

# শ্ৰম ও স্থাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্ৰিকা

ज्या दिस्त वर नुक्तिवाह, अवेक नक, खाना मध्य ७४।

व्यक्तिक विकास मृती श्र वरूवान सांक वर्षक सुना

# वनवार्षक कार्यन्।

अर्थः सम्मानक अन्नायकः। कृषिक कर्मनी कृषिका जानीत्वक वर्षे कृत्यपत्रि रहावात कार्या निर्वाण कवित्राह । बाग्रारण इस् নতা ও নবৰুৱা বিষ্টুত জোনার অধিবিত নাই। কিন্তু তোমার मक्न त्यानीय जेनीय रहेका जामका हेव जारकात जब्हीय कति, काशीत नेवाड चना कृति । भागक कृत व हंत्रान करेंबान क्षिप्रतिहें अभिन महर कार्राड अनुष्ठीन क्षिएक नमर्वक है। अस्य अहे नवन्द-बाहुत प्रकारमान रहेत गढ वरमावह इत्त, इन्स्लाहात कवा भूत्र ्क्रॅबिएसबि, धनः भकील चर्नेनावनीत प्रदेश र्लामात्र े के बुर्गाव/कर्क मेर्नर्भ केत्रियां इन्त्रक्षकित्व क्यायात् स्थायात् स्थायात् পরিভেক্ষি। ভূমি দক্ষ কলাণ ও মন্তব্যে আকর। এই कुल मिल्लामा एव भूमवर कारपात समुक्रांन मन्त्रदेशाच कार्याच নট্রেই জেমারিই জায়ুক শক্তির জিলা দর্শন করিতেছি। প্রভো ! क्षिक वक्षा दर्शन व कशनावे प्रश्ना खरे जवतदर्ग नवार्णन ক্ষিক্স পুৰে কোমান চৰুণে নিলেৰ ভাবে আনত হইতেছি---ক্ষিত্ৰি কৰ, বৃষ মেও, যেন এই ক্ষুণক্ষি ভোমাৰ সেবান विभेत्रक काल नामक प्रवेशन नारम ।

# নশাৰকীয় ঘন্তব্য। 😘

Comment of the control of the contro

शैषिताह, केल क्य रहेताहरू, हर्ज़ू परका पाइ. नश्च बरेबारक् । ব্যশ্তাও দেইরপ। নির্থন সাধুতা দদি কোনও পুরুষে বা ৰারীতে থাকে, ভবে ভিনি বেখানে নাম কৰিবেন সেখানে গোলের বাবর আন্তর্ত্ত কর্মত ক্রইবের বিষ্টার কাড় লোক केन्द्रश द्वीरका नरद्वरर कामिरद, द्वा क वर्ष कि, छाहा का जीवानिनदम सूर्य नृषावेटक करेंद्र मी, काहन आस शर्यक सीवस क्ति काशांत्र। एटकत केंगटबरे नर्जाबा द्विशादाः यह का**ब्रोर्ग द्वा**क् ষ্ট্য, যে সকল ব্যাহ্ম পরিবার দেশের নানা ভাবে বিক্ষিপ্তারিছিয়<u>ি</u> ছেন ভাঁহামের উপরে ওঞ্জর দারিগভার অভিভি ইবিয়াছে। वोहिटब साम धर्म पादारे ध्यकांक क्छिक क्रि मनमें पाटनत मादका पृष्टि जीवाराव केंगरबहे भर्गिक सहित्रोरह । त्नारक ভীৰাদিগ্ৰে দেখিয়া মনে মধে ত্ৰান্ধ থাৰ্মের বিচ'ন করিভেছেবু बरन कन्न, अक कारन धावनी खांक शतिवांत कारह,, खीशांतक, शृंदि ज्लिप्रंडि धक्छि दिन क्षेत्रंद्र छैनानना स्थ मा । नर्वमाहे আত্মহথে রত : চতুর্দ্ধি-কর লোকের পুথ ছাবের সহিত্র ভাঁছার্টের বে কোনও স্পূৰ্ক আছে তাহাদিগকে দেখিবা আছপ বৈৰ্থ 💥 मा। वहर क्रीहारक श्रीकिमान भाग्नर श्रीवनश्रक्ति কাভরতা, সংগারারজি প্রাক্ষি পায়। এরপ ছলে বান্ধিয়ে ব্রাপ্ত ধর্মের প্রচার গুনিলে দে স্থানের পোচের কি উপ্সার ক্রইবেঞ্জ यथन व्यवस्थितन ब्रष्ट् बाटक ब्रेनियन-"विषे वहे अर्थक ब्रह्मकी बुद्ध योग, अभारम कर कार्ग निर्वादन बहैदर्व क्रिकारमे विवर्शनिक्ष ৰদৰ সুচিৰে। তিবে কে.উপ্দেশের প্রক্তি লে ছয়ন্ত্র লেভি क्रिंशांक क्षेत्रिय एकम १ क्षेत्रांका के मेत्रियुर्व और प्रकृति শিক্ষে কৰিয়া ৰলিবে—"এম কলভক্ত ছারাতে সেনে যথে ছার कारो क केर्द्रपिटक है। शिवदा रहत्रे भ रकवन मन बाक्स है वेहें व्यक्षात्र मानुः।" चान्त्रा द्वितिमानि, दन चाटन व्यक्तिक्षणाविदे अस्यत कर्गकरण ना ।" जाने देवसारन अवदी निर्वासी अ कुर्य श्वापि भवितात्र भारत, द्रम्पाचन ब्रोहारमण पाक विश्ववदे पन क्षित्रा व्यक्ति । अकावल्यन योको निम्न रहनन बोबीय नी color differed affeits and that any consensus ere afore that were where, the state of the APP THE PROPERTY OF THE PARTY AND

Color of the Color

-CHIME'S BACK CHIEFE अक नवियान विकित्र केविया विविधाहन, आज मर्च विद्यालय ्राहित काशास्त्र किंका क्रिया प्रश्न छ। हो छेल्टर निर्मित्र केडी , লৈক, 'কল্প জাবিদা দেখিলৈ দেখা বাইবে যে, প্রাক্ষা মহিলাদিমের अबद्ध क्यांत्रि अन्तानेख मा बहेरन उाक श्रीहरांड नकरन श्रमुंसि शाक्टिक शास ना । अतिक शाम अस्त (मेर्बा मितारक, নারীর স্থার্থপবভার সংস্পান্ত ব্রাহ্ম পুরুষের অন্তরের ধর্মীয়ি ्र कृतिष्ट्र हरेता शिक्षाक्त । तर्ग कर्य आक्र शतिवास्त्रव गर्था। क्रोबक निविष्ठ हरेट नरह । यह मुक्त निविष्ठ कि धक धकी অধিন্ত্রিক প্রিবার ইইয়া, প্রাক্ষাধর্ম এটোরের সাহায়া করিতে ুলাবিতেছে । বৃদ্ধি তাহা না হয়, তবে তাহার কারণ কি । অধি-काःन जात्तरे नानीय सम्बद्धारस्य केषान क्रमी क्रायन। क् ব্ৰষ্থে গতই চিস্তা করা বাল, ভতাই অম্ভব করা নায় যে, নামী-शानित अस्त भर्षाचि अवस्तिक क्तिएक मा ना दिएन, बाक रेप প্রচারের অক্ট্রান্তরূপ ফল ুরু লিবে না। আময়া পুরুষশশের . जलात मंद्रां विकीश कितिया वर्ण माना क्षकार छेलात स्वरंगहर्न ু ক্রিয়া থাকি। উভার অধিকাশে, ছলে নালীগণের বোর দিবার স্তবিধা হর না। রে সকল আলোচনাকে প্রক্রবিধার বিদ্রুপ উপকার হর, সে কেঃ আলোচনাতে নারীগণ আনেক সগলে উপস্থিত গালিতে পানে না - ভটিৰ নারীগাণৰ মধ্যে আ**ল্লাখ**র্ম ্রীখন্ত ভাবে প্রচার কবিবার করও কোনও উপায় **অবং**ষিত ভইতেছে না। এইজ জীবন সমর্পণ কা বতে পারেন এইবা কোনত महिला ध्यम ७ आगातित गासा मुद्रे व्हेटल्डाकन मा । आवंत वेहाटक भक्तर नाहे (प, नादीय परिज्ञहरूस शरीह, मायुष्टात्र अ यार्यनारमव জগ.তর মত্র বেশে নারীপ্রকৃতি ब्रिलंश উপবোগী। ক্ষাধানিকভা ও পনিত্রভাবে রাজা করিকেছে। খ্রীষ্ট ধর্মা, বিশু র্ম্মিন্সভূতি জাচীন ধার কত শিগিল হটয়া গিয়াছে, কৈছ এৎনত ेखा**इरावेश ८२. मिक्ट** २ष्टे ४६८७५५, एडा मार्डीवरनंद्रके निर्षाद खाला नाया क्रमावर अवलाग यान कर राष्ट्र देखांचा नहीं याह, ভাৰি ছই: গ্ৰাম ংৰ্ম খাত এলে ভিজিব উপাৰ প্ৰাণ্ডত ইংসে । না, প্রশাস্ত প্রার্থ প্রকান নাগ্রন মধ্যে সংগ্রাধ বাস্ত্রিক কবিনার জন্ম ্রিন্ত্রিশ্রের 🐧 করা ২পরালন্ত, ভাষার ফলও কিচংপার্যাণে ি কুন্ধুয়াছে। বৰ্জ্ঞান নধে নারীদিংগর প্রতি বিশেষ দৃষ্টি দিবে

ত্রক দিন এক তন প্রাক্তি প্র প্রবিধী হালিয়া বলিংগন "আনাবিগতেক বলি ক্লেলগা শান, আধানাবাত আগতে প্রিলেক না।
বিশ্বাধী সকল ক্লিয়া বাইবার করে কিছিলা নালিতে হইবে।
বিশ্বাধী সকল ক্লিয়া বাইবার করে কিছিলা নালিতে হইবে।
ক্লিয়া লাগেলাই কলিয়া বাইবার কলে গভীর সভা
কলিছে হালা বিশ্বাধী বাইবার কলেয়া বিশ্বাধী বাইবার কলেয়া পরিবারের
ক্লিয়া বাইবার কলেয়া বাইবার কলেয়া কলেয়া বাইবার কলিয়া বাইবার কলেয়া বাইবার কলিয়া বাইবার কলিয়া ব

नकल धर्म ७ जामन धर्म-चननवाटचे इहे जेकात धर्म रम्था नाम अके मेकल शब्दि जात अंक जानन स्कैं। मकन स्टर्स सुर्वभ्यात्कत नमुमाय निवम काणिनानन चारक, नीजिक विक्रिकण আছে, লোকের সহিত দৌজক ও সভাব রক্ষা আছৈ 🛴 কিছা ভিজ্ঞান পূর্ব বংসারাস্ভি। সে নীতে এবং গৈ বেলিক गरमात्रामिक बार्गिमिक ने अबे अंगे तम मीकिए निर्मा मिक Carl बलाव शास्क, क्लारकत लक्षा अ शास्त्रा ग्रावसाक्री এই নকল ধর্মের উপাশু দেকতা স্বার্থ। , ইছার উল্লাস্ক কর্মে প্রিছেদ বতং পরিধান কর্ফ না কেন, ভাষার প্রায়া चार्थरहे भूना करिएटहा किस समग्राम्य धरे चक्त हैर्सिक चामद्रद्र किंधू लोते गारे। गर्ममारे लात्कर पूर्व समित्क পাওবা বাহ, "লোফটা বেশ! কেমন বিনয়ী, কেমন আমাহিত bविराव (काम e रम्क मारे-भारक शक्य कार्य) रहें वस द्वाम আছে। নিঃমনত উপাসনাটা করিয়া খাক্তে ব্যক্তি कारबाद माहासार्थ । क्यूनिक्क नामक चाह्य हे जाति के किया লোক বর্ণের অভিরের নিষ্ম অভিশালন ও এক ব विखबन विक्रित हरेदन महरू-देशक अधिक जाति होईना है किछ भारत 'त्यत हटा हैटा पाराहे नहीं । खेनरे की जैवन श्रीं मा भारत, विषान से देवधारतात स्वीर वृत्ति अस्तर संस्थान ह ना वस, उदय (नगारने धर्य बादे । व्यानग्रहीय क्षेत्रीक, काक-नाध्यवना तो कन्त्रमात्वक व्यक्तिन निर्माद्यक व्यक्तिन व विदन ना , अवा की विकासित है जिन्हें, स्टेर्फ किना है । किवाब .. रनोक्षेत्र, अनमशास्त्रत चित्रत्याक्षणा आपि विकास कि for fect 19 difes den vice der नवरंत्रचा ना किथानरम् विक्तांताहरू अस्ति CARCALA AND RUSH AND RIPLERS काराज ना शाहिरक बालाबा

আনার প্রশংসা তাঁহাছিগকে মুগ্ধ করিবা রাখিতেছে। তাহাদের আনেক সমর ও আর্থ, গোকতৃত্তির জন্ত নিযুক্ত হইতেছে। ইহার ভারনি এই যে, প্রাক্ষণতিক অবলগন করিবার জন্ত তাহারা এক সমরে লোকের অপ্রিয় হইরাছেন এবং বাহাকে জগতের কল্যাণ, মুক্তির উপার অক্ষপ বিবেচনা করিয়া থাকেন,—অন্ততঃ মুথে প্রকাশ করিরা থাকেন—তাহার চিন্তার ও উরতির জন্ত তাহারা বার্থিত্যাগ করিতে প্রস্তুত নহেন। যদি তাহাদের অন্তরে প্রাক্ষণর্ম ও ব্লাক্ষসমাজের প্রতি প্রতি থাকিলে, তবে তাহার উরতির জন্ত বার্থনাশের প্রাপ্ত ক্রিবির না কেন গ ইহাতেই বোধ হয় তাহারা নকল ধর্ম লাইরা সন্তই হইতেছেন। বিখাস বৈরাগ্য ও সেবার অবি প্রাক্ষসমাজে প্রজ্ঞানত না হইলে আর গতি দেখিতে পাওরা যাইতেছে না।

সামাজিক উপাসনা,—ব্ৰাহ্মসমাজে যে আকারে বর্ত্ত-यान गामाबिक উপাসনাপ্রণালী প্রচলিত আছে, তাহা প্রাচীন হিন্দু সাধকদিগের নিকট সম্পূর্ণ নৃতন। ইহা থীষ্টীয় স্মাজের প্রচলিত উপাসনা প্রণালীর অমুরূপ। বলা বাহুল্য যে, এই উপা-मना ल्यांनी मर्साङ सम्मत जवः विराम कल्लान । हेरात ल्यांन উপকারিতা এই,--একজন সাধক একাকী নির্ক্তনে তিন বৎসর সাধনের পর যে ফল লাভ করিতে পারেন, এই সমবেত উপা-স্নার স্থায়ে একজন ব্রন্ধোপাসক অভি অর স্ময়ের মধ্যে 🏲 তাহা অপেক্ষা অধিক উপকার লাভ করিরা পাকেন। ইহাতে माबूत मृत्य जेचात्त्रत नाम छना हम। हेहाए माधू मः मर्ग हम, এবং অন্তের হৃদয়ের সাধুতা ও ভব্তি-ভাবের সংস্পর্শে আসিয়া নিজের জীবনের সাধুভাব জাগ্রত করে, পাপ পরিত্যাগের প্রবৃত্তি জ্বয়ে। সর্কোপরি উপকার এই যে, ছইটা হৃদর এক প্রাণ इटेश क्रेचरवत हतरन मंत्रनाभन क्टरन डाक्शानत मर्मा क्रेचरतत বিলেষ প্রকাশ দেখিতে পাওয়া যায়। যীশু এই সমবেত প্রার্থনা ও উপাসনার মূল্য বৃঝিতে পারিয়াই বলিয়াছিলেন—"যদি ভোমরা হুইটা আত্মা এই পৃথিবীতে কোন বিষয়ে সন্মিলিত হও এবং তোমাদের স্বর্গন্থ পিতার নিকট প্রার্থনা কর, তবে সেই প্রার্থনা ভোমাদের স্থগীয় পিতা পূর্ণ করিবেন।" অনেক মৃত প্রাণ ব্যক্তি এই সমবেত উপাসনায় যোগদান করিয়া নবজীবন লাভ করিম্নাছেন.—মনেক শুফ প্রাণ সর্ম হইরাছে। সামাজিক উপাসনা আদ্ধ সাধকের বিশেষ সাধনপথ। কিন্তু এ হেন ফলপ্রাদ সামাজিক উপাসনার মধ্যেও কতগুলি সাধন-বিম আছে। যে ছলে সে সকল অন্তরার ঘটে, সেই স্থলেই এমন **উপকারী বস্তকে বিধাক্ত** করিয়া তুলে। দৃষ্টা**ন্ত স্ব**ক্ষপ এন্থলে একটি কথা উল্লেখ করা ঘাইতেছে। যিনি আচার্য্যের কার্য্য কবেন. তাঁহার দৃষ্টি যদি ঈশ্বরের উপর না পাকে, তিনি যদি আত্ম জীব-নের দীনতা অনুভব না করিয়া অস্বাভাবিক ভাব অবলম্বন करतन, छरव रमहे खुलामनात्र काहात ७ উलकात हल्या मृत्त थाकूक वन्नः व्यात्नात क्षत्रतक खेलानना इटेट्ड मृदत महेन्ना यात्र । বিশাতে "Pulpit admonition and praying at others" এর আলায় লোক ওলনালয় হইতে প্রস্থান করে। ত্রান্স সমাজেও যে এ আদহা নাই তাহা বলা বার না ১ উপাসনা ও প্রার্থনার ! সরলতা, স্বাভাবিকতার অভাব হইলেই সহা অনিষ্ট। ঈশর সামাজিক-উপাসনাক্ষপ বে অম্লা সাধনোপার আমাদিগকে দিরাছেন, তাহার সন্থাহার করিরা জীবন ধন্য করি।

সেব।—বেধানেই লোক নিজের স্থও প্রবিধা ভূলিয়া গিরা অপরের অ্থোৎপত্তির চেষ্টা করে, সেথানেই ভূগবানের কুপা অবতীর্ণ হয়। নিম্বার্থ প্রেম ও সেবার স্থলে ভগবান স্বরং বর্তমান। নরসেবা করিলেই মহান্ পরমেখরের সেবা করা हन्नी याहात्रा विप्तरम वज्र वासव मृत्य चान्न अकाकी कुर्छ (तानी-দিগের সেবা করিতেছেন, বাঁহারা অন্ধ আতুরদিগকে মাতা পিতার ন্যায় যত্ন ও স্লেহের সহিত পালন করিতেছেন, বাঁছারা ছভিক্ষ প্রপীড়িত নরনারীর সমাধে আর উপস্থিত করিয়া তাহাদিগকে মৃত্যুগ্রাস হইতে ব্রক্ষা করিতেছেন, তাঁহারা ভগবানের সেবা করিতেছেন। উজ্জ্বল জ্ঞানচক্ষে দুর্শন করিয়া ভগবানের রাজ্যের একগাছি তৃণকে রক্ষা করিলেও তাঁহারই সেবা করা হয়। তাঁহার স্ট জীবের সেবাতেই জিনি সেবা প্রাপ্ত হন। নিরাকার চিগ্ময় দেবভার বাছিক দেবা এরপেই হইয়া থাকে। এদেশে ধর্মের ব্যাখ্যা নানারপে ব্রিভ হইরাছে, তন্মধ্যে প্রধানতঃ ধর্ম ছই প্রকার। সেবার ধর্ম এবং জ্ঞানের ধর্ম। শ্রীমন্তাগবভকার সেবাধর্মকেই শ্রেষ্ঠ আসন थानान कतियाहिन। ভাগবতে नवम ऋस्त्र, চতুর্থ অধ্যায়ে ভগবান হ্বাসাকে কহিতেছেন:--

মৎ দেবারাপ্রতীতং তে দালোক্যাদি চতুইরং। নেচ্ছস্তি দেবয়াপূর্ণাঃ কুতোহন্যৎকাল বিপ্লভং॥

অর্থ,—''আমার সেবা করিতে যাহারা সমুৎস্ক চিত্ত, তাহারা সালোক্যাদি চতুর্বিধ মুক্তি পাইলেও তাহা লইতে ইচ্ছা করেন না; কালে ধ্বংসশীল অন্য বস্তুর ত কথাই নাই।'' সেবাতে মানুষকে নিঃস্বার্থ হইতে শিক্ষা দের। স্বার্থশূন্য ক্ষায়েই অহতুকী ভগবস্তক্তি জন্মিয়া থাকে। সেবার পথে না চলিলে ধর্মাগাধনেও স্মার্থপবতা আসিতে পারে। সেবাই স্বার্থ-বিনাশেব মহান্তা। এজনাই সাধকগণ বারংবার সেবাত্রতের এত প্রশংসা করিয়াছেন। সেবাতে অহংভাব, দান্তিকতা বিনাশ করিয়া মানব হৃদয়কে মেষবং বিনম্ন করে। যিনি পরের সেবা করেন না, নিশ্চয় জানিও তিনি অহঙ্কাবের হস্ত হইতে মুক্ত হন নাই। সেবা মন্ত্রে দীক্ষিত হইয়াছিলেন বলিয়াই চৈতন্য বলিম্মাছিলেন:—

ত্ণাদপি স্থনীচেন তরোপিব সহিষ্ণুনা। অমানিনা মানদেন, কীর্তনীয়ঃ সদা হরিঃ॥ 🐤

অর্থ,— "তৃণের ন্যায় নীচ ও রক্ষের ন্যার বহিষ্ণু হইরা সক্ষর প্রকার অভিমান ত্যাগ করতঃ হরিনাম কীর্ত্তন করিবে।" সেবা-তেই বিনর, ভক্তিজন্মগ্রহণ করে। জ্ঞানাজ্ঞন, নিজ্ঞান উপাসনা, আলোচনা, শাস্ত্র, পাঠের সঙ্গে সঙ্গে সেবা ব্রত্ত গ্রহণ করা চাই; ভাষা হইলেই আমরা বথার্থ জগবভ্জি লাভ করিয়া কৃতার্থ হইব। পৃথিবীর সম্পন্ন ধর্মশাথেই সেবার মাহাত্মা কীর্ত্তিভ্রাছে। যাহার হস্ত হৃথীর অঞ্জল মুহিতে উদ্যুত্ত হৃত্যু না,

নে ধর্মের একটা উৎকৃষ্ট ফল আখাদন করে নাই। পরবেশন কল্লন, ব্রাক্ষসমাজ মধ্যে এই নেবার ভাব প্রাকৃতিত হউকে।

সাধারণ ত্রাহ্মসমাজ কাহার ?— সাধারণ ত্রাহ্ম-সমাজের সভ্যগণ একাত্তে আত্ম-পরীক্ষা করিয়া দেখুন, ভাহাদের অভরাত্ম এই প্রনের কি উত্তর দের ? ইহাত অনেক সভ্যের भूर्य छनित्राहि (य, नावात्रण बाकनमाक क्षेत्रदेत नमाक ; देशत প্রচারকগণও নিরম্ভর এই সম্ভ্য হোষণা করিতেছেন। সে বোষণার কথা বলিভেছি না। প্রভ্যেকে সভ্যতীক্র কোর্ফের ভাম বিচার করিয়া দেখুন, তিনি অস্তরের অস্তরে ইহাকে ঈশবের হত্তরচিত বিবেচনা করেন কি নাণু ভাবিয়া দেখুন ইহার মধ্যে ঈশবের কার্য্য দর্শন করেন কি না? এবং সেই কার্ব্যের সাহাব্যের জন্ত স্বার্থনাশ করিতে আনন্দ অফুডব করেন कि ना ? जारा यपि स्टेर्स, जर्द नाथात्रन बाक्सनभाष्ट्रत वर्खमान সম্পাদককে প্রকাশ্ত বিজ্ঞাপনে এরপ কথা কেন বলিতে হইবে---"দাধারণ ুবাক্ষদমাজের আর্থিক অবস্থা বড় মক্ষ।" ইহা সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সভ্যগণের পক্ষে কি অগৌরবের কথা ! माशांत्रण बाक्रममास्कद मणागणं चरनक ममरत्र नवविधान मुमास्क्रत ও বিপথগামী ব্রিয়া বর্ণন কুদংস্বারাচ্ছ্র করিরা থাকেন। এবং ইহাও সকলের বিদিত আছে যে, সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের সভাসংখ্যা নব্বিধান সমাজের সভাসংখ্যা जार्भका वहश्वरण जिथक। এथन किछात्रा कवि, नवविधारन व বৰুগণ তাঁচাদের সমাজের এত গুলি প্রচারককে খাওয়াইতেছেন তাঁচাদের প্রচারের বার বছন করিতেছেন, আর সাধারণ ব্রাহ্ম-সমাজের সভাগণ আপনাদের নামমাত্র করেকজন প্রচারকের ও প্রচারকার্য্যের ব্যয়ভার বহন করিতে পারিতেছেন না, ইহার কারণ কি? কারণ নববিধানের অঙ্গীভৃত ব্যক্তিগণ আপনাদের সমাজকে ঈশবের বিধান ব্লিয়া মনে করেন এবং ভাহার কার্য্যের সাহায্যের জন্ত স্বার্থনাশ করাকে পরম পুণ্যকার্য্য ও সৌভাগ্য বলিয়া মনে করেন। সাধারণ ব্রাহ্মসমাঞ্জের সভাগ্ণ আপনালের সুমাজকে সেরূপ ধর্মের ও বিখাসের চক্ষে দেখেন না বলিয়াই স্বার্থনাশের প্রবৃত্তি জন্মেনা। কেই যেন মনে না করেন যে, আমরা করনা করিবা কিছু বলিতেছি। এমন কতবার হইয়াছে যে, একই সময়ে একই সহরে সাধীরণ ব্রাহ্ম-সমাজের একজন প্রচারক ও নব্বিধান সমাজের একজন প্রচারক উপস্থিত হইয়াছেন। সে সহরে নববিধানের সভ্য इरे ठातिकन, এवः किर्माश्य वाक्र माधात्रण वाक्रमभाष्य मछा। সেই কজিপর নববিধানামুরাগী লোক তাঁহাদের প্রচারকের জঞ্চ অসানচিত্তে ২০০ শত টাকা বায় করিলেন, কিন্তু সাধারণ ব্রাক্ষণমাজের অচারকের প্রচার-যাত্রার গাড়িভাড়ার ৩০ টাকা ভোলাও অভিশন্ন কঠিন বোধ ইইতে লাগিল। কেবল সংকীৰ্ণ ও ভ্ৰাস্ত বলিয়া বিজ্ঞাপ করিলে হয় না, ত্যেমরা দেখাও ভোমরা যালাকে সত্যুবল, ও ঈশবের নিজ হস্ত রোপিত সমাজ ৰণিরা ঘোষণা কর, তাহার জন্ম আর্থনাল করিতে প্রস্তুত আছ।

জীবনের পত্নীক্ষা—বধন কোনও পুরুষ ও মন্ট্রুর মধ্যে व्यथम व्योजित ग्रकात हत्र, ज्थन जाहारमूर्व क्षत्र मन मन स्नार উচ্চিত হইরা উঠে। কত আশা, কত প্থের কর্মাতে তাহাদের জ্বর পূর্ণ হইরা যার, তাহারা ভাবে বেন পক্ল বস্ত কেবল ভাছাদেরই ভূথের জন্ত রহিরাছে। বাছিরে যেন কোনও বাধা নাই, ভাছাদের মিলনের পথে আপাভত: যে বাধা রহিরাছে, তাহাই যেন একমাত্র বাধা। সেই বাধা একবার দ্রীভূত হইলেই যেন তাহাদের আবিচিছের স্থানর পথ পুৰিয়া যাইবে এবং তাহারা অমস্ত প্রেমের সাগরে সম্ভরণ করিতে পারিবে। কিন্তু কিছুকাল পরেই ভাছাদের ত্রম প্রকাশিত হইরা পড়ে। ক্রুমে ক্রমে যথন সংসারের গুরুভার ভাছাদের মন্তকের উপরে পতিত হয়, তখন তাহার সঙ্গে সঙ্গে কন্ত চিন্তা, কত ভাবনা আসিয়া ভাহাদের প্রাণ অধিকার করে; রোগ, শোক, দরিত্রতা প্রভৃতি কঠোর পরীক্ষার ভারে ভাগাদের হৃদয ব্দবসর হয়। তথন তাহারা পূর্ব্ব প্রেমের ভাবোচ্ছাদের কণা ভূলিরা পিরা হয়ত নিজের নিব্জিভার বিষয় মনে করিরা অমুতপ্ত হয় এবং পরম্পারকে পরম্পারের অমুধের কারণ বলিয়া মনে করে। কিন্তু যাহারা প্রকৃত প্রেমিক, তাহারা পূর্বপ্রেমের কথা শারণ করিয়া সকল হুংখ, বিপদ ও পরীক্ষার ভার অক্লেশে বহন করিতে সমর্থ হয়। নিজের ক্লেশ অগ্রাছা করিয়া অপরের প্রতি কর্ত্তব্যপালন কমিতে, অপরকে সুখী করিতে ব্যস্ত হয়। ছ:খ কটে বরং তাহাদের প্রেমের ভাবকে আরও উচ্ছল করিয়া দের। এইরপে পরীক্ষার সময়ে কে প্রাকৃত প্রেমিক এবং কে কেবলমাত্র ভাবোচ্চ্যাসের অধীন তাহার পরিচর পাওরা যার।

ধর্মজগতেও ঠিক এইরূপ হুই শ্রেণীর লোক দেখা যার। এই विकामभाष्यत्र माधा मिथिए शास्त्रा यात्र त्य, त्नारक यथन अधाम ব্রাহ্মসমাজে প্রার্থেশ করেন, তথন কত ভাবোক্সম্ভ হইরা ভাঁছারা আসেন। তাঁহাদের প্রাণ তথন উৎসাহে পরিপূর্ণ,ভাঁহাদের জীবন তথন তেজ ও বিশাসে উচ্ছল। তথন তাঁহারা কোনও বাধাকে বাধা বলিয়া মনে করেন না, কোনও বিপদ বা পরীক্ষাকে বিপদ বলিয়া গ্রাহ্ম করেন না। সংগ্রাম **ও নির্বাতনের ভিতর মনে** করেন যে কেবল বাহিরে প্রতিকৃল অবস্থা রহিয়াছে; লোকের যে প্রতিকৃপতা রহিয়াছে, তাহা দুর হইলেই ধর্মসাধনের সকল পথ একেবারে পরিষ্কার হইয়া যাইবে। কিছু লায় ় কিছু-কাল পরে প্রকাশিত হইয়া পড়ে যে বাহিষের যে সকল বাধা বা প্রতিকৃল অবতা তাহা কিছুই নয়। সাধনরাজ্যের পথে তাঁহারা যত চলিতে থাকেন, ডভই বুরিতে পারেন যে ধর্ম-সাধনের শক্ত, বাহিরে নয়, আপনার ভিতরেই রহিয়াছে। আপনারই মধ্যে প্রবল প্রবৃত্তি সকল স্থােগ অপেকা করিতেছে, একটুছিত পাইলেই সমস্ত প্রাণকে অধিকার করিয়া প্রমেশ্বর হইতে দূরে লইয়া পিরা ফেলিতেছে। স্বার্থপরতা, অহস্কার প্রভৃতি রিপুক্লকে দমন করা কত ক্রিন, তথন ভাঁহারা ভাহা বুঝিতে পারেন। এখন যে প্রাণ পরমেখরের সহবাসের অভূল আনশ অমুভব করিয়া ধল হইতেছে, পর মৃত্রেই হয়ত তাহা रकामक क्यावृक्ति वरीन स्टेबा, छाशात व्यान-मूच प्रमुद्ध विका বইরা হাহাকার করিতৈকে। বাহারা কেবলনাল ভাবের হারা চালিত হইয়া ব্রাহ্মসমাজে আসিয়াছেন, উচ্চায়া এইরূপ অবস্থায় মধ্যে পড়িরা অন্তির হইরা উঠেন; তথন আর তেমন উৎসাহ নাই, আশাপুর্ণ ভাব নাই, পরমেশরের নামও ভেমন মিট লাগে না। এইরপে বাঁহারা কেবল ভাবের অন্ত আসিরাছিলেন, ভাঁহারা ভাব না পাইরা শান্তিহারা হন, ব্রাক্ষধর্ম শান্তি দিতে পারে না হরত এটরপ আশহাও করেন। কিন্তু বাঁহারা প্রস্তুত क्षेत्र-(श्रीमक, डांशांत्रा (य नका नहेत्रा श्रथ्य वासनमारक আসিরাছিলেন, দকল অবস্থার মধ্যে তাহাতে ত্বিরুটি রাধিরা ধর্মপাধনে রত থাকেন। জীবনে জনেক বার পরীক্ষা আসিগেও কিছুতেই ভাঁহাদের প্রাণকে আপনার প্রভূ পরমেধরের পর क्डेंग्ड विष्ठनिङ क्रिडिंड शांद्र ना। **जी**वत्न यथन **ज**विचारमञ् তুর্দিন আসে, যথন অন্ধকার আসিরা প্রেমমরের প্রেমমূধ দেখিতে দের না, তথনও তাঁহারই দিকে চিত্ত রাখিয়া আপনার লক্ষ্যপথে অগ্রসর হইতে চেষ্টা করেন। সাধন ভজনের বারা আপনার ভিতরের শক্ত সকল উচ্ছেদ করিয়া সেধানে আপনার ৰীবনের প্রভৃকে প্রভিষ্টিত করিতে চেষ্টা করেন। হর্মনতা, পরীক্ষা, প্রলোভন প্রভৃতি ভাঁহাদের প্রাণকে পর্যেশ্বর হইতে দুরে শইরা যাইতে পারে ন', বরং তাঁহার চরণকে দৃঢ়ভাবে আলিজন করিবার জন্ত প্রস্তুত করে। প্রমেশ্বর কক্ষ্য, আমরা দিন দিন পরীক্ষার পথে স্থান্ত হই।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

### অন্তরে ও বাহিরে।

আমরা চারিস্থলে ঈশ্বর দর্শন করিয়া থাকি; প্রথম-জড় খগতে। এই দৃশ্তমান জগৎ খনিতা, নিয়ত পরিবর্তনশীল: ইহার স্বায়িত কোণার? জগতের অন্তিত্ব আপেক্ষিক মাত্র: ইহার সন্তা আমাদিগের জানের উপর নির্ভর করিতেছে। এই यে ज्ञुणानि मिथिए हिंहा चामात्र निकृष्टे य ध्यकात्र. অক্টের পক্ষে হয় ত ভাহা নছে। মানব বাহাকে রক্তবর্ণ দেখে, পশুগণ হয় ত তাহাকে অক্তরণ দেখে। আমি যে শক একরপ শ্রবণ করিডেছি, ডাছা অস্তের নিকট হয় ড অন্ত প্রকার প্রতিভাত হইতেছে; আমার পক্ষে যাহা মধুর, অক্টের भक्त इम्न ७ जाहा कर्कण। **धहेन्नाल (मधा वाहे** जिल्हा (य. मुख-মান অভ্ৰপতের একটা স্বায়ী সন্তা কিছুই নাই। এই ত গেল অগতের দার্শনিক অনিত্যভাব। সহজ চক্ষেও মানব দেখি-তেছে, এবং বাহারা কিছুমাত্রও চিস্তা করে না তাহারাও স্পষ্ট জানিতেছে যে, জাল যথার সমুদ্ধিসম্পার মহানগরী, কাল তথার মহামাশান, আজা যে রাজগ্রাসাদ ধনমদে উন্মত হইয়া মতাক উন্নত ক্রিরা র্হিয়াছে, খাল তাহা সমভূমিতে প্রিণ্ড হই-ভেছে। স্কৃত্বগতের এইরূপ অনিভ্যতা অভি সুস্পষ্ট ব্যাপার। নিরত পরিবর্ত্তনশীল, বিচিত্ত অভ্যাতের মধ্যে কি স্বামী কোন বন্ধ নাই ? অবশ্ৰট আছে। যেমন বাপা, মেদ, বুলি, ভুবার প্ৰাভৃতি বস্তানচৰ একই জালের বিভিন্ন পরিণতি মাত্র; এই नकरनंत्रहे मृत्न (यमन अकहे अनीत् अप्, वर्षमान, त्नहेत्रन अहे

বিচিত্র পরিষর্জননীল জগতের সূলে এক ছারী, অপরিবর্জনীর বন্ধ বর্জমান রহিরাছেন; এই বিভিন্ন পদার্থনিচর সেই একই পদার্থের বিচিত্র পরিণাম মাত্র, এবং এই অপরিবর্জনীর বন্ধই ক্রায় । সেই জন্মই প্রাচীন ধ্বিগণ বলিরা গিরাছেন,—
"নিত্যোহনিত্যানাং"; যাবতীর জনিত্য বন্ধর মধ্যে সেই এক নিত্য পদার্থ বর্জমান । আধুনিক বিজ্ঞান শান্ত ও গতার গবে-বণা বারা এই নিদ্ধান্তে উপনীত ছইরাছে যে, যাবতীর বিচিত্ত শক্তির মূলে এক মহাশক্তি বর্জমান রহিরাছে। এই যে মহামত্র ঘোবিত কৃইতেছে, বহুকাল পুর্বে আর্য্য ধ্বিগণ্ড উল্লেখ্যে সেই ক্রাই বলিরা গিরাছেন। ইহাই জড়কগতে ঈশ্বন-দর্শন।

বিতীরতঃ প্রাণিরাজ্যে। সাধকগণ পরমেশরকৈ নিরত সকল চেতনের চেতরিতারপে সন্দর্শন করেন। কড়কগতে বিনি মহাশক্তিরপে বর্ত্তমান রহিরাছেন, যাবতীর চেতনের মধ্যে তিনিই এক মহাচেতরিতারপে, প্রাণরপে বিদ্যমান। এইলেও সাধকগণ তাঁহাকে যাবতীর পরিবর্ত্তননীল বিচিত্র চেতনের মূলে এক অপরিবর্ত্তনীর নিত্যা, মহাচৈতক্তরপে, পরমক্ষানরপে প্রভাক করেন—এখানেও তিনি সমুদ্র বিচিত্রতার মধ্যে এক হারী পদার্থও নিরন্তারণে বর্ত্তমান। তাই আর্যাধ্বি বণিলেন, "চেতনশ্চেতনানাম্"; তিনি সকল চৈতন্তের মূলে এক মহাচৈতক্ত।

তৃতীয়তঃ মানব-ইতিবৃত্তে। বিশেষভাবে ইতিহাস পর্যালোচনা করিলে, বাবতীর ঘটনার মূলে এক মহাপুরুবের নিরস্কৃত্ব
পরিলক্ষিত হইরা থাকে। সাধকগণ ঈশ্বরকে এক্সলে বিহাতা
রূপে সক্ষর্ণন করেন। "একোবহুনাং বো বিদ্যাভিকামান্"
তিনি একাকী সমুদ্র প্রাণিজগতের কাম্য বস্তু বিধান করিতেহেন। তিনি যাবতীর ঘটনাকে নির্মিত করিতেছেন। যাহার
যাহা আবস্তুক, বেরপে বিধান করিলে জগতের কল্যাণ হর,
সেই জ্ঞানমর মহাপুরুব তৎসমুদ্র অবগত হইরা যথাবিধি জগৎ
কার্য্য সম্পাদন করিতেছেন। আমরা এক্সলে ভাঁহাকে নিরীকণ করিরা কুতার্থ হই।

**এই যে তিন** चल সাধকগণ ঈশবকে দর্শন করেন ইহা পরোক দর্শন। এরপ দর্শনে আন্থা তৃপ্ত হয় না, সন সন্দেহের অতীতরাজ্যে উপনীত হয় না; উথান, পত্তন, পাপের জালা নিবারণ হয় না। কিন্তু বে সাধক তাঁহাকে আত্মায়দর্শন করেন তিনিই প্রকৃত দর্শন পাইরা ধাকেন। "তমান্সকং যেহসু পশুস্তি ধীরান্তেষাং শাস্তি: শাস্থতী নেডরেষাম্"; যেধীরেরা তাঁহাকে আত্মন্থ করিরা দর্শন করেন—আত্মার পরমাত্মারূপে, আধাররূপে দর্শন করেন, তাঁহারাই শাখতী শাস্তিলাভ করিরা থাকেন,কিন্ধ অন্তের ভাগ্যে তাহা ঘটে না। যভদিন এইক্লপ আত্মাতে দর্শন করা না যার, ততদিন প্রকৃত দর্শন হর না। আর অন্তরে দেখিলেই তাঁহাকে সর্ব্বত্র দেখিতে পাওর। বার, তথন অভ্যাপতে, প্রাণি-রাজ্যে এবং ইভিহাসে তিনি স্পষ্টতরক্ষপে প্রকাশিত হন, তথন चडत्र वाहित नमान हरेता यात्र। यङ्किन ना चखरत रक्षा यात्र, তত্তিৰ এই যে কগৎ-শাল্প, প্ৰাণিশাল্প ইহা পাঠ ক্রিতে পারা যার ন। আকার ইখর দর্শনর ও চাবি হাতে না পাইলে कगर-निकृष উन्वाहिङ क्त्रिए शाहा बाद ना। आत्र वथन এह

চাবি হাতে আদে তথন সাধকগণ অতি সামান্য ঘটনা হইতে
মহোপদেশ সকল লাভ করেন, তথন তাঁহার। পজিপণের ক্রিয়া
কলাপ দর্শন করিয়া নির্ভর শিক্ষা করেন। এই চাবি হাতে
পাইয়াই মহাত্মা নানক বলিলেন, "হে মন! যথন ভোমার আহার
হরি প্রস্তুত রাধিয়াছেন, তথন ভূমি চিন্তিত হইতেছ কেন?
পর্মতিও প্রস্তুর মধ্যে কত শাস্ত জীব জন্মগ্রহণ করিতেছে, হরি
অবিপ্রাপ্ত তাঁহাদের আহার যোগাইতেছেন, আর ভোমাকে তিনি
পরিত্যাগ করিবেন?" ইত্যাদি। অতএব আমাদিগকে সর্ম্ম
প্রযক্তে অগ্রে আত্মার ঈশরকে দেখিতে হইবে,তাহা হইলে অন্তর্ম
বাহিরে সর্ম্মত্রই তাঁহার সাক্ষ্য পাইব। এইরূপ সাধন না হইলে
আমাদের সমস্তই বৃধা হইল। পরমেশ্র আশীর্ম্মান করয়া
কৃত্যার্থ হই।

### যথার্থ আধ্যাত্মিক উপাসনা।

পূর্বেব লা হইরাছে, ত্রহ্মদর্শন ত্রাহ্মের প্রথম সাধন। কিন্তু ইৰাই ধৰ্ম্মের চরম ব্যবস্থা নছে। ভগ্বভ-ভত্ত শ্রবণ ও সংসারের অসারতা দর্শনে ঈশ্বর লাভের প্রাবৃত্তি জন্মার। কিন্তু ধ্যান थात्रणा बात्रा ठिख व्हित ७ निकाम हरेलाहे उक्त पर्मन हहेता থাকে। ঈশরদর্শন হইডেই যথার্থ উপাসনা প্রস্ত হয়, তথনই সাধকের প্রাণের ভাবগুলি উচ্ছল মূর্ত্তি ধারণ করে। সেই অবস্থা-তেই তিনি জীবন্ত ঈশরের অমুপ্রকাশে আপনাকে দেখিতে পান। विजीत राक्ति छेनिक्ड शंकित्त त्यमन भामात्मत्र राका ७ कार्या সর্বাদা তাহার দারা নিম্নমিত হয়, সেইরূপ ঈশরের জীবন্ত সন্তা ও দৃষ্টি ছারা সাধকের জীবন নির্মিত হইরা থাকে। তথন তিনি পাপ, প্রলোভন হইতে উদ্ধার পান। ঈশরদর্শন ভিন্ন পাপ ও সংসারাসক্তি হইতে মুক্তি পাইবার উপায় নাই। আমরা ত্রাহ্মসমাজের অবস্থা দেখিরা অনেক সময় নিরাশ হই। সর্বদা এই প্রশ্ন হয় "ব্রাহ্মগণ কেন প্রলোভনেয় হস্ত হইতে উদ্ধার পাইতে পারেন না,কেন সংসার আসক্তিতে ভূবিরা যান।" কেবল তাঁহার গুণামুকীর্ত্তন প্রবণে পাপ হার না-দর্শন চাই। বান্দ্রমাজে - জাদিরা শ্রুতি হথ পরিতৃপ্ত হইতেছে, বালকগণ্ড বহু শ্রবণ ও পাঠ করিতেছে, কিন্তু কর্মন আক্ষ সহিষ্ণু হইরা দর্শনের জন্ত লালারিত ? ঈবরকে সভ্যবন্ত রূপে ধরিতে না পারিলে, তাঁহার দৃষ্টি আপন জীবনে অমুভব করিতে না পারিলে, কেহ কি পাপ ছাড়িতে পারে ? সহিষ্ণু হইরা ব্যাকুল ভাবে সাধন করিলেই তিনি প্রকাশিত হন। "সাধন বিনে সেধন মিলে না।"

ব্ৰহ্মদৰ্শন হইলে কি নিশ্চিন্তভাবে বসিরা থাকা যার ? তথন তাঁহার আদেশে জীবনকে পরিচালিত করিতে প্রবৃত্তি জন্ম। এ সময়ে একটা বিশেষ সাধন অবশ্যন করিতে হয়। পূর্ব্বে আপনার প্রাণের সাধুভাব গুলিকে ঈশ্বরের প্রেরণা বলিয়া মনে করিয়া সাধক বীয় জীবন পরিচালন করিতেন, এখন সে ভাবে চলিলে সাধকের মৃত্যু। তিনি.মললময়, অতএব বাহা মঁলল ও কুল্যাণ্-কর, তাহা তাঁহার ইচ্ছা, এই ভাব. জীবুনের প্রথম অবস্থার ভাল। যেমন, ললগৎ স্নাছে, অতএব ঈশ্বর আছেন" এরণ চিস্তা

জীবনের প্রথম অবস্থাতেই ফলপ্রান্ধ, সেইরাপ"ইহা ঈখরের ইক্রা"
এই ভাবে স্থাগ্য ক্র্মা প্রথম অবস্থার উপুকারজনক। 'কিন্ত এই'
তক্ষ জ্ঞান পরে সাধকের প্রাণে ভৃত্তি দিতে পারে না। তথন তিনি
সাক্ষাৎভাবে ভগবানের ইক্ষা ব্রিরা তাহা প্রতিপালন করিতে
ব্যক্ত হন। সাধকের জীবনে এই অবস্থাতেই জগৎ বিশ্বাসের নিম্পন
দেখিতে পার। ঈশরের ইক্ষা প্রতিপালনে সাধক এতপুর আনক্ষ
ও স্থপ্রাপ্ত হন যে, কোন প্রকার বিশ্ব বাধা তাঁহাকে সেই কার্য্য
হইতে নিবৃত্ত করিতে পারে না। সংসারের নিক্ষা ও প্রতিবাদ,
অভ্যাচার ও উৎপীড়ন এমন কি মৃত্যু পর্যন্ত তাহাকে ঈশরের
ইক্ষা প্রতিপালন হইতে নিবৃত্ত করিতে পারে না। সংসারের
অমুরাগ ও বিরাগ তাহার জীবনকে বিক্পারিমাণেও বিচলিত
করিতে পারে না।

किन्द्र এই व्यवशास्त्र भानव मृज्य इन्छ इन्ट्रेस्ट नन्पूर्व ऋति व्यवग्रहिक भारेरक भारत्र ना। जैचरत्रत्र हेम्हा भानरन विस्पव আগ্ৰহ ও আকাজকা হয় বটে; কিন্তু আমিত্ব ভাব ভিতরে স্ক্ষভাবে লুকায়িত থাকাতে নিজ ইচ্ছার লোতে সাধক কথন কথন ভাসিয়া যান। তখন আলম্ম ও জড়ভা আসিয়া ঈশবের ইচ্ছা প্রতিপালন করিতে বাধা দের। সাধনের প্রথম অবস্থার পুরুষকার ও ঈশবের দরার উপর নির্ভর হর। কিন্ত অবস্থায় পুরুষকার বিনাশ, **আ**ত্মবিনাশই "আমি" ধর্মজগতের পরম শক্ত। পরিচালিত হইয়াই, ঈখরের ইছা প্রতিপালন করিতে গিয়া নিজের ইচ্ছা প্রতিপালন করিয়া থাকি। এই অবহার সাধক বাহিরের সংগ্রাম অতি সহজে অতিক্রম করিতে পারেন; কিন্ত তাঁহার বিনাশের অল্ল আপনার হল্তে। আমিঘই সর্বাপেকা প্রধান শত্রু, সাধক এই অবস্থাতেই ইহা অমূভব করেন। ৣ এ অবহাতে সাধক নিজের ইচ্ছাকে এত ভয় करत्रन (य, यथन क्लान विषयत्र क्लेचरत्रत्र हेक्क्) वृक्षिएक न। भारत्रन, তথন অন্তের ইচ্ছার অসুগত হইয়া চলা সম্ভ মনে করেন, তবু निष्मत्र रेष्ट्रारक ध्यांत्र (पन ना।

এই প্রকার আত্মইচ্ছার পরাজর ও ব্রশ্বইচ্ছার জয় হইলেই জীবনের পরিত্রাণ আরম্ভ হয়। কিছু পাপের বাসনা মানবের প্রাণ হইতে সহজে উৎপাটিত হয় না। পাপবাসনার বিনাশ না হইলে জীবনের ক্রেশ, জশাস্তি ও তঃথ বার না। যথার্থ উপাসনা জীবনে অস্প্রিত হইলে,—ঈশর সংস্পর্শ প্রাণে অস্ত্রত হইলে, জীবনের মধ্যে কি তাহার কোন চিক্ত প্রকাশ পার না ? ব্রক্ষোপাসনার প্রথম ফল ব্রদ্ধানন্দ। এই আনন্দের সঙ্গে অম্ভ কোন আনন্দের তুলনা হয় না। ব্রহ্মসংস্পর্শ স্থেমর সঙ্গে ব্রহ্মা প্রান্ধির ইত্রসগতে শুর্মা স্থেধ ভোগ করে।

যত্ত্বোপরমতে চিন্তং নিকন্ধং যোগদেবলা,
যত্ত্ব চৈৰাত্মনাত্মানং পশ্চনাত্মনি তৃষ্ঠি ।
ত্ব্ধমাত্যন্তিকং যত্ত্ব নিক্রোক্মতীজিরম্ ।
বেন্তি যত্ত্ব নিচৰারং বিত শুলীতি তত্ত্তঃ ।
বং লন্ধা চাপরং লাভং মন্ততে নাধিকং ততঃ
যত্ত্বিন্ বিচাল্যতে ।

চিত্ত বোগাভাগে বারা নিক্স হইরা বে অবস্থার উপরত হর; বে অবস্থার বিশুত্ত আত্মা পরমাত্মাকে অবলোকন করির। উল্লেডই ভূই লাভ করে, ইপ্রিমের অতীত, কেবল বৃদ্ধি বারা গ্রাহ্ম, নিতাস্থ্য অস্ভব করে, ও ভারা হইতে বিচলিত হর না; যে অবস্থা লাভ করিলে অনা কোন লাভিকে তভোধিক লাভ মনে করে না এবং শুক্ত হংথ বারাও বিচলিত হর না, ভারাই বাধ্কের বোগের অবস্থা, ব্রন্ধভোগের অবস্থা।

ৰিতীয় ফল'প্ৰেম। প্ৰাণে ত্ৰন্ধকৰুণার স্পৰ্শ ছইলে, নীরস হুদ্য সর্বস হয়, অপ্ৰেমিক হুদ্যে প্ৰেমের সঞ্চার হয়।

তৃতীর কণ, মানবের চিরবাহিত শান্তিধনলাভ । মানবপ্রাণ নিরতই এই পৃথিবীতে শান্তি অবেশ করিরা বেড়ার। কিন্তু এই পিপাসা আর কোনও হানে নিবারণ হর না। সাধক যদি অন্তর ও বাহিরের শক্রর ভাড়নার অন্তর থাকিলেন,—পাপ-সংগ্রামে নিরত বিপর্যন্ত থাকিলেন,ভবে ধর্মের আশ্রর লইরা কি কল হইল? সাধকের প্রাণগত আকাজ্ঞা শান্তিলাভ করা,পাপের আলা নির্মাণ করা। আত্মাতে ব্রহ্ম-ম্পর্শ হইলেই পাপের আলা নিবারণ হর, শোক তৃঃথের হন্ত হইতে প্রাণ রক্ষা পার। প্রতিদিন উপাসনা করিলে যদি প্রাণে প্রেম, আনন্দ শান্তি লাভ না হর, ভবে সেই উপাসনা উপাসনাই নহে। পরমেশ্বর ক্রপা কর্মন আমরা প্রকৃত্ত উপাসনার অবস্থা লাভ করিরা ধন্ত হই।

## ব্যাখ্যান রত্নাবলী।

১৩ই मार्क সाधनाश्राम विवृত।

বি তু সর্বাণি কর্মাণি মরি সংশ্বস্ত মংপরাঃ
আনক্তেনৈব বোগেন মাং ধ্যারস্ত উপাসতে,
তেষামহং সমুদ্ধর্তা মৃত্যুসংসার সাগরাৎ
ভবামি ন চিরাৎ পার্থ মধ্যাবেশিত চেতসাম্।
মধ্যেব মন আধৎস্থ মরি বৃদ্ধিং নিবেশর,
নিবসিযাসি মধ্যেব অত উদ্ধং ন সংশয়ঃ।

"হে পার্থ, যে সকল ব্যক্তি তাহাদের জীবনের সম্দর কর্ম আমাতে সমর্পণ করে, আমাতেই অপুরক্ত হর, এবং অনক্রমনা হইরা আমার সলে বৃক্ত হর ও যুক্ত হইরা আমারই ধ্যান ও উপাসনা করে, আমি স্বরং তাহাদিগকে মৃত্যু এবং সংসাররূপ সাগর হইতে উদ্ধার করি। আমাতে আবেশিত-চিত্তদিগকে আমি মৃত্যু-সংসারসাগর হইতে উদ্ধার ক্রি। আমাতে তৃমি মনকে জামি মৃত্যু-সংসারসাগর হইতে উদ্ধার ক্রি। আমাতে তৃমি মনকে জাপন কর, আমাতে বৃদ্ধি নিবেশিত কর, তাহা হইলে আমাতে বাস করিতে পাইবে, ইহাতে সন্দেহ নাই।"

এক রকম অবস্থার কর্মা, বন্ধন শ্বরণ হর; কর্ম মানবান্মাতে অহকার, শুক্তা, নীরস্তা আনিরা দের, চিত্তকে উনিগ্ন ও বিরক্ত করে। যাহারা সর্কাদাই একটা না একটা কর্ম লইরা ব্যক্ত থাকে, যাহারা একাকী সংসারের নানাপ্রকার লোকের সলে কারবার করে, অতি শীমই ভাষাদের চিত্ত ভিক্ত হইরা বার, মান্ত্রের প্রতি প্রীতি লোগ পাইরা, ম্বণা হ্রদরে প্রনি

পার। অনেকে সারাধিন দানা কার্ব্যে বান্ত থাকিরা তিক্ত মন কাইরা বাড়ীকে আসেন, আসিরা হরত সামার্ক কারণে পদ্মীকে দ্বাপমান করেন, সন্তানদের প্রহার করেন। সমস্ত দিনে চিত্তের বে উল্ভেখনা হইরাছিল, তাহা শান্ত করিতে তুই খন্টা কাল বসিরা থাকিতে হয়।

বাইবলে মেরী ও মার্থার গরেতেও এই উপদেশটা স্কারিত রহিরাছে। মেরী ও মার্থা ছই ভগিনী; মেরী সর্বাদাই ব্লীভর সেবা করিত ও তাঁহার উপদেশ ভনিতে ভাল বাসিত। মার্থা নানা কার্য্যে ব্যস্ত থাকিত। একদিন সে বীভকে বলিল "মেরীকে বল্ন, আমার সঙ্গে আসিরা কাল করে"। বীভ বলিলেন— "মেরীই ঠিক ব্ঝিরাছে ও ঠিক করিতেছে।" বাস্তবিক যদি কার্য্যেতে চিত্তের শাস্তিহরণ করিয়া চিত্তকে মলিন করে, ভবে তাহাতে উপকার না হইরা অপকারই হইল।

কিন্ত ইহা ভিন্ন আর একপ্রকার কর্ম আছে। বাহারা সকল কর্ম তাঁহাতে সমর্পণ করে; তাঁহাতে নিরত হয়, তাঁহার সহিত যোগস্থাপন করে, তাঁহার ইচ্ছার সহিত ইচ্ছাকে মিলিভ করি রা দের, সেই কর্মাই ভাছাদের মুক্তির সাহায্য করে। তথন সে কর্ম আর বন্ধন অরপ হয় না। প্রেমেতে ষ্থন ইচ্ছার যোগ হয়, প্রেম যথন কর্মের জন্মদাতা, জাগ্রতগ্রীতি যথন কর্মের উৎপত্তি-স্থান তথন সেই কর্ম মৃক্তিকে আনর্বন করে। যথন কর্ম্বের ফঁলাফলের উপর দৃষ্টি থাকে না, যথন এক্লপ বলিতে পারা যার বে, সফলতা বিফলতা প্রভু জানেন, আমি তাঁর প্রেমে বাধ্য হইরা করিতেছি, তখন দেই কর্ম মৃক্তিকে আনরন করে। যখন कर्त्याल निर्जय मिकि ना सिथिता छाँहात्रहे मिकि मर्मन कति. যধন তাঁহারি মহিমা ও গৌরব দর্শন করি, তথনই সেই কর্ম মৃত্যুসংসারসাগর হইতে মৃক করে। সেণ্টপল্ যেমন বলিয়া-ছিলেন "যীশুর প্রতি প্রেম আমাকে বাধ্য করিভেছে," সেইরূপ ভাবে কর্ম করিলে তাহা মুক্তি প্রদান করে। পাধীগুলি বেমন খাধীনতা বিবর্জিত হইরা ঈখরনির্দিষ্ট উপালে কুলার নির্দাণ করে, তেমনি প্রেমিক স্বাধীনতা হারাইরা, বাধ্য হইরা, ঈশরের ইচ্ছার আত্ম সমর্পন করেন। সেই অধীনতার কাজ, প্রেম ও বিখাসকে বাড়ায়। তথন ভাছার উপর মৃত্যুর অধিকার পাকে না। বাহার অহুরাগ অনত্তে, যাহার নির্ভর সত্ত্যে, যাহার প্রেম সাধুতার প্রতি, সে মৃত্যুর অতীত। কারণ মৃত্যু এই সকলকে म्लार्ग करत ना। जथन त्रहे नाथक स्वेशदार वान করেন। তাঁহারই আশ্রের থাকেন। মৎক্ত বেমন জলে, পক্ষী বেমন বাযুসাগরে স্থাধ বিচরণ করে, তেমনি দেই সাধক ব্ৰহ্মের সন্থাসাগরে ডুবিয়া থাকেন। সেই আত্মা তাঁহার বারা স্থাকিত হয়।

বাঁহারা এই আশ্রমে প্রবিষ্ট হইরাছেন, তাঁহাদিগকে এই সত্য বিশেষ ভাবে শারণ রাঞ্জিতে হইবে। আমরা কি এখানে অকর্মণা হবার জন্ত বসিরা আছি ? তাহা নর; কাজ করিতে হইবে, কিছু যে কাজ ঈশর-প্রীতি হইতে উৎসারিত নয়, সেই কর্মকে বিশাস করি না। আমরা তাঁহারি জন্ত করিব; তাঁহারই জন্ত বাস করিব; তাঁহারই জন্ত বাস করিব; তাঁহারই জন্ত বাস করিব। তাঁহার প্রতি হেইতে বে কাজ

করিব তাহাই ঠিক হইবে; নতুবা অন্ত কর্ম বুখা। আনেকে কোন কাজ না লইরা থাকিতে পারে না, সেরপ তাবে কাজ করিলে সে কাজে মুক্তির পথে অগ্রসর হইতে পারিব না; কিন্তু ঈশর-প্রীতির বশবর্তী হইরা ও নিজের ইচ্ছাকে বিসর্জন দিরা বলি কাজ করিতে পারি তবেই তাহা সার্থক হইবে।

#### পঞ্চাব প্রচার যাত্রীদিগের পত্ত।

আমরা ২৫ এ তারিধ প্রাতে বৈদ্যনাথ পরিত্যাগ করিরা অপরাত্র প্রার ৪ টার সমর বাঁকীপুর পৌছি। ২৬শে তারিধ প্রাতে প্রীযুক্ত বাবু প্রকাশ চক্ত রার মহাশরের গৃহে উপাসনা হর; দাত্রী মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন। অপরাত্র ৪॥। ঘটকার সমর বেহার নেসনেল কলেজ গৃহে বক্তৃতা হর। প্রথমে একটা সঙ্গীত হর, তৎপরে শান্ত্রী মহাশর ইংরাজীতে সংক্রেপে কিছু বলেন। তাহার সার মর্ম্ম এই:—

"শক্তির ( power ) ধর্ম এই ষে, ইহাতে পরিবর্ত্তন সংঘটন करत्र, व्यथवा मःचछेरानत्र राष्ट्री करत्र। रायोग्निहे मेक्टि, स्मिहे খানেই পরিবর্ত্তন। আমাদের দেশের বর্ত্তমান শিক্ষা 🛡 এই मक्ति बन्नाहेन्ना निटल्ड ? विस्मवजाद हिन्दा कविदन दिना যার, শিক্ষাতে এই শক্তি জন্মান দূরে থাকুক, বরং অপকার कविष्ठाह । भिकारिक खानित विकास शहेरिकाइ वर्षे, किर्द ভদারা বিচার করিয়া মিখ্যা পরিভ্যাগ পূর্বক সভা প্রহণের শক্তি হইতেহে না। শিক্ষিত ব্যক্তিগণ, জ্ঞান হারা যাহা অন্যার ও পাপ বলিয়া বৃঝিয়া থাকেন, তাহা পরিত্যাগ পূর্বক জীবনে সভ্যনিষ্ঠার পরিচয় দিতে পরিতেছেন না। তাঁহাদের এমন বন্ নাই যে, স্বীর স্বীর মলিন জীবনকে পরিবর্ত্তিত করিতে পারেন। এই কারণে ভাল ভাল শিক্ষিত ব্যক্তিদিগকে নানারপ অস্তার कार्या निश्च (पथा बाब। य भिकाब कीवान निजिक वानव স্থার না করে, যে শিক্ষায় বৃষিয়া শুনিয়াও লোক পাপ-পথ পরিত্যাগ করিয়া সত্যের পথ অবলম্বন করিতে না পারে, যে শিক্ষায় সরলভার স্থলে কপটভা আ্থানিরা দের, যে শিক্ষায় মুষ্যকে বিনাশ করে, সে শিক্ষায় প্রয়োজন কি ? শিক্ষিত वाक्तिवाहे यनि भिकात नाविष्ठ वृक्षित्रा कौवनटक ठानाहेटल मक्त्रम না হইল, তবে সে শিক্ষার কিছু মাত্র প্রয়োজন নাই।

আমরা দেখিতেছি, বর্ত্তমান শিক্ষার মানুষের আভ্যন্তরীণ জীবনকে পরিবর্ত্তন করিলা দিতে পারিতেছে না। এই পরি-বর্ত্তনের জন্য শক্তির দরকার। কুল কলেজের শিক্ষাতে এই শক্তি পাওরা বাইতেছে না। ঈশর ভিন্ন জীবন পরিবর্ত্তনের এই শক্তি আর কেই দিতে পারে না। প্রাণে দেই ব্রহ্মশক্তি-অবতীর্ণ হওরা আবশুক। এজন্ত সকলকে তাঁছার প্রণাপন ইতে হইবে, তিনি ভিন্ন আর, গতি নাই।" তৎপর এই বিষয়ে ভাই প্রকাশদেব ও স্থান্দর দিং হিন্দি ভাষার পূর্ব উদ্বাসের সহিত কিছু কিছু বলেন। তৎপরে সমলোপযোগী সদীত হর। তদনন্তর শান্ত্রী মহাশর উপনিবদের একটী প্রোক্ উদ্ভ করিলা বালালা ভাষার আপেন্স্মানী সংক্ষিপ্ত বক্তা করেন; তাহার শীর মর্ম্ব এই;—বেনাহং না হ্মৃতাভাম্ ক্মিহ্মু তেন কুর্যান," বাহা ক্লপন্থারী, বাহার উপর কিছু মাত্র নির্ভর করা বার না, তাহার প্রতি প্রীতি স্থাপন করিরাণ মান্তব ক্রবী হুইতে পারে না,পরস্ক ভাহাতে পদে পদে কেবল অপান্তি ভোগ করিছে হর। কিন্তু বাহা স্থারী, নিতা, অনন্ত ভাহাতে প্রীতি স্থাপন করিছে পারিলে আর তর বাকে না, হংখ অপান্তি ভোগ করিছে হর না। অভএব সংসারের কণন্থারী বস্তুতে প্রীতি স্থাপন না করিরা সেই অক্রর, অবিনাশী অনন্তস্করণ পরত্রক্ষে প্রীতি স্থাপন করাই প্রের।"

অতি অৱ সময় পূর্বে বক্তার বিজ্ঞাপন দেওরা হইরাছিল। তবুও বক্তৃতা হলে প্রায় ছই শত লোক উপ স্থিত হইরাছিলেন! সকলেই আগ্রহের সহিত বক্তা প্রবণ করিরাছিলেন। কেহ কেহ আর ও হা> দিন থাকিরা কার্য্য করিবার জন্ত বিশেষ আগ্রহ প্রকাশ করিলেন।

তৎপর দিবস প্রাতে প্রকাশ বাবুর গৃহে উপাসনা হর,
শালী মহাশর উপাসনা করেন। প্রকাশ বাবুর পরিবার
একটী বিখাসী প্রেম পরিবার। আমরা এই পরিবারে আসিরা
আনন্দ পাইরাছি ও উপক্তত হইরাছি। ভগবান্ প্রাক্ষসমাব্দে
এক্সপ পরিবারের সংখ্যা বৃদ্ধি কর্মন।

আমরা সে দিন বেনারস যাত্রা করিরা ২৭এ মার্চ্চ সোমবার অপরাহে পৌছি। এধানে ২৮এ তারিখে কারমাইকেল লাইত্রেরী গৃহে এক সভা আহুত হর। সভাতে প্রার একশভ লোক উপস্থিত ছিলেন। শ্রদ্ধান্দ্রদারী মহাশর প্রথমে ইংরাজীতে বক্তৃতা করেন। তাঁহার বক্তৃতার সার মর্ম এই ;—

"ব্যক্তিগত স্বাধীনতা মানবের উন্নতির মূল। এই ব্যক্তিগত স্বাধীনতা প্রাচীনকালে স্থামাদের দেশের লোকের ছিল না। রাজনৈতিক, সামাজিক, নৈতিক এবং ধর্ম বিষয়ে লোক সম্পূর্ণ-রূপে অধীন ছিল। বর্তমান সময়ে ইংরাজী শিক্ষা আসিরা লোকের প্রাণে এই স্বাধীনতার ভাব কতক পরিমাণে জাগাইয়া मिटिहा कि**ड जामाञ्चल** कन रहेटल हा। **এ**र जारीनला পূর্ণরূপে লাভ করা চাই। কোন শ্রেণীর লোক জগতে রাজদ করিয়া থাকে ? যাহাদের মনেক ধন সম্পত্তি আছে, অথবা খন্য পাৰ্থিৰ ক্ষমতা আছে তাহারাই কি ? না তাহার। নহে। সাংসারিক বৃদ্ধিবিশিষ্ট লোকের নিক্ট তাহারাই গণনীর বটে : কিন্তু তাহাদের রাজত্ব কুদ্র স্থান ও সমাজে সীমাবছ। কিন্তু বাঁহারা প্রকৃতরূপে স্বাধীনতা লাভ করিয়াছেন অর্থাৎ ভাষ क्लाशामि तिर् ७ मम्छ विषय वा मनक्क जाननात ज्योन ক্রিয়াছেন, এক কথার সকল প্রকারের আসক্তি হইতে সুক্ত হইরাছেন, ভালায়াই প্রফুডরূপে মহুবালাভির রাজা। পৃথিবীর বড় বড় সভাট বাঁহারা, তাঁহাদের মতক একজন স্ত্রধরের পদ তলে অবনত কেন ? যীওর কি অনেক ধন সম্পত্তি ছিল, না তিনি বড় পণ্ডিত ছিলেন ? ভাষা নছে। 🗪 ভিনি প্রকৃত স্বাধীনতা লাভ করিরাছিলেন। তাঁহার চিত্ত সংসারাস্তি ইন্সিরসেবা প্রভৃতির অতীত এক সভ্যরাজ্যে বিচরণ করিত। বুদ, মহম্মদ, চৈতন্য নামক প্রভৃতি মহাপুরুষপ্রও এই স্বাধী-ন্তা লাভ ক্রিয়াহিলেন, তাই তাঁহারা •আল পৃথিবীর কোটা খোটা লোকের স্বরেরাজ্য করিতেছেন।

वर्षमान नगरम जागारतम (तर्मन जनका जिल्ला मिननोत्र। लाक गरून नै।मानिक कृतीिंठ, अदर छेनसर्लात औनदीन नित्रम-क्षाणीत मान रहेता পढ़ितायह। <u> শিক্ষিত</u> এই অধীনভার হাত এড়াইভে পারিভেছেন না। এই অব-স্থার দেশের উন্নতির আশা করা বায় না। আমাদিগকে প্রকৃত স্বাধীনতা লাভ করিতে হইবে। স্থল বাহাতে নিপু ও ইক্রি-বাদির হত্ত হইতে মুক্ত হইতে পারে, তজ্জনা সাধন করিতে ছইবে। সর্বাধাকারের অসত্য পরিভ্যাগ পূর্বক সার সভ্য প্রহণ করিতে হইবে। তবেই আমরা প্রকৃত সাধীনতা এবং প্রকৃত সমুষ্যত্ব লাভ করিতে পারিব।" বক্তৃতা সারগর্ভ ও জ্লরগ্রাহী হইরাছিল। তৎপর ভাই প্রকাশদেব উর্দুভাষার কিছু বলেন। তাঁহার বক্তৃতার সার মর্গ্ন এই ;—"মানবের মধ্যে তিন প্রকারের ভাব দেখা যায়; ১ম শারীরিক, ২য় মানসিক, ও ৩র পশুভাব। শারীরিকভাব মাত্রকে ভোগবিলাদের দিকে লইয়া যার; ভাল আহার, ভাল পরিচ্ছন প্রভৃতি সুধ সেবনে চিত্তকে লিপ্ত করে। মানসিক ভাব, যশ, মান, ধন, পদ প্রভৃতি লাভের क्रमा वाच्य करतः। পশুভাব बाता চালিত হইরাই মানুব ইঞ্রির-সেবার ব্রত হয়, রিপ্র দাস হইয়া মহাপাপে লিপ্ত হয়। মাতুষ এই তিন প্রকারের ভাব বারা চালিত চইরা ধর্ম হইতে বিচ্যুত হর, তাহার জীবন পশুর জীবন হইরা পড়ে। যদি এই তিন প্রকার ভাবকে আপনার শাসনাধীন করিতে পারা যার, তবে ইহা ছারা ক্তিনা হইয়া বরং মঙ্গল সাধিত হইরা থাকে। যে শরীর মন ও ই ক্রিয়, সংসারের ভোগে निश्च धोकिया नानाक्त यभाष्टि ७ व्यक्त उर्रापन करत्. তাহা শাসনাধীন হটলে প্রভুৱ কার্য্যে ব্যবহৃত হট্মা শাস্তি ও विभाग धर्मा छात . छे ९ भागन कतिया था कि । कि छ कि श्राकारत **এই তিন প্রকারের ভাবকে শাসনাধীন করা যার** ? বিদ্যা, বৃদ্ধি, মাহুষের বল এখানে পরান্ত। কেবল একমাত্র ব্রহ্মশক্তিই ইহাদিগকে শাসনাধীন রাখিতে পারে,আর কাহারও সাধ্য নাই। পরমেশ্বর করুন, আমবা তাঁহার শ্রণাপন্ন হই এবং তাঁহার শক্তি व्यामारमञ्जू मर्था व्यवजीर्ग इंडेक।" जनमञ्जू माली महानग् वालाना ভাষায় কিছু বলিয়া উপসংহার করেন। পর দিবস প্রাতে করজাবাদ যাতা করি।

(প্রাপ্ত)

#### অভয় ধাম।

পাপ পুণা, হাথ ছাথ, বিপদ সম্পদ দাইয়াই সাধারণতঃ
মন্থ্যজীৱন নির্কাহিত হয়। কথন হাথ কথন ছাথ, কথন
পাপ কথন পুণা, কথন আলোক কথন অন্ধ্যার, এইরূপে
আমাবজা ও পুর্ণিমা জীবনে গভায়াত করিতেছে। ধর্মজীবনে
দেখিতে পাওয়া যায়, দশ দিন বেশ উপাসনার উচ্ছাস চলিভেছে; ভাবের সরস্ভা এবং মাধুর্যো মন প্রাণ মুশ্ম হইয়া
যাইতেছে; সংসার মধুময় বোধ হইতেছে; যে দিকে দৃষ্টিনিক্ষেপ
করি, সে দিকেই প্রভুর অপার ক্রপাহস্ত দেখিয়া পুল্কিত হই;
যাই। শ্রবণ করি, ভাহাতেই ভাহার সংবাদু পাই; সংসার বেন

ব্রহ্মন ইইরা গিরাছে। আবার কোথা হইতে নীরসভার বাতাস আদিরা সকল ভাব ভক্তি ধূলিকণার স্থান উড়াইরা দিল। পুদ্ধরিণী জল উকাইরা গেলে মৎজের বেমন হরবন্থা হর,— জলাভাবে মৎজ বেমন বাতনাভোগ করিতে থাকে, তেমনি প্রাণ বিশুক্তার অন্থির হইরা উঠে। তথন সাধুসহবাস, সদ্প্রহ পাঠ এমন কি আরাধনা প্রার্থনাদিও ভাল লাগে না। সংসার বেম মূর্ত্তিমভী রাক্ষণীর স্থান মূথ ব্যাদান করিবা প্রাস করিতে আইসে। ধর্মজীবন এরপ জোয়ার ভাঁটা, এমন উথান পতন, সরসভা নীরসভার অবস্থার মধ্য দিরা আজীবন অভিবাহিত করিতে হইবে কি? ধর্মরাজ্যে নিরাপদ স্থান কি নাই? এমন স্থান কি নাই, বেথানে গেলে আলহা, সন্দেহ এবং পাপ ও প্রলোভনের সন্থাবনা চলিরা বার। বে স্থানে চির আলোক, চির সৌন্ধর্য্য—চির বসন্ত বিরাজিত, এমন নিরাপদ স্থান কি নাই?

পরিবর্ত্তনশীল অবস্থার প্রতি বিখাস স্থাপন করা ঘাইতে পারে না। নিশ্চন, অপরিবর্তনীয় অবস্থা লাভই আমাদের লক্ষ্য। বে অবস্থা লাভ করিলে পাপ ও মোহের সহিত সংগ্রামের ভয় থাকে না, যে অবস্থা প্রাপ্ত হইলে পতনের আশহা চলিয়া যায়, সেই অবস্থা লাভই সাধনার উদ্দেশ্ত। স্থব্দর উপাসনা আলো-চনা চলিতেছে, সাধুদকে থাকিয়া দিন দিন প্রাণ সভেজ হঁইতেছে; কিন্তু যে দিন একমাত্র উপাৰ্ক্ষনশীল যোগ্য পুত্রটি মৃত্যুমূপে পতিত হইল, সে দিন হইতে হাদয়ের তার ছিল হইরা গেল। এত দিনের উপাসনা, আলোচনা, সাধুসল বালুকা-শোষিত জলের ভার অদুশু হইয়া গেল। সাধন ভজনের পরিবর্ত্তে শোক ছংথের ভীত্র যাতনা ভোগ চইতে লাগিল। এরপ হইলে, জীবন বড়ই বিড়ম্বনাময়। কিন্তু স্কল দেশের সাধুগণ আধ্যাত্মিক জীবনের উচ্চতর সোপানে দণ্ডারমান হটয়া মানবজাতিকে যে অমূল্য উপদেশ প্রদান করিয়া গিয়াছেন তাচা পাঠ করিলে নিরাশ প্রাণে আশার স্ঞার হয়। ব্রাহ্মসমাজে থাঁহারা সাধনপথে দিন দিন অগ্রসর হইতেছেঁন, তাঁহারাও সাক্ষা দিতেছেন যে, ধর্মরাজ্যের যাত্রীণণ ইহজীবনেই এমন নিবাপদ স্থান লাভ করেন, বেখানে গেলে পাপভর, বাসনার ভন্ন এবং সংসারমোহ হৃদয়কে স্পর্শ করিতে পারে

পরমান্থার সভিত আন্থার নিগৃঢ় যোগ স্থাপিত চইলেই পতনের আশস্কা থাকে না। বছদিন জীবে এবং ব্রন্ধে সম্বন্ধ স্থাপিত না চটবে, যুভদিন দ্রের দেবভাব ন্থায় সাধক তাঁহাকে পূজা করিবেন, তভদিন প্রেরত অবস্থালাভ চ্টবে না। এইজ্ঞ শ্রীমন্তাগতকার অর্জুনের মুধ দিয়া বলাইয়াছেন:—

"যে অবজা বিশেষে অব্যন্তি থাকিয়া মানৰ আত্মস্ত্ৰকণ হইতে বিচলিত নাহয়, তাহাই যোগ শ্ৰুবাচ্য ঞানিৰে।"

শরমেশ্বর আশ্রয়নাতা, মানবাত্মা আশ্রিত। পক্ষিমাতা বেমন শাবকদিগকে ত্বীর পক্ষপুটে নিরাপদে রক্ষা করে, ব্রহ্মাণ্ডের জননীও তেমনি ভাবে মানবাত্মাকে রক্ষা করেন। এই আশ্রিতের ভাব লাভ করাই ধর্মজীবনের উপদশ্ত। এই নিরাপদ অব্স্থা লাভ করিশ্বাই মহাত্মা দার্মি বলিয়াছেন :— "God is our refuge and strength, a very present help in trouble. Therefore will not we fear, though the earth be removed, and though the mountains be carried into the midst of the sea; though the waters thereof roar and be troubled, though the mountains shake with the swelling thereof."

ক কথার মর্ম্ম এই বে, "ছে প্রভা, তুমি আমাদের আশ্রম ও অবলঘন; বিপদকালে তুমি অতি নিকট সভার। মেদিনী যদি স্থানান্তরিত হর, গিরিরাজি যদি সাগরগর্ভে নিকিপ্ত হয়, সাগরের জলরাশি যদি ভীষণ তরক্ত তুলিরা গর্জন করিতে আরম্ভ করে, তাহার আন্দালনে পর্বত সকল যদি চঞ্চল হইরা উঠে, তথাপি আমরা ভীত ছইব না।"

যতক্ষণ সাধক সম্প্র্যপে প্রমেশ্বের সরিধানে উপস্থিত না হন, ডতক্ষণই সন্দেহ আশহা ও ডর থাকে; কিন্তু যধন সেই অচ্যুত সদনে উপস্থিত হন, তথন আর পরিবর্ত্তনের আশহা থাকে না। তথনই প্রাক্ষ সাধক বলিরা থাকেন, "কি ভর অভর ধামে তুমি মহারাজা, ভর যার যার নামে।" সেই অভর ধাম লাভ করিবার জন্তই আমাদের সাধন ভজন, আলোচনা, সংস্কৃ। যদি দেখা যার যে, দিন দিন জীবন অভরধামের দিকে অপ্রস্থার না হইরা পরিবর্ত্তনশীল অবস্থার মধ্যেই বাস করিতেছে, তবে ব্ঝিতে হইবে গন্তব্য স্থান বছদ্রে। প্রমেশ্বর ক্ষপা করুন, আমরা এই অভরধাম প্রাপ্ত হইরা নিরাপদ হই।

# পাঁচ ফুলের সাজি।

#### • ৮ম সংখ্যা।

S. T. Coleridge,-

"What is Virtue but a medicine, and Vice but a wound."

পুণ্য ঔষধী এবং পাপ আত্মার ক্ষত ব্যাধি ব্যতীত আর কি ? . Seneca,—

"We might live as if we were living in the sight of all men; we must think as though some one could and can gaze, into our inmost breast."

আমাদের জীবন এরপে যাপন করা কর্ত্ব্য বেন আমরা সকল মন্থ্যের চক্ষের সমূথে রহিরাছি। এরপে চিস্তা করা উচিত বে কোন না কোন ব্যক্তি আমাদের হৃদ্যের অন্তর্তম দেশ পর্যান্ত দেখিতে পারেন এবং দেখিতেছেন।

Sadi,-

"Eat whatever comes from the hand of the friend; for, a sick man is not wiser than a doctor."

স্থার হস্ত হইতে যাহা আইসে ভাহাই ভোজন কর; কার্ণ বোগী বৈদ্যাপেকা জানী নহে।

Shakespeare, -

"A heart unspotted is not easily daunted."

নিক্লক হাবর সহজে ভীত হয় না।

শ্রীমন্তগ্রদাতা,—

"ইজিয়ানাং হি চ্য়তাং বৃদ্ধনোহস্থৰিধীয়তে। তথ্য হয়তি প্ৰকাং বায়ুৰ্ণাৰ্মিবীস্থান ॥" বৰন মন চঞ্চ ইজিরগণের বলীভূত হর,তথন উহার। সমুজে বায়ু কর্তৃত ঘূলীলমান নৌকার ছার পুরুষের বুঁনিকে বিবরে বিকিপ্ত করিয়া থাকে।

F. W. Newman,-

"To indulge in mere play with the ideas of things infinite, appears to be more fatal to religion than any other corruption."

অনস্তবন্ত সকলের বিষয়ে লঘুতার সহিত করনার প্রবৃত্ত হওরা, অন্ত কোন প্রকার অনিষ্ট অপেকাধর্মের পকে অধিক-তর মারাত্মক।

J. G. Whittier,-

"For lo! in human hearts unseen
The Healer dwelleth still,
And they who make His temples clean
The best subserve His will."

কারণ ঐ দেথ ! মানবঅস্তরে অদৃশ্য ভাবে নিরস্তর বৈদ্যনাথ বাস করিতেছেন, এবং বাঁহারা তাঁহার মন্দির সমূহকে নির্মাণ করেন তাঁহারাই স্কাপেকা তাঁহার ইচ্ছা পাদনে তৎপর।

"The paths of pain are thine. Go forth

With patience, trust, and hope;

The sufferings of a sm-sick Earth,

Shall give thee ample scope."

কটের পথ সমূহ তোমার। বৈধ্য বিশাস ও আশার সহিত এই পথে চলিরা যাও; পাপে রুগ্ন ধরণীর আলা যন্ত্রণার তুমি বিস্তীর্ণ কার্যাক্ষেত্র প্রাপ্ত হইবে।

## ব্রাহ্মসমাজ।

শোক সংবাদ— আমরা ব্যথিত হৃদরে প্রকাশ করি-তেছি বে, আমাদের তগিনী নিত্মিনী চট্টোপাধ্যায় গত ৬ই মার্চ আগড়তলা রাজ্ধানীতে ইহলোক শীলা সংবরণ করিয়াছেন। পরোপকার, সরলতা এবং আতিথেয়তা প্রভৃতি সদ্পুণে উহোর হৃদয় অলহুত ছিল। পরমেশ্বর তাঁহার সন্তান সম্ভৃতিদিগকে স্থাবে রক্ষা কর্মন এবং শোকদগ্ধ স্বামীয় প্রাণে শাস্তি দান

উৎসব—উত্তর বাঙ্গাল। ব্রাক্ষসমাজের উৎসব উপলক্ষে
কণিকাতা হইতে প্রচারক শ্রীযুক্ত নবহীপ চক্র দাস এবং সহার
বাবু কৈলাস চক্র সেন জলপাইগুড়ি গিরাছিলেন। গত ১৮ই
চৈত্র হইতে ২১শে চৈত্র পর্যান্ত চারি দিন উৎসব হইরাছিল।
এতত্বপলক্ষে উপাসনা, আলোচনা, পাঠ, ব্যাখ্যা, বক্তা এবং
সংগীত সংকীর্ত্তনাদি হইয়াছিল। ২০শে তারিখ শনিবার দিন
অপরাহে রেলওয়ে টেসনে 'কেলির ধর্ম' সহছে নবহীপ বাব্
বক্তা করেন। রবিবার দিন অপরাহে নগর সংকীর্ত্তন বাহির
হর। সংকীর্ত্তনদল বাজারে উপহিত হইত্রে মুলী জালালউদ্ধিন
বিঞা হিন্দিতে এবং কেই বালালাতে বক্তৃতা করেন।

এই উৎসব উপলক্ষে হানীর ব্রাক্ষবস্থান ভিকা হারা কিছু অর্থ সংগ্রহ করিরা গরিব হংথিকে চাউল, বস্তু ও পরসানি বিভর্ক করিরাছেন।

নিয়নিথিত রূপে ফরিদপুর বাক্ষ্যবাদের উৎসব সম্পন্ন

হইরাছে; ত০ শে নার্চ স্ক্রাকানে উর্বোধন হর। ০১শে নার্চ
প্রাত্তংকালে বাবু কানী প্রসর বস্থ উপাসনা করেন। মধ্যাত্তে

বাবু বিপিন বিহারী চক্রবর্ত্তী ও কানী প্রসর বাবু ব্রাক্ষ ধর্মমুলক শাল্প পাঠ করেন। স্ক্রাকালে প্রীযুক্ত ভ্রননোহন সেন
উপাসনা করেন। ১লা এপ্রেল প্রাত্তংকালে নৌলবী আবছ্ল
আজিম আচার্য্যের কার্য্য করেন। অপরাত্তে বালক বালিকাদিগের
সন্মিলন হর। কালী প্রসর বাবু কথোপক্রমক্তলে ভাহাদিগকে
কিছু উপদেশ দেন। স্ক্রাকালে উপাসনা হয়, ভ্রন বাবু
আচার্য্যের কার্য্য করেন। ২রা এপ্রেল প্রাত্তংকালে প্রীযুক্ত বিপিন
বিহারী চক্রবর্তী উপাসনা করেন। মধ্যাত্তে গরিবদিগকে চাউল
ও কাপড় বিতরণ করা হয়। কালী প্রসর বাবু ভাহাদিগকে কিছু
উপদেশ দেন। স্ক্রাকালে উপাসনা হয়, কালী প্রসর বাবু
আচার্য্যের কার্য্য করেন।

সাময়িক উৎসব—দিয়ালগঞ্চ হইতে কোনও বন্ধ निधिवारहन, "ठानारेन आक्रमार्यंत्र मायरमतिक छेरमवारस ত্রীযুক্ত চণ্ডী কিশোর কুশারী, ত্রীযুক্ত গুরুগোবিন্স চক্রবর্ত্তী এবং বাবু মহেশচজ্র চক্রবর্তী সিরাজগঞ্জ আগেমন করিয়াছিলেন, ख्रुनगरक **ब्रथात करब्रक्तिन नामतिक खे**रम्ब हरेबा निवाह। ২রা বৈশাধ শুক্রবার বাবু চণ্ডী কিশোর কুশারী সন্দিরে uat व्धवात मन्त्राकारण "कर्ष्मभाम"· উপাসনা করেন, সম্বন্ধে সম্পাদক মহাশরের বাড়ীতে বক্তৃতা দেন। শুক্রবার जनबाह्य यथा रे:बाजी कृत्न जिनि हार्जानगरक नीजि नवस्त উপদেশ দেন, তৎপর গুরুগোবিন্দ বাবু কিছু বলেন। শনিবার দিবদ অপরাছে এন্ট্রান্স কুল গৃহে চঞ্জী বাব্ রাজীতে নীতি नवस्त्र छेनाम एनन। धे मिन वाजात्त्र मन, गाँखा अहिएकन অভ্তি মাদক দ্রব্য সেবনের অপকারিতা সম্বন্ধে প্রকাশ্র বস্তুতা ছর। রবিবার অপরাহু ৫ ঘটিকার সময় চঙী বাবু মক্সিরে "বিষয়-বৈরাগ্য" সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন।

প্রচার—হানীর প্রচারক দল নির্মিত রূপে কলেজ স্বোরারে এবং বিডন উদ্যানে সংগীত সংকীর্ত্তন ও বক্তৃতাদি ক্রিতেছেন।

সাধনাশ্রমের বাবু চঞ্জীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার (বিক্রম পুরের)
প্রচারার্থ বিক্রমপুর গমন করিয়াছেন। উছারর পরিবার
আশ্রমে আছেন। বিক্রমপুরবাসী বন্ধগণের অর্থ সাহায্য
প্রার্থনীয়। শ্রীবৃক্ত নবদীপ চক্র দাস জলপাইগুড়ি হইতে প্রভ্যাবর্তন কালে দিবাপভিরা নামক স্থানে অবভরন করেন।
সেবানে প্রছের বন্ধু বাবু কালীনারারণ রার মহাশরের গৃহে
পারিবারিক উপাসনা হ্র এবং এক দিন ক্ষ্ণ গৃহে "ধ্র্মের ত্ই
দিক" সম্ভ্রেবিক্তা করেন।

নাম্করণ—মাণিকলংইর বাবু ছামগোপাল বিখাসের ভূতীর সভানের নামকরণ ছইরাছে। বাবু অবিনাশ চক্র সরকার আচার্যের ভাব্য করেন। বালুঞ্চর নাম অ্ধাংতবিলু

রাধা ছইরাছে। এতত্পলকে রাম গোপাল বাবু নাঃ বাঃ সমাজে ২১ টার্কা দান করিরাছেন। ঈশ্বর শিশুর মদল বিধান করন।

দান — আমরা আনন্দের সহিত প্রকাশ করিতেছি বে, মাননীর ডাঃ ওরুদাস বন্দ্যোপাধ্যার মহাশর থাসিরা অঞ্চলে ব্রাশ্বধর্ম প্রচারার্থ ১০, টাকা দান করিরাছেন।

় নব বর্ষের উৎসব—নিয়লিখিত প্রণালী অনুসারে নব-বর্ষ উপলক্ষে ত্রন্ধ মন্দিরে উৎসব হইতেছে।

৩০শে চৈত্র মঙ্গলবার, সন্ধ্যা ৭ বটিকার সমর বক্তৃতা।

৩১শে চৈত্র বুধবার প্রাতে ৬টা হইতে ৭টা পর্যান্ত সংকীর্ত্তন, তৎপর উপাসনা। অপরাহু ৩টা হইতে ৫২ টা পর্যান্ত আলোচনা এবং ৬টা ইইতে ৭টা পর্যান্ত সংকীর্ত্তন, তৎপর উপাসনা।

১লা বৈশাধ বৃহপতিবার প্রাতে ৬টা ছইতে ৭টা পর্যান্ত সংকীর্ত্তন, তৎপর উপাসনা। অপরাহে ২টা হইতে ৫২টা পর্যান্ত পাঠ ও ব্যাধ্যা, ৬টার সময় সংকীর্ত্তন, তৎপর উপাসনা।

### দান প্রাপ্তি স্বীকার।

टित्रां श्री बाक्षत्रभाव, कृतशृह, धारात्राध्यम ७ छेरधानत्र নির্মাণের সাহায্যার্থ অদ্যাবধি বে অর্থসাহায্য পাওরা গিরাছে, ধস্তবাদের সহিত তাহার দান প্রাপ্তি স্বীকার করা গেল: বাবু কুঞ্চন্দ্ৰ বন্দ্যোপাধ্যার কলিকাডা ১১, গিরিশচন্দ্র কাঞ্চিলাল नीनकामाबि ১८, मिका जानान छेकीन जनপारेखिए ১८, वार् হরনাথ দাস **মুলপুর ১**১, বেণীমাধ্ব মিত্র কাঁথি ১১, জানৈক উकीन बाकनारी ১, कर्मारन मान लोहाणि ১, श्रीमजी হর অব্দরী দত্ত বর্ধমান ১১, বাবু ছুর্গামোহন দাস কলিকাভা ৫০১, (कारति । बाक्षमभाक ०५०/ • वाव् त्रारकस्थनाथ ७० (ठतार्गकी >、, বসস্তকুমার গলোপাধ্যায় শিলং 📢 শর্ৎচন্ত চক্রবর্তী গোলা-चाउँ २, बाक्षमभाक शानाचाउँ ७, बाक्षमभाक किनाजभूत २॥ तं • ताकाटल टोयूबी भिनः ६, रेवक्र्यनाथ एख भिनः ১,, व्यकामहत्व (तर मिनः २०) मिः पि, धन, तरु वर्षा २८, মিঃ পি, त्रि, রাম কলিকাতা ২১, নবীনচক্র দত্ত বোলপুর ১১, শশীভূষণ ৰম্ম কলিকাতা ১১, চাইবাসা ব্ৰাহ্মসমাজ ২১, দকিণ ভারতবর্ব আক্ষসমাজ মাজ্রাজ ৫১٠, বাবু হাজমকিশোর সিং জোরাই 📢 প্রীরম্ববিহারী লাল কলিকাতা ২১, স্থামানন্দ চট্টোপাধ্যার ঐ ১১, কৈলাসচন্দ্র সেন ঐ ১১, পরেশনাথ সেন थे २८, अक्बन वबू थे २०८, शोदनांन द्वाद काकिनीदा २८, बनाब-वस् तात्र भे > , तरखन्तरहा एक वर्षी कर्ष्क मः गृही छ काकिनी हा " ২১, জটিৰ চক্ৰমাধৰ ঘোৰ কৰিকাতা ১০১, বাবু নৰবীপচক্ৰ দাসঐ ५०, अम्मनमान मानिकत्र >०, अम्मनमान कान्ननत्र , तात् क्षाम-नान जाहा वश्वणा ८८, निवनाथ मख निगर ८८, मधुवानाथ नन्ही, ঐ ২॥•, হরকিশোর প্রার্থা ঐ ২১, চন্দ্রকান্ত সেনু করন্তীয়া পাছাড় ८,,विमगठळ आम निगर ১,,वार् देकनामठळ तमळी ১,,धकसम वस् के > ---के > , नैमन्डबून मान के ८ , बान मन्न हक्क वरमहा-পাধ্যার বাছাহর শিলং ১٠১, বাবু রাধানাথ কেব কলিকান্তা ১১, मिः चात्र, क्षेत्र, त्रात्र चिनाका >०८, काः शि. त्यः त्रात्र के क्रून

বাৰু বজনীনাৰ নন্দী পূৰ্ণিরা ২০,গোপালচন্দ্র বিদ্ধান কৰি কলিকাভা ৪০, লারংচন্দ্র মজুমদার প্রীহট্ট ২০,মিঃ আর, এম, দাস লিলং ১০, এক জন বন্ধু ঐ ২০, মিঃ জি, সি, মুখোপাধার ঐ ১০, বারু রাধানাথ গুপ্ত ঐ ১০, রামকানাই সেন ঐ ১০, কে, সি, এপ্ত কোং ঐ ১০, মিঃ এস, সি, দক্ত ঐ ২০, প্রীমতী বামিনী ঘোরাল ঐ ১০, কুমারী কামিনী সেন কলিকাভা ৩০, কুমারী কুমুদিনী খান্ডগার ঐ ২০,বারু ছর্গানারারণ বহু মেদিনীপুর ১০, আক্ষসমাজ ঐ ১০, বারু মধুস্থদন রাপ্ত কটক ৩০, মিঃ জি, সি, বহু কলিকাভা ২০, রার প্রণাভিরাম বড়ুরা ঐ ১০০, বারু দেবী-প্রসর রার চৌধুরী ঐ ২০, ত্রিপুরাচরণ রার রাঁচী ২০, গৌরীকান্ধ রার সিমলাপাহাড় ২০, ভ্রবমাহন সেন ফরিদপুর ৪০, জাইস্ শুরুদাস বন্দ্যোপাধ্যার কলিকাভা ১০০, কুন্দু কুদ্র দান ৬৮৮০—মাট ২৯০০।

निर्वेषक चीनीवयनि ठक्कवर्सी।

# বিজ্ঞাপন।

সাধারণ আদ্ধ সমাজের আর্থিক অবস্থা বড় মন্দ। ইহার আর অপেকা বার অধিক হইরাছে। কি প্রকারে কিছু আর বৃদ্ধি হর, আমরা সে বিষরে চিস্তা কবিতেছি। ইহার সভ্য মহোদরগণ বদি কিছু কিছু চাঁদা রৃদ্ধি করিয়া দেন, তাহা হইলে মপেই উপকার করা হয়। কিন্তু সমাজের চাঁদা এবং তত্তকৌমুদী, মেসেঞ্জার ও পুস্তক হিসাবে এত টাকা বাকি পড়িরা রহিয়াছে যে, সৈই সকল বাকি আদায় করা সর্বাত্রে কর্তব্য। অতএব আমাদিগের বিনীত নিবেদন এই যে, সভ্য ও গ্রাহক মহোদয়গণ অনুত্রহ পূর্বক যত শীঘ্র পারেন এই সমস্ত বাকি শোধ করিয়া এবং সমাজের আর রৃদ্ধি সম্বন্ধে বিশেষ চেষ্টা করিয়া বাধিত করিবন।

সা: ব্রা: সমাজ কার্য্যালয় ২১১নং কর্ণপ্রয়ালিস খ্রীট, ক্লিকাতা,২৬শে মার্চ্চ, ১৮৯৩ শ্রী অঘোরনাথ মুথোপাধ্যার, সহকারী সম্পাদক সাঃ বাঃ সমাজ।

কলিভাতা অথবা মহত্মসন্থ প্রাক্ষ পরিবার ও ছাত্রাবাদে যে
সকল অমুষ্ঠান সম্পন্ন হয়, তাহার অনেক সংবাদ তব্বকৌমুদী বা
মেসেপ্লার পত্রিকার যথা সময়ে এমন কি কোন কোন অমুষ্ঠান
আদৌ, প্রকাশিত হয় না। এ নিমিত্ত আমাদিগের বিনীত নিবেদন এই বে, অংক সমাজ স্তন্তে প্রকাশযোগ্য প্রত্যুক অমুষ্ঠান
অথবা অফ্লাফ্র সংবাদাদি আমাদিগের প্রচারক, পরিচারক, ও
সৈবক মহোদ্যুগণ, এবং মকঃস্কৃত্ত ব্রাক্ষ বন্ধুগণ, স্থানমুরে

অমুগ্রহপূর্কক নিউলিখিত ঠিকাদার পাঠাইরা বাধিত করিবেন।

সাঃ ব্রাঃ সমাজ কার্য্যালয়
২১১নং কর্ণগুরালিস ব্রীট,
ক্লিকাতা,২৬শে মার্চ্চ, ১৮৯৩

জ্ঞীকবোরনাথ মুখোপাধ্যার, সহকারী সম্পাদক সাঃ বাঃ সমাৰু।

বিশেষ প্রয়োজন বোধে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্যানির্বাহক
সভা সম্প্রতি দ্বির করিয়াছেন যে, যে সকল ব্রাহ্মসমাজের উপাসনালয় প্রভৃতি সম্পান্তির টুইডিড আছে, তাঁহালিগের নিকট
হইতে সেই সমন্ত টুইডিড অথবা তাহার নকল আনিয়া এক
কুল পুত্তকাকারে মুদ্রিত করা হয়; এবং এই মুলাকণের ব্রয়
তাঁহালিগের নিকট হইতে সংগ্রহ করা হয়।

কার্যানির্বাহক সভার এই নির্দ্ধারণাত্মসারে আমরা ব্রাহ্মসমাজ
সম্ছের সম্পাদক মহাশরগণকে বিশেষভাবে অহুরোধ
করিতেছি, তাঁহারা অহুগ্রহ করিয়া, তাঁহাদিগের সমাজের
টুইডিড্, এবং তাহা মুদ্রাহ্ণগের ব্যর স্থরপ কি পরিমাণ অর্থ
সাহায্য করিবেন, এই সংবাদ,আগামী ১৫ই মে (১৮৯০) তারিধের
পূর্বে নিম্নলিখিত ঠিকানায় পাঠাইয়া বাধিত করিবেন।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ কার্য্যালর ২১১নং কর্ণগুয়ালিস্ ট্রাট কলিকাতা ১৮ই মার্চ্চ, ১৮৯৩ জীকঘোরনাথ মুথোপাধ্যার সহকারী সম্পাদক সা: ত্রাঃ সমাক্ষ।

# বিশেষ দ্রুফীব্য।

অনেক দিন হইল, সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্যানির্বাহক সভা দরিদ্র ছাত্র, নি:সম্বল পরিবার, ও অন্ধ আত্রাদিগের সাহায্যার্থে একটা দাতব্য ফণ্ড স্থাপন করিরাছেন। এই ফণ্ড হইতে জাতি বর্ণ নির্ব্বিশেষে সকল শ্রেণীর অসহার ব্যক্তিদিগের সাহায্য করা হইরা থাকে। ছ:খের বিষয়, এই ফণ্ডের আয় অতি অল্ল। অর্থাভাবে অনেক প্রার্থীকে ফিরাইরা দিতে হর। এই ফণ্ডের কার্য্য ভালরূপ চলিলে ইলা হারা সাধারণের সহিত একটা ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ হইতে পারে, এবং অনেক ছংখী লোকের সাহায্য হইতে পারে। অভত্রব আমার বিনীত অন্ধরোধ যে, প্রত্যেক পারিবারিক (ক্লাতকর্ম্ম, নানকরণ, বিবাহ, প্রান্থাদি) অন্ধ্রান উপলক্ষে এই ফণ্ডে কিছু কিছু দান করিরা বাধিত করেন।

নাঃ বাঃ ৰমাজ কার্যালর
২১১নং কর্ণন্তরালিন খ্রীট,
কলিকাতা, ২৬শে মার্চ্চ, ১৮৯৩

নিবেদক • খ্রীগুরুচরণ নহলানবিস • সম্পাদক, ''

गाः बाः गमाद्यात नाष्ठ्या विकाश ।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিক।।

২য় সংখ্যা। ১৬ ভাগ।

# ১৬ই বৈশাথ শুক্রবার, ১৮১৫ শক, ত্রাক্ষ সম্বৎ ৬৪।

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২॥ • মফস্বলে ৩ প্রতি পণ্ডের মূল্য 🗸 •

### রাখগো আমারে।

ঝড় মাঝে নিপতিত ভরীর মতন,
মার এ হদর-ভরী—বিপদসম্প ;
চারি দিকে উঠিতেছে ভরক বিশাল,
ঝটকার শান্তি নাই—ছুটে অবিরাম।
ডুব্ ডুব্ ছইরাছে তরণী আমার
ডুবিরা যাবে কি প্রভু অতল সলিলে!
ম্থ কর্ণধার আমি না জানি বাহিতে,
এ বিপদে কেবা আর রাধিবে আমারে?
চারিদিকে জলরাশি নাচে অবিরত,
অশনি দিতেছে তাল সে ভীম নৃত্যের!
কশ্যিত এ কলেবর অতি শ্রান্ত প্রাণ,
এ ঘোর বিপদ-মাঝে দর্যমের পিতা,
রাথগো চরণে ভব ক্বতর সন্তানে।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

আহ্বান—এাদ্দসমাজের কার্য্যক্ষেত্র অতি স্ববিস্তৃত,
অভাব কেবল দাস দলের। তাই আমরা নব বর্বের প্রারম্ভে
কীন কঠে বিনীত মাহ্বান করিছেছি, প্রান্ধ প্রান্ধিকাগণ প্রভূ পরমেশ্বরের কার্য্যে অগ্রসর হউন। আপনারা কি দেখিতেছেন না বে, প্রান্ধসমাজের সেবা যথোপযুক্ত রূপে হইতেছে না। যে সমাজের আপ্রান্ধের আলিলা আপনারা পরিপ্রাণলাভ করিতে-ছেন, সেই সমাজের অস্তু কি আপনাদের কিছু করিবার নাই? প্রান্ধসমাজ আপনাদিগেরই সমাজ। থাটবার জন্তই ঈশ্বর আপনাদিকে এখানে আনন্ধন করিরছেন। যিনি নিশ্চেই থাকিবেন, তিনি বন্ধের কুপা হইতে বঞ্চিত হইবেন। যিনি ভাহার ভার্যে জীবন দান করিবেন, তিনিই মব জীবন লাভ করিবেন।

ব্ৰাহ্মসমাজে সেবকের অভ্যন্ত অভাব হইরাছে। নামা ভানের ব্ৰাহ্মসমাজ হইতে বারংবার প্রচারক চাহিরা পাঠাইভেছেন; আসাম ব্রিশুরার বন্ধুগণ হারী প্রচারক চাহিতেছেন। অনেক

স্থলেই দুংথ ও লজ্জার স্থিত উত্তর দিতে হইতেছে যে, "আমাদের লোক নাই।" আপনারা কি এই অভাব অমুভব করিতেছেন না? আমাদের কথার নয়—ঈশ্রের আহ্বান শুনিয়া আপনারা কার্যক্ষেত্রে অবভরণ শুন।

ত্রান্ধ যুবকগণ! কি ভাবিতেছ গ গণেই কি পৃথিনীর ধন মান উপার্জন করিরা জীবনলীলা শ্ব করিবে ? কেগ কি ঈশবের আহ্বান শুনিরা তাঁহার কার্য্যে জীবন উৎসর্গ করিবে না ? তোমাদের বিদ্যা, তোমানের উৎসাহ, তোমাদের বল, তোমাদের বৃদ্ধি তাঁহার পবিত্র প্রচার কার্য্যে ব্যরিত হউক, এই প্রার্থনা।

ধনী বন্ধুগণ কি পৃথিবীর স্থ-প্রির ধনীদিগের ক্সার ঐখবাবাশি কেবল বিলাদেই ক্ষর করিবেন? আপনাদেব
ধন পর্মেশ্বর তাঁহার কার্য্যে ব্যর করিতে বলিভেছেন, একথা
কি উপেকা কবিবেন? হার, আমাদের ডাক আমাদের অমুরোধ কে ভনিবে? হে ব্রাহ্মসমাজের দেবতা! ভূমি একবার
মুমধুর আহ্বানে ভোমার ভক্তবৃন্ধকে আহ্বান কর। ভূমি
না ডাকিলে, কেই আসিবে না, আসিনেও হ্রির থাকিতে
পারিবে না।

সেবার্থীগণের প্রতি—ব্রাহ্মসমাজের দেবার করু বাঁহার।
আসিতেছেন, তাঁহারা যেন তাঁহাদের মহৎব্রতের শুরুত্বিষয়ে
সর্মদা দৃষ্টি রাথেন। বিশ্বাস, বৈরাগ্যা সেবাই তাঁহাদের জীবনের সম্পন। এই সাধনে আত্মসংযম, নিষ্ঠা, নির্ভর ও ব্যাকুলতার
আবশুল। এই সকলের অভাবে তাঁহাদের মহছদেশু বিফল হইবে।
তাঁহাদের জীবনের প্রতি ব্রাহ্মসমাজ আশাহিত কস্তরে দৃষ্টিপাত
করিতেছে, তাঁহাদের নিকট কত শোকার্ভ, তালিত নরনারী
আসিরা প্রাণ জুড়াইবে আশা করিতেছে। সেবার্থী প্রত্যেক
বাহ্মবান্ধিকা নিত্য সাধনে নিষ্ঠা রাখিবেন, জীবস্ত সাধনে রত
থাকিবের এবং আলগুকে মহাপাণ মনে করিব। নির্ভ পরিশ্রম
করিবের। নৃতন লাখনার্থীগণ তাঁহাদের সংসর্গে আসিরা যেন
নবভার জীপ্ত হন, শান্তিশান্ত করিতে পারেন, এবং ঈশরের
দেখার করা উৎসাহিত হন। সংসারী নামু পৃহত্বের নাার
দেখন সংসার ধর্ম—পৃহত্বর্ম প্রতিপান্ন করিবে তাঁহান্তের

উদ্দেশ্য । স্কৃষ্ট না। তীলাদের জীবনের বিশেষত্ব সর্ক্ষণ রক্ষা করিছে ছইবে। ত্রাক্ষবন্ধুগণ সাধনে ও সেবার তীলাদের সলার করিবন। স্কৃষণ তীলাদের সভিত সাধনে বোগদা করিরা তীলাদের ধর্মবিখাস বৃদ্ধি করিবেন এবং নানাপ্রকার সংপ্রামর্শ হারা এবং অর্থ হারা স্লার্ডা করিবেন।

প্রাচীন ব্রহ্মজ্ঞান ও আধুনিক ব্রাহ্মধর্ম-উপনি-यानत माधा (य व्याठीन उन्नछात्नत चालांग शांवत यात्र, धावः বর্তমান সমরে আক্ষধর্মরূপে যে ধর্ম অভ্যাদিত চইয়াছে এই উভরের মধ্যে প্রভেদ कि ? প্রভেদ এই, প্রাচীন বন্ধজ্ঞান (करल स्टानौनिरगत मर्था रक हिल। स्टानिर्ट्यं श्रीयगन গভীর আছা চিস্তার ফল অরপ বিমল ত্রন্ধজ্ঞান লাভ করিয়া আত্ম-তৃপ্ত চইরাছিলেন। তাঁহারা কেবল জ্ঞানিদিগের নিক-(हेडे **बड़े कारनाक अ**काम कतिरुकत ; भत्रम्भातरक बड़े विषर्ष উদ্দ করিতেন। সাধারণ প্রকাপ্তকে এ জ্ঞান দিবার বাসনা তাঁহাদের হৃদরে উদিত হর নাই। সাধারণ অনগণের বিখাস ও কার্য্য কলাপের প্রতি তাঁছাবা ছস্তার্পণ করিছেন না। কোন কোনও ঋষি কথন কখনও লৌকিক ক্রিয়া কলাপের প্রতি অবজ্ঞা প্রদর্শন করিতেন: এবং সেই সকল চইতে মানব-চিতকে সেই অক্ষর অবিনাণী পুরুষের প্রতি আক্ষর করিতে চেষ্টা করিতেন বটে, কিন্তু সাধারণতঃ উচ্চারা লৌকিক ক্রিয়া কলাপের প্রতি উদাসীন থাকিতেন। এইকাপে দেশ মধ্যে একই সুময়ে চুই প্রকার চিম্বাম্রোত প্রবাহিত ছিল। একটী স্রোভ কভিপ্য জ্ঞানীর মধ্যে প্রাণাটিত ছিল, অপরটী যাগ বজাদির অমুষ্ঠানরূপ স্রোভ সাধারণ জনমগুলীর মধ্যে প্রবাহিত ছিল। ভারতবর্ষের পণ্ডিতমগুলীর মধ্যে চিরদিন এই প্রথা (मशा शिवाह तय, डांशाबा त्य कि इ मडा व्यवाय कविनाव हिहा করিয়াছেন, বা যে কিছু বিচার উপস্থিত করিয়াছেন, ভাষা সংস্কৃত ভাষার সাহায্যে করিয়াছেন, এবং পণ্ডিভদিগের জন্মই করিয়াছেন। মহাস্মারাজা রামনোহন রায় স্কাতো এই চিবস্তন বীতি পরিবর্তিত করিলেন। প্রতিভার চক্ষে তিনি দেখিয়াছিলেন বে, বিমল ভ্রন্মজ্ঞানকৈ সামাজিক ধর্মরূপে ও সক্ষমাধারণের আচরণীর ধর্মারূপে পরিণত না করিতে পারিলে দেশের ছুর্গান্ত দূব হইবে ন।। এই কারণে তিনি চিরস্তন বিচারপ্রণালী পরিভাগে ক'রয়া ওঁহোর বিচার পুস্তক সকল প্রচলিত ভাষাতে রচনা ও প্রকাশ করিতে লাগিলেন। ইচা করিতে যে ভাঁৰাকে কতদুর শ্রম স্বীকার করিতে হইয়াছিল, ভালা একণে জ্বরুদ্ম কর। কঠিন। তাঁহার পুরের বালাল। ভাৰতে গদ্য লিখিবার নিয়ন ছিল না। লোকে গদ্য লিখিতে ত্তি পড়িতে জানিত না। রামযোচনকে গদা পড়িবার রীতি শিক্ষা দিরা ভবে গদ্য লিখিতে इहेबीছে। লোকামুগ্রহের ভাব তাঁহার জনরে এত প্রবল ছিল বে, তিনি ত্রহ্মজ্ঞানকে সাধারণ প্রজাপুরের গ্রহণোপুযোগী করিবরে নিমিত্ত প্রাণপণে যত্ন করিয়া-ছিলেন। তদৰণি আক্ষধৰ্ম সামাজিক ধৰ্ম চইরা হতিবাছে। ইচা चामानिशतक नर्सन। पात्रभ वाशितक इंडेर्स (य, मानवनमाक्रतक शाश ছাপ ইইতে উদার করিবার জন্মই এক্সাধরের অভাদর। স্তরাং

মানবসমাজের পাপ্ ভাপের সহিত সংগ্রাম করিবার কর এবং এই वर्चाक नर्केक लागा कांत्रवास कर भागानिगरक नर्कनार छेगाव व्यवनयन कतिरु इहेरव। तम विवास निधिन्छ। धाकिरन भामारमञ्जूषा कथन है जिस्र कहेरव ना। 'टकान अज्ञरण हिम् हिम् করিরা একটু প্রচার চলিভেছে; ছুই চারিজন প্রচারক ছাজির। দিরা দেখিরাছি, তাঁহারা একটু আধটু নজিরা চড়িরা বেড়াইতে-ছেন; নিয়মভন্ত প্রণানী অনুসারে কাঞ্চীভ কোন ওরূপে চলিতেছে; সভাও চলতেছে, বক্তাও হইতেছে, আনার কি ?' যদি এইরূপ ভাবিরাই তৃপ্ত থাকিতে হয়, তবে ইহাকে সামাজিক ধর্ম করিবার প্রদাস পরিত্যাগ করা কর্ত্তব্য। ঋষিরা যেমন আত্ম তৃপ্ত হইরা থাকিতেন, সেইরূপ নিজ নিজ চাড গাকিলেই ভ ছয়। দশজনে মিলিরা একটা হৈ চৈ করিবার প্রয়োজন কি? আর যদি ইচাকে সামাজিক ধর্ম করিবার অভিপ্রার পাকে, **তবে ইছার শক্তি কিসে জাগে সর্বাদা সেইদিকে দৃষ্টি রাথিতে** इन्टेरिं। किरम् जगराज्य भाग जार्भन्न महिन्न मः आरम् कुनकार्या इ छत्रो याय, किरम मानरतत इत्तत्र शतिवर्त्तन कृतिका (म छत्र) यात त्त्रहे विषय मत्नार्याणी थाकिए इहेरत।

আমরা সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের কাছে কি পাইয়াছি ?—সর্বপ্রথমে কলিকাতা নগরীতে একটা রাক্ষসমাজ
তাপিত হয়, তালার নাম ছিল "কলিকাতা রাক্ষসমাজ।" গণন
তালা হইতে একদল লোক বালির হইয়া "ভারত্তনর্বীয় রাক্ষসমাজ" স্থাপন করিলেন, তথন "কলিকাতা সমাজ" আদি
সমাজ নাম গ্রহণ করিলেন। কিছুদিন পরে ভারত্ববীয়
সমাজ তই ভাগে বিভক্ত হইল; তালারই একদল সাধারণ
রাক্ষসমাজ নাম গ্রহণ করিলেন। কোন্ সত্য প্রচার করিবায়
জন্ম পরমেশ্ব এই নব সমাজ স্থাপন করিলেন? আমরা
এই সমাজের নিকট বিশেষভাবে কি বস্তু পাইরাছি এবং
পাইতেছি, এ বিষয়টা আমাদের সকলেরই চিত্তা করা বাজনীয়।

মানবের সহিত প্রমান্তার সাক্ষাৎ যোগ। এ বোগে কোনও वावधान नाहे, त्कान ९ वाधा नाहे, त्रक्त नवनावीहे हेशएछ অধিকারী। কিন্তু পূথিনীর যাবতীয় ধর্মসম্প্রদারই পরমেশ্বর •ইতে মানবস্থানকে কোন না কোনস্কপে ব্যবধানে রা**থিয়াছে**। কেহ অতাত ধর্মপুরকের মধাদিরা, কেহবা মহুবাের ভিতর निया याहेट छान । अत्रामध्याक नाका एकारव काना, वर्णन करा যেন মানবের ভাগ্যে অসম্ভব। সকণেই সমস্বরে এক উত্তর निया थारकन ;- "পृश्नितीय ब्रामाय निक्षे बाहेर्ड स्ट्रेस (यमन এक वाद्य नाक्षां नाक इत्र ना, खार्यम बात्रवान, क्रांस खोशांस কর্মচারীর চাত হইরা যাইতে হয়, ভেমন মনস্ত এক্ষাণ্ডের রাঞ্চাধি-রাজের নিকট বাইতে হইলেও এছ এবং মহাপুরুবদিগের আশ্রন্ত গ্রহণ না করিলে যাওয়া যার না।" অর্থাং ভূমি কুল্ল মনুষা, ভোষার একবারে সেই মলান্ বিখাধিপ্তির দরবারে-মচ্যতসল্নে यहिवात कि व्यक्षिकात व्याह्ति काहात्र अ मधानिता (मधारन বাইতে হইবে। ভাষা ও ভাষের শুক্ষর আব্রহণে আবৃত্ত व्हेश करे क्लाबनिर बाजनगार्क नानी बारत कार्य, नाना मुर्तिक विवास सर्विष्ठ । काशां क्या साजा क्रियान (काशां क्या

धर्माण्यितास्य जेपेतर्क मानस्यतः मधुष ध्रेट्ण मृत्य गरेवा वादे-एक । मार्थावन बाक्यमबारक मार्थ प्रत्मे विस्तव प्राप्त রায়। ব্রাহ্মধর্ম উদার ও সার্বভৌবিক, এই সভ্য সাধারণ वाबनबाब चार्वाछः धांठाव कविराण्डस्म । अहे छेवांव जूमिएक मानवाचा ७ मेचातव मार्या त्यांमक वावधान प्रक्रिक वहेरक शास না। "ডুবি আর আমি, মাঝে কেং নাই, কোন বাধা নাই ভূবনে" এ কথাট ইচার মূল মন্ত্র। এই মহামন্ত্রের বিশুদ্ধতা तका कतिवात जा नावातन वाकामभाकत रुष्टि। मूर्थ विनि वाकारे वन्न, कार्याजः महाशुक्रवनाम धनः अञास भाष्ठवाम ७ अक्रवाम প্রভৃতির মূলোৎপাটন সাধারণ সমাজই করিতেছেন, এবং মহান পরমেশ্বর সকলেরই অধিগম্য এই মহাসত্য বোষণা করিতেছেন। প্রত্যেক ত্রাদ্ধায়ক ও প্রাচীন ত্রাদ্ধ এবং ধর্দ্দপিপায় নরনারী এজন্ত সাধারণ আদাস্মাজের নিকট চির্থণী। চিন্তা विश्रीन लाटक विलिख शास्त्रन, "माधात्रण खाक्रममाम चात्र आयामिश्रक नृजन कि मिरनन? याश शृर्श्व किन छाहाहै छ আছে।" কিন্তু হাঁছার। হল্মদর্শী তাঁহার। দেখিতেছেন, সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ সৃষ্টি করিরা প্রমেশ্বর মহাস্ত্রের বার উদ্বাটিত कतित्राह्म। भूणिवीत धार्म्यक ठिखानीन लात्कता এই कछहे ইহার প্রতি সভৃষ্ণ দৃষ্টেতে চাহিরা আছেন। বাঁহারা এক সময়ে अ नमास्कृत विक्रकाहत्रण कतिबाह्मन, डाहाता । अथन चौकात्र कविरक्षाह्म (य. পृथिवीट अन्तर अन्तर अन्तर अन्तर अन्तर स्टे र्देशाक् ।

জীন, ত্রক্ষে কিছুমাত ব্যবধান নাই, সাধন রাজ্যে স্কলেরই সমান অধিকার, যাঁহারা এই আদর্শ অস্থারী সাধনা হারা জীবন গঠিত করিতে চালেন, তাঁহারা এথানেই তাহা পাইবেন। পরস্ক যাহারা এই সমাজরূপ করতক মূলে এই মহাধন পাইরাছেন, তাঁহারাই শরীর, মন, ধন ঐশ্বা ইহার চরণে উৎস্গীকৃত করিয়া চরিতার্থ হইবেন। এই নিগৃত তত্ব না ব্যালে এবং এই আদর্শ পথে গমন না করিলে কেইই এ সমাজের জালা দেহ মন অর্পণ করিতে পারিবেন না। এমন কি এ সমাজের আলীভূত থাকাও উল্লাদের পক্ষে স্বাদুর পরাহত।

নামনাহাত্য্য প্রচার—ঈর্বরের নাম কর্তিন, প্রবণ ও লগকে সাধকগণ একটা প্রকৃত্ত সাধনোপার বলিরা সর্বন্ধাই গ্রহণ করিরা থাকেন। ঈর্বরের পবিত্র নাম অলভ অনলরপে প্রাণে প্রবিত্ত হইরা পাপাসকি ও সংসারাসক্তিকে আশ্চর্য্যাও অমোঘ ভাহাতে কোনই সন্দেহ নাই। কিন্তু নামমাহাত্ম্যা প্রচারের প্রণাণী কিরূপ হওয়া উচিত সে সম্বন্ধে আনাদিগের মধ্যে আলোচনা হওয়া বাছনীর। বৈক্ষবগণ বেভাবে নামনাহাত্ম্যা বর্ণন করিরাছেন, ব্রাহ্মগণ যদি সর্বাংশে সেইভাবেই নামের মহিমা প্রচারে প্রত্ত হন, ভাহাতে সর্ব্বণা কলাগ প্রচারে করিয়া থাকেন, অথবা প্রস্থি বিশেষে বেভাবে নামমাহাত্ম্যা প্রচার ইরাছে, ভাহাতে বোধ হল বেন ক্ষেক্টা বর্ণ মাত্র উচ্চারণ করিয়া থাকেন, অথবা প্রস্থি বিশেষে বেভাবে নামের মহিমা বর্ণিত হইয়াছে, ভাহাতে বোধ হল বেন ক্ষেক্টা বর্ণ মাত্র উচ্চারণ করিছে প্রবাহই মানব মুক্তিলাত করিছে পারে। অলামিনের

देवकूर्वशासित विवत्रण मण्डलहे जात्नन,—छिनि चाकीवन বাংসারিকভার ও পাপাছ্র্রানে লিপ্ত থাকিরাও মৃত্যুকালে একবার মাত্র আপন পুত্রকে "নারারণ" বলিয়া ডাকিয়াই মুক্তি-লাক করিরাছিলেন। একলা নারদ হরি-নামনাহাত্মা অবগভ হইবার অক্ত ব্রহ্মা, বিষ্ণু এবং শিব এই তিন প্রধান দেবভার मिक्ट बाहेब्रा वित्यंव किहूरे अवगंत रहेल ना शांत्रियां অবশেষে বিষ্ণুর উপদেশে যমের নিকট উপস্থিত হইলেন। তিনি निष्क किছू ना विनद्म नारम कि नाम कि विद्या दिशान शालीगण चानक तातकीत रञ्जभारक मध्य इटेरकहिन रमटे खारन यारेता উপক্তিভ ছইলেন। নারদ ভালাদের ছংখ দেখিরা যথন ছবি ছরিধ্বনি করিয়া উঠিলেন, অমনি সেই নরকন্ত পাপীগণ দিবা-ষ্ঠি পরিপ্রাহ করিয়া অর্গে গমন করিতে লাগিল। তথন নারদ ব্ঝিতে পারিলেন, হরিনামের মাচাত্মা কত! নামের মহিমা ষত্ট চউক, ভাষা যদি এইভাবে প্রচারিত হয়, তাহাতে কথনই युक्त क्तिरत ना। वाखित्क नाम उथनहे आर्गत कन्यान সাধন করে, বখন ভাচা শ্রমার সচিত, একাম্ব ভক্তির সহিত উচ্চারিত হর। অভ্রথা হেলার ও অভ্রমনস্বভাবে ঈশবের নাম লটলে পরিতাণ চইবে না। সেরপে নাম উচ্চারণ করিলে কাচারও সংসারাসক্তি হাস চইবে না। কোন এক সময়ে, ঈশবের নাম, যে কোনভাবে শ্রবণ ও স্মরণ করিলেই धारलकार्ण मानत्वर উপর আপন প্রভাব বিস্তাব করিত, আর এখন করে না এমন নহে। তবে যাহা সভা নর ভাষা প্রচার করিয়া কি ফল ? আরও একটা বিষয়ে আমাদিগের সাবধান হওয়া আবশ্যক। আমাদের সাধনের উপায়—পাপনাশেব উপায় সকল যথাসম্ভব আধ্যাত্মিক इ ७ द्या । व्यार्थनीय । माजरपाञ्चन पूर बहेर ज "शका शका" मन উচ্চারণ করিলেই মুক্তি, ভাহাব দর্শন ও স্পর্শনে ও কণাই নাই একথা করনাপ্রিয় কবিদিগের মুথে শেভ। পায়। এরপে নামের করেকটা অকর মাত্র উচ্চারণ করিণেই পাশকর ও পুণা বৃদ্ধি হয়, এইরূপ সংস্থার জালালে মানব কখনই পাপ হইতে বিশ্বত হইবে, না। কত লোক সারাদিনরাত্তি নানা প্রকারে পাপের অমুষ্ঠানে লিপ্ত থাকিয়া একবার •গঙ্গামান क्रिवारे जाननारक ७६ विनयः मस्न क्रिटिंग् आवाद श्रद দিন সেই পাপেই লিপ্ত হইতেছে। কত লোকে একদিকে নামের মালা অপ করিতেছে, অপর দিকে তৎসঙ্গে সঙ্গেই পাপ-চিন্তা পোষণ করিতেছে এবং নাম অপ খেষ কবিয়াই পাপা-মুষ্ঠানে রত হইতেছে। বাহিরের উপায় (ভীর্থ-দর্শন প্রভৃতি) এই নিমিত্তই লোকের পাপকর করিতে সমর্থ হর না। উপযক্ত চেষ্টা ও ভক্তির সহিত যে উপার অমুষ্ঠিত হর না, তারা মানব মনকে কথনই পরিবর্ত্তন করিতে পারে না, ভাহা কথনই প্ৰকৃত কল্যাণকর হইতে পারে না। এজন্ত সাধক সেই উপারই धारण कतिरवन, याशा अवनयन कतिरा वाशिरवत छाकिता বিশেষের উপর নির্ভর করিতে হয় না, আন্তরিক ভাক্ত ও অনাই বাহার ভিত্তি ভূমি এবং বাহাতে মনে প্রকৃত काम फिलाब फेट्य के एवं। त्मरे फेक्स वर्ष प्रधान मानदाब क्नानिकत, वाहाटक क्षक्षत्रत वाशि विनर्धे हत्र।

रामूर्य बनिरङह "बामि बुर्ड विधान कतिशाहि, जामि পরিজ্ঞান পাইয়াছি," অণচ সেই সংক্ষ সংক্ষ রাগবেষে বনী-ভূত হইরা অপরকে অকণ্য ভাষার গালি দিতেছে, যার পর নাই অভত্র ব্যবহার করিভেছে, ভাহার এইরূপ পরিত্রাণের মূল্য কি ৭ ত্রাহ্ম এইরূপ পরিত্রাণ লাভের যেমন কোন मृना আছে বলিয়া মনে করেন না, তেমনি যথন দেখা যার नादमत शत नाम डेकातन कतिवां अ शालत कानि चूहिरज्ञ ना, পাপাসক্তি কমিতেছে নাতখন সেই বাহিরের নাম গ্রহণেরও কোন মূল্য আছে বলিয়া মনে করিবেন না। যথারীতি ভক্তি ও শ্রন্ধার সহিত নাম উচ্চারিত না হইলে সে নামের শক্তি কথনই প্রাণকে স্পর্শ করে না, তাহা কখনই প্রাণকে পরিবর্ত্তিত ও পাপ-পথ হইতে রক্ষা করিতে সাহায্য করে না। একস্ত ত্রান্ধ-গণের উচিত, তাঁহারা যথন নামের মহিমা প্রচার করিবেন তথনই বেন ভক্তি ও নিষ্ঠা প্রভৃতির কথা সঙ্গে সঙ্গে ব্যবহার করেন। অন্যথা সভ্যাসভ্যবিচাধবিমুখ হইরা, প্রকাশিত নানা প্রস্তের অনুসরণ করিয়া নামমাহাত্ম্য প্রচার করিলে लाकिमिश्राक अकावन वृक्षा आभावाका अवन कवान रत्र धवः তাহা কখনই কার্যাকর হয় না।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### সাধারণ লোকের মধ্যে ভ্রাহ্মধর্ম্ম প্রচার।

ব্রাক্ষধর্ম অদ্যাপি প্রধানতঃ শিক্ষিত ব্যক্তিদিগের মধ্যেই আবদ্ধ হইয়া রহিরাছে। ইহার প্রচারকগণ শিক্ষিত লোক; এবং তাঁহারা যথন প্রচারার্থ বহির্গত হন, তথন শিক্ষিত ব্যক্তি-দিগের নিকটেই গমন করেন, এবং প্রধানতঃ তাঁহাদের নিকটেই প্রচার করেন। যদিও সমরে সময়ে প্রকাশ্র রাজপথে বা বাজারে বক্তৃতাদি করা হয় বটে, কিন্তু তদ্বারা অশিক্ষিত-দিগের মধ্যে প্রচারের বিশেষ উন্নতি দৃষ্ট হয় না। শিক্ষিত ব্যক্তিদিগের মধ্যে এই ধর্মকে প্রচার করিবার নিমিত্ত যত প্রকার উপায় ও ব্যবস্থা করা হইয়াছে, অশিক্ষিত ব্যক্তিদিগের মধ্যে প্রচারার্থ তদমুরূপ কিছুই করা হয় নাই।

এই ধর্মকে কেবল মাত্র শিক্ষিত ব্যক্তিনিগের মধ্যে আবদ্ধ রাথাতে ছই প্রকার অনিষ্ঠ ঘটিতেছে। প্রথম, শিক্ষিত ব্যক্তি-দিগের অপ্তরে ধর্মভাব গড়িয়া ভোলা অভিশর প্রমাধ্য ব্যাপার। ইংরাজী শিক্ষার গুণে প্রায় প্রত্যেক শিক্ষিত ব্যক্তির ধর্মভাব প্রথমে ভগ্ন হইয়া যায়; ভগ্ন জিনিষকে পুনরার গঠন করা সহজ নছে। এই জন্তই ৬০ বংসর পরে লোকসংখ্যার তালিকায় জানা গেল যে, সমগ্র ভারতবর্ষে ৩৫০০ শতের অধিক ব্যান্ধ নাই। এবং এই কারণে ব্যান্ধর্যের শক্তি জাগিতেছে রা। ইছা অতি হ্র্মণিও ক্ষীণভাবে ক্তিপর শিক্ষিত ব্যক্তির হত্তে পড়িয়া রহিয়াছে।

গরা, কালী, হরিষার প্রাকৃতি স্থানে যথন মেলা হয় সে সময়ে যদি কোনও দ্বিজ্ঞালীল ব্যক্তি সেই সকল স্থানে গমন কয়েন, তিনি দেখিতে পাইবেন, মৃত হিন্দু ধর্মের এখনও শক্তি

কত। সম্প্র সহত নম্বামী ধর্মার্থে কত ফেশই বহন করিয়া থাকে। তাহায়া সমল বিশানে এখনৰ আচলিত ধর্মকে ধরিয়া মাথিয়াছে। ঐ সমল বিশাস, ঐ নিষ্ঠা, ঐ চিত্তের একাঞ্রতাকে তথ্য না করিয়া কি সভ্যের দিকে জ্বর্যকে সঞ্চালিত করা যায় না ?

কেছ কেছ মমে করেন, বে আদ্ধর্ম অস্ত ও অশিক্ষিত ব্যক্তিদিগের কম্ম নছে। অশিক্ষিত ব্যক্তিগণ ইহার উচ্চ সভ্য সকল গ্রহণ করিতে পারিবে না; আর বদিও প্রহণ করে, তাহার পবিত্রতা রক্ষা করিতে পারিবে না।

প্রথম কথা যুক্তিযুক্ত বলিয়া বোধ হর না। খৃষ্টীর ধর্মে বীশ্বরাদের ন্যার কটিল ধর্মমত যদি অলিক্ষিত ব্যক্তিদিগের মধ্যে প্রচার হওয়া সম্ভব হর, তালা হইলে ব্যক্ষধর্মের সার্ক্ষ-তৌমিক ও মানবের প্রকৃতিনিহিত সত্যসকল কেন তালারা গ্রহন করিতে পারিবে না ? এ সকল সত্য ও তালাদের হৃদরে নিবদ্ধ হইয়া ছহিরাছে, কেবল উদ্বোধ করিয়া দেওয়া মাত্র প্রয়োজন। একটু ভাল করিয়া তালাদের হৃদরহারে উপস্থিত করিতে পারিলেই তালারা গ্রহণ করিতে পারে।

ষিতীয়তঃ এরপই বা কেন মনে করা হর, যে তাহাদিগকে ধর্ম দেওরা হইবে আর তৎসঙ্গে জ্ঞান দেওরা হইবে না। ধর্মের সভ্য সকল হৃদয়ে ধারণ করিবার নিমিত্ত যে জ্ঞানের প্রয়োজন তাহা অনারাসে দেওরা যাইতে পারে। কেহ যেন মনে না করেন যে, কতকগুলি গ্রন্থ পাঠ না করিলে জ্ঞান লাভ হর না। সাধুসঙ্গ, সংপ্রসঙ্গ, মৌথিক উপদেশে অনেক নিরক্ষর ব্যক্তি যে জ্ঞান লাভ করিয়াছে, অনেক বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাধিপ্রাপ্র ব্যক্তির মধ্যে সে জ্ঞান দৃষ্ট হর না। স্থতরাং সাধারণ জনমণ্ড-লীকে যথন ধর্মোপদেশ দেওরা হইবে, তথন জ্ঞানোপদেশের ও ব্যবস্থা করা যাইতে পারিবে। তাহাতে কিছুমাত্র কঠিনতা দৃষ্ট হর না।

ব্রাহ্মধর্মকে শিক্ষিত ব্যক্তিদিগের মধ্যে আবদ্ধ রাখার বিতীর অনিষ্ঠ ফল এই যে, সাধারণ জনমপুলী ইছার প্রতি উদাসীন থাকিতেছে। তাহারা ভাবিতেছে ইহা শিক্ষিত ব্যক্তিদিগের অপরাপর কাপ্তের ন্যায় একটা কাপ্ত, বাহার সহিত তাহাদের কোনও সম্পর্ক নাই।

ইতাকে তাছাদের হৃদরগ্রাহী করিবার করা প্রচার প্রণালীর কিঞিৎ পরিবর্ত্তন আবস্তুক। তাছাদের মধ্যে প্রচার করিবার সমরে তিনটা বিষর সারণ করিতে হইবে। প্রথম, চিত্তকে আরুই ও চমৎক্রত করে, লোকের সামাজিকতা প্রার্ত্তি ও সৌক্ষ্যাবোধকে চরিতার্থ করিতে পারে, এমন সক্ষা বিষয় তাহাতে থাকা আবস্তুক। হিতীয়তঃ, তাহাদিগকে অনেকটা শুরুপদেশের হারা চালাইতে হইবে। যেমন খনির মধ্যে অল্ল সংখ্যক লোকে খনন করিয়। ধাতুর উদার করে, সেই ধাতুই মুদ্রার আকারে মুদ্রিত হইরা সর্কাসাধারণের ব্যবহারার্থ গৃহীত হয়, তেমনি ইহাদিগকেও অনেক পরিষাণে মুদ্রিত সত্য দিতে হইবে। উদ্ধারের প্রমতার শিক্ষকদিগের উপরে রাধিতে হইবে।

তৃতীয়তঃ ইহাদিগকে উপদেশ দিবার সমধ্যে যে স্কৃত্য ঘটনা ও চিন্তা ইহাদের জীবনে প্রতিদিন ঘটরা থাকে, সেই স্কৃত্য ঘটনা অবলয়ন করিয়া উপদেশ দিতে ছইবে। গাণ ও কথকতা প্রশালী ইয়াদিগের বিশেষ উপবোগী যদিয়া ट्यांच करें। जामना जामा कति, विविद्य नावायण वाचनगडिकन

मछाभर्भत मृष्टि खतात्र चार्क्ट वंकेटव ।

# সাধারণ ত্রাক্ষসমাজের কার্য্যনির্ব্বাহক সভার ১ম रेक्रमानिक कार्याविवत्र।

#### 7490

ু বিগত ৭ই ফেব্ৰুয়ারি বর্ত্তমান বৎসরের কার্যানির্কাহক সভা গঠনের অস্ত অধাক্ষ সভার একটা বিশেব অধিবেশন হয়। তাহাতে বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র, বাবু হেরছচক্র মৈত্র, বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত, পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী, বাবু নীলরতন সরকার, वावू व्यापिनाथ চটোপাধারে, তীযুক নবৰীপচন্ত্ৰ দাস,বাবু উমাপদ রার, বাবু মধুস্দন দেন, বাবু কালীশহর সূক্ল, বাবু রামানক চট্টোপাধ্যার ও বাবু বঙ্কবিছারী বস্থ বর্ত্তমান বর্বের কার্যানির্কাচক সভার সভ্য নিযুক্ত হইরাছেন, এবং প্রচারক মহাশ্রদিগের প্রতিনিধি অরপ ডাঃ যোগেলনাথ মিত্র মহাপর কার্যানির্কাহক সভার একজন অভিরিক্ত সভা নিযুক্ত হইরাছেন। এভডির পাঁচলন কর্মচারী সমেত মোট ১৮ জন সভা নইরা এ বংসরের কার্যানির্কাছক সভা গঠিত হইরাছে।

ৰুতন কাৰ্য্যনিৰ্কাহক সভা গঠিত না হওৱা প্ৰান্ত নির্মানু-मारत गेड वर्षत कार्यानिकाहक मडाहे कार्या मुल्लात कतित्रा-ছেন। এই नमन्न मर्था शूर्वजन कमिष्टिन क्री नाशांत्रण, क्री বিশেব এবং নৃতন কমিটির ৮টী সাধারণ অধিবেশন হইরাছে।

বিগত ডিদেশর মাদে মাখেৎসবকাণ্য স্থপশন করিবার নিমিত্ত একটি স্বক্মিটি গঠিত হইয়াছল। ঐ ক্মিটি অর্থানি मध्यार कतिया धारा विरामय विरामय श्राम कार्या निर्मारक मछात्र সহিত পরামর্শ করিয়া উৎসব কার্য্য সম্পন্ন করিয়াছেন। ভগবান এবার মাঘোৎসবে আশাতিরিক্ত ভাবে কুপা বিভরণ করিরাছেন। ১লা মাঘ (১৩ই জাতুরারি) হইতে আরম্ভ করিয়া ১৭ই মাঘ (২৯শে জামুরারি) পর্যান্ত উৎসব হইরা-ছিল। উৎসবের বিশেষ বিবরণ "তত্তকৌমুদী" ও "ইতিরান **भारतभारत" धाकामिल इहेनारक, अवस्त्र लाहात विरमय विवत्रण** विधान (मध्या हरेन ना। विवाद उर्पत उपनाक विकति "বিশেষ কাৰ্য্যের হুত্রপাত হইয়া গিরাছে। ১২ই মাঘ প্রাড:-কালে সাধনমগুলী প্রতিষ্ঠা উপলক্ষে বিশেষ উপাসনা পরে মছর্বি দেবেজ্ঞনাথ ঠাকুর মহাশর মন্দিরে चानित्रा नाथकमश्रनीत खारठाक मछारक विरमवछारव चानीर्साम क्रिया यान । डाँश्व श्रमत्त्र श्रम सम्बद्ध (वना ) है। श्रीख नश्कीर्जन, व्यार्थनामि इत्र। এই नवत्र व्यानाक चीत्र चीत्र ंचनकात, रखानि मान करतन ७दः करतको स्यु दायमारकत क्षारं भीवम छेरनर्व कतिरवन वनित्र। हेक्का क्षकान करतन। अण्डित १रे माप् (১৯८म चाल्याति) जातिरथ त्यावारे আর্থনা স্বাজের সভ্য মিঃ ভি, এ, সোদ্ধ মহালর সিটা কাৰ গুৰু "Hindrances to the Progress of Brahmoism" विवरत अस्की वक्षा करहना अस्ट माप

এই নক্ষ অণাদী চিত্তা করিলে লাবাংলর দেকের আচীন- (২৮বে জাত্তারি) সমাজ মলিরে বোবাই আল্পরাকের नण्नावक यिः वि, वि, नगवकाव महानव "The Formation of National Character." বিবরে একটা বক্তা করেন।

১১ই মাঘ রাত্রিকালীন উপাসনার সমর নিম্নলিখিত বাজি-গণ ব্ৰাহ্মধৰ্মে দীক্ষিত হইয়াছেন--বাবু সভীশচক্ৰ চক্ৰবন্তী, ८०माठळ ७१, कारनळनाथ एउ, कारनळनाथ वळू, हेळनातात्रण বাৰু উপেজনাথ সিংহ রার দীক্ষিত হইরাছেন।

নিয়লিখিত স্থান হইতে আন্মবস্থাণ উৎসৰ উপলক্ষে কলিকাভার আগমন করিয়াছিলেন:---नार्टाव, नर्फ्यो, शवा, (प्रवत्रान, (हाभवा) हासावियांग, वामभूव हाँहे, मूर्तिनावान, त्वानभूत्र, ननहाँही, धृनिवान, वर्षमान, त्मिनी-পুর, কাঁথি, চট্টগ্রাম, শিলং, ঢাকা, মরমনসিংহ, ফরিদপুর, বরি-नान, चुनना, बाकनाही, बःश्व, त्ननकामात्री, कननाहे खड़ी, পাৰনা, নওগাঁ (রাজগাহী) রসপুর, কাছাড়, বানিবন, জালিপাড়া কৃষ্ণনগর, মজিলপুর, হরিনাভি, জীরামপুর, সাতক্ষীরা, কোরগর, ছগলি, বরাহনগর, নলধা, বাগঅ চৈড়া, চাফুড়িয়া, স্বালালপুর, नातात्रभगक्ष, वक्षर्याणिनी, छत्राकत, मानिकमर, मानिकगक्ष, क्यांत्रशानि, बनिनश्रत, बनदाधश्रत, कृष्टिक्न, कृत्रदिष्ट्रा, नकत-পুর, বাগুড়ী প্রভৃতি।

**५रे (क्जुबादि नृजन कार्यानिक्राहक मछ। क्रियंच छैना-**সনান্তে এই বংসরের কার্যাভার প্রহণ করেন। পূর্ব পূর্ব वरमात्रव काम अवात्रव ममारक्षेत्र ध्वधान ध्वधान विकालात्र कार्या স্ম্পাদন আৰু নিম্লিখিত স্ব-ক্ষিটাগুলি গঠিত হইরাছে। वर्षा, Business, शुक्रक व्यक्तात्र, नाहेरखत्री, नाह्यत्र, खक्ष विन्तानत्र बाश्चरानिका निकानम्, बाश्चरानिका वार्षिः। এভত্তিत्र वित्नव বিশেষ কার্যা সম্পন্ন করিবার জক্ত আরও করেকটী বিশেষ কমিটি নিযুক্ত হইরাছে। যথা থাসিরা পাহাড়ে ধর্মপ্রচার সাহাযার্থ কমিটি, সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের অনুষ্ঠান পদ্ধতি প্রচার কমিটী,ব্রাহ্ম-ধর্মের মূলসভাগুলি ইংরাজী ভাষার বিবৃত করিয়া পুস্তক লিখি-বার জন্ত কমিটি, পারিবারিক প্রার্থনামালা সংগ্রহ করিবার জন্ত ক্মিটা, গৃহ ভাড়িত ব্রহ্মবুবক্দিগের সাহায্য করিবার ভঞ কমিটা, এবং ই ভিরান মেসেঞ্চারের উর্লভর জন্ত বিশেষ কমিটা।

মকংখলের অনেক খানে ব্রহ্মন্দির ভইরাছে এবং সেই সকল मिलातत व्यानक श्वनिष्ठिरे Trust deed প্রস্তুত হইরাছে। এই সকল Trust deed একতা করিয়া মুদ্রিত করিবার কর কার্যানির্বাহক সভা চেষ্টা করিতেছেন।

क्षेठात-कात्रक महाभारतता निर्व निरक कि कारत কার্ব্য করিবেন,ভাহা কার্য্য নির্বাহক সভাতে জ্ঞাপন করিরাছেন। দিক্রগড় ও কুমিলা ত্রাদ্দসমাজের সম্পাদক মহাশ্রগণ উক্ত ছানৰ্য্যে কাৰ্য্যনিৰ্কাহক সভাকে স্থায়ী প্ৰচায়ক পাঠাইবার कड़ चहुरतार कतिवाहित्वन, धवः वाहावा अमन कतिरवन তাঁহালের বর্থালাব্য অর্থগাহাব্য করিতে চাহির। ছিলেন। কিছ 'বুর্ছাস্যক্রমে আমানের প্রচারক সংখ্যা নিতান্ত অর ধাকাতে 🐿 অভান্ত কারণেঁ, অভান্ত হৃংধের সহিত আপাততঃ **जाहारक्य हेक्हा भूर्व अधिरक भावा गांव माहे।** 

পতিত শিবনাথ শান্ত্রী—গত তিন মাসে ক্লিকাডা থাকির। মন্দরে ও সাধনাশ্রমে নির্মিতরপে আচার্যের কার্য্য এবং ধর্মপুত্তক পাঠ ও ব্যাধ্যাদি করিরাছেন। এতত্তির তত্ত্ব-কৌমুদীর সন্পাদকলা ও মেসেঞ্জার পাত্রকা পরিচালনের সহারতা করিরাছেন; এবং ছাত্রসমাজে মধ্যে মধ্যে বক্তৃতা করিরাছেন। উৎসবের সমর উপাসনা ও বক্তৃতাদি করিরাছেনও মধ্যে মন্দেরে আচার্য্যের কাল করিরাছেন। তিনি মার্চ্চ মাসের শেষ ভাগে প্রচারার্থে পঞ্জাব গিরাছেন।

শ্রীযুক্ত নবদ্বীপচন্দ্র দাস,— জাহুলাবী মাসে কুচবিহার ত্রাহ্মসমাজের উৎসবে তথার গমন কবেন। সেখানে
উপাসনা, পাঠ ও আলোচনা হয়; একদিন "ধর্মের শ্রেষ্ঠ হা" বিষয়ে একটা প্রকাশ্র বক্তা করেন। তথা হইতে
কলিকাতা প্রত্যাগমন কালে পথে অস্ত্রহয়া কিছুদিন রংপ্রে আবহ্নিত করেন। পরে কলিকাতায় আসিয়া পৌছেন। ১৫ই মার্চি পর্যান্ত বিশ্রাম করিয়া এখন প্ররার কলিকাতায় কার্য্য আরম্ভ করিয়াছেন।

বীবু শশিভূষণ বস্ত্—কলিকাতা—মাংলাংসৰ উপলক্ষে
মন্দিরে করেক দিন আচার্য্যের কার্য্য করেন। বিজন কোলারে একটি প্রকাশ্ত বক্তা এবং "এখন কি চাই" সম্বন্ধে মন্দিরে ও ছাত্রসমাজে "বীর্থ" সম্বন্ধে বক্তা করেন।

নিম্তা উৎসবে আচার্য্যের কার্য্য কবেন। এবং "আহ্মধর্ম" কি" দছকে কানীয় সমাজ গৃহে একটি বক্তৃতা করেন।

মেদিনীপুর উৎসবে গমন করেন। তথার এক সপ্তাহের অধিককাল থাকির। উৎসবের কার্য্য সম্পন্ন করেন। এতত্পলকে উপাসনা ও উপদেশ ব্যতীত বেলীছলে "মানব জীবনের উরতি" "লামাদের বর্ত্তমান অবস্থা" এবং সমাজ গৃছে "ব্রাহ্মদিগের কর্ত্তব্য" সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন, এবং নগর সংকীর্ত্তনের দিন সাধারণের জন্য একটা প্রকাশ্ত বক্তৃতা করেন। ইহা ব্যতীত কোন কোন গারিবারিক অনুষ্ঠানে উপাসনা করেন।

টাসাইণ উৎসবে গমন করেন। সমাজ গৃহে আচার্ব্যের কার্য্য করেন, এবং টাউনছলে "ধর্মের লক্ষণ" সম্বন্ধে একটা বক্তা করেন। স্থানীর স্বলগৃহে ছাত্রদিগকে জন্ত নীতি সম্বন্ধে উপদেশ দেন এবং নগ্রসংকীর্তানের দিন প্রকাশ স্থানে একটা বক্তা করেন, কোন কোন পরিবারে উপাসনা ও মহিলাদিগের কর উপদেশ দান করেন।

বাবু নগেন্দ্রনাথ চটোপাধ্যায়—বর্দ্ধনান উৎসব উপলক্ষে সম্পাদকের ভবনে উপাসনা ও উপদেশ দেন, উৎসব দিবসে সমাজ ভবনে প্রাতে বেদীর কার্যা করেন।

ত বংশবাটী।—ছাত্র সভার উৎসব উপলক্ষে "নীতিলিক্ষা ও চরিত্রসংগঠন" বিষয়ে প্রকাশ্ত বক্তৃতা দেন।

রামপুর হাট। — উৎসবের উদ্বোধন ও উৎসব দিবসে সন্ধা-কালে বেদীর কার্য্য করেন। নগরকীর্ত্তন বাহির হইবার পুর্বের, সম্পাদকের ভবনে "নাম মাহাস্মা" ইত্যাদি বিষয়ে বক্তা দেন। কলিক জি সাধনাশ্রমে করেক দিবস আলোচনা এবং 
"ধর্মের দার্শনিক তথা" বিষয়ে চারি দিবস বজুতা করেন।
কোন আন্ধ পরিবারে উপাসনা করেন। মাঘোৎসব উপলক্ষে অন্ধ
বিদ্যালরের সাধ্যমিক উৎসবে, "কড়বাদ পশুন" বিষয়ে
বজুতা, এবং ছই দিবস অপরাছে বেদীর কার্য্য করেন।
সাধনাশ্রম প্রতিষ্ঠি। উপলক্ষে সাধারণ আন্ধসমাল মন্দিরে,
"কোন্ শক্তি কাগ্যকে পরিচালিত করিতেছে ?" এই বিষয়ে
বজুতা দেন। এক দিন অনুষ্ঠান উপলক্ষে উপাসনা করেন।
দাসাশ্রমের সাধ্যমের সভার "সেবাধর্ম" বিষয়ে বজুতা দেন।

ইয়া ভিন্ন কলিকাতা ও অস্তান্ত হানে আদ্ধ ও অস্তান্ত লোকের সহিত ধর্মবিষয়ে কথোপকথন ও আলোচনা করেন এবং ধর্ম বিষয়ে পুস্তক রচনা করেন।

এত তির বাবু কালী প্রসর বস্থ, প্রীযুক্ত লমছন প্রসাদ, বারু নীলমণি চক্রবর্তী, প্রভৃতি মহাশরের। নানা প্রকারে তাক্ষধর্ম প্রচার করিতেছেন।

এই করেক মাসের মধ্যে নিয়ণিখিত স্থান সকল হইতে প্রচারক পাঠাইবার জন্ত নিমন্ত্রণ আসিরাছে:—বেদিনীপুর, বর্জমান, রামপুরহাট, বরাহনগর, কোরগর, হরিনাভি, চট্টগ্রাম, জল-পাইপ্রভি, দৈদপুর, ভিক্রগড়, লাহের ও কুমিরা।

উপাস্কমশুলী—এই তিন নাসে নির্মিতরণে প্রভাক রবিবার বাতীত প্রভাই সারংকাণে ও প্রভাক মাসের অন্তে উপাসনার কার্য্য ইইরাছে। আচার্য্যগণ ও সহকারী আচার্য্যগণ এবং তদ্বাতীত প্রীযুক্ত লছমন প্রসাদ উপাসনার কার্য্য সম্পন্ন করিরাছেন। নিমে আর ব্যরের সংক্ষিপ্ত হিসাব দেওলা সেল। হিসাবে ১০০॥/০ এক শত টাকা নর আনা হত্তে হিত লেখা ইইল বটে, কিন্তু উক্ত টাকা মন্দির সংস্থার কার্য্যে ব্যর হইরা গিরাছে। মন্দির সংস্থারের কন্তু অনেক দেনাও রহিরাছে।

্উপানক মণ্ডলীর সংক্ষিপ্ত আরু বারের বিবরণ।

जग		435	
ठाँना ज्यानात	1610	গ্যাদের আলোদ্ধ ব্যন্ত্র	>b-\
দান সংগ্রহ ও দান	राश्रादव	বেভন হি:	e2110
বার	७८७२॥	মন্দিরের পশ্চাৎ ভাগে	গৰ
এতকালীন দাম ৫	वाधि ६	বেড়া মেরামভের ব্যন্ত	8 We
গ্যাস হি: ছাত্র	<b>गमा</b> क	क्ष वाष	643.
रहेरछ व्याश	۲,		
विविध हिः	1•		b.1/56
		<b>रख</b> दिख	> • N/•
	<b>॥</b> ५८॥१८	-	
পূৰ্ব হিত	POI4511	>	bond'se
	-		
	stondse		

সক্ষতস্তা—গত ৰাষ্যারি হইতে ২১শে মার্চ পর্যন্ত এই তিন মানে সক্ষতস্কার ১০টা অধিবেশন হর। তাহাছে নির্দাধিত ৩টা বিবরের আলোচনা হইরাছিল (১) উপাসক-মগুণীর অ্ব্যবহা করিবার উপার কি ? (২) অভিমান (৩) সংসার। পরে গত ৭ই, ১৪ই ও ২১এ মার্চ এই ভিন দিন কঠোপনিবৎ পাঠ ও ব্যাব্যা হইরাছে। গত ১৭ই অফ্রারী সলনবার সলতসভার বিশেব উৎসব হয়। প্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত সহাপর আচার্ব্যের কার্য্য করেম। ইহাতে গত বৎস্বের সলতসভার রিপোর্চ পরিত হয় ও তৎপরে করেকটী বন্ধু ধর্ম বিবরে আলোচনা করেন।

দাতব্য বিভাগ—বাতব্য বিভাগের গভ তিন মানের কার্যা প্রার পূর্বের ভারই চলিরাছে। এই তিন মান মধ্যে একটা আর, একটা কুর্নরাগী, একটা পীড়িত, ৪টা পরিবার এবং ১২টা ছাত্র ও হুইটা ছাত্রার সাহাব্য করা ছইরাছে। প্রান্ধগণ যদি নিজ নিজ পারিবারিক অনুষ্ঠানাদি উপলক্ষে এই দাতব্য বিভাগে কিছু কিছু অর্থ দান করেন, ভাহা হইলে ইহার ঘারার অনেক হুংধীর হুংধ মোচন হইতে পারে। সম্প্রতি মহিশুরের মহারাজা এই দাতব্য বিভাগে ১০০, শত টাভা দান করিরাছেন তজ্জ্জ্জ্ আমরা মহারাজকে বিশেব ধক্ত গাদ দিতেছি। এই সজে সংক্ষিপ্ত আর ব্যরের হিসাব প্রদত্ত হইল:—

411		- ধর্চ	
এককালীন দান	>90110	মাসিক চাঁদ। দান	65/
অমুঠান উপলক্ষে	9	এককালীন দান	• fi • ¢
ৰাৰ্ষিক দান	> <b>&gt;</b> ∥•	বিবিধ ব্যস্থ	J•
मात्रिक मान	٥		
			٠١١١٥٠
	>eb	হত্তে হিত	२८७
পূৰ্ক স্থিত	>8 to 11 de		
·		•	٠٥١١٥٠
	9.8110.		

ব্রাক্ষছাত্রী নিবাস—ব্যক্ষরাত্রীনিবাসের কার্য্য এই ভিন মাসকাল পূর্ববং দলিয়াছে। ছাত্রী সংখ্যা ৩৯ হইরাছিল, এইক্ষণে ৩৪টা আছে। তত্বাবধারিকাগণ পূর্বের স্তায় বড়ের সহিত কার্য্য করিতেছেন। এই সঙ্গে গত ৩ মাসের আর ব্যবের বিবরণ প্রদত্ত হইল।

<b>4</b> 11		<b>4</b> 35	
ठामा ज्यानात्र	₹ •॥•	(थात्राकी, जनशानात छ	
ছাত্ৰীদিগের বেতঃ	•166•6 F	আলোর ব্যস্ত	8281920
এক কালীন গান	२•\	বাটা ভাড়া	२०१
এড্মিশন কী:	>•<	বৃত্তি হি:	>••/
मोगामिनी वृज्जि	२•\	विविध वाश	<b>bil</b> •
এককালীন গানৱ	মাও ৬	हाजीनिश्यत्र कृत्नत	
		বেভন	er,
		কর্মচারীর বেভন	ર ૧৬∦ત/€
,	> +8 m •	किनिम चत्रिय	eJ.
भूक हिड	>29he/>•		
	1		3382H/e
	>5>51000	হবে ভ্ৰিড	wande
· ·			

পুস্তক প্রচার—"বদ্দদীত, ৬5 সংবরণ" ও "কবির ও ভাহার উপদেশ" প্রশাসিত হইবাছে।

#### बाध-वानिका भिकानतः।

আর		IJ <b>T</b>	
বেতন আদার	8e•nd•	বেতন বাৰত	७>२॥०
খ্লারসিপ আদার	• ااده	গাড়ি বাবতে	529Hd50
होंगां ७ गान	<b>٥•</b> २५•	বিবিধ	ade
विविध ज्यामात्र	₹81/>•	ঋণ শোধ	• 118¢
		কুল বাটাভাড়া	<b>۴</b> ٩؍
•	P>9#>•	<b>ক্লার</b> সিপ	361
পূৰ্ব হিত	> ₹ 18€	কুণ কমিটির নিং	ৰ্দারণ
•		অসুসারে ধরচ (	নেধা হয় ১০১
		<b>হিত</b>	96 NG •

মোট আর ৯১ • ১১ থে সোট ৯১ • ১১ থ একজন শিক্ষ ও একজন শিক্ষরিত্রী কার্য্য পরিত্যাগ করিরাছেন। শ্রীমতী অবলা বস্থ অনুগ্রহ পূর্বক হুই ঘণ্টা করিরা নির্মিতরূপ শিক্ষা দিতেছেন, এজনা তাঁহাকে বিশেষ ধনাবাদ দিতেছে।

ঁ বর্ত্তমান ছাত্র ও ছাত্রী সংখ্যা ৮৯।

ছাত্র সমাজ-এই তিন মাসে ছাত্র সমাজে নিয়লিখিত বক্তা প্রদত্ত হইয়াছে।

- (>) বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র। "অমঙ্গল ও তাহার প্রবান জুনীরতা" ৭ই জাসুধারী। (২) "চৈতজ্ঞের ধর্ম প্রচার" ১১ই কেক্রেরারী। (৩) 'ভারতে ধর্ম সমস্তা'' ২৫শে কেক্রেরারী।
- (৪) বাবু মনোরঞ্জন ৩৪ছ। "কর্মাধ্যেরে মূল কি ?" ১৮ই কেক্রেরারী।
- (৫) শশুিত শিবনাথ শাল্পী। ''বঙ্গীর ছাত্রগণের বর্স্তমান অবস্থা' ১১ই মার্চ্চ।
  - (७) वावू भागकृषण वन्त्रः। "बीत्रक" ১৮ই मार्कः।

মাবোৎসব উপলক্ষে ২৫শে জান্তরারী ছাত্র সমাজের বিশেষ উৎসব হয়। পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী ইংরাজীতে উপাসনা করেন ও বাবু হেরখচন্দ্র মৈত্র ইংরাজীতে "জীবনের মহত্ব" বিষয়ে বজ্তা করেন।

এতব্যতীত ৪ঠা ফেব্রুরারী ও ৪ঠা মার্চ ছাত্র স্মান্তের আলোচনা সভা হর। প্রথম সভার বাবু নগেব্রুনাথ চট্টোপা-ধ্যার ও বিতীর সভার পঞ্জিত শিবনাথ শাস্ত্রী সভাপতির আসন প্রহণ করেন।

ভাগ থাঁসিয়া মিশন—বাবু নীলমণি চক্রবর্তী মহালর সম্প্রতি কলিকাতার রহিরাছেন। কলিকাতার থাকিরা তিনি থালির। ১১৪৯৮/৫ ভাষার একথানি পুত্তিকা রচনা করিরা প্রকাশ করিরাছেন এবং ভংগলর মন্দির নিশ্মণার্থ অর্থ সংগ্রহ করিতেছেন। তিনি বালাগতে একথানি রিপোর্ট প্রকাশ করিতে চেষ্টা করিতেছেন। ১২১২॥১১০ চেরাপুর্বির প্রচার নিবাদে একটী নুত্রন ক্ষুত্র কুটার নিশ্মিত

ৰইরাছে। আমাদের জ্ঞা বিদ্যালয় ভাষাতেই স্থানাভারত ক্টরাছে। বাবু ফানিনীকুমার খোষ দেই বিদ্যালয়ে বালালা শিক্ষা দিভেছেন। পর্যেখনের কুণার ফুইলন খাসিরা বন্ধু খাসিরা মিশ্নের প্রচার কার্য্যে যোগ দিবার ইচ্ছা প্রাকৃশি ক্রিরাছেন।

সিটিকলেজ—সিট কলেজ হইতে ১০টা দরিজ রাক্ষরকর বেতন আমরা বধানিরমে পাইতেছি, এজনা কর্তৃপক্ষরকর বেতন আমরা বধানিরমে পাইতেছি, এজনা কর্তৃপক্ষরকরে বিশেষ ধন্যবাদ দিছেছি। সিটি কলেজের নির্মালসারে উক্ত কলেজের কৌলিলে আগামী তিন বৎসরের জন্ত বাবু দারকানাথ গলোপাধার, ডাঃ জে, এন, মিত্র ও পাঁওতি শিবনাথ শাল্লী মহাশর কার্যানির্কাহক সভা কর্তৃক সভ্য নিযুক্ত কইরাছেন।

সামাজিক কমিটি— মাগামী তিন বংগরের জন্ত পশুত দিবনাথ শাল্লী, বাবু আনন্দমোহন বন্ধ, বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত, বাবু নবছীপ চক্ত দাস ও বাবু মধুস্দন সেন মহাশর সামাজিক কমিটির সভ্য নিযুক্ত হইরাছেন।

মিশন কমিটি—প্রচারক নিরোগ, শিক্ষা প্রভৃতি বন্দোবজের জন্ম বাবু আনক্ষমোহন বন্ধ, বাবু উমেশচক্স দত্ত, বাবু ক্ষক্মার মিত্র, বাবু মধুস্দন সেন, বাবু নবছীপ চক্স দাস, বাবু আদিনাথ চটোপাধ্যার ও পণ্ডিত শিবনাথ শাল্লী মহাশরপণ মিশন কমিটির সভ্য নিযুক্ত হইরাছেন। চারি বৎসর পর্যান্ত ইংগ্রা কার্যা করিবেন।

ব্ৰাক্ষ সন্মিলনী—বিগত মাদে বরাহনগরে বাহু দশি-পদ বন্দোপাধ্যার মহাশরের বাটাতে ইহার এক অধিবেশন হইরা গিয়াছে।

তত্ত্ব-কৌমুদী ও ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জার—এই ছই পত্রিকা পূর্ব্বের স্থান্থই চলিতেছে। বিশেষ কিছু পরিবর্ত্তন হর নাই। কার্ছা বিশেষে নিযুক্ত থাকাতে বাবু হেরম্বচক্ত নৈত্র মহাশর এই তিন মানের মধ্যে অধিকাংশ সমর ইণ্ডিরান মেসেঞ্জারের কার্যা হুটতে অবসর প্রহণ করিরাছিলেন।

সাধনমগুলী—সাধনমগুলী এখন প্রচার নিবালে প্রতিষ্ঠিত হইরাছে। প্রীযুক্ত পণ্ডিত লিবনাথ লাজী, প্রীযুক্ত নবদীপচন্দ্র দাস, প্রীযুক্ত মালিনাথ চট্টোলাধ্যার, প্রীযুক্ত মালিনাথ চট্টোলাধ্যার, প্রীযুক্ত কালীচন্দ্র ঘোরাল, প্রীযুক্ত প্রকাশ দেব ও প্রীযুক্ত গুরুলাস চক্রবর্তী, এই সাতম্বন এই মগুলীর প্রথম সভ্যরূপে প্রবেশ করিরাছেন। ইইারা সমুদ্র সময় ও শক্তিনিয়াপ করিরা প্রাক্ষক্রমাজের পরিচর্য্যা করিত্তে অপ্রসর হইরাছেন।

১২ই মাথ প্রাণান মহর্বি কেবেজ্রনাথ ঠাকুর মহাশর সাধারণ আক্রসমাজের মন্দিরে আগমন করিরা এই মগুলী প্রতিষ্ঠা করিরা-ছেন। উপাসনার পর আচার্য্য এই কার্য্যের সহারতার জন্ত সাহায্য প্রার্থনা করিরাছিলেন। তৎপরে উক্ত কার্যের সাহায্য অরপ প্রার ৬০০ ছর শত টাকা মূল্যের অলক্ষার ব্যাগি ও নগদ টাকা প্রাপ্ত হওরা যার।

কার্যানির্বাচক সভা এই মঙ্গী পরিচালনের জন্ত বে সকল নিরম প্রস্তুত করিয়াছেন সেই,নিরমের ওর ধারা অনুসারে তুই বংসারের জন্ত সেবাকমিটিডে শীষ্ক পশ্চিত শিবনাথ লাজী,শীসুক্ত প্রত্যাশ দেব, প্রীযুক্ত নগৰীপচল্ল দান, ও প্রীযুক্ত ওক্ষান চল্লবর্তী, মঙলীর প্রতিনিধিরূপে মনোনীত হইরাছেন। এবং প্রীযুক্ত
আনন্দরোহন বহু, প্রীযুক্ত উলেশচন্ত্র নড, প্রীযুক্ত কুংচকুমার মিত্র,
ও প্রীযুক্ত আদিনাথ চট্টোপাধারে, উক্ত কমিটিতে কার্যানির্বাচক
সভার প্রতিনিধিরূপে মনোনীত হইরাছেন। প্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবা
নাথ শাল্লী, আপ্রমের ভন্থাবধায়ক ও সেবাকমিটির সভাগতি এবং
প্রীযুক্ত ওক্ষানে চক্রবর্তী সেবাকমিটির স্ম্পাদক নিযুক্ত
হইরাছেন।

সাধনাশ্রমে প্রতিদিন প্রাতে ধর্মবাখ্যান উপাসনা, প্রার্থনা ও সকীতাদি এবং সারংকালে সদীত ও প্রার্থনা চইরা থাছে। এডভিন্ন সাধনার্থীদিগের জনা ভগবদ্দীতা ও দায়দের শীত পাঠ ও ব্যাখ্যা এবং ব্রাহ্মধর্মের মত ও বিশ্বাস সহছে আলোচনা হয়। ব্রাহ্মিদাগের শিক্ষার জন্ত ও বিশেষ বিশ্বেষ পুত্তক পাঠ হইরা থাকে।

পণ্ডিত শিবনাণ শাল্লী ও নবৰীপচক্ত দালের কার্যাবিবরণ প্রচারক মতাশরদিগের কার্যাবিবরণের সহিত পর্বের দেওর। ছই-রাছে। শ্রীযুক্ত মহেজনাথ চট্টোপাধাার-প্রতি সপ্তাদে পাঁচ দিন সম্বাকালে মন্দিরে উপাসনা করিয়াছেন; করেকটা ব্রাহ্মপরিবার পরিদর্শন করিয়াছেন ও তিনটী ব্রাহ্মপরিবারে উপাসনা করিয়াছেন। প্রতি শনিবার নিমতা ব্রাহ্মসমার্চ্সে গমন করিব। তথাকার উপাসনা সম্পন্ন করিবাছেন। আদ্ধ-সমাজের সহিত সহাস্তৃতি আছে, এরণ করেকটা পরিবার পরিদর্শন করিয়াছেন। শ্রীযুক্ত আদিনাথ চট্টোপাধ্যার-তব-क्षिम्बी मन्नामत्मव महाव्रष्ठा कविवाहन, এवर ममत्र ममत्र ব্রাহ্মপদ্মিবারে উপাসন। করিয়াছেন। শ্রীযুক্ত গুরুদাস চক্রবর্ত্তী —ব্রাহ্মবালিকা শিক্ষালয়ে শিক্ষকভা করিয়াছেন; এডডিয় সভারস্মিতি এবং সমর সময় তত্তকৌমুদী সম্পাদনে সহায়তা त्रिशाह्म । श्रीयुक्त कामीहल (पायाम—उपस्कोमुकी मण्या-সহায়তা করিয়াছেন। 💐 বৃক্ত প্রকাশ দেব---প্রচারার্থীদিগকে হিন্দী শিক্ষা প্রিরাছেন। নির্মিতকপে ওরেলিংটন ও বীডন উদ্যানে প্রকাশ্য বক্তৃতা করিয়াছেন। কোন কোন ব্রাহ্ম পরিবাবে উপাসনা করিরাছেন। গভ মার্চ মাসের তিনি শেষ ভাগে শাল্পী মহাশরের সহিত প্রচারার্থ পঞ্চাব গমন কবিবাছেন।

সহার—হাতার। অস্ত কাজে নিযুক্ত আছেন, এরপ ৫৪ জন ব্রাহ্মকে সেবা কমিটা সহায়রপে প্রতণ করিবাছেন। প্রীযুক্ত উমেশচন্ত্র দত্ত এট সভার দলের সম্পাদক নিযুক্ত হইরাছেন। সহারগণ নিম্নলিথিত করেকটা কাণ্যের প্রপাত করিবাছেন:—সলীত শিক্ষা, শক্লিপি শিক্ষা, ব্রাহ্ম পরিবার পরিষ্পান, কলি-কাতার ছাত্রদের মধ্যে কার্যা, ব্রাহ্মসমাজের সহিত সহায়ুভ্ডি আছে এরপ পরিবার সকল পরিষ্পান, বাহিরে প্রচার ও কলিকাতার স্মাপবর্তী সমাজ সকল পরিষ্পান।

#### नाधनान्यस्य चात्र वात्र ।

আয়		वाग	
বাড়ী ভাড়া বাবদ		১০৷৩ কর্ণ গুরালিস ব্রীট বাড়ী ভাড়া ও সরঞ্জাম ধরচ	)
<b>व्या</b> नांत्र	8640	দ্ৰীট বাড়ী ভাড়া ও	Seattle
দান প্রাপ্ত	9561456	শ্রঞ্জাম প্রচ	1
ওয়াকারদিগের আ গ্রাপ্য আদার	3 08 V	মিশন হাউদের ভাড়া (১৮৯৩ সালের অধিম)	
পৃক্ব´ হিত	عد/الهود •/عد	সালের অগ্রিম) ওয়ার্কারদিগের ব্যর	
		<b>ক্ষে শ্বিভ</b>	5/6 0 < <     44
মোট	A9211926	মোট	שכהאכפש

ত্রাক্ষ মিশন প্রেস, পাইত্রেরি, ত্রক্ষবিদ্যালয়, রবিবাসরিক বিদ্যালয় প্রাঞ্তির কার্যোর বিষয়ণ পাওয়া বার নাই।

আফুষ্ঠান—আমর। বভদ্র জানিতে পারিরাছি তাহাতে অবগত হইরাছি বে, এই করেক মানের মধ্যে ৬টা জাতকর্ম ও নামকরণ, ৩টা প্রান্ধ ও ৪টা বিবাহ হইরা গিরাছে।

মৃত্যু—আমাদের সিমলাক বন্ধ বাবু কেদারনাথ চৌধুরী মহাগর ইহলোক পরিত্যাগ করিরাছেন। তিনি করেক বংসুর সিমলা আন্ধ সমাজের প্রতিনিধি স্থরপ অধ্যক্ষ সভার সভা ছিলেন।

### আয় ব্যয়ের হিসাব।

#### সাধারণ বান্ধসমাল।

जान-	_	-ব্যন্ন		
জেনরোশ ফ গু	•N&&©	প্রচার ব্যব	<b>ゆみりゃく</b> シ・	
সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে	র	কর্মচারীর বেতন	ه ۱۱ د	
ठांना वार्षिक २०३	ə। <b>•</b>	ডাক্মা <b>ও</b> ল	P1>0	
মাসিক ৬৯॥	•	পাথের	00,	
এককালীন ১৮	\	সিটী কলেভের দা	7	
	-	হইতে করেকটা গরি	ব	
৩৬৬৷	h•	ব্রাহ্ম ছাত্রের স্থান	র	
	***	বেভন	be11/0	
প্রচার ফণ্ড বার্ষিক ১২৩	95240	সৌদামিনী রুভি	٥٠٠	
বাবিক ১২৩ মাসিক ১৩২		বিবিধ	₹84•	
अवकानीम १७ अककानीम १७		গচ্ছিত শোধ	9340	
GIAAIOIN .O	_	চাওলাভ শোধ	83•	
৩২৯,	<b>å</b>	ক্ষিশন হিসাবে	> 910 .	
<del>estimation</del>		মুদ্রাহণ	8	
সিটা কলেজের দান	ſ	প্রচারকগৃত (বাড়ী-		
অর্থাৎ করেকটা		সংস্থার )	>84d.	
ব্রান্ধ ছাত্রের স্কুট	লর	সুশীলাবালা ও		
বেতন বাৰত উক্ত	কলেজ	চাৰুবালা বৃত্তি	٤٥,	
চইতে দাহায় প্রাং	उ ४१	সাধন কুটীর নির্মাণে	नाधन क्षेत्र निर्मात्नव	
প্রচারকগৃহ হিসাবে		मन्नामक	900	
(বাড়ীভাড়া)	84211426	<b>थ</b> ा पान	96	
তৰ্গামনী ফণ্ড	80	,		
পাথেশ্ব	: e_		২৩০৬;•	
বিৰিধ	910.			
ডাক্মান্ত্র	>/			
হাৰণাড	b • 5			
ওড় কর্মের দান	aa,			
স্থীলা বালা ও				
চাক্ষৰালা বৃদ্ধি	88			
গাছিত	७२।•			
পার্শেণ্টেঞ	);k/o			
প্রচার কপ্ত	· "			
	₹७•०॥>€			
পূৰ্ব হিছ	>>>0  >+	ৰিত 🦾 🗥	22994/6	
নোট মোট	0818/6	মোট	98¥8/€	
	<del></del>	•		

	পুত্তক বিক্ৰা	_	
##1		485	
বাকী মূল্য আদা মগদ বিক্ৰয়		সুদ্রাহণ অপরের পুস্তক	012/
नगरायका ४००५		বিজ্ঞান সূত্র বিজ্ঞান সূল্য শোং	( 5.084/5ee
जनरत्रम २०४।		क्षिमन क्षिमन	•n/•
OFFICIAL COST		विविध	28h/>-
+ <b>+ + + +</b>	/5#	পুত্তক ধরিদ	
		পুত্তকের ভাকমাণ্ড	า ว8หป•
<b>ক্</b> মিশন	Sende		80:40:e
		কর্মচারীর বেডন	*274.
পছিত		পুক্তৰ বাধাই	۶۰,
🕻 -		ডাকমাওল	150
	984110		***
			अ०॥० ७८
পূৰ্বের হিত	9989nd•	<b>হিত</b>	0602110/26
	<u></u>	. •	
<b>ে</b> ম	• । १६६८ है।	মো ট	88261/0
	हे शिशन	মেশেকার।	
আৰু—————		-ব্যর <del></del> ভাক্ষাভুগ	٥٤١١٠٥ ه
মৃণ্যপ্রাপ্তি বিজ্ঞাপন	,	বিবিধ	2640
াৰজাপন এককালীন দান		কর্মচারীর বেতন	
व्यक्तानाम गाम विविध	`	_	910
14144	2/	- কাগজ	€8.
	<u></u>	প্রিণ্টিং	\$8•\
পূৰ্ক হিড	२१७॥४६	19100	
24160	7751176	<b>-</b>	೨೯৯५√€
		হিত	osane
_			-
C	माठे १० २॥ ८) •	-	•८ स्थाद • १ वा
	<b>७</b> च्ट	<b>ो</b> भूको ।	
আয়		-ব্যস্থ	
<b>म्ना</b> टा वि	<b>૭૨</b> ૫મ <b>૮</b>	বিবি <b>ধ</b>	8 had •
নগদ বিক্ৰন্ত	1•	ভাকমা <del>ঙ্গ</del>	99110
		- কাগজ	৩৮৯/•
	્ગ્ર ૧૮ ૬	কমিশুন	>8/:•
		কৰ্মচাীরর বেতন	vah.
পূৰ্ব হিত	) eefilde	<b>म्डाक्</b> र	>. >
		•	
		6-	٠ د ۱۱۱ ۹ ۹
		<b>হিত</b>	26261/0
	<b>S</b>	মোট	Name to 15 a
<b>ন</b> ো	हे अन्दर्भने	(410	spends.
	-		
প	াব প্রচারযা	ত্রীদিগের পত্র।	
আমিরা ২৯৫	শ মাৰ্চ্চ বাৰাণগ	ী পরিভ্যাগ করিয়	ा व्यायांशांत
•		পৌছি। এখানে	•
	•		
ব্ৰাহ্মবৃদ্ধ প্ৰীবৃদ্ধ	া বাবু মছেন্ত	নাথ সরকার '	আমাদিগকে

আমরা ২৯শে মার্ক্ত বারাণদী পরিত্যাগ করিরা অযোধ্যার অন্তর্গত্ ফরজাবাদ নামক ছানে পৌছি। এখানে আমাদিগের ব্রাহ্মবন্ধ প্রীবৃক্ত বাবু মহেজ্ঞনাথ সরকার আমাদিগকে সাদরে গ্রহণ করেন। আমরা তাঁহারই গৃহে অবন্ধিতি করি। গ্রিন অপুরাল্লে "সনাতন ধর্মসভা" গৃহে এক সতা আহৃত হয়। ভাই প্রকাশদেশ উর্দ্ধ ভাষার শক্তা করেন; হিন্দিতে সদীত হর, পাত্রী মহাশার ইংরাজীতে কিছু বলেন।

পর বিবদ প্রাতে আমরা প্রাচীন আবোধ্যা নগরী দর্শন করিতে বাই। এই ছান সরম্নদীতীরে অবস্থিত। সরম্ব দুশা অভি মনোচর। একানে কভকগুলি হিন্দু দেবালর আছে। আঘোধ্যা হিন্দুদিগের তীর্থস্থান, স্থভরাং পর্ব উপলক্ষে এ ছানে বহু লা দসমাগম হটরা থাকে। র'মচন্দ্রের জন্ম ও ভিরোজার, সীভার রন্ধনশালা, লন্ধপের ছর্গ প্রভৃতি নামে কভকগুলি ছান আছে। ইহার অধিকাংশ গৃহই মুসলমান রাজত কালে নির্মিত বলিরা বোধ হয়। লন্ধণত্রেতে একজন প্রাচীন সাধু আছেন। আমরা ভাঁহার সঙ্গে সাক্ষাৎ করিলাম। ভিনি একজন পঞ্চিত লোক, আহ্মধর্মের সংবাহ বিশেষ রূপ জানেন, আহ্মধর্মের লহ্মণ ও উপাসনাপ্রণালী সহক্ষে নিজেই অনেক কথা উত্থাপন করিলাম। ভাঁহার কথাবার্তা ও ব্যবহারে আমরা প্রীতিলাভ করিলাম।

অপরাক্তে মহেন্দ্রবাবর গৃহে সংক্ষিপ্ত প্রার্থনা, সঙ্গীত ও উপদেশ হয়। ভাই প্রকাশদেব ও কুন্দর সিং কিছু কিছু বলেন। শাস্ত্রী মহাশর গীতার একটা শ্লোক পাঠ করিরা ব্যাথা। করেন। ব্যাথ্যা উপদেশপূর্ণ ও অতি হৃদরগ্রাহী হইরাছিল। পব দিবস অপরাক্তে স্থানীর টাউনহলে শাস্ত্রী মহাশর ইংরাজীতে বক্তা করেন। বক্তৃতার বিষয়—"New India, Her new experiences", বক্তা চিম্ভাপূর্ণ ও হৃদরগ্রাহী হইরাছিল। বক্তৃতার প্রারম্ভে ও শেষে সঙ্গীত হয়। তৎপর ক্রজন ইযুরোপীর মহিলা প্রাচারিকা বক্তৃতার প্রশংসা করিরা বন্ধাকে ধন্তবাদ প্রদান করেন।

আমর। তৎপর দিবস (১লা এপ্রিল) লক্ষ্ণৌ যাত্রা করি। লক্ষ্ণৌ উপস্থিত হটয়া আমাদের বন্ধু শ্রীযুক্ত বাবু বিপিনবিহারী বস্তর গুছে আভিথা গ্রহণ করি। এখানে ভগবদাশ্রম হইতে ভাই শছমনপ্রসাদ আমাদের সঙ্গে মিলিত হন। অপরাফে বিপিন বংবুর গৃছে বাবু ছরিমোছন খোষাল"জগাই মাধাইর উদ্ধার"বিবরে কথকত। করেন। তৎপর দিবদ পূর্বাছে খ্রীষুক্ত বাবু ভূবন-মোহন রায় মহালয়ের গুছে উপাসনা হয়। শাস্ত্রী মহালয় व्याक्तिर्शात कार्या करत्रम । खेनातम व्यक्ति श्रानम्नी हहेग्राहित । অপরাহে, স্থানীর টাউনছলে শাস্ত্রী মহাশর ইংরাজীতে ও ভাই প্রকাশ দেব উর্দৃতে বক্তৃতা করেন। উভয়ের বব্তৃতাই সারগর্ভ ও হাদরগ্রাহী হইয়াছেল। সন্ধার পর বিপিন বাবুরগৃছে উপাদনা হয়। পর্যদিবদ প্রাতে ভগ্বদাশ্রমে (ভাই বছমন প্রদাদের বাসস্থান) উর্দৃতে উপাসনা ও উপদেশ হয়। ভাই প্রকাশদেব আচার্য্যের কার্য্য করেন। স্থানীর করেকটা লোক আগ্রহের সহিত যোগ দিয়াছিলেন। অপরাহে বেলল টুডেন্টেন্ এসো-সিরেশনে শাল্রী মহালয় "যৌবন স্বালই ধর্মসাধনের উপযুক্ত সময়" বিষয়ে বাজালা ভাবায় বক্তৃতা করেন। বক্তা শুনির। नकरणहे चाकुडे बहेग्राहिस्सन।

## ব্রাম্মসমাজ।

ন্বব্রের উৎস্ব—ন্বৰৰ উপলক্ষেণ্ড ৩০ শেও ৩০ শে তৈত্ত এবং ১লা বৈশাধ এই ছিল দিন উৎসব ব্ইয়াছিল। নিমে তাহার সংক্ষিপ্ত বিবৰণ প্রদত্ত হুইল;— ৩০পে চৈত্র মঞ্গবার অপরার ৭ বটিকার সমর বাবু ক্লফ-কুমার মিত্র "প্রশান্তির পরাক্রম" স্বদ্ধে বক্তৃতা প্রশংশ করেন। ক্লফ্রমার। বাবুর শরীর অক্ত থাকার বস্তুতা সংক্রপ্ত হইরাছিল। বক্তা একটা ঐতিহাসিক বটনা অবগ্রম করিয়া অভি ক্লব্ররাপে প্রতিপন্ধ করিয়াছিলেন বে, ধননল, বাহুবল এবং লোক বল প্রভৃতি কোন বলই বিধাভার বিশ্বকার্যের প্রতিয়োধ করিতে পারে না। হর্জার ব্রহ্মশক্তির গতিতে বাধ্া দের কালার সাধা ? সকল অসার, অনিতা, কণধ্বংসী চংগুলভাকে পরাভূত করিয়া ব্রহ্মের অনস্ত শক্তি প্রবাহ অনাছিল কাল হুইতে স্থির প্রবাহিত হুইতেছে। স্বর্ধতা ব্রহ্মের বিশ্বরাধান প্রোথিত হুইরা মঙ্গল ও শান্তি ব্যোধা করিতেছে। মানব সেই মহাশক্তির আশ্রের বাস করিলেই নিরাপদ স্থান লাভ করে।

৩১শে চৈত্র ব্ধবার প্রাতে স কীর্ত্তন ও তৎপর উপাসন। হয়।
বাবু সীতানাণ দত্ত উপাসনা করেন এবং উপদেশ দেন। অপবাহে আলোচনা হয়। উপাসকমগুণীর সম্পাদক বাবু বছুবিহারী বসু কয়েকটী প্রস্তাব উপদ্ধিত করেন। তাঁহার একটী
কথা এই যে, বর্ত্তমান সময়ে আচার্যাগণ মৌধিক উপ্দেশ দিরা
থাকেন। এই উপদেশ যদি তাঁহারা লিখিয়া পাঠ করেন, তবে
নানা বিষয়ে উপাসকমগুলীর উপকার হয়। এ বিষয়ে ও অক্সাক্র
বিষয়ে কিছুক্ষণ আলোচনার পর সভা ভঙ্গ হয়। য়াত্রিতে ৭টার
সময় পুনরার উপাসনা আরম্ভ হয়। বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র
আচার্যায় কর্যায় করেন।

১লা বৈশাধ প্রাতে জীযুক্ত বাবু উমেশচক্স আচাথ্যের কার্য্য করেন। মধ্যাছে বাবু সীতানাপ দত্ত এবং শ্রীযুক্ত নবৰীপচক্ত দাস হিন্দু ও বোদ্ধশাল্প পাঠ করেন। অপরাত্র ৬ ছটিকার পর উপাসন। আবস্ত হয়। এইযুক্ত শহুমন প্রাদাকে সাধারণ ত্রাক্ষসমাজের প্রচারক প্রদ্ গ্রছণ করিবার জক্ত এ সময় নিৰ্দিষ্ট ছিল। প্ৰচাৱক জীযুক্ত নৰ্ছীপ চক্র দাস আচার্য্যের কাষ্য করেন। আচার্য্য রেদী প্রাহণ করিলে, জীগুক্ত লছমন অসাদ ধুবেদীর বান্দিকে কান্তাসনে উপবিষ্ট চইলেন। কার্য্যানর্ব্যাচক সভার সভাগণ এবং অভাত धर्षरक्षुत्रन यभाष्ट्रात्न केमट्रामन कविट्रान भव माधावन व्यक्षम्बाटकव সম্পাদক শ্রীযুক্ত বাবু গুরুচরণ মহলানবিশ মহাশয় বলিলেন ;---"শ্ৰদ্ধান্দৰ ধৰ্মবন্ধুগণ! গ্ৰহ্মপরায়ণ ধৰ্মে(ৎসাহী আমাছিলের শ্রমের ভাতা শ্রীযুক্ত লচমনপ্রসাদ সাধ্যেরণ ব্রাহ্মসমাব্দের প্রচা-तक भाग पुष्ठ बहेबात क्षण हेळू क ब बताएक जाना जानि की हारक আনন্দের সহিত আপনাদিগের নিকট উপস্থিত করিভেছি। অপেনারা ইহার ওড় উদ্দেশ্য সাধ্যের জ্বভ্ত সিদ্ধিদাতা প্রয়ে-খবের রূপা প্রার্থনা করুন।" ভৎপর ব্রন্ধোপাসনা আরম্ভ हरेग। সমবেত প্রার্থনার পর আচার্যা প্রচার-ব্রত-প্রভ্ণারীকে নিম্নিথিত প্রশ্ন করেন এবং ব্রতগ্রহণার্থী নিম্নলিখিত উত্তর দান करव्रन :---

১ম প্রশ্ন — "প্রক্ষের প্রতিঃ, মাল্য ১৩০০ বলালে, ৬৪ ব্রাক্ষ্ সংবতে ১লা বৈশাথে বৃৎস্পতিবাসরে, আপ্রান্ধি সভ্যস্তরণ পর্মেশ্বর ও উপস্থিত ধর্মবন্ধুগণের সমক্ষে যে প্রচার ব্রস্ক প্রবণে অগ্রসর হইরাছেন, ইরাতে আপনি জীবত পরপ্রজের আহ্বান অমুত্র করিয়াছেন কি লা ?"

উত্তর।—"মহান্ প্রভ্র আহ্বানেই আমি, চর্মন এবং অফুগমুক চইরাও, প্রচারকার্যাকে আমার শীবনের ব্রভর্ন প্রহণে অগ্রসর হটরাছি।"

২র প্রান্ন "আপনি কি অনক্তকর্মা ছইয়া, চিরজীবনের জক্ত এট ব্রভ প্রহণ করিভেছেন ?"

ুউন্তর।—"প্রভ্র আক্তাতেই এ কীবন চির্লিনের কর তাহার সেবাতে উৎসর্গ করিয়াছি, এখন তিনিই আমার একমাত্র বল।"

তর প্রশ্ন।—"আপনি কি প্রণাদীতে জীবনে এই পবিত্র ব্রড প্রতিপাদনে ইচ্ছুক চইয়াছেন ?"

উত্তর।—"যাহাতে একমাত্র সভাস্থরপ প্রমেশবের পবিত্র পূলা দেশমধ্যে প্রভিত্তিত হয়, বিশুদ্ধ ধর্মানুমাদিত অস্কান সকল গৃতে গৃতে ও জনসমাজে প্রবিত্তিত হয়, ঈশ্বরের প্রিয়কার্য্য সকল সর্বত্র সমাদৃত ও অসুষ্ঠিত হয়, নরনারীর জীবনে সর্বতাে-ভাবে সভা, ক্লার, প্রেম ও পবিত্রভার মর্যাদা রক্ষিত হয় এবং জনসমাজ বিশুদ্ধ প্রীতিশৃধ্বলে বদ্ধ হইরা ঈশ্বরের প্রেমরাজ্য বিস্তারে এবং ঐহিক ও পারত্রিক কল্যাণ সাধনে সমর্থ হইতে পারে, বাহাতে অসভা, পাপ, কুসংস্কার ও অভ্যাচারের দিন অবসান হয়, নাস্তিকভা ও সংসারাস্তির বিলোপ হয়, জনসমাজ হতৈ হিংসা হেয় অমুদারতা বিবাদ বিসম্বাদ ভিরোহিত হয়, এরপ লক্ষ্য রাথিয়া অভঃ পয়তঃ উপদেশ প্ররোচনা ও দৃষ্টান্ত হারা আমি আমার ব্রত্পালন করিতে প্রস্তুত থাকিব।"

৪র্থ প্রেল্ল।—"আপনি যে মহৎ ব্রস্ত গ্রহণ করিতেছেন, তাহা প্রতিপালনে আপনার পক্ষে কি কি কার্যা নিধিদ্ধ বলিরা অনুভব করেন ৭"

উত্তর ।— "বাকো ও ব্যবহারে পৌত্তলিকতা বা নিরীখতার প্রাপ্তর দিব না। একমাত্র সত্যত্মরূপ ঈশ্বর ভিন্ন অক্স কোন ব্যক্তি কি গ্রন্থকে অভ্রান্ত বা মৃক্তির মৃথ্য উপার বলিরা প্রচার করিব না। সাক্ষাৎ বা পরোক্ষভাবে ঈশ্বর ও মানবান্ধার মধ্যে কিনা প্রকার মধ্যবর্ত্তিতা স্বীকার করিব না। উপদেশ বা অফুঠানে লাতিভেদ কিশ্বা পৌন্তহিত্যাভিমানের প্রভার দিব না। অন্ধ ভক্তি বাদর্শন করিবে ভাহা প্রহণ করিব না। বে সকল সামাজিক অফুঠানে বিবেক বা নীতির অব্যাননা করা হর, ভাহাতে বোগ দিব না। সক্তা প্রচারে রত হইরা অপর কোন ধর্মপান্ত কি ধর্ম সম্প্রান্থর প্রতি উপহাস বা বিজ্ঞাপ প্রদর্শন করিব না। ধর্ম প্রচারকের পদকে অর্জনের ও বৈর্ভ্তি মুণা করি।"

ংম আর।—"পূর্ণান্ধ ধর্মসাধন সম্বন্ধে আপনার মৃত ও বিখাস কি ?"

উত্তর।—"ঈশরের প্রতি প্রীতি ও তাঁহার প্রিরকার্যা সাধন বাজীত আত্মার প্রকৃত বিকাশ হর না। এজন্ত আনি বেমন আরাধনা গ্যান ও প্রার্থনাতে বিশ্বাস করি, নেইরূপ সক্ষ প্রকার অনহিত্তকর ভার্যা ও পরিবাণের উপাধ ব্লিয়া বিশ্বাস করি।" ৬ঠ প্রশ্ন।--- শাণনি এই সাধারণ ব্রাহ্মসমালকে ঈখবের ইচ্ছাপ্রাস্থত বলিয়া বিখাস করেন কি না এবং ইহার নির্যাবণীর ক্লান্তুগত হইয়া চলিতে প্রস্তুত কি না ?"

উত্তর।—"আক্ষণর্ম বাহার ইক্ষাপ্রস্ত, এই সাধারণ আক্ষনমালও জাঁহারই ইক্ষাপ্রস্ত বলিরা বিখাস করি, এবং যথাসাধ্য সকল বিবরে ইহার নিয়মাবলীর ও নির্দেশের অস্থপত হইরা চলিব। ঈশার আমাকে আশীর্মাদ করুন এবং ধর্মকর্পণ আমার এ পথের সহার কউন। "এক্ষরণাহিকেবলস্" এই মন্ত্র আমার জীবনের অবশ্যন হউক।"

क्षत्रस्त्र कांराया এर यत्य देशाम (मन। "धर्म माधन করা ষ্ঠিন কার্য্য, প্রচার করা আরও কঠিন। নিজে পরিত্রাণ লাভ করা এবং অপরের পরিত্তাণের উপার বিধান করাই প্রচারক-बीवत्तत्र खेरमञ्जा विनि नित्य शतिखांन नाल करतन नाहे, ভিনি পৰিতাপের সংবাদ কিরুপে অচার করিবেন ? স্থভরাং প্রচারকের ব্রতের স্থার গুরুতর ব্রত মার কি মাছে ? সাক্ষাৎ সম্বন্ধে ত্ৰহ্মণক্ৰিয় সহিত যুক্ত না হইলে, কেহই এই মহাত্ৰতে স্থ্রপ্রতিষ্ঠিত থাকিতে পারে না। কত লোক ঈশবের সেব। कतिरवन, धर्मक्षिठात कतिरवन, এই মহত্ত क्ष नहेता नाधातन जाकनवारक व्यादम कतिवाहित्यम, भारत मानाविश भनीकांत्र मार्था পতিত হইরা বায়ুতাডিত ধূলিকণার ন্যায় কোথায় অনুশ্র হইয়া গৈলেন। বাহারা ঈশ্বরের নির্দেশ অকুসারে এই ব্রভু গ্রহণ ষ্পরিবেন এবং এই সাধারণ ভ্রাহ্মসমাধ্যে ভ্রন্মের জীব**ন্ত**ণীলা দেখিতে পাইবেন, ভাঁহারাই এখানে ছির ফইরা থাকিতে পারিবেন। আপনি আজ বিশেষভাবে ঈখরের অঙ্গলী-সংহত দর্শন করুন এবং সাধারণ ভ্রাহ্মসমাজ বে তাঁছারই কার্যাকেত, তিনি যে ধর্ম প্রচারার্থ আপনাকে ইবার সহিত যুক্ত করিতেছেন এই বিখাসে অভুপ্রাণিত হট্যা আজীবন এই মহাত্রত পালন করুন। পর্যেশ্ব আপ্নার স্থার হইবেন''।

শ্রীপুক্ত লছমন প্রসাদের বরস প্রার ৪২ বংসর। তাঁহার জন্মহান জ্যোধ্যা প্রদেশে। তিনি এখন লক্ষ্ণে নগরে অবস্থিতি করিরা
প্রচার করিতেছেন। তিনি ইংরাজি জ্যারন শেষ করিরা
সামরিক বিভাগে ১০০ টাকা বেতনে কোনও কার্য্যে নিযুক্ত
হন। প্রার ১২ বংসর কাল এই কার্য্য শ্রতি লক্ষতার সহিত
সম্পাদন করেন। বলা বাছলা কিছুদিন গত হইলেই পেন্সনের
সমর হইত; ক্তি ভিনি আর কার্য্যে থাকিতে পারিলেন না।
কার্য্য পরিত্যাগ করিরা আক্ষধর্ম প্রচারে জীবন উৎসর্ম করিশেন। আদ্য ৮ বংসর যাবং সাধারণ আক্ষমমান্দের সহিত যুক্ত
হইরা প্রচার করিতেছেন। এবার তিনি প্রচারক-ব্রত প্রহণ
করিলেন। পরমেশ্র ইহাকে ব্রতে স্কুল্ রাখুন।

সাধনাশ্রম— > লা বৈশাথ প্রাতে মলিরের উপাসনার পর, নাধনাশ্রমে বিশেব উপাসনা হর, বারু মহেজনাথ চট্টো-পাধ্যার আচার্টোর কার্য করেন, বারু গুরুদাস চক্রবর্তী ও বারু কানীচজ্র বোবাল নির্নিখিত মর্ম্মে কিছু কিছু বলেন এবং প্রার্থিন। করেন। শিক্ষা সাধনাশ্রমের ক্রার্থিন। গত বংসর এই দিনে চ্ইকন রাত্র পরিচারক অত গ্রহণ করিয়াছিলেন, আফ

প্রায় ১৫ জন হইরাছেন। বাঁচাদের চন্ত্রপক্ষে বিশিল্প ব্যক্ত পি বিশ্বাস, বৈরাগ্য, সেবা এবং বিনয় ও ভজিত ভাব শিক্ষা করিতে পারেন, এমন পৃষ্ণাপান ব্যাজ্যেষ্ঠ সাধকগা বােগলান করিরা ইহার গান্তীর্য ও সাধুল্টান্তের শক্তি পৃত্তি করিরাছেন। এই এক বৎসরে প্রভূ প্রমেশ্বর বিশেষ ভাবে, আশ্রমবাসীগণের প্রতি তাঁহার কপাবারি বর্বণ করিরাছেন। অর্থাভাবের সমর আশ্রেরাজনে অর্থ প্রেরণ করিরাছেন এবং সাধন ভজন ও সাধু সহবাস এবং জানালোচনার স্থান্ধা করিরা দিরাছেন। এ সকল কথা শ্বরণ করিরা আশ্রমবাসীগণ, আজ্ব ক্তজ্জচিতে সর্কাসিদিদাতা প্রমেশ্বরকে বন্ধবাদ প্রদান করিতেন্দ্রন্থ।

শ্রাদ্ধি—কর্ণ ওরালিশ ট্রাটন্থ বাবু দেবীপ্রসার রার চৌধুরীর ভবনে গত ৪ঠা বৈশাথ পরলোকগতা ভগিনী নিত্তিনী চট্টো-পাধ্যারের আদ্যপ্রাদ্ধ হইরাছে। প্রীযুক্ত নবহীপচক্ত দাস আচার্য্যের কার্য্য করেন। প্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্ত দত্ত প্রার্থনা করেন এবং বাবু দেবীপ্রসার রার চৌধুরী এবং বাবু কানীচক্ত ঘোষাল স্বর্গারা ভারীর জীবনচরিত সম্বন্ধে কিছু কিছু বলেন ও প্রার্থনা করেন। পরমেশ্বর পরলোকগত আত্মাকে শান্তিদান করেন।

দান—বাবু ক্ষেত্রমোহন চন্দের স্বধ্রিণী ডাক্টারী পরী:
কার উত্তীর্ণ হওরার, পারিবারিক উপাসনা হর। এতত্পলক্ষে
তিনি সাধনাশ্রমে এক টাকা দান করিয়াছেন। শ্রীমতী জগলংললী
বোষ সা: বা: সমাজ প্রচার বিভাগে ৬ টাকা ও খাসিয়া প্রচারে
১ টাকা; বাবু গিরিশচন্দ্র কাঞ্জিলাল বার্বিক পিতৃ প্রাছোপলক্ষে প্রচার বিভাগে ১ টাকা; বাবু ভ্রনমোহন ঘোষ বার্বিক
মাতৃশ্রাছোপলক্ষে ব্রাহ্মসমাজ ফপ্তে ২॥০ টাকা এবং কটকের
বাবু মধুস্দন রাও তাঁহার প্রথম প্রের নামকরণ উপলক্ষে
থাসিয়া মিসন কপ্তে ৫ টাকা দান করিয়াছেন। আমরা
দাতাদিগকে ধঞ্চবাদ দিতেছি।

ছাত্রসমাজ—০রা বৈশাধ শনিবার ছাত্রসমাজ বাবু হেরম্বচক্র মৈত্র "ধর্মজীবনের দায়িছ" বিষয়ে ইংরাজীতে বক্তৃতা করেন, এবং গত ১০ই বৈশাধ শনিবার গ্রীয়ের ছুট উপলক্ষে বিদারস্কাক বিশেষ উপাসনা হর, তাছাতে প্রীযুক্ত নবছীপচক্র দাস আচার্য্যের কার্যা করেন। বাবু শালীশক্ষর স্থকুল এবং বাবু কৃষ্ণকুষার মিত্র বক্তৃতা করেন। গ্রীয়ের বদ্ধে বিদেশীর ছাত্রগণ বাড়ী গমন করেন বলিরা প্রতি বৎসরই এ সমর ছাত্রসমাজের ভার্যা বন্ধ থাকে।

উৎস্ব-খলিলপুর হইতে যাবু ঈশরচন্ত্র নাথ লিখিবাছেন;—"ধলিলপুর বাক্সমাজের অটম সাধংসরিক ব্রন্ধাংস্ব উপলক্ষে ধানধানাপুরের বাবু বৈকুঠনাথ দাস, বাবু
বলনীকান্ত সরকার এবং আমি উপাস্ত্রার কার্যান্ত্র সংলাদন
ক্রিয়াছি। শোলাকুত্রা নিবাসী বাবু বারকানাথ বোল মহাশর
সমবেত লোকসঞ্জীর সহিত ধর্মানোচনা এবং একসির

ৰজ্জা প্ৰদান করিছাছিলেন। ১৯এ তৈতা রবিবার পর্যান্ত তিন দিন উৎসব হইরাছিল। এই উৎসবে হিন্দু আতৃগণ ও উৎসালের সহিত বোগদান করিরাছিলেন। প্রাজিদিন ছই বেলা প্রায় ৩০।৩৫ জন লোক উপাসনাদিতে বোগদান করিতেন। ২১শে তৈতা রবিবার অপরাছে সমাজগৃহ হইতে কীর্তনক্ল বাহির হয়। কীর্ত্তন করিতে সকলে বাজারে উপস্থিত হইলে, বায়কানাথ বাবু তৎকালোচিত বজ্জা করেন। বজ্জা সারগর্জ ও শ্রোড় মঙালীর ক্ষরশার্শী হইয়াছিল।"

মহিলাসমাজের উৎসব—লিণং হইতে নাবু কামিনী-কুমার ঘোষ লিখিরাছেন ;—"পর্যবেশরের রূপার নিয়লিণিত প্রণালীতে লিলং মহিলাসমাজের বাৎসরিক উৎসব সম্পার হইবাছে। ১৫ই চৈত্র সোমবার বাবু নবগোপাল দক্ত মহালহের বাড়ীতে মধ্যাহে উপাসনা কর, শ্রীমতী সারদামপুরী দক্ত আচার্যোর কার্য্য করেন। ১৬ই চৈত্র মঙ্গলবার বাবু সীতানাগ দক্ত মহালরের বাসার পাঠ ও উপাসনা কর, শ্রীমতী প্রিরহণা সেন পাঠ ও উপাসনা করেন। ১৭ই চৈত্র বুধবার লাবান উপাসনা মন্দিরে মধ্যাহে পাঠ ও উপাসনা হয়, শ্রীমতী সারদামপুরী দক্ত রচনা পাঠ করেন এবং শ্রীমতী প্রিরহণা সেন উপাসনা করেন।"

বাবু কালীপ্রাসন্ধ বস্তু মহালায়ের কার্য্যবিবরণ—৯ই একেল রবিবার থানাথানাপুর ছানীর ক্লের শিক্ষ বাবু বাননচন্দ্র মহুদার ও বৈকুঠচন্দ্র দাস মহালায়ের বাসার প্রাতে পারিবারিক উপাসনা ও আলোচনা। সারাহে সামাজিক উপাসনা ও উপদেশ। ১৬ই শনিবার—ঐ সকল বাসার পারিবারিক উপাসনা। ১৬ই রবিবার—প্রাতে পারিবারিক উপাসনা, অপরাহে খানথানা-পুর ছাজসমাজের বাৎসন্ধিক সন্মিশনে সভাপতির কার্য্য করেন। ১৭ই সোমবার—বন্ধুবর উমেশচন্দ্র নাগ ও বাবু চন্দ্রনাথ সাহার সহিত একত্র উপাসনা ও আলোচনা করেন।

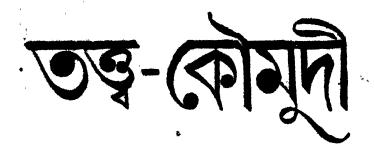
প্রম সংশোধন |—গচ বারের তথকৌমুনীতে ব্রাহ্মসমাল কলমে নিত্তিনী চট্টোপাধ্যারের মৃত্যুনিন "৬ই মার্চ্চ" ছলে "৬ই এপ্রেল" ও "হানীয় প্রচারক দল" হলে "হানীয় প্রচারনল" থবং দান প্রাপ্তি বীকারের মধ্যে "কে, সি, এও কোং" হলে "মিঃ, কে, সি, এওা" এবং "শ্রীষ্ঠী ঘামিনী ঘোষাল" হলে "শ্রীযুক্ত যামিনী ঘোষাল" হইবে।

## বিজ্ঞাপন।

সাধারণ প্রাক্ষসমাজের আর্থিক অবস্থা বড় মক। ইহার আর অপেকা ব্যর অধিক হইরাছে। কি প্রকারে কিছু আর বৃদ্ধি হর, আমরা সে বিবরে চিন্তা করিছে। ইহার সভ্য মরেলরগণ যদি কিছু কিছু চাঁদা রক্তি করিরা দেন, ভাহা হইলে যথেই উপকার করা হর। কিছু সমাজের চাঁদা এবং ভর্কৌমুদী, মেসেঞ্জার ও প্রক হিসাবে এত টাকা বাকী পড়িরা রহিয়াছে বে, সেই সকল বাকী আদার করা স্কার্থি কর্ত্তন্য। অভ এব আমাদিগের বিনীত নিবেদন এই বে, সভ্য ও প্রাক্ত মহোদরগণ অনুপ্রহ পূর্বিক বত লীয় পারেন এই সমস্ত বাক্তি শোধ করিয়া এবং সমাজের আর বৃদ্ধি সম্বন্ধে বিশেব চেটা করিয়া বাধিত করিবন।

সাঃ বাঃ সমাজ কার্যালয়
২১১নং কর্ণভয়ালিস ট্রাট,
কলিকাতা,২৬শে মার্চ, ১৮৯৩

শ্রীক্ষোরনাথ মুথোপাধ্যার।
• সহকারী সম্পাদক
সাঃ বাঃ সমাজ।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পান্ধিক পত্রিকা ।

২৩ সংখ্যা। ১৬ ভাগ।

>শা জ্যৈষ্ঠ রবিবার, ১৮১৫ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাৎসরিক অগ্রিম মৃশ্য ২॥• মফস্বলে ৩১ প্রতি খণ্ডের মৃল্য ৮৭

वन्मना ।

ভোষারি রচনা, হে জগ-কারণ,
দৃশ্য অদৃশ্য এ অগণ্য ড্বন;
ভোষার জ্যোভিতে বিশ্ব জ্যোভির্ম্মর,
ভোষার শক্তিতে স্টে স্থিতি লম;
এক অধিতীয় অক্ষর অবিনাশী,
কোটী রূপে বিশ্বে আপনা প্রকাশি',
বহিরাহু স্টে ডব ক্রোড়ে ক'রে;
অর জয় জয় জয় লগনীশ হরে।

তে শীষ নিমাৰে বিশাল গগন, তোমারি মহিমা করিছে কীর্ত্তন ! ভরব উল্লাসে হরে উচ্চ্ সিত, ভৈরব গর্জনে সিদ্ধু গাহে গীত ! জ্যোতির্দ্ধর বৈভব কোটা চক্ত তারা, মহিমা বন্দনে সবে মাতোরারা! ধ্বনিছে সজীত সদা সমন্বরে; জয় জয় জয় জগদীশ হরে।

শ্বসীম প্রতাপে তুমি তে রাজন্!
সর্ক চরাচর করিছ শাসন;
নেহারি তোমার ইছোর ইলিড,
হাবর জলম হর বে গুন্তিত!
শব্ত তারকা কোটা চন্দ্র ভাত্ন,
চরণে চাহিরা সবে নভ জাত্ন!
নমিছে কভক্ত প্রেম ভক্তি ভরে;
শব্ব জর কর জগদীশ হরে।

এ লোক আশ্রন্ধ, পরলোক গতি,
আনারি অনত বিভূ বিখপতি;
পূর্ণ, পরাংগর, মলল-হেড়,
সংলার অর্গবে ভূষি মহা সেড়;
হুদরে হুদরে শ্রতিমা ভোমারি,
ও পদ পূজিরা বস্ত নর্নারী,

ভক্তি প্রোমোচ্ছ্যাসে বিশ্ব গৈছে ভরে ; কর কর কাণীশ হরে।

# স্ক দকীয় মন্তব্য।

্ক্তকে ঘনীভূত করিবার উপায় কি ?-- আহ্মবর্ণ মাজিক ধর্ম। সামাজিক ধর্ম ইইতে পেলেই ইছাকে ন্যা জন্ন পাপভাপের সহিত সংগ্রাম করিতে ছটবে। জগতের গাপ ভাগের সহিত সংগ্রাম করিছে গেলেই ভদ্নপূর্ণ বল চাই। বছ দিনের সঞ্চিত পাপরালির স্থিত সংগ্রাম করা কিরুপ শ্রমসাপেক ও ভারতে ক্ত বলের প্রয়োজন ভাহা আমরা প্রতিনিরত লক্ষ্য করিতেছি। ব্ৰাহ্মণৰ ব্ৰাহ্মসমাজকৈ কিন্নপ দেখিতে চান ? ব্ৰাহ্মসমাজ এकी कीन कुर्वन ७ मक्तिकीन मन क्हेब्रा बहिब्राष्ट्र, কেছ কথা শোনে না, প্রচারে শক্তিনাই, পাপের সহিত সংগ্রাম করিবার ক্ষমতা নাই; ইহার অধিকাংশ সভ্য-গণ বিষ্যুত্থে রত, অত্থপরতত্ত ও উৎসাহহীন, এরপ দেখিতে চান ? অধ্বা ব্ৰাহ্মসমাজ ভাগ্ৰত ও জীবস্ত मिक्किद्राल कार्या कविष्ठाह, मान मान शालीत क्षम श्रीवर्श्वन করিরা দিতেছে, বছ দিনের পাপরাশি উন্মূলন করিভেছে, সভা ধর্মের শক্তি সর্ব্বঅ বিকীর্ণ হইতেছে, এরপ দেখিতে চান ? অধিকাংশ ব্ৰাদ্ধ ব্যেষ হয় বলিবেন, আময়া ব্ৰাদ্ধসমাজকে কাগ্ৰত ও कीवन्त मक्तिकाल मिथिए हारे। किन्न अन वरे, बाक्रमान জাগ্রত শক্তিরূপ ধারণ করিবে কিরূপে? কোন্সাধনাতে **(महे मक्ति चानिरव ? हेहात उँउरत चामता यनि--"धहे** चामारात्र बाक्सभर्त, राम्स बाक्सर्यत चामर्ग रकमन केल, देशाव नौ जि त्क्यन सह९ विवश हो १ कांत्र कतिश विज्ञहिल हहेरव না। অস্তঃ কমেকজন হেতিজা করিয়া বদ, বে আমরা बाष्प्रभन कीवरम शावन कदिव। वधन छाहा कीवरन जाविछ हरेरव, छथन (लार्क् प्रथिव बाक्सर्य कांशरक वरन, धवः छथनि देशांत्र मंक्ति आशिरवः। त्करण छेशांतर्भ यवि मानव क्षत्र शक्ति বর্ত্তিভ হইত, ভাহা হুইলে শাস্ত্রে এত সহুপদেশ থাকিতে কেলের

এত ছুর্গতি হইত না। কেতাবের উপদেশ জীবনে ফলাইতে হইবে। অতএব ব্রাহ্মসালের একটা সাধনক্ষেত্র চাই, বেধানে থাকিরা ব্রাহ্মসাধকগণ নিবিষ্টচিন্তে ব্রাহ্মধর্ম সাধন করিবেন। বলা বাহুল্য যে, এই সারপেই ব্রাহ্মসাধনাশ্রম বা Brahmo Workers' Shelter স্থাপিত হইরাছে। ব্রাহ্মসমাজের শক্তিকে ঘনীভূত ও বর্দ্ধিত করা ইহার প্রধান উদ্দেশ্য। সেই শক্তিকে ঘনীভূত করিতে পারিলে, তবে আমরা দেশের বহুদিনের সঞ্চিত্ত গণিরাশির সহিত সংগ্রাম করিতে সমর্থ্যহুইব। ঈশর করুন, সাধনশ্রম হারা এই মহুৎ উদ্দেশ্য সাধিত হউক।

কুপাসিদ্ধ ও সাধনসিদ্ধ-পৃথিবীতে ছই শ্রেণীর ধনী দুষ্ট হয়। কভকগুলি শোক উত্তরাধিকারী পুত্রে প্রচুর বিভব ও ঐশর্বোর অধিকারী হইরাছেন, অথবা হঠাৎ কোনও কারণে সম্পদ তাঁহাদের হস্তগত হইরাছে। के मन्मम हिमा-র্জন করিতে এক সমরে যথেষ্ট শ্রম করিতে হইরাছিল, ভাহাতে मत्नर नारे; किंद्ध (म अम जी धन मामाजित वर्षमान अधिकाती-দিগকে করিতে হয় নাই। তাঁহাদের পিতা পিতামহ প্রভৃতি প্রকলন বা অপর কেহ করিয়াছিলেন। তাঁছারা বিনা শ্রমে পাইরাছেন এবং অর আরাসে বর্দ্ধিত করিরাছেন। ইচারা প্রথমোক্ত শ্রেণীর ধনী : ছিতীয় শ্রেণীর ধনী অন্ত প্রকারের। তাঁহারা স্থনামা পুরুষ ; নিজ পরিশ্রম, মিডব্যব্রিতা প্রভৃতি গুণে প্রচুর সম্পত্তি সঞ্চর করিয়াছেন। এইরূপে এই জগতে লক লক্ষ লোক প্রতিদিন ব্যবসায় বাণিজ্ঞা প্রভৃতিব ছারা বিভবশালী হইতেছেন। নিতা নিতা তাঁহাদের হস্ত দিল্ল'ক্ত অর্থ আর কত অর্থ বাস হইয়া যাইতেছে; কিন্তু একটা বিষয়ে তাঁহারা অত্যন্ত মনোযোগী। মূলধনের প্রতি তাঁছাদের সর্বদা স্জ্ঞা দৃষ্টি। সমুদায় আয় ব্যয়ের মধ্যে গড়ের উপরে মূলধন বাড়ি-তেছে কি কমিতেছে, তাঁহারা সকলা তাহা অনুসন্ধান করিলা থাকেন। এজন্ত বুদ্ধিমান ব্যবসাধী মাত্রেই আন্ধ ব্যৱের হিসাব প্রতিদিন মনোযোগ পূর্বাক রক্ষা করিয়া থাকেন। এবিষয়ে কত কৌতুককর গল্প প্রচলিত আছে। এক প্রসার গড়মিশ মিটাইবার জয় পাঁচ প্রসার তৈল বার হয়, य (माकानमात (कवन (माकान श्रृं निम्न) वित्र পাকে, কেবল জব্য সামগ্রী আনিতেছে ও বেচিতেছে, কিন্ত हिशाव निकारभन्न निरक मृष्टि नारे, मूनधन वाष्ट्रिक्ट कि किन-**उट्ट (म विश्वास मानार्याश नाहे, जाहात कुर्मना खताब पछिवा** थाटक। वतात्र (म अगजारन कड़िक इहेत्रा मृन्धन हहेरक विकिक হয়। পৃথিবীতে ধনসঞ্য নিতাস্ত সতক্তা মিতবারিতা ও আত্মপরীক্ষার কর্ম।

ধনসঞ্চয়ের স্থান ধর্মসাধন বিষয়েও তৃই শ্রেণী দৃষ্ট হর,
ক্রুপাসিদ্ধ ও সাধনসিদ্ধ। বাঁহার। কুপাসিদ্ধ তাঁহারা যেন হঠাৎ
কোনও গুপুধনের অধিকারী ক্রুরাছেন। সৌভাগ্যক্রমে
কোনও সাধু সঙ্গ মিলিরা বাওরাতে তাহাদের হৃদর পরিবর্তিত
হইরাছে, ও অস্তরে এত ধর্মবেল লাভ ক্রিরাছেন, যে তাহা
তাঁহাদের চিরলীবনের স্থল হইরা সিরাছে। কোনও কোনও
স্মরে স্থারের কুপাবারি প্রবল অল্লোভের স্থার আসিরা

मामव प्रस्ताः व्यादमं करतः। ताहे व्यादम व्यारक मास्याक ভাসাইরা লইরা বার। রাহা অপর সময়ে ছংসাধা ছিল ভাহা এই কুণাল্রোভের প্রভাবে স্থুনাধ্য হইরা বার। কিন্তু এরুণ সাধুসক ও কক্ণাস্থোত সকল কীবনে ও সকল সময়ে মিশে मा। अधिकाश्य मानवरक नाधरनत बाता धर्याकीवनरक गठेन ক্রিভে হয়। এই সাধনকে তপন্তা বলা যাইতে পারে। তপক্তাৰলিলে কুছে,সাধন বুঝিভে ছইবেনা; শরীরকে যম, निवम. छेनवानामित बावा खश्च ख भीर्ग कदा वृश्विष्ठ हरेरव मा ; शीरा शक्क जभा ह बता ७ मीरज ज्याक के जाता निमय हरे वा है है-দেবভার নাম করা বৃঝিতে হইবে না; কিন্তু ভপস্তার অর্থ धर्मकोवन गर्रामन উদ্দেশ্তে বৈশ্বাগ্য ও সংঘদের বারা আত্ম-শাসন कता। এই आञ्च-भामन आञ्चभत्रीका-मारभकः। (य छेक উत्क-अरक मृत्रधन चत्रभ मञ्जूष दांथा शिद्राष्ट्र, तम विवयं कि भदि-मार्ग উन्नजि हरेएज्ड, जाहा नर्समा चारनाहनीत । वाक्तिगज कीवत्न (एक्रभ, मामाक्षिक कोवत्न (महेक्रभ। माधावन दाक-সমাজের বয়: क्रम (य পঞ্চদশ বৎসরের অধিক ছইতে চলিল, आमारित हिला कतिया रिष्ध दिहिल, इंशा देह आमिन কতদূর সাধিত হইয়াছে বা হইতেছে।

রাণারের ডাক-এদেশে রেলওমে প্রবর্ত্তিত হইবার পূর্বের রাণারের বারা ডাকের চিঠা প্রেরণ করা হইত। এখন ও অনেক স্থানে রাণারগণ ডাক বছন করিয়া থাকে। প্রত্যেক তিন কি চারি মাইল অস্তর রাণারদিগের এক একটা আড্ডা शास्त्र। এकमन त्रानात छाक नहेशा (मोड़िएक शास्त्र, आप একদল রাণার যথাসময়ে আড্ডাতে প্রস্তুত হইরা বসিয়া থাকে। (यहे अथरमाक मन उर्नाञ्च रव. वर जाननारम्य करकत त्वासा नामारेश (मन्न अमनि आत्र এक मन उरक्षार (मरे (वासा ऋतः তুলিয়া লীয় এবং দৌড়িতে আয়ম্ভ করে। এইরূপে ডাক যথাসময়ে স্বীয় গন্তব্য স্থানে উপস্থিত হটরা থাকে। দেশের মানসিক বা আধ্যাত্মিক উরতিও এই রাণারের ডাকের ক্সায়। যে দেশে এক শ্রেণীর লোক ক্ষরের বোঝা নামাইবামাত্র আর একদল সেই ভার কল্পে ভলিয়া লইবার জল্প প্রস্তুত, সেই (मामत खेत्र कि कावार का काता थारक। किन्द्र (यथारन आकाम कृती लाक अञ्चित्र हरेला छाहात्मत्र कार्या छात्र चीत्र चीत्र ক্ষে লইবার জন্ত অপর কোনও দল প্রস্তুত দেখা যার না, সে দেশের উন্নতির প্রোভ ছরার বন্ধ হইয়া যার। আমাদের দেশের সেই প্রকার অবন্ধা দেখিতেছি। একদল রুভী লোক অন্তর্ভিড इहेरण ठाहारमंत्र हाम व्यक्षिमात्र कतियात (लाक राम्धा वाहरक एक न। कि बाजनीर्छिविভाগে, कि निका विভাগে, कि नामा-जिक अ आधाश्चिक कार्या नसंख्ये এই इर्फ्ना पृष्टे इटेएडहि ! এক কৃষ্ণদাস পাণ অন্তর্হিত হইলেন, তাঁহার স্থান অধিকার क्ति वात्र (नाक्नाहे; अक पाकांत्र ब्राह्मकाना मिख (शानन, তাঁহার হানাভিষিক্ত হইবার কেহ নাই; এক কেশবচক্ত সেন গেলেন, তাঁচার ভার বহন করিবার উপযুক্ত আর কাহাকেও পাওরা গেল না; সৃক্ষিত্রই এই ছুদ্দা। সাধারণ আক্ষুসমালের পঞ্চল জন্মেৎসৰ উপস্থিত ; ইহার স্ভাগণ একবার বিবেচনা

कक्रम, डीहासित नमास्क्रिय कार्या ७ व्यक्तिस कार्या नम्किलकरण চালাইবার উপযুক্ত লোক কিরাপ প্রস্তুত হইতেছে। ইবার প্রচারক সংখ্যা দিন দিস বর্ষিত না হইরা ছাস প্রাপ্ত হইরাছে। অপরাপন্ন বিভাগেও কার্ব্য করিবার উপযুক্ত কৃতী লোকের সংখ্যা বৰ্দ্ধিত হইতে দেখা যাইতেছে না। প্ৰশ্ন এই, বৰ্জমান সমন্ধে কার্যাভার বাঁচাদের উপরে ক্লন্ত রহিয়াছে তাঁছারা বধন অন্ত-ৰ্ফিত চটবেন, তথন কোনু দল ভাঁছাদের কাৰ্য্যভাৱ মন্তকে গ্রহণ করিবেন ? এবং এক্নপ লোক প্রস্তুত করিবার জক্ত সাধারণ বীধ্রসমাজ কি উপার অবলয়ন করিরাছেন ? আমরা কোনও প্রকারে উপস্থিত কার্য্যটা চালাইরা দিতেছি, কিন্তু মান্ন্য প্রস্তুত করিবার জন্ত বিশেব উপার অবলম্বন করিতেছি না। মাত্র প্রস্তুত হওয়া না হওয়া অনেকটা শিক্ষা প্রণালীর উপরে নির্ভয় करत । आमारनत (व উৎসাহী, कार्यानक ও अञ्जाती शुक्त ও মহিলার অপ্রতুল আছে, অথবা শিক্ষাও উন্নতির অবসর ও সুবিধার অভাব আছে তাহা নহে; কিন্তু তাঁহাদের শক্তি সকলকে সমবেত করিয়া শিক্ষিত ও উন্নত করিবার উপযুক্ত बक्तावछ नाहे, এवः म्हात्र कतिए भारतन अक्रम শক্তিশালী পুরুষও নাই। এইজন্ত আমানের ছর্কল্ডা রহিয়া যাইতেছে, আমরা কার্য্যের বিস্তৃতির দিকে যত মনোযোগ দিতেছি, স্থারিত্বের দিকে তত মনোযোগী হইতেছি না।

প্রচার কার্য্যের বিস্তৃতি ও গভীরত।— বিগত করেক বংসর হইতে যে ভাবে সাধারণ ত্রাক্ষসমান্তের প্রচার কার্য্য চলিতেছে তাহা এই :--দেশের ভিন্ন ভিন্ন স্থানে যে স্কল ব্রাদ্ধ-সমাজ আছে, তাহাদের সভাগণ উৎসব বা অফুঠানাদির সমঙ্কে সাধারণ ত্রাহ্মসমান্দের কার্যানির্বাহক সভার নিকটে প্রচারক চাহিয়া পাঠাইয়াছেন; সেই নিমল্লণ রক্ষা করিবার জন্ত কার্যা-নির্বাহক সভা প্রচারকদিগকে প্রেরণ করিরাছেন। মহাশরগণ ভত্পদকে ষ্থাষাধা অপরাপর সমাজও পরিদর্শন করিরাছেন। এইরূপে আমাদের যে কতিপর প্রচারক আছেন তাঁহাদের অধিকাংশই নানাস্থানে ঘুরিয়া বেড়াইয়াছেন, কালাকেও মানুষ প্রান্তত করিবাব জয় কলিকাডাতে হায়ী-রূপে রাখিবার বন্দোবত্ত করা হর নাই। ইহার ফল এই হটরাছে, যে পরিমাণে প্রচার কার্য্যের বিস্তৃতি দেখা যাইতেছে দেই পরিমাণে গভীরতাও হারিছ দৃট হর না। পঞ্চদশ বংসরে ছিমালর কইতে কুমারিকা পর্যান্ত ব্রাহ্মধর্ম্মের কথা ছড়াইতে গিরা আট জন প্রচারকের চারি জনকে ছাড়ান ভাল হইরাছে; ना, এই शक्षमण वरमत्र कान घट कनरक कनिकालार आवद রাধিয়া আট জন প্রচারকের ছলে কুজি জন প্রচারক করিতে পারিশে ভাল হইত ? বীও ছাদশ জন মামুব প্রস্তুত করিয়া निया शियादकन. ভাছাতেই জগৎ পরিবর্ত্তিভ হইরাছে। মহত্মণ চারিজন থলিকা ছাড়িয়া দিয়া গিয়াছিলেন, তাঁহারাই পৃথিবী काँभारेबाएसन ; हेडडड, निकानक, खीराम, ज्ञभ मनाजन, প্ৰভৃতি কতিপর মাতৃৰ প্ৰস্তুত করিয়া রাখিয়া গিরাছিলেন **छारार्छ्डे रतिनाम यहारायत यदत पात कीर्विछ रहेत्रारछ।** न्मवितिक दिन्या यात्र, थिरबार्डात्र भाकारवित्र स्नात्र रहन्यी भूक्य

चित्र हरेशा वनिरामन ना, माध्य धांचल कतियार विराम मरमार्य भी क्टेरनम ना, टकरन मानच-व्यथा ७ डेनधर्मात व्यक्तिया कतिया অধিকাংশ সমন্ত রেলওরে গাড়ী ও হোটেলে বাপন করিলেন। ভার ফল এই হইল বে, তাঁহার কার্ব্য চালাইবার অক তাঁহার পরবর্ত্তী কেন্দ্রই রহিল না এবং তাঁহার প্রতিষ্ঠিত উপাসক-মণ্ডলী क्रमणः हीन ७ कोन इटेब्रा अवर्णाय विश्व २।० वर्गत इटेन हैकैनिटिविवान मध्येमावकुक रहेवा त्रन। आमित्रका म्हान धर्मात्र (य এक माख विकास निभान हिन, छाहां ख विनुर्ध हरेसा পেল। অভএব বলিভেছি, সাধারণ ব্রাহ্মসমাব্দের সভাগণ ধর্মসাধন ও ধর্মপ্রচারের বিস্তৃতি অপেকা গভীরভা ও স্থান্থিদের দিকে অধিক মনোযোগী কউন। উপরে উপরে ধর্মের কথা ছড়াইরা সম্ভূষ্ট না হইরা মাতুব প্রস্তুত করিবারু জ্ঞ ব্যপ্ত হউন। ঈশ্বর-কুপাতে সাধনাশ্রম নামে যে আশ্রম প্রতিষ্ঠিত হইরাছে, তাহার উদ্দেশ্ক এই, ধর্মদীবনের গভীরতা ও স্থারিত্ব বিধান করা এবং ব্রাক্ষসমাজের ভাবী কার্ব্যের জন্য ব্ৰাহ্ম-সাধারণ অপ্রেমের এই লক্ষ্য মানুষ প্রস্তুত করা। সাধনে সহার হউন। धकना यमि आयामित धीठावक মহাশ্রদিগের মধ্যে কাহাকেও কিছু দিনের জন্য ছারিরপে আৰম্ভ রাখিতে হর তাহাও বাহনীর।

द्यांक्रमभारक नातीमिकि-दाक्रममब धानत्म करनक শ্রেণীর লোকের পক্ষে আশার বাণী আনিরাছেন। অনেক विवास स्वयहर পরিবর্ত্তন ঘটাইয়াছেন ও পরে আরও ঘটাইবেন। কিন্তু ভারতীর নারীগণের অবস্থার উর্ভি বিষয়ে ব্রাশ্বসমাজ যাহা ক্রিরাছেন ও ভবিষাতে আরও ক্রিবেন তাহা অপরাপর বিভাগের কার্য্য অপেকা কোন অংশে ন্যুন নহে। ব্রাহ্মছিল।-গণ আক্ষসমান্তের প্রসাদে শিক্ষা ও স্বাধীনতার সুখ সস্ভোগ করিতেছেন, পারিবারিক স্থথ ও শাস্তির অধিকারিণী হইয়াছেন. গৃহে ও সমাজে প্রতিষ্ঠা লাভ করিরাছেন। স্থতরাং তাঁহারা ব্রাহ্মসমাজের নিক্ট বিশেষভাবে ঋণী। দেখিতে দেখিতে ব্রাহ্মসমাজ মধ্যে পবিত্রচরিত্রা, স্থানিক্রিতা ও ধর্মানুরাগিণী রমণীর সংখ্যা বর্দ্ধিত হইতেছে। একণে একমাত্র কলিকাতার ত্রাহ্ম-ছাত্রীনিবাসেই প্রায় চল্লিলটি বালিকা বাস করিয়া ষ্ণা-বিধি শিক্ষা লাভ করিতেছে। এই সংখ্যা দিন দিন বৃদ্ধিত हहेत, हान हहेवाब मञ्चावना (मधा यात्र ना। किन्न अन वहे. ব্রাক্ষসমাজ এই নারীপজিকে বর্দ্ধিত ও নিজের এবং জনসম্বা-জের সেবাতে নিযুক্ত করিবার কি উপায় করিতেছেন? বর্তমান সমরে যে সকল কার্য্যের ভার পুরুষদিগের হল্তে ভাত্ত त्रहिशाष्ट्र, छारात्र व्यानकश्विन नात्रीमिशात रुख शाकित्न छे करे-তর ফল ফলিতে পারে। যে সকল কার্য্যক্রে পুরুষের পদা-প্ৰ করা আশহাজনক, সেধানে নারীগণ অবাধে বিচরণ করিতে পারেন। কিন্তু সে সকল কার্ব্যের ভার লইবার উপযুক্ত মহিলা কৈ ? আবার বাঁহারা আছেন উচাদিগকে কার্ব্যে লাগাইবার উপযুক্ত উপায়ই বা কি আছে ? আময়া পূর্ব্বে বলিয়াছি এবং আবার বঁলিডেছি, বে বর্তমান কর্বে আল্লসমাজের নারীশক্তিকে नवरवछ ७ वर्षिण कत्रिवीत छैनात्र विशान कृता कर्छवा ।

প্রশংসা ব্যাধি-ব্যাধি নানাপ্রকার। মাত্র বধন আছ-औजित्त चन्न दरेना भन्नकोत्र श्वभन्नामि नर्गम चनिक्क दन्न, সংকীৰ্ণতার সীমা বধন অত্যন্ত বৰ্দ্ধিত হইরা দৃষ্টিকে ক্ষুদ্র স্থানে আবদ্ধ রাথে এবং অপরের গুণ দর্শনে আক্ষম করে, তথন গে সারাত্মক ব্যাধিগ্রন্ত হইরা আপনার সমূহ অনিষ্ট সাধ্য করে। এ প্রকার ব্যাধি অতি ভরানক ব্যাধি। । এই ব্যাধি মানবের সর্বপ্রকার উরতির প্রতিরোধক; স্থতরাং সর্বাধা পরিতাজ্য। কিছ আঁর এক প্রকার ব্যাধি আছে, তাহা প্রভাবতঃ ব্যাধি না হইলেও ক্রমে ব্যাধিতে পরিণত হয়। তাহা প্রাশংসার ব্যাধি। কাহারও সংখণ দেখিলে রসন। তাহার উপযুক্ত প্রশংসা করিবে, ইহা স্বাভাবিক। কিন্তু সংকীর্ত্তির প্রশংসা করা অতি প্রশংসনীয় কার্য্য হইলেও তাহা কথন गाधिक आकात थात्रन करत्। यथन शतकीक खनताकित বর্ণনার একমাত্র রসনাই ব্যবস্থত হয়, বুখন বক্তৃতায় গভীর ধ্বনির সহিতই প্রশংসার পর্যাবসান হয়, যথন আকাশের তর্জন গর্জনের স্থার বুথা আকালনেই প্রাণংসার পরিসমাপ্তি হয়, তথন সেই প্রশংসাও ব্যাধিরূপ পরিপ্রছ করে। কারণ সেই প্রকার প্রাশংসা ধ্বনি মানবকে আছ-প্রতারিত করিয়া থাকে। সে মনে করে বাহা কিছু সং, বাহা किছু नांधू छारात्र धानःनात्र छ चामि नर्सनारे धान्नज, नर्सनारे तछ ; चात्र कि ठारे ? हेरारे यएडे। धरेत्रन चर्व-হীন বাক্য ব্যৱেই যাহার মন সম্ভই, ভাহার পক্ষে সদ্-দুষ্টান্তের অনুসরণ করা এক প্রকার অসম্ভব হয়। বাক্ষরের অতিশর চালনার স্বারা অস্তর দৃষ্টিহীন হয় এবং অকারণ সম্ভোব ল্রাপ্ত হইরা সেধানেই আপন কর্ত্তব্য শেষ করিরা থাকে। এ প্রকার বুধা বাক্যবার করা ব্রাহ্মগণের পক্ষে এক প্রকার স্বভাবের মধ্যে পরিণত হইরাছে। তাঁহারা অপরাপর ধর্ম-मच्चेनारतत व्यक्षित व्यक्षेत्र व्यक्षानश्चनित्र ध्रमःमात्र मर्समा वास्त्र, অপরের কট সহিফুতা, ও ধর্মপ্রচারের জল্প সর্কবিধ ত্যাগ শীকার, ও একাস্ত যত্নপরারণতার প্রাশংসার নিরত নিযক্ত রচিয়াছেন। কোথার একজন প্রচারক কর্তৃপক্ষের আদেশ পাইবামাত্র আপনার সকল প্রকার প্রির আশা ও উদ্দেশ্ত পরিবর্জন করিয়া আত্মীর বাদ্ধবগণের সঙ্গ পরিত্যাগ পূর্বক অমান বদনে শভ শভ যোজন দুরে চলিয়া যাইতেছেন. কোথার কোন ব্যক্তি সংসার-ধর্ম পরিত্যাগ পুর্বাক ধর্মপ্রচারে প্রবৃত্ত হইতেছেন, কোণায় বা কে আপনার যণাসর্কাশ্ব সদ্মু-ঠানে প্রদান করিতেছেন, কোথার বা সংক্রোমক ব্যাধিপ্রস্তর্গনের দেবার আত্মসমর্পণ করিতেছেন, ইত্যাদি বিষয় উল্লেখ করিয়া বস্তার পর বজ্তা করিতে আহ্মগণ কথনই বিমুধ নছেন। তাঁহাদের বাক্যত্তের চালনার সর্ব্বদাই তাঁহারা অতিশর ব্যপ্ত। কিন্ত ছ:খের বিষয় যে ত্রাহ্মগণ ইহাতেই সন্তই, ইহাই আদি এবং ইহাই অন্ত; সেই সকল অফুষ্ঠানের সমন্ন যথন উপস্থিত হয়, তথন আর কাহারও সহিত দেখা নাই। এই প্রকার অসার বাক্য মাত্র প্ররোগেই যাহারা সম্ভুট, তাহারা কি ব্যাধিপ্রস্ত নহে ? 'এই ব্যাধি সানবকে অকারণ আলু-সম্ভটিতে ভূলাইয়া রাথে। বাহাতে কিছুই ব্যর নাই পারে

এফটা আঁচড়ও লাগে না, এমন অর্থপুত প্রদংসা বাফা व्यादान करा किहुई कडिन कार्य महा। बहेन्नन वाक्ता वाका প্ররোগ করা না করার বিশেষ কোন প্রভেদ্ধ দৃষ্ট হর না। যাহারা সেরপ আশেংসা ধ্বনির ব্যবহার করে না ভাহারাও বেষন কিছুই কলে না, অপরেয়াও বাক্-বল্লের চালনা ভির কার্য্যতঃ কিছুই করেন না। লাভের সধ্যে প্রথম পক্ষ অন্যের প্রাশংসা করেন বলিয়া কোনরূপ অর্থহীন সম্ভষ্টি লাভ করেন না,---গর্কিত হন না ; কিন্তু শেব পক্ষ অকারণ আত্ম-সম্ভৃতি লাভ ক্রিরা বুথা গর্কিত হন, এবং কর্ত্তব্যবিষ্ধ চইরাও সম্ভোব শাভ করিয়া থাকেন। হুভয়াং যে প্রশংসা বাক্য মাত্রেই পর্য্য-বসিত হয় তাহাও ব্যাধি বিশেষ। এই ব্যাধি অতি সংক্রামক। ইহা ব্রাহ্মগণকৈ আক্রমণ করিয়াছে এবং দিন দিন ভাষা-দিগকে প্রগণ্ডতার চরম সীমার দইরা যাইতেছে। আশা করি ব্রাহ্মণণ বুণা বাক্যপ্রয়োগরণ প্রদংসার পরিবর্ত্তে কির্ৎ-পরিমাণে কার্যাতঃ তাঁহাদের সদ্মুঠান সকলের অফুসরণ করিয়া, উপযুক্ত প্রশংসা করিতে প্রস্তুত হুইবেন।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

# সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জন্মোৎসব উপ**লক্ষে** আত্মপরীকা।

দেখিতে দেখিতে বিধাতার ক্লপাতে সাধারণ প্রাক্ষসমাজের বয়:ক্রম পঞ্চদশ বৎসর অতিক্রান্ত হইরা গেল। কিরুপ সংগ্রাম ও আন্দোলনের মধ্যে ইহার জন্ম হইরাছিল এবং আজ কিরুপ কার্য্যক্রে ইহার সন্মুখে বিস্তৃত তাহা চিন্তা করিলে বিশ্রিক হইতে হয়। ইহার জন্মকালে কত লোকে ভবিব্যহাণী করিরাটিলেন যে, ইহার জীবন দীর্ঘকাল বাাপী হইবে না। পরলোক্ষণত কেশবচন্ত্র সেন মহাশর বলিরাছিলেন "ব্যক্তিগত বিশ্বেষে বালার জন্ম, ভাহার ছারিত্ব সন্তব নহে।" সাধারণ প্রাক্ষসমাজ আপনার পঞ্চদশবর্ষবাপী জীবনের ছারা প্রতিপন্ন করিরাছেন যে ব্যক্তিগত বিহেষে ইহার জন্ম হর নাই পরস্ক বিধাতার ভভইচ্ছার এবং তাঁহারই মলল বিধিতে ইহার অভ্যাদর হইরাছিল। নতুবা এই পঞ্চদশ বংসর কাল জীবিত গাজিরা ভার্য করা ইহার পক্ষে সন্তব হইত না। আমরা এই পঞ্চদশ বংসরের মধ্যে ইহার কার্যাপ্রণালীতে কি কি গুণ ও দোব লক্ষ্য করিলাম ভাহা একবার আলোচনা করা বাউক।

ব্রাহ্মধর্মের পবিত্রেতা সংরক্ষণ— ইহা কেই খণ্ডীকার করিতে পারিবেন না, যে ব্রাহ্মধর্মের মত ও অন্তর্ভাবের
বিশুদ্ধতা রক্ষা করিরা সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ একটি মহোপকার
সাধন করিরাছেন। বর্থাসময়ে এই সমাজ অভ্যুদিত না ছইলে
ব্রাহ্মধর্মের মধ্যে নরপুজা, মধ্যবর্তিবাদ প্রাভৃতি কত কুসংজ্ঞার
যে প্রবিট হইত ভাষাকে বলিতে পারে? ভজিভাজন মণ্ডি
দেবেক্সনাথ ঠাকুর মহালর ব্রাহ্মধর্ম সাধন ও ব্রাহ্মধর্ম অন্তর্ভাবের বে বিশুদ্ধ ও যুক্তিযুক্ত প্রশালী প্রাদর্শন করিরাছিলের

এবং মচাত্ম। কেশনচন্ত্র প্রথম বরসে বাচার পূর্ণতা বিধানের ত্রক্ত প্রাণপণে প্রয়াস পাইরাছিলেন, সাধারণ ব্রাক্ষস্মাত্র সেই আদর্শের সংরক্ষণ ও উরতি বিধানে নিযুক্ত রচিয়াছেন। একধাণ বলিলে অভ্যাক্তি হর না বে, এক্ষণে ব্রাক্ষধর্মাত্ররানীদিপের দৃষ্টি প্রধানতঃ সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের দিকেট আরুষ্ট। ব্রাক্ষসমাজ নলিতে লোকে ইহাকেই বুঝিরা থাকে এবং ইহার প্রচারিত উদার সার্মতৌমিক এবং বুজি ও নিনেকসক্ষত ধর্মট ব্রাক্ষধর্ম বলিরা পরিচিত। সাধারণ ব্রাক্ষসমাজ এই মচোপকার সাধনে সমর্ঘ চইয়াছেন, এজন্ত বিধাতাকে আমরা অক্তরের সহিত ধন্সবাদ করিতেতি।

কার্য্যোৎসাহ—সমুদার একতন্ত্র শাসনপ্রণাদীর দোষ এই যে, সমাজের কার্যোর দারিছভার প্রধানত: মন্ত্রণা স্বরূপ কভিপর ব্যক্তির উপর ছান্ত পাকে এবং সমাজের অধিকাংশ লোক সামাজিক কার্য্যে উদাসীন ও পরমুখাপেকী হইরা পড়ে। নিরমভন্ত শাসনপ্রাণালীর ত্থণ এই যে, ইহাতে দারিজভার সমাজের অদীভূত প্রত্যেক ব্যক্তির উপরে শইয়া যায়। দারিস্থ-জ্ঞানের স্থার মানবের স্থাধীন চিন্তার উন্নতি ও চরিত্রের বিকাশের অক উপায় অতি অৱই দেখা যায়। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ যখন শ্রতিষ্ঠিত হইরাছিল, তথন আমরা আশা করিরাছিলাম যে, ইহার নিষমভন্ত প্রণাদী ছারা ত্রাক্ষসাধারণের কার্যোৎসাহ বর্দ্ধিত তইবে। বাঁচারা ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যে ঔদাসীল অবলয়ন कतिबाह्यन डीहात। शुननाव कार्या मतायाती इहेरवन এবং যে সকল শক্তি চতুর্দিকে বিক্ষিপ্ত চইয়া রচিয়াছে তাহা ব্রাহ্মসমাজের উরতি সাধনার্থ সমবেত চইবে। আজ পঞ্চদশ বংসরের পরীক্ষার পর মঙ্গলময় বিধাতাকে ধন্তবাদ প্রদান পূর্ব্বক বলিতেছি যে, আমাদের সে আশা অনেক পরিমাণে পূর্ণ চইগাছে। ব্রাহ্মসমাজের ক্ষেত্রে বাঁচারা আজ কার্য্য করিতেছেন, সাধারণ ব্রাহ্মদমাজ না চটলে তাঁহারা কোথার থাকিতেন গ ব্রাহ্মদলের ক্রায় ক্র্রেদলের ছাব। যে সকল সদ্মুষ্ঠানের আয়োজন হইতেছে ভাহাই বা কোথায় থাকিত ?

নিয়মতন্ত্ৰ প্ৰণালীজনিত একতা — জনসমাজের কার্য্য ছিবিধ রূপে নিম্পন্ন হইছে পারে। হয় কোন প্রতিভা-শালী পুরুষের হল্তে সমুদায় কার্য্যভার অর্পণ করিয়া ভাঁচারই নেড়ভাধীনে থাকিরা কার্য্য করা, না হয় দশলনে মিলিত হইরা নিরমভন্ত প্রণালী অনুসারে কার্য্য করা। বেখানে কোন প্রভিভাশালী পুরুষের নেতৃত্ব নাই এবং নিয়মভত্ত প্রণালী অমুসারে কার্য্য করিবার রীতিও নাই, সেখানে कार्या व्यवन इहेना यात्र এवः (महे पन व्यवाम हिन विविद्त ও টুক্রা টুক্রা হ্ইরা পড়ে। ইহার দৃষ্টাস্ত দেখিবার क्या जात्मक पृत्त यहिए बहेरव ना। नवविधानक वक्षान रय আপনাদেরই মধ্যে মিলিত হইয়া কার্য্য করিতে পারিতেছেন না তাহার কারণও এই। তাঁহাদের মধ্যে অনেক সাধনশীল ধর্মাছরাগী ও ত্যাগী পুরুষ আছেন, বাহারা সমবেত হইলে कछ महर कार्या जाधन कतिएछ शास्त्रन। किन त्रुथा विवास ভাঁচাদের অধিকাংশ শক্তি কর হইরা বাইতেছে। ইহার कांत्रन कि १ कांत्रन कहे, मशांचा दक्षमंत्र हास्त्रत नत्रानाक नमानत्र ।

পর উাহারা এমন কোন প্রতিভাশালী পুরুষ পাইতেছেন না বাছার নেতৃত্বাধীনে ভাঁছারা সকলে ফুটচিত্তে সমিলিত হইবা কার্য্য করিতে পারেন। অথচ দশ জনে মিলিত হইয়া নিরম-ভদ্ৰ প্ৰণাদী অনুসারে যে কার্ব্য করিবেন তাহারও উপায় नारे। भवविधानाहायां महाभन्न (त्र शथ वक्त कतिना निन्नाह्म । তিনি আপন দলত লোকদিগকে নির্ম-ভন্ত ম্বণার চন্দে দেখিতে শিথাইয়া গিরাছেন। ব্যক্তির নেভূত্ব নাই, নিয়মভন্ত প্রণাদীও নাই, ইহার ফল যালা ঘটিতে পারে ভাছাই ঘটিভেছে। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের শভাদিগের মধ্যে যে মতবৈধ নাই ভাহা নহে। আমাদের मर्पा कृत कृत नग आहि; छाँशाता विरागव विरागव छावाशत । মত ও ভাবে এক দলের সহিত আন্য দলের আনেক আনৈক্য আছে, তথাপি নিরমভত্র প্রণাণী থাকাতে থাকিয়া কাৰ্যী করিতে একত্ত পারিতেছেন। নিষমতত্র প্রণালীতে ইহাদিগকে এই শিক্ষা দিয়াছে যে,পরম্পরের মত ও ভাবের প্রতি সমূচিত শ্রদ্ধা প্রদর্শন করা কর্ত্তবা। এবং ইহাও শিধাইয়াছে যে ত্রাহ্মসমাজের কার্য্য কোন এক বিশেষ ব্যক্তির বা বিশেষ দলের নতে, কিন্তু সকলেরই কার্য্য। এই উভয় শিকার গুণে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সভ্যগণ একতা সম্বন্ধ হইয়া কার্য্য করিতে পারিতেছেন।

সমাজদংস্কার-সাধারণ বাদ্দমাল প্রতিষ্ঠিত হওয়া অবধি সমাজ সংস্কার বিবরে ইতার সভ্যদিগের বিশেষ মনোযোগ দৃষ্ট হইতেছে। নারীগণের শিক্ষা ও স্বাধীনতা লাভের বিষয়ে ইহারা বিশেষ সাহায্য করিয়াছেন। এজক্ত দেশের লোকের ছত্তে ইহাদিগকে অনেক নির্যাতিন সহা করিতে হটরাছে। ইতারা নাবীগণের অবস্থার উন্নতি করিতে চান, এই অপরাধে পথে ঘাটে, বক্তাম্বলে, রঙ্গভূমিতে ইলাদিগেব কত প্রকার কুংসা রটনা করা হইয়াছে। কিন্তু বিধাতার কুপায় এই স্মাব্দের স্ভাগণ আপনাদের অবলম্বিত সংস্বার পথ হইতে ष्मगांशि जहे हन नाहै। यथन (मृत्यंत मर्ख्यं हे किसू श्रुपंत পুনরুখান স্রোভ প্রবাহিত, যথন দলে দলে লোক সকল প্রকার সংস্থারের বিরোধী হইতেছে, তথন কেবল এই সমাজের সভ্য-গণ অটল ও নিভীকচিতে সমাজ সংস্কারের নিশান উজ্জীন রাথিয়াছেন। ইচা চিন্তা করিলেই সাধারণ ত্রাহ্মসমাজের দারা যে দেশের মহোপকার সাধিত হইবাছে ও হইতেছে ভাহা অমূভব করিতে পারা যায়। এই সমাজ জীবিত না থাকিলে আজ বঙ্গদেশের নাম ভারতে ডুবিয়া যাইত, এবং বাঙ্গালীগণ ভারতে সর্বাপেকা পশ্চাৎবন্তী জাতি বলিয়া গরিগণিত হইত। এইতো গেল গুণের কথা,দোবের কথাও কিছু আছে। প্রথম:---

ধর্মসাধনে উদাসীত্য-প্রধানতঃ ছইটা বিষয় ধরিরা
সাধারণ রাক্ষসমাজের নাম হইরাছিল। (১) সমাজসংস্কার।
(২) নিরমভন্ত প্রণাণী স্থাপন। বাল্য বিবাহের প্রতিবাদ ও
রাক্ষসমাজ মধ্যে নিরমভন্ত প্রণাণী স্থাপন করিবার জন্ত
সাধারণ রাক্ষসমাজের উদ্যোগকারিগণ প্রধানতঃ উৎসাহী
হইরাছিলেন। ছঃখের বিষয় এই, বিগত পঞ্চদশ বর্ষকাল
সেই আদিম ভাষই প্রবণ দুই হইরাছে। স্তমাজসংস্কার ও নিরম-

তন্ত্র প্রণালী, এই ফুইটা বিষ্দে সাধারণ ব্রাহ্মসমান্তের স্ভাগণের रयक्रभ छेरमाइ (मर्था शिवार्ष्ट, खाक्रधर्म माधन, खाक्रधर्म धारा এবং ত্রাহ্মসমাজ ও জনসাধারণের সেবা বিষয়ে সেরুপ উৎসাহ पृष्टे इव नाहे। हेरांत ध्वमांग राखन निक्**टेर आह्य। (शा**नित्र वर्गादब मार्या हेशांत मञ्जान निव्नमावनी व्यनवन, मः माधनानि বিষয়ে যেরূপ পরিপক্তা প্রকাশ করিয়াছেন তাহা ভাবিশে চমংক্তর হইতে হয়। এত কালের মধ্যে অনেক গ্রণ্মেণ্টও এভ নিয়ম প্রণয়ন করেন নাই। নিয়ম্ভন্ত ব্যবস্থাটা যাহাতে স্থলর ও উল্লভ হয় সে বিষয়ে সভ) मिरा त्र मानारयारात्र कान मिन क्यों इस नाहे। किन्न उक्ति नर्ष माधन ७ उन्निध्य धानात्र विषय धमनहे मरनार्याश य धारात्रक नः था। कमित्रा याहेएछ हु , धारा (य काजनः थाक আছেন তাঁচাদিগকেও প্রতিপালন করা কটকর হইরা উঠিয়াছে। অব্যর এই নিয়মতন্ত্র প্রণাদীর মণ্যে প্রবেশ করিলে দেখা যার যে, ইহার যে মুখ্য উদ্দেশ্য, ভাহা সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সভাগণের হাদরে ভাল করিয়া বসে তাঁহারা যথন সাধারণ আক্ষসমাজ ভাপন করিতে অগ্রসর হইয়াছিলেন, তথন নিয়মতন্ত্র প্রণালীর এই অর্থ ব্ৰিয়াছিলেন যে, ব্যক্তিগত প্ৰভূতকে দমনে রাখা। তাঁহারা মনে মনে বলিয়াছিলেন "ভারতব্যীয় ব্রাহ্মসমাজে কেশ্ব वावृत मर्रामन कर्ड्ड, किन्न आमारमन माथा अन्नभ इटेरा ना ; আমরা মিরমতন্ত্র প্রণালী অনুসারে কার্য্য করিব অর্থাৎ ব্যক্তি-গত প্রাধান্যকে সর্বাদা শাসনে রাখিব।" ছ:থের বিষয়, এই ভাব এখনও অনেকের মনে প্রবল রহিয়াছে। এবং এই ভাব প্রবল থাকাতেই সমাজের আধ্যায়িক কার্য্যের অনেক ক্ষতি হইতেছে। পরস্পরের সহাযতা করা অবেপক্না পরস্পরকে দথলে রাধার দিকে অধিক দৃষ্টি দেখা যাইতেছে। নির্মতন্ত্র প্রণালীর উদেশ্ত আমরা এই বৃঝি যে, প্রস্পারের বিচ্ছিন্ন শক্তিকে সমবেত কবিয়া প্রভূ পরমেখারের সেবাতে নিরোগ করা; পরস্পরের বিরোধী হইয়া শক্তিক্ষয় করা দুরে থাক্, সত্য নিদ্ধারণে, সভ্য সাধনে ও সমাজের উল্লভি বিধানে পরস্পারের সহায় চওয়াও পরস্পরকে সবল করা। কিন্তু আমাদের বিগ্রু भक्षनभ वर्षित कार्या ताध इवेशारक त्य, भवस्थातरक **मवल ना** করিয়াবরং চুর্বল করাই যেন আমেরানিরমতন্ত্র প্রণালীর লক্ষ্য বলিয়া ব্ৰিয়া বাথিয়াছি।

মানবশক্তির প্রাধাত্য—নগবিধানত বনুগণ 'বিধান, বিধান' করিয়া জগতকে অন্থির কবিয়া তুলিয়াছেন। সাধারণ আক্ষমনাজের সভ্যগণ তঁলোদের প্রতিবাদী, স্তরাং নিজেদের সমাজকে বিধান বলিতে বেন ভর পান। ইলাদের কার্য্য দেখিলে এইরূপ বোধ হয়. যেন উলাদের সমাজে ঈশর লীলা করে। আমরা কার্যানির্বাহক সভা গঠন করিয়াছি, আমরা অধ্যক্ষ সভ্য নিয়োগ করিয়াছি, আমরা প্রচারক গ্রহণ, শাসন ও বর্জন করিতে পারি। আমরা, আমরা, আমরা, সর্বাহি আমরা। এই উৎকট অহংভাব নিবন্ধন কার্য্যের সমূহ 'কতি হইতেছে। আমাদের সমাজের সভ্যাগণই শীর সমাজকে বিশাস ও নিঠার

চক্ষে দেখিতে পাইডেছেন না, ইহার জন্ত আর্থত্যাগকে ঈখ-'রের জন্য আর্থত্যাগ বলিয়া মনে করিতে পারিডেছেন না! , চিস্তা করিলেই দেখা যাইবে, যে এই কারণেই সাধারণ আন্ধ-সমাজের কার্য্য ডেমন করিয়া জমিডেছে না।

এসকল পুরাতন কথা, অনেক বার বলা হইরাছে। সাধারণ ব্রাহ্মসমালের জ্বোৎসবের প্রাক্তালে সকলের আলোচনার্থ আর একবার উপস্থিত করা গেল। আশা করি সভাগণ প্রশাস্তচিত্তে এসকল বিষয় আলোচনা করিবেন এবং এই সকল অভাব মোচনার্থ ব্যাকুল্চিত্তে ঈশ্বরের শ্রণাপ্র হইবেন।

### निष्ठी।

বিগত ২০শে বৈশাধ রবিবার সাধারণ আক্ষসমান্ত মন্দিরে

শীমুক নবৰীপচন্দ্র দাস কর্তৃক বিবৃত উপদেশ।

তিন প্রকার বন্ধনে ধর্মসমাজে নরনারীগণ সংযুক্ত থাকেন।
মতের বন্ধন, সাধনের বন্ধন এবং সামাজিকপ্রেমের বন্ধন।
মত, সাধন ও সমাজপ্রেম এই তিন বিষয়েই যাঁহার নিষ্ঠা আছে,
সাধ্য কি কোনও প্রলোভন তাঁহাকে ধর্মসমাজ হইতে এই করে।
অটল অচল পর্বতের জার তিনি সকল নির্যাতন, অপ মান সহ
করিরা অধ্যা রক্ষা করিতে থাকেন। এমন কি ধর্মরক্ষার জ্জা
বিরোধীদিগের হত্তে প্রাণদান করিতেও তিনি কৃষ্ঠিত হন না।

হিন্দুসমান্তের সাধন প্রণালীতে বহুপ্রকার ভিন্নতা থাকা সংব্ মতে তাহারা একীভূত। গৃষ্টীর রোমানক্যাথলিক সম্প্রদারেও ঐরপ দেখা যার। রোমানক্যাথলিকদিগের মধ্যে সাধনের ভিন্নতা আছে; কিন্তু মূল ধর্মতের ভিন্নতা নাই। বৌদ্ধমান্তে এই মূল মতের একতা দেখা যায় না-- একদল বৌদ্ধ ঈশ্বরবাদী, একদল নিরীমর; কিন্তু ভাছাদের সাধনে কোনও বিভিন্নতা নাই। মুসল্মান্দিগের মতে ও সাধনে কিছু কিছু ভিন্নতা शाका मरवं व मभार्षत्र व्यक्ति व्यक्तिक भूमनभारमः व्यक्तिनिक প্রেমে সকলকে একীভূত করিয়া রাধিয়াছে। যদিচ ধর্মসমাজ স্দৃত ব্যাথবার জক্ত এই তিন শক্তিরই প্রয়োজন, কিছ অভবি পক্ষে কোনও একটিতে বিশেষ নিষ্ঠা না পাকিলে সমাল তরু দভায়মান থাকিতেই পারে না। আক্ষমাজ এই তিবিধ শক্তিরই সমব্য় প্রদর্শন করিবেন। ব্রাহ্মগণ শুধু মতে, কিছা माध्य व्यथ्या मामाजिक (व्यय चाकृष्टे हरेल चामर्ने अभागमाज গঠিত চইবে না। ব্ৰাহ্মধৰ্ম যেমন পূৰ্ণাল, সমাজও তেমনি পূৰ্ণাল **इटेरा । बाक्षममाम किन्नू, किया औद्योग मध्या रवीक्षममास्क्र** जात गठिक बहेरन, ये नकन ममारकत मर्था (य ममूनत चक्राव ও অপুর্ণতা রহিয়াছে সে সকল অভাব ও অপুর্ণতা এ সমাজেও থাকিয়া ঘাইবে। অতএব মতে, সাধনে ও প্রেমে ব্রাহ্মগণ একীভূত হইয়া যাইবেল এবং আদর্শ সমাজ গঠন করিয়া जनस्क्राण कगरजत धावृद्धि क्याहित्स।

তংশত অংগ্রের নিবৰ্ন কায্যের সমূহ কৈতি হইতেছে। ব্যহ্মসমাজের ইতিহাসে দেখা যার, মতের বন্ধন ছিল আমাদের স্বাজের স্ভাগণই বীর স্মাজকে বিশ্বাস ও নিষ্ঠার হওরাতেই "আদি" ও "ভারত্ববীর" তুইটি দল গঠিত হইরা- । ছিল। পুনরার পরম্পর বেই কিছু মডের অমিল ছইল, অমনি শেৰোক্ত সমাল ভালিয়া চুটি ছইল; কিন্তু আল কাল আল-সমাৰে সাধনের ভিরত। উপস্থিত হইবাছে। ত্রাদ্ধসমাৰে এরপ ঘটনা এই নৃতন। আহ্নসমাজের মৃদ মত অভি পবিত্র, অপরিষর্ত্তনীয়। আমুষ্টিক কোন কোনও বিষয় পরিষর্তিভ কিলা পরিবর্দ্ধিত হইতে পারে। জীবে ত্রন্ধে সাক্ষাৎ সম্বন্ধ, আত্মার অনস্ত উন্নতি ইত্যাদি মূল মতগুলি অপ্রাস্ত ও অপরি-বর্ত্তনীয়। এই মতামুসায়ে সাধন ব্দবলম্বন করিতে গিয়াই ব্রাহ্মগণ অনুষ্ঠি গুরুবাদ, অন্রাস্ত শাস্ত্রবাদ প্রভৃতির অলীকতা দেখিতে-ছেন এবং সে সকল পরিত্যাগ করিতেছেন। যাছাতে লক্ষ্যপথে याहेट वांधा क्रमाम जवः धर्माममारकत कोवस मेकिटक विनाम করে, তাহা সর্বতোভাবে পরিভাজা। এই জন্তই ব্রাহ্মণণ অনেক পূর্বে সংস্কার পরিত্যাগ করিয়াছেন। সাধন সম্বন্ধেও এই কথা। ত্রাহ্মসমান্দের সাধনের অব্দ প্রেতাকগুলি পরি-বর্ত্তিত হইতে পারে। সাধকের প্রাণে যতই ঈশ্বর লাভের পিপাসা বলবতী হইবে, ততই সাধন-কামনা পূর্ণ করিবার জন্ম নানাপ্রকার উপার অবলম্বিত হইবে। কিন্তু এক-जाधरमञ्ज भूग धारामी-चक्रश-जाधम, विक्रांतम व्यवार्थ शांकरव । ব্রদ্ধ অপরিবর্ত্তনীয় নিত্যপুরুষ, তাঁহার স্বরূপত অপরিবর্ত্তনীয়, নিতা। এখন আমরা তাঁহাকে সতা, জ্ঞান, প্রেম, আনন্দ, পুণ্য বলিতেছি, কোটি কোটি বৎসর পরও সাধকগণ এই কথাই বলিবেন। তিনি কথনও অসতা, অপ্রেম হইবেন না---পাপাবহ হইবেন না: তিনি চিরদিনই সত্যং জ্ঞানমনস্তং, শাস্তং মঙ্গলং এবং ধর্মাবছ পাপতুদং। সুতরাং আরাধন্য সাধনে-স্বরূপ-সাধনে যাঁগারা একনিষ্ঠ হইবেন না, তাঁহারা বিশুদ্ধ অন্ধজ্ঞান হুইতে বাস্তবিক্ই বঞ্চিত থাকিবেন। একদিকে যেমন জীব ও ত্রন্ধের সাক্ষাৎ সম্বন্ধ বিষয়ে সম্পূর্ণ আতা ত্থাপন করিতে হইবে, তেমনি স্বরূপ সাধনে একনিষ্ঠ হইতে হইবে। স্বরূপ সাধনে বিশেষ রূপ রত না থাকিলে ধর্ম ও ঈশর সম্বনীয় জ্ঞান मान इश, धवर (सृष्टे व्यवशास्त्रहे प्राधक कूमरकात, (भोख-লিকতা এবং মধ্যবন্তি বাদের অন্ধকারে পতিত হইয়া থাকেন। ভরকারিত সাগর-বক্ষে নিমগ্র ব্যক্তির পক্ষে ভেলা যেমন জীবন क्रकात উপায় चक्त्र, এই क्रूमःखात्र अवः शाश (मार्मन मःमाद्र ভগবানের স্বরূপ সাধন তেমনি আমাদের একমাত্র আশ্রয়-সেতু। দিগ্ভাস্ত নাবিক যেমন জব নক্ষত্র ক্ষা করিয়া সমুদ্রে গমন করে, তেমন আমরাও ভগবানের স্বরূপ মনন, চিস্তুন, করিয়া ভবসমুদ্রে গম্ভবা পথের অমুসরণ কবিব।

একদিকে যেমন মত ও সাধনে নিঠা থাকিবে, অপর দিকে ব্রাহ্মসমাজের প্রতি তেমন প্রীতি থাকা বাজ্নীয়। ব্রাহ্মসমাজের থিনি প্রাণের সহিত ভাল বাসিতে পারেন না, সাধনে ও মতে তিনি কথনও স্থাত থাকিতে পারিবেন না। বাংগাদের ভগবানে প্রেম জন্মিরাছে, তাঁহারাই মানবপ্রেমিক কইতে পারেন। অভএব মত, সাধন এবং সমাজপ্রেম এই তিন আলে ব্রাহ্মদিগকে পূর্ণতা লাভ করিতে হইবে।

কেহ কেহ বলেন, "আগে নিজের পরিত্রাণ, তারপর সমাজ। আমার পরিত্রাণের উপার অংহ্যণ না করিয়া কি সমাজের

চিন্তা করিতে পারি?" কিন্তু তাঁহারা একবার হির-ভাবে বিবেচনা করিয়া দেখিলে একথার অসক্তি দোব সহ-জেই অফুভব করিতে পারেন। বলি বিখাস করেন যে, বর্তমান সমরে জীবের পরিত্রাণের জন্য প্রভু পরমেশর ত্রাহ্মধর্মকে প্রেরণ করিরাছেন, ভবে সমাজ ও নিজের মধ্যে সীমা স্থাপন করিতেছেন त्कन १ याहार् आमात शतिखान, आमात आशीव श्रवत्नत अ সেই উপারেই পরিত্রাণ হইবে। আপন পরের পার্থক্য ভূলিতে না পারিলে ধর্মের নিগুড় মহিমা বুঝিতে পারা যায় না। অন্যেম্ন পরিত্রাণের উপায় না করিলে, নিজের পরিত্রাণ হইবে না, একথার রহস্ত অনেকে চিস্তা করেন না। ষিনি কেবল নিজকে নইয়া ব্যস্ত, তিনি আত্মপরায়ণ। এই আত্মপরায়ণভার कान हिन्न कृतिया সমাজপ্রেম সাধন না করিলে মৃক্তি নাই, क्षेत्रंद्र त्रह्वारम् थाकिवात्र छेशात्र नाहे। अत्रामन्त्र ज्यामारमञ् কুপা কক্ষন, মতে, সাধনে এবং সমাজপ্রেমে দিন দিন অগ্রসর ছইয়া ত্রাহ্মসমাজ ভাঁছার মহিমা ঘোষণা করুন।

#### निर्व्छन-हिन्छ।।

#### ( करेनक महिना निश्विष्ठ )

দেখ দেব ! শোক আসিয়া যথন প্রাণের প্রিয়বস্থপ্তলি হরণ করিবে, তথন যেন অধীর হইরা তোমা হইতে দূরে গিরা না পড়ি। বরং শোকের মধ্যেই যেন অধের চিত্র দেখিয়া ধৈর্যাবলম্বন করিতে পারি। আমার প্রাণের দেবতা, ভূমি যে ক্লেশ দিবে তাহা সহ্থ করিতে পারিবনা ! এত অপ্রেমিকের কথা ! ভূমি প্রিয়তম ! ভূমি যে ক্লেশ দিবে তাহা সহ্থ করিব না, জবে আমার ভোমার প্রতি প্রেম কি ? শুধু কি শোক, তাহা ছাড়া আরও কঠোর হইতে কঠোবতম যত ক্লেশ হইবে, সকলি অকাতরে সহিব,তবেত প্রকৃত প্রেমিকের কার্য্য হয় ! ভবে দেব, ভবে এই প্রার্থনা—হদয়ে সেই বল্লাও যাহাতে প্রবল বল্লার ভীমস্রোতে অভ্লে মগ্র না হই, যেন ভোমা হইতে বিচ্যুত না হই।

দেখ দেব! আমার কি শোচনীয় দশা! "হুদয় থাল ভরি, ভক্তি পূজাহার" লইয়া আমি তোমার নিকট যাই, তোমার ধ্যানে মনকে নিয়েজিত করি, হঠাৎ একি হইল, যাহা তোমাকে দিতে আসিয়াছিলাম তাহা যে আমাকে আমি অর্পণ কবিলাম! তোমার নাম করিতে নিজেরই নাম করি—তোমার গুণ গান করিতে নিজেরই গুণ গান করিয়া ফেলি; আলে জুড়াইতে আসিয়া আণের দাবানল প্রজ্ঞনিত করি; পুণা প্রেমে ভূষিত হইতে আসিয়া পাপে তাপে বিদয় হই। দেব, রক্ষা কর; এ ছ্দশা হইতে আমাকে উদ্ধার কর।

প্রহরী যথন চোরের হঁত বাঁধিরা লইরা যায়, তথন সেই চোরের কেমন একটা ভরাবহ ঘন নৈরাশ মিশ্রিত অবস্থা হর; বিবাদে ভাহার মুখ বিষয় হর, প্রাণ দারুণ অফুভাপারিতে দ হইতে থাকে। ধরা পড়িরাছে, আর রক্ষা নাই, এই ভরে সে মৃতপ্রায় হয়। সেইরূপ যথন বিবেক প্রাহরী আসিয়া পাণকে ধরিরা ফেলে তথন পাপেরও ওইরূপ অবস্থা হর, তথন দীনতা আনে, আত্মসানি আনে, আত্মসৃষ্টি প্রথর হর।

এমনও দেখা বার, কত প্রচপ্ত দক্ষ্য কারাবাসের ভীষ্ণু যাতনা ভোগ করিরা সকল হৃদর্শ পরিভ্যাগ করে। সেইরপ এই বিবেক প্রাক্তরীর আক্রমণে অনেক ঘোর পাপী মহাসাধু ছইরা জগতের কল্যাণ করিতে থাকে।

মন সংশয় যুক্ত হইলে, বিশ্বাস টলটল করিলে, ধর্মণথ এই 
তইবার উপক্রম হইলে, জগতের সাধু মহাজনদিগের জীবন
অম্ধ্যান করি। পাপীর উদ্ধার কিরপে তইয়াছিল তাহাই
অরণ করি, তথন প্রাণে হর্জের বল প্রাপ্ত হই, সমন্ত সংশর চ্ছেদ
হইরা যার।

মানবের চক্ষের সমুখে তাঁহার অতুল প্রেমছেবি উচ্ছলরণে প্রকাশিত রহিরাছে। পিতার অতুল ভালবাসার তাঁহার পিতৃভাব, মাতার অপার্থিব স্নেহে তাঁহার মাতৃত্বের পরিচর এবং বিশ্বপ্রেমিকতার তাহারই অনস্ক প্রেমের:নিদর্শন। তাই সাধক বিহ্বলচিত্তে বলেন, তৃমি পিতা, ভূমি মাতা, পরিত্রাতা।

সেই বিবাহে প্রাকৃত ফল প্রাসৰ করে এবং ভাহাই প্রকৃত
বিবাহ, যাহার উদ্দেশ্য থাকে জগতে প্রাকৃত সাধু মহাত্মা ও
মনত্মনীর আবিভাব হইবে—ভাহাদের ছারা প্রমেশ্বরের নাম
কর্যুক্ত হইবে—জগতের কল্যাণ হইবে। সেরূপ সংক্র লইরা
কেহ বদি বিবাহ করিতে প্রস্তুত থাকেন তিনি নমস্ত।

সকল বাসনার সমাধি হউক। কেবল একটি বাসনা বলবতী হউক, যাহাতে নবজীবন লাভ করি। সকল আশার ধ্বংস হউক হে প্রভো, কেবল তোমাব আশা প্রাণের একমাত্র সকল হউক।

পাপই মোহ, মামুষ স্থধ সরোবর ভাবিয়া তাহাতে ঝাঁপ দের, কিন্তু চিরস্থথের পরিবর্তে চিরত্রংথ পায়।

আমার অন্তরে যত কিছু কু আছে সে সকল পৃথিবীর দ্রবা।
পৃথিবীর মলিনতা আমাকে কলঙ্কিত করে। আমি মহান
অনত পুণাের সন্তান—আমার উপর পৃথিবীর কু রাজ্য করিবে?
কে বড়? পৃথিবীর কু বড় কি আমার স্থ বড়? কুর সহিত
সংগ্রাম করিয়া আপনাকে জয়য়ুক্ত করিতে হইবে। তা না
হইলে দ্বিবের সন্তান নামে পরিচয় দিতে পারিব না।

ঈশ্বরকে ডাকিবার শ্রেষ্ঠ পথ কাতর ব্যাকুলতা। যথনি প্রোণ শৃক্তভাবে হাহাফার করে, তথনি বুঝি তাঁহাকে ডাকি-বার স্থাসময় উপস্থিত হইরাছে। যথন নিরাশ অবসর শৃক্তহাদয়ে চতুর্দিক শৃক্ত দেখি, তথন তাঁহাকে ডাকিবার স্থাময়।

তাঁহার করুণার বিশেষ চিহ্ন আত্মপ্রসাদ ও নির্মাণ স্থধ। বধন কোন পাপে পড়িবার উপক্রম হইবে, প্রাক্ত অস্থ-তাপের স্থিতি প্রার্থনা করিব।

যিনি ঈশ্ব-প্রত্যাশী তিনি তাঁহার চিত্তের প্রতি সতত প্রথর দৃষ্টি রাথেন। অজ্ঞাতসারে দদি সামাক্ত পাণ তাঁহাকে আক্রমণ করে,বিবেক অমনি দংশন করিতে থাকে। তাঁর নিকট বিবেক সর্বাদা দন্ত লইরা বসিরা আছে, যথনি একটু ক্সুত্র পাণ হইবে, বিবেক আল্মানিরপ শাণিত ছুরিকা হৃদরে বিদ্ধাকরিতে থাকে, সে তীক্ষ আল্বাতে তাঁহার ধর্মজীবনের প্রভৃত ক্ল্যাণ হর।

মৃত্যু এক এক সমর আসিরা সন্তাবণ করিরা যার, "আমি আসিতেছি, আসিতেছি, প্রন্তুত থাক।" অভি ক্ষমিষ্ট বেরে বলিরা যার "আমিই অমৃতের দিকে লইরা যাইব, অনস্তের পথ দেখাইরা দিব, ভূমি নির্মিয়ে চলিরা যাইবে, ভর কি ? জীবনের শেব মৃহুর্জে দেখিবে, দেখিবে আমি কত কোমল।"

#### পঞ্জাব প্রচারযাত্রীদিগের পত্র।

আমরা লক্ষ্ণে হইতে রওনা হইয়া ৪ঠা এপ্রিল হরিয়ারে পৌছি। এখানে পঞ্জাবী বন্ধু প্রীযুক্ত স্থন্দর দাস ভল্লা আমানিগকে আগ্রহের সহিত গ্রহণ করেন। মধ্যাহে তাঁহার গৃহে হিন্দিতে উপাসনা হয়, প্রীযুক্ত প্রকাশদেব আচার্য্যের কার্য্য করেন। অপরাছে আমরা হরিয়ারের হিন্দুতীর্থন্থান দর্শন করিতে যাই। এ স্থান পরম রমণীয়। পর্বতের পাদমূলে বেগবতী গল্পা প্রবাহিত হইতেছে। এ স্থান হিন্দুদিগের প্রধান তীর্থস্থান। ভারতবর্ষের নানা দেশবাসী হিন্দুগণের এখার সমাগম হইয়াথাকে। বিহার, উত্তর পশ্চিম প্রদেশ, পঞ্জাব প্রভৃতি সকল প্রেণীর লোকই অধিকাংশ। যোগী, সয়াসী, গৃহত্ব প্রভৃতি সকল প্রেণীর লোকই এথানে স্নান করিতে আগমন করেন। আমরা এখান হইতে পাকরী নামক শ্বানে প্রীযুক্ত বৈষ্ণবদাস ভল্লার আলরে গমন করি। তথায় উপাসনা হয়, প্রীযুক্ত প্রকাশদেব উপাসনা করেন এবং গীতার একটী প্রোক ব্যাখ্যা করিয়া উপদেশ দেন।

#### লাহোর।

ভই এপ্রিল—প্রাতঃকালে আনরা লাকোর পৌছি।
দ্বানীয় ব্রাহ্মসমাজের প্রায় ৩০ জন সভা আমাদিগের অভার্থনার জন, ষ্টেশনে উপদ্বিত হইরাছিলেন। আনক
দিন হইতে তাঁহারা আমাদের আগমন প্রতীক্ষা করিতেছিলেন,
অদ্য এই সন্মিলনে তাঁহারা সকলেই বিশেষ আনন্দিত হইলেন।
আমরা বন্ধ্বর বাবু অবিনাশ চক্র মন্ত্র্মদার মহাশদ্মের ভবনে
সাদ্রে গৃহীত হইলাম। অপরাছে ব্রাহ্মবন্দ্দিগের সহিত কথা
বার্জা হয়।

পই এপ্রিল—এথানে "দৎদদ" বলিয়া একটি সভা আছে।
তালতে ধর্মবিষয়ে আলোচনা ছইয়া থাকে। আদ্য তালার
অধিবেশন। আলোচা বিষয়—"দ্বীশ্বরের অভিত্ব"। শ্রহাম্পাদ
শাস্ত্রী মহাশয় সভাপতির আদন গ্রহণ করেন। তিনি সন্তাবাদ
(Ontological argument), কারণবাদ, (Causal argument),
কৌশলবাদ (Design argument) এবং বিবেকবাদ (Moral argument) এই চারি প্রকারের যুক্তি দারা আলোচ্য বিষয়িট
অতি স্থন্দর রূপে শ্রোভ্যপ্তনীকে ব্যাইয়া দিলেন।

৮ই এপ্রিল—অপরাত্নে ব্রহ্মান্সরে ধর্মবিষরে কথা বার্তা হর। একজন পুত্রশোকার্ত্ত ব্যক্তি "লান্তিলাভের উপার কি ?" এই প্রেল্ন করেন। লাজী মহালর লাজের বিবিধ বচন উক্ত, এবং নিজের ও অপরের জীবনের পরীক্ষিত সন্ত্য সকল বিবৃত করিরা মানব জীবনের প্রকৃত্ত লাভির উপার অতি বিশাসরূপে নির্দেশ করেন। ৯ই ব্ৰিবার—নধ্যাকে সম্বিলনী ( কন্কারেকা) হর; আলোচ্য বিষর—সাধনমগুলী ( Brahmo Workers' Shelter ) গঠন। এখানে কিরুপে একটি সর্ভার দল সংগঠিত হইতে পারে, সে বিবরে বিশেব আলোচনা কটরা সহারদল গঠনের প্রস্তাব বির হয়। সারংকালে শাল্লী মহাশর মন্দিরে উপাসনা করেন। পরাবিদ্যা ও অপরাবিদ্যা সম্বন্ধে উপদেশ দেন। এই উপদেশে তিনি সমুদার ধর্মাশাল্পকে দেশভ্রমণকারীদিগের গাইড্ বুকের সহিত তুলনা করেন। যদি কৈত ঘরে বসিরা কেবল গাইড্ বুক পড়ে ও নিজে দেশ ভ্রমণ না করে, তালার যে দশা লয়, যে বাজিকেবল শাল্লে ধর্মের কথা পড়ে, কিন্তু নিজে সাধন না করে, তালারও সেই দশা লয়।

> • ই, সোমবার—সারংকালে ত্রহ্মান্সিরে ছানীর বাঙ্গালী। দিগের এক আলোচনা সভা হর।

১১ই, মদলবার—সারংকালে মন্দিরে ইংরাজীতে উপাসনা ও উপদেশ হয়। শান্ত্রী মহাশর আচার্যোর কার্য্য করেন। উপদেশের বিষয় "ব্রস্কোশাসনার আবশুক্ত!"।

১২ট, বুধবার—স্থানীর ব্রাহ্মবন্ধু শ্রীযুক্ত গিরিধর রার মহা-শরের ভবনে সালংস্মিতি হর।

১৩ই, বৃহস্পতিবার—সালাকে মন্দিরে শাস্ত্রী মহাশর ইংরা-জীতে বজত্তা করেন। বজত্তার বিষয় "বর্তমান সমবের বিশেষ চিহত"।

১৪ই, শুক্রবার—সংসক্ষের অধিবেশন হয়, আংলোচ্য বিষয় "নীতিশিক্ষা"। শাস্ত্রী মহাশয় সভাপতির আসন গ্রহণ করেন।

১৫ই শনিবার—সারংকালে মন্দিরে বালালাছ উপসেনা হর, শাল্তী মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন। "ধর্ম যদি আত্মার অরপানের অভাব দ্র না করে, ও জীবনকে পরিবর্ত্তিত না করে, তবে তাহা ধর্মই নয়" এবিষয়ে উপদেশ দেন।

১৭ই, সোমবার— প্রাতে প্রীযুক্ত বাবু তারাপ্রসন্ধ দত্ত মহাশরের গৃহে উপাসনা হয়, শান্ত্রী মহাশর উপাসনা করেন।
সায়ংকালে প্রীযুক্ত বাবু রামনারায়ণ সরকাব মহাশয়ের গৃহে
সায়ংস্মিতি হয়।

১৮ট, মঙ্গলবার—পঞ্জানের স্বদার (Chief) দিগের শিক্ষাব জন্ত এথানে "Chiefs' College" নামে একট কলেজ আছে। প্রাতে আমরা উক্ত কলেজের জনৈক শিক্ষক কর্তৃক অমুরুদ্ধ হট্টা কলেজে পরিদর্শন কবিতে যাই। কলেজের সহিত একট বোর্ডিং আছে, শিক্ষার্থীগণ এই বোর্ডিংএ থাকে। এই বোর্ডিংএব নির্মাদি এবং শিক্ষার্থীদিগের শাবীরিক, মানসিক ও নৈতিক শিক্ষার বন্দোবন্ত দেখিরা আমরা সুধী হইলাম। এই কলেজ ও বোর্ডিং দ্বারা পঞ্জাবের স্রদার্জিগের শিক্ষার বিশেষ স্থাবিধা হুইরাজে। এই কলেজ গ্রণ্থিয়েণ্টের তত্ত্বাবধানধীন।

অপরাত্নে মন্দিরে ইংরাজি ভাষার উপাদনা হয়, শান্ত্রী
মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন। "আত্মানমের প্রিয়মুপাসীত"
উপনিবদের এই শ্লোক উল্লেখ করিয়। উপলেশ দেন।

১৯৩, বৃধবার—শোরংকালে মহেন্দ্রনাথ সরকার নামক এথানকার একজন বালালি বাবুর গৃহে "জগাই মাধাই উদ্ধার" সক্ষমে বাবু ছরিমোহন খোষাল কথকতা করেন। কথকতার মধ্যে মধ্যে সংকীর্তনও হইরাজিল। ২১এ, শুক্রবার---সারংকালে শাস্ত্রী মহাশর মন্দিরে "চরিজের শাসন" বিষয়ে ইংরাজী ভাষায় বজ্তা করেন। বজ্তা শুনিরা সুক্লেই আক্রই হইরাছিলেন।

২২এ, শনিবার—সারংকালে মন্দিরে ইংরাজী বক্তৃতা হর।
বক্তা শাল্পী মহাশর, বিষয়—"প্রাক্ষসমাজ ও ইহার কার্যা।"
তিনি বক্তৃতাতে প্রাক্ষসমাজের উদ্দেশ্য ও ইহারারা কি কি
কার্যা হইরাছে সংক্ষেপে অতি স্পাই ভাষার বুঝাইরা দেন।

২৩এ, রবিবার—প্রাতে প্রীয়ক্ত ক্ষমর সিংহ মন্দিরে উর্দৃতে উপাসনা করেন। অপরাছে হানীর শিক্ষা-সভা হলে বঙ্গসাহিত্য সভার বার্ষিক অধিবেশন উপলক্ষে শান্ত্রী মহাশর ইংরাজীতে শিক্ষা সম্বন্ধে সংক্ষেপে একটা বক্তৃতা করেন। সারংকালে ভাই প্রকাশদের মন্দিরে উর্দৃতে উপাসনা করেন। "জীবনে ধর্ম্মনাভ করা চাই" এ বিষয়ে উপদেশ দেন। তাঁচার ভাবের উচ্চার ও ভাষার লালিতো সকলেই মুগ্ধ হইরাছিলেন।

২৪ এ, সোমবার—বাব্ ভারণচক্ত দাস মহাশরের গৃচে উপাসনা হর; শান্ত্রী মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন। "যোবৈ
ভূমা তৎ স্থম্, নালে স্থমন্তি" উপনিবদের এই স্লোক ব্যাখ্যা
করিরা একটি সারগর্ভ উপদেশ দেন।

স্থানীর প্রাক্ষসমাজের কভিপর উৎসাহী সভ্য সাধনাশ্রনের সহিত বিশেষ সহাত্ত্তি প্রকাশ করেন। তাঁহাদিগকে বাইরা একদিন উদ্যান-সন্মিলন হর। তথার শ্রম্কের শাস্ত্রীমহাশ্র সাধনাশ্রমের উদ্দেশ্র ও কার্যাপ্রশালী বর্ণন করেন। তৎপর তাঁহাদের অনেকে ইহার "সহার" (Helpers) শ্রেণীভুক্ত হইতে ইচ্ছা করেন। এই জন্ত ২৬এ তারিখে ভাই গিরিধর রায়ের গৃহে বিশেষ উপাসনা হর। উপাসনাস্তে শাস্ত্রী মহাশ্র সাধনমগুণী সম্বন্ধে অনেক উপদেশজনক কথা বলেন। তদনস্তর করেকজন ভদ্র মহাদের ও ভদ্রমহিলা সহারশ্রেণীভুক্ত হন।

এবার পঞ্জাবন্থ বন্ধগণের সহিত আমাদের প্রাণের বিশেষ যোগ সংস্থাপিত হইরাছে। ভগবানের করণাতে এরপেই উাহার ভির ভির স্থানের সন্তানদিগের মধ্যে প্রেমের সন্থান সংস্থাপিত হইরা থাকে। এথানকার ব্রাহ্মবন্ধ্র্দিগের উৎসাধ আনেক গুণে বিদ্ধিত হইরাছে। করেক জন মূতন লোক ব্রাহ্মসমাজের দিকে আকৃষ্ট হইরাছেন। তত্তকৌমুদী ও মেসেক্সারের করেকজন প্রাভক হইরাছেন। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের পুরাতন প্রাণ্য টাদা প্রভৃতি প্রার ৮০ টাকা আদার হইরাছে। একজন মহিলাপ্রদন্ত ২০০ শত টাকা দান সাধনাশ্রমে প্রেরিত হইরাছে। এভত্তির সন্ধার দর্রাল সিংহ মহোদের পঞ্জাবে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যে বিশেষ সাহায্য করিবার ইছে। প্রকাশ করিয়াছেন এবং আমাদের পাথের ব্যরের সাহায্যার্থ ২২০ টাকা দান করিয়াছেন। আমারা পঞ্জাববাসী ভ্রাতা শুগিনীদিগকে অন্তরের সহিত ধন্তানাদ দিলা ২৭শে এপ্রিল অমৃতসর যাত্রা করি।

পঞ্জাব প্রেদেশে অমৃত্সর একটা প্রধান স্থান। এথানে রণজিৎ
সিংক "হবমন্দির" নামে স্থবিধ্যাত এক স্থর্ণমন্দির নির্দ্ধাণ
করেন। এই অন্দির অমৃত্সর নামক প্রকাণ্ড দীর্ঘিকার
মধ্যভাগে স্থাপিছে। মহায়া নানকের শির্ধধর্ম পঞ্জাবে কিরুপ
প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছিল, এই হুরমন্দির হুর্লন করিবে

তাহা সহজেই অহুভূত হয়। এই মন্দিরে দিন রাত্রি আরে ২৪ ঘণ্টাই (রাজি তিনটা হইতে আরম্ভ করিরা সমস্ত দিন এবং রাত্রি ১১টা পর্যান্ত ) ধর্মালোচনা, ভল্পন (সঙ্গীত ) अ भार्त करेता भारक। अहे खबन अ भार्ति तिरक अक व्यक्तिक, ৰতান প্রমেখরের মহিম। কীর্ত্তন হয়। একেশ্বর বাদের পবিত্রতা রক্ষার জন্ম গুরু নানকের যে কিরূপ প্রাণগত ইচ্ছাছিল, ভাষা এই ভজন ও পাঠাদি শ্ৰণ করিলেই ব্যা यात्र। किन्छ कि इः (थेत विषय्, नानकित (महे भविता धर्मा ८ এथेन গ্রন্থ প্রায় ও নানারপ কুসংস্কারে পরিণ্ড হইলাছে। মন্দিরে পাঠ ভন্নাদির নিরম সমূহ বৃত্তিভোগী সেবক ও পুবোর্হিতগণ দারা প্রতিপালিত হইর। থাকে। দিবারাত্রি শত শত নরনারী এই मिन्नत मर्नेन ও धानिक कि कि विटिष्ट ; हेशानत अधिकाः नहें শিথ। ইহাদের ধর্মালোচনা এবং লেকে সমাগ্যের স্রোভ मनन कतित्व मान काम्हर्या छात्वत छेनत इतः अथात अकृष्टि দৃশ্র বড়ই ফুলার দেখিলাম; সেটা ইছাদের নরসেবার ভাব। আপনি ক্লান্ত হইয়া আসিয়াছেন, অমনি হয়ত একজন আসিয়া স্থাপনাকে পাখার বাতাস দিতে লাগিল। এক্লপ বিনয় ও সেবা সকলেরই অফুকরণীয়।

আমর। অমৃত্সর হইতে দিল্লী যাত্রা করি। এথানে বাবু হেমচন্দ্র সেন ডাক্তার মহাশর তাঁহার গৃহে একদিন আমাদিগকে আহ্বান করেন। সেধানে সঙ্গীত্তাদি হয়। শাল্লী মহাশর উপনিষ্দের একটী শ্লোক অবশ্বন কার্রা উপদেশ দেন। স্থানীর আর্ও ক্রেক্জন বাজালী উপস্থিত ভিলেন।

পর দিবস আমরা আগ্রা সহবে গমন করি। এখানে আমাদের
বন্ধু বাবু নীলমণি ধর মহাশর বাস করেন। আমরা তাঁহারই
গৃহে আভিগ্য গ্রহণ কবি। মধ্যাকে পারিবারিক উপাসনা হয়,
শাস্ত্রী মহাশর উপাসনা করেন। অপরাহে ডাজ্জার বাবু অম্লারক্তন বসাকের গৃহে উপদেশ, সঙ্গীত, সংকীতান ও
প্রার্থনাদি হয়। শাস্ত্রী মহাশয় আচার্যোর কার্য্য করেন।
প্রার্থ-জন বাজাণী ও কয়েকজন মহিল। উপস্থিত ছিলেন।

তরামে—প্রাতে নীলমণি বাবৃধ গৃঙে উপাসনা হর, শান্ত্রী मशानत छेलानन। करतन। स्थामारमत এই দৈনিক উलाननात्र স্মামবা দিন দিন ভগবানের কৃপা ক্ষধিকত্তব অমুভব কবিতেছি। অপরাছে স্থানীয় ভিক্টোরিয়া কলেজ গুলে এক সভা বন্ধ থাকাতেও শভাধিক শিক্ষিত ह्य। ऋल क (लक् লোক উপস্থিত ছিণেন। প্রথমতঃ একটি চিন্দি সঙ্গীত হয় তংপর ভাই প্রকাশ দেব উদ্দতে সংক্ষেপে অগ্র উজ্জ্বরূপে दाकार्त्य ও दाकारभाष्ट्रत উत्त्र्ध त्याहेगा तन ; जर्भन भाषी মচাশয় চংরাজীতে তংসম্বন্ধে একটি সংক্ষিপ্ত বক্তা করেন। সকলেষে আর একটি সঙ্গীত হয়। এখানকার লোকে এাক্সার্থ্য 🕏 ব্রাক্ষসমাজ সম্বন্ধে এক্রপ কিছুই অবগত নহে বলিলেও অত্যক্তি হয় না। কিন্তু তাঁহাদের মনোযোগ ও একাণ্ডচিত্ততা দেখিয়া বোধ হইল বস্তুব্য বিষয়ের প্রতি তাঁহাবা আকৃত হই-बाएक्स। यक् डाएक मनकम नाम रिविक्स नाथ वकावत्रक ধক্সবাদ দিয়া বংগন যে, বক্তা অভি সায়গর্ভ, ইয়াছে, সকলে-রই উচিত, যে এই উপদেশালুসারে জীবন পরিচালিত করেন। এখানে আক্ষণর্ম সম্বনীয় কড়ক শুলি বই বিজের হয়, এবং কোন কোন উচ্চপদত্ব লোক নীলমণি বাবুর পূত্র আসিয়া আগ্রহের সহিত আক্ষণর্মের তত্ব জিজ্ঞাসা করেন। এত্বান ধর্মপ্রচামের একটি উপযুক্ত ক্ষেত্র যলিয়া মনে হয়। বত্বের সহিত কার্য্য করিলে এখানে স্ফল ফলিতে পারে।

### ব্রাহ্মসমাজ।

সেবা-সংবাদ—সাধনাশ্রম হইতে বাবু চণ্ডীচরণ বন্ধ্যোপাধ্যার প্রচারার্থ বিক্রমপুরে গমন করিয়াছেন, যথাসময়ে এসংবাদ
প্রকাশিত ইইয়াছে। তিনি বজুযোগিনী নামক প্রামে উপস্থিত
ইইবার কিছুদিন পরে প্রামন্থ অনেক লোক বিস্কৃতিক। রোগে
আক্রান্ত হয়, চণ্ডী বাবু প্রচারার্থ অন্য কোনও স্থানে গমন না
করিয়া রোগীদিগের সেবা শুশ্রম্বা করিতে আরম্ভ করেন।
সংক্রামক ব্যাধি ক্রমশঃ ভয়নক মূর্ত্তি ধারণ করিয়াছে। এপর্যান্ত
চৌদ্দ জন লোক মৃত্যুমুখে পভিত ইইয়াছে। এ সংবাদ
পাইয়া সাঃ বাঃ সমাজের দাতব্য বিভাগের সম্পাদক
মহাশর বাবু ক্রপ্রবিহারী গুহু নামক একজন সেবার্থীকে কিছু
ঔষধ সহ তথার প্রেরণ করিয়াছেন। বিক্রমপুর নিবাসী
ব্রাহ্মগণের নিকট অন্থরোধ যে, তাঁহারা এসময় যথোচিত
অর্থ সাহায্য দ্বারা উপকৃত্ত করেন। "২১০ সং কণ্ওয়ালিস ব্রীট,
শ্রীকৃক্ক বাবু গুক্লচরণ মহলানবিস, দাতব্য বিভাগের সম্পাদক"
এই ঠিকানার সাহায্য পাঠাইবেন।

পঞ্জাব প্রচার যাত্রীদল—পণ্ডিত শিবনাথ শারী-প্রমুখ পঞ্জাব প্রচার যাত্রীদল পথে বাঁকীপুর, বারাণদী, ফরজা-বাদ, লক্ষ্ণে এবং ধরিধার প্রভৃতি স্থানে প্রচার করিয়া লাহোরে তথায় প্রায় তিন সপ্তাচকাল ভাঁছারা व्यविष्टां कि किया देश्त्राकी, वानाना, विम्मिट्ड डेमामना, वक्कृडा এবং আলোচনাদি করেন। প্রাভূ পর্মেখরের কৃপার লাহোবের ব্ৰহ্মিত্ৰাভাগণের নবোৎসাহ উদীপ্ত হইয়াছে। কোন কোন নৃভন লোক ব্রাহ্মধর্মের প্রতি আকৃষ্ট হত্যাছেন। লালেরে ব্রাহ্মধর্ম স্বাদন, ত্রাহ্মসমাজের সেবা এবং ত্রাহ্মধর্ম প্রচার উদ্দেশ্যে একটি সহায়দল সংগঠিত হুইয়াছে। তাঁহারা প্রভুর আশীর্কাদ মস্তব্ গ্রহণ করিয়া নব উদ্যামে কার্যাক্ষেত্রে প্রবিষ্ট হউন, এই প্রার্থনা। তথায় এসময়ে তত্তকৌমুদী এবং মেনেঞ্জারের কয়েকজন গ্রাছক হইয়াছেন। একজন মহিলা ১০০১ এক শত টাকা আকাণ্য প্রচারোদেখে দান করিয়াছেন। শাহোরে ব্রাক্ষধর্ম প্রচারের জন্য व्यामार्गत वकुवत मत्रमात मताम मिःइ महाभन्न विरम्भ मरनारयाजी এবং উৎসাধী চটয়াছেন। লাচোরে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের ন্তায়ী প্রচারক মণ্ডলী গঠনের জন্য তিনি বিশেষ আগ্রহ প্রকাশ করিতেছেন। পরমেশ্ব তাঁচার এই শুভসংকরের সহার হউন। ভিনি পঞ্জাৰ প্ৰচার যাত্ৰীগণের পাথের ব্যর শ্বরূপ ২২০১ টাকা দান করিয়াছেন। আমরা পঞ্জাবৰাসী ভ্রাতা ভগিনীলিগকে আন্তরিক ধন্যবাদ প্রদান করিতেছি।

সাধনাশ্রম—পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী লাহোর অঞ্চল গমন করার, শ্রীমৃক্ত নবছীপচন্দ্র দাস আশ্রমের তত্বাবধারক পদে বৃত হইরাছেন। তিনি আশ্রমে বাস করিরা নিয়মিত উপাসনাদি করিতেছেন।

নামকরণ—বাবু কুঞ্জবিছারী সেনের প্রথম পুজের নামকরণ গত ২৮শে বৈশাধ সাধনাপ্রমে সম্পন্ন হটরাছে। প্রীযুক্ত
নবনীপচক্র দাস আচার্য্যের কার্য্য করেন। সন্তানের
নাম প্রবজ্ঞ্যোতি ব্রহ্মানন্দ রাথা হটরাছে। এতত্রপদক্ষে
কুঞ্জবাবু সাঃ ব্রাঃ সমাজের প্রচার বিভাগে >্ টাকা দান
ক্রিরাছেন।

জাতকর্ম—বাবু বছবিহারী বহুর গ্রেষ্ট্রটের বাড়ীতে তাহার পঞ্চ সস্তানের (ছিতীর পূত্র) জাতকর্ম উপদক্ষে উপাসনা হইরাছে। প্রীমুক্ত নববাপচক্র দাস উপা-সনা করেন। বছবাবু সাঃ ব্রাঃ সমাজে ১ টাকা দান করিরাছেন।

বাব্ মধুস্দন সেনের দৌছিত্তের জন্ম উপুলক্ষে গত ২৪শে বৈশাথ তাঁহার কলিকাভাস্থ বাসাতে উপাসনা হইরাছে। প্রীযুক্ত নবদীপচক্র দাস আচাথ্যের কার্য্য করেন ও সন্তানের পিতা শ্রীমান্ জ্ঞানেশরঞ্জন রার প্রার্থনা করেন। প্রমেশর শিশুদিগের মঙ্গল বিধান করেন।

শ্রে শুনান্ লালমোহন চট্টোপাধ্যারের বাটী বিক্রমপুর, বক্সযোগিনী গ্রামে। ইনি কলিকাতার থাকিরা অধ্যরন
করেন। ব্রাক্ষধর্মের প্রতি আরুট হইরা ইনি উপবীত
পরিত্যাগ করিরাছেন। করেক দিন হইল ইহার পিতা
পরলোক গমন করিয়াছেন, হিন্দু সমাজের আর্মীর স্থানগণ
হিন্দুমতে শ্রাদ্ধাদি কারবার জন্ম বিশেষ পীড়াপীড়ি করেন;
কিন্তু গত ২৩শে বৈশাধ তিান নিজ গ্রামে ব্রাক্ষধর্মামুসারেই
পিতার আদ্যশ্রাদ্ধক্রির। সম্পন্ন করিয়াছেন। বাবু চত্তীচরণ
বন্দ্যোপাধ্যার আচার্য্যের কাষ্য কবেন। পরমেশ্বর পরলোকগত আল্মাকে শান্তিদান করুন এবং শ্রীমান্ লালমোহনের
প্রাণে ধর্মবল বিধান করুন।

দীক্ষা-সংবাদ—মোনাই চা বাগান হইতে বাবু ক্ষেত্রনাথ নশী লিখিবাছেন;—"কিছুদিন পূর্ব্বে তত্ত্বকৌমুদীতে, আমাদের স্থকবি আগামী প্রাতা শ্রীযুক্ত কমলাকান্ত ভট্টাচার্য্যের প্রন্ধার্থ্যে দীক্ষিত হওয়ার সংবাদ প্রকাশিত হয়। বিগত ১১ই বৈশাখ গোনাই চা-বাগান প্রাহ্মসমাজে তাঁহার আর ত্ইটী কনির্প্ত প্রত্যোগ্য প্রতিক্রাপত্ত প্রায়ব্ধ ভট্টাচার্য্য প্রতিক্রাপত্ত পাঠপুর্বক বথারীতি প্রাহ্মধর্মে দীক্ষিত হইরাছেন। এই উপলক্ষে আমাদের বন্ধু বাবু মতিলাল হাল্যার উপাসনার কার্য্য করেন। উপাসনা ও দীক্ষার পর, ভিনি সরল ও স্থামিই ভাষার প্রাত্র্যকে তাঁহাদের নিজ শীবন ও প্রাহ্মসমাজ সহজে গারিত ও

কর্ত্তব্য কি ভাষা সুক্ষরক্রপে ব্রাইরা দেন। আসামের স্থার দিকা ও জ্ঞানালোচনা স্থক্তে এরপ পশ্চাৎপদ প্রদেশে একটা সন্ত্রান্ত প্রাক্তপ পরিবার, কুসংস্থারের বন্ধন ছিল্ল করিরা, প্রাক্ষ-স্মাজে প্রবেশ করিলেন, ইহা প্রাক্ষগণের পক্ষে অভ্যন্ত আনন্দের সংবাদ সন্দেহ নাই।"

বার্ষিক উৎসব—বঙ্গা ব্রাহ্মসমাজের সম্পাদক বীব্ যাদবচন্দ্র পাল লিখিরাছেন,—বঙ্গা ব্রাহ্মসমাজের সাহৎসরিক উৎসবােশলকে কলিকাতা হইতে শ্রাদ্ধের প্রচারক শ্রীবৃক্ত বাবু শলিভ্ষণ বস্থ মহাশর এখানে আগমন করেন। তিনি গত ৩১শে চৈত্র বৃধবার এখানে পৌছেন। সেই দিন স্তরাপুর ব্রাহ্মসমাজের সাপ্তাহিক উপাসনার তিনি আচার্য্যের কার্য্য করেন। পর দিন ১লা বৈশাথ নববর্ষোৎসব উপলক্ষে উক্ত সমাজে তৃইবেলা আচার্য্যের কার্য্য করেন। ২রা বৈশাথ আধ্যাত্মিক বিদ্যালরের সাহুৎসরিক উৎসব। এই উপলক্ষে পূর্ব্বাহেক উপাসনা, সংগীত ও সংকীর্ত্তন হর। প্রচারক মহাশর উপাসনার কার্য্য করেন। অপরাহে আধ্যাত্মিক তত্ব সহদ্ধে একটী বক্তৃতা করেন। উক্ত বিদ্যালরের ছাত্রগণণ্ড কিছু কিছু বলেন।

তরা বৈশাথ বাবু শরদিন্দু ছোব মহাশরের বাসার পারিবারিক উপাসনা হর, শশী বাবু আচার্য্যের কার্য্য করেন।

8ठी देवनाथ द्वविवाद इहेदवना नमा**टक छे**लाननानि हद ।

৫ই বৈশাখ সোমবার বাবু শীমস্ত চটোপাধ্যার মহাশরের রাসার সংকীর্ত্তন ও প্রাথনা হয়।

ভ বৈশাধু অপরাহে বগুড়া আক্ষমমান্তের সাম্বর্গরিক উৎ-সবের উদ্বোধন হয়। সেই দিন হইতে ৯ই বৈশাথ রাত্তি প্যান্ত উৎসব চলিয়াছিল। উৎসবে উপাসনা, সংগীত, সংকীস্তন, পাঠ, আলোচনা এবং উপদেশাদি হইয়াছিল।

দই বৈশাধ আচারক মহাশর টম্বন্ হলে ব্যক্তিগত ও জাতিগত উল্ভি সন্ধনে একটা তেলস্থিনী বুক্তা করেন, বুক্ত। হলরগ্রাহী হইয়াছল।

ন বৈশাধ সায়ংকালে নগরসংকীর্ত্তন বাহির হয়। সংকীর্ত্তনদল বাজারে উপস্থিত হইলে শশীবাবু বক্তা করেন। বক্তা আগম্পাশী হইয়াছিল।

ইহা ভিন্ন গরিব বিদ্যালয়ের (Poor's Institution) "স্থনীতে সঞ্চারিণী" নামক ছাত্রসভাতে "ছাত্রজীবন কিন্ধণ হওয়া উচিত ?" এই সম্বন্ধে একটা উপদেশ পূর্ণ বক্তা করেন।

১১ই বৈশাধ রবিবার ছই বেলাই শশীবাবু উপাসনা কবেন।

ঐ দিন অপরাহে উপাসনাস্তে আমাদের শ্রম্কের বন্ধু বাবু
কেদারনাথ সাহ। মহাশরের বাসার প্রীতি ভোজন হইরা উৎসব
পরিসমাপ্ত হর। শশীবাবুর আগমনে এখানে সকলেই বিশেষ
উপকার লাভ করিরাজেন।

উপাসনা ও দীব্দার পর, তিনি সরল ও অ্মিট ভাষার ভাতৃষ্যকে উৎসব—কাব্দিনা ব্রাহ্মসমাব্দের উৎসব উপাক্ষে প্রচারক তাঁহাদের নিজ নিজ জীবন ও ব্রাহ্মসমান্দ সহয়ে দারিও ও বাবু দশিভূষণ বহু তথার গম্ন করেন। ১লা মে হইতে ৪ঠা মে পর্যান্ত উৎসৰ হয়। উৎসবে তিনি আচার্ব্যের কার্যা করেন, "ধর্মোরডি" সম্বন্ধ একটি বক্তৃতা এবং আলোচনাদি করেন; বাবু অক্ষরকুমার শুপ্ত মহাশ্রের বাটিতে সমৰেত উপাসনা হয়, তাহাতে আচার্য্যের কার্যা করেন।

দান—কাকিনার বাবু অক্ষরকুমার গুপ্ত ॥ ০ এবং বাবু করুণাকুমার সেন ১ টাকা সাধারণ আক্ষসমাক্ষের প্রচারবিভাগে দান করিয়াছেন। দাতাদিক্ষুক ধঞ্চবাদ প্রদান করা যাইভেছে।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জম্মোৎসব— নিম', নিধিত প্রাণাণী অফুসারে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের বোড়শ-জন্মদিনের উৎসব সম্পার হইবে।

>লা জৈচ্ছ রবিবার—প্রাতে ও সন্ধ্যাকালে উপাসনা। সন্ধ্যাকালে উপাসনার পূর্ব্বে সংকীর্ত্তন ছউবে।

২রা জৈ চি সোমবার—পূর্বাক্ত ৬ ঘটকার সময় সংকীর্ত্তন ৭ টার সময় উপাসনা। অপরাছে শাল্প পাঠ ও ধর্মালোচনা। সন্ধাকালে উপাসনা।

#### বিজ্ঞাপন।

আগামী ৯ই ও ১৬ই জুলাই, সাধারণ প্রাক্ষসমান্তের অধীনমন্ত নাম্বিদ্যালয়ের সংশ্রবে বর্ত্তমান বংসরের প্রক্ষবিদ্যা বিষয়ক বারিক পরীক্ষা গৃহীত হইবে। কলিকাতান্ত পরীক্ষার্থীগণ সিটিকলেজ গৃহে এবং প্রদেশীর পরীক্ষার্থীগণ আপন আপন স্থানে স্থপরিচিত প্রাক্ষগণের তব্ববেধানে পরীক্ষিত হইবেন। যে সকল পরীক্ষার্থী, প্রক্ষবিদ্যালয়ের ছাত্র নহেন্দ্র তালাদিগকে আগামী ১লা জুলাই কিন্তা তৎপূর্বে বিদ্যালয়ের সম্পাদকের নিকট আবেদন করিতে হটবে। প্রত্যেক ক্ষেত্রের সম্পাদকের সঙ্গে আবেদন করিতে হটবে। প্রত্যেক ক্ষেত্রির সাক্ষর বা প্রাক্ষিকার স্থাক্ষরিত প্রশংসাপত্র পাঠাইতে হইবে। আবেদন পত্রে কিন্তালিত বিশিক্ষ কিল থাকা আবিশ্রক পরীক্ষার্থীর নাম, বয়স, ব্যবসায় (ছাত্র হটলে কলেজ বা স্কুল ও শ্রেণীর নাম), ধর্ম্ম, অভিভাবকের নাম, এবং যে ব্রাহ্ম বা ব্রাহ্মিকার ত্রাবধানে পরীক্ষা দিতে চান তাঁহার নাম।

#### পরীক্ষার বিষয়।

ENGLISH SENIOR COURSE:—Cand's Introduction to the Philosophy of Religion: Chaps. I—V, and Chap. VIII. The New Testament in English: The Four Gospels. and the Bhagavadgita. Chaps. I—XII.

ENCLISH JUNIOR COURSE:—Wright's Grounds and Principles of Religion: Chaps. I—XI; and any one of the following—(1) The New Testament in English: The Four Gospels, (2) The Bhagavadgita: Chaps. I—XII. ৰাজালা উচ্চতৰ কোৰ্স:—বাবু সীতানাথদত প্ৰশীত

'ব্ৰদ্ধজ্ঞানা'; পঞ্জিত অংখারনাথ শুপ্ত-প্রশীত 'লাক্যমূনিচরিত'; ও 'ভগবল্গীতার' বলামূবান, ১ম—১২শ অধ্যার।

বালালা নিয়তর কোর্স:—বাবু নগেজনাথ চটোপাধ্যায় প্রশীত 'ধর্মজিজালা ১ম ভাগ', প্রথম তিন বক্তা; আদি বাজ্যাল-প্রকাশিত বাজ্মধর্মের মত ও নিমান', ৭ম—১০ম অধ্যায়; ও শ্রীযুক্ত চিরঞ্জীবশর্মা-প্রণীত 'ঈশাচরিতামৃত্ত'।

ক্লিকান্তা, ২১•।অ২, ক্ৰ্পণ্ডৱালিস ট্ৰীট, ১৪ই মে, ১৮৯৩।

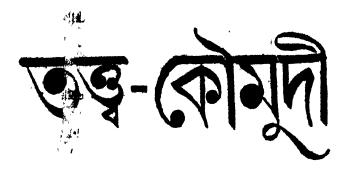
শ্ৰীদীতানাথ দন্ত, ব্ৰশ্ববিদ্যালয়-সম্পাদক।

সাধারণ আক্ষসমাজের আর্থিক অবস্থা বড় মন্দ, আর আপেকা ব্যর অধিক হইরাছে। কি প্রকারে কিছু আর বৃদ্ধি হর, আমরা সে বিষয়ে চিস্তা করিতেছি। ইহার সভ্য মহোদরগণ যদি কিছু কিছু চাঁদা বৃদ্ধি করিরা দেন, ভাহা হইলে যথেই উপকার করা হর। কিন্তু সমাজের চাঁদা এবং ভত্বকৌমুদী, মেসেঞ্জার ও পুস্তক হিসাবে এত টাকা বাকী পড়িরা রহিরাছে বে, সেই সকল বাকী আদার করা সর্বাত্রে কর্তব্য। অতএব আমাদিগের বিনীত নিবেদন এই যে, সভ্য ও গ্রাহক মহোদরগণ অনুপ্রহ পূর্বক যত দীয়া পারেন এই সমস্ত বাকী শোধ করিরা এবং সমাজের আর বৃদ্ধি সহদে অন্তর্নপে বিশেষ চেটা কবিরা বাধিত করিবন।

সা: ব্রা: সমাজ কার্যালর ২১১নং কর্ণ জ্বালিস খ্রীট, ক্লিকাতা। শ্রী অংখারনাথ মুখোপাধ্যার, সহকারী সম্পাদক, সাঃ বাঃ সমাজ।

কলিকাতা অথবা মফ: খলত ব্ৰাহ্ম পরিবার ও ছাজাবালে যে সকল অমুঠান সম্পর হর, তাহার মনেক সংবাদ তত্তকৌমুদী বা নেসেঞ্জার পত্রিকার যথা সমরে—এমন কি কোন কোন সমুঠান আদৌ, প্রকাশিত হর না। অত্তর আমাদিগের বিনীত নিবেদন এই যে, ব্রাহ্মসমাজ হুছে প্রকাশযোগ্য প্রভ্যেক অমুঠানের সংবাদ অথবা জন্যান্য সংবাদাদি আমাদিগের পরিচারক, ও সেবকগণ এবং মফস্বসন্থ ব্রাহ্ম বন্ধুগণ ব্রথাসমরে প্রচারক, অমুগ্রহপূর্ষক নিম্নাণিতি ঠিকানার পাঠাইর। বাধি চকরিবেন।

সা: ব্ৰাঃ সমাজ কাৰ্য্যালয় ২১১নং কৰ্ণগুৱালিস ট্ৰীট, ক্লিকাতা। জী লংগারনাথ মুখোপাধ্যার, সহকারী সম্পাদক, সাঃ বাঃ সমাক।



# ধর্ম ও এগাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিক। ৭

৪র্থ সংখ্যা। ১৬**শ ভা**গ।

১৬ই জ্যৈর্চ. সোমবার, ১৮১৫ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাংসরিক অগ্রিম মৃশ্য ২॥• মদম্পে ৩ প্রতি বড়ের মৃল্য 🗸

#### व्यार्थना । 🧓

দে ব্রাশ্বসমাজের অধিপতি, ব্রাশ্বসমান ত তোমারই বিধি।
সংসারের তাপিত ও শোকসন্তপ্ত নদ্রানী ইহার: আশ্রের
আসিরা শান্তিলাভ করিবে, পাপের আলা নির্মাণ করিবে,
ইহাই তোমার ইছো। তোমার এই পবিত্র ব্রাশ্বর্যা কাহার ও
নিকট নিরাশার কথা বলে না। মৃ:পাণীও ভোমার এই
প্রেমেরধর্মের প্রসাদে পরিত্রাণ পাইনে। তৃমি পরিত্রাতা,
মুক্তিদাতা, ক্ষঃ এবার পাপীর শ্বিত্রাণের ভার লইরাছ!
ভোমার ব্রাশ্বর্যের প্রসাদে অস্কৃত্র মহাপাপীর নিকট স্বর্গের
ভার প্রিয়া গিরাছে। ক হলোক, অনক্ত নরকের ভর দেখাইরা
শুরু ও মধ্যবর্তীর চরণে আশ্রের লইতে উপদেশ দিতেছিলেন;
কিন্তু তৃমি এবার পাপীর নিকটে প্রকাশিত হইরা আশার স্ম্যবুর্
বাণী শ্রবণ করাইভেছ;—"নরনারী সাধারণের সমান অধিকার,
যার আছে ভক্তি, সেই পাবে মুক্তি, নাহি জাত বিচার।"

व्यञ्जा, जूमि তোমার এই মহৎকার্য্যে সাক্ষ্য দিবার অভ বারংবার আমাদিগকে আহ্বান করিতেছ, জগতে আশার স্রসনাচার প্রচার করিতে বলিতেছ। কিন্তু আমরা তোমার কুপার আহ্বানধ্বনি শুনিয়াও শুনিতেছি না, তোমার দ্যার বিধি ব্যবস্থা দেখিবাও দেখিতেছি না, নিষ্ঠা ও ভক্তির সহিত ভোমার পবিত্র ব্রাহ্মধর্ম নাধন করিতে পারিতেছি না, তাই আমাদের নিরাশা ও বংশয় ঘুচিতেছে না। প্রভো, আমাদের ত অপরাধের সীমা নাই,তোমার অ্যাচিত করুণার দান, এই ত্রাহ্মধর্ম পাইয়াও তাছার সমালর করিলাম না, জীবনে সাধন করিলামনা, অসার বিষয় লইয়াই ব্যস্ত রহিলাম; এবং বাঁহারা ভোমার দরার কণা শুনিরা তোমার এই আক্ষধর্ম-তরুত্তলে আখুরু লইতে আসিতেছিলেন, তাঁলাদিগের নিকট তোমার রূপার সাক্ষ্য না দিয়া, আশার কথা না বলিয়া, কেবল নিরাশার কথা विनय विनय मः भव । निवाभाव छेनव कविनाम । जीवन्त्र অবন্ধা ও কার্য্য বারা যেন বলিতেছি, তোমার দয়াতে ব্রাহ্মধর্ম-সাধনে, পাপীর উদ্ধার হম্ব না। প্রভো, এই মহা অপরাধ হইতে উদ্ধার কর—স্থমতি দেও। আশীর্কাদ কর, যেন আমরা ভোমার প্রাক্ষণ্ম নিষ্ঠার স্থিত সাধন করিছে পারি, জীবনে ভোমার কমণার সাক্ষা নিভে পারি। ভোমার ইচ্ছা পূর্ণ হউক।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

আশার কথা—আত্ত কাল কেছ কেছ নিরাশার কথা
বলিতেছেন। এ সকল কথা । তাঁছাদের নিজের বেমন
অপকার হটতেছে, তেমন ুগরের জীবনেও মহা আনিট্ট
ঘটিতেছে। ১০,১২,১৫ বং া কাল হাঁছারা বাজসমাজের
আশারে রহিরাছেন, তাঁচারাও আপন আপন জীবনের অভিজ্ঞতার কথা বলিয়া এই নিরাশার মাত্রা বৃদ্ধি করিতেছেন;
"ব্রাক্ষসমাজে আসিয়া ঈন্সিভবস্ত পাইলাম না, ব্রাক্ষধর্ম্ম
জীবনের পাপ তাপ দ্র করিতে পারিল না; এত দিন ব্রাক্ষসমাজে বাস করিলাম, উপাসনার যোগ দিলাম, কত উপদেশ
শুনিলাম, কিন্তু পাপ গেল না, প্রাণে শান্তি পাইলাম না।"
ইত্যাদি অনেক কথা বলিয়া ব্রাক্ষধর্মের ঘারা যে কিছুই হর না,
ইচাই যেন প্রমাণ করিতেছেন। কেছ গুরুর আশ্রর লইভে
উপদেশ দিভ্রেছন, কেছ সাধন প্রণালীর দৌষ দিতেছেন,
কেছ বা সংসর্গের দোষ্ইত্যাদি কারণ উল্লেখ করিতেছেন।

যাহার। এইরপ নিরাশার কথা বলিরা নিজে ক্ষতিপ্রান্ত হইডেছেন ও অস্তের গুরুতর অনিষ্ঠ করিতেছেন, তাঁহারা তাঁলাদের
কার্য্যের গুরুত্ব ও দায়িত কিছুমাত্র অসুত্ব করিতেছেন বিদরা
মনে হর না। আক্ষ ত্রাক্ষিকা, প্রাণের দিকে চাহিয়া বল দেখি,
যতদিন আক্ষমান্তে আসিরাচ, নিঠা ও প্রকার সহিত ত্রাক্ষধর্ম
সাধন করিয়াছ কি? নিজের জীবনের দিকে দৃষ্টিপাত কর,
কোথায় ছিলে, করুণাময়ের অ্যাচিত করুণারগুলে কোথায়
আসিয়াছ! যে দরা মহাপাপের হন্ত হইতে উদ্ধার কবিয়া
নবজীবনের বাবে আনয়ন কবিয়াছে, সেই করুণার বিক্তমে
কথা বলিতে কি জিহ্বা সম্কৃতিত হয় নাং তাঁহার দান এই
আক্ষধর্ম, তাঁহার বিধি এই ব্রক্ষোপাসনা। তাঁহার দ্যাদ্
পাশীর পরিত্রাণ হয় না, এই, কথা বলিবার পূর্ব্বে ব্রাক্ষের শত্ত
বার চিক্সাকরা উচিত।

कीवन विश्वी जाक्यभाँ नांधन कतिनाम ना, देखित्रनःयम कांकारक वरन कांनिनाम ना, नःनारतत हुकाश विनारमदे नमन কাটাইলাম, অথচ বলিতেছি "ত্রহ্মকৃপাহিকেলম্" কথাটি অর্থ-শৃক্ত; ত্রাহ্মধর্ম পাশীর উদ্ধার করিতে পারিল না!"

"বিনা হৃংথে ছয় না সাধন, সেই বোগিজনার বাছিত চরণ রে! স্থশযার ভরে কেবা পেয়েছে কথন, সেই দেবের হর্লভ অমূল্য রতন রে! অশ্রুপাত ক'রে বীজ কর রে বপন রে, যদি মনের আনিক্ষে শস্ত করিবে কর্ত্তন রে।"

মান্থবের নামে মিপ্যা সাক্ষ্য দিলে পৃথিবীর রাজার নিকট
দণ্ড ভোগ করিতে হর; ঈখরের করণার বিক্লচ্চে কথা
বলিলে কি নিস্তার আছে? ব্রাক্ষ ব্রাক্ষিকা, নিজের শত
দোষ হর্জনতার কথা বল; কিন্ত ব্রাক্ষধর্ম তোমার পরিত্রাণ
দিতে পারিল না, ঈশরের করণা পাপীর উদ্ধার করিতে
পারিল না, এমন কথা কথনও মুথে আনিও না। ভাই বোন,
আশা কর, সহিষ্ণু হইরা তাঁহার নামে পড়িরা থাক, নিষ্ঠা ও
সহিষ্ণুতার সহিত তাঁহার উপাসনা কর, নিশ্চর তাঁহার দর্শন
পাইবে। ঈশরের রাজ্যে প্রবঞ্চনা নাই; তিনি যাঁহাকে আশা
দিরা আনিরাছেন, তাঁহার প্রাণের পিপাসা মিটাইবেন।
সাবধান, সংসারের ঘোলা জলে পিপাসা মিটাইরা বসিরা
থাকিও না। তাঁহার করণার প্রতীক্ষা কর, তোমার এই
ছর্দ্ধিন থাকিবে না।

সঙ্গীত ব্যবহারে সাবধানতা--এদ্দগীত উপাদের, অতি লোভনীয় এবং অতিশয় উপকারী। ব্রহ্মোপা-সনার পক্ষে দলীত এক প্রাকৃষ্ট সহার এবং মানব-মনের উপর ইহার প্রভবে অসাধারণ । একস্ত প্রায় সকল শ্রেণীর সাধকই ব্রহ্মোপাসনার সময় সঞ্চাত কবিয়া থাকেন। যে সঞ্চীত সর্বা-স্থারণের এত প্রিয় এবং একপ সাধন-সহায়, ভাছারও বাব-হারের রীতির বিক্লতিতে কেমন অনিষ্ট ফল উৎপন্ন হয়, এবং এরপ সর্বজনপ্রিয় ও ক্ল্যাণসাধক বিষয় কেমন অক্ল্যাণের হেতু বলিয়া গণা হয়, সে বিষয়ে আমাদের দৃষ্টি আফুট হওয়া অতি বাস্থনীয়। ব্রাহ্মগণ প্রিয় ব্রহ্মসঙ্গীতের কেমন অযথা ব্যবহার করেন, এবং তজ্ঞপ ব্যবহারে কিরূপ অনিষ্টোৎপাদন হয়, তাহার আলোচনা ইওয়া একান্ত আবশুক। সঙ্গীতের প্রকৃত ব্যবহার না হইলে যে তাহা আনিটোৎপাদক হয়, তাহা আমরা সহস্য বুঝিতে পারি না, এবং বুঝিতে পারি না বলিয়াই তলিবারণে যুদ্ধ-भीन हरे ना। मनोट्जब असूर्रबार्ध अस्नक ममत्र अवस्थात अखिदिक এমন কি প্রতিকৃত ভাবযুক্ত কথাও ব্যক্ত করিতে হয়। একজন কোন বিশেষ সময়ে বিশেষ ভাবে যে বিষয় অমুভব করিয়া সঙ্গীতে তাহা প্রকাশ করিরা গিরাছেন,সর্বাংশে তাহা যে অপরের প্রাণের অবস্থার সঙ্গে মিলিবে এরপ সম্ভাবনা অল। হর ত সঙ্গীতের এক ছ্মংশের সহিত প্রাণের মিল আছে এবং সেই অংশের জন্তই গানটা গাভয়া আবশ্রক হয়, কিন্তু গানের একাংশ গাইয়া অপ-রাংশ পরিত্যাগের রীতি প্রায় দৃষ্ট হয় না। একটা গান ধরিলে (भव भर्या ख गा बता है जी छि। हे हा एक जातक ममन्न (मधा वान ; त्य खार्थना कतियोत्र नमत्र याहा खार्थना कता कथनहे উচিত মনে হয় নাই, সেই গানের অসুরোধে তেমন বিষয়ও আর্থনা করা হয়। এরপ ব্যবহার প্রভাতসারে গানের

অমুরোধে হইরা থাকে,এবং ইহারারা বে আরু-প্রভারিত হইবার সম্ভাবনা আছে ভাষাও জানা যার না। অনেক সমর গোকে সৃহজ ক্থার যাহা বলিতে পারে না,স্থর ভালের সৌক্র্যো মুগ্ধ হইরা সে नव कथा चिक नहरक वाक करत्र, धवः धक्रभ वावहारत (य चनत-লভাও,আত্মদৃষ্টির অভাব প্রকাশ পার তাহাও বুঝিতে পারে না। ইহা ছারা অকারণ কারনিক ভাবসকল মনের উপর আসির। পাৰে,এবং তাহা মানুষকে অতি উচ্চ অবস্থার উপস্থিত করিতেছে বলিরা ভ্রান্তি জন্মার। এজন্ত স্পীত করিবার সময় অভিশর चाषा-मृहिभन्नाम् म् ७ वा चावश्च मः। शास्त्र चरूरवार्य च्यवश्व অভিরিক্ত ভাব প্রকাশের একটি মাত্র দৃষ্টাক্ত এবং ভাহার অনিষ্টের বিষয় উল্লেখ কর। বাইভেছে। ঘটনাটী সভ্য স্থভরাং ইহাছারাই প্রতীয়মান হইবে, সঙ্গীত করিবার সময় কত সাবধানতা গ্রহণ করা আবশুক। একটা গানের প্রথম चर्म এই (र, "बामाद्र चानक निवाह नाथ"; अवर **এই** গানের **(** भर भरा भाष्ट्र (व, "(छामाद्र म। (शत भामि कितिव ना ফিরিব না।" এই গানটি অতি স্থার, কবিত্বপূর্ণ এবং অভ্যস্ত ব্যাকুল প্রাণের উক্তি। ইহার ত্বর এবং তাল অতি ভ্রমধুর একস গান্টী গাহিতে যেমন ভাল লাগে, তেমনি প্রাণে বিশেষ ভৃতিলাভ হইর। থাকে। স্থতরাং এরণ গান গাছিভে প্রবৃত্তি হওরা অতি খাভাবিক। একদা মন্দিরে এই সঙ্গীভটি প্রত হইতেছিল। মন্দিরে অনেক প্রছের ব্যক্তি উপস্থিত ছিলেন, ধর্মের অন্ত ব্যাকুণপ্রাণ অনেক ব্যক্তি উপস্থিত ছিলেন ; অনেকেই গানের ভাবে বিমুগ্ধ হইয়া গেলেন। পানটি শেষ হইরা গেলে, উপাসনাও শেব হইল এবং উপাসনাতে বেমন প্রতিদিন সকলে গৃহে গমন করিয়া থাকেন, সেরূপ সেদিনও गक्राके छान्द्रा (जर्मन । किन्नु (त्रामन अक्षी वार्मिका छेनात्र নার উপস্থিত ছিল, দে নিতান্ত সরলপ্রাণা এবং তাহার অনেক अस्तर वाकि উপাদনাছলে ছিলেন, দে ভাছাদিগকে অভিশর সত্যনিষ্ঠ ও ব্যাকুণপ্রাণ বলিরাই জানিত, স্বতরাং সে মনে করিরাছিল যে, ইহারা আজ আর ঈশবকে লাভ না করিরা कितिया गाहेर्यन ना। कात्रण शास्त्र (अधकारण चाह्न, "एकामारत मा পেলে আমি ফিরিব না ফিরিব না।" সে এই মনে করিরা চুপ করিয়া চক্ষু মুদিরা বসিরা আছে। কভক্ষণ পরে সে বুঝিতে পারিল যে, সকলেই চলিরা যাইতেছেন। ইহছোরা ভাছার मानत व्यवचा (क्मन इटेन, महाबहे जाहा विकास भाषा । এই প্রকারে কত লোকের যে কত সদ্ভাব বিনষ্ট इदेश यात्र, লোকের প্রতি পূর্বসঞ্চিত্রতা বিচলিত হইয়া ভংখানে অপ্রকার সঞ্চার হব, তাহা কে বলিতে পারে। এমত সঙ্গীত, ७५ ननीड (कन, नकन क्षकांत्र छाव क्षेत्रांभंत्र नमात्रहे नावधान হওরা উচিত। সঙ্গীত সহদ্ধে এত কথা বলিবার উদ্দেশ্ত এই যে, ইহার স্থর এবং তালে মামুষকে বড়ই প্রভারিত করিয়া থাকে; আত্মহারা করিয়া ফেলে। এ সকল বিষয়ে আমরা দৃষ্টিহীন হইলে বিপেষ ক্ষতিগ্ৰন্ত হইব।

ত্ৰহ্ম-বাণী—নানা বিষয়ে আসক্ত ও নানা আকৰ্ষণে আৰুট এবং লগা বিজ্ঞান্ত মানৰ মনের পক্ষে গল্ভয় পথ নিপর

করিবার জন্ত ব্রহ্মবাণী প্রবণ করা অতি আবক্তক। দর্বতোভাবে এই ব্ৰহ্মবাণীয় অনুসরণ ক্রিতে প্রস্তুত না হইলে, মানবের প্রক ক্ল্যাণের পথে অগ্রসর হওয়া সম্ভবপর নহে। বিশেষভঃ বঁহোরা कान निर्मिष्ठे अप वा महाश्वरवत्र **प्रकृत्वी स्टेता हत्वन** मा, তাছাদের পক্ষে আত্মায় প্রকাশিত বর্ণীয় আলোক অমুক্তব করা এবং প্রশ্নবাণী প্রবণ করা যে কভদুর আবিশ্রক ভাহা সহক্ষেই অমুমিত হইতে পারে। কিন্তু এই ব্রশ্ববাণী প্রবণ ও তাচার অনুসরণ, সরল ধর্মণিপাত্তর পক্ষে সহজ, ও অরপান-तारान्त्र स्राप्त पालाविक रहेता । नारात्रगढः हेरा प्रजिनव ক্ষাটন এবং অতি হুর্ল ভ। ইহা এইকস্থ কঠিন ও হুর্ল ভ নয়, যে ঈশবের বাণী ক্লাচিৎ প্রকাশিত হয়, এবং সক্লের নিক্ট ভাহা প্রকাশিত হয় না। কাঠিন্য এইজন্য যে, সেই বাণী শ্রবণের জ্ঞ মানব-মনের যেরূপ আগ্রহ ও একাগ্ৰভা যেরপ সরলতা ও সত্যপ্রিয়তা ধাকা আবশ্রক সাধারণতঃ তাহা पृष्ठे इत्र ना। व्यामना है लिया शास्त्र वाक् विवयं मदस्य दिवन গোলযোগ করি ও এমে পড়ি, তাহাতে সম্পূর্ণরূপে অতীক্তির বিষয় ঠিকভাবে অমুভব করিতে ভুল হইবার সম্ভাবনা আরও কত অধিক। বাহু বিষয় অমুভব করিতেই সচরাচর কেমন ভূপ হয়, সে বিবরে একটি গর আছে। একদা প্রাতঃকালে ভিত্তির পক্ষীর ডাক প্রবণ করিয়া একজন মুসলমান বলিলেন, যে এই পশী বলিতেছে, "সোভান্ ভেরি কুন্তং।" 'সেই ডাক একলন হিন্দু শ্ৰবণ করিয়া বলিলেন "না আপেনি ভূল বলিতে-ছেন; ও ত 'गোভান্ তেরি কুজং' এই কথা বলে নাই; ও विगटिक, 'ताम, नजान, मनावर्'।" डीक्टिन इस्कान मध्य যখন এবিষয়ে ঐক্য হইল না, তখন তাঁহারা নিকটত্ব এক দোকানদারকে জিজ্ঞাদা করিবেন যে তিতির পক্ষী কি বলিতেছে। দোকালদার বলিল যে, "আপনাদের ছই জনেরই ভুল হইয়াছে; পক্ষী বলিতেছে, পাঁাজ, রম্বন, আদ্রক।" প্রশ্নের মীমাংসা না হইরা, আরও গোল বাঁধিল দেখিরা উছোরা তিন জনেই আবার একজন পালোয়ানের নিকট সেই কথা লিজাসা করিলেন; তিনি বলিলেন, "এবিষয়ে , আপনারা সক লেই ভ্রমে পড়িয়াছেন, তিন্তির পক্ষী ও সব কিছুই বলিতেছে না, সে বলিতেছে 'দণ্ড, মুদার, কসরৎ'।" এই ভাবে চারিজনে চারি প্রকার বলিলে তাঁহাদের কোন भीमाः नारे बहेन ना अवः উভরোভর গোলযোগ বৃদ্ধি इश्वत्रात्र उँशित्री काख रहेग्रा वाशनाशन निकाखरे ठिक मान कतिराम । একটা সামান্য বাহু বিষয়েই यहि এত মতের অনৈক্য সম্ভবে, এবং আপনাপন ক্ষতির অমুরপ সিদ্ধান্ত হয়, তাহা हरेल जहत्थार, जहति दिया छैननिकत विश्वत क्छ অনৈক্য ঘটিবার সম্ভাবনা। এই জন্তুই দেখা যার, ত্রন্ধের বাণী শ্রবণ; এবং ভাহার অভিপ্রার প্রকৃত রূপে অফুডব করিবার পক্ষে বিষম কাঠিত আছে। সচরাচর মাতুর আপনাপন পার্থিব শিক্ষা, সংস্কার, ক্লচি ও স্বার্থের অন্তর্মপ ভাবেই বাণী প্রবণ করিয়া থাকে অথবা প্রকাশিত বাণী সেই ভাবেই গ্রহণ कतित्रा शांक । याचा ऋषि विक्रम, वा मश्चात्र विक्रम अक्रभ चारमण अनिवात मुहास आत्रहे रमशा बात ना। वास्त्रिक বাহারা স্ম্পূর্ণরূপে সরল ও উলার নতে, যাহারা সম্পূর্ণরূপে পুর্বসংস্থারবর্জিত নহে, বাহারা সম্পূর্ণরূপে স্বার্থ ও আত্ম-কৃতি পরিত্যাল করিতে প্রস্তুত ও সমর্থ নহে, তাহাদের পক্ষে বন্ধাণীর প্রকৃত তাৎপর্য্য পরিপ্রহ করা সম্ভবপর নর। এক্সই বিভিন্ন ব্যক্তি এবং নানা সম্প্রদীয় ব্রহ্মবাণীয় বিভিন্নভাব ও অর্থ ব্যাখ্যা করিরা থাকেন। নিজের অস্তই যথন ত্রন্মবাণীর প্রকৃত তাৎপর্য্য প্রহণ এত কঠিন; যধন অতি সরন, নিঃস্বার্থ ও সম্পূর্ণ-রূপে পূর্ব্বসংখারবর্জিত ব্যক্তি ভিন্ন অভ কেই বন্ধবাণী প্রবণ ক্রিতে পারে না,তথন অপরের সহকে বাণীশ্রবণ ও তাহার প্রকৃত ভাৎপর্য্য পরিগ্রন্থ যে আরও কত কঠিন,ভাষা সহজেই অহভব করা যাইতে পারে। বাঁহারা এইরূপ শুরুতর কার্য্যের ভার গ্রহণ করেন, তাঁহাদের সাহসকে হু:সাহস ভিন্ন আরু কি বলা যাইডে পারে ? ভিন্ন ভিন্ন ধর্মসম্প্রদার এবং ধর্মপ্রবর্ত্তকগণের মতানৈক্যের ইহাই প্রকৃত কারণ। এসকল দেখিরা ভনিরা ব্রাহ্মগণের সাবধান হওয়া আবস্তক, যে তাঁহারা যেন সম্পূর্ণরূপে পূৰ্ব্বসংস্থার, স্বার্থ, ও ক্লচি বৰ্জিত হইরা ত্রন্ধবাণী প্রবণের প্রবাসী হন: এবং নিরম্বর ভাহারই, অপেকা করেন।

জীবে দয়।—জীবে দরা ব্রাদ্ধর্মের একটি প্রধান সাধন।
বিনি ভগবানের জনস্ত কৃণা স্বীর জীবনে নিরত ভোগ করিতেছেন, তিনি কি প্রাণীদিগের প্রতি নির্ম্ভুর ব্যবহার করিতে
পারেন ? বাস্তবিক ধর্মপথে বিনি বে পরিমাণে অগ্রসর হইবেন,
তাঁহার জ্বল সেই পরিমাণে দরা ও প্রেমে পূর্ণ হইবে।
সাধক ভগবানের সন্নিকটে উপস্থিত হইলে, তাঁহার স্বষ্ট জীবদিগকে প্রাণের সহিত আলিঙ্কন না দিরা থাকিতে পারেন না।
তথন তিনি সর্বজীবে সেই প্রাণক্রণী, চৈতক্তরূপী পরব্রদ্ধকে
দর্শন করিয়া আত্মপর গণনা বিস্কৃত হইরা যান। তথন বনের
বৃক্ষ লতা পর্যান্ত তাঁহার আপনার হইরা যার। অভ ও চৈতক্ত
সর্বপ্রকার পদার্থের মধ্যে ব্রন্ধকে দর্শন করিয়া তিনি আনন্দিত
হন, এবং গুই বাহ প্রসারণ করিয়া সকলকে আলিঙ্কন করেন।
এই অবস্থাই হিন্দু খবি এইরূপে বর্ণন করিয়াছেন:—

অবং বন্ধুরয়ং নেভি গণনা ক্র্ডচেতসাং উদারচন্ধিতানাম্ভ বস্থবৈধ কুটুম্বকং।

অর্থাৎ, "ইনি বন্ধু, ইনি বন্ধু নহেন, এইরপ গণনা কুড়িতিও অজ্ঞানী লোকের সভাব, উদারচিত্ত লোকের পক্ষে জগতের সকলেই কুটুর।" বাস্তবিক ধান্মিকদিগের নিকট এই সংসার স্থীর পরিবারের জ্ঞার। সমস্তই তাঁহার প্রাণপ্রির বস্তু। কিন্তু এখন একটি গুরুতর প্রশ্ন এই যে, যাহারা জগৎ সংসারের মধ্যে ব্রহ্মফুর্ত্তি উপলব্ধি করিয়া সকলকে আপনার করিবার জন্য সাধন অবলম্বন করিয়াছেন, তাঁহারা প্রাণীবধ করিতে পারেন কিনা গুলুলে মন্ত্রাব্যের কিথা উলিখিত হইতেছেনা, পভ্ পন্দীর জীবন নাশের বিবরই আলোচ্য। বিশ্বপ্রেম লাভ করিবেন বলিয়া বধন ব্যক্ষাধক সাধনা অবলম্বন করিয়াছেন, তথন তাঁহার পক্ষে গভ পক্ষাদির প্রাণনাশ করা বা তৎসাহায়া করা কি মন্ত্রা প্র

নিরামিব ভোজনের পক্ষে ও বিপক্ষে বিভিন্ন ব্যক্তি বিভিন্ন প্রান্তর যুক্তি প্রদর্শন করির। স্বীর স্বীর মত সমর্থন করির। থাকেন। আমরা সে সকল জটিল তর্কের কথা উথাপন করি-তেছিনা। আমাদের আলোচ্য বিষর এই ষে, এক দিকে বিশ্বপ্রেম ও অপর দিকে জীবের প্রাণনাশ, এই ছই বিষয়ে সামক্ষত্ত কোথার? সমর সমর প্রাহ্মসমাজের বেদী হইতেও জীবে দরা যে মুক্তির একটি অল বিশেষ, তাহাও কোন কোন আচার্য্য প্রকাশ করিতেছেন। অথচ সাধারণতঃ আমরা দেখিতে পাই, অনেকেই জীবহত্যা করির। থাকেন। পশু পক্ষী মৎস্তাদির প্রাণনাশে রত থাকিলে কি রূপে সর্ক্ষীবে প্রোম-সাধন হইবে? প্রোম-সাধনের প্রথমেই জীবে দরা অভ্যাস করিতে হয়। জীবের প্রতি দরা করিতে অভ্যন্ত না হইলে প্রেম-সাধন কথনও হইবে না।

মহাভারতের আদি-পর্কেশততম অধ্যায়ে শাস্তমুর রাজ্যের বর্ণনার মধ্যে এই কথা লিখিত আছে,—"তাঁহার (শাস্তমুর) শাসন সময়ে মৃগ, বরাহ প্রভৃতি পশু পক্ষীদিগের প্রতি হিংসা হইত না। তাঁহার রাজ্যে অহিংসা রূপ আকা ধর্ম প্রধান ছিল।" প্রাচীন কালের আক্ষা ধর্মের লক্ষণের মধ্যেও জীবে দয়ার কথা স্পষ্ট উল্লিখিত হইয়াছে। कौरत पत्रा माधन मा কবিলে সে কালের আহ্মণর্ম সাধন হইত না। আমাদের মধ্যেও এবিষয়ের বিধি ব্যবস্থা আছে। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ-প্রকাশিত পঞ্জিকায় ব্রাহ্মধর্মের যে নয়টি মূল মত প্রকাশিত হইতেছে,ভাহার ণম সংখ্যক মতে লিখিত আছে—The Father-hood of God and the Brother-hood of Man and kindness to all living beings ইহার অর্থ এই যে, ঈশবের পিতত স্বীকার ও মানবের ভাতৃত্ব এবং সমুদ্র প্রাণী-দিশের প্রতি দরা করিতে হইবে। ত্রাহ্মধর্মের এই মভের স্হিত জীব্যত্যার সামঞ্জত কিরূপে রক্ষিত হইতে পারে ? Kindness to all living beings এর অর্থ কি, তাহার আলোচনা হওয়া বিশেষ প্রয়োজন। এই মতের সহিত আমা-দের বারহারের সামঞ্জন্ত আচে কি না, এবং ভগবংপ্রেম লাভ कविष्ठ बहेता, आगीमागत अठि मत्राम् इक्षा कर्खना कि ना, ইত্যাদি বিষয় সকলে গভীরভাবে চিস্তা করেন, ইহা প্রার্থনীয়।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### সাধনা ও করুণা।

ধর্মোপদেন্তাগণ ধর্মজীবন লাভ ও ঈশার লাভের জন্ম এক দিকে যেনন নানা প্রকান উপায় অবৈলয়ন করিতে উপদেশ দিয়া খাকেন, ভেমনি ভালার সলে সলে বলিয়া থাকেন, এ সকল অবলছন করিলেট ভইবে না, ঈশারেন করণা ভিন্ন কেন ধর্মজীবন ক্রেপ্তিছর না, ঈশার লাভের অধিকাধী হয়-না। ভালার। এক দিকে বেমনাবলিয়া থাকেন, সংগ্রন্থ পাঠ কর, সংসদ কর,

নিরস্তর আত্মদৃষ্টির সহিত আত্ম-নিপ্রাহ্ কর, ঈশবের আরাধনা, खंदन, कीर्जन धदर धान धांब्रनाटक नियुक्त थोक, जानत निटक **ष्टाहात मरक मरकहे विनात शास्त्रम, हेहाहे यरबंडे मरह, क्षेत्रदात** কৰণা ভিন্ন কেছ ধৰ্মজীবন পাইতে পারে না, তাঁহার অমুগ্রহ ভিন্ন কেই ভাঁহাকে লাভ করিতে পারে না। আপাততঃ এই **इहे व्यक्तित खेक्टिक विक्रक्षव९ यान इत्र। यान इत्र यान ঈখরের অন্থগ্রহ ভিন্ন ধর্মজীবন লাভ** না হর, উাহাকে পাওরা ना यात्र, তবে आत्र धर्मनाधन कतिया कि कन ? नाधू नन कतिता, সংগ্রন্থ সকল অধ্যয়ন করিয়া, নানা প্রকারে কটকর ও পরিশ্রমঞ্জনক সাধন ভলনে প্রবৃত্ত হইয়া কিফল ? আমি यथन (ठडें। कतिया, পরিশ্রম করিয়া উলেকে পাইতেই পারিব ना, छाहात कक्रणा फिन्न यथन ध्यक्त कौरन लाख हहेत्रहे ना, তখন আর এ সকল আঘোলনের কি প্রয়োজন ? যথন উছোর षाबुधार रहेरत उथनहे कीवन गांख रहेरत, उथनहे उाहारक व्याश्च हरेव। तूथा कष्टेकत व्याशास्त्र याहेबा कि कन ? जाशा-**ज्जः উक्क कृहे ध्वकाद्भित উक्किटक विक्रक्षद**९ मन्न हहे**नि**€ विश्मिष्ठाति षाञ्चनदान धावः विद्या कतिता तम्या गाहेत्व, এক্দিকে যেমন ধর্মদাধনের আবস্থাকত। আছে, অপর্দিকে তেমনি ঈশবের দয়াভির তাঁহাকে পাওয়া যার না। ধর্মদাধন ও ঈশবের করুণা চুইই আবিশ্রক। উহার একটির আভাবে ধর্মজীবন কখনই পাওয়া যায় না।

घाँशांत्रा मत्न करतन, लेखन जकन जमरत महा करतन न!, তিনি উদাসীন: মানবের তণস্তা, তব স্তৃতিতে সম্ভূষ্ট হইরা তবে তাঁহার প্রার্থনা পূর্ণ করেন; তিনি মানবের স্থ্য ছংবের প্রতি উদাসীন হইয়া আছেন, বহু তপ্রভার পর তাঁহার নিজা-ভঙ্গ করিরা তাঁছার প্রসন্ন দৃষ্টিকে আকর্ষণ করিতে হয়, তাঁছাদের পক্ষে এ প্রেল্লর মীমাংসা করিতে অধিক আরাস করিতে হয় না। এক কথাতেই ইহার উত্তরহর যে, সাধন ভলন ছারা তাঁহার অনুতাহকে আকর্ষণ করিলেই মনস্বামনা দির হইতে शादा। पा श्राम शाधन । कुशा छे अध्यवहे व्यादासन (मेशा गाहे-তেছে। কিন্তু আমরা সেরুপ মনে করি না, আমরা বিশাস করি, ঈশ্বর নিয়ত কর্ণামর, নিয়ত জাগ্রত, তাঁহার প্রসন্ন-দৃষ্টি नारकत बक्क मानरवत (हहै। यः प्रत प्रारंका नाहे। छिनि চিরপ্রসর, চিরপ্রেমমর, তাঁছাব সম্ভানের অভাব মোচনের জনা তাঁহার ইচ্ছার কখনও বিরাম নাই,--তাঁহার করণাস্ত্রোত কোনও সময়ে প্রবাহিত, কোনও সময়ে অবক্ত হয় ভাষা नम्। किन्न जारा नर्सनारे चामारतम् कनारान्य कना निवन প্রবাহিত। যদি ভাষাই হয়, তিনি যদি নিয়ত করুণাময় এবং বিষ্ক প্রাসর হন, ভাগার প্রোমণাভ করিবার জন্য যদি আমাদের তব স্তৃতির অপেকা নাথাকে, তবে আরু সাধন **एक**रनद कि श्राद्याकन १

প্রবোজন এই যে, ঈশবের কুপালোত নিরত প্রবাহিত হইলেও, তিনি নিরত সহায় এবং প্রসায় হইলেও, নানাকারণে আমরা তাহা লাভ করিবার অধিকারী থাকি না। আমাদের মধ্যে এমন প্রতিকৃষতা নিরত বাস করিতেছে, যাহা সেই নিরভ প্রবাহিত করণালোভকেও আমাদের মধ্যে প্রবিষ্ট হইতে দের লা।

বেমন, প্রবল বর্ধার সময়ও যদি কেছ উপযুক্তরপে দেহ আর্ভ করিয়া৹বাহিরে গ্রমন করে, তাহা ছইলে সেই বৃটির ধারা তাহার পক্ষে কোন কার্য্যকর হর না; যদি কেছ স্থান্য প্রতির বিশ্বিত গৃহে বাস করে, বর্ধার ধারা পতিত হওরা না হওয়া তাহার পক্ষে তৃইই সমান; বেমন রুদ্ধ হার গৃহবাসীর পক্ষে প্রোাদর হওয়া না হওয়ার ইতর বিশেষ কিছুই নাই, সেইরূপ আমরা নানাপ্রকারে জন্মরের দয়াকে আমাদিগের হইতে দ্রে রাধিয়া থাকি,আমাদের অনিছা, আমাদের উদাসীনতা এবং আত্মপ্রভাব প্রভৃতি সর্বাদাই সেই করণা হইতে আমাদিগকে বঞ্চিত রাথিতেছে। নিরত যে করণা-সাগরে আমরা নিমগ্র আছি, আমাদের এমনই স্বভাবের বিকৃতি যে, তাহাও অমুভব করিবার শক্তি আমাদের থাকে না। আমরা আমাদের মধ্যে এমন বিরুদ্ধ ভাবের স্প্রী করিয়া রাধিনাছি, যাহা সেই প্রেমমরেম্ব নিয়ত প্রেম প্রবাহকেও বাধা দিয়া আমাদিগকে সেই প্রেমমরেম্ব নিয়ত প্রেম প্রবাহকেও বাধা দিয়া আমাদিগকে সেই প্রেমধারা হইতে দ্রে রাথে,—ভাহা হইতে বঞ্চিত করে।

যভ্দিন না এই বিক্লভাব অপনীত হইরা মাতুষ আপনার দীনভামুভব করিতে সমর্থ হয়, যতদিন না দে প্রকৃতরূপে অকিঞ্ন চইয়া সেই করুণার প্রার্ণী হয়, ততদিন সেই করুণা থাকিয়াও না থাকার মধ্যে পরিণত হয়। তাহার প্রভাব কোন কার্যাকর হয় না। একদিকে যেমন সরল ও অকিঞ্চন না হটলে काँहात कक्षण माञ्चालात अधिकाती हश्या यात्र ना, अभविष्ठि ইচাও দুই চয় যে, তাহার করণা যেন সর্বাদাই অবিভক্ত অনু-বাগের অপেক্ষা কবে। যে হৃদয় অবিভক্ত অমুরাগের সহিত ঈশ্ব লাভের জনা প্রয়াদী নয়, করুণা যেন সে স্থলে অভিমানীর নাায় প্রভ্যাথ্যান করিয়া যায়। একাগ্রভামধী শ্রদ্ধা ভিন্ন সেই ক্ষরণা কোণাও ভির হটয়া কার্যা করে না। ঈশ্বর সর্বাদ্টি আমাদের সমগ্র প্রাণের প্রয়াসী, আমরা যে কতক তাঁচাকে দিব আরু কড়ক অপবের জন্য রাথিয়া দিব, এমন শ্রন্ধা ভব্তি তিনি চাৰেন না। এজনা প্ৰাণের সমগ্ৰ অকিঞ্চন ভাব ও ঐকান্তিক ভক্তিট সেই करूना नाष्ट्रत बन्न প্রারোগ করিতে হর। সেই অবস্থাতেই মানবের পক্ষে ঈশ্বর লাভ সম্ভল্ন ও সুসাধ্য ∌ स्रा

এই অবিঞ্চনতা ও ঐকান্তিক ভক্তি লাভের জনা ধর্ম সাধনের প্রয়োজন। মানব প্রথমেই আপনার শক্তি ও সামর্থ্যের প্রাক্ত পরিচয় পায় না। সে মনে করে, আমি সাধন ভজন করিয়া আত্মচেষ্টাতেই সেই ত্রহ্মাণনকে লাভ করিব। আমার তপস্তা প্রভাবেই তিনি নিকটছ চইবেন। যতদিন মানবের এ প্রকার জ্ঞান থাকে, ততদিন সে উপারের পর উপায় গ্রহণ করিতে থাকে। কিন্তু ভাছার পরিজ্ঞাত এবং লোক-প্রচলিত উপার সমূহ গ্রহণ করিয়াও যথন বিশেষ কোন স্বধা পার না, তথন তাহার আত্ম-শক্তির প্রতি সন্দেহ জায়তে থাকে; তথন আত্ম-প্রভাব এবং আত্ম সাধন-ভজনের মূল্য যে অতি সামান্ত, তাহা ব্রেক্তে সমর্থ হয়। তথনই বাস্তবিক সে অকিঞ্চনতা লাভের অধিকারী হয়। মানুষ করনা করিয়া, ভাবিয়া চিভিয়া যে এই অবিঞ্চনতা আনয়ন করিবে, তাহার সম্ভাবনা নিতান্ত করা। বার বার পাল্প-শক্তির

আকর্মণাভার পরিচর পাইলেই আত্মার অকিঞ্চনতা আসিতে পারে—সাধক তথনই বাজবিক ব্যাকুলতার সহিত প্রার্থনা-পরারণ-চিন্তে ঈশ্বন-কর্মণার ভিথারী হয় এবং তাহার অপেকার জীবনধারণ করিতে থাকে এবং তথনই সেই কর্মণা তাহাকে চিরদিনের জন্য আপ্রয় দের—আলিজন করে—তথনই সে নিরা-পদ অবস্থার যাইবার উপবৃক্ততা লাভ করে।

একদিকে সাধন ভজন বারা যেমন আত্ম-শক্তির অকর্মণাতা অসামর্থ্য অমুভব হর, অপর দিকে তেমনি সেই করুণা-মরের জন্য ক্রমশং আকাজ্জার পরিবৃদ্ধি হইতে থাকে—ঠাহার আসক্ষমরপত্তা অমুভবের জন্য ব্যাকুগতা বর্দ্ধিত হইতে থাকে। তথন আর ব্রন্ধ-কর্মণা সেই আত্মার উপর স্বীর প্রভাব বিস্তার করিতে বাধা প্রাপ্ত হর না এবং তাহাকে একবারে অর্থকাব করিরা বসে। স্ক্রমং তাহার পক্ষে প্রকৃত জীবন লাভ এবং স্বীর লাভ সহজ হয়।

অতএব দেখা যাইতেছে, একদিকে যেমন তাঁহার করুণাই তাঁহাকে পাইবার পক্ষে একান্ত সহায়, আত্মচেষ্টার যেন কোনই মূল্য নাই, অপরদিকে সাধন ভন্ধন ভিন্নও সেই করুণার আগ্রেয় পাইবার সম্ভাবনা নাই। সেই নিয়ত প্রবাহিত করুণাস্রোত যাহাতে অবাধে আত্মার উপর আত্মগুভাব বিস্তার করিতে পারে ভাহারই জন্য আত্মার অকিঞ্নতা এবং ঐকান্তিক ভক্তির সঞ্চার হওয়া আবশ্রক। সেই অকিঞ্চনতা ও ভক্তির সমাবেশ কলনা বা চিন্তা ছারা লাভের সম্ভাবনা নাই। তাহা পাইতে চইলেই নিম্নত চেষ্টাপরায়ণ চিল্ডে গাধন ভঙ্গনে প্রবৃত্ত থাকিছে হয়। আয়শক্তির অকর্মণাতাকেহ ভাবিয়া ভাবিয়া অফুভব করিতে পারে না এবং অবস্থায় পডিয়া স্বীয় শক্তিগীন-তার পরিচয় লাভ না করিলেও কেহই প্রক্তরূপে অধিঞ্চন ছইতে পারে না। এজনা যেমন যথানিয়মে সাধন ভল্লন করা আবশুক, তেমনি সেই করণাম্যের করণা লাভ করা নিতান্ত थारकन ।

## সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জন্মদিন।

(সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের ষোড়শ জন্মদিন উপলক্ষে লিখিত।)

১১ই মাঘ এদেশে ব্রাহ্মসমাজ স্থাপিত হয়। হয়া জৈছি —
আদ্যকারদিনে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জন্ম। সমাজ আমাদের
পিতা মাতা—পিতা মাতার জন্মদিনে যেমন সম্ভানগণ আনন্দ
প্রকাশ করেন, আমরাও আজ তেমনিভাবে কুজ কদরের
আনন্দ-ধারা সেই জগজ্জননীর পাদ পল্লে অর্পণ করিব। কোন
শ্রেণীর সম্ভানেরা পিত! মাতার জন্মোৎসবে আনন্দ প্রকাশ
করে না !— বাহারা পোষ্য-পুত্র। পোষ্য-পুত্র স্থায় জনক
জননীর সম্বন্ধে চির উদাসীন। পরস্ত তাহারা যে ধর্ম্ম পিতী।
মাতার কাছে লালিত পালিত হয়, তাহাদের প্রতিও তেমন
অর্ক্রাগ লক্ষে না। আজ আমরা আনন্দ প্রকাশ করিব—
কারণ সাধারণ প্রাক্ষসমাজ আমাদের পিতা মাতা।

ধর্ম জগভেত্ব ইতিহাসে দেখা যার, মহাজনগণের জনেকেই সামান্ত ভাবে জন্মগ্রহণ করিরাছেন। যাঁহার প্রেম-ধর্ম

জগতের নরনারী প্রহণ করিরা সংসারের সর্কবিধ ছঃথ ছুদিশা প্রাদমিত করিতেছে, দেই মহাত্মা ঈশা গরিব স্তর্ধরের গৃহে ঘোড়ার আন্তাবলে জন্ম গ্রহণ করেন। বৃদ্ধ রাজপুত্র হইলেও न्विनी नामक चारन भागत्क मृत्न अतिवाहित्नन। क्रिड তাঁহারা নিভান্ত দীন হ:খীর মত জন্ম গ্রহণ করিয়াও অপতের উপর আজ পর্যান্ত অবিচলিত প্রভূত্ব করিতেছেন। অপরদিকে যাঁচারা জগৎকে ধর্ম শিক্ষা দিয়া গিরাছেন, তাঁহাদের অপেকা তাঁচাদের সমকালে কত বিদ্বান, বৃদ্ধিমান, জ্ঞানবান পণ্ডিত ছিলেন, বাঁহারা কুব ধারের ক্রায় তীক্ষ তর্ক যুক্তি দ্বারা বিপক্ষের মত সমূহ খণ্ডন করিয়া স্বীয় মত প্রতিষ্ঠিত করিতে সমর্থ ছিলেন; কিন্তু তাঁহাদের স্বারা একটা লোকণ্ড জগতে পরিত্রাশের পণে অগ্রসর হয় নাই। সাধারণ লোক দ্বারাই প্রমেশ্ব ধর্ম বিপ্লব সংঘটন করিয়াছেন। ইহাতে প্রভু পরমেশ্ববের এই অভিপ্রায় প্রকাশ পাইভেছে যে, তিনি সাধু দুষ্টাস্ত প্রদ-র্শনের জন্য অতি সামান্য লোকের ছারাই মহৎকার্য্যাদি সম্পাদন করিছা থাকেন। যিনি কুদ্র কুদ্র বালু বিন্দুর সমবায়ে পর্বতিরচনাকরেন, বিশুবিদ্ধান কণার সমাবেশে সমুদ্র সৃষ্টি করেন, তিনি আলজীবী, ভিকারী এবং গরিবদিগের ছারাই পৃথিবীতে যুগপ্রলয় সম্পন্ন কবিয়াছেন।

ব্রাক্ষণমাঞ্জ-স্টির ভিতরেও ঈশবের এই অপূর্ক লীলা নিহিত রহিরাছে। ধনে, মানে, জ্ঞানে, প্রভুত্বে পৃথিবীর কত দেশ শ্রেষ্ঠ স্থান অধিকার করিয়া রহিরাছে। সে সকল স্থানে ব্রাহ্মসমাজের অভ্যাদর না হইয়া ছর্কাল, অয়-জ্ঞান, হীনতেজ বল্ল-দেশে কেন ইহার জন্ম হইল ? এই থানেই প্রভুর লীলা দেখিতে পাওয়া যায়। বঙ্গদেশে ব্রাহ্মসমাজের জন্ম না হইলে প্রভুব মহত্ব বাড়ে কিসে ?

বাদ্ধসমাজ স্থাপিত হইল, বাদ্ধধর্ম প্রচারিত হইতে লাগিল; কিন্তু ইহাতে ও বিধাতার লীলা পূর্ণ হইল;না। লোকে ভাবিতে লাগিল "দেশের কতকগুলি গণ্য মান্য বড লোক এক ত্রিত হইয়া স্বীয় স্বীয় ক্ষমতার পরিচয় দিতেছে। বড়-লোক দিগেব দ্বারাই এরপ কার্য্য সম্পন্ন হইতে পারে।" তাই এবার প্রভু লীলা পূর্ণ করিলেন। পৃথিবীর মধ্যে ঘাহারা তর্বাল, একভা-বিহীন, এবং নানাপ্রকার কুসংকার-রত সন্তান, তাহাদিগের প্রতি দয়া করিয়া বেমন স্থর্গের পবিত্র ধর্ম প্রেরণ করিয়াছিলেন, এখন সেই ত্র্বালাগের মধ্যে ঘাহারা বিদ্যা বৃদ্ধি ও জ্ঞানে অধিকতর পশ্চাৎ পদ তাহাদের দ্বারা এই নব শক্তির উৎসন্তর্বাপ সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ স্থাপন করিলেন। ত্র্বিল সন্তানদিগের দ্বারা অতি মহৎ কার্য্য সম্পাদন করাই এই লীলার উদ্দেশ্ত।

এই স্বিস্ত সদৃষ্ঠ ব্লমন্দির কাহাদের দারা নির্দ্ধিত কইরাছে ? কোন শ্রেণীর লোক এথানে সমবেত হইর। ভগবানের নাম করিরা থাকেন ? হাহাদের ধন বল নাই, পদ বল নাই, যাহারা দেশে তেমন স্পরিচিত নহে, ভাহারাই এ সনাজের আশ্রেত।

রাজ্পপ দিয়া হ'ত লোক গমনাগমন করিবার কাতে মন্দির দর্শন করিয়া জিজাসা করে — "এই কি সাধারণ সমাজের ব্রহ্ম- মন্দির ? এত বড় মন্দির ; কিন্তু এখানকার লোকদিগকে ত চিনি না।"
টিহারা চিরকাল অচেনাই থাকুক, প্রভ্র মহিমা—প্রভ্র গৌরব প্রকাশিত হউক।

আজ কোন্ শ্রেণীর লোক বিশেষ আনন্দ প্রকাশ করিতেছেন ? যাঁহারা এ সমাজে বিধাতার হস্ত দেখিতেছেন,—
ইহাকে বিধাতার দীলাক্ষেত্র ভাবিয়া ইহার আশ্রয়ে বাস
করিতেছেন। আজ তাঁহারাই আনন্দ প্রকাশ করিতেছেন,
যাঁহার৷ এ সমাজের উপাসনা প্রণালী, এ সমাজের দার্যপ্রণালী,
নিরমাদি প্রতিপালন করিতে পরাস্থুপ নচেন। অদা তাঁহাদেরই
মুথ প্রেফুল্ল, যাহারা গুরুবাদ, মধ্যবর্ত্তীবাদ, শাল্পবাদ প্রভৃতি
সর্ব্ধ প্রকারের বাধা অতিক্রম করিয়া ভগবানের সহিত সাধারণ
ভূমিতে দণ্ডায়মান হইতে অভিলায়ী।

ক্বফের জন্মোৎসবে বৈফবের কত আনন্দ। এতিইর জন্মদিনে অতি গরিব থৃষ্ঠানেরও মুথের বিষাদ কালিমা বিমুক্ত হয়। আন্যু সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জন্মদিনে ইহার আপ্রিভগণ কি তদপেকা অধিকতর আনন্দ প্রকাশ কবিবেন না?

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ আমাদেব অতি প্রিয় বস্তা। আমাদের রক্ত দান করিয়া কি ইলার চরণ বিধোত করিব না ? ইলাব সেবা করিব না ? আমাদের জ্ঞান, আমাদের সাধন ভল্পন, আমাদের অনহিতকর কার্য্য সকলই এই সমাজ হইতে প্রস্তুত হইতেছে। এই মাতৃদেবীর সেবায় কি আমরা প্রত্যেকে আজীবন চেষ্টা করিব না ?

মনে কি নাই বন্ধুগণ ! কত রাত্রি জাগরণে যাপন করি-রাছ, কত পরিশ্রম করিয়াছ, ইহার সেবার জন্ত কত উৎসাহ উদ্যম এবং সৎসাহস প্রদর্শন করিয়াছ? আজি তাহা স্মরণ কর। অবসন্ধ হৃদ্যে আশা উদীপ্ত হইবে।

কে আমাদিগকে এখানে আনিয়াছেন, একজিত করিয়া-ছেন, সাধন করাইভেছেন? আমরা বিচ্চিন্ন, অজ্ঞাত, অপরিচিত ভাবে কোথায় পড়িয়া রহিরাছিলাম। এই সময়র কে করিলেন? কুদ্র কুল তুণ লইয়া কে এই ঘর বাঁধিলেন? এই মন্দির কালার সাক্ষ্য প্রদান করিতেছে? এ সকল কি লৌকিক ব্যাপার! এ সকল ঘটনা কি মানব-বৃদ্ধি ছারা সম্পন্ন ছইতেছে? না, সেই মহান্ পর্মেশরের লীলা। তিনি প্রত্যক্তাবে এ সমাজ পরিচালিত করিতেছেন। ব্রাহ্মধর্মের মূল সত্য রক্ষার জক্ত তাঁহার এই অত্যক্ত লীলার বিকাশ।

বন্ধুগণ! আমরা ইহাকে ছাড়িয়া কোথায় যাইব । এই মহৎ দান উপেক্ষা করিয়া কোন্ বস্ত গ্রহণ করিব । আঞ্চন পরিত্যাগ করিয়া কাচ,গ্রহণ করিব কি । এমন ছম্মভি যেন আমাদের কাহারও না হর।

ভাই ভগিনীগণ! ভোমাদের চরণে বিনীত প্রার্থনা, বর্ত্তনান মৃত্যে পরিত্রাণের একমাত্র উপার এই ব্রাহ্মসমাল। আফ্রন, আমরা ইহার সহিত প্রাণের পূর্ণযোগ স্থাপন করি। ইহাকে পরিত্রাণের উপার জানিয়া বিদ্যা, বৃদ্ধি, ধন ও ক্ষমতা সমুদর ইহার চরণতলে অর্পণ করি। এ সমাল মানব রচিত নর, পরমেশবের নীলা-নিকেতন। সামরা এখানে সুক্তির লভ্ত

আসিরাছি, সাংসারিক কার্যা সিদ্ধির জন্ত আসি নাই। এ সমাজের কল্যাণোদেশে দিতে পারি না, আমাদের এমস কোন্ প্রির বস্ত আছে ? আমরা যথাসর্বস্থ ইহাতে আহতি দান করিব। তবেই ত্রন্ধরূপা অবতীর্ণ হইবে। প্রমেশ্বর আমা-দিগকে শুভবুদ্ধি দান করুন।

#### সতাং।

সাধারণ আক্ষসমাজের যোড়েশ জম্মোৎসব উপলক্ষে ১লা জৈ) ঠ রবিবার প্রাতঃকালীন উপাসনার পর শ্রীযুক্ত নব্দীপচক্র দাস কর্তৃক বিবৃত উপদেশ।

আরাধনাতে প্রধানতঃ এই করটি স্বরূপ সাধনের ব্যবস্থা আছে;

—সত্য, জ্ঞান, অনস্ত, অপশু এবং আননদ শান্ত মদল ও পবিত্র।
সকল স্বরূপের আদি এবং ভিত্তি ভূমি সত্য স্বরূপ।
"সত্যং" বলিলেই প্রকাশিত, অপ্রকাশিত, মানবের জ্ঞাত
অজ্ঞাত মহান্ পর্মেশ্রের সম্দর স্বরূপ বলা হয়। সত্যের
অভ্যন্তরে সম্দর স্বরূপ নিহিত রহিয়াছে। সত্য স্বরূপ সাধন
না করিলে অভ্যকোনও স্বরূপের ভাবও উপলব্ধি ইইতে পারে
না। অন্যান্য স্বরূপগুলি সত্য স্বরূপের অস্তরন্থ অক বিশেষ।

এতদ্দেশীয় ধর্মোপদেষ্টাগণ তিন শ্রেণীতে সাধকদিগকে বিভক্ত কবিরাছেন ;—প্রবর্ত্তক, সাধক এবং সিদ্ধ। তাঁহারা এবিষয়টি এইরূপে বাক্ত করিরাছেন ;—প্রবর্ত্তক সাধক বাহা ৰুগতে পরমেখরের সতা উপলব্ধি করিতে ইচ্ছুক হন। কিন্ত তিনি কোনও ভানে তাঁছাকে দেখিতে না পাইয়। "নেতি নেতি" "অংথাৎ ইহানয় ইহা নয়" বলিয়া নিরাশ হন। উদ্ধে অনস্ত আকাশে অনস্ত তারকারাজি প্রকৃটিত, নিয়ে স্বিশাল সন্জ, পর্বত নদ নদী ও স্থানল বৃক্ষ লভা পরিপূর্ণ বন্ধা, কিন্ত ইহার কিছুই ত সভা নর। সকলই সৃষ্টি স্থিতি লয়ের অধীন। সাগর শুক হইরা মরুকেত্তে পরিণত হইতেছে, ফরভূমি আনবার দাগর হইতেছে; উল্লভশীর্ষ পর্বত সমভূমি হইতেছে, সমতল ক্ষেত্র উচ্চ প**ক্তের আনকার** ধারণ করি-ভেছে। অপরদিকে প্রিয়তম জনগণ এক একটি করিয়া অদৃভা হইতেছে। শিশু, যুবা, বৃদ্ধ সকলেই অনস্ত মরণ সাগরে ্ঝাঁপ দিতেছে। অদ্য যে গৃহ আনন্দ, শাস্তিতে প্রফুল, কল্য নৈ গৃহে হাহাকার ধ্বনি উপিত হইতেছে। যে সুথ ও সম্পদের লীলাভূমিতে মানব এই মুহুঠে পরমানন্দে বিচরণ করিতেছে, কি ছক্ষণ পরে সে স্থান খ্যাশানক্ষেত্র রূপে দর্শন করিয়া ভীতচিত্তে শ্চাৎপদ হইতেছে। অতএব উদ্ধে অধোভাগে, চতুর্দিকে জড় জীবজগতে নিয়ত পরিবর্তনের মধ্যে অপরিবর্তনীয় ধ্ব লৈত্য কোথায় ? অটল, অচল, অবিনাশী বস্তু কোথায় ? অনি-ভের মধ্যে নিতা অক্ষর পুরুষ কোণার 🕈 এবছিধ চিন্তা পরস্পর। ৰারা ব্যাকুশ মানবাত্মা যথন সত্যের অফুসন্ধান করিতে ইভন্তভ: धावमान हत्र, त्मरे व्यवहार्त्क माधकश्य धावर्खाकत व्यवहा विविद्या निर्मिण कत्रिशास्त्र।

এই অবস্থা অন্তগনানের অবস্থা। সভ্যান্তসনানই সাধকের মুধ্যউদেক্ত্র। চারিদিকে অসভ্য ও অস্থায়ী বস্তু দর্শন করিরা সাধৰ সভ্য শাভের জন্ম অভিন হইরা উঠেন। সাধক চাহে ন সভ্য বস্তু—গ্রুব বস্তু; কিন্তু দেখেন চারিদিকে কেবল অসার ও অনিভ্য। এই জনাই ভিনি বলিভে থাকেন "ইহা নয়, ইহা নয়।"

বাস্থ জগতে নিরাশ হইরা সাধক আত্মার অভ্যন্তরে প্রবেশ করেন। তথন দেখিতে পান, এক অকর অবিনাশী সত্যের সহিত তিনি সংখুক্ত আছেন। এক পূর্ণ অমৃত ভাণ্ডার হইতে তিনি ক্যান, প্রেম, পরিত্রতা প্রভৃতি আত্মিক ভারসমূহ প্রাপ্ত হইতেছেন। এক মহাসতাহইতে মানবাত্মার সকল সম্পতি প্রস্তুত হইতেছে। এই চৈতন্য রূপী আদি সন্তার সহিত আত্মার নিগৃঢ় যোগ দেখিয়া সাধক বলিয়া উঠেন "অত্তীতি অত্তীতি" "তিনি আছেন, তিনি আছেন।" এই যে, আমার আত্মর-কর্তা, মূলাধার রূপে চিন্মর প্রকৃত্ব আমারই হুদরে বাস করিতেছেন।" এই অবস্থাতেই ব্রহ্মসাধক বলেন—"কোণা যাস্রে ভাই তার অবেষণে বল দেখি আমার ? যে জন ডাক্তে জানে, কাতরপ্রাণে ঘরে বসে সে যে পার"।

শাধক আত্মার অভ্যন্তরে প্রবেশ করিয়া সভ্যস্তরূপের সাধনে তক্ষর হইয়া যান। এতদিন বাছ জগতে যাঁহার দর্শন না পাইরা তিনি ব্যাকুল ও নিরাশচিতে অভিকটে কাল যাপন করিতেছিলেন, এখন অস্তরে সেই ছল্ল ভ বস্তর সাক্ষাৎ পাইয়া মোহিত হইলেন। এই সাধনের অবস্থা যথন পরিপক হয়, যথন সত্য বস্তুর সহিত আত্মার নিগুট ঘনিষ্ট যোগ হয়—বধন সংশয়, করনা, ভাবুকতা তিরোহিত হইয়া উচ্ছল ব্ৰশ্বজান বিকশিত হয়, তথন, সাধকের প্রাণের অক্তম্বল ভেদ করিয়। স্মধুর ধ্বনি উথিত হয় "জংহি জংহি" তুমিই ভূমিই। তথন ष्ठिनि याहा प्रमेन करत्रन, याहा खारण करत्रन, जकरनत्र मरधाहे त्रहे आत्नित्र (मन्यादक (मन्यादक भान)। उथन जिनि चाकात्म, চন্দ্র, প্রা, গ্রহ, নক্ষত্তে এবং প্রকৃতির রম্মীয় আভরণের মধ্যে তাঁহাকে দেখেন। শিশুর কোমল মুখে, ফুলের সৌন্দর্য্যে তাঁহারই সৌন্দর্যা দেখিতে পান। সকল অস্থায়ী ও অসারের প্রাণরণে সেই সত্যন্তরপকে দর্শন করিয়া তিনি নিশ্চিস্ত হন, ইহাকেই সিদ্ধাবস্থা বলে। সিদ্ধাবস্থায় অস্তর বাহিরু এক হইরা যার। তথন চকু মুদিত ও অমুদিত একই অবস্থা। সাধক আদ্রিত রূপে,—অফুগৃহীত রূপে, এশ্ব সহবাস লাভ करत्रन ।

কেছ কেছ বলেন;—"নাম সাধন কর, নামেতেই মুক্তি।
নাম করিতে করিতে ঈর্যরের স্বরূপ যথন প্রস্কৃতিত ছইবে,
তথনই আরাধনা করিবে, তৎপূর্বে আরাধনা সাধনের প্রান্তের
অনীয়তা নাই।" কেছ কেছ বা বলেন;—"দিবানিশি
ধ্যান কর, ধ্যানই অনস্ত-কালের সম্বল। আবার কেছ
কেছ বলেন;—"আরাধনা সাধন কেবল ধ্যানরাজ্যে প্রবেশের জন্তা। আরাধনার সাহিত মানবাত্মার নিত্যকালের
সম্বন্ধ নাই। ধ্যানই আত্মার লক্ষ্য। স্কুতরাং সাধক যথন
বন্ধ্যানে তথার ছইরা ঘান, তথন আর আরাধনার প্রেরেজন
কি? অতএব সাধন করিতে করিতে এমন উচ্চাবন্থা লাভ
ছইবে, যথন আরাবনা সাধনের প্রয়েজন থাকিবে না।"

এমন কি এই সকল যুক্তি অবলম্বন করতঃ কেহ কেহ আরাধনা পরিত্যাগ করিরা অন্ত উপারে সাধন করিতেও কুন্টিত হন না। কিন্ত ভগবানের ক্লপার সাধন রাজ্যের বড্টুকু মুর্মা ব্ঝিরাছি, তালতে ইহাই বিখাস হইরাছে বে, আরাধনা অনস্তকালের সাধন।

মানবাস্থার মধ্যে জ্ঞান, ভাব, ইচ্ছা এই তিনটি বিষয় রহিরাছে। অনস্ত কাল এই তিনেরই উন্নতি হইবে। আস্থার অনস্ত উন্নতি শব্দেব অর্থ, আস্থা জ্ঞান ভাব ইচ্ছাতে উন্নতি হওয়া। এই জ্ঞান, ভাব, ইচ্ছাতে উন্নত হইতে গেলেই ভগবানের স্থান সাধন অপরিহার্যা। পরমেশবের স্থান গাধন ভিন্ন কথনও আস্থার এই সকল অপূর্ণ স্থান প্রেম্ণুটিত হইতে গাবেনা। অনস্ত জ্ঞান, প্রেম ও পুণাের আদর্শ সমুথে না রাথিয়া মানবাত্ম। কিকপে জ্ঞান, প্রেম, পুণাে অনস্ত উন্নতি লাভ কবিবে প পরমেশ্বর স্থীয়কপে যদি সাধকের নিকট অনস্ত কাল প্রকাশিত না থাকেন, ভবে সাধক কোন্ বস্ত অবলম্বন করিয়া অনস্ত উন্নতি পথে গমন করিবে প ঈশ্বর আমাদের পরিচালক, আদর্শ এবং উন্নতিদাতা, স্থানপ সাধনের মধ্য দিয়াই আমরা এই জ্ঞান লাভ করিয়া থাকি।

পরস্ত্রপ্রেই বলা হইরাছে, স্তাম্বরপের অভ্যন্তরে সমুদ্র

ম্বর্ক নিহিত রহিরাছে। সত্যে তলার হওয়া অর্থাৎ তাঁহার
উপলব্ধি করাই ধ্যানের উদ্দেশ্য। স্তরাং সমুদ্র স্বরূপের
আদি, স্তাম্বর্ক সাধনাই ধ্যানের লক্ষ্য। স্বরূপ সাধন
ও ধ্যান বাহিরে ভিরাথ বোধক হইলেও মূলে অভেদায়ক
বিষয়। যাহাবা স্বর্পসাধন পরিভ্যাণ করিয়া ধ্যান করিতে
আবস্ত করেন, তাঁহাদের সাধ্যের উদ্দেশ্য কি তাহা কেহ
ব্রিতে পারে না।

সাধনের যে জিনটি অবস্থা উল্লিখিত হইল, সেই তিন অবভাতেই আরাধনা সাধন—সত্যেব সাধন প্রারোজনীয়। সাধক
প্রথম অবভায় সত্যের জন্ম লালায়িত হন, দিতীয় অবভায়
সত্যের সহিত পরিচিত হন, এবং তৃতীর অথাৎ সিদ্ধাবন্ধায়
সভ্যের সহিত যুক্ত হন, তথন উাহার সভ্যের ভোগ হয়।
স্তরাঃ সাধকের আধ্যাশ্মিক উচ্চাবস্থার সঙ্গে সঙ্গে আরাধনার মূলমন্ত্রপ্রলি পরিবর্ত্তিত হয় না। "তুমি সভ্যা, তুমি
জ্ঞান, তুম প্রেম, তুমি পুণা" ইত্যাদি সাধন অনস্ত কালের
সঙ্গী। তবে অধিকারী ভেদে উপশব্দির তারতমা হয় মাত্র।
কৈত সত্য কি তাহা জানিবাব জন্ম ব্যাকুল, কেচ সভ্য বস্ত জানিয়া আনেশিত, কেহ বা সত্যম্বরপের সন্তোগে শান্তিপ্রাপ্ত।
কিন্তু উচ্চ ও নীচ সকল শ্রেণীব সাধকই সভ্যের সাধন করিবেন,
নতুবা লক্ষাত্রত তর্ণীর জায় বিল্পগামী হইতে হইবে।

সত্য স্বরপসাগবে নিমগ্ন হইলে দেখা যার, আরাধনা অমৃত
রাজ্য বিশেষ। ইংার প্রাত স্বরূপে মধুচক্র রচিত। পিপাসিত
মনভূপ অনস্থকাল পান করিলেও অমৃত ভাণ্ডারের পারসমাপ্তি
হবৈ না। নানবাত্মার অনস্ত আকাজ্জার নিকট ভগবানের
পূর্ণ স্বরূপগুলিই উপযুক্ত প্রলোভনীয় স্ত্তঃ। স্তরাং সত্যস্বরূপের সাধন—স্বরূপ সাধন পরিত্যাগ ক্রিয়া অভিবিধ সাধন
অস্বাভাবিক। সের্মণ কোনও সাধনে কথনও স্ধিক্র

প্রাণের আকাজ্ঞা পরিতৃপ্ত হইবে না। কিন্তু হৃংথের বিষদ্ধ যে, এই অমূল্য ধন প্রাপ্ত হইরাও আমরা সমূচিতরূপে ব্যবহার করিতে পারিতেছি না। অন্য সাধারণ ব্যাক্ষসমান্তের অন্যোৎসবের পূর্বান্ধনে আমরা সকলে এই বিষয়টি বিশেষ- ভাবে অরণ করি যে, পরমেশ্বরের অ্যাচিত ক্রপাশুণে বর্ত্তমান সাধন প্রণাণী আমরা প্রাপ্ত হইরাছি। জাতিভেদ ও নানাপ্রকাব পাপমোহাজ্ছর দেশে সত্যের সাধন করিবার জন্তু পরমেশ্বর এই হুর্বাল দীন সন্তানদিগকে আহ্বান করিয়াছেন। যাহারা এই স্থেন প্রনাদিগকে পরিত্রাণের উপায় বলিয়া বিশ্বাস করিবরেন, তাঁহারাই পরমেশ্বরের আশীর্কাদ প্রাপ্ত হইবেন। সত্যেব সাধন করা—আরাধনাসাধনা করা—তাঁহারই আদেশ। আমরা এই আদেশ শিরোধার্য্য পূর্কাক যেন এই সাধনে নিয়োজিত থাকি। সভ্যন্থরূপ পরমেশ্বর আমাদিগকে ক্রপা করুন, আমরা যেন প্রকৃত সত্য লাভ করিতে সমর্থ হই।

#### সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ ও তাহার কার্য্য।

(বিগত ১লা জৈ; ঠ রবিবার সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জন্মেৎসব উপলক্ষে শ্রীযুক্ত শশিভূষণ বস্থ কর্জুক মন্দিরে বিবৃত উপদেশ।)

আগামী কল্য আমাদের প্রির সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের এক্স-দিন। আমাদের সকলেরই বড় আনান্দের দিন। এ সময় প্রাণ পুলিরা হই একটা কণা বলিতে ইচ্ছা হইতেছে। শুনি-রাছি ধন্মবীর মহাত্মা মার্টিন লুণারের সমাধির উপর প্রাহ্মেক্স ছলে এই কয়েকটা কথা লিখিত আছে,—

Is it mans? It shall fade away.

Is it God's? It shall stand for ever.

ইহা কি মলেবেব ॰ তাহা হইলে হহ। ধ্বংদ হইরা যাইবে। ইহাুকি মহান্পরমেখরের গুতাহা হইলে ইহা চিরাদন স্বায়ী হইবে।

আজ, সাধারণ প্রাক্ষসমাজের দ্বারে দীড়াইয়া অনেকেই এই প্রান্ন করিতে পারেন যে, "ইহা মানবের, না, সেই মহান্ পর্মে-খবের মূ" এই পঞ্চদশ বংসরের কাষ্যপ্রণালী অংশস্ত সাক্ষ্য দিতেছে যে, ইহা ভাঁহারই দান।

আমর। যকলেই জানি যে, সাধাবণ ব্রাহ্মসমাজ নিয়মতন্ত্র প্রণালী প্রবৃত্তিত করিয়াছেন। আজ কাল প্রায় সমস্ত প্রসভা জগতেই রাজনৈতিক ও অক্সান্ত বিভাগে নিয়মতন্ত্রপ্রণালী প্রবৃত্তিত ইইতেছে। রাজনৈতিক বিভাগের বড় বড় লোকেরা সাধারণ নিয়মতন্ত্রে লোকদিগাকে শিক্ষিত করিছে প্রয়ামী ইইরাছেন। আমেরিকা মহাদেশে সাধারণতন্ত্র অথবা নিয়মতন্ত্রপ্রিত হওমান্ত্র অংশব কল্যাণ হইরাছে। ইংল্ড দেশের বড় লোকেরা এক্ষণে রাজার পরিবত্তে প্রস্তাভন্ত প্রণালী প্রবৃত্তিব করিবার সমস্ত্র তিনি তাহাকে জগতে প্রেরণ করিবার সমস্ত্র তাহার হালর ভূমিতে উজ্জল অক্সান্ত করা লিখিয়া দিয়াছেন। "ওরে মানব ভূই অল্যন্ত শান্ত্র কর্বা অল্যন্ত ক্রম্ব কণা শুনিরা চলিন্ন নে।" স্বাধীনতাতেই স্বন্ধ, ইহাতেই মানবের ভূমিত অলাকশা

সাধারণ আহ্মসমাজও সেই নিরমতত্রপ্রধানী ধর্মসমাজে প্রবর্তিত করিতে বছবান্ হইরাছেন। নিরমতত্রপ্রধানী কি ? এক সাধারণ নিরমে লোকদিগকে পরিচালিত করা। অগাধ বারিধি-গর্ভে যেমন বৃহৎ তিমিও থাকে এবং কুল্র মংস্তও থাকে, উভয়েই আনন্দ-মনে সঞ্চরণ করে;—ফেমন নীল আকাশে বৃহৎ বাজপন্দী ও চকোর উভয়েই পক্ষ বিস্তার করিরা মৃকভাবে উড়িয়া বেড়ায়, এই নিরমতত্র প্রধানীতে সেইরূপ সকলে সমানভাবে কার্য্য করিতে পারে। ইহাছারা নরনারীর মনের ভাব বিকশিত হয়। ইহাতে মানব মনের শক্তির বিকাশ হয়। ইহা বর্ত্ত্বমান সমরে পরমেশ্রের প্রত্যক্ষ বিধান।

যিনি সামান্য লোক, তাঁহারও যদি গুণ থাকে, তিনিও এথানে এক বংসর, নাহর ছই বংসব, নাহর দশ বংসর পরে আপনার ক্ষমতাম্পারে যোগ্য স্থান প্রাপ্ত হইবেন। এই প্রণালীতে মানবের প্রভূত কল্যাণ হর। রাজনৈতিক বিভাগে আমরা দেখিয়াছি, যেথানে রাজারই প্রতাপে দেশ শাসিত হয়, সেথানে কোন লোক মাথা তুলিতে চেটা করিলে রাজা তাহার মন্তক টিপিয়া ধ্বেন। নিয়মতন্ত্র অথবা সাধাবণ তন্ত্র সেরলে নহে। ইনাতে বালক, সুবা, সুবতী, প্রবীণ ও

দিতীয়তঃ সাধারণ এক্ষেসমাজ ধর্মের জটিলভাব হইতে জনসমাজকে রক্ষা করিবাব জন্ম বিধিমতে চেন্তা করিয়াছেন। এই
ভারকে ধর্মের এমন সকল প্রণালী ও এমন সকল কথা আছে,
যাহার মর্মা জদগলম করা বড কঠিন ব্যাপার। সে সকল এত জটিল
যে, ঠিক জিলিপির পাকের স্থার বোধ হর। অনেক কথার
প্রেক্ত তাৎপর্যা বৃঝিতে হইলে ধর্মের অভিধান হক্ষে করিয়া
বেড়াইতে হয়। ধর্মের এইরূপ জটিল ও কৃটিল ভাবে ভারতেব
সমূহ অনিষ্ট হইয়াছে। সাধাবণ আক্ষমমাজ এই প্রচাব করিয়াছেন যে, সরল ভাবে ডাকিলেই পরমেখবকে লাভ কবা যায়।
ছোট ছেলে যেমন ভারে পিতাকে পিতা বলিয়া সম্বোধন করে.
ছোট বালক যেমন ক্ষার সময় জননীর অঞ্চল ধরিয়া থাবাব
প্রোর্থনা করে; তৃষ্ণার সময় মানব যেমন জল-পান করে—
তাহার মধ্যে যেমন কোন কৃত্রিমতা নাই, সেইরূপ সাধারণ
আক্ষমমাজ ও এই শিক্ষা দিতেছেন যে, "সরল প্রার্থনাই মুক্তির

যাহারা অন্তান্ত গুরু ও শাল্পের আদেশে চলিতে চান, তাঁহাদের এ সংসারে অনেক বিপদ ঘটিয়া থাকে। তাহাদের সেই
দশা হর, যেমন এক জাহাজের নাবিকেবা জাহাজন্তিত কল্পাদের নিকটে কাপ্তেনের মৃত্যুতে তৎক্ষণাৎ সেই দিপদর্শন শলাকার গতি পেরেক দিয়া রুদ্ধ করিয়া দিয়াছিল, এবং সেই গতিহীন যন্ত্রের অনুসারে চলিয়া অবলেষে বিপাকে পড়িয়াছিল।
সেইরূপ যাহারা এ সংসারে জীবন-তরি চালাইতে যায়, তাহাদেরও পদে পদে ঐ অজ্ঞ নাবিকদিগের দশা ঘটিয়া থাকে। সাধারণ
ব্রাক্ষসমাজ বিশেষভাবে এই কয়েক বৎসর এই শিক্ষা দিতেছেন
বে, সয়লভাবে পরমেশবের নিক্ট প্রার্থনা করা, তাহার ধ্যান
করা ইহাই ব্রাক্ষধর্মের আদেশ।

चामारतत्र छेनानना-अनानीत छात्र छे ९क्ड छेनानना-अनानी

আর কথন পৃথিবীতে হর নাই। এই প্রণাণীমত সাধন করিলে
সানবের জীবন গঠিত হর এবং পরিত্রাণ হর। কে বলে এ
সাধনে উপকার হয় না ? আমরা জনেকেই শুনিরাছি, মহবি
লেবেক্স নাথ, বথন "সত্যম্" বলেন, তথন তাঁহার সমস্ত পরীরের
রোম সকল খাড়া হইরা উঠে। "সত্যম্, জ্ঞানম্" বলিরাই ভারতের
গ্রিরা নির্জনে ও গিরি শিথরে বসিয়া সেই মহান্ প্রমেশ্ববের
বন্দনা করিয়া অপার আনক্ষ সভোগ করিয়া গিরাছেন।

তৃতীরত: সকল প্রকার সামাজিক উন্নতি সাধনে তৎপরতা। এই করেক বৎসরের মধ্যে আমাদের প্রির সাধারণ ত্রাহ্মদমাঞ সামাজিক উন্নতি বিষয়ে প্রমেখরের কুপার অনেক প্রিমাণে অপ্রদাব হইতে সমর্থ হইয়াছেন। সামাজিক উন্নতি ধর্মের একটি প্রধান অঙ্গ। এই কয়েক বৎসরে যে সকল সাধুকার্য্যের অফুচান হইয়াছে, তাহাতে আমাদের প্রাণে অত্যস্ত আনন্দ হইয়াছে। সামাজিক উন্নতি সম্বন্ধে অনেক কাৰ্য্য প্ৰত্যক্ষভাবে সমাজ ब्हेट ना ब्हेल ९ हेबात ऋरवांगा जलांगित সম্পাদিত হইয়াছে ও হইতেছে । ইহাতে সাধারণ আক্ষসমাজের জন্ম চারিদিকে ঘোষিত হইতেছে। দৃষ্টান্ত প্রকণ আমাদের একখানি বালালা সাপ্তাহিক পত্রিকার নাম উল্লেখ করা যাইতে পারে। কয়েকজন স্থযোগ্য সভ্যের দ্বারা ইছা পরিচালিত ছই-তেছে। এই পত্রিকা দেশে বিদেশে প্রচারিত হইয়া অশেষ মলল সাধন কবিতেছে, এবং রাজনৈতিক বিভাগে ঘোৰ ষ্মান্দোলন উপস্থিত করিয়াছে। দীন দরিদ্র কুণীদের উপর যাহারা নূশংস ব্যবহার করে, ভাহাদিগকে দমন করিতে এই পত্রিকাই কিয়ৎপরিমাণে সক্ষম হইয়াছে। এই পত্রিকা দীন তঃথিদেব পিতা মাতা হইয়া নানারূপে দেশের অনেক হিতসাধন করিতেছে।

রমণীাদগেব বিষয়েও এথানে কিছু বুলা আব্যাক। এই वरमदा ब्रम्भी निश्तं व्यानक বিষয়ে উন্নতি লিকিত হইরাছে। সাধারণ তাক্ষদমাজ ব্<u>ন্ণীর্নিকে স্বাধী</u>-নতা ও শিক্ষা দানে তৎপর হইষাছেন। আরপ্তিব বলিয়াছিলেন যে, রমণীদিগের আত্মা নাই তিনি ৰদি আজ জীবিত থাকিতেন, তাহা হইলে দেখিতেন, ভারতে রম্ণীদিগের ছারা কত কার্য্য সংসাধিত হইতেছে। রমণীরা জ্ঞানে ও ধশ্মে কত উন্নতি লাভ কবিতেছেন। আমানের আদর্শ অতি উচ্চ। ষদিও অনেক বিষয়ে আখাদের হর্ত্তগতা আছে, কিন্তু এই উচ্চ আদর্শ অনুসারে আমবা চলিতে অভিলাধী হইয়াছি, এবং জগতের নিকট এই সুন্দর আদুর্শ ধরিতে প্রস্তুত হইয়াছি। कान, 'त्थ्रम, कार्यात সামঞ্জ कवारे आमात्मत हिल्ला। बाजनीिक, ममाज, विख्वान अवः मनन मकरणवरे उन्निक कता সাধারণ ত্রাহ্মসমান্দের কার্য্য।

সাধারণ বান্ধসমাজের আর একটি প্রধান কার্য্য এই, সত্য ও চরিত্রকে আদর করা। আমরা ধ্যানকে আদর করি, কিন্তু বদি দেখি, এক বাজি পাঁচ ঘুটা ধ্যান করে, অথচ তাহার চবিত্র হীন, তাহার সভায়িহরাগ নাই—সে ব্যুক্ত সমাজের ভরে ভীত— ভাহা ইইলে সাধারণ বান্ধসমাজ সেরুপ ধ্যানের কোন মূলা কেন না। আমরা ধ্যানের সঙ্গে সংগ্রানীর চরিত্র দেখিতে চাই, সত্যামুরাগ দেখিতে চাই। সত্যের প্রভাব বিস্তার করাই
সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের এক প্রধান লক্ষণ। এই করেক বংসরের
মধ্যে অনেক বালক কাহারও কথা না শুনিরা, এবং
সমাজের ভরে ভীত না হইরা উপবীত পরিত্যাগ করিরাছেন।
অনেক পুরুষ ও রমণী স্বার্থত্যাগের উচ্ছল দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিরাদ
ছেন। কত যুবাপুরুষ উৎসাহের সহিত এখানে যোগদান করিরাদ
ছেন। যাঁহাদের আনন্দযুক্ত বদন দেখিলে প্রাণ আনন্দে পূর্ণ হর।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজেব পূত্র কন্তাগণ, শুভাকাজ্ঞী ও শুভাকাজ্ঞিনীগণ! আপনাদের নিকট এই বিনীত প্রার্থনা যে, আপনারা প্রমেশ্বরের উপর নির্ভর করিয়া দেশে বিদেশে মহান্ প্রমেশ্বরের জন্ম ঘোষণা করুন। মহাত্মা ঈশা বিলিয়াছিলেন, "Let your light so shine before men, that they may See your good works, and glorify your Father which is in Heaven. ইহার ভাব এই, জীবনের জ্যোতি চারিদিকে বিস্তার কর তাহা হইলে লোকে তোমাদের কার্য্য দর্শন করিয়া সেই পরমেশ্বরের জন্ম ঘোষণা কবিবে। বন্ধুগণ জন্মীগণ সেই মহান্ প্রমেশ্বরের নাম চারিদিকে ঘোষণা কর। ব্রাহ্মসমাজের উচ্চ আদর্শ আমরা সকল স্থানে ধরিব। বন্ধুগণ! ইহা মানবেব, না সেই মহান্ প্রমেশ্বের ? ইহা সেই স্বহান্ পরমেশ্বেরই দান। ইহা ছারা দেশের কল্যাণ হইবে এবং জগতের মঙ্গল হইবে।

#### পঞ্জাব-প্রচার-যাত্রীদিগের পত্ত।

আমরা ৪ঠা মে ঝান্দী পৌছি। এখানে কতিপয় বাঙ্গালী ভদলোকের যত্নে একটি প্রার্থনাসমাজ স্থাপিত হইয়াছে। এই প্রার্থনা সমাজের সম্পাদক মহাশার আমাদিশকে অভ্যানাকবেন। সমাজের কয়েক জন সভা আমাদিশক অভ্যানাকবিবার জন্ত ষ্টেশনে উপস্থিত ছিলেন। বাবু মহেন্দ্রনাথ দাস মহাশারেব গৃহে আমরা অবস্থিতি কবি।

হে বে—অপরাজে নহেন্দ্র বাবুর গছে সঞ্চীত, সংকীর্ত্তন এবং প্রার্থনাদি হয়। শাল্পী মহাশয় উপনিষদের শ্লোক অবলম্বন কবিয়া উপদেশ দেন। উপদেশ এরপ প্রাণ-ম্পাশী হইয়াছিল যে,কেহ কেহ অঞ্চ সংব্রণ করিতে পারেন নাই।

৬ই নে—অপবারে মাবহাটা কল গ্রেব প্রাক্ত এক প্রকাশ সভা হয়। ইংরাজ, পার্লী, নারহাটা, হিন্দুখানী, বাঙ্গালী প্রভৃতি নানা শ্রেণীর প্রায় তিন শত লোক সভায় উপস্থিত ছিলেন। প্রথমতঃ একটি হিন্দি সঙ্গীত হয়, তৎপর শ্রীযুক্ত স্থলর সিংহ ও প্রকাশ দেব উর্দ্ধৃ ভাষায় সংক্ষিপ্ত, বক্তা করেন। স্থলর সিংহের বক্তার সার মর্ম্ম—"ধর্ম প্রবৃত্তি মানবের স্বাভাবিক। বেমন ক্রপোসা শরীবের পক্ষে, তেমন ধর্মপিপাসা আত্মার পক্ষে স্বাভাবিক। স্তরাং ধর্মণাভ করিবার জন্ত, কোনও আলান্ত গ্রন্থ বা গুরুর প্রয়েজন হয় না। আত্মা সভাবতই ধর্মের জন্ত ব্যাক্ল, পরমেশ্বর গ্রন্থ ও উপদেশ্বা হইয়া সেই ব্যাক্ল, তৃষিত আত্মাতে ধর্মবারি প্রদান করেন।" বক্তা ক্রেকটি দুইাত্ত

ৰায়া সংক্ষেপে এবিবয়টি জ্বন্দয়স্কাপে বর্ণন করেন।' জীযুক্ত প্রকাশ দেবের বক্তৃতার তুলমর্ম এই ;—"বে ধর্ম মাত্রকে নবজীবন দিতে পাৰে না, ভাছা প্ৰকৃত ধৰ্ম, নহে। কেবল ধর্মের উচ্চ মত মানিলে কোন ফল হয় না। বেদ, বাইবেল, কোরাণ প্রভৃতি গ্রন্থে উচ্চ সত্য নিহিত আছে; তাহাতে আমার কি ? আমার জীবনে যদি সভ্য প্রতিফলিত না হইল, **जरत উচ্চ তত্ত্ব কণ্ঠস্থ করিয়া কি ফল হইবে ? আমাদের দেশে** কত লোক শাল্তে বিশাস করিয়া ধর্মের নানা প্রকার বাঁহ্ অমুঠান—কৃচ্ছ সাধন ইত্যাদি করিয়া থাকে। কিন্তু ভাছাদের জীবন দেখিলে ধর্ম্মের প্রতি লোকের অবিশ্বাস অবিদ্রা যায়। এমনই অণতা, ছক্রিয়া পাপাচরণে তাহাদেব জীবন পূর্ণ। অভএৰ আমাদিগকে সত্যে প্রতিষ্ঠিত হইতে হইবে। ধর্ম व्यवश् वावशांत्रिक कीवन व्यक्तिश्र ना इहेरल नवकीवन लाक क्त्रो यात्र ना। बाक्षधर्य नवकीवन निवात अन्त्र व्यानिशास्त्र। কার্য্য ও বাক্যে সম্পূর্ণরূপে সতো প্রভিষ্ঠিত হওয়াই ব্রাহ্মধর্ম माधन। जेर्रेत कक्रन এ धर्म जीवान व्यवजीर्ग इंडेक।"

তৎপর শাস্ত্রী মহাশয় ইংরাজীতে বক্তা করেন। বক্তার দার মর্ম এই, "পৃথিবীতে সভ্যতার এই উন্নতির দিনে সংকীর্ণ ধর্ম ডিষ্টিতে পাবিবে না। যতই শিক্ষার বিস্তার হইতেছে, ততই লোকের ধর্মকতা চলিয়া যাইতেছে। ধর্ম বিশ্বাস, গ্রন্থ, তীর্থ স্থান ও ব্যক্তি বিশেষকে অভিক্রম করিয়া এক বিশ্বজনীন উদারাতার দিকে ছুটিতেছে। এমন সময় আসিবে, যথন লোকে সেই বিশ্বজ্ঞনীন উদার ধর্মের ছায়াতে আসিয়া বিশ্রাম লাভ कतिरत। এই धर्म कान कान्ति बिर्मायत नरह, किन्छ नकन জাতিরই পবিত্রা**ণের ধর্ম হই**বে। ० धर्मात नेचरत्र প্রকাশ (revealation) একটি লক্ষণ, কিন্তু কোন প্রস্থ বিশেষে ইহা আবদ্ধ ন**ে**। এধর্মে মানবাত্মায় **ঈশ্বরের** প্রকাশ হয় ইহাও একটি লক্ষণ; কিন্তু কোন ব্যক্তি বিশেষেও সময় বিশেষে আবদ্ধ থাকিবে না। উদারতা, ঈশ্বরের পিতৃত, মানবের ভ্রাতৃত্ব ইহার অগুৰিধ লক্ষণ। আধ্যাত্মিকতা এই ধর্মের শ্বরূপ। - धर्मा" वका नाना-রূপ দৃষ্টাস্ত বারা এ বিষয়টি অংতি উজ্জনরূপে প্রাকাশ করেন। বক্তা অতি সারগর্ভ ও প্রাণম্পাশী হইয়াছিল। বক্তাত্তে মিঃ সোরাবজী বাইরামজী নামক একজন সম্ভ্ৰান্ত পাশী ইংরাজিতে বলিলেন, "আমরা ধন্মের বাহাড্মরের মধ্যে বাস করিভেছি. ধম্মের নানারণ অভ্টান ক্রিয়াও नेत्रत हहेएक व्यत्नक पृत्त प्रहिग्नाहि। व्यामारपत मर्या কত অন্যায় রহিয়াছে। বাস্তবিক আসরা প্রকৃত ধর্ম **হইতে অনেক দৃরে। এই অন্ধকারের মধ্যে শ্রহা**শাদ শাস্ত্রী মহাশয় ও অপের বক্তাছয় যে প্রকৃত ধর্মের স্থ্সংবাদ আমাদের निक्षे थाठात कतिरामन असम् हैशामिशाक ७ बाध्यममान्याक এই সভার পক্ষ হইতে আমি আন্তরের সহিত ধ্রাবাদ প্রাদান कति। आत्र रेशाएन निक्षे श्रार्थना এरे एन, रेशाना रवन আমাদিগকে বিশ্বত হইয়া না বান, বেমন অমুগ্রহ পূর্বক ইহারা चामामिशक बान्नधर्षित चुनःवाम खंदन कत्राहेत्नन ; यम अक्रम মধ্যে মধ্যে আলিয়া আমানিগকে উপকৃত করেন।" তৎপর

স্থানীয় প্রার্থনা সমাজের পক্ষ হইতে বাবু বছনাথ চক্রবর্ত্তী ধ্রুবাদ প্রদান করেন। স্ববশেষে আর একটা হিন্দী স্কীত হইলে স্ভা ভল হয়।

তৎপর দিবস প্রাতে শ্রীযুক্ত গিরীশচক্ত চক্রবর্তী নামক একজন প্রাচীন হিন্দু আমাদিগকে তাঁহার গৃহে আহ্বান করেন। তথার উপাসনা ও উপদেশ এবং কীর্ত্তনাদি হয়। শাস্ত্রী মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন। তথার প্রায় ২৫ জন বালানী উপস্থিত ছিলেন।

উপরোক্ত বহুনাথ চক্রবর্তী মহাশয়েব বত্নে এথানে একটি অনাথালয় স্থাপিত হইয়াছে। ইহা কিয়ৎপরিমাণে আমাদের দাসাশ্রমের অফুরূপ। এথানে আপাতত: ১৫টি রোগী আশ্রর পাইয়াছে। বেতন ভোগী ভৃত্যগণ ইহাদের সেবা ভশ্রষা করিয়া থাকে। যহ্বাবৃষয়ং ইহার তত্ত্বাবধান করেন। যহ্বাব্র বয়স ৬০ বংসর, তিনি গভর্মেণ্ট হইতে পেক্ষন পান। তিনি যদিও বৃদ্ধ, কিন্তু তিনি নিজা বা উপবেশনে—আগতে দিন কর্তুন করেন না। তাঁহার সমুদয় সময় নানারূপ জনহিত-ু কর কায্যে ব্যায়ত হয়। তাঁহার শরীর ও মনেব স্থন্তা, কার্য্যোৎসাহ, অমশালতা এবং সহদয়তা অমুকরণীয়। যত্বাবু আমাদিগকে তাঁহার অনাথালয় দশন করিতে আহ্বান করেন। আমরা উপাদনাতে তথায় যাই। মিঃ সোরাবজি এবং আর করেক জন বাঙ্গাণী ও হিন্দু ছানীও গমন কবেন। রোগিগণ এক স্থানে মিলিড হইলে তাহাাদগকে সঙ্গীত ও বাদ্য অবণ করান হয়। পরে জীযুক্ত জ্বর সিংহ সরল উর্দ্ভাষার कि इ धर्याभरम्भ (मन।

ইহাদের প্রক্ষতি অতি সরল, আগ্রহের সহিত ইহাবা উপদেশ শ্রবণ করিল। বতু বাবু ইহাদের জন্ম নানার্ব ফল ও নিষ্টার আনিয়া রাথিয়াছিলেন, পরিশেষে তাহা ইহাদিগকে প্রচুব পরিমাণে বিতরণ করা হয়। যাহাদের সংসারে কেহ নাই, তাহারা এরূপ সম্ভেহ ব্যবহার প্রাপ্ত হইতেছে, এ দৃশ্য আমাদের দেশে নৃতন। ভগবান কর্মন, এরূপ সাধু-কায্যের সংখ্যা দিন দিন বৃদ্ধ প্রাপ্তি হউক।

অপরাক্ষেয়ত বাব্র গৃহে পাঠ, ব্যাথ্যা, প্রাথনা ও সঙ্গীত
কীর্ত্তনাদি হয়। শাস্ত্রী মহাশন্ধ আচায্যের কার্যা কবেন।
প্রায় ৪০ জন ভদ্রগোক ও >২ জন মহিলা উপন্থিত ছিলেন।
জদ্যকার সন্মিলন প্রধানতঃ মহিলাদিগের জন্তই হইরাছিল।
উপদেশ, প্রার্থনা ও সংকীর্ত্তনাদি অতি সবস হইরাছিল।
আমাদের রাস্পার কার্য্য এবার এথানেই শেষ হইল। ভগবানের ক্রপান্ন এথানে একটা নৃতন ভাবের উদ্য় হইরাছে।
এথানে জনেকেই ব্রহ্মধর্ম ও ব্রহ্মসমাজ সম্বন্ধে প্রায় কিছু
জানিতেন না। তাঁহাদের দৃষ্টি ব্রাহ্মসমাজের দিকে আক্রপ্ত
হইরাছে। কেহ কেছ আমাদের কাগজের গ্রাহক হইরাছেন ও
ব্রাহ্মধর্ম বিষয়ক প্রকাদি ক্রের ক্রিয়াছেন এবং স্হাম্ভূতি
প্রাক্ষাশ ক্রিয়াছেন। (ক্রমশঃ)

# ব্রাহ্মসমাজ।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের যোড়শ জন্মোৎসব— স্থারণ ব্রাহ্মসমান্তের যোড়শ জন্মদিন উপলক্ষে গত ১লা ও ২রা জ্রৈষ্ঠ উৎসব হইয়াছে। ১লা রবিবার প্রাতে মন্দিরে উপাসনা হয়। এীযুক্ত নবদীপচক্র দাস আচার্য্যের কর্মি करवन এवः উপদেশ व्यमान करत्रन। वेमिन मस्त्रा-काल बाव मिम्बियन वस्र बाहार्रात्र कार्या करतन। है हारनत প্রদত্ত হুইটা উপদেশ স্থানাস্তরে মুদ্রিত হুইরাছে। ২বা জাৈঠ প্রাতে ত্রীযুক্ত উন্মেশচন্দ্র দত্ত আচার্য্যের কার্য্য করেন। অপবাহে বাবু সীতানাথ দত্ত ইংরাজি ও সংস্কৃত পুস্তক হইতে আন্ধর্মামু-মোদিত প্রবন্ধ ও স্লোক পাঠ করেন, তৎপর আরাধনা সম্বন্ধে বিশেষ আলোচনা হয়। এীযুক্ত উমেশচক্র দত্ত, বাবুমনো-রঞ্জন শুহ, বাবু কুফ্টচক্র বন্দ্যোপাধ্যায় বাবু দীতানাথ দত্ত, বাবু মহেন্দ্ৰনাথ চটোপাধ্যায় বাবু বিপিনচক্ত পাল এবং বাবু কাশীচক্ত যোষাল প্রভৃতি আরাধনা ও উপাদনা প্রণালী সম্বন্ধে স্বীয় স্বীয় মুস্তব্য প্রকাশ করেন। সন্ধা সমাগমে কীর্ত্তন হয়। তৎপর শ্রীযুক্ত নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় উপাসনা করেন। তাঁহার উপদেশ স্থানাভাব বশতঃ এবার প্রকাশিত হইল না। বাক্ষধর্ম ও বাক্ষ-স্মাজের বিশুদ্ধতা রক্ষা করিবার জন্ত প্রনেশ্বর এই সাধারণ ব্রাহ্মসমান্তকে স্থাপন করিরাছেন। আমরা যেন এখানে ব্রাহ্মর कीयत जीना मर्जन कतिया, मिन मिन देशांत रापांत्र अधिक उत्र षाकृष्टे इहे।

প্রাব-প্রচার বাত্রীদল—স্থান প্রান্তর সহিত প্রকাশ কবিতেছি যে, পণ্ডিত শিবনাপ শাস্ত্রী প্রমুথ পঞ্জাব প্রচার-বাত্রিগণ ছই মাদেব পর, গত ১২ই জৈট কলিকাতায় উপনীত হইয়াছেন। ইহারা লাহোর গমনের সময় যেনন স্থানে প্রচাব করিয়াছিলেন, স্থাসিবাব কালেও স্থান্তা, থাণ্ডোয়া, ঝাস্ত্রী, এলাহাবাদ প্রভৃতি স্থানে প্রচার করিয়াছেন। এবার প্রচাবকার্য্যে বিশেষ ওত লক্ষণ দেখা গিয়াছে। ইহাদের উপাসনা, ধর্মালোচনা, শ্লোক-ব্যাখ্যা এবং বক্তৃতা ও সঙ্গীতাদি প্রবণ কবিষা ব্রাহ্মসমাঙ্গেব বিরোধীগণও সহাম্ভৃতি প্রকাশ করিয়াছেন এবং অনেক ধ্র্মাপিণাস্থ-প্রাণ এ ধর্মের প্রতি আরুই হইয়াছে। ইহারা যে স্থানে গমন করিয়াছেন, সেথানেই বিশেষ ধর্মান্দোলন হইয়াছে। বিধাতা ব্রাহ্মধর্ম গ্রহণের জন্ত দিন দিন যে ভারতের ক্ষেত্র প্রস্তুত করি-তেছেন, এ যাত্রায় তাহার স্পষ্ট নিদর্শন পাওয়া গিয়াছে। পরমেশ্বর তাঁহার সত্যধর্ম জগতে প্রচার করন।

উৎসব—গত ২০শে চৈত্র খ্রামবাজার ব্রাক্ষসমাজের বার্থিক উৎসব সম্পন্ন হইরাছে। প্রীথুক বাবু উমেশচক্র দত্ত মাচার্য্যের কার্য্য করেন, প্রীযুক্ত বাবু বিজেক্তনাথ ঠাকুর একটা নিখিত উপদেশ পাঠ করেন। উপদেশটা অতি সারগর্ভ ও চিত্তাপূর্ণ হইরাহিল।

হাজারীধাগ ব্রাহ্মসমাজের উৎসব উপলক্ষে কলিকাতা হইতে প্রচারক প্রীযুক্ত নগেক্তনাথ চট্টোপাধ্যার এবং বারু রেবতীমোহন সেন তথার গমন করিয়াছিলেন। উৎসবে উপাসনা, আলোচনা, বক্তা ও কথকতা ইত্যাদি হইয়াছিল। নগেক্ত বারু ছইদিন বক্তা করেন এবং রেবতী বারু চৈত্ত্তালা সম্বন্ধে কথকতা করেন। বক্তৃতা ও কথকতা অতি হৃদয়গ্রাহী হইয়াছিল। উৎসবের বিস্তৃত বিবরণ প্রাপ্ত হইলে পরে প্রকাশ করা যাইবে।

জন্মদিন—মাণিকদহের জমিদার বাবু বিপিনবিহারী রায়
শীয় জন্মদিন উপলক্ষে সাঃ বাঃ সমাজে ২, সাধনাশ্রমে ২,
ব্রাহ্ম-বালিকা-শিক্ষালয়ে ২, এবং দাসাশ্রমে ২, টাকা দান
করিয়াছেন।

জাতকর্ম—হবিনাভিনিবাদী বাবু শ্রীশচন্দ্র রায়ের পুত্রের জাতকর্ম সাধনপ্রমে সম্পন্ন হইরাছে। শ্রীযুক্ত নববীপচন্দ্র দাস আচার্য্যের কাষ্য করেন। এতছপলক্ষে শ্রীশবাবু সাধনাপ্রমে ২১ টাকা দান করিয়াছেন।

৪ঠা জৈঠে অপার সাবকিউলাব রোডস্থ ভবনে প্রীর্ক শুরুদাস চক্রবর্তীর নবজাত কুমারের জাত কর্ম উপলক্ষে বিশেষ-ভাবে উপাসনাদি হইয়াছে। বাবু কাশীচক্র ঘোষাল পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন, বাবু মহেক্রনাথ চট্টোপাধ্যায় উপাসনা এবং বাবু নবখীপচক্র দাস উপদেশ দান করেন। প্রমেশ্বর শিশুদিগের মঙ্গল করন।

শ্রি—পরলোকগত জগদীশব গুপু মহাশ্যের মাতার বার্ষিক শ্রাদ্ধ গত ১২ই জ্যৈষ্ঠ ২১০।৪ নং ভবনে সম্পান হুইরাছে।
শাল্রী মহাশর আচার্যোর কার্য্য করেন, বানু দেবীপ্রসন্ধ রায়চৌধুরী স্বর্গীয়া দেনিব জীবন চবিতের অংশবিশেষ পাঠ
করেন। জগদীশর বাবুর উইল অনুসারে তাঁহার পত্নী এততপলক্ষে নিম্নলিখিতরূপে দশটে টাকা দান করিয়াছেন,—সাধনাশ্রম
২১, আনাথাশ্রম ১১, জ্বগায়ক দল ২১ ভাবতবর্ষীর ব্রাদ্ধদমান্তের
প্রচাব ভাগোর ১১ সাধাবণ ব্রাদ্ধদমান্ত ২১।

তরা জৈঠে বহুবাজাবস বাবু হরিনোলন দত্তের প্রলোগত পিতার বার্ষিক শ্রাদ্ধ সম্পন্ন হইরাছে। পূর্বাক্তে বাবু উনেশচক্র দত্ত এবং রাত্রিতে বাবু কেদার নাগ রায় উপাসনা করেন। প্র-মেখর প্রলোকগত আংগ্রাদিগের মঙ্গল বিধাম কর্ণন।

পরলোকগতা বালিকার জন্মেৎসব—>র! জাঠ
বাবু দেবীপ্রসন্ন বানচৌধুরীর পরলোকগতা কভা অপরাজিতার
জন্মেৎসব উপলক্ষে বিশেষ উপাসনা হয়। এতত্পলক্ষে দেবী বাবু
সাঃ বাঃ সমাজে > এবং সাধনাশ্রমে : টাকা দান
করিয়াছেন।

. উপনিষদ প্ৰকাৰ্ণ – বন্ধৰিজ্ঞানা প্ৰভৃতি প্ৰণেডা বাৰু

নীভানাথ দত্ত কর্ত্ব স্থাপ, কেন, কঠ, প্রশ্ন, মুগুক, মাপুকা, এই ছর খানি উপনিবদের সরল ও সংক্ষিপ্ত সংস্কৃত টিকা এবং বঙ্গান্দ্রবাদ শীঘ্রই প্রকাশিত হইবে। স্থাসিক বৈদিক পণ্ডিত শী্র্ক সত্যব্রত সামশ্রমী এই গ্রন্থ সংশোধন করিয়া দিতেছেন ও তাঁহার সাক্ষাৎ তত্ত্বাবধানে মুক্তিত হইতেছে। স্তরাং অম্বাদ যে বিশুদ্ধ ও স্কালম্কার হইবে, তাহার সক্ষেত্র নাই। ২১০৩২ নং কর্ণপ্রবালিস খ্রীট ঠিকানার প্র লিখিলে পুত্তক ভি, লি, পার্শেলে প্রেরিত হইবে। ম্বা॥ ৮০ আনা।

পত্রপ্রেকদিগের প্রতি—বাবু ঘারকানাথ গঙ্গো-পাধ্যার এবং বাবু ঘারকানাথ সবকারের একট বিষয়ের চুট-থানি পত্র পাওয়া গিয়াছে। এবার স্থানাভাব বশতঃ প্রকাশিত হটল না। পত্রপ্রেরকগণ ক্ষমা কবিবেন।

#### দানপ্রাপ্তি স্বীকার।

ক্তজ্ঞতাৰ সহিত স্থীকার করিতেছি যে, নিয়লিখিত মহাশরগণ সাধারণ আক্ষসমাজের দাত্ব্য বিভাগে ১৮৯২ সালে নিয়লিখিত অর্ধদান করিয়াছেন।

<u>আীযুক্ত বাবু গোপালটাৰ বহু কলিকাতা মাসিক দান ১২,</u> বাবু অভয়াচরণ মল্লিক ৭১ শ্রীমতী শিবমনোমোছিনী সিংহ, মুঙ্গের ২্ বসস্তকুমারী বন্ধ কলিকাতা 🖟 বাবু সভারঞ্জন থাস্তগির শিবপুর ২১ বাবু আদিনাথ চট্টোপাধ্যায় কলিকাত।।• বাবু গুৰুদাস চক্ৰবন্তী। বাবু উপেন্দ্ৰনাথ মিত্ৰ বাৰ্ষিক চাঁদা ৫১ বাবু যতনাথ ঘোষ 🖎 বাবু কেদারনাথ মিত্র 🔍 বাবু বিপিন-বিলারী দত্ত ২০ বাবু বিলারীলাল মলিক ১০ বাবু লেম্চক্স স্তর আঠ১০ এীমান্ স্থবোধ প্রবোধের জন্মদিন উপলক্ষে ১১ শ্রীমতী কিশোরীবালা চক্রবর্তী দারঞিলিং ১<sub>১</sub> বাবু গোবীকান্ত স্নার ·সীমল। হিল 📞 বাৰু বেণীমাধৰ মিজ ১্বাৰু **কালী প্ৰসন্ন বস্থ** প্রদত্ত ১০০ শত টাকার স্থানের দকণ ৩৩১ বায় গুলান্তি-বাম বড়ুয়া বাঁছাঙৰ কলিকাতা ১৫১ বাবুভৰসিয়া দত্ত ২১ বাবুবরদানাথ তালদাব ৩০১ বাবু ভুবনমোহন খোষ ১১ বাবু ভক্তরণ মহলানবিস ২ বাবু মন্মথনাথ মুখোপাধ্যায় ৫ বাবু নলকুমাব চৌধুবী ২ বাবু রাখালচক্র দেন ১ বাবু বিশিন-বিহারী রাধ জমিদার মাণিকদ্হ ১০১ বাবু নন্দ্রীল সেন কলিকাতা ২ বাবু রাইচরণ দাস উকিল কুষ্টিয়া ২ বাবু এককডি সীংহ বানিবন ১ বাবু ফণীন্দ্রমোহন বস্ত কলিকাত। ১৫ বাবু বাণীকান্ত রায় চৌধুৰী ১॥০ বাবু পার্কভীচরণ দাস পুণীয়। ১০ বাবু গোপালচন্দ্ৰ মল্লিক ২ উমাচরণ দাস ভবানী-পুর 🖎 বাবু প্রদাদদাস মলিক কলিকাতা ৫০১ কোন দীনভাতা বাবু ভগবানচল্র ওছ সিবাহ্নগঞ্জ >্বাবু দেবকঠ রায়ের গৃহিণী ১/ তাঁহার বিধবা ভাত্তভালা ১/ বাবু আগচল্ল লাহিড়ী সিমলা হিল ২ বাবু বিপিনবিহারী বস্ত লক্ষে ২ বাবু রাধানাধ দেব কলিকাতা ২ বাবু কুঞ্লাল শীল মাণিকদহ ১ বাবু গেপোলচন্দ্র বিক্ত কলিকাত। ১, বাবু জগদীশচন্দ্র বস্তু ২৫১ রায় বিপিনরুফ বহু বাহাতর নাগপুর ১∙্বাবৃ যোগেশচ<u>ক</u> চক্রবর্জী কাকিনিয়া ১১ বাবু কানাইলাল সালা ভিলি ১১ বাবু त्यारशक्तकक हत्छे। भारतीय केनिकाला > बीमही बमाञ्चले हो ट्याय > वातृ ताथारशाविन्त माडा क्यांत्रथानि ७ दकान वक्ष् কলিকাতা ৩০, পণ্ডিত রামগতি ভট্টাচার্যা মন্দিলপুর ২১ শ্রীমতী জগৎলন্ধী ঘোৰ কলিকাতা ২<sub>২</sub> বাবু কালীপ্ৰসন্ন বস্থ ১॥• শ্ৰীমতী গোলাপমণি ঘোষ (মা: বাবু সারদাপ্রসাদ সিংছ ) ২ মোট 0>4110>01

> . শ্রীওক্চরণ মহলামবিদা সম্পাদক দাভবা বিভাগ, স্থোরণ ব্রাক্সমার্ক।

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিক।।

৫ম সংখ্যা। ১৬শ ভাগ।

# >লা আষাঢ়, বুধবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

#### তপত্যা।

তপস্থা সংষ্ম বিনা প্রকৃতি ছ্রস্ক, বসেনা ত সভ্যের সাধনে; বাসনা কামনা শত নাহি যার অন্ত, থাকে চিত্ত তাহারি চিত্তনে।

অন্থির চঞ্চল মনে বসাইতে চাহি, ধীর ন্থির ক্ষণমাত্র নয়; কি ভাবে, কি চাচে, তার আদি অস্ত নাহি, কুত্র সুখ লয়ে শুধুরয়।

কে কেনেছে সার তত্ত্ব তপজা বিহনে,
দিব্য জ্ঞান হয়েছে প্রকাশ ?
কে করেছে সািদ্ধলাভ কঠোর-সাধনে,
কে করেছে বাসনা-বিনাশ ?

দেও সে তপজা-বৰ, প্রবৃত্তি-কুরাদা, কেটে যাক্দিবা জ্ঞানোদরে; ঘুচে যাক্ চঞ্চলতা, সংশয় নিরাশা, সার তত্ত্ব ফুটুক হাদয়ে।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

তপত্যা ও সাধন—জগতের ইতিবৃত্তে দেখি, যে সকল সাধু মহাত্মা জগতে অধ্যাত্মতত্ব, প্রকাশ করিয়াছেন, এবং লক্ষ লক্ষ নরনারীকে মুক্তির পথ প্রদর্শন করিয়াছেন, তাঁহার। সকলেই কঠোর তপত্যাবারা সেই সকল সত্য প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। বছদিনের নির্জ্জনবাস, চিন্তা, ও আত্ম-নিগ্রছের পর যাহা লাভ করিয়াছিলেন, তাহাই সজনে আসিয়া বিতরণ করিয়াছিলেন। যেথানেই সাধনা, যেথানেই তপত্যা, সেই ধানেই বিষয়ে বৈরাগ্য ও আত্ম-নিগ্রছ। কিন্তু তপত্যা করিতে হইলেই যে লাধককে অরণ্যবাসী হইতেই হইবে তাহা নহে। প্রতিনিয়ভ মানব-সমাজের মধ্যে এক একটা বিদ্যালাভের জভ্য কত ভণত্যা দৃষ্ট হইভেছে। যিনি বিশ্ব বিদ্যালাভের এম, এ

উপাধি লাভ করিয়া বহির্গত হইয়াছেন, তাঁহার তপভার 'বিষয় একবার স্মরণ কর। একাদিক্রমে ত্রেরেদশ কি চতুর্দিশ বর্ষ-কাল নিত্য বিদ্যালয়ে গতায়াত করিয়াছেন; আপনার স্থ-প্রিয় প্রকৃতিকে নির্মিত করিরা প্রত্যহ চারি পাঁচ ঘণ্টা বিদ্যালবে বন্ধ থাকিয়াছেন; গৃহে পাঠাভ্যাদে রাত্রির অধিক काल गांभन कतिशाहिन; उ९भात छेभाधि लाख कतिबाहिन। যে স্থারকের মধুর কণ্ঠনিংস্ত সংগীত প্রবণ করিয়া মুগ্ধ 📆-তেছ, তাঁহার তপশুরে বিষয়ে একবার মনে ধারণা 🔫 । তিনি কতদিন শিক্ষকের হারে পড়িরা থাকিরাছেন, প্রতিদিন প্রভাবে উঠিয়া কতকাল ধরিয়া রাগ রাগিণীর আলাপ করিয়া-ছেন। এসকল কি তপস্থা নহে ? ধর্মাও সেইরূপ তপস্থা-সাধ্য। আধ্যাত্মিক সভ্য সকলকে আয়ত্ত করিবার অক্তও সেইরূপ তপস্থার প্রয়োজন। সেইরূপ চিত্তের একাগ্রহা, আম্নিগ্রহ ও অমুণীলনের প্রয়োজন। যে সভা তপক্তা ও সাধন-লব্ধ নতে, তাহা জীবনে স্থায়ী হয় না। শাণ পাণরের ফ্রার, ভাহাতে ছদরকে শাণ দিরা সভ্যকে উচ্ছল ও ধারণে কবিতে হয়। তপভাষাবা চিত্তভাদ্ধ হর, চিত্তভাদ্ধ रुहेल आग्रात्र आध्यांश्वक मृष्टि উड्वन ७ मञ्ज-धातरात मक्ति ৰদ্ধিত হয়। সেইকণ চিত্তেই অধ্যাত্ম-তত্ত্ব সকল প্ৰাত্ভাত হইয়া থাকে। যে চিতে নিক্ষন চিন্তাও তপস্তানাই, দে চিন্ত গভীব ভত্ত গ্রহণের উপযোগী নহে; তাছা সব্বদা উপরে উপরে বিচরণ करत्र ७ विक्रमू थीन इटेब्रा शास्त्र।

প্রাক্ষদমান্তে তপ্সারে ভাবকে জাগ্রত করা বিশেষ
প্রাক্ষদন। আমরা যেকপ চিন্তাবিদীন ভাবে কথা বলি ও
কার্যা করি, তাহাতে এক এক সময়ে নিজেদেরই লজ্জা হর।
আমাদের মধ্যে একজন তপত্থী অদ্যাপি উজ্জল আদর্শ ত্বকপ
বিদ্যামনে রহিরাছেন। মহিষি দেবেন্দ্রনাথ প্রাক্ষধন্ম সাধনের
জল্প বেকপ কঠোর তপ্যা করিরাছেন, তাহা ত্মরণ করিলে ও
চমৎকৃত হইতে হয়। তহিরে ফল এই হইরাছে, তিনি যে টুকু
লাভ করিরাছেন ভাবা চিরদিন ধরিরা আছেন। কিছুতেই দেই
ভূমি হইতে তাহাকে বিচলিত করিতে পারিভেছে না। জাঁহার
অবলন্তি পন্থা সম্পূর্ণরূপে আমানের অবলহ্নীর মা হইলেও
ভাহার দৃঢ্তা ও সাধন প্রারণ্ডা হা অফুকরণীয় তাহা কে
আত্মীকার করিবেন। এই তপ্যাতে ভিনি যথন প্রস্তু

रहेबाहित्नम, ज्यम बाक्षधर्व माधमत्क मका ७ जनव मकन কার্য্যকে উপলক্ষ্য করিয়াছিলেন। আমাদিগকে ও সেই ভাবে जनजा कतिएक स्टेरन, जरबरे बालधर्य आमारमञ्ज सीबरम माधिज इहेरव।

ুসজ্ঞ উপাস্মা—উৎকৃষ্ট বস্তুর অপব্যবহারে সর্বতিই বিষময় ফল ফলে। একভাবাপর, সরল কতিপর ধর্মণিপাস্থ षाञ्चा नमर्वे हरेग्ना, यथन क्लामीयरत्त ब्लात्राधना करतन ; उधन তাহার মধ্যে অপূর্ব ভাবের সমাবেশ দেখিতে পাওরা যার। একের প্রাণের সরলতা ও ব্যাকুলতা অন্ত পাঁচজনকৈ অমুপ্রাণিত করে: একের ভক্তি ও বিশ্বাস মন্যের মৃত প্রায় ভাবগুলিকে জাগ্রত করে। সরল ও ব্যাকুল হৃদয়গুলির সমবেত প্রেমের উপর প্রভু পরমেখরের রূপা পড়িরা অপূর্ব ভাবের উদয় करता किन्न यथन क्षारत्रत्र मर्या मत्रनाठात अভाव रम्या यात्र, প্রাণে ব্যাকুলতা আর তেমন থাকে না, নিজের জীবন অপেকা व्यत्मात कीवत्नत्र উপत्र व्यक्षिक मृष्टि পড़ে, निष्क पूर्विवात (हडी না করিয়া, অন্যকে ভাবে ভাদাইবার চেষ্টা হর, এক কথার যথন প্রার্থনা ও উপাসনার সময় ঈশবের উপর দৃষ্টি স্থাপিত না হইরা অন্যের উপর পড়ে, তথন সেই সমবেত উপাদনা-দারা উপকার না হইয়া জীবনের সমূহ অনিষ্ট উৎপন্ন হয়।

जाक्रमभाष्य भरमत्र दात्रा व्यात्राधना ७ व्यार्थना कत्रिवात य প্রথা আছে, তাহাছারা উপাদনা ও প্রার্থনাতে অসতাভাব প্রবেশ করিতেছে কিনা, সমবেত উপাদনার উপর লোকের অশ্রদা উৎপন্ন হইতেছে কিনা, তাহা একবার গভীরভাবে ভাবিবার সমর উপস্থিত হইরাছে। ঈশবের নাম মুখে রহি-রাছে, কিন্তু চকু বহিরাছে মুমুষ্যের উপর; প্রার্থনা করিতেছি क्रेयरत्त्र नाम्, किन्छ अन्तरत्र अनारक छेशरमण रम अग्नात मिरक দৃষ্টি রচিয়াছে। অলাধিক পরিমাণে ইহা সকলেই অনুভব ক্রিতেছেন যে, বর্তমান সময়ে আমাদের সামাজিক উপাসনা কিঞিং পাতলা ভাব ধারণ করিয়াছে, অনেক সময় ইহাও শুনা যায় যে উপাদনার সময় আচার্য্যগণ অন্যের মধ্যে ভাবের উদয় করিবার জন্ত নানা কথা বলিয়া থাকেন। ত্রান্ধের একপ্রাণ ত্ইবার স্থান উপাসনা-কেতা। সামাজিক উপাসনাই ত্রান্ধ-ममास्त्रत माधन-व्यवानीत विस्त्रवः। এই मन्निवासत हात्न যদি পরস্পরের প্রতি অশ্রদাও অবিখাস উৎপন্ন হয়, তবে ত্রান্দের বড় বিপদ। উপাসনার সময় সপ্তম স্বর্গের কথা বলিয়া, ভাবের তরঙ্গে অক্তকে ভাসাইতে চেষ্টা হইল, অথচ জীবনের মধ্যে ভাহার কোন লক্ষণ নাই। সেই মহান্ পর্মেশ্রের छे न इ यथन व्याप्त वृष्टि भएड़, छथन दमना मः यछ इद्र ; প্রাণ মন প্রশাস্ত ভাব ধারণ করে।

আরও একটা বিষয় ভাবিবার আছে। এক্দিকে যেমন পাঁচজনের মধ্যে বসিরা ঈশরের নিকট প্রার্থনা করিবার সমর সাধকের জীবনের নিষ্ঠা, সরলতা ও ঈবরের প্রতি গভীর मृष्टि त्राथा कर्जुल, अस मिटक गाँहाता छेगामक छाहाँदेत এक ভাবপির হওরা আবভাক। বাঁহাদের সহিত প্রাণের মিল নাই,

উপাসনা প্রকৃতভাবে হওয়া কঠিন। সর্বাঞ্চকায় লোকের নিক্ট ত্রাক্ষধর্মের সভ্য প্রচার করা এক কথা, আরু যধন প্রাণ थ्नित्रा बन्न ठत्राय चाचा-निर्दारन कति, उथन मर्का धनीत लाकरक উপস্থিত হইতে দেওয়া অন্য কথা। সামাজিক উপাসনাতে যথন নানা শ্ৰেণীর সম-বিখাসী লোক উপস্থিত হন, তথন উপাসনার প্রণালী পরিবর্ডিড করা আবশ্রক কিনা ভাহাও ভাবিবার বিষয়। সরলতা, ভাবের একতা ও পরস্পারের প্রতি প্রতি ও প্রশ্নার যোগ এবং প্রণালীতে আহা, সমবেড উপাসনার প্রাণ। এই বিষয়ে ভ্রাক্ষসাধারণের বিশেষত: যাঁহারা উপাসনাদি করেন, তাঁহাদের মনোযোগ হওয়া वावज्ञक ।

সকলে পালন-পরমেশর কুপা করিয়া তাঁহার সন্তান-দিগের প্রাণে সাধু সঙ্কর অভ্যুদিত করেন। যিনি সেই সঙ্কা-পথে আজীবন স্থির থাকেন, তিনিই তাঁহার প্রিয় সন্তান। যিনি সমর প্রতিপালনে পরালুখ, তিনি ধর্মরাজ্য হইতে বছ পশ্চাতে গমন করেন। সাংসারিক কার্য্যে আমরা দেখিতে পাই, অঙ্গীকার প্রতিপালন করা সামাজিক ও রাজনৈতিক আদেশ। কেহ যদি তোমার নিকট অদীকার করে যে, সে তোমার গৃহ নির্মাণ করিয়া দিবে; নিরুপিত স**ম**রে তাহা না করিলে রাজপুরুষগণ ভাছার দণ্ডবিধান করি-বেন এবং জনসমাজ তাহাকে প্রবঞ্জ মিপ্যাচারী বলিয়া ত্বণা করিবে। যিনি পরমেখরের সিংহাসনতলে দাড়াইরা প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন যে, আক্ষধর্ম-সাধনে জনসমাজের সেবাভে किया धर्म-श्राठात कीवन मान कत्रित्वन, जिनि यमि त्महे अभी-কার পালন না করেন, ভবে পরমেখরের সমুধে ভাঁছার স্থান আছে কি ? তিনি নিশ্চয়ই সভায়ালা হইতে ভ্ৰষ্ট হইবেন। সকল দেশেই প্রতিজ্ঞা পালনের উচ্ছল দুটান্ত দেখা যায়।

যাঁহারা কোনও প্রকার সাধু সম্ম প্রকাশ করিবেন, ভাহা-रमत्र প্রতি নিবেদন এই যে, বিশেষ চিন্তা, প্রার্থনা ও আলোচনা না করিয়া যেন কেই প্রতিক্ষাপাশে বদ্ধ না হন। কিন্ত যে অদীকার একবার মুধ হইতে বাহির হইবে, তাহা প্রতিপাশন করিতে যেন সর্বাদা প্রস্তুত থাকেন। প্রমেখরের এবং সম-সাধকদিগের নিক্ট অদীকার ক্রা থেশা নছে। সঙ্কর না করা ভাল, কিন্তু একবার কোনও স্কল্প প্রকাশ করিলে শ্রীর মন দিলা ভাছা পাদন করিতে হইবে। যেখানেই আমরা সমর প্রতিপালনের শিখিলতা पिथिए पारे, प्रथानिर मान वाणा पारे। आमना छछ-वक्षात करा मक्त भागत्मव करा व्यागभाउ कवितः भवत्मध्य আমাদের সহায় হউন।

জীবনপ্রদ-মন্ত্র-প্রতিদিন কত ব্রাদ্ধ ব্যক্ষিকা সান্নাধনা-মত্র সাধন করিতেছেন, কত খান হইতে সভাং জানমনস্তং ধানি উথিত হইতেছে, কিছ উপাসনার বিস্তৃতির সঙ্গে সংক ্পরস্পারের প্রতি প্রকা নাই, তাঁহাদের সঙ্গে বসিয়া সমবেত তেমন গভীরতা কেন দ্বন্ধিতেছে না ? দ্বাধিকাংশ ছলে এই

মহামত্র কেরল বায়্তরকে পর্যাবসিত হইতেছে কেন? মত্রসাধনের সহিত সাধকের জীবন কেন. গঠিত হইতেছে লা?
এ কথার উত্তর অতি সহজ। মত্র তাহারই পক্ষে জীবিত
এবং কার্য্যকর, যিনি তাহা বিশ্বাসের সহিত উচ্চারণ করেন।
ব্রহ্মনাম সেই কেত্রেই কল প্রেস্য করে,যে কেত্রের জমি বিশ্বাসপ্ত
ভক্তি জলে আর্জ। বিশ্বাসবিহীনের কাছে আরাধনা মত্রের
ক্রমনামের কোনই মূল্য নাই। কত লোকে দিন রাজি
সন্তাং উচ্চারণ করিতেছেন, কিন্ত উচ্চারণের সহিত জদরের
কোনই যোগ দেখা যার না। মহর্ষি দেবেক্রনাথ
যথন সন্তাং শক্ষ উচ্চারণ করেন, তথন হর ত তাহার সমগ্র
শরীর কন্টকিত হইরা উঠে, তিনি সন্মুথে সত্যকে দেখিতে
পান। "স্ত্যং" এই শক্ষ তাহার কাছে কোন শক্ষ নহে,
জীবন্ত পরমেশ্র।

বিখাদী ব্যাকুল আত্মার কাছেই মন্ত্র জীবিত; অক্তের কাছে পাণীর মত উচ্চারণ করিলে কথনও জীবন পরিবর্ত্তন হয় না, ধর্মভাব বুদ্ধি হয় না, বিশ্বাস ও ব্যাকু-লতার প্রয়োজন। কেহ কেহ সমন্ত জীবন "সত্য সভ্য" করিয়া কোনও ফল পাইতেছেন না, শেষে আরাধনার প্রতি ৰীতশ্রম হইরা ভিন্ন সাধন অবলম্বন করিতেছেন। মন্ত্রের (माव नरह, (माव निरक्त । विश्वामी ना इहेरन अञ्च-माधरन ফল ফলে না; বিশাদী না হইলে ত্রহ্মকৃপা লাভ হয় না; স্থ্যরশিম সকল প্রকার কাচেতেই পতিত হয়; কিন্ত<del>ু অয়সাভ</del> অণিতে পতিত হইলেই **অধি উদ্**গীরণ করিয়া **থাকে।** তজ্ঞপ नाम नकरनरे छेक्ठात्रण करत्रन ; किन्छ विधानी क्षप्रत्रहे नारमत कन क्लिबा थारक। रक्ट यानि शृहदात क्रक कतित्रा जन्मस्था অবন্থিতি করেন এবং বলিতে থাকেন যে, বিধাভার কিরূপ বিচার, এই ঘরে বাতাস ও আলোক দিতেছেন না। তবে যেমন সকলেই তাঁহার অজ্ঞতা দেথিয়া হাস্ত করেন, তেমনি স্বার্থপরতা, বিষয়াসজিদারা চিত্তার ক্রম করিয়া বাঁচারা विशिषा चाह्न, डाहाबा यनि वर्णन (य, श्रांधरन किছू इब ना, আরাধনাতে তাঁহাকে পাওয়া যার না,ভবে তাঁহারা ও উপহাসা-ম্পাদ হন। সূথে উচ্চারিত মন্ত্র সঞ্চীবিত হয় না। আহতএব মন্ত্র भौविष्ठ इश्वदात भाक्त नर्वात्वा चामानिरात नर्विविध छेभाव ব্দবলম্বন করা কর্ত্তব্য। তবেই মন্ত্রমারা সাধনায় সিদ্ধি লাভ ছইবে, নতুবা কণ্ঠত্ব মন্ত্রোচ্চারণে কোনই ফল নাই। প্রস্তুত ना हरेल, दकान कनरे श्राप्त इस ना।

ধর্মজীবন ও ধর্মসমাজ—>লা লৈচের তব-কৌমুনীতে "নাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জন্মাৎসব উপলক্ষে আয়-পরীক্ষা" নামে একটা প্রবন্ধ প্রকাশিত হয়। প্রবন্ধটী ইচ্ছা করিরাই এরপ ভাবে লিখিত হইরাছিল, যাহাতে লোকের দৃষ্টি আকৃত হইতে পারে। 'আমানের সে উদ্দেশু নিদ্ধ হইরাছে। প্রবন্ধটী অনেকের দৃষ্টি আকর্বণ করিরাছে। কাহারও কাহারও বিরাগ উৎপন্ন হইরাছে। তাঁহারা অমুভব করিতেছেন বে, উজ্ প্রবন্ধে সাধারণ ব্যাহ্মসমাজের সভাগণের প্রতি বে অভিযোগ করা হইরাছে, তাঁহারা ভাহার পান্ধ মহেন। আমরা এ সন্ধদ্ধ হুইখানি পত্রও প্রাপ্ত হুইরাছি, তাহার একখানি যথাদ্বানে প্রকাশিত ছইন। তন্তকারুদী মনোযোগপূর্কক বাঁহার।
পাঠ করিরা থাকেন, তাহারা সকলেই অবগত আছেন যে,
উক্ত প্রবদ্ধের শিখিত বিষরগুলি আরও অনেকবার তন্তকৌরুদীতেই প্রকাশিত হুইরাছে, কিন্তু পূর্কে কাহারও দৃষ্টি
এক্লপ আকৃষ্ট হর নাই। যাহা হউক এবিষয়ে সকলের
মনোযোগ যথন হুইরাছে, তখন এই উপলক্ষে কতকগুলি অতি
প্রয়োজনীর বিষয়ের আলোচনা করা যাউক।

উক্ত প্ৰবিদ্ধ পাঠ করিয়া যদি কাহারও মনে এ প্ৰকার धात्रणा किमात्रा थाटक दिन, छेक व्यवस-त्मथक नित्रमञ्ज-व्यणानीत প্রতি আন্থাও বিশাসহীন হইরাছেন, তবে তিনি সে সংস্কার পরিত্যাগ করিবেন। এ সহম্বে প্রবন্ধলেথকের বক্তব্য এই ;— মানব-সমাজের ইভিবৃত্ত-পাঠক মাত্রেই জানেন যে, স্থশৃঞ্লরূপে মানব-স্মাজের কার্য্য পরিচালনার জন্ত অদ্যাবধি যত প্রকার भागन-व्यनांनी উष्ठाविज हहेबाहि, जनार्या चाव्रख भागन-व्यनांनी व्यथवा निषमञ्ज-व्यवानीरे मर्त्सारकृष्टे । रेहाश्व रय मण्णूर्ग निर्त्पाय তাহা নহে ; তবে অপরাপর শাসন-প্রণালীর দোষভাগের সহিত তুলনা করিলে, ইহার দোষ ভাগ সামান্ত বলিয়া বোধ হয়। এই নিয়মভন্ত্র-প্রণালীর ছইটী প্রধান গুণ; প্রথম ইহাতে অয়ধা ব্যক্তিগত শক্তিকে শাসনাধীনে ব্লকা করে; দ্বিতীয় এতদ্বারা বিচ্ছির ও বিক্ষিপ্ত শক্তি সকলকে সমাজের কল্যাণ-সাধনে নিযুক্ত করে। প্রথম কার্যাটী Negative অভাবাত্মক, ৰিতীয়টি Positive ভাষামুক। অভাৰামুক কাৰ্যাটী অপেকা ভাবাত্মক কার্যাটীর দিকেই বুদ্ধিমান ব্যক্তির দৃষ্টি অধিক নিবদ্ধ হওয়া আবশ্রক। দিভীয় আর একটী কথা শ্বরণ রাথিবার উপযুক্ত; মধ্যে জীবনীশক্তি পরে তাছাকে শৃত্যলাধীন করা। ধর্মজীবনের উন্নতি কিরুপে হইবে? এই প্রা ধর্মসমাজের পক্ষে সক্ষপ্রধান। কিরুপ শাসন-প্রণালীছার। তাহা নিয়মিত হইবে, সে প্রশ্ন দ্বিতীয় স্থানীর। আমাদের नभाष्ट्रित मञ्जाभागत धालि (कांच कतिया এই कथा वना इहेताए যে, তাঁছারা যেন নিয়মভন্ত-প্রণালীর ভাবাত্মক দিক অপেকা অভাবাত্মক দিকের প্রতি অধিক মনোধোণী এবং নির্মতন্ত্র প্রণালীর উন্নতির জন্ম তাঁহারা ধেরূপ পরিশ্রম করিয়াছেন, ব্রাহ্মধর্ম-সাধন ও প্রচারের উর্নতি-বিধানার্থ সেরূপ শ্রম করেন नारे। देवा जाञ्चभत्रीकांत्र मूह्एक जाभनात्मत्र द्वनाचा त्रिका কোভের কথা। যাহা হউক একটা সত্য আমাদিগকে সর্বদাই মনে রাখিতে হইবে, আগ্রে ধর্মজীবনের উন্নতির ব্যবস্থা, পরে স্মাজের কার্য্য চালাইবার বিধি ব্যবস্থা। ঈশ্বর করুন সেই প্রধান কার্য্যের প্রতি আমাদের দৃষ্টি দিন দিন অধিকতর্ত্রপে चाक्डे रुडेक।

প্রচার ও প্রচারের ব্যবস্থা—পূর্বোক প্রবদ্ধ আমর।
ক্ষোভ করিয়া বলিয়াছি যে, প্রচারকার্ব্যে সভ্যদিগের এমনি
মনোবোগ বে, প্রচারক সংখ্যা দিন দিন বৃদ্ধি না হৈয়া ছাস
হইয়া গিয়াছে। ইহাছ অর্থ এয়ণ নহে, সভ্যপণের দোবে
প্রভাবন প্রচারক-প্রভাগ করিয়াহেন। সাধারণ

ব্রাক্ষসমাজের সভাগণের প্রতি ও তাঁহাদের প্রতিনিধিবরূপ কার্যানির্বাহক সভার প্রতি কেহ এরপ অভিযোগ করিতে পারেন না যে, তাঁহারা প্রচারকদিগের প্রতি সহিষ্ণৃতা ও সম্চিত শ্রদার সহিত বাবহার করেন নাই। পূর্বোক্ত অভি-যোগের অর্থ এই যে, প্রচারকার্য্যে আশামুরূপ উৎসাহ থাকিলে প্রচারক সংখ্যা বর্দ্ধিত হইত। সে বিষয়ে মনো-যোগের অভাব দৃষ্ট হয়। আমরা যদি প্রথম অবধি প্রচার কাৰ্য্যেব বিস্তৃতি অপেকা গভীবতাৰ দিকে অধিক দৃষ্টি রাথিতাম, যদি পূর্ব্ব ছইতে একদল উপযুক্ত প্রচারক প্রস্তুত করিবার দিকে মনোযোগী হইতাম, ভাছা হইলে এতদিনে ভারতেব নানা স্থানেব কার্য্যক্ষেত্রে কার্য্য কবিবার কন্ত লোক পাইতাম। বভ বিস্তীর্ণ-ক্ষেত্রের উপরে সামন্ত্রিক প্রচার-কার্য্যে চতুর্দশ বংসর শক্তিক্ষয় না করিয়া সেই শক্তির কিয়দংশ যদি কতক-গুলি মানুষ প্রস্তুত করিবার জন্ত নিয়োগ করা যাইত, জাচা চইলে, বোধ হয়, অধিকতর উৎকৃত্ত ফল দেখা যাইত। এই মাত্র বক্তব্য যে, আমরা যদি নিজেদের অভাব ও ক্রটী লক্ষ্য না করি, যদি তাহা সংশোধন করিবাব প্রয়াস না পাই, তাচা হইলে, সে সকল কিন্নপে সংশোধিত হটবে ?

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### মুক্ত ও শাস্তভাব-দাধন।

ভগবদগীতার নবম অধ্যারে নিম্লিধিত শ্লোক্ষর প্রাপ্ত হওষা যার ;—

প্রকৃতিং স্বামবইস্তা বিস্কৃত্রিমি পুন: পুন:।
ভূতগ্রামমিমং কুৎস্নমবশং প্রকৃতের্বশাং ॥
ন চ মাং তানি কর্মাণি নিব্ধৃত্তি ধনস্কর।
উদাসীনবদাসীনমসকং তেয়ক্ষার্॥

অর্থ:— "হে অর্জুন, আমি খীয় প্রকৃতিকে স্বৰণে রাধিয়া, বার,বার এই সকল ভূতকে স্কন করিতেছি, ইহারা খীয় প্রেক্তির বণীভূত। আমাকে এই সকল কর্ম আবদ্ধ করিতে পারে না; আমি এই সকল কর্মে অনাসক্ত থাকিয়া, ইহা-দিগেরই মধ্যে উদাসীনতং আসীন আছে।"

এই কতিপর বচনের মধ্যে অধ্যাত্মরাজ্যের কতকগুলি
গভীর তত্ত্ব নিহিত আছে। সংক্ষেপে তাহার কিঞ্চিৎ প্রদর্শন
করা এই প্রবিশ্বের উদ্দেশ্র । সেই অনস্ত অবিনাণী পুরুষের
সহিত আমাদের আত্মার প্রভেদ কোণার ? আমরা সচরাচর
বিশিরা থাকি, তিনি পূর্ণ, আর আমরা অপূর্ণ, এই উভরের মধ্যে
মহাপ্রভেদ; ইহা সত্য । কিন্তু নিগৃঢ্ভাবে চিস্তা করিলে
দৃষ্ট হইবে যে, আর একটা বিষ্ট্রে আত্মা ও পরমাত্মাতে গুরুতর
প্রভেদ আছে । তিনি মুক্ত, আমরা বদ্ধ । কি জড়, কি চেতন,
কর্মর ভির আর তাবৎ পদার্থই ক্টিন দাসন্তশুভালে আবদ্ধ ।
জড়ের বিদ্ধি শক্তির বিচিত্র ক্রীড়া; ক্রিন্ত সে ক্রীড়ার সাধ্য
নাই যে রেখামাত্র স্বায় নির্দিষ্ট পথ অভিক্রম করির। যার ।
জড়ের শক্তি সমূহ হর্ভেদ্য কার্যা কারণের নিরম ঘারা শাসিত।

প্রকাপ্ত স্থা হইতে সাগর ক্লবর্তী ক্স বালুকাকণ। পর্যান্ত কোন অড়পিণ্ডের সাধ্য নাই যে আপনার ছিতি বা গতিকে অন্তবিধ করে। অড় সম্পূর্ণরূপে স্বাধীনতা বিরহিত।

যথন জড়রাজ্য ত্যাগ করিয়া প্রাণিরাজ্যে প্রবেশ করি,
তথন জড়ের স্থিতিশীলতার পরিবর্জে প্রাণীর গতিশীলতার
পরিচর পাই বটে, চিন্তারাজ্যে জ্ঞানক্রিয়া সম্পন্ন জীবের আবিভাব দেখিতে পাই বটে, কিন্তু মন্ধা হদরের কর্ড্রবৃদ্ধির কোন নিদর্শন প্রাপ্ত হওয়া যায় না। জড়ের স্থায় না। হঁইলেও
তাহারা কর্ড্রবিহীন ও অন্ধশক্তিশ্বারা চালিত। ইতর
প্রাণিরাজ্য পরিহার করিয়া যথন মানব জীবনে প্রবেশ করি,
তথন দেখি মানবজীবন দেহ ও আত্মা এই উভয় রাজ্যে বিভক্ত।
মানবদেহ অপরাপর জড়পিঞ্জের স্থায় প্রাকৃতিক শক্তি সমূহের
অফ্গত ও সম্পূর্ণরূপে কর্ড্রবিহীন। কেবল মানবাত্মাতেই
আমবা কর্ড্রবৃদ্ধির প্রথম আভাস প্রাপ্ত হই। কিন্তু সেই
কর্ড্রজ্যানটুক্ও এত অঞ্জভাতে আবৃত, ফ্রলতাতে অভিত্ত
ও মোহে জড়িত যে, তাহা কিছুই নম্ব বলিলেও অত্যুক্তি হয়
না। এইরূপে হুড় ও চেতন রাজ্যে স্ক্রেই দাসত্ব ও বন্ধভাব;
ইহার সহিত সেই পরম পুক্ষের মুক্ত ভাবের ভুলন। কর।

তিনি সকলের মধ্যেই আছেন অথচ কাহারও অনীন নহেন। ঘোর বিপ্লবকারী প্রচণ্ড বাত্যা, পক্ষত সমান সাগর তরঙ্গের বিকট নৃত্য, আগ্রেয়গিরি সকলের মহা বিনাশকারী অগ্ন্য-লগৰ, সভা জনপদ সকলের গর্কথকাকী ভীষণ ভূমিকম্প এই नकरनत मधारे जिनि बढमान अथठ कारात्र अधीन नरहन। जिनि (यन এই नकन इक्का मिक्ति को ज़ात मर्था जैमानीनवः चानीन चाह्न। देशात्रा उाहात्रहे हेका इहेट छेप्नातिङ হইয়া ভুবনকে কম্পিত করিতেছে, ভালিতেছে, চুব করিতেছে, গড়িতেটে, কিন্তু তিনি সর্বোপরি অধিপতি রূপে প্রতিষ্ঠিত থাকিরা নিজির ও শাস্তভাবে বিরাজিত আছেন; অপর দিকে মানবাত্মার সংগ্রামের মধ্যে ও তিনি। মানবের রোগ, শোক, मात्रिका, পাপেব व्याज्ञश्लानि, व्यामा ও नितामां, इर्व ও বিষाम, প্রভৃতি কত ভাব ও চিম্বার তরঙ্গ কুড় ও চুর্বাণ দিয়া বাহিয়া ঘাইতেছে, তিনি এই সকলের সাক্ষী এবং উছোর অনোঘ সাহায্য ধর্মের বিলয় বিধানে নিযুক্ত; অথচ তিনি এই দকল বিকোভকারী কারণের মধ্যে থাকিয়া ও এই সকলের অতীত। এ সকলে ভারাকে বিকৃত্ধ বা ভারার সতা সমল হইতে তাহাকে বিচলিত করিতে পারিতেছে না। তিনি মানবের ভাব তরঙ্গের উপরে উদাসীনবং আসীন त्रवित्राह्म। (क्वन व)क्किंग्ड को बत्नत्र मः शास्त्र मस्या महि ; किन मानवममास्मत विवान, विष्मार, त्रक्रभाक, शहाकात, বিষয় বাণিজ্যের ব্যক্ততা, কাষ্যতৎপরতা সকলের মধ্যেই তিনি প্রতিষ্ঠিত আছেনে অংপচ তিনি এ সকলের অভীত; এ সকল তাঁহাকে ম্পর্ল করিতে পারে না। সঙ্গল স্থাতিষ্ঠিত थाक्ति कन्यानमन-विधाला রহিয়াছেন।

ঈশবের এই মুক্ত-ভাবের তিবিধ কারণ গৃষ্ট হর;—১ম ভাঁহাতে জ্ঞানের জ্ঞাব নাই—২র ভাঁহাতে শক্তির জ্ঞাব নাই, ৩য় উহিতি প্রেমের পভাব নাই! পানরা অরকান-मुलाब, त्मे कांब्रत्ने जामता मुल्ने जानात्रक्रकेवियात जनमर्थ ; नर्त्तरा क्षीक, केरक्षिक ७ केविया। व्यामात्वय कार्याय कर्णा-क्न ७ नित्नाम व्यक्तिश्म व्राप्त वामात्मन कारमन व्यापाठत शास्त्र ; कुछताः छतिवा नर्सनाहे आमारनत्र निक्षे छमनाच्छा-দিত ও আশহা-জনক। তিনি পূর্ণ কাল, স্তরাং তাঁহাতে (काम छे एक छ। वा जालकात कात्र विनामान मारे ; निरमत श्चावनश्चित्र भव महस्त कान मह्मा व। विकर्क नाहे। २३७: অনেক সময় দেখিতে পাই বে, আমরা জ্ঞানবারা বাহা লক্ষ্য করি, অশক্তি-নিব্দ্ধন তাহা অবল্যন বা পরিহার করিতে পারি ना, त्मरे शातिरे इः त्थेत खेरलेखि स्त्र। कारांख अन्नल इः ध সম্ভবে না। ভিনিপূর্ণ শক্তি, মৃতরাং তাঁহার ইচ্ছার চরি-তার্থতা তাঁহার আয়ন্তাধীন ; উাহার শুভ সমর সিদ্ধ করিবার পথে কোন অন্তরার নাই। তাঁহার তেমের ও অরতা নাই। মানবের ওড স্কলের ভাষা তাঁহার ওভ সকল খীর অব-লখিত পথ হইতে বিচলিত হয় না। তাঁহার প্রেম হইতে মানৰ-প্ৰেমের এই প্ৰভেদ দেখিতে পাই যে মানব প্ৰেম ज्ञाहबाहब त्थामान्यक्रक चानिक्रम करत्। य वाक्ति भंदीत्र मन्त्र নৌন্দর্যাহার৷ বা অভ কোন প্রকার কননীর গুণের হারা चामारात तथमरक चाकर्र करत, त्रहे चामारात धीलिङाकन इत। किन्न याहात (व्ययमानीयक कान कमनीत ७१ नाहे; व्यथवा दव वाकि दवह यदनव कर्नवाकाबादा वार्यादव ट्यादक वांश (तम, जाबारतम मूर्यन मन जरनक क्रनरे जात (मज़न ব্যক্তিকে আলিখন করিতে পারে না। ঐশ প্রেমের প্রকৃতি অম্ব প্রকার। তাহা প্রেমের অপাত্রকেও প্রীতি করিতে পারে। যে শীর প্রকৃতি ও চরিত্রের কর্ময়তা বশতঃ মানবের স্থাম্পান, মানবীর প্রেম ঘাধার পাপাচারে পরাস্ত হইরা ভাষাকে দূরে পরিহার করিয়াছে, ঐশ-প্রেম তাহারও উদ্ধার-সাধনে নিযুক্ত হয়। পাণী আপনার চারিদিকে পাপের প্রাচীর ভূলিয়। **(मब, मान काद काहाब (महे धारकार्क्ड मार्स) बक्कमक्टिब** छ व्यादन मस्य नाह. किस जैन-८ श्रम (म व्याहीत केन्नज्यन कतिता পাপীর উদ্ধার-সাধন করে। বাজপক্ষী যথন জন্ত পক্ষীর পশ্চামাবিত হয়, তথন উপর হইতে নিয়ে, নিয় হইতে উপরে. এক বৃক্ষ ছইতে আর এক বুকে, এক বন হইতে আর এক বনে धरेकरण पर्न मर्छ। পांडान धानकिंग कतिवाध क्रांच इत ना। **म् जाहात वधा कीवरक धतिरवह धतिरव। मिहेन्न उन्नक्नणः** शालीब शण्टाटल शांविल इहेबा लाहात खेकाव जायन कविटवहे क्त्रिय ।

ঐশ-প্রেম যেরপ প্রেমের অপাত্তকেও আলিজন করে, সেইরূপ ঐশভাবাপর ব্যক্তিরাও স্থাম্পদকে আলিজন করিয়া থাকেন। একদিকে দেখিতে গেলে ইহা হারাই প্রকৃত ঈশর শ্রীতির বিচার হর। ্বিনি স্থাম্পদের প্রতি বে পরিমাণে শ্রীতি করিতে সমর্থ, তিনি সেই পরিমাণে ঈশ্বরের প্রতি প্রীতিনান। অগতে এক প্রকার ধার্মিকভার প্রশংসা তনিতে পাঙ্করা হার। বাহাতে নীতি আছে, পবিত্রতা আছে, বিনর আছে, বৌশ্র আছে, কিছু স্থাম্পানের প্রতি প্রবন শ্রীতি

নাই। আসরা বলি সে জীবনে ব্রদ্ধ-পজ্জির কার্য্য সম্চিতরূপে আয়ন্ত হয় নাই। মাসব-প্রেমে বেসন স্থাম্পাদকে প্রীতি করিতে পারে না, তেমনি ইহাতে হ্রাস বৃদ্ধি আছে। ইহা এক সমরে সতেজ, উপ্রাণ্ড উক্ষ থাকে আর এক সমরে হর্ক্ল, মৃহ ও গীতাল হয়। এইরূপে মানবস্মাজে মামুব প্রেমাম্পাদকে সভজ্জই পরিত্যাপ করিতেছে। ঐশ-প্রেমের প্রকৃতি এরূপ মহে। তাহাতে প্রবশ্চা ও স্থিরতা চিরবিদ্যমান।

ইশ্ব পূর্ণকান, পূর্ণকি ও পূর্ণপ্রেম, স্থভরাং তিনি বছাকতঃই মৃক্ষ; তিনি সকল নির্মেরই অধিপতি অথচ কোন নির্মেরই বশীভূত নহেন; তিনি সকল সংগ্রাম্নেরই সাক্ষী অথচ কোন সংগ্রাম্বারা বিক্ষুক্ত নহেন। তিনি মানবের সকল ভাব তরলের মধ্যে বিদ্যমান অণচ কিছুতেই স্বীর শুভসংকর হইতে বিচ্যুত হন না। তিনি আত্ম-প্রতিষ্ঠিত, স্বভন্ত ও শাস্ত। ক্যানশালী ধীরের। ও বিখাসী ভক্তেরা যখন তাঁহাকে সত্যের সত্য জানিরা তাঁহাতে সমাক্রপে প্রতিষ্ঠিত হন, তথন তাঁহারা জীবক্সুক্ত হইরা এই শাস্ত অবস্থাতে উপনীত হন। তথন আর তাঁহাদের চিত্ত শোক মোহের অধীন হইরা স্বার শুভ সংক্র হইতে বিচলিত হর না ও সকল প্রকার বিক্ষোভকারী ঘটনার মধ্যে তাঁহাদের চিত্ত সেই প্রাৎপরে বিশ্রান্তি লাভ করিরা প্রমানক্ষ উপভোগ করিতে থাকে।

# উৎসব উপলক্ষে ২রা জৈ। জ্ব অপরাক্ষে মন্দিরে উপাসনার। পর ত্রীবৃক্ত নগেজনার চট্টোপাধ্যারের প্রাদন্ত উপদেশ।

আমাদের দেশের প্রাচীন অধ্যাত্ম-শাস্ত্র পাঠ করিলে দেখা বার, মহর্ষিগণ কোনও স্থলে বলিতেছেন, "জ্ঞানছারাই ব্রহ্মলাভ করা বার।" আবার অক্তর্তা বলিতেছেন, "জ্ঞানছারা তাঁহাকে লাভ করা বার না।" উপনিষৎ ( বাহা বেদের শিরোভ্ষণ ) পাঠ করিলে এ সম্বন্ধে বিপরীত ভাবের শ্লোক দেখা বার।— "ন চক্ষ্মা গৃহতে নাপি বাচা, নাস্তৈর্দেবৈত্তপদা কর্মণা বা; জ্ঞানপ্রসাদেন বিভ্রদ্ধং ততন্ত তং পশ্লতে নিছণং ধ্যান্ত্রমান:।" চক্ষ্মারা তাঁহাকে প্রাপ্ত হওরা যার না, বাক্যছারা, যাগ যজ্ঞাদি কর্ম ছারা তাঁহাকে লাভ করা যার না। তবে কি প্রকারে তাঁহাকে লাভ করা যার। শ্লাবার স্থানান্তরে বলিতেছেন—

না বিরজে ছক্তরিভারা শাস্তো না সমাহিত: না শাস্তমানসো বাপি প্রজ্ঞানেনৈবাপুরাং।

যে স্ক্রি ভইতে বিরত হর নাই, যাহার চিত্ত শাস্ত সমাহিত হর নাই, সেঁ কেবল জ্ঞানের দ্বারা তাঁহাকে প্রাপ্ত হর না।
এই চুই প্লোকের মধ্যে সামর্ম্মত কোথার ? বেধানে বলা হইদ্বাছে বে, জ্ঞানের দ্বারা তাঁহাকে লাভ করা যার না, সেথানে
জ্ঞান শলে লৌকিক জ্ঞান, বৃদ্ধির চাতুর্যা, বিচারশক্তি, অথবা
ভর্কশক্তি বৃষ্ঠিতে হইবে। যেধানে বলিভেটিছনু, জ্ঞান দ্বারা
ভীহাকে প্রাপ্ত হওলা বার, সেধানে পার্মাধিক জ্ঞান উদ্দেশ্য।
অনেকে মনে কর্মন, সাম্ব স্কল বিদার জ্ঞানই বৃদ্ধি ও

বিচারশক্তিবার। লাভ করে। ইবার তুল্য প্রান্ত মত আর কিছুই নাই। ভীক্ষ বৃদ্ধিৰায়া দাৰ্শনিক ও বৈজ্ঞানিক সভ্য সকল লাভ করা যায়, কিন্তু ধর্ম কেবল বৃদ্ধি ও বিচার শক্তির जाहार्या लाख कबा यात्र ना। धर्च श्रुत्वव विवव, जाधनांत्र বিষয়। বিচায় শক্তির পরিচালনাদারা ধর্মতত্ত্ব শিক্ষা করা ষার, কিন্তু ধর্মকে পাওয়া যার না--ধর্ম ও ধর্মতন্ত এক নছে। আমরা কি দেখি নাই, ধর্মতত্ত্বে ও ধর্মণাল্লে স্থপণ্ডিত ক্ত ব্যক্তি জীবন সম্বন্ধে নিভাস্ত হীন ? ভাহাদের জীবনে ধর্মের (कान गक्रम नाहे। महाপश्चित विनन्ना क्रगांक विभाज व्यथि ভক্তি कारन ना, উপাসনার মন दिর থাকে না, ভগবানে মন বসে না; শাল্ত-জ্ঞানে পণ্ডিড, ধর্মবিজ্ঞানে অভিজ্ঞ হইরাও ছর রিপুর গোলাম। ধর্মতন্ত্বে পাণ্ডিত্য এবং জীবনগভ ধর্মে ব্দনেক ভফাৎ। বিশ্বিদ্যালয়ের ছাত্রদিগকে ধর্ম স্বন্ধীয় প্রান্ন দিলে তাহারা পুস্তক হইতে মুধস্থ করিরা সমুদার উত্থিত্রণে উন্তর করিতে পারে। ছংখের বিষয়, যাছারা এইরূপে ধর্মতন্তে শিক্ষিত হয়, তাহাদিগের মধ্যে অতি অন্ন লোকেই জীবনে ধর্মলাভ করিরা থাকে।

याशामिरशत्र कीवरनत मक्ता व्यत्न चारक, माज ७ विठात-শক্তি তাহাদিগকে উদ্দেশ্ত-পথে গমন করিতে সাহাযা করে। কেবল ধর্ম লাজ নর, সকল লাজ সম্বন্ধেই এই রূপ; সম্পার জ্ঞানই সেই পরম জ্ঞানের প্রতি চিত্তকে নিবিট করে, যদি জীবনের লক্ষ্য ঠিক থাকে। বুদ্ধি ও বিচার-শক্তি ভিন্ন যে সত্য লাভের অক্ত রাস্তা নাই তাহা নহে। বাহিরের সত্য সহক্ষেও একণা থাটে। বে পূর্ণিমার চাঁদ দেখিরা গোল थालात में ठ ठक्ठरक अकरें। किनिय बरे किছू प्रिंच ना, रय मिकन मा, त्महे तोक्सर्या यांत्र खान शनिन मा, जाहांत्र किहूहे (मथा इहेन ना। वाशान (शानाश क्न (मथिएक शिवा, यनि তুমি তাহার রং, দৈর্ঘ্য, প্রস্থ দেখিরা আইস; কিন্ত তোমার হৃদরের ফুল নাফোটে, তবে ভোমার গোলাপ ফুল দেখা হইল না। পোলাপ ফুল কেবল চামড়ার চোথে দেখা যায় না; জনবের চকু চাই ৷ বতকণ ছই চকু না দেখে, ততকণ দেখা হয় না। কেবল ওছ জ্ঞানতে ধর্মজীবন লাভ করা যায় না। याहारिक व्यान भी उन करत्र, याहारिक क्षमरत्रत्र व्याना मृत हत्र, तिहे কুপার জল অন্তরে না পড়িলে ধর্ম হর না। চাতক বেমন নদী সরোবরের জল উপেক্ষা করিরা "ফটিক-জল" বলিয়া চীৎকার করে, ব্রহ্মণাধক ও দেইরূপ সংসারের সহস্র ভোগের বিষয় উপেকা করিয়া, বিদ্যা বৃদ্ধি ও তর্কে অতৃপ্ত হট্য়া, ব্রহ্মের করুণাবারি লাভের জন্ত ব্যাকুণ হন।

অধিকাংশ লোক ৩ছ ধর্মত লইরাই বান্ত। প্রকৃত ধর্ম বাহা তাহা তাহাদের হৃদরে স্থান পার না। পাষাণ প্রাণ ক্রীহার করণা ভির গলেনা। বিশুদ্ধ মত, দর্শন ও বিজ্ঞানেতে স্ক্রি হর না। বড় তৃষ্ণার্ভ বে, সে লল চার; তাহাকে বদি শুক্ত হর্জনা লাও, তবে তাহার তৃষ্ণা মিটিবে কেন ? সে ঘোলাকলপুর্বাবে, কিন্তু তপ্ত বালুকার তাহার তৃষ্ণা-নিবারণ হবে না। তেগুমাদের কাছে পরিষ্ণার জল থাকে তো হাও। নতুবা বেংধর্মাধিপাস্থ সে শুক্ত স্থান্ধ না, সে

বোলা থাবেই। ভোমরা পরিছার জল দিতে প্লার না ?
ইহা প্রাণের পিপালা বোঝে না, বে কেবল তর্ক বিচার লইরা
বাত্ত, সে এক জগতের লোক; আর বে প্রাণের যাতনার
অহির, বড়রিপুর আঘাতে ব্যতিবান্ত, সে আর এক জগতের
লোক। সে ওছ মতের ধর্মে জুলে না। অবস্তই মতামত
দৃচ থাকা চাই। দর্শন বিজ্ঞানের বে প্ররোজন নাই তা নর।
কিন্তু ওধু তাহাতে প্রাণ ভিজে না। তাহাতে হটা রিপুর
উৎপাত লুচে না। এক বিন্দু ভক্তি পেলে বেঁচে বাই। অবেক্ত
শাস্ত-চর্চা করিয়া দেখিলাম, তাহাতে প্রাণে শান্তি পাইলাম
না। আদ্দ্রসমান্তে এক বিন্দু ভক্তি আহ্রক, বাচালতা চলিরা
যাক্, মরুভূমিতে বন্যা প্রবাহিত হউক্।

नाधात्रन बाक्षनमाव अप्तराभन्न करनक उनकात्र कतिवाहिन; বান্ধর্ণের মতের বিশুদ্ধতা রক্ষা করিয়াছেন ও করিতেছেন। নরনারীর আধ্যাত্মিক স্বাধীনতা সমর্থন করিরাছেন ও করি-তেছেন। আৰু মামাদের নারীগণ জ্ঞানে ও শিক্ষার উন্নতি লাভ করিরাছেন; আমরা জাতিভেদের উন্মূলন করিভেছি; পৌত্তলিকতা ভূলিয়া দিতেছি; কিন্তু কেবল এই সকল সংস্থান্তে ভৃপ্ত হইলে চলিবে না। এ সকল সব ভাল। 📭 ভাই ভগিনীসৰ। প্রাণের ভিতর ভগবানের প্রতি স্থায়ী ডক্তি লাভ ক্রিতে পারিয়াছি কি না? বাহারা সংশরবাদী, নাজিক তাহারাও তো এই দক্ষ দংসারের কাজে ব্রতী। ইংলওে ব্রাড্ল প্রভৃতি কত নিরীধরবাদী প্রাণগত পরিশ্রম করিয়া, कौरन पित्रा मःकारत्रत्र कार्या कतित्रारहम। मह९ कार्या (यमन ভান্তিকের তেমনি নান্তিকেরও কর্তব্য। কিন্তু আমাদিগের বিশেষ কর্ত্তব্য আছে। সর্বাদ। অন্তদৃষ্টি যেন লাগ্রত থাকে, বে আণের ভিতর আণেখরকে দেখিতে পাইতেছি কি না ? আষাদিগের মধ্যে বিখাস ভক্তি আফুক। তার নামে সকলে এক হইরা যাই।

প্রত্যেক ব্রাহ্মিকা ও ব্রাহ্মের হৃদরে ভক্তির ফোরারা খুলে যাক। ঈশবেতে সকলে এক হইর। যাক্। ভাঁছার অনুগভ कीवन याहाएक हत्र, (जवक वाख हरे। ७६ छाव, नीवज छाब, বাচালতা আরি ভাল লাগে না। ওক কথার আরে আলে ঠাঙা হর না। প্রাণ শীতল হয় না। শুরু কথার ধর্মপিপান্তর প্রাণের क्कामिए ना। जन गाव, जन गाव, वीहि। त्न है सीवन কাল হইতে ধর্ম ধর্ম করিতেছি; এখন বৃদ্ধ হইতে চলিয়াছি, এখন ও কি ধর্মের কথা লইরাই পার্কিব ? আত্মক্ আবাদিগের মধ্যে ভক্তি আহ্নক, আধ্যাত্মিকভা আহ্নক। এই বে রিপু কটা---**थरे (य काम, टकांध, लाख, साह, मम, मांदनर्गा, टह खास्रनं,** আণেরদিকে তাকাইয়া একটা একটা করিয়া গণিয়ালও দেখি, কার কট। কমিলাছে ? বাহার হত বল্প, সে ভভটা সৃভ্যুত্ত নিকটবর্ত্তী; পরকাণের জন্য কে কন্তটা প্রস্তুত ভাবিয়া দেশ। "हेरा कतिबाहि, छारा कतिबाहि" विनिन्ना स्वाय निर्ण स्ट्रेर्स না। হাদর পৰিতা হইরাছে কি না? রিপু দখন হইরাছে কি না ? সভা-খরপেতে হদর প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে কি না ? তাঁহার ধর্মকে জীবনের উদেশ করিবাছ কি না? এসকল আংকর উত্তর দাও।

#### व्याधान-त्रष्ट्रावली।

#### २९८भ (म, ১৮৯৩, नायनाव्यत्य व्याच्यांछ।

"Many there be which say of my soul, There is no help for him in God.

"But thou, O Lord art a shield for me; my splory and the lifter up of mine head.

"I cried unto the Lord with my voice, and he heard me out of his holy hill.

"I laid me down and slept; I awaked; for the Lord sustained me." Ps. III, 2-5.

"এমন অনেক লোক আছে, যাহারা আমার আত্মার সহত্রে বলে 'ও যে সর্জাল 'ঈশ্বর ঈশ্বর' করে, ঈশ্বর হইতে ওর কোন আশা নাই।' কিন্তু তুমি আমার বর্ণাশ্বরূপ, আমার ঢাল আমার গোরব তুমিই আমার মন্তক উরত করিয়া রাখিরাছ।

"আমি প্রভূ পরমেশরের নিকট প্রার্থনা করিবাম; তিনি দরা করিরা আমার প্রার্থনা শুনিরাছেন। স্থভরাং আমি অকাভরে নিদ্রা গোলাম ও স্থে আগ্রভ ছইলাম। কারণ প্রভূ পরমেশ্বর আমাকে রক্ষা করিয়াছেন।"

যথনই ঈশবের কোনও সাধক তাঁহার করণার উপর নির্ভর স্থাপন করিতে অগ্রসর হন, তথনই পৃথিবীর গোক বলে "ও লোকটা বুথা 'ঈশর, ঈশর' করে; ঈশরের নিকট হইতে থাকে। প্রথমত: যাহারা সংসারে আসক্ত, বিষরস্থা নিমগ্ন, মোহে অব; বাহারা বিষয়কে সর্বল্রেষ্ঠ জানিয়া ভাহারই शृका करत, याहाचा धर्त्वत्र धात धारत ना, याहाता जेपेतिखारक क्षपत्र रहेटल विषात्र कतियाहि, याहात्र। क्षेत्रदत्र विधानशानन कटत না। ভাষারাই বলে "এব্যক্তি বাতুল এ পাগল, এ 'ঈশর नेषत्र' क्तिया कीवनहा नहे क्त्रिम । (काशाय वा क्षेत्रत, (काशाय ठांत्र नता? श्रेचत श्रेचत कात्रता किहूरे श्रेटर ना। श्रेचरत्रत निक्ठे देहात क्रानश आणाहे नाहे"। विजीत्रणः याहाता পাপেতে আসক্ত, মৌমাছি মধুর ভিতর যেমন অড়াইরা পড়ে ডুবিলা যার, উঠিতে পারে না, তেমনি পাপাসক্তির প্রবলতা वनकः, চিত্তের নিত্বতা ও তুলতা বলতঃ, যাহারা পাপে ভূবে, আর উঠিতে পারে না, তাহারা এইরপ কথা বলিয়া থাকে। चार्तक ममन इत का काशाना धर्मविषयक कथा वरन, धर्मत खब गक्न नहेना नाषाठाषा करत ; ठाहाता '(काशात श्रेयत, 🎙 जैनदात माहाया भाखवात ज्याम। तृथा' এইরূপ কথা মুখে না विणाल कि निरक्तान वात्रकात बात्रा वरण। कात्रण कि, विन সভ্য পরমেশবেতে মাহুবের ঠিক বিখাস থাকে,ভবে ভার কথনই পাপে মতি হইতে পালে না, সে কৰনই কুদ্ৰ হুবে ভূবে না। শাণাসক ব্যক্তি মুখে মা বসুক, কাকে নাজিক। তৃতীয়ত:, राशता नाखिक, वाराता अपनक हिन्दा कतिता, विहास कतिता प्रिकारक, दर नेपरमञ्जनाखत्र स्थान ध्यमान नारे, नेपरमञ क्लगात कथा छाषारम्ब समरत छात शांत ना। धरे शक्त

লোক বলিয়া থাকে, "কোথার ঈশ্বর, 'ঈশ্বর ঈশ্বর করিতেছ কেন ? ঈশবের হাত তো কোথাও নাই।"

**"কিন্ত এই তিন শ্রেণী ভিন্ন আ**ন্ন এক শ্রেণীর লোক এরপ কথা বলিয়া থাকে। আমার বোধ হর এই তিন শ্রেণীর লোক च्यानका (महे (नाकामत चवहा चिवक माहनीय। धरे नकन लाक धर्मांगमात्करे वांत्र करत । देशता धर्मात कथा पूर्व वरन, ঈশবের নাম ইহাদের রসনাতে সর্বাদাই আছে, ধর্মকর্মেও ধর্মসমাজের কাছে ইহাদের উৎসাহ খুব আছে। কিন্ত অভরে ইহারা বিষয়াসক্ত। পরমেশরকে সভ্য বন্ধ বলে, কিন্তু পর-মেখারের উপর নির্ভর করিরা চলাকে নির্কোধের কাজ মনে करत । मूर्थ देवांत्रा नर्काना वरन 'धर्म आमारमत धान रुडेक, ধর্মেতে আমাদের উৎসাহ হউক,'কিন্তু অন্তরে দীর্মরে নির্ভর রাথে ना। यथनरे कान लाक मेचदा मणूर्ग निर्छत करत, छथनरे ভাছাকে জিজ্ঞাসা করে, 'ভোমার কি ক'রে চলে ?' যদি বলা যায় 'ঈশবের অমুগ্রহে দিন চলিতেছে,' তবে তাহারা বলিবে 'হাঁ, ঈখরের অনুগ্রহে ভো চলিতেছে; তবে, কি ক'রে চলে ?' ইহারা বলে "ঈখর, ঈখর' কর, ঈখরের পূজা কর, কিন্তু নিজের काह्य अमन किছু ताथ, वाटा निस्मक वाहान वाह ।" हेरांत्री निर्कत्र निरमत्र छेनत्र त्रार्थ, जेयरतत्र छेनत्र त्रार्थ ना । हेरात्रा ধর্মসমাজের নান্তিক। ইহারা অন্ত তিন শ্রেণীর নান্তিক অপেক্ষা হীন। সভ্য বলিয়া কোন মামুষ ঈশ্বরের উপর নির্ভর कतिरन हेहात्रा वरन, "প्रत्यश्वत इहेर्ड डामारन्त कान সাহাব্যের আলা নাই।" প্রকৃত বিশ্বাসী যিনি, তিনি এ সকল ভ্ৰিয়া বলেন, But thou, O Lord, art a shield for me; .My glory and the lifter-up of mine head.—এ সকল কথা ভো শুনিভেছি, কিন্তু হে প্রভু ভূমি আমার হারদের ঢাল, ভূমি আমার গৌরব। 'ভূমি আমার গৌরব' একথার অর্থ কি? আমাদের সহায় ভর্মা সব তিনি ; আমাদের যা কিছু উৎদাহ তাঁহারি জয় ; আমাদের বাহা কিছু কোমরের জোর ডা তাঁহারি; আমাদের বাহা কিছু কাজ তা তাঁহারি; আমাদের যাহা কিছু শক্তি তা তাঁহারি; আমাদের যাহা কিছু ভরদা, তাঁহারই উপর। "ভুমি আমাদের শক্তি, আমাদের পিডা, চিরকাল সঙ্গে আছ্," এই বিখাস চিত্তে জাগ্রত থাকাই বিখাসী वाक्तित्र गक्रण। এই विशासित्र कार्छ यथन जाननात्र जीवन মিলাই, তথন नकात्र माथा माहीएक পুভিন্ন ফেলিতে ইচ্ছা হয়। তখন বলি 'কেন প্রমেশবের সাকী দিতে যাই, কেন ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করিতে যাই, কেন ব্রহ্মশক্তির কথা বলি ?' সভা ঈশবের উপর নির্ভর করিলে কি ভর মনে থাকিতে পারে ? মানুষ আঞ্চন হলে বান্ধ বে ধর্মে, কাম ক্রোধ লোভ পুড়ে যার याक, क्षम পরিশুদ্ধ হয় যাতে, সে অগ্নিতে কেন প্রজ্ঞানিত হই না ? আমরা নিশ্চরই এই চারি শ্রেণীর কোন শ্রেণীতে রহিয়াছি। निष्ठबहे जेचदारा निर्कत व्यवस्थ इव नाहे। इब माह्यस्वत छेनव. नव निर्देश में जिन्द से भव्र , नव अप्र किडूब से भव्र निर्देश बहि-রাছে। একথানা মন বলে, 'ঈখরেতে নির্ছর করি,' আর পাধধানা বলে 'There is no help for me in God.' এরণ यम मिर्द्र कांच क'र्स्ड जात्र देव्हा करत ना।

সেই সভ্য বিখাস বলি আসে, ৰাচ্ছে সমুদর হৃদরের সহিত বলা যার, 'আছেস, আমার জন্ধ প্রভু প্রমেখন সহার আছেন', ভালা হইলে আমাদের দিরে ভাঁর কাজ হবে। সভূষা এ প্রাথার আধ্যানা মনের আধ্যানা বিখাস, আধ্যানা নির্ভর দিরে কিছু হবে না।

#### পাঞ্জাব প্রচারযাত্তীর পত্ত।

একটা বিশেষ কারণে ঝালি হইতে আমাদিগের প্রচার-দল ছই ভাগে বিভক্ত হর, শাল্পী মহাশর এবং প্রীযুক্ত প্রকাশদেব হোসেলাবাদ হইরা ইন্দোর এবং বাবু হরিমোহন ঘোষাল ও প্রীযুক্ত ক্ষার সিংহ কানপুর হইরা এলাবাদ যাত্রা করেন। ইন্দোরের কার্য্য বিবরণ:—

১৩ই মে ইন্সোর—প্রাতে হানীর ব্রহ্মন্সিরে উপাসনা হর। শ্রীবৃক্ত প্রকাশদেব উপাসনা করেন। সন্ধ্যার সমর সঙ্গীত প্রার্থনা এবং হানীর ব্রাহ্ম বন্ধুগণের সহিত কথা বার্ত্তা হয়।

১৪ই মে—শাত্রী মহাশর প্রাতে হিন্দিতে উপাসনা এবং অপরাছে মন্দিরে ইংরাজীতে বক্তৃতা করেন। বক্তা সভার ছই শতের অধিক লোক উপহিত ছিলেন। সন্ধার সমর প্রীবৃক্ত প্রকাশদেব মন্দিরে উপাসনা করেন ও "নব-জীবন লাভ ভিন্ন কেছ ঈশার দর্শন করিতে পারে না" এই বিষয়ে উপদেশ দেন। উপাসনা ও উপদেশে উপাসক-গণের মধ্যে এক অপূর্ক ভক্তির স্রোত প্রবাহিত হইয়াছিল, সকলে কৃতার্থ হইয়া ঈশারকে ধঞ্চবাদ করেন।

ষিতীয় দলের কার্যাবিবরণ—বাবু হরিমোহন খোবাল ও শ্রীযুক্ত কুলর দিংহ ৮ই মে কানপুরে পৌছেন। এবং-ইহালের সহিত শ্রীমান্ জগদীশচন্দ্র রায় লক্ষো হইতে আদিরা যোগদান করেন। ইহারা শ্রীযুক্ত বাবু ক্ষেত্রনাথ ঘোষ পর্বমেণ্ট উকীল মহাশরের গৃহে অবন্তিতি করেন। ঐ দিন সন্ধ্যাকালে তাঁহার বাদার সংগীত সংকীর্ত্তন ও প্রার্থনাদি হয়। শ্রীযুক্ত কুলর সিংহ প্রার্থনা করেন। তৎপর দিবস প্রাতে পারিবারিক উপাদনা হয়, শ্রীযুক্ত কুলর সিংহ উপাদনা করেন। অপরাক্ষে ঐ বাসাতেই উর্দ্তে বক্তৃতা হয়, বক্তা শ্রীযুক্ত কুলর সিংহ বিষয়—"বিশ্বজনীন শুভ সংবাদ।" বক্তৃতা সারগর্ভ ও স্বন্ধ্রাহী হইয়াছিল।

> ই মে—প্রাতে কেজ বাব্র গৃহে উপাসনা হয়, হরিমোচন বাব্ উপাসনা করেন। অপরাক্তে ধর্মশাল্তের বচন উল্লেপ করিয়া হরিমোহন বাব্ ও শ্রীমান্ জগদীশচক্র রায় কিছু কিছু বলেন, তৎপর সফীর্তন হয়।

১১ই মে—ক্ষেত্র বাব্র গৃহে উপাসনা হয়, শ্রীযুক্ত স্থার বিশ্ব উপাসনা করেন। সন্ধ্যার সময় ছরিমোহন বাব্র কথকত। হয়। তৎপর দিবস ইহারা এলাহাবাদ যাতা করেন। স্থানীর ব্যাহ্মবদ্ধাণ ইহ'দিগকে সাদরে অভ্যর্থনা করেন, ইহারা উকিল শ্রীযুক্ত বাবু প্রিয়নাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশরের গৃহে অবস্থিতি করেন।

>२६ सि—नक्षात तमत्र विवत्यायूत शृंदर मनीज मःकीर्कन • वार्थमा इत, विवृक्ष स्थानत निःह वार्थमा कत्तम ।

১৩ই মে—প্রাতে প্রির্বাব্র গৃহে উপাসনা হর, হরিমোহন বাবু উপাসনা করেন। ছানীর প্রাক্ষসমাজের ৬০ জন সভা উপস্থিত ছিলেন। সন্ধার পর প্রার ১০০১২ জন বালাগী। আসিরা একত্রিত হন। শ্রীযুক্ত স্থক্তর সিংহ প্রার্থনা করেন, সলীত ও সংকীর্তন হর।

১৪ই মে—বাবু কেদারনাথ মণ্ডণ মহাশরের গৃহে উপাসনা হয়, হরিমোহন বাবু উপাসনা করেন। সন্ধার পর স্থানীর ব্রন্ধোপাসনালরে সাপ্তাহিক উপাসনা হয়। হরিমোহন বাবু উপাসনার কার্য্য করেন। প্রায় ২৫ জন বালাণী উপহিত ছিলেন। অদ্যকার উপাসনা ও কীর্ত্তনাদি অভি মধুর হইরাছিল।

১৫ই মে—জন্য প্রাত্তে ইহারা গলাযমুনা-সলম প্রারগতীর্থ দেখিতে যান। অমাবভা উপলক্ষে নানা প্রেণীর অনেক লোক বান করিতে আসিরাছিলেন। কোন কোন যাত্রীর তু একটি কার্যা অতি আশ্চর্যা জনক হইরাছিল। একজন আপনার মন্তক বালুকার (গলদেশ পর্যাপ্ত) প্রোথিত করিয়া পড়িয়া আছেন এবং তুই হস্তবিস্তার করিয়া বাত্রীদিগের নিকট ভিক্ষা চাহিতেছেন। আর একজন উর্জ্বান্ত, চিরকালের জন্ত বাম হস্তধানা উর্জ্ব উরোলন করিয়া রাথিয়াছেন। হাতের অবস্থা দেখিলে শরীর শিহরিয়া উঠে। ইনিও ভিক্ষার জন্ত বাসুর গুছে পাঠ, ব্যাখ্যা, কীর্জন ও প্রার্থনাদি হয়। হরিমোহন বারু সমুদার কার্যা সম্পাদন করেন। প্রায় ৪০ জন বালালী উপন্থিত ছিলেন। ইহাদের অধিকাংশই হরিসভার সন্তা। সকলেই অভি আগ্রেহের সহিত কীর্জনাদি প্রবণ করেন।

১৬ই মে—গৰার অপর পারে ৰুসী নামক একটি ছান আছে, এক্সান নির্ক্তন, দৃষ্ট অভি সনোচর। এথানে অনেক मन्नामी फ्रक्ति याम क्रबन। अना हैशात्र। এই वान प्रिथिए ग्रम्म करत्रम ध्वाः इश्मत्रोक मामक धक्कम भन्नमहः राम् আশ্রমে অভিথি হন। প্রমহংস মহাশর ইহাদিগকে সাদরে অভাৰ্থনা করেন ৷ তাঁহার সৌষামূর্টি, বিনীত ভাব ও মিট বাকা এবং উদার ধর্মতে সহজেই চিত্ত আকৃট দয়। প্রসদক্রমে তিনি খনেক সার কথা বলেন, ভাহার মধ্যে প্রধান তিনটি এই—(১) বাহা ভাল, সত্য বলিয়া ব্ৰিবে, ভাহা প্রাণপণে করিবে, আর যাহা মক্ষ, অসতা তাহা পরিভাগি क्त्रित्। (२) मार्यशान क्लान लाक्क्रिय मा। অভাবের নিরম কেছ গজান করিতে পারে না। অভাবকে অতিক্রম করিয়া বাহারা ২া১ ঘণ্টার মধ্যে কিছু লাভ করিতে চার, তাহারা অনেক দুরে সরিরা পঞ্চে। সাহ্রবের সাহাবা हारे वटहे, किन्न हिनिन्ना न बन्ना वर्फ कहिन। डाँहान (क्शवासन्त्र) মধ্য দিয়া যে সাধুকে পাঞ্ডয়া বার, সেই প্রাকৃত সাধু। (৩) বিশ্বাস চাই, তাঁহার উপর নির্ভৱ করিয়া পড়িয়া থাকিতে পারিলে रायात्वरे थान, कृष्ठकार्या इहेरत । ७९१व हिन्तिए छसन अ প্রার্থনা হর। প্রীথুক্ত স্থান্দর সিংহ প্রার্থনা ক্ষেন। পর্ম-रःन मरानत्र निविष्टे हिट्छ योग त्वन अवः चानि नृमाहकत नमीठ छनियात हैक्। धामान मतिरात, नश्मीक कता हत।

ইণারা আশ্রমেরাতি বাপন করিয়া, তৎপর দিবস প্রাতে। সহরে প্রতিগমন করেন।

সন্ধারে সমর স্থানীর ছরিসভার সম্পাদক মহাশবের যত্নে এক সভা আহত চয়। প্রায় ৫০ জন ছিন্দু মহিলা ও শতাধিক ভদ্রলোক উপত্তিত ছিলেম। এই সভার বাবু ছরিমোইন ঘোষাল জগাই মাধাই উদ্ধার বিষয়ে কথকতা করেন। ভগ্নানের নামের শক্তি অভুত, তাঁলার নামে সকলের জ্লর মুবিগলিত হইল, এক মধুর ভক্তির স্রোভ প্রবাহিত হইল। ভগ্নানের শক্তিতে জগাই মাধাইব নবজীবন লাভ, পাপীর জীবনে বিধতাব লীলার এক অপুর্ব দৃষ্টান্ত। ইহাতে প্রাণ কালার না বিগলিত হয়?

১৮ই মে—স্ক্রার সময় পণ্ডিত যোগেক্সনাপ মুপোপাধ্যায় নামক একটা বাবুর গৃহে পাঠ, ব্যাথ্যা, প্রার্থনা
ও কীর্ত্তন হয়। প্রথমে শ্রীযুক্ত স্ক্রুর সিংচ প্রোর্থনা করেন,
পরে শ্রীমান্ ক্রগণীশচক্র রায় শাস্ত্রীয় বচন পাঠ করিয়া কিছু
বলেন, তৎপর বাবু হরিমোহন খোষাল কিছু বলেন।
প্রায় ৪০ জন ভদ্রলোক উপস্থিত ছিলেন। ইইাদের অধিকাংশ হরিসভার সভা। সকলেই অতি আগ্রহের সহিত
কীত্রাদি শ্রবণ করেন ও আনক্র প্রকাশ করেন।

১৯এ মে— অপরাক্তে কায়ত্ব পাঠশালা হলে এক সভা হয়,
সভার প্রায় শতাধিক লোক উপস্থিত ছিলেন। আরক্ত স্চক একটী
হিন্দি সঙ্গীত হইলে, প্রীযুক্ত স্কর সিংহ উর্দুতে "ধর্ম মানবের
আভাবিক" এ বিষয়ে বক্তা করেন, তৎপর আর একটি
সঙ্গীত হয় এবং বাবু হরিমোহন ঘোষালা "ধর্ম সাধনের উপায়
ও জীবনে ভাহার প্রকাশ" এই বিষয়ে সংক্ষেপে কিছু বশেন;
সর্বাশেষে আর একটী সঙ্গীত হয়। বক্তা সারগ্রন্থ হালয়গ্রী
হইয়াছিল। স্থানীয় কোর্টের উকিল প্রীযুক্ত প্রিয়নাথ চট্টোপাধ্যায়
মহাশেষ বক্তাছরকে ধন্ধবাদ দেন ও ব্রাহ্মসমাজের উদ্দেশ্য ও
কার্য্য সম্বন্ধ ইংরাজিতে কিছু বলেন, তৎপর সভা ভক্ত হয়।

২০এ মে— আদা খ্রদাবাদত্থ বাবু শরচ্জ গাঙ্গুলী বি, এ, ইইাদিগকে তাঁহার গৃহে আহ্বান করেন। সেধানে হবিমোহন বাবর কথকতা হর। প্রায় ৬০ জন ভদ্রবোক উপত্তিত ছিলেন।

২>এ মে— অদ্য শান্তী মহাশর ও প্রীযুক্ত প্রকাশ দেব ইন্দোর হইতে এলাহাবাদে আদিরা ইহাঁদের সহিত সম্প্রিলত হইলেন। প্রার এক পক্ষ কাল পরে আবার সকলে সম্প্রিলত হইলেন। সন্ধ্যার সমর স্থানীর উপাসনালয়ে শান্তী মহাশর সাপ্তাহিক উপাসনার আচার্য্যের কার্য্য করেন। অদ্যকার উপাসনা ও উপদেশ প্রাণশ্পশী হইরাছিল। প্রার ৫০ জন বাজালী উপস্থিত ছিলেন।

২২এ মে—প্রাতে বিশ্বনাথ বাবুর গৃহে উপাসনা হয়, শাস্ত্রী
মহালয় উপাসনা করেন। প্রায় ২০ জন লোক উপস্থিত
ছিলেন। অপরাক্তে কারত পাঠশালা হলে শাস্ত্রী মহাশর
ইংয়াজিতে বস্তুতা করেন। প্রায় দেড় শত লোক উপস্থিত
ছিলেন। ব্রাক্তরপর উলার বিশ্বজনীন ধর্ম, কালে এ ধর্মই সমস্ত
জাতির ধর্ম হইবে এই বিষয় অভি উক্ষেলরূপে বর্ণন করেন।

ভংশর বিষমাধ ব্যু এই বলিয়া বক্তাকে ধরুবাদ দেন, যে "আসরা অভি সারগর্জ ও চিত্তাপূর্ণ বজুতা প্রবণ করিলাম। ইংটাই সভাধর্ম, ইহা সরল ও সকলের উপবোগী, এই উপদেশ পূর্ণ বজুতার অভ আমরা বক্তাকে অভ্যের সহিত ধরুবাদ প্রদান করিভেছি।" সর্বাশেষে একটা স্থীত হটয়া সভা ভঞ্চর।

আমাদের প্রচার কার্য্য এবার এথানেই শেষ চট্টল।
এলাচাবাদত অনেকেই আমাদিগকে তাঁচাদের গৃহে উক্তরূপে
কার্য্য করিবার জন্ম আপ্রচের সহিত আহ্বান করিরাছিলেন।
কিন্তু আমাদিগকে শীন্তই প্রভ্যাগমন করিতে চটল বলিয়া
আমরা তাঁচাদের অন্তরোধ রক্ষা করিতে পারি নাই। তাঁহাদের
সদিচ্চার জন্ম অন্তরের সহিত আমরা ধ্যুবাদ করি।

ছ একটা কথা বলিরা উপসংহার করিব। পঞ্জাবের অবস্থা পৃর্ব্বেই প্রকাশ করিয়াছি। বাঙ্গালা দেশ অপেক্ষা পঞ্জাবের প্রচাবক্ষেত্র অধিকত্তর কলোপধায়ী। মহাস্থা নানক এই ভূমি অনেক পবিমাণে প্রস্তুত্ত করিরা গিরাছেন। ভাতিভেদ প্রথাও এগানে অত্যন্ত শিথিল এবং লোকের হৃদর স্বভাব হুই ধর্মপ্রবাণ। এ সময়ে এখানে যত্নপূর্ব্বক ব্রাহ্মধর্মের সত্য প্রচার করিলে অচিরে স্ফল কলিবে।

শেষ কথা এই, এবার আমনা উচ্ছলরপে অমুভব করিরাছি, মানবেব শক্তিৰে কিছুই ছয় না। মালুষ বৃদ্ধি বিবেচনাদারা স্তারাল্য প্রতিষ্ঠা করিতে পারে না। স্বরং প্রমেশ্বই ভাঁচার ধর্ম প্রচাব করেন। তাঁচার শক্তিভেই কার্যা চর। এলাদাবাদে মাত্র ৬া৭ জন বাঙ্গালী ব্রাহ্মদমাজের স্চারুভূতি-কারক আছেন, আর কেহই ব্রাহ্মধর্ম বা ব্রাহ্মসমাজের সহিত কোন ও সংস্রব রাখিতেন না। তাঁদের যোগ হরিসভার সচিত। কিন্তু ব্ৰহ্মের নামেব শক্তিতে আশাতীত ফল দেখা গিয়াছে। সাধারণত: প্রায় সকলেরই ত্রাহ্মধর্মের প্রতি শ্রদা আকৃষ্ট হুইয়াছে। তিন জনের বিশেষভাবে হৃদর পরিবর্ত্তন হুইয়াছে। তাঁহাদের একজন উকিল ও একজন গ্রাজুয়েট। আরু একজন সাধনাশ্রমের প্রতি আকৃষ্ট হইয়াছেন। একজন হিন্দুখানীব মত পরিবর্ত্তন হইয়াছে, তিনি আমাদের কাগজের গ্রাহক হুইয়াছেন। আমরা যেথানে নিরাশ হইয়াছিলাম, ভগবান দেখানে আশাতীত ফল দিয়াছেন। আমরা ২৪এ মে কলিকাতায় পৌছি। শেণ্টার সংস্ট কতিপর বন্ধু আমাদিগকে অভ্যর্থনা করিবার জন্ত হাবড়। ষ্টেশনে উপস্থিত হই রাছিলেন।

# প্রেরিত পত্র।

( পত্র প্রেরকদিগের মতামতের জক্ত সম্পাদক দায়ী নহেন। )

মাক্তবর

**बीयुक उपरकोम्मी मन्नामक** 

মহাশয় সমীপেয়ু।

মহাশর ! গত ১লা লৈচির তদকৌ মুদীতে সাধারণ "ব্রাক্ষ-সমালের অন্মোৎসব উপলক্ষে আত্মপরীক্ষা" ক্রিয়ক যে প্রবন্ধ প্রকাশিত হইরাছে,তাহা পাঠ করিবা খুঁথিত ওম্পাহত হইলাম।

কেন একথা বলিতেছি, তাহা এই পজে যথাশকৈ পুলিয়া বলিতে চেষ্টা করিব। প্রবন্ধটীর শেবাংশ পাঠ করিয়া বেঞ্জামিন ফ্রাছলিনের একটা কণা মনে পড়িল। ভিনি নিক জীবন-বিবর্ণীর একস্থানে বলিয়াছেন, "আমি নির্ভ্যায়ী চটবাকপাবলিব, একথা আমি বলিব না। কেন না যথনই দেধিয়াছি যে, কোন ব্যক্তি নিরহ্লারিতার অভিমান করিয়া, কণা কৃষিবার সূচনা ক্রিয়াছেন, ভাছারই অব্যবহিত পরে তাঁচার আত্ম অহমিকার বিলক্ষণ পরিচয় পাইয়াছি।" আমিও দেখিতেছি যে "আত্মপথ্নীকা" প্রাবক্তের লেখক যথন আমাদের সমাক্তের সভাগণ স্বীর সমাজকে বিশাস ও নিষ্ঠার চকে দেখিতে পাইতেছন না" ৰলিয়া জমুযোগ করিতেছেন, ভণন ভিনি নিজে স্বীয় সমাজকে কোন্চক্ষে দেখিতেছেন তৎপ্ৰতি একবার দাষ্ট নিকেপ কবেন নাই। তিনি সাধারণ ব্রাহ্মসমা**লকে** যে বর্ণে চিত্রিত করিরাছেন ভাছা কি নিজ সমাজের উপর "বিশ্বাস 'ও নিষ্ঠার'' পরিচার**ক** ? সাধারণ ত্রাহ্মসমাক্ষের "সর্বতেই चामत्रा'' ९ "উৎकট चहरजाव" विनामान, धर्मनाधरन ७ व्यकारत এবং জনহিত-ব্ৰতে কোন উৎসাহ নাই, এইরূপ কলছ নিজ नमारकत ऋस्त क्लिन कताहे यनि नमारकत लाजि विद्यान छ निष्ठात नक्षन इत्र, उत्त (प्र विश्वाप ও निष्ठा ना शाकाहे बत्रः শ্রের:। সাধারণ আক্ষসমাজকে এই চক্ষেদর্শন করিয়া লেথক যে কিবাপে পঞ্চদশ বৎসরের পরীক্ষার পর মঙ্গণমর বিধাতাকে ধক্তবাদ প্রদান" করিলেন ভাছা আমি ব্ঝিরা উঠিতে পারি না। ্য সমাজ কেবল "নিয়মভন্ত প্রণালী-স্থাপন" ও "বালাবিবাছের প্রতিবাদ" কবিবার জন্ম সংস্থাপিত চইয়াছিল, ভাহা ধর্মসমাজ वित्रा भग इहेगात कथनहे (याभा नरह! "बाक्षमभाव विनाल লোকে" যদি সে সমাজকে বৃষিধা থাকে, এবং সে সমাজের ধর্ম্মই বদি "উদার সার্বভৌমিক এবং বুদ্ধি বিবেকসঙ্গত ব্রাদ্ধর্ম" **চয়, তবে আমি বলিব ত্রাহ্মসমাজ লুপ্ত চইয়াছে, ত্রাহ্মধর্ম** ভারতবর্ষ চইতে বিদ্রিত হইয়াছে। আহমিকার ধর্ম কখনই ব্রাহ্মধর্মা নছে। লেখক যে কথাগুলি অপরকে ''প্রশান্তচিত্তে' আলোচনা করিতে অমুরোধ করিয়াছেন, তাহা যদি নিজে "প্রশান্তহিতে" ভাবিয়া লিখিতেন, তাহা ছইলে এরূপ পরস্পর বিরোধী কথার কথনও উল্লেখ করিতে সাহসী ছইতেন না। जिनि এक इरन (य कथा विवाहिन, ज्यात्रक्षत निस्कृ जोहा থগুন করিয়াছেন। এখনে আরও ছই একটা দুটান্ত দেওয়া আব্দ্রক। লেখক একছলে বলিভেছেন, "পোনের বংসরের मर्था हेशात्र मछाभग निषमावनी अभवन, मःस्माधनामि विषय বেরপে পরিপক্তা প্রকাশ করিবাছেন, তাহা ভাবিলে চমংকৃত চইতে হয়। ইহা প্রশংসা করে কি প্লেমছলে লেখা হইরাছে व्बिएक शादिनाम ना। (कनना श्रद्भाग्ये लिया इहेबाएइ (य, "ইছার (নিল্নতন্ত্র প্রণাণীর) যে মুখ্য উদ্দেশ্য, তাহা সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের সভাগণের হৃদরে ভাল করিয়া বসে নাই। যাহা-দিগের মূলেই ভূল, তাঁহাদিগের "পরিপকতা" চমৎকারই বটে। ভাঁচারা যে নিয়মতন্ত্র প্রণাণীর ব্যবস্থাটা কেমন ''ফুব্দর" ও "উলত" ক্লিডে সমৰ্থ হইবাছেন, ইহা অনাবাদেই বৃথিতে বে নিৰ্মতল প্ৰণাণীর "কুন্দর" ও "উল্ভ"

ব্যবস্থা একটা ধর্ম সমাজের "আধ্যাত্মিক কার্য্যের অনেক ক্ষতি" कतिराज्याह, जोहांत जावांत खन कि, तम खानत कथा भा वनाहे সমত ছিল। সাধারণ আত্মসমাল বলি আধ্যাত্মিকভার ক্ষতিকা-त्रक इत, बाहर छाटब्त कार्यवमाछ। इत, खटव "विशाकांत खख-हैक्कान अवः जाशान्तरे महन विधिष्ठ देशान अजुलन हरेनाहिन, লেখক কোন্ প্রাণে একথা বলিতে সাহসী হইলেন বৃথিতে পারিভেছি না। বিধাতার মলন বিধির উপর যাহা সংখাপিত নছে, ভাষার পক্ষে "পঞ্চদশ বৎসর কাল জীবিত থাকিরা কার্য্য করা" সম্ভব নহে, এই অন্তুত আবিক্রিয়া কোন্ ঐতিহাসিক গবেষণার উপর নির্ভর করিতেছে,তাহা লেখকই বলিতে পারেন। স্থারণ ত্রাহ্মসমাজের গুণ স্থরূপ যাহা উল্লেখ করা হইরাছে, তাहा এই, कार्य्यारनाह, नियमण्ड-श्रामी-चानन এवः नमाक সংস্কার। সাধারণ ত্রাহ্মসমাজ যদি কেবল মাত্র এই প্রণত্তবের সমষ্টি হয়, তবে উহা ঈশবের কার্যা হইলেও ধর্মসমাজ বলিয়া অভিহিত হইবার উপযুক্ত নহে। এই তিনটী শক্তি বিদ্যমান না থাকিলে কোন সমাজই সজীব অবস্থায় অবস্থিতি করিতে পারে না। কিন্তু এ নিমিত্ত উহাকে ব্রাক্ষসমান্ত নামে অভিহিত করিবার কোন কারণ দেখা যায় না। সাধারণ আহ্মসমাজ না विनिग्ना (कवन माधात्रन मुमाझ विनिध्निहे यत्थ्रहे हहेए ज्ञादि । व्यामानिरात्र विभक्तिया यांचा विनिद्या भारकन, माधादन आधा-সমাজকে যিনি বিশ্বাস ও নিষ্ঠার চক্ষে দেখেন, এমন এক ব্যক্তি আছ সে কথার সাক্ষ্য প্রদান করিতেছেন। এই নিমিন্তই হংথিত ও মর্মাছত হইরাছি। যাদ প্রবন্ধ লেখকের কণা বিশ্বাস করা যায়, তবে ইহাই বলিতে হয় যে, সাধারণ ব্রাহ্মসমার্ক একটী ধন্ম সমাজ নহে, উহা কতকগুলি কাৰ্যোৎসাহী লোকেন অধিচানভূত নিষ্মতন্ত্র-প্রণালীগত সমাজ-সংস্কার সভা। যে मछात्र कार्याएमार कनमाधातरगत्र (मवात्र नरह, मर्क्कह (कवन অহং ভাব প্রতারে নিযুক্ত এবং বাহার নিয়মভত্ত-প্রেণাণী আধ্যা-থ্যিক ভাব বিনাশেই আপনার ফুলর ও উন্নত পরিপক্তার পারচর দিয়া পাকেন। সে সভা সমাজ-সংস্কারের মধ্যেও (চ্যু। माधात्रन बाक्षमभास्त्रत अरे विटेखरीमिक सन माधात्रानत मन्त्राय সাধারণ আক্ষসমাজের যে চিত্র উপস্থিত করিয়াছেন, উচ্বে নীচতম শত্ৰুও ভেদপেক। কুৎসিড চিত্ৰ আহিত কারতে সম্থ হইতেন না।

আর একটা বিষরে করেকটা কথা বলিরাই আমার বক্তব্য শেব করিব। প্রথমতঃ ব্রাহ্মধন্ম প্রচার সম্বন্ধে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচ্র উৎসাহের যদি অভাব দৃষ্ট হর, তবে তাহার নিমিত্ত ব্রাহ্মসাধারণ অপেক্ষা ব্রাহ্ম-প্রচারক্ষণণই অধিক দারী। প্রচারক সংখ্যা যে ক্ষিয়া বাইতেছে, ইংগ ব্রাহ্মসাধারণের অমনোযোগ বলতঃ নচে, প্রচারকদিগর মতিছেরভা বলতঃ। মতিছেরভা কথাটা করিন হইলেও আমি ইছাপুর্যক উহা প্রয়োগ করিতেছি। যাহারা এক সমবে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচারক ছিলেন, এখন সরিরা পড়িরা কেহ আপনাকে অবভার বলিরা পরিচর ছিভেছেন, কেহ কালীর বারে, কেহ বা শিবমন্দিরে শিরপুর্ঠন ক্রিভেছেন, এ স্কল দেখিরা শুনিরা কে তাঁহাদিগক্ষে মতিছের বলিরা মনে म। क्षित्रा शक्टिक शास्त्र ? मिकक्त ना क्षितिन काँशिक्षित চরিত্রের বিরুদ্ধে আরও শুরুতর অভিবোগ উপস্থিত হর। বাঁচারা এখন ও প্রাক্ষসমাক্ষের প্রচারক রবিরাছেন, ভাঁহালিগের মধ্যেও কাৰারও কাহারও গতি এই মতিজ্বতার পথেই পরিধাবিত চইতেছে। এই সকল দৃষ্টান্ত দেখিরা প্রচার স্কার্ব্যে वान्नविरात्र व्य छेरमारकत शनि क्हेर्टन, क्षात्रकविन्नरक व्यक्ति-পালন করিতে হস্ত সৃষ্টিত হইবে, তাহা ভক্ত আশচর্ব্যের विवन्न नाह । यति धर्यमाधनान कन - अहेन्न विकृष्ठ इन, क्षठ-নিউ সাধ্যার প্রতি লোকের যে অমাস্থা জরিবে ভাষা অসম্ভব নতে। যে সাধনার আপনার বিখাস ও চরিত্রকে কোন স্বামী ভিত্তির উপর সংস্থাপিত ক্রিতে সমর্থ নহে, সে সাধন। প্রকৃত नरह। ज्यशह बाक्षमभारक छांहाताहे माधक विषया भगा, याँहाता এইরূপ উৎশৃত্যলভার পশ্চাতে ব্যক্তভা সহকারে প্রধাবিত হন, যাহারা মতিছের ব্যক্তির পদতলে পুষ্ঠিত হইরা, ভাঁহাদিগের निक्रे धर्म्याभरतम जिका करतन, उाँशानिशक अक विद्या शहन करत्रन। সমাজের ঘাঁছার। ধর্মোপদেশক ছিলেন, তাঁছা-দিপের ধর্মের গতি যথন বিপরীত দিকে প্রবাহিত হইতেছে, তথন প্রকৃত সাধনা কি, সে সম্বন্ধে লোকের মনে স্বভাবত:ই শক্ষেত্র উপন্থিত হুইতে পারে। শুরুমন্ত্র যে দেশের লোকের প্রধান সাধনা, ঈশবের স্থানে গুরুকে স্থাপিত করিতে যে त्मरणत त्मारकत चाश्रह, त्य त्मरणत माधकमण्डमी श्रेयरतत পূজা প্রচনিত করা অপেকা আলুদেনালাভে অধিকতর কৃতার্থ চন, সে দেশে ব্যক্তিগত প্রভুত্তে সংঘত ছাথিবার অবিশ্রক্তা যে সর্বাদাই বিদামান থাকিবে, ইহা প্রকৃতির নিরম-मझ छ। वतः हेशात प्रश्नेश इहेरमहै विशासत प्रामका। माधा-वन बाक्रमभाष वााक्रभंड आधान्नक यान अधम हिनारमह বিনাশ করিয়া পাকেন, তাহা ব্যক্তিগত বিষেষ বশতঃ নহে, ভাষা ব্রাহ্মধর্মের পাবত্রভা ও ব্রাহ্ম অনুষ্ঠানের বিশুদ্ধতা রক্ষার कछ। এই ७७ উদ্দেশ্যে यथनहे প্রায়েকন হইবে, ব্রাহ্মসমাজ ব্যক্তিগত প্রভূত দমন বা বিনাশ করিতে প্রস্তুত হইবেন। यथन এ कार्या अनमर्थ इडेरवन, उथनहे मत्न कतिए इहरव, এক্ষিনাজের জীবনীশক্তি লোপ হইয়াছে। সাধারণ আক্ষমাজ ্য সমূচিত পরিমাণে ব্যক্তিগত প্রভূত দমন করিতে পারেন नारे, (मरे कांत्रांगरे (मिश्टिक् यि मक्न वाक्ति बाक्तमभाक পরিত্যাগ করিরা গিরাছেন, পূর্বকার ব্যক্তিগত প্রাধান্ত বশত: তাঁহালাৰ অন্যাপি ত্রান্ধের উপর প্রভুত বিস্তার করিতে সমর্থ চইতেছেন। তাঁহাদিগের পদাফুসরণ করিয়া ক্রমে ক্রমে অনেকে বান্ধসমাজ হইতে না হউক বান্ধের লক্ষা চইতে বিচ্যুত চইয়া পড়িতেছেন। সাধারণ আক্ষণমাক্ষের যদি অমঙ্গল হয়, তবে ব্যক্তিগত অক্সায় প্রভূত বিনাশের চেটাবশত: এবং নিয়ম-তন্ত্রপ্রণালীর অনুসরণ হেড়ু ছইবে না, এই উভরের উপেকা निवक्तरे इहेरव।

আমার সাহ্মর অক্রোর এই, বেন নিজ নাম দিরা প্রতিবাদ করেন। অনামিক প্রতিবাদ করা আমার অভ্যাস নাই; স্থৃত্বাং অপরেও আজ্বনাম গোপন রাখিরা, আমার কোন কথার প্রতিবাদ করেন, ইয়া প্রার্থনীর মনে করি না।

নিবেদক জীবারকানাথ গলেগোধাার।

#### ব্রাহ্মসমাজ।

সাধনাশ্রমের উৎসব—গত ১লা জ্ন সাধনাশ্রমে বিশেষ উৎসব হইরাছে। ঐ দিন আদ্ম মৃহুর্ত্তে কতিপর নির্দিষ্ট উপাসক সমবেত হইরা বিশেষ উপাসনা করেন। ঐ উপাসনা- দলে একজন বি,এ উপাধিধারী আদ্মযুবক ভবিষ্যতে আদ্মসমাজের কার্য্যে সমস্ত দেহ মন নিরোগ করিবেন বলিরা সংকর প্রাকাশ করেন। এই যুবক অতি অরবর্গে হিন্দু সমাজের ভ্রমানক উৎপীড়ন সন্থ করিয়া স্বীর বিশাস পথে দৃঢ় রহিরাছেন। আমাদের আশা হয়, এই ধর্মজাবাপর যুবক যে গুরুতর সংকর করিয়াছেন, তাহা চিরজীবন পালন করিতে সমর্থ হইবেন। পরমেশ্বর ইহার প্রাণে বল দান কর্মন।

বেলা ৭টার সময় নিমন্ত্রিত ও নিয়মিত উপাসকগণ উপস্থিত হইলে ব্রন্ধোপাসনা আরম্ভ হয়। শাল্পী মহাশহ উপাসনা করেন। মধ্যাক্তে ধর্মালোচনা হয়। সন্ধ্যান্ত্রপর প্নরায় উপাসনা হয়। এবেলাও শাল্পী মহাশ্র আচার্য্যের কাষ্য্য করেন। সময় সময় জলধারা পতিত হইরা যেকপ নিদাবের শুক্ষ মৃত্তিকা আর্দ্র করিয়া দের, সেইরূপ উৎস্বের সময় ব্রন্ধ-রূপা অবতীর্ণ হইরা উপাসকের নীরস প্রাণকে সরস করিয়া দের। এই উৎস্বের অনেকেই ব্রন্ধ-রূপালাভ করিয়া থাকেন।

দলি—আসামের বাবু রামছল ত মজুমদার তাঁহার মাতাব আদ্য প্রাছেলক সাঃ বাঃ সমাজে ১ টাকা দান করিরাছেন। এবং ধুবড়ীর বাবু অভিকাচরণ মুখোপাধ্যার তাঁহার পুত্র শ্রীমান্ রমেশচন্দ্র মুখোপাধ্যার প্রথম চাকুরীতে প্রবেশ করার প্রথম মাসের বেতন হইতে সাঃ বাঃ সমাজে ১ ও সাধনাশ্রমে ১ টাকা দান করিরাছেন। আলিপাড়া ক্রফানগরের বাবু এককড়ি সিংছের পিতার বার্ষিক প্রাছোপলক্ষে সাঃ বাঃ সমাজে ১, সাধনাশ্রমে ১ ও দাসাশ্রমে ২ টাকা দান করিরাছেন। আমরা দাতাদিগকে ধ্যুবাদ প্রদান করিতেছি।

লাহোরে সাধারণ ত্রাক্ষাসমাজের জন্মেৎসব—
লাহোর হইতে বাবু অবিনাশচন্ত্র মজুমদার লিথিরাছেন যে, 
নাধারণ ব্রাক্ষসমাজের গত ব্যোড়শ জন্মদিন উপলক্ষে তথার উপাসনাদি হইরাছে। সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের জন্মোৎসব উপলক্ষে
সকল স্থানে এক্ষপ অনুষ্ঠান হয়, ইহা একাত প্রার্থনীয়।

বিবাহ— অপতী বসত্তমারী দেবীর সহিত মরমন সিংহের প্রচারক বাবু শুক্সাবিক চক্রব্রীর বিবাহ হইরাছে। পাত্র পাত্রী উভরেরই নিবাস ময়মন সিংহ জেলার। বিবাহ কলিকাত। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ মন্দিরে সম্পর হইয়াছে। বাবুনগেব্রুনাথ চট্টোপাধ্যার উপাসনার কার্য্য করেন।

১০।৩নং কর্ণওরালিস ব্রীটস্থ ভবনে আরও একটা বিবাহ হইরা গিরাছে। পাত্রী শ্রীমতী স্থরবালা মিত্র, পাত্র বাবু নির্মালচন্দ্র মলিক। বাবু আঘোরনাপ মুপোপাধ্যার আচার্য্যের কর্য্যে করেন। উভর বিবাহই ৩ আইন অমুসারে রেজেইরী হইরাছে। প্রথমোক্ত বিবাহ উপলক্ষে ১ টাকা, বিতীর বিবাহ উপলক্ষে ২ টাকা সাধারণ ব্রাক্ষসমাজে গান করা হইরাছে। আমরা পাত্র ও পাত্রীগণের শুভ কামনা করিতেছি। পরমেশ্বর ইহালের মঞ্ল বিধান ক্ষন।

নামকরণ—ডিক্রগড়ের বাবু ক্ষেত্রনার্থ বোবেব দিতীয় পুল্রের নামকরণ চইরাছে। বাবু গণেশচক্র ঘোষ আচার্য্যের কার্য্য করেন। প্রমেশ্বর শিশুব মঙ্গল করুন।

উৎস্ব-মৃশিদাবাদ হইতে বাবু রামচক্ত মুখোপাধ্যায় লিখিরাছেন,--মুর্শিদাবাদ আক্ষসমাজের সাম্বংসরিক উৎসব উপলক্ষে কলিকাতা হইতে শ্রদ্ধের প্রচারক শ্রীযুক্ত নবধীণ-চক্র দাস মহাশয় এখানে আগ্মন করেন। ১৭ই, ১৮ই ও ১৯এ জৈষ্ঠ এই তিন দিন এথানে উৎসব হইরাছিল। ১৭ই জ্যেষ্ঠ প্রচারক মহাশর উপস্থিত হইতে পারেন নাই, ভজ্জয় উক্ত দিবস প্রাতে সম্পাদক শ্রীযুক্ত বাবু রামগোপাল ্যে উৎসবের উদ্বোধন স্থচক উপাসনা এবং অপরাকে ধর্ম বিষয়ে বক্তৃতা করেন। ঐ দিন রাত্তে নবছীপ বাবু এথানে পৌছেন। ১৮ই জোষ্ঠ বুধবার উৎসবের দিন প্রাতে মন্দিরে তিনি উপাসনা করেন। ঈশ্বরে সম্পূর্ণ নির্ভর না করিলে জীবের পরিত্রাণ নাই, এই বিষয়ে উপদেশ দেন। ২টার পর হইতে আলোচনা, সংগীত, সংকীর্তনাদি হইয়াছিল। উপাসনা হয় ও কবিরের দোঁহা পাঠ করিয়া তদবলম্বনে উপদেশুদেন। ঈশবের রূপা ভিন্ন যে পাপের মূল নষ্ট কয় না, ইতাই উপদেশের বিষয় ছিল। ১৯এ জ্যৈষ্ঠ বৃহস্পতিবার প্রাতে সম্পাদক-ভবনে পারিবারিক উপাসনা হয়। টাঙ্গাইল হইতে সমাগত শ্রীযুক্ত বাবু ছর্গাদার বস্ত্র মহাশন্ন উপাসনার कार्या करतन। অপরাহে নগরসঙ্কীর্ত্তন ও চকে বক্তৃতা হয়। লবদ্বীপ বাবুও তুর্গাদাস বাবু বক্তৃতা করেল। ২০শে জৈয়ে ছ শনিবার জুবিলী হলে "পরিত্রাণের সঙ্কেত" বিষয়ে নবছীপ বাবুবজনুতা করেন। বক্তা প্রাণম্পানী হইরাছিল। ১২০। বৈজ্যন্ত রবিবার সন্ধ্যারপর মন্দিরে তিনি আচার্য্যের কার্য্য করেন। नवदीन वावत जागमान अवात नकतार वित्यव जेनकात नाज क्रियाह्म ।

দোগাছিয়ার উৎসব—এই উৎসব উপলক্ষে কলি-কাতা হইতে শ্রীযুক্ত নবৰীপচন্ত্র দাস প্রারুধ-কতিপর বান্ধব্রতা তথার গমন করেন। ১৯০শ মে প্রাতে উৎসব মণ্ডপে উপাসনা হব, প্রচারক নববীপচন্ত্র দাস আচার্য্যের কার্য্য করেন।
অপরাক্ষে নগরসংকীর্ত্তন হয়; প্রচারক বাবু শশিভ্ষণ
বস্থ বক্তৃতা করেন। বক্তৃতাস্থলে অনেক লোক সমাগম
হইয়াছিল। পর দিবস ২০শে মে প্রীবৃক্ত বাবু করালীচরণ
রাম্যের বাটাতে উপাসনা হর, নববীপ বাবু আচার্য্যের
কার্য্য করেন। অপরাক্ষে উৎসবমগুপে পাঠ, আলোচনা
ও কার্য্যের হারাই মানবের পরিচর" বিষয়ে বক্তৃতা
হয়। শশী বাবু অসুস্থ হওরার নববীপ বাবুই সকল কার্য্যসম্পাদন করেন। আলোচনাতে জাতিভেদ সম্বন্ধেই অনেক
ক্থাবার্তা হইরাছিল।

২১শে মে প্রাতে প্রচার-দল রভিমপুর নামক প্রামে গমন করিয়া বাবু নগেক্সনাথ নিয়োগীর বাটিতে আতিগা প্রহণ করেন। প্রাতে স্থানীর ছবিসভার সংকীর্ত্তন ও উপাসনাদি হয়। নবছীপ বাবু আচার্যোর কার্য্য করেন এবং মনের চঞ্চলতা নিবারিত না হটলে ব্রহ্মকে প্রাণে লাভ করা যায় না, এই মর্ম্মে একটা স্থান্ধর উপদেশ প্রদান করেন। তৎপর তিনি আলোচনা, পাঠ ও "কিয়পে পরমেশরের ক্রপা মানবকে পরিত্রাণ করে" এই সম্থন্ধে একটা বক্তৃতা করেন। সভার জনেক লোক উপন্তিত ছিলেন। উপবীত পরিত্যাগ সম্বন্ধে বিশেষরূপে আলোচনা হয়।

২২শে মে প্রাতে দোগাছির। গ্রামে প্রচার-দল গমন করেন। উৎসব-মগুপে উপাসনা হয়। নবদীপ বাবু আচার্য্যের কার্য্য করেন। অপরাক্তে করালী বাবুর বাটাতে উপাসনা ও আলোচনাদি হয়। নবদীপ বাবুই আচার্য্যের কার্য্য করেন। আলোচনার সমর বাটার মহিলাগণ, পৌঠলিকভার উৎপত্তি, আতিভেক্ত মিলিত উপাসনার অপিশ্রকভা বিষয়ে প্রশ্ন উত্থাপন করেন।

২৩শে মে প্রচার-দল বাবু এককড়ি সিংকের পিতাব বার্ষিক তাজোপলকে জালিপাডা ক্ফনগরে মাধ্বপুর নামক স্তানে আগমন করেন। উক্ত দিবস মাধ্যাঞ্চিক উপাসনা নবদীপ বাবু সম্পন্ন করেন। রঞ্জনীতে নিকটবন্তী কোন ভানে বাবু রেবতীমোচন দেন "চৈত্ত লীল।" সম্বন্ধে কথকত। করেন। কথকতা অনেকের প্রীভিপ্রদ হইয়াছিল। পর দিবস ২৪শে মে এককড়ি বাবর পিভার বার্ষিক লান্ধোপলক্ষে নবখীপ বাব্ আচার্যোর কার্যা করেন। এককড়ি বাব্ ভাঁছরে পিভার অরণচিহ্ন অরূপ ভত্মপ্রোণিতগ্নাদির উপর পিতার **জন্ম 👁** মৃত্যুর দিন লিখিত প্রস্তার গণ্ড স্থাপন করেন। আব্য भावःकां*ल व्य*ठाव-प्रग কৃষ্ণনপরস্থ বাহিরগড়া স্থানীয় প্রাস্থ্য জ্বিদারের বাটীতে গমন করেন। বাব্ ক্ষেত্রনাথ সিংহরার ও বাবু বেদকণ্ঠ সিংহরার ইছালিগকে विटम्य यत्र महकारत जाननामितात छवरन जान मान करत्रन। অন্য রাত্রে তাঁহাদের বহিবাটীতে উপাসনা হয়; শশী বাব্ উপাসনা করেন। শনী বাব উপাসনাত্তে একটা প্লোক অবলম্বন করিয়া উপদেশ প্রদান করেন। ২৫ শে হইতে ২৭ শে মে পর্যায় অভ্যন্ত বড়ও বৃষ্টির জন্ম বিশেষ কোন কার্য্য হর নাট, কেবল শ্লেবডী বাবু একদিন "চৈভল্ল লীলা" কণকভা করেন। ২৮শে মে नात्रः कारन विल्लव छेलानना इत्र, ननी वात् आहारशात्र कार्या करत्रन धरे विमन्न, गत्रगठा ७ गठ्यासूत्राश (य धर्मानाधरमंत्र आधान महाम अहे मार्च अकृति छनात्म व्यक्ताम करवन ।

# ण्ड-कोगूनीं

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিক।।

৬ষ্ঠ সংখ্যা। ১৬শ ভাগ।

# ১৬ই আষাঢ়, রহস্পতিবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম দম্বৎ ৬৪।

तारमिक चिक्रीय म्ला २॥० यक्ष्यत्न ७५

প্ৰতি খণ্ডের মূল্য

#### সাধন-ঘর।

চল যাই নিৰ্জ্জন-মন্দিরে; জগতে করিরা পৃষ্ঠ চল ধীরে ধীরে, পশি গিরে সাধন-কুটারে; পশে যথা মীন স্থিব স্থগভীর নীরে।

চল চল চিস্তার আগারে;
বিষয় বাশিজ্য জোচ, বিভর্ক বিচাবে,
ফেলে চল সকল অসারে;
বোধো দ্বার, কোলাহল পাকুক সংসাবে।

বড় ভীক স্থানীয় বিচল :
বাসা বিধে স্নিজ্জনে ছাাড লোক-সল ,
স্থা-কাাস্ত তার সেই অল
দেখিবে ত মৌনী থাক ; দিও নাক ভল ।
স্নিজ্জনে দেখা প্রিয় সনে ,
কবে আসে কবে যায়, জানে কোন্ জনে ?
যদি আলা প্রেম-আস্থাদনে,
একাকী জাগিয়া থাক নির্জ্জন ভবনে ।

শুপ্ত ধন গাড়া ধরণীতে;
চাপ্ত যদি সেই ধন খুঁডিয়া ভূলিতে,
চিস্তার থনিত্র চাতে বদো এক ভিতে,
থোঁড়ো মাটী এক-নিষ্ঠ-চিতে।

# मम्भामकीय मखना।

সাধনা—মহ বলিয়াছেন যে, খনিত্রের ছারা ভূমি থনন করিয়া মাহ্ব যেমন বারি প্রাপ্ত হর, সেইরূপ মাহ্বকে জ্ঞান লাভ করিতে হইবে। বিদ্যালাভের পক্ষে ইছা অতি উৎক্ট দৃষ্টান্ত। একদিকে বলিতে গেলে বিদ্যা সকলেব হন্তের নিকটেই আছে। 'যে জড়ও আত্ম-লগতের তত্ব আলোচনা করিয়া জ্ঞানিগণ প্রভূত জ্ঞান সঞ্চর করিয়াছেন, সেই জড় জগৎ ও শেই মানৰ মহন্ত্রপ গ্রন্থ আমাদের প্রভ্যেকেরই সমক্ষে

কেবল অভিনিবেশ সহকারে ভাহার মধ্যে প্রবিষ্ট হইর। তত্ত্ব স্কল উদ্ধার করিতে হয়। অভিনিবেশ যেন থনিত্রের ক্রায়, ইচার ৩৪পে<sup>ন</sup>্নন ক্রেম**লঃ** ভিতৰ হুইতে আরও ভিতরে প্রবিষ্ট হুইতে থাকে এবং অবশেষে অভীপ্ট दिष्रत्रत्र উष्क्रम शाहेश शिक्षि गांछ करता देक्तम य श्रार्थक्य उ मनल स नवस्त्र है और निष्म जाशा नरहा व्यशासा-जस नवस्त्र व विके माधना कात्र 9 लाखाकनीय विवास त्यास क्षेत्र । तम मचटक 9 व কথা বলিতে পারা যায় যে, মাননের মুক্তিপ্রদ শান্তি-বারি প্রতো-(कत व्राव्या निकारिक प्रक्रियाण्य । य म्याप्राप्त मक्क्यि विषया অনেক সাধক বর্ণনা করিয়াছেন, সেই মক্রর মধ্যেই জল নিাহত হইয়া রহিয়াছে। কেবল সাধনথনিত্তের সাহায্য চাই। একাগ্র-চিত্তে থনন করিতে করিতে কঠিন ভূমির অন্তরাল হইতেই ভক্তি-প্রদ বারি বিনির্গত হইতে পারে। এই যে সাধনের একাগ্রতা हेशांक हे जनजा वना यात्र। त्रजा खार्मित छोत्र महा धर्मा लाक : মুখে পাওয়াযায় না। ধর্ম যে নিজে উপাজ্জন করিতে না পারে তাহার জক্ত ধর্ম নাই। পর-মুখাপেক্ষী ও শ্রমকাতর ব্যক্তির যেমন বিদ্যালাভ হয় না, তেমনি পরমুধাপেকী ও শ্রমকাতর বাক্তির ধর্ম লাভও হয় না। এই তত্তী আমাদের সর্বদ। স্মরণ রাথা কণ্ডবা।

অটল-ভিত্তি— ব্রাক্ষণমাজের প্রতি ইহার বিরোধী ব্যক্তিগণ এই দোষারোপ করিতেছেন যে, ইহাদের সাধনের ও কার্য্যের হিরতা নাই। ইহাব অর্থাী ব্যক্তিগণ এক সময়ে যে সকল মত ও কার্য্য-প্রণাণী প্রচার করিয়াছেন, আবাব কিছু দিনের মধ্যে সে সকলকে পরিভ্যাগ করিতেছেন বা পরিবর্তিত করিশ্ব। কোণতেছেন। যৌবনের কণা বাদ্ধকো হির থাকিতেছে না। এই অভিযোগ যে কিন্তুৎ পরিমাণে সভ্য নহে। আমাদের বোধ হয় নিজ্জন চিস্তা ও সাধন পরায়ণভার অভাবেই এরপ ঘটরা থাকে। আনেক ভর্ব আমরা গভীর চিস্তা না করিয়াই অবলম্বন করিয়া থাকি। আপাত্তিভঃ উপরে উপরে যে সকল যুক্তি আমাদের হলর গ্রাহী বোধ হয়, ভাছাই অবলম্বন করি। নিগুড় রূপে নিবিষ্ট হইয়া ভত্বালোচনা করি না। ইইরে ফল এই হয় যে, আমাদের বিশাস ও

কাৰ্যা সকল অগভীর ভিভিন্ন উপরে স্থাপিত হইরা থাকে। পরে অবস্থার পরিবর্তনে যথম নৃতন ভাব ও নৃতন সভা সকল आमारमञ्ज मृष्टिरक आकर्षन कतिरा बारक, खबम आबारमञ्ज গভীর নিৰ্ক্ষন চিন্তা ও লাধনা ভাবান্তর উপস্থিত হয়। দারা লোকে যে সকল তত্ব লাভ করে, তাহার সহদ্ধে এরপ ঘটে না। ভাষার স্থিতি ক্ষণিক ভাব-স্রোভের উপরে নির্ভর করে न। महाजा शिक এक मिन डे शरम मिनात नमस्य मिना मिना ব্লিয়াছিলেন যে, "যাহারা তাঁহার উপদেশ শুনিয়া তদ্মুরূপ কার্য্য করে ভাছাদের জীবন স্থদুড় পাধাণ-নির্শ্বিত ভূমির উপীরে प्राणिक हन्न। किन्तु योहात्रा लाहा करत नां, जाहारमंत्र स्रोवन যেন বালুকা রাশির উপরে স্থাপিত। ঝড় বৃষ্টি প্রভৃতিতে विनष्टे इहेन्ना यात्र।" এই উপদেশের তাৎপর্যা এই, জীবন সম্বন্ধীর কোনও উপদেশকে যভক্ষণ কার্য্যে পরিণত করিতে না পারা যার, ভতকণ ভাহার ওক্ত ও গভীরতা সমাক রূপে প্রতীতি করিতে পার। যার না। কার্য্যে পরিণত করিতে (गरनहे अक्तिरक कालनारमय वर्णव श्रियान, क्रश्य मिरक रमहे সভ্যের শুকুত্ব আমরা অমুভব করিতে পারি; এবং বারংবার चालाहना बाबा छाहाब स्थान चामारमब स्वरंत स्कान स्टेर्फ থাকে। তথন আমরা ভাছার সপক্ষে ও বিপক্ষে কি কি যুক্তি আছে তাহা সাক্ষাৎ প্রত্যক্ষ করিতে থাকি। তথন আর তাহা ণোকের মতের উপরে মির্ডর করে না। তৎসম্বন্ধীর আত্যেক বিষয়ই আমাদের সাক্ষাৎ গোচর হয়, এরূপ ভাবে যে বিশাস একবার উৎপদ্ধ হয়, ভাষা অটণ ভূমির উপরে স্থাপিত হইয়া থাকে। যে ব্যক্তি সাধন করে না, ভাছার ভাব অস্ত প্রকার। ভাছার সমুদায় মত ও বিশ্বাস কেবল পরের মুখেৰ উপর ও করনাম উপর স্থাপিড; স্বতরাং তাহা প্রতিকৃশ স্লোভের মুখে দাঁড়াইরা থাকিতে পারে না।

স্বপাক-সাধন--নিজ হাতে পাক করিয়া আহার করিলে যে এক প্রকার অপূর্ব ভৃপ্তি হয়,ভাছা সকলেই স্বীকার করিবনে। অন্তে নানারূপ উপাদেয় থাদা প্রস্তুত ক্রিয়া রাখিয়াছেন, তাহার মধ্যেও দেখা গিয়াছে,নিজ হাতের রালা করা অর ব্যঞ্জন যেমন তৃত্তিকর হয়, সে সকল তেমন তৃত্তিকর হয় না। অনেকে এইরপে অপকে-সাধন করিরা থাকেন। তবে কি পুনরায় ত্রান্ধ-সমাজে "বার রজপুতের তের চুলা" আরম্ভ হ্টবে ? সকলেই কি পুনরার অপাক থাইতে আরম্ভ করিব ? যদিচ শারীরিক আহারে এ সাধনের তত প্রয়োজন নাই,বরং ইহাতে সুমরের অপচয় এবং বুথা ধর্মাভিমান অভিজ্ঞত হয়, (ভবে মাঝে মাঝে করা যাইডে পারে) কিন্তু আধ্যাত্মিক অপাক সকলেরই প্ররোজনীয় এবং ইহার উপকারিতা সহদ্ধে প্রত্যেকে নিজ জীবনে সাক্ষাও मिटि शांत्रियन । निटक धर्म नाधन कता यमित अभगाधा, क्रेचरत्त्र সঙ্গে যোগসাধন সকলের পক্ষে সহজ্নর, এবং ভক্তি প্রেমে গদ-গদ হইরা ভগবং আরাধনা করা বড়ই কঠিন, তথাপি নিজে সেই পবিত্র শহরপের সহবাসের বিমল আনন্দ সভোগের জক্ত যাহা কিছু করি, তাহাতেই বথেই চরিতার্বতা লাভ করি। এণুসাক্ষ্য जकरणहे मिरवन । अहे ध्यकात्र निरक्ष निरक्ष यमि तिहे ध्यमक्रतात्र

প্রেমার পাক করি,এবং আলার করি; এবং চারিদিক হইতে যদি **त्नरे मधु नकत कति धवर कीवाम माखान कति ; हेशाए** य ভৃত্তি, অভের পাক করা কি সক্ষ করা প্রেমারে কি প্রেমমধুতে त्र कृष्टि इव ना। काहे जासश्य वह यशास्त्र वावका कतिशा-ছেন। শুধু আচার্ব্য প্রোমার পাক করিবেন আর সকলে আহার করিবেন তাহা নহে; সকলকেই ভাছার অন্য খাটিতে হইবে; नकनत्करे ता अब निक शांख भाक कतिया नरेख हरेता। সাক্ষাৎ ধর্মের এই মহিমা, অন্য সকল ধর্মে গুরু প্রভৃতির উপর ভার আছে, তাঁহারা পাক করিবেন ও সঞ্চর করিবেন্ আর সকলে সেই অর আহার করিবে। ইহাতে আরাস আছে, কিন্ত ভৃতি নাই, সাহাও রক্ষা হয় না। অপিচ দূবিত অর আত্মতে প্রবেশ করিরা আত্মাকে ধ্বংস করে। যাহারা নিজে পাক করিরা আহার করিতে শিক্ষা করৈ-পথে ঘাটে একাকী হইলেও কথনই তাহীরা আহারাভাবে মারা যার না। যাহার। শ্বরং পাক করিতে অভ্যন্ত, শেবে তাহারা খন্যের পাক করা দ্রব্য স্বাহ্ন কি বিস্বাহ্ন চিনিয়া লইতে পায়ে ; ভাছাতে কোন বন্ধর অভাব আছে, বলিয়া দিতে পারে। निर्द्ध क्षेत्रिक कारन, त्मरे कारनात मकत्मत्र त्माय ७० धतित्व পারে; তথন পরের হাতে খাইতেও আপত্তি হর না। কেন না দে তথন যা তা আহার করিরা তৃত্তি লাভ করিতে পারে না, স্তরাং বারা সুস্বাত, যালা পুষ্টিকর, ভালাই প্রহণ করিয়া পাকে। অতএব প্রত্যেকে স্থপাক সাধন করিতে ছইবে ৷ নিত্য সাক্ষাৎ-ভাবে প্রেম ভক্তি, জ্ঞান বিশাস অর্জন করিতে হইবে: তবে धर्माकीयन वाहित्य अवश्यक्षिण हहेत्य । धमा आक्रधर्मा ! कीयत्य এই অপাকসাধন শিক্ষা দিডেছেন, ধনা ঈশ্বর এবার काहारक अवागरमा शाकिए पिए एक मा अवर भरतम हार्छ পাক করা অল্লে আর সুখী হইতে দিতেছেন না। যদি ভাঁহাকে চাও, নিজে খাট এবং "নিজ চাতে দাও আহার" এই বলিয়া ছারে পড়িয়া থাক। অবিশাসী হইও না; অসহিষ্ণু হইও না, দাত। দরালু ঈশ্বর তোমাদের বাহু। পূর্ব করিবেন।

এ সাধন কে দিল ?— অগতে যত প্রকার ধর্ম-সাধনের প্রণালী আছে, সেই সকল প্রণালীর সাধকদিগকে জিজ্ঞাসা করিলে এক ভাবাপর চুটী উত্তর গুনিতে পাওরা যার। उंहि। दिन मध्य क्रिक्ट क्रिक्ट व्यान धारे गायन व्याखनाका, ज्ञेषद्र श्वरः व्यामारम्य मर्था ध्यकाम कविद्याह्म, व्यावाद रक्ष वा वर्णम (कान (मवाडा, এश्रिम वा अक्र हेशा मान कविद्राह्म। अधन (पथा गाउँक এই आश्वनभारकत्र माधन-श्रमानी (काथा इहै एक পাওরা গেল। বানবাস্থার পরিতাপের জন্য যখন যাত্রা আয়েলন খনং বিধাভাই তাহার বিধান করিতেছেন। बाकनमारणत উৎकृष्टे भावाधना-धारानी अर्थाए मेचरवन श्वतन-সাধন "সভাংজ্ঞানমনতঃ ত্ৰন্ম ইভ্যাদি" প্ৰথমত: মছৰি (मरवळनाथ ठाकूब मरानव व्यवनन करवन। किनि लेचबचार्वा অমূত্রণিত হইয়াই ইহার ব্যবস্থা করেন ও ইহার অসুসর্গ করেন। আরাধনার শেযাংশ "ওজমপাপবিদ্ধন্" পরলোক্গভ नवविधानागियाँ दक्षाविक दत्रम महाभन्न धार्माक करत्न, व्यक्ताम्भाग त्रावनात्रात्रण वद्य महामत्र हेरात्र ८माव "वर्षावरूर

नानकृतः ज्ञानः'' करे करहकति क्या त्यान कतिहा नरेवारकृत। वर्खमान श्रुणाणीत शास्त्र अश्य याहा खाठीन आया विस्तृत প্রাণের ধন, ভাষাও মহর্বি দেবেল্লনাথ প্রচলিভ করেন। তৎপর সমস্বরে মিলিত প্রার্থনা শ্রম্মের রাজনারারণ বাব্ अहेज्राल हेहाब भूनीक नाश्यानत खानानी আনর্ন করেন। वाकानमाक मरशा क्षातिक इत। रक्षातिक राम महामन क्षार्थमान শেষাংশ কিছু পরিবর্ত্তন করেন। যাঁচারা বিশাসী তাঁহারা দেখি-তেছেন এই সাধন-প্রণাদী ঈশ্বরের এক মহৎ দান ; ডিনিই জীবের ত্রাণের জন্য ইহা পৃথিবীতে আনমূদ করিয়াছেন এবং ব্রাহ্মদিগকে मान कत्रियाह्य । अस्वर्धामी विश्वालाशक्य मर्कमारे विश्वाल-ছেন তাঁহার সম্ভানের কখন কি অবস্থা; কোন পাঠ দিলে, কি প্রাণানীতে শিকা দিলে উত্তম জ্ঞান লাভ করিতে পারিবে এবং তাছার তম্ব সকল বুঝিতে পারিবে ও তাঁহাকে শাভ তিনি তাহা জানিয়াই উপযুক্ত সময়ে করিতে পারিবে। উপযক্ত বাবত্বা করেন এবং পুরাতনকে রহিত করেন। ঈশব-প্রেরিত নৃতন ব্যবস্থা যেই মানব গ্রহণ করিতে পাকে। क्षम्मि जाहात्र (अर्ह्घ जा बननमाक मर्पा (चाविक इरेटक पारक। जनकरे এरे नृतन रातका चिंछ चन्न गारकरे शहर क्रिए পারে ও ধারণ করিতে পারে। প্রথমত: ইহা অভি অর লোকেই প্রছণ করে। কিন্তু কি আশ্চর্য্যের বিষয় যত অল্প লোকেই গ্রহণ कक्क ना (कन, (गर्ड हेगात्र (उक ध्वकान भाहेट थारक, अमनि পুৰাতন সৰ যেন জাগিয়া উঠিতে থাকে। যাহারা একরূপ চির নিলার অভিভূত ছিল, দেখি তাহাদের যেন ঘুমের ঘোর ভালিয়া যায়; ভালারা পুনরার সেই পুরাতনকে আবার ন্তন ভাৰাপন্ন করিবা রক্ষা করিবার চেষ্টা পার। কিন্তু সে রুখা চেষ্টা; যথন স্বয়ং ঈশ্বর নৃতন ব্যবস্থা করিয়াছেন, ভথন আর পুরাতনের প্রয়োজন নাই। যদি পুরাতনের প্রয়োজন থাকিত. তাহা হইলে আরে নৃভন ব্যবস্থা হইত না, এখন নৃভনের প্রায়েজন সেইজন্ত তিনি নৃতন বিধি করিরাছেন। যাহার। ইহাকে ধরিতে পারিবে ভাষাদেরই মঙ্গল। ধর্ম জগতের ইতি-হাস ইহার ভুরি ভুরি দৃষ্টাম্ব প্রদান করিভেছে। কিন্তু চু:থের বিষয় যাহারা এক সময়ে এই নুডনকে ধ্রিয়াছিল, ভাহারাই সাধনাভাবে ইহাকে জীখনে পরিণত করিতে না পারিয়া আবার পুরাতনকে গ্রহণ করিল! কোণার ভাহারা নৃতনের আবস্ত কতা অমুভব করিয়া দৃঢতার সহিত সাধনে পড়িয়া থাকিবে, না অবিখাসীদের ন্যায় তাছাকে পরিভাগে করিয়া চলিয়া গেল, পরাজনে গিল্লা আপনার পরিত্রাণের পথে কণ্টক রোপণ করিল। এখন প্রশ্ন এই; নৃতন ব্যবস্থ। হইরাছে ব্রিয়া কি आत প्रताखनक अक्तिवादा है हाहित्व ना १ हाहे वहे कि, (यमन ব্রাহ্মধর্মের মৃলমন্ত্রের মধ্যে একমেবাদিভীয়ং এইটা রিখাস করি, ইহা অতি পুরাতন। কিন্তু নৃতন কথা জীব ত্রন্ধের সাক্ষাৎ সম্বর। সেইরূপ ধ্যানের কথা অতি প্রাচীন; কিন্তু এই জীবন্ত স্বারাধনা ন্তন ব্যবস্থা। ইহাকে ছাড়িরা এসময় ঈশর লাভ হয় না। এখন ব্রান্ধানের প্রতি অতিগুরুতর ভার অর্পিত হইরাছে; अञ्चलक मात्रिक পढ़िवाट्ट। এই नुजन नायनव्यनानी बावा, সাক্ষাৎ ভাবে जीवज उत्सन आवाधनाशामा, পরিতাণ পাত

করিরা, পরম পিতা মাতা পরমেখরকে লাভ করিয়া অগতকে দেখাইতে হইবে। তাঁহারা মিষ্ঠার সহিত সাধনে রত থাকিরা জীবনে ইহার ফল না দেখাইলে ঈশবের নিকট অপরাধী হইবেন এবং অগতের নিকট ও অপরাধী হইবেন। তাঁহারা এ সাধনে সিদ্ধ হইতে পারিলে, ঘাহারা আজিও আরুই হন নাই,ভাহারাও আরুই হইবেন; ঘাহারা কিরিয়া গিরাছেন, তাঁহারাও পুনরার আসিবেন। হে করণামর পিতা, যদি ব্রাক্ষদিগকে দরা করিয়া এই নৃতন সাধন দিরাছ, তবে ইহাতে সিদ্ধি দান কর; নৃতন সাধনে নবজীবন দেও।

প্রচারে প্রেম ও সহিষ্ণুতা—প্রচারক জীবনের দারিত অতি গুরুতর। কাহারও অমুরোধে উপরোধে কেহ প্রচারক এড श्रद्ध करत्रन बाहे। काहात्र अनुष्ठि-नाधन श्रद्धात्र कीवरनत्र উদের নছে। পবিত্র জীবনের আত্মান পাইরা, ঈশ্বর-প্রেম ও ভক্তির মধুরতা অমুভব করিরা, তাঁহাদের প্রাণে স্বতঃ এই ইচ্ছা इत (य याहात्र) এই श्रूप्यत व्यक्षिकात्री इत नाहे, जाहारमत নিকট এই ধন বিতরণ করা কর্ম্বরা। ঈশরভক্ত অক্তের পরিত্রাণ ७ मुक्तित कथा ভাবেন না ; ভাবেন আপনার মৃক্তি ও পরিত্রাণ। তিনি দিরাই সুধী, দিরাই কুতার্থ হন। প্রেম ও কৃতজ্ঞতা এই মুক্তির খবর সকলের নিকট বলিবার জন্ম তাঁহাকে উৎসাহিত করে। তিনি এই প্রচার ব্রভ অঞ্জের উদ্ধারের ক্ষম্প গ্রহণ করেন না। --কিন্তু এ কার্য্য ছারা তিনিই মুক্তির পথে অগ্রসর হইতে পারি-বেন এই বিশ্বাসের অধীন হইয়াই তিনি প্রচারত্রত গ্রহণ कर्त्वन। देशांत्र माम फाल फाला बाला माम-छात खाळाड हत्, আমি প্রভুর সম্ভানগণের দাস—আমি তাঁহাদের সেবা করিতে নিযুক্ত, তাঁচাদের উপর প্রভুত্ব করিতে নিযুক্ত নই। সকলে এই পরিত্রাণের সংবাদ শুনিতেছে না, সকলে হয় ও নিকা করিভেছে ও তাঁহার বিরুদ্ধ আচরণ করিতেছে; তথাপি তাঁছার প্রেম ও সহিষ্ণুভার অভাব হইতেছে না। যথনই পৃথি-বীতে নিৰ্যাতন ও উৎপীড়ন আসিতেছে, তথনই তিনি তাঁহাব প্রাণস্থিত দেবতার দিকে দৃষ্টি করিতেচেন ও বলিতেছেন :---"পিতাপ্রেম দাও স্চিফ্তা দাও—তুমি যেমন প্রেম ও স্হিফ্তা बाता मकनारक ठे। निट्डिं, व्यामारक मिरे जारत है। निट्ड ममर्थ কর। প্রচারকজীবনের এই প্রেম ও স্হিফু ভার অভাবে সকল ধর্মসমাজে মহা অনিষ্ট উৎপন্ন হইতেছে।

ঈশবের সেবক তাঁহার প্রভুর আদর্শ সমূথে রাথিবেন।
ঈশবের করণা যেমন পাপাসক্ত ও সংসারাসক্ত ব্যক্তির গৃহে
ঘাইরা তাহার মন ফিরাইবার জক্ত প্রেম ও সহিষ্ণৃতার সহিত
প্রভীক্ষা করে, ঈশবের প্রেমিক সাধক তেমনি পাপীর পশ্চাতে
ধাবিত হন, তাঁহার আক্রতিতে প্রেম নাগিয়া রহিয়াছে। তাঁহার
মূথে একটাও উচ্চ কথা নাই—মধুরতা সর্বাহাই তাঁহার হাদর
পূর্ণ করিরা রাথিয়াছে। বাঁহারা জীবনে ঈশবের দাসত্ত
গ্রহণ করিতে ইছে। করিয়াছেন—তাঁহারা সর্ব্ব প্রথমে আপনার
হাদরকে প্রেম ও দাস্ভভাবে পূর্ণ করন। কত তির্ম্বার নিন্দা,
উপকারের পরিষর্গ্ত অক্বজ্ঞতা পাইবেন—কিন্তু প্রেম ও
সহিষ্ণৃতা,ভারা সকল সমর কার্য্য করিতে হইবে।

বে পদের যত্র গৌরব তাহার শিক্ষা ও উপযুক্তভাও তভ

অণিক। প্রভ্র দাস ছইয়৷ বাঁহারা তাঁহার পবিত্র সাম, পবিত্র ধর্মের কথা জগৎকে বলিবেন তাঁহারা কি সর্বাপেকা গাৌরব-জনক পদে অভিযিক্ত নহেন ? একার্য্যের প্রথম উপযুক্তভা প্রেম, দিভীয় প্রেম, তৃভীয় ও প্রেম। প্রেমহীন জীবনে এ ব্রর্ত প্রতিপালন করিতে পারিবেন না। কেছ কেছ জ্ঞানের প্রভাবে অনেককে অনেক তত্ত্ব বলিতে পারেন। তাহাতে প্রভ্র নাম প্রচায় হইবে না; আত্ম-প্রচায় সম্ভবে। দীনদাস প্রেমিদাস, আত্মদমনকাবী ব্যক্তিদাবাই তাঁহার কার্য্য হইবে। দীখর তাঁহার দাসপদ-প্রাণীদিগকে উপযুক্ত করুন।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### সাধন-ঘর।

জগতেব ইতিবৃত্ত পাঠ করিলেই দেখিতে পাওয়া যায় যে যে সকল সাধুমহাজন অধ্যাত্মিকতা ও ধর্ম-বিখাসের বলে মানবসমাজে তুমুল ধ্মা বিপ্লব উপস্থিত কার্যা গিয়াছেন, উচিবো সকলেই নিজ্জন-শাস ও গভীর তপভাদ্বারা সেই স্কল সতা লাভ ক্ৰিয়'ছিলেন। শাকাদিংহের কঠোর ভুপস্যাব বিষয় সকলেই অবগত আছেন। স্থৃতরাং ভাহার উল্লেখ মহাত্রা হীভর পূকা জীবনের বিষয়ে অভি । নম্প্রোজন। কিন্তু তথাপি যাহা অবগত হওয়া काब के किल्लाथ महे क्या। যায়, ভাষাতে স্পৃথ্ট অনুমান করা যাইতে পারে বে তিনি ললাভিষেককারী জনের শিষার গ্রহণ কবিয়া বহুদিন অরণা-মধ্যে নিজ্জনবাস ও তপস্যা ক্বিয়াছিলেন। শাবনচরিত য<sup>\*</sup>াহাবা পাঠ কবিষাছেন, তাঁহারা **দকলেই জা**নেন যে তিনি একাকী তীর্থ পর্যটন ও নিজ্জনবাদের সময়েই ভক্তিতত্ত্বের মহন্ত অনুভব করেন ও তৎপরে বছদিন শ্রীবাসের গুহে দার কল্প করিয়া সেই ভক্তির সাধন করেন এবং পরে প্রচারার্থে বহিগ্ত হন। মহাপুক্ষ মহম্মদেব তপ্সাা বিষয়ে ভাঁচার জীবনচরিতে যাচা বার্ণত চইয়াছে, ভাচার কিয়দংশ শ্ৰদ্ধান্ত আৰু বন্ধু গিবিশচজ দেন মহাশয় প্ৰণীত প্ৰস্থ চইতে উদ্ভ কৰিতেছি ,—

"য্থন প্রকৃত ভাবে প্রত্যাদিই তওয়াব সময় নিকটবন্তী হইল, তথন লোক-সংসর্গ ছাড়িয়া নিউছনে ঈশ্বর চিন্তায় দিন যাপন কবিবার জন্ম উচ্চায় মন একান্ত ব্যাক্ল হইয়া উচিল। ভিনি সেই সময় তেরা পকাতেব নেই ১ গহরবে যাইয়া বিদ্ধানন। অহনিশি সেই গান্ত মধ্যে ঈশ্বন-মনন চিশ্বায় নিমৃক্ত থাকিতেন, কিয়দিন অন্তব আবিশ্রক সঙ্গে আবিলা পরিবারের সঙ্গে মিলিত হইতেন, তংপবে প্রক্রিষ গহরবে প্রবেশ করিয়া নিজ্জন সাধনায় নিবিষ্ট থাকিতেন। যে গভে তিনি সাধন ভালনে প্রকৃত হইয়াছিলেন, তাহার দৈখ্য আট হস্ত, পরিসর ভাই হস্ত পরিমাণ, উচা মকা হইতে তিন মাইল অস্তর। কাবা মন্দির হুইতে যাহারা মেনাবাজারে গমন করে, হেরা পর্মত ভাহাদের বামপার্থে থাকে! যে কালো হজরত এইরপ

নির্জন সাধনার পার্ড হন, তথন তাঁহার চলিশ বংসর বরঃক্রম। হজরত মহমদ অধিকাংশ সময় আপনার প্রিয় গিরিগছবর কুটীরে যাপন করিতে লাগিলেন। ভাষা দেখিয়া टकारतम नात्रीशण नगरव नगरत चानिता शामिकारक चामुरशांग করিয়া বলিতেন "অমি বোধিৎকুল-গৌরবে, মহমাদকে ভূমি নানা প্রকার অমুগ্রহে অমুগৃহীত করিলে, ধন-সম্পত্তি মান সম্ভ্রম তাঁহার প্রেমের অফুরোধে বিস্ক্রন করিয়া বসিলে,এলিকে এইকণ তিনি তোমার প্রণয় সংস্প ছাড়িয়া দূরে থাকেন. তাঁহার জন্য এত করিলে, তিনি তোমার প্রতি এইকণ বীতরাগ্র এ কেমন ?" খাদিজা তত্তরে কহিতেন, 'ভগিনীগণ, তোমরা বাহা করনা কার্যা ছঃখ প্রকাশ করিতেছ, আমার মন ভৰিষয়ে নিশ্চিম্ব; হলরত চইতে যাহা সংঘটিত চইতেছে তাহ। আমার প্রতি বীরাগ ও অপ্রেমপ্রযুক্ত নছে, বরং ভাছা সৌভাগ্য উষার উদয় বশতঃ শটিতেছে। প্রেরিডত্ব স্র্য্যের প্রকাশ হওয়ার উপক্রম, স্থগীয় সম্পদের রশ্মিকালে আমার চিত্তাকাশ যে অচিরে আলোকিত হইবে, তাহার পূর্বাভাস দেখিতেছি। বহু বৎসর যাবৎ আমি হৃদরক্ষেত্রে এই কামন। বীজ বপন করিয়াছি, অনেক কাল চইল আমার সুথ শান্তিরূপ মৃলধন এই মহাপণ্য লাভেব আকোজ্ফায় উৎপর্গ করিয়া বসিয়াছি। এইক্ষণ সেই সময় উপাস্ত যে, ইজরত অফুপ্রাণিত হইবেন, পবিত্রাত্মাব আলোক স্বৰ্গ হইতে আগিতেছে, কিন্তু মমুষ্যের সামাজ চকু ভাষা দেখিতে পাইভেছে না।

যাহা হউক, তিনি অনেক সমর এইরপে লোকসংগর্গ পরিত্যাগ করিয়া নিভূত হেরা গহবরে গভীর চিস্কায় মগ্ন থাকিতেন। ক্রমে নিজ্ঞন প্রদেশে ঐশরিক স্থ্যোতি ও একতত্ত্বাদের
গূচ্তব তাঁহার অস্তবে প্রকাশিত ও প্রতিকলিত হইতে লাগিল;
মোহকালিমা তদীয় হাদর দর্পণ হইতে নিদ্ধায়িত হইল,
শর্গীর আলোকের প্রকাশে মনের অক্ষকার পলারন করিল।
তিনি সংসার বন্ধন ছিল্ল করিয়া জনসংসর্গ হইতে দূরে অবস্থান করিলেন। আরবীয় জ্ঞানবান লোকেরা লক্ষণ ব্রিয়া
পরস্পার বলিতে লাগিলেন যে ''অবশ্রু মোহম্মদ স্পর্যরপ্রেমে
আক্রই হইরাছে।" এদিকে হজারত সাধন বারি নিজ্ঞনে স্থীর
হৃদরোদ্যানকে অমুক্ষণ স্লিগ্ন ও সতেজ রাখিতেছিলেন, প্রেমের
পভাকা অমুরাগ ভূমিতে উল্লমিত করিয়াছিলেন। ক্রমে উল্লের
প্রশান্তিত্র অমুপ্রাণনের লক্ষণ সকল স্পার্গ প্রকাশ পাইতে
লাগিল; তাঁহার প্রশন্ত অস্তেল গ্রাধিপতির নিবেধ
বিধির অবতরণ ভূমি হইল।"

এইরপ সকল মহাজ্ঞনের ফীবনেই দৃষ্ট হয় যে তাঁহারা নির্জ্জনে সাধনাঘারা বাহা লাভ করিরাছেন, তাহাই সন্ধনে আসিয়া বিতরণ করিরাছেন। আমাদের আক্ষসমাজের কুত্র ইভিবৃত্তের মধ্যেও দেখিতে পাওরা যার, যে মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ তই বংসর কাল গিরি শুলে বাস ও তপভা করিরা যে শক্তি লাভ করিরা আসিয়াছিলেন, সেই শক্তির প্রভাবেই আক্ষসমাজ প্রকৃজ্জীবিত হইয়া, বর্ত্তমান আকরে ধারণ করিয়াছে।

কেবল অধ্যাত্ম বিষয়েই বা কেন, কি রাজনৈতিক, কি
নামালিক, কি শিক্ষান্যয়নীয়, কি বিজ্ঞানন্যয়ীয় কোন

পভীর তত্ত্ব বিনা নির্জন সাধনার আবিষ্কৃত হয় না। একটা সামার বাহিরের বিষয়ের উল্লেখ করা বাইতেছে। সকল লোকের মূথেই ইংরাজ গ্বর্ণযেক্টের পোট আফিসের বন্দোবন্তের প্রাণংশা শুনিতে পাওরা যার, কিন্তু পরম্পরাক্রমে कछ लाटकंत्र निर्कानिकात करन के वटकावछ गें। एवर मार्थ **छाहा এक रात्र छारिया (मधून) हेश्याक मिर्शय की रात्र निर्व्छन**-স্থা আছে বলিরাই তাঁহারা সারবান বিষয় সকল উৎপন্ন ক্রিতে পারেন। প্রায় প্রত্যেক ইংরাজ গৃহত্বের গৃহে একটী নিৰ্জনগৃহ দেখিতে পাওৱা যায়, সেটী পাঠাগার বা চিস্তাগার (study)। তিনি যথন সেই গৃহে প্রবিষ্ট হন, তথন পরিবার পরিজনের সকলেই জানেন, যে ভিনি পাঠ বা চিস্তাতে নিযুক্ত আছেন, গুরুতর কারণ ব্যতীত তাঁহার চিস্তার ব্যাঘাত कत्रा कर्डवा नहि। এই रामावास्त्रत श्वरण (प्र निर्व्हनशृही। व्यानक नमत्र नितिनक्दातत छोत्र निब्धन ७ निस्त पारक। সেখানে বসিয়া ঘণ্টার পর ঘণ্টা চলিয়া যায়, গুচম্মামী চিস্তাতে निमय शारकन। এই ज्ञात निक्कनवारमत व्यथा ना शांकरण মাডটোন প্রভৃতি রাজ-প্রুষগণ প্রতিদিন যে পরিমাণে পাঠ চিস্তাও অন্যান্য কাজ করিতেছেন, ভাষার দশ ভাগের এক ভাগও করিতে পারিতেন না।

প্রাচীন হিন্দু গৃহস্থাদগের গৃহে নিজ্জন-চিস্তা ও পাঠের জন্য স্বতম্ত গৃহ না থাকুক একটা ঠাকুর ঘর থাকিত। দেটী পূজার ঘর। স্থানাস্তে সকলে সেই ঘরে প্রবেশ করিয়া ইষ্ট দ্বেতার আরাধনা করিতেন। গৃহের বালক বালিকা, দাস দাসী অতিথি অভাগেত সকলেই জানিত, ওটা ঠাকুর ঘর, উহাতে পাবত্র ভাবে প্রবেশ কারতে হয় এবং পূজাধই প্রবেশ করিতে হয়।

বর্তমান সময়ে দেখিতেছি আক্ষগৃহস্থ নবীনের অমুক্রণ করিয়া না নিজ্জন পাঠ মন্দির রাখিতেছেন, না প্রাচীনের অমুক্রণ করিয়া ঠাকুর ধর রাখিতেছেন। তাঁহাদের পুত্র কন্যাগণ ইহা দেখিতে পাইতেছে না, যে গৃহস্থধন্ম করিতে গেলে যেমন রন্ধনের জন্য রাল্লাঘর রাখিতে হয়, আহারের জন্য খাবার ঘর রাখিতে হয়, তেমনি পাঠ, চিন্তা ও উপাসনার জন্যও সাধন-ঘর রাখিতে হয়। ইছার অভাবে যে তাহারা ধন্মভাববিহীন হইয়া বিদ্যিত হয়েব, তাহাতে বিচিত্রতা কি ? আময়া এ বিষয়ে আক্লগৃহস্থাদগের দৃষ্টিকে আক্ষণ করিতেছি। আক্লগৃহস্থের গৃহে নিজ্জনিবাস, আক্লাচন্তা ও সাধন ভল্পনের জন্য সাধন-ঘর থাকা নিতান্ত প্রয়োজনীয়।

# দেহাত্মবুদ্ধি। (প্রাপ্ত)

**এড**গবান্থবাচ—

যভাষাবৃদ্ধিঃ কুণপে তিথা ছুকে খধীঃ কলতা দিয়ু ভৌম ঈশধীঃ।

যভীথবৃদ্ধিঃ সলিলে ন কহিচিজ্জনেম্ভিজ্ঞেয়ু স এব গোধরঃ।

( শ্রীমন্তাগবৎ দশম হন্ধ )

**♥গবান্ বলিভেছেন** :—

ৰাতপিত লেমানর শরীরে বাংগর আত্মজ্ঞান, পুত্র কলত্রা-

দিতে যাহার আত্মীর জ্ঞান, মৃত্তিকা-বিকারে যাহার দেবতাবৃদ্ধি, ७ चलारक वाहोत्र कीर्थकान; नाधूरक वाहोत्र तम कान नाहे, সে ব্যক্তি গো তৃণবাহীগৰ্দভন্মরণ। বদিও বাত-পিত্ত-শ্লেমা-মর কণ্ডসুর শরীর আত্মা নছে, তথাপি সংসারের অধিকাংশ लात्क्रत कार्या-कनान भर्यारनाहना क्रिल मरन रुत्र, छारात्रा যেন দেহকে সারবস্ত বলিয়া ছির করিয়া রাধিয়াছেন। অনেকে দেহকে স্থসজ্জিত করা, দেহের লাবণা এবং সৌন্দর্য্য বৃদ্ধি করা যত্তালোজনীয় মনে করেন, আছার সৌষ্ঠব বৃদ্ধি করা ভত প্রব্যেক্ষনীর মনে করেন না। দেহের সামাক্ত রোগ উপস্থিত হইলে, ভাষা হইতে অব্যাহতি লাভের জক্ত ব্যতিব্যস্ত হইরা পাকেন, কিন্তু আত্মার কঠিন রোগ উপস্থিত ছইলেও তৎপ্রতি দৃষ্টি করেন না। যথন দেহ ও আত্মায় বিবাদ উপস্থিত চং, তথন দেহের প্রাধান্ত স্বীকার করিয়া আত্মার কল্যাণের প্রতি ওদাসীক্ত প্রদর্শন করেন। ধর্মকে অগ্রাহ্য করিয়া অথবৈধ উপায়ে অর্থ উপার্ক্তন করেন এবং তদ্বারা দেহ রক্ষার বন্দোবস্ত করিয়া থাকেন। নীতির মস্তকে পদাঘাত করিয়া শরীর-পালনের বন্দোবস্ত করেন। ইহারা কেবল স্ব স্থ সরীর স্কার জক্ত ব্যগ্র হইতেছেন তাহা নহে। আত্মীয়দিগের শরীর রক্ষার জন্তও ব্যস্ত, কিন্তু তাহাদিগের আত্মারক্ষার জন্ত তেমন ব্যস্ত নহেন। প্রিয়তম ব্যক্তির পীড়া হইলে আর আত্মীয়ের প্রাণে শাস্তি থাকে না; তিনি যাতনায় অন্থির। কি উপায় অবলম্বন কাবলে রুগ্ন ব্যক্তি অচিরে রোগমুক্ত হইবে, তাহারই জন্ম উৎক্ষিত হন, কিন্তু সে ব্যক্তি যদি ছ্ণীতিরূপ গ্রলপানে আত্মাকে বিপদাপন্ন করিতে থাকে, তাহা হইলে তত উৎকণ্ঠা দেখিতে পাওয়া যায় না। নাস্তিকভার বাণে তাহার আহা জর্জরিত হইলেও আত্মীয়ের প্রাণে কিঞ্চিন্মাত্র হংখের উদ্রেক হয় না। মায়াবিনী কপটতা তাহার সমস্ত আয়াকে প্রাস করিলেও আত্মীয়ের প্রাণে বিন্দুমাত্র কন্ত হয় কিনা সন্দেহ।

আত্মীয় আত্মীয়ের জক্ত যাহা করিতেছেন, পরোপকারী ব্যক্তিদিগের কোন কোন মহাত্মাও তদমুরূপ অমুষ্ঠান করিতে-ছেন। কোন দেশে প্রবল ছভিক্ষের অগ্নি প্রজালত হইয়া উঠিল; অনশনে অনেক নরনারী প্রাণ পরিত্যাগ করিতে गानिन, कान । माभन्न वाकि मृत्राम घटेल এই দুর্গতির কথা শুনিয়া হয় ত তথার শত শভ মুদ্রা প্রেরণ করিতে লাগিলেন। কিন্তু সে দেশের লোক সকল ঈশারকে ভুলিয়া পাপের গভার কুপে ডুবিয়া মরিতেছেন। এই কথা শুনিয়া হয় ড তাঁহার প্রাণে কিঞ্চিনাত্রও আঘাত লাগিল না। কোন দেশ মহামারীর व्यवन जाकमान जनमूख रहेया याहेएडएइ, जिनि व्यवन कविया অश्वित इहेरनन। श्वांठिकिएनात्र वस्मावेख कत्रिवात्र खळ हिकिए-সক ও ঔষধ প্রেরণ করিতে লাগিলেন। কিন্তু পানাসাক্তর বোরতর মহামারীধারা যে সে লেশের নরনারীর আত্মার ছুর্গাতর विकास करे फिट्ट, देश खनित्रा की शत्र किटल मनात चारिकार হুইতেছে না। তিনি শারীরিক কুঠরোগাক্রান্ত ব্যক্তাদগের **च्यत्थात्मत क्छ नक मूल। वादा এक मत्नादम वाफ़ी निर्माण** क्षित्र। मिल्ना। क्षिष्ठ व्याधाश्चिक कूर्व-द्वाशाक्तास वास्तिम्हिश्व क्रमान विवन कर्यात्रक कावित्कत्वन ना।

এইরূপ ভূরি ভূরি দৃষ্টান্ত বারা প্রমাণ করা বাইতে পারে, य (महायुद्धि वाकिও व्यक्षिकाः न लाक्त मन रवान वान। রাজত্ব করিতেছে। ছঃখের বিষয় যে, বাঁছারা মুখে ধর্মকে প্রেষ্ঠ বলিয়া প্রচার করিতেছেন, তাঁছারাও কার্য্যতঃ শরীরকে শ্রেষ্ঠ বলিরা প্রতিপন্ন করিরা থাকেন। এতভারা আমরা শরীব নিগ্রহের পক্ষ সমর্থন করিতেছি না। কোন কোন वाकि भंदीत धादन भूक्षमाङ्गुष्ठ भारभद्र माखि मान करदन, স্কুতরাং জাহাদিগের মতে শরীর-নিগ্রহ মৃত্তি-সাধনের অস্তুতর উপায়। আমরাতাহামনে করি না। প্রত্যুত আংমরা মনে করি যে, শরীর ও আত্মায় গুঢ় সম্বন্ধ রহিয়াছে। শরীরে কোন কপ গ্লানি উপন্থিত হইলে, নিক্ষেগে ধর্ম সাধন চলিতে পারে না। এজন্ত শরীর সুত্বাধা কর্তবা। কিন্তু সর্বদায়ই শরী-বের কল্যাণ উপলক্ষ্য, আত্মার কল্যাণ লক্ষ্য ছওয়া উচিত। শরীরকে ব্রাহার। লক্ষ্য মনে করিতেছেন এবং লক্ষ্য মনে করিয়া কেবল ভাহার কল্যাণসাধনেই ব্যক্ত থাকেন্ ভাঁহারাই দেহাত্ম-বাদী। ভাগবতের শ্লোক তাঁহাদিগের সম্বন্ধেই প্রযুক্ত্য, তাঁহারাই উপলক্ষ্যকে লক্ষ্য মনে করিত্ব। গস্তব্য পথ হইতে বিচ্যুত হইর। পড়িতেছেন।

ক্রপণ যেরপ লক্ষ্য— স্থস্থাছেন্দ্যে জলাঞ্জলি দিয়া, উপলক্ষ্যধন সঞ্চয়ের জন্তই বাগ্র হর, দেহাত্মবাদিগণও তজ্ঞপ আত্মার
মঙ্গল সাধনে পরাত্ম্য হইয়৷ কেবল শরীর লইয়াই ব্যস্ত থাকে।
শরীর ও আত্মার মধ্যে যখন বিবাদ উপস্থিত হয়, তখন দেহাত্মবৃদ্ধির পরিচয় পাওয়া যাইতে পারে। ক, ছন্চিকিৎস্থ ব্যাধিগ্রস্ত হইয়াছেন। চিকিৎসক ব্যবস্থা দিলেন যে মহামাস তৈল
ভিন্ন ব্যাধির অবসান হইবে না। ক যদি ব্যাধির হস্ত হইতেমৃক্ত লাভ করিবার জন্ত জীবস্ত মন্ত্র্যা হত্যা করিতে প্রস্তুত্ত
হন, তাহা হইলে বলিতে হহবে, তিনি দেহকে আত্মা অপেক্ষা
শ্রেট মনে করিতেছেন। কারণ জীবন্ত মন্ত্র্যা হত্যাদারা
আত্মার ত্র্গতি হইয়৷ থাকে।

এই দেহাত্মবৃদ্ধি কিনপে দুরীকত হইতে পারে, ভাহার আলোচনায় প্রবৃত্ত ১ওয়া আবশুক। আয়াকে জানিতে পারিলে এবং দেহের সহিত তাহার কি সম্বন্ধ তাহা বিশেষ कर्प क्रमग्रमम क्रांतरक ममर्थ ब्हेरण, (मृहाजात्कित व्यतमान मञ्चलप्र। व्याचारक कानिएंड ६ हेरल, व्यशानमारद्य महिल অন্তর পরীক্ষা করা প্রয়োজনীয়। মনের স্বাভাবিক দৃষ্টি বহি-মাতৃগর্ভ হটতে ভূমিল হটবার পর यु थी। कारनिक्षित्र ममृह बाह्रा वहिर्ज्जगण्डत खान गाउँ कतिएउ थारक। এইভাবে গত হয়। তংপর বিশেষ শিক্ষা প্রদত্ত হুইলে, অন্ত-कृष्टि शूलिएक भारत । व्यमका (कर्मत প্রায় সকল নরনারী এবং স্থ্যভা দেশের স্থাশিকিত ব্যক্তি সমূহ বহিন্দ্রণৎ লইয়াই জীবনা-ভিবাহিত করে, স্থভরাং সুল ই ক্রির গ্রাহ্থ বস্তু ভির তাঁহাদিগের क्रमाविध मुखा উপनिक क्रिवात माधा नाहै। अवस हून मंत्रीतहे উটোদিগের দৃষ্টিপথে পতিত হয় এবং সমস্ত জীবন এই শরীরের সেবাতেই অভিবাহিত হইরা থাকে। মাসুধ বিশেষ শিকা পাইলে ইক্রিয়গ্রাহ্য সূল বহিন্দ্র গও শরীর অভিক্রম করিয়া

তন্মলে অতীক্তির, নিরাকার, চৈতঞ্চমর শক্তির রাজা দেখিতে সমর্থ হর। এই বিশেব শিকা 🗢 🕈 প্রথমত: অভীজ্রির রাজ্যের তত্ত্ব থাহারা আবগত আছেন, তাঁহাদিগের বাকেট বিখাদ স্থাপন করিয়া, তাঁহাদিগের অবলখিত পথ আশ্রর করিতে হয়। বিশ্বাসীদিগের বাক্যে এডটুকু আছা রাখিতে না পারিলে, যথারীতি অনুসন্ধানের প্রাবৃত্তি অন্মিবে না। অনুসন্ধান করিতে করিতে যদি বিখাদীবাক্যের সত্যতা প্রতিপাদিত হর, তাহা হইলে অতীক্রির আত্মার জ্ঞান বন্ধমূল হইতে থাকিবে, এ*র*≄ তৎসঙ্গে দেহাত্মবৃদ্ধি লোপ পাইতে থাকিবে। এখন বিজ্ঞান্ত এই, বিখাদী লোকের পরিচয় পাইবার উপার কি? যে ব্যক্তি বাহ্ ব্যবহারে প্রমাণ করিতেছেন যে, আত্মাই শার বস্তু এবং যিনি আত্মার কল্যাপকে উপেঞ্চা করিরা দেহের কল্যাণের জন্ম ব্যস্ত হন না, পরস্ত প্রারেজন হইলে আত্মার জক্ত দেহকে বিসক্ষন দিতে প্রস্তুত, তিনিই দেহাত্মবৃদ্ধির হস্তু হইতে নিম্বৃতি লাভ করিয়াছেন, তিনিই অতীক্রিয় আত্মাকে বিলক্ষণরূপে জানিতে পারিরাছেন। কেই মনে করিতে পারেন. আমরা এতদারা অভাত গুরুবাদ সমর্থন করিতেছি। অতীম্রির আত্মজ্ঞান পরারণ ব্যাক্তর উপদেশ বিশ্বাস পূর্ব্বক গ্রহণ করিয়া ভদমুরূপ আচরণ করিলে, তাঁহাকে কি অভ্রাম্ভ গুরু বলিয়া স্বীকার করা হইতেছে না ? মতে তাঁহাকে অভাস্ত বলিলেও কার্যাত: তাঁচাকে অভ্রাম্ভ বলা হইতেছে। মানবের উপদেশ গ্রহণ ভিন্ন की वन-পথে অগ্রসর হইবার সাধ্য নাই। বাল্যকালে পিতামাতা কিংবা অক্ত কোন গুরুজনের উপদেশ লইয়া চলিতে হয়, যৌবনে ও বাদ্ধকো কত বিষয়ে কত অনের উপদেশ লইতে হয়। শরীরে ব্যাধি জন্মিলে চিকিৎসকের উপদেশ লওয়া কর্ত্তব্য। গুরু প্রান্তত করিতে ইঞ্জিনিয়ারের ব্যবস্থা লওর। হইতেছে। বিদ্যালয়ে শিক্ষক ও অধ্যাপকের উপদেশ গ্রহণে চলিতে হয়। এই সকল উপদেষ্টাদিগকে কি অভ্রাস্ত বলিতে হইবে ৮ প্রত্যুত ইহা দৃষ্টিগোচর হইভেছে (य, यिनि मन ऋत्व कुछकार्य) बहेबाएकन, जिनि अकामन ऋत्व অকৃতকাৰ্য্য হইলেন। জনৈক চিকিৎসক কোন এক বোগ'-জাম্ব এক শত ব্যক্তিকে রোগমুক্ত করিলেন, কিন্তু সমস্ত শক্তি প্রয়োগ করিয়া সেই শ্রেণীর রোগাক্রান্ত অক্ত ব্যক্তিকে আরোগ্য করিতে পারিলেন না। চিকিৎসকের অক্কতকার্য্যভার এট দুটাস্ত দেখিলা যেমন তাঁচার ভ্রম খীকার করিতে হয়, ধর্ম-যাক্ষকদিগের অক্তকার্যাতা দেখিয়া সেইক্লপ তাঁচাদিগকে ভ্রমাধীন বলিয়া মানিখা লইতে হইবে। একজন ধর্মোপদেটা তই শত শিষ্যকে ধর্মোপদেশ করিলেন, তাহার মধ্যে দেড় শত শিষা উপকার পাইলেন, অংশিষ্ট পঞ্চাশ ব্যানর কোন ফল इंडेन ना, ज्थन ७ यमि এই शकान क्रम लाक जाहात छेशामनाक भिताधार्या कतित्रा छोहारक भन्नम श्रुक विनित्रा चौकान करने, তাচা চইলে বলিব, এই সকল লোক জ্ঞানকে জ্ঞাঞ্জল দিয়াছে। हेरात्रा लाख श्वकृत कूणनश्चन छैशानगर क्यांस मा कतिहा छৎপথেই চলিতেছে। এই সকল ব্যক্তি यनि কোন চিকিৎ-সকের অকৃতকার্যাতা দেখিরা তাঁহাকে ডৎকণাৎ পরিভাগে करतन धारा अल विकिश्यक कार्यमा कतिएक बारकम, करव

धर्त्याभाष्ट्री महत्क छक्रभ ना कतिरा, विवय (य, हैवाता। অভাত্ত তাকবাদ মানিয়া লইতেছেন। কিন্তু কোন ব্যক্তি , ' কোন ধর্মোপদেষ্টার উপদেশ মতে চলিয়া উপকার হয় কি না मिथिनात कम त्म जिल्लाम धार्य कतित्म, जिल्लात চইলে তাহা পরিত্যাগ না করিলে এবং উপকার না হইলে ভাচা তৎক্ষণাৎ বর্জন করিলে, তাঁচার তদ্ধপ আচরণ অভান্ত श्वक्रवारतत शक्तमभर्क विषया श्रीकात कता याहेरल शास्त्र ना । ্স্তরাং আমর। যেরূপ উপদেশ গ্রহণের ব্যবস্থা দিয়া আদিরাছি, ভদ্বারা ঘুণাক্ষরেও অত্রান্ত গুরুবাদ সমর্থিত হইতেছে না। তবে যেমন অল অনভিজ্ঞ বা দশ বিষয়ে অনভিজ্ঞ ব্যক্তিগণ . বছদলী অভিজ্ঞ ব্যক্তিদিগের উপদেশ সকল বিখাস পূর্বক পরীক্ষার্থ গ্রহণ করিয়া থাকে, ধর্ম বিষয়ে ও তদ্ধণ উপদেশ গ্রহণ করা যাইতে পারে। কেছ এরূপ করিলে তাঁহাকে দোষী করা যাইতে পারে না। আমরা দেহাত্মবৃদ্ধির সম্বন্ধে আনেক আলোচনা করিলাম। যাঁহারা শ্বরং আত্মজ্ঞান লাভ করিয়া त्महाञ्च-वात्मत व्य हहेत्व व्यवाविक भावेत्व भारत्न माहे, 'তাঁহারা বিখাসী আআরে নিকট গমন পূর্বক তাঁহাদিগের অবলম্বিত পথ গ্রহণে দেহাত্মবৃদ্ধি পরিত্যাগ করিবেন।

#### প্ৰেম-তন্ত্ব।

#### (कविदात डेकि)

(১) ইয়ে তোঘর হায় প্রেমকা থালাকা ঘর নহি, শীশ উতারে ভূষিধরে তব্ পঁছছে ঘর নাহি।

এই প্রেমের গৃত সামাল্ল নতে, যে আপনার মস্তক ছেদন করিয়া ভূমিতে রাখিতে পারে, দেই এই প্রেমের গৃহে প্রবেশ করিতে পারে।

(২) প্রেম না বাড়ী উপজে, প্রেম না ছাটে বিকায়, রাজা রাণা যোকতে শীশ দেয় লেযায়।

প্রেম ক্ষেত্রে উৎপন্ন হর না, বাজারেও বিক্রের হয় না, কিন্তু রাজা রাণা যাহাব ইচ্ছা হয়, মস্তক দিলেই লাভ করিতে পারে।

(७) (প্রম পিয়লা যো পিয়ে নীপ দকিণাদে, লোভী নীশ নাদে সেকে নাম প্রেমক: লে।

বে প্রেম পাত্র পান কারতে চার, ভাগাকে আপেনার মস্তক দাক্ষিণা দিতে হয়, এজন্ত লোভী ব্যক্তি মস্তক দিতে পারেনা। কেবল রুণা প্রেমের নাম করিয়া থাকে।

(৪) আমারা কোন কালা গরা দেখামা সৃত্কোর ছিন, রোরে ছিন্মে হাসে সোতো প্রেম নালোর।

প্রেম যথন আসিরাছিল তথন সকলেই দেখিরাছিল, কিন্তু সে প্রেম কোথার চলিরা গেল ? যে প্রেমে ক্ষণে ছাসে ক্ষণে কাঁদে তাছাকে প্রেম বলা যার না।

(a) প্রেম প্রেম'ন্ব কোই কছে, প্রেম না চিন্হে কো আট পাহের ভিজারহে, প্রেম কছাওরে সো।

সকলেই প্রেম প্রেম বলিয়া থাকে, কিন্তু প্রেম কেই চিনে না: যে প্রেম অই প্রহর সিক্ত রাখে, ভাহাকেই প্রেম কহে।

- (৬) বাড়ে ঘাটে ছিন্ একনে সো তো প্রেম না হোর অঘট প্রেম পিঞ্চর বলে প্রেম কাহাওরে সো।
- ় বে কোন কাণে বৃদ্ধি পার ও কাণে হ্রাস হর তাহা প্রাকৃত নহে, কিন্তু বে প্রেমের কথন হ্রাস হর না ভাহাই প্রকৃত প্রেম।
- (৭) প্রেম পিয়ারে লাল সোঁ। মন দে কীজে ভাও, সং-ভঙ্গকে ফুপানে ভালাবনার লাও।

ব্দাপনার মন দিয়া প্রিয়তমের প্রেমের দরকার, সংগুরুর (ভগবানের) কুপার এই দাও (বাজি) ভালই হইরাছে।

(৮) যা ঘট প্রেম না সঞ্চারে সো ঘট জান খালান, ঘেইসে খাল লোহার কি খাল লেৎ বিন প্রাণ।

কর্মকারের ভন্তার যেমন খাস প্রখাস আছে। কিন্ত প্রাণ নাই। সেই প্রকার প্রেমনীন ব্যক্তির হৃদর খাশানের মত।

(৯) প্রেম বাণিকা নাহি কর সেকে, চড়ে না নামকি গেল, মানুষ কেরি থালেড়ি ওড় ফিরে জুঁবরেল।

প্রেম বাণিজা ছারা লাভ করা বার না, অথবা প্রেমের নাম লইলেই প্রেমিক হওরা যার না, যে প্রকার বৃষ মহুযোর চর্ম গারে পরিরা মহুযা হইতে পারে না।

(১০) প্রেম বিনাধীরজ নাহি বিরহ নাহি বৈরাগ, সং শুকুবিনামিটে নাহিমন ফাসাকাদাগ।

শ্রেম বিনা ধৈর্য ছর না, বিবছ বিনে বৈরাগ্য হর না, আর ভগবানের কুপা না ছইলে মনের দাগ ঘুচে না।

#### ব্যাখ্যান-রত্বাবলী।

সাধনাশ্রম ২৬এ মে, ১৮৯৩ ব্যাখ্যাত।

"My defence is of God, which saveth the upright in heart."—Ps. vi, 10.

"আমার রক্ষা প্রভু পরমেশ্বর হইতেই হয়, যিনি বিশুদ্ধ-হৃদর ব্যক্তিদিগকে পরিত্রাণ করেন।"

ঈশবের পরিত্রাণপ্রদ শক্তি সকল আত্মার নিকটেই সর্বাদা বিদ্যমান; কিন্তু সকল আত্মায় ইহা প্রকাশিত হয় মা; বেমন ভাডিত সকল বস্তুতে, সকল স্থানে প্ৰচ্ছন্ন ভাবে নিহিত বহি-बाह्म, किन्न हेटात मंक्ति मकन शास्त क्षकांन भाव ना। हेहात প্রকাশ পাইবার জন্ত বেমন বিশেষ অবস্থা প্রয়োজন, তেমনি পরিত্রাতা পরমেশবের পরিত্রাণগুদ শক্তির প্রকাশের জন্ত আত্মার বিশেষ অবস্থার আবশ্রক। সে অবস্থা কি?--uprightness of heart. यांशास्त्र क्षत्र विशुक्त, क्षार्य निकटे অভিসন্ধি, মণিন বাসনা নাই, यौदारमंत्र क्षमः श्रार्थंत (कान मयक नारे, मिर मकन आशार्डि डाहात পরিত্রাণপ্রদ শক্তি প্রকাশ পায়। যে পরিমাণে হৃদয়কে এই অবস্থার মাতুষ লইরা যায়, সেই পরিমাণে ভাহাতে সেই শক্তি প্রকাশ হয়। এই भक्ति मर्जामा श्रमात विषामान ; किन्त उथन हे हेवात विक्रम. हेहात एक, हेहाब भक्ति पर्मन कता यात, यथन कृतत शिविख হয়, অভিসন্ধি রহিত হয়। তথনই চিতে ঈশবের শক্তি চুৰ্জ্জর विकार काल करता। जधनर मानवाचात त्रहे निकास राजन, (महे मक्तित गंधीत्रणा, महे मक्तित विक्रम (मधिता अगर छक

হয়। এই জন্মই এই বিখাসী ব্যক্তি বলিভেছেন, ভিনি বিশুদ্ধ-क्षत्र वाक्तिक्रिके शतिखांग करतन। क्षत्रत्र विश्वकां ना क्हेरन এই मक्ति अवजीर्य हम ना। याँशां आपनात्मत्र अन्ता करे বিশুদ্ধতা অমুভব করিয়াছেন, তাঁছায়াই বলিয়াছেন, My defence is of God; প্রভু পরমেশ্বর আমার রক্ষক। ভালারা সেই দালসে সাহদী, সেই বলে বলী, ভালারা সেই मिकिश्व मिकिमान्। छाहाता मरकात वरन माहनी, स्रेश्वरतत উপর নির্ভর করির। সাহসী। যাঁহাদের হৃদয় বিশুদ্ধ, যাঁহা-रमत्र कारत भत्ररमध्यत राज्य जिल्ल काल काल काल नाहे. তাঁহাদের সাহস, পরাক্রম দেখিয়া জগৎ স্তব্ধ হইয়াছে। সংসারে যাহার কোন সম্বন্ধ নাই, সংসারে যার এমন ঐশ্বর্যা কিছু নাই, যাহাতে সাহস হইতে পারে, এমন ব্যক্তি বীরের ভার দণ্ডার-मान रुदेशा मठाधरर्षत अत्र कीवान तम्थादेशारहन, क्रशास्त्र নিক্ট ঈশবের নামের সাক্ষা দিয়াছেন। সংসারাগক্ত লোক এই প্রকার ব্যক্তির প্রতি কত অভিসন্ধির আরোপ করে: কিন্ত সমুদর বাধা উৎপীড়ন অগ্রাহ্য করিয়া নিভীক হৃদরে পরমেশ্বরের মহৎ নামের সাক্ষা দিয়াছেন। আর কোন্জিনিস হ'তে এইরূপ সাহস আসিতে পারে ? নির্মাণচিত্ত হ'তে বিশুদ্ধ হাদয় হ'তে, অভিসন্ধিরহিত, বাসনা-কামনা বিবজ্জিত চিত্ত হ'তেই দে সাহস হয়। My defence is of God. প্রভু পরমেশ্বর হইতে আমার রক্ষা। যাহারা আপনাকে সম্পূর্ণরূপে ঈশবের হতে রাথিয়াছেন, তাঁহাদিণের রক্ষা এইরূপে। কিন্ত याहारणय क्षमत्र विश्वक्ष नत्र, याहारणत्र हिटल मणिन वामना आहि, चा छिनक्षिर्क मिनिन्छ। चाह्न, छाहारम्य त्रका धहे त्रकस्म নয়। যে কিছু চায় অংক্তরে তার আবে সাহস্হয়না। সে মরণের গোড়া নিজের মধ্যে রাথিয়া দিয়াছে। যে পরিমাণে চিত্তের বিশুদ্ধতা, সেই পপিমাণে সাহস, সেই পরিমাণে প্রসন্নতা, সেই পরিমাণে পরমেশ্বর হইতে রক্ষা। যথনই বিশ্বাসী বলিয়া लाटक वाधा (मध्र, छे९ शी इन करत्र, नमारलाहना करत्र, छथनह বিশ্বাসীর কর্ত্তবা যে জনয়ের অভিসন্ধি কামনা পরীকা করেন। লোকের উপর প্রতিহিংসা দইবার প্রবৃত্তি, লোকের উপর ক্রোধের ভাবে রাখা অত্যন্ত অক্তায়। হৃদয়ের অভিসন্ধি পরীকা করিয়া দেখ, যাদ স্থার্থপরতা, সুথপ্রিয়তা বা কোন রক্ষের চর্বলতা, কোন রকমের মলিনতা থাকে, তবে আপনাকে মেরেছ। নিজের মৃত্যু ভোমার নিজের কাছেই আছে। তবে আর মামুষকে দোষ দেথিয়ে দিতে হবে না। তুমি নিকেই অন্তরের মধ্যে গলিত কুষ্ঠ রাথিয়াছ। নিজেই মৃত্যু ডাকিয়াছ; निष्कृ निष्कृत मर्सनाम कविश्राष्ट्र। किन्छ याम ट्लामात्र किछ्वत বিশুদ্ধতা পাকে, যদি একমাত প্রভু পরমেশবের সেবা করা ভিন্ন, তাঁথার দাসাফুদাস হইয়া তাঁচারেই আশ্রের গ্রহণ ভিন্ন আঞ উদেশ্য অন্ত অভিসন্ধি না থাকে, ভবে ভোমার শক্তি সর্বাশক্তি-মান প্রমেশ্বর হ'তে, তোমার রক্ষা ঈশ্বরের দিক ছইতে। স্কল বিশুদ্ধানত ব্যক্তির রক্ষা তাঁহার নিকট হইতে। "আমার রকা প্রভু পরমেশর হইতে, কারণ আমার মধ্যে অক্ত অভিসন্ধি किइहे नाहे।"

প্রাজন ? রোজই তো মেব ২ইডেছে; ক্তি সকল সুময় কি ভাড়িতের শক্তি প্রকাশ পাইতেছে? মেবের বিশেষ অবস্থা ছইলেই ডাড়িড শক্তির প্রকাশ হয়। আশ্রম করিলেই কি इहेन १ मन क्रम (नांक अक्रब थाकि (नहें कि इहेन १ मन क्राम একতা বসিলেই কি হয়? বিশুদ্ধতা, বিশুদ্ধতা, বিশুদ্ধতা, इत्रविष्ठ विश्व कुछ। हाहे। विश्व कुछ। यति थारक, धक्कन व'म, চুজন ব'স, দেখিবে ব্ৰহ্মশক্তি অবতীৰ্ণ হয় কি না! He Saveth the upright in heart. তিনি বিশুদ্ধ অস্তঃকরণ ব্যক্তিদিগের -উদ্ধার করিবেন। অতএব আমরা যেন তাঁর করুণার এমন অবস্থা পাই, যাহাতে হৃদ্ধে হাত দিরা বলিতে পারি, "My defence is of God, which saveth the upright in heart, প্রভু পরমেশ্বর ভিন্ন আমার অক্ত কোন উদ্দেশ্ত নাই, অতএব **ঈখরের** নিকট হইতে আমার রক্ষা।"

#### বান্ধ সাধনাশ্ৰম

বা

#### BRAHMO WORKER'S SHELTER

मःकास नियमानमा।

- ১। আশ্রম-স্থাপনের উদ্দেশ্য—বাঁচারা বিষয়কর্মে নিশিপ্ত থাকিয়া ত্রাহ্মধন্মদাধন, ত্রাহ্মধন্ম প্রচার এবং ত্রাহ্মদুমাজ ও জনসাধারণের সেবাতে সমুদয় দেহ মন নিয়োগ করিতে ইচ্ছুক, উহোদের একত্র বাস, একত্র সাধন ও একত্র কশ্ম করি-ব্যর ব্যবস্থা করিয়া একটা ঘনানবিষ্ট গ্রাহ্ম সাধকদল গঠন তত্তির ব্রাহ্মধন্ম সাধনার্থী ও করা ইহার প্রথম উদ্দেশ্য। সেবার্থী সকল শ্রেণীর নরনারীর সাধনের ও স্থালনের একটা কেত্র প্রস্তুত করা ও রক্ষা করা ইহার ছিতীয় উদ্দেশ্র।
- ২। ত্রাক্মধর্ম-সাধন—জ্ঞান, ভক্তি ও ক্রাযোগে একমাত্র নিরাকার সভাত্তরপ, মললত্তরপ, পবিত্রত্তরপ পর-মে শরের সহিত যুক্ত হওয়া এবং তাঁহার ইচ্ছার বশবভা হুইয়া জগতের প্রতি প্রীতিতে ও জগতের কল্যাণ্সাধনে দেহ মনকে নিয়ে।গ করাই ত্রাক্ষধর্মসাধন। এই আল্রমের অবশ্যিত সাধন-व्यवानीत्व भूरताक महहाम्य म्यमार नका द्वार स्था स्ट्रेंट । व्यथात मस (माम ७ मकन कारणत क्रेश्वनताम् कानी, छक, ७ कमा সাধুগণের প্রতি এবং সকল সম্প্রদায়ের ধ্য শাল্লের প্রতি সমুচিত শ্রদ্ধা প্রদর্শিত হইবে এবং আনে, ভক্তি ও সদম্ভানের অভি দৃষ্টি রাখা ২ইবে।
- ७। गांधन-প्रशांनी-वशात बाह्यधना, थान. প্রার্থনা, শাল্পাঠ, স্দালোচনা ও সদস্ভান প্রভৃতি স্বাভাবিক ও অধ্যাত্মক উপারে ধর্মসাধন করা হইবে।
- 8 ৷ আশ্রমবাসীধিগের ও আশ্বধর্ম সাধনাধী অভান্ত ব্যক্তিগণের ধর্মসাধনের সাহাব্যার্থ এখানে প্রতিদিন প্রাতে সমবেত ত্রন্ধোপাসনা হইবে। বিশেষ বিশ্ব না ঘটিলে আগ্রেষত্ত आहे काज्ञाम क्षेत्रदात मक्तित धाकाम (मथिएक हरेशन कि | वाक्किशन केशामनात त्याश मिएक विवक हरेश्यन ना।

- ধা আশ্রের ওয়াকারদিগের কার্য্য—বাদ্ধগণের ধর্মসাধনের সহায়তা করা, ব্রাদ্ধ-পরিবার সকল পরিদর্শন করা, ব্রাদ্ধধ্যপ্রতিপাদক পুত্তক পুত্তিকা লেখা, মুক্রিত করা, ও বিক্রম করা, ব্রাদ্ধ বালক বালিকাদিগের শিক্ষা বিষয়ে সহায়তা করা, ব্রাদ্ধগৃহত্বের ও ছাত্র্যদিগের কেহ পীড়িত ও সাহায্য-প্রাণী হইলে তাহার ব্যব্দা করা, নানা স্থানে ও নানা উপায়ে ব্রাদ্ধর্মপ্রচার করা, তন্তির সর্বপ্রেকার জনহিতকর কার্য্যে যথাসাধ্য সাহায্য করা ইত্যাদি ওয়ার্কারদিগের কার্য্য।
- ৬। এই আশ্রমের ওরার্করেগণ ব্রাহ্মধর্মপাধন, ব্রাহ্মধর্মপ্রচার ও ব্রাহ্মসমাজের সেবার জন্ম সকল প্রকার কার্য্য করিতে ও সকল প্রকার কেশ বহন করিতে প্রস্তুত থাকিবেন। এখানে বৈরাগ্যের জন্য বৈরাগ্য শিক্ষা দেওয়া বা অভ্যাস করা হইবে না এবং যিনি যে প্রকার কার্য্যের উপযুক্ত সেই প্রকার কাজে তাঁহাকে নিযুক্ত করিবার দিকে দৃষ্টি রাখা হইবে; কিন্তু ওয়ার্কারদিগের মনের ভাব এইরূপ হওয়া আবশ্রক যে, ঈশ্বরের জন্য ও ব্রাহ্মসমাজের জন্য ছাড়িতে পারি না এমন স্থ্য নাই বা করিতে পারি না এমন ইনকাজ নাই, এমন কি তাঁহারা সকল প্রকার স্থার্থনাশকে পরম স্থাব্র ও গৌরবের বিষয় মনে করিবেন।
- ৭। শ্রেমশীলতা—এই আশ্রমের ওয়ার্করেরণ শ্রমশীল ও কর্ত্রবাপরায়ণ জীবনের আদর্শ প্রদর্শন করিবেন। এই আশ্রম অপরের শ্রমোপার্জিত ও দয়াপ্রদক্ত সাহায্যে প্রতি-পালিত হইবে। স্থতরাং ওয়ার্করেরণ বিনা পরিশ্রমে সেই অল গ্রহণ করা পাপ মনে করিবেন।
- ৮। বাধ্যতা— ওয়ার্কারগণ যেমন একদিকে ঈশ্বরের হস্তে সম্পূণকপে আপনাদিগকে অর্পণ করিবেন, তেমনি অপর দিকে সাধন ও কার্যা-প্রণালী সম্বন্ধে আশ্রমের কর্তৃপক্ষের পরামর্শের অধীন থাকিরা কার্য্য করিবেন।
- ৯। সহায়—বাঁহার। অন্যকর্মা ইইয়া উক্ত উদ্দেশ্বত্তরসাধনে দেহ মন নিয়াগ করিতে প্রস্তুত নহেন, বিষয়-কর্মা
  করিতেছেন বা করিতে ইচ্ছা আছে, অগচ যথাসাধ্য আহ্মধর্মা
  সাধন আহ্মধর্মপ্রচার ও আহ্মসমাজের সেবা করিতে ইচ্ছুক
  তাঁহার। ওয়ার্কারদিগের সহায় বলিয়া গণ্য ইইবেন। তাঁহারা
  ওয়ার্কারদিগের সহিত মিলিত ইইয়া আহ্মধর্ম-সাধন, আহ্মধর্মপ্রচার ও আহ্মসমাজের সেবা করিবেন।
- ১০। ওয়ার্কারগণ আপনাদের ভরণ পোষণের জঞ্চ সর্কান্তঃকরণে ঈশ্বরের উপরে নির্ভর করিবেন। শ্বতঃ প্রার্ত্ত হইয়া যিনি যে কিছু সাহায়্য করেন, তাহা ঈশ্বরের দান বলিয়া গ্রহণ করিবেন। তত্তির আক্ষধর্মাধন, আক্ষধর্মপ্রচার ও আক্ষসমাজের সেবার ব্যাঘাত না করিয়া আশ্রমের ব্যরের সাহায়্যের উদ্দেশ্যে ও আশ্রমের কর্তৃপক্ষের পরামর্শাহ্যায়ে যাহাতে কিছু উপার্জন করিতে পারেন, তাহার চেষ্টা করিবেন। অভাবপক্ষে ভিকা করিবেন, কিছু কথনই আশ্রমের ব্যর নির্কাহার্থ গণ করিবেন না এবং এক কার্য্যের জন্ত যাহা দেওরা হর ভাহা অপর কার্য্যে বার করিবেন না।

- ১১। ওয়ার্কারদিগের মধ্যে যাঁহারা অবিবাহিত 
  তাঁহারা অবিবাহিত থাকিতে পারিলেই ভাল। কিন্তু বিবাহ
  নিষিদ্ধ নহে। তবে বিবাহ করিতে হইলে, ওয়ার্কার বা
  ওয়ার্কারভাবাপর পুরুষ বা নারীকেই বিবাহ করা
  প্রার্কার।
- ১২। মক্ষাখণের কোনও ব্রাশ্ববন্ধু আশ্রমে অতিথিরূপে উপস্থিত হইলে, তিনি চ্ইবেলা এথানে থাকিতে ও আহার
  করিতে পাইবেন। তৎপরে অক্ত কোনও স্থানে তাঁহার
  থাকিবার বন্দোবন্ধ করিতে হইবে। কিন্তু সমাগত বন্ধু বলি
  ব্রাশ্বর্ধশ-সাধনার্থী হন, তাহা হইলে তিনি নিজ ব্যবে
  এথানে অবস্থিতি করিতে পারিবেন। কিন্তু অবস্থিতি কালে
  তাঁহাকে আশ্রমের নির্দিষ্ট কাল করিতে হইবে।
- ১৩ | যে কেহ এই আশ্রমের ওয়ার্কার বা সহায় শ্রেণীভুক্ত হইতে ইচ্ছা করিবেন, তিনি তত্ত্বাবধারকের নিকট শীর নাম ঠিকানা ও অভিপ্রার জানাইবেন; জানাইলে যে হলে र्यक्र रावश डेिड (वाध हम, कन्ना याहेर्त । यथन काहारक छ ওয়ার্কার বা সহায়রূপে গ্রহণ করা ছির হইবে, তথন তদর্থ বিশেষ উপাসনার জন্ত উপাসনার দিন স্থির করিয়া তাঁহাকে উক্ত বিশেষ উপাসনাতে উপস্থিত হইবার অঞ্চ নিমন্ত্রণ করা হইবে। উক্ত বিশেষ উপাসনাক্ষেত্রে পবিত্রস্বরূপ ঈশবের সন্নিধানে তাঁহাকে ওয়াকার বা সহায় বলিয়া গ্রহণ করা হইবে। তৎপরে তিনি যদি ওয়ার্কার হন, তবে শ্রমে ও সাধনে প্রচারেও त्मवाटक, स्वरं ७ इ: १४ चारम ७ वारम चनत **७** बार्कात्मित्व সহিত একীভূত হইয়া যাইবেন এবং যদি সহায় হন, ভবে অপর সহায়দিগের সহিত ঘনিষ্ঠ আত্মীয়তা ও কার্য্যসূত্রে আবন্ধ হইবেন। যিনি ওয়ার্কার বা সহায়শ্রেণীভুক্ত হইবার অভিপ্রায় করিবেন, তিনি সে অভিপ্রায় তত্ত্ববিধারকের গোচর কবিবার পূর্বে, বিশেষ প্রার্থনা ও আত্মপবীক্ষাতে কয়েকদিন যাপন করিবেন ও ঈশ্বরের আহ্বানধ্বনি শুনিতে প্রয়াসী হইবেন। যিনি সেই আহ্বানধ্বনি শুনিয়া অগ্রসর হইবেন. তিনিই দাঁড়াইতে পারিবেন, অপরের পক্ষে তাহা গুরুর।
- ১৪। যতদিন কোনও ভাবী ওয়ার্কারের আবেদন আশ্রমের কর্তৃপক্ষের বিচারাধীন থাকিবে, ততদিন তাঁহাকে আশ্রমের উপাসনার ও কার্যো বিশেষভাবে যোগ দিতে হইবে।

আসং সাধনাশ্রম ২১০৬ কর্ণপ্রয়ালিস খ্রীট ক্লিকাভা। শ্রীশিবনাথ শাস্ত্রী তত্ত্বাবধারক।

## প্রেরিত পত্র।

( পত্র প্রেরকদিগের মৃত্যামতের জপ্ত সম্পাদক দায়ী নহেন। )

#### মাক্সবর

আীথুক তৰ্কৌমুদী সম্পাদক মহাশয় সমীপেষু।
বিনীত নিবেদন,

(১) সংসারে থাকিয়া ধশাসাধন আমাদের আদ্ধর্শের প্রধান উদ্বেশ্ত ; এবং বিবাহই গৃহস্থাশ্রমের প্রথম পদবিক্ষেপ। স্তরাং বিবাহ বিবার ছুএকটা মনের কথা বলিতে ইচ্ছা করিয়াছি। আশা এই, এ সহদ্ধে-প্রাক্ষগণের অভিপ্রার, আগ-নার পত্রিকাতে বিবৃত হইরা, সস্তব হইলে, এ গুরুতর বিষয়ে, সকলের বিখাসের একতা সম্পাদিত হয়। আমার ধারণার সূল মর্ম্মাত্রই নিম্নে প্রাদত্ত হইল। এবং প্রায়েজন মতে, স্বিভারে ও বিনীতভাবে আরও বলিবার ইচ্ছারহিল।

- (২) মাছবের জাত্মা এক। তাহা কেবল সেই একমেবাত্বিতীরমে সমর্পিত হইলে, আত্মার শুদ্ধাচার। একাধিককে
  যদি সে স্পর্শ করে, তবে সে অশুচি হইল। এই জনাই,
  এক সত্যম্ শিবম্ স্ক্রেম্ ব্যতীত, কোন ব্যক্তি, স্ট বন্ত,
  বা গ্রন্থানের পূজা, বা ভাহার প্রতি অষণা সম্মাননা,
  ব্যাহ্মধর্মের বিক্লভাব বলিয়া বিশাস করি।
- (৩) আত্মার পক্ষে স্পর্শনীর প্রভ্ থেমন এক, শরীরের পক্ষেও ঠিক্ সেইরূপ বলিয়া প্রভীতি জান্মিয়াছে। স্থভরাং নরনারীর শরীর একাধিককে অবলম্বন করিলে, পবিত্র ধর্মের উচ্চ আদর্শের চক্ষে, ভাষা পবিত্রভাচ্যুত হইল বলিয়া ধারণা হইরাছে।
- (৪) ভূমগুলের বিভিন্ন ধর্মশাল্পে এবিধরের স্পষ্টরূপ কোন বিধান আছে কিনা, অনভিজ্ঞতা নিবন্ধন তাহা নিশ্চয়রূপে বলিতে পারি না। কিন্তু বিবিধ জাতির আচার বাবহারের প্রতি লক্ষ্য করিয়া দেখিতে পাই, এক-স্ত্রী-এক-স্বামীব বন্দো-বস্তুই ধন্ম জীবনের পক্ষে সঞ্জত।
- (৫) এদেশের আর্যাগণমধ্যে এই ভাব কতক পরিমাণে বিকশিত হইয়াছিল। সক্ষমের আর্থ-প্রাবল্যহেতু, পুক্র একাধিকবার পদ্ধী গ্রহণ করিলেন বটে, কিন্তু জনসমাজের শ্রেষ্ঠতর অন্ধাংশকে "সাচ্চা" রাধিবার চেষ্টা তাঁহাদেরই। এবং এ কণা নিঃশঙ্কচিত্তে বলা ঘাইতে পারে যে, কতক পরিমাণে তাঁহারা কৃতাকার্যাও হইয়াছিলেন। প্রাচীন কালের অংইছোচালিত, নৃশংস কিন্তু মহান্ সতীদাহের কণা ছাড়িয়া দিলেও এমন সহস্র সহস্র সাধ্বী পতিপ্রাণা হিন্দুবিধ্বা এখনও আছেন, যাঁহারা ধ্যানেও এক ভিন্ন দিতীর পুরুষে জানেন নাই।
- (৬) আমরা সেই হিন্দ্গণের পরবর্তী। প্রিক্তার পথে পূব্ব পিতামহগণ বতদ্র অগ্রসর হহতে পাবিয়াছিলেন, তাহার পর হইতে, আরও অধিকদ্র অগ্রসর হওরা, আমাদেরই পক্ষে সঙ্গত। স্ত্রীজ্ঞাতিকে, অস্ততঃ শারীারক প্রিক্তার পথে, স্থির রাখিবার উদ্যম তাহাদেরই। অপর অক্ষাংশকে সেই অবস্থায় শইবার চেটা পরবর্তী আমাদিগেরই কর্ণীর। তবে বাল্য-বিধ্বা ও বাল্য-বিপ্রীকের ক্ণা শুভন্ত।
- ্ (৭) রামায়ণ মহাভারত প্রভৃতির ঐতিহাসিক মৃণ্য অত্থীকার করিলেও, সে সকলের বর্ধনা মধ্যে তৎকালীন আচার বাবহারের এই ভাব দেখা যায়। বহুপত্নীক দশরণের দৃষ্টান্ত সন্তেও, তাঁহারই পুত্র রাম অলভ্যা অসুরোধ ও অশেষ ক্রেশ অগ্রাহ্থ করিরা, কোন মতেই বিভীর পত্নী গ্রাহণ করেন নাই।
  - (৮) বাইবেল প্রেছেও এবিবরে পর্ম রমণীয় ক্বিভু

পূর্ণ সক্তে রহিরাছে। পুরুষ একাফী যথন লেই মূলক্ষরের শুভপালনী ইচ্ছা পূর্ণ করিল না, তথন তাহারই এক আছি হারা নারীর সৃষ্টি হইল।

- (১) বছপদ্মীক মুসলমানেরাও প্রথম বিবাহকে "সাদী", এই পবিত্র নাম প্রদান করেন। পরবর্তী পদ্ধাগ্রহণ "নেক।", এই অপ্রেষ্ঠ নামে পরিচিত হইল। এখনও নেকা-পদ্মী কোন শুভ অমুষ্ঠানের প্রেষ্ঠ কাকে হস্তক্ষেপ করিতে গারে না।
- (>•) বৈষ্ণব-ধর্মের প্রারম্ভে এই পবিত্রতার প্রভি প প্রবর্ত্তকগণের তীত্র দৃষ্টি ছিল। যথন পরবন্তীদের দলপুষ্টের বাসনা বলবতী হইল, তথনই সেই পবিত্রতার চ্যুতি হইল।
- (১১) ধর্মসম্প্রদায়ের কথা দূরে থাকুক, যে কোম্ত-শিষ্যগণ স্ত্রীর মন্তিছ, পরকাল, ও আত্মার অমরত স্থীকার করেন না, তাঁহাদেরও বিশাস জীবনে একবারের অধিক বিবাহ নরনারীর পক্ষে পবিত্রতাচ্যুতি।
- (১২) তবে এ কথা অবশ্রই স্বীক্লার্যা যে, অচঞ্চলচিত্তে এ নীতি-পালন রক্তমাংদের পক্ষে অতীব হংসাধা। কিন্তু ধর্ম্মান্দেশে, লোভ মোহ প্রভৃতি রিপুগণের কোন্টী বন্ধীকরণই বা স্থসাধা? নিতান্ত হংসাধা বলিয়া, সে আয়েসংযম কি ধর্মজীবন গঠনপক্ষে অবশ্র প্রয়োজনীয় বলিয়া স্বীকার করি নাং? ইতি

ক্ৰিকাতা। **অ**বনত ৫ই আষাচ ১৩০০ সন এ শ্ৰীকেদাৱনাথ বায়।

#### ব্রাহ্মসমাজ।

শোক সংবাদ— মাজ আমরা একটা গভার শোকের সংবাদ ব্রাহ্মবন্ধুগণকে প্রদান করিতেছি। ব্রহ্মভক্ত বাবু পুণাদাপ্রসাদ সরকার আর ইং অগতে নাই। গত ৬ই আষাচ তৃতীয় প্রহরের সমর বন্ধমানে সেই বিশ্বাসী লাভা মানবলীলা সম্বরণ করিয়াছেন। গত তিন বংসর হইতে তিনি ক্ষরকাশ রোগে ভূগিতেছিলেন। রোগমুক্ত হওরার জন্ম বায়ু পারবন্ধন, দেশী এবং ডাক্তারী চিকিৎসা ইত্যাদি স্কপ্রকার উপায় অবলম্বিত হইয়াছল, ব্রাহ্মবন্ধুগণের বন্ধে চিকিৎসাদির বিশেষ কোন ক্রটি হয় নাই, কিন্তু কিছুতেই কাল-রোগ হইতে জিনি আরোগ্য লাভ করিতে পারিলেন না।

শ্রহের ভাত। পুণ্যদান্তাসাদের অবস্ত-বিখাস, কর্তব্যক্তান, এবং সেবামর জীবন আদেশ স্থানীর। তাঁছার জীবনে প্রাক্ষানধারের আদেশ—জ্ঞান, ভাক্ত, কর্মের সামঞ্জত হুইরাছিল। তিনি এক দিকে যেনল ঔষধের শিশি এবং পথ্য লইয়া রোগীর স্থারে হারে ঘ্রিতেন, তেমনি ক্বাট বন্ধ ক্রিয়া ঘণ্টার পর ঘণ্টা ধ্যানে নিমর্থ থাকিতেন। ঘোরত্র ব্যারামের অবস্থাতেও তাঁছার মুথ বিষপ্ত দেখা যার নাই, কেহু তাঁছার ক্তরোজি শোনে নাই। সর্ববা প্রক্রা ও শান্ত মুর্তি। তিনি বাঁছার বাড়ীতে ছিনি বাস করিয়াছেন, বাঁছার সহিত ছিনি মিশ্রাছেন,

তিনিই তাঁহার দেবভাবে আকৃট হইরাছেন, এবং শতমুখে তাঁহার চরিত্র ও ভঁগভ্জির প্রশংসা ক্রিরাছেন।

° কেহ কখনও তাঁহার মুখে নিরাশার কথা শোনেন নাই।
ঈশ্বকে দেখা বার না, পাওরা যার না, ইত্যাদি কথা বলিলে
তিনি হংখিত ও বিরক্ত হইতেন। তিনি কোন বন্ধর নিকট
ল্পাই বলিরাছেন "আমি নির্ভই মাকে দেখিকে পাই, মার
কথা শুলি, মার সহিত আমার যোগ হইরা গিরাছে।"
ব্যায়ামের সময়ও তিনি বার বন্ধ করিরা অনেক্ষুক্তণ ধ্যান
করিতেন।

ধার্মিক লোকের ভার স্বরং পরমেশ্বর গ্রহণ করিয়া থাকেন।
ভক্ত পুণাদার জীবনে আমরা একথার উজ্জ্বল দৃষ্টান্ত দেখিতে
পাই। আশাভীতরূপে তাঁহার চিকিৎসার জন্য শত শত
টাকা নানা স্থানের ব্রাহ্মদিগের নিকট হইতে আসিয়াছে।
সকলেই আগ্রহের সহিত তাঁহাকে অর্থ সাহায্য করিয়াছেন
এবং তাঁহাকে সাহায্য করিয়া সকলেই নিজকে কৃতার্থ মনে
করিয়াছেন।

তিনি উচ্চ অঙ্গের লেখা পড়া শিক্ষা করেন নাই; কিন্তু
আধ্যাত্মিক গভীর জ্ঞান লাভ করিয়াছিলেন। সংগীত বিদ্যায়
তাহার অধিকার ছিল না, স্বাভাবিক স্বর ও তত মিট ছিল না, তান
লর ঠিক করিয়াও গাহিতে পারিতেন না; কিন্তু তিনি যথন
ভাবে গদগদ হইয়া গান কবিতেন, তথন বড়ই মধুয় লাগিত,
তেমন গান গাহিতে অনেকেই পারেন না। তিনি অমুক্র্
ছইয়া সমনেত উপাসনায় কথন কথন আচার্যোর কার্যা করিতেন; তাহার উপাসনায় উপাসকমওলীয় প্রাণে এক নবভাবের
সঞ্চাব হইত।

জগতে প্ণাদাপ্রসাদের শক্ত নাই। আমের যে সকল লোক এক সমর আদ্ধর্মের প্রতি বিধেষ-বৃদ্ধি-প্রণোদিত হইরা পুণাদাব সহিত বিশেষভাবে বিবাদে প্রবৃত্ত হইরাছিলেন, পরি-শেষে তাঁহার। পুণাদার চরিত্রের নিকট নত কইয়াছিলেন। যাঁহাবা সাধুভক শক্তগণও মন্ত্রম্ম সর্পের স্থার তাঁহাদের নিকট অবনত হইয়। থাকে। পুণাদার জীবন ইহার সাক্ষ্য প্রদান করিয়াছে।

বান্তবিক যেদিক দিয়াই দেখা যায়, সকল বিষয়েই পুণাদার জীবন পূর্ণতার দিকে অধিকতর অগ্রসর হইয়াছিল। সেই উচ্চ শিক্ষাবিহীন, দরিজ্ঞ, পল্লিগ্রামবাসী উৎপীড়িত, আমাদের দীনভাতা অর্গে গমন করিয়াছেন, আমরা তাঁহার সেই পবিত্র কেহরঞ্জক মূর্ত্তি আর দেখিতে পাইব না; কিন্তু তিনি যে আদর্শজীবন রাখিয়া গিয়াছেন, ব্রাক্ষসমাজের সুবক-যুবতীগণ যেন তদকুসরণ করেন। বিশ্বাস, বৈরাগ্য সেবা তাঁহার জীবনের মূলমন্ত্র ছিল। এই মূলমন্ত্রসাধনে তিনি সক্ষম হইয়াছিলেন। পরমেশ্বর এই সাধন-পথে ব্রাক্ষনমাজকে দিন দিন অগ্রসর কর্মন।

ত্রাক্স-সাধনাশ্রম—লতি দ্রন্থানবাদিনী একজন আদ্ধান ব্রিদাল হইতে বার্
মহিলা বাড়ীতে ক্রেকটা বালকবালিকাকে পড়াইরা মাদিক শেৰভাগে কলিকাতা
চারি টাকা উপার্ক্তন করিরা থাকেন। তিনি দেই টাকা মাদে আগমন করিয়াছিলেন।

মাসে শেল্টারে প্রেরণ করিবেন বলিরা, সংকর করিরাছেন।
ইতিমধ্যে প্রথম মাসের টাকা প্রেরণ করিরাছেন। তাঁলার এই
শুভ উদ্দেশ্রের জন্ত আমরা তাঁলাকে বার বার ধল্পবাদ প্রেরণ
করিতেছি। সম্প্রতি কোন ব্রাহ্মবন্ধু শেল্টারবাসিদিগের
জন্ত প্রার ম টাকা মূল্যের আত্র কাঁটাল প্রভৃতি কল প্রেরণ
করিরাছেন। এরপ স্বতঃপ্রবৃত্ত হইরা, অনেকে শেল্টারের সাহায্য
করিতেছেন। নানা কারণে দাতাদিগের নাম প্রকাশিত হর না। প্রভূ পরমেশ্বর আশুর্রা উপাহের শেল্টারকে রক্ষা করিতেছেন।
গত জাহুরারী মান হইতে এই পর্যান্ত, এই পাঁচ মানে শেল্টারে
১১৮৮॥ পে ব্যর হইরাছে। পরমেশ্বের চরণতলে প্রণত হইরা
আমরা আমাদের সাহায্য-দাতাদিগকে বার্যার ধক্তবাদ প্রদান
করিতেছি।

জন্মদিন—কলিকাতার বাবু গোপালচক্র মিরক তাঁহার পুত্র ও কন্যার জন্মদিন উপলক্ষে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে ২১ টাকা দান করিরাছেন এবং আমহাই ব্লীটের কুষ্ঠাশ্রমের প্রায় ১৫০ জন কুষ্ঠরোগপ্রস্ত ব্যক্তিকে পরিতোবপূর্মক ভোজন করাইরাছেন। আমরা গোপালবাবুকে ধন্তবাদ প্রদান করিতেছি।

ব্রাহ্ম-সমিতি—বরাহনগরের বাবু শশিপদ বন্দ্যোপাধ্যার একটা ব্রাহ্ম-সমিতি গঠন করিতে সংকর করিরাছেন। আপাততঃ মাদে একবার সমিতির অধিবেশন হইবে। তাহাতে মনোনীত কতিপর ব্রাহ্ম নিমন্ত্রিত হইবেন। তথার উপাসনা, আলোচনা এবং প্রীতিভোজন হইবে। এই সমিতির ব্যরের জন্ম শশিপদ বাবু সম্প্রতি ১০০১ টাকা দান করিয়াছেন এবং সমিতি স্থাপন উপলক্ষে সাঃ ব্রাঃ সমাজে ৫১ ও সাধ্নাশ্রমে ৫১ টাকা দান করিয়াছেন। শশিপদ বাব্ব এই সাধুসংকরের জন্ম ধন্ধবাদ প্রদান করিতেছি।

উৎস্ব—গত ২৪শে ও ২৫শে জুন ভবানীপুর ব্রাদ্ধন সমাজের উৎসব হইয়াছে। ২৪শে জুন শনিবার রাত্রে প্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী আচার্যোর কার্য্য করেন, তৎপরাদন প্রাতে শ্রীযুক্ত নবদীপচক্র দাস আচার্যোর কার্য্য করেন। অপরাকে বাবু হরিমোহন ঘোষাল কথকতা করেন। তৎপর বাবু যোগেক্তচক্র ঘোষ বক্তৃতা করেন, এবং রাত্রে বাবু কেদারনাথ রাম উপাসন। করেন। কলিকাতা হইতে যাঁহারা নিমাজিত হইরা উৎসবে গিরাছিলেন, ভবানীপুরের ব্রাদ্ধবন্ধ্গণ তাঁহা-দিগকে যথোচিত আদের অতার্থনা করিয়াছিলেন।

বাগেরহাট হইতে বাবু হরিন্ধার্থ দাস লিখিরাছেন।
"প্রমেশ্বরের কৃপার নিম্নিথিত প্রণালীতে বাগেরহাট

লগ্নেষ্বরের কৃশার নির্মাণিত অশালাতে বাগেরহাত ব্রাহ্মন্মাজের উৎসবের কার্যা সম্পর হইরাছে। উৎসব উপলক্ষে ব্রিশাল হইতে বাবু মনোমোছন চক্রবর্তী এবং উৎসবের শেষভাগে কলিকাতা হইতে বাবু দেবীঅসের রার চৌধুনী ভাগমন ক্রিয়াছিলেন। ১৮ই জৈঠ ব্ধবার অপরাক্ত ৭ ঘটকার সমরে উপাসনালরে উৎসবের উরোধন স্চক উপাসনা হয়। বাবু ছরিনাথ লাস আচার্য্যের কার্য্য করেন। স্থানীয় মুক্ষেক্ বাবু সিভিক্ঠ মরিক "উৎসবের জন্য বিশেষ ভাবে প্রস্তুত হওয়া" সম্বন্ধ উপদেশ প্রদান করেন।

১৯শে জৈ ঠ বৃহস্পতিবার প্রাতে বারু মনোমোহন চক্রবন্তী 'মাচার্য্যের কার্যা করেন। "এই উৎসবে বাহিরের আড়বর ও উদ্ধানের প্রতিদৃষ্টি না করিয়া, আত্মাতে বিখাস; সত্যনিষ্ঠা প্রেম্ ও পবিত্রতা লগত হইতেছে কি না সেই দিকেই দৃষ্টি রাখিতে হইবে" এই মর্ম্মে উপবেশ প্রদান করেন। অপবাহ ৪ ঘটকার পরে কীর্ত্তন ও প্রার্থনা হয়। সন্ধ্যার পরে বারু সিভিক্ঠ মল্লিক মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন। এবং পিরোজপুরের বারু আভতোষ মিত্র মহাশয় বিশেষভাবে প্রার্থনা করেন।

২০শে জৈ ঠি শুক্রবার প্রাতে বাবু মনোমোছন চক্রবর্তী আচার্য্যের কার্য্য করেন এবং গীতার একটা শ্লোক অবলম্বন করিয়া উপদেশ দেন।

অপরাক্ত ঘটকার পরে উপাসনালর হইতে নগরকীর্ত্তন বাহির হইরা সন্ধ্যার পরে উপাসনালয়ে সমাগত হয়। অজিকার কীর্ত্তনে ভগবানের বিশেষ করুণা প্রকাশ পাইয়াছিল। কীর্ত্তনের পরে বাবু মনোমোহন চক্রবর্তী "ধর্ম ছেড়ে শাস্তি কোথায় ?" এই বিষয়ে সংক্ষিপ্ত বক্কণা করেন।

২১শে জৈ চ শনিবার বাবু নবীনচন্দ্র সিংহ আচা-গ্ল্যের কার্যা করেন। অপরাক্তে সংকীর্ত্তন ও প্রার্থনা হয়। সন্ধ্যার সমর বাবু দেবীপ্রসর রার চৌধুরী দেশের বর্ত্তমান্ ধর্মের অবহা এবং আমাদের কর্ত্তব্য সম্বন্ধে সংক্ষিপ্ত বক্তৃতা করেন।"

থাসিয়া মিশন—থাসিয়া মিশন সহকে হাইকোটের জল মাননীয় চক্তমাধব ঘোষ মহাশয় নিয়লিথিত মত প্রকাশ করিয়াছেন;—

"গত অক্টোবর মাসে যথন আমি শিলকে ছিলাম, সেই
সমরে থাসিরাজাতির কল্যাণের জন্ম বাবু নীলমণি চক্রবর্তীর
তত্ত্ববিধানাধীনে প্রতিষ্ঠিত ব্রাহ্মপ্রচার-আশ্রম দর্শন করিতে
যাই। তথার যাহা দেথিরাছিলাম, তাহাতে বড়ই আনন্দিত
কইয়ছি। দেথিলাম তথার থাসিরা ভাবার লিখিত ধর্মোপদেশপূর্ণ করেক থানি পুত্তক এবং বালালা হুরে থাসিয়া ভাষার
রচিত ধর্মসলীতপুত্তক রহিয়াছে এবং থাসিয়া ভাষার উপাসনাদি হইতেছে। এই মিশন জীত সাধু কার্যা করিতেছেন।
তানিলাম সম্প্রতি চেরাপুঞ্জীতে একটা শাধাআশ্রম থোলা
হইরাছে। আমি এই মিশনের সর্বালীন উরতি কামুনা করি।"

আসাম গ্ৰণ্নেন্ট থাসিয়া মিলন সম্ভাৱে গত সেন্সস্ রিপোর্টে নিয়ণিখিত মন্তকা প্রকাশ করিয়াছেন ;— শ্বাসিয়া জাতির মধ্যে একটা কৃত্র ব্রাহ্মণিশন কার্য্য করিতেছে, বাহা বেশ কৃতকার্য্য হইতেছে বলিয়া গুনা যায়।"

নামকরণ—গত ১৩ই জৈচি শিলকের বাবু একেন্দ্রনাণ সেনের সপ্তম সন্তান ও তৃতীর পুত্রের ওছ নামকরণ একেধর্ম-পদ্ধতি অনুসারে সম্পন্ন হইয়াছে। তছপলকে বাবু নীলমণি চক্রবর্তী আইচার্য্যের কার্য্য করেন। বালকের নাম স্থীক্রক্মার রাথা হইরাছে।

দান— আসামের অন্তর্গত নওগায়ের বাবু রামছ্লভি
মজুমদার তাঁহার মাতার আদ্যশ্রাদ্ধ উপ্লক্ষে থাসিরা মিশনে
ে টাকা দান করিয়াছেন। আমরা দাতাকে ধন্যবাদ প্রদান
করিতেছি।

ব্রাহ্মসম্মিলনী— আগামী রবিবার ২রা জুলাই প্রীয়ক্ত বাবু রাজকৃষ্ণ কর মহাশরের উল্টাডিলিছ উদ্যান-ভবনে সাম্মিলনীর মাসিক অধিবেশন হইবে। প্রাতে ৮ ঘটিকার সময় উপাসনা হইবে। সাম্মিলনীর সভাগণেব উপস্থিতি একান্ত প্রার্থনীয়।

### বিজ্ঞাপন।

আগামী ১৪ই জুলাই অপরাফ ৬১ ঘটিকার সময়
১৩নং নির্জ্ঞাপুর ট্রীটস্থ সিটিকলেজভবনে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের
অধাক্ষ সভার দিতীয় বৈমাসিক অধিবেশন হইবে।

#### विद्वातियम् ।

- কার্যানির্কাছক সভার দ্বিতীয় ত্রৈমাসিক কার্যাবিবরণ
  ও আয় ব্যয়ের হিসাব।
- ২। বাবুবাণীকান্ত রায় চৌধুরী আহতাৰ করিবেন;—
  - (ক) সমাজের বর্তমান নিরম সকল বিচারিত ও সংশো-ধিত হইরা গুটীত হইবার বন্দোবত করা হউক।
  - (भ) नमास्त्रत ८० नियम्बद २व, ०व, ४४, नाहा निविद्धिक रूप्तेक ।
- ৩। বিবিধ।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ কার্যালর ২১১ নং কর্ণওরালিস ব্রীট কলিকাতা ১৫ই জুন ১৮৯৩

শ্রীপ্তরুচরণ মহলানবিশ সম্পাদক।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিক।।

৭ম সংখ্যা। ১৬শ ভাগ।

>লা শ্রাবণ, রবিবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাংসরিক অগ্রিম মৃশ্য ২॥• 'মফস্বলে ৩১ প্রতি থণ্ডের মৃশ্য প৽

### - সহিষ্ণু বিশ্বাস।

व्यनत्त्र (मथाहे नथ, निष्क नथहाता ; অপরে সাহস দিই, নিজে ভরে সারা ; ष्मभारत (मिथिया) (भारत কোমর বাঁধিছে জোরে আমি যে অভলে ডুবি না দেখি কিনারা; আমি যে হারামে ফেলি মোর ধ্রব-ভারা। নির্ভর নির্ভর বলি ; যথন হঙ্কারি ष्यात्म वायु, चन चछ। होनिक विश्वाति **छ। एक यदन जिनः नादन,** फुर्त धर्मा जन्मकारत, **কেন গো নির্ভারে প্রাণ বাঁধিতে না পারি ?** কেন গো তরাসে কাঁপি, ফেলি অশ্রবারি ? আলোরি ঈশ্বর কি গো ? নন কি আঁধারে ? তবে কেন ভয়-ভীত আমি এ প্রকারে ? বিরদ কেন গো প্রাণ ? বদন কেন বা মান ? তরাসে হারারে পথ নিরাশা-বিকারে কেন গো একাকী তবে দেখি আপনারে ? काशित विश्वाम, (मधि (श्रम कानित्र) षानिष्ठि এ कीरन, मक्दन निर्कात এক সন্তা আছে বিরে, এক হস্ত আছে খিরে. একেরি মঙ্গল বিধি অল্ফা যভ্নে শত হুর্মণতা মাঝে রাখিছে এ জনে। কোৰা হতে আসে মেল ডুবার বিশ্বাস 📍 সাহস প্ৰায় কেন ? কেন জাগে তাস ? আশঙ্কা ছান্ডৱা ভারে ভেদে পড়ি এ প্রকারে, শরীরের স্বাস্থ্য টুটে ; পরাণে হতাশ ; অন্তরে পশিলে শৃত্য, বাহিরে আকাশ ?; একি দশা ! প্রনঃ দেখি পেরে ছঃসময় व्यक्टत तिश्व वृष्ट कार्श (शा क्रक्टब्र, কঠিন প্রতিক্ষা ভোৱে, वाधिव (म मरव (कारब, আতি দেহ ক্লান্ত মন পরাভূত হয় ; **ट्टरव याहे, रक्नारफ इ: १४ व्यान विरामत।** 

বুঝেছি সংগ্রাম বিনা না হর সাধনা;
আঁধার না পেলে আলো চাহে কোন্ জনা?
যেবা সর সেই রয়; আসে ভার স্থামর;
ওই যে গর্জন, উচা করিছে ঘোষণা
আসিবে কুপার ধারা, তাহারি স্টনা।
সহিষ্ণু বিখাস তবে চাহি তব ঘারে,
ভউক গর্জন ধরা, ভুবাক আঁধাবে,
ও চরণে মতি রাণি, আমি যেন পড়ে থাকি
অন্ধ মার্জ্জারের শিশু থাকে যে প্রকারে,
না দেখি, উদ্দেশে যেন ডাকিগো ভোমারে।

## मम्भापकीय मखना।

লাভ ও প্রদর্শন—শ্রীমন্তাগবতে একপ লিখিত আছে যে,মহর্ষি বেদব্যাস লোক-হিতার্থ বিশাল ভারত গ্রন্থ অষ্টাদশ পুরাণ রচনা করিয়া, অবশেষে এই চিস্তাতে নিমগ্ন হইলেন---"আমি তোলোকের শাস্তি লাভের উপায় বিধানার্থ বছশ।স্ত রচনা করিলাম, কিন্তু আমার প্রাণে শান্তি হইল না কেন ?" এই বলিয়া তিনি নির্জ্জনে বণিয়া ক্ষোড করিতেছেন, এমন সময়ে দেবর্ষি নারদ তথার উপস্থিত হইলেন। ব্যাসকে থিল দেখিয়া কারণ জিজ্ঞাস। করাতে ব্যাস আফুপুর্বিক সমুদার কারণ বর্ণন করিলেন। তথন নারদ তাঁলাকে ভক্তিতত্ত্বের অমুসদ্ধান कत्रिवात क्रम्म উপদেশ দিলেন। व्याप्तत्र मन्ति य धान छिथि छ हरेग्राहिन, जनसूक्तन श्रञ्ज यामारनंत्र नकरनंद्रहे मरन नमस्त्र नमस्त्र উথিত হওরাউচিত। মানবের মুক্তির পথ বলিরা যে পথ নির্দেশ করিতেছি, সে পথ অবলছন করিয়া আমরা মৃক্তির • অমৃত রস আখাদন করিতে পারিতেছি কি না? অপবের ছ:ধাথি বাহাতে নিৰ্মাণ হয়,ভাহার জম্ম ব্যগ্র হইয়াছি,কিন্ত আপনার कुपराव छ:थावि मिर्काण हरे एक कि ना ? (य खेयरथ व्यापत्वव রোগ শাল্তি হইবে বলিরা আশা করিডেছি, ভাহাতে নিকের **रतान भाष्टित गक्न**न मिथिएकहि कि ना ? এक्रम धारमत बाता वात्रश्वात आचानहीका कतात विरमय व्यवस्थाकत। आमारतत्र

**हक्षण ज्ञात व विभू शीन हिन्छ, मर्समारे (मशाहेटल, खनाहेटल** वाश हरा; नाफ जारभक्ता अनर्मन विश्वतः अधिक मन्तिरांशी इत। কিন্তু এ জগতে বাঁহারা ু্যে কোনও বিষয়ে গভীরতা ও সভাত ৷ লাভ করিয়াছেন, তাঁহাদের গতি বিপরীত দিকে দৃষ্ট হইয়াছে। उँ। हारा अपूर्वत्य जुनिया शिया नाष्ट्र क्यू हे गुठा इहेम्राह्न। विषा विषय (पथि, उांशांतारे यथार्थ विषान रहेबाह्नन, यांशांता লোকে কি হইলে সম্ভূষ্ট হয়,এ প্রশ্ন না করিয়া এ বিষর্টার প্রক্রত-**তত্ব कि, এই প্রশ্নের দাবাই আপনাদিগকে সর্বদা বাত্ত** রাথিয়া-ছেন। চরিত্র সম্বন্ধেও দেখি, যাগাদের দৃষ্টি কেবল মানব-চক্ষ্র উপরে, তাহারা সারবান চরিত্র লাভ করিতে পারে না। কিন্ত যাঁহারা মানবচকুকে ভূলিয়া গিয়া ধর্মের জন্ম, সাধুতার জন্মই, আত্মশাসন ও আত্মোরতি বিধানে মনোযোগী, তাঁহারাই সভ্য-ভূমির উপরে স্থাপিত স্থান্ট চরিত্র লাভ করিয়া থাকেন। জন-সমাজেব, বিশেষতঃ সংবাদপত্তের ক্র'ড়া-পুত্তলিকা স্বরূপ সভ্য-সমাজেব এ প্রকার অবস্থা দাঁড়াইয়াছে যে, যে যত পরছেন্দার-বত্তী, বিবেক-বিহীন ও অসার হইবে সেই তত লোকামুগ্রহের অংশী হইবে, আরু যে যত সারবান, নিঠাবান ও বিবেকপরায়ণ इडेरव, সেই তত জনসমাজে প্রতিষ্ঠা লাভে অসমর্থ চইবে। বোধ হয় ইছাও বিধাতার মঞ্চল বিধি, প্রাকৃত সাধুতার ভাগ কোমল আধাাত্মিক বস্তকে তিনি অনেক সময়ে লোক চম্ফের অগোচবেই রক্ষা করিয়া থাকেন। সে যাহা হউক লাভ করি-বার প্রবৃত্তি অপেক্ষা প্রদর্শনের প্রবৃত্তি কোন বিভাগেই ভাল নহে। ধর্মসাধন বিষয়ে ইহা অস্তীব নিক্দনীয় ও চবিত্রেব অসাবতা উৎপাদক। যতবার আমাদের চিত্ত চতুর্দিকে অসাব উত্তেজনার মধ্যে পডিয়া বৃহিমুখীন ও প্রদর্শনাপ্রয় হইয়া পড়িবে, তত্তবারট আমাদিগকে আঝুপবীকা দারা সেই চিত্তকে অন্তমুপীন করিয়া লইতে হইবে। সত্য পদার্থ লাভ করিতে পারিলে ভাষা প্রদর্শনের জন্ম বাগ্র চইতে চইবে না, ভাষা আপনি আপনাকে প্রচার করিবে। জনস্মাঙ্গের কোলাচলের মধ্যে ধর্মসাধন করিতে গিয়া আমাদিগকে সর্বাদাই সংগ্রাম করিতে হইতেছে; যতবার আমরা সভোর সলিধানে যাইতে চাহিতেছি, তত্তবারই অসারতাতে আমাদের চিত্তকে যেন বছি-শুথীন করিয়া দিতেছে। এই সংগ্রামে ঈশর সানাদের সহায় হউন।

ব্যাধির লক্ষণ ক্ষাবের প্রশংসা গুনিতে ভাল লাগে,
না নিজের প্রশংসা গুনিতে ভাল লাগে? আয়চিতা ভাল
লাগে না পরের চিতা ভাল লাগে? নিজের দোষ বলিতে
ভাল লাগে, না পরের দোষ বলিতে ভাল লাগে? নিজের
সমাজ ভাল লাগে, কি অক্ত দলে বসিয়া পাকিতে ইচ্ছা হর?
ভূমি ব্রাহ্ম, আপনাকে ব্রাহ্ম বলিয়া পারিচয় দিতে মনে আনন্দ
ও উৎসাহ হয়, না লোকে পাছে ভোমাকে ব্রাহ্ম বলিয়া জানে
এই ভরে সর্কাল ব্রাহ্মসুক্র? ভূমি যেখানে যাও সর্কারো কি
ব্রাহ্মদের ও ব্রাহ্মস্মাজের অফ্সকান করিতে ইচ্ছা হয়, না সে
সকল হইতে দ্রে থাকিতে ইচ্ছা হয়? ভোমার পলের সন্মান
রক্ষা করিতে ভাল লাগে, না ভোমার ধর্মস্মাজের সন্মান বৃদ্ধি

করিতে ভাল লাগে ? ইত্যাদি আরগুলি সমূধে রাখিরা সর্বদাই আত্ম-পরীকা করা ভাল। এখন দেখিতেছি, অনেকে আপনাকে আন্ধ বলিয়া পরিচয় দিতে লজা বোধ করিভেছেন,ভাঁছারা যখন कनिकाणा महरत वाम करतन, जबन धूव छेरमाही ब्राह्म बारकम; কিন্ত বাহিরে গেলে আর আন্ধ বলিরা পরিচয় দিতে সাহস হয় না। এ সহরে তিনি ত্রাহ্ম আছেন, আর এক সহত্তে বদলি হইলেন ত আর ভ্রাহ্ম নাই, ইহার কারণ কি ? যাঁহারা এরপ করেন তাঁহাদিগকে জিজ্ঞাসা করিলে তাঁহারা বলেন, ত্রাহ্মদের চরিত্র লোক-সমাজে আদরের বস্তু না হইয়া স্থার বস্তু হইয়াছে, তাই তাঁহারা আক্ষ বলিরা পরিচয় দিতে লক্ষা বোধ করেন; কেছ কেছ বলেন,আমাদের চরিত্র ত্রাক্ষ চরিত্র নয় আর কি বলিয়া আহ্ম নামে পরিচয় দিই। কিন্তু প্রশ্ন এই, চির্দিনই ভ উক্ত উভয় কারণ বিদ্যমান, তবে পৃক্ষেই বাকেন তীছার। আপনাদিগকে আদ্ধ বলিয়া পরিচয় দিতে এত আগ্রহান্তি ছিলেন, আর এখনই বাকেন তাহানাই ৷ এ বিষয়ে চিস্তা করিলে ইহাই মনে হয়, আক্ষধন্ম যে তাঁহাদের পরিতাণের জ্ঞান্ত আসিয়াছে এবং এই ধর্ম গ্রহণ করাই যে গৌরবের বিষয় এ বিশ্বাস তাঁহাদের নাই। ঈশ্বর জীবকে উদ্ধারের জন্ত যে এই নুতন ধর্ম প্রেরণ করিয়াছেন, তাহা তাঁহারা বিখাদ করিতে পাবেন না। এই বিখাদধীনতা হইতেই তাঁচারা আপনাদিগকে ব্ৰাহ্ম বলিয়া পরিচয় দিতে লজ্জা বোধ করেন। যথন এই মূল ভিত্তি বিশ্বাদ টলিল, তথন নামে ব্রাহ্ম থাকিলেও প্রকৃত जाकात्र थाटक ना, जथन शास्त्र हिखाई ध्वांतन क्य, कारकह ত্রাহ্মসমাজের গৌরব বৃদ্ধি অপেক্ষা নিজের পদ গৌরবই শ্রেষ্ঠ ননে হয়। এই শোচনীয় অবস্থায় নিজের সমাজের কি দলের অনুসন্ধান ুকরা দূরে থাকুক তাহা হইতে পলাইয়া দূরে দূরে থাকিতেই ইচ্ছ। হওয়া স্বাভাবিক। তথন নিজের रमाघ तनिएक कि रमिथरक **कात हैका शास्त्र ना, व्यास्त्र रमा**स বলিতে ও দেখিতেই ভাল লাগে। তথন আত্মচিন্তা অপেক্ষা পর চিন্তাই ভাল লাগে, অবশেষে মাতুষ এমন ভানে গিয়া দাঁড়ায় যে, ঈশ্বরের প্রাশংসা অপেক্ষা নিজের প্রাশংসা ভনিতেই मिष्टे लार्छ।

আর যদি অক্স ব্রাহ্মদিগের জীবনের তুর্গতি দেখিরা ব্রাহ্ম বলিয়া পরিচয় দিতে লজ্জা হইতেছে এরপ হয়; তাহা হইলেও বক্তবা এই, তুমি নিজ চরিত্রকে কেন এইরপ কর না, যালাতে তোমার গুণে তাহাদেরও গোরব বৃদ্ধি হয়। প্রীষ্টান-দিগের মধ্যে কি অপরাধী ছক্রিয়ায়িত লোক নাই? তথাকি প্রীষ্টান নামের এত গৌরব কেন? বছসংখ্যক প্রীষ্টায় প্রেয় গুরুষ গুরুষদীব উৎক্রই চরিত্রের গুণে কি নহে? এস ভূমি আমি ব্যক্তিগত ভাবে ব্রাহ্মধর্মকে জীবনে সাধন করি, মহুষ্যদ্বের আদর্শকে জীবনে প্রান্ত আমাদের জীবনে প্রত্ব পরমেশরের নাম ও তাঁহার সভ্য ধর্ম গৌরবান্তিত হইবে। যালার বৃদ্ধি এ পথে মা গিরা অক্স পণে যাল, তালার ভিতরে ভরানক ব্যাধি প্রবেশ করিয়াছে বৃন্ধিতে হইবে।

বিশুল জ্ঞানই বিমল ভক্তির ভিত্তি—অনেক সমর দেখা যার, যাঁহারা ভক্তির প্রয়োজনীয়তা অধিকতররপে প্রতি-পর করিতে ইচ্ছা করেন, এবং লোকে ভক্তি-পথ অধিক পরিমাণে আশ্রম করে এরপ ইচ্ছা করেন, তাঁছারা অনেক সমর জ্ঞান বা বিশুদ্ধ মতকে শুদ্ধ বালুকারাশি নামে অভিহিত করিয়া থাকেন, এবং ভক্তিকেও দোলা জল প্রভৃতি শব্দ ছার। বর্ণন करतन। छांशामत छेकि नकन अनित्न मन हत्र यन स्थान বাবিশুদ্ধ মতের সহিত শুক্তার একটা অনচেদ্য নিত্য সম্বন্ধ বর্ত্তমান রুটিয়াছে। জ্ঞান বা বিশুদ্ধ মতাবলম্বীও যে সরস চইতে পারে; সে পথে চলিলেও যেলোকের পিপাদার শান্তি হইতে शास्त्र ; उाहारमञ्ज खेकि अवग कतिरम अक्र ताम इत्र ना। পক্ষাস্তরে যে ভক্তির আবেশ্রকতা তাঁহারা অধিক পরিমাণে সমর্থন ও প্রদর্শন করিতে.চাতেন, তাহাকেও ঘোলা জল প্রভৃতি শব্দে আভিচিত করাতে সেই ভক্তিরও যথেষ্ট নিন্দা করা হয়। তাঁচাদের উক্তি দারা ইহাই প্রতিপন হয় যে, ভক্তি আর বিশুদ্ধ হইতে পারে না। ভক্তির সহিত ঘোলা কথাটার যেন একটা অচ্চেদ্য নিত্য সম্বন্ধ বর্ত্তমান আছে। এইরূপ ভক্তি সমর্থন-काबी धवः छान ७ विकक्ष मट्जत निनाकात्रिशंग व्यक्तां ज्ञादित বিষম অনিষ্টের স্ত্রপাত করিয়া থাকেন। তাঁহারা ভাবিয়া দেখেন না বে, তাঁহাদের উক্তি দারা জ্ঞান বা ভক্তির কোন দিকে যাইতেই লোকের প্রবৃত্তি হয় না। বিশুদ্ধ জ্ঞান ও মত যদি শুষ্ণ বালুকার সহিত তুলিত হয় এবং ভক্তিও যদি কেবল ঘোলা कनरे रम, ज्रात करे घर मिरकत कान मिरकरे लाक्ति याहेवात প্রবৃত্তি হইবে না। তদ্ধ বালুকাতে যে লোকের পিপাদা মিটে ना, छाहा (क ना आरत? किंड छान वा विकक्ष महिक নিরবফিলর শুক বালুকা নামেই অভিহিত হইবার উপযক্ত গ তবে ত कान मानवित्र शक्त निकास्टरे व्यक्षास्त्रीय तक्षः। माध করিয়াকে কভকগুলি গুছ বালুকা গলাধঃকরণ করিতে প্রবৃত্ত হইবে ? জ্ঞানের সহিত ভঙ্কতার যে একটা নিতা ঘনিষ্ঠ আত্মীয়তা আছে, তাহা আমরা বিশ্বাস করি না: বরং ইচাই সতা যে প্রকৃত জ্ঞানই বিশুদ্ধ স্থামিষ্ট ও পুষ্টিকর এবং তাহাই স্পর্কে সরস, স্বল ও উন্নত করে, এবং বিমল জ্ঞানই আত্মাকে চিরশান্তি দিরা থাকে। অস্তুণা লোকে কারনিক ও ক্ষণিক শান্তিপ্রদ একটা অবস্থার সহিত পরিচিত হইতে পারে বটে. এবং যাহাকে খোলা জল নামে অভিহিত করা হয়, সেই অবিশুদ্ধ ভক্তি জলের আখাদন পাইতে পারে বটে, কিন্তু ভাচা কখনট প্রাণের স্বাস্থ্য লাভের উপায় নহে। অস্বাস্থ্যকর পানীয় জল পান ক্রিয়া পিপাসার হাত এডাইয়া কোন মতে প্রাণকে मासमा मिवात धात्रि वाहारमत आह्न, जाहाता कथनहे प्रतम्भी বুদ্ধিমান নামে পরিচিত হইবার উপযুক্ত নহেন। উপযুক্ত চিকিৎস্ক বিক্লুত পিপাসায়িত রোগীকে কথন্ট ভাহার প্রার্থনীর অবিভদ্ধ অল প্রাদান করেন না। কিন্তু যাহাতে বিভদ্ধ প্রণাণীতে উপযুক্ত ঔষধ সেবনে তাহার পিপাসার নিবৃত্তি रम, जारामहे वावचा कतिया थाटकम धावः कारारे कन्यानकत्। শাখাশাভ ও শিশাসার প্রাকৃত শান্তি সেই উপায়েই হর। षानाष्ठकः मास्ति वा व्यात्वत्र मास्नै। नात्कत्र नित्क कीवन्ति स्वत

জ্ঞান লোকেরই গতি হইরা থাকে। পিপাসার সময় তাহার। যে কোন জল পাইবে, ভাছাই পান করিবে,এরপ ভন্ন দেখাইরা লাভ कि अवर छाहाट छेरमाह मिशारे वा कम कि ! छाहा छ **हिब्रमिन्हे इहेब्रा व्यानिएउट्डा** लाक् छ नाना প्रकारत यागा জলই পান করিতেছে। কিন্তু তাহা কি সুবুদ্ধির কাজ হট-তেছে ? না ভাহা ছারা পরিণামে স্বাস্থ্য লাভের কোন উপায় হইতেছে, বৃদ্ধিমান ব্যক্তির সেরপ পথ অবলম্বন করা কথনই উচিত নয়, যাহা কেবলই আরামপ্রদ, কিন্তু স্বাস্থাকর নয়। যে কোন উপায়ে একমাত্র শান্তি লাভ বা পিপালার নিবৃত্তিই উদ্দেশ্য হওয়া উচিত নয়। কিন্তু আছার প্রকৃত স্বাস্থাও কল্যাণ गां छ दे की वत्त्र फेल्म्था। এह फेल्म्था माधन कतिवात क्या पिन নিরস্তর শুক্ষ মরুভূমির উপর দিয়াই দাইতে হয় বা শুক্ষ বালুকা द्राणि थुँ फ़िया थुँ फ़ियारे निखक कर পारेट रय, जाहारे कि कर्छना नरह १ এবিষয়ে চাতকের দৃষ্টাস্থই আমাদের অভ-कत्रीत्र। त्म भिभामात्र व्याग हात्राहेट्न. নিচ করিয়া জলপান করিবে না। নির্মাণ বৃষ্টিধারাতেই তাহার পরিতৃপ্তি। व्यामात्त्र डेलान्डोगान्त्र त्मरे ८५डी করাই উচিত যে যাহাতে লোকের সেই বিশুদ্ধ পানীয় জলের অন্বেষণে প্রবৃত্তি হয়: তাহার পরিবর্ত্তে যাদ উচ্চাবা लाक (याला क्रम थाहेर्त विनया छय-अन्मंन करतन, जानार क কি ফল ? লোকে ত ঘোলাজন থাইয়া আাসতেছে এবং অমুস্ত ও হইতেছে। অস্ত্রু হইয়া পিপাদা নিবৃত্তি করিয়া কি লাভ ? ইহাই প্রার্থনীয় যে যাহাতে লোকে বিশুদ্ধ জল প্রাপ্ত হয় এবং তাহার জন্ম চেষ্টা প্রায়ণ হয়, তাহারই জন্ম উৎসাহিত क्ता, १९ श्रीमर्भन क्ता। नज्या विश्व महत्क निन्ता कतिया তাহাকে শুক বালুকা নামে অভিহিত করিয়া কিছুই লাভ,নাই। কোন উদ্দেশ্যই তাহাতে সিদ্ধ হটবে না ৷ তাহাতে নালোকের বিশুদ্ধ মতের দিকে যাইবার জন্ম প্রবৃত্তি চইবে, না ভক্তি পণ আশ্রম করিতে ( যাছাকে যোলা কল নামে অভিহিত করা হয় ) প্রবৃত্তি হইবে। আমাদিগকে ইচাই দেখাইতে চইবে যে বিশুদ মতের সহিত ७ क তাব কোন ঘনিষ্ট অচ্ছেল্য সম্পর্ক নাই। এবং ভক্তির সহিত ও আবিলভার কোন নিভা অচ্ছেদ্য সম্পক नाहै। अवश्मर्यामा अहे खार्तिहे लाकरक छैश्माहिक कतिएक हहेरत (य विक्षक ख्वान्तित পথেই চ¦লতে হইবে। তাহাতেই শাস্ত্রিপ্রদ বিমল ভব্তি লাভের সম্ভাবনা আছে, অক্সণা আপাততঃ भाखि পाইলেও রোগের হাত হইতে উদ্ধারের উপায় নাই।

প্রচারক দল বৃদ্ধির প্রয়োজনীয়ত।—বাদ্ধধর্ম প্রচারের জন্ম বিধাতা ভারত-ক্ষেত্রের জমি প্রস্তুত করিতেছেন, এখন প্রচারক চাই। ভারতের চাবিদিকে দলে দলে প্রচারক চাইতেছে। পঞ্জাবের দ্রাভাগণ তথার এক ব্রাহ্ম-সাধনাশ্রম প্রাত্ত করিবার জন্ত স্মামাদিগকে অনুরোধ করিয়াছেন। এসমর উপযুক্ত বহু প্রচারকের আবশ্রক। প্রচারকের ব্যরূপ জ্ঞাব দেখা যাইতেছে এবং চারিদিক হইতে প্রচারকের জন্তু যেরূপ চিটির উপার চিটি আসিতেছে, ভাহাতে বোধ হর অচিরেই প্রভ্

প্রস্তুত হউন। মহর্ষি দেবেক্স নাথ আপনাদিগকে কি বলি-তেছেন, মনোযোগ পূর্বাক প্রবণ করুন;—

"যাহাবা অন্যাপি ব্রাহ্মধর্মের আশ্রের না নইরাছে, তাহাদিগকে তাঁহার আশ্রের আনিতে সাধ্যাম্পারে যন্ত্রান্ হও;
যাহাতে ব্রাহ্মধর্মের সত্য পৃথিবীর এক সীমা ছইতে সীমান্তর
পর্যান্ত প্রচারিত হয়, তাহাতে শরীর মন সমর্পণ কর। কেছ
প্রবিকা হইয়া, চুম্বকামুকারী আগ্রিমর বাক্য সকল নিঃম্বসিত
করিয়া সকলের চিত্তকে আকর্ষণ কর, কেছ বা স্থানিপুণ প্রন্থকার
হইয়া ব্রাহ্মধর্মের সত্য সকল সকলের মনে মুজিত কর এবং
কেছ বা পর্যাটক পরিব্রাহ্মক হইয়া ক্রমিদিগের ফ্রায় সামান্ত্র
ভৌবন যাপন করতঃ ঈশ্ররের নিমিত্তে সাংসারিক স্থ্য বিস্ক্র্যান
দিয়া, ঘরে ঘরে, ছারে ছারে, ব্রাহ্মধর্মের ক্রম পতাকা উড্টীন
কর, ইছার কোমল ভাব সকল সকলের হৃদয়ে রোপিত কর।
আমাদের ব্রাহ্মধন্ম প্রচারের সময় এই আরম্ভ ইইয়াছে;
এই সময়ে আমরা যেন সকলের সঙ্গে যোগ দিয়া ঈশ্বরের
আভিপ্রায় দিয় করিতে যত্ন করি। আমাদের এই ব্রাহ্মধর্ম্ম

বছ বংসর প্রেমহর্ষি যে উপদেশ দিয়াছেন, ভালা এখনও সম্পূণভাবে কায়ে পরিণত হর নাই। কায়াক্ষেত্র বিশাল বিস্তৃত। বৌদ্ধগণ প্নকাথত হইরা কার্যাক্ষেত্র বিস্তৃত করিতেছেন, মুসলমানগণ জাপানে রাজত্ব বিস্তৃত করিতেছেন; ইংলণ্ডের স্মৃসভা দেশেও শিষাদল বৃদ্ধি করিতেছেন, উপধর্মের সেবকগণ ব্যাঘ্র ভর্লের মুখে প্রাণাদতে যাইতেছেন; ত্রম্ভ বক্ষর মানবের হস্তে প্রাণ হারাইতেছেন; আর ব্রাহ্মগণ নিজের দেশেই হীন মালন তুর্বল হইয়া রহিয়াছেন; সভ্য ধন্মের আলোক পাইয়াও ভালার জন্ত জীবন মন স্মর্পণ করিতে সাহদী হইতেছেন না। এ কলক কতদিন ব্রাহ্মগণ সহিবেন?

লক্ষণ জানা এবং অবস্থালাভ-এক ব্যক্তি ব্যাক্-লভা কাহাকে বলে তাহা জানিবার জন্ত কিজানু হইলে, উত্তরদাতা তাহাকে ভাষায় কিছু না বলিয়া তাহার হাত পা ধরির। পুকুরের হুলে নিকেপ করিলেন। সে হুলে পাড়িয়া, অতি ব্যস্তভার শহিত উপরে আসিবার জন্ম আয়োজন করিতে লাগিল। নানাপ্রকারে তাহার বাস্ততা প্রকাশ পাইতে লাগিল, এবং কতক্ষণ পরে উপরে উঠিল। উত্তরদাতা কছিলেন, "ব্যাকুলতার অর্থ এই।" তুমি জাল হইতে উপরে আংসিবার জ্ঞ ব্যাকুল হইয়াছ। ইহাই ব্যাকুলভার অবস্থা। তথন দে ব্যাকুলতা জিনিস্টা কি অতি সংক্ষেই বুঝিতে পারিল। অনেকে এইরপ ব্যাকুলতার অবস্থা লাভ করিবার জন্ম ব্যগ্র না হট্যা ব্যাকুলত৷ কাছাকে বলে, তাহার লক্ষণ জানিবার জন্ম ব্যগ্র হয়। কিন্তু ব্যাকুলভার লক্ষণ জানাপেক। ব্যাকুল হওয়া বেমন আমাবশুক, তেমনি ঈশ্বর-দর্শন কাছাকে বলে তাহার লক্ষণ জানা অপেকা, ঈশ্বর-দর্শনই প্রয়োজনীর। কাহারও জীবনে সৌভাগ্যক্রমে যদি ঈশার-দর্শন লাভ হয়, তাহার কি ঈশব-দর্শনের লক্ষণ জানা নাই, বলিয়া ঈশবকে চিনিয়া লইবার . জামুবিধা ঘটে গুঁ এ কথা কেছই স্বীকার করিবেন না। কারণ

ঈশ্বর-দর্শন এমন ব্যাপার ভাষা জীবনে ঘটলে আংগ নিজেই ভাছা বুঝিতে পারিবে। জ্যামিভির সংজ্ঞা জানা না থাকিলে कान बक्ती क्लाबन नाम कि छाहा हन छ कह ना दनिए भारत, কিন্তু ঈশ্বর-দর্শন কি সেক্ষপ ব্যাপার ৭ ঈশ্বর-দর্শন ঘটলে লোকের আর লক্ষণ জানিবার অপেক্ষা থাকে না.। যতক্ষণ সেরপ সম্পেহ থাকে, যুভক্ষণ ভাবিরা চিন্তিরা মাথা চুলকাইরা ঈশ্বর দর্শন হইয়াছে কি না, তাহা বুঝিতে হয় বা লক্ষণের সহিত মিলাইয়া লইবার অবস্থাথাকে, ততক্ষণ বৃথিতে হইবে যে, ঈশ্ব-দৰ্শন লাভ হয় নাই। সমুদ্ৰ গ্যনাথী কোন ব্যক্তি ষ্টীমারে আরোহণ করিয়া যদি নিজিত হয় এবং তাহার জাগ্রত হইবার পুর্কেই যদি খীমার সমুদ্রে উপস্থিত হয়, তবে সে ব্যক্তি জাগ্রত হইয়া কাহারও নিকট প্রশ্ন না করিয়াই বুঝিতে ষ্ঠীমার সমুদ্রে উপস্থিত হইয়াছে। অথবা যে ব্যক্তি কথনও পাহাড়দেখে নাই, সে যদি রেল গড়ৌতে যাইতে যাইতে হঠাৎ কোন পাহাডের নিক্টবর্তী হয়, তথন কাছাবও নিকট হইতে জানিবার পূর্বেই সে বৃঝিতে পারে যে যাহা দেখিতেছে তাহা পাহাড়। এইরূপ বিশেষ বিশেষ ঘটনা প্রারই ঘটিয়া থাকে, যাতা অতি সহজেই বুঝিতে পারা আবশ্রকতা নিক ট জিজাদার কাচার ও যায়. शांटक ना। झेचेत-मर्नन ७ अक्रभ वााभात या, जाहा वृश्विवात জন্ত কাহারও নিকট জানিবার অপেকা করিতে হয় না। क्रेचत-मर्गन इटेलारे भीवरन পরিবর্ত্তন ঘটিবে। প্রাণে বিশেষ অবস্থা সমাগত হইবে। গকালান করিলে পাপ যায়, কিছ গঙ্গাস্থানের পরেও যদি ভাবিয়া চিন্তিয়া বুঝিতে হর, যে পাপ গেল কিনা, তাহা হইলে গলালানে পাপ যায় এ কথার যেমন কোন মূল্য থাকে না, অথবা যিওঞ্জীটে বিশ্বাসী হইয়া পরিত্রণে পাইলাম কিনা তাহা ভাবিয়া চিস্তিয়া বুঝিতে চইলে, সেই কথার যেমন কোন মূল্য থাকে না, ভেমনি ঈখ্র-দুৰ্লন হইল কিনা তাহা যদি লক্ষণের সহিত মিলাইয়া বুঝিতে হয়, বা মনে কোনরূপ সন্দেহ থাকে, তাহা হইলেও সেই দশনের কোন অবর্থ থাকে ना। जेचंत-पर्मन हिन्छ। कतिया वृद्धिवात विषत्र निष्ठ, কিন্তু তাহা একটা বিশেষ অবস্থা-লাভের ব্যাপার। দর্শন-লাভ হইলে একদিকে যেমন ভাচা পরিকাররূপে বুঝা যাইবে, জন্য मित्क मृत्क कोवरन अप्रतक পরিবর্ত্তন ঘটিবে। अ**स्त्रश** ঈ্যুর-দুর্শন হইরাছে বলিয়া মনে ক্রিয়া নিশ্চিত্ত থাকিলে প্রবঞ্চিত হইতে হয়। বুণা আবাভিমান ও আত্মবিশ্বতি আসিয়া প্রাণকে অধিকার করিবার স্থবিধা পায়। এরপ কালনিক বিশাস যাহাদের হয়, ভাহাদের প্রকৃত দর্শন লাভের জন্মও আরে আকাজকা বা চেটা থাকে না। স্বতরাং প্রাকৃত पर्नन नाट्य स्मृहे वाख हरेट हरेट ; ठाहात सम्मानाणात মুখাপেকী হইরা তাঁহার করণার উপর নির্ভরশীণ হইরাই পড়িরা পাকিতে হইবে। যথন তিনি অমুগ্রহ করিরা দর্শন দিবেন, তথন তাহাবুঝিতে আবে বেশী সময় লাগিবে না। বেশী ঊপ-দেশেরও আবশ্রক হইবে না। প্রাণ নিজেই ভাহা অমুভব করিরা আশ্চর্যাধিত ছইবে এবং জাপনাকে ধ্রু 🍽ন করিরা ক্লভাৰ্থ হইবে।

# मंभामकीय ७ প্राश्व श्रवहा।

### "ধন্মে শ্ৰুতিলব্ধ জ্ঞান''।

একজন বাঙ্গালী ভদ্রলোক আগরাতে বাস করিতেন। শৃতিশক্তির জন্ত তাঁচার বড় প্রশংসা ছিল। বন্ধু বান্ধবে তাঁগাকে শ্রুতিধর বলিতেন। একবার বৃদদেশ হইতে আগরাতে তাঁ হার করেকজন বৰ্দ্ধ পিরাভিলেন। ভাঁগারা আগরার তাজমচল নামক মুপ্রসিদ্ধ সমাধিমন্দির দেখিবার জন্ত অভিশর উৎস্থক চটলেন। কিন্তু সে সময়ে তাজের জীর্ণ-সংস্কার হইতেছিল। একজন ইংরাজ ইঞ্জিনিরার ঐ কার্যোর ভারপ্রাপ্ত হট্রা সেণানে বাদ করিছে-ছিলেন। আগরাবাসী ভদ্রলোকটা সমাগত বন্ধুগণ সমভিব্যাহারে তাব্দের ঘারে উপন্থিত হইয়া দেখিলেন, যে ভাব্দে প্রবেশের ছকুম নাই। ইঞ্জিনিয়ার সাহেব স্বরং বারে দণ্ডার্মান। তিনি ভাঁচার নিকটম্ হটয়। সবিনরে ভিতরে প্রবেশের অনুমতি প্রার্থন। করিলেন, কারণ বঙ্গদেশীয় বন্ধুগণ আর অধিক দিন অব্দ্বিতি করিতে পারিবেন না। ইংরাজ কর্মচারী অনুমতি দিলেন না। যথন তাঁচারা ফিরিয়া আদিতে উদাত, তথন ইংরাজ কর্মচারী বলিলেন-"বাবু, ভোমরা বালালা দেশ চইতে ष्मानिज्ञाह, मार्क्किनिः गारेवात्र शलत नद्धान विनवा मिटल शांत १" व्यागवायात्री वक्की व्यमित वनिरमन ;—"बानि, मार्किनिः गाईएड ब्हेरन इब्ही नथ चाह्न, এक्ही कांद्रारंगाना नित्रा, अक्ही निनि-শুড়ি দিয়া। এক এক পথে এডগুলি আড্ডা আছে" ইড্যাদি। এইরূপে কোণায় গরুর গাড়ি মিলে, তাহার ভাড়া কতু, কোণায় বোড়া পাওয়া যার, প্রভৃতি পৃত্যারূপুত্ররূপে সমুদার সংবাদ দিতে व्यात्रष्ठ कतिरमन। ७४न हेरताक कपाठात्री वनिरमन-वात् তোমরা ভিতৰে এস, আমি বিবরণগুলি লিখিরা লইব।" এই স্থােলে তাঁচাদের ভিতরে প্রবেশ হইরা গেল। তাঁচারা যথন ভাজ দেখিলা বিনিপ্ত চটলেন, তখন নবাগত বন্ধণ আশ্চর্যা-ৰিত চইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন—"তুমি ত দার্জিলিলে কথনও যাও নাই, পথের এত খবর দিলে কিরূপে ! আগরাবাসী বন্ধু বলিলেন--- কমেক মাস চইল একথানা গাইড বৃক (Guide book) পড়িরা ছিলাম, তালা চইতে ঐসকল বিব-রণ শংগ্রহ করিরাছি ।" ভীহারা সকলে ভনিয়া অবাক্ হইরা গেলেন।

একজন যেমন কখনও দাজিলিল না দেখিয়াও পথের সম্পার বিবরণ আফুপৃর্জিক বলিরাছিলেন, সেরূপ ঘটনা সংসারে প্রতিদিন ঘটতেছে। গ্রন্থকার ও মুল্রাকরণণ কলিকাডায় বসিয়া সমপ্র জগতের ভূগোল বিবরণ প্রণয়ন করিতেছেন। তাঁহা-দের করজন পৃথিবীর সে সকল স্থান পরিদর্শন করিয়াছেন ? এইরূপে এক ব্যক্তি একথানি রেলওরের ম্যাপের সাহায্যে ও কতকগুলি গাইড বুকের সাহায্যে সমুদর ভারত্বর্বের সকল প্রধান প্রধান নগরের প্রধান প্রধান করিয়াছ ব্রুক্ত প্রধান প্রধান করিয়াছ ব্রুক্ত প্রধান প্রধান করিয়াছ ব্রুক্ত সংবার করিয়া

সে নিজে হাবড়া হইতে বর্জনান পর্যান্তও কথনও গমন করে নাই।

धर्मद्वारका । दिन्दि मर्जामा अरे नामात्र घरिटल । পদেশে সকলের অভিশর পাণ্ডিতা। तिश्-मयत्नव छेशाव কি জিলাসা কর, অমনি সকত সভার দশলন সভ্য রিপু-দযনের প্রকার ও প্রণালী নির্দেশ করিবার জন্ত অগ্রদর হইবেল। ঈশর-দর্শন কাছাকে বলে প্রশ্ন করিবামাত্র পাঁচজন ঈশর-দর্শনের শক্ষপ নির্ণয় করিতে বসিবেন, গাইড বুকে বাহা পড়িরাছেন, সাধু সলে বসিয়া যাহা ওনিয়াট্ছন, তাহার ব্যাখ্যা कतिर्वत । शाहे उक मृष्टि-धार्मात व्याधा। कता এक कथा, আর ধর্মরীজ্যের পথে নিজে চলিয়া অভিজ্ঞতা ছার। জ্ঞানলাভ করা মার এক কথা। কেবল গাইড বুক পড়িয়া দেশের বিবরণ জানিরা রাখিয়া যেমন মন সম্ভষ্ট হয় না ; তেমনি ধর্মত হ কেবল শুনিরা রাখিলেও চিত্ত পরিভূট হর না। পৃথিবীর কোনও মহাজনই শ্রুত কথাতে সম্ভূষ্ট হইরা থাকেন নাই। আমরা কি চিরদিন পরকে রাস্তা দেখাইব, সে রাস্তাতে নিজেরা कि ठलिय ना? मृङ्ग मितन मृङ्ग भया। भयन कविद्रा यिन प्रिचित्र कित्रमिन (क्वन शाहेफ वृक (मिश्रा शत्र शिक्र शाहेफ) नमाठात्र नित्राहि, निटक वर्षमान भवान ७ यारे नारे, जाहा তাহা হইলে সে মৃত্যু কি ক্ষোভের মৃত্যু হইবে ?

আর এক অর্থে শাল্প সকলকে গাইড ব্রের সহিত তুলনা করা যাইতে পারে। গাইড বুক প্রথমে যখন প্রণীত ছট-য়াছিল, তথন এরূপ ব্যক্তিদিগের ঘারাই প্রণীত হইরাছিল, বাঁছারা সচকে ঐ সকল স্থান পরিদর্শন করিরাছিলেন। তাঁছা দের গাইড বৃক প্রণয়নের উদ্দেশ্ত ও এই ছিল যে, অপরে তাঁহাদের সংকলিত বিবরণ পাঠ করিয়া সেই সকল ভান তাঁহাদের প্রণীত গ্রন্থাবলী হইতে বিশেষ সাহাযা লাজ করিবে। শান্তকারগণ ও সাধুগণ এই জক্ত শান্ত রচনা করিরাছেন, ও ধর্মের উপদেশ দিয়াছেন যে, তাহা পাঠ ও শ্রবণ করিয়া সাধারণ জনসমাজে ধর্মাসাধনের প্রবৃদ্ধি ত হইবে, এবং যাহারা ঐরপে ধর্ম সাধনে প্রবৃত্ত হইবে, তদ্যারা ভাহাদের বিশেষ সাহায্য হইবে। কিন্তু লোকে ঘরে বসিয়া গাইড বুক পড়িয়া অপরকে যেরূপ পথের বিবরণ বলে, আমবা यिन मिटे छार्व भाक्ष । अभिभागान वार्यकात कति, जाका ছইলে কি ভাছার অপব্যবহার করা হয় না ?

অথচ এইরপ অপব্যবদার আমর। প্রতিদিন করিতেছি। পরকে উপদেশ দিবার প্রবৃত্তি এমনি প্রবল যে, আমরা পণ না দেখিরাও পরকে পথের উপদেশ সর্ব্রদাই করিতেছি। এইরপ করিরা করিরা অবশেষে নিজে দেখিবার প্রবৃত্তি ও আব থাকে না। ধর্ম জীবনের এই বিপদ হইতে রক্ষা পাইবার জন্তু সর্ব্রদা সতর্ক থাকা আবশ্রক।

### নিৰ্জন চিন্তা।

#### (करेनक महिनानिधिछ।)

যথন মোহ নাশ হর, তথন বাসনা-কণ্টকের তীক্ষ
আঘাত উপেক্ষা করিয়া তোমার আলারের দিকে চুটিয়া
যাই। অমনি কে গো ভূমি, আমার আলিকন কর ? জীবনের
সে কি মধুমর অবস্থা, হলর অমৃত সাগরে ভাসিতে থাকে।
চির বিরহীর শেষ মিলনে কি এত স্থথ হয় ? সে স্থেধর বর্ণনা
জগতের কোন শাল্লে কি নিখিত আছে ? চারিদিক মধুর,
কে বলে ভূমি নাই ? এই ষে মধুর আলিকনে আবদ্ধ করিয়াছ।
এ মিলনের জীবস্ত স্থ্ধ, জাগ্রত ভাবে পাইয়া কে বলিবে
"ভূমি নাই ?"

তিনি ধক্ত, তাঁছার অনুপম সত্য-জ্যোতি সমস্ত মানবের হৃদরে ঢালিরা দিতেছেন। যাহারা আঁধারে পথ হারা হইরা বিচলিত হইরাছে, তাহাদিগকে প্রকৃত পথ দেখাইরা দিতে-ছেন। যে তাঁহাকে পাইল সে তো অনস্ত আখাস পাইরাছে; অনস্ত স্থাধ স্থী হইরাছে; যে তাঁহাকে পাইল না তাহার কি হইবে ? হৃদরের মধ্যে প্রবেশ করিরা দেখি, চির শাস্তির আলর কোণার, চির প্রেম কোথার জাগে, চির বসস্ত কোণার বিরাজ করিতেছে?

অসমরে সে বে চির করার আক্রমণে দীপ্রশিরা হইরাছে, করিবার কত ছিল কিছুই সে করিতে পারিল না; অকাল বার্দ্ধকা তার উৎসাহ যুক্ত চকু নিপ্রাহত করিরা দিতেছে, শত শত মরণ কীট জীবনের গ্রন্থিতে গ্রন্থিতে প্রবেশ করিতেছে; সে প্রতিপদে বিঘূর্ণিত হইতেছে; তার মলিন হাদয়খন মলিনতার নিবিড় আঁধারে দিন দিন আছের হইতেছে। কি উদ্দেশ্তে সে কঘন্ত জীবন, পাপভারাক্রান্ত প্রাণ লইরা এখনও সংসারে রহিরাছে? এরণ জীবন কত কাল সে বহন করিবে? কিছু বাহ্য পদার্থ বিনষ্ট হইরাছে তাহাতে ক্ষতি কি? পার্থিব বল ছারা কেহু কখন ধর্ম সংগ্রামে বিজয়ী হইতে পারে না; ধন্মের নব জ্যোতিতে হাদয় গৃহ আলোকিত হউক গভীর আঁধারে প্রকৃত পণ পাইবে, আর কিছু না পার পথের কণ্টকটি দূর করিও প্রভুর গ্রিরকার্য্য হইবে।

মান্তব পাপে পড়িরা যথন পরমেশ্বের নিকট যার,
কেমন সভরে লজ্জার সান হইরা পড়ে, মনে করে যাব না,
ফিরিরা যাই, ডুবেছি ত আরো ডুবি। কিন্তু পাপী যদি দরামরের দরার উপর নির্ভর করে, আশার ক্ষীণ রিশ্মি লইরা মলিন
প্রাণে তাঁহার সরিধানে যার, তবে কি হর,—না মরণোমুথ বাজি
যেমন কথনও কথনও বেঁচে উঠে, ধীরে ধীরে তার প্রয়ানোম্থ প্রাণ ফিরে আসে, ধীরে ধীরে শরীরে বল সঞ্চার হর,
সেইরূপ পাপ মন একটু একটু করিরা পুণাের বল লাভ
করিতে থাকে।

করণামগী জননী কি আমাদের সংসারারণাে কেলে দিয়ে অন্তহিত হইরাছেন? তাহা তো নয়। মানবই তাঁহাকে চার না, তাই সংসার ত্থের হয়। মানব পালের গভীর কুপে পড়িরা হাহা-কার করে, আশান্তির আদ্ধানের চিরদিন ডুবিয়া থাকে। মানব

যদি একবার পূর্ণ বিখাসভরে জগন্মাতাকে দেখিত, তাঁছা হইলে শান্তি, আনন্দ, আশাপ্রাপ্ত হইত।

বদি ভূমি মনে কর আমি পরের সেবা করিব। গুরু সংকর
করিবে তো ভোমার সেবাকার্য্য ভালরপ স্থানপার হইবে না—
ভূমি প্রভুর স্থাভতা চইতে পারিবে না। যদি ভূমি ঈশারের প্রেমে
বিশ্বপ্রেমে আপনাকে নিমজ্জিত করিয়া থাক, সকলে আমার
প্রেমমর পিতার সম্ভান যদি এ ভাবে জগৎ সংসারকে দেখিতে
পার, ভবে দেখিবে ভোমার উদ্দেশ্য সফল হইবে। কার্য্য স্থানকরূপে সম্পার হইবে, সুক্রের ফল প্রস্ব করিবে।

প্রকৃত গলাস্থান তাহাই যাহাতে সেই শুদ্ধ বুদ্ধে অবগাহন করিয়া হদর পুণাপ্রবাহে স্থাত হর, মুখ্নী ব্রহ্মানক জ্যোভিতে জ্যোতিমান হইরা যার। সে গলাস্থানে কত কোটী কোটী পাপ বিধৌত হইরা, প্রোণে পুণাের সঞ্চার হর। ব্রহ্ম সহবাস জনিত যে আধ্যান্মিক গলাস্থান হর, তাহার ফল ইহকাল পরকাল অনন্ত-কাল পর্যান্ত স্থানী হয়।

সংসারে থাকিরা বিবেককে উজ্জন করিতে ছইবে। বুদিকে
মার্জিত করিব, কচিকে উন্নত করিব, পাপকে কর করিব,
অব্যেমের পরিবর্ত্ত প্রেম আনিব, জোধের ঔবধ কমা আনিব,
অনৈক্যের হলে এ কতা আনিব, অসহিফুতার পরিবর্ত্তে সহিষ্

ইইব। এত শিক্ষা যে সংসার আমাদিগকে শিধাইতেছে, সে
সংসার পরিত্যাগ কর। কি কাহার ও উচিত ?

পাপী যখন পাপের তীর যাতনার ছট ফট করিতে থাকে, তখন যদি কোন মাহেজ কণে সে একবার বিবেক কর্ণ পাতে, তবে তাহার মোহান্ধকার ভেদ হইরা যার, জ্ঞাননেত্র প্রকৃতিত হর, সে তানিতে পার জগভজননী ডাকিতেছেন, তার সকল পাপভর দুরীভূত হর, সকল ত্থে যন্ত্রণার অবসাম হয়। চিরানক্ষ চিরপ্রেম তাহার প্রাণের ভূষণ হর।

পর্মেশ্ব এমন একটা গুণ আমাদের মণ্যে দিরাছেন যে;
যদি আমি উচ্চ আশা প্রাণে ধারণ কার, তাহাতে কিছু না
কিছু উরত চইবই হটব। অতএব নিরাশ না হইরা যে যতটুকু
পারি উচ্চ আশায় উৎফুল হইব। কেন না আত্মা অমর, কুঞ্জা
লইরা থাকিলে আত্মার অধাগতি হইবে। আত্মা অমর
রাজ্যের যাত্রী; উচ্চাকাজ্জা তাহার সম্বাণ সাধুসংকরের সহার
লশ্বর। স্থতরাং তাহার ফণ নিশ্চর ফ্লিবে।

যদি আমি ধণ্মে দৃঢ় হই, তবে আমার ভর কি ? ঐ পাপ আসিতেছে ঐ তঃধ আসিতেছে ভর কি ? ধণ্মধণ্মে যদি আরো আফাদিত থাকে তবে পাপ কি করিতে পারে ?

এ সংসার কি ভয়নক স্থান। ঐ পাপানল, ঐ জ্বাস্থির প্রথম বিষ, ঐ শোকের হাদয়ভেদকারী জ্বালা; অবিশ্বাসের তীর গরল, ছংথের করাল মৃত্তি; মৃত্যুর ভরবেহ ব্যাদান। এই ভয়ানক সংসারে যদি সেই দয়াময় শাস্তিময় প্রেময়র দেবভাকে জ্বলম্বন না করি, তবে আ্লাকে চারেদিকে প্রচণ্ড উদ্ভাপ হইতে রক্ষা করিব কিরুপে ?

ক্ষেণ বাসনা ত্যাগ করিলে ধর্মজীবন লাভ করা বার না। বাসনাকে করতলগত করিরা বলি জগভের হিতরভে নিযুক্ত করা যার, তবেই প্রকৃত ধর্মজীবন হয়। কেবল বাসনা ভ্যাগ করিরা ওড়িপিতের স্থার বনিরা থাকিলে ধর্ম হর না। প্রথমে আপনার ছরম্ভ হানরকে বৃশীভূত কর, তবে জগতের কণ্যাণ করিতে পারিবে, নিজের মহার্য উদ্দীশ্ক কর তবে সহজ্র মানবকে আরুই করিতে পারিবে।

মানব স্থাধীন, পশুরা বন্ধ। পশুদিগের যে নিরমে বন্ধ করিয়াছেন, তাহারা সেই নিরমেই বন্ধ আছে। কিন্তু মানবের পক্ষে
তাহা নয়, মানবকে স্থাধীন করিয়াছেন, ইচ্ছা হয় পাপের দিকে
বান্ত, ইচ্ছা হয় পুণাের দিকে কিরে এস। স্থাধীন ইচ্ছার সঙ্গে
থিনি প্রবৃত্তিকে জয় করেন, তাঁরই পুরস্কার ধর্মানন্দ। ধরিয়া
বাধিয়া যে প্রেম হয় সে তাে প্রেম নয়। যিনি স্থাপনা স্থাপনি
প্রেম করেন, সেই প্রেমই আসল প্রেম। প্রাক্ষত প্রেমিক সয়ল
প্রেম চাহেন। মানব স্থাধীন ইচ্ছার সঙ্গে যথন প্রেম দান
করেন ভ্রথনি তিনি তাহা হাত পাতিয়া গ্রহণ করেন।

যৌবনকালে যেরূপ মনের সমস্ত শক্তি জাগ্রত হর, তাহাতে যদি ধর্মভাব প্রক্টিত না হর, তবে সে যৌবন পিশাচত্ত্ব পরিণত হুইবে। যৌবনে যেরূপ তেজ ও উৎসাহে ঈশবের প্রির কার্য্য সাধন করা যায়, বার্দ্ধক্যের অবসম্বতার তাহা সম্ভব নহে।

যিনি কর্ত্তবাবান সহস্ররপ কর্ত্তবা মধ্যে তিনি ডুবির । থাকেন, কিন্ত ত্রিসন্ধাা দৃচ নিরম করিয়া পিতার নাম করেন—
শত কার্য্যের মধ্যে এক একবার ঈশবের কার্য্যে আত্মাকে ডুগাইরা দেন, তাহাতে কর্ত্তবার কর্কশতার মধ্যে কত সরস ভাব উদর হয়।

বিখাল ভক্তি প্রেম ধ্যান ধারণার যতই একনিষ্ঠতা বৃদ্ধি 
করে ; ততই আশ্চর্যারপ উন্নতি হইবে। দিন দিন আধ্যাত্মিক 
রাজ্যের অমৃণ্য রত্ম সকল হারা হৃদর গৃহ অপূর্ব্ব শোভার 
ক্রশোভিত হইবে। কিন্তু সাধক যদি ইহাতে গর্বিত হরেন 
তবে সর্বনাশ। যাব ধন তাঁর কাছে ফিরিয়া যার সাধক যত 
উচ্চে উঠিয়াছিলেন পতন হইবে, তত নীচে। সেই দেব দেব 
পরম দেবের ক্রপার আমার আধ্যাত্মিক উন্নতি হইয়াছে এই 
বিখাসে উৎসাহিত হইয়া যিনি আননদ করেন তারই মঙ্গল।

ঐ দেখ বজ্ঞ আগিয়া ভক্তের মন্তক বিদীর্ণ করিয়া গেল;

শত শক্ত শাণিত অন্ত হৃদর বিদ্ধ করিল, পৃথিবীতে মন্তক
রাখিবার স্থানটুকুও রাহল না, তথাপি কি প্রশাস্ত কি গন্তীর

মুখে এফই কথা। "ভোমার ইচ্ছার জর হউক।" তাঁহাকে

না পাইলে তাঁহার অক্ষয়, অমর, অমন্ত, সুধা শান্তি প্রেম না

পাইলে কি সাধক এত নির্ভন্ন নিশ্চিন্ত হইতে পারেন 
 ধন্ত

সাধু ভক্তেরা। তাঁহারা ভরকর পরীক্ষানলে বিদ্ধা হইরাও

প্রত্যক্ষরণে জগতের সমুখে প্রমেশ্বরকে দেখাইয়া গিয়াছেন।

এবং কালের অক্ষর পটে চিরদিনই দেখাইবেন।

মনে যদি কুভাব জন্মে, মনেই থাক্, যদি কুভাবের অনুযারী কার্যাকর, ভোমার জীবন বিষ উদগীরূপ করিবে, যতক্ষণ সপাবষ উদগীরপ করে না, ততক্ষণ তাহা বিষ বটে। কিন্তু অপরের অনিষ্ট করিতে পারে না। যথন বিষ ঢাগে তথনই সর্বনাশ হয়।

বাদ্যযন্ত্রে স্থনিপুণ বাদক যথন তাহাতে আঘাত করেন;
কি স্থক্তর শ্বরশহরী উঠে—নিতাস্ত, কর্কণ প্রাণেও সে শ্বর-শহরীর আঘাত হইতে থাকে; তেমনি এ স্থান্যত্রে করে বিনেক বাদকের আবির্ভাব হটবে, বাহার এক আঘাতে হাদরহিত পুণা-প্রেম পবিত্রতার ধ্বনি ধ্বনিত হটরা বিমুগ্ধ করিবে।

# সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্ব্বাহক সভার ২য় ত্রৈমাসিক কার্য্যবিবরণ।

#### १ ८५५८

বিগত তিন মাস নিম্নলিখিত ভাবে কাৰ্য্যনিৰ্ব্বাছক সভা কাৰ্য্য সম্পাদন করিৱাছেন।

এই সমরে কার্যানির্কাহক সভার ১৩টা সাধারণ অধিবেশন হইয়ছিল। পূর্ব্ব পূর্ব্ব বংসরের স্তার এবার ও এই তিন
মাসের মধ্যে তুইটা উৎসব হইয়া গিয়াছে। প্রথমটা বাঙ্গালা বর্ব
শেষ ও নববর্ব উপলক্ষে ছিতীয়টা সাধারণ ব্রাহ্মসমাব্দের ক্রেরাংসব। প্রথম উৎসব উপলক্ষে ৩০শে চৈত্র ভারিথে অপরাহে
বাবু ক্রফকুমার মিত্র মহাশর "ব্রহ্মশক্তির পরাক্রম" বিষরে
এক বক্তৃতা করেন। পরদিন প্রাত্তে সমাজমন্দিরে উপাসনা
হয়। বাবু সীতানাথ দন্ত মহাশর আচার্যাের কার্য্য
করেন। রাত্রে বাবু ক্রফকুমার মিত্র মহাশর আচার্যাের
কার্য্য করেন। ১লা বৈশাথ প্রাত্তে বাবু উমেশচক্র দন্ত
মহাশর উপাসনা করেন। অপরাহে বাবু সীতানাথ দন্ত ও
নবন্ধীপচক্র দাস মহাশর হিন্দু ও বৌদ্ধ শাস্ত্র হইতে পাঠ করেন।
রাত্রে শ্রীয়ৃক্ত লছমন প্রসাদ সাধারণ ব্রাহ্মসমান্কের প্রচারকপদ্দে নিযুক্ত হন। তত্রপলক্ষে যে বিশেষ উপাসনা হয়

ছিতীয় উৎসব উপলক্ষে ১লা জৈচ রবিবার প্রাতে উপাসনা হর। তাছাতে বাবু নবছাঁপচক্স দাস মহাশয় আচার্যোব কার্য্য করেন। রাত্রে বাবু শশিভ্ষণ বস্থ মহাশয় উপাসনার কার্য্য করেন। পরদিন সাধারণ আক্ষাসমাজের জন্মদিনে প্রাতঃকালে বাবু উমেশচক্স দত্ত মহাশয় আচার্যোর কার্য্য করেন। অপরাক্ষে পাঠ ও আলোচনা হয়। রাত্রে উপাসনা হয়, তাহাতে বাবু নগেক্স নাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশয় আচার্যোর কার্য্য করেন।

১ম ত্রৈমাসিক রিপোর্টে আগত করা হইরাছিল, যে মফখল ব্রাহ্মসমাজের Trust Deed গুলি একত্র করিরা মুদ্রিত করিবার ব্যবস্থা করা হইতেছে। ইতি মধ্যে অনেকগুলি Trust Deed পাওয়া গিরাছে এবং তাহার অধিকাংশ ছাপা হইরা গিরাছে। আশা করা যার তাহা শীঘ্র প্রকাশিত হইবে।

প্রচার—বিশেষ আনন্দের বিষয় এই যে বিগত নববর্ষের দিনে আমাদের প্রজাম্পদ বন্ধ প্রীযুক্ত লছমন প্রাসাদ সাধারণ আক্ষণমাক্ষের প্রচারকপদে অভিষিক্ত হইরাছেন। তিনি ইতিঃ পূর্ব্বে প্রায় ৮ বংসর উত্তর্গ পশ্চিমাঞ্চলে আক্ষণর্ম প্রচার করিতেছিলেন। বিগত বংসর তিনি প্রবেশার্থী প্রচারক বলিরা গৃহীত হইয়াছিলেন। অংপরে যথাবিহিত ভাবে সাধারণ আক্ষদমান্দের প্রচারক রূপে গৃহীত ও অভিষিক্ত হইরাছেন।

আমাদের প্রচারকগণ নিম্নদিথিত রূপে গত ভিন মাস কার্য্য করিয়াছেন। বাবু নবন্ধীপচন্দ্র দাস। বিগত মাংলাংসবের সমর হইতে অনেকদিন পর্যান্ত তিনি অসুত্র ছিলেন। শরীর সুত্র হইলে কলি-কাতাতে কিছুদিন থাকিরা তৎপরে জলপাইগুড়ি আক্ষসমাজের উৎসবে যান। সেথানে কয়েকদিন থাকিরা উপাসনা, উপদেশ, পাঠ. ব্যাখ্যা এবং আলোচনাদি করেন। একদিন রেলওয়ে ষ্টেশনে কলির ধর্ম এই বিষয়ে বক্তা করেন, এবং আর একদিন বাজারে "আর ঘুমাইও না" এই বিষয়ে প্রকাশ্র বক্তা করেন।

জলপাই শুড়ি হইতে প্রত্যাগমনের সমর নাটোর এবং দিঘা-পাতিয়ার অবতরণ করেন, নাটোবে সমাজের অর্থ সংগ্রহ সম্বন্ধে কিছু কাজ করেন। দিঘাপাতিয়াতে পাবিবারিক উপাসনা করেন এবং একদিন "ধর্মের ছুইদিক"এই বিষয়ে বক্তৃতা করেন। তথা হইতে কলিকাভার প্রত্যাগমন করেন।

বিশেষকপে আহুত হইয়া ত্গলি জেলার অন্তর্গত দোগাছিয়া প্রামে উৎসব করিতে যান। সেপানে কয়েক দিন থাকিয়া উপাসনা, উপদেশ, পাঠ, ব্যাখ্যা ও আলোচনাদি দারা আদ্ধর্ম প্রচাব করেন। একদিন "কার্য্য দারাই মানবের পরিচর" এই বিষয়ে বক্তৃতা করেন। এই সময় ইহার নিকটবর্তী ভিন্ন জিল প্রামে কীর্ত্তন ও উপাসনাদি দারা ঈশ্বরের নাম প্রচার করেন একদিন রহিমপুর নামক গ্রামে "কিরপে প্রমেশ্বরের রূপা মানবকে পরিজ্ঞাণ করে" এই বিষরে বক্তৃতা কবেন।

এ সান চইতে একটা ব্রাহ্মবন্ধ্র অমুরোধে জালিপাড়া ক্ষয়-নগর ও মাধবপুর গ্রামে য্নি, সেথানে উপাদনাদি চন্ধ, একটা বিশেষ অমুষ্ঠান উপলক্ষেত্র ক্ষাকরেন, তথা হইতে বাহিরগড়। গ্রামে যান। এখানে উপাসনাদি করেন। তথা হইতে কলি-কাতার প্রত্যাগ্রমন করেন।

মুর্শিদাবাদ আক্ষাসমাজের সাহুৎসরিক উৎসব উপলক্ষে তথার আহত কইয়া যান, সেথানে কয়েক দিন থাকিয়া উপাসনা উপদেশ ও আলোচনাদে দ্বারা ধল্মপ্রচাব কবেন, একদিন স্থানীর টাউনকলে "পবিত্রাপের সঙ্কেত" এই বিষ্ণার বক্তৃতা এবং বাজারে "মানব আপনার কার্য্যের ফল আপনিই ভোগ করে" এই বিষয়ে প্রকাশ্র বক্তৃতা কবেন। এই সমরে নশিপুর নামক স্থানে ২ দিন পারিবারিক উপাসনাদি কবেন। তথা কইতে কলিকাভা ফিরিবার সময় নলগাটীতে কয়েক দিন থাকিয়া সমাজে ও পরিবারে উপাসনাদি করেন।

একবাব বদ্ধমানে যান সেথানে পাবিবারিক উপাসনাদি করেন। কলিকাতার থাকাব সমর মধ্যে মধ্যে উপাসকমগুলীর সাপ্তাতিক উপাসনাকার্য্য কবেন, কয়েকটী পরিবারে উপাসনাদি করেন, সাধনাশ্রমের নির্দিষ্ট কাজ করেন এবং তদ্ ব্যক্তীত তুটা উৎসবে কাজ করেন।

প্রতার বাহিরেও মধ্যে মধ্যে কোন কোন স্থানে উপাসনাদি করেন। ভ্রানীপুর স্থ্যরবন সমাজের উৎসবে এক বেলা উপাসনার কার্য্য করেন।সম্প্রতি নোয়াগালি গমন করিয়াছেন।

বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়—ফলিকাত। সাধনা-শ্রমে নিম্নলিথিত তিনটা বিধরে তিন দিবস বক্তৃতা;—অকৈয়তা-বাদ থগুন। (২) উপাসনার বিরুদ্ধে আপত্তি থগুন। (৪) সাকার পু নিরাকার উপাসনা। এত্তির, অক্তেয়তাবাদ, ঈশরদর্শন প্রভৃতি বিষয়ে তিন দিবস আলোচনা। সাধারণ আলসমাজ বিশিরে, সমাজের জন্মোৎসব উপলক্ষে উপাসনা ও উপদেশ এবং একটি অভূঠানে আচার্য্যের কার্য্য করেন। ছাত্রসমাজের আলোচনার সভাপতির কার্য্য করেন।

হাজারিবাগ—উৎসব ও অক্ত সমরে সর্বান্তম পাঁচ দিনস ব্রহ্মনন্দিরে উপাসনা ও উপদেশ। এক দিবস কোন রমণীয় ছানে সামাজিক উপাসনা। নিম্নলিখিত চুইটা বিষয়ে কেশব হলে চুইটা প্রাকাশ্ত বক্তৃতা;—(১) সেবাধর্ম। (২) স্টিকৌশল। এক দিবস ব্রহ্মনন্দিরে নাম কীর্ত্তন বিষরে বক্তৃতা।

বংশবাটী—এক্সমন্দিরে উৎসবের উর্বোধন। উৎসব উপলক্ষে কোন ভদ্রণোকের বাটাতে জীলোক ও সর্বসাধারণের উপযোগী উপাসনা ও উপদেশাদি। এক দিবস ধর্মালোচনা। উৎসব উপলক্ষে গড়বাটাতে প্রকাশ্র বক্তা। বক্তার বিষয়,—
'নীতিহীন ধর্ম, ও ধর্মহীন নীতি।'

শিবপুর। (জেলা হগলি) জমিদার মহাশ্রের বাটীতে বজ্ঞা। (বজ্তার পুর্বেও পরে সংগীত ও কীর্ত্তন) এত্তির ধর্মবিষয়ে পুত্তক রচনা করিয়াছেন। আহ্মসমাজের সভ্য এবং সর্ক্তান্ত লোকের সহিত ধর্ম ও সামাজিক বিষয়ে আলোচনা করিয়াছেন।

বাবু শশিভূষণ বস্তু—কলিকাতা—মন্দিরে ছই দিন সাপ্তাহিক উপাদনা ও সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জন্মদিন উপলক্ষে একদিন আচার্য্যের কার্য্য করেন। কোন কোন পরিবাবে উপাদনা করেন। পতিকায় ধর্মবিষয়ক প্রবন্ধ লিথিয়াছেন।

বশুড়া—বংসরের শেষ দিন ও নববর্ষ উপলক্ষে উপাসনা করেন। কোন কোন পরিবারে উপাসনা, উপদেশ প্রদান বশুড়া সমাজের উৎসবোপলক্ষে করেক দিন আচার্য্যের কার্য্য করেন। উমসন হলে "ব্যক্তিগত ও সামাজিক উরতি" সম্বন্ধে একটা বক্তৃতা করেন। সুলগৃহে "ছাত্রজীবন কিরুপে গঠিত হর" সম্বন্ধে ছাত্রদিগের জন্ম একটা বক্তৃতা করেন। আধ্যাত্মিক বিদ্যালয়ের উৎসবে "অধ্যাত্ম জীবন কিরুপে গঠিত হয়" সম্বন্ধে একটা বক্তৃতা করেন। এবং সাধারণ লোকের জন্ম "ধর্ম্মকীবনের মধুরত।" এবং "চরাচর ব্রহ্মাতে পরমেশ্বরের আবির্ভাব দশন" এই মধ্যে একটা বক্তৃতা করেন।

কাকিনীয়া—উৎসব উপলক্ষে করেক দিন সমাজে আচা-র্যোব কার্য্য করেন। কোন পরিবারে বিশেষ অফুষ্ঠান উপলক্ষে উপাসনা করেন ও উপদেশ প্রদান করেন। ধর্মোরতি সম্বন্ধে একটী বক্তৃতা করেন।

দোগাছিয়া—সাধারণ লোকের জন্ত "পরমেশ্বরকে জ্ঞানিকে মাহ্রষ মৃত্যুভর হইতে মুক্তিলাভ করে" এই মর্ম্মে একটা বজ্ঞাকরেন। জালিপাড়ারুক্ষনগরে কোন পরিবারে ২ দিন উপাসনা করেন ও উপদেশ প্রাদান করেন। এবং উক্ত জ্ঞানে সামাজিক উপাসনার দিনে আচার্য্যের কাষ্য্য করেন। তৎপর শরীর অক্ষ্ হওয়ার এবং ভ্যানক বর্ষার জন্ত কিছু দিন ছইল কার্য্য করিতে পারেন নাই।

শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী—২৩শে মার্চ ভারিথে পঞ্জাব যাত্রা করেন; পথিমধ্যে দেওবর, বাকীপুর, বারাণদী,

কর্মাবাদ প্রভৃতি হানে ছই এক দিন করিরা থাকির। প্রচার করেন। এপ্রিলের প্রথম সপ্তাদে লক্ষ্ণে প্রেলিছন। এথানে ছই দিন ত্ইজন আদ্ধব্দুর গৃছে উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। ভানীর রিফাইন হলে একদিন আদ্ধব্দ বিষয়ে ইংরাজীতে বজুতা করেন এবং Bengali Students, Association এ "থুবৈব ধর্মানিভভাৎ" বিষয়ে বাদলা ভাষার বক্তা করেন। এখান চইতে গ্মনকালে চরিছার চইরা লালোরে বান।

লালোর—তিন দিন ব্রহ্মান্সরে ইংরাজী বক্তা হর,—
বিবর—"'Signs of the time." "Regulation of conduct" "Brahmo Samaj, its aim and work" আর এক দিন শিক্ষা সভা হলে "প্রস্তুত শিক্ষা" বিষয়ে ইংরাজীতে বক্তৃতা হয়। তুই দিন সংসদ সভার আলোচনা করেন, বিষয়— "ঈখরের অন্তিখের প্রমাণ" ও "শ্রহ্মাবান্ লভতে আনস্"। তুই দিন জানীয় ব্রাহ্মবন্ধ্বিগের সহিত ধর্মালোচনা করেন। এক দিন মহিলাদিগের সহিত আলোচনা করেন। এক দিন মহিলাদিগের সহিত আলোচনা করেন। মন্দিরে তুই দিন ইংরাজীতে ও তুই দিন হিন্দিতে এবং এক দিন বাঙ্গলাতে উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। তুইজন ব্রাহ্মবন্ধুর গৃতে তুই দিন এবং একটি ছাত্রাবাসে একদিন উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। কানীয় করেকজন ব্রাহ্মকে লইরা সাধনাশ্রমের একটি সহার দল গঠন করেন। একদিন কথকতা সভার হৈতক্তের জীবন সংক্ষেপে বলেন।

দিল্লী--বাবু তেমচন্দ্র সেন নামক একটি বন্ধুর গৃহে শাল্লীর বচন উদ্ভ করিরা উপদেশ দেন ও প্রার্থনা করেন।

আগ্রা—একজন ব্রাহ্মবন্ধুর গৃহে ২ দিন উপাসনা কবেন, আর একজন স্থানীর ডাক্তারের বাড়ীতে শাস্ত্রপাঠ, ব্যাথ্যা আর্থার্থনাদি করেন। একদিন ভিক্টোরিয়া কলেজ হলে "সার্থ-জনিক ধর্ম" বিষয়ে ইংরাজীতে বক্তৃতা করেন।

ঝান্সী—তিন জন ভদ্রলোকের গৃতে শান্ত পাঠ ও ব্যাথ্যা প্রার্থনাদি করেন। মারচাট্টা প্রাইমারী স্কৃল প্রাক্তনে একদিন "ভারতের ভবিষাৎ ধর্ম" বিষয়ে ইংরাজীতে বক্তৃতা করেন।

ইন্দোর—ব্রহ্মন্দিরে "Test of universal religion" বিষয়ে ই'রাজীতে বক্তা করেন।

এলাহাবাদ—একদিন একজন ব্রাক্ষের গৃহে উপাসনা করেন। একদিন মন্দিরে সামাজিক উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। একদিন কারত্ব পাঠশালা হলে, ইংরাজী ভাষার "উদার ধর্ম" বিষয়ে বক্তৃতা করেন।

কলিকাতা—অধিকাংশ সমন্ন সাধনাশ্রমের উপাসনা করিয়া-ছেন। আশ্রমবাসীদিগের শিক্ষা ও কার্য্যের বন্দোবন্ত করিয়া-ছেন। একদিন স্থাবনি ব্রাহ্মসাজ্ঞের উৎসবে আচার্য্যের ভার্য্য করেন। এতন্তির তত্তকৌমুদী সম্পাদন করেন এবং মেসেঞ্জার সম্পাদনে সহায়তা করেন ও সপ্তাহে তিন দিন গীতা ব্যাথাা করিরা পাকেন।

শ্রীযুক্ত লছ্মনপ্রসাদ—প্রধানতঃ গদ্ধে সহরে থাকির। ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করিরাছেন। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জন্মোৎসব উপলক্ষে তথার বিশেব ভাবে উপাসনা করেন। ইতিমধ্যে প্রায় ১০০ শত রোগীকে শ্রবধ বিভর্গ করিবাছিলেন। এভডির

তিনি এলাহাবাদ, ফভেপুর, পৈনতাপুর, ব্যারাটিরা, মারমাধা-পুর, ভাগীপুর, প্রভৃতি স্থানে প্রচার করিরাছেন।

এভত্তির বাবু কালী প্রসর বস্থা, ঢাকা, থানধানাপুর, তিরি, মরমনসিংহ প্রভৃতি স্থানে ও বাবু নীলমণি চক্রবর্তী থাসির। পাহাড়ে থাকিয়া ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করিরাছেন।

নিয়লিখিত স্থান হইতে প্রচারক মহাশরদিগের নিমন্ত্রণ আসিরাছিল;—ত্রহ্মদেশ, দোগাছিরা, বাগেরহাট, কাকিনিয়া, বশুড়া, হাজারিবাগ, জলপাইশুড়ি, মুর্শিদাবাদ, নোরাখালি, ও বর্দ্ধমান।

উপাসকমগুলী—এই তিন মাস ইহার কার্যা নির্মিত তাবে চলিরাছে। গত বৎসর থাহারা আচার্যা ও সহকারী আচার্যা ছিলেন, তাঁচারাই এবংসরের জন্ত পুনর্নিযুক্ত চইরাছেন। বাবু সীতানাথ দত্ত, নবছীপচক্র দাস, বাবু শশিভ্ষণ বস্থ পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী মহাশর এই তিন মাস আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন। বাবু বঙ্কবিহারী বস্থ ও বাবু কৈলাসচক্র সেন মহাশর যথাক্রেমে সম্পাদক ও সহকারী সম্পাদক নির্ক্ত হইয়াছেন। প্রতিদিন সারংকালে ও রবিবার প্রাতে মন্দিরে উপাসনা হইরাছে।

#### উপাসকমগুলীর আর ব্যরের হিসাব।

<b>ভা</b> র———		বার	
मान शांखि	<b>૭</b> ૮૯	বেজন হিঃ খরচ	>•/
ठाँना जानाव	۷٩ ؍	কুদ্ৰ ব্যয়	394/38
মন্দির মেরামত চিঃ	शाश ८	গ্যাদের আলো বি	<b>ः</b> २५
षञ्छीन উপলক্ষে म	ন্দিরের	মন্দির মেরামত হি	: >७८१८) १॥
আলো হিঃ প্রাপ্তি	•	হাওলাত শোধ	201
<b>হাও</b> লাত	500		
		মোট ধৰচ	१९८१८०५
	٥٩٠٠ره	<b>হন্তে</b> স্থিত	कार्या
পূৰ্বস্থিত	١٠٠١١/٠		
			29011/€
মোট জমা	२१०॥/€		

সঙ্গত-সভা—এইসমর মধ্যে সক্তসভার ১০টী অধিবেশন হয়, ১১ই এপ্রিল মকলবার সমাজমন্দিরে বর্ষশেষ উপলক্ষে উপাসনা হওয়ার সক্তসভার অধিবেশন হইতে পারে নাই। উক্ত ১০টী অধিবেশনের প্রথম হাই অধিবেশনে কঠোপনিবৎ পাঠ ও ব্যাখ্যা হয়, পরে ১১টী অধিবেশনে নিম্নলিখিত ৪টী বিষয়ে আলোচনা হইয়াছিল:—(১) ব্রাক্ষদের গৃহ কিবাপ হওয়া উচিত; (২) ধার্ম্মিকের লক্ষণ কি ? (৩) ব্রাক্ষসমাকে পরস্পরের প্রতি প্রীতির যোগ হইবার উপায় কি ? (৪) আমাদের পরস্পর প্রতির যোগ হইবার কার্যাগত উপায়, এই চারিটী বিষয়ের প্রত্যেকটীই ২০ দিন করিয়া আলোচিত হয়।

ব্ৰাক্ষাত্ৰীনিবাস—ব্ৰাদ্ধ ছাত্ৰনিবাসের কাৰ্য্য গভ ০ মান একপ্ৰকার চলিরাছে। ছাত্ৰীসংখ্যা পূৰ্ব্বাপেক্ষা কমিরাছে, এখন ২৭৷২৮ জন হইবে। ইহার আর্থিক অবস্থার উর্জি করা বিশেষ প্রব্যোজন। ছাত্ৰীনিবাসে অন্ততঃ ৪০টা বালিকা আনিকাইছার কার্য্য স্কুচাক্ষরণে চলিতে পারে এরপ আর্পা হর।

ব্দার ব্যবের হিসাব।			
আৰ		ব্যব্	
টাদা আদার	₹8∥•	(थात्राकी, जनशाता	র
ছাত্রীদিগের বেডন	१२०	ও আলোর ব্যয়	৩৭১৸/•
বৃত্তি হি: ●মা	8811•	বা <b>ড়ী</b> ভাড়।	२०१
এককানীন দান	٤,	বৃত্তি হিঃ খরচ	¢8  •
এউমিশন ফী:	e,	বিবিধ ব্যন্ন	9110
হাওগাত	ر ده	ছাত্রীদিগের স্কুলের	বেতনঃ৮্
	***************************************	কর্মচারীর বেতন	२७१।२•
	434		<del></del>
পূৰ্কার স্থিত	<b>અર</b> મત	<b>t</b>	৯৫৬/১•
·		হ <b>ডে</b> হিড	811/50
	からっとんの		

องงหา

দাতিব্য বিভাগ—দাতব্য বিভাগের গত তিন মাদের কার্যা ভালই চলিয়াছে; ১৫টা ছাত্র, ২টা ছাত্রী, ৫টা পরিবাব, ১টা অন্ধ ও একটা কুঠরোগীকে অর্থ সাহায্য করা হইরাছে। বিক্রমপুরের অন্তর্গত বজ্রযোগিনী আমে ওলাউঠার অত্যম্ভ প্রাহ্রভাবের সংবাদ পাইয়া, এখান হইতে বাবু কুঞ্জবিহারী শুহকে ওলাউঠার চিকিৎসার উপযোগী এলোপ্যাথিক এবং হোমিওপ্যাথিক ঔবধ সহ তথার পাঠান হইয়াছিল, ভদ্মারা করেকটা রোগীর চিকিৎসা হইয়াছিল, ঈম্মর ক্রপায় ওলাউঠার প্রকোপ কমিয়াছে। আন্সবন্ধ্রণ পারিবারিক অম্প্রান উপলক্ষে এই দাতব্য বিভাগে কিছু কিছু অর্থ সাহায্য করিলে অনেক উপ্রার হয়। আশামুরূপ অর্থাভাবে অনেক তৃংথীকে সাহায্য দানে বঞ্চিত করিতে হয়।

আয়	ব্যয়ের	হিসাব	1
11.7	.,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	1 1	•

व्य† व		ব্যস্থ———-	
অনুঠান উপলকে		মাসিক দান	<b>७</b> 8∥•
<b>मान</b> वाशि	>>/	এককাণীন দান ও	
এককালীন দানপ্রাপ্তি	७२	বজুযোগিনীর ঔষ-	
বার্ষিক দলে	>6/	ধের মূল্য	ozhee
মাসিক দান	e h •		
			20810c
	2840	হস্তেহিত	२००१२६
পূৰ্ক্ৰার স্থিত	२४७		
			<b>७</b> ၁१५०
	osque.		

সাধন শ্রেম — পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী ও বাবু নবদীপচক্ত দাস মহাশয়ের কার্য্য বিবরণ প্রচারক মহাশয়দিগের কার্য্য বিবরণের সহিত দেওরা হইয়াছে।

শ্রীযুক্ত প্রকাশ দেব—মার্চ মাসের শেষ ভাগে পঞ্জাব যাত্তা করেন। একদিন শক্ষে রিফাইন হলে উর্দৃতে বজ্বতা করেন। ভগবদাশ্রমে হিন্দিতে উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। হরিছার—মিঃ স্থক্তর দাস ভালা নামক এক জন বন্ধুর গৃহে একদিন ও পঞ্জাবী আর একটি বন্ধুর গৃহে একদিন হিন্দিতে উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। লাহোর—ব্রহ্মনালের এক দিন উর্দুতে উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন।
আগ্রার ভিক্টোরিরা কলেজ হলে এবং ব্যাঁজিতে উর্দুতে ব্রহ্মবর্দ্ম
বিষয়ে বক্তৃতা করেন। ইন্দোর—তিন দিন মন্দিরে হিন্দিতে
উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। এতত্তির পঞ্চাব প্রচার
দলের কার্য্যের সাহায্য করেন। কলিকাতা—সাধনাশ্রমে
কথনও কথনও উপাসনা করেন। এতত্তির ধর্ম সম্মীর
প্রিকার সম্পাদনের সহায়তা করেন এবং বালালা ধর্মগ্রন্থ
উর্দুতে অন্থবাদ করেন। পঞ্জাববাসী ব্রাহ্মধর্ম অন্থরাগীদিগের সহিত চিটি পত্র লিখিবার ভার তাঁহার প্রতি অর্পিত
ছিল। তাহা তিনি সম্পার করিয়াছেন এবং সপ্তাহে তিন্দিন
হিন্দি শিক্ষা দিয়া থাকেন।

বাবু মহেজ্ঞনাথ চট্টোপাধ্যার—সাধারণ ব্রাক্ষ্যমাজের ধনাধ্যক্ষের কার্য্য এবং কার্য্যালয়ের অক্সান্ত কার্য্যের সহায়তা করেন
ও করেকটি ব্রাক্ষ পরিবার পরিদর্শন করেন। সপ্তাহে পাঁচ
দিন সমাজমন্দিরে সামংকালে উপাসনারকার্য্য করেন। মধ্যে
মধ্যে আশ্রমের উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন।
এতদ্বির প্রতি শনিবার নিমত। ব্রাক্ষ্যমাজের সাপ্তাহিক উপাসনা
করিয়াছেন।

বাবু গুরুদাস চক্রবন্তী—বাদ্ধবাদক বোর্ডিংএর অধ্যক্ষের কার্য্য করেন, ব্রাদ্ধবাদিক। স্থলে শিক্ষকতা করেন। মধ্যে সাধনাপ্রমে উপাসনা করেন। এতন্তির তত্তকৌমুদী সম্পাদনের সহারত। করিয়াছেন।

বাব্ আদিনাথ চটোপাধায়—শারীরিক অন্ত্তা বশতঃ
কল বায়ু পরিবর্ত্তনের জক্ত লাহোরে গমন করেন। সেধানে
পঞ্জাব প্রচারেযাত্রীগণের সহিত বোগদান করিয়া প্রচারের
সাহায্য করেন। একদিন তথাকার ব্রহ্মনিদরে উপাসনা
করেন। কলিকাতা প্রত্যাগমন করিয়া বিশেষ ভাবে ব্রহ্মি
নিশন প্রেসের ত্রাবধারকের কার্য্য করিতেছেন। মধ্যে মধ্যে
কোন কোন বাড়ীতে উপাসনা করিয়াছেন। একদিন রবিবার
প্রাতে মন্দিরের উপাসনার এবং একদিন সাধানাশ্রমের
উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন। এত্তির তত্ত্বকৌমুদী সম্পাদনের সহায়তা করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত কাশীচক্ত ঘোষাল—নিষমিত রূপে সাধনাশ্রমের কার্য্যাধ্যক্ষতা ও তত্ত্বকৌমুদী সম্পাদনের সংগ্রহণ করিরাছেন। কপন কথন দাসাশ্রমে গিরা রোগীদিগকে উপদেশ দিরাছেন ও সংগীত, প্রার্থনা করিয়াছেন এবং মাণিকতলা সমাজে মধ্যে উপাদনা করিয়াছেন।

এই তিন মাসের মধ্যে সাধনাশ্রমে এক দিন উৎসৰ ক্ইরাছে।
শাল্রী মহাশর সপ্তাহে ৩ দিন ভগবদগীত। পড়াইতেছেন, নগেশ্র বাবু সপ্তাহে হই দিন তত্ত্বিদ্যা সম্বন্ধে উপদেশ দিয়া থাকেন।

#### व्याव वारत्रव रिजाव।

ক্ষা প্রচ প্রচ প্রচ প্রজ্ম বাড়ী ভাড়া ৫৪ প্রাজনীর জিনিস ধরিদ প্রাতন কাগজ বিজের ৮৮ ৬ সালো প্রভৃতির ব্যর ৮৮৮১ •

জনা  আগভার বিজের তথা৶১৫  দামপ্রাপ্তি ২৩৮৮৩  ভিকাপ্রাপ্তি ২৮৮৮৫  আপ্রমত ভির ভির ব্যক্তি		পরচ  অভিথি এবং আশ্রম- বাসীগণের আহা- রাদির ব্যর  ৩৩৩/৮/১০ দাতবা  ১	
श्रेष्ट व्यावि	88 34 • 2/2		8201J.
	82 26/6	হয়েছিভ	

ছাত্রসমাজ—এই তিন মাসের মধ্যে অধিকাংশ সমর বালকদিগের গ্রীমাবকাশ অল্প ইছার কাজ বন্ধ ছিল। ছুটির পর ছইতে এখনও কার্য্য আরম্ভ হর নাই। ছুটীর পূর্ব্বে ওরা বৈশাথ বাবু ভেরম্বচন্দ্র মৈত্র মহাশম "ধর্মজীবনের দারিছ" বিষরে বক্তৃতা করেন এবং ১০ট বৈশাথ তারিথে গ্রীমের ছুটী উপলক্ষে বিদার স্টক বিশেষ উপাসনা হর। বাবু নববীপচন্দ্র দাস আচার্যোর কার্য্য করেন এবং বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র ও কালীশক্ষর স্কুল মহাশের বক্তৃতা করেন।

তব্-কোমুদী ও ইণ্ডিয়ান মেদেঞ্চার—এই তিন মাদে বিশেষ কোন পরিবর্ত্তন হর নাই। যথারীতি পত্রিকা ভাকাশিত হইতেছে।

পুস্তক—নাণীনগরের বাবু কেদারনাথ সরকার "জাভিভেদ"
নামক একথানি পুস্তক সমাজকে দান করিয়াছেন। বাবু কেদারনাথ রায় কত "মাশানভন্ম" ২ ভাগ ১ম সংস্করণ। বাবু নবছীপচন্দ্র
দাস কত "আদ্ধার্মাত্ত্ব" ২র সংস্করণ ও পণ্ডিত সিবনাথ শাস্ত্রী
কত "পুস্পাঞ্জলি" ও "বক্তান্তবক্ষ" নামক পুস্তক ছয়ের
স্বত্যধিকার সমাজ ক্রয় করিয়াছেন।

অনুষ্ঠান - আমরা বতদ্র সংবাদ পাইরাছি, তাচাতে জানিতে পারিরাছি যে, এই তিন মাসের মধ্যে ৭টা জাতকর্ম ও নামকবণ, ৩টা প্রাদ্ধ, ২টা বিবাছ ও ২টা দীকা সম্পন্ন হইয়া গিরাছে!

সভ্য ও সহযোগী—এই তিন মাদের মধ্যে সাধাবণ ব্রাহ্মসমাজের তিন জন সভ্য ও ১০ জন সহযোগী নিযুক্ত ইইরাছেন।

মৃত্যু—বিশেষ ছ:থের সহিত জ্ঞাপন করিতে হইতেছে, বে আমাদের বড়বেলুনবাসী শ্রদ্ধান্দ বদ্ধু বাবু পুণ্যদাপ্রসাদ সরকার মহাশর ইহলোক পরিত্যাগ করিরাছেন। যত দিন শক্তি ছিল তিনি অকাতরে ব্রাহ্মসমাজের জন্ত তাহার জন্মস্থান বড়বেলুনে ও অক্তান্ত হানে ব্রাহ্মধর্ম প্রচারের জন্ত খাটিয়াছেন। পুণ্যদা বাবু আপন সরল বিশাস ও ভক্তিতে সকলের বিশেষ আদরণীয় ছিলেন। তাঁহার অভাবে, ব্রাহ্মসমাজ এক জন সেবক হারাইলেন। ব্রাহ্মসাধনাশ্রম তাঁহার ব্রী ও প্ত্রের ভরণ পোষণের বন্দোবন্ত করিতেছেন। আ্লা করি ব্রাহ্মবন্ত্রণ এ বিবরে, ধ্পাযোগ্য সহারতা করিবেন।

(ক্রম্পঃ)

### ব্রাহ্মসমাজ।

ব্রাক্ষসন্মিলনীর উৎস্ব—২৫এ জ্ন উণ্টাডিলীতে বাবু রাজক্ষ কর মহাশরের বাগানে ব্রাক্ষসন্মিলনীর মাসিক্ উৎসব সম্পর হইরাছে। এই উৎসবে প্রায় ৫০ জন উপস্থিত হইরাছিলেন। পৃর্বাক্তে ৮ ঘটিকার সমর উপাসনা হয়, প্রিযুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত আচার্য্যের কার্য্য করেন, তৎপর আলোচনা হয়। শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাপ শাস্ত্রী আলোচনার বিষয় উত্থাপন করেন, শ্রীযুক্ত বাবু হেরস্বচক্র মৈত্র, কাণীশক্ষর স্কুল, বিপিনচক্র পাল প্রভৃতি অনেকে স্বীয় স্বীয় মন্তব্য প্রকাশ করেন। আলোচনা সময়োপ্যোগী ও স্থাকলপ্রদ হইয়াছিল। অপরাক্তে শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত মহাশয় পাঠ ও প্রার্থনা করেন। তৎপর সকলে গৃহে গমন করেন। এবারের উৎস্বে সকলেই উপকৃত হইয়াছেন।

সাধনাশ্রমের উৎস্ব—গত >লা জুলাই সাধনাশ্রমের
মাসিক উৎস্ব কইয়াছে। প্রাতে ৭ টার সমর পাঠ ও
স্যাধ্যা হয়। তৎপর উপাসনা কয়। শ্রীমুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ
শাস্ত্রী উপাসনা কয়েন। অপরাক্তে পাঠ ব্যাধ্যা হয়। সক্ষার
পর পুনরায় উপাসনা হইয়া উৎস্ব সমাপ্ত হয়। যথন প্রমেশ্বর
প্রাণে উপস্থিত কন, তথনই প্রক্লুত উৎস্ব হয়। তিনি ক্লুপা
কয়ন, ব্যাহ্মগণ প্রকৃত উৎস্ব সন্তোগ করিয়া ক্লুভার্থ হউন।

শিক্ষালয় ও ব্রাক্ষাত্রীনিবাস— এতদিন ব্রাক্ষালক। শিক্ষালয় এবং ব্রাক্ষাত্রীনিবাস ছইটী স্বতম্ব সব কমিটার তত্ত্ববেধানে ছিল। এখন কার্য্যের স্থবিধার জান্ত কর্য্যানির্কাছক সভা এই ছটিকে একীভূত করিয়া একটী কমিটার কর্ত্ত্বাধীন করিয়াছেন। শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী উক্ত কমিটার সম্পাদক নিযুক্ত হইয়াছেন। নৃতন বন্দোবত্তে ছাত্রীনিবাস এবং স্থলের কার্যা স্পৃত্যালাব সহিত সম্পান হইবে বলিয়া অনেকেই আশা করিতেছেন।

প্রচার-- শ্রীযুক্ত বাবু নবন্ধীপচন্দ্র দাস নোয়াথালীব বাবু হরকান্ত বস্ত্রর পুত্রের নামকরণ উপলক্ষে তথায় গমন কবেন। তাঁহার সহিত বরিশাল হইতে বাবু বরদাকান্ত রায়ও গমন করেন। বালকের নাম মোহিনীকান্ত রাখা হইয়াছে। এতছপলক্ষেহরকান্ত বাবু সাং রাঃ সমাজে ২, সাধনাশ্রমে ২, ঢাকা রাজ্মনাজে ২ এবং নোয়াথালী রাজসমাজে ২ টাকা দান করিয়াছেন। নোয়াথালী অবস্থিতি কালে নবন্ধীপ বাবু, হরকান্ত বাবু ও স্থানীয় অক্সাক্ত বন্ধুগণেব বাড়ীতে প্রতিদিন পাঠ ব্যাথাা ও উপাসনাদি করিয়াছেন। তৎপর বরিশালে আগমন করিয়া প্রতিদিন এক এক বাড়ীতে উপাসনা করিয়াছেন এবং ছাত্র-সমাজে কালার নেতৃত্বে চলিব ?" এ সম্বন্ধে একদিন বক্তৃতা করিয়াছেন। বাবু ললিভকুমার বন্ধর ছইট কন্তার নামকরণ উপলক্ষে, আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন। কন্তা ছটির নাম উবাবালা ও নলিনীবালা রাথা হইয়াছে।

বাঁশবাড়িয়ায় উৎসব—বাঁশবাড়িয়া আক্ষমাক্ষের বার্ষিক অক্ষোৎসব সম্পান চইয়াছে। এতছপ্লক্ষে কলিকাডা চইতে বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যার এবং বাবু রেবডীমোহন সেন তথাৰ গমন করেন। উৎসবে উপাসনা, বক্তাদি হয়। নগেন্দ্র বাবু বক্তৃতা করেন।

সাধন-গৃহ প্রতিষ্ঠা—বরিশাল হুটতে বাবু মধুরানাপ লাস লিখিয়াছেন;—"বরিশাল ব্রাহ্মসমাক্ষের প্রচারক শ্রীযুক্ত বাবু কালীমোহন দাস তাঁহার নিজ বাটীতে একথানি সাধন-গৃহ প্রস্তুক্ত কবিয়াছেন। বিগত ২২শে নৈশাথ বৃহস্পতিবার সেই গৃহ প্রতিষ্ঠা হুইয়াছে। তত্পলক্ষে উপাসনা, কীর্ত্তন ও শ্রীভিডোজন হুইয়াছিল। শ্রীসক্ত বাবু মনোমোহন চক্রবর্ত্তী প্রাতে, শ্রীযুক্ত বাবু কালীমোহন দাস মধ্যাক্তে ও শ্রীযুক্ত বাবু ইন্দুভ্বণ রায় সন্ধ্যার পবে উপাসনা করিয়াছিলেন।

কালীমোচন বাবু প্রাতে, মধ্যাহে ও রাজিতে সর্কাণট এই গৃতে বসিয়া সাধন ভক্তন করিয়া থাকেন। এইকপ নির্জ্জন সাধনে দৃঢ়নিষ্ঠা সাধাবণের অফুকরণীয়। আমরা ভগবানের নিকটে প্রার্থনা কবি যে প্রত্যেক ত্রাক্ষেব বাড়ীতে এইরূপ এক একথানি সাধন গৃহ প্রস্তুত হউক।

था जिल्ला जिल्ला - भवरमधातत कुलात मिन मिन था जिल्ला মিশনের উল্লভি হইতেছে। একণে থাসিয়া পাহাডে পাঁচ ভানে পাঁচটী আক্ষসমাজ আছে। ভল্লধ্যে চেৰাপুঞ্জী প্ৰচাৰ আপ্রমের সংশ্লিষ্ট সমাজনী নৃতন প্রতিষ্ঠিত হটয়াছে। প্রতি সপ্তাহে এই সমাজে অনেকগুলি পুরুষ ও রমণী উপস্থিত হইরা থাকেন। গৃহটী কুদ্ৰ বলিয়া বড়ই অন্তবিধা হইতেছে, উপযুক্ত একটা সমালমন্দির নির্মিত না হইলে এই অস্থ্রিধা দুর চট্রেনা। কিন্তু অর্থাভাব বশতঃ এই কার্যো প্রবৃত্ত চইতে भाता याहेरज्ञाह ना। व्यामा कवा यांव (य जान्तवकुतागंद्र माहारया এই অম্ভাৰ শীঘু দূৰ হটবে। বৰ্ষণৰ প্ৰবলভা ৰশভ: মৌদদাইএর আক্ষদমাজ গৃহ ছই বৎসরের মধ্যেই অভিশর কীর্ণ চইয়া পডিরাছিল। তজ্জ্জ শধা চইয়া প্রস্তারের দেওয়াল বিশিষ্ট অপর একটী গৃহ ক্রের করিতে হইরাছে। ভাহা ক্রের ও সংস্কাৰ করিতে আনেক টাকা ঋণ কৰিতে চইরাছে। বাঁহাদের পাসিয়া মিশনেব সঙ্গে সহায়ভূতি আছে, তাঁহাদের निक्रे क्रेट माकाया धार्थना क्या याकेट करहा। नावेकान मिड-এৰ সমাজগৃত পথের ধারে নির্দ্মিত তত্তরাছিল। সম্প্রতি গ্বর্ণমেন্ট দেই রাস্তা বিস্তৃত করিরাছেন। ভজ্জন্ত স্থানাস্তরে একটা নতন সমাজগৃত প্রস্তুত করিতে চইরাছে। তুইজন নতন লোক এই স্থান্ধে যোগ দিয়াছেন। শেলা ত্রাহ্মসমান্তের ৰাৰ্য্য রীতিমত চলিতেছে। তথ্য হইতে ছই তিন জন বন্ধ শাইকানসেউএর সমাজের কার্য্য চালাইবার জক্ত গভ তিন দাস নিয়মিভরপে প্রতি সপ্তাতে আসিয়াছেন। নানা কারণে সৌধার সমাজের অবস্তা ভাল নতে।

করেক দিন হইল রাসনসিং নামে একজন থাসিরা বন্ধু প্রচার কার্য্যে তীবন উৎসর্গ করিবার উদ্দেশে থাসির। মিশনে ধোপ দান করিরাছেন। তিনি অতিশর ব্যাকুল, উৎসাহী এবং কইস্হিষ্ণু। ব্রাক্ষধর্মের সভ্য অঞ্চাতীরদেশ্ব মধ্যে প্রচার করিবার জন্ত তিনি সর্বাদা থাটিভেছেন এবং বাঙ্গালাভাষা শিক্ষা করিতে আরম্ভ করিরাছেন।

আমাদের চেরাপ্সীর চিকিৎসালরের দিকে দিন দিন লোকের দৃষ্টি আরুষ্ট হইতেছে। প্রাত্যক আনক পুরুষ ও রমণী এইখানে ঔষধ লইবার অক্ত আসিরা থাকেন। কেহ কেহ ১০/১২ মাইল দ্রন্তী স্থান হইতে আসেন। গভ ভিন সপ্তাকে দেড় শতের অধিক লোক ঔষধের অক্ত আসিরা-ছিলেন। এখন হইতে এই চিকিৎসালরের অক্ত কলি-কাতা দাসাশ্রম হইতে ঔষধ পাওরা যাইবে।

কিছুদিন চইল থাসিয়া ভাষার ব্রাহ্মধর্ম সম্বন্ধে একথানি পৃত্তিকা প্রকাশিত হইয়াছে। কলিকাভার কোনও বন্ধু ক্ষমুগ্রহ করিয়া এই পৃত্তিকা প্রকাশেব সকল ব্যয় ভার বহন করিয়াছেন। থাসিরাগণ আগ্রান্তের সহিত ইহা প্রাহণ করিতেছে।

চেরাপুঞ্জীর অন্তর্গত নংরিম নামক গ্রামে একটী গৃহ নির্দ্ধিত হইতেছে। তথার শীঘ্র একটী রাহ্মসমাজ স্থাপিত হইবে। সময়ে সময়ে এই স্থানে ভিন্ন ভিন্ন গৃহে রাহ্মধর্ম সম্বন্ধে বক্তুভাদি করা হইয়া থাকে। তাহাতে বহুসংখ্যক পুক্ষ ও রমণী উপস্থিত হইয়া থাকে।

চেরাপুঞ্জী প্রচারজ্ঞাশ্রম-নির্দ্ধাণ এক প্রকার শেষ হইরাছে।
কিন্তু তাহার টীনের ছাদ করিতে এবং একটা উপযুক্ত সমাজমান্দর
নিমাণ করিতে এবং মৌসমাই ও চেরাপুঞ্জী সমাজগৃহের
জন্তু যে ঋণ হইরাছে, তাহা পরিশোধ করিতে অংনক অর্পের
আবশ্রক। আহ্মগণ এবং আহ্মসমান্দের হিত্কে। জ্ঞাণ কি
এই শুভকার্যোর জন্য কিঞিং সাহায্য করিবেন না ?

কলিকাতা ছাত্রসমাজের উৎসব—গত ১৪এ ৪২৫এ আবাচ সাধারণ আক্ষসমাজ মালার, ছাত্রসমাজের বার্ধিক উৎসব সম্পন্ন হইয়া গিরাছে। প্রথম দিন, সন্ধ্যার পর শ্রীযুক্ত বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় "সেবাধর্ম্ম" বিষয়ে বক্তুতা করিয়াছিলেন। পরাদিন প্রাতে শ্রীযুক্ত বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র উপাসনা করিয়াছিলেন, অপরাক্তে শাস্ত্রপাঠ ও ব্যাখ্যা হইরাভিল এবং সারংকালে পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী উপাসনা করিয়াছিলেন।

পত্রপ্রেকগণের প্রতি—তদ্বনেমুদীতে প্রকাশ করি-বার জন্ত আমাদের হত্তে অনেকগুলি পত্র আসিরাছে। তদ্ব-কৌমুদীর কলেবর কৃত্র। স্বীর স্বীয় বক্তব্য বিষয় সংক্রেপে না লিখিলে স্থানের সংকূলন হর না। যাহা হউক প্রকাশবোগ্য পত্রগুলি ক্রমে ক্রমে মৃত্রিত হইবে। লেখক মহাশ্রগণ আমা-দিগ্রু ক্ষমা ক্রিবেন।



৮ম সংখ্যা ১৬**শ ভাগ**। ১৬ই ত্রীণ, সোমবার, ১৮১৫ শক, ত্রাক্ষ সন্থৎ ৬৪।

বাংসরিক অগ্রিম মূল্য ২॥• মফস্বলে ৩ প্রতি বণ্ডের মূল্য ১০

#### একতা ।

আয় ভাই কাছে কাছে দাঁড়ায়ে সকলে, প্ৰাণে প্ৰাণে জাগুক শৰুতি; विवाप विष्कृत्म (पथ पिन यात्र हत्न, দিনে দিনে বাড়িছে হুৰ্গডি। (পरिष्ठ (य महामज नाधिष्ठ (य काछ. সেই মন্ত্ৰ জাগাও হৃদয়ে; পরিহরি অভিমান, রুথা ভর লাজ, সেই মন্ত্রে যাও এক চরে। দেখাও জগতে, সেই মজের সাধনে পাসরিতে পার হে আপনা; সর্বাস্থ ভেটিতে পার প্রভুর চরণে, ধর জন সুথের বাসনা। একতা দৃঢ়তা বিনা কবে সৈ<del>ত্ৰণ</del>ল রণক্ষেত্রে জিনিছে সংগ্রাম ? একতা দৃঢ়ভা বিনা কবে ধর্মবল জিনিয়াছে এই ধরাধাম। একতা দৃঢ়তা তবে কর চে সাধনা ক্ষুদ্র ভাব রাথিয়া পশ্চাতে; পরিচরি স্থপ, স্বার্থ অসার জল্পনা.

# স্ম্পাদকীয় মন্তব্য।

সঁপ নিজে ত্রন্ধের কুপাতে।

একতা ও দৃঢ়তা—কগতে সর্বত দেখিতেছি, একটা বিষয়ের প্রতি যদি দশকনের গাঢ় অহরাগ কয়ে তাহা হইলে, ভাহাদের ব্যক্তিগত বিভিন্নতা সম্বেও তাহারা এক সলে কাল করিয়া থাকে। জনেক পলীগ্রামে সমরে সমরে বারইয়ারি হয়। নশলম সমবয়য় বয়ু একতা হইয়া হিয় করে যে, সাধারণের মিকট চাঁদা বায়া অর্থ সংগ্রহ করিয়া একটা পূজার উৎসব করিয়ে কয়েক দিল যাত্রা, গান আমোদ প্রমোদ চলিবে;

প্রামের প্রক্র রমণী বালক বৃদ্ধ সকলেরই একটা কিছু নৃত্র रमिथवात्र, छनिवात्र, विनवात्र, कहिवात्र विवय हेरेटव ; श्रामा क्रीव-নের সমভাবাপর ভাব করেক দিনের জস্ত একটু তিরোহিত **हरेता मन्यम युवक এইऋभ এकটा সংকর ऋगत्र नहेन्ना मन-**ः বদ্ধ হইল। পরস্পারের উৎসাহে পরস্পার উৎসাহিত। কে নেতা কে নীত এ চিন্তাই তাহাদের অন্তরে উদিত হয় না। কিরূপে কার্য্যোদ্ধার করিতে হইবে, এই চিস্তাই সকলের অন্তরে প্রবল দেখিতে পাওয়া যায়। আব্দর্য্যের বিষয় এই ভাছা- ব দের মধ্যে এমন এক অপূর্ব ভাবের আবিভাব হর, বাহাতে তাহারা অকাভরে শ্রম করে, পরস্পারের সাহায্য করে, যে যে প্রকার কার্য্যের উপযুক্ত সে সে প্রকার কার্য্যেই প্রবৃত্ত হয়; কেং বাঁশ কাটিতেছে, কেং তাহা বহন করিতেছে, কেং গৃহ নির্দ্রাতার কার্যা করিতেছে, কেহ লোক ডাকিভেছে, কেহ মাটি কাটিভেছে। কে উৎক্রই কার্য্য করিভেছে, কে নিক্রই कार्या कविरुक्त, এ গণনাই তালাদের থাকে না। धामन्निहित्त শ্রম করে; প্রসন্নচিত্তে পরস্পবের ত্রুটী বছন করে; প্রসন্নচিত্তে একের ভ্রম প্রমাদ অপরে সংশোধন করিয়া লয়। মধ্যে কি মতভেদ উপস্থিত হয় না? কোনও বিষয় শইয়া তর্ক বিতর্ক চলে না? নিশ্চর এরূপ ঘটনা হর। কিন্তু তাহাতে তাহাদের প্রেমের বিচ্ছেদ ঘটে না; কার্যোর ও ব্যাঘাত ब्रुना। এक्जन ज्ञानद এक वाक्तिक कर्कन कथा विविद्याहरू. সে ব্যক্তি ডুতীয় ব্যক্তিকে গিয়া বলিল—"দেখ ভাই কাঞ্ডা (मध्यक्, व्यामाटक कि शानाशानिष्ठ। मिन। अमन त्नाटकत महन কাজ করিতে নাই 📍 ভৃতীয় ব্যক্তি বশিশ—"ছেড়ে দেও, ওর মেজাজটা একটু কড়া তা ত জানাই আছে, চল চল কাজটা সারিয়া আসা যাউক।" এই বলিয়া ছই জনে কাজটা সারিতে গেল। জিজ্ঞাসা করি আমরা কি এমনি অধম হইরাছি, যে वात्रहेवातित्र खेरनाटक मास्यटक यक्ता वांविएक भारत. ব্রাঅধর্মে ও ব্রালসমাজের হিতসাধন ব্রতে কি আমাদিগকে **७७ छो। वैशिष्ट भारत ना? हेहार किছू मत्मह नाहे** य कामना मकरन विन बाक्यभर्मनाथन लाक्यभर्मश्रीतात ७ उक्त-সমাজের সেবার অস্ত অস্ততঃ সেরূপ উৎসাহী ও অভুরাগী হই-ভান যেরপ একটা বার্টরারির ব্যাপারে মাত্ত হইরা থাকে,

তাহা হইলে আমরা অলেষ প্রকার বিভিন্নতা স্বেও এক সঙ্গে থাকিয়া কাজ করিতে পারিতাম। আমাদের ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পার্থকার যে মহৎ বলিয়া প্রতীয়মান হইতেছে, সামাল্ল একটু সমালোচনা, বা অপমান যে সহু করিতে পারিতেছি না, ইহাতেই প্রমাণ, বা অপমান যে সহু করিতে পারিতেছি না, ইহাতেই প্রমাণ, বা অপমান ফে কার্যারূপ মহৎ ব্যাপারটা অপেকা আমাদের ক্ষুদ্র স্থিও আধিক দৃষ্টি। অবশ্র মতগত অক্টিতব পার্থকা প্রতি অধিক দৃষ্টি। অবশ্র মতগত অক্টিতব পার্থকা নিবন্ধন কোনও কোনও স্থলে একত্র কাল্ল করা কঠিন হইতে পারে; কিন্তু সেরুপ স্থলেও ব্রাহ্মধর্ম ও ব্রাহ্মনান্দের প্রতি প্রেম প্রবল থাকিলে, সেই পার্থকা নিবন্ধন হাদেরর প্রতি প্রেম প্রবল থাকিলে, সেই পার্থকা নিবন্ধন হাদেরর প্রতিদ বটে না। এই ক্লুই বলি, মুথে আমরা ব্রাহ্মন্মাল বান্ধাম যতই চীৎকার করি না কেন, মনে ব্রাহ্মসমাজের প্রতি প্রেম আমাদের অরই। কার্যো তাহার পরিচয় প্রতিদিন দিতেছি। আমরা ব্রাহ্মবন্ধর কর্কণ কথা শুনিরা কবে বলিতে পারিব—"আঃ ছেড়ে দেও, মানুষ্টার মেজাল কড়া, চল কাল্লটা সারিয়া আসি ?"

আবার বদি মনে করি, একাজটা প্রভ্ প্রমেখরের নির্দিষ্ট কাজ; তিনি ইহার প্রেরক ও ইহার অধিষ্ঠাত্ত্রী দেবতা, তাহা হইলে কি লজ্জাই হয়! তাঁহার কাজে হাত দিয়াও আপনাদের কুজভাব ভূলিতে পারিতেছি না। তাঁহার প্রতি আমাদের এমনি প্রেম!

कर्यारगोश-जामारमत्र ७ कि मना हहेन, यमि नाना প্রকারে কার্যো হাত দি, লোকে বলে "এত কাজ কাজ করিলে চলিবে কেন? ধ্যান ধারণাতে বস। কাঞ্চ কাজ করির। ওকাইয়া মরিও না।" আবার যদি কাজ কর্ম হইতে অবস্ত হইয়া ধ্যান ধারণাতে বসি, লোকে বলে "হা, লোক গুলা কেবল আণতে দিন কাটায়।" এ যে সেই ঈশপ কথিত পিতা পুদ্ৰের খোড়। বিক্রয়ের স্থায় হইল, সকলকে সমুষ্ট করিতে গিয়া খোড়া বিক্রেডা কাহাকেও সম্ভষ্ট করিতে পারিল না। গোকের সস্তোষ সাধনের কথা দুরে থাক, আমাদের নিজের মনেই বোধ হয় একটা সাধনের পথ স্থির ছইতেছে না। আমাদেরও মনে বেন এই ভাব প্রচ্ছন রছিরাছে যে, ধ্যান ধারণা, ঈশ্বর-প্রীতি ও তাঁচার প্রিয় কার্য্য সাধনের মধ্যে এক প্রকার বিরোধ আছে। যোগী অথবা প্রেমিক কথনও কল্মী হইতে পারে না, এবং ক্সী ক্ধন ও যোগী হইতে পারে না। অথচ একথা সত্য যে ঈশবোদেশে ও তাঁহারই আদেশে যে কার্যা ক্রত হর, ভাছা তপঞ্চা ও যোগের অঙ্গ শ্বরূপ ? তদারা প্রবৃত্তি সকলকে নির-मिछ करत, कर्खना खानरक छेळ्न करत ; श्रमत्ररक विश्वक करत, এবং আত্মাকে পরিপুট ও স্থান্ট করে। কর্ম যথন এই স্থানিট ফণ উৎপন্ন না করিয়া তিক্ত ফল উৎপন্ন করিতে থাকে, তথন বুঝিতে হইবে যে, সে কর্ম্মের ভিত্তি ধর্মের ভিত্তি নছে। প্রকৃত बाक्षमाधरकत्र कोदरन गठीत थान धात्रमा ७ व्यक्नांख कार्या धहे इटे अब है ममार्यम मुद्दे इहेबा थारक। आमानिशरक ४९ अहे আদর্শের অমুসরণ করিতে হইবে। ব্রাক্ষের প্রীতি কর্মের পোৰক ও কৰ্ম প্ৰীতির পোষক হইবে।

আত্মচিন্তা--- হুৰে জ্বীয়াৰে বিপদে সম্পদে এবং স্বতি निनात व्यविष्ठि शक्ता है अर्थ की रामन गक्ता। नमीत छत्रक কুত্র কাঠ থঙকে উল্ট পাল্ট করিয়া ভাসাইয়া লইয়া যাইছে পারে, ঠুকিছ অনুত পর্যক্তির মূল দেশে তরক্তে প্রতিহত হইতে হয়। নিয়তই দে বিভ্তিছি মানুষ সংসায় কর্তৃক পরি-চালিত হয়। সংসারের शंकि লাভ ছারা জীবন নিয়মিত ১ইরা থাকে। যিনি স্থন্দর গৃছে বাস করিতেছেন, গুবেলা নানাবিধ মুখাদ্য আহার করিতেছেন, যাঁহার অর্থের অভাব নাই এবং कीवरन आधीत विष्ठित पढि नाहे; नामानिक ७ ताल-নৈতিক সন্মান ও বিলক্ষণ আছে, ডিনিন পর্ম স্থী। হঠাৎ ইহার কোনও ব্যক্তিজম ঘটিলে,—যদি টাকাগুলি চুরি যার, কিন্তা কাছারও মৃত্যু হর অথবা দেশের বোকে সম্মানের পরিবর্ত্তে অসম্মান করে,—ভবে তাঁহার স্থাপর উৎস শুকাইরা যার। চিস্তার চিস্তার জীহার শরীর ও সাস্থ্য বিনাশ আগু हत्र। शःशात वाँशातित सूच मास्ति माछा, छाँशातित स्ववद्या निम्ठब्रहे अक्रण इटेरव। मःभारतत्र इद्वानिष्ठे डाहारम्ब मन স্থ হ:থ ভোগ করিবে। আর এক শ্রেণীর গোক আছেন, তাহারা সংসারস্তরের উর্চ্চে উটিরাছেন; সংসারের বাভাস उाँगामिश्राक म्लान् कविराज लावि ना। (व व्यवदाव नाःनाविक জীব কাঁদিরা আকুলহর, তাঁহারা সে অবস্থাতে পভিত হইলেও व्यमाख शास्त्रन। छाहाजा चीत्र कर्खना कार्या हित शानिया সমুদার প্রশাস্ত-চিত্তে বহন করেন। তাঁহাদের দৃষ্টি সেই সভ্য ও মকল স্বরূপ পর্মেশ্রের প্রতি: সংসার তাঁচাদের লক্ষ্য নছে। যেমন খোদ। ফেলিরা দিয়া স্থাত আত্র ভোজন করিতে হর, থোদা কেছ থায় না, খোদার সহিত কোনও সম্পর্কও নাই. ভেমনি এই সংসায় আবরণের ভিতরে দেই জগজ্জননীকে বাঁছারা লাভ করিয়াছেন অথবা ভাঁছার দিকে বাঁছারা অগ্রসর হই-তেছেন, তাঁহারা মুখ ছ:খের চঞ্চলতাকে সর্বতোভাবে পরিত্যাগ করিয়া ছির বস্তকে ধারণ করেন। তাঁছাদের দৃষ্টি ভিতরের দিকে। আমবাকে কত টুকু দর্ম পথে অতাসর হইরাছি, এই বিষয়ে চিন্তা করিলেই বুঝিতে পারিব। উপাসনা, আলোচনা ধর্মপুত্তক পাঠ বেশ চলিতেছে, লোকে দেখিরা ভাবিভেছে "ইনি পृंबनीय वांकि, देनि यथार्थहे क्षेत्रंत छक्ता" जिनि निस्वत रवे काविट इस (य, हैं। कि इ कि इ अधिनव हरे कि व वि । কিন্ত যে দিন তাঁহার স্থের ঘরে আগ্ন লাগিল, পুত্র কিনা প্রীট মারা গেল, অথবা অক্ত কোনও বিপদ আসিয়া পড়িল, সে দিন তিনি এমন আহুর হইলেন বে, ঈশবের নামও সুখে আনিলেন না। ইহাতেই টের পাওয়া যার, মূল বস্ত বহু দূরে। যিনি প্রকৃত উপাসনাশীন,সংসার তাঁহার উপর কর্তৃত্ব করিতে পারে না। যদি লোকে দেখিতে পার যে, ব্রাহ্মগণ অতি ভুচ্ছ কথার রাগিরা উঠেন, সামাল কভিতেও ভালাদের মূথে বিবাদের পাঢ় কালিমা পড়ে, নিন্দাকারীকে শক্ত ভাবেন, ভবে পৃথিৰীর लाटक अवछरे वनिटव त्य, "हेशन्ना यथन न्यक विवदाहै অপর সাধারণ লোকের মত রহিয়াছে, তথন ঈশ্বর ঈশ্ব विनिन्ना त्कन (विकास ?" वाकविक बाक्रममारक्षत्र मंदरा द्व नकन সাধু মহাত্ম। সংসারের অতীত ছলে বাস ক্রিতেছেন, ভাহারাই

वि शर्मात्र जामर्ग क्रन्टर (मथाईटल्ड्न। जूनि वाच, উপাসনা মন্দিরে গমন করিতেছ, চঠাৎ আসিরা কেছ কানে कारन रिन "प्रहानत जानगारक जातूक राक्ति रफ्डे निका করিরাছে। আপনার বিরুদ্ধে এই এই কুৎসিত কথা বলি-রাছে।" ইহা শুনিয়া যদি ভোমার আন অভির হইরা উঠে, উপাসনা ক্ষেত্রে বসিদ্ধা বদি ভূমি ভগবানের দিকে না চাছিয়া সেই নিন্দাকারীর প্রতিভিংসার চিস্তান্তে ব্যাপ্ত ছও,—তবে माधात्रण धीरम क्रवेटल ट्लामात भीरतमत वित्मवस प्रविण टकाशात ? ধর্মালোচনার সমর সংগলেও বদি তুমি ব্যক্তি বিশেষকে লক্ষ্য করিরা তীকু বাণ কেপণ কর, অর্ধাৎ সকল বিষয়ে সকল कार्याहे क्रिया विक्र मध्यारत द्वार बहेरन, करव खेलाजना कतिया कि कन हहेन ? প্রতি দিন প্রত্যেক ব্রাক্ষের এ সহক্ষে আত্ম-চিস্তাকরা কর্ত্তব্য বে, তিনি সংসারের হস্ত হইতে কভটুকু ৰক্ষিত আছেন। ব্ৰাহ্মসমালে যে কিছু নিন্দা, বিস্থাদ অশান্তি দেখা যায়, ভাছা এই সাংসারিক বুদ্ধি প্রবণতা হইতে উद्भुष्ठ । वाहाता मश्मादित माम छाहास्मत यक्षा कनह विवास विज्ञषाम ज्यमास्ति विविध्यत्रे वर्खमान शांकरव । शृथिवी वर्षार्थहे অর্গরাজ্যে পরিণত হয়, যদি সাধকগণ সংসারের হাত হইতে পরিত্রাণ লাভ করিতে পারেন। পর্মেশ্ব ক্লপা করুন, আমরা विन विन এই পথে अध्यमन हरे।

অবিরাম গতি-পর্মত হইতে ধীরে ধীরে লোভপতী অবিরাম গতিতে সাপ্রাভিমুখে প্রবাহিত হইতেছে। প্ৰামণ শ্ল্যক্ষেত্ৰ, উপরে অনত আকাশ। সন্ধাসমাগ্ৰে নদীতীরে বাঁচারা গমন করেন, তাঁহারা তদানীস্তন স্রোভস্বভীর পরম রম্ণীয় শাস্ত ও প্রফল মূর্ত্তি অবলোকন করিয়া আনন্দ রুদে আপ্লুত হইরা থাকেন। অন্তর্গমনোমূপ সূর্য্যের হেমাভকিরণ নদী বক্ষে নিপতিত হওয়ার বারি রাশিকে স্থণ কড়িত মথমণের স্তার দেখাইতেছে। তীরস্থ বৃক্ষ সমূহের স্থির প্রতিচ্ছারা নির্ম্বল অলের অভ্যস্তরে মনোহর দৃষ্ট হইতেছে। চতুর্দ্ধিকেই মৃর্ত্তিমতী নিস্তমতা। অকমাৎ এই নিস্তমতা ভেদ করিয়া ধরবেগে বার প্রবাহিত হইতে লাগিল। তপন্তীর স্তান্ন স্থিরো-পবিষ্ট বৃক্ষ-শ্ৰেণী ঝড়েব আঘাতে ত্লিতে লাগিল। ভয়ানক তরক শ্রেণী উথিত হইর। ভীম গর্জনে প্রবাহিত হইতে লাগিল। বির বোগিনী স্রোতস্থতী উন্মাদিনীর স্থায় তাওব নুতা করিতে লাগিল। আবার কিরৎকাল পরে সে নৃত্য থামিরা গেল। আধাাত্মিক জীবনেও আমরা এরপ দেখিতে পাই। श्रेत्रंत জীতিতে একটা অস্তত্ত্ব বাহিনী গতি থাকে, আবার সমরে সমরে উচ্চানও হয়। এক শ্রেণীর সাধকের জ্বর ঐ স্থির আচঞ্চল প্রোভন্ততীর স্কার নিরত ভগবানের দিকে ছটিতেছে। वाहित्त डाहारनत छारवत रकानहे धाकाम रमधा यात्र ना। ভারাদের আকাজ্ঞা, ভাব, উৎসাহ উদীপনা নিত্তক, দির লেভখতীয় ভার। তাহা গর্জন-বিহীন, শল-বিহীন, তরল-বিহীন। আর এক শ্রেণীর সংধক বাহ্নিক ভাবের জন্তই শালায়িত। যে দিন ভাষারা নৃত্য করিতে পারিশেন না, व किन डेशानमांकारन हरकड़ बन शक्ति हरेन मा धरः छावा-

বেশে অদ সঞ্চালন হইল না, সে দিন বেন ভাঁহাদের উপাসনাই হইল না। ভাবের মাদকভা ভিন্ন বেন ভাঁহাদের প্রাণ সঞীব থাকে না।

আধ্যান্মিক জীবনে এক্লপ ঘটনা নিত্যই ঘটিয়া থাকে। কথন গুৰুতা, কথন মিষ্টতা, কথন উচ্চালের মধ্য দিরা সাধককে বাইতে হর। বাঁহারা ভাবের প্রবাসী, যে দিন ভাবের অভাব ছর, সে দিন তাঁহার। শুক হন। যাঁহারা নিরতই উপাসনার মধুর আত্মাদ পাইতে ইচ্ছা করেন, তাঁহারা মিষ্টতার অভাব হইলে উপাসনা হইল না বলিয়া ভিত্র করেন। কিন্তু প্রকৃত বিশ্বাসীর হুদরের অবস্থা অক্ত রূপ। তিনি দেখেন, তাঁহার প্রভূনিয়তই निकरि चाइन । या यि हिन मञ्चानरक चाहत ना करतन, तम দিন কি সন্তান-ক্ষেত তাঁহার হাস হইরা থাকে ? যখন আদর করেন, তথনই কি স্নেহ বলবান হয় ? বাস্তবিক ভাবের মিইতা ना भारे लिও एक-शहर व्यवस्त रह ना। ये व्यविदास वाहिनी নদীর নাার তাঁহার চিত্ত নিয়তই ভগবানের দিকে ছুটতেছে। তিনি মিষ্ট, তিক্ত, আনন্দ, নিরানন্দ কিছু বোঝেন না। এই রূপ অবিরাম বাহিনী জীবন নদী কথনও আধ্যাত্মিক অবসাদ অমুভব করে না। নিয়তই তাহাতে ক্ষুর্ত্তি। তাঁহাদের চিত্ত-विष्कृप रत्र ना। अक्रम सीवनरे चानर्न हानीत ।

শান্তম্—প্রাচীন ধ্বিরা বলিয়াছেন ''শান্তমুসাসীত" শাস্ত ভাবে ঈশবের উপাসনা কর। আধুনিক সাধক বৈফাবগণ ও পঞ্চ সাধনের মধ্যে শাল্কভাবেই প্রথম সাধন করিতে বাল-রাছেন। তাঁছারা শান্তভাৰ সাধনের যারা অরূপেতে উপস্থিত হন তৎপর অক্সান্ত ভাবের সাদনেতে ভাঁছাকে। সভোগ করেন। সাধনরাজ্যে বাঁছারা চলিয়াছেন বা চলিতেছেন তাঁছারাই এইটা বেশ অমুভব করিরাছেন যে,চিত্তের প্রশাস্ততা ব্যতীত সেই শাস্তম্ ঈর্বরেতে প্রবেশ করিতে কেছ পাবে না। তাই সকল শ্রেণীর সাধকগণের পক্ষেই সর্ব্ব প্রথমে চিত্তের প্রশাস্ততা অভ্যাস করিতে হয়। চিত্তের স্থিরতা ভিন্ন এই মহৎ ব্যাপার জীবনে সম্পন্ন করা কখনই সম্ভবপর নয়। চিত্তের প্রশাস্তত। লাভ করিতে হটলে অভ্যাস এবং বৈরাগ্যের ধারা চিস্কণ্ডদ্ধির প্রয়োজন, যক্ত অভ্যাস এবং বৈরাগ্যের দারা চিন্তের শুদ্ধতা জন্মিবে, তত চিত্ত সংষ্ঠ হইয়া আসিবে, তথন চিত্তের প্রশাস্ততার সঙ্গে সঙ্গে ঈশ্বর-শ্বরূপ আত্মার নিকট প্রকাশ হইতে থাকে। এইরূপে স্বর্প রাজ্যে যত অগ্রসর ছইবে ততই ঈশবোপাসনা মধুন ছইবে। যাহারা যত স্বরূপরাজ্যে প্রবেশ করিয়াছেন তাঁহারা তত উপাসনাতে সিদ্ধ হইয়াছেন। তাঁহাদের পক্ষে ভগবদারাধনার স্থায় মিষ্ট দ্রব্য আরে কিছু নাই। যত দিন তিনি আমাদের নিক্ট মধুর না হইতেছেন, তভদিন উপাদনাতে আমাদের প্রাণ पूर्विश्व याहेरव ना, धवः धहे कार्यास्क ट्यां कार्या विवत्न। বিশ্বাস্থ করিছে পারিব না; স্কুতরাং ইহা ধরিয়াও থাকিতে পারিব না। যথন তিনি মধুর হইবেন যথন চিত্ত তাঁহাতে ডুবিবে তৃথন এই সভা অসুভব করিতে পারিব। তাঁহার নামে यात (माक, यात 'खान, यात क्षत्रकात । वाखिवकहे जाहात नात्म ७४म (भाक जान बारक ना, जबन हाबात निर्वाजन कत आर्मन

সেই মধুমর ভাব, সেই আনক্ষমর ভাব, সেই শান্তিমর ভাব আর কিছুতেই কাড়িরা শইতে পারিবেনা। তথনই মান্ত্র যাহা সভ্য বুনে, প্রাণ দিরা অথচ প্রাণান্ত ভাবে সে কার্য্য সমাধান করিতে পারে। যীশু এই শান্তিমর রাজ্যে প্রবেশ করিরাই জীবনদান করিরছেন, বৃদ্ধ এই শান্তিমর রাজ্যে প্রবেশ করিরা সব বিসর্জন দিতে পারিরাছিলেন, এখনও বাহারা আপনার প্রভুকে আদর্শ করিরা জীবনপথে চলিতেছেন তাঁহারা এই কথা বলিতেছেন:—
"আমরা যেন তাঁহাকে সক্ষ্থে রাধিরা নির্যাতনের মধ্যেও শান্তির সহিত আপনার কাজ করিতে পারি এবং নির্যাতনকারী-দিগকে প্রেম করিতে পারি। শান্তিহারা যেন না হই।

প্রার্থনা সম্বন্ধে সতর্কতা—একলন ভিন্কুক ধনীগৃহ-ত্তের খারে ভিকা করিতে আসিরা আম চাহিল। জৈছি মাস সকলে আম থায়, পরিব বলিয়া তাহার কি আর আম থাইবার সাধ হয় নাণু সে আপন আকাজকা ধনীর ছারে প্রকাশ করিল। কিন্তু বাডীর লোকেরা তাছাকে আম না দিল্লা এক-মুষ্টি চাউল প্রাদানের ব্যবস্থা করিল। গরিব কি করে, তাহা লইয়াই চলিয়া গেল। এই ভিক্কের দশা আমাদের জীবনে নিষ্ত ঘটতেছে। উপাসনার সময় ঈশবের ছারে আমরা কভ উচ্চ উচ্চ বিষয়ের প্রার্থনা করি। কিন্তু আমাদ্বের অপেক্ষা আমা-দের অবস্থা যিনি ভাল জানেন, তিনি আমাদিগের যালা পাওয়া উচিত তাহাই আপোন করেন। ধনীর ভূষণ বসন দেখিয়াগরিবের ভাগার প্রতি লোভ উপন্থিত চইলে, বেমন সে অবস্থার অতি-विक प्राकाकका कविद्रा (भारव कृत वस, मनस्रांभ प्रश् करत्र। আমাদের ও সেই দশাই ঘটে। সাধু সক্ষনের উন্নত অবস্থা **मिल्या मानत ज्यारवर्ग मध्यत्र कतिर्छ मा भाविषा धारकवाद्य** ভালা পাইবার জন্য প্রাণে আকাক্ষা লয়-এবং প্রার্থনাও উপজিত হয়। কিন্তু তাহা পাইনার মত অবস্থা নর বলিবাপাটনা। এই প্রকার অধিক দিন হইতে থাকিলে ক্রমে প্রার্থনার প্রতি অনান্তা জনিতে থাকে। প্রার্থনা করিয়া ক্রিয়া বিফলমনোর্থ চুট্লে শেষে আর প্রার্থনা ক্রিবার প্রবৃত্তি হর না। অবিশ্বাস আসিয়া প্রাণকে আক্রমণ করে এজনা नर्कषारे बाचा-मृष्टिक शावन त्रांथा कर्त्तवा। लाख शत्रवण हरेत्रा না চাহিরা আবশ্রক জ্ঞানে চাওয়াই উচিত এবং সে ভাবে চাহিলেই পাওয়া যার।

অক্তানতা নিবন্ধন যেমন অবস্থার অতিরিক্ত বস্তু চাওয়া হয়। আবার ইচ্ছা করিয়াও সমন্ত্র সময় তেমনি অবস্থার অতি-রিক্ত বন্ধ প্রার্থনা করিবার প্রবৃত্তি আমাদের মধ্যে প্রবল দেখা যায়। বিশেষতঃ যখন সন্ধন উপাসনা হয়, তখন এইরূপ ঘটনা প্রায় ঘটিতে দেখা যায়। আরাধনা যখন হইয়া গেল, তখন ত প্রার্থনা করিতেই হইবে। কারণ, নিয়ম আছে আরাধনার পরে প্রার্থনা করিতে হয়। এইরূপ অবস্থায় অনেক সমর করনার সাহায্যে যাথা বাস্তবিক তেমন প্রার্থনীয় বা আবস্তুক নয় ভাহাত প্রার্থনা করা হয়। যিনি উপাসনা করেন, তাঁহার সামান্ত ক্রটি যাহা আছে, যাহার জন্য প্রাণে সংগ্রাম হইতেছে, তিনি সেই সামান্য বিষয় প্রার্থনা করা অনেক সময় উচিত

मन्त करतन ना। कांत्र छन्दाता छैनानकगरनत निकरे कित्र । পরিমাণে হীন হইবার আশহা আছে। এই অবভার লোকের নিকট হীন হইবার ভরকে অতিক্রম করা সকলের পকে ঘটিরা উঠে না, এখন্য প্রার্থনার বিষয় সকল সৃষ্টি করিয়া লওয়া হয়। স্তরাং এই প্রকার স্টে করা প্রার্থনা যে সফল হইবে না, ভাগা ত সহজেই বুঝিতে পারা যার। ইছাছারা একদিকে যেমন কপটতা বৃদ্ধি পান্ন, তেমনি যে ভারে লোকে এরূপ প্রার্থনা করে তাহার হস্ত হইতেও নিম্বৃতি লাভ হয় না। কারণ লোকে ভাহার জীবনের গতি অন্য রূপ দেখিয়া এবং প্রার্থনার বিবর লাভের জন্য তেমন আঞ্জহ বা চেষ্টা না দেখিয়া ভাষার প্রতি হত শ্রম্ভ হইতে থাকে। শরীরের সম্বন্ধে যেমন কুধা, আত্মার পক্ষে যদি কোন অভাব তেমনি কটুদায়ক না হয়, শরীরেয় कुश भाखि ना इहेरन रायम इटेक्ट कतिया राष्ट्राहरू इत्, শরীর অবশ হইয়া আদে, ক্রমে অকর্মণী হইয়া পড়িতে হয়; যতকণ না আচারীয় পাওয়া যায় ততকণ আরে কিছুতেই উদ্বেশের শান্তি হয় না; আত্মার পক্ষে অভাব বেধে সেইরূপ অশান্তিকর তীব্র যাত্রনাদায়ক না হইলে বাস্তবিক সরল প্রার্থনা বাহির হর না। সেরপ ভাবে প্রার্থনা বাহির না হইলে প্রার্থনা পূর্ণ হইবার সম্ভাবনাই বা কি 📍 শারীরিক ব্যাধির ভাগ করিলে रयमन हिकि ९ नक छेष्ट भन्न वात्रका करतन ना, यनि वा करतन তাহা তাহার চৈতন্যোদয়ের উপযোগী করিয়াই করেন। আমা-দের অন্তর্যামী দাতা কি তাহা করেন না ? প্রার্থনা অভাব মোচনের নিমিত্ত। অভাব বোধ নাপাকিলে অকারণ প্রার্থনা করিয়া কি লাভ ? তথন আত্মার যাহাতে চৈতন্য আগে, অভাব যথেষ্ট আছে অথচ তাহার জ্ঞান নাই, যাহাতে এরূপ অসাঢ়তা নই হয়, ভাহারই জন্য প্রথিনা করা কর্ত্বা ৷ প্রার্থ-নার সময় প্রবল ব্যাকুলভার সহিত নানা কথা উচ্চারণ করিয়া यनि किছूकान भरतरे आस्मान व्यासारन तक रूखना यात्र, व्यार्थ-নার বিষয় লাভের পুর্বেই যদি ভাহার জন্য প্রাণে কোন আকাক্ষা নাথাকে,এমন কি, কি প্রার্থনা করিয়া আসিলাম, তাহার শ্বৃতি পর্যান্ত না থাকে, ভাহা হইলে এমন বিকৃত ভাবাপন্ন প্রার্থনান। কর। অপেক্ষা হিরভাবে আ্যান্টার সহিত নিক্ষের অবস্থা অমুভব করিবার প্রয়াগী হওয়াই কি কর্ম্বব্য নয় ? ব্যাধি व्यानक व्यकारतत (एश यात्र,व्यानक ममत्र व्यार्थना ६ द्याधित मध्य গণাহইয়াপড়ে। এ প্রকার ব্যাধির হাত হইতে রক্ষা না পारेल क्लालित काला क्य। अवना शार्थना यहाट मतन, चार्जावक, ७ बाजादात बार्क्स हत, तम विवदम ब्यामादमस যত্ৰীল ভইতে ভইবে।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

### একতার উপায় কি 🕫

সভ্য লগতের সর্ব্যাই এক ধ্বনি শ্রুত হইতেছে একতা একতা—একতা। একতা অতি মিট্ট; একতা দেখিলে ও লাভ করিলে পরম আনন্দ। একতা ভিন্ন মানব সমাজ কোধান ধাকিত ? বিষয় বাণিজ্যের উন্নভি কির্পে হইত ? মানব- শক্তির অভ্ত ভীর্তি সকল কির্মণে প্রকাশ পাইত? বর্তমান
সমরের চিন্তালীন ব্যক্তিনিগের মধ্যে একজন বলিরাছেন বে,
অসভ্য ও বর্জর অবস্থা এবং সভ্যতার মধ্যে এই প্রভেদ দেখিতে
পাওরা যার, যে অসভ্য বর্জরগণ একভার মূল্য জানে না,
সভ্য জাতি সকল তাহা অবগত আছে। ইহা ত সত্য কথা,
বনে যে সিংহ ব্যান্ত ভর্ক প্রভৃতি হিংল খাপদগণ বিচরণ
করিতেছে, তাহারা যদি একভাস্ত্রে বছ হইতে জানিত, তাহা
ভইলে মানবগণ কি তাহাদের উদ্ভেদ সাধ্যে সমর্থ হইত ?
জানে মা, পারে মা, বলিয়াই ভাহাটো মাজীব হল্পে বিষদ প্রাপ্ত
হইতেছে।

এই একতার মূল্য প্রাচীনকালের পণ্ডিতগণ বিশেষরূপে অফুভব করিরাছিলেন। এ বিষয়ে তাঁচাদের যে উপদেশ তাহা এদেশের সংস্কৃতজ্ঞ ব্যক্তিদিগের নিকট স্থানিচিত।

> ''অল্লামপি বস্তৃনাং সংহতিং কার্যাসাধিকা। তৃতৈ গুণ্তুমাপরৈ ব্ধান্তে মন্ত দ্ভিনং॥"

"অতি কুদ্র বস্তু সকলকেও যদি সমবেত কৰা যায়, তন্ধারা মহৎ কার্য্য সাধিত চইতে পারে। তৃণ অতি কুদ্র কিন্তু তাখার সমষ্টি হারা কাছি প্রস্তুত করিয়া তন্ধারা মন্ত হস্তীকেও আবিদ্ধ করা বায়।"

কিরপ সংক্ষেপে ও সারগর্ত্ত বাক্যে একতার মূল্য ব্যক্ত করা চইণাছে! সভাতাৰ উন্নতি সমকারে এই একতা প্রবৃত্তি স্পাত্র বৃদ্ধিত চটতেছে। যে সকল ধর্মসমাজ পরস্পার বিচ্ছিল কইয়া বিবাদ ও বিষেষ কালাতিপাত করিতেছিলেন, ভাছারাও বর্তমান সময়ের একতা-প্রবৃত্তি দর্শন করিয়া আপনাদের প্রাচীন সংকীর্ণতা পরিষার পূর্বক সন্মিলিত ভাবে কার্যা করিতে উল্যোগা इरेशाएन। किञ्च এक्तिक (यमन मानत-झनश्य স্বাভাবিক একতাপ্রবৃত্তি আছে, তেমনি অপর দিকে চিস্তা ও কার্যোর স্বাধীনতা-প্রবৃত্তিও আছে। এই স্বাধীনতা-প্রবৃত্তি এত প্রবল, যে ইহাকে আবদ্ধ করিবার জন্ম, রাজা, গুরু বিষয় বাণিজো মানবচিন্তার স্বাধীনতা নিবন্ধন যে সহস্রপ্রকার বৈচিত্র সংঘটিত হইয়াছে, ভাহার উল্লেখ অনাবশ্রক। কারণ <u>সেণানে কেচট মানবচিন্তাকে নিষ্ণিত ক্রিবার প্রশ্নাস পার</u> না : সকলেই স্বাধীনভাবে চিস্তা করে ও কার্যা করে। স্তরাং বৈচিত্রা সংশটিত হওয়া অনিবাধা ও অপরিহাধা। কিন্তু ধর্ম-বিষয়ে মানব অপর পথ অবলম্বন করিয়াছে। জীবনের অপর-অপর বিভাগে যে চিন্তা ও কার্যোর স্বাধীনতা অবাধে দিয়াছে. ধর্মনিষয়ে সে স্বাধীনত। দিতে সমর্থ হয় নাই। ঈশ্বর ধর্মের প্রবর্ত্তক, তিনি মানবের মৃক্তির পথ নির্দেশ করিয়া পাকেন. এই মূলগত সংস্কার ও বিশাস নিবন্ধন বার বার মানবের ধর্ম-চিম্বাকে নিয়মিত করিবাব চেষ্টা করা হইয়াছে। ঈশবের অভিপ্রায় বেদে বা বাইবেলে বা কোরাণে লিপিবদ্ধ আছে। যাহার চিস্তা দেপথ পরিত্যাগ করে দে অপরাধী, त्र शाली। "माखिको (यमनिमाकः"--- त्य (यमनिमाक (महे মান্তিক। এইরূপ শাসনের হারা মাতুষের স্বাধীনতাকে থর্ক ক্রিয়া একতা স্থাপনের চেষ্টা হইবাছে, ইউরোপ প্রভৃতি

रमा वह वक्षा दानाव छेलाम बाबविध नकन अनैक হইরাছে, বিশেষ আদালতের স্টে হইরাছে, মানুষকে স্বাধীন-চিন্তার অপরাধে কারাগারে নিক্ষেপ করা হইরাছে; ধন সম্পদে विकिष्ठ कर्ता हरेबाए, जनस हिजानल सीवस पद करा हरे-রাছে। তথাপি কেই মানব মনকে আবদ্ধ করিতে পারে নাই. চিস্তাও কার্য্যের সম্পূর্ণ একতা স্থাপনে সমর্থ হয় নাই। অধিক কি সমুদর প্রীষ্টীর সম্প্রদায়ের লোক বাইবেল গ্রন্থকে অভাস্ত ও ঈশর-প্রণীত গ্রন্থ বলিয়া মনে করে, অপচ ইংলভের ক্রায় একটা পুলৈ দেশে আগে ছইশভ প্রকার জীয়ির সম্প্রদার আছে, ইহারা পরম্পারের সহিত উপাসনাতে, ধর্মদাধনে, ও জনহিতকর কার্য্যে স্মিলিত হন না। বিদেশেই বা গমন করি কেন? এই ভারতবর্ষে কত প্রকার হিন্দু সম্প্রদায় আছে, তালা যাঁছারা জানিতে ইচ্ছা করেন, তাঁহারা একবার পরলোকগত অক্ষর-কুমার দত্ত মহাশারের প্রণীত ভারতবর্ষীয় উপাদক সম্প্রদার নামক গ্রন্থের প্রতি দৃষ্টিপাত করুন। ইহারা সকলেই হিন্দু উপাস্ক সম্প্রদায়, স্কলেই বেদকে অভ্রান্ত বলিয়া স্বীকার করেন অথচ চিস্তা ও কার্য্যে, সাধনে ও অমুষ্ঠানে কি বিচিত্রভা।। মানবমনকে নিয়মিত কবিবার জন্ত, চিতা ও কার্যোর একতা छेरभारत्व क्रज भाजक्ष मुख्य त्रिक ब्हेग्राहित। देक, त्र একতা ভ স্থাপিত হইল না !

এখন প্রশ্ন এই, ভবে ব্রাহ্মগণ কিরূপে আপনাদের মধ্যে একতা ভাপন করিবেন ? তাঁহারা অন্রান্ত গুরু ও অন্রান্ত भारत विश्वाम करतन ना। मानत्वत हिन्दा ७ कार्याटक निव्याम छ করিবার অস্ত যে সকল রজ্জু উদ্যাবিত চইয়াছিল, তাহাও তাঁহারা ছিল্ল কবিষাছেন, তবে আর কিরূপে প্রস্পারকে আবদ্ধ রাখিবেন? কিবাপে মত ও আবরণের বিচিত্রতা নিবারণ क जित्न १ हे हात छ छ उत्र धहे वला घा हे एक शास्त्र (य একতার অর্থনিচিত্রতার অভাব তালা স্থাপন করা ব্রাহ্মসমাজের লক্ষ্য নহে এবং সম্ভবও নতে। এই রূপ একতা স্থাপন করিতে গিয়াই পৃথিবীৰ মহাজনগণ ঘোর ভ্রাম্থির কার্য্য করিয়াছেন, মানবসমাজের উন্নতির পথে অর্গল পাত কবিয়াছেন। তাঁহাদের মধ্যে অনেকের এই ভারি দেখিতে পাই যে, তাঁহারা কেবল মাত্র মানবের ধর্মপুরাকে উদীপ্ত করিয়া সম্ভূষ্ট থাকিতে পারেন নাই সেই সঙ্গে এক একটা সাধনপ্রণাণী ও আইন দিবার চেষ্টা কৰিয়াছেন। এবং সেই সকল নিধি যাহাতে মানব লজ্জ্বন নাকরে সেজন বিশেষ প্রয়াস পাইয়াছেন! মহমাদ কেবল একেশ্ববাদ প্রচার করিয়া ও পৌত্তলিক হার দোষ নীর্ত্তন করিয়া मुद्ध हे हे है है न न न । जिनि निष्क यि कि इ मामास्रिक, देनि कि বা আধ্যাত্মিক তত্তকে সভা বলিয়া অমুভব করিলেন, সমগ্র মানবজাতিকে চিবদিনের अञ्च সেই পথে আনিবার নিমিত অগ্রসর হইলেন। এবং সেই জন্তই কোরাণকে দ্বীর প্রাদত্ত অভাস্ত শাস্ত্র ও আপেনাকে ''আথিরি প্যাগম্বর'' বনিয়া ঘোষণা कति(लन। हेहात कल এहे हहेल (य मठासीय भन्न मठासी চলিয়া ঘাইতেছে অন্চ পৃথিনীর লক্ষ লক্ষ পুরুষ ও রম্ণীর চিত্ত উাহার হত-প্রতে থালের মধ্যে পড়িরা আছে, স্বাধীন ভাবে চিস্তা ও কার্য্য করিতে নাহন করিতেছে না। কিন্তু এত করিয়াও

কি তিনি চিন্তা ও কার্য্যের বৈচিত্র্য সম্পূর্ণরূপে নিবারণ করিতে সমর্থ হইরাছেন ? মুসলমানদিগের যে সকল বিভিন্ন সম্প্রদার তাহারাই এই উক্তির সাক্ষী।

তবে ব্রাহ্মসমান্দ কিরূপ একতার প্রার্থী। বিচিত্রতার মধ্যে যে একতা ভাছাই ব্রাহ্মসমাজের প্রার্থনীর। ব্রাহ্মদিগের মধ্যে সাধনগত, শিক্ষাগত, ক্লচিগ্ত, মতগত সহস্রপ্রকার विकित्वा शाकित्व, अथिक मकत्न अक्तरन वस्त्र शाकित्वन, अक-সঙ্গে কার্য্য করিবেন ও এক উদ্দেশ্যের অসুসরণ করিবেন। ইহা কি স্স্তুব 🕈 জনসমাজের পরস্পর বিচ্ছিন্ন প্রাণিপুঞ্জ যথন একতা কার্য্য করিবার জক্ত সন্মিলিত হয়, তথন তাহাদের সন্মি-লনের একটা ভিত্তি থাকে। নানা বিষয়ে পার্থকা থাকিলেও একটা বিষয়ে মিলন থাকে:— সেই ভূমির উপরে সকলে দাঁড়োর। যভক্ষণ সেই মিলনের স্থানে বিরোধ না ঘটে ভভক্ষণ ভাহারা একত্র থাকিয়া কার্য্য করে। মনে কর একটা সুরাপান নিবারণী সভা হটয়াছে—তাহাতে আজিক আছে.—নান্তিক আছে. আমিষানী আছে, নিরামিষানী আছে, তীখরবাদী चाह्न, এक्ष्यंत्रनामी चाह्न, देदीता मकरन शतम्भात्तत পার্থকা জানিয়াই সমিলিত হটরাছেন, এবং পার্থকা সত্ত্বের কার্য্য করিতেছেন। তাঁহাদের মূলমতে ও মূল-উদ্দেখ্যে একতা আছে। ব্রাহ্মসমাজকেও এইরূপ ভূমির উপরে একতার ভিত্তি স্থাপন করিতে হইবে। ব্রাক্ষসমালের মূল মতগুলির সহিত ও ইহার মূল উদ্দেশ্যের সহিত বাহাদের একতা থাকিবে. তাঁহারা সকলে একত্রে বাস ও কার্য্য করিবেন। ঐ মূলমত ও मृग-উদ্দেশ্যের অভিরিক্ত যিনি যাহা সাধন ও প্রচার করুন, তাহা করিতে দিতে হইবে, ও তাহা সন্তেও তাহাদিগকে আপ-নার লোক বলিয়া স্বীকার করিয়া লইতে হইবে।

এই স্থাল কেছ কেছ প্রাপ্ত করিতে পারেন। ত্রাক্ষসমালের মূলমত ও মূল-উদ্দেশ্য বিষয়েই যদি মতান্তর উপস্থিত হরু ভাষা হইলে একতা লাভের উপার কি 📍 ইচার উত্তর এই আমরা বিখাদ করি ত্রাহ্মদমাজের মূলমত ও মূল-উদ্দেশ জানিতে कारात व वाकि नारे। यनि त्य विषय कारात अ मान बादक. তবে তাহারুও উপার আছে। ত্রাহ্মদিগের অধিকাংশের মতে মূল মত ও মূল উদ্দেশ্য স্থির করিয়া লও। লইবার পর সে বিষয়ে বাঁহাদের একতা তাঁহাদের সকলকে ব্রাহ্ম বলিয়া স্বীকার কর, তাহার অতিরিক্ত যদি কেহু মানেন বা করেন তল্লিবন্ধন তাঁহাকে আহ্মনাম হইতে বঞ্চিত ক্রিতে ঘাইও না। বাঁচারা ঐ অভিরিক্ত মূলমতের কিছু মানেন, এবং ভরিবন্ধন নির্বাভন সহ করেন, তাঁহাদের প্রতিও পরামর্শ এই :--তোমরা আপনা-দিগের মত ও ভাব পরীক্ষা দেখ, যদি দেখ যে আক্ষধর্মের মুল উদ্দেশ্যের সঙ্গে তোমাদের একতা আছে, তবে তোমরা আপনা-দিগকে আদা বলিয়া ভান ও ঘোষণা কর। কাচারও কথাঃ ষ্ঠ্পাত করিও না। কিন্তু সম্প্র বাধা সংস্কৃত ব্রাহ্মসমালের কার্যাকে পরিত্যাগ করিও না ; ব্রাহ্মস্থার চ্ইতে দুরে দাঁডাইও না একতার ব্রত সকলে প্রাহণ কর। প্রেমের প্রথম সোপান উদারতা। একতা বাস কর, একতা কার্য্য কর, উদার ভাবে পরস্পারের পার্থকা বহন করিতে শিক্ষা কর, কালে প্রেম कश्चिदि ।

#### ব্যাখ্যান রত্বাবলী।

( ২৯ জুলাই ( ১৮৯৩ ) সাধনাশ্রমে বিবৃত্ত )

"মন্তঃ পরতরং নান্যৎ কিঞ্চিদন্তি ধনগ্রন। মরি সর্কমিদং প্রোভং স্থতে মনিগণাইব॥"

ভগবদগীতা, ৭ম অধ্যায়, ৭ প্লোক।

আর্থ—"হে ধনশ্বর আমা অপেক। শ্রেষ্ঠ কিছু নাই। ক্তে মণি সকল যেরূপ সরিবিট থাকে, এই সমুদর জগৎ সেইরূপ আমাতে সরিবিট রহিরাছে।"

মণি সকল যথন স্ত্রের হারা এক জ বছা হইর। মণিমালিকা প্রেছত করে, বা পূশা সকল যথন স্ত্রের হারা এক জ সরিবদ্ধ হইরা মালারেপে পরিণত হয়, তথন আমরা তাহার অভান্তরে কি দেখিতে পাই ? মালাতে আবদ্ধ হইবার পূর্বের মণি সকল বার্ত্তির হিল, পরস্পরের সহিত অসম্বদ্ধ ছিল, এক স্ত্রের হারাই তাহাদের পরস্পরের মধ্যে সম্বদ্ধ হাণিত হইল; তাহারা এক দেহের অকরেপে পরিণত হইল। স্ত্রেই তাহাদের এক অস্পাদনের মূলীভূত কারণ। আজ যদি স্ত্রে ছিল হয় তৎক্ষণাৎ তাহারা পরস্পর হইতে বিভিন্ন হইরা চতুর্দিকে বিক্ষিপ্ত হইরা পজিবে। অত এব স্ত্রে মালার মধ্যে স্ব্রে প্রধান পদার্থ, স্ত্রে না থাকিলে, মালার মালাত্ত হয় না। অথচ যে স্ত্রে এত উপকারী, যে স্ত্রে এত প্রয়োজনীর, যে স্ত্রে এক তা সম্পাদক, সেই স্ত্রেকে কেছ দেখিতে পার না, তাহা স্বাদা চক্ষুর অক্তর্যালেই থাকে।

ঈশবকে এই একাণ্ডের ভাবৎ বস্তব মধ্যে স্তা শবস বলিবার অভিপ্রায় এই বে, তাঁহার বারাই ইহার একত্ব সম্পা-वक्रे निविद्वेतिष्ठ किया कतिराहे (मधा দিত হইরাছে। यात्र (य, এই ब्रक्का (७ त कृष्ट ७ तुइ९ छाव९ भनार्थ ५ क छू (भइन)-বন্ধনে পরস্পরের সহিত আবেদ্ধ হইরা রহিয়াছে। তৃণ কণার সহিত কল, বায়ু, অমি, চল্ল, সূর্য্য, পূথিবী প্রভৃতি ভাবৎ ভূত ও সমগ্র জড় জগৎ গ্রাপত হইরা রহিয়াছে। পৃথিবী থাদ্য দিতেছে ও রদ যোগাইতেছে। অগ্নি উত্তাপ मिल्डिह ७ वाशुरभावन कतिरिट्ह, श्र्वा वर्ग कनाहेर्डिह, **এইরণে যে কোন পদার্থের কথা চিন্তা করা যায়, দেখিতে** পাই যে তালা ত্রন্ধাপ্তের অপয়াপর পদার্থের সহিত নানা প্রকার সম্বন্ধে আবদ্ধ। আভএৰ দেখিতেছি এই ব্রহ্মাণ্ডের সমস্ত পদাৰ্থ প্ৰহীন মালার পুশু সকল বা মণিগণের ন্যার পরস্পর বিছিল বা অসম্ভ নতে। ক্রি মালার অন্তর্গত मांगगर्गत नात्र मुक्रम्माद्वत महिन्छ आवद्य ७ এक प्राट्टत अमी-ভূত। কিন্তু এই একাতে মালার পুত্র কে । সে বন্ধু কোণার বারারা ইহার৷ পরস্পরের সহিত সম্ম রহিয়াছে এবং যাহাতে ইহাদের একত্ব সম্পাদিত হইয়াছে ? সে বস্ত, ক্রন্ধ বস্ত। । এই ভিন্মর ব্রহ্মসত্তা নরনের অক্তরালে থাকির। এবং জড় ও চেড-त्नत मास् महितिहै शांकिया ममूनायत मास्य अक्ष तका कवि-ডেছে। বর্ত্তমন সমরের একজন চিন্তাশীল পণ্ডিত বলিরাছেন বে, এই জগৎ যে এক জ্ঞানশীল শক্তি দারা শাসিত ভাৰায়' প্ৰমাণ এই যে ইহার কুজ ও মহৎ ভাবৎ পদাৰ্থ বনিই স্বংক

পরস্পরের সহিত সহয়। একের শাসনাধীন না থাকিলে উদ্দেশ্ত ও লক্ষ্যের এক্সপ একতা এবং সেই লক্ষ্যসিদ্ধি বিষয়ে বিবিধ বস্তুর সাহায় কথনই দেখিতে পাওরা বাইত না। যথন দেখি যে পোষ্ট আফিন টেলিগ্রাফ আফিন প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন আফি-সের মধ্যে এমন যোগ রুলিয়াছে, যে পরস্পারের সহায়ভায় একই উদ্দেশ্য সিদ্ধ চইতেছে, তথন যেমন বুঝিতে পারি যে, ভালারা একই গবর্ণমেণ্টের অধীন, সেইরূপ ব্রহ্মাণ্ডের বস্তু স্কলের মধ্যে সম্বন্ধের ঘনিইতা লক্ষ্যে একতা ও সেই লক্ষ্য সাধনে পরস্পারের সহারতা দেখিয়াই সহজেই প্রতীতি করিতে পারি যে ঐ সকল বস্তু এক শক্তি ছারা নিয়মিত, ও একই পরা-মর্শের অধীন। অত্তর একণা অতীব সত্য যে, সেই চিমার পুরুষই মালান্তিত স্ত্রের ন্যার জড় ও চেডনের মধ্যে নিহিত ণাকিয়া তাহাদের একত্ব সম্পাদন করিতেছেন এবং বিবিধ পদার্থকে এক উদ্দেশ্য সিদ্ধির দিকে নিয়োগ করিতেছেন। অত-এব তাঁহাকে এই ভ্রন্ধাণ্ড মালার পরম স্ত্র বলিয়া নির্দেশ করিলে কিছুই অভাক্তি হয় না।

তাঁচার এই চির বিদ্যমানতা ও প্রত্যেক পদার্থের সহিত এই ঘনিই যোগ যথন আমরা লক্ষা করি, তথন আমাদের মন বিশ্রাম লাভ করে, তথন বাস্তবিক আমাদের এই জীবনকে মহাসতা ও মহাশক্তির ক্রোড়ে প্রতিষ্ঠিত ও তাঁহার হারা স্থ্রক্তিত দেখিতে পাই এবং নির্ভরের ভাব স্থাতই হৃদয়ে সঞ্চারিত হয়। এই মহাসতা স্ত্রের ন্যায় নয়নের অন্তরালেই চিরদিন রহিরছে। মণিমালিকার মণি সকলকেই যেমন বাহিরে দেখি, স্ত্রকে যেমন দেখিতে পাই না। ভক্রপ ইক্রিরগ্রাহ্ বিষয় সকলকেই বাহিরে দেখি, তাহাদের অন্তরালে যে মহাসতা বিদ্যমান ভাহাকে প্রত্যক্ষ করিতে পারি না। কেবল জ্ঞাননিষ্ঠ ধীরেরাই সংশার রহিত বৃদ্ধি ও স্ক্র আত্মদৃষ্টে হারা সেই পরম ভত্ত উপলব্ধি করিয়া থাকেন।

## ধর্মদমাজে নিয়মতন্ত্র প্রণালী। (প্রাপ্ত)

এক সময় যাহা একান্ত প্রার্থনীয় বলিয়া মীমাংসিত হয়,
যাহার অভাবে কার্য্য আর ভালরপে চলিতে পারে না বলিয়া
বিশ্বাস হয় এবং যে অবস্থা পাইবার জন্ত নানাপ্রকারে যত্ন
চেটার বিশেষ প্রেরেজন হয়, অন্ত সময় আবার তাহার
সহিত দীর্ঘকাল অবন্তিতি করিতে করিতে দেখা যায় যে,
মন আর তাহাতে পরিজ্প্ত হয় না। আবার সেই প্রাচীন
রীতি যাহা এক সময় অসহ্ত ও নিতান্ত অপ্রার্থনীয় বলিয়া মনে
হইয়াছিল, তাহাই পাইবার জন্ত লোকের ব্যাকুলতা হইয়া
থাকে। আমাদের এই উক্তির প্রমাণ অরপ বলিতে হইতেছে,
যাহারা এক সময় আক্রসমাল মধ্যে এক তল্পতার আনিইকারিতা
উপলব্ধি করিয়া সমালমধ্যে সাধারণতত্ম ও নিয়মতত্রপ্রালীর
প্রবর্তন করিতে বিশেষ আগ্রহশীল ছিলেন এবং সে জন্য
বিশেষ যত্নপরায়ণ ছিলেন, এই করেক বৎসয় সেই সাধারণতত্ম
ও নিয়মতত্রপ্রণালীর মধ্যে থাকিয়া এথন আবার পূর্কাবস্থা

পাইবার জন্য তাঁহাদের অনেকের প্রাণে আকাজ্যার উদর

হইতেছে। এমন কি নিরমভন্ত বা সাধারণতত্ত অনুসারে
ধর্মসাজ্যের কার্য্য চলিতে পারে না এবং চলা উচিত নর
বলিরাও তাঁহাদের মধ্যে সিদ্ধান্ত হইতেছে। বর্তমান অবস্থার
অসন্তুষ্টি এরূপ সিদ্ধান্তের একটা কারণ হইলেও আমাদের
বিচার করিরা দেখা উচিত যে, বান্তবিকই ধর্মসমাজের কার্য্য
নির্মতত্ত্বপালীয়ারা স্ক্চার্রপে চালিত হইতে পারে কিনা।

লগতে আর যতপ্রকার সভাসমিতি আছে, অধিকাংশ ভূলেট নিরমতন্ত্র প্রণালীবারা যদি কার্য্য সুসিদ্ধ চইতে शादा. धर्मात्रमारकद कार्या तत खानानीरक ना हिनवाद পক্ষে বিশেষ কি অস্তরায় আছে? রাজনীতি, শিক্ষা, জনহিত্তকর অমুষ্ঠান প্রভৃতি সাধারণ কার্যা সকল সম্পাদনের জনা জগতে কতপ্রকার সভাসমিতি আছে এবং স্বতই নানাপ্রকার নিরমপ্রণালীও বর্তমান রহিয়াছে। নিয়মাত্ব-সারে সেই সকল কার্য্য যদি স্থানির্বাহিত হইতে পারে, ভাচা इटेल धर्मात्रमारकत कार्या अमन कि चाहि, याहा नाधात्राव মতে বা নিয়মে স্থানিকাহিত হইতে পারে না ? নিমতল্পতার বিরুদ্ধে প্রধান আপত্তি এই যে, নিয়মানুসারে বাঁছারা কার্যোব वावका कृतिवात अधिकात लाश इन वा आपनापन मह জ্ঞাপন করিবার অধিকার প্রাপ্ত হন, তাঁহারা সকলেই সমান। সকলের মতেরই সমান মূল্য। যিনি ২৫ বৎসর ধর্মসাধন করিয়াছেন, উহোর মতেরও যে মূল্য আজি যিনি সমাজের সভা হইলেন, তাঁহার মতের ও সেই মূল্য। ইহাছাবা কার্যোর সুশুঝলা না इहेबा विभुखना घडिता थाकে। वह मित्नत अख-জ্ঞতাও অল্লকালের অভিজ্ঞতার কোন ভারতমা করা হয় না, ইচাদ্বারা স্থবিচারের বিদ্ন চয়। এই আপত্তি যদি বাস্তবিক যক্তিযুক্ত হয়, তাহা হইলে ধর্মসমাজ সম্বন্ধেও যেমন যুক্তিযুক্ত অন্য সমাজ সম্বন্ধেও তেমনি যুক্তিযুক্ত। ধশাসমাজে বছদিন অব্স্থিতি এবং সাধন ভজনাদি ছারা যেমন বিশেষ বিশেষ ব্যক্তি কিন্তুপরিমাণে বিশেষত্ব লাভ করিয়া থাকেন, অপথাপর সমাজ সকলেও তাহা ঘটিয়া থাকে। তবে সে সকল স্থানে সাধারণভত্ত্বে বিরুদ্ধে আপত্তি উপত্তিত না হটয়া ধর্ম-সমাজের বেলা এরপ আপত্তি উপস্থিত হয় কেন ? এ কথা শ্বীকার্য্য যে বিশেষ বিশেষ ব্যক্তির যে বিশেষত্ব আছে, ভাছা স্ব্যত্তই আদরণীয় এবং তাঁছাদিগকে স্ব্যত্তই বিশেষ বিশেষ কার্য্যের ভার অর্পণ করা হইয়াথাকে। রাজনৈতিক সভাতে (यमन (मथा यात्र, पेशाता वहकान इवेटड अहे अटड उडी अवर विष्मय कानवान, ध्यथान ध्यथान कार्यात्र छात्र छै।हानिरशत প্রতিই অর্পিত হয়; নবাগত লোকের পক্ষে সে সকল কার্য্যের ভারতাপ্ত হইবার সম্ভাবনা নাই। ধর্মসমাজেও ভাহাই দেখা यात्र। यांकात्रा नाथन ಅकनानि वात्रा वित्मय व्यक्तनत. यांकात्रा ধর্মজীবন গঠনে অপর সাধারণকৈ সাহায্য কবিতে সমর্থ, উাছা-দিগকেই সেই সকল কাথ্যের ভার দেওয়া হয়, ধর্মসমাজে নিরমতত্র প্রতিষ্ঠিত বলিয়া সকলেই যে উপদেষ্টার আসন গ্রহণ করেন ভাছ নির। -সে বিষয়ে ঘাঁছারা সক্ষ ভাঁছাদের পরামর্শ ७ উপদেশ অনুসারেই কার্যা হর। অপরাপর ছলে যেমন

কতকগুলি কাৰ্য্য সাধারণের বিচারের উপযোগী থাকে। ধর্মসমাজেরও কতকভাল কার্যা সাধারণের বিচারের উপবোগী এবা সেই সকল কার্য্যেই সাধারণের মত প্রদানের স্থবিধা দেওরা হয়। অতএব দেখা উচিত অক্সাম্ভ ছলে নিয়মতন্ত্র প্রণালীতে কার্য্য সম্পন্ন হইতে বাধা না থাকিলে ধর্মসমাজে কেন বাধা উপন্থিত হ**ইবে। বরং ইহাই সম্ধিক সম্ভ**বপর (य धर्मानगः एकद काया निश्चमण्ड श्राणी अञ्चलात अधिक भदिमाण অপুঝলার সভিত চলিবে। কারণ যেরপ সহিষ্ণুতাও উদারতা থাকিলে আগনাপেকা অল অভিজ্ঞের কথা গ্রাহ্য করা সম্ভব হয়, তাতা ধত্মসমাজের লোকের বিশেষতঃ ধর্মসাধনে অগ্রসর ব্যক্তিব নিকট হইতেই অধিক পরিমাণে আশা করা যায়। কারণ তাঁচাবা দর্ব্ব প্রকারে জিতাত্মা, সংযমী, সহিষ্ণু ও প্রেমিক হু ইবেন ৷ অপবের সমালোচনা তাঁহারা যে পরিমাণে স্ফু করিতে সক্ষ ১ইবেন অভের পক্ষে ভজ্ঞপ আশোকরা যায় না। রাজ-নৈভিকেব নিকট বা অপরাপব ছলে যাদৃশ সহিস্কৃতা ও উদা-রভার পবিচয় পাইবার সম্ভাবনা আচে, যদি ধর্মসমাজের অগ্রগণাণণ তালা প্রদশন করিতে না পারেন--যদি কনিছেব নিকট ২টাত সমালোচনা, প্রামশ্বা জ্ঞাত্বা বিষয় প্রহণ কৰিতে প্ৰান্থত না হন, ভাহা হইলে ধৰ্মদাধন এবং ধৰ্মজগতে অধিক সংঘ্রালের যে ফল জীবনে ফলিত হইবার কথা, ভাগা ठाहाता १ १ इन नाहे, हेहाहे तुलिए इहेरत। अञ्चला धर्म-সমাজের পাত অতি অংকভর অভিযোগ উপস্থিত হটবে যে याँकावा ध्यानानरमत्र (शोदरवत्र ध्वामानी महम ; डाँशाम्ब (य স্হিফ্তা ও উদাবতা আছে ধার্মিকগণের চরিত্রে তাহা নাই। যে তানে ফাবেৰা ধীরভাবে কার্য্য সম্পন্ন করেন, আপনাপন জ্ঞানেব ব' অভিজ্ঞতার অভিমান ক্রিয়া ধৈর্যাচাত গ্যেন ন। এবং সাধাবণভল্লের বিরোধী হয়েন না, ধর্মসাধনে অগ্রসর ব্যক্তিগণ যদি সে দকল স্থানে অধীরতার পরিচয় দেন, আপ-নাপন কাষ্যের প্রতিবাদ গ্রহণে অনিচ্ছুক বা অসমর্থ হন, এবং সাধারণভতের বিরোধী হন, ভাছাম্বারা ধর্মেরই নিন্দ। কবা হয়। ধর্মাধন মানবের জীবনে যে স্কল সদ্গুণ সঞ্চার কবিরা দিবে বলিয়া আশা ছিল, তাছারই প্রতিকৃলে সাক্ষা উপত্তিত হয়। ফুডরাং ইহা সভা নয় যে, ধর্মসমাজের কার্যা নিয়মতন্ত্র প্রণালীতে চলে না বা চালান উচিত নয়।

যে যে সানে সাধারণতন্ত্রতার প্রতিকৃলে অভিযোগ উপন্তিত হয়, সেই সেই সানে লোকে অযুথা অভিমান ও কর্তৃত্ব প্রিয়তারই পরিচর প্রাপ্ত হয়। যাহা ধর্মসাধনে অগ্রসর ব্যক্তির পকে নিভান্ত নিক্ষনীর। সাধারণতন্ত্র বা নিয়মতন্ত্রপ্রণালী অফুসারে যে সকল বিষয় নির্দ্ধারিত হয়, ভাচা যে সকল সময়ই স্থনীমাংসা বা অধিকভর কল্যাণকরই হইবে, ভাচা স্ত্তৃত্রপে বলিতে না পারিলেও ভাচা যে এক ব্যক্তির নীমাংসিত বিষয় অপেক্ষা অধিকভর স্থনীমাংসিত ও কল্যাণকর চইবে, ভাচা বলিতে পারা যায় এবং ইহা নিঃসন্দেহে প্রতিপর করিতে পারা যায়, যে সাধারণের মতে যে সকল কার্যা হয়, ভাহাতে কোন গুই অভিস্কির বা স্বার্থপর্ভা

খাকে না। পরামর্শ পূর্কক মল অভিপ্রারে লগজনে কার্য্য করিতে পারে না। যদি তাহা সম্ভব হয়, তাহা হইলে সে সকল ব্যক্তি যে সমাজে অবস্থিতি করে, তাহা কথনই ধর্ম-সমাজ নামের যোগ্য নহে। বিশেষতঃ অধিকাংশের মতে কোন অকল্যাণকর মীমাংসা হইলেও, তাহার সংশোধনের পথ প্রাণত্ত থাকে। কিন্তু একতন্ত্রতার প্রাধান্য যেখানে, সেথানে একবার ভ্রম হইলে, তাহার সংশোধনের সম্ভাবনা অভি কম। একনাও সাধারণতন্ত্র ও নিয়মতন্ত্রহারা ধর্মসমাজের কার্য্য অধিকতর পরিমাণে সুনির্কাহিত হইয়াথাকে।

ধর্মসাধনে অধিক অগ্রসর ব্যক্তির মত এবং অল অগ্রসর ব্যক্তির মতে যদি ভারতম্য করা আবিশ্রক হয়, ভাহা হইলে অধিক জ্ঞানবান এবং অল্লক্ডানব্যক্তি, ধনী ও নির্ধন, শারী-রিকবলে বলীও তুর্বলেরও মতের বিভিন্নতা থাকা আবেশুক। যে, যে বিষয়ে প্রধান সে, সেই বিষয়ে অবিক্তর সাহায্য করিতে मक्तम, এবং তালাদের সালাযা লইবার জক্ত সর্বাদা বাবস্থা থাকাও আবশুক। কিন্তু সাধারণ বিষয়েব মীমাংসায় সাধারণের সকলেরট সমান অধিকার না থাকিলে, কখনট কার্য্যের সুবাবস্থা इन्हें लि शास्त्र ना अनः जन्हार्य (य नामा धर्मानमास्त्रत लाग अनः মূল লকা, ভাচার প্রতিকৃল্ডা করা হয়। অকাবণ সমাজ মধ্যে অতি অকলাণকৰ বৈষমা প্ৰতিষ্ঠিত ক্রিয়া সমাজ-দেহকে হুর্মল ও छिन्न विष्ठित कतिया (फना छत्र। देवस्यानाम कथन हे नमार अब পুষ্টি ও স্বাজ্যের সাহাযাকারী নয়। তাহার অনিষ্ট ফল চির-কাল মানবসমাজ ভোগ করিয়া আসিয়াছে। আবার সেই নৈষ্মাবাদের প্রতিষ্ঠা করিবার প্রয়ানী ভইলে, ইছাই প্রতিপন্ন ছইবে যে, আমর। নতন আদর্শে, নবভাবে যে সমাজ প্রতিষ্ঠিত করিতে সংকর করিয়াভিলাম এবং যাহার আয়োজন ক্রিতে এতদিন যুদ্ধ চেষ্টা করিতেছিলাম তাহা আমাদের আর বাছনীর নয় বা ভাছার উপকারিভার আনর আমাদের বিশাস নাই। একতন্ত্রতার অনিষ্টকাবিতা অপেক্ষা বৈষ্ম্যবাদের অনিষ্টকারিডা অধিকতর প্রবল। সূত্রাং যথোচিত স্চিফুতা, ধীরতা ও উদারতার সহিত আমাদিগকে সাম্যের প্রতিষ্ঠা করিতে এবং সাধানণতন্ত্রের কল্যাণকর সুফল লাভের প্রতিক্ষাতেই অবস্থিতি করিতে হটবে।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্যানি-বাহক সভার ২য়

ত্রৈমাসিক কার্য্যবিবরণ।

३४३७।

(গতনারের শেষ)

ব্ৰাহ্মবালিকা-শিক্ষালয়—গ্ৰীয়ের বছের পর ইচার কার্য্য প্নরার আরম চটরাছে। ইচার মধ্যে একজন শিক্ষরিত্রী পদত্যাগ করিয়াছেন। শ্রীমতী অবলা বস্ত,বাবু কালীশন্তর স্কুল, বাবু জরশন্তর রায় অন্ত্রহ পূর্বক গ্রীমাবকাশের পূর্ব পর্যান্ত ক্লে কার্য্য করিয়াছেন এবং গ্রীমাবকাশান্তে বাবু জন্নশন্তর রার, বাবু ক্ষীরোদচক্ত দাস ও কুমারী প্রেমদা দাস অন্তর্গত করিরা

কার্য্য করি	তছেন। এ <b>জন্ত আমন্ন জাঁহাদিগকে বিশে</b> ষ ধ <b>ন্ত</b> বাদ	₹
দিতেছি।	বর্ত্তমান সময়ে শিক্ষালয়ে ছাত্র ও ছাত্রী সংখ্যা ৮৫	ı
	भिकासम्बद्धाः प्राप्त प्राप्त क्रियान ।	

जां व		-ব্যয় ————	
বেতন আদায়	৩৬৭./•	কর্মচারীর বেতন	€داھۃٯ
ব্ৰত্তি আদার	8∉∥•	গাড়িভা <b>ড়া</b>	32892¢
চাদা ও দান প্রাপ্তি	> 9 <b>৮</b> ॥•	বিবিধ	940/20
চরিত্র পুস্তক বিক্রম	२५०	বৃতিদান	२८\
বিবিধ	210	স্ব কাটীভাড়া	691
	e264.	•	**************************************
পূর্বকার স্থিত	8 • ทศ •	হস্তেষ্ঠিত	२॥/•
মোট	<b>w</b> 36,	মোট	७७५

নানাপ্রকারে শিক্ষালরের ৪০৬ টাকা দেনা আছে।

নীতিবিদ্যালয়—নীতিবিদ্যালয়ের কার্য্য পূর্ববং চলি-তেছে। গ্রীমাবকাশ উপলক্ষে ছই মাস বিদ্যালয়ের কার্য্য স্থাত ছিল। একটা আনন্দের সংবাদ এই যে নীতিবিদ্যালয়ের অক্সতম শিক্ষান্ত্রী শ্রীযুক্তা হেমলতা সরকারের বিশেষ উদ্যোগ ও সহায়তায় বালীগঞ্জে, একটা নীতিবিদ্যালয় স্থাপিত হইযাছে। শ্রীযুক্ত ডাক্তার প্রসরক্ষার রাম মহাশ্রের ভবনে
ইহার কার্য্য হইয়া থাকে। শ্রীযুক্তা সরলা রায় এই বিদ্যালয়টীর জক্ত যেরূপ পরিশ্রম করিতেছেন, তাহার জক্ত ভিনি
আমাদের বিশেষ ধক্তবাদের পাত্রী।

উপরোক্ত কমিটি করেকটা ব্যতীত আর কোনটারও বিশেষ উল্লেখযোগ্য কার্য্যবিবরণ পাওয়া যার নাই।

# আয় ব্যয়ের সংক্ষিপ্ত বিবরণ I

#### সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ। ——ব্যয়

M18		1) 4	
সভ্য ও সহযোগিগণে	\$	প্রচার	৮१७/२
<b>हाँ</b> मा व्यानात्र	89611000	মাসিক ৪৮৪	ه الا
ৰাৰ্ষিক ৩৭৭১	۵,	এককালীন ৩৭৬	10
মাসিক ১০১॥	do.	Meanuin	
		৮৬	0 h/2
8 १ ৮॥	e) o	ইন্কম্ট্যাকা ১	२।•
প্রচারার্থ দানপ্রাপ্তি	999110	<del></del>	
,বার্ষিক >৽	>/		(c)
মাদি <b>ক</b> ১৯৫	2	কর্মচারীর বেতন	>.04.
এককালীন ৪১	() •	কমিশন	<b>া</b>
		<b>ডাক্মাণ্ডল</b>	>>4/0
૭૭૧	110	প্রচার গৃহ সংস্কার	en/6
প্রচারক গৃহ ভাড়া	20/	স্ব ক্ষিটি হিঃ	1140
ञ्चन व्यानात्र	<b>9</b>   0	বিবিধ	2.3NO
जन्म द्राम्पटेति कि	>/	পাথেয়	७२
পাথের	45110		30N/5
বিবিধ	ં	টুাইডীড্ মুলাকন	, २२,७
সিটি কলেজ বৃত্তি	<b>₽</b> ₹∥•	সিটি কলেল বৃত্তি	<b>*</b> >>
টুটেডীড ্সুক্রাম্ন	۲,	সুশীলাবালা ও চার	Fai <b>ল</b> )
ব্রাহ্মসমাধ লাইব্রেগী	bhb	বৃত্তি	53/
বাগজাঁচড়া মিশন	ב/ונש	त्रोपाभिनौ वृश्वि	307.
খাসিয়া মিশন	20/	ব্ৰাহ্মসমান গাইবে	हो ।
* . * .	•		•

কলিকাতা উপাসক	मखनी ১৯১	থাসিয়া মিশন	.>5/
ছর্ভিক	و، ۲۰۵		96
স্থায়ী প্রচার	-	কলিকাতা উপাসক	_ `
• •		প্রচারক গৃহ	
		•	•
देखिनान स्वरंगकान			
		ইঞ্জিন মেদেঞ্জার	
হাওলাত ও সস্পে			२७२॥/२
বিগত ত্রৈমাসিকের		তত্ত্ব-কৌমুদী হিঃ	
<b>হিত</b>	>>११५/७	পুস্তক হিঃ	५०६१।/७
		হাওলাত ও সদ্পেৰ	म ১৮२०५/२
মোট	১২৩৭৩॥৬	<b>रा</b> खिष्टि <u>उ</u>	>৫१२।•
		<b>শো</b> ট	১২৩৭৩॥৬
	ইভিয়ান	মেশেঞ্চার।	
আর		-राम्र	
<b>মূল্যপ্রাপ্তি</b>		কর্মচারীর বেতন	80110
বিজ্ঞাপন	₹8∖	<b>মু</b> ড়াঙ্কন	>00
নগদ বিক্রন্থ	15	কাগজ থরিদ	الحالان
ডাকমাশুল হিসাবে	ফেরৎ	ক মিশন	8
জ্মা	٩٤٥		১০৬॥৶ঀ
বিবিধ ভিঃ	ζ).	• •	י טווייי פי/ווה
এককালীন দান	•		
जिक्काणाम गाम	- 3/	হা 9লাত	২৩৩৯/৩
	७१७॥४३		७>२॥४८
গত ত্রৈমাসিকের বি		<b>হিত</b>	96.40
, ,,, , , , , , ,			
	১৯৩।৵৪		२ ५०। <b>५</b> ८
	তন্ত্ৰ-কে	तेमुनी ।	
<b>অার</b> ———		-ব্যয়	
মূল্পাপ্রাপ্ত	৪৩৩॥৫	কর্মচারীর বেভন	<b>₽5∥/&gt;</b> ∘
নগদ বিক্রয়	4.	<b>মুদ্রাঙ্কন</b>	28110
ডাক্মাণ্ডল	৸•	<b>ক</b> গিজ	echel:
		ক মিশন	ห./ 0
	808146	ডাকমাশুল	89
গত ত্রৈমাসিকের		বিবিধ	<b>प्रा</b> र्ज ०
<b>হিত</b>	20201/0	হাওলাত	> ६२०।/>६
		•	
	३०४०॥८/६	_	३७११७/ <b>८</b>
		<b>হি</b> ত	२०० <sub>८</sub> ५०
			*************
			२०८३॥८५६
	9t#277	ात ऋ√७ ।	
পৃস্তকের ফণ্ড। আয়————বায়——————			
নগদ বিক্রম	3834de		ক্র য়ের
ঐ অপরের	99 Je		69/ •
বাকী মূল্য আলায়		•	હાત •
ডাক্মাণ্ডল	b1/0	,	७७॥७७०
কমিশন	2511920	ডাক্মাশুল	#1/2°
राचा (च		– পুস্তক বাধা <b>ই</b>	80/
	२१२॥/७०	क गिमन	88NJ >0
গত ত্রৈমাসিকের		<b>কা</b> গজ	5/50
হিত	0607110/36	বিবিধ	811/ •
147	-5-7-114 3 <i>t</i>	হাওগাত	288 • Ho/ >€
	७৮১३।६	र। जना। ७	
, *			٥٥٥٤٠٠٠
•	ı	<b>হিত</b>	०७३ <i>५</i> ८३ <b>६</b> ३७७८५
•		, 🐧 -	1@00.2∙
	,		***
		•	02721¢

#### আন্ধমিশন প্রেসের ১ম ছর মাসের হিসাব

चात्र —	– বায়——————
ছাপাই ( যত টাকার	মুদ্রান্ধন, কাগজাদি বাবদে
काख ब्हेबार्ह् ) ১৯৬२४०	
১म टे <b>जः ১०৮०॥</b> √०	হইয়াছে ২৩৩৫৸৫
২র তৈঃ ৮৮১∥৽	<b>२म देवः   ১</b> ୭৪୭ <i>७</i> ১६
व्यानात्र २১७०।/०	२म्र देखः २२॥>•
ऽम दे <b>वः ১১৮</b> ৪√৫	বেভন ১১৮০।•
२व टेजः २१७४२०	১ম কৈঃ ৬৪১৶¢
প্রেসপ্রস্তুত হিঃ ২২১১	२म्र टेवः ६८२८७६
<b>ऽम देवः   ১১</b> %।	সরস্তামি ১৩৫।৵৭॥
२म्र देखः ১०१॥०	১ম ক্রৈঃ ৭৪॥ <b>॰</b>
গৃহ প্ৰস্তুত হিঃ ৬০১	২য় তৈত্ৰ: ৬০৸৵ঀ॥
১ম তৈঃ ৩•্	বিবিধ ৫১।৫১০
২য় তৈত্ৰঃ ৩০১	ऽय देख: ७৫√৫
বিবিধ ৩৬৮৮/০	२ म टेकः ১१।/œ
১ম তৈঃ ৩৫৷১০	ডাক্মাশুল ১৮/৫
२ऋ देखः ১॥/১∙	२म देखः ।⊍ <b>৫</b>
হাওলাভ জমা ১৫৬৬।/৫	২য় তৈঃ ৸৵৽
১ম ত্রৈঃ ৮৩৬% এ	গুহ প্রস্তুত ৫১১০
२३ टेवः १३०॥√०	२म्र टेजः ७७७०
	• ञ्चन ५००॥०
৬০ <i>০ দ্যা</i> ন ৫	ऽस देख: १ <b>८</b> √
গত বর্ষের স্থিত ৪১/১৫	২য় ক্রেঃ ৭৬॥•
<del></del>	বাটীভাড়া ৬•১
6000Mdo	
	२म्र देखः ७०
	ওরারেণ্টিয়ার ১৯০॥•
	১ম देखः ১०२॥०
	२म टेवः ৮৮.
	প্রেম প্রস্তুত ৬৯।৫
	) म देखः ।।।।। ।
	२म्र टेखः ७१॥/৫
	হাওলাভ শোধ ১৮০৯৮১৫
	२म टेवः २९४॥ ४०
	२य देखः ५७५% ६
••	॥१८७ ४६६०
	गहिरमञ्ज ১२
	ااو د اد د د د د د د د د د د د د د د د د
	श्चित्र १। 📗
	4.04020

### পাঁচফুলের সাজি।

#### > 1 Marcus Aurelius .--

"Wander at random no longer Alas! You have no time left to peruse your diary to read over the Greek and Roman history, or so much as your own common place book, which you collected to serve you when you were old. Hasten then towards the God. Do not flatten and deceive yourself. Come to your own aid "mfy, if you have a kindness" "nrself."

লকাহীনভাবে আর বিচরণ করিও না। হার ! ভোমার দৈনন্দিন লিপি পাঠ করিবার, প্রীক এবং রোমান্ ইভিহাস পুনরার অধ্যয়ন করিবার বা এমন কি বৃদ্ধ হইলে ভোমার উপকার হইবে বলিরা যে বন্ধু বিষয়িণী পুত্তিকা সম্ভলিত করিয়া-ছিলে, ভাহাও পাঠ করিবার সমর অব্ধিষ্ট নাই। অরার গত্তবা আনের দিকে গমন কর। আত্মলাধা করিও না এবং আত্ম-প্রভারিত হইও না। যদি আপনার প্রতি দরা থাকে, তবে সমর থাকিতে থাকিতে আপনার সহায়তা কর।

#### 21 Epictetus .-

"Think of God oftener than you breathe. Let discourse of God renewed daily more surely than your food."

খান প্রখান লওয়া অপেক। অধিকবার ঈশরের বিষয় চিস্তা করিও। প্রত্যাহ আহারাপেকা নিশ্চিন্তরপে ভগবৎ প্রস্থ পুনংপুনং আলোচিত হইতে থাকক।

oı Shelley .--

Time

Unfathomale sea, whose waves are years!

Ocean of time, whose waters of deep woe.

Are brackish with the salt of human tears!

Thou shoreless flood which in thy ebb and flow.

Claspest the limits of mortality;

And, Sick of prey yet howling on for more,

Vomitest on its inhospitable shore!

Treacherous in calm, and terrible in storm,

Who shall put forth on thee,

Unfathomable sea ?

হে অতলম্পর্শ সমুদ্র, বর্ষণণ ভোমার ভরকা! হে কালকলধি, ভোমার গভার বিষাদের কলরাশি মানবাক্ষতে লবণাক্ত!
হে অকুল ভরকোচ্ছ্বাস ভূমি ভোমার কোয়ার ভাটাতে নশ্বরছের
সীমা সকলকে আলিক্ষন কর, এবং বিনাশে বীভরাগ ভগাচ
আরও পাইবার কভ বরণ কাররা ভোমার ধ্বংসাবশেষ সমূহ
ভাহার আভিণ্য বিহীন কুলে উন্দীরণ করিয়া থাক, ভূমি
শাস্তির সমরে বিশাস্থাতক এবং ঝটকাকালে ভরানক, হে
মতলম্পশ কলবারাধ, কে ভোমাতে (জীবন-ভরী ভাসাইবে)
ভাসিবে ?

### ব্রান্মসমাজ।

প্রচার—শ্রীবৃক্ত নবৰীপচক্র দাস বরিশাল হইতে প্রভাগমনের সময় নোরাখালীতে নিমলিখিত কার্য্যাদি করেন;—ভানীয় টাউন হলে "সতাধর্মা কি?" এবং "কি উপায়ে ধর্মাণাভ করা যায়?" এই ছইটি বক্তৃতা কয়েন। ভানীর মাজিট্রেট মিঃ বি, দে ছই দিনই উপস্থিত থাকিয়া আগ্রহ প্রকাশ কার্যাছেন এবং পারবারে পারবারে উপাসনা উপদেশ আলোচনাদি করিয়া তথা হইতে যশোহর গমন কয়েন। তথার পরিবারে উপাস্না, আলোচনা এবং বার লাইত্রেরিংত এক দিন "আমাদের কিনের অভাব" সহজে বক্তা করেন।

গদার তীরবর্ত্তী বেলুর নামক গ্রামে গত ৩০ শে স্কুলাই রবিবার আমাদের প্রচারক-দল গমন করিরাছিলেন। সেধানে সংগীত সংকীর্ত্তন উপাসনা ও ব্যাখ্যা ও উপদেশাদি হইরাছিল। শ্রীযুক্ত নবদ্বীপচক্র দাস উপাসনা ও শ্লোক অবলখনে উপদেশ দান করেন, এবং শ্রীযুক্ত শশিভূষণ বহু কিছু বলেন।

বর্ত্তমান মাসের প্রথম ভাগে সাধনাশ্রম হইতে শ্রীগুরু প্রকাশ দেব এবং বাব্ হরিমোহন ঘোষাল মফঃস্বল গমন করিয়া নিম্নিথিতরূপে কার্যা করিয়াছেন :—

বর্দ্ধনান—শ্রীযুক্ত বাবু রাজগোপাল রার নামক একজন পেন্সনপ্রাপ্ত ডে: মাজিপ্রেটের গৃহে চরিমোচন বাবু ব্রাহ্মধর্ম গ্রন্থ চইতে কিছু পাঠ এবং সঙ্গীত, সংকীর্ত্তন ও প্রার্থনা করেন। শ্রীযুক্ত শ্রীনাথ দত্ত, শ্রীযুক্ত বাবু বিনোদবিচারী বন্ধ মচাশয়-দিগের গৃহে উপাসনা করেন। ব্রাহ্মসমাজ মন্দিরে একদিন "বিষমঙ্গলের জীবন" সম্বন্ধে কথকতা করেন। বিষমঙ্গলের নবজীবন প্রাপ্তি, ভগবৎ-প্রেম ও সাধন-পথে সংগ্রাম প্রভৃতি বিষয়গুলি উজ্জ্বলরূপে বর্ণিত হইশাছিল।

রামপুরহাট—স্থানীয় ব্রহ্মান্সিরে শ্রীযুক্ত প্রকাশ দেব হিন্দিতে উপাদনা করেন ও উপদেশ দেন। সাপ্তাহিক উপা-সনায় বাবু হরিমোহন ঘোষাল মন্দিরে উপাদনার কার্য্য করেন এবং বাইবেলের একটা উপদেশ উল্লেখ করিয়া কিছু বলেন একদিন বাবু মহেশচক্র খেন মহাশরেছ গৃহে হরি-মোহন বাবু উপাদনা করেন ও প্রকাশ দেব প্রার্থনা করেন।

নলগান — আমাদের বন্ধু প্রীযুক্ত নীলকান্ত সিদ্ধান্ত মহাশর, এখানে রজনী বিদ্যালয় স্থাপন এবং ছোমিওপ্যাথিক চিকিৎসা ধারা গরীবদিগের মধ্যে বিশেষরূপে কার্য্য করিতেছেন। এত দ্বির করেকটি আদ্ধ-বালিকার প্রতিপালন ও শিক্ষার ভারও গ্রহণ করিয়াছেন। নীলকান্ত বাবুর গৃহে প্রকাশ দেব হিন্দিতে উপাসনা করেন।

ভাগলপুর—শ্রীযুক্ত उन्मरि नात्रायुग মহাশয়ের পুছে উপাদনা হয়, প্রকাশদেব স্বী হিন্দিতে উপাদনা করেন। স্থানীয় ব্রহ্মান্দরে এক্দিন হিন্দিতে উপাসনা হয়, প্রকাশ দেব জী উপাসনা করেন এবং উপনিষদের বচন উদ্ধৃত করিয়া উপদেশ দেন। একদিন তীযুক্ত অন্ধাদেব নারায়ণ মহাশায়ের श्रुष्ट चार्याहमा मञ्जाहत्र। श्रुकाम स्वरकी ध्यार्थमा करत्रम। uक्षी श्राप्तत উত্তরচ্চলে স্থানীয় উকিল **औ**युक्त वाव निवातगठन মুখোপাধ্যায় ও প্রকাশ দেব জী প্রভৃতি ব্রাহ্মধর্ম ও তাহা गाथन मश्रक्ष किछू किछू राजन। औग्रक अकारनर नाताग्रास्त शृद्ध इतियाहन वात् विवयशालात भीवन विषय कथक्छ। करतन। विष्यतः श्रीयुक अन्नामव नातामव ভাগলপুরত্ব বন্ধুগণ ইহাঁদের কার্য্যের জনেক সহায়তা করিয়াছেন, তজ্জ তাঁহা-मिश्रक चास्त्रिक श्रम्भवाम ।

কাটিবার--রবিবার সন্ধার পর সাপ্তাহিক উপাসনা হর। বাবু বরিমোহন বোধাল উপাসনা করেন। ১৭ই জ্লাই--অপশ্বাক্তে দ্বানীয় অন্ধান্ধিয়ে এক সভা হয়। এখনে একটি হিন্দী সদীত হইলে প্রকাশ দেব জী সংক্ষিপ্ত প্রার্থনাপূর্বক হিন্দীতে "মুখে ধর্মাত মানিলে হয় না, জীবনে সাধন করা চাই" এ বিষয়ে তেজনী ভাবার বক্তৃতা করেন। তংগর জার একটা হিন্দী সদীত হইলে হরিমোহন বাবু কিরূপে "এই ধর্ম জীবনে সাধন করিতে হয়" এ বিষয়ে কিছু বলিরা উপসংহার করেন। সভাতে বাদালী ও হিন্দুহানী প্রায় ৮০ জন লোক উপস্থিত ছিলেন। সকলেই মনযোগের সহিত বক্তৃতাদি প্রবণ করেন। তংগর মন্দিরে হিন্দিতে উপাসনা হর, প্রকাশ দেবজী আচা-র্যোর কার্য্য করেন এবং প্রকৃত্ত শান্তি কিসে পাঞ্জরা যার এ বিষয়ে উপদেশ দেন।

এতদ্ভির উপরোক্ত ভান সকলে ব্রহ্মধর্মের প্রক বিক্রম্ন ও সাধনাশ্রমের জন্ত দান সংগৃহীত হইরাছে। এবং কেছ কেছ আমাদের কাগজের প্রাছক হইরাছেন। ইইরো তথা হইতে প্রিরাতে গমন করেন। সেখানে গিরা শ্রীযুক্ত প্রকাশ দেব জাররোগে আক্রান্ত হন। শ্রীযুক্ত বাবু পার্কাতীচরণ গুপ্তের গৃহে হরিমোহন বাবু একদিন কথকতা করেন, ও উপাসনাদ হয়। শ্রীযুক্ত প্রকাশ দেব পীড়িত হইরাছিলেন বলিয়া, হহার। সম্বর কলিকাতা প্রত্যাগমন করিয়াছেন।

শাজি—পরলোক পুণাদাপ্রদাদ সরকারের আদ্যাশ্রাদ্ধ গত ২২শে জুলাই ব্রহ্মান্দরে সম্পন্ন হইয়ছে। বাবু উমেশচন্ত দত্ত আচার্য্যের কার্য্য করেন। বাবু কাশীচন্ত ঘোষাল পুণাদা বাবুর সংক্ষিপ্ত জীবনচরিত পাঠ করেন। তাহার অনাপা প্রাক্তির রজতবালা সরকার একটি শিশুসন্তান সহ এপন ব্রাহ্মবন্ধ্রণ আশ্রের আহেন। ব্রাহ্মবন্ধ্রণ তাহার সম্পূর্ণ বায়ভার বহন করিতে প্রস্তুত রহিয়াছেন; কিন্ত তিনি সাধারণের সাহায়ে জীবনযাত্রা নির্বাহ করা অপেক্ষা শিক্ষাত্রি অপবা তত্রেপ অন্ত কোনও কার্য্য দারা জীবিকা নির্বাহ করা ভাল মনে করেন। অতএব যাহাতে তিনি উপযুক্ত কপে শিক্ষ লাভ করিছে পাবেন, আনাদের সেই উপান্ন বিধান করিয়া দিতে হইবে। আশা করি সকলেই এ বিষয়ে সাহায্য করিবেন।

আমাদের শ্রেদ্ধের বর্ধার গুণাভিবাম বৈজুয়া বায় বাছাত্বের প্রথম প্র জ্বরোগে প্রলীয়া নামক স্থানে মানবলীলা সংবরণ করিয়াছেন। এই বৃদ্ধ বর্ধে অয় দিনের মধাে বজুয়া মহাশর করেকবার শোকের আঘাত পাইলেন। প্রথমতঃ তাঁহার কল্পা (ডাঃ নলকুমার রাধের জী) বিধবা হন, তৎপব সহধ্মিণী পর-লোক গমন করেন, এবার প্রথম প্রভি হারাইলেন। অপর লোক হইলে একপ নিদারণ শোকের আঘাতে ভালিয়া পড়িতেন; কিন্তু বড়য়া মহাশরের বিখাস ও ভক্তি তাঁহাকে এই কঠোর পরীক্ষাতেও স্থায়র রাথিবাছে। বায়ুব আঘাতে কদণী বৃক্ষই ভূপতিত হুইয়া থাকে. স্থান্ট পর্বতকে টলাইভে পায়ে না। গত ২২শে জ্লাই পরলোক গত আত্মার কল্যাণার্থ কলিকভার ডাঃ মোহিনীমেছিন রস্কর বাটিতে উপাসনা হয়। শ্রিম্ক নবরীপ চক্ত দাস আচার্যের কার্য্য করেন। বজুয়া মহাশরের প্রার্থনা

অতি প্রাণস্পর্শী হইরাছিল। তাঁহার বিখাস ও ভক্তিভাব দেখিরা উপাসকগণ ভৃপ্ত হইরাছিলেন। প্রমেখরের প্রতি নির্ভর করিরা কিরপে শোকে হঃধে অবিচলিত থাকিতে হয়, এই বৃদ্ধ সাধকের জীবন তাহার দৃষ্টান্ত স্থল। প্রাদ্ধ উপলক্ষে তিনি ব্রাহ্মসমাজের নানা বিভাগে ৩০১ টাকা দান করিয়াছেন।

শ্রীমান্ শ্রীরঙ্গবিহারী লালের খুল্লিভামহের আলা শ্রাদ্ধ গত ২৬ শে জুলাই ২১০।৫ নম্বর ভবনে সম্পন্ন হইরাছে। শ্রীযুক্ত নবনীপচন্দ্র দাস আচার্য্যের করেন। এতত্পলকে শ্রীমান শ্রীরঙ্গবিহারী সাঃ ব্রাঃ সমাজে ২ দাতব্য বিভাগে ২ সাধনা-শ্রমে ২ দাসাশ্রমে ২ এবং অনাথাশ্রমে ২ মোট ১০ টাকা দান করিয়াছেন।

গত ৩•শে ছুলাই বেণেটোলা ২৪৫।৪নং ভবনে বাবু প্রসন্নকুমার কুণ্ডের পিতার আদ্যে শ্রাদ্ধ সম্পন্ন হইয়াছে। ডাঃ ছে, এন, মিত্র আচার্য্যের কার্য্য করেন। প্রমেশ্বর প্রলোকগত আত্মাদিগের কল্যাণ বিধান করুন।

নামকরণ— ২২শে জুলাই, কলিকাতা ২১৭ নং ভবনে বাবু অধরচন্দ্র মিত্রের কলার নামকরণ হইরাছে। বাবু আদিনাথ চট্টোপাধ্যার উপাস্ত্র করেন। বালিকার নাম স্থরীতি রাখা হইরাছে।

শিলকের বাবু মথুরানীথ নন্দীর ছইটি পুজের নামকরণ ছইরাছে। এতছপলকে বাবু নীশমণি চক্রবর্তী আচার্য্যের কার্য্য ক্রেন্ত্র শেলা সংক্রেন্ত্র শেলা সংক্রেন্ত্র শেলা হইরাছে। প্রমেশ্বর শিশুদিগের কল্যাণ্বিধান করন।

বরিশালের কার্য্যবিবরণ—বরিশাল হইতে জনৈক আন্ধবন্ধ নিমলিথিত কার্য্যবিবরণ প্রেরণ করিয়াছেন ;—

জাতকর্ম — প্রীযুক্ত বাবু বিরণচক্ত দাস মহাশয়ের পুজের জাতকর্মোপলক্ষে এক্ষোপাসনা হয়। বাবু কালীমোহন দাস মহাশয় আহার্যোর কার্যা করেন। নিবারণ বাবু বরিশাল আক্ষসমাজে ১ টাকাদান করিয়াছেন।

বিবাহ—ৰবিশালনগরে পরলোকগত ডাক্তার জগৎচক্ত গুপ্ত মহাশরের ২য় পুত্র শ্রীমান্ বিনয়ভূষণ গুপ্তের সহিত কলিকাতা প্রবাসী শ্রীমুক্ত রাধিকাপ্রসাদ মৈত্রের ১মা কল্পা শ্রীমতী কুমারী ইন্দ্মতীর শুভবিবাহ হইরাছে। শ্রীমুক্ত বাবু কালীমোহন দাস আচার্যোর কার্যা করেন। বিবাহ ১৮৭২ সালের ৩ আইন মতে রেজেইরি হইরাছে। এতত্পলক্ষে বিনয় বাব্র মাতা বরিশাল ব্রাক্ষসনাজে ৫্টাকা দান করিরাছেন:

শ্রাজ-বরিশাণ নিবাসী বাবু বামনচন্ত্র গাঙ্গীর পর-লোকগত খণ্ডর কালীমোহন রায় চৌধুরীয় আলা প্রাজ্যেপলকে ত্রন্ধোপাসনা হইয়াছে। বাবু ছিল্লাস দত্ত আঁচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন।

বরিশাণ নিবাসী বাবু চণ্ডীচরণ শুদের পিতামহের আদ্য শ্রাজোপলকে ব্রজোপাসনা হইরাছে। বাবু কালীমোহন দাস উপাসনা করিরাছেন। এতত্পলকে চণ্ডী বাবু দাসাশ্রমে ১্ টাকা দান করিয়াছেন।

বরিশাল ব্রাহ্মসমাজের ৩২শৎ জন্মোৎসব—৯ই আঘাত বৃহস্পতিবার সন্ধ্যার সময় উৎসবের উদ্বোধন হয়। বাবু মনোমোহন চক্রবর্তী আচার্য্যের কার্য্য করেন।

১০ই আবাঢ় গুক্রবার—বরিশাল ব্রাহ্মসমাজের জন্মদিন। প্রাতে ও সন্ধ্যাকালে উপাসনা, সঙ্গীত সন্ধার্তন হয়। ছবেলাই বাবু কালীমোহন দাস আচার্য্যের কার্য্য করেন। মধ্যাকে পাঠ, আলোচনা, সঙ্গীত, সন্ধার্তনাদি হয়।

১১ই আষাঢ় শনিবার—প্রাতে উপাসনা, সঙ্গীত ও সংকী-র্ত্তন হয়। বৈকালে "ব্রাহ্মধর্ম ও ব্রাহ্মসমাজ" সম্বন্ধে বক্তৃতা হয়। বাবুমনোমোহন চক্রবর্তী উপাসনা ও বক্তৃতা করেন।

দান—আমরা ক্লভজ্ঞভার সহিত স্বীকার করিতেছি যে,
নিম্নলিথিত ব্যক্তিগণ সাধারণ ব্রাহ্মসমাহে নিম্নলিথিতক্রপ দান
করিয়াছেন:—বাবু কান্তিচক্র চট্টোপাধ্যার প্রচার বিভাগে ১১
ও থাসিয়া প্রচার ভাণ্ডারে ১১, বাবু রলনীকান্ত সরকার
প্রচার বিভাগে ২১, বাবু গুরুদ্যাল রায় ৪১. মি: এল, এন
চৌধুরী সাধারণ প্রাহ্মসমাহে ৫১, সাধনাশ্রমে ৫১, ।

ভ্রমসংশোধন—নোয়াধালী হইতে বাবুরজনীকান্ত রার লিথিয়াছেন, "গত ১লা প্রাবণের ভন্ধকৌমুলীতে আমার অগ্রজ প্রীযুক্ত বাবু হরকান্ত বস্ত্র পুরের নামকরণের বিবরণে ২টা প্রমাদেশ গেল।" ১ম বালকের নাম "সোলিনীকান্ত" রাধা হইয়াছে "মোলিনীকান্ত" নলে। ২য় তিনি নামকরণ উপলক্ষে পাঁচি টাকা লান করিয়াছেন—ঢাকা পূর্ববালালা আক্ষসমাজে ১৯ টাকা এবং কলিকাতার সাধারণ আক্ষসমাজে ও আপ্রমে ৩৯ টাকা প্রত হয়া জুলাই রবিবার নামকরণ ইইয়াছে।

পুরকার বিতরণ—মাজাজের ত্রান্ধবন্ধাণের তত্ত্বাবধানে গরিব বালক বালিকাদিগের একটা কুল আছে। সম্প্রতি
রাজা বালগজপতি রার বাহাত্র স্থলের ষঠ বার্ষিক উৎসব
উপলক্ষে গরিব বালক বালিকাদিগকে বক্ত দান করিরাছেন।
স্বলের তত্ত্বাবধারকগণ এতৎ সংস্ট একটা বোর্ডিং খুলিবার
সংকর করিরাছেন। আমরা তাঁহাদের সাধুসংকরের জন্ত ধন্তবাদ প্রদান করিতেছি। ত্রান্ধদিগের তত্ত্বাবধানে বালক
বালিকাদিগের জন্ত বোর্ডিং স্কুল যত স্থাপিত হইবে, ভত্ত্ব



# ্ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

৯ম সংখ্যা ১৬শ ভাগ।

>লা ভাজে, বুধবার, ১৮১৫ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাংসন্থিক অব্রিষ স্বা থাও মহন্দের ৩ প্রতি বডের স্বা

#### আছ্ম-সমর্পণ।

कछरे विषय ! वारका रहेस व्याधीन, छव महा चावित्रा सन्तरक : ভবু হে বিশাস কেন অভিলয় কীণ, ক্ষেন ডব্লি বেভে ভব পৰে 🔊 কত প্ৰিন্ন সংখাধনে সংখাধি ভোমার, वान यम हब्रान हानिया ; कि स्टब तम मिडे कावा, यहि कमहात. व्यथि निरम विश्वत शक्ति । १ धूनि नषा, कि दृष्ट के नष्ठा मध्यायान, সভ্যে যদি না হলো নির্ভন্ন ? बीवन-मश्काम मंकि त्वत्र ना त्य शत्न, त्म थरन मा धन कारव नह। यमि (र निर्छत स्थाद दिल क्शर्छ, यमि चाना भार्विय महत्त, তবে কেন তৰ গৰা খুবি নানামতে, কেন ডাকি সভ্য সভ্য বলে ? तिक रह विश्वान-चौषि व स्माह चौषातः ; শ্রি আমি সভ্যের সাধ্না; व मकि गानिष्ट धरे निविन मानात, তারি ক্রোড়ে সঁপিহে আপনা॥

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

বন্ধন-জাল-শুটিগোলা বখন আগনার দেই হইতে
বস বিনির্গত করির। জাপনার কোব নির্দাণ করিতে থাকে,
তখন এক ব্রিক্তির্ব্ব্যাপার দৃষ্ট হর। সে ক্রমে ক্রমে আপনার রচিত
কারাগারেই আবদ্ধ হয়। মাছব চ সেইরপ নির্ভর আপনার
রচিত কারাগারে আপনিই আবদ্ধ হইডেছে। যানব আপনাকে
ক্রমের করিবার জন্ত আপনি নারাব্রকার কাল কৃষ্টি করে।

কেছ কেছ পদের জালে জড়িত হইরা আবদ্ধ হয়। উপাসনা ७ शार्षनात छारात्करे शक्क नेपनातायना स्नाम किना तरे ভাষাতেই সম্ভই থাকে, ভাগাভেই আত্মভূপ্ত হয়, এবং ভাষার অভীত আর কিছুর অন্ত ভাগদের প্রাণ ব্যাকুল বন্ধ না। এই बाल खाठीन नायकविश्वत मध्य चानतक मूर्य बक्की नाम नाव বার বার উচ্চারণ করিয়া ধর্মের শ্রেষ্ঠ কার্যা হইল বলিয়া মনে करबन। (कह (कह छारवह बारन चावड हन। छीहांबा यथन দ্বার-চিন্তাতে বা তাঁহার 🖦 শীর্তন বা প্রবণে নিযুক্ত হন, क्यन छीश्रामन श्वरत धन कामान खारवारत व स्टेस्ड वारन। এই ভাব-প্রবশতা প্রকৃতিসিদ্ধ গুণ। ভারার ভারার ও अङ्गिष्ठ जावक्षवण्यां किहू वर्षिक शतिमाल गृहे द्व । अहे ভাষতাৰৰ ব্যক্তিগৰ বখন ভাৰোচ্ছানের পূর্ব সঞ্জোপ করিতে थाक्न, ७४म छाहारकरे शर्यात हत्रमावका विनया मरम करनम । कार केरहारमञ्ज मानव हाविमित्न अकटाकात वान विकास करत, ৰাছাতে ভাঁছাদের দৃষ্টি আবদ্ধ হইরা বার। ভাঁহারা ভাবেই তৃপ্ত হইরা সস্তোষ লাভ করেন। আবার বাহিরের ক্রিয়া কাহার কাহারও পক্ষে বন্ধন জাল অরুপ ৷ তাঁহারা কতকগুলি ধর্মের বাছিরের নিরম পালন করিতেছেন এবং ভাছাকেই ধর্মজানে তৃপ্ত হইয়া আছেন। সেই বাহ্যক্রিয়া অন্তর্কে স্পর্ণ ক্ষিডেছে কি না, হৃদয়কে সমুরত ক্ষিতেছে কি না, সে বিষয়ে कौंशास्त्र मृष्टि नारे। वाश्टिक्त निवय भागन कविवारे कांश्या সম্ভঃ। ইহাও তাঁহাদের পক্ষে একপ্রকার জালস্বরূপ। আমরা ষধনই অনবহিত হই, বাহিরের বিষয়ে ব্যাপৃত হইরা আত্ম দৃষ্টি विद्योन करे, ७५नि च आकारुगारत अहे मकन जान जामारनत চিত্তকে আবদ্ধ করে। আনরা খোর ভ্রান্তির মধ্যে পড়িরা আত্মবিত্মত হইরা থাকি। ঈশ্বরকে সত্যত্তরূপ বলি, দ্রান্ত্র ৰলি, পিছা মাভা ৰলি, অণচ তাঁছার প্রতি সে প্রকারে নির্ভর কৰিতে পারিতেছি কি না সে দিকে দৃষ্টিই থাকে না। বাহিরে अक्षे पर्यात्र वार्गात । अ नाथन চলিতে थारक, अथह अखरत " শৃত্বভা-- অসারতা-- নির্ভরহীনতা। এই শোচনীর অবস্থা হইতে ঈশ্বর আমাদিগতে উদ্ধার করুন।

রচিত কারাগারে আপনিই আবদ্ধ হইভেছে। যাদৰ আপনাকে মৃতিত্বৈধ—আদদের মধ্যে যথন এই আন সমরেতেই আবদ্ধ করিবার জন্ম আপনি নানাঞ্জনার জান কৃষ্টি করে। মডের ভিন্নতা গ্রন্থক ভিন ধন হইরাছে, ভখন বাহির হইতে

र्मिश्री परनरक रवे बाक्रमभारकत स्विष्ट विवरत मरकह केश्विरवर्ध है। कि इ चाण्डरवीत विवय नम् । हैशत है मध्या यथन अक्रम चिन ज्यन किছू मीर्चकान शिला ना बानि देशात कछ भाषा खाभाषा निर्गंड रहेरव अवः अरे नमान रोनवन रहेर्ड रहेर्ड (भरा कान-গর্ভে বিলীন হইয়া যাইতে পারে এরূপ আশবা হৃদরে উদিত হওরা কিছুই অস্বাভ।বিক নহে। কিন্তু এরপ চিন্তা ক্লেবল ইহার বিরোধীদিণের পক্ষেই সম্ভব। কিন্তু বাঁহার। ইহার মধ্যে বাস করিতেছেন, তাঁহাদের পক্ষে কি স্বাভাবিক ? বাঁহারা বিশাসী তাঁহার৷ ইহার এই উত্তর দিবেন-ইহা যদি আমার তোমার জিনিস হইত, তবে তোমাদের আশহার কথা শুনিরা ভাবিতাম। ইহার এই প্রথম উদ্যমেই যেরূপ অবস্থা দেখিতেছি তাহাতে ইহার স্থায়িত্ব সম্ভব বোধ হয় না; কিন্তু ইহা ত তোমার আমার জিনিদ নর; ইহা ঈখরের শীবস্ত পরিতাপপ্রদ বিধি। করুণাময় ঈশার এবার এই জীবস্ত সাক্ষাৎ ধর্মা স্বারা জীবকে উদ্ধার করিবেন। স্থতরাং ইহাতে ষ্ডই মৃতবৈধ (मर्थ ना (कन, यउरे रेहारक इन्तंन (मर्थ ना (कन, अगर्ड भागनात मक्टिए हैश कत्रयुक्त इहेरवह इहेरव। भागास्त्र মধ্যে যাহার৷ বিশাসী হইর৷ পড়ির৷ থাকিবে তাঁহারাই পরিজ্ঞাপ লাভ করিবে। তবে কি শুধু বাহিরের লোকেরাই নিরাশার কথা বলেন এবং ঐ আশঙ্কায় চকুতে দেখেন? না তাহা নছে। ত্র।ক্ষদমাব্দের ভিতরেও এরপ লোক আছেন, বাঁহারা ইহাকে বিশ্বাদের চক্ষে দেখিতেছেন না, তাঁহারাও অন্তর্বিরোধ দেখিরা সমরে সমরে নিরাশ হইতেছেন ও এমন কি অর করেণে বিরক্ত হইরা সরিরা পড়িতেছেন। এইরাপ অর বিখাদী ব্যক্তিগণ সম্পূর্ণরূপে ইহার সহিত একীভূত হইতে চান না। ভরে ভরে এরপভাবে অমুষ্ঠান করেন ধাহাতে প্রাচীন দলে সহজে মিলিতে পারেন। তাঁহারা ধর্মকে শ্রেষ্ঠ স্থান দিতে পারেন না; পৃথিবীর হুধ সম্পদ মান সম্মেকেই শ্রেষ্ঠ স্থান দিয়া श्रात्कन। এরপ ত্র্বল বিশাসী লোক সকল সমাজেই থাকিবে; তাहा (पिश्रा-छोछ हरेल हिन्दि ना दब्र छाहा (पिश्रा स्पन्न সকলকে সাৰধান ও উৎসাহী হইতে হইবে। পুণিবীতে ষ্ণাৰ্থ ধর্ম রক্ষান্তরা, বিশ্বাস অফুদারে চলা আতশর কঠিন ব্যাপার विनिधा मक्तमा व्यवन वाधिए इहेरव।

আমরা এই মতদৈধ দেখিয়া কিছু ভীত হই না, বরং আনক
সমর আনন্দিত হই। আনেক সময় ইহারই মধ্যে জীবনীশক্তির
বিদামানতা দেখি। মনে হর ইহা বিধাতার জীবস্ত বিধি,
ইহাতে কোন আবর্জনা আসিতে পাইবে না। মতভেদের
মধ্যে চিস্তানীশতার পরিচর পাওরা যায়। বিশেষ যে ধর্মে
কোন অল্লান্ত মহুষা বা গ্রন্থ নাই সেখানে মত ও ক্রচিগত
বৈচিত্র থাকাই সম্ভব। যেখানে সে বৈচিত্র নাই, সেখানে
কিঞ্চিৎ পরিমাণে মৃতভাব আসিয়াছে ব্লিয়া মনে হয়, তবে
ইহা অবস্তু শীকাষ্য এবং ইহা দেখিয়া আমাদিগকে সময়ে সময়ে
আতিশর হুংথিত হইতে হইতেছে যে, মতগত পার্থক্যনিবন্ধন
আনক স্থলে হ্লায়েরও পার্থক্য ঘটতেছে, প্রেমের প্রিবর্জে
আবোম জান্মতেছে; তছারা সমগ্র মণ্ডলিয় খননিবিউতা বিনষ্ট
হইয়া য়াইতেছে। তাহা মানবংশ্রন্থতির হুর্মেলভাবশতঃ,

आधारमञ्ज अक्षेत्र वर्षाकीनरमञ्ज कीमजावभाषः। वीक्षांत्रा धहे প্রাক্তর তুর্বলভা ও ভীনভা দুর্শন কাররা বৈধন ও নিরাশ হইতে-ट्रिन, डॉव्डिनिशंटक अक्की कथा अल्ला चार्य ताथिट बरेटन । जारा **এरे, बाबधर्मात ७ बाबागमारकत (र बाहर्ग,** जारा व्यानक পরিমাণে এদেশের পক্ষে নৃত্য । এই নৃত্য আদর্শ অভুসারে সমাজকে গঠন করা कि ছুই बिरानत कार्या ? এরপ কার্য্যে क्छ देश्या ७ निक्कृतात्र ध्वाशीकन ! व्यामारम् त भनीत गरनत मर्त्ता, व्यामारमञ्ज आङ्गाजित मर्ता क्ल इवानजात वीक निर्विड हरेबा बहिबाह्य। (त तकन कि এक्तिस छेत्र्निछ हरेछ পারে ? आমরা বেরূপ মাল মসলা, এই মাল মসলাতে কার্য্য चात्रञ्ज कतिराज श्रात्म से वहकाल वात्र वात्र विक्रम श्रायक्र हरेएज ছইবে। তাছাতে নিরাশ হইলে চলিবে না। এই বিশের বিধাতার নিকট সহিষ্ণুতা শিক্ষা করিতে হইবে। তিনি এই জড়রাজ্যে কদর্ব্যভার ভিত্তর হইতে সৌন্দর্যা আবিষ্ঠার করিয়া-ছেন বটে, কিন্তু ভাহা কভ বুগের অণিপ্রান্ত বিবর্তন ক্রিয়ার यन। आभवा कि हेव्हामाज इर्जन करन कतिता नहे छ পারি?

দিতীরতঃ যতই আক্ষণণ তাঁহাদের মূলমতের উপরে দশুরমান হইরা অপর সকল বিষয়ে পরস্পারের প্রতি উদার হইডে
পারিবেন, ততই মতভেদনিবন্ধন প্রেমের বিছেদ অপনীত
হইবে। এরুণ একটা প্রতিক্তা প্রত্যেক রান্ধের অন্তরেই
থাকা কর্ত্তব্য, যতক্ষণ মূলমতে ঐক্য ভাছে, ততক্ষণ কথনই
মগুলী হইতে বিছিল্ল হইব না বা কাহাকেও বিছিল্ল করিবার
ইছে। করিব না; তাহা করিলে অপরাধী হইব। একভার
প্রতি একটা দৃষ্টি ও তাহা রক্ষার ক্ষম্ন আগ্রহ প্রত্যেক রান্ধের
অন্তরে থাকা আবিশ্রক।

উপাসনাতে বিনয়—মাহবের কাছে বিনীত থাকিতে অনেকেই শিক্ষা করেন, কিব্নপে বিনর লাভ করা বার, বিনর লাভ করিতে ছইলে লোকের স্ভিত কিরূপ বাব্হার করা कर्खवा हे ज्यानि विषय हिन्छ। करबन, धनः यथानाधा कार्या श्रीन-ণ্ড ক্রিডে চেষ্টা করেন; কিন্তু ঈশ্বের নিক্ট গ্মন কারতে এবং উপাসনার বাক্য উচ্চারণ করিতে যে তদপেক। অধিক विनायत श्रीवासन ७ कथा (यन स्मान्यक है जिस्रा करवन ना। (क्यात माकिएहें हित्र कार्ट छें पश्चि बहेर्ड (गर्न, (क्मन मास শিষ্ট হটতে হয়, জিহ্বাকে সংযত করিয়া কথা বলিতে হয় ভাছা ज्ञान कार्या मार्ग विद्यालय क्षेत्र कार्या के ন্থিত হইবেন, তাঁহাদের কি তদপেকা অধিকতর সম্ভব ও বিনরের महिल कथा बनाख डेमर्वमम क्या डेिल्ड मर्ह १ डेमानमाय बना হইতেছে "আমি ঘোর পাপী, তুমে পরিত্রাণ কর।" কিন্তু সেই কথাগুলি এমান ভাবে উচ্চারিত হইতেছে যে. যেন তিনি জোল করিরা ঈশ্বর হইতে পরিতাণে লাভ করিরা লহবেন। পাশী रुरेता পরিতাণের अञ्च ध्यायंना कता, गश्म প্রমেখ্রের সমীপে এরপ বিবরে কথা বলিতে কতদুর বিনরের জ্ঞাব-শ্রক, তাহা উপাদক চিন্তা করেন না। পুতরাং অনেক সময় ৰজুতার মত কথা বলিয়া যান।

আহার অপার কলণা মনে হইলে, ভাজের উদর হর এই ভার অবং ভজিই বিনরের প্রতিষ্ঠাতা। বেখানে ভার ও ভাজি নাই, সেধানেই হাদর বিনীত হর না। আভাবিক উপাসনা হইলে নিক্তর উপাসকের হাদর বিনীত হর না। আভাবিক উপাসনা হইলে নিক্তর উপাসকের হাদর বিনরে অবনত হইবে। বেখানে প্রাকৃত ভাব নাই, সেধানেই অহতারের্দক উচ্চ উচ্চ কথা। কিছু সকল কার্যাই সাধনসাপেক্ষ। উপাসনা বেমন নিত্য সাধনার বিষয়,তজ্ঞাপ সমবেত উপাসনার কির্দ্ধণে উপাসনা করিতে হয়, ভারাও হয়, কির্দ্ধণে বিনরের সহিত বাক্য উচ্চারণ করিতে হয়, ভারাও সাধনের বিষয়। সাধন না করিলে, হাদরের সদ্প্রণ লাভ হয় না, বাক্য সংঘত হয় না। বাতাবিক সমবেত উপাসনার অনেক সময় অবিনর প্রত্ত বাক্য বাহির হইয়া পড়ে, তজ্ঞান বিশেষ ব্রত অবলখন করা কর্ত্বা।

ত্রী মানব প্রকৃতির' একটা শ্রেষ্ঠ ভূষণ। ত্রীষান্ পূরুষ ও

রীমতী নারী সকলেরই শ্রদ্ধার পাত্র। কিন্ধ দ্রী কেবল শরীর
সক্ষদ্ধ নহে, আত্মা-সক্ষদ্ধ একপ্রকার দ্রী আছে। নিজ দেবক অবধারণে প্রদর্শন করা বেমন দ্রীর নিরমবিক্ষম, সেইরূপ নিজ আত্যন্তরীণ ভাবরাশিকে অবধারণে প্রদর্শন করাও আধ্যাত্মিক ব্রীবিক্ষম। আমাদের উপাসনা ও প্রার্থনাদিতে অনেক সমরে ব্রীবিক্টানতা প্রকাশ পাইরা থাকে। ঈশ্বরের পবিত্র সরিধানে উপদেষ্টার ভার উচ্চ আসনে না বসিরা প্রার্থার ভার নির আসনে বসাই ব্রী-সঙ্গত কার্য। এই সত্যাটী শ্ররণ রাথা কর্তব্য।

সরল পথ---धर्मवात्कात याजीशन हित्रमिन हे अवन भर्थ গমন করিয়া থাকেন। কুটিল লোকেরাই কুটিল পথ অবলম্বন করে, বিরোধীদিগের মডের স্ভিত সামঞ্জত রক্ষা করিয়া চলে, সদ্ধি স্থাপন করে। বাহা অণত্য, অনিষ্টকারী, মানবাত্মার বিষশ্বরূপ তাহার সহিত আবার সন্ধিবন্ধন কি? ছুংধের বিষয় এই বে, এক সময় ভ্রাহ্মণণ বে সকল দূবিত রীতি নীতিকে পাপ ও কুসংস্থার বোধে পরিভ্যাগ করিয়াছিলেন, বে সকল আচরণের ছারা স্পর্শ করিতে কুষ্টিত হইতেন, যে সকল ভাব व्यवनयन कता धर्मगाधानत शाक्त काजियनक वनित्रा উপদেশ मिर्डन, এখন অনেকেই আবার সেই সকল বিরোধী ভাব এচন করিতেছেন। व्याघीन नमाय्यत नहिल निस्तक्त कताहै (यन डाॅंबारमंत्र डेरम्खः। डीबारमंत्र कार्या (यन बेबारे व्यक्तान भाव (व, व्याठीन ममास्क्र महिल मिक्किन ना इहेरन ব্রাহ্মসমাল টি'কিবে মা। কেহ কেহ প্রবন্ধে, বক্তার व्यवः चार्ताहनात्र ध्वत्रण ভार्तत्र कथा क्षेत्राण कत्रिराज्य हम। এই অবস্থায় পতিত হট্যা সরল ধর্মসাধ্কগণ যেপথ অবলম্বন क्रिजाहिन, जामारम्य छाहा हिसाक्या कर्खना धनः छम्बन्यन **করাই ধর্মসঙ্গত**।

একদিন মহাত্মা মহত্মদ কাবা মন্দিরে কোরাণের বচন পাঠ করিতেছিলেন। বিরোধী কোরেশগণ ভাষা শ্রুবণ করিতেছিল। "অনস্তর ভোমরা কি লাভ ও গরি এবং ভৃতীর মনাভকে (কোরেশদিগের পৌত্তলিক দেবতা) দেখিয়াছ ?" ইড্যাদি বচন পাঠ করিয়া গরিচ্ছেদ সমাপ্ত করেন এবং বধারীতি প্রমেশ্রের

নিকট মঞ্চক ক্ষমনত করেন। কোরেশগণ ভাবিণ বে, সহস্থ তাহাদের দেবতাকে স্বীকার করিয়া নমস্বার করিলেন। ইহা क्षांविश्व क्षांश्वां नक्ता क्षानिक हरेग । (कार्यमहर्ग नर्स्ती-পরি এক অনাদ্যনন্ত পরমেখরকে বিখাস করিতেন। বেসন হিন্দুগণ বলেন বে, একমাত্র সভাবরূপ চিন্মর পরবৃদ্ধ হইছে সকল দেবতার ক্টে হ্টরাছে। অর্থাৎ নিরাকার এক আছেন ध कथा । अरा धवर छए-एडे हेल हलापि (पवछा चाह्न, छाहा । সভ্য। সাকার নিরাকার উভরই সভ্য। কোরেশগণ ঠিক এইদ্নপ বিশ্বাস করিত। এক নিরাকার ঈশর তাহাদের লাভ ও গরি প্রভৃতি দেবতাকে স্টে করিরাছেন, ইহাই ভাহাদের ধর্ম-বিখাস ছিল। স্থভরাং মহম্মদ যথন ভাহাদের লাভ পরিকে चौकात कतिरमम, छथन छाहाता महत्रामद निवाकात स्थितरक चीकांत्र कतिरव जाफरी कि ? এই मिन स्टेटिंग कार्यमान মহন্দরে কার্যোর সহায়তা করিতে লাগিল। ছই দলে---সাকার নিরাকারে মিলন হইল। সভার শান্তি স্থাপিত হইল। **हर्ज़िक्त लाट्य यानिन (य, विवास निश्वास इरेज़ा** গিৰাছে। কিছু অন্ন দিনের মধ্যেই মহক্ষদ বুবিতে পারিলেন বে, কোরেশদল ভাঁহার সহিত কি ভাবে বোগদান করিভেছে, কি ভাবে ভাছার দল পুষ্টি করিভেছে। তথন মহম্মদ কোরেশ ल्ल्निक डिक्नि क्रिक्नि क যাহা মনে করিয়াছেন, তাহা অসত্য, আমি আপনাদের रमव्छारक चौकात कति नारे धवः मचान मान कति नारे, সন্মান দিতেও প্রস্তুত নহি, এক্ষাত্র ঈশ্বর ভিন্ন কেহ উপাস্ত नारे।" (कारतम मनপভিগণ महत्त्वरमत्र এर উक्ति अवन कतित्रा মহা জুদ্ধ হইল। পুনরার বিবাদানল প্রজানিত হইল। মহাস্থা যাঁও দেবমন্দিরে প্রবেশ করিয়া মন্দিরের জিনিস পত্র ভালিয়া ছিলেন। बाखविक महन शार्त्रिक्तिशत निक्रे कान्त्र श्रकात অসত্য ও কুদংস্বার ডিষ্টিতে পারে না। এ।স্বাগণ এক সময় এ বিষয়ে অতি সৎ দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিয়াছিলেন; কিন্তু এখন আর क्राःश्वाद्यत्र व्यक्ति (छमन युगा नाहे, वदा व्यन्तक क्राःशाद्यत्र সহিত সন্ধি করিতে প্রস্তুত হইতেছেন। এ অবহা সরগতার व्यवद्या नरह, हेहा गारमात्रिक वृद्धिमूनकः; हेहार्ड धर्त्रभीवरनंत्र অধোপতিই হইতে থাকিবে।

ক্রেম্নাধ্ন—নক্ল ধর্মণাত্ত্ব, সকল মহাজন, সকল সম্প্রালয়ের লোকেই উটেভংশরে বলিতেছেন "প্রেম সাধন কর, প্রেমেতেই ধর্ম, প্রেমেই মৃক্তি।" বাস্তবিক জগতে বেধানে অপ্রেম, অলান্তি, সেধানে ধর্ম থাকে না। কিন্তু জীবনে এই মহাত্রত পালন করা বড়ই কঠিন। স্বার্থকে পদললিত করিরা অজ্ঞের স্থণ ও স্থিধা বিধান করা, নিজের মান মর্য্যালার প্রতিনা চাহিরা কেবল পরকে স্থী করিবার চেষ্টা করা বড়ই শুরুতর কার্য্য। একজন লোক অভ্যাসের শুণে ছই ঘণ্টা ধ্যানে বসিতে পারে বা কর্তব্যের অভ্রেরেধে দেশহিতকর কার্য্য করিতে পারে; কিন্তু প্রাণ দিরা ভাল বাসিতে, নিক্ষকের ছ্র্মান্ডা শির পাতিয়া গ্রহণ করিতে পারা বড় করিন কার্য্য। প্রভ্যেকের বিদ্যালয় গ্রহণ করিতে পারা বড় করিন কার্য্য। প্রভ্যেকের বিদ্যালয় গ্রহণ করিতে পারা বড় করিন কার্য্য। প্রভ্যেকের

লোকে প্রতিধিন অপরের নির্বাতন, উৎপীড়ন এবং নিকা সক্ করিভেছে। নিককের কথা জীকু বাথের স্থার অবর বিদ্ধ করিভেছে, লোকের অবিচার, পক্ষপাতে কড বোকে আলা বন্ধণা ভোগ করিভেছে। বে সংগারে কেবলই বোব অন্ত্যনান, নিকা, বাকবিভঙা, পর্মীকাভরভা, ভার্যপরতা, কলহ, রক্তপান্ড ইত্যানি নিরভ ঘটজেছে, সেলানে সর্কোশরি " প্রেরকে রকা করা বড়ই ক্ষিন।

८क्द अक्षे नायुकार्या अवृत्व क्षेत्रास्का । अनन्यास्था हिजगावनहे जाहात केरमण, अवस निरमत निक नामर्था व्यातात्र कविवाद्यम। किन्द निक्राकत्र किन्ता काहात्रक इर्गान तहेना ক্ষিতে ছাড়িতেছে ন।। ছর্কান বাছব দিকার প্রোতে ক্যাদিন মুদুদ্ থাকিতে পারে ? এখন ব্যক্তিরও চিত্ত অপ্রেমে উত্তেশিত **११। वाद्यविक क्षेट्र व्यागायत्र गश्जादत्र द्वारमत्र मैठन वा**त्रि ৰাৱা বাহায় হৃদৰ নিৰ্ভ বিধেতি হইতেছে, তিনি ভিন্ন কেহই माखिनाण कतिएल भारतन मा। य मग्रह है है जनारमस्यत गाधु गृद्धोन्छ ग्रन्थान् अपूर्वतीत्र । बायठळ पूर्वी महा निव्यक क्ति। त नीमाहरम द्यादा त्यारम द्यक्षाहेड ध्वश मिल ভিকা ক্রিয়া থাইড; ক্রি কোন বৈরাপী কত খার, কিরণে बान करत, काहात्रक नदान करेक। ब नवत्र टेक्कना नीनाहरन ছিলেন। সে বিশেষভাবে "চৈভনোদ অবস্থিতি, রীতি, নীতি, ভিন্দা,শরদ,আচরণ সবদ্ধে পৃথাত্বপৃথরণ সন্ধান লইছে লাগিন। তথ্ম হৈডনোর জন্য চারি পণ কড়ির প্রশাদ আসিত, তাহা চারি জনে থাইতেন। প্রায়চক্র বলিয়া বেড়াইতে লাগিল বে, "চৈতন্য মিঠার খার, মিঠার সেবনে সম্যাসীয় জিহবার দোব ৰুরো। চৈডনোর চাল চলন বিশাসীর মত।" চৈভনোর বালস্থানে রামচক্র প্রতিদিন ঘাইত। চৈন্তন্য ভাষার নিন্দা-वाका श्रमित्रात किहूमाल विश्वनिष्ठ हरेएक् मा। शूर्ववर তাহাকে আদর সম্ভ্রম করিছেন।

একদিন মামচন্ত্র প্রাভঃকালে তৈতকার ববে কতকগুলি
পিশীলিকা দেখিরা বলিয়া উটিলেন "রাজিতে এখানে মিটার
কাসিরাছিল, ভারতে এত পিপড়া বেড়াইডেছে। হার বিরক্ত
সর্যানীদিপের একি ইন্তির লাজসা।" চৈতন্য মিটার জোজন
করিতেন না তিনি সামান্য প্রসাদ ভক্ষণ করিতেন। কিছ
রামচন্ত্র পুরীর ঐ মিখ্যাবাদে তিনি বিরক্ত হওরা দূরে থাকুক বরং
গোবিন্দকে ডাকিয়া কহিলেন "আমার জন্য আদ্য হইতে অর
প্রসাদ আনিবে।" একথা ভক্তমগুলীতে রাই হইলে সকলে
মহা ছংখিত হইলেন। চৈতন্য অভ্যাশনে দিন দিন গুকাইরা
ভাইতে লাগিকান।

ভজগণ সকলে বিশিত শইরা চৈতন্যকে কহিলেন "রামচন্ত্র পুরী অতান্ত নিক্ষক, তার কথার অর পরিত্যাগ করিরা আপেনি পরীর কীণ করিতেছেন কেন ! নিক্ষকের কথার আত্মবিনাশ করা কি থার্মিক্সের কর্তব্য ?" চৈতন্য বীরভাবে উত্তর করি-লেন; "ভোমরা পুরীর কেন নিক্ষা করিতেছ, উনি ও সত্য কথাই বলিরাছেন, বাত্তবিক জিহ্বার বিলাগিতা সর্যাসীর ধর্ম নহে। ভাল থাইরা ভাল পরিরা বতিধর্ম রক্ষা করা কারনা। রারচন্ত্র পুরী কর্মক্যে জন্মই আরাক্ষে সংব্যত হুইতে বৰিবাছেন। তোৰয়া ভাঁচায় কথা অন্যভাবে প্ৰচুণ করিতেছ কেন ?" চৈতনোয় উদায়তা এবং প্ৰেম দেখিয়া ভক্তগণ বিশিষ্ঠ কইপেন।

त्रायहळ भूत्रीत न्याच निष्यक (मारकत मध्या) वर्खमान ममरव वित्रण नरहः क्षि हिन्दानात्र नाम राज्यम त्यामन मुद्देश्व (मथा यात्र मा। टेक्कमा महीत ध्वःमकाती टेवलाला व्यवस्थन করিয়াছিলেন, সেই অবস্থাতেও তিনি নিক্ষাক্র দৃষ্টি হইডে बका भाग माहे। हेरा दावा अमान इरेडिए स गर्न ममस्बरे निक्या वर्ग विद्यामान शास्त्र । किन्द्र निक्या काश्रीत निक्या वास्त्र উপবেশ রূপে এছণ করাতেই ধর্ষের মাহাত্ম্য প্রকাশ পার। चामारम्ब मर्था वीहाका टेहकरनाव नाम केक वाकारन चायश निमात्यक बरेवारक्त, अथवा बरेरकरक्त, छोवावा निमाकावीव टांडि किंद्रण वावश्य क्षिया शास्त्र, अविवास मकानाई भाषातिका कता कर्खना। भाषात्मतः मध्या गाँशना व्यक्तीता ভাষাপন্ন সম্ভবতঃ ভাষারা ঐরপ নিশাকারীকে এই বলিয়া ভাড়াইয়া দিবেন বে "আমায় আহায় বিহার এড়তি সবছে ভোমার মন্তব্য প্রকাশ করিবার কি অধিকার আছে ? ভূমি निक्ष ग्रावशन एक।" व हिला आहा कावान के हिला भवन নিশকের কথার কণপান্ত করিবেন না, চকু উদ্মীলন করিবেন मा ; क्रिक्र मान मान कानिरवन, लाक्की व्यानक निष्ठवात नाम করিতেছে। বৃতিধর্শের সহত্তে নিভাস্ত অনভিজ্ঞ, আধ্যাত্মি-কতার ভাব প্রহণ করিতে পারে, এমনও শক্তি নাই। এই ছুই मिटक **इरे धारात्र छार। এकामरक निमानक नी**जिलिका (मध्यात रेव्हा, व्यथत विषय व्यवहार व्यवहार व्यवहार व्यवहार প্ৰেম হইতে ইহায়। উভয়ে ৰঞ্জি। প্ৰাচ্য ভাৰাণয়ই হউন, আর প্রতীচ্য ভাবাপরই হউন, বিনি শক্তকে আলিলন করিতে गारत्रन, निमारकत छेक्ति छेगरामाभत्र छात्र शहन कत्रिक भारत्रन, এমন বিনীত, শান্ত এবং প্রোমকই আদর্শ স্থানীয়।

বাক্ষসমাকে এই প্রেমের ভাব জাগ্রত করিবার জন্ধ বিশেষ
সাধন আবশুক। বাক্ষসমাজে নিক্ষক উৎপীড়নকারীর সংখ্যা
জনেক; কিন্তু তাহাদিগকে ভাগবাদিতে পারেন, এরপ ব্যক্তি
কর জন আছেন? সামান্ত দোষের কথা উল্লেখ করিকে
যাহারা অগ্নিমুন্তি ধারণ করে, তাহাদের কথা বালভেছি না।
কিন্তু বাহারা প্রেমসাধন করিতে প্ররাসী, জ্বার-দর্শনার্থী তাহাদের নিকট সকণেই সাধু দৃষ্টান্তের আশা করেন। প্রমেশর
কপা কর্মন, ব্রাহ্মগণ শক্রকে প্রেম করিতে, নিক্ষকের বাক্য
উপদেশ স্বরণ প্রহণ কারতে যদ্ধান হউন।

উদারতা—বাজীকরবিগের হাতে একখণ্ড অহি থাকে, তাহার স্পর্শে থেক বস্তব্দেশন্ত বস্তুতে পরিণত করিতে পারে, এমনভাবেই তাহার। সেই অহি থণ্ডের ব্যবহার করে। ভাহারা কৌশন প্রদর্শনকালে সেই অহিথণ্ড এক একটা পদার্থে স্পর্শ করার আর অমনি ভাহা শন্ত পদার্থে পরিণত হয়। বাজীকরেরা বেমন লোক চন্দুকে প্রান্ত করিবার মানসে অহিথণ্ডের ব্যবহার করিবা থাকে। প্রধান্ত এক প্রেণীর লোক দেখিতে পাওরা বার বাহারা উদারভার ভার ক্ষমন শন্তীক্ষেও সেই স্কাবে বার বার বাহারা উদারভার ভার ক্ষমন শন্তীক্ষেও সেই ক্সাবে বার

कात्र कतियां बाटकम । काँकाटबन्न ककात्र काटव ट्वाब क्र, विकासका শক্ষের এমন একটা লাশ্চধা শক্তি আছে বাহায় প্রভাবে বোৰ, ভুৰ্মণতা, কুসংখ্যারপ্রিয়তা প্রভৃতি লক্ষ্যই বেন ক্ষয় হইয়া বার। এক ব্যক্তি এক সময়ে ভাজিভেন প্রধার বিশেষ বিপক্ষ हित्यम, नमते ७ व्यवकात পतिवर्खत्य छाजात मत्नत পतिवर्खम इहेन। जिनि क्रांम बाजिएलएम्स नवर्षम बाद्यक क्रिएनन धरः কাৰ্যোও তাহার পোষ্কভা করিছে লাগিলেন। যদি ভূমি ভাহার প্রতিবাদ কর অমনি ভোষাকে ভিনি অসুদার বলিয়। সম্ভাষণ করিবেন এবং উদারতার স্মদান্ আঞ্রর প্রবণ করিবেন। এক সময়ে বিনি কোন কুসংখারের অভিশয় বিরোধী ছিলেন এখন অবস্থার পড়িরা তাঁচার আশ্রর গ্রহণ করা প্ররোজন হইল আর কার্যোও ভালার পরিচর পাওরা গেল, ভূমি ভাঁলাকে দেই কুসংখারের প্রতিকৃলে ভোমার মত জ্ঞাপন কর, অমনি বেধিবে ভালার সুধ হইতে উলারতা নামক মহাল্প নি:স্তহ্ইরা আনিবে। व्यात्राक्तनवर्णाः काशात्र । शालात्र । शहिक प्रतिष्ठेका परिवाहः, শাসন করিতে বাও অথনি তুমি অভুদারতার সংকীৰ্ণ সীমার আৰম্ভ হটরা মচিয়াছ বলিরা অভিবৃক্ত হইবে। প্রাশ্বগণ যে সকল পৌত্তলিক অনুষ্ঠানে যোগ দেওগাকে এক সময় অপ-ৰাধের ও ক্ষতির কারণ বলিয়া মনে করিতেন, মনের পরিবর্তন ৰা অন্ত কোন প্ৰয়োজনে এখন সেই সকল অনুষ্ঠানে যোগ দেওবার আবশ্বক হইবাছে, তাহার প্রতিকৃলে কিছু বলিতে ৰাও ভূমি অনুদার হইবে। এইরপে উদারভাকণ ঐক্তঞ্চালিক অল্লের সাচায্যে অনেক দোব হর্মণভা ও কুসংকারকে প্রশ্রর मिवात नथ (यन मिन मिन धानच करेएछ हा। छेमात्रका नात्कत বে এমন একটা আশ্চর্ব্য গুণ আছে, তাহার দেহ বে রাক্ষদের माजिक भंदीरतत काम यक हेक्सा यक हरेएक भारत या यक हेक्सा কৃত্র হটতে পারে এরপ জান কিন্তু সকলের নাই। যদি বাত্ত-ৰিক্ট উদায়ভাশন্যের এমন কোনগুণ থাকিত বে,বাহার স্পর্লেই লোৰ ৩ণে, তুর্মলভা সবলভার, কুসংস্কার স্থসংস্থারে পরিণত बहैटल शांतिक, जांचा बहेरन खेलात्रका बिनिगरी वर्ष्ट मात्राच्यक এবং অভিশন্ন ভলার কারণ চইত এবং অমুদার উপাধি লাভ ৰচই নিশ্বনীয় হউক না কেন তাহাই প্ৰাৰ্থনীয় হইত। কিছ সৌভাগোর বিষয় এই যে উদায়তা শব্দের এমন ভীষণ শক্তি নাই। ভাহাত্র স্পর্শেই দোষ গুণে পরিণত হয় না।

উনারতা শব্দের অর্থ ব্যাখ্যা যদিও অসামরিক, কারণ তাহার ব্যাখ্যা বছবার হইলছে, তথাপি বথম লোকে ভাহার অর্থের নামারণ বিপর্যায় ঘটাইতেছে তথন ভাহার আলোচনার সাভ ভির ক্ষতি নাই। উনারভাসম্বদ্ধে ভানিতে গেলেই দেখা যার, ইহা ছিডিম্বাপক রবারের মন্ত বন্ধ নর বে,বত ইছা টানিরা বড় করা লার বা বত ইছা চাপ বিয়া ছোট করা বার। ইহার বাত্তবিক একটা মির্দিট আরতন আছে, বত চেটা করনা কেন ইহা আপনার অবরব কথনই পরিভ্যাগ করে না। ইহা সভ্য ও কল্যাণ্ডে অভিক্রম করিরা বিন্দু পরিমাণ্ডের আপনার সীমা বৃদ্ধি করে না। সম্পূর্ণরূপে সভ্য ও কল্যাণ্ট ইহার অবরব। ইহা সর্জ্বাই সভ্যকে আলার করে, সভ্যেরই অন্ত্রনণ করে। সংক্রেই ইহার মুল বৃত্ব প্রভিত্তিত। স্থভরাং বাহা কিছু অসভ্য,

বাহা কিছু ছুট, বাহা কিছু অফ্ল্যাপ্তর, উদারতার সহিত ভাহার কোন সম্পর্ক নাই। সন্ত্যাসভ্যের বিচার পৃত্ত হইরা কিছু প্রদেশ বা পরিভাগে কথনই উদারতা নয়। বিচারবিহীন ভাবে আলোজনীয় হইলেই বা ভাগ লাগিলেই যে কোন মঙ আহণ বা পরিভাগে, কখনই উদারভা নর। উদারভা বিন্দু পরি-সাণেও অসভ্যের সংস্লব সহু করিছে পারে না। ইহা শিশুর জীড়ার ক্ষম ও নর বে ইচ্ছাছুত্রণ ইহাকে পরিবর্তিত করিতে পারা যায়। ইবার জল এতাল জভি ভুলুচু, ভারার ব্যতিক্রম করা আর সভ্যের অপলাপ করা একই ক্থা: ব্যাখ্যার বলে বা বুদ্ধিচাভূর্ব্যে সতাকে অসত্য এবং অসত্যকে সভ্যবৎ প্ৰতীয়মান করা যাইতে পারে, কিন্তু ভালা উদার্ভা নামের নিকট দিয়াও বার না। ভাচা চির্দিন পরিচার্য্য চির্দিনই পরিভাষ্য। উদায়তার প্রকৃত তাৎপর্ব্য সভাকে নিরাপভিতে আনর করা, লাভ ক্ষতি গণনাবিদীন চইরা সভাবে আশ্রম করা। সে সভা যে দেশ যে কাল যে লোকের নিক্ট হইডেই স্মাপ্ত চউক না কেন, তাহা ছোট, বড. निक्रे, উৎक्रेड भगत्र अभवत् रव रकान वास्त्रिवरे आनिक्रक रुक्रेक ना (कन । मछा, अरे कान कवितन्ते अरुकेत अर्थ मानत अरूप धानच कानरे केमात्रका। कान विश्वतंत्र श्राक्तिम ना कता, মনোষাৰিক বা অক্ত কোন আখহাৰ কোন মতে সাহ দিহা বাওরা নিরীক প্রকৃতির কার্য্য ক্টতে পারে এবং লোকরঞ্জনের উপারস্বরূপ হইতে পারে; (ক্তু তাহা উদারতার সীমাদেশ স্পর্শ कत्रिवात्रक्ष रवांगा नरह । त्र व)क्ति देवात्रक। मक् पूर्व वात्र वात्र উচ্চারণ করিলেও ভাহার মহন্ত ও মাধুর্য্য অফুভব করিতে অস্-মর্থ। উদারতা চিত্তকে প্রশন্ত করে, সভ্যের জন্ত আফুল করে এবং নিয়ন্ত সভ্যের অফুসরপে বাল্ড করে।

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

### ধৰ্ম-কঞ্ক।

চীনদেশীর সাধু কংকুচ সর্বাদা বলিতেন,—"ভাষা তুনি উপদেশ করিও না বালা ভূমি নিক্তে আচরণ কর না। বাদ ও বা উপদেশ কর ভাষা ছইলে অরার ভলসুরপ আচরণ কর।" ভাষার এ প্রকার বলিবার অভিপ্রায় এই, মাসুষ যদি নিক্ত উপদেশের অন্তর্ম আচরণ না করে, ভালা হইলে ভাগাব চরিত্র অভঃগারবিহীন, সভ্যভাবিহীন ও মেরুলগুরিহীন হর্ত্তর্ম পড়ে। অগতে এরুল বহুসংখ্যক লোক দ্বেখিতে পাওরা যার বালারা সর্বালা উচ্চ উচ্চ কণা মূখে বলিভেছে অথচ ভালাদের কার্যা ভলসুবারী নাছে। এই সকল লোক মানব সমাকে অভিলয় স্থানিত। ইহাদিগকে ধর্ম-কঞ্কধারী বা প্রচলিও ইংরাজীতে হামবাগ বলে। এরুণ ব্যক্তি অপেক্ষা ভাহারা প্রেষ্ঠ বাহান্ত্র উচ্চকথাও নলেনা—ইচ্চকাজেও লিপ্ত নতে ; ধর্ম-ক্ষ্প আপ্নালিগকৈ আর্ভ করিলা অসাধুভাচরণ করে না। ক্ষপ প্রভাব অপরাধ অপরাধ্য অস্ত্রায় বাংগ্র বাংগ্র বার্যা অসাধুভাচরণ করে না। ক্ষপ প্রভাব অপরাধ্য অসার্যাধ্য বাংগ্র বার্যা অসাধুভাচরণ করে না। ক্ষপ প্রভাব অপরাধ্য অসার্যাধ্য বাংগ্র বার্যা অসাধুভাচরণ করে না। ক্ষপ প্রভাব অপরাধ্য অস্তর্যার

किन्द्र (नाटक कि बेव्हा) कतिया शर्य-क्षूकं वित्रा थाएक? অনেকস্থলে এরূপ হয় বটে। স্বার্থপর ও ক্ষুদ্রাদর ব্যক্তিরা त्निश्वाद्य द्य शर्मात्र व्यक्ति कनमात्कत्र व्यक्तीष्ट्र चान्याः व्यमन কি ধর্মের বহিরাবরণের প্রতিও লোকের অভিশন্ন সম্ভম। ইহা দেখিয়া লোকচকে ধূলি দিবার অভাভাহারা ধর্মের বহিরাবরণ ধারণ করে ও তত্বারা আপনাদের ছুর্ভিসন্ধি পূর্ণ করিরা লর। এইরাপে কড শত শঠ, প্রবঞ্চ ও ছক্রিরাবিত लाक महाभी ७ माधु माधिका अस्तर्भ स्वत्र क्रिएए । তাহারা দেখিরাছে যে সর্যাসী ও সাধুদিগের প্রতি এদেশের লোকের প্রাপাঢ় আন্থা এবং ঐ আচরণে আবৃত থাকিলে অনা-রাদে নর্কতি গভারাত করিতে পারা বার, সকলের সন্মানিত কইয়া থাকা যার, অথচ বথেচ্ছ সুধ ভোগ করা যার। ইচা দেখিরা তাহারা ধর্মের আচরণকে আত্মারকার উপার শ্বরূপ প্রহণ করিরাছে। এই ব্যাপারটা এডদুর প্রবল ছইরাছে বে উত্তর মশ্চিমাঞ্চলের পুলিস সর্বাদা সতর্ক। যেণানে একদল न्डन मन्नामी ७ माधु जामित्रा वरम, मिहे बारनहे विरमद भूनिम নিবুক হয় এবং চুরি বা ডাকাতিয় জন্ত বে সকল ওয়ারেণ্ট আছে, তাহারা তর তর করিরা অবেবণ করিতে থাকে।

আমরা এক ধর্ম-কঞ্কধারীর কথা আনি। সে ব্যক্তি এক সময়ে সকল প্রকার সমাজ-সংখ্যরের প্রতি অমুরাগ জানাইভ এবং মুখে সর্কাল উলার সভ্য সকল প্রচার করিত। অনেক লোকে ভাষার বাক্পটুতার খণে আরুষ্ট হইত। কিন্তু লোক-টীর গুপ্ত চরিত্র কথনই ভাল ছিল না। মধ্যে সধ্যে তাহারী অব্যাতি শুনা বাইত। কথনও শুনা গেল কোনও ভদ্রলোকের ৰাডীতে অভন্ত ব্যবহার করাতে প্রহার ধাইয়াছে। কথনও জনশ্রুতি হইল কোনও শর্ণাগতা নিরাশ্ররা বিধবাকে বিপথে নীত করিরাছে ইত্যাদি। অবশেষে সকল শ্রেণীর লোকে ভাচার প্রতি অভিশর বিরক্ত হট্যা উঠিল। সে দেখিল যে Tagg कार्ट्या व्यापन मनस्मन विषयीत छात्र थाकिया व्याप्य निस् চরভিদন্ধি চরিতার্থ করিবার স্থবিধা হয় না। অবশেষে শ্বির করিল যে ধর্মের পরিচ্ছদ ধারণ করিতে চইবে, তাহা ছইলে অবাধে স্বীয় প্রবৃত্তি চরিতার্থ করিতে পারিবে। স্মার এমন স্থবিধাই বা ভারতবর্ষ ভিন্ন অপর কোন দেশে পাইবে। এথানে সকল শ্রেণীর, সকল ভাবের, সকল ক্ষচির পুণ্যাত্মা ও পাপা-চারীর জন্ত ধর্ম আছে। এক ভারিক সাধনের নামে কি বুজিরাই না আচরিত হইতেছে। সেই স্থচতুর ব্যক্তি অব-**८मर्ट्स फरबंद मह्नाभन्न इहेन। देशविक दश्राम आंश्रामार्ट्स** আবৃত করিরা ভব্মে আবৃত চইরা চিমটা ও ত্রিশূল হস্তে কির্দ্দিবস ইডক্তত: ভ্রমণ করিল। লোকে দেখিল একজন টংরাজী শিক্ষিত কুটী লোক, যে-বিবয় কর্ম করিয়া অনেক অর্থ উপার্ক্তন করিত, সে এখন বৈরাগ্যের বেশ ধারণ করি-शार्छ। এ गांकि निकार किছू भागेत्रारह। এই ভাষ मश्या-রের বশবর্তী চইরা সকলে তাহার প্রতি সম্ভ্রম প্রদর্শন করিতে লাপিল। ক্রমে দেখা গেল, ক্তকগুলি ভৈরবী জুটাইয়াছে। के कन जीलारकत महिक मसीममाक निर्मक बाहतन करत এবং নিলকভোর মাত্রা হত অধিক হয় ভত্ত আল ও ধর্মাছ

লোকে তাহাকে সাধক বলিরা সম্ভ্রম করে। এইমপে তাহার চিরপোবিত চন্দ্রবৃত্তির চরিতার্থতা অবাধে চলিতে লাগিল।

व्यवच रेडा धर्म-क्ष्म धातराम छे०क्ठे मुद्देश्व। किन्द ধর্মকে এরণে নিজ ছন্তাবৃত্তির আঞ্চাদ্নের উপায় শ্বরণ না করিয়াও লোকে অনেক সময়ে ধর্ম-কঞ্ক ধারণ করিয়া থাকে। মুথেউচ্চ উচ্চ কথা বলিবার অভ্যাস হইয়া বার. কিন্তু কার্যাত: ভদ্মুরূপ আচরণ করিবার প্রবৃত্তি থাকে না। **এই मक्न वाक्ति (य लाक-ध्यवक्षनात्र छेरमान्हे छेछ क्या** ক্ষিরা থাকেন, ভাষা নহে। কিন্তু অভ্যাস বুলতঃ ঐক্লপ ষ্ট্রাপাকে। এক সময়ে উাহারা সেই সকল সভ্যে সমগ্র ছদরের স্থিত বিখাস স্থাপন করিরাছিলেন; এক স্মরে ঐ সকল বিষয় তাঁহাদের সাধনের লক্ষ্যত্বলে ছিল: এক সময়ে তাঁহারা সরল ও ঐকাস্তিকভাবে ঐ সকল সভ্যের অভিমুধে অগ্রসর হইবার চেটা করিয়াছিলেন: কিন্তু কালসহকারে হুদর মনের ছর্মনতা বশতঃ৷ বার বার সাধন-ভ্রষ্ট ও পরাস্কৃত হইরা অভরের ব্যাকুলতা ক্রমে নির্বাণ প্রাপ্ত হইরাছে; নিরা-শাতে হলরের উৎসাহকে মলীভূত করিরাছে; ক্রমে আত্ম দৃষ্টির অভ্যাস চলিরা গিরাছে। এখন মুখে উচ্চ উচ্চ কথা श्रुनित्र व्यक्तांन व्याद्य किंद्र बीवत्तत्र मध्या त्कानश्र नश्रुवाम নাই; জীবনকে আগন্ত ও জড়ভাতে বিরিয়াছে। এ অব-স্থাও অতিশয় শোচনীয়।

ধর্ম-কর্মুক হইতে বক্ষা পাইবার জন্ত সভ্যতা সাধনের দিকে मृष्टि वाथा कर्खना। वाहा मृत्य आर्थना कविट्रिक्ट काहा क्रीनान नायन कतिन, अवर वाहा जीवत्व नायम कतिवात छाडी कतिव না, তাহা সুধে প্রার্থনাও করিব না, এরপ প্রতিজ্ঞারত হইরা প্রার্থনা করিলেও অনৈক উপকার দর্শিতে পারে। মনে কর আমরা একদিন আমাদের সন্মিলনী সভাতে প্রার্থনা করিলাম---"হে প্রভো আমাদের মধ্যে শাস্তি ভাগন কর।" এ প্রার্থনার यि कि कि वर्ष थाक, जत दम वर्ष करे, वामना व्याचारितास ও অশান্তিনিবন্ধন ক্লেশ অনুভব করিছেছি এবং শান্তিকে ম্পূর্ণীর মনে করিতেছি। ইহাই যদি সভা হয় ভবে আমাদের পরবর্তী আচরণে তদ্মুরপ লকণ স্ফল লক্ষিত হওয়া উচিত. অর্থাৎ ইহা দেখা চাই যে আমরা খতঃপরতঃ শাস্তি স্থাপনের জন্ত চেষ্টা করিতেছি। নতুবা প্রার্থনার গুরুত্ব ও দারিত্ব পাঙ্কে না। ঈশ্বর-চরণে নিবেদিত প্রার্থনা এক একটা প্রতিক্ষা-वारकात कात । जूबि मूध कृषिता य धार्थमा कतिरन, छण्डाता नगथभूर्वक स्रेषंत्र-महिषात्म धहे कथा वनित्न त्व कृषि छन-সুরূপ আচরণ করিবে। বলি না কর তবে ভূমি অপরাধী ও ধর্ম-কঞ্কধারী। করজনে প্রার্থনাকে এরপ গুরুতমভাবে লইরা থাকেন ? দৈনিক প্রার্থনার প ছার দিয়া আনেক সময়ে শামাদের জীবনে অস্তাতা ও অসারতা প্রবিষ্ট হইরা থাকে। छेशानक माध्यवहे अविवस्त्र मनाग नृष्टि थाका आवश्रक।

### ৰাতীয়তা।

#### ( প্রাপ্ত )

বায়ুর গতির বেমন বিরতা নাই কথনও প্রবল, কথনও চ্ছল। অলা পূর্ম ছইতে কলা হয়ত উত্তর হিক ছইতে, আবার পরের দিন হয়ত দক্ষিণ দিক হইতে প্রবাহিত হইরা থাকে। মানব মনেতেও এইরপ চক্ষণতা সর্মানই বর্তমান রহিন্নছে। ২ বংসর পূর্মে মনের বেরপ গতি ছিল, বে সকল বিষর প্রির ছিল আল হয়ত তাহায় বিপরীত ভাব দৃষ্ট হইতেছে। মৃতন বিষর, নৃতন চিন্তা আসিরা মনকে অধিকার করিরাছে। মনের এই অন্থিয়তা, এই নিয়তপরিবর্ত্তনশীলভাকে দমন করিবার করেই গাধক সাধনায় প্রবৃত্ত হইরা থাকেন—এই নিমিন্তই ধর্ম্মাধন অভি আরাস-সাধ্য। মনের প্রকৃতিতে স্থাবতঃ বে.অন্থিয়তা আছে, তাহাকে নিয়ন্তর পরিবর্দ্ধিত হইতে না দিয়া শান্ত ও সমাহিত ভাবে অবহিত রাখিতে সচেট হওরাই প্রার্থনিয় । মনের বথেচ্ছগতিকে বাধা না দিলে সে কথনও সত্য ধারণও প্রহণ্ডের উপযুক্ত হয় না।

কিন্তু প্রাশ্বসমাজের মধ্যে সমরে সমরে সে চেটার অভান্ত অভাব লক্ষিত হর। যে সকল বিষয় স্থামাংসিত হইরাছে, যে সকল অনিটকর বিবরের অনিটকারিতাসকরে একবার উপযুক্ত সিদ্ধান্ত হইরা গিরাছে, দেখাযার আবার সেই সকল বিষয়ও লোকের প্রিয় হইডেছে। স্থামাংসিত বিষরের ও পুনর্ধীযাংস। করিবার জন্ত আন্দোলন, আলোচনা চলিতেছে। এইরূপ অন্থিয়তা যেমন ধর্মসাধনের বিশ্বকারী তেমনি মানসিক দৌকাল্যের পরিচারক। এজন্ত প্রাচন হইলেও আজ একটা বিষরের আলোচনা করা বাইতেছে।

ব্ৰাহ্মধৰ্ম যে প্ৰকৃতি শইয়া অন্মগ্ৰহণ করিয়াছেন, ভাহা ছারা हेशास्त्र (व छेमात्रका, मक्तयनीनका, हित्रविमामान श्रीकृत्व ভাছাতে সম্পেহ করিবার কোনই হেতৃ নাই। দেশ বাকাল ইহাকে আবদ্ধ ক্ষিবে না। কোন জাতি বা সম্প্রদায় ইহার विष्मय चानव्रीव ७ फेल्क्पैव इहेर्य ना। हेरा रामन मण खर्ग मद्यास जेमात, धर्मा उच्च धार्ग कतिएक (यमन हम्म, काम वा জাতির প্রতি ইহার কোন বিশেষ পক্ষপাতিত্ব থাকিবে না,ভেমনি সামাজিক আচায় বাবহায়,গার্হস্থা রীতিনীতি সম্বন্ধেও कान (मम, चार्क मर्रामात वा <u>कारत देश चारक श्रांकरर जा।</u> ব্রাক্ষধর্মের এই প্রকৃতির বিপর্যার ঘটাইতে বাঁহারা ইচ্চা করেন कीहाता चकि श्विक हरेला , रेहात वादव हरेला, रेहात প্রকৃতি অমুদ্ধর করিতে এবং কল্যাণ সাধন করিতে কথনও উপযুক্ত পাত্র নহেন। যাহারা আত্মধর্ষের এই মূল প্রাকৃতিয় পরিবর্তন করিতে প্ররাণী হইবেন, তাঁহার৷ সক্ষন ও জানী करेरक शास्त्रन, किन्नु की बाह्य आन्धर्यात महर गम्मा थात्रात (समन শক্ষ, ইয়ার সেবা করিডেও ডেসনি অসমর্থ। আজীয়তা वा जाल्यनाविक्छ। हेशब नक्त इहेट्ड शास्त्र मा। टकाम विस्तर লাতির আচার ব্যবহার বা জান গরিমার ইহা আবদ্ধ থাকিবে धर्षप्रक ७ नका खर्गनपरक (यमन याहा कन्मानस्य

ব্যবহার, রীভি নীতি ও বাহা জ্ঞান বিজ্ঞানের অন্থ্যেদিত, বাহা মানৰ নাজেরই ফল্যাণ্ডর, ভাহাই ত্রান্ডের অবলবনীর, তাহাই আলহনীর। ভাহা কোন্ বেশের কোন্ লাভির বা কোন্ সন্তাদারের সে বিচার করিবার অবসর ত্রান্ডের নাই। কারণ ভাহার অবলবিত ধর্মের প্রেকৃতিই সেরপ নর। একত ইহা বেবন সর্বাত্র প্রচারিত হইবে, আপনার জ্ঞান বিখাস বেমন চারিদিকে । ছড়াইবে, ভেমনি সামাজিক পারিবারিক সর্বপ্রকার কল্যাণ্ডর আচার ব্যবহারও সর্বাত্র হইতে শিক্ষা প্রহণ করিবে।

লাভীয়তা শব্দ এক অর্থে ব্রাহ্মের অভিধান হইতে উঠিয়া याहेरत। (म कार्य এहे, याहार्स्छ (माकरण कामरत्रत्र मम् ७ म দর্শনে ও তাহার অনুসরণে অন্ধ করে ও অনিচ্ছুক করে। আপন দেখের বাহা ভাল, তাহার প্রতি অত্যধিক অমুরাগ প্রদর্শিত হউক, ভাহাতে লাভ ভিন্ন কৃতি নাই। কিছ কাডি विरम्य व। (मम विरम्रायत क्षांक चन्द्र-(क्षम मानर्वत कन्गार्यत পথকে অবকৃত্ব করে। এইরূপ অভ্যপ্রেম মানবকে অকারণ বিছেবপরারণ করে। ইহা ছারা লোকের দৃষ্টি অতি সংকীর্ণ সীমার আবদ্ধ হয়। জ্ঞানোরতির সরণ ও সহল পথ ইহা बारा व्यक्तक बहेरा यार । अबस चलाजित्यम चित्र मनाग-কর ও অতি স্থানীর হইয়াও উরতির বিব্য বিরোধী হয়। चकाजि-(श्रम (वमन मानरवंद्र ज्ञान कन्तान नावन कविदाहरू, ভমনি ৰাতীয়তারণ অন্ধতার লোককে অপরের প্রতি শুধু উদাসীন 'করিয়াছে এমন নর কিন্তু নিত্য বিবাদ, বিবেষ,অপ্রেমের বশীভূত ক্রিরা মানবকে বিপর্ধগামী ক্রিয়াছে ও ক্রিভেছে। অমুচিড অনাতি-প্ৰেম বা অন্ধ-দাভীয়তা আল উটিয়া ঘাউক রাজ্যের প্রধান ভার ও গ্রথহেশ্বরূপ বৃদ্ধ-ব্যবসায়ী সৈনিকগণের व्यधिकाः मार्क व्यथनहे विमात्र म्युत्रा बाहेर्ड भातिरव। अक শ্রেণীর লোক বে সাত্রবধের নিত্য নুতন কৌপল আবিষার করিবার জন্ত বান্ত রহিরাছে, তাহাদের জ্ঞান শক্তি এ বিষয়ে নিয়োগ করিবার কোন প্রয়োজন হইবে না। তাঁহাদের শক্তি (मर्भत अञ्चितिध कठ कन्।। १ कत्र विषय निगुक इहेन। এथन हे ক্ত হিতস্থিন ক্রিতে সমর্থ হইবে। জাতীয়তা যেনন লোককে যুদ্ধপ্রির করে, তেমনি সাহিত্য, বিজ্ঞান, ধর্ম, নীতি প্রভৃতি সর্বাপ্রকার কল্যাণকর বিষয়ে প্রছেষপরারণ করিয়া লোককে অতি সংকীৰ্ণ, অতি সামাল ভানে আবদ্ধ করিয়া থাকে। ইছা বেমন জ্ঞান ধর্মের পরিপস্থি, তেমনি বিষয় বাণিজ্যেরও বিষম প্রতিবন্ধ ।

প্রকৃতি অন্থতন করিতে এবং কল্যাণ সাধন করিতে কথনও
উপযুক্ত পাত্র নহেন। যাঁহারা আন্ধর্মের এই মূল প্রকৃতির
পরিবর্জন করিতে প্ররাণী হইবেন, উাহার। সক্ষন ও জানী
কইতে পারেন, কিছু উাহারা আন্ধর্মের মহৎ লক্ষ্য ধারণে বেমন
ক্ষম, ইহার সেবা করিতেও ডেমনি অসমর্থ। জাতীরতা
বা সাম্পারিকতা ইহার লক্ষণ হইতে পারে না। কোন বিশেব
কাতির আচার ব্যবহার বা জান গরিমার ইহা আবদ্ধ থাকিবে
না। ধর্মাত ও সভ্য প্রহণসভ্জে বেমন যাহা কল্যাণকর
ভাহাই প্রাশ্বধানকীর অবল্যনীর, আন্ধর্মীর, ভেমনি আচার
ভাহাই প্রাশ্বধানকীর অবল্যনীর, আন্ধর্মীর, ভেমনি আচার

ক্ষিত্রসংকীপ আতীর্কার আব্দ্য হইতে পারেন। বাহার।

সেদ্ধণ ইচ্ছা করেন ভাঁহার। বর্ত্তমান সময়ের উচ্চতর জ্ঞান ও ধর্মের অমূপবালী হইনা নিভান্ত সংকীর্ণতা এবং উন্নতির বিষয় প্রতিষ্ঠিত করিছেন। তাঁহারা পবিত্রা আম্বর্মের উদার ও মহুৎ ভাব পরিপ্রাহ করিছে না পারিরা ইচার ক্ষরান্ কন নিজ্ঞানিনে ত ভোগ করিছে পারিবেনই কা, অপরের পক্ষেও বিষম কন্টক্ষরণ হইবেন। বাঁচারা জাতীরভা রূপ সংকীর্ণ সীমার আপনাদিপকে আবদ্ধ করিছে-ছেন, তাঁচারা আম্বর্ধের মূল প্রকৃতিই বিশ্বত ইউভেছেন। ইহার মূলে ফুঠারালাভ করিছেছেন। আম্বর্সাকর ইতিহাস আমাদিপকে যাহা শিক্ষা প্রদান করিছেছে, ভাহা বিশ্বত হওরা এবং ভাহার প্রতি দৃষ্টিহীন হওরা অতি অমন্ত্রের হইবে। ক্ষরাং আজীরভাবাদিপন বা আজীরভাপ্রিরগণ আপনাদের ক্লিক পরিতৃত্বি বা ক্রির চরিভার্ত্তার অক্স ইহার কল্যাপকর মহুৎ আর্থ্যকৈ হীন না করেন ইচাই প্রার্থনীয়।

## প্রেরিত পত্র।

( পরপ্রেরকের মন্তামতের জন্ধ সম্পাদক দারী নংহন।)
শ্রদ্ধান্দান শ্রীযুক্ত ভন্তকৌ মুদী সম্পাদক মহাশর
সমীপেরু—

মতাশর,

ব্দাপনার পত্রিকার সাহায্যে একটা শুরুতর বিষরে সাধারণ ব্রাহ্মসমান্তের কার্য্যনির্কাহক স্ভা, অধ্যক্ষ স্ভা ও সাধারণ সভার সভাদিগের এবং মন্দিরের ট্রান্টাগণের মনোযোগ আকর্ষণ করিতে অনুমতি প্রাপ্ত ছইলে বিশেব অনুগৃহীত হইব। সাধা-রণ ব্রাহ্মসমাজ-উপাসনা-মন্দিরের ট্রাইডীডের «ম পৃঠাতে মন্দিরের ব্যবহার সম্বন্ধে নিয়লিখিভরূপ নিয়ম লিখিভ আছে ;-"এই মন্ধির, যিনি এই বিশ্বস্থাণ্ডের স্টিক্টা ও রক্ষাক্র্ডা সেই চিরস্তন ও অপরিবর্তনীর মহান্ ঈশবের পূজা ও অচেনার লক্ত ব্যবহৃত হটবে ; কিন্তু এরূপ কোন নামে তাঁহার পুজা ও অচ্চনা হইতে পারিবে না যাহা কোনও লোক কর্তৃক এক কিম্বা অধিক 'বিশেষ প্রাণীর' প্ৰতি ব্যৰহাত হইয়াছে।" (for the worship and adoration of the Eternal and Immutable Being who is the Author and Preserver of the universe, but not under or by any name, designation or title used or applied to any particular being or beings by any man whatsoever.) यहांचा बाका बागरगहन वाब वाक्रमगारकवे ট্রাষ্টভীডেও ঠিক এইরূপ নিমুমই করিবাছিলেন। প্রভেদ এই বে সেখানে "কোনও লোক কর্তৃক" এই ছলে "কোনও লোক आवेव। मन कर्क् क" "( by any man or set of men whatsoever)" निथा चाह्य। এখানে এ कथा वना क्षांत्राजन (य, "বিশেষ প্রাণী" (particular being or beings) এই বাক্ষ্যে গায়ত্রত্ব হাড়া দেবদেবী মহাপ্রকৃষ প্রভৃতি সক্ষ্য প্রকার आनेरक्टे न्यारेरक्ट, ७४ माझ्य कि नक्टक ्कारेरकट्ट मा।

भारत, এছলে Being भारत भरतकार वृत्तात विना वक् सकत्त्र লিখিত হইরাছে, কিন্তু পেবে যে being শব্দ ব্যবদ্বত হইরাছে, ভাৰা ছোট অক্ষয়ে লিখিভ এবং ভাৰায় পূৰ্বে "বিশেষ" এই বিশেষণটী দেওয়া আছে, ইহাতে এই বৃৰা বায় বে, ভাচা পরব্রহ্ম নহে, পরব্রহ্ম হটতে ভিন্ন, কিন্তু লোক কর্তৃক পর-ব্ৰহ্মে হানে অধিষ্ঠিভ হইতে পারে। এই বিধিটা অতি লাই ভাষাতে লিখিত চইয়াছে। বিশেষ উদ্দেশ্ত না থাকিলে একপ विधि कवा इन्ड ना। जात विष्य विवन्नात भन्न ध्वनः कविवारकत्र मिरक मृष्टि बाथिबारे या था विधि निर्मिष्टे बरेबारक ভাগতে সন্দেহ নাই। এই সকল ট্রাইডীডে বিশেষ উদায়ভা দৃট ছর। যাহা সকল সমরের জন্ত প্ররোজনীর নহে, বাহা ভবিবাতে পরিবর্ত্তন করা দরকার এক্লপ বিষয় কথনও ইহাতে সন্মিবিট লয় না, কারণ এ সকল নিরম বর্জনান ও ভবিষ্যৎকালের জ্ঞাই করা হয়। আমরা কি এখন ইহার কোন অংশ পরিবর্ত্তন করা দরকার বোধ করিডেছি? ইহাতে কি এরপ কিছু আছে, বাল আমাদের উর্ভির ব্যাখাত করে 📍 কথনই নহে। কেহ যে একথা বলিভে পারেন সে বিষয়ে আমানের গভীর नत्मरु चाह्य। किंद्र (मथा वार्वे एक हिंद्र वह निवयों) नक्ता ভল করা কইভেছে। ট্রাইডীডের কোন নিরম ভল কইভে দেওরা কোন মতেই উচিত নৰে। ট্রিডীডের নিরম যে ভঙ্গ হইতেছে ভাহা আমরা প্রমাণ করিভেছি।

আনেকেই "হরি" নাম ব্যবহারে কোন দোব দেখেন না এবং "হরি" নাম ব্যবহার করিতে ভালবাদেন। এই ছেড়ু আমরা দেথাইতে ইচ্ছা করি, "হরিনাম" ব্যবহারে অনিট আছে এবং "হরিনাম" ব্যবহার করাতে ট্রাইডীডের নিয়ম ভঙ্গ করা হইতেছে।

चारतरक विनेत्रा थारकन, "इति" (कानक विरामत स्वरुद्ध नाम नरह, फेरा श्रद्धाध्यद्ध नाम। मर्ख ध्यनम आयारमुद्र একটা কথা বলা প্রয়োজন যে, আমরা জানি ব্রান্মেরা ছিরি"নাম ঘারা পরতক্ষকেই বৃঝাইয়া থাকেন। কিন্তু বিচার্য্য বিষয় এই যে, অন্ত লোকে "হরি"নামে পরত্রন্ধকে বুষো না, কোন@ ৰিশেষ দেবতা বুৰে। ইহা সৰ্বজনবিদিত যে অঞ্চলেশে (यक्रभरे रुजेक, वक्रावरण "रुजिनारम" हिन्तूरान विलय (एवक्रास्क्रे লকা করিয়া থাকেন। "ভরি"নাম তাঁহাদের নিষ্ট নিরা**ছার** জনত অরণ পরত্রক প্রতিপাদক নচে। চিন্দুগণ "হয়ি" মূর্ত্তি গঠন করিরা পূজা করেন। বদিও সাধারণতঃ ঘটেতে হরিকে প্রতিষ্ঠা করিয়া পূজা করা হয়, তথাপি "হরি" সাক্ষায় হস্ত পদ विनिष्ठे स्वयका ध्वरः विरागव विरागव प्रमात मृर्खित श्रवंग कता क्या । ध क्या वना धारमञ्जन (वाथ इहेरछह्इ (य, माधाम्यक: (य मकन দেবতার সূর্ত্তি গঠন করা হয়, সময় সময় তাহাদিপকেও ঘটে প্রতিষ্ঠিত করিয়া পূজা করা হয়। সূর্ত্তি গঠন করিবার কুরিধা নাহইলেই ঘটে পুণাহইরা থাকে। হরির পূজা সর্কা। হয় বলিয়া লোকে সাধারণতঃ মৃত্তি গঠন করিতে পারে না। বিশেষ বিশেষ সমরই মৃত্তি গঠন করে। কোনও স্থানে "इश्नि" বিশ্রহ রূপে নির্মিত গৃহে পুলিত হর। আমরা এরূপ ছলও জানি धानम कि रिम्पु-मिरेनोशंग गर्वाच "वृत्ति" ७ निष्ठाकात आस

**ब्राप्टन कर्रेनम**ा कीवादनम् निर्माकात श्रेरका काव चारह এবং সৈ ভাব প্রকাশ করিতে হটলে উচ্চারা "ঈশব", "লগদীশ" "नेतरंत्रचत्र" हेल्यानि भक् वायनात करतन। गकरनरे जारमस "ভবি," "বিফু," "শিব," "চর্গা," "কানী," "ক্লগছাত্রী" প্রাভৃতি (एरएकरीशन "क्रेश्वत" इंडेएंड छित्र। तकन विमुद्धे सारमन "উবরের" মৃতি লয় না। ভালারা "ঈবরের" মৃতি গঠন করিয়া। পृका करवन ना, केवरतत नम्र्य "मूठ" (पन ना, यनि (पन ना)। কিন্তু হরি দয়ত্বে এই দয়ত্তই হয়। এক শ্রেণী "দরি" বলিতে "निक्" काशना "नाजात्रन" तृत्यन, जास्र (अनी "कका" तृत्यन ; কিন্তু সকলেই সীমাৰত্ব দেবতা বুঝেন। "ভরি" পলের ধাত্-প্রভারগত অর্থ কি প্রাকালের গ্রন্থাদিতে উহা কি অর্থে বাব-সত চটয়াছে, ভাচা দেখিবার আমাদের কোন প্রারোজন নাই। টহা নিশ্চর সভ্য যে, এখন এক শ্রেণীর লোকে "চরি"নাম কোনও বিশেষ সীমাবদ্ধ দেবত। সহক্ষে ব্যবহার করিতেছে। বে কোন সাধারণ লোকের নিকট জিজাসা করিলেই জানা गाइरव "हत्रि" विवार जाहात्रा (कान ह विराग दावजारक वृत्य । ট্টার বিরুদ্ধে কেচ কিছু বলিতে পারেন না। ইচা নিশ্চর সভা। শভএব হরি'নাম পরত্রক্ষে আরোপ করিলে তাঁহাকে এরূপ একটা নামে পূজা করা হয় যাহা কোনও একশ্রেণীর লোককর্তৃক কোনও বিশেষ দেবতা সম্বন্ধে ব্যবহৃত হইতেছে। স্তরাং আমরা স্পাইরণে কহভব করিভেছি বে **আরাধনা, প্রার্থনা সংগীত ই**ত্যা-দিতে পরব্রহ্মকে "হরি"নামে পূজা করিলে উপা-সনা মন্দিরের টাফটডীডের বিরুদ্ধ কার্য্য করা হয়। কেবল সাধারণ ব্রাহ্মসমান মন্দির স্বহ্মে কেন (আমরা যভদ্ব জানি) সমস্ত মঞ্চির স্থক্ষেট এই বিধি আছে। তাই মন্দিরে হরিনাম বাবছারে সকল ছানেই অন্তার করা চয়।

আনক দলে ইলা দেখা গিয়াছে যে যথন আহ্মগণ "ভবি"
সংকীর্ত্তন করিরাছেন তপন দলে দলে লোক তালাতে যোগ
দিয়াছে এবং সে দলে নমজার করিরাছে, এমন কি অনেক সময়
বালাসা ইত্যাদি লুট দিরাছে। কিন্তু তাঁলারাই যথন অন্ত নামে সংকীর্ত্তন করিরাছেন, তপন সকলে চলিয়া গিয়াছে।
ইলাতেই দেখা বায় "ছরি" নাম প্রচণ সভ্য প্রাচার সম্বন্ধে কি
অনিত্ত করে। অনেক বৃদ্ধ হিন্দু মনে করিতেছে যে আহ্মেরা
দিন দিন হিন্দু ইভেছে শীঘ্রই হিন্দু হইয়া যাইবে। কেন না
আহ্মগণ এভনিন পরে ছরিনাম মালায়া ব্রিয়। হবিনাম প্রহণ
করিতেছেন; আনেকে হিন্দু ক্রিয়াকাণ্ডও প্রচণ করিতেছেন।
আনক সুবক্তে তাঁলায়া এ সকল কথা বলিয়া ভূলাইতে সক্ষম
ইত্তছেন। সুবক্ষের স্বজ্বেই এপকল কথার বিখাস করিতেছে।

আরু এণ্টা কথা সকলেই জানেন আমাদের মধ্যে এরপ এক শ্রেণীর রাজ আছেন,বাঁলারা যে সকল স্থানে 'ছরি' প্রভৃতি দেব দেবীর নামে সংকীর্ত্তন ও উপাসমালি লয়, ভালাতে যোগ দেন না অথবা যোগ দিতে ভাল বাসেন না। ছইতে পারে ভালারা এক সীমাতে বাইরা উপস্থিত হইলাছেন। কিন্তু সমত বাল্প এক নাধারণ উপাসমাতে বোল বেল ইঞ্চা ক্লিপ্রামোলনীয়

मरण ? जाहारमञ्जू केशासमा अलगरतीचानि कि अति र स्वा উচিভ নহে যে কৃষ্ণেই ভাগতে যোগ দিভে পারে? ভাষাই যদ্ভিষয় ভবে এ বিষয়ে দৃষ্টি না করিলে কি বিশেষ অনিষ্ট म्बला ? मकरन याद्यां अमिका कार्य जेशामनानि कतिया উপরত ছটতে পারে সে দিকে দৃষ্টি রাধা বিশেষ কর্ত্তন্য। কাষেই এই শ্রেণীর মতের প্রতি পশ্বাস রাধিয়া কার্য্য করা উচিত। কেচ কেহ বলিতে পারেন এই শ্রেণী অপের শ্রেণীর मए हाल ना किन ? किन हैना महस्क देवा यात्र (व छाजा **হইতে পারে না। এক শ্রেণী "হরি" প্রভৃতি দেব**্দেণীর নাম ব্যবহৃত চইলে দেই উপাসনা সংগীতাদিতে যোগ দিতে পারেন না---যোগ দেওরা অক্তার মনে করেন। আরি অপর শ্রেণী ছরি প্রভৃতি নাম ব্যবহার করিতে ভাল বাসেন এ সকল নাম তাঁলাদের অনেক সালায় করে। কিন্তু তাঁলারা এরপ ৰলিতে পারেন না যে এ সকল নাম বাবহাত না হইলে তাঁহা-দের ধর্মজীবন চলিতে পারে না অথবা এ সকল নাম যে সব উপাদনা ও সংকীৰ্তনে ব্যবজন্ত ৰা হয়, ভাহাতে যোগ দিতে পারেন না কিখা যোগ দিলেও ভালতে সমগ্র জনরের সঙ্গে বোগ দিতে পারেন না। কাজেট দেখা যার কোন শ্রেণীর উপর মিলন নির্ভর করিতেছে। বাস্তবিক বিশ্বল্পীন উদার আবাধনা সংকীৰ্ত্তন ভাচাই, যাহাতে সকলেই যোগ দিতে পাবে—যালতে কালবেও কোন ঋাপত্তির কারণ বিদ্যমান না থাকে। কেছ কেচ ইহাকে যথেষ্ট মনে না করিছে পারেন ইলার সলে আনবও কিছু যোগ করিতে ইচ্ছা করিতে পারেন। কিছু টহার কোন অংশের বিকল্পে আপত্তি করিতে পারেন না। বিশেষত্ব ভাঁচারা নিজে নিজে সাধন করিবেন। সাধ্-রণের নিকট সেরপ করিতে গেলে চলিবেনা। আমাদের উপাসনা সংগীতাদিতে এই নিয়ম রক্ষিত না হইলে যে অচিরে আর এক বিশাদ উপস্থিত হটবে তাহাতে সন্দেহ নাই। কিছু-দিন চটতে অনেকের চিন্দুয়ানীব দিকে যেরূপ প্রাবল গতি দেখা যাইতেছে ভাহাতে শীঘ্রই ইহার প্রতিক্রিয়া হইবে। অনেকেই এখন টচা ভয়ের সঙ্গে অবলোকন করিতেছেন, কিৰু-বিক্দ্ধে ভালোলন করিবার সময় উপঞ্চিত হয় নাই মনে করিতেছেন। কিন্তু চাঁহাবাও বেশী দিন অপেকা কবিতে পারিভেছেন না। কাল্পেই আমাদের পূর্ব হইতে সভর্ক হওয়া উচিত। এই ছেডু, যে সকল ভাব বা ভাষা আপত্তিজনক ভাঙা আমাদের উপাসনা-मिट्ड मर्स्तभा नर्ड्डन कवा मनकात। **এ**नः (म**रे अन्त व्या**मारमत সংগীত পুস্তকের কোন কোন গানের অংশবিশেষ পরিবর্ত্তন ছ ওয়াও দরকার। অতএব সমস্ত ব্রাক্ষপ্রাতাদের নিকট বিনীত প্রার্থনা তাঁচাবা উপাসনা সংগীভাদির সময় বেন এরূপ ভাষা ও ভাব রক্ষা করেন, যাহাতে কাহারও কোন আপত্তি না হইতে পারে—যাভাকে সকল দলের লোকই যোগ দিতে পারে। আর कामात्त्रत्र कार्यानिसीहक ७ क्यांक गुडात गुडा ७ पुष्टिमरहानत्र-গণের নিক্ট বিনীত তথাধনা এই যে যাহাতে মঞ্চিরে 'ছরি' প্রভৃতি দেব দেবীর নালে পরতক্ষের পূজা হইরা ট্রাইডীডের मित्रम एक मा वस, छोड़ाका द्यन त्य विदय मृष्टि दार्थन ध्वर उस्तर्शीत शृक्षकदिक स्थितक वार्शिक वार्शिकतक स्थाननक

পরিবর্ত্তন করিরা দৈন। সভাসংরক্ষণ কম্ম আমরা এই ছইটী প্রার্থনা করিতেছি।

উপসংহারে প্রদ্ধান্দার প্রীযুক্ত শিবনাথ শারী মহাপর ১৮৭৫ সনের অক্টোবর মাসের "সমদর্শীতে" "ভক্তিভাব ও ভক্তিভাব।" নামে বে একটা প্রবন্ধ লিপিরাছিলেন, ভাষা হইতে কিরবংশ উদ্ভ করিয়া দিতেছি:—

"আর একটা প্রশা আমাদের বধ্যে প্রচলিত হইতেছে তালার ও প্রতিবাদ করা আবশ্রক বেশ হইতেছে। ধর্মসাধন ও ধর্মাম্লান সহকে এ দেশীর ও অপর দেশীর প্রাচীন ধর্ম সম্প্রদারগণ বে সকল শক্ষ ব্যবহাব করিবছেন, তাহাও আমাদিগের মধ্যে অনেকে ব্যবহাব করিতে আরম্ভ করিরাছিন। অগতের লোকে সে শক্ষপ্রলি ব্যবহার করিলে এক প্রকার অর্থ ব্যবহার করিরা থাকে, আমরা সেই শক্ষপ্রলি অপর প্রকার অর্থে ব্যবহার করিরা থাকি। ইহাতে বর্তমানে নির্থক লোকের বিজ্ঞাপ ও উপহাসভালন হইতে হর, ভবিষাতেও নাল্লার বিজ্ঞার কারণ হইরা থাকে। অভএব ধর্ম প্রবর্ত্তক ও প্রচারকদিগের ভাষা সহক্ষে নিভান্ত সভর্ক হওরা একার করিবা।

ব**ভড়। ) অনু**গত ভই জুন। ১৮৯৩ **) অ**নৈক সভ্য।

> মাননীয় প্রীবৃক্ত ভবকোমুদী সম্পাদক মহাশর সমীপের +

नविनय निर्वमन,

মহাশর গত ১৬ জৈটের তত্ত্তীমূদীর সম্পাদকীর স্তন্তে আপনি "জীবে দরা" বিষয়ে যে মন্তব্য প্রকাশ করিরাছেন সে সহত্তে আবার কিছু বক্তব্য আছে, অনুপ্রহ পূর্বাক তত্ত্তীমূদীতে প্রকাশ করিলে বাধিত এইব।

चाननात्र त्यथम कथा अहे "माधक चनवात्नत्र मन्निक्छि छेनश्विक बहेरन छीबात महे बीविविशस्य खार्यत महिन जानि-कन ना मिन्ना थाकिएड भारतन ना, जयन जिनि नर्सकीरव रनहें व्यानक्री, टेइडक्क्रे श्रे अक्टर पर्मन क्रिया जाजानव ग्राना বিস্মৃত হট্না যান। তথন বনের বৃক্ষতা পর্যান্ত ভাঁছার আপনার হইরা যার ......িক্ত একটা গুরুতর আগ धरे (य, पाहाता कार्मातात माथा अवस्तृति जेलनाक कतिया ग्रक्ताक चार्यनात कतिवात क्रम भारत व्यवस्य कांत्रशास्त. তাঁহারা প্রাণীবধ করিতে পারেন কিনা?" আপনার এ প্রশ্নের আপনি উত্তর দিয়াছেন, তাহা সহত্তর কিনা জানি না, তবে এই পর্যান্ত বলিতে পারি যে আপনার কথা মানিরা চলিতে গেলে কেবল মংজ মাংল কেন অপর কোন তাবা আহারও মাসুবের অদৃত্তে ব্টিরা উঠে না; কারণ, সকলেতেই ব্রন্ধ রহিরা-ছেন,প্রাণী জগতে বেমম তাঁহার প্রকাশ উত্তিদ লগতেও তেমনি उँहात्रहे क्षकान । सूछताः ब्रम्भ अनान विनया यनि माःनानि भारात वर्कनीत हत, छर्द चात्र मानूर्यत चारारतम वस्त अहिन কি গু তাই বলিতেছিল্যে অয়পনার কথা মানিয়া চলিতে গেলে बासूरवर कारणा कीहाब काबरवरे ब्रक्ति केळं. मा १

আপনায় বিভার কথা "এক্সিকে বিবল্পেন অপর্যিকে बीवित्र खानमान केहे इत्रेवित नामक्षक द्रणान है खीनमान ७ चाश्रम कि चनतिहारी कार्री कातन क्रांच चावड, राश्रीम व्यापनाम दिविय रम्यारमहे कि छ।विट्ड हहेरव छ।गत्र मुरन অপ্রেম আছে ? জনপ্লাবন দাবানন প্রাভৃতি এক একটা নৈস্পিক বটনাতে কত লক লক নিৰ্দোব প্ৰাণীৰ জীবন নাশ हत्र। आहे मक्न रिनय-चंदेमार्ट छ अक्साळ क्रेचरतबहर कारक : कृति कृति क्यांनी महे इत, कारे बन्तिया कि वनिएक हरेत रव अरेखिव केचरबंद करवारमंत्र भवितादक ? कथनरे मा । এই সৰ আশাত দৃশ্বমান অম্বল বটনার পশ্চাতে প্রেম্মরের यत्रम উल्लंश मुकाशिक। ८०१म, काट्यम काट्य नव, উल्लंख। वृशः आध्यात्वत कन वाशीवश अदश्यम्बक ए प्रशीत मत्यर ৰাই। কিন্তু উচ্চতর উদ্দেশ্ত (যথ। মানবলাতির সভাতার উন্তি ও খাখ্যৰকা ) নিছিত্ৰ অভ জীৰ হত্যাত্ৰ লেব কি ? विन छाहात्रा छाहारमत छान मित्रा आयारमत छान वै। हो हे वात क्ष मुद्दे इत बाहे ? चाहातार्थ छ। भी बान- छा छ প্রকৃত পক্ষে নির্দিয়তা নয় ৷ গুলে বিভাগ কুকুর পুষিয়া পথ্যাপ্ত পরিমাণে আছার না দেওরা, গরু বোড়া রাখিরা জনাহারে, व्यवाहारत विवाताल बाहे। हैया नश्वाहे अङ्ग्छ निर्मत्रछ।। পূর্বোক্ত প্রাণী-হত্যার সংল বিশ্বপ্রেমের সামঞ্জ থাকিতে भारत, किन्तु (भारताक क्षत्र राजदारता मान क्षिन्कारमध থাকিতে পারে না। আপনি বিশ্বপ্রেমবাদী ত্রাক্ষের পক্ষে আহারার্থে জীবছত্যা গৃহিত করে বলিরা ইকিত করিয়াছেন তাই এত হণা লিখিলাম।

ক্লিকাতা, বহুগত ২৮নে লৈছি ১৩০০ স্থানি এই ক্লিচন্দ্ৰ সৌম।

माक्रवत्र श्रीपृक्त "ठचरकोम्ही" नन्नाहक महाभव नवीरनप्

স্বিনয় নিবেদন,

নিম্লিখিত পত্রগানি অমুগ্রহ পূর্বকৈ তত্তকৌমুদীতে প্রকাশ ক্রিমা বাধিত ক্রিবেন।

মাজবর জীবুক্ত "ধর্ম চক্ত" সম্পাদক মহাশয়

नभोरनद् ।

मायमम् निरम्म.

গত >লা চৈত্র তারিখের ধর্মতক্ষে কোর্মার ব্রাক্ষণমাধ্যের সাহৎসরিক উৎসব উপলক্ষে যাহা লিখিত হহরাছে, তৎসহদ্ধে আবার করেকটা কথা বলা আবশ্যক বোধ হইরাছে। অভত্রব এই পত্রখান আগামী বারের ধর্মতক্ষে প্রকাশ করিবন।

১ম। আমি কোরগর ত্রাক্ষসমাজের পরিচালক নছি, কি**ত্ত** উহার সম্পাদক এবং সভ্যদিগের আবেশ অস্ত্রলারে কার্য্য ক্রিয়া থাকি।

২ন। "কোরগর গমাজ বিরোধীগমাজের অজীভূত নহে" এই কথা আমি বলিয়াছি লিখিয়াছেন, কিছু আমি এরপ বাক্য গ্রেরোগ করি নাই। আমি বলিয়াছিলাম বে "কোরগরু স্বাজ সংখ্যাপ রাজ্যসাজের অসীভূত সহে" এবং সাধারণ স্বাজের সহিত ঘানিট্ডর সম্বন্ধ থাকিলেও ক্ষেত্রগর সমাজ উক্ত সমাজের আর অন্ধ্যমণকারী সহে।" সকল সমাজেরই ধাবে গুণ সম্বন্ধের ইহার মড দিবার সম্পূর্ণ থাধীনতা আছে এবং ব্যথারণ সমাজের আচার্য্য জির জন্য কাহাকেও আচার্য্য নিমুক্ত করিবার খাধীননতা আছে। এই সকল কারণে আমি বলিয়াছিলাম বে কোরগর সমাজ Neutral ভিরকালই আছে এবং ভাহার কোন পরিষ্ঠ্যম চম নাই।" তবে এ কথা সভ্য যে কোরগর সমাজমাজিরের ট্রান্টালিগের আচার্য্যকে পদচ্যুক্ত করিবার সম্পূর্ণ করভা আছে এবং ভবিহাতে কোন কারণে উক্ত ট্রান্টাপদ খূন্য হইলে ভাহা প্রণের ভার সাধারণ প্রাশ্বসমাজের কার্যানর্য্যাহত সভার হতে নাক্ত আছে।

তর। এছলে ইহাও বলা নিতাত আবশ্যক বে "বিরোধী সমাল" অর্থে বলি কোচবিহার বিবাহের বিরুদ্ধে মঙলাতা বুঝার তবে কোরগর ব্যাক্ষপ্রাক্ষ "বিরোধী সমাল"; কারণ উক্ত বিবাহের সমর এই সমাল প্রকাশ্তকাবে উহার বিরুদ্ধে মত প্রকাশ করেন এবং সে মতের কোন পরিবর্জন আজিও ঘটে নাই। আর বলি "বিরোধী সমাল" অর্থে নববিধানবিরোধী বুঝার তবে কোরগর সমাল "বিরোধী সমাল"; কারণ নব-বিধানের মত সকলের বধন প্রথম স্থাপাত হর তথন হইতেই কোরগর সমাল উহার বিরোধী এবং নববিধানের প্রশ্রর দিতে কোরগর সমাল কথনও প্রস্তুত্ব নকেন।

৪র্থ। গড মাথোৎসবের সময় এক দিবস শ্রদ্ধাশার শ্রীযুক্ত
বাবু প্রতাপচন্ত্র মঞ্চনদার মহাশার সাধারণ আদ্দানাকৈ আচাবীর কাঁই ক্ষার কোঁছপর সমাজের সভ্যপণ কির করেন বে,
সকল সমাজের আত্মা ও বিশেষত্ব ছাজিরা বিরা সাধারণ ভাবে
ও সাধারণ মতের উপর নির্ভর করিয়া পরশারের মধ্যে বত ।
মিলিড চইতে পারা বার ততই ভাল, এবং সেই জনাই এবার
নব্বিধানের প্রচারক্ষিপকে কোরগর স্বাজ্বের বার্ষিক উৎসবে
উপাসনা করিবার জন্য আহ্বান করেন।

পরিশেষে নিভান্ত বাথিত হৃদরে নিবেদন ভরিতে বাধ্য ১ইতেছি বে আমার পরমারাধ্য পিতৃদেবকে অনুমার সহিত উল্লেখ করা চটরাছে। ইহা ভতনুর উদার, ন্যারসভত ও ভয়োচিত হটরাছে, আপনায়া বিবেচনা ভ্রিটেই বৃথিতে পারিষেন। অধিক বলা বাছলা।

> বশহদ শ্রীসভ্যান্তার দেব।

## ব্রাক্ষসমাজ।

ব্ৰিক্ষ-বুবক্দিগের সাদ্ধ্য-সন্মিল্ — প্রিযুক্ত বাব্ পার্কতীনাৰ বন্ধ নহাশর বাদ্ধ যুবক্দিগের কম্প গভ ৪ঠা আগষ্ট ভক্রবার ৪৫নং বেনেটোলা লেনে এক সাদ্ধা-সমিতির অন্যোজন কলেন। প্রীবুক্ত বাবু ক্ফক্মার মিত্র ব্যক্দিগকে উপদেশ প্রদান কলেন এবং বাবু উপেক্ষেকিশোর রার চৌধুরী ও পার্কতী বাবু কোন কোনও পুত্তক বইড়ে পাঠ করেন। মধ্যে মধ্যে সমীত ক্ইরাছিল। এইরপ আযোব মিপ্রিক নীতিশিক্ষার উপার ব্রক্পণের চরিত্রগঠনের পক্ষে বিশেষ উপবোধী।

উৎস্ব—গত ১।৬ই আগষ্ট শিবপুর ব্রাজসমাজের বার্বিক উৎস্ব সম্পন্ন হইলা সিরাছে। এতহুণলক্ষে কলিকাতা হইতে বাবু সৰ্বীপচন্দ্র হাল ও বাবু আহিমাৰ চট্টোপাধ্যার প্রকৃতি

ভবার গমন করেন। এই শবিধার অপরাহে ক্রনীয় ইঞ্নিরারিং কলেজের ডুইং হলে নর্বীপ বাবু "ছাত্র-জীবনে নীতি শিক্ষার প্রোরাজনীরভা" সহয়ে বজুতা করেন। বজুভার হলে প্রার ১০০ শত ছাত্র উপন্থিত হইরা মলোবোগের সহিত বজুতা প্রবণ করিয়াছিলেন। পর্যাবন প্রায়ে উপাসনালরে আদিনাথ বাবু উপাসনা করেন। অপরাহে কলেজের ছাত্রাবারে নব্বীপ বাবু শাস্ত্র পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন এবং সঙ্গীত সংকীর্ত্তন হইরা উৎসব পরিস্বাপ্ত কর।

নির্জন-সাধন—গত বৎসর আমাদের করেকজন প্রচারক মহর্ষি দেবেজনাথ ঠাকুর মহাপরের বোলপুরত্ব পান্তিনিকেতনে গিয়া এক মাস কাল বাস করেন। এবার সাধনাশ্রম হইতে পণ্ডিত লিবনাথ লাজী, বাবু নববীগচল্ল দাস প্রভৃতি তথার কিছুলিন বাস করিবেল বলিয়া গমন করিরাছেন। বাহারা লাজিনিকেতনে গিরাছেন, তাহারাই জানেন তথাকার প্রকৃতির নিজকতা এবং দূরপ্রসারিত প্রান্তরের গান্তীর্য ও নির্জনতা সাধকের প্রাণে কেমন নবভাবের সঞ্চার করে। মহর্ষি শান্তিনিকেতন ত্থাকা করিয়া ব্রাশ্বগণের মহোপকার সাধন করিয়াছেন।

দান-শেলকের বাবু মধ্রানাথ নন্দী ওঁছোর পুত্রবরের নামকরণ উপলক্ষে থাসিরা মিশনে ২১ টাকা দান করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত বাবু অগদীশচক্ত বস্থ তাঁহার পরলোকগত পিভার বার্ষিক শ্রামোপদক্ষে দাসাশ্রমে একশত টাকা দান করিরাছেন।

গত পূর্ব রবিবার হইতে সাধারণ আদ্মসমাজের এছ-বিদ্যালকার কার্ব্য পুষরায়ত্ম হইরাছে এবং ইহার ছাল্ল বার্বিক পরীক্ষার পাঠ্য পুস্তকের তালিকা 'বেসেঞ্চার" প্রিকার প্রকাশিত হইরাছে, অধ্যরনার্থিগণ দেখিয়া লইবেন।

বিগত ৩১এ জ্লাই সোমবার ১১০ বং কর্ণএরালীন হীট ভবনে বাবু প্রবোধচক্র মহলানবিসের প্রথম পুত্রের জাভকর্ম সম্পন্ন হইয়াছে, বাবু নবছীপচক্র দাস আচার্ব্যের কার্য্য করেন।

নৃতন ব্ৰাহ্মসমাজ— অৱৰিন হইণ বাবু নীগমণি চক্ৰ-বৰ্তীর উদ্যোগে চেরাপুলীর অন্তৰ্গত নংরিম নামক হানে একটা ব্রাহ্মমাজ হাণিত হইরাছে। অনেক থাসিরা পুরুষু ও রমণী সেই সমাজে উপস্থিত হইরা থাকেন।

নুতন সমাজমন্দির—খাসিরা পাছাড়ত্থ যৌসমাই আছ-সমাজের নুতন গৃহ প্রতিষ্ঠা হইরা পিরাছে। পুরাতন পৃহ জীর্ণ ভওরাতে একটী পাভরের পুরাতন বর ক্রের ক্রিয়া যেরাম্ড ক্রিয়া লওরা হইরাছে।

দীক্ষা—উ বিশ্লোরার এবং উ বিজ্ঞোমণি নামক ছইজন উৎসাহী থাসিরা যুবক স্প্রতি ব্রাক্ষণর্যে দীক্ষিত চইরাছেন। এই দীক্ষাফার্য্যে বাবু নীল্মণি চক্রবর্তী আচার্য্যের কার্য্য করেন। লাইকানসেউ ব্রাক্ষসমাজে এই কার্য্য সম্পন্ন হয়। আনক্ষের বিবর এই যে ইহারা উভরেই আপন আপন পরিবারের মধ্যে ব্রাক্ষধর্মকে প্রতিষ্ঠিক করিবার ক্ষম্প বিশেষ চেটা ক্ষিতেছেন এবং কিন্নং পরিমাণে ক্রতকার্য্য হইরাছেন। ক্রত্তান ক্রত লোক উক্ত স্মাজে বোগ বিরাহেন। ইহালের মধ্যে একজন এই প্রাবের স্কার, বরস প্রোর্থ ৫৫ বংসর। এই ব্যক্তি-পূর্মে অভ্যন্ত অন্যাপান করিছেন। ভারত্তে তাহার প্রাবাহ হোগ আগো গ্রের্থ অন্তের্ম হর্ম ব্যক্তি ইনি মন ভারি ,

করিরাজেন এবং সেই হইতে তাঁলার মনে পূর্বজ্ঞ ক্রার্থের জন্ত অতান্ত অনুভাগের, উদর হইরাছে। ভাগ ভাবে জীবন যাপন করিবার জন্ত তাঁলার জ্বনে গভীর আকাজ্য। হইরাছে। পরমেশ্বর তাঁলাকে শান্তিদান করুন!

প্রচার—বাবু নীলমণি চক্রবর্তী এক থাসিরা বন্ধু সমন্তিবাহারে ওরালিং নামক এক স্থানে প্রচার করিতে গিরাছিলেন। তথার ছই দিন থাকিরা বস্তুতা ও আলোচনাদি ছারা এ।ক্ষধর্ম বাাগ্যা করেন। আনেক পুরুষ ও রমণী আগ্রাকের সহিত ব্যাথ্যা ওনিরাছিলেন। এবং কতকগুলি থাসিরা পুত্তক বিক্রীত চইরাছিল।

হ্রিসেনা—করেক বংগর গত চইল তালতলাতে "চরি-লেনা" নামে একটি ধর্ম-সাধনমগুলী প্রতিষ্ঠিত চইরাছে। ইচার উদ্দেশ্ত অতি স্থানর, আমরা সর্বাস্তঃকরণে এই মণ্ডলীর উন্নতি কামনা করি। ইহার অমুষ্ঠানগত্র নিয়ে প্রকাশিত হুইল।

উপাসনালয়—এই জগতের শ্রষ্টা পাতা ও নিরস্থা জীবন্ত পরমেশ্বরের উপাসনা না করিলে নরনারী কথনই স্থাশাস্তি লাভ করিতে পারে না। কিন্তু বর্ত্তমানকালে এই উপাসনার প্রতি সকলেরই কেমন একটা লিখিল ভাব দেখা
বাইতেছে। যাহাতে গৃহে গৃহে ঈশ্বরোপাসনা প্রচলিত হর,
তহিষ্বের যথাসাধা সাহায্য করিবার জক্তই বিগত ১২৯১ সনের
১১ই ফাল্কন ভারিখে এই হরিসেনামগুলী প্রতিষ্ঠিত হইরাছে।
সম্রতি তালতলা ২৯৷১ নং নেউগীপুকুর ইই লেনস্থ শ্রীযুক্ত বাব্
দীননাপ কুমার মহাশরের ভবনে প্রতি রবিবার সন্ধ্যা ভাটার
সমর উক্ত সেনাদলের সামাজিক উপাসনা হইরা থাকে। সর্ক্রসাধারণকে এই উপাসনার যোগ দিবার জক্ত সাদরে নিমন্ত্রণ
করা বাইতেছে। যদি কেই ইছো করেন, তিনি এই সেনাদলকে শ্রীয় গৃহে লইয়া গিয়া হরিসংকীর্ত্তনাদি শ্রুবণ করিতে
পারেন। গৃহে লইরা যাইতে কিছুমাত্র বার হইবে না।

নীতি-বিদ্যালয়— যাগতে যালকগণের চরিত্র পবিত্র ও ধর্মান্থমোলিত হয়, ভাগার জস্তু হরিসেনাদল উপরোক্ত স্থানে একটা নীভি-বিদ্যালয় স্থাপন করিয়াছেন। প্রতি রবিবার প্রাতে ৬॥টার সময় উক্ত বিদ্যালয়ের কার্য্য আরম্ভ হয়। য়াঁহায়া আপনাদিগের পরিবারত্ত বালকদিগকে সচ্চরিত্র ও নীতিপরায়ণ করিতে ইছা করেন, অথচ আপনাদিগের সময়াভাবে ভাগাদিগতে যথোচিত শিক্ষা দিতে পারেন না, ভাঁহারা যদি অমুগ্রহ প্রকি বালকদিগকে উক্ত বিদ্যালয়ের প্রেরণ করেন, ভাহা হইলে সেনাদল বিশেষ আফলাদিত ছইবেন। বলা বাহল্য যে, ইহাতে ও কিছুই ব্যয় হইবে না।

ধর্ম-পুত্তক লয় — চরিসেনাদল আপনাদের উপরোক্ত কার্যালেরে একটি ক্ষুদ্র ধর্ম-পুত্তকালর সংস্থাপন করিয়াছেন। ইচাতে সকল আতীর ধর্মপুত্তক সংগৃচীত চইতেছে। তন্ত্র-বোধিনী, ধর্মতন্ত্র এবং তত্তকৌমুদী নামক তিনধানি ধর্মপ্রিক। ইচাতে নিগমিত ভাবে আসির। গাকে। যিনি ইচ্ছা করিবেন ভিনি প্রতিদিন প্রাত্তে ভাটার সমন্ত্র আলিরা বিনাশ্লো পুত্তক ও পরিকা পাঠ করিতে পারিবেন। উক্ত সমরে কাচারও অস্থবিধা চইলে তাঁচার অক্ত বিশেষ বন্দোবত্ত করা হইবে। পুত্তক বা প্রিকাদি গৃতে লইয়া যাইবার নির্ম নাই।

সেনরি প্রাজন করিনেনাদলে সেনার প্রয়োজন আছে। বিনি দেশের তুর্গতি-মোচন আছ ভগবানের কার্য্য করিতে করিনেনাদলে প্রবেশ করিবেন, মঙ্গলী তাঁহাকেই সমান্দরে প্রকণ করিবেন।

ভিক্ষা—বলা বাছলা যে সেনাদলের সমস্ত কার্যাই , সাধারণের নিকট অর্থ ডিকা করিয়া সম্পন্ন হইয়া থাকে। যদি

করিরাছেন এবং সেই হইতে তাঁহার যনে পূর্মকভ চুকার্যোর ক্ষেত্র ইচ্ছা করেল, ভিলি: এই দলকে অর্থের বার। সাহ।যা জন্ত অতান্ত অনুভাগের উদর হইরাছে। ভাল ভাবে জীবন ফরিডে গারেন।

নিবেল্ন-যাঁহার। হরিবেনাদলের সভিত মিলিত হইতে অথবা ইতাকে অর্থ সাভাষা করিতে ইচ্ছা করিবেন, তাঁহারা অনুপ্রহ পূর্বক হরিবেন। উপাসনালবের ঠিকানার কার্য্যাধ্যকের নামে পত্র লিখিবেন।

#### দানপ্রাপ্তি স্বীকার।

চেবাপুলী প্রচার আশ্রম ও ত্রাক্ষণমান্তের সাহায়ার্থ পূর্ব্ব প্রাপ্তিশীকারের পর যে অর্থ পাওরা গিরাছে, কুডজ্ঞতার সাহত নিম্নে ভাষার প্রাপ্তিশীকার করা গেল। বাবু শিবনাথ मख मिलः ১<sub>১</sub>, तामहस्य मख खे २<sub>०</sub> तमगङ्गहे मख खे ১<sub>०</sub> तामगण्डि मान के ১, जीय ही जित्रवना तमन के अ। वातू मेच बहुम-मात्र के ১, वायनमात्र वरमााशाधात्र के ১, मीननाथ मात्र के ०, विभिन्नविकाती मञ्जूमनात के २, नवरंगानान मन के २, जात्रज-हक्क (मव के ১८, ८क, त्रि, हाहोशांत्र के २८, मरङाक्क्रमात वक्क ঐ ১১, সহাযুভূতিকারী ঐ ২১. ডাঃ পি, সি রায় কলিকাভা ২১, বাবু ছেরছচজ্র মৈত্র 🏖 ৫১, রামানক্ষ চাট্টাপাধ্যার ঐ ১১, রাম-তুর্ভ মজুমলার নওগাঁ৫১, সাধুচরণ রায় কটক ৫১, মি: (▼ এন রার (সি এস) ৭ৄ, জনৈক আক্ষমতিবা আবিপুর ২॥০, বাবু বিপিনবিভারী রায় মাণিকদত ১৫১, বরদানাথ ছাল্দার ভবানীপুর ৫√, শ্রীমতী জগৎলন্ধী ঘোষ হালকাতা ১√, বাবু वनताम (मन भिनः २८, स्वलहता नि॰ वर्षा ३८, हमहता कांबनि ১, कांबिहत्य हरिष्ठांभाशाम वक्षत्र ১, नवकिर्मात (मन् প্রীষ্ট্র ২১, অভুলচন্ত্র ঘোষ ঐ ১০১, লন্দ্রীনারারণ চৌধুরী নাগপুর ৫১, কেদারনার্থ কুলভী বাকুড়া ২১, একজন বন্ধু ১১, একটী কুদ্র বালক ১/০, কুদ্ৰ কুদ্ৰ দান ২৮০—মোট ১৭৮৫/১০, পূৰ্মকার আধি স্বীকার---২৯০/০ সর্ব্বসমষ্টি ৩৮৭৮**८/১**০

# <sup>বিজ্ঞাপন।</sup> ভিক্ষা প্রার্থনা।

আসাম প্রদেশের অন্তর্গত তেজপুর সহরে অনেক দিন হটছে একটা ব্ৰাহ্মসমাজ আছে। কিন্তু মৰ্থাভাবে এপৰ্যান্ত একধানি উপাসনা সন্দির নির্দ্ধিত চইতে পারে নাই। ভক্ষনা সন্তা-দিগকে ভির ভির বাসার সামাজিক উপাসনাদি কার্যোর জন্য সমর সময় অনেক অমুবিধা ভোগ করিতে হইয়াছে। সমাজের একথানি নিজের গৃহ প্রান্থত না হটলে এট অসুবিধা কিছুতেই দ্র ভটবে না। কিন্তু একখানা ছোট রক্ষের টিনের হর: করিতে চইলেও ন্যানকরে। এক হালার টাকার প্রায়োজন। विशास माला मिता व मार्था होता कार मार्थात त्वा निक्रे किका করায় আজ পর্যান্ত প্রায় সাড়ে তিনশত টাকা স্বাক্ষরিত ত্রবাছে, আর অধিক পাটবার আশা নাট। অপর স্থানের वाक्षवस् अवः वाक्षमभाष्मव किलाकाको महामन्त्रशास्त्र माहाया ভিন্ন এট অভাব দর চটবার আর উপার নাট। ভাট আছর। সকলের সভাতভূতি প্রার্থনা করিতেটি, মধা ক্ষমিধা সকলেট कि ह कि ह अर्थ मार्गाया कतिया आमानिश्वत উतिथित अलावित দ্ব করিয়া এট বনাকীর্ণ দরিজ দেলে ভগবানের নাম প্রচারেয় সভার হউন এই আশ:। যিনি যাতা দিবেন ভাতা আমাদিলের व्यवता उत्तरको मुनीत मुन्नानरकत निक्र नार्शहरनहे इहेरव ইভি—

তেলপুর ব্রাহ্মসমাল, আসাম ৩১শে জুলাই ১৮৯৩ निरवहरू व्योगचीकाच, व्यक्ताकाक, व्यक्तमाथ वय, व्यक्तमाथ वय,



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা

১০ম সংখ্যা ১৬শ ভাগ।

১৬ই ভাত্র, ব্রহস্পতিবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সন্থৎ ৬৪।

ৰাৎসৱিক শব্বিম মৃশ্য ২॥• মফখণে ৩১ প্ৰতি ৰঞ্জের মৃশ্য 🗸 ৩

#### . চিরদঙ্গী।

ৰথার তথার রই, ভূলি বা জাগ্রত হই, প্রভূজানি তোলা বই দীনে কেহ রাখে না; জীবনের অন্ধকারে, ভূবি পাপ তাপ ভারে ভোষা বিনা সে হস্তরে আর কেহ দেখে না।

চঞ্চণ হলর মোর, বিবর-বিপ্লব বোর, ভোমারে বন্ধি হে ভূলি বিচিত্ত তা নর হে, আপনা ভাবি একাকী, নিরালে মগন থাকি, তথনো করণা তব দুরে নাহি রর হে।

আছ ভূমি কাছে কাছে, এ মৃঢ় ভূমিরা আছে,
ভূমি রাখ; অবিশ্বাসী ভরে সারা হইছে;
দেখিলে বাঁচিয়া যায়, নাহি দেখে সে কুপার,
থাকিতে সুধের পথ হংখ ডেকে লইছে।

এ খোর মোহের ঠুলি, ক্লপা করি দেও খুলি, সভত নিকটে দেখি অপনে বা পরনে; ভোষারি আলোকে চলি, ডোমারি আদেশে বলি, শীবস্ত ধর্মের জ্যোতি দেখি প্রভূ নরনে।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

নৈকটা সাধন--- অবতারবাদ ও অত্রান্ত শাস্ত্রবাদে বিশ্বরতে মামব-ল্লন্ন ছইতে দ্বে কেলিয়া দেয়। দীবা ভূতার হয়লের অভ ও মানবের উদ্ধারের নিমিত অবতীর্ণ হইরাহিলেন এবং শ্বরং মানবঙ্গে স্ক্রির পব প্রদর্শন করিরাহিলেন। কিছ সম্পান অতীতের কথা। এখন বদি ভূমি তাঁহার লীলার বিবরে কিছু আনিতে চাও, তাহা হইবে অতীতের দিকে দৃষ্টপাত করিতে হইবে; মৃত তায়া অধিগত করিতে হইবে; প্রোহিত ও ধর্মবাস্ত্র-যাথাকের্ডানিগের সাহায়ো সেই মৃত তাবার হর্ষোধ উদ্ধি সকলের ভাংগর্যা প্রহণ করিতে হইবে; ভত্তির ভূমি ঈশরের ভ্রমবার ব্যরিচর পাইবে না; মৃত্যিকার ধর্ম লাভ করিতে পাইবে

না: এই সভাবলম্বী ব্যক্তিদিপের কথার ভাবে এই প্রকার বোধ হয় বেল উভিয়ো মনে করেন, যে পুরাকালে মানব মন भाग्य এ**ভদুর কলভিভ হর নাই, মানব-ছ**দ্ম এভদুর এই ও পতিত হয় নাই, হুতরাং দে সময়ে ঈশ্বর মান্ব-সংসারে অবভীর্ণ হইতে পারিদাছিলেন; একণে আর দে দিব নাই। মানব একণে এতদুর মনিন ও ব্রটাচারী বে ঈশর একণে মানব-সক ড্যাপ করিয়াছেন এবং দূরে বাস করিতেছেন। একৰে যদি जीहात हैका ७ चारमण मानियात हैका हत्र, छटव 'बम, बाहैद्यम, वा दकाजारनम्न शृष्टे। छेन्वाहेन कत्र । त्यरेबारन छाराज विधि ६ নিবেধ অবপত হও। অবভারবাদের ভার বিজ্ঞানের বর্ডবান मरफ क्षेत्रक मृत्य निरम्भ कतिशास । वेचन अक तुर्द কার্য্য-কারণ-পৃথ্যদের পশ্চাতে রহিয়াছেন। অন্ধশক্তির বারা এবং সেই শক্তির নিয়ামক কতকগুলি নির্থের বারা অপৎ চলিডেছে; ইহার উপরে তাঁহার সাক্ষাৎ হস্ত নাই। এই সকল স্থাতিষ্ঠিত নির্মকে তিনি পরিবর্তিত করিবেন না; স্থতরাং তাঁহার নিকট প্রার্থনা করা নির্থক; ভাছাতে কোনও প্রকার লাভ নাই। इंडि वस्ताहरे वा आक्षासन कि? वैशिष्ड भित्रवर्धन नारे, প্রসন্নতা অপ্রসন্নতার সমন্ধ নাই,তাঁহার স্ততি বন্দনাতে বুধা সমন্ন নষ্ট না করিয়া তাঁহার প্রতিষ্ঠিত নিম্নাবলী মনোযোগপূর্বক আলোচনা কর, এবং ভশ্বণ্য হইতে আপনাকে রক্ষা-করিবার উপায় উত্তাবন কর। প্রাক্ষণর্ম এরপ দূরত্ব ঈশবে তৃপ্ত নহেন। वाष्मधर्य डीहारक समरमत्र निक्रेष्ट ७ भीवस शूक्यज्ञरण आठीडि ক্রিবার জন্ম উপদেশ দিতেছেন। তিনি যে কেবল অভীত কালেই আপনার করণার সাক্ষা নিরাছেন এরপ নছে; কিন্তু প্রতিদিন আমাদের প্রভাকের জীবনে করণার সাকা मिर्छर्डन। टक्वन खाठीन कारनत माधुमिरनंत कर्र जारम वानी व्यक्तांत्र कविशाहिरनम काश सरह व्यथमक व्याकाम नवन क পবিত্র আত্মাত্তে আহেদবাণী প্রচার করিভেছেন; প্রভ্যেকের বিবেকে থাকিয়া কর্মব্যের উপদেশ করিতেছেন। দৈনিক चीराम এই निक्छा मारम कन्ना जाकशार्यन मरहाशासमा।

ত্রক্ষণি স্থিত ঃ---প্রাচীন শারে এই একটা বাক্য আছে "রক্ষণি হ'তঃ";--ত্রক্ষে বিনি গ্রন্থকরণে স্থানিখাছেন

তিনি একে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছেন। একে প্রতিষ্ঠিত শক্ষের অর্থ

কি ? একে সেরপ ব্যক্তির চিত্ত মৃচ্রপে আবছ। পল্ল বেমন

মৃণালের ছারা মৃলের সহিত মৃচ্রপে আবছ সেইরপে সেই প্রকৃত

কানী ও বিখাসীর চিত্ত একে অন্চ্রপে আবছ। পল্লটী বধ্ম
কলের উপরে ভাসিতেছে, তখন-চক্লে দেখিলে বোধ হর না মে

তাহার তলে মৃণাল আছে; বা তাহা কোনও পলার্থের সহিত

মৃচ্রপে বন্ধ রহিয়াছে। বরং যখন বাযুভরে জলরাশি আন্দোলিত

ইইতেছে বা প্রোতের বেগে কল্লোলিত হইতেছে, তখন

দেখিতেছি পল্লটী একবার এদিকে একবার ওদিকে নীত হই
তেছে, একলানে দির থাকিতেছে না, বেন মৃলে কোনও বন্ধন

নাই। কিছু অপেক্ষা কর বায়ু থামিরা গেল; প্রোত মন্দীভূত

হইল; কল প্রশান্ত আকার ধারণ করিল; তখন দেখ বেধানকার

পল্ল সেইথানে দাঁড়াইরাছে; আগনার মৃশকে আশ্রর করিয়াই

আছে। একে প্রতিষ্ঠিত ব্যক্তিও প্রতিষ্ঠিত থাকেন।

বাঁহার চিত্ত ত্রন্ধে প্রতিষ্ঠিত হইরাছে, তিনি নিরাপদ স্থানকৈ অধিকার করিয়াছেন। জীবনের বাহিরের আন্দোলনে তাঁছাকে স্বস্থান-চ্যুত করিতে পারে না। বাহিরে দেখিতে তাঁহার ইন্সির সকল ও মন বাহিরে খুরিভেছে কিন্তু তাঁহার অন্তরাত্মা এক প্রশান্ত ও নিজক স্থানে বাস করিতেছে; যেথানে বাহিরের বিক্লোভের কারণ সকল গমন করিতে পারিভেছে না ৷ যোগযুক্ত ব্যক্তিরাই এই স্থানকে অধিকার করিরা থাকেন। জ্ঞানবোগ অধবা কর্মবোগ উভন্ন বিধ হোগের দারাই ঐ যোগযুক্ত অবস্থা লাভ হইয়া থাকে। বাহারা জ্ঞানঘোগী তাঁহারা বিমল তত্ত্ব-ক্সানের দারা ইহা সুন্দররূপে প্রভীতি করিয়াছেন, বে সমুদায় অঞ্বের মধ্যে সেই এক বস্তই জব। ইহা জানিয়া তাঁহারা সেই এব পদার্থেই প্রতিষ্ঠিত হইয়াছেন; এবং বাছিরের বিষয় সকলকে পরিবর্ত্তনদীল ও কণ্ডসুর জানিয়া তদ্বারা আর বিচলিত হন না। কর্মিযোগিগণ আর এক পণ দিয়া ঐ স্থলেই উপনীত হইয়া পাকেন। তাঁহারা কর্তব্যের উপরে প্রকিন্তিত হইয়া ফলাফল কামনা ত্যাগ করেন; এবং বাভিরের সুথ তু:খের ছারা আর আপনাদের চিত্তকে বিচলিত চটতে দেন না। জর পরাজরের पिटक उँकाएमत पृष्टिहे थाटक ना । श्रीत श्रीत स्रीवानत कर्त्वा সমাধা করিয়াই তাঁহারা নিশ্চিন্ত মনে বাস করেন। লোকের অমুরাগ বিরাগের প্রতি দৃষ্টিপাত করেন না। এরূপ কর্মযোগের অবস্থা আঠীৰ স্পৃত্ৰীয়। জ্ঞানযোগী ও কর্মযোগী উভরেই ব্ৰহ্ম প্ৰভিষ্ঠিত।

নিৰ্ভনবাস-

একাকী চিস্তরেন্নিভাং বিবিক্তে হিতমান্সন:। একাকী চিস্তমানোহিপরং শ্রেরোহপচ্ছতি।

.२६৮ (ज्ञाक वर्ष क्यांत्र म्यू ।

অর্থাৎ "নির্জন প্রদেশে একাকী অবস্থান করত সর্বাদা আপনার হিত চিন্তা করিবে। নির্জন চিন্তা দারা পরম শ্রেম লাভ হইরা থাকে। নিরত লোক কোলাহুলের কথ্যে বাস করিলে মাহুব মালু-বিস্তুক হইরা বার। জামি কে, কোথা বইতে আসিরাছি, কোথার বাইব, কারাকে আঞার করিরা রছিরাছি ইন্ড্যাদি প্রশ্ন মনে উদর হর না। কেবল বান্ত্ বিষর লইরা মন বান্ত থাকে। বিশেব ভাবে আত্ম-চিন্তা পরারণ না হইলে ব্রক্ষজ্ঞাসা প্রাণে উদর হর না। বাঁহার জীবন বহিমুখী, বিনি কেবল বাহিরের জ্থা বার্ত্তা, আলোচনা, আলোপনে মগ্ন থাকেন, তিনি আত্মার অভ্যন্তরে কিরপে প্রবেশ করিবেন? জন কোলাহলমর ভান বাজার বিশেষ। হাট বাজারে গেলে বেমন মনের চঞ্চণতা উপস্থিত হর, কোন বিষয়ে দৃঢ় অভিনিবেশ হর না, কোলাহলমর সংসার ও তজ্ঞপ। এই জ্ঞুই পূর্বতেন ব্রক্ষবিগণ নির্ক্তন সাধনের প্রয়োজনীয়তা বারংবার নির্দেশ করিরা গিরাছেন।

ব্রাহ্মধর্ম সজন ও নির্জ্জন উভর বিধ সাধন-প্রণালী অবলছন করিতে উপদেশ দেন। নিরবচ্ছির নির্জ্জনতা প্রাথনীর নহে এবং কেবল সজনতা ও আত্মার অন্তক্ল নছে। কিন্তু মতে বাহাই থাকুক, কার্যাতঃ ব্রাহ্মগণ অতি অরহ্মণই নির্জ্জনবাস করিরা থাকেন। বাহারা বিবর কর্ম করিতেছেন, উাহারা রাজ্ঞিন কোলাহলের মধ্যে বাস করেন, যাঁহারা বিবর কর্ম পরিত্যাগ করিরাছেন, উাহাদের ও নির্জ্জন সাধনের স্থবিধা ঘটরা উঠে না। নির্জ্জন সাধন ভির ধর্ম জীবন গঠিত হর না। ধর্ম জীবন কেন, যিনিই সংসারে কোন বিশেষ কাঞ্ক করিতে প্রবৃত্ত হইবেন, তাহাকেই নির্জ্জন-বাস করিতে চইবে।

যাঁহার। ধর্ম-সাধন করিতেছেন, নির্ক্ষনবাস ভাঁহাদের
পক্ষে সর্বাপেকা প্ররোজনীর। মহাত্মা মহত্মদ হরা পর্বতের
গহরর তপতা করিতেন; বীণ্ড ও নির্ক্ষনে ধ্যান করিয়া সিদ্ধ হইয়াছিলেন। এদেশীর অবিগণ নির্ক্ষনতা এয়ণ ভাল বাসিতেন যে, উাহায়া লোকালয় পরিভাগে করিয়া গিয়িস্লে চিরদিনের অন্ত বাসগৃত নির্মাণ করিতেন। বাত্তবিক নির্ক্ষন-বাস, নির্ক্ষন সাধন ভিন্ন ধর্ম জীবন লাভ করা অসন্তব। এজন্ত প্রত্যেকের দৈনিক জীবনে কিরৎকাল নির্ক্ষন-বাসের ব্যবতা করা আবশ্রক। বাহারা কার্য্যে সর্বাদা ব্যাপ্ত ভালাদেরও মধ্যে মধ্যে নির্ক্ষন-বাসের বাবতা করা কর্ত্তবা। নির্বিজ্ঞ্জ লোক-কোলাহলে, বিশেষক: নগবে বাস করিলে চিত্তবিক্ষেপ উপত্তিত হয়। প্রাণের তৈর্য্য এবং শান্তভাব বিনষ্ট হইয়া যার, ক্রমে উপাসনার প্রতি মন বীতশ্রদ্ধ হয়।

নির্জন বাস ও গভীর চিন্তা ব্যতীত অদ্যাণি লগতে কোনও

মহৎ তব আবিষ্কৃত হর নাই। এমন কি রাজনীতিক পুরুষগণ
বে সকল কঠিন ও জটিশ রাজনৈতিক প্রশ্ন লইয়া ব্যস্ত রুভিয়াছেন এবং সে সহয়ে যে সকল নৃত্যন তব আবিষ্কার করিভেছেম;
ভালাও নির্জন বাস ও গভীর চিন্তার ফল। যে সকল উৎক্রট
প্রশালীতে ইংরাজ-গবর্ণমেন্ট এলেলে কার্য্য চালাইভেছেন, বধা
পোই আপীসের কার্য্যপ্রগালী, বিচার প্রশালী ইভ্যাদি সে সকল
প্রশালী কি সহজে উদ্ভাবিত হইরাছে গুলরম্পরাক্তমে কও প্রভিত্তাদালী ব্যক্তি নির্জনে বার ক্ষম করিয়া সেই সকল বিষয়ে চিন্তাকরিয়াছেন এবং এক একটা প্রশালী উদ্ভাবন করিয়াছেন। প্রকর্মনান্ত্রী
ছিল, এক্ষণে ভালা তিরোহিত হইয়াছে। প্রকর্মে কার্য্যকর্মে

নির্জনে গভীরদ্ধণে ভোনও তথেয় আংলাচন। করিতে দেখা বার না। সকল কার্যাই হাটের মধ্যে চলিতেছে। এমন কি ব্রাহ্মধর্মপ্রচার ও ব্রাহ্মসমাজ গঠনরূপ ওক্তর কার্যা ও ব্রাহ্মগণ নিভান্ত চিন্তাবিদীন ভাবে হাটের মধ্যে বিসর্থা করিতেছেন। নির্জনে হারক্তর করিয়া দিনের পর দিন ব্রাহ্মধর্মের গভীর ভত্ত সকলের আলোচনাতে প্রাবৃত্ত আছেন, ব্রাহ্মদিগের মধ্যে এরপ ব্যক্তি অধিক মিলিবে না। নির্জন চিন্তা ও সাধনাভাবে আমাদের কার্যা সার্বান হর না। অভ এব প্রত্যেক পরিবারে ও প্রভাকে দিনে যাহাভে কিরৎকাল নির্জনতা সন্তোগের ব্যক্ষা থাকে ভালা প্রার্থনীর। যাহাদিগকে কার্যাছরোধে কোলাহলের মধ্যে গাকিতে হর, ভালাদেরও মধ্যে মধ্যে নির্জন বাস ভাল।

ব্ৰাক্ষধৰ্ম ও ব্ৰাক্ষদমাজ—ৰামনা অনেকবার বলি-রাচি যে ত্রাহ্মধর্ম জীবনের আদর্শ এবং ত্রাহ্মসমাজ সেই আদর্শ সাধনের ক্ষেত্র। যদি বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যক্ষরণ কেবলমাত্র এই কথা বলিরা দেন যে বি, এ, পরীক্ষা দিতে ক্ইলে, সানিত্যে এই প্রাকার विला हाहे, चरक वहें ज्ञन भावमर्निका हाहे, मरनाविकारन व প্রকার দক্ষতা চাই; ইত্যাদি। কিন্তু ভবিবরে আশাসুরূপ পারভর্নিতা লাভের সভার শ্বরূপ প্রস্থাবলী বদি নির্দেশ না করেন, তালা লটালে পারদর্শিতা লাভের বিবরে সকলের সমান क्रु छेवछि मुद्दे इंद्र मा। এট छन्न श्राहायनी निर्द्धण करा आवश्रक ब्रन्न किन्त श्रद्धांत्रणी निर्द्धन कतिता निर्देश (मंद इंद्र मा । दींग खशालमा कार्राद्र सम्र करनम मा शेरक, खबर निकाकार्या भाषतनी ७ जनक अशानकतिन्त निवृक्त করা না বার, তালা হইলে কি বিশ্ববিদ্যালয়ের নির্দিষ্ট শিক্ষার आप्तर्म कार्या नाधन कडेरल शास्त्र ? विश्वविद्यागरस्त्र धाप्तर्मिल বিদ্যার আদর্শকে কার্গ্যে সাধন করিবার ক্ষুট, নানা কলেকের স্টি। এই সকল কলেজ প্রতিনিয়ত সেই আদর্শকে চক্ষের সমক্ষে বাধিয়া সাধন করিতেছেন। সর্বাদা আপনাদের ছাত্র-निगटक भरीका कविता त्मिथिएछाइन कछमृत तम जामत्मैव मिटक चार्त्रमञ्जू इहेरल्डहा कहे पहें। इं कार्यमध्य कविद्रा हिसा করিলে আমর। ত্রাহ্মধর্ম ও ত্রাহ্মসমাকের সম্বরের প্রকৃতি বেৰ কিন্তুৎ পরিমাণে অফুভন করিতে পারি। বান্ধর্ম आयाम्बद नमाक धर्मकीन्द्रनत अवनी आपर्न धतिवास्त्रतः। (महे आवर्षाक वास्त्रिक्ष कोवरन अवः नामाकिक कोवरन माधन कविष्ठ बहेरा । खाक्रमाम (मृबे माधनरक्त । अर्थान चावश्च मक्टन ममरवे छार्च भवन्भरित मागरिया (महे चामर्भरिक লীবনে সাধন করিভেছি। গ্রাহ্মধর্ম আমাদের বাকিগত জীবন ও সামাজিক জীবনকে সম্পূর্ণ নৃতন ভিত্তির উপরে স্থাপন कतिरक हाहिरक्रह्म। स्मानत स्मारकत वस्त्रम्म मश्कात अहे स्य जे দৃত্তম ভিভিন্ন উপরে সমাজকে স্থাপন করিলে, সমাজের তুর্গভির नीमा थाकित्व ना । मासूच त्य छात्वत्र मत्या वर्षिष्ठ वत्र, त्य नकन সামাজিক বাৰতা শৈলৰ অবধি দেখিয়া থাকে, ভাষাদের চিতা चक्रावक्षः हे तम्हे भरत हमिशा बारक। छविक्रक कामक धाकात नावचा द्य इटेड्ड भारत. धवर छचात्रा ममास्त्रत द्य कुन्नम इटेड्ड शारत, देश काशारतत मानहे जारत मा। क्षक्कार रकामक

ন্তন' সামাজিক তথা প্রচারিত হইলে তাহারা সম্ভে বর, থবং সেই ন্তন তথাবলবীনিগকে সমাজের খার পক্র বিলয় গণনা করে। সর্ব দেশে ও সর্ব কালে এই নির্মাণ কিছা হইরাছে। তারতে এই নির্মের ব্যতিক্রম কেন ঘটবে ? এ দেশের প্রাচীনতা-প্রির লাভি সকল বে বান্ধর্মের নৃত্তন আদর্শকে সন্দেহ ও ভীতির চক্ষে দেখিবেন তাহাতে বিচিত্র কি ? কিছু আমানিগকে নির্মন্তর আলোচনা করিতে হইবে, পরীক্ষা ভারা দেখিতে হইবে, আমরা বান্ধ্যক্ষর কার্যাণ সাধনকাক্রে বান্ধর্মের আদর্শকর কার্যান করিতে পারিতেছি। আমাদের কার্যান কলাপকে কতদ্র ধর্ম-বিশাসের অনুগত করিতে পারিতেছি। বিশাস ও তদ্পুগত্ত জীবন, ইহাতেই বান্ধ্যমাজের প্রাণ ইহা আমাদিগকে সর্বাণ স্বান্ধতে হইবে।

পারিবারিক জীবনে ত্রাহ্মধর্ম্মের কার্য্য-ত্রাহ্বদর্ম জীবনের বে নৃত্তর আদর্শ আনর্ন করিয়াছেন ; ভারার প্রভাব আৰম্ম ইতিমধোই নানা বিভাগে দর্শন করিতেছি। ইয়া ব্যক্তিগত জীবনে নীতি ও সদমূচানের ভাব বর্দ্ধিত করিরাছে: ইহা সর্ক্রাধারণ্যে বিদিত। ভাছার আর বিশেষ উল্লেখের धारताबन नारे। जामाबिक बोवान वानाविवाह बहिक कर्ता. विधवाविवाह क्षप्रानिष्ठ कन्ना, वहविवाह निवातन कन्ना, जनवर्न বিবাহ প্রচলিত করা প্রভৃতি খনেক প্রকার সংবারকে প্রবর্ত্তিভ স্বিরাছেন, তাহাও স্কলে অবগত আছেন। এবং ইহা বলিলেও অভ্যুক্তি হয় না যে এই সকলই ব্রাক্ষসমাজের প্রতি লোকের বিরাগ-বৃদ্ধি অক্সিবার প্রধান কারণ। ত্রাক্ষসমাজ धेरे मकन मुश्राक नार्त्वा क्लार्थन क्रिवाइन विवाह লোকে ইহার প্রতি এত থড়গহন্ত হইয়াছেন। কিন্তু সমাত্র-সংক্রান্ত ক্তকগুলি কুরীতির উন্মূলন ও কতকগুলি উৎকৃষ্ট রীতির প্রচলন করিয়াই আক্ষণণ নিশ্চিত হইতে পারিতেছেন না। উাদাদের হত্তে অতীব গুরুতর কার্যোর ভার ভত্ত হইরা রহিয়াছে। পারিবারিক জীবনে ত্রান্ধর্ম্মকে প্রতিষ্ঠিত না করিতে পারিলে তাঁহাদের অবলম্বিত সভ্য সকল বন্ধমূল হইবে না। তাঁহারা এতদিনের পরিশ্রম ও যত্নের দারা ঘাঁহা কিছু कतिए छन, छाहा कारन विनुश हहेता याहेरव। यङ पिन खान-পুরুষগণ একা একা ধর্মের সংগ্রাম করিতেছিলেন, ভতদিন তাঁছা-एमत मत्न खविषा एक कि कि कि के से नाहे। **छाहात्र।** खबन (क वन এই চিস্তা করিবাছেন, কিরুপে বিশ্বাসাম্পারে অমুষ্ঠান করিব, किक्रां कोवानव निक्नी कि धरे धर्मित कारणांक कानिय --কিরূপে প্রাচীন সমাজের নির্যাতন সহু করিয়া স্থির থাকিব। কিছ একণে তাঁহাদিগকৈ আর এক প্রকার চিন্তাতে নিযুক্ত হইতে হইতেছে। এখন উংগদের অনেকেরই গৃহ পুত্র কম্পাতে भूर्ग इहेत्राष्ट्र । आमा शृहरण्यत्र शृहर भूख कळात्र मःथा। विन विन वृद्धि भारेराज्यहः। हर्जुर्केन वरमत्र भूट्स वानक वानिका मन्त्रिः गरनत मिन गावात्रण आक्रामाक मिन्दतत दानीत छेकत भार्यत शांत । जीन महिशा भूग रहे जा, अकरण खाराया मिलाइत **पर्ह्यक द्यांन भूग कतिहा (काल)। अहे मरथा। वर्ह्यिक हत्नाह्य** 

गरक गरक बाष्मनरभव कालिए ७ हिन्दा वाजिया बाहेरजरह । अथन ভবিবাতের প্রতি দৃষ্টি পড়িতেছে। ইহাদিগতে কিরপে শিকা हिल्ल, शतिवात मर्था खाक्रधर्च हान छाखे वहेटछ शास ह । धहे চিত্তা আমাদের সকলের অন্তরে প্রবল হওরা নিডান্ত আবস্তক: कात्र वाशता चात्रात्रत टकाएक चित्रताहर, चात्रात्रत टकाएक প্রডিপালিত হুইয়াছে, আমানের শিক্ষা ও শ্ক্তির সম্পূর্ণ व्यथीन थाकिनारह, व्यामता यनि छान्। एनहें व्यवस्त वर्षाति স্থায়িত করিতে না পারিলাম, তাহাদিগকে জুলিকিত ও সমুদ্ধত করিতে না পারিলাম, তথম কোন সাহসে বাদিদ্ধের ताक्ष छाकि, त्कान् जाहरत चनत्क धर्चाचि विवाद है। করি। যে ব্যক্তি ধন উপার্জন করিতে জানে, কিন্তু ধন রক্ষা ভরিতে কানে না, সে বেমন সময়ে দারিত্রা ভোগ করে, **महेक्** रा धर्मनमाञ्च लाक छाकिरात जन्न राख ; किन्ह राहाता रत्य चारक, जाशांतित बका e खेबिज माधानत बक्र महिहे नहि, ভাহালিগকেও অধিক দিন বৃদ্ধি পাইতে হয় না : ভাহারা ভ্রার নানা প্রকার পাপ ও অভ্যাচারের আলর হইরা উঠে।

ত্রাক্স-বালকদিসের নীতি—সাময়া দেখিয়া হ:খিভ হউডেছি, অনেক ভ্রাক্ষ গৃহত্বের গৃহে বালকগণ আশামূরপ শিক্ষা পাইভেছে না। কোনও কোনও স্থলে পিতা মাতা পুত্ৰ ক্রাদিগকে আক্ষদমাজের কার্য্য ও পতিবিধি হইতে দুরে রাধিতেছেন; এবানকার কার্য্যে তাহাদিগকে মনোবোগী করিতে-ছেন না ; এখানকার পুত্তক পত্রিকাদি পড়িতে দিতেছেন না ; এখানকার উপাসনা ও উৎপ্রাদিতে যোগ দিতে দিতেছেন মা: অপর দিকে ত্রাহ্মসমাজ-বিছেষী হিন্দুভাবাপর বালকবালিকা-দিপের সহিত বা এটিভাবাপর ফিরিকী শিশুদিপের সহিত মেশা বন্ধ করিতে পারিতেছেন না, শিক্ষার অমুরোধে সেইরপ বিল্যালয়ে পাঠাইতেছেন। ফল এই হইতেছে, তাঁহাদের বালক-বালিকাপণ ব্রাহ্মসমাজের প্রতি অনুরাগহীন এবং কোনও কোনও হলে আন্ধ-বিৰেবী হইরা বৃদ্ধিত হইতেছে। কোনও কোনও পূচে বালকগণ এরপ ছক্রিরাহিত হইরা উঠিতেছে যে. শ্বরণ করিলে কর্ণবয় আবরণ করিতে হয়। আনেক গৃহে বালফগণ শিক্ষা বিষয়ে দেশের উন্নতির সঙ্গে চলিতে পারিতেছে না: অশিক্ষিত ও অঞ্চ থাকিয়া যাইতেছে। একণে ব্ৰাহ্মগণ िंखा कंक्रन, धरे मकन वानक यथन वज्रः शार्श हरेटव, उचन টহাদিগকে লইরা কিরপ সমাজ গঠিত হইবে। ব্রাহ্মের। নিজেরাই সেই সকল বুবককে নিজ নিজ কল্পা দিতে চাহিৰেন कि ना ? आंत्र चरत चरत डेक्ट धन यूवक शाकिरन, डीहांता বালিকাদিণের নীতি পরিশুদ্ধ রাখির৷ চলিতে পারিবেন কি না ? বিশেষতঃ তাঁছারা বালাবিবাহ ও রমণীর অবরোধ প্রথা ভূলিরা দিতেছেন, তাঁহারা কি নিজ সমাজের বালক বালিকাদিগকে नर्वना परव परव तका कविरा भावित्वन ? जाहा कि मखद? তৰে তাঁহাদের জন্ত কি প্রকার ভবিষাৎ অপেকা করিতেছে ? আর কতদিন তাঁছারা এ সকল বিষয়ে উদাসীন থাকিবেন ? (मान त धाना व वका माजादेशाह, छाहार खाना-वानक-निर्भात निकास विवरम जाबारनम मस्या जन्म का का नामि

যবি বিশেষ মনোযে সী না হন, এবং দেই জার্ব্য জীবন সমর্পণ না করেন, ডাহা হইলে ভবিবাতে বড় বিপদ দেখা যহিছেছে। যদি সভব হর সহরের বাহিরে কোনও আছাকর ছানে ব্রাক্ষণালকর। সেখানে উৎক্রই জান শিক্ষা এবং ধর্ম ও নীতি শিক্ষা দিবার বন্ধোবত কর। প্রত্যেক ব্রাক্ষণরিবারকে সেখানে ছীর বালকদিগকে রাখিছে বাধ্য কর। সাবধান পাক, জান শিক্ষা বিষয়েও বেন তালারঃ উৎক্রই ছান অধিকার করিতে পারে। ব্রাক্ষধর্মের আদর্শ তাহাদের অন্তরে উত্তমরূপে মৃত্রিত করিবার চেরী কর। অথবা অন্তর্গন ও উপার বদি আলোচনার ছারা উৎক্রইতর বলিরা। বোধ হর ডাহা অবশ্বন কর। বর্ত্তমান শিথিলভাবে বালকণ্যাত্র বর্ত্তিত চইতে দিলে আমাদের কলাণ নাই।

# সম্পাদকীয় ও প্ৰাপ্ত প্ৰবন্ধ।

স্বামুভূতি, সংশান্ত্র ও সদৃগুরু।

একজন প্রসিদ্ধ ইংলাজ লেখক উপহাসজ্লে বলিরাছেন যে শিশুরা বেরপ কথনও কথনও বীর জনকের ছদ্ধের উপরে চড়িরা বলিরা থাকে—"বাবা। আমি মাথাতে ভোমা অপেকা বড়" সেইরপ আমরাও অনেক সমরে আমাদের পূর্বপুক্ষবিগের ক্ষে বসিরা বলিরা থাকি—আমরা ভোমাদের অপেকা বড়ঃ এই উপহাসোজির মধ্যে কিছু সভ্য নিহিত আছে। অগভের বর্তমান উরতি বে ভূতকালের উরতির উপরে স্থাপিত ভাহা আমরা অসেক সমরে ভূলিরা হাই।

मामय-खारनत नकन विचाराके एहे इब रव, वर्डमान चर्छी-তের উপরেই প্রতিষ্ঠিও। যদি কেই অদ্য কগডের স্থা সম্পদ বৃদ্ধির কোনও নৃতন উপার উত্তাবন করিতে প্রবৃত্ত হন, ভাষা हरेल डीहाटक कृष्ठकारन त्य किहू छेनात छेडाविछ हरेसाह ভাছার আলোচনা করিতে হয় ও ভন্মধ্যে যালা কিছু উৎকৃষ্ট আছে, ভাতাকে স্বীর পরামর্শের মধ্যে প্রতণ করিছে হয়। এক-জন একটা নৃতন আকারের লোচায় কল আছত করিতে যাইতেছেন। তাঁহাকে আলোচনা দায়া দেখিতে হইবে বর্তমান সমন্ন পর্যান্ত লৌচেন্ন কি পরিমাণ উৎক্টতা ছটলাছে, সেই लोहरक कडमूत्र कारल नागान गाईरङ भारत ? अथवा यखमूत উরতি হইরাছে, তাহার উপরে আরও কডটা উরতি করিবা লভয়া যাইতে পাৱে ইত্যাদি। ভাৰা না ক্ষিমা সে ব্যক্তি বদি বলেন, ভূতকালে বালা কিছু দইলাছে, ভাষার সহিত আমার স্থদ্ধ নাই ; আমি বিশামিজের স্টের ভার সম্পূর্ণ নৃত্তন জগত রচনা করিব ; আমি ধনি চইতে লৌহ তুলিব, গালাইব, ধান বাহির করিব, ইম্পাত করিব ইত্যানি, ভবে সকলেই এক্সপ ব্যক্তিকে বাতৃণ বলিরা বিজ্ঞাপ করে। যে কার্ব্য লোকে শভ শত বৎসর ধরিয়া করিরা ভূলিয়াছে, ভারাতে ভূমি স্থয় সাই कंत्र (कन १ विकान विवास ध वहेत्रभ। (कान व विकामनिक পণ্ডিত বহি অতীতের প্রতি দৃষ্টি না সাধিয়া ব্রদ্ধ বিজ্ঞানের र्छत्र जानिकान सरेनारस, छारा मका ना कतिया निरक त्नाका ষ্টতে আরম্ভ করিতে বাল, তবে সকলেই তাঁবাকে বাজুল বলিয়া এ উপহাল করে। বিজ্ঞান সকলে বিদ্যানি বে উর্ভি ইউডেন্ডে ভাষাও অভীভেন্ন উপরে প্রতিষ্ঠিত।

मानव जीवानव वा मानव नमारबाब क्यांमध विकारवे राज्या বার না বে অতীভকে সম্পূর্ণ বিশ্বত হুইরা কোনও উরতি দাড়াই-एउट् । यतः हेश पनिएक वत्र एवं, क्ष्मान व वास्ति वा दकासक সম্পার যদি অভীভকে অগ্রাভ্ করিরা চলে ভবে ফাছাকে পাতি ভোগ করিতে হয়। একজন প্রসিদ্ধ মার্কিন পশ্চিত विनिश्नो (इन,---"नका अमन वेखा, यति जनवर्गानका वर्णकः नरव কেলিয়া বাও, তবে পুনরার কুড়াইরা লইবার জন্ত শিছাইরা चात्रिए वस ।" हेशंत्र वर्ष वहे, चान विव चछीर्डत द्यान ह মহাসভ্যের প্রতি উপেক্ষা করিরা চলিরা বাও, কিছুদিন পরে चाराव नगावित श्रेमाबित गीं (प्रवित्त शहरत-(कान व विश्वदह यनि चठी छटन चढा छ धरे भाषि। কর্ত্তবা না হর ভবে ধর্ম-জ্ঞান বিষয়ে (क्म कर्खवा इरेटन? जगरीचंत्र कि (करन वर्खमान नगरतरे बानव-समरत नडा नकन উद्धानिङ कतिरङ्कर ? এ বিষয়ে ছুই শ্রেণীর লোকে ছুই অভিনিক্ত সীমার পমন করিরা থাকেন। এক শ্ৰেণী অভীতকালে উত্তাসিত সতা সকলেৱ কাতি এত জোৰ দেন যে তাহার সহিত তুলনার, বর্তমানে ৰাজিগত জীৰনে উদ্ভাগিত সভা সকলকে অভি হীন বোধে फेलका कतिया बारकन:-- अन्त (अनी वाक्तिन्छ जीवरन উত্তাসিত সভ্যকে এত শ্ৰেষ্ঠ স্থান দেন বে অভীতে উত্তাসিত সভ্য श्रम्भारम् प्रवेकात् हत्म स्विति बार्यम । धरे हरे क्षानात প্রমের ছুই প্রকার কল। অভীতের উপরে অভিরিক্ত জোর नित्न, अठीएउरे आवदा थानित, अठीएउत आलारकतः अपूर्तार्थ निक चार्लाक निर्काण कतिरत. डेब्रठिव बांव वक ৰইয়া যার। সেরূপ সমাল উরতিবিচীন পাতবিচীন ও উদ্যম-বিহীন হইরা থাকে। আবার অতীতকে সম্পূর্ণরূপে উপেকা করিয়া চলিলে মানব নানাপ্রকার ভ্রমের মধ্যে পতিত হয়। विद्मवतः मेचत-विचानी धारणाक वास्ति हे हा चीकात कतिता बारकम मेचबरे धर्माब धावर्षक। जिनिरे वृत्त पूर्ण मानव-स्नारत मकारक क्षेत्राक्ष्म क विद्यारक्षम । जयस्त जयस्त यानव-व्यवस्त स्व স্কল সভা প্রকাশিত চইরাছে, ভাছা (মানবীর ফুর্মণতা ও ক্রমের ছারা জড়িত চইয়া) প্রাচীন শাস্ত্র সকলে নিবন্ধ রচিয়াছে। অভএৰ প্রাচীন শাস্ত্র সকলকে অভীতের প্রকাশিত সভ্য সকলের ধনিস্কুণ মনে করিলেও হয়। সভানিষ্ঠ বাক্তি আপ-आंब धर्म सीवन शर्रम कविवाद ममाब क मक्बाक कारक वाद উপেকা করিছে পারেম না। অতীতকে সমাদর করিতে अहेटन हेराविश्राम । मत्नारयांश शृंक्ष क रमधिट इस ।

একণে উপার কি ? বলি অতীতের প্রতি অতিরিক্ত বোঁক নিবিদ্ধ, বলি নিজের অলোককেই সর্বশ্রেষ্ঠ ভাবিরা অপর সকল আলোককে উপেকা করা ও নিবিদ্ধ, ভবে কর্ত্তবা কি ? এই ছলে বোগবাশিষ্ঠের একটা বচন অরণ হর, ভাষা এই:—"বায়ুজ্ভে কুণান্ত্রসা গুরোক্টেবেকবাক্যতা।"

🌯 অৰ্থাৎ বাছভূদি, জুলাছ ও সন্তক্ত এই ডিলের একবাক্যতা

বাবেৰণ করিতে হইবে। এথানে খাছত্তি অর্থাৎ ব্যক্তিগত বিবেক নর্কাপ্তে ও সর্কা প্রধান। তাহাই তিতি। খাছত্তিকে প্রথমে স্থান্তের সহিত তুলনা করিতে হইবে; তৎপরে সদ্ওক অর্থাৎ জীবক সাধক ও সাধুদিগের মধ্যে কাহার ও সহিত বিদ্যুনিই আধ্যাত্মিক সক্ষম থাকে, তবে তাঁহার প্রদর্শিত আলোকের সহিত তুলনা করিতে হইবে। যদি শাল্পে ও সাধুবচনে খাছত্তি-কর্ম সত্যের সার পাওরা যার, তাহা হইলে বড় স্থের বিবর। অবস্থা একথা বলিলে ইহা ও বলা হইল যে শাল্প ও ক্ষম্মকাক্য বিদ্যুক্তির বিরোধী হর, তাহা হইলে আয়ুত্তি-প্রদর্শিত পথ অবলম্বনীর। তথাপি পূর্বেক্তে উপদেশের ভাৎপর্য্য এই সত্য-নির্ণবিচ্ছু ব্যক্তিকে স্থান্ত ও সন্পুক্র উপদেশের প্রতি একটা শ্রহাপূর্ণ ভাব মক্ষা করিতে হইবে। তারের তিনি স্ত্য-নির্ণবে সমর্থ হইবেন না।

नमगुक्र भरकत व्यर्थ कि? अक भक्ती विम्रानाएं সहताहत ৰাবছাত হইয়া থাকে। বিদ্যালাত বিষয়ে গুৰু গুই প্ৰকার কাৰ্য্য कतिया थाटकन । व्यथम निष्य खान-म्यु हात्र मध्यार्थ नियानिराजत অন্তরে জ্ঞানম্পূর্ছ উদ্দীপ্ত করেন, দ্বিতীয়তঃ জ্ঞানলাভের প্রণালী निर्फिण करवन । जाशील विमाद मुहोरखन बाबा अर्थ है। विभम করা বাইতে পারে। একজন সংগীত রুসাভিজ্ঞ ও সংগীতবিদ্যা-পারদর্শী ওতাদ বা ওক আছেন। কতক ওলি বুবক ভাঁহার নিকটে সংগীত শিক্ষা করিতেছেন। ইহারা ঐ ওন্তাদের নিকট ছুই ভাবে উপক্রত হুইতে পারেন। প্রথমতঃ তাঁহার সংগীতামু-রাগ দারা ট্রানের মনে সংগীতাত্বরাগ অন্মিতে পারে : দ্বিতীয়তঃ 'अजान निष्म भारेबा नामा अकाव बानबानियेव सक्त 'अ अवानी দেখাইরা দিতে পারেন। শিবোরা "ইমন" আলাপ করিডেছে ठिक वरेट उटह नां, श्रक्त এक हे शाहेबा (मथावेबा मिटनन। धर्म-ৰগতেও আমর। সাধনপথে অগ্রসর ব্যক্তিদিগের নিকট উক্ত উভর প্রকার উপকার লাভ করিছে পারি। আমরা ভাঁচাদের विचान, देवद्रांगा, त्रवात कश्चित मःस्मार्ग तहे कश्चि नाड করিতে পারি; বিভীয়ত: অনেক প্রশ্নে তাঁহাদের অভিজ্ঞতার সাহায্য পাইতে পারি। বাহারা নিজ জীবনের আলোক ছারা আমাদের বাক্তিগত জীবনের আলোককে আরও উজ্জল করিয়া দেন তাঁহারাই আমাদের ধর্মপথের প্রকৃত বন্ধু, তাঁহাদিগকে धर्मा शास्त्र वस्तु वन, महात्र वन, निक्रक वन, श्रुक्र वन विवश्रेष्ठी वक्रे।

এই গুরুবাদ সহক্ষেও আমরা ছই শ্রেণীর লোককে ছই আভিরিক্ত সীমাতে বাইতে দেখিতেছি। এক শ্রেণী গুরুর চরণে ব্যক্তিত ও মহুবাত বিক্রের করিরা কুল্ল হইরা বাইতেছেন; আপর শ্রেণী সাধক ও সাধুদিগের প্রতি সৃষ্টিত আদরের অভাবে অহমিকার হতে পতিত হইরা ধর্মকে হারাইতেছেন। গুরুবাদের যে অনিষ্ট কণ এদেশে কলিরাছে ভাহা শ্রনণ করিলেও হুদ্ধ ছাথে মান হর! মাহুবগুলি মহুবাত বিহীন হুইরা শিশুর মত হুইরা গিরাছে; চিন্তা ও বিচার শক্তিকে অলাঞ্জলি দিরা অভ্যার হুইরা পড়িরাছে; পাপকে বাধা দিবার সাধ্য আরে ভাহাদের নাই! মহুবাকে এরপ মহুবাত বিহার পরিণত করে হাছারা মানবের বছু নতে,

পরম শক্র । প্রতরাং গুরু এই শব্দ উচ্চারণ মাত্র বহু সংখ্যক
ভূক-ভোগী লোকের দারণ দ্বণা ও আত্ত্ব উপস্থিত হওরা
কিছুই বিচিত্র নহে। আমরা শব্দের কল্প কলহ করিভেছি না।
গুরু শব্দ কচি-সক্ষত না হর "সাধ্পদেশ" বল বা অল্প শব্দের
স্থাই কর। ভিতরকার কথাটা এই, ধর্মজীবনে অগ্রসর ব্যক্তিদিগের উপদেশের প্রতি শ্রদ্ধা পূর্বক কর্ণপাত করিতে হইবে
এবং স্বায়ভ্তির আলোককে তাহাদের আলোকের সহিত
মিলাইতে হইবে; তবে সত্য-নির্গরের পক্ষে সহায়তা হইবে।

অতীতের প্রতি ও সাধুদ্ধনের প্রতি শ্রদ্ধাপূর্ণ ভাব থাকিলে उाँशाम्ब ख्रेगावनी स्थामारमञ्ज क्षमत्त्र कार्या कतिर्छ भारत। অপরের যে किছু সদ্প্রণ আছে, বিনয়ী ব্যক্তি তাহা দেখিতে পার। অহঙ্কারীর নিজ অহঙ্কার তাহার দৃষ্টিকে আবরণ করে। অনেক অমূল্য বস্তু তাহার চক্ষের নিকটে থাকে অপচ সে দেখিতে পায় না। ব্রাহ্মসমাজ এই সাধুভজিকে এদেশের লোকের মনে উদ্দীপ্ত করিবার চেষ্টা করিতেছেন। যীও, বৃদ্ধ, মহম্মদ প্রভৃতির প্রতি লোকের যে শ্রদ্ধা বাড়িতেছে, ভাহার মূলে কি আহ্মসমাজের চেষ্টা নহে ? প্রাচীন হিন্দুশাল্লের প্রতি লোকের যে শ্রহা বাড়িরাছে, ভালার মূলেও কি আহ্মসমাজের ও তত্তবোধিনী সভার চেষ্টা নছে? অতএব সাধুভক্তি ভগ না করিরা রক্ষা করাই ত্রাহ্মসমাজের চেষ্টা। কেবল ভক্ষ করা वाक्षत्रमास्क्रत कार्या नरह, शर्ठन कत्राहे हेहात ध्राधान कार्या। है। मक्न (मर्गंद्र मक्न माधुडारक পরিপোষণ করিনে; সক্ল কালের সকল সাধুর সহিত জদরের যোগ স্থাপন করিবে। अशास्त्र क्षित्र प्राप्त न्या विदः हेश बाक्षम्मारङ्ग् মহা কর্ত্তব্য।

### 'জীবন-দংগ্রাম ও পাপ পুণ্যের জন্মভূমি।

আমরা এই জগতে তিন প্রকারের পদার্থ দেখিতে পাই।
এক জড়, বিতীর ইতরপ্রাণী, তৃতীর মানব। এই তিন প্রকারের
পদার্থেরেই এক একটা বিশেবত্ব আছে। জড়ের বিশেবত্বকে
ভড়তা, সাধারণ প্রাণিগণের বিশেবত্বকে ভূগতৈতক্ত,এবং মানবের
বিশেবত্বকে স্ক্রতৈতক্ত নামে অভিহিত করিতে পারা বার।
জড় স্টে প্রকরণের নিম সোপানে প্রতিষ্ঠিত, ভূগতৈতক্ত তাহার
মধাসোপানে বিরাজিত, এবং স্ক্রতৈতক্ত তাহার শীর্ষত্বলে
স্পোভিত। জড় জড় শক্তির অধীন, ভূগতৈতক্ত প্রাণশক্তি
ঘারা পরিচালিত, এবং স্ক্রতৈতক্তের রাজ্যে আধ্যাত্মিক শক্তি

ক্ষেটেত জ্ঞ মানবের বিশেষর ১ইলেও, সে এই তিবিধ উপ-করণেই গঠিত হইরাছে। অভশক্তি, প্রাণশক্তি এবং আত্ম-শক্তি এই শক্তিত্ররের কার্য্যকলেরই নাম মানব-জীবন বা মানব চরিত্র। এই বিভিন্ন ও কির্পেরিমাণে পরস্পার-বিরোধী শক্তিত্ররের সমাবেশ হইতেই মানবচরিত্রের অন্ত বিচিত্রতার উৎপত্তি হইরাছে। এই তিবিধ পদার্থ ও তিবিধ শক্তি বারা গঠিত বলিরাই আমরা একই কালে আপনা-

দিগতে বছ এবং মৃক্ত, মলিন এবং নিশ্বল, পরাধীন এবং বাধীন জীবরণে অবগত হইতেতি।

এই জড় দেহ জড় নির্মের অধীন; মাধ্যাক্বী শক্তি,
রসারনশক্তি, তড়িংশক্তি প্রভৃতি জড়শক্তি এই দেহশিশ্বরকে
প্রতিনিরত ভালিতেছে ও গড়িভেছে। এই প্রাণ মন জীবনিরমের অধীন, ইন্দ্রিরশক্তি এবং ইন্দ্রিরল সুধ গুঃধানির
আসক্তি বিরক্তি প্রভৃতি বাসনাকুলের বারা ইচারা পরিচালিত
ও নিরাত্রত হইতেছে। এই দেহ মনের অতীত আত্মা আধ্যাব্যিক শক্তি সঞ্চারের বারা উরোধিত ও বিক্সিত হইতেছে।

এই শক্তিত্রর বিভিন্ন এবং কিরৎপরিমাণে পরস্পার বিরোধী **ब्हेरन ७ मानवकी तरम मर्त्तन। भवन्भारवत्र मरम प्रांक प्रतिक्रेकारव** সম্ভ থাকিয়া জাপন আপন কাৰ্য্য সাধন করিয়া থাকে। আমাদিগের জড়দেহ কেবল জড়শক্তির অধীন নহে, কিছ প্রাণশক্তিরও অধীন। কেবল তাহাই নহে, ইহার উপরে প্রাণ-শক্তির যড়টা প্রভূত্ব আছে, কেবলমাত্র অভূপক্তির সেরপ কোনওই আধিপতা নাই। কেবল রসারনের নির্মের ছারাই এই জড়দেহযন্ত্ৰ নিমন্ত্ৰিত হয় না; প্ৰাণশক্তির সাহায্য ব্যক্তি-রেকে রুশারনশক্তি এই অভ্দেহের উপরে কার্য্য করিভে গিরা व्यक्षण करेत्रा পড़ে। এই कन्नरे नर्स शकाद्यत्र टाकुटे हिकिएना প্রণালীতে রোগাঁর প্রক্রভিজেনে, একট জাতীর রোগে, বিভিন্ন ওবধ প্রযুক্ত চইয়া থাকে। আমাদিগের প্রকৃতিতে এই কড দেৰের কড়শক্তি সভত প্রাণশক্তিকে অবশ্বন করিরাই বাস্ করিছেছে। এমন কি চেষ্টা করিলে,অতি সহঞ্চেই এই প্রাণশক্তি দেহস্থিত জড়শক্তিকে সম্পূৰ্ণক্লপে স্বাধিকারচ্যুত করিয়া রাধিতে পারে। বিষয় বিশেষে গভীর ভাবে মনোনিবেশ করিলে, অভি সহকেই এই দেচকে কুৎপিপাস। এবং শীভোক্ষের শাতীত করিয়া তুলিতে পারা যার। "ভারতের যোগিগণের জীবনবুক্তান্তে ইঙার ভূরি ভূরি দৃষ্টান্ত প্রাপ্ত হওরা যার। এরূপ শ্রুত হওরা যার, ইউরে:-পের মধাযুগে একজন খৃষ্টার তপখী ঈশার মৃত্যুয়াতদা আপনার भीवत উপनक्षि कतिवात (ठहेात गछोत धार्मानमध स्हेत्राहित्नम। কিরংক্ষণ পরে ক্রমে ঈশার দেহের যে যে খলে লৌহবিছ হইরাছিল বলিয়া জনশ্রতি আছে,এই ধ্যাননিমন্ত্র তাপদের শরীরের সেই সেই স্থান বিদীর্ণ হইরা রক্তল্রেভ প্রবাহিত হইতে আরম্ভ করিয়াছিল। কেবল এইরূপ বেগেধ্যানেই বে মানবের জীবশক্তি ভাছার দেহের জড়শব্দিকে পরান্ত করিয়া থাকে, তাই। নহে। **অস্তান্ত** অবস্থাধীনে অক্তাক্ত প্রণালীতে এবং এই জীবশক্তি জড়শক্তির উপরে নিয়োজিত হইমা তাহাকে আপনার অধিকারচাত করিয়া রাধে। কাম জোধ রিপু অতাধিক মান্তার উত্তেজিত হইলে (य मानत्वत अफ्छान शावरे मुख हरेता यात्र, रेहा दक ना खाटन ? অতাধিক মানসিক উত্তেজনাতে আমরা প্রারশ:ই ভো জড়-শক্তিকে অবলীলাক্রমে অভিক্রম করিতেছি। বেমন জীবদক্তি জড়শক্তির নিরামক রূপে মানবপ্রস্কৃতিতে নিহিত রহিয়াছে, তেমনি আত্মশক্তি এই দেহত ৰড়দক্তি ও এই অন্তৰ্ভ প্ৰাণ-শক্তি উভরেরই নিরামক এবং প্রভু হইরা উভরেরই উপরে প্রতিষ্ঠিত রহিরাছে।

মানৰ প্ৰস্থাতিতে এই ত্ৰিৰিধ শক্তিয় স্মাবেশ ংইজে বেষদ

মানব চরিজের বিচিত্রতার উৎপত্তি হইরাছে, তেমনি এই
শক্তিররের পরম্পর বিহুদ্ধ ভাব ও ফার্ব্য হইতেই ধানব
লীবনের সর্ক প্রকারের নৈতিক লংগ্রামেরও স্টে হইরাছে।
এই মহার্দ্ধে নিশ্বিপ্ত ভাষণ আর্মেরাল্র সম্হের হারা উল্পীরিভ
ধ্মরাশিই মোহরূপে ভাহার প্রাণকে আছের করিভেছে;
এই সকল অল্ত-প্রক্রিপ্ত বাণ সকলই শোক হৃঃব প্রভৃতি রূপে
মানবের কোমল মর্মান্তলকে দিবানিশি বিদ্ধ করিভেছে। এই
সংগ্রামের সমান্তি না হইলে মানব ক্লাপি শাস্থতী শান্তি ও
নিরবভির আনক উপভোগ করিতে সক্ষম হয় না।

এট সংগ্রামক্ষেত্রেই পাপ পুণ্যেরও জন্ম ছইয়া থাকে। নভুবা বিধাতা পুরুষ অস্ত্র কোনও রূপে বা অস্ত্র কোনও প্রণাদীতে मानवाक माकाए छाटा भाभ भूगा श्रीमान करत्रन नाहै। জলের ধর্মই শৈত্য, অগ্নির ধর্মই উদ্ভাপ, তেমনি মানব প্রাকৃ-তির এই অপরিহার্য্য শক্তি-গংঘর্ষণের ধর্মই পাপ পুণোর প্রতিষ্ঠা। যত্তদিন এই সংগ্রাম, তভাদন মানবের পাপ ও পুণ্য-বোধ, ভুথ এবং ছ:খবোধ, থাকিবেই থাকিবে। এই সংগ্রাম যতদিন না আরম্ভ চর, অর্থাৎ মানব হতদিন কেবল মাত্র জড় নিয়ম বা জীব নিয়মেরই অধীন থাকে, ততদিন পর্যান্ত তাছার অন্তরে পাপ পুলোর জ্ঞান প্রকাশ পার না। স্বাপেরিও শিশু, যে কেবল জড় শক্তি এবং নিমুডর জীবশক্তি দারাই জীবিত থাকে এবং আপনার ইন্দ্রির চালনা করে, তাহার তো কোনওই शाल भूगा (वाध नाहे। क्रांस खोवन क्रिय विकारन यथन जानात অন্তরে বিভিন্ন বাসনা জাগ্রত হইতে আরম্ভ করে, এবং এই সকল বাসনার মধ্যে প্রতিঘন্দিতা উপস্থিত হইরা যথন এক মহাস্তামের স্তুপাত করে, তথন মানব-জীবনে **ब** हेट उहे ভাগার D) SSE ভাল **43**? তৎসঙ্গে পাপ হইরা পুণ্য বোধের ও সঞ্চার चिं देनार मानव श्रकृति क क मिल बहे श्राधान चारक, অপর শক্তি তথন সেই এক শক্তিরই বশে বাস করে, তথনও मानत्वत्र सीवत्न मक्तिवस् छेनचित्र वत्र ना, अठ वर त्र कारन मानत्वत्र भाभ । नाहे भूगा । नाहे ; कर्खवा । नाहे अकर्खवा । बाहे: कर्डकु बाहे, कर्ष ह बाहे, कर्षक्त मः यागत बाहे। মান্ত প্রকৃতির বিকাশের সঙ্গে সঙ্গে ইহারা ক্রমে ডাহা হইডেই উৎপন্ন হইরাথাকে। বেমন অংতি শৈশবে জীবনের প্রভার-কালে মানবের পাপ পুণ্য থাকে না; তেমনি জীবনের পরিণভিতে, যদি সৌভাগ্যক্রমে এই শক্তি ছন্দ নিবৃত্ত হইয়া যার, শৈশবে বেমন এক শক্তির জনন্য-প্রতিযোগী প্রভূত মানবের উপরে প্রতিষ্ঠিত হইরা একই প্রণালীতে নির্মিরোধে শিশু জীবনকে পরিচাণিত করে, পরিণ্ড বর্গে যদি সেইরূপ এক শক্তিরই অমন্ত-প্রতিবোগী প্রভূশক্তি মানবচরিত্রে ব্রুমূল क्हेंबा शिबा, मान्यत्व जीवनरक নিৰ্কিয়োধে একই পথে পরিচালিত করিতে সক্ষম হয়, তবে ভবনও আর এই পরম मोकाशानानी राक्तित नाक नान नातात मः बाम शास मा। জীবন-প্রভাতে যেমৰ মানব-প্রকৃতি নিহিত সমুদার শক্তি कड़नकि जर नित्रकत्र कीरनकित मन्पूर्ग वर्तन बादक, जीवम-মুজিতে ৷ তেমনি আমানিগের প্রস্থৃতিগত শক্তি সমূহ এক স্ক্র

চৈতত শক্তির সম্পূর্ণ বনীভূত ক্টর। থাকে, এবং এই জন্তই মুক্তজীব "পুণ্য পাপে বিধুর পরম সাম্মুঠপতি।"

धरे एम टिफक्रमक्तित साविकात वाजित्तरक मानवस्तरत প্রকৃত পাপবোধ স্বান্থিতে পারে না। স্থামরা সচরাচর মাত্যকে পাপ পুণ্য নামে অভিহিত করি, অনেক স্মন্ত তাহা কেবলমাত্র গৌকিক <del>বিষয়</del>ণ্ড ভাহার ব্যতিক্রমের নামান্তর সাত্র। কিন্তু আঅশক্তি জাঞাত হইলে ভাহার সঙ্গে সঙ্গে পূর্বে জীবনের পাপ পুণোর সংক্ষা পরিবর্তিত হইরা যায়। তথন পাপ ও পুণ্ রাহিরের কার্যক্ষেত্র হইতে স্থানান্তরিত হইয়া অন্তরের চিন্তাও ভাবের ক্ষেত্রে গিরা প্রতিষ্ঠিত হয়। পুরের, যথন মানুষ কেবল **লড় ও জীবনশক্তির অধীন ছিল, তথন যাহা পাপ ছিল না, এমন** কি তথন যাহা পুণা ছিল, এখন ভাহা মহাপাপে পরিণ্ড ছইরা উঠে। যতদিন না আমাত্মশক্তির ক্রুরণ হয়, ওডদিন জীবন-শক্তিকে যথোচিত ভাবে অকা করা, যথাবিধি আহার, নিজা ইভ্যাদি, পুণাকর্ম বলিরা পরিগ্রিভ। তত্তদিন জীবন কর 😮 খাহাডক; মহাপাপ। কিন্তু আত্মশক্তি জাগ্রত হইলে, আধ্যা-ত্মিক কল্যাপের জন্ত যদি প্রয়োজন হর, জ্বাপনার জীবনশক্তিকে কর করা, অনিত্রায় অনশনে শরীয়কে গংবত ও ক্লিষ্ট করা, মহা পুণাকার্যা হইয়া উঠে, তাহা না করিলে পাপ হর। যাহার। বে নির্মের অধীন থাকে, দেই নির্মের দ্বারাই ভারাদের পাপ পুণ্য নির্দ্ধারিত হয়। যাহার। জড়নিরমের বা কেবল জীবন-নির্মের অধীন তাহাদের পাপ পুণ্য ঐ নির্মের ছারা নিয়ন্ত্রিত হইরা থাকে। বাঁছারা ঈশ্বরের কুপার আধ্যা-ত্মিক রাজ্যের প্রভাত্মত প্রাপ্ত হইরাছেন, অন্ত তুলাদঙ্গে তাঁহাদের পাপ পুণাের পরিমাপ হয়। (क्वन कीवन-শক্তির অধীন যাহারা, সমাজের বিধান **मः मार्येष वर्ष मान आस्त्राक्रन** কুরা, অফ্লতা ভোগ করা তাঁহাদের ধর্ম হইতে পারে, কিন্তু পর-(सचरत्र क्यांक्र-ब्रांकात धाका वाहाता हरेग्राह्न, डाँहानितात পক্ষে বিষয়-ভ্যাগ ও বৈরাগ্যই ধর্ম, ইহার ব্যক্তিক্রম অধর্ম। ব্ৰাহ্মবন্ধু এখন নিৰ্দাৰণ কমন, তিনি কেবল জীবন ব্ৰাজ্যেই বাস করিবেন, না পরত্রক্ষের অধ্যাত্মরাক্ষ্যে তাঁছার দাস হই পের এক उक्तिमगाक चानिवाक्ति।

### পাঁচ ফুলের সাজি।

#### I. Socrates-

"Intimacy with the good leads to the practice of virtue, whereas the companionship of the witked destroys it."

সাধুগণের সহিত খনিষ্ঠতা আমাদিগকে ধর্মসাধনে লইয়া যায়, আয়ে হুটেয় সহবাস তাহানই করে।

#### 2. S. T. Coleridge.

"O fair is Love's first hope gentile mind!
As Eve's first starthrough fleecy cloudlet peeping"
কুল খনৱাশির বধা হইতে উটি মুটি মারিয়া কেথিবার.

সময় সন্ধ্যার প্রথম ভারকাটী বেমন দেখার প্রেমের প্রথম আশা ভেমনি মৃত্ অন্তরের পক্ষে ক্ষমর ।

"For what is freedom, but the unfettered use
Of all the powers which God for use had given?
But chiefly this, him first, him last to view
Through meaner powers and secondary things
Effulgent, as through clouds that veil his blaze."
कातन, वावहाद्ध स्वतंत्र द नम्मात निक मित्राह्म, चारीनका
हान्नहे चारीन वावहात्र वाकीक बात नि ? किंद्र ध्यरानकः

কারণ, ব্যবহার্থে ঈশর বে সমুদার শক্তি দিরাছেন, স্বাধীনতা ভাগারই স্বাধীন ব্যবহার ব্যভীত আর কি ? কিন্ত প্রধানতঃ এই বে, ভাগার ক্যোতি আবরণকারী মেবমানাস্থরণ নিরুইতর শক্তি এবং বন্ত সমূহের মধ্য দিরা সর্ব্ধপ্রথম এবং সর্বশেষ রূপে ভাগাকে নিরীক্ষণ করা ।

०। हानका---

শমুহূর্ত্তমণি শীবেচ্চ নরঃ শুক্লেন কর্মণা। ন করমণি কটেন গোক্সম-বিরোধিনা॥

নিৰ্দ্মণ (পুণা) কৰ্ম সাধন করিয়া এক মুহূর্ত বাঁচিলেও জীবন সাৰ্থক হয়; ইহপয়কাল বিনষ্ট করিয়া মুগাত্তকাল জীবন ধারণ করিলেও ফল নাই।

৪। বোগবাশিষ্ট---

"ন দৈবংনচ কর্মাণি ন ধনানি ন বাছবাঃ। শর্পং ভবভীভানাং স্থাবছাদৃতে নৃণাং॥"

(ভত্তজান বিষয়ে) বন্ধ না করিলে, কি দৈব কর্ম, কি ধন কি বন্ধু, কোন বস্তুই ভব-ভন্ন-জীত মানবকৈ রক্ষা করিতে পারে না।

७ जनकात्त्रामनिवर—

"ক্ষাচানভূাদিতং বেন বাগভূাদ্যতে। তদেব ব্ৰশ্ন ছং বিদ্ধি নেদং যদিদমূপাসতে।"

বাক্য বাঁহাকে প্রকাশ করিতে পারে না, বাঁহাদ্বারা বাক্য নিরোজিত হর, তাঁহাকেই তুমি এক্স বলিয়া জান; লোকে বে পরিভিন্ন বস্ত উপাসনা করে, তাহা কথন এক্স নতে।

"যক্ষনসা ন মহুতে যেনাহুর্মনোমভম্।

ভদেব ব্ৰহ্ম হং বিদ্ধি নেদং যদিদমুপাসতে ॥"

ত্রন্ধজানিগণ বলেন, লোকে মনের ছারা বাঁহাকে মনন করিছে পারে না, বিনি মনকে জানিডেছেন, তাঁহাকেই ত্রন্ধ বলিরা জান; লোকে বে কিছু পরিষিত পদার্থের উপাসনা করে, ডাহা কথন ত্রন্ধ নহে।

6. The Koran.

"God loveth not corrupt ing" ঈশ্বর অসদাচার ভাল বাসেন না।

"God is gracious unto His servants."

ক্ষর তাঁহার সেবকগণের প্রতি সদর।

"Know that God is mighty and wise."

বানিও যে ঈশ্বর শক্তিমান এবং কানবান।

"God loveth those who repent, and loveth those who are clean."

বাঁহারা অস্তাপ করেন, ঈশ্বর তাঁহালিগকে ভাল বানেন, বাঁহারা নির্দাণ তাঁহালিগ্রহে ভাল বালেন।

#### 7. St. Matthew-

"Blessed are they which are persecuted for righteousness' sake: for their's is the kingdom of heaven."

"Blessed are ye, when men shall revile you, and persecute you, and shall say all manner of evil against you falsely, for my sake."

Rejoice and be exceeding glad: for great is your reward in heaven!for so persecuted they the prophets which were before you."

বাঁছারা ধর্মের অস্ত উৎপীড়িত হন তাঁহারাই ধর, কারণ অর্গরাজ্য তাঁহাদেরই।

(তথনই) তোমরা ধরু, যথন মনুষ্যগণ ধর্মের করু, ভোমাদিগকে গালি দিবে, নির্যাতন করিবে, এবং মিথ্যাপূর্বক ভোমাদের বিরুদ্ধে যথেচ্ছ অপবাদ দিবে।

উল্লাস কর, এবং নিরতিশন আনন্দিত হও, কারণ স্বর্গে ভোমাদের পুরস্থার মহৎ। কারণ এই রূপেই ভোমাদের পূর্ব্ববর্তী মহাজনগণকে নিপীড়িত করিয়াছিল।

## প্রেরিত পত্র।

( পত্রপ্রেরকের মতামতের জন্ত সম্পাদক দারী বহেব কিছা কাপি ক্ষেত্রত দিতে বাধ্য নহেম। )

মাক্তবর শ্রীমৃক্ত তত্তকামূদী সম্পাদক মহাশর সমীপের।

यहां भंद.

পত ১লা ভারের ভন্ধনিমূদীতে "জনৈক সভা" সাক্ষরিত "হরিনামের অনিটকারিত।" সহকে এক পত্র এবং "প্রীপ্রভূলচন্ত্র নাম" সাক্ষরিত "আহারার্থে প্রাণিনাশ প্রকৃতপক্ষে নির্দিরতা নর" সহকে এক পত্র, এই চুই পত্র প্রকাশিত হইরাছে। এই উভর পত্রের মতামত সহকে আমার কিঞ্চিৎ বক্তব্য আছে, ভাহা নিরে লিখিতেছি, অনুগ্রহ করিরা ভন্ধকৌমূদীতে প্রকাশ করিরা বাধিত করিবেন। আমার বক্তব্য বিষর আমি অতি সংক্ষেপেই জানাইব।

১ম পত্র সম্বন্ধে বক্তব্য এই ব্য,—"হরি" শব্দ উচ্চারণ করিলেই বে সাকার হরিকেই বুবিতে চইবে আমাদের এরপ বোধ হর না। রাম, কৃষ্ণ, কালী প্রভৃতির ক্লার হরি কোন অবতার নহেন। তবে পত্রপ্রেরকের আপন্তি এই বে, "সাকার বাদিগণ অনেক সমর হরির মূর্ত্তি গঠন করিরা থাকেন।" কিন্তু সাকার-বাদিগণ মূর্ত্তি গঠন করিলেই বা হরিকে অবভার বলিলেই যদি নিরাকার হরির পূজা বর্জন করা হার, ভাহা হইলে নিরাকার পূজার জন্ত কোন নামই থাকিতে পারে না।

শবভার-বাদিগণ এবং পৌত্তশিকগণ নিরাকার ছল্লির ন্যার শন্যান্য নামের কিন্ধণ ব্যবহার করিয়াছেন এবং ক্রিভেছেন ভাষা একবার দেখা বাউক।

- >। "मिजीधारताचा जगनीधारताचा" अञ्चल व्यवणावय मिश्रम ! मिजीधारक जेथात विवादहरू।
- ২। মচাকবি কালিনাস রত্বংশের প্রথমেই জগৎপিতা শঙ্গের অর্থ চরপার্ক্তী এবং প্রমেখর শঙ্গের অর্থ পার্ক্তীনাথ করিরাছেন।
- । নর্মদা নদীর ধারে ওঁকারনাথ নামক এক বিখ্যাত
   তীর্ষদান আছে, সেহানে এক মন্দিরে এক প্রস্তরের মহাদেব
   আছেন, তাঁহার নাম ওঁকারদ্বী বা ওঁকারেশর।

আর অধিক বলিবার প্ররোজন নাই, যে তিনটী দৃষ্টান্ত দেওরা গেল তাহাতেই প্রমাণ হইতেছে যে, "হরি" শন্দের যে গতি "ঈখর"—"পরমেখর"—"জগৎপিতা" এবং "ওঁ" শন্দেরও দেই গতি, তবে কি নিরাকার হরিকে কেবল মনেই রাখিতে হইবে ? মুথ ফুটরা কিছুই বলা যাইবে না ? আর এক কথা পৌত্তনিক্ষণণ সাকার ভাবে করনা করিলেই বা অবভার বলিলেই যদি নিরাকার হরি সাকার হইরা যান, তবে মনেই বা রাখিব কিরণে ? সাকারবাদিগণ রাগরাগিণীর ও সাকার মৃত্তি করনা করিতে ছাড়েম নাই। ভাহাতেই কি রাগরাগিণীও সাকার হইরা গেল ?

২য় পত্র সম্বন্ধে বক্ষব্য এই যে,—পত্রপ্রের্ক বলিরাছেন,
"বৃথা আমোদের জন্ধ প্রাণিবধ অপ্রেম মূলক ও দ্বলীর সন্দের
নাই।" এক্ষণে আমার বক্তব্য এই যে, যথন ঈশর আমাদিগকে
আহারার্থে বহুপ্রকার ক্রব্য দিরাছেন এবং তাহা আহার করিরা
আমরা বেশ হুই-পুই শরীরে সংসার্থান্তানির্বাহ করিতে সক্ষম
হুইতেছি, এক্ষণ স্থলে সাধারণ ভাবে "আহারার্থে প্রাণিবধ"
কার্য্যকে কি "বৃথা আমোদজনক কার্য্য" বলা উচিত নর ?
আমাদের বিবেচনার আহারার্থে সাধারণভাবে প্রাণিবধ, বৃথা
আমোদজনক কার্ব্যের মধ্যেই গণ্য; তবে এক্ষণ বিশেষ স্থল
থাকিতে পারে, যে সময় প্রাণিবধ না করিলে প্রাণ-ধারণ করা
বন্ধ ক্রিন হুইরা পড়ে, অথবা কোন বিশেষ আবস্তুকীর কার্য্য
সিদ্ধি হব না। তক্রপ স্থলে প্রাণীবিশেষের মঙ্গলার্থ প্রাণীবিশেষ বধ করিলে ক্ষতি নাই।

প্রাণিবধকালে যেমন প্রাণিগণ কট অফুডব করে, উদ্ভিদগণ অবশ্র তাহা করে না, অস্ততঃ আমরা উদ্ভিদগণের কট বুঝিতে এবং বিশাস করিতে পারি না, স্ক্তরাং উদ্ভিদ ভক্ষণ প্রাকৃত পক্ষে নির্দিশ্বতা নহে।

লিখনের স্টে জীব লিখরাদেশে বা দৈব ঘটনাতে মারা পড়িলে প্রেমমনের মলল উদ্ভেপ্ত অবপ্ত ভালার পশ্চাতে থাকে, ইছা আমরা বুঝিতে পারি; কিছ আলারার্থে অনেক প্রকার পদার্থ থাকিতে মহুব্য ঘারা অকারণ প্রাণিবধের পশ্চাতে কোন মলল উদ্দেশ্য আমরা বুঝিতে পারি না। হত্তী, ঘোটক, মহিষ প্রভৃতি অন্তপণ উদ্ভিদ আছার করিয়াই শক্তি সঞ্চর করে। কেছ কেছ বলেন, সিংহ, ব্যাত্র প্রভৃতির শরীরে বেশী শক্তি থাকে, কিছ সিংহ, ব্যাত্র প্রভৃতির শরীরে বেশী শক্তি থাকে, কিছ সিংহ, ব্যাত্র প্রভৃতির অলাক্ত মাংসের ক্রার নরমাংসও ভক্ষণ করে, তবে কি নর্মাংস ভক্ষণ, অন্যান্য মাংস ভক্ষণ, মংগ্ত ভক্ষণ এবং উদ্ভিদ ভক্ষণ সবই সমান ? বলি সমান না হয়, ভবে অক্যারণ বা অভি সামাক্ত কারণে জীবগণকে কট

দেওরা কখনই উচিত নছে এবং উদ্ভিদের সহিত মংতের এবং মংস্যের সহিত অন্যান্য উচ্চ শ্রেণীর জীবের তুলনাও হইতে পারে না। কারণ বদি উদ্ভিদ আহার করিলেই মংস্ত আহার করা উচিত হর এবং মংস্ত আহার করিলেই অন্যান্ত উচ্চশ্রেণীর জীবের মাংস তক্ষণ করা উচিত হর, তবে নরমাংস ভোজনেই বা দোষ কি প্পত্রেরক বলিরাছেন, "ব্রহ্ম-প্রকাশ বলিরা যদি মাংসাদি আহার বর্জনীর হর, তবে আর মান্ত্রের আহারের জন্য রহিল কি ?" বদি পত্রপ্রেরকর কথা ঠিক হর, তবে একজন অসভা নরমাংসাশী বলিতে পারে বে, "যদি ব্রদ্ধপ্রকাশ বলিরা নরমাংসই বর্জনীর হয়, তবে আর মান্ত্রের আহারের জন্য রহিল কি ?

নশিপুর, অমুগত মুর্শিদাবাদ, শ্রীজগন্নাগপ্রাসাদ গুপ্ত। ৯ই ভাজ ১০০০।

> শ্রদ্ধান্দাদ শ্রীযুক্ত তত্ত্তামূদী সম্পাদক মহাশয় সমীণেমু

মহাশ্র,

সাধারণ লোকদিগের মধ্যে যাহাতে ব্রাহ্মধর্ম প্রচার হয় তাহার প্রতি সাধারণ ব্রাহ্মসমাব্দের দৃষ্টিপতিত হইয়াছে দেখিরা, আমরা অত্যন্ত আহলাদিত হইরাছি। সাধারণ লোকেরা সভ্য-ব্রাহ্মধর্ম হৃদয়দম করিতে পারিবে না, সভাধর্ম শিক্ষিতদিগের, এইরূপ ভাস্তদংস্কার যদি কাছারও থাকে, তাঁহাদিগের বিবেচনা করা উচিত যে সভ্যের পথ সরল, না মিথ্যা করনার পথ সরল, সত্যের ধারণা সহজ, না মিথ্যার ধারণা সহজ, অবশ্রই মিথ্যা क्त्रनात्र १थ करिन, छाहा हहेरन निक्तत्रहे बाक्यधर्य निकिर्छत्र, অশিক্ষিতের, পণ্ডিতের, মূর্থের, ধনবানের, দরিদ্রের, রাজার, ভিক্ষকের। পৃথিবীর সমস্ত নরনারীদিগেরই ত্রাহ্মধর্মে অধিকার আছে.সকল সম্ভানেরাই পিতার ধনে সমাংশভাগী হইয়া থাকে। পরম কারুণিক পরম পিতার ক্সায়বিধানে ঐ নিয়নের কথনট ব্যতিক্রম হইতে পারে না। জ্যেষ্ঠ যদি বৃদ্ধিংীন অশিক্ষিত ক্রিষ্ঠ ভ্রাতাকে পৈতৃক ধনে বঞ্চিত করেন তাহা হইলে তাঁহাকে যেরপ জাতি বঞ্না রূপ মহাপাতকে লিপ্ত হইতে হয়, সেইরূপ শিক্ষিত ব্যক্তিগণ যদি অশিক্ষিতদিগকে উ৷হাদিগেব উপলব্ধ সভা সকল প্রদান না করেন, ভাষা হইলে ধন্মধনে বঞ্চনাক্রপ স্ক্রাপেক্ষা গুরুতর পাপে পতিত চইতে চইবে, অতএব শিক্ষিত ভ্রাতাদিগের সর্বপ্রেয়ত্বে অশিক্ষিতদিগের মধ্যে সত্যধর্ম প্রচার করা কর্ত্তবা, সম্প্রতি ব্রাহ্ম সাধারণের যে সাধারণ লোকের প্রতি দৃষ্টি পড়িয়াছে, তাঁহারা আশিক্ষিতদিগের মধ্যে ধর্মপ্রচার করিতে উল্লাভ হইয়াছেন, ইহাতে নিরভিশয় जानिक इहेग्रा जामाहेट हि-वत्राहनगरत जानक अभनीवी লোকের বাস. এই শ্রমকীবীদিগের উন্নতির জঞ্জ বরাহনগর-নিবাসী - বাবু শশিপদ বস্থোপাধ্যায় বছদিন হইডে कार्या कतिया कांनिएएएक। देशानिश्वत मध्य गांशारक ধর্মভাব জাগরিত হয়, তিনি সে বিষয়েও বিশেষ চেটা করিয়া

থাকেন এ দেশের লোকের বছদিনের বিখাস যে সাধারণ লোকেরা কথনট নিরাকার পরবেশরের উপাসনা করিতে সমর্থ হয় না। কিন্তু বরাহনপরের শ্রমনীবীরা ঐ কথার যথার্থতা খণ্ডন করিয়াছে। তাহারা নিয়মিতরূপে সমাজে উপস্থিত হইরা ভক্তি-পূর্বক উপাসনার যোগ দিত। আপনারা উৎসাহী হটরা নিজগুতে ধর্ম্মোপদেশের নিমিত্ত সভা আহ্বান করিত। মাণোৎসবের সমূরে সাধারণ ভ্রাহ্মসমাজ সন্ধিরে বরাহনগর শ্রমজীবীদিপের বৎসর বংসর যে উৎসব চইত বরাহনগর ছইতে পঞ্চাল যাট জন প্রমজীবী দশবদ্ধ কইরা ভক্তিতরে ত্রন্ধ সংকীর্তন করিতে করিতে ব্রন্নযাশিরে উপস্থিত চইত, তাচা অনেকেই জানেন এবং কলিকাতা হইভেও আন্বর্গণ সময়ে সময়ে বরাহনগরে আসিয়া শ্রমজীবীদিপের ধর্মোৎসাহ দেখিরা আনন্দ প্রকাশ করিরাছেন ও সমরে সমন্বে শ্রমনীবীদিগের বাটাতে উপস্থিত घरेशा छेशाम श्रामान कविशाहन: धरे मकत्वव बादा कि প্রমাণিত হইতেছে না যে অশিক্ষিতেরাও নিরাকার প্রমেশবের উপাসনা কবিতে সমর্থ: সাধারণ লোকে নিরাকারের উপাসনা কবিতে পাবে, এই সতা এদেশে প্রথম ব্রাক্ষসমাজ প্রচাব কবিয়াছেন। কিন্তু মুক্তি ডিন্ন কার্যাতঃ অন্ত কোথাও ইচার সত্যতা স্প্রমাণ হয় নাই। ছঃখের বিষয় বর্তমান সময়ে শশিপদ বাবুৰ শারীবিক অমুস্তভা চেড় চেষ্টাৰ শৈণিলো ও উপযুক্ত প্রচারকের অভাবে ইহাদিগের আর দেরূপ উৎসাচ দেখা যায় না , কিছু এখানে একটি সুন্দর কার্যাক্ষেত্র বিস্তুত্ত विश्वारक। कार्या कविरम निम्हत्रहे स्वक्षम कमिटव, माधादन ব্ৰাহ্মসমাজেব ধর্ম প্রচাবকেবা নানা স্থানে ধর্ম প্রচারার্থ সমন করিতেছেন, বদি মধ্যে মধ্যে তাঁছাবা ও ব্রাহ্মসমাজের সভাগণ ববাহনগরে আসিয়া ধর্ম প্রচাব করেন, যদি শ্রমজীবীদিগেব গতে গতে উপন্তিত হট্যা তাহাদিগকে ধর্মোপদেশ দান করেন. ভাচা চইলে নিকৎসাহ শ্রমজীবীরা উৎসাহিত চইয়া ধর্মের দিকে অঃকৃষ্ট চটবে তাঁচারাও কর্ত্তবাপালন করিয়া কুড়ার্থ হইবেন। আশা কবি ধর্ম প্রচারকগণ আমাদের কণা উপেক্ষা कदिरवन ना।

শ্রদ্ধাম্পদ শ্রীযুক্ত তরকৌমুদী সম্পাদক মহাশয় শ্রদ্ধাম্পদের।

গত ১৬ট আবাটেন তত্ত্বকৌ মূণীতে শ্রীবৃক্ত কেদারমাপ রার মহাশর একাধিক বিবাহের বিরুদ্ধে একথানি দৃঢ় প্রতিবাদ-স্চক পত্র লিথিরাছেন। আমি ব্লিভা**ত্ত কর্ত্ত্**রার অন্ধ্রোধে এ সম্বন্ধে তু একটি কথা না লিথিয়া থাকিতে পারিলাম না। অনুগ্রহ পূর্বক পত্রথানি প্রকাশ করিয়া বাধিত করিবেন।

একাধিক বিবাহের বিস্তম্ভ ছ চাক্রিট কথা বলা কিয়া লেখনী চালনা করা কিছুই কঠিন নছে; কিছু হঃখের বিষয় এই বে, যথন গরীকা উপস্থিত হয়, যথন পদ্মী বা পঠিচ পর- লোকে গমন করেন, তথন আর পূর্কবং দৃঢ়তা থাকে না। পূর্ক প্রতিজ্ঞা বা আদর্শ হইতে বিচার্ত হইরা আনেকেই পুনরার কিবাহিত অথবা বিবাহের জন্য আকাজ্যিত হইরা থাকেন। এক সমর বাঁলাদের মুথে "উচ্চ ব্রন্ধচর্যা, পূর্ণাবরব প্রেম, আদর্শ দাম্পত্য ও নিত্যকালের বিবাহ" ইত্যাদি কথা প্রবণ করিরা বন্ধ-গণ মুগ্র হইতেন, পদ্মী বিরোগের পর আবার তাঁহাদের বিপরীত ভাব দেখিরা চঃখিত হইতৈছেন। অভ এব বাঁলারা বিপন্নীক অথবা বিধবা এবং বৈত্রবীর পারে উপন্তিত, তাঁহাদের এ সকল ভবের আলোচনা করিলেই শোভা পার। নত্বা যে সমর পড়িয়াছে, ভারাতে নীরব থাকিরা কার্য্য হারা স্বীর

এখন রার মহাশরের যুক্তি করটির সংক্ষিপ্ত আলোচনা করিতে চেষ্টা করি। তিনি প্রথমেই বলিরাছেন, মানবাত্মা रायन अक भगरमधात मःगुक कवेरन हे एक्का आई क्य, ডেমন মানত শরীরও কি পত্নী কি পতি অবলম্বন করিলেই পবিত্র থাকে ইত্যাদি। এরপ উপমা নিভাস্কই অসঞ্চত। ঈশ্বর পূর্ণ নিতা, সর্বতে বর্তমান এবং চিনার, তাঁহার সহিত মানবাত্মার নিত্য কালেব সম্বন্ধ। তিনি আত্মার মূলাধার, কর্তা। আ শ্রাদাতা কপে নিয়ত বর্ত্তমান। প্রমেখরের স্ভিত মানবাত্মার व्याकारमञ्ज गुरुशान नावे. এक वनिष्ठ त्यांग। मंत्रीता मंत्रीता--ভড বস্তুতে জড বস্তুতে কি এটকপে খনিষ্ঠ যোগ সম্ভবে গ মানবাত্ম অনুভ্রকাল ঈশ্বরের স্ত্রিধানে বাস করিবে, শ্রীর ত্রদিনের জ্ঞা নশার দেহকে কি দম্পতিগণ অন্তকাল চিন্তা कतिरान । हेडाई कि निवाद्य आपनं ! मिलन इस आश्वास আস্থার, শরীরের সহিত মিলন হর না। যদি কেই বলেন, দম্পতির আন্মিক রোগই অনস্কলল স্থায়ী, উভরে প্রেমে अभिकृत व्हेत्रा अतिराह्यम (गार्श अमत स्वीतन राभन कतिरत। ইচাও মানব জীবনের সম্পূর্ণ আদর্শ বলিয়া অসুমিত চর না। প্রথমতঃ প্রমান্তার সহিত মানবাত্মার বে সহন্ধ, সেইরূপ সম্বন্ধ কোন মানবের স্থিত চুইতে পারে না। বিভীয়ত: মা<mark>নবংগ্রাম</mark> মহুষা বিশেষের প্রতি কেন্দ্রীভূত না হইয়া মানব সাধায়ণের প্রতি বিস্তুত হওয়াই আদর্শ। প্রেমিক শাক্যসিংচ গোপাকে বেমন ভাল বাসিতেন, দরিজ কবক রমণীকেও তেমনি প্রেমের চক্ষে দেখিতেন। এমন কি এড়ইন আর্মলডের কাব্যে লিখিভ হটয়াছে যে, শাক্য সিংহ গৃহত্যাগের অব্যবহিত পূর্বে স্ত্রীকে সংখ্যাধন করিয়া বলিয়াছিলেন যে, "I loved thee most Because I loved so well all living souls"

"আমি ত্রন্ধাণ্ডত্ব সমস্ত জীবকে এত ভাল বাসিয়াছি বলিয়াই তোমাকে অভ্যন্ত ভাল বাসিয়াছি।" একত্পলকে কোন গ্রন্থভার বলেন যে, "অগতের সমস্ত জীবকে বে ভাল না বাসে তাহার ভালবাসা ভালবাসা নহে, ভালাই মোহ। বুছ-দেবের ভালবাসা প্রকৃত ভালবাসা, মোহ নহে। মোহ ব্যক্তিবিশেষ কি বিষয়বিশেষের কুল পরিসরের মধ্যে নিবন্ধ থাকে, ভালবাসা অগ্যার ছড়াইরা পড়ে।"

বিনি ছই জেম বাহ প্রসারণ করিয়া নরনারীকে আলিজন করেন। তাঁবার প্রেন ক্ষেত্র এক স্থানে: সীনাক্ষ প্রাক্তিক পারে নাথ প্রেমে সংকীর্ণতা নাই। যথার্থ ঈশ্বর প্রেরিক সাধু নিজের পিতা মাতা প্রী প্রেমিগকে বেশন ভাল বাদেন, অকান্তকেও তেমনি শ্রীতির চক্ষে দেখেন। ভালার পরিত্র প্রেমের চক্ষে ভিরত্য ও পার্থক্যবোধ স্বার্থপরতা বলিরা পরি-পণিত তর। অতএব রার স্চাশরের মতে "এক্ষেনাভিতীরং" সাধনের ভার পত্নী কিলা পতিতে এক্ষেনাভিতীরং সাধ্য বিশ্বকনীন আদর্শ প্রেম সঙ্গত নহে।

কিন্তু শনীর সধক্ষে অভবিধ নিরম। বছবিবাহ স্থভাব-বিরুদ্ধ কার্যা। বছলনের প্রতি বিশুদ্ধ প্রেটমে আত্মা পরিভূই চর। কিন্তু বছবিবাচ ছারা হলর মনের অধােগতি হর। কিন্তু একের অভাবে ছিতীয় বার বিবাচেতে উক্ত দােষ স্পর্দে না। ভবে বাঁচারা মৃত পতি কিছা পত্নীর স্থভি-চিচ্ জ্লারে ধারণ করিরা তাঁচার ধাানে নিমশ্ব থাকিবেন, উচার নিকট বিবাচ প্রেটাভন স্কলা।

রায় মহাশয় ৫ম প্যারাতে লিথিয়াছেন, এদেশের হিন্দুস্যাক্ত তাঁচাদের শ্রেষ্ঠতর অর্দ্ধাংশকে "সাচ্চা" রাপিবার জন্ত "বিধ্বার বিবাচ দেন নাই এবং "সহস্ৰ সহস্ৰ হিন্দু বিধবা এখন ও আছেন, যাঁহাবা ধ্যানেও এক ভিন্ন দিভীয় পুক্ষ জানেন নাই।" কোন मजारमाम পতिপবারণ। নাবী নাই ? किन्नुप्रमास वनशृक्षक বিধবাদিগকে অবিবাহিত বাণেন। একপে যাহাদের বাজ সভীত রক্ষাহয়, প্রাক্ত সভীত্ত হোগেদের অনেক দুরে অনুস্থিত। কারাবাসিগ্র কোনও হৃদ্যোট কবিতে পাবে না। करमिन शहरीत छात्र १ नियाजान मास्त्र मह भास शास्त्र এজন্য কি কেছ ভাহাদিগকে সাধু ববিবেন, এবং ভাহাদের মুত্ত স্বভাবের প্রশংসা করিনেন গুনির্যাভনপ্রাপ্র, কারাবাসিনী শত সম্প্র সভী বিধবা অপেক্ষা একটি স্বাধীন সভী নারীর মূল্য অবধিকানতে কি 🕈 সভীত্বের প্রসঙ্গ হতলে অনেকেট এভদেশীয় সভীদিগকে লক্ষ্য করিয়া গাকেন। তাঁচাদের অতে পৃথিবীর অপের দেশে কেত সভী নারী নাই। সভীর পাদস্পর্শে সকল (माम्ब क्'महे भविजीक क कशारक। करत भार्थका **अहे** (स्.आमाम কাতিভেদ, অবসোধ প্রগা, অসাভ।বিক ব্রন্ধটো ইত্যাদি সামালিক শাসন হারা বিধবাদিগকে যেরূপ সংযত রাখিতে চেষ্টা করা ছইতেছে, অপর পেশে এরূপ চেষ্টা হয় না। কিন্তু সেথানে স্বাভা-বিক লতীগণ সভিত্তের উজ্জ্ল আলোক বিকীর্ণ করিয়া জগতকে আলোকিত করিতেছেন।

৬ঠ প্যারাতে যাতা লিখিত চইরাতে, তাতার সুলমর্ম এই, হিন্দুজাতি বেমন অর্জাংশকে সাচচা রাখিবার চেষ্টা করিয়া-ছিলেন, রাক্ষসমাজ তেমন অপর অর্জাংশকে (অর্থাৎ পুরুষ-ছিলকে) সাচচা রাখিবেন। কিন্ধু কণা এই যে, যে উপায়ে হিন্দুজাতি জীজাতিকে 'সাচচ' রাখিয়াছিলেন, রাক্ষসমাজ যদি শে উপারে পুরুষদিগকে "সাচচা" রাখিতে ইচ্চা করেন, তবে সমাজ-শাসনের ভার কাতার প্রতি অর্পতি থাকিবে? বার মহাশর বাল্যবিধ্বা এবং বাল্য বিপত্নীক দিগকে এই নিরম চইতে বাদ দিয়াছেন। রাক্ষসমাজে "বাল্যবিধ্বা এবং বাল্য-বিপত্নীক" কিন্তুপ, তাহার টকা করিলে ভাল হইত।

তৎপর তিনি সপ্তম প্যায়াতে ঐতিহাসিক প্রমাণ প্রদর্শন করিয়াছেন। লিখিরাছেন্ যে, রামারণ মহাভারত প্রভাতর ঐতিহাসিক মৃদ্য অধীকার করিলেও সে সকলের বর্ণনার মধ্যে তৎকালীন অপর ব্যবহারের এই ভাক দেখা যার। "রামচন্দ্র একটি বিবাহ করিরাছিলেন, ইহা উল্লেখ করিয়া এক পত্নী গ্রহণের শ্রেষ্ঠিত্ব প্রতিশাসন করিয়াছেন। সাধারণতঃ ধর্মশাস্ত্র প্রথেত। এবং ধর্ম্মোলেইাদিগের চরিত্রই জনসমাজ কর্তৃক অবশ্যিত হুইয়া থাকে। ধে ভাগ্রদায়ীভার ন্যায় মোক্ষাত্রত

পূর্ণ শান্ত পৃথিবীতে আর নাই বলিরা হিন্দুগণ এবং হিন্দুসমাজের বিধে গভিপ্রাপ্ত বালগণ হালিরা থাকেন, সেই গীতা বাহার মুখ দিরা বাহিন হইরাছে, জাহার বোড়শ শত ল্রী ছিল। মহাভারতকার-বাসের জ্রীর্লাতি সহছে ব্যবহার ও তাইার বংশলীলা সকলেই অবগত আছেন। হিন্দু শাল্তের আদেশ এই যে, পুল্রোৎপাদনের জন্য বিবাহ করিতে ইইবে। একটিতে ব্যবহার, নতুবা ছটি, না হয় তিনটি, এরপে বত্ত ইছো করিতে পার। বংশ রক্ষা না হইলে অর্গ লাভ হয় না।

রায় মহাশয় মুসলমান ও বৈক্ষব স্থাক্তের কথাও উল্লেখ
করিরাছেন এবং বলিরাছেন যে, তাঁচারাও এক বিবাচের পক্ষপাজী ছিলেন। কিন্তু হংখের বিষয় এই বে, এ সইছে রায়
মচাশরের উক্তি ভির আর কোনও প্রমাণই পাওয়া বায় না।
মুসলমান ধর্ম প্রবর্ত্তক মহত্মদ অয়ং সর্কাপ্রথমে থাদিজা নারী
এক বিধবার পাণিগ্রহণ করেন। তৎপর সন্তানবতী বিধবা ও
কুমারী প্রভৃতি করেকটি বিবাহ করেন। মুসলমান স্থাক্তের
থলিকা ও ধার্মিকা রমণীগণও একাধিক বিবাহ করিরাছেন।
এক্রপ ভলে কিরপে বলা ঘাইতে পারে যে, মুসলমান ধর্মসমান্ত একাধিক বিবাহকে সুণার চক্ষে দেখেন।

তৎপর বৈষ্ণব সমাজের কথা। বিবাহের উচ্চ আদর্শের বিষয় বলিতে গিয়া বৈষ্ণব সমাজের কথা উল্লেখ না করিলেই ভাল হইত। চৈতনার সমসামিরক বৈষ্ণবগণ এক প্রকার সন্নাসী বৈষ্ণব ছিলেন। চৈতনা স্ত্রীলোকের মুথ দর্শন করি-তেন না; কিন্তু চৈতনার পাবই বৈষ্ণব সমাজে সেবাদাসী রাখার নিয়ম প্রবিত্তিত হয়। কেন্তু কেন্ড্রমনে করেন যে, বৈষ্ণব সমাজে যে এই কুপ্রথা প্রবেশ করিরাছে, নিত্যানন্দের অসাব্ধানতাই ইহার মূল কাবণ। তিনিই স্কাপ্রথমে চৈতনাধর্শের আদর্শকে মান করেন।

উপসংহারে রায় মহাশয় লিখিয়াছেন, "অটঞ্ল চিত্তে এ নীতি পালন রক্ত মাংসেব পক্ষে অতীব হুঃসাধা় কিন্তু ধর্মো-দেশে, লোভ, মোহ প্রভৃতি রিপুগণের কোনটী বণীকরণ্টবা স্থাধ্য ?" বাস্তবিক ধর্মদাধন কবিতে ইন্দ্রিদ্র-সংযম নিভাস্তই আবিশ্রক। ইন্ত্রির সমূহ সংযত না হইলে ধর্মানিবের ছারেও কেছ উপস্থিত হটতে পাবিবেন না। কিন্তু বিবাহট যদি ইঞ্জিয় সংযমের অন্তরায় হয়, ভবে কাহারও বিবাহ কর:ই উচিত নয়। এক্স হটলে প্রাচীনকালের সর্রাস ধর্মই ধর্মগাধনার্থিগণের অবলমনীর। রার মহাশর সর্বাশেষে লিখিরাছেন—"নিতাক্ত তুঃসাধ্য বলিয়া, সে আত্মসংযম কি ধর্মগ্রীবন গঠনপক্ষের অবস্থ প্রয়োজনীয় বলিয়া স্বীকার করি না গ দ্বিতীয়বার বিবাহের সমন্ত্র কি কেবল আত্মসংঘমেব কণা উপস্থিত করিছে চইবে. श्रापेमवादात्र ममम् कि मकरनाई मिक्क श्रुक्य शास्क्रम ? जनम কি আত্মসংঘমের কথা বলিয়া বিবাহে বাধা দেওয়া উচিত নর? রায় মছাশরের যুক্তি অনুসারে গুদ্ধ আগ্রসংয়নের অনুরোধে কাছারও বিবাহ করা উচিত নর।

এখন আমার নিজের ছ একটি কথা লিখিরা পত্র শেষ করিব। বিবাহিত কি অবিবাহিত সকলের পক্ষেই ইন্দ্রির সংযম অত্যাবশুকীর। বিবাহিত কি অবিবাহিত জীবনে পার্থকা এই, একজনের অসংব্যের ফল বাহিরে প্রকশি পার, অপরের অসংব্যের ফল কেহ দেখিতে পার না; কিছু জ্বদরের অভ্যন্তর দেশ, পাপের বিষে কর্জেরিত হইরা যার। সেই অব-ভাতেও লোকে ভাছাকে ব্রহ্মচারী বলিরা থাকে।

ফল কথা এই, বিবাহে বাঁধা দেওরা কর্ত্তব্য নহে, যাহাতে বিবাহিত জীবনেও ইল্লিয় সংযম করিতে পারা যার, সেরূপ জালোচনা, উপদেশ এবং দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করাই উপদেষ্টার কর্ত্তবিধ্য কর্ম। বিবাহের সহিত ঐক্লিহিক সম্ভের যতই ুহাস হইকে, তত্তই মানব-জ্বাহে দেবত্ব সঞ্চারিত হইবে।

क्रिक्डा। ैं कानीठळ (वारान।

#### পত্রপ্রেরকদিগের প্রতি।

সনেক্পাল প্রেরিজপাল কানেক দিন হইতে আমাদের ছতে রছিরাছে। ছানাভাব বশতঃ সে সমুদার মুল্লিভ হইতে পারে নাই। অথচ পল্লেগ্রকগণ মনে করিতেছেন বে ভাঁছাদের পল্ল ব্লি ছাণা পূর্বাক উপেক্ষিত হইল। তবে এ কথাও বলা আবক্তক বে দকল পল্লেই বে দকল সমরে প্রকাশের উপযুক্ত হর ভাঙা নহে। আমরা বিগতবারে ও বর্ত্তমানবারে ছান সমাবেশ করিরা অনেক্পাল পল্ল মুল্লিভ করিলাম। তথাপি অনেক্পাল অবলিষ্ট রহিল, ভাগার সংক্ষেপে উল্লেখ করা যাইভেছে:—

শ্রীবৃক্ত বাবু গোপালচক্র সেন বরিশাল "আমরা কি চাই"
নামে একটা দীর্ঘ প্রবন্ধ প্রেরণ করিয়াছেন। এ থানি বছদিন
আমাদের হত্তে পড়িয়া রহিয়াছে। পত্রথানিতে লেথক ব্রান্ধসমাক্রের জনেকগুলি দোবের উল্লেখ করিয়াছেন। ব্রাহ্মসমাজের
ক্রেটীবিবরে ভত্তকৌমুদীতে শ্বতংপরতঃ এত উল্লেখ করা হইয়াছে
যে ব্রাহ্মসমাজের ক্রেটীর কথা শুনিতে শুনিতে ইহার পাঠকগণ
ক্লান্ধ, আর ভাল লাগে না। এক জন যদি বসিয়া বসিয়া ক্রমাগত বলিতে থাকে, "আমি অধম" "আমি অধম" "আমি অধম"
শেবে লোকে বিরক্ত হইয়া বলে—আরে বাপু! অধম হোদ্
অধম আছিস্, এত বলে আর কি হবে।" তত্তকৌমুদীর
পাঠকদিগের যেন সেই দশা ঘটয়াছে। তাঁহায়া বিরক্ত হইয়া
বলিতেছেন,—"আরে বাপু! ব্রাহ্মসমাজের ক্রেটীর কথা আর
শুনিতে ভাল লাগে না।" শুতরাং সেন মহাশরের পত্র মুজিত
ক্রিতে পারা বার নাই।

ত্রীবৃক্ত বাবু গগনচক্র হোম—ইনি এক সুদীর্ঘ পত্রে এই ছঃথ করিরাছেন বে, ত্রাদ্ধসমান্তের বুবক দলের প্রতি প্রবীণ-দিগের দেহ নাই। ত্রাদ্ধ ত্রাদ্ধকে দেখেনা; ত্রাদ্ধ ত্রাদ্ধকে সাহাব্য করিতে ইচ্ছুক নহে ইত্যাদি। ত্রান্দ্দিগের হদর-বিহীনতা দেখিরা গগন বাবু এত বিরক্ত হইয়াছেন যে, তাঁচার ভাষা অতি ভীত্র হইয়াছে। ভাষার এই ভীত্রভার ধন্য এবং পূর্বোক্ত কারণে এ পত্রখানিও মুদ্রিত করিতে পারা গেগ না।

🕮 যুক্ত বাবু ছারকানাথ সরকায়—বিগত ১লা জৈচির ভত্তবৈষ্দীতে সাধারণ ত্রাহ্মসমাজের জন্মোৎসৰ উপলক্ষে 'আছা-পরীকা'নামে যে প্রবন্ধ প্রকাশিত হইয়াছিল, তাচার প্রতিবাদ করিয়া পত্রথানি লিখিত হইরাছে। উক্ত বিষয়ে একখানি স্থাৰি পত্ৰ অত্যে প্ৰকাশিত হওৱাতে এথানি প্ৰকাশ করা আবশ্রক বোধ হয় নাই। ইহাতে নৃতন কথা এই বলা হইরাছে যে ভত্তকৌমুদীর সম্পাদক এক সময়ে সাধারণতন্ত্র প্রণালীর এত খাণ কার্ত্তন করিয়া এক্ষণে তাহার অপবাদ করিতে প্রবৃত্ত হওরাতে লোকে বলিতেছে, তাঁহার মনে গুরু-গিরির ভাব আসিয়াছে। এ সম্বন্ধে বক্তব্য, সম্পাদক এখনও সাধারণভন্ত্র-প্রণাশীর গুণ কীর্ত্তন করিয়া থাকেন। তাঁচার বিশ্বাস মানব-সমাজকে শাসন করিবার জন্য অদ্যাবধি যত खनानी উडाविक इहेशाह, जनात्मा नांभावन जन श्रानी मत्सार-কৃষ্ট, কিন্তু ভাষা বলিয়া ভিনি ইয়াকে একটা উপাশু দেবতা यान करबन ना। नामनव्यनानी व्यापका धर्मकीवानत पिरक অধিক দৃষ্টি দেওয়া আবস্তাক মনে করেন।

জানৈক বন্ধু (ঢাকা)---পত্রথানি অভিশয় দীর্ঘ। পত্র-প্রেরকাপ অনুত্রাই পূর্বক পত্রের দীর্ঘতার দিকে দৃষ্টি রাথিবেন।

### ব্রান্মসমাজ।

সৈরদপুর হইতে একজন আশ্ববদু লিখিরাছেন।

"গত ১২ই ভাজ সৈরদপুর আক্ষসমাজের নৃতন মন্দিরের প্রতিষ্ঠা ভার্যোপলকে উৎসব হইরা গিরাছে। প্রাতি প্রীবৃক্ত বাবু আন্ততোষ বস্থ মহাপর সমরোপ্যোগী প্রার্থনা করিরা

উৎসবের উলোধন করেল। বৈশালে লগর সংশীর্জন করিভে করিছে সমালে প্রজ্ঞাগমনান্তর প্রীযুক্ত বাবু নবৰীপ চল্ল লাস প্রচারক মহাশর মন্দিরের প্রতিষ্ঠা পজ পাঠ করেন। সম্পাদক সৈরলপুর বাজসমালের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস পাঠ করেন এবং প্রীযুক্ত রালা গোবিন্দাল রার বাহাছর ও অন্যান্য মহোদয়গণ বাঁহারা এই সমাজ নির্মাণ কর্মানা প্রদান করেরছেন, উাহাদিগকে অন্তরের সহিত ধন্যবাদ প্রদান করেন। বাবু আদিনাথ চট্টোপাধ্যার, বাবু বছবিহারী বস্থ, বাবু হর্মাণ দাস, বাবু গিরিশ্চক্র কাঞ্জিলাল এবং অন্যান্য বন্ধুগণ উপস্থিত হইয়া উৎসবে যোগদান করিরাছিলেন। প্রীযুক্ত বাবু নব্দীপচন্ত্র দাস প্রচারক মহাশর উপাসনা করেন এবং হৃদয়গ্রাহী প্রার্থনা ও উপদেশ প্রদান করতঃ উৎসবের কার্যা শেষ করেন।

প্রচার—শান্তিনিকেতনে অবস্থিতিকালে শ্রীযুক্ত প্রকাশ দেব এবং শ্রীযুক্ত কালীপ্রদায় বস্থু একদিন বোলপুরে বস্তৃতা করেন। বস্তৃতার পূর্বেও পরে সঙ্গীত-ও সংকীর্তন হয়। অক্ত একদিন বাবু কাশীচক্র ঘোষাল "নিত্যানন্দের প্রেম প্রচার" সহজে কথকতা করেন, উভর দিনই হানীর অনেকে উপস্থিত হইরাছিলেন।

বিবাহ—গত ১১ই ভাজ শনিবার দিনালপুর নগরে একটা অসবর্ণ বিধবা-বিবাদ দটরা গিরাছে। পাজ মরমনসিংছ নিবাসী প্রীযুক্ত বছবিদারী দাস। পাজী দিনালপুর বালিকা-বিদ্যালয়ের পশুত বাবু জৈলোকারাথ বিশ্বাসের ভাগনী শ্রীমতী জ্ঞানদাক্ষরী। এই বিবাদ ১৮৭২ সালের ৩ আইনাকুনারে রেজিটার করা হটরাছে। বাবু নব্দীপচন্দ্র দাস বিবাহে আচার্য্যের কর্যা করেন এবং বাবু ভ্রনমোদন কর মদাশর বর কল্পাকে সমরোপযোগী উপদেশ দেন। বিবাদ সভার ভানীয় অনেকে উপস্থিত ছিলেন। বছ বাবু এই অমুষ্ঠান উপলক্ষে নিয়লিথিত রাজন করিয়াছেন। সাং ব্রাং সমাজ ৫, জলপাট শুড়ি বাজনমাজ ১, দিনালপুর ব্রাক্ষসমাজ ২, রংপুর ব্রাক্ষসমাজ ২, ব্রাক্ষসমাজ ২, ব্রাক্ষসমাজ ২, ব্রাক্ষসমাজ ২, ব্রাক্ষসমাজ ২, ব্রাক্ষসমাজ ২, প্রান্তিনী সম্প্রান্তনীনবাস ১, থাসিয়া মিশন ১, গরিবদিগের ক্ষুত্র ভগিনী সম্প্রদার ১, মোট ১৬।

শ্রাদ্ধি—টালাইল উপবিভাগের কর্টায়া ব্রাক্ষসমান্তের সম্পাদক বাব্ হরনাথ বোষ মহাশয়ের পরলোকগতা সহধর্মিনীর শ্রাদ্ধোপলকে গত ৮ই ভাল্র বিশেষ উপাসনাদি হইরাছে। পশুত শিবনাথ শাল্রী মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করেন। হরনাথ বাব্ প্রার্থনা করেন। ঈশ্বর উাহার কন্যাকে শাস্ত্রিতে রাথ্ন এবং পৃথিবীতে তাঁহার স্থানী ও সম্ভানদিগকে সাম্ভনা দান করুন। ইহার জীবনে বেশ ধর্ম ভাব ছিল। তিনি যে ৩টা পুল্র ও একটা কন্যাকে পৃথিবীতে রাথিয়া গিরাছেন,তালারা মারের এই ধর্ম ভাবের অধিকারী হউক। হরনাথ বাব্ আপনারের এই ধর্ম ভাবের অধিকারী হউক। হরনাথ বাব্ আপনার সহধার্মনীর আত্মার তৃপ্তির জন্য তাঁহার নামে সাধারণ ব্যাক্ষসমালের হতে ১০০ টাকা স্থামীকঞ্চেদান করিতে ইচ্ছা করিয়ছেন এবং এখন সাঃ ব্রাঃ সমাজে ও দাতব্য বিভাগে ২ এবং সাধন-আশ্রমে ৫ টাকা দানকরিয়াছেন।

বিগত ১৩ই ভাদ্র সোমবার পরলোকগত নবীন চক্র রার মহাশরের সাধ্বসরিক প্রাদ্ধোপলকে প্রাতে আদ্দ সাধনাপ্রমে তাঁহার পরিবারত্ব আত্মীয় অজন বিশেষ ভাবে ব্রক্ষোপাসনা কবিরাছিলেন। তাঁহার বন্ধু পণ্ডিত শিবনাথ শাল্লী মহাশর আচার্যোর কার্যা করিরাছিলেন।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিক। ।

> ४म जःशा।

১৬শ ভাগ।

১লা আখিন, শনিবার, ১৮১৫ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাংসরিক অগ্রিম মৃল্য ২॥

মফস্বলে
প্রতি খণ্ডের মূল্য প্র

্এ ঘোর শৃষ্থল।

কে বাঁধিল চিতে মোর এ বোর সৃত্ধলে ? ষত ভাবি এবার উঠিব, এবার শাসিয়া মনে প্রতিজ্ঞার বলে: নব ভাবে জীবন গড়িব ! মুদ্ত সংকর কত বাঁধি দৃঢ় করি, কত যুক্তি, কভই মন্ত্ৰণা ; बायदा की रन-नीत शीदा आहा मति. একে একে মিলার করনা। চেয়ে দেখি পড়ে আছি মেই পুরাতনে, সে স্লানতা, সেই সে জড়ভা, (मरे जार्थापिक नीत विहाइ मधान. সেই—সেই—সেই ছর্মলভা। কে বাঁধিল চিতে মোর এবোর শৃত্যলে ? কে রচিল এ বিষম জাল ? কেন মনোর থ-শত যায়গো বিফলে 🤊 ওঠা পড়া রবে কতকাল 🕈 ক্লপা-হন্ত দেও প্রভু, দাঁড়াই সাহসে, হুহুদারি ছিড়িয়া শৃত্যল ; ডুবাই ভাপিত চিত তব প্রেম-রসে, তব বলে হই হে সবল।

## সম্পাদকীয় মন্তব্য।

ব্রাক্মধর্ম সার—একজন ব্রাক্ষ একদিন অপর একজন ব্রাক্ষকে বলিতেছেন—"দেও কোনও লোক যদি স্রোতের জলে নামিরা সেই জলে মাথা ডুবাইরা পাছথানি মাটী হইতে ডোলে, ভাহা হইলে ভাহার কি দশা হয়? উত্তর—"সে স্রোতের বেগে নীত হয়।" প্রায়—"কিন্তু যে ব্যক্তি কঠিন মৃত্তিকাতে শক্ত করিয়া পা ছথানি রাধিরা মাথা ডুবার, ভাহাকে কি স্রোতে ভাসাইরা লইরা যাইতে পারে?" উত্তর—"না, ভাহাকে স্থান-

চ্যুত করিতে পারে না।" তথন প্রথম ব্যক্তি বলিলেন--"ইচা শ্বরণ রাখিও, ভোমরা বে নানাপ্রকার চিন্তা ও ধর্মভাবের त्यारा नामित्त, यनि निरकत्नत्र शास्त्रत कमि विक ना ताथ প্রোতে ভাসিরা হাইবে। অপর ধর্মের প্রতি প্রেম বল, সভাব বল, উদারতা বল, সৰ নিজের জমি ঠিক রাধিয়া।" বিতীয় ব্যক্তি প্রশ্ন করিলেন—"সে জমি কি ? উত্তর—"একমাত্র সভা-শুরূপ প্রমেশ্বকে সাক্ষাৎভাবে আত্মাতে প্রতিষ্ঠিত দেখা व्यवः डीहारक मर्स्साक दान निवा डीहाव मनन हेव्हात अन्यव्ही হওরা। আমরাকি পৌত্তলিককে বলিতে পারি, আমি বাহা ধরিয়াছি তাহা আমার পক্ষে সত্য, ভূমি যাহা ধরিরাছ, তাহা তোমার পক্ষে সভ্য। ঐ পুভূব পুলিরাই ভোষার, মুর্কি। हैग विनाल मिथा। बना हहेरव । मुक्ति आवात कि ? छाँ हारक সাক্ষাংভাবে আত্মাতে পাওরার নামই মৃক্তি। তাহা পুত্ন পুলিরা কিরপে হইবে ? যালাই কর, যতই ঘুরিরা বেড়াও, বতই ছুটাছুটি কর, যতই ইহার বাড়ী, তাহার বাড়ী অম চাথিয়া বেড়াও না কেন, ইহা ভিন্ন মুক্তি নাই। বলিরাছেন—"ভমাত্মতং বেমুপশ্রুন্তি ধীরান্তেষাং শাত্তিং শাস্ব তী নেতরেবাং" তাঁহাকে বাঁহারা আত্মন্থ করিয়া দেখিয়াছেন তাঁহাদেরই মৃক্তি, মুক্তি অক্তের জন্ত নহে। পা রাধিবার এই জমিটুকু হারাইলে চলিবে না। ঈশ্বর আত্মাতে প্রতিষ্ঠিত এই যেমন আহ্মধর্মের একটা সার কথা, তেমনি তাঁহাকে জীবনে সর্ব্বোচ্চ স্থান দিতে হইবে, ইহাও বিতীয় সারক্থা। ঈশ্বরের উপাসক কি পরিমিত দেবতার নিকটে মন্তক অবনত করিতে পারেন? ভাহা হইলে কি ঈখরকে সর্বোচ্চ স্থান হটতে অপস্ত করা চয়না ? একজন বিদেশবাসী লোকের বিষয়ে একপ শুনা গিয়াছে যে, সেব্যক্তি বয়ক্তদিগের ভয়ে স্বদেশাগত স্বীয় বৃদ্ধ পিতাকে গৃহের প্রাচীন ভূত্য বণিয়া পরিচন্ন দিরাছিল। ইহা যেরপ ব্যবহার, যিনি ঈশ্বহকে জানিয়াছেন ও তাঁহার উপাসনা কর্ত্তব্য বলিরা অভুত্তব করিয়াছেন, তাঁহার পক্ষে লোকভরে পৌত্তলিকভাচরণ করাও সেইরূপ ব্যবহার। সে পৌত্তলিকতা ছারা এই কথা বলে "আমি যে ঈশ্বর ঈশ্বর করি আপনার। अनिवादहर्न, (महा किছू नटह मिहा परिकात (थना माळ, जाननाता रवत्रभ चारमभ कतिराजरहन जाहाहै कतिय।" धक्रभ चांहत्रन कि नेयंत्र मदस्य व्यवतार 🐿 याय नटर १ (म. क्रेनावका, छेलावका

নচে তালা মৃত্যুর পূর্বে লকণ, যাহাতে স্তাত্মরপের উপাসনা ও পৌতলিকতাচরণের মধ্যে প্রভেদ দেখে না।

ধর্মের আসল ও নকল—ঢাকা সহরে একবার কয়েকজন ভদ্রলোক একটা রঙ্গভূমি করিয়া অভিনয় করিতে ইচ্ছুক তইলেন। তাঁহাদের নাট্যোলিখিত পুরুষদিগের মধ্যে মহাপুরুষ মহম্মদ একজন ছিলেন। অভিনয়ের দিন বহুসংখ্যক মুসল্মান সভাত্তনে উপন্থিত। অভিনয় চলিতেছে, অবশেষে একজন **महत्राम जाकिय्र। तक्षक्र (ल উপস্থিত इहे(लन। (यहे এहे राका** উচ্চারণ "হজবত মহম্মদ এলেন"—অমনি সিংহগর্জনে হৃতাব দিয়া মুগলমানগণ মার মার করিয়া উঠিল। "কি এত বড় আম্পদ্ধ। ঈশ্বরের প্রেরিত পুরুষের আবার নকল।" তুসুল দ'সা উপস্থিত হইল, মুদলমানদিগকে শাস্ক করাই ভ্লর। অভি-নেতাগণ তৎক্ষণাৎ অভিনয় বন্ধ করিয়া দিলেন: কর্যোডে ক্ষমা প্রার্থনা ও অমুনয় বিনয় করিতে লাগিলেন, তবে তাহারা **শাস্ত** হ্ল। প্রেশ্ন করি, মুসলমানগণ এত উত্তেজিত হ্ইল কেন ? ইহা कि चार्जावक नह ? (र किनियहाँ कि खान निहा में जा मत के दें, যাহার মারণে চিত্তকে উদ্দীপ্ত করে, তোমার মন প্রাণ অগ্নিময় হয়, তোমার আপাদ মন্তক নিষ্ঠা ও শ্রদ্ধাতে পূর্ণ হয়, তুমি কি তাহার নকল দেখিতে পার ? রম্ভূমিতে বারালনাদিগের মধ্যে একজন যদি আচার্য্য সাজিরা আদে, ও যদি আন্ধদিগের উপাদনার নকল কবে, তাহা হইলে কোন আহ্ম আছেন, বঁহার হাদয়ে ব্যথা লাগে না ? তথন ত্রাহ্মগণ কি গ্রণমেন্টের निक्र चार्यक्त कतिया (मक्त प्रक्रिय प्रक्रिय कतिया (क्त ना १ জ্মথবামনে কর, কোনও রঙ্গভূমিতে যদি ঈশ্বর সাজিয়া কেহ আদে ও বলে,—"এই বিখের স্তীকর্তা ঈশ্বর আদিলেন,' তাহা হইলে সেই রক্ত্মির অধিকাংশ লোক বিরক্ত হইয়া সে স্থান পরিত্যাগ করে কি না গোড়া মুদলমানছিগের ভারে প্রহার कतिर्द्ध উদাত ना হ। প्रवायन क्रेन कि ना १ जर्द (मध প্রাণের সঠিত যাঁহাকে শ্রদ্ধা করিতেছ তাহার নকল প্রাণে ্ছ হয় না। কোন প্রেমিক বা প্রেমিকা এরপ আছেন, যিনি ্রাপনার-প্রেমের নকল ব্যিয়া দেখিতে পারেন ?

ইহা বাদ সত্য হয়, তাহা হইলে ধর্মের পবিত্রতা ও আধ্যানিক্তা বহিরা একবার হদয়লম করিয়াছেন, তাঁহারা কি
ব্যান নামে বীভংস আচরণকে বিদয়া দেখিতে পারেন, অথবা
ভাহার প্রশ্রম দিতে পাবেন? আধ্যাত্মিক ধর্মের আত্মাদন
াহাবা পাইয়াছেন, তাঁহারা কি একজন তালিকের কদাচায়
বিশ্বম প্রীতিলাভ করিতে পারেন ? বরং ইহাই কি আভাবিক
াং, বে ধর্মের প্রকাপ অপব্যবহার দেখিলে তাঁহাদের চিত্ত
সোকে গৃংগে মান হইয়া পড়ে? আমরা ইতিবৃত্তে যে সকল
বর্মনাকারেকদের বিসরণ পাঠ করি, মাহারা ধর্মের জক্ত লোকের
হতে নিপাজিত হইয়াছিলেন, তাঁহাদের সকলেরই জ্বলম ধর্মের
মানতা দেশিয়া শোকে নিময় হইয়াছিল। মহায়া যীশুর
অপর একটী নাম ছিল "man of sorrows" শোকার্ক মন্থ্য।
ভাইরে যে জীবনচ্রিত লিখিত হইয়াছে, তাহাতে একত্মানে

তাঁহার অশ্রণতের কথা দেখা যায়, কিছ তিনি যে কথনও ছাল্ল করিয়ছিলেন তাহার কোন নিদর্শন প্রাপ্ত হওয়া যায় না। এইয়প আয়ও অনেক সাধুজনকে সর্বাদা ছাথিত দেখা গিয়াছে। এ ছাথ কি তাঁহাদের নিজের পাপের জল্প না জগতের পাপ তাপের জল্প ? জগতে ধর্মের ছগতি দেখিয়াই তাঁহায়া সর্বাদা ছাথিত থাকিতেন। মহায়া রাজা রামমোহন রায় তাঁহায় প্রছে লিথিয়া রাথিয়াছেন যে এদেশীয় ধর্মের ছয়বল্বা দেথিয়া তিনি ছাথিত হইয়া প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলেন যে, তাহায় সংস্কারে প্রাণ মন সমর্পণ করিবেন। ধর্মের বিক্বত ভাব দেথিয়া সাধুদিগের চিত্তে এতই ছাথ হয়। তথন যে ব্যক্তি একবার ধর্মের পবিত্রতায় ও আধ্যাত্মিক তার আভাদন পাইয়াছেন, তিনি কিয়পে ধর্মের নামে অধর্মের আচয়ণ দেথিয়া আনস্বিত হইতে পারেন, ভাহা আমাদের বুদ্ধির জগস্য।

বল্মীক মিৃব পুত্তিকাঃ—প্রাচীন শাল্লে উপদেশ আছে:—

"ধর্মংশটনঃ স্ঞ্সুয়াৎ বল্মীক্ষিব পুত্তিকঃ''।

অথ- পুত্তিকারা যে প্রকার ধীরে ধীরে বন্ধীক নিশ্মাণ करता त्महे क्राल धर्मारक भटेनः भटेनः मध्य कांत्रस्य । धर्मा भस्य এখানে চরিত্রকে মনে করিতে হইবে🔊। প্রিকাদিগের বন্মীক নিশাণের ভার চরিত্র-সংগঠন 🚁 বি👡 কাল ও সহিস্তৃত। সাপেক। মানব চরিত্র অতি ধীপুলির ৩ আছি হুইয়া থাকে। লোচক্র দাস বিবাহে হানয় পরিবর্ত্তন এক দিনে ঘটিতে ৯ বি ১ বি বু বানের একটা উক্তিতে একজন পাপাসক ব্যাক্তর মুখ পাপের দিক হইতে পুণ্যের দিকে ফিরিতে পারে। কিন্তু সেই পরিবর্তিত হাদরকে চির্দিন পুণোর পথে প্লাভিষ্টিত রাখা, সমুদায় প্রাচীন অভ্যাসকে পরিবভিত করিয়া প্রত্যেক চিন্তা ও কাষ্যকে পরিশুদ্ধ করিয়া তোলা, তাহা পুত্তিকাদিগের বল্মাক নির্মাণের স্থায় শ্রম ও অধ্যবসায় সাপেক্ষ। দিনের পর দিন যাহতেছে কিছু কিছু छान मंभिष्ठ इरेटिह, ज्ञान मत्नत्र मास्क विकाम इरएएह, হস্তবর একটার পর আরে একটা সংকার্য্যে নিযুক্ত হইতেছে, স্দ্রের সাধুভাব বৃদ্ধিত **২হতেছে, ঈশরের প্রতিবিশাস ও** in र्व विश्व इटेंटिंग्ड मानव हात्रव धहकाल गठि**उ इत्र।** কেবল তাহা নছে। পুতিকার। যথন বলাক নিশাণ করে বা গৃহ নিশাতা যথন অট্যালিকা নিশাণ করে, তথন দেখিতে পारे (य, नियार्गाभाषा) ज्ञान अकवात विश्लीकृष्ठ रहाल. जवर निमा(गार्थाणी मामधी अक्वाब मः गृशीं इहान, छाशाम्ब কার্য্য অবাধে চলিতে থকে। কোনও আকম্মিক দৈব ছাক্র-भाक खेभाइक ना रहेल, छाहरमत कारपात कही ध्रहना। किंद চরিত্র-গঠনরূপ কাথ্যে প্রতি পদেই সংগ্রাম 🕻 ভাছার প্রত্যেক উপকরণ গুরুতর সংগ্রামের পর লাভ ক্রিতে হয়; দারিজ্যের সহিত সংগ্রাম, রোগ শোকাদির সহিত সংগ্রাম, অতিকৃশ ঘটনা সকলের সহিত সংগ্রাম, চতুর্দিকের 🕻 লাকের জড়তা ও বিকল্পভাবের সহিত সংগ্রাম, এইরূপ সংগ্রাম্ঞ্রীনরভার চলিতে থাকে। ইহার উপরে আবার প্রাচীন অভ্যাস 🚓 হুলভাবে নবীনকে নিরভন্ন বাধা দিতে থকে। প্রভন্নং চরিত্র প্রভন্ন কার্য্যে

বাঁহারা ব্রক্তী চন তাঁহাদিগকে পুত্তিকাদিগের অংশক্ষাও থৈয়শীল চইতে চয়। ইহা দেখিরাই উপনিষদকার মহর্ষি বলিযাছেন "নায়মাত্মা বলহীনে ন লভাঃ;" এই পরমাত্মা বলহীন
বাক্তির লভা নহেন। চরিত্র গঠন ভূর্বলচেভা ব্যক্তির কর্মা
নহে। আত্ম-শাসন ও আত্ম-সংখ্যের স্বারাই স্থীগণ এই
মহৎ বিষয়ে কভকার্যা হইয়া থাকেন।

বহির্থীন সাধন-মনোহর স্বর সংযোগে সংগীত कीर्जन এवर ऋगीन जावाय धर्मगाथा जेशांत्रनामि इरेट्टाइ, ভাবোচ্ছাসে সকলের হৃদরই বিগলিত, এই অবস্থা ভি. ব আদিয়া অনেক কঠিন প্রাণও বিগলিত হয়; ডফ ফল্যে ে'নেব धात्रा श्रवाबिक इटेटक थाटक। किन्न स्वटे स्प्रेस निर्मा अपिक नी मः शीख 😉 वीनाध्वनि नीवव रहेन, छेपाननाट्याव न प्य 🖫 ছানে গমন করিলেন, তখন প্রাণ পূর্ববিৎ শুক্তা। এনা দেয় ছটতে লাগিল। এতখার। ইহাই প্রমাণ্হয় ে, ংগীত ও বক্তার মনোমুগ্ধকারী শক্তিতেই কিয়ৎকালের ঘন্ত 🤇 🕮 উচ্চাস হইয়া থাকে। বিবিধ স্থালিত বালাগিলি 📜 🗟 ীত ও উদ্দীপনা পূর্ণ বক্তা শ্রবণ করিলে, সকলের ৩৯.১ ই আ -জ্বের সঞ্চার হয়। আবার সেই সংগীত ও বজুতা ব.দ ধর্ন-সম্মীয় হয়, তবে ধর্মপথের যাত্রীগণ বে ভাছাতে যেদিবান করিরা সরসভা লাভ করিবেন, তাহার সন্দেহ কি আছে? কিন্ত পরীক্ষায় দেখা গিয়াছে, এইরূপ সময় সময় দশজনের সহিত মিণিত হইয়া, সংগীত ও সংকীর্তনের ছারা প্রাণে যে ভাব সঞ্চারিত হর, তাহা অতি অস্থারী। এরপ উপায়ে পরমেশবের সহিত আত্মার সাক্ষাৎ যোগ স্থাপিত হয় না। এমন কি সময় সময় কীর্ত্তন ও বক্তার দ্বাল অপকারও হট্যা থাকে। প্রাণ এমনি বহিমুথী হইয়া পড়ে যে, তাহাকে গৃহে লইয়াযাওয়া कठिन रहा।

পরমেশ্বরের সহিত মানবাত্মার যোগই উপাসনা।
শাস্ত সমাহিত না চইলে আত্মোপলির হর না, আত্মোপলির
না ছইলে আত্মা ও পরমাত্মার যোগ অক্স্ভূত হইতে পারে না।
মৃদক্ষ করতালের ধ্বনিতে সাধকের প্রাণ নৃত্য করিয়া উঠিল,
বাহিরেও নৃত্য আরম্ভ হইল; আমি কে, পরমেশ্বরের স্থরেপ কি,
জগত কি বস্তু এ সকল আধ্যাত্মিক তন্ত ভূলিয়া গিয়া কিয়ৎপরিমাণে শারীরিক উত্তেজনা এবং কিয়ৎপরিমাণে সঙ্গগুণ
মন উত্তেজিত হইল। তথন প্রাণের ভিতর দৃষ্টি করিলে,
তিনি দেখিতে পাইবেন, যাহাকে পাইবার অভ্য কীর্ত্রন,
নৃত্য, অপ্রাজলপাত হইতেছে, সেই চিন্ময় দেবতা প্রাণের
মধ্যে নাই, প্রাণ শৃত্য শাশানবং। তথন সাধক ব্রিতে পারেন,
নৃত্য কীর্ত্তন সকলই বিফল। যাহার জন্ম এত আয়েয়লন, কার্য্য
কালে যদি তাঁহাকে ভূলিয়া যাই, তবে ওপথে না যাওয়াই

বাস্ত বিক সমবেত উপাসনা, কীর্ত্তন, বক্তা, প্রবণ, এক অবস্থাতে সাধনের সহায়, অপর দিকে আত্ম দৃষ্টি বিহীনের সক্ষে এই সকল উপায় আত্মাকে ঈশ্বর হইতে বিচ্যুত করিয়া বিয়া সাধকের প্রাণকেশ্ব করিয়া কেলে। এ সকল উপায় দীর্ঘকালের অবলখনীর না হইলেও সমর সময় উপকারক, ইহাতে সাধকের ঈশ্বর লাভের ইচ্ছাকে জাগ্রত করিরা দের। কিন্তু জাঁহাকে লাভ করিতে হইলে প্রাণের গভীরতম প্রদেশে প্রবেশ করিতে হইবে! নির্জনে আত্মচিন্তা, পাঠ, ধ্যান ইত্যাদি বারা প্রাণ যেমন অন্তমুখীন হইবে, কীর্তনে যোগদান করিরা কোলাহলে প্রমন্ত হইরা তেমন ফললাভ করিতে কেহ সমর্থ হইবেন না।

বর্তমান সমরে উচ্চ কীর্ত্তন, নৃত্য, অঞ্পাত ইত্যাদি সরস উপায়নার লক্ষণ বলিরা অনেক ছলে বর্ণিত হইরা থাকে। কিয় পরীমার সময় দেখা গিরাছে, যাঁহারা জীবনে কেবল ঐরপ সরম উপায়না ভোগ করিয়া আসিতেছেন, তাঁহারা সামান্ত সাম ত প্রালাতনের হতে আত্মরক্ষা করিছে সমর্থ নহেন। অত্রব বাহিলের আরোজনের দিকে মনোযোগ প্রদান না করিয়ে অস্তর হাত্যে প্রবেশ করিতে হইবে। অস্তরে প্রবিষ্ট না হইনে চিনার প্রমাত্মার সহিত ঘনিই যোগ অসম্ভব।

স্বার্থ-গশৈই ধর্মের শক্তি—দান প্রেমের অহরপ।
বিহার প্রতি বতাকু এনে, ভাহাকে ভভটুকু দান করা যায়।
ভূলাকে একথানা সামাস্ত এর দিয়াই প্রচুর দেওরা হইল মনে
করা যাল; স্বান্থান উপকারের জন্ত কিঞ্ছিৎ অর্থ দান করিয়াই
প্রিভুট হওরা যাল।

বর্মসা সম্বন্ধেও ঐকপ নিরম। বাঁহার প্রেম ব্রচ্টুকু, তাঁহার দান ততটুকু। ঈশ্বর ও ধর্মের প্রতি বাঁহাদের হৃদ্যের প্রেম নাই তাঁহার৷ আমোদ প্রমোদে ধন ও শক্তি কর করেন কিন্তু ধর্ম্মেন্দেশে কিছুমাত্র স্বার্থ হানি করিতে প্রস্তুত নহেন। আবায় অন্য অন্য ব্যক্তি ধর্মদমালকে একটুকু ভালচকে দেখেন-এবং অন্যের উপকারার্থ অমুগ্রছ অরুপ কিঞ্চিৎ অর্থ দানও করিয়া গাকেন। কিন্তু যিনি যথার্থ ঈশ্বর-বিশ্বাসী, বাঁহার হুদ্যের সমগ্র প্রীতি ঈশ্বরের প্রতি অর্পিত হইয়াছে, তাঁহার ভাব অন্যরূপ। ধর্মের জন্য অর্থ দান করাত তুচ্ছ-ইহাত উছোর ধর্মজীবনের স্চনাতেই হয়। যে দিন ঈশ্বর করুণার বায়ু ठाँहात প্রাণে লাগিয়াছে, দেই দিন দরিন্দ্রতাকে জীবনের ভূষণ করিয়াছেন। ধন, জন, জীবন যৌবন যথাস্কাম্ব প্রভুর চরণে नियाहे ज्थि। छेनास्म, वन धारतारा कथन । मान हन्न ना-যাহার প্রাণ যায়, সে পৃথিবীর নিষেধ না মানিয়া পতকের ন্যায় আপনার জীবন যৌবন ধন জন সকল প্রভুর প্রেমানলে আছতি দিতে পারে। ইহা কি স্বপ্ন-বৃদ্ধ, চৈতন্য, যীশু কি ইহার সাকী নছেন। কত বিশ্বাসী, সাধুর জীবনে এই আত্মেৎসর্গের জীবস্ত मृष्टोख (मिथ्ट পाश्रमा यात्र। विश्वाभी कौरानत कथा श्रूगाक्या। আজ একটা বিখাদী জীবনের কথা বলিয়া আমাদের বক্তব্য শেষ করিব।

সমাট থিওডিরাসের সম্ম, এন্টনিকাস্নামক একজন রাজ-বংশীর সমাস্ত পুরুষ রোগনগরে বাস করিছেন। তিনি ধনগৌরবে রাজ্যের মধ্যে সক্ষপ্রেষ্ঠ স্থান অধিকার করিরাছিলেন। তিনি ইউফ্রিসিরা নামী একটা উচ্চ বংশীয়া মহিলার পাণিগ্রহণ করেন। এই কম্পতি অতি ধর্মপরায়ণ ছিলেন। অল্লিম পরে ইহাদের একটা কন্যা জ্মগ্রহণ করে,ভাহার ও নাম ইউফ্রিসিরা রাখা হয়। তৎপর ইহারা উভয়ের জীবন ধর্মের পরি-চর্য্যার সমর্পণ করিবেন বলিরা সংকর করিলেন। এক বৎসরের মধ্যে এণ্টনিরাদের মৃত্যু হয়। ইউফ্রিসিরার বরস তথন অধিক হয় নাই। রূপে গুণে, কুলে ও এখর্যো ভিনি স্থোমে শ্রেষ্ঠ ভানীয়া ছিলেন। অনেক সম্ভান্ত বাজপুরুষ ভাঁচার পুনর্বিবারের প্রস্তাব করিয়া বিরক্ত করিতে লাগিল। তিনি রোম পরিত্যাগ করিয়া মিসর দেশে চলিয়া গেলেন। তাঁছার অৱ বয়স্কা কন্যা সঙ্গে ছিল। মিসর দেশে তাঁচার বিস্তৃত अभिनाती हिन। उँ होता (कान धर्माक्षरमत निकृष्ठे बाहेना বাস করিতে লাগিলেন। সেই ধর্মাশ্রমে তিনি আপন কন্যাকে লইয়া সর্বাদা যাতায়াত করিতেন। কিয়ৎকাল পরে ইউফিসিয়া সেই আশ্রমের তত্ত্বিধারিকাকে আপনার সমুদার সম্পতি দানের প্রস্তাব করিলেন। তত্ত্বাবধায়িকা বলিলেন "আমরা এই পৃথিবীর ধন দিয়া কি করিব, আমরা অর্গের ধন ডিক্ষা করি।" ইউফিসিয়া ধনের সংব্যবহার করিতে না পারিয়া বড় ছঃখিত হইলেন। অনেক অফুনর বিনরের পর সেই তত্ত্বধারিকা বলিলেন-- "উপাসনা গুছের আলোর জন্য কিঞিৎ দান কবিতে পার।" ইহা শুনিয়া তিনি কুতার্থ হইলেন।

একদিন ধর্মাশ্রম হইতে ফিরিরা আসিয়া কলা মাতাকে विलन---"मा, जामात जीवन धर्मात श्रीत्वर्गात् क्रेश्वत সেবায় অর্পণ করিব---আর বিবাহ করিব না।" মাতা একমাত্র ক্ম্যার এই কথা শুনিয়া ছঃখিত না হইয়া আনন্দে ক্রেলন করিতে লাগিলেন। তাঁহার অন্ধের যষ্টি একমাত্র কলাকে ধর্মাশ্রমে তত্তাবধায়িকার হত্তে অপুণ করিয়া শেষ উপদেশ দিলেন—''ঈশারকে ভয় করিয়া চলিও. আশ্রমবাসীদের বাধ্য থাকিও---ন্সার ভূমি যে রাজবংশ হইতে উৎপন্ন, এবং অভূল ঐশ্বর্য্যের অধিকারিণী তাহা কথনও মনে রাথিও না : " অল্লদন পরে জননীর মৃত্যু হইলে রোমের সম্রাট বালিকার অভিভাবক হটলেন: সম্রাট কুমারীকে লইরা বাইবার জন্ত ত্থেরণ করিলেন এবং একজন উচ্চবংশীয় পুরুষের সঙ্গে তাঁচার বিবাহ ভির করিলেন। রাজা বাব বার অনু-রোধ করিয়া পাঠাইলেন, "ভূমি আসিয়া পৈত্রিক অভুল সম্পত্তির অধিকারিণী হও ও বিবাহ করিয়া স্থী হও। ইউফিসিরা লিখিয়া পাঠাইলেন, "সকল সম্পত্তি বিক্রন্ত করিয়া দরিদ্রদিগকে দান করুন। আমি ঈশ্বরের কার্ব্যে জীবন অর্পণ করিরাছি-আমি আর বিবাচ করিব না। আপেনি ও রাণী উভরে আমার জন্ম প্রার্থনা কবিবেন—বেন আমি প্রভুর উপযুক্ত দাসী হইডে পারি।" এই পত্র পাইয়া রাজা ও সভাস্থ সকল লোক অঞ্-পাত করিতে লাগিলেন ও পত্রামুঘারী কার্য্য করিলেন।

ইউফুনিরা প্রভ্ব চরণে কি দিরাছিলেন ? প্রথম ধন দানের জন্ত আকাজ্ঞা। ধন তৃষ্টে—কেচ. তাঁহার ধনকে প্রচণ করিল না। ছিন্তীর দান আত্মজীবন সমর্পণ। তাঁহার আর কি প্রির ছিল? একমাত্র কক্সা—তাঁহাকেও আনন্দের সহিও ঈশবের সেবার দিয়াছিলেন। মহাত্মা যীশু মানব-হৃদয়ে এই স্বার্থনাশের ভাব উদীপ্ত করিতে পারিরাছিলেন বলিয়াই জগভে জরমুক্ত হইরাছেন।

ব্ৰাহ্ম বালক বালিকা---আমরা ত্রান্ধ বলেকদিগের নীতি সম্বন্ধে গভবারে কিছু বলিয়াছিলাম। দেখিয়া সুখী ट्रेताहि (य, त्र पिष्क बाक्षवक्षपिश्वत काहात । काहात । আরুষ্ট হইরাছে। ভাঁহারা অমুভব করিতেছেন যে, এ বিষয়ে ত্বরার একটা উপার বিধান করা কর্তব্য। স্থপের বিষয়, করেক বংসর হইতে সাধারণ আক্ষসমাজের স্ভ্যগণের দৃষ্টি এ বিষয়ে कार्यानिकीहक जड़ा करत्रक वरमन च्याकृष्ठे हहेब्राष्ट्र । ছইতে ব্রাহ্ম বালিকাদিগের শিক্ষার্থে একটা বিদ্যালয় ও একটা বোর্ডিং স্থাপন করিরা চালাইরা আসিতেছেন। এবং বিগত বর্ষের প্রারম্ভ হইতে উক্ত সমান্তের কভিপয় সভ্যের প্রায়ত্ম বালকদিগের জন্ত একটা বোর্ডিং স্থাপিত চইরা চলিয়া আসিতেছে। এক প্রকার বলিতে গেলে কার্যোর ভিত্তি স্থাপিত হইরাছে। একণে ত্রাহ্মবন্ধুগণ মনে করিলে এই গুলির বিশেষ উন্নতি সাধন করিতে পারেন। আপাততঃ একটা কারণে উক্ত বিদ্যাহার ও বোর্ডিংগুলির দ্বারা সর্বশ্রেণীর আহ্ম-গণের সমান উপকার হইতেছে না। বালিকা বোর্ডিংএ মাসিক ৯॥০ টাকাও বালক বোডিংএ ১২ ্টাকা ফী ধাৰ্য্য কল চই-ষাছে। ইহাতেও ব্যয় সংক্লান হইতেছে না। সহরে বোর্ডিং-গুলি রাখিয়া ইহা অপেকাকম ফী লইরা কোন মতেই কার্য্য চালাইবার উপায় নাই। অথচ প্রত্যেক কল্পার জন্ম সর্বভেদ মাসিক ১৪। ১৫ টাকা বায় করিতে পারেন, বা প্রত্যেক বালকের জন্ম মাসিক ১৮। ১৯ টাকা দিতে পারেন একপ আন্ধ-शृहाइत्रहे वा मःथा। कछ। बाक्षमित्रत्र व्यभिकाः नहे मित्रमः ; সামাঞ্চরপ আরের ছারা কোনও প্রকারে সংসার্থতে৷ নির্পাচ করিয়া থাকেন। অথচ প্রতি ব্রাহ্মগৃহেই পুত্র ক্সার সংখ্যা मिन मिन विद्वित इटेटलाइ। देशामात्र खानामकात्र, मर्त्याभति ধর্ম ও নীতিশিক্ষার, সতুপায় বিধান করা সমাজের পকে নিতান্ত कर्खना। এই जन्न हे न्यां जनक हहेग्रा नाम कता। याञ्च धका একা সকল কাজ করিয়া উঠিতে পারে না, একাএকা সকলদিকে मतायां श हहे एक भारत ना अहे अनाहे नमाय । याहा एकामात আমার পক্ষে করা কট্টসাধ্য ভাহা দশব্দনের সমবেত শক্তির ঘারা করা অপেক্ষাক্বত সহজ। এই জন্ত বিদ্যালয়াদি স্থাপন। ঈশ্বর-কুপার যাঁহালের অবস্থা অপেকাক্তত ভাল, তাঁহালের এরপ কার্য্যে সহারতা করা অতীব কর্ত্তব্য। ক্রুড্রভার সহিত আমরা শীকার করিতেছি যে, ত্রান্ধবন্ধদিগের অনেকে সহায়তা করাতেই কার্যাগুলি এখনও চলিরাছে। কিন্তু তাহাদের বর্তমান অবস্থাতে चामात्मत मच्छे थाका कर्खना सम्र। याद्याटक এই मकल देशात्म आमारमञ्जू छांदी दश्मीयमिरशन मिक्नात बाखितक खेन्नि रुन, এবং যাহাতে ভাহাদের মনে ধর্মামি প্রজ্বিত হয়, সে বিষয়ে সর্বাদা দৃষ্টি রাখিতে হইবে।

কেছ কেছ অনুভব করিতেছেন, যে বোর্ডিংগুলি সহর হইতে বাহির করিয়া লইয়া যাওরা কর্ত্তব্য। তাহাতে বিবিধ উপকার লাভের সন্তাবনা—প্রথমতঃ সহরের বাহিরে গোলে অন্ন ব্যয়ে ধরচ পত্র চালাইতে পারা যায়, স্কুতরাং ছাত্র ছাত্রীদিগের ফী ক্মাইরা দিরা সর্ক্সেণীর ব্রাহ্মগণের উপকার সাধন করা যাইতে পারে। ছিতীয়তঃ সহরের

বাহিরে থাকিলে বালক বালিকার পান্য অপেকাকৃত ভাল থাকিতে পারে। ভাষারা প্রকৃতি মাতার অধিকতর নিষ্টে शंकिए शास, मोहियात थ शिनवात वह विदीर्ग मार्ट शाहिए পারে, দৈহিক প্রম্যাধ্য কার্য্যের অভ্যাস করিতে পারে। সকলে এই সকলের অনেক বাবাত চইতেছে। তৃতীয়ত: সহরে মারুবের জীবনের মধ্যে ক্রত্রিমতা ও স্বার্থপরতা অনেক পরিমাণে প্রবিষ্ট क्षेत्री थाटक। धार्थास जीवरमत्र वाद्य क्षांव ভारवत्र मिरक মাফুবের অধিক দৃষ্টি পড়ে; স্কুতরাং সহরের ন্যার স্থান হৃদরের क्षिमन । अत्रम श्वनारनीत विकारमत शक्क व्यक्त महा। ব্রাহ্মগণের অধিকাংশের সাংসারিক অবস্থা বেরূপ হীন্ ভাছাতে ভালাদের সন্তানগণকে সলরের বাব্গিরিভে বন্ধিত করিলে ভবিবাতে বোর অনর্থ উপস্থিত চইবে। জীবনযাতা নির্বাহ করা অতীব ব্যরসাধা চইয়া উঠিবে। সূতরাং ব্রাহ্ম যুবকগণ আর বিবাচ করিতে সাহসী। ছইনে না। বহুসংখ্যক যুবক যুবতী শবিবাহিত পাকিয়। বাইবে; অথচ ভাহাদের অভ্যানপ্রাপ্ত সামগ্রী যোগাইতে পিতা মাতার মহা ভারবোধ হইতে থাকিবে। তৎপরে চিন্তা করিতে হইবে, অবিবাহিত কন্যাদিগের ভরণ পোষণের উপার বিধান করিয়া যাওয়া কত জন ব্রাহ্মগুরুত্বের সাধ্যারত। ভবিষ্যতের এই সকল অনর্থ পরিহার করিবার कना बाक्ष वानक वानिकानिशतक यशानाधा निहिक खार्य, बहा বারে, অভ্যন্ত করা ভাল। প্রাকৃতিয়াভার যত নিকটে রাখিতে পারা যার ডতই ভাল। বিস্তীর্ণ মাঠ, স্বহস্তাব্দিত উদ্যান ও चनीन जाकात्मत्र मत्था विश्वेष्ठ हरेता छाहात्मत्र रेपहिक छ আধ্যাত্মিক সর্কবিধ কল্যাণ ছইবার সম্ভাবনা।

অপর দিকে সহরে বাসের সপক্ষেও বলিবার আছে। গ্রান্ধ-समास्क्रित यं उ दौरान धौरान कार्या वर्ष वर्ष महत्त्र। यं कि इ मलामभिक्ति मभूमत्र महत्त्र। यमि वानक वानिकारक अहे मकन करेल पृत्त ताथी यात्र, जाहा हरेला, नभाव हरेल जाहाता त्य শিক্ষালাভ করিতে পারিত তাহার ব্যাঘাত হইবে: সুম্বিখাসী দিপের সংস্পর্কানত যে লাভ চইতে পারিত তাছা আরু হইবে মা। বিতীরতঃ বোর্ডিংগুলি সহরে থাকাতে সকলের চক্ষের উপরে রহিরাছে, ভাল মন্দ্র যাহা ঘটিতেছে, তৎক্ষণাৎ লোকের हरक পेफ्रिएहरू, धवर (यथान मर्माधन व्यवश्चक मरामाधन করা যাইতেছে। ভদ্তির যথনি কোনও প্রকার বিশেষ সাভাষ্য আবশ্রক হইতেছে তথনি খানীর ব্রাহ্ম-মগুণীর সহারতা পাওয়া याहेरछह । पृत्त शाल डेक डेख्त स्विधा शाखता वाहेरव ना। धहेकार फेछन मिरक है छावियात आह्य। याहा इकेक प्रतान এই নিষয়ে ত্রাহ্মদিগের একটা পরামর্শ সভা (conference) ছ ওরা আবশ্রক। আগামী মাধোৎসব হইতে বাহাতে এগুলির বিশেষ উন্নতি করিতে পারা যায় এখন হইতে তাহার আরোজন कहा कर्सना ।

# দম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### অভ্যাস-শৃত্থল।

আভাবের শক্তি যদি কেছ জানিতে চান তবে তাঁহাকে আর অধিক দ্রে যাইতে হইবে না। মানবের গতিক্রিরার প্রতি লক্ষ্য করিলেই দেখিতে পাইবেন। কতনার পড়িরা, কত আঘাত পাইরা, কত ব্যথা পাইরা একটী শিশুকে হাতিতে শিখিতে হর, তাহা আময়া সকলে অবপত আছি। বালক যথম নিজ পিতার প্রালণে পাদচারণা করিতে আরম্ভ করে, তথন তাহাকে কত সন্তর্পণে, কত সাবধানে চলিতে হর। প্রত্যেক পদবিক্রেপে পড়িবার ভরে টল টল করিতে থাকে। দেখিলেই বোধ হর সেই পাল্চারণা কার্য্যে তাহাকে সমুলার মনটা দিতে ইতেছে। কিন্তু একবার চিন্তা ক্রিরা দেখ, অভ্যাসের শ্রণে সেই কার্যেই কালে কিরূপ আভাবিক ও আনারাস-সাধ্য হইরা যার। কেবল তাহা নহে তাহা কিরূপ প্রীতিপ্রাল চইরা থাকে।

অভ্যাদের গুণ এট যে, ইহাতে কার্যাঞ্চনিত প্রমের অন্নতা করে অথচ কার্যাপ্রবৃদ্ধিকে বর্দ্ধিত করে। ইহার উপরে যদি তৎ তৎ কার্য্যের সঙ্গে সুথের যোগ থাকে, যদি তন্ধারা কোন দৈহিক বা মানসিক আনন্দ লাভ করা যার, তাহা হইলে অভ্যাসগুণে সেই কার্যা-প্রবৃত্তি চিত্তে অতিশর প্রবল হয়। এক জন যদি প্রাতঃসঞ্জনের নিরম করেন, তাচা চ্টলে দেখা বার, প্রতিদিন প্রাতঃকাল হইবামাত্রই তাঁহার মনে বছির্পমনের প্রবৃত্তি স্বভাবতঃ প্রবল হয়। প্রাতঃকালের বিশুদ্ধ বায়ু সেবনের যে মুধ, সেই স্থান স্মৃতি অজ্ঞাতসারে তাঁছার চিত্তকে আকৃষ্ট করিতে থাকে। যদি পল্লীর মধ্যন্থলে একথানি বার্দেবিত, স্থকর-মাসনবিশিষ্ট, প্লোদ্যান-মধ্যন্থিত ও সাধারণের ব্যব-হারোপযোগী গৃহ নির্মাণ করিয়া রাখ, দেখিবে সারংকালে একটা ছইটা করিরা পল্লার লোক প্রতিদিন সেধানে আসিরা বসি-তেছে। ইহার কারণ কি ? সেই স্থানটীর সুধকরতাই ভারার লোভনীয়তার কারণ। নিত্য সেই সুখ ভোগ করিয়া লোকের তাহা অভ্যাসত্যাপ্ত হইয়া যায়। নিভাই সেই স্থাৎয় স্মৃতি লোকের মনকে অক্তাতগারে আকৃষ্ট করে। এই যে গুপ্ত স্থ্ লালসা ইছা মানব মনে অভি নিপ্টভাবে কার্য্য করে। যে वाक्तित व्यस्ततः हेश धाविहे इरेन्ना शांक मिरे वाक्ति व्यसक ममस्त ইহাকে লক্ষ্য করিতে পারে না; সে এক আরু প্রকৃতির বণী-ভূত হইরা কার্য্য করে। এই কারণেই পঞ্জিতগণ ইহাকে মোহ শবে অভিহিত করিয়াছেন এবং ইহাকে সকল পাপের নিদান বলিরা নির্দেশ করিরাছেন। বস্তুতঃ স্ক্রেরপে বিবেচনা করিব। पिथित मृहे हहेरव य साह हहेरा न्यूपांत भारतत छे९ निख **इत्र । त्यादक धारे पूथ-मामगु बादा व्याकृ**हे इहेन्रा यथन कान छ নিবিদ্ধ ক্ষুথের দিকে থাবিত হয় তথন আত্ম-সংব্রুণে জনমর্থ হইলেই পাপে পতিত হয়।

সকল, পাপের মূলেই এই স্থ্যালসা দৃষ্ট হইবে। এরেণ ঘটনা অনেক্বার ঘটরাছে এবং প্রতিবিদ ঘটতেছে, যে শভ শভ সান্ব কোনও কার্যবিশেবের অনিষ্ট্রতারিতা অনুভব করিয়াও তাহার হস্ত হইতে নিফুতি লাভ করিতে পারিতেছে না। বার বার অঞ্তাপ করিতেছে, বার বার প্রতিক্ষা করি-তেছে, বার বার নিজ্জিলাভের উপার চিস্তা করিভেছে, অবচ পতল যেমন জলস্ত জনল মধ্যে পতিত হয়, নেইরপে বার বার সেই পাপাগ্নির মধ্যে পতিত হইতেছে। এক ব্যক্তি অভিশন্ন অ্রাসক; এই অ্রাসজি নিবন্ধন তাহার গৃহে শাস্তি নাই; न्तीरत चाका नाहे ; लाकनमारक नचम नाहे ; हेहातहे कछ সে সর্কান্ত হইয়াছে; পরিবার পরিজনকে পথের ভিক্ষুক করি-श्नां इं, वानक वानिकानिशत्क भिकाविशीन त्राधिशादहः, जाहादक একদিন অফুকৃণ মুহুর্ত্তে ধরা গেল, ও তাহার অবস্থা তাহার নিষ্ট উচ্ছল ভাষাতে চিত্রিভ ষরা গেল। শুনিভে শুনিভে ভাহার চক্ষে জল পড়িতে লাগিল; সে অকুত্রিম ভাবেই অনু-ভাপিত হইল; আর স্থাপান করিবে না বলিয়া প্রতিজ্ঞা করিল। সকলে মনে করিলাম লোকটা বুঝি এইবার ছইডে ভধরাইরা গেল। কিন্ত কি পরিতাপের বিষয়। করেক দিন পরে শুনি সে পুনরার পুরাতন বন্ধুদিপের সহিত সন্মিলিত হইরাছে अवः भागात स्त्रांभव्य भिष्ठाहि। त्मरे छेत्रामिनी स्त्रांत्र मूर्डि সে আবার যথন দর্শন করিল তথন আর সে আপনাকে রক্ষা कतिएक भातिम ना। निविहेिहाएक हेहात मध्य धाविहे हहेता पिथित कि पिथा यात ? आमत्रा पिथिए शाहे टाक्ट यूथ-দাশসাই তাহার পতনের ছেড়। স্থরাপান করিলে একপ্রকার সায়বীয় উত্তেপনা হইয়া থাকে, তাহা সুধপ্রদ। এই উত্তেপনার च्छ ख्वाभाषीत मन्न भाष्ट्रका थाटक। यथनि तम ख्वात मृर्डि मर्नन करव, ७थीन रमहे चुछि व्यस्त बागिया छैर्छ धवः रमहे मिटक हिटलंब व्यवन चाकर्यन इत्र। धहे व्यवनाख्या मूहूर्ड আত্ম-সংযমের শক্তির অভাবে, মানুষ পতিত হইয়া যায়। কোনও প্রকার পাপ অভ্যাসপ্রাপ্ত হইলে এই দশা ঘটিয়া থাকে ষে তাহাকে বাধা দিবার শক্তি হ্রাস হইরা যার:।

কলিকাতার কোনও ভবনে করেক জন উৎসাহী ও ধর্মামুরাগী যুবক বাস করিতেন। সেই ভবনেই একটী ঘরে একজন অধিক বয়স্ক ব্যক্তি ছিলেন। ঐ বর্ষীয়ান ব্যক্তি আচারে ব্যবস্থারে অতিশয় ভদ্র ছিলেন এবং ঐ যুবক দলকে স্নেহ করিতেন। কিন্তু তিনি ছক্মিয়ারিত ছিলেন। তাহার বুদ্ধ ৰন্নদে ঐক্লপ আচরণ দেখিরা ব্যক্গণ অতিশ্র তঃখিত হইতেন। একদিন यूवकशन পরামর্শ করিয়া সেই বয়োর্ছকে কিঞিৎ নীতির উপদেশ দেওরা আবশ্রক বলিরা দ্বির করিলেন। যুবকদিগের মধ্যে একজন অপর সকলের মুধ-পাত্র স্থরূপ হইয়া এক দিন একাল্ডে সেই বরোবৃদ্ধকে অনেক অফুযোগ कतिरान धारा छाठात हतिराज्य मराभारानव सम् असूरताध করিলেন। যুবকগণ আশকা করিরাছিলেন, যুবকলিগের মুথে প্রতিবাদ শুনিয়া তিনি চটিয়া যুাইবেল এবং তাঁহাদিগকে অনেক তিরস্বার করিবেন। কিন্তু ঐ ববীয়ান ব্যক্তি ভাছার কিছুই করিলেন না। তিনি অতিশর বিনরের সহিত আপনার অপ-রাধ খীকার করিয়া বলিলেন "ভোমরা যাহা বলিভেছ ভাহা সকলি সত্য, আমি ও কতবার মনে করি এসকল পথ পরি-ভ্যাপ করিব কিন্তু পারি কৈ?" "পারি কৈ"-এই ভ্যানক

क्थो । मासूरवत्र मस्म वर्णकण बरवत्र बामा धारक, वर्णकृत रम मस्म करत दा छाहात भव्य छाहारक वित्रवसी कतिता प्रांपिरक शांत्रियमा, নে ঈশ্বর-ক্রপাতে আপনার প্রবৃত্তি কুলকে সংবত করিরা ধর্মের कृषिण छेब्रिटिं के किया, कक्षण कारात स्थापत वन थारक, मत्न छेरनाह थारक, खनरव नाहन थारक; किन्छ यात्र यात्र সংগ্রামে পরাস্ত হটরা ব্ধন নিরাশা হৃদ্যে আসিয়া প্রবিট ছইতে থাকে, তথন মাসুষের কোমর ভালিরা যার। আর সে উঠিতে পারে না। পশুশালার লৌহ-পিঞ্চর-বন্ধ ব্যাছ বেমন প্রথম প্রথম আপনার বন্দিদশার কঠোরতা অত্তব করিতে সমর্থ না ছইরা লৌছময় পরাদের উপরে আঘাত করিতে থাকে, সম্পুথে মানুষ দেখিলেই আক্রমণ করিবার জন্ম উল্লুফ্ন করিতে थाक, किन्तु कारण यथन कानिएं भारत (य, त्म (चात्र कात्रांगात्र হইতে নিছুভি লাভের প্রয়াস পাওয়াই বুগা, তথন বেমন হতবীৰ্য্য, ভয়োদাম, জড়-ভাবপের হইরা আপনার ভাগ্যের হতে আপনাকে ছাড়িয়া দেয়, তেমনি হায় এ জগতে কত পাপী প্রথম প্রথম পাপ কারাগার হইতে নিজ্তি লাভ করিবার অভ্য কত প্রবাস পার, কিন্তু অবশেষে পাপ হইতে নিরুতি লাভের প্রবাস বিফল জানিয়া আপনাকে ভাগ্যের হল্তে অর্পণ করে এবং এই সর্বনেশে "পারি কৈ" বলিয়া পাপের সহিত সন্ধি বন্ধন

অবশেবে এই অভ্যাস একটা শৃথানের স্থার হইরা প্রস্কৃতিকে पुरुक्तर्थ व्यावक करत्र । हेव्हामक्टिक विरमय भवग न। कत्रिल এই অভ্যাস-শৃত্যল হইতে নিম্বৃতি লাভ করা হুমর। ইচ্ছা-শক্তির স্বলতা ইচ্ছা ক্রিলেই পাওরা যার না। যেমন বিষের ধারা বিষের চিকিৎস। করিতে হয়, তেমনি অভ্যাদের ছার। অভ্যাদের ব্যাধি দূর হয়। তোমার পাক্ষডি তোমার নিরমাধীন হইতে চহিতেছে না; তুমি ভাহার আপত্তি ভনিও না; নিজ প্রভৃতিকে ভাছার ক্ষির অমুরূপ কার্য্যে নিযুক্ত থাকিতে দিও না। প্রাকৃতি যাহা চাহে তাহাই বদি সর্বাদা বোগান যায়, তাহা হইলে প্রক্রান্ত আছরে হইরা পড়ে। তথন আর ভাছাকে নির্মিত করিবার উপার থাকে না। এজন্ত প্রকৃতিকে নাণ্য করিয়া বাহা কন্তব্য ভাহার আচরণে প্রবৃত্ত করা উচিত। প্রথমে সে সকল কার্যা ক্লেশকর হইবে, কিন্তু অবশেষে অভ্যাসের গুণে শ্রীভিকর হইবে। আপনাকে সংযত করিতে করিতে সংব্য অভ্যাস প্রাপ্ত হইবে। তথন অভ্যাদের ব্রো অভ্যাদকে জন্ন করা ষাইবে।

### ধর্ম ও নীতি।

( প্রাপ্ত )

এক কথার বলিতে গেলে ধর্মের বাহ্ন বিকাশের সামই
নীতি। কিছ লগতে ধর্মেইন নীতি ও আছে। নাজিকগণ—
লবরের অভক্তগণ ও নেই নীতি অবশ্যন করিরা থাকে। কিছ
ভাহা পল্প-পত্ত-স্থিত জলবং অতি চঞ্চল, অস্থানী, অস্তিত্ব প্রা।
ধর্মেই নীতির প্রাণ। বে হৃদ্রে ধর্মর গভীরতা নাই, সেখানে

নীতি র্নীভৃত। পরীক্ষার রিনে, প্রবোজনের রিনে সেধানে ধর্মের চিহ্ন কের রেখিতে পারনা।

এই পৌত্তণিক্তা, অবভারবাদ এবং ছাডিভেদ প্রপীড়িত দেশে লোকে ধর্মের বাছাস্থগানের দিকে বেমন মনোযোগ প্রাদান করে, নীতির দিকে ভেমন মহে।

"পরিহাস" \* \* "প্রাণ-সংশয় ও সমন্ত বিজের নাশ সন্তাবনার মিথ্যা কথা বলিবে। কেই মিথ্যা সাক্ষ্য প্রদান করিলে
লোকে তাহাকে নিক্ষা করে, সে অক্সার, কারণ অনেক স্থলে
মিথ্যা সাক্ষ্যে বরং ধর্ম আছে।" (মহাভারত হাশীতিতম অধ্যার)।
শ্রীমন্তাগবত অইম করে, অইাদশ অধ্যারে এরণ লিখিত আছে,
"শ্রীবশী-করণ কালে, হাস্ত পরিহালে, বিবাহে বরের ওণাত্রকীর্ত্তনে, জীবিকাবর্ত্ত রক্ষার নিমিত্ত, প্রাণ-সংকটে, গোত্রাক্ষণের
হিত-সাধন কল্প এবং কাহারও প্রাণ হিংসা উপহিত ইইলে,
মিধ্যাকখন দোবাবহ নহে।" পুনশ্চ মহাভারতে ৩৪ অধ্যারে
লিখিত আছে, ব্যাস বলিতেছেন,—"বে ব্যক্তি আপৎকালে
শুকুর নিমিত্ত ব্রহ্মণ ব্যতিরেকে অক্স জাতির ধন হরণ করে,
ভাহাকে চৌর্য্য দোবে দ্বিত ইইতে হয় না "

এক্লপ উপদেশ কি নীতির মৃলচ্ছেদকর নহে ? বাঁহারা এই উপদেশাফুসারে খীর খীর জীবন পরিচালন করেন, ভাঁহারা কি সভ্য পথ বাত্রী ? সভ্যই ধর্ম,সেই সভ্যের অপলাপ করিলে কি ধর্মরক্ষা হর ? কিছু পুরাণশাক্ষকার বলিভেছেন, ''মিধ্যা কথা বলিলে ধর্ম নই হয় না। যদি দেবে, হিলে ভক্তি থাকে, শাক্ষাফুযানী জিয়াদি অফুটিত হর, ভবে মিধ্যা কথা বলিলে, চুরি করিলে, গুরাপান ক্রিলেও পতিত হইবে না। অবস্তু এককল কুজিয়ার বিক্লেও অনেক উপদেশ আছে; কিছু থেমন এক কল্সী হুয়ে বিক্লু মাত্র গোমৃত্র নিক্লিপ্ত হইলে সমুদর হুয় নই হইরা যায়, ভক্রপ হু একটা ঈদৃশ উপদেশে শাল্রের স্কীবভা বিনাশ প্রাপ্ত হর।

আধ্যাত্মিকতার উচ্চ তত্ব, প্রাণায়াম যোগ, তপভার গভীর উপরেশ, সকল তত্ব বিফল হইরা যায়, যদি ধর্মশান্ত নীতিহীনভার প্রশ্রের দের এবং পাপ কার্যাকে পুণা কার্যা বলিয়া
কীর্ত্তন করে। নীতিহীনতা মহাপাপ, যিনি জ্ঞাত ও অজ্ঞাত
ভাবে বে সকল পাণে লিপ্ত রহিয়াছেন, তাঁহার হৃদরে ব্রক্ষজান
কি রূপে ফুর্তি পাইবে ? সভ্যের ছারা হৃদর পবিত্রীকৃত না
হইলে সেই সত্য অরূপকে কেহ কি চিন্তা ক্রিতে পারেন ?
ধর্ম পরিশুদ্ধ অনাবিল, ফ্টিকবং। তাহাতে পাপের কলছ
কালিমা প্রবেশ করিলে ভাহা ধর্ম নামে উক্ত হইতে পারেনা।

বে দেশের ঋবিগণ পৃথিবীতে সর্ক প্রথম ব্রহ্মতন্ত আবিকার করিরাছেন, যে দেশের ব্রহ্মতন্ত সাধক অদ্যাবধি জগৎরূপ ব্রহ্মত্বিক কইণা রছিরাছেন, যে দেশের উপাসকগণ সর্ক প্রথম, রজনীর অহুকার অবসানে উবার নবীন আলোক প্রকাশের ভার এক মাত্র সভ্য ধর্ম আত্মা ও পরমান্ত্রার সহন্ধ জনিত অগাঁর আলোক প্রকাশ করেন, "একমেবা বিতীয়ং" "সভ্যং জানমনতাং ব্রহ্ম" ইত্যাদি কথা সভ্যতার শৈশব কালে বাহারা খোষণা করিয়াছেন, পৃথিবীর সম্বর্দ্ধ সর্বাহী আধ্যাদ্ধিক বিবরে, ব্রহ্মতান স্বত্তে বাহারের

নিকট ঋণী, ভাঁহাদের দেশে,—একবি মহবি গণের নৈমিবারণ্য ক্লেত্রে—পৌত্তলিকা ও অবতার-বাদ প্রবেশ করিরাই দর্মনাশ করিরাছে। বর্তমান সমরে এদেশে নর-পূকা, অস্বাভাবিক সাধন, ধর্মের বাহু অনুষ্ঠান ইত্যাদি আবর্জনা রাশির অভ্যাত্রে ভারতীর প্রাচীন ব্রক্ষান স্কারিত হইরা গিরাছে।

হিন্দু ধর্মকে প্ররায় জাগ্রত করিবার জন্ত সম্প্রতি এদেশে একদল উৎসাহী লোক দণ্ডারমান হইরাছেন। কিন্তু হংধের বিবর যে, তাঁহারা জাতীর গৌরব অরণ উপনিবদাক্ত বিশুদ্ধ বন্ধ-জান প্রচার না করিয়া তিত্র ও পুরাণোক্ত কায়নিক ধর্মত প্রচার করিতেছেন। অধিকতর হংথের বিষয় এই যে, কোন কোন ব্রাক্ষ্রাতাও জাতীরভাব রক্ষা করিতে গিরা অজ্ঞাতসারে প্রক্রথানকারীগণের বৈজ্ঞানিক ব্যাখ্যার প্রমে পতিত হইরা আল্ল-বিশ্বত হইতেছেন।

তত্র ও পুরাণোক্ত ধর্মের দোব এই যে, তাহাতে সাধকের বাহ্ন অনুষ্ঠানের দিকে যেরপ মতি হর, নীতি এবং আধ্যাদ্মিকতার দিকে তেমন মনোবোগ থাকে না। আদর্শের দোবেই এরপ হইরা থাকে। উপাক্ত দেবতার অফ্রপই সাধকের চরিত্র গঠিত হর। উপাক্ত দেবতা সত্যের অপলাপ করেন, স্থরাপান করেন, অপরাপর অসাধু আচরণ করেন। সাধকও তেমনিই চরিত্র লাভ করেন। তত্ত্রোক্ত দেবতা মাদক দ্রুরো পরিত্রই, স্তরাং সাধকগণ ও স্থরা গঞ্চিকার দেবক হন। খ্টান মিশনারীদিগের কথার গ্রন্থিমেন্ট স্থরা ও গঞ্চিকা বিক্রের বন্ধ করিলে তত্ত্রোক্ত সাধন অসম্পূর্ণ থাকিবে। এদেশের সম্যাসী বৈক্ষব এবং যোগিগণ অনেকেই সাধনের সমর মাদক ক্রব্য ব্যবহার করেন।

একদিকে অবভারবাদ, পৌত্তলিকতা এবং জাতিভেদ প্রথা প্রভৃতি যেমন নীতি-ছীনতার কারণ, অপর দিকে অন্মান্তরীণ কর্মফল স্বীকার করা এবং ডজ্জ্জ্ব নৈতিক সংগ্রামে নিশ্চেষ্ট থাকাও বিনাশের দিকে গমনের প্রশন্ত পথ। অভার কার্য্য ष्यमृष्ठित कहेरन नकरन मिनिया कर्षकर्त्वारक अहे वनिया खारवाथ দিরা থাকেন যে, "পূর্বজন্মকৃত কর্মের ফলে এরূপ ঘটরাছে, বিধাতার লিপি কে খণ্ডন করিবে ? মামুষ পাপ করিবে কি পুণা করিবে, কিরুপে জীবনযাত্রা নির্মাহ করিবে ইত্যাদি भारीहिक ७ जाशाजिक नकन कथा विशाला शुक्रव এकनिन লিখিয়া রাখিরাছেন, তদমুযায়ী নিরত কার্য্যাদি সম্পাদিত ছইতেছে। কাছার সাধ্য, সেই বিধাতার বিধি অতিক্রম করে ? মালুবের স্বাধীনতা নাই, মানুব অব্স্থার দাস, বৃদ্ধি কর্ম্মেরই अञ्चनत्र करत्। जकान शृक्षदम्ब क कर्षारुग हेर जीवान (छान করিতেছে। কেই ইছো করিরা পাপ কিছা পুণাকর্ম করিতে পারে না। পূর্বজন্মের তপস্তা বা পাপাচরণের ফলে ইহ জীবনে ত্ব বা ছঃৰভোগ হইডেছে।" স্বভরাং নীভিহীনতা এবং. পাপের প্রতি ভেমন খুণী হয় না। ঈখরের বিধিবারাই বধম পাপকার্য্য অমুষ্ঠিত হইতেছে, তখন পাপীর দোষ কি ?

नीिक अवः धर्ष य चाट्क्सा याश गःवष्म, भागान्त्रण अवः वेचन नेर्नन य हरे विक्ति अवः विभन्नीक भागानी,गांधान विन्तृताज्ञ अ विवस प्रमानीमाश्रीक क्षेत्रीक क्षेत्र नारे। अ स्मानन

সাধকগণ ধর্মলাভের জল্প যেরূপ ব্যব্দতা প্রকাশ করেন, নৈতিক উন্নতির অস্ত তেমন আকাজক। নাই। ইহার ফল এই হইরাছে যে, নীতিহীন ধর্ম অপ্রতিহতপ্রভাবে এদেশে রাজত্ব করিতেছে। পঞ্চাবের বিখ্যাত যোগী হরিদাস চল্লিশ দিন ভুগর্ভে প্রোধিত অবস্থার ছিলেন, তৎপরে দেখান হইতে উটিরা একটি পতিতা রমণী সহ প্রেসান করেন। বর্ত্তমান সমরে একজন উচ্চ শিক্ষিত हिन्तू, विमानत्त्रत পाठाशुक्तक अहे यात्रीत यात्रिकात्रीत যশোকীর্ত্তন করিয়াছেন। বাস্তবিক যে দেশের ধর্ম নীভিবিহীন হইয়া বিক্লন্ত মূর্ত্তি ধারণ করে, সে দেশের আনাদর্শ যে এরূপ কুৎসিত হইবে, তাহাতে সন্দেহ কি আছে?

স্ক্রাপান নৈতিক ছীনভার চরম শক্ষণ। এমন পাপ নাই, যাছা স্থরাপারীকে স্পর্শ করিতে না পারে। স্থরাপানে হাবভীর পণ্ডভাব উত্তেজিত হয়, স্মৃতরাং স্করাপায়ী নিয়ত পাপ ও প্রলোভনে নিমগ্ন থাকে। হিন্দুর সর্বাশ্রেষ্ঠ ভন্ন "মহানির্বাণ" দিলুল উত্তেজক প্লার্থ সেবন করিয়া চিত্তের মন্ততা আনরন क्रबंडः श्रेचेवाधनात वावचा निवारह्म। (क्वन स्वात वावचा थ्रमान कतित्रा महानिर्सागकात काख हन नाहे, ७९मात्र श्राप्त ह নারকীয় ভোগের বাবস্থা দিয়াছেন। সাধারত: ভাছা পঞ্<sup>ল</sup>ম"-কারের সাধন বলিরা উল্লিখিত হইরা থাকে। স্থরাপান সম্বন্ধে মহানিৰ্বাণ বলিতেছেন ;—

স্থরা জ্বমরী তারা জীবনিস্তারকারিণী। জননী ভোগমোক্ষাণাং ৰাশিনী বিপদাক্ষাং। ১৫০ দাহিনী পাপ সংগানাং পারিনী স্বগতাং প্রিরে। मर्कामिक श्रम। स्थानवृक्षितिमाविवर्किनी। ১०७ मुरेकवृम्कृष्टिः निरेद्धः नाधरेकः किंछि পानरेकः। रमवारक मर्कना (मरेवबारमा श्वाकीहेमिकरम् । ১०१ সমাগিধিবিধানেন স্থসমাহিতচেতশা। পিবস্তি মন্দিরাং মর্ত্তা। অমর্ত্তা এবতে কিভৌ। ১০৮ একাদশ উল্লাস।

ইহার অর্থ এট, সুরা, দ্রবময়ী সাক্ষাৎ জীবনিস্তারকাবিণী ভারা অরুণা, ইহা ভোগ ও মোক্ষের জননী এবং রোগ ও বিপদ সমূহের নাশকারিণী ৷ হে প্রিরে ৷ ইলা বারা পাপসমূহ দগ্ধ হর এবং ইহার প্রভাবে মহুষ্যের জ্ঞান, বুদ্ধি, বিদ্যা এই সমস্তই বৃদ্ধি পাইরা থাকে। হে আলো! (অন্ত কথা কি) মৃক্ত, মুমুর্, সিদ্ধ, সাধক, নুপতি, ও দেবগণ পর্যান্ত আপন আপন অভীষ্ট সিদ্ধির অস্ত ইচার সেবা করিয়া পাকেন।

महानिर्सागकात मृर्खिमान शांश खुत्रा त्राक्रमत्क धर्मात जुराल ভূষিত করিয়া এবং তাহার কপালে পবিত্রতার কৃত্রিম ফোটা দিয়া সাধকের নিকট উপন্থিত করিয়াছেন। এ দেশের সহস্র সহস্ৰ পুৰুষ রমণী ধৰ্মসাধন করিতে গিয়া স্থরাকে আলিকন করিয়া থাকে এবং ইহার কালকুট বিষে কর্জরিত হইয়া অচিরে মুমুখাত্ব বিনাশ করে: তান্ত্রিক গুরু স্বহত্তে শিষ্যের মুথে এই বিষ পাতা ভূলিয়া দেৱ, শিষ্য অমৃত জ্ঞানে পান করে। যে সকল कुनकामिनीगण हिन्मुग्रहंत्र (मधी ऋत्रणा, छांहाता अ हेहुरा वछात প্রটোচনার অনেক সময় এই কালকুট পান করিয়া থাকে।

ষে, নীতি এবং ধর্ম একট স্থতে গ্রাধিত। সীভিহীন ধর্ম প্রাণ হীন দেহের ন্যার অকর্মণ্য। ঘদি দেখা যায়, কেহ অবিল্রাস্ত সাধন করিতেছেন, দিন রাত্রি ভাৰলোভ इहेरछाइ, छार रायमन अकालहे सूथी इहेरवन, राज्यन छिनि यानि সেই ভাবস্রোতের মধ্যে থাকিয়া জ্ঞাত ও অজ্ঞাতসারে সত্যের অপ্রাপ করেন এবং কথা বার্ডার সামঞ্জ রক্ষা না করেন, এবং নীতি হীনতার প্রভার দেন তবে সকলেট ততোধিক হংৰিত হইবেন। নীতিহীনভার এ দেশ রসাতলে গিরাছে। এখন जाऋषिशदक विष्मय खात्व मछर्क बहेट इहेटन, यन छीहारमत মধ্যে নীতিবিহীন ধর্ম প্রবেশ লাভ না করিতে পাছে।

## প্রেরিত পত্র।

( পত্র প্রেরক দিগের মভামডের জল্ঞ সম্পাদকদায়ী সহেন, কিখা কাহার ও পত্র কেরড দিতে তিনি বাধা নহেন )

মাক্তবর

**এীযুক্ত তত্ত্বকৌমুদী সম্পাদক মহাশর** मभीरमयू।

গত ১৬ই ভালের তৰ্কোমুদীতে শ্রীযুক্ত বাবু অগরাধ প্রসাদ গুপ্ত মহাশর যে পত্র ধানা লিবিয়াছেন, তাহার একঅংশ সম্বন্ধে মুই একটা কথা লেখা দরকার বোধ হউতেছে; অমুগ্রহ शृक्षक उत्तरकोमुमीएउ क्षकान कतिहा वाधिक कतिरवन।

তাঁহার প্রথম কথা:—"হরি শব্দ উচ্চারণ করিণেই যে দাকার বৃথিতে হটবে এরপ নটে।" >লা ভালের তব-कोमुमीएउ य এकन कान कथा चाह्य छाहा एमधि ना। আমরাও একথা বলি না। পত্তে বরং এরূপ কথা আছে যে, ত্রাহ্মগণ "হরি" শব্দে নিরাকার ত্রহ্মকেই বুঝিয়া ণাকেন। তবে কথা এই যে, "হরি" বলিলে হিন্দুগণ সাকার সীমাবিশিষ্ট কোন দেবতাকে ব্ৰিয়া পাকেন। "ह्रि" "कानी" "हुर्गा" "कुरक्ष" (कान खेराडम नारे।

डाँहात दिठीत कथा, "हतिनाम छाड़िएन পূজার জন্ত কোন নামই থাকিতে পারে না" এবিষয়ে কিছু িবিনি একথা বলিতে পারেন ভাঁহার বলা নিম্প্রয়োজন। "ব্ৰাহ্মধৰ্মা" যে কিরূপ বুঝি না।

তাঁহার তৃতীর কথা, "হল্পি শব্দের যে গতি ঈশ্ব প্রভৃতি শলের ও সেই গতি" ইহা প্রমাণের বস্তু তিনটা উদাহরণ मित्राह्म । **अ**थम উদাহরণ যে ভিনি क्রिप উল্লেখ क्रिए পারিলেন বুঝি না। ডিনি কি ইছা জানেন না যে, ঐ বাক্যে निज्ञीचंत्ररक क्षणनीचंत्र रुना वत्र नाहे, निज्ञीचंत्ररक लेचत कार्य পূজাও করা হর নাই ? এবং জগদীখর শব্দে কেছ কথনও मिज्ञीचंत्र बूरक मार्चे बूरक मा ध्वर वृक्षिरव मा ।

(२) क्रांनिमान श्रृष्ठाकत এक श्रांत कि वाधा कति-য়াছেন তাহা দেখায় বিশেষ প্রয়োজন নাই। হিন্দুগণ আনেক সময় তাঁহাদৈর কোন বিশেষ দেবতাকেও সর্কোপরি কর্তা। ত্রাহ্মগণ চির্দিন এই মহাতত্ব ঘোষণা করিয়া আসিতেছেন / অসীন, নহান, প্রমেশকরে ছান প্রদান করিয়া থাকেন। এমন কোন শ্রেণী নাই বাহার। পরমেশর শব্দ বলিতে পার্বাতী-নাথকে বুঝে অথবা উক্ত নামে পার্বাতীনাথ কি কোন সীমা বিশিষ্ট দেবদেবীকে পূজা করে।

তর। "ওঁ" এবং "ওঁকারনাথ, জথবা "ওঁকারজি" সম্পূর্ণ ডির। কোন মতেই এক নছে। আর শুধু "ওঁ" নামও ব্যবহার হয়। সাধারণ ভাবে এসহদ্ধে এই বক্তব্য যে, যদি নিতান্তই প্রমাণিত হয় যে ঐ সব নাম দেব দেবীতে ব্যবহার হয়, তবে তাহাতে হয়ি নামের সপক্ষে কিছু প্রমাণ হয়, ইলানের ব্যবহারও অন্যায়। এসকল নাম ছাড়িলেও অনেক নাম আছে।

৪র্থ কথা,— "এ সকল নাম ছাড়িলে নিরাকার ছরিকে মনে রাখিতে হইবে, মুখ ফুটিয়া কিছু বলা যাইবে না।" এ বি-বয়ে অতিরিক্ত কিছু বলা সম্পূর্ণ নিভায়োকন।

ধন কথা,— "পৌত্তলিকগণ সাকার ভাবে করনা করিলেই যদি নিরাকার হরি সাকার হইয়া যান, তবে মনেই বা
রাথিব কিরাপে?" পূর্বে পত্রেত এরপ কোন কণা পাইলাম
না, তিনি একথা কোথা হইতে আনিলেন বুঝিতে পারিলাম না।
রাক্ষসমাজে বোধ হয় এরপ কেচ নাই যে বলিবে, নিরাকার হরি সাকার হইয়া যাইতে পারেন। প্রধান কথা এই যে,
লোকে শক্ষের অর্থ যুক্তি তক করিয়া বুঝে না। কাযেই হরি
প্রভৃতি দেব দেবীর নাম ব্যবহার করিলে লোকে তাহাদের
পূর্ণক্ষত দেব দেবীকেই বুঝেবে স্ক্তরাং তাহা সত্য প্রচার
সম্বন্ধে মহা বিম্নকর।

পূর্ব্ব পত্র-প্রেরক একটা কথা বলেন নাই। আনেকে বলিয়া থাকেন, হরিনাম ভিন্ন ভক্তি হয় না; এসম্বন্ধে বেশী কিছু বলা নিপ্রেলেন। শুধু এই বলিলেই হটবে যে, ভক্তি কোন নামের উপর নির্ভর করে না। প্রকৃত ঈশ্বর দর্শনের উপরেই নির্ভর করে। যে সকল সম্প্রদায় হরিনাম ব্যবহার করে না, জাহাদের মধ্যে আনেক ভক্ত আছেন। ভাক্তভাজন মহযি দেবেক্সনাথ ঠাকুর ও ঢাকার প্রীযুক্ত কালীনারায়ণ রায় মহাশয়গণের ভাক্ত যে কাহারও অপেক। কম একথা বোধ হয় কেহ বলিতে সাহস্করিবেন না। আদ্বাধ্যা বিশ্বকানি ধর্মা, ইহাতে নানা জ্যাত ও নানা সম্প্রদারের লোক আ্যাসবে কাষেই সকলের পক্ষেহারিনাম গ্রহণ সম্ভবপর হইবে না। জাহাদের কি আয়ে ভাক্ত হইবে না?

ছরি প্রভৃতি দেব দেবীর নাম ব্যবহারের অনিষ্টকারেতা সম্বন্ধ অনেক বলিবার আছে, দরকার হুলৈ ভবিষ্যতে বলিব। এবিষয়ে ব্রাহ্মসমাজের ইতিহাস যোশক্ষা দিভেছেন, সে দিকে শক্ষা করা সকলেরই কর্ত্তর। আমাদের বিশ্বাস—"জনৈক সভ্য" যে পত্র থানা লিখিরাছেন ভাহা থেরূপ স্থাক্তি পূর্ণ ভালাভে উহার বিক্লছে কেহ কিছু বলিভে পারিবেন না। উহার বিক্লছে যাহা কিছু বলিবার আছে ভাহা ভনিবার জন্ম নামরা উৎস্ক বহিলাম।

# SIPPIN

#### শ্ৰীযুক্ত তত্ত্বকৌ মূদী সম্পাদক মহাশর

সমীপেষু।

আমার নিয়লিখিত প্রথানা আপনার পত্রিকায় আগামী বারে প্রকাশ করিয়া বাধিত করিবেন।

আপনার ১৬ই ভারের পত্রিকার "সাফুভূতি, সংশাস্ত্র ও मन्खक" नामक व्यवस्त "(कान 9 विषय्यहे यान खडी छटक खडा। छ ক্রিয়া চলা কর্ত্তব্য না হয়, তবে ধ্যা-জ্ঞান বিষ্য়ে কেন্ कर्खना रहेरत ?" निधिष्ठ चाह्य वर्षाए कज़न्य ও उৎभवसीत জ্ঞানকে আধ্যাত্মিক বস্তু ও তৎসম্বন্ধীয় জ্ঞানের সহিত এক ভূমিতে ভূপনা করা এবং দৃষ্টাত্তে উভয় বিষয়ে এক রকন বুঝাইতে (5**8**1 **শাধনার** প্রয়োজন করায় একটী শুরুতর ভ্রম ঘটিয়াছে। তাহার কারণ এই,—ঈশ্বর নানা রুক্ম জডবন্ত সৃষ্টি করিয়া জগতে রাথিয়া দিয়াছেন। স্বতবাং শিক্ষক মহাশয়েরা জড়বস্ত সম্বনীয় জ্ঞান ঐ জড়বস্ত ছাত্রের সম্মুথে ধরিরা শিক্ষা দিতে পারেন এবং ছাত্রগণও ঐ বস্তুর সহিত শিক্ষের উপদেশ মিলাইর। উহা প্রকৃত কি না তাহা ব্ঝিতে পারে। এই ভাবে আমাদের জড়কান জানায়। शांक। এই कना कड़कान श्रुक्त माहार्यारे चामत्रा শিখিতে পারি। কিন্তু আধ্যাত্মিক জগতে এই নিয়মের অনাথা দেখিতে পাওয়া যায়। আধ্যাত্মিক জগতে আত্মানিকে দশক, ঈশ্বর বস্তু। এখানে তিনি নিজে দেখান অর্থাৎ নিজে রূপা করিয়া উপাদকের আত্মাতে প্রাকাশিত হন। ইচাতে উপাসকের নিজের একমাত্র ব্যাকুল ইচ্ছা এবং অন্ধের কুপার প্রয়োজন। কোনও মহুষোর এরূপ শক্তি নাই, শিষাকে ঈশ্বর দর্শন করাইতে পারেন। স্কুতরাং এখানে ঈশ্বরকে रियान मध्यक मञ्चा छक्त कार्या कि हुई नाई ध्वर छक्न (य দিখন সম্বন্ধে যে সকল উপদেশ দেন তাহা সত্য কি না তাহা মিলাইয়া লইতে ছাত্রের উপায় নাই। এই জন্ম উপদেষ্টার উপদেশে আমাদেব ঈশ্বর জ্ঞান হয় না। যদি আব্যাত্মিক অগতে অভ্ৰগতেৰ স্থায় কতকগুলি বস্তু পুৰ্বে ঈশ্বৰ স্টি করিয়া রাখিতেন তবে মহুযা-গুরু ঐগুলি লইয়া শিকা দিতে পাবিতেন। কিন্তু এবাজো দশক ও বস্তু ঈশ্বর ভিন্ন অন্ত কিছুই নাই। **ले** प्रत আত্মাতে কুপা করিয়া নিজে প্রকাশিত হন তথনই আত্মা ত্তা অমুভব করিতে পারে নচেৎ নরে। তবে আধ্যাত্মিক জগতে কি কি উপায়ে ঈশ্বর দর্শন হইতে পারে তাহাব পণমাত্র আমর। বলিয়া দিতে পারি। वे भाष हांनान ঈশ্বর দর্শন নাও ইইতে পারে, একা কুপার সম্পূর্ণ প্রয়োজন। ইহা বারাই দেখা যাইতেছে, জড়জগতে আমরা নিজে -বস্তুকে ধরিয়া সাক্ষাৎভাবে শিক্ষা দিতে পারি। **ল**গতের পথমাত ব্লিয়া দিতে পারি। মুভরাং এই ছই পথ এবং তাতার সাধন পথ সম্পূর্ণ স্বভন্ত। কেছ কৈছ সাম্বার এক একটা গুণকে বস্ত মনে করেন কিন্তু ভাছা ভূগ। আপনার ও মনের বিখাস সম্ভবতঃ আমারই ভাষ। কিন্ত প্রবন্ধী অভিন্নপ •হইরা ইাড়াইরাছে।

আশা করি আগামীতে এই এম সংশোধন করিয়া বাধিত করিবেন।

পটুয়াটুলী ঢাকা } . ২৩এ ভাজ অমূগন্ত শ্রীকৈলাসচন্দ্র বন্দ্যোপাধাার।

# তামাকের অপকারিতা। [ ভন্নবোধনী ফইতে উদ্ভ ]

খৃষ্টীর পঞ্চদশ শতাকীর শেষভাগে আমেরিকা আবিষ্কৃত হইয়াছিল। এ কথা বোধ হর আনেকেই অবগত আছেন। একদিকে যেমন সেই নবাবিছ্বত দেশে যুরোপীয়াদি নানা লাতীয় लाक पत्न पत्न डेशनित्वम चायन भूसंक जायन जायन অবস্থা উন্নত করিতে লাগিলেন, অঞ্চলিকে ডজ্রপ বাণিধ্যের উপযোগী বিবিধ পদার্থ-ঘাহা হয় ত সভাজন সমীপে চিরাদন অপরিচিত পাকিত, তাহাও তথা হইতে দিগদিগন্তরে প্রেরিত **চইয়া বাণিজ্য বিভাগেরও অসাধারণ উন্নতি সাধন করিতে** লাগিল। অক্তান্ত জব্যের কথার প্রয়েজন নাই, আমাদের আলোচ্য বিষয় বে তামাক, যাহা বর্ত্তমান সময়ে কি সভ্য কি অসভা ভদ্রাভদ্র সকল শ্রেণীর অধিকাংশ নরনারীরই আদরের সামগ্রী হইরা দাঁড়াইরাছে, আমেরিকা আবিষ্কৃত না হটলে দেই তামাকের ব্যবহার কের জানিতে পারিতেন না। এই তামাক কোন এক দেশ বিশেষের বনজাত উদ্ভিদ কি না, টহা নিশ্চয় করিয়া বলা বড়ই কঠিন; স্তরাং ইহার জন্মভান লইয়া মতভেদ হওয়া অসম্ভব নচে। বস্তুত:, এই উদ্ভিদ যে স্থানেই জাত হউক ন। কেন, ইহার নামকরণ ও ব্যবহার त्यम चारमतिका अक्षम बहेर उहे बहेबा हिन, हेबा विचान कति-বার কারণও অনেক আছে।

১৪৯२ थुः अस्य कनवम् यथन टार्थमवात आस्मित्रिकात्र গমন করেন, সই সময় যে সকল ব্যক্তি তাঁহার সঙ্গী ছিলেন তাঁহারাই কিউবা উপদীপে বনজাত তামাক ও তত্ত্তা অসভা অধিবাসীদিগকে ভাচার ধৃমপান করিতে প্রথম দর্শন করেন। তৎপরে কঁলছদের ঐ দেশে দ্বিতীয়বার গমনকালে য়াম্নন পেইন নামে জনৈক ফ্ৰাসী তাঁহার সঙ্গে গিয়াছিলেন। তিনিও আমেরিকার অসভা অধিবাসিগণকে নাসিকার ভাষাকের নক্ত গ্রহণ করিতে প্রথম দেখিতে পান। ১৫০২ খৃ: আবে त्मानवात्री (नाटक प्रक्रिंग चार्मित्रकात्र छेभक्नवात्रीपिगटक ভাষাকের পাত। খাইতে প্রথম দর্শন করেন। ফ্রান্সীস্কোফা-রণাণ্ডীজ নামে একজন চিকিৎসক স্পোনের রাজা বিতীয় াকলিপের আদেশে আমেরিকার অন্তর্গত মেকসীকো প্রদেশের ু উৎপন্ন দ্রব্যাদি নির্ণয় করিবার জ্ঞা ১৫৫৮ খৃ: অংকে তথায় গ্ৰন ক্রিয়া সর্বপ্রথমে খুরোপে তামতক্র গাছ আনরন করেন। সেই আদেশে এই উদ্ভিদ [ Tobacco ] নামে পরিচিত। ১৮ अर श्रः व्यास [Ovadea ] द्व देखितृत्व धानत्रन करत्न छ९-পাঠেও জানা যার যে, সেন্ডোসিনগোরের অধিবাসিগণ ইংরাজী [Y] বর্ণের মত কার্চের একপ্রকার বন্ধ প্রস্তুত ক্রিরা তাহার ব্যেগে ধুমদেবন ক্রিত এবং ঐ ব্যের নাম্ভ

আবার ভাহারা [ Tobacco ] বলিত। যে প্রণালীতে ভাহারা ভাষাকের ধূম গ্রহণ করিও ভাহা অভি কৌভুক-জনক। কেন না, উপরোক্ত [ Y ] আফুতি বিশিষ্ট যজের নিম ভাগস্থ আধারে তামাক রাখিয়া ভাহার ছইটা ডানার উপরিভাগের⊿ তুই প্রাক্তভাগ নাসিকার তুই ছিজে প্রবিষ্ট করিয়া নিশ্বাস্যোগে টানিরাটানির।ধূমপান করিত। ফ্রাকাদেশবাসী জন্নাইকট্ হইতে তামাকের বীজ খদেশে প্রেরণ করেন। সেই নাই-কটের নাম চইতেই য়ুরোপের সর্ব্বত এই উদ্ভিদের নাম [Nicotina Tobaccum] হইরাছে। ইহার আর একণত वरमत व्यस्य व्यर्थार मधान्म भंजानीर्क मत्र वानवेत्र ज्ञारन [Sir Walter Raleigh] আমেরিকা হইতে ইংলভে ভাষাক আনয়ন করেন। 🛊 আমেরিকায় ইংরেজজাতির প্রথম অধি-কৃত স্থানের নাম বর্জিনিয়া। ঐ স্থানের প্রথম শাসনকর্তা [Ralph Lane] ও [Sir Francis Drake] ভাৰাক খাইবার যন্ত্র আনিরা র্যালেকে উপহার প্রদান করেন। সে বত্র মুগার ছিল, র্যালে মহোদর ওদ্যুটে রৌপ্য যত্র প্রস্তুত করিয়া লইয়াছিলেন।

যদিও স্পেনবাসীরা প্রথমত: যুরোপে তামাক আনর্ম করেন বটে; কিন্তু তথাপি সে দেশের লোকে প্রথমে ভাষাক वावहात करतन नाहे, हेरसक बाजिहे युरतारा जामाक त्यवम শিক্ষার দীক্ষা গুরু। [Ralph Lane] আমেরিকার অসভ্য লোকদিগের আদর্শে তামাক থাইতে শিক্ষা করিয়া তথা হুইছে খদেশে প্রভ্যালমন করেন এবং উাহারই দৃষ্টাস্ত অবলম্বনে র্যাবে তামাক থাইতে আরম্ভ করেন। তৎপরে ই*হার আ*নু-করণ করিরা রাজ্ঞা এলিজেবেতের সভার অন্যান্য অমাত্য-বৰ্গৰ ভাষাক থাইতে অভ্যাস করেন। ইংরেজ জাভিয় মধ্যে অনেকে তামাক থাইতে লাগিলেন বটে; কিন্ত ইংলপ্তের ক্ষেত্রে ভাহার অপবিত্র বীল অনেক কাল পথ্যস্ত বপন করিছে দেওয়া হয় নাই। বিভীয় চারলসের সময় হইতে এতকাল প্রান্ত হংলতে তামাকের চাস নিধিদ্ধ ছিল, কেবল ইদানীস্তন অথ্ে :৮৮৬ খু: অক হইতে পরীকা শ্বরূপে ওপার তাহার চাস হঠতেছে। আদকে ইংরেজ জাতির দেখা দেখি যুরো-পের অন্যান্য স্থানের অধিবাসিগণ ক্রমান্তর ভাষাক থাইছে শিক্ষা কারতে লাগিলেন। বলিতে কৈ, সপ্তদশ শভাৰীতে এই কুশিকার স্রোতে অন্যান্য দেশও ভাগিতে আরম্ভ করিল। বস্তুতঃ তামাকের যেন কি এক অলোকিক মোহিনী শক্তি चारक, वित्रमिनके रमारक रमथा रमर्थि छेवात नम्छरम् मुखक ষ্মবন ১ করিয়া শিষ্য চইয়া পড়ে। উহার মধ্রে একবার সুগ্ধ চইলে তাহা হইতে নিছতি লাভ অতি সৌভাগ্যের কথা।

ভাষাক আছা ও নীতিবিরোধী পদার্থ, এই জন্ত উহার ব্যবহার কাইরা প্রথম প্রথম যুরোপ অঞ্চল ভুমুক বিবাদ বিস্থাদ আরম্ভ হয় এবং উহার ব্যবহার নিবারণ করিবার জন্য নানা প্রকার রাজশাসন ও ধর্মশাসনও প্রচারিত হইরাছিল।

<sup>\*</sup> Pareira Page 567.

কোন কোন ছলে প্রাণদপ্তের আদেশ ও ভর প্রদর্শন করিতে ফুটিকরে নাই।

এখন অক্লান্ত দেশ ছাড়িয়া একবার ভারতবর্ষের দিকে দৃষ্টি করিয়া দেখা বাউক, ভারতবর্ষ তামাকের জন্ম ছান কিছা ইংরেজ জাতির স্তার বিদেশত হইরা ইহা নিজ অধিকার বিস্তারে ভারতবর্ষবাসীদিগকে আরম্ভ করিরাছে। আমরা অত্সদ্ধানে যতদ্র জানিতে পারিরাছি, ভালতে ভাষাক ভারতের বনজাত উদ্ভিদ বলিলা বিশেষ কোন পরিচয় পাই-তেছি ন। আমেরিকার ও যুরোপ অঞ্চলে যালাকে [Tobaco] वरन, त्मरे এकरे छेडितनत चानितात्र शान शान व्यर्शर পারস্যরাক্ষ্যে যেরপ ভূষাকি বা ভোষাক ভারতেও তত্ত্বপ ভাষাক বা ভাষাকু শব্দে পরিগণিত হওয়া অসম্ভব বুলিয়া বোধ হর না। মহাত্ম এল্ফনস্টন সাহেৰ উত্তম কথাই विनद्याद्भन त्य, व्याप्यत्रिकारमध्य धरे डेडिम त्य मत्य পরিচিত, ष्मञ्जाञ्च (मामद (मारक ७ यथन (महे जकहे थाकू वा वहारद हेहा द পরিচয় দিয়া থাকেন, তথন আমেরিকা ছইতেই বে, ইহার नामकत्रन अथम हरेत्राहिन, हेरा व्याष्टर्ग वा व्यवस्थ नहर। ভামাক ভারতবর্ষের বনজাত উদ্ভিদ হইলে অতি প্রাচীন কাল হইতে এ দেশের জনসমাজে ব্যবস্ত হউক বা না হউক, ভোলা ষ্টেশের নিকট অপ্রিচিত থাকিত না। কেন না, তিনি ত ভাল ধুতুরা লইয়াই লীলা খেলা করিয়াছেন, তাঁহার তল্তে মত্রে তামাকের 🗣 জ নাই। গাঁজা মদ ও আফিং যে কোন मानक खराहे (कन (लारक रावहात्र ना कक्षक, जामाक व नक-শেরই অতাগামী। এমত অবস্থার শহর ইহার সন্ধনি পাইলে কথনই ছাডিতেন না, নিভাস্ত পক্ষে তাঁহার ঝুলিতে হুই এক ছিলিম তামাকের সন্ধানও পাওয়া ঘাইত। এদেশীর লোকের মধ্যে বাঁছার৷ নিদানাদি শাল্পের ব্যবস্থামতে চিকিৎসা করিয়া থাকেন, তাঁহাদিগের মধ্যে প্রাণীণ ও মুপণ্ডিত অনেককে জিজ্ঞাদা করিয়া জানা গিয়াছে যে, নিদানাদি গ্রন্থে ভাষাকের কোন উল্লেখ নাই। মহাত্মা ভাবনিত্র বহুতর চিকিৎসা শাল্ত মন্থন করিয়া "ভাবপ্রকাশ" নামে যে উৎকৃষ্ট চিকিৎসাতত্ত্বের গ্রন্থ প্রচার করেন, উক্ত গ্রন্থেও তামাকের কোন প্রমাণ নাই।

( ক্রমখঃ )

## ব্রাক্ষসমাজ।

ফুর্ভিক্ষ-নানা খান হইতে অরক্টের সংবাদ হাত হওরা বাইতেছে। খানীয় প্রাদ্ধণ এসখনে যথার্থ সংবাদ প্রদান করিলে আমরা বাধিত হইব। যে সকল খানে প্রকৃত পক্ষে হর্ডিক হইয়াছে, সাধারণ প্রাদ্ধশমাজের কার্যানিস্বাহক সভা ভারার প্রকৃত বিবরণ জানিতে পারিলে টাদা সংগ্রহ করিবা সেই সকল খানে চাউল বিতরণের জন্য লোক পাঠাইতে পারেন। আমরা পূক্ষ বলের অরক্ট প্রপীড়িত খানের তত্ব জানিবার লক্ষ্ বিশেষ বাগ্র থাকিলাম।

भाष्डि निक्छित्न वाम—इंडिश्र्स ब्रकानिक रहे-

রাছে যে, সাধনাশ্রম হইভে ক্ষেক্জন সাধক মৃহ্যি দেবেজ-নার্থ ঠাকুর মহাশরের শান্তি মিক্ষেতনে নির্জন বাসের জন্ত গমন করিয়াছেন। ইং ারা তথার করেক দিন বাস করিয়া আশ্রমে পুনরাগমন করিয়াছেন। শান্তি নিকেতনের দুর-অসারিত প্রান্তর, গান্ধীর্যাপূর্ণ আশ্রম এবং প্রকৃতির শান্তিপ্রদ দৃত্ত সাধনের বিশেষ অমুকৃল। বাঁলারা নাগরিক কোলাহলে দিবানিশি ব্যতিব্যক্ত হইতেছেন, আত্ম চিস্তা করিবার বাঁহাদের অবসর নাই, কাক সমাকুল বট-বুক্ষের ক্রায় কোলাছলময় স্থান যাহাদের পরন মন্দির বা বিশ্রামভবন। এক কথার বাজার যাঁহাদের বাসস্থান, বাজার যাঁহাদের সাধন স্থান, ভাঁহাদের পকে দেইরপ নির্জন গান্তীর্যাপূর্ণ দেশে মধ্যে মধ্যে গমন করা নিতান্ত কর্ত্তব্য। মহর্ষি এই আশ্রম স্থাপন করিরা নির্জ্জন সাধ-নাথী ব্রাক্ষদিগের বিশেষ উপকার সাধন করিয়াছেন। আমাদের পরিচারকগণ যতদিন শান্তি নিকেতনে ছিলেন, মহবির ব্যয়েই তাঁহাদের আহারাদি নির্বাত হইরাছে। নিকেতনের তত্বাবধায়ক বাবু অব্যেরনাথ চট্টোপাধ্যায় ইহাদের প্রতি বিশেষ ভদ্রতা এবং ষত্ব প্রদর্শন করিয়াছেন। আশ্রমধারী পঞ্জিত মহাশরও দৌজতাও শিষ্টতা দ্বারা বিশেষ আপ্যারিত করিয়াছেন। বাস্তবিক সাধনার্থীদিগের জক্ত শাস্তি নিকেতনে অতি স্থলর বলোবন্ত আছে।

প্রচার—ধ্বড়ী আদ্ধনমান্তের বার্ষিক উৎসব উপলক্ষে

শীযুক্ত নবছাপচন্দ্র দাস তথার গমন করেন। গত ১২ই ভান্ত হুইতে চারি দিবস উৎসব হর। স্থানীর অন্ধনন্দিরে ছাত্র-সমান্তের এক অধিবেশন হর, তাহাতে নবছাপ বাবু ছাত্রজীবন সম্বদ্ধে বক্তা করেন। উৎস্বাস্তে তিনি তথার যে কর্দিন অব্ভিতি করিরাছিলেন, প্রতিদিন বাসার বাসার উপাসনাদি করিরাছেন।

শ্রীযুক্ত বাবু শশিভ্ষণ বস্থ কুমিলা আক্ষসমাজের উৎসব উপলক্ষে গমন করেন। ১৩ই হইতে ১৫ই আগষ্ট পর্যান্ত তথার উৎসব
হয়, উপাসনার শশী বাবু আচার্যোর কার্য্য করেন। তিনি এক
সপ্তাহের অধিক কাল তথার অবহিতি করিয়া কোন কোন
পরিবারে উপাসনা করেন, ছাত্রদিগের সহিত আলোচনা করেন
এবং টাউন হলে "জীবস্ত শক্তির লক্ষণ" এবং "জাতীর চরিত্রের
অবনতি ও উরতি" সম্বদ্ধে হইটি বক্তৃতা করেন। স্থানীর
সমাজ গৃছে ছাত্রব্রেশ্রে জন্ত "Solemn Warnings" সম্বদ্ধে
ইংরাজি বক্তা ও ভিক্টোরিয়া স্থল গৃছে "ছাত্র জীবনের কর্তব্য
ও দারিদ্ধে" বিষরে বাশালা বক্তৃতা করেন।

আত্মীয় সভা—করেক জন আজবদ্ধর উল্যোগে আদ্মীর সভা নামে একটি সভা ছাপিত হইরাছে। দরিত আদ্মগণের উপকার এবং নিজেকের মধ্যে প্রীতি স্থাপন করাই এই সভার উদ্যোগ কর্তাদিগকে আশীর্কাদ কর্মন।

দান---আমরা ক্বতজ্ঞতার সূহিত জানাইতেছি যে বালক বালিকাদিগের রবিধাসরীয় নীতি বিদ্যালয়ের সাহায্যার্থ বরি-শাল হইতে শ্ৰীযুক্তা মুক্তকেশী দত e ু টাকা প্ৰেরণ করিয়া-ছেন ও বালক বালিকাদের আমোদ বিধানার্থ মাননীয় জটিস চক্রমাধব বোষ মহালবের পুত্র প্রীযুক্ত সতীলচক্র বোষ ২০১ ठोका मान कतिबाह्म।

রামমোহন রায়ের স্মরণার্থ সভা—খাগামী ২৭এ ্রেপ্টেম্বর প্রত্যেক ত্রাহ্মের বিশেষ শ্বরণীয় দিন। ঐ দিন ভারত-গৌরব-রবি ঈশ্বর-প্রেমিক মহাত্মা রাজা রামমোহন রায় ব্রিষ্টল নগবে ইহলোক লীলা সংবরণ করেন। জাঁহার জীবন-কাহিনী আলোচনা, এবং তাঁহার পরনোকগত আত্মার প্রতি শ্রদ্ধা প্রদর্শনের জন্ত ত্রাহ্মগণ প্রতি বৎসর ২৭এ সেপ্টেম্বর ভারিখে সভা করিয়া থাকেন। এবার কলিকাতা সিটি কলেজ গৃহে সভাহইৰে। নানাধৰ্মাব**লখী** বিখাত ব**ক্ত**াগণ বক্তৃতা 🌣 রিবেন এবং রাজার হুরচিত সংগীতাদি গীত হইবে। স্মামরা আশাক্বি, ক্লিকাভার ভাষ মফ:স্বলের প্রভ্যেক সমাজের সভাগণ প্রতিবৎদরে উক্তমহান্মার স্মরণার্থ সভা করিবেন এবং যাহাতে এতত্পলক্ষে কোন প্রকার স্থায়ী শুভাস্থান হয়, ভাছার চেষ্টা করিবেন।

স্বাধন-আশ্রমে উৎসব—গত >লা সেপ্টেম্বর সাধনা-শ্রমের মাসিক উৎসব সম্পর হইয়াছে। ঐ দিন জীযুক্ত বাবু জন্তুপদ্ধর রায় ত্রাক্ষদমাজের কার্য্যে জীবন উৎসর্গ করিয়াছেন।. ইনি অবিবাহিত প্রোঢ়। কুমিলা বালিকা বিদ্যালয়ের শিক্ষকতা কাৰ্য্যে নিযুক্ত ছিলেন। সেই কাৰ্য্য পরিত্যাগ করিরা পত মাঘোৎসবের পর হইতে সাধনাশ্রমে যোগ দিয়াছেন। ইনি আপাতত: সমল্লাধীন পাবচারক রূপে গৃহীত হইলেন। পরমেশ্র ইহার সাধুসকলের সহায় হউন।

লীযুক্ত নগ্ৰীপচক্স দাদ, এবং লীযুক্ত প্ৰকাশ দেব ও **এীযুক্ত** ছরিমোহন খোষাল ছোটনাগপুর অঞ্লে প্রচারার্থ গমন কবিয়াছেন।

## টাঙ্গাইল ত্রহ্মোপাসনালয় নির্মাণার্থ সাহায্য প্রার্থনা-পত্র।

नविनग्र निरंदमन

মনমনসিংছ জেলার মধ্যে টালাইল একটা প্রসিদ্ধ ভান। ৭ ৷৮ বংসর গত হইল এখানে একটা আক্ষসমাজ সংস্থাপিত **হ**ইরাছে। কি**ন্ত উ**পাসনালবের অভাবে ব**হু অন্ন**বিধা ভোগ করিতে হইয়াছিল, করটিয়ার সদাশর জমীদার মাননীর হাফেজ মহক্ষদ আবাল খাঁ সাহেব উপাদনালায় নির্মাণের জন্য ৪৫০ শত টাকা দান করিয়া আমাদিগকে কৃতজ্ঞতাপাশে বন্ধ করিয়াছেন। কিন্ত চুই সহস্ৰ টাকার কমে একটা পাকা গৃহ নিৰ্মাণ করা সম্ভব নহে—এই অবিখাসের মুগে ধর্ম ও নীতির মাহাত্মা সংখা-পন দেখিয়া বাহারা প্লকিত হন, এমন প্রভাক সজ্জনের निक्रे जामत्रा छेभामनागत्र निर्मार्गत जना अर्थ छिमा कति-তেছি। আলা কৃরি ধর্মপরারণ নরনারীগণ এই মহৎ কার্য্যের কিলিকাডা ১৭ই সেপ্টেম্বর ১৮৯০) সম্পাদক সাধারণ আক্ষসমাজ

জন্য আমাদিগকৈ অর্থদান করিতে কথনও বিষ্ণ হইবেন না। ষিনি বাহা দান করিবেন, ভাহা কৃতজ্ঞতার সহিত এইণ করা

निर्वत्रक,

শ্রীহরনাথ ঘোষ, ডাব্জার, করটিয়া, টাঙ্গাটল। জীরফকুমার মিত্র, সঞ্জীবনী সম্পাদক. কলিকাতা। শ্রীপ্রসন্ধর্মার বন্থ, সঞ্জীবনী স্থপারিণ্টেণ্ডেণ্ট, ঐ। **এ মণুরানাথ গুহ, সুল সব ইনস্পেক্তর, টালাইল আদ্ধসমাজ-**

শ্রীয়তীক্রচক্র শুহ, বি, এ, শিক্ষক টাঙ্গাইল স্কুল, মন্দির কমিটি সম্পাদক।

व्यर्थानि व्यर्थनाकातीत्मत्र मत्था त्कान अक्वानत्र निक्षे পাঠাইতে পারেন।

#### ব্রাহ্মবালকদিগের শিক্ষা।

কোন একজন সদাশর বন্ধুর সাহায়ো আত্মীর সভা কভিপর দ্রিদ্র ব্রাহ্মবালকের শিক্ষার ভার গ্রহণ করিতে প্রস্তুত হইয়া-ছেন। বালকগণকে কলিকাভান্থ কোনও এণ্টেন্স স্কুলে ভর্ত্তি করিয়া দেওয়া ছইবে। ত্রাহ্মসমাজের সকল বিভাগের ত্রাহ্ম-বালকই সভার সাহায্য প্রাপ্ত হইতে পারিবে। প্রার্থীদিগকে নিম্ন স্বাক্ষরকারীর নিকট লিখিত আবেদন পাঠাইতে হইবে।

#### ব্রাহ্মবালিকাগণের শিক্ষা।

আত্মীর সভা মফংখণস্থ কয়েকটা দরিদ্র বালিকার শিক্ষার ব্যয়ভার আংশিক অথবা সম্পূর্ণরূপে বহন করিতে প্রস্তুত হইয়া-(इन। वानिकामिशक कानकाका अथवा कृप्तकेष्य वार्षिः স্থুলে ভার্ত্ত করিয়া দেওয়া হইবে। আহ্মদনাের সকল বিভা-গের বালিকাগণই সভার সাহায্য প্রাপ্ত হইতে পারিবে। বালিকাগণের কর্তৃপক্ষগণ নিম স্বাক্ষরকারীর নিক্ট আবেদন করিবেন। ইভি।

১০। ৩ কৰ্ণভয়ালিস্ ব্ৰীট 🤭 কলিকাতা।

এই প্ৰাকুমার চট্টোপাধ্যার সম্পাদক—আত্মীর সভা।

#### বিজ্ঞাপন।

আগামী ১২ই অক্টোবর অপরাহ্ন ৬ ঘটকার সময় ১৩ নং মিজ্জাপুর ষ্ট্রীটত সিটি কণেক ভবনে সাধারণ আহ্মসমাক্ষের অধ্যক্ষ সভার তৃতীয় তৈমোসিক অধিবেশন হইবে।

বিবেচ্য বিষয়।

- ১। কার্যানব্যাহক সভার তৃতীয় ত্রৈমাসিক কার্যাবিবরণ ও আর ব্যয়ের হিসাব।
- ২। বাবু বাণীকান্ত বান চৌধুরী প্রান্তাব করিবেন:---ব্ৰাহ্ম ছাত্ৰীনিবাস সব কমিটীর সম্পাদক বাবু গুরুচরণ মছলান-বিশ মহাশয়কে উক্ত সব কমিটীর সম্পাদক-পদ হটতে অবস্ত করিবার কারণ অনুসন্ধান করিবার নিমিন্ত একটি ক্ষিণন নিযুক্ত হউক।
- ৩। সাধারণ ত্রাহ্মসমাজের পুস্তক বক্তৃতা ও উপদেশাদি मध्य रुत्रिनाम वावरात मद्यक्त मत्रमनिमः एव वातू वन्नताकान्ध বস্থ মহাশয়ের একথানি পত্র সম্বন্ধে বিচার।
- 8। সাধারণ আক্ষদমাব্দের প্রচারক পুননিয়োগের নিয়ম সম্বদ্ধে বিচার।
  - ८। विविध।

সাধারণ আক্ষসমাজ অফিস २>> नः कर्बन्नानिम द्वीहे,

শ্রীগুরুচরণ মহলানবিশ



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১২শ সংখ্যা। ১৬শ ভাগ।

১৬ই আখিন, রবিবার, ১৮১৫ শক, প্রাক্ষা সন্থৎ ৬৪।

বাংসরিক অগ্রিম মৃশ্য ২॥

মফস্বলে

প্রতি ধণ্ডের মৃল্য 

০

#### সেবা-ত্ৰত।

মন কেন চাও রে মিটভা 👂 কেন এত খ-ত্থ-পরতা ? এই ত বিধিন্ন লেখা. कीवत्न हिन्द अका, কেন তবে চাঞ্জ রে মিত্রতা ? पर्याप दक्त रवा छवा १ কেন ভূমি জলোকার মত, ধরি ধরি করিছ নিয়ত গ য। কিছু ধরিতে চাও, ধরিবারে নাছি পাও. বার বার হও আশা-হত তৰু কেন উৎস্ক সতত 🤊 মুথে কেন এডই লালসা ৭ কেন সেবা কর না ভরসা? नत्र ऋत्य ऋषी रुदत् निष्ण या ७ भागतिस দ্বহিবে না তোমার এ দশা.; व्याप भारत (व्ययमत्र वत्रयो। मर्खा (मर्वा, छेशदा स्रेश्वत, এ হটী ত নিত্য সহচর : ন্থ-ভৃষ্ণ। ফেলি পাছে, বল বুদ্ধি যাহা আছে, সেবা-ত্রতে রাথ নিরন্তর ; পাবে সুধ জুড়াবে অম্বর। ওছে প্ৰভু, ওছে বিশ্বপতি ! নাহি হব চাহিতে শক্তি, नीवन नवन इहे. यथात्र उथात्र बहे, (नवा-खरा भाक नमा मणि :

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

छव भाग धहे (इ मिन्छि।

সামাজিক শাসন-প্রণালী--- সনসমাজের কার্য্য হুই প্রকারে চলে, এক কোন এক প্রতিভাগালী নেতার অধীনে, বিভীয় দশলনের সমিবিভ জান ও সমিবিভ

व्याहीन कारन व्यथमाञ्च व्यनावछरे मंक्तित्र व्यशीतः। हिन। चानिम वर्सन व्यवदान्न यथन व्यवदेवन 🕏 विटेर्वस्त ৰাতি সকল সৰ্কানা উত্যক্ত উপক্ৰত ও ট্ট্রা থাকিত, তথন যে ব্যক্তি প্রতিভাও বৃদ্ধির প্রাথর্য্যে जिल्लाम मर्या अधि हरेड, जाहा मिश्र क् विभएकारण विभव्-ছারের উপার বলিরা দিতে পারিত, অ্বদ্ল-রক্ষার নানা প্রকার कोमन खेडावन कतिएं भातिक, लाह्य चंडावक:हे (महे প্রতিভাশালী ব্যক্তির অনুগত হইত। আত্ম-রক্ষার জঞ্জ তাহাকে আত্রর করিয়া থাকিত। এখনও আরবদেশে ও मधा व्यामिकार अमन मकन यायां वह कां जि हिहार , याहाता এক একজন প্রতিভাশালী নেতার অধীনে বাস করিতেছে। আদিমকালে এই সকল প্রতিভাশালী নেতাকে কেহ সভা করিয়া মনোনীত করিত না। স্বীয় প্রভিডার ওণে ঐ স্কল বাক্তি এক এক দলের উপরে স্বীর অধিকার স্থাপন করিতেন। রণজিৎ সিংহ যে সমগ্র পঞ্চাবের অধীশব হইলাছিলেন, ভাহা কি শিক রাজাদিগের সভাতে মনোনীত হইরাণু শিবজী যে মহারাষ্ট্রীয় শক্তিকে আদের বস্ত করিলা ভূলিয়াছিলেন, ভাহা কি কোন সভার ভোট অনুসারে ? ভাহা নহে, সাহসে উদ্যোগে ও প্রতিভাতে যে সর্বাগ্রগণা হইয়াছে সেই অপরদিগকে স্বীয় পদানত করিয়া লইরাছে।৹উচ্ছু-ঋল ও निष्य-अर्गानी-विधीन সমাজের এই অবস্থা অবস্তম্ভাবী। বর্ত্তমান কালের সভাও নিম্নামুগত সমাকে আরে এক প্রণা প্রবর্ত্তিত হইয়াছে। এখন যে প্রতিভার আদর বিলুপ্ত হইয়াছে, বা গুণিগণের গুণের প্রতি অনুরাগ নাই, তাহা নহে। "শুণৈ:হি দর্বত্র পদং নিধীয়তে"—বিধাতা শুণকে এরপ শক্তি मित्राष्ट्रन, यणाता हेरा मक्टनबरे खमन्नदक **आकर्ध** करत क मर्सख খীয় অধিকার স্থাপন করে; এখনও প্রতিভাশালী ও গুণী वाक्तिशन श्राथां चां च कतित्रा थाक्ति। छांशांत्रिशत्करे मकत् সভ্যসমাব্দের অগ্রগণ্য শ্রেণীতে দেখিতে পাওরা যায়। তবে প্রাচীন কালের সহিত এখনকার প্রথম প্রভেদ এই,—সেকালে অধিকাংশ লোক কুজ থাকিছ, স্তরাং ভাহাদের মধ্যে একলনের মন্তক উচ্চে উঠিলে ভার্যকে অভিশব মহৎ দেখাইত; বর্তমান সময়ে भिकाश्वर बात्र केळवा नाष क्यांट त्रहें क्रम अविखानानी वाकिनिशत्क ७७ वर्ष (नथात्र ना । व्याहीन बीमानभीत्र दाय-

নীতি-বিশারদ খেমিইক্লিন বা পেরিক্লিন, কিংবা রোমীর রাজনীতিবেতা কেটোর নাম যে ইতিহাসের আকাশে উজ্জন তারকার ভাগ জলিতেছে, তাহার কারণ এই সক্কারের মধ্যে সেই এক একটা আলোক ছিল। বর্ত্তমান সময়ের প্লাড়টোন রাজনীতি বিষয়ে দেই প্রাচীন রাজনীতিজ্ঞদিগের অংশকা কোন অংশেই ন্যুন নহেন, তবে তাঁহার চতুম্পার্শে আরও ক্ষে ও মহৎ অনেক তারকা জলিতেছে বলিয়া তাঁহার জ্যোতি সে প্রকার দীপ্রিশালী বোধ হইতেছেনা। বিতীয় প্রভেদ এই,—মাডটোনকে অপর দশ জনকে সঙ্গে লইয়া কাজ করিতে হইতেছে। তাঁহার কার্য্য ঐ দশলনের চিন্তা ও কার্য্যের ছারা নির্মিত হইতেছে। জনসমাঞ্জের এই তুই প্রকারে কার্য্য করিবার রীতি আছে। যাহারা দশজনে মিলিয়া কাজ করিতে অসমর্থ; দশজনে একতা विभिन्त । विकास के के बार के ब এবং ছিল্ল বিচ্ছিল হইলা পড়ে, তাহারা তত্ত্বাই প্রমাণ করে যে নিয়মতন্ত্রপ্রণালী ভাহাদেব জন্ত নহে। কোন এক প্রভিডা-শালী নেতার অধীনে থাকা তাহাদের পক্ষে শ্রেয়; তাহা হইলে তাহাদিগের দ্বারা কার্য্য হইতে পারে। কোন গ্ৰে यमि এकमन विवास 'अ कनहकात्री पृत्रक वानक शास्त्र, छत्व रमधारन এক জন জবরদন্ত কর্তা না থাকিলে, ঐ বালক দিগের ঘারা কোনও কার্য্য হয় না। আহ্মগণ পরস্পরের সহিত বিবাদ করিরা কি এই প্রমাণ করিতেছেন, নিরমতন্ত্রপ্রণালী তাঁহাদিপের क्छ नटर ; निख-पिरात्र क्छ (य भामन अनाली वावक्छ इत्र, ठाँशामितार क्य ७ तमहेक्रभ अगानीत आवा मन ?

খে বৈর গঙ্গা— একজন ব্রাহ্মধর্ম প্রচারককে একজন শিক্ষিত ব্যক্তি একদিন জিজ্ঞাস। করিলেন—"ব্রাহ্মধর্ম ও নব-বিধানের মধ্যে প্রভেদ কি ?" ব্রাহ্মধর্ম প্রচারক উত্তর করিলেন, "আপনি এই তিনটী সভ্যের প্রতি প্রণিধান করুন"—

- ১। একমাত্র নিরাকার, পূর্ণপরাৎপর পরমেশ্বরই মানবের উপাস্ত।
  - २। महत्त्रम नेथत-८व्यद्विष्ठ महास्त्रन ७ व्यवास १११-१४ मर्गक।
- ৩। মহম্পন-প্রণীত কোরাণ অভাস্ত ও সর্বাণা অবলম্বনীয়। এই সভাত্ত্বকে বাঁহারা অবলম্বন ক্রিয়াছেন, তাঁহাদিগকে আপনি ব্যাহ্ম বলেন কিনা ?

উত্তর। নাতাহারাত মুদলমান।

প্রস্ন। আছে। আর তিনটী সত্যের প্রতি প্রণিধান করুন।

- >। একমাত্র নিরাকার পূর্ণ পরাৎপর পরমেশ্বরই মানবের উপাত্ত।
- ২। কেশবচন্দ্রনে ঈশার প্রেরিড মহাফান ও অন্রাস্ত পথ ুপ্রদর্শক।
  - ৩। কেশবচক্র সেন প্রণীত নবসংহিতা প্রভৃতি অভ্রাস্ত ও স্কাথা অবলম্বনীয়।

উপরি উলিখিত সভ্যত্তর বাঁহার৷ অবলম্বন করিরাছেন ভাঁহাদের সঙ্গে পুর্বোক্ত ব্যক্তিছিগের প্রভেদ কি?

উত্তর। প্রভেদ এই মাত্র মহল্পের পরিবর্ত্তে কেশবচক্র সেনকে বসাইয়া দেওয়া হইয়াছে।

প্রাপ্ন। তবে মহম্মদের ধর্মকে আক্ষধর্ম কেন বলিবেন না ? यिन महत्राम व्यावक विनिधा छाहारक क्रिमान ब्राह्मधर्मा ना वर्णन, **ভবে কেশবচন্তে আবদ্ধ ধর্মকে উদার ব্রাহ্মধর্ম কেন বলিবেন ?** शृर्त्साजिथिक मठाज्ञत्रक रम कार्य रमश्रम स्हेत्रारक, र्याम इत्र नवविधानी वक्षांनरभव मस्या व्यक्ति व्यव त्नारक है तम कारव মানিরা থাকেন। যাহা হউক পূর্ব্বোক্ত কথোপকথনটা উদ্ভ कतियात्र व्यक्तिशात्र এरे, माध्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति इहेरन ७ (कान ७ जाधुवि (भारत धर्मा क यथन व्यावक करा यात्र তথন আর তাহা আক্সধর্ম থাকে না, ইহাই প্রদর্শন করা। কলিকাতার দক্ষিণে রাজপুর হরিনাভি প্রভৃতি জনপদ সকলের मजिक्टे नित्रा এक ममस्य शका वश्याना हिन । कानक्राम ननी সে পথ পরিত্যাগ করিয়া অপর পথে প্রবাহিত হইয়াছে। কিন্ত গলার প্রতি লোকের এমনি ভক্তি বে তালারা মজা গলার প্রাচীন থাতে পুছরিণী খনন করিয়া ভাষার জলকৈ গলালল বলিয়া সেবা করিতেছে। যে সকল ধনী লোক ঐ সকল পুরুরিণী খনন করিয়াছেন, তাঁহাদের নামে ঐ সকল পুকরিণী প্রসিদ হইয়াছে যথা :—অমুক ঘোষের গঙ্গা, অমুক বস্থুর গঙ্গা ইত্যাদি। ষেমন গলানা মলিলে আরে ঘোষের গলাবা বসুর গলা হইতে পারে না, সেইরপ ধর্ম সংকীর্ণ ও বিষ্ণুত না ছইলে ব্যক্তি-विल्या कावक इत्र मा। এই मक्न मः भीर्ग क्व इहेड धर्माक छेदात करा उ।ऋनमास्कृत महान छेत्मण ।

ধর্ম্ম উপদেশে ও জীবনে—একবার একধানি স্বাহান্ত সমুদ্রগর্ভে বাইতে বোরতর বাড্যার মধ্যে পতিভ क्टेब्राहिन। (मर्टे काहारक ज्यानाभन ज्यात्त्राशीनरमत मर्या একজন বিশপ অর্থাৎ প্রধানধর্মাচার্য্য ছেলেন। ভিনি নিড্য জাছাজের লোক্ষিগকে গইর। উপাসন। ক্রিভেন, এবং ধর্ম ধর্ম ঈশ্বর ঈশ্বর করিয়া সকলকে বিরক্ত করিয়া ভূলিয়াছিলেন। ঝডের প্রকোপ যথন বৃদ্ধি পাইতে লাগিল, তথন আরোহিগণ স্ভাবত: অন্থির হট্যা পড়িল। কেই কাঁদিতেছে, কেই প্রার্থনা করিতেছে, কেহ হা হডোম্মি করিতেছে, নারীগণ ক্ষণে ক্ষণে মৃচ্ছিত হইয়া পড়িতেছেন। এইরূপে ক্পকালের মধ্যে ভীষণ দৃশ্য উপস্থিত **২ই**ণ। এদিকে আহাৰ মতের স্থ তুলিতেছে; আবলম্বেই সাগর গর্ভে যায়। কা**থেন ধীরচিতে** श्रीय कर्छत्र माध्यम मरनारवानी माहिन अवश काहासवानि बन्धा করিবার জক্ত প্রাণপণে প্রেরাস পাইতেছেন। বিশপটী সুক-তিনি ছুটাছুটী করিতেছেন, লের অপেক্ষা ত্রন্ত ও ব্যস্ত। একবার নীচে যাহতেছেন একবার **উপরে আদিতেছে**ন। व्याद्माशीमरात्र जामरक व्यात्र अम् मध्य दृष्टि कतिरहरूम । व्यव- , শেষে ঝড় যথন আতিশয় বাড়িয়। উঠিশ, তথন তিনি অতে ব্যক্তে कारश्चरतत्र निक्छ शिवा जिळाशा कतिरणन, "कारश्चन ! कारश्चन ! জাহাজের অবস্থা কিরূপ দেখিতেছ ?" কাপ্তেন ধীরভাবে উত্তর क्तिराग,-- यात्र कि ? यार्गान गुरुगरक श्राव्य क्यून, व्यायका সকলে সম্বরে প্রভূ পরমেশরের পবিত্র স্ত্রিধানে উপ্রিভ ছট্ব।" ভনিরা বিশপের প্রাণ উড়িয়া গেল; তিনি বলিরা উটিলেজ, "এমনি কি হবে, বোধ হয় তাহা হবে না।"—বিনি ঈশ্বয়

লিখন করির। লোককে জালাতন করিয়া তুলিরাছিলেন;
বিপদকালে তাঁহার মুখে লিখরের নাম জাসিল না, কিন্তু একজন জাহাজের কাপ্তোন, বিষয়ী লোক, তাঁহার মুখে সর্কাঠো
লিখরের নাম প্রকাশ পাইল। জগতে দেখা যার অধিক ধর্ম ধর্ম ঘাহারা করে সমরে সমরে তাহাদের এই প্রকার শান্তি হইরাথাকে; তাহারা ধর্মের প্রতি আছা হীন হইরা যার।
উপদেশে জনেক সমরে উপদেটার সর্কানাশ করিরাথাকে।

বাহারা সর্বাল ধর্ম ধর্ম করে, ভাহারা যে অনেক সময়ে 'ধর্ম হইতে বিচিহ্ন হয়, ইহার নিদর্শন মানব সমাজে ভূরি ভূরি পাওরা গিরাছে। কত দূর হইতে, কত নিষ্ঠার সহিত, কত ৰাৰ ভূষণ করিয়া লোকে কাশী গলা প্ৰভৃতি তীৰ্থ স্থানে আদিলা থাকে। কিন্তু ঐসকল ধর্মক্ষেত্রে যাহারা সর্বদা বাস করিভেছে, সেধানকার ধন্ম কায্যের ভার যাহাদিগের প্রতি ক্লন্ত রহিরাছে, সেই কাশীর পাঙা ও গ্রার গ্রালিদিগের বিষয় একবার স্মরণ कतिएक देशन ध्यमान धाश रुवमा यात्र। ज्ञासामगटक प्रिथित ধর্মের প্রতি অনাস্থা অনিয়া যায়। ধর্মকে ভাছায়া একটা জীবিকার উপায় শ্বরূপ জানে, ইহার অভিরিক্ত ধর্ম্বের সহিত তাহাদের কোনও সম্পর্ক নাই। প্রসিদ্ধ মার্টিন লুখার রোম-নগরে গিয়াই ক্যাথলিক ধর্মের অসারত। দর্শন করিয়াছিলেন। ধর্মের অধান ক্ষেত্রে তিনি ধর্মের ষেক্রপ অবমাননা দেখিয়া-ছिल्न अक्ष भाव कृषांग (मध्यन नाहे। देमनिक भौवतन ধর্ম সাধনের নিষম থাকার প্রায়োজন, অথচ সর্বাদ। স্বিধান থাকিতে হর, ধর্মের বাহিরের মৃত্তির সহিত পরিচল হইলা পাছে ভাৰাৰ আভাস্তারক প্রাণের প্রতি উদাসীন হইয়া যাই।

জীবন পরিবর্ত্তন-ধন্মসাধন ও ধর্ম প্রচারের উদ্দেশ্ত জীবন পরিবর্ত্তন। কি উপারে মানবের হুদর পরিবৃত্তিত হয়---कि क्रिल मानदवर ठिख भारभव निक रहेटल क्रिवा क्रेचरवन निटक यात्र ? शर्यात्र कथा ज्यात्मात्क रिनाटक शास्त्र , ज्यातक লোক ঈশ্বর-প্রেরাদী, ধশ্বসাধনে অনেক সময় ক্ষেপ্ণ করিতে शास्त्रम, किन छाशास्त्र क्षम शास्त्र मिटक मार्शास्त्र मिटकहे पाकित्ज भारत । मानत्वत्र कामत्र यथन भःभात हहेत्ज क्रेश्वत्त्रत দিকে ফিরে,ভখন তাহার কতকগুলে বিশেষ চিহ্ন প্রকাশ পার। ৰদীতে কোনার আসিরাছে কিনা তাহা বেমন নদী বক্ষান্তত कार्छ, भट्यंत्र व्यक्ति मृष्टिभाज कतिया वना यात्र, त्मरेक्रभ मानव জীবনের গতি ঈশবের দিকে ক্যারয়াছে কিনা, ভাষা মানবের জীবনের ঘটনা সমূহের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেই বলা যাইতে পারে। य कीवान यथार्थ পরিবর্ত্তন হইয়াছে, সেই कीवानর প্রথম সক্ষণ দীৰতা। আত্ম সমৰ্থনের ভাব আরু তাঁহার জীবনে দেখিভে পাওয়া যায় না। জন্যের নিন্দা তিরস্বার সর্বদা মন্তক পাতিয়া ৰহন করিতেছেন। দীনতা তাহার ভূষণ। দিতীয় লক্ষণ, ৰাৰ্থ-নাশ। ধর্মের জন্ত ছাড়িতে পারি না এমন বার্থ ও সুধ नारे। पादात मूथ नेचातत निरक कितिबाह्न, छाहात मेचातत चना, शर्मात्र कमा चारतत चात्र कि चाटि १

भीवरमत थरे পतिवर्त्तन गांछ क्तिवात मना नक्त धर्म नाधनाधिर रेष्ट्रक। थरे सनत পतिवर्त्तन कि छेनारत स्त ?

নদীতে ভারার হর চক্ষের আকর্ষণে। বথন সমুজের কল চল্লের আকর্ষণে ফীত হয়, তথন নদীতে ভারার হয়। নদী ও সমুজ ইচ্ছা করিরা পৃথিবীতে এই জোরার উৎপর করিতে পারে না। তবে কি পৃথিবীর ও সমুজের কিছুই করণীর নাই ? আছে পৃথিবী চল্লের নিয়ে আপন বক্ষ বিভার করিরা অবস্থান করিতে পারে; কিছু জল উর্ছে তৃলিবার, নদীর প্রোত উর্জ দিকে প্রবাহিত করিবার শক্তি চল্লেতে আছে।

মানব হাদরের পরিবর্ত্তন সম্বন্ধে ও এই নির্ম। সেই দ্রার চল্লের শক্তিতেই মানবের হাদরের লোভ: পরিবর্ত্তিত হর; নিজে ইচ্ছা করির' হাদরে এক বিন্দু পরিবর্ত্তনও আনিতে পারে না; কিন্তু মানবকে এই টুকু করিতে হইবে, সেই প্রেম চল্লের নিয়ে আপন হাদরকে আনির। রাধিতে হইবে; পরিবর্ত্তন উাহার কুপায় হইবে।

मक्न धर्म मध्यमास्त्र हे छितृ छिहे नव भी वन खाद राजि-দিগের বিবরণ পাঠ করা যার। তবে এ সম্বন্ধে গ্রীষ্ট ধর্ম্মের ইতিবৃত্ত যেমন আশ্চর্য্য আশ্চর্য্য ঘটনাতে পরিপূর্ব এক্লপ প্রান্থ অন্যত্ম দৃষ্ট হর না। দেণ্টপলের জ্বর পরিবর্জনের বিবরণ সকলেই অবগত আছেন। বৈষ্ণব ধর্মে জগাই মাধাইএর षद्ग .षाण्ठर्याक व नरह । মুস্বম্ন **ध**र्ष्य ওমরের নবজীবন লাভ একটা বিশায়কর ঘটনা। ওমর धक्कन महन्त्रामत्र श्रथान मक हिल्लन । जिनि कारा मिलार् সমবেত কোরেশ বংশীর আত্মীর অজনগণের সমকে দেবতা-मिश्तत मास्य भाषय शृक्षक कहे श्रीष्ठिका कतिका विक्रिक हहेबा-हिलान, य महत्रामत मछक यह इहेट विक्रित ना केत्रिया छे भरवणन कति दवन न। द। व्यक्तावर्खन कति दवन না। তদমুদারে তিনি দশস্ত্র হইয়া স্বীয় ভগিনীর গৃহে উপন্থিত হইলেন। তাঁহার ভাগিনী ও ভাগিনীপতি তৎ-शृत्सरे मर्यापत शाय मीकिंठ रहेबा। इतन। उहाब। अत्नक অকারে ওমরকে সাত্তনা করিবার প্রয়াস পাইলেন, কিছ সেই সিংছের ভার বলশাণী বীর কিছুতেই শাস্তমূর্ত্তি ধারণ করিলেন না। তিনি স্বীয় ভাগনী ও ভগিনীপতিকে জন্তর-রূপে প্রহার করিলেন। **ए**शिनीत्क यथन व्यक्तांत्र करतन, তখন তাঁহার ভাগনী ভাঁহাকে বলিলেন—"ভাই আমরা এসলাম ধর্মাবলম্বী হইরাছি, হজরত মহম্মদকে ঈশর-প্রোরত বলিরা খীকার করিয়াছি, আমাদিগকে ওড়া ছারা ৩৩ ৬৩ করিলেও ধর্ম পরিত্যাগ করিব না।" মহস্পদের জীবনচরিত লেখক বলিয়াছেন-"ধর্ম্বেডে ভাগনীর দৃঢতা দেখিরা ওমর বিশ্বথ-সাগরে মর্ম হইলেন ও আপেন কায়্যের জল্প অফুতাপ করিতে লাগিলেন।" তৎপরে স্বীয় ভগিনী ও ভগিনীণতি ও অপর বিখাসিগণের মুখে কোরাণের করেকটা হর। প্রবণ করির। তাঁহার হুদর একেবারে পরিবর্জিত হুইরা গেল। ভিনি যেমন বিরোধী ছিলেন তেম্বি মহম্মদের অনুগত হইর। পড়িলেন।

কেই কেছ বণিরা থাকেন যে ছইটা কারণে আক্ষধর্শের যারা গোকের হুদরে প্রবৃদ অনুতাপের উদর হওরা কঠিন। প্রথম আক্ষগণ অনস্থ নরকে বিখাদ করেম না, স্কুডরাং ভাঁহা-দের অন্তরে পাপের অধিটকারিতা বোধ ভড ভীত্র হুইবার

কণা নছে। দ্বিতীয়ত: ত্রাহ্মগণ বিশ্বাস করিয়া থাকেন, যে সকলেরই পরিত্রাণ হইবে। ঈশবের রাজ্যে কেহই বর্জিত চটবে না। এই মতও পাপ-বোধের তীব্রতাকে মন্দীভূত करता किन्द्र हिन्दा कतिराग है राम्था यहिरत (य खत्र, व्यरणका প্রেম মানব অস্তবে অধিক কার্য্য কবিয়া থাকে। ভয় সকল প্রাকৃতির উপরে কার্য্য করে না। কিন্তু প্রেম সকল প্রকৃতিব উপরে কার্যা করিয়া থাকে। শান্তির ভব্ন অপেকা ঈশ্বর-প্রীতির দারা মানব-হৃদয়েব অধিক পরিবর্ত্তন ঘটিতে পাবে। আর ইহাজানিশেই বাকি যে এক সময়ে অবশ্য মৃক্তি হইবে। তাহা বলিয়া কি কোনও প্রস্তৃতিত্ব হৃদয় পাপকে স্পৃহণীয় বোধ করিতে পারে? রোগী যদি জানে দশদিন পরে রোগ निम्हत्र याहेरव, हिकिৎमकश्य यमि स्म विषया छा**टारक नि**म्हत्र-রূপে বলিয়া থাকেন তাহা হইলে কি দে রোগ যন্ত্রণাকে স্পুহণীয় মনে করিতে পারে? সে কি বলে "আছে৷ থাক্ থাক্ এই রোগ যাতনা আমার দেছে থাক্, সেইরূপ পাপের কালিমা-ময় মূর্ত্তি বে দেখিয়াছে সে কি পাপ পুষিরা রাখিতে চাহে। অতএব ইছা নিশ্চিত যে পাপীর নিকটে ঈশ্বরের উদার প্রেমের মহিমা ভাল করিরা ধরিতে পারিলে, তাহার হৃদয় পরিবর্ত্তিত , হইবেই হইবে।

অন্তের আহ্বান-জনস্ত নিয়ত মানবকে মধুরশ্বরে ডাকিতেছেন। সমুদ্রস্থ পোতারোহী ব্যক্তি যথন অনিমেষ-নয়নে চতুর্দিক নিরীক্ষণ করেন, তথন দেখেন আকাশ, সাগ-রের বেলাভূমির ক্রায় দণ্ডায়মান। উত্তাল তবঙ্গরাজি যেন চতুর্দিকে আকাশের সহিত যুদ্ধ করিতেছে। চক্ষুর দৃষ্টি সীমা-বন্ধ। যেথানে কিছু নাই, সেথানেও একটা কিছু সাকার মূর্ত্তি নির্মাণ করে। কিন্তু অন্তশ্চকু বখন এই অদ্রপ্তিত করনা-মন্ন হবনিকা ভেদ করে, তথন প্রাণ এক অনাদানস্ত অসীম সত্তা-সাগরে ভূবিয়া যায়। আকাশকণী অনস্ত তথন সময় বুঝিয়া मानव ल्यानरक मधुत षाह्वारन ष्याकर्यन कविरछ शास्त्र। সাস্ক জড়রাজ্য পরিত্যাগ করিয়া ঐ অনস্কের রাজ্যে প্রবেশ করিবার জন্ত আকাশ গন্তীর ধ্বনিতে আহ্বান করে। আবার যথন প্রেমে হাদর প্লাবিত হয়, যথন প্রীতিভাজনকৈ দেখিয়া দেখিয়া আশা তৃপ্তি হয় না, প্রাণ পূর্ণ হয় না, দর্শনে বিমুখতা জন্মেনা, তথনও ঐ জনন্তের ক্রিয়া। সাম্ভ প্রেম, পরিমিত ভোগ মানব প্রাণকে তৃপ্তি দান করিতে পারে না। মানব হুদর অতি কুদ্র বটে; কিন্তু প্রেমস্থা যভই কেন ঢাল না, ভাঙার চিরদিন অপূর্ণ থাকিবে। প্রীতিভালনকে দেখিয়া দেখিরা, দেখার সাধ মিটে না৷ অনস্তকাল দেখিতে, ভাল ভাসিতে ইচহাহর। এখানেও হাদর অনেতম্থীন হইরা রহি-রাছে। সাস্ত প্রেমে, সাস্ত ভোগে মানব হৃদর পরিতৃপ্ত নছে। **ट्या**मक्रभी अनन्छ हिद्रकान मानवरक छाँहात निरक आकर्षन করিতেছেন,তাঁহার ডাকে আফুট না হইয়া সাম্ভভাব লইয়া কেহই সম্ভই থাকিতে পারে না। ভাই মানবদ্ধর অনস্ত প্রেমের জন্ত नागन। এইরপে এক মহাসন্তা কান, পুণা, আনন্দ প্রভৃতির भकाखरत्रवान कत्रित्रा काछ भकाखनारत्र मानव क्षत्रदक छाहात्र

দিকে আকর্ষণ করিতেছেন। বিখাসী অবিখাসী, পণ্ডিড মূর্থ, সভ্য व्यम् अकताहे पारे व्यनस्तित व्यक्ति व्यक्ति वरः छै। । । मिटक शमरनान्य। महर्षि (मरवस्त्र नाथ विनेत्राह्मन, "अथम বয়সে আমার নিকট এই নক্তর্থচিত অনস্ত আকাশ, অনস্ত দেবের পরিচর দেয়। একদিন শুভদ্দণে এই অগণ্য নকত্রপূর্ণ অনস্ত আকাশ আমার নর্নপথে প্রদীপ্ত হইশ। আশ্চর্য্য ভাবে একেবারে আমার সমুদর মন, সমুদর আত্মা আকুট হইল। অমনি বুদ্ধি আসিয়া সিদ্ধান্ত করিল যে, ইহা কথনও পরিমিত হল্ডের রচনা নছে। সেই মৃহুর্ত্তে অনভের ভাব হৃদয়ে প্রতিভাত হইল।" \* \* "আমার এই বিশাস ছিল যে, ঈশ্বরই শালগ্রাম শিলা, ঈশ্বরই দশভূজা ছুর্গা, ঈশ্বরই চতুত্ৰা সিদ্ধেরী; কিন্তু শুভক্ষণে যেমন এই অনস্ত আৰু-শের উপরে আমার নয়নযুগল উন্মীলিত হইল, অমনি আমার জ্ঞান উন্মীলিত হইয়া পৌত্তলিক ভাবকে ক্ষণকালের মধ্যে তিরোহিত করিয়া দিল। অমনি জানিলাম, অনন্ত আকাশের অগণানক্ষতা পরিমিত হস্তের কার্যানহে, অনস্ত পুরুষেরই এই প্রথম উপদেশ অনস্ত আকাশ হইতে ব্দনস্ত রচনা। পাইলাম।"

অসীম জড ও চৈতনাকে পরাভ্ত করিরা অনস্তের আহ্বানধ্বনি সর্ব্যাই উথিত হইতেছে, যিনি তাহা প্রবণ করিয়া
তদমুসরণ করেন, তিনিই অমৃত্যম রাজ্যে উপস্থিত হন।
মহর্বি যেমন অনস্তের আহ্বান প্রবণ করিয়াছিলেন, তজ্ঞপ
অনেকেই সজ্ঞানে ঐ মধুরধ্বনি প্রবণ করেন, কিন্তু মহর্বির
ন্যায় সেই অনস্তের অহুসরণ কর জনে করিয়া থাকেন ?
বিরাম নাই, বিপ্রাম নাই এক অবারিত অনাহত শক্ষ উথিত
হইতেছে তাই ব্যাহ্মকাব গাহিয়াছেন;—

"বার বার প্রেমভরে—ডাকিছ গো মা, প্রেম বাছ প্রশারিকে—ডাকিছ গো মা, সেহে বিগলিত হরে—ডাকিছ গো মা, আর আর আর বলে—ডাকিছ গো মা, অপরাধ ক্ষমা করে—ডাকিছ গো মা, হাসিমুখে প্রেমভরে—ডাকিছ গো মা, জীবের দশা মলিন দেখে—ডাকিছ গো মা।"

ধন্য সেই অনন্ত পপের যাত্রী, যিনি মাতার ডাক ভানিরা মাতার অঞ্চল ধরিরা অনন্ত পথে গমন করেন।

রামমোহন রায়—আর কতদিন আমরা রামমোহন রায়ের স্থৃতিচিক্ত ভাপন বিষয়ে উদাসীন থাকিব ? তাঁহার ভার ভার ব্রদেশবংসল ব্যক্তি করজন জালিয়াছেন ? তাঁহার ভার ব্রদেশের জন্ত এত পরিশ্রম বা কে করিরাছেন ? আমরা তাঁহার স্থৃতিচিক্ত আদ্যাপি স্থাপন করিতে পারিলাম না, ইহা এদেশের লোকের পক্ষে বিশেষতঃ বাজালিদিগের পক্ষে বড় নিন্দার কথা। মহর্ষি দেবেক্সনাথ একবার বলিরাছিলেন, ব্রাহ্মসমাজই তাঁহার সর্বপ্রধান কীর্ত্তি-ভক্ত। এ ক্ষথা সভ্য তাহার আর সন্দেহ কি ? চৈতক্ত নানক, ক্ষীর প্রভৃতি মহাত্মগণের কি কির্তিভক্ত আছে ? তাঁহারা সহ্ব সহক্ষ

नवनाबीय চিতে दान कतिराजन, देशहे छाँगायत कीर्फ-एछ। बाबरमाहन बाबक त्मरे व्यकाल मानव-हिट्ड वाम क्तिरवन, তাঁহার আধার বতর পৃতিচিত্র কি ? কিন্ত আতীর শিক। ও काछोत्र अगावनोत विकालत निरक मृष्टि कतितन, चरमामान-কারী মহাজনগণের কোনও প্রকার শ্বতিচিক্ রাধিবার প্রবোজনীয়তা অমুভব করা বায়। মহাজনদিগের স্থতিচিক্ ৰায়া দেশকে পূৰ্ণ কয়ার স্থায় কাতীয় প্ৰতিভা ও ৰাতীয় 🖦 ণাবলীর বিকাশের উৎক্র উপায় ব্যতি ব্যরই আছে। (क्वन द्वामत्माहन द्वाद (कन, स्वाटन धर्म्य ७ शरदाशकाद्व যে কেছ শ্রেষ্ঠ পদ্বী অধিকার করেন, তাঁচারই স্মৃতিচিহ্ন স্থাপন করা কর্ত্তব্য। কিন্তু কি চুর্ভাগ্যের বিষয় দেশের कि धूर्मभा ! इरत, नरत, भवार मकरनवरे चुर्किहरू चारिक ছন, কিন্তু বর্ত্তমান যুগের সর্ব্বপ্রধান ব্যক্তি বিনি তাঁছার স্মৃতি-हिरू चार्नन कतिएठ 'दक्ड छेरमाशी नरह। **এक नमरबर्** ডাক্তার রাজেজালাল মিত্র ও পঞ্জিতবর, ঈশারচক্র বিদ্যা-সাপরের মৃত্যু চইরাছে, একদিনে ভাঁচাদের উভরের স্বরণার্থ সভা আছু চ হইয়াছিল, কোন দিন হয়ত শুনিব ডাক্তার রাজেল্ড-লাল মিত্রের একটা উৎক্লষ্ট প্রতিমূর্ত্তি বিলাভ হইতে নির্মিত চইরা আসিরাছে; ব্রিটিশ ইণ্ডিরান এসোসিএসনের হলে ভালা খোলা हरेत ; किन्न विमानाभरतत अणिमृर्खित कथा चात छन। याहेरव না। ইহার কারণ এই, ডাক্তার রাজেক্রলাল মিত্রের স্থতিচিত্ স্থাপন বিষয়ে অমিদারগণ উৎসাধী। তিনি তাঁহাদেরই লোক ছिलात । चुखताः त्रिष्ठे। नीख बहेवात चाना चाट्ट । विम्रा-সাগর দরিজের বন্ধু ছিলেন; দরিজগণ তাঁহার প্রতিমৃতি इागन कतिका छेडिएक भातित्व ना। वाहा इंडेक दामर्गाहन, রারের স্বৃতিচিত্র স্থাপন করা বাঙ্গাল মাত্রেরই কর্ত্তব্য; বিশেষ ত্রাক্ষদিগের। রামযোহন রার সংরের প্রাক্তে যে গৃহ নির্দ্মাণ कतिया वात्र कतियाहित्वन, त्र छवन चागालि विग्रमान बहियाह. সে ভবন তাঁহার বংশধরদিগের হস্ত হইতে অঞ্চ হস্তে গিয়াছে। একণে সেই বাটীতে স্থকিরা ব্রীটের থানা রহিরাছে। একটু চেষ্টা করিলে টাকা তুলিয়া ঐ বাড়ীটী ক্রম্ম করিয়া তাঁচার স্মাত-চিক স্বরূপ রাখা ষাইতে পারে। তাহাতে তাঁহার নামে একটা লাইত্রেরী স্থাপন করা যাইতে পারে। তাঁহার প্রতিমৃত্তি ভারার মধ্যে রাখা ঘাইতে পারে। আমাদের মধ্যে করেক बाक्षि यनि व्यक्तिकाक्षर इहेन्ना धविष्य नार्शन, जाहा इहेरन ক্লডকার্য্য ছইতে পারেন। বিগত ২৭ সেপ্টেম্বর নিটীকলেজ ভবদে রাজার পরণার্থ সভা হইরাছিল, প্রতি বংসর এইরূপ সভা হইবে। কিন্তু তাঁহার একটা স্থতিচিক্ত স্থাপন বিষয়ে বৰ্মলের মনোযোগী হওরা উচিত।

### বিশ্বাদীর বাধ্যতা।

বিশ্বাসিগণ আপন জীবনে এক প্রকার বাধ্যতা অহভব করেন, বে বিবরে চিন্তা করিলে চমৎকুত হইতে হয়। মহাপুরুষ মহক্ষদের জীবন চরিতে দেখিতে পাঞ্ডম যায় বে, ডিনি ব্ধন কালাভে ধর্ম প্রচার আরভ করিলেন, ডখন ডাঁহার অ্লাভীর

कारतम अभीत वाकिन्न छात्रात विद्याशी एरेना केठित्यम **এ**वः তাঁহার ও তাঁহার শিষা দলের প্রতি বিবিধ প্রকার নির্বাতন चात्रच कतिराम । कर्यक्रम (कार्यम मगर्गाज नगरवज হইরা এক্দিন মুহল্লের খুল্লপিতা আবুতালেবের নিক্ট গমন করিয়া বলিলেন ঃ—"ভোমার এই ভ্রাতৃস্পুত্র মহম্ম পৈতৃক ধর্ম পরিতা৷গ করিয়া এক অন্তুত নৃতন ধর্ম অবিকার করিয়াছে : त्म चामारतत्र (त्वडातिरगंत्र निन्ता करत्र, ७ (लाक नक्नरक বিপথগামী করিতেছে; এতত্তির সে আমাদিগকে পণভাত-ধর্মজোহী বলিরা থাকে। আমরা প্রথমত: একস্ত তোমার निकाष উপन्तिज इहेबाडि, या जूबि जानाक छेलाम मित्व পুনর্বার যেন দে আমাদিগকে ও আমাদের ঠাকুর সকলকে এরপ অফুচিত কথা না বলে। অতঃপর সে যদি তোমার উপদেশে নিবৃত্ত না হর তবে আমরা যে উপারে হৌক তাহাকে নিবারণ করিতে সচেট ফ্টব।" শান্তি-প্রির আবৃতালেব কোরেশ দলপতিদিগের এই বৈর-নির্যাতন-ম্পৃহ:-সূচক বচন खेरण कतिता न्यांडेरे कारू उर कतिरणन रय, व्याक्रीत चक्रनगरणत মধ্যে ছোর বৈরানল প্রজ্ঞানত হইল। সহক্ষদ তাঁহার अवगष्डि अथ इहेट्ड निवृद्ध न। इहेट्न ७ देवब्रानन निर्साण क्रिवाब देशावस्त्र नाहे। धवः हेराख वृत्तिएक शावित्न (य, মহত্মদকে শত্রুকুলের হল্তে নিদারুণ শান্তি ভোগ করিতে হইবে। ইহা অফুডৰ করিয়া আবৃতালের মহম্মদকে স্বীয় সরিধানে ডাকি-লেন এবং ব্যগ্রভার সহিত উচ্চার অবলম্বিভ পথ হইতে প্রতি-নিবুর হইবার জন্ত অমুরোধ করিতে লাগিলেন। কোরেশগণ उाहारक याहा विविश्वाहित, छाहा खालन कतिरतन, अवः चान-ছিত বিপদ প্রদর্শন করিতে ক্রটী করিলেন না। কিছ মহশ্বদ ভীত হইবার পাত্র ছিলেন না। বিশ্বাসবলে ভাঁহার হুদ্র সবল ছিল। তিনি উত্তর করিলেন:--"তাত, মোহমদের आ। (व मेच्दतत्र मंक्लिशृर्व हत्य विश्व बहेत्रा तिवाह्म, छाहात নামে আমি বলিভেছি, যদি কেবেশগণ পূৰ্ব্যকে আনয়ন कतिवा जामात मिक्न क्रांच ७ हज्याक वाम क्रांच जानेन क्रांच व्यवश्व व्यवभावका धार्मिन कतित्रा व्यामारक वरत य कृति কার্য্য হইতে নিবৃত্ত থাক, তারা হইলেও আমি অবশু প্রবাস পাইব, হয় এসলাম ধর্ম প্রতিষ্ঠিত করিব, না হর, প্রাণ দিব।" ভনিয়া আবুভাবেৰ ক্তৰ হট্য়া গেলেন। বুঝিলেন মহমদ निवृष्ठ श्हेरवन ना।

জিজ্ঞানা করি মহল্প যে বাধ্যতা জ্ঞানের বশবর্তী হইর।
প্রাচার কার্য্যে প্রবৃত্ত হইর।ছিলেন সে বাধ্যতা কোণা হইতে
মানিল ? সকল মহাজনের জীবনেই এই প্রকার বাধ্যতা
দেখিতে পাওরা যার। মহাল্যা যীশু ওাহার মৃত্যুর কিছুদিন পূর্ব্য হইতে সর্বাদাই ভাবে ও সংকেতে বলিতেন যে, দ্বরার
তাহাকে শক্রহন্তে নিধন প্রাপ্ত হইতে হইবে। মথ্চ সেই পথেই
মার্যার হইতে লাগিলেন যাহাতে শক্র হস্তে নিধন প্রাপ্ত হপ্রা
মার্যান্তা এ বাধ্যতা কোণা হইতে মানিল ? তিনি কি
মানে করিলে মৃত্যুকে পরিহার করিতে পারিজেন না ? প্রচলিত
ধর্মের প্রভিবাদ ক্রিরা গোঁড়া ধর্মবাজকদিগের শক্রতার
মার্যা প্রাক্তির না ক্রিরা কি পাকিতে পারিজেন না? তিনি কি

मरम कतिरम काकारत्रथं मगरतस क्यथरतत्र कात्रथामारक सुर्ध সফ্লেদিন যাপন করিতে পারিভেন না 👂 🖙 ভীহালে এ পৰে আসিভে বাধ্য করিল ? আর সৈ বাধ্যজা ধা এভ প্রবল कि ध्राचारत रहेन, बाहाएक मुकालत छत्र वनित्रा नगा हहेन मा 🕈 नकन महास्मात की बटन कहे अपहे अपहे दिला। दि नमस्त रविनाम शाहारतव समा वहिर्मेख करेराम, तम ममरत (मरे मवदीन নগরেই কত পণ্ডিত ছিলেন, বালারা সঙ্গাচিতে নিজ গুড়ে বসিয়া ছাত্রবৃদ্দের পাঠনা কার্ব্যে নিযুক্ত ছিলেন। চৈতনাও ষৌবনের প্রারম্ভে ঐরপ পাঠনা কার্যো নিযুক্ত ছিলেন। তিনি मत्म कतिराम कि बीनत्मत्र अवभिष्ठे काम श्राप्तत डैशरत পাদিরা ছাত্র পড়াইরা শেষ করিতে পারিতেন নাং **শে পথ থাকিতে কে তাঁচাকে নৃতন পণ অবলয়ন কয়িতে** বাধ্য করিল, যে পথে গিরা ভিনি লোকের উপহাস বিজ্ঞাপ ও নিৰ্যাতনেৰ পাত্ৰ চইলেন 🕴 এ ৰাধ্যতা কোণা হইভে আংসিল 📍 মহাআয়ারাজারামমোহন রারের বিষয় সারণ কর। তিনি যে সময়ে বিষয় কর্মা পরিত্যাগ করিয়া কলিকাতা সভরে আসিরা বাস করিলেন, ভখন হঠাৎ ধনী ছইবার দিন ছিল। তাঁচার অবাবহিত পূর্বে ও তংখালে, রামগুলাল সর্কার, বিখনাপ-মতিলাল, মতিলাল শীল, ও রামকমল সেন প্রভৃতি चरनरक नामास नामास वन्दा इटेरल व्यव निर्मत मर्था शहर ধনশালী হটরা উঠিতেছিলেন। রামসোহন রার মনে করিলে कि সেই পণ অবশয়ন করিতে পারিতেন না ? তাঁহার স্কার ধন মান সঞ্চর করিবাব স্থাবিধা কাছার ছিল গ তিনি যদি বিষয় কর্ম্ম তাাগ করিয়ানা আগিতেন তাহা হইলে কি অচিরকাণের मर्था धानिष्रात मर्था मुक्ताखन्या वास्ति इहेर्ड भातिर्छन ना १ विस्मारका मन्नां । मार्साहरू का कि करेवा कि জীবনের অবশিষ্ট ফাল থাকিতে পারিতেন না ? কে ওাঁহাকে সে পথ পরিত্যাগ করিয়া ধর্ম ও সমাজ সংস্কাররূপ তুরুত্ কার্য্যে আত্ম-মমর্পণ করিবার জন্ত বাধ্য করিল ? তিনি কি তাঁহার কাৰ্য্যের ফলাফল বিষয়ে অঞা ছিলেন ? তিনি কি জানিতেন ना (व এই পথে গমন क्षिरन जिनि चाम्म वानिमिर्गत बाता নিগৃহীত হুইবেন ? তাছা তিনি পরিষ্যারত্রণে স্থানিতেন, পরিছাররপে নিজ গ্রন্থে লিখিয়া রাখিয়া গিয়াছেন, যে তাঁচার विटवक छै। हारक त्व भाष अधानत हकेट वांगा अतिशाहक সে পথে অপ্রসর হটয়া তিনি আত্মীর স্বলন কর্ত্ত পরিতাক্ত इडेबाइज এवः निविध ध्यकारत लाक्त्र निर्याउन मञ করিয়াছেন ; কিন্তু তথাপি তিনি ছঃখিত নহেন।"

এ বাধ্যতা কোণা হইতে আসিন ? প্রভাক নি: খার্থ, পরপ্রেমিক ও বিখাসী হৃদয়ে এই বাধ্যতা অমুভূত হইরা থাকে। মলিন ও কলুবিত হৃদয়ে এই বাধ্যতা অমুভূত হর না। চিন্ত যত কলুবিত হর, ততই বিবেকের বাধ্য করিবার শক্তি হাস হইরা বার। আর যতই চিন্ত নির্দাণ ও খার্থশৃষ্ঠ হর ততই তাহা ধর্ম নিরমের অমুগত হর। আমরা কি খীর খীর জীবনে এই বাধ্যতা অমুভব করি না ? আক্রগণ কোন্বলে খীর খীর খারে দঙারমান রহিরাছেন ? আক্র বদি ভাহারা ভারাদের হৃদয়ন্থিত বিশাসন্তে গোপন করেন, বদি আক্র প্রাচীন স্বাক্ষের

মিকট সন্তক অবনত করিলা বংগন—"বে তাঁছারা এছবিন বাহা অবলহন কলিয়াছিলেন ভালা প্রাত্তি, ভালা হবলৈ তাঁলারা কলাই লোকের প্রিয় ও আলরণীর চইছে প্রয়েন। কিন্তু ভালা না করিলা প্রাক্তিক আশ্রম করাতে তাঁছালা প্রতিদিন কন্ত প্রকার লোকের নির্যান্তন সন্থ করিভেচেন। এ সমৃদার এক দিনে নিবারিত হইতে পারে, অবচ কে তাঁহালিগকে এই নির্যান্তন সন্থ করিল। প্রাশ্বধর্শের আশ্রমে পাকিতে বাধ্য করিভেচ্ছেণ

সভা, ভাষ, প্রীতি, পনিত্রতা প্রভৃতি সম্দর মদল ভাবেই মানব-হাদরের উপরে এক প্রকার বাধাতা আছে। হাদর অভানত:ই এই সকলের অন্থাত হয়, যাদ আর্থ প্রবৃত্তি বা অপ্র ফোনও কলুষত ভাব আদিয়া ভাছাকে কলুষত না করে। এই কন্সই আন্ধাকবি গাইয়াছেন;—

সহজেই ধার নদী সিন্ধুপানে কুন্থম করে গন্ধদান ; মন সহজে সদা চাহে ভোমারে,

ভোষাতেই অমুরাগী, মোহ যদি না ফেলে আঁধারে "

ৰাত্তৰিক নদীর গতি বেমন স্বভাবত: নিয়াভিমুখে বায়, কুসুমের গন্ধ বেমন স্বভাবত: চতুর্দিকে বিক্ষিপ্ত হর তেমনি নির্মাণ মন স্বভাবত: ঈশবেচছার স্বস্থগত হইয়া থাকে। কিন্ত চিত্তের এই নির্মাণতা লাভ করাই হছর।

যেমন সাধারণ ভাবে সভ্যা, ন্যায়, প্রেম ও পবিত্রভার এক প্रकात वाधाजा चाह्य। প্রকৃতিবিশেষে, কার্যাবিশেষের সেই প্রকার বাধাতা দৃষ্ট হর। কোন্ কার্ব্যে কোন্ ব্যক্তির হৃদর মনের অনুরাগ করিবে তাহা কেহ বলিতে পারে না। ঈশর कान मिरक काहारक ध्यातन काहन काहा एक वनिष्ठ भारत ? তাঁহার প্রেরণা যথন হৃদরে আসিরা উপস্থিত হয় তথন মানুষকে পরাধীন করিরা ফেলে। সেণ্টপল বারবার বলিয়াছেন, "আমি वन्ती, आयात त्राधीन जा नारे, आयि ध्यानत ना कतिता शांकिए ज পারি না৷" এই পরাধীন ভাব মানবের আধাাক্সিক প্রাকৃতির এক নিগুড় তক। যদি কাহারও হত পদ রক্জু বারা দুচ্রপে वह शास्त्र, जात तम वास्ति मोड़िएज शास ना स्मन विमन्ना অমুবোপ করা বেমন রুধা, তেমনি ঈশরামূপ্রাণিত ব্যক্তিগণের কার্য্য কলাপের প্রতিবাদ করাও বুধা। তাঁহারাও অমুভব করিরা থাকেন যে, তাঁহাদের স্বাধীনতা নাই। ভটপোকার পক্ষে শুটি না বুনিয়া থাকা যেরপ অসম্ভব, তাঁহাদের পক্ষে क्षेत्रवामिष्ठे भए। ना हनाव (महेक्रभ व्यमुख्य । व्यवहायुक्षानिक ব্যক্তিদিগের এই লক্ষণ দেখিয়া জগৎ স্তব্ধ হইয়া গিরাছে, ও ব্রহ্মশক্তির গুরুত্ব ও প্রভাব অমুভব করিয়াছে।

পাশ্চাত্য ও প্রাচ্য ধর্মভাব।
(ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্চারের বার্ষিক উৎসব উপলক্ষে উপাসনা
কালে শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী কর্তৃক প্রবন্ধ
উপদেশের সারাংশ)

জন্য জানাদের প্রির পত্রিকা ইপ্তিয়ান মেদেঞ্চারের খার্ষিক উৎনবের দিন। জন্য প্রাতে জাবেরিকা ইইতে সমাগ্ত<sub>্</sub>ঞ্জ-

থানি পজিকা হতে করিরা একটা চিত্তা হবরে উলিভ क्रेटिक्न। (म विखानी धरे :-क्ष्म बरमन मूर्स के मिलका থানি হখন প্রথম বাছির হ'ব, তথন এক খণ্ড কাগল সুত্রিত इहेक ध्वर (म्थितिहे त्वाथ इहेक, काशक्यांत्र व्यथिक मिन काशी इहेद्द ना। यांबाता काशक थानि वास्ति कतित्रहिलान, काँशति ७ कर्व ভরে বাহির করিরাছিলেন। উদার ধর্মভাষ লোকে পদ্দক্ষ করিবে किमा छांगात्र मत्न এই जानका हिन। किन प्रविष्ठ नारेनाम युक्त वर्तास्त्र भव वर्त्रव याहेर्ड नानिन, छुक्त छाहारमञ् काशास्त्रत क्षेत्रिक करेटक गाशिन। धक निष्य काशास्त्रत करणवत বুদ্ধি হইতে লাগিল ; অপর দিকে ভালার অত্তর্ভ বিষয় সক-লেরও বিশেষ উৎকর্ষ লক্ষিত হইতে লাগিল। এবারে সে কাগলখানির আরও উরতি হইরাছে। কাগলখানি হতে পড়ি-(नहे जानम वत्र। कागमधानि हाटक कतित्रा काविटक नागिनाम, कार्या मद्दा शृद्ध । श्रीकारम कफ व्याखन । शाकाका तम नक-**(मत ममञ्**रेशास्त्र शिष्ठ (यस समीद शिष्ठद माहि । समी मकन গিরিশুল চইতে যথন নি:স্ত চয়, তথন তাহাদের আছতন অতি সংকীর্ণ থাকে। প্রস্তর রাশির মধা দিয়া ঝির্ঝির্করিয়া একটী क्रमधात्रा मामिटल्डाइ। खक्ती मृशान वा अक्ती कूक्त मन **क्तिलहे जाहारक भान • हेन्रा शाहरल भारत । जबन रम निर्व** রিণীকে দেখিলে বোধ হয় না যে কখনও ভাহার এত বল বিক্রম হইবে, যে তাৰা স্থৰিশাল পল্লার ন্যায় ভীষণ মূর্ত্তি ধারণ করিয়া প্রাম জনপদ প্রভৃতি উল্লিড করিরা ধাবিত হইবে। কিছ नहीं यहरे ममहत्व व्यवहोर्ग इस्ट थारक, उहरे माथानही সকলের সহিত স্থিলিত হইর। বিশাল মাকার ধারণ করে; তথ্য মহা মহা ভরণী সক্ষ ভাহার বেগকে অভিক্রম করিয়া পারে উত্তার্ণ হইতে পারে না। পাশ্চাভ্য শুভাত্রভানের প্রকৃতি এইরূপ। আজ ছুই চারিটা লোক শইরা একটা ভুভকার্য্যের স্ত্রপাত হইতেছে। অপেক। কর কিছু দিন না বাইতে যাইতে (मबिट्ड পाইবে, कड मड मड लाक डांशांट दांग नित्राह्मन, ध्येवः छाहारमञ् कार्यारकत्व कलपृत्र वाश्य हहेता शाष्ट्रवाहरू। कामि मा जाननाता नकरन छनित्राह्म कि ना देशनर्थ छन्। মহিলাদিপের একটা সভা আছে। হাঁসপাতালের রোগীদিগকে कून केनहात (मध्या के नाम के किया। नाम नाम नाम कार्य স্থানে এক একটা বর ভাড়। করিরা রাখিয়াছেন। সেই হরে नशाह इरे मिन या जिन मिन खाए बहिना नजारान भाना ক্রিলা সমবেত হন। গরিব লোক্দিগকে ফুল যোগাইবার बना मानन त्रख्या थात्क। त्य निन न्छार्ग्ह त्थाना इय, त्र দিন চভূদিক হইতে ভারভার ফুল আসিতে থাকে; এবং মহিলা সভাগণ সেই সকল ভোড়া বটন করিয়া হাঁসপাভালে **এবরণ** করিতে থাকেন। করেক ঘণ্টা এই কার্য্যে ষাপন করিরা সকলে স্বীয় স্থীয় ভবনে প্রতিনিবৃত্ত হন। এই সভা ৰত্ বৎসর জীবিত সহিরাছে এবং বংসর বংসর ভাহার উন্নতি হইডেছে। অবন অবন হই একটা হাঁসপ্যভাবে ফুল বোরণ করা হইত, একবে বছসংখ্যক হাঁসপাতালে প্রেরণ করা হর। সে দিন আর একটা অতুত সভার বিবরণ পাঠ করিয়াছি। নে বেশের পরীগ্রামন্থ একথানি সংবারণত্বের সম্পাদক এই সভা

স্থাপন ক্ষিত্রাছেন। ভিন বংগর ইইভে ৭৮ বংগর বর্গের वानक वानिका हेरांत्र मुखा। व्यर्थाए बाहाता (काम टाकारत আপ্রায় নাম আক্র ক্রিডে পারে, ভারারা ইরার স্ভা। প্রভ্যেক নৃত্য সভ্যের নিকটে একথানি ছাণা গোটকার্ড প্রেরিড হয়, ভাষাতে খুল খুল করেকটী প্রতিক্ষা থাকে ভাষাতে স্বাক্ষর করিব। ক্ষেত্রত পাঠাইলেই সভ্য হওরা যায়। সভানিগকে जनवानब कार्राप्त मर्था अकृष्ठे। कांक अरे कविर्क कत्र रव, औरहेत्र জন্মোৎসবের পূর্বে পুরাতন খেলানা সকল সংগ্রহ করিরা ডাক-(वार्श मण्णामरकत निक्षे ध्यात्रण कतिरङ इत्र । जिनि औ मकन পুরাতন বেলানাকে একটু রঙ্চঙ্ছিরা নৃতন করিয়া পরীব-দিগের কুটীরে কৃটীরে শিশুদিগকে বিতরণ করেন। পুরাতন খেলানা সংগ্রহ করা শিশু সভাদিগের একটা মহা উৎসাহকর কার্য্য। অনেক শিশু সভ্য সহৎসর ধরির। পুরাতন ধেলান সংগ্রহ করিরা রাখে। এটি মাসের পূর্বে পিতা মাতার ছারা বাস্করন্দী कत्रित्रा मण्यामरकत्र निक्षे छारक द्वारण करत्र। मःवामश्रद्ध পজিলাম এই সভার দিন দিন এফ উন্নতি হইতেছে যে বিগত বৎসর প্রায় ১৫। ১৬ হাজার থেলানা সংপ্রছ চইয়াছিল। সে দেশের সমল প্রকার শুভাত্রানের ভাব এই প্রকার।

चामारमय रम्प क्रिक हेशाय विश्वतीठ च्यवणा। चामारमय मिल्ला कार्यक अलाक्ष्ठीन महादगार कात्रक इत. किल्ला निर्वादिशः यूथ मीन्नाव नाव निवास मान जार धारन करत । त्नारक्य উৎসাহ ও অকুরাগ বৃদ্ধি পাওয়া দূরে থাক্ মন্দীভূত হইরা যার। काक्षे भन्ना क्या रहेना ठनिए शास्त्र। हेरात कात्र कि र প্রধান কারণ এই, আমাদের দারিত জান অতি অনুজ্ঞা। কর্ত্তবা বোধে বাহাতে হত্তার্পণ করি, ভাহা স্থচারুদ্ধপে নিকাহ করিতে যে আমরা বাধা, ভাচা আমরা অফুডব করি না। যে কাৰ্য্যের ভার গ্রহণ করা বার, ভাষা অভি অসম্পূর্ণ রূপেই সম্পাদন করিয়া থাকি। বিতীয়ত: এই সকল সদমুষ্ঠানকে আমরা ধর্ম বলিয়া মনে করিতে পারি না। আমরা মনে করি, হাঁদপাভালে রোগীদিগকে ফুল প্রেরণ করা, গরিবের ছেলেদিগকে ধেলানা বিভয়ণ করা ইহাতে আবার ধর্ম কি আছে ? ইা বলি একজন উদ্যান্ত ধ্যানে বসিয়া থাকিতে পারে বা কুন্তক করিতে পারে, বা তিন ঘণ্টা ঈশ্বর ঈশ্বর করিরা চেঁচাইতে পারে, তাহারই ধর্ম হয়। ভিতরে এই প্রভেদটা পুকাইরা রহিয়াছে। (म दिल्ला क्यांक मान्य करते करते मान्य क्यांत्र क्यां অবস্থা কি আছে। দিনের পর দিন রাত্তির পর রাত্তি এক ভাবেই বাইভেছে, সেই রোগবন্ত্রণা, সেই ঔবধ সেবন, সেই চিকিৎসকের মুর্জি, সমুদারই হাদরকে বিবর ও মলিন করিছে থাকে। এরপ ব্যক্তির হল্তে একটা ফুলের ভোড়া বদি বার. ভাহার মণিন সুথে কি একটু প্রেণরভার উদর হয় না ? সেই পুশাগুছ ভারাকে প্রস্কৃতির হুছতা, সন্ধীবতা ও প্রসন্নতা শ্বরণ क्त्राहेश (पत्र । ভাছার বল্লণামর নরক্বাদের মধ্যে অর্পের শুরুভি-मन निःचान चानिना (सन्। अरे चानसर्टेक् छेरशानम चन्ना कि ধর্ম নম্ব ? সৈইরূপ আময়া সকলেই জানি খেলামার প্রতি শিশু-বিশেষ কিয়াপ আগ্রহ। একটা হাকর বোলানা পাইলে ভাহা-रमप्र आर्थ कि जानकर रप्त । यह जानक कि रक्षक वितर्

मखारमत व्यार्गरे स्त्र, मतिरक्षत्र मखारमत व्यार्ग कि स्त्र मा १ কিন্তু হার কড দরিল্লের কুটীরে কড সঙল সকল শিশু রহিরাছে যাছারা বৎসরের মধ্যে একটাও খেলানার মুধ দেখিতে পার না। তাহার৷ শৈশব-ফুলভ অজ্ঞতাবশতঃ স্বীর পিতা মাতার অবস্থা ना कानिया कड जमत कांक्रिया कननीत व्यक्षण ४८व-- "म! (थनाना (१६"। व्यवः इत्रष्ठ (थनानात्र भतिवर्श्व कननीत्र ग्रन्थः প্রহার পাইয়া ক্রন্সন করিতে থাকে, না হয়, মাডা ও সন্তান উভয়ের চক্ষে জলধার। বহিতে থাকে। এই স্কল দ্বিদ্রের গৃহে বৎসরাস্তে যে দিন কতকগুলি সুন্দর ধোলানা উপস্থিত इ. ७ थन कझना कतिया (मथ (मथान कि चानमध्यिनि डे उँतिया) পাকে। মাতা ও সম্ভানের প্রাণে কি অপুর্ব স্থাবে সঞ্চার হয়। দরিস্ত্রিদিগকে এভটুকু সুপ দিবার জন্য যাঁচারা শ্রম করা ভাবশ্রক বোধ করিয়াছেন তাঁচারা কি ধর্মকার্য্য করিতেছেন না ? আমরা সদম্ভান সকলকে ধর্মকার্য্য বলিরা মনে করিতে পারিতেছি না ৰলিয়াই ভাৰাতে মন প্ৰাণ দিয়া লাগিতে পারি না। এ বিষয়ে ব্রান্ধেরাও প্রাচীন প্রাচ্যভাবকে অভিক্রম করিতে পারিভেছেন না। একজন পরে।পকারার্থে কোনও কার্য্য করুন, ঈশরের শুভ ইচ্ছা জানিয়া ভাগতে প্রাণ মন সমর্পণ করুন, বিশুদ্ধ ঈশ্ব-প্রীতি তাঁহার চালক হউক, স্বই হউক, তথাপি ব্রাশ্ব-प्रिरंशत चरनरकत्र मूर्य छन। याहेर्य,—"উनि काल काल करतन, कारक कि इहेरव धर्म हाहै। "धर्म (यन मानवकीवन इहेर्ड এकটा খভৱ বন্ধ। সে ব্যক্তি যে দিন কাহ্ন কর্ম ত্যাগ করিয়া এক কোণে বাসরা কৃন্তক করিতে আরম্ভ কারবেন সে দিন ঐ ব্রাশ্ব-গণ বলিবেন হাঁ। এড দিনের পর ধর্ম গন্ধাহতেছে। এইরুপে পাশ্চান্ত্য ও প্রাচ্য উভর দেশের ধর্মভাবগত মতের পার্থক্য থাকাতেই কার্যাগত প্রভেদ দৃষ্ট হইতেছে। আমরা আদ্ধ, আমাদেব জীবনে পাশ্চাত্য ও প্রাচ্য উভয় ভাব সন্মিলিত ছইবে। আমরা প্রাচ্য ধ্যান ও পাশ্চাত্য কর্ম্ম উভর্ট জীবনে সাধন করিব। জ্ঞানে ও ধ্যানে ও তপস্যাতে যেমন আগ্রহ ধাকিবে, ঈশ্বরের প্রিরকার্য্য সাধনে ও তেমনি অমুরাগ क्हेर्द। ज्ञेचत्र व्यामापिशस्य এই পूर्व धर्मा ज्ञाव व्यापान कक्रन।

#### রাজা রামমোহন রায়ের স্মরণার্থ সভা।

গত ২৭ শে সেপ্টেম্বর সিটিক লেজ পৃহে এক আশ্চর্যা দৃশ্য দেখিরাছি। জনেক দিন হটতে এমন দৃশ্যনয়ন পথে পতিত হয় নাই। জালা রাজা রামমোহন রারের মৃত্যু দিন। ৬০ বংসর পূর্বে এই দিনে মহাস্থা রাজা রামমোহন রার স্থাপুর বিটিল নগরে মানবনীলা সংবরণ করেন। আজা তাঁহার স্থাপে বাসী হিন্দু, মুসলমান, প্রীষ্টান, বান্ধ সকলে তাঁহাকে স্বরণ করিবার জ্ঞা সন্মিণিত।

আদ্য সিটিকলেজ গৃহে সভা হইবে বলিরা সামাস্ত ভাবে বিজ্ঞাপন প্রচারিত হয়। অধিক লোক সমাগত হইবার জন্ত লাকাল বিজ্ঞাপন কিছা কোনও প্রকারের আরোজন করা হর নাই। প্রতি বংসর বেমন সামাস্ত ভাবে উদ্যোগ হইরা থাকে, এবার ও, সেইরপ হইরাছিল। সিটক্লেজের বিতল

পুৰে সভাধিৰেশলের ছান হয়। সভাপভির দক্ষিণভাগে महिलाश्रान्त विश्वास चामन अवः च्या क्रिक श्रेक्षवश्रान्त चान নির্দ্ধিট হয়। অপরাচ্ ৫ ঘটিকার সময় সভারত হইবার কথা। ভুটটার সমর হটতে লোক বাইতে আবস্ত করে। চারিটার সমর হল লোকে পরিপূর্ণ হইরা গেল। ৪॥ টার সমর এত লোক হইল যে, সভা ছলে দাঁড়োটবার একটুক হানও রহিল না। ক্লেরে নিমে, প্রাক্নে এবং উঠিবার সিঁডিতে লোকে লোকা-রণ্য হইরা গেল। লোকের উৎসাহ প্রাকুলভাব এবং আগ্রহ त्मिश्वा ध्यान चानत्म পরিপূর্ণ হইল। পাওত শিবনাথ শালী, শ্ৰীযুক্ত বাবু আনন্দমোহন বহু, বাবু ক্লফকুমার মিত্র এবং বাবু হেরস্বচন্দ্র মৈত্র প্রভৃতি উদ্যোগ কঠাপণ নীচে আসির: দাড়াইরা লোক স্রোভ দেখিতে লাগিলেন এবং কি উপারে অদাকার कार्य। मकरणत मरसायक्रमकत्राल निर्काह हरेरछ लारत, ७९मक्राह्म পরামর্শ করিতে লাগিলেন। ক্রমশ: লোক স্রোত বৃদ্ধি হইছে দেখিয়া তাঁচারা হির করিলেন যে, কলেজ প্রাঙ্গনে আর একটি भक्षा कतिहा वक्कृ छामि कति (वन।

এই পরামর্শ হির হটলে ছাত্র, শিক্ষক এবং অক্সাক্ত ভদ্র-लाकश्व निक इल्ड कलक शृह इहेटक (वक्ष वानित्र। প্রাঙ্গনে স্থাপন করিতে শাগিশেন। যাঁহার। বক্তা শুনিকে আসিয়াছেন, তাঁহারাই খহন্তে বেঞ্চ আনিয়া অঞ্জে বসিতে দিতেছেন, ইহা বড়ই স্থকরদৃশ্য। সকলের হৃদরে যেন উৎসাদ ও আনক্ষের তাড়িত স্রোভ বহিতেছে। অতি অর সময় মধ্যে সভার আয়োজন শেষ इटेल। আনেকে বেঞে विभागन, व्याप्तरक हर्जुमित्व में।ज़ारेबा बरिश्तन। जैशरब अवः নীচে আবে ছুই হাজার লোকের সমাগম হইরাছিল। ছুই ম্বানে একই সময় হুই ৭়ৰৎ সভার কার্য্য হইতে লাগিল। 🕏পয়ে মাননীয় ডাঃ শুরুদাস বন্যোপাধ্যায় সভাপতির আসন প্রাছণ করেন। স্বিধ্যাত বক্তা শ্রীযুক্ত বাবু কাণীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার অগ্নিমরী ভাষার বক্তা আরম্ভ করিলেন। বক্তার ভাষা, ভাষ এবং উচ্চ্যাসে শ্রোভাগণ মুগ্ধ হইরাছিল। ভাড়িত সঞ্চারের ভার মুহুর্তের জক্ত সকলের হৃদধের অংশসরতা দুরীভূত হইয়াছিল। মহাত্মারাজা রাম্মেহেন রায়ের শিক্ষা সম্বনীর অপরিসীম্জান ও প্রতিভার বিষয় বক্ত। জ্বন্ত ভাষায় বর্ণনা করেন। কালি চরণ বাবু গুণপ্রাহী, সাধুগণের মধ্যাদা রক্ষকোরী, অপক্ষপাতী এবং প্রতিভাষিত বক্ষা। একাধারে এসমস্ত গুণের সমাবেশ অতি অর লেকের মধ্যেই দেখা যার। একস্তই কালীচরণ বাবুর বঙ্চুত। কামানের গোলার মত সকলের হৃদরকে

কাণীচরণ বাব্র বক্তার পর প্রীযুক্ত বাব্ মনোরঞ্জন শুহ এবং তৎপর শ্রীযুক্ত বাব্ নগেজনাথ চট্টোপাধ্যার বক্তৃতা প্রদান করেন। নগেজে বাব্র বক্তৃতার সভাপতি এতদ্র আতৃট হইরাছিলেন বে,তিনি বিশেষ ভাবে বক্তার শুণাফুবাদ না করিয়া থাকিতে পারেন নাই। ঐ সভাতে শ্রীযুক্ত বাব্ স্থানীজনাথ ঠাকুর এবং হিতেজনাথ ঠাকুর সধ্যরকঠে রাজার স্থাচিত সংগীত করিয়াছিলেন।

নীচে কলেক প্রালনের সভার প্রীবৃক্ত বাবু জানকীনাপু

খোষালৈর প্রকাবে প্রীযুক্ত বাবু আনন্ধরোহন বস্থ সভাপতির মাসন প্রচণ করেন। জীবুক বাবু দেরস্বচল্ল মৈত্র, জীবুক বাবু ক্লক্ষার মেতা এবং জীযুক পণ্ডিত শিবনাথ শালী বক্ত। करत्रम । यानिह बक्कृषा कतिवात व्यक्त हैहाता (कहने व्यक्त ह ছিলেন না; তথাপি ইগদের সকলেরই বক্তা অতি অসমগ্রাহী श्रीपुक (इश्वष्ठक रेमज প্রথম তঃ ওলখিনী ইংরাজি ভাষার রামমোছন রাবের চরিত্রের মাচাত্ম্য বৰ্ণনা কৰেন। তৎপৰ ক্লফাৰাৰু বালাণাতে কিছু বলেন, আৰ্বশেষে শাস্ত্রী মহাশর বজাুত। করেন। সভাপতি সিঃ বস্তু প্রথমত: সভা প্রারম্ভস্চক মতি হাদয়গ্রাহী মস্তব্য প্রকাশ ▼রেন, তৎপরে বক্তাগণের বক্তৃতা শেষ চইলে, তিনি অবস্ত ভাষার সংক্ষেপে বক্তা করেন। সভাত্ত সকলে আতি নিবিট-চিত্তে বক্তৃত। প্রাণ কার্রাছিণেন। রাজি ছইলে এই কলের ৰক্ষ্যতাবস্কৃত। এধানে আলোর কোনও ৰন্ধোৰত ছিল না। উপরে আলোকমর গৃহে তথমও বজুতা চলিতে

এবার লোকের আগ্রন্থ এবং উৎসান্ধ দেখিয়া আমরা আখন্ত হইয়াছি। মহাত্মা রাজা রামমোচন রার বর্তমান শভাকীর শ্রেষ্ঠ পुक्रव । छै। हात्र को वटन मकल खरनंत्र ममारवण (माथर्ड পा अग्र) ার। তিনি সামঞ্জনীভূত উরতি সাধনের দুরীস্ত প্রদর্শন করিলা গিলাছেন। ভিনি ঈশর-প্রেমিক ছিলেন। পরমেশরের প্রতি উছোর গভীর অন্তরাগ ছিল। তিনিই এদেশে এক্ষো-भागनात वीक वभन करतन। जिन এक मिरक स्थमन धार्मिक, ধশাসংস্কারক ছিলেন, অপর দিকে আছিতীয় রাঞ্টনীভক এবং সমাজ-সংস্থারক ছিলেন। উছিরে প্রেম কেবগ এ দেশে আবিদ্ধ ছিব না। াতনি পৃ'থবীর সমস্ত জাতিকে আপনায় মত ভাল বাসিতেন। অপরাদকে এন্ধ বিদ্যালাভের জ্ঞা সংস্কৃত, ভিক্রে, লাটিন পাবসি, আরবি প্রভাত ভাষার পাতিত্য লাভ কাররাছেলেন। একাধারে বিদ্যা বুদ্ধ ধন্ম জ্ঞান বিশ্বপ্রেম, রাজনীতি সমাজনীতি প্রভৃতি যাবতীয় তাণ সলিবেশিত হইয়াছিল। স্কল ণিষয়ে এরূপ व्यापुर्व म्यवृत्र वर्खमान ममस्य क्य व्यानव्य कौवरन चित्राह् ? এসকল কারণেই তিনি উনবিংশ শতাকীর শ্রেষ্ঠ পুরুষ। ভিান त्य चानर्न माधन कतिवात कना धानपान नाानवाहित्यन, পরমেশ্বর করুন, এদেশের লোক যেন সেই আদর্শ সাধন করিতে সমর্থ । সভা রকা, স্বাধীনত। স্ত্রীজাতির প্রাভ প্রেম. বিশ্বলনীন ধর্ম-সাধন, জ্ঞানালোচনা, শিক্ষামুরাগ প্রভৃতি বিষয়-ঋণির পূর্ণভা সাধনই জাঁচার জীবনের ত্রত ছিল। লোক যতই উচ্চার উচ্চ আদশের দিকে গমন করিবে, তভই **रमाम्बर मन्नाः अन्तर्हे तामामान्य तात्रत चत्र्वार्थ मछात्र** व्याधार, উৎসাহ এবং সকলকে ঐকাস্তিক যদ্ধের সহিত যোগ-मान कांत्रराज प्रिंशिंग खांग चानत्म भित्रभूग हत्र। धारः चामा ছয় যে, দেশবাসিগণ এক দিন না এক দিন রামমোছন রারের व्यापन व्यक्तनारत कीवन गर्छन कतित्रा खात्रक्रमाखात हु: ध पूर ক্রিতে সমর্থ হইবে।

# প্রেরিভ পত্র।

( পত্র প্রেরকদিগের মতামতের জন্ত সম্পাদকদায়ী নছেন, কিবা কাহারও পত্র ক্ষেত্র দিতে বাধা নহেন ) বাণীবনে ব্রাহ্মপল্লি স্থাপন !

বছসংখ্যক আহ্মগণের বাসগৃত নির্ম্মণ করির। একস্থানে বাস ও আহ্মধর্ম প্রচার এবং বিবিধ উপায়ে ০িডকর কার্য্য এ জনসাধারণের সেবা করা এই আহ্মপলি স্থাপনের উদ্দেশ্য।

নানা কারণে ব্রাহ্মসমাজের অধিকাংশ লোকেরই আর্থিক অবস্থা অভিশয় ভাল নয়। পৈতৃক বাড়ী পরিভ্যাগ করিয়। অনেকেই নগয়ে বাস করিতে বাধা হইয়াছেন। বলা বাত্লা নগরে বাস করা বন্ধ ব্যৱসাপেক। অধিকাংশ ব্রাহ্মগণ্ট প্রচুর অর্থাভাবে গৃহ নির্মাণ করিতে সমর্থ হইতেছেন না। ভাড়াটিয়া রাড়ীতে, অভি সন্বীৰ্ণ স্থানে, পরিবারত্থনেক লোক একতে মতি কেলে কাল্যাপন করিতেছেন। ভালাতে অনেকের স্বাস্থ্য নষ্ট হট্না যাইতেছে। পুরুষাসূক্ষমে এরপে ভাড়াটিয়া বাড়ীতে বাস করা কি বিব্য কটলনক তাচা ভুক্ডোগী বাকিমাতেই অবগভ चारहर । উপाक्करनीन राक्तित घडार इट्टा পরিবারস্থ সৃষ্ট্র অক্ল সাগরে ভাসিতে থাকেন। তথন অনক্রোপার হইরা লক্ষা পরি ত্যাগপূর্মক ভিক্ষার্থে এ স্ক্রনমান্তের হারে উপত্তিত হওয়া ভিন্ন ভাচাদের আর গভাস্তর নাই। এই শ্রেণীর নিরূপার ব্রাহ্মদিগ্রে অর্থ সাহায্য কবিশার জন্ত খুটান সমাজের নারে আক্ষাসমাজে च्यनाथ'न गत किया बायम् हा छेत्र (Alms house) हे छा। कि क्रू हे নাই। বাস্তাবক এই শ্রেণীর ত্রাহ্মগণের পুরুষামুক্রমে জীবনযাত্রা-নিৰ্বাহ করা বড়ই কটজনক এবং বিড়ম্বনাময়। এই দূরবস্তা দ্রকরণের একমাত্র উপায় এই যে, মফ:স্বলে কোনও উর্বর্ত্বানে ভূমি ক্রয় করিয়া প্রভ্যেকের বাডী নিশ্বাণ করা। ভারতে একদিকে গৃত্তীন ব্ৰাহ্মগণ যেমন গৃত পাটবেন তদ্ৰূপ স্বায় ভূমি-জাত শতাদি বারা এবং স্থলভ মূল্যে ক্রীত অঞ্চানা আহার্যা বস্তু বারা অতি সহজেই জীবনযাত্র। নির্বাহ করিতে পারিবেন।

কলিকাতাই ব্রাক্ষসমাজের কেন্দ্রখন স্তরাং কলিকাতার
নিকটবর্তী কোন স্থানে এইরপ ব্রাক্ষপালি সংস্থাপিত হইলে
সাধন ভজনের ও জ্ঞানালোচনার কলিকাতার স্থিত নিয়তই
তাহাদের যোগ থাকিবে। গঙ্গাতীরস্থ অধিকাংশ স্থানই
ম্যালেরিরা গ্রস্ত। জমীর মূলাও অধিক আহোর্য্য ক্র্যাদিও
হর্ষ্ণা। এই জন্ত ও অভান্ত নানা কারণে আমরা ব্রাক্ষপালি
স্থাপনের জন্ত এই বাণীধন গ্রামকে মনোনীত করিয়াছি।

এন্থান উদ্বেজ্ মহকুমার উত্তর পশ্চিম কোণে তিন মাইল
দ্রে অবস্থিত। উল্বেজ্ হইতে আম্তা অভিমুখে যে থাল গিরাছে
তাহার ধারেই এই গ্রাম। বারমাদ থাল দিরা উল্বেজ্ হইতে
নৌকাতে বাভারাত করা যার। কলিকাতা হইতে উল্বেজ আহাজে ছই ঘণ্টার পথ। উল্বেজ্ হইতে বাণীবন নৌকা কিছা
পদপ্রক্ষেত্রক ঘণ্টার রাস্তা। শীঘ্রই এই স্থান দিয়া মেলিনীপুব
অভিমুখে রেল যাইবে, ভাহা হইলে কলিকাতা গমনাগমনের
আরপ্ত স্থিধা হইবে। এখন জাহাল ও নৌকার যাভারাতে এথানে জ্মীদারের জ্মধীনে জ্বোড-ক্স্ক প্রতি বিহা ১০, ১৫, ২০ টাকার বিক্রের হর। খরচ পত্র বাদে ন্যুনপক্ষে প্রতি বিহা জ্মিতে ৬ টাকা আর হর। এস্থানে ম্যালেরিয়া নাই, সকলের স্বাস্থাই ভাল থাকে।

রাজধর্ম প্রচার,—এখানে বাঁহারা বাস করিবেন, তাঁহারা বেমন সাংসারিক বিবিধ প্রকার স্থবিধা প্রাপ্ত হইবেন, তেমন উহাদিগকে রাজসমাজের কার্য্যে বিশেষ উৎসাহশীল হইতে হইবে। এখানে বাঁহারা বাড়ী ঘর করিবেন, তাঁহারা ছই শ্রেণীতে বিভক্ত হইবেন। পরিচারক এবং সহায়। বাঁহারা জনক্রমা হইয়া রাজধর্ম প্রচার এবং জনসমাজের সেবা করিবেন তাঁহারা পরিচারক বলিরা গণ্য হইবেন। বাঁহারা বিষয়কর্ম করিরা অর্থ ও সামর্থ্য ছারা এই উদ্দেশ্ত সাধনের সহায়তা করিবেন, তাঁহারা সহায় রূপে গণ্য হইবেন। সহায়-দিগের প্রদত্ত সাহায়, পুত্তক বিক্রবের আর এবং ক্তঃপ্রবৃত্ত দান দ্বারা পরিচারকগণের ভরণপোষণ চলিবে। তাঁহারা কোনও প্রকার বিষয় কর্মে লিপ্ত হইবেন না।

বর্ত্তমান সমরে এতদঞ্চলের স্থানে স্থানে ব্রাহ্মধর্মের জ্যোতিঃ
বিকীর্ণ হইতেছে। আমরাগড়িগ্রামে নববিধান সমাজের ব্রাহ্মগণ
এক প্রচারক্ষেত্র স্থাপন করিরাছেন, খালোড় গ্রামে সাধারণ
ব্রাহ্মসমাজের সভাগণ এক ব্রাহ্মসমাজ স্থাপন করিরাছেন।
সকল গ্রামেই ব্রাহ্মধর্মের কথা শুনিতে লোকে আগ্রহ প্রকাশ
করিরা থাকে। এ অবস্থার নির্ভ গ্রামে ব্রামে ভ্রমণ করিরা
সঙ্গীত, সঙ্গীর্ভন, কর্থক্তা, আলোচনা এবং বক্তৃতা ও ব্যাখ্যাদি
দ্বারা প্রচার করিলে বিশেষ ফ্লোদের হইবার সম্ভাবনা।

এ অঞ্চলের অনেক প্রামেই বড় বড় কুল আছে। বাণীবন ও তরিকটবর্তী ছানে কুল নাই। এ প্রামের অধিকাংশ লোকই গরিব, নিরক্ষর এবং নৈতিকাংশে অতি হীনাবস্থাপর। অতএব এথানে সর্ব্যথম একটী কুল স্থাপন করিয়া শিকা বিস্তারের উপার বিধান না করিলে এই গ্রামে রাক্ষার্থর প্রচারিত হইবে না। অতএব সম্প্রাত বাণীবনের উল্লাভর জন্ত নিম্লিখিত উপার অবল্যিত হইবে; কুল স্থাপন, রোগীর চিকিৎসা, নীতিবিদ্যালের এবং সঙ্গতমগুলী হাপন।

উদ্দেশ্য সাধন করিবার জন্ম আমরা নিরত চেটা করিতেছি; জানি না, আমাদের কুদ্র চেটার কি ফল প্রস্ত হইবে। অর্লিন হইল অত্ত্বানে একটা মাইনর কুল স্থাপন করা হইরাছে। একজন প্রাক্ষয়বক স্বতঃপ্রবৃত্ত হইরা হেড্মাটারের কার্য্য করিতেছেন। এথানে বাড়ী করিবার জ্ঞা আপাততঃ কিছু জমি থরিল করা হইরাছে, সেথানে সম্ভবতঃ ভিনটী প্রাক্ষপরিবার বাড়ী নিম্মাণ ও ক্ষধিকার্য্যাদি করিবেন। উপযুক্ত লোকের অভাবে এ পর্যন্ত প্রচার কার্য্য জারম্ভ হর নাই। আমরা প্রাক্ষবকুদিগের সমাপে সাহ্মনর নিবেদন করিতেছি বে, তাঁহারা আমাদের এই উদ্দেশ্যের সহারতা করিয়া চরিতার্থ করেন। বাহারা এই উদ্দেশ্যের সাহত যুক্ত হইরা পরিচারক কিছা সহারক্ষণে এথানে বাড়ী করিতে ইচ্ছুক হইবেন, তাঁহারা আমার নিকট প্রাদি লিখিলে বিস্তৃত্ব বিবরণ জানিতি পারিবেন। এই আক্ষপ্রি ক্লিকাতা সাধনাশ্রমের অদীভূতক্রণে ভাছাদের সহিত বোগ রক্ষা করিয়া। শ্রস্তাবিত শক্ষাত্রর সাধন করিবেন।

বাণীবন ব্রাহ্মপরি শ্রীএককড়ি সিংহ রার ২০শে সেপ্টেম্ব, ১৮৯৩। কলিকাতা সাধনাশ্রমের জনৈক্সহার

মাক্তবর

- এব্রু তব্ব-কৌমুদী সম্পাদক মহাশর

नभी(भवू।

মহাশ্র,

গত >লা আখিনের তত্ত্ব-কৌমুদীতে প্রীযুক্ত বাবু চক্র মোহন বিখাস মহাশর আমার পত্তের একাংশ সম্বন্ধে যে যে কথা বলিয়াছিলেন তৎসম্বন্ধে কিছু বলা আবেশুক হওয়াতে লিখিতেছি; অহুগ্রহ পূর্বাক তত্ত্ব-কৌমুদীতে প্রকাশ করিয়া বাধিত করিবেন।

বাদ্দগণ "হরি" শব্দে নিরাকার ব্রহ্মকেই বুঝিরা থাকেন।
ইহা সকলেই জানে, কিন্তু ১লা ভাজের তত্ত্ব-কৌমুদীতে পত্ত প্রেরকের অভিপ্রায় এইরূপ যে "ব্রাহ্মগণের এইরূপ বুঝা উচিত নহে।" তাহা যদি না হয় তবে তিনি ব্রাহ্মগমাজ হইতে "হরি" শব্দ দূর করিতে ইচ্ছুক কেন?

क्थांत्र निर्क मृष्टि न। क्रित्रत्ता, क्थांत्र छाटवत मिर्क्ट मृष्टि क्रता कर्खवा।

আমি গিধিরাছিলাম "সাকারবাদিগণ মুর্ত্তি গঠন করিলেই বা অবভার বলিলেই যদি নিরাকার ছরির পূজা বর্জন করা যায়, ভাষা হইপে নিরাকার পূজার জন্য কোন নাম থাকিছে পারে না।" একথার অর্থ এবং ভাব ইছা কখন নহে বে, কেবল "হরি নাম ছাড়িলে নিরাকার পূজার জন্য কোন নামই থাকিতে পারে না।" এইরপে কণার অন্যরূপ ভাষ গঠন করিরা পত্র প্রেরক বলিয়াছেন যে "যিনি একণা বলিতে পারেন ভাষার "গ্রাহ্মধর্ম" যে কিরপ বৃ'ঝ না।"

এই উব্ভিতে প্রকাশ পায় যে, পত্র প্রেরকের "ব্রাহ্মধশ্মের ভার অভি উব্ভব ।"

আমার অন্যান্য কথার কোন যুক্তিসঙ্গত উত্তর ন। দিয়া কেবল আলগা কথা বল\ হইয়াছে।

এক স্থলে পত্র প্রেরক বলিরাছেন "এসকল নাম ছাড়িলেও আনেক নাম আছে।" কিন্তু ছঃখের বিষয় এই বে, একটী নামেরও উল্লেখ নাই।

"পৌত্ত শিকগণের অতি আদরের সাম্প্রী তাঁথাদের আনে-কের নিতাপাঠ্য "বিষ্ণু সহস্র নাম" প্রভৃতি পুত্তক একবার পাঠ করিলেই বুঝিতে পারা যায় যে "তাঁহার। পৌত্ত লিক ভাবে এবং সাকার ও সীমাবদ্ধ ভাবে কোন নাম ব্যবহার করিতে ছাডেন নাই।"

অবৈত, সভারণ, জ্ঞানরণ, শিব, অনন্ত, ব্রহ্ম, ওঁ, বিখনাথ, জগরাথ, বিখন্তর, হরি, পরব্রহ্ম, ঈখর, জগরীশ, পরমেশ্বর, মহেশ্বর, জগৎশিতা প্রভৃতি পুংলিক শক্ষ এবং আন্যাশক্তি, ভগনাতা, জগদাত্তী প্রভৃতি শ্রীনিদ শক্ত উন্থান ছাড়েন নাই। পত্র প্রেরক অন্তগ্রহ পূর্কক "উন্থার কথিত অনেক নাম প্রকাশ করিবেন।" আমরা জানিতে চাহি কোন্ নাম সীমাবদ্ধ মূর্ত্তির প্রতি পৌত্তলিকগণ ব্যবহার করেন নাই।

পত্র প্রেরক যে কথা বলিবেন তাহা ভাল বুজি দিয়া বুঝাইয়া দিবেন। "আক্ষধর্ম বিশ্বলনীন ধর্ম, ইহাতে নানা জাতি
ও নানা সম্প্রদারের লোক জাসিবে, তাহা ত বুঝিলাম, কিছ
তাহারা নিরাকার হরি যদি না বলিতে পান, তবে কি কি নাম
করিবেন ? পত্র প্রেরকের মতে ত "অনেক আছে।" পত্র
প্রেরক যাহা স্থ্যুক্তি পূর্ণ বুঝিয়াছেন, তাহা সকলের পক্ষে
স্থ্ কি পূর্ণ হওয়ার পক্ষে বিশেষ প্রমাণের আবশ্রক এবং সেই
সকল স্থ্কিপূর্ণ উজ্জ্লপ্রমাণ জানিতে আমরা উৎস্ক্
রহিলাম।

বিশ্বনাণ, জগদ্ধাত্রী প্রভৃতি শব্দ বলিলেই পৌতলিক গণ ইাসিতে পারেন এবং বলিতে পারেন যে "কাশির মন্দিরের বিশ্বনাণ এবং যে মৃর্তির তাঁছারা বংসর বংসর পৃত্দা করেন সেই জগদ্ধাত্রী মৃত্তি ইত্যাদি" কিন্তু এরপ স্থলে আদ্ধাণের কি বলা উচিত নহে যে "বিশ্বনাণ সমন্ত বিশ্ব ব্যাপিরা আছেন, আমরা তোমাদের মন্দিরের প্রস্তরের মৃত্তির উদ্দেশে এ শব্দ ব্যবহার করিতেছিনা। বিশ্বনাণ, হরি, জগদ্ধাত্রী বলিলে ভোমরা যে সীমাবদ্ধ ভাব ব্রিশ্বা থাক, আমাদের হৃদরে সেরুপ ভাব নাই ইত্যাদি।

নশিপুর, মুশিদাবাদ, ১০ই জাখিন ১৩০০ **অ**হুগত

প্রীবগরাথ প্রসাদ শুর।

## ব্ৰাক্ষদমাজ।

সৃতিক্ষ-পূর্ববলে যথার্থ ই ছর্তিক উপস্থিত হইরাছে।
সাহায্য দানের জন্ত কার্যানির্কাহক সভা উদ্যোগী হইরা সম্প্রতি
১০০ একশত পাঁচ টাকা পাঠাইরাছেন। দিন দিনই ছর্তিক্ষের
প্রকোপ বৃদ্ধি হইতেছে। অচিরে চতুর্দ্ধিক হইতে প্রভূতপরিমাণে
সাহায্য প্রাপ্ত না হইলে অরাভাবে অনেক নরনারীর মৃত্যুমুথে
পতিত হওরার সম্ভাবনা। আমহা,সাহুনর অহুরোধ করিতেছি,
বে ছর্তিক প্রপীড়িত্রদিগকে সাহায্য দান করিতে সকলে
মুক্তবত হউন। সহাদর ব্যক্তিগণ প্রতিবারে বেরূপে ছর্তিক্ষের
সাহায্য করিরা আসিতেছেন, এবারপ্ত সেইরূপ সাহায্য
করিবেন, আমাদের এরূপ আশা আছে। পর্মেশ্বরের সেবকগণ
কি কুধার্ত্তকে অরদান না করিরা, নিশ্চিত মনে কাল্যাপন
করিতে পারেন ? সাঃ ব্রাঃ সুমাজের সম্পাদক শ্রীযুক্ত বার্
শ্রন্থক মহলানবিশ মহাশ্রের নামে ২১১ কণ্ডরাঃলশ হীট
কলিকাতা এই ঠিকানার সাহায্য প্রেরণ করিবেন।

"মেসেঞ্চার" পত্রিকার জম্মোৎসব—গভ ২৬শে নেপ্টার, সন্ধ্যা ৭॥ ঘটকার সমর মেসেঞ্চার পত্রিকার ১০ম अग्रमिन উপলক্ষে বিশেষ উপাসনা इटेबाहिल। মেসেঞারের স্থানীয় গ্রাহকগণ এবং সাহাব্যকারী অক্তান্ত অনেকে নিমত্রিত হইরা উপস্থিত হইরাছিলেন। পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী বেদী গ্রহণ करतन। छोहात अमर छेशाम चार्छ मात्रगर्छ, श्रमस्याही এবং সামরিক ভাবাত্মক হইরাছিল। তিনি সহজ ভাবার সংক্ষেপে অতি সার কথা বলিরীছিলেন। মুক্তিত হইল। উপাসনার ব্দুত মেসেঞ্জারের সম্পাদক প্রীযুক্ত বাবু হেরছচক্র মৈতা পত্তিকার व्यार्थिक व्यवद्या मद्यक्त मकानत्र मानारवात्र व्याकर्षन करतन। তৎপরে ম্যানেকার বার্ষিক হিসাব পাঠ করেন। তাহাতে দেখা যার যে, মেদেঞ্জারের প্রাহকগণের শতকরা ৩০ জন মূল্য বাকী রাথেন। কিন্তু সকলের নিষ্ট হইতে নিয়মিত সময়ে সম্পূর্ণ মূল্য আদার হইলেও গ্রাহক সংখ্যা বৃদ্ধি না হইলে ব্যন্ন সংকুলন ছইবে না। বর্ত্তমান সময়ে অনেক ব্যয় হ্রাস করিয়া কোনরূপে ব্যর সংকুশন হইতেছে। অতএব আমারা ব্রাহ্মগণের নিকট निरवन्न कतिराक्ष् य, यांशामत निक्रे व्यामकारतत मृग्र বাকী আছে, তাঁহারা আপনাপন দেয় টাকা অতি শীঘ্ৰ প্রেরণ করেন এবং মেসেঞ্চারের গ্রাছক বুদ্ধির জ্ঞালচেষ্ট হউন। একটুকু চেটা করিলেই সকলে অতি শীঘ্র গ্রাহকসংখ্যা বৃদ্ধি ক্রিয়া দিতে পারেন।

মৃত্যু সংবাদ—আমরা গভীর ছংখের সহিত প্রকাশ করিছে, বোদে প্রার্থনাসমাজের সভ্য নারারণ মহাদেব পরমানক মহাশের গত ১৩ই সেপ্টেম্বর মানবলীলা সংবরণ করিরাছেন। কর্ত্তব্য পরারণভা, শ্রমশীলভা এবং খদেশ বংসলভার সহিত ধার্মিকভা মিশ্রিত হইরা উাহার পবিত্র চরিত্রকে আরও স্থাভিত করিরাছিল। উাহার বিরোগে বোদে প্রার্থনা সমাজ একটি উজ্জ্বল রুদ্ধ হারাইলেন। উাহার সংক্রিপ্ত জীবন চরিত সমরাস্তরে প্রকাশ করিবার ইচ্ছা রহিল। পরমেশ্বর ভাঁহার স্বর্গগত আ্রাকে শান্তি প্রদান কর্কন।

রামমোহন রায়ের সারণার্থ সভা—২৭শে তারিথের স্বরণার্থ সভার কার্যাবিবরণ প্রবন্ধাকারে সম্পাদকীর স্তম্ভে প্রকাপত হইল। এবার রামমোহন রারের গুণাবলীতে যুবকগণ এরূপ আরুষ্ট হইরাছেন যে, ২৮শে তারিথে সিটিকলেজের বি, এ ক্লাশের ছাত্রগণ পণ্ডিত শিবনাথ শাল্লীর মুথে রাজার চরিত্রকাহিনী ভনিবার জন্ত ইছে। করেন। কলেজের প্রিজিপালের অমুরোধে শাল্লী মহাশর ঐদিন ছাত্রদিগের নিক্ট রামমোহনা রারের সম্বন্ধে ইংরাজিতে বক্তৃতা করেন। সমন্ধ্ব সমন্ধ্র ছাত্রদিগকে এরূপে সহুপ্রেধ ক্রিলাছেন।

বিবাছ--ৰে:ছনীপুরত্ব প্রীষ্ট্র বাবু অভয়চেরণ বহুর পুত্ৰ খ্ৰীমান্ জানেক্সনাথ ৰক্ষম সভিত লাছোৱের খ্ৰীযুক্ত বাবু রামচন্দ্র বন্ধ্যোপাধ্যারের প্রথমা কন্যা শ্রীমতী সত্যপ্রিয়া ৰদ্যোপাধ্যায়ের শুভবিবাল গত ১৯শে সেপ্টেম্বর সম্পন্ন লইরাছে। শ্ৰীযুক্ত বাধু নগেজনাধ চট্টোপাধ্যায় আচাৰ্য্যের কার্যা করেন। বিবাহ উপলক্ষে রামবাবু নিয়লিখিত রূপ দান করিয়াছেন। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচার বিভাগ ৫ সাধনাশ্রম ২ वानिका (वार्षिः २, मानाध्यम २, माछवा विख्या 🖎 स्मार्छे १ कार्च १८८

গভ ২৯শে সেপ্টেম্বৰ ভারিখে সাধনাশ্রমে আর একটি বিবাদ হটরাছে। পাত্র ময়মনসিংহ নিবাসী বাবু হয়ানক 📆 পাত্রী কলিকাতা নিবাদী পরলোক গত গোবিল্লচজ্র বুঞ্চিতের প্রথমা কন্যা শ্রীমতী লক্ষীমণি রক্ষিত। এ বিবারে শ্রীষুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত আচার্য্যের কার্য্য করেন। উভয় বিবাহই তিন আইন অফুসারে রেজেটরী হইরাছে। আমর। নবদৃষ্ণতি৷দগকে আশীর্কাদ করিতেছি এবং প্রার্থনা করি-ছেছি ঈশ্বর তাঁহাদিগকে ধর্মপথে রক্ষা করুন।

ত্রাক্স-ছাত্রীনিবাদের বার্ষিক উৎসব—গত ৩০শে সেপ্টেম্বর শনিবার এবং ১লা অক্টোবর রবিবার ছই দিন ছ।তী নিবাদের বার্ষিক উৎসব চইরাছে। প্রথম দিন ছাত্রীনিবাসের बाब अकि श्वीटक जानियुत्र मश्वािका स्वश्रहेगां कर नहेश ষাপ্রশা হর। শেডি সুপারিটেওেট প্রীমতী লাবণাপ্রভা বস্ত্র এবং ছাত্রীনিবাসের সম্পাদক পণ্ডিক শিবনাণ শাস্ত্রী ও সঙ্গীত অধ্যাপক বাবু উপেক্ষকিশোর রায় চৌধুরী প্রভৃতি ইই৷দের त्रहिष्ठ शमन करत्रन।

ত্তৎপর দিন রবিবার অপরাজ ৫ ঘটকার সময় বিশেষ क्रेशामना इत, शिक्षक भिवनाथ भावी खेशामना करतन धवः छेश्टबन (बन ।

শাল্লী স্কাশৰ প্ৰতিদিন অতি প্ৰত্যুষে ছাত্ৰীনিবাসের স্কলকে লইরা উপাসনা করেন। প্রথমতঃ কোন গ্রন্থ হইতে কৈছু পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন, তৎপর প্রার্থনা করেন। মেয়ের। গান করেন। ইহাতে ছাত্রীগণের প্রভূত উপকার হইতেছে।

রামনোহন রায় ক্লব-পত ৩০লে সেপ্টেম্বর শনিবার পুর্বাক্ ৬॥ ঘটকার সমর বেনেটোলা লেনত্ব সিটকলেজের विकीत करन छै वृक्त वायू केरमनहन्त्र परखत डेरमार्श "तामस्माहन রার ক্লব" নামে একটি সভা স্থাপিত চইয়াছে। সভার উদ্দেশ্র 😮 কার্যাবিবরণ সমরে প্রকাশিত হইবে। প্রমেশ্র এই সভাকে कानी कक्त।

मम्भामत्कत्र निर्वामन-गठ २१८म (मार्श्वेषत्र मकः यह ৰে ৰে ভানে মহাআয়া রাজা রামমোহন লাবের আরেণার্থ সভা হুইরাছে, সেই সেই ছানবাসিগণ অনুগ্রহপূর্বক সভার কার্যা 'বুরণ প্রেরণ করিরা বাধিত করিবেন। কার্য্য বিবরণ সংক্ষিপ্ত त्रा व्यावनीत्र ।

## বিজ্ঞাপন।

সাধারণ আক্ষসমাজের অধ্যক্ষ সভার সভ্য নির্বাচন স্বন্ধীর অবান্তর নিরমের হিতার নিরমানুসারে সাধারণ এক্সেমাজের সভাদিগকে জানান যাইডেছে যে, যাঁহার৷ আগোমী বৎসরের (১৮৯৪ সনের) জন্য অধ্যক্ষ সভার সভা মনোনীত হটতে ইচ্ছা करतम, डाँगात्रा आधारी २०० नतकत डाजिएक मध्या मधात्रव ত্রাহ্মসমাজের কার্যালয়ে আপনাদের নাম ধামাদি প্রেরণ করিবেন। এই ভারিখের পরে আর কাহারও নাম গৃধীত হইবে না। প্রার্থিগণের আফুঠানিক ব্রাহ্ম হওরা আবস্তুক।

२>>नः कर्व अत्रागित्र द्वीहे, २२० (मर्ल्डेयत ১৮३०

এ গুরুচরণ মহণানবিশ সম্পাদক সাঃ বাঃ সমাধ।

আগামী ১২ই অক্টোবের অপরাহ ৬ ঘটকার সমর ১৩ নং মিজ্জাপুর ব্রীটস্থ সিটিকলেজ ভবনে সাধারণ আক্ষ্যমাজের অধাক সভার ভূতীর তৈমাসিক আধবেশন হইবে।

#### विदवहा विवत्र।

- ১। কাৰ্য্যনিৰ্কাহক সভাৱ তৃতীর ত্রৈমাসিক কাৰ্য্যবিষয়ৰ ও भात्र वाद्यत्र हिमाव।
- ২। বাবু বাণীকান্ত রাম চৌধুনী প্রস্তাব করিবেন---ব্ৰাহ্ম-ছাত্ৰীনিবাস সৰ কামটার সম্পাদক বাবু ওরচরণ মহলা-নবিশ মহাশয়কে উক্ত সব কমিটার সম্পাদক-পদ হইতে অবস্ত করিবার কারণ অমুগন্ধান করিবার নিমিন্ত একটি কমিশন नियुक्त इडेक।
- ৩। সাধারণ আক্ষসমাজের পুস্তক, বক্তা ও উপদেশাদি মধ্যে চরিনাম ব্যবহার সম্বন্ধে মরমণসিংহের বাবু ব্রল্যকান্ত বস্থ মহাশরের একথানি পত্র সহকে বিচার।
- ৪। সাধারণ তাক্ষসমাজের প্রচারক পুনর্নিরোগের নিম্ম সম্বন্ধ বিচার।
  - e। विविध ।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাল অফিস २১১ नः कर्ववत्रालिम होते.

শ্রীগুরুচরণ মহলানবিশ গণিকাতা ১৭ই সেপ্টেম্বর ১৮৯৩ 🕽 সম্পাদক সাধারণ আক্ষমার্ম

२३১ मः क्र्यंब्यानिम क्रेप्टे, बाक निमन राज वैकार्डिकाळ तक क्ष्यं मूजिक क अप्टे वारिन धारानिक।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা

১৩**শ সংখ্যা।** ১**৬শ ভাগ।** 

১লা কার্ত্তিক, মঙ্গলবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাংসরিক অগ্রিম মূল্য ২॥• মদস্বলে ৩ প্রতি থণ্ডের মূল্য • ১০

• সেবা-স্তুতি।

হুণ হুখ করি ; স্থ চিবদিন রর না ; मन्नामित हामि कानकान ; দে কাদি-সম্ভোগ-ত্বথ দৰ ভাগ্যে হয় না; সকলি ত গ্রাস করে কাল। মিষ্টতাৰ লোভে মন নানা পথে ফিরে পান করে ভিক্তভা গবল ; দম্পদ চাহিতে ডুবে বিপদের নীরে; मास्रि-वाष्म बागिष्ट वनग। এ হুথ-আলেরা পথ ভ্লায় জাঁধারে, चार्ला हालि निताम-नगरन ; यक याहे भर्भ नाहे; कर्मम भागादा **जूदर भन्, जाँधात्र नग्रम्।** এই ভ বিধির বিধি, স্থ যেবা চার নতে ত্থ তাহার কারণে; ভুলায় ভাছাবে সুথ মরীচিকা-প্রায়, ত্রথানলে পোড়ায় জীবনে। যাক হুখ, যাক শাস্তি, যাক গো শিষ্টভা; থাক ভূমি দেবা ! মোর প্রাণে ; ছাড়ে যদি ধন, মান, প্রাণয়, মিত্রভা, ভূমি মোরে রেথ শান্তি-দানে। ব্ৰহ্ম কন্তা তুমি দেবা, তুমি ব্ৰহ্ম-বাণী, ধীর স্থির ভূমি ভব-নীরে; नत-कार्याः निः हागत्न এकमाळ दावी. ভব বোঝা সদা নরশিরে।

## সম্পাদকীয় মন্তব্য।

সেবা-সাধন—কোনও পদার্থে রঙ্ করিতে হইলে, রঙ্ওরালারা সর্ব্যেথমে ভালতে একটা পাংশুবর্ণ রঙ্ লাগা-ইরা ভামি প্রান্ত করিরা থাকে। ইহাকে ভাষারা আত্তর

বলিরা থাকে। অত্রে এই আন্তর না দিলে, সে পদার্থে ভাল করিয়ারঙ্ফলে না। মানব চরিত্তেও সেইরূপ কর্ত্ব্যু-পরা-হণতার রঙ্না লাগাইলে ভাগাতে সাধন ভজনের রঙ্ফলে শা। কর্ত্তব্যপরায়ণ্ডাকেই আমরা দেবা নাম দিভেছি, কারণ ধর্মের পক্ষে সম্দার কর্ত্তব্য কার্যাই ঈশ্বর সেবা। পূর্ণস্বরূপ প্রমেখরের এমন কি অভাব আছে যাহা মানব পুনি পুরণ করিতে পার ? স্মার তিনি ভোমার স্কৃতিবাদেরই বা অপেক। কি রাথেন 📍 ভবে ভাঁচার প্রিরকার্য্য সাধনে যদি আপনাকে নিয়োগ করিতে পার, তিনি ছদরে থাকিয়া যে কর্ত্তব্য কার্য্যের উপদেশ করেন, ভাহা যদি সমুচিভক্ষণে সম্পাদন করিতে পার, ভালা হইলে ডাঁছার উৎকৃষ্ট দেবা কয়। পবিত্র এবং বিশ্বাসী চিত্তের লক্ষণ এই যে, তাহা এই সেবাকে একটা ব্রত বলিরা অমুভব করিরা থাকে। এই সেধা-ব্রভ ব্রাহ্মধর্ম সাধ-নের একটা প্রধান ভিত্তি। যাহাতে সেবা-ব্রত নাই, কর্ত্তব্য-প্রায়ণ্ড। নাই, ভাহার ভজন সাধনে আমাদের আস্থা হর না। त्म यान कीखरन नाठिया **উ**न्यख श्वाप्त कव, यान छेनामनाकारन কাঁদিরা গড়াগাড় যার, যদি উচ্চ ধন্মের কথা বলিরা গগন ফাটায়,কিছুতেই আমাদের আছা জন্মে না। বৃক্ষকে যেমন মানুষ ফলের বারা বিচার করে, আমরা দেইরূপ ধর্ম-জীবনকে ফলের দারা বিচার করি। কর্ত্তব্য-পরারণ্ডাবিচীন লোকের ধর্ম্মোমাদকে চাবুকের বার। আরোগ্য করিতে ইচ্ছা করে। আক্ষদিগকে সেবা-বিহীন ধর্মভাবে রত হইতে দেখিলে আমরা অধোগতি বলিয়া মনে করি।

আমাদের একজন পরলোকগত শ্রদ্ধাভাজন বন্ধ সর্বাদা এই বলির। ক্ষোভ করিতেন, যে "নাচিবার ব্রাহ্ম পাই, কাঁদিবার ব্রাহ্ম পাই, কাঁদিবার ব্রাহ্ম পাই, ফুদীর্ঘ স্থাবিন। করিবার ব্রাহ্ম পাই, কিছ ধীর ও দৃঢ়ভাবে স্থার কস্তব্য সাধন করিবার জন্ম আতি জন সংখ্যক ব্রাহ্মই পাই। এরপ ব্রাহ্ম অতি জনই দোধ, বাঁহার হল্তে কোনও গুরুত্র কার্যোর ভার দিরা নিশ্চিত্ত মনে থাকিতে পারি যে তাঁহার সাধ্যে বতা আছে, ক্লিন করিতে ক্রতী করিতেছেন না, সে কার্য্য সমৃতিজ্বলৈ সম্পাদিত হইতেছে।" এই কর্ম্বরা-প্রায়ণভার শিথিলতা ও দারিছ জ্ঞানের জন্মভানিব-ছন ব্যাহ্মদিগের হারা কোনও কার্য্য সকল স্ক্রাহ্মদেশে নির্মাহিত্ত

ত্ঠতেছে না। ইহা কি সামানা কোভের কথা! যাহাদিগের নৈতিক অবস্থা এই, তাহারা আর ভজন সাধন কি করিবে। ক ক্তব্য-প্ৰায়ণভাবিহীন ধৰ্মভাব থাকা অপেক্ষা না থাকাতে ক্ষতি কি ?

সর্বাদা ঈশ্বরের নাম কর-সাধুরা বংগন "সর্বাদা ঈশবের নাম কর" "অবিশ্রান্ত প্রার্থন। কর" "সমৃদ্য কার্য্যা-রভের পূর্বের ঈশ্বংকে স্মরণ কব'' উচোদের এরপ বলিবার অভিপ্রার কি ৪ তাঁচারা আপনাদের জীবনে ইহা প্রত্যক্ষ কবিষাছেন, যে পাপ ত দূরেব কথা, যথনই অন্ত কথার মন দিয়াছেন, বা বুপা আলোচনায় প্রবুত চইয়াছেন তথনট যে তাহাতে কোন ফল হয় নাই তাহা নহে তাহাতে চিত্তের মধ্যে একপ্রকাব চাঞ্চল্য উপস্থিত হওযায় বরং কুফল ফলিয়াছে। এমন উত্তম জীবন এমন উত্তম বাকৃশক্তি পাইয়া যে আপন রসনায় ঈশ্বরের নাম না করে, ভালার জীবন অভি অসার। আবাব অন্তদিকে দেখিয়াছি পবিত্র ঈশ্বরের নাম করাতে स्रीयन পবিত ब्रवेशाए. डेब्डन ब्रवेशाए, नवन ब्रेशाए, মহত্ত বাডিয়াছে। যথনই কেচ প্রার্থনা পূর্বক কোন কাজে প্রবৃত্ত হন, হৃদরে অসাধারণ বল ও উৎসাহ লাভ করেন, ষধনই ঈশ্বকে শ্বৰণ পূর্বক কোন কাজে প্রবৃত্ত হন, অমনি আর ভাহাতে অক্সায় হচবার আশক্ষা থাকে না। একদিকে केश्वर यात्र पात्र। कालनाटक निवालन मत्न कविवाद्यन व्यक्तिक আবার দেখিয়াছেন, এই ঈশ্বর বিক্ততিতেই সমুদয় পাপ উৎপন্ন চটতেছে। টহা জীবনে প্রত্যক্ষ কবিয়াই তাঁচারা সকণকে এই উপদেশ निशाह्म। रातक काल आश्रतां अत्राहि দেখিয়াছি, ষণনই বাড়ী চহতে বাহির চইতাম বা কোন কায়ো প্রবৃত্ত চইতাম তথন পিতা মাতা জোঠতাত পিতৃস্বসা প্রভৃতি বার বার ঈশ্ববের নাম কাবতেন এবং আমাণিগকে ঈশ্ববের নাম এইয়া যাত্র। করিকে ব্লিভেন। ব্রাহ্মসমাক্ষে যথন প্রথম প্রথম আমরা আদিয়াছিলাম, এই ভাব আমাদের মধ্যে খুব উজ্জল ছিল। প্রাথন। করিয়া ও ঈশ্বরের আশীকাদ ভিক্ষা ক্ষরিয়া সমুদ্ধ কাজে প্রবৃত্ত হইষাছি। পথে ঘাটে যথনই নন একটুকু হালকা হইত বা বাজে কণাম প্রসুত্ত ইতাম অম্নি প্রার্থনা কবিভাম। এই ভাব কমিষা যাওয়াতে এখন দেখিতে পাত অনেক সময় ব্রাক্ষেরা বুগা কথায় কাট্টিতেছেন্ অনেক সময় বিশেষতঃ তর্কেব সময় আত্মহারা হত্যা যাতা বলা উচিত নয় বা অবস্তু তাকাও বলিতেচেন। বলিতে কি এক-কপ ভায়ের পথ বা সভে)র পথ হঠতে কিছু কিছু সরিয়া পড়িতেছেন। এখন পুনরায় আমা;দগকে সর্বাদ। প্রার্থনাপুরাক কাজ করিতে চইবে। যথনট দেখিব যে চিন্ত ৰহিশুখীন হইতেছে वाटक कथात्र माভिट्टिष्ठ, उभन्डे हिल्ला ख्रित्र कतिया खार्यना ছার। আয়াকে শুদ্ধ করিতে হঠাব এবং ঈশ্ববের প্রশংসা কীর্ত্তনে নিগুক্ত ইইতে ইইবে। বিশেষ সভা স্মিতিতে এই श्वकात ভाবে काक ना इहेटल अपनक मनत्र स्टायत नाटम আসিবে। ব্রাহ্মবন্ধুদিগকে বিনীত অমুরোধ কোন প্রকার কথায় জীবন অতিবাহিত করিতেছেন সে দিকে মেসেঞ্জার গ্রহণ করেন; কিন্তু বাড়ীর বালকেরা ভাষা

ट्यन नर्सना मृष्टि तारथन । स्रेचवरक ज्निता नश्कार्या कृतित्न क्र 😻 হোপও। তাঁচারই জক্ত সব। তাঁচাকে সর্কলা আরণ রাখিয়া স্ব ক্রিতে হট্বে। কথন মৃত্যু উপন্থিত হট্বে কে জানে ? যেন মৃত্যু সময় প্রাভূকে ভূলিয়া মরিতে নাহর এই জন্ম সাধুরা বলিয়াছেন, সর্বন। ঈশ্বরের নাম কর, অবিশ্রান্ত প্রার্থনা কব, ঈশ্বকে স্মবণে রাখ।

"অবিশ্রাস্ত প্রার্থনা কর" এ কথার ভাৎপর্য্য এরূপ নচে যে, সর্ব্য কর্ম বিবজ্জিত হটয়া কেবল দিনরাত্তি প্রার্থনাট করিতে হইবে। সংসারের নানা কার্যো ব্যাপুত থাকার অবস্থাতে ভাচা मञ्चन । कि बु हे हा मञ्चन, याहा कव, यथान याउ, ঈশ্ববের দিকে মুখ থাকিবে। মনে কর এক ব্যক্তি এক স্থান হটতে আরে এক স্থানে যাইবে বলিয়া বৃহিপ্ত হুইয়াছে। সে পথে নানা বিষয় চিস্তা করিতে করিতে ও অপর একজন বন্ধুর সহিত কথোপকপন করিতে কবিতে যাইতেছে। সে কি প্রতি পাদবিকেপে স্মরণ করে স্মাম অমুক স্থানে যাইতেছি 📍 ভাচা কবে না, অণ্চ ভাহার সমুদ্র পাদ্বিক্ষেপের সমষ্টিব গ্রি সেই স্থানের অভিমুপ্থই থাকে। দেইরূপ তুমি প্রত্যেক কার্য্য করিবার সময়ে ঈশ্বকে স্মরণ না রাথিতে পার, অস্তভঃ এইটুক দেখ যে ভোমার সম**গ্র** কাব্যোর সনষ্টির গতি ঈশ্বরাভিমুখে ব্রিয়াছে কি না। অব্যব্ মনে কব এক বাকি গৃহে পত্নীৰ অভি গুক্তর পীড়া দেখিয়া কর্মস্থানে গিয়াছে। সে শীঘ্র শীঘ্র কর্মস্থান চইতে বিদায় শইয়া গুল্ছ আদিতেছে, পথে বাঞ্চারে গিয়া কিছু দ্র্বী দামগ্রী क्रय कविट्डाह । कन्त्रश्वास्त विभावि समाधन्न कार्षियात समन्, বা বাজারে জ্বা সামগ্রীর মূল্য ভিব কবিবাৰ সময় পত্নীকে মনে না থাকুক, কিন্তু একণা কি বলা যায় না দে, ভাচার মন বাড়ীডে পড়িয়া রভিয়াছে। তেমনি আমর। যে যে কাজ করি, মন খেন ঈশ্ব চরণে প্রিয়া থাকে।

ব্রাহ্ম-সাহিত্য পাঠে ব্রাহ্মদিগের উদাসীনতা— ব্রাহ্ম প্রতিদিন যেমন অন্ততঃ একণার পুণাঙ্গ উপাসনা করিবেন, তেমন প্রতিদিনই ভাঁচার ত্রাহ্মধর্ম সম্বন্ধীয় কেনিও পুশুক অধ্যয়ন কৰা ক্ষ্ৰা: যাঁহারা অভাস্থ শাস্ত্রে বিখাস করেন, উচোবা নিরত শাস্ত্রের বচনাদি পঠি করিয়া থাকেন। উচিরো ধর্মশাস্ত্র পঠি কশকে পুণাকার্য্য বলিয়া বিখাস করেন। আক্ষণণ কোনও অনুস্তে শাস্তে বিশ্বাস करतन ना; किन्न बाल्यभन्ना मध्यकीय शुक्तकानि धवर व्यक्ताना ধর্মের মধ্যে যে সকল প্রকৃত সত্য বাক্য রহিয়াছে, গুড়ীর শ্রন্ধার সহিত তাহা পাঠ করা বাঞ্চনীয়। প্রতিদিন উপাসনার পূর্বে কিন্তা পরে পাঠের নিয়ম করিলে, উপাসনার সহিত পাঠ ও নিতা অভ্যাস হইয়া যায়। আহতান্ত চঃপের বিষয় যে. वाक्रामित्रं गर्या प्रान्तिक वाक्रमण्य भवक्रीत श्रष्ट 9 भिक्रम পাঠ করিতে উদাসীন। এমন কি তর্বেমুদী মেদেঞ্জার প্রভৃতি কাগজও অনেকে একবার পাতা উল্টাইযা দেখেন না। আমরা স্বচকে দেখিরাছি, মফঃস্বলম্ব কোনও ধনী শিক্ষিত ব্রাহ্ম

খুলিয়া পাঠ্না করিলে, পজিকা থানি আর থোলা হয় না।
কলিকাতার অনেকেই তত্তকামুদী পড়েন না। আক্ষদিগের
পজিকা যদি আক্ষাণ পাঠ না করেন, তবে কে পাঠ করিবে?
আমরা যতদূর জানিয়াছি, তাহাতে বোধ হয় পাঠ না করিবার
কাবণ আলতা এবং উদাসীনতা। সাহিত্যের চর্চা এক সময়ে
আক্ষদিগের মধ্যে অভিশয় প্রবল ছিল। কিন্তু এক্ষণে আক্ষগণকে সাহিত্যচর্চা বিষয়ে উদাসীন দেগা যাইতেছে। ইহার
ফল এই হইতেছে, তাঁহারা সাহিত্য জগত হইতে
পিছাইয়া পড়িতেছেন। আশা করি এবিষয়ে সকলের দৃষ্টি
আরুই হইবে।

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### যোগচকু।

যুধিষ্ঠিবকে বককাপী ধর্ম অনেক গুলি প্রশ্ন জিজ্ঞাস। কবেন, ভাছার একটা প্রশ্ন এই, অশচর্যা কি ?" সুধিষ্ঠিব উত্তর কবিলেন, "মাফুধ নিয়ক অপরের মৃত্যু ঘটনা দেখিতেছে, তপাচ নিজের মৃত্যু সম্বাক্ষ চিন্তা করে না। সংসাবের বিনাশশীলতা এবং নম্বকা দেখিয়া স্বীয় মৃত্যুব বিষয় চিম্বা না করাই আশ্চর্যোর বিষয়।" কিন্তু ইচা আপেকাও আশ্চর্যোর বিষয় আছে। মাফুম নিরত ক্রক্ষ সন্তার মধ্যে অবন্ধিতি কবিতেছে, ক্রন্ম আকাশে আত্মা পক্ষী বিচরণ করিকেছে, ক্রন্ধ সমুদ্র মীনের স্থায় মানব সন্তান ভ্রিয়া রিছিয়াছে, তথাচ প্রস্পার বিশ্বেছে "ঈশ্বর কোথার, স্বার কোথায়?" স্থা চতুর্দ্দিক আলোকিত করিয়া মধ্যাহ্ম গালনে প্রকাশিত, তাহার প্রথর কিবলে পৃথিনী আলোকিত, এ সময় যদি কেই চিজ্ঞাসা করে যে, "স্থা কোথায়? আলোক কোথায়? স্থা কিরণ কিরপ বস্তু ?" ভবে যেনন সক্ষেই হান্ত কবিবেন, তেমন সাধারণ জনগণের ঈশ্বরাফ্র-সন্ধানের কথা শুনিয়া ব্রন্ধবিদ্যাণ আশ্চেয়ায়িত হন।

কলওয়ে সাহেব কতুক সংকলিত গ্রন্থে নিম্নলিখিত উদাহবণ্টা প্রাপ্ত ওরা বায়। "একদা কোন নদীর মংস্তসমূহ এক ত্রিত হইয়া পরস্পাব আলোচনা কবিতেছিল যে "সকলেই বলে যে, জল হইতে আমণা স্টে এবং রফিত হহতেছে, কিন্তু জল কি বস্তু আমরা কথনও দেখিতে পাইলাম না। তথন তাহাদের মধ্য হইতে অপেক্ষাক্ত স্থবোধ কএকটা মংস্ত বলিল, "আমরা শুনিরাছি যে সমুদ্রের মধ্যে এক আতি বৃদ্ধিনান ও পণ্ডিত মংস্ত বাস করেন, তিনি সমুদর বিষয় জানেন, চল আমরা তাঁহার নিকট যাই এবং আমাদিগকে জল দেখাইতে ৰাজল কিরুপ, তাহা আমাদিগকে বৃষ্ণাইরা দিতে, তাঁহাকে অমুরোধ কবি।" এই কথা শুনিরা তাহাদিগের মধ্যে অনেকেই সেই বিজ্ঞ মংসার নিকট গিয়া উপস্থিত হইল। সে তাহাদিগের আবেদন শ্রুবণ করিয়া এইবংগ উত্তর করিল।

ছে প্রশ্ন মীমাংসাথিগণ "তোমরা প্রমেখরের মধ্যে বাস ক্রিডেছ অথচ তাঁহাকে জান না। "তোমরা নদীর কুলে বসিরা আছে অথচ একবিন্দু জলের জন্য ভূফার মরিতেছ।" বাস্তবিক আমাদের এই প্রকারই

সাধারণ লোকের দৃষ্টি অতি সূল। সাধারণ লোকে যাহাকে জল বলে, স্ক্রদর্শী বৈজ্ঞানিক তাহাতে গ্যাসম্বরের মিলন দেথিয়া থাকেন। সাধারণ লোক বলে, "আকাশটা পৃথিবীর চক্রাতপ", বৈজ্ঞানিক বলেন,"উহা কোনও বস্তু নহে"; নির্ব্বোধ মানব মরুভূমিতে মৃগত্ফিকা দেখিয়া তাহা জল বলিয়া পান করিতে চায়, বৈজ্ঞানিক বলেন, "ওখানে যাইও না, উহা कत नग्ना" नाधात्रा पृथिवीरक शालात मज (पर्य, देवछामिक (शान (मरथन। (महेक्स प्रमाद्धि (नारक (मरथ, গाছ পायत, চন্দ্র, সূর্যা, ঘর, বাডী, সংসার ইত্যাদি জভ বস্তু। देवछानिक (मर्थन, हेहात्र मर्धा देवज्जेत्रभी (मन्छ। स्ट्रा ভাচার চক্ষুকে আবরণ করিতে পারে না। আক্ষ বৈজ্ঞানিকের দৃষ্টি জডম্বর ভেদ করিয়া চৈত্ত রাজ্যে উপন্থিত হয়। বিষ্ণুপুৰাণ প্ৰণেতা এক ভানে ঈশবকে সংখ্যাধন করিয়। विनिशास्त्र (य "जुमि छानाञ्चा, এই म्र्क्तिय पृष्टे इरेटिंग्स्, ইচা তোমার জ্ঞানময রূপ; কিন্তু অজেবা জগৎকে ভূতময় দেখিতেছে। অবুদ্ধিগণ জ্ঞান স্বরূপ এই অথিক জগৎকে অর্থ রূপে (সূল রূপে) অবলোকন করত: মোছ সংপ্লাব ( সংসার সাগারে ) ভ্রমণ করিতেছে, ছে প্রমেশ্বর ! যাঁচারাজ্ঞানচিৎ শুদ্ধচেতা, উচোরা অথিল জগৎকে ভোমার জ্ঞানাত্মকরাপ বলিয়া দেখেন।"

মুষা পরমেশবকে জিজ্ঞাসা করিলেন, "প্রভো, আমি তোমাকে কোপায় পাইব ?" প্রমেশব উত্তর করিলেন, ''জানিও যথনই তুমি অফুসন্ধান কবিয়াছ, তথনই তুমি আমাকে পাইয়াছ।"' একজন আবনীয় লোককে কেহ জিজ্ঞাসা কবিয়াছিলেন, ''তুমি কিকপে জান যে, পরমেশব আছেন ?" সে ব্যক্তি উত্তব করিয়াছিল, "প্রভিঃকালকে দেখিবাব জাজ কি আলোব আবেশ্রক হয় ?''

বাস্তবিক মানব যে আলোক দ্বারা উল্লেকে দেখিতে চাধ,
সেই আলোকট তিনি। মানব স্থান উল্লেক্ট বাসু কবে,
তাহাতেট বিশ্রাম, তাহাতেট শ্বন, ভ্রমণ, অপ্ন বসন,
তাহাতেট জীড়া কৌতুক আমোদ প্রমোদ কবে, অগ্রচ
উল্লেক্ত চিনে না। কেছ যদি তুপ্রভর বেলায় লগুন জালিয়া
স্থোর কিবণ দেখিবাব জন্ম গৃহের বাহিব হ্য এবং উটচেঃম্বরে
বলিতে থাকে 'ওগো বলতো কোন্ স্থানে স্থোর কিরণ পত্তিত
হইয়াছে, আমি এই লগুনে আলোর সাহাযো তাহা দশ্ন
করিব," তবে যেমন স্কলেই তাহাকে উন্মন্ত বলিয়া স্থির
করিবেন, তজ্ঞাপ সাধাবণ মানব স্থান ভ্রম্ব পথে গ্রমন করিয়া
কেবলই উদ্ভাষ্তার প্রিচয় প্রদান করে।

দৃষ্টিশক্তি সকণেরই কি এক প্রকার ? বুদ্ধ, ঈবা, মুষা যে
চক্ষে দর্শন কবিতেন, সাধারণ মানবও সেই চক্ষেই দর্শন করে;
কিন্তু তাঁহাদের স্ক্র দৃষ্টিশক্তি বৈজ্ঞানিকের স্থার স্কুলভেদ করিয়া
চৈত্রস্ত রাজ্যে যাইভে পারে না। সাধারণের দৃষ্টি স্কুলে অজ্
অগতেই আবিদ্ধ পাকে। অজ্ এবং চৈতন্তের মধ্যস্থ্যে য্বনিকা

রহিরাছে, এই যথনিকা যিনি উত্তোলন কবিতে সমর্থ হইরাছেন জিনিই চৈত্র রাজা দর্শন করিরাছেন। এই ষ্বনিকার নাম মোহ। মোহহীন না হইলে কেহই চৈত্ত্রের সাক্ষাৎ লাভ করিতে সমর্থ হন না। মোহ আবরণ উন্মোচিত না হইলে চৈত্র রাজ্যেব দার উদ্বাটিত হয় না। এই জ্লা গীতাকার বলিরাছেন;—

যা নিশা সর্বভূতানাং তভাং জাগর্ত্তি সংয়মী।

যভাং জাগ্রতি ভূতানি সা নিশা পশ্রতো মুনে:॥

>ম—৬৯ শ্লোক।

অর্থাৎ "অজ্ঞানাচ্ছন্ন সর্বভূতের পক্ষে যাহা নিশা সকপ, কাহাতে ব্রহ্ম বি ব্যক্তি প্রবৃদ্ধ থাকেন, যাহাতে অন্তান্ত সকলে প্রবৃদ্ধ থাকেন, যাহাতে অন্তান্ত সকলে প্রবৃদ্ধ থাকেন, যাহাতে অন্তান্ত সকলে প্রবৃদ্ধ থাকে, তাহা তত্ত্বদর্শী মূনিব পক্ষে নিশা স্বকাপ।" সুল কথার নলিতে গোলে সাধাবণ মাননেব যথন রানি, মুনিব তথন দিন, মুনিব যথন দিন তথন সাধাবণেব বাত্রি। সাধাবণের প্রকৃত দর্শন হয় না বলিয়াই একপ হইয়া থাকে। ঋষি-গণের প্রকৃত দর্শন হইয়া থাকে; এই জন্মই তাঁহারা প্রকৃতিতে চৈতন্তের দর্শন প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। সভ্যের সাক্ষাৎকার একবার প্রাপ্ত হইলাই মানব যোগচক্ষু প্রাপ্ত হয়। তথন সাধক ক্ষতে ও চেতনে সেই এক প্রম চৈতন্যের শক্তির প্রকাশ দর্শন করিছে থাকেন। সেই একই সন্তার আলিঙ্গনে সমৃদর স্বর্জিত। যোগ-চক্ষে এই প্রমাশ্রয়কে না দেখিলে জদয়ে প্রকৃত বিশ্বাস ও নির্ভবের সঞ্চার হয় না। নির্ভর ভিন্ন ধর্মও নাই। এই কারণে এই যোগচক্ষু লাভ করিবার জন্য সকলেরই সাধন প্রারণ হওয়া কর্ত্ব্য।

## সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্ব্বাহক সভার ৩য় বৈমাসিক কার্য্যবিবরণ।

#### 77201

বিগত তিন মাসে কার্যানির্বাহক সভার ১৪টা সাধারণ অধিবেশন হটরাছিল। কার্যানির্বাহক সভার ছটটা অধিবেশনে বিশেষভাবে ধর্মবিষয়ে আলোচনা হয়। একদিনের আলোচনায় স্থির হর যে কার্যানির্বাহক সভার অধিবেশনের নির্দিষ্ট সময়ের আগ ঘণ্টা পূর্বে অর্থাৎ ৭ ঘটকার সময় সকলে সমবেত হটয়া ৮ ঘটকা পর্যান্ত প্রান্ধনা সঙ্গীতাদিতে যাপন করিবেন। ভদত্মগারে বর্তুমান সময়ে কার্যা চলিতেছে। এবং তাহা ছারা উপকারও হটতেছে।

চিকাগো মহামেলায় পৃথিনীত্ত সকল ধর্ম সম্প্রদায়ের প্রতিনিধিগণের একটা মহাসন্মিলন হইয়া গিয়াছে। তাহার সঙ্গে সহাস্তভ্তি জ্ঞাপন করিয়া কার্য্যনির্বাহক সভা টেলিগ্রাম করিয়াছিলেন।

প্রচারকগণের নিরোগ ও শিক্ষা সহজীর নির্মাস্সারে বর্ত্তমান বর্ষে উচ্চাদিগকে পুনর্নিরোগ ক<sup>া উ</sup>চিত ছিল। কার্যা-নির্কাহক সভা এ বিষয়ের গুরুতামূভব করিরা এবং নির্মের অর্থ সহজে অধ্যক্ষসভার অভিপ্রায় অবগত হওরা আবিশ্রক মনে করিয়া বিশেষ কিছু করিতে পারে<sup>এর</sup>ন নাই। এবং এবিষকের মীমাংসার্থ অধাক্ষসভার প্রস্তাব উ<sup>্প্</sup>সিতিত করিতেছেন।

খাসিয়া মিস্ন—দিন দিন<sup>থা</sup> এই সিসনের উরতি চইতেচে।
চিরাপুঞ্জিতে একটা প্রচারভবন প্রস্তুত হইরাছে এবং তাহার সংস্থালের একটা সমাজ স্থাপিত হা ইয়াছে। গৃহ নির্মাণের জন্ত নানা স্থানের সহাদয় বন্ধুগণের িনকট হইতে প্রার্থী চাবিশত টাকা শুরা গিরাছে, কিন্তু এখন বা ইহার জন্ত খাণ আছে। মৌসমাই সমাজের জন্ত একটা প্রস্তারের ে দ.প্রাল্যক্ত ঘর ক্রেয় করা হইনাছে। এই গৃহ নির্মাণের জন্ত পুণ করিতে হইরাছে। বারু নীলমণি চক্রনর্ত্তীর উপবেই এই মিসনের কার্যা ভার অর্পিন আছে। তিনি আপনার কায়োর সাহাযার্থ একজন খাসিয়া বন্ধুকে সহকানী কপে প্রহণ করিয়াছন আর একজন বাস্থালি সহকানী ও এছন করিবার কণা চলিতেছে।

তুর্ভিক্ষ-প্লনাজালায় নিশেষতঃ টাকাব অন্থর্গত অনেক স্থানে অতিবিক্ত ক্ষণপ্লাবেন হও্যায় লোকের নিশেষকপ অরক্ট উপন্থিত হুইয়াছে এই অরক্ট নিনাবণের জক্ম ঢাকাব ব্রাহ্মগণ একটা সভা স্থাপন কবিষা কটপ্রশাসনের চেটা করিতোছন। কার্যানির্মাহক সভা ভাঁহাদের সহিত একসোণে কার্যা করিতে ইচ্ছা করিয়া সম্প্রতি ১০০ একশত টাকা উভাদের নিক্ট পাঠাইয়াছেন । আবশ্রুক হুইলে এথান হুইতে লোক প্রেরণের জন্মও প্রস্তুত আছেন। এজন্ম সমাজের প্রক্রিকতে অর্থ সাহায্য প্রাণনা পত্র প্রক্রান্যে ব্যবস্থা কবিষাছেন।

প্রচার—এই সমর মধ্যে নিয়্রণিথিত স্থান হইতে প্রচারকগণের নিমন্ত্রণ আসিয়াছিল। কুমিলা, দিনাজপুর, দৈদপুর, বর্দ্ধান, চাইবাসা, ধুবড়ি, ঢাকা, শিবপুর, বেলুড। আমাদের প্রচারকগণ নিম্নণিথিতক্রপে গত তিন মাস কার্যা করিরাছেন।

#### শ্রীযুক্ত নবদ্বীপচন্দ্র দাস—

নোয়াথালি—এখানে প্রায় সপ্তাত কাল থাকিয়া
সমাজে ও পরিবারে উপাসনা উপদেশ এবং পাঠ ব্যাথ্যাদি দ্বাবা
ব্রাহ্মধর্ম প্রচার কবিয়াছেন। একদিন একটা বিশেষ অন্তর্ভান
উপলক্ষে উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন এবং আলোচনা
করেন।

বরিশাল — এথানে প্রায় ১।৬ দিন থাকিয়া সমাজে এবং পরিবারে উপাসনা উপদেশ এবং পাঠবাগা দারা রাহ্মধর্ম প্রচার করেন। বিশেষ অন্তর্গান উপলক্ষে উপাসনাদি করেন। ছাত্রসমাজে "কাছার নেতৃত্বে চলিব" এই বিষয়ে বক্তৃতা কবেন এবং আলোচনা করেন।

খুল্না—এখানে ৩৪দিন থাকিয়া পরিবারে উপাসনা এবং পাঠ ব্যাখ্যাদারা ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করেন,স্থানীয় টাউনছলে "সভ্য ধর্ম কি?" এবং "ধর্ম কি উপায়ে লাভ করা যায়?" এই ছই বিষয়ে বক্তৃতা করেন এবং আলোচনা করেন।

যশোহর—এথানে ৩।৪দিন থাকিয়া সমাজে এবং পরিবারে উপাসনা উপদেশ ও পাঠ ব্যাথ্যা দ্বারা আক্ষধর্ম প্রচার করেন। ন্ধানীর বার লাইত্রেরিতে "আমাদের কিনের অভাব ? এই বিষয়ে বক্তৃতা করেন, একটা পল্লিতে একজন বন্ধুর গৃহে বিশেষ উপাসনা করেন এবং উপদেশ প্রদান করেন।

শিবপুর—প্রার্থনাসমাজের উৎসবে উপাসনা উপদেশ এবং পাঠ ব্যাথ্যাদি করেন এবং ছাত্র জীবনে নীতি শিক্ষার প্রয়োজনীয় ছা সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন।

শ্রীরামপুর-সমাজে উপাদন। করেন এবং উপদেশ প্রদান করেন।

(तलू ७१ र्म — डेशामना करतन এवः डेशाम धामान करतन।

দিনাজপুর—সমাজে ও পবিবারে উপাসনা করেন; উপদেশ প্রদান করেন, ও একটা বিশেষ অনুষ্ঠান উপলক্ষে উপাসনাদি কবেন।

সৈয়দপুর—মঞ্দির প্রতিষ্ঠা উপলক্ষে সমাজে উপাসনা করেন এবং উপদেশ প্রদান করেন ও বিশেষ রূপে তথাকার বন্ধানর সঙ্গে আলোচনা করেন।

ধুবড়ী -- সমাজের বার্ষিক উৎসব উপলক্ষে তথার সমাজে এবং পরিবাবে উপাসনা কবেন, পাঠ ব্যাখ্যা এবং উপদেশ ছারা ব্রাহ্মধর্ম প্রচাব কবেন, বিশেষ কপে আলোচনা করেন, ছাত্র-সমাজে "ছাত্রদীবনের অভ্যাবশুকীর করেকটী বিষয়" এই বিষয়ে বক্তৃতা কবেন। আরে একদিন "জীবস্ত ধর্ম্ম" বিষয়ে বক্তৃতা করেন।

চাইবাসা—এথানে প্রায় ৯।১০ দিন থাকিবা উৎসবে উপাসনা পাঠ ব্যাথ্য। এবং উপাসনাদি দ্বারা আদ্ধাম প্রচার্

পুরুলিয়।—উপাসনা পাঠ ব্যাখ্যা এবং একদিন টাউন হলে "প্রক্বত মথ্যা ভাবন সংগঠন" এবিষয়ে বক্তৃতা করেন।

আংসেনসোল—এখানে উপাদনা পাঠ ব্যাখ্যা এবং উপদেশ দ্বারা প্রাক্ষধর্ম প্রচাব করেন।

বাঁকুড়া—সম্প্রতি এগানে অবন্তিতি পূর্ব্বক উপাসনা উপ-দেশাদি দারা ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করিতেছেন।

কলিকাতায়—অবস্থিতি কালে ত্রাহ্ম সাধনাশ্রমে এবং পরিবাবে উপাসনাদি করিয়াছেন। বিশেষ ২ অফুষ্ঠান উপ-লক্ষে উপাসনাদি করিয়াছেন। পরিবার ও ছাত্রাবাস পবি-দর্শন করিয়াছেন। তত্তকৌমুদীতে মধ্যে মধ্যে লিথিয়াছেন। এতিন্তির সমাধ্যের অক্তান্ত কার্য্য ব্যাসাধ্য কবিয়াছেন।

শীযুক্ত নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়—বংশবাটী ছাত্র সভার সভাপতি কপে নিম লিখিত ২টি বিষয়ে তুই দিবস বক্তা করেন। ১। "রক্ষণশীলত।" ২। "ইয়োরোপেব নিকট আমরা কি শিক্ষা করিতে পারি।"

তেলিনীপাড়'—জমীদার মহাশারদের বাটীতে উপাসনা ও বক্তৃতা করেন।

ঢাকা-- পূর্শ্ববালাল। বান্ধসমাজমালেরে উপাসনা e উপ- |

দেশ। ছাত্র সমাজের উৎসব উপলক্ষে, পূর্ববালালা ব্রাক্ষসমাজমালিরে উপাসনা ও উপদেশ এবং ছাত্রসমাজের উৎসব উপলক্ষে
"নিমালিথিত ২টি বিষয়ে বক্তা ১। "নীতি শিক্ষা ও
চরিত্র সংগঠন।" ২। "ধর্মাতের বিরোধ ও সামঞ্জত।"
পূর্ববালালা ব্রাক্ষসমাজে অর্গীয় বিদ্যাসাগর মহাশয়ের মহত্ব
বিষয়ে বক্তা।

কলিকাতা। একটী শ্রাদ্ধ উপলক্ষে উপাদনা। ছাঅদমাজে প্রশ্নোত্তর। দিটিকলেজে বিদ্যাদাগর মহাশরের মুরণার্থ সভার বিদ্যাদাগর মহাশরের মহন্ত বিষয়ে বক্তৃতা। পরিচারকাশ্রমে তিন দিবদ ধর্মালোচনা এবং একদিবদ ''দাকাব ও নিরাকার উপাদনা'' বিষয়ে বক্তৃতা ও মালোচনা। কোন ছাআবাদে প্রোর্থনা ও আলোচনা। কোন আন্মপরিবারে জন্মদিন উপলক্ষে উপাদনা। ছাঅদমাজে "দেবাধর্মা" বিষয়ে প্রকাশ্র বক্তা বক্তা বক্তা। একটি আন্ধবিবাহে আচোগ্যের কার্যা। রাজা রাম্মেহন রায়েব স্থরণার্থ সভার ''রাজা বাম্মেহন রায় হিল্ নাবীব জন্ম কি করিয়াচেন ?'' এই বিষয়ে বক্তৃতা।

কলিকাতা ও মফসলে এবং অকান্ত লোকের স্থিত আলোচনা ও ধন্মবিষয়ক পুস্তকরচনাতেও অনেক সময় আতবাহিত হুইয়াছে।

শ্রীযুক্ত শশিভূষণ বস্তা। কলিকাতা—কোন কোন প্রিবারে, বৃদ্ধিগের সহিত ও নিম্ভা আঞ্চনাজে মধ্যে মধ্যে উপাদনা করেন।

কুমিল্লা—এথানে উৎসবে আচার্য্যের কার্য্য করেন।
কোন কোন পরিবারে উপাসনা ও উপদেশাদি প্রদান করেন,
আজবন্ধ ও ছাত্রদিগের সহিত ধর্মালোচনা করেন। স্থানীদ
টাউন হলে "জীবস্ত শক্তির লক্ষণ" ও "জাতীয় চবিত্রের অবনতি ও উন্নতি" সম্বন্ধে এবং ছাত্র'দাগের জন্ত সমাজগৃতে হংরেজিতে "Solemn warnings" এবং ইংবাজি সুল গৃতে "ছাত্রজীবনের দায়িত্ব ও কন্তর্য "সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন।

পত্তিকায় ধন্ম বিষয়ে প্রবন্ধ লিখেন এবং "The Principles of Brahmoism and the order of divine Bervice in the Brahmo Samaj. নামক একথানি পুস্তক প্রবন্ধন করিতেছেন। এবং অন্ত একথানি পুস্তক প্রবন্ধনে রভ আছেন। প্রচারক মহাশর্দিগের বাংসারিক অবসর গ্রহণেব নির্মান্ধ্বসারে কিছু দিন বিশ্রাম কবেন।

পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী—মন্দিরে রনিবাস্থীর উপাসনায় আধকাংশ সময় আচার্যোব কাষ্য করিয়াছেন এবং
সাধনাশ্রমেব তত্ত্বাবধায়কতাও দৈনিক উপাসনায় অধিকাংশ
সময় আচার্যোব কার্য্য করিয়াছেন। ত্রান্ধবাালকা বোর্ডিং ও
শিক্ষালয়ের সম্পাদকীয় কাষ্য নিয়মিতকপে নির্মান্ত করিয়াছেন।
ছাত্রসমান্তে উপাসনা বক্তৃতা আলোচনাদি করিয়াছেন।
কোন কোন ত্রান্ধপারিবারে অমুষ্ঠানে আচার্যোব কার্য্য করিষাছেন। এতিন্তিয় ভত্তকামুদী সম্পাদন ক্রিয়াছেন এবং
মেসেঞ্জার সম্পাদনের সহায়ত্ব। করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত লক্ষাণ প্রসাদ-এই তিন মাস কাল মধ্যে যত্রিন লক্ষ্ণোয়ে ছিলেন তথায় দৈনিক ও সাথাছিক উপাদনাদি করিরাছেন। প্রভার প্রাতে দরিদ্রদিগকে হোমিও-প্যাথি ঔষধ বিভবণ করিয়াছেন। রোগীর সংখ্যা প্রায় ১৫০০ হইয়াছিল। এতদাতীত প্রকাশ্র রাজপথে বক্তাও ধর্মালোচনা করিরাছেন। কোয়েটা ব্রাহ্মসমাজের সাম্বৎসরিক উৎসবে আহুত হইয়া তথায় ঘাইবার কালে এবং তথা ছইতে প্রত্যাগমন কালে লাছোর, রক্ষ সকর প্রভৃতি স্থানে অবস্থিতি সরিয়া উপাসনা, বক্তা, ও ধর্মালোচনা করিয়াছেন। ইহাতে তাঁহার একমাদ কালের অধিক অতিবাহিত হয়। তিনি এই স্কল স্থানে ধর্ম প্রচাব এবং কোন কোন সদার ও শিক্ষিত ভদ্রলোকদিগের স্থিত ধর্মালোচনা করিয়া বিশেষ উপকৃত ও উৎসাহিত হইয়াছেন।

বক্তা ও উপদেশের বিষয়	স্থান
Terms of divine love.	লাহোর এক্ষমন্দির।
To be divine is the real aim of li	ie রক্ষ ভন্তনমণ্ডলা মণ্ড
The object of life	<b>्कारम्</b> ठा ।
Terms of enjoying the utsob	<b>₫</b>
Materials of holy life	ক্র
The practical feature of our relig	ion 🔄
What we mean by conversion	B
The open enemies of God	ক্র
Life here and here after	ক্র
A good old way	ঐ
Our duties	<b>&amp;</b>
Home and its teachings	র ক্ষ
The basis of religion is to be with God	} मक्त्र
The materials of happy life	<b>শ</b> কর
The human life	লাভোর
The duties of educated Indian	ক্র
	_

পাপের এবং ভাঁচার লঞ্জে দাতবা চিকিৎদালয়ের সাহায়া হেতু নিম্নলিখত এককালীন দান জন্ম দাতা দিগকে তিনি সকাস্তঃকবণে ধন্তবাদ দিভেছেন। मफीत प्रयाग गिः गाटात--- ५०० কোয়েটা ব্রহ্মসমাজ দেওরান নেভালরাও স্কর—১০১

লক্ষো হাইদ্রাবাদে দাতব্য চিকিৎসালয়টি হইরা তাঁচার প্রচার কার্য্যের অনেক স্থান্ধ ও উন্নতি হইয়াছে। স্থানীয় বন্ধুগণ একটি শাথা চিকিৎবালয় পুলিবার জন্ম অমুরোধ করিতেছেন. কিন্তু সহকাৰী অভাবে আপাতভঃ ভাহা সম্ভব পর নহে। ছইটি যুবক তাঁহাব চিকিৎসালয়ে বিশেষ সাহায্য করিয়াছেন। সে অক্ত তাঁহাদিগের নিকট তিনি ক্রতজ্ঞতা প্রকাশ করিতেছেন।

এত্তিল বাবু কালীপ্রসল বস্থ নিম্লিথিত রূপে কার্যা করিয়াছেন। তিনি কিছুকাল তিলিগ্রামে স্থানীয় উপাসকদিগকে শ্রীয়া মাঝে মাঝে উপাসনা ক্রিয়াছেন, ও রবিবার সনায় কথন কথন আচার্য্যের কার্য্য ক্রিয়াছেন, কোন কোন

উপাসনার সময় উপদেশ দিয়াছেন। কিছুকাল ঢাকায় थाकिया करमक्ती উপामक गरेया एकनागरम्य এक धारकार्छ जिन দিবস উপাসনা করেন, রবিবার প্রাতে ভক্তনালয়ে উপাসনা করেন। তৎপর ক্লিকাত। আগমন করেন। ক্লিকাডার অব্দ্বিতি কালে চুই দিন সাধনাশ্রমের ও এক দিন প্রাতে ভন্ধনালয়ের উপাসনা কার্য্য করিয়াছিলেন। সাধনাশ্রমের উপাদনালয়ে একদিবদ সায়াছে কোন মহিলার মাতৃপ্রাদ্ধ উপলক্ষে উপাসনা করেন। হুইটী বনুর অমুরোধে একদিবস हेर्फन जेम्यारन जेशायना करवन। कान वक भनिवात माग्रारक नातू निशिन निकाती ताम महामारमत नामाम उपामना करनन। ছাত্র সমাজের উৎসবে পাঠ গাখ্যা ও গেলুড গ্রামে ধর্ম প্রচারের সভাষত। করেন। এক দিন ভবানীপরে মনোবঞ্জন গুতের বাসার পারিবারিক উপাসনা কবেন। সাধারণ ত্রাহ্মসমাজেব অঙ্গীভূত রঙ্গপুর ব্রাহ্মসমাজের বিশ্ভিং ফণ্ডের জ্ঞ কয়েক টাকা দান সংগ্ৰহ করেন। ধর্ম বিষয়ক একটী দীর্ঘ প্রবন্ধ লিখিতে নিযুক্ত আছেন। কলিকাতা হইতে বোলপুর গমন কালে বৰ্দ্ধমানে কামিনীকান্ত গুপ্তের বাটীতে উপাসনা করেন। বোলপুরে উপস্থিত হওয়ার পর বন্ধু মণ্ডলীতে একদিন উপাসনা করেন। গোলপুর গ্রামে ধর্ম বিষয়ক একটা বক্তৃত। করেন। নগগটীতে বাবু নালকান্ত সিদ্ধান্তের বাডীতে উপাসনা করেন। রামপ্রভাটে বাবু মতেশ্চক্ত ঘোষের বাসায় উপাসন। করেন। রবিবাব গুট বেলা সমাজে উপাদনা করেন। সায়াছে छे शामनाय छे शामना (मन वार अभवादः आत्माहना करतन। বাজারে স্থাত প্রার্থনা করেন, তংপর মন্দিরে আসিয়া স্থাতি ও প্রার্থনা বক্তা কবেন। রামপুরহাট হইতে কলিকাতায় ফিবিয়া 'কে ন একটা বন্ধুব জন্ম দিনোপলকে উপাসনা করেন।

এবং বাব নীলমণি চক্রবার্তী প্রধানতঃ চেবাপুঞ্জিতে পাকিয়া कार्या कतियात्क्रम मत्भा मत्भा शामिया शाहात्क्रत व्यमाना স্থানে ধর্মাপ্রচার করিয়াছেন। ভাগার কার্যোর বিশেষ বিবরণ পাওয়া যায় নাই।

#### সাধনাশ্রম।

পণ্ডিত শিবনাথ শাল্লী এবং বাব্ নবদীপচন্দ্র দাসেব কার্যা-বিবৰণ প্রচারকগণের কার্য্যবিবরণের সভিত দেওয়। হইয়াছে। অভাভা পরিচারকগণের কার্যা বিবরণ এই রূপ।

শ্রীযুক্ত প্রকাশদের--ইনি রামপুরহাট ব্রন্ধমন্দিরে উপাসনা करत्रन ७ छेलानम एनन कार (कान जास्त्रत ग्रह खार्थना करतन ও নলহাটিতে উপাসনা করেন। ভাগলপুরে কোনও পরিবারে खेलागना करतन এবং উপনিষদের লোক উল্লেখ করিয়া উপদেশ দেন। একদিন আলোচনা সভাতে প্রার্থনা ও আলোচনাদি करतन। कलिकाचा अध्यक्तिरहेन स्वायास्य व्यक्ताचा वक्ताचा করেন। শান্তিনিকেতনে অবস্থিতি কালে বোলপুরে একদিন বক্তৃতা কবেন। একণে তিনি প্রচারার্থে ছোটনাগপুর অঞ্চলে গমন করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত আদিনাথ চট্টোপাধ্যার সাধনাশ্রমের দৈনিক উপা-

বাসার এবং মন্দিরে রবিবার প্রাভ:কালে মধ্যে মধ্যে উপাসন। করিয়াছেন। কয়েকটী পারিবারিক অনুষ্ঠানে উপাসনা করিয়াছেন। এবং প্রাক্ষ বালিকা শিক্ষালয়ে ২ সপ্তাহ বাবু (পরশব্দর রায় মহাশরের অনুপদ্ধিতিতে) শিক্ষা প্রালান করিয়াছেন। ইনি নিয়মিতকপে প্রাক্ষমিশন প্রেসের জন্তাবধারকতা করিয়াছেন এবং তত্ত্বকৌমুদী পরিচালনের সহায়তা করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত মতেক্সনাথ চাটোপাধ্যায়—সাধারণ প্রাক্ষসমাজের ধনাধ্যক্ষের কাষ্য ও কার্য্যালয়ের অন্তান্ত কার্য্যের সহারতা করেন ও করেকটি প্রাক্ষ পরিবার পরিদর্শন করেন। রবিবার প্রাতে কয়েক দিন সমাজ মন্দিরে উপাসনার কার্য্য করেন। মধ্যে মধ্যে আশ্রমেব উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য করেন। এবং প্রতি দিন সায়ংকালে সমাজ মন্দিরে উপাসনা করিয়াছেন। এতিপ্রি প্রতি শনিবার নিম্বা প্রাক্ষসমাজে সাপ্তাতিক উপাসনা করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত গুক্লাস চক্রবর্ত্তী—ব্রাক্ষ ছাত্রনিবাসের তত্ত্ববিধারকতা এবং বালিক। শিক্ষালয়ের শিক্ষকতা কার্য্য নিয়মিত কপে
সম্পাদন করিয়াছেন। সময় সময় সাধনাশ্রমের দৈনিক
উপাসনায় আচার্য্যের কার্যা করিয়াছেন ও কোন কোন বাসায়
উপাসনা কার্যাছেন। এতছিল তত্ত্বকৌম্দী সম্পাদনের সহায়তা কবিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত কাশাচন্দ্র ঘোষাল—সাধনাশ্রমের কার্যাধাক্ষতা ও প্রাক্ষ ছাত্রীনিবাস ও বালিকা শিক্ষালয়ের হিসাবাদি কার্যো নিয়মিত কপে সহায়তা কার্য়াছেন এবং শাস্ত্রিকেতনে অবস্থিতি কালে বোলপুরে এক দিন নিত্যানন্দের প্রেম প্রচার সম্বন্ধে কথকতা করেন ও ওয়েলিংটন স্থোগ্রে এক দিন বক্তৃতা করেন। কথন কথন সাধনাশ্রমের দৈনিক উপাসনায় আচাব্যের কার্যা কার-রাছেন এবং তত্ত্বামুদা সম্পাদনের সহায়তা করিয়াছেন।

সাধনাশ্রমে এই সুময় মধ্যে ৩টী মাসিক উৎস্ব হইয়াছে
১লা সেপ্টেপ্তবের উৎসবে বাবু জয়শকরে রায় সংকল্লাধীন সেবক
ক্ষেপে গৃহীত হইয়াছেন। আগেষ্ট মাসে আশ্রমবাসীগণের আদকাংশ বোলপুরে নিজ্জন সাধন আলোচনাদিতে যাপন কারয়াতেল।

#### व्याप्र वाद्यत विभाग ।

<b>অ</b> ব্য		ব্যয়	
বাটাভাডা	88	প্রচারার্থে পাথেয়	, ডাক্মাণ্ডল
পুস্তক বিক্রয়ের আয়	ં હ્	ও অঞাজ কুদ্র ব	।।स ७५//०
আত্থিকণ্ডের দানপ্র	ાજિ ⇒્	আশ্রমবাসগণের	ī
আশ্রমব্যাসগণের		আহার ও অক্সার	<b>D</b>
নিকট হইতে প্রাপ্তি	>646	বাবতে ব্যয়	852nd50
বিদিদ বিক্রম	20110	অতিথিগণের জ	<b>ज</b> वाज
मान व्याश्वि	>00hd>0	•	ऽ <b>ा</b> ।∕०
ভিন্দা প্রাপ্তি	585 JSC		
			o hus 68
	3 6 11668	স্থি চ	470
পূর্মস্থিত	10/0		
·		<b>নো</b> ট	٠٠٠/٥٠ (
<b>মোট</b>	600630		

পুস্তক প্রচার—আমাদিগের প্রচারক বাবু শশিভ্বণ বহু মহাশর ক্বত আহ্মধর্ম হেতা নামক পুস্তকের ১৫০০ খণ্ড এবং সেই পুস্তকের সন্ধাধিকার ২০ টাকা মূল্যে সমাজকে বিক্রর করিয়াছেন। উত্তরবক রেলওয়ের রাণীনগর টেশনের বাবু কেদারনাথ সরকার মহাশায় তাঁহার ক্বত "আলোক" নামক পুস্তকের ৭৭৫ খণ্ড পুস্তক সাধারণ আহ্মসমাজকে দান করিয়াছেন। আমরা এই দান জন্ত দাতাকে ধ্যুবাদ দিতেছি।

সৃষ্ঠ স্ভা—এই তিন মাসে সৃষ্ঠ সভার ১৩টা অধিবেশন হইরাছিল। তাহাতে প্রথম তুইমাস ইমিটেসন অব ক্রাইট নামক পুস্তক পাঠ ও ব্যাথ্যা ও আলোচনা হর এবং ৩র মাসে ব্রাহ্ম বালক বালিকাদের শিক্ষা সৃষ্ধের নানা প্রকার আলোচনা হহয়াছিল।

দতিব্য বিভাগ—গত তিন মাস কাল দাতব্য বিভাগের কার্যা প্রায় পূর্মবিৎই চলিয়াছে। এই তিন মাস মধ্যে ১৫টী, ছাত্র, ২টী ছাত্রী ৫টী পরিবার, ১টী অন্ধ এবং একটী কুঠ রোগীকে অর্থ সাহায্য করা হইয়াছে। অর্থাভাবে করেক জনকে সাহায্য করিতে পার্য ষায় নাই।

#### আয় ব্যয়ের হিসাব।

জ্মা———		—পরচ ——	
वार्षिक होना व्यानाः	•1/C F	यानिक नान	b •    •
মাসিক	>⊄∥•	এক কাণীন	> <    % -
অনুষ্ঠান উপলক্ষে	<b>२</b> २ <i>,</i>		20%
এক কালীনদানপ্রা	থি ১১॥•	रस्ड इड	२०१५•
•বিবিধ হিঃ	> ·/e		
ora	9.11/€		90 3ho/ 0
পূর্বকার স্থিত	२७०।১৫	- মোট	9•9hd
<b>ে</b> মাট	0.0hd		***************************************

ছাত্রসমাজ—নিগত জুলাই মাসে ছাত্র সমাজের ন্তন বংসর আরম্ভ হয় এবং কর্মাচারিগণের হস্তে কাষ্যভার ন্যুত্ত হয়। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী সভাপতি, প্রীযুক্ত বাবু ক্ষাকুমার মিত্র সহকাবী সভাপতি, প্রীযুক্ত প্রীচরণ চক্রবর্ত্তী সম্পাদক ও প্রীযুক্ত জ্ঞানেজনাথ বস্থ ও স্থারচক্ত বন্দ্যোপাধ্যায় সহকারী সম্পাদক নিযুক্ত হইয়া কাষ্য চালাইতেছেন। কর্মাচারিগণ ব্যতীত অন্যান্য বংসরের ন্যায় ছাত্রসমাজ আপনাদের মধ্য হইতে ১০ জন সভ্য লইয়া একটা কার্য্যনিকাহক সভ্য নিযুক্ত করেন। বিগত তিন্মাস মধ্যে ছাত্রসমাজের সাধারণ সভার একটা ও কার্য্যনিকাহক সভার তিন্টী অধিবেশন ছইয়াছে।

বক্তা বিষয় **স্থান স্মর**বাবুমনোরপ্রন শুছ মানবাস্থারত্থিঅল উপাসনা মন্দির ১০ই জ্লাই
"কুককুমার মিত্র বিদ্যাসাগরেরসমাজসংস্কার ঐ ২২এ জ্লাই

,,কালীশকর স্কুল ধর্মেরনামে অধর্ম B **এই আ**গষ্ট শক্তিসকার ,,কুঞ্চুমার মিত্র 3 ২২এ আগষ্ট ,,কালীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায় ঈশরেরপুঞ্জা, জেনারেল এসেম্ব্রি ১৯এ আগস্ট ,. নগেব্রুনাথ চট্টোপাধ্যার ঈশবের অন্তিত্ব, উপাসনা মন্দির ১ই সেপ্টেম্বর পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী জীবনের মধ্যপথ ২৩এ সেপ্টেম্বর বিগত ১৯ শে জুলাই অপরাহ্ন ৭॥ ঘটিকার সময় একটি আলোচনা সভা হয়, তীযুক্ত নগেলুনাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশয় সভাপতির আসন গ্রহণ করেন।

বিগত ২রা সেপ্টেম্বর অপরাক্ত ৭॥ ঘটিকার সময় উপাসনা মন্দিরে ছাত্রসমাজের বিশেষ উপাসনা হয়। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় উপাসনা কবেন ও উপদেশ দেন।

নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশয় ছাত্রসমান্তের সম্পাদককে লইয়া মিরজাফরের গলিতে ১নং ছাত্রনিবাসে গ্রন করেন। তথায় উপসেনার পর কিছুকাল সংফীন্তন হয় এবং অবশেষে ধর্মবিষয়ক আলোচনা হয়।

व्यक्षां भक की युक का नी महस्र नस्र महा मध्य मण्णान करक সঙ্গে লইয়া ৭ই আগেষ্ট মিবজাফেরেব গুলির ১নং বাটী, ১৭ই আগষ্ট স্থামাচরণ দের খ্রীটেব ১০নং বাটী ২৪ শে আগষ্ট বৈঠক-থানার ১১৯ নং বাটী, ৩১ শে আগষ্ট বৈঠকখানার ১২৬ নং বাটী পরিদর্শন কবিয়াছেন এব ছাত্রদিগের জ্ঞাতব্য বিষয়ে ছাত্রদের সঙ্গে কথোপকথন করেন।

বিগত ১৬ই সেপ্টেম্বর অপবাজ ৭ ঘটকার সময় সায়ংস্মিতি হয়। প্রায় ৩০০ লোক উপস্থিত হইয়াছিলেন। He nere and need ..... ছাত্রীগণ অনেক সম্ভ্রাস্ত ভক্ত ।ক ও মহিলা উপস্থিত হইয়া-ছিলেন, তাঁহাদের মধ্যে ৪।৫ জন ইংবেজ পুক্ষ ও রমণী ছিলেন।

ছাত্রসমাজের ১টা সভ্যকে বইয়া একটা ভশ্রষা বিভাগ গঠিত হইয়াছে।

বুদ্ধাবন মল্লিকেব গ্লির ১নং বাদাস্ভাত্যমাজের জনৈক সভা ও ফাকরচাদ মিত্রেব ট্রাটের ১২নং বাদায় আরে একটা সভা পীডিভাবস্তায় সম্পাদককে গুন্রায়া কবিবার লোকের বন্দোবস্ত ক্রিবার জ্ঞা লিথিয়া পাঠান, সম্পাদক শুশ্র্ষা বিভাগের সভা-গাণের কভিপয় সভাকে প্রেবণ করিষা তাঁহাদের ভূঞাবার वानान्छ कात्रन । एकित सन्त्रीत्माहन माम এই इहे सात्रहे विना ভिक्तिए । कित्र मा कित्र गाइन ।

বত্তমান সময়ে ছাত্রসমাজের সভা সংখ্যা ২৪৩। সংখ্যা ক্রমশই বৃদ্ধিত হুইতেছে।

এই তিন মাদে নিয়ামত চাঁদা ও সায়ণস্মাতর বায় নিকা-गार्थ এककाणीन मान गहेग्रा आग्र १०५ है। का आग्र श्हेग्राह् ; বায় ও প্রায় এরূপই হট্যাছে। এই আয় হইতে পুর বংসরের কিঞিৎ ধার ও শোধ হহয়াছে '

রবি বাসরীয় নাতি বিদ্যালয়—ইণার কার্যা রীতি-মত চলিতেছে। একণে ছাত্র ও ছাত্রী সংখ্যা ১৩২। বালক ও বালিকার সংখ্যা সমান। এই তিন মাসের মধ্যে ানমাল্থিত এক কালীন দান পাওয়া গিয়াছে। শ্রীযুক্ত সতীশচক্র ঘোষ ২•্ শ্রীযুক্ত মুক্তকেশী দত্ত 📢 শ্রীযুক্ত পান্মতাচরণ দাস 🕽 কোন একটা বা তদাধক কোর্স অধ্যয়ন করিছে পারিবেন।

ে শ্রীযুক্ত পার্বতীনাথ দত্ত ে, এই সকল দানের জন্য আমরা দাতাগণকে ধন্যবাদ অর্পণ করিতেছি।

উপাসক মণ্ডলী—মান্দরে নিয়মিত রূপে প্রাতে ও সন্ধ্যার সময় উপাসন। ইরাছে। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী, গাব্ উমেশচক্র দত্ত ও কৃষ্ণকুমার মিত্র উপাসনাব কার্য্য সস্পর করিয়াছেন। শাল্তীমহাশয়মগুলীর বস্তমান অবস্থায়ন উল্লিখ্য মানসে মঞ্জীব সম্পাদককে এক পত্ত লেখন, সেই শত্ত উপাসক মণ্ডলীর এক বিশেষ আধবেশনে বিচারার্থ উপাস্তিত করাতে উপাস্ত সভা মধোদরগণ মগুলীর অবস্থা অসুসন্ধানের জন্য একটা কমিটি নিযুক্ত করিয়াছেন। সেই কমিটি কিলে উপাদক মণ্ডলীর উন্নতি সংসাধিত হয় তাহাৰ আলোচনা করিতেছেন। মঞ্জার আয়ে ব্যয়েব হিসাব নিমে প্রদত্ত হইল।

উপাসকমগুলীর আয় বায়ের চিদাব।

ভাষে		,वोध	-
দান প্রাপ্তি .	٤\	বেভন হিঃ থবচ	≥eh•
<b>ठें। मा कामा</b> श्र	soondse	कूछ राष्ट्र	) that
গ্যাস ৹িঃ ছাত্রসমাজ		গ্যাদেব আলো তিঃ	२७७
<b>১</b> হতে প্রাপ্ত	<b>a</b> \	মন্দিণ মেরামত কিঃ	39/50
		চাওলাত শোধ	99
	2094423C		
পুৰ্ব হত	०५% २२॥	´	2,480/2¢
مو د الد		– <i>≅र</i> ऋकिङ	810/5
। ्रा	११७५५६	-	
			5450/911

119666

ব্রহ্মবিদ্যালয়—নিগত জুলাই মালে এই বিদ্যালয়েব বাষিক প্রীক্ষা হট্যা গিয়াছে ও তংপর নববর্ষ (মাদশ বর্ষ) व्याद्रश्च बहेब्राइक । विश्व वर्गद विमानियात कार्या मस्त्रासकत-कार्य हरल नाहे। ह्याउँही स्थापित मध्या हेराया क मिनियात छ বাঙ্গালা জ্বানয়ার, কেবল এই ছটা শ্রেণার কার্যা নিয়মি এরূপে নিয়ামতকপে কাথা করিতে পাবেন এরূপ **ह**ियाहिन। শিক্ষকের অভাবেই এই বিশুঘালার কারণ। পরীক্ষাকাণে কেবল তিন জন ছাত্র সমগ্র সিনিয়ার কোসের এবং একজন हाज (कवन 'निউটেটেয়েনেটের' পরীক্ষা দিয়াছেন, এভদ্বাভী গ মফস্বলের একটা ছাত্র বাঙ্গালা জুনিয়ার কোর্সের পরীকা দিয়াছেন। পূর্বাবভী কোন বংসার পরীক্ষার্থীর সংখ্যা এত अहा हत्र नाहे। शृष्ठ नरमत्र कार्म नित्मस कठिन इहेग्राहिन, বোধ হয় ইহাই একপ অল্লার প্রধান কারণ। প্রসন্ধ্রমার রায় ধর্মবিজ্ঞান, পশ্চিত শিবনাথ শাস্ত্রী 'ভগবদগীভ' वाव केरममहत्त्र पढ 'निकेटिएहेरमफे' व नाव अविनामहत्त्र वस्मान পাধ্যায় বাঙ্গালা জুনিয়ার কোপের পরীক্ষা গ্রহণ করিয়াছেন। नवर्यंत (कार्म विश्व मध्क क्या ब्हेग्राइ) बेरदाकि स्था-বিজ্ঞান, বাঙ্গালা ধন্ম'বজ্ঞান, হিন্দুশাস্ত্রের 'ভগ্রদূরীতা' ও খ্রীষ্টান শাস্ত্রের 'নিউটেটেইনেটি' এই চারি বিষয়ে চারিটা অত্তর কোর্স গঠিত হইণাছে। শিক্ষাথিগণ এই চারি কোর্মের মধ্যে বাব্সীতানাথ দত্ত ইংরেজ ধর্মবিজ্ঞান ও 'ভগবদগীতা' এবং বাবু অবিনাশচক্র বন্দ্যোপাধ্যার বাদ্যালা ধর্মবিজ্ঞান অধ্যাপনার ভার লইয়াছেন। এই তিনটা শ্রেণীর কার্য্য নিয়মিতক্রণে চলিতেতে। নিয়মিত শিক্ষকের অভাবে 'নিউটেটেমেণ্টেব' শ্রেণী এখনও খোলা হয় নাই।

ব্রাক্ষ ছাত্রীনিবাদ ও ব্রাক্ষ বালিকা শিক্ষালয়— গত জুলাই মাধে আক্ষান্ত্ৰীনিবাস ও শিক্ষালয় কাৰ্য্য-নির্বাচক সভাব নিদ্ধারণ অনুসারে একাত্রত করিয়া এক সব কমিটির কর্ত্তরাধীনে আনা ১ইয়াছে। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী উক্তে কমিটিব সম্পাদক নিযুক্ত হটয়াছেন। জুলাই মাস হইতে একজন শিক্ষক ও একজন শিক্ষয়িত্রী নৃত্ন নিযুক্ত হইয়াছেন। মূলেব বর্ত্তমান ছাত্র ও ছাত্রীসংখ্যা ৮৩। তন্মধ্যে ১৮টী ছাত্র অবশিষ্ট ছাত্রী। বোর্ডিংএব ছাত্রীসংখ্যা বর্ত্তমানে ২৭: তন্মধ্যে ২:টা শিক্ষালয়ে পাঠ কবে আর ৪টা বেথুন বিদ্যালয়ে পাঠ करत। (वार्ष्टिः वानरम् भत्र चामारतत्र चित्रिकः इत्र ना। শিক্ষালযের খণচ নিয়মিত বেতন ও টাদাবাবদে যত আদায় হয় ভাচা অংগেফা বেশী চইডেছে। ত্রাহ্ম সাধারণের আর্থিক সহায়ভুতি বাহীত একপ শিকালর চালান কঠিন। বিশেষ ছু:পেৰ বিষয় এই ব্যাসমন্ত বিষয় এই শিকালয়ে বালিকা-দিশকে শিক্ষা দেওয়াৰ ইচ্ছা আছে, অৰ্থাভাৱে ভাচা দিছে পাৰা বাইতেছে না। তালিকে সহাদয় ব্রাক্ষমহোদয়ণবের দৃষ্টি আক্রষ্ট হর্মানি শস্ত প্রয়েজন।

গত তিন মাদের আয়ে বাদ্যেব হিসাব।

আশ		বায়	
বেভন আ	माय ३८०:॥४३६	থোৱাক জলথা	বার
বোডি ফি	र २८६५,'२६	ও কোলো	orshde
<b>ফুল</b> মি	88. nd	কৰ্মচাৰী ও চাৰ	<b>ফ</b> রের
টাদা ও এ দান ক <b>ক্</b> জনমা	১৭০৫॥১১৫ এককাগান ৪৫৫॥১	বেজন শিক্ষক ৪ শিক্ষ ৪৭৭ চ{কর ৭৫৸	1  •
পূৰ্বছিত	44 500000000000000000000000000000000000	ত্তে ধোপা গাড়ী হিদাবে থা বাড়ীভাড়। গাড়ী থবিদ ও গা ভাড়া বাবদে কর্জ শোধ	8¢1>¢ व्रक्त २७२५/¢ २१४८
		বি।এই এইচ	bonde
		<b>হ</b> ন্তেতিক	225970
সমষ্টি	३ २ २ म∥ २ <b>६</b>	স্মষ্টি	२ऽऽ∀्।ऽ⊄
50		'v == ==	2¢ f

ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জার ও তত্ত্ব-কোমুদী—ইছিয়ান মেসেঞ্জার সম্পাদন সাভাষ্যের জন্ত একটা সব কমিটি গঠিত হইয়াছে। কমিটির সভাগণ সম্পাদক মহাশয়কে বিশেষভাবে সাভাষ্য করিতেছেন। সম্প্রতি মেসেঞ্জারের ১০ম বাধিক জন্মোৎসব হইয়া গিয়াছে। উপাদনা পূর্বক কার্যায়ম্ভ হয় তৎপর ইহার উন্নতিকল্পে নানা প্রকার আলোচনা হইরাছিল। দিন দিন মেসেঞ্জারের আর্থিক অবস্থার উন্নতি হইতেছে। তত্তকৌমুদী সম্বন্ধে বিশেষ কোন পরিবর্ত্তন হর নাই। উভর প্রকাই নিয়মিভরূপে প্রকাশিত হইতেছে।

ব্রাক্ষা মিশন প্রেস—সমাজ কার্য্যালয় হইতে পূর্ব্বে ব্রাক্ষা
মিশন প্রেসের জন্য যে টাকা ঝণ দেওয়া হয়, তদ্বাতীত এই
তিন মাসে ২৫০০ টাকা প্রেসকে ঝণ দেওয়া হয়য়াছে। এই
টাকা দ্বারা অন্যান্যের নিকট প্রেসের যে ঝণ ছিল ভাহা
পরিশোধ করা হয়য়াছে। বর্ত্তমান সময়ে প্রেসের দেনা, (বাজার
দেনা হাওলাত ও কর্জ্জ দক্রন) প্রায় ৫৮০০ টাকা। পাওয়ানা
৬১৩৭৮/৭॥ আছে। প্রেসের তিন মাসের আয় ব্যরের হিসাব
নিমে দেওয়া গেলঃ—

निस्म (पश्या (श्रा	÷		
আয়	<b>-</b> -	। ] त्र	
  ছাপাই হি: (যত দীৰ	ক (র	মুদ্রাকন, কাগজ	প্রভতি
কাজ হইয়াছে)	<b>३२७४%</b>	বাবতে ধার দেও	म्रा इंडे-
আদায় (মুদ্রাক্ষন		য়াছে	\$884/9H
কাগজ প্রভাত		বেতন হিঃ	382m/20
বাবতে বাকী		<b>সৰ</b> জামি	P5/29#
আদায়)	>e>>/e	বিবেধ	≈# <b>₹</b> #
প্রেসপ্রস্তুত হিঃ	<b>&gt;8</b> 21%>•	ডাক্ম <b>ভিল</b>	:4.
কাগজ বিক্ৰয় হি:	৩৮২।•	কাগজ খরিদ	osensa
গৃহপ্রসূত হিঃ	٥٠,	প্রেদ প্রস্তুত	>88h
প্যাকিং হি:	211/50	<b>স্থ</b> দ	160
কৰ্জ্জ জমা	2000	বাটা ভাজা	,oc/
হাওৰাত জমা	5008/0	ভয়াবাণ্টিয়ার	<b>२२७</b> ८
		ছাড	>10
	<b>⊅</b>   ∘ 5 6 &	কর্জ শোধ	२६•०√
গত ত্রৈমাসিকের	श्रिक 81ल्२॥	হাওলাত শোধ	2401145C
			#25°5299
		<b>শ্বিত</b>	>8h/>•
মোট	७३२८५०/१॥	মোট	& 25 8 M & 4 11
অায়	ব্যয়ের সং	ক্ষিপ্ত বিবরণ I	••
	ইভিয়ান যে	মদেজার।	
mtz			****

•	13,111	Cac. (a) (a)	
व्याव		ব্যর-———	
मृना आखि	80./.	কৰ্মচাবীৰ বেভন	2001
বিজ্ঞাপন	89	মৃঞাকন	201
নগদ বিক্রয়	11000	কাগ <b>জ</b>	pp0/: *
ডাক্মান্তল ফেবৎ জ্বা	910	ক্মিশন	٥١٠
বিবিধ হি:	2110/0	ডাক্যাভাল	224.
-		বিবিধ	₹3'€
গভ তৈমাণিকেব কিড ও	)boh•	হাওলাত ও সংপ্ৰসস্	82547°
•		হিত	9824)¢
	bil/>・	মোট	h shirt / Sa

**শোট** 

'eccentre calb

	3	ণাধারণ ত্র	किन्याक।	
119			-ব্যন্ন	
ভ্য ও সহ	যাগিগণের	•	প্রচার	@   <del> </del>
है। ज्यानात्र		۰۰۹٫۶۰	কর্মচারীর বেতন	>2.
	שנ שמיה	•	ক মিশন	٩٠٠
	33% <sub>(</sub> 3€		ডাক্মান্তল	¢1>•
		<b></b>	প্রচার গৃহ	en/>•
	۰ د ۲۰ و ه		विविध विविध	٠٠٤/٠
	-	ماء د د مدور	্উৎসৰ কাৰ্য্যালয়ে	
		~~#IN =	চিৰাগোতে তা	
•	90110			-
াসিক	2451		वार्थिक कार्याविवर	। न व्यक्षिक त्व
ককালীন	220H2	•	ব্যস্থ )	
		-	<b>ञ</b> ्	>0/
	90214·	ا بالمحيد	পাথেয়	54
চারক গৃহ		36/IIP66	টুটেডীড মুদ্রাছন	
क्ष्में स्टब्स् खा	92110		সিটি কলেজ বৃত্তি সৌদামিনী বৃত্তি	
চ্ছের পৃহ টি	१३ (४१ <i>५</i> ७) ३८∖३८		লোগামনা থাও স্থলাতা বৃত্তি	>•\ 88\
			হুৰ্জাতা হাও ছুৰ্ভিক	>•e11/•
	>>911/5¢	:	খাসিয়া মিশন	٠٤٠)٠
म	· ·		বাগঝাঁচড়া মিশন	e14.
म (त्रस्कट्ठेरि	<b>য</b> ফি	h•	কলিকাতা উপাসব	
থেয়		•	মণ্ডগী	284.
বিধ		•	ত্রাশ্বনিশন প্রেস	₹€••\
টিকলেজ ব		•168		७४२२५५ •
হ্মসমা <b>জ ল</b>		•16 •11	হাওৰাত ও সস্পে	
সিয়া মিশন শিম্মী ফণ্ড		>•/	10-110-0-116	
ামিয়া কন্ত কাতা বৃত্তি		88		<b>८०</b> २२॥ ५ ८
माणा प्राच भीषक कति		\	<b>হণ্ডো</b> হত	8 <b>৬</b> ગ/•
	_		সমাজ কণ্ড ১৫৬।	•
পাসক মণ্ড		4.6	মেদেশ্রার ১২৬,	
ওলাত আ জন্ম	न । त्र	987	<b>७च-८कोमूमी</b> ১৮०।	nd C
ন্ডিং ফণ্ড পাদকের			-	
गागर्पत्र किंद्र इहेर्ड	ফেরত	291920	840	/•
थी व्यक्त		•1165		
च-(को मूनी		sponde		
বিয়ান মে	সেঞ্জার :	ऽ <b>२७</b> ৵ऽ¢		
	 >b	عدك:٥٠		
া ভগাত ও				
,,				
গেড তৈমা	_	عدراادهم		
५१७ ८वन। इंड	1 1 T T T	>६१२।•		
মাজ ফণ্ড	92610			
মসেঞ্র				
<b>इय-</b> ८को भूमो				
্ত্তক	১৬৩১১•	,		
-	<b>८</b> १२।•			¢.
	•			

1		<b>₽4-</b> C	को भूमी ।	
আয়	-		ব্যৰ	•
<b>মূল্যপ্রাহি</b>	t	२४१॥८३०	কর্মচারীর বেতন	>24/
নগদ বিক্র	द	2∥•	<b>मृ</b> जाकन	<b>€</b> 8√
ভাকমা <b>ভ</b>	7	J•	কাগল	٥٠٠١١/٥٠
l			ক মিশন	PH/>•
			ডাক্মা <b>ওল</b>	9911/0
গভটেত্ৰমাৰি	সকের স্থিত	ऽ २७७ <b>८</b> ३०	বিবিধ	>.#>€
			হিত	20.04e
<b>যো</b> ট	•	ور • ما •	্ মোট	e2.10.
		পুস্তবে	র কপু:	
আর			ব্যস্থ—————	
নগদ বিক্র	য়	२०४।७०	অপরের পুস্তক বিক্র	য়ের
ঐ অপরে	র	৩৬৯/১০	মুলা শোধ	20119 -
বাকী মূল্য	আদার	4210/50	-	<b>₩8€</b> ′
ডাক্মান্ত্ৰ		<b>6</b> 45•	ক্ষ্মচারীর বেতন	<b>62</b> \
ক মিশন		રાઇ•	<b>भूजाकन</b>	€811+
বিৰিধ		レン・	ডাক্মাণ্ডল	9110
		-	পুস্তক বাঁধাই	4.
		ochel.	ক মিশন	26.26
হাওলাভ 🔻	৪ সসপেন্স	८०४/६	কাগজ	4011/30
সমাজ হি:	हरेए हा	<b>g</b> -	বিবিধ	sile
লাতের অ	ংশ ফেরত		হাওলাত ও সস্পেন্স	8
	ऽ <b>७</b> ८/८			
1	हिः हरेएड			
ঐ	ক ক			
	٧٠٠٠			
_	808/€	r		
গচ্ছিত	8			
-	807/e			
	_	988 (2		
গভ তৈমা	जिल्हा	100 (4		
গত জোন। হিত	1-16 T N	>500/>•		
মোট	-	309d)e	মোট	209676

#### ব্ৰাক্ষদমাজ।

#### রাজা রামমোহন রায়ের স্মরণার্থ সভা।

পত ২৭শে সেপ্টেম্বর অপরাক্ত ৬॥ টার সমর নিল্ফামারিম্ব ব্যক্ষিসমাজ গৃছে রাজা রামমোহন রায়ের মৃত্যুদিন উপলক্ষে একটা সভা হর। সভার ছানীর প্রথম মৃনসেক মাননীর প্রীযুক্ত বাবু উমানাথ ঘোষাল মহাশর সভাপতির আসন প্রহণ করেন। বাবু রজনীকান্ত সরকার বি, এল ও বাবু বিশ্বেমর ওপ্ত রাজার সংগুণাবলী আলোচনা করিরা ছইটা মুদীর্থ প্রবন্ধ পাঠ করেন। তৎপর অভাভ ছই একজনেও রাজার মহজের বিষয় কিছু কিছু বলেন। সর্কাশেষে সভাপতি মহাশর রাজার জীবনের অধ্যারিকা অবলম্বন করিরা একটা বক্তৃতা করার পর

বিগত ২৭শে সেপ্টেম্বর অপরাক্ত ৫ ম্বটিকার সমরে কাকিনীরা ছাত্রসমান্দ গৃলে একটা সভা হর ; অনেক ভদ্রলোক এবং ছাত্র উপস্থিত ছিলেন। অত্যন্ত ইংরেজী স্থুলের হেড মাটার উক্ত-মহাত্মার জীবনী সম্বন্ধে একটা বক্তৃত। করেন।

বিগত ২৬শে সেপ্টেম্বর বুধবার অপরাক্ত ৬॥ ঘটকার সময়ে বিদ্যাল ব্রজমোহন কলেজ গৃতে মহাম্মা রাজা রামমোহন রায়ের স্মরণার্থ এক সভার অধিবেশ চইরাছিল। স্থানীর মুক্ষেক বাব্ সীতিকঠ মলিক মহাশর সভাপতির আসন গ্রহণ করিয়াছিলেন। বাব্ অধিনীকুমার দত্ত এম্ এ, বি এল, বাব্ সভ্যানম্পদাস বি, এ, ও মাব্ মনোমোহন চক্রবর্তী রাজার জীবন ও কার্যা সম্বন্ধে বক্তৃতা করিয়াছিলেন।

বছরমপুর কলেজে ছাত্রদের উদ্যোগে রামমোছন রারের মৃত্যু দিবস উপলক্ষে গচ বুধবারে বিরাট সভা হইরা সিরাছে। সন্ধা ৭ টার সমর এত লোক হইরাছিল বে, অনেক কটে অনেকে দাঁড়াইতে স্থান পাইয়াছিলেন। সভাপতি বাবু দীননাথ গাঙ্গুলী। বক্ষা বাবু এজেন্দ্রনাথ শীল, গৌরবল্লব সেন, মাধবচক্স তর্কসিদ্ধান্ত, নফরচক্র রার।

বিগত ২৭শে সেপ্টেম্বর বুধবার রাত্রে কাঁথি হাই সুল গৃহে ছানীয় গ্রথনিন্ট উকীল বাবু উপেক্সনারারণ মজ্মদার এম এ, বি, এল, ও মুল্মেনীর সেরেন্ডালার বাবু তারকচক্র ব্বিয়ের কর্তৃক "মহাত্মা রাজা রামমোলন রারের স্বরণার্থ সভা" আহুত হুইরাছিল। হেড মান্টার বাবু তারকগোপাল ঘোষ বি, এ, কর্তৃক "মহাত্মা রাজা রামমোলন রারের জীবনের মহত্ব" হুলরা-গ্রাহী রূপে বিরুত্ত হুইরাছিল। স্থানীর সিনিগ্রার মুল্মেফ বিরুত্ত বাবু হুরক্সফ চট্টোপাধ্যার এম্ এ, বি এল, সভাপভিষ্
স্থানন গ্রহণ করিয়া এবং ছানীর অপরাপর স্থানক ভদ্রমঞ্জনী সভার যোগ দান করিয়া রাজার মহত্বের প্রতি স্থাপনাদিগের হৃদ্ধের প্রহা প্রদর্শন করিয়াছিলেন। বক্তা প্রায় ২ ঘণ্টা ব্যাপী হইয়াছিল।

বিগত ২৭শে সেপ্টেম্বর বুধবার মহেশতলা উচ্চ শ্রেণী বিদ্যালয়ের ছাত্রগণ সমবেত হইরা রাজা রামমোহন রায়ের মৃত্যুদিন উপলক্ষে এক সভা করেন। সভাস্থলে প্রধান শিক্ষক এবং ছেড পণ্ডিত মহাশর উপস্থিত ছিলেন। স্থযোগ্য শিক্ষক বাবু রাজেজ্ঞনাথ চট্টোপাধ্যার মহাশর সভাপতির আসন গ্রহণ করেন।

মহাত্মা রামনোহন রায়ের মৃত্যুদিন উপলক্ষে বিগত ২৭শে সেপ্টেম্বর বুধবার রাঁচি প্রাহ্মসমাজ ভবনে, উক্ত মহাত্মার সহত্ব অস্থ্যান ও গুণাবলী আলোচনা জন্তু, প্রান্থ ২০ জন ভদ্রলোক ও ১৬টা স্ক্লের ছাত্র সমবেত হইরাছিলেন। বাবু রাজকুমার দাস, এম, এ, গ্রথমেণ্ট স্ক্লের ২র শিক্ষক মহাশ্র রাজার গুণাবলী আলোচনা করিরাছিলেন।

গত ২৭শে সেপ্টেম্বর মরমনসিংহে প্র্যাকান্ত হলে ক্তিপর গণ্যমান্ত লোকের উদ্যোগে মহাত্মা রাজা রামমোহন রারের মরণার্থ এক সভা হইরাছিল। সভার সহয়ের সম্ভান্ত আনেক লোক উপস্থিত ছিলেন। মিউনিসিপাল চেমার্যান, উকীল বাবু ভাষাচরণ রাম্ব সভাপতির আলন প্রহণ ক্রেন। তিনি বিষয়টার গান্তীর্য্য গন্তীয় ভাবে বুঝাইর। দিলে সলীতের পর সিটিস্থলের একজন শিক্ষক কবিতা পাঠ করেন। তৎপরে বাবু অক্ষরকুমার মজুমদার এম এ, বি এল, মহাল্মার জীবন-বিষদভাষার অশৃত্যলার সহিত বিবৃত করেন। বাবু শ্রীনাথ চন্দ, বাবু অমরচন্দ্র ও পণ্ডিত উমেশচন্দ্র বিদ্যারত্ম কিছু কিছু বলিয়া ছিলেন। রাজা রামমোচন রার সহজে এখানে অরূপ সভা এই প্রথম। এ সভার বিভিন্ন শ্রেণীর লোক বোগ দেওরার আমরা সন্তই হইয়াছি।

লাহোর, বোম্বাই এবং মাজ্রাজন্থ প্রাশ্ধন রাশা মোলন রারের ষ্টিতম মৃত্যুৎসব করিরাছিলেন। ২৪ পরগণার অন্তর্গত মজিলপুর গ্রামে রাজার মৃত্যুদিনে এক সভার অধি-বেশন হইরাছিল।

मधीवनी।

বিগত ২৭ সেপ্টেম্বর সন্ধ্যা ৭॥ ঘটকার সমরে মেদিনীপুর পাবলিক লাইত্রেরিক বেলীহল গৃহে মহাত্মা রাজা রামমোচন রাবের অরণার্থ একটা সভা আছত হইরাছিল। স্থানীর কলেজের শিক্ষক বাবু অভয়চয়ণ বস্থ সভাপতিয় আসন গ্রহণ করেন। সর্ব প্রথমে "কোণা আছ, দেখ এদে মহামতি রাম-মোহন। তোমার জন্মভূমি ভারতভূমি হয়েছে कি মুখোভন" এই হৃষ্য সন্ধীত গীত হইবার পরে, সভাপতি মহাশয় রাজার জীবনী সহকে একটা মন্তব্য প্রকাশ করেন। রাজা রামমোহন রার যে কেবল আক্ষদিগেরই মারণীর তাহা নচে, কিন্তু সমুদর বাঙ্গালি জাতি তাঁহার নিকট ক্লুভজ্ঞতা পালে আবন্ধ, ইহা সভা-পতি মলাশর স্থানররূপে বিবৃত করেন। তৎপরে বক্তা বাবু হীরালাল বন্দ্যোপাধ্যার রাজার জীবনী অতি স্থন্দররূপে ৰণনা করেন। বক্তা, রাজার অসাধারণ অধ্যবসায় ও পরিশ্রমণীলভ', ভাহার প্রবল জ্ঞানভৃষ্ণা এবং বিশ্বজনীন প্রেম ও উদারতা, প্রভৃতি মহৎ গুণাবণি, সভাস্থ, সমুদর ভদ্র মহোদরদিগকে অভি क्रमातकार कारतम कत्राहेबा तन। वक्कृता मभाश्च इहेला, সভাস্ব ভদ্রমহোদয়গণের মধ্য হইতে কেহ কেছ কিছু বলেন। পরিশেষে রাজার স্বরচিত একটা সঙ্গীত গীত হইবার পর সভা ভক হর। সভাত্তল, কভিপন্ন গণ্য মাক্ত ভদ্র মহোদরের সমাবেশ হইয়াছিল এবং সভাভ সকলেই ইহাতে সহাস্তৃতি প্রকাশ করিয়াছিলেন।

বর্জমান মিউনিসিপালিটির টাউন হলে এক সভা আহুত হর। স্থানীর আত্মগণের আহ্বানে অন্ত্যারে কলিকাতা হইতে বাবু বিপিনচক্র পাল তথার গমন করিরা বক্তৃতা অবদান করেন।

কান্দী প্রার্থনা সমাজে এক সভা হর, সমাজের সম্পাদক মহাত্মা রাজা রামমোহন রার সহত্তে প্রার্থ করেন।

थानिन। नाहार्ष्ण धक नडा इन, नातू मोनमनि हळावर्डी वक्ष्मान करनन।

শ্রে—জলপাইগুড়ির ষ্টেশন মাষ্টার আমাদের বন্ধু বাব্ निग्रहाम (प श्रवलां क श्रम किर्याहिन। यपि १ हिन्तू स्थादिक চিলেন; কিন্তু নিষ্টাদ বাবু ব্রাহ্মধর্ম এবং ব্রাহ্মসমাজের সংক ইহার প্রাণের ঐকান্ধিক যোগ ছিল। স্থানীয় ব্রাহ্মসমাজের জিনি সম্পাদক ছিলেন। ব্ৰাক্ষঅতিপিদিগকে তিনি সমাদবেব স্তিত আপন গতে স্থান প্রদান করিয়া আপ্যায়িত কবিতেন। স্বীয় কার্যা দক্ষণা সচ্চবিত্রতা, এবং ক্লায় প্রায়ণভার জ্ঞানে রেল পায় কাঠ্পকীয়দিশের নিকট বিশেষ পোশংসা এবং সন্মান লাভ কবিয়াছিলেন। ইহার সহদয় বা. এব° দরাকীলভা আমন-কেনট অনুক্রণের সোগা। কয়েকটি দ্বিদ্ বালকের এব° টচাঁব একটি দূর সম্পর্কীয় আত্মীয় পৰিবারের ভরণপোষ্ণের সম্পূর্ণভাব ইনি কয়ং গ্রহণ কবিষাভিবেন। কেছিল ৩।৪ জন জাফিসের অন্ন বেকনের কেবাণী ইহাঁর বাসায় প্রভাহ আহ'-বাদি কবিভেন। সৱলভা, চবিত্তেব পৰিত্ৰেভা, এবং দয়া ও কায় প্ৰায়ণ্ডাৰ প্ৰণ জ্বপাইপ্ৰডির ভোট বড় স্কল প্ৰকার (लात्कन म्ह्यूडे टेडाँन (फोटार्मा हिल। स्टाबन साम्बन ৰাজালী সকলেই ইহাঁকে ভাল বাসিছেন—শ্ৰদ্ধ কবিছেন। ইঠাৰ আঝার কল্যাণাগ জলপাইণ্ডিৰ ব্ৰাহ্মৰক্ৰণ সমৰ্বত হট্যা একদিন উপাসনাদি কবিয়াছিলন। প্ৰমেশ্ব ইহার শোক সস্থপ পবিবাবে শান্ধি দান করুন।

কুতজ্ঞতার সভিত স্থীকার কবা ঘাইকেছে বিক্রমপুৰের ছর্ভিক নিবারণার্থে নিম্নলিখিত কপুদান প্রাপ্ত হইয়াছি ।

17.2 (1.0)	
দাসাশ্রমের ছারা আদায়	261
শ্ৰীমতী ক'কুণা মহলানবিশ, কলিকাতা	b \
বাৰু হণচক্ৰ চৌধুৰী, শেৰপুৰ	301
ু রোহিনীকুমার দসে, বগুড়া হইতে	<b>:</b> 5 ,
,, উমেশচসূদেও, কেলকোভা	>/
একটা ভদুমহিলা	a,
	-

वृक्तिक-निवातरगत क्या माश्या धार्थना।

পূর্ববাঙ্গালাব ভিন্ন ভিন্ন স্থানে বিশেষতঃ ঢাকা জিলাব আছঃপাতী বিক্রমপুবে ভ্যানক অন্নক উপস্থিত হইয়াছে। ইতিপূর্বে প্রাবল বস্থায় গবিব লোকদিগের এবং গোবংসাদির যে ভ্যানক করু উপস্থিত হইয়াছিল তাহা শ্লবণ হইবেও গদ্য বিদীর্গ হয়। মাঞাদের ঘরে ধান ভিল তাহাপাও জলেব জন্ম ধান ভানিতে অক্ষম হইনা অনাহাবে দিন কাটাহয়াছে। যাহাদের কিছু ছিল না ভাহাদের বস্তু সহজেই বৃক্তিতে পারা যায়। সম্প্রতি প্রায় ২৯৮৭ শত লোক দিনাস্থে এক বেলাও আহার পান্ন না। বিক্রমপুরের ক্রেক্জন ধনী আপ্রনাপন প্রামের লোকদিগের সাহায্য ক্রিতে প্রেরুও হইয়াছেন এবং গ্রণ্মেন্টের পক্ষ হইতে আনেক পরিমাণে সাহান্য ক্রিভেছেন, কিন্তু এ সকল সাহান্যে সমস্ত বিক্রমপুরের ছাজিক্সণীড়িত লোকের অভার যুচিতেছেনা।

পূর্ববাঙ্গালা ব্রাহ্মসমাজ ওয়ার্কিং কমিটা নামে একটি কমিটা স্থাপন করিয়া বিক্রমপুরে সাহায্য করিতে ক্রুসংকল্ল ইইয়াছেন। সাধাৰণ ত্ৰাহ্মসমাজেৰ কাৰ্য্যনিৰ্বাহক সভা এই সংবাদ পাইয়া উক্ত কমিটীৰ নিকট আপাতত: ১০০১ এক শত টাকা প্ৰেৰণ করিয়াছেন। কিন্তু শীঘ্র শীঘ্র টাকা পাঠ।ইতে না পাবিলে অনেক লোকেব মৃত্যু হওয়া অসম্ভব নঙে৷ এ স্বল স্থানে উপযুক্তৰূপে সাহায্য কবিতে হইলে বহু অংথেব প্রযোজন। এখনও কার্ত্তিক ও অগ্রহায়ণ এই ছুই মাদ কাল সাহায্য কবিতে ইইবে। কার্যানিকাহক সভা এবমাত্র জগদীশ্ববের কুপা ও সহদয় দাতাদিগেব সাহাব্যাব উপৰ নিৰ্ভৰ কৰিয়া এই ওক্তেব বাৰ্য্যে হস্তক্ষেপ কৰিয়াছেন। এইকপ জুভিক্ষেপ দাবা জগদীখবেৰ কি মঙ্গল অভিপ্ৰায় স্কুসম্পন্ন হযু, ভাহা আম্বা স্পষ্টৰূপে বুঝিতে পাৰি না। কিন্তু একটি কথা বুঝিতে পাৰা যায় যে অনাহাণে ক্লিষ্ট ভ্রাতা ভণিনীদিণের আর্ত্তনাদে আমাদেব হৃদয় বিগণিত হ্য কি না এবং আমাদেব অল ১ইতে একমুটি অর দিশা ফুবাত ভাতা ভগিনীদিগেব ফুধা নিবৃত্তি করিতে চেষ্টা ববি কিনা, তাহা তিনি এই সকল ঘটনা দ্বাবা আমাদিগকে দেনাইয়া দেন যাগ্রা সুথ স্ফুল্টোদন যাপন ক্রিতেছেন তাঁহারা দকলে বদি এবিষয়ে মনোযোগে হন তাহা হইণে অনামা স অনেক ছঃখাব ছঃব ১৮৮ন ২ছতে পাবে। পুৰু পুৰু ছুভিঞ্চ উপলক্ষে দেশাহতৈশা দালাগণ সাধাৰণ জাক্ষা সমাজেব ছর্ভিক কণ্ডে অধাদি দান কবিলা শেমন অনেক বিপল্লেব বিপদ-উদ্ধাৰ ও মুম্যুৱি প্ৰাণ ৰক্ষাৰ সহায়তা কৰিয়াছেন আশা কবি এবাবেও সেইরূপ কবিবেন।

যিনি যাহা নিতে হক্তা কবেন মন্থত প্রক সহব নিম্ন সাক্ষরকারীর ঠিকানায় গাঠাইলে অভিবিক র হক্ত নব সহিত গুডাত হইবে। আমাদের নিকট টাবা আসিলে আমার) ছভিক্ষরণীডিত হানে তাহাপাঠ্ইষা দিব। পূর্দ্ধ বঙ্গের অহান্ত হানেও ছঙিক্ষ হইয়াছে। কিন্তু বিক্রমপুরের লোকের কন্ত বেশী পরিমাণে ইইয়াছে বিলয়া আমারা সেহানেই এখন স্থায়াক কিতে সংকল কবিয়াছি। টাকা অধিক আসিলে আমারা অভ্যান্ত ছাকা পাঠাইতে চেটা কাবব। যাহাতে ছঙিক্ষতণ্ডব টাবা কেনেও ক্লে অ্যথা ব্যাবা অপবাধ না হয় সে বিষয়ে আমারা বিশেষ দৃষ্টি বাধিব। নিবেদন ইতি

সাধাৰণ বাজনমাজ কাৰ্য্যালয়
-১১ ন কণ্ডমালিস খ্ৰীউ
কলিকাতা।
-১৪এ আধিন ১০০০

নিবেদক শ্রী গুক্তবণ মহাধানবিশ সম্পাদক, সাধারণ রাক্ষ**সমাজ** 

## বিজ্ঞাপন।

সাধ্যের আক্ষমাজের অধ্যক্ষ সভাব সভা নিকাচন স্বস্থানীৰ অবাস্থ্য নির্মেশ শ্বভাষ নির্মাল্ল স্বাধারণ আক্ষমাজের সভাদিগকে জানান যাহতেতি বে, বাহারং আগানী বংসরের (১৮৯৪ সলেব) জন্য অধাক সভার সভা নবোনাক হহতে ইচ্ছা করেন, ভাষারা আগানী ২০০ নবেগর লাহিস্থেব নধ্য সাধারণ আক্ষমাজের কার্যাগ্রহ আপ্লাদের নাম ধানাদি প্রেরণ ক্রিবেন। এই ভারিখেব প্রে আব কাহার নাম গৃহীত হইবেনা প্রেটিগণের অন্তিটানক একে হওয়া আবভাক।

২১১নং কণ্ডয়ালেস্ ট্রাট, ২৯এ সেপ্টেম্বর ১৮৯০ সাঃবাঃ সুমাজ কার্য্যালয়। প্রী গুরুত্বণ মহুগানবিশ সম্পাদক সাঃ তাঃ সমাজ।

40



# ধর্ম 👁 সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১৩**শ সংখ্যা।** ১**৬শ ভাগ**।

১৬ই কার্ত্তিক, মঙ্গলবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২৮০ মকস্বলে ়ৈ ৩ প্রতি **বণ্ডের** মূল্য 🗸

্কাছে থাক।

কোন পথে বাই ভগবান ?
গভীর আঁধার ঠোল, ইচ্ছা তব পথে চলি,
শত বাধা বিদ্ন আসি দাডার সমুথে,
ভীষণ পাষাণ দের চাপাইরা বুকে।
বসে পডি, হয়ে মিয়মান,
কোন পথে বাই ভগবান ?

চারিদিক্ গভীর আঁধার ,—
বিপর দেখিয়া মোবে, শত মারা-মৃত্তি ধরে,
শত প্রশোজন লরে, অরাজি নিচয়,
হন্ধারি গ্রাসিছে মোর সমগ্র হৃদয়।
গতি, পিতা কি হবে আমার ?
চারিদিক্ গভীর আঁধার।

এদ পিতা, তুমি এদ কাছে ;—
এ আঁধার দ্র করি, কুদ্র ছই বাছ ধরি,
লয়ে যাও তবালোকে তোমারি স্থপথে!
ছুটে যাই মহোলাদে পূণ মনরথে,
তুমি বিনা আর কেবা আছে!
এদ পিতা, তুমি এদ কাছে।

ছও মম জীবন-সম্বল;
তব শক্তি-স্পাৰ্শ লাগি, উৎসাহে উঠুক জাগি,
অবসন্ত্ৰ দীন হীন কুদ্ৰ মোর প্রাণ;
কুদ্র ভূণ হয়ে যাক্ ভূজন্তর পাষাণ
দূরে যাক্ পাপ কোলাছল।

হও মম জীবন-সম্বল।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

আত্ম-মন্দির— বিখানী মুসলমানগণ মক্কা নগরস্থ কাবা মন্দিরকে অতিশর ভক্তির চক্ষে দেখিয়া থাকেন। ভাঁছারা মনে করেন যে অর্গে ঐ আকারের ক্ষবি প্রস্তের নির্দ্ধিত একটী মন্দির

আছে, তাহারই অফুসারে কাব। মন্দির বিনিশ্বিত হট্যাছে। वर्ष वर्ष वहनःश्वक याजी मकान्र कावामनिरद्ध नेपद-नर्णन-লালসাতে সমাগভ হইয়া থাকে। একবার একজন ইত্রী, অপরাপর যাত্রী সম্ভিব্যাহারে মকা নগরে উপস্থিত হইল। সে আশা করিল যে কাবামন্দিরে তাহার ঈশ্বর-দর্শন হইবে। কিন্তু দেই জনকোলাহল, ও বিষয় বাণিজ্যের আড়েশ্বের মধ্যে সে কাবামনিদরে বিশেষভাবে ঈশ্বরকে দেখিতে পাইল না। যথন সে হঃখিত অন্তরে মন্দির প্রদাক্ষণ করিতেছে, তথন যেন ভিতর চইতে দৈববাণী চহল, তুমি নিজ গৃহে প্রতিনিবৃত্ত চও, সেখানে তোমার দেবমন্দির দোখতে পাইবে। সে ব্যক্তি স্বীয় ভবনে প্রতিনিবৃত্ত হইরা দেখিল যে ঈশ্বর সেখানে বিদ্যানিত রহিয়াছেন। পারস্ত ভাষাতে লিখিত একথানি গ্রন্থে এই উপদেশটা প্রাপ্ত হওয়া যায়। এই উপদেশেব মধ্যে গভীর তাৎপৰ্য্য নিষ্টিত আছে। উপদেশটী এই :—যে ব্যক্তি নিজ ভবনে क्षेत्रद्राक (प्रथिष्ठ न। পारेया पृत्रामां काराक (पांचरक जिल्लाह, ভাচার জগু ঈশ্বর কোনও স্থানেই নাই। আবর যে অগ্রে তাঁহাকে গৃহে দেখিতে পায় সে তাঁহাকে দুরেও দেখিতে পায়। আত্ম-মন্দিবে, প্রকৃতি-রাজ্যে ও মানব-ইাতরুত্তে এই তিবিধ স্থানে আমব। সচরাচর ঈশরতে দর্শন করিয়া থাকি। [কয় অগ্রে তাঁহাকে আয়ু-মন্দিরে দেখিলেই তাঁহাকে প্রক্রাতরাজ্যে ও মানব-ইতিবৃত্তে দেখিতে পাওয়া যায়। যে ব্যাক্ত আজু-মন্দিরে তাঁহাকে দেখে না, সে তাঁহাকে কোথাও দেখিতে পায় ना। प्यामता (र कड़ताका अमानव-हे जित्र ख डाँ जाता मनेन করিব তৎপূর্বেত উঁহোর সহিত পরিচয় চাই, বিনা পরিচয়ে कारात लीला (परिषर ? आश्वामान्तरत हे त्म हे भति हव आश्वाहत । গোমেষ ত প্রকৃতির শোভা দেখিয়া থাকে, তাহারা তন্মধ্যে चनरत्रत चार्छाम (मध्य ना (कन? कांत्रन এहे, जाहास्मत অন্তরে অনস্তের পরিচয় নাই। এই কারণেই ঋষিগণ তাঁছাকে व्यायमम्बद्ध रम्थिवात बना वात वात छे शतम निवादह्न।

কৃচ্ছু-সাধন—জীমরের প্রসন্নতা লাভ করিবার উদ্দেশে কচ্ছু সাধনের রীভি আনেক ধর্মেই নেখিতে পাওয়া যায়। শরীর ও মনকে নিমারণ নিগ্রহ করিলে তবে দেবতা প্রসন্ন হইয়া থাকেন। এই সংখারের বশবর্তী হইরা এদেশে ও

অপরাপর দেশে তপস্থিগণ অতি কঠোর সাধনা করিয়াছেন। आभारनत रमर्ग श्रुवारन ७ लोकिक श्रुवारन कछ कर्छात তপস্থার বিবরণ ভূনিতে পাওয়া যায়। যাহা ভূনিলে ভান্তত চইয়। থাকিতে হয় যে মানব কি প্রকারে নিজ শরীর মনকে এতদূব নিগ্রাহ করিতে পারে। অদ্যাপি এই ধর্মপ্রবণ দেশে কত ক্লছে-সাধন দেখা যাইতেছে। কত লোক উৰ্দ্ধবাছ হইয়া রচিয়াছেন, কত লোক পঞ্চপা হইতেছেন, কত লোক গজাল নির্মিত শ্বাতে শ্বন কবিরা রহিয়াছেন। কেবল যে এ দেশেই এ প্রকার তপস্থার প্রাচুর্য্য দৃষ্ট হইরাছে তাহা নতে. যে ইউবোপ খণ্ড আজ হুণ সমৃদ্ধি, ও বিষয় বাণিজ্যের বিস্তাবেৰ জন্য প্রাসিদ্ধ, যেখানে বিষয় সুথ পরাকাষ্ঠ। প্রাপ্ত হই-য়াছে বলিয়া মনে কবা যাইতে পারে, সেই ইউবোপ খণ্ডেও এক সমরে তপস্থিগণ কঠোব তপস্থা করিয়াছেন। খ্রীষ্ঠীয় সন্ন্যাসিগণ বৌদ্ধ যতিদিগের ভায়ে মরুপ্রান্তে ও গিরিগছবরে বাদ করিয়া তুবস্ত তপস্তা কবিয়াছেন, যাখা প্রবণ করিলে চিত্র চম্কিত হয়। বর্তমান সমরে লোকে কচ্চ সাধনের প্রয়োজনীয়তা তত অফুভব করেন না। দেহকে বা হাদয়কে নিগ্রহ করিলে যে ঈশ্বর প্রাসর कन, এ বিশ্বাস আর দেথিতে পাওরা যায় না। ইতারা কুচ্ছ সাধনের পক্ষ, উচাদের ভাবের মধ্যে প্রবেশ কবিলে, দেখা यात्र (व काँकाता क्रे कानरन এই প্রাকাব পথ অবলম্বন काর्या থাকেন। প্রথমতঃ উচ্চারা শিখাস করেন যে কামনার বিষয় कडेएड । इंडरक मृत्य ना लडेरल, कामनात आध कथनहे निक्तांग रेव ना। भारत किशाहिन.-

> "ন জাতু কামঃ কামানমুপভোগেন শাম্যতি; ছবিষা কৃষ্ণবয়েবি ভূম এবাভিবদ্ধতে।"

অর্থাৎ কামনার বিষয়ের উপভোগ ছার৷ কামনা কখনই নিবৃত্ত হয় না বৰং অগ্নিতে গুড দিলে দেমন ভাচা আরও বাদ্ধত হয় সেইবাপ হইয়া থাকে। অভএন তাঁহাদের উপদেশ अहे, यान कामनारक निवाह कोवरा 519, जरत किएक वन-পূর্বাক কামনার বিষয় হহতে বিভিন্ন কব। ক্লফ্র সাধনেব বিতীয় যুক্তি এই যেধন চাহিতেছ, ভাহার জন্ম যে ভোমাব প্রহ্ল ব্যাকুলত। আছে, কিরূপে ব্রিবেপ যদি দেখি সেজ্ত প্রাণে মন সমর্পণ কার্যাছ ;— চন্ধ্য তপ্রাণ ক্রিভেছ, ভাষা হুইলে বুঝতে পাবি যে ভূমি ভাহার প্রার্থী বটে। ভণ্যার ষারা ব্যাকুলভাবই পরিচয় হয়। ঈশর এফপ ব্যাকুল্ড। पिथिताई अमन इत। **এই উভ**न्न अकात युक्तित नासा त्य কিয়ৎ পরিমাণে সভা নাই ভাষাকে বলিবে ? আমরা কি कौद्रान नगरत्र नगरत्र अञ्चल कृति नारे, त्य आगारमत्र हिन्छ বণন সুপাসজিতে।নতান্ত নিমগ্ন হয়, এবং আগরা গণন তাতা লক্ষ্য করি, তথন হয়ত বলপূদাক মনকে সেই স্থুণ হইতে বিচ্ছিন্ন করা আশেখক হয়। তথন অনিয়ন্ত্রিত সুগল্পুচান্দ্ নিয়ন্ত্রিত কারতে পারেলে, আমাদের আত্মশক্তি বদ্ধিত চইয়া পাকে। একপ জিতাত্মা পুরুষদিগকে স্থাপ্রভা আর জীবনের শক্ষা ও কত্তন্য পথ হইতে নিচ্যুত করিতে পারে न।। এই कातरण माधानत व्यात्रास्त्र व्यानक माधक स्थम्भुशाक प्रमन করিবার আশায় যে স্থ নিষিদ্ধ নতে তাহাকেও অনেক সময়ে

বজ্জন করিয়া থাকেন। ভাহা কেবল মনকে স্বীয় বশে আনিবার চেষ্টা মাত্র। এইরূপ ওঙ্কর তপস্থার ধারা মানবের হৃদয নিহিত ব্যাকুলতার পরিচয় প্রাপ্ত হওয়া যায়। এই কারণে लारकत धर्म माधानत भारत किथिए भत्रीका । क्रम शास्त्र. তाहा अधार्थनीय नरह। এই जनाहे लाहौन कारनय कानिशन শিক্ষার্থী শিষ্যদিগকে কঠিনরূপে পরীক্ষা করিয়া তবে গ্রহণ করিতেন। যাহাবা ছ:খ কেশ বহন করিয়া থাকিত, তাহারা জ্ঞানলাভের উপযুক্ত বালয়। গৃহীত হইত। আভএব কুচ্ছ-সাধন ছারা ব্যাকুণতাই প্রাকাশ পার, তাছাতে সন্দেহ কি? আনরা শবীব মনের অকারণ নিগ্রহকণ ক্লছ্সাধনের পক্ষ-পাতা ন। ০ইগেও আত্মার সংযম শাক্ত বাদ্ধত কবিবার নিমিত্ত কেনিও কোনও খণে নির্দোষ স্থুখেও বজ্জন করা আবশুক বোধ কার। আত্মার সংযম শক্তি একবার বাহ্মত হুইলে আর এরপ সাধনের প্রয়োজন থাকে না। তথন সুথ ভোগই কর. পরিহারট কর, কিছুভেই আত্মার স্বাধানতা ও কর্ড্র শক্তি বিলুপ্ত হয় না।

শ্রবণ ও সাধন-সভা শ্রবণ করিয়াছি অনেক, কিছ সাধন করিয়াছি অতি অল। আমাদের মধ্যে কত ব্যক্তিকে ক্ষোভেব সহিত একপ কথা বলিতে হয়। বিদ্যাভ্যাস করিতে আরেন্ত করা অবধি ক্ষদা পথান্ত যত উপদেশ প্রবণ করিয়াছি ভাহাযদি আঁীহ যবাদির প্রায় রাশীক্ষত করিছে পারা যাইও ত্তি। চইলে গোধ হয় হিমালয়কেও অভিক্রম ক্রিড। প্রতি-াদন প্রাতে কণ্দয় ও চক্দয় উন্মৃক করিয়৷ উথিত হটতেছি, জনস্রেতের ভাষে কঙাদক দিয়া কন্ত উপদেশের স্রোভ চক্ষু কর্ণে প্রবিষ্ট চইন্ডেন্ড; রাজপথে কয়েক ব্যক্তি পরস্পার वामाञ्चराम किटिङ कविष्ठ याहरहाइ, कर्ग शाहिया अभि এক ব্যাক্ত অপর ব্যাক্তকে হিত কথা বলিভেছে, ধনা বা নীডিব্র নিগমান্ত্রাবে উপদেশ দিকেছে, এলরপু ধর্ম ও নীভির উপদেশ যথ। তথা আমাদেব চক্ষ্ম ও কর্মানে আক্রমণ করিতেছে। কিন্তু বাহিব হৃহতে চকুদাকে আকর্ষণ কৰিয়া যদি ভিত্তের প্রবেশ করি, যাদ আত্মান্ত্রসন্ধান ও আত্মান্তচাতে প্রবৃত্ত হহ, ভাচা হহ'ল কি দোগতে পাই ? দেখি ঐ সকল সং ১)ব অভি অল অংশই প্রকৃতভাবে জীবনে সাধন ভইষাছে। ঞ্ছ সভাকে জীবনে পরিণ্ড ক্রার ন্মে সাধন। যদি এক ব্যাক্ত কেবল সমূদার রাগ রাণিণীর অর্নলিপি মুখস্থ করিয়া বাথে, ভত্বা পে পাবক বালয়া সন্মানত হইছে পারে না। যত্জণ স্বর্গাপি-বন্ধ রাগ রাগিণী কঠে ফণিত না হয়, ভত্ৰণ দে ব্যক্তি গায়ক ব্যায়া স্মানিত ছইছে পারে না। সেইরপ যেব্যক্তিকেবল ধর্ম ও নীতির উচ্চ উচ্চ কথা লোকমুথে শুনিয়া রাথিগ্রছে বা শাল্পে পড়িয়া রাশি-য়াছে, কিন্তু জীবন ভদ্মুয়ায়ী করিতে পারে নাই, সেও ধার্মিক বলিরা প্রিচিত হছতে পারে না। কাগ্রের অরলিপিকে কঠে আমানা বেমন সংগীতের সাধন, সাধুমুখের বা **এচ্ছের স্**ত্য**েক** সেইরপ জীবনে আন। ধর্ম জীবনের সাধন। এইরপ সাধন পরায়ণ ব্যক্তিই সভ্যের মহিমা জ্লয়ক্সম কারতে পারেন;

खराक्त धर्म-श्रवर्कक महास्मानिरगत অপরে পারে না। জীবনের প্রতি দৃষ্টিপাত কনিলে দেখিতে পাই, তাঁচারা এক একজনে এক একটা পুৰাতন সভ্য জীবনে সাধন করিয়া সিদ্ধি লাভ কবিয়াছিলেন। ঈশ্বর পিতা একথার ভারে প্রাচীন ক্র্পা কি ভিল? দিছদী জাতির মধ্যে তৎপূর্বেক কত ভক্ত ও প্রোমকের মুণ দিয়া ঐ সভা নির্গত হইরাছে। কত শত শত লোকে শুনিয়াছে, উপেক্ষা করিয়াছে; যাঁশু তাহা সাধনের বস্তু ব্রিয়া অব্লম্বন করিলেন এবং সাধনের গুণে তাহাতে সিদ্ধি লাভ কবিলেন। এইরূপে ঈশ্বর মধান ও মানব তাঁহার দাস, এই প্রাচীন সভাকে সাধনেব খারা মহমাদ আয়েস্ত করিয়া।ছলেন। আনাদের এক একবাৰ মনে হর, আজ প্ৰাপ্ত যে সকল উচ্চ উচ্চ ক্থা শুনিয়াছি ও শিধিয়াছি, তাহা যাদ ভুলিয়া ষাইতে পারে, তাচা হঠলে যেন ভাল হয়। আমাবার এক একটা করিয়া সভ্য সাধনের দ্বারা স্বায়স্ত করি। তাছা হচণে ধর্ম জীবনের বাস্তাবক উল্লাভ হত্তে পারে। একটী বিদ্যালয়ের কোন শ্রেণীতে যে সকল বলেক পাঠ কাবত, তাহাদের মধ্যে একটা বালকের মেধাশাক্ত কিঞ্ছং অল্ল ছিল। কোনও বিষয়ের ন্যা গ্রহণ কারতে, তাহার অংশক্ষাক্ত অধিক বিলম্ভ্তঃ অলভাশক্ক ভাষাব প্রাত মধ্যে মধ্যে অভি-শয় বিবক্ত ১ইডেন। কিন্তু ঐ বালকের একটা গুণ এই ছিল যে সে একটাবিষয় পাকা কারয়া না বাুরারা অভ্নত বিষয়ে মনোনবেশ কারতে পারিত না। যাহা বুঝিত তালা পাকা কার্যাই বুক্তে। শিক্ষকের বিরাগভাজন হল্পেও সে না বুঝের। বুঝিয়াছে বলিও না, কিংবা অঞ্চ বিষয়ে মন দিত না। किं इ (अह (अव) व कारन वामक भिक्राकित अस अ निस्कारित অস্চিষ্ণু চা বশত: একটা বিষয় ভাল কাবিয়ানা ব্রিয়াও অভ বিষয়ে বাবিত ১৯৩। চনমে এই দাড়াইল যে ঐ প্রথমোক বালকটীত সকলের মধ্যে এইও বলিয়া প্রেগণিত হতল। সে ষ্ট্কু।শাৰল, ভাগতে পাৰপক ব্যংশতি জানাল। ধাম সাবন সম্বেদ্ধে এচর । বত্ন পাক অবার ও অসাহয়ু লোক একপ আছে, মাহারা কেবল সভা ভানয়ার সন্তই, পাকারণে সাধনেব ছারা আমাও কাবতে হচ্চুক ১০০, আবার কতকগুলা লোক এরপ আ ছ, যাহার। একটা বিষয় সাধন না করিয়া বিষয়াস্তরে চিন্ত নিবেশ কাণতে পাবে না। একটা অত্যে ভাল কার্যা সাধন কবি পবে, আর একটা দোখন, এই তাঁহাদেব মনের ভাব। এই প্রকাব ভাব ধন্ম সাধনের অমুকুল।

শক্তির দায়িত্ব—পাত্তকারা বন্দাক নিশ্বাণ করে, মধুমক্ষিকাবা মধুব চক্রা নিশ্বাণ করে, তাহাদের প্রত্যেক মুহুত্তর
কার্য্যের প্রাত দৃষ্টিপাত করিলে দেখা যার যে প্রত্যেকে স্বীয়
স্থার কার্য্যে মনোযোগী, যাহার যেটুকু করিবাব আছে সে সেটুকু
স্থচারুরেপে ও সক্ষাস্পালপে কার্দেছে। প্রত্যেকে
স্থানার অংশটুকু স্কাবরূপে করে বলিয়াই, সমগ্র নস্তটী স্কার
কর। মানব-সমাজের উর্গতিরও ঐ নিয়ম। আমাদের প্রত্যেকের যে অংশটুকু করিবার আছে যদি আমরা তাহা স্কাররূপে
করি তাহা হইলে সমগ্র সমাজের উর্গতি স্কারতি স্কাররূপেই সাধিত

হইতে পারে। বহু বিস্তীর্ণ ক্লেজে কার্য্য করা বা বহুসংখ্যক লোকের উপকার করা স্কলের ভাগ্যে ঘটে না; সেরূপ প্রতিভা শইরা সকলে জনাগ্রহণ করেনা, এবং সুযোগও সকলে পার না। কিন্তু এরপ সামান্ত মানব কেচ নাই, এরপ হীনাবস্থাপর কেহ নাই যালার জীবনের একটুকেতা নাই এবং সেই কেতে कि इ. क तिवात नाहे। এक विम्मू करन त्र मर्पा (य व्यन्ता की छानू বাস করে, তাহাদেরও প্রত্যেকের জীবনের ক্ষেত্র আছে, কার্য্য আছে। অতএব তুমি যতই সামায়ত ও হীনাবস্থাপন্ন হও না, ভোমার নিজ জীবনে প্রতিদিনের কর্ত্তব্য জনেক কাজ আছে। বিভীণ ক্ষেত্র পাইলে না বলিয়া ক্ষোভে সময় ক্ষয় না করিয়া যাদ তুমি এই প্রতিজ্ঞারত হও যে তোমার জীবনক্ষেত্রে যভটুকু কর্ত্তব্যভার ভোমার উপবে পড়িয়াছে সেইটুকু তুনি স্থচারুদ্ধণে সম্পাদন করিবে, তাচা চইলে নিজ বিবেকের ও ঈশ্বরের প্রায়তা লাভ করিতে পার এবং চরমে তোমাব সেই কার্য্য সমগ্র মানবসমাজের উন্নতির অঙ্গ শ্বরূপ হটতে পারে। লোকে দেখুক আর না দেখুক আমার জীবনটুকু আমি স্থলর-রূপেই গঠন করিব, এরূপ প্রভিক্তা মহুধ্যোচিত। আর বাঁহারা এই পৃথিবীতে মহুষাত্ব লভে ক্রিয়াছেন, সারবান জাবন প্রাপ্ত চটয়াচেন, তাঁহারা সকলে এইকপ প্রতিজ্ঞার সহিত কার্য্য করিয়াছেন। এ উপদেশ অভি প্রাচীন উপদেশ। ঈশ্বর আমাদের দেহ মনে যে কিছু শক্তি সামধ্য দিয়াছেন তাহা কুপণেব ধনের ভাষে পুতিয়া রাখিবার জভাদেন নাই। সে मकरनन निर्पार्श्वचात्रा निष्ठित ७ व्याग्रत कन्।। नाधरनत क्रमुहे দিরাছেন। এই দকল শক্তি যে আমরা লাভ করিয়াছি তা**চার** সঙ্গে শঙ্গে এক প্রকার দারিত্বও আছে। আমরা সে স্কল্কে সম্চিত্রপে ব্যবহার কবিবার জন্য দায়ী, তাঁহাব অভীষ্ট পথে নিবোণ কবিবার জন্য দায়ী। এই দায়িত জ্ঞান সর্বাদা প্রবন্ধ থাকা উচিত। স্থাসিদ্ধ পিওডোব পাৰ্কাৰ মৃত্যুৰ প্ৰাক্*ৰাৰে* এই বলিয়া ক্ষোভ কারলেন—ঈশ্বর আমাকে প্রভূত শক্তি াদয়াছিলেন, ভাহাব অংক্তিও ব্যবহাব করা হইণ না।" অথচ পাকার জন্ন কালের মধ্যে যে সকল কাষ্য সম্পন্ন করিয়াছিলেন त्म निषय हिन्छ। कावत्म ज्यामना ज्यामहयास्त्रिक ब्रहेगा याहे। ভোন একজন কুষকের সন্তান। উত্তমক্রপ শিক্ষা লাভ করিবার স্থােগ তাঁহাৰ ভাগাে ঘ'ট নাই। অল্প বয়সেই তাঁহাকে শিক। সাঙ্গ কবিয়া অথোপাজ্জনের চেষ্টাতে বত চইতে চইরাছিল। ज्यशह निरङ्गवरे आम 'अ ज्यक्षावमारयव श्वरंग कि ख्वान, कि अधारम, কি মানব-সেবাতে, সকল বিবায়ে অদিশ্ভানীয় হইয়াছিলেন। এই দায়ত্ব জ্ঞানই তাঁগাকে উল্ভিব অভিমুখে লইরা গিয়াছিল। আমাদেব অন্তরে এই দায়িত্ব জ্ঞান অল বলিয়া আমাদের চরিত্রেব সেকাপ উন্নতি দৃষ্ট হয় না। আহ্মধর্ম এ দেশকে নব-कीनन श्रामान कतिरवन, बाक्षशन अम, अभानमाम উत्माश প্রভৃতির দ্রীত্ত এদেশবাসীদেশকে প্রদশন করিবেন। কিন্ত অনেক ত্লে দেখেতেছি একে যুবকগণও বুক-ভাড়িত মেষ্যুথের ন্যায় অস্হায় ও নিরুপায় হইয়া বেড়াইতেছেন; আংঙিজ্ঞা সহকারে নিজ নিজ দেহ মনের শক্তিকে নিজের ও অপরের অবস্থার উন্নতির জন্য নিয়োগ ক্রিতে পারিতেছেন না।

দেশের সর্ব্রেই সকল শ্রেণীর মধ্যেই দ্রিজ্ঞ ও অর কট
দিন দিন বর্দ্ধিত হইতেছে। বর্ষে বর্ষে দলে দলে অর্দ্ধ শিক্ষিত
যুবকদল বিদ্যালয় হইতে বহির্গত হইরা কর্মপ্রার্ণী হইতেছে।
কিন্তু এত লোকে অর পাইতে পারে এরপ চাকুবী কোথায় ?
কাজেই দরিজ্ঞা দিন দিন বাভিতেছে। কিন্তু সকল সম্পদের
খনি অরপ বিন্তীর্ণ ভূমি পাড়িয়া রহিয়াছে; মানবের বৃদ্ধি,
শ্রম ও মানবের শক্তিকে নিয়োগ করিলে, ইচা হইতেই
একটা উপায় বিনির্গত হইতে পারে। তঃথের বিষয়
ব্রাহ্ম যুবকগণের মধ্যেও সে প্রকাব উদ্যোগ দৃষ্ট হইতেছে না,
তাহারাও পথল্রন্ত মেষস্থার ন্যায় কিংকর্ত্রাবিম্ট হইয়া
ছুটিয়া বেডাইতেছে। এই সকল যুবককে কাজেব লোক
কবিয়া ভূলিতে পাবে, ব্রাহ্মদিগের মধ্যে এরপ কভী লোক
দেখা না দিলে এ তুর্গাত ঘূচিবে না।

ব্রাহ্মগণের দরিদ্রতা— দার্দ্রতার কথা বলিলেই জ্মনেক ব্রাহ্ম পরিবারের চুরবস্থার কথা স্মরণ হয়। এই দল্পিদ্রতা দিন দিন বাডিতেছে। তাহার একটী প্রাধান কাৰণ এট, ব্ৰাহ্মগণেৰ আধিকাংশট বড বড সচরে বাস করিতেছেন। মফ:স্বলে বিরোধী ব্যক্তিদিগের মধ্যে বাস করাতে অনেক অফুবিধা বলিয়া, নিরস্তব লোকের উপহাস, বিজ্ঞাপ ও নির্যাতন সহা কবিতে হয় বলিয়া, আহ্ম পরিবার সকল সহরেও প্রধান প্রধান নগবে থাকিতে ভাল বাসেন। করিণ ৰ্ভ ব্ভ নগ্ৰে লোক অনেক্টা স্বাধীন; প্ৰভ্যেকে আপনাৰ ইচ্ছাফুরপ চলিতে বলিতে পারে, এক জনের জীবন অপর দশ জনের জীবনেব স্হিত তত আবদ্ধ নয়। কিন্তু সহরে বাস করাতে আর একটা অনর্থ উপান্তত চইতেছে; সকলের জীবন নাগরিক জীবন হইয়া যাইভেচে। সহরে থাকিতে গেলেই পাচক ৰা পাচিকা ও দাস দাসী রাখিতে হয়, বাহির হইতে গেলেই ভদ্র পোষাক পরিতে হয়, ঘারে জিনিস পতা বিক্রয় ৰুরিতে আসিলেই চুই একটা ক্রয় করিতে হয়, এইনপে, এটা eটা করিয়া বার বাভেয়া যাইতেছে। ওাদকে প্রকাত মাতার ক্লিগ্ন সহ্বাস হইতে দূবে থাকাতে দেহের বল, মনের শক্তি সমুদ্রিত বিকাশ পাইতেছে না। বড বড় সহর মানবহৃদয়ের হেকামল গুণাবলী বিকাশের অন্তকুল স্থান নতে। বড সহরে লোকে স্বার্থপর হয়। ভোমার ঘারেই বাঁহার ঘর ওঁহার স্কিত কয়ত তোমার দৃশ বৎস্বের মধ্যে আলাপ কয় নাই। এক ভালাতে মামুব মরিয়াছে তিন তালাতে নুভাগীত চলিতেছে, কেচ কাহাবও সংবাদ শ্রনা। কেচ কাহারও সুথ হঃপের অংশ লইতে চায় না। পল্লীগ্রামে থাকিতে গেলেই দশ ক্ষনের সাত্ত সম্বদ্ধ হইতে হয়। অল পরিসর স্থানে প্রত্যেকেট অপর সকলকে জানে; একজনের একটু বিপদ चिटिलाहे ममाकरन मः वाम भाग्न अव भाग्न भाग्न भाग्न कित-বার জন্য অগ্রসর হইয়া পাকে। আনাদেব বোণ হয়, মফঃখলে কোনও একটা স্বাস্থ্যকর স্থান দোখয়া যদি একটা ব্ৰাহ্ম উপ-নিবেশ স্থাপন করা যায়, তাহা হইলে বর্তমান অবস্থান আনেক উন্নতি হইতে পারে। সেই উপনিবেশস্ব্যক্তিগণ কৃষি বাণিজ্য

প্রভৃতিতে মনোযোগী হইবেন; দৈহিক শ্রমের দ্বারা শীয় শীয় অবস্থার উরতি করিবেন এবং সেই সঙ্গে জ্ঞানোর তি, বিদ্যাচর্চা,
ধর্ম ও নীতে শিক্ষার ও উপার পাকিবে। এরপ আদশ
উপনিবেশ স্থাপন করিয়া ব্রাহ্মগণ যদি এদেশবাসীদিগকে পথ
দেথাইতে পারেন, তাহা হইলে একটা কাজ হয়। করেক
বৎসর পূর্বের "মান্দ্রাজ ইউবেশীয়ান এদোসিএশন" নামক
সভার যত্নে তত্ত্বত্য ইউবেশীয়ানগণের জন্য মহাস্থর রাজ্যে
একটা উপনিবেশ স্থাপিত হুইয়াছে। আমাদের বোধ হয়
একণ উপনিবেশ স্থাপন বিষয়ে গ্রেগ্মেন্টও জনেক সাহায়
কবিতে পারেন। ব্রাহ্মাদগের দানিদ্রা নিবারণের একটা
কোনও উপার দ্বায় না করিলে, অচিরকালের মধ্যে ব্রাহ্ম

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### তৃপ্তি।

মানৰ প্রাণ সকাদাই তৃ.প্তাব জ্বন্ত ব্যস্ত। আহার বিহাব প্রভৃতি দৈচিক ক্রিয়া চইতে গুক্তর কত্ত্ব্য পালন প্রাপ্ত স্কল कार्याहे मानव ज़िश्च भाहेट हेम्हा करन। य कार्या ज़्श्च পাইবার আশা নাই সে কাষ্ট্রে লোকে নিতাম্থ পাঁডাপাঁড না इडेरल महरक याहेरड हारह ना। मानव शक् हिर्ड स्मन अहे তৃপ্তি পাইবার জন্ম প্রাণশ আকাজক: বিদামান, বিধাতার বিধান ও সেইকপ দেখা যায়। মানব আহার কাববে, কোনরূপে শ্রীরের পুষ্টিকর কক্তবভালি আহার্যা সৃষ্টি করিলেই হইত , কিন্তু ভাহার সঙ্গেও হ্রাদ হুগন্ধি ইত্যাদি বিদ্যমান রাণিয়া মানবকে (कमन ज्थित्रामान कतिवात वावण कता क्वेगारक। कर्जावात অনুবোধে তুম কঠোর পরিশ্রম করিতেছ, শ্রীর অন্বস্র চইতেছে—গাত্র যমাক হইতেছে; কিন্তু ভাচার সঙ্গে সঙ্গেই অন্তরে আশ্চর্য্য শান্তি লাভ হইতেছে। এইরপ প্রত্যেক कार्या है मानव यथन धाक्र है भक्ष क असूनारत कार्या नियुक्त इहेश। থাকে, তথনই ভাহার সঙ্গে অপূর্ব তৃথি লাভ করে। আহার বিহার প্রাভৃতি দৈহিক ক্রিয়া কাণ্ডেব মধ্যে যেমন कार्य) कतिवात मान मान्नहे जाश्र श्रामात्मत वावश ब्याह्य। समा माधान माधा । जारात वाचार (प्रशासास मा। जारा चार প্রকৃত পদ্ধতি অমুসারে সাধন ভদ্দনে প্রবৃত্ত চইলে সেই সাধন ভর্জনের সঙ্গে সঞ্জে সাধক অপূর্ব্ব তৃপিও পাইয়া পাকেন। এরপ তৃপ্তিলাভ না চটলে সাধকের পকে ধৈর্য্য ও সহিষ্ণুতার সহিত দ্যধনভন্তনে নিযুক্ত থাকা সকল সময় সম্ভব হুইত না। কিন্তু আছার বিহার প্রভৃতি নিতা প্রয়োজনীয় কার্য্য ও অপরাপর শুক্তর কর্ত্তব্য কার্য্য অমুষ্ঠানের সঙ্গে সঙ্গে এইরূপ তৃথিলাভের ব্যবস্থা নিয়ত বর্ত্তমান থাকিলেও—তৃপ্তিলাভ মানব্দীবনের উদ্দেশ্য নতে। জীবনের উদ্দেশ্য কল্যাণ লাভ ও স্বাস্থ্যলাভ। ভাষা পাটবার জন্ত মানবকে অধিকাংশ সমর যে কঠোর পরিশ্রম, দৃঢ় নিষ্ঠা ও প্ৰবল ত্যাগ স্বীকারেরর মধ্য দিয়াযাইতে হুর তাহার পুরস্কার এবং সংকর্মে নিয়ত নিযুক্ত রাথিবার পক্ষে

ইহা একটা অপূর্ক কৌশল। বিধাভার আশ্চর্য দান। স্থতরাং আমরা যদি এই তৃথি লাভকেই জীবনের উদ্দেশ্ত বলিরা হির করি, ভাহাতে আমাদের অত্যস্ত ভ্রান্তি ইইবে। তাহাতে আমাদের অত্যস্ত ভ্রান্তি ইইবে। তাহাতে আমাদের কল্যাণ্লাভ অপেক্রা আরাম ও শাস্তির জন্ত ব্যক্ত গ্রেবল ছইবে। এবং যে কোম কার্য্য দারা প্রাণে পরিতৃথি পাইতে পারি, আমরা ভাহারই অয়েষণে অধিকতর বাস্ত হইব। তদ্বারা আমরা কেবলই স্থিপ্রের, কোমলভাবাপর হইরা ওক্তর কর্তব্যের পথে চলিতে অক্ষম হইব।

সম্ভুষ্ঠান ও ধর্মসাধন প্রাভৃতি কার্ষ্টোর সঙ্গে সঙ্গে নির্ভ ভৃপ্তিলাভ হয় বলিয়া, লোকের একপ সংস্কার বন্ধমূল হইয়া शिवाद्ध (य এहे ज़ित्र भा अवाहे वृश्य व्यामात्मत्र नका এवः এहे নিমিত্তই দেখা যায় যথন উপাসনাদিতে মানব আর তেমন তৃপ্তি পার না, তথন অতি সহজেই উপাসনাদির প্রতি দোষাবোপ 🖚রিয়া, ইছা বারা জীবনের কোনও সুফল লাভের আশ। নাই মনে করিয়া উপাদনা কবিতে ক্ষান্ত হয়। কিন্তু একটু স্থির হিতে ভাবিয়া দোপলেট বুঝ: যায় যে আমর সকল সময় তৃিপ্ত পাইবার উপযুক্ত বা অধিকারা থাকি না। স্বস্থ ও প্রকৃতিস্থ অবস্থার না থাকিলে কখনই কেছ তৃথি পাইতে পারে না। অক্সেষ্ট দেখা যায়, যে হুমিষ্ট বস্তু ভোগে এক সময় কত তৃপ্তি পাওদা যায়, ভাহাই পীড়ার সমন্ত্রিম অতৃথির কারণ হর। ষে তথ্য সুস্থাবস্থায় উপাদেয় জ্ঞানে শোকে আগ্রাহের সহিত পান ক্রিয়াপাকে,ভাহাই আবার সময় বিশেষে বিষম অভ্থির কারণ হর এবং লোকে অভিশব বিরক্তিব সহিত তাহা পান করিয়া থাকে। আবার ইচাও দেখা যায় মানুষ প্রবল বিকারের সময় যখন তৃত্তি পাইবার আশায় অলপান করিতে অত্যন্ত ইচ্ছাকরে তথন চিকিৎসক ভাছাকে জল দিতে নিষেধ করেন। কারণ সে জল ভাগার ক্ষণিক তৃপ্তির কারণ হহলেও পরিশেষে বিশেষ কষ্ট-দারক চইরা থাকে। যথন কাছারও শ্রীব অগ্নিতে দ্রু হয় ज्यन मि गालि महाक्रे क्षण श्रामात्त्र कक् बाल हम जार যাদও সেই জল ক্ষণকালের জন্ম যন্ত্রণার শান্তি করে; কিন্তু পরক্ষণেই ভালা বিষম যাভনার কারণ এবং অকল্যাণকর হয়। মুতরাং দকল সময় দকল বস্তুতেই যে তুপ্তি পাওয়া যাইবে এবং ভাচা যে কল্যাণকর হইবে এমন নয়।

লোকে এখন ভাল উপাসনা হইল কি না তৃত্তি ছারা ভাহার বিচার করিয়া থাকে। কিন্তু সকল সময় তৃত্তি লাভ ছারা ভাল উপাসনা হইয়াছে বলিয়া মনে করা বিষম ভ্রম। যথন প্রাণের অবস্থা স্কুম্থাকে, তখন ঈশ্বরের নাম কীর্ত্তন মননাদি তৃত্তির কারণ হইবে। কিন্তু যাদ কেহ শুরুতর পাপামুদ্ধান করিয়া আসে তখনও যাদ সে উপাসনা করিয়া ভৃত্তিয়াভ করে, তবে সে উপাসনা কথনই প্রকৃত উপাসনা নহে এবং তাহা কথনও আত্মার কল্যাণকর নহে। তখন যাদি তাহার প্রকৃত উপাসনা হর এবং সে আত্মাপরাধ স্মরণ করিতে করিতে নিজ কুৎসিত ছবির সহিত প্রাণে প্রকাশিত স্কুম্মর ছবির তুলনা করিতে থাকে, তাহা হইলে ভাহার প্রাণে নিশ্চয় প্রবণ অস্ত্রাণ উপস্থিত হইবে। এবং ভাহা ছারাই ভাহার ক্ল্যাণ হইবে। এই অবস্থারও যাহারা তৃত্তির জন্য ব্যস্ত হয়

ভাষারা নিতান্তই ত্রাকাজ্ঞক; জাহাদের জাশা কথনই পূর্ণ হইবার নহে। কিন্তু লোকে একাই ভৃত্তির জক্ত বান্ত যে এরপ ক্ষরাবন্ধান্ত যে কোনে প্রকারে ভৃত্তি পাইবার চেষ্টা করে; এবং ভাবোন্ধীপক দানাপ্রকার বাক্য ও সংগীতাদির সাহায্যে প্রাণের ব্যাধির যাতনা চাপা দিরা রাখিরা কোন প্রকারে আত্মবিস্কৃত হইরা ভৃত্তির সহিত সমন্ন কাটাইতে যার। এরপ অবহাকে চিকিৎসক্রণ বিকারের লক্ষণ বলিয়াই নির্দেশ করেন এবং পর্ম বৈদ্য প্রমেশারও ভাচার ক্ষর্যাণের জন্য তথন ভাহার প্রাণে ভৃত্তি না দিরা আশান্তির প্রবল অনল আলিয়া দিরা থাকেন। অমৃতাপের বিষ্ম আলার ছটকট করিয়া সমর কাটানই ভাহার পক্ষে তথন আবশ্রক।

স্তরাং তৃত্তি যদি পাইবার আশা থাকে তাহা হইলে প্রাণ্কে সর্কাণা সুস্থ রাখিতে হইবে। অনাণা ক্ষণিক ভৃষ্ঠি প্रिटिश छाहा कथनहे कला। शकत हहेरव ना। শাস্তিপ্রদ পবিত্র নাম মানবপ্রাণে শাস্তি দিরা পাকে ইছা চিরপ্রসিদ্ধ। কিন্তু যদি সে নাম লইয়া, তাঁহাব গুণামুকীর্ত্তন ক্রিয়াও তৃত্তি না পার্য়া যায়, তাহা দ্বারা ইহা প্রমাণিত হয় না যে তাঁহার নামে তপ্তি পাওয়া যায় না বা উপাসনা ছবে৷ আরাম লাভ চর্না। তথন অন্য করেণ অনুমান করাই উচিত। স্থু শরীরে চন্দন লেপন কবিলে শরীর ক্লিগ্ন চইবে ইছাই নির্ম। যদি তাভা না হয়, তবে সহজেই বুঝিতে হইবে শরীরে কোন ব্যাধি উপস্থিত হুইয়াছে এবংসেই কারণেই স্লিগ্ধকারী চন্দ্রন লেপন করিয়াও ভূমি ভৃপ্তি পাইতেছ না। এই রূপ যদি দেখ উপাসনায় ভৃত্তি হয় না, ঈশবের নাম বইলে প্রাণে শাস্তি জাসে না, ভাছা হছলে ভোমার পক্ষে স্কাগ্রে অনুস্কান করা উচিত প্রাণে কোন ব্যাধি জানারাছে কি না। তাহা না করিরা যদি তুমি উপাদনার প্রতি দোষারোপ কর বা ঈশ্বরের নামের শক্তিতে সন্দিহান হও, তদ্বারা তোমার অজ্ঞানতারই পরিচর পাওয়া ঘাটবে . এবং সেরূপ সংস্কারের বশবভী চইয়া চলিলে তোমার তৃাপ্রলাভও ঘটিবে না, প্রাণের কল্যাণ লাভও হইবে ना ।

#### ধর্মে সাম্প্রদায়িকতা ও উদারতা।

সাম্প্রদায়িকতা শব্দী ব্রাহ্মদিগের চক্ষে অতিশন্ন ঘুণিত চইয়াছে। ইহাতে সংকীর্ণতা, অফুদারতা, অপ্রেম, অন্ধতা প্রভৃতি সমুদার প্রকাশ করে। কাহারও কাহারও মনে এই সাম্প্রদায়িকতার ভর এত অধিক যে তাঁহারা সেই কারণে বিশরীত দিকে অতিরিক্ত সীমাতে যাইতেছেন; পাছে লোকে সাম্প্রদায়িক বলে এই আশহাতে সত্যে অসত্যে প্রভেদ রাধার আবশ্রক বোধ করিতেছেন না। গণ্ডী শব্দটা এই শ্রেণীর ব্যক্তিদিগের পক্ষে একটা মহা আসের বস্তু হইরাছে। অপর দিকে দেখিতেছি যে কন্তকগুলি ব্রাহ্ম ব্রাহ্মধর্মকে এত সংকীর ও সীমাবদ্ধ আবে দেখিতেছেন, যে আপন আপন অবলম্বিত প্রণালীর ব্যতিক্রম সহ্থ করিতে পারিতেছেন না, সেক্ষপ ব্যতিক্রমকারীদিগকে অব্যক্ষ বিশ্বা বৰ্জন বা নিগ্রছ করিতে

চাহিতেছেন। এই কারণে বোধ হইতেছে যে কাহাকে সাম্প্র-দারিকতাবলৈ ও উদারতারই বা অর্থ কি তাহা ধীর্মচত্তে কিঞ্চিৎ আলোচনা করিলে উপকার দর্শিতে পারে।

সাম্প্রদায়িকতা শব্দটী সম্প্রদায় শব্দ হটতে উৎপর। প্রাচীন সংস্কৃত এন্তে সম্প্রদার শব্দে গুরু ও শিষ্য পরস্পরা বুঝায়--অর্থাৎ कान ७ विरम्य धर्ममञ्जा ना प्राधन शाली अक्र मिया भवण्या कारम (ष मत्नत्र मत्या नामित्रा चार्मि, त्महे मनत्क मध्यमात्र नत्न। चाङ এव এক একটা সম্প্রদায় কতকগুলি নবপ্রচারিত সভ্যের সংরক্ষ ক, পোষক ও সাধক। চিন্তা কবিলেই দৃষ্ট হইবে, স্তাবিশেষের সংরক্ষণ ও পোষণের জ্বন্ধ একাণ সম্প্রদায় গঠিত হওয়া অনিবার্য্য ও বিধাতার বিধান। তরু-বীজের রক্ষণ ও পোষণের সঙ্গে ইহার তুলনা চইতে পাবে। বিধাতা অধিকাংশ তরুর বীক্সকে একটী কোষের মধ্যে নিহিত করিয়াছেন। আত্রের কেমুরটী (कमन कठिन आवताल आवुङ इहेब्रा शास्त्र (म आवव्यक्ति) না থাকিলে বীজ্ঞী অকালে বিনষ্ট চইয়া যাইত। সেইরূপ কোন ও সভা যখন জগতে অবভীৰ্ষয়, তথন তাছাকে কতিপয় হৃদয় প্রেম্বারা দুট্রপে ধারণ করে, একাগ্রহার সহিত সাধন करव, উৎসাচেব সহিত প্রচার করে, এইরূপে ভাষা বলশালী হইয়া জগতকে অবধিকাৰ করে। এরপে সত্যকে ধাবণ ও সাধন না কবিলে কোনও সভাই জগতে স্থানপ্রাপ্ত হইত না। বর্তমান সভাজগতের প্রতি দৃষ্টিপাত কবিলে দেখা যায় যে এই প্রণালীতেই সত্য সকল সংরক্ষিত ও প্রচারিত হুইতেছে। প্রাপমে অলসংখ্যক ব্যক্তিব মধ্যে ধারণ ও পোষণ, শেষে জগতে বোষণ। এইকপে দাসত্ব প্রথা উঠিয়া গিয়াছে, বাণিজ্যেব স্বাধীনত। বিস্তাব হইয়াছে, সুবাপান নিবারিত হুইতেছে। জগতের ধর্মান স্থানার সকলও এই বিধাত'-নিদিষ্ট পথের অনুসরণ করি-র'ছে। সাধুমুথ দিয়া কোনও নৃতন সতা অনতীণ হইলেই প্রে.মক-হৃদ্দ দিয়া সম্প্রদায় গঠিত হুইবাছে ও সেই সভাকে ধারণ কবিয়াছে। যত দিন সেই সকল সভা সম্পূর্ণকপে क्रगंडरक जामकात्र ना कविरव उडिमिन क्षे मकन मुख्येनारग्रंग জীবনের উদ্দেশ্য বিদ্যমান গা:কেবে ও তাহারা জীবিত থাকিবেই পাকিবে।

একণে চিন্তা করা উচিত ব্রাক্ষধর্মের আকারে যে
সকল সভা এভদেশে প্রচাবিত চইভেছে, ভাষান সংরক্ষণ ও
পোষণের জন্ম সম্প্রনায় গঠিত ছওয়া যাভাবিক, আনিবাসা ও
প্রয়োজনীয় কি না ? বিশেষ ইহা প্রবণ রাখিতে চইবে এই
সকল সভা কেবল জ্ঞানগভ সভা নহে, ভাষা সাধনের বিষয়।
যদি কেবল জ্ঞানগভ সভা চইভ, ভাষা চইলে ভাষার জন্ম
সম্প্রদায় বন্ধনের প্রয়োজন ছইভ না। প্রতিদিন বিজ্ঞানের
কভ ন্তন ন্তন সভা আবিক্ষত চইভেছে, সাহার জন্ম কেনা
সম্প্রদায় গঠন করা আবিশ্রুত চইভেছে না। আবিদ্ধার
কর্ত্তাগণ প্রকাকারে মুদ্রিত করিয়া পণ্ডিত মঞ্জনীর গোচরার্থ
প্রচার কারভেছেন, ভাষাতেই সেই সকল সভা সকলে প্রচারিত
ছইয়া যাইভেছে। কিন্তু ধর্ম্মজীবন সম্বন্ধীয় সভা সকল
সেরশ নহে, ভাষা সাধনসাপেক। এই সাধন অপরের সাহাযাসাপেক স্বরাং এই সকল সভা সাধনের অন্ত সম্প্রাহার্য

मुख्यमात्र दक्षन यमि श्राजातिक अधारतासनीत हहेग जत সম্প্রদার সম্প্রদার, গণ্ডী করিয়া চীৎকার কর কেন ? जिल्लान किन गर्डन इटेएज एड विश्वा प्रःथ ना कतिना वन्नर এই বলিয়া হু:খ কর এই সম্প্রদারের খননিবিষ্টভা, দুঢ়ভা, একাগ্রতা কেন এরূপ হইতেছে না, যুদ্ধারা ব্রাহ্মধর্মের সভ্য স্কল স্মৃচিত বাপে সংরক্ষিত,পোষিত ও সাধিত হইতে পারে ? वाक्षानन नारम এक ही पन किन इहेर उच्चित हैन विनिन्ना छू:थ ना कतियो नवः आमता এहे जानिया द्वःचित्र हरेएडहि (य এहे मरन्त्र বিশ্বাস, নিষ্ঠা ও একাগ্রচিত্তা কেন এত ব্দিত চইতেছে না যাহাতে এই দলটা একটা কামানের গোলার স্কার দৃতবদ্ধ हत्र। अक्रांश वित्वहन। कत्रा कर्खवा (य नण स्रष्टे इश्वता यथन স্বাভাবিক ও বিধাতার বিধি, তখন সেই দলের প্রতি প্রত্যেক ব্যক্তির বিশেষ প্রেমণ্ড স্বাভাবিক কি না? এ জগতে চিস্তা. ভাব, ও কাৰ্য্যগত একডার উপরে সচরাচর প্রীতির ভিডি স্থাপিত হয়। অতএব এফ সম্পানয়স্থ ব্যক্তিগণের পরম্পারের প্রতি বিশেষ প্রীতিমান হওয়া স্বাভাবিক কি নাণু বিশেষতঃ আর একটা বিষয় চিন্তা করিলে স্বসম্প্রনায়স্থ ব্যাক্তগণের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি দিবার কারণ দৃষ্ট হয়। যে সভ্য পালনের জ্ঞা তুনি নিগ্রহ সহ করিতেছ, সেই সত্য পালনেব জন্ত যদি অক্ত কাহাকেও নিগৃহীত হইতে দেখ, তাহা হইলে তোমার হান্য কি সহজে ভাহার সাহায্যার্থ অগ্রসর হর না-্যান না হুর তবে তোমার দায়িত জ্ঞান অদ্যাপি ফোটে নাই।

র্যাদ স্বসম্প্রদারের প্রতি বিশেষ প্রীতিও স্বাভাবিক ভটল---তবে সাম্প্রদায়িকতা এত ঘুণিত চটল কেন ? তবে সাম্প্র-দায়িকত। কাঠাকে বলে ? স্বসম্প্রদায়ের প্রীতিকে সাম্প্রদায়িকতা वल ना, किञ्च (प्रदे शीजित विकादक प्राष्ट्रामात्रक जा वला। यमन नाष्णका तथामत्र विकात केवा। एकमनि चनल्लात्वत लाक প্রীতির বিকার সাম্প্রদায়িকতা। একজন রমণী যদি নিজ প্রিকে প্রাণ মনের স্থিত ভাল বাসে তালতে নিন্দার কি আছে? कि इ यनि त्मरे প्रायत वर्ष এरे रह ति तम नादी व्यात কোনও পুরুষের কোনও সদগুণ দেখিতে পায় না, বা পতি অক্ত কোনও রমণীর সহিত হাঁসিরা কথা কহিলেই ঈর্বাা করে, ভালা চইলেট বলিতে লয় ভালার প্রেম বিক্লভ ও এক ব্যাধি বিশেষ। সেইকপ নিজ সম্প্রদারের প্রতি প্রেসের অর্থ ধনি এই হয় যে অপব সম্প্রনায়ের মধ্যে যাহা উৎক্লাই ও অঞ্করণের যোগ্য আছে, তাহার প্রতি অন্ধ, অথবা স্বস্ত্রাদায়ের কেই অপ্র সম্প্রদায়ের লোকের সহিত আশ্রীয়তা ক্রিলেই ঈর্যান্তি ছইব্ ও তাহার প্রতি চক্ষু রাকাইব, তাহা হইলেই মনে ক্রিডে হইবে যে ভালা সাম্প্রদায়িকভা, ভালা চিত্তের একটা ন্যাণি। মভুবা স্বস্প্রদায়ের প্রতি প্রীতিমান ও স্বাবলম্বিত সভ্যের প্রতি নিষ্ঠানান হইলেই কালাকে ও সাম্প্রদায়িকতা দোষে দোষী করা যায় না।

সাম্প্রদারিকতা কি তাতা ব্ঝিতে পারিলে উদারতা কি তাতাও ব্ঝিতে পারা যার। উদারতা অনেক প্রকারের আছে, এক প্রকার উদারতা আছে, তাতা উদাসীনতা সভ্ত। আনি সকল ধর্মাবলখীকেই

উদারভাবে গ্রহণ করিতে পারি। আমেরিকা দেশে "নৈতিক উরতি সভা" নামে একটা সভা চইয়াছে, তাচাতে আতিক নাত্তিক উভয়কেই প্রহণ করা হয়, কারণ কুঁছেরো ধর্মবিখালের প্রতি উদাসীন। ধর্মবিখাস যাচাদের অত্তরে প্রবল, এবং ধর্মসাধন ও ধর্মপ্রচারার্থই বাঁহাদের চেষ্টা উচ্চাদের উদারতা এইরূপ উদাসীনতা সম্ভূত উদারতা নহে। দিতীয়ত: এক প্রকার উদারতা আছে তাহা লোকরঞ্জন প্রবৃত্তি-সন্তৃত। হিন্দ্র নিকটে তাছাব মনের মত কথাটা বলিলে, তাচার প্রশংসা পাওরা যার, মুদলমানের নিক্ট তাহার বিখাদের অহুরূপ কথা গুলি বলিলে—সে প্রীত হয় অতএব তাহাই কর। আহ্মধর্মে ত এমন কথা অনেক রহিয়াছে, যাহার সহিত কাহার ও বিবোধ ৰাট, সেইরূপ কথাগুলি বল না কেন, তাঠা স্ক্রাদিসক্ষত इहेरव—সকলকেই প্রীত রাখা যাইবে। এ উদারতাও আমাদের আর্থেনীয় নছে। লোকবঞ্জন আমাদের উদ্দেশ্য নহে সভ্যের অমুসন্ত্রণ উদ্দেশ্য। তৃতীয়ত: এক প্রকার উদারতা ক্ষাছে বাহা ঈশবের ও ধর্মের জ্ঞানসভূত। ধর্মের মতৎ ও উচ্চভাব হৃদরে ধারণ করিলে, মাতুষ আবে ইছা মনে করিতে পারে ৰা, যে ঈশবের অমুপ্রাণনশক্তি কেবল এক দেশে বা এক জাতি মধ্যে বা এক ব্যক্তি মধ্যে বদ্ধ হইতে পারে। তিনি নানা ভাবে ও নানা ভানে নীলা করিয়াছেন ও সর্বাদা করিতেছেন। স্বীয় মণ্ডলীর মধ্যে তাঁচাব প্রকাশ দেখিয়া যেকপ আনন্দিত হটব, অক্তত্ত তাহার যে কিছু লীলা क्ष्मेंन कवित, जागाज्य भागामण गरेत। এनेक्स विन्नीर्ग মানব-ফাদরে ঈশ্বরের গীলা দশন চইতেও উদারতার উৎপাত 📭। চতুর্থত: এক প্রকার উদাবতা আছে তাহা প্রেমস্ভুত। বেখানে সর্লতা ও সাধুতা সেই থানেই হৃদ্যের অহরাগ ও ভক্তি শ্রদ্ধা ভাষাতে সম্প্রদায়ের বিচার নাই।

শেষেক্ত তুই প্রকার উদাবতাই ধর্মের অমুগত ইহাই
আমাদেব প্রাথনীর। বাঁহারা গণ্ডী গণ্ডী ধ্বনি তুলিয়া ব্রাহ্মসমাজকেও একটা বন্ধনরজ্জু বলিয়া অমুভব করিতেছেন
উচ্চাদের জানা উচিত যে ইহা বিধাতার বিধি এবং অপবিহার্যা।
এ আফারে ভগ্গ কর আকারাস্করে ফুটিবেই ফুটিবে। তবে যদি
ধ্রমবিখাস ও ধ্রমভাব মানব অস্কর হহতে বিলুপ্ত করিতে পার,
অথবা সন্ধ্যাদের ধ্রমকে প্রবৃত্তি করিতে পার, তাহা হইলে
সম্প্রদার বন্ধন হইতে নিস্কৃতি লাভ করিতে পার, নতুবা নহে।

#### ব্রাহ্ম পর্যাটকের পত্র।

আমাদের একজন আক্ষাবন্ধ্ কতিপর হিন্দু তীর্থস্থান পর্যা-টন করিতে যাইরা চিত্রকুটে ধালা দর্শন করিয়াছেন, ভালার বিবরণ নিয়ে প্রদিত্ত হইল। ইলা দেখিলে ঐ সকল ভীর্থবাসী সাধুদিগের ভাব আননক অবগত হওয়া যাইতে পারে।

#### চিত্রকৃট।

উত্তর পশ্চিম প্রাদেশের অন্তর্গত বান্দা জেলার করই বৈষ্ণব হইরাছেন) আছার করিতে কাহারও আ শিক একটা উপজেলা আছে, চিত্রকৃট সেই করইর অধীন। অক্ত জাতির হল্তে আহার করেন না।

এলাচাবাদ হইতে জবলপুর পর্যান্ত ইই ইণ্ডিরা রেলওরের বে লাইন গিরাছে, সেই লাইনের মধ্যবর্ত্তী মাণিকপুর নামক একটা টেশন হইতে আবার একটা লাইন ঝালী পর্যান্ত গিরাছে, করই সেই লাইনের অন্তর্গত একটা টেশন। করই হইডে চিত্রকুট ৪ মাইল দ্বে অবস্থিত !

চিত্রকৃট অভি প্রাচীন স্থান। এই স্থান অভি নির্জ্জন ও রমণার বলিরা প্রাচীন কাল হইতে অনেক সাধু প্রুষ এখানে এकाञ्चितिष्ठ, जाभनाभन देश्वेरमव्यात्र সেবাতে নিযুক্ত থাকিতেন; সেই জয়ত এই স্থান তপভূমি বলিয়া প্রাসিদ্ধ। রামায়ণে বর্ণনা আছে রামচন্দ্র পিতৃপত্য পাণন জভা বন ভ্রমণ কালে এই স্থানে কিছুদিন অবস্থিতি করিয়াছিলেন। ধর্মাত্মা চিন্দুগণ এই স্থান পুণ্যক্ষেত্র क्रिन चौकात शृक्षक प्रिंश शिक्षा थारकन। অত্যন্ত রমণীয়, প্রায় চ্ছুর্দিকে পাহাড়। ইগার মধ্যে মধ্য-श्रुरनद्र अक्री भाहार एवं भागतम निवा अक्री क्रूज ननी खन्-ছিত হইতেছে, স্থানীয় স্বাধিবাদিগণ এই নদীকে গলা বলিয়া অভিহিত করেন। এই নদীর অপর পারে একটা কুদ্র পাচা-ড়ের উপর চিত্রকৃট সহর অব্স্বিত। এই চিত্রকৃটে ছোট বড় প্রায় ৫০।৬০টী দেবালয় আছে, প্রায় স্কল দেবালয়েই রাম-সীতার মূর্ত্তি। এই সকল দেবালয়ের মহাস্তগণ 🕮 সম্প্রদায়ের বৈষ্ণব, মহাত্মা রামাসুজাচার্য্য এই বৈষ্ণব সম্প্র-मारतत कावर्कक। अभारत अहे रेवस्थव मच्छामात्र माधावणकः তুই ভাগে বিভক্ত। ১ম আচারী, ২য় সাধারণী এই বৈঞ্চবপ্ত প্রধানত: সাধু তুল্দী দাস কুত রামায়ণকে বিশেষভাবে মার করিয়া থাকেন।

১ম আচারীগণ। ইহারা দেবলেরে বাস কবেন ও রানগী ভাষ মূর্ত্তি পুনা কবেন। এই আচারিগণের মধ্যে আবার ছই শ্রেণী, ১ম গৃথী, ২য় বৈরাগী। গৃথিগণ স্ত্তী পুত্ত পবিবার লইয়া, ঠাকুর বাজীর মহাস্তর্কপে অবস্থিতি কবিয়া শিষ্যাদি কবিয়া থাকেন। ও রাজা রাজড়া প্রদত্ত যায়গীর ইত্যাদির দ্বাবা জীবিকা নিকাহে করেন। আর বৈবাণিগণ চিবকাল অবিবাহিত থাকিয়া কেবল ধন্মালোচনাতেই নিযুক্ত থাকেন।

এই বৈরাগিগণের দেবলেরে ত্রালোক বাস কবিতে পাবেন না। বৈরাগীদের আচার ব্যবহাব আতি স্কর; প্রার সকলেই প্রভাহ প্রাতে, মধ্যাক্তে ও অপবাক্তে ভিনবার স্নান করিয়া থাকেন, ডোর কৌপীন পরিধান করেন ও রামাত বৈষ্ণবর্গণের স্থার বিশেষ ভিলক ধাবণ করেন। ই হালের মধ্যে য হারার একটু বয়র তাঁহারা সর্কালা মালা জপ কবেন ও সাধাবণত: বৈকালে পরস্পর একত্রিত হইয়া শাস্ত্রালানা ও সংপ্রসক্ত কবিয়া থাকেন। ই হারা সকলেই দিন রাত্রিব মধ্যে মধ্যাক্ত কালে একবার আহার করেন। ই হালের মধ্যে আহাতিকেন পুর্ণ মাত্রার রহিয়াছে, আহ্বাল বৈষ্ণবের হত্তে অর্থাৎ (পুর্বের জাভিত্তে আহ্বাণ ছিলেন এক্ষণে বৈষ্ণব হইয়াছেন) আহার করিতে কাহারও আপত্রে নাই কিছ আছার হুলের না। যেন্থানে রাহ্বাল

বৈরাগী না পাওরা যায় সেহলে নিজে নিজে পাক করিয়া আহার করেন। ইহারাও অনেক শিষা সেবক করেন এবং মালা রাজড়া প্রাদত্ত যায়গীরও জ্লাধিক পরিমাণে ইঁহাদের সকলেরই আছে।

২য়। সাধারণীগণের স্নানালার ঐ রূপই, ভবে তাঁলারা জ্বাতি-ভেদ স্বীকাব করেন না। এই জ্বাভিভেদ অস্বীকার করার একটু বিশেষত্ব আছে, তালা এই, ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্র ও শৃদ্ধ এই চারি জ্বাতির হল্ডে ইঁলারা ভূমালার করেন। কিন্তু তালা ছাড়া খৃষ্টান, মুসলমান কি ইতর লোকের হল্ডে আলার করেননা।

ইগারা দেবালয়বাসী নহেন। চিত্রকৃট দহর হইতে প্রার দেও মাইল দ্রে জানকী কুগু নামক একটি অতি নির্জ্জন স্থান আছে। (এই স্থান বন্দেল থণ্ডের রাজ্ঞার অধীন) সেই স্থানের পর্বতের পাদদেশে স্থানীয় গঙ্গা কুল কুল ধ্বনি করিতে করিতে প্রবাহিত হইতেছে, তাহারই নিকট ক্রকগুলি পর্বত গুহা, সেই গুহাব মধ্যে এই সমস্ত সাধুগণ বাস কবিয়া নির্জ্জনে আপনাপন অভীষ্ট দেবতাব সাধন ভজনে নিযুক্ত আছেন।ই হাদের মধ্যে কেহ কেহ চীর কুমার ও কেহ কেহ গৃহত্যাগী।

এই স্থানের প্রাকৃতিক দৃশ্য অতি মনোহর। প্রহা প্রবির সম্মুখে নদী ও তৎপরে বৃহ্ণবাদী পরিপূর্ণ পাহাড়। এই সমস্ত পাহাডে নানা শ্রেণীর পক্ষী সর্বাদাই বিহার করিতেছে; বিশেষতঃ মধ্র মধ্বীগণের কেকারবে সর্বাদাই একটী অপূর্ব মাধ্যা ভাষ মনে জাগ্রত হয়। ঈশ্বর কৃপার আমি এইরপ একটী প্রহাতে করেক দিন বাস করিয়াছিলাম।

এই সমস্ত গৃহত্যাগী গুহাবাদী বামোপাদক বৈষ্ণবগণেব চরিত্র অতি স্থলর ইহাদের ভগবানে বিখাস ও জীবে দয়া (मिथिया व्यामि वाक्टरीं बहेगाहि। व्यामि (य खंबाटिक हिनाम, সেই গুহাটীতে অন্ত হুইটা সাধু আছেন। একদিন রাজে অতান্ত ঝড বৃষ্টি হয় ভাগতে আমার অতান্ত শীত করিতে থাকে, কিন্তু আমার নিকট কম্বল বা গাত্র বস্ত্র কিছু না পাকায় শীত নিবাবণের কোন উপায় ছিল না। ইহা জানিয়া উক্ত সাধু বরের মধ্যে রামজী দাস নামক একটী সাধু, আপনার নিজের গাতের লুইথানি আমার গাতের উপর ফেলিয়া দিয়া হিন্দি ভাষার বলিলেন যে "স্ক্লে একথানি গ্রম কাপ্ড রাথার প্রয়েজন, তুমি এই থানি কাচাকেও দিও ন।"। আমি বলিলাম "আপনি আমাকে নিজের গাত্রের কাপড থানি দিলেন, আপনার কি হইবে ?" প্রভ্যান্তরে তিনি কহিলেন যে "তোমার ছংগ দেখিয়া সীতাপতি তোমাকে এই কাপড দিলেন, আমি मि नारे। आमारक आवाद भौजाशांक मिरेट्स मिरवन, रेहाटक कृषि किছू मत्न कत्रि अ ना।"

ইহাদের সহিত প্রায় প্রতিদিন বৈকালে ধর্মালোচনা হইত।
এখানকার বর্ত্তমান সাধ্গণের মধ্যে সর্ব্ব প্রধান সাধুর নাম রামা
বাবা। তাঁহার সহিত বিশেষ ভাবে শাল্পালোচনা ও সাকার
নিরাকার ইত্যাদি বিষয় লইয়া বিচার হইত। তিনি আমাকে
খুব ভাল বাসিতেন। কিন্তু আমাকে তাঁহাদের পানীয় জল
ইত্যাদি স্পর্ক করিতে দিতেন না। আমি হাড়ি মেথরের

আরও খাইতে পারি বলিয়। উাহারা আমার ম্পশ দ্রুলা ভোজন করিতে ইচ্চুক নহেন। একদিন একটা বাবালী আমাকে ভোজনের নিমন্ত্রণ করেন, ভালার পর রামা বাবার নিকট বথন ভানিলেন যে আমি হাড়ি মেধরেবও অল গাইতে পাবি, তথন বাবালী নিমন্ত্রণ ফিরাইয়া লইয়া বলিলেন যে, এইরূপ হাড়ি মেণরের অল যাহারা ধার তাহাদিগকে নিমন্ত্রণ করিতে পারি না।

এই সমস্ত গুচাবাসী সাধুগণের মধ্যে একটা শুহার একজন অবৈত্বাদী সাধুপাকেন, তাঁহাব নাম কৃশাল নাথ। তিনি উলঙ্গ থাকেন, কাহারও সহিত কথা কহেন না, বিশেষ আবশ্যক হইলে শ্লেটে হিন্দি ভাষার লিখিয়া দেন। তাঁহার সহিত আমার এইরূপে কিছু কথাবার্তা হয়। তিনি প্রশ্ন কবিলেন "তুমি কে ?" আমি উত্তর করিলাম "আমি অতি দীন মনুষ্য।" তাহাতে তিনি বলিলেন যে "আপনাব এখনও দিবা জ্ঞান হয় নাই" পরে প্রশ্নোত্তবে জ্ঞানিলাম যে "আমি সেই পরমাত্মা"— এইকপ জ্ঞান না হইলে অঞ্চ জ্ঞানকে দিবা জ্ঞান বলিয়া তিনি মনে করেন না। তাঁহার সাধনের বিষয় কি জিল্ঞাসায় তিনি বলিয়াছিলেন যে, "আত্মার প্রমাত্মার এক বলিয়া চিন্তন করাই আমার সাধ্ন।"

ইগাদেব আহাবাদি, <mark>১৯</mark>রি প্রকার নিয়মে উপার্জিড়ত हत्र। ১ম, বাঁহাদের অজ্লাই ব্লেছামার পাহারও নিকট কিছু চাচেন না ও আচার্ত্র জ্ঞান অদ্যাপি কেইতে বাহির হটলা কোণাও যান না, ৰ প্ৰতি বিশেষ প্ৰীতিও স্বাভাবিদ তাচাই ভূপ্তি পূর্বক আছার করেন। বৈর, মাধুকুবি অর্থাৎ মধ্যাক সমরে গৃহত্তদের বাড়ী ও দেবালয় ইত্যাদি ভানে যাইয়া কটা ভিকা করিয়া আনেন এবং ভাচাই আচার করেন। ৩য়, চুট্কি অর্থাৎ প্রাত্তে ৮৷১ ঘটকাব সময় গৃহস্তদেব বাড়ী বাড়ী যাইয়া ময়দ। ভিক্ষা করিয়া আনেন ও তাহাই স্বহস্তে পাক করিয়া আচার করেন। ৪র্থ শ্রেণীর সাধুরা উক্ত তিন প্রকারের কিছুই করেন না, কোন কোন স্থানে তাঁহাদের বু'ত্ত আছে তাঁহাবা তাহাই ও সাধারণের প্রাণ্ড व्यर्थ बाता थाना जनानि ज्ञत्र कतिया व्यवस्थ भाक कतिया এই সমস্ত সাধুগণের মধ্যে কেচ্ই শিষ্য ভোজন করেন। সেবক করেন না। কেচ জিজামু চটরা উপস্থিত চইলে ইহারা ভালার স্হিত ধর্মালোচনা করেন ও ধর্মোপদেশ দিরা নিকট শুনিলাম थारकन। हैगाएत এথানে যমুনা নামক একটা সাধু ছিলেন যিনি এ৬ বৎসর প্রলোক্যাসী হুইয়াছেন, তাঁহাকে সক্ষেই সিদ্ধ পুরুষ বলিরা জানিতেন। লোকে তাঁহাকে বিরক্ত করিত বলিয়া তিনি কয়েকটি কুকুর পুষিয়। ছিলেন, তাঁছার গুছার নিকট काशांक व याहेर ज प्रिथा जिनि त्रहे कुकुत श्वनित्क লেলাইয়া দিতেন, কোন ব্যক্তি সেট কুকুরদের বাধা অতিক্রম করিয়া তাঁচার নিকট উপশ্বিত চইতে পারিলে তবে তিনি তাহার সহিত ধর্মালোচনা করিতেন ও ধর্মোপদেশ দিতেন।

এই সাধারণী বৈষ্ণবগণের মধ্যে কাছাকেও মৃত্তি পূজা

করিতে দেখি নাই। মুর্তি পূজার কথা জিজ্ঞাসা করিলে কলিতেন যে আমরা নিজেরা মুর্তি পূজা কবি না ও ডালার আবেশুকও নাই; তবে দেবালরে বাইরা মুর্তির নিকট অক্তদের স্থার প্রথামাদি করিয়া থাকি। ভগবানের নাম জপ করাই আমা-দের প্রধান দাধন। কিন্তু রাম অবভারে ইলাদের দৃঢ় বিশাস আছে। ইলাদের মধ্যে শাস্ত্রজ্ঞ ও জ্ঞানী ব্যক্তিরা বেদ বেদাভা প্রভৃতি পাঠ করিয়া থাকেন।

এখান চইতে ১৬ মাইল দূবে অনস্বা নামক এক পাছাড়ে
অত্তীমুনির আশ্রম নামে একটী স্থান আছে, সেধানেও ২০১ জন
সাধু থাকেন। এই সমস্ত স্থান নির্জ্জন সাধনের বিশেষ
উপযোগী বলিয়া স্থানে স্থানে অনেক সাধু বাস করেন।
ছর্ভাগাক্রমে সকলের সহিত আমার আলাপ করিবার স্থবিধা
হয় নাই, ভগবানের কুপার আমি এখানে ১৫ দিন বাস করিয়া
ছিলাম। আমার নিকট অর্থ সম্বলন। থাকায় আমি প্রভাহ
মধ্যাক্ষ সম র চিত্রকৃটে যাইয়া এক এক দিন এক এক দেবালয়ে
অতিথি হহতাম ও ডাল কটী পাইয়া সম্ভোষের সহিত আহার
করিতাম, এখানে এত বাঁদের যে পাছে খাদ্য দ্রবা কাডিয়া
লইয়া পলায়, সে জনা আমার আহাবের সময় একজন লোক
লাঠি হত্তে পাহারা দিত। এইকপে এই স্থানে ভগবানের
আশের ক্রপা উপভোগ করিয়া স্থানান্তবে যাই।

## প্রেরিত পত্র।

( পত্র প্রেরকদিগের মতামতের জল্প সম্পাদক দায়ী নছেন, কিখা কাচাবও পত্র ফেবত দিতে বাধা নহেন )

মাক্তবর শ্রীয়ক ভর্কোমুদী সম্পাদক মহাশয় সমীপেযু — স্বিনয় নিবেদন।

মণাশার, আমার যে পতা গ্ড ১লা আখিনের তত্তকৌ মুদীতে প্রকাশিত চইরাছিল, তাচার অনুপ্রক স্থান এই প্রথানা পাঠাইতেছি, অনুগ্রহপৃশাক ১৬ই আখিনের তত্তকৌ মুদীতে প্রকাশ কবিরা গাধিত করিবেন।

উপনিষদের প্রত্যেক অধ্যারের শেষে যেকপ "ওঁ শান্তিঃ ছিরি ওঁ" আছে, ভক্তিভাজন শ্রীমন্মহর্ষি দেনেজনাথ ঠাকুর মহাশয়ের প্রণীত উপাসনা পদ্ধতিতেও সেই প্রণালী অবলাম্বত ইরা বর্ত্তমান কাল পর্যান্ত প্রচলিত হইরা আসিমাছে। কালে ভারতবর্ষীর ব্রাহ্মসমাজ সংস্থাপিত হইলে উক্ত সমাজেব উপাসনা পদ্ধতিতে "ওঁ" এবং "হরি" শব্দ পরিত্যক্ত হয়। এই গ্রিত্যাগের অস্ত কিছু অর্থ ই বৃত্তি না। উক্ত সমাজের প্রথম মুক্তিত "ব্রাহ্মসমাজের ইতিহাসে" উল্লেখ আছে,—"যে সকল নাম ইরান্ত "ব্রাহ্মসমাজের ইতিহাসে" উল্লেখ আছে,—"যে সকল নাম ইরান্ত গ্রাহ্মসমাজের ইতিহাসে" এই পাক্র প্রতি আরো-পিত হইরাছে ভাষা ব্রহ্ম প্রতিপাদক শব্দরগে ব্যবহার নিবিদ্ধ।" এই জন্তুই যে "ওঁ" এবং "হরি" শব্দ পরিত্যক্ত হইরাছিল ভাষা উল্লেখিত বাক্য ম্বারাই বুঝা যার। অধুনা উক্ত সমাজ বে তাঁছাদের প্রতিষ্ঠিত নিরম ভঙ্গ করিরা চলিয়া-ছেন ভাছা সকলেরই বিদিত, আমরা তৎসম্বন্ধে কিছু বলিতে

চাই না। আমাদের বক্তবা কেবল স্থাবরণ প্রাক্ষণমাজ সহদ্ধ।
সাধারণ প্রাক্ষণমাজ যে উপাসনা ও সঙ্গীতাদিতে "০ির" নাম
ব্যবহার করিতে পারেন না,তালা জনৈক প্রাক্ষের পত্রেই যথাযথ
ক্রেপে আলোচিত চইরাছে। কিন্তু এইকণ যে, সাধানণ প্রাক্ষণ
সমাজের সংগীতাদিতে "০িরি" শব্দের এত ছড়াছড়ি তালার
কারণ কি ? এ সকল বিষয় যতই ভাবা যায়, যতই মূল অন্থসন্ধান করা যায়, ততই দৃঢভরক্রপে ধারণা হয় যে,ইলা আমাদের
বংশাহুগত দোষ। বাস্তবিকই ইলা বংশগত দোষ গুণেব স্থার
আমাদের ভিতরে অনুপ্রবিট হল্যা রহিয়াছে, স্থ্রিধা পাইলেই
প্রকাশ হইরা পড়ে। ইলা ভির আর কোনও কারণ দৃষ্ট হয়
না।

অনেক দিন চটল আমার অভীব প্রক্রের কোন বন্ধু আমাকে বলিরাছিলেন "চল্রমোচন, সন্দেশ থাইতে থাইতে ঘালাদের রসনা উলার রসে বিভোর চইয়া গিয়াছে, ভালারা যেমন মিঠাইরের দোকানের নিকট দিয়া গমন করিলে স্বভঃই ভাচাদের জিহবা রুদাইরা উঠে, ভেমনই আমাদেব হৃদের একবার খভাবসিদ্ধ কোন ইচ্ছা, আবেগ বাভাব দ্বাৰা বিক্লুত চইলে, অন্ত দিকে হাজার দুঢ়ভা পাকিলেও যথনই সেই প্রলোভনের স্থােগ পার তথনই ভাহাতে প্রাণ না ঢালিয়া থাকিতে পারে না। তথন অন্ত সকল দিক দেখিবার ও বিবেচনা করিবার শক্তি বা ইচ্ছা থাকে না, আত্মদমনও অসম্ভব হটয়া পড়ে এবং গেই প্রলোভনের মাদকতা সকল জ্ঞান ও দুচতা ডুবাইরা ভাগতেই বিভোব করে।" এই স্থলে এই কথা প্রচণ করিলে বোধ হয় অন্তায় হইবে না। কেন না দেখিতে পাইতেছি যাত্রা এক সময় নিজ জ্ঞান বিবেচনা এবং বিশ্বাস আমসুসারে দোষাবছ বলিণা প্ৰিত্যাগ কবি, তাহাই আবার ভাবে প্ভিয়া গ্ৰহণ করিয়া থাকি। নতুবা আমবা নিজকে আহ্ন, সমাঞ্চকে वाकाममाक, धर्मा क वाका धर्मा विषय अठात कविया, धीरव धीरत वक्रमान देवस्थत मस्स्मिनारम्य देववात्रा धर्मा व्यवतावहारव काम "হরি" শব্দ ব্যবহার কবিয়া লোকেব মনে ত্রাহ্মধর্ম সম্বস্থ ঘুণা এবং দ্বৈধ ভাব জনাট্যা দিতেছি কেন ? সেই জন্মট বুলিভে-किनाम देश वः भग्छ (नाव श्वाप्तव क्वाप वास्त्र, माः म, धवः ক্লায়ে এরূপ ক্রডিত কটয়া গিয়াছে যে উচা চাডিযাও ছাড়িছে পারি না। যে প্রাচীন সম্প্রদারের স্ভিত ধর্মাদি সম্বন্ধে সম্ভাব না পাকায় তাঁচাদিগের হটতে খতন্ত চইনা পডিয়াচি ভাঁচাবাও তাঁছাদের উপাশু দেবতাকে হৃদয়ের গভীর ভাবব্যঞ্জক স্থোত্রাদি ছারা অর্চনা করিবার সম্ব "এক্ষ" নামে প্রকাশনা করিয়া পারেন না। এই "অহ্ন" নাম এমনই মহান্। এমন হাদয়গাতী সুমধুর মহান ব্রহ্মনাম কেন যে প্রাণে ভাব উদ্রেক করিতে সক্ষম হইবেনা বুঝিনা। একটা কথা জিজ্ঞাসা করি ভক্তি. নামে না অন্ত কিছুর উপর নির্ভর করে? অবশ্র স্কলেই মুক্তকটে বলিতে বাধ্য চইবেন যে ভক্তি প্রাধানত: খুণ এ দর্শনের উপর নির্ভর করে। যথন দর্শন হয় অথবা প্রাণে উপলব্ধি চয় তথনই ভাব ও ভক্তি চয়। বিখাসেও (Believe) মনে যে ভাবের উদয় নাহয় এমন বলিতে পারি না, কিন্তু যে পর্যান্ত প্রেক্সত বিশ্বাস (Faith) না হর সে পর্যান্ত প্রেক্সত ভাব,

ভক্তি হয় না। যে ভাব-ভক্তি-প্রভাবে চিয়দিন পঞ্জি। থাকিতে পারি না ডাহার কোন প্রয়োজন নাই।

নামের মধ্যে বিশেব কিছু মধুরতা আছে বলিরা আমার তেমন মনে হয় না। "হরি", "কালী", প্রভৃতি যেমন "ব্রহ্ম"ও ভেমন। তবে বিশ্বজনীন নাম গ্রাহণ্ট স্থুসঞ্চত। কোন নামেই মাদকতা নাই। কেন না যে মদাপানে লোক উচ্ছন্ন যাইতেছে সেই "হুরা" নামেরও তাশা নাই, যদি থাকিভ তবে লোকে ধনে প্রাণে মারা ঘাইত না। অভএব নামের কোন গুণ নাই हेहा चौकारा। जर्द "हरि" नाम निष्ठ वाक्षा कि, हेहा বিচার্য্য। উহার বিচারের আবশ্রকতা নাই। কেন না আমরা বাঁহার উপাসক, যিনি আমাদের উপাশ্ত দেবভা, তাঁহার নাষে নিজকে, সমাজকে, এবং ধর্মকে জগতে প্রকাশ করিয়াছি ষ্মতএব ষ্মন্ত নামেব প্রহোজন কবে না। বিশেষতঃ ব্রাহ্মধর্ম বিশ্বজনীন ধর্ম ইছা অন্ত নামে অভিবাক্ত ছওয়া উচিত নয়। "হবি" প্রভৃতি নাম বিশ্বজনীন ধর্মে প্রচারিত হটতে পারে না। এদেশবাসী জাতি মাত্রেই জানে যে विन्तुगर्ग "कुछ", "विकू", ''ৈটেডক্স", এই তিনকেই ''চরি" নামে প্রচার করিয়াছেন। একদা একজন শিক্ষিত ভক্ত বৈষ্ণবকে একজন হরিনাম ভক্ত ব্রাহ্ম কিজ্ঞাস৷ করিরাছিলেন "মহাশয় 'হরি" ও "ক্রফ্র" ভিন্ন কি না ?" ভছততে তিনি ভাবের সহিত বলিলেন ''না ভাহা কখনট নছে যেট হরি, সেই ক্ষণ্ড সেই আমার চৈত্তু 'ব্রাহ্ম তত্ত্বে আবার 'ব্রহ্ম" ও "চরি" এক বলাতে ভক্ত উচিার সঙ্গে আর আলাপ করা দূরে থাকুক স্থান পরি ভ্যাগের উদ্যোগ क्रिया कैं। निया (क्रांतालन। এই ভरू देवस्वत्त्र ভक्तित्र महत्वक्र। ও নিষ্ঠার গভীরতা অমুভব কবিয়া পরে কি কেচ বলিতে পারিবেন লোকে "ত্রহ্ম" ও "হবি" এক বলিয়া বিখাদ করে 🕈 ব্রাহ্মসমাজ পূর্ববিধি স্বীকার করিয়া আসিতেছেন যে, যে সকল माम कान (पन (पनी कि व्यवভात व्यादाश कहा बहेबाइ সেই সকল নাম আহ্মসমাজে বিজ্ঞাপত হটবে না এবং সেই নামে উপাসনাদি চহবে না এমত হলে "হরি" নাম ব্রহ্মসমাজে 'ব্রহ্ম" রূপে গ্রহণ করা কোনকপে স্থায়-সঙ্গত মনে করি না। কেচ কেচবলেন "চরি" "ব্রেছার" নামান্তর। মানিলাম নামান্তর ভাগতে কি লাভ হটল ? (मर्ग यथन अक्क अर्थ ठावक्क, कथन श्रास्त्रक्र कि ? अभव কেছ কেছ বলেন ছবির প্রতিমৃত্তি নাহ,ভাগাই বা কেমন ক্বিয়া বলিব ় বিষ্ণুর যথন প্রতিমৃত্তি আছে তখন হরিরও প্রতিমৃত্তি আছে। "বাসবদ্ত।" নামক পুশুকে "ভিরণানপর ও ভরিভর क्रिश मर्भन" এট প্রস্থাব পাঠ করিলে মৃত্তি আছে कि ना अपना শ্রীমন্তাগবতে "ভরি" শব্দে কাহাকে উল্লেখ করিয়াছেন তাহ। পাঠ कदिल मकलाहे कानिए भादित्व। এवः आमि त्वाध कदि সকলেই ইচা জানেন। অণর কেচ কেচ ব্লিয়া পাকেন "চ্রি" নামটা সিদ্ধ চইয়াছে "কালী" "গুৰ্গ।" নামটাও ড সিদ্ধ কিন্তু "আল্লা" নামটা কি সিদ্ধ নতে ? বরং "আলা" নামে কোনরূপ পৌত্তলিক ভাব নাই কেবল ভাব। অভারপ। ভবে ছ্রিনাম ভজেরা "আলা" নাম তেমন ভাবে গ্রহণ করেন না কেন ? ইহার জন্তই বলিতে হইতেছে ইহা আনাদের মক্জাগত ও বংশাসুগত ভাব।

রিশক্ষনীন ধর্ম সংকীর্ণভার আনা কর্ত্তব্য নতে এবং আমি
আজীব হংথের সহিত প্রকাশ করিতেছি যে এই "চরি" নামের
বাহুল্যভাই ব্রাক্ষধর্মের মছর গতির অন্ততম কারণ। প্রাচীনেরা
নব্যদিগকে সম্বোধন করিয়। বলিয়া থাকেন যে "দেখ ব্রাহ্মদের
রক্তের তেজ যেই পড়িয়া আসিতেছে এবং যেই ধর্মের দিকে
টান পড়িভেছে অমনি "চরি" ভিন্ন গতি দেখিভেছে না।
অতএব ভোমবা সাবধান হও। দেখিবে করেক দিন পরে
কালী" "চুর্গা" ও কাছবে এবং প্রতি মৃত্তিও নির্মাণ কৰিবে।"

তাই প্রাক্ষধর্মান্থনাগী এবং এই মহান্ধর্মের মহন্ত ও প্রিক্তা রক্ষণে বছুশীল মহোদরগণকে সাম্থনিয়ে বলিভেছি আপনারা সময় থাকিতে হরি নামরূপ প্রাচীন ধর্মের আববণ হুইতে প্রিয়তম স্থমহান্ প্রাক্ষধর্মকে রক্ষা করুন এবং এই রক্ষার জন্ত বন্ধপরিকর হউন নতুবা কিছুকাল পরে অভ্যান্ত একেশ্বর্বাদের ভায়ে ইহাও "হরি" নামরূপ মহা আবর্তে পডিরা হিন্দু-সমাজের কুক্ষিগত হুইরে। এখনও সময় আছে। সময় পাকিতে জাগ্রত হউন, উত্থান করুন, পডিয়া থাকিবার সময় নাই। বাহার যত টুকু শক্তি আছে তাহা ব্যবহার করিতে কেহ নিশেচই থাকিবেন না।

গ্রাহ্মণলী মন্নমনসিংছ ।
ত্রীচন্ত্রমোচন বিখাস।
১২ই আখিন ১৩০০

শ্রদাশদ

শ্রীযুক্ত তত্ত্তে মুদী পাত্রকার সম্পাদক
মহাশয় শ্রদ্ধাম্পাদেরু—

महाभाग ।

আমার এই পত্র থানি ভত্তকৌমুদী পত্রিকায় প্রকাশ করিলে: অফুগ্ঠীত হইব।

(कान निरम्थ काद्राण **काल कान उ**क्कामशास्त्र छक्रनाम ख मधावर्किवाम महेवा विरामय चारमानन वकराउर । ७ जब्ब शास ন্তানে সভা সমিতিও হইতেছে। কিন্তু যেরপ ভাবে ইছার আন্দোলন হটতেছে, তাহাতে এই গুক্তর বিষয়ের মীমাংসা ছওয়। দূরে পাকুক বরং আরও আনত হইবার সম্ভাবনা। আমার বিবেচনায় উক্ত গুরুতর বিষয়ের এইরূপ ভাবে আন্দোলন না চটবা উচার মধ্যে কিছু সভা আছে কিনা ভাগাট ধীরভাবে বিচার করা উচিত। স্থপকে (যাঁচারা গুরু স্বীকার করেন না) ও বিপক্ষে ( যাঁচারা আক্ষমাঞ্চের সাধনপ্রণালীর অসম্পূর্ণতা অফুভব করিয়া প্রক এচণ করিয়াছেন,) যে সমস্ত যুক্তি ও অভিজ্ঞতার সাক্ষা দেখা যাইতেছে, ভাহাতে নিম্লিখিত তিন্টা বিষয় মীমাংগীত না চটলে, এট গোলযোগ মিটিবার সম্ভাবনা কম বলিয়া বোধ হয়। স্কুতরাং আমি ব্রাহ্মসাধারণের মনযোগ আকর্ষণ জন্য সেট জিনটা প্রাহ্ম নিমে লিথিতেছি, আশা করি ত্রাক্ষ মচোদয়গণ ধীরভাবে নিয়লিখিত তিন্টা বিষয় বিচার করিয়া দেখিবেন।

১ম প্রার্থ। আক্ষনমান্তের প্রচলিত সাধন প্রণালীর মধ্যে কিছু অসম্পূর্ণতা আছে কি না ? ২র প্রার্থ। ব্রাহ্মসমাজ কথনও অন্ত্রান্ত গুরু বীকার করেন না ও কবিতে প্রস্তুত্তও নচেন। কিন্তু এতদিন বেভাবে গুরু স্বীকার করিরা আসিয়াছেন, বর্ত্তমান সময়ে তাভার কিছু বাতিক্রম চইতেছে। এখন প্রায়া এই যে, ধর্ম রাজ্যে অগ্রগামী কোন অভিজ্ঞ ব্যক্তির নিকট [ব্যক্তি কেণ্ণ ভাচার কোন কথা চইতেছে না।] বিশেষ ভাবে ধর্ম শিক্ষা করা ব্যাহ্মধর্মের অনুমোদিত কি নাণ

তয় প্রশ্ন। যোগ শিক্ষাকারিগণ বলেন যে, ঈর্মার সকলের
মধ্যে সমভাবে বর্জমান থাকিয়া সকলকে আপনার দিকে
আকর্ষণ করিলেও, জনসাধারণ বিষয়মোচ ও কাম ক্রোধাদির
বশীভত চনয়া, একদূব আত্মবিস্মৃত ও বহিম্পীন চইয়া
পডিয়াচে যে ভাচাবা ভাঁচাকে দেখিতে পাওয়া দূবে থাকুক,
বে পথ অবলম্বন করিলে গাঁচাকে পাওয়া যায়, ভাচাব ভাচাবা
আবলম্বন করিতে পাবে না। স্মৃতরাং কোন একজন অভিজ্ঞ ব্যক্তি ভাঁচাব আত্মশক্তি ছারা বিষয়ী ব্যক্তিব বহিম্পীন
মনকে অন্তম্পীন করিয়া, ব্রহ্ম দর্শনের পথ খুলিয়া দিতে পাবেন।
ইচারই নাম শক্তি সঞ্চার। এরূপ শক্তি সঞ্চারের মধ্যে কোন
সভ্য আচে কি না প

একপে আক্ষ ভাতাদিগের নিকট বিনীত নিবেদন, তাঁচারা উক্ত তিনটা প্রশ্ন গভীব ভাবে বিবেচনা কবিরা উচাদের মধ্যে যদি কিছু সতা থাকে, তবে তাচা আক্ষদর্যের অঙ্গীভূত কবিরা শউন, নচেৎ হাজার হাজাব লোকে বহু বংসর ধরিরা উহার বিরুদ্ধে চীৎকার করিলেও বর্তমান গোলবোগ মীমাংসা হুটবে না। ইতি

**৮ই কা**রিক, ১৩০০ |

८गवक,

শ্ৰীসভাদশী।

#### বান্সসমাজ।

দনি—কণ্টীয়া নিশ্সী শ্রীযুক্ত বাবু হরনাথ ঘোষ মহাশয় ভদীর স্বৰ্গীয়া পত্নী শংকুমারী ঘোষের স্মৃতিচিক্ত স্বরূপ সাধাবণ ব্রাহ্মসমাজে ১০০ টাক। দান কবিয়াছেন। ঐ টাক। দারা শিরংকুমারী ফগু" নামে একটী ফগু স্থাপিত হইবে।

সভাসমিতি—গত ২৩এ অক্টোবর চইতে ২৬এ পর্যান্ত ৪ দিন ঢাকা নগরীতে পুরু বাঙ্গালা আক্ষদন্মিলনীর অধিবেশন হইয়া গিয়াছে।

বিগত ১২ই অক্টোবর বৃহক্ষাতিবার সন্ধ্যা ওটা ১৫ মিনিটের সমর সিটি কলেজ গৃতে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের অধ্যক্ষ সভাব ড়ঙীর বৈমাসিক অধিবেশন হটরাছিল। শ্রীযুক্ত বাবু আনন্দ মোচন বহু সভাপতির আসন গ্রহণ করেন। সভার অক্টান্ত কাথ্যের পর শ্রীযুক্ত বাবু চণ্ডীকিশোর কুশারী মহাশরের নিয়লিথিত প্রভাব উপস্থিত হয় যে "সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের উপাসনা, বক্তৃতা, সদীতাদিতে যেন "হরি" অধ্বা পৌত্রাক্তা স্চক অভ কোনও নাৰ ব্যবহার করা

না হয় এবং বেন সভীত ও অস্তান্ত পৃত্তকের নৃতন সংস্করণে ঐ সকল নাম বাদ দেওরা হয়"। শ্রীবৃক্ত বাবু শরচেক্ত রার তাঁহার প্রতাবের অমুমোলন করেন।

শীবৃক্ত বাবু তেরষচক্র মৈত্র এই প্রক্তাবের সংখোধন করিয়া প্রভাব করেন বে বাবু চন্ডীকিশোর কুশারী মহাশরের প্রক্তাব এবং এতদ্ বিষয়ক জন্যান্য পত্রাদি কার্য্যনির্বাচক সভার প্রেরিত কউক, তৎপরে তাঁহারা বিবেচনা করতঃ যাহা কর্ত্তন্য মনে করেন, তাহা জাধ্যক্ষ সভাকে জানাইবেন। প্রীয়ক্ত বাবু শরচক্র রায় এই প্রস্তাবের সহিত একমত হইরা পূর্বপ্রস্তাবের স্মর্থন পরিহার ক্রেন এবং এই প্রস্তাবের স্মর্থন করেন।

তৎপরে সভা ভঙ্গ হয়।

মৃত্যু—শ্রীযুক্ত বাবু নিবারণচন্ত্র রার লিখিরাছেন কাঁথি নিবাসী বাবু চরিপ্রাসাদ দেব সরকার আরে ইচলোকে নাই। তিনি সাধারণ আক্ষসমাজের একজন উৎসাহী সভ্য চিলেন। উচোর মৃত্যুতে ভানীর আক্ষসমাজ একজন উদ্যম-শীল ব্যক্তিকে চারাইলেন। চরিপ্রসাদ বাবু ৬৭ মাস চইতে বৃত্যুত্র রোগগ্রস্থ চইরাছিলেন। গত ১২ই অক্টোবর উচোর মৃত্যু চইরাছে। প্রমেশ্বর তাঁচার আত্মাকে শাস্তিতে রক্ষা কর্মন।

দীক্ষা—— মাজ্রাজ হইতে অত্তা ত্রাক্ষণমাজ্ঞের সম্পাদক মহালয় বিণিয়াছেন:—

শগত >লা অক্টোবর রবিবার সন্ধ্যা সার্দ্ধ ছর ঘটিকার সময়

থানীর ব্রন্ধোপাসনা মান্দরে প্রীবৃক্ত এল্ স্থ্রহ্মণ্যম্ আরার
ব্রাহ্মধর্মে দীক্ষিত চইয়াছেন। ইনি এখানকার প্রান কলেকোব সিনীয়র বি. এ. ক্লাসে অধ্যয়ন করেন। এডতুপলক্ষে
ব্রহ্মোপাসনা চইয়াছিল। শ্রীযুক্ত এম্, আর, ভেরুটো রক্মম্
নয়াত গাক এম্, এ, মহাশর আচায়োর কার্য্য করেন। ভদীর

অগ্রিময় উপদেশ বাক্য প্রবণ করিয়া শ্রোত্বর্গ প্রোৎসাহিত

চইয়াছিলেন এবং নব দীক্ষিত লাভার অন্তরে ব্রাহ্মধর্মের সভ্য
সকল স্তুদ্ধ কপে মুদ্ভিত চ্ইয়াছেল। ক্রমার এই ধর্মাওলীকৈ

আশীকাদ কর্মন এবং ভাবত মাভাব শ্রেষ্ঠ সন্ধান মহান্মা
রাজা রামমোহন রারের প্রচারিত পরম ধর্ম অবলম্বন করিবার

জন্য লোকের চিত্তকে আকর্ষণ কর্মন লে

বিবাহ—গভ তরা অক্টোবর কলিকাতা নিবাসী প্রীযুক্ত, বাবু কেমচন্দ্র দাদের কন্যা শ্রীমতী গিরিবালা দাদের সঙ্গুত্ত শ্রীচট্ট নিবাসী বাবু প্রভুলচন্দ্র সোমের বিবাহ ব্রাহ্ম-পদ্ধতি অফুসারে নিম্পার হুইরাছে। প্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শালী আচার্য্যের কার্য্য করেন। ৩ আইন অফুসারে এই বিবাহ রেজেন্টারী করা হয়। পাত্রের বর্দ ২৭ বৎসর এবং কন্যায় বন্ধস ১৭ বৎসর।

গত 
ই কার্তিক শনিবার আমাদের ঢাকাছ বহু

ত্রীযুক্ত বাবু নবকাত চট্টোপাধ্যারের বিতীরা কঞা জীমতী

স্থানা দেবীর সহিত শিলং প্রবাসী জীয়ুক্তবাবু হরকিশোর

কুডজভার সভিত খীকার করা বাইভেচে যে বিক্মপুৰেব

শর্মার বিবাহ পূর্ক্রাকালা ব্রাক্ষসমাক্ষ গৃহে সম্পন্ন চইয়া পিরাছে। বিবাহ সভাতে স্থানীর ব্রাক্ষণণ এবং ঢাকার কভিপর গণা মাল লোক উপন্থিত ছিলেন। বাবু চণ্ডী-কিশোর কুলারি এবং বাবু নীলমণি চক্রন্থর্তী দাবা বিবাহের কার্য্য সম্পন্ন চইয়াছিল। শিলংভ বাবু নিবনাথ দত্ত বর ক্ষাকে উপদেশ দিয়াছিলেন। উপদেশটী অতি হৃদর্গ্রাহী চইয়াছিল। পূর্ক্রাক্ষলা ব্রাক্ষসমাক্ষ গৃহে এই সর্ব্ব প্রথম ক্লাক্ষ্যিক কার্য্য কবেন। বরুস ২৭ বংসর। কল্পার বয়স ২১ বংসর। ১৮৭২ সনের তিন আইন অমুসারে এই বিবাহ রেছেইবি চইয়াছে।

গত ১৪ট কার্দ্ধিক, সোমবার কর্ণপ্রাণিস ট্রীটন্ত ১০।৩ নং ভবনে একটা ব্রাহ্মবিবাহ হটরা গিরাছে। পাত্র শ্রীযুক্ত বাব্ দীভানাপ দত্ত নিপদ্ধীক, বরুদ ৩৭ বৎসর। পাত্রী, শ্রীযুক্ত নধুরানাপ মুখোপাধ্যাশের মধামা কনা। কুমাবী শ্রীমতী কাদাখনী মুখোপাধ্যায়, বযুদ ২০ বৎসব। পণ্ডিত শিবনাপ শান্ত্রী মহাশব আচার্যোব কার্যা করেন। এই বিবাহ ১৮৭০ সালের ৩ আটন অনুসাবে বেক্লেষ্টাবী করা হয়।

পীড়া— আমাদিগের লাক্ষ্ণ নিনাসী প্রচারক প্রীযুক্ত ভাই ।

ভাষমন প্রসাদ আনেক দিন হুইন্ডে জব বোগে কই পাইডে ই ।

ভিলেন। তিনি প্রার ২০ দিন সংজ্ঞাহীন ছিলেন এখন ব আর জব হর না বটে, কিছু তিনি এহাদুশ তুর্বল হুইরাছেন যে প্রায় কুই মাস শ্যাগেত গাকিতে হুইবে। নানা ভান হুইতে তাঁহাব বন্ধুগণ পত্র লিখিয়াছন। কিছু তিনি এখন ব সে সকলের উত্তর দিতে অসমর্থ। বন্ধুগণ তাঁহার জন্য ই প্রার্থনা করন।

শ্রীয়ক্ত বাব সীতানাগ দত্ত আনক দিনেব প্রিশ্রামর প্র ইন্লাকেন, কঠ প্রালু, মুণ্ডক, ও মাঞ্কা এই কাষক-খানি উপনিষদ টীকা ও অফুবাদ সহিত মুদ্রিত করি- 🤈 য়াছেন। এট কার্যাটী তিনি অতিশয় নিঠার স্তিত সুস্পাদ্ন কবিরাছেন। যে দিন পুস্তকথানি বাহিব হয় সে দিন । owne विक वाक्रवरक कडेबा विस्मय केशात्रना कवियां कितन। রভা ভুনিরা আমবা প্রীত চইরাছি। কাবণ ব্রহ্মনিষ্ঠ গৃতস্ত যে কাৰ্য্যট করুন ভাচা প্রব্রহ্মের নামে উংস্প ক্রা ক ইবির। আমাদের যতদূর সাবণ আনচে, আমোদের পরলোক গত াদ্ধ জগদীখর গুপু মহাশ্য ও তাঁহাব প্রাণীত চৈত্রচবিত যে উ 'য়ন শেষ করেন, সে দিন বিশেষ উপাসনা কবিয়াছিলেন। ব বৃদ্ধি প্রস্তুক্রেদিশের এইরূপই কর্ত্ত্রা। সীভানাণ বাব্র ড ব্রন্থথানি অভি সাবধানতার সভিত প্রণীত চইরাছে। টীকাতে। তিনি শ্রুরেরট অনুগমন করিয়াছেন ব্লিয়া ভাঁহার নাম র "भद्रवृक्षभा" বাশিয়াছেন। অফুবাদ মৃলের প্রকৃত ভাবনাঞ্জক কাথচ স্নাধার চইরাচে। গ্রান্থানি ২১-।৩।২ কর্ণপ্রাণিস होहे अञ्चकारतत्र निकृष्टे भावता यात्र मुना ১८ हाका।

প্রলোকগত জগদীশ্বর শুপ্ত মকাশ্বর তাঁছার প্রীপগুন্ত বাসভবনে পূলাব সময় ব্রক্ষাৎসব করিতেন। আমথা দেখিরা স্থণী চইলাম যে তাঁচার বিধবা পত্নী তাঁচার এই প্রগাটী ষড়ের সহিত রক্ষা করিতেছেন। এবারে তিনি কলিকাতা হইতে কতিপর ব্রাহ্মবন্ধ এতদর্থ নিমন্ত্রণ করিয়া করের দিন তাঁচার ভ্রনে বাসক্রিয়া উপাসনা সংগীত সংকীর্ত্তনাদি ছারা ব্রাহ্মধর্ম প্রচার ক্রিয়া আসিয়াছেন।

	व क्वाचाश्करकरण (याचन	
इर्डिक निर्वादशादर्थ निम्ननिधिय		<b>;</b>
	াশিতের পর।	
বাবু বাধাৰলভ চৌধুনী, কলিব		4
,, বৈকৃঠনাণ দাসের বারা		1•
্,, বিপিনবিহারী সেন, আর্		>/
,, গোপালচন্দ্র মল্লিক, কৰি	4	<b>&gt;</b> <
	<u>ক</u>	>/
* • • • • • • • • • • • • • • • • •	<b>&amp;</b>	>/
	চক্ষ বাগছি, পাবনা।	
বাবু ছুৰ্গানাথ বাগছি, পাবনা	<u>_</u>	۶,
,,	<u> </u>	2
্,, মোহিনীমোহন চক্রবজী		۶,
**	•	Ħ •
, দাবিকানাণ বিশাস		3/
,, বিপিনচন্দ্র পাল		H •
• *	<b>a</b>	1.
	<u> </u>	>/
T	<b>a</b>	<b>4</b> •
বাবুকেবছচন্দ্র মৈত্র কৰি		8
্, কেদাৰনাথ কুলভি, বাঁৰ		211-
শ্ৰীমতী অভিকালেনী, কো		>•/
বাবৃ বটক্লফ চট্টোপাধ্যায়, ক		>/
্, শ্রামাচবণ বস্তু ৬৪।১ স্থবি		>/
शिवकी क्याबी खर्य नमिश्रुत्र,	-	5/
বাব জগ্রাথ প্রসাদ গুপু	<u> </u>	3/
শীমতী সাক্ষতী অংপ	<b>(a)</b>	i •
ব্রু অধরচনদুমজুনদার	কলিকাভা	ij =
ু রসিকলাল পাটন	<b>a</b>	3/
ু সভানাৰায়ণ পাস্তগিৰী		3
ু মতে জুনাথ স্কুড়ার	স্যুগ্ৰিছি	•
्टारमन्नाताम करेनक त <b>ब्</b>		3.
বাবু বনমালী বায়, জমিদার,	বন ওয়াবী নগ্ৰ	> • • \
, डेनबराम नाम मिना,	আসাম	8
ু শশিভ্যণ বিশাস,	কলিকাদা	•
ु (शानिस्मलान तात्र	চোরবাগান কলিকাতা	\$/
, गाठमानांश हरछे। शाधाः	<b>a</b>	•
ু নবীনকৃষ্ণ গুপ্ত	मुर्निमावाम 	•
শ্রীমতী বিধুমুখী রায় চৌধুরী		\$/
বাবৃ কালীনারায়ণ রায়	দিঘাপতিয়া	8
ডাইকার এম, এম, বস্থ	ক <i>লি</i> কাভা ১	3/
ু পি, সি, বায়	<u>এ</u> 	3/
রার গুণাভিরাম বড়ুরা বাচাছ		3/
বাবু কেদারনাথ রায় সি, এস		>/
ু আন্তর্ভ মহুমদার ু আনভ্রচরণ মরিক	ক্র ক্র	8
		٤,
ু বিপিনবিচারী দত্ত আক্রান বিপিনবিচারী সমস্থ	<u> </u>	· \
ডাক্কাৰ বিপিনবিহারী সৰকা ক্ৰীয়াহী কৈলবালা বাব		3/
चीमडी रेमनवाना तात्र सन्दर्भकारक सम्ब	কলিকাভা	3.1
ৰাবু দেবেজনাথ পাল জেবেল্ডেন সভা কোট		3/
	পডে <b>ণ্ট</b> বালিশিবা আত্মীর। মাজীন স	
সমিতি কালীখাট দক্ষি		>•<
		9>5,
	পূৰ্ব্য প্ৰকাশিত	er
	-	0991
		- 1 17

# তত্ত্ব-কৌমূদী

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১৫শ সংখ্যা। ১৬শ ভাগ।

>লা অগ্রহায়ণ, বুধবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাংশন্ধিক ব্যান্ত হান্ত মকস্বলে ৩ প্রতি বড়ের মূল্য 🗸

ধরে থাকি ভোমারি রূপায়। পাড়িরা উঠিরা, উঠিয়া প'ড়বা, অমূতাপ অঞ মুছিতে মুছিতে ; रेभयार छात्र हुए हिं डिंग्रा, यू डिशा, শংকল্পের ঘর ভাগ্নিতে গড়িতে, ধানছে ভাবন ভাই জীবন-জলদি-পানে । দর না ক্ষণেক দাড়ায়ে ভাবিশ্চ। এই ত নিয়াত, আমেতে শক্তি চকাণতা মাঝে, উঠিতে পড়িতে: সংগ্রাম—সংগ্রাম—এই জেনো গতি, এই বিধি ভাই এ মন্তা মহীতে; হায় হায় করে তবে বিষাক্ত-বিষ্ণাদ-বাণে শাস্ত্রীন কেন কবিতেছ চিতে ? প্তনেব ভবে, মুথে অঞ্ ঝরে ঝকক সে অঞাবহ মূলাভাব ; শোকাশ্র ভিতরে, চাও আশা ভরে দিওনা খেরিতে নিরাশ আঁধার। আশা যদি বেঁচে থাকে সকলি বহিল ভাই তাঁর রূপা ধরে উঠিবে আবার। দেও ভভ মতি তবে বিশ্বপতি পড়েও আশাতে উঠিয়া দাঁডাই . বিশ্ব।সে নির্ভরে জাগুক শক্তি; উঠি किशा পড়ি তব পানে ধাই। प्रतिल, नवरन, नना, चारनारक खाँधारत (यम ধরে থাকি ভোমারি কুপার।

## সম্পাদকীয় মন্তব্য।

ব্রাহ্মধর্ম কি দিয়াছেন ?—আমরা অনেক সমর নিরাশার কথা ধলি ও ওনিছে পাই। আম্রা ব্রাজ্বপের আশ্রয়

লইরা জীবনকে আশামুরূপ উরত করিতে পারি নাই। বাহা ছিলাম ভাৰাই বৃতিয়াছি। এই কথা কি সভা ? আমরা যাতা ছিলাম তাহাই কি রহিয়াছি? আমাদের শীবনের কি কিছুই উন্নতি वय नाहे ? प्रेचंद्रत शतिज्ञानश्चम कक्रमा कि व्यामारमंत्र कीवरनत কোন পরিবর্ত্তন ঘটার নাই ? আযুজীবনে ও অন্তের জীবনে কোন পরিবর্ত্তনের চিক্ত কৈ দেখিতে পাই নাই? ধর্মবিশাস মানব প্রাণে কি পরিবর্ত্তন ঘটায় ? ধর্ম মাতুষকে কি দের ? মাতুষ কি জন্ম ধর্মের আশ্রের গ্রহণ করে? উদেশ চুইটা। প্রথম পাপ হইতে উদ্ধান হওয়া—বিভীয় শাস্তি-লাভ। মাতুষ নানা প্রকার পাপের ও চুম্পুরুত্তিব অধীন। ঈশ্বরেব নাম, ঈশ্বরের কফণা, প্রথম মামুষকে পাপ চইতে বাঁচার। আর মামুষ নানা প্রকার শোক তাপের অধীন। णःथ मातिजा माञ्चरक मक्तमा रहना (मग्न । जेनेत विधान माञ्चरक বোগ শোক তঃথ দাবিদ্যের মধ্যে সান্তনা দেয়। আদ্ধানর-নারীর মধ্যে এসব চিহ্ন কি আমবা দেখিয়াছি ? নিজের জীবনেব a अत्मन कौरानन पिरक ठाविशः लेखेर करूगान এই সাক্ষী कि আমরা দিতে পাবিনা, যে ত্রাহ্মধর্মের পরিত্রাণপ্রদ স্পানে আমরা আনেক পাপ হইতে উদ্ধার পাইয়াছি। ঈশবের করুণা वाकार्य ७ वाकामभाषाक्रम दात्र निधा व्याभारतत्र कीवनरक शांवव ও উন্নত ক্রিয়াছে এদাক্ষী কি আমবা জগতেব নিকটে দিতে পারি নাণু আমরা স্থিব-চিত্তে ভাবিয়া দেখি আমরা কি ছিলাম, কি হইয়াছি। যে জ্বয় কেবল পাপের পণে ছুটিত আবে সেই হৃদয়ে কি পাপের প্রতি স্থা ও ধর্মের প্রতি অমুরাগ দেখিছে পাই না ? ঈখবের করণা স্মরণ, তাঁহার প্রতি কৃতত্ত হওয়া ও সেই করুণার সাকী দেওয়া, প্রত্যেক ত্রান্ধের পক্ষে কর্ত্তব্য। অপূর্ণ জীবনের মুর্বলভা ও ক্রটি একেবারে দূব হয় না; পড়িব উঠিব আবার প্রার্থনা করিব, ইহাতে আত্মাব বল বৃদ্ধি হয়। चामदा निस्त्र कीवाम अ चाज्र कीवान मेथातत महा (म्थिता. ব্রাহ্মধর্মের পরিত্রাণপ্রদ শক্তি দেখিরা আন্ধ কৃতজ্ঞ অন্তরে তাঁচার क्क्रगात्र माक्की मिटलिक्। बाक्यभर्त्र चामामिश्रक चारनक भाग इटेट ब्रक्ता कतिबाद्यान ; धर्यात मिटक चाकडे कतिबाद्या ।

क्रेचरवड करूगांक्रणी खाकावर्ष कि ज्यामानिशटक त्मांक छःत्वत

মধ্যে শাস্তি দেন নাই ? সস্তানের মৃত্যুতে পিতা মাতা যথন অধীর না হইয়া প্রশাস্তভাবে ঈশ্বর-চরণে প্রার্থনা করেন "এংভো ভোমার ইচ্ছ। পূর্ণ হউক" তথন জীবনে ব্রাহ্মধর্ম জয় যুক্ত হইল ইহা কি বলিতে পারি না? न हे यू স্বামীর মৃত্যুতে যথন শিশুসন্তান ভাসমানা পত্নী ঈশবের চরণে প্রার্থনা করেন "প্রভো আমার সংসারের স্বামী, পরম স্বামী যে ভূমি তোমার আশ্রয়ে আমা-দিগকে রাথিয়া গিরাছেন; আমাদের ভয় কি; তোমার ইচ্ছা পূর্ণ হউক। আমার স্বামীকে তোমারই অমৃত ক্রোড়ে লইরাছ, তোমার দয়া ধন্ত।" তথন কি ব্রাহ্মধর্ম্মের শান্তিপ্রদ শক্তি দেখিতে পাই না ? ঘোর শোক যন্ত্রণার মধ্যে তাঁহার দয়৷ কি হৃদরে অমৃত ও শক্তি প্রদান করে নাই। আত্মজীবনে ও পরজীবনে তাঁহার দয়ার হস্ত আহ্মধর্মের পরিতাণ-প্রদ শাক্ত ম্মরণ ও অনুভব করিয়া ক্বতজ্ঞ হইতেছি। তাঁহার করণার সাক্ষী কি দিব না ? আমরা সকলে এই সাক্ষীদি যে আক্ষধর্মের স্থীতল চরণে আশ্রয় লহলে পাপীর পাপ যার ও শাস্তি পাওয়। যায়।

প্রচার-সহায়—প্রত্যেক ধন্মসম্প্রদায়ের দৈনিক জীবনে रम्था यात्र (य, व्यालनाता (य धर्म विश्वान करत वा याहा ৰাগ্না নিজের। পরিতাণে লাভ করিয়াছে, তাহা জগতে আহোরিত হউক বা সকলে গ্রহণ করুক এই জন্ম শারীরিক মানসিক বা আর্থিক সকল প্রকার সাহায্য দান করিয়া থাকে। ব্রাহ্মধর্মে যাঁহারা প্রবেশ করিয়াছেন, তাঁহারা কেবল সহায় নহেন তাঁহার। প্রত্যেকেই প্রচারক। কিন্ত এই মহাসভ্য পাইয়াও দেখিতেছি অচারের জন্ত ব্যগ্রত। দূরে থাকুক, প্রচারের সহায়তার অভাও অনেক ব্রাহ্মের তেমন ব্যগ্রতা নাই। প্রচারক কোন স্থানে গেলে সঙ্গে সঙ্গে থাকিয়া নানাপ্রকারে প্রভুর নাম প্রচারের স্থবিধা করিয়া দেওয়া, 💠 অর্থের দ্বারা সাহায্য করা, হুহার জন্মও তেমন আগ্রহ দেখা যায় না। হয়ত প্রচারক धात कांत्रज्ञा ठानिया चानित्नन, किन्न त्मथात्न चष्ठिन অব্ভাপরত্রাকা রহিরাছেন, ত্হটী টাক। পাথেয় দিতে পারিলেন না। হহাতে এই বুঝা যায় ত্রাহ্মধন্মকে উঁহার। এত প্রিয় জ্ঞান কবেন না যে সে জ্বরু কিঞ্ছিৎ বায় করিতে পারেন। অর্থের মার। কি সাংসারিক অংথ-স্পূরা এত প্রবল বে ধন্ম ভাষার ভপর অ।পনার প্রাভুত্ব স্থাপন করিতে পারেন নাই। আক্ষণণ ন্তন ধর্ম এছণ করিয়াছেন, নৃতন জিনিস জগংকে দিতে যাইডেছেন, এ সময় তাঁহাদের কত শ্রম কত छात्र चौकात्र कतिरम ७ कार्या मक्नका नांच कतिरंड পারিবেন, তাহা প্রত্যেকের ভাবিয়া দেখা উচ্চিত। কর্ত্তব্য জ্ঞানেও প্রচার-কার্যো সহায় হওয়া প্রত্যেক আক্ষের কক্তব্য। আবার অনেক স্থলে দেখি আক্ষদিগের অপেক্ষা অপর সম্প্রদায়ের লোকের নিকট ক্ষধিক সাহায্য প্রাপ্ত হওয়া যার। তাঁহারা অর্থ দাহায়া করেন, আমাদের পুস্তক ওুপত্রিকাদি প্রচণ করেন। ত্রাক্ষধর্ম প্রচারে ত্রাক্ষগণের যথন এত ওদাসীন্ত তথন প্রচারক সংখ্যা বর্দ্ধিত ন। হওয়া কিছুহ আশ্চর্য্যের বিষয়

ঔদাসীভ্য দৰ্শনে নিরুৎসা১ ১ইয়া যান। শুনিতে পাই এমন ব্রাহ্মও অনেক আছেন, ইংহারা নিজ সমাজের কাগজ না লইয়া অপর সমাজের কাগজ লইয়া থাকেন। এরূপ ভাব দেখিয়া কিছু বলিলে অনেক সময় তাঁহার। উদারভার কণাই বলেন। যাহা হউক ইইাদের প্রতি আমাদের প্রামশ এই যে সমাজে থাকিয়া নিজে ফ্লভক্তার্থ হইতেছ সর্বাগ্রে ভাহাকে বাঁচাইতে চেষ্টা কর। তেমোদের সমাজের কাগজ যদি মনের মতও না হয় তবু গ্রহণ কর, তোমাদের প্রচারকগণ মনের মত নয় তবু সহায়তা কর বরং মনের মত করিতে স্বাদা সচেষ্ট হও, ভাছাডে দোষ নাহ। কিন্তু প্রচার-সৃহায় হৃহতে কখনই উদাদীন হৃইও না। ঈশ্বর এশিনসাধারণকে তার ধল্মপ্রচারের সহায় করিয়া ग डेन ।

অ'দেশব'দ-- বাকাধণো যথন অভান্ত শান্তবাদ কি অভান্ত গুরুবাদ নাই, প্রত্যেক ত্রান্ধই আপনার বিবেক অমুসারে চলিবেন এবং তাহাতেই আত্মার অনস্ত উন্নতি সাধিত হইবে,এই যথন বিশ্বাস; তথন বিবেকের অনুসরণ ব্যতীত ব্রাহ্মের আবার গতাভার নাহ। বিবেকের আনজ্ঞা ছাড়িয়া বা অমাঞ করিয়। শাস্ত্রের অনুসরণ করিলে তিনি আর আক্ষ বলিয়া অভিহিত হইবারই যোগ্য থাকিলেন না। এক্সিধেয়া গ্রহণ কারয়া, আক্ষাসমাজে প্রবেশ করিয়',—এই শিক্ষাএই উপদেশই পাইয়াছি বা জীবস্ত অক্ষের নিকট এই শিক্ষা বা এই উপদেশ পাহয়াই আক্ষধক্ষ গ্রহণ ক্রিয়াছি। যদি ইক্ বিখাস না করিয়াও কোন লোক ত্রাহ্মসমাজভূক্ত হইয়। তাহা আক্ষধকোর **4**۱ ব্রাহ্মসমাজের ८माय নয়। কিন্তু ব্যক্তিবিশৈষের ছ্বালতা। এহ বিবেককেই বিশ্বাসী ব্যাক্তর। ঈশ্বরের আনদেশ বাঈশ্বরবাণী বলিয়া ব্যাথ্যাকরেন। প্রভেদ এই, বিবেক বলিতে ঈশ্বরের দক্ষে খনিষ্ঠ যোগ বুঝায় না কিন্ত আদেশ ও বাণী বালতে ঘান্ত যোগ বুঝায়। ফলভঃ ঈশ্ব আংদেশ বাঠাত ধ্যা জিজ্ঞ। হ্র প্রকৃত জীব্ত ধ্যা জানিবার অক্ত উপায় নাহ। বিশেষ পুরাতন ধর্ম পারত্যাগ কার্যা নবধন্মে কোন লোক আসিতে পারে না। নবধন্মের জঞ कान लाक मःमादिश मक्य चाम। हा। इस कीवन छे०मर्ग করিতে পারে না। তথনত ছ্বাণ মাহ্য স্বণ হয় এবং সকল বাধা বিল্ল ছাড়িয়া ঈশ্বরের পথ অধুসরণ করিতে পারে, যথন সে আপনার প্রভূর আজ্ঞ, প্রাপ্ত হয়। পিতার व्याप्ति इस्त्रण मञ्चालित ध्यारण वर्णत अञ्चानत रहा, আক্ষাসমাজ এই মহাসত্য খোষণ। করিয়াছেল বিশেষতঃ সাধা-রণ বাঝাসমাজ এছ মহাসতে যুর্হ অনুসুসরণ কার্যা ঈশারের भिवा कावर ७ (इन । छत्व चारमभवारमञ्ज विकटक क्थन कान कान कथा इह्याह्म अहा कि छ छ। आएम म-বাদের বিক্লমে নয় প্রকৃতক্রপে অভাস্ত **७**क्र वाटमब्रह বিরুদ্ধে। একজন আদেশ পাইয়াছেন কি ভ্রমে পাড়-য়াছেন তাহা ।তান জানেন। কিন্তু ব্রাক্ষ্যধারণের তাহার অনুসরণ করা আদেশবাদ নয়, অভাত গুরুবাদই বলিতে হইবে। তাই ঈশার আদিট হইয়া আঞ্চগণ আক্ষধশের পবিত্রতা রক্ষার জন্ত কথন কথন এরপ প্রতিবাদ করিবাছেন, নতে। বাহারা- উৎসাহিত হইরা আনেন তাহারাভ এই ঈশর তাহাদের মধ্যে আপনার জীবভ লীশাই-দেপ্টেরাছেন।

বিশ্বাস চক্ষ্তে দেশিলে ভাষা সহজেই বুঝিতে পারা যায়। যিনি আদেশ পান, তিনি এমে শজ্লিও তাষাই মাঞ্জ করিবেন সভ্য, কিন্তু আব সকলে তাষার অনুসরণ করিলে বুঝা গেল, তাছারা আক্ষণপ্রের মহাসভ্য হইতে বিচ্যুত হইয়াছেন। তাই যেমন অল্রান্ত মনুষ্যানাদেব প্রতিবাদ পূর্বে হইতে হইরা আসিভেছে, তক্ষণ এখন ও হইতেছে। সেইবাপ আদেশবাদের কণা বলিরা অল্রান্ত মনুষ্যানাদেব বা লোকের স্বেচ্ছাচারিতার প্রতিবাদ পূর্বেও হইয়াছে এখনও হইতেছে। মানবের স্বাধীন বিবেকের কণা বলিরাই অল্রান্ত শাস্ত্রবাদের প্রতিবাদ কবা হইয়াছে। আদেশবাদের ক্রান্ত মান্ত কবা হয় নাই। আদেশই আক্ষের ধর্মশাস্ত্র, গুরু ও নেতা। আক্ষ আদেশেরই অনুসরণ করিবেন।

ঈশ্বর প্রেমিটকর ধর্ম্ম এবং সাম্প্রদায়িক ধর্ম।— সংসারে ছই শ্রেণার লোক দেখা যায়। এক শ্রেণীর লোক मम्मव পূर्व मःकात विकार हरेया भत्रस्य दित कन्न वाक्न চইয়াছেন, সেই ব্যাকুলতা ধারাই জাঁহাবা ঈশ্বকে লাভ করিয়াছেন। তাঁগারা কোন প্রকার শাল্প, গুরু কিম্বা সমাজ বাধর্মনীতির অভাস্ত আদেশে চালিত হন নাই। তাঁহারা পিতা মাডার বা ধর্মের দেশ প্রচলিত ধর্মের **অনুকরণ** করেন নাই। যে চিবপোষিত সংস্থার তাঁহাদের রক্ত মাংসের সহিত মিজিত ছিল, ভাচা সম্পূর্ণ রূপে বিদ্রিত করিয়ান্তন প্রাণ মন লহরা তাঁহার। ঈশ্ব-প্রাপ্তির জন্ত ব্যাকুল হইরাছিলেন। ভাহাতেই তাঁহারা সোদ্ধণাভ করিয়াছেলেন। মহম্মদ, শাক্য-দিংহ, যাভ্নীষ্ট প্রভাত এ শ্রেণীৰ দাধক। হইবো প্রাচীন শাস্ত্র কিছা কোন মত প্রচার করেন নাই, প্রমেশ্বরেব निक्टे रहेट एर मका পाह्याएहन, काशहे अहात क्षियाएहन। অপব শ্রেণীর লোক গভাতুগাতকের ন্যায় কেবল পশ্চাৎ অত্ব-সরণ করিয়া থাকেন। এ শ্রেণীর লোক ঈশ্বরের সহিত সাক্ষাৎ मयस छापन करतन ना, नेधत छक्ति गरक नेधरतत छात्न আভ্যিক্ত করিয়া তাঁহাদের সহিত্ত যোগ স্থাপন কারতে প্রয়াশী হন। ইহাঁদিগের ধারা এরপেই ধর্মাসম্প্রদায়ের উৎপাত হর। মহম্মদের অমুণর্ত্তিগণ কোরাণকে অভাস্ত এবং মচমাদকে কেব্র করিয়া এক সম্প্রদার সৃষ্টি করিয়াছেন। খ্রীষ্টের অমুকরণকারি-গণ বাইবেশকে অভ্রাম্ভ এবং যাওঞীইকে ঈশ্বরের আসনে অভি-ষিক্ত করিয়া ধর্মসাধন করিতেছেন। বুদ্ধের শিষ্যগণ বুদ্ধকেই মুক্তির উপায় বলিয়া মনে করেন। চৈতন্য নানক, কবার প্রভাত নহাত্মাগণের পথাবলম্বিগণ এরূপে তাঁহাদিগকে পূজা ক্বিভেছেন। তাঁহারা স্বয়ং প্রমেশ্বরকে বাভ কারবার জ্ন্য তেম্ন ব্যক্ত নহেন, ভাঁচাদের অবল্ছিত মহাপুরুষগণের মুখ্যাদ। এবং অলোকিকত্ব প্রাতপর করিবার জন্ম যভ বাঞা।

মহম্মদ ঈশ্বর লাভের জন্য মহা ব্যাকৃল হইয়। হরা প্রতের
গহুবরে কঠোর তপ্রভার প্রবৃত্ত হইলেন। দিন রাত্রি সেই
বহু ব্রাহ্ম পারবারে পারবারে পারবারিক উপাসনা হয় না। হিন্দুরা
বহু ব্রাহ্ম পারবারে পারবারিক উপাসনা হয় না। হিন্দুরা
বহু ব্রাহ্ম পারবার পারবারে সময় হয়া কালীকে স্ময়ণ করেন
বেমন গাত্রোখন করিবার সময় হয়া কালীকে স্ময়ণ করেন
বাহ্মান বিশ্ব ক্রিমান করিছে বাহ্মান করিছে
বাহ্মান বহু করিছান করিছান করিছান বহু করিছান বহু করিছান বহু করিছান বহু করিছান বহু করিছান বহু করিছান করিছান বহু করিছান করিছান বহু করিছান করিছান বহু করিছান ক

ছিলেন, মহম্মনও ভেমনি হয়া গছবরে ধ্যানযোগে নিরাকার পরত্রের সাক্ষাৎ লাভ করেন। কিছু গর্ভমান মুসলমান সম্প্রার করার পাকেন ? তাঁছারা কোরাগকে অভ্যন্ত রূপে মান্য করা ও উপাস্পার স্থান্ধ বারবার মহম্মনের নাম উচ্চারণ করা এবং কভকগুলি সামাজিক বিধি অমুসারে পরিচালিত হওয়াকেই মুসলমান ধর্ম বলিয়া বিশ্বাস করেন্ এবং তদমুবারী কাল করেন। মহম্মন যে প্রণালীতে ঈশ্বরকে লাভ করিয়াছিলেন, যেরূপ পূর্ব্ব সংস্কার বর্জিত হইয়া সাধন ভজন করিয়াছিলেন, ইইরো সে সকল বিষয়ের অমুসরণ করেন না, কেবল মহম্মনের স্থান বাত্তের জন্য বাস্তা। অর্থাৎ মহাপুরুষগণ ঈশ্বর লাভের জন্য বাস্তা। অর্থাৎ মহাপুরুষগণ ঈশ্বর লাভের জন্য বাস্তা হাকুল। প্রত্যেক ধর্মসম্প্রদারই এরূপে ঈশ্বরের সম্মান এবং অধিকার থর্ব্ব করিয়া মহাপুরুষদিগকে সেই সম্মান ও অধিকার প্রদান করিতেছে। সাম্প্রারিক ধ্যের ইলাই প্রধান কলক।

ত্রাহ্মধর্ম, অসাম্প্রদায়িক ধর্ম। এ ধর্মে কোনও ব্যক্তি-বিশেষকে কেব্র করিয়া ঈশ্বরোপাসনা করিতে উপদেশ দেন না। এধর্মের বিশেষত্ব এই যে, পরমেশ্বরের সহিত মানবাস্থার সাক্ষাৎ যোগ উপলব্ধি করিবার জন্য অভ্রান্ত গুরু কিছা শাল্তের অমুসরণ করিতে হয় না। মহম্মদ, বুদ্ধ প্রভৃতি যেরূপ পুকা-সংস্কার বার্জত হইরা সম্পূর্ণ স্বাধীন ভাবে ধর্মসাধন এবং মুংক্ত-লাভ করিরাছিলেন, ত্রাহ্মধর্ম তেমনি স্বাধীনভাবে সকলকে ঈশ্বর শাভের পথ প্রদর্শন করেন। গতারুগতিক হইর। গুক্ কিম্বা শাল্পের মধ্যে আবদ্ধ হহয়া স্বাধীনতা হারাইতে ব্রাহ্মণত্ম নিষেধ করেন। আক্ষাধর্ম সাধকাদগকে বলেন "তোমরা মহম্মদ, বুদ্ধ, খুষ্ট প্রভিতির নায়ে হও। কিন্তু মুদলমান ধন্ম:-वनश्री, औष्टेशमावनश्री প্রভৃতির न्যाय अञ्चलत्रकाती हहेल ना। ব্রাহ্মধন্মের ইহাই বিশেষত্ব। এই বিশেষত্বকে হাঁহার। রক্ষা কবেন না, বাঁহারা গুরু কিয়া পুত্তক বিশেষের স্বভ্ন রক্ষা কারবার জন্য ব্যগ্র, তাঁহারা এ ধন্মের বিনাশসাধন করিতে-ছেন। কোন ব্যক্তিবিশেষের নামের সাহত, শালেরে সাহত এ ধর্মের যোগ নাহ। এ ধ্বের যোগ স্বয়ং প্রমেশ্বরের সাহত।

পারিবারিক ব্রেলাপাসনা—উপাসনাই ধর্ম সমাজের প্রাণ। উপাসনা বিহান সমাজ নাত্তিক সমাজ মধ্যে পরিগাণত। মুথে উচ্চ ধর্মসত মানিলে কি হইবে ? উচ্চতব
আধ্যাত্মিক সত্য লাভ কবিবার জন্য কোনও লারোজন না
কারলে সকলি বুণা। ঈশ্বর লাভের একমাত্র উপার উপাসনা।
কেবল বিশুদ্ধ মত পোষণ করিলে ঈশ্বরকে পাওয়া যায় না।
উপাসনার দার দিয়াই ঈশ্ববের রাজ্যে উপস্থিত হওয়া বায়।
কিন্তু আমর। অভ্যন্ত হৃংথের সহিত প্রকাশ করিতেছি যে,
বছ ব্রাহ্ম পারবারে পারবারিক উপাসনা হয় না। হিন্দুরা
যেমনু গাত্রোথান করিবার সময় হুর্না কালীকে স্ময়ণ করেতে
ভাল্পণ সেইরূপ প্রভেংকালে গাত্রোথান ও রাত্রিতে
নিজ্রার সময় ছ্তিন মিনিট কাল মাত্র প্রবাহন্ত সময়
থাকেন, ইণাই তাইাদের উপাসনা। স্বারবাহন্ত সময়

বেত হইয়া দিন রাত্রি মধ্যে কোনও এক সময় উপোসন। করি-বার বিধি না থাকিলে যে কোন পরিবারই অক্ষনিষ্ঠ গৃহস্থ কইতে পাবেন না, একণা তাঁছারা বিস্মৃত হন।

পারিবারিক উপাসনা প্রতি পরিবারে প্রতিষ্ঠিত না থাকাতেই আদ্ধা সন্তানগণ উপাসনাশীল চইতেছে না। বে সকল পরিবারে প্রতিদিন অস্ততঃ একবার পারিবারিক উপাসনা হয়, সে সকল পরিবারেব সন্তানগণ উপাসনা করিতে একপ অভ্যাসনীল হয় বে, পরিণামে তাহারা যথন গৃহ পরিত্যাগ করিরা অস্ত স্থানে বাস করে, তথন সেই পূর্বে অভ্যাস্বশতঃ নিয়ত উপাসনা করিয়া থাকে। বে সকল গৃহে পারি বারিক উপাসনা হয় না, সে সকল আদ্ধা গৃহত্বের বালক বালিকাগণ উপাসনাতে বিমুখ হয়। তথন সকলে বলিয়া থাকেন, "আদ্ধা ছেলে মেয়েরা ভাল হইতেছে না।" বাস্তবিক আদ্ধা পূল্র কন্তাগণ উপাসনা-বিহীন নাস্তিক হইবার প্রেধান করেণ আদ্ধা বারের পারিবারের উপাসনা বিহীনতা।

কি গভীর ছঃথের বিষয়, যে ধন্ম স্থান করিবার জয় বাঙ্মপণ আত্মীয় স্বজনকে প্রিত্যাগ করিলেন, কত নির্যাতন, কত বিপদ, কত প্রকার ক্লেশ সহু করিলেন, এখন পরিবারের মধ্যে দেই ধর্ম আভিষ্ঠিত করিতেছেন ন।। ইহাতে আগ্র ধর্ম প্রচারেরও বিশেষ বিল্ল চইতেছে। লোকে দেখিতেছে, ত্রান্ধেরা যাহা মুথে বলে, কায়ে তাহা করে না। ত্রাহ্মগণ মুখে বলিভেছে, "ত্রন্ধনিষ্ঠ গৃহত্ব হইতে হইবে।" কিছ कार्याजः निम निम পরিবারে ঈশরের নামও উচ্চারণ কবি-তেছে না। এরপ কার্য্যতঃ নাস্থিকতা দেখিয়া কি ধ্যাপিপাস্থ वाक्तिशन है नारमत व्यासन्न शहन कतिरवन ? वान्हविक शाति-বারিক উপাসনা-বিহীনতাই ত্রাহ্মধর্ম প্রচাবের প্রধান বিম্ন। "প্রচারকের অভাব, অর্থের অভাবে প্রচার হইছেছে না।" এ সকল কণা উটেচ:স্বরে লোষণা না কাবয়া যদি আহ্মগণ ঘরে ঘরে পারিবারিক উপাদনা প্রতিষ্ঠিত করেন, তবে অভিরে त्महे छेभामनात वरण बाक्षध्य हाति। एक आहाति छ हहेरा। मनत्र मकः खनन्य (य मकन बाक्ष शतिवाद्य शांत्रवादिक छेशामना. উৎসব আলোচনাদি নিরত হইয়া থাকে, আমরা ভানি সে সকল পরিবারের সংসার্গ আসিয়া অনেকে ত্রাহ্মধর্মের দিকে आकृष्टे इरेबाएइन। উপাসনা बर्टेड आमता प्रकल शहेत. সকল অভাব পূর্ণ হইবে। অত্তর্র আমাদের বিনীত অফু-রোধ, ত্রাহ্মগণ পারিবারিক উপাসনার প্রতি বিশেষ মনোযোগী ছউন। প্রতি পারবার হইতে দিনে নিশীণে ব্রহ্ম নামের অমধ্বনি উপিত চটলে নিশ্চরট প্রমেশ্বের স্ভারাজ্য প্রতি-ষ্ঠিত হইবে।

নাম সাধন ও আরিখিনা—বহুবার ঈখবের নাম গ্রহণ এবং নানা প্রকারে তাঁহার স্তৃতি করিবার ব্যবস্থা সকল ধর্ম সম্প্রদারের মধ্যেই বিশেষ ভাবে প্রচিলিত আছে। প্রেরোজনীর নিত্য নৈমিত্তিক ক্রিরা সমূহ সমাধা করিতে যে সময় টুকু বারিত হয়, তত্তির অবশিষ্ট সমন্ত সময় অনেক ধর্মসাধক ক্রীবরের নাম স্বরণ মধনেই যাণন করা কর্তব্য বলিয়া মনে

करान। बाक्षनभाक श्रेषात्र आविधना এवः नाम नाधनरक चाननात्त्र चिक अस्ताबनीत जाधनकरन शहर कतिहास्त्र। এই প্রকারে স্থন্দর ভাষায় ঈশ্বের শ্বরূপ ব্যাথা৷ এবং উচ্চার छत कतिनात कानग कि ? अञ्चास मध्येमात कत्र क गत्न कर्तन এইরপে ভক্তির সাহত তাঁছার আরাধনা করাতে এবং বার-স্থার উচ্চার নাম কীতান করাতে ঈশবের বিশেষ প্রাণয়তা লাভের সম্ভাবনা আছে। বিশেষতঃ এদেশের পুরাণাদিতে দেখা যায়,ঈশ্বর জগতের কার্য্য হইতে অবসর গ্রহণ করিয়া, ইহার হ্থ ত:থেব প্রতি উদাদীন হটয়া আছেন, কোনও আপেদ্ विशाम तर्वाम नैहेट उद्दिन ना, यनि दकान खरकत अमनन ঘটনা আসিয়া সৃষ্টিকে বিপর্য্যন্ত করিয়া দেয়, জগৎবাসিগণেব ধর্মহানি হইয়া অধ্যেমির রাজত্ব প্রতিষ্ঠিত হইতে পাকে, জগৎ-পতির সে দিকেও দৃষ্টি নাই। স্প্ট প্রাাণণণ স্ববস্তুতি স্বারা তাঁহার চেতনা সঞ্চার কবিলে এবং কগতের ভাগেব প্রতি **डाँहात मृष्टि आकर्षण कांत्रत्य करवाकान त्महे अनिरष्टेत्र निया-**রণের জন্ত কোন উপায় বিধান করেন। স্থকাং এই শ্রেণীর সাধকগণের পক্ষে বারস্থার ঈশ্বরের নাম প্রচণ এবং উচ্চার স্তবস্তুতি কর। নিভাস্তই প্রয়োজন। কাবণ তাঁহাদের দেবতার প্রসন্নতা লাভের ইতাই প্রকৃষ্ট উপার। ত্রাহ্মগণ ঈশ্বব সম্বন্ধে এমন বিশ্বাস করেন না বে তিনি কথনও জগৎ সম্বন্ধে উদাসীন হন ৰা উচ্চার স্স্তানের কল্যাণ সাধন কল্প 'উচ্চার চেত্রনা সঞ্চার করিয়া তাঁহার দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে ১ম। আহ্মণন্ম ঈশ্বকে চিব জাগ্রত, চির কল্যাণময় এবং জগভের সাহত माकार मधस्त मधक विवाह (यायम कवियाहन। भीने का आभामरात्र मर्याके चार्क, बाक्षणण केशरे कार्तन, ঈশবেরও যে উদাদীনতা হটতে পাবে, তাচা ত প্রাক্ষ কানেন न।। व्यञ्चाञ्च धर्मावनविश्वन इय ७ मन्न करतन (य नानातार्य ন্তান্ত্রতি ছারা বা তাঁটার প্রশংস-গীতে ছারা তাঁটাকে বশাভূত করিতে পরি।যায় ও তাঁহরে বিশেষ প্রসর্ভ: লাভ করা যার। প্রাক্ষ ভাহাও মনে কবেন না এবং ভাগা করাও উচিত নয়। কারণ এচরণে স্থব স্থান্থির বন্ধীভূত হওয়া কুদুভার পরিচাযক। মানবীয় চকাণভা ও প্রশংসা প্রিয়তাতেই এরণ সম্ভব। মহান ঈশ্ববে এরণ ভাবের আরোপ করিলে তাঁহার আরে মহস্ত এমন কি ঈশ্বরতা থাকে না। যাদ ভাহা হয় অথাৎ ঈশ্ব চিবলাগ্রহ চিরকল্যাণময়--- জীবের চির विटेच्योहे इन, उंहाव अगाम नाट्य बना य'म (कानजा खन স্তুতিব অপেক্ষানা পাকে, এমন কি যদি তিনি আমাদের মঙ্গল সাধনে আমাদের অপেকাও অধিক পরিমাণে ব্যব্ম কন, ভাঙা **১ইলে আমরা তাঁচার আরাধন ও তবস্তাত কার কেন?** বারস্থার তাঁহার নাম গ্রহণের ব্যবস্থাই বা কেন গ

এইকপ আলাধনা ও নাম সাধনের তেতু হহা নয় যে, ঈশার তন্ধারা কিছু আধক পরিমাণে আমাদের নেকটবর্তী হহবেন বা আধক পরিমাণে প্রীত হইবেন। তাঁহার নৈকটাও আর বাড়িতে পারে না, তাহার প্রীতিও যাহা আছে তাহার আর বৃদ্ধি নাই। তবে এইরপ আরাধনা ও নাম সাধনের কি কোনই কারণ নাই। সে কারণ ঈশারের লৃষ্টি অধিক আফ্রশ্রুবা

ভাঁছাকে অধিক। পরিমাণে প্রাসন্নকরা নছে। কিন্তু আমরা যে নানা প্রকারে তাঁহা হইতে দূরে থাকি ও তাঁহার বিরুদ্ধভাবাপর থাকি তাহার অপনোদন করা। আমরা নিরস্তর বহিবিষরে আগেক্ত হইরা, বহিনিধরের চিন্তা ও অমুধ্যানে রত হইরা ঈশ্বর ছইতে দুরে অবস্থিতি করি। তাঁলা চইতে ভিন্নভাবাপন্ন হট্যা आभारतत क्षकृति विकृति छान्छ इटेबा थारक। यांश महज हिन, छाटा आमारतत शक्त कठिन टग्न। कात्रण आमारतत প্রকৃতি এই, অধিক পরিমাণে বে বিষয়ের চিতাতে আমরা নিযুক্ত হই, আমাদের স্বভাবের মধ্যে তাহাই সংক্রোমিত হইতে পাকে। ক্রমে আমরা সেইরপ ভাবাক্রাস্ত চইতে থাকি। সংসর্গের শক্তি আমাদের জীবনে এই জয়ই এত প্রবল। আমরা যাদৃশ সংসর্গে থাকি সেইরূপ ভাবাপর হইয়া পড়ি; অর্থাৎ নিরস্কর সেই চিন্তা,দৈই ভাবের মধ্যে অব্দ্রিতি করাতে,সেই সকল (माव वा श्वण कामारमृत मरका मःकाख इत। (य (यक्रण ভावना করে দে দেইরূপ প্রকৃতি প্রাপ্ত হয়, ইছা একটা ভির মীমাংদিত স্তা। স্থতরাং আমাদের প্রকৃতিকে এই বছিবিষয়ের বন্ধন ছইভে মুক্ত করিয়া, সেই চিনার পবিত্র অরপের সহবাসের উপযোগী করিতে হটলে, যত অধিক সময় তাঁহার গুণ স্মরণ মনৰে নিযুক্ত থাকিতে পারা যায়, তত্ই উদ্দেশ্য সাধনে অগ্রসর হওরা যাইতে পারে। আমরা চারিদিকে যে সকল পদার্থ হার। পরিবেটিত আছি, যে সকল ঘটনার মধ্যে নিরস্তর বাস করিতেছি, সেই সকলের স্কিত্ই অধিক পরিমাণে ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধে আমাবদ্ধ আছি। সেই স্কলই আমাদের প্রিয়ুচ্ইয়া আছে। আমাদের প্রকৃতিতে সেই সমস্ত ভাবই প্রবল। এই य जामता पून वहिनियतामक हहेता चाहि, এह जामिक हहेएड भुक्त इहेट इहेटन এवः स्नेश्वतत्र जात्व जातूक हहेट इहेटन ९ डीहा ह প্রকৃতি প্রাণে প্রক্ষৃটিত দেখিতে ইচ্চুক হইলে, সেই চিম্ভা, সেই সহবাস, ষাহাতে জ্ঞাতসারে অধিক পরিমাণে হয়,আমাদের তাহাই করা কর্ত্তন্য। আরাধনা ধ্যান, বা তাহার নাম শ্রবণ কীর্ত্তন ছারা আমাদের প্রকৃতি সেই ভাবাপর হইয়া থাকে। দিবদের মধ্যে যুত্ত অধিক সময় তাঁহোর গুণ কীর্ত্তন ও মননে যায়, তত্ই আমাদের মধ্যে তাঁহার প্রকৃতি সংক্রান্ত হইতে গাকে ও আমরা. সেই সহবাসের উপযুক্ত চই। আমর। কুদ্রাশয়তা চইতে উন্মুক্ত চটরা মহদাশর হটরা তাঁহার জ্ঞান, প্রেম, পবিত্রতা সভ্যোগের আধিকারী চট। এজকাই দেখা যায় ব্রহ্মনিষ্ঠ ব্যক্তি অসার বিষয়ের চিস্তাতে রভ থাকিতে ক্লেশ অমুভব করেন। তিনি ভাঁহার প্রিয়তমের স্বরূপ ধ্যান, তাঁহার পণিত্র কী র্ভি-ছোষ্ণা ভাঁহার অ্মধুব নাম শ্রবণ কীর্তনেই সদা বাাপুত থাকেন. তদ্বারা তিনি বন্ধকে আফুট না করিয়া, তাঁচাকে অধিক শ্রীত না জিয়া, নিজেই তাঁলার স্মধুর প্রীতি আসাদন করিয়া সমধিকরপে তাঁহাতে প্রীত হন। এবং সেই প্রকৃতি প্রাপ্ত ছন; ইহাই আরাধনা ও নাম সাধনের ফল। তোষামোছ ক্রিয়া ঈশ্বরের প্রীতি পাওয়াযায়না। তাহা হারাকুডাশর মানবের প্রীতি ও প্রসন্নতা পাওয়া যাইতে পারে। ভ্তরাং महान् क्षेत्रदेव नाम श्रद्धन मनन विदः छीहात अन कीर्छन गहाटछ আমাদের প্রকৃতিকে পরিবর্তিত করিবা, তাঁচার প্রকৃতি সম্পন্ন

করিতে পারে, আমরা সর্বপ্রেবছে যেন সেই নিমিত্তই ব্যাকুল হুই এবং ভজ্জন্ত তাঁহার চিন্তা ও নামসাধনেই ব্যক্ত থাকি।

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

### সাধন-নিষ্ঠা।

वाञ्चधर्यं नामांकिक धर्म। कननमां अत्र कार्या कनारभन्न ভিতর থাকিয়াই আমাদিগকে এই ধর্মকে সাধন করিতে হইবে ; এবং এথানকার বিবিধ প্রকার বিদ্ন বিপদ ও প্রলোভনের স্হিত সংগ্রাম করিরাই আমাদিগকে উরতি লাভ করিতে ছইবে। প্রাচীন কালের ত্রন্মজ্ঞানের স্তিত বর্ত্তমান ত্রাহ্মধর্মের এইস্থানে প্রভেদ; ইহা আমরা সকলেই গানি। কিন্তু জনসমাজের কোলাহলের ও কার্য্য লোভের মধ্যে থাকিয়া ধর্ম সাধন, করার পথে যে একটা বিপদ আভে তাহা আমরা অনেক স্থলেই ভূলিয়া वाहे। तम विभेन अहे:---म्मक्त्यत प्राथा विश्वा धर्मा नाभव করিবার কালে আমাদের দৃষ্টি অনেক সময় আপনাদের উপর **হইতে উঠিয়া পরের উপরে পতিত হয়; অর্থাৎ নিজে সাধ্য** পথে কতদুর অগ্রাসর হইতেছি এই চিস্তা অপেক্ষা লোকে কি ভাবে আমার সাধনকে গ্রহণ করিভেছে এট চিস্তা লইরা মন অধিক ব্যাপৃত হইরা পডে। এই বহিমুধীন ভাব অভ্যাস প্রাপ্ত হইলে চরিত্রের পূচ মর্ম্ম স্থানে এক প্রকার অসভাতা প্রবিষ্ট হয়। তথন ল্যোকে অজ্ঞাতসারে মনে করে যে ধর্মা-সাধন, ধর্ম-প্রচার ও ধর্মাফুটান সব কেবল পরেরই জন্ম। তাছার সহিত নিজ জীবনের সম্বন্ধ না থাকিলেও হানি নাই। এই ভাবের বশবন্তী হইয়া মাহুষ ভজন দাধন করে, ধর্ম প্রচার করে.ও বিবিধ শদসুঠানে রত হয় কিন্তু তন্ধারা তাহার নিজ হাদয় ও জীবনের কল্যাণ সাধিত হয় না, সে সমূদায় কেবল পরের জন্মই থাকে।

এই বহিমুখীনতা বৃদ্ধি পাইলে মানব চরিত্র অতীব অবজ্ঞার বস্তু হইয়া পড়ে। তথন যে লোকাকর্ষণের উদ্দেশে মানব বহিমুখীন ভাব ধারণ করিয়াছিল, তাহাও বিফল হইয়া যায়। সেরপ বাক্তির সাধনে, প্রচারে ও সদস্টানে আর কেহ আরুই হয় না। তাহার নিজের জীবনের ও মুথের ভাষার অসামঞ্জ্ঞভানে সকলেই বীতপ্রদ্ধ হইয়া যায়। আবার এই বহিমুখীন ভাব মানবকে ঘোর আত্ম-প্রতারণার ভিতর ফেলিয়া দের। ধর্মের বাহিরের সাধন ও ক্রিয়াতে নিযুক্ত থাকিয়া মাহুষ অজ্ঞাতসারে মনে করিতে থাকে যে ধর্ম সাধন সম্বদ্ধে যাহা কর্ত্তব্য তাহা করা হইতেছে; আর অধিক কিছু করিবার নাই। এই প্রান্থ আত্মতৃত্তি মাহুষকে ব্যাকুণতা ও সংগ্রাম বিহীন করিয়া ফেলে। তথন পরোপদেশের জন্ম যাহা বলা যায়, তাহা নিজে করিবার জন্ধ প্রার্ত্তিও ও চেষ্টা থাকে না। জগতে এইরপ প্রান্থ আত্মত্তির সাধকের সংখ্যা কম নহে।

ব্ৰাহ্মগণ যদি সৰ্বাহ্ম সভৰ্ক আত্ম-পরীক্ষা-পরাহ্মণ ও প্রার্থনা দীল না থাকেন ভাষা হইলে ভাঁচাদিগেরও এই প্রকার আত্ম ভৃত্তির মধ্যে পভিত হইবার সম্ভাগনা। এবং ইচা কি সভ্য নতে যে আমাদের আনেকের সাধন এই বৃতিমুখীন-ভাবংদায়ে দৃষিত। আমাদের সাধন ও কার্য্যেন মধ্যে তলে তলে এক থাকাৰ অস্তাত। প্রবিষ্ঠ হটলাতে।

এই অসংগার বিতীন বৃতিমুপীন ভাব দূব করিবার উপার কি? ধর্ম-জগতেৰ ইতিবৃত্তে দেখিতে পাওয়া যায় যে সকল সাধক জনসমাজের কোল'গলেব মধ্য থাকিয়াও আত্মাব নিৰ্জ্জনতা ব্ৰহ্ম কবিতে পাৰিয়াছেন এবং ছা্যাকে প্ৰিতাৰ कितियां श्रीक्रक मात बच्चा क भितियां व क्षेत्र असी श्रक्त वर्ण श्रीवाम পাইয়াছেন, তাঁহাবাই চবমে দি'ল্পলাভ কবিতে সমর্থ হইয়াছেন। **এই যে ছায়াকে পবিভাব ক**িয়া বস্তুত্ক পবিবাব প্রায়াস ইতা-(कहे नामन निर्हा नत्न। जामन-निष्ठ नाक्तिशन खन (काना-হলের মধো থাকিয়াও ভাহার প্রতি উদাসীন। অসাব কোলা হলে ভাঁহাবা কোন দিন গন্ধৰা পথ হইতে তিচাত হন না, না পাইয়াও পাইয়াছি বলেন না অণবা ছায়'কে দেখিয়া বস্তু वश्च करिया ही रकाव करतन ना। यह मध्य नमना छै। धारमंत्र খ্রণ কীর্ত্তন করে, অথবা ভাঁচাদিগকে সাধক-শ্রেষ্ঠ বা অগ্রসর ব্যক্তি বলিয়া ঘোষণা করে, তথাপি তাঁচাবা এক মৃহুর্ত্তব জন্ত ও আপেনাদের প্রাকৃত অবস্থা বিস্মৃত হন না। যথন শত শত বাকি ছায়াব পশ্চাতে ধানিত হয়, তখন হয়ত সকলেব চক্ষের অগোচরে থাকিয়া ভাঁহাবা নিবিষ্ট চিণ্তত সভা বস্তুর অপন্নয়বে প্রবৃত্ত থাকেন। যে সকল সাধুমহাস্মার নাম ধর্ম-জগতে বিশেষ প্রতিষ্ঠ। লাভ করিয়াছে এবং য'গানের পদাক্ষ অনুসবণ কবিয়া क्षत्र का के कि । कि । कि नवना नी की बन भरण का शाव करे (कार्क, তাঁহাদের জীননে নিশেষ গুণ কি ছিল, এই চিম্বাতে প্রবৃত্ত হইলেই এই সাধন-নিষ্ঠার প্রতি দৃষ্টি পতিত হয়। জগতের প্রচলিত ধর্ম সাধনে যদি তাঁহাবা আত্মপ্ত হইতে পাবিতেন, ভাষা হইলে ভাঁহাদের জীবনে সে প্রকার কঠোর সংগ্রান জাগিত না। জীহাদের মহত্ত্বের গুট বহস্ত এই :-- মে তাহারা অপরের মুপ ঈশ্বর পরকাল ও পশ্ম ধশ্ম বিষয়ে যাতা শুনিলেন তাতাতে তৃপ্ত ङहेटच পादिरलग ना , निक माध्यन व दाता (मरे मक्त म्डारक আয়িত্ত কে বিধাৰ জন্ম দচ প্ৰতিক্তাক্ত ১ইকোন।

কোন প্ৰার বিদ্যাবিদ্যা প্ৰশোভানৰ দ্বা সেই লক্ষা হাই দে দ্বৈকে স্বারাই ইইটে দিলোন না। স্বৰ্ধেষ্ নিবস্থৰ একাঞান সহিত সভ্যোর ধানে কাবিছে কবিতে স্বরে সভ্যোর জ্যোতিঃ বিদীণ ইইলা, এবং স্ক্রেলাবের প্রপাবের স্বারিক্ষা হাবে দিবা জ্ঞান-চক্ষুতে সেই সভ্যা প্রেষকে দশন কাব লোন। ইহবেই নাম সিনিলাভ। এই ভাব প্রাপ্ত ইইমাই স্ক্রেণাবিদ্যাল হলেন। শুনুত্র বিশ্বে স্বার্ভত প্রারে, স্বার্ভ্রেশানি দিলালন ভঙ্গ। বেদাহমানেই পুরুষং মহান্তং স্বারিগণ ভ্যাসং প্রস্তাং শ্রেষ্থা হাবিগণ

অথ:—ে (০ বিব্য ধানবানী অনুত্ব পুত্র মকল, ভোনবা শ্রুবক কব পানে সক্ষাবেব প্রাণার আদিতা বর্ণ এই মহান্ পুরুষকে জান্যাত।"— এই কব সিজিলাভ করিয়াই সাবন-ান্ত সাধকগণ জন হ বাম-বন বিভর্গ করিছে সমর্থ ইইয়াছিলেন। ব্যাক্ষিণোৰ চিত্র যেনন বার বাব বহিমুখীন ইইবার স্ভাবনা ভাগাদিগকে তেনান চূত্তা ও একাগ্রভার সহিত সাধন-নিতা অবশ্যন কবিতে হইবে।

#### যোগ ও ব্রাহ্মসমাজ।

( প্রাপ্ত )

যোগ কণাটীর বিভিন্ন নিবৃতি আছে। সে সম্পায় বিবেচনা করা আমাদের উদ্দেশ্য নহে। সবল অধ্যাত্ম-যোগ কি এবং উচাকোন নেশে ব্রাহ্মসমাজে প্রবেশ কবিরাছে, ইত্যাদি বিষয় এই প্রবন্ধে আলোচিত হইবে।

স্থারের সহিত যোগ, কোন্ অর্থে ধার্মিকগণ যোগ শক্ষ প্রায়েগ কবিষা থাকেন ? যোগ বলিলেই বিযোগের অন্তিম্বরার । কিন্তু স্থারের সহিত বিযোগ সম্ভবে না, কাবণ ভাহা হলল আত্মা বিনাশ প্রাপ্ত হল। স্থাব ও জীব নিতাস্ক্ত; কিন্তু এই যোগে জীব অনুভব করে না, কাবণ পাপ ও অজ্ঞান ভীবের অক্তশ্চক্তক মলিন, ও উজ্জ্বল দৃষ্টিশক্তি-হীন করিয়া রাথিয়াছে। এই অজ্ঞান ও পাপ যত দ্বীকৃত ইইবে, ততই দৃষ্টিশক্তি বন্ধিত ইইবা, জ্ঞানচক্ষ্ খালবে। এই অধ্যাত্ম চক্ষ্ উন্মালিত কাববার জন্ত নানা প্রকাব উপায় বাক্রেশ মানবাত্মা কর্তৃক উদ্ধাবিত ইইবাছে। ইহাদেবই নাম যোগ সাধন। আক্ষেত্রেশ উচাবিত ইইবাছে। ইহাদেবই নাম যোগ সাধন। আক্ষেত্রেশ করা উচিত, ইহাই আ্নাদের অনুস্কের।

ক্ষার চিনায় অতীক্রের। ই ক্রমের সাহাযা হারা ভাহাকে প্রত্যক্ষ করিবরে উপাধ নাই। আয়ার মধ্যে তাঁহার সন্তাহাক ভূতিই যোগ। আয়ার মূপে এক্সশক্তি, জ্ঞানের মূপে তাঁহার জ্ঞান, প্রেমের মূপে ভাহার প্রেম, প্রেমের মূপে ভাহার প্রেম, প্রেমের মূপে ভাহার প্রেম। ভান আমাতে এবং আমি তাঁহাতে, বিন্দুর মাঝে কিছাও সিন্ধর মাঝে বিন্দু এবং সাজে অনত্যে একটা ঘনিষ্ঠ প্রেমের সম্বন্ধ আতি প্রিম্মের কপে উপলিক করাই যোগ। যোগ কন্ত্রা হইতে বিভেল্ল নতে। কর্ত্তবিক করাই ধর্মের মজে, আতা। যোগ কন্ত্রা ক্রমের মান্তা ক্ষাকার সিদ্ধান করে। যোগ একটা আন্যায়েক অবস্থা—শারীবেক নতে।

কিন্তু শ্বীর ও আয়োগে আধার আধ্যে স্থান। স্থা শ্রীরে স্থা আয়ে চাই , নতেৎ সংধ্যে অন্নক ব্যাঘ ত জানিব। কি প্রেকাবে দেহ স্থা বাধা, উহা কিঞ্ছিং বন্ধ করিকেই জানা যায়। যুক্তহিব, যুক্তাবিহার, যুক্তাবিহার, যুক্তহিই, ভাগাবিদান হহলেই শ্বীব মহাশ্যকে স্থা হাগা যায়; মোটাম্টী ইহাই বলা যাহেতে গাবেঃ

अथम जागारभन ठाड कि १ मारकर्भ नना याहर छ ।

- ১। সাত্য—সূত শ্বীব চাই। আহার, নিজা, বিহাবাদিতে
  নিয়ম ও সাববনেতা থাকেলে হথা স্থান্ত হয়। ্প্রাণ্যামাদি
  ইতার উপায় হহতে পাবে, বিস্কু উহা ভ্যাবহ; কাবৰ অনেক স্বনেই সমূহ অনিউজনক। আনি যোগ সাধনকে প্রাণায়াম না ব্লিয়া "বাসনাবিরাম" ব্লি।
- ২। তান— যেখানে ব্যিলে মনঃসংখ্যের ব্যাঘাত হর না, এমত তান চাই। নাতি এলৈ, নাতে শীত, প্রিক্ক, নিজ্ঞান, নিঃশব্দ ভানই সাধ্নের অনুক্ল। দেহ মনের প্রায়তা ও আফ্রেশ-জনক ভান চাই ।

যে প্রকারে থাকিলে নিজাবেশ, আলস্য, অড্তা, চঞ্চল্ডা, অন্থাদি উৎপন্ন হর বা চইতে পারে, সে প্রকারে অবস্থান করিলে চলিবে না। মহর্ষি পত্তপ্রলি একস্থলে স্ত্রে বলিরাছেন "আসন সহজ ও তিব" লগুরা প্রয়োজন। কিন্তু উঁচার টীকাকার ৮৪ প্রকার আসনের অবতারণা করিয়াও ক্ষান্ত না চইয়া ৮৪০০০ চৌরাশি সহস্র প্রকার আসন আছে, এই প্রকার বলিরাছেন। অনেকেই এই সমুদার উপায়কে, উদ্বেশ্র বলিরা ভ্রম করিরা "আসন" কৃত্রি সাধনে কাল নই করেন। আমরা উহা করি নাই, অত্রেব উহা হইতে কোন উপকার সম্ভব কি না বলিতে ওপারি না। কিন্তু এই পর্যান্ত বলিতে পারি যে শারীরিক প্রেক্রিয়া অপেক্যা, মানসিক প্রক্রিয়ার দ্বারা শীঘ্র মানসিক ফল উৎপন্ন হইবার স্বস্তাবনা। বিশেষতঃ এই কাল তপ্রভাবি ব্যায়ান্মানের কাল নহে। অত্রেব এখন সে সমুদার কঠোর ব্যায়ান্মাদি অভ্যাস করা নিপ্রান্তন। সহজ, দ্বির্প্ত আরেশ উপ্রেশন করিলেই যথের ইইতে পারে।

৪। সংঘ্যা ।— ইন্দ্রিরের চঞ্চলতা থাকিলে মনং তির ছয়
না। আনেক বৈজ্ঞানিক কঠোর সংঘ্যা, কারণ অঞ্চণ ইন্দ্র আতি কৃক্ষ যন্ত্রাদি তির ভাবে বচক্ষণ হস্তে ধারণ করিছে পাবেন না। প্রসিদ্ধ কুত্রীগারের। সংঘ্যা, নচেৎ লায়্বিক চুর্বলতা নিবন্ধন আনেক কসবং অসন্ত্র হুইত। এই কারণেই প্রাচীন শ্রীসে অলিম্পিক মেশার মল্লযুদ্ধে ঘাঁহারা প্রতিযোগিতা করি-তেন, তাঁহারণ সংঘ্যার সহারতা করে। অভএর সংঘ্যা পারী-বিক তিরতার জন্তাও প্রয়োজন। আন্তরিক হিরতার জন্ত, উহার স্মানই প্রয়োজন। মন অপ্রতিত্র বস্তুবিষয়ে বিকিপ্তা থাকিলে, চিত্রিকার নিবন্ধন বিষয় বিশেষে মনোনিবেশ অসন্তর। বিশেষতঃ ই ক্রয়-ভাগ ইন্দ্রির ক্রথ-লাল্যা ব্রন্ধিত করে। উহার বৃদ্ধি হুইলে, অধ্যান্ত্র-বিষয় লাল্যা ত্রাম পায়। যাদ ভাহাই হুইল, ভবে কেই বা ও কিসের ফক্রই বা মনংসংঘ্যা ক্রিবে। বাক্যাদের সংঘ্যান্ত নিক্ষান্ত প্রয়োজন।

 ৪। চিত্র বি 'নবেধ।—মানাসক রুতি সম্হকে অভাস ছাৰা বছিবিষ্ট্ৰি ১০০ছ। ফ্ৰাইষা বস্তু বিশেষের ধানে নিয়োগ করা সাধকের গণ্ডে নিশস্থ প্রাঞ্জন। রূপ বসাদিতে নিচরণ-শীল মনকে জনশঃ ধার্বস্তুতে স্বির করিতে হইবে। শাল্প-कारतन्त्री नत्त्रान त्य भान्न, अन्त्र, जिञ्जाखा, नामाखा, जामासा, ननांहे-मध्या वा र कार्या ६० वर्गक खित्राहात मध्या कविया, मुष्टै खित कतिहा भगायत र जिख्युखि निज़क्ष इहरा शाहक। चारिक है नर्लन । ग हुल कि निर्माण त्राधानि चाता । अहे मकल कन नाम कता यात्र। विश्व रकात्र तत्नम (य क्षाक्रण छेलात्त्र. উপযুক্ত মাত্রায় প্রানাধান না চইলে কুর্ছ, উন্মাদ, ক্ষয়ব্যক্র **हेजानि** ভगकत भगका नाम्यत छेर्पा**ख हता क**थन कथन अ ৰা হঠাৎ মৃত্যু প্ৰান্ত গাট্যা পালে এবং ভজ্জা অমুক্তা করিয়া-**ष्ट्रन (य मर्ला**श) का अपनी को ने जिल्ला का नीस नहा । अपनी षिन इट्रेंट के के काकात (याश न्द्रांश काक्रमार**लत (एट्ट** क्यारिक) कतियाद्य, किन्न हेवाइह माना लागावादमत धारे नमुनात, ( আভার কথা পরে বলিব ) বিষময় ফল আনেক ুখলে ভরতর | আকাৰে প্রকাশিত চইতেছে। দৃষ্টাস্ত উদ্ধুত করা নিপ্রয়োজন। কারণ ব্রাক্ষ যোগ-সম্প্রদায়ের নিকট উচা অবিদিত নাই।

৫। (शाह वञ्च ।---भाग छ कविन, किन्न कि भाग कतिव ? र्यागभाञ्च नरनम रव **চিন্তবৃত্তি নিরুদ্ধ ও আংলু। স্মা**ৰ্ভিত ভইলে ষাগ ধানি করিবে তৎসম্বন্ধে তথা জ্ঞাত চইতে পানিবে। এড रान निकारकात कथा। नाधनारकात कि धान कतिर ? (रोक-যোগী আজুত্তাদি অসুধান করেন, অথবা স্বধ্যান বর্জন করিখা মানসিক শৃক্তা লাভের চেষ্টা কবেন। শৃক্তা ও মৃত্যু একট ৰুণা। আমবা শৃন্ততা চাই না, পূৰ্ণতা চাই। আজিক माधक क्रेश्वत धान करवन। महर्षि পত्रक्षति हेहारक है मर्स्वास्ट স্থান দিয়াছেন। ঈশ্বরধ্যান কিন্তু একটা গোলমেলে কথা। উহা কি আকারে করিব? তাঁচার নিষ্ণ, নান, স্বরূপ, বা ভংগল্পনীয় বিষয়বিশেষে নিকাত নিক্ষণা দীপশিখার মত মনকে স্থিবভাবে প্রয়োগ করা চাই। কিন্তু উহার মধ্যে কোন্টী করিব ? বে স্থরপাত্মক নাম, বা স্থরপ চিন্তা করিলে প্রেম, ভক্তি, विश्वाम, ना जानत्मव केनत्र हत्र, जाहाहे ভानिए हहेता। চিত্ত সহকোই ভাষাতে পির ছইবে—কারণ মন ও হানর উভরে युक्त बहेश केव्हाव महिक कार्या कि बिरत; आञ्चात ममुनात दुखि বচিবিষয় চইতে নিগৃহীত চওত: অন্ত:মুখীন চইয়া এককালে এক কার্যোরত হটবে। কিছুকাল নিয়মিত সময়ে নিয়মিত রূপে এট প্রকার কবিলে, আত্মার গূঢ অত্ন ও বর্ণনাতীত আনন্দায়ভূতি জ্মিবে, আ্যা তথন ভূম্নিক স্গেরে, যেন "অংগ্রান" চইষা নিমগ্ন চইবে। তথন ঈশবজ্ঞানের ক্ষীণ পিপাসা जेश्वतमर्गन वालगात्रभ अपमा ७ ध्वज्द दिशवनि প্রবাচের আকার ধারণ করিবে। সেই সঙ্গে সংগ্रह **5क्ल**ज প্রভৃতি हे किया लिखाः. निषय नान्या. লোণ পাহতে থাকিবে। ব্ৰহ্মজ্ঞান ও ব্ৰহ্মপ্ৰেম যত্ট ক্তি পাইবে, ভত্ত মন ও লদ্ধেব সৰু ভিসম্হ মুক্লিত হইতে পাকিবে, তুকাৰতা ও মলিমতা দূৰ ১ইতে থাকিবে, "হৃদয়কাননে ফুটিলে ফুল, চাবিদিক চবে সৌবভে আকুল।" আয়াৰ নিজিত বুজি ও শক্তিসমূহ জাগ্রন চইতে থাকিবে। এই জন্মই উপু-নিষ্দেৰ ঋষ্ণ দূৰ খতীৰ কাল হইছে নি'লুভ মানৰকে বলিতেছেন "উঠ, জাংগাং, সায়ো ও প্ৰমায়াকে দৰ্শন কৰিয়া মুক্ত ও ক্লডাৰ্থ হও।" আয়োর সম্বায় শক্তি বলপুর্বকৈ এক-कारत धाराम ना करितन, छेशापत प्रमाक् क नम ना वह त প্ৰমণ্মাকে লাভ ক্ৰা যায় না, সেই জ্ঞ ঋ্ৰিণ্ণ ব্লিয়াছেন "नागगञ्जा वनशैरनन नाउः ।"

পুন: যে অকণ সাধন কবিব ভাষা সভামূলক ছওবা চাই—
মিথারে হ'র' সভাে উপনাছ হওৱা য'য় না। সবল ও বাকুল
ভাবে ভ্রমবশত: নিগাকে যদি ধাব, ভাবদশাঁ ভগবান অবশ্রতী
পরিশেষে ক্রণাপুরক সভাালোক প্রকাশ কবিবেন সন্দেহ
নাই। তথা আবার সম্যেব ধানে ও ভ্রমা কবিতে হইবে।
কিন্তু ইহাতে বিলম্ম হইবে। নচেং সতা ও মিথাার হাবা এক
সময়ে সভালাভ কবিলে সভা ও মেথাার প্রভেদ কি ? অভএব
সভাের ভ্রমনা না করিলে সভাত্ররপের দর্শন লাভ হইবে কি
প্রকারে? সভাের ধানে ও পুলা করিতে হইলে সভাভারী,

সভাকারী, সভ্যাচারী, এবং সভ্যপ্রির ছওরা অবশুই কর্ত্বা। নচেৎ সভ্যের প্রকৃত ভজনা হওরা আকাশকুসুমবৎ জলীক দিবা-স্থামাত্র।

এক এক স্বরূপ এক এক প্রাক্তরির আত্মার প্রিয়। যে শ্বরপটী সাধন করিবে, আত্মাও সেইভাবে রঞ্জিত হইবে। বেমন আর্ম্লা কুন্তীর পোকার ধ্যান করিতে করিতে তাহার প্রস্তৃতি चातक शतिमाण नाष्ठ करता। এकी चत्रश नाधन कत्रिष्ठ क्रिएं, अञ्चलि একে धारक धार्काल जातकात जिन्दात छात्र ব্দরকারের মধ্য হইতে যেন ফুটিয়া উঠে। প্রেমাদি ভাষের বর্ণ ধ্যানে মাথামাথী না হইলে আত্মান্ন তাঁহার স্বরূপের রং খুলে না—ফুটিয়া উঠে না। স্বরূপ ফুটিলে অজ্ঞান ও অপবিত্রতা দুরীভূত হইবেই হইবে। কারণ সমলিন সলিলে পরিষার প্রতিবিশ্ব ক্ৰথনই পড়িৰে না। উচা যত ন্বিয় ও নিৰ্মাণ চইবে—প্ৰতিবিশ্ব **७७३ म्लप्टे इकेरत। উहा विश्वी शमार्थरक नाम कतिराय-**যেমন জ্যোতির প্রকাশে অন্ধকার বিনষ্ট হর। অতএব ধ্যের বস্তুর সম্বন্ধে বিশেষ সাবধানভার সহিত সাধকের নির্ম্বাচনশক্তি थारबाग कबा कर्खवा। धरकश्वतवामी जाधकश्व या जमुमाब অরপাত্মক মন্ত্রাদি সাধন করেন, তাহার করেকটী মাত্র নিয়ে উল্লিখিত চটল।

- ১। ४ छ ७ १ मर।
- ২। ওঁদচ্চিদেকং ব্ৰহ্ম।
- ७। ७ मडार भिवर चुम्मद्वर।
- 8। उँ मिकिनानमः उच्च।
- 💶 ওঁ সভাং জ্ঞানং অনস্তম্ ব্ৰহ্ম।
- । ॐ भाखः भिवः कदेवङः।
- ৭। ওঁভন্ধং অপাপবিদ্ধং।
- ৮। ওঁ আনন্দ রূপং অমৃতং।

অবৈত্বাদিগণ "তত্মদি," "সোহং" ইত্যাদি বিষয় ধ্যান করিরা থাকেন।

ক্রেম্প:--

## প্রেরিত পত্র।

পেত্র থেরকদিগের মতামতের জন্ত সম্পাদক দায়ী নহেন, কিছা কাহারও পত্র কেবত দিতে বাধ্য নহেন ) শ্রদ্ধাস্পাদ শ্রীযুক্ত তত্ত্বকোমুদী সম্পাদক মহাশর,

मभौत्यम् ।

মহাশয়!

গত ১৬ই কার্ত্তিকের তব কৌম্দীতে "শ্রীসত্যদর্শী" ব্রাক্ষ সাধারণর নিকট তিনটী প্রান্ন উপস্থিত করিয়া তাহার মীমাংসা কবিতে অমুরোধ করিরাছেন। ব্রাক্ষসমাজের পক্ষে এই সকল প্রান্ন কিছু নৃতন বা অমীমাংসিত নহে। কিছু যথন বারস্বার এই সকল প্রান্নের আলোচনা হইংতছে এবং সন্দেহ ও বিতর্ক আসিয়া লোকের মনকে আন্ধোলিত করিতেছে,তথন এই প্রকার সন্দেহ ও বিতর্কের অবসান করিতে সকলেয়ই যথাসাধা প্রান্নী হওরা আবক্তক। প্রান্ন করেকটার যথায়ণ উত্তর

প্রাণানে সক্ষাকি আক্ষম ভাঙার বিচার না করিয়াও কর্ত্ব্য জ্ঞানে এই শুরুতর কার্য্যে অগ্রসর হইলাম।

সত্যদর্শী মহাশরের প্রথম প্রাশ্ন এই যে"ব্রাক্ষসমাজের প্রচলিভ गाधन व्यनालीत मर्था किছू जगम्मूर्गण जारह किना" এই व्यक्तित মীমাংসা কর। বেশী কিছু কঠিন নর। কারণ ব্রাহ্মপণ বিখাস করেন মানবাত্মা অনন্ত উল্লভিশীল। আত্মা নির্ভন্ন উন্নতির পথেই অগ্রসর হইবে। স্থতরাং এইরূপ অনস্ত উন্নতিশীল আত্মার কল্যাণোপযোগী ধর্মাও যে উন্নতিশীল এবং সেই ধর্মের সাধন-প্রণালীও যে উন্নতিশীল চইবে তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। উন্নতিশীল আত্মার পোষণক্ষম সাধন প্রণালী কথনই সীমা বিশিষ্টও সম্পূর্ণ হইবে না। ইতাতে নিতা ন্তন বিষয় সংযোজিত চইবে; নিতা নৃতন তত্ব ও ভাব সকল মিলিত ভইরা ক্রমশঃ ইচাকে পূর্ণভার দিকে লটরা বাটবে। সম্পূর্ণ হটল বলিয়া সীমা নির্দেশ করিবার অবভা কথনও হইবে না। স্থতরাং বর্ত্তমান সাধন প্রণালী যে সম্পূর্ণতা লাভ করিয়াছে এরূপ নির্দেশ করা ত্রাহ্মধর্ম্মের বিরোধী। ত্রাহ্ম কথনও কোন श्रेगानीरक मण्पूर्ण विनिधा निर्फाण कविराज भारतन ना । वर्जमान সাধন প্রণালীর কত উল্লভি হইবে, কভ নৃভন নৃতন ভস্ব ইচার অন্তনিবিষ্ট চটবে ভালা কেচট আনে না। ভবে ব্রাহ্মগণ কেন যে আপনাদের সাধন-প্রণালীকে অসম্পূর্ণ জানি-রাও তাহা অবলম্বন করিয়া আছেন, তাহার উত্তর দেওয়াও ক্ষিন নহে। কারণ উচিরা নিজেরা যেমন অসম্পূর্ণ তাঁহাদের সাধন-প্রণালীও তেমনি অসম্পূর্ণ। সম্পূর্ণ সাধন প্রণাণীর অভিত্তের সম্ভাবনাও নাই। যদি থাকিত ভ্রাহ্মণণ তাহার অমুসরণ করিতেন। কিন্তু তাহা নাই। তাঁহাদের নিকট যাহা উৎকৃষ্ট বলিয়া মনে হইতেছে,ভাহাই অব-লম্বন করিয়া ধর্মসাধন করিভেছেন। ব্রাহ্মগণ এমনও মনে করেন না যে কোন প্রণালী বিশেষেই সকল অভাব দূর হইতে পারে। প্রণালীর স্বতঃ এমন কোন ক্ষমতা নাই, যাহার স্বাশ্রর মাত্রেই মানবের সকল অভাব ঘুচিয়া যাইতে পারে। পেকা প্রয়োজন--আন্তরিক অনুরাপ ও নিষ্ঠার স্ভিত ব্রহ্মকুপার প্রভাগী হইয়া ও তাঁচাতে নির্ভরণীল চইয়া নিরত পরিশ্রমণীল অন্তরে সাধনে রভ পাকা। নভুবা যদি প্রণানীরই বিশেষ কোন ক্ষমতা থাকিত, ভাষা ষ্টলে প্রত্যেক বাজিই ধর্মের চরম সীমার ঘাইতে পারিত। কেহ গুরু, কেচ শিষা থাকিত না। এখন যে এক একজন গুরুর পশ্চাতে শত শত শিবা ছুটিরা যাইতেছেন ভাষা সার ঘটিত না। কোন একটা প্রণালীর আশ্রন্থ প্রচণ করিয়া সকলেই একবারে ধার্মিক প্রধান হইতে পারিছেন। किंख डागात मृही ख भा ख्या यात्र ना । এक हे ध्रांभानी व्यवनयन कतिया कोवरन कठ जांत्रजमा मुद्दे इत। अत्राप जांत्रजमा चृतिवास কারণ কি ? অন্তুসন্ধান করিলেই দেখা ঘাটবে যিনি যে পদ্ধি-মাণে ব্যাকুলতা সহকারে নিয়ত পরিশ্রমের স্থিত সাধনে রঙ রহিরাছেন, তিনি সেই পরিমাণে ধর্মপথে অঞাসর হইরাছেন। মুভরাং একমাত্র কোন প্রণাদীর আশ্রন্ন লইলেই সকল অভাব বার না। বিশেষ নিষ্ঠা ও অনুরাগের সহিত সাধন করিলেই তবে উন্নতি হইছে পারে।

সভাদশী মহাশরের ২য় আলল "আক্ষসমাজ কথনও অভ্ৰান্ত গুরু স্বীকার করেন নাই করিতে প্রস্তুত্ত . নচেন ইত্যাদি ..... এখন প্রশ্ন এই ८य **धर्णवाटका** অপ্রগামী কোন অভিজ্ঞ ব্যক্তির নিকট বিশেষভাবে ধর্মশিকা করা ত্রাদ্ধর্মের অনুমোদিত কি না।" ত্রাদ্ধসমান্ত অভ্রন্থ শুরু কেন খীকার করেন ন। ? যদি এমন হয় যে বাস্তবিক কেচ অন্তান্ত আছেন, অথচ ভাহাকে অন্তান্ত বলিয়া মাক্ত করা হয় না, তাচা হইলে এরূপ আচরণ নিতান্তই অপ্রদের এবং সভ্যের বিরোধী। ত্রাহ্মগণ এমন খামথেরালের কথা কখনও বলেন मा। वतः बाक्षशंग हेगाहे वालन त्य यिनि त्य विवास प्यञास ভাঁছাকে দেই বিষয়ে অভাস্তরপে মানাই উচিত। বিজ্ঞানের এমন কোন কোন সভা আছে, যাহাকে অভাস্ত সভা বলিরাই স্বীকার করিতে হর। স্থৃতরাং সে সত্য যিনি জানেন তাঁহাকে সেই বিষয়ে অভ্ৰাক্ত মানিতে কোন দেয়েই নাই। বরং मा मानाहे (पाव। जा विलया (पहे वाक्तिरक प्रमश विकास লান্তে অভ্ৰান্ত ধলিয়া স্বীকার করিতে চইবে, এমন কোন কণা নাই। বিজ্ঞানের কত বিষয় অমীমাংসিত, অনাবিষ্ণত রহি-স্বাছে ভাচার ইয়ত। নাই, স্মতরাং সমগ্র বিজ্ঞান বিষয়ে কাচা-কেও অল্রান্ত বলিয়া স্বীকার করা ক্রায়সঙ্গত নতে। এইরূপ লভ্যেক বিষয় সম্বন্ধেই বলা যায়, যাহা বাল্ডবিক সভা তাহায় কান বাঁচার আছে সে বিষয়ে তিনি অভান্ত। কিন্তু পূর্ণ 🗃 ন মানবের মধ্যে কালারও থাকিবার সম্ভাবনা নাই। পূর্ণ 🐠 ন একমাত্র ঈশরেই বস্তুগান। ভিনিই সকল বিষয়ে অভ্রাস্ত । মানব কোন কোন বিষয়ে অভান্ত ইংলেও সমাক জ্ঞান যথন ভাচাতে সম্ভবে না, তথন কিরূপে তাচাকে সমাকরণে অভান্ত बनिया माना याहेटल পारत । वाक्य विषयक यथन नाना ध्यकात ভ্রম চটরা থাকে। তথন অন্তর্জগতে আরও কত ভ্রম ঘটিবার मञ्जावना। विद्यविष्ठः मानव कीवन व्यनस উन्नजिनील जाहात পোষণোপৰে।গী ধর্ম 9 অনস্ত উন্নতিশীল। সেট অনস্ত উন্নতিশীল ধর্ম্মের কত তত্ত্ব অনাবিষ্কৃত ও অসীমাংসিত আছে কে জানে? মুডরাং এরপ অনস্ত উন্নতিশীণ বিষয়ে কাচাকেও অভাস্তরূপে क्षंडन कर्त्रा नाहा छ युक्ति विज्ञास । यान (कह ज्याननाटक राज्ञन অভাস্ত বলিয়া মনে করেন, উচ্চাব সেই সাহসকে অভি সাহস ভিন্ন আৰু কি বলা যাইতে পারে। যদি বাস্তবিক অভান্ত কোন বাক্তি থাকিভেন, আর ব্রাহ্মগণ তাঁচাকে অভ্রান্ত বলিয়া স্বীকার না করিতেন, ভাছা দুখনীর ছইত। কিন্তু সেরুণ वाकि नाहे ध्वः इहेट्ड भारतन ना। ध्यम खान्नान चलास শক্ত শীকার করেন না। তবে ধর্মরাজ্যে অগ্রসর অভিজ্ঞ বাকির निकृष्टे भिक्षा कर्ता व्यथवा विरमयञ्चादि धर्माभिका कर्ता कथनहे व्यक-ৰ্ভবানছে। গণিত, বিজ্ঞান প্রভৃতি সমস্ত বিষয় যখন অপরের निक्छे निका कता यात्र, धर्य नचरक त्कन निका कता ना বাইবে। শিক্ষণীর প্রভ্যেক বিষয়ই শিক্ষা করিতে হইবে। শিক্ষার व्यगंगी नानाकानत नानाव्यकात इरेटल भारत : किन्द भिका ক্রিতেই ছইবে। ধর্ম্মশৃদ্ধীয় সাধারণ শিক্ষা ভাষা শিক্ষায় ভার। জনসমতে জামলেই মামুব কথা বলিছে শিংধ। काहार निक्षे कथा बनिएक निका कत्रिम, छाहा द्यान निर्देश

করিবার উপায় নাই; দেশস্থ সকলেই এই ক্ষেত্রে যেমন शिक्षक। धर्यमध्योग माधावन खान ९ (उमनि। नकरनके কিছু কিছু ধৰ্মতত্ত্ব জানে কাহার নিকট যে সে তত্ত্ব শিক্ষা হইল ভাগ নির্দেশ কবিবার উপায় নাই। আন্তরিক জ্ঞানার্জন বুদ্ধি হইতে লোকে বিশেষ ভাবে কোন ব্যক্তির শরণাগত না হইয়াও অনেক তত্ব শিকা করিতে পারে। এবং সেই শিকাই বিশেষ শিক্ষার মূল ভিত্তিরূপে কার্য্য করে। শিক্ষার পর ভাষা সম্বন্ধে বিশেষ জ্ঞান লাভ করিতে হইলে সাহিত্যের পণ্ডিতের নিক্ট গমন করিলে শিক্ষা অনেক পরিমাণে সহজে ও অল্প সময়ে হয়। কিন্তু কোন শিক্ষকের সাচাঘ্য এচণ না করিলেই যে শিকালাভের সম্ভাবনা নাই; এমন বলিবার কি সুযোগ আছে। যদি ভাছা সম্ভব হইত ভাছা हरेत चापि उच्च किन्नाभ चारिकुड हरेत। चार्छास्टक चार्शक প্রবল জ্ঞান-পিপাসা ও একাস্ত যত্নের সহিত চেষ্টা কর্বাভেই জগতে নানা তত্ত্বে আবিকার চইয়াছে। সকলেরই প্রথম निक्क छ।नहाठा प्रस्तकन ७३ मध्य भग्नरमध्य । जिनि भिका ना দিলে কোন তত্ত্ই শিক্ষা করিবার উপায় নাই। প্রত্যেক বিষয়েই মাহুষ তাঁহার মুখাপেক্ষা করিয়া,ভাঁহাব প্রতি নির্ভরশীল হইরা থাকিতে পারিলে শিক্ষা করিতে পারে। কিন্তুতাচাসময় ও পরিশ্রম সাধ্য। এজন্ত যেতৃত্ব একবার প্রকাশিত হইয়াছে,তাহা জানিবার জন্ত আর সেরপ পরিপ্রম ও সময় ব্যয় না করিয়া, সেই ভত্তজ্ঞের নিকট শিক্ষা করাই যুক্তি সঙ্গত। তত্বারাই সহজে অল সময়ে শিক্ষার বিস্তার হইডে পাবে। ধর্মতত্ব শিক্ষার জন্তও এই নিমিত্তই প্রকাশিত তত্ত্ব সম্বন্ধে শিক্ষকেব সাহায্য লওরা আবিশ্রক। কিন্তু ইহা ঘারা এমন প্রমাণিত হয় না যে সেই শিক্ষকের নিকট না গেলে আর সে তত্ত শিক্ষার উপায় ছিল না বা তাঁহার নিকট শিক্ষা লাভ না করিলে কাহারও পবিত্রাণ হইবে না। ধম রাজ্যে এই এক ভয়ানক বিভীষিকা বর্ত্তমান আছে, যে ব্যক্তি-বিশেষের শরণাপর না হইলে, তাঁহার প্রদর্শিত পথে না চলিলে আরে কাচারও উপায় নাই। পরিতাণে নাই। তাঁহার কণার উপর সন্দেহও বিচার করিবার শিক্ষার্পীর কোন আধকার নাই। मण्यु-विराव काचा-विहात वृद्धि । विराव करक विमर्कान मित्रा दकान ব্যক্তির চন্তে আত্ম সমর্পণ না করিলে আরে কিছুতেই শিকা পাইবার উপার নাই। এমন কি এ দেশে ধর্মঞ্জর কেবল আধ্যাত্মিক বিষয়ের ভার লইরাই কান্ত হন না--লিব্যের সর্বা প্রকার বিষয়েরই বিধাতা হটয়া থাকেন। সেরূপ বিষয়েরও শিষ্যের স্বাধীনত। থাকে না। ব্রাহ্মগণ முத் আত্ম ভাবে আফুসুর্ণ করাকে---আত্ম বিবেককে বিসর্জ্জন मित्रा मण्यूर्नतरभ পরের অফুসরণ মনে করেন না। ভদ্যরা আত্মার অধোগতির যথেষ্ট প্রমাণ সকল জগতে বিদামান রঙিয়াছে। এই জন্ত ব্রাহ্মণণ কাচাকেও अभन छार्ट ७ इन चौकांत्र करतन ना, यांहात्र व्यथीनछार्ड विरवक मिन हरेएक शास वा शाकार महस्त नेचरतत मधुबीन वहेवात সম্ভাবনা না থাকে। পরম ওজ পরমেশর প্রভ্যেক আত্মার वक कारात्र निकाय यात्र श्रीत्रा प्राथिशास्त्र । (शरे पाटम

গমন করিতে অভান্ত চওয়াই নিরাপদ। কারণ সেই ওরুর সহিত কালারও বিচ্ছেদ ঘটে না। তিনি সর্কাদা সকলের সঙ্গেই আছেন। পুণিবীব গুৰু স্কল সময় সঙ্গে থাকিতে পারেন না। সকল নর নাবীর পক্ষে গুরুর সাক্ষাৎ পাওয়াও সম্ভবপব নয়, কারণ গুরুর সংখ্যা বেশী নয়। এবং সকল বিষয়ে তাঁহাব জ্ঞান ও সমাক নহে। এজন্ত জীবনের সমগ্র বিষয় শিক্ষাব ভার কাহাবও প্রতি অর্পণ কব। কর্ত্তব্য নচে। যিনি যে বিষয়ে অভিজ্ঞ তাঁহার নিকট সে বিষয় অবশুট শিক্ষা করা যাইতে পারে। তাহাতে অল প্ৰিশ্ৰম ও সময়ে কাৰ্যা সম্পন্ন চইতে পারে। সুতরাং তাহা কেন ত্রান্দ্রের পক্ষে অকর্ত্তন্য হটবে? কিন্তু সর্বাদাই স্বায়ুভূতি স্থান্ত ও সতপদেষ্ঠার উপদেশকে মিলাইয়া কার্য্য করিতে क्रहेरत। वर्र्शमान मगरयत खक्शन जाहार नाथा (एन विवाह) ব্ৰাহ্মগণ সেকপ গুৰুকৰণে অনিচ্চুক। এবং ব্ৰাহ্মগণ এমন ও मान करतम ना (य এवे काल खक्त अधीन ना इवेटन कांवाव अ পরিত্রাণ লাভ হয় না। একজন যদি আম্ববিক যত্রও পবিশ্রমে কোন সভা আয়ত্ত করিছে পারিয়া থাকেন, অক্টেও ভাচা পারিবেন। ইচাই ব্রাক্ষের বিশ্বাস। এজন্ত কোন আশকা-क्रमक পথে গমন না कतिया श्रद्भ श्रद्धक श्रद्धा श्रद्धक श्रद्धा विकरे বাইতে এবং তাঁহাব শিক্ষাকে শিরোধার্য্য করিতেই ব্রাহ্ম ধর্মের উপদেশ। মানবের মধ্যে যিনি সেই শিক্ষার অফুরূপ শিক্ষা প্রদান করিতে পাবেন বা সেজনা প্রয়াসী চন, আন্ধ সেরূপ শিক্ষকের শিক্ষা গ্রহণ করিতে কথনই বিমুধ ইইবেন ना।

স্ত্যদুশীৰ ৩ ব প্রশ্ন এই যে "যোগশিক্ষাকাবিগণ বলেন যে · । বিষয়ী ব্যক্তির বৃহিন্মুখীন মনকে অন্তমুখীন করিয়া ব্রহ্ম দর্শনের পথ খুলিয়া দিতে পারেন। ইহাবই নাম শক্তিস্ঞার। এরপ শক্তি সঞ্চারের মধ্যে কোন সত্য আছে কি না"। এইপ্রশ্নের भीभारमा किकाल कता छ। छ। माधात्रपंत्र कल बाताई कार्यात्र গুণাগুণ নিণয় করা হইয়। থাকে। যোগশিক্ষাকারিগণ শক্তি-मकारत्रत (गत्रभ क्ननारक्त कामा करत्रमा এस्मरम् मध्य সম্প্র নর নারার জীবনে কি তাত। প্রতিক্লিত ইইতেছে ? শত শত বৎসব ধবিয়া এ দেশ এবাণ শক্তি সঞ্চারের ফল পরীক্ষা করিয়া আদিয়াছে। কিন্তু শক্তি স্থার হইলেই যে বিষ্যী বাজির মন অন্তমুথীন ১য় বা এক্ষদশনের পথ থুলিয়া যায় এমন पृष्ठीख ७ देशी (नेशा यात्र ना। (कान मुख्यनाम विस्मायत नारभारत्व ना कांत्ररण ७ ५ (मर्भन्न में किंगकां नहीं उनान स्कान भव्यमात्र कराट धर्मकीनाम्ब (क्यम भाष्य) व्यमान कति एउए छन छाहा मकरलबहे जाना आहि। जैयन मुर्लेग्ने अप श्लिया (शहल অর্থাৎ ঈশ্ব-দর্শনের স্থানিধা পাইলেও যাদ জীবনের একপ তর্বস্থা थाकে वा त्मर पर्नन विषय উपानीन छारे थातक व्यथना विस्थीन মন অন্তর্থীন নাহয়, ভাহাহইলে সে শক্তি স্থারের শাক্ত কেমন তাহা বুঝা যাইতেছে। এ দেশের পক্ষে শক্তিসঞ্চারের कर्था नुष्ठन नत्र। उद्मादा (य मकन कन नाज इत, जाहा ९ वह দিন হইতেই পরীক্ষিত হইয়া আসিতেছে, যদি প্রাক্ষতই শক্তি-नकात मानत्वत नेयत पर्यानत नथ श्रुणिया पिएछ नमर्थ इहेछ এवर

বিষয়ীর বৃদ্ধিন মনকে অন্তমুধীন ক্রিতে সমর্থ হইত, তাহা **চ্টলে এ দেশের কোটীকোটী নরনারীর জক্ত বাচা শত**শত বৎসন্থ খোলা আছে ভাচাব ফল কি এমন চইত। যথন এ দেশের নর নারীর জীবনে সেফল ফলে নাই, তথন শক্তি সঞ্চারের ষে ফলেব আশা যোগশিক্ষাকারিগণ করিতেছেন ভাহা নিভান্তই ত্বাশা। বোণশিক্ষাকাবিগণের উদ্দেশ্য যদি সফ**ল ছইভ** জগতের পক্ষে ভাহা একটা অতি শুভসংবাদ এবং অবত্যস্ত কল্যাণ্কর ব্যাপার চইত। কিন্তু শত শত বৎসরে সে উদ্দেশ্ত সিদ্ধ হয় নাই। শক্তি সঞ্চাব দাবা বাহার। ঈশ্বর দর্শনে সমর্থ হইরাছেন শ্লিয়া মনে করেন, জাঁহাদেশ সেই ঈশ্বর দর্শন লাভ একমাত্র শাক্তসঞ্চাব বা অঞ্চবিধ সাধনেব ফল ভাচাও নিরূপিড हम नाहे। कि छ हे हा (नथा शिशाह्म, उँ। शांतरिक अ नित्रस्त নাম সাধন ও অভাবিধ সাধন ভজনে রত থাকিতে চইলাছে। স্ত্রাং কোন্সাধনের ফলে ঈশ্বর দশন চইল কেমন করিয়া বলা ঘাইতে পারে। সাধারণত: ঈশ্ববের রুণাবাদিগণ **ঈশ্ব**র দর্শনকে তাঁহার রুপাব দান মনে করিয়া থাকেন। স্থভরাং মানবপ্ৰভাব কৈ ঈশব-প্ৰভাব কোন প্ৰভাবে সেই ওডফল পাওয়া গেল, তাতা কেতই ভিরক্সপে নির্দেশ করিতে পারেন ন।। এজন্ত শত শত বংসর যে ব্যাপাবের ফল এদেশ পরীকা করির৷ আসিয়াছে, ভাষার পশ্চাতে বিফল মনোরথ ফইবার জক্ত কোন বুল্লমানেবই যাওয়া উচিত নয়। আক্লধর্ম এরপ শক্তি मुकाद्वित क्रमवन्त्र। विभिन्न किछू चाहि वामम् मत्न करत्रन না। যদিও কিছু ফলবস্তা থাকে ভাছাও ভেমন আকাজকণীয় বলিয়া মনে হয় না। কবেণ তদপেক। সহজও সফল আপালী জগতের নিকট প্রকাশিত হ্রয়ছে। শক্তিসঞ্জের প্রস্কৃত্ত অর্থ এই যে কোন ভক্তিমান ব্যাকুলাত্মার নিকট গমন করিলে বা তাঁগার সংবাদে থাকিলে সহজেই ভাক্তরতি প্রবল হইরা शारक--- त्राकृण्डा विक्रंड बहेबा शारक। विश्वामीत महवारम থাকিলে বিখাসের সঞ্চার হয়। অনাসক্ত বৈরাগীর সহবাসে বৈরাগ্যের সঞ্চার হৃত্যা পাকে। এইরূপ সাধুসহবাসের ফ্**ল** সক্ষত্ৰ প্ৰভিকাশত হইয়া থাকে। বিখাদী, ভক্ত, ও প্ৰেমিকের বিশ্বাস, ভক্তি, প্রোম অন্স ব্যাক্ততে সঞ্চারিত হওয়াকে যাল শক্তি সঞ্চার নাম দেওয়। যায়,মেরূপ শক্তি সঞ্চারকে ব্রাহ্মসমাল অতি আদরের সাহত চির্দিন গ্রহণ করিবেন। ফলভঃ আধ্যাগ্রিক অগতে হহাই শক্তি। এবং এই শক্তিগাভ করিলেই সাধক সিদ্ধ মনোরপ হইতে পারেন। প্রেম, ভাক্ত বিশাসাদির ভার আধ্যাত্মক শক্তি ভিন্ন অপর যে শক্তি ভা**চা লড়ীর শক্তি** ত ওরাই সম্ভব। তাহা শরীরের কল্যাণ সাধনে উপযু**ক্ত হুইলেও** হুইতে পাবে। আত্মার কল্যাণ সাধনে অভীয় শক্তির প্রভাব বেশী আছে এমন নর। স্তবাং সেরপ শক্তি সঞ্চারের প্রায়েজন ব্রাহ্মবমাজ স্মীকার করেন না।

নিৰেদক কলিকাতা। শ্ৰীআদিনাথ চট্টোপাধ্যায়।

١

#### শ্রদ্ধান্দ শ্রীযুক্ত তত্তকৌসুদী সম্পাদক মহাশর সমীপেযু—

#### ( ভ্ৰাতৃদ্বিতীয়া )

মহাপর,

এট পাত্রের শিবোনামের বিষয় লটয়া অদ্য কিঞ্চিৎ আলো-চনা করিতে বাসনা করি। তিন্দু স্মাজের অনেকগুলি প্রাচীন গার্হস্তা অফুষ্ঠান আমরা ত্রাহ্মসমাজ মধ্যে গ্রহণ করিতে সক্ষম হট নাট। কেন হট নাই, ভাচা বলিবাব আবেল্লাকতা অদ্য আমি দেখিতেতি না। কোন কোন অফুষ্ঠান অবতিশয় আদেরের সহিত ব্রাহ্মসমাজ প্রহণ করিয়াছেন। তন্মধো ক্রাডাচের উল্লেখ কবা যাইতে পারে। অ্যনেক ব্রাহ্ম পরিবারে দাবিদ্রোর মধ্যেও যে প্রাকার আডম্বনের সহিত জাতাত পর্ব সম্পন্ত ইরা থাকে, তাতা আমেরা সকলেই জানি। অবস্থার অভিরিক্তরণ আয়োজন না করিয়া জাতাল পর্বাফ্টান সম্পাদিত হওয়া বাঞ্নীয় বলিয়াই মনে .হয়। জাতাহের ভায় ভিন্দমাজ প্রচলিত সর্বপ্রকাব গার্হতা অভুষ্ঠান যে ব্রাহ্ম পরিবার মধো অফুটিত হইতে পাবে না, ইহাব সর্মবাদি-সম্মত। লাত্রিতীয়া অংমি ত্রিধ একটী অনুষ্ঠান বলিয়া মনে করি। কিন্তু কতিপ্য শ্রদ্ধের এবং আমার ভব্তিভালন আমু-ষ্ঠানিক আক, নিজ নিজ পবিবার মবো, সাভিশর স্মারোহ স্তকাবে ভ্রতিষিতীয়ার অনুষ্ঠান কবিতে প্রবৃত্ত চইতেছেন দেখিয়াই আমি এই বিষয়ের আলোচনার প্রবৃত্ত চইলাম।

হিন্দুশার হইতে এই বিষয়ে কি জানিতে পারা যায়, তাহা অত্যে দেখা যাউক।

নির্বান্ত দিতে উক্ত চলাছে, যমৰি লীয়াত শপ্তিপদ্যুত। প্রাহেতি। যম্পিলীয়া মধ্যাক্ত ব্যাপিনী পূর্ববিদ্ধা চেতি ক্লোজি:। অর্থাৎ নির্বায়তাদিতে কহিতেছেন, প্রতিপদ্যুক্তা বিভীয়া, যমন্ত্রীয়া। চেমাজিতে উক্ত চল্যাছে, মধ্যাকের পূর্ব চল্ডে আবন্ত করিয়া মধ্যাক্তকালব্যাপিনী বিভীয়া, যম-বিভীয়া।

আতা বিশেষ। হেমাটো কান্দে:—

"উজে শুকু দিতীয়ারামপবাহেহর্চারৎ যমম্।
আনংকৃত্ব ভাকুজায়াং যমলোকং ন পশুতি॥
উজ্জে শুকু দিতীয়ায়াং পূজিত শুপ্তি। যম:।
বৈষ্টিত: কিয়বৈহন্টি শুনু যেছতি বাঞ্ছিং॥

অর্থাৎ উজ্জেব (কার্ত্তিক মাসেব) শুকু দি গ্রীরাত্তে অপবাকে যমের অর্চনা কবিবে, সানাস্থে স্থা,জারা চারার অর্চনা কাববে, তাচা চইলে যমশোক দর্শন করিতে চইবে না। কার্ত্তিক মাসের শুকু দি গ্রীয়ার পূজিত ও ভর্পিত যম, হাই ও কির্রগণ কর্ত্তি পবি-বেইতে চইরা বাঞ্জিত যাহা তাহা প্রাদান করেন।

ভবিষ্য পুরাণেও প্রায় ঐকপ উল্লেখ আছে। গৌড়দেশের নিমিত্ত নিম্নলিখিত কপ বাবস্তাঃ—

ষমঞ্চ চিত্র গুপ্তক ব্যদ্তাংশ্চ পূজ্জে । অর্থাশ্চাত্র প্রাদাতব্যা য্যায় সহজ্জ হৈঃ॥ মন্ত্রতা

"এফে হি মার্ক প্রজা পাশহন্ত।
ব্যান্ত কালোকসরামরেশ।
ভ্রাত্তি জীনা কু হদেব পূজাং
পূচাণ চার্ঘাং ভগনলমন্তে॥
ভ্রাতন্ত বামুজা হাহং ভূঙকভ জানিং শুভম্।
প্রীত্রে যমরাজন্ত যমুনাল। বিশেষতঃ॥"
খ্যোক্রিলাতে হি বদেভিভি স্মার্ডাঃ॥ ইতাল দাদমিতাপ্যান্তঃ।
ইতি মির্ণার বিজ্ঞী ২র পরিভেন্নঃ।.

উপরি-উক্ত সংস্কৃত বচনগুলির ব্যাখ্যা নিপ্রয়োজন। উদ্বৃত লোকগুলি বার। ম্পট্ট দেখা যাইতেছে যে, ভ্রাভৃদ্বিভীয়ার অপর নাম ষ্মহিতীয়া এবং ভাত্হিতীয়ার সঙ্গে য্ম ও ব্মুনা পূজা জড়িত রহিরাছে। যম ও যমুনা পূজা না কবিয়া ভাতৃ-দিতীয়াফুঠান শাল্লের বিধি নহে। তবে যম ও যমুনা **পূজা** বাদ দিয়া ভ্রাতার আদর অভ্যর্থনা করিতে আমার আপত্তিনাই। কিন্তু ভাচা কার্ত্তিকের শুক্ল দ্বিতীয়াতে না করিয়া একটী বিশেষ তারিথ ধরিয়া করাই যুক্তিসঙ্গত। আঙ্গা কোন কার্যা নির্থক ভাবে করিবেন না। তিনি যাহা কিছু করিবেন, তাহা যুক্তির অফুমোদিত চওয়া আবিশুক। অর্থতীন ভাবে কোন কার্যা কর। যদি কাহারও পক্ষে গঠিত হয়, তবে তাহা ব্রাক্ষেরই পকে। ত্রাহ্ম ভগিনী যদি ভ্রাতার আদেব বা পূজাকরিতে চাচেন, তবে তিনি কার্ত্তিকের শুক্লখিতীয়ায় না করিয়া অপর একটা নির্দিষ্ট দিবলে করিলেই যুক্তিসঙ্গত হয়। ভাতৃত্বিভীয়ার ভ্রাতৃপূজার অনুষ্ঠান একটা সাংবৎসরিক অনুষ্ঠান বলিরাই বৃঝিছে ছটনে। আতৃপুঞ্জার সাংবৎসরিক অনুষ্ঠান করিন্তে চটলে আতৃদ্বিতীয়াতে তাহা হয় না, কেন না কার্ত্তিকেব শুকু দ্বিতীয়া ত ঠিক ৩৬৫ দিব্দ পরে আদে না, প্রারই ৩৬৫ দিব্দের অনেক অগ্রে বা পরে আসে। স্থতরাং কার্ত্তিকের শুকু দ্বিতীয়া ধরিয়া ভাতৃপুন্ধা করিতে হটলে ভাতৃপুন্ধার সাম্বৎস্থিক অনু-ষ্ঠানের অভিপ্রায় সিদ্ধ চটল না।

ভাত্ৰিতীয়ার যম ও যমুনা পূজার অংশ বাদ দিয়া ভাত্দিতীয়া আফুঠান যদি ত্রান্ধের অমুঠের চর,তবে আবও কতকভালি অফুঠান ত্রাহ্মপবিবারমধ্যে গৃতীত চইলে জাতীরভাব বৃদ্ধির
পক্ষে বিশেষ সচারতা চর । যথাঃ—বিজয়ার নমস্কাব ও আলিকনাম্বি এবং জামাত্রজ্জন, (জামাইষ্টা বা ষ্টাবাটা) ও নবার
প্রভৃতি । এতঘাতীত ত্রাহ্ম যদি ভাত্-অর্চন করেন, তবে তাঁচার
পক্ষে বংগরের মধ্যে অস্কুত: একটী দিন পিতৃ-অর্চন, মাতৃ অর্চন,
দাদে দাসী অর্চন প্রভৃতি বছবিধ পূকার্চনার প্রবর্তন করা
আবিশ্রক। নতুবা বংগরের মধ্যে কেবল মাত্র এক দিন একটী
ভাত্-অর্চনের ব্যবন্থা করা যুক্তি ও তর্কামুমোদিত চয় না ।
আর এক কণা ভবিষা পুবাণে উক্ত চইয়াছে" "মেহেন ভগিনী
হস্তাং ভোক্তব্যং প্রষ্টিবর্ধনম্, দানানিচ প্রদেয়ানি ভগিনীভো
বিধানত: ॥ স্বণাল্কার বন্ধারপুলা সংকার ভোলনৈঃ । স্বা

ব্রাহ্মগণ যে হিন্দু আচার প্রহণ করিয়া ভ্রাতৃপুত্রার অনুষ্ঠান করিছেনে দেই আচাবামুদাবেই আবার ভ্রিনীকেও স্থালকার প্রভৃতি বহাবধ মনোহাবী পদার্থ প্রদান করিবার ব্যবস্থা আছে। কিন্তু বাদ্যাধান দেখেন, হিন্দুগণ ভ্রিনীকে কিছু বড একটা দানাদি কবেন না বা পূজাদি করেন না, দেই জক্ত উহারেও ভ্রিনী অর্চন অংশ বাদ াদ্যাছেন। আমার আদল বক্তব্য এই যে, হিন্দু সমাজ মধ্যে প্রাচীন কাল হইতে যে সকল পৌত্রলিক অনুষ্ঠান চাল্যা আগিতেছে ভাহাব গৌত্তলিক অংশ বাদ দিয়া যদি অপর অংশ প্রহণ করা বাহ্মগাধারণের অভ্রেত্ত হয়, ভাহা হইলে সর্ব্ব্রেগের বিজ্ঞার নমস্করে আলিক্ষনাদির ক্যায় জ্যুতীর প্রেমাদ্দীপক অনুষ্ঠান গুলি গ্রহণ করা অত্যক্ত উচিত। তৎপর সম্ভব হইলে বিচারপুব্রক আরও অনুক্ত অনুষ্ঠান ব্রাহ্মসমাজ্য মধ্যে প্রবেশ করান যাইতে পারে। কিন্তু ভাহা না করিয়া কেবল মাত্র ভাত্তি ব্যায়ুষ্ঠান সম্পন্ন কণা কোন মতেই যুক্তিসঙ্গত নহে। ইতি

দেবগৃহ ১২ই নভেম্বর ১৮৯৩

নিবেদক শ্রীউমাপদ রার।

### ব্রাম্মসমাজ।

নামকরণ— আমাদের প্রেমাম্পদ প্রতা শ্রীষ্ট গৌরীনাপ বস্তর প্রথম। কন্তার নামকরণ কার্য্য গত ২৬শে ভার্তিক স্থান্যর হইরাছে। কন্তার নাম শ্রীষতী স্থান্যরী রাথা হইরাছে। গৌরীবাবু এই উপলক্ষে সাধনাশ্রমে ১ দান করিয়াছেন। এবং গত ২৭শে কার্ত্তিক শ্রুদ্ধের প্রতা শ্রীযুক্ত বছবিহারী বস্তর ২র প্রের নামকরণ কার্য্য স্থান্যর হইয়াছে। বন্ধ গবু এই উপলক্ষে সাধারণ প্রাক্ষমাজের প্রচারক্তেও ২ টাকা ও সাধনাশ্রমে ১ টাকা দান করিয়াছেন, এই উভর অমুষ্ঠান উপলক্ষেই শ্রীযুক্ত মবদ্বীপচন্ত্র দাস মহাশর উপাসনার কার্য্য করিয়াছেন। ক্ষার শিশুদিগকে দীর্ঘায় কর্ষন।

কুমারখালি ত্রাক্ষাসমাজের বার্ষিক উৎসব—
গভ ৫ই এবং ৬ই কান্তিক শনি ও রবিবার কুমারখালি ব্রাহ্মসমাজের বার্ষিক উৎসব চইয়া গিয়াছে। ছই দিবসই প্রাক্তে
ও সন্ধাতে মন্দিরে উপাসনা উপদেশাদি চইয়াছে। প্রীযুক্ত
নবছীপচন্দ্রদাস মহাশয় উপসনার কার্য্য করিয়াছেন। রবিবার
অপরাক্তে শ্রীযুক্ত বাবু চেবছচন্দ্র মৈত্র এম,এ মহাশয় ইংরেজীভে
বক্তা করেন। বক্তাব বিষয় "জীবনেব কৃতকার্য্যতা"।

স্থায়ী প্রচার ফণ্ড-স্বর্গীর জগদীশর ওপ্ত মলাশন্তের প্রাদ্ধ উপলক্ষে তাঁচার সভধর্মিণী স্থায়ী প্রাচার ফণ্ডে ৫০০১ পাঁচ শভ টাকা দানেব সংবল্প কবিয়াছিলেন। ভিনি এখন नमास्त्रत रुख (प्रवे है।का अर्थन कवित्राह्मत । जेवंत भूत्रलाक **एश्रि माधन कक्न।** অনাথা বিধবা পৃথিবীতে শান্তিণাভ কর্মন। তাঁচার আরও মনেক গুলি স্থ সংকর আছে। বোকাভাকে সেগুলি সুসম্পন্ন চইভেছে না। ভিনি নিজ প্রামে যে সব সদমুঠানের বাসনা কবিয়াছিলেন,ভাচা পুসম্পন্ন করিতে ছটলে, লোকের আবিশ্রক। ঈশ্বর সাধুসম্বল্পের नहात रहेन। ए। श्री था 5 ति कर खत छन्न जिला व होता था हात কার্য্যের সুশুঝ্লা হওর। কঠিন। বাঁহারা এই ফণ্ডে দান স্বাক্ষর ষ্টিরাছেন, তাঁহাবা আপনাদের অঙ্গীকৃত দান প্রদান করিয়া **ক্রেকে পুষ্ট** করুন যঁ'হারা এ বিষয়ে এথনও উদাসীন **আছেন.** ভাঁচারা চিস্তা করন, আপনাব সমাজকে ভাল বাসিতে চইবে **এইরপেই** ভাহাব পরিচয় দেওয়া উচিত।

উৎসব—-গৰু ৩১এ আখিন হুইছে ৪ঠা কাৰ্ত্তিক পৰ্যান্ত মাণিকদহত শ্রীযুক্ত বাবু বিপিনবিচারী রার মতাশয়ের ভবলে পারিবারিক ত্রাহ্মাৎসৰ হটরাছেল। কলিকাডা, ঢাকা, মরমন-সিংচ, ব্যান্ত প্রভাত স্থান হইতে ব্রাহ্মগণ উৎসাবে স্মাগ্র ভইরাভিলেন। ৩১এ আখিন রাত্রে উরোধন হয়। প্রচারক 🗃 युक्त नवदी भहक्त मात्र व्याहाटयात्र कार्यः कटत्रन। > ना কার্ত্তিক প্রাতে প্রীযুক্ত কালীপ্রসর বস্থ ও সারাক্তে নারু সাদিনাথ ष्ट्रोभाशात्र উপাসনা कार्या मण्यत्र करत्रन। २ता कार्डिक আতে শ্ৰীযুক্ত নগৰীপচক্ৰ দাস ও সায়াকে শ্ৰীযুক্ত মচেক্ৰনাৰ ছট্টোপাধ্যার আচার্য্য ছিলেন। তবা কার্ত্তিক বিপিন বাবুর ৰাটীর সল্লি ≯টছ একটা বটবুকের তলে উপাসনা চর, শ্রীযুক্ত নৰ্থীপচন্দ্ৰ দাস উপাসনা করেন ও শ্রীযুক্ত গুরুদাস চক্রবর্তী ও শ্রীযুক্ত শশিভূষণ মলিক বক্তৃতা করেন। সায়ংকালে 🗣 भागमा इत्र। वात् व्यानिमाथ हामिशाशात्र छे भागमा करतम । এঠা কার্ত্তিক প্রতিংকালে উপাধনা হয়। বাবুনব্দীপচন্ত দাস উপাসনা করেন। অপরাহে নগর নীর্ত্তন ও বালারে বক্তৃতা চর এবং সারাফে ভানীর ত্রাহ্মসমাজের উর্ভির জক্ত নবছীণ বাবু প্রার্থমা করেন। তৎপরে কীর্ন্তনাদি করিয়া উৎসব কার্য্য সম্পন্ন। बन्ना এভব্যভিবেকে উৎসবে "छैव। कीर्डन" এবং चलहारह

আলোচনা হইত। এবারে উৎসবে অনেক তাপিত আত্মা শান্তি পাইরাছে। ধন্ত তাঁহার কৃপা, যাঁহার বিধানে মধ্যে মধ্যে উৎস্বাাদ আসিয়া তাপিত আত্মায় শান্তিবারি সিঞ্চন করে ও উন্নত জীবন লাভের পক্ষে স্থায়ত। করে।

न्तर्कोन-पायात्तर कतिता व वस् पायात वत्रमान ঘোৰ মহাশয় ইভিপুর্বে আপনার প্রণোক্ষ্যতা সহধর্মিণী শরৎ কামিনীর নামে একটা স্বায়ী ফণ্ড সংস্থাপিত করিয়া ১০০১ টাকা প্রেরণ করিরাছেন। সে সংবাদ পূর্বে প্রকাশিত ●ইরাছে। অর দিন হইল উাঁহার খুলতাত ভগীর আলল উপলকে 👁 এইরপ তাঁহার নামে একটা কণ্ড সংখ্যাপন অভ ১৫১ টাকা ঞোরণ ক্রিয়াছেন। এট কণ্ড ভাষাত্মদরী কণ্ড নামে অভিহিত হইবে। এই টাকামূল ধনস্বরপথাকির। উহার আর হইতে সমাজের কার্যো বার হইবে। আলাদি অমুঠানে মৃত বাজির নামে এইরূপ ফণ্ড সকল স্থাপন করিলে মৃত ব্যক্তিদের জন্ত স্বৃতিস্চক অনুষ্ঠান হয় এবং ইছা দারা স্মাজের প্রভৃত কল্যাণ সাধিত **ইয়;** আমেরা অনুষ্ঠান সকলে অয়থা। ব্দলেক টাকা বার করিয়া পাকি। কিন্তু তাহাতে বিশেষ কোনই कन इत्र ना । এর প कश्व সংখ্যাপন করিলে বিশেষ উপকারের আশা করা যার। চরনাথ বাবুকে এট সাধু সঞ্চার জন্ত আমর। ধক্সবাদ করি। অনুষ্ঠাতাদিগের দৃষ্টি এদিকে আকৃট হউক रेश राष्ट्रनोग्र।

প্রতিরি— প্রীযুক্ত নবৰীপচক্ত দাস মহাশর বাঁকুড়া অঞ্চল চইতে প্রত্যাগমন করিরা মাণিকদহে শারদীর উৎসবে বান। সেধানে উৎসবের কার্যা সমাপন করিরা কুমাবধালি ব্রাহ্মনমান্তের বার্ষিক উৎসবে উপলক্ষে তথার যান। সেধানে উৎসবের কার্যা সমাপন করিরা ঢাকাতে পূর্ব্ধ বাঙ্গালা আক্ষ্যম্মিলনীতে বোঁগদান করেন। তথার পরিবারে উপাসনা করেন এবং একদিন প্রাত্তে সমাজে উপাসনা করেন। তথা হইতে করিদপুরে যান। তথার সমাজে উপাসনা করেন এবং পরিবারে উপাসনা পাঠব্যাধ্যাদি করেন। তথা হইতে কলিকাতা প্রভ্যাগমন করিরাছেন।

দানপ্রাপ্তি—কতজ্ঞতার সহিত স্বীকার করা বাইতেছে যে বিক্রমপুরের ছর্ভিক নিবারণার্থে নিম্নলিখিতরণ দান পাওরা গিরাছে:

### পূর্ব প্রকাশিতের পর।

ভালিকা দেখ।

শ্ৰীযুক্ত বিশিনবিহারী দাস কলিকাডা	<b>11</b> •
আক্ষসমাকের একজন দ্রিজ স্হায়ভৃতিকারী বারোগ	री नवीचा।•
মাননীর গুরুদাস বন্ধ্যোপাধ্যার কলিকাভা	3
শ্রীমতী গিরিবাশা দাস 🚨	•
শ্রীযুক্ত দল্লীনারায়ণ চৌধুরী, নাগপুর	•
त्राहि आक्रममारकत्र मञ्जाभागत निक्षे हहेएछ बाबू	विश्वाहत्रव
রার ছারা সংগৃহীত	2440
শ্রীযুক্ত গৌরীনাপ বস্থ কলিকান্ডা	1•
শ্ৰীমতী স্থৰণ প্ৰজাৰস্থ ,,	6
শ্রীযুক্ত তারণচক্র দাস লাভোর	>,
সরদার দরাল সিংচ লাছোর	26
একটা মহিলা ক্লিকাভা	•
কোন এক বন্ধু	
, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	

# তত্ত্ব-কৌমুদী

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা

১৬শ সংখ্যা। ১৬ শজাগ।

১৬ই অগ্রহায়ণ, ব্রহস্পতিবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাংসরিক অগ্রিম মূল্য ২৪০ মফস্বলে ৩ প্রতি খণ্ডের মূল্য 🗸

প্রার্থনাতে জেগে রও।
আহর না হতে রাতি, গগন ছাইল
বন ঘনে; আসিছে আসিছে
মেঘগালি; বাযুভরে চৌদিকে ধাইল;
খোরাধারে ধরণী গ্রাসিছে।

হস্পারি ডাকিল বায়ু; উঠে লন্ফ দিয়া, তক্ষপিরে ভালে মড়মাড়; চপলা চমকে শত নরন ধাঁথিয়া; শত বাল ছোটে কড়মাড়,

ঝিমির ।ঝমির ঝিম্ বর্ষে সারারাতি : লন্ লন্ গণাকে হকারে; লারানিশি ।১কিমিকি চপলার ভাতি; ভেকদল ডাকে চারিধারে।

প্রভাতে উঠির। দেখি, স্থনীল আকাশে
মেঘনিন্দু নাহি কোনো ধারে,
নবীন অরুণ-বিভা প্রাচীতে প্রকাশে;
কেম-দ্রবে মাধার সংসারে।

নব-জলে স্নাত তক্ত স্থাসিগ্ধ কোমল, তত্তপরি সে কিরণ ধারা, নম্মনের শ্রীতি-প্রাদ পবিত্র উজ্জ্বল, কিবা ধরা চিত্ত-চমৎকারা।

এই ছিল কালরাতি, এই সুপ্রভান্ত, সে প্রসন্ন প্রকৃতির হাসি, কোণা ব্র্বা, সে বিজ্ঞলী, কোণা ব্দ্রপান্ত, নবানদো ধরা যার ভাসি।

নিরাশে ডুবোনা ভাই, বিপদ আঁধার রহিবে না জেন চিরকাণ; শাস্তি পবিজ্ঞতা প্রেম পাইবে আবার, কেটে যাবে খন মোহজাণ। প্রার্থনাতে জেগে রও, ত্রদ্ধত্বণা স্মরি, ধৈর্যাডোরে বাঁধতে আপনা; বিপুল বিপ্লব মাঝে সেই জুপা ধরি কর তুমি সভার সাধনা।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

সাধন-সম্পত্তি – একজন সংধক বলিরাছেন, অমুভাপের লক্ষণ কি, ভাষাৰ প্ৰকৃতি কি এবং ভাষার কাৰ্যাই বা कि 🐠 শাল্ল জানিতে চাই না, কিন্তু অমুভাপ করিতে চাই।" প্রাকৃত সাধকের কথাই এই। অমুভাপের শাল্প শুনিরা আমার কি इहेर्द, अञ्जालं कांत्रन मरचं । या भागात क्रमरत स्पष्टे जन्-তাপের উদয় হর না, এই ছ:খেই দ্রিয়মান্ আছি। বাঁছারা আপনাদের জীবন পরীক্ষা করিয়া আপনাদিগকে অন্তরে মুণা করিতে থাকেন—তাঁহাদের ধর্মোপদেশের প্রতি এক প্রকার ৰিভ্যুগ অন্মিরা যায়; মন বলিতে থাকে, "দূর হৌক ও সকল বলিয়া ও শুনিয়া কি ছইবে ?" যদি একজন বসিয়া বৃসিয়া মনোযোগ পূর্বক সুচিকিৎদকের প্রণীত স্বান্থ্যরকা গ্রন্থ স্কল পাঠ করে, এবং সে বিষয়ে ভাষার পরিপক্ত জ্ঞান করে, কিছ कार्याकारण यनि (नथा यात्र, त्य छाहात नित्कत चाहातकात्र मिटक मृष्टि नारे, এवः मिन मिन रमरे बाक्य छानिया यारेटकट्ड, ভবে ভাহার শাস্ত্রজ্ঞানে সম্ভোবের কারণ কি থাকে 📍 স্বাস্থ্য-রক্ষার উপায় জানিয়া ভাছাব লাভ কি যথন ভাছাকেই রোগ-শ্ব্যাতে পাড়য়া ছট্ফট্ করিতে হইছেছে। সেইরূপে ধর্মের শাস্ত্র জানিয়াফল কি, যদি সেই জ্ঞান পাপ হইতে বাঁচাইতে নাপারে। আমাদিগকে কি অনেক সময়ে এই ব্লিয়া অঞ্পাত করিছে হয় না, যে পরকে পণ দেখাইবার জন্ত বাতি ধরিলাম, ক্ছি নিজের গৃহের অন্ধকার গেল না। অপরকে খাখ্যলাভের উপার विनम्ना मिनाम किन्तु मिर्कत चाकानाच हरेन ना? এक्कन মুপ্রাসিদ্ধ করাসি দর্শনকার বলিয়াছেন—বে অকৃত জ্ঞান লাভ कतिए हरेल, याहा किছू खनियाह कि निविदाह लाहा बन

চইতে বিদার করিরা, চিন্তকে জ্ঞানহীন ও একমাত্র সন্দেহের
নিলর করা আবশ্রক। সাধকের পক্ষেও বোধ হর এই কথা
বলিতে পারা যার যে প্রকৃত ভাবে সাধন করিতে হইলে, যাহা
কিছু শুনিরাছ কি শিথিরাছ ভাতা ভূলিরা যাও, ভূমি যে টুকু
চরিত্রে উপার্জন করিবে সেইটুকু ভোমার, সেই টুকুন্সেই ভূমি
নিজের সাধন সম্পত্তি বলিরা গণা করিতে পার; ভাত্তির আর
বাহা কিছু মনে সঞ্চিত চইরাছে, ভাতা ভোমার নচে। এই
সাধনসম্পত্তি বাহারা প্রাপ্ত হন, ভাতারাই বান্তবিক ধর্মজগতে

প্রচার-একজন ডাক্তার ম্যালেরিয়া-নাশক বটকা" বলিরা এক প্রকাব বটিকা প্রস্তুত করিলেন, এবং ভাষার গুণা-বলী বর্ণনা করিরা নান। সংবাদপত্তে বিজ্ঞাপন দিলেন। ছোট অক্রে,বড অক্রে নানাভাবে নানা ভঙ্গীতে তাঁহার বিজ্ঞাপন সংবাদপত্তের প্রথম স্তস্তেই দৃষ্ট চইড; এবং কিরূপে উাচার छेवथ (मद्दान এक्छन क्य स्त्रोर्ग क्यांन-मात्र वाह्नि स्ट्रां **७** मदन-কার হইয়াছে, কিবাপে তাহাব মুথে খাস্থ্য ও প্রসরতার আভা ফিরিয়া আসিয়াছে, ভাছার একটা ছবিও ছিল। মাালরিয়াগ্রস্ত ও অরপীডিত ব্যক্তিগণ প্রথম প্রথম দলে দলে ভাঁচার ঔষধ ক্রের করিতে আরম্ভ কবিল। দেখিতে দেখিতে তাঁচার অনেক ধনাগম ছইতে লাগিল। কিন্তু কিছুদিন পরে উক্ত ডাক্তার বদলী হইরা একটা ম্যালেরিরা পীডিত জেলাতে গমন করিলেন। সেখানে গিরা উচার পরিবার পরিজনগণ সকলে ম্যালেরিয়াতে পীডিত চটয়া পডিলেন; অকালে হুই একটা সন্তান কালগ্রাদে পতিত হইল; তিনিও ম্যালেরিয়াগ্রন্ত হইয়া বার বার পীতেত হইরাছুটী লইতে বাধ্য হইলেন। এই সংবাদ যথন সংবাদপত্তে শক্ষাশ চইরা পডিল, তথন ওঁহোর ম্যালেরিয়া-নাশক বটিকা লোকের নিকট একটা উপলাসের বস্তু হটরা দাঁডাইল। অসার मुक्कार्क विकालामत्र कथा छिठिताहे लाक् वरत-वर्धा "अमुरकत म्यारमतियानामक वृष्टिका।" (भवास्कि यान विकाशतनत चाएसवरे। এত অধিক না করিত তালা চইলে লয়ত লোকের বিছেষ বৃদ্ধি এত অধিক হইত না। দ্বিতীয় ছবি ঠিক ইহার বিপরীত। এক জন চিকিৎদক একবার একটা গাভ আবিদ্ধার করিলেন বাতা রক্তকামাশবের পক্ষে মতৌষধ মনে চইল। কিন্তু উক্ত পীড়া निर्मारवत्र शक्त यथार्थ डेशकाती कि ना खानिनात सन्त जाशरम গোপনে ভালার আরক ও বটিকা প্রস্তুত করিলেন ও বতুসংখ্যক রোপীকে পরীকা করিতে লাগিলেন। তাঁলার স্ত্যাপ্রয় প্রকৃতিতে কিছুমাত্র হাঁক ডাক ছিল না। লোকে জিল্লাসা করিলে বলিতেন "আপানাদিগকে দেখাইবার মত এখনও কিছু হর নাট; মনে একট। খেয়াল আসিরাছে মাত্র পরীক্ষা করিয়া দেখিতেছি, যদি ফ'ল কিছু দাঁড়োর জানিতেই পারিবেন।" क्रांस यथन ভিনি ঔষধের উপকারিতা বিষয়ে নিঃসক্ষেত হইলেন, তপন ধীরে ধীরে তদমুসারে চিকিৎসা আরম্ভ कतिरामन। সংখাদপত্তে যে विख्वाभन मिएक कहेरव छाड्। मरन र्जानिन ना। किन्द कि सानि क्यान कवित्रा त्र त्रःवान निन निन চারিদিকে ব্যাপ্ত হইয়া পড়িল। প্রতিদিন দশ পনর জ্ঞোশ দূর

ছইতে লোকে ওঁষ্ণ ক্রের করিবার জন্ম আসিতে লাগিল। ভাছাতে তিনি ধনী ছইরা গেলেন। পৃর্কোল্লিখিত উভর ছবির মধ্যে প্রভেদ কি তাহা চিন্তা করিলেই প্রচারের প্রকৃত প্রণালী কি তাহা হাল্লম করিতে পারা যার। যাহা পাইলে লোকে বাত্তবিক পাপ তাপ ছইতে রক্ষা পার, এরূপ কোনও বস্তু যদি তোমার নিকট থাকে, তাহা আপনাপনি প্রচারিত ছইবে, আরে যদি তাহা না থাকে তুমি যতই প্রচারের আড়ম্বর করিবে ততই লোকের বিত্ঞা জান্মবে। এই অসার আড়ম্বর-প্রির্ভা ছইতে ইম্বর আমাদিগকে রক্ষা করুন।

ব্রাক্ষাদিগের দ্রিদ্রতা —ব্রাক্ষাদিগের দ্রিদ্রতা বিবরে ষ্ত্রোক্ষিৎ বলাহহয়ছে। হছা ত্রাহ্মাতেরই একটা গভীর চিস্তার বিষয়। মাতৃষ সামাঞ্জ অবস্থাতে থাকে, বা শুক্লতর দৈছিক পরিশ্রম ছারা জীবন ধারণ করে, ইহা কিছুই ছ:থের বিষয় নহে, ত।হাতে ধর্মজীবনের হানি না হহরা বরং সাহায্য হইবার কথা। কিন্তু মাসুষানজ সাধ্যের অতীত অবস্থাতে পাকে, এবং দিন দিন ঋণজালে জাড়ত হয়, ইহা কোনরূপেই প্রার্থনীয় নহে। আক্ষ্যাপ মধ্যে এই শ্রেণীর লোক সংখ্যা বন্ধিত হইলে ক্রমে আক্ষামাঞ নিয়প্রেণীর খুটোর ও ফিরিকী সমাক্ষের ভারে অংশেষ নাচভা ও ছুর্গতির আকর হইবে। যথাসময়ে আহ্মগণের চিঞ্জিত হ্রা আবিশুক হুহরাছে। সম্প্রদেশের দারিতা বৃদ্ধির সংক্ষ ব্রাহ্মদিগের দারিন্তা দিন ।দন বুদ্ধি হইতেছে। ইহার কতক-গুলি করেণ আছে। হিন্দুসমাজ মধ্যে একারভুক্ত পরিবার প্রথা প্রচাশত থাকাতে, একজন ভ্রাতা যাদ কম উপার্জন করে তবে অপর ভাতাাদগের উপাজ্জন বারা ভাহার ও ভাহার স্ত্রী পুত্রের অভাব সকল পুরণ হইয়া যায়। কিন্তু ভ্রাহ্মগণের অধিকাংশকেই একাল্লভুক্ত পরিবার হুইতে বিচ্যুত হুইরা স্বীর পদের উপর দীড়েহিতে হইয়াছে। যেখানেই যাউন, সংখ मत्त्र धकी कृष्ठ वा वृह्द भाववात जनातान वीका ज्यारह। সংসার সাগরের তরকে যে সম্ভরণ করিবেন, ঐ বোঝাটী পুরের कें পরে চাপান আছে, ত্রাদন যে রোগশযায়ে পড়িয়া থাকিবেন ঐ छालत ७ तम (भाषामा । क्या कतिएक इहरत्। ० के हे व्यवहा-हां नाह, এक है निः भाग रकाल बात अवगढ़ नाह। आहर क शूख কস্তার সংখ্যা দিন দিন ব।জিতেতছে, আয় ওদমুরূপ বা:জতেছে न।। इशात छेशात आवात अविकाश्य खान्त वर् वर् महत्त्व বাস করিতে বাধা হইতেছেন। পল্লীগ্রামে পাক্রে নানাপ্রকার নিব)তিন সহ্য করিতে হয়; মনোমত সহাপাওরা ঘ্রেনা, পুত্র কন্সারে শিক্ষাদির সুবাবস্থা হর না ; স্তরাং স্করে বাস উ।হাদের পক্ষে বিশেষ প্রায়েজনীয় হচয়া উঠিকেছে। সহয়ে থাকিতে (शामके नानाव्यकारत यात्र। छम्रालारकत्र मिक्ठ (मथा করিতে হইবে, ভাল কাপড়থানি, ভাল জুতা বোড়াটী, ভাল কোটটা চাট, এক যোড়া মোজা চাট, ছাড় গাছটা চাই; মি লাদিগেরও ভাল ধুতি, ভাল জ্যাকেট ভাল জুত। প্রভৃতি চাই। এ সকল ব্যয় আপনা আপনি আসিয়া পড়ে। অনেক সমরে হচ্ছ। করিলেও বাুধা দিয়া রাথা যার না। এইরূপে ব্ৰাহ্মগণ দানিত্ৰা ও ঋণভাৱে প্ৰণীড়িত হইতেছেন। ইহার

কানও উপার করিতে না পারিলে, আক্রানমাল মধ্যে ভরানক ভূনীভি প্রবেশ করিবে। এই দারিত্রা নিবারণের উপার কি ভালা সকলেরই ধীরচিত্তে বিচার করা আবশুক। একটা केशात्र क बारकत निकरिहे (एथा यात्र। आक्रामिश्वत महरत बाम খুচাইতে পারিলে ভাল হয়। প্রাহ্মদিগের অক্ত যদি মফখলের কোনও স্বাস্থ্যকর স্থানে একথও ভূমি পাওয়া বার, এবং সেখানে আদ্ধ-পরিবারদিগের থাকিবার বন্দোবন্ত করা ষায়, ভাছা হটলে সহর-বাদের অনিষ্ট ফল হইতে কিয়ৎ পরি-মাণে রক্ষা করা যাইতে পারে; অথচ অনেকগুলি পরিবার একত থাকিলে সঙ্গলাভ ও পত্র কক্সার শিক্ষা বিষয়ে কোনও অস্মবিধা ঘটে না। আমরা দেখিয়া চিন্তিত চইতেছি যে, সহর ण्डेट सक्त वाहेबात शतुखि विक्रि ना हहेगा श्राटन महिता ব্রান্ধের সম্ভার আসিবার প্রবৃত্তিই অধিক দৃষ্ট মইভেছে। আভার क्वविवाद (कान 9 मःश्वान शाक्क वा ना शाक्क मकरन है महरवद नित्य इति उहिन। जामा कति, धरे शुक्र उत्र विषय्ती धवात-कात्र वार्तिक कनकारत्रात्मत विराध चारणाहनात्र विषय हहेरव ।

আদিশ ও জীবন-একলন আন্দ্র গৃহত্তের গৃহে একটা দ্বিদ্র বিধব। নারী স্বীয় পুত্রটীকে লইয়া ভিক্ষা করিছে আসিত। গৃহত্ব যথনি ভাষাকে দেখিতেন তথনি তাঁচার ল্যার উদ্বুহুইত, তিনি হার হায় ক্রিতেন, এবং মধ্যে মধ্যে কিছু কিছু অর্থসাধায়াও কবিতেন। তাঁধার নিজের অবস্থা শীন ছওয়াতে আর অধিক সাহায্য করিতে পারিতেন না। কৈছ তিনি যে সাহায্য করিতেন, তাহা শুক মক্তুমিতে জল-বিন্দুর ক্রার ক্রণেকের মধ্যে বিলীন চইরাষ্ট্র। এইক্রেপ কিছুদিন যায়, যখন একদিন একজন অন্তঃপুর শিক্ষয়িত্রী ইউ-বোপীয় মহিলা তাঁচার ভবনে আসিয়াছেন, সেই সময়ে উক্ত বিধবা নারীও উপস্থিত। তাহার ত্রন্দার কথা শুনিয়া ঐ ভউরোপীয় মতিলার অস্তরে দয়ার সঞ্চার হটল। তিনি অধিক ভার হার করিলেন না; দয়ার বাহ্ত প্রকাশ কিছুই দেখাইলেন मा : किस छाहारक भवनित (महे ममरत्र आमिरक वित्रा हिनता গেলেন। প্রদিন যথাসময়ে তিনি উপায়ত হইলেন এবং বিধবাটীকে লইমা গাভিতে ভুলিমা ডিট্ট্র চ্যাবিটেবল সোলাইটীর সম্পাদক পরলোকগত রাজা দিগম্বর মিত্র মহাশ্রের बांगिएक नहेन्ना (शतना। निशमन नातु विनालन, "हाटक छाका আছে কিনা আফীসে না জানিরা বলিতে পারিতেছিনা।" উট্তরোপীর সভিদা বলিলেন—"আমার হাতে আফীদের উপরে চিঠা দিন আমি একণ্ট জানির। আগিতেছি। রাজার নিকট िठी नहेबा (महे शांकिएड) ह्यातिएवन मामाहित आफोरम वफ बाबब निकरे शिवा खानिया चात्रितन (य ठाका चाह्य, **डाहारक मारम मारम किছू किছু मिख्या याहेर** भारत। छम्बूनात्त्र क्षे विधवा नात्रीत अञ्च मानिक ८ होका कतित्रा मिवात वावका इहेन। मारमब भंद मान शक्त हात्र हिनदाहिन उथानि ভাচার যে তঃথ নিরারণ হর নাই, ভাহ। একজন প্রকৃত কর্ম-नीमा '। जनव-छानवा मिल्लाव बावा छुठे मिल्ल बहेबा रशन। अञ्चाता धरेमाळ वकारा (व स्वत्त्रत छे एकडे छाव नकारक

কার্যো পরিণত না করিতে পারিলে, ভাচার মৃল্য অভি অরট থাকে। পূর্বোক্ত গৃত্ত যে ঐ বিধনা নারীর ছংখে দয়ার্ড बबेबाहित्मन छाहारछ मत्मह कि १ किन्न (म मन्नारक कार्या) পরিণত করিবার বৃদ্ধি না ঘটাতে তাহাব কোনও মূল্য ছিল না। अमरत्रत फेक्ट कार मश्रक रवज्ञभ, कीरत्यत फेक्ट चामर्भ मश्रक क रमरेक्रम । कीवरनत्र खेद्राज ज्ञानम् हरकात्र निकटे ज्ञानिहा कन কি যদি তাহা কার্য্যে পরিণত করিতে না পারা যার। বাহারং जनाधा जामर्लित कज्ञना करत, ও ভाग हिट्छ পোষ্ণ कत्रिश्च হুখী হয়, ভাহারা এ পুণিবীতে ভাবুষ ও অফর্মণ্য লোক বলিয়া গণ্য হয়। এরপ মকর্মণ্যতা ও ভাবকতা নিশ্চিম্ভ উপস্থাস পাঠকদিগের পক্ষেই শোভা পার। জনসমাজের সুথ ছঃখু উরতি অবনতি বিষয়ে যাহাদের দৃষ্টি এবং জনসমাজের উল্লভি माध्यात मः कता । कांगामा भाग देश माख ना। कांशाबा नर्सन। ठिखा करतन अनत्रविष्ठ चानर्न किञ्राल कार्र्सा लित्रक कता यात्र: এवर छाहा कीवान माधन कतिएक ना भातिएन. তাঁহাদের মনে শান্তি ও আরাম থাকেনা। আমাদের এত কণা বলিবার অভিপ্রায় এট, যে ত্রাহ্মণর্ম আমাদের সমকে একটা সামাজিক আদর্শ আনিয়া দিয়াছেন ৷ প্রাচীন সমাজের বেরণ বিধি ব্যবস্থা ছিল, ভাষা আর আমাদের মনঃপুত চটডেছে না। আমরাউৎকৃষ্টতর অবস্থার প্রতি লক্ষ্য করি-ভেছি। কিন্তু লক্ষ্য করিলে কি হটবে, যদি ভাহা একাস্ত क्षमत्त्र शाधन कतिवात (घडे। ना कता यात ? वामानिशत्क शीत-চিত্তে বিবেচনা করিতে হইবে বে সামাজিক ভাবে আমাদিগকে কি কি গুণাবলী অর্জন করিতে চইবে, তৎপরে এরপ সকল উপার অবলম্বন করিতে চইবে, যাহাতে ঐ সকল গুণাবলী সমাজ মধ্যে বিক্লিত চইতে পাৰে।

ভাবী ত্রাক্ষসমাজ—ভাবী ত্রাক্ষসমাল কিরুপ চইবে, এ চিস্তা ব্রাক্ষ মাত্রেরই করা কর্ত্তব্য এবং এ বিষয়ে ব্রাক্ষ মাত্রেরই ভাবিবার ও করিবার কিছু আছে। বর্ত্তমান ব্রাহ্ম ধন্মের একটী প্রধান লক্ষণ এই যে ইঙা স্মাঞ্জিক ভাবে সাধন **চটতেছে—সমাজের উরতি অবনতির স**হিত ই**চার ঘনি**ঠ যোগ রাঙরাছে। আমাদেব সামাজিক জীবন বিক্লত, দ্বিত ও জ্ণীতি পূর্ণ চটলে, আমরা সেরপে সমাজে এধর্মকে সাধন করিতে পাবিব না। এই কারণে ব্যক্তিগত সাধনের স্তার সামাজিক জীবনের উন্নতির দিকেও আহ্মদিগকে মনোযোগী চইতে চইবে। আমাদের মধ্যে এরূপ একটা দল পাকা আবেশ্রক—ঘাঁচারা व्यामात्मत्र जामास्मिक स्रीवरतन्त्र छेन्नछि नाधरत् नविर्णय मरनारवाधी থাকিবেন, ও তদর্থ বিবিধ প্রকার উপায় অবলম্বন করিবেন; ভাৰী অংক্ষদমাজ ইঃ।দিগের খারাই গঠিত চইবে। ভাৰী वाकानमास विनिश्च नकत्वत पृष्टि चलावलः वाकावानक वानिका-দিগের উপরে পতিত চট্বে। ইহাদিগের শিক্ষা ও চরিত্র গঠনের উপর ভাষী আহ্মসমাজের হুও ছ:খ বছল পরিমাণে নির্ভর করিতেছে। আমরা বত্ত চিন্তা করিতেছি ভত্তই বোধ চইডেছে যে সম্ভব ছটলে সমুদায় আক্ষ বালক বালিকাকে বোর্ডিংএ রাখিরা শিক্ষা দিতে পারিলেই ভাল কর। এক বিকে

ৰেখিতে গেলে পিতা মাভার সংকর স্থায় সভ কোথার আছে, अवर गुरुहे वानक वानिकात भएक क्षेत्रत निर्मिष्ठ भिकात जान। कि इर्छागावन उर्जान वानिका (व गुर्ह शाकिता प्रस्तिविध ম্বাশিকা লাভ করিতে পারে, এরপে গৃহট এখন ব্রাক্ষ্মিণের মধ্যে অধিক নাই। বিশেষ যে সকল সামাজিক স্পাণ্ উপাৰ্জনের উপরে ভাবী ব্রাহ্মসমাজের উন্নতি ও কল্যাণ নির্ভর করিতেছে, সেই সকল সল্প উপার্ক্তনের অমুকৃত ব্যবস্থা অজি অল্প পরিবারেট আছে। একটা বোর্ডি এর ক্সায় স্থান যে শৃত্যা ৰে নিরম, যে সমরের সভাবতার, যে ধর্মোপদেশের ব্যবস্থা ৰুৱা সপ্তব; গুৰুতের গুৰু তভদ্র সপ্তব বোধ হয় না। এই সকল শাসন ও শিক্ষার মধ্যে থাকিয়া বর্দ্ধিত হইলে বালক वानिकात मन्त (महे मकन वक्षमून इहेब। यात्र ; अवः উछत्रकातन সেই সমুদার ভাবী সামাজিক উন্নতির নিদানভূত চইতে পারে। এই জন্তু বোর্ডি গুলিকে সমাজের হত্তে পরমোপকারক যত্ত্র-শক্ষণ বিবেচনা করিতে হইবে। সেধানে ভাবী ব্রাহ্মণমাজের পুত্রপাত হটরাছে।

বর্ত্তমান সমরের একজন সুপ্রসিদ্ধ ইংরাজ বলিরাছেন যে শুখালা, ও সময়ের সুবাবস্থা ইংরাজের গার্হস্থ সামাজিক ভৌবনের একটা প্রধান লক্ষণ। বাস্তবিক ইংলপ্তে গমন করিলে সর্বাঞ্জেই এইটা চক্ষে পড়ে। আমরা দুর হইতে বিস্মিত হইরা প্রাক্স করি, গ্লাডটোনের প্রায় ৮৪ বৎসরের রুদ্ধ এড কাজ করেন কিরপে? কিন্তু ইহার তলে যে এই শৃন্ধলা (Method) আছে তাল চিন্তা করি না। ইংরাজের গার্হস্ত সামাজিক জীবনে (Method) না থাকিলে ভাগাদিগের ছারা এভ কাজ কোনও প্রকারে হইতে পারিত না। আমাদের বোধ ■ स स्थाविन्छ हे: बाक পরিবার সকলের বাশক বাশিকাগণ বে বোর্ডংএ শিক্তি ও বৃদ্ধিত হয়, এই শৃত্থলার মূল সেখানে। সেখানে শৃত্যলাধীন থাকিয়া কাজ করিয়া ভাষারা অভান্ত হয়, পরে যখন গৃহধর্মে প্রেশ করে, তথন সেহ অভ্যাস থাকিয়া ৰার। এইরপে শৃত্তালা ও সমধ্যের সুব্যবস্থা একণে ইংরাজের লামাজিক জীবনে প্রবিষ্ট চইয়া গিগছে। ব্রাক্ষণিগ্রেও সেইক্লপ বালক বালিকাদিগকে বোডি এ রাথিয়া সেই সকল मम् अर्ग विक्रिष्ठ कतिए इहरत, यद्धात्र। উত্তরকাশে ভাৰী আশ্ব-সমাজের উন্নতি পক্ষে সহায়তা হইতে পারে।

স্থোপার্ছিত ধন-প্রতিদিন লোকে বাজার চইতে আর্থ দিরা কত কুলার ক্রলর ফুলা কল ক্রর করিরা আনিরা থাকে। আবার লোকে স্থীর বাগানের স্বৃত্ত-রোপিত গছে হইতে—বে গাছে গে নিজে যত্ত্বের সহিত সার প্রদান করিরাছে এবং জলস্কিন করিরা বহু দিনের যত্ন ও সেবার পর থে গাছ ক্রতে ক্রল কাল দানে সক্ষম হইরাছে, সেই গাছ হইতে কুল কল সংগ্রহ করিরা থাকে। এই যে ছই প্রকারের ফুল কল ইলাদের বজ্ঞাত যে বিশেষ কোন পার্থকা আছে এমন নর। বরং বাজার হইতে আনীত ফুল কল অধিকতর মনোরম অধিকতর সৌলাগোঁ ভূষ্তও হইতে পারে। কিছু সেই ব্যাক্ষর নিকট এই ছই প্রকার ফুল ফলের মূল্য কি

স্মান ? তিনি কি এই উভয়কে এক চকে দর্শন করেন 🔊 ক্ধনই নর। নিজ যত্নার্জিত ফল ফুলের সভিত ক্রীত ফল ফুলের जुननारे हरेटि शांति ना। यांगाता कथन ९ वर्गे टाकारत निय বাগানের স্বহস্তে রোপিত এবং যত্নবৈতি গাছ চইতে ফুল ফল লাভ করিরাছেন; ভাঁলারাই ভালার মূলা ব্ঝিণ্ড পারেন। তাঁচারাই এই তুই প্রকার ফুল ফলের বস্তুগত সামা বর্ত্তমান थाका मरवा छे छरत्रत প্রভেদ অমুভব কবিতে সমর্থ हहेरवन। একদিন কোন গৃহত্বের বাটী চইতে একটী বেগুণ অপজ্ঞ হয়। (महे (बखन खनहड बखरात, डीहात এड वहे हहेताहिन, (ब তিনি আকেপ করিয়া বলিয়াছিলেন, আমার যদি অক্স কোন বেশী ম্ল্যবান জিনিস যাইড, তথাপি আমার এরপ কট হইভ না। ইছা ছাবা বুঝা যায় স্থোপার্জিত বস্তু আরে পরের আর্জিড বস্তুতে কত প্ৰভেদ। ফুল ফলেই যে এরূপ প্রভেদ তাহাও নায়। ধন বত্নাদি সকল বস্তুতেই এইরূপ প্রেড্দে দুষ্ট হটর। থাকে। পিড়পুরুষের উপার্জিড ধনের একরূপ মূল্য। আর নিজা-উপ।জ্জিত ধনের অভারপে মূল্য। ইহার দৃষ্টান্ত সক্ষেত্রই দেশ যার। लाटक रेभिकिक धन यछ महस्य नहें कांत्र भारत, त्थाभाव्यिक ধন তত সহজে নষ্ট করিতে পারে না। বাহিরের ধন রজু বা অপরাপর বস্তুর স্ঠিত যেমন খোপাজ্জিত বস্তুর বিশেষ ভার-তমা লক্ষিত হয়, ধল্মধন সম্বন্ধে 🎓 ভাগা উক্ত হইতে পারেনা 🕈 বরং এথানে এ কথা স্মারও বেশী খাটে। কারণধর্ম স্থোপ।ক্ষিত ভिন্ন बन्ना विलित्त है बन्ना याकाता के कार वर्फ मानूब कहवान আশায় অন্তের হন্ত অণশ্যন করিয়া, অন্তের শাক্ততে পর্কিমান क्केटल केव्हा करत्रन, कांकाता यानिक मत्न कतिरक भारतन **(व** খুন সংক্ষেই ধন্মের তত্ম সব আরত্ত করিয়া ফোললাম। কিছ পে সংস্কার বেশী। দল কাথেব বেলার সাহায্য করে না। যদিও কবে, ভাষারও মূল্য স্বোপাজ্জিত তত্ত্বের নিকট অভি সামার। বংসরের পর বংসর মাধার ঘাম পারে ফেলিয়া, একাস্ত অনুসূ-রাগ ও যত্নে একটা তম্ব উপাৰ্জন করিলে, ডাচা যেরূপ আলের জিনিস হচবে, অক্ত হচতে শ্রু, অধায়াস বা অব্যুল্ক তত্ত্ব कथनहरमज्ञल व्याप्ति भामस्त्रम य**ण** श्हेटल भारत ना ध्वर ভাল। ধবিয়া থাকিবার প্রবান্তও তেমন প্রবণ হইতে পারে না। এজন্ত যাঁহারা গুরুব শরণাগ্ত হুহুরা, রাতারাতি বড় মাতুষ হুইতে চাহেন, ডাঁহাদের জীবন ক্থনই ডেমন গভীর, ডেমন দৃঢ ভি। তার উপর এমতি ঠিত হয় না। তাখারা চিরদিনই পর মুখাপেক্ষী, প্রাহ্মসর্বকারী হইয়া ভাস। ভাসে। ভাবে চলিয়া থাকেন। তাঁগোদের জীবন নিরাপদ অবস্থায় যাইর। সুশাস্ত बरेवात ञ्चावधा व्याश्च हत्र ना। अञ्जत अञ्चाव इट्टाइं ह्यू कि অন্ধৰণার দেখেন। এজয়ত সকলেরই কন্তব্য বিশেষ যত্ন 👁 আয়াসের সাহত ধর্মকে নিজ সম্পত্তি করিতে প্রয়াসী হওয়া। স্হিফ্ডাও ধীরতার স্হিত স্তোর গুচ্ছত্ অবগত চইডে যরশীণ হওরা। অভেথা নিরাপদ অবস্থা পাইবার সম্ভাবন। অভাত কম।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

### শক্তি-সমবায়।

মানব সমাজে সং ও অসং উভর শক্তিই একতা বাস क्तिराज्ञ , উভয়েर श्राश देशे भिक्षित मिरक शाविक रहेरलाइ। মঙ্গলময় বিধাতা কেন তাঁহার সৃষ্টি কার্য্যের মধ্যে অস্থ ও অমলবকে ভান দান করিবেন, এই প্রশ্নও অতি তুরুহ ও গভীর। ইহার সমালোচনাতে প্রবুত্ত হওয়া এই প্রবন্ধের गका नहा । सृष्टि कार्या मक्तव मध्य व्याकत्वत विमामान्छ। लिथियारे वर्खमान युर्गत विखानीन नाखिकशन वनियादहन, "स्य वन, जेश्वत मत्रमक्तिमान नाधन, ना इत्र वन जिनि शूर्व मक्रन নহেন। তিনি যদি 'পূর্ণ মঞ্চল ও পূর্ণ শক্তিশালী হইতেন कारा रहेल कि काठा रुष्टे कार्यात मर्था व्यवकृत विश्वास থাকিত? সে যাগ চউক সৃষ্টি কার্য্যে আমরা মঙ্গলের সৃষ্ঠিত অমঙ্গকে বিদামান দেখিতেছি। কেবল তাহা নহে, ইহাও অমুত্র করিতে পারিতেছি যে,অসতের স্তিত সংগ্রামে অসংকে পরাস্ত করিয়া দৎ প্রাতিষ্ঠিত হইবে, এবং অমঙ্গলকে নিবারণ করিরা মঙ্গল আপনাকে জয়গুক্ত করিবে, ইচাই যেন বিধাতার বিধি। পার্ষে অসং না থাকিলে সং কাহার সহিত সংগ্রাম করিত ও কিবপে প্রাফ্টিত হইত ? অত এব অসতের উৎপত্তি সম্বন্ধে আমাদের যে প্রকার সিদ্ধান্তই হউক না কেন, অসতের সহিত সংগ্রাম আমল। প্রিভার করিতে পারিতেছি না। সং ও অসং হই আমাদের চিস্তাকে আন্দোলিত করিভেচে, ভাবকে উত্তোজ্ঞ করিতেছে, জীবনকৈ আঘাত করিতেছে।

<u> গোভাগ্যক্রমে বিধাতা অসংকে মানব জীবনের পার্মে</u> থাকিতে দিয়াও তাহার জয়া হইবার উপায় রাখেন নাই। बाहा अमुका, याहा अमर काहा विमान शाक्ष हहेत्वहे हहेत्व: म्गिनिकीन तृत्कत नाम, वानिनिकीन (मर्कत साम ७ क ७ विमष्टे ছইবেই চইবে। ঋষিণণ বালয়াচেন:-- "সমুলো বা এষ: পরিভাষাতি যোনত অভিবদতি।" যে অসুতকে আশ্রে করে সেম্মলে প্রিশুস্হর। বুণে বুগে প্রত্যেক বিশ্বাসী এই কথা বলিয়াছেন এবং জগতেব ইতিবৃত্তেও এই কথা প্রম:-ণিত রহিয়াছে। যাহা সতা, যাহা প্রকৃত বস্তু ভাহাব অবপ শাপ অসম্ভব। গালিলিয় বলিলেন, "পুথিনী ঘুবিতেছে," অজ্ঞ লোকে উলোক কারাগারে নিক্ষেপ করিল, ধরে ঘরে অজ্ঞ ব্যক্তিগণ এই মতের প্রতিবাদ কবিতে লাগিল; মানব সমাজে व्यत्नक व्यमास्त्रि, व्यत्नक विद्वार, व्यत्नक विश्वव घर्षित ; किन्न তাহা বলিয়া পূণিনী থামিল না। যে ঘুরিতেছিল সেই ঘুরি-তেই লাগিল। অবশেষে লোকের জ্ঞানকে সংশোধন কবিয়া नहैं एक हरेन। এই तभ आजि इंडेक, कानि इंडेक, कूहे শতাৰীর পরেই হউক সভ্যের হারা জ্ঞানকে সংশোধন করিয়া महेरडहे बहेर्त ।

জগদীখর যেরূপ অসভ্যকে জয়শালী করেন নাই, সেইরূপ জ্বসভ্য ও অসংকে সন্মিলিড ভাবে কাষ্য করিবার শক্তি দেন

क्रमभारकत अज्ञ मःश्रक अमहाहाती लाक वह নাই। সংখ্যক শান্তি-প্রিয় ও সদাচায়ী লোককে সময়ে সময়ে যেরূপ উপদ্রুত করে, তাহা দেখিলে মনে হয়, যদি অস্দাচারিগণ খীর অভিদল্পি চরিতার্থ করিবার জন্ত সমবেত হইতে পারিভ, ভাছা হইলে জনসমাজের কার্যা চালান এক প্রকার অসম্ভব হইয়া পড়িত। আজে যদি জগতের সমুদর छैरक द्यान ७ नत्र छाहो नाकिशन भन्थ भूसक बननमाब छैरनब निवात अञ्च नगवक इत्र धवः छाहेनामाहे छञ्ज शातन करत्र, তাহার জন্মই সমগ্র জগৎ টলমল করির। উঠে। কিন্তু এই নরজোহিগণ যে আপনাপন শক্তিকে সমবেত করিবে, তাহার পথে অন্তরায় অনেক রাহরাছে। সমবেত ভাবে কার্য্য করিবার জন্ত অধার্ত্তিক কেও ধর্মনিয়মের আত্রয় প্রহণ করিছে হর এবং উদ্দাম স্বার্থপ্রবৃত্তিকে কিয়ৎপরিমাণে শৃন্ধালত করিতে হয়। স্বার্থান্ধ ও পাপাদক নরজ্যেহিগণ তাহা পারে না বালয়াই ভাহাদের থারা যভটা অনিষ্ট সংঘটিত হইতে পারিত, ভাহা হহতে পারিতেছে না। কিন্তু অসতের পক্ষে সমবেত হওয়া বেরূপ হুক্র সতোর পক্ষে দেরপ নহে। প্রকৃতিই এই, ভাষাতে প্রেম, কোমলতা 🛭 আত্মাবনাশ আছে, স্থতরাং তাহা সমবেত হইবার भाष्ट्रकृत। এক ११ (य क्रमिन्सा व्यन एउत्र व्याधान पृष्टे इत् ভাহার কারণ এ নতে যে, তল্মধ্যে সং বিদামান নতে, কিন্তু তাছার কারণ এই যে সং যাঁহারা ভাঁহারা পরম্পর বিচ্ছিন্ন ও উদাসীন ভাবে রাহয়াছেন। যে সকল জ্ঞাত সমবেত मक्तित्र रेष्टेकन এकवात्र लक्का कतिबाहिन, छ।राहित मध्य সমবেতভাবে কার্য্য করিবার প্রাক্ত দিন দিন বদ্ধিত দেখা যাইতেছে। সমাজ মধ্যে কোনও প্রকার গুর্নীতি বা কুরীতির অচলন দেখিলে তাহারা নিরাশ হইয়া হাল ছাড়িয়া দিতেছেন न।। किन्न छाहात्र निवाबन छ थाछि।वधारनत अन्त मन स्वरन পারকর বন্ধ হইতেছে। পদ্মানদাতে কোনও নৌকা স্রোতের मूर्थ উঠিতে পারতেছে না দেখিলে, অমান চারাদকে কেতে যে সকল কৃষক কাজ কারতেছিল, তাহারা ছুটিয়া আসে ও ममझटन धतिया नोकाथानि शांत कतिया (मया जाकादन्त বুদ্ধিতেই বলে এরাপ কাজ দশজনে হাত না । দলে হয় লা। দেহরূপ সভাদেশ সকলের অধিবাসাদিগের এই স্বাভাবিক ব্রাদ্ধ জনিতেছে যে, সামাজিক আনপ্ত ানবারণ ও সামাজিক উন্নত-माधन प्रभावता मगरवज्ञात वक्षणांत्रकत ना श्रेटण स्य ना। এই সংস্কার জাঁহাদের অন্তরে দিন দিন বন্ধুণ হৃহতেছে। আমাদের ভাব ইহার বিপরীত বলিয়া আমরা স্থীয় স্বীয় শাকুকে সমবেত কারতে পারিভেছিনা। আমাদের ভাব যেন এই প্রকার-"যাহার নৌকা দেই টানিয়া তুলুক আমি, মথে। ঘামাইতে ঘাইব কেন ? আবার অনেক ভাল ভাল লোকের এ প্রকার ভাব দেখা গিয়াছে-- "সং ও অসং হই স্মাজ मार्था थाकित, नकत ममार्थि चाहि; चन ९८क सिथित छत्र भाइरेल हिलार मा : मराज्य छेभराम रमा , मराज्य चाहित्र कत, অসং অপেনি নিবারিত হটবে।" ইহাও এক প্রকার ছ-ত্থ-পরতা ও উদাসীনতা। সং ও অসং সকল সমাজেই থাকে ইহা সতা, সকল জীবনেই থাকে ইহাও সভা। কিন্তু সৎ

জন্মশীল থাকে ও সাহসে থাকে এবং অসৎ সংকৃতিত থাকে ও শাসনে থাকে, ইহাই সমাজের প্রাকৃত স্কৃত্ব অবস্থা। তাহা না হইনা যদি দেখি যে, সৎ সংকৃতিত, হীন-সাহস ও পরম্পার-বিচ্ছিন্ন হইনা আছে, এবং অসৎ অবাধে ও মনের আনন্দে বুক ফুলাইনা বেড়াইতেছে, তাহা হইলে কি প্রকার সামাজিক অবস্থা প্রকাশ করে ? অতএব বাহারা সতের পক্ষপাতী, তাঁহাদের সেই পক্ষ পাতিত কেবল হাদরে বন্ধ রাখিলে চলিবে না। আপনাপন শক্তিকে সমবেত করা তাঁহাদের পক্ষে একান্ত প্রয়োধন ও অতাব কঠাবা। পরম্পার বিচ্ছিন্ন থাকিনা অসংকে শীবৃদ্ধিশালী হইতে দিলে, তাঁহারা ঈশ্বর ও মানবের নিকট অপরাধী হইবেন।

উপরে সাধারণ ভাবে যে সত্যের আলোচনা কর। হইল, তাহা বিশেষ ভাবে ব্রাহ্মণিগের জীবনে প্রান্থান করিতে পারা বার। আমরা সকলেই যে শক্তিশালী লোক তাহা নহে। কৈন্ত আমাদের ক্ষুদ্র কুল্ড শক্তিকে বাদ আমরা সমবেত করি, তাহা হইলে তদ্ধারা অনেক অনিষ্ট নিবারিত ও ইট সাধিত হইতে পারে। যথন এদেশে প্রকাশু প্রেকাশু রথ টানা হর, তথন ক্ষুদ্র কালক বালিকান্ত আসিরা রথের কাছিতে হাত দেয়। তুমি মনে করিতে পার বে কাছি শত শত বর:প্রাপ্ত লোকে ধরিয়াছে, তাহাতে ক্ষুদ্র বালক বালিকার হাত দিরা আরে কি হইবে। কিন্তু তাহা নহে, ঐ বালক বালিকার কাত দিরা আরে কি হইবে। কিন্তু তাহা নহে, ঐ বালক বালিকার ক্ষুদ্র আকর্ষণ রথের গতির পক্ষে কিঞ্ছিং সাহায্য করিতেছে। সেইকপ ব্রাহ্মসমান্ত রূপ রথের গতির পক্ষে তোমার আমার ক্ষুদ্র ও মহতেব সকলেরহ হাত দেওরা আবিশ্রক। এই সমবার প্রবৃত্তি বদ্ধিত না হইলে আমাদের কোনও কার্য্য স্থানকপে চলিবার উপার দেখা যায় না।

যাদ কোনও আহ্বা একপ মনে কবেন, কাল ত একপ্রকার
চ'লভেছে, আমি আবাব কি করিব, কোণার যোগ দিব।
তবে বালতে চইবে যে তিনি অ'স্বেম্মালের কার্ণ্যের গুরুত্ব
এবং মহত্ব এখনও স্মাকরপে হুদ্রজম করিতে পারেন নাই।
আহ্বাস্থ্যমালের কার্যাক্ষেত্র অনন্ত বিস্তৃত। তাহার করেকটীমাত্র
নিদেশ করিতেছি।

প্রথম—প্রচার। প্রচার ব্রাহ্মসমাজের একটা প্রধান কাজ। সকলে একবার চিস্তা করিয়া দেখুন একালটা কিরপ ত্র্বল ও ক্ষীণভাবে চলিতেছে। এ ক্ষেত্রে এখনও কত শত লোকের কাম্য করিবার সান রহিয়াছে।

বিতীয়—ব্রাক্ষ শিশুদিগের শিকা। আমাদিগের মধ্যে কত পুরুষ ও কত মহিলা এ কাথো জীবন দিলে তবে এ কার্য্য স্থাক্ষণে চলিতে পারে।

তৃ গীয়—সাহিতা। ব্রাহ্মদিশের মধ্যে সমবার শক্তি পাকিলে এবং সাহিত্যে পারদর্শী লোক থাকিলে, তাঁহারা ব্রাহ্মমিশন প্রেদটাকে সাহিত্য জগতে একটা প্রবল শক্তিরপে পরিণত কারতে পারিতেন; ব্রাহ্মস্নাল হইতে স্ক্ল-পাঠ্য গ্রন্থান করিতে পারিতেন; ব্রাহ্ম গৃহত্বের গৃহে পাঠ্য স্থনীতিপুণ উপভাসাবলী প্রকাশ করিতে পারিতেন; বিভিন্ন ধর্ম স্প্রেদারের ইতিবৃত্ত মুক্তিত করিয়া ব্রাহ্মদিগের জানকে

উল্লক্ত করিতে পারিতেন; সাধুমহাত্মাদের জীবন চরিতে মুদ্রিত করিয়া লোকের ধর্ম জীবনের সাহায্য করিতে পারিতেন। সমবার শক্তির ও অভুরাগের অভাবে তাহা হইতেহে না।

চতুর্থ—বাক্ষদিগের মধ্যে জ্ঞান বিজ্ঞানের (culture) উন্নতি।
এ বিষয়ে ব্রাক্ষগণ দিন দিন পশ্চাতে পড়িতেছেন বই অপ্রসর
হইতেছেন না। আমাদের মধ্য হইতে ক্তক্তলি লোক
দলবদ্ধ হইরা সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের পুতকালরটাকে কেল্লস্বরপ
করিয়া ব্রাক্ষসমাজ মধ্যে জ্ঞান-বিস্তারের ও বিদ্যার উন্নতির
কত উপার বিধান করিতে পারেন। সমবার শক্তির অভাবে
তাচার কিছুই হইতেছেনা।

পঞ্চম —জনহিত তথা। সুরাপান নিবারণ, পতিতা রমণীদিগের উদ্ধার, দারিন্তা তৃঃথ নিবারণ প্রভৃতি কত জনহিতকর
কার্য্য পড়িয়া রহিয়াছে, সমবেত ভাবে কার্য্য করিলে যে সকল
কার্য্যে ব্রাহ্মগণ বিশেষ কৃতকার্য্য হইতে পারেন।

এত প্রকার কার্য্যক্ষেত্র হাতের নিকট থাকিতে কোনও বান্ধ বেন এই বলিরা ছংখ না করেন যে তাঁহার খাটিশার কার্যক্ষেত্র কোথার ? আমরা আমাদের স্বেচ্ছাচার-প্রবাভ স্বিগা প্রভৃতিকে সংযত করিয়া সমবেত হইতে পারি না এই কথাই বলুন। তাহাই সত্য কথা।

### धर्म्माधरन माधूमङ ।

মহাক্বি ভবভূতি প্রণীত এক্থানি সংস্কৃত নাটকের মধ্যে নিম্লিখিত ক্বিতাটী প্রাপ্ত হওয়া যার ;—

বিভরতি গুকা প্রাজ্ঞে বিদ্যাং যথ। তথৈব লড়ে;
নতু থলু তয়ে। জ্ঞানে শক্তিং করোতাপদ্ধি বা।
ভবতিচ পুন ভূরান্ ভেদঃ ফলং প্রতি ভদ্যথা
প্রভবতি শুচিবিশ্বোদ্যাতে মণি ন মৃদাং চয়ঃ॥

অর্থ—"গুরু প্রাক্ত ও জড় বিচার না করিয়াই সকলের প্রতি সমনেভাবে বিদ্যা বিভরণ করিয়া থাকেন; তিনি কালারও বোধশক্তি প্রদান করেন না বা হরণ করেন না; কিছ ফলে দেখিতে পাই অনেক তারতমা ঘটিয়া থাকে; নিশাল আতসী কাচই স্থারশাকে প্রতিফণিত করিতে পারে মুৎপিও তাহা

বিদ্যালয়ে সকলেই গমন করে, উৎকৃত্ত শিক্ষকের সংসর্গে আনেক ছাত্রও বাদ করে, সকলে সমান বিদ্যালাভ করে না কেন ? ইহার উত্তরে কেই বা বলিবেন সকল ছাত্রের ধারণাশক্তি সমান নহে, কেইবা বলিবেন সকল ছাত্রে সমানরূপ প্রশিধান করে না। তবে দেখিতেছি ছুইটা বিষয়ের পার্থকা নিবন্ধন কলগত তারতম্য উপন্তিত হয়। প্রথম ধারণাশক্তি, বিতীর প্রণিধান-শক্তি। ধারণাশক্তির উপরে কাহারও হাত নাই। সকলে সমানরূপ মন্তিক্ষ লইরা জন্মগ্রহণ করে না। কাহারও কাহারও মেধা অতীব আশ্চর্যা। যে বিষয় উহোদের সমক্ষেউপন্তিত হয়, উহিবা প্রিত তাহার ভিতরে প্রবেশ ক্ষরিতে পারেন এবং তাহার মর্ম গ্রহণ করিতে পারেন। আবার কাহার কাহারও প্রকৃতি বিশ্বিৎ জড়ভাবাপর; কোনও বিষয়ের

भर्षे अर्ग कृति एक डी हारने त विनव हरेता थारक। धक्रे प क्षि छ আছে,বে নার আইকাক নিউটন যথন শিশু ছিলেন তথন তাঁচার নিৰ্টে ইউক্লি:ডর জামিতির প্রথম ভাগের সাতচলিশ প্রতিজ্ঞ। পাঠ করিয়া শুনান হইয়াছিল। তিনি শুনিবামাত্র বলিলেন ইহা ত সত্য। বে প্ৰতিজ্ঞার সত্যতা বোধ করিতে কত বয়:প্ৰাপ্ত ৰাণকের মস্তক বুরিয়া যায়; শিশু নিউটন স্বত:সিদ্ধ ভাবে আনুভব করিলেন যে তাহ। সতা। কিছু এই মানব সংসারে मात्र चाहेबाक निष्ठेवेन बहेबा मकरम बनाशहर करत ना। কলিকাত৷ সংস্কৃত কলেকের স্থাসিত্ব ব্যাক্রণাধ্যাপক আশেষ-শাস্ত্রজ্ঞ পরলোকগত ভারানাথ তক বাচম্পতি মহাশরের বিষয়ে এরূপ শ্রুত ছওয়া যার যে, তিনি পঠদ্দশতে मर्खाटकत व्यक्षिकाः न निन, अतः निरनत व्यक्षिकाः न मन्न गन ভারিরা বেড়াইতেন, হয় ভ একাদন রাত্রে করেক ঘণ্টা। भाक्षा श्रष्ट नहेवा विनित्तन, अमिन निवादनादकत छात्र समूनत विষয়ের মর্গ প্রতণ করিয়া সমুদ্য কণ্ঠত করিয়া লইলেন। দেকালে কলিকাতা সংস্কৃত কলেজে নীগুরাম শালী নামে व्यक्कन श्रीका (मन्त्रेत महायहाशाधार शिष्ठ कार्तात्र व অবহারের অধাপক ছিলেন; তিনি বালালা জানিতেন না সংস্কৃত ভাষাতেই কথা ক্ষিতেন ও অধ্যাপনা কাৰ্য্য চালাইতেন। তিনি অনেক সময়ে হাসিয়া বলিতেন---

"মম যত্র যত্র সম্পেহ স্ত তৈবে ভারাপ্সছভি।"

আর্থ—''যেথানে ষেথানে জামার সন্দেচ আচে, সেই সেই খানেই ভারা প্রশ্ন করে।'' ভারানাথের এই ধারণাশক্তি লইয়া সকলে জন্মগ্রহণ করে না।

বিদ্যা লাভ বিষয়ে ধাবণাশক্তির ভার প্রার্ণিধান-শক্তির ও वाशाकन। कातक वृद्धिमान हात व्यागिमात्तव अज्ञाद छे ९कृष्टे -चाहार्यात्र निकटि थाकिया । विमानाञ्च कतिरञ्ज भारत ना। কিন্তু প্রেল্ল এই, এই প্রাণধান স্কলের হয় না কেন ? উত্তর,— জ্ঞানলাভের জন্ম যাহার ব্যাকুশতা আছে, ভাচারই প্রণিধান छन्न व्यापदात्र इव ना। श्राञिमिन हत्कत छेपात्र (मथिछिहि, দ্রেশের শত শত ধনিসম্ভানের বিদ্যা-শিক্ষার জন্ত কত উপার তাহাদিগকে বিদ্যালাভে স্থায়তা অবল্মিত হুইতেছে। করিবার জন্ম প্রচুর অর্থ ব্যর করিয়া উপযুক্ত শিক্ষক সকল দেওয়া হইতেছে; তাঁলারা উঠিতে বসিতে সংগে রহিয়াছেন; উৎকৃষ্ট বিদ্যালয়, উৎকৃষ্ট শিক্ষক, উৎকৃষ্ট পুস্ত গালয় প্রভৃতি ममुनव आरबाबन तहिबाहि, ज्यंशे छारापित मरशा अणि अब সংখ্যক বালকই কৃত্বিদ্য হইয়া প্রতিষ্ঠ। লাভে সমর্থ হইতেছে। ইছার কারণ কি ? তাহাদের সকলেই কি অভ্মতি ? ভাহা नाइ, कात्रण क्षेत्रक वालाक व चाराक वशः श्राश्च इहेशा विषय কার্যানিকাতে স্বিশেষ বৃদ্ধিমন্তার পরিচয় দিতেছে। তালার কারণ তাহাদের জ্ঞানস্থার অভাব, স্তরাং শ্রমপ্রবৃত্তির আভাব। এটরপে প্রাতিদিন এই সত্যের ভূরিভূরি প্রমাণ लाश इ हया याहेरल ए कान-म्लुश-नम्लम, वार्क्न ह सम्भीन काळाहे श्वत्रभाष्ट्रभात बाता खेशक्क हत्र। याहात चारत्वम नाहे, क्कानम्पृत्र नाहे, अमधीनका नाहे, छाहात कर्प विना छानित्र। विना।-लाएक चावनवन-দিশেও ভাছার উপকার হয় না। শক্তিই উর্ভির ভিডি, গুরুপ্রেশ সহায় মাজ।

কিন্ত আবল্যন-শক্তি মূল ভিত্তি বলিয়া গুরুপদেশের व्यक्तिकनीवणां क्योकात कत्रा यात्र ना। अक्र.न नकन विश-(वह फे॰क्ट बास् नकन व्यनी ज हरेबाह्य। अकी छुत्रह विवद्रक সমুচিত রূপে অধিকৃত করিতে চইলে, যে যে অবশ্য জ্ঞাতব্য বিষয়ের প্রয়োজন, ভাচাও নানাবিধ গ্রন্থে নিবন্ধ করা চইরাছে। স্থাং বর্ত্তমান সময়ে একজন লোক নিজ গুছে বসিয়া শ্রম 😮 অফুদদ্ধানের হারা অধিকাংশ বিদ্যা লাভ করিতে পারে। ভবে वफ़ वफ़ करनास्त्र वफ़ वफ़ विक्र मिश्री (श्रीरक्षितात्र नियुक्त ক্রিবার প্রয়োজন কি 📍 ডাক্তারি গ্রন্থ হারে ব্যিয়া পড়িয়া ও নিজ পরীকার ঘরে৷ ত একজন ডাক্তার হইতে পারে, তবে মেডিকেল কলেজ খুলিয়া ছাজার ছাজার টাকা বেভন দিয়া প্রোফেশার নিযুক্ত করা হয় কেন ? ইহার কারণ এই, ঐ সকল কৃতবিদ্য প্রোক্ষেদার সেই স্কল গ্রন্থের বর্ণিত বিষয় সাধনের বারা আয়ত করিয়াছেন; তাত্তর নিজ অভিজ্ঞতার হার। তংসংক্রোম্ভ অনেক নুতন তত্ত লাভ করিয়াছেন। তাঁহাদের স'মধানে বসিলে আল সমলের মধ্যে এত বিশদরূপে এত স্বল্য-বান জ্ঞান-সম্পত্তি লাভ করা যার, যাহা নিজে স্কান ছারা জানিতে বহুকাল সাপেক। যথন উৎকৃষ্ট গ্রন্থ ও উৎকৃষ্ট শিক্ষক উভয় সন্মিশিত হয়, তথন বিদ্যালাভ কার্যা गहरक ও स्वनात्रकार निकाह हत्।

विनागा महस्य अधानक य कार्या कतिया शास्त्रन धर्षकान गांच मचरक माधू-मज्ज (महे कार्य) कतिया शास्त्र। এখানেও স্থাবলম্বন উন্নতির মৃগ ভিত্তি। যাহার ব্যাকুলতা नाहे, निर्वाद माधन ७ अम नाहे, छाहारक रक धर्म मिर्छ भारत १ তাহাকে ৰদি যুগ ষুগ ধরিয়া ধার্মিক জনের সঙ্গে ফেলিরা রাথ, তথাপি দে ধর্ম লাভ করিতে পারিবে না। যে সকল ব্যাপারের মারা কত এরাবত চুর্ব হইয়া যাইতেছে, কত পাতকী নৰজীবন পাইতেছে, কত জীবনে বিপ্লব ঘটতেছে, যে ব্যক্তি ভাগার মধ্যে থাকিবে, সকলি দেথিবে, শুনিবে, অপচ কিছুর্ই উপকার প্রাপ্ত হইবে না। পদ্ম-পত্রের জল যেকপ উপর দিয়া গড়াইয়া ৰায়ু পত্ৰকৈ সিক্ত করে না, সেইরূপ সতুপদেশ সকল 🕏 ভাছার মনের উপর দিয়া গড়াইয়া ঘাইবে, ভাছার মনকে সিক্ত করিতে পারিবে না। আমেরা কি এরপ শত শত দুটান্ত দেখিতে পাইতেছি না? কিন্তু স্বাবলম্বন মূল ভি'ত্ত বালয় এথানেও সাধু সঙ্গকে একেবারে অগ্রাছ করিলে চলে ন)। অসপরাপর বিষয়ের ক্রার বর্তমান সময়ে ধর্ম গ্রাছেব ও অপ্রভুল নাই; ধর্মজীবনের স্কল অবস্থার উপযোগী গ্রন্থ প্রচুর প্রিমাণে প্রাপ্ত ছওয়া যায়, সে স্কল্ পঠি ক্রিয়াও অনেকে ধর্মজীবনের সাহায্য লাভ করিতে পারে তবে আনার माधु-माम अत्याक्षन कि । आवाद विगालिक विमालिक विषय ज्ञाभाभक याद्या कतिया थारकन धर्म्मगाधन विषय माध्यक्र 9 ভাছা করিয়া থাকে। শাস্ত্রে ত ধণ্মের তত্ত্ব সকল নিহিত আছে, কিছু সেই সকল তত্ত্বে সাধনের ঘ'রা আছত করিয়াছেন, এরপ বাক্তি যদি পাওয়া যায় তাহা চটলে সেই সকল তাৰেব মর্ম্মতাট্য সম্বাদ্ধ এবং অনেক নৃত্ন তক্ক ক্রাক্সম করার সম্বাদ্ধ কত সহায়তা হইতে পারে ? এবিষর লইরা বিবাদে প্রবৃত্ত

হওরার কোনও প্রবোজন দেখা বার না। আদ্ধ যদি বিদ্যালাভের জন্য অধ্যাপকের অধীন হওরাতে আপতি না করেন, তবে ধর্ম্মগানন বিষয়ে সাধুজনের অধীন হইতে কেন আপতি করিবেন ? আমাদের বোধ হয় যাহা সহজ ও আভাবিক তাহাকে অতিরিক্ত মাত্রাতে গ্রহণ করাতেই লোকের বিকৃত্ধভাব উৎপন্ন হইতেছে। প্রত্যেক ব্যক্তিকেই একটা মহাস্ত্রা স্থাণ রাধিতে হইবে সেটা এই—"তোমার ধর্মের ভার ঈশ্বর কাহারও উপরে অর্পণ করেন নাই, তাহা তোমাকেই অন্তেশকরিতে হইবে, সাধন করিতে হইবে ও উপার্জন করিতে হইবে।" এবিষয়ে কাহারও প্রতি সম্পূর্ণ ভাব অর্পণ করিবে আপনাকে মন্ত্রাত্ব হুটান কবিয়া শিশুত্বে পরিণ্ড করা হয় এবং যে উদ্দেশে একপ করা হয় সেই উদ্দেশ্রই সফল হয় এবং যে উদ্দেশে একপ করা হয় সেই উদ্দেশ্রই সফল হয় না; একপ ব্যক্তি প্রকৃত ধর্মজীবন প্রাপ্ত হইতে পারে না।

### যোগ ও ব্ৰাক্ষসমাজ। (পৃন্ধ প্ৰকাশিতে পর)

৭। নাম ও সঙ্গীত বাধন। অরপাত্মক নাম ও অরপ ধ্যান একট বল্ত। কিন্তু নাম সাধনে সাধারণতঃ ধ্যানের স্তার গভীরতাথাকে না। হৃদয়তন্ত্রীব সৃহিত স্থব মিলাইবা বিভূগুণ গান করা আহার পকে বিশ্রাম, আমোদ ও উপকারজনক। সক্ষণাই চিত্তবৃত্তি নিরোধ করতঃ ধ্যান-নিরত হওয়া সন্তবপর নছে। মন্তিক্ষে অবকাশ প্রয়োজন, নচেৎ জত্যধিক তথ্ মুনার ভঙুলাধারের ভঙুল সিদ্ধ হইবাব পুরেই শতথত হওনের উহার উদ্দেশ্য াসাক বিষ্যে ব্যাঘাত জন্ম। নাম, শ্বরূপ বা ভাবোদ্দীপক সঙ্গীতের মানসিক বাশাক্ষিক ভাবে স্বভাব আবৃত্তি নানাপ্রকারে হিত্তলনক। এই সমুদায় অভ্যা-সের সহিত "তিমান্ প্রাত" এবং "তম্প্রিয় কার্য্য সাধনং" নিভান্ত প্রয়োজন। প্রকৃতক্পে নাম করিতে পারা ও এক দর্শন সম্ভোগ করা একই বস্তু এবং এক দর্শন ও প্রেক্ত জীবনও এক ই বস্তু। সেহ জন্ম ছ কালক বলিয়াছিলেন, "आक्षीतः , निमत्त्र मत्काना , आङ्गान् कांचा माठा नाम , माठा নামর্কি লাগে ভূথ; যো থাওয়ে সো তবিয়াওয়ে ছঃখ।" ক্ষথাৎ তাঁগোকে ক্ষরণই জীবন; তাহার বিক্ষিত মৃত্যু। খাঁটিনামই প্রকৃত জাবন। প্রকৃত নামের কুধা হহলে ডহা যে ব্যক্তি ভোজন করেন তিনি হঃখ্যাগর উত্তাণ হছয়। অক্ষয় পানক ধাম লাভ করেন। এই কারণেই মহানতি ব্যাসদেবের সুৰু বিধিব সার বিধি এই যে "অষ্ঠবো৷ সভতং বিষ্ণুঃ," এবং নিষেধ এই যে "ন বিশ্বস্তব্যা কদাচনঃ।" এই কারণেই বোমৰ সাধক ব্যিষাচেন "think of God oftener than you breathe"—কেবল প্রতি নিশ্বাদে নতে, যতপার নিশ্বাস লও তেদপেকা অধিকবার তাঁহাব প্রেমমুধ স্মবণ করিও। বাঁছার অজ্ঞপা সাধিত চট্যাছে, তিনি ধ্রু। তাঁলার ভাব ঈশ্বের সঙ্গে নিত্য সহস্পীত।

এই যে "দমে দনে নাম" লওয়। ইহা করনা না প্রাকৃত প্রতাবেই সম্ভব, তাহা যিনি ভগবদ্প্রেমনিক আত্মার সেইমা

মুর্ত্তি ও নির্কাত নিছলা দীপ্রিথা ভাব প্রাালোচনা ক্রিরাছেন তিনিই কানেন। এইরপ সাধ্যণ চলা ফেরা প্রভৃতি সর্ববিধ কার্য্যের দারা ত্রন্মের নাম প্রচার ও গুণকীর্ত্তন করেন। তাঁছাদের হৃদয় মধুচক্র সদৃশ মধুব সৌরভময় ও চিত্তভ্লাকর্ষক। উহোদের আত্মা যেন আনন্দ ও মাধুর্যারসে বিভোর হইয়া আছে "কেবা শুনাইল তব নাম ? জণিতে জপিতে নাম অবশ করিল গো, আকুল করিল মোব প্রাণ।" এই নাম 'বৃণা উচ্চারণ' কবিলে বিপরীত ফল হয়, অর্থাৎ নামাপরাধ হয়। বুগা নাম লওয়ার অর্থ এই যে, যে সমরে মন विषयाखरत नियुक्त, ७९कारन मृज ভाবে উহা উচ্চারণ করা, 😎 ছতাজনক শৃত্য ভাবে, অর্থাৎ প্রেম, ভক্তি প্রভৃতি ভাব শৃ্ত্য ছইযা নামকে কেবল শাব্দিক বস্তুতে পরিণত করিলে একটী রুণা নাম কবিবার প্রবৃত্তিরূপ অভ্যাস ও তজ্জনিত আধ্যাত্মিক ষ্মবনতি জন্মে। মহাজনেরা নাম মাহাত্মা কীর্ত্তন কবিয়াছেন— এমন কি ঈশবের নামকে ভাঁছাপেক্ষাও গুরুতব বলিয়াছেন। ভাঁহার৷ বলেন যে আমরা নাম হারাই তাঁহাকে লাভ করি— ষ্মত এব নাম মহদ্বস্তু। বস্তুতঃ ধারণার অবস্থাতে নাম ও নামিত বস্তব প্রভেদ দূর হয়।

ন। সহকারী উপায়। বিষয়সক চিত্তকে সাধনের উপযোগীও অফুকুল করিতে হইলে প্রথমতই সভাসেতা, সারালার বিচার জনিত বিবেক ও বৈরাগ্য প্রয়োজন। অসার ভ্যাগ করিয়া সার জ্ঞান ও লাভের আকিঞ্চন হইলেই 'বাসনারাম্' বাসনা সংযম হইবে। গভীব বারেধিতে নিম্ম ছইয়। হত্ত পদ ইতন্ততঃ বলপুক্ষক সঞ্চালন করিলে মৃত্যু আনবার্য্য; ইতন্ততঃ যাইলে বিপদ'। স্থির ভাবে সংযত ইছে। ও সংযত্তেই কইয়। গস্তব্য পথে যাইতে হইবে। আআা নিজেই আআার ইঞ্জিনিয়ার। উহার ব্যাকুল ইচ্ছা থাকিলে, উহা পূরণেব পথ নিজেই আবিকার করিবে ও খুজিয়া, লইবে। যাহা যাহা করিলে উদ্দেশ্য সিদ্ধির স্থবিধা হইবে, উচা ভাহা জানিতে পারিবে ও করিবে।

সংসঙ্গ, সদ্প্রন্থ, সদালোচনা হইতে জীবন্ত ও মৃত ব্যক্তি-গণেব সাধু চিপ্তা, চাবে ও সাধন-বহুত অবগত হওয়া যায় এবং বিবেক, বৈৰাগা, প্রেম, ভাজি, বিশাস, প্রভৃতি মহান্তভাবো-দ্রেককারী কথা গুলি আ্য়ার বল, স্বাস্থ্য ও ক্ঠি সম্পাদন করে।

আয় প্রীক্ষাদের দ্বারা বিশেষ ফল হয়। আমাদের কি আভাব, কত পরিমাণে উহা দূব চইতেছে বা না হইতেছে, তৎসম্বন্ধে কি কি করিছেছি বা উপার অবলম্বন করা যাইতে পারে ইত্যাকার ভাবনাধারা সাধনরূপ সোপানে আরোহণের অবলবম্বন একান্ত প্রয়োজন।

লক্ষা ভির হওয়া চাই। আমরা কি চাই তাহা ভির হ**ইলে,** কোন্পথে, কোন্ উপায়ে উহা লাভের স্থাবধা হইবে, ভির করিয়া লক্ষ্যে দিকে পদ সঞ্চালন করিতে হইবে, নচেৎ ইতন্ততঃ কবিলে কোন ফণ হইবে না।

এইত গেল অভিশয় সক্ষেপে সহজ ও প্রাকৃত আধার্য যোগ সাধনের সহজে কয়েকটা মোটামুটি কথা। ইহার মূল

व्यापा ७ व्यापाळाटन। किंद्र माथा कीवरनत आछाक व्यापा गाधन এहे कथाणित चार्ति, मधा ७ चका चकत कि, यति दकह किकामा करतम, ७८व वनि "চतिख, कर्डवा ७ आ**श्व-वनीक**त्रन।" প্রকৃতিত্ব আত্মার পক্ষে এই সমুদার স্বাভাবিক কার্যা। সাধ্যের বস্ত নহে। কিন্তু বাহাদের আত্মা বিক্লন্ত, তাহাদের পক্ষে আত্মাকে প্রকৃতিত্ব করার প্রয়োজন। ইহার প্রকৃষ্ট উপার বছ সদ্এছে ও সাধুমুথে লাভ করা যায়, বিবেচনা ছারাও বাহির করা वात्र वटि, किन्ह माध्न-श्रवीग वाक्तितारे स्ववनामि ७ भन्नीका चाता ভागत्रभ कारनन । भागारमत गका छेक र छता हारे, क्थनरे नीह इक्ष्म छिहिछ नरह। यान सामारम्य हित्र सोणिक ना इन, ভাহা হইলে আদর্শ চরিত্র সন্মুখে রাখিয়া ভাহার নকল করিছে ছইবে। পাপঃইতে সুক্তি কামন। করিবার, অঞ্জান তিামর হইছে উত্তীণ হটবার, এবং জ্ঞান ও ধর্মের উন্নতির সংক সঙ্গে নেই উত্তম পুরুষের সহিত নেতা যোগে মিনিত ≉ইতে বাসনা, আকাজকা ও আশা করিবার প্রতেটক মানবেরই অধিকার আছে। এ "আশাই" মুক্তির হেড়। কিন্তু "আশার" माल माल डेलयुक (हरे। हार । मूकि वा यान कि इ वाकि छ সম্প্রদায় বিশেষের পৈতিক বা একচেটীয়া বস্তু নছে। স্কতিই बीदित প্রাণে পিপসে। আছে, ও পিপাসার শাস্তির कक् ानर्प्रण ७ में ठन जानरनत छेरमञ्ज आह्या ज्ञानरात्र विरागस्त असद्ध क्ष्मां ज्यानकात उपाठि सरेवया

আত্ম-বশীকরণ। ইহাসাধারণের পক্ষে বড় সহজ নহে। ভন্নক কঠিন। রিপুগণের আয়তন এমন বেয়াড়া রক্ষের বৃদ্ধি পাইয়াছে যে আমরা অবিধা পুর্বক উহাাদগকে "পাকৃ-फ़्हिरफ'' পाति ना। फेहाबा धवा **(हाबा ८**नग्र॰ ना, फाथह ৰুকারিত চীলের মত কোথা হইতে আসিয়া ছে। মারিয়া আমাদের অভারত বহু যতনের সামগ্রী সমূহ কাড়িরা লইয়া যায়। হাফেজের মত উচ্চ আত্মাও উত্তাল তর্ত্তের বিভী-াবকাময় ভীষণ আকার দেখিয়া কাতর, ব্যাকুল ও অসহায় ভাবে চিৎকার করিয়াছিলেন। কিন্তু বিানই ধীর ভাবে অনাথশরণের চরণ ধরিয়াছেন, যিান "ভাসায়ে দিয়েছেন দুকুল, সেই অকূল কাণ্ডারীর করে," তিনিই আত্মার মধ্যে, তুর্বল্ডার মধ্যে ''মাটভঃ !" রবের বজ্ঞনির্ঘোষ শুনিরাছেন। তিনি তরঙ্গমধ্য হইতে তীরত্ব শঘুচিত ব্যাক্তগণকে উচৈচ:খরে বলিতে পারেন "আমি ছকাল হইয়াও স্বল্। আমি মরিতে মরিতে বাঁচিতেছি।" আমার দীর্ঘ নিশাস বা ক্রন্সন ভোমরা ভানও না, আমার অঞ তোমরা দৌগও না। আমি একলা সংগ্রাম করিব, একলা বাচিব বা মরিব। আমি আমার আত্মা-व्यादकारकेत क्यूल दकारण विशिष्ठ। व्यामात्र,-वसूरक क्षप्त दनम्ना कानाहैव। कामि अकना कामित, जिनि अकना कानावन।"

সুটি আঘাতের ছারা কাঁঠাণ পাকান কওদ্র ভাগ জানি
না। অধিকাংশ লোকেই কিল-পক্তার পক্ষপাতী। বৃক্ষপক্তার দিকে বুঝি কেইই নহেন। কোন কোন যোগ
কামিগণ চাহেন, যে আমরা বসিরা থাকিব, কিন্তু বন হইতে
অক্টী জটাজুটধানী গুরু-অভিধান সাধক বহু সাধনের ধন
ক্ষিত্রন ক্রিয়া আনিয়া আমাদের প্রাণে স্কার ক্রিবেন।

সেই শক্তি লাভ করিরা আমরা লিভেক্সির হটরা সাধন করিব। অলস ব্যক্তির পক্ষে উহা সহল নচে, গুরুই আছেন, আর বিনিই আহ্ন। হিরপ্রতিজ্ঞ ও যদুশীল ব্যক্তির পক্ষে উহা সহল, অভএব গুরু-বল-সাহায্য নিম্প্রোলন।

"ব্ৰহ্ম দৰ্শন।" ধর্মের বাজাল্পে একটা প্রকাণ্ড হৈ চৈ পজিয়াছে যে অমুকের এক দর্শন হইতেছে, হইয়াছে বা হইবে এবং অমুকের নিকট একটা গুপ্ত ভাড়িতাধার আছে, যাহার শক্তির কিঞ্মাত সঞ্চারিত হইলেই, রেলগাড়ির এঞ্জিনের স্থান্ন উহা আমাদিগকে পশ্চাৎ হইতে ঠেলিরা ধাকা দিরা **इ**ট क्रिक्री शृक्षवा शारन नहेका याहेरव। (वेन कथा। প্রথমত:ই ত মাত্র मिट्ड इट्टा, आश्व-विक्रम क्रिएंड बहेर्त, (मुक्टेनिया बहेर्ड बहेर्त । श्रेष्ट्रांत्र व विक्रांक क्राक्टलाहिजाहबर कदा इट्टा शद्य शख्य शहरा উপনীত হওনের সম্বন্ধেও কিন্তু আমার অতি গভীর मस्मर चाह्य। उद्मनर्भन वस्रुधी देखिशुर्ख शानकश्चात्र धनि-मर्था, व। विमानरवत्र । नावफ्छ। त्र भर्था नुकान विन-"निविकः खरात्राम्" हिन, बन्न "खरारिजः शस्त्रत्वंः" हिन्न। ব্রাক্ষসমাজ তাঁহার অনুসন্ধান করিণেন—কেহ কেহ বা তাঁহার ক্শামাত্র লাভ করিয়া মহতাখ্যান উপাক্ষন করিলেন। তাঁহারা ষে এই সাত রাজার ধনের বিলুম'তা অংশ লভে কারলেন, তাছার मृगा नारे-- (क्यम विभिन्ध रिन् विन् (नाविष्ठ, क्षत्र ६ कोवन বিস্কান দিতে হয়। সকলে ভাহা দিতে পাবে না। কিছ আনেকেই উহা পাহতে চায়। তাহারা উহার ম্যাদা জানে ना, कछ काठ चड़ व्यामाकन छाड़ा कान्न ना। हेहात चामत বাজিল বটে, কিন্তু আসল বস্তু কেহু াদতেও পারে না—কেছ . किनिতেও পারে न।— अथह हाई, यन जुनान हाई— अयान এको नकन मिकित स्टि इहन, याहा পথে चाहि পাওয়া যাহতেছে। "একাদশ" এখন, বুঝে আংনকেহ কারতে-(इन । वस्त्री नाधरकत क्षत्रस्थका क्रेटक नाकारत है। निमा ताक-পথে বাহির করা হইয়াছে--্শবে ক্তদুর গড়াহবে বলা যায় না। আবার হহারওগতিক বড় স্থাবধাজনক নহে। ওনা যাইতেছে যে, প্রক্ষের সঙ্গে সঙ্গে তৎপারিষদ্বগাও থাকেন, তিনুন विका शाक्त ना वा इंदें। एता निक्रे विका आति शाहिती নহেন। এক হইতে ভোত্রশ কোটী থেচর, ভূচর উভচর, জনচর, **एन राम वी शन हे हरनाक अज्ञात अञ्चित्र हेर्ड एय एयथारन** ছিলেন আছার নিদ্রা বজ্জন কার্যা কোন কোন স্বাধ্কের মনোরঞ্জনার্থ উাহার কুদ্র ও কোমল মভিছেব ক্রনারাজ্যে মহা স্মারোহের সহিত আসিয়া নৃত্য গাঁড ব্দার্ভ ক্রিয়াছেন। ইহাঁদের म (ज আমাদের কোনই সহামুভূতি নাই। আমর। এক্ষদর্শনকে এমন কিন্তু চ-किमाकात वस्तु मान कति ना--- छेश छेन्द्रन इटेटल छेन्द्रन लुद्र हरेद कर्मात्त वा श्रीवान छेश सूत्राहेद ना-उँहा श्रुक्र छत्न হইতেও **গুরুতর বম্ব—এদের ফুপাই** তাহা গাভের এক্ষারা<sup>,</sup> फेशास, मानव-क्रश नरह।

উহার অস্ত ছুটাছুটা করিলে চলিবে না; বংসর বংসর ধীরে ধীরে ভূমি কর্ষণ, ও বীজ বপন করিতে হইবে—উপযুক্ত ঋতুতে রূপাবারি বর্ষিত হইবে---এবং উপবৃক্ত কালে আনর৲ আবপ্ত-লাভ করিয়া ধন্ত ও রুভার্থ হইব।

( 西平박: )

# প্রেরিত পত্র।

(পত্র প্রেরকদিগের মতামতের জন্ত সম্পাদক দারী নহেন, কিবা কাহারও পত্র ক্ষেত্রত দিতে বাধ্য নহেন ) শ্রদ্ধাম্পাদ শ্রীযুক্ত তত্ত্বকৌমুদী সম্পাদক মহাশের সমীপেযু—

অভান্ত গুরুবাদ ও ব্রাহ্মধর্ম।

অবিচারিত ভাবে অনেক গুলি মত ত্রাহ্মণমালে প্রবিষ্ট करेबा, आक्रान्रात कुन्रतत উপরে বিশেষ आधिপতা বিস্তার ক্ষার্যাছে। একণে কেহ সেই স্কল মতের বিরুদ্ধে কিছ ৰ্ণিলে কি ক্রিলে ভাগাকেও অবিচারিত ভাবে ত্রাক্ষণম বিরোধী বলিরা মনে করা হয়। এইরূপ বিচার বিহীন সিদ্ধান্ত যে সমাজে যে পারমাণে প্রতিষ্ঠিত হয়, সেই সমাজ সেই পরিমাণে অন্ত:সার শৃক্ত হইরা পড়ে, গোড়ামীই কেবল সেধানে সমালাছতির কর্তা হহর। দাঁড়ার। बहेक्रम छात हहेए বর্তমান । ধ্বসু সমাবের ক্তই না অনিট হইরাছে। নব গঠিত। खाञ्चनमाळ याहारा এই রোগের হস্ত হইতে রকা পান, ইহাই 🖎। খনীয়। আমরাইছে। কার, যে সকল মত লইয়া বস্তমান भगतम अञ्चतमात्कत मासा त्रालाखात खेलाइड श्हेनात्ह, ব্ৰাহ্মসমাজের আভভাবকগণ খির ভাবে সে সকল বিষয় শহয়। বিচার করুন, তাহাতে ব্রাহ্ম সাধাবণের মত ও মন আধক্তর উদার হচবে এবং মতাস্তর জানত মনাত্তর ও অনেক পারমাণে ভিরোহেত হহবে আশা +त्र। यात्र। "পুনজ্জনাবাদ" আঞ্চধ্য বিরোধা বলিয়াই আন্ধান্ধারণের বিশ্বাস ছিল, কিন্তু চিন্তাশীল 😮 সাধনশীল আহ্ম আভভাবকগণ পুৰুজন্মবাদকে আহ্মণম্ম বিরোধী মনে করেন ন, পুনজ্জনা বিখাস করিয়াও একজন শ্রমের ব্রাক্ষ থাকিতে পারেন এরপ মনে করেন। এরুপ আনতে পারার উক্ত বিষয় শহ্যা গোড়ামী ভিতরে ভিতরে কিছু কাম্যা যাহতেছে। व्यक्ताच विषय गर्मा व्यालाहना ब्ह्राल अरनक छेलका(तत मछ।वन।।

বাক্ষণনাকে যোগ শহয়াযে আন্দোশন উপস্থিত হয়য়ছে
ভালতে অল্ল প্রস্থাপর আলোচনা অন্ত প্রারোজনীয়
ইইয়া পাড়য়াছে। "সত্ত" যগন আমাদের শাল্প, তথন
এতকাল যাহা বিশ্বাস কারয়া আসিয়াছি, সত্যটা পাছে বা
ভালার বিকল্প হয়, এরপ আসে ব্রাক্ষের মনে উপদ্বিত হওয়া
কলচে সলত নহে। যাহা মিপ্যাও কুসংস্থার বলিয়া বছকাল
পরিত্যাগ করিয়াছি, সত্য বলিয়া প্রমাণিত হহলে তাহাকে
আমানবদনে শ্রহার সহিত গ্রহণ করাই সত্যাম্বাগের লক্ষণ।
বিশ্বাস করি ব্রাক্ষাণের মধ্যে এরপ সত্যাম্বাগের অবভারণ
করার পুর্বে পাঠকগণকে একটা বিষয় বিশেষ ভাবে শ্বরণ
রাথিতে অমুরোধ করি; "অল্যন্ত গুরুবাদ ব্রাক্ষধর্ম বিরোধী

কিন।" ইহাই আমার আলোচা বিষয়, কিন্তু কিরুপে গুরুনির্ণর করা হইবে এবং কেই বা গুরু হইবেন সে সকল কথা এ প্রবিদ্ধের আলোচা বহে, এবিষয়টা স্বাদা মনে রাখিরা আলো-চলা করিতে হইবে।

আমার মনে হর বাক্ষধর্মের সাধন তত্ত্বের যাহা মৃশমন্ত্র ভাহারই উপর অপ্রান্ত গুরুবাদের ভিক্তি প্রতিষ্ঠিত। জীবাদ্মার সহিত্ত পরমাত্মার সাক্ষাৎ বোগই ব্রাক্ষধর্মের মৃণ তত্ত্ব।
বাহারা বর্মকে ক্ষেত্রত মাত্রে আধ্যাত্মিক ব্যায়াম মনে করেন,
দীখরের বাক্তিত্ব মানেন না, মাছ্য বে ব্রহ্মপর্শন ও ব্রহ্মবাক্যা
প্রবণ করিতে পার এসমন্ত বিখাস করেন না, বিবেকের
অভিরিক্ত দীখর প্রত্যাদেশ যাহারা মানেন না, উাহাদের
সহিত আমার আলোচনা নহে এবং এবিষয় আমি তাঁহাদিগকে বুরাইতে ও প্ররাসী নহি। যাহারা ঐ সমন্ত শ্বিবর
অস্ততঃ মতে মানেন তাহাদিগের নিকটই আমার বিচার
প্রার্থনা।

### योकार्या ।

- ১। जेबत अलाख हेरा चीकार्या।
- २। जैचरत्रत्र वागी अञास हेहा चौकाया।
- ৩। ঈশারবাণী মানবান্তারে প্রকাশ পার ইহা স্বীকার্যা।

এই ভিন্টী श्रीकार्या शर्मात्र लाग এवः এই श्रीकार्या खन्नहे অভ্রান্ত গুরুবাদের জনক। এই তিনটীকে অস্বাকার করিলে অভ্ৰাম্ভ গুৰুবাদ কিছুতেই টেকে না এবং এই ভিনটীকে चौकात्र क ब्रांग अञास श्वक्रवामा के प्राप्त का वाद ना । মাহুৰ আপনার অভিজ্ঞতা ও বৃদ্ধির উপর নিউর করিয়া কে नकन कथा वेटन, छाहा आमता वह পतिमारन विशास कतिएक পারি বটে, কিন্তু অলাস্তরূপে স্বীকার করিতে আপত্তি করিছে পারি। যে সকল দার্শনেক মত ও বৈজ্ঞানিক প্রণালী এক সময় সত্য বলিয়া স্থির প্রতিষ্ঠিত ছিল। সুময়ে তালার অনেক পরিবস্তন ঘটিভেছে। কিন্তু ঈর্ণাের বাণী ক্রনহ ভ্রাস্ত হইছে পারে না। পাঠক মনে রাখিবেন অগতে যে সকল কথা क्षेत्रवागी वांगत्रा श्राविष्ठ श्रेत्राष्ट्र, छाहा क्षेत्रवागी किना এবং ভাহা সভা 奪 মিপা। এ প্রবন্ধে আমরাসে বিষয়ের आलाहिन। कत्रिव मा, तम विषय धक्त भागायाम कार्य না, কেন না ভাগতে আমাদের চিত্ত মুগ বিষয়ের বিচারে আক্ষ हरेता अगल ज भगास (कह स्थतवानी छान्छ भाई-রাছেন কিনা ভাষা আমাদের বিচাধ্য বিষয় নছে। কিন্তু "মাছুছ नेवत्रवाणा खनिएक भाषा है। आक्रमच विद्यामी कवा नरह এবং এরপ কথ। বিশ্বাস কার্য়াও একজন খাঁটি ব্রাল্প খাকিছে পারেন তালার কিছু সংশর নাহ। একণ কতকগুলি কথা উপযুগির রাথির আমি আমার প্রবন্ধের উপসংহার করিব।

- ১। श्रेषश्चात्र।
- २। क्रेथद्र-नानीकालासः।
- ৩। ঈশ্বর-বাণী মানবাত্মার প্রকাশ পার।
- ৪। এমন কোন ব্যক্তি পাকা অসম্ভব বা অংঘীক্তিক লভে
  বিনি দীবারের বাক্য শুনিরা লিব্যকে সেই উপদেশ
  দিতে পারেন।

- র রবরের বাণী শুনির। উপদেশ দিলে সে উপদেশ
   অভাত।
- । যিনি সেইরপ অভাত উপদেশ প্রদান করেন, ভিনিই ত অভাত গুরু।

ইহার যে কোন কথা জনীকার করিলে সমগ্র রাজ্যপুর্বে জনীকার কবা হর। শুরুবাদের যে মূল তথ্য জড়ি সংক্ষেপে এই প্রবদ্ধে প্রকাশিত হইল, ভালতে কোন মামুবকে জন্তান্ত খলা হইল না। কেবল জন্তান্ত শুরুর কণাই বলা হইল। প্রশোসন হইলে এ সকল কথা জধিকতর পরিকার করা খাইবে।

चिम्तात्रवन खर,

### ব্ৰান্মসমাজ।

শোক-সংবাদ---আমরা গভার ছাথের সহিত প্রকাশ ড়রিতেছি যে, আমাদের প্রভেছ ভ্রাতা বাবু ক্ষেত্রমাহন মুখো-পাধ্যার গত ১২ট নবেশ্বর কলিকাভার বাটীতে ইছলোক শীলা সংবরণ করিরাছেন। সাধারণ ত্রাক্ষসমাজ এ বৎসর ছইটা উজ্জল রড্ন হারাটলেন, পুণালাপ্রসাল এবং ক্লেত্রমোহন। ক্ষেত্র বাবুর বিয়োগে উছোর বিধবা পত্নী এবং শিশুসন্তানগণ বেমন শোকসাগ্রে ভাসিতেছেন, ভাঁছার বছুগণ্ড ভেমনি भारक निमध कहेबारकन अवर माधातम आक्रमारकत आजिक মললাকাক্ষী ব্যক্তিই তাঁলার বিচ্ছেদে দ্রিরমান্ হইবেন। গত ২৬এ নৰেশ্বর হরিলোবের ব্রীটে ক্ষেত্র বাবুর বৃদ্ধু বাবু মহেক্স চন্তাদার পূহে আছেকিয়া সম্পন্ন হইয়াছে। বাৰুসীভানাথ শ্বত উপাদনা করেন, ৰাবু আদিতাকুমার চটোপাধ্যায় তাঁছার मध्य भी रनहित ज शांक करतन । जेशामना क्लाख व्यान करे আঞ্জল সংবৰণ করিতে পারেন নাই। ক্লেত্র বাব্র অনাণা পত্নী आह्यात्वाभगत्क माधात्रण खाक्तमभात्कत खाठात निकाश माधनाश्रम, শাসাশ্রম, প্রভৃতিতে ৫০ টাকা দান করিয়াছেন। সংক্রিপ্ত জীবনচরিত জাগামী বাবে প্রকাশিত চইবেঃ প্রমেশ্বর (भाकनदा विश्वात लाए भाखिनान कन्नन, धवः धहे बनान পরিবারকে ধর্মপথে রক্ষা কক্ষন।

শ্রেচার—নাধারণ ব্রহ্মসমাজের কার্যানির্কাচক সভার
নির্কারণ অন্থনারে বাবু কাশীচক্র ঘোরাণবিক্রমপুরে গমন
পূর্বক ছর্ভিক প্রশীড়িত কোন কোন স্থানে সাচার্য প্রদান
করেন; কিন্তু ছর্ভিক প্রশামত হওরার সম্প্রতি তিনি কনিকাতার আগমন করিয়াচেন। ছর্ভিকের কার্য্য ব্যতীত তিনি
নানা স্থানে বক্তা, উপাসনা, সংগীত এবং কথকতারি বারা
আগ্রধর্ম প্রচার করিয়াছেন।

নামকরণ—গভ «ই নবেছর বজ্লযোগিনী নিবাসী বাবু গৈলিশচক্র বোবাণের কভার নামকরণ কার্য্য সম্পন্ন হইয়াছে। অভত্পলকে বাবু কাশীচক্র বোবাল উপাসনা করেন। কভার : নাম স্বালা রাধা হইয়াছে। গত ৬ই অগ্রহারণ আমাদের পাষনাত্থ বাবু কৈলাসচন্ত্র বাগ্ছির ভূতীর পুত্রের নামকরণ কার্য পুসম্পর হইছাছে, সম্ভানের নাম শ্রীমান্ জ্ঞানেকচন্ত্র রাণা হইরাছে। শ্রীষ্ক্ত নবৰীপচন্ত্র দাস আচার্য্যের কার্য্য করিরাছেন। এই উপলক্ষে কৈলাস বাবু সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচার ফতে ১০ টাকা দান করিরাছেন, ঈশ্ব শিশুদিগ্রে দীর্ঘায়ু করুন।

বিবাহ—গত ১৯এ কার্ডিক কৃষ্টিরার বাবু ছ্র্পাচন্ত্রপ বিখাদের প্রভাগ বাবু কুঞ্জবিহারী বিখাদের দহিত মর্মনসিংছের বাবু রামচন্নতি মন্ত্রমারের কন্তা শ্রীমতী স্থবালা মন্ত্রমারের শুভ বিবাহ সম্পন্ন হইরাছে। পণ্ডিত শিবনাথ শাল্রী আচার্য্যের কার্য্য করেন। এতছপশক্ষে রামহন্নতি বাবু নিম্নালিখিতরপ দান করিয়াছেন; --সাধারণ ব্রাহ্মসমান্তের প্রচার বিভাগ ১০০ দাত্রাবিভাগ ৩০ সাধনাশ্রম ২০ গৃহতাড়িত ব্রাহ্মদিগকে ২০ দাসাশ্রম ২০ ব্রাহ্মবালক বোর্ডিং ২০ বালিকা বোর্ডি ৫০, মোট ২৬০ টাকা।

২রা অপ্রচারণ কলিকাতার মন্দিরে আর একটি বিবাহ হটয়া গিয়াছে। পাত্র ভবানীপুর নিবাসী বাবু গিরিশচক্র দে, পাত্রী টাকীর বাবু কেদারনাথ রায়ের কক্স। প্রীমতী প্রভাবতী রায়। বাবু উন্দেশচক্র দত্ত এই বিবাচে আচার্য্যের কার্য্য করেন। উত্তর বিবাহই ৩ আইন অনুসারে রেজেটারী হই-য়াছে। প্রদেশার নব দম্পতিদিগকে আশীর্ষাদ কর্কন।

উৎস্ব—সিদ্ধিরাপটি পারিবারিক আদ্দ্রসমাকের বার্থিক আদ্মাৎসব গত ১১ই অগ্রহারণ সম্পর হইরাছে। প্রাভঃকানে বাবু আদিনাথ চটোপাধ্যার উপাসনা করেন, রাজিতে বাবু কেদারনাথ বার উপাসনা করেন। উপাসনাতে হুই বেলারই প্রীতি-ভোজন হয়।

### প্রদেশীয় ত্রাক্ষসমাজ।

উৎস্ব— শিলং আক্ষদমান্তের উনবিংশতিত্ম উৎসৰ নিয়লিথিত প্রণালী অনুসারে সম্পন্ন হইবাছে;—

৪ঠা নবেশ্বর শনিবার—রাত্রে উৎবাধন। বাবুরাচত্র চৌধুরী উপাদনা এবং উপদেশ প্রদান করেন।

৫ট রবিণার—প্রাতে লাবান উপাসনা-সমাজে উপাসনা হর। বাবু নীলমণি চক্রণজী আচাধ্যের কার্য্য করেন এবং বেলা ৩টার সময় শিলং আদ্ধসমাজ মন্দিরে "বিখাদ" সম্বন্ধে বাজালার বজ্ঞা করেন। তৎপরে তিনি উপাসনা করেন।

৬ই সোমবার—রাত্রে বাবু সদরাচরণ দাস মহাশরের বাডীতে উপাসনা হয়। নীলমণি বাবু পাঠ ও উপাসনা করেন।

৭ই মঙ্গবার—প্রাতে লাবানে পণে পথে উষাকীর্ত্তন হয়।
বাবু লালমাধব বহু মহাশায়ের বাড়ীতে গিরা নীলমলি বাবু
প্রাথনা কবেন। মধ্যাক্তে মহিলা সমাজের উৎসব হয়।
রাত্র বাবু নবগোপাল দত্ত সমাজ মন্দিরে ধর্মপ্রেছ পাঠ ও
প্রার্থনা করেন।

৮ই ব্ধবার—উৎসবের দিন। বাবুরাচজ চৌধুরী আহত সমাজ মালবে উপাদনা এবং উপদেশ প্রদান করেন। মধ্যাছে 'ঈশবের প্রতি প্রেম'' সম্বন্ধে আলোচনা হয়। তৎপরে কীশুন ও উপাদনা হয়। বাবু নীলমণি চক্রাক্তী উপাদনা করেন এবং 'প্রভূকে জীবনে গৌরবাহিত কর" এই বিশ্বরে উপদেশ প্রদান করেন।

৯ট বৃহস্পাতৰায়— লাজে বাবু রাচ্চক্র চৌধুরীয় বাড়ীতে কীর্ত্তন হয়। বাবুনীলমণি চক্রবর্তী প্রার্থন। করেন।

১০ই শুক্রবার-নালে বাবু ভারকনাথ রার মহাশবের বাড়ীভে-উপাদনা হর। যাবু নীলমণি চক্রবর্তী উপাদনা করেন।

১১ই শনিবার—বেলা ৪৪টার সময় মৌখার আক্ষসমাজে "ঈখরে মানবীয় ভাব ক্ষারোপ" এই বিবয়ে থাসিয়া ভাবায় এক বক্তৃতা করেন। পরে রাত্তে বাবু তারিণীচরণ নন্দীর বাসার কীর্ত্তনাদি হয়। বাবু শরৎচক্ত চক্রবর্তী প্রার্থনা করেন।

১২ই রবিবার—প্রাতে লাবান উপাসনা সমাজে উপাসনা হয়। বাবু রাইচরণ দাস উপাসনা করেন। মধ্যাকে নির্জন পালাড়ে প্রার্থনাদি হয়। বাবু সদ্মাচরণ দাস এবং বাবু রাচচন্দ্র চৌধুরী প্রার্থনা করেন। অপরাকে সমাজ মন্দিরে উপাসনা হয়। বাবু নীলমণিটেক্রবর্তী উপাসনা করেন এবং "ল্পার্শমণি" এই বিষয়ে উপদেশ প্রদান করেন।

### ত্বৰ্ভিক।

ইতিপুর্বে আমরা জানাইরাছি বে, পূর্ববাঙ্গালা প্রাক্ষসমাজ কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত রিলিফ ফণ্ডের হল্তে আমরা কিছু টাকা পাঠাইরাছি। সেই কমিটা ভূজিক্ষের সাহায্যার্থে বিক্রমপুরে ও৮ থানা প্রামে সাহায্য করিরাছিলেন, সেই লোক উত্তর বিক্রমপুরে ও৮ থানা প্রামে সাহায্য করিরাছেন। ঐ ৩৮ থানা প্রামে ১১২৮ জন লোককে সাহায্য করা হইরাছে, ইহাদের মধ্যে পুরুব ১০৬ জন, স্ত্রীলোক ৩৯৬ জন, বালক বালিকা ৬২৬ জন, মোট ১১২৮ জন। এই কার্য্যে ব্রাক্ষসমাজের টাকা হইতে বেশী টাকা ব্যর হয় নাই। মুক্সিগ্জের ডেপুটা মাজিষ্ট্রেট মহাশর ব্রাক্ষসমাজের লোকের হাতে যে টাকা দিরাছেন, সেই টাকা ছারাই অধিকাংশ স্থানে সাহায্য করা হইরাছে। ঐ ৩৮ খানা প্রাম ভিন্ন আরও গুইটা প্রামের গুইটা ভদ্র পরিবারকে গোপনে সাহায্য করা হইরাছে। তৎপরে বাবু কাশীচন্ত্র ঘোষালকে সাহায্যার্থে প্রেরণ করা হইরাছিল।

ক্রথমাবস্থার ছার্ভক্রের প্রকোপ অত্যস্ত প্রবেশ হইরাছিল, সেই সমর মুক্সিগঞ্জের ভেপুটা মাজিট্রেট মহাশয়ের যদ্ধে অনেক লোকের কষ্ট নিবারণ হইরাছিল।

ভদ্রলোক এবং কৃষ্কদিনের অধিক কট হর নাই।
চাউল হুর্মুলা চওরাতেই ভাহাদের যাহা কিছু কট হইরাছিল।
অনাথা বিধবাদিগের ভ্রানক কট হইরাছিল, হুংথের বিষয়
ই হারা দিনের পর দিন উপবাস করিরা কাটাইরাছেন, তথাাপ
প্রকাশ্রে সাহায্য গ্রহণ করিতে প্রস্তুত হন নাই। আনাদের
একেন্ট গোপনে অনেক চেটা করিয়া ক্রেক্টী বিধবার সাহায্য
করিহাছেন। বিক্রমপুরে এখন ধান পাকিতেছে, ইহাতে
শ্রমজীনীদিগের কত্রক পরিমাণে স্ববিধা হইতেছে।

দ্যানপ্রাপ্তি স্থীকার—ক্বতজ্ঞতার সন্তি স্থীকার করা বাইতে যে, বিক্রমপুরের ত্তিক নিবারণার্থে নিম্নলিখিত দান পাওয়া গিয়াছে:—

गांख्या शिवादक •		
	শতের পর।	
বাবু অংবিনাশচক্র ঘোষ	এসেনশোল	٠, د
ু আভাতো্য রায়	<u>ব</u>	II •
ু সিজেখর বল্যোপাধ্যার	ক	1•
্ একজন বন্ধু		۲,
মজুমদার এও কোং	ক্লিকাতা	3/
বাবু ভূঞ্জাল ঘোষ হইতে আং	প্ত বাবু ছুৰ্গাকান্ত চক্ৰবৰ্তী	
কর্ম সংগ্রীত মার্ঘারিটা	<b>অ</b> গাসাম	e • 1
বাবু কালীক্ষ বসকে	কলিকাতা	31
ু উমাকান্ত দাস	ক্র	<b>b</b> \
ু মাধনলাল ঘোষ	<b>@</b>	ţ•
ु (सर्वेखनान सूर्याभाषात्र	<b>(3</b> )	10/0
" (मरवक्तनाथ होधूनी	ক্র	1.
ु (परवस्त्र नाथ काम्	<b>&amp;</b>	1+
ु क्षीसमाथ वस्	<b>ক্র</b>	3/
ु मोमबाथ ७८	<b>ছাজারি</b> বাগ	.56
নিঃ এম, এল, শীল মায়ফত বা	াৰু কালীৱকা বসাক	. 31
ৰাবুদীননাথ গাঙ্গী	ধার ওরার	1

	रीवानान रानमाव	কলিকাড়া	. 2
 W	ক।লীপ্রসর বস্থ	<b>&amp;</b>	n•
,	কুঞ্বিহারী মিত্র	সইদপুর	₹,,
	উদরচরণ মলিক	र्गिका छ।	3/
	वनभानी धन	<b>্র</b>	11 •
,,	क्र्गानावायन वस्र कर्ज्य मःगृशी	ত মেদিনীপুর	8 /•
,,	চক্রশেধর হোষাল	আকমির	. 3/
,,	বিনোদশাশ মুখোপাধ্যায়	ক্র	3/
,,	লন্দ্রণ সিং	मार्डिज निः	8
,,	ছরিনাথ₃রার কর্তৃক সংগৃহীত	চাইবাসা	94ને
		পূর্ব প্রকাশিত	>2.4/. 82240/e
		-	• اردااه ۹۹

### বিজ্ঞাপন।

তত্ত্বকৌমুদী ও ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্চারের গ্রাহক এবং সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সভামহোদয়গণকে পত্র লিথিয়। এবং পত্রিকার বিজ্ঞাপন দিয়া আমরা পড় আশা করিরাছিলাম যে তাঁহায়া ত্ব তাকা অমুগ্রহপূর্কাক ফণাসমরে এবং সত্ত্বর পাঠাইয়া সমাজের আনেক অভাব ও ছঃখ দৃর করিবেন। বংসর ভ শেষ হইতে চলিল, এখন দেখি অনেক সভা ও গ্রাহকের হিসাবে বিস্তার অনাদায় রহিয়াছে। বাহাদিগকে ধারে পুস্তক বিক্রয় করা হইয়াছিল তাঁহাদিগের নিকট হইতে, এবং মফপ্রণস্থ কোন কোন এজেন্টের নিকট হইতে সমস্ত বংশরে যে টাকা গাইয়াছি ভাহা নিকাক সামাজ।

আগামী মাঘোৎসবের পূর্ব্বে সমাজের অনেক দেন। পরিশেধি করিতে হইবে, এবং অভান্ত নান। প্রকারের বার নিব্রাহ করিছে কইবে। এক্ষণে সমাজের সভা ও সহযোগী মহোদরগণ তাহা-দিগের স্বীকৃত উদান ও পুস্তকের মৃল্যা, এবং পাঞ্জিবাদরের প্রাহ্ক মহোদরগণ পাঞ্জিবাদরের মৃশ্য পাঠাহতে আরে যেন বিশ্ব না করেন তাহাদিগের স্ধ্নেরই নিকট আমার এই বিনীক প্রথিন।

পত্রিকার অনেক বংস্রের মূল্য বাকী আছে। স্তরাং উহিচ্চিগের পত্রিকা বন্ধ করা কত্তব্য এচ্যুক্তি অসুসরণ করিছে আমরা মাদৌ প্রস্তুত নাহ। একজন গ্রাহক্ত হাদি তাহাই বাস্থনীয় মনে করেন, আমারা নিতান্তই মলাহত হাইব।

সাঃ আক্ষসমাজ ২১১ কণওয়ালিস খ্রীট, কলিকাতা ৩০ নবেম্বর ১৮৯৩ শ্রী মধ্যের নাথ মুথোপাধ্যার সহকারী সম্পাদক সাঃ বাঃ সমাজ।

সাধারণ প্রাহ্মসমাজের অধ্যক্ষ সভার বিগত তৃতার কৈমান দিক আধবেশনে সাঃ বাঃ সমাদের সঙ্গীত, পুন্তক, বক্তুতা ও উপদেশাদি হুইতে হ্রি প্রভৃতি পোডালক নাম উঠাইরা দিনার নিমিত্ত যে প্রভাব উপস্থিত হুইরাছিল, অধ্যক্ষ সভা কার্যানিকাহক সভাকে সে সম্বন্ধ কর্ত্ব্য কি ভালা স্থির কার্যানিকাহক সভাকে সে সম্বন্ধ কর্ত্ব্য কি ভালা স্থির কার্যানিকাহক সভা এরপ স্থির করিয়াছেন যে এনিমিত্ত কা্যানিকাহক সভা এরপ স্থির করিয়াছেন যে এনিমিত্ত কা্যানিকাহক সভা এরপ স্থির করিয়াছেন যে এনিমিত্ত কা্যানিকাহক সভা এরপ স্থান করিয়া করিছেন যে এবিষয় সম্বন্ধ ব্যক্ষ মাত্রেরই মতামত সংগ্রহ প্রক্রিক যথা সম্ভব নির্দ্ধান স্থির করিতে চেন্তা কার্বেন। অভএব ক্লিকাতা এবং মফঃস্বলম্ভ ব্যক্ষসমাজ এবং ব্যক্ষমাত্রেই অমুগ্রহ করিয়া এ সম্বন্ধ উল্লেখ্য উপক্রত ও বাধিত হুইব।

সাঃ ব্রাঃ সমাঞ্চ কার্য্যালয়
২১১ নং কর্ণ ওরালিস বীট
কলিকাতা ৩০ নবেছর ১৮৯৩



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১৭শ সংখ্যা। ১৬শ ভাগ।

১লা পৌষ, শুক্রবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

"যৎকল্যাণ মভিধ্যায়েৎ তত্তাত্মানং নিয়োজ্যেৎ।"

শ্যাহা কিছু কল্যাণ বলিয়া জানিবে, তাহাতে ভাপনাকে
নিয়োগ করিবে।"

বিশাল অগৎ-তত্ত্ব কি ভূমি বুঝিবে ? দেখা বোঝা সকলি অসার, প্রাকৃতির ঘবনিকা ভূমি উদ্বাটিবে হেন সাধ্য কি আছে ভোমার।

যে ভূমে দিভারে আছে, ওই পদতলে
লক্ষ রেণু; এক রেণু লরে
দেখিতে ব্ঝিতে যাও, চিস্তাব অভলে
মগ্ল হবে দিশা হবে। হয়।

জীবনের আদি কোণা ? এই স্ত্র ধরি যাও জীবে দেখিতে বৃঝিতে, লাথ লাথ যুগ যাও কল্পনাতে তরি এ সমস্তা রহি যাবে চিতে।

আপনা বৃঝিতে যাও আদি অন্ত লয়ে,
কি বৃঝিছ ? কে তৃমি এখানে ?
এ গোলোক-ধাধা-মাঝে কোন্পথ দিরে
আসিরাছ কাহার সন্ধানে ?

কি দেখিবে ? কি বৃত্তিবে ? দেখা বোঝা যড,
পথ চলা আলোকে আঁধারে;
ভালিছে গড়িছে বিশ্ব যে শক্তি নিয়ত
ভারি ক্রোড়ে সঁপ আপনায়ে।
আলোকে আঁধারে পথ যা কিছু দেখিছ,
ভাহে চল; আলোক আসিবে;
কেলিতে চরণ দেখ সে পথে রাখিছ,
আগু পিছু কি আর ভাবিবে ?

কেবা কি করেছে কবে আগু পিছু ভেবে ?
কে বেঁচেছে কেবা বাঁচামেছে ?
বুনিরে বুদ্ধির জাল কে ভরেছে ভবে ?
ভটি-পোকা নিজে জড়ারেছে।

বুনো না বৃদ্ধিব জাল আগগু পিছু করি; কল্যাণেতে সদা লাগি রও; যে শক্তি পালিছে নিশ্ব সদা ক্রোড়ে ধরি জাগু পিছু তাঁরি হাতে দেও।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

স্রল পথ-জীবনের সরল পথ সকলেই চার; কিবপে त्म महन भण भा वहा यात्र ! विश्वामी act निर्कत्रनीन वास्कि. রাই এই সরল পথ পাইয়া থাকেন; অপবের জন্ত তাহা নছে। অভিদ্রির সরলতা যেথানে, জীবন পথের সরলতা ও সেথানে। মমুষ্য সত্য ও সংভিন্ন অন্ত কিছু লাভ করিবার অভিসন্ধি রাখে विनिम्नाहे को बत्न त्र भए कृषिन हहेमा यात्र। व्यात (य नाधूव किटन সত্য ও সংকে আত্রয় করা ভিন্ন অক্ত কামনা নাই, তাহার জীবনের পণ চিরদিন সরল। তাঁহার জীবনে যে বিপদ আসে না, বা ভাহার প্রতি লোকের বিরাগ বা বিছেম বুদ্ধি জন্মে না, বা তাঁচাকে সময়ে সময়ে প্রলোভন জালে জড়িত হইতে হয় না, তাহা নচে; এ সকলি তাঁহার পক্ষে সম্ভব এবং হয়ত ঘটি-য়াও থাকে, কিন্তু তাঁহার হৃদয়ের মধ্যে কোন প্রকার আভি-সন্ধিনা থাকাতে সে প্রলোভন জাল তাঁহাকে আবদ্ধ করিতে পারে না; বা সে বিছেষ তাঁহাকে পণচ্যুত করিতে পারে না। পূর্ণেলু যেমন ক্ষণিক মেঘজাল হইতে মুক্ত হইয়া বিশুণ শোভা ধারণ করে, সেইরূপ তাঁচার বিমল চরিত্রও সেই ক্ষণিক উপ-রাগ হইতে মুক্ত হইর। অধিকতর সমুজ্জল হয়। হয়ত তাঁহার জীবদশতে নানাবিধ কারণে লোকে তাঁহার মহত্ব ও সাধুতা অকুভব করিতে সমর্থ হর না। কিন্তু এই মর্ত্ত্য-লীলার অক্তে যথন তাঁহার স্থৃতি ও তাঁহার স্থরেপম কার্য্যসকল এ জগতে পড়িরা থাকে, তখন পরবংশীয় পুরুষেরা তাঁহার গুণাবলী স্মরণ করিরা ও কীর্ত্তি কলাপ আলোচনা করিরা মুগ্ধ ছইতে থাকে। কত সাধু মহাজনের জীবনচরিতে এই কথার সাক্ষ্য প্রাপ্ত ছওরা গিরাছে। मृहीरस्त अन्य आमानिगरक मृदत्र वाहरङ ছইবে না। মহাত্মারাজারামমোহন রার ইহার উজজ্ব দৃটাভা। জীবদশাতে তিনি অংদশবাসীদিগের কিরূপ বিরাগ ভাজন

ৰ্টয়াছিলেন ভাষা পাঠক মাত্ৰেই অবগত আছেন। যথন হিন্দু কুল ভাপনের স্চনা হয়, তথন সহরবাসী ভদ্রলোকেরা বলিয়া। ছিলেন যে, রামমোহন রাম কমিটাতে থাকিলে ভাঁছারা সে কমিটীতে থাকিবেন না। তাঁহার প্রতি কলিকাতা সহরের বড়লোকদিগের বিছেষবৃদ্ধি এতই প্রবল ছিল। ইংলতে যধন রাজার মৃত্যু চর, তথন হোরেস ছেমান উইলসন্ সাচেব ভারতবর্ষ হইতে প্রতিনিবৃত্ত হইয়া ইংলণ্ডে বাস করিতে-ছিলেন। সুপ্রসিদ্ধ রামকমল সেন মহাশন্ধের সহিত উইলসন সাহেবের অভিশন্ন প্রীতিছিল। রাজার মৃত্যু হইলে ডাকার উইলসন রামকমল সেনকে সেই সংবাদ দিয়া শেষে লিখিলেন— "কিন্তু ইহা স্বীকার করিতে হইবে যে, রামমোহন রায় সাধারণ ব্যক্তি ছিলেন না।" পাছে বামকমল দেন বিরক্ত হন এই ভগে এ কণাটাও যেন তিনি ভাষে ভয়ে লিখিবাছিলেন। রামমেহিন রায়েব প্রাত লোকের এতই বিদ্বেষ ছিল। কিন্তু আজ সে বিষেষ কোণায় 📍 সমুদ্রতীবে শিশু হস্ত-নিশ্মিত বালুকাময় প্রাচীবের ক্রায় ভাহ, কালস্রোতে ধোত হইয়। গিয়াছে। বাম-মোহন রায়ের গুণাবলী ও কীত্তিকলাপ জাগ্রত রহিয়াছে আর সকলি কালগভে বিলীন ১ইয়াছে। ইঠার কারণ কি. রাম-মোহন রায় স্থাথের ও ডঃথের কুটিশ পথ পরিত্যাগ কবিয়া ক উব্যের সরল পথ অবলম্বন করিয়াছিলেন। আরে এই সরল পথে চলিবার যে পুরস্কার ভাহাও ভিনি উল্লেখ কবিয়াছেন। তিনি বালয়াছেন "লোকে আমার যতই প্রাতকুণতাচৰণ কক্ক ना दिनन, এই চিম্বা জনিত আয়প্রনাদ চইতে কেইই আমাকে বঞ্চিত কারতে পারিবে না যে, আমার অভিধান তাঁগার নিকট বিাদত যািন নিজ্জনে দশন করিয়া সজনে পুরস্কৃত এং সংকলের বিশুদ্ধতাই তাঁহার স্বা প্রধান অত্র স্বরূপ ছিল, এবং ইহাই তাঁহার পণের সরলভাকে রক্ষা क्रिशाह्य।

সত্যাদর—কিছুদিন হহল কলিকাতা সহরে উপযুত্তপরি করেক দিন আহফেন কামশনের অধিবেশন হইয়া গিয়াছে। উক্ত কমিশনের সাহত হংলপ্তের আহফেন ব্যবসায় নিবারণী मভाর मण्यानक আলেকজ্ঞার সাতের আসিয়াছিলেন। তেনি ব্রাহ্মদিগের দ্বরো অন্তর্জ কহয়। বিগত ৪ঠ। ডিসেম্বর সোমবার সাধারণ আক্ষামাজ মান্দরে সুরাপান নিবারণ সম্বন্ধে একটা বক্তা করিয়াছিলেন। বঞ্তার মধ্যে অনেক সারবান কথাছিল। কিন্তু তাঁহার মুথে একটা কথা শুনিরা আমর। অভিশয় শজ্জিত ও চঃথিত ইইধাছি। তিনি বক্তার মধ্যে ছু:থ করিয়া বলিলেন, আমি এদেশে আসিয়া এদেশের ভদ্র-(कार्कामरशत श्रुथ व्यान का का का अ वक् वक् वशा क्वन-য়াছি, ক্র অনুসন্ধান হারা পরে ব্ঝিতে পারিয়াছি যে, তাহার অধিকাংশ কপ্টভাপুর্। এদেশীর শিক্ষিত লোকদিগের ক্ষপটত। দেখির। অতিশর ছ:খিত চটরাছি। আলেকজ্ঞার সাহেৰ একজন বারিষ্টার; তিনি খীর বিখাসের জভ নিজ ৰাৰসায় পরিত্যাগ করিয়া কেবল জনহিতকর কার্য্যে জীবন **छ**९नर्ग कतिग्राह्म, स्वाभान निवाद्यात्र **केल्म् पा**क्किका!

দেশে গমন করিরাছিলেন; স্তরাং তাঁহার পকে কপটতা (मधित्रा मर्जाइ इ इ दा कि हू है विकित्त नरह। आमारनत नक्का ও ক্লোভের বিষয় এই ষে, একজন বিদেশীয় ভদ্রলোক এদেশে করেক দিনের জল্প আসিয়া এদেশীয় শিক্ষিত ব্যক্তিদিগের সহিত মিশিয়া এই দেখিয়া গেলেন যে, ইংরাজী শিক্ষাতে ইহাদিগকৈ কণ্ট করিয়াছে। তিনি এই ধারণা लहेशा चार्तिए कि दिन्ना याहेर्यन-हेशहे छः त्थेत विषद्र। क्षिका धक व्यकात व्याधित कात्र व्यानाकत हित्र व्यक्ति হইয়াছে, অপরকে প্রবঞ্চনা করিতে করিতে অনেকের জীবনে প্রবঞ্চনাই স্বভাব ও সভ্য-প্রিয়ত। তাহার ব্যতিক্রম স্বরূপ इहेब्रा मी ए। है थ्राइड । असन कि वर्ष्ट्यान नमास्त्र (य व्यानाटक ब्र মুথে স্বধর্ম ও স্বজাতির প্রতি অফুরাগের কথা গুনিতে পাওয়া যায়, তাগার ভিতরেও কপটতা প্রানষ্ট গ্রহণা রগিয়াছে। এই জন্ত সে সকল কথাবও কোনও প্রকার শাক্ত জাগিতেছে না। এই অন্তঃসাব্বিচীন কপ্টতা মানব-চরিত্র ১৮তে অন্তৃতিত না হইলে কোনও প্রকার মহৎ ও উচ্চ ভাব ভাহাকে আধ্কার কবিতে পাবে না। এজগতে মহত্ত্ব ও মহুষাত্ব কপটের জন্ত নতে। চিম্বা, বাকা ও কাযাগত সভাভা না থাকিলে মনুষাত্ত্ব জাগ্রত হয় না।

ক্ষুদ্র কার্য্যে মহৎ ভাব—শ্রম বিভাগের দৃষ্টাম্ব দিতে হইলেই লোকে স্চরাচ্ব আলাপন নিমাণ প্রণালীর দৃষ্টাস্থ প্রদেশন কবিষা থাকে। এক প্রসাতে হয় ত চল্লিশ পঞ্চাশটী আলপিন পাওয়া যাইতে পাবে ; কিন্তু ঐ আলপিন গুল কত লোকেব প্রমের ফল খকপ ? এব জন লোহার তার কাটিয়াছে, একজন ঘাষ্যাছে, একজন অগ্রভাগ হল্ম করিয়াছে, একজন আলাপনের মাধাটী করিয়াছে। এই রূপে নানা হল্ডের ভিতর পিয়া একটা আলাপন প্রস্তুত চহয়। আসিয়াছে। কিন্তু প্রত্যেকে যাদ স্বীয় স্বীয় সংশ সুচারুরপে সম্পন্ন না করে তাহা হইলে সমগ্র আলাপন্টী স্থন্ধর ও উৎষ্ট হইতে পারে না। ধর্ম-সমাজের কাণ্যকেও এই ভাবে দেখিতে হইবে। আমাদের ঘাহার প্রাভ যে কার্য্যের ভার আছে, আমরা প্রভ্যেকে যদি তा।। युठाक्रकाल मन्भव ना कति, छाडा बहेल भवता कार्याती कथनर छन्मत ६ फेंट्करे रहेरू भारत ना। এहे छावछै। यम व्यामार्तित मकरलत कानरत खारवण करत, जाठा कहरण ममारकत विरम्य कन्।। इत। এक आर्थ धर्मात्रभाष्ट्रित तकन कांबह সমান, কারণ সকল কাজই ঈশবের কাঞ্জ, এবং তদ্বা उँচারই (मता व्या किन्द्र व्यात oa कि किशा (पश्चिम नक्न काक সমান নতে, কোনও কাজ কুত্র ও সামাস্ত এবং কোনও কাজ মহৎ। যাঁহার হত্তে কুদ্র কাজ্ঞীর ভার পড়িরাছে তিনি यि मार्न करतन, अहे मामास्त्र कार्य व्यावात्र भारनार्याणी स्हेव কি ? বড কাজ যথন আসিবে তথন স্থচাক্তরণে সম্পন্ন করিব এবং নিজের সমগ্র শক্তি সামগ্য নিয়োগ করিব, ভাছা হুইলে नगारखन व्यक्षिकाश्म कार्याहे क्रम्माशम स्टेटन। यीहान स्टल কুত্র কার্যাটীর ভার পড়িয়াছে, তাঁহাকেও (मथिट्ड स्ट्रेटन । তিনি শ্বরণ রাখিবেন বে, ভাঁহায়

চরিজের •উরতি বা অধােগতি ততুপরি নির্ভর করিতেছে। তিনি বদি দাবিত্ববিধীন ভাবে, ওদাসীক্তের সহিত সে কর্মটী नमाधा करतम, जाहा हहेला के खकारत कार्या करा जाहांब चाकाम रहेन्रा यारेत्। धक्तात्र मान्निएत्वार्थत्र मिथिन्छ। अभिरण, जिनि (य कार्याहे धातुल बहेरवन, (कानीहे काम-রূপে করিতে পারিবেন না: উল্লার বিবেক অংকুজন ছইরা याहेरव ध्ववः जिनि जेचरत्रत्र निक्टि चलत्राधी ७ मानरवत्र चाव-আবে পাতা হইবেন।

कौरानत मधा প्रथ-यूनबाक भिकार्थ यथन পिতृश्ह ভ্যাগ করিয়া তপ্তার্থে নিরঞ্জন নদীর অভিমুখে গমন করেন, তথন পাঁচজন ত্রাহ্মণ যুবক তাঁহার সমভিব্যাহারী হইয়াছিলেন। ইহারাই সেই অবণা মধ্যে তাঁহার কঠোর তপস্যার সাক্ষী ও সঙ্গী ছিলেন। কিন্তু যে দিন বৃদ্ধ কঠোর তপ্রসাকে বিফল জানিয়। পরি ভাগে করিলেন ও নিয়মিত অন্নণান গ্রহণ কারতে লাগিলেন, সেই দিন তাঁহার প্রতি উক্ত পাঁচজন আহ্বা সন্না-সীর মন ১টিমা গেল। তালারা তাঁলাকে পবিত্যাগ করিয়া বারাণদার অভিমুখে প্রান্তান কবিল। শাক্য দি॰ত ভাতাতে ভগ্রদয় না কইয়া বিগুণ প্রতিজ্ঞার স্চিত পুনরায় গভার ধ্যানে নিম্প্র হটলেন। যুগন তিনি সি'দ্ধলাভ করিলেন, তুগন मसीट्या (मह पक बाकानात व्यावस्त निवर्ग करान वरः কাশীধামে ভাগদিগকে প্রাপ্ত ইয়া তাছাদিগের নিকট নিম্ন-লিখিত ভাবে স্বীয় মনোগত ভাৰ ব্যক্ত করিলেন:---"তে আন্দিণ্যণ। চুট আতিরিক্ত দীমাকে পরিভাগে করিতে হুটবে: একদিকে, যে ইক্সিয় সুথাসক্তির দারা চিত্তকে কলুষিত করে, ভাহাকে বর্জন করিতে হহবে; অপরদিকে যে কঠোর তপদ্যা শরীরকে ভগ্ন ও চিত্তকে অশান্তি পূর্ণ করে,ভাহাকে ও পরিহার করিতে হইবে।"

ব্রাহ্মণর্ম মচাত্মা লাক্যসিংকের প্রাদ্লিত এই পথকে অব-লম্বন কবিয়াই চলিতেছেন। কিন্তু এই পথ আনত কঠিন পথ, ভাচা আমরা প্রত্যেকে প্রাতদিন অসুভব করিতোছ। আমরা আং তিদিন বালয়। থাকি যে সংসাবে বাস কবিব আংগচ ভাচাতে লিপ্তা চটব না। এট মর্শ্মে কভ উপদেশ আমাদের বেদী চইতে প্রদত্ত হটরা পাকে; কত দৃষ্টাস্ত আমাদের সমকে প্রদর্শিত চইয়াপাকে। রাজবি জনকের দৃষ্টাস্ত আমরা কত-ৰার প্রদর্শন করিয়াছি ও সে বিষয়ে কতবার আনলোচন। করি-वाहि। वर्षमान नमस्वय धक्कन धर्माशलाही नक्ता वनिर्छन বে ধনীর গৃছের দাসী বেরূপে ধনী সম্ভানের সেবা করে, সেই-क्रार्ण जः नारतत त्रवा कता अर्थाए धनीत नाजी रयमन धनीत मसानटक चांश्वरात , (धांश्यात, नाहात, आमत्र करत; सननी নিজ সন্তানকে বাহা করিয়া থাকে, ভাগা সম্পায় করে, এবং **চর ড অন্তরের সহিত প্রীভিও করে, কিন্তু ইচা বিলক্ষণ শ্বরণ** থাকে যে, সে সন্তান ভালার নতে, সে বড় ভইলেই ভালার ভক্ত হইতে যাইবে। সেইকপ সংসারকে খাওয়াও ধোওয়াও নাচাও আদর কর, কিন্তু সর্বাদ। শ্বরণ রাখ বে, ভাহা ভোমায়

কালৈ বেখিতেছি এভাবে, সংসারকে সেবা করার ভার কঠিন কাল অতি অৱই আছে। বাঁহারা বলিতেছেন, সংসারে থাকিয়া উপরেয় সেবা করিব তাঁচাকের অনেকে বিষয় সুথের মাত্রাকে এত বাড়াইতেছেন, বে ঈশ্ব-সেবা চাপা পড়িৱা ষাইতেছে। যীও বলিয়াছেন "কেহই চুই প্রভুর সেবা করিছে পারে না, বিষয় ও ঈশ্বর উভরকে এক সঙ্গে সেবা করা যার ना।" बाष्मर्गन हेवात्र উछत्त विनिहास्क्रन-ठिक कर्णा। छुहै প্রভূরাথিলে সেবা করা কটিন; কিন্তু ঈশরকে একমাত্র প্রভূ করিয়া সংসারকে ভাঁহার অমুগত করিয়া কেন সেবা করা যাইবে না। একথা ত শুনিতে বেশ। কিছ এভাবে কাৰ্য্য করা কভ কঠিন। অনেক হিন্দু গৃহত্বের বাডীতে দেখা যার, শন্ন ঘর, বৈঠকথানা, পাঠাগারে প্রভৃতি বড় বড়, ঠাকুর ঘরটী অতি সংকীর্ণ, এক পালের একটা কুঠবা। তেমনি অনেক ত্রাঙ্গের জীবনে ইছা কি সত্য নহে যে, বিষয়স্থ সমুদার ভান অধেকার কবিদা রহিয়াছে, আন্ধর্ম অতি সংকীণ একটা কুঠরীর মণ্যে বন্ধ ইইয়াছে ৷ আমি গা নিজানিজ জীবন যতই আলোচনা করি ভক্ত ভগনদনীতাব নিম্নলিথিত বচনটা স্মরণ হয় :---

> ধ্যায়তো বিষয়ান পুংসঃ সঙ্গন্তেষ্পজায়তে। সঙ্গাৎ সংকারতে কামঃ কামাৎ ক্রোধোচভিকারতে॥ ক্রোধান্তবভি সংমোহ: সংমোহাৎ স্মৃতি বিভ্রম:। স্থৃতি ভ্ৰণ্যাধ বৃদ্ধিনাশো বৃদ্ধিনাশাৎ প্ৰণ্যাত।।

व्यर्थ-निवस्त्र विषय मध्य वाम । विषयात धान कतिएड করিতে মানবের তাহাতে আদক্তি জন্মে; আগক্তি হইডে কামনার উদয় ৹য়; কামনা হইতে ক্রোদের উংপত্তি হয়; ক্রেণ চইতে চিত্ত-বিভ্রম জন্মে; চিত্ত-বিভ্রম হইতে স্মৃতি ভংশ; স্মাত ভংশ হইতে বৃদ্ধিনাশ; বৃদ্ধিনাশ হহতে মহা-विनाम : व्यवसंख्य बहे जन्म।

কি উপায় অবলম্বন করিলে এই স্বাভাবিক ক্রম বিনাশকে वाधा मिए लाजा यात्र ७ की गत्नत मधालल व्यवस्य कतिहा চলা যার, তাকা গভীর চিন্তার বিষয়। আমাদের বোধ কর জীবনের আদর্শকে উন্নত করিতে না পারেলে এবং সুথ ও ছ:থেব ভূমিকে ভ্যাগ করিয়া কন্তব্যের ভূমির উপরে দণ্ডায়নান ছইতে না পারিলে এই মধ্যপথ ধারতে পারা যায় না।

ব্রাহ্মধর্মের উদারতা—শেক সাদী প্রণীত বোদ্ধা গ্ৰাছে নিম্নলিখিত আখ্যায়িকাটী প্ৰাপ্ত হওয়া বায়; এই আথায়িকাটী কনওয়ে সাহেব প্রণীত গ্রন্থে সংগৃহীত হইয়াছে। আথ্যারিকাটী এই:—একবার বিহুদী জাতির আদি পিতা ইত্রাহিম সাত দিন উপৰাস করিয়া রহিলেন। উপবাসাত্তে गः कत्र कविरागन (य, अकस्यन चांछिथिक चाहात ना कवाहेना আহার করিবেন না। এই সংকর করিয়া ভিনি উৎস্থক চিত্তে মকর অভিমুখে চাহিয়া রহিলেন। কির্থকণ পরে দেখিলেন যে, একজন অভি প্রাচীন ও জরাজীণ লোক উছির ভবনাভিমুখে আগমন করিতেছে। ঐ বৃদ্ধকে দেখিরা ইব্রাহিম অভিশব আপ্যায়িত হইলেন এবং অভি সমাদর ্নিছে, এ দুঠান্তটীও আতি অ্বৰঃ ভাষাতে স্বেহ নাই। কিন্তু পূর্বিক অভ্যর্থনা করিব। নিক্ক ভবনে প্রহণ করিবেন।

আহারের সময় উপস্থিত চইলে, ব্ধন আরে ব্যঞ্জন আনীত হইল তখন ইব্রাহিম তাঁহার প্রথানুসারে প্রমেশ্বরকে ধন্তবাদ করিতে প্রবৃত্ত হটলেন। তথন দেখা গেল, যে সেই বৃদ্ধ তাঁছার পরিবার পরিজনের সহিত স্তুতিবাদে যোগ দিলেন না। ইহার কারণ বিজ্ঞাসা করাতে ঐ বৃদ্ধ বলিলেন যে, তিনি অগ্নির উপাসক তাঁহাদের সম্প্রদারে আহারের পূর্বে ও প্রকার স্ত্রতি করিবার নিরম নাই। তথন ইব্রাহিম অতিশর কুদ্ধ ছইয়াসেই বৃদ্ধকে তাভাইয়াদিলেন। বৃদ্ধ চলিয়া গেলে এক দেবদৃত চঠাৎ ইব্রাহিমের নিকট প্রকাশিত হইয়া বলিলেন-শ্টব্রাহিম প্রায় শত বৎসর কাল প্রভু প্রমেখ্রের করুণা, স্থ্য কিরণ, বৃষ্টিধারা, ও অন্ন পানের আকারে ঐ ব্যক্তিকে প্রতি-পালন করিয়াছে ; ভূমি সামান্ত মতগত পার্থক্য নিবন্ধন উচাকে ভাডাইয়া দিলে ?" এই বলিয়া দেবদূত আংভটিত ছইলেন। ইছা অতি প্রাচীন উপদেশ, এবং অতি সামাক্ত কণা; কিন্তু সামাক্ত কথাও ম্মরণ রাধা কত কঠিন। স্থামরা কতবার এই সামান্য উপদেশ ভূলিয়া সংকীণ্ডাব মধ্যে পতিত হই। একজন এদেশীয় ত্রাহ্ম ইংলও বাস কালে একবার ত্রিষ্টল নগরে যাইতে ইচ্ছাক্রিলেন। সেনগবে তাঁচার প্রিচিত কোনও প্রিবার ছিল না। তাঁহার লপ্তনত্ত কোনও ইংবাজ বন্ধুর এক ভগিনী ব্রিষ্টলে বাস করেন। উক্ত লণ্ডনম্থ ইংবাজ বন্ধু প্রস্তাৰ করি-শেন যে, ভাঁছারা উভরে ভগিনীর বাটীতে গিলা থাকিবেন। ভদমুদারে তাঁহার ভগিনীকে লেখা হইল। তাঁহার ভগিনীপতি ভ্রম গৃছে ছিলেন না। ভগিনীপ্তির স্হিত প্রামর্শের অপেক। না করিয়াই ভগিনী লিণিলেন, "উত্তম কথা, ভোমরা এস আমরা অভিশব সুধী চইব।" কিন্তু যথন চুই বন্ধুতে ব্রিষ্টল যাত্রা করিতেছেন তথন টেলিগ্রাম আসিল যে, সে গৃহে ব্রাহ্মবন্ধুর আভিথ্য গ্রহণ সম্ভব নচে। যাহা হউক অন্ত প্রকার বন্দোবস্ত করিয়া তাঁহারা ব্রিষ্টলে গমন করিলেন। ব্রিষ্টলে গিয়া অমু-সন্ধান দারা জানিতে পাবিলেন, তাঁহার ভগিনীপতি একজন গোঁডো এইলৈ, তিনি আসিয়া বাইবেল অসুসন্ধান করিয়া কি এক বচন পাইয়াছেন, যাহাতে একজন থীষ্টাবিশাদী ব্যক্তিকে আভিপো প্রহণ করা উচিত বোধ হর নাই। যাহা হউক লোকেব ধর্ম বিখাদের উপরে কাহারও হাত নাই। কিছ বে প্রকার ভাব হইতে উক্ত গ্রীষ্টীয় গৃহত্ত একজন ব্রাহ্মকে খীয় ভবনে স্থান দিতে পারিলেন না, সেই প্রকার ভাব কি चामार्गित । चाचरत चानक ममरत्र काक करत ना १ खाचरर्पात ভার উদার ধর্ম বাঁচার। গ্রহণ করিয়াছেন, তাঁহাদের প্রেমের वाह गर्स मध्यमारम्य ताकरक व्यालिकन कविवास सम् विश्व ह थाकित, हेहाहे लात्क (प्रथिष्ठ जामा कत्त्र।

গুরুবাদ কিন্তা আচার্য্যবাদ— গুরুবাদ কিন্তা আচার্য্য বাদ রাক্ষধর্মের অন্থুমোদনীয়, তাহা বিশেষবিবেচ্য বিষয় নয়। ক্রিছ ইহাই বিচারের বিষয় যাহা দারা আত্মার কল্যাণ সাধিত হয়। যাহাতে মানবাদ্ধা ঈশবের সহিত সাক্ষাৎ সম্বন্ধে সম্বন্ধ হইতে পারে, তাঁহার সন্মুখীন হইতে পারে

ভাছাই ব্রাহ্মধর্মের অবলঘনীর। গুরুষাদ মানা অনাবশ্রক কিছা আচার্যাবাদ মানা অনাবশ্রক, এরপ নামের প্রভেদ করা নর। কিছু যাহা মানবাদ্মাকে ভাহার স্বাধীন বিবেক-নির্দিষ্ট পথে চলিতে বাধা প্রদান করে—যাহাতে ভাহার বিচার শক্তিকে বিনষ্ট করিয়া বা সেরপ বিচারের পথ অবরুদ্ধ করিয়া, ঈশ্বরের সহিত মানবাদ্মার সাক্ষাৎ সহদ্ধে সহদ্ধ হইবার পথে ব্যাঘাত উপস্থিত করে, ভাহাই ব্রাহ্মধর্মের অনুমুমোদিত। শক্ষেব ভার্তম্য নর, কিছু অবস্থা ও বস্তুগত ভারতমাই বিচার্যা। প্রচলিত গুরুবাদ বা আচার্যাবাদ মানবাদ্মাকে সাক্ষাৎ সম্বন্ধে ঈশ্বরের স্পিত সম্বন্ধ হইতে এবং সাক্ষাৎভাবে ভাহার সন্মুণীন হইতে বাধা দেয় বলিয়াই ভাহা ব্রাহ্মগণ্যব পরিত্যাক্ষা।

नवविधानी वसूत्रन छाँदारम्ब अভिवानकात्रितरम्ब अर्थाए সাধাৰণ ব্ৰাহ্মগমাঞ্জের কোন কোন লোককে প্ৰকাশে বা গোপনে ওকর আশ্রয় গ্রহণ করিতে দেশিরা আচায্যবাদের সমর্থন করিভেছেন,। ত্রাহ্মসমাজ কোন দিন গুরুবাদ বা উাচারা যেকপ আচার্যাবাদ মানিতে বলেন, তাহা মানেন নাই। সাধারণ আহ্মানমাজেব লোকদিপার মধ্যে কেছ কেছ যে পরিমাণে দৃষ্ণীয় ওারুবাদ অমর্থাৎ যাহা উপরে নিদেশ করা গেল, একপ গুরুবাদেব আশ্রয় লইয়াছেন আক্ষদৰ্ম হইতে বিচ্যুত হই-সেই পরিমাণে তাঁহাবা রাছেন। অথবা বঁলোরা ভটত হটরা আছেন তাঁহারাও ব্ৰহ্মধৰ্ম হইতে সেই পরিমাণে বিচাত হইবার জন্য পা বাডাইয়া আছেন। ত্রাহ্মধর্ম সাক্ষাৎ সম্বন্ধ স্ক্রারের সভিত যোগের ধর্ম । তাহাতে যে কোন ব্যক্তি বা বিষয় বাধা দেয় । তাহাই পরিত্যালা, তাহার নাম যাহাই হউক। সাধারণ বান্ধ-সমাজের কেচ কেচ গুকর আভার গ্রহণ কবিরাছেন, ভাহা নিতান্ত পরিতাপের কারণ সন্দেহ নাই। কিন্তু তা**ছাতে নব**-বিধানী বন্ধুদিগের সাম্বনা লাভের কোনই কেতু নাই। কারণ তাঁহারা গুরুবাদের অভানামকরণ করিয়াই কি বক্ষা পাইবেন, মনে করিতেছেন ? ভাষার সম্ভাবনা নাই। নববিধানী বন্ধুগ্র এসম্বন্ধে তাঁচাদের পত্তে যেরূপ লিখিতেছেন, তাভা ভইতেই বুঝা যাইতেছে যে, উাহারাও গুরুবাদের দৃষ্ণীয়তা হইতে রক্ষা थान नाहे। धार्किवामकातिश्व कि **कारमनवास्त्र** धार्किवाम করির৷ পৃথক হটয়া পাড়িয়াছিলেন ? আদেশবাল অপ্রাহ্ম করা ব্রাহ্মধর্ম্মের বিধি নয়। কারণ ভাষাই ব্রাহ্মগণের অবলম্বন এবং ভাহাই শাস্ত্র। ভাহাই ধর্ম জীবনের আংগো। ভবে ভাঁহারা कान (कान चार्मरभव धार्डिवान कहिवाहितन। जहन खारव বিবেকের অনুমোদনীয় নয় বলিয়া যদি কেছ কোন ব্যক্তিয় আদেশের প্রতিবাদ করে, ভালার অনুস্বণ না করে, ভালা নিন্দনীয় নয়, বরং ভাচাই আন্দোর কন্তব্য: ভাঁছারা বেরূপ व्याप्तिनात वा कांत्रायाताम मानिष्ठ वर्णन, जाहाहै बारकार भन्नम শক্ত। সেই শক্তকে মিতা বশিরা মনে করা কথনই নিরাপদের অবস্থানর। উচ্চারা আদেশ বাদের সমর্থন করেন, প্রভ্যেক ব্ৰাশ্বই করিয়া থাকেন। কিন্তু তাঁচারা কি প্রত্যেক ব্যক্তির নিকট প্রকাশিত আদেশ মান্য করিয়া চলেন ? যদি চলি-(छन, छाहा हहेत्न छाहारमञ्ज सन्मिरतत्र त्वारी नहेता असन विवास

বিশংবাদ • কেন ? তাঁহারা বখন সকলের নিকট প্রকাশিত আদেশকে যান্য করা উচিত মনে করেন না, সেরপ সকলের পক্ষেই সকল আদেশ মান্য করিরা চলা উচিত না হইতে পারে। এরপ অফুদারতা এবং ব্রাহ্মভাবের বিরোধিতাই অনিটের করেণ এবং ভাহাই ব্রাহ্মের পক্ষে অনমুমোদনীর। আচার্য্য বাদ নামেই সব দোষ কাটিরা বার না। স্ল বস্তুতে দ্বণীর ভাব রাখিরা নাম পরিবর্ত্তন বা ভাষা পরিবর্ত্তন করিরাই নিস্তার পাইবার উপায় নাই।

# ্ সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

### ধর্ম্ম প্রচার।

এক শ্রেণীর লোকে স্বভাবতঃ প্রাণের আবেগে বা প্রকৃতি-প্ৰাৰম্ভ শক্তি ৰাবা চালিত চইয়া কবিতা এবং প্ৰাৰম্বাদি লিখিয়া পাকেন। তাঁচাদিগকে কেচ উত্তেজিত করুক আর না ককর, কেছ উৎসাহ প্রদান কফক আর না করুক, ভাঁহারা না শিখিরা পারেন না বলিয়া লিখিয়া থাকেন। অফুরোধ উপরোধের জ স্ত ভাঁচারা বসিয়া থাকেন না অথবা লোকে তাঁচাদেব লিখিত ক্ষবিতা বা প্রবন্ধ আদৰ করে কি অনাদর করে তাহাব প্রতিও ষ্ঠাচাদেব দৃষ্টি নাই। স্মার এক শ্রেণীর লেথক আছেন তাঁচার। প্রয়েজন মন্ত লিখিয়া থাকেন অপবানা লিখিলে কাজ চলে না বলিয়া লিখিরা থাকেন। যেমন কোন ব্যক্তি একথানি সংবাদ-পদ্ধ প্রকাশ করিতেছেন। প্রতিদিন বা সপ্তাচে তাঁলাকে কাগজ জ্বস্মাজের নিকট উপস্থিত করিতে হর। সুতরাং তাঁগাকে কিছু লিখিতেই হঠবে। যে কোন রূপেই হউক পত্রিকার কলেবর পূর্ব করিয়া সাধারণো প্রচার কবিতেই হইবে। তাঁহার **অন্ত**রের ব্দবস্থার প্রতিও দৃষ্টি করিবার সময় বা স্থবিধ। নাই। সে সময় তাঁচার অন্তর হটতে কোন সর্ম লেখা বাহির হওষা সম্ভব কি ना. (म विहाब कविवाब ज्ञानमवं कैं। हा नाहे। (यज्ञालि इंडेक किनि ना निभिन्ना भारतन ना। व्याचात्र व्यष्ट्रांस ५ कत्रमाहेम् ৰারা চালিত হটরাও লোককে আনেক সমর বিথিতে হয়। এই বিভিন্ন প্রকাবের লেখক ও তাঁচাদের রচিত প্রবন্ধে যে **बार्डिन, धर्म श्रीहारत बाहाता व्यव्छ बहेन्नाह्मन, डाँगारनत कार्यात** मार्था । शक्त ने श्री एक पहें इहेश शिक्त गाँकाता चला दिव ভাড়নার, প্রাণের আভাস্তরীণ উত্তেজনার বশীভূত চটয়া श्राक्ताविक ভाবে धर्म श्राहादत अञ्चल हन, छाहादित आहादित আর যাঁলারা প্রয়োজন বলিরা, ভানিরা চিন্তিয়া প্রচার-এত প্রত্য করিরাছেন-কোন বিশেষ সমাজের মত বা ভাব প্রচার कतिए छात्र शार्थ इहेता हन, श्राहत ना कतिरन उँ शिरामत দিনপাত হয় না, এই জন্ত অভাবের প্রবণ তাড়নার নয়, কিন্ত লোকের অমুরোধ উপরোধ বা অমুরাগ বিরাগ ছারা চালিত হইরা कार्वा करबन; এই ৰিডীর শ্রেণীর প্রচারে বছ প্রভেদ। এই ছুই শ্রেণীর লোকের সহিত পরিচিত না হইরা, ভাঁচাদের স্বভাব, অবস্থাও উদ্দেশ্যাদি অবগত না হইরাও লোকে অতি সৰ্জে কাৰ্ব্যের প্রণালীও অবস্থা দেখিয়াই ভাগার প্রভেদ সমূভ**ৰ করি**ভে

भारत । विरवह क रनारकत निक्षे छाहारमत कार्यात छात्रछमा অভি সহজেই প্রকাশিত হইরা পড়ে এবং তাহার ফলও সেইরূপ ফলিরা থাকে। এজন্ত বাঁছারা প্রচারত্রত গ্রহণ করিরাছেন বা করিতেছেন তাঁহাদের বিশেষ সতর্কতার এবং আত্মপরীক্ষার স্হিত দেখা প্রবোজন, কোন্ভাব দারা চালিত হইরা কার্য্য করিতেছেন বা কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতেছেন। পৃথিবীতে কার্যোদ অভাৰ নাই। ঈশবের প্রিরকার্য্যেরও অভাব নাই। স্বতরাং कार्र्श क्षात्रुख इहेनात्र शृत्स हेगाहे (मथा चानश्रक---(म कार्य) দারা নিজের ক্ল্যাণ ছইবে কিনা—নিজের আ্যার সদাভি हहेरा कि नः। (र कार्या निस्कृत मलाहि लास्कृत मस्रापना নাই; ভাচা দ্বারা অণরেরও কোন উপকারের প্রভ্যাশা নাই। স্তবাং কোন্ কাৰ্যো নিযুক্ত হইণে আত্মকল্যাণ ও জগতেব কল্যাণ উভয় সাধিত হইবে, তাহা ানকপণপূস্কক ভবে তাহাতে প্রবৃত্ত হওয়া আবিশাক। ভাল কাজে নিযুক্ত হটরাও এজ্ঞ लारकत करधार्गाक इटेश थारक। लिख निस्कत निकरि छ छौतन ভারবহ বোধ হয়, অপবের নিকটও বিবক্তিকর চইয়া পড়ে। শুধু বিরক্তিকর নয় কিন্তু অকল) শিকর হটয়া থাকে। এজস্ত কাষ্য সং হইলেও তাহাতে আত্মার কচি ও অমুরাগ আভ-বিক বা অন্ত কারণ প্রস্ক, অতিধীবভাবে তাহার বিচার করিয়া তাহাতে প্রবৃত্ত হওয়া আবেশ্রক।

বর্ত্তমান যুগে লোকের মন বিষয় বাণিজ্যের উল্লভির জঞ্চ (यमन वास, এक पिएक (यमन ब्रष्टना প্রভাত চইতে না হইতে वनवारनत वन, वृक्षिमारनत वृक्षि, धनोत धन, विकारनत विनाध বিয় ও বাণিজাের কোলাংল বুদ্ধির জক্ত-ভালার এীবুদ্ধির জন্ম নিযুক্ত হইতেছে, অপর দিকে ধর্ম পচারের জন্মও লোকের আগ্রহের সীমা নাই। লোকে যেমন সাংসারিক উরতিব জন্ত শ্বীর মন বৃদ্ধি বিদ্যা ধন আছোত নিযোণ করিতেছে; আছ দিকে ধর্ম প্রচারের অক্সন্ত হাজার হাজাব লোক আপনাদের সুগ তু:থকে উপেক্ষা করিয়া অগম্য স্থানে যাইতেছে-ভীবৰ বিপদাশল্পকৈ অগ্রাহ্য করিয়া, জীবনের মায়া পরিত্যাগ করিয়া নিতঃ নৃতন প্রদেশে গমন করিতেছে এবং নৃতন नृडन विभागतक व्याध्वान कवित्रा व्यानिष्टर्ह। लाक्तित्र व्यर्थ বিদ্যা বৃদ্ধি এ কার্য্যে কম বায় হটাতছে এমন নয়। কিন্তু লোকে ধর্মপ্রচারের জন্ত যে এত বাস্ত, ইচার মূলে প্রবেশ কবিয়া আমরা কি দেখিতে পাই? আমরা কি मर्रामाहे (मथिए हि (य नाटक खडाना क्व हरेवा, मर्छात भथ পরিভ্যাগ করিয়া এবং সজ্ঞা হইতে বিচ্যুত হইয়া বিষম অনর্থের প্থে, অকল্যাণের পথে যাইতেছে, আত্মা অধোগভির দিকে याहेट उद्धः छाहा हहेट उद्धात कतिया कलारिनत पिरक जानसन ক্রিরা, স্কলেইকি মান্থের সদ্গতির জন্তুই বাস্তু ? তাঁহাদের ভাষা দেরপ ভাবই প্রচার করে তাহাতে সক্ষেহ নাই এবং তাঁছাদের ভাষার অমুরূপ অন্ত:করণবিশিষ্ট ব্যক্তিও যে অনেক আছেন ভাছাভেও সন্দেহ নাই। কিন্তু সকল সময় এক্সপ অফুভব করিবার অবকাশ পাওয়া যার না। ধর্ম প্রচায়ের মৃলেও এক প্রকার কুদ্র স্বার্থ বা প্রলোভন দেখা বার। काहा नामाधकारम्य स्टेरमक व्यथानकः धरे कार्यम र

লোকে প্রকৃত সত্য লাভ করুক বা না করুক আমি বাহা বৃঝিতেছি ভাল প্রচণ করুক। লোকেই অভানতা ঘুটিয়া শ্রন্থক সভালোক লাভ চউক ভালার প্রতি উদারভাবে ভত দৃষ্টি নাই, কিন্তু আমি বে সম্প্রদায়ের লোক ভাহার প্রচাবিত মত গ্রহণ করুক। এই প্রকার মত প্রচারের সহিত আব্যবৃদ্ধি বিলেচনার আব্যক্তান গরিমার শ্রেষ্ঠতার ভাবও बरन श्रीदल ना शास्क अपन नम्र। अम्र छहे (मथा यात्र लास्क স্তা প্রদান করিবাব জন্ম যেমন বাস্ত, স্তা প্রচণ করি-বার জ্ঞাতেমন বাস্তানর। দলগত মত প্রচাব ও দলর্জির জ্ঞা যত ন্তু প্রকৃত নিচারশক্তির বৃদ্ধির স্থিত স্ত্যাস্ত্য নিৰূপণ কবিবাৰ প্ৰান্তি ব শক্তিকে প্ৰান্ত করিবাব জন্ম তেমন ব্যস্ত নয়। প্রাকৃত প্রচাবক তিনি যিনি লোকেব সভ্যাত্মসন্ধিংসা বৃদ্ধিকে প্রধল করেন। স্বাধীনভাবে বিচাবেব প্রবৃত্তিকে বৃদ্ধি কবেন। তিনি কোন দলেব মত গ্রহণ করাইবার জন্য বাস্ত না হইয়া, বা আজাদলেব মত গ্রহণ ক্ৰাট্ৰার জনা ভত ৰাস্ত না চট্য়া ধৰ্মক্ৰণা ও স্তা অফুসন্ধান ও গ্রাহণের ক্ষণাকেই প্রাবল ক্রিয়া থাকেন। ভাগ চইলেই ভাঁচার পক্ষে সম্মন্ত হওয়া উচিত। নতুৰা দল বৃদ্ধি বা অংমত গ্রহণ কৰাইবার প্রবৃত্তি ঘাঁহাদেব প্রবন্ধ তাহারা খুব ভাগেশীল ও ধার্মিকাগ্রগণা বলিষা পরিচিত হটলেও তাঁচারা প্রকৃত ভাগিদীকার করিছে পাবেন নাই। আত্মজান ও ব্রির প্রশংসাধ্বনি শ্রণ করিতে-মাত্মগৌরব-খোষণা শ্রবণ কবিতে তাঁচাদেব মন এখন ও বাল্ড। দলের স্বার্থ ভাঁছারা ছাড়াইছে পারেন নাই। স্থুতরাং সেক্প প্রচারেও প্রকৃত কল্যাপ লাভেত আশা কম। ভাতা ঘানা ঈখবের প্রসর্ভা व्यापका चम्तात । वाबाधानामा नाम्ब म्हाननाहे व्यापक। বাঁছারা ধর্মপ্রচারের ব্রহ গ্রহণ করিছেছেন বা ক্রিয়াছেন তাঁখাদের স্বলাগ্র দেখা উচিত কোন্ভাৰ প্রাণে স্ব্রাণ্পক্ষা অধিক প্রবল। লোকে ঈশরের মহিমা ব্ঝিতে সমর্থ হউক এবং বৃঝিলা ভাছা জীবনে পরিগ্রহ করিয়া, তাঁহার মহিমা মহিমাাস্বত করুক-ন্দভ্যের উদার আশ্রের লাভ করিয়া কল্যাণের পথে অগ্রসর ছউক, এরূপ আকাজ্ফাই প্রবল অগবা লোকে দলের আশ্রয় গ্রাঞ্গ করিয়া অপবা দলের প্রাচারিত মত সকল মাক্ত করির। সঙ্গে সঙ্গে তাঁচাদের বিদ্যা বৃদ্ধি প্রভৃতির শ্রেষ্ঠ প্রতিপর কর্মক, একপ আকাক্ষাই প্রবল। ঈশ্বরের মতিমা বিস্তৃত হউক, জন্ন যুক্ত হউক এরূপ উদ্দেশ্য না লইয়া যদি কেচ ধর্মপ্রচারের জন্ত বাস্ত হন, উহোর সেই ব্যস্তভা সেই भाळारुव मृत्य निक शोदत-व्यवान व्यकांन भाहेत्वहे भाहेत्व। সুভরাং তালা যেমন সভা প্রচারের স্লার হইবে না; ভেমনি निष क्लान लाम्बत अक्रुक्ल इहेरव ना। कार्या ७ वावमा क्ष्मांच प्रात्व धाकारत्व प्रार्हि। धर्माधात्व (यन সেইরপ কোন আর দশটা কার্য্যের মত একটা কার্য্য বা অপন্ন কোন বাবসারের মত একটা ব্যবসার না হয়। তাহাছার। ইংলোকে তৃথি পাওয়া গেলেও প্রকৃত কল্যাণ লাভের সম্ভাবনা ভাগতে নাই। সুতরাং প্রচারত্রত প্রহণ অতি উচ্চ কার্যা ্হইলেও তাগতেঁও সক্ষা স্বাগ স্বাস্ট্র স্থিত নিজ্ঞ

পরীকা করা উচিত। গৌরবের প্ররাস দলগতই হউক আর আ্যাগ্রই হউক অভি অনিইকারী এবং মারাম্মক।

# দোষ কাছার—সাধন প্রণালীর না সাধকের ? (গ্রাপ্ত)

কিছু দিন চইতে আহ্মসমাজে সাধনপ্রণাণীর সংক্ষা নানা কণা চইতেছে। গত ১৬ই কার্তিকের তত্তকামুণীতে আহিত সভাদশী মহাশয় এই প্রশ্ন উত্থাপিত করিয়াছেন । এবিবল্লী সহক্ষে বিভাবিত আলোচনা প্রয়োজন হইয়া উঠিয়াছে। আমা-দের অক্ষমতা আমরা বিশেষকাপে অবগত আছি, কিন্তু আর কেন্ত্রই এ কার্যোব ভাব প্রহণ করিতেছেন না ব্লিয়া, নিজান্ত কর্ত্রবা বোধে ইহাতে হস্তক্ষেপ করিতেছি।

সর্ব্ধ প্রথমে আমাদের সাধন প্রণাণীটী কি ভাছা সংক্রেণে আলোচনা করা প্রয়োজন। আমাদের সাধনের চারিটী অঙ্গ (১) উদ্বোধন, (১) আরাধনা, (১) ধ্যান, (৪) প্রার্থনা।

(১) উদ্বাধন — আম্বা অনেক সময় বৃত্তিমূপীন পাকি. অভ্রব সকলপ্রথমে আমাদের প্রাণকে প্রব্রক্ষের উন্মূণীন করিছে ছট্ৰে—এইকপ অৰ্ম্ভাতে অনিতে ইট্ৰে, যাছাতে <mark>তাঁছার</mark> প্রকাশ সম্ভবপর হয় ৷ তাঁহোকে পাওয়াব জন্ত স্বল ব্যাকৃণ আকাক্ষা এবং সেই সঙ্গে সংস্থ তাঁলাতে নির্ভন্ন কটলেট এই অবন্তা চটল--- উদ্দাধন চইল। বোধ চয় বলিতে চটবে না; এই অবস্তাকেই প্রার্থনা বলা হয়। क्षार्गत এहे अवद्य চটাল--- প্রার্থনা চটালে, পররক্ষ আয়াতে তাঁচার অরপ প্রকাশ কবেন। (২) আবংখনা স্বরূপ বর্ণন্ত কুডজাতা প্রকাশ। व्याद्यारक भगवास्त्रत अकाम बहेरन ठीकारक निरमय ভारत किसा করিতে, ভাঁচাৰ স্বরূপ সকল বিশেষ ভাবে মনন ক্রিভে এবং সেই সঙ্গে সঙ্গে তাঁতাকে গভীবরূপে উপল্পি করিতে সক্ষয় চ ৭ বা বার। এসমৰ প্রাণে ক ভক্ত ভাও উপদিত ভয়। তাঁচাকে ঘত্ট বেশী উপলব্ধি করা যার তত্ত প্রেম, ভব্তি 😉 ক্লতজ্ঞতার উদর হয়। ইহার নাম আধারাধনা। এই ভাবে গভীৰ চইতে গভীৰতৰ ৰূপে তাঁহাকে উপলব্ধি কৰিতে কৰিছে প্রাণ তাঁহাতে নিমর্ম হয় অর্থাৎ (৩) ১। ধ্যানের অবস্থাতে উপ-নীত হয়। এই ভাবে গভীর উপলব্ধি চইলে তাঁচার **স্থপা-**মুরাগ উদ্দীপ্ত হয়, তাঁচাকে পাটবার আকাজ্ঞা প্রবল হয় এবং এই অবস্থাতে, তুলনার নিজ চুরবস্থা বেশী হওয়াতে ভালা দূর করিবার আংকাজক। ও প্রেবল কর; প্রাণ (৪) প্রার্থনায় অবস্থায় উপনীত হয়। फारे दाविटाइ आमादात माथन প্রণালী সংক্ষেপত: এই---গ্রার্থনা, প্রার্থনার ফল্বরূপ আত্মাতে ব্ৰহ্ম প্ৰকাশ চইলে তাঁচার চিন্তা, ভাচার ফল স্বরূপ গভীররূপে এক উপলব্ধি এবং ইছার ফল ক্ষ্ণুপ প্রব**ণ্ডর** আকাজকাবাপ্রার্থনা।

এখন দেশা যাউক উক্ত সাধন অবলহনে ফল লাভ চইছে পারে কিনা। প্রার্থনা বা সরল ব্যাকুল আকাজনা হইলে বে আত্মতে এক প্রকাশিত হন---একাদর্শন হয়---একাশ আর্মান দ্যতর কানি, স্ক্রাদী-সমত। স্ক্রেশীয় ও স্কল বৈশীয়

ब्लाक हैका चीकान कर्नाटल्डिम। कारबार हेकान मणाणा প্ৰমাণ অভ আৰু আমরা কিছু যদিব না। যদি কেই আপত্তি করেন তবে এ বিচার করা ঘাইবে। ব্রাহ্মসমাকের পুত্তক, পত্রিকা ও বক্তা, উপদেশালিতে এবিবর অনেক্যায় আলো-চিত ক্ট্রাছে। বিশেষ্ড: মেসেঞ্রে পঞ্জিততে এ সম্বন্ধ কত ছক্ষর ক্ষমর উদ্ভ ও সম্পাদকীর প্রবন্ধ বাছির ছইরাছে। আশুন আলিলে যেকপ বাডাস আসিবেই, বার খুলিলে रवक्रम चात्र चारमा छारवम कतिरवहे, त्रहेक्रम छार्चना बा ष्पाकाणका इहेल बच्च खाल खाका निष्ठ इहेरवसहै। हेटा सा ভটয়া পারে না, ইভা একটী আনধ্যাত্মিক নির্ম। স্থভরাং व्यक्तिक नमत्र भर्गास्त मनम वा क्षत्रभे हिसा बात्रा (य এहे हर्मन গভীর চইবে, আধকতর স্পষ্টরূপে যে ব্রহ্ম উপলব্ধি চইবে ভালা স্তক্ষেট বুঝা যায়। কোন বস্ত অনেক সময় প্র্যাস্থ मस्मारमान्त्रत माञ्च भृष्यायूभुक्यकर्भ स्मिश्त (य छेक नेखन छान अधिक व्हेर्र, छेवारक अधिक इत म्लाहेकरल काना राहेर्द ভাচাতে সলেচ নাই। এবং কোন বল্প, বিশেষতঃ কোন ত্মার বস্তু চিন্তা কারতে করিতে যে মন ভাচাতে মগ্ন চইয়া যাটবে তাচা স্চল্টেই বুঝা যায়। কাজেই এরপ স্বাভাবিক নির্মান্ত্রপাবেট অনেক সময় প্রাস্ত ব্রহ্ম-আরাধনা করিলে প্রাণ ভাষাতে নিম্প্র হইয়া ষাইবে—ধ্যানের অবস্থাতে উপনীত ছটবে এনিষ্যে স্লেভ নাই। প্রেমস্থরপ সুন্দর প্রবৃদ্ধক প্রাণে দে।খাল যে প্রেম ভব্তি জারিবে, প্রাণ ভাঁচাকে ছাডিয়া উঠিতে চাত্রে না ইছাও সহজেই ব্রা ঘাইতেছে। অনন্ত-ব্ৰহ্মে প্ৰাণ মত্ই ভূণিৰে, তাঁছাকে আরও অধিকতপ্ৰরূপে উপ-শব্ধি কবিবার জন্ম প্রাণ তত্ত ব্যাকুণ হইবে এবং একা, উপলব্ধি চটলে নিজ কুদ্র ভা, অসাবত। স্পষ্টতর ভাবে বোধ ধ্যান হইতে প্রাণ স্বাভাবিক ভাবে इहेरवर्डे ठठेरन । প্রার্থনার অনস্বায় উপস্থিত হয়। এই অবস্থার ফল আরও चारिक ज्वतरा उमा উপল स स्ज्वाः चामत्रा स्विट्डिह, ইচার। প্রস্পাব এরপ সম্বন্ধে আবিদ্ধ হোবে আতোকে পরবর্তী অবস্থা আনিয়া দেয়। সহজ যুক্তিতেই আমরা বৃঝিতে পারিভেছি ইছা আমাদিগকে উরতজীবন লাভে मुम्बर्थ करत्र। । এই স্থাভাবিক নির্মের উপরেই আমাদের সাধন প্রণাদী প্রভিষ্ঠিতা। মনোবিজ্ঞান, সাধারণ যুক্তিও এই প্রণাদীর পক্ষে সাক্ষা দিতেছে। সভোগাছও অভ ভোগাছ শত শত माथक हेरात भक्त माक्का निर्छाह्यन। व्यामता मिथ्टिक हेरा উন্নত ধর্ম জীবন লাভের সম্পূর্ণ উপযোগী এবং নিাশ্চত ফলপ্রদ 🔁 भाष ।

অখন একটা গুরুতর প্রশ্ন রহিয়াছে। উদ্বোধন হইলে—
সর্বা ব্যাকুল প্রার্থনা হইলে ফল হইবে বুঝা যার। কিন্ধ প্রশ্ন
এই উক্ত প্রার্থনার অবস্থা পাইবার জন্ত কি লাখন আছে ?
অবিব্যে ব্রাহ্মসমাজ নিম্নলিখিত সাখন নির্দেশ করিতেছেন। (১)
সংগ্রন্থ পাঠ, (২) প্রকৃতি চর্চা, (৩) সাধুসল ও (৪) নিজ জীবনে
ব্রহ্মপা ও তাঁহার কার্য্য বিব্যের এবং নিজ অবস্থা বিষয়ে
চিন্তা। ইহাদের প্রত্যেক উপার বারাই যে কিছু উপকার
হইতে পারে, ধর্মকীবন লাভের—ব্রহ্মণান্তের আঞ্চাক্তা জ্বিয়তে

भारत काहा मकरगरे चीकात कतिरवन, किन्छ नवन नवत, जकन अवदारक देशवा कार्याकाती किना छाशहे विहार्या। ইহারের দক্ষের বে স্থান উপকারিতা আছে তাহা আমরা विनद्ध शांत्र मा। भरताह शार्ष्ठ ७ त्रकृष्ठि वर्काएक १व कानक जबन आन कांक्षक कन फाहारक मत्नक नाहे; किन कामना একথা ৰলিতে পারি না, সকল সমরে ইহারা কার্য্যকারী इरेट्य। देव्हारपत्र कार्याकात्रिका व्यानकते। व्यागापत्र व्याप्यत অৰম্বার উপর নির্ভর করে। প্রাণের অবস্থা অমুকূপ না क्हेरल कन नाल इब ना। नाधू गन हेगालव व्यापका व्यक्षिक कन सामक। ८यम (मृज्य तक्क (मृज्यी व्यामार्गत व्याप त्मर कावहे कामाहेबा (मन्। माधू कोवस माध्य उन्नड कीव, কাষেট তাঁকার সংসর্গে প্রাণে সম্ভবে জাগ্রত হইবে, উচ্চ আকাজক আলীপ্ত হইবে, ভাঁচাব কথার ফল বেশা হইবে। কারণ তাঁচার কথার পশ্চাতে প্রাকৃত জীবন রচিয়াছে। তীর বত বলের স্থিত নিক্ষিপ্ত হটবে, ভাষা যেমন ভত গভীর ভাবে বিদ্ধান্থলৈ, সেইরূপ কথা প্রাণের যন্ত গভার স্থল চইতে উত্থিত ছইবে, ভাগা ভক্ত গভীর ভাবে শ্রোতার প্রাণে প্রবেশ করিবে, वक्तना विषय वक्तांत्र यजन्त्र नीवन नक्त मन्त्र बहेटन, खेहा खड कार्याकावी बहेरव। किन्न छाहे वालवा এकथा वला यात्र ना नाधू-मक मर्रानारे कार्याकाती इंडर्रा हेशात कल 9 शालाव कारकाब উপৰ অনেকটা নিৰ্ভৰ করে। বস্তুটী কোমল না হইলে অথবা অমুকৃণ অবস্থায় ন। থ। কিলে ভীর যেমন লক্ষ্য বিদ্ধ করিছে। পারে না সেইরূপ সাধুসঙ্গকাবীর প্রাণের অবস্থা "কোমল" ( अर्थार পार्म (न भी निश्व नह ) अर्थना (महे ममरहत अन्त असू-কৃগ নাহটলে বিশেষ ফল হটবে না। কাজেট ভাৰতা বিশেষে সাধুসঞ্জানীর উপর সাধুর কার্যা এত ক্ষীণ হইতে পারে খে कि कूठे बहेग ना मान कता यात्र; कात्रण डेबा (महात विश्व কার্যাকারী নহে, প্রাণকে জাগ্রত করিতে সক্ষম নহে। এরপ ক্ষমতানাই যে, সমস্ত প্রতিকৃণ অবস্থা দূব করিয়া উক্ত লোককে সম্পূর্ণরূপে অফুকুল অবস্থাতে আমিয়া দিতে পারে। কারণ কোন ব্যক্তির উপরই কাহারও সম্পূর্ণ আধিপত্য নাই। মাসুষের কর্ড়ত ভাহার নিজের উপব অন্যের উপর নংহ। কোন মাহুষের উপরই ভাষার নিজের এবং শ্বরং প্রমেখরের ভিন্ন অন্য কাহারও সৃষ্পৃৰ্ণ কর্তৃত্ব নাই। কাবেই প্রত্যেক মমুধ্যের উপর ভাছার নিজের এবং প্রভু পরব্রহ্মের কার্যা স্কাপেক্ষা অধিক কাষ্যকারী। স্কুরাং এই পরিষ্ঠন সম্বন্ধ, প্রার্থনার অবস্থা আনমূন সম্বন্ধেও স্বীয় ও ব্রহ্মকুপরে কার্য্য मक्षारभक्ता । अनुकल मनरावत कना क्ष्मावक । कीवल नजनमङ বিধাতা পরত্রন্ধ যে আমাদের সকল বাধা বিদ্ন দুর করিয়। षामारमञ्ज टकान (५डी) ना शाका मरच्छ व्यथेवा विक्रक (५डी) शाका সম্বেও নানা ভাবে তাঁহার দিকে আক্রষ্ট করিতে পারেন, ल्यानटक डीहात उच्चभीन कतिर्ड भारतम्, श्रारंग क्षेत्र व्याकाकः। জাগাইরা দিতে পারেন, ভাহা সকলেই স্বীকার করিবেন। মানব নিজ চেষ্টাতে কি করিতে পারে তাহাই বিচার্যা। कि बहेरन खार्बना वा गाकून वाकाकात व्यवहा नाम वहेरड भारत ? चाकाव द्याय सहराग छार। पूत्र कतिवात चाकाका

क्रियात । निष्म शंकीय शार्श निश्च चाहि-चर्या कीवरनम লক্ষ্য শ্বরূপ পরব্রন্ধ চইন্ডে দূরে রনিয়াছি, গভীর ভাবে প্রাণে এরপ অমুভব করিতে পারিলেই প্রার্থনা আদিবে। ভাদা ভাদা রূপে একটু বোধ চইলে প্রাণে গভীর আকাজ্ঞা জিমিনে ना। निक्त कान अवद्यात आहि हेडा विष्यताल उनगरित कविट्ड भारतित्व आकाष्क्रा अग्रिट्ड भारत । वित्यव विश्व করা ভিন্ন অনা কোন উপারে গভীর অভাব বোধ কতকটা জাগাইরা দিতে পারে সভা, কিন্তু শিশেষ গভীর ভাবে জাগা-हैना मिए पारतन ना। कावन डे पनिक्त मण्यूर्ण हिसात कार्या। ৰভই চিন্তা করা যাইবে জ্ঞান তভই পৰিকার হইবে। আর সকল উপায়ই বাহিবের, ভাহাদের এখানে বিশেষ ক্ষমতা নাই। কাবেই এ অভাববোধ পকে গভীর আত্মচিস্তা বা আৰু পৰীক্ষাই একমাত্র উপার (অবশ্র বন্ধকুপা ভিন্ন আমনা অনা উপায়ের কথাই বলিভেছি ) এই উপার যে নিশ্চর ফল প্রদ ভাগাও সহজেই ব্যা ঘাইবে। গভীব ভাবে নিজ আবেখা চিন্তা করিলে পুজ্জারুপুজ্জকেপে পরীকা করিলে নিজ তরবভা বিশেষ রূপে অফুভন চটনে ও ভাহা প্রাণে মৃদ্রিত চইবে। একথা সহজেট বুঝা যাইতেছে ইচা না চইয়া পারে না। ইহা স্বাভাবিক নিরম। কাষেই আর্চিস্তাই শ্রেষ্ঠতম এব॰ নিশ্চিত ও স্কাপেকা অধিক ফলপ্রদ। এ উপার অবলদন্ত স্কলারে প্ৰাক্ষে সহজা। মানুষ যাত তুরবস্থাপার হউক না কেনি, যাত গভীব ভাবে পাপে নিমগ্ন থাকুক না কেন সকলেব নিজ অবস্থা সম্ভ্রে চিম্বা কবিতে পারে। সামানা ইচ্ছা হইলেই এপথ ষ্মবলম্বন করিতে পারে। আমরা দেখিতে প'ইতেছি উপবি-লিখিত উপার চতুইয়ের মধ্যে চতুর্থটী ছারা অর্থাৎ নিজ অবস্থা চিন্তা ছাবা স্কাপেক। বেনী প্রিমাণে উপকৃত হওয়া যায়। শুধু ভাতা নতে, চতুর্থ উপায়টা সকল সময়েই ফলপ্রাদ। এ প্রণালীতে সাধন করিলে কোন মতেই বিফল হইতে হয় না। এখন প্রমাণিত চইল আমাদের সাধন প্রাণালী উন্নত ধর্মজীবন লাভ পকে সম্পূর্ণ কার্য্যকারী।

মূল প্রশের মীমাণসার পূর্বের আরও করেটী বিষর সক্ষদ্ধে আলোচনা করা প্রেয়েজন, কি ভাবে সাধন করিলে এই প্রণানীতে ফল পাওয়া গাইবে না তাহা দেশা উচিত। প্রাথনা আরাধনা কি তাহা বলা হইরাছে, কি নর সে বিষর কিছু আলোচনা করা প্রয়োজন। ইহার পর আমরা আলোচ্য বিষয় সক্ষদ্ধে আম্বাদের মত প্রদান করিব।

(ক্রমশঃ)

### ব্রাহ্ম পর্যাটকের পত্র। উশারনাথ।

মধ্য প্রদেশের অন্তর্গত নিমার অথবা থাণ্ডোরা জেলার মধ্যে মান্দাতা নামক একটী জান আছে। উকারনাথ সেই মান্দাতার নিকট নর্ম্মানদীর অপর পারে অব্যিত। থাণ্ডোরা ভইতে হোলকার টেট রেলপ্যের রাস্তার থেঁড়ি ঘাট নামক নর্মাণ নদীর তীরে একটা টেসন আছে, সেই টেসন হইতে উকারনাথ ৭ মাইল। থেঁজিবাট চইতে উকারনাথ বাইণার বেশ পাকা রাভা আছে; বাওরা আসার জনা গরুর গাড়ী পাওরা বার।

ধেঁজি ঘাটে একটা বালালী ব্ৰহ্মচারী আছেন, তাঁচার সচিত্ব আলাপে জানিলাম তিনি প্রার ২৫ বংসর চইল ঐ মঞ্চলে আছেন, ৩৪ বংসর চইল তিনি থেঁজি ঘাটে নর্ম্মান নদীর তীবে একটা ধর্মশালা প্রস্তুত কবিরা সেধানে বাস করিতেছেন। অতীত্ত অস্ত্যাগত আসিলে তিনি তাঁচাদের আলারাদি দিরা সেবা করিয়া থাকেন। ব্রহ্মচারী মহাশর নিজেব আপ্রমে কোন প্রকার মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠা করেন নাই। প্রণবাদি মন্ত্র জপ করিরা থাকেন। তাঁহার জন্মদান তগলি জেলা। এক্ষণে বৃদ্ধ চুইরাছেন।

এই ব্ৰহ্মচাৰী জী কৰিলেন যে ওঁকাৰনাপের মহাদেবের নামান্ত্রপাৰে ঐ ভানের নাম ওঁকাৰ নাম ওঁকাৰনাথ। আহি ঐ সহাদেব আছেন সেই পাহাড়ের নাম ওঁকাৰনাথ। আহি ঐ পাহাডেৰ চারিদিক ঘুৰিয়া বিশেষ কপে প্র্যাৱেক্ষ্ম করিরা দেখিয়াছি যে পাহারটীর আকার কডকটা ওঁএর মত।

এই ওঁ আকৃতি পাহাডটীর দৈর্ঘা প্রায় ২ মাইল ও প্রস্ত हু মাইল হুইবে। ইহাব সন্মুপ দিয়া পূর্সবাহিনী নর্মদা নদী গল্পীর শব্দ করিতে কবিতে প্রবাহিত হুইতেছে এবং পাহাডের মন্তক দেশ হুইতে নর্মদার একটা শাখা বহির্গত হুইয়া (এই শাখাকে স্থানায় অধিবাদীবা কাবেবী কহে ) পাহাডটীকে বেইন কবিশা আবার পাহাডের পাদদেশে মূল নদীর সহিত মিলিত হুইয়াছে। ইহাতে পাহাডটীকে একটা দ্বীপের নাায় দেপা যায়।

এই পাহাতের উপর উঠিলে চতুর্দিকের প্রাক্তিক দৃষ্ট অতি স্থানর দেখার। সেই স্থানের চতুর্দিকেই পাহাড। নর্মান নদীর উভয় কুল আমাদের দেশের নদীর বঁগেধন ন্যার। পাহাছ শ্রেণী প্রাচীনের মত মস্তক উন্নত করিরা শোভা পাইতেছে। ইহাতে উক্ত স্থানের সৌন্দর্যা ও গান্তীর্যা সাধকের প্রাণে নিশেষ ভাবে প্রবেশ করিরা, সেই অনস্ত বিশ্বনির্মাতাকে স্মুবণ করাইরা দেয়। সেই জন্য বোধ হয় এই স্থান হিন্দুসাধকদিগের একটী প্রিত্ত তীর্থ বশিয়া নির্দিই হইয়াছে।

এই পাছাডের পাদদেশে একটা ছোট সহরের মত বাজার আছে, সেই বাজারের মধ্যক্তলে ওঁকার নাগ নামক মহাদেবের মশির। এই মহাদেব দেখিবার জনা নানাদেশ হইতে হিন্দু- তীর্থবাত্রীগণ আসিরা মহাদেব দেশন ও পুলাদি দিরা থাকেন। এপানকার লোকেরা প্রাবশ মাসকে পুণামাস মনে করেন। সেই জক্ত প্রাবশ মাসে এখানে যাত্রীদিগের অভ্যক্ত ভীত হয় এবং অনেক লোক পুণ্য হইবে বলিয়া এই স্থানে সমক্ত প্রাবশ মাস বাস করিয়া থাকেন।

এই কুত বাজারের পূর্ব দিকে কিছুদ্রে ঐ পালাড়ের মধা দেশে করেকটী গুলা আছে, তালাতে করেক জন সাধু বাস করিয়া পাকেন। এই অল সংখাক সাধু এক একজন এক এক সম্প্রদার ভূকা, সকলের গুলাভেই দেকভার মুর্বি আছে এ<sup>7</sup>ং প্রায় সকলেই গাঁলা ভালাদি ধাইরা থাকেন এই। একটা শুহাতে আমাদের ত্রাহ্মবন্ধু প্রভের বাবু প্যারীণাল (चाव महामन थाटकन, चामि डाहान खहाटिहे क्रिक मश्राह ছিলাম।

প্যারী বাবুর কঠোর বৈরাগ্য ও সাধন ভঙ্গন দেখিয়া আমার মহাত্মা বৃদ্ধদেবের কথা স্মরণ হইত, বাস্তবিক তাঁহার বৈরাগা ও সাধন দেখিলে তাঁহাকে দ্বিতীয় বৌদ্ধদেব বলিয়া বোধ হয়। ভিমি ভোরে উঠিয়া শোচাদি করিরা একটা বিশেষ আসনে विषया धारिन निमध हन, छाहात श्रेत मधारू नमस्य ২०।১৫ मिनिटित अन्न একবার উঠিয়া মানাদি করিয়া আবোর ठिक मक्तात धकड़े शुर्व्य डेठिश ধ্যানে নিম্ম হন। একপোরা আন্দাল হ্র ও কিঞ্চৎ বেলপত্র বাটা থাইরা পুনরায় ঘণ্টা খানেক বাদে সাধনাতে নিযুক্ত হন। রাত্তে ২।৩ ঘণ্টামাত্র নিদ্রা যান, কোন কোন দিন আবও কম নিদ্রা যান বলিয়া ৰোধ হয়। এইরপে তিনি প্রায় আহার নিদ্রা পরিত্যাগ করিয়া কঠোর সাধনাতে নিযুক্ত আছেন। তিনি এখন মৌনব্রত অবলম্বন করিয়া আছেন, কথা কলেন না, আমার সহিত তাঁহার লেখালেথির ছারা কিছু কিছু **इहे**छ।

ক্রমশ:

### প্রেরিত পত্র।

(পার ধ্বেরকদিগের মতামতের জন্ত সম্পাদক দায়ী নছেন, কিখা কাহারও পত্র ফেরত দিতে বাধ্য নছেন ) অভ্রান্ত গুরুবাদ ও ব্রাহ্মধর্ম।

পূकाপान और्क छत्त-(कोमूनो मन्नानक মলাশয় সমীপের।

মহাপদ,

গতবারের "ভত্ত-কৌষুদী"তে উপরোক্ত বিষয়ে একখানি পতা বাহির হইয়াছে। আশা করি ইছা বারা আক্সমাজের विस्मय कणााण माथिक बहेरव: कात्रण हेशास्त्र अनुम्मारतम किन्ना বিনিমন্ন করিবার একটা স্থবিধা হইরাছে। পাথবাতে মত कगह, विवाम, छाहाब अपनाकत्रहे मृत्न शत्रम्भारतत्र मध्य অক্সতা বিদ্যমান; স্থতরাং যাহাতে অক্সের মনের ভাব জানিবার शक्क श्रुविधा हम्, छाहा कलाह मामान वस्त्र नहि । धहे कातराहे खाइ मानात्रक्षन वावृत्र भावधानित्क मृत्राचान मान कता छे हि छ धावश (य फिल्मा) शखशानि वानित इत्तेताह, छविवत जकत्वत्रते मनाराती र अत्र कर्खना । ¿ दाक्त गर्भ अञास श्वरूनामरक वह मिन हरेन नमाधिए कविता निम्हित मन्न चष्ट्रमहित्त वान कतिरङ-हिल्लम ; र्हा९ धरे भक्त चीत नमापि रहेट उथान कतिया সমাজে বিচরণ করিতে আরক্ত করিয়াছে, ও আপনার গাতের পুতিগদ চারিদিকে ছড়াইরা দিতেছে। এখন আর নিশ্চেষ্ট थाकिल हिन्द ना । श्वक्रवामी लाज्यत्व कि विनवाब आहर. ভাষা জানির। জালোচনাবারা বাহাতে আমরা একটা ভির निकारक खेमनीक हरेरक भावि, खबिरत कारकाक वारकार है क्यीन इहेबा निष्म करबक्ती कथा विश्व । आणा कति वकुशन অৰ্হিত্চিত্তে আমার প্রধানি পাঠ ক্রিরা স্বীর স্থীর মন্তব্য প্রকাশ করতঃ গুরুষার সহত্রে যাহাতে একটা নিশ্চিত মীমাংস। হটর। বার, তবিবরে সহারতা করিবেন। বে সমাজে স্বাধীন চিন্তা অপ্রতিহত, সে দমাজে ভির ভির বাজির চিন্তা ভির বিষয়ের দিকে প্রবাহিত হওয়াই স্বাভাবিক। একতা রক্ষা করিতে হইলে পরস্পরের প্রতি শ্রহা রাধিরা ছিরচিত্তে ও নিষ্ঠার পৰিত বিরোধী মতের আলোচনা করিরা নির্দারিত সভাের অনুসরণ করাই সর্বাঞ্জি উপার্। আমবা যেন এই মহৎ সভ্য বিশ্বত না হই।

শ্রমের মনোরঞ্জন বাব লিখিরাছেন:---

"আমার মনে হয় ত্রাহ্মধর্মের সাধনতত্ত্বে যাতা মূলমন্ত্র ভাচারট উপর অভাস্ত গুরুবাদের ভিত্তি প্রতিষ্ঠিত। জীবত্মার স্থিত প্রমাত্মাব সাক্ষাৎ যোগই ব্রাহ্মধর্ম্মের মূলভত্ত্ব।"

কথাটা নিভাস্ত আত্মবিরোধিতা দোষে দৃষিত বলিয়া বোধ হইতেছে। জীবাঝার সহিত প্রমাঝার সাক্ষাৎ যোগ যাদ শীকার কর, ভাষা ফইলে ওরুর সম্বন্ধেও সেই যোগ ষেরূপ সম্ভব, শিব্যেব সম্বন্ধেও সেইরূপই সম্ভব ; স্থতরাং যদি অভ্রান্ত গুরু স্বীকার কর, তাহা হইলে অভ্রান্ত শিব্যও স্বীকার করিতে চটবে। অভএব যদি কেবল অভান্ত প্রকৃই স্বীকার তাল চলল জীবাত্মার সহিত পরমাত্মার বোগ কেবল শুকুর সম্বন্ধে স্বীকার করা চটল, শিষ্যের সম্বন্ধে আব স্বীকার করা চইল না; স্তরাং জীবাত্মার সচিত পরমাত্মার যোগ বৃগপৎ স্বীকার ও অস্বীকার কবা হুইতেছে। আয়বিবোধিত। দোষ पाछिन ना कि ? आत यनि शक्त अ निया छ छत्त्रहे अला ह हन, (মনোরঞ্জন বাবুর অভান্তভার ভিত্তি আন্তভ: তাহাই প্রমণে করিতেছে,) তাহা হটলে শুরু ও শিষ্যে কোন প্রভেদ রি ল না, ত্তৰনে এক হইর। গেলেন, আমাদেরও বিবাদ মিটিয়া গেল। এতলে এই আপতি উঠিতে পারে যে, শিষাও অভ্রাম্ভ হইতে পাবে. কিন্তু সাধন সাপেক্ষ। বেশ কথা। কিসের সাধন ? অবশ্র পরমাত্মার সহিত যোগেবই সাধন, কারণ মনোরঞ্জন বাব্ বশিয়াছেন, ভাহাই অভ্রন্তেভার ভিত্তি। স্কল আ্যাবই স্তিভ ষধন পরাত্মার একই সম্বন্ধ, তখন গুরু যে প্রাণালী অবলম্বনপূকাক পরমেখরের স্থিত সাক্ষাৎ যোগ অফুভব করিয়া অভান্ত হুহুরা-हिन, भिषादक छिक त्मरे थानानी करनायन कतिएक रहेरत, এবং সেই প্রাণালী ভাষারও নিকট প্রকাশিত চইবে; স্বভরাং ওরের আনে দাঁড়োটবার ছল কোথায় ? একটী দৃষ্টাপ্ত গ্রহণ করা যাউক। মনে কক্ষন এক ব্যক্তি ঢাকার গিয়াছিল, আন্বে এক वाकि हाकांत्र याहेरव ; फेंडरप्रतहे धकरे भर, धवर धकरे वाकि উভরেরই নেতা। এরূপ ছলে শেষোক্ত ব্যক্তির পক্ষে পুর্বোক্ত वाकि कि अरुगविष्ठक ? कथनरे नहि । तिरेक्ष, तकन मानत्वतरे গন্তব্যস্থান ও পথ ষথন এক এবং ঈশ্বর ষ্থন সকলেরট নেতা, ভুখন যিনি একটুকু অগ্রাপর হইয়াছেন, ভিনি ব্যতীভ আমাব চলিবেনা কেন ? এতহাতীত ঋক অভাক্ত হইলে শিবোর কিছুই লাভ নাই; কারণ শিষ্য যতক্ষণ গুরুকে অন্রান্ত বলিরা বন্ধনীল হওয়া উচিত মনে হইডেছে। আমি এই কর্ত্তব্যবৃদ্ধির । না জানিতেছেন, অর্থাৎ শুক্ল বে প্রণালীতে সভ্য লাভ করিয়া

অল্রান্ত হইরাছেন, শিব্যপ্ত সেই প্রণালীতে সত্য লাভ করিয়া আল্রান্ত না ইইতছেন, অর্থাৎ যতক্ষণ তাহাতে অল্রান্ততা দর্শনের চক্ষু না ফুটতেছে, ততক্ষণ গুরুর অল্রান্ততা শিষ্যের সম্বন্ধে কিছুই নছে। এবং শিষ্য যথন স্বয়ংই অল্রান্ত ইলেন, তথন ত চুই জনে একাসনে আসীন হইলেন, এবং গুরুব আর প্রয়োজন রহিল না। বস্ততঃ অল্রান্ত গুরুবাদ স্বীকার করিলেই তাহার সঙ্গে সধ্য মধ্যবর্ত্তিবাদ স্বীকার করিতে হয়, স্তরাং মানবান্মার সহিত প্রমাত্মার সাক্ষাৎ যোগ অন্ততঃ শিষ্যের সম্বন্ধ অস্বীকার করা হয়; কারণ গুরু অল্রান্ত বলিলেই তাহার সঙ্গে সঙ্গে বলা হইল যে শিষ্য অল্রান্ত নহেন, অর্থাৎ অল্রান্ত ঈশ্বকে প্রাণে পাইতে পাবে না; স্ক্তরাং তাঁহাকে গুরুবাধী মধ্যবর্ত্তীব আশ্রন্থে গাকিতে হইবে।

শ্রমের মনোবঞ্জন বাবু অভান্ত গুরু প্রমাণের জক্ত যে যুক্তি অবলম্বন করিয়াছেন, তাহা কতদ্র সারগর্ভ, এখন তাহারই বিচারে প্রবৃত্ত হওয়া যাউক।

- ১। ঈশবের বাণী অভান্ত;
- ২। ঈশ্বের বাণী মানবান্ত্রার প্রকাশ পার।

উল্লিখিত বাক্যন্তর (premiscs) মনোরঞ্জন বাবুর নিজের।
কিন্তু এই ছই বাক্য চইতে যুক্তি শাল্লের নিয়মান্ত্র্যারে কি
কি সিদ্ধান্তে (conclusion) উপনীত হওয়া যার ? এই কি নয়
যে "মানব অল্রন্তে" ? মানবাল্পা বলিতে কিছু ব্যক্তি বিশেষের
আল্লা বুঝার না। স্থতরাং মনোরঞ্জন বাবুর বাক্যন্ত্র কেবল
ব্যক্তি বিশেষের অল্রন্তে প্রমাণ করিতেছে না, সমগ্র মানব
আতির অল্রন্তি প্রমাণ করিতেছে। মনোরঞ্জন বাবু পরে
বলিয়াছেন, যে এই বাণী শুনে সেই অল্রন্তা কিন্তু 'শুন'
আব প্রকাশ পাওয়া একই কথা। সকলেই যদি অল্রন্ত হইল,
ভাহা হইলে সকলেই অল্রন্ত শুক,

পুক্তে পুক্তে ধূল পরিমাণ। দশ বিশ গণ্ডা ভূতলে শয়ান॥

এতে গাতীত সকলই প্রক্ষর হইয়া গেল, শিষ্য বেচাবির আরে দাঁড়াইবার স্থান রহিল না।

আঁর একটা কথা। 'শুক' সম্ম বাচক শব্দ; অর্থাৎ শুক্
ৰলিকেট শিষ্য বুঝার, এবং শিষ্য ব্যতিরেকে শুক্র ধারণাট
চর না। সূত্রাং শুক যাদ অলাস্ত হন, তবে তিনি শিষ্যেরট
সম্মন্ধে অল্লাস্ত, অর্থাৎ শিষ্য যদি তাঁহাকে অল্লাস্ত বলিয়া জ্ঞানেন
তবেই তি'ন অল্লাস্ত, নতুবা নর। সত্যের প্রত্যক্ষ প্রকাশ
ভিন্ন যথন অল্লাস্তভার নিদর্শন পাওয়া যায় না, এবং শিষ্যের
মনে যথন স্তা প্রত্যক্ষভাবে প্রকাশিত হয় নাই (করেণ।
প্রকাশিত হইলে আর গুক্র প্রয়োজন থাকিত না); তথন
শিষ্য শুক্রকে অল্লাস্ত বলিয়া জ্ঞানিতে পারেন না, অর্থাৎ তিনি
অল্লাস্ত নহেন।

আব একটা কথা। মনোরঞ্জন বাবুর দ্বিতীয় বাক্য (the second premise) শিষ্যের সম্বন্ধে সভ্য নতে; কারণ শিষ্য যভক্ষণ শিষ্য, অর্থাৎ যভক্ষণ ভাহার নিকট প্রভাক্ষভাবে সভ্য প্রাকাশিত হয় নাই, ভতক্ষণ তিনি জানেন না যে মানবের সাহ্মার সভ্য প্রভাক্ষভাবে প্রকাশিত হয়, অর্থাৎ স্বীশ্রের বাণী শুনা যার; স্থাতরাং তিনি কি প্রকারে বলিতে পারেন যে "ঈশ্বরের বাণী মানবাত্মার প্রকাশ পার" ইছা সত্য। যুক্তি শাল্রের নিরম এই যে, যদি চুইটা বাব্যের (premises) মধ্যে একটা অসত্যা হয়, ভাহা হইলে সিদ্ধান্ত ও (conclusion) অসত্য। স্থাত্রাং মনোরঞ্জন বাব্র "গুক অপ্রান্ত" এই সিদ্ধান্ত যাহা "ঈশ্বরের বাণী মানবাত্মার প্রকাশ পায়" এই অস্ত্য বাক্য (premise) হইতে করা হইয়াছে, ভাহাও অস্ত্য; অর্থাৎ গুরু অপ্রান্ত নহেন।

আব একটা কথা। মানব যখন পরিমিত, অর্থাৎ স্ত্য যখন পূর্ণকপে তাঁহাব মধ্যে প্রকাশিত হইতে পারে না, তথন তিনি চিবদিনই অজ্ঞ অর্থাৎ ভ্রমশীল, অর্থাৎ ভ্রাস্ত; স্কুত্রাং শিষ্য যদি জানেনও যে শুরুর মধ্যে কোন সত্য প্রকাশিত হইরাচে, তথাপি তিনি বলিতে পারেন না যে শুরু অভ্রাস্ত, অর্থাৎ অপূর্ণ মানব পূর্ণ হইরা গিরাচে, সাস্ত অনস্ত হইরাছে। অত্এব শুকু কোন ক্রমেই অভ্যাস্ত হইতে পাবেন না।

অবশেষে শ্রহের মনোরঞ্জন বাবু বলিয়াছেন, "ইহাছে কোন মানুষকে অল্রান্ত ৰলা হইল না। কেবল অল্রান্ত গুরুর কথাই বলা হইল।" তাহা হইলে মনোরঞ্জন বাবুর মতে গুরু মানুষ নহেন; কারণ তিনি স্পাইত: গুরু ও মানুষ এই চুই শ্রেণীবিভাগ করিলেন। গুরু যদি মানুষই না হইলেন, তবে "মানবান্তার ঈশ্বরের বাণী প্রকাশ পার" এই যুক্তির হারা গুরুর অল্রান্তা প্রমাণ হইল কিরপে ? একেই বলে যে ডালে বসা সেই ডালই কাটা।

শ্রমের মনোরঞ্জন বাবু যুক্তিবারা গুরুর অল্রান্ত তা প্রাস্থালিক। তাঁহার যুক্তিবারা যদি গুরুর অল্রান্ত তা প্রাস্থালিক। তাঁহার যুক্তিও আল্রান্ত কারণ লাভ্ত কারণ লাভ্ত কারণ লাভ্ত কারণ লাভ্ত কারণ কারণ আল্রান্ত হয়, তাহা হইলে তিনিও আল্রান্ত; কারণ কারণ কারণ কারণ কারণে বাহা নাই তাহা কার্য্যে থাকিতে পারে না; কারণে বাহা নাই তাহা কার্য্যে থাকিতে পারে না; কারণে বাহা নাই তাহা কার্য্যে থাকিতে পারে না; কারণে বাহা নাই তাহা কার্য্যে থাকিতে পারে না! তাঁহার যুক্তি অপেক্ষা অল্রান্ত গুরু প্রায়াণ করে, তাহা হইলে তাঁহার যুক্তি গুরুর অপেক্ষা অল্রান্ত হয়, তাহা হইলে তাঁহার যুক্তি গুরুর অপেক্ষা অল্রান্ত হয়, কারণ কার্য্য অপেক্ষা কারণ শ্রেষ্ঠ , ক্ষুত্রনাং মনোবল্পন বাবু মহা মহা অল্রান্ত, অর্থাৎ তান অল্রান্ত গুরুর বিশ্বান্ত।

শ্রেষ মনোরঞ্জন বাব বিলিয়াছেন অন্ত গুরুবাদ বালাপথ বিবাধী নতে। কেন নতে গ্রেষ ঘূলির বলে তিনি গুরুর অনাস্ত তা প্রমাণ করিতেছেন, তাতা যথন মিপ্যা বলিয়া প্রমাণিত ত্তল, অর্থাং গুরুর অন্তাস্ত তা যথন প্রমাণিত ত্তল না, অর্থাং তিনিট লাস্ত্র রাত্যা গেলেন, তথন তাঁহাকে অনাস্ত বলিলে অস্তা কথা বলা তয়। যাতা অস্তা ভাতা ব্রাহ্মধর্ম বিরোধী, স্ত্রাং অন্তাস্ত গুরুবাদ ব্রাহ্মধ্যা বিরোধী।

"ওঁ প্রদায়পাহিকেবলং"।

দীন্তীন শ্রীম্বিনাশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়।

অলান্ত গুরুবাদ সম্বন্ধে আমর। আরও অনেকগুলি পত্ত প্রোপ্ত হইরাছি। ক্রমে প্রকাশ করিবার ইচছা মাছে। न्दिनम् निर्वामन विहे---

১৬ট অগ্রচারণের তত্ত্বকৌমুদীতে শ্রীবৃক্ত মনোরঞ্জন গুল মহাশয়েব পত্র থানি পড়িয়া শক্ষিত হইরাছি। অসত্যকে যার-পর নাই ভার করি, কিন্তু সকল সময় তারাকে চিনিরা উঠিতে পারি, একপ বিদ্যা বৃদ্ধি মাই। স্মৃতরাং গভীর আধ্যাত্মিক বিষয়ের অবভাবণার পূর্বেই যদি "গৌড়ামি" "অন্ত:সাব শৃন্যভা" ইত্যাদির বিভীষিকা এবং সতা ও বিশ্বাদের বিরোধ বিষয়ক ভুমিষ্ট শ্লেষের করেক মাত্রা সেবন করিয়া লইতে হয়, তবে আর বজি লোক সহজেই শক্তিত হইতে পারে। পুনর্জনের দন্তান্ত্রী পডিরাও আখন্ত চইতে পারি নাই। কারণ এখনও সরল ভাবে (কিন্তু "অনিচারিত ভাবে" নয় ) বিখাস করি যে দরামধেব রাজ্যে একবার মহুষা দেচ ধারণ করিয়া, নেকডে বাখ, ঢোঁডো সাপ, চিংডি মাছ, ওলাউঠার বীজ ইত্যাদি পর্যায় ক্রমে অধোগমনের বাবস্থা নাই। ব্রাহ্ম অভিভাবকগণ যভই চিস্তাশীল, উপাসনাশীল এবং শ্রদ্ধাম্পদ হউন না কেন, তাঁহা-দের উল্লিথিত কপ বিখাস থাকিলে, অস্ততঃ এবিষয়ে আমি তাঁহাদেব পদাতুদ্বণ করিতে অসমর্থ। সভাই যথন আমা-দিগের শাস্ত্র, তথন অসত্যে কি কবিয়া বিশ্বাস স্থাপন করি? এর নাম যদি গোঁডোমি হয়, তবে হে গোঁডামি ! তুমি কমিও না, কমিও না, কমিও না।

ত্মীকার্য্য-অধ্যায়ের অব্যবহিত পূর্মবর্তী পারাগ্রাফটীর প্রার-ভেই "ব্রাক্ষধর্মের সাধন-তত্ত্বে মূলমল্লের" উপর অভান্ত শুরুবাদকে প্রতিষ্ঠিত কবা হইয়াছে। "প্রেভুপরমেশ্বকে প্রীতি করা এবং তাঁহার প্রিরকার্যা সাধন কবা", ইহাই ফ ত্রাহ্মধর্ম, ইহাই ত তাহার সাধন, ইহাই ত তাহাব তম্ব, ইহাই ত তাহাব मृग, हेशहे ७ ७ शित्र मञ्जा हेशांड 'अञाञ्च' बहेरा बहेरा गर्सा (अ निष्कृत है अञ्चाल इश्वा धाराजन, कांत्र निर्माहन करी। चत्रः। এ क्यांने खर मध्नारात्र डेक व्यवस्त्र व्यात्नाता नरह বলিয়াছেন। আর বলিয়াছেন, "মানুষকে অভ্রাস্ত বলা চই-ভেছে না, অভাস্ত গুরুব সম্বন্ধে আলোচনা করা চইছেছে।" অভ্রাম্ভ গুল্পার কি মহুষ্যত্ব লোপ পার 💡 বাস্তবিক ত্রিভূজের বাহ ছাড়িয়া কোণ মাত্র লইয়া "গদভদেতৃ" \* লভ্যনের চেষ্টা বেরূপ, শুরু মরাশারের এ চেষ্টাও দেখিতেছি সেইরূপ। স্থতরাং আগে এবিষয়টার একটা মীমাংসা না চইলে চলিতেছে না। শুকু অভান্ত চইলে কি চইল, যাদ আমি তাঁচাকে চিনিতে গিয়া ভূল ক্রিয়া বাদলাম ? অভ্রাস্ত গুরু নিণ্যের একটা অভ্রাস্ত উপায় চাতি। দে উপায়টী কি শিষা নিদ্ধারণ করিবেন? ভবে ত তাঁহাব নিজেরট আগে অভায় হওয়া চাহি। আর অনুস্তি হইলে তারে গুরুৰ প্রয়োজনই বাকি ? সে উপায়টী কি ৩৪ক বলিয়া দিবেন ? তাহা চইলে ত নিকাচনই আগি ম্বানগামী দর, কারণ ভাহার পুর্বে গুরুকে এচণ করিতে • हेरङ एहं।

অভ্ৰাম্ম প্ৰক্ৰু নিৰ্ণয় সম্বন্ধে যদি এত গোল, তবে তাঁহার অন্তিম লইয়া তৰ্কে কি লাভ ?

"অভাতত" মাকুষ কি চওরা সম্ভব? মাকুষ যে অপূর্ণ; আর ভার চিরকাল উন্নতি চইবে-অর্থাৎ সে চিরকালই অপূর্ণ থাকিবে, নচেৎ উন্নতি বন্ধ চটবে। অপূর্ণ যে, সে কি অভাস্ত চটতে পারে ? স্তরাং গুরু যদি অল্রাস্ত চটতে চাচেন, তাঁচাকে মাতৃষ ভিন্ন আর কিছু চইতে চইবে। একমাত্র সেই পূর্ণ পুরুষই আমাদের অভ্রাম্ভ গুরু সেই জন্ত সর্বাত্রে ভিকা করি "অসভা চইতে সভ্যোতে লইয়া যাও।"

গুরু মহাশরের স্বীকার্যাগুলি না মানিলেও অভ্রান্ত গুরুবাদ টিকিতেই পারে না। সে গুলি যিনি মানেন, ক্লিনি যদি মাজুষকে পূর্ণ করিরা দিবার মতন ক্ষমতাশালী পুরুষ না হন. ভবে তিনি ও অভাস্ত গুরুবাদকে টিকাইতে পারিবেন না; কারণ; "মাতৃষ ভ্রান্ত" এই চতুর্থ স্বীকার্যাটীকে ভাষার এড়াইবার যো নাই।

একণে কতকগুলি কণা উপযুচ্পরি রাখিরা পত্তের উপ-সংহার কবিতেছি।

- ১। ঈশ্ব অভ্রাস্ত।
- ২। ঈশবের বাণী অভান্ত।
- ৩। মাফুষ ভাস্ত।
- ৪। মাফুষের শ্রুতি ভ্রাপ্ত।
- विश्वमत्र क्रेचंदतत वागी व्यवित्र छक्कातिक इहेटलह. কিন্তু এমন কোন মামুষ থাকা অসম্ভব এবং অংহাজিক বে. সেই বাণী ভানিতে এবং ভদ্বিষয়ক উপদেশ দিতে তাহার কদাচ ভুল হইতে পারে না।
- ৬। তবেই ত আর মাতুষ অভ্রাস্ত গুরু হইতে পারিল না। উপসংহারে এবিষয়ের অবভারণার জন্ত গুরু মহাশয়কে ধক্সবাদ করি। কিন্তু তাঁচাব নিকট বিনীত নিবেদন এই বে. মতভেদ হইলেই যে প্রতিপক্ষ গোঁডামী, অবিচায়, অসরণতা ইত্যাদি অপরাধে অপরাধী হয়, একপ মনে করিবার কোন কাবণ্ট নাই। বিশেষত: একপ যুক্তিতে আলোচনার উপর এক রাশ্মও আলোক নিকেপ করে না। ইতি।

বিনয়াবনভ

কলিকাতা

শ্রীউপেক্স কিলোর রায় চৌধুবী।

### ব্রাহ্মসমাজ।

উৎস্ব—থালোড় হইতে কোন বন্ধু লিথিয়াছেন ;— নিম্লিথিত প্রণালী অফুসারে থালোড় ব্রাহ্মসমাজের ৬ বাষিক উৎসব সম্পন্ন হট্মা গিয়াছে;

১৮ট কাত্তিক রাত্রে উৎদবের উদ্বোধন ও উপাসনা বাব রসিকলাল পায় সম্পন্ন করেন। ঐ দিন হইতে উপাসক মগুলীর প্রাণে একটা নবস্তাবের স্থার চইয়াছিল।

১৯এ ফার্ত্তিক-কলিকাতা পাধনাশ্রম হইতে আগত প্রীযুক্ত বাবু হরিমোহন ঘোষাল প্রাতে উপাসনার কার্য্য करबन धनः देवकारण जमान शृहर "मशाह माधाह केबादबन"

<sup>&</sup>quot;Asa's bridge."

বিষয়ে কথকত। করেন। এই দিন কথকতা গুনিবার জয় অনেক লোক আসিয়াছিলেন।

২০এ কার্ত্তিক—সমন্ত দিনব্যাপী উৎপব। প্রাভঃকালের উপাসনার কার্ব্য কলিকাতা হইতে সমাগত শ্রীযুক্ত বাবু বিপিন চক্ত পাল সম্পর করেন। মধ্যাক্তে আলোচনা হয়। বৈকালে ধর্ম সম্বন্ধে বিপিন বাবু একটি স্থন্দ্ব বক্তৃতা করির সমাজ গৃহে আগত বহু সংখ্যক লোকের মনোরঞ্জন করেন। রাত্রে উপাসনার কার্য্য হরিমোহন বাবু করেন। উপাসনা মধুর ও হুদয়গ্রাহী হইবাছিল।

২১এ ক্ষাতিক—প্রাতে বাবু ভূবনেশ্বর ভট্টাচার্য্য উপাসনার কার্য্য করেন। বৈকালে বাগনানের বাজারে নগর সংকীর্ত্তন ও বজ্ঞা হয়। রাত্রে সমাজ গৃহে ব্যক্তিগত প্রার্থনা হয়।

২২এ কার্ত্তিক—রাত্রে শান্তিবাচন।

গত ২৯ নভেম্বর ভারিথে থাসিয়া পাহাডম্ভ চেবাপুঞ্জী প্রচার আন্ত্রমের প্রথম সাম্বস্রিক উৎস্ব নিম্নিথিত প্রণালী অমুসারে সম্পন্ন হইয়াছে।

প্রাতে আশ্রমে বাঙ্গালা এবং থাসিরা ভাষায় উপাসনা হয়। বাবুনীলমণি চক্র-বর্তী উপাসনা করেন। সন্ধাকালে আশ্রম প্রার্থনাদি হয়। এবং কুদ্র এফটা প্রবন্ধ পঠিত হয়। পরে বাঙ্গালা এবং থাসিয়াতে প্রার্থনা হয়।

সিরাজগঞ্জ ব্রাহ্মসমাজের পঞ্চদশ বার্ষিক উৎসব উপলক্ষেকলিকাত। চইতে প্রচারক শ্রীযুক্ত নবদীপচক্র দাস এবং শ্রীযুক্ত হরিমোহন ঘোষাল তথার গমন করেন। নিয়নিখিত রূপে তথাকার উৎসব সম্পন্ন হইয়াছে;—

১২ই অগ্রহায়ণ রবিবার—প্রাতে ব্রহ্মমন্দিরে উৎসবের উদ্বোধন ছয়। নবদ্বীপ বাবু উপাসন। করেন। অপরাক্তে ৰাজ্ঞালে কীৰ্ত্তন ও বক্তৃতা হয়। ছলিয়েছেন বাবু বক্তৃতা करतन। द्राजिट्ड शनवात्र मान्यदत छेलामना ७ छेलाम ध्य, নবৰীপ বাবু উপাসনা করেন। ১০ই অগ্রহায়ণ রাত্তিতে মন্দিরে নব্দীপ বাবু "ত্রাহ্মসমাজে ঈশ্বরের শাক্তর পরিচয়" এ বিষ্ধে ৰক্তা করেন। ১৪ই অগ্রহায়ণ সমস্ত দিনব্যাপী উৎসব। ছুই বেলা উপাসনা, উপদেশ, পাঠ ব্যাথ্যা ও আলে,চনা হয়। नवदौभ वावृष्टे ममञ्ज कार्या करत्रन । ১৫ वे जातिरथ मन्ताकारन বাজারের নিক্টবভী ধানগড়া নামক গ্রামে মুসলমানদিগের সভার অদ্যক্ষ আহত চইয়া (স্থানে স্কলে উপস্থিত হন। প্রার্থনার পর নবদীপ বাবু ও হবিমোহন বাবু উভয়ে বজ্তা করেন, সেধানে প্রায় তিন শত লোক উপস্থিত হুইয়াছিলেন, বক্তা গুনিমা তাহারা প্রীত হুইয়াছিলেন। ১৬ই অগ্রহায়ণ উৎস্বের শেষ দিন নব্দীপ বাবু উপাসনা কবেন। উপাসনান্তে শ্রীমান অনাগ वहु भतकात्र द्वान्त्रधर्म्य मीक्षिত इत्।

পাবনা হইতে বাবু কৈলাসচন্দ্র বাগছি লিখিয়াছেন;
পত ৪ঠা ও ৫ই অগ্রহারণ শনি ও রবিবার তইদিন পাবনা
ব্রাহ্মসমাজের সপ্তবিশে সাম্বংগরিক উৎসব সম্পন্ন হইনা
গিয়াছে। প্রচারক প্রীযুক্ত নবদ্বীপচন্দ্র দাস মহাশর এতত্বপলক্ষে
এখানে আসিয়াছিলেন। প্রথম দিন প্রত্যুহে উবা সদীত
করিতে করিতে সহরের অনেক স্থান প্রদক্ষণ করিয়া সমাজে
উপন্থিত হওয়া যায়। ছিতীয় দিনও ঐরপ উবা কীর্ত্তন হয়।
প্রথমদিন প্রাতে মন্দিরে নবদ্বীপ বাবু উপাসনা করেন। অপয়াহে বাজারে কিছুক্ষণ কীর্ত্তনের পর নবদ্বীপ বাবু "সকলেরই
নিজ নিজ কর্মফল ভোগ করিতে হইবে" এই বিষয়ে বক্তৃতা
করেন। তৎপর কীর্ত্তন করিতে করিতে মন্দিরে যাওয়া যায়,
সন্ধ্যান্দালে বাবু হেরম্বচন্দ্র সৈত্র মহাশ্ব "আদর্শ অম্পারে
ভীবন পথে অগ্রসর হওয়া উচিত" এই বিষয়ে ইংরাজীতে

একটা বক্তৃতা করেন। বিতীয় দিন ছই বেলা মন্দিরে উপাসনা উপদেশ পাঠ ও ব্যাখ্যা হয়। নব্দীপ বাবু আচার্যের কার্য্য করেন।

### বিজ্ঞাপন।

আগামী ১১ই জামুয়ারী ১৮৯৩ বৃহস্পতি বার অপরাহ্ন ও ঘটকার সময় সিটিকলেজ ভবনে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের অধাক্ষ সভার ৪র্থ তৈরমাসিক অধিবেশন চইবে।

#### विद्वा विवत्र।

- )। ठजुर्थ देवामात्रिक कार्याविवत्र ।
- ২। আগামী বর্ষের অধাক্ষ সভার জন্ত ভোট গণনাকারী স্বক্মিটী নিয়োগ।
- ত। কার্যানির্কাহক সভার সভা নিয়োগ সম্বনীয় অবাস্তর নিয়মের কিছু কিছু পরিবর্ত্তন সম্বন্ধে কার্যানির্কাচক সভার প্রান্তাব।
- ৪। বিধবা অথবা বিপত্নীদিগের প্রার্কিবাছ সম্বনীয় নির্দ্ধারণ সম্বন্ধ পুনর্কিচারের অস্তু বাবু উমেশচন্ত্র দত্ত প্রত্তাব উপন্ধিত করিবেন।
  - ৫। সমাজের বার্ষিক কার্যাবিবরণ সম্বন্ধে বিচার।
  - ৬। বিবিধ।

সা: ত্রা: সমাজ কার্যালের

২১১ কর্ণপ্রয়ালিস ট্রীট : কলিকাতা ৭ই ডিসেম্বর ১৮১৩ শ্রীগুরুচরণ মচলানবিশ। সা: ব্রাঃ সমাজ সম্পাদক

### ভোটিং পত্র।

আগামী বার্ষর অধাক্ষ সন্তা গঠনের নিমিত্ত ভোটিং পত্র সভ্যগণের নিকট প্রেরিত হইরাছে। যদি কোন সন্তা ভোটিং পত্র প্রাপ্ত<sub>ু</sub>না হন, অন্তর্গ্রহ স্থার্ধক সাধারণ ব্রাহ্মনমান্দ্র কার্য্যালয়ে জানাইলে পাইতে পারিবেন। সাধারণ ব্রাহ্মনমান্দ্রের মফংস্বলম্ভ সন্তা মছোদয়গণকে বিশেষ ভাবে অন্তর্গ্রধ করা যাইতেছে যে ওঁহোরা যেন স্থ স্থ ব্রাহ্মসমান্দ্রের সম্পাদক মহাশন্ত্রপর নিকট হইতে ভোটিং পত্র লইরা এবং ভাগা প্রণ করিয়া আগামী ৫ই জ্প্রারী ১৮৯৪ ভারিথের মধ্যে নিম্লিথিত ঠিকানার পাঠাইয়া আমাাদিগকে বাধিত করেন।

সাঃ বাঃ সমাজ ২১১নং কণ্ওয়ালিস খ্রীট কলিকাভা ১লা পৌষ ১৩০০

শ্রী অবোরনাথ মুপোপাধ্যার। সহকারী সম্পাদক সাঃ ব্রাঃ সমাজ

কোলেব দেশে চঁটবাসা সহরে প্রাক্ষসমান্তের একটি মন্দির প্রতিষ্ঠি। করিবার প্রস্তাব হইরাছে। ইহাতে আহ্মানিক এক হাজার টাকা ব্যর হইবে। সহবটি নিতান্ত সামান্ত ও দরিত্র হুইলেও এপানকার অধিবাসিগণ অনুগ্রহ পূর্বক ইতিমধ্যেই ৩২১ টাকা স্থাকর করিয়াছেন এবং আরও শতাবিধি টাকা এয়ান হুইতে সংগৃহীত হুইবার সম্ভাবনা। যদ্যুপি এখনও আনেক টাকার অভাব রহিয়াছে, তথাপি ভগবানের কৃপাও সাধারণের দাতব্যের উপর নির্ভর করিয়া, আমরা এই শুক্তর কার্য্য আরম্ভ করিয়াছ। একণে স্বর্গাধানণের নিকট আমাদের সাম্মর প্রথনা। যে তাঁহারা কৃপা করিয়া এই অনুষ্ঠিত কার্যো সহায়তা করিবেন। দান যুহুই সামান্ত হুউক না কেন সাদরে ও কুহুক্তরার সহিত গৃহীত হুইবে। কলিকান্তা সাধারণ ব্যক্ষসমান্তের পূজনীয় আযুক্ত বাবু মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যার এবং পণ্ডিত নবছাপচন্দ্র দাস মহোদয়গণকে দান গ্রহণ করিবার ভার দেওয়া হুইয়াছে।

চাইবাসা

শ্ৰী শংখার নাথ খোৰ।

**হরা ডিসেম্বর ১৮৯৩** 🕽

সম্পাদ ক



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১৮শ সংখ্যা। ১৬শ ভাগ।

\*

## ১৬ই পোষ, শনিবার, ১৮১৫ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাৎসরিক অগ্রিম মৃল্য ২॥• মফস্বলে ৩ প্রতি থণ্ডের মূল্য ፊ•

À,

জীবন সঞ্চার।

কোমল শিশির-বিন্দু পড়ে কোন্ কণে ? কে সাজার নব তুর্বাদলে 🕈 ষবিভাপে পিল্ল জরু, কে ভাবে গোপনে शिक करत भाक्ति-श्रेष करन **१** प्रिंभिना क कान कार कार्य (म निनित्र, মুক্তাপাতি বিমল প্রভাতে, প্রেয়াশ্রু সলিল সিক্ত মুখে প্রকৃতির দেখি শুধু অরুণ-বিভাতে। ধবার উত্তপ্ত মূপে লিগ্ধ কর দিয়া करत नागु करत मण्डायन १ নে পরশে প্রেম নিন্দু শিশির হুইরা (महे डाभ करत नितात्व? ফানিনা ত কবে পড়ে সে শিশির বারি, मिश्रि अधु भीनार्गा छाहात, সংসার-ভাপিত চিত্তে করুণা তাঁহারি গোপনেতে বর্ষে এ প্রকার। कार प्रशिवा थाक छेक्नभारन (हरत्र कर्तापन यथा गमा तम :---यवित्त तम कुशातामि त्यन जुममस्य যাবে ভাপ যুডাবে নিশ্চয়, আসিছে বসস্ত কাল, তাপিত সংসারে. ভরুণভা সাঞ্চিনে আবার, জীৰ্ণ অবসন্ন তক্ত অমৃত আসাৱে পাবে, হবে জীবন-সঞ্চার।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

নিরাশা ও আশায় দ্বন্ধ—উৎসব সমাগত। আবার আশাপূর্ণ নরনে ত্রাহ্মগণ মহোৎসবের দিকে চাহিতেছেন। বিদি ক্ষেত্বলেন, তোমরা ত বার বার আশা কর, বার বার

ঈশ্বরের করণ। লাভ কর, অব্বচ বার বার তাহার সমুচিত বাবলার কর না, ভবে আর আশা কর কেন ? আমরা সুক্ত-কঠে ও অবনভমন্তকে আপনাদের সকল জুর্মলভা স্বীকার করি—অথচ আবার আশা করি। এই আশাই আমাদের कीवन । कोवत्नव डेक्ट कामर्न याहाता क्रमत्त्र थावन क्रिवाह्नन, তাঁহাদিগকে নিরস্তর এই নিরাশা ও আশার মধ্যে আন্দোলিভ চইতে হয়। ব্রাহ্মণর্ম আমাদের নিকট যে উন্নত আদর্শ **প্রকাশ** কবিয়াছেন, ভদ্মুসারে ব্যক্তিগত জীবন ও সামাজিক জীবনকে গঠন কবা কি সভল কপা ? যথনই আমরা আছু-পরীক্ষা করিব তথনই দেশিব যে আদর্শ হইতে অনেক দূরে রহিয়াছি। এতবে আমরা সকল সমর আত্মপরীকা করি না, বলিবাই নিরম্বর আৰুগ্লানি সহা কবি না এবং অনেক সময়ে যেখানে আৰু ভাপির কারণ নাট সেণানেও আত্ম-তৃপ্র চট্যা থাকি। ইতার উপত্রে यात्र ताथिए क्रवेटन (य यामाएनत कार्या कतिवात मिक्कि अस । আমরা হৃদদ্ধের উত্তেজনাতে অনেক কার্য্যে হস্তার্পণ কবি, যাচা স্চারুরপে সম্পন্ন কবিছে আমাদের শক্তিতে কুলায় না। অনেক স্থলে আমাদের বিবেকেব চর্ব্বলতা বশতঃও আমরা অনেক কর্ত্রসাধনে পরাত্মণ থাকি। আপনাদের এট সকল তুর্বলিতা স্মাবণ হইলে, বাস্তবিক এক এক সময়ে নিজেদের প্রাক্তি এতই অশ্রমা হয়, যে তথন আবে আপনাদিগকে ঈশ্বর ও মানবের সেবার উপযুক্ত বলিয়া মনে হর না। কিন্তু মানবের আধ্যাত্মিক জীবনেব গৃঢ় রহস্ত এই যে নিবাশার পার্ছে আশা लूकावेशा शास्क ;--- मानत्वत्र इक्वन्छाव मस्युवे ज्ञेश्वत्वतः जवन्छ। নিছিত থাকে। আকৃত বিখাদী ব্যক্তি আপুনার ভুর্বলতা যত্ত পভীররূপে অমুভব কবিয়া থাকেন, তাঁহার করুণার উপত্তে তত্ত গাঢ় নির্ভর উপস্থিত হয়। অতএব শত চুর্বলতা সম্বের আজ আন্ধাণ আশাপূর্ণ অস্তবে প্রভু পরমেখবের করণার দিকে চাহিতেছেন। বংসর যতই শেষ হইয়া আসিতেছে; আছ-পরীক্ষার ভীত্র ছুরিকা আমাদেব হৃদর মনকে কাটভেছে। কত শুভ সংকর:বিফল হইয়াছে, কত অসুঠিত কাৰ্য্য পরিভাস্ক চ্ট্রাছে, কত শুভ উদ্যোগ অসমাপ্ত রহিরাছে; কভ ভ্রম, थ्यमान, व्येषी इन्स्निका मिक्क इहेबाছে। आज कान बाध धक्र पारहन, यिनि मरहादमस्य जानन एकतीत निमान क्रिना

উঠিয়া দাঁডাইবার সময়ে এ কথা বলিবেন না— "আমার যাহা করা উচিত ছিল অথচ করিতে পারিলাম না, প্রভ্যুত যাহা করা অফুচিত ছিল অথচ করিলাম, আমার সে সকল অপরাধ ক্ষমা কর আমি অফুতাপ সহকারে প্রার্থনা করিতেছি।" তবে কথা এই আর মৃত সংকরের শ্মশানে বিসন্ধা রোদন করিয়া কি হটবে, অফুতাপাশ্রেরপ প্রায়শ্চিত্তের পণ উৎসর্গ করিয়া আমানিগকে নবশক্তি লাভের জন্ম প্রার্থনাপূর্ণ অন্তরে উঠিয়া দাঁড়োইতে হইবে। এই ব্যাপার জীবনে সর্ব্রদা চলিতেছে। এই নিরাশা ও আশার ঘুন্দে স্কর্মর আমানের সহায় হউন।

নিত্মভূমি — দৰ্কদাই দেখা যার, মামুষ যতকণ কোন ও শুক্লভর কার্য্যে হস্তার্পণ না করে, কোনও কঠিন ব্রভ সাধনের ভার আপনার উপরে না লয়, তভক্ষণ সে আপনার বলেব আকৃত প্ৰিমাণ জ্বয়ঙ্গ্ম ক্রিতে পারে না। কর্ত্ত্ব্য ক্লেত্র ≢ইতে দৃ′ব বধিয়া অনেক চৰ্বল ব্যক্তি আপনাকে স্বল खाविटल भारत, जीक जाभनारक मान्त्री विरवहन। कविटल शास्त्र, मः कीर्न-८ठा वाक्ति व्यापनारक छेनात महन कविष्ठ পারে, কিন্তু সেই সকল ব্যক্তি যথন কার্য্যক্রে অবভর্ণ करतन, यथन (कान ९ खक्र छव नाग्रिय आश्रनारनत छेशरव প্রহণ করেন, যথন কোনও মহৎ-গাদুণ কার্য্যে প্রিণ্ড করিতে প্রযাসী হন, তথন আপনাদেব গুপালতা আপনাদেব চক্ষে প্রতিভাত হটতে পাকে; তখন অন্তরের গৃঢ ব্যাধি ষেকিছু আছে তাহা ধৰা পডে। আমবা ব্রাক্রণের উচ্চ चाममं कोरान माधन कविटा शिया धरः बाक्समगारकत महर कार्या इञ्चार्थन कांत्र আপেনাদেব অস্তবে কোণায় কি नाःति আছে, তাচা প্রতিদিন লক্ষ্য করিতে পারিতেছি। ইচাত পরম লাভ। ইহাতে বিনয় আনিয়া দেয়। বেথানে বিনয় দেইখানেই ব্রশ্বরূপা। অতএব মঙোৎস্বের আনন্দে প্রাবশ कात्रवाद शृद्धं व्यागता এই विनय्रक सन्द्रा छान अनान कति। আপনাদের কোণায় কোন ব্যাধি আছে, তাহা জানিতে ত আবে বাকি নাই। সেই সকল অরণ করিয়া অবনত মস্তকে এক-রূপার হৃত্ত অপেক। করি। রুষ্টর হল সংস্তৃত প্রিত হয়, পিত্র উচ্চভূমি হইতে ভাহা গড়াইয়া চলিয়া যায় এবং নিয় ভূমিতে গিয়াস ঞ্িত হটলা পাকে। হত। আতে প্রাচীন দুরীস্তে। কিন্তু ইহার আংচীনতা নিব্দন ইহাব গদীবতা বেন আগেণ্ বিশ্বত না হই। এই বে ন হাংসৰ আগৰ এছে একছ কে সম্পিক উপকৃত ১৯: গ্রিন্যে যাত্র মৃত্ত আন্ত পাকিবে উৎসৰ উভোৱই জ্ঞা গাসেৰে। ক • ছৎসবে আগৰ দেপিবাছি ত্রকা রূপার স্রোত বঞার কালেব আয় প্রাবৃতিত **ভটরাতে** ; বাঁহোবা **অহকারে বা অ**থেপ্নে নতুক উলুত কবিয় পাকিয়াছেন, छै।हात्रा सकरल ४क्षिक हहेग्राट्टन, छोटाता (य ওক হলর লইযা ছিলেন ভাহা লইরাই পাডয়া পাকিয়াছেন আমার যাঁহোদের জদয় নিয়ন ভূমির ভাষা আমবনত পাকেয়াছে তীহোরাই ব্রদ্ধ-কুপার স্রোভ প্রাণ ভরিয়া সন্তে।খ ক্রিয়াছেন। অপেদীখন স্থানরে আমোদিগকে বিনয় দিয়া উৎসবের জয় ধাজাত করন।

প্রকৃত নির্ভরশীলতা— আগারাজ্ঞাদন প্রভৃতি সর্ব-প্রকার শারীরিক প্রয়োজনীয় পদ্র্থের জন্ত চিন্তিত না 🕏ইরা সমাকরণে দে সকল বিষয়ে প্রমেখ্রের গুভি ভারাপ্র করিয়া এবং তাঁচার প্রতি নির্ভবশীল চইয়া, তাঁহার ইচছা পালন করা, ভাঁচার প্রিয়কার্যো বত পাক',ইচাই সর্ব সময়ের সর্ব দেশের বিশ্বাসিগণের লক্ষণ বলিয়া অভিচিত চটয়। আসিতেছে। সংসারের চিন্তা একেবারে দূর কবিয়া সে সকল বিষয়ের ভার সুম্পূর্ণরূপে ঈশ্বরে সমর্পণ করিতে পারা একদিকে শেমন विश्वारम् व नक्कन, व्यापनित्क धमकन कृप विश्वत्य अन्त लारकन মুণাপেকী হওয়া এবং মানবের সভোষ্য-প্রার্থী হওয়া বা মানবের উপর নির্ভর করা, ভেমনি হীনত'-গঞ্জক এবং আশস্কা-क्राकः। সাধक मस्त्रनाहे आगात भाग প্রভৃতি বিষয়ে स्रेश्वरत উপবে নির্ভব করিবেন। তিনি যে ভাবে বাপেন,যে ভাবে চ**লিভে** বলেন দে ভাবেই থাকিবেন এবং চলিবেন। ভাহা বেমন গৌববকর তেমনি নিরাপদ। ছকাণ মানণেব প্রতি সাধকের আন্তাএমন কম যে সামাল শারীবিক প্রয়োজন সাধনার্থত ভাচার উপর নির্ভর কবিতে সাচসী হন না এবং ভাচাকে নিরাপদ অবভা জ্ঞান করেন না। ববং সেরপ করাকে অত্যত্ত লঘু গ্-ব্যঞ্জ ত পৌবব-হানিকর বাল্যাত জানেন। সামাত্র শারীবিক প্রয়োজন সিদ্ধ করিবার জন্যই যদি লোকের প্রাভি নিভর করিতে ভবসা না হয় এবং তাহা যাদ ধ্মহানিকর ও বিশ্বাসের অল্লভার পরিচায়ক হয়—যে শ্রীরের মাত্ত অভি অল সময়ই আত্মার সম্বন্ধ থাকিবে, যে শ্রীবের অভিছে কয়েক বংসর বা মাস বা দিনেই প্র্যাব্সিত ১২বে, য'তার প্রাঞ্জন অ:ত সামাক্ত চেষ্টা ও যত্নে সিদ্ধ হৃহতে পাবে, তাহায় ভারই যাদ মানবের আহাত দেওয়া এত আশেষ্ক:-জনকও ধত্মহানিকর व्य, তोक्। क्रेटन (य काश्वा अन्छ कान था। करा-अन्छ छन्नि हरे যাহার স্বভাব, তাহার কল্যাণ সাধনের ভার লোকে কোন্ভর-সায় যে আর একজন কুদ্র, গুকাল ও সামান্য জ্ঞানসম্পন্ন মানবের উপর প্রদান কারয়। নি.শ্চন্ত ১হতে চায় ভাত্র त्रे पुत्रा यात्र ने । मत्रादित अना जातना कता सपारानिकत. ভাষার ভার, অন্য লোকের উপর দেওয়া যদি হীনতা-ব্যঞ্জক অগমানকর হয় ভবে আত্মার ভার অন্য মানবের দেওয়৷ 🍅 চীনতার প্রকাশক নয়, ভাহা কি আত্মার অপুমানকর নয় 🕈 नवीरतत्र ভातर यानि व्यना लादित व्यक्ति । मर्च जत्रा ना इस গ্রা ইত্লে আয়ার ভার কোন্ ভরসায় অনা গোকের প্রতি দওয়া যাইতে পারে? বাঁচারা এরণে আছার ভার খন্য ্লাকের উপর দেন, তাঁহারা হয় আত্মার প্রতি উদাসীন: না হয় আ আয়-জ্ঞানে বঞ্চিত। বঁগোরা ভরণা করিয়া আ আয়ার ভার ঈশ্বরে অর্পণ করিতে পারেন না, তাঁচাতে নিভরশীল হটরা তাঁহার মুণাপেকী হইয়া ও তাঁহার ব্যবভার অনপেকার থাকিতে সাচ্সা হল লা, তাঁচাদের ঈখরের প্রতি শারীরিক ভারার্পণের কথাও অসমত ও অর্থহীন হট্যা পড়ে। ওঁছোরা लेचेत्रक धक्रो। कथात कथा यांग्या बत्न कर्दन। বেলায় উাহাতে নির্ভরশীল হইতে পারেন না। বিখাসী ভিনি, যিনি কি শামীরিক কি আধ্যাত্মিক সকল

শিবরেই সেই সর্বাশক্তিমানের প্রতিই নির্ভরশীণ হন। কেবল
শরীরের ভার নয়; কিন্তু সম্পূর্ণরূপে আত্মার ভারও তাঁচাতে
অর্পণ করিরা আত্মন্তভার স্থিত তাঁচারা ধর্মপ্রেণ চলিয়া
বান। প্রাহ্মগণ শরীর ও আত্মা উভরের ভারই পরমেশ্বরে
অর্পণ করিতে অভ্যন্ত হউন। তাচাতেই পর্ম কল্যাণ লাভ
চইবে। ঈশ্বর আমাদিগকে শুভ মতি প্রাদান কর্মন যেন
দক্ল নিষ্থেই আমরা তাঁহার মুণাপেক্ষী হইয়া থাকিতে
পারি।

কে ঈশ্বরের করুণার সাক্ষী দিবে ?—সর্বত ই ঈশ্ব-द्वित नाम क्षात्रात कतिवाव कमा (वारकत क्षार्शक्रम। (य मक्ष ব্রাহ্ম ন্রনারী ভাঁচার ক্রণায় নবজীবন পাইয়াছেন-ভাঁচার कक्रनात भतिहर भाडेबाएहन-डांडात्रा कि (प्रडे कक्रगांत क्रशा অগতের নরনারীর নিকট বলিয়া,পবিত্র ব্রাহ্মধর্মের শীতল ছায়াতে লকলতে ডাকিবেন না ? আমরা স্কলিট অফুভব করিভেছি স্বাহ্মধর্ণের সমাচার নরনাবীর নিকট বলিবাব জক্ত শত শত ব্রাহ্ম ব্রাহ্মিকার জীবন উৎসর্গ করা প্রাক্সন। যাতা বুঝাতেছি ভাচার অন্থদনণ কবিরা সকলকেই আহ্বান কবিতেছি-ৰাহাৰা ঈশ্বৰ করণ।ববুগাক্ষী দিতে ইচ্ছুক জাঁহাৰা অবায भीतन मन এট कार्या निराशं कक्तन। भीतानत यह (तनी দিন তাঁহাবা ককণার কথা বলিছে পারেন ভত্ই ভাল। যাঁহা-দেব প্রাণে ইচ্চা আছে— ও গাঁহারা তাঁহার ডাক অফুভব কবিছে-ছেন তাঁহারা আর বিশম্ব কবিবেন না। অ'সরা ঈশ্বরের কার্য্যে ঈশ্বরের নামে তাঁহাদিগকে ডাকিতেছি। আমাদেব এই ডাক কাহারও কর্ণে নাপৌছিলেও প্রাভু তাহার কার্যা করাইবাব খন্য লোক ডাকিষা আনিবেন, এই বিখাসেব অধীন চইয়া সকলকে ডাকিতেছি ও তাঁহার নিকট প্রার্থনা করিতেছি, তিনিই তাঁহার কার্যা করাইয়া লইবেন। ত্রাদ্ধর্মের কার্যা-ষ্ঠি বিস্তুদ, এথানে কাষ্য করিবার লোকের সংখ্যা অতি পঞ্চাবে প্রচারক্ষেত্র থূলিবার জন্য প্রস্তাব চই-एकाइ, श्रुक्त राष्ट्राचाम विरागय ভाবে व्यक्तारतत वस्मानन्छ আবিশ্রক। বোমে, মাজাল প্রভৃতি প্রদেশে লোক পেরণ করা অভ্যন্ত প্রয়েজন। জাপান ত্রাহ্মধর্মপ্রচার করিবার অভি উপযুক্ত ক্ষেত্র। কিন্তু তাঁচার ক্ষেত্র কাজ কবে লোক **क्लाशाहर आमहा आगात लेचरतत नाम डाका नवना** वीनिशरक আহ্বান করি,বাঁহারা তাঁহার কার্য্যে জীবন দিছে ইচ্ছুক,তাঁহারা चाव विलय कतिरान ना। এवात मार्माप्यराज शरत रहन जकरण कार्यात्करत्व निर्मय ভारत व्यातम कतिर्घ भारतन। जेचरतत আহ্বান প্রবণ কবিরা উচ্চার করণার নির্ভর করিয়া একায়ো অগ্রসর চউন। তিনিই তাঁচার পথ দেণাইবেন, তি।নই এপথের সভায়, কোনও ভয় নাই। তাঁছার কায়ে। এ জীবন দিতে পারিলে কিনা চইল। ঈশ্বর আমাদের সহার হউন।

কার্য্য-সুশৃজ্যলা— আদ্দনাজের কার্য্যে সুশৃত্যলভার
অভাব সর্বদাই অক্তব করা যায়। উচ্চ আদর্শ লইরাই
অনেক সময় কার্য্যের অক্রিন হর, কিন্তু কিছুদিন বাইতে না

याहेटकहे त्वि (तह जावर्न हहेटक वृद्ध निक्याहि। यदन यदन কতই সুন্দর ছবি গড়িয়া, কাগজে অন্ধিত করিতে গেলাব, কিছ কাগলে আর সেই ছবি আছিত হইল না, এখন সে ছবি क्षाकात । मन भाव त्रहे इति त्रिश्वा मुद्धे इत्र ना । व्याव প্রত্যেক কার্য্যেই এই প্রকার ভাব দেখিতেছি। বিরচিতে ইহার কারণ অনুসন্ধান করিলে, এই শিথিলতার মূলে বিশেষভাবে আমাদের হাদ্য নিভিত যে তুই একটা দেবে লক্ষিত হয়, একলে ভাচারট উল্লেখ করিব। প্রাথম কাবণ এই আমরা অনেক কার্য্য আরম্ভ কবিবাব পূর্ব্বে বিশেষ চিম্বা ও আত্ম-পরীক্ষা করি न। (महे कार्य) পविচालन कतियात्र मेख्नि ও मात्रर्ग आमारम्ब মধ্যে আছে কি না, ভাহার বিষয় বিশেষরপে ভাবি না। অভি দারিত্ব-বিহীনভাবে অনেক কার্য্যের স্চনা করি, কিছু ইহার পরিণাম কে রক্ষা করিবে, কি ভাবে রক্ষা চটবে, ভাচার বিবন্ধ ভাবি না। কোন কার্যো হন্ত দিবার পূর্বে সেই কার্য্য পরি-চালনের উপযুক্ত ব্যক্তিব অনুসন্ধান করা যে একান্ত কর্ত্তব্য **छाडा একেবারে ভুলিয়া বাই। জগতে অনেক সংকার্য্য আছে,** किब कीनरमव नरकात निरक मृष्टि वाथिवा त्रहे कार्या कछ हुकू লিপ্ত চটতে পারিব, ডাচা নিবেচনা না করিরা গুরুতর কার্যো আমবা হাত দি। ভাহাৰ ফল এই হয় যে, সেই ভার্য্যে বিশৃশ্বাণা উপস্থিত হয়।

ইতাব দিতীয় কারণ কার্যো অনুবাগ ও কর্ত্তবাপরারণতার অভাব। আমাদেব জীবনে এক প্রকার এমন লঘুভাব রিহ্নি বাছে বে, আমাদেব জীবনের নিকট যাহা উপস্থিত হর, তাহাই ধরি ও তাহার পশ্চাতেই চুটী। সমাজ ও ব্যক্তিগত জীবনের যেন কোন কেন্দ্র নাই। সংকার্য্য আমাদের জীবনের নিকট আনেক সমর প্রলোভনের কার্যা করে। একটী দৃষ্টান্ত দিলে আমাদেব কথা পরিকার হইবে। ব্রাহ্মসমাজের প্রধান কার্য্য আধ্যান্মিক উন্নতি। সেই কান্য্যের সহাসভাব জন্ত মন্দির প্রতিষ্ঠা, উপাসকমগুলী, আচার্য্য ইত্যা দ। যদি সমাজের অন্তঃ ৪ ৫ জন প্রধান প্রধান ব্যক্তি দিনরতে এই কাজের জন্ত থাটেন, তবে এই উপাসকমগুলীব উন্নতি হয়। কিন্তু তাহা হইতেছে না। মৃথ্য ও গৌণকার্য্যের বিচাবে আমাদের শক্তি অভি অন্ন। আমাদেব লোকের যদ অল্লভা থাকে, অনেক কার্য্যভার না লাইলেই হয়। আশা করি, নববর্যের কার্য্যারস্তের সমন্ধ এই সকল বিষয় আলোচিত হইবে।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### ত্ৰকোৎসব।

কুসুনকুন্তল তরুগণ এবং কুসুনকুন্তলা লতারাজি বধন
স্থান্য স্টর সর্বোত্তম উপাদের ও মনোচর আভরণে ভূবিক
হইরা, সুনোরভে চারিদিক আমোদিত করিতে থাকে, যথন
ভাচারা কুল্যাজে সজ্জিত চইরা উলাসের সহিত মধু সঞ্চরকারী
মধুক্রগণকে প্রমন্ত করিরা, আকর্ষণ ক্শিতে থাকে এবং উচ্চাদের ক্রুক্ আমন্ত্রণ আমন্ত্রত ছইরা লুঠনবাব্যায়ী মধুক্রগণ

यथन चाननारमत हिताछाछ मुर्छन कार्यी धावुछ इहेन्न', म शुक्राएक मूथ निशा मधू मक्षत्र कतिएक शास्त्र धार वालनात्नव স্ব ভাৰত্ৰত চপ্ৰতা বিস্থৃত চইয়া, যথন শাস্তভাবে মধু সঞ্জে 'নিযুক্ত থাকে এবং মধুর ৩৪ন ৩৪ন ধ্বনিতে চারিদিক প্রতিধ্বনিত করিছে পাকে, তথন মনে হয়, তাচারা উৎসব করিতেছে। क ।तम उरमव (महे व्यवधारक हे बना उंति छ, य व्यवधात्र मुर्खाएणका প্রার্থনীয় এবং প্রির পদার্থের সহিত সংযোগ ঘটে। যাতা ৰ কাপেকা শভনীয় এবং আরাম ও কল্যাণপ্রদ তাহার সহিত স্মিলনট প্রাকৃত আনন্দের উপযুক্ত সময়। মধুস্কিক স্দিগের পক্ষে মধু-সংগ্রাহর কালই সর্বাপেক্ষা প্রার্থনীয় কাল। ভাছাই ভাষাদের পিকে সর্বাপেকা শান্তি আরামপ্রদ সময়। সে नभरत खाबारतत चलारवंड चाक्यां शतिवर्द्धन बक्किल बन्न। ভাহাদের স্বভাবসূলভ নিতা চপলতা আর তথন লক্ষিত হয় না। ্ৰে চপল—এমন যে অভির, যাতারা মুহুইকোলও শ্বিরভাবে অবস্থিতি করে না তাহারাও তথন শাস্তভাবে ৰ ধুভাতে মুথ সংলগ্ন কবিয়া আনন্দ মধুপান করে, মধু সঞ্র করে এবং শুন শুন ধ্বনিতে ভাচাদের সুসমযদাভার মহিম। কীর্ত্তন করে। তথন ভালাবা চুর্বল চইয়াও স্বল লয় সহজ্ঞীক হটরা নিভীক হর, তথন তাডাইলে তাহারা **আপন সান** হটতে বিচলিত হর না। মধুকরের পক্ষে ইহাই স্বরাপেক্ষা উত্তম সময় এবং প্রার্থনীয় অবস্থা। তাহাদের পক্ষে ইহাই প্রকত मरकारनन।

উপরে যাতা বর্ণিত তইল তাতা দ্বারাই আমাদেব প্রাক্ষাংসব 奪 তাতা বরা ঘাইতেতে। মানশায়ার পক্ষে সর্বাপেকা । প্রার্থনীয় এবং কল্যাণকর অবস্থা কি ৪ ব্রহ্ম-সন্তাতে নিমগ্র ছইয়া মানৰ যথন আয়োৱ চিৰসম্বল চিৰকালেৰ অবলম্বন অনুত ধন আত্মাছনে তৃপ্ত হয়, যথন তাহার অব্যাম ও বিশ্রাম শ্বল প্রিরতম প্রমেশ্রের স্কিত সাক্ষাৎ হয় এবং তাঁহাতেই ষ্থন আছে। বিচৰণ করে, তাঁহাতেই সাম্বনা লাভ করে এবং ভাঁচার আরামপ্রদ পবিতা সুহবাদে পাকিয়া যথন অনপনার ৰী বন সম্বল পুণাধন সঞ্চয় করিতে করিতেও তাঁচার পবিত্র যশঃ 😮 মহিমা কীর্ত্তন করিতে থাকে এবং সংসারের সকল ভাবনা : বিশ্বত চটয়া, সেট সতা সাগরে নিমগ্র চটরা যায়, যথন বিষ্ণীর বিষয়কামনা, কল্মীর কল্মলাল্যা ডাঁখাকে পাইয়া নিবৃত্ত হয়; ৰখন যশং প্রার্থীর যশংলালসাধনাভিলাষীর ধন-পিপাসা এবং পৃথিবীর সর্বাপ্রকার ভোগ বিলাসীর ভোগ বিলাসের আকাজ্ঞা। ভাঁচাকে পাইয়া, তাঁচার স্থাময় সহবাসে নিমগ্ন হইয়া শাস্ত হয়, চিরাভ্যস্ত চণলতা ও অভিরতা ঘাইরা যখন মধুকরের ভার স্থানর পরমেখরে প্রাণ মন সংযোজন পূর্বক স্থান্তির প্রশাস্ত হয়, তথনই তাহার পক্ষে প্রকৃত ব্রেলাৎসব উপস্থিত হয়। **७५**न **६ ८७ ६**९७ वानस्म मास्त्रात्र कतित्त्र समर्थ इत्र । शत्रमाञ्चात्त्र আত্মা বিহার কবিবে, ভাগতেই নিম্ম হইয়া পুণিবীর অক্ত সৰ্গ বাসনা কামনা অভিক্রেম করিয়া সেই আনন্দ ও শাস্তিব শনি চইতে আনক শান্তি আচরণ করিবে, ইচাই মানবের পক্ষে नर्साराका आर्थनीत, नर्साराका भारामधान ७ नर्साराका क्गानकत भवत्रा ; छाहात्रहे नाम ब्राह्मा राज्य । ब्रह्मा के गहेशा

আনস্ক করা, ভাঁছাতে বিশ্রাম করা এবং ভাঁছাকে পাইরা শাস্ত হওয়া ইহাই অক্ষোৎসবের চরম ফল।

चामत्रा এই উৎসবের चिनिताती, এই श्राकात উৎস্বানশ সভোগ করিবার জন্মই আমেরা সৃষ্ট চইরাছি। এক্ষোৎসৰে বাহিরের আড়েখৰ ধৃমধান তথনই শোভনীয়, যথন তাহা সেই ব্ৰহ্মণতা সাগরে নিমগ্ন হটবার পক্ষে সাচায্যকারী চর। তথনই ব্রক্ষোৎসবের আংরোজন সাথকি চয়, যখন আংআয়া তাঁহার চির-প্রার্থিত বস্তু ও চির আরামেব স্থল অধিকার কবিতে পারে। আমাদের জন্ত সেই ত্রেকাৎসৰ আবার আসিতেচে। সেই প্রার্থনীয় সময় সমাগত চইতেছে যে সময় আমরা বিশেষ ভাবে এই উৎসব করিতে স্বিধা পাই। বাস্তবিকট কি ত্রাহ্মগণ এই উৎসবে তাঁহাদের সর্বাপেক। প্রার্থনীর অধিকার ব্রহ্ম-সহবা**স** লাভে সক্ষম হইবেন 📍 বাল্ডবিকই কি তাঁহাকে প্ৰাণে পাইয়া ব্ৰাহ্মগণ পৃথিবীর ধন মান যশাকাজকা বিস্মৃত হইতে সক্ষয় **চইবেন এবং সেই অমৃতভাতে মুখ যোজন। করিয়া অমৃতের** আসাদন করিতে করিতে অমন্ত পাইতে পারিবেন। যদি ভাহা পারেন, তালা চইলে মাঘোৎদৰ দার্থক চইবে এবং ভালার আরোজন সর্থিক আয়োজন হইবে। নতুবা উৎসবের হৃত্ত আনেরাসকল কার্য্যই করিব, কিন্তু সেজ্জুর যে পরিশ্রম ও সময় বায় হটবে তাহা পরিশ্রম মাত্রই সায় হটবে এবং যে সময় বার হটবে ভাহার বুণা সময়ক্ষেপ মাত্রই হ্টবে।

এই উৎসবের জন্ম যে আয়োজন তাচা কি প্রকারের আয়োজন ? আমাদের বল, বুজ, ধন,জন এ কাগ্যে যে বেশী সহায়তা করিবে তাহানর। কিন্তু এই আধোজনের আদি অন্ত নিভব ও ব্যাকুলতা। সেই কুধা পাওয়া চাই, যে কুধা জানালে মাগুরের আরু আরু চিন্তার অবসর খাকে না। ছভিক্রের সমর মাতৃষ যেমন অন্তঃ-क्या बहेबा, कानगढिछ इहेबा (क्यन का बार्या वश्च हे काश्यान करत, जाहातरे अञ्चल करत अवर याहा भाग जाहारे छेनत्र करत, अगृष्ठ धरनत सना-- पूना धरनत सना आभारतत (मह কুণা পাওয়, চ'ই। সেইরূপ নিউব ও ব্যাকুণত। চাই, অফুলাত-পক্ষ বিহগশবেক ভাহার মাভার জন্য যেনন ব্যাকুলভাৰে व्यापका करत । जाशात्र निष्कत्र किहूहे कतिवाव मुक्ति नाहे. नामा व्हेट উड़िया याहेया चावात करत अमन माथा नाहे. ক্ষার প্রাণ আকৃল অপচ নিজে আচার্য্য সংগ্রহ করিতে পারে ভাগৰে এমন কোনই শক্তি নাই, তথন মাত্ৰাই ভাগাৰ একমান্ত ভরসা। মাতা আসিয়া আহার না দিলে তাহার আহার পাইবার আর কোন সম্ভাবনা নাই। সেই অবস্থায় ভাগার মাভার জনা (य वाक्रिन डा-माजात सन्। (य अप्लक्षा कतिया शाक्रिनात छात. আমাদিগকে দেইভাবে অপেক। করিতে চইবে,দেইভাবে অনুন্যো-পার হইরা নির্ত্তর ও ব্যাকুলভার স্থিত অগ্নাভার অন্য অপেক্ষা করিতে হইবে। পক্ষীশাবক যেমন জানে ভাগার মা**ভা** আসিয়া ভালতে আহার দিবেই, আমাদেরও সেইরূপ দুরু विश्वान वहेबाहे थाकिए हहेत्न, (व अनुमान जामात्मत कृथान अत्र निर्दर्भ निर्दर्भ। छाँगात अलीकात अतार्थ-अलीकात। ভাহ৷ তিনি পূৰ্ণ করিবেনই—আমাদের আশা কখনই **আপুৰ্** वाश्वित्वन ना।

মধু সঞ্চলকারী মধুকরগণকে কি কেচ নিমন্ত্রণ করিয়া ভাকিরা আনে ? কেচ কি যাইরা বলে যে বনে ফুল ফুটরাছে, ভোমরা যাও, মধু সংপ্রহে প্রবৃত্ত হও। কেচ কি এমন সংবাদ শইরা **जाशामिशक् जाकिरक यात्र १ (क या जाशामिशक्क रंग नःवाम** ( पत्र ( कि व हे जावा कार्त ना। जिल्ला मत्त क्र क्र क्र क्र क्र का कर्य ( व हे তাহারা মধুসঞ্চল করিতে যার। ফুলের সৌরভই তাহাদের প্রাণকে আকুল করিয়া থাকে। আমাদের উৎসবের নিমত্রণ কর্ত্ত। কে ? কোন মানুষ কি এই নিমন্ত্রণের ভার পাইরাছেন ? মাফুবের যে আমন্ত্রণপত্র যায় তাহা ত অভি সামান্য, উপলক মাত্র। কিন্তু প্রকৃত আমন্ত্রণ দেই সুধামরী জপন্মতোই করিল। থাকেন। তাঁহার সুমধুব আহ্বানের বিরাম নাই। অনাহত শব্দে নিরস্তর তিনি তাঁচার সস্তানগণকে ডাকিভেছেন। আসম্ভ্রণধ্বনির বিরাম নাই। যাতার কর্ণ সেই ধ্বনি শুনিতে পার, সে আর স্থৃত্তির চইরা বসিরাপাকিতে পারে না। তাহার পৃথিবীর বিষয় সম্পদ একদিকে পডিরা থাকে; ভাহার প্রাণ সেদিকে দৃষ্টিপাত করিবারও অবসর পার না। এই ধ্বনি ভুনিলা যাঁচারা উৎসবে প্রাবৃত্ত চটবেন, ভাঁহারাট বান্তবিক बाक्कारमत्त्रत छेरकृष्टे कल लाए ममर्थ इन्टेरन । उांशामित পক্ষেই "নিমন্ত্রিত আজি স্থার প্রেম ভবনে" এই গান করা (मांछ। भाहेरत। ब्रह्मा९मत (कान ममग्रतिरमस व्यापक নতে। কোন ভান বিশেবেও তাতা আবদ্ধ নয়। ব্যাকুলাত্মার পক্ষে---ত্রদ্ধাপাত্মর পক্ষে উচ্চার সহবাস লাভ, উচ্চার সাক্ষাৎ नाज जनन जमत्व जनन चात्मरे जल्लातः। मृन चात्राजन निर्जत ও ব্যাকুলভার সহিত অকিঞ্চন ভাবে, তাঁহার জন্য অপেকা করা ঠাছাকে ডাকা।

অনেক প্রতিবন্ধক এই পথে বাধা প্রদান করিবার জন্য আগবাড়াইয়া আছে। সাংসারিকতা প্রভৃতি বাহিরের শক্র অপেকা অন্তরের শক্ত — অকুধা অরুচি ও আলহা প্রভৃতি मक्काग्रहे चनका लाख द्यधानकः मक्का माधन कतिया থাকে। আমাদের পক্ষে সেই সকল আন্তরিক শত্রুর সচিত সংগ্রাম করাই বিশেষ কঠিন। কারণ ভাগারা অস্তরে ৰুকারিত ভাবে পাকিয়া কার্য্য করে। প্রথমত: এসকলকে ধরিতে পারাই নিভাস্ত ছ:দাধ্য। তৎপর এই সকলকে ধরিতে পারিলেও অতিক্রম করা আরও কঠিন। অতিক্রম করিতে হইলেই নিজের অভারের সভিত সংগ্রাম করিতে হয়। পবের সহিত সংগ্রাম করিবার ইচ্ছা সহজেই হইতে পারে। কিন্তু নিজের স্থিত সংগ্রাম করা সহজ্পাধ্য নহে এবং লোকে ভাহাতেই অধিক পরিমাণে অনিচ্ছুক হইরা থাকে। এই ভিতরকার শতক্তে ধরিরা ভাষাকে পরাস্ত করিভেই বিশেষ ৰাপ্ৰ ষ্টতে হইবে। একা একা এই স্কল শক্ৰৱ স্হিত সংগ্রাম করিতে অনেক সময় প্রবৃত্তিও হয় না, ভেমন জোরে আৰাত করিতে স্থবিধাও হয় না। এজনা সমবেত চেটা এবং ব্যাকুলাত্মাগণের সন্মিলনেই আমরা বিশেষ বল প্রাপ্ত वर्षे धैवः धौवन वरन चल्राततः भक्रात्म चाक्रमण कतिर्ह्ण शाति । अरे बना छेरनदाकाल वाक्नाधानानत नियान विराध मन्त्राह्म ध्वर छाहारे उत्कारम्य मत्कारम्य भाग्न सम्मन्त्रा

ব্যাকুলাত্মাগণ সকলে স্থিলিত হউন। এক্ষোৎসবে এক্ষণন লাভ করিরা সকল মনোরথ হউন। কলদাতা সিছিদাতা পিতা সকলকে এক্ষোৎসবের শ্রেষ্ঠ দান—তাঁদার পরিচর ও তাঁদাতে নিমগ্র হইবার স্থ্যোগ আমাদিগকে প্রদান করিয়া কৃতার্থ করুন।

# দোষ কাহার---সাধন-প্রণালীর না সাধকের ? ( পর্ব্ধ প্রকাশিতের পর )

কতকণ্ডলি সুমিষ্ট বাক্য, প্রার্থনা নর। অন্ত লোকের দেখা দেখি হউক অথবা অক্ত যেরূপেই হউক, আমাদের মধ্যে সমর সময় যে একটুকু ভাসা ভাসা আংকাজকা জন্মে অথচ আংশের গভীর প্রদেশের ভাব, পাপ লইরা—অন্য জিনিস লইরা বেশ আছি, তাহা ছাড়িতে প্রস্তুত নহি। গভীর প্রদেশে কোন অভাব বোধ নাই, কোন কষ্ট নাই,—এরপ আকাজ্ফাও প্রকৃত আকাজ্জা নতে--প্রার্থনা নতে। এরপ প্রার্থনার কোন ফল চইতে পারে না। এভাবে চিরঞীবন সাধন করিলেও অক্ষদর্শন नास कहेरव ना। कावन अथारन खारनव भविवर्श्वन नाहे। धक्रभ সাধনে বরং আমিরা প্রকৃত জীবন লাভের অস্তরায় আনিয়ন কবি ৷ এভাবে চলিলে শেষে আমাদের প্রকৃত প্রার্থনাজে অবিখাস জন্মে এবং আমরা সাধনাদি পরিত্যাগ করি। অপর পক্ষে এই সকল বাহাফুটানে অচন্ধার জন্মে। এশ লাভ সম্বন্ধে আরও কডকগুলি অন্তরার আছে। এসম্বন্ধে মহাত্মা हेमार्जन (Emerson) विलाउ एक्न। 'When we have broken our God of tradition, and ceased from our God of Rhetoric, then may God fire the heart with his presence. व्यर्थार मश्यात नम श्रेथन, वात्कात श्रेथन, चकुमात्मव नेचव, मस्त्र श्रकांत कल्लमाव नेचव, প্রাণে প্রকাশিত হটতে পাবেন। যে প্যান্ত ইহাদিগকে ভাঙ্গিয়া না ফেলি সেই প্রাপ্ত তিনি প্রকাশিত হইতে পারেন না। কাবণ আমরা ছায়াকেই একা মনে কবিয়া তপ্তথাকি; আবে তাঁচার জন্য বাক্ল হই না। এই অবস্থা যে প্রকৃত অক্ষদশ্পের কৃত শক্ত তাঞাবলাযার না। ইহা আমাদিণকে যতদৰ ভ্রাপ্ত করিব। থাকে,আরে কিছুতেই এরূপ পাবে না। কারণ ইচা অনেক নিষ্বেই ব্রন্ধের অনুকাপ অণ্ট ব্রহ্ম নয়। বিশেষ প্রীক্ষা ভিন্ন আমরা এ ভ্ল ধবিতে পাবি না। কি কি ভাবে এরণ অবস্থা হয এবং ভাষাতে কেন ব্ৰহ্ম লাভ হইতে পাবে না, সে বিষয়ে কিছু षात्नाहना कवा ध्याताकन।

আমবা ঈশ্বব স্থয়ে জনেক কণা শুনি অনেক পুত্তক পণ্ডি,
ইচাতে তাঁহাব স্থনে আমাদের প্রাণে একটা ভাব দাঁডাইয়া
যায়, আমাদের প্রাণে তাঁহাব একটা প্রতিকৃতি (Image)
গঠিত হয়। ইচা কখনও স্তা ত্রন্ম নহে। আবার আমরা
নিজে তাঁহার নানা শ্বনপ বর্ণনা করিষা প্রাণে তাঁহাব ভাব
জন্মাইতে পারি। এই অব্যায়ও প্রাণে তাঁহার একটা প্রতিকৃতি গঠিত হয়। ইহাও স্তা ত্রন্ম নহে। পুর্বে কোন
সময়ে ত্রন্ধদর্শন হইলে, শ্বরণ-শক্তির ক্রিয়া হায়া সেই অবস্থাটা

ल्यार्ग मामवन कतिएक शांति -- এই व्यवद्यात्र क्यार्ग जांबात ভাব অন্মিৰে তাঁলাৰ প্ৰতিকৃতি গঠিত হইবে। ইছাও সভা এক নহে। যাহা বলা চইয়াছে ইবা চইডে আমরা युविएउ शावि, कि धाकारत भागता धार्थमात नाति भागा-দের আরাধনারও অপব্যবহার করিতে পারি। এক্সর্শন হুইলে বিশেষ ভাবে তাঁচার চিন্তা করার নাম আরাধনা। প্রথম প্রাণে ত্রন্ধ প্রকাশিত না इहेरन व्याताधना अमुख्य रुष्ठ, कार्यरे (महे "आदाधनाटु" क्न हरेट नार्य मा। मजार कानर है जानि वाका छेळावन बावा वानवा शृद्ध বে সত্য স্থরূপ জ্ঞান স্থরূপ ব্রহ্মকে সাক্ষাৎ ভাবে প্রাধে পাই-রাছি তাদার স্বরণ বারা কোন মডেই প্রকৃত এক্সর্পন দইতে পারে না। কোনও প্রকার মধ্যবর্তী থাকিলেই ব্রহ্ম দর্শন হইতে পারে না। এত্থল এগকশকে মধ্যবর্তী করা হইমাছে हेबाद माथा उत्भव कार्या नाहे। এই ভাবে कान मछ्डे उम-मर्जन बहेरत भारत ना। आयास्त्र अक्षाट्य किছू मठा आह्य किमा विज्ञात कवित्रा (एथा याउँक। वर्गमा अमित्रा वा वर्गमा कतिशा भागता कथन । त्यान विषय दार्थिए पाति मा । अथवा একবার কোন বস্তু দেখিলে পুনর্কার দেখিবার সময় পূর্ব্ব ভাব শ্বরণ বারাও বন্ধটী বেখিতে পারি না। দেখিতে হইলে সকল मगरबरे माकार ভाবে দেখিতে इहेरव। अर्थाए बखरी जामा-मित्र रुक्त मन्त्राथ थाकिरव हेका आमारमन मर्नामित्रत छेनत विरमय छाटन क्रिया कतिरव । छेहात भविवर्स स्था वस बहे किया कविरम जाहाबरे मर्ननरे हरेरव, देशाय मर्नन हरेरव मा। मकन श्रकात वच-काम मचरबारे धारे कथा। वर्णमा,-म्लेन-শ্ৰবৰ সকল বিষয়ই এক কথা। এথানেও মধ্যবৰ্তীভা কাৰ্যা-काबी नरहा वर्गनांक बाबा वखन मर्जन हत्र मा। मरनत मरशा বস্তুটীর একটা প্রতিক্বতি গঠিত হয় মাত্র। পূর্বের স্থামরা যে সক্ৰ বস্তু দেখিৱাছি বা শুণ জানিতে পারিৱাছি, তাহার বিভিন্ন সংযোজনা ছার। আমরা বর্ণনামুখারী বস্তুটী মনে ধারণা করিতে পারি। উহা বর্ণিত বল্কর সম্পূর্ণ অবস্থুরূপ ইইবে, কিন্তু উক্ত ধর্ণিত বস্তর অন্তিম্ব কিন্তু। অভাবের সঙ্গে ইহার সম্পর্ক নাই। व्यक्तिक ना थाकिरमञ्ज्ञामता मत्न এর প वश्च धात्रमा क्रिटिं शाति। आत वस्ति थाकित्व अहे छेशात्त वस्त (म्था बहेन ना. বন্ধ সক্ষে সাক্ষাৎ জ্ঞান লাভ চইল না, বন্ধটীর একটা প্রতি-কৃতিকেই আমরা জানিগাস। এক্সে শুধু আমাদের জ্ঞানের ক্রিয়া এই প্রতিকৃতিটা সম্পূর্ণ কপে আমানদৰ জ্ঞানর। গঠিত कारवरे छेहारक आभारत्व रहे वद्य विग्रह अहा आभारत्व कात्मत्र वाहित्त हेशंत्र चलिए नाहे। এहे सनाह हश्हि नहाः। বলা হয়, কলিত বন্ধ বলা হয়। বাহিবে উভার অধুরূপ বস্তু थाकित्व भारत । किन्न याहा व्यामत्रा धरे छात्र तमाभत्कि वा অমুভব করিতেছি, ইহা আমাদের করনা ভিন্ন কিছু নহে। পুর্বে त्य वश्वती (मृथिवाहि श्वत्रणाता छाता काम कमाहेत्न, वर्षाद छाहारक शावना क्षिएं हारान छ एवं छेहा क्यानाहे हहेरत. वस मद्द माकार कान हहेर्द मा, डेक वस्त्र मनेन व्हेर्द मा खाहा चाव विगएल इहेरव ना। कारवह धारे कारव नेकं रव বন্ধ চাহাও বন্ধ নয়--- কলনা স্বষ্ট তাঁহার প্রতিস্থান্ত মাজ।

উহার জীবন নাই। আমরা উহার অধীন নহি। উহাই সম্পূর্ণরণে আরাদের অধীন। আমাদের পূর্ণ নাত্র। এতাদুশ ব্রক্ষান লাভে কেবল মানবীর শক্তিরই ফার্যা, মানবশক্তি বহিত্তি কোন শক্তি পরমাশক্তি, হৈতজ্ঞমর ব্রহ্মের কোন কার্য্য নাই। কিন্তু তুই শক্তির কার্য্য ভির বস্তুজান অসম্ভব—ব্রক্ষান ও অসম্ভব। ব্রক্ষদর্শনে ব্রক্ষশক্তিই কার্য্য করিবে, মানব কেবল প্রহণ করিবে। এইজল্প আমরা বলি ব্রন্ম অপ্রকাশ, ব্রন্ধনা ভির তাঁলার দর্শন হইতে পারে না। তাই প্রাণের গভীর স্থান হইতে গাঁত উঠে "তুমি নাহি দিলে দেখা কেব কি দেখিতে পার, তুমি না ভাকিলে লাভে সহজ্ঞে কি চিত ধার ৬ শমানবাত্মা কিছু করিছে পারে না, মধবর্ত্তী কিছু দ্রে দাঁড় করাইলে তাহা তথু করনা হইবে, সেধানে ব্রক্ষদর্শন অসম্ভব হইবে।

शृष्टि । मानव देखिवृद्ध आत्नाहना दावा आमारणव व्यान ষাপ্রত হইতে পারে। কিন্তু সৃষ্টির মূলে সৃষ্টেকর্ত্তা পরবন্ধকে দেখিতে যাইরা, আনেক সমর আমরা করনার, অমুমানের, ত্রেস উপনীত হই। যখন সৃষ্টি ও ইডিহাসকে আমরা মধাবতী রূপে স্থাপিত করি; ভাহাদের সাহাযো ত্রহাদর্শন লাভ করিতে যাই তখন আমরা অমুমানের ঈশর ভিন্ন আর কিছুই লাভ করি না। खात्नत्र कार्या (एथिया चित्र कति छेशत मृत्य कानमत क्री আছেন। এ সিদ্ধান্ত সভা; কিন্তু ইছাতে বস্তুটা সম্বন্ধে অনুমানই করিতেছি। বৃক্তিতর্ক কোন বস্তর জ্ঞান ক্রাইতে পারে না। বুক্তি কুসংস্কার দূর করির। প্রতিবদ্ধক সকল দূর করিতে পারে, দর্শনের সহায়তা করিতে পারে; কিন্তু দর্শন করাইতে পারে না। দর্শন করিবার এক ভিন্ন দিতীয় উপান্ন নাই। যুক্তি, ভর্কদানা, "স্তরাং," "অভেএব" হারা যে বস্ত জ্ঞান আমরা লাভ করি, তালা অমুমান ভিন্ন কিছুই নহে। সেধানেও তথু আমাদের জান-কার্য্য করিতেছে; করনা কার্য্য করিতেছে। কাষেই এই উপারে সভা ত্রন্ধ লাভ হইতে পারে না। ইহাতে কার্মনিক ত্রন্ধ, অনুমানের ত্রন্ধই (God of Infrence) শাভ হর। তবে আত্মাতে সাক্ষাৎভাবে ত্রন্ধার্শন চইলে, সৃষ্টি ও ইভিচাসের মধ্যে माकाए छारव उक्तमर्भन हत्र। किन्दु (म ममत्र युक्तित कार्या शास्क না, কার্য্য হইতে কারণে যাওয়। হয় না। এ সকল মধ্যবর্তীরূপে शास्त्र मा। अक्रम पूर्णन मा बहेरन डेबानिश्र क मधावर्दी कवित्रा প্রদার্শনের চেষ্টা করিলেই কর্মার ঈশ্বর লাভ হটবে। এ বিষয়ে त्रनी किछू वनिवात पत्रकात मारे।

সংগীত সংকীর্ত্তন আমাদের প্রাণতে সহজে আগ্রত করিতে পারে এবং প্রস্তাদনি হইলে ভাহাকে গভীর ভাবে উপলব্ধি কবিবার সাহায়ও করিতে পারে। কিন্তু সংগীত সংকীর্ত্তন আরা প্রস্তাদনি করিতে গোলে, পূর্ব্বোক্ত রূপ ফণ্ট হইবে, কারণ এখানেও বর্ণনা। বিশেষতঃ সংগীত সংকীর্ত্তন যেরূপ মন্ত্রতা ও আনক্ষ আনিয়া দিতে পারে, ভাহাতে বিশেষভাবে আন্থাপরীক্ষা না করিলে, উহা হইতে মহা অনিষ্ট হইতে পারে, উচ্চাধীবন লাভ হইরাছে, এই প্রম্ন অন্মিতে পারে। ভাব্তভা আনিছে পারে।

আৰু লোকের উপাসনাদিতে বোগ দেওয়ান্তেও উপকার

হটতে পারে, প্রাণ সকলে জাপ্রত হটতে পারে এবং উপলব্ধির গভীরতাও জারিতে পারে। কিন্তু উহা বারা প্রজাবনি লাভ করিতে গোলেও পূর্ব্বোক্ত ফলই আসিবে কারণ এখানেও বর্ণনা; বিশেষতঃ অনেক সমর প্রাণ পরিবর্ত্তিত না হইলেও ভাবের উত্তেলনা কারিতে পারে, অক্তের ভাব সংক্রোমিত কইতে পারে। বিশেষ আত্মচিকা না থাকিলে অক্তের জিনিয়কে নিজের বলিয়া মনে করিয়া সন্তই থাকিতে পারি।

विनामत कथा धारे या धारे कतिक वक्ष मण्मूर्गक्राम महा वक्षत অভুরণ। ইলা ভাব উল্লেক করিতে পারে, ইলার প্রতি **ভागवांत्रा अ**श्विरङ भारते, हेशांक भारेवान हेक्का हहेर्छ भारते। এই कन्नरे महत्व मास्य काम मा. मन्त्रवेख गांच इहेरकाइ এরপ ভ্রম হয়। বিশেষভাবে আত্মপরীক্ষানা করিলে এ ক্রম ধর। বার না। কারণ অধিকাংশ সমর একটুকু তৃথি, সামাস্ত স্থানন্দ বারাট জীবনের অবস্থার বিচার করি। অথচ সভ্য ব্রন্ধ ছাড়া করি চ "এক্ষে"ও এই লাভ হইতে পারে। সভ্য বস্তুতে ও ক্ষিত বস্তুতে প্রভেদ এই যে ক্ষিত বস্তুর কোন শক্তি নাই। সত্যবস্তই শক্তির আধার। কাবেই এরপ ব্রহ্মলাতে জীবন পরিবর্তিত হটতে পারে না। আমরাবেরপ ক্রমণ: অনস্ত উন্নতির দিকে বাইতে চাহি, তাহা হর না, জীবন বেখানে, त्म थात्नरे मांफारेश थात्क, कारवरे **डेक्ट क्रकांत्र** माधनमीन सौरत এরপ ছরব্ছ। দেখা যার, যাহ। বন্ধলাভ হইলে কোন্মভেই वॉक्टि शास्त्र ना । कीवरनत्र केन्नि बात्रा विठात ना कतिरत. विष्मविकारव कांचानहीक। ना कविरत, कामता এই अम हहेरफ রক্ষা পাইতে পারি না। তাই অধিকাংশ সময়ে আত্ম-প্রভারিত करे। बन्नगाछ रहेन, व्यथह कौयन द्वाराम क्वि त्रहेशातह দ।ড়াইয়া রহিশ, ইহা হইতে পারে না। কাবেই জীবনের গাতি-দারাই বিচারিত হইবে আমরা কি লইরা আছি। এখন আম্মার দেখিতেছি যে ত্রহ্মদর্শন সহকে সকাপ্রকার মধাবর্তী पूर्व ना क्रिलिहे येख छ्वरहा। स्थारकी बाता उन्नगास व्यवस्थ বালরাট, ত্রাহ্মধন্ম সক্ষপ্রকার মধ্যবর্তীবালের ঘোর শক্ত। এই करा आक्रकरि शान करतन "कृमि आत आवि मास्य (कर नाहे" ইংর বিরুদ্ধ কিছু কারতে গেণেই বিপদ এবং ইংলে অফুসরণ कतिरागहे व्यक्तक कौरन गांछ क्हेर्रर। एकन बाह्न बामारमञ्ज किह ध्रेग न। विशा जन्मन कति ए स्टेर्स न।।

ধশ্বসাধনে গভার চিন্তাশীলভার প্রয়োজন কিন্তু এ বিষয়ে আনাদের নিভান্তই অভাব। আমরা কার্য্যে এতহ ব্যক্ত এবং আতার চরিত্রগুণে আমাদের চিন্তাশীলভার এতই অভাব যে কোন বিবরেই গভার ভাবে তুবিতে পারি না। আমরা চাহি সহজ্ঞ ধর্মা। যে সকল অবস্থার মধ্যা দিয়া না গেলে ধর্মালাভ চইতে পারে না, আমরা সে সকল অবস্থা লাভ করিতে প্রস্তুত বা বিশেষ চেটিত নহি। যে যত্ম ও পরিশ্রম প্রয়োজন আমরা ভাষা করিব না অওচ ফল পাইব, ইহা কিরুপে সম্ভবপর হইবে? প্রাণালীটী যদিও সহজ। ইহার সাধনা কোনমতেই সহজ্ঞ নহে বরং বড়ই কঠিন। আমরা অনেকেই সেই কটটুকু শীকার করিতে চাহি না—কাষেই আমরা ফললাভ করিতে পারি না। বেখানে ছই প্রেণীক লোক ছই প্রকার সাক্ষ্য দিভেছেন

সেধানে বিশ্বস্ক যুক্তি ভিন্ন সভ্যনিদ্বারণের অন্ত উপার নাই। উভয় শ্রেণীই সমল ধর্মপ্রার্থী ও সভ্যমারী। এক শ্রেণী বলেন এই সাধনে কল পাইতেছেন না অন্ত শ্ৰেণী বলেন কল পাইতে-ছেন। আবার আমাদের ভারও কেচ কেচ আছেন বাঁচারা বলিভেছেন ইহাতে ফল পাওৱা বার অথচ জীবনে বিশেব কোন ফল লক্ষিত হইভেছে না। এই অবস্থার আমাদের জীবন मिवित्रा जनना जनमान्त जिनीत क्या छनित्रा जामता अ अकार ৰীমাংলা করিতে পারি না যে দাধন প্রণালীর দোষ আছে। ৰে পৰ্যান্ত বিশুদ্ধ বৃদ্ধি এই প্ৰশালীয় কোন জটি না দেখাইতে পারে, সেই পর্যান্ত শুরু এই কারণে আমরা প্রণালীর দোষ দিভে পারি না। কাষেই বাধা ছইরা বলিতে ছইবে, আমরা ঠিক ভাবে সাধন করি না বলিরাই এরপ ঘটিতেছে। আমাচের জীবনে क्न मा इहेरन के हहा दनिए भावि मा विकास कोर्वास है हेगाए कम स्थानाहै। अञ्चल: हुहै अक्सन व यथन अहे दाना-লীতে সাধন করিয়া ফল পাইয়াছেন, তখন অবশ্র বলিতে ছইবে व्यनागीत लाव नाहे लाव चात्रालबहे। विकृष्ठ छाट्य त्राधन कति विवादे जामात्तत वहे हत्रवन्ना।

### ব্রাহ্ম পর্য্যটকের পত্র।

र्छ का ब्रमाथ ।

( भूकं क्षकानिएक भन्न )

প্যায়ী বাবু এই ওঁকারনাথে আসিবার পূর্বে চিত্রকুটে > ইবংসর ছিলেন, ভাহার পর প্রার ৩ ইবংসর ছইল ওঁকারনাথে আসিরাছেন। এই ওঁকারনাথেই সাধনের কঠোরতা র্দ্ধি করি-রাছেন। ভিনি এখন বোগ সাখন করেন, কোন মন্ত্রা শুকর নিকট কোন দিন কোন উপদেশ লাভ করেন না। দিন দিন তিনি ঈখরের দিকে অগ্রসর হইভেছেন ও তাঁহার অবদা পূব আশাজনক বলিয়া তিনি কছিয়াছেন। কিছ এ কথাও বলিয়াছেন যে এখনও তাঁহার ব্রহ্মদর্শন হয় নাই। একণে তাঁহার নিজের কোন ইছো নাই, ভগবানের ধর্ণন লাভ হইলে, ভগবান তাঁহাকে যাহা আদেশ করিবেন তাহাই তিনি করিবেন,—এইরূপ তাঁহার ইছো।

তিনি ইহাও বলিয়াছিলেন বে যদিও তিনি এপর্যান্ত কোন মহাবা গুরু বীকার করেন নাই বা সাধন ভজন সন্ধীর কোন কথা এপর্যান্ত কোন মহাবাকে জিল্লাসা করেন নাই বটে; কিছু পুন্ম দেহধারী আত্মাগণ তাঁহার নিকট উপস্থিত হইরা সাধনাদি সহকে তাঁহাকে উপদেশ দিরা থাকেন,। প্রশ্ন করিয়া জানিয়াছি বে শহর অর্থাৎ মহাদেব বিশেব ভাবে তাঁহাকে উপদেশ দেন। মহাদেবকে তিনি একজন ধ্ব বঙ্গ যোগী পুরুষ মনে করেন ও মানবাত্মা বে শ্রেণীর আত্মা মহাদেব সে শ্রেণীর আত্মা নহেন, কিছু মানবাত্মা হইভে উন্ধৃত আর এক শ্রেণীর আত্মা।

ভাক্তভাজন শ্রীবৃক্ত বিজয়ক্তক গোস্বামী মহাশরের উপর প্যারীবাবুর গভীর শ্রদ্ধা আছে। তিনি একদিন গোস্বামী মহাশ্রের এক্থানি চিটি আমাকে বেখাইয়া হিলেন, ভাহাতে প্রধানত: এই ছইটা বিষয় লেখা ছিল। ১ম "আমি নিজ অভিজ্ঞতার হারা ইলা জানিরাছি হে বল্জিগৎ বেমন অকাট্য নিরমের হারা পরিচালিত হইডেছে, আধ্যাত্মিক জগতেও সেইরপ অকাট্য নিরম সমূহ আছে। তল্মধ্যে ব্রহ্মদর্শনের ইলা একটা অকাট্য নিরম যে সদ্প্রকার কণা ভিন্ন তাহা চইবার নতে।" ২য় ভ্লার হইডে সকল প্রকার সংস্থার ও বাসনা দ্র হওরা চাই, প্রচারের বাসনা থাকিলেও ব্রহ্মদর্শন হইবে না।"

এখন প্যাবীবাবুর পৃথিবীব সভিত কোন সম্বন্ধ নাই।
আমি এতদিন তাঁহার শুহার ছিলাম। কিছু আমাকে ব্রাহ্মসমান্ধ
সম্বন্ধীর, কি কলিকাতাব, কি তাঁহার ভ্রাতা ভগ্নী বা বন্ধু বান্ধব
প্রভিত্তির কাহারও কোন কথা কোন দিন জিজ্ঞাসাও করেন
নাই। কেবল একমনে সর্বাদাই ধ্যানে নিমগ্ন আছেন।
আমি মাঝে মাঝে তাঁহার সহিত সাধন ভল্লন সম্বন্ধীর কথার
আলোচনা কবিতে চেটা করিতাম, একদিন তিনি স্পাইই
লিখিরা দিয়া ছিলেন যে "ভাই। আমার সময় এখন বছ
অম্ল্যু, এখন আমার একপ অবস্থা যে ধর্মালোচনা বা ধর্ম গ্রন্থ
পাঠ ইত্যাদি কবাকেও সময় নাই বলিয়া বোধ হয়, স্কুতরাং
এখন এ সমস্ত কথা বলিবার সমর নাই, যদি ভগবান কখন
দিন দেন, তবে তাঁহার কর্মণার কথা ছারে ছারে বলিব।"

পারী বাবু বাকা বন্ধ করিয়া আছেন বলিয়া, ভানীয়
লোকেবা উঁহাকে মৌনীবাবা বলিয়া অভিচিত করেন।
এথানকার সমস্ত সাধু ও-অক্তান্ত লোকেয়া ইহাঁকে খুব
শ্রেদ্ধা করেন, এমন কি একাল-নীব দিন অনেক লোক
বেলা ৪ টাব সময় স্টতে ইহাঁব গুলার নিকট এই অভিপ্রায়ে
বিসিয়া থাকেন, যে ইনি সন্ধার সময় গুলা চইতে বাহির
চইলে, ইহাঁকে দশন কবিয়া গিয়া জলগ্রহণ কবিবেন। তানীয়
গুলাবাদী সাধুগণ আনাকে বলিয়াছেন যে "আমবা অনেক
সাধু দেখিয়াছি। কিন্তু এখন সাধনাতে নিম্ম কোন সাধুকে
কথনও দেখি নাই।"

পাারী বাবু অভি সামাক্ত তৃগাহার করেন বলিয়া তাঁচার শনীর অভ্যস্ত নার্ণ চইয়া গিয়াছে। ইহাতে সাধুগণ অতাস্ত চঃগিত। র্ভাহার1 আমাকে ক্তিরাছিলেন যে ''আতার না ক্রিলে শ্রীর ক্থন্ত পাকিবে না ভূমি আহার কবিতে মৌনীকে বিশেষ ভাবে অমুরোধ কর ও গীতার বচন উদ্ধান কবিশা বল।" বাস্তবিক আমিও পাারী বাবুকে আহাব পুদির জন্য বিশেষ অনুবোধ করিয়াছিলাম, তত্ত্তরে তিনি বলিয়াছিলেন "ঈশ্বরে আদেশে বাধ্য হইয়া, এইকাপ আচার ভ্যাগ কবিতে হইয়াছে। আমি ইচ্ছা করিয়া আ্চার ত্যাগ করি নাই তিনি আ্বার আদেশ করিলে আহার বৃদ্ধি করিব।" আমি আদিবার সময় দেখিয়া আসিরাছি, তিনি চথের পরিমাণ কিছু বৃদ্ধি করিয়াছেন।

আমি প্যারী বাব্র গুলাতে পাঁচ সপ্তাল ছিলাম, তাঁলাকে ধে সেট (দোকানদার) গুঝাদি দেন, তিনিই আনাকে প্রভাল ২ । ৬ টার সময় ডালকটী ইত্যাদি পাঠাইয়া দিতেন, আয়মি ভালাই পরম কুধে আহার করিতাম। এইরপে এখানে ভগৰাদের ক্লপার আমার অভিন্সিত বিষয় লাভ করিয়া, কৃতার্থ চইয়া-নানাম্বান ভ্রমণ করিতে বৃচির্গত হই ।

### প্রেরিত পত্র।

( পত্র প্রেরকদিগের মডামতের অক্ত সম্পাদক দারী নহেন, কিছা কাছারও পত্র ফেরড দিতে বাধ্য নহেন )

শ্রদান্সদ

শ্রীযুক্ত ভত্তকৌমুদী সম্পাদক মহাশর সমীপেযু

अध्यक्ष महाभन्न,

অমুগ্রহপূর্বক এই পত্রধানি ডক্কৌমুদীতে প্রকাশ করিরা বাধিত করিবেন।

শভান্ত শুরুনাদ এবং ব্রাহ্মসমাদ সৃষ্ধে বাবু মনোরঞ্জন শুহ্
১৬ই শগ্রহায়ণের ভরকৌমুলীতে যে পত্রধানি লিথিয়াছেন ভাহা
আহান্ত আপত্তিজনক এবং যুক্তিবিক্তম। তিনি যে সকল কণা
খীকাট্য বলিয়া বর্ণনা করিয়ছেন, ভাহার সকলগুলি শীকাট্য
বলা যার না। ঈশ্ববের বাণী মানবান্তায় প্রকাশ পার সহ্য,
কিন্তু মান্ত্রম জ্ঞানে প্রেমে এবং পবিত্রভার এরূপ উন্নত নম্ন বে
দেই বাণী যে ভাবে ঈশ্বরের নিকট হুইতে আসে, ঠিক সেইভাবে
ধারণ এবং ক্ষনরক্ষম করিতে পারে। যেমন সকল দর্পণেই
প্রতিবিশ্ব পড়ে সভ্য কথা। কিন্তু দর্পণের গুণাভুসায়ে ভাহার
ইতর বিশেষ হয়, সেইরূপ বাহারা ধর্মজগতে যত অগ্রসর
ভাহাবা সেই পরিমাণে ঈশ্বরের বাণী গ্রহণ করিয়া পাকেন।
কিন্তু যথন কেহই সম্পূর্ণরূপে নিম্পাণ নহেন অথবা জ্ঞান এবং
প্রেমেতে এত উন্নতি লাভ কবেন নাই যে পূর্ণজ্ঞানী এবং
প্রেমিক বলা যাইতে পারে, তথন সেই বাণী যত্তুকু লাভ্যক্রেন ভাহাও সম্পূর্ণরূপে অল্লান্ত বলা যার না।

দানপর আর একটা কথা এই যে সেই বাণী প্রাণে অমুভর করিয়া, উপদেশ দেওয়ার সময় আবার তাহা ঠিক ঠিক রূপে বাহির হয় না। প্রাণে যাহা অমুভর করা যায়,তাহা মুথে কথনই অল্রান্ত কপে প্রকাশ করা যায় না। এনিষয় বোধ হয় সকলেই স্মীকার কবিলেন। তাহা হহলে দেখা যায় যে, ১মহঃ ঈশরের বাণী মায়ম অল্রান্তরূপে গ্রহণ করিছে পারে না, ২য়তঃ সেই বাণী ঘটটুক গ্রহণ করে, তাহা আবার ঠিক সেই ভাবে মুথে প্রকাশ করিছে পারে না। স্বতরা ঈশর এবং তাহার বাণী অল্রান্ত হটলেও উপদেটার মুথে অল্রান্ত ভাবে বাহির হয় না এবং তক্তর অল্রান্তর্জ্ব (অপবা মনোরঞ্জন বাবুর মতে অল্রান্ত ঈশরের বাণী প্রকাশক হওয়াও সম্পূর্ণরূপে অসম্ভর।)

তিনি ই গার সঙ্গে সালে আর একটা কথা লিখিয়াছেন হথা
"চিস্তানীল ও সাধননীল আক্ষ "অভিভাবকগণ" পুনজাল্মবাদকে
আক্ষধর্ম বিরোধী মনে করেন না" এই অভিভাবক করজন
এবং তাঁহাদের নাম কি প্রকাশ করিলে ভাল হইত। দেখিতেছি আক্ষ অভিভাবক নামে একটা ন্তন কথা সৃষ্ট হইল।
বাহা হউক আক্ষ অভিভাবকগণ পুনজাল্যবাদ সীকার করিছে

পারেন। কিন্তু আমর। ভাচা স্বীকার বা স্বরীকারের কোন আবশ্রকতা দেখি ন । পরলোকের বিষয় সমস্ত সম্পূর্ণভাবে चनवारमञ्जूषा । जनिव्दत्त कन्नमा मा कताहे जान। जमताचा কোন একটা অবস্থায় পাকিবেই। কি অবস্থায় পাকিবে, যিনিই ৰৰ্ণনা করিবেন কল্লনা সাত্ত। অতি হঃথের বিষয় বে এতকাল ব্রাহ্মসমাক্ত যাতা ঈশ্বরের হল্ডে রাখিয়াছিল, মনোবঞ্জন বাব্য ব্রা**ল্ল অভিভা**বকেরা ভাষা লইয়াও টানাটানি ভরিকেছেন। বাহা হউক পুনর্জন্মবাদীদিগের তৃদ্দশার একটা দৃষ্টান্ত সংক্ষেপে निथिता आभात राक्तवा (भव कविराज्छ।

করেক বৎসর চইল হুগণী জেলার কোন স্থানে উপাসনা এবং সংকীর্ত্তন ভটভোছন। সেই সময়ে বাহিরে একটা ছাগল काँ फाहेब्रा कान कान वभकः हत्कत सन एक निष्डि हिन धवः খন খন পানা দিকেছিল। ১ঠাৎ তাগার উপর কোন ভক্তের **इक्कू लाइन क्रवर उपने अकृत्य कार्यन क्रिकामा क**रियन। भूमकानातामी श्वरू तनियान এ ছাগল शृंत्रज्ञान हति छक हिन ভাট ছরিনাম ভনিয়া কাঁদিভেছে। সকলে তথন বাহিরে चात्रिया हाशनाक विशेषका प्रकार्शक कवित्व नाशितन। (कव ক্ষেত্র ভাগলের পারে ধরিতে ল্যাণলেন। ছাগল বেচারা ত তথন আণাস্ত। চীৎকার কৰিয়া পলাইতে পারিলে বাঁচে।

কেচ বলিতে পারেন ইনা অপেকা পাগলের কাও আর कि भारह ?

ঝাণকাটী একান্ত অনুগ্ৰ বরিশাল ञीवकारीकाळ एता **৬ই ডি**সেম্ব ১৮৯৩

> अकाम्मन औयुक उद्दर्शभूमी मम्मामक মহাশয় সমীপেয়।

মহাপর,

विश्व ১५३ व्याद्यांग्रागंत उत्तरकोम्मीएउ "व्याद्य श्वज्ञताम **ও আক্রধর্ম" সম্বন্ধে আমার একগানা পত্র প্রকাশিত হইয়াছিল।** লানা গেল সেই পত্তেব লিখিত বিষয় সম্বন্ধে অনেকেব মনে মনেক রূপ সন্দেহ ও আপাত্ত উপস্তি চইয়াছে, সেই मक्न चार्राक च धन ७ मासक्छक्षान्य (हरोत चाराकात এই পত্রধান। লিখিত চটল। অনুগ্রহপুরকে তত্ত্কোমুদীতে স্থান मान कतिया वाधिक कतियन।

১। আমি লিথিরাছিলাম "জীবাত্মার সহিত পরমাত্মার नाकार (यागरे आक्षरार्यंत मृगङ्खा" वर्गाट (कर (कर महन ⇒রিরাছেন, তবে ত সকলেই ব্রহ্মযোগে যোগী, সুত্রাং স্কলেই আদেশ প্রাপ্ত। তবে আর গুরুশিষ্য সম্বন্ধ কিসের জন্ত ? বস্তুতঃ আমি আমার প্রবন্ধে এরূপ অর্থে উক্ত কথা প্ররোগ করি নাই। व्यवस मधा म्लहेरे करे खाद ज्ञांस्थाएक विकोशाचात गरिक পরমাত্মার যে সাক্ষাৎ যোগ হয়, ইছা আক্ষধর্মের মূলভত্ত এবং अक्र रवान नाफ क्यारे आक्रमम नाधानव फेल्क्ट । विन रारे साग नाक क्रिया माकार खालातिहै हम, अर रमहेज्ञ প্রভাষিত্র হইয়া উপদেশ দেন, তাহার সেই উপরেশ অলাভ । হইবে। কিছ ভাচাকে পূর্ণগ্রন্থ বলা বাইবে কি ? ইউরি ভর

উপদেশ এবং সেইরূপ উপদেশদাতা শুরু অপ্রাত্ত শুরু, একণা ত্রাহ্মণর্ম বিরোধী নছে। বয়ঞ্চ ব্রাহ্মধর্ম প্রতিপাদক, যিনি ব্রস্থ-বোগ করেন নাই, ভেমন ব্যক্তি যদি শিষ্ত শীকার করিয়া প্রভাগিষ্ট গুরুর বাক্য অফুসারে চলেন, তবে তাহাও ব্রাহ্মণর্ম-निरताधी व्य न।। कार्क लार्डित मक्टि भत्रमाञ्चात रव ऋष्क्रा যোগ রহিরাছে, মানুষের সহিত্তও সেইরূপ বোগ রহিয়াছে। "জীবাত্মার সভিত প্রমাত্মার সাক্ষাৎ যোগ" বলিতে আমি त्य (यार्श्व कथा विण नाहे, जाधन-जार्थक हिड्ड-(यार्श्व কপা বলিয়াছি। স্ভরাং সকল মামুষেরই সে ্যোগে যুক্ত छ अमात व्यामा शांकित्व अन महत्व के कि हू (म (यार्ग युक्त नरह, যিনি যুক্ত অয়ক্তের। তাঁচার উপদেশ শুনিবে ইচাই ত সকল প্রকার শিক্ষার প্রণালী, চহাতে আনার আপত্তি কি 🕈

২। কেছ ভাবেন গুক যে প্রণালী আবলম্বন করিয়া প্রভ্যা-तम् भारत्यारह्न, निषा ९ उ रमहे खनानी व्यवस्थन कतिया मुक् হঠতে পারেন, তবে আর গুরু মানার প্রয়োজন কি 📍 আমার বক্তবা এই যে, গুরু মাশ্র ভিন্ন কেন্দ্রধর্মণাভ কবিতে পারিৰে কি না আমার প্রবন্ধে আমে তাগাব কিছুমাত্র আলোচনা করি नारे, (करण अलाख अक्रवान बाक्यधर्म विद्यारी नहरू, आमि হুকার দেখাইয়াছি, সুত্রাং অপ্রাস্ত্রিক বিষ্ট্রের আলোচনার প্রার্ভ চররা অনাবশ্রক। ওক অ'শ্র ভিন্ন পারতাণ হর একথা কেই প্রমাণ করিলেও জ্ঞক গ্রহণ করা অধ্য ইহা প্রমাণিত ০য় না। মাত্র খাপনা আপনি বিদ্যা উপাজ্জন করিতে পারে প্রমাণিত হছলেও, শিক্ষকের আপ্রয় গ্রহণ করায় বিদ্যা উপাক্ষন •ইতে পারে না, চহা প্রমাণিত হয় না। অকৃল আটলান্টীক সাগ্রে তব্লী ভাষাহয়। ক্লম্ম্ন্তন মহারাজে। উপাস্ত ১ইয়-ছিলেন, আর একজন যদি কলম্বের ভাষে অকুল না ভাষিয়া डीहार উপদেশ ধারমা উ।शांत প্রদাশ র পণে আমোরকার যার, তবে তালতে কি কিছু নিকাদ্ধতা লয়ণ বস্তুত: জীবনের প্রত্যেক প্রোজনীয় বিষয়েভেচ আম্বা এইরপ প্রোপদেশ माछ कविश्रा कारी। कतिश्रा शांकि, हेहाट अक्षर्य हत ना। बक्का একপ না কারলে মানব্দীবন বোধ হয় পশুজাবন হইয়া যায়। গত বংসর কলিকাতার আনীত ভর্ক-প্রাতপালিত কর্ত্তীই তাহার প্রতাক সাকী।

৩। কেচকেচ অজ্ঞ ও ভ্ৰান্ত এবং "ভ্ৰান্ত ও অপূৰ্ণ" একট কথা মনে করেন। কাজেচ অভান্ত গুরুণাদ কথাটা তাঁচাদের প্রাণে গুরুতর সাঘাত করে। কেন না একমাত্র ঈশ্বর जित्र बात (कहे वा भूग • हेर्ड भारत ? এটी यে **बा**डि **पू**न-ভ্রান্ত তাহা সহজেই বুঝ' যায়। ভাস্ত মাত্রই অজ্ঞ এবং অপূণ। কিছু অজ্ঞ ও অপূর্ণ মাত্রই যে ভ্রান্ত কইবে এরূপ কোন কথা নাই। পৃথিবীর কেন্দ্র হলে কিরূপ উত্তাপ তাহা আমি कानि ना, हेशां उपापि अस्य धनः अर्थ हहेगाम नहि । किन्न ভ্ৰাপ্ত ছইবাম কি ? ধে অবগত নহে ভাছাকে অজ্ঞ ও অপূৰ্ वान। आत्र (य जून कवित्राष्ट्र जाहात्करे खांख वान। डेस्ट्र কণাই এক কি 📍 ত্রাহ্মধর্মের মূলতত্ত্তালি একত্র কারর। मृक्षिक कतिरण बारकते निर्हात जाहा व्यवश्रदे अञान श्रद

জ্যামিতি যদি অল্রান্ত গ্রন্থ চর, তাচাতে তাচা পূর্ণ চইল কি গ স্থানাং কোন মানুষকে যদি অল্যন্ত ও বলা যার তথাপি তাচাকে পূর্ণ বলা চইল না। কিরু আমার প্রাবদ্ধে আমি অল্যন্ত মানুষের কথা বলি নাই, কেবল অল্যন্ত গুরুব কণাই বলিয়াছি। এ কথাটার অর্থ ব্রিভেণ্ড আনেকে দেখিতেছি ভূল কবিরাছেন। বোধ হয় তাঁচারা এই উভর বাকোর পার্থকা উপলব্ধি করিতে পারেন নাই। জাগদীশ পণ্ডিত অল্যন্ত দার্শনিক এবং জাগদীশ পণ্ডিত অল্যন্ত মানুষ এই উভর বাকো কি কিছু পার্থকা নাই গ এই কপাঞ্জল এত দূর বিস্তার করিয়া বলিতে চইবে প্রথম প্র লিথিবার সময় আমার সেকপ ধাবণা হর নাই।

৪। কেচ কেছ একপও চিম্বা কবিয়াছেন যে "অভাস্ত **প্রক্র** কানিতে চইলে, অনুস্তু শিষ্যের প্রয়োজন নতুরা অনুস্তিক অভ্রান্ম ভাবে কিরুপে ব্রা ঘাইবে ? স্থভরাং গুরুর পুর্বে শিষোৰ অভ্ৰান্ত ভঙ্যার প্রশোজন এবং শিষা অভ্ৰান্ত চইলে আবে গুক্ব প্রায়েকন কি ?" নিজে অন্ত্রায় না চটাল অস্তাক অমন্ত্রে বলিষাভানা যায়না এই যুক্তি অবলম্বন কবিয়া নাস্থি **्करा यथन आ**याराम्य माझ उर्क कारन छथन छै। हारमन कथा स কোন উত্তর দিতে পাবি না। কিন্তু কোন ব্রাহ্ম এরপ প্রশ্ন করি<sup>ল</sup> জোভার উত্তর দেওয়ং অভিশ্যসহজ হয়। কেন না ব্রাহ্মগণ আপেনাবা অল্রাস্ত, স্কজিত, পূর্য-প্রিত ইত্যাদি না চইয়াও ঈশ্ব-तरक **खेनकत ७**९१ युक्क नित्रा छित कतिया/हर। छञ्जास ना इन्हें बा का हारक ९ अ जास प्रिय करा यात्र स', हेटा यिनि दरलन, किनि चालातका वाली किन्न बान्न नर्टन। चालातका वालीत व **সকল আ**পত্তি খণ্ডন করিতে আমার কোন শক্তি নাই। অপেব কেচ কেহ এরপও ভাবিয়া পাকেন, আমরা আত্ম বৃদ্ধি ছারা যথন প্রক্রকে নির্ণয় কবিব তথন প্রক্র অলেপকা আমাদেব ৰুদ্ধিই শ্ৰেষ্ঠ। এরূপ চিস্তাকৰা একান্ত বালকভা মাত্র। কেন না আমারা আত্ম বৃদ্ধিদ্বারা ঈশারকে নির্ণয় কবিয়াছি এবং ঈশবের অভাশ্বতাজ্ঞত হইবাছি। এই জনা ঈশব অপেক। আমাদের বৃদ্ধি শ্রেষ্ঠ চইয়াছে এবং আমবা ঈশ্ব অপেক। ष्यञ्चास इनेपा हि अक्रेश नरह। ष्यागरा मर्सन। (र ममन्द्र नास्किरक মহাত্মা বলিয়া শ্রহা করিয়া পাকি, তাঁহাদিগকে মহাত্মা ভির কবিতে ঘাইয়া, আমরা উভোদিশের অপেকা মহাত্মা হটয়া যাই একপ নহে, একপ চিস্তা একরপ ছন্টিস্তা মাত্র।

৫। কেছ কেছ গলেন স্বার অল্রান্ত এবং তাঁচার বাণী ব অল্রান্ত বটে, কিন্তু ল্রান্ত অপূর্ণ মানুগ্রর মধ্য দিয়া আসিছে ভাচা বাঁটিরপে আসিতে পারে না।" একগার মধ্যে একটা শুক্রতর ল্রান্তি এই বে মানুষ যদি কগনও অল্রান্ত ঈশ্রর বাণী না পার, ভবে সে অল্রান্ত ঈশ্রর বাণীর অল্যন্ত কোগায় পাইবে ? যাচা অল্রান্তর্জাপ মানুষ্যের কাছে পৌছে না, মানুষ ভাচাকে অল্রান্ত আনিলে ফলই বা কি? যাচাচউক এই কগার মধ্যে একটা প্রাক্তর বিশেষ তন্ত্র রাচরাছে। মুস্বামান, খ্রীরান, চিন্দু প্রভৃতি যদি বলেন, অপূর্ণ ও মলিন মানুষ্যের মধ্য দিয়া বাঁটি অল্যন্ত ঈশ্রর বাণী আনেতে পারে না, ভবে আমি তাঁহাদের কথার কোন উত্তর দিতে পারি না। কেননা মুস্বামান, বলিতে পারেন "আল্লা প্রিক্তি পুক্ষর

মহত্মদকে বিপেষ্ডাবে স্টে করিয়া তাঁহার মণাদিরা খাঁটি সভ্য প্রেরণ করিয়াছেন। খ্রীষ্টান ও বৈঞ্চ বলিভে পারেক: উপাব সায়ং অবভীণ হইয়া, জগতে সভা প্রচায় করিয়া গিয়া**ছেন,** धिन्तृ वनिष्ड भारतन, आधारतत (वन अप्नोक्रयत उक्कावाका;<sup>\*</sup> কিন্তু গ্রাহ্মগণের সেরূপ কিছু বলিবার অধিকাব নাই, যাত্র্যের মধ্যদিয়া ঈখবের বাণীও ব্রহ্মতত্ত্ব অভ্রত্তরণে প্রাকাশিত হয়, একথা অস্থীকার কবিলে ত্রাহ্মদর্শের কি দাড়াইবার হল शास्त्र १ (प्रकार बहेरन खाइत्राग्टक विताह वस "सामत्री ধর্মক র যাতা কিছু বলিতেছি ভাতার কিছুট অন্তান্ত সভা নহে। ইচা মলিন ও ভ্রাম্ভ মরু/বার কপোল করিত ম<mark>লিনভা ও</mark> ভ্ৰান্তি বিজড়িত চিম্বা মাত্ৰ।" কোন বিশ্বাসী ব্ৰাহ্ম **কি এরপ** বলিতে প্রস্তুত আছেন 🕈 ভগবান ব্রহ্মসমাক্ষকে এরপ প্রাচ্চন নিগৃত ভীৰণ মতেৰ হল্ত হইছে রক্ষা কৰিবেন। ১লা (भोरवर जवरको मृते ते ১৯७ शृक्षीय विजीय कनस्य मन्नामकी ब স্তুত্ত নিপিত হটয়াছে ''আদেশবাদ অগ্র'হা কবা ব্রাহ্মধর্শে**র** বিধি নয়, কারণ ভাচাট আক্ষাণাণ অবলম্বন এবং ভাচাই ধর্ম ফীবনের আলো।" শ্রহ্মাম্পদ তত্ত্বৌমুদী স**ম্পাদক** মহাশ্য সাধারণ অক্ষেস্মাজের আনচার্যা ও প্রচালক, তীহার মুশে একণা শুনিয়া আমবা কিছু আশব্য চইলাম। আমরা নিখাদ করি ঈশ্বন এক ব্যক্তি, ভিনি যপন মাস্তবকে প্রাজ্যা-(एम करतन, जभन এ ভাবে करदन नो, (य कामि य कार्एम করিব ভালা এ ব্যক্তি যেন খাঁটি বুঝি'ত না পাবে। যদি व्यामाटक टकान नियस व्याप्तम कता क्रेचटतव ठेउछा ठन्न এनः তিনি আদেশ কৰেন, কিন্তু জড় শক্তি কি আমার অপূর্ণতা পেট আদেশকৈ খাঁটিকাশে আমার নিকট উপন্থিত হইতে ৰাধা দিতে সক্ষম হয়, তবে ঈশ্বকে কি শক্তিনীন বলা হয় না 🕈 অব্যসংকল ও বিবেকবাণীকে আদেশ ভাবিলেই এক্লপ সৰ সন্দেহ উপস্থিত হয়। এ সকল সন্দেহ যে তর্কে মিটে ন। তালা জানি, ভবে প্রাসঙ্গ ক্রমে বলিতে এইল।

৬। কেচ কেচ অলান্ত গুরুণাদকে জীবারা ও পরমান্ত্রর মধাগত জাবরক ভাবিরা ইতাকে ব্রাক্ষধন্ম বিরোধী মলে করেন।
ইতা কেবল গুকতত্ব সক্ষে জনভিজ্ঞতার ফল, জীবরের স্থিত সাক্ষাৎ যোগের বাসনায়ই মানুষ গুরুর জাত্রর প্রত্থিক করে।
মতরাং গুরু ব্রহ্ম আবরক নতেন। পরস্ত ব্রহ্মণোগের বিশেষ ব্রহা। এরূপ চইলে যদি ব্রহ্ম আবরক হন, তবে উপদেষ্টামাত্রই জ্যাধিক শরিমাণেই জ্ঞাবরক চইবেন।

৭। সাধনপত্মকে অল্রাস্ত না মানিলে কথনই সাধন-নিষ্ঠা দাঁড়োর না। বাঁচারা কোন অবস্থা লাভ করিতে প্রারামী হইরা সাধন করেন, তাঁহারা অবস্থাই কিছু না কিছু অল্রাস্ত মানেন। কেহবা অপেনার প্রকপোলকরিত মত ও পথকে অল্রাস্ত ভাবেন, কেহবা বাঁহাকে ঈশ্বরাম্প্রাণিত বলিয়া বিশাস করেন ভাবেন, কথিত মত ও প্রদর্শিত পথকে অল্রাস্ত মানেন। একজন ভাবেন সাধন ভজনতীন আমি অল্রাস্ত, মস্ত একজন মনে করেন, পাস্ত সমাহিত যোগমুক্ত ব্যক্তি, অল্রাস্ত প্রভেদ এইমাজ। বিনি শিতীয় বাজির প্রদর্শিত পথকে অল্রাস্ত প্রভেদ এইমাজ। বিনি শিতীয় বাজির প্রদর্শিত পথকে অল্রাস্ত ভাবেন, ভাহার একটা মুক্তি এই আছে বে উক্ত ব্যক্তি কর্মরান্ত প্রভরাং অল্রান্ত, প্রথম ব্যক্তির মত এট বেঁ আমি বাচা বৃবিয়াতি ভাগাই অপ্রাপ্ত। কেত বা অপ্রাপ্ত গুরু মানে কেত্বা অপ্রাপ্ত অবং মানে, ইবার মধিক কিছু প্রাভেদ নাই। ইতি

ভৰানীপুর শুনানাবঞ্জন শুহু।

### ব্রাক্ষসমাজ।

সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের কার্যানির্বাচক সভা নিম্নলিখিত
প্রাণাণী অনুসারে আগামী চতুংষ্ট মাবোৎসব সম্পন্ন করিতে
ইচ্ছা কবিয়াতেনা আবেশুক চইলে এই প্রণাণীর সামাক্সরপ
পরিবর্জন চইলে পাবিবে। আমবা ভত্তকৌমূদীর প্রাচকগণকে
এবং ব্রাক্ষসমাজের সচামুভূতিকারী প্রত্যেগকেই এই উৎসবে
বোগদান ক'রবার জক্ত বিশেষ আগ্রাহের সহিত নিমন্ত্রণ
করিভেছি। মফবলত্ত বন্ধুগণের অবণার্থ নিশেদন কবিতেছি যে
ভাঁছার। উংসবে আগামন কবিবার সমন্ন কবেন এবং যাঁচারা
কপবিবারে এখানে আগামন কবিবান, ভাঁহারা যেন বান্ধ্যমাজ
কাষ্যালয়ে সে সংবাদ অপ্রে প্রদান কবেন।

>লা মাঘ, ১৩ই জাহুয়ারি শনিবার—এক্ষে পরিবাব সকলে উপাসনা ও আক্ষসমাজের কল্যা-ণার্য প্রাথনা।

২রা ৢ ১৪ই ৢ রবিবান—প্রাদঃকালে উপাসনা। অপরাক্ষে বিভনপার্কে প্রচার , ভৎপরে নগর সংকীর্ত্তন এবং উপাসনা।

•ৰ। ৢ ১৫ই ৢ সোমবার—সারংকালে উৎসবের উল্লেখন।

৪ঠা ৢ ১৬ট ৢ মললবার—প্রাতঃকালে উপাসনা।
 সায়ংকালে বক্তৃতা।

১৭ট ু বুধবার— প্রাভঃকালে উপাসনা।
 সায়ংকালে ব্রহ্মবিদ্যালয়ের উৎসব।

 ३ ১৮ই ুর্ফশতিবার—প্রাতঃকালে উপা-সনা। সায়ংকালে বক্তৃতা।

।ই ু ১৯০ ু শুক্রবার--প্রাভঃকালে উপাসনা।

সায়ংকালে সক্ষতের উৎসব। ≷ ৢ ২০০৫ ৢ শনিবার—-ত্রাক্ষিকাসমাজ ও বঙ্গ-

মছিলা সমাজের উৎসব। সায়ং-কালে সাধারণ আক্ষমজের বাধিক অধিবেশন।

৯ই ু ২১এ ু দ্ববিধান—প্রাতে উপাসনা। অপ-রাহে আলোচনা, সারংকালে উপাসনা।

১•ই ু ২২এ ু সোমবার—প্রাভঃকালে উপাসক-মশুলীর উৎসব। অপরাফে নগর-সংকীর্ত্তন, সারংকালে উপাসনা।

*	२७व	•	মলগণারসমন্ত বিনখাপী উৎ-
			गर ।
	284	•	বুধবার-প্রাত:কালে সাধনসঞ্জ-
			লীর উৎসব। মধাচে <b>ল আলো</b> -
			চনা। সায়ংকালে বস্তুতা।
	204		বৃহস্পতিবাবপ্রাতঃকালে উপা-
			সনা। অপরাকে বালকবালিকা-
			সন্মিনন। সারংকাণে ছাত্রসমা-
			ক্সের উৎসব।
	104		গুক্রবার প্রাত:কালে উপাসন।।
			সায়ংকালে বক্তা।
	२१४		শনিবারপ্রাতঃকালে উপাসনা।
			অপরাকে রবিবাস্ত্রিক বিদ্যালন্ত্রের
			সায়ংকালে বক্তা।
	२৮ व		রবিবার—উদ্যানে ব্রাক্ষদক্ষিলনীয়
			<b>উ</b> ৎস <b>व</b> ।
		. 20 a . 20 a . 20 a	, 384 , 384 , 384

অন্থিতিন ক্ষন হার, অনাপ, অক্ষ লোকদিরের জন্ত সিরাজ গঞ্জের আক্ষাজ্গণের যাত্র তথার একটা কুজ আশ্রম প্রতিষ্ঠিত হচরাছে। স্থানীয় ভদ্রশোক ও প্রধান প্রধান রাজ ক্ষাচারিগণ ইহার প্রতি বিশেষ সহাত্রভূতি প্রকাশ করিয়াছেন। প্রমেশ্বর উল্যোগকারীদিরের প্রাণেবল বিধান কর্নন।

প্রচার—গভ ১০ই ডিসেম্বর রবিবার কলিকাতা হইছে কতিপর আদ্ধবন্ধ গলাতীরণজী বেলুড নামক প্রামে পিরা উপাসনা, সংগাঁত, সংকীর্জন এবং বক্তৃতাদি কবিরাছেন। প্রামেব লোকে বিশেষ মনোযোগের সহিত যোগদান করি-রাছিলেন। কলিকাতাবাদী আদ্ধাগণ অবসর মতে এরপে নিকটণজী ভানে গদন করিয়া বিবিধ উপারে আদ্ধর্ম প্রচার করেন, প্রাথনীয়।

শ্রাজ কলিকাতা বাবাটাতে সম্পন্ন হববার দিঘাপাতিয়া ষ্টেটের
ম্যানেকার বাব কালী নারায়ণ রায়ের পরলোকগত পিছ
আদ্যশ্রাদ্ধ কলিকাতা বাসাবাটীতে সম্পন্ন চইরাছে। ই
বাব্ উমেশচন্দ্র দত আচার্য্যের কাষ্য করেন। কালী নার।
বাব্ পিতার সংক্ষিপ্ত জীবন চরিত পাঠ ও প্রার্থনা করেন।
শ্রাজ্যেপলক্ষে কালী নারায়ণ বাব্ সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে ১২৫
টাকা এবং সাধনাশ্রমে ৫০ টাকা ও অক্সাক্ত স্থানে ৭০০ টাকা
মোট ছই শত টাকা দান করেন। পরমেশ্র প্রোলোক্ষ

গত ৬ট ডিগেম্বর টুকাঁথির পরলোকগত আক্ষবন্ধু বাৰ্ হরিপ্রসাদ সরকারের আদ্য প্রাদ্ধ গত এই নবেম্বর সম্পার হইরাছে। কলিকাতা হইতে আগত বাব্ ইম্পূত্বণ রার আচার্যোর কার্যা করেন। হরিপ্রসাদ বাব্র জী এতত্পণক্ষে লাঃ আঃ স্মান্তে ২ টাকা সাধনাপ্রনে ২ টাকা ও এবং স্থানীর

बाक्तवारक २८ होका खबर अञ्चाच जारत २८ होका स्वाहे १८ টাকা দান করিয়াছেন। পরমেখর পরলোকগত আত্মাকে ভালার অমৃত নিকেন্ডনে স্থান দান করুন এবং স্ত্রীর প্রাণে मास्त्रि मान कक़न।

জ্বাভক্র্ম-- মলপাইগুড়ির শ্রীযুক্ত বাবু চরিমোচন চক্র বর্জীর প্রেথম পুল্রের ক্লাভকর্ম্ম গড় ৬ট কার্ক্তিক সম্পন্ন চটয়াছে। বার্ অবিনাশচন্ত্র দাস, মৃন্দী জালাল উদ্দীন এবং বাবু হবিদাস ঋপ্ত মহাশবেরা নবকুমারের কল্যাণ কামনায় বিশেষভাবে প্রার্থনা করেন।

বাৰ্ষিক আদ্ধি-গভ ৮ই পৌষ শুক্ৰবাৰ নিম্ভা গ্ৰাম শ্রীযক্ত মতেক্সনাপ চট্টোপাধ্যায় মহাশ্যের ভগ্নীর পবলোক श्रम मित्रत विस्मय देशामना इत्र । वाव व्यामिनाथ हर्ष्ट्रीशासाव উপাসনাকরেন। মচেন্দ্র বাব প্রার্থনাকরেন। এই উপলক্ষে কাষেকজন ব্ৰাহ্ম বন্ধু নিম্ভার গমন ক বিযাছিলেন।

নামকরণ---গভ ২৮শে অগ্রহায়ণ মঙ্গলবাব থাসিয়া পাছাডভ লেলা নামক স্থানে ইউ ইয়াটন কাজিণাম্ এবং ইউ গোবিন্দচন্দ্র রায়ের কক্সার নামকরণ ব্রাহ্ম পদ্ধতি অনুসাবে সম্পন্ন চইয়াছে। বাব নীলন্দি চক্র-ত্রী আচার্যার কাশ্য সম্পার করিয়াছিলেন। কল্পা তইটীর নাম ব্পাক্রমে সৌদামিনী এব॰ কুমুদিনী বাপা হটবাছে।

ক্লভক্ততার সভিত স্বীক'র কবা ঘাইতেছে যে বিক্রমপুবের চুর্ভিক্ষ নিবারণার্গে নিমুলিপিত দান পাওবা গিয়াছে। ৰাব দীননাথ গুপ্ত হাজাৰিবাগ

(শ্ৰীমতী চঞ্চল দেবী দ্বাৰ সং	ংগুছীভ) ১১॥
ु कानकी नाग हा है। लागाय न	ঞ্চনাৰ ১
্বু তুর্গ দাস কন্ত মেদিনীপুর (স	ংগুহাত) ৮
ু অধরচন্দ্র মজুমদার কলিকার	51 5.
সিমশা পর্বতের একটি বন্ধু	•
	ااط د
<b>शृ</b> रक	প্রকাশিত ৫৫০॥

## বিজ্ঞাপন।

যোট

আলোমী ২ • শেকানুষারী শনিবাৰ অপরাজ ৬ ঘটকার সময় কলিকাতা ১৩ন মির্জ্জাপুর ষ্ট্রীটম্ম সিটি কলেক ভ্রনে সাধারণ ব্যাহ্মসমালের যোড়শ সাহংগ্রিক স্ভার অধিবেশন হট্রে।

সভা মতোদরগণের উপস্থিতি একাস্ক প্রাথনীয়।

### विद्वा विषय ।

- >। (बाफ्रम नार्षिक कागानिवत्रनी এवर बाब नारवत किन्नान।
- कर्षकावी जित्यान । 2 1
- व्यथाक प्रस्ता प्रश्तित ।
- অধ্যক সভার সভা নিয়েগে সম্কীর অবাস্তর নিরমেত নিম্নলিপিডরপ পরিবর্ত্তন বিবরে কার্যানিকাচক সভাব প্রস্থাব :---
  - অবারর নিরমের বিতীয় নিরমে "অনামুঠানিক" শক্তের পর এই সকল नरकत राश कडेरर । यथां—"त्यम २ तरमात्रत श्रापिक कि नां, ভিন বংসরের অধিক কাল সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের সভা কি না।"
  - (খ) অধ্যান্তর নিয়মের ভূ গীর নিয়মে নিয়লিখিতরূপে পরিবর্ত্তিড চইবে ; ~ ''দাধারণ ব্রাহ্মসমাজের অধাক সভা ভাঁচাদের তৃতীয় জৈমাসিক অধিবেশনে সাধারণ ব্রাহ্মসমাক্ষের > জন সভা লইয়া একটা মনো-नवन जब-कथिती शर्रन कतिरवन। औ न सरनत मर्सा माः औः मनारस्रत मन्नापक वा महकाती मन्नापक এकक्षम शाकित्वन, अवर डिनि अहे मन कामित मन्नानत्कत कावा कतित्वन । मत्नामत्रम नव कमित्री আনন্তক নোধ করিলে না: ত্রাঃ সমাজের উপযুক্ত সংখ্যক সভ্যের কলিকান্তা ১লা পৌর ১৩০০

नाम डीशारपत्रे मछ कानिया कथाक मछात्र मछ। मरमनियमार्थ दश्यत्र করিছে পারিবেন ৷ এতখ্যতীত সাং বাং সমাজের কার্যানির্বাহক-স্ভা আবস্থক বোধ করিলে, সমাজের ২২ নিরমামুসারে বাঁছারা ১৫ বংসারের ন্যুন বয়ক কিমা ডিন বংসারের আপেকা ন্যুন কাল সমাজের मका, डे|हाटमत मधा हहैट७७ व्यथाक मछ।त्र मछ। मत्नानग्रनार्थ व्यवस করিতে পারিবেন।

অধ্যক্ষ সভার পদগ্রার্থী সভ্যগণের নামের তালিকার ভিন্ন ভিন্ন ৰাপে মনোনীত সভাগণের মধ্যে কোনও ইতর বিশেষ করা হইবে মা।

- (গ) সপ্তম অবাস্তর নিরম উটিয়া<sup>\*</sup> ঘাইবে।
- (খ) ৮ম. ৯ম, ১০ম অৰাস্তর ানয়মেব ''ভেটি গণনাকারী'' কিছা ''গণনা-काती" भरमत পরিবত্তে "মনোনয়ন" हेहरा।
- (৩) পঞ্ম আগন্তব নিযমেব মুদ্রিত "ক তপদীল এবং ক তপদীলের অসুষারী মুদ্রিত'' উঠিয়া যাইবে।
- ে। বাবুবাণীকাক্ত রায় চৌধুরী মহাশয় নিয়লিখিত প্রেক্তাৰ উপস্থিত কবিবেন:---
  - (১) ব্রাহ্মছাত্রীনিবাস সব কমিটীব সম্পাদক বাবু গুরুচবণ মছলানবিশ মহাল্যের সম্পাদকীয় কায়োর অবসান বিষয়ে কায়ানির্বাছক সন্তান্ত্র আচিরণের শ্রতি অসভোগ প্রকাশ করা হড়ক।
  - (২) ব্রাক্ষ-ছাত্রীনিবাস সংস্থাপন অবধি বাব্ গুক্চরণ মহলানবিশ মহাশয় যেরপ স্থদকভাব সাইত ইহার কাষ্য সম্পাদন কবিয়াছেন, ভাছাতে স্তাথানুরোধে কার্যানিকালক সভাব (অন্যক্ষ সভাবও) কার্যা সক্ষে ছুংখ প্রকাশ কর। হওক এবং আগোমী বধের কার্যান-লাহক সভাকে অনুবেধে কৰা চদক যে কোন প্ৰকারে উচ্চাকে পুন নবুক্ত করিয়া উ।চরে প্রাত বেল উপযুক্ত ব্যবহার এবং ছাত্রীনিবাসের খ্রীবৃদ্ধি করেন।

माः बःः भगाज कार्यानग २३३ कर्न इसी लम् ब्रीहे কলিকাত ৭ই ডি সম্ব ১৮৯৩

শ্রীপ্তক্চরণ মঙ্গানবিশ।

সাঃ বাঃ সমাজ সম্পাদক।

আগামী ১১ই জালুয়াবা ১৮৯০ বুংস্পাত্রার অপরাজ ৬ ঘটিকার সময় সিটেকবেজ ভবনে সাধারণ এক্ষিসমাতের অধ্যক্ষ সভার ৪থ তৈমাাসক অধিবেশন হটবে।

वित्तिष्ठा तिस्य।

- ১। চতুর্থ বৈমালিক কাব্যান্ব্রণ ও আর নাষের ভিস্পি।
- ২। আমাসামী বর্গের অধাক্ষ সভার অস্ত ভেটে প্রণাকারী স্বকাষ্টা নিয়োগ।

৩। অধ্যক্ষ সভার সভা নিয়েগে সম্বন্ধীৰ আগস্তের সিয়মের কিছু কিছু পৰিণঠন সম্বন্ধে কাৰ্য্যানকালক সভাব প্ৰস্তাৰ।

৪। বিধৰা অথবা বিপত্নাক'দগের পুনাকাৰাত সম্বনীয় নিদ্ধারণ সম্বাধ্ব পুনাব্বচাবের জ্ঞান বাব্ উন্মেশচন্ত্র দত্ত মৃত্যুপ্তর প্রস্থাব উপস্থিত করিবেন।

अभारकत वार्षिक कार्यानिवनन मध्यक्त विठात ।

৬। বি!শধ।

সা: ব্রা: স্মাঞ্চ কার্যালয় २১১ कर्ष प्रशालिम द्वीडे কালকাতা ৭ই ডিসেম্বর ১৮৯৩

ত্রী গুক্তরণ মচলানবিশ माः बाः मगः व मन्त्राप्तकः।

### ভোটিং পত্র।

আগামী বর্ষের অবাক্ষ সভা গঠনের নিমিত্ত ভোটিং পঞ मछाशर्पन निक्षे ्याबिक इंडेता**ए**। यहि (कान मछा एकाहिर পত্ৰ প্ৰাপ্ত না চন, অনুপ্ৰহ পূৰ্বক সাধানণ ব্ৰাহ্মসমাল কার্য্যালয়ে কানাইবে পাইতে পারিবেন। সাধারণ ্**ত্রাক্ষ** সমাজের মফাশ্রলত সভ্য মহোলয়গণকে বিশেষ ভাবে জ্বসুরোধ कता राहिटहरू, (य डीहाता (यन च च खाक्रामारकत नालामक মলাশরগণের নিকট চটতে ভোটিং পতা শইলা এবং ভালা পুরণ করিয়া আগোমী ৫ট জ'কুয়ারী ১৮৯৪ তারিখের মধ্যে নিম্বলিখিত ঠিকানার পাঠাইয়৷ আমাদিগকে বাধিত করেন ৷

माः वाः गमाय २১)नः कर्व ६ या गित्र 🖺 हे শ্ৰী মঘোরনাপ মুংধাপাধ্যার नरकाती नन्नावक।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা

১৯শ সংখ্যা। ১৬শ ভাগ।

১লা মাঘ, শনিবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৪।

বাৎসরিক অপ্রিম মূল্য ২॥• মফস্বলে ৬ প্রতি থণ্ডের মূল্য ✓•

### व्यार्थना ।

ह मौनम्याम थिछा! आवात (छामात मौनकीन मस्रानश्रम উৎসব কবিবার জন্ম তোমার দ্বারে আসিয়াছে। প্রভো। এই অপরাধী সন্তানদিগের জীবনেব সকল সংবাদ তুমি জান। যাত। করা উচিত ছিল না, তালা কবিয়াছি, যালা করা উচিত ছিল ভাছা করি নাই, পিতা আমাদের অপরাধ ক্ষমা কর। পিতা चारतकरक ভক্তি ও শ্रद्धा कहा উচিত ছিলা কিন্তু করি নাই, কত জনকে প্রীতি করা উচিত ছিল অণচ করি নাই,তুমি আমাদিগের ব্দপরাধ ক্ষমা কর। ভোমার সাধন ও সেবা যেকপ নিষ্ঠা ও ভক্তির সহিত করা উচিত ছিল্তাহা করি নাই, ভূমি আমাদিগকে কমা কর। সাধু দক্ষে ভোমার পবিত্র নামের হাওরাতে খসিলে মহা-भाभीत कत्रत अर्गावत्र। यात्र ,चर्जीत ভाবে कत्र भूर्व इत्र। केनकारनत জন্ত সংসারের জ্বালা যন্ত্রণ। ভূলিয়া যাই। এইকপ শ্বণীয়ভাবের আভাস ড উৎসৰ-ক্ষেত্রে বার বার পাইডেছি, আর ছুইদিন बाहेट ना याहेट करे हा गाइँ हा एक निट कि। इंशी ७ व्यवतारी সম্ভানের তৃঃধ ও অপরাধ কি ঘুচিবে না ? জীবনে কি তোমার সভ্যের আলো চির্দিনের মত প্রতিষ্ঠিত হটবে নাণ লাভো এবার উৎসবে তোমার মলিন সন্তানদিগের মলিনত। घुচाहेट बहेटन, পारभन्न खाला निर्दाण कतिए बहेटन , ट्यामात ক্রণার হাওয়াতে নৃতন সংকল প্রাণে আসিতেছে; নৃতন অভিজ্ঞা জীবনকে আধিকার করিতেছে; ভোমার প্রেমমূণ না দেখিলা, ভোমার সভাালোককে চিরদিনের মত সম্বল না কবিয়া তোমাব উৎসবের দার ছাড়িব না। ষ্পীশ্বর, এবার ভোমার ব্রাহ্মদমাঙ্গকে ভোমার ক্রোড়ে দেখিব, ষ্মার সকল অশান্তি ও ছ: থ ভূলিয়া যাইব। তোমাকে ভূলিয়া, ভোমাকে হারাইয়া আমাদের যে ছণ্দশা, ভাহা ভ ব্দান। (एर्ट, मूठ व्यार्ग नवजीवरनत मध्येत कत्। আইভিজ্ঞাও সংক্রের মধ্যে তুমি শক্তিরূপে প্রকাশিত হও। ভোমার রূপার উপরে একাস্ত ভাবে নির্ভর করিয়া যেন আমরা ভোমার মটোৎসবে প্রায়ুত ১ই ৷ আনীকাদ করু যেন বিনয় ও আয়ো-সমর্পণের স্তিত ভোনার করুণার প্রাতীক্ষা ক্ষিতে পারি। ভোমার ভক্তগণের শুভাকালা এবং ভোমার আশীর্কাদ মন্তকে লইয়াযেন তোমার প্রসাদের অপেকা করিতে পারি।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

প্রাচীনে নবীন-কালে সক্ষীল প্রাচীন হয়। বহুপদার্থ কালে জরা প্রাপ্ত হয়, তালাদের শ্রী দৌন্দর্য্য অন্তর্ভিত **লয়, এবং মৃত্যু ভালাদিগকে ধীরে ধীরে প্রা**স ष्पावात्र याहारमञ्ज 🕮 स्मोन्मर्गा এक्टवारत ष्यञ्चित्र हत्र मी, ভালার।ও মানবের চক্ষে প্রাচীন হইরা পড়ে। **म**ण मिन (मिश्रवाहि जाहा आह (मिश्रिक हेम्हा करत ना। এমনি চক্ষের অভাব, পরম অন্দর যাহা, যাহা একদিন চিত্তকে नित्रय-तरम পूर्व कतियाहिल, श्रमस अपूर्व आनन्त বিস্তার করিয়াছিল, তালা কালজেমে প্রাচীন ও সৌন্দর্যা शैन हरेया भएड ; जात्र 6 छएक जाम्हर्गा-त्राम मिक्क करत्र नी। বিধাভার বোধ হয় এই প্রকার বিধি, মানব যদি প্রাতনে তৃপ্ত থাকিত তবে আর নব দৌন্দর্য্যের স্বষ্টি বিষয়ে প্রারামী হইত না। মানব-হাদয়ে এই নৃতনের স্পৃহা বলবতী **পাকা**-তেই মানব সমাজ চিরদিন নবীকৃত হইতেছে। যে উন্নতি বা যে সৌন্দর্যা একবার সাধিত হইয়াছে, মানব মন ভাচাকে জ্যাগ জরিয়া ঘাইতেছে, ও তদপেকা অধিকতর উরতি ও ष्यिक उत्र (मोन्सर्ग উৎপामन अप्रामी हहे (कहा) বিভাগেই এই অভূপ্ত নবীন স্পৃতা কাষা করিতেছে। এই জীবনেই এরূপ কভকগুলি বিষয় রহিয়াছে যাহা কথন পুরাতন হয়না। প্রিয় জনের মুধ কোন ও দিন আমরা পুরা-তন ব্লিয়া অফুড্ব ক্রিনা। কোনও দিন ব্লিনাও মুধ পুরাতন চইয়াছে, আরে আনন্দ বিধানেব শক্তি নাই, এখন নূতন মুথ চাই। কে কবে আপেনার আংগদিণীকে বা আপনাব পুত্র কঞাকে বলিয়াছে, তোমাদের মুধ আচৌন হইয়া গিয়াছে নৃতন মুধ পরিধান কব ? ব্রং এই কথাই कि भाजा नाक (य (श्रामानाम वाकिमित्तत मूथ या भूतांखन इत, जिन्हे **अ**धिक अन्तर इत। (श्रायन ध्रमन श्रम। हेहा याहारक म्लाम करत्र जाहारक नुजन करा। विरम्पम वहमिन वात्र कति-एकि, चारामंत्र काया कानक मिन कुनि नाहे, विरम्भीत मध्या, विजाबोर्स मध्य मिन हिना याहेटल एक, यम क्रांप अकविन अकजन दकान के जिल्ल ख्राहीन मूच दिए पारे, ज्राह

সে প্রাচীন মুথ জনজে কি আনক্ষ প্রদান করে! তথন কি
সেই প্রাচীনের জন্ত সমুক্ষি নিবীন ত্যাগ করিতে পারা যার না!
প্রেমের এমনি মহিমা। এই জগৎ ত অনেক দিনের প্রাচীন।
কিন্তু যে দিন প্রেমের চক্ষে ইহার দিকে চাই, সে দিন আর
প্রাচীন লাগে না। সে দিন ইহার গুপ্ত কথা সকল প্রকাশ
ক্ষীয়া পড়ে; সে দিন ইহার পত্রে পুলো ফলে কত নৃতন উপদের দেখিতে পাই। কবি প্রেমের চক্ষে প্রকৃতিকে দর্শন
ক্ষেম বিলয় প্রকৃতি তাহার নিকট চির্যৌবনা।

আমর। যে মহোৎসবে প্রবৃত্ত হইতে যাইতেছি তাহার ন্যায় প্রাচীন অধর কি আছে? ঈর্মারের নামের ন্যার প্রাচীন শব্দ মানৰ ভাষাতে অতি অরই আছে। প্রেম-বিহীন হৃদরের পক্ষে ধর্মের সমুদার ব্যাপারই প্রাতন, ঈর্মারের নাম প্রাতন, উলোর মহিমাগান প্রাতন; কর্বেণ, মনন, নিদিধ্যাসন সক্লি প্রাতন। কিন্তু ব্রহ্মক্রণার আবির্ভাবে হৃদরে ধদি প্রেম সঞ্চার হয়, তাহা হইলে আমরা সক্লি নৃতন দেখিব; তাহার শক্তির সংস্পর্শে সমুদার ক্রন হইরা উটিবে। অতএব ব্রহ্মক্রপার জন্য প্রতীক্ষাক্রি।

अक्जान वामन—वह मःशाक वामायद्व मःरवारग ৰে অপূৰ্ব স্বর-লহরীর সৃষ্টি হয়, তাহাকে ঐকতান বাদন বলে। ঐকতান বাদনের দলে একজন দলপতি বা শিক্ষক থাকেন, তিনি সর্বপ্রথমে একটা স্থুর বাঁধিয়া থাকেন, তৎপরে সেই মুরের সহিত মিলাইয়া অপর সকলকে স্বীয় স্বীয় যন্ত্র বাধিতে व्यातिम करत्न। এक এक्टिन्स कल यञ्च छिन यथन वीक्षा इस्र, उथन উ। হার ইঙ্গিত মাত্র সকলে এক সঙ্গে বাজাইতে আরম্ভ করে। কিন্তু আমরা স্কান্ট অফুভব করিতেছি যে আমরা দশজনে এক স্থর বাজাহতে পারিতেছি না। দশন্ধনের স্থর ভিন্ন ভিন্ন ছটয়। বাজেতেছে এবং প্রীতি উৎপাদন না করিয়া অপ্রাতি উৎ-পল্ল করিতেছে। ইতার কারণ কি? আমাদেব যন্ত্রায়ক থিনি তাঁহার স্থরের সহিত নিজ নিজ স্থর মিলাইতে পারিতোছ না। যক্তনায়ক স্বয়ং পরমেশ্বর। হৃদয়কে প্রশাস্ত ও বিশুদ্ধ করি-লেই তাঁহার স্থব ভানিতে পাওয়া যায়; তাহা প্রতি জনেরই कर्ण वास्थि। याँ शाहात। त्मृष्टे ऋत्त्रत्र मृत्यु मिलाहेग्राह्म्स, ভাঁচাদের জাতি, শিক্ষা, ভাষা ও সামাজিক অবস্থাগত বিচিত্র-ভার মধ্যে ও কেমন স্থবের অপূর্ব্ব ঐক্যান্ত হইভেছে! এক-জন জ্মিলেন বলে, আর একজন জামালেন স্থায় পশ্চিমে. কিন্তু বাজিলে জানা গেল এক স্থুর বাজিতেছে। আমরা क्षत्रदक एक कतिएक शांत्रि ना विनिष्ठाहै. त्रहे विश्ववााशी ख বিশ্বজনীন স্থার শুনিতে পাই না। যেমন ফাটা বাঁশীভে ফাটা শব্দ নির্গত হয়, তেননি আমাদের স্বার্থ-দূষিত অবিশুদ্ধ হৃদর হটতে যে সুৰ বৃহিপতি হটতেছে তাহার মধ্যে স্বার্থের ফাটা আওয়াল শ্রুত হুইতেছে। विदवक कर्ग ত প্রয়াতে ব্রহ্মাত্তের স্থ্য ঠিকভাবে ভানতে পাইডেছি না এবং নিজ নিজ হার মিলাইতে পারিতেছি ना। এই রূপ গোলে মালে বেন্দ্র বাজিয়া বৎসরের পর বৎসর

চলিয়া যাইতেছে। মহোৎসব উপছিত-ত্রহ্মরাগ এইবার আবার একবার ভাল করিয়া- বাজিবে। এ সমরে আমাদের প্রত্যেকের পক্ষে কর্জব্য কি ? ঐকতান বাদনহলে বাদকগণ বাহা
করে, তাহা আমাদের প্রত্যেককে করিতে হইবে। বাদকগণের যথন যন্ত্র মিলাইবার সমর উপস্থিত হয়, তথন বলিভে
থাকে "আ: গোলটা একটু থামুক, স্থরটা একবার ভানি, যন্ত্রটা
মিলাইয়া লই।" তেমনি আমরা প্রত্যেকে যেন বলি "আ:
গোলটা একটু থামুক, যন্ত্রটা একবার মিলাইয়া লই।" আমাদের
মধ্যে হাহারা উৎসবের প্রারম্ভ হইতেই নিজ নিজ যন্ত্র মিলাইয়া লইতে পারিবেন, তাহাদেরই হৃদয়ে উৎসবক্ষেত্রে ব্রহ্মান্তের
মহারাগ, ব্রহ্মরাগ বাজিবে। তাহারাই পৃণমাত্রায় উৎসবের
আনন্দ সস্তোগ করিতে পারিবেন। অপরেয়া প্রবিক্তি হইবেন; তাহারা সেই পরম পুক্ষের স্থর না বাজাইয়া নিজ নিজ
বেস্থর বাজাইবেন।

যদি ব্ৰহ্মডাঙ্গায় না দাঁড়াল জল—"ৰত দিন পান कतिलाभ"---य'म अक्षणाया ना मैं। जान कन, जरत कशर करा বল্বে কেনভকত বৎসল"। এই গানটী আবার স্থারণ করি-বার দিন আগিয়াছে। ব্রন্ধভাঙ্গা কাগাকে বলে ? বিশাল প্রাস্তরের মধ্যে সময়ে সময়ে এক একটা উচ্চ ভূমি দেখিছে পাওয়া যার; যাহার উপরে বর্ষার জল কথনও দাঁড়োর না; তাহা উষরক্ষেত্র, সেথানে শস্তাদি জায়ে না। ভাহাকে ব্রহ্ম-ভাঙ্গা বলে। যেবারে অভিশর বক্তা হয় সেবারে এক্ষডাঙ্গা পর্যান্ত ভূবিরা যার; লোকে বলে এবার ত্রন্ধডালা ভূবিরাছে। ভক্তগণ কথনও কথনও আপনাদের হৃদরকে ব্রহ্মডালা বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন। বেমন একটা আট দশ হাত উর্দ্ধ মৃত্তিকার ন্তুপে একটা প্রত্তেক ও আমাদের দৃষ্টি হইতে আবরণ করিয়া রাথিতে পারে, দেইরূপ আনাদের হৃদর্ভিত সামাত অহ্সার্ভ অনেক সময়ে পর্বত সমান ত্রহ্ম-কুপাকেও আমাদের দৃষ্টি হইডে আর্ত করিরা রাথে। আপনাদের ফুদ্রকে প্রকৃত বিনরে পূৰ্ণকরাযেকি কঠিন তাহা আমেরা ৩১:০'দন অঞ্ভৰ কার-তেছি। অন্তক্ষার এমনি শক্ত যে ইহাকে এক ছার দিয়া বিদায় করিলে, কপান্তর ধরেণ করিয়া অপর দাব দিয়া হাদরে আংনিট্র হয়। অমন কি রামায়ণে।ল্লিখিত মহীরাবণ যেরূপ **অবলেরে** বিভীষণের স্বাকার ধারণ কবিয়া আসিয়া শিবিরে প্রবিষ্ট হুইয়া স্বীয় অভীষ্ট সিদ্ধ করিয়াছিল, তেমনি যে বিনয়ের ছারা অভ্যা-(त्रत्र प्रमन श्टेर्ट, अहकात्र अस्म नगरत्र (श्रष्ट विनयत्र आकात्र ধারণ করিয়া আগমন করে। এই অত্কারের হস্ত হত্তে আমর। নিঙ্গতি পাই কিরূপে? উৎসবের ছারা তাঁহারাই উপ-कृष्ठ रहेरवन, यांशात्रा विनयत्र व्यापनारमञ्ज श्वाप्तरक वास्त्रिक নিয়ভূমির ভার করিতে পারিবেন। আহার এখনও বাঁহ্রো অংকারে গ্রীবা সমুলত রাথিবেন, তাঁহাদের হাণয় ব্রহ্মভালা हरेत्रा शांकित्व । উৎসবে याशात्रा चानित्रा त्यांश मित्वन छीहा-দিগকে যেমন হাদয় কেতাকে নিয়ভূমির খ্যায় করিতে হইবে তেমনি ইহার কাবোর ভার যাঁহোদের উপরে পাড়িয়াছে তাঁহা-निशरक कात्र व नमाधकतारण क्षाप्तरक निष्ठकाम कात्र करेरव।

আই সকল কার্যোর গৌরব যাহা কিছু তাহা সেই পরম প্রভ্রই—

কই তাণটী যদি তাঁলারা জরুরে জাগারক রাণিতে পারেন,
ভালা হইলে তাঁলাদের কার্যোর উপরে ঈশ্বের কৃপা ববিত

কইবে। যদি আ্মা-পৌরববৃদ্ধি কিঞ্জিয়াত্ত তালাদের অন্তরে

শ্বেল হর, ভালা চইলে তাঁলাদেরও হৃদর উচ্চক্ষেত্তের স্থার

কম থাকিবে। ঈশ্বব করুন খেন আমরা সকলে যথাসমরে

হৃদরকে নিম্ভুমির স্থায় করিতে পারি।

উৎসবের বিশেষত্ব—আমরা যে মধ্যে মধ্যে উৎসব করিয়া থাকি তাহাতে বিশেষত্ব কি আছে ? সেই ও উপাসনা, व्यार्थना, धान, धात्रणा, कीर्द्धन । प्रशेष । (प्रशेष व्यारणाहना, ৰক্তা ও উপদেশ। সেইসকল প্রাচীন ব্যাপার ভিন্ন বিশেষভাবে উৎসবের জন্ত আর কি বিশেষ আরোজন করা হয়, যাহার প্রতি আমবা এত শুকুতর্ত্তপে মনোযোগ আকর্ষণ করিবার জন্য অমুরোধ করিতেছি। তারুত্ব ও বিশেষত্র কোণার ? আমরা উৎসবে উপাসন। প্রার্থনাদির অমুষ্ঠান করিলেও ইতার বিশেষভ না আছে এমন নর। সে বিশেষত্ব অন্তবে, বাহিরে নর। আন্তরিক পরিবর্তনেই এই বিশেষত্ব উপলব্ধি হয়। শরীর সম্বন্ধেও আমরা সময় সময় এরূপ পরিবর্ত্তন অমুভব করিয়া থাকি। बक्ड वक्क विरामव समराव कामारामव विरामव मिले नार्ला, धवः ভাছা দ্বারা শরীরের বিশেষ তৃপ্তি হয়। আমরা সকলেই জানি কোন কোন সময় সরবৎ খাইতে বিশেষ ইচ্ছা করে, অন্য দিন ৰা অন্নের আখাদন বিশেষ প্রীতিকর হয়। কোন দিন ঝালের আখাদন ভাল লাগে, আবার অন্য দিন হয় তিক্ত বন্ধ বিশেষ **इंशिनांत्रक व्हेंना थारक। এই मकन मित्न स्रप्त, यान वा जिस्ह** আখাদনের বন্ধগুলিতে যে কোনরূপ পরিবর্ত্তন ঘটে, ভাগা নম। তাছারা পূর্বেও ধেমন ছিল পরেও তেমনি থাকে। আমাদের শারীরিক পরিবর্তনেই এক এক সময় এক বস্তু বিশেষ প্রিয় হয় ও তৃত্তিদায়ক হয়। তেমনি উপাদনা, প্রার্থনা সংগীত, সংকীতন প্রভৃতি সেই প্রাচীন বস্তু ১ইয়াও উৎসবে ভাচা নতন আকার ধারণ করিয়া, অন্তরের বিশেষ তৃপ্রিদায়ক এবং প্রাণদায়ক হয়। এইরূপ পরিবৃত্তিত প্রাণ লইয়া যাঁচারা উৎসবে প্রবৃত্ত হইতে পাবেন, তাঁহাদের পক্ষেট উৎসবের বিশে-ৰত্ব আছে। তাহার অভাবে "ঘটের গঙ্গা জল'' এই প্রবাদ बारकात नाम उरमारवत उपामनामिक आमामित शाक्त विरम्भव হীন ও পুবাতন বস্ত হটয়া পড়ে। কিরূপ পরিবর্তন লটয়া উৎসবে প্রারুভ চইতে চইবে গ্রে পার্যর্তন ক্চির পরিবর্তন, আকাজ্যার পরিবর্তন। প্রতিদিন যে আকাজ্যা লইয়া উপ-সনা করি সেইরাপ আকাজ্জা লইয়া যদি উৎসবে প্রবৃত্ত হই, তবে আমাদিগের সেইরপ ফলই লাভ ইইবে, তাছার বেশী আশা করিবার কি চেতু আছে। প্রতরাং বিশেষ ব্যাকুলভা বিশেষ সংকল্প লইয়া উৎসবে গমন করিতে হইবে। আমরা দেখিতে পাই দরীর উত্তপ্ত হটলে, সহজেই শীতল সরষৎ পানের व्याकात्रका हत्। व्यामारमत्र श्रांग कि नः नारतत्र छेन्द्रश्च वायुर्छ উষ্ণ হর নাণ উষ্ণ হয়, তাহাতে সন্দেহ নাই। কিছ भामता बीहाएक खान नीकन हहैएक नारत, जाहात नहान नाहे

না—ভাছা পাইতে ব্যাকুল হই না। অন্যবিধ বছ জারা প্রাণের আলা বিবারণ করিতে যাই, ভাই মনে হর প্রাণের আলা ঘাইবার নর, উৎসবে সে আলা বাইবে না। আবার অনেক সমর আলাকে আলা বলিয়া বোধ করিবার শক্তিও থাকে না। তাছাতেও ব্যাকুলতা জন্মে না। এই জন্ম বিশেষ ভাবে আত্মানুসন্ধান করিয়া দেখিতে হইবে কেন ক্র্ধাহর না, কেন সন্তাপকে সন্তাপ বলিয়া মনে হয় না, অতি তীক্ষ আত্মানুষ্টি ভিন্ন এরোগ ধরিবার উপায় নাই; শুভরাং উৎসবে প্রবৃত্ত হইবাব পূর্বে যাহাতে বিশেষ আত্মানুসন্ধান বারা ক্র্ধার সঞ্চার হয়, পুণা পবিত্রতার জন্য প্রাণের আকাজ্যা, হয়, এখন ভাছাই করিতে হইবে।

আর এক ভাবেও আমরা উৎস্বের বিশেষ্য অকুভৰ করিতে পারি। আমরা অনেক উপাদের বস্তু একাকী আহার ফরির) থাকি। সে সময়ে তাহার যে মিট্ডা অনুভব করি, যথন দশলন সুহাদের সহিত প্রীতি ও সদ্ভাবে তাহা আহার করি, তাহার মিইতা কত অধিক অনুভব করিয়া থাকি। আবার আহার করিতে করিতে তাহা যদি কোন বন্ধুকে প্রদান করি তাহাতে কত অধিক তৃপ্তি অমূভব করি। তথন আহারের আনন্দের সঙ্গে অনাবিধ আনন্দও সন্তোগ করিতে থাকি। বস্তুগত ভারতমা না থাকিলেও বন্ধুজনের সমাগমে আনন্দের পরিমাণ কত বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। তেমনি উৎসবে যথন নানা স্থান হইতে ব্যাকুলাত্ম। ও সজ্জনগণের সমাগম হয়,তথন একাকী উপাদনার যে তৃপ্তি পাইতেছিলাম, তাহার পরিমাণ কত বাড়িয়া যায়। একগুণ শক্তি শতপুণ হয়। একপ্তণ, প্ৰেৰ শতপুণ হয়। তথনকার গান, তথনকার আলোচনা, প্রার্থনাদি मकनहे विश्मिय ज्रांश-माह्रक, आमाश्रमक धवर अफ्डा-नामक হয়। ভক্ত ও ব্যাকুলাত্মাগণের সন্মিলন তাড়িত শক্তির ন্যার প্রাণের উপর আশ্চর্যারূপে কার্যা করে। অনেক সমর সেই শক্তি কোথা চইতে আসে ভাহা অমুভবও করা যায় না। তথনই উৎসবের বিশেষত্ব সহজেই অমুভূত হয়। বাস্তবিক উৎসবকে আধাাগ্রিক ভোজে "কুধিত ও তৃষিত আত্মাগণের সম্মিল্ন" এই নামে অভিহিত করাই উচিত। ব্যাকুলভার ব্যাকুলভাব সঞ্চার করে। একেব ভ্যাগ স্বীকারেব দৃষ্টান্ত অপরের নিপ্রভ ত্যাগরীকারের আকাজ্জা জ্বলিয়া উঠে। শুভস্মিলন ষত হয় ভতই আত্মাৰ কল্যাণ। ধর্মা জগতে অগ্রসর হইবার পক্ষে তত্তই অধিকত্তর ত্বিধা পাওয়া যায়। পক্ষে ব্ৰহ্মকুপা অনুভব পক্ষে উৎসব আতি প্ৰাশন্ত সময়। এমন স্থযোগ লাভ করা সৌভাগ্যের বিষয়। আলস্য ও জড়তা পরিত্যাগ করিয়া এই উৎস্ব স্ভোগ কারবার জন্য এখন হইতে প্রস্তুত হই।

স্থাভাবিক গতি— পুলা প্রদর্শনীতে লোকে যথন স্থা-গত ব্যক্তিদিগের মনস্কটির জনা ফুল স্কল স্থাজ্জিত কবিয়া রাথে, তথন স্কলেই যথাশক্তি স্কাপেক। মনোত্র, স্কাপেক। স্থাভ স্থাজ্যুক ফুল স্কলই সংপ্রত করিয়। থাকে। প্রথং লৈ স্কল ফুল যথাশক্তি স্করভাবেই স্লোইয়৷ রাথে। দুর্শক-

পণ সকল ফুলই বিশেষ আঞাহের সহিত দর্শন করিতে থাকেন। সকল ফুলেই তাঁছাদের মনোধরণ করিবাব শক্তি থাকিলেও नकत व्यक्तिकहे (य नकत कृत नमान चाक्टे करत छाहा नरह। কেছ এক প্রকারের একটা গোলাপের দৃশ্য দেখিয়া মুগ্ধ **ছইতেছেন, কেহুবা অপের প্রকারের** একটা গোলাপে বেশী হইতেছেন। একজন হয়ত বলিতেছেন "দেখ কেমন সুন্দর রূপে ফুলগুলি সাজাইয়াছে" এইরূপে এক এক জন এক এক প্রকার ফুলের প্রশংসা করিতেছেন। এসকল ম্বলে ফুল সকল যে ব্যক্তি বিশেষকে কিছু অধিক আদর **ক্রিয়াছিল বা তাহার জনা যে কিছু বেশী দাজ সজ্জা**  রিয়াছিল ভাহা নছে। মালীগণ যে কোন ব্যক্তিবিশেষকে বিশেষভাবে কোনও কাপ আদর অভার্থনা করিয়া বা কোনরপে মনস্তৃষ্টিকর বাকা বলিয়া প্রলুক করিয়াছিল লোকে আপনা হইতে, প্রকৃতিদত্ত বিশেষ ७मन नग्र। বিশেষ মান্যিক ভাব চইতেই এক একজন এক এক আংকার ফুল বা সাজ সজ্জায় মুগ্ন হইয়া ভাচাব আংশংসা কবিযা-ছিলেন। স্বাভাবিক ভাবেই লোকে এইরূপ বিভিন্নরূপে আত্ম-কচিও সৌন্দর্য্য নিণয়-শক্তিব পরিচ্য প্রদান ক্রিয়া পাকে। ইহাতে স্বভাব ভিন্ন অন্য কাহাকে চালক দেখা যায় না। এই প্রদর্শনীতে যেমন লোকে কাচারও কর্তৃক চালিত লা হইয়াও কোন কোন ফুল বা সাজ সজ্জায় অধিক পরিমাণে আকট্ট হয়, ভাচাব পক্ষপাতী হয়, সেইরূপ আধ্যাত্মিক জগতেও लारक चलाव इहेटल्डे कान कान विषय अधिक आकृष्टे हम । অধিক পরিমাণে পক্ষপাতী হয়। এখানেও স্বভাবের চালনা ভির অন্ত কোনরূপ প্ররোচনা দেখা যার না। এই স্বভাবের প্রারোচনা হইতেই কেছ বা প্রেম ও ভক্তির অধিকতর পক্ষ-পাতী, কেহব। জ্ঞানের সমাদর করিতে স্মুংস্ক। অপরের। আবার কর্মপ্রিয়। কিন্তু স্বভাবের চালনায় লোকে যে ভিন্ন ভিন্ন विवास आधिक आकृष्टे हम, आवक शतिभारन निषम विरामास्त প্রশংসা করে তাহাও গোকের নহা হয় না। দেখা যায় জ্ঞানী, ভক্ত ও প্রেমিককে ভত্ত পছল করেনা। ভক্ত ও প্রেমিক আবাব জ্ঞানীকে এক-টুকেমন ভাবে দর্শন করেন। কন্মীও হয়ত জ্ঞানী ও छक्टरक (छमन छान छारत शहर करतन ना। विवासित (कान ছেতুন। পাকিলেও এইরূপ বিবাদের অতীত বিষয় সকল লই-बा ९ मच्छेनारव मच्छेनारव क के ने निरंदाध हिन्दहरू। आब मभाष व थकात विवाहतक निकास्त्र व्यापिकक । व्याप्त क মনে করেন। এবং সকলের প্রভিই উদার ও সদভাব প্রদর্শন করিতে উপদেশ দেন। কিন্তু লোকে তাহা শুনিতে চায় না। এই প্রকার সামানা বিষয়ে বুগা তর্ক দ্বারা পরস্পার হুইতে দূরে श्रीतया यात्र। ध्वरः ध्वेत्रभ व्यनर्थकत्र निवान निगरनारम लाटक অপরের প্রতি উদাসীন হয় এবং অপরের নিকট হইতে বাহা পাটবার ছিল ভাচাতে বাঞ্চ হয়। এজন্য সর্ব্রদাই সকল ভাষাপন্নকেই উদার প্রীতিতে গ্রহণ করিতে চইবে। একটা कथा विरमवछारव मत्न ताथिए इहेरव स्य यमि छ श्रष्ठावहै.विरमव বিশেষ বিষয়ে আমাদিগকে আকৃষ্ট করে,তথাপি সকলের পক্ষেই ति अपनीति थातिएव नाव स्थापात्राकात मकन पित्कहे

মনোযোগ দিতে হটবে। আগে এই রাজ্যের সকল বিষয়ের সহিত পরিচিত হটয়া, পরে যাহার যেটা ভাল লাগে ভাহাজে বিশেষ মনোযোগ দিতে হটবে। ভাহা না হটলে ধর্ম অসম্পূর্ণ থাকিবে, জীবন অঙ্গহীন থাকিবে। এই যে মহোৎস্য নিকটবর্তী হটতেছে, এই উৎসবে যেন আমরা ধর্মের সকল ভত্তই অফুশীলন করিতে পারি। পক্ষপাভিতার অধীন হটয়া অপরের প্রতি তৃচ্ছ ভাচ্ছিলা না করিয়া, যেন উদার প্রীতিতে সকলে সম্বিলিত হটতে পারি।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

## ক্ষয় ও উপচয়।

প্রকৃতির নিয়ম এই শ্রমান্তে বিশ্রাম, ক্ষয়ান্তে উপচর। শ্রমকালে যে সকল শারীরিক শক্তি বিপর্যান্ত হয় বিশ্রাম-কালে প্রকৃতি ভাহা পুনগঠিত করিয়া লন। এই কারণে নিতার ভায় বন্ধানবেব অতি অরই আছে। সমস্ত দিবসের শ্রম, উষ্ণতা, উত্তাপ, উদ্বেগ, প্রভৃতি সমুদায় চবণ করিয়া নিজ। মানবের দেছ মনকে হুন্ত, প্রকাতন্ত, প্রসর ও কর্মক্ষর কাবয়াদেয়। এইরূপ প্রকৃতির মধ্যে কার ও উপ্চয় স্কাদ। চালতেছে। প্রতি মুহুঠেন কাষ্য দ্বারা আমাদের দৈটিক ধাতৃপুঞ্জ নিরস্তর ক্ষয় প্রাপ্ত চ্চতেছে। শরীরের পুরাতন অবু मक्न नाना व्याकारत (मह हहेरड विश्विष्ठ हहेशा याहेरड हि। এই ক্ষা ক্রিয়া এত জ্রুত চলিতেছে, যে বস্তমান সময়ের কোন কোন ও পণ্ডিত গণনা করিয়া বলিয়াছেন, ভিন বংসরের পুর্বে দৈতে যে সকল প্ৰমাণুছিল, তিন বৎসর পরে ভালার একটা অণুও থাকে না। কিন্তু প্রকৃতি যেনন ক্ষরের দার উন্মুক্ত রাণিয়াছেন, তেমনি উপচয়ের ছারও গুলিয়া রাণিয়াছেন। আমরা প্রতিদিন যে সকল অন্ন পান গ্রহণ করিতোছ ওদ্বারা 🖁 ক্ষা প্রাপ্ত দৈহেক ধাতৃপুঞ্জ গঠিত হইতেছে।

এই ক্ষ ও উপচয়ের নিয়ম অধ্যাত্ম-রাজ্যেও খাটে। শংসার-মধ্যে আমরা যথন বাস করি এবং কার্যাক্ষেত্রে যথন বিচরণ কবি তথন আমিরা সকল সময়ে অফুকুল আবস্থার মধ্যে থাকি না। কত পাপ প্রলোভনের মধ্যে পড়িতে হর, কত চিত্তের বিক্ষোভকারী কারণ ঘটিশা থাকে, কত উত্তপ্ত বাঘু আসিয়া আমাদের আত্মাকে শুক্করিতে থাকে। সকল সংগ্রামের মধ্যে অনেক সময়ে আমাদের আধ্যাত্মিক শক্তি সামর্থ্যের ক্ষয় চইতে থাকে। আমরা অনেক সময়ে पिश्टि भारे त्य व्यामारमव शाराव नवनडा हान हरेरडह ; উৎসাহ মলীভূত হইতেছে; বিখাস ও নির্ভর যেন স্লানভাব ধারণ করিতেছে। একদিকে যথন এইরূপ ক্ষয়ের লক্ষণ প্রকাশ পাইতে থাকে, তথন অপরদিকে উপচয়ের জন্য ব্যুগ্র হইতে হয়। কিন্ত শরীরের ধাতৃপুঞ্জ কল্য আংপ্ত হটলে, ধেমন অবয় অংশের ঘারা পুনরায় গঠিত হয়, সেইরূপ আত্মার ক্ষকে निवाबण कतिया छे शहराक वृष्टि कतिवात छेशाम कि १ বেমন অর পান হারা দেহ রক্ষা হর, আত্মা সেইরূপ সে

পরম পুরুষের শক্তি ও আবির্ভাব দারা বাঁচির। থাকে।
এই কারণে কোনও ভাবুক সাধক বিশ্বসী ও ভরুগারী
অনের চিত্তকে জলপার্ছে রোপিত বুক্ষের ন্যার বলিরা
বর্ণনা করিয়াছেন। নদী তীরবর্তী তরু বেমন সর্বাদা সভেজ,
সর্বাদা জীবস্ত ও সর্বাদা রিশ্ব-কাস্তি, তেমনি প্রেমযোগে সেই
পবিত্র পুরুষের সহিত যুক্ত আত্মাও সর্বাদা সভেজ, জীবস্ত ও
হরিদ্বামর।

যিনি আত্মার অনুপান স্বরূপ আত্মার জীবন রক্ষার 😦 স্বাস্থ্যের উন্নতি জান্ত সর্বাদা তাঁচার সহিত যোগ অভ্যেশ করিতে হইবে। সংসারের কার্য্যের বাস্তভার মধ্যে আমরা অনেক সময়ে এই আধ্যাত্মিক যোগ সধন বিষয়ে ইচ্ছামুরপ মনোযোগী ছইতে পারি ন।। প্রতিদিনের চিত্তা ও কার্য্যের স্রোত আমাদিগকে অনুনেক সমরে বহিরা লইয়া যার। আমরা বিষয় চটতে বিষয়াস্তরে বিক্লিপ্ত চটয়া ভ্রমণ করিতে থাকি। यि । पहे सनत्क मनाय मनाय कार्यात वाखान इंटिंड व्यप-एड कविया विश्विकाल (मर्डे श्रुम श्रुक्रायंत्र श्रीड मनार्क নিয়োগ না করা যায়, ভাচা চইলে আআ ভক্ত ও ত্রলৈ হইয়া পড়িতে থাকে। শরীর সম্বন্ধে এরপ অবন্থা অনেকে দেথিয়া थाकित्वन (य व्यवशास्त्र कान । निरम्य भीषः (मथा यात्र ना, कान ७ वाधित सक्तन क्षकान नाहे, किन्द ज्यानि त्वर प्रस्तन কার্য্যে অপটু ও শ্রমে পরাধ্যুগ। কার্যাক্ষম ও শ্রম-প্রিয় ব্যক্তিবা যথন আপনাদেব অন্তরে এই শ্রম-বিমুখতা লক্ষ্য করেন, তথন অমুভব করিতে থাকেন যে অরায় কাষ্য হইতে অবস্ত হইয়া আছো কর আহার ও আয়েকর বায়ু সেবন ও विधारमत वत्नावस कर्तः कर्खरा नज्वा त्मह ख्राय शौड़ा दाता ' আক্রোন্ত হটবে। সেইকাপ আমরা ও কি সময়ে সময়ে আত্মার মধ্যে এক প্রকার অবসাদ অমুভব করি না, যথন দেখি कान । विषय भौजात विषामान नाहे किन्त क्षा, मन निष्डक, नीत्रम ६ व्यवमत १ এই जमात कार्या करेए व्यवशिष्ठ करेत्रा স্বাস্থ্যকর আ্যাগ্রিক আহার ও স্বাস্থাকর আধ্যাগ্রিকে বায়ু সেবনের জল মাইতে হয়।

আমর। উৎসব কালকে সংসার পণের প্রাপ্ত ও ক্লাপ্ত
পথিকগণের স্বাস্থ্যকর আধ্যাত্মিক বায়ুসেবনের সময় বলিয়া
মনে করি। কিন্তু এ বায়ু কি প্রকার বায়ুণ লোকে ব্রহ্ম
শক্তিকে সচরাচর বায়ুর সহিত তুলনা করিয়া থাকে। কোন
দিক দিয়া বায়ুবহিবে এবং কথন ভাহা বেগে আসিবে ভাহা
যেমন কেইই বলিতে পারে না, সেইরপে ব্রহ্মশক্তি যে কথন
কোন উপারে, কোন স্ত্র ধরিয়া হৃদয়ে অবতীর্ণ ইইবে ভাহা
কেইই বলিতে পারে না। আমাদিগকে কেবল অপেক্ষা করিয়া
থাকিতে হয়; ব্রহ্ম ক্রপার প্রতি একান্ত নির্ভর রাখিয়া ও
ভাহার করণার বায়ুর অপেক্ষা করিয়া সকল কার্যাের সহিত
যোগ দিতে হয়। কোন বিষয়টা কাহার নিকট যে জীবনের
বার্ত্তা আনিবে ভাহা কে বলিতে পারে ? কত বার ত দেখিয়াছি বড় বড় ব্যাপারে যোগ দিলাম, অথচ হৃদয় কবাট
খুলিল না; হঠাৎ একটা সামান্ত কথাতে হৃদয় হার খুলিয়া
গেল ও হৃদয় মধ্যে ব্রহ্ম ক্রপায় বায়ু প্রবাহিত হুইল।

অত এব আশা পূর্ব ও নির্ভর-শীল অন্তরে আমাদিগকে মালেৎদরে প্রবেশ করিতে চইবে। যাহাঁদের সম্বংসর শক্তি দামবাঁর ক্ষয় চইরাছে, তাঁহাদের ক্ষতি পূরণের সময় উপন্থিত। ব্যবং প্রভু পরমেশ্বর অহতে রুপার অন্ন বিভরণ করিবেন, যে অলে রোগ যায়, ত্র্রলভা যায় অবসাদ যায়, সেই অন্ন বিভরণ করিবেন। ভক্ত সমাগমে তাঁহার শক্তি পবিত্র স্থান বায়ুর স্থান প্রবাহিত হইবে। সেই বায়ু যিনি প্রোণ ভরিরা সেবন করিতে পারিবেন তিনি স্বাস্থ্য লাভ করিরা গৃহে প্রতিনির্ভ চইতে পারিবেন। আমেরা তবে প্রার্ণানাপূর্ণ অন্তরে মহোৎসবে প্রবেশ করি।

## সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্ব্বাহক সভার ৪র্থ ত্রৈমাসিক কার্য্যবিবরণ।

#### ১৮৯৩।

বিগত তিন মাসে কার্য্যনির্বাহক সভার ১২টা সাধারণ এবং ২টা বিশেষ অধিবেশন হইয়াছিল। আগামী বর্ধের অধ্যক্ষ সভা সংগঠন জ্বন্তু সমাজের সভ্যদিগেব নিকট ভোটিং পত্র প্রোবিত ইইয়াছে। আশা কবা যার এবার অধ্যক্ষসভা গঠনে অস্কবিধা হইবে না।

হরি প্রভৃতি কোন কোন নাম কতিপয় সভ্যের মতে পৌস্ত-লিক বলিয়া আপত্তি জনক হওয়াতে কাব্যনির্কাহক সভা সমগ্র ব্রাহ্মসমাজের সভ্য ও ব্রাহ্ম মাত্রেরই এ সম্বন্ধে মতামত অবগত হইবার নিমিত্ত চেষ্টা করিতেছেন।

### ठुर्ভिक ।

পূর্ববাঙ্গালা ব্রাহ্মসমাজ কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত রিলিফ কণ্ডের হতে আমরা কিছু টাকা পাঠাইয়াছিলাম। সেই কমিটী ছর্ভিক্ষেব সাহায্যার্থে বিক্রমপুরে যে লোক প্রেরণ করেন, তিনি উত্তর বিক্রমপুরে ৩৮ থানা গ্রামে সাহায্য করিয়াছেন। ঐ ৩৮থানা গ্রামে ১১২৮ জন লোককে সাহায্য করা হয়, তন্মধ্যে পুরুষ ১০৬, স্ত্রীলোক ৩৯৬, বালক বালিকা ৬২৬, মোট ১১২৮ জন। এই কার্য্যে ব্রাহ্মসমাজের সংগৃহীত টাকা হইতে বেশী টাকা বায় হয় নাই। মুন্সিগঞ্জের ডেপুটী মাজিট্রেট মহাশয় ব্রাহ্মসমাজেব লোকেব হাতে যে টাকা দিয়াছিলেন, সেই টাক। দ্বারাই অধিকাংশ স্থানে সাহায্য করা হইয়াছে। ঐ ৩৮ থানা গ্রাম ভিন্ন আমরও ছইটী গ্রামের ছইটী ভদ্র পরিবাবকে গোপনে সাহা্য্য করা হইয়াছিল। তৎপরে বাবু কাশীচন্দ্র ঘোষালকে তথায় প্রেরণ করা হয়।

প্রথমাবস্থার ত্তিক্ষেব প্রকোপ প্রবল হইরাছিল, সেই সময় মুজিগঞ্জের ডেপুটী মাজিট্রেট মহাশয়ের যত্নে অনেক লোকের কট্ট নিবারণ হয়।

ভদ্রলোক এবং কৃষকদিগের অধিক কট হয় নাই। চাউল ছর্ম্মুল্য হওয়াতেই তাহাদের যাহা কিছু কট হইয়াছিল। অনাথা বিধবাদিগের ভয়ানক কট হইয়াছিল। ইহারা দিনের পর দিন উপবাদ করিয়া কাটাইয়াছে, তথাপি প্রকাশ্রে সাহায্য গ্রহণ করিতে প্রস্তুত হয় নাই। আমাদের এজেন্ট গোপনে অনেক চেষ্টা করিয়া কয়েকটী বিধবার সাহায্য করিয়াছিলেন।

The Royal Opium Commission সমক্ষে সমাজের পক্ষ হইতে সাক্ষ্য প্রদান করিবার জন্ত সমাজের করেকজন সভ্যকে জন্মরোধ করা হয়। তাঁহাদের একজন বাঁতীত সকলেই এই কার্য্য স্থানকতার সহিত সম্পন্ন করিয়াছেন। এই কমিশন সংস্কুই বাঁহাবা বিলাভ হইতে কলিকাভার আগমন করিয়াছেন, তাঁহাদের মধ্যে J. G. Alexander সাহেব "Temperance" বিষয়ে, এবং Parliament মহাসভার সভ্য H. J. Wilson সাহেব "Some moral and Social Reforms in England" বিষয়ে, সাধাবণ ত্রাহ্মসমাজ উপাসনালয়ে বক্তৃতা করিয়াছেন। এতথ্যতীত ছাত্রসমাজের সংশ্রবে Revd. Thomas Evans সাহেব এবং Mrs Hauser, President World's women's Christian Temperance Union Calcutta, উভয়েই Temperance বিষয়ে সমাজ মন্দিবে বক্তৃতা করিয়াছিলেন। এই সকল বক্তৃতার জন্ত বক্তাদিগকে আমরা কদরেব সহিত ক্তেক্তা প্রদান কবিতেছি।

কার্য্যনির্বাহক সভা Royal opium commission Temperance পক্ষায় সভাগণকে অভ্যর্থনা কবিবাব জন্ম শ্রীযুক্ত সভাপতি মহাশয় এবং অন্থ কতিপয় সভাকে অমুবোধ করেন। তাঁহাদিগের একজন এবং অপর কয়েকজনের উদ্যোগ ও চেষ্টায় বঙ্গমহিলা সমাজের এক সায়ংসমিতি হয়। তাহাতে Mrs. and Miss Pease, Messrs Arthur Pease M. P., H. J. Wilson M. P. এবং J. G Alexander মহোদয় এবং মহোদয়াগণ নিমন্ত্রিত হইয়া তথায় আগমন পূর্বাক সমাজের অনেক সভোব সঙ্গে আলাপ করিয়া আপ্যায়িত করিয়াছিলেন।

খাসিয়া মিশন। বাবু নীশমণি চক্রবর্তী যথাশক্তি এই
মিশনের কার্য্য সম্পন্ধ করিতেছেন। দিন দিন ইহার উন্নতি
ইইতেছে। চিরাপুঞ্জিতে যে প্রচার-ভবন প্রস্তুত ইইয়াছে,
তাহাতে উপাসকমণ্ডলীব আর স্থান হয় না। বিদ্যালয় ও
ঔষধালয়ের কার্য্য ভালই চলিতেছে। পারিবারিক অফুষ্ঠান
ও প্রাক্ষসমাজের প্রণালী অমুসারে ইইতেছে। সম্প্রতি বাঁহারা
প্রাচান প্রণালী পরিত্যাগ করিতেছেন, তাঁহাদিগকে নির্যাতন
সহু করিতে ইইতেছে।

স্থায়ী প্রচার ফণ্ড। প্রচাব এবং অভাভ কার্য্যে সাহাব্য হেতু ক্ষেকটী ফণ্ড স্থাপিত হইয়াছে। এই ফণ্ডগুলির মূলধন অবায়িত থাকিয়া তাহাদের হুদ নির্দিষ্ট কার্য্যে ব্যয় সম্পন্ন হইবে। আয় বায়ের হিসাবে এই ফণ্ডগুলির নাম উল্লেখ করা হইবে। স্থাগাঁয় জগদীশ্বর গুপ্ত মহাশয়ের প্রাদ্ধ উপলক্ষে তাঁহাব সহধামাণী স্থায়ী প্রচার ফণ্ডে ০০০ পাঁচ শত টাকা দানের সক্ষল্ল করিয়াছিলেন। তিনি এখন সমাজের হল্তে সেই টাকা অর্পণ করিয়াছেন।

প্রচার ও সাধংসরিক উৎসব উপলক্ষে এই তিন মাসু কাল মধ্যে শিরাজগঞ্জ, পাবনা, কুমিলা, কোচবিহার, বাগসাঁচড়া, রাম-পুর-বোয়ালিয়া, চক্রবৈড়িয়া, চট্টগ্রাম, ঢাকা প্রভৃতি স্থান হইতে প্রচারকগণের নিমন্ত্রণ আসিয়াছিল। আমাদিগের প্রচারকগণ নিম্নলিখিতরপে বিগত তিন মাস কার্য্য করিয়াছেন।

পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী—কলিকাতা উচ্চ নীতি বিধারিণী ছাত্র সভাতে "সাহিত্যে জাতীয় চরিত্র" সম্বন্ধে
একটি, ছাত্রসমাঞ্চে একটি, এবং একদিন ধর্ম সম্বন্ধীয়
প্রশ্নের উত্তর প্রদান উপলক্ষে একটি বক্তৃতা করেন।
ব্রাহ্মবালিকা বোর্ডিং এবং স্ক্লের সম্পাদকতা, আশ্রমের
উপাসনায় অধিকাংশ সময় আচার্য্যের কার্য্য, সময়ে সময়ে
মন্দিবে উপাসনা, নিয়মিত্ররপে তম্ব-কৌমুদীর সম্পাদন কার্য্য
এবং কোন কোন বাসায় উপাসনা ও অমুষ্ঠানে আচার্য্যের কার্য্য
করিয়াচেন।

শ্রীযুক্ত বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়—বাত, জ্বর প্রভৃতি পাঁড়ায় কই পাওয়াতে গত তিন মাস কাল-ইচ্ছাত্মরূপ প্রচার কার্য্য কবিতে পাবেন নাই। কলিকাতা সাধারণ রাহ্মসমাজ মন্দিরে ছই দিবস উপাসনা, কোন রাহ্মপবিবারে একটি শিশুব জন্মদিন উপলক্ষে উপাসনা, সোটক শেজ ভবনে, রাহ্মস্মিলনীতে উপাসনা এবং সাধারণ তাহ্মসমাজ মন্দিরে 'মহাশক্তি' বিষয়ে একটি বক্তা করিয়াছেন। এতথ্যতীত ভবানীপুর প্রার্থনাসমাজে উপাসনা এক দিবস একটি শিশুর নামকবণ উপলক্ষে উপাসনা, রাহ্ম ও স্থান্থ লোকের সহিত ধর্ম ও সামাজিক বিষয়ে আলোচনা, সাম্যুক প্রিকায় ধর্মবিষয়ে প্রবন্ধ, এবং ধর্মসন্ধ্রীয় পুত্তক রচনা কবিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত বাবু নবদ্বীপচন্দ্র দাস—বাকুড়া অঞ্চল হইতে অত্যাগমন পূর্বাক কিছুদিন কলিকাতায় প্রচার কবিয়া মাণিক-দহে শাবদীয় উৎসব, তৎপর কুমারখালি ব্রাহ্মসমাজের বার্ষিক উৎসৰ কাৰ্য্য সম্পন্ন করিয়া ঢাকা পূৰ্ব্যবাদালা ব্ৰাহ্মদন্মিলনীতে গোগদান করেন। তথায় পরিবারে এবং সমাজে উপাসনা করেন। ঢাকা হইতে ফরিদপুরে গমন করিয়া তথার সমাজে **এবং পরিবারে উপাসনা পাঠব্যাখ্যানাদি করেন। তৎপর** কলিকাতায় প্রত্যাগমন করিয়া সাধনাশ্রমে, মূল্লিবে এবং কোন কোন পরিবারে উপাদনাদি করেন, পরে পাবনা ও গিরাজগঞ্জের উৎসব कार्या मध्यन्न कविशा ठाकांत्र याजा कटतन। शुक्तं বাঙ্গালা ব্ৰাহ্ম-সন্মিলনী হইতে কাষ্যানিকাহকসভা এক ৰ দুরোধ পত্র প্রাপ্ত হন, তাহার মন্ম এই যে, উক্ত সন্মিলনী পুর্বা বান্ধালা ও আসাম প্রদেশ পইয়া একটা প্রচার ক্ষেত্র প্রস্তুত করিবেন এবং আমাদিগের প্রচারক বাবু নবদীপচক্ত দাস মহাশয়কে সেই কেতে প্রচার কার্য্যের ভার অবর্ণণ করিবেন। মালোৎসব নিকটবর্ত্তী, তাহার পর এই বিষয় সম্বন্ধে কর্ত্তব্য কি তাহা স্থির করিবার স্থবিধা জ্বন্ত কার্য্য-নির্কাহকসভা উক্ত প্রচাবক মহাশয়কে এক মাদের নিমিত্ত একটি প্রচারদলসহ ঐ অঞ্লে গিয়া প্রচার করিতে অসুরোধ উক্ত প্রচারক মহাশয় সিরাজগঞ্জে কয়েক দিন পীড়িতাবস্থায় ছিলেন তৎপর একটু স্বস্থ হইলে পর ঢাকা হইয়া কুমিলা উৎসবে গমন করিয়াছেন। তাঁহার শরীর এখন मन्पूर्व ऋष वा मवन द्य नाहे।

শ্রীযুক্ত বারু শশিস্ত্যণ বস্থ—মধ্যে মধ্যে নিমতা ব্রাহ্মসমাজে, কোন কোন ব্রাহ্ম পরিবারে এবং মন্দিরে জিন রবিবার রাত্রে আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন। "Brahmoism" নামক পৃত্তিকা প্রকাশে রত ছিলেন। Indian Messenger পত্রিকা সম্পাদনেও কিছু কিছু সাহায্য করিয়াছেন। তিনি লিখিতেছেন, "আমি চঃথের সহিত জানাইতেছি যে, এই জিন মাস কাল মধ্যে আমার উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে যাইবার কথা ছিল। কিছু কোন কোন বিশেষ কারণে সেথানে যাইতে পারি নাই এবং আশাহুরূপ কার্য্যন্ত করিতে পারি নাই।" সম্প্রতি তিনি বাঘ্র্যাচড়া ব্রাহ্মসমাজের উৎসবে গমন করিয়াছেন। তথা হুইতে কুচবিহার উৎসবে যাত্রা করিতেন কিছু অস্কুতা বশতঃ তিনি কুচবিহার যাইতে অসমর্থ হুইয়াছেন।

শ্রীযুক্ত লক্ষাণপ্রাসাদ— অক্টোবর মাসে কঠিন জব রোগে প্রায় ২০ দিন সংজ্ঞাহীন থাকেন। তৎপর অল অল করিরা আরোগ্য লাভ করেন। এই পীড়া তাঁহার কার্য্যের বিস্তর ক্ষতি করিয়াছে। তথাপি তিনি নিতাস্ত চর্ব্বল অবস্থায়ও লক্ষ্রে সহরের মধ্যে পূর্ব্বে যেথানে ছিলেন, সেই স্থানে আগমন পূর্ব্বক তথাকার সমাজে দৈনিক ও সাপ্তাহিক উপাসনার কার্য্য করিয়াছেন এবং তথায় একটা ব্রহ্ম বিদ্যালয়ের কার্য্য এবং তাঁহার হোমিওপ্যাথিক চিকিৎসালয়ের কার্য্যও তিনি যথাশক্তি সম্পন্ন করিয়াছেন। তাঁহার শরীর এথনও চ্ব্রেল। আমাদিগের বন্ধু বাবু হারালাল রায় এবং আর একটি যুবক চাঁহার যথেষ্ট সেবা ও সাহায্য করিতেছেন।

### সাধনাশ্রম।

পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী এবং নবন্ধীপচক্র দাসের কার্য্য প্রচারকগণের কার্য্যবিবরণের সহিত দেওয়া হইয়াছে। অক্সান্ত পরিচারকগণের কার্য্যবিববণ এই রূপ:—

শ্রীযুক্ত আদিনাথ চটোপাধ্যায় নিয়মিতরূপে ত্রাক্ষমিদন প্রেসের কাধ্যাধ্যক্ষতা করিয়াছেন। শারদীয় উৎসব উপলক্ষে মাণিকদহ সমাজে, সাধনাশ্রমে, কয়েকটী পারিবাবিক অন্থ-ষ্ঠানোপলক্ষে সিন্দুরিয়াপটি পাবিবারিক সমাজের উৎসবে এবং মন্দিরেও কোন কোন রবিবার প্রাতে আচার্য্যের কাধ্য করিয়াছেন। তত্ত্ব কোমুদী সম্পাদনে সাহাধ্য করিয়াছেন এবং গ্রাহ্মবালিকা বোডিংএ উপাসনা করিয়াছেন।

শ্রীসুক্ত প্রকাশ দেব গত সেপ্টেম্বর মাসে ছোট নাগপুর অঞ্চলে গমন করেন। চাইবাসা উৎসব উপলক্ষে একদিন হিন্দিতে উপদেশ দেন, তথাকার ছাত্র সভায় একটি বক্তৃতা করেন এবং ছই দিন সমবেত উপাসনায় আচার্য্যের কাষ্যা করেন। পুরলীয়া টাউন হলে এক দিন বক্তৃতা, আসেন্ সোলে এক দিন উপদেশ প্রদান, বাকুড়ায় জেলায় ছই দিন সমবেত উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য, এক দিন বাজারে প্রকাশ বক্তা এবং মহায়া রাজা রামমোহন রায়ের মৃত্যু দিনে একটি বক্তৃতা করেন। তৎপর কলিকাতায় প্রত্যাগত হইয়া শার্দীয় উৎসব উপলক্ষে মাণিক দহে এক দিন বাজারে প্রকাশ ভ

বক্তা করেন। তৎপর করেকদিন কলিকাতার থাকিয়া পরে হাজারিবাগে গমন করেন। সেথানে বক্তৃতা উপাদনা এবং আলোচনাদি ছারা আক্ষধর্ম প্রচার করিভেছিলেন, ইতিমধ্যে পারিবারিক হুর্ঘটনা বশতঃ জন্মভূমি পঞ্জাব প্রদেশে গমন করিয়াছেন।

শীযুক মহেক্সনাথ চট্টোপাধ্যার নির্মিত রূপে সাঃ ব্রাঃ
সমাজের ধনাধ্যক্ষের কার্য্য, শারদীয় উৎসব উপলক্ষে মাণিকদহে
আচার্য্যের কার্য্য, কলিকাতার করেকটি ব্রাহ্ম পরিবারের
তত্মাবধান,রবিবার প্রাত্তে করেক দিন মন্দিরে উপাদ্ধনা, নিমতা
ব্রাহ্মসমাজে প্রতি শনিবার সামাজিক উপাদ্ধনা এবং একটি
অমুষ্ঠানে আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন।

শীযুক গুরুদাস চক্রবর্তী নিয়মিত রূপে ব্রাহ্মবালক ছাত্র নিবাসের তত্ত্বাবধারকের কার্য্য, ব্রাহ্মবালিকা শিক্ষালয়ের শিক্ষ-কতা কার্য্য, এবং শারদীয় উৎসব উপলক্ষে মানিকদহে প্রকাশ্র বক্তৃতা, আশ্রমের উপাসনা এবং কোন কোন সময়ে অনুষ্ঠানো-পলকে উপাসনা, এতহাতীত সময় সময় তত্ত্ব-কোমুদী সম্পাদনের সহায়তাও করিয়াছেন!

শ্রীযুক্ত কাশীচন্দ্র ঘোষাল মাণিকদহ শারদীয় উৎসবে যোগদান করিয়া ঢাকা ব্রাহ্মসমিলনীতে উপস্থিত হন। সন্মিলনীব অধিবেশন শেষ হইলে তিনি তথা হইতে বিক্রমপুরে হর্ডিক্স-প্রশীড়িতদিগকে সাহায্য করিবার জন্ম প্রেরিত হন। ছর্ভিক্ষের প্রকোপ প্রশমিত হওয়ার তিনি কলিকাতায় প্রত্যাবর্ত্তনের পূর্ব্বে সঙ্গীত, সংকীর্ত্তন, বক্তৃতা ও কথকথাদি দারা ঢাকা ও বিক্রমপুরের কোনও কোনও স্থানে ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করেন ও তদ্ভির একটী পারিবারিক অন্থানে আল্রাহ্মের কার্য্যাধ্যক্ষতা ও তত্তকামূদীর সম্পাদন বিষয়ে সহায়তা করিয়াছেন।

আয় —		ব্যয়————	
ভিক্ষাপ্রাপ্তি	201142e	অতিথিগণের জন্ম বা	त्र ६७॥/०
দানপ্রাপ্তি	284•	শেল্টাবেব জ্ঞাসাধ	াবণ
ঘৰ ভাড়া প্ৰাপ্তি	₹8∖	বায় এবং পাণেয়াদি	291920
অতিথি ফণ্ডেব জমা	>>/	আশ্রমবাসীদিগের	
পুস্তক বিক্রন্থ	ลท.	আহোরাদির বায	855117¢
পাথেয় হিঃ	৬१५/•		
জিনিস বিক্রয়	২৬॥•		98:116
আশ্রমবাসিগণেব		<b>শ্বিত</b>	anda
निक्र रहेरा था थ	৩২ <i>০৮</i> ৫	,	
	<b>689</b> /0		٠٤ له ٩ 8 ه

উপাসকমগুলী—মলিরে নিব্মিতরপে প্রাতে ও সন্ধ্যার সময় উপাসন। হইয়াছে। পণ্ডিত শিবনাথ শালী, বাবু শশিভূষণ বস্থ এবং বাবু উমেশচক্র দত্ত মহাশয় প্রধানতঃ আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন।

	আর ব্যয়ে	য়র হিদাব।	
আয় ———		-ব্যয়	<del>-</del>
मान <u>श्र</u> ाश्चि	)।4>¢	কর্মচারীর বেতন	२७५०
চাঁদা সংগ্ৰহ	> ৽ ৬। ৵ •	কুদ্ৰ ব্যয়	:0/0
	•	গ্যাদের আলো হি:	રહાા∙
	>•94>¢	মন্দিব মেরামত হিঃ	٤,
পুৰ্কস্থিত	8192511	হারমোনিয়ম মেরাম	<b>ত ১∙</b> ∖
	-		
মোট 🕝	118:566		961/-
		হম্বেস্থিত	np bacc
			1191566

**उक्त**विमानस्—भावनीम इंगैव भन्न उक्तविमानस्यत কাৰ্য্য পুনবাবন্ধ হইয়াছে। ধর্মবিজ্ঞানের ইংরেজি শ্রেণী ও ভগবদ্গীতাব শ্রেণীব কার্য্য নিয়মিতরূপে চলিতেছে। প্রথমোক্ত শ্রেণীর সংশ্রবে গত ১২ই ডিসেম্বব শ্রীযুক্ত বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধাায় মহাশয় "মহাশক্তি" বিষয়ে একটী ৰক্তা করেন। উক্ত শ্রেণীর সংশ্রবেই উক্ত প্রচারক মহাশয় "ঈশবেব অন্তিত্ব'' বিষয়ে পূর্ব্বে একটা বক্তৃতা করিয়াছিলেন।

ব্রাক্ষদন্মিলনী—এই তিন মাদের মধ্যে ১১ই ডিদেম্বর হইতে ১৬ই ডিদেম্বর পর্যান্ত ৬ দিবদ প্রতিদিন সন্ধ্যার সময় निष्ठिक एम क वर्रन छे भामना इहेग्राह्य । श्रीयुक्त छेरम महन पर्छ, **শिवनाथ भार्त्वो, नरशक्तनाथ हर्द्धोशाधाम्म, भाग्नेष्ट्रम दञ्च, परहक्त-**নাথ চট্টোপাধ্যায় ও ক্বফকুমার মিত্র উপাসনা কবিয়াছিলেন।

ছাত্রসমাজ-বিগত শাবদীয় অবকাশান্তে ২রা ডিসে-ষর তাবিথে ছাত্রসমাজেব কার্য্য পুনরায় আরক্ষ হয়। বাবু উমেশচক্র দত্ত মহাশয় এই উপলক্ষে মন্দিরে উপ,সনার কার্য্য কবেন। ১ই তারিখে বেভারেও টমাস ইভান্স সাহেব "on the need of Temperance-work in India" বিষয়ে মন্দিরে একটী বক্তৃতা করেন। এই সভায় পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় সভাপতির কার্য্য করেন। বক্তৃতান্তে মি: এ এম বন্ধু মহাশয় একটা স্থললিভ এবং উৎসাহস্চক বক্তা দারা বক্তাকে হৃদয়েব কৃতজ্ঞতা প্রদান করেন। Mrs, Hauser ও একদিন উপাদনালয়ে বক্তা कतियाहित्तन। ১५१ जानित्थ "मशानिक" विषया नातू नरशक्तनाथ চটোপাধ্যায় মহাশয় মন্দিরে একটি বক্তৃতা করেন, এই বক্তাটি ছাত্রসমাজ এবং ব্রহ্মবিদ্যালয় উভয়ের সমবেত চেষ্টায় হইয়াছিল। ১২ই এবং ১৬ই তারিখে শ্রীযুক্ত বাবু জগদীশ চন্দ্র বস্থ মহাশয় সম্পাদককে সঙ্গে লইয়া হুইটী ছাত্রনিবাস পরিদর্শন করেন।

ব্ৰাক্ষছাত্ৰীনিবাস ও ব্ৰাক্ষবালিকা শিক্ষালয়।— এই তিন মাদে ছাত্রী সংখ্যা ৭৭ জন ছিল, তন্মধ্যে ১৬টা বালক নয় বৎসরের নাুন বয়স্ক। বোর্ছিংএর ছাত্রী সংখ্যা ২৭টা। ৪টা ছাত্রী পরীক্ষা দিয়াছে এবং সকলকেই আগামী । কাহয়ের সম্পাদন কার্য্য ভার বাঁহাদিগের হত্তে অপিত আছে প্রবেশিকা পরীকায় উপস্থিত করা হইবে।

আয় —		ব্যন্ন	
ছাত্র ছাত্রীর বে	তন আদায়	বৈাডিং থরচ	8084.
	>5>>110.	কর্মচারীর বেতন	७१४८६
বোর্ডিং ফি	96:110	গাড়ী	२४४५%
ऋग कि	8२०√•	বাড়ী ভাড়া—	२१•
প্রবেশিকা )		প্রবেশিকা পরীক্ষার	ফি ৪•১
পরীক্ষার ফি:	8•/	বিবিধ	\$915@
	>5>>110/o		39621/C
চাঁদা ও এককালীন দান		<b>হ</b> ন্তেশ্বিত	೨ <i>७७</i> ₽∫•
	৯১৩॥৵•		
	३७०२।३६		
পৃৰ্কস্থিত	২৯৩ <i>১</i> ১ •		
মোট	> Pache	মোট	249elle

त्रविवामतीय भीजि विमानस-भीजिविमानस्यत कार्या নিয়মিতরূপে চলিয়াছে। বর্ত্তমান সময়ে ছাত্র ছাত্রী সংখ্যা ৯০। ইহার পুস্তকালয়ের জ্বন্ত বিলাত হইতে কতকগুলি সুন্দর পুস্তক আনান হইয়াছে। কুমাবী মার্টিনোর নিকট হইতে এবিষয়ে অনেক সাহায্য পাওয়া গিয়াছে, এজ্বস্ত তাঁহার নিকট আমরা বিশেষ ক্বতক্ত আছি।

সঙ্গত সভা--এই তিন মাস কালে সঙ্গত সভার অধি-বেশন নিয়মিতক্রপে হইরাছিল। কেবল ১২ই ও ১৯এ ডিসেম্বর এই হুই মঙ্গলবাৰ ব্ৰাহ্মসন্মিলনীর উৎসৰ ও সমাজ মন্দিরে ব**ক্তৃ**ভা **इहेगां इन तिन्ना मक्टल्य अधित्यमन इम नाहै।** অধিবেশনে অবিয়াৎসগ ও সর্কমত্যন্তং গহিতং এই ছুইটী विषयात व्यात्नाहना विष्यय ভाবে रहेग्राहिन।

গত ৩০এ অগ্রহায়ণ হইতে সঙ্গত সভার কয়েকটা উৎসাহী সত্য কর্তৃক মাঘোৎসবের উলোধন স্বরূপ পূর্ব্ব প্রব্র বৎসবের মত ব্রান্ধ ভ্রাতাদিগের বাড়ী বাড়ী ভোর সংকীর্ত্তন হইতেছে।

দাতব্য বিভাগ—দাতব্য বিভাগের কার্য্য গত ৩ মাদ কাল প্রায় পূর্কাবংই চলিয়াছে। এই তিন মাদ মধ্যে ১টা পরি-বার ১২টা, ছাত্র, তটা, অন্ধ, এবং একটা কুষ্ঠ রোগীকে অর্থ সাহায্য করা হইয়াছে। বাঁহারা দ্য়া করিয়া এই দাভবা বিভাগে অর্থ দান কবিয়াছেন, তাঁহাদিগকে হৃদয়ের সহিত ধন্তবাদ প্রদান করিতেছি। আয়ে ব্যয়েব হিদাব নিম্নে প্রাদত্ত रहेन।

	2 to 3 h d •		২৬১৸৵•
পুর্মকার স্থিত	€84 ₹•94	<b>হ</b> ন্থেস্থিত	39040
এককালীন	4.	_	bb0/•
মাসিক দান	9		>>~
অন্তৰ্গান উপলক্ষে বাৰ্ষিক দান	9•   %  •	মাসিক দান এক কালীন দান	<b>45</b>
জমা		থরচ	

ইণ্ডিয়ান মেদেঞ্জার ও তত্ত্ব-কোমূদী—এই পত্রি-তাঁহারা যথাশক্তি এই কার্য্য সম্পন্ন করিয়াছেন।

শার ব্য	ইভিদান মেষেঞ্চার।				
अस	ा <del>ष</del> ।	चात्र	البشالة بشيبي فيبيبيهن	—ব্যন্ন	
		मृना जानात्र	269/	কর্মচারীর বেতন	8 2 N +
<b>আ</b> র	বাৰ	বিজ্ঞাপন	301/3	• মুদ্রাক্ষ	5001
শভ্য ও সহযোগিগণের	⊄াচার ব্যর ৫৪৪√∙	নগদ বিক্রম	he	-	8.
	কর্মচারীয় বেতন ১৬৮১	কাগৰ বিক্ৰয়	911		stend.
ৰাৰ্ষিক ২৩৩১/১৫	ক্মিশন /১০				3643.
यानिक ३४२५८६	ডাক্মাণ্ডল ১১৸৶•	বিবিধ	२५५	• ।वावव	30630
descriptions county	বিবিধ (অধ্যক্ষসভার,				
8૨ <b>૦</b> ૨/•	মুদ্রাহন এবং অস্তান্ত		२४४॥		8201920
व्यक्तांश्रं मानवाश्रि २००।/•	কুজ ব্যয়) <b>১</b> ১/•	পত তৈ্বাসিকের বি	হ্ব ভ	राखिष्ठ 🖁	21/6
বাৰ্ষিক ৪০॥৵●	ञ्च ४६,		<b>३२७</b> ४३६	2	
মাসিক ১৩২।•	প্রচার গৃহ ৩৮/১০			-	\$>8h>¢
व्यक्तांन ४२।८०			838436		,
	नारभग्न >৮॥•				•
	আসাম মিশন ৪১			कोभूमी।	
₹€€1/•	সিটিক লেজ বৃত্তি ৮০॥•		% वट	कार्या।	
विविध ३२०/>	(मोनाभिनौ वृष्टि २०)			<u> - वाब</u>	
স্থদ ৮৩।•	ট্রাষ্টডিড ৭৭।১	আর —	22214.		<b>b</b> :  •
शरिषत्र २८,	ছ্ডিক ফ্ড ৮০১০	মূল্য আদার	•		<b>A3/</b>
স্থায়ী প্রচার কণ্ড ৫০৫১	তৰকৌমুদী ১৮১৮/১৫	নগদ বিক্রম	٤/	मूलांकन	•
विन्धिः कथ ७५॰ भाजित्रा मिनन >>	মেসেক্সার ১২৬-/১৫ গচ্ছিত বা হাওলাত ১৬০৫৮/০		-	- কাগজ	७०८५०
বাগর্যাচড়া মিশন ৭৮	11 MG 41 61 G 11 G 20 CN 2		> <b>₹</b> >14•	ভাক্ষাও্ল	Pane
সিটকলেজ বৃত্তি ৮০॥•	₹28₽€•	গত তৈমাদিকের		विविष	9100
क्र्यामग्री कथ २०५	राष्ट्रिक २१२५६	হিত	34.W36	t	
इर्डिक कछ ६११८०	China			•	३४ <b>७</b> ॥७७४
नानाविश काग्री कुछ 88 • \	•		عدادده	হতে হিত	>=  -
শরৎকামিনী > • • \			-		
<b>ग्रामाञ्</b> लती > ८					<b>٠</b> ٠٤٧)٤
तानी व्यवभूना खरा 👀					
পাৰ্কতী গুপ্তা ২০১					
बीतानान खरु २०/ थाना खरा २०/			পু	ত্তক।	
ছুৰ্গাপ্ৰসাদ শুপ্ত ২৫১					
जानाताम ७४ २६		व्यात्र		ব্যস	
জানকী গুপ্তা ৫•১		নগদ বিক্ৰয়	26240	অপরের পুস্তক বিক্র	ब्र .
कमनात्रायण त्राम >००		ক্র অপরের	۰۵ر۷ ۰	মূল্য শোধ	२। 🗸 •
		•	•	কর্মচারীর বেডন	>=  =
88•		বাকী মূল্য আদার	0 < 11.5	কাগৰ	२৮/১०
<b>उपरको</b> मुनी >e॥०		ভাকমাগুল (ফেরৎ)			
हः (मरमञ्जात अ/		কমিশন	ルン・	মুক্তাঙ্কন	781•
পুত্তক ১২৯৷০ গঢ়িতে বা হাওলাত ৪৯৷০		<b>মুদ্রাম্বন</b>	•	ভাক্ষাওল	<b>∌</b> l <b>⊍•</b>
MAC HELDING ONLY		ৰিবি <b>ধ</b>	•	<b>ক্</b> মিশন	>24d>•
२१ • ४ । । । ८		গচ্ছিত বা হাওলাত	ee11/0	বিবিধ	p10/0
গড তৈমাসিকের হিত ৪৬৩১০				গচ্ছিত বা হাওলাত ে	শাধ ১৯॥•
***************************************			344100		
૭) ૧ <b>)</b> મહેલ	००११४५००				>6919.
	Audited		1	<b>रा</b> खिष्टिं	>4>10
	BANK UBEHARY BOSE				
	Auditory	,	<i>\$</i>		244110.
	8/1/94.				4 & A 1160 A

<b>ভাক্ষিশন তে</b> শ ।					
আর——		بيزاران بروسيت ميد	– ব্যন্ন		
আনার (মূ	(जाइन,	কাগৰ,	সুদ্রান্ধন, ব	<b>ांगळ,</b> मश्र	রি
দগুরি ব	গ্ৰভৃতি ব	वावटम -	গ্ৰন্থতি ব	।विदम याः	हा
যাহা আদ	ায় হইয়	गटक्)	<b>অ</b> পরকে	थात्र ८५७:	яt
		३७८७८ <b>६</b>	<b>र</b> हेग्राट <b>क्</b>	!	১৫৬৬/১•
ছাপাই (যত	5 টাকার	ι	সরঞ্জামী		28492.
कांक इहेर	राटक्)	2245/	বিবিধ		81020
কাগল বিৱ		,	ডাক্মা <del>ও</del> ল		110
প্রেদ প্রস্তুত	<b>হ হিঃ</b>	>२४५	কাগল থরি	म	>->4>€
গৃহ প্রস্ত (	ફે:	9.	বেতন হিঃ		<b>6</b> 00/•
শ্যাকিং হিঃ	j		প্ৰেদ প্ৰস্থ	<b>ড</b>	42167.
হাওলাত		96611420	•		98
দঃ কর্মচারী	ার		বাটীভাড়া		٥٠/
বেতন	७७१।	, ●	ওয়ার এও	টিয়ার	>>9110
টাইপের মৃ	ग्रा ७८। न	>•	ছাড়		<b>৩৮</b> ५১৫
नः ऋम	96		হাওলাত		tenels.
			দঃ কর্মচারী	90.476	
ছাড় হিঃ		95116	मः ऋम	90	
			<b>मः টाই</b> প	२७∙५३€	
		<b>७</b> ७७४५८७			
গত তৈমাসি	কে স্থিত	5 28W2.			
					2P8 2110
		<b>৩৯</b> ৩০৻১৫	<b>হিত</b>		<b>→</b> 5  2•
				_	
				ಲ	<b>३८</b> ,७७५

## ব্ৰাহ্মসমাজ।

প্রচার—সাধনাশ্রম হইতে শ্রীযুক্ত প্রকাশদের এবং শ্রীযুক্ত স্থার সিং গত নবেম্বর মানে হাজারিবাগ ব্রাহ্মস মাজের অনুরোধে তথার গমন করেন। ইহাঁরা সেথানে হিন্দি বক্তা, উপাসনা, আলোচনা এবং সংগীকাদির দ্বারা ব্রাহ্মধর্ম প্রচারে করেন। পারিবারিক চ্র্তিনা বশতঃ শ্রীযুক্ত প্রকাশদের ইতিনধ্যে জন্মন্তান পঞ্জাবে গমন করেন, সে সময় শ্রীযুক্ত স্থাকার সিং হাজারিবাগে উক্ত প্রকারে কার্য্য করেন। সম্প্রতি মাধ্যেৎসব উপলক্ষে তাঁহারা উভয়েই সাধনাশ্রমে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়াছেন।

তীযুক্ত বাবু নবদীপচক্র দাস এবং বাবু ছরিমোচন দ্বোষাল পূর্ববঙ্গে প্রচারে বহির্গত ছইয়া, কুটিয়া, সিরাজগঞ্জ, ত্রিপুরা প্রভৃতি স্থানে গমন করিয়া উপাসনা, বক্তৃতা ও সংগীতাদি দারা ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করিয়াছেন। ছরিমোহন বাবু ইতিপূর্বে কলিকাতা সাধনাশ্রমে প্রত্যাবর্ত্বন কদিলাছেন,নবদীপ বাবু চাকাতে অবছিতি করিতেছেন। স্থওতঃ চাকার আন্ধ-বন্ধুদিগের বারা অনুস্ক হইরা এবার মাবোৎস্বের সময়ে তিনি চাকাতেই অবস্থিতি করিবেন।

"চটकार्वास् इहेर्ड क्लाम ७ बाक्षवकु निधिन्ना ह्वन,

**চটकाবেড়ির। ও ডৎসন্নিকটবর্ত্তী গ্রামসমূহে অনেক ভক্ত-**লোকের (যথা আহ্মণ কারত্ব ও সদগোপ প্রভৃতি) এবং ক্রবক স্রোণীয় অনেক হিন্দু মুসলমানের বসতি আছে। কিন্তু এড দিনেও এত লোকের মধ্যে একমাত্র বাবু চল্লনাথ চৌধুরী ব্যতীত আর কেহ আহ্মধর্ম গ্রহণ করেন নাই এবং আহ্মধর্ম বে কি, তৎসহদ্ধে এধানকার অধিকাংশ লোক একবারে খনভিজ্ঞ । চক্রবাবুর পুত্র এীযুক্ত বসক্তকুমার চৌধুরি মধ্যে মধ্যে অবকাশ সময়ে এখানে আসিয়া करत्रक ब्रुग्न याद९ এখানে बाक्षधर्म विद्धातित अन्नाम भारेता प्यानिपाहिन। এ বংসর প্রীষ্টম্যাস্ডে উপলক্ষে তিনি কলিকাতা সাধনাশ্রমের ঞীযুক্ত বাবুকাণীচক্ত ঘোষাণ মহাশয়কে সজে গইয়া এখানে আগমন করতঃ বিশেষভাবে ব্রাক্ষধর্ম প্রচারের চেটা করিয়া-ছেন। ঈখরেচ্ছায় সুবাডাস বহিরাছে। হিন্দুপ্রধান গ্রামে (यथान बाक्षध्य प्रशस्त लाटक द खान धक्रवादाहे नाहे, धवः যেখানে মাম্লা মোকজমাতে ও প্রচলিত ধর্মের উপর অবি-चारमञ्ज बन्न, माधावरधत्र देनिकक व्यवद्य। व्यक्ति (भावनीय, रमधारन লোকে আগ্রহ পৃক্তক কানী বাবুর সঙ্গীত ও বক্তাদি প্রবণ করিয়াছে ও প্রীত হইয়াছে।

কালী বাবুর আগমনে আমলা বিশেষ উপকৃত হইরাছি।

এ অঞ্চলে বিশেষ ভাবে ব্রাহ্মধর্ম প্রচার এখন হইতে আরম্ভ

হইল। ভগবান তাঁহার ধর্মকে স্কল ধর্মের উপরে জয়যুক্ত
কর্মন।"

উৎস্ব—নোরালিয়া আদ্দ্রনালের বার্ষিক উৎস্বের প্রারম্ভে সম্পাদক বাবু মধুরামোলন মৈত্র অক্সাৎ মানবলীলা সংবরণ করেন। ইনি তথাকার আদ্দ্রমাজের এক্সন বিশেষ উৎসালী সভা ছিলেন। আদ্দ্রমাজের কার্য্যে কখন ও উলোর শিপিলভা ছিল না। হঠাৎ উলোর অভাবে অনেকেই মনেকরিয়াছলেন যে, বোধ হয় এবার বোরালিয়া সমাজের উৎস্ব হলবেনা; কিন্তু প্রমেশ্বরের কুপার উৎস্ব সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। কার্যাবিবরণ প্রাপ্তে হইলে প্রে প্রকাশিত হইবে।

গত ১লা জামুরারী নিমতা ব্রাহ্মসমাজের বার্থিক উৎসব অতি স্থাল্লর সেপালাদত হইরাছে। পূর্কা দিন অপরাছে কলিকাতা হইতে পঞ্জিত শিবনাথ শাস্ত্রী প্রমুখ কভিপর ব্রাহ্ম তথার গমন করেন। স্থানীয় এন্ট্রাহ্ম স্থাগৃহে সভা হয়। সংগীতের পর শাস্ত্রী মহাশর পাঠ ও ব্যাগ্যা করেন। তৎপর দিন কলিকাতা হইতে অনেকে গমন করেন। অতি প্রত্যুবে বাড়ী বাড়ী গিলা ভোর কীর্ত্তন করা হয়, তৎপর গা টার সময় বহুসংখ্যক লোক মিলিত হইরা নগরকীর্ত্তন করেন। ৮। টার সময় উপাসনা হয়, বারু উমেশচক্র দত্ত আচাগ্যের কার্য্য করেন। এবং যোগ সম্বাহ্ম অতি উপাদের উপদেশ প্রাদান করেন। মধ্যাক্রে পরিব হুংখিদিগকে চাউল বিতরণ করা হয়,তৎপর মাদি ব্রাহ্মসমাজের

শ্রীবৃক প্রিরনাথ শান্তী ব্রাশ্বধর্ষ গ্রাহ লাঠ করেন, তৎপর বার্
বিপিনচক্র পাল নির্ভন্ন সহজে বক্তা করেন। বক্তা
ক্ষরগ্রাহী হইরাছিল। রাজিতে নগেক্রনাথ চট্টোপাধ্যার
উপাসনা করেন এবং বিখাস সহজে উপদেশ দেন। এই
উৎসব উপলক্ষে বাব্ মহেক্রনাথ চট্টোপাধ্যার সাধনাশ্রমে
২, টাকা দান করিরাছেন।

মাণিকদৰ আক্ষদমাঞ্জের দশম বার্ষিক উৎসব নির্মাণিশিত প্রশালীতে সম্পন্ন হইরাছে। ১৬ই পৌব উর্বোধন। বাব্ কালীপ্রসন্ন ভট্টাচার্যা উপাসনা করেন। ১৭ই পৌব পূর্বাক্ষে স্রব্বোপাসনা; বাবু উন্মেশচক্র নাগ উপাসনা করেন। অপরাক্ষে শাস্ত্র পাঠ এবং সন্ধ্যাকালে উপাসনা হর, কালীপ্রসন্ন বাবু উপাসনা করেন।

বাগআঁচড়া ব্রাহ্মসমান্তের এক জিংশৎ সাহৎসরিক উৎসব উপলক্ষে কলিকাভা ছইতে প্রচারক শ্রীযুক্ত বাবু শশিভূষণ বস্থ এবং শ্রীযুক্ত কৈলাসচল্ল সেন তথার গমন করেন। গত ১২ই পৌব, ছইতে ১৭ই পৌষ পর্যান্ত উৎসব ভইরাছে। উৎসবে উপাসনা আলোচনা, মহিলা সমাজের উৎসব, বালকবালিকা সন্মিলন, নগর সংকীর্ত্তন প্রভৃতি ছইরাছে। বক্তৃতা উপাসনাদি শশী বাবু করিয়াছেন, কৈলাস বাবু সংগীত সংকীর্ত্তন করিয়াছেন।

সূত্যু সংবাদ — আমরা ছ:খের সহিত প্রকাশ করিতেছি, আমাদের বাধ্যক্ বাবু গুরুচরণ সমাদারের পদ্ধী রক্তামালার রোগে গত ১ই কামুরারী কলিকাতাং ১০০০ কর্ণ-গুরালিস্ ব্রীটাই ভবনে চারিটি শিশুসন্তান রাথিয়া ২০ বংসর বরুসে অকালে পরলোক গমন করিয়াছেন। পরমেশ্বর মাতৃহীন শিশুদিগকে রক্ষা কর্মন এবং লোক-দগ্ধ স্থামীর প্রোণে শান্তিদান ক্র্মন।

শ্রাদ্ধ — প্রীযুক্ত বাবু সনিতমোহন দাসের পিতৃপ্রাদ্ধ উপসক্ষে সাধনাপ্রমে উপাসনা হয়। প্রীযুক্ত পশুত শিবনাথ শাস্ত্রী
মহাশর উপাসনা করেন। সালত বাবু এতছপলক্ষে সাং ব্রাঃ
সমাজের হায়ী প্রচার বিভাগে ২ টাকা এবং পতিতা রমণী দিগের
আপ্রমের কল্প ২ টাকা ও দাতবা বিভাগে ১ টাকা দান
করিয়াছেন।

বাগআঁচড়া নিবাসী প্রীযুক্ত রাজেজনাথ মরিকের পিতার আদ্য প্রাক্ষেপলক্ষে বাবু শশিভ্যণ বস্থ উপাসনা করেন। রাজেজ বাবু এই উপলক্ষে সাং ব্যাং সমাজে ১ টাকা দান করিয়াছেন।

গত ১৯শে অপ্রহারণ মাণিকদহের বাবু কালীপ্রাসর ভট্টাচার্যোর পিতার আদ্ধ তাঁহার জন্মভূমি কাউলীবেড়া প্রামে সম্পন্ন হইরাছে। এতত্পলক্ষে মাণিকদহ হইতে কতি-পর প্রাহ্মবদ্ধ তথার গমন করেন। কালীপ্রাসর বাবু নিজেই আচার্যোর কার্যা করেন। আমালের মরমনসিংহত্ব বাত্মবন্ধু শ্রীমৃক্ত বাবু শ্রীনাথ চন্দ্র মহাশ্রের পরলোকগত পুত্র সভ্যানন্দের শ্রহণার্থ অমুষ্ঠানের নিয়লিখিত বিবরণ প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে।

১২ই পৌৰ মদলবার প্রাকৃত্যে ভারে ভারে উবা কীর্ত্তন তৎপর সমাধি-ভাবে দাঁড়াইরা ব্যার্থনা। পূর্বাহ্ন ৮ ঘটিকার সমর সমবেত উপাসনা। মধ্যাকে সংগীত, গীতা প্রভৃতি গ্রন্থ পাঠ, ব্যাখ্যা এবং মৃত্যু ও পরলোক বিবয়ে আলোচনা। ৪টা হইতে সন্ধা পর্যান্ত সমাধি ছলে ্ধ্যান, व्यार्थना ७ मःकोर्जन, ब्राजिट्ड मित्रनिष्ठ উপामना । २०३ (भोव প্রাতে সংকীর্ত্তন ও উপাসনা। মধ্যাকে ত্রান্ধবালকবালিকা সেবা। সত্যানন্দ যে স্কল বস্তু ভাল বাসিত, ভালার পিতা माठा (महे मक्न वस सहस्य श्रेष्ठ कतिया क्रांठ याजू वानक-वानिकामिश्रक (ভाजन क्यारेग्नाहित्न। अभवारक ১৪ - सन मोन इः थी वानकवानिकामिशाक न्डन कानए ଓ कमनारनव् প্রভৃতি খাদ্য দ্রব্য বিভরণ করা হয়। অন্তান্ত প্রকারের শভা-ধিক দরিত্রকে চাউল ও পরসা দেওরা হয়। সন্ধ্যাকালে সংকীর্ত্তন ও উপাসনা হইয়া কার্যা শেব হয়। স্থানীর উত্তর সমাজের ব্রাহ্মগণই আগ্রহের সহিত এই অমুষ্ঠানে যোগ দিরা ছিলেন। শিক রম্বতি ভাষী করিবার জন্ম, ভাষার সমাধি ভান প্রেক্তর-নির্মিত হইতেছে; তথার একটা ইটকমর সাধন কুটীরও নির্দ্মিত চইভেছে। সত্যানন্দের নামে একটা স্বায়ী ভছবিল ম্বাপন করিবার জন্ত শীঘ্রই কিছু টাকা কোন ও হিতকর স্বার্য্যে অর্পিত চইবে ৷

জাতকর্ম—গত ২৫শে অগ্রহায়ণ মাণিকদহ নিবাসী
সতীশচক্র ঘোষের ষষ্ঠ সম্থানের (চঙুর্থ কল্পার) জাতকর্ম উপলক্ষে বিশেষ উপাসনা হইয়াছে। এতত্পলক্ষে কন্যার মাতা সাং ব্রাঃ সমাজের দাতব্য বিভাগে॥• আনা দান ক্রিয়াছেন।

বিবাহ— বিলাতের ত্রাহ্মবন্ধ্ শ্রীযুক্ত ভয়দী দাহেবের তৃতীয়া ক্সার সহিত হায়দরাবাদের শ্রীযুক্ত মতিরাম স্থীরাম এডভানির শুভবিবাহ করাচি সহরে সম্পাদিত হইরাছে, পাত্ত বারিষ্টারের কাজ করেন। নববিধান-প্রচারক শ্রীযুক্ত বাৰ্ অমৃতলাল বহু আচার্যোর কার্যা করিয়াছেন। ইংল্ডীয় মহি-লার সহিত ভারতবাদীর বিবাহ ব্যক্ষসমাজে এই প্রথম।

দানপ্রাপ্তি— ডুমরাওণের বাবু ব্রক্তের্ক্মার বস্তর চভূর্ব পুত্রের নামকরণ উপলক্ষে সাং ব্রাঃ সমাজে ০ টাকা এবং সাধনাশ্রমে ১ টাকা এবং সিবাজগঞ্জের বাবু ভগণান চক্ত প্রক্তের প্রথম পুত্রের নামকরণ উপলক্ষে সাঃ ব্রাঃ সমাজে ১ টাকা ও সাধনাশ্রমে ১ টাকা দান করিরাছেন।

ত্রান্ধবালক ছাত্রাবাসে ময়ুবভঞ্জের মহারাকা এক-

কালীন ১০০ এক শত টাকা দান করিছাছেন। আমর। এই দানের অভ মহারাজাকে বিশেব ধভবাদ আদান করিতেছি।

## প্রেরিত পত্র।

( পত্র প্রেরকদিগের মতামতের জস্ত সম্পাদক দারী নহেন, কিছা কাহারও পত্র কেরত দিতে বাধ্য নহেন )

মান্তবর

প্রীবৃক্ত তরকৌমূদী সম্পাদক
মহাশর সমীপেরু।

মহাশয়,

আপনার ১৬ই অপ্রহায়ণ ও ১৬ই পৌষের তত্তকৌমুদীতে ৰাবু মনোরঞ্জন ৩৪ছ মহালয়ের ছই খানি পতা প্রাকালিত ছই-রাছে। অতাস্ত গুরুবাদ যে ত্রাহ্মধর্মের মন্ত বিরুদ্ধ নছে, উভর পজেই ডিনি ইছা প্রতিপন্ন করিবার যথেষ্ট চেষ্টা করিয়াছেন। প্রথম পত্তের স্চনাতেই তিনি বণিরাছেন "অবিচারিত ভাবে অনেকগুলি মত ব্ৰাক্ষ্সমাৰে প্ৰৰিষ্ট হইয়া ব্ৰাহ্মদিগের হৃদয়ের উপরে বিশেষ আধিপতা বিস্তার করিয়াছেন। ত্রান্দেরা অবি-চারিত ভাবে কোন মত গ্রহণ করিয়াছেন কি না তাহার বিচারে প্রবৃত্ত না হটয়াও একথা অনারাসে স্বীকার করা যাইতে পারে যে, তাঁহারা গুই মহাশয়ের বিচার প্রণালী কথনও অবলম্বন করেন নাট, এবং সেইজপ বিচার করিয়া কোন মত গ্রহণ ৰা পরিত্যাগও করেন নাই। স্তরাং ব্রাহ্মসমাজ যে অবি-চারিত ভাবে কতকগুলি মত গ্রহণ করিয়াছেন একণা বলিবায় প্তত মতাশবের সম্পূর্ণ অধিকার আন্তে। প্তত মহাশবের বিচার প্রণালীকেবল অভিনব নতে, অন্তও বটে। কিন্তু গুছ মহা-শর বলিবেন, তোমরা ঘালাই মনে কর না কেন, তালাতে আমার কিছু আদে যার না, আমি ত্রাহ্মধর্মের এই মূলমন্ত্র অত্রাস্ত গুরুবাদ তোমাদিগকে বুঝাইতে প্রায়াস নাই, "চিস্তা-শীল ও সাধনশীল ব্ৰাহ্ম অভিভাবকগণকে আমি ইছা ব্ঝাইতে चভিলাষী। তাঁহারাও পূর্বেই আক্ষধর্মের আর এক মূলমন্ত্র পুনর্জন্মবাদের অভ্যস্তভা স্বীকার করিয়াছেন। যদি তাঁহা-দিগের নিকট জয়ী হইতে পারি, তোমরা মেষপালের স্তায় রাথালের অনুসরণ করিবে। গুড়মহাশর স্পষ্ট ভাবে এতগুলি কথা বলেন নাই, কিন্তু প্রাকারান্তরে বলিরাছেন। শুহ মহা-শর যে মতের পোষক তাহাতে অমুধাত্রীদিগকে উপেক্ষা করিরা কেবল নেতৃণর্গের প্রতি লক্ষ্য রাখা ভাছার পক্ষে স্বাভাবিক। কিবু আমবা অসুবাতী দল নিজেদের আর্থ লইয়াই অধিক ব্যস্ত। আমাদিগের কিনে কল্যাণ বা অকল্যাণ হইবে অগ্রে তাহাই দেখিতে চাই। গুচ মহাশর কিছা অপর চিন্তাশীল ও সাধনশীল ব্রাক্ষ অভিভাবকদিগের বিবেচনার অস্ত আর্মি কোন কণা বলিতেছি না। স্থামাদিণের নিজের—সফ্ষাজী দলের

বিবেচনার জন্ত আমি চুই চারিটা কথা বলিতে সাহসী হইরাছি i
খুচ মহাশর প্রতিপর করিরাছেন, কর্বরের বাণী অপ্রাভ, সেই
বাণী বিনি শুনিরা অপ্রাভ উপদেশ প্রদান করেন তিনিই ড
অপ্রাভ খুক ৷ খুচ মচাশরের এই অপ্রাভ বুক্তি প্রণাণী অবলখন করিরা আমিও আর একটা অপ্রাভ সত্য প্রাভ প্রভাগিগের নিকট উপস্থিত করিতে সাহসী হইরাছি,
বধা:—

- (১) जन छत्रन भगार्थ।
- (২) জল ঘটে অবস্থিতি করে।
- (७) यह करनत चाथान,

স্তরাং ঘটও তরল পঢ়ার্থ। গুড় মহাশরের বৃক্তি তত্ত্বর সহিত আমার যুক্তি তত্ত্বের সম ধর্মত্ব কোথার ? যাঁহারা জিজ্ঞাসা করিবেন তারাদিগের অবগতির অক্ত কথাটা একটু পরিষার করিয়াবলা আবশ্রক। ঈশরের বাণী অপ্রান্ত, সেই অপ্রান্ত বাণীর কোনও একটা কোন ব্যক্তি বিশেষের মধ্য দিয়া প্রকা-শিত হইলে সেই ব্যক্তি সেই অত্তান্ত বাণীর আধার মাত্র ছইল। কোনও অভান্ত বাণীর আধার যদি অভান্ত হয়, ভবে কলের আধার যে ঘট সেও ভরল পদার্থ বলিয়া গণা . হইবে না কেন গ এই যুক্তি প্রণানী আর একটু প্রসারণ করিলে ইহাও প্রতিপন্ন হইবে যে আমার তিন বৎসন্ন বরসের বালকও অভারত। সে বলে মাফুছের ছুই পা, ছুই লাত, ছই কাৰ, ছই চোধ, এক নাক। ইহাযে অভাস্ত। সতা তাহার সন্দেহ নাই ৷ এই অদ্রান্ত সতা মে বলে সেই ত অভান্ত পুরুষ। ওচ মহাশ্যের সিদ্ধান্ত অনুসারে মহুবা, मार्क्ट जनाउ। (कन ना कशर्ड अपन मासूय (वाध इन्न नाटे, যে কোন না কোনও অভান্ত সভা জাত নছে।

এম্বে শ্রুচ মহাশর অবশ্রুই বলিতে পারেন, একটা কি ছইটা অভ্ৰান্ত কাত পাকিলে বা কাছারও মধ্য দিয়া প্রেকা-শিত হইলেই কেহ অভান্ত গুরু হয় না। কিন্তু ঈশবের ক্রটী অভ্রাস্ত বাণী শুনিরা করটা অভ্রাস্ত উপদেশ দিলে, মাফুষ অভ্রাস্ত গুরু হইতে পারেন, গুরু মহাশর তারা উল্লেখ করেন নাই। এইরপ কোন নির্দেশ না থাকার সোকের মনে ভুইটা সিদ্ধান্ত উপন্থিত হইতে পারে। প্রথম সিদ্ধান্ত এই যে, ক্লখুৱের কোন অভ্ৰান্ত ৰাণী শুনিলা বিনি ভালা প্ৰকাশ কৰেন, ভিনিই অভান্ত গুরু। এই গিছান্তে উপনীত হইলে অভ্ৰন্তে গুরু অসংখ্য হইরা দাঁড়োর। বিভীর সিদ্ধান্ত এই যে, ঈশবের একটা কিয়া দশটী অভ্ৰান্ত বাণী শুনিলেই কেছ অভ্ৰান্ত শুকু হুইতে পারেন না, ঈশবের সমস্ত বাণী যিনি শুনিতে পান এবং তাহা গুনিয়া অভাস্ত উপদেশ দেন, তিনিই অভাস্ত শুক্র। শেবোক্ত দিদ্ধান্তে উপনীত হইতে হইলেও ইহা স্বীকার করা আবশ্রক ्य, रुव श्रेत्रंदवत वागीत निर्फिष्ठे जःथा। चार्ट्स, नजुवा चामस्था ঈখর বাণী শুনিবার পক্ষে শ্রোভার আসীম সংক্রি বিদ্যমান রহিরাছে। ঈশর যধন যাহা বলিবেন অন্তান্ত শ্রুক তথ্নই তাহা শুনিতে পাইবেন। একদিকে ঈশবের শক্তি সীমা বিশিষ্ট করা, কিছা অপর্নিকে কোন মনুবোর শক্তি অসীম করা ব্যতীত শেষোক্ত সিদ্ধান্তে উপনীত হওর। অসম্ভব ।

মহাশর ইহার কোন্ পক্ষ অবলম্বন করিয়া চলিতে চাছেন; জানিতে পারিলে উপক্ষত হইব। আর যদি আনাদিগের কুল চিম্তাশক্তির অতিরিক্তে মহাজনদিগের গন্তব্য অন্ত কোনও প্রাণত পণ থাকে অন্বাতীবর্গ তাহাও জানিবার অনভিলামী নতেন।

ওছ মহাশন্ন বলিয়াছেন, ভ্রান্তিও অক্ততা একার্থ বোধক নতে, আমিও তালা বলিতেছি না। কিন্তু ভ্রান্তিও অঞ্জতা चार्तक छाल भवस्भावित म्हह्य। च्या छा छाल (यथान জ্ঞানের অভিমান কৰা যায়, সেধানেই ভাস্তি বিদ্যমান। পৃথি-বীর কেন্দ্রখনে কিরূপ উত্তাপ তাহা আমি জানি না, ইহা আমার অজ্ঞত। পটে কিন্ধ ল্রান্তি নতে। এই অজ্ঞতা তথনই ল্রান্তিতে প্ৰিবৃত্তি ভ্ৰাৰে, যুদ্ধামি বলি যে, "কেন্দ্ৰতা কিব্ৰুপ উত্তাপ আছে, তাচা ঠিক না জানিয়াও একণা অনায়াসে বলিতে পারা যায় যে, তথাকার উত্তাপ মাতুষের পক্ষে স্থ করা অসম্ব।" তথাকার উত্তাপ,কিন্দপ না জানিয়া উহা মাতুষের স্থ্য শক্তির সীমাধীন কিনা ভাষা কিরুপে নিদ্দেশ করিব ? ঈশ্ববাণী বলিয়া জগতে যে সকল কথা প্রচারিত ইয়াছে. ভাষা প্রকৃত ঈশ্ববাণী কিনা এবং এপর্যাম্ভ কেত ঈশ্ববাণী ভ্ৰনিতে পাইয়াছেন কি না তাহা অগ্ৰে বিবেচনা না কবিয়া অভ্রাস্থ প্রক কিরূপে স্বীকার করা যাইতে পাবে, তাহা ব্ঝিতে পারিছেছি না। खण মহাশয় বলেন "ঈশ্ববাণী কথনই ভ্রাস্ত हरेट পाরে ना," একথার কাচাব ও কোন সংশর নাই। किन्ह ইগার ঘারা আলভাত গুণবাদ প্রতিপাদিত ইইল কিরূপে? শেষ চইতে নির্মাণ ফলগারা নির্গত চয়, ইচা সকলেই স্মীকার ক্ষেন, কিন্তু সেই জলধানা পুন্ধনিণীতে পাত্ত হটলে ভাহাব निक्षका निमले हहेत अक्षा यनि (कह नतम, नाहा हहेता जिल (मायव अलाव विश्वष्ठा अधीकाव कविलान, हेहाहै कि প্রতিপর ১ইল। বিশুদ্ধ জল অবিশুদ্ধ পুদ্ধিনীতে পতিত ভটলে তাতার বিশুদ্ধতা বিনষ্ট ভটতে পাবে গুত মতাশ্য নিজেও বোধ হয় ভাষা অস্বাকাৰ কৰিবেন না। প্ৰছবিণীতে পতিত জল বিশ্বদ্ধ কিনা ভাষা বিচার করিতে চইলে পুসরিণীব বিশুদ্ধ ৰা অবিশুদ্ধ অবস্থাৰ অনুসন্ধান কৰা আৰ্শুক। মেণের জল বিশুদ্ধ কিনা এন্থলে সে বিচার নিম্প্রযোজন। মেঘের জল বিশুদ্ধ চটলে পুক্ষরিণীর জলও যে বিশুদ্ধ চটবে তাচা অনুমান করা স্বস্থত নহে। স্থাব অভ্রাস্ত, স্থাবের বাণীও অভ্রাস্ত টিছা সম্পূর্ণ সভা। কিন্তু মানুষ অল্রান্ত নতে, মানুষের যেমন অজ্ঞানতাও অপূর্ণতা আছে, তেমন ভ্রাপ্তি প্রমাদও আছে। নির্বালতা যদি পুক্রিণীর অভাবিক ধর্ম চইত, ভালা চইলে পুছারণীতে পভিত মেঘের জগ ণিশুদ্ধ কি না, এ প্রাস্থ উপস্থিত ছইত না। কেন না তাহা হইলে উভয় অংলই বিভান বৰিয়া গণা ছইত। মামুষও যদি অভাস্ত হইতেন তবে তিনি ঈশ্বের অব্যাস্ত বাণী অব্যাস্ত ভাবেই যে শুনিয়াছেন একথায় কাহারও সংশর হইত না। কিন্তু মারুবের যথন ভান্তি প্রমাদ আছে, তখন তিনি ঈশবেরবাণী অভ্রাস্ত ভাবে শুনিতে পাইয়াছেন কিনা, এ প্রান্ন অভাবত:ই উপস্থিত হইবে। কিন্তু এ প্রান্ন কাহারও মনে উপন্তিত ছইলে গুছ মহাশন্ন বলেন, "সমগ্র ব্রাহ্মধর্মকে !

অস্বীকার করা হয়।" অত্রন্তে গুরু স্বীকার না করিলে সমগ্র ব্রাহ্মণর্মকে অস্বীকার করা চর, ইচা বিশেষ সাচ্সিকভার কথা বটে। অভান্ত ঈবর সীকার করিতে হইলে এভান্ত গুরুত স্বীকার করিতে হইবে, না করিলে অভ্যেয়তা বাদী বলিয়া গণ্য দইতে চইবে, ইচা গুড় মৃচাশ্যের "অধিকতন্ত্র উদাবতার" লক্ষ্ণ, গোঁডোমীব চিজ নহে। এহলে গুছ মহাশয়কে বলা উচিত, চিকিৎসক অত্যে আত্ম বোগের প্রতিবিধান করুন। মহাশয় কি ইহাই বলিতে চাহেন,ঈখরকে অভ্রাপ্ত বলিয়া স্বীকার করা যেরপ সহজ, গুরুকে অভাস্ত স্বীকার করাও সেইরূপ সহজ ? কিন্তু মাদিগেৰ কৃত্ৰ বৃদ্ধি ত তাহা বুঝিতে পারি-তেছেনা। কেন না আমেবা জানি ঈশর পূর্ণ ফ্রর্বশক্তিমান ও সকলেশী; যিনি পূৰ্ণ ও সকলেশী ভালাব পক্ষে ভারিং অসম্ভব। স্বভরাং ঈশ্বরকে অভ্রান্ত বলিয়া শ্বীকার করা বেমন সহজ, কোন মামুঘকে অন্রান্ত বলিয়া স্বীকার কবা তেমনই কঠিন। কেননা গুরুই চউন, আর অন্য মানুষ্ট হউন, তিনি অপূর্ণ ও অদুরদ্শী, স্মতবাং প্রতিপাদ তাঁচাব ভ্রান্তি ঘটিবার সম্ভাবনা। ভাষ্কির এমন সম্ভাবনা সত্ত্বেও কোন ব্যক্তিকে অভ্রাপ্ত গুক্ বলিয়া স্বীকার করিতে চইলে কোন কোন লক্ষণ বাবা তাঁচাকে চিনিয়া লইতে হইবে। গুডু মহাশ্যের ভাচা উল্লেখ কৰা উচিত ছিল: কিন্তু তিনি তাহার উল্লেখ করেন নাই। মণ্চ ঘাঁহাৰা ভাঁহাৰ স্বীকাৰ্যা পণ স্বীকার করিতে প্রস্তুত হন নাই, তিনি তাঁহাদিগকে অসম্ভতিত চিত্ত অজেমবাদী ও অব্রাহ্ম বলিতেছেন। ইছাই কি উচ্চ সাধনার ও চিস্তানীলভার লক্ষণ? তিনি হিনটা স্বীকার্য্যের উপর আব যে হিনটা সম্ভাবিত স্বীকার্যা যোজনা করিয়াছেন, তাহা স্বীকার্যা বলিয়াই গণা হইতে পারে না। জগতে অনেক বস্তু অসম্ভব না হইতে পাবে, কিন্তু অসম্ভব না চইলেই যে উচা সম্ভব চইল ইচা স্বীকাৰ্য্য বা স্বতঃসিদ্ধ নছে। সকলেই জ্ঞানন, "যে বেবস্তু কোন এক বস্তুর সমান ভাহাবা প্রস্পার স্মান," ইহা জ্যামিতি শাস্বে একটা সভং বিদ্ধ। কিছু এই সভং বিদ্ধেব উপর নির্ভব कतिशायि (किन चामारक दरन (य. ताम यथन चामात तक् এবং সে যতুর ও বন্ধু তথন ষত ও আমি পরস্পার বন্ধু, ভাছা চটলে কি আমাকে স্বীকাব কবিতে হইবে যে, যত **প্রাক্তই** সামাব বন্ধু। , যতর সঙ্গে আমার প্রিচ্য না থাকিছে পারে, यद्भ (य श्वान किया (मास ताम ठाहाव नक् इडेबाएह, आमि তাগার পক্ষপাতীনা হইতে পাবি: বামেব অপর গুণ বা দোষ আমাৰ হৃদ্য আকৰ্ষণ করিয়াছে, যহুৰ পক্ষে আমার বন্ধু ছওরা অসম্ভব নছে, কিন্তু ভাছা বলিয়াই উহা ধ্রুব নিশ্চিত সভ্য নহে। আকৃতি সম্বন্ধে যাহা স্বতঃসিদ্ধ, প্রকৃতি সম্বন্ধেও তাহাই স্বতঃসিদ্ধ বলিয়া গণা হইবে তাহা বলা যায় না। ঈশ্ববের বাণী মানবাস্থায় প্রকাশ পার,একথা বলিলেই কোন মাতুষ অভ্রান্ত গুরু হইল না। ঈশ্বর পূর্ণ অভ্রান্ত, অপূর্ণ মানুষের পক্ষে পূর্ণ অভ্রান্ত হওয়া অসম্ভব। কোন মানুষ এক বিষয়ে অভাস্ত হইলেই তিনি অভাস্ত শুক হইলেন না, কেন না তাহা হইলে প্রত্যেক মাতুবই অপ্রাস্ত প্রক এकथा शूर्वाई तना इरेब्राइ। अह महानायत अञ्चास अक সেরপ কথনই নহে। পূর্ণ অভান্ত গুরুনা হইলে তাঁহার কথার প্রকৃত সিদ্ধান্ত হয় না। কিন্তু পূর্ণ অভ্রান্ত গুরুক অসম্ভব।
অপূর্ণ অভ্রান্ত গুরুক পদার্থটা কি তাহা বুঝিতে পারিলাম না।
গুরুর ভ্রান্তি সন্তাবনা মনে করিলেই তাঁহার কথা অবিচারিত
ভাবে গ্রহণ করা অসম্ভব হইয়া দাঁড়ায়। জগতে শারীরিক দাসত্বের যে ভাবে স্থান্ত হইয়াছিল, অভ্রান্ত গুরুকাদে প্রাহ্মসমাজে
আধ্যাত্মিক, মানসিক ও নৈতিক দাসত সেই ভাবে প্রতিষ্ঠিত
হইবে। গুরুপদাকাজ্জীদিগের ইহাতে লাভ থাকিতে পারে,
কিন্তু আমাদিগের ভায় অমুযাত্রীবর্গের ইহাতে ঘোরতর
সর্ব্বনাশ হইবে।

নিবেদক ক্রীন্থারকানাথ গঙ্গোপাধ্যায়।
তরা জাতুয়ারি ১৮৯৪।

# শ্রীযুক্ত তত্তকৌমুদী সম্পাদক মহাশয়

अकाम्भ (मयु।

সকলের নিকট হইতেই উপদেশ গ্রহণ করিতে ত্রাক্ষ যেমন বিনীতভাবে প্রস্তুত, অন্ত কোন ধর্মাবলম্বীই তেমন নহেন। স্থতবাং মনে যেন গাকে যে উপদেষ্টা লইয়া কোন তর্ক হইতেছে না, সেই উপদেষ্টা "অভাস্তু" হইতে পারেন কি না সেই বিষয়েই সন্দেহ। যাঁহার কদাচ ভ্রম হইতে পারে না—বাঁহার কথার উপর বিবেকের বিচার চলিবে না—"অভাস্ত গুরু" ইত্যাকার। ভিতরে সত্য থাকিলেই যদি অভাস্ত হয়, তবে তসকলেই অভাস্ত গুরু; কারণ এমন লোক নাই যাহার ভিভরে কিছুমাত্র সত্য নাই—স্থাগাগোড়াই ভ্রান্তি।

- ১। মনোরঞ্জন বাবুর দ্বিতীয় পত্তে সাত্টী ধারা। প্রথম ধারায় তাঁহার সেই পুরাতন কথাবই পুনক্তিক করিয়াছেন। তাহা যে ভ্রান্তিম্লক, তাহা প্রমাণিত হইয়াছে।
- ২। দ্বিতীয় ধারায় ভল্লক-পালিত কন্যাব দৃটান্ত। মামু
  যকে ছাডিয়া ভলুকের অনুসরণ করাতে তালার ঐ দশা হইয়া
  ছিল। সেই জগৎ-গুরুর উপদেশ উপেক্ষা করিয়া মানুষের

  উপদেশ অল্যন্ত মনে করিয়া চলিলে না জানি কি দশা হয়।
  কারণ তালার তুলনায় মানুষ ভল্লক হইতে ও অধ্য।
- ত। তৃতীর ধারার "অজ ভাস্ত ও অপূর্ণ" কণাগুলি লইরা বিরাট বিচার। কেল কেল নাকি 'অক্স' ও 'ভাস্ত' এবং 'ভাস্ত' ও 'অপূর্ণ' একট কণা মনে করেন। এই অজ্ঞাত আভ্যুক্তকে ধরাশারী কবিয়া তৎপর ব্যাখ্যা—"যে অবগত নহে তাহাকে অজ্ঞ ও অপূর্ণ (!) বলে। আর যে তুল করিয়াছে তাহাকেই ভাস্ত বলে।" সাফী চইক্সন গ্রন্থ! বাস্তবিক দেখিলাম তাহারা কিছুই অবগত নতে আর কোন তুলও করে নাই। আল্চণ্যের বিষয় এই যে, অচেতন পদার্থ নাত্রেরই এই গুণ দেখিলাম—কিছুই অবগত নতে। আর কোন তুলও করে নাই। তথন ব্রিন্লাম যে, কাঠ লোপ্তের যে "অভ্যন্তি" প্রস্তাবিত "অভ্যন্ত গুকর" ও সেইরাপ অসন্তব অভ্যন্তি। বাস্তবিক বিচার শক্তি যাহার আছে, ভ্রমাভ্রম তাহারই সপ্তবে। গ্রন্থের পক্ষে কিছু অবগত হওরা অথবা তুল করা সন্তবে না। "অভ্যন্ত গুরুদের কিমন্ত্রাত্ব বিবেক সম্বন্ধে সন্দেহ প্রকাশ করিয়া প্রশ্ন হইরাছে—

"জগদীশ পশুত জ্ঞান্ত দার্শনিক এবং জগদীশ পশুত জ্ঞান্ত মানুষ এই উভয় বাকে কি কিছু পার্থকা নাই ?" হংশের বিষয়, এহেন প্রশ্নের পরও জামাদের সন্দেহ যাইতেছে না। কারণ, আমাদের বোধ হয় যে জ্ঞান্ত দার্শনিক জগদীশ পশ্তিতের শ্রোতাকর্ষণ করিলে মানুষ জগদীশবাবু কোন কালেই আপত্তি করিতে ছাড়িবে না। স্কুতরাং তথ্ন তাহার মনুষ্ত লোপ পাইয়াছে, কি করিয়া মনে করি।

- ৪। কোন্ ব্যক্তিতে কতথানি ভান্তি আছে, জানিতে হইলে তাহার জ্ঞানের পবিমাণ্টা আমার আগাগোডা জানা চাহি, আর সেই জ্ঞানের বিষয়গুলির সম্বন্ধেও সমাক জ্ঞান চাহি। যত্তুকু না জানি, তাহাতে ভান্তি আছে কি না, জানিতে পারি না। ভগবানের কথা দূরে থাকুক, কোন মানুষের জ্ঞানের পবিমাণও যাথাগ্য সমাক্ নিকশণ করিবার শক্তিই মানুষের নাই। যদি থাকিত, তবে সে নিজেই অভান্ত হইত।
- ৫। ঈশবের বাণী মাহুষের ভিতর দিয়া থাঁটিকপে আসিতে পারেই না, আমি এরপ কথা বলি নাই। আমি বলিয়াছি যে. এমন কোন মামুষ থাকা অসম্ভব এবং অযৌক্তিক যে, সেই বাণী ভুনিতে এবং তদ্বিষয়ক উপদেশ দিতে তাহার "কদাচ ভূল হটতে পাবে না।" বাস্তবিক আমাদের যে ভূল চটবার উপযুক্ত অপূর্ণতা রহিয়াচে, এ অতি সভা কথা। এখন যাহাকে সতা বলিয়া মনে করি, জ্ঞানোয়তি সহকারে তাহাতে ভ্রম লক্ষিত হইতে পাবে। এই সম্ভ কণাটায় ওরূপ আমি ডাক ডাকিবার কোন কারণ দেখি না। "সতাই যথন আমাদিগের শাস্ত্র, তথন এতকাল যাতা বিশ্বাস করিয়া আসিয়াছে, সভ্যটা পাছে বা তাহার বিকল্প হয়, একপ তাস ব্রাহ্মের মনে উপন্থিত ছওয়াকদাচসঙ্গত নছে।" (মনোরঞ্জন বাব্র প্রথম পত্তের ভূমিকাম দেখুন)। জড়শক্তি কিছা আমার অপূর্ণতা ঈশ্বরের আদেশকে থাঁটিরূপে আমার নিকট উপস্থিত হইতে বাধা দিতে সক্ষম হইলে, অবশ্র ঈশ্বকে শক্তিহীন মানেতে হয়। স্তরাং আমার জন্ম যদি কোন আদেশ থাকে ভবে নিশ্চযই ভাচা আমার নিকট পৌছেবে, তখন সদত্মণবে কার্য্য কবিব। যভক্ষণ না পৌভাহতেছে তভক্ষণ নিশ্চম বু'ঝব যে, আমার জান্ত কোন আদেশ নাই। সে অবস্থায় যদি বিবেক-প্রণোদিত হঁইয়া কাহাবও উপদেশ গ্রহণ কবি তবে পাপ হইবে, কারণ ভালা ঈশবের আদেশ নলে। স্করাং গুক গ্রহণ করা অধর্ম। निरंदकवानीरक चारम ना जानित बहेज्रम मद म्हान है अधिक
- ৬। "ঈশ্বের স্থিত সাক্ষাৎ যোগের বাসনায়ই মানুষ গুরুব আশ্রয় গ্রহণ করে, সূত্রাং ওকে একা আবিরক নহেন।" একাপ যুক্তি গ্রাহ্য হটলে অভি স্থকেই অভান্ত গুক্র সাধাতি হয়। ঈশ্বের স্থিত সাক্ষাৎ যোগের অন্তরায় খনে করিয়াই আনাবা অভান্ত গুকুকে বিজ্ঞান কবি। সূত্রাং ডিনি বিজ্ঞীয়া।
- ৭। "সাধন পছাকে অভ্রান্ত না মানিলে কথনট সাধন নিটা দাঁড়ার না।" একটা অভ্যন্ত সাধন প্রাণালী যদি পাই, তবে ত বাঁচিরা যাই। অবলম্বিত সাধন প্রাণালীতে যদি ভ্রম থাকে, তবে তালাকে অনাত ভানিয়া লইয়া সাধকের প্রভৃত অকল্যাণ বই আর কোন ফল কইনে না। বাস্তবিক "এইরূপ বিচার বিহীন সিদ্ধান্ত যে সমাজে যে পরিমাণে প্রভিত্তিত হয়, সেই সমাজ সেই পরিমাণে অন্তঃসার শ্ন্য হইরা পড়ে, গোঁড়ানিই কেবল সেথানে সমাজতির কর্তা হইরা দাঁড়ায়।" (মনোরঞ্জন বাবর প্রথম পত্রের ভূমিকায় দেখুন)

উপসংহারে হুংথের সহিত বলিতে হইতেছে যে, অল্রাস্ত শুক্রবিরোধীদিগের উপর "অল্রাস্ত অহং" বাদ আরোপ করাতে সত্যের অপলাপ হইয়াছে। ইতি।

> বিনরাবনত শ্রীউপেন্দ্রকিশোর রার চৌধুরী।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

২০শ সংখ্যা । ১৮শ ভার ।

১৬ই মাঘ, রবিবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২॥• মফস্বলে প্রতি থণ্ডের মূল্য

### প্রার্থনা।

ি হে করণাসিরু! নববর্ষের কার্যক্রেতে অবভরণ করিবার সমঙ্গে আমরা তোমাব চরণে পতিত হইছেছি। আমাদের ফর্মলতা ভোমার অবিদিত নাই। আপনাদের মশিন জীবন ঘারা তোমার সভ্যধর্মকে কিরুপ মলিন কবিয়া ফেলিতেছি, ভাহা স্মরণ করিয়া শজ্জাভারে অবসন্ন হইরা পড়িতেছি। কিন্তু প্রভো সরল ভাবে যে প্রার্থনা করে, অকপটে যে সংগ্রাম করে, ভোমার রূপা চিরদিনই ভাহার সহার। সেই রূপা ঘারা আমাদের সহার হও, আমাদের দ্বেতাকে স্বল্ভাতে প্রিণ্ড কব। ভোমার সভ্যধর্ম সর্পত্রে বিস্তৃত হউক, ভোমাব সভ্যরাজ্য সর্পত্র প্রতিষ্ঠিত হউক। ভোমার চনণে এই প্রার্থনা!

পাঠিকগণের প্রতি নিবেদন—করেক বাবের তত্ত্ব কৌমুদী প্রাকাশ করিতে বিলম্ব হইল। পাঠকগণ এই জুটী মাজ্জনা কবিবেন। মাঘোৎসবের কার্য্যে ইহার পবিচায়কগণ ব্যস্ত থাকিতে হল। এই নিমিত্ব প্র'ত বংসরই উৎসবের পবের করেক সংশ্যা বিলম্বে প্রাকাশিত হইয়া থাকে। আশা করি এই বিশ্বস্থার শুধরাইয়া লওয়া যাইবে।

## চতুঃষষ্টিতম মাঘোৎসব।

যৎকালে ভারতাকাশ অজ্ঞানের অমানিশার এবং কুসংস্কার ও পাপের ঘনঘটার সমাচল, যথন ইলার চতুর্দিকেই অবকার, যথন কেলই একপ আশা করেন নাই যে, অচিবাৎ সেই বিষম অবকার ভেদ করিয়া সত্যধশ্যের উজ্জ্ঞন তপন নভামগুলে উদিত হইবে। তথন যে জাগ্রত পুরুষ আমাদের কল্যাগের জন্ত মুক্তিপ্রদ আসাদেই প্রাহ্মসমাজ জীবন-পথে আর এক বংসর অগ্রসর হইল। এই উপলক্ষে অনুষ্ঠিত চতুর্ইত্বিম মাঘোৎসব স্থাসর হইল। এই উপলক্ষে অনুষ্ঠিত চতুর্ইত্বিম মাঘোৎসব স্থাসর হইল। ইলাছে। প্রাহ্মগণ সমস্ত বংসর শোক, ছংখ, নীরসভা, বিশুম্বাভা প্রভ্তির সহিত সংগ্রাম- করতঃ অবসরপ্রার হইরা সভ্কা নেত্রে মাঘোৎসবের আগ্রমন প্রতীক্ষা করিতেছিলেন। সকলেই আশা করিতেছিলেন, যখন মাঘোৎসব আসিবে এবং সাধু ভক্তগণের এক্ত সমাবেশে ও ব্যাকুল প্রার্থনার ভগবানের

ক্বপা-স্রোত অবতীর্ণ চইবে, তথন সেই স্রোতে আমবা সকলেই ভাসিয়া যাইব, আমাদের অবসর দেহে উৎসাহের উষ্ণ শোণিক প্রাবাহিত হইবে, আবার আমরা নবীন উৎসাহে নববর্ষের কার্য্যপ্রণালী আরম্ভ করিব। এইকপে সকলেই উৎস্থক হৃদ্ধে দিন যাপন কবিতেছেন; উৎসব-কমিটী উৎসবের আর্রোক্তনে ব্যস্ত আছেন; প্রত্যেক ব্রাহ্ম গৃহসজ্জা, উপহার প্রভৃতির যথা-সাধ্য আর্যোক্তন কবিতেছেন, এমন সময়ে দেখিতে দেখিতে পৌষ মাস চলিয়া গেল।

মাঘমাদের প্রথম দিন আদিল। ঐ দিনের নবস্থাের আবিভাবের দক্তে সঙ্গে আক্ষাণ নৃত্ন উৎসাহ লইরা জাগ্রভ হইলেন। পূর্ব্ধ পূর্ব্ধ বৎসরের ক্যার এবারেও প্রভাবে আক্ষাত্র নিজগৃতে উপাসনার উদ্যোগ করিছে লাগিলেন। আক্ষাত্রণ ভরণ বর্ষদের তকণ উদ্যাসের সহিত ছাত্রাবাস সকল স্থাক্তিত করিলেন। অনেক পরিবারও ঐ দিন স্ব স্থা গুল পূজা প্রাদিতে বিভূষিত কবিলেন। অনেক স্থানে আক্ষাত্রের বিজয় নিশান উড্টীন হইল। অতি প্রভাব হইতে আরম্ভ কবিরা সমস্ত দিন নানাস্থানে উপাসনা চলিতে লাগিল। সমস্ত দিন ব্যাপিষা এবং কতক রাত্রি প্যান্ত আক্ষাণ আক্ষামাজের ক্যাণের জন্ত স্থা স্থাত্র প্রাক্ষাণ ব্যাক্ষামাজের ক্যাণের জন্ত স্থাত্র প্রাথনা কবিলেন।

ইরা মাঘ, ১৪ই জানুয়ারী, রবিবার—প্রাতঃকালে শ্রীযুক্ত বাবু আদিনাথ চটোপাধ্যায় মহাশ্য সমাজমন্দিরে উপাসনা করেন। অপরাক্ত ওটার সময় বীডন উদ্যানে প্রচারাথ গমন করা হর। পূর্ব্ব হইতেই জ্ঞাপন করা হইয়াছিল যে, অপরাক্তে বীডন উদ্যানে বক্তৃতার পর সংকীশুন করিতে করিতে মন্দিরে আগমন করা হইরে। স্কুতরাং সেই সময় মন্দিরে মৃদলের মধুর ধ্বনি উটিবাসাত্র আহ্মণণ এবং অক্সান্ত আনেক লোক চতুর্দ্দিক হইতে মান্দরাভিমুথে আগমন করিছেন। পরে সেথান হইতে সকলে নির্দিষ্ট স্থানে গমন করিলেন। পরে সেথান হইতে সকলে নির্দিষ্ট স্থানে গমন করিলেন। সকলে ক্রেম বীডন উদ্যানে আসিয়া মিলিত হইলে প্রার্থিনানন্তর বাবু মথুবামোহন গান্ধুলি, ভাই প্রকাশ দেব, বাবু বিপিনচক্ত্র পাল প্রভৃতি মহাশয়গণ সময়োচিত ভাষায় এবং ভাবে বক্তৃতা করিলেন। এতগুপলক্ষে থাসিয়া পর্বত হইতে সমাগত একজন থাসিয়া বন্ধু কিছু বলিয়াছিলেন। শ্রীযুক্ত বাবু নীলমণি চক্রবর্তী তাহার ভাব ব্যাখ্যা করিয়া দিলেন।

বক্তাদির পর গায়কগণ উৎসাহের সহিত নিয়লিখিত কীর্ত্তন আয়ক্ত করিলেন।

### নগরসংকীর্ত্তন।

তাল রূপক।

ৰ্যাক্ল অন্তরে, ত্রন্ধনাম গাও প্রাণ-ভরে।
ত্রন্ধনাম গানে মৃত প্রাণে জীবন সঞ্চারে।
এ নাম সাধুর হৃদরেরধন,
পাপীর অবলম্বন,
এ কাম শ্বণে মহাপাতকী তরে।

ভাল লোফা।

কাহার মধুর রব উঠেছে গগনে ?

( কিবা মধুব মধুব বে । )

কাহার মধুব বাণী ভুনিবে প্বাণে ?

ভোৱা বল বল রে !—হাদ্য-বীণা কে রে বাজায়—)
ভাই বে ।

কে—রে এমন করি ভাঙ্গি ঘুমের ঘোর,
( ভোরা জানিস কিরে ভাই ।—এমন করে কে রে মাতায়—)

মৃত্ল মোহন তানে ফ্লয় করে (ভার ?

( প্রাণ স্থাকুল করে )

ভাই বে!
কোমণ পরশে কার শিহবিছে প্রাণ ?
( তোরা জানিস কি রে ভাই।—
ববা মানুষ কে—রে বাঁচাক, এমন কবে কে—রে নাঁচার—)
নীরস মণান কঠে (আজ) উঠে কার নাম।

#### ভাল ধয়ব।।

এস, পশিযে পরাণে, মরমের কাপে, ভানি সে মধুর নাম, (কিবা মধুর মধুর রে ! পরাণ আকুল করে ) ঘুচিবে যাতনা, ভয ভাবনা, ঘু'চবে সকল কাম। ( বন্ধ নামের গুণে ) কাম ক্রোধ আদি, যত রিপুগণ, नाम-शक्ष यनि भागः; কাপি ধর ধর, ভারে হাড় হাড় আপনি দূরে পালায়। ( ব্ৰহ্ম নামের তেভে— ) মার!-মোহ জাণ, ভবের জঞাল, ছूँ रेल नामित का छन, আঁথির পলকে, হয় ভত্মময়, এমনি নামের গুণ। জ্ঞানের গরবে, ক্ষীত যার প্রাণ, त्म व यमि नाम भागः

ত্যজি অভিমান, ত্ণের সমান, ।

(মান আর থাকে না থাকেনা—)

সকলের পারে লুটার।

আপনার প্রেমে,

বাঁধা পড়ে দ্যাময়।

নরাধ্য জন,

লইলে শ্রণ

ভাল--পেমটা।

আপ্নি এসে কোলে লয়।

আমবা এক্ষনামে তরে যাব,—
আজ আমরা বেঁচে যাব।
এক্ষনামের বলে সবে নবজীবন পাব,
সে চবণে সদয় মন সবাই ঢেলে দিব।
নামামূছ পানে বিষয়-ভৃষ্ণা নিবারিক,
তাঁবই কণায়, তাঁরই দেবায় জীবন কাটাইব।
আনলকপ দেখে ভয়-ভাবনা ঘুচাব,
"তোমাব ইচ্ছা পূর্ণ ১উক"—স্থথে ছথে গাব।
এক্ষ-প্রেমে বিভোব হয়ে আপনা ভ্লিৰ,
যারে পাব ভাবেই প্রেম আলিঙ্গন দিব।
বিশ্বক্প মাথে এক্ষ-কপ নেহারিক,
এক্ষ-শক্তির জয় গাইযে এক্ষণামে যাব।

কীর্ন্তনের দল উৎসাতে গান করিছে করিছে ভক্তি-ভাজন মহযি দেবেজনাথ ঠাকুর মহাশরের বাটাতে সমাগত হইলেম। এবং তথার কিয়ৎক্ষণ কীর্ত্তন করিয়া আদি আদ্দ-সমাজমন্দিরের নিকট আসিলেন। তথার মন্দিরের সন্মুথে কতক্ষণ গাম করত: পুনরায় তথা হইতে সকলে সাধারণ সমাজমন্দিরে প্রত্যাবতান কবিলেন। কিয়ৎক্ষণ কীর্তনের পর উপাসক ও দর্শক সকলে স্থ স্থান পরিপ্রহ করিলে শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত মহাশর উপাসনা করিলেন।

ত রামাঘ, ১৫ই জানুরারী, সোমবার—আজ
উদ্বোধন উদ্বোধন। পূক্ষ হইতেই বিজ্ঞাপিত হইয়াছিল যে সারংকালে মান্দরে উদ্বোধন-কাষ্য সম্পাদিত হইবে। স্বতরাং সন্ধার
পূর্বেই মান্দরে অনেক লোকের সমাগ্ম হইল। ঠিক ৬
ই ঘটিকার সময় উপাসনা আরম্ভ হইল। প্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ
শাল্পী মহাশয় আচার্যের কাষ্য ক্রিলেন। ভাঁছার উপদেশের
সারম্পানিমে প্রান্ত হইল:—

### উৎসবের ভিতর বাড়ী।

শিসময়ে সময়ে বড় বড় সহরে মহামেলা হর, তাহাকে Exhibition ভাথবা প্রদর্শনী বলে। সেই মেলাতে নানাপ্রকার দেখিবার পদার্থ থাকে। নানা দেশ বিদেশে যে বে উৎকৃত্ত ক্রব্য পাওরা যায় একটা স্থান খিরে সেইগুলিকে নানা ভাবে সজ্জিত করিয়া রাখে। কিন্তু তাহার মধ্যে সর্বাপেক্ষা স্থানর, সর্বাপেক্ষা উপযুক্ত, যে বিশেষ জিনিস থাকে তাহার জন্ত সভার বন্দোবত দেখিতে পাওয়া বার। তাহার জন্ত বিশেষ

ভাবে একটী স্থান খেরা হয়। সকলে তাহা দেখিতে পায় না। **ट्रमिश्चात्र अस्त्र** विरागय हिकि हेन । ट्रम्मात द्यंनिटक गासूच বার, দেখিতে পার কত জুলার জিনিস, কত হাসিবার জিনিস সজ্জিত রহিরাছে। সে সব দেখে দেখে ঘুরে ঘুরে বেডার, বনু বান্ধৰের সহিত কত আমোদ করে। অনেক সমরে এমন হর ৰে পরসার অভাবে কেহ সর্বাপেক। তুন্দর জিনিস্ট। না দেখিরাই ফিরিয়া যায়। আবার এমন লোকও আছে বে মেলার আসিয়া কেবল বন্ধু বান্ধবের সভিত আমোল আহলাদেই সময় কাটার। বাহিরের জিনিস দেখিয়াই ৰাডী ফিরিয়া যায়। **मिथान यमि किट छोटाक किछाना करत, "**कि मिथान, সেণানে যে এক অপূর্ব স্থলর জিনিস আছে, তাহা দেখিরাছ কি ?" সে বলে, "না ভাছা ত দেখি নাই।" তথন প্রশ্নকর্ত্ত। বলে, "তবে কি দেথিয়াচ ? যাহা দেথিবার জক্ত যাওরা তাই দেশ नाहे, जत्त, कि मिथिता ? जत्व जात्र कि हल ?"ठाहात्क नकत्त এইকপ লজা দের। সে নিজের ক্রটি বুঝিতে পারিয়া বড়ই লজ্জিত হয়। আমাদেব এই মহোৎসবে বাঁহারা প্রবেশ ক্রিতে याहेटहरून, डांगांत्रा सानित्वन, हेगात इंग्रेन वाफी। छेरमत्वन ভিতর বাড়ী আরে বাহির বাড়ী। উংসবের বাহির বাড়ীতে কত আমোদ হইতেছে, ছেলেরা নাগবদোলায় গুলিতেছে, কত লোক কভালনিস কিনিভেছে থাইতেছে, নিশান উভিভেছে, ঘণ্ট। বাজিতেছে। এইটা উৎসবের বাহির বাদী। কিছ একটা ভিতরের বাড়ীও আছে। সে একটা আশ্চয্য বাড়ী। সেখানে আজব কারখানা। সেখানে প্রবেশ কবিবাৰ টিকিট আছে। সেই জায়গা সকলের শ্রেষ্ঠ জায়গা। ভাষাকে কে বলে অলপুর, কেচ বলে চির্নায় প্রমকোষ। ইচা কি 🕈 এখানে কি আছে ৷ তাহা শেখা ৰাষ, কিন্তু বাহির থেকে বলা যার না। আহবেশ নাক বিলে বু'ঝতে পারা যায় না। ইছিবা প্রবেশ করেন উত্তিদের আনন্দ আর ধরে না। অপূর্ব সূত্য-জ্যোভিতে ভাঁচাদের প্রাণ পরিপূর্ণ হয়।

এই ফানে মহাসভা বসিয়া শিয়াছে। ইতা ইতকাল পরকাল-ব্যাপী সভা। এখানে বাঁহারা বহিয়াছেন, তাঁহাদের জাভ নাই। ইছা বিশ্বাসী অমরাত্মাদের সভা। এখানে কেবলই বন্দন। উঠিতেছে। অনাহত ভেরীর রব, অনাহত বন্দনা। এথানে ৰাঁহাবা রহিরাছেন, তাঁহাদের মত্তক দিব্যালোকে উজ্জ্ব। এই अमताचारमत (कह हेरकारन तरियारहम, (कर भतकारन গিরাছেন। এখানকার এক অপূর্ব্য গন্ধ। এখানে চারি প্রাকার গন্ধ পাওয়া যায়। যেমন বাবুদের বাগানে গেলে বেল, মলিকা, গোলাপ, জুই প্রভৃতি নানাপ্রকার পুষ্পের গন্ধ পাওয়া যার, সেইরূপ এই ভানে চারি প্রকার গন্ধ পা**ৰ**রা যার। প্রেমের গন্ধ, আননের গন্ধ, আশার গন্ধ ও পবিত্রতার গন্ধ। এই রাজ্যে যিনি প্রবেশ করেন, তাঁচার প্রাণ প্রেমে পূর্ণ হয়, প্রাণে আনন্দ ফুটিয়া উঠে, আশাও পবিত্রতায় প্রাণ পরিপূর্ণ হইয়া যার। এই রাজ্যে যে যায় সে পূর্বের রক্ম থাকিতে পারে না। আর এক রকম হইয়া যায়। বাহির বাঙীতে যে বলিতেছিল, 🖜 আমার কাছে আংসে কেন, দুরে দাঁড়াক—ও আমার কাছে দাড়ায় কেন ?" সে যেমন এই ভিতর বাড়ীতে আংৰেশ করে,

चात्र अमिन विनिन्ना छैट्ठे, "आत्र चात्र, निकारे चात्र''। ८व বাহির বাডীতে কতবার বলিভেছিল,"কিছু হবেনা কিছু ছবেনা," সে যেই এইখানে আসিয়াছে যেই সভ্য হাওয়া ভাহার গায়ে লাগিয়াছে, আর অমনি আশা ফুটিয়া উঠিয়াছে। সে অমনি বলিয়া উঠে, "আমি বাঁচিব, আমি বাঁচিব"। বাহির বাডীতে বে নিরা-নন্দে ছিল,প্রাণ যাহার ডিক্ত ৰোধ হইতেছিল,যেই এথানে প্রবেশ করিল, আর অমনি আনন্দের সঞ্চার। এ কি চাওরা গারে লাগিল! যাহার বাহির ৰাজীতে মনটা একেবারে মলিন হইরাছিল, ঝড়ে কদ্লী বুক্ষের ক্রায় যাচাব চরিত্র ছিন্ন ভিন্ন ও আন্দোলিভ হুইতে-ছিল, অপ্রিত্তার ম্লিন্ডাতে যাহার প্রাণ্টা পূর্ণ ছিল, সে ভিতর বাডীতে যেই প্রবেশ করিল, আর ওকি হইল ? চকু कि प्रिथित ? गकलि बम्लारेश (भेता। এই छे १ न त यां बाता প্রবৃত্ত হটতে ঘাইডেছেন, কেবল বাতির বাডীতে থাওরা দাওয়ার বাস্ত না থাকিয়া ভিতর বাড়ীতে প্রবেশ করুন। শুধু বাহির বাডী হইতে ফিরিয়া খরে গেলে, যথন সকলে জিজাসা করিবে, "কি দেখিলে," তথন কি উত্তর দিবেন ? অনেকে এইকাপে বাহির বাড়ী হ'তে ফিরিরা যান বলিরা ल्याल कानम, काभा, कि हुई शान ना । यिनि निराम द्रिहिद्दाहिन, তিনি নিবাশ হট্যা ফিবিয়া **যান।** যিনি নিরান<del>ল</del> র্ছিয়াছেন, তিনি নিরানন্ট থাকিয়া যান। যিনি অপবিত তাঁহারও কিছু হয় না। উৎস্বেব ভিতৰ বাডীতে প্রবেশ করা হটল না, ভাষা হইলে ত কিছুই হটল না। এই ভিতর বাডীব দ্রজাকে থোলেন ? স্বরং উৎসবের অধিপতি। তিনি স্বরং প্রেলল মুখে ছার খুলিয়া বলেন, "এল প্রেবেশ কব।" আমরা এইখানে माँछारेव। এই यে সেই আসল জারগা। বলিব, "উংসবের আধিপতি, ছাব খোল।" তাঁহাকে যদিনা পাওয়া যার তবে কিছুত ত ত্ত্র না। সেই বিমল সল্লিধানে আদিলাৰ কিনা, সেই হাওরা গায় লাগিল কিনা তাই দেখিতে হইবে। যেন প্রতাবিত হইয়া ফিরিয়া না যাই। প্রভু এমন রূপা ককন, যেন আমাদের উৎসবেব আয়োজন সার্থক হয়। আমরা কর্যোড়ে তাহার নিকটে উপস্থিত হইরা যেনপ্রার্থনা করিছে পারি।

৪ঠা মাঘ, ১৬ই জানুষারী, মঙ্গলবার—আন উষা-কালে মলিরে প্রথমতঃ সংকীপ্তন হইল সংকীপ্তনের পর শ্রীযুক্ত বারু মহেন্দ্রনাথ চটোপাধ্যায় মহাশন্ন উপাদনা করিলেন। ভাহাব উপদেশের দারমন্ম এই:—

"দীনামা। লোকেবা ধন্য, কারণ মর্ণ রাজ্যে তাঁহাদের অধিকার। ধন্ম প্রযুক্ত তাডিত লোকেরা ধন্য কারণ মর্গ রাজ্যে তাহাদের অধিকার।—কেবল যে এটি এই উপদেশ দিয়াছেন তাহা নহে। দেশে বিদেশে সকল সাধু এক বাক্যে বিশিয়াছেন যে, আপনাকে বিনমী ও দীন ভাবাপয় না করিতে পারিলে ধর্ম রাজ্যে কেহই অধিকার পায় না। ভক্ত চৈতন্য মহা উৎপীড়ন বিনয়ের সহিত সহ্ করিয়া ধর্মের জয় করিয়াছিলেন। অসমরা ও সময়ে সময়ে এ পাপ জীবনেও দেখিয়াছি যে খানে দীন ভাবে ধর্মের জন্য যাহা কিছু সহ্ করিয়াছি সেই খানেই আক্রধর্ম জয় করিয়াছেন। এক সয়য়

যেথানে লোকে প্রহার করিয়াছে আবার ইহাও দেখিলাম যে সেই লোকেরা আবার আগ্রহ সহকারে ব্রাহ্মধর্মের কথা শুনিষাছে ও ব্রাহ্মধর্মা গ্রহণ করিয়াছে, আমার বিশাস এই যে মদি আমরা বিনয় ও দীনতার সহিত ধর্মেব জন্য লোকের উৎশীজন সহ্য করিয়া ধর্মা প্রচার কবিতে পারি তাহা হইলে ব্রাহ্মধর্মা স্থদেশে ও বিদেশে অতি সম্বর জয়লাভ করিবে। ইশার আশীর্কাদে করুন যেন উহাহার জন্য সকল সহিতে পারি।

সন্ধাকালে শ্রীযুক্ত বাবু শশিভ্ষণ বস্তু মহাশার "ধর্মদীবনের বিকাশ" বিষয়ে বক্তা প্রদান করেন। তাহার সারাংশ নিমে দেওরা গেল।

"আজ কাল চারিদিকে ধর্মের আন্দোলন চলিতেছে। নানা প্রকাব ধর্ম্মলভা প্রতিষ্ঠিত হইতেছে। ৪টী প্রধান সম্প্রদায় এই পৃথিবীতে আছে। হিন্দু, বৌদ্ধ, গ্রীষ্টান, মুগলমান! চারি সম্প্রদায়ের লোকই ভারতবর্ষে ধর্ম্মপ্রচার কবিতেছেন। অনেকে দেশ বিদেশ পরিভ্রমণ কবিয় মৃতপ্রার হিন্দুসমাজকে জীবন দিবার জন্ম তার স্বরে বক্তৃতা ক'বতেছেন। অনেক আধ্যাদ্মিক ব্যাপ্যা" বাহির হইতেছে। বৌদ্ধ প্রচারকগণ্ড নীরব নন। ধন্মপাল প্রভৃতি বৌদ্ধব্য প্রচার কবিতেছেন। ইউবোপ প্রভৃতি দেশে লৌদ্ধব্যার আলোচনা হইতেছে। মুসলমানগণ্ড নীরব নন। ভাতাবাও গ্র প্রচাব কবিতেছে। মুসলমানগণ্ড নীরব নন। ভাতাবাও গ্র প্রচাব কবিতেছে। Wellington square এ কেজন ইংরাজ মুসলমান হইয়াছেন।

গ্রীষ্টধর্মের কথাই নাই। চারিদিকে পুর প্রচার হইতেছে মুক্তিফৌজ নুহন রকমে গ্রীটধর্ম প্রচার কবিশতছেন। এই সম্ভ ধর্মের আন্দোলন চারিদিকে খুব চলিয়াছে। ভাবতবৰীয় উপাসক সম্প্রদানের দেখিতে পাই বৈষ্ণব, শৈব, শাক্ত, ও গণিপত্য এদেশে খুব প্রাধান। এই সকলেব মধ্যে ব্রাহ্মসমাজ আনেক সমরে অনেক লাঞ্চনা সহ্য ক্রিয়াও আপনার সূত্য প্রচার ক্রিচেডেন। চাবিদিকে অনেক শত্রু থাকা সাহও দণ্ডারমান রভিয়াছেন। ইছার মধ্য আবোৰ Theosophy নামে নুতন মত বৌদ্ধ ও নিক্রক্ষের সংশ্লেশ্র ছংগ্র । পরসম্মর <mark>থাকুন বা না থাকুন</mark> শাত নাত, গাফ প্রজিয়া পালন কারেলেই হইল। ধর্মবিখাস থাকাবানাথাকাতে কভি বুদ্ধিনাই। এই গুলির মধ্যে আহ্ম-সমাজ কি দেখাইতেছেন ? মুক্তির পথে কি করে যেতে হবে। कान अर्थ **अवनम्रन कतिरम श्रक्क** कत्र भ्याकी वरनत्र विकास **চ্টতে পারে। ধর্মজী**বনেও ভৌতিক জগতের ভার নিয়ন রহিয়াছে। মানবের ধর্মমুক্ল সকল সেই নিয়মে বিকশিত • য। তার প্রথম নিয়ম, আত্রার পবিত্রতা। ফ্রন্য পাবত্র না कर्टेटन भद्रश्याच्यारक (एथा यात्र ना । यङ्तिभू आभारमञ्ज ভ्यानक প্রতিকুলাচনণ করে। ইছাদিগকে খাছারা নিশ্মল কবিতে না পেরেছেন ভাবানের সাকাং দশন তাঁদের অস্তব: যদ্ধারা কুভাবের দিকে মন ধাবিত হয় তার মধ্যে প্রথম গুণিত পুত্তক পাঠ করা। অধিকাংশ যুবক ইংরেজী অঘত novel পডেন। মন কলুবিত করিবার পকে এমন আর কি হইতে পারে ? বিতীয় রজভূমি, নরকের পিশাচ রজভূমি ছাড়া আর কোথায় লাছে ? পৰিত্ৰতা লাভের পঞ্চ প্রত্যেক ধর্মশাল্লে কভ कर्छात्र विधि हिल।

২য়—পবিত্রতা লাভ করিলে আপনা আপনি পর্মেশরের প্রেতি একটা প্রেমের ভাব হর। ঈশ্বরের দর্শনে প্রাণ বিকলিত হয়। ইহার বিরুদ্ধে গুরু ও পুরোহিত মানবাত্মার অত্যন্ত করিরছে। অল্রন্ত গুরু মানবের যত ক্ষতি কবিরাছে আর কিছুতে তত নহে। অল্রন্ত গুরু মানিতে গেলে. হিতাহিত বিবেচনা একেবারে পরিত্যাগ করিতে হয়। আত্মার সঙ্গে পরমাত্মার নৈকটা ধর্মজীবন লাভের উপায়।

তম—জ্ঞানালোচনা। জ্ঞানেব প্রতি দৃষ্টি না থাকিলে কছ যে ক্ষতি হর বৈশ্বব সম্প্রদার দেখাইয়াছেন। মহায়া হৈত্যু একদিন অহৈতকে বলিয়াছিলেন জ্ঞান অপেকা ভক্তি শ্রেষ্ঠ। এক্ষণ বৈশ্বব সমাজে এত পাপ প্রবেশ করিয়াছে যে তাহাতে বংকশ্প হয়। এ দেশে যুবকদেব মধ্যে তেমন জ্ঞানচর্চা নাই। অধিকাংশ পুশ্তকের দোকানে কুলপাঠ্য ছাডা অন্ত ভাল বই পাওয়া যায় না। তার কাবণ শিক্ষা ভাল বক্ষে প্রচাব হয় নাই। ধর্মজীবনের পক্ষে জ্ঞান নিতান্ত প্রযোজনীয়।

৪থ—সজন ও নিজ্জন উপাদনা ও প্রার্থনা। এক সঙ্গে উপাদনা করিলে প্রাণে কেমন চমংকার ভাব ও আমনদ পাই। ৫ম। সংধ্যুস্বনাদ। ভাষাতে প্রাণেব মধ্যে আপুনি ভাব আসে। কওঁভেজারা বলেন এক সঙ্গে সাধন না করিলে সাধনই হয় না।

৬ ছ । উদারতা। সতা প্রাণে ধারণ করিতে গোলে সকল কাতি হইতে সতা গ্রহণ করিতে হয়। সকল দেশীয় ধ্যাচার্য্যাল্থ প্রায় একই কথা বলিয়া গিয়াছেন। যাহাবা ধ্যা গ্রহণ করিতে চান তাঁদের নিকট Asia, Europe একই কথা। যেথানে সাধুতা সেথানেই মাথা অবনত করিতে হইবে।

পম— স্বার্থত্যাগ ও নবসেবা। এদেশে বাঁরা ধ্যঞ্জীবন সাধন কবিষাছেন তাঁহারা কেবল নিজেবাই করিষ্ছেন। কিন্তু অপরের সেবা না করিলে ভাহান্ত ক: ভ হয়। Love thy neighbour as thyself, ভূমি ভোষার প্রান্ত বেশীকে আপনার হুয়ে ভাবিবে। এই ৭টা ভাবে ধ্যমতাবনেব বিকাশ। বাঁহারা ইহার সবগুলি গ্রহণ না করেন ভাহাদেব একাক্ষ সাধন হয়। বস্তুগান সময়ে ব্রাহ্মসমাজে এই ভাব দিবার জন্ত দশুয়েমান। লোকে যা বলে বলুক এই ব্রাহ্মসমাজের মধ্যে এক চমংকাব ভাব আছে।

কোন কালে কালে। ১৭ই জানুয়ারী, বুণ্ণার—আজ পাতঃ কালে মালিরে উপাসনা হয়। প্রীনুক্ত ভাই প্রকাশ দেব আচার্যোর কার্যা করেন। সর্ব্যাকালে প্রজ্ঞবিদ্যালয়ের উৎসব সম্পার হয়। এতি চপনকে প্রার্থনার পর প্রজ্ঞবিদ্যালয়ের বার্থিক বিবরণ পাঠ করেন। ঐ রিপোর্ট হইতে জানা বায় যে এ বংসব ইংরেজী কোর্সে তিন জন, বালালা নিমন্তর কোর্সে একজন,এবং ইংরেজি নিম্নতর কোর্সের কেবল বাইবেলে একজন পরীক্ষার্থি পরীক্ষা দেন। ইহার কারণ (২) নিয়মিত শিক্ষকের অভাবে কোন কোন প্রেণীর কার্যা নিয়মিত রূপে হয় নাই, (২) পাঠ্যের ক্রিনতা। বর্ত্তমান বর্ষে ছিতীয় কারণ দূর করা হইরাছে। ডাজ্যের প্রস্মাক্ষরার রায় ঈংরেজি ধর্ম বিজ্ঞানের, পঞ্জি

শিবনাথ শাস্ত্রী 'ভগবলগীতার' বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত বাইবেলের, এবং বাবু অবিনাশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যার বালালা কোর্সের পরীক্ষা প্রহণ করেন। পরীক্ষাণিগণ সকলেই উত্তীর্ণ হইয়াছেন। ভাহাদের নাম এই:—

फेक्ट बत हे १ दत कि (अपी।

প্যারীলাল ঘোষ প্রেসিডেন্সিকলেজ, চতুর্থ বার্ষিক শ্রেণী
মুনীক্রনাথ বল্যোপাধ্যার ঐ ঐ
মরদাঞ্চসাদ সেন সিটিকলেজ ঐ
বাঙ্গালা নিম্নতর শ্রেণী

যোগানন্দ প্রামাণিক

শাভিপুর।

তৎপরে শ্রীযুক্ত বাবু নগেক্সনাথ চট্টোপাধ্যার মহাশর পরকাশ বিষয়ে বক্তা করেন। বক্তার সার মর্ম নিমে দেওরাপো:—

শিংশয়বাদীরা বলেন আয়া একটা স্তম্ম বস্তু নয়—তাহা
মন্তিকের ক্রিয়া মাতা। এই মত সতা চইলে মৃত্যুতেই আমাদের
শেষ। আয়া যে লডের ক্রিয়া নয়,গতবারে এই মত অনেকগুলি
অথগুনীর যুক্তি হারা প্রতিপর করিরাছিলাম। মৃত্যুব পরেও
বে আয়া থাকে, আমি সে সম্বন্ধে কিছু বলি নাই। আয়ার পরকালে অন্তিম্ব প্রমাণ করিতে হইলে আয়াব অন্তিম্ব আগে
আমাণ করিতে হয়। আনায়-বাদ্থপুন প্রেই হইরাছে। অনায়বাদ্ধপুন ও পরকাল হটী স্বত্ত বিব্যু নয়। একই বিষ্য়ের
ছটী অংশ।

অনাত্মবাদী বলেন মৃত্যুতেই শেষ। মৃত্যুর পরে আর কিছু নাই। চিতানলে বা পৃথীগর্ভে সকলই ফুরাইরা যার। কিছ একটা কথা; জগতে কিছুৱই বিনাশ হয় না। ভঙ্গ হয়। পারবর্ত্তিত হয়। জ্বডের বিনাশ নাই। তবে কি আত্মার বিনাশ আছে ? ইহার উত্তরে বাশতে পারেন, জড়ের ভঙ্গ আছে, ভেমনি আহাও ভঙ্গ হঠতে পারে। দেহ ভঙ্গ হইলে যেমন ভার দেহত্ব থাকে না, আত্মা ভঙ্গ হইলে তার আত্মাত্ম কিরপে থাকে ? যাতা পরমাণুর সমৃষ্টি ভাতারই ভঙ্গ হইতে পারে, যাতা ভাচা নর ভাচা ভল ১ইতে পারিবে কেন ? ভল হওরার অর্থ পর্মাণুর বিল্লেষণ। স্থভরাং ধখন আত্মা প্রমাণুসমৃষ্টি নর, তথন আবা অব্পু, ইচা ভঙ্গ হওয়া অসম্ভব। পুতরাং আরার আয়াম চিরদিনই সমান। কেচ বলিছে পারেন, সর্ব শক্তিমান্ প্রমেশ্বর কি আত্মাকে বিনাশ করিতে পারেন না ? যিনি সক্ষ-भक्तिमान ভिनि भारतन ना हेहा कि मूर्थ चानिरव १ हेक्हा कतिरन जिनि भारतन, किस जिनि हेक्का करतन कि ना, युक्तिमक्र छ ুকিনা ইচাই বিবেচা। অপতের সমস্ত পদার্থ কি বলে ? জগতের একটা বালুকণাও বিনাশ হয় না। তবে কি তিনি कानधर्यंत अधिकाती, निधिण अज्ञा ७ इटेट अर्थ आजारिक বিনাশ করিবেন ? ইহা কি বিচারসক্ত ? আত্মার অমরছের আংশোচনা করিতে হইলে ছুইটা দিক্ দেখিতে হয়। প্রথম প্রমে-चरतत्र चत्रभ । जिनि नग्नामत्र, श्राप्तवान मञ्ज-मद्यत्र । ष्यभन्न निरक আত্মার প্রাকৃতি। এই ছুইলিকের তুলনার সমালোচনা করিলে প্রকালের অভিত নিশ্চিত প্রমাণ হয়। প্রমান্তার সহিত মিশাইয়া আত্মায় প্রস্তুতি স্বেপুন। প্রথম ভারবৃদ্ধি, sense

of justice সহস্র কঠে জাত্মার আমরত বোবণা করিতেছে।
পদে পদে আমাদের ন্যার-বৃদ্ধি ক্লিষ্ট। প্রালার প্রতি রাজার,
দরিত্রের প্রতি ধনীর অত্যাচার যে কত, কে তাহার গণনা
করিবে, পৃথিনীয়র এই সব অত্যাচার শ্বরণে হুৎকম্পাহর।

যত ভূমি ভাল হইবে, আত্মা পৰিত হইবে, তত এই অত্যাচার (मिथिया कष्टे हहेरत । नाम-वृद्धि वरन, य अनाम करत, जान অবশ্রই কর্মফল ভোগ করিতে চইবে। কিন্তু জগতে কি তাহা স্র্বাদা দেখিতে পাই ? অন্যার অভ্যাচারী কি সর্বাদ। উপযুক্ত कर्षाकृत (ভाগ करत ? व्यानक चाल करत ना। विलाख भारतन, বাহ্নিক ষ্টনা পাইলেও আন্তরিক যন্ত্রণা অবশ্রই হয়। একথাটা ভাল লাগে না। ইহলোকে উপযুক্ত আন্তরিক যন্ত্রণা যে স্ব ন্তলে হয় এ কথা স্বীকার করিতে পারি না। যধন হুদার্য্য করে তথন থুব গ্লানি হয়। দিতীয় বার অপেকাকুত আরে। ভার পর আবেও কম। ক্র:ম আয়িপ্লানি কাণ চইয়া আসে। শেষে তুদার্য্য অভ্যাদ হয়, কিছুমাত্র প্লানি হয় না। তবে পাপের আন্তরিক যন্ত্রণা ইহু সংসারে কৈ ? কিন্তু ক্সারবাদী বলি-তেছেন, পাপের উপযুক্ত কর্মফল অবশ্রই ভোগ করিতে হটবে। নতুবা, সাধু ও পাণীর অবস্থা এক চইরা যার। ইহাব আবে এক দিক আছে। অত্যাচরিত ব্যক্তি ভায়বান্ভগবানের রাজ্যে যে অক্সার অভ্যাচার সহ্য করিল, ভাষার কি পূরণ হইবে না। ইচসংসারে Compensation দেখিতে পাই না। ভবে उांत नवा काराव थाक ? शतकान चाहि, छारे चामात्मत স্থায়-বৃদ্ধি শাস্থিলাভ করে।

মানবাত্মার প্রকৃতি আলোচনা করিলে দেখি আত্মার গতি পূর্বার দিকে। সীমাবদ্ধ ক্ষুদ্রে আত্মা তৃপ্ত নর। জ্ঞানপিপাসার কোণাও বিশ্রাম নাই। এ সংসারে তাহা চরিতার্থ হর না। অনস্তেব দিকে মানবাত্মা ছুটিতেছে। অতএব প্রকাল আছে। অসীমের দিকে মানবের শক্তি ও ইচ্ছার গতি, কিছু সমর সীমাবদ্ধ। মানাস্ক ও আধ্যাত্মিক শক্তির সীমা নাই। অতএব মামুব অনস্ত কালের জন্তা। প্রেমের গতিও ক্রমোরতি-শীল। মৃত্যুতেই যদি শেষ, তবে ইহকাল প্রকালব্যাপিনী হদ্বের প্রসারিণী শক্তি কেন হইল । বে অনস্ত জীবনের বীজ্ আত্মার মধ্যে দেখি, তহে। ইহকালের জন্তা নর। শিশুব প্রসার হওরা যেমন, মৃত্যু তেমনি দ্বিতীর প্রস্ব।

প্রেম প্রেমাম্পাদের সঙ্গে চিরসন্থকে বন্ধ ছইতে চার।
প্রেম বলে, "মলেও যেন দেখা পাই।" প্রেমের এই স্থভাব
তিনি দিরাছেন। অথচ বিখাস্ঘাতকের মত মরিবার, সমর
গলা টিপেরা মারিয়া দেন ইছা কি সপ্তব ? মৃত্যুতেই যদি শেষ
হয়, তবে প্রেমাম্পাদ মানুষ ও প্রেমাম্পাদ পরমেখরের সঙ্গে,
আমাদের ক্ষণিক সম্বন্ধ। তবে উচ্চাকে সভ্য সংক্র কেন
বল ? ভিনি প্রেমকে যে স্থভাব দিলেন ভাছা কি মিথা। ছইবে ?

পবিত্রতার দিক্ দেখুন। বিবেক বলে 'পবিত্র হও'।
চারি আনা হওয়া নয়, বোলআনা পবিত্র হইতে হইবে।
মানবের ধর্মবৃদ্ধি বলে ''ধ্যাকে সম্পূর্ণকপে পণলন কর।" একর
আনস্তকাল চাই। পূর্ণ ধর্ম এ লোকে সম্ভব নয়। মহাসাধুর
আপনার ক্রটী দেখিয়া ক্ষ্ক হন। ধর্মকে যভই ধারণ করিতে

যান ভতই উচ্চ হইতেও উচ্চতর হয়। তথন দেখেন ইহজীবন পূর্ণ ধন্ম সাধনের পক্ষে অসম্ভব। কিন্তু প্রাণের ভিতর হইতে কে সর্ক্রদাই বলিতেছে "ধন্মকে পূণ্রপে সাধন কর।" তবে বিবেক কি মিথ্যাবাদী? তাহা বলিতে পারি না। তাই সে করিতে বলে "অনস্ত জীবনে অনস্ত ধর্ম-ধন লাভ করিয়া জীব ক্রভার্থ হইবে।"

তাব পর আমাদের স্থেছে। সম্পূর্ণ স্থ চাই। কিছ
ইহলোকে কার মুথ পূর্ণ হইয়াছে ? জগতে পূর্ণ তৃপ্তি দেখিছে
পাই না। জীবনুক প্রুষের কি পূর্ণ তৃপ্তি হইয়াছে ? অনস্ত
প্রেম, জ্বান তাঁহার সমুখে। অনস্ত জীবনের অনস্ত সজ্তোগ,
তাঁহার আশা এই। পরিমিত জীবনের কয়দিনে তাহা সন্তব নর।
কোথাও কেউ বলে না, তৃপ্ত হইয়াছি আর চাই না। মানবের
হৃদয় নিহিত, পরমেখরে প্রতিষ্ঠিত আশা কথনও তৃপ্ত হইবে
না। প্রকৃতিতে দেখি, এক দিকে অভাব অপর দিকে তাহার
পূরণ। কিছ ভাবুন দেখি, কুধা আছে অয় নাই, এরপ হইলে
জগৎ কয়দিন রক্ষা হইত ? যিনি শাবীরিক অভাব পূর্বের
বাবয়া করিয়াছেন,তিনি ইহার আয়াব অভাব অপূর্ণ রাখিবেন?
তাঁহার স্থায় ও কয়ণা মানবের স্থভাব ও জগতের উপমিতি
শতকণ্ঠে বলিতেছে, যিনি এই কুধা দিয়াছেন তিনি অবশ্রই অয়
দিবেন। "যোবৈভুমা তৎস্বশ্ম। নালে স্ব্থমন্ত।"

পূর্ণ প্রেম, জ্ঞানের অধিকারী হওয়া কি এক দিনের কা**ল ?** "লাথ লাথ যুগ হিয়াপর রাথিসু তবু হিয়া জুড়ান না গেল।''

আমর। জীবন কত ভাল বাসি। বাঁচিতে যত ভাল বাসি এত আর কিছুই নয়। বাঁচিয়া থাকিবার অনস্ত তৃষ্ঠা মানুষের মনে কেন আসিল? ৬•। ৭• বৎসরেই তৃষ্ঠি হয় না কেন? এটা অতি প্রবল মাক্ত, Plato এহ যুক্তিটা বলিতেন। জীবন তৃষ্ঠার প্রকৃতি কি ? ইহার অনস্ত গতি। আর এই বর্তমান জীবনে কেহ সন্তই নহে, ইহা ভবিষ্যতের দিকে তাকাহ্যা আছে।

আব এক । দকে— যে যাতাকে ভাল বাসে সেকি ইচ্ছা করে তাব প্রেমাস্পদ মরিয়া যাক্ ? সে চিরছীবী হয়, না মরে, এই ইচ্ছা করে ? অনস্ত প্রেমনন্ত্রী মা তার তেলেকে গলা টিপিয়া মারিয়া কেলিবেন ? তিনি আশীর্কাদ করিতেছেন 'চির-জীবী হও।'

পরমাত্রার সহিত বে নিগৃত যোগ ভাহা এক অলোকিক অবস্থা। এ যোগ হইলে আত্রা স্পষ্ট বৃথিতে পারে, ইহা অস্থায়ী নয়। ইহা অনস্তঃ এ সম্বন্ধে নৃহবি দেবেক্তনাথ ঠাকুর বলিতে-ছেন:—

পরকাল চাফ্র প্রত্যক্ষ হয়, কিন্তু তাই মাত প্রমাণ নয়।
অক্সনপে,জ্ঞানে পর্নেশ্বর ও পরকাল ফ্রানিডে পারি,সাধন ভ্রুন
ছাবা ফ্রানিডে পারি। যিনি এক্সে স্থিতি করেন, তিনি এক্ষকে
দশন করেন এবং তিনি উহার মধ্যে ইহকাল পরকাল দশন
করেন; পৃথিবীতে থাকিয়াও এই অপাথিং অব্দ্বা হয়, যদি
সাধন করা বায়। মায়ান্ধ এ কথা বুঝে না।

ঙই মাঘ, ১৮ই জানুয়ারী রহস্পতিবার। প্রাতঃকালে এবং সন্ধ্যার সময় মন্দিরে উপাসন। হয়। প্রাতে শ্রীবৃক্ত বাবু মতেজনাথ চট্টোপাধ্যার এবং সায়ংকালে শ্রীবৃক্ত প্রতি শিবনাণ শালী আচাব্যের কার্যা করেন।

প্ট মাঘ, ১৯শে জানুয়ারী শুক্রবার। প্রাত্ত কাব্ শাশভ্ষণ বহু উপাসনা করেন। সায়ং-কালে সঙ্গত সভার বাধিক উৎসব হয়। প্রীযুক্ত বাবু উমেশচন্দ্র দক্ত উপাসনা করেন এবং সভাপতির আসন পাবপ্রহ করেন। প্রীযুক্ত বাবু কুলবিছারী সেন সভার কার্যাবিবরণ পাঠ করেন। কার্যাবিবরণ স্থানাস্তরে প্রকাশিত হইবে। তৎপর প্রীযুক্ত বাবু হরগোবিক্ষ চৌধুরী, প্রীযুক্ত বাবু মহেন্দ্রনাথ চাট্টাপাধ্যায় প্রীযুক্ত বাবু চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়, প্রীযুক্ত বাবু মথুবামে:হন গাঙ্গুলী ও প্রীযুক্ত বাবু বিপিনচন্দ্র পরে ধন্মগাধন সম্বন্ধে স্থ জীবনের অভিক্ত ভাব্যক্ত করেন।

৮ই মাঘ, ২০শে জানুয়ারী শনিবার।
আজ বলমহিলাসমাজ ও আাজ লা সমাজের উংসব। প্রভাষ
হইতে মহিলাগর্ণ মান্দরে সমাগত হইতে আবস্ত করিলেন।
মান্দর কেবল মহিলাবর্গের উপাসনাব জন্ম পূক্ষ হহতেই
নার্দিই ছিল, মন্দিরে নাবীগণ সমবেত হহয়। পর এক্ষের গুণগানে
চতুদ্দিক পূর্ণ করিলেন। শ্রীযুক্ত পাণ্ডত শিবনাথ শাল্লী উপাসনা
কারলেন। সিটিকলেজে প্রুষদিগের উপাসনা হয়। তথায়
শ্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসন্ন বন্ধ উপাসনা করেন। তাহার
উপদেশের সারম্য নিয়ে বিবৃত হহল।

পরমেশ্র দ্যা করিয়া পাণাব উদ্ধারের নিমিত্ত চুই একটা উপায় কারতেছেন এমন নয়, কিন্তু শুগু সহস্র উপায় কবিতে-ছেন, অসম্ভা উপায় কারতেছেন। অতএব আমাদিগের নিবাশ হুহবার কোন কারণ নাই। আহারক ভাবাপন হুহুরা আমরা তাঁহার অনেক উপায় ব্যথ কবিয়াছি। তিনি আসাদগভে তাঁহার প্রোবত উপায় বার্থ কারবার ক্ষমতা দিয়াছেন, বলিয়াই আমরা ব্যথ করিতে পারিয়াছি, না হহলে তাহার উপায়কে আমরা ব্যথ করি আমাদিগের এমন সাধ্য কি ? আমরা কি স্বাশক্তিমান অপেক। ও অধিক শাক্তশালা ? কিছ অতীত-কালে আমরা তাহার যত ভগারত ব্যথ কার্যা থাকি না কেন, তাহা বালয়৷ আন্মরা ভাবেষাতের আশা পারত্যাগ করিছে পারি না। চিরকাল আমরা পাপে মজিয়া পাপের দাসত কার্য धक्र ७१वान भागाभिः एक शृथिकी । आर्मन नार्। অনম্ভকাল আমরা পাপ এবং পাপজানত ক্লেশ স্থ কারৰ হহা যগন ঈশবের অ.ভপ্রায় নছে, তথন তাহার প্রেবিড উপায় অবশ্রহ সফল ১হবে। শ্রু সহত্র উপায় যথন বিধান করিয়াছেন আরও করিবেন, তাহার একটা উপায় ও কৈ আমাদিগের উদ্ধার সাধন কারবে না ? বিশ্বয়ী ঈশ্বর ।নশ ধ্যুক ২২তে আনাদিগকে লক্ষ্য করিয়া শত স্থল পরিত্রাণের বাণ নিক্ষেপ কারতেছেন, একটা ও কে আমা দগকে ভূপাতিত এবং তাঁহার পদভলে পাভিত করিতে পারিনে না 📍 অতএব উপাসকগণসাহসীহও। নৈরাভা পরিভাগে কর। বিখ্যাত ধর্মগ্রাস্থে স্নাছে যে স্বৰ্গ রাজ্যের কোন যাত্রীকে একলা নৈরাখা-অহার পথ ১ইতে ধার্যা আনিয়া তাহার কেরাতে

অবরুদ্ধ করিয়া নিত্য নিত্য অশেষ যন্ত্রণা দিতে লাগিল। কিন্তু ব্ৰহ্মের কুপানলৈ অকত্মাৎ একদিন সেই মহুষ্য জাগ্ৰছ हरेंग। এवः कात्रागात्र छान्निता वाहित्त स्थानित्रा त्मिथिएछ পাইল যে অহুর প্রাঙ্গণে দাঁডাইয়া আছে; অমনি সে ছুটিয়া গিরা সেই অত্যাচাবীর মস্তক ছেদন করিল। ব্রহ্ম আমা-দিগকে পরিত্রাণ দিবার জন্ম কত উপায়ই বিধান করিতে-চক্র স্থ্য আকাশে পর্যায়ক্রমে উদিত, অন্তমিত **হইতেছে, কত নক্ষত্র আকাশে প্রেফ**ুটিত হইয়া **অন্ধ**কারময় আকাশকে উজ্জ্ব করিয়াছে, আমাদিগের বাসভূমি পৃথিবী নানা কপে অংশক্ষিত। নদী তড়াগ সমুদ্র হ্রদ তরুণত। তৃণ ওলা মদ্মা প্রকার জীব ইতাতে আছে। চকে যাহা কিছু **मिश्टिक् मकनहे ७ जामामित्र भित्रजार्गत छे**भात्र । মালেৎস্ব আদিয়াছে ইহাও আমাদিগের একটা পরিতাণের উপারত্বকপ হইয়া আদিয়াছে। কিন্তু পরিত্রাণের উপার शहिला क्या मा, डेकात भवावकात हाहै। পরিত্রাণের উপায় পাহয়া যদি অধিকতর আগ্রহের সভিত জামরা ঈশ্বরের অনুগ্র ছইয়া তাঁহার উপাসনায় প্রবৃত্ত না থাকি, তাহা হইলে উপায় निकार क्टेर्व। क्रेथन रायन व्यामानिशन উদ্দেশ, তেমन আমাদিগের উপারও বটেন। পাপ হইতে পরিত্রাণের নানা উপায় দিয়াছেন সভা, কিন্তু তিনি স্বয়ংই আবার সর্ব্ব প্রধান উপায়; তাঁহাকে ছাড়িয়া আর কোন উপায় কার্যাকর হইতে পারে না।

সাধুসঙ্গ একটা পরিত্রাণের উপায় যাহা মাঘোৎসবে আমরা বিশেষ ভাবে লাভ করিব বলিয়া প্রত্যাশা করি। কিন্তু ঈশ্বরে মতিগতি না জন্মিলে সাধুসঙ্গ আনাদের কি উপকারে আদিবে ? কতলোক আছে যে ঈশ্বরেতে ভক্তি নাই বলিয়া সাধুসঙ্গ লাভ করিয়াও ভাহাতে কল্লাভ করিতে পারে না। অবশেষে সাধুনিকা কারয়া পাপ সঞ্চয় করে। এবং ঈশ্বরোপাননাতে কিছু হয় না একপ মিণ্যাকণা প্রচার করিতে ও কুট্টিত হয় না। অভএব সাবধান, মাঘোৎসবের আকারে আমাদের যে পরিত্রাণের উপায় আসিয়াছে, আমরা যেমন ইহার স্থবিধা গ্রহণ করিব ভেমান মাঘোৎসবেব প্রেরন্থিত ঈশ্বরকে যেন ভালয়া না যাই। কিন্তু যেন মহোৎসাহে তাঁহার উপায়নাতে প্রের্ভ হই, ভাহা হইলে আমাদিগের কামনা স্ফল হইবে।

সারংকালে ৬॥ ঘটিকাব সমর সিটিকলেজে সাধারণ আক্ষান্দর রাধিক সভার অধিবেশন হয়। প্রাথনাস্ত শ্রীযুক্ত উমেশচন্দ্র মহাশর সভাপভির আসন গ্রহণ করেন। এ দিন বিশেষ কোনও কার্য হয় না। বার্ধিক রিপোট ও কর্মচারী নিয়োগ লইয়। অনেক বাদান্ত্বাদের পর ২৯শে জান্ত্রারী ১৭ই মাঘ সোমবার পুনরায় সভা হইবে বলিয়। সভা ছবিত হয়।

৯ই মাঘ, ২১শে জানুয়ারী রবিবার। প্রাকৃষ্যের মান্দরে সংকার্ত্তন, তৃৎপরে উপাসনা হয়। প্রীযুক্ত পাপ্তত শিবনাথ শান্ত্রী মহাশয় আচায্যের কাষ্য করেন। মধ্যাক্ত ২ ঘটিকার সময় (Conference) আলোচনা সভা হয়। তথায় উৎসব উপলক্ষে সমাগত অধিকাংশ আদ্ধ ও আদ্ধিকা উপান্থত হিলেন। প্রীযুক্ত বারু কেলারনাথ রায় (সি, এস) মহাশন্ত সভাপতির

আসন প্রহণ করেন। এই সভার "আদ্ধালক ও বালিকাদিগের শিক্ষা এবং আক্ষদিগের সাংসারিক অবস্থা" এই ছ্ছটী বিষরের আলোচনা হর। প্রীযুক্ত বাবু ক্লফ্রুমার মিত্র মহাশরের উপর বালকদিগের শিক্ষা সম্বন্ধে প্রস্তাবে উত্থাপিত করিবার ভার ছিল।

কৃষ্ণকুমার বাবু কলিকাতা সিটিকলেজের ভন্নাবধারক; তাঁলাকে প্রতিদিন বালকদিগের উরতি ও নীতির দিকে দৃষ্টি রাখিতে হর। সিটাকলেজে অনেকগুলি ব্রাহ্মবালক পাঠ করে, ভালাদের শিক্ষার অবস্থা, নীতিও চরিত্র কিরুপ, ভালালক্ষ্য করিবার অবসর তাঁলার প্রতিদিনই ঘটতেছে। স্কুতরাং ব্রাহ্মবালকদিগের শিক্ষাসম্বন্ধে তিনি যাহা বলিলেন, তালার প্রতিসকলেবই বিশেষ রূপে প্রণিধান করা কর্ত্তবা। ব্রাহ্মবালক বালিকার শিক্ষাবিষয়ে ব্রাহ্মসমাজের দারিছ ক্রির্প গুরুতর তালা প্রদর্শন করিয়া তিনি তৎপরে ব্রাহ্ম শিক্ষা মাতার বিবেচনার্থ কতকগুলি সারগর্ত্ত কণা বলিলেন। জাঁলার বক্তার সারাংশ এবং কনফারেন্সে পঠিত অপরাপর বিষর স্থানান্তরে মুদ্রিত হইবে।

কৃষ্ণার বাব্র উক্তি শেষ হইলে অনেকে তৎসম্বন্ধে মতামত প্রকাশ করেন। কেহ কেহ প্রস্তাব করিয়াছিলেন, যে আহ্মবালক বালিকাদের জন্য প্রত্যেক আহ্মের নিকট হইডে উহাদের আহ্মের উপরে শতকরা কিছু কিছু ট্যাক্স লওরা কর্তব্য। এবিয়য়ের আলোচনা শেষ হইলে, আহ্মাদগের সাংদাধিক অবস্থা বিষয়ে আলোচনা আরম্ভ হর।

" ব্রহ্মিদেগের সাংসারিক অবস্থা" বিষয়ে আলোচনা উপস্থিত করিবার ভারে শ্রীযুক্ত বাবু স্থাকুমার চটোপাধ্যার মহাশরের প্রতি অপিতি হইয়াছিল।

তিনি তঁহোর বক্তার দরিত বান্ধাণিগের ত্রধন্থার ছবি
চিত্রিত কবিরা দেখাইলেন যে, প্রান্ধান্ধান্ধা দরিত পরিবারের
সংখ্যা দিন দিন বান্ধত হইতেছে। ই হাদের কাহারও কাহারও
করপ হীনাবস্থা যে পুত্র কন্যার শিক্ষা দিতে সমর্থ নহে। এই
সকল অশাক্ষত বালক বালকা উত্তরকালে কিরুপ দাভাইবে
তাহা সকলেই অনুমান কারতে পারেন। দারিদ্যের ভাতনার
ব্যান্ধাণিব নাতি আর রক্ষা হইবে না। তাহারা প্রবঞ্চক,
মিথ্যবাদী, পরস্থাপহারক হইরা উঠিবে, এবং ব্যান্ধা পরিবার
সকল সর্ববিধ নীচতার আগের হইয়া উঠিবে। এই সকল
উল্লেখ করিবা অবশেষে তিনি দারিদ্যা নিবারণের পাঁচ প্রাক্ষার
উপার নিদ্দেশ কবিলেন।

প্রথম, ব্রাহ্মণল্লী স্থাপন অথাৎ সহর্বাস প্রিত্যাগ করিয়া ব্রাহ্মদিগের মফস্বলে বাসস্থান নিমাণ কর।।

ধিতীয়, ব্যব সংকোচ। প্রাক্ষ পুক্ষ ও রমণীদিগকে সংসার-যাত্রা নির্কাহার্থ দৈছিক শ্রমদাধ্য কাষ্য করিছে অভান্ত করা; ও আহার বিহারাদির বায়ের স্বল্লভার দিকে দৃষ্টি রাখিডে উপদেশ দেওয়া।

ভূতীর—অর্থ সংখান। অর্থাৎ জীবনবীমা প্রভৃতিব ক্সার অর্থ সংখানের উপায় করা। চতুর্থ—স্বাধীন ব্যবসার। ব্রাহ্মগণ যাহাতে রাজকার্য্য প্রাণী না হইরা স্বাধীন ব্যবসায় দারা সংসার পালন করিতে পারেন ভাহাই প্রার্থনীয়।

পঞ্চন—মিলিত ভাগোর (co-oparative stores) এতদার। স্থাত ম্লো উৎকৃষ্ট দ্রা সকল যোগান ঘাইতে পারে।

এই বিষয়ে যে আলোচনা উপন্ধিত হর, তাহাতে আনেকে যোগ দিয়াছিলেন। উপসংহারে সভাপতি বলেন যে দরিদ্র আক্ষায়বকদিগকে জীবন সংগ্রামে সাহায়া করিতে পারে এরূপ একটা কমিটা থাকা একান্ত আবস্তুক। স্থ্যকুমার বাবুর পঠিত প্রবন্ধ জানান্তরে প্রকাশিত হইবে।

রাত্রিকাশের উপাসনাকার্য্য শ্রীযুক্ত বাবু নগেক্তনাথ চট্টোপাধ্যার সম্পাদন করিয়াছিলেন। তাঁহার উপদেশের সারাংশ নিমে দেওয়া গেল।

আর ওনা কথায় তৃপ্তি হর না। প্রাত্যক্ষ, স্বায়ী কিছু চাই। যে ধর্ম গ্রহণ করিরাছি, ভাতার বিশেষ লক্ষণ এই যে এখানে স্কলি প্রত্যক্ষ। প্রকালে ঈশ্বন্দ্রি লাভ করিবে. আমাদের ধর্ম একথা বলে না। এখানেই তাঁহাকে দেখ। বৈকুঠে ভগবানের দর্শন পাবে। আক্সধর্ম এমন কথা বলে না। ধর্ম প্রত্যক্ষ; জীবনে প্রত্যক্ষ না হইলে, সেটী আমার শুনা কথা থাকিল; নিজন্ম হটল না। সমূদ্রগর্ভে অনেক রদ্ধ আছে শুনিয়া আমার দারিদ্রা ঘোচে ন'। শুনাকপাতে বা ভর্কের মীমাংসার হল না, পাওরা চাই। সাধুবা ধর্মের অনেক উচ্চ কথা বলেন, ভাহা ভানিয়া আধাংখ্যিক দারিতা घाट न। भारत थाकित कि इहेर्द, लाल हाहै। मुह्य কোনও জ্ঞানই কেবল ওনাতে হয় না। যে হিমালয় দেখে নাই সে কালিদাদের বর্ণনা পড়িরা কি হিমালয়ের ভাব গ্রহণ করিতে পারে 🕈 প্রভূব নাম কত মধুর, ভক্তজন আবাদন রিয়া অজ্ঞান হইয়া যান। সংগারের লোকের নিকট সেই নাম একটা কণা মাত্র, ভাগার মধ্যে আরে কি অমূত আছে ? এ নামে কত মধুর ভাব, ভাহাতে যে পুত্র শোক দূর হয় ইলা কেবল ভক্তজনের বিদিত। নাম ব্লিবামাত্র কোপায় গেল শোক্তাপ। "বার শোক, যার ভাপ, যার হাদর ভার" প্রত্যক্ষ কথা, ভর্ক করিয়া কে বুঝাইবে ? সর্কালত হইয়া, হাহাকার করিতে ক্রিতে যে বলিয়াছে "প্রভু, কোণায় তুনি" প্রাণে হাত দিয়া ৰলিরাছে, "তুমিই দক্ষে প্রভু।" প্রার্থনা প্রাণের হাহাকার, व्याप्तित क्षा कृषा। (करण कथाई कि व्यार्थना ? <del>ৰলেন, সাধন কর, এখনই আয়াতে তাঁহাকে দে</del>খিবে। কুতার্কিক বলিবে উহা মনের খেলাল, বিশাদী বলবে সত্য। শাস্ত্রের কথা শুলা কথা। তবে কি শাস্ত্রের কথা অগ্রাহা कविव, कथनहे नह। श्राधुमक कबिव, अकाश्रिक भाज आला। চনা করিব, এসকলে সাহায়া করে; কিও ২০কণ না তুমি बिनाटक পाजितन, हैं। खामि त्मिश्राकि, मठा वर्षे, निस्क खाश्वामन করিয়া দেখিয়াছি, জীবনে প্রত্যক করিয়াছি ঈশ্বর আছেন, নামে অপুকা মাধুবী, তভক্ষণ ধর্মজীবনের কিছুই হয় 'নাই। প্রকৃত বিখাদ যেগানে প্রকৃত ধর্মদীবন সেই থানে।

ধর্মজীবনের বুনিয়াদ বিখাস। ইহা ক্রমোরতিশীল। ভাবিরা দেও দেখি, অনন্তজীবনের পথে কি অগ্রসর হইতেছ ? প্রকৃত धर्मकीवन এक कांत्रशाम्र श्विव हहेता शास्त्र ना। हत्र भन्तारण, নর অতাসর হয়। যদি ধর্মপথে এক এক পা অতাস্ব হইতে না পারি তবে প্রকৃত ধর্মজীবন হয় নাই। সাধুরা ধন্মজীবনের উচ্চস্থানে উঠিয়া যাহা লাভ করিয়াছেন, নিমুন্থানের লোকেরা তাহা কানে না। ধর্মজীবন বটবীজের স্থায়। বিদিত হর। অনেক সময়ে, আমরা একই কথা বলি, এক রাস্তার চলি, কলুর বলদেব মত অগ্রসর হই না। একই তক ২০।২৫ বৎসর চলিয়াছে, অগ্রসর হয় না। অনেক সময় মনে করি মহাত্মাদের স্বক্থা বৃঝিয়াছি। একজন গোয়ালন্দ দেখিরা यिन ঢाकात वर्गना करत, जरव स्थमन इत्र आभारतत आस्तरकत দশা তেমনি। কাম ক্রোধেব গোলাম ১ইয়া রাহ্যাছে, অথচ ত্রন্ধ দর্শনের কথা বলে। ধশ্মজীবনের অনন্ত রাভা। অগ্রসর হও, চল। কত নৃতৰ দেখিবে, পুৰাতন নয়। যাহাদের উন্নতি হয় না, তাহার হি বলে নৃতন কথা গুনা যায় না। যী 🤋 বলিলেন—"আমি ও আমার পিতা এক; জগতেব লোক তার অর্থ না ব্রিয়াযী ভকেই ঈশ্বর মনে করিয়া পূজা কয়িছে লাগিল। অনেকে মনে কবে তীক্ষ বৃদ্ধি থাকিলেই বৃষ্ধ ধক্ষের কথাব্রাযার; মিগ্যা কথা। প্রকৃত বিখাসী সেছো পথে চলিরা যান, পশ্চাতে ফিরিয়া দেখেন না। দিতীয় লক্ষণ, বিখাসী माधावन लाटकव प्रिथि, क्विके পরিवर्शिक इहेट उद्धा खना कथा उ इहेर है। श्रुवत मूख साल था 9वा, উল্টেড যাবেই। অনেকের শেষ গ্রন্থের অন্নুযায়ী মত হয়! यिथान विधान खना कथा, छाड़ा वमनात्व, छार्कत मोमाःना क्षृतारवः; (यथारन एत्था क्षिनिम् रम्थारन चहेन, चहक्षन । धर्मको वन विषय ९ ठाই। यथार्थ धर्म की वन (य नाज कित्राह्त, (म व्यवेन। স্থের সময় দয়ামর বলা সোজা, সর্বস্বাস্ত হট্যা বলা ফটিন। আর এক শ্রেণীর লোক ছঃথের সময় ভগবানকে ডাকে, স্থের সময় ভোলে। কাচারও মাঝামাঝি পথ আছে। স্তীপুল্রও চাই, ভগবানও চাই। যথার্থ বিখাসীর নিকট এক প্রমেশ্বর; পাঁচটার মধ্যে একটা নর। "সব যাক্ তুমি থাক।" এই ভাব যাঁচার হইয়াছে, তিনিই প্রকৃত ধ্যাজাবন লাভ করিয়াছেন। যে ছাথে ডাকে, মুখে ডাকে সেই প্রকৃত ধর্মজীবন সাভ করিয়াছে।

১০ই মাঘ, ২২ শে জাকুয়ারী সোমবার।
আবাতে কলিকাতা উপাসকমগুলীর উৎসব। প্রথম সংকীজন,
তৎপরে উপাসনা হয়। প্রীযুক্ত বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত মহাশয়
আচার্য্যের কাম্যা করেন। তাঁহার উপদেশের সারাংশ নিমে
প্রদত্ত হটল:—

One thing have I desired of the Lord, that will I seek after; that I may dwell in the house of the Lord all the day of my life, to behold the beauty of the Lord, and to enquire in his temple. Ps. XXVII. 4.

"ঈশ্বের নিকট আমার এই একটা মাত্র ভিক্ষা, এবং ভাছা-রই জন্ত আমি চেটা করিব, যেন প্রমেশ্বের আল্রে যাবজ্জীবন বাস করিয়া আমি ভাঁচার সৌন্দর্য্য দর্শন করি, এবং ভাঁচার মন্দিরে ভাঁচাকে অফুসন্ধান করি।"

ছগবানের নিকটে কত লোক কত প্রার্থনা করিয়া থাকে।
ধন, মান, পুলু, ঐশ্ব্যা কত কি চার। আবার কত ধর্মার্থী
আচেন, উচিবাবা এই সকল চাহেন না বটে, কিন্তু অন্ত কামনা
জানান। স্বর্গশাভ, নির্ব্বাণ, মুক্তি, অষ্ট ঐশ্ব্যা প্রভৃতি চান।
ভাক্ষর প্রার্থনা কিন্তু একট সে এট; "আমি যেন ভোমাকে
দেখিতে পারি।" চিরদিনট এট প্রার্থনা থাকে। ঈশ্বকে
দেখিবান ক্রন্ত, সর্ব্বদা প্রভাক্ষ করিবার জন্ত একান্ত প্রার্থনা।
ভগবানকে কি দেখা যায় ? এ কথা লোকের মুথে ভনিয়া কি
আমরা ভর পাটব ? ভোগ কবিবার বন্ধু ত ইচসংসারেই রহিরাছে, ভাচার অতিকিক্ত কি আবার কিছু পাওয়া যায় ? ভক্তের
কামনা ভাট। ইচলোকের বন্ধানট যদি ভক্তের তৃপ্তি হইত,
ভাহা চইলে আর ঈশ্বরের সৌন্ধ্যা অনিমেষে দেখিবার জন্ত আকাজ্ঞী ইইভেন না। সকল দেশের, সকল কালের ভক্তাদগের এট একট কথা; সংসারে যথার্থ স্থে ও আনন্দ পাওয়া
যায় না। "রসোর্বৈগ:—ভিনিই রস স্বর্প।"

(कान कान मध्यमारम्ब (वारक नव-माधना कतिमा शास्त्रन । শবের উপরে ব্লিয়া ঈশ্বরের ধ্যান করেন। ইতার গুঢ় ম্থা था है (य हे ऋत्र-श्राश (य वस्तु मकन च्यारह, का हरक च्यापनारक বিযুক্ত করিতে না পারিলে, সংসারকে মৃতবৎ দেখিয়া ভাচার উপর বসিয়া ভগবানের সাধনা না করিতে পারিলে, প্রক্রত কপে ভাঁচাকে পাওরা যায় না। শবের ক্সায় সংসারের বল্প সকলকে দেখিতে **হইবে, তবে সেই অমৃত স্বরূপকে লাভ করা** যাইবে। যদি অক্ষ বস্তু দেখিতে চাও, তবে ইন্দ্রিরের অভীত রাজ্যে উালাকে অনেষণ করিতে হটবে। গীতা-"যা নিশা সর্বভূতানাং ভক্তার জাগতি সংযমী। "সকল প্রাণীর নিকটে যাহা রাত্রি সংৰমী ভাহাতে জাগিয়া পাকেন।" এই মৃত্যুর পরপারে অমৃত चक्तभ वाम क्रिडिंडिन, ध्यान महिट्ड ब्वेटन, स्थान आमहा জীবিত চইব। আকার বিশিষ্ট বস্ত নম্মর তাহা হইতে যে আনন্দ লাভ করি তাহার তিন লক্ষণ;---(১) তাহাতে পাপ মিলিত থাকে; (২) সে আনন্দ পাতলা, যতই ভিতরে যাওয়া যায় তত্ই ফাঁকা ফাঁকা দেখা যায়। (৩) আর তাহা ক্ষণস্থায়ী। আরে হল্রিয়াতীত ঈশরের চরণ হইতে যে সুথ লাভ করা যায় ভাচা নির্মাণ, গাঢ় ও অক্ষর। ভক্তের প্রাণ এই জন্ম নশ্বর শোভা সৌন্দর্য্যে তৃপ্তি মানে না; নিরাকার সত্যস্তরণ দেবতার (मोन्मया दिल्ल वाद्य हम्न किल्लाम कैं। हारक दिल्ला यात्र । অনেক হলে তিনি আপনাকে দেখান। সকল পদার্থে তিনি বাস করিতেছেন। কিন্তু এ সকল যথার্থ তাঁহার রূপ নয়, এ এ তাঁহার প্রতিরূপ ছায়। । মন্দিবে কত সমরে কত সুথ পাই, এও বাহ্ন, ছারা। কিন্তু মণার্থ কথা, দাযুদ বলেন "ভোমার মন্দিরে তোমার রূপ দেখিব।" আমরা বাহিরের রাজ্যে তাঁচাকে দেখি কিন্তু আবার হারাইরা ফেলি। তাঁহার নিত্য-शृद्ध छैद्दिक दिवाल इट्टेंच। ट्रेक्टिलान, मानन, विकालन

রাজ্যে নয়; অতি গভীরতম সেই স্থান, বেধানে তিনি নিতা সৌল্র্য্যে পূর্ণ রহিরাছেন। সেধানে তাঁহার নিতাপদ প্রাপ্ত হইরা ভক্ত সকল বন্ধন হতে মুক্ত হন।" হিরন্মরে পরে কোষে বিরক্ষং ব্রহ্ম নিজ্ঞান ভিরন্মর পরমকোষে সেই নিরপ্তন। সেধানে তাঁহাকে দর্শন করিতে হয়। সে বাহিরের গৃহ নয়, অন্তরের গৃহ। আমাদের আত্মাতে ভার হার আছে, সেথান দিয়া তিনি প্রবেশ করেন। সকল ভক্ত আপনায় অন্তরের ভিতর দিয়া সেই দেশে যান। সেথানকার দর্শন শেষ হয় না। অনন্তর্কাল থাকে। এই নিগৃত দর্শনই কি সকল সাধনের উদ্দেশ্য নয় ? তাঁর দর্শন হলে আর কি বাকী থাকে, সকল আশা পূর্ণ হয়়। প্রক্রত ব্রহ্মাপাসকদিগের সকলেরই চিরদিন যেন এই প্রার্থনা অব-লম্বন হয়।

অপরাক্তে নগরসংকীর্ত্রন বাহির হয়, ওয়েলিণ্টন স্বোয়ারে সংকীর্ত্তন আরম্ভ হইবার কথা ছিল। স্বতরাং তটার পর হইতে সকলে তথায় গমন কবিতে আরম্ভ করি-লেন। সকলে সমবেত হইলে প্রথমতঃ একটা সঙ্গীত হইল। তৎপরে আযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় সময়োচিত প্রার্থনা করলেন এবং তৎপবসকলে উৎসাহের সহিত নিম্নাধিত কার্ত্তন আরম্ভ করিলেন:—

(नाकः।

তোরা আয় আয় রে গাই ব্রন্ধ নাম, সবে মিলে হাদয় খুলে গাই রে । নামে হাধা-সিন্ধু উথলিবে, মোদের তাপিত হাদয় জুড়াইবে।

**थ**यवा ।

অমৃত সাগরে, পাইফু অন্তরে, কেন ৰা হেলিফু ভায়,

(মোহে অন্ধ হয়েরে)

বিন্দু বারি তরে, কেন মরু-পরে,

ছুটিনু মৃগের প্রায় ; (আশা-মরীচিকার)

প্রাণের পিয়াদে, স্থথের লালদে,

যা কিছু ছুটিয়া ধরি;

( मिला हात्र। हस्त्र (त्र )

না ধরিতে ডাই, এ কিরে বালাই, অমনি পলায় সরি;

( আশার নিরাশ করে )

বুঝিসু এখন, তক্ষ সমাভন, অমৃল্য প্রশমণি;

(তার তুলনা নাই রে) (অতুলন প্রেম-মণি) অনিত্য সংসারে, মরণ-মাঝারে,

(महे ७ अपृज्यनि। (पृज-मधीयन)

দশকুশি ,

(. দেখ) দেখরে প্রেম নয়নে, হদরে হৃদর-ধনে রে
প্রাণ সথা প্রাণে বিরাজিত, রে
(প্রাণের প্রাণ হয়েরে)
সেপ্রেমের উৎস হতে, প্রেম ধারা এ জগতে
দশদিশে হয় প্রবাহিত।
(হৃদয় সবস করে রে) (স্থবিমল প্রেমধারে)
সেপ্রেমে নিজে পাসরি, স্থ স্থার্থ পারহরি
কব কব সত্যেব সাধন রে।
(ক্রান্ম মন সঁপে বে) (প্রেমম্যেব শ্রীচরণে)
প্রেমে দিব্য জ্ঞান পাবে, বাসনা বিল্ম হবে,
নিবে যাবে পাপের দহন রে।
(প্রাণ শীতল হবে বে) (প্রেমম্যেব প্রেম-নীরে)

#### একভালা।

মন ভুলোনা, কভু ভুলোনা, সেই সং স্বৰূপে ভুলোনা রে; বিষয়-মোহে ভুলে, ভবে মজোনা বে,

সেই সাবাৎসারে তাজ না রে। (ওরে অবোধ মন) ছাড আপনাব, প্রেমে পাবে তাঁবে,

তিনি প্রেমে বাঁধা এ সংসাবে। ( ও সেই প্রেমমর )

#### कृलन ।

মনের সাধে, আজ স্বাই মিলে দ্যাল বল—
আজ গাহবে ভাই দ্যাল নাম, উভায়ে নিশান,
গগন কাপায়ে কব তাঁবি প্রণ গান।
আজ গাহরে ভাই দ্যাল নাম অনুতের সার,
ল'বণে কীর্ত্তনে প্রাণে অমৃত সঞ্চাব।
আজ গাহরে ভাই দ্যাল নাম, এ ভবে ভইণী,
সংসাব জলধি যাহে অভি হৃচ্ছ গণি।
আজ গহেবে ভাই দ্যাল নাম, পাপা জনের আশা,
ভগ্ন কিব-বাসী দ্যাল এম্নি ভালবাসা।
আজ গাহরে ভাই দ্যাল নাম, সুথের বারতা,
গুচুক্বে বিচ্ছেদ প্রোণে জা গুকু বে এক তা।
আজ গাহরে ভাই দ্যাল নাম নিলায়ে জ্লয়,
আজ পাপা ভাপী স্বাই বল জয় দ্যাময়।

মিল— ওরে কিবা মধুব এই দ্যাল নাম,
সংশার-মর-মাঝে শাস্তি ধান প্রাণাবাম রে।

ক্রমে কীর্ত্তন দল বাগান ছাজ্যা রাজগণে আসিয়া উপস্থিত ছইল। সকলে গাইতে গাইতে উন্তঃ ভিনুথে গমন করিতে লাগিলেন। ক্রমে তাঁহারা একটা আফা ভবনের সন্মুখ আসিয়া উপস্থিত হইলে, নিজলাগণ আনন্দে উৎফুল হইয়া পুস্পানুষ্টি করিতে লাগিলেন। গামকদিশের নস্ককে রাশি রাশি পুস্প বর্ষিত হইল। সেখানে বিভুক্তণ স্পীতের পব আবার সক্লে অগ্রসর হইলেন। কীর্ত্তনদল ক্রমে বহুবাজার খ্রীট, আমহ্ন্তি খ্রিট, মেছুয়াবাজার খ্রীট এবং কর্ণভিয়ালিস্খ্রীট হইয়া মন্দিরে আসিয়া

উপনীত হইলেন। তৎপরে সকলে উপবেশন করিলে উপাসনা আরম্ভ হইল। শ্রদ্ধাম্পদ শ্রীযুক্ত বাবুনগেল্ডনাথ চটোপাধ্যায় আচার্য্যের কার্য্য সম্পাদন করিলেন।

১১ই মাঘ ২৩শে জানুয়ারী মঙ্গলবার।—আৰ মাঘের এক।দশ দিবস। আজ সেই দিন, যে দিনে চতু:ষাষ্ট বৎসর পুরের মহাত্মা রাজা রামমোহন বায় এই মহা নগরীতে বিশ্ববিজয়ী ত্রাহ্মধর্মের বিজয় নিশান প্রোথিত কবিয়া-ছিলেন। আজ দেই দিন, যে দিনে ত্রাহ্মধর্মের মহাকেতু বিশ্ব-জনীন প্রেশের মৃত্ব (শ্লোবে ইতস্ত: সঞ্ারিত হটরা ভাবতের, দেশ বিদেশেব, সমগ্র জগতের পাণী তাণী নরনারীর व्याप्त भास्तिभाता वर्षन कात्रवात जञ्च मकनरक हेहात निरक मर्वा প্রথমে আকর্ষণ কবিতেছিল এবং চুন্দল ও চতাখাস ভারত-বাসীব প্রাণে সব্বপ্রথম বল ও আশার স্থার কবিভেছিল। আজ্ঞ সেই দিন যে দিৱনৰ কথা অরণ কবিলে ত্রাক্ষের প্রাণ শিহরিয়াউঠে। আজ সেইমাঘের একাদশ দিবস। মহাযক্তার পূর্ণাতটি। দশ্দিন ধবিয়া কুশ-সমিধ আছভ চইতেছিল, যজাক্ও নিশ্মিত চইতেছিল; সমগ্র ব্রহ্মাণ্ডের পুবোহিত পরম পুরুষ আহা প্রজলিত করত: পূণাত্তির আয়োজন করিতেছিলেন। এই দিন শীতজনিত ক্লেশ অগ্রাহ্ কবিয়া সুর্য্যোদ্যের অনেক পুর হুইছে আক্ষাগণ মন্দ্রিভিমুখে আসিতে লাগিলেন। একজন, ছইজন, দশজন করিয়া ক্রমে শভ শত নব নারী মন্দি<sup>দ্</sup>ব উপস্থিত হইলেন। হুংক্কার বভ বিদ্রিভ क्टेंटि नानिन, . ७ छ हे सिशा तान त्य मिन्त नाटक भित्र भून । গায়কেব। সঙ্গীত ধরিদেন। স্থানাভাবে বহুসংখ্যক লোককে দ'গুয়েমান চইয়া থাকিতে ১ইল। আজে আচােযা, উপাস্ক স্ক-লেরট নৃতন ভাব। স্কলেব মুণেট আশা ও উৎসাচের ভোাতি ফুটিশা বাহির হইতেছে। সকলেই প্রাকুল্প। সন্ধীত চলিতেছে কিন্তু অনেকেই উৎসুক মনে উপাসনার আরম্ভ প্রতীক্ষা করিছেছেন। দেখিতে দেখিতে নিংকট সময় উপাছত হইল। গায়কেরা এতফণ স্থীত করেতেছিলেন কিন্তু এখন নূতন উৎসাছে সঙ্গাঁত আবস্ত করিলেন। তৎপরেট উলোধন আরম্ভ চটল। এীনুকে পাওত শিবনাথ শালী মহাশয় আন্চাথেয়ের কার্য্য করি-লেন। আচাষ্য প্রথমে এই মছোংসবে প্রবেশ করিতে হুইলে কি উপকৰণ লট্যা ঘাটতে হয় ভাহার বর্ণনা করিয়া, যে মহাপুক্ষদিশের আধ্যাত্মিক রক্তে ত্রাহ্মগণের জন্ম, তাঁহাদের তথ্য করিশেন।

উদ্বেধ্যনের সময় চইতেই উপাসকর্নের ভাবোচ্ছাসের লক্ষণ সকল প্রকাশ পাইতে লাগিল। ক্রমে আরাধনা ধ্যান প্রভিত্য শেষ চইলে, আচার্য্য নিয়লিথিত উপদেশটী দিবেন।

## "ত্যাগেনৈকেনামূত্রমানশুঃ।"

পূর্ব কালের মহায়ার ত্যাগ দারাই ঈশরকে প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। উপনিষ্দেরও পূর্বে যে সকল ধার্মিক লোক
ছিলেন, তাঁহারা এক্যাত্র ত্যাগের দারাই অমৃদকে পাইয়া-

ছিলেন। ° তাই উপনিষৎকার ঋষিগণ বলিতেছেন, আমাদের পূক্ষের মহাআয়ো ত্যাগের আয়াই অমূহজ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। শ মানবাআয়া তো চিরদিনই আমের; ত্যাগো আরা আমের ২ওয়ার এথ কি ? উপান্ধদে এবিষয়ে উক্ত আছে।

> "বদা শক্ষে প্রভিদ্যক্তে হৃদর স্যেহ গ্রন্থর: অথ মক্ত্যোহ মৃত্যেভবতে তাবদুর্শাসনম্

"যে সময়ে এখানে সমুদার ১ দর-গ্রন্থি ভগ্ন হর, তথনই জীব অমর হয়েন; এইমাতা উপদেশ জানিবে।" হহার অথ এহ, আমরাযথনহ অমর, অমুচত প্রভৃতি শব্দ ব্যবহার কারব, তথনই বুঝিবে হৃদিয়প্রান্ত ২ইতে মাজে, সমুদ্য কামনা হইতে নিস্থাত। কিসের দ্বারা পেই সকল মহাত্মারা অনুভত্তকে প্রাপ্ত হত্যাছিলেন ? ভ্যাণের ধারা, কেবল ভ্যাণের ধারা। जारगरेनरकन । जाग कारारक वरन र अथार हाड़ा , कारारक ছাড়া? আপনাকে ছাড়া, স্বার্থ নাশ করা কেবল এই পথ ধবিষা তাঁহাবা অমুচ্ছ আংপ্ত ইইয়াছলেন। নিবিষ্ট-চিত্তে চিপ্তা করেয়া দেখিলে অক্সভব করিতে পারা নায়, যে স্কল্মহায়াব ও মহজেনের কীত্তি আলোচনা করিয়া থাকি, য চালের অনুসৰণ কার, তাঁহারা সকণেহ এই ভ্যাগের দ্বারাই অফুডজ পাইরাছিলেন। মহায়াদের জাবনের কয়েকটা আশ্চয্য লক্ষণ অচ্ছে, যুহো চিস্তা কারলে উহিলাদগকে আর সাধারণ মতুষা মনে করা যায় না। তাহার কভিণয় লফণ নিদেশ কারভোছ।

প্রথম কাবের প্রতি অবপুকা প্রেম। বৌদ্ধদ্যাবলয়ীরা বলেন, শাক্যসিংছ মুক্তায়া, তথাপি তিনি যে জন্ম এচণ কাব-রাছিলেন, সে কেবল জাবের প্রতি অনুগ্রহের জন্ম। জরা-মরণের হত্তে মানবের নিগ্রহ দেখিয়। তাতার হাদয় এত ব্যথিত তইয়াছিল যে তাত্বে জন্ত এই কেশ বছন করিয়াছিলেন। গ্রীষ্টিয়ান-গণ বলেন যাভ স্বরং পরমেশ্বর, তিনি যে এত যন্ত্রণা স্ভ্ क्रिया कोनन मिलन, तम दक्तन कीनार अट्टर अग्रा কীশাল্লতা সকল মহাত্মার লক্ষণ। এই জাবামুগ্রহের শভী-রভার বিষয় চিন্তা কারলে উহ।দেশকে ভারে সাধাবণ মৃত্যা বলাযায় না। আমাদের প্রেমের প্রেক্তি এই যে ব্যক্তি প্রমা-ম্পাদ, স্থলার, কোমণা, এবং অমুবাগনীল, তাহার উপাই যায়। कि इ (यथान कनयाका, इनक, ष्यमाधूका, त्रथान आमारति **ब्यम शिवा चानिक्रन करत्र ना। ववर या भागी छाशास्त्र छ** প্রেম করা যায়, কিন্তু যে প্রেমের পারবর্তে অপ্রেম দেয়, ক্রতমূহইয়া অপকার করে, তাহাকে প্রীতি করা আ্যাদের সাধীায়ত নর। সাধুদের মহত্ব দেখুন, যে হস্ত আঘাত কবিভেছে, তাহাকে প্রেম দিয়াছেন। ঈশা, বুদ্ধ প্রাভাত বড বড নাম व्यक्ष्यन क्रिट्डाइ (क्न, मश्जा त्राका त्रामानन त्राम **শিখ**নাছেন যে শোক্তাশকতা দোনিয়া উচিচার প্রাণ এড০ याशिक रहेनाहिन (य देशात फेटफ्लिन क्रम क्रथ मामया नगीत,पन, সমুদর নিয়োগ করিয়াছিলেন। যে জ্যাত ওাগাকে উৎপীতন ক্রিয়াছে, নগ্ণ্য লোকের তারে ব্যবহার ক্রিয়াছে,পাষ্থের ভায়ে भाषकाश कतिशास्त्र, अभ्यान कतिशास्त्र, जाराबरे छेद्धार्वत कना व्यवं नामध्रा भन्नोत, दल नमूनन निरमाश कांत्ररान। हे:न(७

ভলনাশরে গেলে, উপাসনা কালে রাজার চকু দিয়া জনধার।
পড়িত। সেধানকার উপাসকগণ কারণ জিজ্ঞাসা করিলে
বালতেন "উপাসনায় যোগ দিতে গেলে, দেশের লোকের
জন্য আমার প্রাণ ব্যাকুল হয়।" কি প্রেম! "যার থরতর
শরে জর জর, তাছাবি কল্যাণ অস্তরের ধ্যান" এ যদি মহল্ব না
হয় তবে আর মহল্ব কোণায় ? মহাল্যাদিগের প্রেম,
ও জীবার্গ্রহ জ্পাধারণ।

মহাত্মাদেগের আর একটা লক্ষণ আশো। ঈশ্বরের উপর ও মাহুষের উপর আশা অসাধানণ। ঈশ্ববেব উপর আশা করা বিড কঠিন নয়। কিন্তু মাহুষের উপর আশা করা বড় কঠিন। পৃথিবীর পাপ ভাপ এগতি ইহাবা যেমন দেখেন অভা লোক এমন দেখে না। ইহাবা লোকের নিরুষ্টতা যেমন অকুভব করেন, অঞ্জ গোক তেমন করেনা। অথচ ইছারা মাছুষের উপর আশাহীন হহঙেন না। যাদ মারুষের উপর বিশেষ আশানাথাকৈত তবে জার ধ্যপ্রচাব করিতেন না। বিখাস না থা কলে কি আর ভাহাদের কাছে গিয় ধন্মের কথা বলিতে शाविष्ठन? वामका (माय्या शाहे व्यानक नक्षविष्ठे वाक মাহ্যের পাপ ও হ্ণীতি দোখয়া দেখেয়া তাহাদেব উপর আশা ও विश्वाम একেবারে হাবাইয়া ফোলয়', শেষে নরাবল্বো হইয়াছেন। াক্স হহাদের কাষ্য দেখ় এত গুণ্ডি, এত পাপ দেখিয়াও মামুবের উপর কত আশা রাখিতেন! আবার দেখ আশা ब्राचित्वन (काषात्र! वड़ कनडानानो, मद्धमनानी व्य मकन লোক, তাগাদেব উপবে কি আশা রা:ধতেন গু তাহা নর। পৃথিবী যাহাদের মগ্রহাছে, সেই হুবল, মশিক্ষত জেলেমালার মুথের।দকে তাকাইয়া ইহাঁর। কি এক আশা পাইলেন। একটী বঁড বাড়ী ভৈয়াবি কারবার জন্ত অনেক ইট কাঠ সংগ্রহ করা চইয়াছে। মিস্ত্রাবা ভাঙ্গা ইউগুলিকে দূরে ফোলয়া দিছেছে। তখন একজন নৃতন কারিকব আংসিয়া বাললেন "ও কি করি-एक, चामन जिनिम (य :कनिया निष्क्त । ঐ ভাঙ্গ। देउँ खान्ह (य मझवूछ इछे।" मश्राज्ञात्वा ठिक अहे वकाम, व्यामवा (य मकन ইট কটি অকম্মণ্য ব'লয়া ফেলেয়া দি, ছাহাই লইয়া অট্যলিকা अञ्च करत्रन। देशास्त्र ठिक् चाहि, देशी बामास्त्र ठक्क् • मिशा मुग्न करवन ना । वेटी द्वा (प्रदे ७ क्षा वेटवेद मर्त्या अमन কিছু দৌগতে পান যাত। আমবা দেখিতে পাই না। ঈশ্বরের উপর ইণাদের কেমন আশা। যখন চাবি।দক প্রাতক্ল, তথন ও আশা ছাডেন নাই। যাত্র শক্র পে যথন চারিদিকে বা'ডতে লাণিল, যথন তাঁচার শিষ্যাদণের উপর অভ্যাচার উৎপীড়ন হইছে লাগিল, তথন তিনি কয়েকজন শিষ্যকে ডাকিয়া জিজ্ঞাণা কারলেন, "Will ye also go away ?" াড়ান তথন তাহা-াদগকেও ছাডিতে প্রস্তাহ তার পণ ঐ বারজনও ছাডেবা ্ৰেল। একাকী যথন উচ্চাকে হত্যা কাবতে লছয়। যায় ওখন ও ভিনি স্থগ্ৰালোর গ্ৰামস্ট ক.রতেছেন।

তৃতীয় অপুকা সাহস। এই অপুকা সাহস অনেক মহাত্মার জীবনেই দেখা গিয়াছে। সমুদ্য দেশ ও ফাতি যথন প্রাভিক্ল, তথন ও তাঁছাবা নিভাক চিভে দ গুয়েমান থাকি তেন। মহম্মদ যথন ধ্যাপ্রচারে প্রবৃত্ত হইলেন, তথন দেশের সমুদ্য লোক

বিরুজে দাঁড়াইল। মহল্মদের থুড। মহল্মদকে অভিশব ভাল বাাদতেন। তাঁহার বিরোধীরা তাঁহার পুড়ার কাছে গিয়া বাঁণণ "আপনার ভাতৃম্ব এ দেশে ভয়ানক অয়ালকতা উপস্থিত করিয়াছে। সে দেবতাদিগকে বিক্রপ করিতেছে। লোকদিগকে দেবতার উপাদন। হইতে নিবুত্ত করিতেছে। সমস্ত দেশের লোক উহার উপর ২ড়গাংস্ত হইয়াছে; কেবল আপনাকে শ্রদ্ধা করে বলিয়া এথনও কিছু করে নাই। স্থতরাং আপনাকে বলিভেছি আপান শীঘ্ৰ উহাকে নিবৃত্ত ককন নত্বা, জানিবেন, উহার জীবন রক্ষা করা ভার হইবে। মহম্মদের খুড়া মহম্মদকে ভাকিয়া বলিলেন, "মংখাদ আমে তোমায় বাল্যকাল হইতে অতিপালন কারয়াছি, এতাদন তোমাকে সস্তানের স্থায় স্নেহে রক্ষাক্রিয়াজাগিয়াছি। কিন্ধু এখন আরু তোমাকে আমার পক্ষপুটে রাখা অসম্ভব হইয়াছে; আাম স্লেহের অনুরোধে বলি-তেছে তুমি নিবৃত্ত ২ও।" মহল্মদ খুডার নিকটে লতান্ত বিনীত ভাবে কথা বাদতেন, স্বাদা অবন্ত মস্তকে চালতেন। ভাছার এই অফুবোধ শুনিয়া তাঁহার মুথের দিকে চাহিয়াবাললেন "আমার এক হত্তে স্থ্য আর এক হতে চন্দ্র আনিয়া দিলেও নিবৃত্ত হইব না।"

এই यामा ७ माहरमत मर्सा कि रम्या गात्र ? ज्यारारीनरकना-मुड्यमान ७:, এমন ध्वकी खग हेर्डा (त्र हिन यात्रात स्त्र (य प्रत्) कानियाहित्वन, जारात मधा निभक्त हाजिया नियाहित्वन। কে পক্ষ কে বিপক্ষ ভাগা গণনা করিবার অবসর হয় নাই। উ। হাদের মানবের প্রতি যে বিখাদ ভাহাব মূলে এই। ঈশ্ববেব ছাতে সমস্ত সমর্পণ কারয়। দিরাছিলেন, বলিয়াই মানবে **এ**মন বিশ্বাস ও এমন সাহস। যাদ মনে করিতেন সভ্যের জয় পরাজর আমার উপব নিভর করে, তবে নিজের ছবলতা দেখিয়া নিরাশ হইতেন। ভ্যাগের ছারা, আত্মসমর্পণের ছারা, সভ্যের হাতে নিজেকে ছাাড়য়া, সেহ বল পাহয়াছিলেন। তাগরা দেথিয়াছিলেন যেমন পৃথিবীতে মাধ্যাক্ষণ সমুদয় পদার্থকে স্ব স্থানে প্রতিষ্ঠিত রাথিয়াছে, তেমনি প্রনেশ্বরের শক্তি ধন্মকে প্রতিষ্ঠিত রাথিয়াছে। সেজ্ঞ ঈশ্রের হাতে টাশরা আপনাদিগকে সমর্পণ করিয়াছিলেন। এলএই তাহা-াদগের বাসনা বিশয় হইয়াছিল। সভ্যের চিন্তনে, লোকভয় ও ক্রাশ্রতার বর্ধন সমুদার ছিল হত্যাছিল। Know the truth and the truth shall make you free. Atogs প্রেমে মাকুষ আপনাকে ছাড়িয়া দিলে, তবে স্বাধীন হয়। তাছার। সতে। আপেনাকে দিলেন বালয়া বল, আশা, সাহস পाইলেন, নবজীবন পাইয়া সভ্যের বলে বলা হত্তেন। মানবের অনরত্ব ত্যাগ ভিল্ছর না। বাদ কোন মন্ত্র জপ করিতে হয় ভবে এই মন্ত্র জপ কর "ত্যাগেনৈকেনামূতত্বনান্তঃ।" ঈশ্বরের नाम रक्ट कति ना रकन, वाब वाब छेलामना कति ना रकन. ভাগ,-ভাগে,-ভাগে ভিন্ন অমৃত্র পাওনা ঘাইবে না। যিনি रय गांत्रमारण खार्थनारम खाळाड, जिन त्मरे शांत्रमारण धयामारच হচ্ছুক, তিনি সেই পরিমাণে অমূত্ত লাভের অধিকারী; নতুবা অমৃত্ত পাওয়া যাইবে না; স্বার্থনাশের ভাব না আদিলে ৰড় বড় কণা ও বাহিরের সাধন মাতালের নৌকা চালান'র মত;

নৌকা বাধিয়া রাথিয়া সারারাত্তি দাঁড় টানার মত। ধক্ষপ্রচার मझरक्ष अर्रामा এই कथा चात्रण त्राथिएक रहेरव। धर्मात्र कथा कि लाक्तित कार्गत कारह विनाम हे हहेन ? मान क्रिन এक মাদের মধ্যেই এই কলিকাতা সহরের সকল লোককে আদ্ধ-धत्यात कथा कुनाहरक भाति। व्याप्त वाकाहेत्रा, विकालन मित्री পাড়াক্ষ পাড়ায় মিটীং করিয়া কীর্ত্তনের দল বাহির কবিরা, অতি সহজেই এক মাসের মধ্যে আক্ষধর্মের নাম সহরের সকল লোকের কাছে পোঁছাইয়া দিতে পারি। কিন্তু তাহাতে কি হইবে ? ব্ৰাহ্মধন্মের কথা শুনাইলেই কি ব্ৰাহ্মধন্ম প্ৰচাব হইল ? প্রচারের অর্থ কি ? "একমাত্র ঈশ্বরই উপাস্থা, তাঁহার উপাসনা ও প্রার্থনা করা উচিত, জাতিভেদ রাথিতে নাই,"ইত্যাদি কথা क्यहा खनानहे कि लाहात्र। याम এहे लाहात हम, खरन खा कठिन नग्न। किन्न ध्यानादात्र व्यथं योग भाष्ट्रस्त्र मन विष्णान रुग्न, ভাক্ষা হটয়া যাওয়া, যদি স্বার্থপরের নিঃস্বার্থ হওয়া, বিষয়াসক্তের বিষয়াসাক্ত শুক্ত হওুয়া হয়, তবে, আপনারা বলুন দেখি, কাঞে ভাহা হহতেছে কি না 🔈 ছজন লোকের মন বদণাহবার ভার দিলে আমি নাচার। এছ পনর বৎস্রের মধ্যে আমিতে। অনেক বক্তৃতা কারয়াছি, অনেক উপদেশ দিয়াছি, ভারত-বর্ষের প্রায় সকল স্থানেহ গিয়া আক্ষান্মের নাম ওনাহয়া আসিয়াছি। কিন্তু ভাই রে, ক'লনের হৃণয় বদলাইয়াছি 🕈 यान कारात्र अनम्र वन्नारेवात्र माश्या रहेमा थाक छ। পরমেশ্বরকে ধল্লবাদ দিহ, তবে মনে কার, আমার প্রচারক **४७**मा मार्थक २ हेगा हि। नग अन लारकित्र योग क्षमग्र वनगाह्या থাকে তবে,জীবন সাথক মনে কার। কিন্তু দশ হাজার লোক যে আমার বক্তা ওনিয়াছে, তাহাতে প্রচার হয় নাহ। যাদ পাপেব প্রতি ঘূণা জন্মহিয়া দেওয়া, হাদ্য পারবর্তন হওয়া প্রচার হয়, ভবে দেখ সে প্রচারক কে আছে! বক্তা বেশ কারতে পারিব, আধ্যাত্মিক বিষয়ের কৃট প্রশ্ন স্কল জিজ্ঞাস। কর. বেশ পরিষ্ণার মামাংসা করিয়া দিব; यनि बिख्छाना कর "যোগ কাছাকে বলে?" তবে বেশ বুঝাছয়া দিতে পারিব। কিন্তু ভাহ, আমাকে যাদ জিজ্ঞানা কর, আমার যোগ কতটা হুহয়াছে, ভবে যে লজ্জ। পাহ। এক্ষিধন্ম প্রচার কি কথায় ১হবে 🟲 যদি দেখ যে আক্ষাপ্ৰের জ্ঞা স্থার্থনাশ কারতে প্রস্তুত, ইংগ্র জন্ত কিছু stake করিতে প্রস্তুত, তবে আমি বলি, তাহার দারা **অ**হার হহবে। যাদ নিজের স্থাথ, স্থারে পথটা বেশ পরিষার রাথিয়া আন্ধণ্ম প্রচার কারতে যাও, সে রক্ম করিয়া আন্ধণ্ম প্রচার ইইবে না। রেথে দাও ও বজুতা; স্বার্থনাশ, স্বার্থনাশ, वार्थनाम---कार्राटनक,--जान इहेरणहे रहा। हेरात पृक्षीस জগতে যথেষ্ট। াশ্থ ধম্মের এত প্রতোপ হহল কেন্ ? ।শ্খ-দিগের দশম গুরু পোবিন্দ সিংহ একবার শিথধন্মের উর্ভি চিন্তায় নিজ্জন পক্তে ধ্যানে নিমগ্ন হহলেন। কিছুদিন পরে আসিয়াসকণ শিথকে সমৰেত কারয়া উলুক্ত তরবারি হত্তে नहेशा विनित्न--- "ति तेत्र अहे आत्म इह्याह-- निष्यत्यत রক্ষার জন্ত একশত মাতুষের মাথা চাই: কে শির দিবে এস: আমি এহ তরবারিতে তাহার মাথা কাটিয়া দেবীর কাছে শইয়া यहिव।" এই विणया वात्रशांत ही एकांत्र कतिया ए। किएक माणि-



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

২০শ সংগ্রা। - 🏎 হল ১৬শ ভাগ।

>লা ফাল্পন, দোমবার, ১৮১৫ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাংসরিক অপ্রিম মূল্য ২াা• মফবলে ৩ প্রতি গণ্ডের°মূল্য ৬

### মাঘোৎসব। জিপ্তকাশিকের পর। '

( পর্ব্ব প্রকাশিকের পর। ) কিন্তু কেচ্চ অগ্রসর চ্টল না। তখন গোবিলা সিংছ বলিলেন"আছো, একশত জন না ১উক, পঞ্চাশ জন এস। "পঞ্চাশ জনও আসিণ না। তথন তিনি তু:খিত চুইয়া বলিলেন "শিব ধর্মের জন্ত প্রাণ দিতে পারে এমন পঁচিশ জন লোক কি নাই ? এস, পঁচিশ জনও এস"। তথনও কেচ অঞাসর চইল না। ज्थन निराम इडेश श्रुक (शारिक शिर् विशासन मिन्यन, দশক্ষন."। তথন ও কেচ আসিল না। তথন গোবিন্দ সিংছ विनालन "मनकन ना ० त शीं ह कन अगा" यथन शीहकन उ আসিল না, তথন গুরুগোণিক অভির ছইরা উঠিলেন। নিরাশার উত্তেজিত কঠে বলিলেন "ন্শ্ৰণশ্ৰের জন্ম মাণা দিতে পারে এমন এक्सन (नाक्छ कि नाहे ? नियम्प (गन (घ । नियस्पात রকার জন্ত কেচ কি প্রাণ দিতে পার না 🕍 তখন একজন সর্গমতি জাঠ দণ্ডার্মান । ইল। গুরু গোবিন্দ শিংকের ন্যার লক্ষ দিয়া ভাতার তুল ধরিয়া টানিয়া লইয়া চলিলেন। নিকটে এক তাঁবু ছিল, ভাগাৰ মধ্যে লইয়া গিয়া ভাচাকে সুপজ্জিত পালতে বেসাইলেন, বসাইয়া ভাষার পদ্ধুলি লাইলেন। তাবুর ভেড়বে ভালাকে বসালয়া রাখিয়া একটা পঁ.ঠা কাটিলেন, ভাগার রক্ত গড়াইয়া তাঁবেব বাহিরে চালল। তখন সেই রক্তাক ভরবারি হক্তে শইয়া বাহিরে গিয়া বলিশেন "আর চারি জন চাই, আর চারি জন হইলেই ১ইবে।" সমবেত रनारकता (महे त्रकाल कतवाति । एमहे तरकत श्राता (माथवा अञ्चल्यान कविन (महे वाङ्गास्क काहा इत्याहा धार्वे वाह প্তরুগোবিন্দ সিংচের আহ্বান শুনির। আর একজন অগ্রসর करेग, जागात्म अ धीतल इत्म धतिया जीवत फिल्दा महेबा পালকে বসাটলেন ভাচারও পদধ্লি লইলেন, এবং আংগের বারের মত আর একটা পাঠা কাটিলেন। এইরূপে পাঁচ বার পেলেন, পাঁচণারে পাঁচলন লোক ভাঁছার আহ্বানধ্বনি শুনিয়া জীবন দিতে অন্তাসর হইলেন। ভিনি তাঁবুর ভিতরে সেই পাঁচ জনকে একতা করিয়া তাঁহাদিগকে আলিখন করিলেন ও বলিলেন "আজ ১ইতে ভোমরা আভোকে তারুগোবিশ দিংছ, আজ হইতে আমরা ছর জন ওারুগোবিন্দ সিংহ হইলাম।" धे इस कन १७ तः त्यां विकास निर्देश का अस्ति । এই ছব জনের জীবনই সম্তা শিধমপ্তলীর মধ্যে জীবন উৎপর क्रिन। छाई विन वार्थनाम ना इद्देश मुक्ति कार्यना। कासि

অনেক দিন ব্সিয়া চিন্তা করিয়াছি, গ্রীষ্টধর্মের জয় কিরুপে टरेन १ ७ अम् बाज अमात्र ভानतर मीमारमा रह नारे। औहेशर्पात्र अफामत कारन रमिश्टि भारे, इरेंगे आदन भवाकाष শক্তি ইহার প্রতিকৃলে ছিল—এক গ্রীসের সভ্যতা, স্বার এক, রোমের রাজপক্তি। এত বড় ছুঠ্টী শক্তিকে ভিসে পরাস্থ করিল ? শক্তি ছাড়া শক্তিকে অন্ত কিছুতে বাধা দিতে পারে না। কোণার সে শাক্তর জন্ম, যাহা এই ছইটী পরাক্রণত मिक्कित्क वाक्षा मिर्फ ७ सम् कतिए नमर् इहेम्राइ ? वाहेरवरन এই প্ৰান্নেৰ উত্তৰ কি নাই ? এই দেৰিতে পাই যে খুষ্টেত্ৰ শিষ্যগণ নিঃস্থার্থতার মন্ত্রে দীক্ষিত হইয়াছিলেন। ভগন বে জীষ্টান হইত, ভাচারই যথাস্থাত্ত বিক্রের ক্রিয়া সাধারণ ধনভাতারে দিতে চইত। আজ যদি ব্রাহ্মসমাজে নিয়ম করা যার যে আরের দশ ভাগের এক ভাগ দিতে হইবে, নতুবা ত্রান্ধ-সমাজের সভা হওর। চইবে না, তবে কেমন সভা হয় দেখি ? তার পর এই নিঃস্বার্থতা পদে পদে। প্রেরিতদিগের বিরুদ্ধে একবার আভিযোগ হয় যে বিধবাদের সমুচিত পরিচর্যা। কইতেছে না। তাঁচারা কি এই অভিযোগ শুনিরা অভিমান করিলেন ? ভাষারা কি বলিলেন কি, এত বড় আস্পর্জ', যাচারা ঈশবের প্রেরিড, তাচাদের নামে স্থাবার অভিযোগ?" তাহা করিবেন না। সমুদয় মণ্ডণীকে ভাকিয়া সমবেত क्तिरानन: विनारान "भागता वास्त्रिकरे धरे कांच क्रांतिक পারিয়া উঠিতেছি না; ভোমবা লোক পছন্দ করিয়া দেও।" **এই कथा श्रुनिता प्रमृत्य पारश्यम ও प्र**श्चिर्याण निस्ताण स्हेग। ইহাঁদিগের স্বার্থ বিনাশ পদে পদে। ইহাতেই তো শক্তি জাগিরা উঠিল। ত্রাহ্মসমাজ যে এতদিন জাগিয়া আছে ভাচার কারণ কি ? ভাহার কারণ কি এই যে ভূমি আমি ও আর দশব্দে ব্জুতা ও উপদেশের ছার। ইহাকে রক্ষা করিতৈছি ? তাহা নয়; যে ত্ৰকজন লোক ইহার জন্ত স্বার্থত্যাগ করিব:-ছিলেন, তাঁচালর সেই ভ্যাণের ফলেই ইছা এতদিন বাঁচিয়া আছে। রাজা রামমোহন রায় যখন ত্রাক্ষধর্ম প্রচার করিতে আরম্ভ করেন, তথ্ন সহরের অনেক বড়লোক তাঁহার সঙ্গে জুটিরাছিলেন। কেহ কেহ বলেন রাজার এ সছদ্ধে একটা Policy ছিল। ভিনি বড় লোকদিগকে হাতে রাখিতেন। কিন্ত বৃড় লোক তো অনেক জুটিয়াছিল, তাহাতে 👸 হইল 🤊 णारात्रा कि बाधनमाय त्राधिताह । त्राका स्थने हे:वर ७ চলিয়া গেলেন, তথন আর তাদের উদ্দেশ পাওয়া গেল না।

কিন্তু একজন দরিজ ভ্রাহ্মণ রামচক্র বিদ্যাবাগীশ যিনি ব্রাহ্মসমাজের প্রতি প্রেমে আবদ্ধ ছিলেন যিনি খাশানে প্রদীপ জালিয়া বৎসরের পর বৎসর অপেকা করিডেছিলেন—তাঁহার জীবনের দারা ত্রাহ্মসমাজ জীবিত রহিল। তাঁহার জীবন স্বার্থত্যাগের দুষ্টাস্ত। স্থার তারপর মহর্ষি দেবেজ্রনাথ যিনি ইচ্ছা করিলে বড় লোকদের মধ্যে নিশ্চয় স্থান পাইতে British পাবিতেন, যিনি ইচ্ছা করিলে আৰও Indian association এর secretary থাকিতে পারিতেন— একজন রাজা মহাবাজা হইতে পারিতেন—তাঁহার দৃষ্টান্ত (पथ ! जिनि প्रांग निया जाकामभाकारक धतिरानन, व्यर्थ, मामर्था, সমুদর ইহাব জন্ত নিয়োগ করিলেন। তারপর কেশবচন্দ্র—ইনি ইচ্ছা করিলে টাকশালের দেওয়ান হইতে পারিতেন, ভাহা না कतित्रा चार्थ कनाक्षनि नित्रा बाक्षममाकरक ल्यान नित्रा ধরিলেন। তাঁহার সঙ্গের প্রচারকগণ প্রত্যেকে নিজের নিজের স্বার্থ ও স্থবের আশা পরিত্যাগ করিয়া ব্রাহ্মসমাজকে রাণিয়া-(ছन। (महे कळाहे विल, "ठाारिगरेनरकनामुड्यमान्छ:--" এই স্বার্থ নাশ ব্যতীত শক্তি হইবে না, বাদনা বিলয় হইবে না। যাব যত স্বার্থনাশ, তার তত্টা শক্তি জাগিবে। ভাল কথা শাস্ত্রে ডের আছে, তুমি বিশ পঁচিশ বংসব বক্তৃতা কবিয়া তাহার বেশা কিছু বলিতে পারিবে না। কিন্তু সত্যকে জীবন मिया धरा ठारे। व्याग मिया ना धरितन मठात मक्ति हम ্না। বিধাতা ব্রাহ্মসমাজের উপর এই ভার দিয়াছেন, সতা মুথে বলা নয়, সতাকে জীবন দিয়া ধরা। "অমূল্য রতন, অমূল্য বতন" তে: কত বলিয়াছি। রুঞ্ কি বৃথিতেছি? এক্ষাধম্মকে রত্ন বলিয়া কি বুথিতেছি। ইং৷ কি এমন জিনিস হইয়াছে, যে জন্ত আপনাকে দিতে পাবি ? একিমমাজে তো অনেক যুবক যুবতা আছেন, সকলেই কি সংসারেব পথে চলিবেন ? তোমরা প্রাক্ষসমাজে यामिया ७ कि नकरनहे—मकरनहे—मःभारतत्र भर्य हिन्द ? जाकाममाक्र के प्यान निम्ना कि यक्षन अ ध्रित ना १ (क्वन पृष्टे**ष्ट ७**नारे मात रहेन ? जामती जर्कात कतिया याशास्त्र সম্বন্ধে বলি যে তাহাবা উপধ্যের সেবা করে, তাহারা তো তাহাদের ধন্মের জন্ম জীবন দিতে পারে, আর আমরা পারি না? সভ্যের জন্ম প্রাণ দিতে পারে এমন কি কেউ নাই? একটু স্বার্থ ছাড়িলে কি জাবন সার্থক হয় না ? শক্তি কত तथा काष्ट्र याहेल्डाह, जेबादात (मताय शिल कि সার্থক হয় না ? তিনি কি এতটুকুও প্রিয় নন ? তবে কি প্রচার কবি ? কি উৎসব করি ? প্রভু পরমেশ্র আরু কজা দিন, শঙ্জা দিন। সত্যে প্রাণ না দিলে স্বাধীন হইব না। তবে এই প্রার্থনা করি। আজ উৎসবেব দিনে হৃদর দেখি, কডটুকু ছাড়িতে প্রস্তত। বড় বড় কথা সকল আমাদের বলা আর ভাল দেখার না। এসকল কথার গুরুত্ব গেল. আমাদের ছাতে পড়িয়া কথা গুলির গুরুত্ব গেল। "স্বার্থনাশ" "স্বার্থনাশ" বলিয়া কথাটার গুরুত্ব গেল। ছোট ছোট স্বার্থ ছাড়ি দেখি। जिनि এই व्यक्तिकात्र जेमन कतिन्ना मिन (य ছां फिन। नजून। তাহার ধর্মের শক্তি জাগিবে না।

প্রার দশটার সময় উপাসনা শেষ হইল। কিন্ত তথনও সলীত, কীর্ত্তন চলিতে লাগিল। আন্ধ আর কাঁহারও ছাড়িরা ষাইতে ইচ্ছা করে না। ১টার সময় আত্মচিস্তা আরম্ভ হইল। কিন্তু ইহার পূর্ব্বে অর সময়ের জন্ত সলীতাদি বন্ধ নাই। ২ ঘটিকা হইতে পাঠব্যাখ্যা ইত্যাদি চলিতে লাগিল। মধ্যাক্ত আত্মচিস্তার সময় মন্দিরে বেশী লোকের সমাবেশ ছিল না। কিন্তু পাঠব্যাখ্যার সময় হইতে আবার মন্দির।ভিমুখে জনপ্রোত প্রবাহিত হইতে লাগিল। অপরাক্ত ৪টার সময় মন্দির পূর্ণ হইয়া উঠিল।

প্রথমত: শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্স দত্ত মহাশয় নানা শাস্ত্র হইতে বচন উদ্ধার করিয়া বাাথাা করিলেন, তৎপরে শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় উপনিষদেব কয়েকটী শ্লোক পাঠ করিয়া বাাথাা করিলেন। তাবপর তিনি ভক্তিভালন মহর্ষি দেবেক্রনাথ ঠাকুর মহাশয়ের প্রেরিত একটা উপদেশ পাঠ করিলেন। মহর্ষি তাহার অস্কুত্রতা বশত: স্লেহাস্পদ ব্রাহ্মগণের সহিত মিলিত হইয়া মাঘোৎসব সম্পন্ন করিতে পারেন না। এই জন্ম তিনি উপদেশ ও আশীর্কাদ প্রেবণ করিয়াছিলেন। উহা পাঠ করিয়া দেই কয়টা কথা সর্কান স্মরণ রাথিবার জন্ম শাস্ত্রী মহশেয় সকলকে অমুরোধ করিলেন। উপদেশ ও আশীর্কাদ নিয়ে প্রদত্ত হইল:—

#### ওঁতৎসৎ

আযুম্মন !

ঈশ্ব তোমার কল্যাণ দাধন করুন। তাঁহার শ্রণাপন্ন रुरेया कुणाल मःभात-गाजा निकार कव। अनुस्त्र अका अकि প্রক্রিত করিয়া দিনান্তে নিশান্তে তাঁহাব পূঞ্চা কব। তাঁহার নিকটে অহকণ শুভ বুদ্ধি ও ধশাবল প্রার্থন। কর—তিনি "মহদ্রমং বজ্রমুদ্যতং," তাঁহাকে ভয় করু, ভবে আরে লোকের ভग्न थाकित्व ना। "तरहा देव मः," তिनि स्मरहत्र च्याकत्र, প্রেমের সাগর—উাহাকে প্রীতি কর, ভাগা হইলে সকলের প্রিয় হইবে। বিপদে পডিয়া, রোগে শোকে কাতৰ হইয়া তাঁহার নিকটে জ্রন্দন কর, তিনি তোমাকে বিপদ হইতে বক্ষা করিবেন, তোমার অঞ্জল মাজনা কবিবেন। পাপে পতিত ইংল সেই পতিতপাৰনের নিকট সম্বর্গচিতে ক্ষমা প্রার্থনা কর—এমন কর্ম আব করিব না, এই কথা মনের সহিত বল— তাহা হইলে তিনি তোমাকে ক্ষমা করিবেন-পাপ হইতে मुक कतिरवन। यथन मम्मारमत्र हिटलार्ग विष्ठत्र कतिरव. তথন তাঁহাকে ভূলিও না। সেই সময়ে তোমার হৃদয়ের ক্লভ-জ্ঞতা তাঁহার সিংহাসনের প্রতি উথিত হউক। তাহা ২ইলে অপনার ক্ষমতার প্রতি আর অভিমান থাকিবে না। ভোষার প্রতি আমার এই উপদেশ, তোমার প্রতি আমার এই আশীর্কাদ।

#### ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

আদ্যকার ভাব লিথিয়া বর্ণনা করা যায় না। না দেখিলে প্রোণ তৃপ্ত হয় না। সন্ধ্যা পর্যান্ত এই রূপ চলিল। সন্ধ্যার পর সান্ধ্যোপাসনা আরম্ভ হইল। শ্রীযুক্ত বাবু নগেজনাথ চট্টো-পাধ্যার আচার্য্যের কার্য্য করিলেন। এসময় মন্দি,র কিছু মাত্র স্থান ছিল না। অনেকে মন্দিরে প্রবেশ করিতে পারেন নাই। বহুলোকের সমাগম হওরাতে মন্দিরের এক অপূর্ব দৃশু হইয়াছিল। অতি উৎসাহে ও আননের সহিত উপাসনা শেষ হইল। উপাসনার পর প্রীযুক্ত বাব্
বসম্ভক্ষাব চৌধুরী সন্ত্রীক ব্রাহ্মধর্মে দীকিত হইলেন। দীক্ষান্তে
আচার্যা নিম্নলিখিত উপদেশটা প্রদান করিলেন।

"আজ বাঁহাবা প্রকাশুরূপে এই মাঘের ১১ দিবসে পবিত্র ত্রাহ্মধর্মে দীক্ষাগ্রহণ করিতেছেন, তাঁহাদের জীবনে ইহা একটা সমহৎ ও অতি গুরুতর ব্যাপার। ইহা গ্রহণ করিয়া তাঁহারা তাঁহাদের মন্তকে একটা গুরুতর দায়িত্ব লইতেছেন। যে ধর্ম গ্রহণ করিলেন সেধর্মেব গুতি আমাদের দেশের লোকের কিন্দপ ভাব তাহা তাঁহাবা বিশেষ অবগত আছেন। এই ধ্যেব, এই রাক্ষদমাজকপ আন্দোলনের বিক্তমে দেশের শত শত লোক থড়াহন্ত। দেশের প্রচলিত মত, বাহিক ক্রিয়াকাও এবং যে সকল কুদংস্কাব 'দেশমধ্যে প্রচলিত আছে, তাহাব বিক্লকে আন্দোলন কবিয়া আমহা দেশেব লোকের দাবা স্থণিত ও অশেষ প্রকারে লাঞ্চিত ইইয়াছি। হে ভাই, হে ভ্রি, এই ধর্ম গ্রাহণ করিয়া সমাজের লোকেব নিকট প্রীতিলাভ করিবে. অশোকবিও না। এবন একমাত্র লোকের ঘুণাও অভ্যাচার স্থ করিবার জন্ম প্রস্তেত ২ও। কিন্তু ধ্রমনিহিত বিবেক, প্রমেখ্রের সাক্ষাৎ বাণা অভুস্বণ ক্রিয়া চলিবার C5 है। कविद्या लादकव निकावा अभागाव भिष्क मुहि कविद्व না। সত্যেই জীবন, আজীবন স্তাকে ধাবণ ক্বিয়া তোমা-(५त निक निक वि८०८कत कक्षणविश्व कतः । त्वादकत निका कप्र দিনের জন্ত, আমব। কয় দিনের জন্ত এ সংসাবে আ্রিয়াছি। সভোর জান্ত জীবন, সভাই গ্যান্তান। নিকা বা প্রশংসা কিছুই নয়। প্রমেশ্ব লক্ষ্য তিনিই স্হায়। জয় প্র-रमचरतत्र अप्र। किছू ভय नारे। माञ्च विहूरे नग्न। माञ्च কীটাগুকীট। আজু যদি প্রচলিত ধর্মের, মিগাা কুসংস্কারের পক্ষ অবশ্যন কৰিয়া ভাহাৰ গুণ্নীক্তন কৰি দেশেৰ লোক কত আদর ক্ষিবে। কিন্তু সে আদর অভার্থনা আমরা চাই না। দূব হউক কুদংস্কাব, দূব হউক পৌত্তলিকতা।

পরমেশ্ববের কুপায় সকল প্রকাব কুসংস্কারের বিক্রাজ্ঞান ধর্ম মুদ্ধ ঘোষণা করিয়াছেন। যে দিন মহায়া রাজা রামমোহন বায় ভাবতে এত মহায়্দ্ধ দোষণা করিয়াছেন আজ সেই মহাদিন। সেই মুদ্ধে গাঁহারা যোগদান ববেন ঠাহারা মর সৈনিক, তোমরাও সৈনিক হইয়া আজ এই মহায়ুদ্ধে যোগদান করিতেছ। প্রাণপণে মুদ্ধ কর। শুধু বাহিরের সহিত মুদ্ধ করিলে চালবে না। আমাদের অস্থরে বাহিরে শক্র। বাহিরের কুসংস্কাবের বিক্রছে যেমন মুদ্ধ করিবে, ভিতরের পরম শক্র রিপু কটার সহিত্ত প্রাণপণে মুদ্ধ করিয়া তাহাদিগকে পরাজিত করিয়াব চেটা করিবে। আমার মনে হয় বাহিরের শক্র অপেক্ষা অন্তরের শক্রই অধিকতর প্রবল। হে ভাই, হে ভয়ি, এবং সমাগত আন্মবদ্ধাণ, তোমরা এই মুদ্ধে বিশেষ মনোযোগী হও। জয় প্রভু পরমেশ্বর, তোমারই জয়। তুমিই আমাদের মুদ্ধের সেনাপতি। আমাদের অস্তরের বাহিরে মুদ্ধ। তুমি সহায় হও।

**এই পৌর লিকতা এবং অশেষ প্রকার সামালিক ছণীতির** 

বিক্তমে আমরা আক্ষসমাজের সভ্যগণ দণ্ডারমান হওরাতে কত প্রকার বিজ্ঞানের পাত হইরাছি। কিন্তু আমরা ওসব প্রাভ্ করি না। জানি সভ্য আমাদের পক্ষ। স্পুতরাং সভ্যস্থরপ পরমেশ্বর আমাদের পক্ষ। আমরা নিন্দা বিজ্ঞাপ প্রহি না। ভোমরা বীরের স্থায় ধর্মজীবন যাপন কর, নিন্দা প্রশংসা কিছুই গ্রাহ্থ করিও না।

এই যে মহাযুদ্ধ, ইহা প্রেমেব যুদ্ধ। এ যুদ্ধে কেমন করিয়া रयांग मिटल रह ? यांहाता आमामिगटक विटमय कतिरवन आमता उँ। हामिशटक ८ श्रम कतिव। याहात्रा आमारमत निन्मा कतिरवन, আমরা তাঁহাদের সদ্ভণের কথা বলিয়া তাঁহাদের প্রশংসা গান করিব। তাঁহারা গালি দিবেন, আমবা বলিব"হে প্রমেশ্বর,তুমি তাঁহাদের কল্যাণ কর।" এ যুদ্ধে নিন্দাব পবিবর্ত্তে প্রশংসা,গালির পরিবর্ত্তে কল্যাণ প্রার্থনা, প্রহারের পনিবর্ত্তে প্রেমালিঙ্গন; এই সকল অস্ত্র বাবুহার করিতে হইবে। যাঁও এ সম্বন্ধে কি উপদেশ দিয়াছেন তাহা সকলেই জানেন। "তোমাব দক্ষিণ গণ্ডে কেহ চপেটাঘাত করিলে তোমার বাম গণ্ড ভাহাকে ফিরাইয়া नाउ।" हेश कि वाषावाष्ट्रि **উপদেশ** ? ना, এ উপদেশ ना मानिल এ युष्क अवनाष्ट्रत मञ्जावना नाहे। "मार्गि छुटे कलित्र काना, छाই व'रल कि त्थ्रम निव ना ?" अत्र इहेल कात्र. পাপেব না পুণাের ? মার খাইয়া প্রেম দেওয়া ঽইল বলিয়াই ত পুণোর জয় इडेल-মহাপাপীর উদ্ধাব সাধন হইল। यनि বিদ্বেষর পরিবত্তে বিদ্বেষ, চপেটাঘাতের পরিবর্ত্তের চপেটাঘাত, এই যুদ্ধের অস্ত্র হয়, তাহা হইলে, হে ব্রাহ্মগণ, জানিও ব্রাহ্ম-ধর্মেব জয় হইবে না। সকল 'ঘুণা, সকল অত্যাচার প্রেমের থাতিরে সহা করিতে হইবে। প্রেমের স্রোতে সমুদায় ভাসিযা গেল এই যথন লোকে দেখিবে, তথন অবনত মন্তকে তাহারা मंठा शहन कतित्व. शूर्तात भग ष्यवलयन कतित्व, ज्थनहे यूष क्रमाज इहेरव।

আমরা কুসংস্থার ও পৌত্তলিকতা পরিহার ক্রিয়াছি। "ন তক্ত প্রতিমা অস্তি।" আমরা ভালই করিয়াছি। কিন্তু আরু এখানে বাহারা উপস্থিত আছেন, তাঁহাদের সকলকেই ক্লিক্তানা কবি, বাহারা পৌত্তলিকতা পবিতাগে করিয়া ব্রাহ্মসমাক্ষে আসি-য়াছেন,তাঁহাদের মধ্যে ইহা অপেক্ষা কি অধিকতব পৌত্তলিকতা । নাই ? এমন লোক কি দেখি না যে পৌত্তলিক ক্রিয়া কবে না—অথচ এই বিপু কয়টাব দাস, স্বার্থপরতার দৃচ রক্ত্রুত বদ্ধ। ইট কাট দিয়ে যে দেবতা গভা হয় তাহার পৃক্ষা ছাড়িয়াছে, কিন্তু তামা কপার দেবতার পূকা ছাড়িতে পারে নাই। ইহা অপেক্ষা স্ক্ষতর পোত্তলিকতা—রিপুর পৃক্ষা, স্বার্থপরতার পৃক্ষা। পিতা মাতাব বক্ষে শেল বিদ্ধ করিয়াছ, কিন্তু তোমার পৌত্তলিকতা ত যায় নাই।

আৰু প্ৰাতঃকালে ভক্তিভাৰন আচাৰ্য্য যে উপাসনার সময় বলিয়াছেন ভাছা ঠিক—থাতায় নাম লিথাইলেই প্লান্ধ হয় না। এই বাহ্নিক পৌতুলিকতা পরিত্যাগ করিয়াছ সভ্য, কিন্তু যদি আধ্যাত্মিক পৌতুলিকতা না গেল ভবে মা বাপ পরিত্যাগ করিয়া প্রান্ধসমাজে আদিয়া কি হইবে ? সাবধান, হে ভাই, হে ভারি, সাবধান। বাহ্নিক পৌতুলিকতা আপেক্ষা

অধিকতর পৌত্তলিকতা আছে। চিত্তশুদ্ধি, ক্ষমা, স্বার্থত্যাগ চাই। এই চিত্তভূদ্ধি—নিৰ্দ্মণ হওয়া—অতি কঠিন। আমি অনেক দিন ব্ৰাহ্ম হইয়াছি কিন্তু যতই দিন বাইতেছে, ততই तिथा पार्टिक विश्व की प्रमन कड़ा कि কঠিন। এই যে বাহ্মিক পৌত্তলিকতা ছাড়িরাছি ইহার সঙ্গে সঙ্গে অন্তরেব পৌত্তলিকতা ত যায় নাই। ইহা বড়ই কঠিন। এই যে ভিতবেব রিপু কয়টা, ইহাদের বিনাশ করি কেমন করিয়া ? তবে কি কোন উপায় নাই ? আমি আর কিছু জানি না। ইহা কেবল তাঁরি কুপা। আমি অনেক দেখিলাম আর কিছুতেই হয় না। কেবল একাস্তচিত্তে তাঁর প্রার্থনা। তাঁহাৰ দাধনা ভিন্ন হইবে না। যীশু বৰিয়াছেন, "Pray Without ceasing না থেমে অবিশ্রাস্ত প্রার্থনা কর।" ইহা ভিন্ন আব অন্ত উপায় নাই। ইহাতেই নির্দ্মণ হইতে পারিব। জয়ড্কা বাজাইয়া থবরের কাগজে প্রচার করিলেই ধর্ম হয় না। তাহাতে অন্তরের বিষ ত যাবে না। অহবহ সেই বিষের জালায় জ্বলিয়া मविरव। এই वन्नन, किছুতেই याইरव ना। नम नम करव ধর্ম হইবে না। তাহাতে জগতেব লোক ভূলিবে, কিন্তু ভিতরেব শক্র যেমন তেমনই থাকিবে। আমি একজন পুরাতন ত্রাহ্ম অনেক বক্তা কবিয়াছি, অনেক গলাৰাজি করিয়াছি। যথন প্রাণেব ভিতর প্রবেশ করি, দেখি জালা যায় না। যথন প্রাণ ভরিয়া তাঁহাকে ডাকি তথনই যাতনা ভূলিয়া যাই। ব্রহ্ম-সাগরে ডুব দাও, নতুবা এই অন্তবের যাতনা আব কিছুতেই याहेर् ना। लाग मिन्ना धर्म कता हारे,-- व्यक्तिक इटेरल हिन्द না। স্বামী চায় স্ত্রা প্রাণ দিয়া তাঁহাকে ভাল বাস্তক। যিনি জগতের স্বামী তিনি কি চান ? সংসারের ভাবে নয়, আধ্যা-গ্রিক ভাবে বলি, তিনিও বলিতেছেন, ঐ যোল আনা প্রাণ (मञ्जा চাই। वाहरवरन चार्ड "God is a jealous God." তিনি হিংস্তকে প্রমেশ্বর। আমরা আমাদের প্রাণের थानिक है। उाहारक मि आज थानिक है। त्रिशूरमवा धवः স্বার্থ-পরতায় পরিপূর্ণ করিয়া রাখি, তাহা তিনি সহ্য করিতে পারেন না। তিনি ঐ ১৬ আনাই চান। যাও বলিয়াছেন, "সমুদায় প্রাণ মন দিয়ে তোমার প্রভুকে ভাল ब्राम ।" ममुनाय काटकत मत्या उँ। हाटक द्राया हाहे, न्या काटकत মধ্যে তাঁহার উপাসনা একটা, এরূপ করিলে চলিবে না। সকল কাজ তাঁহার, তিনিই সব। এই ভাবে হৃদয়কে প্রস্তত कत्र। शृहर विषया मन्नामी हहेट जात मन्त्रुर्ग कार्प छाहारक প্রাণ দেওয়া চাই। সকল কার্য্যেই তাঁহাকে অধিষ্ঠাতী দেবতা कत्रा हाहै। बाक्सधर्म (य छात्र हिन्छित्हन (म छात्र इहेत চলিবে না। হে প্রভু, আমরা যে ভাবে চলিতেছি এ ভাবে হইলে ত ধর্মসাধন হইবে না। আমরা সংসারের সেরা করিতেছি. व्यामारमञ्जलिको हिना याहेर अरह । এ ভাবে इहेरल हिना ना व्यान मिट्ड हरेरन। जकन मिट्न जाधुनरावत्र वहे वकहे कथा। বিদেশীয় সাধু যীশু বলিয়াছেন; "যারা পরমেখারের জক্ত প্রাণ দের তারা প্রাণ পার।" উপনিযদে একটা আধ্যায়িকা আছে। আপনারা আথ্যায়িকাটীর থোসা ফেলে শাস গ্রহণ করুন। ष्माचात्रिकांने এই,--- এकवात्र अहे महायरक्कत्र ष्मारत्रावन हत्र।

**ठक्**, कर्ग, প্রাঞ্তি মানবদেহের বৃত্তিসমূহ এই বজ্ঞের **অমু**ষ্ঠান করেন। যজের মন্ত্র, "অসতোমা সদামর, তমসোমা জ্যোতির্গ-मज, ... .. ইত্যাদি।" প্রথমতঃ যজের হোতা হইল চকু। চকুর বড় অহহার। সেমনে কবিল আমি কত কি দেখি, আমি না থাকিলে সমুদায় জগত অন্ধকারময় হইত। চকুর **এই ष्यरकात रखगारा यक १७ रहेन। उ९ भरत कर्ग प्रा**मिन, তাহারও এইকপ অহম্বার হওয়াতে যজ্ঞ পণ্ড হইল। ক্রমে ক্রমে রসনা প্রভৃতি অপরাপর বৃত্তিসমূহ আসিলেন। তাঁদেরও যজ্ঞ পও হইল। কি হইবে, সিদ্ধিলাভ (য হয না৷ একজন বাকী ছিলেন। তিনিকে? তাঁহার নাম প্রাণ। শেষে প্রাণ গেলেন। তাঁহার অহলার হটল না। তিনি সিদ্ধিলাভ চকু, कर्न, तमना, প্রভৃতি ই ক্রিয়গণ অহলাবেই মন্ত, যজ্জদিনি হইবে কেন ? যথন প্রাণ যায় তথনই হয়। "হে প্রভা, "অসতোমা সদাময়, ইত্যাদি" কাণ, চকু বসনা কভবার বলিণ, কিছুই হইল না। যপন প্রাণ গিয়াই বলে তথনই হব। কেন হয় ? প্রাণের কোন স্বার্থ নাই। প্রাণ সকলেব জন্ম আয়ু-বলি দিতে প্রস্তুত। মস্তকেব কেশ ২০তে পদাস্থলি প্র্যাস্ত প্রাণ পবের জন্ম দিতে প্রস্তুত। প্রাণ কণ্ঠ ত্যাগ স্বীকার করিয়াছে। নিমার্থ প্রাণ যথন প্রার্থনা কবে "অস্তোমা স্লাময়, ইত্যাদি" তথনই প্রকৃত প্রার্থনা ১ব এবং তাহা সুসিদ্ধ रुग। नाक मूथ চোক প্রার্থনা কবিলে কি হইবে। যতক্ষণ কথার সাধক ততক্ষণ তাহাব সাধনা হয় না। প্রাণ দিয়া করে তথনই হয়। বড় বড় শক্ত শক্ত কথা বলিয়া नाधन कतिरल हे रुग्नन।। ध्यान ना मिर्टन रुहेरव ना। পরিবারের মধ্যে সবাই থাইতেছে সব।ই পরিতেছে। যদি একজন এমন থাকে যে কেবল অভ্যের স্থের জন্ম হাত আর সকলে কেমন করিয়া স্থে থাকিবে, এই যাহার চিন্তা, যে সকলের স্থা স্থী ছাথে ছ:থী, সেই পরিবারের প্রাণ। প্রাণের মভাব স্বার্থত্যাগ। আমাদের ত্রাহ্মসমাজের প্রাণ কে ছইবে। যে স্বার্থ ভূলিবে, অপরের জন্ম থাটিবে তাহাকেই প্রাণ বলিব। যিনি নি:স্বার্থ হিতৈষী, দেশের মধ্যে, জাতির মধ্যে তিনিই প্রাণ। সাধনে পরের জন্ম আহাণ দেওরা চাই। যদি প্রবল শত্রু জাসিয়া বলে "তোমার আহ্মধর্ম, আহ্মসমান্ত, ছাড়িতেই হইবে নডুবা এই ভরবারির দারা ভোমার মস্তক কাটিয়া ফেলিব। আগুনে তোমায় দগ্ধ করিয়া মারিব।" যদি আমি জরবারীতে প্রাণ দিই, চিতানলে পুড়ে মরি, তাহা হইলে প্রাণ দেওয়া হইল। ষদি বল মরিতে হয় মরিব, তবুও সত্য ছাজিব না, ভাহা হইলেও প্রাণদেওয়া হইল। "শির দিয়াশির নাহি দিয়া।" এ এক রকম প্রাণ দেওয়া। আর এক রকম প্রাণ দেওয়া আছে ঘাহা প্রতিদিন দিতে হয়। প্রতি পদক্ষেপে পরের স্থের জন্ত তোমার প্রাণটী দিতে হইবে। দ্বিদ্রতার কশাঘাতে ছট ফটকরিতেছ। তবু অসজ্পায়ে অর্থোপার্জন করাকে খুণা কর, ভগবানকে প্রাণ্টী একেবারে দিয়া ফেলিরাছ, দরিক্তা আন্ত্ৰক, স্থ আস্ত্ৰ ছাথ আস্ত্ৰ, সক্ল অবস্থাতেই তোমার প্রাণ ভগবানের দিকে। এই যে প্রতিধিনের স্বাস্থ বলিদান,

এ বড় ভর্মর প্রাণদান। হে ব্রাহ্মগণ, ভোমাদিগকে এই থ্রাণদান করিতে হইবে। বদি পার তবে ভাল, নতুবা কিছুই হইল না। প্রতিক্ষণে পরের স্থের জন্ত আত্মবলি দিতে হইবে।

উপাসনা শেষ হইলেও প্রায় রাত্রি ১১টা পর্যাস্ত সকলে ভাবে বিভোর হইরা কীর্ত্তন করিলেন। এইরূপে গ্রান্ধ ইতিহাসে স্থপ্রসিদ্ধ ১১ই মাবের মহোৎস্ব সম্পন্ন হইল।

১২ই মাঘ, ২৪শে জাসুয়ারী, বুধবার—আজ সাধনাশ্রমের উৎসব। গত বৎসব এই দিনে ভক্তিভাকন শ্রীমনাহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহাশয় পরিচারকগণকে ভভাশীর্বাদ করত: সাধনাশ্রমের প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন। এক বংসব পূর্ব্বে এই দিনে ব্রহ্মকুপা অজ্ঞর্যারে ব্রাহ্মসমাজেব উপর বর্ষিত হইয়াছে। ১১ই মাবের স্থায় এই দিনটীও ত্রাহ্ম-সমাজেব ইতিহাসে অমবত্ব লাভ কবিয়াছে। ওয়াকাবিগণ অতি প্রত্যায়ে সংকীর্ত্তন কবিতে করিতে ছই একটী ব্রাহ্ম বাটীতে গমন করেন। তদনস্তর সকলে মন্দিরে সমাগত হইয়া যতক্ষণ রজনীব অন্ধকাব ছিল ততক্ষণ সংকীর্ত্তন করেন। প্রাত:মুর্যাব অভাদয়েব সঙ্গে সঙ্গে চতুর্দিক আলোকিত হইলে मिन्दित वहालारकत ममागम इहेल। प्यत्नरक है हैहात शृद्ध আসিয়া কাঁর্ত্তনে যোগ দিয়াছিলেন। গত বৎসর যে অজ্ঞ্জধাবে ত্রদারপা বৃষ্টি হইয়াছিল, ওয়াকাবগণ তাহার সমূহ সন্ধাবহার कविष्ठ পাবেন नाहे, उाहावा मण्णुनंत्राप जगविष्ठाव अधीन হহতে পাবেন নাই, সম্পণকপে স্বার্থ, নিজম্ব নাশ কবিতে পাবেন নাই বলিয়া, ক্ষোভ অমুতাপে দগ্ধ হইয়া মন্দিগ্নে উপস্থিত হুইয়াছেন। তাঁহাবা ভাবিভেছেন এবার কি আবার সেইরূপ ক্লপান্ত্রোত প্রবাহিত হইবে—আবাব কি আমরা সেই স্রোতে ভাসমান হইয়া জন্মেব মত স্বার্থপ্রতার উচ্ছেদ সাধন ক্রিতে পাবিব। এইকপে তাঁহাদের হৃদয়ে বুগপৎ কোভ অমুতাপ, আশা ও বিশ্বরের তরঙ্গ উঠিতেছে, এমন সমরে পূর্ব্ব নির্দেশ অমুদারে একজন গাইয়া উঠিলেন, "শোন বে শোন বে তাঁর বাণী।" গত বৎসর এই মহাসঙ্গীডের মহাশক্তিশালী বাক্যে সকলের জনমে তাড়িত প্রবাহ ছুটিয়াছিল, এবার কি কিছুই হইবে না ? অবশ্ৰই হইবে। এই কীশুন্টী গাহিতে গাহিতে অনেকে মাতিরা উঠিলেন। ওয়ার্কারদের অনেকের ভাব উচ্ছ সিত श्रेता छिति। वहकन गान श्रेटल छेभामना आत्र इहेन,। সাধনাশ্রমের তত্তাবধায়ক শ্রীযক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় উপাসনা कतिरान । উপাসনাত্তে এ যুক্ত বাবু शक्तमान চক্রবর্তী, শ্ৰীযুক্ত ভাই প্ৰকাশদেব, শ্ৰীযুক্ত বাবু আদিনাপ চটোপাধ্যায়, শ্রীযুক্ত বাবু কাশীচন্দ্র ঘোষাল এই আশ্রম সম্বন্ধে স্ব স্থ জীবনের অভিজ্ঞতা ব্যক্ত করিয়া ভগবৎ-ক্লপার সাক্ষ্য প্রদান করিলেন এবং প্রার্থনা করিলেন। তদনস্তর পঞ্চাব নিবাসী জীযুক্ত বাবু इत्रभत्न मात्र क्रेचरत्त्र इस्ड ज्यापनारक नमर्पन क्रियान এবং মহিলাদিগকে কার্য্যক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইবার জক্ত আহ্বান করিয়া প্রার্থনা করেন। জলপাই ওড়ির প্রীযুক্ত মুন্সী জালাল-প্রার্থনা করিলেন এবং স্বীর জীবনের |

অভিজ্ঞতা ও অভাবের বিষয় কিছু কিছু বলিলেন। ভাহার পর সাধনাশ্রমের নিভ্যপাঠ্য স্থোত্রটী পঠিত হইয়া উপাসনা শেষ হইলেও ১২টা পর্যাস্থ কীর্ত্তন চলিল। সকলে প্রায় উন্মত্ত হইয়া উঠিলেন। কিন্তু ১টার সময় আলোচনা হইবার কথা ছিল বলিয়া কীর্ত্তন বন্ধ হইল।

টো বাজিলে আলোচনা আবস্ত হইল। প্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত মহাশর সভাপতির আসন গ্রহণ করিলেন। প্রীযুক্ত
পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশর ব্রাহ্ম-বালিকাদিগের শিক্ষা
সম্বন্ধে একটা প্রবন্ধ পাঠ কবিলেন। তাহা স্থানাস্তবে
প্রকাশিত হইবে। প্রবন্ধ পাঠান্তে যে আলোচনা হয়,
তাহাতে অনেকে যোগ দিয়াছিলেন। কেহ বা বালিকাদিগেব
বিশ্ববিদ্যালয়ের অবলম্বিত প্রণালীতে শিক্ষা দেওয়ায সপক্ষে
কেহবা তাহাব বিপক্ষে মত প্রকাশ করিলেন।

সায়ংকালে শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাপ শাল্পী মহাশয় "প্রাচ্য ও প্রতীচ্য ধর্মা" বিষয়ে বক্তৃতা কবেন। ২ ঘণ্টাব অধিককাল বক্তৃতা হয়। বক্তা প্রাচ্য ও প্রতীচ্য ধর্মেব বিশেষ বিশেষ ভাব নির্দেশ করিয়া তাহাদেব সমাবেশেব প্রযোজনীয়তা প্রতিপন্ন করিয়াছিলেন।বক্তৃতা অন্ত স্থানে প্রকাশিত তইবে।

১৩ই মাঘ, ২৫শে জানুযারী, রহস্পতিবার— প্রাতে উপাসনা হয়। বাবু নীলমণি চক্রবর্ত্তী মহাশ্য আচায়ের কার্য্য করেন এবং "ধর্মজীবনে নিবাশা" এই বিষয়ে উপদেশ প্রদান করেন। তাঁহার উপদেশেব সাবমর্ম্ম এইরপ,—

"ক্ষেক্ দিন ধ্বিয়া আম্বা মাঘোৎস্ব উপভোগ ক্বিয়া হৃদয়ে কত আনন্দ লাভ কবিয়াছি। ত্রন্সরূপা স্পর্ণে আমাদেব প্রাণে কত আশা এবং উৎদাহ জাগিয়া উঠিয়াছে। পাপ তাপের কথা আমরা এখন ভূলিয়া গিয়াছি। কিন্তু এই ভাব হয়ত অধিক দিন থাকিবে না। গত বর্ষে হয়ত অনেকে অনেক সময় শুক্ষতার মধ্যে প্রিয়াছেন। আবাব আগামী বৎসবে হয় ত অনেককে শুক্ষতাব মুধ দেখিতে চইবে। যতদিন না প্রকৃতভাবে ধর্মজীবন গঠিত হয়, তত্দিন সময়ে সময়ে ভদ্ধতা বা সরস্তা, সময়ে সময়ে উৎসাহ বা নিরুৎসাহ আসিবেই ° আসিবে। কিন্তু ইহাব মধ্যে এক বিপদ আছে। এইকপ শুক্ষতার মধ্যে সময়ে সময়ে নিবাশা আসিছে পাবে। নিবাশা ধর্মজীবনের পথে ঘোর শক্ত। চিবরুগ্ন ঘাহারা, তাহারা অনেক मिन धतिया **ज्यानक धाकांत्र** छेयथ मितन कतिया, शाथाव ज्यानक নিয়ম পালন কবিয়া যথন দেখে যে, বোগের কিছুই উপশম হইতেছে না,তথন ভাহাদের আর আরোগ্য লাভের আশা থাকে না, অথবা ঔষধের উপকারিতাতে আর বিশ্বাস থাকে না। ক্রমে ক্রমে কুপণ্য করিয়া ভাহাদের রোগ বৃদ্ধি হয় এবং শেষে তাহারা হয় ত মৃত্যুমুখে পতিত হয়। সেইকপ শুদ্ধতার মধ্যে কাহারও কাহারও মনে হইতে পারে যে, এতদিন এত উপাসনাদি সাধন ভজন করিলাম, কৈ পাপ ত গেল না, কিছু ত হইল না। তেবে বৃশ্ধি পাপ আর যাইবার নম, অথবা উপাসনার क्लान ७ जेन ना है, अब क्लान वित्न गायन अवनयन

ক্রিতে হইবে। এইরূপ নিরাশার অবস্থার মধ্যে পড়িয়া কেহ কেহ হয় ত একেবারে উপাদনাদি ত্যাগ করিতে পারেন এবং কেহবা অন্ত প্রকার সাধনপ্রণালী আশ্রর করিতে পারেন। ইহাতে বিশেষ আধ্যাত্মিক ক্ষতি হয়, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। এইরূপ নিরাশার হুইটি কারণ অনেক সময়ে দেখা যায়; ঈশ্ববের করুণাতে অবিশ্বাস এবং তাঁহার মঙ্গল-ভাবের উপর নির্ভরের অভাব। অনম্ভ মঙ্গলময় তিনি, ৰাহাতে আমাদের প্রকৃত মঙ্গল হয়, তিনি ত তাহাই বিধান করিতে-ছেন। আমবাকি জানি? আমরা যাহাকে অমঙ্গল বলিয়া কলনা ক্রিয়া কত ভীত হই, কিছুদিন পরে হয় ত বুঝিতে পারি যে, তাহারই মধ্যে আমাদের প্রকৃত কল্যাণ নিহিত ছিল। আমরা যাহাকে 😊 জ মরুভূমি বলিয়া মনে করি, হয় ত ভাহারই মধ্যে স্থশীতল বারিস্রোত লুকায়িত রহিয়াছে। **৺াকুতভাবে কিদেব দাবা আমাদের মঙ্গল হয়, তাহা কি** আমরা জানি? যে ভূকতাব মধ্যে প্ডিয়ানিবাশ ইইতেছি, হয় ত তাহাবই পশ্চাতে তাঁহাৰ অপাব কৰুণা লুকায়িত বহিয়াছে। অতীত জীবনেব দিকে চাহিলে আমবা কি দেখিতে পাই ? আমবা কোথায় ছিলাম, তিনি আমাদিগকে কোথায় আনিযাছেন ? জাবনেব এত বৎসৰ এ ভাবে কাহাৰ ক্লপায় চলিয়া নেশ ২ তিনি কি আমানিগকে পবিত্যাগ কবিতে পাবেন ? আমবা যভই পাপগ্রন্ত হই না কেন, তাঁহাব কফণাব অনুপ্রক আমিবা কিছুতেই ২ইতে পাবি না। সংসাবের জননী গেমন প্রস্থান অংগ্রে। আগেনার ক্র শিশুকে অধিক যুত্র কলেন, স্থানন না বে.গা দুব হয়, ততদিনা ভাহার কাছে বিসিয়া ৰণেকেন, ৰতাৰন না তাহাৰ ধ্বাগ্ছান্ত মলিন মুথে স্বস্থতাৰ ावका भ इंग्र, ज्ञानन कांश्व भरन ष्यानम इंग्र मा। (महेक्प আমাদের আগ্নার জননা বিনে, আমাদের অমবালা বাঁহার অনত-ক্রেড়ে চিবকাল বাস কবিবে, পাপগ্রস্ত আত্মাকে তিনি ক্ষনও পরিত্যাগ করেন না। তাঁথার শন্তান হইয়া মানবাত্মা পাপে মালন নোগাৰ छात्र बहेगा থাকিবে, ইহা তিনি দেখিতে পাবেন না। যত দিন না সেই আথা আপনার স্বাভাবিক পুণ্যের জ্যোতিতে উজ্জ্ব ও স্থানর হয়, তত্তিন তিনি ক্ষাম্থ হিহতে পাবেন না। পাপার উদ্ধাব সাধনের জন্ম তিনি সর্বাণা বাস্ত। পাপীব উদ্ধাবের জন্তই তিনি আন্ধর্ম পাঠাইয়াছেন। পাপীকে আশ্রা দিবার জ্ঞাই ব্রাহ্মসমাজের অভ্যাদয় ইইয়াছে। चामता एउटे इन्सन ७ वाली बहुना, चामारमत कीवरन गाहा ঘটিয়াছে তাহা তিনিই কবিয়াছেন। আমরা যে পথে আসি-ब्राह्मि जिनिहे ज्यानिबाएछन, ज्यामाएनत याद्या याद्या व्याद्याजन ভিনিই দিয়াছেন। তবে কেন আমবা নিরাশ হইব ? ওক্তা বা সরসভা, জুর্মলভা বা স্বল্ভা স্কল অবস্থায় মধ্যে ভাঁছার কঙ্গণতে বিশ্বাস করিয়া তাঁহার নঙ্গলভাবের উপর নির্ভর করিয়া পড়িয়া থাকিব। তাঁহার এত করুণা উপভোগ করিয়া যদি তাহাতে অবিশাসী হই, তবে ঘোৰ নান্তিকতা অপরাধে ष्म भारती इरेव। यिनि अधिमिन कीवन ठानारेट छ हन, व জীবনের ভার তাঁহার হাতে। এইরূপ বিখাদ থাকিলে আর নিরাশা আসিতে পারিবে না।

অপরাহে মনিরে বালক वानिका-निधनन रहा। श्रीप्र ছয় শত বালক বালিকা হুন্দর সাজে সজ্জিত হইয়া মিলিত হইয়াছিল—ভাহাদের সে দৃশ্র কি মনোরম! সকলে সন্মিলিত হইলে প্রভ্যেকের গলায় ফুলের মালা দেওয়া হয়। প্রথমত: তাহারা একটা সঙ্গীত করে পরে জীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় শিশুদিগকে তাহাদেব উপযোগী একটী স্তুপদেশ দেন এবং তিনি ডাক্তার নীলরতন সরকাব মহাশয়ের পরলোকগতপুত্র নির্মালবতনের নাম উল্লেখ করিয়া বলেন "নির্মালেব পিতা ও মাতা নির্মালের মৃতিচিক স্বরূপ তোমাদিগকে পুষ্প উপহাব দিবেন।" তিনি যথন এই কথার উল্লেখ করেন তথন সেই বালকের শ্বতি মনোমধ্যে উদিত হইয়া উপস্থিত ব্যক্তিগণেব চিত্তে এক অপূর্ব্ব ভাবের উদয় করি-য়াছিল। শাস্ত্রী মহাশয়ের উপদেশেব পর পুল্পোপহার দেওয়া হয়। তদনন্ত্ৰ তাহারা সকলে আনন্দ্ৰাজ্ঞাবে আনন্দে আহার কবে। ডাব্রুার নীলরতন সরকার মহাশয় ইহার বায়ভার বহন करत्रन ।

সায়°কালে ছাত্র-মাজের উৎসব উপলক্ষে শ্রীযুক্ত বাবু নগেল্ডনাথ চটোপাধ্যায় মহাশয় "নীতিহীন ধর্ম ও ধম্মহীন নীতি" বিষয়ে বক্তা কবেন। বক্তাটীব বিবরণ না পাওয়াতে প্রকাশ করিতে পাবা গেল না।

১৪ই মাঘ, ২৬শে জানুরারী, শুক্রবার—প্রাতঃ-কালে মন্দিবে শ্রীয়ক বাবু কালীপ্রসর বস্থ মহাশয় উপাসনা কবেন তাহাব উপদেশেব সাব মর্ম:—

যোগের অর্থ ঈশবের সহিত যোগ কাছাকে বাল গ মানবায়াব সন্মিলন। বিশ্বসংসারে যোগ সামঞ্জ দেখা যাইতেছে। প্রমাণ্ডে প্রমাণুতে সংযোগ ক্রিয়া **ঈশ্র** জগং উৎপন্ন কবিয়াছেন। তাগবই ইচ্ছাতে এথানে यभुष्यम् मुद्रे इहेरहरह। যদি আমরা তাহার ইচ্ছামুগত হইষা চলি, ভাহা হইলে সমুদ্ধ বিশ্বসংসাবে যে যোগ-সামঞ্জ एतथा गाइँटिएइ, छाठाउँहे महिल आमाएनव खेका হইয়াচলা হইল। যদি তাঁহার ইচ্ছান্ডগত না হই, তাহা হইলে অনেরা যোগলুট হইয়া সংসাবে বিশ্বালা আনিলাম। এই প্রকাব বিশুঘল। আসাতেই সংসাবে ওংখেব মাতা বাডিয়াছে, স্থার মাত্রা কমিয়াছে। ফলতঃ অতিরিক্ত মুখ-কামনা কবিয়া আমবা সংসারের বিশ্রালা উৎপন্ন করিভেছি. इः स्थित भावा निष्क कति एक हि। इः स्थित चः न. स्टूर्यत चार्न ঈশ্ব সমুদ্ধ মাত্রদের জক্তই রাথিয়াছেন। কিন্তু আমরা নিজ স্থাবৰ অংশে সৃত্ত থাকিতে না পাৰিয়া প্রমেশ্বর অভ্যের क्या (य स्थाय वाश्य त्राथियाहिन काशांक शक मिर्क याहे। এই প্রকারে অক্টের স্থথে হন্তক্ষেপ করিয়া আমরা নিজেই কি সুখী হইতে পারি? তাহাও পারি না। অতিরিক্ত সূপ कामना ना कतिया, देखत ज्यामानिशत्क याहा वतन यनि जाहाहै করিতাম, তথ কিমা হঃথ ঈশ্বর আমাদিগকে যাতাই দেন না त्कन, उाहाहे आमारित लाभा आः विवा यि भिरदाधारी। क्रिया नरेजाम, जारा रहेल आमन्ना निष्क्र स्थी रहेजाम, অগ্রকেও সুথী করিতে পারিতাম। আমাদিগের উচিত যে আমরা সম্পূর্ণরূপে ঈশবের বাধ্য হই। এইরূপ পূর্ণ বাধ্যতা আমাদের

बींवरनत मृन मञ्ज र अया छिठिछ । ज्यामानिरगत देवतागा अहे বাধ্যতার অন্তর্গত হওয়া আবশ্রক। বৈরাগ্যের নিজের কোন মুল্য নাই। যে বৈরাগ্য বাধ্যভার অন্তর্গত নহে ভাহা অনিষ্ট-कांत्री, ভাষাতে পাপ হয়। আমাদিগের দেশে নগ্ন সন্ন্যাসী-দল এই প্রকারে বৈরাগ্যের আচরণ করে। তাহাদিগের গৈরিক বস্ত্র, কটাজুট, এবং ভস্মাচ্ছাদিত কলেবর তাহাদিগকে এক প্রকার ভয়ানক মূর্ত্তি প্রদান করে। এই মূর্ত্তি দেথিয়া আমা-দিগের বালক বালিকারা অত্যন্ত ভয় পায়। ছ:খের বিষয় ব্দনেক ব্রাহ্ম ইহাদিগের বাহির দেখিয়াই ভূলিয়া যান। তাঁহার৷ উপদেশ শুনিবার জন্ম ইহাদিগের নিকট যাদৃশ বিনীত ভাবে দণ্ডায়মান হন, গ্রাহ্মসমাজেব কোন উপদেষ্টার নিকট হয়ত কথনও দেইরূপে উপস্থিত হন নাই। ব্রাহ্মসমান্ত্রের কত উপদেষ্টা পূর্ণ বাধাতার পথ গ্রহণ করিয়া, যথার্থ প্রেমিক এবং ভক্তের ভায়ে যাহাতে ঈশ্বব প্রতিষ্ঠিত ব্রাহ্মসমান্স রূপ পরিবার পৃথিবীতে বঞ্জায় থাকে, তজ্জ্ম ব্রাহ্মসমান্তের এই ছঃসময়ে প্রাণপণে খাটিতেছেন। আমবা হাহাদিগকে প্রেমিক ভক্ত যোগী বলিয়া বিবেচনানা কবিষা কি মাদক-দেবী নগ্ন সন্ত্রাসী দলকে কিম্বা বঙ্গদেশেবকপট বৈবাগীনিগকে তাহা বিবেচনা কবিব ৭ বাঁহাবা পিতার ঘর বঞ্চায় বাণিবার জন্ম শরীবেব বক্ত জল কবিতেছেন, আমি পিতাব সেই সুধী প্ৰাদিগকেই त्यांशी विनिवंश किया जाशां मिश्र करें त्याशी विनिव, याशांवा নোগের হৃত্ত্বক তুলিয়া পিতাব পবিবার ছিম্ন ভিন্ন করিয়া পিতার ঘর ভাঙ্গিষা সল্লামী হইবা চলিয়া ঘাইতে চান প **(मरबाक** निगरक कथन हे रयानी विनाट भावि ना, ववर विरम्नानी বলিতে পারি। যোগের অর্থ মিলন। ভূমি সমুদ্য প্রাণের সহিত, মনেৰ সহিত, হৃদ্যেৰ সহিত প্ৰমেশ্বকে ভাল বাস। व्यवः नवनावीत्क छाडे छानेनी विलया तथ्रम कव, इंडाडे त्यार्गव মূল ফুর। ভালবাদার স্বাভাবিক গতি মিলনের দিকে-যোগের দিকে। কিন্তু যাহ'বা পিতাব ঘর ভাঙ্গিয়া দিতে প্রস্তুত, তাঁহাবা কেমন প্রেমিক— কমন যোগী। ভাই ভগিনী আক্ষমাঞ্চেৰ এই চবাৰ্ণাৰ সময়ে বাহাৰা প্ৰকৃত শ্রদার পাত্র, যাঁহারা আমাদের পরিচালক হইবার যোগ্য তাঁচাদিগকে চিনিয়া লইবেন। ঈশবেব মেষদল যেন ছিল ভিন্ন না হটতে পাবে। তাহা হ'লে বিপদ এবং মতা আসিবে। যেমন প্রমাণুতে প্রমাণুতে গ্রথিত করিয়া भेषत उन्नाख छेरशम करिलन, भारति ममुनग्र नवनातीक একত্রিত করিয়া তিনি জগতে মহা পরিবারে মহাযোগ উৎপন্ন কৰিবেন। আমরা তাঁছারই কোলে ভাই ভগিনীকে **(मथिया, এবং ভাই ভগিনীতে তাঁহাকে নিরীক্ষণ করি**য়া कु उर्थि हहेत्। स्नेश्वत जाहाहे कक्रन।"

সায়ংকালে বাবু শশিভ্ষণ বস্থ উপাসনাব কার্য্য করেন এবং জগতের ধর্মাচার্য্যদিগের বিষ্য়ে উপদেশ দেন। তাঁছার উপদেশের মর্ম্ম এই:—সময়ে সময়ে পৃথিবীতে ঝড়ের যেমন বিশেষ প্রয়োজন হয়, তেমনি মানব সমাজেও বিশেষ বিশেষ ক্ষমতাশালী বাক্তিরও আবেশ্যক হইয়া থাকে। সেই সকল বীর পুরুষ সমাজে মহাবিপ্লব উপস্থিত করিয়া থাকেন। তাঁছারা সমাজের

স্রোতকে অস্তু দিকে ফিরাইরা দেন। এই সকল মহৎ লোক জগৎকে আন্দোলিত করিয়াছিলেন, এবং নিজেদের উদ্ভাবনা শক্তিদারা অনেক নৃতন সত্য জগতে প্রদান করিয়াছিলেন।

- (১) মুষা। ইনি রিছদী জাতির মধ্যে ঘোরতর পরি-বর্ত্তন উপস্থিত করিয়াছিলেন। মহান্ প্রমেশ্বরের নাম প্রচার করিয়াছিলেন। সিনাই পর্বতের উপর হইতে যে দশ আজ্ঞা প্রচার করিয়াছিলেন, তাহার প্রথম আজ্ঞা এই যে পরমেশ্বর ব্যতীত অন্ত কোন দেব দেবীব নিকট মন্তক অবনত করিও না। মুবাই ইজ্রেলেব বংশেব পরিত্রাভাসরপ হইয়া তাহাদের অশেষ কল্যাণ করিয়াছিলেন।
- এই প্রবল প্রতাপান্তি ব্যক্তির (২) শাক্য মূনি। বিষয় যত পাঠ ও চিন্তা করা যায়, ততই মন যেন গান্তীর্যারসে পূর্ণ হইয়া উঠে। আজ কাল ইযুবোপ ও আমেবিকা প্রভৃতি হুসভাজগতে বুদ্ধের জীবন ও ধর্ম সম্বদ্ধে অনেক পণ্ডিত ব্যক্তি বিশেষ রূপে আলোচনা কবিতেছেন, এবং অনেকে ইহাকে মহাত্মা গ্রীষ্ট অপেক্ষা 🛊 উচ্চস্থান প্রদান করিতেছেন। ম্বর্গীয় পণ্ডিতবর Renan সাহেব তাঁহাব স্থবিখ্যাত গ্রীষ্টের জীবন চবিতে" মহর্ষি ঈশার গুণ কীর্ত্তন করিবাব সময় বুদ্ধেব नाम উল্লেখ ना कविया काछ बाकिए शासन नाहै। এক স্থানে বলিতেছেন "No man has trampled under foot the family joys, the happiness of this world (sakyamuni excepted)" অথাৎ কোন মানব পৃথিবীৰ छव धैचर्या शामनान कविष्ठ ममर्थ इन नाहे (भावा मूनि বাভীত)। একদিক হইতে দেখিতে গেলে এত বভ মহা পুৰুষ বোধ হয় স্থাব পৃথিনীতে জন্মগ্রহণ কবেন নাই। সিংহের জীবনে একটি বছ আশ্চধ্য ব্যাপার দেখা যায়।(প্রোফে-সাব) মোক্ষমূলর এক স্থলে লিখিয়াছেন যে তাঁহাবং লিষা বুন্দ একবার তাঁছাকে বলেন, "পৃথিবীর সকল মহাপুরুষ क्लान कालोकिक वालाव अन्यन कविया शाकन. আপনিও আমাদিগকে কিছু দেখান।" তাহাতে শাকা মুনি বলেন, "Confess before Men the sins you have committed, that is the true miracle ,—"গোপনে य সকল পাপ কবিয়াছ তাহা জগতের কাচে প্রকাশ কব, তাহাই অলৌ, কিক কার্যা" কেমন স্বল্ভা। তাঁহার জীবন ধ্যান্প্রায়ণ ছিল। নিস্তন ও গম্ভীর ভাবে তিনি নিজ আত্মাৰ মধ্যে প্রবেশ ক্বিভেন। অনেকে বলেন তিনি নিরীশ্বর্বাদী ছিলেন, ইচাকখন বিশ্বাস কৰা যাইতে পাৰে না। নিৰ্ব্বাণ অৰ্থে ত্রক্ষে লীন ছওয়া। বর্তুমান সম্যে চাবিদিকে যেকপ বিষয়ের কোলাহল, তাহাতে শাকামুনির ধাান অমুসরণ করা আমাদের বিশেষ প্রয়োজন হইয়াছে। তাঁহার অপূর্ব্ব বৈরাগ্যের বিষয়ও আমাদের বিষয়-বাসনাপুর্ণ সময়ে বিশেষরূপ চিন্তা করা আবশুক। শাকামনি তপস্যাববলে ষড়বিপু দমন করিয়াছিলেন। তিনি যথন সাধন-সিদ্ধ হইয়া প্রচারে বহির্গত হন, তথন সেই ধর্মবীর नियानिशतक मासाधन कतिया वनियाहितन, "मन्त्रामीत नन, আমি ফুর্জন্ব রিপু সকল দমন করিতে কৃতকার্য্য হইরাছি। আশা করি, তোমরাও আমার স্থায় জিতেম্রির ইইয়া'দেশ

বিদেশে নির্বাণ তত্ত্ব প্রচারে রত থাকিবে।" তাঁহার ছর্জ্জর প্রতিক্তা-বল ছিল। যথন তিনি গভীর নিশীথে গৃহ পরিত্যাগ করেন, এবং তাঁহার প্রিয় অস্কচৰ ছন্দক তাঁহার মহান্ রভের পথে বিদ্ন শ্বরূপ হইয়া দণ্ডায়মান হন, তথন তিনি বলিরা ছিলেন, "যদি মন্তকে শিলার সহিত বৃষ্টি পতিত হয়, ধাতুপূর্ণ স্মাগ্রেয়গিবি যদি মন্তকে ভাঙ্গিয়া পড়ে, শক্তির শেল সম কুঠাব যদি মন্তকে বিদ্ধ হয়, তথাপি আমি কথনও গৃহে থাকিব না।" এই ছই প্রতিজ্ঞার কথা শ্রবণ করিয়া ছন্দক অবাক হইয়া বহিল। শাক্য সিংহের জীবন অন্তুত ঘটনায় পূর্ণ। গ্রীষ্ট জন্মিবার ৫০০ বংসব পূর্বে তিনি অপ্র্বে ত্যাগন্ধীকার, বৈবাগ্য, জনস্ত প্রিত্রতা, অসাধারণ প্রতিজ্ঞা ও নরনারীর কল্যাণের জন্ম জীবস্ত প্রচারেব ভাব দেখাইয়া গিয়াছেন।

৩। সক্রেটিস। ইনি গ্রীসে নীতি-বিপ্লব আন্যন কবেন। এই মহাপুক্ষ যুবকর্ন্দেব চবিত্রেব উন্নতির জ্ঞ চাবিদিকে স্থানির্মাল নীতি প্রচাব কবিতেন। তথন কোন লোকের চরিত্রেব বিশুদ্ধতা অবগত হইতে হইলে লোকে জিজ্ঞাসা কবিত, "সভ্ৰেটিসূ কি তোমাব চরিত্র নির্মাণ কবিয়া দিয়াছেন ?" তিনি যুবকদিগের গুরু ও নেতা হইয়া যথন নীতির পথে আনিতে ক্বতকার্যা হইলেন, তথন দেশের অসক্তবিত্র **গুট লোকেরা তাহা সহু কবিতে না পারিয়া এই মহাগ্রার** বিৰুদ্ধে ৰাজার নিকট নানা অভিযোগ উপপ্তিত কবিল। সক্রেটিস বাল্প-সমীপে নাঁত হইলে রাজা তাঁহাকে তাঁহাব স্মভি-যোগের বিকল্পে মতামত প্রকাশ কবিতে বলেন। শান্তস্বভাব সক্রেটিস ভাহাতে কোন উত্তর না কবাতে তাঁহাকে কাবাবদ্ধ কবা হয় এবং তাঁহাব প্রাণ বিনাশেব আজা হয়। তিনি যে ক্ষেক্দিন কারাগারে ছিলেন, তাঁহাব অমুগত শিষ্যেবা সর্বাদাই তাঁহাকে পবিবেষ্টন করিয়া থাকিত। তিনি শান্ত প্রফুল মনে তাহাদিগকে পরলোকের বিষয় উপদেশ দিতেন। একবার তাঁহাব কোন শিষ্য এই বলিয়া ছ:থ প্রকাশ কবেন "বিনাদোষে সক্রেটিসের প্রাণদণ্ডের আজা হইল," সক্রেটিস তাহা শুনিয়া বলিলেন, "তুমি কি চাও যে, সক্রেটিস অপবাধ কবিয়া প্রাণ-ভ্যাগ কবে ?" কয়েকদিন পরে তাঁহাকে হেমলক বিষপান করিতে দেওয়া হইল। তিনি স্বহস্তে পাত্র গ্রহণ করিয়া উহা পান कतिरान । मृञ्रा-ममत्र পर्याष्ठ ज्यानन मरन निरामिशरक चर्नधारमञ्ज्ञ विषय छे अर्लन लाम करत्र । व्यवस्थय रहमनक विष मिवन कतिया भयाग्र भयन कतिरलन, किय़ कर भरत তাঁহার কণ্ঠরোধ হইয়া আদিল; তিনি চকু মূদিত করিয়া ইহ-সংসার পরিত্যাগ করিলেন। সজেটিস পুরাকালের একজন প্রধান নীতি-সংস্থারক। ইইার ঋণে গ্রীস দেশের প্রভৃত কল্যাণ সাধিত হইয়াছে। বর্ত্তমান সময়েও সক্রেটিদের ভাষে লোকের বিশেষ আবিশ্রক হটয়াছে।

৪। ঈশা। ইনি পৃথিবীতে এক যুগান্তর উপস্থিত করিয়া-ছেন। ইহার প্রতাপে জগতে কতই ব্যাপার সংঘটত হইরাছে। প্রীষ্টের কীবনে ছইটা প্রধান বিষয় দেখিতে পাওয়া যার; বিশাস ও পবিজ্ঞতা। তিনি শিষ্যদিগকে বলিয়াছিলেন, "যদি তোমাদের সর্বপ কণার ক্রায় বিশাস থাকে, পর্বতকে বলিবে

স্থানাস্তরিত হও, এবং তখনই উহা স্থানাস্তরিত হইবে।" তিনি বিখাসীব চুড়ামণি ছিলেন। তিনি যেন জীবত প্রমেখরকে মানবের সম্মুথে ধরিয়া দিতেন। তাঁহার বিখাসের জীবন व्यामार्गित विरमेष मिक्नांत छल। वर्खमान ममरत्र हातिनिरक যেরূপ সংশয়বাদ, অজ্ঞেয়তাবাদ, প্রবল হইতেছে, এসময়ে খ্রীষ্টের জীবন অধায়ন করা নবনারীর অতীব কর্ত্তব্য। ইহাতে আমাদেব বিশ্বাস থুব দৃঢ হইতে পারে। অন্ত দিকে তাঁহার জীবনে পবিত্রতার ভাব দেধিলে অবাক্ হইতে হয়। তিনি কেমন জোবেব সহিত বলিয়াছিলেন, "যদি তোমাব ডান চকু অভদ্ৰ দৰ্শন কবে, উহা উৎপাটন কবিয়া ফেল, যদি তোমাৰ দক্ষিণ হস্ত কোন অপবিত্র কাণ্য কবে, তাহা কর্ত্তন করিয়া ফেল।" পবিত্রতাব দিকে খ্রীপ্টেব বিশেষ দৃষ্টি ছিল। বলিয়াছিলেন, "নির্মালচিত্ত ব্যক্তিরা ধক্ত কাবণ তাহাবা প্রমেশ্বরের দর্শন লাভ করিবে।" বিশ্বাস ও প্রিত্ত। এই ছই প্ৰম বস্তু সৰ্কানা তাঁহাৰ জীবনে উচ্ছণ ভাবে স্থান পাইয়া ছিল। প্রমেশ্বের পথে গমন ক্রিতে হইলে, এই ছুই বস্তুব বিশেষ প্রয়োজন, বিশ্বাস ও পবিত্রতা।

ে। মহন্দ্রণ। ইনি আবব দেশের উদ্ধাবকর্তা। ইনি
ধন্দ্রংসাবক দিগের মধ্যে ধর্মনীবছের পরিচয় দিগা গিয়ছেন।
বিশ্বাস বলে সক্ষণ। বলীয়ান হইয়া ইনি নিজ ব্রতপালনে সর্ক্ষণা
বত থাকিতেন। মহন্দ্রদেব বীবছের কথা স্মন্থ করিলে
শ্বীব যেন বোমাঞ্চিত হয়। ইনি যথন মহান্ প্রমেশ্বের নাম
প্রচারে বত হন, তথন আবর দেশের অজ্ঞ ও পৌত্তলিক নরনাবাবা ইহার পরম শক্র হয়য়া উঠিয়াছিল। এই শক্রক্লে
পবিবেছিত হইয়া এই ধন্মনীর কাবার মন্দিরমধ্যে গমন
ক্রিয়া প্রলদ্গের মন্তকে হল্ত রাথিয়া বলিতেন "সত্য
আসিয়াছে এখন মিথাা তিরোহিত হউক।" এই বলিয়া শিয়্যদিগকে তাহা ভয় করিতে বলিতেন। কি বীর্ছ! আমরা
লোকের ভয়ে—সমাজের ভয়ে কত বিষয় সত্য বলিয়া বুয়িয়াও
তাহা পালন করিতে পারি না। মহন্দ্রদের জীবন আমাদিগকে
এই শিক্ষা দিতেতে, যে নিভয়ের মহান্ পরমেশ্বের নাম প্রচার
ক্র—নিভয়ের সত্যের ঘোষণা কর।

অবশেষে আমাদের ত্রাহ্মসমাজের কথা বলা আবশুক বাধ হইতেছে। যথন এই বঙ্গদেশ অহ্বজারে আছের ছিল, তথন মহায়া বাজা রামমোহন রার নিরাকার পলবক্ষেব নাম ঘোষণা করেন। কত নির্যাতন সহ্য করিয়া তিনি ত্রাহ্মসমাজ প্রতিষ্ঠা করেন। তাঁহার বিষয় অধিক আর কি বলিব, আমরা অনেকেই তাঁহার বিষয় বিশেষরূপে অবগত আছি। তৎপর আমেরিকার দিকে একবার দৃষ্টিপাত কর্মনা, আমরা আমেরিকার নিকট বিশেষ ঋণী। মহায়া থিয়োডোর পার্কার বোষ্টন নগরে একেশ্বরবাদ প্রচার করেন। পার্কারই "Harmonious development সর্ব্ধ সামঞ্জসীভূত উন্নতির" বিষয় কথার এবং কার্য্যে বিশেষ ভাবে দেখাইয়া গিয়াছেন। তাঁহার রাশীক্ষত গ্রন্থ সিরলে আমরা দেখিতে পাই ষে তিনি নানা বিষরে পণ্ডিত ছিলেন। তাঁহার গ্রান্থ, বেমন ধর্মজাব ভেমনি সাহিত্য, বিজ্ঞান দর্শন প্রভৃতি নানা বিষয়ের উল্লেখ দেখিতে সাওয়া যায়। এদিকে যেমন তাঁহার ধর্মামুবাগ ও পাওিতা ছিল, তেমন অপরদিকে দেশহিতৈবণাও ছিল। ভিনি দেশের নানা হিতকব কার্য্যে রত থাকিতেন। দাসত্ব প্রথার বিরুদ্ধে তিনি মহাযুদ্ধ করিয়াছিলেন। এবং তিনিই বিরুদ্ধের বিরুদ্ধে সমব ঘোষণা করিয়ামহান্ নিরাকার পররক্ষের নাম ঘোষণা করিয়াছিলেন। এই সকল কারণে চারিদিকে তাঁহাব শত্রুদল রুদ্ধি ইইয়াছিল। কিছু সেই বীরপুরুষ দিতীয় লুগব সদৃশ হুইয়া কুসংস্কাব, ও নবদেবতার বিরুদ্ধে দমব ঘোষণা করিয়াছিলেন। ইইার জীবনচরিত পাঠ কবা আমাদের একাস্ক কর্ত্রা; বিশেষতঃ ব্রাহ্মসমাজের প্রত্যেকের তাঁহার গ্রন্থ ও তাঁহার জীবন চবিত পাঠ কবা অতীব কর্ত্রা। ব্রাহ্মসমাজ তাঁহার নিকট বিশেষ ভাবে অণী।

অবশেষে মহায়্মা কেশবচন্দ্র সেনের নাম উল্লেখ করা আন্ধ্র আবশ্রুক, তাহা না কবিলে আমবা অক্তত্ত্ব হইব। যদিও সত্তোব অফুরোধে আমরা তাঁহাকে পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইয়াছি, তথাপি তাহার জীবনের বিশেষ বিশেষ ওণ আমাদের শ্বন কবা একান্ত কর্ত্তব্য। কেশবচন্দ্রের জীবনে পবিত্রতাব ভাব বিশেষ ভাবে পবিলক্ষিত হইত। তাঁহার জীবনে Puritanic ভাব খুব প্রবল ছিল। আবাব আন্ত লিকে তাহার মধুব উপাসনা, প্রার্থনা ও উপদেশ সকল আমাদের বিশেষ উপকাব সাধন কবিয়াছে। সেজক্ত তাঁহাব নিকট ক্বত্ত্ব থাকিব। তাহার জীবন চবিত আমাদেব সকলেব পাঠ করা উচিত।

মে সকল মহাপুক্ষের বিষয় এখানে বর্ণনা করা ইইল, উলোৱা জগতে বিশেষ কীর্ত্তি রানিয়া গিয়াছেন। কিন্তু আবেও আনক গোক জগতেব গিশেষ কল্যাণ সাধন কবিয়া গিয়াছেন। আমা গাহানেব নিকটও বিশেষ ক্রভক্ত ইইব। আর যে সকল পোকেব নাম জগতেব ইতিহাসে উল্লিখিত ইয় নাই, এমন সাধু পোকও জগতে আনক জন্মগ্রহণ কারয়াছেন, ভাহার পোপনে প্রমেশ্বের নাম কীন্তন ও গানে জীবন কন্তন ক্রিয়াছেন। সক্ষদশী প্রমেশ্ব উল্লেখিক ক্রিবেন। কিন্তু আমাদের বিশেষ অবন রাখা উচিত যে মহান প্রমেশ্বই মানবেব প্রধান স্থানিয়া, তিনিই গুকুর শুক্ত, প্রম গুকু।

১৫ই মাঘ, ২৭শে জানুয়ারী, শনিবার—প্রাতঃকালে মন্দিরে উপাসনা হয়। রাবু নীলমণি চক্রবন্তী মহাশম
আচার্যোব কাশ্য কলেন। তাহাব উপদেশের মর্ম এই:—
গ্রহ হাল প্রাত্তে এই মন্দিরে কেমন উৎসাহের সহিত্ত
রন্ধনাম কীর্ত্তন হইতেছিল। ব্যাকুলতার ভাবে প্রমেখবের
স্থানস্থাবে মুণ কেমন উজ্জ্ল ও স্থানর হইয়াছিল। ব্রন্ধনাম
এতই মধুর লাগিতেছিল যে অনেক বেলা হইয়াগেল, তথাপি
অনেকে মন্দির ত্যাগ করিতে পাবিলেন না। পথে এক বন্ধর
সহিত্ত সাক্ষাৎ হইল। তিনি বলিলেন "এখন প্রাণে কত
আনন্দ, ক্ষয়ে কক্ত আশা জাগিয়াছে, কিন্তু এই ভাব স্থায়ী

হয় না কেন ? " এই কথা আমারও প্রাণে লাগিল। মনে इंदेन (य मारचारमत्त्र ममग्र च्यामता (यन न्डन इंदेश याहे, ष्पावात करत्रक मिन शरत ष्यामारमव रय हीन मुगा रुप हीन দশাহয়। এই সময় একটা আখ্যায়িকার কণা স্মৰণ হইল। এক সময়ে এক বাক্তি আসিয়া এক ধর্ম প্রচাবককে জিজ্ঞাসা कतिन, "अक्षात्र महासम् । ज्यामि ज्यानक वरमव धविष्ठा न्नेधरवर्ग ,.. निक्र आर्थनानि क्रिया आमिट्हि, নীতিপালন এবং পর্হিত সাধনও কবিয়া থাকি। কিন্তু কিছুতেই আমার **জীবনের প্রিবর্ত্তন ১ইতেচে না আমার পাপও যাইতেছে না।**" এই কথা ভানয়া উক্ত ধর্মপ্রচারক বলিলেন "যাও, গৃহে ফিবিয়া যাও এবং প্রাভূ প্রমেশ্বকে গৌরবান্তি কব।" এই কথার মূলে অমূলা সভা নিহিত বহিয়াছে। যত দিন না আমরা আমাদের ইচ্ছাকে সম্পূর্ণরূপে প্রভূ প্রমেখ্বের ष्यधीन कविट्ड शाविव, यडिंगन ना ष्याशनारमंत्र शोतवरक ভূলিয়া জীবনের সকল কায়োর মধ্যে তাঁহাকে গৌরবাঘিত করিতে শিক্ষা করিব, ততদিন কিছুই হইবে না। আমবা কত সাধন ভজন, কত উপাসনা দঙ্গীত করিয়া থাকি। উৎসব আদে এবং যায়, অগচ আমবা তাঁহার হাতে সম্পূর্ণ রূপে আপনাকে ছাড়িয়া দিতে পাবি ন।। আপনাদের শক্তি ও জানকে আমরা কত বিশ্বাস ববি, আপনাদেব খ্যাতি এবং গৌরবেব জন্ম কত আমবা ব্যস্ত। সকল কার্য্যের সময় কি বলিতে পাৰি—"প্ৰভো! আমৰা নয়, তুমিই গৌৰবায়িত হও গ" ধন্মজীবনেৰ পথে যত প্ৰকাৰ শ্ৰু আছে, ত্ৰাধো অহদ্ধাৰ এবং আত্মাভিমানই প্ৰধান। ইহা ছাডিয়াও ছাডে না। যেব্যক্তি স্বল ছাড়িয়া, স্কল স্বার্থ সুথকে অগ্রাহ্য কৰিয়া সামাভ এক কৌণীন মাত্র ধাবণ কৰিয়াছে, ভাহাৰও কেণিয়ে এই শুকু লুকাষিত হুহুয়া বাস কৰে ভাছা সে বুঝিতে পারে না। অলাক্ষত ভাবে এই আয়াভিমান আমাদেব জীবনে কতই অনুৰ্থ সাধন কৰে, তাহা বলা যায় না। ভিত্বে থাকিলে আলোচনার সম্য সতা নিণ্যের দিকে দৃষ্টি না शंकिया व्यापनाव (जन वजाय वाशिवाव नित्क व्याकाच्या ध्य . বোনও সাধু কার্যা কবিবাব সময় ভাহাব মধ্যে প্রমেখবেব ইচ্ছাজ্পযুক্ত হটক এইরূপ মনে না হইয়া কিলে আমাপনাব গৌবৰ ৰদ্ধিত হয় প্ৰাণে এই ভাৰই আদে। অভা কেই মতেৰ বিক্তমে কথা কাহলে এই অভিমান প্রাণে জাগিলা উঠে, অভ্যের যে বিবেক আছে, সতা বৃঝিবাব শক্তি আছে, সে যে ঈশ্ববেধ সন্তান একথা আবমনে থাকে না। এই অভিযানের ভাব থাকিতে ধম্মজীবনের প্রকৃত উন্নতি স্থিত হয়না। আম্বা কত উৎসব কবিতোছ, প্রভূ প্রমেশ্বও ক্রণাদানে ক্থনও কুপণতা করিতেছেন না। কিন্তু তাহা আমাদেব জীবনে স্থানী ২ইতেছে না! প্ৰতেশ্বল ষ্তই বাষ্ট্ৰধাৰা নিপতিত হউক না কেন, উন্নত বলিয়া দেখানে যেমন জল দাঁচায় না, সেইকপ অহয়ত, আত্মাভিমানে ক্ষাত ব্যক্তিব জীবনে প্ৰমেশ্বেৰ সভা এবং क क्ला लाग्नी इस ना। आञ्चा जिमान ठाश नवाहेश (मस ! পর্মেখন করুন আমাদের এই শত্রু বিনষ্ট হউক। আমবা नक्रिकाचार केंश्वित करीन हहे, कीवन, वाका, कार्या ও विश्वाद

আপনাদেব গৌবব অশ্বেষণ না করিয়া তাঁহাকে গৌরবান্বিত। করিতে শিক্ষা করি। তিনি আমাদের শীবনেব প্রভু, আমা-দেব সমাজের রাজা হউন। আমাদেব সকল প্রাণ মিলিত म्हेंग उँ हो वह मिर्क धाविल इंडेक, धामारमंत्र मकन हें छ। এক অ মিলিয়া তাঁধাব মঙ্গলময়ী ইচ্ছার সঙ্গে যুক্ত হউক। তাহা হইলে তাঁহাৰ শান্তি, তাঁহাৰ আনন্দে আমাদেৰ প্ৰাণ্ আমাদেব জীবন প্লাবিত হইবে। এবং ব্রন্ধোৎস্বের ফল षात्री इहेरव ।

অপবাজ ০ ঘটিকার সম্য ১০ নং কণ্ডয়ালিস খ্রীট ভ্রনে बाववामनोत्र नौं जि विभागत्यन भूतन्नात विजवग इस । वालक বালিকাগণ সঙ্গাত, আবৃত্তি এবং অভিনয় দাবা দশকগণকে ভুষ্ট কাৰ্যাছিল।

সায়ংকালে মন্দিরে জীয়ক বাবু শশিভ্ষণ বস্থ মহাশয় উপাসনা কবেন। তাঁহাৰ উপদেশেৰ সাৰাংশ এই: -

প্রচণ্ড বৌদের উত্তাপে ধরা যথন উত্তপ হয়, লোকে যথন গ্রীমের উত্তাপে চট্ফট্ কবিতে থাকে, উত্তাপ যথন অসহ হুহুয়া উঠে, তথন দেখা যায়, প্রকৃতিব নিয়মানুসারে আকাশে মেঘের উদর হর, এবং বৃষ্টিধারায় ধরা শীতল হইয়া থাকে। মানবসমাজেও প্রায় এইরূপ প্রণালী দেখা গিয়া থাকে। প্রায় ৪০০ শত বংসব পুরের বঙ্গদেশে বৈদান্তিক পণ্ডিতগণ যধন শুষ ক্রিয়াকলাপ লইম। ব্যস্ত ছিলেন, যথন অবিশ্বাস, नान्डिक डा ६ अरश्राम (लाकि इमन धक श्रकात एक ३ कर्छात ভটয়া উঠিবাছিল, তথন মহাত্রা চৈত্তা নবধীপে জন্মগ্রহণ ক্ৰিয়া প্ৰমেশ্বৰৰ মধুৰ লামে ৰঙ্গদেশ আৰিত ক্ৰিয়াছিলেন। তিনে কাষে শাস্তে মহা পাওত হইয়াও পাাওতা দূবে নিকেপ কাৰয়া হবি,প্ৰমে উন্মন্ত ২ইয়া অসংপা নবনাবীকে সাতাইয়া ত্রিরাছিলেন। তাঁছার জীবনে দেখা ঘাষ যে, তিনি প্র-মেশ্বকে পাইবাৰ জন্ম নিৰম্ভৰ ব্যাকুল হইমা বেডাইতেন। তিনিই নগৰ সংক্তিন প্ৰাইত ব্ৰেন, তাহাৰ পূৰেে নগৰ সংকীত্তন ছিল না, লোকে ক্ৰমালী দিয়া কীত্তন ক্ৰিত। মগ্রায়া হৈত্ত নগ্র সংক্তিন বাহেপ ক্রিমা কত লোককে एष (প্রমেব জালে অবিদ্ধ করিয়াছিলেন ভাহাবলা বায় না। ভিনি মধ্বভাবে হবিনাম দাধন কবিয়াছিলেন। বৈঞ্চব শাস্ত্রেব २८११ ८य भाष, नाष्ट्र, मथा, वाश्मना ७ भाषुया ভावित উল्लिख (मधा याग, महाद्या हिडका এडे (अध ভाবের সাধন কার্যা প্রেমের প্রাকালা দেখাইয়া গিয়াছেন। এই ভাবের সাধন কাব্যা তিনি প্রেমে বিভোব হইবা নীলামু-বক্ষে চক্রেব জ্যোতি দৰ্শনে কম্প প্ৰদান করেন। মহাত্ম হৈত্তা বঙ্গদেশে <u>(श्रामक विश्वव डेशाइड कावमा शिम्राइडन । श्रवरमधन क्रश</u> করুন, আমবা যেন চৈত্তের ব্যাকুলভা ও অমুবাগ জাবনে লাভ কবিতে গ্ৰথ হট।

১৬ই মাঘ, ২৮এ জানুয়ারি, রবিবার—আজ উংসবের শেষ দিন। অস্তান্ত বৎসরের তায় এবাবেও উদ্যান স্মালন হট্যাছিল। এবার স্কলে উন্টাডিলি, বাবু রাজক্ষ কবের বাগানে সম্মিলিভ হইমাছিলেন। প্রাতঃকাল হইতেই । আধ্যাত্মিক অবস্থা বিষয়ে **আলোচনা হইমাছিল।** ঞ্রীমুর্জ

বন্ধুগণ তথার যাইতে আরম্ভ করেন। **বেলা আ**রি ১০টা. সময় সকলে একতা হইলে সমবেত উপাসনা হয়। ত্রীযুক্ত বাব্ নবদ্বীপচক্র দাস মহাশয় উপাসনার কার্য্য করেন। তাঁহার উপদেশেব সারমর্ম এই :---

মাঘোৎস্ব--- ब्राक्तां देश मानीय वाशांव नय, हेशांक স্বয়ং ভগবান ব্যাকুল আত্মাদিগকে লইয়া লীলা করেন, ইহাতে মানব আত্মাতে অর্গের প্রভু অরং অর্গের অমৃতবারি সিঞ্ন কবেন, স্বর্গের পুস্পর্ষ্ট বর্ষণ করেন। যাঁহারা পিপাসিড **হ**ইয়া আইসেন তাঁহাবা তৃপ্ত হইয়া যান। তবে **অনেক সম**র (मधा यात्र, तृष्टि श्व इहेत्रा शिवाटक, এक निक जानित्रा शिवाटक, किन्दु व्यन्त निक एक हे विश्वादछ। व्यत्नक ममग्र तम्था यात्र, ফুল সকল ফুটিযাছে, উত্তম সাজে সজ্জিত হইয়াছে, কিছ নিচে লুক্কায়িতভাবে কাঁটা সকল বহিয়াছে, তুলিতে গেলে, ভাহাডে হাত লাগাইতে গেলে আঘাত পাওয়া যায়। তাই ত্রহ্মোৎসবে প্রা**ভি** বংসরেই এক মহা কাও হয়, কিন্তু শেষে তাহার স্থফল দীর্ঘকাল ভোগ করিতে পাবি না : মাঘোৎসবেব ব্যাপার বাঁহারা দেখিয়া-ছেন छांश्वाहे व्यवाक इहेग्राह्म। किंख (भारत उपन कन দেখেন না কেন ? ইহার উত্তর আমি এই দিতে পাবি যে এক मिक मिया युष्टिय खल गड़ारेया शियाह्न, मकल मिक **ভिष्क** नारे। কাঁটাৰ উপৰই ফুল সকল পডিয়াছিল, তাই এ ফল ফলিয়াছে। যদি এই সময় সকল দিকে দৃষ্টি কবিতেন এবং ভিজাইতে চেষ্টা পাইতেন, বিষেয় কাঁটা সকলের প্রতি দৃষ্টি কবিয়া তুলিয়া क्लिट (हरे। क्रिटान, छारा रहेटल क छे भारत स्थार দেখিতে পাইতেন, ভাহা এক অপুকা জিনিষ হইত। কিউ তাহা না ২ওয়াতেই এই ছদশা হইতেছে।

দে কাঁটা কি ? আমি আৰু একটা কাঁটার কথা বলিভেছি, সেইটাই প্রধান কাটা বলিয়া মনে ২য়, সেটা আমিছ। নিককে না ভুলিতে পাবিশে এ বৃষ্টি এ পুষ্পবর্ষণে সে শোভা হইতেছে না। ভাই মিল কবিতে ঘাই, আলিক্সন কবি, বোপায় কোমল ম্পদে এবং গল্ধে আরুপ্ত হইবে, না নিচের কণ্টকেব আঘাতে দুরে প্লায়ন করে। এই আমি এই মহাশক্ষ। নিজে একটা কঠা হটব, নিজের কোটটা বজায় রাথিব, নিজের যেংশ আনা আগে, ভাষার প্র আবে স্কল, এই ফ্রুই এ ফল ফ্লি তেছে। আৰু সাম্মলনীৰ উৎসবে একথা এই কন্তুত বলিতেছি, যদি সন্মিলন ক্ষিতে চাও আপনাকে ভোল নিজেব বাহা ক্ষি-बांत्र आह्य कव, आधना आधनि मुख्यिलन ३३८४, मुख्यिलन्त्र क्रज काविएक इहेर्द ना अवः वाख्यक इहेर्फ इहेर्द ना। व्यवशह ভাই বলিয়া নিজের মত ও বিশ্বাসকে বিসক্তন কবিবে না এই নির্জ্জনে ঈশ্বর সেই জ্ঞা ডাকিয়া আনিয়াছেন, <sup>যাহাব</sup> त्य निक जिल्ला नाहे जिलाहेत्रा गुनु, यंहात त्य की होते। जूनिए পার নাই এগানে তুলিয়া লও। পিতা দ্যালু তিনি শত অপরাধ মাজনা করিতে প্রস্তুত আছেন এবং সেই জন্মই এই ব্যাপার আনিয়াছেন এখন আমরা তাঁহার সেই প্রসাদ কভি করিয়াধন্য হই।

তৎপর বেলা প্রায় ৪টা পর্যাস্ত ব্রহ্মসমান্দের বর্তমান

উমেশচক্র দত্ত মহাশয়ের উপর সেদিন আলোচ্য বিষয়ের অবভাবণার ভার ছিল।

এই আলোচনাতে और्क अक्रात्र মহলানবিশ और्क मध्रारभारन गात्रूनी, श्रीयुक विभिन्छन भान, श्रीयुक कात्र নাথ মুখোপাধ্যায় ও প্রীযুক্ত নবদীপচক্র দাস প্রভৃতি মহাশয়গণ कि इ कि इ रामन।

সায়ংকালে মান্দরে উপাসনা হয়। ত্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করেন। তিনি নিয়লিথিত यत्य উপদেশ প্রদান করেন:---

আমাদের মাহোৎসব সাম্ম হইল। ভক্তবুন্দ ত্রায় স্ব স্থ স্থানে গমন করিবেন। লোকে যথন মেলা হইতে ফিরিরা আদে, তখন পাডাব লোক দেখিতে আদে কে কি কিনিয়াছে. त्क कि गारेवाहि, तक कि आनिव.हह। छे<गव हहें छ थे छि</p> निवृत्व इहेरम रमारक रमिश्ट हाहिरव रक कि शहेम। अड-এব উৎসবান্তে একবার জালোচনা করি, কে কি পাইলাম। बन्धमिकत भौगा अञ्च अपूछ। हेश यथन अवजीर्ग हम्र उथन माना मिरक नाना कन छे९भन्न करव। । रायम अकरे पृथिवीत बम तृक्क विरमस्य । कम विरमस्य विरमय विरमय बम लामव করিয়া থাকে, কোনও ফল মিষ্ট কোনও ফল ডিক্তা, কোনও कन करें हे छा। मि, उमिन अक्टे अन्तर्भिक कमरत्र कमरत्र विकिन्न क्न উर्भन कविया थाक। यमि এর भ कान । राज्ञाक দেখেন, যাহার ছাবে দশজন প্রাণী मम्बी खार्थना नहेबा উপন্থিত: তিনি সমূদ্য প্রার্থনা শুনিয়া একটা শক্ষ উচ্চাব্ कविरलन, अमिन ममझरान मम श्रकात श्रार्थना शूर्व इहेग्रा গেল, তাহা হইলে তিনি কেমন বিশ্বয়ায়িত হন গ ত্রহ্ম শক্তিব স্মাবিভাবও ক্রিয়া এমনি বিশ্বয়কর ব্যাপাব। এক এক नफ উচ্চারণ কবিলেন, অমনি আমাদেব দশলনেব দশটী প্রার্থনা পুণ হট্যা গেল। ব্রহ্মশক্তির আবিভাবে দশ্টী হৃদ্রে দশ্লী সংকল্প জাগিল। কেই প্রতিজ্ঞাকবিলেন এবাব ইইতে উপাসনাশাল জীবন যাপন করিবেন; কেছ প্রতিজ্ঞা কবিলেন, যাহাৰ অনিষ্ট কৰিয়াছেন ভাহাৰ ক্ষতিপূৰণ কৰিবেন, কেছ श्राविकां कविरागन, वास्त्रभया शहारव भीवन সমর্পণ कविरावन, কেই প্রতিজ্ঞা কবিলেন ভাবনের অবপ্রিত্ততা দ্ব করিবেন ইত্যাদি। এক শাক্ত শতধা হইরা শত প্রতিজ্ঞাব উদয় করিল। ধদরে সংসংক্ষেব জন্ম হইতেই আমরা এক্ষশক্তির আবিভাব শক্ষা করিয়া থাকি। অদ্য উৎস্বাস্তে একবার আলোচনা ক্ৰিয়া দেখি গুদয়ে কোনও সাধু সংকল্প জ্বালি কি না। কি শহয় আমনা উৎসব হইতে প্রতিনিবৃত্ত ২ইডেছি। কাহার क्षप्रय कि नःकन्न आशिवाहि, श्राद्धारक नक्षा कन्नन धवः याशास्त्र সম্বংসরে তাহা কার্য্যে পরিণত হ্য, তাহার উপায় বিধান

এইরূপে চতু:ষ্টিতম মাঘোৎসবের কার্য্য সম্পন্ন হইল। অপরাপর বৎসরের প্রায় এবাবেও নানা স্থান হঠতে ত্রান্সবন্ধ-গণ উৎসবে যোগ দিবার জন্ত সমাগত হইয়াছিলেন। তঃখের বিষয় কার্যাবিবরণ সমগ্রভাবে প্রকাশ করিতে পাবা গেল না। ৰাহাদের উপদেশাদির বিবরণ প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে তাহাই ।সভার বিশেষ অধিবেশনে নিম্লিখিত ব্যক্তিগণ বর্তমান

প্রকাশিত হইল। যে সকল বক্ত তাদির বিবরণ পাওয়া গেল না ভাহা প্রকাশ করিতে পারা গেল না।

#### ব্ৰাহ্মসমাজ।

वर्रुगान वर्षत कन्न औयुक आनन्तरमाहन वस महानत्र সাধারণ ত্রাক্ষণমান্তের সভাপতি, ত্রীযুক্ত রজনীনাথ রায় মহাশব मन्नामक, औयूक अरवात्रनाथ म्राथानाधाय ७ औयूक शानकष আচার্য্য মহাশর্ব্য সহকারী সম্পাদক এবং প্রীযুক্ত তাকচরণ महनानिविभ महाभन्न दकावाधाक मत्नानी छ हरेताहिन।

অধ্যক্ষ সভা-নিম্নলিথিত ব্যক্তিগণ এবারকার সাধা-वन बाक्षमभारक्षव अधाक मछाव मछा मत्नानी छ श्रेष्ठा हिन :---

কলিকাভার জন্ম পণ্ডিভ শিবনাপ শাল্লী, বাবু হেব্ৰচন্দ্ৰ रेमज, উरम्भहन्त एक, कृष्ककूमात्र मिळ, व्यानिमाण हरहेगिनाहात्र, नवहीं भ हल मान, छाउनात्र नीनत्रकन मवकाव, वावू हात्रकानाथ গান্থনী, ডাক্তার, পি, কে, রায়, বাবু কালীশহব সঙ্গুল, নগেল-नाथ हट्डोपाधारा, मनिज्या वज्र, त्रामानम हट्डोपाधारा. উমাপদ রায়, চুর্গামোছন দাস, শ্রীমতী কাদখিনী গাঙ্গুলী, ডাব্জার মোহিনীমোহন বস্থ, মধুসদন সেন, ডাক্তার জে, এন, মিত্র. বাবু আদিত্যকুমাব চট্টোপাধ্যায়, ডাক্তার পি, সি, রাহ, রার গুণভীবাম বড্যা, কুমানী কামিনী সেন, বাবু বঙ্কবিহাবী वस्, वावू ह छीहत्रन वत्नाां भाषा, यहनाथ हक्तवंदी, मीठानाथ नकी, विशिनविहावी मवकाव, हिंद्रसोहन धावाल, अगनी भठता বসু।

মফস্বলের জন্তু মি: লছমন প্রসাদ লক্ষ্ণে, ডা: ডি, বহু পুরুলিয়া, নীলমণি চক্রব গ্রী থাসিয়া হিল, বিপিনবিহাবী ৰাম मानिकतर, मून्नी झालान डेफिन झनलारे खडी, वावू हाडी किटनाव कुमानी हाका, नवकाञ्च हर्ष्ट्रांशाधाय खे, मानज्यन वस्त्र त्नेशान. शैतालाल शलनाव वहत्रभूत, ভुवनसाहन कर्नामासभूत, वजनीकास धाष छाका, कुमावी कुमुननी शाखनीव महिन्द्र. वाधाकाञ्च वत्नाभाधाग्र व छ छ। कालीरमध्य नाम वांवभान, মিঃ কে, এন. বায় দি, এদ, বাবু চঙীচবৰ দেন মুন্দীগঞ্জ, শ্রীনাথ চন ম্যমন্সি'হ, মধুস্দন বাও কটক, পাল্লভীচরণ গুপ্ত পূর্ণিয়া, কৈলাসচন্দ্র বাগছী পাবনা।

নিমাল্থিত বাজিগণ নিম্লিখিত স্থানেব প্রতিনিধিরূপে ष्पराक मजारा गृशैक श्रेशाहन:--वाव वाकार (होधूनी मिनः, वाव् ज्वनस्थारन स्मनः, क्रिक्ष्वः, वामाननः हत्छात्राक्षात्रः বাকুডা, সাতক্তি দেব কোন্নগর, ত্রৈলোক্যনাথ চক্রবন্তী দাহ্জি-লিং, মিঃ কে, জি, গুপ্ত ক্লফনগ্ৰ, বাবু বিশ্বনাথ কর কটক. कुकक्माव मिख छोन्नारेन मधुष्टनन रमन र्वायानिया, नव्छक्त त्राग्र भगभनित्र, नवदी अठक नाम व छछा, घावकानाथ द्याप কাঁখি।

कार्यानिर्दर्गाष्ट्रक म्ला-गड >२३ (म्ब्रेशावी अधाक

বংসরের জন্ম কার্যানির্কাহক সভার সভা মনোনীত হন:—
বাবু যত্নাথ চক্রবর্তী, নবদীপচন্দ্র দাস, হেরম্বচন্দ্র মৈত্র, ক্ষয়কুমাব মিত্র, ডাঃ পি, কে, বায়, ডাঃ এম, এম, বহু, বাবু
কালীশকর স্থকুল, বাবু উমাপদ বায়, মধুস্থদন সেন, রামানন্দ
চট্টোপাধ্যায়, ডাঃ পি. সি. বায় এবং বাবু বছবিহারী বহু।

গত ৬ই ফেব্ৰুয়ানী মঙ্গলবাব সাধনাশ্রমে একটি ব্রাক্ষ বিৰাহ হইয়া গিষাছে। পাত্রেব নাম শ্রীমান্ হারাণচন্দ্র সিংহ রার, বযস প্রায় ৩০ বংসব; পাত্রী কুমানী বমুনাবালা, বরস অহুমান ২৮ বংসব। কবেক বংসব হটল যে তিনটি অসহায়া নেপালী বালিকা ব্রাহ্ম সমাজেব ক্রোডে আশ্রয় গ্রহণ কবেন, এই পাত্রী তাঁহাদেব সর্ব্ব জোষ্ঠা। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী এই বিবাহে আছার্যোব কার্যা করেন। বিবাহ ৩ আইন অনুসারে বেজিষ্টারী হইয়াছে।

গত মাঘোৎদব যে কেবল কলিকাতাতেই সম্পন্ন হইয়াছে তাহা নহে, ভাবতের আরও অনেক স্থানে প্রাহ্মগণ উৎদাহেব সহিত উৎদব করিয়াছেন। ঈশ্ববেব ককণায় এমন দিন আদিবে যখন কেবল ভারতবর্ষ নহে, কিন্তু সমস্ত জগৎবাসী এই মহা উৎদবে যোগদান কবিবে। আমবা অনেক স্থানেব উৎদবের বিবরণ প্রাপ্ত হইয়াছি, তাহা এখন প্রকাশ করা স্থ্যবিধালনক নহে। একক প্রকাশিত হইল না।

আমরা শুনিয়া বিশেষ আনন্দিত চইলাম যে আমাদেব লক্ষেত্র নববিধান ও সাধাবণ আক্ষমাজেব সভাগণ মিলিত হুইয়া মাঘোৎদৰ কৰিয়াছেন। লক্ষোতে একটি ব্ৰহ্ম মন্দিৰ আছে, এপর্যাম্ভ নববিধানী বন্ধুগণই তাহা ব্যবহাব কবিয়া আসিতে-ছিলেন। সাধাৰণ ব্ৰাহ্ম সমাজেৰ সভাগণ স্বতন্ত্ৰ স্থানে উপা-मनानि कतिरहम। धवाव डाहावा य उष উৎসবেব ইতিমধো নববিধানী উদ্যোগ কবিতেছিলেন। কি শ্ব বন্ধুগণ একত্র নিলিয়া উৎসব কবিবাব জ্ঞা তাঁহাদিগকে তংপৰ সকলে মিলিভ হইয়া প্ৰাৰ্থনা আহ্বান কবেন। পূৰ্বক উৎসবেৰ কাৰ্য্য প্ৰণালী স্থিব কৰেন এবং তদমুদাৰেই উৎসব হয। নববিধান প্রচাবক আয় ফুক দীননগে কর্মাকাব এবং সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রাচারক শ্রীযুক্ত লছমন প্রসাদ এই উৎসবেৰ কাৰ্য্য সম্পন্ন কবেন।

ব্ৰাহ্মবিবাহ—বিগত ২০এ জান্তরাবী ভাগলপুরে একটি বান্ধবিবাহ ইইয়া গিগাছে। পাত্রী আমাদেব শ্রদ্ধের বন্ধু বাবু নিবাবণ চন্দ্র মুখোপাধাবের কন্তা কুনারী সবোজিনী এবং পাত্র শ্রীমান্লালবিহাবী রায় চৌধুনী বি. এ। নিবাবণ ব ৰু স্বয়ং আচার্য্যের কার্য্য করেন। বিবাহ ও আইন অনুসাবে বেজিন্টারী হইয়াছে।

প্রচার মাত্রা-নাধনাশ্রম হইতে এক প্রচার-দল নির্গত ।

ইয়া বেহার ও উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে যাত্রা করিয়াছেন।

আপাততঃ প্রীযুক্ত ভাই প্রকাশ দেব, প্রীযুক্ত শুক্রদাস চ্কেবর্ত্তী
ক্রীযুক্ত কাশীচন্দ্র ঘোষাল, প্রীযুক্ত ভাই স্থলর দিং এই প্রচার
দলে আছেন। কাশী বাবু কিছুদিন পবে ফিরিয়া আসিবেন
এবং তংশ্বানে প্রীমান্ প্রীরঙ্গ বিহারী লাল গিয়া তাঁহাদের সঙ্গে যোগ দিবেন। এই প্রচার-দল বর্দ্ধমান্ রামপুট হাট,
নলহাটা, মুশিদাবাদ, ভাগলপুব, মুপ্লেব প্রভৃতি স্থানের সমান্ত্র
পরিদর্শন কবিয়া বাঁকীপুব পর্যান্ত পৌভিয়াছেন। সর্ক্তরই
ব্রাহ্মবন্ধ্রণ সাদরে ইহাদিগকে গ্রহণ কবিয়াছেন, এবং বিধাতা
ইহাদেব ক্ষুদ্র কাথ্যের প্রতি কুপা করিয়াছেন। উহারা ক্রমে
উত্তর পশ্চিমাঞ্চলাভিমুণে অগ্রসন হইবেন এবং উত্ত পশ্চিমে
কিছুকাল ভিতি কবিবেন। ইহাদেব গুচার বাত্রার পূর্ক্রাদন
কলিকাতা সাধাবণ ব্রাহ্মসাজ্র মন্দিবে তদর্থ বিশেষ উপাসদা
ও দান সংগ্রহ হয়। ঐ উপাদনা কালে ৩০ টাকার অধিক
সংগৃহীত হইয়াছিল। তাহাই সন্ধল কবিয়া ইহারা বহির্গত্ত
হইয়াছেন। অবাশন্ত নির্ভব প্রভু প্রমেশ্বের উপর।

আমাদের ন্তন সহযোগী "একা" থাসিয়া মিশন সম্বন্ধে এই প্রকাব মন্তব্য প্রকাশ কবিয়াছেন;—"সাধানণ ব্রাহ্মসমাল কর্ত্বক প্রতিষ্ঠিত থাসিয়া মিশন একটি অতি মহৎ কার্যা। এই মিশনের ভারপ্রাপ্ত, বিশ্বস্ত কার্যাকারক শ্রীযুক্ত নীলম্পি চক্রবন্তী নানারপ বাধা ও প্রতিকৃশতার মধ্যে যেরূপ সহিষ্ণুতার সহিত কার্য্য কবিয়াছেন, আমবা তাহার প্রশংসা কবিয়া শেষ করিতে পারি না। আমবা আশাক্রি সাধারণ ব্রাহ্মসাল এই মিশনকে স্থায়ী ভূমিতে দাঁড় করাইবার প্রক্রসাধ্যমত চেটা করিবেন।"

নিম্লিখিত প্রণালীতে মোসমাই, সঙ্রাবী ও নন্ত্রিম আক্ষমাজেব সভাগণ মিলিত হইয়া চিরাপুঞ্জিতে মাখোৎস্ব সম্পন্ন কবেন :—

ববিবাব ২২এ জাতুযাবী মিসন হাউসে উৎসবের উদ্বোধন স্চক্ উপাসনা হয়। মিঃ ইউ বর্ধন রায় আচায়ের কাষ্ট্র কবেন।

সোমবাব—প্রাতে মি: ইউ ববধন রায এবং সন্ধ্যায় মি: ইউ সাইমন উপাসনা করেন।

মঙ্গণবাব— প্রাতে ২উ ববধন বায় উপাসনা কবেন, মি: কাবাইবিন প্রার্থনা কবেন। মব্যাকে বালক বালেকা স্থিপন হয়, তাহাতে মিঃ সাইমন প্রাথনা করেন। অপবাকে । মং সাইমন "অভ্য ধ্যোব সাংহত প্রাক্ষধ্যোব কি ভ্লাং" এ বিধ্যে বক্তা করেন, তৎপূবের মিঃ ইউ হালী বিং প্রাথনা করেন।

গত গো দে ক্রমারী সাধনাশ্রমের প্রতিপ্তা দিন উপলক্ষে
সাধনাশ্রমে বিশেষ উৎসব সম্পন্ন চইয়াছে। ১৮৯২ সনের
এই দিনে পবিচারকাশ্রম প্রতিষ্ঠিত হয়। প্রতে পণ্ডিড
শিবনাথ শাল্রী মহাশ্য উপাদনা কলেন। আপ্রমেব এ কুল্ল
জীবনে ঈশ্বনের যে অপার করণার নিদশন পারয়া গিয়াছে,
শাল্রী মহাশয় কয়েকটি ঘটনা উল্লেথ করিয়। তাহা অতি উজ্জন
কপে উপাসক রন্দের ক্রদয়ে মুদ্রিত কয়েন। তৎপরে বাব্
জ্যশক্র বায়, যিনি এক বৎসর কাল আশ্রমের সহিত সংক্র
আছেন, তাহাকে রয়াকাবরূপে গ্রহণ করা হয় এবং শ্রামতী
চঞ্চণা ঘোষ ও বাবু হলমেহন ঘোষাল সংকল্লাধীন ওয়ার্কাবরূপে গৃহীত হন এবং বারু কুঞ্জাল ঘোষ, বারু হারাণচন্দ্র সিংহ
বায় ও মুন্সী জালাল উদ্দিন আশ্রমের সহায়শ্রেণীভূকে হন।
অপরাক্ষে শ্রীয়ৃক্ষ বাবু নবদ্বীপচন্দ্র দাস উপাসনার কার্যা
করেন।

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

२२ण जःभा।

১৮শ ভাগ।

১৬ই ফাক্কন, মঙ্গলবার, ১৮১৫ শক, ব্রাক্ষ সম্বৎ ৬৫।

বাংদরিক অগ্রিম মূল্য ২॥• মফরলে ৩

প্রতি পণ্ডের মূল্য

#### প্রার্থনা।

ছে মঙ্গলম্য বিধাতা। তুমি কতবার আমাদের হৃদয়কে ৰূপত কৰ আবার কতবাৰ আমৰা মোহ-নিদ্ৰাতে অভিতৃত <sup>এই।</sup> কভবাৰ হৃদণে শুভ স্কল্লেৰ অভ্যুদ্ধ কর, কভবার তোমার চনণে প্রতিজ্ঞা কনি, আবাব কতবার তাহা বিশ্বত হট্যা অবসন্ন ও জডভাবাপর হট্যা পডি। এইরূপে আমা-(मर कीवन क्लालका यालकार मध्या व्यक्तिनिक इहेब्रा যাইতেছে। কিন্তু চর্বলতার ঘারা সময়ে সময়ে অভিত্ত চটলেও আমবানিরাশ হটনা, কারণ তোমার ক্রণা সর্বাদা আমাদেব সহায'। অকপট্চিত্তে যে হোমার সাহাযা প্রার্থনা কবে তুমি তাহাব সহায়তা করিতে কথনই বিমুথ নও। ভোমাৰ প্ৰদাদে তাহাৰ ছৰ্বলভা দ্বলহাতে প্ৰিণ্ড হইয়া খাকে। আমরা নববর্ষেব প্রারম্ভে তোমার চবণে পড়িষা व्यार्थना कतिरुक्ति रा कृषि व्यामानिशस्क वन स्व याहारु আমবা বস্ত্রমান বর্ষে সমধিক দৃঢ্তাব স্থিত তোমাব প্রদশিত পুথেব অনুসরণ করিতে পারি। তুমি আমাদেব প্রত্যেকব উপবে যে কর্ত্তর্য ভার অপণ ক্রিয়াছ তাহা যেন সমুচিত রূপে बह्न कविवात क्रम्म (हर्षे) कति ।

## সম্পাদকীয় মন্তব্য।

আগামী বর্ষের কার্য্য সূচনা—ন্তন বংসরের জন্ত কর্মচারী, অধ্যক্ষ সভা, কার্যানির্মাহক সভা প্রভৃতি মনোনীত হইয়া কার্য্যারম্ভ হইয়াছে। বর্জমান বর্ষে কি কি কার্য্য হতার্পণ করা হইবে সেই আলোচনা চলিয়াছে। মাননীয় সভাপতি মহাশয় উাহার বিগত সাম্বংসরিক বক্তাতে কতক্ষালি কার্য্যের স্চনা করিয়াছেন। বিগত আদ্ধ সন্মিননীতে যে ক্ষেকটী অক্ষতর বিষয়ের আলোচনা উপস্থিত করা হইয়াছিল, ভাহার বক্তাতেও সেইগুলির প্রতি বিশেষ দৃষ্টি ছিল। বর্জমান বর্ষে সেইগুলির প্রতি বিশেষ দৃষ্টি ছিল। বর্জমান বর্ষে সেইগুলির কার্যের পরিগত করিবার জন্ত কিঞ্চিৎ সচেই হওয়া

কর্ত্তব্য। সন্মিলনীর ভিন দিনের স্ম**ালো**চনাতে প্রধানতঃ চারিটী বিষয়ের অবভারণা কবা হয়। (১ম) ব্রাহ্মবালকদিগের শিকা (২র) ত্রাহ্মবালিকাদিগের শিক্ষা (৩র) ব্রাহ্মদিগের সাংসারিক ব্দবস্থা (৪র্থ) ব্রাহ্মসমাজের বর্ত্তমান আধ্যাত্মিক ব্দবস্থা। সকলগুলিই অতিশর প্রয়েজনীয় বিষয় এবং প্রত্যেক বিষ-**রেই কিছু কিছু করিবার আছে।** ইহার মধ্যে ত্রাক্ষ বালক ' বালিকাদিগের শিক্ষাবিষয়ে কিঞ্চিৎ স্ত্রপাত কবা হইরাছে এই সাত্র। কিন্তু তাহাতেও করিবার অনেক আছে। वानक मिरात क्या अकृति रवार्षिः अवः बाक्यवानिकामिरात्र क्या একটা বোডিং ও বিদ্যালয় স্থাপন করা হইয়াছে। উক্ত উভয় উপায়ে যে ইপ্তফল ফলিতেছে, তাহা আমবা সকলেই লক্ষ্য কবিয়াছি। কিন্তু ক্লোভেব বিষয় যে উক্ত উভয় বিষয়েও আক্ষবন্দিগের সাহায্য সমুচিতকপে পাও্যা যাইতেছে না। वाक्रवानक व्यक्ति वाक्रवानक मिर्गित बन्न करा इहेगाहिल, কিন্তু ব্রাহ্মবালকের সংখ্যা আশানুরূপ হয় নাই ৷ বালক-বালিকার প্রকৃত শিক্ষার ভাষে গুরু দায়িদভাব ধর্মসমাকেব পক্ষে অতি অৱই আছে। অথচ সমূচিত অধ সাহাযোব অভাবে উক্ত উভয় কাধাই অতি কষ্টেব সহিত ও অসম্পূৰ্ণ ভাবে চালাইতে হইতেছে। আশা কবি বর্ত্তমান বর্ষে এবিষয়ে বন্ধুগণের মনোযোগ অধিকতব রূপে আরুষ্ট হইবে।

তৎপবে ব্রাহ্মদিগেব সাংসারিক অবস্থা। ইহাও একটা শুকতর চিস্তার বিষয়। এবিষয়ে যে প্রবন্ধ পঠিত হুইরাছিশ তাহাও স্থানাস্তরে প্রকাশিত হুইল। ব্রাহ্মদিগের সাংসাবিক অবস্থার উন্নতি বিধানেব উপায় না করিতে পাবিলে ত্বরার সমাজেব বিশেষ অবনতি হুইবে, এই আশহা অনেকেব মনে হুইরাছে। বর্ত্তনান বর্বে এবিষরেও কিছু ভাবিবার ও করিবার আছে।

সর্মশেষে সমাজের বর্তমান আধ্যান্মিক অবহা। 
ক্রু এক
মহৎ কার্য্যক্ষেত্র। ক্লিকাতাতেই করিবার কত আছে।
কলিকাতার উপাসক্ষণ্ডলীটীর অবহা অভিশব্ন নিশুভ।
অস্তান্ত ধর্মসমাজে এরপ এক একটা উপাসক্ষণ্ডলী কিরুপ

আধ্যাত্মিক শক্তিব উৎসম্বরূপ হুইরা রহিরাছে তাহা চিন্তা করিলে আশুর্য্যান্থিত হুইতে হয়। আর আমাদের উপাসক-মগুলীটার অবস্থা পর্য্যালোচনা করিলে ছঃথিত হুইতে হয়। উপাসনাকার্য্যের ভার বাঁহাদের প্রতি অর্পিত হয়, উপাসক-দিগের সহিত তাঁহাদের ঘনিষ্ঠ যোগ নাই; উপাসকে উপাসকে ছনিষ্ঠতা নাই। সহবেব ব্রাহ্মদিগের সকলে নিয়মিত সাপ্তাহিক উপাসনাতে আসেন না। উপাসকমগুলীর কার্য্যে অনেকের বিশেষ উৎসাহ দৃষ্ট হয় না। অর্থের অসচ্ছলতানিবন্ধন উপাসকমগুলীব অত্যাবশ্রুক ব্যয় নির্মাহ করাও সময়ে সময়ে কঠিন বোধ হয়।

এইরূপ যে দিকেই দেখা বাইবে সেই দিকেই করিবার বর্পেষ্ট আছে। স্থের বিষয় বর্জমান বর্ধের কার্য্যনির্ব্বাহক সভা ইতিমধ্যেই এই সকল বিষয়ে মনোযোগ দিতেছেন, আশা করা যাইতেছে যে বর্জমান বর্ধ অতীত না হইতেই আমরা এই সকল বিষয়ে কিছু কিছু ফল দেখিতে পাইব। ব্রাক্ষসন্মিলনীতে পঠিত প্রবন্ধগুলি স্থানাস্থবে প্রকাশিত চইল।

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### ব্রাহ্ম বালকদিগের শিক্ষা।

( ৯ই মাথ দিবদেব আহ্ম সন্মিলনীতে ত্রীযুক্ত বাবু কুঞ্চকুমার মিত্র কভুক বিবৃত। )

ব্রাহ্মগণ পুত্রদিগকে কিন্দুপ শিক্ষা দিতে ইচ্ছা করেন?

যে শিক্ষাতে ধন ম ন লাভ হয়, সেই শিক্ষা দিতে চান, কি

যদারা পূর্ণ মহুষ্যত্বেব বিকাশ হয় সেই শিক্ষা দিতে চান ?

সম্ভানগণ যদি বিনয়, প্রেম, সদিচ্চা ও ঈশ্ব-ভক্তি-প্রায়ণতাশ্রু হইয়া কেবল ধনী ও মানী হয়, ব্রাহ্ম তাহাতে সম্ভূট, না
ধন মান-শ্রু হইয়াও যদি প্রেম, বিনয়, পবিত্রতা, সাধু ইচ্ছা ও
ভগবড্কি-প্রায়ণ হয় তাহাতেই সম্ভূট ? আমাদের নিক্ট
শিক্ষাব উদ্দেশ্য কি ?

পাচীন কালে গ্রীস দেশে স্পার্টা এক নগণ্য রাজ্য ছিল, ইহার অধিবাসিগণ ছর্মল ছিল, ভাহাদের চারিদিকে প্রাক্রাস্ত প্রতিম্বলী জাতি সমূহ বাস ব বিত। লাইকারগাস নামক একজন প্রতিভাশালী জ্ঞানী, জন্মভূমিকে বীব ভূমি করিবার জন্ম দৃচসকল হইলেন। বীব স্প্রতিকরা তাঁহাব লক্ষ্য, স্তরাং মদেশের বালক ও বালিকাদিগকে সকলসিজির উপযোগী শিক্ষা দিতে আরম্ভ করিলেন।

যাহারা বিকলাক তাহার। কথনও বীর হইতে পারে না।

স্থতরাং তিনি আইন করিলেন যে বিকলাক শিশুদিগকে বধ
করিতে হইবে। বালকগণের যথন সাত বৎসর বয়স হইবে,
তথন ক্রাহাদের পিতামাতার নিকট হইতে ভাহাদিগকে লইয়া
আসিয়া রাজপুরুষদিগকর্ভ্ক প্রতিষ্ঠিত শিক্ষালয়ে রাখিতে

হইবে। ৭ বৎসর হইতে ৩০ বৎসর পর্যান্ত ভাহারা ব্যার্থার ও
ব্রুকৌশন শিক্ষা করিবে। সাহযুতা শিক্ষা দিবার জন্ত

মধ্যে মধ্যে তাহাদিগকে নৃশংস ভাবে বেঞাঘাত করা হইত। ভাহাদের স্কাঙ্ক হইতে ক্ষমিরধারা বহির্গত হইত, তথাপি কেহ আর্দ্তনাদ কবিতে পারিত না। শীত, গ্রীমে এবই পরি-চ্ছদ পরিধান করিত-ক্রথনও কথনও অনশন-ব্রত অবলম্বন করিতে হইত-উদর পূর্ণ করিয়া কথনও তাহারা আহার করিতে পাইত না-কুধার জালা নিবৃত করিবার জন্ম তাহা-निगटक मृगग्रा वा टोर्गावृद्धि व्यवनश्वन क्रिट उँ ९ माहिष्ठ करा **হুইত। ৩**- বৎসর পূর্ণ না হুইলে কেহু বিবাহ করিতে পারিত ৰা—কোন সভা সমিভিতে যাইয়া তক বিভকে যোগ দিভে পারিত না। লাইকারগাস যে শিক্ষা প্রবর্তন ক্বিয়াছিলেন ভাহাতে অচিরকাল মধ্যেই স্পাটাব নরনারীগণ বিক্রমশাণী रहेग्राह्यि। তাহাদেব বীবদর্পে সমস্ত গ্রীসদেশ কম্পিত হইয়াছিল। লাইকাবগাস স্বদেশবাসীকে বীর করিতে সঙ্কর করিয়াছিলেন এবং সম্বল্লসিদ্ধিব উপযোগী শিক্ষার প্রথাও প্রবর্ত্তিত করিয়াছিলেন স্করাং তাঁহার লক্ষ্য সিদ্ধি হইয়াছিল।

আমবা রাহ্মসমাজে জ্ঞানী, প্রেমা, হুজ্জর ইচ্ছা-শক্তি-সম্পর. ঈশ্ব-পরারণ লোক সৃষ্টি করিতে চাই। দশ হাজাব ধনী লোক অপেক্ষা আমরা একজন ধান্মিককে শ্রেষ্ঠ মনে কবি। আমাদেব যথন ইহাই মত, তথন পুশ্রদিগকে কিরুপ শিক্ষা দিতে আমবা ইচ্ছা করি ?

বর্তমান সময়ে এদেশে অপরা বিদ্যাব চচ্চা ইইতেছে। কিন্তু
পরা বিদ্যাব প্রতি কাহারও মনোবোগ নাই। আদদেব
প্রগণও দেশ-প্রথান্নসাবে কেবল অপরা বিদ্যায় শিক্ষিত
ইইতেছে। স্কুতবাং আদ্মদেব লক্ষ্য সিদ্ধি ইইতেছে না।
প্রগণ জ্ঞান, প্রেম, সাদিচ্ছা ও ঈশ্ববানিষ্ঠা পূণ ইইতেছে না।
এখন আমাদেব কঠব্যাক ?

- (১) অপবাবিদ্যা শিক্ষাব জন্ত দেশে বিদ্যালয়ের অভাব নাই। কিন্তু কোন বিদ্যালয়েই পরাবিদ্যা শিক্ষা দেওৱা হয় না। আমাদের বালকদের জন্ত যদি পূথক বিদ্যালয় স্থাপন করিতে পাবিভাম ভবে বিদ্যালয়েই পরা ও অপবা বিদ্যাশিক্ষা দিতে সক্ষম হইভাম। কিন্তু কেবল আক্ষাবালকদের জন্ত বিদ্যালয় স্থাপন করা এখন নানা কাবণে সম্ভব বোধ হং তেছে না। প্রভরা আমাদের বালকগণ মাধারণ বিদ্যালয়ে আ রা বিদ্যা শিক্ষা কবিতেছে, গৃহে ভাহাদিগকে পরা বিদ্যাশিক্ষা কবিতেছে, গৃহে ভাহাদিগকে পরা বিদ্যাশিক্ষা দিতে হইবে। ব্রহ্মজ্ঞান উদ্দীপিত করিবার জন্ত গৃহেই ব্যবস্তা কবিতে হইবে। পিতা মাতার উপরেই এই গুরুভার পাডতেছে। তাহারা স্থানিদগকে ক্রমে ঈশ্বর-বিষয়ক সহজ্ঞ ত্র হইতে গভারতর ধর্ম্মবিজ্ঞান শিক্ষা দিবেন। এইরূপে বালকদের জ্ঞান বৃদ্ধি করিতে হইবে।
- (২) প্রেম-বিহান মামুষ মামুষই নছে। প্রমেশ্বর সকল স্বান্ধর আন্ধাতে নিহিত করিয়া দিয়াছেন। কিছ বিনা কর্ষণে দে বীজ অন্ধাতি হইতে পারে না। সাধারণ বিদ্যালয়ে প্রেমশিক্ষা হয় না। বালকদের প্রোণে প্রেম বিকাশ ক্রিবার ভার পিতা মাতার উপরেই পড়িতেছে। পিতা অপেক্ষা মাতাই এই শিক্ষাদানের সম্ধিক অধিকারিশী। পিতা মাতা বালকদের প্রাণে ধীরে ধীরে কোম্লভাবগুলি

কুটাইয়া কুলিবেন। ভাহাগ্গা যাহাতে ভাই ভগিনীকে ভাল বাসে, বিভাল প্রভৃতি গৃহপালিত জীবকে ভাল বাসে, সেই শিক্ষা দিতে হইবে। এমন কি বুক্ত লতাকে যাহাতে আদর যত্র করিয়া জল দেয় সেইরূপ শিক্ষা দিতে হইবে। অর প্রভৃতি আতুবদিগকে সম্ভানদের দ্বাবা ভিক্ষা দেওয়াইতে হইবে। বাডীতে কাহাবও পীড়া হইলে সম্ভানদের দ্বাবা ভাহাদের সেবা ভ্রমা ক্বাইতে হইবে। এইরূপে সম্ভান-নিগকে প্রেমশিক্ষা দেওয়া কর্ত্ব্য।

(৩) বালালী জাতির ইচ্ছাশক্তি বড হর্বল। ব্রাহ্মগণ চতুর্দিকে প্রতিকৃল ঘটনা দারা বেষ্টিত হইয়া বাস করেন। च्यामात्त्र मुखानशांपत्र हेच्हामां कि यिन इच्छेत्र ना इत्र उत्त शान भूप विभएत मुखावना। वालाकान इहेट जाहानिशस्क समह শিক্ষা দিতে হইবে যাহাতে তাহারা যাহা সং বলিয়া জানে সামান্ত ক্লেশকে অবহেণা কবিষা তাহা গালন কবিতে शास्त्र । केञ्कारक मर्व्य व्ययस्त्र प्रष्ठ कविटक क्वेट्य । वानकरम्ब হচ্ছাশক্তি স্বভাবত: খুব দৃঢ পাকে। কিন্তু দেখা যায় অনেক নির্বোধ পিতা মাতা বলপুরক তাহাদের ইচ্ছাশক্তিকে দমন কবিষা ক্রমে ভাহাদিগকে শক্তিগান কবিয়া ফেলেন। আন্তে আত্তে প্রতিকূল ঘটনা জগ কবিতে উৎসাহিত কবিলে বালক-দেব ইচ্ছাশক্তি ক্রমে দৃঢ় হইতে পাবে। এ সম্বন্ধে মাতা যদি বালকদিগকে স্থূন্দৰ স্থানৰ গল বলেন ভবে ইচ্চাশক্তি কাগরণের সহায়তা হইতে পাবে। বালকের পড়িতে ইচ্ছা क्टेंटल्ड ना, এই प्यनिका क्या कवाटेट ट्टेटव, वालटकत বাৰবাস্বিক বিদ্যালয়ে যাইতে ইচ্ছা ২ইতেছে না, তাহাৰ व्याप्त छथाय याहेवांत्र हेक्का काशाहेशा मिट्ड क्ट्रेट्ट। स्कान অস্বাস্থ্যকৰ দ্ৰব্য থাইবাৰ লালসা হইৰাছে, সেই লালসাকে ভয় দেখাইয়া নহে, কিন্ধ তাহার সদগ্রের দোহাই দিয়া নিবৃত্ত কবিতে উত্তেজিত কবিতে হইবে। এইরূপ নানা উপায়ে বালকের ইচ্ছাশক্তিকে দঢ় কবিতে হইবে।

(৪<sup>০</sup> ঈশ্ব বিখাদ ও ভক্তিশিক্ষাব ভান গৃহ। গৃ**হ বাতীত** আর কোণাও তেমন স্থলবরূপে ঐ শিক্ষা হটতে পাবে না। পিতা মাতাই **ৰালক-জী**বনের আদশ। পিতা **অপে**কা মাতাই অধিকতর আদশ। সম্ভানগণ যদি দেখিতে পায় পিতা মাতা শ্রতিদিন ভক্তির সহিত প্রত্রেক্সের পূজা করিতেছেন। পিতা মাতার সেই ভক্তিমাথা মূখের দিকে চাহিয়া সন্তান ঈশ্বভক্তি শিক্ষা করিতে পারে। সন্তানগুলি ঈশ্ববপরায়ণ হইতেছে না. কোন কোন ত্রাক্ষের মুখে এই থেদের কথা ভনিতে পাওয়া যার। আমার বিশ্বাস, গৃহে উপাসনার ব্যবস্থা না থাকাই এই শোচনীয় অবস্থার প্রধান কারণ। প্রতি গৃহে নিষ্ঠার সহিত প্রতিদিন এক্ষোপাদন। হউক, সে গৃহের সন্তান বিখাদ ও ভক্তির দৃষ্টাস্ত দেখুক; ইহা দেখিয়া ভাহাবাও খভাবত: বিশাসী ও ভক্তিপরায়ণ হইবে। পিতা মাতা বৃক্ষ লতা, চক্র সুধ্য, মন্তব্যদেহ প্রভৃতি প্রাকৃতিক বছর স্বদ্ধে গল করিতে করিতে ঈখরের অভিজের কথা সন্তানের প্রাণে সহজে মৃত্তিত করিয়া দিতে পারেন। নানা ঘটনার কথা উল্লেখ করিয়া नत्रत्यक्षत्र जामानिगरक रक्षम जान वारमन जारा व्यादेश निर्क

পারেন। সন্তানেরা ৮০০ বংসর বয়স হইলেই সোজাম্ব জি ছই এক কথায় ঈশ্ববের নিকট প্রার্থনাও করিতে পারে। আহারের সময় পরমেশ্বর আমাদিগকে এই আহার দ্রব্য দিয়াছেন, ইগা মনে করিয়া তাঁহাকে ক্তক্ততা অর্পণ করিতে পারে। কিন্তু সাবধান গইতে হইবে ফেন সন্তানগণ প্রার্থনাটা কেবল কথার কথা মনে না করে। এইরূপে পিতা মাতা দৃষ্ঠাস্ব, উপদেশ ও শিক্ষা ঘারা সন্তানের প্রাণে ভগস্তুক্তি জাগ্রত করিয়া দিতে পারেন। ধনবল বা জনবলে আক্ষাসমাজের প্রাথিক হইবে না, ধর্ম যেখানে শ্রী সেখানেই বাস করেন। জ্ঞান, প্রেম, ইচ্ছা ও ঈশ্বব-ভিজিব বিকাশের নামই ধর্ম। এই ধর্ম্মই আক্ষাদের একমাত্র লক্ষ্য। এই লক্ষ্য লাভেব জন্ম শিক্ষার প্রকাশ করিয়াছিলেন, আমরাও ভেমনই এই পৃথ শিক্ষার বলে ছবলে আক্ষাদিগকে এ দেশে তর্জয় শক্তিতে পরিণত করিতে পারি।

## ব্রান্সদিগের সাংসারিক অবস্থা।

( ৯ই মাঘ আক্ষসন্মিলনীতে শ্ৰীয়ক বাবু স্থাকুমাব চটোপাধায়ে ক'ৰুক পঠিত )

মঙ্গল-বিধাতা প্রমেশ্বের কুপায় এখন ব্রাঙ্গধর্ম দেশ विष्मुद्रम প্রচাবিত ইইভেছে। ভাবতবর্ষের নানা প্রদেশের ত কথাত নাত, স্থদ্ৰ ইউবোপ ও আমেবিকাতেও ৰাহ্মধম্মেৰ ভয় প্তাকা উড্টীয়মান ইইতেছে। এখন আব ব্ৰাহ্মধশ্যেৰ আলোক কেবল মহানগণী কলিকাভাতে আৰদ্ধ নাই। এখন আৰু কেবল মাত্র কতিপ্য কলিকাতাবাদী আহ্ব একত্র হইবা সপ্তাহে এক-বাব উপাদনা কবিয়া নিশ্চিম্ব থাকিতে গাবেন না। সে সকল দিন গত হইয়াছে। এথন নগবে নগবে, পল্লাতে পল্লীতে ব্ৰাহ্ম-সমাজ প্রতিষ্ঠিত ও ত্রাহ্মধর্মের জয় ঘোষিত ২হতেছে। কত ভাই কত ভগিনী আক্ষধৰ্মেৰ নামে আকুই হইয়া আক্ষ প্রিব্যব্দুক হইয়া আমাদের স্মারু প্রিপুষ্ট করিতেছেন। ব্রাহ্ম প্রিবাব বৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে ব্রাহ্মসমাজের দাধিত দিন দিন র্দ্ধি ইইতেছে। এক্ষণে ব্রাহ্ম ব্রাহ্মিকাদিগের জ্ঞান ধ্যোলাতিব সুবাবস্থাৰ প্ৰয়োজন হইযাছে। এক্ষণে ব্ৰাহ্মপ্ৰিবাবেৰ বাল্ঞ বালিকাগণের শিক্ষার জন্ম বিদ্যালয়ের আবশুক ইইয়াছে। এক্ষণে বিদেশস্থ আক্ষবন্ধুগণের বালক বালিকাদিণের কলি-কাডায় বাসপান, ভস্বাবধান ও শিক্ষাব বাবকা না কবিলে আৰ চলে না। এই সকল शुक्र ভाর বহন কবিয়াই যে আক্ষমাঞ নিশ্চিত্ত থাকিবেন ভাগ পারিবেন না। আজ কাল আব একটি গুরুতর বিষয়ের আলোচনা নিতান্ত আবিশ্রক হইরাছে। टक्वन चाल्नाहनात्र इटेरव ना, याहार्ट्ड त्यह विषयात्र अक्टो मीमाश्मा ও उनस्क्रभ काया इस डाहाहे कतिए इहेरत।

বাক্ষসমাজে তিন অবস্থার লোক আছেন; সঙ্গতিপন্ন,
মধ্যবিত ও দরিদ্র। আমাদের মধ্যে সঙ্গতিপন্ন লোকের সংখ্যা
অতি ক্ষর, মধ্যবিত ও দরিদ্রের সংখ্যাই অধিক। সঙ্গতিপন্ন
বাক্ষদিগের সাংসারিক অবস্থা সচ্ছল। ভাঁছারা কাছারও
মুধাপেক্ষা না করিয়া আপনাদিগের পারিবারিক সুব্যবস্থা

আপনারাই করেন। তাঁহারা অর্থ্যারা সর্বপ্রকার কল্যাণকর कार्या अञ्चनभाकारक यर्षष्ठे महाब्रका करतन। मर्सा भर्मा তাঁহাবা নিশ্ব আহ্মদিগকে অর্থসম্বন্ধে 'সাহায্য ক্রিয়া তাহা-দিগের কৃতজ্ঞতাভাজন হন। ইহাঁদিগেব সাংসারিক স্পবস্থা সম্বন্ধে ত্রাহ্মসমাজেৰ কিছু ভাবিবার বা করিবার নাই। মধাবিত্ত ব্ৰাহ্মদিগেৰ অবস্থা এতাধিক সচ্চল না হইলেও তাহারা অপবের সাহায্য ব্যতীত আপনাদিগের পরিবাব প্রতি-भावन 3 वावक वाविकाशास्त्र भिका नान कतिएक मम्थे। দ্মাপাততঃ তাঁহাদিগেৰ এক প্ৰকাৰ চলিতেছে। কিন্তু তাঁহা-ানগের মধ্যে অনেকেবই যত্র আয় তত্র ব্যয়। তাঁহারা কিছুই সংস্থান কবিতে পাবিতেছেন না। বোগাক্রাম্ভ হইয়া বা অন্ত কোন প্রকাবে অর্থোপাজ্জনে অক্ষম হইলে তাঁহাদিগেব ছ্ব-। বস্তাব দীমা থাকে না। তাহাদেব মধ্যে কাহাবও মৃত্যু হইলে মৃত ব্যাক্তব প্ৰিবারবৰ্গকে অকুলপাথাকে ভাদিতে হ্য। অন্তের গলগ্রহ হওয়া ব্যতীত তাহাদিশেব উপাযান্তর থাকে না। স্থেব বিষয় যে ইহাদিগেব মধ্যে কেহ কেহ জীবন্বীমা দাবা অপেনাদিগের পরিবাববর্গকে এই অবস্থা হইতে বক্ষাব ভপাষ করিব। বাখিতেছেন। ইহাদিগের জন্ম আক্ষমাজের . অপোততঃ কিছু করিবাব না থাকিলেও ইহাদিগেব অবতা অযোগা। বাহাবা এবিবণে চিন্তা কবিষাছেন, তাহাবা এট সম্বন্ধে কতক চিস্তাৰ কাৰণ আছে। দাবদ্ৰ আহ্ব পৰিবাবেৰ 'সিদ্ধাম্ভে উপনীত হৃত্যাছেন, যে দ্বিদ্ৰ ও এমন কি মধাবিত সাংস্যাবক অবস্থা অতি শোচনীয়। সবিদ্ৰ ব্ৰাহ্মগণ অতি। অবস্থাৰ ব্ৰাহ্মদিগেৰ পক্ষেত্ৰ কোন পল্লীগ্ৰামে বাস কৰা শ্ৰেষ-কঙে সংসাৰ প্রতিপালন কৰেন। ইহাদিগের মধ্যে কেহ কেহ। স্বর। পল্লীগ্রামে পরস্পৰ হইতে বিচ্ছিন্ন হইয়া বাস কৰায় আন্ধ-াদবাৰাত্ৰ প্রিশ্রম ক্রিয়া যাহা কিছু উপাজ্জন কবেন ভদ্বাে াদগেব অনেক অস্থাব্যা হইতে পাবে, কিন্তু কতকগুলি পাৰ্বাৰ তাহাদিগের স্কল ব্যয় সংকুলন হ্য না, কোন না কোন অভবি । একত্র হইয়া বাস ক্রিলে সে স্কল অস্থাবিধার আশেকা নাহ। স্কল্ট বহিয়া যায়। অথাভাবে ইহারা বালক বালিকাদিগকে । জতএব স্থাবিধান্তনক ও স্বাস্থ্যকর স্থানে একাদগের একটি প্রী ক্রশিকা দিতে নিজেরা না পাবিয়া অভোব সাহাযোর উপর ভাপন অহান্ত প্রযোজনীয় হইয়াছে। ন্মভব কবিতে বাধ্য হন। পবিবার মধ্যে রোগ বা অঞ্ কোন গুৰ্মটনা উপস্থিত হইলেও অন্তেব সাহায্যের উপর নির্ভব কোন ব্যব্যায় বা ক্লমি কার্য্য অবলম্বন কবিয়া ত্র্য স্বচ্ছনে করা ভিন্ন তাঁহানিগের উপায়াস্তব নাই। কোন কোন নিস্ব প্রিবার ইতিমধ্যেই অন্ত্যোপায় হইনা ব্রাক্ষ্মমাজের ডপ্র সম্পূর্ণ নির্ভব কবিতে বাধ্য হই্যাছেন। এরূপ ব্রাহ্ম পবি-বাবের সংখ্যা আপাততঃ অল বটে, কিন্তু ব্রাহ্মধর্ম প্রচাব ও ব্রাহ্ম পবিবাব বৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে যে সংখ্যা বৃদ্ধি হইবে ভাহার 🕆 नर्लंग्नाहे। त्र यांगे ६७क मतिज आक्षमिर्गत राक्रेश व्यवसा তাহাতে ভ্রাহ্মসমাজ আর নিাশ্ত থাকিতে পারেন না। ইহাদিগের অবস্থার উন্নতিব কোন উপায় না কবিয়া উদাসীন थाकिल ভविषाट निम्ठग्रहे महा जनर्थ मःघर्षे ठ हहेता।

इंडेर्ट्रानग्राम ७ रम्यांग्र शिष्टांम मख्यांगारवत्र पविज्ञाताक-দিগের পারিবারিক অবস্থা বাহাবা প্রত্যক্ষ করিয়াছেন, দারিদ্যেব বিষময় ফল জাঁহাবা সহঞ্চেই অমুভব করিতে অর্থাভাবে উক্ত সম্প্রদায়দ্বয়ের বালক-जक्रम क्टेर्यन। ৰালিকাগণ স্থশিকা লাভে বঞ্চিত। এই জন্ত তাঁহাদিগেব মধ্যে কত প্রকার পাপ প্রবেশ করিয়া ক্রমে তাঁহালিগের সমাজকে কল্বিত ও ঘূণিত করিয়া তুলিয়াছে। বাহ্মস্মাজের দারিদ্রোর কোন প্রতিকার করিতে না পারিলে ইহারও যে সেইরূপ চুর্গতি হইবে তাহার আর সন্দেহ কি ? এখনই দেগা

যাইতেছে যে কোন কোন নিম্ব ত্রান্ধের বালক বালিকাগ অর্ধাভাবে কোন ভাল বিদ্যালয়ে অধ্যয়ন করিতে পারিতেছে না। স্তরাং তাহারা অশিক্ষিত অবস্থায় থাকিবে এবং কালে ব্রাদ্ধ-সমাজেব কণ্টকশ্বরূপ হইয়া উঠিবে। কেবল ইহাই নহে,দারিন্তা সাধারণত: মহুষ্যকে নীচ করিয়া ফেলে। দারিদ্র্য এয়ক लारक मिथा, धारकना, टोर्ग ७ जनान जनहभाद जननवन কবিতে বাধ্য হয়। অতএব ব্রাহ্মসমাজের দাবিদ্রা যাহাতে দূর হয সন্ধাণ্ডো তাহাব উপায় কবা ব্রাহ্মদিগের নিতান্ত কর্ত্তবা। এক্ষিপমাঞ্ এখনও এত বিস্তৃত হয় নাই যে ইহাব দারিদ্রা দ্ব করা অসম্ভব। চেষ্টা কবিলে এখনও ত্রাহ্মপৰিবাবে অশ্বচ্ছণতা ও অভাব অন্ততঃ কতক প্ৰিমাণে দূব হইতে

বিষয়টীব গুরুষ সকলেই অন্নভ্তৰ কৰিয়াছেন। ব্ৰাহ্মসমাজেৰ দাবিদ্যা দুৱীকৰণেৰ ক্ষেক্টি উপায় ব্ৰাহ্ময়গুলীৰ সন্মুথে উপস্থিত করিতেছি।

২। এক্ষি-পল্লী-স্থাপন-ক্লিকাভাষ বাস,অভিশ্য ব্যয়-माधा। এथान् मकन प्रवाहे महाधा अथह जन्नामाकत। **এই मक्न कार्या महानश्री महाविख ७ मिक्स लाकिन वारम्ब** र्य मक्न बास्मव এধানে কোন বিষয় कार्या नाहे, छोहाया भ्यापन ग्रिया जीविकानिसार कविएड शांतिर्वन। याहाता कार्यााशनरक এপানে অবস্থিতি করিতে বাধ্য, ভাহারা ও আপনাদিপের পরিবাব দেখানে বাথিয়া বায় সংকোচ করিতে পারিবেন। व्यवस्तान्त्रमादि ठाँशाजा मत्या मत्या छथा स याहेमा छाँशामित्मन তথাবধান করিবেন এবং বে সকল বন্ধ স্থায়ীরূপ তথার বাস কবিবেন তাঁহারাই তাঁহাদিগের অমুপস্থিতি কালে তাঁহা-দিগের রক্ষণাবেক্ষণ কবিবেন। নিকটে স্থাচিকিৎসক, বিদ্যা-শয় ও বাজাব প্রভৃতি থাকে এরপ কোন সাম্যকর ও স্থাবিধা জনক স্থানে পলীটী সংস্থাপন করিতে হইবে। তাহার পর. याहात्रा त्मरे भन्नीत व्यनिवामी इरेतन छाहाता व्याभनामित्मत চেটার এবং ব্রাহ্মমণ্ডলীব সহায়তায় আপনাদিগের উপাসনার জন্ত একটা উপাসনালয়, বালক বালিকাদিগের শিক্ষার অভ একটা বিদ্যালয়, সাধারণের পাঠের জন্ম একটা পাঠাপার প্রভৃতি ভভামুগ্রান সকল ক্রমশঃ কবিয়া লইতে পারিবেন। কলিকাতার ত্রান্ধছাত্রীনিবাস ও শিক্ষালয় অত্যন্ত ব্যৱসাধ্য विनिया नकरनहे व्यक्ष्णव कतिराज्यह्न। व्यत्तरकत्र धावना कहे যে কোন স্বাস্থ্যকর পল্লীতে এই ফুইটা স্থানাস্তরিত করিঙে পারিলে ব্যয়ভার অনেক লাঘৰ হইবে; অণ্চ ভাহাতে মক-

স্বলম্ব আদ্ধান্ত বিশেষ অক্ষ্ বিধা হইবে না। অতএব বাক্ষ ছাত্রীনিবাস ও শিক্ষালয়ও কালে সংস্থাপিত পলীতে স্থানাস্তরিত হওয়া বড় অসম্ভব নহে। আমার স্মরণ হয় কোন কোন শ্রম্মের বন্ধু ইতিপুর্ব্বে এ সম্বন্ধে আলোচনা করি-রাছিলেন। আশা করাযায় যাহাতে তাঁহাদিগের অভিপ্রায় সিদ্ধ হয়, তাঁহারা তৎপক্ষে বিশেষ যত্রবান হইবেন। আদ্ধানিবাস ও শিক্ষালয় সংস্থাপিত পলিতে স্থানাস্তরিত হইলে সেখানে রাক্ষদিগের আর অক্ষ্ বিধার কারণ থাকিবে না। মধ্যবিত্ত ও সামান্ত অবস্থার ব্রাহ্মগণ সেই পলিতে বাস করিলে অল ব্যয়ে স্থে সংসার্যাত্রা নির্বাহ করিয়া কিছু কিছু সংস্থান করিতে পাবিবেন। ইহা হইলে তাঁহাদের মৃত্যুতে তাঁহাদের পরিবাববর্গকে এক্ষণকার ভায় নিঃসম্বল হইয়া কাহাব ও গলগ্রহ হইতে হইবে না।

এসম্বন্ধে উলেথ করা কর্ত্তব্য যে শ্রন্ধের শ্রীযুক্ত আনন্দমোহন বহু ও বাবু উমেশচন্দ্র দক্ত মহাশয়দ্বর পচম্বায় অবস্থিতি কালে তথায় বা তরিকটবন্তী অন্ত কোন স্বাস্থ্যকব ও স্থবিধান্তনক স্থানে একটি প্রাহ্মপানী সংস্থাপনোদ্দেশে বহু চেষ্টা ও পরিশ্রম কবিয়াছিলেন। পচম্বা ও তরিকটবর্তী স্থানগুলি অভিশয় স্থাস্থ্যকর ও অনেক প্রকাব ব্যবসায় ও ক্ষরিকার্যোব বিশেষ উপযোগী। এই সকল স্থানে আহারীয় দ্রব্যাদি অভি স্থলভ, ভূমিব কব যৎসামান্ত এবং গৃহ নির্দ্মাণেব ব্যয় অভি অল্ল। এই সমস্ত কাবণে ওঁহোবা উক্ত স্থানগুলি মনোনীত করিয়াছিলেন। ছংথেব বিষয় তাঁহারা যাইাদিগের জন্ত এতাধিক পবিশ্রম করিলেন তাঁহাবা এবিষয়ে উদাসীন। যদি পচম্বা সম্বন্ধে বিশেষ আপত্তি হয় অন্ত কোন স্থবিধান্তনক স্থান মনোনীত করা হউক, কিন্তু এবিষয়ে আর নিশ্চিম্ত থাকা বিধেয়া নহে।

২। বায় সংকোচ-নানা কারণে ত্রাহ্মপরিবারের বায় ক্রমশঃ বৃদ্ধি হইতেছে। একদিকে যেমন কলিকাতা বাস ও বালক বালিকাদিগেব শিক্ষার গুরুতর বায়, অন্ত দিকে দেইরূপ সভ্যতা ও আফুষ্দিক বিলাসিতার নানা প্রকাব বায় ব্রাহ্মসমাজেব অর্থাভাবের প্রধান কাবণ। ব্রাহ্ম ব্রাহ্মিকা-গণ আপন আপন পারিবারিক কার্য্য সকল অপমান জনক মনে করিয়া অবহেলা করেন। পূর্বে, অন্তেব কথা দরে থাকুক, সন্ধতিপন্ন লোকের বাটীর মহিলারাও রন্ধন ও অন্যান্ত পারিবারিক কার্য্য অতিশন্ন গৌরবজনক মনে করিয়া আগ্রহের সহিত সম্পাদন করিতেন। অদ্যাপিও অনেক হিন্দু পরিবারে সেইরূপ ব্যবস্থা রহিয়াছে। কিন্তু আমাদেব সমাজের সামান্ত সামাক্ত গৃহস্থদিগেব বাটীতে এক একজন পাচিকা না হইলে চলে না। আমাদিগের মহিলারা রন্ধন অপমানের কার্য্য মনে করেন। কাহারও কাহারও সংস্কার এই যে রন্ধন রোগোৎপত্তির কারণ। রন্ধনে রোগোৎপত্তি হয় কিনা তাহা জানি না, তবে এই পর্যান্ত বলিতে পারি যে আমাদিগের মাতা. পিভামহী, প্রপিভামহী প্রভৃতি সকলে ছই বেলা বন্ধন করি-তেন, কিন্তু তাঁহাদিগের কোন রোগের কথা ভনা যায় না।

आमानिरात পরিবারের পরিচ্ছদের ব্যয়ও কিছু অ্যথা

বলিয়া বোধ হয়। সন্ত্রম রক্ষা, লচ্জা ও শীত নিবারণের জন্ত যে পরিচ্ছদের প্রয়োজন তাহাতে কাহারও আপত্তি নাই, কিন্তু বিলাসিতার জন্ত পরিচ্ছদে অযথা ব্যয় করিয়া সমাজ মধ্যে কুদৃষ্টান্ত প্রদর্শন করা অতি অন্তায় কার্য্য।

পূর্ব্বকালে আমাদিগের দেশের মহিলাগণ পদব্রজে গলামান ও তীর্থ দর্শনে যাইতেন; এথনও হিলু সমাজে সেই প্রথা রহিয়াছে। কিন্তু আমাদের সমাজে গাড়ি না হইলে উপাসনালয়ে বা কাহারও বাটাতে যাতায়াত হয় না। বিগত উৎসবেব সময় শকটবানেরা ধর্মঘট করিয়া গাড়ি বন্ধ করাতে মহিলাগণের উপাসনালয়ে যাতায়াতেব যে কত বায় হইয়াছিল তাহা সকলেই অবগত আছেন। এই সকল বিষয়ে বাক্ষসমাজের দৃষ্টি আফুট হওয়া নিতাস্ক বাঞ্নীয়।

- ৩। অর্থ সংস্থান—ব্রাহ্মদিগের সাংসারিক অবস্থা সাধারণত: এত অম্বচ্ছল যে তাঁহাদিগের মধ্যে অনেকে আপন আপন পরিবারের জন্ম কিছুই সংস্থান করিতে পারিতেছেন না। এই জন্ম কেহ কেহ কোন কোন জীবনবীমা সমিতিব সহিত সংস্থাই ইইয়াছেন। ইহাদিগের মৃত্যুতে ইহাদিগের পরিবারবর্গ একবারে নিরুপায় হইয়া পড়িবে না। আমাব বিবেচনায় প্রত্যেক ব্রাহ্মেরই ইহাদিগের মৃত্যুতের অনুসর্ম করা কর্ত্ব্য। ব্রাহ্মসমাল হইতে এ সম্বন্ধে কিছু করিতে পারিলে ভাল হয়।
- ৪। স্বাধীন ব্যবসায়—পবের উপর নির্ভর অথবা সামান্ত বেতনে পবের দাসত্ব করার পবিবর্ত্তে ব্রাহ্মগণ কোন না কোন লাভজনক ব্যবসায় অবলম্বন করিয়া আপনাদিগের উদাম, পবিশ্রম ও অধ্যবসায়ে প্রভৃত অর্থ উপার্জ্জন করিয়া আপনাদিগের অবলার উন্নতি ও স্থুও স্বছন্দে জীবনাতিপাত কবিতে পারেন। এবিষয়ে পার্শি ও মাড়োয়াবি সম্প্রদায়ের দৃষ্টাও অমুকবণীয়। কোন ব্যবসায়ে প্রবৃত্ত হইতে হইলে অভিজ্ঞতা ও অর্থ উভয়েরই প্রয়োজন। বাহাবা যে ব্যবসায়ে প্রবৃত্ত হইতে অভিলাষী তাঁহাদিগকে অগ্রে সেই ব্যবসায় সম্বদ্ধ অভিজ্ঞতা লাভ কবিতে হইবে। তৎপরে অর্থ সম্বদ্ধে ব্রাহ্মসমাজ হইতে কোন স্থ্যবস্থা করা কর্ত্ত্ব্য। সঙ্গতিপন্ন ব্রাহ্মনান্ত এবিষয়ে অনেক সহায়তা কবিতে পাবিবেন।
- ে। মিলিত ভাণ্ডার (co-operative store)—ব্রাক্ষদিগের একটা মিলিত ভাণ্ডার হওয়া অত্যন্ত প্রার্থনীয়। ইহা
  দাবা একদিকে ব্রাহ্ম সাধাবণের নিদোষ ও স্বাস্থ্যকব আহাবাৰ
  দ্রবাদি পাইবার বিশেষ স্থবিধা হইবে, অপব দিকে কয়েক
  দ্রন ব্রাহ্মের অর্থোপার্জনের একটা উৎকৃষ্ট উপায় হইতে
  পারে।

উপসংহারে আমার এই প্রস্তাব যে ব্রাহ্মদিগের সাংসাবিক অবস্থা উন্নতির উল্লিখিত অথবা অন্ত কোন উপায় কায্যে পরিণত করিবার জন্ত একটী সমিতি সংগঠিত হইয়া এসম্বনীয় আলোচনা শেষ হউক।

# ব্রাহ্ম বালিকাদিগের শিক্ষা। (১২ই মাঘ সন্মিলনীতে শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী কর্তৃক পঠিত।)

ব্রাহ্ম বালিকাদিগকে কিরুপ শিক্ষা দেওয়া কর্ত্তব্য; এই প্রশ্নের বিচার কবিতে গেলেই আর হুইটী বিষয়ে চিম্ভা করিতে হয়। প্রথম ক্রোহ্ম সমাজ নারী-জীবনের কিরুপ আদর্শ সমক্ষে বাথিয়াছেন ?

দিতীয়—ব্ৰাহ্মসমা**হ** ব্ৰাহ্ম পৰিবাবের কি আদর্শ অবলম্বন কৰিয়াছেন

প্রথমে নারী-জীবনের আদশ—আমাদেব সমকে তৃই প্রকার আদশ উপস্থিত। এক আদশ প্রাচীন হিন্দু সমাজেব, বাহাতে বলে:—

নান্তি স্ত্ৰীণাং পৃথগ্ যজে। ন বৃতং নাপ্যপোৰিতং প্ৰিং শুশ্ৰুষতে যেন তেন স্বৰ্গে মধীয়তে।

मन् ।

অর্থ—নাবীদিগের পৃথক্ যক্ত নাই পৃথক্ ব্রন্ত বা উপাসনানি নাই, ইছাবা যে পত্তির শুক্ররা করেন, তন্ধবাই স্বর্গগামিনী হযেন। এই মূল ভাবেরই অনুসরণে এই বিবি প্রচার হইগাচে;—

> বাল্যে পিতৃবশে তিঠেং পাণিআহ্ম্য যৌবনে পুতাণাং ভরন্ধি প্রেতে ন ভঙ্গে স্থী সংস্থতাং।

অর্থ—নাধী বাল্যে পিতাব অধীনে থাকিবেন. যৌবনে পতিব অধীনে থাকিবেন, ও বাদ্ধক্যে প্রণণেব অবীনে থাকি-বেন, রুমণী কথনই স্থানিতা অবলম্বন কাবটোন লা।

পুক্ষোক্ত আদশ অনুসাবে এই ভাবতে লক্ষ লক বম্বী চিবদিন আপনাদেব প্রবৃত্তি ও অধিবাবকে থকা কবিষা পতি সেবাকে ও প্রসেবাকে প্রমাধ্য জ্ঞান কবিষা মৃত্ত চিত্তে দিন মাপন কবিয়া আসিয়াছেন ও এখন ও আসিতেছেন।

ব্রাহ্মসমাজ পরিস্ফুটরূপে না হউক অপ্রিস্ফুটভাবে নারী জীবনের আরে এক আদশ ঘোদণা কবিয়াছেন ও তাহার অয়ুস্বণ কবিভেছেন। সে আদশ এই—

"নবনাবী সাধারণেব সমান অধিকাব, যাব আছে ভক্তি পাবে মৃক্তি নাহি জাত বিচাব।" অর্থাং ভক্তি দাবা মৃক্তি লাভ করা বিষয়ে নরনারীর সমান অধিকাব। ইহার অর্থ এই পুক্ষেব ভায় নারীও স্বাধীন ভাবে ঈশ্বকে জানিবেন, ভাহাকে প্রীতি কবিবেন ও নিজ-জীবনেব মহত্ব সাধন করিবন। ইহাই হইল সর্ব্ব প্রকার স্বাধীনতার ভিত্তি।

জীবনের মহর সাধন সম্বন্ধে পুরুষ ও নারীতে প্রভেদ সাই—প্রুষের পক্ষে যাহা জীবনের মহর-সাধনের পথ, নারীর পক্ষেও তাহাই মহর-সাধনের পথ। অধাৎ জানকে উজ্জ্ল করিয়া সত্যকে গ্রহণ করা, প্রেমকে উজ্জ্ল করিয়া সত্যকে প্রীতি করা ও ইচ্ছাশক্তিকে দৃঢ় করিয়া সত্যের অনুসরণ করা। যে ভীবনে এই তিবিধ উপকরণ স্থানিত হন, এবং জাগ্রত ঈশ্বর প্রীতি তাহাদের প্রিতালক হয়—সেই জীবনেই মহন্ব সাধিত হয়।

এই আদর্শ অমুসারে চিন্তা করিতে গেলে এই ভাবিতে

ছইবে, কি প্রকারে শিক্ষা দিলে আমাদের বালিকাগ্ণ জাগ্রত দিখর-প্রীতির বারা উদ্দীপ্ত হইতে পারে এবং সেই জাগ্রত প্রীতিব বারা পরিচালিত হইয়া, জ্ঞানের উজ্জ্বলতা, প্রীতির প্রবলতা, ও ইচ্ছা শক্তির দৃঢ়তা লাভ করিতে পাবে। তাহাদিগকে সেই-রূপ শিক্ষাই দিতে হইবে, যাহাতে তাহাদেব জ্ঞানসঞ্চার অপেক্ষা জ্ঞানম্পৃহা উদ্দীপ্ত করার দিকে, পরের চিন্তা মনে ঢালিয়া দেওয়া অপেক্ষা চিন্তাশীলতা উৎপাদনের দিকে, সমুতার কাহিনী শুনান অপেক্ষা সাধুতার আকাজ্ঞা জ্বনানর দিকে অধিক দৃষ্টি থাকিবে।

সর্বোপরি ইহা শ্বরণ রাথিতে হইবে যে তাহাদের হৃদয়ে যদি ধন্মাগ্নিনা লাগে, তাহাদেব দ্বাবা ব্রাহ্মসমাজেব বল বৃদ্ধি হইবে না। তাহাবা হাজার শাস্ত, স্থাল, পবিত্র ও মিষ্ট প্রেক্তি সম্পন্ন হউক না কেন, কিছুতেই তাহাদিগকে বিষয়ান্দ্রি, প্রাণপবতা, অসাব বিলাসপ্রিয়তা প্রভৃতি হইতে রক্ষা কবিতে পাবা যাইবে না। তবে একপ শিক্ষা কিরুপে দেওয়া যাব।

ভাবী প্রাহ্ম-পরিবাবের আদশের বিষয়ে চিন্তা করিলেও বালিকানিগের শিক্ষাবিষয়ে বিশেষ মনোয়াকী চইবার আবশ্য কতা অন্তত্তর করা যায়। প্রাহ্ম-পরিবারগুলির দ্বারা চুইটা উদ্দেশ্য সিদ্ধ হওয়া আবশ্যক। প্রথম প্রাহ্ম পরিবার যেন একপ ভান হয়, যাহাতে থাকিয়া পুক্ষ ও বমণী প্রত্যেকেই স্বীয় জীবনের মহর সাধন করিতে পারে; রিতীয়, এক একটা পরিবার যেন এক একটা ধ্যাগ্রির কুণ্ড-স্বরূপ হইয়া রাক্ষসমাজের বল রুদ্ধি করিতে পারে। নারীগণের প্রস্তুত্ত শিক্ষা বাত্রতিক্থনই এ উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারে না।

কিন্দা শিক্ষা প্রণালীব দাবা পুর্বোক্ত উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পাবে ৪ সে প্রণালী যেরপ ইউক না বেন, বালিকাদিগের ফলনে ধ্যায়ি প্রজলিত করা ভাষাব একটা প্রধান লক্ষ্য হওয়া কর্ত্তবা। সেই সঙ্গে মানসিক শক্তি ও এদরের ভাব সকলকে বিকশিত করিতে ইউবে। বর্তমান সময়ে যাহাকে উচ্চ শিক্ষা বলে, ভাষা অপেক্ষাও গভীবতর শিক্ষা আমাদের বালিকাদিগের পক্ষে আবশ্রক। এবং সেই প্রকার শিক্ষার আবশ্রকাদিগের পক্ষে আবশ্রক। এবং সেই প্রকার শিক্ষার আবশ্রকাদিগের বর্তমান শিক্ষা-প্রণালীর উপরে আন্তা রাখিছে পারিতেছি না। বিশ্ববিদ্যালযের উপাধিপ্রাপ্ত অনেক মূবকের জ্ঞানের যে অবস্থা দেখি, তাহাকে উচ্চ শিক্ষা বলিয়া আখ্যাত কবিতে কজ্ঞা বোর হয়। আমি ত একজন বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাধি প্রাপ্ত ব্যক্তি, আমি প্রকৃত জ্ঞান সম্পন্ন ব্যক্তিদিগের নিকটে বিদ্যা নিজের অজ্ঞতা অস্তুত্ব করিয়া অনেকবার এত লজ্ঞা পাইয়াছি যে ভাহার বর্ণনা হয় না।

বিশবিদ্যালয়েব শিক্ষা-প্রণাণীর প্রতি আমার প্রথম আপত্তি এই, ইহাতে কতকগুলি জ্ঞানের কথা শুনায়, জ্ঞান স্প্রাকে উদ্দীপ করে না; অপরের কতগুলি চিন্তা মনে ঢালিয়া দেয়, চিন্তানীলতা উদ্দীপ্ত করে না। পরীক্ষাও পাশ হওয়ার প্রতি প্রধান দৃষ্টি থাকাতে শিক্ষক ও ছাত্র উভয়েরই জ্ঞান-স্পৃহার উদ্দীপনার প্রতি প্রয়াস না থাকিয়া কতক্ত্রাল

জ্ঞাতব্য বিষয়ের প্রতি প্রয়াস থাকে; হৃদয় মনের প্রশন্ততা ও চিন্তাশীলতা লাভ অপেক্ষা পরের চিন্তা গিলাইবার দিকে প্রের্ভি থাকে। বদি তাহাদের জ্ঞানের প্রশন্ততার উদ্দেশে তাহাদের নির্দিষ্ট পাঠ্য পুন্তকের অতিরিক্ত আর পাঁচথানি সংগ্রন্থ পড়াইতে চাও, সেদিকে না শিক্ষক না ছাত্র কাহারও ভরাতর হয় না। তাহারা সেই পাঠ্য পুন্তকের কতিপম বিষয় লইমা থোড় বড়ি থাড়া, থাড়া বড়ি থোড় কবিতে চায়। ইহা অনিবার্য্য।

দ্বিতীয় আপত্তি—একটা অতিরিক্ত প্রতিদ্বন্ধিতা ও উত্তেজনার মধ্যে পড়াতে ছাত্র ছাত্রীদিগের মন্তিদ্ব অতিমাত্র উত্তেজিত হয়; তাহারা তাহাদের শবীব ও মন উভয়ের অপকাব করে।

তৃতীয় আপিত্তি—বিশ্বিদ্যালয় সভা যাহা নির্দেশ কবিয়া দিয়াছেন, ভদতিবিক্ত অনেক জ্ঞাতব্য ও শিক্ষিতব্য বিষয় আছে, সেসকলেব শিক্ষা দেওয়ায় সূবিধা হয় না। অথ্রে বাঙ্গালা ভাষাটাও যে ভাল কবিয়া, পাকা কবিয়া শিথাইব ভাহাও ঘটয়া উঠে না, চদদাত না ভাঙ্গিতে ভাঙ্গিতে কট সটে ইংবাজী শিথাইবার প্রেণাতে শিক্তদিগেব মনের বিকাশকে

চতুর্থ আপিতি—যে ধর্ম ও নীতিকে আমাবা সর্কোণিবি হান দিতে ইচ্চা করি, বিশ্ববিদ্যাল্যের প্রণালী নিঃশক্ষ ভাষাতে এই বলে—ধর্ম ও নীতির শিক্ষা মানবের শিক্ষার অন্তর্ভুতি নহে। তুমি অসং ও অধান্মিক কি না তাহার সহিত আমাদের সম্বন্ধ নাই, তুমি এতটা সাহিত্য, এতটা আছ শাস্ত্র, এতটা ইতিহাস শিথিয়াছ কি না আমানা তাহাই দেখিতে চাই; ইহা যদি শিথিয়া থাক আমাদের প্রস্তুত্ত উপাধি গইয়া যাও। এই নিঃশক্ষ শিক্ষার ফল,—ধর্ম-শিক্ষাকে শিক্ষিত্ত ব্যক্তিদিগের পক্ষে হীন করা।

এক্ষণে প্রশ্ন এই, আমনা কি আমাদিগের বালিকাদিগকে
বিশ্ববিদ্যালয় নিরপেক হইরা উচ্চ শিক্ষা দিতে পাবি না ?
বিশ্ববিদ্যালয়েব প্রণালীর ভিতরে না থাকিলে যে উচ্চ শিক্ষা ও
প্রক্রত শিক্ষা দেওয়া যায় না তাহা মনে করি না, ববং মনে
কবি এই প্রণালীদাবা প্রক্রত উচ্চ শিক্ষাব ব্যাঘাত
ভইতেছে।

क्ट (कट वलन विश्वविদ্যानस्त्र ख्रेगांनी এक है। दिन्न উত্তেজ क कावन—A good incentive, এই कावन পরিহাব कवित्न এরপ বিপদ ঘটিতে পারে যে আমাদের আদর্শ উচ্চ শিক্ষা কেবল মনেই থাকিবে, কার্য্যে ছইল कि না দেখিবার কেহ থাকিবে না। ইহার উত্তরে এই বক্তব্য, আদর্শটা কার্য্যে হইতেছে কি না দেখিবার জন্ত কোনও একটা উপায় উদ্ভাবন করা কঠিন নহে।

আর একটা কথা, যদি বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রণালী পরিত্যাগ করিয়াও উৎকৃষ্ট শিক্ষা দেওয়া সম্ভব হয় ও অতি ভালরূপেই সম্ভব হয়, তবে আমরা বালিকাদিগের জক্ত সে প্রণালীর আবিশুক্তা মনে করি কেন ? ছুই উত্তর—

थिथम,--आभारतत अरनक वानिका हत्र कित रकोमार्ग

অবলম্বন করিয়া থাকিবে, হয়ত তাহাদের অনেককে আত্ম-পোষণ ও অফন-পোষণের জক্ত উপার্জ্জন করিতে হইবে। কর্ম্ম করিতে গেলেই বিশ্ববিদ্যালয়ের শিক্ষা ও উপাধি আছে কিনালোকে দেখিবে। স্থভরাং সে শিক্ষা সকলকে দেওয়া চাই।

এ বিষয়ে চিন্তনীয় বিষয় একটা আছে,—কর্ম্ম কর্মা বলিয়া ছায়ার পশ্চাতে ছুটলে ত হইবে না। দেশে আজিও স্ত্রী শিক্ষার যে অবস্থা ভাহাতে বিশ্ববিদ্যালয়ের উচ্চ শিক্ষা প্রাপ্তা মহিলাদের কর্ম্ম করিবার স্থান কোথায়? কলিকাভাব বেথুন কলেজ, ঢাকার ইডেন স্থল প্রভৃতি ছুই একটা বিদ্যালয় ছাড়িয়া দিলে, আর স্থান কোথায়? ববং ইহা বলিলে অযুক্ত কথা বলা হয় না, যে বর্ত্তনান বালিকা বিদ্যালয় সম্হেব অধিকাংশেব যে হীনাবন্থা ভাহাব শিক্ষয়িত্রী প্রস্তুত কবিতে হইলে বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রণালী অপেক্ষা সভন্ত প্রণালী অবলম্বন করিয়া প্রস্তুত কবিলে ভাল হব।

বিশ্ববিদ্যালয়েব প্রণালীর দিকে গতিব বিভীয় কাবণ—
আমাদেব বমণীদিগেব মধ্যে যাহাবা প্রতিভাশালিনী ও মনসিনী
তাঁহারা যদি বিশ্ববিদ্যালযেব উপাধি সকল গ্রহণ কবিতে চান,
অথবা কেছ যদি চিকিৎসা বিভাগে প্রবেশ কবিয়া প্রতিষ্টা
লাভ করিতে চান, সে ঘাব কি ভাঁহাদেব জন্ম উন্তুক থাকা
আবশ্যক নহে । আমি বলি অবশ্য মক্ত বাধিতে ভইবে।

আমি এতক্ষণ বাহা বলিলাম ভাহাব সাব নিধ্ধ এই :—
বিশ্ববিদ্যালয়েব প্রণালীতে কি বলে, না বলে, ভাহাব প্রতি
দৃষ্টিপাত না কবিষা আনাদেব অনিকাংশ বালিকাকে উৎক্ট শিক্ষা দিতে হইবে, যদ্বাবা ভাহাবা যধার্থ জ্ঞানলাভ কবিতে পাবে, জ্ঞানস্পৃহা উদ্দীপ্ত হইতে পাবে, চিন্তাশিল্ভা জ্মিতে পাবে, ক্ষদ্য মনেব প্রশস্তভা হইতে পাবে।

ধর্মশিকা এই শিকাব প্রধান অঙ্গ হত্যা উচিত।

সর্বোপরি তাহাদেব অস্তবে যাহাতে ব্রাহ্মসমাজের কাজ কর্ম্মের প্রতি অমুবাগজন্ম একপ উপায় অবলম্বন করা কর্ত্তব্য। ব্রাহ্ম-শিক্ষকদিণের 'সংসর্গ ও ব্রাহ্মসমাজেব কার্যাক্ষেত্রের সংগ্রাম ইহাব একটা প্রধান উপায়।

জ্ঞানামুরাগ, সদম্ভানক্চি প্রসেবা প্রভৃতি, কার্য্যের,
শৃন্ধলা ও গৃহেব স্থ্যাবস্থা প্রভৃতি শিক্ষা দিবার উদ্দেশে
প্রত্যেক ব্রান্ধ বালিকা কিছুদিন কবিয়া উপযুক্ত চবিত্র সম্পন্ন।
মহিলাদিগের অধীনে বোর্ডিংএ থাকিকে পাবিলে ভাল হয়।
আমি সম্ভানদিগকে পিতামাতার নিকট হইতে বিছিন্ন করিবার
পক্ষ নহি। কিন্তু আমাদের অধিকাংশ ব্রাহ্মপ্রিবারের বর্ত্তমান অবস্থা যেরূপ তাহা দেখিয়া বোধ হয় যে সেথানে থাকা
অপেক্ষা বয়ঃপ্রাপ্ত বালিকাদিগের বোর্ডিংএ পাকিলেই শিক্ষালাভের পক্ষে অপেক্ষাকৃত অধিক সাহায্য হইতে পারে।

অধিকাংশ বালিকার পক্ষে এইকপ উপায় অবলম্বিত হইবে;
অথচ যাহারা বিশ্ববিদ্যালয়ের উচ্চমঞ্চে আবোহণ কনিতে
ইচ্চুক তাহাদের জন্ত ঘার উন্মুক্ত থাকুক। তাহাও কঠিনবোধ
হয় না। কিছুকাল আমাদের প্রণালীতে শিক্ষিত হইয়া পবে
তাহারা সেই মঞ্চে পদার্পণ করিতে পারেন। সে জন্ত শিক্ষার
স্থান পাওয়া কঠিন নহে।

#### ১৮৯৩ সালের

#### সঙ্গত সভার কার্য্য বিবরণ।

গত মাঘোৎসবে **২ই** মাঘ মঙ্গলবার এই সভার বিশেষ উৎসব হয়। তাহাতে শ্রদ্ধাম্পদ শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন। সঙ্গতের কার্য্য বিবরণ পাঠান্তে ক্রেকটা লাতা নিজ নিজ জীবনের অভিজ্ঞতা সম্বন্ধে কিছু কিছু বলেন।

গত বংসর এই সভায় উপস্থিত সভায় সংখ্যা গড়ে ৮। ১০ জন ইইয়াছিল। এত জিয় সময়ে সময়ে কয়েকটা মহিলাও যোগ দিয়াছিলেন। ৩০এ চৈত্র, ২৮এ অগ্রহায়ণ ও ৫ই পৌষ এই তিন মঙ্গলবারে সমাজ-মন্দিরে উৎসব, বক্তৃতা ও ব্রাহ্ম সাম্মলনীর বিশেষ উপাসনা থাকায় এই তিন দিন বাদে এ বংসর এ সভাব ৪৭টা অধিবেশন হয়। তাহাব ১৩টা অধিবেশনে উপনিষদাদি শাস্ত্র পাঠ ও ব্যাখ্যা হয়। আদি বাক্ষসমাজেব শ্রদ্ধাশাস্ত্র ব্যাখ্যা কবিয়া আমাদের কতভত। ভাজন হইয়াছেন, সে জন্ম আমবা তাঁহাকে ধন্মবাদ দিতেছি। অবশিষ্ট ৩৪টা অধিবেশনের মধ্যে ১৪টা অধিবেশনে নানা বিষয়ে আলোচনা ও ২০টা অধিবেশনে নিয়লিখিত ১০টা বিষয়ের আলোচনা হয়:—

(২) "অভিনান" (২) "সংসার" (৩) "সংসার কেন ধদ্দেব প্রতিবন্ধক হয় ও তাহা নিবাবণের উপান্ন কি ?" (৪) "ব্রাহ্মদের গৃহ কিরূপ হওয়া উচিত্ত" (৫) সাধুব লক্ষণ কি ?" (৬) "ব্রাহ্মদর্শের লক্ষণ কি ?" (৭) "ব্রাহ্মদর্শর পরস্পবেব প্রতি প্রতির যোগ কেন হইতেছে নাও তাহা হইবাব উপায় কি ?" (৮) "আমাদের প্রস্পবেব মধ্যে প্রীতিব যোগ কবিবার কার্য্যগত উপায়।" (৯) "সর্ব্ধন মত্যন্তঃ গর্হিতঃ" (১০) "আব্বোৎসর্গ"। এই সকল বিষ্ণের কোন কোন্টা ৩।৪ দিন ধবিয়া আলোচিত হইয়াছিল। আমরা উপরোক্ত বিষ্ণের ক্রেকটীর সার্মর্শ্ম নিবেদন ক্রিতেছি—

২। ব্রাহ্মদের গৃহ কিকপ হওয়া উচিত—"ব্রহ্মনিটো গৃহত্বভাব তবজ্ঞান প্রায়ণঃ। যব্দদ্ কর্ম্ম প্রকৃর্বীত তদ্ধানি
সমর্পণে ।" ইহা আমাদিগের আদর্শ মত। কিন্ত ইহা
কার্যাগত কবিতে হইলে, আমাদিগের কতকগুলি নিয়মে
আবদ্ধ হওয়া উচিত। তাহা এই—১ম, প্রতিদিন প্রাতঃকালে
ও সন্ধ্যাকালে ভক্তির সহিত ভগবানের পূজা করিতে হইবে।
২য়, পিতা মাতা প্রভৃতি গুরুজনের প্রতি ভক্তি শ্রদ্ধা ও ভ্রাতা
ভগ্নীদিগকে প্রেম করা কর্ত্বর। ৩য়, দাস দাসীগণের প্রতি
সদ্ম ব্যবহার। ৪র্থ, সকলের প্রতি সরল ব্যবহার। ৫ম,
বিসম্মের সহিত মৃত্ব বাক্যের দায়া কথাবার্তা কহা। ৬৯,
অতিথি-সেবা। ৭ম, জীবে দয়া। ৮ম, জ্ঞানালোচনা ও
শাস্ত্রাদি পাঠ। এই সকল বিষয় বান্ধা মাত্রেরই অবশ্র
কর্তব্য। এইরূপ ভাবে আমাদের জীবন গঠন করিতে চেষ্টা

করিলে আমাদের পরিবার ব্রাহ্মপরিবার নামের উপযুক্ত হইবে ও আমাদের পরিবারে বে সমস্ত সন্তান সন্ততি জন্মিরাছে বা জন্মিবে তাহারাও আমাদের দৃষ্টান্তের ছারা জীবন •গঠন করিতে শিক্ষা করিবে।

৩। ব্রাহ্মধর্মের লক্ষণ কি ?— ১ম, আআয়ায় ব্রহ্মের প্রত্যক্ষ
যোগ সাধনই ব্রাহ্মধর্মের প্রথম ও সর্বরপ্রধান লক্ষণ। ২র,
তাঁহার প্রিয়কার্য্য সাধন করা, ইহাও তদ্ধপ প্রয়োজনীর।
হিল্ফাতির প্রধান ভাব আআতে প্রমাত্মার দর্শন বা আআর
সহিত ব্রহ্মের প্রত্যক্ষ যোগ স্থাপন; আর য়িহুদী জাতির প্রধান
ভাব মানব-ইতিহাসের মধ্যে ঈশ্বরকে দর্শন করা। মহাআ
রাজা বামমোহন বায এই ছুই জাতির ছুই বিশেষ ভাব এক্তর
সন্মিলিত করিয়াছিলেন ও মহর্ষি দেবেক্সনাথ সেই ভাব
প্রাণে অন্ত্রত করিয়া "ত্র্মিন প্রীতি স্তত্ত্য প্রিয়কার্য্য
সাধনঞ্চ তত্ত্বাসনামের" ব্রাহ্মধর্মের এই পূর্ণ লক্ষণ প্রচাব
ক্রিয়াছেন।

৪। ব্রাহ্মসমাজে পরম্পরেব প্রতি প্রীতির যোগ কেন হইতেছে নাও তাহা হইবার উপায় কি 
?—>ম, আমাদের পরম্পরেব মধ্যে অবিশ্বাস থাকায় আমাদেব মধ্যে প্রীতির যোগ হইতেছে না। ২য়, আমবা অন্তেব দোষ দেখিতে যেরুপ্দ তংপর, নিজেদের দোষ দেখিতে তেমন নহি। ৩য়, ভাবপ্রধান, জ্ঞানপ্রধান ও কর্ম্ম-প্রধান এই ভিন শ্রেণীব লোক আমাদেব মধ্যে দেখা যায়; কিন্তু ইহাদিগের মধ্যে এক শ্রেণী অপব শ্রেণীব লোককে একটু অশ্রদ্ধাব চক্ষে দেখেন। প্রধানতঃ এই ক্রিনটী কারণে আমাদের মধ্যে প্রীতির যোগ হই-তেছে না।

ইহা দূর করিতে হইলে সর্কাণ্ডো নিজকে হীন বলিয়া জানা প্রয়োজন। আমাদের আয়-দৃষ্টি প্রবল হইলে নিজেদের ক্রুটী চক্ষণতা দেখিতে পাই ও তাহা দেখিলে অস্তের দোষ দেখিলেও তাঁহাব প্রতি প্রীতির অভাব হইবে না বরং তাহা রৃদ্ধি পাইবে। ২য়, পরস্পর প্রাণ খুলিয়া আলাপ করাব প্রয়োজন; এরপ কবিলে পরস্পরের প্রতি অবিশাস ও সন্দেহ দূব হইবে। ৩য়, আমাদের নিজ নিজ মত সম্বদ্ধে যে গোঁড়ামী আছে তাহা ভালিয়া দিতে হইবে। ৪র্থ, আমরা সকলে ব্রাহ্মসমাজে আদিয়াছি ভগবানকে পাইবার জক্ত, সকলেই পরিত্রাণাকাজ্জী, এই ভাব মনে সর্ক্রদাই চিন্তা করা কর্ত্তব্য। ৫ম, যদি প্রেমময় পরমেশ্বরের দিকে সকলের মুথ থাকে তাহা হইলে প্রস্পরের প্রতি প্রেম অবশ্রন্তারী হয়। অতএব আমাদের আত্মার গতি যাহাতে তাঁহার দিকে হয় তাহাই সক্ষপ্রের উপায়। ৬৯, পরস্পর পরস্পরের বাড়ী যাওয়া ও পরস্পরের সংবাদাদি লওয়াতে প্রীতি সংস্থাপত হয়।

তৎপরে এই প্রীতির যোগ করিতে হইলে পর-দোষ কীর্ত্তন করা একবারে বিষবৎ পরিত্যাগ করা কর্ত্তব্য। বাঁহাদের সহিত আত্মীরতা করিতে ইচ্ছা করি, তাঁহাদের কথনও কোণাও নিন্দা না করা। যদি তাঁহাদের কাহারও কোনও দোষ থাকে, ভবে তাঁহার নিকটেই ভাহা বিনীত ভাবে বলা

উচিত; কিছ অন্তের নিকট বলিয়া তাঁহাকে হেয় ক্রিবার চেষ্টা ক্রা কথনই উচিত নহে।

ে। আত্মোৎদর্গ—আত্মোৎদর্গ করা বড় কঠিন ব্যাপার। আমিরা মুথে আত্মেৎেসরের কথা বলি বটে, কিন্তু জীবনে ভাহা সম্পন্ন করা স্থক্তিন। একজন সাধু বালয়াছেন "আত্মোৎ-नर्ग कतिशाह, তবে প্রাথনা কর কেন ?" অথাৎ আত্মোৎ-সর্গ করিলে প্রার্থনার আবিত্রকতা থাকে না। আমি যথন নিজের মন প্রাণ সম্পয় দান করিয়াছি, তথন আরে আমার নিজের †কছুইথাকিণনা। আনমারমনের উচচ নীচ ⊄রভৃতি সম%। বাসনা নিকাণ না হইলে যথাথ আন্মোৎসগ হইবে না। এই-ক্লপ সমস্ত বাসনা বিসজ্জন দিয়া আন্মোৎসর্গ করিলে বাঁহাকে আত্মেৎেশগ করা যায় তথন ভিনি যাধী বলিবেন তাহা করা সম্ভব হয়। স্থতরাং নিজের বাসনার জন্য প্রাথনার আবিশ্রক্তা থাকে না, সে সময় আমার কেবল এহ কন্তবাু্যে আমি কেবল তাহার মুথ-পানে তাকাইয়া থাকি।

কিন্তু আমাদের পক্ষে আত্মোৎসর্গ একটা সাধন। "আমি ভগবানের হহব" এইরূপ ভাব অল্লাধক পরিমাণে সকলেরই হয়, কিন্তু এঅবস্থা আমাদের স্থায়ী হয় না। ইহা স্থায়ী করিতে **২ইলে আমাদিগকে সক্ষত্যাগী ২ইবার জন্ম অর্থ, সময় ইত্যাদি** मन्छ विषयप्रवर किছू किছू कविया ভगवानित कार्या मिटा इहेर्स । अहे अल क्रांस क्रांस कांत्र के विराठ व्यासारने व আদশের দিকে অগ্রস্ব হইতে পারিব। ইহাই ধন্ম।

लाटक धर्म माधन कतिवात कछ नाना व्यकात (ठेटी) करते। ১ম, প্রতিজ্ঞা; কিন্তু মাহুষ হহা রক্ষা করিতে পারে না, বিফল **६व । २व, फार्कतग, मास्य हेश कोवट याहेबा विक**न इয়া থাকে। ৩য়, সাধু-জাবনের প্রভাব; ইয়া অতিস-প্রতবের ক্রায় অক্টের জীবনে কাষ্যকরে। ইহাতেই জীবনের যথার্থ পবিবস্তুন হয়।

মহাম্পরমেখবের ক্পায় এবংসর সঙ্গত সভা কভ্ক নিম্ন-লিখিত কাৰ্য্য ছহটা সম্পন্ন হইয়াছে।

১ম, সম্ভতের একজন উৎসাধী সভ্য কন্তৃক পূব্ব পূব্ব বংশরের ভায় এবংসরও প্রতিদিন সন্ধ্যার প্র স্মাঞ্জ-মন্দিরে পরত্রকোর উপাদনা হইয়াছে।

২য়, পূর্ব্ব পূর্ব্ব বৎসরের স্থায় এবংসরও সঙ্গত সভার কয়েক ধন সভা ৩০ এ অগ্রহায়ণ ২ইতে সমস্ত পৌষ মাস কলিকাতা-वामी आक्रानिरंगत--- क्वन माधात्र आक्रममारकत नरभ, व्यानि ত্রাক্ষপমাঞ্জ নববিধান ত্রাক্ষপমাঞ্চের ত্রাক্ষদিগের বাড়ী বাড়ীও ভোর সংকার্ত্তন ও উপাসনা করত: ভগবানের নাম প্রচার রিয়া আপনাদিপকে ধয় ও ক্বতার্থ করিয়াছেন।

প্রাচ্য ও প্রতীচ্য ধর্মভাব। ( ठकू:वष्टिकम मारचादमव উপলক্ষে ১২ই माघ २३० काल्यांत्री শ্ৰীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্ৰী কৰ্তৃক প্ৰদত্ত বক্তার সারাংশ )

বর্তুমান সময়ে ছুই প্রকার স্রোড এদেশে দ্যালিত

ইচ্ছানা করিবেও আমাদের সামাজিক রাজনৈতিক, পাবি-বারিক প্রভৃতি সকল সম্বন্ধ ধীরে .ধীরে এই পরিবর্তন-লোতে ভাসিতেছে। একান্নবর্ত্তিতা, পূর্বতন পারিবারিক গঠন প্রভাত সকলই পরিবর্ত্তনশীল। পিতা, পুত্র, ধনী ও দরিজ, বর্ষীয়ান ও যুবক, পুরুষ ও নারী, রাজাও প্রজা, জমীদার ও রাইয়ত প্রভৃতি সকলেরই সম্বন্ধ এই উভয় চিস্তা-স্রোতের সন্মিলনে পরিবৃত্তিত হইতেছে। এবং সর্কশেষে এই স্রোত ধর্মরাজ্যে∉ যুগাস্তর উপহিত করিয়াছে। বর্তমান সময়ে ৩৯চা ও **প্রতীচ্য এই উভয় ধর্মভাবের সন্মিশন সংঘটিত হইতেছে**।

একণে আলোচ্য—প্রাচ্য ধর্মভাব কি ? প্রাচ্য ধর্ম বলিলে আমরাহিশুধর্ম বুঝিব। কারণ পূর্কদেশীয় অপের ছইটা ধমেব মূলভাব য়িহুদী ধর্ম হইতে উৎপন্ন। প্রতরাং ইহাদের মধ্যেও প্রাচ্য এবং প্রতাচ্যভাব বিদ্যমান। এহ প্রাচ্য ভাবের ভিত্তিও প্রকৃতি কি তাহা নির্দেশ করিবার পুরের কিরূপে উহা উৎপন্ন হইল দেখা আবিশুক। সাধারণত: যাদ ধন্মভাবের মূল ভিত্তি বিচার করি, তাহা হই*লে এই প্র*লে উপনীত হই— केचेत्र, मानवाञ्चा ७ क्व १९ এर नक त्वत्र चन्न १५ अवस्त्र-विष्ट्रम সেই সেই ধর্ম সংস্থাপকগণ কি কি মত প্রকাশ করেন ১ সেই সেই মতের উপর স্থাপিত হইয়া ভিন্ন ভিন্ন ভাব প্রক্রেটিত হইয়াছে। ঈশ্বর সম্বন্ধে আজ পর্যান্ত অগতে তিন প্রকার ভাব দেখিতে পাৰয়া যায়—(১) জগতে, (২) মানবাত্মায় এবং (৩) ইতিহাসে তাঁহাকে দশন করা। জড়জগৎ, চেতনরাজ্য এবং মানবসমাজ স্কাদা সকলের চকুর সমকে বিদ্যমান রহিয়াছে। কোনও কোনও জাতি জডে, কোনও কোনও জাতি চেতনে এবং অপবেবা ইভিহাদে ঈশবের সতা সন্দশন করিয়াছেন। প্রাচীন গ্রীকগণ জড় জগতেব শোভায তাহাকে "হন্দবং" রূপে দশন করিয়াছেন। জড় জগতে ঈশ্ব-দশন অভ্যাস করিলে তাহাব সৌন্দধ্য এবং শৃত্থলা মানব-প্রাণকে আকর্ষণ করিবেই কবিবে। সামান্য বালুকাকণা হইতে । স্থবিশাল হিমালয় পৰ্য্যস্ত যেধানে দেখি, সক্ষত্ৰই সৌন্দৰ্য্য চাবিদিকেই मुध्यना। अन्तीकन त्यारन कौछानून त्नइ नदा-বেক্ষণ কবিলে শোভার পরে শোভা পবিলক্ষিত হয। ১৯৫৬ দেখিলে "হন্দরং" ভাব জাগিবেই জাগিবে। এই কাবণে গ্রাস্-দেশে স্থপতিবিদ্যা, শিৱ, কাব্য, ষ্ট্ট্যালকা প্রভৃতি যথেষ্ট উন্নতি लाफ कतिशाष्ट्र এवः यांश किছू ध्रेशाष्ट्र ममछ्हे स्नत्—इिं রান্তা, ঘর প্রভৃতি সমন্তই স্থলব। আধুনিক ফ্রাসীকাতি যেরপ সৌন্দর্য্যপ্রিয় প্রাচীন গ্রীকগণও সেইরূপ সৌন্দ্রোর উপাসক ছিলেন। তাঁহারা জড়েব মধ্যে দেখিতে অভ্যাস করিয়াছিলেন বলিয়া, ঈশ্বরকে স্থলর দেখিতেন। এই সৌল্ব্য জ্ঞান তাঁহাদের মধ্যে এতদূব বিকশিত ছইয়াছিল যে, সৌন্দর্য্যই তাঁহাদিগের মধ্যে পুণ্য এবং কদর্য্যতা পাপ বলিয়া পরিগণিত **रहेउ**।

কোনও কোনও জাতি চেতনে বা আত্মাতে ঈশ্বর দর্শন অভ্যাস ক্রিয়াছেন। তাঁহারা তাঁহাকে নিভারপে শৈথিয়াছেন। <sup>হ্ইতে</sup>ছে—একটা পূর্বে দেশীর, অপরটা পাশ্চাতা। আমরা<sup>।</sup> হিন্দুগণ নিতান্নপে "জবমজবেষু" সমুদর অজব প্রাধের মধে

उाँशिक अवकाल मन्ननंन कतिशाह्न। अकल धार धहे, আত্মাতে দেখিলে নিত্য জান হয় কেন ? জডজগতে তাঁহাকে মুদ্দর বলিয়া উপলব্ধি করা যায়, কিন্তু আন্থাতে দেখিলে তিনি কিরূপে নিতা বলিয়া প্রতিভাত হন ? ইহার কারণ আত্মাতে প্রবিষ্ট হইলে, বিশেষকপে আত্মাতুসকান করিলে, পরিবর্ত্তনশীল নানারূপ অবস্থা প্রথমেই অমুভূত হয়। মানস সাগবে, হর্ষ, তুঃথ, শোক, ভয় বিশ্বয় প্রভৃতি নিয়ত কড তরঙ্গই টুঠিতেছে। ইহার সমুদরই অস্থারী, ক্ষণিক। এথনি এই বিশাল সমূদ্রে নিমগ্ন হও, দেখিবে তথার কত তর্দ উঠিতেছে, পড়িতেছে, প্রস্পারে তুমুল আঘাত কবিতেছে, चावात (काथात्र विनीन वरेएउएइ। अक्रमकात (य हिसा, वर्ष, শোক, তাহা পরক্ষণেই লয় প্রাপ্ত হইতেছে। কিন্তু এ সকলের मर्सा कि सात्री भनार्थ कि इहे नाहे ? এ नकन कि ख्विविशैन মুক্তার আয়ে ? চিস্তাব মুক্তাগুলি কি প্রস্পার বিচ্ছিন্ন হইরা ইতন্তত: বিক্ষিপ্ত রহিয়াছে, অথবা এ সকলের মূলে অন্তর্নিহিত এমন কোনও সূত্র আছে, যাহা এই সকলের একতা সন্নিবেশ ছাবা অপূর্ব স্থচিক্কণহার বচনা করিয়াছে? অন্তরে প্রবেশ করিয়া দেখ এ সকলের মূলে আত্মতবোধ (personal identity) আছে কি না ? এই আগ্রুবোধ এই সমুদয় চিম্বাকে একপতে বাধিয়াছে। এই আত্ম চিম্বাতেই "সুতে মণিগণাটব" সমস্ত সম্বদ্ধ হইয়া রহিয়াছে। আসা সকলের মূলে স্থায়ীরূপে বিদ্যমান রহিয়াছে। অভতএব আত্মাতে নিমগ্ন হইলে যথন সমুদন্ন অস্থায়ী ভাবের মধ্যে একটা স্থায়ী বস্তু দেখিতে পাওয়া যায়, তখন স্বভাবত: এই প্রশ্নের উनम्र इम्र (य-जामार मर्था (यमन এक स्नामी एक तिश्मार्ष्ट, তেমনি এই বাছজগতের সমুদ্য পরিবর্ত্তনশাল ঘটনাব মধ্যে এমন কোন্ত্ত বহিয়াছে, যাহা এই সকলকে একতা রাথি-निष्ठा भागर्थक (मथारेया (मय । धरेक्रापरे रिक्शन स्वेयंत्रक নিতা বলিয়া দশন করিয়াছিলেন।

তৃতীয়ত: কোনও কোনও জাতি মানব ইতিবৃত্তে ঈশ্বরকে দশন করিয়াছেন। য়িত্দীগণ এই শ্রেণাব অন্তর্গত। তাঁহারা মানব ইতিবৃত্তে বিধাতার দালা সন্দশন করিতেন। তাঁহারা ঈশ্বরকে মানবের ক।যোর সাক্ষী, বিচারক বলিয়া অন্তব করিতেন। এ দেশের চিম্বালীল ব্যক্তিগণ যে সেরূপ ভাবে ঈশ্বকে অনুভব করেন ন।ই তাহানয়। মনুসংহিতাতে আছে—

"একোহহমস্মী গ্রামান एकः কল্যাণ মনামে।

নিত্যং হিতক্তে সদোৰ পুণাপাপেকিতা মুনিঃ॥ ''

হে ভদ্র! আনি এক কি আছি, এই যে তুমি মনে করিতেছ, এরপ করিবে না। পুণ্য পাপদশী দক্ত পুরুষ শুদ্ধ হুইরা তোমার হৃদয়ে নিতা হিতি করিতেছেন।

এই বচন হইতে দেখা যাইতেছে যে হিন্দুগণও ঈশারকে তাঁহাদের কার্য্যের সাক্ষী, বিধাতা ও বিচারক বলিয়া অফুভব করিতেন। কিন্তু এটা এদেশের মুখ্য ভাব নর। এই ভাবটী রিহুদীদের মধ্যে বিশেষ ভাবে প্রকাশিত হইয়াছিল। আরার মধ্যে বাঁহারা প্রমান্তাকে দেখিয়াছেন তাঁহারা

দেখিরাছেন যে পরমাত্মা ওতপ্রোত ভাবে সমুদ্র বস্তুতে বিদ্যমান আছেন। তাঁহারা দেখিরাছেন, যেমন এই নিত্য পুরুষ হৃদরের পরমাকাশ আত্মার পরমাত্মা হইরা, জীবনের আধাররূপে বিদ্যমান রহিয়াছেন, আত্মা হইতে তাঁহার আকাশেরও ব্যবধান নাই, সেইরূপ তিনি সকল বস্তুতে গুড়রূপে অহু প্রবিষ্ট রহিয়াছেন। যাঁহারা ইতিবৃত্তে তাঁহার আ্বেবণ কবিয়াছেন তাঁহারা তাঁহাকে বাহিরেই দেখিয়াছেন। তাঁহারা দেখিয়াছেন তাঁহারা করিতেছেন এবং মানবের কার্য্য সমুদ্র পর্যবেক্ষণ করিতেছেন। তিনি নিক্ষ গৃহে সিংহাসনে বিদ্যা রাজ্বদণ্ড হত্তে সমুদ্র শাসন করিতেছেন।

হিন্দুগণ আত্মধ্যে দেখিয়াছেন ৰলিয়া "অনিত্যের মধ্যে নিত্য" এই ভাব উপলব্ধি করিয়াছেন। তাঁহারা বলিয়াছেন:—

নিত্যোহনিত্যানাং চেতনক্ষেতনানাং প্রকো বহুনাং যোবিদধাতি কামান্। তমান্মতঃ বেহসু পশুন্তি ধীরান্তেষাং শাস্তিঃ শাস্থতী নেতরেৰাম্॥''

যিনি তাবৎ অনিত্য বস্তুর মধ্যে একমাত্র নিষ্ঠা, যিনি সকল চেতনের একমাত্র চেত্রিতা, একাকী যিনি ভাবতের কামাবছ বিধান করিতেছেন, তাঁহাকে যে ধীরেরা খীয় আত্মাতে সাক্ষাৎ দৃষ্টি কবেন, তাঁখাদের নিতা শান্তি হয়, অপর ব্যক্তিদিগের ডাছা क्नां शि इत्र ना।" जांशांत्रा मिथित्राह्म कर्ष्य मर्सा स्य निक নিত্যরূপে বাস করিতেছে সেই শক্তিই মানবাত্মাতে চৈতক্সরূপে প্রকাশিত রহিয়াছে। পাশ্চাত্য পণ্ডিত H. Spencer ও একস্থানে ৰণিয়াছেন—'There is an infinite and eternal energy from which everything proceeds i' তিনি বে কেবল চৈতত্ত তা নয় কিন্তু তিনি বিধাতা। তাঁহাকে আযুত্ত বলিয়া জানিতে হয়। এই স্বায়নিষ্ঠত। হিন্দুধর্মের বিলেষভাব, আত্মাঙে পরমাত্মাকে দশন করাই মুখ্য লক্ষ্য। ইহা হইতে আরও হুইটী ভাব সমুৎপর হইয়াছে। ১ম নিত্যানিত্য বিবেক, ২ম মানবাঝার পরাধীনতা। আত্মাতে দেথিলেই পরমাত্মা নিত্য ও অন্ত সকল वष्टरे अनिजा (भर्था शाया। এ कथा शूट्स्वेह वना इहेगाहर। अकरण रमथा राष्ट्रिक, अहे मानवाचात्र भत्राधीन हा चानिन किस्न ? ভারতের চিস্তাশীণ সাধকগণ, ঝাগ্রৎ, স্বপ্ন ও সুযুপ্তি আত্মার এই তিনটী অবন্থা উপলব্ধি করিয়াছেন। ইহাতে তাঁহারা দেখিতে পাইলেন যে স্থা ও স্থৃতি স্বাধীন অবস্থা নয়। স্থাপ্ন যে স্কৃত্ৰ বিষয় দেখিতেছি তাহার কোনটার উপরেই আমার হাত नारे। य नकल विवय आमि कथन छावि नाहे हत्रछ এমন কত বিষয় আমার কলনানেত্রের সম্মুধে উপস্থিত হইতেছে। ইহার কোনটাও আমার ইচ্ছামতে ঘটে নাই— नकनरे आमात्र रेव्हा-नित्राशकः। शुरुशि आवशात्र ७ कथारे নাই, তথন আমার আমিত জান পর্যায় ক্লকালের জয় পুকায়িত হয়। এইরূপে তাঁহারা দেখিয়াছেন যে এই ছুই অবস্থা সম্পূর্ণরূপে অন্ত এক শক্তির অধীন। তাঁহারা আরও দেখিয়াছেন य এर य नावाजावना, गाराराज जामि गारेरजी. बारेरजी,

বসিতেছি, উঠিতেছি, যে অবস্থায় আমার কর্তৃত্বজ্ঞান সর্ব্বদা আমার সমূধে বহিয়াছে ইহাও সম্পূর্ণ স্বাধীন অবস্থা নয়। কারণ প্রত্যেক মুহূর্তে আমাদের যে জ্ঞান ক্রিয়া ( sensation ) इटेट्डिइ. এবং পবে মন যে মাল মদলায় চিস্তার প্রাসাদ নির্মাণ করিতেছে দেই জ্ঞান-ক্রিয়াব উপর আমাদের কোনও হাত নাই। চকু খুলিবামাত্র স্থালোক আমাদের পোচরে আদিতেছে, তার উপর আমাদের কি হাত আছে ? हेक्तिय-बात निया कड़कार व्यामात्मत्र छेभत य ভाব উर्भन्न ক্রিতেছে, তাহার উপর আমাদের কি হাত ? এইরূপে দেখিতে পाই যে কোনও জ্ঞান ক্রিয়াই আমাদেব ইচ্ছাধীন নয়। তৎপরে দেখিতে পাই যে আমাদের এই যে औবন ইহার चानि ७ चन्न कि हूरहे উপর আমাদের কণ্ড্ছ নাই। এ कीर-त्नत यथन व्यातस करेबाएक, उथन व्यामाएकत हेक्कार इब नारे। আবার যথন এই জীবনের শেষ হইবে তথনও আমাদের ইচ্ছা নিরপেক্ষ ভাবেই হইবে। আমাদের জন্মের উপর কোনও হাত নাই, যে জীবন সকলে পোষণ করিতেছি, তাৰ অস্তের উপর কর্ত্তব নাই। জীবন যে এখন আছে তাহাতেও ভার জ্ঞানের উপব কর্ত্ব নাই। সমুদ্র ইব্রিয়জনিত জ্ঞান আমাদেব ইচ্ছাধীন নয়। প্রতি নিয়ত যে সকল ক্রিয়ার উপর আমাদের জীবন নির্ভর করিতেছে, তার উপর কি হাত আছে 📍 খাস, প্রখাস, রক্ত-সঞ্চালন, পাকহুলীর ক্রিয়া ইহার কোন্টা আমাদের ইচছাধীন ? কি আশ্চয্য যে সকল আমরা স্বহস্তে লইলে কোনও রূপ বিপদের সম্ভাবনা নাই, সেই श्वनिष्टे (कवन ष्यामाप्तत्र शास्त्र, ष्यात (यथारन भएन भएन विभन ভাহার কোনওটীই আমাদের হস্তে অর্পিন্ত হয় নাই, সমস্ত গুলিরই পরিচালনের ভার অন্ত এক শক্তির হল্তে ক্রন্ত রহিরাছে। বদি খাস্যন্ত্র পাকস্থলী প্রভৃতির কার্য্য আমাদেব হস্তে থাকিত তাহা হইলে কি মুহূর্ত কালের জন্তুও আমাদের জীবনের আশা ছিল ? তবে আর ষাধীনতা কোথায় ? পশ্চিমদেশীয় ঋষি অমাশন বলিয়াছেন:--

"Life is a stream, it is descending into us, from where we know not."

"আমাদের এই জীবন-সরিৎ নিয়ত আমাদের মধ্যে প্রবাহিত হুইয়া আসিতেছে, কিন্তু কোথা হুইতে প্রবাহিত, তাহা আমরা অবগত নহি।"

( ক্রমশ: )

## দীক্ষার্থীদিগের প্রতি শ্রীমন্মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহাশয়ের উপদেশ।

"ঈশর আমারদিগের মনে কি এক স্পৃহা দিয়াছেন, যে স্থাতে আমরা তাঁহাকে লাভ করিবার জন্ম সর্বদাই লালাগিত। এই ঈশর-স্থা মহয় মাত্রেরই হৃদয়ে জাগরুক; পশু মধ্যে ইহা দেখিতে পাওয়া যায় না। ঈশর ব্যতীত আমারদিগের যে জীবন ধারণ সে পশু জীবনের সঙ্গে সমান। ঈশর বিনা আমরা চলিতে, বলিছে, এমন কি নিংখাস কি

নিমেষ ফেলিতেও পারি না। তাঁহার কুপাতেই আমরা জীবন ধারণ করিতেছি, তাঁহার কুপাতেই আমরা চলিতেছি, বলিতেছি এবং নিঃখাদ ও নিমেষ ফেলিতেছি। সকল সময়ে, সকল স্থানে, সকল কার্য্যে, সকল অবস্থাতেই ভাঁহার কুপার পরিচর পাইতেছি। তাঁহার কুপাই আমারদিগের সম্বল—
"ব্রহ্মকুপাহিকেবলম্।"

আমরা বিপদে পডিলে কে এমন বন্ধু আছে যে, সেই বিপদ হইতে আমারদিগকে উদ্ধার করে ? কে এমন বন্ধু আছে বে আমাবদিগকে মোহ-পাপ হইতে রক্ষা করেঁ? সে কেবল একমাত্র ঈশ্বর। আমরা বিপদে পভিলে তিনি রক্ষা করেন. এমন কি বিপদে পডিবার আগেও আমারদিগকে সাম্লাইয়া দেন। সংসাবে মা যেমন সম্ভানকে বিপথে পতিত হইবার शृर्व्य माम्नारेश (मन्, मिरेक्र नेश्व मर्वान जामाक्रिंगरक সাম্লাইয়া দিতেছেন; এবং বিপদ হইতে রক্ষা করিতেছেন। তিনি অহরহ আমাবদিগকে শুভবুদ্ধি প্রেরণ করিতেছেন। আমবা তাহা না ভনিয়া, তাঁহার আদেশ লজ্যন করিয়া পাপে পডি-ডেছি। কে সেই পাপ হইতে আমারদিগকে রক্ষা করিবে; কে সেই পাপ হইতে আমারদিগকে পরিত্রাণ করিবে ? যাহার আদেশ লজ্মন করিয়া পাপে পডিয়াছি, তিনি ভিন্ন আর আমারদিগের সে পাপের পবিত্রাতা নাই। যথন পাপে পডিব. তথন তাঁহার নিকট ক্রন্দন কবিব, যথন বিপদে পড়িব তথন তাঁহাকেই ডাকিব; তিনি আমাবদিগকে রক্ষা করিবেন-**তিনি আমারদিগকে উদ্ধার করিবেন। নদীতে নৌকা** ডুবু ডুবু हरेल, <ोकांत लांक प्रकल (यमन "(ह क्रेश्नत त्रकः। कतः" বলিয়া আর্ত্তনাদ কবে, সেইরূপ আমরা বিপদে পড়িলে "বক্ষা কর" বলিয়া তাঁহার নিকট কাঁদিব—ঈশ্বব ভিন্ন আমারদিপের আৰু গতি নাই। ঈশ্ব ভিন্ন কেমন করিয়াচলে ?

তিনি আমারদিগেব একমাত্র স্থাপাতা ও সম্পদ বিধতা।
আমবা তাঁহাব নিকট ক্বতজ্ঞ হইব, আমবা তাঁহাকেই
প্রীতি করিব, তাঁহাকেই ভক্তি কবিব। আমাবদের ভক্তি প্রীতি
ও জ্ঞান সেই এক ঈশ্বব ব্যতীত আব কিছুতেই চরিতার্থ হর
না। আমাবদের জ্ঞান তাঁহাকে জানিযাই ভৃপ্তি লাভ কবে,
আমাবদের হনর তাঁহাকে প্রীতি ও ভক্তি করিয়াই ক্বতার্থ হয়।
শ্রীতি ও ভক্তি পুম্পেব দাবাই তাঁহাব পূজা কবিতে হন।
ভোমরা তোমাদের প্রীতি ও ভক্তি পুম্পের দারা তাঁহার অচ্চনা
করিবে।

তিনি আমাবদিণের ইচ্ছাকে স্বাধীন করিয়া দিয়ছেন।
আমরা ইচ্ছা করিলে তাহাকে লাভ কবিতে পাবি। তবে
আমরা তাঁহাকে পাই না কেন ? ইচ্ছা করি না, চেষ্টা কবি
না বলিঘাই আমরা পাই না। আপন ইচ্ছায় তাঁহার প্রতি যে
প্রীতি ও ভক্তি অর্পন করা যায়, তাহাই প্রকৃত ভক্তি ও প্রীতি।
জোর করিয়া চাবুক মারিয়া কাহারও ভক্তি ও প্রীতি আকর্ষণ
করা যায় না। একজন অর্থলোভে ভক্তি, প্রীতি সমাদর
দেখাইতে পারে; কিন্তু তাহা প্রকৃত ভক্তি বা প্রকৃত প্রীতি নহে।
সেকপ কপট ভক্তি ও প্রীতি কোন কাজেরই নয়। অনিচ্ছায়
ভক্তি প্রীতির কোন মূলা নাই। তিনি চাহেন, আমরা ইচ্ছা

কবিরাই স্বাধীন ভাবেই তাঁহাকে ভক্তি করিব। ইচ্ছা ছাবা আমবা জ্ঞান শিক্ষা করি এবং সেই জ্ঞান ছারা আমরা ভাঁহাকে লাভ করিতে পারি। জ্ঞান ছারা তাঁহাকে লাভ করিতে হয়। আমরা যে তাঁহাকে পাই না, ভাহা কেবল জ্ঞানের অভাবে। চেষ্টা করিলে আমরা জ্ঞান লাভ করিতে পাবি। জ্ঞানের ছারা তাঁহাকে লাভ করিতে সচেষ্ট হও, দেখিবে তাঁহাব প্রসাদ অবতীর্ণ হইবেই হইবে।

তাঁহাতে চিত্ত সমাধান কর, অবশুই তিনি প্রসাদ-বারি বর্ষণ করিবেন। দুক্ষক দেমন নিজে চেষ্টা করিয়া ক্ষেত্র কর্ষণ কবে, তৎপর আকাশ হইতে বারি বর্ষণ কবিলেই, সেই ক্ষেত্রে শশু জন্মে, তেমনি আমবা তাঁহাকে লাভ করিবার জ্বশু সর্ব্বদাই চেষ্টা করিব, কিন্তু ফলদাতা তিনি; তাঁহার ক্ষপা হইলেই আমারদের চেষ্টা সফল হইবে। তাঁহাকে লাভ করিবার জ্বশু আমরা চেষ্টা করিলে, তিনি ক্ষপা করিবেন, তিনি আমারদের সহায় হইবেন, তাহাতে কিছু মাত্র সন্দেহ নাই।

শীমান্ মনীক্ত ও শীমান্ প্রিয়নাথ! চিরন্ধীবন তাঁহাকে পাইবার জন্ত তোমরা তোমারদিগের জ্ঞান বৃদ্ধি নিয়োগ কর। যাগ্যবন্ধ ঋষি বলিয়াছেন:—

"নতং বিদাথ যাইমাঃ জ্ঞানা স্তৎ বুমাকং অস্তরং বভূব নীহারেন প্রাবৃতা জ্যাচাস্তৃপ উক্ষ শাস্তরন্তি।''

এই আশ্চয় জগৎ দেখিয়া, চারিদিকে আশ্চর্যা সৃষ্টিকৌশল (मिश्रा ७ (जामत्रा जांशां क कानित्म ना ; यिनि काक्षत्त त्रांश्रा-ছেন তোমরা তাহাকে অব্তরেও দেখিলে নাণু কেমন করিয়াই বা তাঁহাকে জানিবে? অজ্ঞান কুয়াদা দব যে ঢাকিয়া রাখিয়াছে। বৃথা জল্পান্তে রহিয়াছ। প্রাণের তৃপ্তি সাধন ও ইন্দ্রিয় চরিতার্থ কবিতে ব্যস্ত বহিয়াছ। স্মতএব অজ্ঞানতাকে পবিহার কর, বৃথা জল্লনা বাচালতাকে পরিস্যাগ কর। ইন্দ্রিসংযম কর। সৃত্য বিনাজ্ঞান কথন তৃপুত্য না, অজ্ঞানের করনা তেত্রিশ কোটী দেবতা, কিন্তু জ্ঞানের দাবা যে সভা আবিষ্ণত হয় তাহাতে দেখি যে ঈশার একই অবিতীয়।" তোমরা সমাহিত চিত্ত হইয়া জ্ঞান প্রেম ও ভক্তি-বোগে সেই "সত্যং জ্ঞানমন স্থং এক্ষেব" পূজা কবিবে। তোমরা অপব দেবদেবীর পূজা করিও না। একমাত্র ঈশবের আরাধনাই ব্রাহ্ম ধর্মের মূল মন্ত্র। প্রতিদিন ঈশ্বরের উপাদনা করিবে। উপাসনাই আয়ার অন্নপান। আহার অভাবে শরীর যেমন ক্য ও চুর্বল হয়. উপাদনা অভাবে আয়াও দেইরূপ চুর্বল रुष्र। मिनारमी मिनारख, निभारको निभारख, मिनारक निभारकी যথনই পারিবে তাঁহার উপসেনা করিবে। একদিনও যেন वक्ता ना इय्र। উপাসনাথীন इटेग्रा (यन मिन ना यात्र। किन्त ব্রাহ্মধর্ম্ম তোমাদিগকে বিধি দিতেছেন, যদি কোন দিন বিপদে বা রোগে একেবারে মুহুমান বা হতচেতন হইয়া পড়, সে দিন উপাদনা বাদ দিতে পার। নতুবা প্রতিদিন তাঁহার উপাদনা कतिरव। कृत हम्मन निया छौहात छैपानना कतिरा हय ना। "তশ্মিন প্রীতিস্তম্ভ প্রিয়কার্য্য সাধনঞ্চ তত্নপাসনমেব" তাঁহাকে প্রীতি এবং তাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধন করাই তাঁহার উপাসনা।

### ব্রাক্ষসমাজ।

মনাই চা-বাগান ব্রাহ্মসমাজে গত মাথোৎসবের সময় চন্দননগর নিবাসী বাবু কাণীচরণ বস্থ নামক এক ব্যক্তি ব্রাহ্ম-ধর্মে দীক্ষিত হইয়াছেন।

ভক্তিভাজন শ্রীযুক্ত রাজনারারণ বস্ত মহাশয়ের পুত্র শ্রীমান্ মনীন্দ্রনাথ ও পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী মহাশয়েব পুত্র শ্রীমান্ প্রিয়নাথ বিগত ১লা ফাল্কন সোমবাব প্রাতে সার্দ্ধ আট ঘটকাব সময় পার্কষ্ট্রীটয় ভবনে পুজাপাদ শ্রীমনাহর্ষির নিকট পবিত্র ব্রাহ্মধর্ম্মে দীক্ষিত হইয়াছেন। পুজাপাদ মহর্ষি উপাসনা ও দীক্ষা কার্য্য সমাধা করেন এবং আশীর্ষ্মাদ করিয়া দীক্ষার্থী-দ্বয়কে উপদেশ প্রদান করেন। স্থানাস্তরে তাঁহার উপদেশ প্রকাশিত হইল।

প্রচার-পশ্চিম প্রচার যাত্রীদল ১৯এ ফেব্রুয়াবী ভাগল-পুবে এীযুক্ত বাবু নিবারণ চক্র মুখোপাধ্যায় মহাশয়ের বাডীতে উপস্থিত হন। ২•এ প্রাতে উক্ত বাদায় উপাদনা হয়, শ্রীযুক্ত গুরুদাস চক্রবর্তী উপাসনা করেন। রাত্তিতে আক্ষবন্ধু বাব্ জয়-কৃষ্ণ মিত্র মহাশয়েৰ বাসায় উপাসনা হয়, গুরুদাস বাবু উপাসনা করেন। ২১এ প্রাতে নিবারণ বাবুর বাসায় উপাসনা হয়, এীযুক্ত প্রকাশদেব উপাসনা করেন। রাত্তিতে এীযুক্ত বাব্ ताधात्रमण मिः ह्व वांनाम छेलानना इम, खक्रनाम वाव छेलानना করেন। ২২এ ভারিথ ভাগলপুব ব্রাহ্মসমাজেব বাধিক উৎসব উপলক্ষে প্রাতে মন্দিবে গুরুদাস বাবু আচার্য্যের কার্য্য করেন ও উপদেশ দেন। ২৩এ তারিধ প্রাতে নিবাবণ বাবুব বাসায় উপাসনা হয়, শ্রীযুক্ত কাশীচক্র ঘোষাল উপাসনা কবেন। অদ্য অপরাকে প্রচারদল ভাগলপুর হইতে মুদেরে যাত্রা করেন এবং বাত্রিতে মুর্পেবেব আক্ষাবন্ধু শ্রীযুক্ত বাবু চণ্ডীচরণ সিংহেব বাসায় উপস্থিত হন। তথায় উপাসনা হয়, ৩০কদাস বাৰু উপাসনাকবেন। ২৪শে প্রাতে স্থানীয় উকিল বাবু মহেক্স-। লাল বায়ের বাডীতে উপাসনা হয়, শ্রীযুক্ত প্রকাশদেব উপাসনা কবেন। অপবাহে বাজাবে কীন্তন ও হিন্দি বস্তা হয়। প্রকাশদেব বক্তা কবেন। রাত্রিতে মন্দিরে উপাসনা रुष । श्वक्रमाम वार् উरवाधन श्रुठक পाঠ ও व्याणा कविया আরাধনা কবেন, তৎপবে আীযুক্ত প্রকাশনের উপদেশ প্রদান কবেন। ২৫শে তারিখ প্রাতে চ্গাবাব্ব বাসায উপাসনা हर, अक्रमाम वाव् छेभामना करतन । 🗗 भिन याद्योमन वीक्रि পুরে গমন কবিয়াছেন।

#### বিজ্ঞাপন।

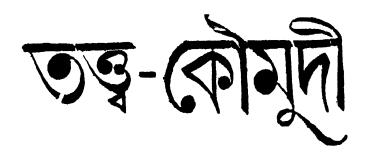
আগামী ১১ই মার্চচ, সাধারণ ব্রাহ্মসমাজউপাসনালসে সায়ংকালীন উপাদনার পর সাঃ বাঃ সমাজের কলিকাতাস্থ উপাস্ক মপ্তলীর বাধিক অধিবেশন ২ইবে।

#### विद्वहा विषय ।

- >। বার্ষিক কার্যাবিবরণ ও আয় ব্যয়ের হিসাব।
- ২। আচাৰ্য্য ও কল্মচানী নিয়োগ ও কাৰ্য্যনিকাছক সভাগঠন।
- ৩। গত ২৩এ জুলাই উপাসক মগুলীর বিশেষ অধি-বেশনে মগুলীর উরতি সম্বন্ধে অনুসন্ধান করিবার জন্ম বে কমিটী গঠিত হইয়াছিল, তাহার রিপোট সম্বন্ধে মীমাংসা।
- ৪। বিবিধ।

না: বা: নমাজ কার্য্যালয় ৪ঠা মার্চচ, ১৮৯৪।

বন্ধবিহারী বন্ধ



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

২**০শ সংখ্যা**। ১৬শ ভাগ।

>লা চৈত্র, বুধবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

#### প্রার্থনা।

**एको वनमाजा।** यापाएमत निक्रे मकन कथा व भूताजन হুটরা ঘাইভেছে। চারিদিক হুইভে প্রতিদিন এমন কভ উচ্চ উচ্চ উপদেশ শুনিতেছি যাহা কর্ণে প্রবেশ করিতেছে, কিন্তু প্রাণকে স্পর্শ করিতে পাবিভেছে না। যথন দশলনে মিলিয়া উপাদনাতে বৃদিতেছি, তোমার আরাধনাতে নিযুক্ত হইতেছি. ভধন অভ্যাস বশত: অতি উচ্চ উচ্চ ভাব ও অতি উচ্চ উচ্চ কথা মুখে প্রকাশ পাইতেছে। তোমার নিকট যথন প্রার্থনা করিতেছি,তখন সর্ব্ব প্রকার আধ্যাগ্মিক উন্নতির জন্ত আকাজ্ঞা জানাইতে ক্রটী করিতেছি না; কিন্তু জীবন যে নিমু ভূমিতে किन जागहे शांकिया वाकेटकरका रमहे विषयामिक, रमहे সার্থপরতা, সেই স্থ-প্রিয়তা। ক্রমে আমাদের জীবনেব छे भरत माधु-को वरन त अ माधु भरत एक मान इहेता याहे-তেছে। এই ব্যাধিতে আমাদিগের ধর্মজীবনকে চুর্জাল ও নিশ্রভ করিয়া ফেলিতেছে। আমবা প্রস্পুর ১ইতে বিচ্ছিন্ন হুট্রা,নিজ নিজ জীবনের স্থার্থপরভাতে নিম্ম ইট্যা যাইতেছি। এই সংকট হটতে আমাদিগকে উদ্ধাৰ কর। আমাদের বাক্য ও কার্যা সকলকে তোমার জাবনী-শক্তির ঘারা অফুপ্রাণিত কব। আমাদের সাধন স্বস হউক : আমাদের ধ্রমঞ্জীবন সভেজ ও সবল হউক; তোমার চরণে এই প্রাথনা।

## সম্পাদকীয় মন্তব্য।

ধর্মসমাজের শক্তি কোথায় গ— আমবা যে কেবল ব্রাদ্ধর্থকৈ নিজ নিজ জীবনে অবলম্বন করিয়া পবিভৃপ্ত হইতে চাহিতেছি ভাহাই নহে,ইহাকে প্রচার করিতে চাহিতেছি। অর্থাৎ ইহাকে সামাজিক শক্তিরূপে পরিণত করিয়া এতদ্বারা জন সাধারণকে উন্নত করিতে চাহিতেছি, জনসমাজের প্রচাতি কুসংস্থার, পাপ ও চ্ণীতি নিবারণ করিয়া তৎস্থানে সভাজ্ঞান, ও উৎকৃষ্ট নীতিকে প্রচাতি করিতে চাহিতেছি। জন-সমাজের এ প্রকার সংস্থার করিতে যাহারা প্রয়াসী হন্ধ, ভাহাদের সহিত সমাজের লোকের বিরোধ ঘটনা

হওয়া অনিবার্যা; কারণ বাহারা প্রাচীন কুসংস্কার ও প্রাচীন রীতি নীতির পঞ্পাতী, ভাহারা এই সংস্কার-পথাবশ্বীদিগকে সমাজের শক্ত বলিয়া গণনা করিবেই কবিবে। কিন্তু আমা-দিগকে ভাবিতে হইবে যে, সে শক্তি কি শক্তি ঘাহার বলে ব্রাহ্মধর্ম ও ব্রাহ্মসমাজ দেশের প্রচলিত কুসংস্থার ও রীতি নীতিকে পরাজিত করিয়া তংস্থানে সত্যের রাজ্য প্রতিষ্ঠিত করিবে ৭ এই প্রশ্নের বিষয়ে চিস্তা করিতে গেলেই দেখিতে हहेरव (य. क्यां क य मकल धर्म मन्त्रामात्र करानाञ कवित्राहि, मानत्वत्र চिস্তাকে পরিবর্ত্তিত করিয়াছে, बानत्वत्र রীতি নীডিকে উন্নত এবং সংশোধিত করিয়াছে, তাহারা কোন্ শক্তিতে ভাহা করিতে সমর্থ হইয়াছে ? যতই আমরা ইতিবৃত্ত আলোচনা করিব ততই দেখিতে পাইব যে বৈরাগ্যের শক্তি ভিন্ন অন্ত (कान ७ मक्ति बाता अगर अय इय नारे। वार्यनाम, वार्यनाम, यार्थनान, এই সকলের মূলমন্ত্র ছিল। কোন যুগ-প্রবর্ত্তক মহাজন এক্লপ অন্মিয়াছেন যিনি বৈরাগাক্রপ অস্ত্র ধারণ করেন नाहे ? योख निष्कृत विषय धहे कथा विनया किलन-"मृशाम-দিগের গত্ত আছে, পক্ষীদিগের বাসা আছে, কিন্তু আমার মন্তক রাধিবার স্থান নাই"--বৃদ্ধ এই বৈবাগ্যের আবশ্রকভা এতদুর অমুভব করিয়াছিলেন যে নিজে রাজপুত্র হইয়া ভিক্সা ত্রত অবলম্বন কবিষাছিলেন। মহম্মদ যথন মৃত্যুমূথে প্রিত হয়াছিলেন তথন দশ টাকার সম্পত্তিও গচ্ছিত বাথিয়া গিঁয়া-ছিলেন কিনা সন্দেহ, অথচ তিনি মনে কবিলে রাজোখর রাজা হইতে পারিতেন। চৈত্র সন্যাস-ধর্ম অবলম্বন করিয়া-ছিলেন। নানক বিষয়কর্ম পবিত্যাগ কবিয়া পথের ফাকির হইয়াছিলেন। মেণ্ডিষ্ট সম্প্রদাযের প্রতিষ্ঠাকতা জন ও্যেস্ল বলিয়াছিলেন-"আমি ত্রিশ শিলিকেব অধিক অর্থ নিজের নিকট রাধা পাপ বলিয়া মনে কবি"। স্থ প্রসিদ্ধ প্রষ্টধর্মা প্রচারক কেরির বিষয়ে এরূপ কথিত আছে যে যথন তিনি পবলোক গমন করিলেন, তথন তাঁহার ডেব্দেব মধ্য হইতে চৌদ্দী পয়সামাত পাওয়া গেল। অথচ সেই কেবা নানারূপে মাসে অন্ততঃ ৭০০ ৷ ৮০০ শত টাকা উপাজ্জন কবিয়া প্রচার কাব্যে অর্পণ করিয়াছেন। ইতিহাস তয় তয় করিয়া দেখ কে কোথার क्रश्रं के लाहेबाह, एक काथाय मानव क्रम्यक लिव्हिक

করিরাছে, যে বৈরাগ্যের মন্ত্রে দীক্ষিত হর নাই ? তুমি আমি আপন আপন স্থ সছলেভার ডুবিয়া থাকিব, আপন আপন সাধ্যে ভোগ বিলাস যতদ্র ভোগ করা যার করিব, আর এই স্থাপপব, আরাম-প্রির ও বিষরাসক জীবদিগের হারা ত্রাক্ষ-ধর্মেব শক্তি বাড়িবে, এ আশা-আকাশ কুস্থমের স্থার।

শক্তির অপচয়—আমরা প্রতিদিন অমুভব করিতেছি, व्यामाप्तित मिक्तित के व्यापनित्र इहेरल हि। (य नमत्र याहेरल हि, সেই সময়ে প্রত্যেকের বারা যতটা কা**জ** হইতে পারিত তাহা হইতে পারিতেছে ন।। দশন্ধনে হৃদয়ে হৃদয়ে মিলিতে পারিলে ষতটা কাজ হইডে পাবিত, তাহা হইয়া উঠিতেছে না। আমবা সকলেই ব্ৰাহ্মসমাজকে ভাল বাসি। প্ৰত্যেকেই বলেন "আমি वाक्षमभाष्टक ভाग वामि"। এकशा छनित्वहे এकछा मश्क कथा मत्न উनम्र रम्र--यनि वाक्षममाकत्क क्रिट् वाखिविक ভान বাসে, তবে তাহার উন্নতির জক্ত কি সচেষ্ট হয় না ? যদি আন্ধ সমাজের উন্নতি 😮 কল্যাণ আমাদের প্রত্যেকেরই প্রার্থনীয় হর, তবে আমরা কেন তাহার কল্যাণোদেশে মিলিত হইতে পারি না ! পরম্পরের সহিত যে একটু প্রভেদ রহিয়াছে, তাহাব বোধটা এত প্রবল রহিতেছে যে ব্রাহ্মসমাজেব কল্যাণ চিন্তা তাহার নিকট স্থান পাইতেছে না—এরূপ হইতেছে (कन ? क्रेचरतत मठा वाका विखातत कछ याशता हेळ्क তাহাদের সকলেরই যাহাতে শক্তিব অপচয় না হয় সে দিকে দৃষ্টি বাধা কর্ত্তব্য। যাঁধাৰ ঘডটুকু দিবাৰ আছে, তিনি ভত-টুকু দিবেন, যাঁহার যভটুকু কবিবার আছে তিনি ভভটুকু কবিবেন। মতভেদ ও কার্য্যের স্বতন্ত্রতার গুরুতর ও অল্জ্য-নীয় কারণ না থাকিলে কার্য্যের শুভন্ততা হইতে দিব না, এরূপ একটা প্রতিজ্ঞা প্রত্যেকেরই মনে থাকা ভাল।

নিত্য উপাসনা কর—"নিত্য উপাসনা কর, উপাসনা বসুষাকে ক্ষন্ত অপরাধ এবং ধালা কিছু দৃষ্ণীয় তাহা চইতে রক্ষা করে; আব ঈশ্বরকে স্মরণ করা নিশ্চয়ই মনুষ্যের একটা অতি শুক্তর কঠবা:"—কোরাণ।

মহাত্মা মহত্মদ যথন পৌত্তলিব তাকে বজ্জন করিয়া একমাত্র নিরাকার ঈত্মরের উপাসক হইলেন, তথন সর্বাত্যে এই
উপাসনাকেই অবলম্বন কবিলেন। তিনি ইহার আবগ্রক্তা
এতই প্রতীতি করিলেন যে আপন সম্প্রদায়ের মধ্যে
পাঁচ বার উপাসনার নিয়ম করিলেন। এ সম্বন্ধে মুসলমানদিসের মধ্যে একটা গল্প প্রচলিত আছে। মুসলমানগণ এই
গল্লটিকে মত্য ঘটনা বলিয়া বিশ্বাস করেন। আমরা সেরপ
বিশ্বাস করি না, কিন্তু ইহার উপদেশ গ্রহণ করিতে পারি।
গল্লটি এই:—এক দিন রাত্রিতে ঈত্মরের দৃত জেব্রিল মহত্মদকে
ঈশ্বরের নিকট লইয়া যায়। মহত্মদ কেব্রিলের সঙ্গে গিয়া
ঈশ্বরের সহিত সাক্ষাৎ করেন। তিনি যথন ঈশ্বরের সল্লিধানে
উপন্থিত হইলেন তথন দেখিলেন স্বর্গ এক অপূর্ব ক্যোতিতে
আলোকিত হইয়াছে। তথন মহত্মদের প্রতি এই আদেশ

হইল "মহ্ম্মদ, ভোমার শিষ্যদিগকে পঞ্চাশ বার উপাসনা করিতে আদেশ করিও"। মহ্ম্মদ আজ্ঞা শিরোধারণ করিরা প্রত্যাগমন করিলেন। পথে মুবার সহিত সাক্ষাৎ হইল। মুবা ইহা প্রবণ করিরা বলিলেন "মহ্ম্মদ তুমি কি করিরাছ, কেন পঞ্চাশ বার উপাসনার কথা স্বীকার কবিলে ও ফুরুল, চঞ্চল মাহ্ব কি পঞ্চাশ বার উপাসনা করিতে পারে ও আমি ছইবার উপাসনা করাইতে পারিলাম না, তুমি কি এত বার পারিবে ও যাও ফিরিয়া যাও।" মহম্মদ ফিরিয়া ঈশবের নিকট গোলেন। তথন তিনি ২৫ বারের আদেশ করিলেন। মহম্মদ চলিলেন, কিন্তু আবার মুবার অহুরোধে মহম্মদ ঈশবের নিকট ফিরিয়া গোলেন। তথন ঈশবর পাঁচবার উপাসনার আদেশ দিলেন। এবারও মুবা মহম্মদকে ফিরিডে বলিলেন, কিন্তু আর উাহার কথা শুনিলেন না এবং আপন স্প্রাদারের মধ্যে পাঁচবাব উপাসনার নিয়ম প্রবৃত্তিত করিলেন।

এই গ্র হইন্ডে বুঝা যার মহমদ উপাসনাব আবশ্রক্তা কতদ্ব অমুভব কবিয়াছিলেন। পঞ্চাশ বার উপাসনা কবিভে হইবে এ ইছা তাঁহার হইয়াছিল।

এই উপাসনা কেবল নিয়মে ছিল তাহা নহে মহক্ষদের জীবনে ইহা দেখা যায়। যখন তিনি প্রথম পৌত্তলিকতা ছাডিলেন, তখন তাঁহার পত্নী খাদিজাকে লইয়া নিক্তনে উপাসনা কবিতেন, তাহাতেই খাদিজা দীক্ষিত হইলেন। থাদিজা বক্তাতে দীক্ষিত হন নাই, উপদেশে দীক্ষিত হন নাই, কিন্তু সভ্য প্রভুৱ উপাসনা মন্ত্রে দাক্ষিত ভইয়াছিলেন।

যথন চভূর্দিকের লোকে জানিতে পারিল, মহম্মদ হরের দর্জাবন্ধ কবিষা উপাসনা করেন, তথন তাহারা দেখিতে আসিল আর উপাসনাতে দীকিত হইতে লাগিল। এইরূপে একজন সন্ত্রীক দীক্ষিত হটলেন। তাঁহার স্ত্রীর এক চর্দান্ত ভাই ছিল। সে কৃষ হইয়া তববারী হত্তে মকা হইতে বহিৰ্মত क्टेन এवः कारत्रमामात्रत निक्रे शिवा श्रीख्या कतिन যেরপেই হউক সে মহম্মদেব মন্তক কাটিরা আনিবে। এই প্রতিজ্ঞাতে দৃঢ হইয়া দে মদিনার অভিমুখে যাত্রা করিল। তাহার ভগিনী মদিনাতে থাকিতেন। দে ভগিনীয় वाडीटड (शल. डेव्हा मिथारन महत्त्वनरक पिश्रिल कार्तिस। তথায় গিয়া দেখে ভাহার ভগিনী স্বামীর সহিত উপাসনা করিতেছে। দেখিয়া তাহার ক্রোধ হটল এবং ভগিনীকে কিরাইবার জন্ম অনেক যন্ত্রণা দিতে লাগিল ও তাঁহার স্বামীকে প্রহার করিল। কিন্তু তাঁহাবা কিছু বলিলেন না। শেষে ঐ বাক্তি শরন করিলে রাত্রিতে তাঁহারা আবার উপাসনা क्रिएं नाशित्नमः। यथन मिट उपामनात नागी मकन जाहात्र শ্রতিবিবরে প্রবেশ করিতে লাগিল, তথন তাঠার প্রাণে অস্ফু যাতনার উদয় হুইল, সে আর ন্তির থাকিতে পারিল না; উঠিয়া আসিয়া ভগিনীকে বলিল "তোমরা কি কবিতে-ছিলে, আমার প্রাণ কেন অন্তির হইল, আমি যে আর শ্বির থাকিতে পারি না ?" ভগিনী বলিলেন "আমরা ঈশবের উপাসনা করিতেছিলাম।" সেই ব্যক্তির প্রাণ আভর্মারূপে

পরিবর্ত্তিত হইরা গেল: এমন যে জুর্দান্ত লোক, যে মহন্মদের প্রাণনাশে উদ্যাত হইয়াছিল, ভগিনী ও ভগিনীপতির প্রতি উপাসনার অন্ত উৎপীড়ন করিয়াছিল, উপাসনার ঘারা তাহার कीरानत भारिवर्शन २हेन, तम मौक्तिष्ठ हहेन। उपन सकाव হৃদমূল পড়িরা গেল। মহম্মদ এই উপাসনা দারাই প্রচার **করেন।** যে সাংঘাতিক রোগে মহম্মদের মৃত্যু হয় সেই দারুণ রোগের সময়েও তিনি প্রতিদিন ভল্পনালয়ে উপাসনা করিতে বাইতেন। এই নিয়ম ছিল রাত্রিশেষে একজন লোক রোজ আসিয়া বলিত "মহাপুরুষ, জাগ্রত হউন, সত্য প্রভূব উপাসনার সমর হইয়াছে, উপাদনা করুন:" তিনি গাত্রোত্থান করিয়া মন্দিবে যাইয়া উপাসনা করিতেন। যথন তাঁহার পীড়া বুদ্ধি भाहेन, उथन लाकि हाउ धतिया छाहाक मिन्दि नहेगा याहेल, जिनि উপাসনা कत्रिराजन। त्नर्य त्य मिन একেবারে অক্ষ হইয়া পড়িলেন, সে দিন তিনি বলিলেন "আমি टामारनत काहात कांट्र कि व्यथनाथ कतिशाहि वन, व्यात আমি তোমাদের সহিত উপাসনা করিতে পারিব না, এই আমার শেষ।" ইহা শুনিয়া সকলে উচ্চৈম্বরে কাঁদিতে मालिन। এই যে নিতা উপাসনা তিনি অবলম্বন করিয়াছিলেন ইহাই তাঁহার অবলম্বন ছিল। তিনি জানিতেন পৌত্তলিকতা ছাডাইয়াছি তাহাতে কি, সত্য প্রভূব জীবস্ত উপাসনা দেওয়া চাই, তাই তিনি দিবার চেষ্টা করিয়াছিলেন।

আমাদেব ব্রাহ্মসমাজে দিবাব কি আছে? এই সত্য-প্রক্ষেব জীবস্ত উপাসনা যদি না দিতে পারি, তবে কিছুই হইবে না। ঈশ্বর করুন এই জীবস্ত উপাসনা আমাদের সকলের প্রাণেব সশ্ব হউক।

ব্ৰাহ্মাণ্ডে ব্ৰাহ্মধৰ্ম—যখন একটা ব্ৰাহ্মবিবাহ হয়, ভৰন আমরা এই ভাবিরা আনন্দিত হই, যে একটা ব্রাহ্ম-পরিবারের সংখ্যা বর্দ্ধিত হইল। আমরা এই আশাকরি. বে সেই নবৰিবাহিত দম্পতি নিজ গৃহে ব্ৰাহ্মধৰ্মকৈ বকা क्वित्वन अ माधन कतित्वन এवः छांशासत्र त्कारफ रय সকল পুত্র কল্পা কলিবে তাহাবাও ভাবী ত্রাহ্মসমাজের আলীভূত হইয়া ইহার বলবৃদ্ধি কবিবে। কিন্তু তাহা না ছইয়া যদি দেখিতে পাই যে ব্ৰাহ্মগৃহে যে সকল বালক ৰাণিকা জনিতেছে, তাহারা ব্রহ্মধন্মের ভাব প্রাপ্ত হইতেছে मा: वतः व्यत्मात्क ভाবে ও চবিত্রে ত্রান্ধবিবোধী হইয়া উঠিতেছে, তাহা হইলে ব্রাহ্মবিবাহে আনন্দিত হওয়া উচিত নছে। আমরা ইতিমধ্যেই দেখিতে পাইতেছি, অনেক আদ্ধ-গুড়ের বালকগণ ব্রাহ্মধর্ম ও ব্রাহ্মসমাব্রের প্রতি অমুরাগবিহীন इहेबा बिक्क इहेटल्डा वानिकानिरात मर्पा এ व्यनिष्टे फन এখনও তত প্রবলরূপে দৃষ্ট হয় নাই; কারণ বালকাগণ বালক-দিগের ভার বাহিরের লোকের সহিত সেরূপ নিশিতে পাবিcocs ना। किन्न वानकंतिरात्र अत्नरक उाक्रमभाक २६ एड দ্রে পড়িতেছে। তাহাদিগের মধ্যে যাহার। বরঃপ্রাপ্ত ভাহারা ব্রাহ্মসমাজে একবার পা দেয় না; উপাসনার কোনও बाब धारत ना ; कथा वार्खारक वत्रः खार्त्वामगरक छेपरान

বিজ্ঞাপ করে। এক্নপ হওরার কারণ কি ? উত্তর—শিতা মাভার অনবধানতাই ইচার কারণ। শৈশব হইতে তাঁহাবা স্বীয় স্বীয় পুত্র কস্তাকে ত্রান্দসমাজের সংস্রবে ( touch ) রাথেন नारे: शहर जारामिशक वकती मिनल बाक्यर्य वा बाक्यम्यात्वत कथा वर्णन नाहे ; वत्रः जाहारमत्रहे नमरक बाक्षनमारकत लाक-দিগের সমালোচনা করিয়াছেন, হয়ত অনেক সময়ে উপহাস বিজ্ঞাপ করিয়াছেন; সমাজের যে সকল লোক তাঁহাদের পুত্র কস্তাগণের শ্রদ্ধা ও ভক্তির পাত্র হওয়া উচিত, এরূপ সকল বাক্তিকে হয়ত পিতা মাতা সামান্ত মতভেদের অন্ত পুত্র কক্তারই সমক্ষে অবজ্ঞাসূচক ভাষাতে সমালোচনা করিয়াছেন। এই রূপে তাহারাও অবজ্ঞাস্চক ভাষাতে সমালোচনাঁ করিতে मिथियाहि। এই রূপ নানা কারণে অনেক গৃহের বালক ব্রাহ্মধর্মের প্রতি আন্থাহীন হইয়া বৃদ্ধিত হইতেছে। অপচ এই कांजिएका अभीषित (मान बाक्षत्रमाक विव এই नकन वालक वालिकात जान मभास नाहे। इंशामिशतक खाञ्चमभारकह विवाह कतिए इहेरव; बाक्षमभाष्ट्रहे वाम कतिए इहेरव. ব্রাহ্মসমাজের উন্নতি অবন্তির ফলভোগ করিতে হইবে। তাহা হইলে এই দাঁড়াইল যে ভবিষ্যতে এক্নপ অনেক পরিবার ব্রাহ্মদমাজে থাকিবে, যাহারা নামে ব্রাহ্মদমাজের লোক থাকিবে, কিন্তু আচরণে সম্পূর্ণ ব্রাহ্মবিরোধী হইবে। रमज्ञ वाक्रमभाष्मत्र मणा कि श्रेरत, रमज्ञ मभाष्मत्र व्याज দেশের লোকের ভাব কি দাড়াইবে, সেরূপ সমাজেব দারা ব্ৰাহ্মধৰ্ম্মের গোরৰ কভদুর রক্ষিত হইবে, তাহা ব্ৰাহ্মগণ একৰাৰ ক্তিরচিত্তে বিবেচন। করুন। এই বিষয় বার বার আলোচনা **ब्हेट** ७ ७ १६ इ: १५७ विषय बाक्ष गरनत के विषय प्रत्नारमान দৃষ্ট হইতেছে না। পুত্র কন্সার শিক্ষাবিষয়ে যেরপ সভ≸ হওয়া উচিত সে সতর্কতা দৃষ্ট হইতেছে না। যতই চিস্তা করা ষাইবে, ততই অমুভব করা যাইবে যে ব্রাহ্মবালক বালিকা-গণের শিক্ষার অপেকা গুরুতর কার্যাভার ব্রাহ্মসমাজের হত্তে অতি অৱই আছে। এমন কি এ বিষয়ে অমনোযোগী থাকিলে ক্রমে ব্রাহ্মধর্ম প্রচারও বন্ধ হইয়া আসিবে। উদরামরের রোগী যেমন লোভবশত: এক দিক দিয়া আহার করে, কিছ তাহা অপর দিক দিয়া বাহিব হইয়া যায়—তাহাতে শরীর পড়ে ना: (महेन्नभ क्षाठात कार्यात दावा এक मिक मित्रा लाक **ডाकि**र्द, प्रतिव लाक व्यथन मिक मिन्ना विक्रं हहेगा वाहिन **হটরা ঘাইবে** : সে প্রচারে ফল কি গ অভতার প্রচারকার্যোর অপেকাও বালক বালিকাব শিক্ষার উপায় বিধান তামতের কগুৱা। এজন্ত যদি সকলে সমবেত হইয়াকিঞ্চিৎ অর্থবায় কবিতে হয়, তাহা সর্বাগ্রে করা কর্ত্তব্য। ইহাকি আবার व्यारेम्ना निष्ठ रहेरव ?

বাধা বাহিরে নহে—আমাদের অনেকের জীবনে এমন এক সময় ছিল, যথন মনে হইত বাহিরেব প্রতিবন্ধক তাতেই সাধন ভজন ভাশরূপে চলিতেছে না। এমন কি আনেকের পক্ষে এমন সময়ও ছিল, যথন উপাসনা কবিতেও স্থবিধা হইত না। যথন ব্যক্ষসমাজের সহিত সবে পরিচিত ইইতোছলাম।

সময় সময় সামাজিক উপাসনায় উপস্থিত হইতাম, কিছ প্রকাশ্ত ভাবে ত্রাহ্মধর্ম গ্রহণ করি নাই, তথন দৈনিক উপাসনার নিয়ম থাকিলেও উপাসনা করিবার স্থান ও সময় ভালরূপ যুটিত না। বাঁহাদের সহিত একত্রে থাকিতাম, তাঁহারা এরূপ উপা-সনার সহিত পরিচিত নছেন। স্কুতরাং তাঁহাদের মধ্যে বসিরা চকু মুদ্রিত কবিয়া উপাসনা করিতে স্থবিধাও হইত না, আবার ভয়ও হইত। তথন কোপায় একটু নিৰ্জ্জন ছান পাওয়া ষাইবে, কোথায় নদীর ধারে বা অক্ত কোন মন্থ্যের পভায়াত-হীন স্থান পাইব সে জক্ত কত চেষ্টা হইত। কত ভয়ে ভয়ে তখন উপাসনা করিতে প্রবৃত্ত হইতাম। লোকে বা দেখিতে भाग्न. तम्बिट्ड भारेत निका कन्नित्व এवः অভিভাবকগণকে विनिश मितन विषम जानर्थ चंडित ; এই সকল जानकात्र जधन কত না সতর্ক ভাবে নির্জ্জন স্থানে উপাসনা করিতে প্রবৃত্ত হইতাম। সামাজিক উপাসনাম্বলে যাইতেও কত ঘুরিয়া ফিরিরাবাকা পথ দিরা সমাজে যাইরা উপাসনা করিতাম। তথন মনে হইত, এই সকল বাধা যদি অতিক্রম করিতে পারি, তাহা হইলে আর কোন ভাবনা থাকে না। আশামুরপ উপাসনাদি করিতে আব কোনই অমুবিধা থাকে না। তথন মনে করিতাম, যাঁহারা প্রাচীন স্মাঞ্চ পরিত্যাগ করিয়া সম্পূর্ণ-রূপে ত্রান্ধসমান্তে যোগ দিয়াছেন,তাঁহার। কেমন সৌভাগ্যবান। তাঁছাদের কত স্থবিধা। কেহ উপাসনা করিতে বাধা দিবার नारे। यथन रेष्टा रय उथनरे उपामना कतिएक पादान। किस যথন সেই দিন আসিল যথন বাহিরের প্রতিকৃলতা কাটিয়। গেল, বধন সমস্ত দিন রাত্রি বসিয়া উপাসনা করিলেও নিষেধ করি-বার কেহ থাকিল না বরং তাগতে উৎসাহ পাইবাবই সম্ভাবনা इहेन। উপাসনা ना कतिरान निका कतिवात त्नाक यू छिन, ভখন দেখা গেল সাধন ভজনের প্রতিকৃলতা ভধু বাহিরে নয়, কিন্তু ভিতরেই বেশী। বাঁহারা আদ্ধ বলিয়া পরিচিত হইয়া-८इन. मामाखि ♦ উপাসনাভলে না গেলে বা নিজ্জন উপাসনা না করিলে তাঁছারা নিন্দি চই হন। উপাসনা কারবার পক্ষে ভাঁহাদের বাহিরে কোনই বিল্ল নাই, বরং স্থবিধাই আছে : ব্রাহ্মগ্রের সন্থানগণ যদি উপাসনা কবে, তাহাতে সকলে প্রশেশ্সাই কবে, উৎসাহই দেয়, কিন্তু নিষেধ কবিবার কেহই নাই। এ অবস্থায় যদি দেখি যে উপাদনাতে তেমন মন নাই— मर्सा मर्सा উপामना-विधीन इटेश निन काष्ट्रीटेट कहे इस না। এমন যে প্রির সামাজিক উপাসনা যাহাতে যোগ দিতে ষাইয়া কত সময় তিরস্থাব এমন কি প্রহার সম্ভ করিতেও हरेग्राह्यः, जाहार् अञ्चलिष्ठ हरेल्य रहमन क्षे हर्य ना এমন কি সামাল্য কাজেব ওজর কবিয়া উপাসনা হলে না যাইতে মনের আগ্রহ বেশা, সামাত্ত অমুবিধা ঘটিলে আস উপাসনা স্থলে যাইতে প্রবৃত্তি হয় না, এমন কি আমোদ প্রমোদ করিয়া **मिट ममय्रेक का**णाहेटल वतः हेन्द्रा हम्न, ख्यां नि उनामना एतन বাইতে প্রবৃত্তি হর না; তপন সহজেই মনে হয়, বাধা বিল্ল বাহিরে নর কিন্তু ভিতবে। ভিতবের অকুধা, অকচিট প্রাণকে এমন হীন অবস্থায় উপস্থিত করিয়া থাকে,। এজন্ত मिथा गात्र यथन व्यान श्रष्ठ क क्यारीन रहा, ज्यन महस्क

সামাজিক উপাসনা উপদেশ ও সংগীতাদির সমালোচনা করিতে, ভাহার দোষ অফুসন্ধান করিতে প্রবৃত্তি সম্ধিক প্রবৃদ্ধ। তথন সেই ভিতরের রোগ চাপা দিয়া রাখিরা আত্মপ্রবোধের অক্ত অপরের ক্বরে দোষ্যরোপ করিয়া, সৃত্তিশাভ করিছে প্রবৃত্তি হয়। যথন উপাসনা করিতে করিতে আন্তরিক রিপ-সকলের সহিত সংগ্রাম উপস্থিত হয়, যখন প্রবৃত্তিকুলকে দমন করিয়া সংযতচিত্ত হইয়া চলিবার আবিশ্রক হয়, বিষয়-বাসনার মাত্রা হাস কবা আবশুক হয় তথনই বাস্তবিক সাধকের পক্ষে কঠিন সময় উপন্থিত হয়। বাহিরের প্রতিকৃণতা বেশী দিন থাকে না: আর তাহা অতিক্রম করাও বেশী কঠিন নহে। কিন্তু ভিতরকার শত্র-যাহার সহিত সংগ্রাম করিতে গেলেই আত্ম-নিগ্রছ করিতে হয়, আত্মস্রথের কিয়ৎ পরিমাণে লাঘৰ করিতে হয়, তথনই প্রধান অন্তরায়ের সহিত সাক্ষাত হয়। সাধক এই সময় যদি দৃচ সংকল্প করিয়া---সাধনপথে অগ্রসর হইতে যত্নশীল না হন, ষ্টাহার পক্ষে এ পথে চলা দিনের পর দিন কঠিন হয়। তথন সাধক-সমাজে শরীরটা পড়িয়া পাকিলেও প্রাণ বহু দূরে চলিয়া যায়। এই সময়ের অবস্থা অতি শোচনীয়। এই সময়েই লোকে উপাসনাদিতে না याहेवात श्रूराश कार्ययन कविराज श्रांक। এই সময়ে क्वम कार्यावाहना घटि। किन्दु এकहे। काम्धर्या वार्शात এই याहाता নিয়মিত রূপে সাধন ভজন করেন, তাঁহারা যে অভান্তের অপেক্ষাকাজ কম করেন এমন নয়। উাহারা যে বিষয়কর্ম না করেন তাহাও নয়। দেখা যায় নিয়মিত রূপে উপাসনা কবিলে কাজের কোনই ক্ষতি হয় না বরং তাঁহারাই বেশী কাজ कतिवाव ऋविधा প্রाপ্ত হন। তবে বুণা জল্পনা গলাদি করিয়া বা ক্রীডা ও আমোদ প্রমোদে হয়ত তাঁহাবা সময় যাপন করিতে পারেন না। অভাব সময় বা স্থবিধার নহে। অভাব---আন্তরিক পিপাসা ও প্রবৃত্তির। এই ছুইটা থাকিলে সকল দিকেই স্থবিধা হয়। সংসাবের কাজও চলে, সাধন জ্জনও চলে। আমরা আর কতকাল পরের উপর দোষারোপ করিয়া এবং বাহিবের প্রতিকৃশতা নিবারণ করিয়া করিয়া বেড়াইব। অস্তবের বিপু সকল ধরিতে এবং ভাহার মায়া এডাইভেই আমাদের প্রবৃত্তি প্রবল হউক।

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

## ব্যাপ্তি ও গভীরতা।

বর্ত্তমান যুগ ব্যান্থিরই অনুকৃশ, গভীরভার অক্সকৃশ নছে।
প্রভাকে দেশের উৎপর দ্রবা, প্রভাকে জাতির উৎপর চিন্তাকে
অল্লকালের মধ্যে দশদিকে ব্যাপ্ত করিয়া ফেলিবার অস্ত কভ প্রকার উপার আবিদ্ধৃত হইয়াছে। সমুদ্র বক্ষে দিবারাত্র অগণ্য বাজ্পীয়পোত তরক্ষ বক্ষ বিদারণ করিয়া ছুটিভেছে, হলভাগে অগণ্য বাজ্পীয় শকট মেদিনীকে কল্পিত ও দিগ্-বলয়কে ধুমাকীর্ণ করিয়া ধাবিত হইতেছে—অগতের ক্ষমিলাভ দ্রবা, চিস্তাকাত সাহিত্য, ও বার্ত্তাবহন করা ইহাদের প্রধান কার্যা, ইহার উপরে লোকের ধনলাভের প্রবৃত্তি প্রবৃদ। ৰদি এরূপ কোনও দ্রব্য উৎপন্ন হয়, যাহা ব্যয়সাধ্য ও অপেকা-ক্ষত অৱশংখ্যক লোকের ভোগযোগা, তাহাকে স্বরায় স্থলত ও বছজন-ভোগ্য করিবার জন্ত বিবিধ প্রকার উপায় অবশস্থিত হইরা থাকে। চিস্তাল্ক সতা সকল সম্বন্ধেও এইরূপ। প্রভূত চিস্তার দারা একজন যাহা লাভ করিতেছেন, তাহাকে স্থবোধ্য कतिवा नर्क्तनाथात्र त्वार्शियाणा व्याकार्य व्यनमभारक प्रतीय উপস্থিত করা হইতেছে। ভাহার সূগ সূগ জ্ঞাতব্য কণা ছুই মাদের মধ্যে স্কলেরহ কণে উঠিভেছে। বিশেষতঃ জীবনসংগ্রামের কঠিনতা ও কায্যে অতিরিক্ত ব্যস্ততা বৃদ্ধি ছওয়তে, গভীররূপে কোনও বিষয়ের আলোচনা করিবার প্রবৃত্তি মামুষের থাকিতেছে না। দৈনিক সংবাদপত্র, তাহাও চিম্বার সহিত পাঠ করিবার অবসর অনেকের হহতেছে না। সকলেই যেন কি এক চক্রের অঙ্গাভূত হইয়া ঘুরিতেছে, ঘুরিতে ঘুরিতে যে হহ একটা বিষয় দৌশয়া লইতে ও যে হই একটা কথা ভানিয়া লহতে পারিতেছে, এইমাতা। এইরূপে कानारनाहना मचरक ज्यन ज्र (म्था यात्र, रय कारनेत्र दूर दूर তত্ত্ব সকল বছদুর ছড়াহয়। পাড়য়াছে, বছসংখ্যক লোকের কণগোচর হ্হয়াছে, কিন্তু অস গোকেই গভীরতা লাভ ক্রিবার প্রয়াস পাহতেছে।

আচান কাশের ভাব হহার বিপরীত ছিল। তথন ব্যাপ্তি অপেকা গভারতাই আধক ছিল। লোকে বহুকতে একজন সং শুরু পাইত বা হুহথানি উৎকৃত গ্রন্থ সংগ্রহ করিতে পারিত। কিছু সেই ছুহথান গ্রন্থই গভীবরূপে আলোচনা করিয়া বাংপতি লাভ করিত। যে ছুহ চারিটা কাড়তত্ব বা মনস্তক্ষ আবিষ্কৃত হত তাহাই গভীররূপে অনুশীলত হইত। বর্তুমান কালের ব্যাপ্তির সঙ্গে সঙ্গে পোই প্রাচীন কালের গভীরতাও বাধিতে পারিলে ভাল হয়।

धर्मगाधन । मम्बूष्टीन मश्रास । के इन निर्केश বর্ত্তমান সময়ে লোকের প্রবৃত্তি গভীরতা অপেক্ষা ব্যাপ্তির দিকে অধিক দৃষ্ট হয়। প্রথম, সদস্তান সম্বন্ধে চিন্তা করিলে। অনেক স্থলেই এইরূপ-দোধ যে সে সদমুষ্ঠানটী স্থায়ী ভিত্তির উপরে স্থাপত হইল কি না এবং তাহার উত্তরোভর উন্নতির উপায় কি. এ সকল চিম্বা লোকের মনে উদয় না হইয়া স্কাগ্রে ভাছাকে বছদংখ্যক লোকেব বিদিত করিবার প্রবৃত্তিই প্রবল হয়। ধর্মকেও এইরূপ প্রদশনের বস্তু করিবার প্রবৃত্তিও প্রবল দৃষ্ট হয়। কোনও কোনও ধর্মসম্প্রদায়ের মধ্যে এই প্রাবৃত্তি অভিশয় প্রবল। কিন্তু এরূপ প্রচারের স্থায়ী ফল দৃষ্ট হয় না। যেখানে গভীরতা অপেকা ব্যাপ্তি অধিক সেথানে অসার ও গ্ৰীরতা-বিহীন লোক যুটিতে থাকে, এবং তাহারা অনেক সময় এক স্রোতে আদে, আব এক স্রোতে ভাসিয়া যায়। यमि এक भेज ज्यारिन एत्व छूटे वरनत ना याहेर् याहेर् जाहात ৭৫ জন খালিত হটয়া পড়ে। কিন্তু গভীরতার দিকে দৃষ্টি রাথিলে বিপরীত ফল ফলিয়া থাকে। যদিও অল সংখ্যক লোক থাকে, সেই অল্লসংখ্যক লোক স্থায়ী হয়, এবং সেই অল্লসংখ্যক **इहेर्ड डेखन्न कारन वहमार्थाक लाक महे काराभन्न हहेन्ना थारक**।

ব্রাহ্মসমাজের ইভিবৃত্তের বিষয় চিস্তা করিয়া দেখিলেও দেখিতে পাওয়া যায়, যে ইহার কার্যাপ্রণালীর মধ্যে আমবা এতদিন গভীরতা অপেক্ষা ব্যাপ্তির দিকে অধিক দৃষ্টি দিয়া আসিতেছি। লোক আনিবার জন্ত যেরূপ ব্যগ্রতা দৃষ্ট হইয়াছে, আনীত ব্যক্তিদিগকে উন্নত করিবার জন্ত সেরূপ ব্যগ্রভা দৃষ্ট इम्र नाहै। এমन कि हेहान्न श्रानातक ও উপদেষ্টাগণকেও ত্রন্ধজ্ঞানে স্থপরিপক্ষ করিবার জন্ত বিশেষ উপায় অবলম্বিভ হয় নাই। ইহার ফল এই হইতেছে যে এক সময়ে বাহারা উৎসাহের সহিত ত্রাহ্মধর্ম প্রচার করিতেছেন তাঁহারাই অপর সময়ে ব্রাহ্মধর্মকে ও ব্রাহ্মসমাজকে বর্জন করিয়া সাইতেছেন। দেখিলে বোধ হয় যেন তাঁহারা জোয়ারের জলে আসিয়াছিলেন ভাঁটার জলে বাহির হইয়া যাইতেছেন। যেথানে গভীরভা লাভ করিবার দিকে দৃষ্টি অল্প, বেখানে ভাবের উপরেই সকলেই আছে, দেখানে মত ও ভাবগত চঞ্চলতা ও অন্থিরতা অনিবার্যা। ভবিষাতে আমাদিগকে ব্যাপ্তি অপেক্ষা গভীরভার मिटक **अ**धिक मत्नारगांगी इहेट इहेट्न, उष्णित आमता खास-সমাজের মত ও কার্য্যপ্রণালাকে শ্বির রাখিতে পারিব না।

## জীবনের প্রভু কে ?

( সাধারণ ব্রাহ্মসমাজমন্দিরে শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী প্রদত্ত উপদেশের সারাংশ)।

ঋষির। ঈশবের শক্ষপ কত প্রকারে নির্দ্ধারণ করিয়াছেন। তাহার মধ্যে একটা এই,—

"মহান প্রভুবৈ পুরুষ:"

তিনি মহান, তিনি পুরুষ। প্রথমত: তিনি পুরুষ—অথাৎ তিনি অন্ধর্শক্তি নন, কিন্তু জ্ঞান, প্রেম, ইচ্ছাসম্পন্ন পুরুষ। আমাদেব আত্মা যেমন পুরুষ, তেমনি তিনি পুরুষ: তাঁছাব সহিত আত্মাব যোগ, অন্ধশক্তিব সহিত অন্ধশক্তির যোগ নয়। জ্ঞানের সহিত জ্ঞানের, প্রেমের সহিত প্রেমের ও ইচ্ছার সহিত ইচ্ছার যোগ, পুরুবে পুরুষে যোগ: যেমন ভোমায় আমায় যোগ। আকাশের সঙ্গে আকাশ মিলিয়া যায়, জলেব সঙ্গে জল মিলিয়া যায়, মহাকাশের সঙ্গে ঘটাকাশ মিলিয়া যায়, সেঁক্লপ নয়, কিন্তু পুক্ষে পুরুষে যে যোগ এ বোগ তাহা। অধাৎ জ্ঞান, প্রেম ও ইচ্ছার যোগ। আমাদেব জ্ঞান, প্রেম, ইচ্ছা যথন দেখি, তথন দেখি ভাহারা জ্ঞান, প্রেম, ইচ্ছারই অমুসন্ধান করে। তাহা না হইলে চবিতার্থ হর না। এমন এক বস্ত यिंग प्यायाय मण्यूर्य तान, यादाव छान, त्थ्रम, देखा नाहे, प्यात তাহাকে যদি প্রীতি করিতে বল, তাহা আমার পক্ষে সম্ভব নয়। মনে কর আমি একটি কুকুবকে ভাল বাসি। ভূমি যদি বেশ হুলর একটি কুকুর নির্মাণ করিয়া, ভাহাকে কাচের চক্ষ দিয়া-নানা শোভার স্থশেভিত করিয়া আমার দিকে তাহার মুখ ফিরাইয়া রাখ, তাহা হইলে কখনও তাহাতে আমার প্রীতি হইবে না; তাহার উপর আমার প্রেম যাইবে না। কিন্ত তাহার পরিবর্তে একটি জীবন্ত প্রাণী যদি আদে, তাহার প্রেম-পূর্ণ দৃষ্টি যদি আমার চক্ষের উপর পড়ে, ভবেই আমার

প্রেম চরিতার্থ হর, না হইলে নর। লোকে যে প্রতিমা নির্মাণ করিরা পূজা করে, দেখানেও জ্ঞান, প্রেম, ইচ্ছা আরোপ করিরা লয়। তাহা না হইলে জ্ঞান, প্রেম ইচ্ছা চরিতার্থ হয় না। মতবাং তিনি পুরুষ অন্ধশক্তি নন। যেমন তাড়িত্ একটা শক্তি আছে, তিনি সেরপ নহেন। কিন্তু জ্ঞান, প্রেম, ইচ্ছামর হইরা জামাদিগকে আকর্ষণ করিতেছেন।

ৰিভীরতঃ তিনি যে কেবল পুরুষ, তাহা নছে,—"তিনি মহান্পুরুষ '' ইহার মধ্যে গভীর অর্থ আছে। ঈশার করুন, আমরা যেন তাহা গ্রহণ করিতে সমর্থ হই।

"ভিনি মহানু ও প্রধান পুরুষ<sup>্</sup>" অনেক কার্য্যে এক अक्बन अधान भूक्ष धारक। अञ्जादक है कांक करत, कि তিনি অধ্যক্ষ। যেমন সৈঞ্জিগের একজন অধ্যক্ষ থাকে। সৈক্সেরা তাহার অধীনে যুদ্ধ করে; তীহার কথার প্রাণ দের। যথন জাহাজ সমুদ্রে যায়, একজন প্রধান অধ্যক্ষ, আর স্কল ভাহার অধীন থাকে। তাঁহার তকুমেই কাজ করে। সংসারে একজন কর্ত্তা থাকে, সকলে তাঁহার অধীন হইয়া চলে। সেই প্রধান পুরুষের কর্ত্ত। নিয়ম করিবাব ভার তাহার, চালা-ইবার ভার তাঁহার উপর। তিনি নিয়ামক, অপর সকল তাঁচার নির্মের অধীন। এক দিকে নিয়ন্তা, অপর দিকে বাধাতা। তাহানা হইলে কাফা হয়না। অধ্যক্ষের কথা যদি ना उत्न তবে य कार्यात जन्न छाहारक नियुक्त कता इहेग्राइ ভাহা সম্পন্ন হয় না এবং ভাহা ছইলে এরপ অধ্যক্ষের কোন অর্থ थादक ना। वाधाङ। बाताहै कावा हग्न। छाहात है छ। श्रधान, অপর সকলেব ইচ্ছা বিতীয় স্থানে। তাঁছার ইচ্ছামত কাজ হয়। কিন্তু কার্য্যের গৌরব তার।

কাল কৰে সকলে, কিন্তু গৌরব তাঁর। প্রত্যাক সৈন্ত যুদ্ধ না করিলে যুদ্ধে জরলাভ দ্য় না, কিন্তু জ্বের প্রশংসা সেই সেনাপতির। তিনি হয়ত অস্বারোহণে পশ্চাতে ছিলেন, সেনাবা প্রাণপণ করিয়া যুদ্ধ করিয়াছে, কিন্তু গোরব ভাঁছারই। আপাতত: একথা বোধ হইতে পারে একি অবিচার, তাঁহার গৌরব কেন? কিন্তু ইহাতে গল্ভান অর্থ আছে। গ্রুদ্ধ না থাকিলে হালার সাহসা সৈত্র থাকিলেও চীনের যুদ্ধে কর্ম হইত না। তাঁহার শৃন্ধালা, তাঁহার কার্যা তৎপরতা, তাঁহার বীরব, তাঁহার সাহস, তাঁহার হৈগে, তাঁহার শৌর্যা না থাকিলে সৈন্ত্রগণ হালার সাহসী হইলেও কথনই যুদ্ধে জর হইত না। স্থেরাং গৌরব তাঁহারই।

ঈশরকে প্রধান পুরুষ বলিলে এই বলা হয়, তাঁহার অধীন ১ ওয়া, তাঁহাকে জীবনের কর্ত্তা করিয়া চলা। জীবনের সমস্ত কার্য্যের গৌরব তাঁহাকে দেওয়া এই ভাবে তাঁহাকে গ্রহণ করিতে পারিলেই বলা যার "মহান প্রভূবৈ পুরুষঃ।"

ধর্মের আর কোন অর্থ নাই, কেবল তাঁহাকে প্রধান পুরুষ করিলেই হর, আর কিছু নর। অনেক সময় দেখা ম র মান্ত্র আপনাকে প্রধান পুরুষ করিয়া মুখে বলে ঈশ্বর আমরা কর্ত্তা। কদর দেখিলে দেখা যার নিয়ন্তা তিনি নন, কিন্তু মান্ত্র আপনি নিজে। তাঁহার ইচ্ছা নর কিন্তু মানবের ইচ্ছাই প্রধান। আপনাদের জীবন পরীকা করিলে দেখা যার, নিজেকেই প্রধান পুরুষ করিরা রাখিরাছি, আমরাই জীবনকে
নির্মিত করিতেছি। তিনি প্রজু, আমি দাস, এভাব নর।
আমি তাঁহার ইচ্ছা পাসন করিতেছি, আমি তাঁহার সন্তান
হইয়াছি এভাব নর, কিন্তু আমি এখানে প্রধান পুরুষ।

আপনার ইচ্ছাকে অনেক সময় প্রধান ভাবি। প্রার্থনা করি অনেক সমর এই ভাবে বে আমার ইচ্ছা পূর্ণ হউক, ভোষার বারা। নিজের ইচ্ছাই পূর্ণ করিতে চাই তাঁহা বারা। কিন্তু প্রকৃত ধার্মিকের পার্থনা এই "ভোমার ইচ্ছা পূর্ণ হউক আমা বারা।" "আমার ইচ্ছা পূর্ণ হউক ভোমার বারা" এই উত্তর প্রার্থনাতে অনেক প্রভেদ।

সেইরূপ গৌরবও আমরাই গ্রহণ করি। প্রধান পুরুষ তিনি নন, কিন্তু আমরা। "মহান পেভূবৈ পুরুষঃ" বলা যার, তথন, যখন জীবনের উপর তিনি প্রতিষ্ঠিত হন। অথাৎ সকল কার্যো তাঁহারই গৌরব দেখি।

তিনি কেবল মহান পুরুষ নহেন কিন্তু প্রভু। প্রভু শংলর অর্থ কি ? না বাহার প্রভাব আছে, মনের উপর বাহার শক্তি আছে। প্রভুর যে শক্তি তাহা গৃঢ়শক্তি, তাহা অব্যক্ত ভাবে মানবের চরিত্রের উপব কার্য্য করে। যেথানে পুরুষ দেখি, যেথানেই প্রভু দেখি, সেধানেই এই গৃঢ়শক্তি দেখা যায়। এই গৃঢ় শক্তির প্রতি দৃষ্টি রাখিয়া মন্থ বলিয়াছেন:—

্দণ ও: স্থাপু জাগতি দভোহি চরতিক্রম:।"

অর্থাৎ সকল লোক যথন নিদ্রিত থাকে, রাজার শাসনদও তখন জাগিয়া থাকে। তুমি সামার মামুব, অক্সার কার্বা অফুঠানের চেষ্টা করিতেছ, মনে করিতেছ কেছ ভোমাকে দেখিতেছে না, কিন্তু রাজশক্তি তোমাকে দেখিতেছে ৷ তুমি যে তোমাৰ পাৰ্যন্তিত লোকের ৰক্ষেছুরিকা আঘাত করিতে সাহস কর না তাহাব কারণ কি ? রাজার শাসন-ভর। এই কোটা কোটো লোকের মধ্যে ছম্প্রবৃত্তির বশবন্তী মামুষ কি নাত ? আজ যদি দণ্ডশক্তি ভালেয়া ফেলা যায়, ভবে কি ইংরোদেশকে অভির করিয়া তোলে না 📍 পশ্চিমে কানপুর প্রভৃতি ভান যথন বিদ্রোহ হইয়াছিল, তথন ব্যবসা ৰাণিজ্য সমুদায় ৰন্ধ হইয়া গিয়াছিল, দোকান করিতে পারিত না, হাট বাজার বা ৰাজীর প্রবেশ দার বন্ধ, লোক ভয়ে ঘরের বাহির হইত না। কোন মতে দিন কাটাইত। সৈত্যেরা তরবারি হল্পে নগরে বেড়াইতেছে! সে যে 🗣 অরাজকভা ভাহা ভাষায় বলা যায় ना। आक द्राक्षात मक्ति ७ व कतित्रा (मंड, कना (मध्य জনসমাজ ভগ্ন হইতেছে। কাল যদি গুনিতে পাই যে কেলাভে देनच नारे, थानाम श्रुनिम नारे भवनारात्केत धनाभाव मुठ रुटेबाल, **जर्दा क्यादित वाहित रहा श्राक्**ल ना थ।किला শাসন চলিত না। প্রভূশকি দণ্ডের স্থায় কার্য্য করে। এই শাসনদণ্ড যদি না থাকিত, তবে আৰু এতগুলি লোক নিরাপদে এখানে বসিয়া ঈশ্বরের নাম ক'রতে পারিতাম না। প্রডেটক नम विष्करन এই बाक्निकित कथा कि बाद ना, कि बादाक রূপে প্রভ্যেকের মধ্যেই ইহা আছে। সেইরূপ প্রভুর শক্তির

ভাবও শ্ববাক। কোন বাড়ীতে গেলেই টের পাওরা বাদ্ব গ্রহসামী বাড়াতে আছেন কিনা? কর্জা বাড়ীতে থাকিলে, ভূতাদের মধ্যে কর্মের বাস্ততা ও শৃথ্যলা দৃষ্ট হর, প্রভূর ভরে সকলেই আপন আপন কার্যা শৃথ্যলাবদ্ধরূপে সম্পন্ন করে। আর সেই প্রভূষণি বাড়ীতে না থাকেন, তবে সকল কাজেই বিশৃথ্যলা।

আমরা যে ঈশরকে গভু বলি আমাদের কি সেই শৃঞ্জালা ও নির্ভর আছে? তিনিক আমাদের প্রভু, কিছু আমরা কি অমুক্ষণ তাহা মনে রাণি, ও তাঁহার উপর নির্ভর করি? শিশুর গতি যথন দেখি সে শ্বাধীমভাবে খেলা করিরা বেড়ার, সে আর কিছু জানে না তাহার নির্ভর আছে তাহার মারের উপর। সে যে প্রভোক কার্যো ভাবে ভার মা আছে, তাহা নহে. কিছু সে অবাক্ত ভাবে মারের উপর নির্ভর করে। এই নির্ভরের কারণ হরণ কর তাহার সব বাইবে, প্রাসরভা বাইবে। যদি প্রভুর উপর নির্ভর করিতে পারিভাম তবে কি শিশুর ক্রার নির্ভব করিয়া প্রসর পাকিতে পারিভাম বাই

আর দেখি ষেখানেই প্রভূ সেখানেই নির্ভর সেখানেই প্রতীকা। আমরা কি নির্ভর করি ? কত সময় কত শুক্তর প্রশ্ন আমাদের মনে উঠে, আমরা কি প্রভীকা করি ভিনি সে প্রথক্তে আদেশ করেন কি না?

নির্ভ রব সংক্র সংক্রই আদেশ পালনের জক্ত প্রস্তুত থাকা আবশ্রক। আমাদের নিজেদের জীবন দেখিয়া কি বলিতে পারি বে নির্ভর করিতে পারিরাছি, তাঁহার আদেশের প্রতীক্ষা করেরছি, এবং দে আদেশ পালন করিছে পারিরাছি ? আমরা তাঁহাকে প্রভু করি। তাঁহার আদেশের প্রতীক্ষা করে ভাবনের প্রভু করি। তাঁহার আদেশের প্রতীক্ষা করে এবং তাঁহার আদেশের প্রতীক্ষা

## 

( পুর প্রকাশিভের পর।)

আমাদের প্রত্যেক জ্ঞানের রশ্মি অক্স হান চইতে আসি-তেছে। প্রত্যেক সত্যের কিরণ অক্সন্থান হছতে বিকীণ হইরা তোমার সদরে উপনীত হইতেছে। ইহার একটিও তোমার নর। তবে এ সকলের কর্ত্তা কোন্ জারগার ? বর্ত্তমান সময়ে utilitarian (হিতবাদীগণ) এই প্রশ্নের মামাংসা কবিতে গিরা neccessitarian হইরাছেন, প্রাচীনকালে ভারতের ঋষি গণ ইছার সিদ্ধান্ত করিতে গিরা আয়ার স্বাধীনতা দেখিতে পান নাই। যদি কর্তৃহই নাই তবে আয়া কিরণে এই অনিতা জগতে আসিল ? তাহারা এই প্রশ্নেব উত্তর অবেবণে প্রবৃত্ত হইরা কর্ম্ব-নিরম অম্ভব করিলেন। আয়া কর্মকল ভোগের জ্ঞ আসিরছে। তাহারা দেখিলেন জড় রাজ্যের স্ক্রিই নিরম, কোধাও কাহারও স্বাধীনতা নাই। বিশাল স্বাধীনরম, কোধাও কাহারও স্বাধীনতা নাই। বিশাল স্বাধীনতা মির্মান্তেলে, স্থাভন

চক্রমা নিয়মের বাধ্য হইয়া পূর্ণিমা-রজনীতে নরনানক দান क्रिटिए, नित्रमाधीन शाकाएउই नक्कब-मक्ष्म समानिनात আকাশমগুল স্থগেভিড করিতেছে, মেদ সকল বাধ্য **रहेब्राहे खनशात्रा दर्यन कत्रिर**ङ्ख, क्षक्रां दिन वर्ष कारण निव শোভার শোভিত হইরা অগজ্জনের মনোহরণ করিতেছে। এইরূপ জড়গজতের সর্ব্বেই নির্ম— বাধ্যতা। ইহা হইছে डाँहाता এই निकास कतितन द्य मानत्वत्र कार्या नमूनमञ হুর্ভের্য নিয়মশৃথ্যে আবদ রহিয়াছে। কর্মের নিয়ম মানিরা তাঁহারা ঈশবের ভারকারিতা রক্ষা করিলেন---পাপের শান্তি ও পুণ্যের পুরস্কার স্বীকার করিলেম। জীবা-ত্মার সংসারে জন্ম, কর্মাফল ভোগের জক্ত বলিয়া অবধারণ করিলেন। এইরূপে তাঁহারা আংআ, জাগৎ ও ঈখর সম্বন্ধে निकास क्त्रित्नन (र जेश्रत निजा, जाशा कर्ज्य-विशैन, नियम।-বন্ধ এবং অপণ অনিভা, মানবাত্মার কর্মভোগের প্রাচ্য ধর্মভাবের মধ্যে এই তিনটী ভাব প্রক্টিভ দেখা यात्र ।

এ সকল ভিন্ন ইহার আরও একটা প্রধান ভাব আছে। দেটী এই—অনিতা জগতে নিতা আয়ার বাস প্রার্থনীয় **কি না** গ ইহার উত্তর, প্রাধনীর নর। যেহেতু জগৎ ছঃখময়—ছঃখমর অগতে আত্মার বাস কিরূপে প্রার্থনীয় হইতে পারে? জন্মগ্রহণ इः(अबरे कांत्रण। अन्त्र रहेट्ड निकृष्टिरे मुक्ति। म्रानाब मक সংস্কৃত স্থাড়ু হইতে উৎপন্ন; ইহার অর্থ যাতায়াত,ভব শক্ষে ব্দর্শ কর। তাঁহারা এই কগতে আগমন, এখানে করকেই ष्पठास इ:४मत्र मत्न कतिर्देशन । अहे सम्रहे मः नात्र स्ट सम् चनार्थक रहेरनंद इःच्याठक रहेन्नाइहः। সংসারকে ঊাদের এত ছংখ্মর মনে হইল কেন ? দেখি সমুদ্র প্রাণী জগৎকে মিট मान करता निकार मान करत कार मिहे। कार्मत नवीन b क नक्षे नवान. नक्षे चानलगात्रक, या (मध्य काटक ष्पानक या ७८न ভাতেই ভৃষ্টি। यह দেখে यह ७८न ७ एई কৌ ভূহল। আরও দোধৰ আরও শুনিৰ আরও আনান্ত হইব আবও মিট্ডা উপভোগ করিব। তাদের নবীন গ্রুত্তে কত আশা, কত উৎদাহ, উপভোগ-প্রবাত্ত কত প্রবল। ব্দার ব্যাতে এত মিষ্ট কিনিষ্ণ রাংলাছে। তবে এত ছ.খ কোথা হইতে আদিন ? কেন প্রাচান পণ্ডিতগণ জগৎকে তু:খুমুর অমূভৰ করিলেন 🕆 বেদে কোৰাও ত জগৎকৈ ছ:খনয় দেখি না। বেদে enjoymentএর ভাব, অগৎকে উপভোগ করিবার क्षाव, भूगमाळात्र तमिष्टक भारे। देवनिक श्रामिशायत धर्माकाव ন্তন, তাঁদের দৃষ্টি ন্তন, সমস্তই ন্তন। তাঁদের নৃতন চক্ষে তাহারা অগণকে সোক্ষর্যোর আকর, প্রথের উৎস বলিয়া ट्रिलयाह्न । दर्प दर्गन ७ क्रिका नाहे, देविद्रिक विश्वत প্রার্থনা করিতে হইবে না সে ভাব তথন ছিল না৷ উল্লাব্য गर्मना हे जित्रहरू ना प्राथत करु है वाष । त्महे स्वयं कहे शत्यात পুরস্বার-বলিয়া মনে করিতেন এবং ধন্মপথে থাকিয়া ভাতারই অন্ত প্রার্থনা করিতেন। বেদে সর্কাদাই এরপ প্রার্থনা প্রাপ্ত इ अम्रा योष-- "(इ हेन्छ ! ज्यानाविशत्क धन त्व अ याहा विन विन वर्षिक इम्र ; चामानिशत्क इधवकी (धस् एन इ चामता इप बाहे ,"

এমন কি ভেকের যে কুৎসিত শব্দ তাহার মধ্যে বৈদিক ঋষিগণ এক প্রকাব স্বরমাধুী অনুভব করিয়াছিলেন। বেছে বর্ষাকালে ভেকদিগের মক মকা ধ্বনির প্রাশংসা আছে। কিরপ সবল মন থাকিলে জীবনের সুথ এত অধিক অমুভব কবা যার যে ভেকেব শক্তে মন মুগ্ধ হইতে পাবে। এই শৈশব-স্থলভ সবলতা, এই জীবনের স্থপভোগের শক্তি, এই ইন্দ্রিকনিত তপির আসাদনের ক্ষমতা অতীব মধর।

প্রথমে এই ভাব ছিল তবে কিজল জগৎ চঃধমর মনে क्टेन १ महाञ्चा तुक छः ८ वर्ष का का १८ क दिन विद्या कि एन । जिनि क्र १९८० ज्यानक प्रः १ मत्र विद्या धर्मा खापन क्रिवारकन । একণে দেখা যাউক জগৎ চঃখমর এ কণা সভা কি না। क्र गर यनि प्रःथमत्र इत्र जत्त कि क्षेत्रत कक्र गामत्र नाइन, ज्यापता প্রমেশ্বর কি জগৎপিতা নহেন ? জগৎকে বে ছঃখ্ময় দেখি তাহাব কাবণ ছঃধের কথাটা আমাদের মনে থাকে স্থাধের कथा ज्लिया याहे। छज्जन जेचरक सर्थह धनायान मिहे ना । जुमि वरमरवर मरशा এकामन कि कुई मिन खदानक रवान যম্মণা ভোগ করিরাছ সেই কথাটা হৃদরে অভিত কবিরা বাধিয়াছ আর এতদিন যে স্থপ্তোগ করিলে, এতদিন বে সভদেহে প্রফুর মনে কাল চবণ করিলে তাহা আরু মনে থাকে না। প্রমেশ্ব আমাদের ধ্রুবাদ চান না এই জন্তুই স্থাবের कथा मत्न थारक नाः चात्र चामानिगरक छःच পরিছার কবিতে হইবে এজন্ত তার ছাপ মনে বিশেষরূপে অন্তিত थाक । िखानीन इहेबा आमता अपनक ममत्र मिहेला हाताहै। **क्रियानीन इहेबा (मिथिटन क्यार इ:धमब्रहे मत्न इब्र। विजीवज:** প্রাচীন কালেব সহিত তুলনা করিয়া বর্তমানকাল ছ:খমর मत्न इत्र । हेडिवृद्ध छात कथाहे तिथिङ थाएक मन्त कथा কেহ লিখিরা রাখে না, ব্যাস বালীকি ইহাঁদেবট কথা লেখা আছে আব ষেকত 'হরে নবে' জন্মগ্রহণ কবিষাছিল ভাছার কেছ স্কান বাথে না। কাজেই ইতিহাস পাঠে প্রাচীনের জন্ত অবগন্ত ২ইতে যাইয়া আমৰা ভাল দিকটাই দেখিতে পাই মলভাগ কথনই আমাদেব নয়নপথে পতিত হয় না। এই জন্মই অনেকে প্রাচীন, প্রাচীন প্রাচীন কবিয়া বর্জমানকে মণিন দেখিয়াছেন—জগতকে ছঃথময় মনে করিয়াছেন। এভাব য়িতদীদেব মধেও ছিল। এই চুই জাতি জগৎকে মলিন চকে দেগিল কেন ? এমন কোনও কারণ ছিল বাহা ছই জাতিতেই বিদামান ছিল। অসভোৱা এই জগৎকে ভাজা সম্ভোগ করে। চিম্ত। করিলে মনে হর রাজনৈতিক পরাধীনতা, উৎপীড়ন, সামাজিক দারিদ্রা প্রভৃতি জগৎকে তঃথময় দেখিবার কারণ। য়িত্দীদেব মধ্যে বন্দীদশা ও তার্ভিক এই ভাব আনিয়া দিয়াছে। এদেশে ও ত্রাহ্মণদের অভ্যাচার প্ৰবল হইয়াছিল: অক্সান্ত থাতি সৰ্বদা প্ৰশীডিত ৰুইত . তাচাদের মন নিয়ত মিয়মাণ থাকিত। এ সকলের উচ্ছেদ করিবার জন্তুই বদ্ধানেবের অভাগর। জগৎ হঃখমর হওয়াতেই তৎপ্রতি বিরাগ উৎপন্ন হট্রাছে।

क्षेत्रकन कांत्रागंत मभारवाम अस आजानिक्रं । १ विवार-

ভাব প্রাচাধর্শে প্রক্টিত হইয়াছে। এবং ভিনটাতেই আচিশ্যা দেখা গিরাছে। আত্মনিষ্ঠতা আত্মতৃপিকে প্রস্ব করিয়াছে। প্রাচ্য ঋষিগণ সর্ম্বদা আপনার ধ্যান, চিন্তা ও সাধনেই তৃপ্ত থাকিতেন। ইহার দৃষ্টান্ত বেশী দিতে হইবে না। হাজার হাজাব সর্নাসী প্রমহণ্স প্রভৃতি এবিষয়ের উজ্জ্ব দৃষ্টাস্ত > ব্লবিষয়-বিরাগ। ইছাব মধ্যে সতা আছে কিন্তু ইছা সন্ন্যাসকে উংপর করিরাছে। ইহা হইছে এই ভাব জ্মিরাছে যে মহুষা-সমাজ ঘুণার বস্তু, ছঃখময়, উহা পবিত্যাগ কর। ৩য়ত: অদৃষ্ট-বাদ। ইহাতেও সভা আছে, সমুদর নিরমাবন ভাগতে স্মার সন্দেহ নাই। কিন্তু তাহার আতিশ্যা বশতঃ নীতি বিষয়ে উদাসীন ভাব (Stagnation) উৎপন্ন করিয়াছে। নৈতিক এবং আধ্যাত্মিক যে তিনটী মূল ভাব বলিয়াছি তাহার আভি-भेगा इटेट के जिन्ही छे९भन्न इटेग्नाइ । टेबान फल-सम्ब स नी जित्र मरशा विरक्षण। अपनाम कानमार्ग ७ एकिमार्ग अधा-নতঃ ধর্মদাধন হইরাছে। পর্মহংস প্রভৃতি জ্ঞানমার্গাবলম্বী ও বৈষ্ণবৰ্গণ ভব্তিপথাবৰ্শনী। উত্তন্ত্ব সম্প্রদান মধ্যেই নীতি এবং ধর্মের যোগ অ প্রক্ষৃতিত রহিয়াছে। প্রাচ্য ধর্মভাব এই /

একণে আলোচা, প্রতীচা ধন্মের ভাব কি ? প্রতীচা ধর্ম য়িহুদী ধর্ম হইতে উৎপন্ন। তাহাদের মুখাভাব ঈশ্বর মানৰ কা যোর বিচাবক ও মানব ইতিবৃত্তের নিয়ামক। সেমিটিক ও হিন্দু জাতির মধ্যে প্রভেদ এই যে হিন্দুগণ আঞ্জলগতে অধিক বাস করাতে ভাব প্রবশ। রিহণীগণ মানৰ ইভিরত্তের আলোচনা করিয়াছেন বলিয়া বৃহিন্দুখীন ও পরিচ্ছিল ভাবাপল (Exact) इहेग्राह्म। हिम्म्मिर्शत श्रेथरत्रत छाव अवाक অনবিগম্য ( Vague ) তাঁহারা ঈশ্বরকে অচিস্তা, মহান ইত্যাদি বলিয়া নিদেশ ক্ষিয়াছেন। "তিনি অকায়, তিনি অবণ, তিনি সুল, জিনি সুল নহেন, তিনি চলেন, তিনি চলেন না " এইবপ অম্পষ্টভাবে তীহাবা ঈশ্বরের শ্বরূপ নির্দেশ ক রিয়াছেন

বিভূদীগণ ইতিবৃত্তে দেখিয়াছেন বলিয়া ভাঁছাদেব **ঈর**বু-জ্ঞান প্রিচ্ছিল্ল ভাবাপল্ল: ভাবতের ঈশ্বর immanent in nature, প্রকৃতিতে, জতে হৈততে ওতপোতভাবে অব্যিত। बिङ्गीरनव क्रेश्वत मीमावक প्रविक्रित Extra cosmic Being প্রকৃতির বৃহিষে। তাঁহাদের ঈখব প্ররূপ নিকেশে কোন্ত প্রকাব গোলমাল নাই। তাঁহাদের ঈশবের একস্থানে বাস। তিনি তথা হইতে জগৎ কাৰ্য্য দেখিকেছেন। Old Testament এর ঈশ্ব বৃক্ষতলে পদতারণা করিভেছেন: কাচারও বাটীতে একরাত্রি থাকিতেছেন : কাছারও উপর ক্রোধ করিছে-চেন: একজনের প্রামশে অন্তের সর্ক্রাণ ক্রিভেচ্নে, ইত্যাদি প্রকার। शिक्षीमिरशत धर्मविषया अकल खावह পরিচ্ছিল, সীমাবদ্ধ। তাঁহাদের যে সীমা নিদিষ্ট আছে তার ওপারে যাও আর তোমার রক্ষা নাই। মুধার ছারা যে নিয়ম প্রকাশিত হইয়াছে তার অভিরিক্ত আর কিছুই ভোমাতে প্রকাশিত হইতে পারে না। আর এদেশে দেখুন এ সকল বিষয়ে কেমন উদায়তা। অধিক বলিবার প্রায়েজন বিরাগ ও ৩য় অদৃষ্টবাদের বিকাশ হইরাছে। এই ভিনটী নাই। এক ভগৰদগীতাদেখুন-চিস্তার কেমন আশুর্বা উদায়ভা। and the same of th

বিচ্চীদের মধ্যে এই উদারভার অভাব। সেই অস্তই মত অইয়া কাটাকাটি। ঈশর জগতের বাহিবে,বাহিব হুইতে জগতের সকল ঘটনা নিয়মিত করিতেছেন, মান্বের কাজ দেখি-১েছেন, তাহাদের মূলভাব এই প্রকাব। (ক্রমশঃ প্রকাশ্র)

## প্রেরিত পত্র।

---

( পত্রেবকাদগের মভামভের জন্ত সম্পাদক দায়ী নচেন।)

#### ব্রাহ্মবালিকাদিগের শিক্ষা।

গত ১০ই মাঘের আলোচনা সভাতে সাধারণ রাক্ষেসমান্ত্র
মন্দিরে উপবোক্ত বিষয়ে প্রস্তার উপস্থিত করা হইয়াছিল।
আদ্ধান্পদ প্রিয়ত শান্ত্রী মহাশ্র যেরূপ ভাগে প্রস্তারের
অবভারণা করেন ভাহাতে ইহা অন্তমান করা নিয়াছিল যে
রাক্ষ্র বালিকাধিগের শিক্ষার প্রণালী শইয়াই আলোচনা হইবে
কিন্তু চন্তাগারশতঃ ভলবিশেষ ভাহা হুহতে বিচ্যুত হুইয়া
আলোচনা অন্ত প্রধারশ্রম করেয়াছিল এবং ভাহাতে
সমন্ত্রাহন ভিন্ন অন্ত কোন কল্লাভ হব নাই। যাহা হউক
মূল প্রস্তার সম্বন্ধে আমার যে ২০০টী কথা বলিবার আছে
ভাহা এক্ষণে রাক্ষ্যাধারণের গোচন কবিতে ইচ্ছা করি।

কেছ কেছ বলিয়াছেন যে আগেকাৰ নাৰীগণ যেকপ বন্ধনকুশ্ৰ ছিলেন এখনকাৰ বান্ধ মেবেদিগকে সেক্স দেখা यात ना , कैं हावा वक्षनभागात कार्या कुछ शृहे मध्म । ज्यामि বলিতে বাধ্য যে এই কয়েকটী কথা কলিকা শব ব্ৰাহ্মগণেৰ মুপেই শুনিতে পাওয়া যায়, এবং ভাহাৰ কাৰণও ৰহিষাছে।, কলিকভাষ ক্ষলাৰ আঞ্ৰণৰীব্ৰে ক্ত চন্দ্ৰল ও মঞ্জিকে কত পীডিত কবে তাহা, ঘাহাৰা গৃহিণাৰ ৰন্ধন আহাৰ কৰিয়া প্ৰিত্প হন, তাঁহাৰা একবার ভাবিয়া দেনিতে পাবেন, এবং ष्यकूमकारन ९ काना यात्र (य এই (५) हे घरनक गृश्शि वसन কবিতে প্রায়প্তন। তবে ইহা অব্যু স্নীকাষ্য যে মেয়েদেব পকে बन्धनाम याव शैथ शृक्क।या छठाककाल नाकाना वज्हे পরিতাপের বিষয়, কাগা নিজে না কাবলেও ভাগা অন্য দাবা ক্ৰাইতে হুইলে সে বিষ্ধে বিশেষ জ্ঞান পাকা অভান্ত প্ৰয়ো জন। ইহা শ্লীকাৰ্য্য হইলে স্থতেই এই গিদ্ধান্ত আসিয়া পড়িল, যে মেনেদের শিক্ষণীয় বিষয়ের মধ্যে গৃহকাষ্য শিক্ষা একটা মুখা স্থান অবিকাৰ কবিবে। এঞ্চণকাৰ ফেয়োদগকে वक्षनामिएक व्यक्रमणकात अञ्चल ७० (भाष १५५या गाय ना , च्यामि यमि ठिक वृतिया शांकि उत्त ताम कर आएक्य एकत्व नात् ঐ সন্তার ইহার ঠিক উত্তব দিয়াছিলেন; যে আগেকার গৃহিণীবা বেমন এখনকার গৃহিণীগণ অপেকা গৃহকমে প্রেষ্ঠ ছিলেন এক্শকাৰ গৃহিণীরাও তেমনি তাঁহাদিগের অপেকা স্থারণতঃ विका। ७ मानितिक ठकी वियत्त्र छेंबीक लाख कविद्याहिन। গৃহকার্যোর শৃত্যলাদি খারা যেরূপ পরিবারবর্গের শারীরিক ম্বন্ধকভাবিধান করা যায় মানসিক ভাবের শৃথলা ওভাব প্র্যালোচনা হারা সেইকাপ মান্ফিক অচ্চুল্ডা বিধান করা

যাইতে পারে। যদি সামী স্ত্রীর মধ্যে মানসিক বিকাশও ভাবের মিলন অধিক বাঞ্নীর হয়, তবে গৃহের সাধারণ কর্মেব ভার বেতনভোগী ভূত্যের হাতে দিয়াও স্তা যদি সেই সময়ে অপেকাকৃত উন্নতত্র মানসিক ভাবোনোষ্ক্র কার্যো স্বামীব সাহ্চর্য্য বিধান করিতে পাবেন তবে জ্ঞানপিপাত্র স্বামীব পক্ষে ইহাপেকা অধিক প্রার্থনীয় আর কিছুই ১ইতে পাবে না। এই হেতৃ আমি সর্বতোভাবে ইং। মনে কবি যে বালিকাদিগের পক্ষে যেমন গৃহকার্য্য শিক্ষা কৰা প্রার্থনীয় তেমনি জ্ঞানচর্চ্চা কৰাও অৰঞ্চ কর্ত্তবা। যদি ত্রাহ্মবালিকা বিদান ও জ্ঞানী সানীব সাহচর্যা লাভে अखिनाियो इन তবে छाँशांक (यमन श्रामीत भारौतिक সাচ্ছলাবিধান জন্য গৃহকর্মের সুশুখালা কবিতে হইবে তেমনি ठाँशाव मानमिक चाष्ट्रना ९ उँ। हात कर्छवाविधारनव ऋदर्स औ পাকিবে। তৎপর সম্ভানদিগকে লালন পালন ও কর্ত্তবাামুষ্ঠানে নিয়োজন, এবং ভাহাদিগকে জীবনের মহত্তদেশ্য আয়ত্ত করিতে ९ उ९मण्युत्त यञ्जील इटेटा, निका श्राम देखानि याव छी प्र कार्या माज्हरस्य ग्रेस हेहेमा थात्क वहे मकल कानरा आमान বোধ হয় যে ব্রাহ্মগণের পক্ষে বালকদিগের শিক্ষা অপেকা বালিকাদিগের শিক্ষাব গুকত্ব অধিকতর অফুভব করা উচিত। একটু অমুধাৰন কৰিয়া দেখিলে প্ৰভাত হইবে যে ব্ৰাহ্মসমাঞ্চেৰ অধিকাংশ দ্বিদ্রতা কেবল মাত্র উপযুক্ত শিক্ষাব অভাবে ঘটিতেছে। রাক্ষিকাগণের মধ্যে যত অন্ধলিকিতা ও অশিকিতার সংখ্যা বাডিবে তত্ত গৃহকম্মে বিশৃঞ্জলা, সন্তান পালনে অক্ষতা, সম্ভানগণের শিক্ষাভাব, ও আয় ব্যয়েব সম্ভূলানের অভাব বিশেষকপে লক্ষিত ২টবে। একণে প্রত্যেক ব্রাগ্ন-বালিকাকে যদি শিক্ষা প্রাপ ১ইতেই হইবে ভবে কিরপে ঐ শিক্ষা প্রদান ক্রা ঘাইতে পাবে ভ্রিষয়ে স্কলের চিন্তা ক্রা

ব্রাহ্মসমান্তে 'আব্যাত্মিক' কথাটী 🛎ত সাধাবণ ভাবে প্রচলিত ইইতেছে যে অনেকেব কাছে তাহা নিতাকম-সুল্ছ কথাৰূপে প্ৰিণত হট্যাছে, কিন্তু তাহাৰ ভাৰ বিষয়ে কয়প্ৰন চিন্তা কৰেন বৰা যায় না। সমাজ 'আধ্যায়িক বিবংহেব অত্যস্ত পক্ষপাতী। কিন্তু সেই আধান্ত্রিক মিলন বা বিবাধ যে কি তাহা কয়জন ভাবিয়াছেন বলিতে পাবি না। সচবাচৰ দেখা যায় স্বামী স্ত্ৰীতে একত্ৰে 'ধন্মসাধন' অৰ্থাৎ একত্ৰে নিভা নিধমিত উপাসনা ক্বা.ও এককে সমাজে যাওয়া ইত্যাদিই আধাৰ য়িক মিলনেব অঙ্গ ও ক্রিয়া বলিয়া প্রিগ্রাণত। কিন্তু এত ৮-রিক্ত,ভাবের সমাবেশ দাবা মিলন,,যাহাকে আমি প্রকৃত ১৯,৮০০ য়িক নিলন'বলি,)ঈশ্ব এবং জগতেব যাবতীয় ভাব ও কাগাকে উভয়ে এক ভাবে গ্রহণ কবা ভাগ কয়টা সামী ও স্ত্রীব ঘটনাছে ভাহা বিবেচনা সাপেক্ষ। এমনকি কোন কোন ও সলে ইছা ও দেখা গিয়াছে যে ঐ সকল বিষয়ে স্বামী স্ত্রীর ভিতবে ভাববিবাোধতা পর্যান্ত বিদান'ন বহিয়াছে। ইহার অধিকাংশ ভল প্রীক্ষা कितितहे (मधा सहित या ब्हानहाड़ा दाता उँ अस्व मानिस्क বিকাশ একরপ না হওয়াতেই ইহা ঘাঁদ্যা থাকে। এক্ৰে বিবেচনা করা কর্ত্তব্য যে যদি আধ্যায়িক মিলনই প্রকৃত বিবাহ, ज्दद तिराहरक मक्नकाम कत्रगार्थ आमारमञ्जलीका-

मिगरक किञ्जल निकिन्छ। कविरङ इहेरव ? (य ऋ**रण रक्**वन গৃহকর্মকুশল রম্বীকে স্তাকবা একমাত্র বাছনীয় হয় সে হলে আমি ক্রা শবেদৰ অর্থ 'গৃহকরী (ইংরাজীতে যাহাকে 'house-keeper' বলে) কৰিতে পাৰি কিন্ধ ভাগতে জী সহধন্মিণী হইল না, অমণবা স্বামী স্ত্রীতে আধ্যায়িক মিলনও इंग ना। जातात (य छल छो शृहतर्प्य मण्णूर्ग जाकूमण, त्म গৃহে শৃঞ্লা থাকে না তবং মাহুষেব শানীরিক ধর্মপালনে ষ্থেষ্ট বিল্ল উৎপাদন কৰে: আচত্তৰ ধৰ্মাকে সৰ্কতোমুখী সাধনবস্তু করিতে ২ইলে স্থীকে সংধ্যমিনী কবিতে হইলে, স্থীব জ্ঞানোনেষ্কৰ শিকা প্ৰধান এবং গৃহ্কৰ্ম শিকা দিতীয় স্থান অধিকাৰ করিবে : বিস্কু উভয়ই অবশ্র কর্ত্তব্যক্ষে পরিগণিত হইবে, নত্বা শিক্ষা অপূৰ্ণ থাকিবে।

একণে আনবা শিকাৰ উদ্দেশ্য সদয়ক্ষম কৰিতে সক্ষম ছটলে ভাছাব প্রালী আলোচনা করিতে পাবি। কিন্তু ভাহা কবিবাৰ পূৰ্বে আৰও একটা বিষয় বিশেষভাবে আলোচনা কবিতে ইছে। কবি। কি প্ৰিমাণে বালিকাদিগকে শিক্ষাব জন্ম পবিশ্রম কলাইতে হইবে তাহা বিচার করিতে গেলে সহজেই 'অতিবিক্ত পৰিশ্রনেব' কথাটী আসিয়া পডে। কোন বয়দে কতদূব প্ৰ্যুম্ভ পবিশ্ৰম ক্বাইলে তাহা সাধাতিবিক্ত ছইয়া পড়িবে না ভাছা এহলে বিচার কবা কর্তব্য। ইংবা-জিতে একটী বই আছে তাহাৰ নাম 'Overpressure in Schools': ইহা ডাক্তাৰ 'হর্কেন' কর্ত্ক 'মদেশীয়' ভাষাতে लाभम वांत्र इस ; उर्भव लासाझनीयचा त्वास हेश हेस् রোপের স্থল সুসভা ভাষায় অমুবাদিত হইয়াছে। ঐ এলে ৰালক বালিকাদিগকে শিক্ষাৰ অন্ত অতিবিক্ত পৰিশ্ৰম কৰাই-ৰার কি কি বিষময় ফল ফ্রিয়াছে তাখা বিষদরূপে দশান इंग्राह्म। कित्यान नग्ना वालिकामित्यन मत्या मियः लीड़ा, হিষ্টিবিয়া প্রভৃতি মন্তিক হানিক্ব বোণেব প্রাতভাবই প্রথ-মত: 'হতেল'কে হহাব তথাত্মধানে নিয়োজিত কৰে। ভাষতে তিনি দেনাইয়াছেন যে কুলেব ছাঞাদিগেব মধ্যে ১০ ১হতে ১৬ বংসৰ বয়স প্ৰাস্ত বোগাৰ সংখ্যা অভাস্ত অবিক, এবং ১১ হচতে ১৪ বংসৰ বয়স প্ৰয়স্ত প্ৰান্ত্ৰ मुख्या ৫० छ। त्व छेल्द्र त्यांगी (मधा गांग। ५ देश हेश छ দশান হটয়াছে যে ঐ বয়সে বালিকাগণ প্রায়ই ৮ ২ইতে ৯ ঘণ্টা করিয়া প্রতিদিন মান্সিক পশ্লিম ক্রিয়া থাকে। कारिक मु वालक निर्धाय महिन्द कुलनाम स्मिथा या राजे विस्त বোগা বালক অপেকা যোগা বার্মিকার সংখ্যা প্রায় শতকরা ১৫ জন বেশী। ইতাৰ কাৰণাত্মশ্বনে কৰিতে গিয়া হর্তেশ त्मथाहेग्राट्छन ( ac घानक निवार हिकि शा नात्माहो 3 ভাছাতে একবাৰো মত দিলাছেন) বে ঐ বল্পে বাণিকা-দিগের শানীবিক বিশেষ প্রিবত্তন সংঘটন চেতু ভাহাদেব ধমনীতে ৰক্ত সঞ্চলন অত্যন্ত উচ্ছেজ্লভাবে ২ইলা গাকে, অত্তব তথন মস্তিষ্কে অধিক পরিচালিত ক্বিলে ভাহাতে छाशामिरशत तक प्रकामित श्हेता माउकरक गांगारतारशत आधात क्तिया ८ डाट्न ।

পডিয়া গিয়াছিল এবং ভদববি অনেক পিতামভার চকু ফুটিয়াছে; তাহাবা একণে এই নিয়ম কৰিয়াছেন যে বালিকা-দিগকে কিশোৰ ব্যুসে গ্ৰন্থপাঠে অনিক নিয়োজিত না ক্রিয়া চিত্র ও সঙ্গীত বাদ্যাদি চিত্র প্রফুলকর বিদ্যাশিক্ষাতে নিয়োজিত কবিতে ছইবে। বিশ্ববিদ্যালযে প্রবিষ্ট হওয়া সম্বন্ধেও এই निशम निश्माद्ध (य ১৮ वर्षातत नान वर्षा (कान वानिक। কেমিজ কিখা অলুফোর্ডে প্রেশাধিকার পায় না। তৎকাৰে তাহাদের ধননাতে রক্ত সঞ্চালনের গুদমনীয় বেগ অপেকা-কুত প্রশমিত হুইলে তাখাবা পুনবার মন্তিমকে নিরোজিত ববিয়া কাৰ্য্য কৰিতে সক্ষম হয় বলিয়া ঐ বয়সে বিশ্ববিদ্যালয়ের শিক্ষার্থ কিঞ্চিৎ অতিবিক্ত পরিশ্রমণ তাহাদের শ্বীরের পক্ষে उट व्य**िष्ट** का वी इय ना।

बाक्रमभाष्मि तिस्मि च्रम्भावन कवित्रा त्मिंपत्त हेशाब সভাতা অফুভত হটবে। এই রূপ ফলে কি কণা কর্ত্তবা ভাগ সমাজের শিক্ষা বিভাগের কার্তৃপক্ষদের বিশেষ বিবেচনার বিষয় হওয়া উচিত। আনাৰ বিবেচনায় ইছা যুক্তিযুক্ত বোৰ इम्र (य वानिकामिशक ১२ वर्षत वम्र भया छ छ कार्याव জন্ত তাড়া না দিনা এক মনে বিদ্যাশিকা কবিতে দেওয়া কর্ত্তবা। ভৎপুৰ ৪ বংসৰ (অর্থাৎ ১৬ বংসৰ পর্যান্ত ) বিদ্যা শিক্ষাৰ ভাগ ক্ষাইয়া দিয়া শানীৰিক পরিশ্রম যথা গৃহকর্ম এবং সঙ্গীত, বাদ্য ও চিত্রান্ধনাদি চিত্তপ্রদূলকর কার্য্যে নিয়ে-জিত কবিলে অল্লায়াগেই একটা কর্ম্মাকা অগচ অলাধিক প্রিমাণে শিক্ষিতা মেয়ে প্রস্তুক্রা ঘাইতে পারে। স্মর্প্র এই সম্যে একেবাৰে বিদ্যাশিকা ব্যাক্রিয়া না দিয়া বরং শিকার উদেশ্য এবং সমৰ আৰণ রাখিবা বিশ্বিদালিবে যে সময়ে যে টুকু শিক। আৰত কৰা যায়, খামৰা ভাষা বাদ দিয়া। তদপেকা অন্ন সম্বে সেই প্রিমাণ জ্ঞান আয়ত্ত কবিতে পাবিব কিনা তাহাই विधान कतिएक व्हरता ই বাজি ভাষাকে গৌণ শিক্ষণীয় ্বিব্যুক্রিয়া সংধারণ জ্ঞাত্রা বিধ্যু গুলি বাঙ্গালা ভাষাতে শিকা দিলে এই অভাব অনেক পাৰ্মাণে বিদ্বিত হইতে পাবে, এবং ও সম্মাজে ব্যালকাদিগের শিক্ষার জন্ম ইহা কৰা এক স্থি প্ৰয়েজিন ইট্ৰা পাডৱাছে। ভাই এশাস্ক কঠাৰ বোবে আনাদিগকে ইচা কবিতেত ১৯বে। অব্জ বাঁহারা বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রীক্ষাথিণী তাঁহাদের ক্ষতা বিশ্ববিদ্যালয়ের পথ থোলা বাহ্যাছে, এবং উাহাদের জন্ম সুল কলেজ। বহি-য়াছে: কিন্তু বাহালা সেই প্ৰায় পোছিতে আশা কৰেন না ভাগদেৰ জন্ম কৰা মাইতে পাৰে ? তাঁহাদিগকে কেন (कर्न २ । > म॰भा Royal Reader পডाই हाई (काम विशिष्ट छान वाडित्तरक गृर्श किवाईशा शांग्रान इश १ एक कि मरन ব বেন যে ৰাক্ষালাতে কুত্ৰিলা৷ স্পিনী ইংবাঞ্জিনবিশ স্বামীর জ্ঞানগৌরব বুঝিতে সক্ষম নহে ? কেবলমাত্র ২। ৪টী ইংরা**জি** শক্ষেব জ্ঞানভাবে সাহিত্য ও বিজ্ঞানের পূল সূল বিষয় স্কল সাধারণ ভাবে শিক্ষা দিলে অধিক উপকাব দশিবে না ? যাঁহারা वालिकानिशटक विश्वविद्यालातत भन्नीका एए अवाहेटल मन्द्र কবেন তাঁহাবা ঐ সমন্টুকু পাঠের ভাগ কমাইয়া ১৬ বংশক্তের ইংলণ্ডে এই গ্রন্থ অমুবাদিত হইবার পরে মহা ছলফুল। পর পুনরায় তাহা বৃদ্ধি করিয়া দিতে পারেন। Over-pressure

কথাটা আ্লোচনা করিতে হইলে কোন স্থানে pressure টী পতে এবং তাহার সহিত অক্ত কোন pressure এব সংস্তব আছে কিনা তাহা বিশেষভাবে বিবেচনা না করিলে ঐ আলো-চনা ফলপ্রদ হয় না। এইরূপ বয়সাফুক্রমে শিক্ষা নিয়্মিত করিলে আমরা অনায়াসে শিক্ষাব বিষয় ও ততপ্রোগী প্রণাগী বিচাব করিতে পারি।

याँशावा नर्छमान विश्वविद्यालारात भिका धार्मालीन विरवाधी, ভীহাদের বিপক্ষে এই একটী যুক্তি থাড়া কৰা চইমাচে বে এই প্রাণালী ভিন্ন অভা কিছু কাধাকরী হইবে না। বাঁহাবা এরূপ বলেন উচোরা বিশ্ববিদ্যালয়ের এবং আমাদের উদ্দেশ্যের পার্থক্য বিচার না কবিষাই কণাটা বলিয়া থাকেন। বিখ-विमान्दत खार्श कथ ७ शरत कना नानान निशान इस चामना क्टि चार्रा कना नामान ९ भरत वनमाना निशाहेट हाहे मा। ভবে পাৰ্থকা কোথায় ং---দেই পাৰ্থকা না বুঝিলে সমস্ত বাৰ্থ চইরা যাট্রে । স্বানী নিজের জ্ঞান ইংবাঞ্জি ভাষ। ভিন্ন অন্ত कान ভाষাय नाक कनित्न जाशांक कि खारीन व्यवस्ताना स्ट्रेन মনে কৰেন, যে বাঙ্গালা শিকিতা মেয়ে ছাবা ঐ বিষয়ে তাঁগাব সাহচ্য্য সুপ সম্ভোগ হইতে পাবে না গ আমিত এই বুঝি বে স্ত্রীর স্পিকিতা হওয়া অভঃবিপ্রক; ভাগার জ্ঞান পরিক্ট হইবে, ভাষা গাগাই হউক না কেন? অভএৰ আমার বোধ विमालय इडग হয় ত্রাক্ষবালিকাদিগের জন্ত এমত আৰেখ্যক যাহাতে ৫০ বল ৰাকালাতেই সাধারণ জ্ঞানপ্রদ বিষয় नकन পঠिত इहेरन जनः हेरत्याम जकति (भीग जाशाकर्प निका-পিণী দিগেৰ ইচ্ছাদীন থাকিবে।

আনি এই তলেই আমাৰ বক্তব্য শেষ করিয়া বাদ্ধ সাধা-রণেৰ মতেৰ প্ৰত্যাক্ষা কাৰৰ এবং ডাহা জ্ঞাত ইইতে পাৰিলেই ভংপর শিক্ষ-ীয় বিষয় সম্বন্ধ আলোচনাতে প্রবৃত্ত ইইব।

এন্থলে আনন্দেৰ সহিত বিজ্ঞাপত কৰিতেছি যে সম্প্ৰতি বিশ্বেৰালকা শিক্ষালয়ে শ্ৰন্ধেয় শান্ধা মহাশ্যেৰ প্ৰবৃত্তিত মত কাৰ্য্যে প্ৰিণত ক্ষাণাথ কথাঞ্ছিৎ উদ্যোগ ক্রা হইণাছে। ইতি।

क्लिकाङा, काह्यमा २००० । }

বিনয়াবনত শ্রীঅপুরুচন্দ্র।

## ব্রাক্ষদমাজ।

বিগত বড়দিনের ছুটিতে চেরাপুঞ্জিতে থাসিরা পাহাড়ত বান্ধদিগের এক সামালনী সভা হইয়াছিল। নানা তান হইতে পুরুষ ও রমণী প্রায় ৪০ জন উপাত্তত হইয়াছিলেন; ইংলের অবিকাংশই থাসিয়া। বাবু নীলমণি চক্রবর্তী সভাপতির কার্যা করেন। ২৩এ হইতে ২৮এ ডিসেম্বর পর্যান্ত সন্মিলানিত বিষয়গুলি আলোচিত হইয়াছিল;—(১) থাসিয়া সিশনকে অর্থ, প্রামর্শ ও অভ্যান্ত উপায়ে সাহায্য করা। কুদ্র কুল পুষ্ক প্রভাবের সাহায্য করা। প্রত্যেকের ধর্ম প্রচার করা। (২) প্রভাবের সাহায় করা। প্রত্যেকের ধর্ম প্রচার করা। (২) প্রভাবের সাহায় করা। প্রত্যেকের ধর্ম প্রচার করা। (২) প্রভাবের সাহায়

মধ্যে সন্তাৰ ও প্রীতিবর্দ্ধন করা এবং সকলে সমবেত ভাকে সমাজের উন্নতি সাধনে চেপ্তা করা। (৩) উপাসনা, প্রাথনা, সংগীত, আত্মতিপ্তা প্রভৃতি ছারা নিজে ধর্ম সাধন কবা এবং পরিবাবে ধর্ম প্রতিপ্তা করা, স্ত্রী পুলাদি সকলকে ধর্ম শিক্ষা দেওবা। এই স্মিল্লনীতে ব্রোরা যোগ দিয়াছিলেন সকলেই উপকার লাভ করিরছেন।

শামাদের প্রদাস্পদ সভাপতি প্রীযুক্ত আনন্দমোচন ৰস্থ নহাশর স্বাস্থ্যোত্তির জন্ত আগামী ৪ঠা এপ্রিল বিলাত্যাত্তা করিবেন। তাঁহার ইচ্ছা এই স্থোগে ইউবোপের নানা দেশ প্রাটন কবিয়া ভগাকার সমাজ, নীতি ওধ্যাবে উন্নতি বিষয়ে অভিজ্ঞালাভ বদেন। আমবা আশা করি তাঁহার এ বাতান্ত্র বে কেবল সাস্থোবই উন্নতি হুট্রে তাহা নহে, ব্রাহ্মসমাজ্যেরও প্রভূত কল্যাণ সাবিত হুট্রে।

গত ২বা হইতে ৫ই মাঘ পর্যান্ত বর্দ্ধমান প্রাক্ষাসাম্পরিক উৎসব হইয়া গিবাতে। এত গুপলক্ষে শ্রীযুক্ত নগেল্রনাথ চট্টোপাধ্যায়, নবরীপচল্র দাস ও অংলাবনাথ মুপোপাধ্যায় তথায় গন্ন কবিয়াছিলেন। উৎসবে, উপাসনা, বক্তা, নগবসংকীর্তনাদি হয়। ইহাব অধিকাংশ কার্য, হ হয়ার সম্পন্ন ববেন। নববিধান প্রাচাবক শ্রীযুক্ত বঙ্গচন্দ্র রাম্ম এবং আদি ব্রাহ্মসামাজেব শ্রীযুক্ত কীতিক্রনাথ ঠাকুব মহাশয় এই উৎসবের কতক কাষ্য সম্পন্ন করেন।

গত ৯ই হইতে ১১ই মার্চ পর্যান্ত টাঙ্গাইল প্রাক্ষ্যাক্ষের উৎসব সম্পন্ন হইরাছে। এত গুলক্ষে বাবু নবদীপ চক্র দাস, রফকুমাব মিত্র এবং অঘোৰনাথ মুখোপাধায় তথার গমন কবিষাছিলেন। রাজরফকুমাব মিত্র ছই দিন "প্রকৃত জীবন" ও টেত লা ও ভাঁহাব দর্মা, বিষ্ঠান বিজ্ঞা কবেন। এত ছিল্ল উপাসনা আলোচনা, পাঠ বাখনা নগববীত ন ও ঘাবে ঘাবে উষাকী জ্নাদি হয়। নগবনীত নে রফাবাবু বক্তা ববেন। কক্পাসর প্রমেখবের রুপার উৎসবে সকলোই উপকৃত্ত হুইয়াছেন।

थाठोत-- श'रुवन थाडानगाडी मन २०.म स्वत्राती ভাগলপুৰ হইতে ৰওনা হইয়া বঁ,কিপুৰে 🚊 ফ্ৰু নাবু ভ্ৰহ্মদেব নাৰামণ ডেপুট মাজিপ্টেটেৰ বাসায় অবস্থিতি কৰেন। সেখানে নিয়ত উপাসনা ও ছাত্রদিগকে শুইয়া ধ্যালোচনাদি কবেন। এক দন শ্রীধুক্ত প্রকাশ দ্ব স্থানীয় বেহাব ক্যাস্কাল কলেজ গৃহে উনুভাষায় আক্ষাণ্য সম্বন্ধে বক্তা কবেন। শ্রীযুক্ত কানাচন্দ্র (ঘাষাল এবং শ্রীযুক্ত স্থলব সিংহ তথা হইতে মঞ্জদবপুৰ নগৰে গ্ৰন কবেন। তথায় আনাদেৰ প্ৰিয় আক্ষরতা আীষ্ক বাবু কুঞ্বিহানী বিশাসের বাসায় ইইনা অবহিতি কবেন। জীযুক্ত বাবু হাজাবিলাল ও কুঞ্জবাৰু বাজারে উপাসনাদি কবেন। স্থানীর প্রধান উকিল শ্রীয়ক্ত বাবু তৈলোকানাথ বহুর বাসায় একদিন বাতে কভিন, প্রার্থনা এবং অন্লোচনা হয়। মুগাজিজ দেমিনবা নাম ক ইংবাজি স্লগতে এক দিন নীতি সম্দে বজুতা হয়। উদ্ ভাষায় জীযুক্ত হুন্দর সিং এবং বাঙ্গলাতে কাশী বাব বলেন। ম্বানীয় প্রধান প্রধান উকীল হাবিল ও অক্সান্ত সম্ভান্ত ভদ্রবোক ও ছামমওলীতে প্রায় আড়াই শত লোক উপিত্রিক **रहे** ब्रा**हिलन। देहाता छथा रहेट ज अल्ला हहे बा** वाकि पूज

হুটুয়া ৭ই মাল তাবিথে গ্রাগ্মন করেন। সেপানে আমাদের আছের ব্রাহ্মবন্ধু বাব্চন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়ের বাসায় অব্দিতি करवन। উक्त वानाम भाविनाविक উপामना व्या। এक निन পানীয় জেলাকুলগৃতে নীতি সম্বন্ধে শ্রীযুক্ত কুলর সিং উদ্ ভাষায় বক্তা কবেন। বক্তা ফ**লে ক্লের ছাত্র ও অয়সায়** ভদ্রলোক প্রায় ১০০ শত শ্রোকা উপস্থিত ইইয়াছিলেন। একদিন ববিবাব বাত্রিতে বাহ্মবন্ধু বাবু উমাচবণ সেনেৰ বাসায় পানীয় ত্রাহ্মবন্ধুদিগকে শইয়া উপাসনা করা হয়। কাশী বাবু উপাসনা কবেন। ইহাঁবা সেধান হইতে বওনা হইয়া আবা গমন কবেন। ইতঃপৃর্বের বাকিপুর হইতে এীযুক্ত প্রকাশদেব এবং গুৰুদাস বাবু তথাৰ গিয়া ডেপুট কলেক্টাৰ শ্ৰীযুক্ত বাবু গ্লাপোৰিন্দ ৩৫ মহাশয়েৰ বাসায় অব্যাহিতি ক্ৰিভেছিলেন। জীয়ক প্রকাশ দেব, শ্রীযুক্ত জন্দব সিং, শ্রীয়ক্ত শ্রীবঙ্গবিহারী লাল এবং ভ্রীয়ক্ত প্রকলাস চক্রবর্ত্তী তথায় কিছুদিন অবস্থিতি কবিষা বেহাৰ ৭ উত্তৰ পশ্চিমাঞ্চলে প্ৰচাৰ কৰিবেন। শ্ৰীৰুক্ত কাশীচল ঘোষাল কলিকাতা পুনরাগমন কবিযাছেন। উক্ত मन भौघरे नाको अकान धानातार्थ वाहित इटेरवन, मःकन्न कान। देश (इन।

গত ১৯ ফাল্প ঢাকা পাচাব আশ্রমে মাণিকদহ নিবাসী শীমান দেবেন্দ্রনাহন ভৌমিকেব পিতাব আদাশ্রাদ্ধ ক্রিয়। রাহ্ম পদ্ধতি অনুসাবে সম্পন্ন কবা হইয়াছে। শীযুক্ত চণ্ডী-কিশোব কুশাবী মহাশ্য আচার্যোব কার্যা কবেন। এই অনুধান কবিষা দেবেন্দ্রমোহনকে প্রীক্ষায় পডিতে ইইয়াছে। ইশ্বব ভাঁহাকে বলবিধান করুন।

শীষ্ক বাবু বিজ্ঞাস দত ঠাঁথার প্রনের নামকবণ উপলক্ষে বিশাল রাজসমাজে এক শত টাকা দান কবিষাছেন। ভাষাভাবে এক্সমাজেব আনক কাস্য স্টাক্রপে সম্পন্ন হততেছে না, রাজ্যণ পাবিবাবিক অনুষ্ঠানাদিব সম্য যদি দও মহাশ্যেব এই দহাস্ত অনুস্রণ কবেন, ভবে স্মাজেব যথেষ্ট সাহায্য হইতে পাবে।

সাধন:শ্রমে বাবু হবিমোহন ঘোলালের পুরের নাম করণা-ফুটান সম্পন্ন ইইবাছে। পণ্ডিত শিবনাথ শালী আচার্যোব কায়। করেন। শিশুৰ নাম পুণেক্যোইন বংগা ইইয়াছে।

ফরিদপ্রবেব অন্তঃগতি কোটালিপাড়া প্রভৃতি স্থানে লোকের অতিশয় অলকট উপস্তিত হইয়াছে। তাহাৰ বিবরণ আনামৰা ু, 🐲 ত দিন সংবাদ পত্ৰে পাঠ কবিতেছি। ফ্ৰিদ্পুৰ ভইতে কয়েক জন সাধাৰণ ত্ৰাহ্মসমাজেৰ নিকট সাখাব্যেৰ জন্ত আবেদন কবিয়াছেন। তাহাদেব পৰে জানা যায় যে লোকেব ভায়কট্ট এতদুর হট্যাতে বে, কোন কোন তলে দ্বিদা স্ত্রালোক নিরূপায় হইষা শিশু সম্ভানের ক্লেশ দেখিতে না পারিয়া উদ্ভানে আগ্রহত্যা করিয়াছে, দুপুরেয়া নামক গ্রামে কয়েক জন স্ত্রীলোক আহাবভোবে প্রণভাগে কবিয়াছে, একজন স্ত্রীলোক পেটের জানায় আপন কজাকে একজন কুলটা গ্রীলোককে দান করিয়াভিল, ফরিদপুরের কভিপার ভদ্রেকে ভাষা জ্ঞানতে পারিরা ক্রাটাকে দিবাইয়া আনিয়াছেন , অনেকগুলি বিধ্বা স্ত্রীলোক অনত্যোপায় হইয়া বৃহদূব হুইতে ইাটিয়া ফ্রিদপুর সহবে আশিয়াছে, "ফ্রিদপুর গার্বিবারিক সংস্থান সমিতির" সম্পাদক ভাহাদিগের উপায় কবিতে না পারিয়া বিত্রত চ্ট্রা প্ডিয়াছেন। ঐ সকল বিধবার নাম ও ধাম আমাদেব নিকট প্রেরিভ হটয়াছে। এই সকল বিবরণ পাঠ করিয়া সাধারণ আক্ষসনাজ অয়কটগ্রস্ত ব্যক্তিগণের সাহায় করা আৰশ্বক বোধ কবিহাছেন।

ব্ৰাহ্মবালিকা কোডিং ও শিক্ষালয়—বৰ্তমান বৰ্তেন প্রাবস্ত ১টতে ত্রাহ্মবালিকা শিক্ষালয় ও বোডি এব কাষা নুতন প্রণালীতে আরম্ভ হটয়াছে। প্রণালীটীৰ মধ্যে এখান প্রধান দ্রষ্টবা বিষয় নিমে প্রদশিত হইতেছে। সপ্ম প্রণালী অমুসাবে বালকাগণ বৎসবে আবস্ভ কবিয়া :৬ বংস্ব বয়সে পঠে সাক্ষ করিতে পাবিবে। এই নয় বংস্ব কাল প্রধানতঃ হ ভাগে বিভক্ত হইবে। প্রথম চাবি বৎসব প্রাধানত: বাঙ্গালা ভাষাতেই শिका (पश्रा ३ हे(त, (१) तमात हुए । तर्ग है । ता विश्व পাঠা তই একখানি পুস্তক প্ডাইয়া দেওয়া ইইবে। এই চাবি বংগৰ অত্যে সাধাৰণ ব্ৰাহ্মসমাজ একটা প্ৰাক্ষা করি-বেন ও সার্টিকিকেট দিবেন। এই চারি বংসরে বালিকাগণ বাঙ্গালা লিখিতে পড়িতে শিখিবে, ও অন্ধ, ইতিহাস, ভূগোল, সূচীকাশ্য, সংগীত, পদার্থাবন্যার স্থূল স্থুল তত্ত্ব, নীতি ও ধম্মের তত্ব প্রভৃতি বাঙ্গাণাতে শিক্ষা করিবে। তৎপবে আবে তিন বংসব দ্বিতীয় কোর্স। এই তিন বংসবেও বাঙ্গালাৰ প্রতি विर्मिष अस्मार्थाश शाकरत किन्नु स्मृहे महामार्थाट € পুরাপেকা অধিক মনোযোগ দেওয়া চটবে। এট কোসেও ধন্ম ও নীতি শিক্ষাৰ বিশেষ বাৰ গ্ৰাছে। এই তিন বৎস-বান্তে সমাজ আৰাৰ একবাৰ প্ৰীক্ষা কৰিবেন ও দিঙীয় সাটিফিকেট দিবেন। এখান হইতে বালিকাগণ ছই দিকে গ্মন কবিবে। লাহারা বিশ্ববিদ্যালয়ের উচ্চ প্রীক্ষাত্তে গমনেচ্ছ তাগবা চুট বংস্থে এন্ট্রান্স পরীক্ষার জন্ম প্রস্তুত হইবে, আৰু ব্ৰহারা বিশ্ববিদ্যালয়ে প্রবেশেচ্ছু নহে ভাছারা चार 5हे वरमत निरम्य कारम शक्षण ववरन। अथार हेश्ताकी সাহিতা, ইতিহাস, সংস্কৃত, ধর্মবিজ্ঞান আড়েতি যে কোনৰ একটা বা ছুইটা বিষয় লহতে চাতিবে ভাষাকে ভাষা দেওয়া ठडेर्द . এव॰ (मटे (कारम व **चा**न्नमार्टन मिका रमध्या ६वेरन। এই কোমের পেষে সম।জ পুনবায় প্রীক্ষা কবিবেন ও শেষ সার্টিকিকেট বিবেন। এই সার্টিকিকেট হাতে থাকিলে যদ কোনও বালিক: কমা কাজ কবিতে চাঞেন, তাঁথাৰ কমা কাজ পাইবাৰ স্থাবধা হইবে। দিতীয়তঃ সমাজ্ঞ জানিতে পাবি-त्वन वालिकाभिष्या भका कि अकाव इंडेग्राष्ट्रं। এड नुइन প্রণালার আব একটা গুণ এই, ইহাব গ্রণমেন্টের প্রবার্ড ন্তন প্ৰণালীৰ সভিত সাদ্ধ্য আছে, স্তৰাণ গ্ৰণমেণ্টেৰ অবল্যিত কোস্পুলিও গ্ৰুণ কৰা ১ইয়াছে। তদ্বা গ্ৰণ-মেণ্টেব নিকট কিছু সাহাযা পাইবাব সম্ভাবনা আছে। এই নুত্ন প্ৰণাণীৰ দ্বো আমাদেৰ মধো মকল জেণিৰ মতেৰ সমতা বিধান কৰা ২চনাচে। একৰে সকলে শিকাল্যটীৰ উন্নতি বিধানে মনোযোগী হচয়া হছাকে বক্ষা করুন।

## বিজ্ঞাপন।

আগোমী ১-ই এপিল বৃহস্পতি বার অপবাক ৩3 ঘটকার সময় ১০নং মিজ্বাপুর ইউত্ত গাটি কলেজ ভবনে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজেল অবাক্ষ সভার প্রথম নেমানিক আধ্বেশন ইইবে। বিবেচ্য নিয়স।

- ১। কাষ্ নিকাছক সভার প্রথম ত্রৈনাসিক কার্যাবিবরণ এবং আয় ব-মোর হিসাব।
- >। অধ্যক্ষ সভাব সভা বাব চণ্ডীচবণ বন্দ্যোপাধাৰে মহাশ্যেৰ পদ প্ৰিভ্যাগ হেডু শুক্ত পদ পূৰণ।
  - ৩। হিনাব পরিদশক নিয়োগ।
  - 8। निविधा

সাঃ তাঃ সমাজ আফিস

> ६ रे मार्फ

: 48

শ্রিকনীনাধ রায়

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

২৪শ সংখা। ১৬শ জাগ।

১৬ই চৈত্র, রহস্পতিবার, ১৮১৫ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাৎদরিক অগ্রিম মূল্য ২৮০ মকপালে ৩১ প্রাক্তি পণ্ডের মূল্য 🔗

#### প্রার্থনা।

ছে প্রভো। আমরা কেন আরে সম্বৃষ্ট ছইরা পড়ি? উর্ণমাভির জালে পতিত মক্ষিকার ক্লার কেন অনেক সময় ভ্রোদাম হট্যা সংগ্রাম প্রিত্যাগ ক্রি ৭ এবং অর জ্ঞান, অর ८१म, खन्न विचान ७ खन्न देववारणा मुद्दुष्ट इङ्गा णा कालिया पि १ এই অল্ল-সম্মুট্টা আমাদের জীবনে একটা ব্যাধিব মত হটরা मां जाहेबार । चां ज केळ केळ विषयात चारनाहना हनिरक्ट. অভি মহৎ মহৎ আদর্শসকল আমাদের সমকে আসিতেছে,সমুদর দেখিতেছি ভূনিতেছি, আলোচনা কবিতেছি, প্রশংসা করি-**एडिंड, किंद्ध निरक्तरा रिहे श्रृक्तकार होन ७ मिनन छार नहेशाई** সম্ভুষ্ট হটয়া থাকিতেছি। দিন দিন যে সকল উচ্চ উচ্চ সত্য রদনাতে প্রকাশ পাইতেছে, ও কর্ণে প্রবেশ কবিতেছে, তাহার कुठंढी कार्या পরিণত इटेल कीवत्मत अवद्या किविया याग्र. কিছ সে চেটা আমাদেব আসিতেছে না। এই ঘোৰ বাাধিতে আমাদিগকে অন্তঃদার-বিহাঁন কবিয়া কেলিতেছে। ভুমি আমাদিগকে এই বাধি হইতে রক্ষা কব, যেন আমরা বিনীত, বাাকুল, ও ভালা মন লইয়া সভোব নিকটবর্তী চইতে পাবি এবং প্রাণপণে ভাষা সাধন কবিতে সচেষ্ট হই। আমা-मिश्रक এই আণীस्तीम कत्र।

## সম্পাদকীয় মন্তব্য।

শ্রেদ্ধা ও অনুক্রণ—ধর্মজীবনে কোনও আদর্শের প্রতি শ্রদ্ধা প্রকাশ কবিলে যথাসাধা তাহাব অন্তকবণ করিতে চেষ্টা করিবার জন্তু যে আমরা দায়ী এ কথা আমবা আনেক সময়ে ভূলিরা যাই। লোকে যেমন দূব হইতে একটী উংকৃষ্ট ছবির প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া তাহার প্রশংসা কবে, এবং পরক্ষণে তাহা ভূলিয়া বিবরাস্তরে ব্যাপ্ত হয়, সেই ক্ষণিক আনন্দ ও প্রশংসার অতিরিক্ত তাহাদের করিবার কিছু থাকে না, সেইক্লপ আমরাও অনেক সময় মহাজনগণের চরিত্র আলো-চনা করি, ধেন ক্ষণিক আনন্দা লাভ করা ও প্রশংসা করার।

অতিরিক্ত আমাদের করিবার কিছু নাই। বক্তা উজ্জল বর্ণে চৈতক্তের প্রেম, ধীশুর বিশাস, মহম্মদের দাস্তভাব, বৃদ্ধের বৈরাগ্য প্রভৃতিব ছবি চিত্রিত করিলেন, শ্রোভাগণ পুলকিও হইরা বলিলেন—"বাং কি স্থন্দব ছবি!" এইবানেই মেন সকল দারিম্ব পর্যাবসিত হইরা গেল। তৎপবে বক্তা ও শ্রোভা উভরেই বিষয়ান্তরে ব্যাপৃত হইলেন; কাহারই আর ভাবিবার বা করিবার কিছু রহিল না। আমরা বেন আনেকটা এইরূপ ভাবে মহাজনদিগের চরিত্রের আলোচনা করিতেছি। ব্রাহ্মগণ বেন অগতের সমুদার মহাজনগণের সুক্রবির (patron) হইরা বসিরাছেন। নিজেরা এক উচ্চগুনে বসিরা ইইাদেগের প্রতি কিঞ্চিৎ অনুগ্রহ দৃষ্টি করিরা ইইাদেব গুণাবলী শ্রীকার করতঃ জগতের নিকট আপনাদের উদাবতার পরিচর দিতেছেন।

এই এক প্রকাব ভাব আব বিনীত শিব্যান্ত্রে আব এক প্রকার ভাব। বিনয়ে অবনত হইয়া ইচ্ছেন্ত গুলাবলী স্থাবন্ কবিতেছি, এবং প্রাণপণে ঐ বিশাস, বৈবাগ্য প্রেম প্রভৃতি **জীবনে লাভ কবিবাব চে**ন্না কবিতেছি। আমাদেব মধ্যে এই বিনয়েব অভাব বডই লক্ষ্য কবিভেছি: কি এক প্রাক্ত অংমিকাব উন্না যেন আমাদেব সকল কার্যোব মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া আমাদিগকে অসাব ও পেমবিহীন কবিয়া দিভেছে। আত্ম-প্ৰীক্ষা ও অনুতাপ কদয়ে জাগ্ৰত থাকিলে মানবেৰ মথে र्य विनय्त्रत हान्ना १९ ए । वाक्र-मृत्थ (महे विनय्त्र हान्ना (मिश्र) অবডাক্ত ইচচাহয়। আংকা-পবীকা ও অন্তাপে যাহাদের হৃদয় পূৰ্ণ থাকে, তাহাবা প্রদোষ চর্চাতে অধিক সময় দিতে পাবে না। এই একটা সংকেতের দ্বাবা আমবা সকলোই আপনা-দিগকে পরীক্ষা করিতে পাবি। যদি প্রত্যেকে আপনাকে নিয়লিধিত প্রস্ন কবি,—"আমবা দশজনে একতা হইলে নিজ নিজ জীবনেব ছুণতিৰ কথা অধিক হয় কি প্ৰ-দোষ কীন্তন অধিক হয় •ৃ" তাহা হইলেই বুঝিতে পারি স্রোত কোন দিকে বহিতেছে। আমরাসকলে ঈশব-চবণে এই প্রার্থনা করি যে তিনি আমাদের বিনয় ও বাকুলভাকে সর্বাণা জাগ্রত রাধুন।

গুণত্র — আমাদের দেশে সম্ব রজঃ ভমঃ এই তিন প্রকাব গুণকে দাশনিক পণ্ডিতেবা কল্পনা করিয়াছেন। ইহার মধ্যে তমোগুণ স্বাপেক্ষা নিকুষ্ট।

তম— অন্ধকাব, যে ভাবেৰ দারা জ্ঞানকে আর্ত কবিরা বাথে। ইহার ধন্ম মোহ। যে সকল মানুষ তমোভাবাপন্ন তাহাবা সুল ইন্দ্রিরের অতীত কিছু বুঝিতে পারে না; সুল স্থাবৰ অতিরিক্ত কিছু জানে না; সুল পদার্থ ও ইন্দ্রিরের বিষয় নাইধাই বাস কবে, আসক্তিতে অন্ধপ্রায় হইরা আবন্ধ থাকে, ইন্দ্রিয় স্থাথর বিষয়েতেই মুগ্ন থাকে। এই হইল তমোগুণের কার্যা।

বজোগুণেব ধর্ম অহং বৃদ্ধি। বজোগুণ-সম্পন্ন ব্যক্তিব কার্য্যে উৎদাহ এবং অহং প্রাধান্ত প্রকাশ পায়। মামুষ তম হইতে বজোগুণেব মধ্যে যথন প্রবেশ কবে, তথন তাহাব সকল কার্য্যেই অহং ভাব প্রকাশ পায়। বাহিবেব জাঁক জমক, আমি সব কবিতেছি, কেবল এই ভাবে প্রিপূর্ণ। এই গুণে প্রবেশ কবিলে বৃদ্ধি কিছু খোলে, মামুষ কিছু উপবে উঠিয়া আন্দে।

কিন্তু ইহা হইতে প্রধান সত্ত গুণ। ইহাব ধর্ম পবিত্রতা, নিটা। এই গুণসম্পন্ন লোক সাথবিবহিত, সর্কাদা মঙ্গলভাবে পূণ। নিজেব স্থা স্বাৰ্থ বিস্কৃতন দিয়া অপবেব মঙ্গল সাধন কৰা তাঁহাৰ সভাব। তিনি ধর্ম ক্রেন, কোন সার্থের জ্বন্ত নহে, তাহাতে তাঁহাৰ আমিত্ব নাই, ঠাহাৰ স্ক্লি ঈশ্রাথে।

এই যে তিন প্রকাব গুণেব কণা বলা হইল, ইহার প্রণমটি তম,—এই তম মাসুবের জ্ঞানকে আরত কবে, মাসুবকে ইন্দ্রির স্থাথ মগ্ন কবে এবং সেই ইন্দ্রিয়ের বিষয় হইতে যে দূষিত প্রবৃত্তিকপ বাস্প উপিত হয় তাহাতে মানবাত্মাকে অন্ধ কবিয়া রাথে। তাহাকে ইন্দ্রিয়েব অতীত কোন বিষয় ভাবিতে দেয় না, পবিত্র বিষয় চিন্তা কবিতে দেয় না, বর্ম করিতে দেয় না, ইহা নিত্রাব্যা।

ইহাব পব লৌকিক ক্রিয়া কংম্ম যাহাবা লিপ্ত, মাহাবা কর্মানল কামনায় ধম্মেব কার্যা কবে, বাহিবেব কার্যা ও অন্ধলান কুরে এবং সকল কাভেই অহং বৃদ্ধি প্রবল থাকে, ভাহাবাও কিছু ভাল। ইহা বজোপ্তবে কার্যা।

কিন্তু ইহাব পৰ সত্তৰণ, ব্ৰহ্মদশনের অবস্থা। ইহাতে কথা পাকে কিন্তু কথাদলেৰ কামনা পাকে না, লৌকিক ক্ৰিনা পাকে কিন্তু মন তাঁহাৰ জন্মই ব্যক্তি হয়। স্বৰ্ধ প্ৰকাবেৰ স্থাপ হিংসা, দেষ বিলুপু হয়, প্ৰেমে হাদয় পূৰ্ণ হয়, তাঁহাতেই চিত্ত নিমগ্ন পাকে।

যতক্ষণ পর্যায় এই অবস্থানা পাওয়া যায় ততক্ষণ ধর্মের বিমল সুথ পাওয়া গায়না। স্থন বাসনা যায়, বাহিরের ক্রিয়া কলাপ যায়, নিঃসার্ভাবে তাঁহার পূজার জন্ম প্রাণ ব্যাকুল হয়, তথনই বিমলানন্দ, সুথ পাওয়া বায়।

নীরব সাধন—নিজ্জন বনে একাকী একটী গৃহে বসিয়া রহিয়াছি, বাহিরে সবেগে এক পদলা রৃষ্টি হইতেছে। ঝিমির ঝিমির ঝিম, বৃষ্টি ধারা তক্ষশিরে পড়িতেছে,

পত্রে পত্রে পড়িতেছে, টপ টপ বৃক্ষতলে ঝরিতেছে. এক ধাবা না পড়িতে আর এক ধারা আসিডেছে, তরু পত্র-গুলি ধাবার আঘাতে নত হইয়া পডিতেছে, যেন প্রম স্থা সেই স্থলিগ্ধ ধারা সম্ভোগ করিতেছে ৷ অদ্ধ ঘণ্টা পুর্বের্ব ঐ সকল তকপত্র প্রথর তাপে স্লান ও ধূলিতে সমাচছয় ছিল, আর অর্দ্ধ ঘণ্টার মধ্যে কি পরিবর্ত্তন! তরুপত্তে সুহস্র ধাবা পড়িতেছে দেখিয়া ও মনে স্থুখ হইতেছে, যেন বুক্ষের সঙ্গে মাথা পাতিয়া তাহা নিজ মন্তকে লইতেছি। মনে প্রশ্ন উদিত ইইল বুক্ষটীর প্রতি প্রভুর এত ক্কণাকেন ? সে কি কবিষাছে যে এত অহুগ্রহ পাইতেছে। মনেই উত্তব হইল---বৃক্ষ ত এই অন্তগ্ৰহ পাইবাবই উপযুক্ত। বৃক্ষ কণা বলে না. আমাদেব ন্যায় লম্বা লম্বা প্রার্থনা কবে না, ঈশ্ব চবণে বড বড সংকল্প ও বড বড প্রতিজ্ঞা জানায় না: কিন্তু নি:শক্ষে তাঁহাব বিধি পূর্ণ কবিতেছে: বৃক্ষ জীবনেব যে কাগ্য ভাগা নীববে সাধন কবিভেচে; স্বভবাং স্তসময়ে ভাঁচাব কুপা বাবিও পাইতেছে। আমরা ও যদি নীববে আমাদেব জীবনেৰ বিধিকে পূর্ণ কবিয়া যাইতে পারি, তালা হইলে স্কুসমধে তাঁলার সাহায্য পাইতে পাবি। কিন্তু ভাবিয়া দেপি আমাদেব অনেকের প্রকৃতি অতিশয় অসাব, যদি মনে আকাজ্ঞা কবি এক গুণ, করিব কবিব বলিয়া চাঁক ডাক কবি দশগুণ। কার্ন্য कविवाव शृत्त्वर गर्गन-(मिननो काषारी देश इनि। करन कार्या অল্লই হয়। নীবৰ সাধনেৰ এক প্ৰকাৰ সৌৰুষা আহাছে, এক প্রকার গান্তীয়া আছে, এক প্রকাব প্রভাব আছে। ঈশ্বব করুন আমবাদিনুদিন যেন তাহা অধিক পরিমাণে অনুভৰ কবিতে পারি।

ঈশরে আশান্তিত হও-সময়ে সমরে পরমেশ্বরের বিধিপালন কবিতে গিয়া আমাদেব মন অবসল ছইলা পড়ে, যেন নিবাশ্রয় হইষা পডি। তথন এরূপ মনে হয় যেন <del>ঈখ</del>ন সাহায্য কবিতেশ্চন না। বিপদেব উপর বিপ্র মাইতেছে, চাবিদিক অরুকার্ম্য ; নিবাশা আ্থাদিয়া প্রোণকে অস্থির কৰিয়া গুলিতেছে, চেষ্টা কৰিয়াও কাৰ্যো দল লাভ কৰিতে পাবিনা। এই অবস্থা ১ইডে ম্কিলাভ কবিবাব জ্বন্ত নিজে त्य मकल উপाय जनलवन करिट्डि, मकलडे वार्थ कहेंग्रा যাইতেছে। একদিকে মথন এরপ অবসমূতা এবং কার্ষো ফলহীনতা, তথন আবাব চাবিদিকে লেপকেক অবিশাস। তাহাবা আমাৰ অবস্থা দেখিয়া বলে "তুমি যাব উপর নিভব কবিরাচিলে, দেখ সে কিছু নয়।'' এসময় মাস্কুকের মন নিবাশ হুইয়া যায়। এসময় যদি মনকে বলি "Hope thou in the Lord" তৃমি ঈশবে আশালিত হও, যদি ভাছার উপব নির্ভব করিয়া চলি, তাঁগাকে আমার করিতে পারি, তবেই মঙ্গল। বিপদ আসিয়াছে তাগতে কি ? ভূমি আশাধিত হও। ছদিন আসিয়াছে, ভাহাতে তুমি ভীত হইও নাআশাবিত ছও। কৃষক যেমন বীজ বপন করিয়া আশাকবে, ফল ফলিবেই, বিজ্ঞানবিৎ যেমন আশাকরেন তাঁহার পরীক্ষার ফল ফলিবেই, সেইরূপ ধর্ম জগতেও

আশা চাট ৷ তুমি তাঁহার উপর বিশ্বাস ভাপন কবিরা আশাষিত হও। তাঁহাকে মঙ্গলময় বিধাতা জানিয়া, তাঁহাকে বিপদের সহায় জানিয়া, তাঁহাকে পরিত্রাতা ও প্রেমেব আদাব জানিয়া আশান্তি ছও। তুমি ফলাফলের দিকে কেন দৃষ্টি কর ? ভূমি কভটুকু জানিতে পাব যে ফলাফল দেখিবে ? আনেকে নিফল হইয়াছে তাহাতে কি ? তুমি আশা কর। আশা কর যে একজন আছেন; এমন একজন আছেন যিনি মানবের আশ্রয় স্থল; আশা কর একজন কর্তা আছেন; এই আশা कतिया ठाँशा विधि शालन कर। मुडारक चालि-ঙ্গন কর, পাপকে পবিত্যাগ কর, অবিখাস দূব কর এবং তাঁহাব উপর আশা স্থাপন কর। ফলেব জন্ম ভাবিও না. তিনি তাহা দিবেন। স্বাধ্ব করুন, আমরা তাঁহার বিধি পালন করিতে সক্ষম হই।

খাসিয়া মিশন-কিছু দিন পূর্বে খাসিয়া মিশনেব কাৰ্য।বিবৰণ সম্বন্ধে "থাসিয়া জাতি ও থাসিয়া মিশন" নামে এক থানি পুত্তিকা প্রকাশিত হইয়াছে। থাসিয়া জাতি फ का ठा वार कुमः कारवत मधा নিম্প বহিয়াছে। তাগাদের কোনও ধর্ম, ধর্মশাস্ত্র বা ধর্ম-শিক্ষক নাই। বোগ ना निभाग मारा चार्याकृत्वार्य जाहावा नाना श्रकात छेथ-্রেবতার পূজা কবিয়া থাকে। পাডবার কোনও পুস্তক ভাগদেব ছিল না, লিথিবার কোনও ভাষাও ভাগাবা জানিত এই সকল বিষয় চিম্বা করিলে ভাহাদের অজ্ঞ অবস্থার কণা কিয়ৎ পরিমাণে বুঝিতে পাবা যায। কিন্তু তাহাদেব এই অবস্থা ক্রমে ক্রমে অনেক প্রিমাণে প্রিবৃত্তিত হইতে চলি-য!ছে। বিগত অংদ শৃশাকীৰ অধিক কাল গৃষ্টায় ধৰ্ম-পচাবকগণ থাসিয়া পাহাডে আসিয়া নানা প্রকাবে ভাহাদেব উল্লিব জন্ম কার্যা করিয়াছেন। থাসিয়া ভাষায় ই বাজী অক্ষর প্রবৃত্তিক কবিয়া কয়েক থানি প্রস্তুক প্রবাশ কবিয়া-ছেন, নানা ভানে পাঠশালা ভাপন কবিয়া থাসিয়াদিগকে भिक्काः निट्याहरू . अवधानम् श्रीनम् जागाप्तव (वाराव bिकिश्माव উপায় কবিয়াছেন এবং অনেক লোক, ক খৃষ্টায় ধন্মে দীক্ষত করিয়াছেন। কিন্তু স্বল প্রাকৃতি পাসিয়াগণ পৃষ্ঠায় বন্মেন ত্রিস্বাদ ব্ঝিতে না পারিয়া উহাতে পরিতৃপ্ত হইতে পাবিতেছে না। তাহারা উপদেবতার পূজা কবে বটে, কিন্তু তাহাবা मर्खनाहे त्रीकात करव एय अक्साब क्रेश्ववहे मकल्वव खहा, পাতা ও পবিত্রাতা। তাই ব্রাহ্মণশ্যের মতের সঙ্গে তাহাদেব জন্বের সম্পূর্ণ সহামুক্তি। প্রমেশ্বের ক্রপার অতি আশ্চর্যা कोभाग थानिया भाशाष्ट्र आश्वभन्य आवम कांत्रप्राष्ट्र धनः পাঁচ বংসরের মধ্যে অলে আলে ভাহা ভাহাদের মধ্যে বদ্ধমূল ছইতেছে। খৃষ্টীয়ানদিগেব স্থায় আমাদের অর্থবল এবং কার্য্য করিবার লোক নাই: তথাপি আশাতীত ভাবে এই অর সমরের মধ্যে আমাদের ক্রু মিশন উরতি লাভ করিয়াছে। প্রে একজন মাত্র কার্য্য করিবার লোক ছিলেন, একণে অপর তিন জন (একজন বাঙ্গালী এবং ছই জন খাসিয়া) ভাহার সক্ষে যোগ দিরাছেল। কোনও থাসিয়া খৃষ্টার ধর্ম সেইরূপ ধীরে ধীবে ধর্মকে সঞ্য কবিবে। মানব-চরিত্র জাতি

প্রচার করিতে আদিলে তাহাকে যথেষ্ট পরিমাণে বেতন প্রদান করা হইয়া থাকে। যে জুই জান খাসিয়া বন্ধু গাসিয়া মিশনের কার্যা কবিতে আসিয়াছেন তাঁহারা নানা প্রকাব অভাব ও অস্কবিধার মধ্যে নি স্বার্থ ভাবে প্রমেশ্বের নামে কার্गা কবিভেচেন। পাসিয়া ভাষায় ব্রাহ্মধর্ম সম্বন্ধে পাঁচ থানি পুস্তক রচিত হুট্যাছে। ছয় স্থানে ছয়টী ব্রাহ্মসমাজ স্থাপিত হটয়াছে। তিন স্থানের থাসিয়া বন্ধুগণ আপনাবাই আপনাদেব সমাজেব কার্য্য চালাইতেছেন। একটা বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হইয়া তাহাতে বালকবালিকা এবং যুবাদিগকে জ্ঞান শিক্ষা দেওয়া হইতেছে। একটী দাতব্য চিকিৎসালয প্রতিষ্ঠিত হইরাছে। অনেক বোগী তথা হঠতে প্রতিদিন নিয়মিতক্রপে ঔষধাদি পাইতেছে ৷ এতদাতীত বালকবালিকা-দিগেব জন্ম একটা কুদ্র নৈতিক বিদ্যালয় খুলিয়া তাথ হইতেনীতি ও ধর্ম শিকা দেওয়া হইতেছে। স্থানে স্থানে মনেক গুলি পুরুষ ও বমণী ব্রাহ্মণর্ম গ্রহণ কবিয়াছেন, এবং অক্তান্ত অনেকে ক্রমে ক্রমে ব্রাহ্ম ধর্মের দিকে আরুই হইতেছেন। পাহাডেব নানা স্থানেব লোক এক বাকো সীকাব করিতেছে যে ব্রাহ্মধর্মই একমাত্র পবিত্রাণ-প্রদ সভা ধর্ম। এইরূপে দেখা যাইতেছে যে প্রভু প্রমেশ্বরের রূপ। অবতীর্ণ হটয়া অল সময়ের মধ্যে ধাসিয়া মিশনকে কেমন मवन ९ भविभूहे कविग्राह ।

নানা ভাবে থাসিয়া মিশনেব উন্নতি হইরাছে বটে, কিন্তু অর্থাভাবে অনেক সময় আশামুরূপ কার্য্য হইতে পাবিতেছে না। চেবাপুঞ্জিতে একটা সমাজ মন্দিরেব নিভান্ত প্রয়োজন। যে গৃহে উপাসনাদি হয়, তাছাতে काधिक (नारकिव कान इस्र ना। এই जन्म व्यर्थिव व्यक्तात বিশেষ ক্ষতি হইতেছে। যে প্রচাব-আশ্রম নির্দ্মিত, হই-ভেচে ভাহাবৰ নিমাণ কাৰ্যা শেষ হইতে পাবিতেছে না। याश्या शामिया भिनात्व कामा कविष्ठाह्न, छाशांनिगरक 9 অনেক অভাবেৰ সঙ্গে সংগ্ৰাম কবিতে হুইতেছে। ব্ৰাহ্মধ্য সম্বন্ধীয় পুস্তকাদি প্রচাব, একটী চিকিৎসালয় গৃহ নির্মাণ এবং न्डन २। ७ है। ममाज ११० निर्माणित ९ निरम्स आवशक बहै-ग्राष्ट्र। शामित्रा काण्टित कनागि माधानत कन्न स्नृतस्त्र हे लख इहेट शृष्टीयानगन कठ अकारवरे माश्या कविराज्यका ! আমাদেৰ প্ৰিয় ব্ৰহ্মধন্ম আমাদেৰই ক্ষদেশীয় থাসিধা জাতিকে দিবাৰ জ্বজায়াদ আমেৰা তাহাৰ কিয়দংশ সাহাষ্য ও कविटा (5ही कवि, जाहा इहें लिंड गर्ब हे रेड भारत।

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

বল্মীকমিব পুত্তিকাঃ।

প্রাচীন নীতিশাস্ত্রে একটা মহোপদেশ এই আছে:-"ধন্মংশনৈ:সঞ্জিন্নাং বল্লীক্ষিব পুত্তিকাঃ।"

অর্থ-পুতিকারা যেরূপ দীবে ধীবে বল্মীক নির্মাণ কবে

ধীরে ধীবেই গঠিত হইরা থাকে। অনেক সংগ্রাম ও আনেক আশা নিরাশা ভোগ করার পরে ধর্মজীবনে একটু উন্নতিলাভ কবিতে সমর্থ হওয়া যায়। বিধাতার বিধিই এই প্রকার। কেহ কেহ হয়ত জিক্তাসা কবিবেন, ব্রহ্মসঙ্গীতে আছে,—

" নিমেষে পাতকী যায় পুণাধামে " **নে কি তবে কল্লনা বা কবির অভ্যুক্তি? চিবদিন ভক্ত-**নুথে শুনিয়া আসিতেছি, প্রভু নিমেষের মধ্যে পাতকীকে তরাইয়া লইয়া থাকেন, তাহা কি বাক্যের অলঙ্কার মাত্র ? ভাহা বাকোব অলকাব মাত্র নহে। তাহার মধ্যে সতা আছে। এক মুহূর্ত্তে পাপীর মন পাপ-পথ পরিত্যাগ করিয়া ফিবিতে পারে; এক মুহুর্ত্তে মোহনিদ্রাভিভূত মানবের নিদ্রা ভালিতে পারে; এক মুহুর্ত্তে মাত্মবের আকাজ্ঞা সংসার হইতে ফিরিয়া क्रेश्ववमुथीन अहेरङ भारत्र। वहमःथाक लारकत्र कीवरन এ कथात्र প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে। সাধুজনের সঙ্গে গিয়া বা কোনও একটা বিপদে বা কোনও একটা আক্সিক ঘটনাতে পডিয়া তাহাদেব চিত্ত কাগ্ৰত হইয়া উঠিয়াছে। একপ দৃষ্টাস্ত ইতি-বুত্তে অনেক পাওয়া গিয়াছে। মহাত্মা বুদ্ধ একদিন স্বীয় পিতার বাজপুৰী হইতে নিৰ্গত হইবার সময়ে জ্বামৃত্যুর ছবি দেখিয়া হঠাৎ বৈবাগাভাবে পূর্ণ হইয়াছিলেন। দেণ্ট ডামক্ষ নগরাভিমুখে যাইবারু সময় বিহাৎ ও বক্সাঘাতের মধ্যে পডিয়া ঠাৎ পরিবর্ত্তিত হইয়াছিলেন। লালাবাবু সন্ধ্যাকালে একটী সামাল স্ত্রীলোকেব একটা কথা ভানয়া ক্রেবে মত ফকীর হুইয়াছিলেন। লুপার সীয় সমক্ষে বীর বন্ধে বজাঘাতে হত ङहेट एतिया পবিবर्शित ३२ माहित्वन। महर्षि एत्र तस्ताय শাশানে শবদাত করিতে গিয়া পরিবর্ত্তিত হইয়াছিলেন। এইরপ অফুস্দান কবিলে হঠাৎ ছদয় পরিবউনের অসংখ্য দৃষ্টান্ত প্রাপ্ত হওরা যার। স্কুতবাং ''নিমেষে পাতকী যাষ পূণা-ধামে" এ কথাটা সম্পূণ অলীক বা কবিব কল্পনা প্রসূত নহে।

কিন্তু ইহাৰ মধ্যে একটা কপা আছে। মানব-জনয় এক মুহুর্তে ফািবতে পাবে, কিন্তু পুণো প্রতিষ্ঠিত হওয়া ও ধন্ম कीवनरक गठेन कवा अक्षिपनित कमा नरह, छाठा श्रांखका-দিগের বল্মীক নিম্মাণের ভাষে শ্রমদাণ্য ও কাল দাপেক। এক মুহুত্তে একজনেৰ পাপেৰ প্ৰতি ঘুণা ক্ৰিয়া পুণোৰ প্ৰতি আকাজ্ঞাৰ উদয় ১ইতে পাৰে, কিন্তু পাপ-পথকে সম্পূণ্রপে বজ্জন কবিয়া পুণাপুথে প্রতিষ্ঠত হওয়া এক দিনের কার্যা নচে। ধশ্মজীবন গঠনের চেষ্টাতে প্রবুত চইলেই আয়ে-নিগ্রহ কবাব প্রয়োজন হয়। আয়ুনিগ্রহের প্রয়াস উপন্তিত হইলেই (मिश्टि পा अया गांत्र (य, का जान मुझल मकल मुझल कारभका দৃঢ। যে ব্যক্তি বছদিন কোনও প্রবৃত্তি। বিশেষের চরিতার্থতাতে অভাত হইয়াছে, তাহার পক্ষে সেই প্রবৃত্তি বিশেষের দাসত ১০তে নিষ্কৃতি লাভ করা বড় সহজ নতে। यभन (म मर्का भः कत्राण जाशास्य प्रमन कतिर ज जाशि जिल्ला দে জন্ত কাতর অভাবে পরমেখবের নিকট প্রার্থনা কবিতেছে. ভপনও দেখা যায় যে, সে বার বার সেই পুরাতন শক্রু ক পরাজিত হইতে থাকে; তাহার পুরাতন প্রবৃত্তি প্রতিজ্ঞার রুজু ছয় ভিন্ন করিয়া ভাহাকে পুরাতন চুর্বলভার মধ্যে প্তিভ

কবিতে থাকে। ব্যাকুল ও মুক্তি-পিপাস্থ আত্মার পক্ষে এই অবস্থা অভিশর যন্ত্রণাদারক। মন সংগ্র পবিত্র বায়ুতে বিচরণ করিতে চাহিতেছে, কিন্তু রক্তমাংসের হর্কলতা তাহাকে বাব বার কর্দমে বিলুটিত করিতেছে। এইরুপে বার বাব প্রতিজ্ঞা, বার বার প্রার্থনা করিরাও মানুষ যথন দেখিতে পার যে তথাপি বার বার পতিত হইতেছে, তথন তাহার প্রার্থনার উপকাবিতা বিষয়ে সন্দিহান হইবার সন্তাবনা। এইরুপে অনেক লোক প্রার্থনাকে ও পরিশেষে ধর্মকে পরিষ্ণ্রাগ করিয়াছে।

একবার শোনা গেল যে একজন অতিশয় ছক্রিয়ায়িত ছিলেন, र्ह्या बिकारमा द्यार निया जारात अन्य श्रीवर्तिक इरेन। প্রথম উদ্যুমে দেখা গেল যে এক সময়ে যেমন তাহার ছক্রিরার আতিশ্যা ছিল, ধম্মজীধনের প্রাণী হইয়া তেমনি তাঁহার বৈরাগ্যেব আভিশ্যা হইল। তিনি সাধনেব কঠোর নিয়মের ছাবা আপনাকে, শাসন কবিতে লাগিলেন। তাহার প্রাণ শাস্তিহীন হইয়া পডিল। তাহাৰ বৈবাগ্য ও वाक्निजा पिथिया लाटक खब रहेया शन। विख कि कृतिन পরে হঠাৎ শুনিতে পাওয়া গেল যে তিনি আবাব সেই পুরাতন ছক্রিয়া সকলে লিপ্ত হইয়াছেন। লোকে বিশ্বিত ও অবাক হইয়া গেল। দকলেই জিজ্ঞাদা করে লোকটা আবার পতিত্ত হইল কেন ? ভিতৰকাৰ কারণ এই সে বাজিক বাহিরে যখন ধ্যাজীবন লাভের জ্ঞু সংগ্রাম করিতেছিল, তথনও ভাহার পুবাতন শত্রুকুলেব হাত ২ইতে সম্পূর্ণ নিমৃতি পায় নাই। লোকে না জাফুক তথনও গোপনে সে বার বার পুরাতন প্রলো ভনেব নিকট পরাজিত হইতেছিল। বার বার প্রতিজ্ঞা a প্রাথনাক দাবা আয়ুরক্ষার প্রয়াস পাইতেছিল, কিন্তু সম্পূর্ণ কু ভকাৰ্য্য ২ইতে পাবে নাই। অবশেষে প্ৰাৰ্থনাৰ প্ৰতি অবিশ্বাস ও নিজেব প্ৰতি নিবাশাৰ উদয় হটল। সে ভাৰি**ল আৰ** সংগ্রাম কৰা বিফল, ভাষাতে কেবল জীবন তিক্ত ষ্টয়া যায়। केंग्रव यिष्ठ शास्क्रम, मामरवन धार्यमा ध्ववन करवम ना। अके ভাবিয়া দে আবাৰ পৰাতন স্ৰোতে গা ভাসাইয়া দিল।

আমাদেব সকলেরই জীবনে এই কপ বার বাব প্রতিজ্ঞা ও বাব বার পতন ঘটিতে পাবে, তথন আমাদিগকে মনে করিতে হইবে—"বলাঁকিমিব পুত্তিকাং" পুত্তিকালা ফেন্প দীরে ধীৰে বলাক নিম্মাণ কবে সেইরূপ ধীবে ধীবে মানবচরিত্র গঠিত হইয়া থাকে। নিরাশ হইলে চলিবে না। ধর্মাজীবনের বে এই ক্রেমোরতি ইহা বিধাতার বিধি। যেমন দৈছিক বল একদিনে লাভ করা যায় না, নিয়মত রূপ অর পান গ্রহণ কবিতে কবিতে কালে বলের সঞ্চার হয়, সেইরূপ মানসিক বলও একদিনে লাভ করা যায় না। মানসিক বল লাভের উপায় সকল অবলম্বন করিতে কবিতে কালে বলের সঞ্চার হয়। থাকে। জগদীশ্বর যদি পুণাকে এইরূপ আয়াস-সাধা না করিতেন তাহা হইলে আমাদের নিকট পুণারর মূল্য থাকিত না। ঘোর পাতকী যদি এক লন্দ্রে সপ্তম স্থর্গ উঠিতে পারিত, তাহা হইলে মানবকুলে স্বর্গরাজ্যের আদের থাকিত না মনুষ্য-জীবনের স্বর্গতেই এই নিয়ম। যাহা একদিনে ভালা বার,

ভাহা গড়িতে দশ দিন লাগে। ইনা আমাদিগের পক্ষে অতি উৎকৃষ্ট ব্যবস্থা, কারণ এইরূপ ব্যবস্থা থাকাতেই আমরা ভাঙ্গিতে ভীত হই ও গড়িতে প্রয়াস পাই।

### ধর্মজগতে তুই শ্রেণীর লোক। #

ৰাইবেলের এক স্থানে এইরূপ একটা আখ্যায়িকা আছে-একদিন এক ব্যক্তি আদিয়া যীশুকে জিজ্ঞাসা করিল, "হে ঋলো, পরিতাণ লাভ কবিবার জন্ত আমাকে কি করিতে ছটবে ?" যীভ ভতুত্তবে বলিলেন—"দকল প্রকার নীতি পালন কৰ এবং পিতা মাতাকে ভক্তি কৰ।" সে বলিল---"বৌৰনকাল হইতে আমি ঐ সকল মীতি পালন কৰিয়া আসিতেছি।" তথন গ<del>ীও</del> পুনব্বাব বলিলেন—"এক বিষয়ে ভোমাৰ অভাৰ পহিষাছে দেখিতেছি, ষাও তুমি গৃহে ফিবিয়া মাৰ, এবং ভোমাব যে সকল সম্পত্তি আছে, তাহা বিক্রয় ক্রিয়া দ্বিদ্রদিগকে বিভরণ কব, ভাষা হইলে স্বর্গীয় ধনলাভ ক্রিতে পারিবে। যাও, ফিরিয়া আসিয়া আমার অনুস্বণ কর।" ঐ ব্যক্তির অনেক অথ্যস্পতি ছিল এবং সে তাংগ ছাড়িতে প্রস্তুত ছিল না, স্কুচবাং দেয়ীশুর বাক্য শুনিয়া ছঃ খন্ত হইয়া চলিয়া গেল। উক্ত বাইবেলেব আবে এক স্থানে সাধুদাযুদ নিম্লিখিত বাক্যগুল বলিয়াছেন বলিয়া উল্লিখিত হুইয়াছে—"আমি মেৰ, প্রভু প্রমেশ্ব আমার মেষপালক। জ্মামাৰ কিছুবই অভাৰ হইবে না। তিনি আমাকে শস্তপুণ কেনের মধ্যে শহান কবিয়া বাগিবেন, ভিনি আনমাকে नियास निर्वातिनीत निकटिं शहेशा याहेटवन। यीन मुक्रात ছায়াচছল উপত্যকাৰ মধ্যেও বিচৰণ কৰি, তথাপিও আনি ভীত হইব না। কাবণ, হে প্ৰভু. ভূমি আমাব সঙ্গে বহিষাছ। ভোমাৰ শাসন দও আমাকে ৰক্ষা কৰিবে৷ তোমাৰ কৰণা 😘 মঙ্গলভাব চিবজীবন আমাব অনুস্বণ কবিবে। আমি চিরকাল প্রভূব গ্রে বাস কবিতে পাহব:'' বাইবেলেব চুট স্থান হইতে ছইটা বিষয়েৰ উল্লেখ কৰা হইল। ইহা দাবা ধম্মজীবনেৰ অন্তি গভীৰ ছুইটা ভাৰ আম্বাৰ্ঝিতে পাৰি। পুরেষ্টে গুই বাজিই ধর্মণিপাস, উভারই প্রমেশ্বকে লাভ ক্ষবিতে চান। কিন্তু প্রথম ব্যক্তি প্রমেখনকে লাভ ক্রিবার জন্ত আপনাৰ পাথিৰ ধন মান ছাডিতে প্ৰত নন। আমাৰ স্থা সম্পদ সৰ পূৰ্ণ মাত্ৰায় থাকুক, আমাৰ মন্তকেৰ একটী কেশ্ৰ না বিঢ়াত হয়, অথচ প্ৰমেশ্বকে লাভ ক্ৰিতে পাবি---यिन এমন হয়, ভবে উ।হাকে চাই। আহাৰ যদি বল, এ मकन ছाড़िट बहेरव, তবে डाँहारक পाইव डांबा बहेरल विल. এত তঃখ ক্লেশ ও অভাবের মধ্যে তাঁহাকে লইয়া কি লাভ ? ভাহার মনেব এইরূপ ভাব। আর দিণীর ব্যক্তির ভাব সম্পূর্ণ অক্ত প্রকার। তিনি আপনার প্রভুকে পাইবার জক্ত আপনার ত্রথ ছঃধ, ত্বাথ সম্পদ সকল ভূলিয়া গিয়াছেন। তিনি ৰলিলেন-- তুমি আমার জীবনের নেতা, আমি তোমাব ষ্মপুণ্ড দাস। মেষ যেমন স্থাপনার প্রভুর অফুসরণ করে,

আমি দেইরপে তোনার অহুসরণ করিব। কোথার ভাল থাদ্যদ্রব্য আছে, কোণার উপযুক্ত পানীয় আছে, কোথার স্থারামদায়ক বিশ্রামন্তান আছে মেষ ত তাহা জানে না। তাহার প্রভূই দে দকল জানেন, এই জন্ত সে সম্পূর্ণভাবে তাঁহার অফুগত হইয়া তাঁহাবই অফুসরণ করে। কোনও বিপদজনক স্থানে গমন করিলেও সে ভীত হয় না, কারণ সে জানে যে তাহার প্রভু যপন তাহার সঙ্গে বহিয়াছেন, তথন ভাহাব সকল ভার ত ভাহার প্রভুবই হল্তে। সেইরূপ আমি কি থাইব, কি পরিৰ, কোথায় থাকিব তাহা কি আমি জানি? আমার প্রভু আমার সেসকল ভাব ড ভামাব উপব। বিপদ, ছ:থ পৰীকা বা অন্ধকাৰ আগে, ভাহাতে আমি ভীত হটব কেন ? ভূমিত চিবদিন আমাৰ সঙ্গে বহিষাছ. ভোমাৰ করণা,ভোমাৰ মঙ্গলভাৰ স্কল্টিত আমাৰ জীবনের সঙ্গেই বহিয়াছে। আমি ভোমাবই, যেপানে লইয়া যাইবে যাও, যাহা কৰিবে কৰ, আমি ভোমাকে পাইবাৰ জ্ঞা, ভোমাৰ ইচ্চাকে জয়য্ক করিবাব জ্ঞাস্ব ক্বিতে প্রস্তুত।

ধর্মজগতে এইকপ ছুই শ্রেণীর লোক আমৰা স্কলা দেখিতে পাই। মান্তব যথন প্ৰমেশ্বকে লাভ করিবাব জ্ঞ ব্যাকুল হইয়া তাহাব ছাবে আসে,তথন সে তাহাকে স্তাস্তাই চাষ্কিনা, ইহা তিনি প্ৰীক্ষা কবিতে চান। প্ৰাণেৰ কাণে কাণে তিনি আগিয়া জিজ্ঞানা কবেন — "যদি তুমি আমাকে চাও, ভবে আৰ কিছুই চাহিতে পাৰিৰেনা, যদি আমাৰ হটবে, তবে আব কাহাবও হটতে পাবিৰে না: দদি আমাকে প্রাণ দিবে, তবে আব কাছাকও প্রাণ দিতে পাবের না :" এই কথা শুনিয়া এক শ্রেণীর লোকেন প্রাণ স্তান্তত হইয়া যায়। ভাগাৰা মনে কৰে চুই দিক থাকিবে সেই ভ ভাল, এ আবাৰ কি ? ভাহাবা অনেক ভাবিয়া, চিন্তা কবিষা, ভৌলদভেব এক দিকে প্ৰমেশ্বকে বানিয়া অন্ত দিকে সংসাবেৰ স্থ সম্পদ প্রভৃতি বাথিয়া দেখে। ভাষাদেব নিকট সংসাবেব দিকটাই অধিক ভানী হয়। তথন তাহাৰা আৰু হইল না মনে কৰিয়া ক্ষান্ত চয়, ধ্মাজীবনেৰ গণে আৰু অগসৰ ১ইতে পাবে না। আব ধিতীয় শ্রেণীৰ লোকে যখন আপনাৰ প্রাণেব, মধ্যে প্ৰমেশ্বেৰ ঐ বাণী ভূনিতে পান, তথ্য বলেন "ইং. সতা সভাই ত আমি ভোমাকে চাই, ভোমাকে পাইবাৰ হুকু যাহা কৰিতে হইবে, আমি সে সকলে গ্রন্থত। যদি ভূমি আমার সমস্ত প্রাণ চাও, তবে ভাগা এখনই গ্রহণ কব। আব আর আমাব যাহা আছে, সব ভূমি শও। আমি কেবল মাত্র তোমাকে চাই।ধন মান আমি বুঝি না,স্থ সম্পদ আমি জানি না, হঃথ কেশেও আমি ভীত নই। আমি বতামাকে লাভ কবিতে চাই। তোমাব সঙ্গে থাকিলে আমাৰ আব কি ভয় ? তোমার উপরেই ত আমাব সকল ভার। আমাকে যেথানে রাথিলে ভাল হয় দেইথানেই তুমি রাথিবে, যাহা कतिता मन्न इत छोड्। हे कृषि कतित्व, य भर्ष गहेरन अक्छ कन्यान इत्र, त्मरे भए मरेरव।" এरेक्स लाक्करे बच्च उः প্ৰযোধনকৈ লাভ করিছে চান এবং তাঁহাকে লাভ কবিভে সমর্থ হন।. তাঁহারা যথন আপনার প্রাণের ভৌলদভের এক

<sup>&</sup>lt;sup>\*</sup> (कान ७ मकः चन च जान्नामात्म अवस छे शत्कान त्राप्ताः ।

দিকে আপনার প্রাণের দেবতাকে বসান এবং অস্তদিকে সংসার ও তাহাব সকল স্থুও সম্পদকে রাখিয়া তুলনা করেন, তথন প্রমেশ্বর যে দিকে তাহাই তাঁহাদের নিকট ভারী হয়। অপব দিককে তাঁহাবা কিছু নর বলিয়া মনে করেন। ওক্ত সধন এইরূপ ব্যাকুলাত্মাদিগের কথা উল্লেখ করিয়া বলিয়াছেন;—

"এক বৃদকে কাবণ চাতক নিত হঃথ পাবে, প্রাণ গয়ে সাগর মিলে, ফুণ কাম ন ভাবে।

চাতক এক বিন্দু জলেব জন্ম সকাদা কতই ক্লেশ পাইয়া থাকে; সাগবে কত জল রহিয়াছে তাহাতে তাহার কিছুই কাজ হব না। আমাদেব দেশে এরপ প্রবাদ আছে বে চাতক রষ্টিব জল ব্যতীত অন্ম জল পান করে না। কত দিন সে এক বিন্দু জলের জন্ম শুষকঠে উদ্ধুপ হইরা প্রতীক্ষা কবে। পৃথিবীতে কত জল রহিয়াছে, পিপাসায় তাহাব প্রাণও বহির্গতপার, তথাপি সে সে জল পান করে না। তাহার নিকট পৃথিবীব সমস্ত জল থাকিয়াও যেন নাই। ঈশরের জন্ম বাাকুলাত্মাদিগেব অবস্থাও সেইরপ। তাঁহাকে না পাইলে সংসারেব লত সংস্থ তাঁহাদিগকে কিছুমাত্র শান্তি দিতে পারে না। সে সকল স্থে তাঁহাদের নিকট থাকিয়াও যেন নাই। তাঁহার জন্ম তাঁহার সকল ছাড়িতে সর্বদাই প্রস্তেত।

উপরে যে ছই শ্রেণীর লোকের বিষয় উল্লিখিত হইল, আমরা তাহার মধ্যে কোন্ শ্রেণীর অন্তর্গত ? আমরা কি পরমেশ্বরকে লাভ করিবাব জ্বন্ত সকল ছাড়িতে প্রস্তুত হইরাছি ? তিনি যদি বলেন, "সকল স্বার্থ বলিদান করিলে তবে আমাকে পাইবে," তবে কি আমরা নিঃসংলাচে বলিতে পারি "এই লও, প্রভু, আমাব সব লও" ? প্রাণের ভৌলদণ্ডের এক-দিকে যদি তাহাকে এবং অন্ত দিকে সকল সংসাবকে রাখি, তবে কি ভাঁহার বিদক আমাদেব অধিক ভাবী বোধ হয় ? পরমেশ্বর করুন আমরা প্রকৃত ভাবে তাঁহার হই এবং তাঁহাকে জ্বীবনের সার কবি।

প্রাচ্য ও প্রতীচ্য ধর্মভাব।

১০ই মাঘ শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী প্রদক্ত

বজ্তার সাবাংশ।

(পুরু প্রফাশিতের পর।)

প্রাচ্য ধর্মে পাপ কাহাকে বলে ? মোহ,—অনিত্যকে নিত্য বলাই পাপ। য়িত্দীদিগের পাপ বিদ্যোহ, ঈশবের আজ্ঞার বিরুদ্ধ কাজ। আমাদের মুক্তি জ্ঞানে; তাহাদের মুক্তি ঈশবেরছার অধীনতাতে। এই বিদ্যোহ নিধারণ করিয়া মানবকে ঈশবেছার অনুগত করাই ধর্মের উদ্দেশ্য। এদেশের ঋষি বলেন—

"গায়তো বিষয়ান্ পুংসঃ সঙ্গন্তেষূ পজায়তে।
সঙ্গাং সংজ্ঞায়তে কামঃ কামাং কোধোহভিজায়তে ।
কোধান্তবতি সংমোহঃ সংমোহাৎস্মৃতি-বিভ্রমঃ ।
স্মৃতিভ্রংশাদ্ বৃদ্ধিনাশো বৃদ্ধিনাশাং প্রণশ্পতি ॥'
বিষয় চিতা ক্রিতে ক্রিতে তাহাতে পুক্ষের আস্তি

ৰুল্মে। আস্ত্তি হইতে কামনার উৎপত্তি হয়, এবং কামনার পথে প্রতিবন্ধক উপস্থিত হইগেই ক্রোধের সঞ্চার হয়; ক্রোধ হইলে মাফুষের হিতাহিত বৃদ্ধি লোপ পান; হিতাহিত বৃদ্ধির বিনাশ বশত: আত্ম-বিশ্বতি উপস্থিত হয়; আত্ম-বিশ্বতি হইতে বুদ্ধি নাশ; এবং বৃদ্ধি নাশ হইলে সর্কানাশ ঘটে।'' ঋষিগণ বলেন, অজ্ঞানবশতঃ বিষয়ের, অনিত্য বস্তুর চিন্তা হইতে সকল অনর্থের উৎপত্তি। অতএব সর্ব্ব প্রথম্বে ঐ সকল অনিত্য {বিষয়কে বিনাশের কারণ জানিয়া সেই সকল হইতে চিত্তের প্রত্যাহার কর এবং নিত্য বন্ধব ধ্যানে নিমগ্ হও। বতাহা হইলেই নিত্যবস্ত জানিবে এবং মুক্তিলাভ করিবে। যিহুদীগণ বলেন মুদাধাবা যে আজা প্রচারিত হইয়াছে ভাৰা পালন করিলেই মুক্তি। খৃষ্টান বলেন যীওর হারা যে আদেশ প্রচারিত হইয়াছে, তাহা পালন কর। তবেই দে<del>থ, মানবের</del> বাক্তিস্বজ্ঞান ও দায়িস্জ্ঞান যিচদী ধর্ম্মের মূলে নিহিত রহিয়াছে। পৃষ্টীয়ধর্ম যিহুদীধর্ম প্রস্তু। ইহাতে ব্যক্তিমজ্ঞান আরও প্রক্টিভ করিয়াছে। মুসাব ধর্ম নিয়মে বরং স্বাধীনভা কিছু থকা হইয়াছে, খৃষ্টীয় ধর্মে উহা সম্পূর্ণ প্রাফাটিত। ছই মহাপুরুষের দ্বাবা খৃষ্টীয় জগতে এই ব্যক্তিত্বজ্ঞানের **ब्हेबाइ ५म स्मिन्ड भन,** বছল প্রচার লুপার। মানবাম্মার যে মূল্য আছে, মহত্ব আছে, যীভর উক্তিতে এই ভাব থাকিলেও সেণ্ট পল এবং নুধার ইহা বিশেষ রূপে ব্যক্ত করেন। যীশু নিজে মানবাত্মার সহত্ত ঘোষণা কবিয়াছিলেন। তাঁহার শিষাগণ কোনও এক বিশ্লাম দিনে শভেক শীষ ভক্ষণ করিয়াছিল। যিহুদীগণ ইহা দেখিয়া মুসার নিয়মেব ব্যতিক্রম হইল বলিয়া যীশুর শিষাগণের প্রতি বিষম আক্রোশ করিছেছিল। তথন যীও বলিলেন— "Sabbath is made for man and not man for the Sabhath." मानरवर अग्रहे विज्ञाम मिन. कि বিশ্রাম দিনেব জন্ত মানব সৃষ্ট নহে । তাঁহার এই উক্তিতে মানবাত্মার মহতই প্রকাশ পাইতেছে। তার পর যীওর মৃত্যু হইলে তাঁহাৰ ভ্ৰাতা জেমস্ খুষ্টায়মগুলীভুক্ত হইলেন। সেখানে তাঁহাব বিষম প্রতাপ হইয়া উঠিব। তিনি একজন নিঠাবান যিহুদী ভিলেন। বিভূদী ধর্মের বাবতীয় নিয়ম পালনে ওঁ। হার বিশেষ আগ্রহ। তিনি খুষ্টায়ম গুলী মধ্যে যাইয়াও যিহুদীর ভাব পরিত্যাগ করিতে পাবিলেন না। মণ্ডলী মধ্যে **অনেকের মনে** এইভাব মৃদ্রিত কবিলেন, বাঁহাবা বিহুদীর অফুঠান সমুদর मम्लापन करतन नारे, डाँराता बुढान रहेरछ शातिरवन ना, তাঁহাদের মৃক্তির আশা স্থদ্রপরাহত। অবনেকে তাঁহার এই মতের সমর্থন কবিলেন। তাঁহার একটা গণ্ডী গঠিত হইল। যথন তাঁচাদের মধ্যে এই অসভ্য প্রবেশ করিল, তথন ধর্মবীর বিশ্বাসী সেণ্টপল নিজ বিক্রম ধারণ করিলেন। ভিনি এই অসত্যের সমর্থন করিলেন না। বিখাদে মাঞ্য ভরিয়াযায়,নিয়ম পালন কিছুই নয় —পল ভীমনাদে এই মহাসত্য ছোষণা করি-লেন। তিনি বলিলেন যিহুদী হও আর জেণ্টাইল হও,তাহাজে किहूरे योत्र चाराना, जूमि विह्ती चन्नुहान প্রতিপালন কর আর ना कत्र, जाहारक किहूरे क्षि दृष्कि नारे-विन पूमि विचानी रह,

বিশাদের নিরাপদ বন্দর পাইয়া থাক, ভাহা হইলে মুক্তি ভোমার করতলে। এই মত প্রচার করিয়া তিনি সকল খৃষ্ঠীয় ও विष्मीत्मत्र विकृत्क मधायमान रहेया नित्कत कौवतन वाकित्वत (individualism) পরাক্রম দেখাইলেন। ইহার কয়েক শত বংসর পরে লুথান আবার হৃদান্ত পোপের পরাধীনতারূপ নিগড় ভগ্ন করিয়া ব্যক্তিগত স্বাধীনতার পতাকা উড্ডীন করিলেন। তার পর ক্রমাগত এই ব্যক্তিত্বের আগতুণ क्वनिष्ठ नाशिन। ममल देखेरताभ विभवमत्र हरेगा छैठिन। বর্ত্তমান সময়ে এই ব্যক্তিত্বভাব অতিরিক্ত মাত্রায় প্রকাশিত হইয়াছে। "যে যার আপনার" এই ভাব ইউরোপে অত্যস্ত প্রবল। আমাদের দেশে কাতিভেদের প্রবল প্রতাপে ব্যক্তিছের প্রভাব নিভান্ত হীন। আমি কি খাইব, কিরূপ কাপড় পরিব, আমি শুশ্রাথিব কি না সমস্তই সমাজ নির্ণয় করিয়া দিবে। কিন্তু সে দেশে প্রত্যেকে সম্পূর্ণ স্বাধীন। অতিবেশী কি করে, কি থায় কেহ তাহার কোন সন্ধান বাথে না। তাহাদের প্রত্যেকের স্থপ তঃথের সহিত অপরের কোনও नम्य नाहे। जुमि निक गृह्य घथाकृति था उनाहाद्य थाक, कृषि यर्थन्ने भतिरभन्न वावशत कत्र कथना नग्न भारत मिनयाभन क्त-क्ट म मध्य कि कि किकामा क्रिय ना। স্বাধীনতার জক্ত প্রত্যেকে আপনাকে ইচ্ছামুরূপ গঠন করিতে পারে। সে দেশে স্বাধীনতার ভাব এতই প্রবল যে, কাহারও অবস্থা বিজ্ঞানা করিলে সে রাগ করে। স্থামি कि थाहे, कि পরি, किञ्चल ভাবে দিন काটाই, আমার সম্ভ আছে কি না, তোমার তাহা জানিবার প্রয়োজন কি? সেরপ জিজ্ঞাসা করিবার অধিকার কি ? ইংবেজদের আবার জাত্য-ভিনান অত্যন্ত অধিক। ইহাদের ব্যক্তিয় এত প্রবল যে, ইহারা ভাই গোনেরও থবব লয় না। সে জ্ব্যু যে কত সামাজিক 5নীতি ও কেশ ২ইয়াছে তাহা বর্ণনাতীত। তাহারা প্রত্যেক নিষ্কের পায়ের উপব দাড়াখতে সচেষ্ট। এই ব্যক্তিত্বের মাত্রা এখানে অত্যস্ত অধিক হইয়াছে, আবার সেথানকার চিন্তালীল লোকেরা অন্ত দিকে এতই ঝুঁকিয়া পডিয়াছেন যে তাঁছাবা বাকিৰ সমূলে বিনাশ কবিয়া সামাজিকতা (socialism) প্রতিষ্ঠিত কবিতে উৎস্থাক হইয়াছেন এবং state কে সমুদ্য ক্ষমতা দিতে প্রস্তুত হইয়াছেন।

এই ব্যক্তিষের উর্রভির সঙ্গে সঙ্গে দায়িত্ব বোধেব প্রাবল্য বশতঃ পৃষ্ঠীয়ধর্ম নীতি-প্রধান হইরাছে। এইজক্স পৃষ্ঠীয় ধর্মের ইতিহাসে এক মহাভাব পরিলক্ষিত হয়। পৃষ্ঠীয় ধর্মে জয়য়য়হণ করিয়াই সমাজের পাপ ও ছনীতি সকল দ্ব করিবার জক্স চেষ্টা করিছে লাগিল। শিশু হত্যার (infanticide) নিবারণ নর-পশু জীকার (gladiator shows) দমন ও দাম্পত্য নীতির উর্রভি, এই সকল বিষয়ে প্রেই মৃষ্টিমেয় পৃষ্টানগণ আশ্চর্যা পরাক্রম প্রকাশ করিয়াছেন। তৎকালে ব্যক্তক্ষেশীর রাজপ্তগণের স্থায় রোমীয়গণ শিশুদিগকে হত্যা করিত। বর্জমান কালে ইংলগ্ডীয়গণ গৃহে গৃহে উষ্ণ জলে নিক্ষেপ করিয়া বিজ্ঞান-শিশুদিগকে হত্যা করেন। তাহা-

দিগকে এই জন্তার কার্য্যের বিষয় বলিলে তাঁহার। তজ্জন্ত কিছু মাত্র হংথিত হন না, প্রভুগত হাসিতে হাসিতে বলেন "সকলেই এইরূপ করে।" সকলেই এমন কি পৃথিবীর সমস্ত লোকে অসুষ্ঠান করিলেও যে অস্তায় কথনও ক্তায় বলিয়া গরিগণিত হইতে পারে না, তাঁহার। ইহা বুঝিতে পারেন না। রোমবাসিগণ বিভাল শিশু বধের স্তায় মানব শিশুকে বধ করিতেন। কেহ প্রতীকারের কথা বলিলে হয় ত এরূপই উত্তর দিতেন। প্রাচীন খৃষ্টায়গণ এই কুপ্রথা রহিত করেন।

বোমদেশে ইহা অপেকাও এই এক বীভংসকাও প্রচলিত ছিল যে তথাকার ধনীগণ স্ব স্ব দাসবর্গকে হিংস্র পশুর সৃহিত যুদ্ধ করিতেপ্রবর্ত্তিত করিতেন। কথনও তাহাদের হত্তে জ্বন্ত প্রদত্ত হইত, কথনও হতভাগ্যগণ নিরস্ত্রই এই সিংহ ব্যাছের সন্মুখীন হইত। এই ব্যাপার দেখিবার জন্ম ভক্ক বংশীয় সহস্র সহস্র পুরুষও রমণী একতা হইতেন এবং যথন হিংশ্র শ্বাপদকুল হত-ভাগ্য দাসদিগের দেহ থও বিধও করিত তথন তাঁহারা করতালি ধ্বনি করিয়া আনন্দ প্রকাশ কবিতেন। যথাকালে রোমদেশে এই ভীষণ কাণ্ডের অমুষ্ঠানও দেই সময়ের অপরাপর পাপ ও ছনীতি দুর করিবার জন্ত ঈশবের বিধানে শৃষ্টধর্মের উৎপত্তি হইল। কাজেই ঐ নিষ্ঠুর কার্য্য আর অমুষ্ঠিত হুইবার স্থবিধা পारेन ना। **এक** पिन तक्र छत्। खेक्र स्वीड़ा हहे छिट्ह, সহস্র সহস্র নরনারী একত্রিত হইয়াছেন, ক্রাড়া আরম্ভ হইতেছে মাঅ। হতভাগা দাসগণ সশত্ত হইরা দাড়াইরাছে এখনও ষ্কে প্রবৃত্ত হয় নাই, এমন সময়ে একজন সাধুপুরুষ কোথা हरेए इ हिंगा आमिया विनातन "हैं। हैं। कत कि । कत कि । এরপ ভীষণ নিষ্ঠুর কার্য্যে প্রবৃত্ত হইও না।" এই বলিতে বলিতে তিনি তাহাদেব মধান্থলে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। দর্শক পুরুষ ও মহিলাগণ বিবক্ত হইয়া চতুদ্দিকে চীৎ-कतिया विनया डेठिन, कि । একটা সামাত্র সন্মাদীর এত বড দাধা যে সে আমাদের কৌতুক বন্ধ করে! এখনি উহাব প্রাণনাশ কব।" তাহাদের এই আদেশ চতুদিকে ধ্বনিত ২ইবা মাত্র একজন সেই সাধু পুক্ষের বক্ষে ছুবিকা আঘাত করিল। যখন সাধু পুরুষ ধূলায় লুঠিত হইতে লাগিলেন, যথন তাঁখাৰ ৰক্ষ: হইতে কৃধির ধারা প্রবাহিত হটয়া রঙ্গভূমিব অঙ্গনকে বক্তাক্ত কবিতে माशिन, ७थन जाहारमत टेठ्छ इहेन, जाहाता विनन "দেখ দেখি এই সাধু পুরুষ কে?" অমুসদ্ধান করিয়া জানিতে পারিল তিনি একজন ধার্মিক মহাপুক্ষ। যথন সকলে এই কথা জানিতে পারিল তথন লজা ও অমৃতাপ সকলেব অন্তবকে অভিভূত করিল। সেই দিন হইতে আর সেই ভীষণ ক্রীড়াব কথা কেহ মুখেও আনিত না। এইকপে একজন গৃষ্টীয় সাধু পুঞ্ষের রক্তে এই বিষম হনীতি রোমনগর रहेट विश्वीक रहेन।

তৎকালে দাম্পত্য নীতিও অত্যন্ত শিথিল ছিল। প্রাচীন গ্রীসে হেটিরি নামে এক শ্রেণীর কুলটা স্ত্রীলোক ছিল।; ভাহারা সমাজে সন্মান পাইত। এমন কি সজেটাশের ভার 14.

একজন মহাজ্ঞানীও এই শ্রেণীর নাবীগণের গৃহে গমন করিয়া নানাবিধ,প্রসঙ্গ করিতেন। পৃষ্টীয় ধর্ম এই কুপ্রথার মূলেও কুঠাবাঘাত কবিয়াছে।

নীতিব প্রাধান্ত এবং দায়িত্ব জ্ঞানের প্রবলতা থাকাতে, জীশ্ব মানবেব বিবেকে প্রতিষ্ঠিত, এবং চবিত্র ঘারা ধর্ম সাধন করিতে হইবে, এই ভাব প্রইধর্মে উজ্জ্ল দেখিতে পাওরা যায়। এই ভাব প্রবল ধাকাতেই পৃষ্টীয় জগতে মানবের অকস্মাৎ জীবন পরিবর্ত্তন (sudden conversion) এবং মৃত্যু-শব্যায় পাপ স্থীকার (death-bed confession) যত দেখিতে পাওরা যায়, অন্যত্র তত দেখা যায় না। এদেশেও লালা বাবু প্রভৃতির দৃষ্টান্ত আছে সত্য, কিন্তু ব্যীয় জগতেই একপ দৃষ্টান্ত অনেক অধিক।

প্রাচ্য ভাবের অতিবিক্ততা জন্ম যেমন তিন্টী দোষের উৎপত্তি সেইরূপ প্রতীচ্য ভাবের আতিশ্যা হইতেও ভিন্টী দোষ উৎপন্ন হইবাছে। (১ম) ঈশ্বর কাষ্য্যের বিচাবক, এই ভাব হইতে অতিবিক্ত কার্য্য-তংপরতা। (২র) বিষয় ঈশ্বর সেবাব ক্ষেত্র, ইহা হইতে বিষয়-তংপরতা। এবং (৩য়) অতিবিক্ত ব্যাক্তর হইতে সমাজিক বিশ্রালা উৎপন্ন হহুমাছে।

ষাদ এই প্রাচা ও প্রতাচা ভাবদ্য মিলিত হয়,—আ্থা-নিষ্ঠভাব সহিত কাৰ্য্য-তংগ্ৰতা, বিষয় বিবাগ্যের সহিত নরদেবা, এবং বাজিত্বের স্থিত একতার স্থানি হয তাহা হইলেই পূর্ণ ধর্ম সংগাপত হয়। ব্রাহ্মসমাজ এই জন্ত জন্ম গ্রহণ ক্রিয়াছেন। মহাত্র বাজা বাম্মেহিন বায় এই প্রাচ্য এবং প্রতীচ্যকে একত্র মিলাইবাব জন্তুই জন্ম গ্রহণ কৰিয়াছিলেন : তিনি তাঁহার জীবনেৰ এই উদ্দেশ্য সিদ্ধ কবিবাব জ্বা বেদান্তেব এক নৃতন ভাষা কবিলেন। ভাষাতে এদেশাশ নিক্ষিত্র ত্রের মধ্যে পাশ্চাত্য कियानील क्रेश्वरक छार्त्वान्ड कित्राना धरण्यात य বাংকা শাস্দ তাখাৰ অৰ্থ অৰ্জাক্ত চৈত্ৰ, যাহা ৰগতেৰ অতীত। এই জন্ত এক শন্দ ক্লাবলিক। একেব যে প্রকাশ হং ক **এদেশীয়গণ ঈশ্বর বলেন। এক্সেসমাজের এক্স নি**জ্ঞায় নহেন। আর কিছু দিন পরে সমগ্র ভাবতে এক্ষ ও ঈধর শক্ষ একাথ হইবে। এক্সিনাজ কেবল আয়তাপ্ত উৎপন্ন করিবে না। এধানে সুনস্ত সন্মিলিত হচবে। কেচ কেহ ব্লিতে পাবেন ভাগ কি সম্ভব? পশ্চিমের ভাব কি এদেশে আনা যায় ? আনি বলি বসবাই গোলাপ, ও কপি এদৰ ভারতে কিড়পে আদিনাছে? আধ্যায়িক वर्क्षान भगाष (प्रथा ভগতেও naturalisation বাডে। ষ্টেতেছে যে কর্ম্ম-প্রধান ইংলও দেশেও জর্মাণীর চিস্তা-স্মোত প্রবাহিত হইতেছে এবং ইংল্ডের কর্ম্ব-তৎপরত: ক্ষমণ দেশে ক্রমশই পরিবাধে ২ইতেছে। পাশ্চাত্য ভাব এদেশে আসিবে। থাহারা নিজ নিজ জীবনে এই উভয় ভাবকে দশ্মিলিত করিতে চেষ্টা কবিতেছেন তাঁহারাই প্রকৃত আহ্ম ধর্মের সাধন করিতেছেন; আর 'বাঁহারা একাকের সাধনা করিতেছেন তাঁহারা পশ্চাতে পড়িরা

আছেন। ভগবান্ করুন আমেবা সকলে স্ব স্থীৰনে এই স্মিলিত ধর্মগুলব সাধন করিতে পারি।

#### রামমোহন রায়ের মহন্ত।

(প্রাপ্ত )

যাঁহারা বাজা রামনোহন রার সম্বন্ধে কিছুমাত্র জানেন. তাঁচাদের অনেকেই তাঁহার অসাধাবণ মহত্ত কিন্ত আমার আশহা হর. খীকাব কবিয়া থাকেন। অতি অল্ল লোকেবই মনে এই মহত্বের প্রকৃত পরিমাণ ও প্রকৃতি সম্বন্ধে একটা স্থিব ও স্থম্পষ্ট ধাবণা আছে। একপ হওষাও কিছুই আশ্চর্যোব বিষয় নহে। মহত্ত্ব মানৰ মনেৰ মহত্ত ছিল্ত তাঁহাৰ শক্তি আত্মাৰ শক্তি ছিল, ভাঁহাৰ চৰিত্ৰেৰ বহিঃজ্যোতিঃ অগ্নতেৰ আলোকের আভা মাত্র ছিল। আত্মাৰ মহত্ত্বে ওজন কে কৰিবে? আত্মাৰ গভীৰতাৰ নিদ্ধাৰণ কে কৰিবে? আত্মাৰ আলোক নিষ্টতা কত ঘন ঘন আন্নাদনে অকচিকৰ কবিষা তুলিভে পাবে এই স্কল উৎকর্ম যদিও মানবেব সংকীণতার eিত্ব দিবাই প্রকাশিত হয়, তথাপি প্রকৃতপক্ষে, মানবের নং, কিন্তু বিধাতা পুরুষেবই গুণাভাস মাত্র, এবং তজ্জ্ঞ স্প্ৰদাই অন্তেৱ স্থাদ বহন কৰে বলিয়া এ সকল মানৰ ल्डात्नित्र मन्त्रीर्व व्याग डाधीन इस ना . भार ठ महर्द्वार**क व** চনিত্র চিত্রনীক্ষণ ময়ে পাছায়ো দপ্ত চিত্রকলকের জ্ঞায় প্রভীষ-মান হট্যা থাকে। যত বেশীক্ষণ এই চিত্র নিনীক্ষণ কৰা যায়, যত হুখাকপে ইহাকে দৃষ্টি কৰা যায়, ভতই ২ংগৰ সৌক্ষৰ্য্য চক্ষৰ উপৰে প্ৰকাশিত হুইতে থাকে, এবং ভুতুই যুত্ত কু সৌন্দর্যা দেখা ও ভোগ কবা যায়, ভাহার অংশীত আরো অপুরু গৌল্যা যেন ভাহাতে আছে, একপ মনে হয়, ত্রমে দেখিতে দেখিতে প্রের যাহা অদপ্ত ছিল ভাই। দৃষ্টিৰ বিষয়ীভূত হয়, পৃৰ্বে যাহা অব্পষ্ট ছিল ভাষা স্থাপ্ত হুব, এবং এইকাপে ক্রমে সেই চিত্রের মধ্যে আছে: বলিয়া পুশেষ কল্পনাও কৰা যায় বিশশিত হট্যা উঠে এবং দশকেশ চিন্তকে গেই সামাল্য তিন চাবি ইঞ্চি প্ৰিসৰ চিত্ৰেৰ এই নিয়ত-াৰকাশোৰুৰ *कोन्नरगात्र भर्गा उर्देश विश्व विश्व कित्र है* মোহন বায়ের চরিত্র সম্বন্ধে কি ঠিক এরূপ হয় নাই 😢 এদেশে উাহার সমসাময়িক লোক মওণীর চক্ষে তাহার সোল-(र्यात कि मठा रागव धकारम उ मुष्टे इहेग्राधिन १ মহৎ চরিলের গৌন্দর্য্যের আভাস মাত্র দেখিতে সম্ব হটবাব পূর্বে এজাতির চকুকে অদ্ধণতানী-ব্যাপী শিক্ষা लाভ করিতে হইয়াছে। এবং ভাহার পরে আরো দশ বংসর ঘনিষ্ঠও নিবিষ্ট ভাবে তাহা নিরীকণ ও আলোচনা क्तियां अध्यामापिशाक हेश श्रीकांत्र कतिए इहेरलए, বে আমরা রামমোহন রাজের চরিতের সৌন্দর্যা 🗷 সহস্থ

**८क्वन वृक्षित धाता ७, आश्रीक कारण, आश्रल कतिएल ममर्थ**। **ब्हे** नाहे।

शृत्र्वहे तला हहेब्राह्म, এই মহত্ত, আহার মহত্ত। এবং আত্মার মহত্ত যাহা, তাহা সর্কোপরি দটি শক্তিরই মহত্ব। মানসিক ও আধাোগ্লিক মহত্ব মাত্রই এইরূপ। বৈজ্ঞা-নিক, নৈয়ায়িক. কবি ও প্রবক্তা ইহানের স্কলেরই শক্তি দৃষ্টিতে। ইহাদেব সমসাময়িক ও ক্ষদেশীয় লোকেবা যাহা **(मशिट्ड भाग्न ना, है हाता छाड़ा एम्राथन विद्यार है होता** (अर्क । शांविनि । निष्ठेन, कि फार्रान अफ ७ था। गै-জগতের সভা সমত আপন আপন সমসামণিক জনগণ অপেকা অধিক দেখিয়াছিলেন বলিয়াই ইহাদের নাম জড়বিজানের ইজিহাসে বিগাত হুট্রাছে। মনোবিজ্ঞানের ইতিহাসে এইরূপ ডেকার্ট, ক্যাণ্ট বা হিগেলের নাম প্রাসিদ্ধি লাভ कविशाद्भाः कवि ९ श्रायकाव मक्ति (न मृष्टिग् छ हेश नकत्व हे সীকাব কবেন। কিন্তু লোকে সীকার করুন আব নাই ককন,-- স্বৰ্ব প্ৰকাবেৰ মানসিক ও আধাায়িক মছত্ত ষে দেখিগত একথা অগ্রাহা করা অসাধা।

এই দষ্টি-শক্তি আয়াব। এবং আয়াব চক্ষ্ৰ সর্ব্যঞ্জ धर्म **এ**डे (य भवीरतन हकू (यण्टल आकारतन विलित्तका দশন করে, অংখার চকু সেপলে মূল বস্তুব একায় উপলন্ধি কবিয়া গাকে। বাহা বিভিন্তাৰ মধ্যে আছেরিক একতা श्वाभागत भक्ति दावारे मन्त्र श्रकात्वर मान्यिक ९ व्याधााचिक শক্তি ও শ্রেগভাব প্রিমাণ ১ইয়া পাকে। এই জ্বত জগতের স্কা প্রকাবেদ বিচিত্রভাব মধ্যে একট প্রমাণুপুঞ্চেদ শীলা আবিষ্কাৰ কবিয়াছিলেন বলিয়াই রসায়ন শাস্ত্র-বিশাবদ পণ্ডিত মঙলী মনো ডাল্টন এরপ শ্রেষ্ঠ স্থান অধিকাব कवियाकित्यन। উद्विप अधीव-क्रगडिव এकरे अमिविकाल-नील প্রাণতার ক্রিয়া । का क निषाि । हान विलिश हे -- विवर्त्तन-बारनत প্রতিষ্ঠাতা ভাববিন বস্তমান বৈজ্ঞানিক সমাজেব শীর্ষ স্থান আধকার করিয়াছেন। মহামতি ক্যাণ্টের পুরের আধানক দশন জভবাদ ও মাযাবাদ, এই প্রস্প্র বিরোধী कुरे मर्ल विकक्त किल, जवर जब ि:11मिडा-निवस्त मरना-বিজ্ঞানের সাংঘাতিক অপকার সাণিত হইভোটল। এই প্ৰস্পৰ বিৰোধী দল ছয়েৰ মতেৰ মধ্যে সামঞ্জ স্থাপন ক্রিয়াছিলেন বালয়াই ক্যাণ্ট স্বর স্থাততে আধুনিক দাশনিকগণের সক্ষল্রেও ও অ।ধানক দশনের উদ্ধার-কতা ৰালয়া পাৰগণিত ২হয়চেন। এবং বসায়ন বিজ্ঞানে कालहैन, व्यामावकारन कार्यावन, मरमाविकारन काण्टे याहा কারিয়াছেন, ধ্যাবজ্ঞানে, আধুনিক স্নরে, রাজা রাম-মোহন রায় ঠিক ভাহাই করিয়াছেন, এবং ঠিক অফুরূপ স্থান অধিকার কার্যাছেন। তিনিই সব্ব প্রথমে, আধুনিক কালে, জগতের বিভিন্ন আনকারের ধন্ম বিখাদের মধ্যে মূলগত একটা একত্ব দর্শন করিয়া, জনমগুণীর নিকটে ভাহার সভ্যতা আভিপাদন করিবার প্রয়াস পাছ্যাছিলেন। পাওভপ্রবর त्माक्रभुगदत्तत्र कथात्र जिल्हे गर्वादती मन्त्र शकादतत राखांत

ছিলেন, এবং অব্যক্তকে বাক্ত করিবার জন্ম, অজ্ঞেয়কে জানিবার জন্ম মানবপ্রাণের একটা ব্যগ্রতা লক্ষ্য করিয়াছিলেন। তিনি সকল ধর্মেই অনম্ভের প্রতি প্রাণের একটা গভীব টান ও ঈশবেৰ প্ৰতি সৰল প্ৰেম প্ৰত্যক্ষ কৰিয়াছিলেন। বিগত অর্মপতাকী সময় মধ্যে সভ্য জগতেব ধর্ম বিষয়ক চিয়াতে এক মহা বিপ্লব সংঘটিত হইয়াছে। বিখাসের ভিত্তিব উপরে প্রতিষ্ঠিত প্রাচীন তত্ত্বিদা ধর্ম-বিজ্ঞানকে আপনার আসন পবিত্যাগ কবিয়া দিতেছে, জগতের সর্বতি শিক্ষিত লোকে তাঁহাদিগেব পূর্ক পুরুষগণ অপেক্ষা ধর্মের এক মহত্ত্ব পূর্ণত্ব ও উদাবতর আদৰ লাভ কবিয়াছেন। ধন্ম-বিষ্যক সংকীণ্ডা ও অস্থিকুড়া ष्पापनामिश्वत हिवसन स्विभित्र क्ट्रेंट এक्टी हाक क्वेग्नाह र्य এक बृष्टेभर्य-अधान (माम मकल भर्यात এक महा সমিতির অধিবেশন বিগত বর্ষে সম্ভবপর বলিয়া প্রমা-भित्र इहेब्राइ, এবং আপনাবা জানেন যে ভাবতে প্রায मथुडि वर्ष शृद्धि वाङा बामरमाहन वार्षिव मन र्ष मक्त চিম্বা ও ভাবের দারা আন্দোলিত হইযাছিল, তাহাৰ অন্তর্ম চিম্বা ও ভাবেব প্রাবল্যই মভা কগভেব ধন্ম বিষয়ক চিম্বা ও ভাবে একপ প্রবায় উপস্থিত কবিয়াছে। ভলনায় বিভিন্ন ধন্ম শাস্ত্র আলোচনাব (Comparative Theology) প্রথম প্র-প্রনশ্ক, রাম্মেহ্ন রায়, ইহাব প্রতিভাতা তিনি একথা বলা অসম্বত নহে, কারণ তিনিই আধুনিক পণ্ডিত মঙলী মনো দৰে প্রথমে হিন্দু, বৌদ্ধ, পৃষ্ঠীয় ও মুদ্শমান এহ ধলাচতৃষ্টয়েব তুলনায় পাঠ ও আলোচনা কবিযাছিলেন। মোক্ষ্ণৰ প্ৰভৃতি তাঁহাৰই খাদ্শিত পথে বিচৰণ ক্ৰিষা আজ সভা সমাজের ধম চিস্তাতে এই যুণান্তব উপস্থিত কবিতেছেন। ধন্মেৰ দশন ( Philosophy of religion ) ৰা ধন্ম বিজ্ঞান অবতি ফাল দিন হটল পাশ্চাতা জগতে প্রতিষ্ঠিত হইতে আরম্ভ হইবাছে: বস্তু: ব্যাণ্ট, হিণেল, ও লিয়াবমেকাব, এই তিন জন স্বপ্রসিদ্ধ দাশনিক পাওত বৰ্ত্তমান সভা জগতেৰ চিস্তাতে যে আমূল পৰিবস্তন আনয়ন কবিষাছেন, তাহাব দ্বাৰাই কেবল এই নুত্ৰ বিজ্ঞানের উৎপত্তি সম্ভাবিত :ইয়াছে। এবং ক।াণ্ট' হিগেল, ও লিয়াবমেকাব, এই তিন জনই বাজা বানমোহনেব সম-मामांत्रक (लाक। कााणे वाका अप्शक्ता आत्मक व्यान-काष्ठे ছिल्म वाहे, oat वाका यथन जिल्मा वर्षत যুবক তথন তিনি পরলোক গমন কবেন। কিন্তু হিগেল রাজা অপেকা চাবি বৎসরেব বড ও রাজাব তই বৎসৰ পুরে প্রলোকগত হয়েন। भिगानस्यकात जानात বের বড ছিলেন, এবং রাজার মৃত্যুব পব বংস্ব মান্ব नीना मःवत्य करत्रमः। অতএব বিধাতা-প্রক্ষের প্রিক্ নিঃশ্বাস হইতে উৎশন্ন হইয়া যে দাণনিক চিস্কাল্ডেভ বিগত শতাকীৰ প্রারম্ভে ইউবোপের উপর দিয়া প্রবাঞ্জি इहेशी काल्डे हिरान अल्डिय मधा निया कृष्टि लाख ক্ৰিয়াছিল, ভাহাই ভাবতেও উপর দিয়া প্রধাহত হৃত্যু অভ্যস্তবে মানবামারে এক অব্যুট ক্রন্দন ধ্বনি প্রবণ করিয়া- বিয়া রাম্মোহনের বুলি ও আহাকে জাতাত করিয়া

তাঁহার ছারা ত্রাহ্মসমান্তেব প্রতিষ্ঠা করিয়াছে। কোনও मक्तिमाली वाक्ति (य मक्त कार्या कीवरन मन्नामन कतिया याइरेड मधर्य इत. जनर्भका, এই मकन मम्भानिज जास-क्षीरनव मधा निया मानव-मरन रय व्यामा ७ व्यानरण त छेनत কবিয়াছিল, তদারাই তাঁহাব মানসিক শক্তিশালীতার ক্যাণ্ট ও হিগেল প্রভৃতি পবিচয় প্রাপ্ত হওয়া যায়। चानव मत्म (य जामा ও जामर्म प्रकात कतिया शियाहिन, তাঁহাদের বতসংখ্যক শিষ্য (এবং তাঁহাদের মধ্যে বর্তমান জগত্তের অনেকানেক পণ্ডিতাগ্ৰগণ্য সভ্য বাকি রহিয়াছেন) সে আশা ও আদর্শকে আরও পরিপুণ করিবার জক্ত প্রাণপণে পরিশ্রম কাবয়া ক্যাণ্ট প্রভৃতির াচন্তা ও জ্ঞানকে ক্রমশঃ বিস্তৃত, বিকশিত ও পরিবদ্ধিত করিয়া ভুলিয়া জগতের অশেষবিধ কল্যাণ সাধনা করিতে-ছেন। কিন্তু রামমোহন রায়েব চিন্তাব আলোক, কি আন্ধ-মণ্ডলী মধ্যে কিম্বা তাহাব বাহিরে, আজ অতি অয় লোকই বহন কবিভেছেন; এবং স্বগীয় কেশব চন্দ্ৰ সেন ব্যতীত আব কেহ দে অমৃত আলোককে বদ্ধিতও উজ্জল তর করিতে সক্ষম বা যতুবান হন নাই। আজ যে রাজা রামমোহনের নাম ও জ্ঞান-দীপ্তি ক্যাণ্ট প্রভৃতির নাম ও জ্ঞানের ক্রায় জগতে ব্যাপ্ত হইতে পারে নাই, ইহাব কারণ রামমোহন রায়ের প্রতিভার কুদ্রতা নহে, কিন্তু যে জাতির মধ্যে তিনি জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন, তাহার অপকৃষ্টতা, এবং এই সকল দেখিয়া শুনিয়া লোকের মনে সহজেহ এই আঞ্চেপ হহতে পারে যে বিধাতা কেন এমন ব্যাক্তকে এই নরাধ্য জাতিতে ও এই অধঃপাতত সমাজে জেরণ করিলেন।

### পত্রপ্রেরকদিগের প্রতি।

শুক্রবাদ সম্বন্ধে অনেকগুলে প্রেরিত পত্র আমাদের হস্তগত হইমাছে। মনোবঞ্জন বাবুব তৃতীয় পত্রও পাওয়া গিয়ছে। কিন্তু তংপুকো তাঁহার প্রথম তই পত্রেব অনেকগুলি প্রতিবাদ আ্বিয়াছে। সে সমুদ্য মুদ্রিত কবা সম্ভব নহে। এবারে তাঁহার প্রতিবাদের একথানি মুদ্রিত করা গেল। আগামী বারে মনোরঞ্জন বাবুব তৃতীয় পত্র ও আরে একথানি গুত্র ছাপিয়া এবিষয়ের বিচার বন্ধ কবা যাইবে । ত—স।

### প্রেরিত পত্র।

পেত্রপ্রেকদিগের মতামতের অস্তু সম্পাদক দায়ী নচেন।) শ্রদ্ধাম্পদ শ্রীযুক্ত তত্ত্ব-কৌনুদী সম্পাদক মহাশয় সমীপেষু।

### অভান্ত গুরুবাদ ও ব্রাহ্মধর্ম।

মহাপর,

আমার বক্তব্য অভি সংক্ষেপেই বলিভেছি। আশা করি অমুগ্রহ করিয়া প্রকাশ করিবেন।

১। শ্রছের মনোরঞ্জন বাবু তাঁহার প্রথম পত্তে লিখি-রাছেন, "মামুব আপনার অভিক্ততা ও বুদ্ধির উপর নির্ভর

কবিরা যে সকল কথা বলে তাহা আমরা বলপরিমাণে বিশ্বাস কবিতে পারি। কিন্তু অল্রান্তরণে স্বীকার করিতে আপস্তি কবিতে পারি।" অর্থাৎ বৃদ্ধি ল্রান্ত, স্পুতরাং বৃদ্ধিপ্রস্তু যুক্তি কর্ক দাবা মীমাংসিত সিদ্ধান্তকে অল্রান্ত সতা বলিয়া গ্রহণ করা যায় না। মনোবঞ্জন বাবু নিজেই যথন এরূপ সিদ্ধান্তকে অল্রান্ত সন্তা বলিয়া প্রহণ কবিতে প্রস্তুত্ত মচেন, তথন অপরের নিকট ইহাকৈ সতা বলিয়া প্রমাণ কবিবাব জক্ত এত চেষ্টা কবিতেছেন কেন গ তিনি কি বলিতেছেন না "আমি যুক্তি তর্ক দাবা শুক্তর অল্রান্ততা প্রমাণ কবিলাম। কিন্তু ইহাকে আমি অল্রান্ত রূপে গ্রহণ কবিতে প্রস্তুত নহি।" ইহাকি আ্যা-বিরোধ নহে গ

>। "মানবান্থায় ঈশর-বাণী অল্রান্তরূপে প্রকাশিত হইতে পারে না" এই ভয়ানক মেতের প্রতিবাদে তিনি বলিয়াছেন "আয়ুস্কর ও বিবেক-বাণীকে আদেশ ভাবিলেই এরপ সন্দেহ উপস্থিত হয় ' অর্থাৎ ল্রান্ত আত্মসংকর ও ল্রান্ত কিম্বা ল্রান্ত-রূপে প্রকাশিত বিবেককে আদেশ ভাবিলেই আদেশবাদেব অল্রান্তর্ভা সম্বন্ধে সন্দেহ জয়ে।

বিবেকবাণীও যথন ভ্রাস্ত বা ভ্রাস্থরপে প্রকাশিত, তথন বিবেক দ্বাবা গুরুর অভ্রাস্কতা নির্ণয় করা সম্ভব নছে।

- ৩। প্রাক্তাদেশ অভাস্ত এবং অভ্যস্তরপে প্রকাশিত, ইহা
  আমবা সকলেই স্থাকাব করি। কিন্তু মনোরঞ্জন বাবুর মতে
  ব্রহ্মণোগে অস্ক্র আয়ায় ব্রহ্মণাণী প্রকাশিত হয় না, স্কুতরাং
  গুরু অভ্যাস্ত কি না ইহাও প্রকাশিত হয় না। স্কুতবাং ব্রহ্মযোগে অযুক্ত ব্যক্তি গুরুব অভ্যস্ত হা কানিতে পারে না।
- ৪। অলান্ত সভাব সঙ্গে গুরুবাকা মিলাইয়া দেখিলেও 
  ক্ষুবাকোর সভ্যাসভা নির্ণয় করা যাইতে পারে। প্রভাাদেশই একমাত্র অভ্যন্ত বাণী। কিন্তু ব্রহ্মযোগে অযুক্ত
  আল্লা অনাদিষ্ট। স্কুরাং ভাহার পক্ষে গুরুবাকোর সভ্যাসভা নির্ণয় কবা অসম্ভব। গুরুবাকোর অভ্যন্ত জানিতে
  হইলে শিনাকে পুরেই উক্ত সভা বিষয়ে অভ্যন্ত হইতে
  হইলে—ইহাব প্রতিবাদে মনোরঞ্জন বার্বালয়ভেন—"ইহাব 
  উত্তব দেওয়া অভি সহজ্ঞ, কেন না ব্রাহ্মগণ আপ্নারা অভ্যন্ত
  সর্বাজ্ঞ ও পূর্ণ পবিত্র ইত্যাদি না হইয়াও ঈশ্বকে ঐ সক্ষ
  গুণ্যুক্ত বলিয়া ভির করিয়াছেন।"

জান জ্ঞাতবস্ত অংশকা শ্রেষ্ঠ ইহার প্রতিবাদে লিশিত হট্রাছে:—

"এরপ চিস্তা কৰা বালকতা মাত্র। কেন না আমধা আত্মবৃদ্ধি দারা ঈশরকে নিণয় করিয়াছি। এবং ঈশ্বরের অন্তান্তা জানিয়াছি। ইত্যাদি।"

মনোরঞ্জন বানুর মতে ঈশ্বরের অস্থিত, অল্রান্থতা পূর্ণ-পবিত্রতা ইত্যাদি সম্দয়্ আয়-বৃদ্ধি হারা নির্ণীত। কিন্তু ভাহার মতে আয়ুবৃদ্ধি হারা নির্ণীত সিদ্ধান্থকে অল্রান্থরূপে গ্রহণ করা যাইতে পারে না। স্থতরাং "ঈশ্বর আছেন" "তিনি অল্রান্ত," "তিনি দর্বজ্ঞ", ইত্যাদি মন্তকে অল্রান্থ বিদ্ধা গ্রহণ করা বাইতে পারে না। এরূপ কথা আমরা বলিলে সনোরঞ্জন হারু আমাদিগকে নিশ্চয়ই ব্লিবেন,—

"अक्र पिंचा कता वानक जा माखा" "हेश यिनि वरनन তিনি অজ্যেতাবাদী" সন্দেহবাদী বা নান্তিক "কিন্তু ব্ৰাহ্ম नरहत्र।"

বৃদ্ধিষারা ত্রহ্মকে প্রকাশিত করা যায় ইহা চিম্বা করিলেও মনে হয়, অমাবতা রজনীতে দেশলাই জালিয়া স্থা দর্শন কবা অসম্ভব, একপ চিম্বা কবাও বাতৃলতা।

- ৫। যে উপায়ে ব্যক্তিবিশেষের অভান্তভা প্রমাণ করা হইয়াছে, সেই উপায়ে সমূদয় মানবাঝারই অভাস্ততা প্রমাণ করা যায়:--
  - (৩) "ঈশববাণী মানবাত্মায় প্রকাশ পার।"
- (৪) স্থাতবাং তুই একজন মামুধ কেন, সকলেই সেই যাক্য শুনিয়া উপদেশ দিতে পারে।
- (a) "क्रेचरत्रव वागी. अनिया जेनरम पिरम रम जेनरम অভান্ত ,"
- (७) मकरनारे यथन এই तभ पाजा ख छे भरते पा निएंड भारत, তথন সকলেই ত অভ্ৰাস্ত গুক!

স্রতবাং অভ্রাম্ব গুক্রাদ মানববাদে পরিণত হইল।

- ৬। আপত্তি উঠিতে পাবে—মানবান্মা চৈত্রত্যাগযুক্ত मानवाद्यात्कहे वना इहेबाहिन। जाहा इहेतन व्यामवा जिन्ही প্রেশ্ন কবিব।
- (ক) একটা আত্মার পক্ষেও কি সদাসর্বাদা ত্রন্ধার্যোগে যুক্ত থাকা সম্ভবপর ?
- (থ) যোগসূক্ত হইলেই কি প্রত্যেক বিষয়ে ব্হারণী প্ৰকাশিত হয় প
  - (গ) श्वक कि किवन व्यामिष्टे विषय्ये डे अर्पाम (प्रम १

ইহার একটীও যথন সত্য নহে, তথন কেমন ক্রিয়া বলিব গুৰুবাকা অভ্ৰান্ত 📍

- ৭। খিতীয় বক্তবো দেখান হইয়াছে যে মনোবঞ্জন বাবু विश्वाम करवन, विरवकवानीरक आरम्भ विनिश्न ख्रम कवा मस्रव। শুকুও যথন মামুষ, তথন তাঁহাব পক্ষেও ভ ভ্রম কবা সম্ভব। প্রতরাং শুক্ল অপ্রাপ্ত নহে।
- ৮। তাক মহাশয়গণ অহবহ অভিজ্ঞতার কথাই বলিয়া থাকেন। ঈশববাণী বলিয়া অতি কম সতাই প্রচার কবা হয়। ভক্তিভাজন শ্রীযুক্ত বিজয়ক্ষণ গোসামী মহাশয় আমাদের এন্দের বন্ধু প্যারীশাল ঘোষ মহাশয়কে যে পত্র লিথিয়াছিলেন বিগত পক্ষেব তত্তকীমুদী হইতে তাহার অংশ বিশেষ উদ্ভ করা গেল।

"আমি নিজ অভিজ্ঞতা দারা জানিয়াছি · · · · সংগুরুর কুপা ভিন্ন তাহা ( ব্ৰহ্ম দশন ) হইবার নহে।"

এইরপ অভিজ্ঞতার উপর নির্ভর করিয়া সমুদয় গুরুই भरनक ममरत्र धर्म्याभरमम श्रमान कवित्रा शास्त्रन ।

মনোরঞ্জন বাবু অবখাই বিজয় বাবুর উক্ত মত অভাস্তরূপে া গ্রহণ করিছে প্রস্তুত নহেন। কারণ উক্ত কথা অভিজ্ঞতাব উপন নির্ভন্ন করিয়া বলা হইয়াছে।

भारतात्रश्चन वाव व्यामां शिंगारक नावशान कतिता मिटक-

কি ত্রান্তি অপেকা প্রেছতর ? অজ্ঞতা অভাবাত্মক অবস্থা, উक्त व्यवद्या हहेएड भनावन कतिवात मगत्र भन्यानन ब्हेरन (प्रहे भूष्यान तक हे खान्डि वना हरा। खळाडा छात्नत मण्जूर्ग অবভাব; ভ্রান্তি অবপূর্ণ জ্ঞানের পরিণাম। জ্ঞানের অতীত বিষয় সম্বন্ধেই মামুষকে অজ্ঞ এবং জ্ঞানের বিষয়ীভূত বিষয় সম্বন্ধেই মামুষকে ভ্ৰান্ত বা অভ্ৰান্ত বলা যায়। ভূকে ক্ৰম্ব উত্তাপ বিষয়ে শিশু অজ্ঞা, আর শিক্ষিত মানবকেই উক্ত বিষয়ে ভ্রাস্ত বা অভ্রাস্ত বলা সম্ভব। অজ্ঞতার মূলে চিস্তাহীনতা নিশ্চেষ্টতা, উদাম-বিহীনতা এবং জড় প্রকৃতি, আর চিম্বাণীল ও উদ্যমশীল মানবের পক্ষেই চেষ্টাবলে ভ্রাস্ত বা অভ্রাস্ত হওয়া সম্ভবপব। স্থতরাং ভ্রান্তি অজ্ঞতা অপেকা উন্নততর অবস্থা। উষালোক কি অন্ধকার অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ নহে 📍 সেই জন্মই আমরাবিখাস করি অভ্য গুরু অপেকা ভ্রাস্ত গুরু সহলগুণে শ্রেষ্ঠ ; অজ্ঞ শুরুকেও এক সময়ে ল্রাস্থ শুরু হইতে হইবে।

১ । अञाष्ठ अक्रवान ना मानित्न हे त्य अञास्त्र अंश्वान মানিতে इहेरव (क विनन ? नाधन-পথকে অভ্যস্ত না মানিলে কথনই সাধন-নিষ্ঠা হয় না অতি সত্য কথা৷ কিন্তু বিধাতার निर्मिष्टे সাধন পথ অবলম্বন করিলে কি কম নিষ্ঠা হয় ? মনোবঞ্জন বাবু কি সভাই বলিতে চান শুরু ভিন্ন অপর সকলের সাধন পথই স্বকপোল কল্লিত ? আর গুরুবাকা অভ্রাস্ত ইহা কল্পনা করিয়া লইলেও সাধন-নিষ্ঠা হওরা সম্ভব নহে। কারণ हेश कहाना ।

১১। অগতের শৈশবকাশ হটতে বর্তমান সময় পর্যান্ত প্রকাশিত সত্যকে অমান্ত ও অগ্রাহ্ন কবিয়া একজন মানবকে শুকু বলিয়া গ্রহণ করা বালকতা ও ধর্মবিবোধী বলিয়া মনে হয়। চার্বাক, মিল স্পেনসার হৃহতে আবস্ত কবিয়া মহাত্ম। ষ্ট্রশা প্রয়ন্ত সকলেই আমাদের গুরু। সাহিত্য, বিজ্ঞান, দুর্শন, মৌথিক উপদেশ, বক্তা গৃহকর্ম সমুদয়ই ধর্ম-পথের সহায়।

১২। সত্যাসত্য নিণয় না কবিয়া ব্রাহ্মগণ অপরের মতা-মতকে অত্যান্ত বলিয়া স্বীকার করিতে পারেন না: সত্য আমরা তিন্টী উপায়ে গ্রহণ করিতে পারি।

- (क) अञास पुक्ति अनामी, याश अञास ।
- (খ) Conscience যাহা অভ্ৰান্ত।
- (গ) সভ্যের সাক্ষাৎ প্রকাশ, যে সভা সভ্রান্ত।

প্রচলিত ভাষায় এই conscienceকেই বিবেক বলা रुहेब्राट्ड ।

আজ এই স্থানেই উপসংহাব কবিতে হইল। সময় এবং श्रुविधा इहेरन खिवरार खात्र खानक कथा वानव हेन्हा আছে।

রামপুরহাট ১০ই শামুয়ারী ১৮ন৪। বিনীত

শ্ৰীমহেশচন্ত্ৰ ঘোষ।

### ব্রাহ্মসমাজ।

ত্রভিক্ষ সংবাদ-ক্রিদপুরের অন্তর্গত কোটালিপাড়া ছেন, অংক আজ হইতে পারেন, প্রাক্ত নহেন। কিন্তু অজ্ঞতা প্রভৃতি ছানে খুব ছর্ভিক উপস্থিত হইয়ছে। গত সংখ্যক

ত্ত্বকৌমুদীতে আমেরা ভাহার কথঞ্চিং বিবৰণ প্রকাশ ববিয়াছি। অত:পর বিছুদিন ছইল সাধাবণ ত্রাহ্মসমাজ অর 🕫 গ্রাপ্ত লোকদিপের সাহায্য করিবার জ্বন্ত কিছু টাকাসহ ত্রীযুক্ত বাবু কাশাদক্র (ঘাষাল মহাশয়কে ছভিক্ষ-প্রাপীডিত স্থানে পাঠাইরাছেন। ভিনি কোটালিপাডার অন্তর্গত রাধা-গঞ্জ হইতে লোকের অন্নকটেব যে বিবৰণ লিখিয়া পাঠা-ইয়াছেন তাগ অতীব শোচনীয়। তিনি লিখিয়াছেন যে कथात्र जात्मरक हे पिर्न এक वात्र अ था है रक भाग ना। रक १ रक ह বা কচু, লাউ সিদ্ধ কবিরা থাইতেছে। কানী বাবু তথায় উপস্থিত হইলে সাহায্য প্রাপ্তিব আশাষ অনেকে ওঁচোব পিছনে পিছনে ছুটিয়াছিল। ভিনি প্রথমতঃ ভাহাদিগকে তুই, চারি আনা কবিয়া বিত্তবণ কবেন ৷ অবশেষে একনণ ठाउँम ध्विम कविश्रा याश्वा के मितम मन्ना भया छ कि हूरे পাইতে পায় নাই ভাহ।দিগেব প্রতি জনকে এক পোয়া হিসাবে पिट्ड लाशिएलन। पूर्कि कात निवदरण आमता करहाक**ी** जनग বিদাৰক সংবাদও পাইয়াছি। একজন বিধৰাৰ ছটী ছেলে ছিল। एक एक की रिक बाइरेन्ड मिएड ना भाविया (म उपकार शान-ত্যাগ করিয়াছে। অপব এক স্থানে মাঠেব মাঝথানে শৃগাল कुकुरव এक में र्जालारक व मृज्याह शहिमारह । स्रविव স্থাবোকটী অনাগ্যবে মবিয়াছে।

শুনা গেল গ্ৰণমেণ্ট অলকট্ট-প্ৰাপ্ত লোকদিগকে ধান দিতেছিলেন। তাহাবা ধান ভানিয়া ছুই সেব কবিষা চাউল বাথিয়া অবশিষ্ট চাউল ফেবত দিত। এইকপে অনেকেব বেশ সাহায়া হইতেছিল। কিন্তু যে সকল কল্মচাবী ধান বিতৰণেৰ কাজে নিযুক্ত ছিলেন উচ্চাদেৰ অসাবুতা এবং কাজেৰ ফ্রেটাতে গ্ৰণমেণ্ট উক্ত সাহায়া ৰন্ধ করিয়াছেন।

কাশী বাব লিপিষাছেন যে তিনি কুধান্তদিগেৰ হাহাকাৰ এবং ক্রন্দন প্রানতে নিতাস্তই ব্যথিত ইয়া পড়িয়াছেন। এসময়ে যদি ভিনি ভাছাদিগকে উপযুক্তরূপে দাহায্য করিতে না পাবেন তবে তাঁহাকে যাবপর নাহ কট্ট ভাগ কবিতে হুইবে। বাস্থাবিক অবস্থা যেরূপ শোচনীয় তাহাতে সাধাবণ ব্রাহ্মসমাজ এইরূপ হুর্ঘটনায় ক্থনই উদাসীন থাকিতে পাবেন না৷ অথচ সানাবণ ব্রাহ্মসমাজেব তহবিলে এমন অর্থ নাই যাহাতে ছভিক প্রপাডিত লোক্দিগ্রকে যথোপ্যক্ত রূপ সাহায্য কৰা ধাইতে পাৰে। বিগত বৰ্ধাকালে বিক্রমপুরেব ছড়িকেব সাগাবাৰ্থে যে একটা তগৰিল সংস্থাপিত হৃহয়াছিল ভাহাৰট উদ্ভ কিছু টাকা সঙ্গে কবিয়া কাশী বাব বওনা ब्हेश शियाहिन। किन्नु जिनि खानावेशाहिन (य डेक्ट है।का शाय নিংশেষিত হইয়াছে। আশা কবি উপস্থিত তুর্ঘটনায় · हातिनिक ब्टॅंटड (तेम व्टिंडवी मञ्जूष मश्चाराण भागावण ব্ৰাহ্মসমাজেৰ কাৰ্য্যেৰ সাহাব্যাৰ্থ অগ্ৰস্তৰ হইৰেন ৷ এসন্থৰে विनि याश किছু দান কবেন ভাগ সাদ্বে গৃথীত হইবে এবং ডাৰ্ডিক প্রপীডিড লোকদিগের সহায্যার্থ প্রেরণ করা ঘাইরে।

চিঠিপত্র এবং টাকা নিম্নলিখিত ঠিকানায় পাঠাইতে হইবে। তত্ত্ব-কৌমুদীতে টাকার প্রাঞ্জি স্বীকার কবা ঘাইবে ইভি।

সাধ্বেণ রাজসমাজ ২১১নং কণ্ওযালিস খ্রীট ক্লিফাতা।

গুরুচরণ মহলামবিশ।

নামকরণ—গত ১৮ই মাচচ বাবু শশিভূষণ বস্থ এম,এ, মহাশ্রের প্রথমা কঞার নামকরণাফুঠান সম্পন্ন হট্যাচে। শ্রিষুক্ত উমেশচক্র দক মহাশ্র আচার্যোধ কার্যা করেন। কঞার নাম স্বব্রতা রাধা হট্রাছে। জাতিক শ্ব-শিত ৪ঠা মার্চ শিলংস্থ বার্ কৈলাশ চক্র সেনের দ্বিতীয় কন্তার জাতক শ্বান্ত ছান সম্পন্ন ইইয়াছে। বার্ নীলমণি চক্রবর্তী মহাশয় উপাসনার কান্য করেন।

বিবাহ—গত ২০এ ও ২৪এ মার্চ ছইটী ব্রাহ্ম বিবাহ ছইয়া গিয়ছে। প্রথমটীন পাত্রেব নাম বাবু রজনীকান্ত দাস, বয়স ২৫ বংসব। পাত্রী শ্রীমতী কুমুমকুমারী ঘোষ, বয়স ১৫ বংসর। এই বিবাহে শ্রীযুক্ত নবদীপচক্র দাস মহাশয় আচায়ের কাষা করেন। বিত্তীয় পাত্র আমাদের বদ্ধ বাবু কামাথাচবণ বোষেব পুত্র শ্রীমান বজনীনাণ ঘোষ বি, এ বয়স ২৬ বংসব। পাত্রী বাগ্যাচড়া নিবাসী প্রলোকগত মতিলাল মল্লিকেব কলা শ্রীমতী বাম্বজিনী, বয়স ১৫ বংসব। এ বিবাহে শ্রীযুক্ত অঘোরনাথ মুখোপাধায়ে মহাশয় আচার্যোর কাষ্য করেন। ছই বিবাহই ৩ আইন অমুধাবে রেজেইনী করা হইয়াছে।

শোক সাংবাদ—অংশবা ছঃপের সহিত প্রকাশ করি-তেছি যে আমাদের বন্ধু বাবু গোবীনাপ বস্থা একমাত্র শিশু কন্মানীর গ্রহণ শামান্ত মৃত্যু হুইয়াছে। প্রমেশার শোক স্তপ্ত পিতা মাতাব প্রাণে শাস্তি বর্ষণ কর্ফন।

আমনা প্রাক্ষসমাজের আবে একজন হিতাকাজনী বন্ধু হাবাইলাম। সন্তর্গে মাজে ববিনার বায় গুণাভিরাম বজুশা বাহাত্ব একটা বিধনা কলা ও ছইটা নাবালক শিশু সন্তান বাথিয়া জনবোগে ৬০ বংসন ব্যাসে প্রলোক গমন কবিনাছেন। ইনি অনেক দিন সাবাবেশ নাক্ষ্যাজের জনাক সভার সভা ছিলেন। এবং নানাকপে ব্রাক্ষ্যমাজের সেবা কবিনাছেন। ইনি গ্রেণ্যেটের পেন্সন ভোগ করিতেছিলেন। গ্রেণ্যেটি ইনার কায়ে বাহাত্ত্ব উপাধি প্রদান কবিয়াছিলেন। ইহার অভাবে ইহার সন্তানগণ একেবাবে অভিভাবক-বিহান হইয়া পাডয়াতে। প্রমেশ্বর শোকাই সন্তান গণকে সাল্বনা এবং মৃত আত্মাকে শাক্তি প্রদান কর্পন।

প্রচিরি—বাবু নীলনণি চক্রবর্তী শিলং হইতে কলিকাত।
আগমনেব পথে স্থানামগঞ্জে একদিন ইংরেজি হাই স্কুলে
"সাভাবিক ধল্ম" বিষয়ে বক্তৃতা কবেন। স্থানীয় মুনদেশ বাবু নিস্থারণ বন্দ্যোপাধ্যায় এম.এ. বি,এল, মহাশয় সভাগাতৰ আসন গ্রহণ কবেন। আরে একদিন আমাদের শ্রহেয় বন্ধু বাবু ক্লয়ণ্যাশ রায় মহাশয়েব গ্রহ উপাসনা করেন।

### বিজ্ঞাপন।

আগামী ১>ই এপ্রিল বৃহস্পাত্তবার অপবাক্ত ৫১ ঘটকার সময় ১৩নং মিজ্জাপুর ষ্ট্রীটস্থ সিটিকলেজ ভবনে সাধারণ ত্রান্দ্রসমাজের অধ্যক্ষ সভার প্রথম ত্রৈমাসিক আবিবেশন হহবে। বিবেচ্য বিষয়।

- ২। অধ্যক্ষ সভার সভা বাব চণ্ডীচনণ বন্দ্যোপাধ্যাৰ মহশেষেৰ পদ পরিভাগে হেডু শুগু পদ পুৰণ।
  - ত। হিসাব পাবদশক নিয়োগ।
  - 8। निविध।

সা: ব্রা: সমাজ আফিস }

শ্রীবজনীনাপ রাষ

मण्याहक।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১ম সংখা। ১৭শ ভাগ ।

১লা বৈশাথ, শুক্রবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাৎসবিক অগ্রিম মূল্য ২॥৺ সফললে ৩১ প্রতি থণ্ডের মূল্য ১০

#### প্রার্থনা।

হে প্রভো! যাঁহাবা বিশুদ্ধ অন্তরে ভোমাকে অৱেষণ ক্ৰিয়াছেন ও ভোমাতে বিখাদ হাপন ক্ৰিয়াছেন, উচাৰা চিবদিন তোমাৰ আশ্রুকে সুশীতল ছায়াব লায় অন্তৰ্ ক্ৰিয়াছেন: সংসাৰ-তাপে তাঁপিত হইলেই তাঁহাবা তোমাৰ চৰণ-ছায়াতে গিয়া সকল ভাপ জুডাইয়াছেন। ভোমাকে প্রতিদিন সতা বলিয়া ঘোষণা কবি, প্রতিদিন আবাধনাতে তোমাব সভাসকপেব মহিমা কীর্ত্তন কবি, কিন্তু ভয়ে, বিপদে, ছ:খে, ক্লেখে, পাপ প্রলোভনে ভোমাব চবণ-ছায়াকে আশ্রম করিতে পাবি না কেন ? আমাদেব উদিগ্র চিত্ত শাস্তভাৰ বকা কলিকে পারে না কেন ৪ তবেই ত ব্ৰিতে পাৰিতোছ, তোমাকে মূথে সতা বাললেও তোমাকে সতা বলিয়া চিনিতে এখনও বিগম্ম আছে। ত্ককণানিদ্ধ। তোমার স্থাতিল চৰণ-ছাষা আমবা কত দিনে আশ্রয় কবিব গ কত্রদিনে তোমাকে জীবনেব সত্য আশ্রয়ক্তে অবলম্বন কবিব গ তুমি আমাদিগ ক আশাকাদ কব, ষেন আমবা বিশ্বাসিগণেব সেই অবস্থা প্রাথ হইতে পাবি।

### সম্পাদকীয় মন্তব্য।

নির্মাল বায়ু—গোগবাশিষ্ট গ্রন্থের মধ্যে নিম্নণিথিত বচনটা প্রাপ্ত হওয়া যায়,—

" উভাভ্যামের পক্ষাভ্যাং যথা থে পক্ষিণাং গতিঃ। তথৈর জ্ঞান-কর্ম্মাভ্যাং জায়তে প্রমং পদং॥"

অর্থ—"যেরপ পক্ষিণণ উভয পক্ষে ভর কবিয়া আকাশে উদ্ভীন হইযা থাকে, সেইরপ জ্ঞান ও কল্ম উভয়কে অবলম্বন করিয়া সাধক প্রম পদ প্রাপ্ ইইয়া থাকেন।" ইহার অফুরপ একটা বচন খ্রীষ্টায় সাধু টমাস্থ কেশিপেসর প্রণীত শ্রীষ্টের অফুরপ করণ" নামক গ্রন্থে প্রাপ্ত হওয়া যায়। তিনি এক স্থানে বিশিয়াছেন,—"অভিসন্ধির বিশুদ্ধতা ও চিত্তের সরলতা এই উদ্য পক্ষের উপরে ভর করিয়া মাফুষ ঈশ্বর-চরণে উঠিয়া থাকে।" সকল সাধু জনের একই উক্তি। অভিসন্ধির বিশুদ্ধতা

এবং চিত্রের সবলতা এচ হুইটী থাকিলেট, আত্মাব চাবিদিকে এক প্রকাব নির্দ্মল বাযু প্রস্তুত হয় ; সেই নির্দ্মল বাযুতে যে সকল সাধক বিহাব কবেন, তাঁহাদেব পক্ষে ঈশ্বব-সহবাস লাভ कता जा जा विक ७ महस्र । छै। होता देशे त्व व्याल (यह मर्सान) वाम কবিতেছেন, এবং তাঁহাব প্রেম-স্থা নিবন্থব পান করিতে-एक । किन्नु कनमगडिक नानाविध कागा, नानाविध क्यवजा अ নানা প্রকাব পাপ-প্রলোভনেব মধ্যে বাস কবিয়া অভিসন্ধিব বিশুদ্ধতা ও চিত্তেব সর্বতা ককা কবা কঠিন। সচবাচৰ দেখিতে পাই যে, জগতের পাপ তাপের সহিত সংগ্রাম করিতে গিয়া অনেক লোকে আপনাদেব অভিসন্ধিব বিশুদ্ধতা হাবাইয়া কেলেন। বাঁহাবা এক সময়ে অতি মহৎ ও উদাবভাবে কাগ্য কবিতেছিলেন, ভাঁহাদেব কাৰ্যোব মধ্যে কুদ্ৰভাব প্ৰবিষ্ট ২য়। যাঁহাৰা আঘাত পাইয়াও আঘাত কৰিবাৰ ইচ্ছা কৰেন না, বিক্দাচৰণ দেখিয়া সন্থাবেৰ দায়াই চালিত হন, চতুদিকে স্বার্থপ্রতা দেখিয়াও স্বার্থপ্র বৃদ্ধিকে স্থান দেন না, তাঁহারা ध्य ; डीहावारे क्रेबरवत महवाम नाट्य উপगुक, किन्न क्रेबरव ও সাধুতাতে অকপট ও অটল বিখাস ভিন্ন অভিস্থিব একপ বিওদাতা চিবদিন রক্ষা করা ছফব। ঈশ্বর কক্ন আমিবা সেহ অকপট বিশ্বাস লাভ করি।

ঈশ্বরের গুণকীর্ত্তন—শ্রীমভাগবতে আছে :—
সঙ্কান্ত্য-মানো ভগবাননস্ক:
ক্রতান্তভাবো ব্যদনংথি পুংদাম্।
প্রবিশ্র চিত্তং বিধুনোতাশেবং
যথা তমোহকোহ ভ্রমিবাতিবাতঃ॥

"অনন্ত প্ৰমেশবের নাম কীন্তন এবং তাঁহাব মহিমা শ্রবণ কবিতে কবিতে তিনি হৃদ্ধে প্রবেশ কবিষা স্থা বেমন অন্ধকার, প্রবল বাত্যা যেমন মেঘকে অপসারিত কবে, তেমনি মহুষ্যগণেব অশেষ হৃংথ বিদ্বিত কবেন।"

মানুষ যথন সেই অনস্ত ঈশবেব গুণ কীর্ত্তন কবে ও শ্রবণ করে, তথন ঈশব তাহার হৃদয়ে উদিত হন, এবং তাহার হৃদয়ের সমস্ত হৃংথ দূর কবেন। যেমন স্থাের প্রকাশে পৃথিবীর অন্ধকার দ্বীভূত হয়, এবং বায়ুব প্রভাবে আকাশের মেব বিদ্রিত হয়, সেই প্রকার ভগবানের প্রকাশে মানব-হৃদয়ের সমস্ত তঃথ যন্ত্রণা দ্রীভূত হইরা যার।

অনেক সময় আমাদিগের আয়ার অবন্য এরপ হয় যে, আর ধর্ম-প্রসঙ্গল লাগে না, আর তাঁহার নামে ক্ষৃচি হয় না, উপাসনায় প্রাণ বসে না, সাধু-সঙ্গ ভাল লাগে না। কিন্তু তথন যদি তাঁহার মহিমা কীর্ত্তন না করি, তাঁহার প্রণাহ্যাদ করিতে প্রার্ত্তনা হই, তাঁহার উপাসনা পবিত্যাগ কবি, তবে আবেও এই হইয়া অবশেষে তাঁহা হইতে একেবাবে বিচ্তুত হইয়া পড়ি। কত লোকের অবন্য এরপ হইতে দেশা গিয়াছে। প্রথমে উপাসনায় অক্চি হইয়াছে, পবে ক্রমে তাঁহার প্রণাহ্মকীর্ত্তন পরিত্যাগ করিয়া ম্লান হইয়া পড়িয়াছে, অবশেষে একেবাবে পতন হইয়াছে।

আত্মার অবস্থা যথন এরপ হয়, তথন তাঁহার গুণাফুকীর্ত্তন পরিতাগ করা সঙ্গত নয়। ববং এ অবস্থায় আরও বিশেষ ভাবে তাঁহার নাম কবা উচিত। এরপ করিতে কবিতে তিনি অন্তরে প্রবিষ্ট হন এবং হৃদয়ের সমস্ত তুঃথভার হবণ করেন।

এই গুণ কীর্ত্তনের জন্ত আমাদিগকে প্রস্তত হইতে হইবে, এবং তাঁহাব নামে ডুবিতে হইবে, তাঁহার চিস্তনে আপনাকে নিমগ্র কবিতে হইবে। তিনি আন্দ্রিকাদ করুন, আমবা তাঁহাব নাম কীর্ত্তনে ও তাঁহাব ধাানে মগ্র থাকি:

একনিষ্ঠ সাধন—তাঁহাতে প্রীতি এবং ভক্তিলাভ করিবাব অন্ত সজন এবং নিজ্জন ছট প্রকারেন সাধনেবই প্রয়োজন। প্রথমে তাঁহার বিষয় শুনিতে হইবে ও তাঁহার বিষয় কার্ত্তন কবিতে হইবে। ইহা অপর সাধকদের সঙ্গে এবং ভক্তদেব সঙ্গে না হইলে হয় না। তাঁহাদেব সঙ্গে বিসয়া কার্ত্তন করিতে হইবে ও শুনিতে হইবে, এইরূপে সজনে সাধন করিতে হইবে।

একদিকে যেমন স্ভন সাধন প্রয়োজন, অপেব দিকে তেমনি তাঁহাকে নিজ্জনে ধ্যান করিতে হইবে এবং তাঁহাকে পূজাকরিতে হইবে। এই যে সজন ও নির্ক্তন সাধন এই উভয় মথন সন্মিলিভ হইবে, তথন প্রেম ভক্তি জাগিবে। কিন্তু ইহা কি প্রকাবে করিতে হটবে—না একাগ্র চিত্তের সঙ্গে, একনিষ্ঠ সদ্ধের সহিত; তাঁহাকে স্ক্রোধ্য স্ক্রোজ ও স্কল হইতে মূল্যবান জ্ঞান করিতে ১হবে। এই লাবে পূজা করিতে ২ইবে। এইভাবে না ক্রিলে ঠাঁহাকে ল'ভ ক্রা যায় না। এক মনের সঙ্গে অৱেষণ কবিতে ২ইবে। ইংবাঞীতে একটী কণা আছে Singleness of mind, সকল প্রবাব বস্তুব মধ্যে তিনি প্রম বস্তু, সকল প্রকার সম্পদের মধ্যে তিনি প্রম সম্পদ, এইভাবে যদি সাধন করা যায় এবং সর্বপ্রকাব বাধাব মধ্যে যদি তাঁহার জন্ত প্রাণ ব্যাকুল হয়, তাহা হইলে এক মনেব সহিত অধেষণ कता इम्रा এই উপদেশ সর্কণাস্তেরই। বাইবেলে আছে— "Lovethy Lord with all thy heart, with all thy mind and with all thy strength"—সমুদর মন, সমুদর শৃক্তি ও সমুদর প্রাণের সহিত তাঁহাকে ভালবাস।" এখানেও তাই; এক

মনে পূজা কর। এই এক-নিষ্ঠতা রক্ষা করা বড় কঠিন। সপ্তাপেক্ষা আকাজ্জার বস্তু তিনি, তাঁহাকে লাভ করাই সর্বাপেক্ষা
ক্ষ্প, এরপ অবস্থা লাভ করা বড় কঠিন। কত প্রকার অবস্থা
আমাদের মনে আসে, তাহাতে হৃদয় অস্তুদিকে যায়। একাগ্রভাবে তাঁহাকে অমুসন্ধান করিতে দেয় না। কিন্তু একাগ্রভাবে অস্বেষণ না করিলে তাঁহাকে লাভ করা যায় না। ঈশর
কর্পন, যেন আমরা সকলে একাগ্রভাবে তাঁহাকে পূজা করিতে
পারি।

প্রকৃত নির্ভর—ভক্তগণ চিবদিন প্রার্থনা করিয়াছেন, "হে প্রভো! তোমাব গুণে আমাকে বাধিয়া রাথ, আমার গুণে আমি বাধিয়া রাথিব তাহা নয় কিন্তু ভোমার গুণে বাধি"। প্রকৃত নির্ভর যতদিন না থাকে, ততদিন এভাব থাকে যে আমাব গুণে ঈশ্বরকে বাধিয়া রাথিব। আমরা তাঁহাকে ভক্ত-বংসল বলি, তথন এই ভাবি যে আমার ভক্তিতে বাধিয়া রাথিব। আমার ব্রাক্লতাতে পাইব, আমার সাধনে তাঁহাকে পাইব, এই প্রকার নিজের সাধনের উপর নির্ভব থাকে। কিন্তু যথন প্রকৃত বিনয় আসে, তথন প্রাণ বলে "তোমাব গুণে আমাকে বাধিয়া বাথ আমার গ্রেণে নয়।"

যথন জীবনে নানারূপ প্রীক্ষা উপস্থিত হয়, যথন বিপদের প্রবশ ঝঞ্চাবাতে পতিত ২ই, চতুন্দিক অন্ধকার দেখি, সাহায্য কবিবার আব কেহ পাকে না তখন ব্রিতে পারি, আমাদেন গুণে বাঁধিয়া বাপা কত কঠিন। একটি আথাায়িকা আছে:— একটি লোক পাহাড়েব উপর দিয়া চুইটি শিশু সম্ভান লইয়া যাইতেছিলেন। পথ অতি ছগম। তিনি স্ভান ভয়কে বলিলেন, "তোমবা সাবধানে এদ, পথ বড ছুগম।" এই বলিয়া ছোট শিশুটাৰ হাত ধবিয়া লইয়া চলিলেন এবং বজটিকেও ধরিয়া শইতে চাহিলেন। কিন্তু সে কোন মতেই তাহার হাত ধরিতে দিল না। সে বলিল, "না, তুনি ধরিও না, আমি নিজে ধরিয়া যাইব।" পিতা তা∌াকে অনেক ক্ৰিয়া বৃঝাইলেন, তাহার পডিয়া যাইবার যে অনেক আশকা আছে ভাষা বার বাল বশিশেন, কিন্তু সে কিছুতেই তাঁহাকে ধবিতে দিল না, নিজে পিতাৰ হাত ধবিয়া চলিল। কমণ্ড্যা তিনি ছোট শিশুটীকে ধবিষা চলিংশেন। ক্রমে আমধিকতর সফটাপন্ন স্থানে আদিয়া উপস্থিত। কিন্তু এথানে আদিয়া বঙ শিশুটী আৰু পিতাকে ধবিয়া থাকিতে পাৰিল না, ভাহার গদশলন হইল, দে পডিয়া গিয়া আঘাত প্রাপ্ত হহল ৷ অবশেষে পিতা ছোট শিঙ্টীকে নিরাপদে পার করিয়া তাহাকে আসিণা ধরিয়া তুলিলেন।

এই গল্লটি আমাদের জীবনে বড় থাটে। আমরা যধন তাঁহাকে ধরিয়া থাকি, তথন পড়িয়া যাই, সাজা পাই। আর তিনি যাহাকে ধরিয়াছেন, সে নিশ্চিস্ত। এই জল্প ভক্ত বলিয়াছেন, "হে মাতঃ তোমার গুণে আমাকে বাঁধিয়া রাথ।"

হঠাৎ যদি একটা তীর আসিয়া গার লাগে, হঠাৎ বৃ্ঝিতে পারি না কভদ্র বিঁধিল, তখন জানিতেও পারি না। পরে ষণন দেশি কতদ্র বিধিরাছে, তথন জানিতে পারি, কত বেছনা। মানুষ যথন পাপে প্রবেশ করে তাহাও এইরূপ।
হঠাং যথন পাপে পড়ে বুঝিতে পারে না, কিন্তু পরে বুঝিতে পারে। তথন ব্যাকুল হইয়া পড়ে। তথন সেই পাপের যাতনা হইতে রক্ষা পাইবাব জন্ত যে বাহা বলে তাহাই করে।
মানুষ যথন রোগে পড়ে, তথন যে যাহা বলে তাহাই করে।
কিন্তু কিছুতেই যথন আরে ভাল হয় না, তথন যথার্থ চিকিৎসক্ষের কাছে যায়।

আয়াব বিষয় এরপ— পাণেব ব্যাকুলভাতে, অশান্তিতে যে যাহা বলে সে দিকেই ছুটিয়া যায়। কথনও গ্রন্থের কাছে, কথনও মান্থেরে চরণে যাইয়া পড়ে। কিন্তু অবশেষে যথন দেখে যে কিছুভেই আর কিছু হয় না, তথন বৃঝিতে পারে সভা স্বরূপ মিনি, তিনি ভিল্ল আব গতি নাই। তথন তাঁহার শ্বণাপল হয়, তথন বলে ভুমি আসিয়া আমাকে ধর, আমার শুণে নয়, কিন্তু ভোমাব শুণে আমাকে বাঁধিয়া রাখ।"

আনাদের জীবনে ইকা কতবার অক্তত্তব করিয়াছি।

যথন বুঝিতে পারি আর কিছুতেই কিছু হইল না, তথন
আনাদেব এই অবভা হয়। প্রমেশ্ব করুন আমরা তাঁহাব

শ্বণাপ্র হই তিনি আমাদিগকে ধরিয়ারাপুন।

### সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

''সত্যে কর প্রীতি পাইবে পরিত্রাণ।"

নীক্ত একদিন শিষাগণকে উপদেশ দিয়া বলিলেন—"তোমবা সভাকে জ্বান সভাই ভোমাদিগকে স্বাদীন করিবে।" মহায়া বাজা রামমোহন বার ভাঁহাব প্রণীত একটা সঙ্গীতে বলিয়া-ছেন—"সভ্যে কর প্রীতি পাইবে পবিত্রাণ।" এই উপদেশেব গুঢ় তাংপ্রা কি গু

সাধারণ মানবের মন্ত্র সংসাবে নানা প্রকার ভয়ে আরক্ষ থাকে, মৃত্যু ভয় রিপদ ভয়, পোক ভয় ইত্যাদি। এই সকল ভয়ের জয়্র মানর মন ল জগতে অসংকোচে কায়্য করিছে বাবে না, অনেক সময়ে কক্তরা বৃঝিয়াও তাতার অয়ৢয়য়য় করিছে পাবে না, কিংবা কোনও কায়্য করিয়া ছলয়ে শান্তি-লাভ কারতে পাবে না। একদিকে য়েমন ভয়-য়ানিত সঙ্গোচ অপরদিকে তেমনি আসক্তি-জনিত সংকোচ। বিশেষ বিশেষ মানবের বিশেষ বিশেষ পদার্থের প্রতি আসক্তি আছে। কাহারও ধনে আসক্তি, কাহারও মানে আসক্তি, কাহারও ইন্দ্রিয়ালিত স্থথে আসক্তি। এই সকল আসক্তিকে ঝিয়গণ আয়ায়৽ বজ্পয়প করিয়া বর্ণন ক্রেরয়াছেন। এই সকল রজ্ময়াই মানবায়া পাথির বিয়য় সকলের সহিত আবেদ্ধ হইয়া থাকে।

यि मास्यदक जानकि ও जग्न धरे उज्ज ध्वकात शान हरेट मुक कत्रा याग्र, जारा हरेटन टम जाटनक शतिमार वासीन हरेटज

পারে। এই উভয় প্রকার বন্ধন হইতে মানবায়াকে মুক্ত করিবার উপায় কি? রামমোহন রায় বলিলেন,—"সত্যে কর প্রীতি পাইবে পরিত্রাণ।"

ধিনি বিশুদ্ধ অন্তরে সভাকে প্রীতি করেন, তিনি আর এক জগতের লোক। তিনি এই সংসারে বাস করিয়াও ইহার মধ্যে অবস্থিতি করেন না। তিনি বাস্তবিক পদ্ম-পত্রের জ্লের ভাষ সংসার মধ্যে রহিয়াছেন, অথচ ইহাতে লিপ্ত ইইতেছেন না। বাহিরে দেখিতে তিনি সংসারে নানাপ্রকার কাঞ্জ করিতেছেন, কিন্তু তাঁহার মন ঈখর-চরণে অবস্থিতি করিতেছে। স্ত্রাং মৃত্যু-ভর, বিপদ্-ভয় বা লোক-ভয় কিছুতেই আর তাঁহার চিত্তকে বিচলিত করিতে পারে না। প্রথম মৃত্যু-ভুষ, ঋষিগণ বলিয়াছেন, "একমাত্র তাঁহাকেই জান, যাহাতে মৃত্যু তোমাদিগকে ব্যথা দিবে না।" যে সকল বস্তুর উপরে মৃত্যুর অধিকার, মৃত্যু যাহাদিগকে বিক্বত ও পরিবর্টিত করিষ্টত পাবে, আমাদের প্রীতি যতদিন সেই সকল বস্তুতে আহাত্ত থাকে, তত্দিন আমবা মৃত্যুব অধিকার মধ্যে বাস করি, এবং মৃত্যুর নামে কম্পিত হই; কিন্তু আমাদের প্রীতি যথন সভ্যে আর্প্ত হয়, তথন আমবা অমর-ভূমিতে আবোহণ কবি, কারণ সভা, ভাষে, প্ৰিত্তা প্ৰভৃতি অমর। এ স্কল বিষয় মৃত্যুর অধীন নহে। স্তরাং থাহাদের চিত্ত স্তা, জার, প্রীতি, প্রিত্তার আধারম্বন্প প্রমেশ্বেতে এক্তরূপে অপিত হয়, তাঁহাবা এই মঠাধামে থাকিয়াও অমরধামে বাস করিতে থাকেন। মৃত্যু আর তাঁহাদিগকে ব্যথা দিতে পাবে না।

মৃত্যু-ভয়ের জ্ঞায় বিপদ-ভয় বা লোক-ভয়ও তাঁহাদিগতে ভীত করিতে পারে না। লোকে বিপদের ভয় এত অবিক পরিমাণে কবে, তাহার কারণ এই, পাছে তাহাদের অনিট **१प्र. (कान 9 व्यकाव चार्यंत शांन इप्र। किन्दु ये। इरिन्द मन** স্বার্থের পাশে বন্ধ নহে, তাঁহাদের দে আশকাতে উদ্বেগ নাই। তাঁহাবা ধীবচিত্তে বিপদেব প্রতিকার করিবাব চেষ্টা করেন এবং তাঁথাদেব মধ্যে যতটা হয়, প্রতিবিধানের চেষ্টা করিয়া নিজ কন্তবা সাধন কবিয়াছেন বলিয়া ধীর ও প্রশাস্ত ভাবে বাদ করিতে থাকেন, ফলাফলের ভাব ঈশ্ববের হস্তে বাখিয়া দেন। এইরূপ লোকেব প্রতিকূলতাচরণেও তাঁহাদের শত্রুতার ভাবেব উদয় হয় नां। यथान चार्थ महेत्रा हानाहानि, (मई থানেই ঘোৰ শত্ৰতা। গীতাকাৰ বলিয়াছেন—"সঙ্গাং সংশায়তে ক্রোধঃ" আস্তি ইইতেই ক্রোধ বা শক্তভার সঞ্চার रप्र। (यथारन चामिङ नाहे, भियारन मळाठाव छ कावन ना**हे**। সত্যে থাহার চিত্ত অপিত, তিনি নিঃস্বার্থতার বিমল ও সুন্নিগ্ন বাযুতে বাস করিতেছেন; সেথানে শক্তভা নাই। সুভরাং সত্যে প্রীতি করিলেই প্রকৃত স্বাধীনতা লাভ করা যায়।

#### জ্ঞান ও ভাব।

ভাক সোতের জলের স্থায় আদিতেছে ও বাইতেছে; প্রাতে জোয়ারের জলের স্থায় ধরতর বহিতেছে, অপরাত্মে

ভাঁটার স্থায় সদয়ক্ষেত্রকে শুষ্ক রাথিয়া যাইতেছে। এইরূপ, ভাব मर्खना প্রবর্ত্তনশীল। অনেক সময়ে ভাবের উৎপত্তি ও বিলয়ের কাবণ নির্ণয় কবা যায় না। একদিন প্রাত:কালে উঠিয়া সমুদায় বেন নৃতন দেখিতেছি, ফদয়ে নৃতন আশার সঞাব হইয়াছে, মনে নব ফুর্ত্তি আসিয়াছে, সমুদায সবস ও প্রীতিপ্রদ বোধ হইতেছে, স্কল কার্যোই কি এক মিষ্টতা অমুভব কবিতেছি। প্রাতঃকাল এই ভাবে গেল; সন্ধানা আসিতে সে আনন্দ ও সে মধুরতা তিবোহিত হইয়াছে; মন শেন অবসাদে ডুবিতেছে. চত্দিক যেন নিবাশ অন্ধকারে পূর্ণ হইতেছে। অথচ এরপ প্ৰিবৰ্ত্তনেৰ কোনও কাৰণ লক্ষ্য ক্ৰিতে পাৰা যাইতেছে না। সমস্ত দিনেব মধ্যে এমন কিছুই ঘটে নাই যাহাতে চিত্তকে অবসাদে মগ্ন কবিতে পাবে। এই কাবণে বোধ হয় ভাবেব উত্থান ও পতন অনেক প্রিমাণে শারীবিক অবস্থার উপ্রেও নির্ভব কবে। ভাবেব এই পরিবর্ত্তনশালতা লক্ষ্য কবিষাই ভগবালীতাকাৰ অৰ্জ্যনৰ মূথে নিম্নলিখিত উক্তি দিয়াছেন :—

চঞ্চলং হি মনঃ রুষ্ণ প্রমাণি বলবৎ দূচংৎ। তস্থাহং নিগ্রহংমন্তে বায়োগিব স্থৃচদ্দবং॥

"(হু কুফা মন অতিশ্য চঞ্চল ও অতিশার অনবহিত; সেই মনকে সংযত কৰাকে বাযুব সংযমেৰ স্তায় ছফৰ বলিয়া মনে কবি।" বাযু যেমন সভত 'চঞ্ল, সভত বহমান, সদ্ধেব স্তুত চঞ্ল ও স্তুত বহুমান। ভাবরাশিও সেইকপ किह छान এ প্রকাব নহে, তাহা নিবেট পাষাণ খণ্ডব ন্থায়; ভাহা সভ্যের উপরে প্রতিষ্ঠিত, স্কুতরাং ভাহাতে পবিবর্ত্তন দৃষ্ট হয় না। এক বাক্তি যতদিন স্কুত্ত ও সবল ৰহিয়াছে, তভুদিন উৎসাহের সহিত কাৰ্য্য কৰিতেছে, ভাহাৰ মধে প্রসরতাও উৎসাহের চিত্র লক্ষিত হইতেছে; সে কত আশার কথা বলিতেছে, কত মানন্দের সমাচার দিতেছে ৷ किछ (में वाकि यथन (तांश भंगांदि भंगन कृतिगार्छ, उश्न হয়ত ভাহার মুখে অফুবিধ কথা শুনিতে পাওনা যাইতেছে, নিবাশা ও নিবানন্দেব সমাচাব শ্রবন কবা যাইতেছে। জ্ঞান সম্বন্ধে এরূপ হইবার সম্ভাবনা নাই। মনে কর সে বাজি একটা ভান বা কোনও একটা ঘটনা ভাবনে প্রত্যক্ষ ক্ৰিয়াছে, সেই বস্তু বা সেই ঘটনা তাহাৰ স্মৃতিতে মুদ্রিত হইষা বহিষাছে। তাহাব পক্ষে তাহা অস্বীকাব কবা কি সম্ভব ৷ মহাবোগে আক্রান্ত ২ইলেও যতক্ষণ তাহাব সংজ্ঞা একেবাবে বিলুপ না হইতেছে, ততক্ষণ তাহাকে জিজ্ঞাসা कविलाहे (म श्रोकान किन्दि (य, (म जाहा (मिथिया) । জ্ঞানের পক্ষে আর প্রাতঃ সন্ধ্যা নাই; অহুকুল বা প্রতিকূল অবতানাই। জ্ঞান চিব-জাগ্রত।

জ্ঞান ও ভাবের মধ্যে প্রকৃতিগত এই বৈষম্য স্মর্ণ রাখিলে ধর্মজীবন গঠন বিষয়ে কিঞ্চিৎ সাহায্য হইতে পাবে। ধর্ম-জগতের সাধকদিগের মধ্যে আমরা ছই প্রবাব ধর্মজীবন দেখিতে পাই। এক শ্রেণীৰ সাধকেৰ ধর্মজীবন ভাব-প্রধান, অপব শ্রেণীৰ ধর্ম জীবন জ্ঞান-প্রধান। থাহাদেৰ ধর্মজীবন ভাব-প্রধান তাঁহারা সর্বদা ভাবের তরঙ্গের উপরে ছ্লিতেছেন। কথনও উৎসাহে ছুটতেছেন, কথনও বিপদে মান হইয়া পড়িয়া | করিলেই দেখিতে পাই ব্রাহ্মসমাজ বালক বালিকার শিক্ষার

থাকিতেছেন। এই শ্রেণীর সাধকদিগের ধর্মামুনাগ ও कार्रगारमाह ज्ञानक शविमार्ग नमविधामी ७ नमनाधक मिर्गत উপরে নির্ভর কবে। যদি সোভাগাক্রমে তাঁহারা কতকগুলি উৎসাহী লোকেব সহবাস লাভ কবেন, তাহা হইলে 'চাঁহাদেব 9 উৎসাহ প্রবল থাকে, তাহাদের ধর্মাতুবাগ উজ্জ্বল হয়; আব যথন তাঁহারা একাকী হইয়া পডেন, তথন উৎসাহ মনীভূত হইয়া যায়। কিন্তু জ্ঞান-পথাবলম্বীব ভাব এ প্রকার নহে। জ্ঞান স্বাধীন ও স্বতন্ত্র, তাহা প্রমুখাপেক্ষী নহে। জ্ঞান, দশ জন সমবিশ্বাসী মিলিলে অধিক হয় না, কিংবা সঙ্গবিহীন হইলেও হ্রাসপ্রাপ্ত হয় না। জ্ঞানের ভূমি স্বদৃচ ভূমি।

কিন্তু ইহাও বিচার কবিতে হইবে, কার্যা ও উৎসাহেব मृत्य ভाব। य भीवत्न ভाব नारे, क्विन खात्नवरे প्राधारा দে জীবন অনেক সময় নি**ক্ষম আগ্র-স্থুও তুপ্তিতে পর্যা**বসিত হইতে পারে। এই জন্ত আমাদেব ধন্মজীবনে জ্ঞান ও ভাব উভয়েবই তুল্য মাত্রাতে সমাবেশ প্রার্থনীয়।

वर्खमान ममरम द्विष्टि भाउमा (य, बाक्सममास्क्रित धर्म-कीवरनव मर्या ভाবেवरे शायाजा। ध्याकीवनरक कारनव स्रम्ह ভিত্তিব উপরে স্থাপন কবিবার নিকে সেকপ দৃষ্টি নাই। এই ममाज्ञ कुल वाक्तिश्व (यम मुन करमत उरमार्ट उरमाव्टि इट्रा কাৰ্য্য কৰিতেছেন, একেব অনুবাগে অপবেৰ ক্দয়ে অনুবাগ স্ঞারিত ইইতেছে। ভাহাতে কার্যা এক প্রকান চলিতেছে। কিন্তু সেই উৎসাহ ও কাণ্যকে জ্ঞানেব স্থদত ভিক্তিব উপবে স্থাপিত কবিবার জন্ম বিশেষ মনোযোগ দৃষ্ট ইন্টেছে না। ত্রদ্ধ-বিদ্যালয়ের ভাষে যে ছই একটা জ্ঞানালোচনাথ উপায় আছে, তাখঙে মনোযোগেৰ অভাবে ভাল কৰিয়া চলিতেছে ना। आमाप्ति कार्यात ভाবে এই প্রকার দেখাইতেছে एर. আমবা লোক ডাকিবাৰ জন্মই বাগ্, কিন্তু যাহাৰা আহুট হইয়া আসিতেছে, তাহাদিগকে শিক্ষত ও প্রকৃত ভিত্রি উপরে হাপিত কবিবাব জন্ম আমানের কোনও ১০ নাই। এমন কি যে দকল বালকবালিকা আমাদেব গৃহে জানুৱাছে ও আমাদের ক্রোডে বৃদ্ধিত ইইতেছে, তাথাদিগ্রেও স্কুদ্র ভিত্তি উপবে স্থাপিত কবিবাৰ বিষয়ে আমানের প্রাথান নাই। আমৰা এ বিষয়ে মতই চিম্বা করিতেছি, তত্ত্ অম্বত্ত ক্ষিত্তিছি মে. বালকবালিকা ও যুবক-যুবতীদিগকে- ত্রাহ্মধন্ম বিষয়ে স্থানিক্ষিত ও স্থদত ভিত্তির উপবে স্থাপিত কবিতে না পাবিলে আজ-गमारक्षित कामा कथनहे द्यांग्रिक लाख हटेरव ना ।

বাহিরে দেখিতে, চুই শত লেকে আরু ই ইয়া আদিল किन्न करमक वरनत ना याहेरा याहर छाहात महन ५०० ६५% শতজন সমাজ ত্যাগ করিয়া গেল, ভাহাতে লাভ কি > ভাগ অপেক্ষা বদি পঞ্চাশ জন আদে ও সেই পঞ্চাশ জন, শিক্ষাৰ গুণে প্রকৃত উন্নত জীবন লাভ কবে, তাহা কি অধিক স্পৃহনীয় নয়। প্রচারের বাাপ্তি অপেক্ষা গভীবতা কি ভাল নতে ? কার্য্যের ক্ষেত্র অল্লায়তন হয় তাহাতে ক্ষতি নাই, কিমু সেই স্বরায়তন ক্ষেত্রে যাহাতে ভাল ক্রিয়া কাজ ক্রিতে পারি আমাদের সেই দিকে দৃষ্টি থাকা আবশ্রক। এই বিষয়ে চিন্তা

জক্ত যে কার্য্যে হস্তার্পণ করিরাছেন, ভাহাতে বদি সম্চিতক্সপ কৃতকার্য্য হইতে পারি তাহা হইলেও অনেক পরিমাণে ভবিষাতের ভিত্তি স্থাপন কবা হয়। জগদীখর আমাদিগের সকলকে এই সকল গুরুতর বিষয়ে মনোযোগী কর্ফন।

#### धर्म्म-জीवत्नत वर्ष गणना ।

আজ বর্ষশেষ দিনে যদি আমবা আমাদের জীবন শ্মা-লোচনা কবি, তাহা হইলে বোধ করি তাহা অসাময়িক হইবে না। প্রাচীন সঙ্গীত পুস্তকে.—বাজা রামমোহনের সঙ্গীত পুস্তকে, একটা সঙ্গীতে একটা পদ আছে:—

> "গত হয় আয়ু যত, স্নেহে কহ হ'লো এত, বৰ্ষ গোলে বৰ্ষ বৃদ্ধি বলে বন্ধুগণে।"

এট পদটা বলিয়া তিনি আশ্চর্যান্তিত হইরাছিলেন। আযু ক্রমে কমিরাই ঘাইতেছে, ইহা সভা কি না ? পৃথিবীর জীবন যদি তোমার ৬০ বংসব নির্দিষ্ট থাকে, আজ তাহার এক বংসর বাদ গেল কি না ? কিন্তু এইকপ কি আজই এক বংসব শেষ হইল ? ना. यङ्गिन পृथिवीटङ आनिमाइ वर्मत वर्मत এই ऋर्भे हिना ৰাইভেছে ? ইহাৰ কি কোন ধোঁজ ধৰৰ বাথ ? এপন ত গোলে माल जुलिया चाइ, (थाँक थवत नहें उड़ ना ; किन्द এक पिन (य এইকপ অহিসাবেট হিসাব শোধ হইয়া যাটবে, একদিন যে क्ष्री९ (पृथित ७० वरमत्वर चान एक मुरुखं । वाकि नारे। उथन আবাৰ একটুকু ৰেণী চাহিলেও পাইবে না। তথন যতই কেন ♦ाम्राकाि कत नां, लामारक स्मिन हिल्मा याहेरछहे ३हेरत। অভএব আজ বর্ষশেষে এ বংশবেব হিসাব দেখ। গোলমালে चाक जात गाहेटल निश्ना। वर्धत व्यथम मित्न वा धांतरनत ध्यंश्य मिरन याश विनियां ছिला जाना कतियां है कि ना ? सिट नांधु ৰাক্য স্বরণ কব:- "যাহা কর্ত্তব্য ছিল, তাহা কবিয়াছি, যাহা चक्छना हिल जोश कति नाहे,—ना याहा चक्छना हिल जाहाहे कतिवाहि, याश कर्छवा हिन छाशव किहूरे कति नारे, नवरे ভिलिया शिवाहि," এইরপে হিসাব পরিষ্ঠার করিয়া বাথ , এবং পিতার হিসাবে অর্ণাক্ষরে নিজ নাম সই দিয়া রাথ। চূডান্ত हिमात्वत मित्न तम्थार्टें अभवित्व। भीवत्न राम थां म लख, আবার বর্ষশেষে তাহা উপস্থিত করিবে।

ভাই! পৃথিবীর জীবন কমিতেছে, তাছাতে ভাবিবার বিকাশ হইবে না। আবাধনা ভিন্ন কবানও আন্থান পূণ বিকাশ হিছু নাই; ইহা ত কমিবার জন্তই হইবাছে, ইহা কমিবেই। কিন্তু সন্থাও চাহিলা দেও অনস্ত জীবন বাড়িতেছে কি না? আনুর বাড়া কি পুণিবীর এক বৎসর কমিরা, ধর্মা-জীবনে এক বৎসর বাড়িল, ইহা যদি হয়, তাহারই নাম অনস্ত জীবনে বাড়া। ধর্মজীবনে সেই নবজীবনের দিন হইতে বর্ষ স্বানা করিয়া দেও, এবার ২০ বৎসরের পর ২০ বৎসর হইল কর্মান বাড়া। ধর্মজীবন বাড়ে। আবার কল সাধনে ধর্মজাবাদি বাড়িতে পাবে, কিন্তু পুণাল জীবন বাড়িবার পক্ষে আরাধনাই বিকাশ হয়। বিকাশ হয়। বিকাশ হয়। বিকাশ হয়। বিকাশ হয়। বিকাশ হয়। বিকাশ হয় বিকাশ বাড়াবার বিকাশ হয়। বাড়াবার বাড়াবার বিকাশ হয়। বাড়াবার বাল বাড়াবার বাড়াবার বাড়াবার বাড়াবার বাড়াবার বাড়াবার বাড়াবার বাড়াবার

এক বৎসর কমিরাছে, কিন্তু ধর্মজীবন ছয় মাস বাজিয়াছে।
গেল এক বৎসর, হইল ছয় মাস, ইহার অর্থ কি ? ইহান অথ
এই, এক বৎসরে যতটা সময় তুমি ঈশর মননে, ঈশব-চিস্তার.
ঈশর-দেবায় দিয়াছ, অর্থাৎ যতক্ষণ প্রভুকে প্রাণে রাথিতে
পারিয়াছ, ততটাই তোমার যথার্থ জীবন, নতুবা অল জ্ঞানে
জীবন এক বৎসর হইলে যে, ধর্মজীবনও এক বৎসব হইল তাহা
নয়। প্রাচীন ঋষিও বলিয়াছেন:—

"তরবো পি হি জীবস্তি মৃগপক্ষিণঃ সজীবতি মনোযক্ত মননেন হি জীবতি :"

তরুরাও জীবিত আছে, মৃগপক্ষিবাও জীবিত রহিয়াছে।
সেই জীবনই যপার্থ জীবন, যাহা ঈশ্বর মননেব দারা জীবিত।
তাই হিসাব করিয়া দেখ, এক বংসরে কতটা হইয়াছে।
ছয় মাস হইলে তাহাই জীবন বলিয়া গৃহীত হইবে। তাই এক
বংসব পৃথিবীব গেল, কিন্তু শর্গে ছয় মাস বাডিল, এই রূপে ও
যাহাদের জীবন বাড়িতেছে, তাহাবাও ধন্তা সকলেই এ
হিসাবে দেশ কত জীবন বাড়িয়াছে।

এ জীবন বাডে কি উপায়ে গ যদি ঈশর মননাদি ছাবা এ ফীবনেব হিসাব গণনা হয়, তবে তদারাই ইহা বাডে। निতा ने भेत्र आत्राधना कवित्व, এक पिन ७ एगन वक्षा ना गात, তাহা হইলেই এ জীবন বাড়িবে। কিরূপে সেই আবাদনা সম্পন্ন করিব ? ভক্তিভাজন শ্রীমন্মহর্ষি দেবেক্রনাগ এ বিষয এইৰূপ উপদেশ দান কৰেন—"সতাম জ্ঞানমনস্থম ব্ৰহ্ম আনন্দৰূপ মমৃতং যদ্বিভাতি শান্তম্ শিবম অবৈতম্" এই বীজ বা পুণাচীন समित्र এই मञ्ज উচ্চারণ পূর্বক নিজে স্বাধীনভাবে বা কোন পুত্তক অবলম্বন করিয়া নিত্য তাঁহাব আরাধনা কবিবে , আমল: ঐ প্রাচীন বীজেব সঙ্গে "গুদ্দমপাপবিদ্ধম ধ্যাবহং পাপরুদ• ভগেশন" এই বীজ ও যোগ কবিষা দিতে বলি। গাঁহাবা নিছে স্বাধীনভাবে মুথে বলিয়া, বা চিন্তাতে ঐ বীক্ষ স্বল উচ্চাবণ প্ৰক উহাকে সমুথে বাখিয়া, উত্তমকপ তাহাৰ আবাদনা कतिएक शारतम, जांशावा जाशाहे कविरवम, आव गांशादा <u> সেরপভাবে আবাধনা কবিতে পাবেন না—ভাঁহাদেব প্রথম</u> শিক্ষাৰ জন্ম বা চিবদিনেৰ জন্মই পুস্তক অবলয়নে আবাধনা কৰা উচিত। কিন্তু স্বাধীনভাবে প্রার্থনা করিবেন। আরাধনা বাদ দিয়া শুদ্ধ প্রার্থনা কবিলে বা আবাধনার সঙ্গে প্রার্থনা, উদ্বোধন, উপদেশ সকল জড়াইয়া এক উপাসনা কবিলে আয়াব পুন বিকাশ হইবে না। আবাধনা ভিন্ন কখনও আত্মাৰ পূণ বিকাশ হইতে পাবে না। আরাধনা বাদ দিলে তাহাকে এক-পেশে हरेए इहेरव, जिनि एक हे रकन धम्प्रमाधन कक्रन ना। जांशाव খুব ধর্মভাব বাড়িতে পারে, কিন্তু তাঁহার আত্মার পুণ বিকাশ হইবেনা। আত্মার সকল দিক বিকাশের জ্ঞ্জ আবাধনাই প্রকৃষ্ট উপায়; এবং মতেও স্থিব থাকিবাব এক প্রধান সহায়। ষ্মারাধনা দ্বাবাই ধর্মনীবন বাডে। আব সকল সাধনে ধর্মভাবাদি বাড়িতে পাবে, কিন্তু পূর্ণান্ত জীবন বাডিবার পক্ষে আরাধনাই একমাত্র উপায়। ভাঁহাব স্বরূপ জীবনে উপভােগ কবিতে नातिरनहें कीवरनत विकान इत्र। यथन आभि महर्षित भूर्भ एहें

ইংতেই মংর্ষি এখনও ব্রাক্ষধর্মকে চিরজীবনের সম্বাক্ষপে বরিয়া বাথিতে পাবিয়াছেন। তাঁহার উপদেশে এক দিকে যেমন দৃততা দেখা যায,—নিভা"সভাম্ জ্ঞানমনস্তম্" বীজ উচ্চাবণ কবিতেই হইবে—অপরদিকে খুব উদার ভাব। পুস্তক অবলম্বনেই হউক বা স্বাধীনভাবে মুখে ব্লিয়াই হউক আরাধনা কবিবে।

আবাধনাতে স্থলপ সকল কি ভাবে বা কোন্টীর পর কোন্টী এনিষয়ে সাধকেব পূর্ণ স্বাধীনতা থাকিবে। পুস্তক প্রবাসনে সাধন কবিশে, তাহা ত বাধাই আছে, তবে নিজে লগন কবিবেন তখন পূর্ণ স্বাধীনভাবে করিবেন। কিন্তু নিত্য সাধনে যেন একই ভাব বা শৃখলা থাকে। যাহা হউক আবাধনা সকলকেই করিতে হইবে। যেমন ঈশব প্রীতি, তেমনই তাহাব প্রিয় কার্যা করা চাই। তুমি দিবাবাত্রি ঈশব ধ্যান-বারণাতে কাটাইতেছ, আন যদি তাহার পুত্র কন্যার সেবাব প্রয়েজন হয় তাহাতে মন যাইতেছে না, তবে জানিবে তাহা প্রাক্রিন হয় তোমাব ধামা-জীবন লাভিবে না। অত্রব যদি ধর্ম-জীবন বাচাইতে চাও, এই প্রীতি ও প্রিয় কার্যাের সাধনে নেযুক্ত থাক।

এ প্রবডই পিচ্ছিল। যদি উঠিতে না পার, দাঁড়াইয়া প্রাকতে পাবিষে না, নিশ্চণ পড়িয়া যাইবে। তাই সর্বাদা প্রাণ-পণে চেটা করিবে, যাহাতে অগ্রস্ব হইতে পাব। পিতা হাত বাডাইশা বহিয়াছেন , তুমি এক পা বাড়াইতে না বাড়াইতে— এক পা অগ্ৰদৰ গইবাৰ জন্ম পা তুলিলেই—পিতা তোমাকে ज वाङ्किया वर्षक्या लहेत्वन। क्ट्रे कार्पटे ममुस्य विश्वामी ভাবন-পণে অগ্রস্ব ইইয়াছে। আহা। ক্তজন নিজেব ভপর নিভণ কবৈতে গিয়া, ও কতজন এপথ ছাড়িয়া দিয়া বিনাশ প্রাপ্ত ইয়াছে। দেখিও বেন আমবা এপথ ছাডিয়া দেষা বিনাপের পথে যাইয়া না গতি। দেখ দেখি কভজন এং--भाव माता शिवारक, व्यत्नकल्यत कीतरन याश्रता भाता शिवारक গ্রাহাদিগকে আজি অবণ কব, তাহাদেব আত্মার জন্ম প্রার্থনা কৰ, অবে বাহারো অল্লজপের জীবন লইলা ধন্ম জীবনে মাবা গেয়াছে, তাহাদের জন্ত কি ফাজ শোক কবিবে না ? তাহা-দেব আহার জন্ম কি আজ প্রার্থনা কবিবে নাণ আজ ভাগানেরই জন্ম বিশেষ কপে প্রাথনা কব। **ঈ**শ্বর সেই आश्वामिशक स्वत्रथ स्थानिशा श्वनताय नवसीवन मान कक्न। যেন আগানী বংসর ভাহাবা আসিয়া ধর্ম-জীবনে অন্ততঃ ছ্যু মাস জীবিত ছিল, এই হিসাব দেখাইতে পারে।

বাহিরের থাতায় উঠুক বা না উঠুক, দেখ প্রমেশ্বরের থাতায় কতজন এবাব নবজীবন পাইয়াছে, কত জনের পৃথিবীতে ধর্মজীবন আবস্ত হইয়াছে; এই ত বর্ধ শেষে আলোচনার বিবয়। কত টাকা আয় হইয়াছে কত বায় হইয়াছে, কত কাজ হইয়াছে কত িপোট হইয়াছে এ হিলাব কর বা না কর তাহার জন্ত ভাবি না; কিন্ত ধর্ম-জীবন কত বাজিয়াছে তাহাই দেখ। নিজের এবং পরের অনস্ত জীবন কতটা বাজিল তাহাই দেখ, এবং কত নৃতন জীবন

আাসিল তাহাই দেখ। নবজাবন দাতা ঈশ্বর আমাদের নিক্ট এই জীবন উজ্জন করুন।\*

### প্রেরিত পত্র।

( পত্রপ্রেরকদিগের মতামতের জন্ম সম্পাদক দায়ী নছেন। ) শ্রদ্ধাম্পদ শ্রীসুক তত্ত্ব-কৌমুদী সম্পাদক মহাশয় সমীপেযু—

### তৃতীয় পত্র।

১৬ই অগ্রহায়ণের তত্ত্ব-কৌমুণীতে প্রকাশিত "অভ্রাস্ত গুক্বাদ ও ব্রাহ্মধন্ম'' শীর্ষক আমার গত্তেব বিক্লছে যে সকল আপত্তি উত্থাপিত হইয়াছিল ১৬ই পৌষেবৃ তত্ত্ব-কোমুণীতে আমি তাহাব প্রত্যুত্তব দিয়াছি। তাহার পর আবার ভিন্ন প্রণালীর কোন কোন আঁপত্তি উত্থাপিত হইয়াছে, এই পত্তে তাহাব য্থাসাধ্য উত্তব দিতে চেষ্ঠা করিব।

১। কেহ কেহ মনে করেন ঈশ্বর-প্রত্যাদেশ অভ্রান্ত বটে, কিন্তু মাতুষ প্রত্যাদেশের আধার মাত্র স্কুতরাং সে কিরুপে অভ্ৰান্ত হইবে ? উচোৱা এইরূপ বুঝেন, যেমন ঈশ্বববাণী कि कि र उतन भनार्थ अवर खक्र अक्षी कठिन घर, उत्रम भनार्थ ঘটে আছে, ইহাতে ঘট যেমন তরল হয় না, সেইকপ মাহুষে ঈশ্ববাণী থাকিলেই মামুষ কথনও অভ্রাস্ত হয় না। কথাটার পবিশ্বাব ভাব এই যে ঘটেতে তবল পদাৰ্থ থাকিলেই ঘট যেমন তরল হয় না, ওরলতার আধার মাত হয়, তেমনি মানুষেতে অভাততা থাকিলেই মানুষ কথনও অভাত হয় না, ভাভাত্তাৰ আধর মাত্র হয়। পটের সহিত জলেব এবং ঈশ্র-বাণীৰ সহিত মানবাত্মাৰ আধাৰ আধেয় স্থঞ্জের যে সমহ কেথায় তাহা তুল বুদ্ধিতেও খুঁজিয়া পাওয়া যায় না। व्यामात मत्न व्य क्रेचत्र-वांगी खाल खाल ना तिचाम कतिया কেবল ভকেব অন্নরোধে মানিয়া লইলে বিভ্নমান বাজিদেরও এরণ এম উপস্থিত হইবে। ঈশ্বব বাণী একটী চৈতি হা-বস্তু, মানুষ্ও একটা চৈত্ত্য-বস্তু, ইহারা উভয়ই স্বজাতি ও সমধ্মী, जन একটা তরল বস্তু, यह একটা कठिन वञ्च এবং ইছারা উভয়ই বিজাতি ও অসমধর্মী, স্কুতরাং ইহাদিগকে উপনান উপনেয় করিয়া প্রমাণ প্রয়োগ করিলে "মতঃই ভ্রমপ্রমানবুক্ত সিদ্ধান্ত প্রসূত হইবে। একেও কডের সহিত চৈতক্ত বস্তুর पृष्टाक थार्ट ना, यपिक व्यवार्यामान कड़ीय पृष्टाख वावहात्रः कतिए हम, किन्द समाल घरहेत्र मृहीन्द्र अस्कराति हे स्वक्ताना। বন্ধসন্ধীতে আছে "মিসে নদী জলধিতে হয় একাকার" ইহাও गानव-टेठजरस्त महिज পূर्ণ-टेठजस मिनदम ठिक पृष्टीस नरह। একটী দৃষ্টাস্ত দিতে আমার ইচ্ছা হয়। অন্ধকার যতই গভীর হউক না কেন, তাহার মধ্যেও কিঞ্চিৎ আলো পাকেই থাকে কিন্তু সে আলো অতি কীণ এবং বোরতর তমসাগৃত, ক্লফাই-

<sup>\*</sup> বর্ষদেষ উপলক্ষে প্রীযুক্ত বাবু নব্দীপ চন্দ্র লাস মহাশন্ন কর্তৃক পঠিত।

নার অর্জরাত্রে চন্দ্রমা যথন তাহার উপর আবাপনার জোৎসা
বাশি ঢাপিরা দেয়, তথন কি আব দেই তমসাস্ত কীণ
আলোকেন সহিত স্থনির্দাণ চন্দ্র কিরণের আধার আধের সম্বন্ধ
থাকে ? সেইরূপ ঈশ্বরবাণীরূপ চৈত্রত বস্তু যথন মান্ত্র্যরপ
চৈত্রত বস্তুতে প্রকাশিত হন তথন আর উভয়ের আধাব
আধের সম্বন্ধ থাকে না। মান্ত্রের তথনকার যাহা কিছু
সমস্তই ঈশ্বরেব এবং সে সমস্তই অল্রান্ত। এই বিশ্বাসটুকু
না থাকিলে আনাব মতে ধর্ম থাকে না।

२। (क्ट (क्ट विवाह्न "(कान क्या क्या (कान বিষয় অভ্রান্তরূপে জানিলেই যদি জ্ঞাতাকে অভ্রাপ্ত বলা হয় ভবে ত ৩ বংস্বের শিশুকেও অভ্রান্ত বলিতে হয়।" এই রূপ দন্তান্ত ব্যবহাৰ করিতে দেখিয়া মনে ১য় তাঁহাবা বুঝি আলোচ্য বিষয় ভুলিয়া গিয়াছেন। বালক হাত পা চিনে কিমা গাভী লাপনাৰ ৰংস্থ চিনে, এইরূপ জানা চেনা লইরা অভান্ত छक्रवामित क्षावक्ष कावछ क्षेत्राष्ट्र कि? इ.एक व ध्यापर्ण ঈশ্বৰ প্ৰত্যাদেশ প্ৰাপ্ত হইয়া যিনি শিষ্যকে তদন্ত্ৰায়ী উপদেশ मान करवन उंशिएक हे अला ख ख म वना हहेगारह। ध्विनारन উদ্দেশ্তকে দুরে রাথিয়া কেবল শব্দার্থ ধবিয়া বাগ্ছাল বিস্তার করা নক্ষণ। কেহ জিজ্ঞাসা করিয়াছেন ঈশ্বর বাণী কণ্টা শুনিলে মন্রাম্ভ গুরু হওয়া যায় ৪ ঈখরের সব বাণীই শুনিতে ধ্য কি ছ চারিটা শুনিলেই ধ্যু পু ইহাব উত্তর এই যে তাঁথার অনস্থ ভাব সমগ্র ধারণা কবিতে কে পারে ? কিন্তু তাঁহাব দশ্দী প্রত্যাদেশ শুনিরাও অভ্রাম্ভ গুরু হও্যা যায়, দশ হাজার শুনিয়াও অল্লাম্ভ গুরু হওয়া বায়, যাণ গুরু কেবণ মাত্র ঈশর বাণী দ্বারাই শিষ্যকে ধ্যোপদেশ প্রদান করেন। অভাত বিষয় সম্বন্ধীয় সংস্ৰ ভূল থাকিলেও ভিনি অভান্ত গুক। বালকের হাত পা চেনারাণ অভ্রাম্ভ স্বতাকে ঈশ্বর প্রত্যাদেশ वना रम नाहै। পুक्ष व्यर्श एक टेउ छ, প্রকৃতি व्यर्श জড়ের সহিত যথন যুক্ত হয়, তথন সেই জ্ডাশ্রিত চৈত্রতকে छान वल, उंश हिमालाम माज। छान हेलियाधीन, अड़ाधीन। একটা আলো यथन नाना त्रक्षत्र काट्टत আবরণে আচ্ছাদিত গাকে তথন যেমন বাহিকে নানাক্রপ আলোর প্রকাশ হয় किय जाहात कि हुरे विश्वक व्याला नरह, रमहेन्नल रेस्सियलाय व्यकानिक विविध-विषय निविध, कामारमत धरे छान । विश्वक ্চতক্ত নহে। অভাতীত ও ইন্দ্রিয়তীত হইয়া আয়া যথন স্বন্ধণে অবস্থান করে তথনই সে নির্মাণ হয় এবং অভাস্ত রূপে ঈশ্বর প্রত্যাদেশ লাভের অধিকারী হয়। পুজাপাদ শ্ৰীমান্শকরাচার্য্যের ভায় জ্ঞানী ও ক্মী পৃথিবীতে ক্য়জন জন্মগ্রহণ করিয়াছেন ? সমগ্র ভারত-মণ্ডল পাদদলে ভ্রমণ করিয়াধর্ম প্রচার, সমগ্র ভারতের বৌদ্ধ ও হিন্দু পণ্ডিতবর্গের সহিত বিচার, কত গ্রন্থ প্রণয়ন, যে দিকে দৃষ্টিপাত কর ইহার জ্ঞান ও কর্মের সীমা নাই, তিনি . তাঁহার "বিবেক চ্ডামণি" নামক স্থাসিদ্ধ গ্রান্থ পরিষ্ঠারভাবে বলিয়াছেন "স্মাধির मधा मित्रा जित्र हि९ ब्रह्मत विकारमत काछ भण नाहे।" हेरा भात्राम श्रित्र कानम काकर्मागा लाटकत कथा नटह किन्छ मुर्डिमान छानी ও क्यों महत्राहार्यात উक्ति। आमत्रा आरम्भ काहारक

বলি এবং কোন্ অবস্থার মান্থব নির্দ্ধল আদেশ লাভের অধিকারী হন ভাষা সংক্ষেপে বলিলাম। যাহা কিছু সত্য ভাষাকেই দিখানাদেশ বিশ্বাস করা এবং প্রাক্তর দ্বীশ্বরাদেশ লাভ করা এক কথা নহে। আদেশের অনেক অপব্যবহার হওয়াতে ব্রাক্ষমাজে আদেশ-ভাতি উপস্থিত হওয়া এবং আদেশকে বিজ্রপের বস্তু মনে করা অস্বাভাবিক নহে, এই জনাই আমরা কিরূপ আদেশবাদ মানি ভাষা কিছু বলিভে হইয়াছে। পরিশ্বেষ বক্তব্য এই বে—মানবাত্মায় স্পশ্বের নির্মাল আদেশ প্রকাশিত হয় এবং মানুষ ভাষা অভাস্ত রূপে ধরিতে পারে ইয়া, রামত্ত ধর্মের মূল মন্ত্র, য়াহারা এই মূল মন্ত্র বিশ্বাস না করেন তাঁহাদেব সঙ্গে কোন বিচারের প্রেয়জন নাই।

ে। কেহ কেহ বলেন, "মানুষ কথনই যে অভ্ৰাস্ত আদেশ ধরিতে পারে না তাহা নহে, কখনও পারে কখনও নাও পারে।" এ কথা সীকার করিলে মানুষের অপূর্ণতাকে অভ্রাম্ভ আদেশ লাভের প্রতিবন্ধক বলা যায় না, কেননা মানুষ ভ চিব অপূর্ণ ভবে আর কথনও আনেশকে কিরূপে অল্রান্তকপে ধরিবে ? মুতবাং স্বীকার করিতে হয়,মান্তব কথনও কথনও এরূপ নির্মাণ হয় যে, তথন অভ্রাস্ত বাণী ধরিতে পাবে। এক্ষণ দেরূপ নির্মান অবস্থা যে জীবনে স্থায়ী হইতে পাবে না, তাহার কোন যুক্তি ত নাই। অভ্ৰান্ত মানুষ নিয়া আমরা কোন আলোচনা করি নাই, কিন্তু এক্ষণ কথা প্রদঙ্গে বলিতে হইল, "মামুষ অভ্ৰাপ্ত হইতে পাৰে" এ কথা যদি বলি, তবে ভাহা কি ব্ৰাহ্মধন্ম বিরোধী হয় 💡 অথবা যুক্তি দাবা কেহ প্রমাণ কবিতে পারেন বে মামুব অভান্ত হইতে পারে নাণু ভাত্তি আ্যার স্বাভাবিক व्यवस्था नरह, राम्य ७ कारत्य व्यावद्य २३८७ जास्त्रिकस्य, व्याचान নিকট যদি এ আবরণ উলাক্ত হয়, তবে আপনার ভিতবে সে সমস্ত তত্ত্ব দেখিতে পাইবে আশ্চ্যা কি ? তথন তাহাব लाखिरे वा रहेरव रक्त ? आमवा हिवकान उथान পতन মানি না, ইহা অতিক্রম করিয়া নিবাপদ স্থান আছে বিশ্বাস কবি। এখন যে সমস্ত পাপ তাপ বহিয়াছে সম্পূৰ্ণ ইহাদিগকে অতিক্রম করিয়া চিরকালের জন্ম নিরাপদ অবস্থায় চলিয়া যাইতে আশা রাখি। ভান্তিও একরূপ পাপ, ইহাও জন্মেব মত চলিয়া বাইবে, এই সমস্ত চলিয়া গেলেই জীব মুক্ত হইল, আয়াব পরিত্রাণ হইল। ইহাব পর অনম্ভ উন্নতি আবস্ত। পাপ ছাড়িয়া অনম্ভ পুণাপথে ছুটিব এবং ভ্ৰাম্ভি ছাড়িয়া অনম্ভ छ। दित्र পথে ছুটিবে। চিবকাল ভ্রম থাকিলে সে জীবের আর পরিত্রাণ হইল কই ? মাতুর পূর্ণ নছে, কিন্তু তাঁহার ष्मनश्र उन्नि । कडप्तरक ष्मनश्र वर्ण ? भूर्ग विलिए বা কি বুঝায় ? অনম্ভ উন্নতিও পূর্ণতার সীমাবেখা কি কিছু निर्फ्ल कता यात्र ? ज्यामारमत्र वर्खमान जीवरनत शीमारे कि পূর্ণ নাকি ? চারিদিকে অভ্রান্ত দেখি না, অতএব অভ্রান্ত नाइ जादः इहेट अ भारत ना, हेश छ युक्ति नहि। अपनिक इन्न उ काम टकांध मृज लाक स्थित नारे, उारापित धांत्रगां अ এই যে, এদ্ধপ লোক থাকিতে পারে না, বাঁহারা এক পলক **চিত্ত हित क्रिट्ट পারেন না, উাহারা य**पि एटनन यে কোন

ব্যক্তি অনাহারে অনিদ্রায় একাদনে একাদশ দিবাবাত্তি ব্রহ্মানে মগ্ন ছিলেন, হয়ত ইহাকে আরব্য উপস্থাসের গল্প মনে করিবেন। ভগবান বাঁহাকে যে অবস্থায় যতটুকু বিখাদ করিতে দেন, তিনি ততটুকু মাত্র কবিতে পাবেন, ইহাতে মামুষের কোন বাহাছরী থাটে না এবং মামুষেব গৌবব অগৌববেবও কৈছু নাই। ক্লম্বের অবস্থা এক না হইলে একেব যুক্তি অন্তের প্রাণে লাগে না, তবে আলোচনা এইজন্ত কবিতে হয়, কথাগুলি সমবিখাদীব উপকাব জনক।

উপসংহারে বক্তব্য এই যে, আমার ৩টা প্রবন্ধে আমি যাহা কিছু ধলিয়াছি, তাহাতে আমাব এই একমাত্র লক্ষ্য যে আমাব সমর্থিত বিষয়গুলি ব্রাহ্মধর্ম বিরোধী নহে। সকলকে এই সকল মানিতে হইবে, ভাহা আমি বলি নাই, কিন্তু যাহাবা ইহাই মানিলেন, তাঁহাবা ব্রাহ্মধর্ম বিরোধী কিছু করিলেন না ইহাই আমি বলিয়াছি।

নিবেদক শ্রীমনোরঞ্জন গুচু।

## অভিনন্দন পত্র।

ক্দরের অকৃতিম জীতি ও শ্রদ্ধাভাজন শ্রীযুক্ত আনন্দমোহন বস্থ, সাধাবণ বালসমাজের সভাপতি মহাশর,

সনীপেষু।

মহাশয় !

আপনি স্বাস্থ্যের উদ্দেশে কিছুদিনের জন্ত আমাদিগকে পবিত্যাগ করিয়া ইয়োরোপ থণ্ডে গমন কবিতেছেন। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জন্ম অবধি জন্য প্রয়ন্ত আর কথন ই আপনি, এত দীর্ঘকালের জন্ত, আমাদিগকে পবিত্যাগ কবেন নাই। আমরা সর্বাদাই আপনার সংপ্রামর্শ, অক্লান্ত উংসাহ 😘 শক্কতিম অমুবাগেৰ দাবা সীয় স্বীয় কাৰ্যো উৎসাহিত হইয়াছি। বলিতে কি, প্রমেশ্বের কুপায় আপ্নার উৎসাহ, অফুবাগ ও স্বিবেচনাৰ গুণেই সাধাৰণ ত্ৰাহ্মস্মাল অনেক প্ৰিমাণে কৃত-কার্য্যতা লাভ কবিতে সম্থ হট্যাছেন; স্ত্রাণ আপনাকে অপেক্ষাক্ত দীর্ঘকালের জন্ম বিদায় দিতে, আমাদেব কুদুর वियार मान इहेर उरह। कि ख अशत निरक आभा इहेर उरह रय, **আপনি নিজ স্বাস্থে প্**নবাষ প্রতিষ্ঠিত হইয়া আরও অনেক ৰৎসর উৎপাহের সহিত স্থাক্ষমমাঞ্চের সেবা কবিতে পারিবেন; এবং বছদিনের পর ইয়োরোপ খণ্ডে পুনরায় পদার্পণ করিয়া, ন্তন চিস্তাও ন্তন কার্য্যোৎসাহের সংঅবে আসিয়া, হৃদয়ে খনেক নৃতন ভাব সঞ্য করিতে পারিবেন, এবং তদ্বারা আপ্ নার প্রিয় আক্ষদমাজ ভবিষ্যতে আরও উপক্তত হইবেন। আপনার জীবনে যে সর্বতোমুখীন উন্নতির ভাব আমরা এত-দিন লক্ষ্য করিয়া আসিতেছি, তাহা আরও বর্দ্ধিত হইবে, এবং **জাণনি আরও দক্ষতার সহিত আদ্মদ্যাক্ষের সেবা ক্রিতে**  সমর্থ হইবেন। আপনার চরিত্রের ধে কমনীবভা, যে অক্তিম বিনয়, যে হৃদয়েব প্রশস্তভা ও উদারতা এবং যে আড়ম্বরশ্রু ঈশ্বর-প্রীতিব গুণে, আপনি এতদিন আমাদিগকে মৃগ্ধ ও আরু কবিয়াছেন, তদারা বিদেশে বাহাদিগের মধ্যে বাস কবিবেন, তাঁহাদিগকেও মৃগ্ধ ও আরুই কবিবেন, তাথাতে সন্দেহ নাই। আপনার প্রভাবে অনেক হৃদয় রাহ্মধর্ম ও রাহ্মসমাজের প্রতি

এই সকল আশা হৃদয়ে লইয়া, আমরা, আপনাব সমবেত ধর্মবন্ধুগণ, আপনাকে হৃদযেৰ অক্কত্রিম প্রীতি ও শ্রদ্ধা জানাইয়া, প্রবাস গমনেৰ জন্ম বিদায় দিতেছি।

পরমেখন জনায আপনাকে নিজ স্বাস্ত্যে প্রতিষ্ঠিত কবিরা, নবোদ্যম ও নব আশা দিয়া, আমাদিগেন মধ্যে পুনবায় আনম্মন করুন। আপনি আবিও বছ বৎসর স্কুত্ত দেহে ও প্রসন্ন চিত্তে, আমাদিগেন মধ্যে বাস করিয়া, তাঁহার সেবা করুন, এই আমাদেন আস্তরিক প্রার্থনা।

क्लिकाडा, २१३ टेइ व,

আপনাব ধশ্ববন্ধু

৬৫ ব্রাহ্মাক।

সাধাবণ ত্রাহ্মসমাজের সভাগণ।

শ্রদাম্পদ শ্রীণৃক্ত আনন্দমোহন বস্থ মহাশম অভিনন্দন পত্তের উত্তরে যাথা বলিয়াছিলেন তাথাব সারাংশ।

বন্ধুগণ ৷

এই উপলক্ষে অধিক কিছু বলিতে আমাৰ ইচ্ছা হয় না। এখন কেবল গভীব চিস্তাতে মগ্ন পাকিতেই ইচ্চা হয়। এত ভাল বাসার কথা আপনাবা আমাকে বলিয়াছেন যে, তাহা ভূনির। এখন আমার জুকালতাৰ কথাই স্থাৰণ হইতেছে। ভাল কথাৰ আমি উপযুক্ত কি না এবিবয়ে বুণা সমালোচনা করিবাব প্রয়োজন নাই, মনের আবেগে আনেক সমরে ञानक डेक्क कथा विनिशाहि, आस्तक डेक्क विषया आस्ताहना কিন্তু এই চাবি দিকেব সংগ্রামের ভিভরে কবিয়াছি। আমার অনেক সময়ে মনে হট্যাছে, ঈশ্বেব রূপাট আমা-দেব একমাত্র সহায়। ভাষা না হইলে আমাদের এই রান্ধ-সমাজ এত দিন জীবিত থাকিত বিনা সলেই। এই সাধারণ আক্ষসমাজ যথন তাপিত হয় সেই সময়ের কথা এখন আমাৰ শ্বতিপথে উদয় ইইভেচে। কিন্তু এবিষয়ে কোন কথা বলিবার পূর্বেমনে হইডেছে, কি কবিতে পারিয়াছি বে জন্ত আপনাবা এত সেহের কথা বলিলেন ? कीवत्न कात्मक कथा हिल, कात्मक কবিবার ছিল, ভাহার অভি অলই পূর্ণ হইলাছে। ভবিষ্যতে কি হইবে, বলিতে পারি না। কিন্তু এই নিবাশার ভিতরেও আনন্দ হয়। এত ভাইভগিনীর প্রার্থনায় প্রাণে আশার সঞ্চার হয়। যদিও এখন শ্রীর ভগ্ন, তথাপি ভবিষাতে ঈশ-বের কুপা আসিতে পারে। ঈখরের কুপা আসিলে কিনা হয় ? অতি ক্সুত্র জীবের ছারাও সংসারের অনেক কাঞ্চ হয়। অনুবীক্ষণের ৰারা কত কুদ্র জীবের অভিত জানিতে পারা যার, তাহাদের ছারাও পৃথিবীর কত কার্য্য সাধিত হইতেছে।

তখন আমাদের মত অভি কুল জীবের ধারীও বে ঈশবের কার্যা, তাঁহার অভিপ্রাণ্ণ, কথন কথনও সিদ্ধ ছইতে পারে ইহাতে সন্দেহ নাই। তাঁচার কঙ্গণার চিহু অনেক পাইয়াছি। এখন এত লোক এত নম্নাবী ব্রাহ্মসমাজে দেখিয়া কত আনন্দ হয়। ইহাঁদেব দাবা এথন কত কাল হইতে পালে। সেই ১৮৭৮ দালের ফেব্রুয়াবি মাসে যথন আমাদের এই সাধারণ खोक्षानभी क्षेत्र १ हमी हम, (मर्ड नगरत्र कथा प्रत्र १ इंटरन भरन হয়, নিভাস্ত ঈখরের কুপাডেই আমরা বাহা কিছু করিছে পাবিয়াছি। সেই সর্ক্ষদিদ্ধিদাতা প্রশেষরের চনণে সকলে ভাণাম কবি। সেই সময়ে কত বিশ্ববিপত্তি বিদ্যমান ছিল। পাত্রি ১টা ২টা পর্যান্ত কত কাম কবিতে হইখাছে। পুত্তকাকাবে লেখেন যদি সেই সময়ের কথা কেহ ভাছা হ'লে একটা কাজেব জিনিস হয়, একটা Interesting Record इव। आभा कवि एक विशिवन। সমস্ত বাধা বিশ্ন অভিক্রম করিয়া সম্পূর্ণ, স্বিখরের কুপরে উপর নির্ভর কবিখা কভিপয়মাত্র লোক কভ গুরুতর জাজ কবিয়া-ছেন। আমবা তথন জানিতাম না. ১৬ বংসব পরে কি দাঁডাইবে। আমরা তথন এ সকল চিম্বা মনে স্থান দিতাম না। সেই কুদু তবণী তাঁহাবই নাম করিয়া তথন ছাড়া হটয়াছিল, এখন কত নরনারী উহার আশ্রমে আসিয়াছেন; কত বালক বালিকা ইহাতে আরেছি। কবিয়া স্থাপ্ত চলিয়াছে। यि ष्यालनावा निष्करमत कर्त्रवा इतिहा ना यान, जाहा हहेल याशास्त्र देशना जान क्षेत्रा बाक्सममाक्राक भीवनाविज करत তাহাবই চেষ্টা করুন।

অধন রাজসমাজে কত নৃত্তন প্রশ্ন আসিতেছে, যাহা আগে ছিল না। কত নৃত্তন Difficulties চাবিদক হইতে উপস্থিত। সেই জন্ম এখন নৃত্তন লোক চাই, নৃত্তন উংসাহ চাই। যাহাবা ঈশ্ববেব কপাতে লালিত পালিত হইতেছেন তাহাদের ভিতরে নৃত্তন উৎসাহ চাই। নতুবা কিছু হইল না। এতদিন রাজ্যন্মাজে যাহা হইণাছে, তাহা আলোচনা কবিয়া ফল নাই। এখন গাহাবা রাজস্মাজক কাল কবিতেছেন, তাঁহাদের পুর কল্পারা পবে রাজসমাজকে যাহাতে গৌরবান্থিত কবে, তাহার চেটা করা আবশ্রক। তথন কত বন্ধু বৌদ্রে বৃষ্টিতে কত কট পাইমছেন, তথাপি ঈশ্ববের বলে বলীয়ান হইয়া কত কাল ক্রিয়াছেন। এখন যাহাবা কাল ক্রিয়েছেন, তাহানিগকে বলি, যত দায়িজ উপস্থিত ইইয়াছে সেই গুলি মনে ক্রিয়া, যাহাতে সমাজকে গৌরবান্থিত ক্রিতে পারেন তাহার চেটা করন।

Constitution এব কথা বলিয়া কোন কাজ নাই। এখন ছুইটা বিষয়ে এ। ক্ষানের মনোযোগ আকর্ষণ কবিতে ইচ্ছা হই-ভেছে। এই ছুইটা বিষয়ে যদি আক্ষাণ মনোযোগী হন তাহা ছুইলে বিদেশ হইতে খাদেশে ফিবিয়া আসিয়া, তাহাদেব উন্নতি দেখিয়া প্রাণে কত আনন্দ হইবে। সে ছুইটা বিষয় এই—

১। ধর্ম সম্বন্ধীয় জ্ঞানোপার্জনের চেটা করুন। আমরা যথন প্রথম ত্রাহ্মসমাজে আসিলাম তথন ধর্মপুত্তক পড়িবার জন্ত কত উৎসাহ ছিল। Parker এর পুত্তক, Newman এর পুস্তক, Miss Cabbe এর পুস্তক, এই সকল তথন আমর। কন্ত উৎসাহের সহিত পড়ি ভাম। ছঃধের সহিত বলিতে হইতেছে, দেই ধর্ম সম্বনীয় জ্ঞানোপার্জনের চেষ্টা আহ্মদিগের মধ্যে এখন তত দেখা যার না। সেই ইচ্ছা ও চেষ্টা যাহাতে হর, ভাষা করা প্রয়োজন। আশা করি সেই ধর্ম সনন্ধীয় জ্ঞানো-পার্জনের চেষ্টা যাহাতে হয়, সেই বিষয়ে কলিকাতাবাসী আহ্মগণ নৃতন উৎসাহ লইয়া কার্য্য করিবেন।

২। কলিকাতাতে এত ত্রাহ্মপরিবার রহিয়াছেন,তাঁচাদের মধ্যে কত বালক বালিকা বহিয়াছে; বড় ইচ্ছা করে ইহাদের ভিতরে আধ্যাত্মিকতা – ধর্মভবে—আস্ক। ধর্মভাব না হইলে বিছুই হইৰে না। সেই ধৰ্মভাব যাহাতে আসে তাহার জন্ম চেষ্টা কৰা প্রয়োজন। ইচ্ছা কবে যে সাধারণ ব্রাহ্ম-সমাব্বের সভা বলিতেই একজন নিষ্ঠাবান ঈশ্বর-ভক্ত লোক বুঝাইবে। খাহাতে তাঁহাদের নামেব সহিত এই association আসিতে পারে সভাগণ তাহার জন্ত চেষ্টা করুন। আমাদেব congregation এর meeting এ যাগতে সভাদের মধ্যে আধাাত্মিকতা বিকাশ হয় এই বিষ্যে একদিন আলোচনা হইয়াছিল, সকলে ঈশবের কাছে প্রার্থনা করুন যেন ব্রাহ্মসনাজে ঈশ্বরেব কুপার বক্তা আসিয়া আমাদিগকে ভাসাইয়া লইয়াযায়। আমার ইহা দেখিয়া যে কেবল আনন্দ হুটুবে তাহা নয়, সেই সঙ্গে সঙ্গে আমার হর্কলতাব ভিত্বে वनप्रकाव इट्टेंदि। আৰ অধিক কি বলিব, আপনাবা যে সকল দয়ার কথা বলিয়াছেন যেন একট্কুও তাহাব উপযুক্ত হইতে পারি। আমি অতি অর্দিনের জন্ম বিদেশে যাইতেছি। একটা বিষাদেব ভাবের মধ্যে মনে হইতেছে. সেই রামমোহন রায়ের বিলাভ যাবাব সময়েব সেই গান, যাহা এথনি গাওয়া **ब्हेन, राम जाहार जार नहेगा याहेर्ज भारि। जाहा हहेर**न প্রাণে অনেক শান্তি পাইব। এই ১৬ বংসর যে পরমেশ্বরের রূপা **टमिश्रा**ष्टि रमहे अत्रामश्चव "कि श्वरमान कि विरम्हन," मर्का ने महत्र সঙ্গে আছেন ইহা যেন মনে রাখিতে পাবি। আমাদেব শ্রদ্ধেয় বন্ধু তাঁহার প্রার্থনার মধ্যে, দূরে থেকেও যে কথোপকথনেব কথা বলিলেন,ইহাতে অতি গভীব ভাব—অতি মধুব ভাব নিহিত আছে। আজকাল বিজ্ঞানে টেলিফোনেব তাবে কথোপকথনেব বাবস্থা করিয়াছে। এখন সেই তাব পর্যান্ত উঠাইয়া দিয়া বিনা তানেই কণোপফথনের চেষ্টা হইতেছে। সেইরূপ হৃদয়ের প্রীতি यिन शास्त्र जाश इटेल किस्तार कथा डेकावन कविवाब थाया-क्रन रुम्न ना, पूरव थाकियां उक्रांशिकथन क्वा याम्र।

গত বুধবাব Executive Committee তে আমাদের কতক গুলি কথার আলোচনা হইতেছিল। এমন উপাদের কথা হইতেছিল, যে কেমন একটা মধুমর ভাব উপন্থিত হইল, সেই স্থান ছাড়িরা আসিতে কপ্ত হইল। আমাদেব ব্রাহ্মসমাজের স্থাপ্যিতা দেই রামমোহন বায়েব কথা, তাঁহার বিদেশে যাবার কথা, Miss Collet এব কথা, এই সকল কথা স্থান করিয়া ছাদরে কেমন এক প্রকাব ভাবেব আগি ভাব হইল। মনে হইল পরেব বুধবারে কতদ্রে থাকিব। দ্রে থাকিয়াও আপনাম্বের সঙ্গে বিজ্ঞির থাকিব লা। স্থায় কক্ষন যেন ফিরিয়া আগিরা

ব্রাহ্মসমাজের উন্নতি দেখিয়া আনন্দ লাভ করিতে পারি।

দিখার করুন যেন ফিরিরা আসিরা আধ্যাত্মিকভাবে ব্রাহ্ম
সমাজকে প্লাবিত দেখিয়া সেই সঙ্গে সঙ্গে নিজের হুর্বলতার
ভিতরে বলসঞ্চর করিতে পাবি। দিখার আমাদের সঙ্গে সঙ্গে:
উহার আলোকে আমরা সর্বাদা চলিতেছি। এতগুলি লোক
আমরা তাঁহার দিকে চাহিয়া প্রার্থনা কবি, যেন সেই প্রীতি
পবিত্রতা লাভ করিয়া আমবা ইহকালে স্থা হই, প্রকালে
অনস্ত জীবনের জন্ম উপযুক্ত হইরা তাঁহারই পথে চলিতে
পারি। দরামর প্রমেশ্বর আশীর্কাদ করুন।

উপাধ্যানে পডিয়াছি, Israelites দেব বিপদে প্রমেশ্বব তাহাদিগকে রক্ষা করিয়াছিলেন। অবণােও তাহাদের জন্ত অরপানের বাবস্থা করিয়াছিলেন। সেইরূপ আনাদের বিদ্ব বিপত্তির মধ্যে ঈশ্বর আনাদের কদম সরস করুন। তিনিই আনাদের অরপানের বাবস্থা করুন। বন্ধুগণ, এখন বিদায় গ্রহণ করিতেছি। যদি ফিবিয়া আদিয়া দেণি বাল্লসমাজ নৃতনভাবে কাজ করিতেছেন তাহা হইলে প্রাণে আনন্দলাভ করিয়ানিজকে রুতার্থ বােধ করিব। ঈশ্বর সকলের ক্লামে আনিগ্রত হউন। আনাদিগকে ক্রোড়ে ধারণ করিয়া আনাদের চির কল্যাণ বিধান করুন।

### ব্রাহ্মসমাজ।

ত্রাক্ষ-বালকদিগের বোর্ডিং—একজন মহিলাবোর্ডিংএর কার্য্যে নিয়মিতরূপে সাহায্য করিতেছেন; ক্ষুদ্র বালকগণকে দেখিবার ভার এবং রোগীদিগকে ভুশ্বা করিবার ভার বিশেবভাবে ইহার উপরে দেওয়া হইয়াছে। আগামী ভুন মাস হইতে যাহাতে বোর্ডিংএর কার্য্যপ্রণাশীব বিশেব উন্নতি করিতে পারা বায়, বোর্ডিংএব কর্তৃপক্ষ তির্বিধ্যে সচেষ্ট হইয়াছেন।

বরাহনগর ব্রাহ্মসমাজের—এক্তিংশ উংসব নিম্ন-লিখিত প্রণালীতে সম্পন্ন হট্যাছে।

> ই মার্চ—শনিবার অপব্যক্তে হপ্তাবাজ্ঞারে বাবু বিপিনচন্ত্র পাল বক্তৃতা করেন। সায়ংকালে মন্দিরে বাবু চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায় উপাসনা করেন।

১)ই মাচ্চ—প্রাত:কালে ববাহনগর ইন্টিটিউট্ হলে উপা-সনা হয়। বাবু কেলাব নাথ বায়ের উপদেশ প্রাণম্পর্লী হইয়াছিল। সায়ংকালে ঐ হলে উপাসনা হয়, বাবু বিপিন চক্র পাল আচার্য্যের কার্য্য করেন।

ফরিদপুর ব্রাহ্মসমাজের—সপ্ততিংশ উৎসব নিম-লিখিত প্রণালীতে সম্পন্ন হইয়াছে।

২২শে মার্চ বৃহস্পতিবার—সায়ংকালে বাবু ভ্বনমোহন সেন বি,এ, উদ্বোধন স্চক উপাসনা করেন।

২৩শে মাৰ্চ-প্ৰাভ:কালে উপাসনা; আচাৰ্য্য বাবু কৈলাশ

চক্র বাগ্ছি। তাঁহার উপদেশের বিষয় "ঈশবের সর্বব্যাপিছে অবিশাসই সকল পাণের মূল।" বাবু বিশিনবিহারী চক্রবর্তী "আহ্বধর্ম" গ্রন্থ হইতে বচন ও ভাহার ব্যাখ্যা পাঠ কবেন। সায়ংকালে উপাসনা; আচার্য্য বাবু ভূবনমোহন সেন; তাঁহার উপদেশের বিষয় শুপ্রীভিঃ পরমসাধনম্।"

২৪শে মার্চ—প্রতিংকালে উপাসনা; আচার্য্য বাবু ভ্রন মোহন সেন। তাঁহার উপদেশের সার এই—"যেমন অন্ন আছে জানিলেই কুধার নিকৃতি হর না, তেমনি আধ্যাত্মিক সভা সকল জানিলেই আত্মার কুধার তৃত্তি হর না। যেমন অন্ন গ্রহণ করা প্রয়োজন, তেমনি আধ্যাত্মিক সভ্য সকলকেও জীবনে পরিণ্ড করা প্রয়োজন।" সায়ংকালে বাবু ভ্রনমোহন সেন উপাসনা করেন।

২৫শে মার্চ - প্রাতঃকালে বাবু ভ্বনমোহন সেন উপাসন।
করেন। তাঁহাব উপদেশের বিষয় — "কিমাম্মনা যো ন জিতেন্দ্রি
যোভবেং।" মধ্যাকে দবিদ্র ও রুগ্নদিগকে চাউল ও অথ
বিতরণ কবা হয়। সায়ংকালে বাবু ভ্বনমোহন সেন উপাসন।
কবেন, ও "ঈশর সর্বাদা নিকটে আছেন" এ বিষয়ে উপ-দেশ দেন।

নামকরণ—করিদপুবেব বাবু বিশিনবিহাবী চক্রবভীর প্রথম (প্রত্র) সন্তানের নামকরণ উপলক্ষে ২৪শে মার্চ উপাসনা হর । বাবু কৈলাসচক্র বাগ্ছি আচার্য্যের কার্য্য করেন। বালকের নাম করুণাবিহারী ও অমিয় কুমার রাখা ইইয়াছে।

বিবাহ— १ই এপ্রিল সারংকালে সাধারণ ত্রাক্ষসমাজ মানিরে বাবু মহেল চক্র ভৌমিক বি,এর সহিত আমাদিরের বন্ধু বাবু ফণীক্রমোহন বস্থর প্রথমা কপ্রা কুমারা মৃণালেনা বস্থর ভাবিবাহ সম্পন্ন হইয়াছে। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রা মহাশন্ধ আচাব্যের কার্য্য করেন। এই বিবাহ ৩ আইন অমুসারে রোজ্টারী করা হইয়াছে। প্রমেশ্ব বর ক্সাকে আন্রেলিক্রেন।

গত ১০ই এপ্রিল মঙ্গলবার ববিশাল ব্রাহ্মসমাজ মান্দরে বদ্ধমান জেলার অন্তগত ভেটা নিবাসী আনুক বাবু প্ররেজনাথ দত এম, বির সহিত বরিশাল জেলার অন্তগত গৈলা নিবাসী পরলোকগত বৈকুগচন্দ্র সেনের ৪থা কপ্রা প্রিমতা সরলতা সেনের ভভবিবাহ ব্রাহ্ম পদ্ধতি অন্তসারে সম্পন্ন হতয়াছে। শক্ষের প্রচাবক আনুক বাবু নগেক্তনাথ চট্টোপব্যার মহাশ্ম আচার্যোর কার্য্য করিয়াছেন। ঐ বিবাহ ১৮৭২ সনের ৩ আহন অনুসারে রেজিন্টারী করা হহয়াছে।

প্রচার—পশ্চিম প্রচার ধাঞী দলের নিয়লিণিত কার্ষ্য-বিবরণ পাওয়া গিয়াছে।

১নশে মাচ্চ বাবু গুরুলাস চক্রবর্তী ও বাবু শ্রীরক বিহারী লাল বাঁকিপুরে উপস্থিত থন। ২০শে মার্চ গুরুলাস বাবু ও ভাই স্থানর সিংহ মঞ্জংরপুর অভিমুখে গমন করেন। তথার

পৌছিয়া বাবু কুঞ্বিহারী বিখাস ও বাবু গণেশ প্রসাদের বাড়ীতে পারিবারিক উপাসনা করেন। পরদিন তাঁহারা মতি-হারীতে উপস্থিত হন। ডে: মাজিট্রেট বাবু প্রসরকুমার দাসের 🗣 বাবু উমাচরণ ঘটকের বাটীতে উপাসনা, উপদেশ ও শাস্ত্র ব্যাখ্যা হয়। ২২শে ও ২৩শে সাধারণের জন্ম সভা আচ্ত **হয়। ২৩শে শ্রীযুক্ত ক্ষুলর সিংহ "সার্কজনীন ধর্ম''** বিষয়ে উদ্ভাষায় বক্তা করেন। ২৫শে রবিবাব উপাসনা হয়। উপদেশের বিষয়—"কি প্রকারে পরমেশ্বরকে প্রীতি করিতে ও তাঁহার দেবা করিতে হয়।" ২৬শে প্রাতঃকালে বাবু প্রসন্নকুলার দাসের বাটীতে উপাসনা হয়। উপদেশের বিষয় "আধ্যাত্মিক জীবন লাভ<sup>্</sup>" ২৬শে তাঁহারা অরো অভিমুখে যাত্রা করেন। ২৭শে তথায় উপস্থিত হন। ২৮শে বাবু গুরুদাস **ठक्रवर्छी ७ वावू धीवक विरादीणाण विनावम याका करत्रन** ; শ্রীযুক্ত স্থলর সিংহ অস্থ ছওয়াতে আরাতেই থাকেন। বেনারসে বাবু জগন্নাথ প্রসাদ গুপ্তের বাটীতে উপাসনা ও ধন্ম প্রাসঙ্গর। বেনারসে ত্রাহ্মসমাজের জস্ত একটা গৃহের অভাব অনেক দিন ১ইতে অনুভব করা যাইতেছিল; ঈশরের কুপায় त्म कालाव श्रुपं रहेवात खेलात स्टेबाइक। मकत्वहे खिनिवा আনন্দিত হইবেন, বাবু জগরাথ প্রসাদ গুপ্ত তাহার ৩৫০০১ টাকা মূল্যের একটা বাড়ী সামাজিক উপাসনার জন্ত উপযুক্ত টুটিগণেব হস্তে সমর্পণ করিতে সঙ্কর করিয়াছেন। সেখানে একজন স্থায়ী প্রচারকের থাকিবার বন্দোবস্তও করা হইবে।

শ্ৰীযুক্ত আনন্দমোহন বম্ন—বিগত ৪ঠা এপ্ৰিল বুধবার ''মিজাপুর" নামক জাহাজে আরোহণ করিয়া ইংলও অভিমুখে যাত্রা কবিয়াছেন। তিনি লণ্ডনে কিছুদিন থাকিয়া স্বাস্থ্যের উন্নতির জন্ম জর্মাণি দেশে গমন কবিবেন। বিগত ৩-লে মার্চ্চ ১০নং কর্ণওয়ালিস দ্রীটম্ব ভবনে তাঁহাকে বিদায় স্চক অভার্থনা করিবার জন্ম ব্রাহ্মসমাজের সভাগণ সমবেত व्हें ब्राहित्तन। मर्सार्था "कि श्वरमा कि विरमान यथा ब ज्या ब থাকি" এই সংগীতটী করা হইল; তারপর শ্রীযুক্ত বাবু উমেশ চন্দ্র একটা প্রাণম্পশী প্রার্থনা করিলেন। সাং ব্রাং সমাজের সহ: সম্পাদক শ্রীযুক্ত প্রাণকৃষ্ণ আচার্য্য সমাজের সভাগণের অভার্থনা সূচক অভিনন্দন পত্র পাঠ করিলেন। ইহার পব আনন্দমোহন বাবু ব্রাক্ষসমাজকে নানারূপে যে সেবা করিয়াছেন তৎসম্বন্ধে পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী মহাশন্ন কিছু বলেন; তিনি যথন আনন্দমোহন বাবুর ভগ্নখান্ত্যের কথা क्रमहरूपनी ভाষায় উল্লেখ করিলেন তখন অনেকেই অঞ্-विमुद्धन कविग्राहित्वन। ७९ शत्र धाननारमाहन वावू छेउदा बाहा वितालन, जाहा हानास्टर ध्वकाशिक हहेन।

ইহার পর পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী রচিত নিয়ণিথিত সংগীতটী হইল—

#### কাফি-একভালা।

আণ কাঁদে আজ ছাড়িতে ভোমার বিদার কি দিতে পারি ? ইদর ডুবিছে বিযাদ-সলিলে নরনে আসিছে বারি। প্রথম যৌবনে দিবে দেহ মন পর-হিত-ত্রত সাধনে,
ভগ্ন কথা দেহ আজ লয়ে যাও প্রবাসে পরের সদনে।
খার সিছু জলে তরণী ভাসালে, চলিলে ছাড়িরে আলারে;
তোমার স্থগন্ধ, শুতির আনন্দ, রহিল পড়িয়া হৃদয়ে।
কি এক আলোক যেন দ্রে যায়, আসিছে আঁধার ঘনায়ে;
শৃস্ত ঘরে মোরা রহিমু জাগিয়া তোমাব প্রবাসে পাঠায়ে।
বলী হ'য়ে এস, স্থী হ'য়ে এস, লয়ে নব ভাব-বাশি;
খাহারি সেবাতে ভগ্ন এই ভমু, তিনি তব সহ-বাসী।
বিদেশে প্রবাসে পড়িলে নিরাশে শ্বরিও এ প্রেম-কাহিনী;
জেনো তব তরে বিভূর হয়ারে কাঁদিতেছে ভাই ভগিনী।

উৎস্ব—মেদিনীপুর হইতে নিম্নলিখিত বিবরণ প্রাপ্ত হওয়া গিরাছে। মঙ্গলময পরমেশ্বরের ক্রপার মেদিনীপুর ব্রাহ্মসমাজেব ৪৮শ ব্রহ্মোৎস্ব স্থচাক্তরূপে সম্পন্ন হইযা গিরাছে। শ্রদ্ধাম্পদ শ্রীযুক্ত নগেক্তনাথ চট্টোপাধ্যার মহাশর এখানে স্থাগমন করিয়া উৎসব কাব্য সম্পন্ন করেন।

ধ্য ফাল্লন শুক্রবার—উৎসবের উৎবাধন। শ্রদ্ধের নগেক্র নাথ চট্টোপাধ্যার মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন। তাঁহার উপাসনা ও উপদেশ অতি হৃদরগ্রাহী হইয়াছিল। ভগবানকে ব্যাকুল ভাবে প্রার্থনা করিলে তবে তাঁহার দর্শন পাওয়া যার। মুথের চাওয়া নয়, কিন্তু প্রাণের ব্যাকুল প্রার্থনা। রাজপুর বৃদ্ধের রাজসিংহাসন পারে ঠেলিয়া, যেরূপ ব্যাকুল হইয়া বনবাসী হইয়াছিলেন। সেইরূপ ব্যাকুলতা চাই। আচার্য্য মহাশর এই ভাব সকলের হৃদয়ে জাগাইয়া দেন।

ভই ফাল্পন শনিবার—রাত্রিতে সমাজ মন্দিরে উপাসনা হয়। বাবু তারকচন্দ্র ঘোষ উপাসনার কার্য্য করেন। উৎসব ক্ষেত্রে প্রবেশ কবিতে হইলে দীন, হীন, কাঙ্গাল হইয়া তাঁহার ছাবে আঘাত কবিতে হইবে। এই ভাবে উপদেশ দেন।

৭ই ফাস্কন রবিবাব—অন্য সমস্ত দিনব্যাপী উৎসব।
শ্রদ্ধাম্পদ শ্রীযুক্ত নগেল্ডনাথ চটোপাধ্যায় মহাশয় আচার্য্যেব
কার্য্য করেন। মহাত্মা শিবচন্দ্র দেব এই মেদিনীপুর
ব্রাহ্মসমাজ মন্দিরকাপ বীজ বপন করিয়া যান ও তৎপরে ভক্তিভাজন রাজনারায়ণ বস্থ মহাশয় ইহার মূল দেশে জল সেচন
করিয়া সমত্বে ইহাকে বদ্ধিত কবেন। আচার্য্য মহাশয়
তজ্জ্ল্য সেই ইহ পরলোক বাসী আত্মানিগের মঙ্গল কামনা করিয়া
সক্ষ-সিদ্ধিদাতা বিধাতার চরণে ক্তৃত্ত্ত্তা জানান। তাহার
উপাসনা ও উপদেশে সকলের হৃদয় বিগ্লিত হইয়াছিল।

৮ই ফাস্তুন সোমবাব—ক্ষম, স্মাতুর ও দরিদ্রদিগকে বস্ত্র ও পয়সা বিতরণ করা হয়।

নই ফাজ্বন মঙ্গলবার—জাদ্য নগর সংকীর্ত্তন। কীর্ত্তন দল পাহাড়ীপুর আক্ষা সমাজ হইতে মঙ্গলময় প্রমেশ্বকে শ্বরণ করিয়া কীর্ত্তন করিতে করিতে বাহির হন। নগরের বড় বড় বাজারের মধ্য দিয়া উৎসাহের সহিত স্থমধুব অক্ষনাম কীর্ত্তন করিতে করিতে ফিরিয়া আন্মেন।

১০ই ফাত্তন বুধবার--জাদ্য পাহাড়ীপুর ত্রাক্ষ সমাজের

উৎসব। প্রাতে বাবু তারকচক্স খোষ উপাসনার কার্য্য করেন।
অপরাত্র হইতে কীর্ত্তন আরম্ভ হর। সন্ধ্যার সময় আবার
উপাসনার কার্য্য আবস্ত হয়। শ্রাদ্ধের বাবু নগেক্স নাথ চট্টোপাধার মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করেন। তাঁহাব উপাসনা ও
উপদেশ সকলের হৃদয়কে বিশেষকপ আরুষ্ট করিয়াছিল।

১>ই ফাল্পন বৃহস্পতিবাব—রাজা কালী প্রসন্ন গজেন্দ্র মহা-পাত্র মহাশরেব বাটাতে পাবিবারিক উপাসনা হয়। প্রদের নগেল্র নাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশর উপাসনার কার্য্য কবেন, এবং স্ত্রালোক দিগেব জান্ত বিশেষভাবে উপদেশ দেন।

২২ই ফান্ধন শুক্রবাব—স্থানীয় মুনদেফ বাবু জ্ঞানেক্র চক্র বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয়েব গৃহে পারিবাবিক উপাদনা হয, এবং পবে গ্রীতিভোজন হয়। বাবু অভয়চবণ বস্থ উপাদনার কার্য্য কবেন।

১৩ই ফাল্পন শনিবার—জপবাহু ৭ ঘটকাব সময় মেদিনী-পুব আক্ষ সমাজ গৃহে "ধর্ম মতেব বিবোধ ও সামঞ্জস্য" বিষয়ে বক্তৃভাহয়।

১ এই ফাল্পন ববিবার—প্রাতে বাবু অভয়চবণ বস্থর কনিষ্ঠ পুত্রেব নামকবণ উপলক্ষে উপাসনা হয়। বাবু নগেক্তনাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশ্য আচার্য্যের কার্যা করেন। বালকের নাম সবল কুমার বাথা হইরাছে। বাত্রিতে সমাজ মন্তিবে উপাসনা হয়। বাবু ভাষকচক্র থোষ উপাসনার কায়্য করেন।

ুংই ফান্ধন সোমবার—গোপগিনি নামক স্থবমা স্থানে উপাসনা হয়। স্থানীয় করেকজন ব্রাহ্ম ও মহিলাগণ সন্মিলিত হইয়া প্রকৃতির নিভূত কুঞ্জে লীলামর পরম প্রভূব অপুর লীলা দেবিয়া জ্ঞাণ মন কুতার্থ করেন। শ্রদ্ধাম্পাদ নগেরুনাথ চটোপাধ্যার মহাশয় উপাসনা করেন, তাঁহাব উপাসনা অতি ক্ষমন্ত্রপাশী হইরাছিল। প্রকৃতির উৎস গুলিষা প্রেমমর পর-মেখব তাঁহার সন্তানদিশকে প্রতি বৎসদ উৎস্বান্তে অপূর্ব্ব

দান—চাইবাদা ব্রহ্মমন্দিবের জন্ম দান—
শ্রীমতী বিধুমুগী বাদ চৌধুরী
শ্রীমৃক্ত প্রাণকৃষ্ণ আচার্য্য
ডা: নীলরতন সবকাব
শ্রীবৃক্ত মোহিনীমোহন মজুমদার
থিসেদ্ ইউ, এন্, মিত্র
শ্রিমৃক্ত তৃক্জি ঘোষ

চেরাপুঞ্জি ত্রহ্মন্দির ও প্রচাবকাবাদের জন্ত দান—
শীমতী অজিকা দেব. কলিকাতা
কণ্ডিস্ চন্দ্রমাধব ঘোষ (দিতীয় বার)
শীম্ত কানীপ্রসর দত্ত, বিজনী
ভা: প্রকৃত্রচন্দ্র রায় (দিতীয় বার)
শীম্ত দীননাথ দাস, শিশং
, উসাচবণ দত্ত, ,,

শ্রীযুক্ত কৃষ্ণদর্গাল রায়, স্থনাম গঞ্জ	<u>ک</u> ر
" হুকড়ি ঘোষ, কলিকাভা	٠, د
পূর্বে খীকুড	۲۹۶ ۱۰ کاماد ۱۰ 8
	-

(माठे ८००५८) -

ববাহনগবস্থ কোন বন্ধু কোনও অনুষ্ঠান উপলক্ষে মিশন ফতেও ১ দান করিয়াছেন।

বাগজাঁচড়া শঙ্কবপুরের শ্রীযুক্ত অবিনাশ চক্র হালদার মল্লিক উাঁহার মাভার আদ্যশ্রাদ্ধ উপলক্ষে মিশন ফণ্ডে ১ দান করিয়াছেন।

মাণিকদহেব বাবু বিপিনবিহাবী রায় তাঁহাব পুত্রের জন্ম-দিন উপলক্ষে মিশন ফণ্ডে ২১, দাসাশ্রন্ম ২১ ও অনাথাশ্রমে ২১ দান কবিয়াছেন।

কাকিনিয়াব শ্রীযুক্ত অক্ষরকুমাব দাস তাঁহাব কোন বন্ধুব পীড়া আবোগ্য হওয়া উপলক্ষে মিশন ফণ্ডে ৬ সাধনাশ্রমে ২ ও দাতব্য বিভাগে ২ দান কবিষাছেন।

ক লিকাতাব শ্রীমতী বিনোদিনী মুথোপাপাধ্যার পরলোক গত শ্রীযুক্ত ক্ষেত্রমোহন মুথোপাধ্যাযের আদ্যশ্রাক উপলক্ষে মিশন কণ্ডে ১২ সাধনাশ্রমে ৮ ও দাতব্য বিভাগে ৫ দান কবিয়াছেন।

বশুডাৰ শ্ৰীযুক্ত শ্ৰীমস্ত চটোপাধায় ঠাঁচাৰ মাতৃশ্ৰাদ্ধ উপলক্ষে মিশন ফণ্ডে ২্ও সাধনাশ্ৰমে ১ দান কৰিয়াছেন।

ফবিদপুরের বাবু বিপিনবিহাবী চক্রবর্তী ভাঁহার প্রথম পুত্রের নামকবণ উপলক্ষে মিশন ফ্ডে ২১ দান করিয়াছেন।

শিলংএর বাব্ ভারত চল্র দেব তাঁহার পিতৃশাদ্ধ উপলক্ষে থাসিরা মিশনে ২ দান কবিয়াছেন; শঙ্কবপুদের বাবু বেচারাম চটোপাধ্যায় তাঁহার প্রণীত গ্রন্থালীর এক এক ৭ও থাসিয়া মিশনে দান কবিয়াছেন।

পুঁটিয়াব বাণী খ্রীমতী হেমস্কুমানী দেবী তাঁহার দেওয়ান্
খ্রীয়ক গোবিদ্নোহন বায়েব হাত দিয়া টাঙ্গাইলে ত্রহ্মান্ত্রি
নির্মাণার্থ ২০০১ টাকা দান কবিক্রছেন। ম্যমন্সিংহত্ত কীল
খ্রীয়ক অন্থবদ্ধ গুছ বি এল্মহাশয়ও ঐ কার্গের হৃত্য ১০০১
দিতে প্রতিশৃত হুইয়াচেন।

অমান দাতাদিগকে ধহাবাদ দিলা ক্রতজ্ঞতার সহিত ঊছো-দিগেব দান এহণ কবিতেছি।

#### বিজ্ঞাপন।

আগামী ২০শে এপ্রিল ওক্রবার অপরাত্র ৭ ঘটিকার সময় ২৩নং মিজ্জাপুর ষ্ট্রীটস্ত সিটিকলেজ ভবনে সাধাবণ ত্রাহ্মসমাজেয় অধ্যক্ষ সভার স্থানিত প্রথম ত্রিমাসিক অধিবেশন ইইবে।

আগামী মঞ্গবার সঙ্গত-সভার অধিবেশনে অপরাফ্ ।।।
টার সময় কলিকাতা এবং নিকটত্ব স্থান সকলের ব্রাহ্মসমাজে
কি উপায় অবল্যন করিলে ধর্ম প্রচারের স্বিধা হয় ভবিবিধী
আলোচনা হইবে।

>>,

4.

>•<

4

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

২য় সংখ্যা। ১৭শ ভাগ।

১৬ই বৈশাখ, শনিবার, ১৮১৬ শক, ত্রাক্স সম্বৎ ৬৫।

বিংসেরিক অপ্রিম মূল্য ২১০ মফস্পলে ৩২ প্রতি থণ্ডের মূল্য 🗸

#### প্রার্থনা।

হে বিশ্বপত্তি! ভূমি সভাস্বরূপ, সভ্যেতে শুভিষ্ঠিত, ভোমার সকল কার্য্যে সভাতা। যাহা মিপাা, যাবা ছারা তাহার সহিত ट्डामात्र मचक नाहे। मानव ना वृक्षित्र। हैर्व विवान ध्वाश हत्र, কোনও কোনও সভ্যকে অপ্রির জ্ঞান করে কোনও কোনও সভ্যকে একরূপ না দেখিয়া অন্তরূপ দেখিতে চায়, কিন্তু তুমি দে কাতরোক্তির প্রতি দৃকপাত কর না; অপ্রিয় সত্যকে প্রিয় কবিবার জন্ত ব্যগ্র হওনা, মানব্রের ছ:থ দেথিয়া বাগ্রতা প্রকাশ কর না। তোমার রাজ্যে যাহা আছে, তাহা আছে; जाहा थाकित्व: भाष्य धाक ना त्मथुक म्ममिन भरत तम्थित, আপনার ভ্রম আপনি সংশোধন কবিবে। তোমার যে কার্য্য जाना नीतरव व्यथह व्यविहानिक मःकरम्व महिक माधिक हहे-তেছে। এরূপ করিব, দেরূপ করিব বলিয়া ভোমার রব নাই: যাহা করিবার তাহা নিঃশব্দে অথচ ছক্ষয় শক্তিতে করি-তেছে। কেহ এট, কেহ তুট হইতেছে, সে রোষ বা সে তোষেব প্রতি তোমার দৃষ্টি নাই, তোমাব ভুভ সংক্র সিদ্ধ করিভেছ। কোন কাজ কেন কবিলে তাহার কাবণ ও যুক্তি व्यन्तर्मन नाहे, व्याजा-भक्त ममर्थन नाहे; এই তোমাৰ নিয়ম যে সত্য কালে আপনাকে আপনি বিদিত করিবে। হে প্রভো! আমাদিগকে এই নীর্ব সত্য-প্রিয়তা ও অবিচ্লিত ভড় সংকল্পের ভাব শিক্ষা দেও, আমরা যেন চিস্তা বাক্য ও কার্য্যে मञाजारक मस्त्रमाहे ष्यासम् कति। এই जामात्र निक्षे व्यार्थना ।

### সম্পাদকীয় মন্তব্য।

ধর্মের বহিরাবরণ ও ধর্মের সার তত্ত্ব—একজন
খুটার সাধু বলিয়াছেন :—"তুমি ত্রীখরবাদ সম্বন্ধীর গভীর তত্ত্ব সকল স্থালররূপে ব্যাথা করিতে পার, ইহাতে ভোমার লাভ কি ? যথন ভোমার অবিনর সেই ত্রিরূপী ঈশরেরই বিরক্তি কর হইতেছে?" এই সত্পদেশটার বিষয়ে চিন্তা করিবে আমরা

ষ্মনেকেই উপক্লত হইতে পাবি। ২হাব গুঢ় তাৎপৰ্য্য এই উচ্ছল জ্ঞান ও বিচাবে পারদর্শিতা অপেকা বিনয় কি প্রার্থনীয় নহে ? তুমি একজনকে ঈশর-বিশাসী করিবার জন্ম বার্ত্ত হইয়াছ, সেই জন্ম তকের উপরে তর্কের উদ্ভাবন করিতেছে, দেই জন্ম জোধ করিতেছ ও নিজ জ্ঞান-গর্ব্ধ প্রকাশ করিতেছ, ভাবিতেছ না যে জ্ঞান-গর্ম দারা যে অনিষ্ট হইতেছে তোমার অ্যুক্তিপূর্ণ বিচার দ্বাবা কথনই সে অনিষ্ট নিবারিত হইতে পারে না। যেমন প্রকৃত বিষয়ী ও কার্য্যক্রী-বৃদ্ধি-বিশিষ্ট লোকের দৃষ্টি সক্ষদা টাকা আনা গণ্ডাব উপরে অর্পিত থাকে. বড় বড় প্রস্তাব কল্পনার রঙ্গে চিত্রিত হইয়া শ্বস্তার দেখাইতে পারে, তাঁহাবা যেমন তাহাতে ভোলেন না. ফলে কি লাভ বাক্ষতি দাঁডাইবে, তাহাই যেমন দেখিয়া থাকেন, তেমনি প্রকৃত সাধকদিগের দৃষ্টি সর্বাদাই সত্যতা ও জীবনের উপরে অর্পিত। ভাষাময় আড়েম্ববে ডাঁহারা পরিতৃপ্ত হইতে পারেন না। লোকে যতই ভাষাময় জাল বিস্তার করিতে থাকে তত है छोहार पत पायक हु। विकास वास्त पारक, 'मृत इडेक, আমরা যে ভাল হইতে পাবিলাম না। বিখাস, বৈবাগা, সেবার ভাব যে সেকপ লাভ করিতে পারিতেছি না। আমাতে विधाम, विनय अका ও निर्जंद नाहे, कामि পবের দোষ अलब **ठकां कतिया कि कतिव ?' ठिखा क**नि लाहे दाया याहेरव दय চিতের এই সার্গ্রাহিতার গুণেই অগতের মহাজনগণ মহৎ হইয়াছিলেন। অপর সকলে কেবল মৌথিক শব্দ ও ধন্মেব বহিরাবরণ লইমা সম্ভট হইয়াছিল,—তাহারা তাহা হইতে পারেন नाहे। उाहाता (यन मान मान विवाहित्वन, 'तकवन छेशात्वत्र তবঙ্গে ভাসিব না, একবার তলাইয়া দেখিব পাতাল কভদুর 🖓 এই বলিয়া তাঁহারা ভলাইবার চেষ্টা করিয়াছিলেন। গভার সাধনে প্রবৃত্ত হইবার সময় এক এক জন ঈশবের এক একটা শ্বরূপ অবলম্বন করিয়া সাধন করিয়াছিলেন এবং সেই স্বরূপে দিদি লাভ করিয়াছিলেন। তাহাই তাঁহারা অগতে দিরা গিয়াছেন। বুদ্ধ শাস্ত ভাবে সিদ্ধ, যীও পিতৃভাবে সিদ্ধ, মহম্মদ দাশুভাবে সিদ্ধ, নানক গুরু ভাবে সিদ্ধ, চৈডম্ব প্রতি छादि शिक्ष हे छाति। अहे नकन महाबन यति बन नमास्बद व्यक्तिक धर्मात विदेशवित्रण मुख्ये धाकिएक भातिरूकन, काहा

হইলে কি ধর্ম তত্ত্বের গভীর স্থানে অবতরণ করিতে পারিতেন? ইইারা ধর্মের সাক্ষাৎকার করিবার জন্ম ব্যথা হইরাছিলেন, এবং যতক্ষণ তাহা করিতে পারেন নাই, ততক্ষণ
সন্ত্রপ্ত হইতে পারেন নাই। আমাদিগের অস্তরেও ধর্মের
সভ্য ভাব ধারণ করিবার জন্ম ব্যথাতা থাকা আবশুক। যতক্ষণ
অন্তবে ও জীবনে সাক্ষাৎ জীবস্ত ধর্মের অপুর তৃপ্তি না
পাইতেছি, ততক্ষণ আর সকলি বাহিরের জল্পনা, এইরূপ একটী
ভাব সর্বনাই আমাদের অন্তরে থাকিলে ভাল হয়, তাহা
হল আমুরা ধর্মোপদেশ দেওয়া অপেক্ষা ধন্মলাভ করা বিষয়ে
অধিক মনোযোগী হইব।

কাজ ও হৃদ্যের সরসতা—অনেক লোকেব মুথে সকলা একটা অভিযোগ ভনিতে পাওয়া যায়—"সংসাবে অনেক কাজ কবিতে হ্য, ঈশ্বব-চিন্তা ধ্যান ধাবণাদিতে অধিক সময় দিতে পারি না. স্পতবাং অনেক সময়ে জনর গুষ্ক হইয়া যায়।" এই অভিযোগকারীদিগেব প্রতি প্রথম বক্তব্য-সংসারেব কার্মের মাত্রা কথনই এত বাডিতে দেওয়া উচিত নহে, যাহাতে ঈশার-**हिन्छा ९ शान शाव**णानिव भभग्र ना थाका। **छाहा क**वित्न এই প্রকাশ পায় যে, তাঁহাবা ঈশ্ববোপাসনাকে জীবনেব একটা শুকুত্ব কন্তব্য বলিয়া মনে কবেন না। নিয়মিত ত্রন্ধোপাসনার সময় রাথিয়া তবে অজ কার্যোব বাবস্থা কবিতে হইবে। জেনেরণ গর্ডন আমাদের ভূতপূর্বা াবণব জেনেরল, স্থাসিদ্ধ मर्फ त्रिप्रण वाहाइएतव खाहेरछडे स्मरक्रिके हहेग्रा अस्मर् আসিয়াছিলেন। কিন্তু ত্রাষ সে পদত্যাগ করিয়া দেশে প্রতি-निवृक्त इटेलन। याहेवांत्र ममस्य निश्विष्ठा श्रालन-"यिनि রাজ্কার্য্যে হস্তার্পণ করিবার পূক্ষে ছুই ঘণ্টা কাল ঈশ্বর-চিস্তায় যাপন করিয়া থাকেন, এরপ ব্যক্তিব হল্তে ভারত-সামাক্ষার কোনও অমঙ্গলের অশঙ্কা নাই।" ভাবতবর্ষের গ্রথ্ব জেনেবল यिन ठाँशित बाह्यकार्यात वर्ष्या वास भेषा भेषत-विद्यारण ध्रे घली गालन कविवाद ममग्र कविटल পाविन, लाहा हहेला कान কাজের লোক এরূপ আছেন, যিনি মনে কবিলে ঈশ্বরোপাসনার জ্ঞু সময় রাখিতে পাবেন না ? অতএব উহা কথাই নহে, উহা কেবল আমাদের অলম ও স্থথ-প্রিয় প্রকৃতির ছল মাত্র। विजीयजः योज्ञानां काटबन ल्याक, योज्ञामिशरक मर्स्ना নানাপ্রকার কার্য্যে হন্তক্ষেপ করিতে হয়, তাঁহাদিগকে আর একটী পরামর্শ দিবাব আছে। কাজ ও ত্রন্ধোপাদনাকে এতটা च उम्र क दिन (कन १ व्यानक (ला दिन म कांत्र এই প্রকার वाहिता। यथन क्रेबर्जिक्षा ७ धान धावनाटक विम, ख्यनक् ধর্মসাধন হইয়া থাকে. সেইগুলিই ধর্মের কার্যা; আর যথন मः माद्य निष्क कर्छना পालन कति, यथन পरतत्र (मवा कति, ভাহা যেন ধর্মগাধনের অস্তর্ভ নহে। এইরূপ ভাব থাকাতেও অনেক সময়ে কাজের দ্বানা হৃদরের ভাব শুকাইয়া যায়। অত এব পরামর্শ এই, কাজকেও ধর্মসাধনের অঙ্গ করিয়া লও। বেমন কোনও উৎসবে বাইবার সময় মনে কর, প্রভুর কুণা সভোগ করিতে ঘাইভেছ, সেইরূপ কোনও রোগীর দেবা

করিতে যাইবার সময়েও অফুভব কর, যে প্রভুর রুপা সস্থোগ করিতে যাইতেছ। কাল যথন জাগ্রত ঈশর-প্রীতির খারা উদীপ্ত হইবে, তথন তাহা হৃদয়কে গুছ না করিয়া বরং সবস কবিবে।

ত্যাগ---এদ ভাই তুমি আমি বেশ আরামে থাকি এবং নিজেদের বিশেষ ক্ষতি না করিয়া একটু একটু সময় দিয়া ধর্ম প্রচার করি—এক্সপ ভাবে অদ্যাবধি জগত কোনও ধর্মই প্রচারিত হয় নাই। ধর্মের কতকগুলি মত প্রচারিত হইলেই যদি ধর্ম প্রচার হইল ভাবিতে পারা ঘাইত, তাহা হইলে বলা যাইত যে এ প্রকার স্বস্থ-প্রিয় লোকের দারাও ধর্মপ্রচার হইতে পারে। আমেরিকার প্রেততত্ত্বাদিগণ দেশ বিদেশে প্রচারক প্রেবণ করেন নাই; নিজেদেব দেশে বসিয়া গ্রন্থ প্রণয়ন করিয়াছেন, তাহা দেশ বিদেশে গিয়া তাঁহাদের মতকে প্রচাবিত কবিয়াছে, ইহাতে তাঁহাদেব বিশেষ ত্যাগের প্রয়োজন হয় নাই। ডাবউইন নিজ গৃহে বসিয়া গ্রন্থ প্রণয়ন কবিয়া-ছেন, সে গ্রন্থের বারা অর্থ সম্বন্ধে যে বিশেষ ক্ষতিগ্রস্ত হইয়া-ছেন এরূপ বোধ হয় না, কিন্তু তাঁহাব মত সমুদয় জগতে পরিব্যাথ হইয়া পড়িয়াছে। ত্যাগেব বিশেষ প্রয়োজন হয নাই। কিন্তু ধর্ম প্রচার একপ নহে। মানবের হৃদয় পরিবর্তন करा धन्य श्रहात्वर डेल्म् । विषयामरूटक क्रेन्नताबूतानी करा, श्वार्थभवटक निःश्वार्थ कवा, भाभागतौरक भूगावान कता यनि ধম্মপ্রচাবেব উদ্দেশ্য হয়, তবে তাহা কেবলমাত্র মত প্রচার षाता रग्न ना। मानव-क्षप्रा नुकन अधि अविष्ठे कता आवश्रक रुष । এ অग्नि कत्रत्र थाकित्वरे मासूष व्यथत क्तर्य तित्व भारत । 'যার সদয়ের অগ্নি এত ক্ষীণতেজ যে তাহার নিজের স্বার্থ ও স্থগের একটু ব্যাঘাত কবিবার শক্তি নাই, সে অপরের कपरत्र कि अधि पिरव ? याशांत्र कीवरन निः वार्थछ। नाहे, छाहा যেন অপর সদয়কে উদ্দীপ্ত করিবার প্রয়াস পায় না। জগতেব ইতিবৃত্ত আলোচনা কবিয়া দেখ, কোথায় কবে কোন ব্যক্তি নিঃস্বার্থতার অগ্নি ব্যতীত মানবের অস্তরে ধর্মভাব উদ্দীপ্ত কবিতে সমর্থ হইয়াছে ? যাহা কাধারও লাবা কথনও হয় নাই, তাহা কি আমাদের দারা হটুবে ? ত্রাহ্মগণ দেশ মধ্যে चार्य-मार्मत व्यक्ति जानाहरू ममर्थ ना इटेरन. डाहानिरश्रत অবলম্বিত ধর্মা দেশের লোকের মনে নিবন্ধ করিতে পারিবেন না। আমরা দেখিতেছি আক্ষদমাজে এই নিঃস্বার্থতার আলি আশাসুরূপ প্রজ্ঞালিত হইতেছে না , সেই জ্ঞুই এাক্সধশ্ম এরূপ মান অবস্থাতে রহিয়াছে।

শোকের সংবাদ—গভীব ছংথের সহিত আমরা তত্ত্বকৌম্দীর পাঠকদিগকে সংবাদ দিতেছি যে, প্রাক্ষমাজের
চিরপরিচিত বন্ধু কুমারী সোফিয়া ডব্দন কলেট বিগত ২৭শে
মার্চ লগুন নগরে দেহত্যাগ করিয়াছেন। কুমারী কলেট
না হইলে হউরোপের লোক প্রাক্ষসমাজের কথা জানিত কিনা
সন্দেহ। তিনি প্রাক্ষ না হইয়াও প্রাক্ষসমাজকে ইউরোপ
বত্তের লোকের নিকট অপ্রিচিত করিবার ক্যা কিরাপ শ্রম ও

বত্র করিয়াছৈন, ভাবিলে আশ্চর্যালিত হইতে হয়। তিনি বিকলাল হটয়া অলাগ্রহণ করিয়াছিলেন এবং এক প্রকার চিররোগশয্যার শয়ানা ছিলেন, বলিলে অত্যুক্তি হয় না। অপচ দেই বোগ শ্যাতেই শ্রন করিয়া নিরস্তর ত্রাহ্মসমাব্দের কলাণ-চিন্তাতে নিযুক্ত থাকিতেন। ব্রাহ্মসমাজের প্রত্যেক পুস্তক ও পত্রিকা মনোযোগ পুর্বাক পাঠ করিতেন এবং সর্বাদাই সংপরামর্শ দান ঘারা আমাদের কার্য্যের সহায়তা করিতেন। ১৮१० मार्ग यथन পরবোকপত কেশবচন্দ্র সেন মহালয় ইংলওে গমন করিয়াছিলেন, তথন কুমাবী কলেট বিশেষক্রপে তাঁহার কার্য্যের সহায়তা করেন; এবং কেশব বাবুর বক্তৃতা ও উপ-দেশাদি সংগ্রহ করিয়া এক বৃহদায়তন পুস্তক মুদ্রিত করেন। তৎপরে যথনই ব্রাহ্মসমাজে কোনও বিশেষ ঘটনা ঘটত, তথনই ভাহা ইল্লোবোপ খণ্ডের লোককে বিদিত করিবার জন্ম উপায় অবলম্বন করিতেন। এবং তদর্থেই ১৮৭৬ খ্রীপ্রান্দ হইতে প্রতি বর্ষান্তে "ত্রান্ধ ইয়ার বৃক" নামে এক একথানি পুস্তক মুদ্রিত করিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন। <sup>"</sup> তাঁহাব প্রণীত 'Brahmo Year Book' : ४४२ मान भर्गाञ्च हिना । তৎপরে অর্থাভাবে এবং অক্তান্ত কানণে বন্ধ হইয়া যায়। এত ভিন্ন কুমারী কলেট ব্রাহ্মদমাজের একথানি সংক্ষিপ্ত ইতি-वृक्त निथिग्राष्ट्रितन । इहाधाता हैत्याद्वाराशत लाक्त आम-ममास्क्रत विषय विरामवकाल कानिएं भारत। এই मवल कानरन ইয়োবোপের লোকে তাহাকে ত্রাহ্মসমাজ সংস্থীয় স্ক্রিধ সংবাদের উৎসক্ষরণ মনে করিত। Encyclopædia Britanica নামক স্থপ্রাসদ্ব অভিধানের বর্তমান সংকরণে ব্রাহ্ম সমাজ সম্বন্ধে যে প্রস্তাব উঠিয়াছে, তাহা তাহাবই লিখিত। বলিতে কি, ত্রাধ্যমাজের প্রতি ও সেই সঙ্গে ভাবতবর্ষের প্রতি তাঁহার এত প্রেম ছিল যে, ভারতবর্ধীয় ডাকের দিন উপস্থিত হহলে তাঁহার আগ্রায়প্রজনগণ বিদ্রুগ করিয়া জিজ্ঞাসা করিতেন "তোমার অদেশ হইতে কি সংবাদ আদিয়াছে ?" তাঁহারা অনেক সময় বালতেন "আমরা নামে তোমার আপ-নার লোক, ভোমার প্রকৃত আপনার লোক ভারতব্যে।" সাধারণ আহ্মসমাজ যথন স্থাপিত হয় তথন কুমারী কলেট হহার অভানয়কে ঈখরের বিশেষ বিধি বলিয়া অঞ্ভব করিয়া-ছिल्न এवः उपविध इंशत कार्यात्र माह्य खान मन छानिया मिश्राष्ट्रिलन । ১৮৮२ माल "बाक हेगात वृक" वक श्रेल কুমারী কলেট আর একটা মহৎ কাষ্যে হস্তাপন করিয়াছিলেন। সেহ সময় হততে তিনি মহাখারালা রাম্মেহন রায়েব এক-थानि की वन ठांत्रक विधिष्ठ भरव है। कर्तन धारा धर कर्मक বংসর সেই কার্য্যেই ব্যাপত ছিলেন। রাজার জীবন চরিত সংক্রান্ত বিষয় সকল সংগ্রহ কারবার জন্ম তিনি কিবলৈ পরিএম করিয়াছেন ও এক একটা বিষয়ের প্রস্থুত তব্ব জানিবার জন্ত क्छ (हड़ी करियारक्त छाहा निषिया लाटकत क्षात्रक्रम कता ছুক্র। অনেক পরিশ্রম ও চেষ্টার পর তিনি কাষ্য এক প্রেকার সমাধা করিয়া রাজার জীবন চরিত মুদ্রিত করিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন। শুনিতে পাওয়া যায় তিন পরিচেছন পर्यास मूजिन इहेगाएए। इः (अत्र विषय एवं जिल कार्या)

স্বসম্পন্ন করিরা বাইতে পারিলেন না। তিনি এটিংর্ম বিখাদিনী ছিলেন এবং প্রসন্নচিত্তে সর্ববাই মৃত্যুর জন্ত প্রস্তে
ছিলেন। তিনি পরোপকার ব্রতে বে পবিত্র জীবন বাপন
করিরা গিরাছেন, তাহার ফলস্বরূপ স্বর্গধানে স্থান প্রাপ্ত ইইরাছেন। আমরা তাঁহার পরলোকগত আঘার জন্ত কি
প্রার্থনা করিব ? তবে এই বলিয়া ক্ষোভ করি যে তাঁহার
পরলোক গমনে ব্রাহ্মসমাজ একজন অক্তর্ত্তিম হিতৈবিনী বন্ধ্র্
হাবাইলেন। ১৮২২ গ্রীষ্টাব্দে তাঁহার জন্ম হইয়াছিল স্করাং
মৃত্যুকালে তাঁহার বয়ঃক্রম ৭২ বৎসর হইয়াছিল।

ব্রাক্ষা বালকদিগকে বাঁচাও—আমরা আর কতদিন বান্ধ পিতামাতাকে সতর্ক করিব ? কতবার তাঁহাদের কর্তবা তাঁহাদিগকে দেখাইয়া দিব ? গ্রাহ্ম বালকদিগের পথে যে বিপদ রহিয়াছে তাহাব প্রতি ব্রাহ্ম অভিভাবকগণ আর কতদিন উদাসীন থাকিবেন ? आमजा मिन मिन दिश्वित शाहेरछहि स्व, স্থুলে বালকদিগকে প্রেরণ করা বিষম ভয়ের কারণ হইয়া দাড়াইতেছে। সেখানে হুইটা বিপদ আমাদের বালকদিগের জন্ত অপেকা করিতেছে। প্রথম--হিন্দ্ধের পুনরুতানের হাঙ্গামায় এখন দেশের চারি দিকেই ব্রাহ্মবিরোধী ভাব। এই ভাব কলের বালকদিগের মধ্যেও প্রবিষ্ট হইয়াছে। কোনও **ट्यांगीटक यनि जिमारी वानाटक त्र प्रदेश जाक वानक शास्क**, সেই ছইটাকে বাদ দিয়া অবশিষ্ট আটাশটা ব্ৰাহ্ম-বিরোধী। ভাহারা কথার কথার ত্রাগ্ধসনাজকে উপহাস ও বিজ্ঞাপ করিতে এবং গালি দিতে জ্বটা করে না। এই প্রকার হাওয়ার মধ্যে যদি একটা বালক নিরন্তর বাস করে, তাহার কি প্রকার ভাবাপর হওয়ার সম্ভব ? ইহাব উপর দেখিতে পাই, অনেক আন্ধ পিতামাতা স্বীয় স্বীয় বালকবালিকাকে ব্রাহ্মসমাজের সংশ্রব श्रेट अदनक ममग्र मृत्त त्रात्थन। हेशत छेलामना ও উৎमवा-দিতে আনেন না, ত্রাধ্বসমাজ সংস্থ নৈতিক বিদ্যালয়ে ভাখাদিগকে প্রেরণ করেন না, কিম্বা অক্ত কোনও প্রকারে এান্স ত্রান্সিকাগণও ত্রান্স বালকগণের সহিত নিশিতে দেন না। কিন্তু অপর দিকে নিরম্ভর পুর্বোক্ত ত্রাহ্মবিরোধী ভাবের হাওয়ার মধ্যে বাস কবিতে দিতে আপত্তি নাই। ইহার ফল এই হয় যে ব্রাহ্মধন্মেব ভাব পাইবার যে সকল দ্বাব षाह्म, ভाश वस थाटक किन्न छित्रवाते। ভार भारेवात ध দকল দাব তাহা উন্মক্ত থাকে। কালে ঐ সকল বালক ব্রাহ্মধন্মের বিরোধী ও ব্রাহ্মদিগের বিজপকাবী হইবে, তাহাতে বিচিত্র কি ? অনেক ব্রাহ্মগৃহে তাহাই ঘটতেছে। পিতামাতা যে ব্রাহ্মধন্মের জন্ত অশেষ ক্লেশ সহ্ত করিয়াছেন, তাঁহাদের সন্থানগণ, তাঁহাদের গৃহে বদ্ধিত ও প্রতিপাণিত হইয়া তাঁহাদেব বক্ষে বদিয়া সেহ ধর্মকে উপহাস কবিতেছে। ইহাকেমন স্থলর ফল প আপোরা যে ধশ্বের জন্ত নিপীড়িত হইয়াছিলেন, তাহার কেমন উৎকৃত্ত পরিণাম ? ব্রাক্ষ পিতা-মাতার চিম্বাবিহীনতার কেমন ফুলর পুরস্কার ?

আর একটা বিপদ ইহা অপেকাও ভয়ানক। আমরা

দৈখিয়া চিন্তিত হইতেছি যে বঙ্গদেশের সর্বাচই বিশেষত: কলিকাভার কুলের বালকদিগের নীতি পুনরার কল্বিত হইয়া যাইতেছে। হিন্দুধর্মের পুনরুখানকারিগণ আর কিছু কবিতে না পারুন ত্রান্ধ-রুচি ও ত্রান্ধ-নীতির বিদ্রুপ করিয়া দেশের এই মহোপকার সাধন করিয়াছেন! ऋरतव वालक-**मिर्शित मर्सा रिक्त इक्तिब्रिक त्रांत मः नाम भाष्या गारेटक** हि. ভাহা ভনিয়া লজ্জাতে মন্তক অবনত হয়। এই সকল চ্শ্চবিত্র বালকের সংশ্রবে আসিয়া কোনও কোনও ব্রাহ্ম গৃহের বালক একপ হৃশ্চবিত্র হইয়াছে যে তাহা বিশ্বাসের অভীত। ইহা দেখিয়া সহবেব কোনও কোনও ব্ৰাহ্ম পিতামাতা পুত্ৰদিগকে স্থূলে পাঠাইবেন কিনা, এই গভীর চিন্তায় নিমগ্ন হইয়াছেন। এ চিন্তাব কাৰণ আমবা বুঝিতে পাবি ; কিন্তু এ সম্বন্ধে স্বাধাৰণ ব্ৰাহ্মগ্ৰণৰ যে উদাদীনতা তাহা বুঝিতে পাবি না। তৎপরে চিম্বা কব, यिन ममारकत्र वालक श्रुणि अपनुष्ट्रा छिर्छ, वालिका श्रुणिएक पर রাথিতে পারিবে কি না ? এক সমাজে বাস করিয়া ভাহাদেব মেশা বন্ধ করিতে পাবিবে কি না 📍 আন্ধবালকদিগের মধ্যে যদি হুণীতির স্রোভ প্রবাহিত হয়, ভাবী ব্রাহ্মসমাজেব উন্নতিব আশা কোথায় থাকিবে ? গুছের মধ্যে পুতিগন্ধ বাথিয়া কোন্ मारुटम रेरात প্রচারকগণ প্রচার করিতে যাইবেন ? আব সে প্রচারের ফলই বা কি হইবে ? এই সকল কাবণে নাবাব বলিতেছি, ব্ৰহ্মগণ সঞ্জাগ হউন। সময় থাকিতে ব্ৰাহ্ম-বালক-দিগকে বাঁচাইবার চেষ্টা করুন। নতুবা ভাহাদের পথে সর্কাশ আদিতেছে। বলিতে তঃথ হয়, তুই বৎসবের অধিক-कान कनिकाठा महत्त्र बाक्षरानकनित्रिय खन्न अक्टी त्वाडिः স্থাপিত হইয়াছে। ইহাতে বালকদিগের তত্বাবধান ও স্থশিক্ষাব यर्पष्टे वस्मावन्त्र व्याष्ट्र। याशास्त्रत् वानकश्य हेहार्ड हिन् তাঁহারা ইহার স্থশিক্ষার অনেক প্রশংসা করিয়াছেন। বিগত মাবোৎসবের সময় ব্রাহ্মদ্মিলনীতে সিটী কলেঞ্চের ভরাবধায়ক সর্বসমক্ষে এই বোডিংএর বালকদিগের রীভিনীতির প্রশংসা করিয়াছেন। তথাপি ব্রাহ্ম-অভিভাবকগণের এ বিষয়ে মনো-(साग (मथा थाईट उट्ह ना। याहारमत क्या द्याउँ शांभि उ इहेन. সেই ব্রাহ্মবালকের সংখ্যা এখানে বেশী নহে! আমরা এখন ও ৰলিতেছি, ব্ৰাহ্মগণ যদি আপনাদের সমাজের কণ্যাণ চান, ভবে সকলে ছবায় সমবেত হউন। এই ব্যেডিণকে স্চরের वाहित्य (कान व शाशक्य शान नहेश या हैन। (वाहिः हाक একপ করুন যাহা অধিকাংশ ত্রাক্ষের আয়তাধীন হটতে পাবে। সেধানে সকল ব্রাহ্মকে স্থায় স্বীয় পুত্রদিগকে পাচাইতে বাধ্য कक्रन ; এবং छानभिका ও धर्माभिकात উৎकृष्टे वत्नावछ कक्रन । ভাত্তর ত্রাহ্মবালকদিগকে বাঁচাইবার উপায় দেখা যাইতেছে ना। शिक्षिण बाक्ष-यूरकिंगित मध्य अमन कि कि नारे, वाहात्रा धरे अक्र उव कार्या जापनारमत्र सीवन ममर्भन कतिर ह পারেন ?

### সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### ব্রাহ্মসমাজে জ্ঞানালোচনার অভাব।

মহাত্মা রাজা বামমোহন রার স্ক্পেণ্মে এদেশে গভীর छानालाहनाव ११ धननेन कतिशाहन। (वम, (वमाध, উপনিষদ্ প্রভৃতি উচ্চ অঙ্গের হিন্দু শাস্ত্র সকল এদেশেব সাধারণ্যে অজ্ঞাত ছিল। এদেশের ত্রাহ্মণ্যণ ব্যাক্রণ, কাব্য, ভাষেব হুই চাণিটা বিষয় ও স্মৃতির ছুই চাণিটা কথা পাঠ কবিয়াই সহষ্ট থাকিতেন। অধিকাংশ ত্রাহ্মণ তাহাও জানি-তেন না। তাঁহাবা কোন ও প্রকারে দশকর্ম সমাধা কবিতে শিথিতেন ও কতকগুলি উদ্লট সংস্কৃত শ্লোক কঠন্ত করিয়া ধনি-দিগের গৃহে ভাহা উচ্চারণ ও ব্যাখ্যা ব ব :: ভোষামোদ ও উঞ্চ-বুত্তি দারা শীবিকা নির্বাহ করিতেন। ধর্মেব গভীর তত্ত্সকল সাধাবণ প্রকাপুঞ্জেব নিকটে প্রচ্ছন ছিল। ভাহাবা ধর্মের নামে অনেক অধ্যের আচবণ কবিত: এবং তুচ্ছ ও লঘু-বিষয়ের চর্চা ও চিস্তাতে সম্যাতিপাত কবিত। সেই লঘুতা इटेट चरम्याभौतिशरक उन्नात क्वियाय मानाम त्रामरमाइन বায় তাহাদিগকে গভীর জ্ঞানালোচনায় প্রবৃত্ত কবিলেন। তিনি त्वन त्वनाच्य উপনিম্নাদি সাদেশীয় ভাষায় অञ্चला **क्विया** সাধারণের বোধগম্য কবিষাছিলেন। আমাদের দেশেব প্রাচীন সাহিত্যে যে এমন গভীব ও উচ্চ ভর্মকল নিহিত আছে, ইহা দেখিয়া বঙ্গদেশের লোক বিশ্বিত ও স্তব্ধ হইয়া গেল। এবং ইহা বলিলে অত্যক্তি হয় না যে, তাঁহার সময় इहेट इहे जिल्ला कारिकन भाषा लाहिना अनुखि अनन इहेन। কেছ বা তাঁহার মণক্ষতা কেছ বা তাঁহাৰ প্রতিপক্ষতা করিবাব জ্ম বেদ, স্মৃতি, পুৰাণ, তন্ত্ৰ প্ৰভৃতি ধম্মশাস্ত্ৰ সকলেৰ আলোচনা আবস্তু কারলেন। বান্যোহন বায় যে কার্য্যের সূত্রপাত কবিষা গেলেন, মহর্ষি দেবেক্সনাপ ভত্তবোধিনী সভা স্থাপন কৰিয়া ভাষাৰ উদ্যোগে মেই কৰ্ষিকে আছে ঘনীভূত কৰিয়া ত্লিলেন। এণেশের কোনও সভা যদি আপন্বে নামের সাথকতা সম্পাদন কারতে সমর্থ হট্যা থাকে তাহা ত্রবোধনী मुखा। यथन मुमुख (मर्भात (लाक (बंडेड्, हुन्ना, बाहा कार्त, আক্ষাৰড়াই প্ৰভৃতি লইয়া বাস্ত, তখন একমাত্ৰ তম্বাধিনী সভা প্রমার্থ তবের আলোচনাতে প্রবন্ত। এই তব্বোধিনী সভা হইতেই ভত্তবোৰিনী পত্ৰিকা প্ৰকাশিক হয়। খ্যাতনামা সম্পাদক প্রলোকগত অক্ষয়কুমার দত্ত মহাশর উহাতে কি প্রকাব গভীর বিষয় সকলের আলোচনা করিতেন, তাহা তাঁহার প্রণীত "ধর্ম-নীতি" "বাহ্যবন্ধর সহিত মানব প্রাক্ত-তিব সম্বন্ধ বিচার" ও "ভারতবর্ষীয় উপাসক সম্প্রদায়" প্রভৃতি গ্রন্থে ক্প্রকাশ। সেই সন্ধ্রে ব্রাহ্মসমাজই এদেশে গভীর জ্ঞানালোচনার পথপ্রদর্শক ছিলেন। তত্ত্বোধিনীর পৃষ্ঠাতে যেমন একদিকে বেদ বেদাস্ত, উপনিষদ প্রভৃতি অমুবাদিত ও বিচারিত হইত; তেমনি অপর দিকে পাশ্চাত্য জ্ঞানি-দিগের জ্ঞানসভ্ত অপূর্ব তত্ত্ব সকল স্বিবেশিত হইত।

এই কারণেই ভত্ববোধনী পত্তিকার এবং ব্ৰাশ্ব-গৌরব ছিল। ভাক্তার রাজেন্ত্রলাল মিত্র, পণ্ডিতবর ঈশ্বরচন্ত্র বিদ্যাসাগর, স্থপ্রসিদ্ধ শ্রামা-চরণ সরকার প্রভৃতি জ্ঞানিগণ তত্ত্বোধিনী সভার সভ্য শ্রেণীভূক ছিলেন ও ইহার কার্য্যের সহায়তা করিতেন। ব্রাহ্মণমান্তের কার্য্যের ভার যতদিন মহর্ষির হল্তে গ্রন্ত ছিল তিনি ততদিন ইহার জ্ঞান গৌরব রক্ষা করিবার প্রয়াস পাই-ग्राष्ट्रम । (य मिन इटेंटल (क्ये विद्या राज्य महासम् कामि সমাজ হইতে বিচ্ছিন্ন হইয়া স্বতন্ত্র সমাজ স্থাপন করিলেন, দে দিন হহতে ব্রাহ্মসমাজ মধ্যে আর এক স্রোত প্রবিষ্ট হইল। পৃদ্ধকার জ্ঞানপ্রধান ভাবের পবিরর্ত্তে ভক্তিপ্রধান ভাব আবিভূতি হইল। আহ্ম আচার্য্য ও প্রচাবকগণ জ্ঞানা লোচনাতে উদাসীন হইয়া 'গৌর নিতাই' 'গৌর নিতাই' করিয়া মাতিয়া উঠিলেন। এখন দেখিতেছি 'গৌব নিতাই' আমাদেব কিঞ্ছিৎ আনিষ্ট ক্রিয়াছেন। আমাদের জ্ঞানা-लाइना প্রবৃত্তি কিঞ্চিৎ খব্দ ক্বিয়া দিয়াছেন।

> "বিজ্ঞা ও স্থসভা ২'তে নাহি চাই, যে যা বলে যাক ব'লে, সে সব ২েসে উভাই"

এই বলিয়া গান করি । কবিয়া আমরা অজতাকে লক্ষাৰ কাৰণ না ভাৰিয়া গৌৰবের বিষয় ভাৰিতে শিথিয়াছি। কেশবচক্র সেন মহাশ্য একদিন টাউন হলে বক্তাতে নিজেব रिष्य निल्लम "How can you call a man learned who does not read two books in three hundred and sixty-five days" অথাৎ "দে ব্যক্তিকে তোমরা বি প্রকাবে বিখান্ বলিতে পাব যে, তিন শত 'প্যবট্টি দিনে ছুই থানি বই পড়ে না।" অভএব দেখা যাহতেছে যে তং- । १३ কালান ব্ৰাহ্ম দলপতি স্বীয় অজ্ঞতাকে লক্ষাৰ কাৰণ না ভাবিয়া গৌববের বিষয় ভাবিয়াছেলেন। এই ভাব এখনও বিদ্যমান বাহয়ছে। অন্ত ব্ৰাহ্মদিগেৰ কথা ছাড়িয়া দিয়া বৰ্তমান এক্ষি আচার্য্য, উপদেষ্টা ও প্রচাবকদিগের দৈনিক জীবন যদি লক্ষ্য কৰা যায় ভাষা হহলে দেখা যায় যে তাঁহাদের মধ্য হইতে জ্ঞানালোচনার অভ্যাস একবারে বিল্পু হইয়া গিয়াছে। কেশবচন্দ্র সেন বলিয়াছিলেন তিনি ৩৬৫ দিনে ছই থানি গ্রন্থ পড়িতেন না, আমার্দের মধ্যে এরূপ লোক পাওয়া অসম্ভব নহে, যাঁহারা হয়ত বিগত ৫ বৎসরে হুই থানি গ্রন্থ পড়েন नाहे।

বান্ধদিগের মধ্যে এই জ্ঞানালোচনার প্রবৃত্তি হ্রাস হওয়াতে ব্রাহ্মসমান্দের কার্য্যে স্থিরতা ও ধীরতা থাকিতেছে ন।। আন্ধ্রাধিনি উৎসাহে ব্রাহ্মধর্ম্ম প্রচাব কবিতেছেন, কাল তিনি ভাবের স্রোতে ভাসিয়া আর এক রূপ ধারণ করিতেছেন। আনাদের অনেক কার্য্যে চিস্তাবিহীনতা, অসারতার লক্ষণ প্রকাশ পাইতেছে। এই সক্ল বিষয় চিস্তা করিয়া আমাদের মনে হইতেছে যে, ব্রাহ্মসমান্ধ্রমধ্যে জ্ঞানালোচনা-প্রবৃত্তি প্রবল করিবার জন্ম উপায় বিধান করা নিতান্ত প্রয়োজন হইয়াছে। স্থের বিষয় যে, ডাক্টার প্রসরকুমার রায় প্রভৃতি কতিপয় চিস্তাশীল শিক্ষিত ও জ্ঞানিলোক এ বিষয়ে উল্যোগী হইয়াছেন।

তাঁহারা বেন লোকের ঔদাসীক্ত দেখিরা ভগোদাম না হন।
বাক্ষ্যমাক্ত মধ্যে জ্ঞানের প্রতি বে প্রকার জ্ঞাদার দাঁড়াইয়াছে,
তাহার এ ভাব ভগ্ন করিতে কিছুদিন লাগিবে। আশা করা যায়
উদ্যোগ কর্ত্তাগণ মনোযোগী থাকিলে কালে জাবার হাওয়া
ফিরিবে।

### সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্ব্বাহক সভার ১ম ত্রৈমাসিক কার্য্যবিবরণ।

#### 18646

বিগত ডিসেম্বর মাসে মাঘোৎসব কার্য্য স্থাসন্দার করিবার নিমিত্ত একটা সবকমিটি গঠিত হইরাছিল। ঐ কমিটি অর্থাদি সংগ্রহ করিয়া এবং বিশেষ বিশেষ তলে কার্যানির্কাহক সভার সহিত পরামশ কবিয়া নিম্নলিখিত প্রণালী অফুসারে উৎসব কার্য্য সম্পন্ন করিয়াছেন।

ঃলা	মাঘ,	১७ <u>ह</u> े	জামুয়াবি	শনিবাৰ	বাহ্ন	পরিবার	मक्रल
				উপাসনা ও	বাহ	hসমা <b>জে</b> র	কল্যা-
				ণার্থ প্রার্থনা	1		

२वा	a)	>8 <b>इ</b>	,,	ববিবাব—প্রাতঃকালে উপাসনা।
				অপবাহে বিডনপার্কে প্রচার;
				তংপৰে নগৰ সংকী <b>ত্তন</b> এবং
				উপাসনা।

৩বা "	2)	: ८ हे	,,	(माभवाव माग्र° कारन	উৎসবেব
				केरहाधन ।	

831	"	३५हें	,,	মঙ্গলবাৰ—প্রাতঃকালে উপাসনা।
				সায়ংকালে বক্ত তা।

α ङ्	**	১৭ই	"	বুধবাব—প্রাত:কালে ড	भागना ।
				मायःकारम उन्नविमानस्य	া উৎসব।
30		345		বহুম্প্রিবার—প্রাক্তঃকার	ল উপা-

. `	"	 ,,	Gartin allocation and latter
			সায়ংকালে সঙ্গতের উৎসব।
_			.6

€	w	२५७	"	ববিবা	ৰ—প্ৰাতে উপ	াসনা। অপ-
				রাহে	षारगाठना,	সায়ংকালে
				উপাসন	11.1	

>•ই "	२२७	1)	সোমবার – প্রাতঃকালে উপাসক-
			মণ্ডলীর উৎসব। অপরাকে নগর-
			সংক্রীক্র সাধংকালে উপাস্তা।

				गरकाखन, गावरक	। (न ७ मान	(1-1
इरः	"	২৩এ	.0	মঙ্গলবারসমস্ত	<b>मिनव्या</b> शी	উৎ-
				14.27		

<b>ः</b> २ <b>ह</b>	29	२८ व	বুধবা	র—প্রাক	কালে :	<b>ণাধনম</b> গু
			गौत	উৎসব।	मधारक	चारना
			<b>हना</b> ।	<b>সায়ংকা</b>	লে বস্ত	51 1

>०₹	, <b>২</b> ৫৫	۱ ,	বৃহস্পতিবায়—প্রাতঃকালে উপা-
			সনা। অপরাহে বালক্বালিকা-
			সন্মিলন। সারংকালে ছাত্রসমা-
			জের উৎসব।
<b>३</b> 8ह	, ২৬এ	*	ভক্রবার—প্রাত:কালে উপাসনা।
			সায়ংকালে বক্তৃতা।
ऽ०₹ ,	, २१७	n	শনিবার-প্রাত:কালে উপাদনা।
			অপরাক্তে রবিবাসরিক বিদ্যালয়ের
			উৎসব। সায়ংকালে বক্তা।
<b>७</b> ७३ ,	, '২৮এ	,,	রবিবার—উদ্যানে ত্রাহ্মদ্মিশনীর
			উংস্ব।

উৎসবের বিশেষ বিবরণ তত্তকৌমুদী ও ইণ্ডিগ্রান মেসে-ঞ্লাবে প্রকাশিত হইয়াছে, এজন্ত তাহাব বিশেষ বিবরণ এথানে দেওয়া অনাবগুক।

১১ই মাৰ বাত্ৰিকালীন উপাসনাত্তে শ্ৰীযুক্ত বাবু বসন্তকুমার চোধুবী সন্তাক ব্ৰাহ্মধন্মে দাক্ষিত হইয়াছেন।

निम्नानिथिक दान १६८० उ। कावसूता उ९मन उपनाक किन-কাতায় আগ্যন ক্রিয়াছেলেন,-

मारहात्र, नत्क्री, गग्ना, शाकातिनात्र, वामभूत्रहारे, मूर्निनानान, বোলপুর, নলহাটা, ধুলিয়ান, বন্ধমান, মেদিনাপুর, কাথি, চট্টগ্রাম, निनः, ঢोका, कुभिल्ला, भग्नभनिश्ह् क्विनश्रूव, वांत्रभान, शूनमा, वाक्ष्राशी, तःशूव, (नन्याभावी, अन्याह छ भी, यावना, नड्यी (বাজসাহী) বসপুর, বানিবন, জালিপাডা রুক্তনগর, মজিলপুর, হবিনাভি, শ্রীবামপুর, সাতক্ষারা, কোন্নগ্র, লগাল, ব্রাহ্নগ্র, নলধা, বাগফাঁচড়া, চাহেডিযা, জালালপুৰ, নারায়ণগঞ্জ, বজ্ঞ-त्याशनी, ७ द्राक्त, माधिकशङ, कूमात्थाल, थलिनभूत, अश-ল্লাপপুর, কুষ্টিয়া, কুলবে!ড়রা, সঙ্গরপুর, বাগুড়ী।

বিগত ১২ছ কেব্ৰয়ারি তারিখে বক্তমান বংশবেব কাৰ্য্য-নিকাহক সভা গঠনের জন্ত অধ্যক্ষ সভার একটা বিশেষ অধিবেশন হয়। তাহাতে বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র, বাবু হেরম্ব চক্র মৈত্র, বাবু যত্নাথ চক্রবর্তী, ডাঃ প্রসন্নকুমার রায়, ডাঃ মোহিনীমোহন বহু, ডাঃ প্রফুলচক্র রায়, বাবু নবদীপচক্র भाम, वाव् डेमाभन बाब, वाव् मधूरुनन स्मन, वाव् कालामकव श्रुकुल, वावू जामानम ४८६। (शाधा । वावू वक्षविशाजी वश्र বত্তমান ব্যের কার্য্যানিকাহক সভার সভা নিযুক্ত হইয়াছেন। প্রচাবক মহাশয়দিগের প্রতিনিধি স্বরূপ বারু উমেশচক্র দও মহাশয় কার্য্যনিবাহক সভার একজন অতিরিক্ত সভ্য নিযুক্ত ইংয়াছেন। এতত্তির পাচজন কর্মচারী সমেত মোট ১৮ জন দভা লইয়া এ বংগরের কাণ্যনির্বাহক সভা পঠিত इटेग्नाइ ।

নুতন কাৰ্য্যনিকাহক সভা গঠিত না হওয়া পৰ্যান্ত নির্মামু-দারে গত বর্ষের কার্যানির্কাহক সভাই কার্যা সম্পন্ন করি-ग्राट्डन ।

১৪ই ফেব্রুয়ারি তারিনে নৃতন কার্যানির্বাহক সভার ১ম এই বংসরের কার্য্য ভার প্রহণ করেন এবং সমাজের অধিকাংশ সমর ম্লিরে ও সাধ্যাশ্রমে উপাস্নায় আচা-

আধ্যাত্মিক উরতি, উপাসক মণ্ডলীর দারী আচার্যা, উত্তর পশ্চিমাঞ্জে এবং থাসিয়া পর্বতে প্রচার, ব্রাহ্ম বালক বালিকা-দিগের শিক্ষা, ব্রাহ্মদিগের আর্থিক উন্নতি, ত্রাহ্ম মিশন প্রেস ও नमान कार्यानरतत ख्वावचा, श्रुक धाठात व्यवः धर्मनचनीत्र পুস্তক বিক্রমের বন্দোবস্ত, সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ পুস্তকালর ও नमान कार्याानरत्रत्र हिनाव शतिकात कतित्रा तका कता, কর্মচান্নিগণের প্রতি আন্তা, সামাজিক সন্মিলন, ধর্মবিজ্ঞান মভা ও ব্রাহ্মবন্ধুমভা প্রভৃতি বিষয়ে অনেক আলোচনা হয়। পুর্ব্ব বংসরের ভায় এবারও সমাজেব কার্যা সম্পাদন জন্ত Business Committee গঠিত ছইয়াছে। পণ্ডিত শিবনাপ भाक्षी महाभग्रतक मन्नामककारा এवः अठातक मरहामग्राम अ বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত, মহেল্রনাথ চট্টোপাধ্যায়, কৃষ্ণকুমার মিত্র মহাশর্দিগকে লইয়া এক বিশেষ স্বক্মিটি গঠিত হইগাছে, আবশুক বোধে তাঁহাবা সভা সংখ্যা বুদ্ধি করিতেও পাবিবেন। এই সবকমিটি কলিকাতার এবং তরিকটস্থ স্থান সমূহেব ব্রাহ্মগণের ও ব্রাহ্ম পরিবারের আধ্যাত্মিক উন্নতি যাহাতে হয় তাহার হ্বাবস্থা কবিবেন।

এই তিন মাসের মধ্যে পুরুতন কার্য্যনিকাহক সভার ২টি সাধা বণ, ১টি বিশেষ, এবং নৃভন কমিটিব ৪টি সাধারণ অধিবেশন হইয়াছে।

ব্বাহ্নগ্র, কোন্নগ্র, বামপুর্হাট, বাঁকুডা,বর্দ্ধমান,টাঙ্গাইল, জলপাইগুডি, ভবানীপুর, লক্ষ্ণৌ, মেদিনীপুর ও হবিনাভি ব্রাহ্মসমাজের সাম্বংসরিক উৎসব সম্পন্ন হইয়া গিয়াচে।

পুত্তক প্রচার—Brahmoism নামক একথানি ক্ষুদ্র পুত্ত-(कव ) म मः खंबन ও তাহাব मञ्जाधिकाव क्रम कवा हहेग्राह्य।

ফ্রিদপুবের অন্তর্গত কোটালিপাডা অঞ্লে লোকেব অভিশয় অন্নকণ্ট উপস্থিত হওয়াতে তথাকার প্রকৃত অবস্থা কি তাচা অনুসন্ধান করিবাব নিমিত্ত এবং অর বিশ্বর অর্ধ সাহায্য করিবার জন্মও বাবু কাশাচন্দ্র ঘোষাণকে বিঞ্চিৎ অর্থসহ সেই অঞ্লে পাঠান হইয়াছে।

আমাদিগের শ্রহাম্পদ সভাপতি বাবু আনন্দমোহন বস্থ महाभारत करत्रक मात्र बहेराज चान्ना छान नाहे अअन जिल ইউবোপ যাত্রা করিতেছেন। কায্যনিবাছক সভা আশা করেন যে তিনি এই স্থযোগে সাধারণী ত্রাহ্মসমান্তের প্রতিনিধি স্বরূপ ইউরোপে কিছু কার্য্য করিবেন। তাঁচার প্রতি যথাসাধা শ্রদ্ধা প্রদর্শন উদ্দেশে একটা বিশেষ স্বক্ষিটি গঠিত করিয়া भिग्ना हिटलन । ध मन्नदक गांश वाहा कहता धर गतक मिछिटे जांश করিয়াছেন। ঈশ্বর করুন তিনি সম্পূর্ণ স্কুন্ত ও সবল হইয়া স্থারণ ত্রাক্ষসমাক্ষের নানা প্রকারের হিতক্র কার্য্যের च्युक्षान कतिशा श्राप्तत्व श्राजागमन करत्रन ।

আমাদিপের প্রচারক মহাশর্গণ নিম্নলিখিতরূপ কার্য্য कत्रियाष्ट्रम ।

পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী-মাঘোৎদবোপলকে মন্দিরে পাঁচ দিন আচার্য্যের কার্য্য, একদিন প্রাচ্য ও প্রভীচ্য ধর্মভাব প্রধিবেশন হয়। এই অধিবেশনে সভা বিশেষ উপাসনাত্তে বিশবে সন্দিরে বক্তা, ছাএসমাজে তিন দিন বক্তা,

ব্যের কার্য্য, একটা আন্ধ বিবাহে আচার্য্যের কার্য্য, ভত্তকৌমুদ্রী
সম্পাদন ও Indian Messenger পত্তিকা সম্পাদনের সহারতা,
সাধনাশ্রমবাসিদিগের শিক্ষার ব্যবস্থা, করেকটা আন্ধ পরিবার
ও ছাত্রবাস পরিদর্শন, এতন্তির আন্ধবাসিকা শিক্ষালয় ও বোর্ডিং
এবং আন্ধবালক বোর্ডিংএর তত্ত্বাবধান।

শিষ্ত বাবু নগেন্দ্রনাথ চটোপাধ্যায়—
নিৰ্তা ব্রাহ্মসমাজের সাষ্ৎস্রিক উৎসব উপলক্ষে আচার্য্যের কার্যা, কলিকাতা ছাত্রসমাজে "বিবেক ও ঈশ্বর" বিষয়ে ছইটা বক্তা, মাধ্যেশের উপলক্ষে ব্রহ্মবিদ্যালয়ের সাশ্বংস্রিক উৎসবে "পরকাল" বিষয়ে বক্তৃতা, ছাত্রসমাজের উৎসবে "পশ্মতীন নীতি ও নীতিহীন ধন্ম" বিষয়ে বক্তৃতা এবং তিন দিবস তিনি বেদার কার্য্য এবং ভংপর কোন ব্রাহ্ম পরিবারে একটা শিশুর জন্মদিন উপলক্ষে উপাসনা, শ্রীনামপুর ব্রাহ্মসমাজের উৎসব উপলক্ষে আচার্য্যের কার্য্য, মেদিনীপুর উৎসবের উল্লেখন, উৎসব দিবসে ছই বেলা বেদার কার্য্য, পাহাডাপুর ব্রাহ্মসমাজে উৎসব উপলক্ষে দেদীর কার্য্য, কোন ভদ্রলোকের বার্টীতে উপাসনা ও উপদেশ, সমাজ মন্দিরে "পদ্ম মতের বিবাধে ও সামঞ্জ্য" বিষয়ে বক্তৃতা, কোন কার্ম্য পরিবাবে একটা শিশুর নানকরণ উপলক্ষে উপাসনা এবং গোপার্যিকে স্বান্ধবে ব্রহ্মপাসনা ।

বদ্দান ব্রহ্মিন ডের উৎসব উপলক্ষে সম্পাদক মহাশয়ের ভবনে উপাদনা ও উপদেশ এবং সমাজ বাটাতে সঙ্গাঁত ও সংকার্ত্তন বামপুরহাট উৎসবের উদ্বোধন, উৎসর দিবসে ছই বেলা বেদীর কার্যা এবং সম্পাদক মহাশয়ের ভবনে নগর সংকার্ত্তন বাহির হুইবার পুরের "নাম মাহান্ত্রা ও ভক্তি" বিষয়ের বক্তৃতা, এতগাতীত ধ্র্মাবিষয়ক পুত্রক বচনা, সাময়িক পত্রিকায় ধ্র্মাবিষয়ক প্রবন্ধ লোবা, কলিকাতা ও মফঃস্বলে বান্ধ ও অক্তান্ত লোকের সহিত ধ্র্মা ও সামাজিক বিষয়ে আলোচনা।

গ্রীয়ক্ত বাবু নবদ্বীপচন্দ্র দাস—

কলিকাতা - মাঘোৎসবেব মধ্যে একদিন উদ্যান সন্মি ननीए डेलामना अवरु डेलामन मान, मगाएक डेलामना, পরিবাবে অনুষ্ঠানাদি উপলক্ষে বিশেষ উপাদনা এবং সাধনাপ্রমে মধ্যে মধ্যে উপাসনাদি, ববাহনগবে-একটা পরিবারে বিশেষ অফুষ্ঠান উপলক্ষে উপাসনাদি, ঢাকায়---মালোৎসব উপলক্ষে উপাসনা, পাঠ, ব্যাপ্যা এবং পরিবাবে উপাসনা, একদিন আক্ষসমাজে "नक्षक्रभा" विसाय वक्कृ डा এফদিন উপাসনা, বাকুড়া উৎসবে नातांत्रगथ-नगाद्य डेलामना डेलामन, लार्ठ ও वााचा, এक निन मयाक मन्मिटत 'वाकानभारक छगनारमन लीना' এই विषया वक्क छ। এवः আর একদিন স্থানীয় কোন ভদ্র লোকেব বাসায় তাঁহাদেব विल्म असुरवार "रय हांग्र त्मरे शाम" এर विषय वक्त् छ। বাজারে "ধর্মে থাকিয়া ক্লেশ পাইতেছি দেখিয়া অধর্মে मन मिटव ना" अहे विषय वक्कु छा, वर्कमान छे परव छे भामना ও উপদেশামি টালাইল উৎসবে উপাসনা, উপদেশ, পাঠ ব্যাখা। এবং জালোচনা बाता खाक्रधर्य धाठात, वाचित्वत खाक्रत खाजा वाव क्रकक्मात्र विज बहाभरम्य बाफ़ीरफ कीर्खनानि । क्रविनान आक्षेत्र फाउनोत्र बार् इत्रमान (बाब महाभव्यत्र शतिवाद्य अवः नमारक डेनानना, डेनाहम ७ व्याच्या वदः श्रानीय माननीय অমিদার শ্রীযুক্ত হাফেজ মহম্মদ আলি থা সাহেবের সুলে "ছাত্রজীবনের তপস্থা কি ?" এই বিষয়ে বক্তা তৎপর নগর मः शीर्जन, बाम्कीत-छा कात्र तमगी त्माहन घटेक महानरत्रत्र यर्ष शानीत कूरन "धाकुछ खीवरनत नकन कि १" धहे विवरत वकुछा, ভাদগ্রাম—তাঁহার জন্মভূমি দেখিতে যাইয়া গ্রামেব ভদ্র লোকদেব অমুরোধে "মানব আপনাব কর্মানুরূপ স্বভাব লাভ করে" এই বিষয়ে বক্তৃতা, কোন্নগর উৎসবে ঊপাসনা. উপদেশ, পাঠ ও ব্যাথ্যা জলপাইগুড়ি উৎসবে সমাজে এবং পবিবারে উপাসনা, উপদেশ, পাঠ, ব্যাখ্যা এবং মালোচনা, একদিন সমাজ মন্দিরে "বিশ্বাদে মিলিবে বস্তু ?" বিষয়ে বক্তা এবং বাজাবে "মানব নিজ কর্মেব জ্লভ দায়ী" বিষয়ে বক্তা, দৈনদপুর-পরিবারে এবং সমাজে উপাসনা, উপদেশ **এবং ব্যাখ্যাদি কবেন**।

শীযুক্ত বাবু শশিভ্ষণ বস্ত—কলিকাতা—মাঘোৎসব উপলক্ষে মন্দিরে কয়েক দিন উপাসনা এবং "ধর্মজীবনের বিকাশ" সম্বন্ধে একটি বক্তৃতা কবেন। মাঘোৎসবের শেষ দিন হইতে প্রায় ছই মাস কাল শবীর অস্ত্রু থাকার কোন কার্য্য কবিতে সমর্থ হন নাই। একথানি বাঙ্গালা ও একগানি ইংবাজি পুস্তক বচনায় প্রায়ুত্ত আছেন, এবং Brahmoism নামক একথানি ক্ষুদ্র পুস্তক রচনা কবিয়া তাহার স্থাবিকার সমাজে বিক্রম্ব করিয়াছেন।

বাবু লক্ষাণ প্রসাদ—লক্ষ্ণে অবস্থিতি কালে সামা
কোক উপাসনা, দরিজদিগকে ঔষধ বিভবণ এবং ব্রন্ধবিদ্যালয়ে

শিক্ষা দান করিয়াছেন। মাঘোৎসবে লক্ষ্ণেতে আচার্যোর
কাষা এবং বক্তৃতা করিয়াছেন। এতদ্বাতীত তিনি শাণ্ডিলা,
হবছই, সাজাহানপুব, বেরিলী, মুরাদাবাদ, সাহারাণপুর
মজ্ফবনগর, মিরট, দিল্লি, সেকেক্রাবাদ, আলিগড, মথুবা,
রুলাবন এবং আগ্রা প্রভৃতি স্থানে ভ্রমণ করিয়া সেই সেই
স্থানে উপাসনা, বক্তৃতা, ধর্ম্মালোচনা দ্বাবা ব্রান্ধর্ম্ম প্রচার
কবিয়াছেন। এক্ষণে তিনি গোয়ালিয়া, ঝান্সি,ব্যাণ্ডা, এলাহাবাদ, কানপুর প্রভৃতি স্থানে প্রচারার্থ গমন করিয়াছেন।

খাশিয়া মিশন ও বাবু নীলমণি চক্রবন্তী—একধানি বাঙ্গালা বিপোট এবং থাসিয়া ভাষায় আদ্ধায় সম্বন্ধীয় একধানি ক্তু পুত্তিকার সংশোধিত দিতীয় সংকরণ প্রকাশিত হইরাছে। একধানি ইংবাজি রিপোট ও অক্ত একধানি থাশিয়া পুত্তিকা প্রস্তুত হইতেছে। নীতি বিদ্যালয়, বঙ্গ বিদ্যালয়, চিকিৎসালয় প্রভৃতির কার্যা রীতিমত চলিতেছে। বাবু নীলমণি চক্রবন্তী এই মিশন কার্য্যের জক্ত ষথেষ্ট পরিশ্রম ক্রিতেছেন। ইহার অর্থ সংগ্রহ হেতু তাঁহাকে নানা স্থানে শ্রমণ করিতে হয়। সেই উপলক্ষে সমাজে ও পরিবারে উপাসনা, অফুটান ও বজ্তা দারা তিনি আদ্ধার্ম প্রচার করিতেছেন। বিগত মাঘোৎসব্যেক্লিকাভায় প্রশাদিরে তিনি ছই দিন আচার্যের কার্য

করিরাছেন। এতহাতীত প্রাতেও করেকদিন উপাসনা করিরাছেন। স্থনামগঞ্জে "বাভাবিক ধর্ম্ম" বিষয়ে একটি বস্তৃত। করিরাছেন।

#### সাধনাশ্রম।

আশ্রমের দৈনিক উপাসনা নিয়মিতরূপে চলিয়াছে। এত ছিল্প মাসিক তিনটী উৎসব হয়। >লা জাতুয়ারি উৎসবে একজনকে আশ্রমের সহায় শ্রেণীভুক্ত করা হয়। ১লা ফেব্রু-यावी जाजास्य वांश्मविक उत्मत्व अक्षमत्क अमर्कावकार्य, তুই জনকে সংকল্লাধীন ওযাকারকপে (একজন মহিলা) এবং তিন জনকে আশ্রমেব সহায়রূপে গ্রহণ কবা হয়। বিগত बार्षाएमरवाननाक ३२ हे याच माधावन बाक्समयाक यन्तिरव আশ্রমের উৎসর হয়। এই উৎসর উপলক্ষে একজন পাঞ্জাবী ভাতা আপনাকে केचरिव हवर्ग ममर्थन करवन। मार्घारमस्वव পুরু হইতেই উত্তর পশ্চিম প্রদেশে এক প্রচাব দল পাঠাইবাব সংকল্প কৰা হয়। তদনুসাৰে গত ফেব্ৰুয়াৰী মাদে ভাই প্রকাশদেব, ভাই স্থন্দব সিং, ত্রীযুক্ত গুক্দাস চক্রবতী, ত্রীযুক্ত কাশাচক্র ঘোষাল তংপৰে আমান্ আমিকবিহাবী উত্তর পশ্চিম প্রদেশে যাত্রা কবেন। এই উপলক্ষে মন্দিবে ৮ই ফেব্রুয়াবী তাহাদের বিদায় স্চক ত্রন্ধোপাসনা হয় এবং তৎপব তাঁহাদেব ব্যয় নিকাহার্থ অথ সংগ্রাত ২য়।

আশ্রম হইতে ক্ষেক্টা ব্রাহ্ম ও হিন্দু প্রবিবাব এবং ছাত্রা-বাস প্রিদশন ক্রা হইয়াছে। এই প্রিদশনে উপাসনা সঙ্গীত সংকীর্ত্তন ও আলোচনাদি হইয়াছে। প্রযোজন নত ক্থন ক্রথন রোগীব শুশ্রমাদিব ব্যবস্থা ক্রা হইয়াছে। নিম্নে ওয়া-ক্রিবগণের কার্য্য বিবরণ প্রদৃত্ত হইল।

শ্রীযুক্ত পশুত শিবনাথ শাস্ত্রী এবং বাবু নবদীপচক্র দাস মহাশব্যের কার্যাবিবৰণ স্থানাস্তবে মুদ্রিত হইয়াছে।

শ্রীযুক্ত আদিনাথ চটোপাধ্যায়— ব্রাহ্মমিশন প্রেসের অধ্য- কেব কার্য্য করেন। কখন কখন আশ্রমের উপাসনার কার্য্য কবেন। মাঘোৎসবে মন্দিরে একদিন উপাসনা কবেন। কোন কোন ব্রাহ্ম পবিবারে পরিদশন ও উপাসনার কার্য্য করেন। সম্প্রতি স্বাহ্য উন্নতির জন্ম কিয়দ্দিবসেব অবকাশ গ্রহণ কবিয়া পশ্চিমে গিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়—মাংলাৎসব উপলক্ষে
মন্দিরে চুই দিন উপাসনা করেন। অস্তান্ত সময়ও মন্দিরে
প্রাক্তঃকালীন উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য করেন। নিম্তা
রাহ্মসমান্দের আচার্য্যের কার্য্য করেন। কয়েকটি রাহ্ম পরিবার প্রিদর্শন করেন। আশ্রমের উপাসনার কার্য্যও অনেক
সময় কবিরাছেন।

শ্রীযুক্ত প্রকাশদেব—মাথোৎসবে মন্দিরে একদিন উপাসনা করেন। কথন কথন ব্রাহ্ম পরিবার পরিদর্শন করিয়াছেন। "ব্রাহ্ম প্রচাবক" পত্রিকার সম্পাদনের সহায়তা কবেন। ফেব্রুয়ারী মাসে উত্তব পশ্চিমে যাত্রা করিয়া প্রচার করিতেছেন।

শ্রীযুক্ত শুরুদাস চক্রবর্তী—উত্তর পশ্চিম প্রদেশে যাইবার

জস্তু বিশেষরূপে প্রস্তুত হন। কথন কথনও সাধনাশ্রমে উপা-সনার কার্য্য করেন। কেব্রুয়ারী মাসে উত্তর পশ্চিম প্রদেশে যাত্রা করিয়াছেন এবং নানা স্থানে প্রচার করিতেছেন।

শ্রীযুক্ত কাশীচন্দ্র খোষাল—তমুকৌমুদী সম্পাদনের সহায়তা করেন। ফেব্রুয়ারী মাসে উত্তর পশ্চিম প্রদেশে প্রচাব করেন পরে কলিকাতা প্রত্যাগত হইয়া ফরিদপুর অঞ্চলে অয়কষ্ট প্রপীডিত লোকদিগের সাহায্যার্থ প্রেরিত হন। ইনি এখনও তথায় কাজ কবিতেছেন। ইনি সাধনাশ্রমে কথনও কথনও উপাসনাব কাষ্য করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত জয়শয়ব রায়—আশ্রমের মাানেজমেণ্টের ভার ইহার হাতে। আশ্রমবাসিণী মহিলাদিগকে প্রতিদিন শিক্ষা দিয়াছেন। প্রায়ই ব্রাহ্ম পরিবার পবিদশন করিয়াছেন। কিছুদিন ব্রাহ্মবালিক। শিক্ষালয়েও শিক্ষা দিয়াছেন।

উত্তব পশ্চিম প্রদেশে প্রচার যাত্রীদল আপাততঃ আরাতে আশ্রমেব একটি শাথা প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। আবা জেলা বিহার ও উত্তর পশ্চিম প্রদেশের প্রায় সন্ধিন্তলে, এজ্ঞ এবং আবও কোন কোন কাবণে ঐ স্থলে তাঁহারা আপাততঃ অবস্থিতি করিয়া প্রচার কবিতেছেন।

নিমে আয় বায়েব হিসাব প্রদত্ত হইল :--

আয়		_বায়	
मान श्राप्ति	926/0	., .,	তথি
সাঃ বাঃ সমা <b>জ</b> হট	ভে	দিগেব আহারা	fr
প্রচাব কার্য্যের সা		বাবদ	૨૧૧૫૮১•
প্রাপ	<b>خ</b> ۰ ؍	পাথেয় হিঃ	99110
বাড়ী ভাডা হিঃ	20	ডাকমা <b>স্ল ও</b> প	মকাক
ওয়াকাবদিগের নি	किं	বাবদ	₹ %    \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
হইতে প্রাপ্ত	20:110		and the second s
ভিক্ষা প্রাপ্তি	<b>৩৯</b> ৯১.		<b>98</b> :/«
পাথেয় হি:	<b>a</b> \	<b>ন্ধিত</b>	@11/5·
পুস্তক বিক্রম হিঃ	9110		
বিবিধ হিঃ	241	মোট	28 7 19 19
	08 o he > o		
গত বৎসরের স্থিত	and a		
		•	
মোট	2:411680		

সঙ্গত সভা—এই তিন মাদে প্রতি মঙ্গলবার সন্ধ্যার পর সাঃব্রঃ সমাজের উপাসনা মন্দিরে এই সভার ৯টা অধিবেশন হয়। তাহাতে গড়ে ১১ জন সভ্য উপস্থিত হইয়া-ছিলেন। এই ৯টা অধিবেশনের মধ্যে তিনটা অধিবেশনে 'মহানির্কাণ তন্ত্র' ও 'বাইবেল' পাঠ এবং ব্যাখ্যা হয়, বাকী ৬টা অধিবেশনে নিয়লিখিত ৩টা বিষয়ের আলোচনা হয়। ১। "হিন্দু শাস্ত্র পাঠের ফলাফল কি ?" ২। "সঙ্গতেব সভ্যদিগের অবশ্ব কর্ত্তব্য বিধি ও নিষ্ধে।" ৩। "সত্ত্যের সাধন।"

ব্রহ্মবিদ্যালয়—মাঘোৎসবের পর হইতে ইংরেজ ধর্ম-বিজ্ঞানের শ্রেণী ও ভগবদগীভার শ্রেণী নিয়মিতরূপে চলিতেছে। ইদানিং বাবু অবিনাশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যার মহাশয়ের শিক্ষাধীনে বাঙ্গালা ধর্মবিজ্ঞানের শ্রেণী পুনরায় থেলা হইয়াছে। এই শ্রেণীতে মধ্যে মধ্যে ইংরেজিতেও বক্তৃতা হইয়া থাকে।

#### দাতব্য বিভাগ—

ঈশর ক্লার দাতব্য বিভাগের কার্য্য পূর্ববংই চলিয়াছে।
এই তিন মাস মধ্যে ৮টা পরিবার, ১২টা ছাত্তা, ১টা ছাত্তীর,
ছইটা অন্ধ ও একটা কুঠ রোগীর এবং একটা লোকের পাথের
সাহায্য করা হইরাছে। অর্থাভাবে উপযুক্তরূপে হংখীদিগের
সাহায্য করা ঘাইতেছে না। সর্ব্বাধারণে বিশেষতঃ ব্রাহ্মগণ
যদি অফ্টানাদি উপলক্ষে এই কণ্ডে কিছু কিছু অর্থ দান
করেন, তাহা হইলে এতদারা অনেক তঃখীর তঃখ মোচনের
সাহায্য হঠতে পাবে। যাহারা এই কণ্ডে অর্থ দান কবিরাছেন, তাঁহাদিগকে অন্থবের সহিত ধন্তবাদ প্রদান কবিতেছি।

জ মা		-গ্রচ	
ष्यस्थीन উপলক্ষে দান		মাসিক দান	80 NO
পা <b>া প্</b>	२४	এককালীন দান	2610
বাধিক দান	ه ااد د	विविध वाग्र	5:10e
বিবিধ হিঃ প্রাপ্ত	<b>ं॥</b> ०		
•			reide
	••	হত্তে স্থিত	>801>€
পূৰ্বকাৰ স্থিত	> 9 5 4 e		
`	-		३>bh•
	२२४५०		

ব্ৰাহ্ম ছাত্ৰীনিবাস ও ব্ৰাহ্ম শিক্ষালয়—ছাত্ৰীনিবাসে शरफ हालो भरथा २৮। वर्तनान हाली भरथा २१। ইहास्तर मधा এक जन এখানে শিক্ষার্থীৰ কাজ কবেন ও ৰাকা ২৬ জনপঠি কবেন: ৭ জন নুত্র ভর্ত্তি হইগ্লাছেন এবং অন ছা'ড্যা গিয়াছেন শিক্ষালয় - গড় ছাত্রী সংখ্যা ৭৭। वर्खमान ছাত্র ও ছাত্রী সংখ্যা ৭৯। ইঙাদের মধ্যে ২৫ জন ছাত্রীনিবাদে থাকে। বাবীসকলেই বাড়ী হইতে আসিয়া প্ডিয়া যায়। ইহাদেব মধো ১৫ জন বালক। ১৩ জন নুজন ভর্ত্তি ১ইবাছে এবং > জন ছাড়িয়া গিয়াছে। গত এন্ট্রান্স প্রীক্ষায় ও জন ছাত্রী প্রীক্ষা দিয়াছে। বর্ত্তমান । এণ্টান্স ক্লাশেব ছাত্রী সংখ্যা ৮। ছুই জন শিক্ষক কার্যাভাগে। कविद्यार्कन ध्वरः > कन निक्कद्रियो निभाव शहन कविद्यार्कन । ; ১ क्रन । भक्तक ও इंडे क्रन भिक्रमियों नियुक्त श्ह्या हिन। ইহাদের মধ্যে একজন শিক্ষায়ত্রী বিনা বেতনে কাজ কবি-তেছেন প্রজ্ঞার বীমাদে বার্ষিক প্রীক্ষা এবং ফেব্রুযাবী ছইতে ন্তন বংশৰ কাৰ্যাবেন্ত চইষাচে। শিক্ষাপ্ৰণালী কিঞ্ছিৎ পবিবর্ত্তন হইয়াছে: নিম্নেশ্রণী স্মাহ বাঙ্গালা ও উচ্চশ্রেণী भग्रतः हे रताञ्चन अणि वित्यव गत्नात्वारा (५९४) हम। বাবু মথু চামোচন গঙ্গোগাঁধীয়ে এক পঞ্চ কাল বিনা বেতনে काछ करिश्राष्ट्रितम।

	হিস্বি।	
ৰমা ——	—— ধরচ ——	
ছাত্র ও ছাত্রীদের	ছাত্ৰীনিবাসে	ার খাওয়া
বেতন	১১৫৫৸৽ থচর	867056
होना ও नान	৩৬৯২৫ কর্মচারী ও	চাকর-
	(मन (व	ত্ৰ ৬৭৭॥৽
	১৫>৪৮৫ গাড়ী	>> « N911
পূৰ্বস্থিত	১৩৬৶৽ বাড়ীভাড়া	२१७
	विविध	491091
<b>মো</b> ট	sus-nele	
		>ab>ha/>
	<b>হ</b> ত্তেখি	७६० १५८३६
	মোট	sounde

শ্বিনের জীবনী শক্তি", "সামাজিক আশাশীলতা; প্রীযুক্ত বাবু নগেক্সনাথ চটোপাধ্যার মহাশর "বিবেক ও ঈশ্বর" (১) "বিবেক ও ঈশ্বর" (২), "ধর্মহীন নীতি ও নীতিহীন ধর্ম।" শীযুক্ত বাবু রুফকুমার মিত্র বি.এ "প্রকৃত শিক্ষা", এতদ্বাবতীত তরা মার্চ্চ "জীবনের কৃত কার্যাতা" সম্বন্ধে শ্রীযুক্ত বাবু হেরম্বচন্দ্র বৈত্র এম, এ, ও বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র বি,এ বক্তৃতা করেন, পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী সভাপতি ছিলেন। ২টি মাত্র আলোচনা সভা হইয়ছে। উভয় সভাতেই শাস্ত্রী মহাশয় সভাপতির কার্যা কবিয়াছেন। ২৪শে মার্চ্চ ছাত্রসমাজে ইপাসনা হয়। শীযুক্ত বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত আচার্যোব কার্যা করেন। গত ১৯শে ফেরুয়ারি ডাঃ পি, কে, বায় ছাত্রসমাজের বরেকটী সভাকে আপনার গৃহে নিমন্ত্রণ করেন এবং তাহাদের সঙ্গে নানা বিষয়ে আলাপাদি করেন। ছাত্রসমাজের বর্ত্তমান সভা সংখ্যা ২০৪ জন।

উপাসক মগুলী—বিগত ০ মাসে নিয়মিতকপে মন্দিরে উপাসনা হইয়াছিল। শ্রদ্ধাম্পদ পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী ও জীযুক্ত বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত মহাশয়গণ অবিকাংশ দিন উপাসনার কাষ্য কবিয়াছিলেন।

ম ওলীব বর্ত্তমান অবস্থাব উন্নতি সাধন জন্ম বিগত জুলাই মাসে যে কমিটী গঠিত হইশ্লাছিল সেহ কমিটির বিশোট বিবেচনাধীন রাহ্যাছে।

আয় ব্যবেব হিসাব

আয়		4) ¾	
<b>ठैं नि</b> । ञानाम	9000	বেভন	७५ ॰
দান সংগ্ৰহ	>%>0	মন্দিব মেবামত	2 311% 0
ছাত্রসমাজ হইতে গ্যা	<b>স</b>	গ্যাসের আলো	159110
<b>રિઃ</b> જાજ	>>,	সুদ্র কৃদ্র বায়	: હા ઇશા
হাওলাত	२४	হাব্যোলিয়ম	
	-	মেরামত	٠٠/
	2221/10		
পূর্বস্থিত	७७४८ १॥	l	102/1
		— হস্তেষ্টিত	৬;•
	2861/2	n	
			1861/51

# আয় ব্যয়ের হিসাব। সাধারণ বাদ্ধসমাজ।

আয় —————	- वाय	
সভা ও সহযোগিগণের		1-7 -
নিকট চাদা আদায় ৩৯৫॥১১৫	কম্মচাবীৰ বেতন	984/50
বাষিক ২৮০॥১১১	উপাসক মণ্ডলী	(1)0
মাসিক ১১২৫	গচ্ছিত ও হাওলাভ	223 %
०२ ६॥ ५ २ ६	ট্রাইডিড	15.
প্রচাবার্থ দান ৩০৮।১/১০	বিবিধ	21/•
বার্ষিক ৯৫৮৯/•	মৃদ্রাস্থণ	>>{₁ •
মাসিক ১৪৪॥∙	ভাকমাভুল	31e'5.
<b>এककानी</b> न ७৮८> •	উৎসব	seh.
	আসবাব	e \
00 Pld 30	সিটা <b>কলেজ</b> বৃত্তি	F8110

<ul> <li>किंसिन विकास निर्माण विकास निर्माण विकास निर्माण विकास विक विकास विक विकास विक विकास विक विकास विक विकास विकास विकास विक विक विक विक विक विक विक विक विक विक</li></ul>	> ∥•	মূল্য আগার নগদ বিক্রর হাওশত কাগজ গত বংসরের স্থিত	26/19/26 26/19/26 26/19/26 26/19/26 26/19/26	কৰ্মচারীয় বেক্তর কাপজ মূড়াঙ্গ কমিশন ডাকমাশুল দপ্তরী বিবিধ	9 Hod 6 - \hd 10 - \h
(৫ প্রচারক গৃহ ভৃত্তিক লেট সৌদামিনী লি হত্তেছিত ) ) :	হৈ: ৫৸/১০ ৯০॥০ বৃত্তি ১০১ ১২৬৬॥৮/০ ৩৭০॥৮/১৫	নগদ বিজ্ঞার হাওলভ কাগজ	26110 20010 20010 20010 20010 20010 20010 20010	<b>কাপ্ত</b> মূড়াঙ্গ কমিশন ডাকমাণ্ড্ <b>ল</b> দপ্তরী বিবিধ	9 he's 8/ 8/36 9 ho/s 3h/s
ছৰ্ভিক লাই নৌ দামিনী : লৈ হত্তেছিত লৈ হত্তেছিত লৈ	৯০॥• বৃদ্ধি ১০১ ১২৬৬॥৫০ ৩৭০॥১/১৫	হাওকত কাগজ	>&II.0 >&II.0 >&II.0	মূড়াঙ্গ কমিশন ডাক্মাণ্ডল দপ্তরী বিবিধ	8/30 Be/30 9 Ho/0 3 H/0
ele/ (সীদামিনী ele/ e হত্তেছিত e	হস্তি ১০১ ১২৬৬॥৫০ ৩৭০॥১/১৫	কাগ <b>জ</b>	>&II.0 >&II.0 >&II.0	কমিশন ডাকমাণ্ড <b>ল</b> দপ্তরী বিবিধ	البادة البادة البادة البادة
।⊍∘  • হতেস্থিত    }>•	୨୧ <i>୭</i> ୫୩% ୧		>€  • >Þ≤  •\>¢	দপ্তরী বিবিধ	16/5@ 9 40/0 5 4/0/0 5 29/1/5 &
• <b>হতেস্থিত</b>  /১•	٥٩٠١١١ > ٥	গত বংসরের স্থিত		দপ্তরী বিবিধ	<u></u>
• <b>হতেস্থিত</b>    -  -	٥٩٠١١١ > ٥	গত বংসরের স্থিত		বিবিধ	مراهد ع د/ ۱۱۱۹ هـ د ال
);					عدارااوهد عدارااوهد
);• :	<u></u> > ⊌©91/>€		) \$ \% 46 C	<b>হত্তে</b> স্থিত	
	S € € 1/S €			<b>হন্তে</b> স্থিত	₩•
				,	
					>>+4/>€
·				7 (2) 4 1	
			ব্ৰাহ্ম মিশ	न (प्यन ।	
			১ম ত্রৈমাসি	কে হিসাব।	
		আদায় (মুদ্রারণ ইর	ग्रापि	মুদ্রাহণ কাগজ ইং	<b>डा</b> क्
/>¢		হিসাবে যাহা প		বাবদ যাহা ধার ৫	
<i>)</i> •		1	ু প্রক্রাপ্ত করা ও	<b>হ</b> ইয়াছে	steolle.
		ছাপাই	>> અ∘ <b>ા</b> ⊍•	स्र	98
<b>′</b> > <b>¢</b>		প্রেস প্রস্তুত	>9 o   o/ •	বাটী ভাড়া	30,
		গৃহ প্রস্তুত	\$0,	ওয়ার এণ্ড টিয়ার	755/
পুস্তক।		<b>हा अगा</b> ९	, ५७५२५(६	সরঞ্জামী	siends.
		ञ्चम १७५		বিবিধ	810/50
<b>ফর্ম</b> চাবীর বে	তেন ১২৸/১০	কর্মচাবীব			11/•
৫ মুদ্রাকণ	₹9\	•			৬৫৩॥১ •
·	૭৯				9.04/5.
: ডাক্মাভুল	<b>3</b> %c <b>€</b>				ble e
	1		86200/26		25/
অপরের পুস্ত		গত বংসরের স্থিত			3
•	SHOHE				,
পুসক ক্রয়	3281V)&	•	8422 h.e		• '666
গড়িত	orehe se		•		<b>V</b>
— হাওলত	į			,	
	,				
,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,				ote i sautine	
	a2 > 11/2 o			•	801010
<b>হস্তে</b> স্থিত	≫81/¢			<b>হ</b> স্থেহিত	>6
	)२ <b>६१</b> % ३६			•	
\ \ \ \			মুদ্রান্ধণ     মুদ্রান্ধণ     মুদ্রান্ধণ     মুদ্রান্ধ     মুদ্রা	মুদ্রাহ্বণ     স্কর্মী তম্মত টাইপ হেস্কর      ডাক্মান্তল     স্ক্রেল স্থাক বিজ্ঞারের      স্ক্রেল স্থাক বিজ্ঞারের      স্ক্রেল স্থাক বিজ্ঞারের      স্ক্রেল স্থান কর্মা সভা বহুসরের স্থিত ৮৯॥১০      স্ক্রেল সমান্ত      স্ক্রেলিড তিন্ত      স্	প্রিন্ধ বিজ্ঞান বিজ্

মূলা আদার	₹₽812 <b>•</b>	কর্মচারীর বেভন	७৯
বিজ্ঞাপন	221	<b>मूजाइ</b> व	>2010
নগদ বিক্ৰশ্ব	w.	কাগন্ধ	७२॥•
কাগজ	h•	<b>मश्र</b> ी	244·
ডাক্মাণ্ডল	J•	কমিশ <b>ন</b>	81•
		ডাক্মা <b>ওল</b>	٤٥٠٥٥
গত বংস্বের স্থিত	۰۲۶،۵۲۰ ۱۷۵	বিবিধ -	ew.
10 44614 100			2084/3C
	७७७।/७६	হম্বেহিত	#>  •

### ব্ৰাহ্মসমাজ।

विवाह-विशंख २०१म अधिम मनिवात कात्रशत्रनिवानी শ্ৰীযুক্ত সাতকড়ি দেবের মাণিকতলা থালপারত্ব ভবনে তাঁহার ক্সা কুমারী স্থবালা দেবের সহিত, দেরাছন প্রবাসী আমাদের अरद्भव वद्भ वावू कालीरमाहन शास्त्रत शुक्ष औमान विशिनविकाती বেংবের গুভবিবাহ গ্রাহ্মধর্ম-পদ্ধতি অনুসারে সম্পন্ন হইরাছে। পাত্রের বন্ধস অফুমাণ ২৩,২৪ বৎসর, পাত্রীর বন্ধস ১৪ বৎসর, ব্রীযুক্ত নগেন্দ্রনাপ চট্টোপাধ্যার মহাশর আচার্য্যের কর্যেন । ৩১৬/১৫ বিবাহ ৩ আইন অমুসারে রেজেটরি হইরাছে।

শ্রাম্বন্ধ ২১শে এপ্রেল শ্রিবার প্রাতে শ্রীযুক্ত
বাবু হেরছচক্র নৈত্র নহাশরের ক্লিকাডার ভবনে উহিবে
পূজনীরা মাডা ঠাকুরাণীর আলাশ্রাদ্ধ বাস্থার্থের পদ্ধতি সক্
সারে সম্পন্ন হইরাছে। পণ্ডিত শিরনাথ শাল্রী ও বাবু নবখীপচক্র দাস আচার্য্যের কার্য্য ক্রিরাছেন। প্রাদ্ধেরে প্রাঠ্ করিরাতাহার স্বর্গান্তা জননীর যে সংক্রিপ্ত জীবনচরিত পাঠ করিরাভিলেন, তাহা প্রবণ করিয়া অনেকেই উপক্রত হইয়াছেন।
এই সকল প্রদ্রের হিন্দু রমণীর গুণাবলী আমাদের মহিলাগণের
অমুকরণীর।

আদ্যশ্রেদ্ধি—নদীপুর নিবাসী (মুবশিদাবাদ) শ্রীযুক্ত
বাবু জগলাথপ্রসাদ শুপু ১৬ই চৈত্র কাশীধামে তাঁহাব
প্রলোকগতা মাতৃলানীর আদ্যশ্রাদ্ধ প্রাক্ষধর্ম অন্থপারে সম্পন্ন
করিয়াছেন। উক্ত অন্ধূলিন শ্রীযুক্ত বাবু গুরুদাস চক্রবর্ত্তী
আচাগ্যেব কার্য্য করিয়াছেন। গুপু মহাশর তাঁহার মাতৃলানীর
উইলদ্বারা কাশীধামে যে বাজী পাইয়াছেন তাহা প্রাক্ষসমাজের
কার্যো দান করিবেন বলিয়া শ্রাদ্ধ-বাসবে সংক্র করিয়াছেন।
বাজীর দাম ৩৫০০ টাকা হইবে। তিনি শ্রাদ্ধের পর নিম্নাধিত অর্থ দান কবিয়াছেন।

সাং বাং মিশন ফণ্ড >\

ঐ সাধন আশ্রম

দাসাশ্রম

স্মাধ আশ্রম

>\
স্মাধ আশ্রম

>\

পরমেশ্বর পরলোকগত আত্মার শান্তিবিধান করুন।

দীক্ষা—মনাই চা বাগান নামে আমাদের বন্ধ্র প্রীযুক্ত আনন্দমোহন বন্ধ ও শ্রীযুক্ত গুণামোহন দাস মহাশয়দিগের আসামে একটী চা বাগান আছে। দাজিলিং নিবাসা শ্রীযুক্ত মতিলাল হালদার মহাশয় এই বাণানের অধ্যক্ষ। আমবা দেখিরা স্থণী হইতেছি যে, মতি বাবুর যত্তে ও চেষ্টাতে তদ্দেশে ব্রাহ্মধর্ম প্রচার হইতেছে। পত্র পাঠে জানা গেল গত ৬ই মার্চ তারিখে মনাই চা বাগান ব্রাহ্মসমাজে শ্রীযুক্ত বলেশ্বর আগরওয়ালা নামক একজন যুবক পবিত্র ব্রাহ্মধর্মে দীক্ষিত হইরাছেন। ইনি তেজপুরস্থ স্ক্রিধ্যাত ও সম্লান্ত শ্রীযুক্ত হরিবিলাস আগরওয়ালার প্রাত্তপুত্র; বয়স ২০/২৪ বংসর; বলেশ্বর বাবু তাঁহার দাক্ষা উপলক্ষে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচার কণ্ডে এককালীন ব্লপাচ টাকা দান করিয়াচেন।

প্রচার—কলিকাতা সাধনাশ্রম হইতে শ্রীবৃক্ত বাবু মহেন্ত্রনাথ চট্টোপাধ্যার ও হরিমোহন খোবাল কাঁথি আক্ষদমাক্রের
উৎসবের সাহায্যার্থে প্রেরিড হইরাছিলেন। তাঁহারা সেথানে
আক্ষধর্ম প্রচার করিরা সম্প্রতি প্রতিনিবৃত্তি হইরাছেন।

শ্রীষুক্ত বাবু নীলমণি চক্রবর্তী চট্টগ্রাম সাধারণ ব্রাহ্মসমাব্দের উৎসব উপলক্ষে গ্রন করিয়াছেন। শ্রীবৃক্ত বাবু নববীপক্তস দাস বস্তুতা প্রাক্তসমানের উৎসব উপলক্ষে তথার গমন করিয়াছেন।

ছাত্র-সমাজ—বিগত ১৩ই এপ্রেল সারংকালে প্রেনি-ডেন্দি কলেজের বিজ্ঞানাধ্যাপক শ্রীবৃক্ত জগদীপচক্র বস্থ ও তাঁহার সহধর্ষণী শ্রীষতী অবলা বস্থ কলিকাতা সাধারণ প্রাক্ষ-সমাজের ছাত্রসমাজের কতকগুলি সভ্যকে আপনাদের ভবনে নিমন্ত্রণ করিরাছিলেন, জগদীপ বাবু ছারাচিত্র (Magiclantern) ঘোগে নানাবিধ আশ্চর্যা বিষয় প্রদর্শন কবিরা সমবেত ছাত্রদিগকে বিশেষ প্রীত করিরাছিলেন এবং তাঁহার পত্নী সৌজন্ত ও আতিপোর ছারা সকলকে - বিশেষ আপ্যায়িত করিরাছিলেন।

কুমারী কলেট্— কুমারী কলেটের মৃত্যু সংবাদ যেদিন কলিকাতার পঁচছিল, তৎপর দিন সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ আফিস ব্রাহ্ম মিশন প্রেস ও ব্রাহ্ম বলিকা বিদ্যালয় বন্ধ রাথা হয় এবং সেই দিন যে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্যানির্বাহক সভার অধিবেশন হওয়ার কথা ছিল, তাহা বন্ধ থাকে এবং পর্নদিন সেই অধিবেশন হইয়া অপরাপর কার্য্যের মধ্যে কুমারী কলেটেব মৃত্যু উপলক্ষে শোক স্চক প্রস্তাব স্থিরাক্বত হয়। তৎপর দিবস আর্থাৎ ২০শে এপ্রেল শুক্রবার অধ্যক্ষসভার যে অধিবেশন হয়, তাহাতে অপর সকল কার্য্য বন্ধ করিয়া কেবল মাত্র শোকস্টক এক প্রস্তাব গৃহীত হয়। ২৭শে এপ্রেল সিটিকলেজ ভবনে অনেক ব্রাহ্মবন্ধু সমবেত হইয়া তাহার জন্ম বিশেষ প্রার্থনা করেন।

ক্তজ্ঞতার সহিত সীকার কবিতেছি যে, জেলা ফবিদপুরের শ্রন্থর্গত কোটালিপাড়া অঞ্চলের ছর্ভিক্ষ পীড়িত বাজিদিগের সাহায্যার্থে নিম্নলিথিত মহোদর মহোদরাগণ অর্থদান করিরাচন। আর অনেকে পুরাতন এবং নৃতন বস্ত্রদান করিরাচেন, তাঁহাদিগকে আন্তরিক ধ্সুবাদ প্রদান করিতেছি।

প্রীগুক্চরণ মহলানবিশ.

ধ	নাধ্যক, সাধারণ ত্রাহ্মসম	गुक्र ।
শ্ৰীযুক্তা অনস্তবালা দেবী, গৌ	রীপর (বন্ধ ক্রয়ার্থ)	٠٤,
<b>बीयुका कानिमही (नवी (वज्र</b>	क्रमार्थ)	۶۰/۰
তীযুকা কুঞ্জকুমারী ওপা, ন	া <b>দীপুর</b>	۶/
"काभिनीञ्चनती (परी	ð	<b>!!</b> •
ू <b>ण्</b> छ देवसण्यी	<b>&amp;</b>	ķ •
वक्रन विवि	ক্র	d•
বাবু প্যারিশাল খোষ, মেদিনী	পুর	1.
" निर्मानहङ्घ होधूती		ų.
"মক্ৰজান মণ্ডল		<sub>1</sub> •
"ভুবনমোহন ঘোষ, কলিয	<b>•</b> 1ত1	۶,
" অমৃতলাল দাস, ৩১নং র	किठ्य प्रोटमत त्मन	# •
কুমারী প্রেমকুস্থম দেন,	ক <b>লিকা</b> ডা	>/
মিষ্টার কে, জি, গুপ্ত	₫	.4\
שבת לבעות במנים להוד לה	* .b	,

6:40

	নিৰ্ম্মলা দন্ত,	ক্র	<b>ک</b> ر
বাবু হ	প্ৰক্ৰাৰ রার	,	(Jy) 4.
:টা ব্ৰ	াশিকা		500
শ্ৰীমতী	হেমন্তকুমাবী সকুল		>,
v	গিবিবালা দাসী		>/
n	কুন্দমালা সেন		>\
29	অনলা কম্ব		3/
	वित्राख्यां किनी एएवं,	কলিকাতা	<i>ii</i> •
×	প্রেমলভা দেব	<b>3</b>	11 •
বাবু ম	তিলাল ফালান, মল্লিক	ষ্ট্ৰীট, বডবাক্সাব কলিকাতা	'o'
শ্ৰীমতী	ে হেমস্তকুমাবী হালদার		1-
শ্রীমতী	(अर्थगरी (प्रव		j •
পুরাত	ন বস্ত্র বিক্রেস		4.
ৰাৰু ব	াধাগে <b>৷বিৰু সাহা, কু</b> মা	রথালি	۶/
		-	

### বিজ্ঞাপন।

### कुङ्क करछत माहागा প্रार्थना।

গত ভাদে মাদে পূর্বে বাঙ্গালাব ভিন্ন ভিন্ন স্থানে বিশেষতঃ
বিক্রমপুরে ভ্রানক অন্নক ই উপন্ধিত হইষাছিল। সেই সমল
ঐ সকল লোকের সাহায্যাথে আমরা সাধাবণের নিকট সাহায্য
প্রাণনা করিষাছিলাম। অনেক মহোদর ভ্রাতা ভ্রিনানগণ
তথন অর্থ সাহায্য করিয়াছিলেন। আমনা ভ্রাবা এ সকল
স্থানে লোক পঠিইয়া সাহায্য করিয়াছিলাম। ভাহাব দক্র কিছু অর্থ উন্তর্ভ হর্রাতে ভাহা স্থাবিণ, ব্রাহ্মসমাজের ছভিক্ষ
ক্রেগে গজ্জিত ছিল।

বিগত ফাস্কুন মাস চইতে ফ্রিদপুলের অন্তঃপাতী কোটালি-পাচা অঞ্জে ভয়ানক অয়কট উপস্তিত ২ইবাচে। তথা ২ইতে কোন জোন সঙ্গার লোক স্বিবেণ ব্রাহ্মস্নাজেব কার্যানিকাইক স্ভার ঐ দংবাদ জানাইয়াছেন। তংপবে কাষ্যানিকাঠিক 'স্ভা৪∾্চলিশটি টাকাস্সাবুকাশীচ—জ যোবাল মহশিয়কে ঐ সকল অঞ্লে প্রেরণ কবিয়াছেন। কাশী বাবু ৩থায় মাইয়া অফুসন্ধান করিয়া শিথিয়াছেন যে, বাত্তবিক্ই তথায় ভয়ানক আয়কষ্ট উপস্থিত হুট্য়াছে। এমন কি কয়েক জ্বন লোক অনাহারে থাকিয়া কষ্ট সহা কবিতে না পারিয়া উদ্হরণে প্রাণ-कताश कतियाटण। कार्यानिक्याहक मन्न औ मःवान शाहेश। ক্রমারর টাকা পঠেটিভেছেন। অস্ততঃ আবাঢ় মাস পর্যাস্থ এইভাবে দাহায়া করিতে হটবে। এই জভা আমরা দর্শ সাধারণের নিক্ট বিনীতভাবে অর্থ সাহায্য প্রার্থনা করিতেছি। যাহারা হুথ ক্ষছন্দে দিন যাপন করিতেছেন, তাঁহারা যদি এই অনাহারে ক্লিষ্ট দ্রাতা ভগিনীদিগের ছংখের কথা একবার চিন্তা করেন এবং খীর খীয় ক্ষমতা অমুসারে কিছু কিছু অর্থ সাহায্য করেন, ভাহা হইলে অনেক পরিমাণে এই সকল দীন দরিজ-मिर्गत घःथ भाइन इटेस्ड शास्त्र।

বাঁহাবা এই ছজিক পীড়িত লোকদিগেব ছঃখ মোচনের মন্ত্র কার্যা করিতে ইচ্ছা কবেন, তাঁহারা অনুগ্রহ পূর্বক সম্বর্ম নিম, সাক্ষরকারীর ঠিকানার পাঠাইলে আঞ্চাবক কুতজ্ঞ গ্রহ সহিত গৃহীত হইবে। আমাদিগেব নিকট টাকা আদিশে আমরা ছজিক পীড়িত স্থানে তাহা পাঠাইবা নিব। বাঙাতে ছজিক কণ্ডের টাকা কোনও কপে অব্ধা ব্যস্ত্র বা অপ্যায় নাহর, সে বিষয়ে আমবা বিশেষ দৃষ্টি বাথিব।

নিবেদক, ্রিপ্তরুচরণ অহলানবিশ ধনাধাক সাধারণ বাদ্ধসমাজ।

মুত দেখেৰ প্ৰতি সম্মাননা পুথিবাৰ সকল জাতি মধ্যেই (पित्रिक शास्त्रा यात्रा आभारिकत (पर्वास्त्र भ्यानशकाल-জন্মত দেহ শাশানে লইয়া যাইবাৰ সমৰে আছীয় সঞ্জনগৰ হাতে ভুন্ধা লুহয়া যান। আমনা এ প্রথাকে অন্যান করিতে পাবে না। আহে,ব হজনের মুভ দেহ আত সার্ধানে मयानगः करित संभएक भगाष्ट्रास्त नवता सहिएक भाषा साम्र. আমব' তাহাৰ একটি উপাধ চিতা নাবতে হ। শাংলেতেধ **ख**रु । यन् भुद्र विक्रम्प स्थाप । या विक्रम् । या विक्रम्प । या विक्रम्प । या विक्रम्प । या विक्रम्प । या विक्रम गमरभाग्व कावशास्त्र विभूष । । १८७ था १८५। १। १० व्यवशा वावशात एसन कावया व्यामना व्यानक मनन वह कहे ষম্ভব কার। আকি। এছতা জানরা এনন একটি উপায় াস্ত্র কারতে ইচ্ছা ক্রিভোছ, শহাতে মূত্র দেনের প্রতি যথা-ो उन्हर्भ पारक, व्यथि तर्ग । नाषा २२मा अञ्चार्धावक भी १ ९ ५५२व ६३७ भक्षा ५ ४५। करा भागा

য়ত বেহেব গ্রাথানি ভাপন বাদ্যা আত্মার স্বর্জন ও বন্ধু বার্ধর দাবা ভগ চালিত কাবতে পা। যায়, ভাগা হললে বন্ধু বার্ধর দাবা ভগ চালিত কাবতে পা। যায়, ভাগা হললে বন্ধু নান অভাব অন্দেক প্রিমাণে মোচন হল্পে পারে। শক্তথানি এমন ভাবে পারত হলবে যাহা দোবায়াই সকলের মনে বেশ সার্ধিক ভাবের উদয় হলবে। আমবা অনুমান করিছেছি, আপাততঃ নালাদিক ৫০০ পারে শঙ্ক টাকা হল্পে একবান শক্ট প্রস্তুত হলতে পারে। ব্রাহ্ম মহোনরগণের নিকট বিনীত ভাবে এই কার্য্যের জন্ম আন্মান সাহান্য ভিশাক বিবেছি। আশা কবি, সকলেই এ বিষ্পের গুক্ত আ্লান বারার আমাণিগকে বাদিত করিবেন।

বলা ৰাজন্য যে আক্ষমাত্রেই মৃত দেহ শ্মশানে স্ট্রা যাইবার সময় এই শক্টথানি ব্যবহার করিতে পালিবেন। নগরের এমন কোন স্থানে একটি বর ভাড়া ক্রিয়া হউক বা যে উপায়ে হউক শক্টথানি রাথা হইবে যে সহজেই সক্লে যধাসময়ে উহা পাইতে পারেন।

> নিবেদক শ্রীকান্তিচন্দ্র মিত্র। শ্রীগুরুচরণ মহলামবিশ।

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

তয় সংপা। ১৭শ ভাগ।

১লা জ্যৈষ্ঠ সোমবার, ১৮১৬ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫। 🕞

বাৎদরিক অগ্রিম মূল্য ২১০ মফললে ৩

প্রতি খড়ের মূলা

#### প্রার্থনা।

তে স্ষ্টেকর্ত্তা বিধাতা, রক্তমাংসময় জীব মানবকে তুমি চর্ক্রন বলিয়াই জান। তুমি কি মানবের নিকট পূর্ণতার অপেক্যাকব ? তাহাব অপূর্ণতার অর্থ এই যে, সে ভ্রান্তি ও চর্ক্রলতা বশতঃ তোমার প্রদর্শিত আদর্শ হইতে সর্ক্রদাই আপনাকে হীন দেখিতে পাইবে। কিন্তু তুমি ইহা চাও যে, সে অকপটে তোমার প্রদর্শিত আদর্শের দিকে অগ্রসর হইবার জন্তা প্রয়াস পাইবে। সরল ও অকপট আকাজ্কা তোমার নিকটে অতীব স্পৃহনীয়। পুল্পের স্থাণ যেরূপ, অবপট আকাজ্কা মানবাত্মার পক্ষে সেইরূপ। ইহা পুল্পের স্থাণের স্থাণের স্থাত্ম তোমার নিকট আদৃত হয়। যে প্রাণে আকাজ্কা আছে, সেথানে তোমার শুভাণীর্কাদও আছে। প্রভাগ, এই প্রাথনা করি যে, সহস্র চুর্ক্রিতার মধ্যে হৃদয়ের আকাজ্কা যের স্ক্রনণ উর্মুণে থাকে। সে অগ্নি যেন কথনও নির্ক্রাণ হয়ান।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

শান্তিধাম—এই গ্রীয়ের প্রথর রৌদ্রে করেকজন পথিক এক বিতীর্ণ প্রান্তব মধ্য দিয়া পথ চলিতেছে। কিছু পথ উতীর্ণ হটতে না হটতে তাহাদের কণ্ঠতালু শুক্ত হইয়া আসিল। তথন পিপাসার বারি কোথায় পাওয়া যায়, তাহাদের অন্তরে এই চিস্তার উদয় হইল। পথ পার্ম্বে যদি কৃষ্ণ-বাটিকা দেখিতে পায়, জলের অম্বেশে যায়, কিছু নিরাশ হইয়া ফিরিয়া আসে, কারণ দেখিতে পায় যে, যে হই একটা তড়াগ বা বাপী আছে, তাহাতে জল এত অয়, এয়প পদ্ধিল ও এয়প উষ্ণ যে তাহা পানের উপযুক্ত নহে। অবশেষে যথন তাহারা নিরাশ অন্তরে অ্বসময় হইয়া পড়িতেছে, এয়প সময়ে দরে কতকগুলি ছায়াযুক্ত কৃষ্ণ দেখিতে পাইল এবং ইহাও শক্ষা ক্রিল যে, কতকগুলি পথিক লোক বৃক্ষতলে বিশ্রাম করিতেছে এবং অগ্নি জালিয়া আহারার্থ রন্ধনাদি করিতেছে। তথম ভাহায়া আশাষিত হইয়া বলিল, "ওই যে ছায়াযুক্ত বৃক্ষের নিমে সাম্থ্য বিশ্রাম করিতেছে ও প্রশান্ত চিত্তে য়ন্ধনাদি

করিতেছে, তবে নিশ্চয় ওথানে জলাশয় থাকিবে। চল ওট বৃক্ষতলে যাই।" ত্রাহ্মগণ চিন্তা করিয়া দেখুন, তাঁহারা যে ত্রাহ্মধর্মের আশ্রয়ে বাস করিতেছেন, তাহা কি ঐ প্রকার সংসার-প্রান্তরে বট-চ্ছায়া সদৃশ? তাঁহারা কি এই বটচ্ছায়াতে বসিয়া শাস্তি লাভ কবিতেছেন ? যদি ইহা তাঁহাদিগকে শান্তি দিয়া থাকে তবে সংসার পথের শ্রান্ত পথিক-গণ নিশ্চর এই বৃক্ষতলে আফুষ্ট হইবে, আর যদি এতদারা তাঁহারা নিজেই শাস্তি লাভ না করিরা থাকেন, ভাহা হইলে ইহা পাপ-ভারাক্রান্ত নরনারীকে আকর্ষণ করিভে পারিবে না। সভা-স্বরূপ ঈশ্বরে প্রকৃত বিশাস স্থাপন করিলে, लाटक लात्त्र याथा अमन अकी चानव भाव, राथात মনে করিলেই প্রবেশ কবিতে পারে ও সকল তাপ নিবারণ 🅶বিতে পাবে 🔔 সকল বিশ্বাসী ও প্রেমিকের জীবনে এই শান্তি ধার্মের পঞ্জিচয় প্রাপ্ত 🗢 যাভূফায় 🕽 তাঁহারা শুক্তব বিপদেব ছারা আক্রান্ত হারী। অত্নাত্র বিচলিত হন নাই। প্রশাস্ত ও অপরাজিভ-চিত্তে সকল অত্যাচার বহন করিয়াছেন : এই প্রশাস্ত ও অপরাজিত ভাব কোথা হইতে আসিয়াছিল গ তাঁহাদের চিত্ত সর্বাদা স্থান্নিশ্ধ ত্রহ্ম-সহবাসে বাস করিত বলিয়াই ঐ প্রশাস্ত ভাব জনিয়াছিল। এই প্রশাস্ত ভাবেব ছারা বিচার করিলে দেখিতে পাই আমরা কোন দুরে পড়িয়া রহিয়াছি। সামাক্ত একটু উত্তেজনার কারণ উপস্থিত **इहेरल आभारतत रय চिख्ठाक्षना कराय जाहा वित इहेर**ङ অনেককণ লাগে। লোকে সামাক্ত একটু অনভিমত কথা বলিলে বা অনভিমন্ত কার্য্য করিলে, অসহিষ্ণু ও উদ্ধত প্রাকৃতি একেবাবে উত্তপ্ত হইয়া উঠে ও তীব্র প্রতিবাদ করে। এই সকল লক্ষণ দেখিয়া বোধ হয়, আমরা এখন প্রকৃত ভাবে স্ত্যস্বরূপের চরণাশ্রয় করিতে পারি নাই। ঈশ্বর করুন বেন আমরা তাঁহার চরণকে বাস্তবিক শান্তিধাম বলিয়া অমুভব করিতে পারি।

সাধনে ঔদাস্ত-নিয়লিখিত আখ্যারিকাটী বৌদ্ধগ্রন্থ হইতে সংগৃহীত। মহাত্মাবৃদ্ধ যথন রাজগৃহের সন্নিকটবর্ত্তী গৃঙ্জকৃট নামক পর্কতে বাস করিতেছিলেন, তথন তাঁহার পার্যন্থ শিব্যগণের মধ্যে একজন ব্বাপুক্ষ ছিল, ভাহাকে ধর্ম-সাধন

বিষয়ে বড অমনোযোগী দেখা যাইত্যি ক্রিনিটে ও ওদ্ধেত দিন কাটাইত। সেই পর্বতেব **অপর পাথে**ত্রিক ভীরণ **অ**রণা-ময় স্থান ছিল, সেথানে নিরস্তব নানাপ্রকার শর্ম ইইড, 🔑ই 🚜 কাবণে লোকে বলিত যে, দেখানে ভূত প্রেতের আবাস স্থান। এই ভয়ে কেহ সেধানে যাইত না। বুদ্ধ একদিন ঐ অলস ও উদাসীন যুবককে সেই ভীষ্ণ অবুণা মধ্যে এক বৃক্ষ্তৃলে গ্রিয়া আश्रुठिश्व ও धारन तक शांकिरंक बोरम् कतिर्तन । विनर्तन —"যতক্ষণ না আমি তোমাকে দেখিতে আসি, ততক্ষণ তুমি ঐ স্থান পরিত্যাগ কবিবে না।" তাঁহার আদেশাহুসারে ঐ যুবক গিয়া সেই বুক্ষতলে আসীন হইল, এবং ধ্যানস্থ হইবার চেষ্টা করিতে লাগিল। কিন্তু চতুদ্দিকে এরূপ বিকট শব্দ ২ইতে লাগিল যে,- তাহার চিত্তে বিষম ভয়ের সঞ্চার হইল। (म একবার মনে করিল পলায়ন করি, আবার বুদ্ধের আদেশ শ্ববণ করিয়া তাহা হইতে প্রতিনিবৃত্ত হইল। যথন সে এই প্রকাব ইতন্ততঃ কবিতেছে, এইরূপ সম্যে কিয়দুবে দেখিল ষে, একটী বক্তহন্তী ভাষে প্লায়ন করিয়া আদিতেছে। ক্ষে দেই হন্তীটা এক নিজ্জন গিবিকুঞ্জে লুকায়িত হইয়া নিক্পদ্ৰবে শয়ন কবিয়া নিদ্ৰিত হইল। তথন সে ব্যক্তি চিন্তা কবিল, এ স্থান এরূপ নিরুপদ্রব যে, ভয়-ভীত বক্ত-হন্তীও এখানে আশ্রয় লইয়া আপনাকে নিরাপদ মনে করে; এই ত নিরুপদ্রবে সাধন করিবাব স্থান। এই ভাবিয়া সে আবার খ্যানত্ব হইল। যথাসময়ে মহাত্মা বুদ্ধ আসিয়া উপস্থিত হইলেন এবং তাহাকে ধ্যানন্থ দেখিলেন। ধ্যানভঙ্গে কুশল প্রান্ন করাতে সে ব্যক্তি ভাহার ভয়, বন্ধহন্তীর আগমন ও ভাহার চিস্তার दिषत्र সমুদার বাক্ত করিল। বুদ্ধ কহিলেন—"ভূমি উপদেশ প্রাপ্ত হও, ঐ ষ্বেভাইকী তুমি দেখিয়াছ, ওটা বন্ধন ভারে যুগ ভ্রষ্ট হইয়া পলাইয়া আ**সিরাছিল। লোকে হস্তিযুগ** ধবিতেছিল, ঐ হস্তীটী বন্ধন-ভয়ে অরণ্যে প্লাইয়া আশ্রয় লইয়াছিল। একটা সামাত্ত পশুও আয়ুরক্ষা করিবাব জন্ত বাস্ত, আব ভূমি এই প্রলোভনপূর্ণ সংসারে আত্মবক্ষার জন্ম ব্যস্ত নও, তুমি সে বিষয়ে উদাসীন।" তদবধি সেই অলস ও উদাসীন শিষ্যেব চেতনা হইল। সে মনে মনে প্রভিজ্ঞা করিল (य. माध्रास चात्र छेमाच्य कतिरव ना।

কর্ত্তব্য-জ্ঞান-বিহীন ধর্মভাব—বৌদ্ধান্তে আর একটা আখ্যায়িকা প্রাপ্ত হওয়া যায়। তাহা এই—একজন গৃহত্তেব একমাত্র পুত্র ভিন্ন সংসারে কেহ ছিল না। তাঁহারা পতিপ্রীতে ঐ একমাত্র পুত্রকে অভিশয় আদেব দিতেন। তাহার ফল এই হইল যে, তাঁহারা তাহার বিদ্যাশিক্ষার জন্ত যে কিছু আয়েজন করিলেন, তাহার কোনও ফল দর্শিল না। সে পাঠে অমনোযোগী, অবাধ্য ও ছর্ক্ত হইয়া উঠিল। তথন পিতামাতা তাহাকে গুরুকুল হইতে বাডীতে লইয়া গেলেন এবং তাহাকে বিষয় কার্য্যের তত্বাবধানে নিযুক্ত করিলেন। কিন্ত সে বিষয়ে সোনোনিবেশ করিল না। আপনার কর্ত্ব্য সাধনে উদাসীন হইয়া কেবল আমোদ প্রমোদে সময়াতিপাত করিতে লাগিল ও বিবিধ ছক্রিয়াতে রত হইয়া প্রতিবেশিবর্গের

ভাষার পিঠাঁ বিবিষয়ে ভার নিজ হত্তে গ্রহণ করিলেন। তথন সে কর্মবিহীন, অলস ও লোকের নিলিত হইয়া বেড়াইতে লাগিল। অবশেষে সে আর কিছু করিবার না পাইয়া মহায়াব্দের নিকটে উপস্থিত হইল এবং তাঁহার প্রচারিত ধর্মে দ্রীক্ষিত হইরার অভিযার, প্রকাশ করিল। বৃদ্ধ বলিলেন—
তুমি ঘদি আমার সহবাসের রূপ চাও,তবে অত্যে গিরা আপনার সভাব-চবিত্র সংশোধন কর। গৃহে ফিরিয়া যাও, পিতা মাতার বাধ্য হও, নিত্য পূলা সমাপন কর, তোমার দৈনিক কর্তব্য সকল সমূচিতরূপে সম্পাদন কর। তৎপবে আমার নিকট পুনবার আগমন করিও, তাহা হইলে বোধ হর আমি তোমাকে আনার শিষ্যদল মধ্যে গ্রহণ করিতেও পারি।"

এই আখ্যায়িকাটী হইতে আমরা একটা উপদেশ প্রাপ্ত হইতে পারি। জনসমাজে এক শ্রেণীর অলস ও অকর্মণা লোক দেখিতে পাওয়া যায়, ভাহারা এরূপ শ্রম-কাতর যে শ্রম সাধা কোন ও কার্যোই মনোনিবেশ করিতে পারে না। শিক্ষকতা করিতে দেও, জাকর্মণা শিক্ষক হইয়া পড়ে; আপীষ রাখিতে দেও, কর্ত্তব্য কার্য্যে অবহেলা কবে, কোনও বিষয়ের ভার দেও প্রচারুরপে নির্বাহ করিবার প্রয়াস পায় না। ইহারা কোনও দিকে কুতকার্য্য না হইয়া অবশেষে মনে কবে ধার্ম্মিক ও সাধু হওয়াই ভাল, তাহাতে এ সকল হাঙ্গামা কিছুই নাই। এই ভাবিয়া গৈরিক বসন বা অন্ত কোনও ধার্ম্মিকের বেশ পরিধান করিয়া বসে। আমাদের এদেশে ধার্মিকেব একটা প্রধান লক্ষণ অলস্তা স্তরাং তাহারা ধার্মিক সাধু নাম পাইয়াও থাকে। মহাত্মা বৃদ্ধ যদি থাকিতেন ভাহা হইলে . হয় ত বলিতেন, "আমার শিষ্যত্ব গ্রহণ করা অল্স ও অক্সাণ্য লোকের কর্ম নহে, অগ্রে কর্তব্যের ভার ভাল করিয়া বহিয়। এস, পবে দেখিব তুমি ধর্ম সাধনের উপযুক্ত কি না গ" ত্রাহ্ম-সমাজে কর্ত্তব্য-জ্ঞান-বিহীন ধর্মভাব যেন প্রভান্ন প্রাপ্ত না হয় প

সাধুসঙ্গ — সাধুসঙ্গ হই প্রকার, জীবস্ত সাধুসঙ্গ ও মৃত্ত সাধুসঙ্গ। অনেক সময় জীবস্ত সাধুসঙ্গ অপেক্ষা মৃত মহায়াদিগেব সঙ্গ লাভে অধিকত্ব উপকার প্রাপ্ত হওয়া বায়। জীবিত সাধুদিগের দোষগুলি আমাদের চক্ষের সল্প্রে ভাসিতে পাকে, স্ত্বাং তাঁহাদের প্রতি অনেক সময় অবিচলিত প্রজার উদয় হয় না। কিন্তু মৃত মহায়াদিগেব দোষ দেখা যায় না। তাঁহাদের জীবন চরিতে, তাঁহাদের সাধুতারই গন্ধ পাওয়া যায়। তাঁহাদের চরিত্রের ক্ষণ অংশ আমাদের কাছে অপ্রকাশিত; স্তরাং তাঁহাদের প্রতি শ্রদ্ধ জানামা থাকে।

কি উপায়ে মৃত সাধুস্ধ লাভ হয় ? তাঁহাদিগকে চক্ষে দেখা যায় না, তাঁহাদের কথা কর্ণে শুনিতে পাওয়া ষার না। কেবল স্বহত্ত কিস্বা, পর হস্ত লিখিত জীবন চরিত পাঠ এবং তাঁহাদের চরিত্র অফ্ধ্যান ঘারা তাঁহাদের সঙ্গ লাভ হইরা থাকে। উপাসনাকালে, উঘোধনের সময় সাধুগণের মাহাদ্মা চিস্তনে যথেই উপকার হয়। সাধুগণের স্থবিমল চরিত্র সর্কাণ চিস্তা করিতে করিতে তাঁহাদের সহিত আত্মার নিগুত্ সম্ক

' দ্বাপিত হয়।<sup>\*</sup> তথন তাঁহারা দূরে থাকিলেও অতি নিকটে, मृङ स्टेरन अभी विरुद्ध मात्र वर्षमान । ये रव वृक्ष, ये रव यी छ, চৈত্ত আমার প্রাণের চারিদিকে দ্ওায়মান। তাঁহারা व्यामारक উপদেশ দিতেছেন, ধর্মের স্থমিষ্ট কথা শুনাইতেছেন, জ্ঞান ভক্তি কর্মের আদর্শ দেথাইতেছেন, আমি কি তাঁহা-দিগকে পরিত্যাগ করিতে পারি ? চঞ্চল মন, দুল মিনিট शास्त वस्त्र ना ; वृक्तराव कि विनादन १ इग्न वरुपत निर्व्हात, নিরশনে, একাসনে, ধ্যান করিলেন। ৃতুমি ছটি পয়সার মমতা পরিত্যাগ করিতে পাব না, ঐ দেধ কপিলাবস্তর রাজ্যের ধন মান, স্ত্রী পুত্র সকল স্থের আশা পরিত্যাগ कतिया भतम धरनत व्यव्यवर्ग तिर्म एतरम पृतिराउटहन। टामारक त्कर निका कतिशारह, धारण वााणा भारेबाह ? বাত্রে ঘুম হয় নাই, তোমার নামে কলঙ্ক আরোপিত হই-রাছে। কি উপায়ে প্রতিশোধ নইবে, তাহার চেষ্টা করি-তেছ, হা নিকোধ ! তুমি এভাবে ধর্মসাধন করিবে ? ঐ (मथ ভक्त योख क्रम काछ बुनिया भक्तिरंगत मश्रद्ध कि বলিতেছেন ,— "প্রভো, তুমি ইহাদিগকে ক্ষমা কর, ইহারা कारन ना त्य, कि व्यवदान कतिरहाहा" भवीरवय त्वनना োধ নাই, শক্রব প্রতি কি অপুনর প্রেম। তোমার হৃদয় ভকাইয়া গিয়াছে, মকভূমির ভায়ে উত্তপ্ত হইয়াছে, ত্রন্ধের নাম উচ্চারণ করিতেও ভাল,লাগে না। ঐ দেখ চৈতক্ত সিংহ গজ্ঞনে নগৰ কাঁপাইয়া মহা সংকীৰ্ত্তনে প্ৰমন্ত। চক্ষে জল ধাবা বহিতেছে, প্রাণ দেহ ছাড়িয়া যেন কোথায় চলিয়া গিয়াছে, প্রেমের বন্যা প্রবাহিত হইয়াছে। এইরূপে দৈনন্দিন জীবনে, সাধুদিগেব সহিত স্মিলিত হইতে না পারিলে সাধু সঙ্গ লাভ হয় না।

সাধুদক লাভের উদ্দেশ্য সাধু হওয়া। প্রাক্ষ যীশু হইবেন, কিন্তু প্রীষ্টান হইবেন না, যোগেতে বুদ্ধ হইবেন কিন্তু বৌদ্ধ ধন্মাবলম্বী হইবেন না, হৈচতন্ত্রের স্থায় ভক্ত হইবেন; কিন্তু হৈচতন্ত্র পদাস্থ্যবাকারী বৈষ্ণব হইবেন না। সাধু প্রশংসায় কোনও ফল লাভ হয় না, সাধুর সাধুতা জীবনে লাভ করিতে পাবিলেই মঙ্গল। প্রাক্ষ্যমাজে বক্তৃতায়, উপদেশে সাধু প্রশংসা যথেষ্ট হইতেছে, ক্লিন্তু সাধুগণের মহাত্ম্য লাভের চেষ্টা তেমন ভাবে হইতেছে না। বিশুদ্ধ জ্ঞান দ্বারা পরিচালিত হইয়া সাধুতা গ্রহণ রূপ ব্রত অবলম্বন করিলে অচিরে প্রাক্ষমাজের অংশেষ কল্যাণ সাধিত হইবে।

ব্রাহ্মধন্মের রাজ্য-বিস্তার—কেহ কেহ বলেন, ৬৫ বংসর অতাত হইতে চলিল, এদেশে এাক্ষসমাজ স্থাপিত হইয়া ব্যাহ্মধর্ম্ম প্রচারিত হইয়া আদিতেছে, কিন্তু প্রাহ্মের সংখ্যা এক কম যে, ২৮ কোটি ভারতবাদীর মধ্যে তাহা উল্লেখযোগ্য নহে। একথা অতি সত্য। কিন্তু আমরা ব্রাহ্মধর্ম প্রচারের প্রসার এরূপ সংখ্যাহ্মসারে স্থির করি না। ব্রাহ্মধর্ম যে নবীন সত্যালোক প্রদান করিবার জন্ম পৃথিবীতে অভ্যাদিত হইরাছে, সেই সত্য জনসমাকে প্রবিষ্ট হইয়া আভ্যন্তরিক ক্লেদ দূর করিতেছে কিনা ইহাই আলোচনার বিষয়।

বৃদ্ধদেব নিরঞ্জন নদী তীরে তপস্থা করিয়া সিদ্ধিলাভ করেন। এই নদীর অপর নাম ফলস্তা। বর্ত্তমান সমরে গয়ার প্রান্তদেশে এই নদী মক্ষভূমির স্থার বালুকামরী। দিবা বি প্রহরের সমর ধধন মার্ভিও থরতর কিরণে ফল্পুর বালুকাণকে অগ্রিক্দু পিলের স্থার জ্বলস্ত করিয়া তুলে, তথন প্রান্ত পথিকের গাত্রদাহ উপস্থিত হয়; কিন্তু সেই উত্তপ্ত বালুকারাশির একটুকু খনন করিলেই ক্ষতিকের মত অতি স্থাতল জল পাওয়া যায়। সৈকত ভূমির নিয় দিয়া অবিরত শীতল প্রোত ধীরে ধীরে প্রবাহিত হইতেছে। ব্রাহ্মধর্ম্মের আভান্তর দেশ দিয়া প্রবাহিত হইতেছে। কি হিন্তুসমাজ, কি মুদলমান সমাজ, কি প্রীষ্টান সমাজ সকল সমাজের অন্তর্থকেই ব্রাহ্মধর্মের মূলমন্ত্র কার্য্য কবিতেছে।

উত্তৰ পশ্চিমাঞ্চলে পণ্ডিত দয়ানন্দ স্থান্ত তি হিন্দু সমাজে এক ব্ৰন্ধের পূজা প্রতিষ্ঠিত করিবার জন্ত আর্য্য সমাজ স্থাপন করিয়াছেন। পৌত্তলিকতা, জাতিতেদ প্রভৃতির বিরুদ্ধে আর্য্য সমাজেব সভাগণ প্রকাশ সমর ঘোষণা করিয়াছেন। বঙ্গেব শ্রেণ্ড সাহিত্য সেবক পরলোকগত বাবু বঙ্কিমচক্র চট্টোপাধাায় তাঁহার ধর্ম সম্বন্ধীয় প্রবন্ধে অবতার বাদের আবরণ দিয়া ব্রাক্ষধর্মের সতাই প্রচার করিয়াছেন। যে সকল হিন্দু প্রচাবক হিন্দু ধন্মেব পৌত্তলিক অংশ প্রচার করিছে গিয়া দেব দেবীর বৈজ্ঞানিক ব্যাখ্যা করিতেছেন, তাঁহারা অপ্রত্যক্ষ ভাবে দেব দেবীকে বিনাশ করিয়া এক ব্রন্ধের মাজক স্থাপনেরই সহায়তা করিয়াছেন। ইংলভের গ্রীষ্টান সমাজে স্বাধীন গ্রীষ্টান নামে এক দল দিন দিন বৃদ্ধি পাই-তেছে। তাঁহারা বীশুকে ঈশ্বর বলেন না, বাইবেলকে অভ্যান্ত বলিয়া বিশ্বাস করেন না। তাহাদিগকে প্রীষ্টান ব্রান্ধ বলা বাইতে পারে।

সম্প্রতি আমেরিকাব মহা মেলার ধর্ম সম্বন্ধীয় বিরাট সভার অধিবেশনে নানা দেশের নানা ধর্মসমাজের প্রতিনিধি-গণ উপস্থিত হইয়া যেরূপ উদার ও সরল ভাবে আলোচনাদি করিরাছেন, তাহাতে চিস্তাশীল ব্যক্তিগণ সকলের মূলে যে একই ধর্ম প্রতিষ্ঠিত এবং সকলের গতি ও পবিণতি যে একই' সূত্রে এথিত, ভাহা অন্মূভব কবিয়া আনন্দিত হইয়াছেন। छितिक मामाकिक विषय ७ वहविवाह, वालाविवाह, खाछिछिन প্রভৃতি যে দকল সামাজিক কুপ্রথাব বিরুদ্ধে ত্রাহ্মসমাজ যুদ্ধ করিতেছেন, সে সম্বন্ধে এতদেশে অতি স্নফল প্রস্তুত হটতেছে। দিন দিন ঐসকল কুপ্রথাব অনিষ্টকারিতা সকলে অমুভব করিতেছেন। ত্রাহ্মধর্ম অস্তান্ত ধর্মের স্থায় গণ্ডী মধ্যন্থিত ধর্ম নহে, ব্রাহ্মধর্ম মহুষ্য নির্দিষ্ট রেথান্ধিত ধর্ম নহে, ব্রাহ্মধন্ম विश्वक्रमीन, जकरणत जाधावन जम्मछि, जकण मानरवत हत्रम ধর্ম। স্থতবা পৃথিবী যতই জ্ঞানে প্রেমে উন্নতির পথে ষ্পত্রাসর হইবে, ততই ব্রাহ্মধর্মের রাজ্য বিস্তৃত হইবে। সভাই <u>बाक्षधर्षः;</u> मर्छात्र **धत्र इ**हेर्दरे हहेर्द ।

### সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ ।

#### खानां लाठना माधनाक ।

সাধন শক্ষীকে অনেকে অতি সংকীর্ণ অর্থে গ্রহণ করিয়া থাকেন। যে সমষ্টুকু উপাসনা, আরাধনা, বা নামজপে যাপন কবা যার, সেইটুকুই ধর্ম সাধনে গেল; এবং এরূপ কার্যো যিনি যত অধিক সময় যাপন কবেন, তিনি সেই প্রিমাণে সাধক শক্ষ-বাচা। একজন কোনও গুরুর নিকট দীক্ষিত হইয়া একটা মন্ত্র পাইয়াছেন, একাকী বা ধর্মবন্ধ্বনিধে সহিত সন্মিলিত হইয়া সেইটা জপিয়া থাকেন, সেইটা তার ধর্ম-সাধন। মুথে স্পষ্ট করিয়া না বলুন ভাবে এই প্রকাব বোধ হয় যে জীবনের অপরাপর কার্যোর সহিত ধর্ম সাধনের বিশেষ সম্বন্ধ নাই।

ধর্ম সাধনের এই সংকীর্ণ ভাব হৃদয়ে থাকাতে এই শ্রেণীর সাধকদিগেব জ্ঞান ও কর্মের প্রতি ওদাসীলা দেখিতে পাওয়া বায়। জ্ঞান ও কর্ম লইয়া কি হইবে, তাহা ত ধর্ম সাধনের অন্তর্ভূত নহে; তাহা মায়িক অর্থাং লৌকিক ইট্ট সাধনেব উপায় মাত্র। কিন্তু নিবিষ্ট চিত্তে চিন্তা করিলেই দেখিতে পাওয়া যাইবে যে, জ্ঞান ও কর্মের সহায়তা বাতীত ভক্তি কথনই উৎকৃষ্ট ফল প্রস্ব করিতে পাবে না। ইন্মিয় নিগ্রহ, চিত্ত-শুদ্ধি, মানব-প্রেম, সত্যানিষ্ঠা, ঈশ্বব-প্রীতি প্রভৃতি ধর্ম সাধনের যে সকল উৎকৃষ্ট ফল উনিথিত হইয়াছে, তাহা লাভ করিতে হইলে জ্ঞান ও কর্মকে সক্রদাই সহায়রূপে গ্রহণ করিতে হয়। প্রথমে জ্ঞানের বিষয় বিচার করা যাউক। তত্ত্বনিধি স্থাতি প্রত্যানের অর্থমে জ্ঞানের বিষয় বিচার করা যাউক। তত্ত্বনিধি স্থাতি প্রত্যানের অর্থমে প্রশংসা করিয়াছেন। ভগবল্গীতাক্তানের বিল্যাছেন:—

"নহি জ্ঞানেন সদৃশং পবিত্রমিঽবিদ্যতে " অর্থ—জ্ঞানেন সদৃশ পবিত্র বস্ত্র আরে নাই। যোগবাশিষ্ট গ্রন্থে আছে:—

উভাভ্যামের পক্ষাভ্যা॰ যথাথে পক্ষিণাং গতিঃ, তথৈর জ্ঞান-কর্মাভ্যাং স্কায়তে প্রমং পদ•।

অর্থ—পক্ষিগণ উভয় পক্ষে ভব করিয়া দেরপ আকাশে দিছিয়া পাকে. সেইরপ জ্ঞান ও কর্ম্ম উভয়েব সাহায্যে মানবেব প্রমুপ্ত লাভ হয়।"

প্রাচীন আচার্যাগণ জানকে কেন ধর্ম-সাধনের অঙ্গ বলিয়া বর্ণনা কবিলেন ৪ ইছার কাবণ এই, বাস্তবিক জ্ঞান চিত্তকে সম্মত ও পরিশুদ্ধ করে। একজনের কদমে যদি প্রক্লক জ্ঞানামূর্বাগ উদ্দীপ্ত হয় ও জ্ঞানামূর্বালনে অভিনিবেশ জ্ঞান, দেখিতে পাওয়া যায়, সেই সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার চিত্তের সকল ক্ষতা চলিয়া যায়, তাঁহার চিত্ত প্রতঃই সংযত হইয়া আসে। ক্রু স্বার্থ ও প্রথাসক্তির উপরে উঠিতে না পারিলে মামূষ্য প্রকৃতভাবে জ্ঞানামূর্শালন করিতে পারে না। পর্মার্থ জ্ঞানের কণা দ্রে পাকুক, সামান্ত বৈজ্ঞানিক তত্ত্বের আলোচনাতেও মামুষকে বৈরাগাভাবে পূর্ণ করিয়াছে; ক্ষ্ধা তৃষ্ণা ভূলাইয়া দিয়াছে, এবং অস্থ্ ভূগধ সৃষ্ঠ করিতে সম্ব্ করিয়াছে।

এতদেশে বুনো স্নামনাথের যে গল্প প্রচলিত আছে, ভাহা কেবল এদেশের জ্ঞানিদিগের পক্ষেই যে থাটে তাহা নহে, সকল দেশেব জ্ঞানিগণ ঐ প্রকার বৈবাগা ভাবাপর ছিলেন। বুনো রাম-নাথের গল্লটা এই।—ইনি একজন মবদ্বীপের মহাপণ্ডিত ছিলেন। একটা বনের মধ্যে ইহার সামান্ত কুটার ছিল। সেধানে এক বৃক্ষভলে বসিয়া তিনি সর্বাদা জ্ঞানালোচনা করি-তেন। সাংসারিক অবস্থা অতিশয় হীন ছিল; রামনাথের সে দিকে দৃষ্টি ছিল না। একদিন তিনি গুক্ষতলে বসিয়া গভীর তত্ত্বালোচনাতে ও অধায়নে নিযুক্ত আছেন, এমন সমরে গৃহিণী चानिया पत्र ताँ धिवात किছू नाहे वनिता उज्जन गर्जन कतिएउ আবস্তু করিলেন। অনেক তর্জন গর্জনের পর রামনাথ চকু जुलिया চाहित्लन, এবং कि त्राधित्वन बिखामा क्वाय निक्षेष्ट् একটা তেঁতৃণ গাছের পাতার দিকে অঙ্গুলি নির্দেশ করিয়া **८** एथोडेग्रा नित्रा व्यावात खानात्नाहनात्व मत्नानित्व कतित्वन । অর্থাৎ আজু ঐ ভেঁতুল পাতার ঝোল করিয়া চালাও। আমে-রিকা দেশেব সুপ্রসিদ্ধ ভাডিততত্ত্ববিৎ পণ্ডিত এডিসনের বিষয় এইরূপ একটা কোতৃককর গল প্রচলিত আছে, কতদুর সভ্য ভাহা বলিভে পারা যায় না। সে গল্পটা এই, এডিসনের এইকপ নিয়ম আছে যে, তিনি যথন তাঁহাব (laboratory), বৈজ্ঞানিক প্রীক্ষাগাবে থাকেন, তথন ডাকিতে নিধে। তাঁহার আহাবীর সামগ্রী সেথানে দিয়া আসিতে হর। যে তত্তী মনে জাগিয়াছে, যতক্ষণ ভাহার একটা নিস্পত্তি না হয়, ততক্ষণ তিনি সে ঘর পরিত্যাগ করেন না। যে কৌতুককর ঘটনাটীর উল্লেখ লোকে করিয়া থাকে, তাহা তাঁহার বিবাহের দিন ঘটিয়াছিল। ভজনালয়ে বিবাহান্তে ডিনি সন্ত্ৰীক বন্ধুবান্ধক সহকারে স্বীয় ভবনে আসিলেন। আসিয়া সকলে আমোদ প্রমোদ কবিতেছেন, হাল্ল পরিহাস প্রভৃতি চলিতেছে, ইতিমধ্যে কোন সময়ে এভিদন সে সভা হইতে সরিয়া পড়িয়াছেন ৷ কি এক নতন তত্ত্তাহাৰ মনে জাগিয়াছে, তিনি তাহার পরীক্ষাগাৰে প্রবেশ করিয়াছেন। কিয়ৎক্ষণ পরে সকলে বধন জানিতে পাণিলেন যে, তিনি পরীকাগারে গিয়াছেন, তথন সকলে তাঁহাব পত্নীকে ডাকিনে নিষেধ করিয়া একে একে চলিয়া গেলেন। সে রাতি অভিবাহিক হইয়া গেল, এডিসন শয়ন शृह् थाकितन ना ; भन्नित (वना ) • है। यासिया (शन, उधन अ বাহিব হটলেন না। অবশেষে তাঁহার পত্নী আর অপেকা করিতে না পারিয়া তাঁহার পরীক্ষাগারে প্রবিষ্ট হইলেন। প্রবেশ কবিয়া দেখেন, এডিদন একথানি বেঞ্চের উপরে শয়ন করিয়া ছই কক্ষতলে ছই হস্ত দিয়া, নয়ন মৃদ্রিত করিয়া আছেন. দেখিলে বোধ হয় যেন নিদ্র। যাইতেছেন, কিন্তু ভাহা নিদ্রা নহে, তিনি চিন্তা করিছেচেন। তাঁহার পত্নী তাঁহাকে ঠেলিবা माज हकू हाहिया विवक्त रहेवा बिक्कामा कविरमन,-- जूमि (क? কেন আমার চিন্তার ব্যাঘাত কবিতেছ ? যথন বুঝিলেন যে, তিনি তাঁহার নব-পরিণীভা ভার্যা, তথন মার্জনা চাছিয়া উঠিয়া বিদিৰেন, ও সে গৃহ হইতে বাহির হইয়া আদিলেন। এ গল্পী সত্য না হইলেও এরূপ চিত্তের অভিনিবেশ আনেক জ্ঞানীর कीवत्न पृष्टे रहेबाहि। कानात्नाहनाएउ अन्नभ किनिद्वन

থাকিলৈ কি আর ক্রাশরতা থাকিতে পারে ? বেথানে অজ্ঞতা সেথানে প্রায় ক্রাশরতা দৃষ্ট হয়। ক্রাশর ব্যক্তি যতই সাধন কর্মক, তাহার সাধন কথনই উৎক্লট ফল প্রসব করে না। চিত্তের উদারতা ও কর্ত্তব্য জ্ঞানের উজ্জ্লতা এই হুইটা গুণ যে চিত্তে নাই, সেথানে ধর্ম সাধনের রঙ থোলে না; ধর্ম-বিশ্বাস সেথানে কদাকার দেথায়। এই জ্বল্ল জ্ঞানালোচনাকে ধর্ম সাধনের একটা প্রধান অঙ্গলপ্রমনে করা কর্ত্তবা। কেবল উপাসনা, প্রার্থনা, নাম-জ্ঞাপ হইবে না, সেই সঙ্গে সংক্ল জ্ঞানালোচনা ও সদক্ষানকেও রাথিতে ছইবে।

এই জ্ঞানালোচনা বিষয়ে ব্রাক্ষদিগেব ঔদাসীস্তের বিষয় গতবারে উল্লেথ কবা গিয়াছে। জ্ঞানালোচনার অভাবে ব্রাক্ষ-সমাজের ধর্মভাব দিন দিন সংকীর্ণ ও অফুজ্ঞল হইয়া য\ইতেছে। আশা কবি, এদিকে সকলের দৃষ্টি আফুট হইবে।

#### ব্রাক্ষ-বালক ও বালিকাদিগৈর শিক্ষা।

বহুদিন হইতে আমর' এবিষরে ব্রাহ্মদিগের দৃষ্টি আকর্ষণ কবিবার চেটা করিতেছি । সুধের বিষয় যে গতবারের তত্ত্ব-কৌমুদীতে "ব্রাহ্ম-বালকদিগকে বাচাও" এই শীর্ষক যে সম্পাদকীয় মস্তব্য প্রকাশিত হইয়াছিল, তাহা কাহাবও কাহাবও দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে। এসম্বন্ধে আমরা শিক্ষক হা কার্য্যে অভিজ্ঞতা প্রাপ্ত একজন শ্রদ্ধের ব্রাহ্ম বন্ধ্ব নিকট হইতে একথানি পত্র প্রাপ্ত হইয়াছি, ভাহাস্থদীর্ঘ হইলেও সকলের বিশেষ আলোচনার বিষয় বলিয়া এই প্রানেই গৃহীত হইল। আশা করি সকলে এই বিষয়ে চিস্তা কবিবেন ও যাহাতে এই সকল আলোচনার একটী ফল ফলে সে বিষয়ে সহার হইবেন। পত্রথানি নিয়ে প্রদত্ত হইল:—

"বিগত ১৬ই বৈশাথ তারিথের সম্পাদকীয় মন্তব্য মধ্যে "ব্ৰাহ্ম-বালকদিগকে বাঁচাও" প্ৰবন্ধ পাঠ করিলাম। এ সম্বন্ধে আমাদের কিছু বলিবার আছে, যত সংক্ষেপে হয় ভাহা লিখিতেছি। আমি কলিকাতায় গত ১৮ বংশর কাল ছাত্রভাবে ও শিক্ষকভাবে কাটাইয়াছি। এই ১৮ বৎসরের মধ্যে ১০ বৎসর-কাল শিক্ষকতা করিয়াছি 💪 এত কাল কলিকাতার প্রধানত: ২টী উৎকৃষ্ট বিদ্যালয়ের সহিত সংশ্লিষ্ট থাকিয়া এই অভিজ্ঞতা नाफ कतिशांकि (य. এই সকল বিদ্যালয়ে यদি কেহ বালক-দিগকে না পাঠাইয়া তাহাদের লেখা পড়ার বন্দোবস্ত করিতে পারেন, ভাহাই করা উচিত। আমি আজ কেবল এই কথা विनिष्ठिक् ना, यथनहै आभाव वसूता वानकिमिश्राक कृतन পাঠाইবার কথা জিজ্ঞাসা করিয়াছেন, আমি সর্ম্বদাই তাঁহাদের বাডীতে রাথিয়া পড়াইবার বন্দোবন্ত করিতে অহুরোধ করি-बाहि। आमि कलिकाजात यञ जान-रालक आहে. जाहारमत व्यक्षिकाः भटकरे कानि। ' छाराद्यत मध्य यळ खनि कूटन পড়িরা হাষ্ট্র ছেলেদের সহিত মিশিরা ভাহাদের পিতামাতাব শক্ষার ও সমাজের কলছের কারণ হইরাছে, তাহাও অবগত আছি। আমার যে বন্ধুরা কলিকাভার স্কুল সমূহে কাজ করেন আমার বোধ হয়, তাঁহাদেরও মধ্যে কেহই এইরূপ মনে 🕽 করেন না যে, আমি একটা কথাও অভিরিক্ত করিয়া লিখিতেছি। কলিকাতার স্কুল সমূহের উন্নতি করা নিভান্ত আবস্থাক হইরাছে, তাহা আজ্ঞ কালকার শিক্ষা-ব্যবসায়ী সকলেই স্বীকার করিবেন। এখন ঐরপ বড় কাজে হাত দিবার শক্তি আমাদের আছে কি না তাহার বিচার না করিয়া, যাহাতে আমাদের ঘরের বালকদিগের কিছু করিতে পারা যায়, তাহার ব্যবস্থার কথা ভাবিলে হয়।

ष्यां भिन्न विश्वारह्म (य, बाक्ष-वानक मिरात्र अन्त किन-কাতায় বোর্ডিং স্থাপিত হইয়াছে এবং তাহাতে বালকদিগের স্থান্দাব ও তত্ত্বাবধানের বন্দোবস্ত করা হইয়াছে, কৈন্তু তথাপি বান্ধ-অভিভাবকদিগের এই বিষয়ে মনোযোগ দেখা যাইতেছে না। আমাদের মনে হয়, অত্যাম্ভ সামাভ কারণ থাকিলেও প্রধানত: ছইটী কাবণে এই বোর্ডিংএ তাদৃশ অধিক বালক হয় নাই। (১ম) এই বোর্ডিরএ থবচ অধিক। এত থরচ দিয়া অতি অন্ন পিতামাতাই এই বোর্ডিংএ বালকদিগকে রাখিতে পারেন। কলিকাভায় বোর্ডিং রাথিলে ইহা অপেকা কম ধরচে চালানও সহজ নয়। (২য়) এই বের্ডিংএ শিক্ষার জন্ত স্বতন্ত্র কোন বন্দোবন্ত নাই। বালকেরা বাড়ীতে থাকিলে যে ফুলে গিয়া পড়িবে এবং যে সকল স্কুলের ছেলেদের সহিত মিশিবে, বোর্ডিংএ থাকিলেও যথন তাহারা তাহাই করিবে, তখন বোর্ডিংএ পাঠাইয়া বেণী লাভ দেখেন না বলিয়া কেহ বালকদিগকে তথার পাঠাইতে চান না। এই ছইএর প্রতিকারের উপায় আপনিই লিণিয়াছেন, এই বোডিংকে महत्वत्र वाहित्त्र (कान्ध श्वाष्ट्राक्व श्वात्न गरेग्रा याहेट इस्ति। किञाद द्यार्फिः । महत्वत्र वाहित्त्र नहेगा याख्या याहेट शाद. দেই সম্বন্ধে আমরা কিছু বলিতে ইচ্ছা করি ক্রমে তাহা লিখিতেছি।

বিগত ২৯শে এপ্রেল তারিখের Indian Messenger পত্তে একখানি প্রার্থনা পত্র বাহিব হইয়াছে। ভাহাতে লিখিত श्हेगाइ (य. श्वामारमत बान्ध-वानिका वार्डिः এ २० है। वानिका অবস্থান করিয়া শিক্ষা লাভ করিতেছেন, এবং বোর্ডিংএর ছাত্রী ব্যতীত আরও ৫৫টা বালকবালিকা ব্রাহ্ম-বালিকা শিক্ষালয়ে শিক্ষা পাইতেছেন। কিন্তু এই ছইটীর অত্যন্ত অর্থাভাব হইয়াছে। ছাত্র ছাত্রীদের বেতন লইয়া মাসিক আবও २००८ ठोकार करम हेशांत अंत्रठ हिलाउट मा। गंडनीरमणे हेरेएड সাহায়া পাইবাব জন্ম বিগত ২ ছই বংসব যাবং যথাসাধ্য চেটা হইতেছে, কিন্তু তাহা পাওয়া যাইতেছে না, কত দিনে বা কত পরিমাণে পাওয়া যাইবে, তাহার কিছুই নিশ্চয়তা নাই। এই বৎসরের অবশিষ্ট অংশের জগুই প্রায় ২০০০ টাকা আবিশ্রক হইতেছে। সাধারণত: আমাদের আয় যেরূপ তাহাতে যে এতদিন এত বাম কবিয়া স্থূল ও বোর্ডিংটী রক্ষা করা গিয়াছে हेहाहे या ११ है तिया मान हहे एउ हा। आह एवं दिनी मिन রাধিতে পারা যাইবে বোধ হয় না। বাবু গুরুচরণ মহলানবিশ বাবু খারকানাথ গঙ্গোপাধ্যায় ও পণ্ডিক শিবনাথ শাল্পী মহাশয়-গ্ৰ ইহানের কার্যান্তার গ্রহণ করিয়া, কিরূপ কট করিয়া যে, এই ছইটা রক্ষা করিয়াছেন, তাথা সহজে বুঝা যায়। এত টাকা

থবচ করিয়া আর কত দিন আমরা ইহাদের রক্ষা করিব ? ইহাদেরও মফস্বলে লইয়া বাওয়া ব্যতীত আর কোনও উপার আছে বলিয়া মনে হয় না। যথন আমাদের কুল ও বোর্ডিং রাথিতেই হইবে, এখন কি উপায়ে তাহা রক্ষা করা যায়, সেই বিষয়ে আমাদের চিস্তা করা উচিত।

কম্মেক বৎসব ধবিয়া তত্তকৌমুদী স্তম্ভে ও উৎসবের সময় Conferenceএ সহরের বাহিরে ত্রাহ্ম-বালক ও বালিকাদিগের জন্ম বোর্ডিং ও স্কুল স্থাপন করা সম্বন্ধে আলোচনা হইয়াছে। কিন্তু উহা কার্য্যে পবিণত কবিবাব বিশেষ কোনও চেষ্টা করা হয় नाइ। श्रात्र व्यापिख किराया थार्कन, याश कार्या प्रतिगठ করা হইতেছে না, তাহার সম্বন্ধে আলোচনা করিয়া লাভ কি ? কিন্তু আর একটি কথা আছে, কোনও কাজ একদিনে সম্পন্ন হয় না, পূর্ব্বে অনেক আলোচনা করিতে হয়, সপক্ষে ও বিপক্ষে বতকিছু বলিবার থাকে, তাহা সব জানা আবিশুক হয়, পরে ভাহা কার্য্যে পরিণত করিবাব চেষ্টা করিতে হয়। বোধ হয় এই সম্বন্ধে আলোচনা অনেক হইয়াছে,এখন ইহা কাৰ্য্যে পরিণত করিতে হইবে। গ্রাহ্ম-বালক ও বালিকাদিগের জন্ম স্থল ও বোর্ডিং যথন রাথিতেই হইবে এবং আমাদেব সাধ্যমত ব্যয়ে তাহা যথন কলিকাতার রাখা যাইতেছে না, তথন মৃক্ষরেল লইয়া যাওয়া ব্যতীত আর উপার দেখা যাইতেছে না। মফঃস্বলে স্থান নির্দেশ সম্বন্ধে এই করেকটা দেখিয়া কাজ क्रिंडि हरेरि । क्रिकांडा इरेडि द्वलभथ पिया ১०।১২ घनी मत्था পৌছान यात्र, अमन जातन याहेटल इहेटव। ज्ञानी প্রধানত: স্বাস্থালাভ হওয়া চাই। যে স্থানে বোর্ডিং ও সুল হইবে, সেথানে অধিক পরিমাণে ও অল্ল দামে জ্মী পাওয়া আবশুক। তথায় আহাবীয় দ্রব্যাদি সন্তায় পাওয়া চাই এবং তাহার নিকট কোন স্থানে ডাক্তার থাকা চাই। এরপ স্থান বে পাওয়া যায়, তাহা বোধ হয় আমরা সকলে জানি।

মফঃস্বলে বোর্ডিং ও সুল লইয়া গেলে যে যে স্থবিধা ও ও অসুবিধা হইতে পারে তাহার সংক্ষেপে আলোচনা করা নাইতেছে। স্থবিধা এইগুলি (১ম) অপেক্ষাকৃত অপ্পরায়ে বালক বালিকারা থাকিতে পাবিবে; (২য়) কলিকাতা হইতে অপেক্ষাকৃত স্বাস্থ্যকর স্থানে থাকিলে বালকবালিকাদের শরীর ও মন প্রফুল পাকিবে; (৩য়) কলিকাতার ভায়ে স্থানের নানা প্রকার কুশিক্ষা ও কুসংসর্গ হইতে বালকবালিকারা রক্ষা পাইবে। অস্থবিধাগুলি এই—(১ম) কলিকাতায় ব্রাক্ষসমাজ্যের বিজ্ঞ ব্যক্তিবা ইহার তরাবধানে নিযুক্ত আছেন, সেথানে তাহারা থাকিবেন না। (২য়) পীড়া হইলে কলিকাতার যেরপ চিকিৎসা হইবাব সম্ভাবনা, তাহা হইবে না। ক্রেক্টী বিষয় সম্বন্ধে বিশেষ বিবরণ কিছু লেখা যাইতেছে।

(১ম) স্থবিধা জানাদের মনে হয়, মকঃললে থাকিলে আহার বাসন্তান, শিক্ষা ও ঔষধ হিসাবে ব্যর মোট ১০ টাকার অতিরিক্ত হইবে না। স্থানের ছাত্র ও ছাত্রী সংখ্যা অধিক হইলে, চিকিৎসার জন্ত অতিরিক্ত বন্দোবন্ত না করিতে হইলে কিয়া গভর্গমেণ্ট হইতে সাহাব্য পাওয়া গেলে আরও অর ব্যরে চালান যাইতে পারে। এইরূপ কার্য্যের জন্ত সমাজ কণ্ড

হইতে চাঁদা হিসাবে কিছু পাওয়া গেলে অপেকাকত মন্দ অবহাপন্ন ব্রাক্ষদিগের পুত্র ক্সাদিগের হার কম করিয়া দেওয়া যাইতে পারিবে। এই ব্যয়ে কলিকাতা হইতে ভাল আহার দেওয়া মাইতে পারিবে। অল ব্যয়ে চালান रुटेरव विषय्ना एव व्यथरम दार्जिः ञ्चाभिक रुटेशाहिन, जारा সকলেই অবগত আছেন। উপরের হিসাবে বাড়ী ভাড়া কিছু ধরা হয় নাই। জমির থাজনা হিসাবে অতি সামান্তই ধরচ হইবে। সম্প্রতি বাড়ী তৈয়ারি করিবার জন্ম কিছু টাকা আবশুক। আমাদের এখন কলিকাতার ব্রাহ্ম-বালক-দিগের বোর্ডিং ও ব্রাহ্ম-বালিকাদিগের স্কুল ও বোর্ডিংএব বাড়ী ও গাড়ির জন্ম প্রতি মাদে প্রায় ২৫০ টাকা বায় হইতেছে। আমাদের বোধ হয়, এই সমন্ত টাক। হয় ধারু, না হয় ভিক্ষা করিয়া চালাইতে হইতেছে। বালকবালিকার জন্ম ছইটা স্বতন্ত্র বাড়া ও বিদ্যালয় প্রস্তুত কবিতে বোধ হয়, ৫০০০ টাকা লাগিবে। এই টাকায় भाका वाड़ी इटेरव ना, वाजाना इटेरव। वाथिए रहेरल वालिका-विमानस्यत्र क्रज এहे वरमत्रहे २००० টাকা লাগিবে এবং বালকদের জন্মও ১০০০ টাকার কমে रहेरत ना। जाहा रहेरल राम्था याहेरजरह रय. এই এक বংসর যে খরচ হইবে ভাহা পাইলে কিছুকালের জন্ম আব বাড়ীর ভাবনা ভাবিতে হইবে না। আমরা যদি শিক্ষক-দিগকে এক একথানি ছোট ছোট বাড়ী তৈয়ার করিয়া দেই, তাহা হইলে আরও কিছু বেশী পড়িবে। সম্প্রতি যে, এভ টাকার আবশুক হইবে, তাহা বোধ হয় না, কারণ একেবারেই আমরা এত বালকবালিকা পাইব না, আপাততঃ য্ত্রালকবালিকা যাইবে, ভাহার মত বাড়ী তৈয়ারি করিয়া পরে আবহাক মত বাড়াইয়া লইলে চলিবে।

( স্ম) ও ( ৩য়) স্থবিধা সম্বন্ধে বিশেষ বিছু লিখিবার আবশ্র-কভা নাই। কারণ এ বিষয়ে যে ছই মত আছে, ভাহা আমরা অবগত নহি।

এখন অস্থবিধাগুলি দেখিতে হইবে। (১ম) তদাবধানেক অভাব ;—কুল ও বোর্ডিং হইলেই যে খানে ৭৮৮ জন অপেক্ষাক্বত বয়োরদ্ধ শিক্ষক ও শিক্ষয়িতী বাদ করিবেন, তাঁহারা সকলেই वालक वालिकामिशक प्रिथितन। आत अक्री कथा कनि কাতার বালক বালিকাদিগকে রাখিতে যেরপ সাবধানতার আবশুক, সে স্থানে সে প্রকার সাবধানতা আবশুক হইবে ना। क्लिकांडा इटेंटड नवधीं वातू, कि आमिनांध वातू, কি অঘোর বাবু একজন গিয়া সে স্থানে বাদ করিতে পারেন। তাঁহারা একজন থাকিলে আনেক বিষয়ে স্থবিধাও হইতে পারে। কাঞ্চী যেরপ গুরুতর ভাষাতে সমাজ হইতে তাঁহাদের মতন একজনকে দিতেই হইবে। এইরূপ স্থানে বোর্ডিং ও কুল স্থাপিত হইলে অনেকগুলি আহ্ম পরিবারও त्र द्वारन रात्र कतिरवन। व्यामारमत्र व्यक्षिकाःरभत्र राक्रभ আর্থিক অবস্থা, তাহাতে ক্লয় বা জরাগ্রন্থ হইলে বা অর্থোপার্জনের উপায় না থাকিলে আমরা বড়ই বিপল্ল-रहेत्रा পড़ि। क्लिकांकांत्र थाकि**रल थंत्र**ह शब आस्तक हत्र,

মফ:ম্বলে কোনও স্থানে কুল ও বোর্ডিং হইলে এই হইবে य ज्यान कहे एन जातन शिश्रा वीन कतिएक शास्त्रम। य नकन ব্রাহ্ম কার্য্য উপলক্ষে বিদেশে যাইতেছেন, তাঁহাদের সম্ভান সম্ভতিদের কোথায় রাখিবেন, পড়া শুনার কি করিবেন, তাহার ভালরূপ বন্দোবস্ত করা কঠিন হইতেছে। এরূপ একটা স্থান হইলে তাঁহাদেরও স্থবিধা হইতে পারে। বোর্ডিংএর ছাত্র ও ছাত্রী ব্যতীত এইরূপে আরও অনেক ছাত্র ছাত্রী পাওয়া যাইবে এবং তত্তাবধান করিবার লোকও অনেক পাওয়া যাইবে। (২য়, চিকিৎসা) আমরা যদি সঙ্গে করিয়া একজন ডাক্তার লইয়া ঘাইতে পারি, তাহা হইলে আর ভাবিতে হইবে না। ইহা যে বড় কঠিন, তাহা আমার মনে হয় না। নতুবা স্থানীয় সরকারী বা বেসরকারী কোনও ডাক্তারের সহিত বন্দোবস্ত করিলেও চলিতে পারে। যে উপায়ে হউক একজন Asst Surgeonএর পদস্থ লোকের সাহায্য পাওরা কঠিন হইবে না। মফঃস্বলে থাঁহারা বাস করেন তাঁহারা ইহা অপেক্ষা ভাল ডাক্রারের সাহায্য প্রায় পান না। তবে কলিকাতায় যেরূপ স্থবিধা হয় সেরূপ হইতে পারে না। বিশেষ আবশুক হইলে আমরা রোগীদিগকে শীঘ কলিকাতায় আনিতে পারি কিমা কলিকাতা হইতে ডাক্তার ও লইয়া যাইতে পারি: ইহাও ফঠিন হইবে না।

বালকবালিকাদের জন্ত স্থলের যেরপ বন্দোবস্ত করা যাইতে পারে, সেই বিষয়ে কিছু লিথিয়া আমি এই পত্র শেষ করিব। আমরা ব্রাহ্ম-বালিকা-শিক্ষালয়ে ও Sunday school এ ছোট ছোট বালকবালিকাদের এক সঙ্গে শিক্ষা দিয়া দেখিয়াছি যে, তাহা দ্বারা বিশেষ অনিষ্ঠ হইবার কোনও সন্তাবনা নাই। নিম শ্রেণীর কয়েকটী ক্লাশে বালকবালিকারা এক সঙ্গে পড়িবে, পবে উচ্চ শ্রেণীতে বালকদিগকে ও বালিকাদিগকে সভন্তভাবে শিক্ষা দেওয়া যাইতে পারে। ইহাতে অধিক শিক্ষক আবশ্যক হইবে না, অথচ ছইটী স্কুলই চলিবে। ব্রাহ্ম-অভিভাবকেরা এ বিষয়ে নিজ নিজ মত প্রকাশ কবিলে, যদি তাহা এই প্রস্তাবের সপক্ষে হয়, তাহা হইলে সাঃ ব্রাঃ সমাজের কার্য্যনির্কাহক সভাকে সেই মত অন্থুসারে কার্য্য কবিতে অন্থুবাধ করা মাইতে পারে। আমরা ইতিমধ্যে অবগত হইয়াছি যে শিক্ষাবিভাগ সংশ্লিষ্ট কয়েকটি ব্রাহ্ম ও ব্রাহ্মিকা এই প্রস্তাব জন্ত্যারে কার্য্য করিতে প্রস্তুত হইয়াছেন।

### ব্রাহ্মপর্য্যটকের পত্র। (গত ১৬ই পৌষের পর)

আমি ওঁকারনাথ হইতে মধ্যে এক সপ্তাহের জন্ম ইন্দোর ও উজ্জিয়িনী সহর দেখিতে যাই। ইন্দোরে একটা ব্রাহ্মসমাজ আছে। স্থানীর ব্রাহ্মদের মধ্যে আমাকে কেহ কেহ চিনিতেন। তাঁহাদের একজন আমাকে চিনিতে পারিয়া অত্যম্ভ আগ্রহ সহকারে তাঁহাদের বাড়ী লইয়া গেলেন এবং তাঁহাদের মন্দিরে উপাসনাদি করিবার জন্ম একাস্ত অন্থরোধ করিলেন। আমি তাঁহাদের আগ্রহ ও অন্থরোধ এড়াইতে না পারিয়া একদিন

প্রাতঃকালে বাদালা ভাষায় উপাসনা ও সন্ধ্যকালে প্রার্থন। বিষয়ক আলোচনা করিয়াছিলাম।

#### উজ্জয়িনী।

এই উজ্জায়নী সহর ইন্দোর হইতে ২৭।২৮ মাইল দ্বে হইবে। রাজপুতনাও মালয় বেলওয়ের একশাথা উজ্জায়নী সহর পর্যান্ত গিয়াছে। উজ্জায়নী সহর একটা প্রশস্ত ও উচ্চ পুরাতন প্রাচীর দ্বারা বেটিত। এই সহর পোয়ালিয়ার মহারাজার অধীন, এখানে ইংরাজ রাজত্ব না থাকার সহরটা সম্পূর্ণ দেশীয় ভাবে অবস্থিতি করিয়া আপনার প্রাচীনত্বের গৌরব প্রচার করিতেছে। এই স্থানই মহারাজা বিক্রমাদিত্যের রাজধানী ছিল; অনেক অমুস্কান করিয়া তাঁহার সময়ের কোন চিহ্ন আছে কিনা জানিতে পারিলাম না। এই সহরটা একটা নদীর কিনারায় অবস্থিত। সেই স্থানের দৃশ্র অতি মনোহব, সমুপ্র প্রাচীর-বেটিত সহব, অদ্রে ক্ষুত্র ক্র পাহাড় শ্রেণী ও মধ্যস্থলে রৌপ্য স্ত্রবং নদী প্রবাহিত হইতেছে। এই নদীকিনারাটী প্রশন্থ ভাবে ইট ও প্রন্তর দ্বারায় বাধান। ভাহার মধ্যে স্থানে স্থানে ক্ষুত্র ও বৃহৎ মন্দির সমূহ শোভা পাইতেছে।

সহরের প্রায় এক মাইল দ্রে নদী-কিনারায় "ভর্তৃহরির গুহা" নামে একটা প্রকাণ্ড গুহা দেখিলাম। তাহা এখন মাটির নীচে অতি অন্ধকারের মধ্যে অবস্থিত। এখানে ২ জন সন্ন্যাসী বাস করেন, তাঁহাদের মধ্যে একজন আমাদিগকে প্রদীপ আলিয়া এই গুহা দেখাইতে লইয়া গেলেন। বোরতর অন্ধকার মধ্যে প্রদীপ হস্তে অতি সন্ত্রাসে এই গুহার মধ্যে প্রবেশ কবিয়া গুহা পরিদর্শন করিতে লাগিলাম। প্রস্তরেব গাথুনি বহুতর ক্ষুদ্র কুঠরি তাহার মধ্যে অবস্থিতি কবিতেছে। লোক প্রবাদ এই গুহারে মহারাজা বিক্রমাদিত্যেব আতা ভর্তৃহরি অবস্থিতি করিয়া মহান পরমেশ্বেব ধ্যানে নিময় গাকিতেন। গুহার অবস্থা দেখিয়া ভাহার প্রাচীনত্বেব বেশ পরিচয় পাওয়া যায়।

এই সহরে মহাবাজা বিজ্ঞাদিত্যের কুলদেবতা "মহাকাল" নামক শিবলিক অবস্থিত। ইহার দর্শন জ্ঞান্ত বহুতর যাত্রী সময়ে সময়ে এখানে আসিয়া থাকেন। স্থানীয় ভূমির সমতল ক্ষেত্র হইতে অনেক নীচে এই মহাদেবের স্থান। এই মহাদেব দেখিতে হইলে অন্ধকারময় সোপান সমূহ ভেদ করিয়া নিমে যাইতে হয়। সেখানে পুরোহিতগণ প্রাণীপ আলিয়া উচ্চরবে শিবের স্থাতি বন্দনা ও পূজাদি করি-তেছেন। এই মন্দিরের প্রাক্ষনের মধ্যে একজন মধ্যবয়ন্ত্রা বাঙ্গালী সন্ন্যাসিনী দেখিলাম, তিনি মারহাট্টা রমণীদিগেব মত কাপড়াদি পরেন। আলাপ করিয়া জানিলাম তাঁহার বাড়ী গোবরভাকায় ছিল। এখানে ২।৪ জন সন্ন্যাসী বাদ করেন, তাঁহাদের কাহারও কাহারও অবস্থা ভাল বলিয়া বোধ হইল।

এক্দিন বৈকালে নদীতীরে বেড়াইতে পিরা দেখিলাম তথায় দলেদলে মারহাটা রমণীগণ (মারহাটি ভাষাতে স্থীত করিতে করিতে পরম্পরের হাত ধরাধরি করিয়া একটা পিঠালীর নৈবেদ্যের চারি ধারে নাচিয়া নাচিয়া ঘুরিয়া বেড়াইতেছেন। অফুসদ্ধানে জানিলাম ইহাঁরা সকলেই ভদ্রমহিলা, অদ্য নাগ পঞ্চমী, এই নাগ পঞ্চমীর দিন ইহাঁরা এইরূপ করিয়া কোলিক প্রথাম্পাবে সঙ্গীত ও নৃত্য করিয়া থাকেন। শ্রীকৃষ্ণের প্রেম বিষয়ক সঙ্গীত ইহাঁরা গাইতেছেন। এথানে স্ত্রীলোকদের অবরোধ প্রথা নাই, তাঁহারা সকলেই পুরুষের ভাায় কাছাদিয়া কাপড় প্রেন এবং আবহাভালারে সকলের সহিত কথাবাতা ও সকল শ্বানে যাতায়াত করিতে পাবেন। আমি এথানে তিন্দিন ছিলাম, তৎপর ওঁকারনাথে ফিরিয়া আসি।

#### নাসিক।

ওঁকাৰ নাথ হইতে বহিৰ্গত হইয়া থাণ্ডোয়া আসি, সেথানে একদিন থাকিয়া নাসিক যাই। নাসিক ষ্টেসন হইতে নাসিক সহর প্রায় ৬ মাইল হইবে, ট্রামণ্ডয়ে যাওয়া নায়। এই नांत्रिक महत्र गांनावती ननीव जीत्व व्यवश्वि। वात्रांनीरनव কাণী যেমন মহাতীর্থ, দাক্ষিণাতা বাসীদেব পক্ষে নাসিকও তেমনি মহাতীর্থ। কথিত আছে এথানে রাম কড়ক दावन-छिनिनी अर्थनथात नाक काले इटेग्राहिन विनिन्ना এटे शास्त्र नाम नानिक इहेग्राह्य। शामावतीय व्यथव शास्त्र পঞ্বটীর কথা মনে হয় না। এপঞ্বটী এখন একটী সহর। বড ৰড প্ৰস্তুৰ নিৰ্দ্মিত মন্দির সমূহ ও মারহাটা ধনীদিগেব অট্যালিকা পুঞ্জে পরিপূর্ণ। ধাহা হউক এই স্থানেব এই গোদাবরী নদীর দৃশুটা অভি হৃদর। এক পারে নাসিক ও अनव नारत नक्षवती, यहा थात्म शामावती मनी खवाहि छं হইতেছে। এই নদীর গর্ভ মধ্যে কৃদ্র কৃদ্র মন্দির, গৃহ ইত্যাদি নিশ্বিত হওয়ায় অতি স্থলর দুখ হইয়াছে। এথান इहेट धात्र > भारत पृत्व ज्लावन, धनिनाम जारा 9 প্রায় সহবের ফ্রায়। তবে সেংানে বছণ পরিমাণে বাম সীতাব মন্দির ও তথায় সল্যাদিগণই থাকেন। বলা বাহল্য দীতামাইর কুটার, লক্ষণের কুঠির, সুর্পনাথার নাক ইত্যাদি বলিয়া স্থানীয় লোকেরা যে সমস্ত দেখান তাহা বিশ্বাস যোগ্য বলিয়া বোধ হয় না, আমি এখানে কয়েক ঘণ্টা থাকিয়া বোম্বাই যাত্রা করি।

#### পুষ্ণর।

বোষাই সহরে ৪ দিন থাকিয়া বরদা আসি, তথা হইতে আজনীর যাই। এই আজনীব সহর হইতে পুন্ধর-তীর্থ ৬ মাইল হইবে। একা কবিয়া এই তীর্থ দেখিতে যাই। আজমীর হইতে পুন্ধর-তীর্থ ঘাইতে হইলে একটা কুল পাহাড় অতিক্রম করিতে হয়। সেই পাহাড়ের উপর হইতে আজমীর সহর অতি মনোহর দেখায়।

বে স্থানে পুদ্ধ ব-তীর্থ অবস্থিত, তাহার প্রায় চারিদিকে পাহাড়, সেই পাহাড়ের কয়েকটা আবার বালুময়। প্রাকৃতিক দৃত্ত অতি স্থান্তর। পুদ্ধ ব-তীর্থ স্থার কিছুই নহে চারিদিকে দেবালয় পরিবৃত একটা প্রকাণ্ড সরোবর। এই সরোবর কাহারও কর্জ্ক থোদিত নহে, ইহা পাহাড় পরিবেষ্টিত একটা স্বাভাবিক ক্ষুদ্র হ্রদ। এই হ্রদের জলে স্নান করিবার জ্ঞাই নানাদেশ হইতে যাত্রিগণ উপস্থিত হইয়া থাকেন। হ্রদের জল হগদ্ধ হইয়া গিয়াছে এবং তাহা সব্জ বর্ণের ক্ষুদ্র ডিমের ফায় পদার্থে পরিপূর্ণ। স্থানীর পাণ্ডাগণ যাত্রী-দিগের নিকট অর্থ লইয়া মস্ত্রোচ্চারণ পূর্ব্বক এই হ্রদে স্থান করাইতেছেন, যাত্রিগণ আনন্দ ও উৎসাহ সহকারে স্নান করিয়া আপনাদিগকে ক্ষৃত ক্বতার্থ মনে করিয়া প্রত্যাগত হইতেছেন।

#### পত্রপ্রেরকদিগের প্রতি।

গুক্রাদ সম্বন্ধে অনেক বিচার হইয়াছে। তত্ত্ব-কৌমুদীতে এবিষয়ে আর পত্তাদি মুক্তিত করিবার ইচ্ছা নাই, অতএব এই বাবকার দুইণানি পত্ত মুদিত কবিয়া শেষ কবা গেল। ত, স।

### প্রেরিত পত্র।

(পত্রপ্রেক্দিগের মতামতের জন্ত সম্পাদক দারী নচেন।) শ্রদ্ধাম্পদ্ শ্রীযুক্ত তত্ত্ব-কৌমুদী সম্পাদক মহাশর সমীপেযুক্ত

#### গুরুবাদ ও ব্রাক্মধর্ম।

মহাশ্য,

উলিখিত বিষয়ে অনেকগুলি পত্র আপনার পত্রিকাতে বাহিব হইমাছে। ঐ সকল পত্রে যে যে প্রশ্ন উত্থাপিত হইয়াছে, সে সব গুলিকেই নিমলিথিত কয়েকটা প্রশ্নে পরিণত করা যাইতে পারে:—

- ১। প্রত্যাদেশ কাহাকে বলে १
- ২। কোন একটী সভাকে প্রতাকভাবে ভানিলেই কি জাতা অভাভ হইলেন ?
- ০। কোন একটা সভ্যকে সাক্ষাংভাবে জানিলেই কি
  ভিনি তৎসম্বন্ধে অভাত গুক হইতে পারেন ?
- ৪। অত্রাস্ত ওক ঈশব ও মানবালার মধ্যে আবেবণ কিনাং
- ে। ভ্ৰান্ত অপূৰ্ণ এক কথা কি না ?
- ৬। অভান্ত গুৰুবাদ আহ্মধৰ্ম বিরোধী কি না ? বাক্যান্তবে, যিনি অভান্ত গুৰু খীকার কবেন তিনি "আহ্ম" কি না ?
- ১। প্রত্যেক সৃত্যই জ্ঞাতা বা প্রমেশ্বরের সৃহিত বিষয়ের সৃষদ্ধ দাত্ত। অনন্ত বিশ্বের অনন্ত পদার্থ নিচয় প্রমেশবের অনন্ত জ্ঞানে নিত্য সৃষ্ধে আবদ্ধ ইইয়া হিতি করিতেছে, স্থতরাং ইহার প্রত্যেক সৃষ্ধই সত্য এবং চিস্তাদ্ধারা ইহাদের মধ্যে যে কোন স্থদ্ধকে আয়ন্ত করিলেই প্রত্যাদিষ্ট হওরা হইল, অর্থাৎ প্রমাদ্ধার সৃহিত জীবাদ্ধার সাক্ষাৎ সৃষ্ধ স্থাপিত হইল। অতএব কোন বিদ্যালয়ের অতি নিম্প্রেণীক কোন ছাত্রও যথন কোন সত্য চিস্তাদ্ধারা গ্রহণ করে, তথন সে যে প্রিমাণে প্রত্যাদিষ্ট, কোন ধার্ম্মিক ন্যক্তি ব্ধন

অধ্যাত্ম জগতের কোন গৃঢ় সতা লাভ করেন, ডিনিও ডধন (महे भतिघार्ण अहामिष्ठे। मर्छा मर्छा रकान अस्मि नाहे, এवः छात् छात्म १ कान श्राप्त नाहै। "প্রত্যেক ত্রিভূজের কোণত্রয় তিন সমকোণের সমান", ইছাও বেমন সভা "জীবকে প্রেম কর" ইহাও তেমনই সভ্য। অভত এব মনোরঞ্জন বাবু যে বালিরাছেন, সমাধির অবেভার সভাকে সাক্ষাৎভাবে অবগত হওয়ার নামই প্রভ্যাদিই হওয়া, অভ্য অবস্থায় সতা লাভ করিলে, অথবা যে কোন সতা লাভ করিলে প্রত্যাধিষ্ট হওয়া হয় না, তাহা কদাপি সভা নছে, এবং সভ্যে সভ্যে একপ একটা প্রভেদ করাতে কেবল চিন্তাব জড়তা প্রকাশ পার মাত্র। "সমাধি" कथाणे वहेश वडहे शांतमान हिन्दि हा । दकान व्यवहादक সমাধির ভাবস্তা বলা ঘাটবে ৭ টহা কি আত্মাব নিজিয় ভাবস্তা ना मरङाभिनक्तित्र व्यवस्था ? मानव यथन द्यान मङा উপनक्ति करत, उथन रा उनात हत, वार्थाए उएकारात कना राहे मठा ভাহার মনকে একেবারে অধিকার করিয়া ফেলে। ইহাই कि समाधित व्यवद्यां नरह ? यनि ना इत्र, छाहा इहेरन अक्षेत्रा বোধ হয় निवर्धक, अबवा वर्षाछिमानी महाशुक्रयमिशात इत्य চিন্তাহীন বাজিদিগকে স্তম্ভিত করিবার একটা যন্ত্র মাত্র।

শ্রমের মনোবঞ্জন বাবুর প্রত্যাদেশের মত ক্ষতীর ভরাবহ:—
"পুরুষ ক্ষণাং গুদ্ধ চৈতক্ত প্রকৃতি ক্ষণাং ক্ষড়ের সহিত্
ধবন যুক্ত হয়, তথন সেই ক্ষড়াশ্রিত চৈতক্তকে ক্ষান বলে,
উহা চিদাভাস মাত্র। ক্ষড়াতীত ও ইক্সিয়াতীত হইলা আয়া
যথন স্বরূপে ক্ষরে প্রত্যাদেশ লাভের ক্ষধিকারী হয়।"

ক্থাটা অত্যস্ত শ্রুতি-মুখকর বটে, কিন্তু ইছার কোন অর্থ নাই। চৈত্ত বলিতে বিষয়ী আত্মার বিষয়জ্ঞান বাতীত আর কিছুই বুঝি না। যাগাই বলনা কেন, অন্তর্জগতে ব্দবগাহন করিলে এভগাতীত আরে কিছুই পাইবে না। মুভরাং বিষয় বা জড়ভৌত চৈত্তোর স্মাবনা কোপায় ? এবং জড়াতীত চৈত্ত বলাও যাহা, আত্মার গলা টিশিরা দফা নিকাষ করিয়া দেওয়াও তাহা। চৈত্তপ্তের সহিত জড়ের वयन (यांग रंग, এकंश वीलांगरे जोशांत माल माल रेहां । বলা হইল বে, এমন এক সমর ছিল, যথন চৈত্তস্ত্রের সভিত ব্দড়ের যোগ ছিল না, অর্থাৎ বড় চৈতক্ত হইতে স্বতন্ত্র ভাবে অবস্থিতি কারত। কিন্তু জড যদি চৈত্র হইতে স্বতন্ত্র হইরা পাকিতে পারে, তাহা হইলে চৈতন্তের আর প্রয়োজন কি ? ध्वर हिडल स्ट्रेंट सर्फ्त डेप्पिंड, कि स्क स्ट्रेंट हिज्हाला উৎপত্তি তাহাই বা কি প্রকারে কানা যাইবে ? এবং জড় ও আত্মা এই ছই বিপরীত প্রকৃতি সম্পন্ন পদার্থের যোগই वा रहेन कि कार् १ वर राग यनि मस्य ना रत्र. जरव िनाकामरे वा काथात्र शास्त्र ? कड़ यनि हिड्छ इरेड সভত্ত বস্তু হয়, তবেত চৈতক্ত কড়ের ছারা পরিমিত, অর্থাৎ ব্দনত নহে, অর্থাৎ ঈশ্বর নাই। অতএব মনোরঞ্জন বাব্ব দশন নাজিকতা প্রমাণ করিতেছে। তিনি অজ্ঞাতসারে সাংখ্য দর্শনের নান্তিকভার ভিতর পডিরা গিরাছেন।

২। কোন একটা সভাকে সাক্ষাৎ ভাবে জানিলেই জাতা আন্তান্ত হুইতে পারে না। মনোরঞ্জন বাবু হয়ত বলিবেন, যখন সে সভাটী জানিল তথন ও সেই সভা সম্বন্ধে ত সে অল্রান্ত। সভা; কিন্তু ভাহার ব্যক্তিছ কি সেই মুহুর্ত্ত ও সেই জ্ঞানটুকু লইরা? তাহার জ্ঞানে শত শত ভূল ল্রান্তি সহেও ভাহাকে ঐ একটী সভোর জ্ঞা অল্রান্ত বলা কি যুক্তিসক্ষত? এরূপ কথা বলিলে, "অংশ সম্পূর্ণের সমান" এই অসকত কথা কি বলা হয় না? কোন ব্যক্তিকে অল্রান্ত হইতে হইলে, ভাহার প্রত্যেক চিন্তা, প্রত্যেক ভাব, প্রভ্যেক কার্য্য অল্রান্ত হওয়া আবশ্রক। নতুবা তাহাকে অল্রান্ত বল্লিলে কেবল ভাহাকে বিদ্রাপ করা হয় মাত্র। ঈদুশী ব্যক্তরতিতে কোন বৃদ্ধিমান্ ব্যক্তি সন্তুই হইতে পারেন না।

শ্রুমের মনোরঞ্জন বাবু এই যুক্তির একটা উত্তব দিছে প্রায়াস পাইয়াছেন। তিনি বলিরাছেন, দেশ ও কালের অধীনতা বশতই মানবের ভ্রান্তি হয়; স্কৃতরাং মানব যথন সাধনবলে দেশকালের অতীত হইবে, তথন আবে ভাহার ভূগ ভ্রান্তি থাকিবে না। এ আশা নিভান্ত তরাশা। মানব অর্থই দেশ ও কালের অধীন আয়া; স্কুতরাং দেশ ও কালের অতীত হওগা আর মানবের মানবন্ধ লোপ হইয়া ব্রহ্ম হটয়া যাওয়া, একই কথা। কিন্তু বে শর্পতঃ পরিমিত, তাহার কি দেশ কালের অতীত অর্থাৎ অনন্ত হইয়া যাওয়া সম্ভব গ ইহা কি ত্রিকোণ ব্রের ক্রায় অসম্ভব নহে গ মনোবঞ্জন বাবুর এ মত বৈদান্তিক মায়াবাদ, ব্রহ্মধর্লের মত নহে।

৩। কোন একটা সভাকে সাকাৎ ভাবে জানিলেও জ্ঞাতা তৎসম্বন্ধে অভ্রান্ত গুরু হইতে পারে না; কারণ স্তোব দাক্ষাৎ দর্শন বাতিবেকে অভাস্থতার জ্ঞান হয় না, এবং শুরুর অন্তরে প্রকাশিত সতা যথন শিষ্যের অস্তরে প্রকাশিত হয় নাই (কারণ তাহা হইলে আব গুরুব প্রয়েজন থাকিত না) তথন ঋক যাহা বলিতেছেন তাহা অত্রাস্থ হইলেও শিষা তাহাকে অভান্ত বলিয়া জানিবে কিরূপে ? এবং ভাহা জানিতে না পারিলেই বা গুরুকে অভাস্ক वाल कि टाकारत ? मानावश्चन वावू हेशत छेखरत विनिधा-ছিলেন "নিজে অভ্ৰাস্ত না হইলে যদি কাহাকেও অভ্ৰাস্ত বলিয়া না কানা যায়, তবে ব্রাহ্মগণ স্বয়ং ভ্রাপ্ত হইয়াও क्रेश्वेत्रक <u>ञ्चास्त विषय्ना कानित्तन कि श्रकाति १</u>" ছঃখের কথা এই যে, ত্রাহ্মগণ কেন ঈশ্বকে অভাস্থ বলেন মনোরঞ্জন বাবু প্রচারক হইয়াও তাহা অবগত নহেন। ঈশব প্রত্যেক মানব লদয়ে প্রতাক্ষ ; সভারূপে ঘটে ঘটে বিদামান থাকিয়া প্রত্যেক জ্ঞান ক্রিয়ার সঙ্গে আপনার সভা শ্বরূপেব সাক্ষা আপনিই প্রদান করিতেছেন। মানবের সহিত মানবের সাক্ষাৎ যোগ নাই। ভোমাব মনের ক্রিয়া আমার মনেব ক্রিরা নহে: এমন কি ভোমার বে আত্মা আছে তাহাঙ আমাকে নিজের জ্ঞানে প্রকাশিত আত্মাব অন্তিত প্রতিপাদক শক্ষণ তোমাতে দেখিয়া অনুমান করিয়া নইতে হয়। স্থতরাং কোন ব্যক্তি যুখন বলেন যে তাঁহার মধ্যে কোন সভ্য প্রকাশিভ रहेबाटक, खबन, यनि आमात्र मध्या शूट्स दकान मठा

প্রকাশিত হইয়া থাকে, তবে এই অস্থান মাত্র করিতে পাবি

যে, হয়ত তাঁহার মধ্যে কোন সত্য প্রকাশিত হইয়াছে, এবং
তাহার কথিত সত্য যথন আমার মধ্যে প্রকাশিত হইবা,তথনও
তাঁহার মধ্যে যে সে সত্য প্রকাশিত হইয়াছিল,তাহা আমাব অম্থমানেরই বিষয় থাকিবে , কাবণ তাঁহার মধ্যে যে ক্রিয়া হইয়া
চিল ও আমাব মধ্যে যে ক্রিয়া হইয়াছে, এই তুই ক্রিয়া
ভূল্য হইলেও এক নহে , স্তবাং তাঁহার মধ্যে প্রকাশিত

ক্রিয়ার প্রত্যক্ষ জ্ঞান আমার সম্ভব নহে, অতএব তাঁহাকে

অল্রান্ত বলিয়া জানাও সম্ভব নহে । অল্রান্ত বলিয়া না জানিয়া
জল্রান্ত বলিয়া জানাও সম্ভব নহে । অল্রান্ত বলিয়া না জানিয়া
জল্রান্ত বলিয়া জানাও সম্ভব নহে । অল্রান্ত বলিয়া না জানিয়া
জল্রান্ত বলিয়া আমার সম্ভব নহে । অল্রান্ত বলিয়া না জানিয়া
জল্রান্ত বলিয়া আমার প্রত্যক জ্ঞান ক্রিয়ায়ই আমাদের অন্তরে
প্রত্রক্ষ , স্বতরাং আমরা নিজে ল্রান্ত হইয়াও ঈশ্বকে অল্রান্ত
বলিয়া জানিতেছি । যথন কোন সত্য আমাদেব অন্তরে
প্রকাশিত হয়, তথন আমরা সমষ্টিভাবে ল্রান্ত হইলেও ব্যষ্টিভাবে
অল্রান্ত ।

৪। অভান্ত গুরু মানব ও ঈশবের মধ্যে যে আববণ, তাহাতে আব কোন সন্দেহ নাই। জ্ঞান হয় প্রত্যক্ষ না হয় অনুমানসিদ্ধ। গুৰু যদি অভ্ৰাপ্ত হইলেন তবে তাঁহার বাকোর উপবে আর বিচার অথবা অফুমান চলিবে না, कादन তाहार क्या नहेग्रा यमि विठात क्रिड विभ, उाहा हहेता : ভ তাঁহার অল্রান্ততা অস্বীকাবই কবা হয়, যেহেতু অস্বীকার না করিলে বিচার আইদে কেন ? স্বতবাং অনুমানের দ্বারা ভংক্থিত সভোর জ্ঞান আমোব ২ইতে পারে না। আর প্রভাক্ষ জ্ঞান ত নাই, কাবণ তাহা থাকিলে আব গুরুব প্রয়োজন কি ? তাহা-হইলেই এই হইল না কি, যে গুরুব উপদেশকে অভ্ৰান্ত না জানিষাও তাহাকে অভ্ৰান্ত বলিতে **७३ त्य. व्यर्शां ना कानिगां ७ विंगां ७ ३३ त्य. व्यर्शां न ३३। कि** সম্ভব ৪ অতএব অভ্রায়গুরুবাদ কি মানবের ঈশ্ববদ্ভ জ্ঞান বুদ্ধিৰ অবমাননানহে ৷ আমবা দেখিয়াছি যে অভান্ত গুক স্বীকাব করিলে অনুমান দ্বাবা তত্রপদিষ্ট বিষয়ে আমাদেব (कान कान नाट्य प्रामा नारे। (कवन ठाहारे नहरू, প্রভাক জ্ঞানেরও কেনি আশা নাই। প্রভাক জ্ঞান যে গুরুমুখ হইতে লাভ কৰা যায় না, তাহা আমি পুর্বেই দেখাইয়াছি। अञास अक सीकार कतिलाहे अक्रमुशालको बहेट बहेन, সুত্বং প্রত্যক্ষ জ্ঞানের পথও অবরুদ্ধ হুইয়া গেল। আমার मत्न इत्र, याहाना आपनानिगरक अञाष्ठ छक्र मत्न करनन, ভাহাবা যেন বলিতেছেন, 'হে অজ্ঞ মানব। তুমি জ্ঞান লাভেব জন্ত।তামার জ্ঞান-চকু নিমালিত কব, আমবা তোমাকে প্রম স্কর আধারে জগৎ দেখাটব:" অত্যব দেখা গেল মে. **अञ्चिष्ठ ७क मान्दित्र छान-প्रथित अत्रताधक, अर्थाए छ।न-**স্বরূপ ঈশ্বর ও মানবাত্মার মধ্যে আবরণ।

ে। ভ্ৰান্ত ও অপূৰ্ণ একই কথা। যে ভূল কৰে সেই ভ্ৰান্ত বটে, কিন্ত ৰে ভূল কৰে না সেই অভ্ৰান্ত নহে। যতক্ষণ কেহ কোন কাৰ্য্য না কৰিতেচে, ততক্ষণ সে ভ্ৰান্তও নহে অভ্ৰান্তও নহে। সমুধস্থ কাৰ্যগুকে ভ্ৰান্তও বলি না অভ্ৰান্তও বলি না। জ্ঞানের অপূৰ্ণতা থাকিলে কাৰ্য্য করিতে গেলেই यथन जून कतिएछ हहेर्द, उथन अपूर्व ७ लाख धक कथा इहेन ना कि ?

৬। অতএব প্রতিপন্ন হইল যে অত্রাজগুরুবাদ অসতা; যাহা অসতা তাহা ত্রাহ্মধর্ম-বিরোধী; অতএব অত্রাজগুরুবাদ ত্রাহ্মধর্ম-বিরোধী, এবং থাহারা অত্রাজ গুরুবাদী তাঁহারা সাধু ও সচ্চরিত্র হইলেও ত্রাহ্ম নহেন।

"ওঁ ত্রদারুপাহিকেবলম।"

কলিকাতা। ব্ৰাহ্ম বালিকা শিক্ষালয়। ২৭এ বৈশাখ, ১৩০১ সাল। স্থীত্মবিনাশচন্দ্ৰ বন্ধ্যোপাধ্যায়।

মাক্তবর শ্রীযুক্ত তত্তকৌমুদী সম্পাদক মহাশর সমীপের।

মহাশয় !

>লা বৈশাথেব তত্তকৌমুদীতে অভ্ৰান্ত গুৰুবাদীর যে তৃতীর পত্র প্রকাশিত হটয়াছে, তাহার প্রথমাংশ আমার পত্রের প্রতি-वार्ष्ट्रे निथिउ इदेशार्ছ वनिया (वाध इम्र। किन्नु यथन जिनि আমাব নাম উল্লেখ কবা প্রয়োজন বোধ করেন নাই, তথন তাঁহাবই দুষ্ঠান্ত অনুস্বণ কবিয়া আমিও এই পত্তের কোন স্থল তাঁহার নাম উল্লেখ করিব না। ঈশার বাণী যে কিঞিৎ তবল পদার্থ, এই অভ্রান্ত সভান্ত গুরুবাদী আমাৰ পত্রেব কোন্ স্থান পডিয়া উপলব্ধি করিয়াছেন, বুঝিতে পারিলাম না। কিন্তু গুতিপক্ষেব কথাকে আপনার কল্পনার সাহায্যে একরূপ বিক্লুঙ जाकात्र मिया मानव ना जाकारेल मानवदरभत्र रहीतव नाड হয় না; অথত দানব্বধ ধান্মিকের এক প্রাধান কর্ত্তব্য কন্ম, মুত্রাং অভ্রাম্ভ গুরুবাদী আপনার কণ্ডব্য কর্ম্ম সাধন কবিযা-চৈন বলিয়া ভাঁছাকে জমুযোগ কবিতে পাবি না। "ঘটেন সহিত জলেব এবং ঈশার-বাণীৰ স্থিত মানবাল্বাৰ আধাৰ আধেয় সম্বন্ধের সময় কোথায়" তাহা যথন "ফুল বুদ্ধিতেও গুঁজিয়া পায় না," তথন যে, অভাস্থ গুরুবাদীব ন্যায় অতি স্ক্ষ-वृद्धि लाएक जाहा यूँ किया भाहेरवन ना, हेश जाम्हर्गात विषत নহে। জল তরল বস্তু, ঘট কঠিন বস্তু, সুত্রাং তাহারা প্রস্প্র বিজ্ঞাতীয় ও অসমধ্মী, অভান্ত ওয়েকবাদী স্কাৰ্ছিন বলে এই দিদ্ধান্ত করিয়াছেন ৷ কিন্ত এই উভয় বস্তুর দাময়িক ধন্ম তর্শ ठ किंत इट्टेलिस (य. जेशांत्रा जेंडाप्त्रेड कड भार्ष जवः कड পদার্থেবা যে পরস্পেব বিজ্ঞাভীয় ও সকলোট অসমব্যা নঙে, कुल इहेट उ कुल उर दुक्ति गहेगा यनि चामि এই कथा विल, चामा কবি হলাবৃদ্ধি মহাশয় আমার এ গ্রন্থতা ক্ষমা কবিবেন। জল তরল পদার্থ হইয়াও যথন বরুদে পরিণত হয়, তথন ঘটের কাঠিয়া ভাঙ্গিতে যে শব্দির প্রয়োজন, বরফ ভাঙ্গিতে ভদপেকা অল্ল শক্তি লাগে না। স্কাবৃদ্ধিব একবার এই মূল কথাটা ভাবিমা দেখা উচিত ছিল। তিনি বলেন, "ঈশর-বাণী একটা চৈতক্ত পদার্থ, মাহুষও একটা চৈতক্ত বস্তু, ইহারা উভয়েই স্বজাতি ও সমধ্যী।" ইহারা উভয়েই স্বন্ধাতি ও সমধ্যী কি ना, छाहाहे वित्वहा विषय , व्यथह धहे वित्वहा विषय कहे তিনি रित्र मिश्वाखकाल निर्दिष कतिशाहिन।

আবিতাক, ঈ্বর-বাণীও মহুব্য অজাতি ও সমধর্মী কি না। প্রথমত: মহুষ্য বলিলে কেবল তাহার অমরাত্মাকে বুঝার না, (नह ও আञ्चा উভয়কেই বুঝাইয়া থাকে, দেহ জড় পদার্থ ; বাণী বিশেষতঃ ঈশার-বাণী জড পদার্থ নহে। স্থতরাং এক্লে তাহা-দিগকে স্বজাতি ও সমধর্মী বলা কঠিন। জলে ও ঘটে বে পরিমাণ স্বজাতিত্ব ও সমধর্মত্ব আছে, ইহাতে তাহাও নাই। তবে यिन हेश वना इय या, टिज्जुक्राल डेज्याई नमधन्त्री ख স্ক্রাতি এম্বলে ইংাই প্রতিপন্ন করা হইয়াছে, তাহা ইইলেও এই कथा किछा छ (य, जेश्वत-वांगी (यक्रभ टेन्ड छ भनार्थ मसूरा अ कि দেইরূপ । মাসুষেব সুষুপ্তি আছে, নিক্রাবস্থায় চৈতন্ত থাকে না, থাকিলেও অতি অল্লই থাকে; ঈশ্ব-বাণী কি নিত্য চৈত্ত পদার্থ নহে, উহাবও কি হ্রাস বৃদ্ধি আছে, জাগ্রত ও নিদ্রাবস্থা আনচ্ছে? যদি না থাকে, তবে ঈশ্বববাণী ও মহুষ্যেব শ্বজাতিত্ব ও সমধর্ম হ যে পবিমাণ জল ও ঘটের ধর্ম ও জাতিগত পাথক্য ভদপেক্ষা অধিক নহে। আমার দৃষ্টাস্ত যদি "একেবাবেই অকর্মণা" হয়, অভাস্ত গুরুবাদীর অভাস্ত দৃষ্টাস্তেব পরিণামও ভদপেক্ষা কোন অংশে শুভকর নহে। ববং তিনি যে দৃষ্টাস্ত খাবা ঈশ্বৰ-বাণীৰ ও মনুষ্টোর সমধ্যাহ ও স্বজাতিছ প্রতিপাদন করিবার চেষ্টা কবিয়াছেন, তাঁহাব পূর্ব্য প্রদশিত যুক্তি অনুসারে দেই দৃষ্টান্ত আব একটু প্রসাবণ করিলেই অবৈতবাদে উপস্থিত इहेट इस, जे बेदवानी देव इस विश्वायिक प्रमुखाद श्रकां छि छ সমধ্মী হয়, তবে ঈশ্বভ চৈত্ত স্বরূপ বলিয়া মান্তবেব স্বঞাতি ও সমধ্যী হইবেন। ইহাই কি ব্ৰাহ্মধৰ্মণ অভান্ত গুৰুবাদী निक्षहे विविधाद्यात, "क्षेत्रवारी क्षेत्र देव के वस्त्र यथन मास्यक्षेत्र চৈ ১ক্ত বস্তুতে প্রকাশিত হয়,তথন আব উভয়েব আধার আধেয় সমন্ধ থাকে না।" মুতবা চৈত্ত স্কপ স্থাকাশ সম্ব যথন মামুষে প্রকাশিত হন, তথন ঈধরে ও মামুষে কোন প্রভেদ খাকে না, উভয়ে এক হইয়া যান, ইহা কি ত্রাহ্মেব না অংগ তবাদীর কথা? এই বিখাসটুকুনা থাকিলে যদি ধর্মনা থাকে, তবে আমি ববং অধর্মেই বাস কবা শ্রেয়: মনে কবিব, ! তথাপি মাত্রুষকে ঈশ্ববেব অজাতি ও সমধ্যী বলিয়া ঈশ্বরের অব্যাননা ক্রিতে অগ্রসর ইইব্না।

অভ্রাম্ভ গুরুবাদী আদেশ কাহাকে বলেন, তাহাব সংক্ষেপ বাাধ্যায় যে সকল অসংক্ষিপ্ত কথা বলিবাছেন, তাহাব অনেক কথাই বৃঝিতে পারি নাই, যে সকল স্ক্ষদশী ব্যক্তি জীবেব স্থল দেই হইতে স্ক্ষদেহ বাহিব কবিয়া তাহাদিগকে উন্মৃক্ত অবস্থায় বায়ু মঞ্জলে বিচবণ করিতে দিয়া থাকেন, তাহাদিগেব স্ক্ষদানিক তত্ব ও গুহু ধর্মতত্ব আমাদিগের স্থায় স্থল হইতেও স্থলতর বৃদ্ধিদিগের না বৃঝিবাবই কথা। স্থতবাং তজ্জ্য দুংথিত হই নাই। আব অভ্রাম্থ গুরুবাদীও আমাদিগের উপকারের জন্মই লিখিয়াছেন। স্থতবাং তিনি তাহার অভ্রাম্থ সকারের জন্মই লিখিয়াছেন। স্থতবাং তিনি তাহার অভ্রাম্থ সকারের জন্মই লিখিয়াছেন। স্থতবাং তিনি তাহার অভ্রাম্থ সব্যোক্ষ সমর্থক আর যে সকল যুক্তি দিয়াছেন, তাহা যথন বৃঝিলামই না, তথন তাহার আলোচনা না করাই শ্রেয়:। তিনি মুর্ত্তিমান জ্ঞানী ও কন্মী শঙ্করার্য্যের উক্তির উল্লেখ ছারা শেকের যে আভ্রম্ভ উপন্ধিত ক্রিবার চেষ্টা ক্রিয়াছেন, তাহা

ना कतिराहर जान रहेछ। भइत अञास अकृत नावी व्यवानी হন নাই; বাঁহারা অভ্রাস্ত গুরুর অভ্রাস্ততা স্বীকার করিতে প্রস্তুত নহেন, তাঁহারা বিনা প্রমাণে শহরের বাক্যও অভাস্ত विन्ना श्रीकात कतिए श्रास्त हरेरायन कि ना मत्मर यून। তাঁহারা শঙ্কর বলিয়াই শঙ্করের বাক্য গ্রাহ্য করিবেন না, আব কিন্তুর বলিয়াও কিন্তুরের উক্তি উপেক্ষা করিবেন না। এখনে শকরে কিন্ধরে কোন প্রভেদ নাই, অবিচারিত ভাবে কাহারও বাক্য গ্রাহ্য বা প্রত্যাখ্যান করা বিধেয় নহে। সে যাহা হউক, আমরা আলোচ্য বিষয় ভুলিয়া গিয়াও লক্ষ্য পথ হইতে বিশেষ বিচ্যুত হই নাই। আমাব প্রশ্নের উত্তরে অভ্রন্থ গুরুবাদী স্বীকার করিয়াছেন, "দশটী প্রভ্যাদেশ শুনিয়াও অভাস্ত প্রকৃহওয়া যায়, দশ হাজার শুনিযাও অভাস্ত হওয়া যার।" তবে দশকে ও দশহাজারী অভাস্ত গুরুব গুরুত্ব লগুত্বের কোন প্রভেদ আছে কিনা তিনি তাহার উল্লেখ করেন নাই। যদি অভাত্তে অভাত্তে বিরোধ উপন্তিত হয়, তবে কাহারও ভ্রান্তি স্বীকার করিতে হইবে কি না গ আমার জদয়ের অবস্থা যথন তাঁহাৰ হৃদয়ের অবস্থার সম্ভূলা নহে, তথন তাঁহার নিকট আব কোন প্রশ্নের উত্তর প্রত্যাশা করা সঙ্গত নহে; কেননা তিনি কেবল সমবিশ্বাসীর উপ-কারের জন্মই লেখনি ধারণ করিতে প্রস্তত। কিন্ত ব্রাহ্ম-সমাজে কেহ তাহার সম্বিখাসী আছেন কি না জানি না। থাকিলেও এ পর্যান্ত তাঁহারা দেখা দেন নাই। স্নতরাং তাহার কথান্থদাবেই তত্তকৌমুদীতে তাঁহার আব কোন পত্র স্থান পাওয়া উচিত নহে। অথচ পরিতাপের বিষয় এই, আপনি-তত্তকামুদী সম্পাদক মহাশর, তাঁহার পত্তকেই তত্তকোমুদীতে শেষ স্থান দিয়া তাঁথার প্রতিকৃল পক্ষদিগের মুথ বন্ধ করিবাব ভৈবৰ নাদ ঘোষণা করিয়াছেন। আপেনার স্মৰণ রাখা উচিত ছিল, ভত্তকৌমুদী ব্ৰাহ্মসমাজেৰ পত্ৰ, যে মন্ত ব্ৰাহ্মসমাজে স্থান পায় নাই, চাবিদিক হইতে যে মতেব ঘোৰতৰ প্ৰাত্ৰাদ হইতেছে দেই মতের পারপোষককে শেষ বক্তব্য বলিবাৰ স্থোগ দিয়া তাহার প্রতিপক্ষের মুধ বন্ধ করা, আর ব্রান্ধ সমাজের মূলদেশে কুঠারাঘাত করা একই কথা। আশা কবি আপনি আমার এই পত্রথানিকে স্থান দিতে বিরত হইবেন না। निर्वाक.

শ্রীদ্বারকানাথ গঙ্গোপাধ্যায়।

### ব্রাহ্মসমাজ।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের পক্ষ হইতে শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় কুমাবী এদ, ডি, কলেটেব ল্রাতৃস্ত্রী কুমারী ই, এদ, কলেটকে যে পত্ত লিথিয়াছিলেন, তাহার স্থল মর্ম এই:—

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্বাহক সভা আপনার পিতৃ-খসা এবং আমাদের বন্ধ কুমারী এস, ডি, কলেটের মৃত্যু জন্ত ভাঁহাদের আন্তরিক শোক আপনার পরিবারবর্গকে জানাইবার

জন্ম আমার প্রতি ভারার্পণ করিয়াছেন। কার্যানির্কাছকসভা আমার প্রতি যে কার্যোর ভার অর্পণ করিয়াছেন, তাহা ছই কারণে অতি পবিত্র কার্য্য। প্রাথম কারণ এই যে, আপনার পিতৃদ্দা ব্রাহ্মসমাজের কল্যাণের জক্ত অনেক শক্তি ক্ষয় কবিয়াছেন। দিতীয় কাবণ এই যে, লণ্ডন নগবে তাঁহাব সহিত যথন আমার প্রথম দেখা হয়, তথন হইতে তিনি আমাকে আপন সংহাদরের ক্লার ভাল বাসিতেন। আপনার শোক গ্রন্থ পরিবার হয় ত শুনিয়া কিঞ্চিং সান্ত্রনা লাভ করি-বেন যে, ভাবতবর্ষে সহস্র সহস্র প্রান্স-হৃদয় তাঁহাদের গভীর শোকের অংশ গ্রহণ করিতেছেন। আপনার পিতৃত্বশা ইংলণ্ডে शकिया । श्वामारमत मरक जनरत्र युक्त हिर्लन । अनर्रामा मर्भत्रा-মূল দ্বারা প্রক্রতর বিষয়ে আমাদিগকে সাহায্য করিয়া আসিতে-ছিলেন। বার্দ্ধকা ও গুরুতর শাবীরিক অসামর্থা সত্তেও তিনি व्यामार्गित कन्।। गजनक कार्या भित्रम क्विरंड कथन ९ क्रि করেন নাই; স্থতবাং মাপনার প্রলোকগত পিতৃত্বশার প্রতি व्यामारम्त्र कु उक्क ठा एठक धरे हि हि शहन करून धरः व्यामारम्त्र (भाक-मःवान ज्याननात्र शतिवाववगरक छानन कक्रन। তাঁহার প্রযুক্ত আয়া স্বর্গে স্থথে এবং শান্তিতে বিহার করে; আমরা আপনার পরিবারবর্গের সহিত একজ্বয় হইয়া এই কবিবার জস্ত "তর্কৌমুদী" ও "ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জে" আমবা প্রার্থনা করিতেছি।

বিগত ২০শে এপ্রিল শুক্রবার কুমারী এল, ডি, কলেটের ষ্ট্যুতে শোক-প্রকাশ করিয়া "রামমোহন রায় সভাতে" এক প্রস্তাব গৃহীত হয়। কুমারী কলেটু রান্ধার একখানি বিস্তৃত শীবনী শিথিতে আবস্ত করিয়াছিলেন। উক্ত সভা এই শীবনীথানি শেষ করাকে একটি পবিত্র কার্য্য মনে করেন। এই সভা হইতেও কুমারী ই, এস্, কলেটের নিকট শোক-সহার্ভৃতি জ্ঞাপক একপণ্ড পত্ত প্রেরিত হইয়াছিল।

সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের ধোডশ সাহৎস্ত্রিক জ্লোংস্ব कार्याञ्चलाली निष्म ञानल इहेन:-

७५८म देवनाथ (५००५) ५७हे ८म (५৮०८) त्रविवात--शृक्तारू 🔞 অপবাহ্ন ৭টার সময় সংকীর্ত্তন ও উপাসনা। অপরাহ্ন ৪টার সময় শাস্ত্রপাঠ ও ধর্মালেলচনা।

>णा देशाष्ट्र, ১६३ (म. भामवात्र-- शृक्ताक् । खपत्राक् । वेदात्र সময় সংকীর্ত্তন এবং উপাসনা।

२त्रा टेकार्छ, २०१ (स. सक्नवाव-- शृद्धारू ও অপরাফ १ होत्र मसम् मःकीर्वन এवः উপामनाः। व्यथनारू ४ होव मसम् भाजनार्ध ও ধর্মালোচনা।

"মঙ্গলময় প্রমেশবের কুণার, শ্রদ্ধাম্পদ শ্রীযুক্ত কালী-নাবায়ণ গুপ্ত মহাশয় কর্ত্তক, উক্ত শ্রদ্ধাম্পদ মহাশয়ের অধিকার-ভুক্ত কাওরাদি নামক স্থানের নাতি দুরস্তিত ময়মনসিংহ ছেলান্তলেভটা পড়ে। ও কংশের কূল গ্রামনিবাসী খ্রীযুক্ত স্বয়চন্দ্র আচার্য্য প্রীযুক্ত নিত্যানন্দ আচার্যা মহাশর উভয়েই সীয় স্বীর পরিবারসহ পবিত্র ব্রাহ্মধর্ম গ্রহণ করিয়াছেন। ভগবান তাঁহার দরিজ ব্রাহ্ম সম্ভানদিগকে অবস্থা সম্বন্ধীয় এবং লোক ! কলিকাতা ১২ই মে ১৮৯৪। 🕽

নির্যাতন ইত্যাদি নানাপ্রকার প্রীক্ষা হইতে রক্ষা ক্রুন, এই ২০এ চৈত্র কাওবাদি ব্রাক্ষমন্দির প্রতিষ্ঠা উৎসব উপলক্ষে এই পল্লীগ্রাম নিবাসী নবীন ব্রাহ্মণণ সপরিবাবে वांशमान कतित्राष्ट्रिन।

বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত	<b>ক</b> লিকাতা	٧,
" ठ छो हत्र व तत्मा विभाग	<b>"</b>	>
একজন গরিব ব্রাহ্ম	•	:/
বাবু অবিনাশচলু সৰকাৰ	<b>19</b>	31
" इतिरमाञ्च पञ्ज	**	2/
<sub>, প</sub> ভ়েলচক্র সোম	-	1•
শ্ৰীমতী অম্বিকা দেব	কোরগব	3
বাবু বৈকৃঠনাপ হাজবা	<b>ৰ</b> ণ্টাই	<b>)</b>
"বিপিন চক্র সাস্মল	*	3/
" ভারাচাঁদ ব <b>হ</b>	21	11 •
	•	> h •

#### निद्वम्न ।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের আর্থিক অবস্থার প্রতি দৃষ্টি আকর্ষণ মধ্যে মধ্যে বিজ্ঞাপন দিয়া থাকি। তদ্দটে সমাজের সভ্য ও সহবোগী এবং উক্ত উভয় পত্রিকারই গ্রাহক মহোদম্বগণের অনেকেই একটু আলম্ভ ত্যাগ করিয়া স্বস্থ দেয় টাকার কিছু কিছু পাঠাইয়া সমাজেব অনেক উপকার করিয়া থাকেন, खळ्ळा **डाँ**शांनिश्य निक्षे आमानिश्यत आष्ट्रिक कुष्टळा श्रकाम कविरक्ष ।

ष्मामानिर्गत श्रातक महाभव्रग्रातक रव वर्षकिक वर्ष সাহাযা করা যায় তাহা সম্প্রতি হ্রাস হইয়া যাইতেছে। প্রচা-রকের সংখ্যা অতি কার। যে অল্ল সংখ্যক করেকজন আছেন তাঁহাদিগের উপর আবার ছাত্র-নিবাস, বালিকা বিদ্যালয় প্রভৃতিব ভাব অপিত আছে বলিয়া ভাঁহাবা স্মন্ত সমর প্রচার কার্যাদিতে অক্ষম। এ অবস্থায় তত্ত্বকৌমুদী ও ইপ্রিয়ান মেদেশ্বর পত্রিক। ছট থানি ছারা যে কিছু প্রচার হইভেছে গ্রাহক মহাশয়গণের নিকট হইতে ভাহাদিগের মূল্য প্রাপ্ত ना इट्रेट्स मभाटकत वार्या हला कठिन। वञ्चलः श्रम कतिया আর কতাদন চলিতে পারে, আরে ঋণ মুক্তই বা আমরা किक्रां ए इहेव ?

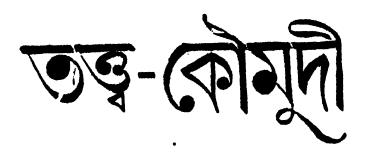
সমাজের সভাগণের নিক্ট এত বাকি পডিয়া রহিয়াছে যে তাগার একটা তালিকা প্রকাশ করিলে অনেকেই সমাজের নিয়মামুগতে সভাের অযোগা হইয়া পডিনেন। আমরা এই তালিকাটি প্রস্তুত্ত কবিতে গিয়া দেখিতেটি ছই বৎসরের ভ কণাই নাই কোন কোন সভ্যের নাম থাতায় আছে সভ্য কিছ অর্থ সাহায্যের কোন চিহুই তাহাতে দেখিতে পাওয়া যায় না।

প্রাচার কার্যা অথবা পত্রিকার সাহায়৷ হেডু এককাদীন দান উঠিয়া গিয়াছে বলিলেই হয়।

এ অবস্থার সমাজের হিতাকাজ্ঞী মাত্রেবই নিকট আমা-দিগের বিনীত নিবেদন সম্বর তাঁহারা যেন আমাদিগকে কিছু কিছু অর্থ সাহাষ্য করিয়া এবং স্ব স্ব দেয় টাকা পাঠাইরা বাধিত ও উপকৃত করেন :

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ কার্য্যালয় ] २১: नः कर्व अयोगिन है। है.

निद्वमक. শ্রীক্ষােরনাথ মূথােপাধাার महकाती मन्नामक. সাঃ ব্রাঃ সমাজ।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

৪থ সংখ্যা। ১৭ শ ভাগ।

১৬ই জ্যৈষ্ঠ মঙ্গলবার, ১৮১৬ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক অত্রিম মূল্য ২॥০ মফস্বলে ৩ প্রতি থণ্ডের মূল্য ৮০

#### প্রার্থনা।

হে বিশ্বপতি! বাঁহারা প্রেমের পথ অবক্ষন করিয়াছেন, তাঁহারা যে জীবনকে মধুময় বলিয়া অফ্ ভব করিয়াছেন। তোমার এই স্থলর জগৎ তাঁহাদের চক্ষে মধুয়য়, মানব-জীবন মধুয়য়, জীবনের স্থল ওংগ মধুয়য়, জীবনের স্থল ও কার্য্য সকল মধুয়য়। তাঁহারা সহজ ধর্মজাবে শয়ন করেন, সহজ ধর্মভাবে বায়তে বাস করেন ও সেই বায়্তে বিচরণ করেন। তোমার প্রত্যেক বিশ্বাসী ওপ্রেমিক সন্তানের জীবনে এই মহাসত্য প্রমাণিত হইরাছে। আমাদিগকে এই প্রেমের পথে একবার দঙায়মান কর, সেই প্রেমের স্থ একবার প্রাণ ভরিয়া সন্তোগ করি, প্রেমে আয় সমর্পণ করিয়া আপনাকে হারাই, এবং প্রেমের বায়তে বাস করিয়া অল-পার্ম্ব-রোপিত বৃক্ষের লায় সহজ ও স্বাভাবিক ভাবে বর্দ্ধিত হই। তথন ভোমাকে ধল্পবাদ করা আমাদের প্রতিদিনের আনলকর ব্যাপার হইবে এবং তোমার সেবাই জীবনেব স্থানিইতম কার্য্য হইবে।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

তুই পথ—পাহাড়ে উঠিবার সময় অনেক হলে ছইটী
পথ দেখিতে পাওয়া যায়। একটা প্রশন্ত; গাড়ি, ঘোড়া
প্রভৃতি যাইবার জন্ত বচিত, প্রস্তবাদি দারা উত্তমকপে বাধান ও
একপ ভাবে নির্দ্দিত যে, তদারা গমন করিলে গিরি
আরোহণের ক্লেশ কিছুই অমুভব করা যায় না; যেন সহজ্ঞ
পথেই চলিতেছি। আর একটা পথ ছরারোহ, তাহাতে
উন্নত শৈল্পিথরে আহোরণ করিতে হয়, ত্রায় শরীর
ক্লাস্ত ও অবসন্ন হইয়া পড়ে। অতি স্বল্কায় পার্কত্য জাতি
স্কল্ই এই স্কল্পথে গতায়াত করিতে পটু। তাহারাই
পৃষ্টে ভার লইয়া ঐ স্কল্প পথে উঠিতেছে ও নামিতেছে,
তাহা তোমার আমার পক্ষে সহজ্বসাধ্য নহে। ধর্মরাজ্যেও
যেন ছই প্রকার পথ দেখিতেছি, একটা প্রেমের পথ ও
অপ্রস্টা কঠোর সাধনের পথ। প্রেমের পথ একবার ধরিতে

পারিলে আর ক্লেশ থাকে না; মামুষ অতি সহজে অগ্রসর হয়। কিন্তু প্রেমের পথ বতদিন ধরিতে না পাবা যায়. ততদিন মানুষ কঠোর সাধনের পথে চলিতে থাকে। এই পথে ধর্ম অতিশয় তিক্ত ও প্রমাজনক বলিয়া বোধ হয়। শ্মীর ও মনকে ওকতর রূপে নিগ্রহ করিতে করিতে মন পরিপ্রাস্ত হইয়া পড়ে। সাধনের যেরূপ ছুইটী পণ, সাধকও ছই শ্রেণীর দেখা ষাইতেছে। বৃদ্ধ, যীও, মহম্মদ প্রভৃতি যে পথে গিয়াছিলেন তাহা কিরপ সহল ও স্বাভাবিক পথ ছিল! মহাত্ম শাক্য সিংহ ৬ বৎসর কাল যে কঠোর সাধন করিলেন. অবশেষে তাহা অনাবশুক বোধে উপেকা করিলেন; এ্রং निष्य च्यांजात रख रहेए भन्नमात यारात कतिता हकः সাধনের প্রয়োজনীয়তা প্রতিপন্ন করিলেন। তাহাতে তাঁহাব পঞ্জন শিষ্য তাঁহাকে ব্রত্ত্যাগী বোধে বর্জন করিলেন কিন্তু তিনি তাহাতে কিছুমাত্র ভীত বা ছংখিত না হইয়া সীয় আবিষ্ণত মধ্য পথ অবলম্বন করিয়া সিদ্ধিলাভ কবিলেন এবং প্রচার করিতে লাগিলেন। এ সম্বন্ধে একটা আথ্যা-মিকা প্রচলিত আছে। বৃদ্ধ দেখিলেন একটা দেবদৃত একটা वीनायञ्च हत्छ छाहात्र निक्र आविष्ट् छ हहेत्नन, এवः यज्जी তাঁহার হস্তে দিয়া সর্বাত্যে তাহাকে সপ্তমেরও উপরে স্থব চড়াইয়া বাঁশিতে বলিলেন। শাক্য সিংহ তদমুরপ কবিলেন। जनमञ्ज्य रनवन्ज जांशास्य के यञ्ज वाकाहरू आरम्भ कविराग । বৃদ্ধ বাজাইতে গেলেন, কর্ণের প্রীতিপ্রাদ স্বর নির্গত হইল না। তদনস্কর দেবদৃত আবার তাঁহাকে যন্ত্রটা একেবারে নীচে বাধিতে विलित्न। वृक्ष छम्छक्रभ कतिलान; आवाव वासाहेटल আদেশ করিলেন। এবারেও কর্ণের প্রীতি-প্রদ স্বব নির্গত হইল না। অবশেষে মধ্য পথে যন্ত্র বাঁধা হইল, এবং উৎক্ট স্বর নির্গত হইতে লাগিল। তথন দেবদূত তাঁহাকে এই উপদেশ দিলেন "হে জ্ঞানিশ্রেষ্ঠ ! কঠোর ক্বচ্ছুসাধনও সাধকের পদা নর, ই ক্রিয়ত্থ পরভন্ততা ও সাধকের পদা নয়; মধ্য পথ हे नर्खना व्यवन हतीय। जी ठाट उपरमण व्याह ;—

যুক্তাহারবিহারস্য যুক্ত চেষ্টা কর্মণি।

যুক্তস্থপাববোধন্ত যোগো ভবতি গুংথহা।

অর্থ-বে ব্যক্তি উপযুক্ত পরিমাণে আহার বিহার করিয়া
থাকেন, যিনি উপযুক্তরূপ শ্রম করেন এবং আবিশ্যক মত

নিজা ও জাগরণ করিয়া থাকেন, সেই ব্যক্তির পক্ষেই যোগ ছঃথ হানিকব হয়।" প্রেম পথাবলম্বী প্রত্যেক মহাজনই এই পথে গমন করিয়াছিলেন। যীশুর জীবনে রুজুসাধন বা বাহ্য তপস্থা ছিল না। তিনি স্বজ্ঞলেশ আহার বিহার করিতেন, নিমন্ত্রণ গ্রহণ করিতেন, স্বথে নিজা ঘাইতেন, পথে, ঘাটে, বনে জঙ্গলে স্বাভাবিক ভাবে ধর্মপ্রচার করিতেন। তিনি একবার সমবেত য়িছদীদিগকে লক্ষ্য কবিয়া বলিয়াছিলেন, "জন,উপবাসাদি হারা কঠোর তপস্থা করিতেন তথাপি তাহাকে তোমরা মান নাই, আর আমি স্বজ্জলে আহার বিহার করি আমাকে কি মানিবে ?" প্রেম পথাবলম্বী প্রত্যেক সাধকের নিকটেই ধর্ম নিঃখাস প্রস্থাদের স্থার স্বাভাবিক।

ব্রাহ্মবালকদিগের শিক্ষা—একজন ব্রাহ্ম মহিলা মফ্স্বলের কোনও স্থানে বাস করিতেছেন। তিনি একটী মাত निশু পুত नहेश विधवा हहेशाहन। অতি শিশু ছিল, তাহাকে বিদ্যালয়ে প্রেরণের চিন্তা মনে উদিত হয় নাই। কিন্তু একণে বালকটা পাঁচ বংসর উত্তীর্ণ হইয়া ছয় বংসরে পড়িয়াছে, স্থতবাং জননীর মনে তাহাকে বিদ্যালয়ে প্রেরণেব চিস্তা উদিত হইয়াছে। তিনি নিতাত চিস্তিত হইয়া কলিকাভান্ত একজন বন্ধকে যে পতা লিখিয়াছেন তাহা হইতে কিয়দংশ উদ্ধৃত কবা যাইতেছে;—"হিন্দুদের স্থুলে ভাষাকে পড়িতে দেওয়া উচিত নয়;—পুরে ছোট ছেলেদের উপযুক্ত সুল নাই: আর যে সব কুল আছে তাহারা ব্রাহ্মদেব ধুব নিক্লা করে, আমার মনে হয় তাকে কলিকাতা वाशाहे जान। " अहे महिना निक भूज्ञत्क बाक्तविद्याधी ऋतन প্রেরণ করিতে যে চিন্তা করিতেছেন, অনেক ত্রান্ধ পিতামাতা দে চিন্তা করেন না। একজন স্থকুমার মতি বালক বিদ্যালয়ে যদি নিরন্তব ত্রান্ধদিপের নিন্দা শ্রবণ করে, তবে তাহার কিরূপ ভাবে বর্দ্ধিত হইবার সম্ভাবনা, তাহা সহজেই অনুমান করা गाइटिन भारत । वालरकता वदाः आशि इहेग्रा यथन करणस्य वाम, ত্ৰপন একপ নিলাবাৰ গুনিলে তাহাদেব তত অনিষ্ট হয় না: বিছ শৈশবে শিশুগণ অতি সহর সহাধ্যায়ীদিগের ভাব প্রাপ হইয়া থাকে। এইজন্ত কেহ কেহ প্রস্তাব করিয়াছেন, त्य वाकावानक मिर्शत (वार्डि॰ अत मरक बाकावानक मिर्शत कन्न একটী কুল স্থাপন কর। ১উক। যঠ কি সপ্তম শ্রেণী পর্য্যস্ত ালকগণ ব্ৰাহ্মবালিকা-শিক্ষালয়ে পড়িতে পারিবে. তৎপরে উপরকার কয়েকটা শ্রেণী স্বতম্ব হানে রাখা হইবে। নিকটে বাডী চুটা রাখিতে পারিণে একই শিক্ষক ভিন্ন ভিন্ন সমরে হই স্থানে 'ড়াইতে পারিবেন। আমরা গণনা করিয়া দেখিয়াছি, কলিকাভার সমুদায় ত্রাহ্মবালক পাইলে প্রায় ७०।१० नि वानक इम्र, ইशामिश्राक नहेम्रा धक्नी सून कता গাইতে পারে, এবং অনেক কৃত্রিদা ত্রাহ্মযুবক এরপ কার্য্যে খাটিতে পারেন। ক্রমে এই ছইটী বোর্ডিং ও কুল, মফস্বলে लहेत्रा गाहेटल भाता यात्र। आमता मिथिया स्थी इहेटलिह द्य ক্রমেই এই গুরুতর বিষয়ে ব্রাহ্ম ত্রাহ্মিকামিগের দৃষ্টি পতিত

হইতেছে। এরপ আশা হয় যে খ্রায় ইহার কোনও একটা উপায় নির্দ্ধারিত হইবে।

ব্রাক্ষা সাম্প্রদায়িকতা—একজন স্থানিকত চিন্তা শীল বাঙ্গালি ভদ্রনোক একদিন, একজন ব্রাক্ষ প্রচারককে জিজ্ঞাসা করিলেন;—"আপনারা ব্রাক্ষ না হইলে ভাহাকে আর ভাল বাসিতে পারেন না; আপনাদের কথার ভাবে বোধ হয় অব্রাক্ষ মাত্রেই অসৎ লোক, আপনাদের এই প্রকার ধারণা। ব্রাক্ষদিগের মধ্যে একপ সংকীণতা ও সাম্প্রদায়িকতা প্রবিষ্ট হইতেছে কেন ?"

প্রচারক মহাশয় উত্তর করিলেন.—"ব্রাহ্মদিগের অন্তরে কিয়ৎ পরিমাণে সাম্প্রদায়িক ভাব প্রবিষ্ট হুইয়াছে ও দিন দিন বর্দ্ধিত হইতেছে তাহা আমরাও অফুভব কবিতেছি। किन्छ रय नकन कारतात अकल ममारतम व्हेमा अहे फन ফলিতেছে তাহার উপরে যেন আমাদের হাত নাই। প্রথম আমাদের দেশে জাতিভেদ প্রথা প্রচলিত থাকাতে এই একপ **इहे** टिल्ड (य, (य (कह वाश्वधर्मा व्यवस्थत कतिरल्ड लाहारक জাতিচাত হইতে হইতেছে, অর্থাৎ তাহার আশ্রীয় জ্ঞাতি কুটুখগণ ভাষার সহিত আহার ব্যবহার পরিত্যাগ করিতে-ছেন। কাজেই ব্ৰাশ্বগণ যেন এক নূতন জাতি হইয়। দাড়াইতেছেন। একবার একজন থাসিয়া ভদ্রলোকের বাড়ীতে গিয়াছিলাম, তিনি একে একে তাঁহার পুত্রগুলির সহিত আলাপ করিয়া দিলেন। একটা পুত্রকে পরিচিত করিয়া দিয়া বলিলেন "আমর এই পুল্রটা প্রীষ্টান।" অর্থাং দে औট ধর্ম অবলম্বন করিয়াছে। রবিবার ছরে না থাকিয়া গির্জ্জাতে যায়, প্রচলিত থাসিয়া ধর্মে যোগ দেয় না এই মাজ। অপরাপর সমুদায় বিষয়ে সেই পুত্রে ও অপরা-পর পুলে বড় অধিক প্রভেদ নাই। সে বাড়ীতে আছে. পিতামাতা ভাইভগিনীব নিকট বাস কবিতেছে। মধ্যে জাতিভেদ প্রথা নাই স্নতরাং জাতিচাত করাও নাই। ইহাতে পুরাতন আগ্রীয়তীর ব্যাঘাত হয় নাঃ বঙ্গদেশে वाक्रिनिशंत व्यवश्रा व्यक्ष क्षेत्र । वाक्र इहेलाई लाएक তাহাকে জাতিচ্যত করে, কাজেই জাতিচ্যত ব্যক্তি অপর জাতিচাতদিগের সহিত মিলিয়া বাস করিতে বাধ্য হয়। পুরাতন বন্ধুদিগের সহিত আত্মীয়তা পুত্র ছিল হইয়া যায়। षिञीय अथन रमाय श्रीय मर्ख्यहे जान्नविरतायी जाव मुहे হয় ৷ লোকের স্থিত মিশিতে গেলেই অনেক সময় বাদ-বিততা, বিবাদ কলহ উপস্থিত হয়, এইজ্ম ত্রাহ্মগণ ব্রাহ্মদিগের मत्त्रहे अधिक मिनिया थात्क। द्यथात्नहे छ्हे मन त्नात्कत মধ্যে মিশামিশি বন্ধ হইয়া যার, সেইথানেই পরস্পারের সম্বন্ধে অনেক ভ্রাস্ত ধারণা জ্মিবার কারণ হয়। এই জ্ঞ तित्नंत त्नारकत बाक्षिपरात मचरक व्यानक क्मारकात व्यारह, আক্ষণিগেরও দেশের লোকের সম্বন্ধে কুংসংস্কার আছে। নানা প্রকার স্বত্নষ্ঠান উপ্রক্তে অধিক পরিমাণে উভর দ্বের মিশামিশি আরম্ভ হইলে বর্তমান সাম্প্রদায়িকতা অনেক পরিমাণে বিদুরিত হুইতে পারে।

সংসার-ধর্ম এবং সাংসারিকতা-সংসারই ধর্মকেত্র। ধর্মদাধনের জন্ম সংসার পরিত্যাগ করিয়া বনে গমন করিতে হইবে, ব্ৰাহ্মধৰ্ম এ কথা বলেন না। "ব্ৰহ্মনিষ্ঠ গৃহস্থ" হইবার জন্মই ব্রাহ্মধর্ম উপদেশ দেন। যিনি সংসার-ক্ষেত্রে বিধাতার লীলা দর্শন করিতে পারিলেন না, বনে গিয়া তিনি কি বিখপতিব মহিমা উপলব্ধি করিতে পারিবেন ? বাস্তবিক সন্ন্যাসধর্ম, বনচারীর ধর্ম, প্রাকৃত ধর্মের বিকৃতি মাত্র। ধর্ম-পথ সহল ও সরল। সংসার-ত্যাগ, কুচ্ছ সাধন कि প্রম তত্ত্ব লাভেব উপায় ? বিশেষ বিশেষ মানবের এক্নপ পদ্বা অবলম্ব-নীয় হইতেও পারে: কিন্তু সাধারণ মানবের ঐ পথ আদর্শ স্থানীয় নহে। সংসারকে মর্গে পরিণত কবাই ব্রাহ্মধর্মের ष्यामर्भ। किन्तु यिनि সাংসারিকভাকে সংসার ধর্ম বলিয়া গ্রহণ করিবেন, তিনি বিষরুক্ষকে চন্দনতরু ভ্রমে আলিখন করিবেন। বাঁহারা কার্য্যতঃ বিষয়াসক্ত, সাংসারিকভায় মগ্ন, অথচ সেই বিষয়াসক্তি ও সাংসারিকতাকেই সংসার-ধর্ম বলিরা ব্যাখ্যা করিতেছেন এবং বাঁহার৷ এই বিষয়াসক্তিকে ঘূণা করিতেছেন, সাংসারিকতা দূর করিবার জন্ত উপদেশ দিতে-ছেন, তাঁহাদের প্রতি তীত্র কটাক্ষণাত করিতেছেন, তাঁহাদের অবহা বড়ই শোচনীয়। শরীরের ভিতরে ব্যাধি রহিয়াছে, যদি তাহা বৃঝিতে না পারিয়া মনে করে বেশ স্থাও আছে, তবে ষেমন অজ্ঞাতদারে দেই লুক্কারিত ব্যাধি দিন निन वृक्ति शाश रहेशा शान नहें कतित्व, अहे स्विभेत्र शांधक-গণের অবস্থাও সেইরূপ।

পুত্র ক্সাকে লালন পালন কর, স্ত্রীকে অলম্বার দেও, লোহার সিম্বকে টাকা সঞ্য কর, পাকা বাড়ী নির্মাণ কর, व्यविवात किन मिन्दित ना शिवा वाफीटि आस्मान धारमान कत, বন্ধ ৰান্ধবদিগকে নিত্য প্ৰীতিভোজন করাইয়া বন্ধুছের প্ৰসার বৃদ্ধি কর ইত্যাদি কার্য্য স্থলশার করিতে পারিলেই সংসাব-ধর্ম इहेन। हेहा यमि मःभात-धर्म हम्र, उत्व পृथिवीट अक्रभ वास्कि অতি অৱই আছে, ৰাহারা এই ধর্ম পালন না করে। খাওয়া প্রা মুখ সুবিধা এই পৃথিবীতে বেশ চলিতেছে। তজ্জ্ঞ প্রচারকেরই বা প্রয়োজন কি ? ধর্ম-মন্দিরেরই বা আবিশ্রকভা কি আছে ? পশু পক্ষী নিয়ত বে ধর্ম পালন করিতেছে, **मिहे धर्म পালন করাইবার জন্ত মামুষ্কে উপদেশ দিতে হয়** না। কিন্তু কোনও সাধনশীল ও চিন্তাশীল ত্রান্ধ একপ সংসার शाननाक मःभाव-धर्मा विनिद्यन ना। यिनि श्रद्धाचारक नका-श्रुल द्राथिया मःभात भागन करदन, मःभात स्वेचर नास्त्रत উপায়-এক লক্ষ্য, সংসার গস্তব্য পথ, এইরপে যিনি ধর্মসাধন कत्त्रन, जिनिहे भः भात-धर्म भागन कत्तिराज मक्तम इहेरतन। ছঃথের বিষয় যে, অনেকেই সংসার-ধর্ম পালন করিতে গিরা ঘোরতর বিষয়ী হইয়া পড়েন। বিষয়াস্ক্রিকে সংসার ধর্ম মনে ক্রিয়া কত লোকে ইহজগতে প্রতারিত হইতেছেন।

কে সংসারকে প্রভূ পরমেশ্বরের দীলা-ক্ষেত্র করিয়াছে, কেইবা বিষয়ে মঞ্জিয়া আধ্যাত্মিক বিনাশ সাধন করিতেছে, ভাহা আচরণেই চিনিতে পারা যায়। বিষয়াসক্ত ব্যক্তি ধর্ম্মের পরিছেদ পরিধান করিয়া কত দিন করিত রাজ্যে থাকিতে

পারিবে ? বিপদের দিনে, পরীক্ষার দিনে, তাহার লুকারিত निक मृर्खि वाश्टित ध्वकानिक हरेबा পড़ित्वरे পড़ित्व। किन्न যিনি ব্রহ্মের জ্বন্ত সংসার করিতেছেন, তিনি সমুদয় বিপদ আপদে স্থির অটল থাকিবেন, কিছুতেই তিনি শান্তিহারা ट्हेर्टिन ना। योहार्टिन वर्ष क्विन गृहिनीत स्वार्टिह ব্যয়িত হয়,—তুঃথীর হুঃগ মোচনে, ধর্ম প্রচারে, সাধু অফুষ্ঠানে যাহার কোনও অংশ বারিত হয় না, যাহার জীবন ধারণ কেবল ভোগ বিলাদ চরিতার্থ করিবার জন্ম, কিন্তু প্রভুর মহিমা বিস্তারের জন্ম নছে; যাহার শক্তি সামর্থ্য কেবন্ধ স্বীর মান সম্ম ও অৰম্ভার উন্নতি সাধনেই পর্যাবসিত হয়, কিন্তু মর-नात्रीत (मवा, ७ धर्म थाठारत याठारमत तुक भारम किम्रश्भित-মাণেও ক্ষয় হয় না, তাহারাই বিষয়াসক। যাহারা কেবল নিজের হ্রথ হ্রবিধা দইয়া ব্যস্ত, আর কোনও দিকে ভাকার না, তাহারাই সাংসারিক। অপর দিকে যাহাদের "প্রাণ ত্রহ্মপদে হস্ত কাজে তাঁর" যাঁহারা ঈশ্ব-প্রীতিকাম হইয়া मक्न कार्या निर्काह करतन, रौहाता ज्ञानरत ज्ञाल स्थी, धर्म প্রচারে উৎসাহশীল, দরিজের অশ্রু মোচনে আনন্দিত, কুধাভূরের माशास्त्रात सन्ध गोशाता भूकरुख, गोशाता धर्मात त्राका, जेचरतत রাজ্য বিস্তারের জন্ম না দিতে পারেন, এমন কিছু নাই, না ছাড়িতে পারেন, এমন কোনও বিষয় নাই, তাঁছারাই সংসার-ধর্মী। বিষয়াসক্ত ও সংসার-ধর্মীদিপের মধ্যে চিরকান বিরোধ চলিয়া জাসিতেছে।

বিশাস তুর্গ-নিম্লিথিত আখ্যায়িকাটী বৌদ্ধ্যম্ভে প্রাপ্ত হওয়া যার। মহাত্মা শাক্য সিংহের সমরে একজন ব্রাহ্মণ যোগী প্রায় ছাদশ বৎসর কাল কোনও বৃক্ষতলে বসিয়া তপতা করিতেছিলেন। কিন্তু ঐ তপন্থী কোনও প্রকারে ইন্দ্রিয়-স্থ্থ-লাল্সা-জনিত-চিত্ত চাঞ্চল্য নিবারণ করিতে ममर्थ इन नाहै। वृक्ष এই बाक्षांगत्र मःवान कानिएजन এवः তাহার চিত্ত-চাঞ্চল্যের বিষয় অবগত ছিলেন। একদা শুক্ল পক্ষের রজনীতে তিনি শ্রমণের বেশ ধারণ করিয়া ঐ তপস্থীব সল্লিধানে পিয়া আসন গ্রহণ করিলেন। তাঁহারা উভয়ে বসিয়া আছেন, এমত সময়ে সমুধন্থ নদীব গর্ভ হইতে একটা কৃশ্ম উঠিয়া তাঁহাদিগের দিকে আগমন করিতে লাগিল! কিন্তু কৃশ্বটী অধিক দুর অগ্রসর না হন্তে হইতে কোণা হইতে একটা উদ্বিড়াল দৌড়িয়া আসিয়া তাহাকে আক্রমণ কৰিল। কুর্ম্মটী প্রাণভরে স্মাপনার দেহ-কোষের মধ্যে মন্তক ও হস্ত পদাদি সংকৃতিত করিয়া লুকাইয়া রহিল। উদ্বিড়াল কৃমের স্থুদুঢ় দেহ-কোবের উপরে বুথা আঘাত করিয়া নিরস্ত হইয়া গেল। উদ্বিড়াল প্রতিনিবৃত্ত হইলে কৃষ্ম আবার স্বছল চিত্তে অগ্রসর হইতে লাগিল। তথন ঐ তপখী শ্রমণবেশধারী বুদ্ধকে সংখাধন করিয়া বলিলেন—"দেথ কুর্মটীর আত্মরকার হুদুচ্ উপায় থাকাতে কেমন বিপদ হইতে রক্ষা পাইল।" শ্রমণবেল-धाती वृक्त विशालन-"ष्यामि धक्षन मास्ट्यत विषय जानि, त्म তপস্থার দারা মুক্তিলাভ করিতে চার, কিন্ত ঐ কুর্মের স্থার আপনার প্রবৃত্তি স্কল্ফে সংবর্ণ ক্রিডে না পারাডে

অনেক ক্লেশ পাইয়া থাকে।" ইহাতে ঐ তপস্বীর দৃষ্টি নিজের উপরে পড়িয়া গেল এবং সে ক্রেমে শ্রমণবেশধারী বুদ্ধের পরিচয় পাইয়া তাঁহার শ্রণাপন্ন হইল।

এই আধ্যায়িকাটী হইতে আমরা একটী উপদেশ প্রাপ্ত হই। কৃশ্রের অঙ্গ-রক্ষার জন্ম যেমন একটী স্থাচ্চ আবরণ আছে, তেমনি প্রকৃত বিখাসী ব্যক্তিরও একটী স্থাচ্চ আবরণ আছে। যথনি তিনি পাপ-প্রলোভনে, বা ভন্ন বিপদে পতিত হন, তথনি ঐ আববণের মধ্যে আপনাকে প্রচ্ছের করিয়া নিরাপদ হইতে পারেন। এই যে নিরাপদ অবস্থা, ইহাকে নানা ভক্ত নানা ভাষাতে বর্ণনা করিয়াছেন। বৃদ্ধ মিছদী নরপতি দায়্দ ইহাকে পাষাণ নির্মিত হুর্গ বলিয়াছেন। নানক এই অবস্থাতে পর্মেখবকে নিজের বর্ম্ম বর্ণন করিয়াছেন। বস্তুতঃ যে সকল ধর্মবীব ধর্মের জন্ম অসহ ক্লেশ সহা করিয়াছেন, এমন কি সময়ে সময়ে প্রাণ পর্যান্ত দিয়াছেন, তাঁহারা এই প্রকার বিশাস-হুর্গে আশ্রম লইয়াছিলেন, নতুবা কথনই এত ক্লেশ সহা করিতে পারিভেন না। ঈশ্রের কক্ষন আম্রা যেন বিশাস হুর্গে আশ্রম লইতে পারি।

উন্মাদিনী শক্তি—সাধু মহাজনগণ কোন জগতকে বশীভূত কবিয়াছেন ? যীও যথন নৰ বৰ্ম প্ৰচার আবস্ত করিলেন, তথন তাঁহার স্থগ্রামবাদী ও পরিচিত ব্যক্তিগণ বলিতে লাগিল. "এই না সেই ঘীও আমাদের জোসেফ ছতারের ছেলে, উহার ভাই ও ভগিনীগণ ত আমাদের সঙ্গেই আছে, ও ব্যক্তি ইহার মধ্যে কি দেখিল, যে এই সকল আশ্চর্য্য কথা বলে ?" চৈতন্ত যথন বৈষ্ণব ধর্ম্ম প্রচার করিতে প্রবৃত্ত হইলেন, তথন নবদীপের লোক বলিতে লাগিল-"ওরে আমাদের সেই নিমাই পণ্ডিত।" নানক যথন প্রভু পরমেশ্বরেব মহিমা কীর্ত্তন করিবার জন্ম বহির্গত হইলেন, তথন লোকে বলিতে লাগিল, 'সেই লবণ ব্যবসায়ীর চাকর।" এইরূপে পুথিবীৰ অধিকাংশ মহাজন সামাল অবস্থাতে জন্মগ্ৰহণ কৰিয়া সামান্ত ভাবেই কার্যাারম্ভ করিয়াছিলেন। কিন্তু তাঁহাদের गत्था अपन कि हिन, याशांट मध्य मध्य वाखितक छांशांत्र व শিষ্য মন্ত্রে দীক্ষিত করিয়াছে ? গড়ের উপরে বলিতে গেলে मक लारे अरे कथा विशिवन (य. अरे मकन महास्रानंत हिति क কি এক উন্নাদিনী শক্তি ছিল, যে কেই সেই চরিত্তের সংস্পাদে আসিয়াছে বা তাহার অফুণ্যান করিয়াছে, দেই উন্মত্ত-প্রায় হইয়া উঠিয়াছে। তাহাত বুঝিলাম, কিন্তু এই উমাদিনী শক্তির মূল কোথায় ? কি দেখিয়া লোকে উন্মন্ত इहेग्राष्ट्र । তाहारमञ्ज धन वन वा शमभर्ग्यामा हिन ना र्य. ভাহা দেখিয়া লোক আফুট হইবে। ইহাঁরা সকলে জ্ঞানি-শ্রেষ্ঠ ও ছিলেন না যে, জ্ঞানগৌরব দেখিয়া কেহ আরুই रहेता उत कि छिन १ छिन हेहाँ एन न जान। हेहाँ जा সকলে ত্যাগী পুরুষ ছিলেন। ইহাঁদের চিত্ত স্বীয় স্বীয় অবল্ধিত ও প্রচারিত সত্যে এতদুর পরিবাধি ছিল যে, স্বার্থচিন্তা স্বার মনে স্থান প্রাপ্ত হয় নাই। ইহারা নিঃস্বার্থ-পরতার অগ্নিতে উদীপ্ত ছিলেন এবং সেই অগ্নিতে সুথ ও

স্বার্থকে আহতি দিয়াছিলেন। এবিষয়ে মহম্মদের দৃষ্টাস্ত বিশেষ আলোচনীয়। অপরাপর সাধুপণ এক প্রকার সন্ন্যাসী ও ফকীর হইয়া গিয়াছিলেন বলিলে হয়, কিন্তু মহম্মদ ফকীর হন নাই। তিনি গৃহী ছিলেন, গৃহস্থ ধর্ম প্রচার করিতেন; স্ত্রী পুত্র লইয়া বাস করিতেন। কেবল তাহা নহে, তিনি বিপক্ষকুলের উপরে যথন জয়লাভ করিলেন, তথন তিনি চারিদিক হইতে একজন সমাটের সন্মান প্রাপ্ত হইতে লাগিলেন। পরে যুদ্ধে যুখন তাঁছার দৈলগণ জয়লাভ করিতে লাগিল, তথন তাঁহার সেনাপতিগণ এক একজন রাজ সম্পদ লাভ করিতে লাগিল। মহম্মদের যদি পার্থিব সম্পদের প্রতি কিছু মাত্র দৃষ্টি থাকিত তাহা হইলে সেই সময়ে রাজ্যেখর রাজা হইয়া বসিতে পারিতেন এবং অতুল বিভবের অধিপতি হইয়া বিষয়-স্থ ভোগ করিতে পারিতেন। কিন্তু তাঁহার সে मिक पृष्टि **ছिन ना, जिनि य किছू मन्भ**म श्रीश इटेरजन जारा তাঁহার প্রচারিত ধর্ম বিস্তারে নিয়োজিত হইত। এমন কি তাঁহার প্রিয় কল্লা ফাতেম। দেবীর যথন বিবাহ হয়, তথন তিনি সর্কাণারণে পূজিত মহাপুরুষ, কিন্তু তথনও তাঁহার এরপ হীনাবান্থ। যে অপরে বিবাহের ব্যয়ের সাহায্যার্থ কিছু किছू मान कत्रांट विवास्त्र वात्र निर्साह स्हैग्राहिन। ফাতেমার বিবাহের পব একদিন মহম্মদ কল্পাকে দেখিতে (গলে, ফাতেমা বলিলেন—"পিতঃ আমাকে সমুদায় গৃহ কর্ম चहरत कतिए हम, धवः পতि वाहित्तत काक कतिमा थारकन, যদি দরা করিয়া আমাকে একটা পরিচারিকা দেন ভাষা हहेत्त खातक मांहाया हथ। सहस्यम छेखत कतित्मन "कनानि। আমি তোমাকে পরিচারিকা অপেকা উৎক্রপ্ত যাহা তাহা দিব। তুমি প্রতিদিন ঘাত্রিশৎবার বলিবে "আল্লা" হো আক্রবর ( পরমেশরই মহান )। মহন্দদ যথন মানব লীলা সম্বর্দ করিলেন, তথন একটা বসিবার মাছব, একটা বদনা ও সামান্ত হুই চারিটী দ্রব্য ভিন্ন তাঁহার নিজেব আর কিছুই রহিল না।

এই সকল সাধুর জীবনের নিঃসার্থতা দেখিয়াই যুগে যুগে লোকের মন উনীপ্ত হইয়া উঠিয়ছে। এই নিঃসার্থতাই ইলাদের উন্মাদিনী শক্তিব মৃল। জগতে যত ধর্ম প্রচারত হইয়া জয়লাভ করিয়াছে সকলের ইতিবৃত্তে এই একই কথা। কবে কোন ধর্ম বিষয়াসক্তির সহিত মিত্রতা করিয়া জয়লাভ করিতে সমর্থ হইয়াছে? লোকের চিত্তে উন্মাদিনী শক্তি সঞ্চারিত করিতে পারিয়াছে ? যাহা কাহারও হারা হয় নাই, তাহা ব্রাহ্মধর্মের ও ব্রাহ্মসমাজের হারা হইবে ? যাহা সাধন করিতে সকল সাধুজনকে স্বার্থনাশের জায়া হইবে ? যাহা সাধন করিতে সকল সাধুজনকে স্বার্থনাশের জায়া লালতে হইয়াছিল, ব্রাহ্মগণ কি বিষয় বালিশে মাথা রাথিয়া হ্মথের ঘুম ঘুমাইয়া জাহা সাধন করিতে পারিবেন ? আমাদিগের হ্মদৃত্ বিখাস ব্রাহ্ম সমাজ মধ্যে স্বার্থনাশের জায়া যতই প্রজ্ঞাতি ইইবে তত্তই ব্রাহ্মধর্মের উন্মাদিনী শক্তি বাড়িবে, তত্তই নরনারীয় হাদ্ম ইহার দিকে আর্ম্নন্ত হইবে। জায়র কয়ন স্বার্থনাশের অধি আমাদিগের মধ্যে প্রজ্ঞাতিত হউক।

## • সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ ।

#### প্রেম ও সামঞ্জস্তা।

ধর্ম কি মামুষকে অস্বাভাবিক কবে ? প্রাচীন কালের সাধকদিগের এপ্রকাব বিশ্বাস ছিল বটে। অতি প্রাচীনতম কাল হইতেই প্রায় সকল জাতি মধ্যে উপাস্ত দেবতার প্রীত্যর্থ বলিদানেব প্রথা প্রচলিত ছিল। এতদ্বেশেব প্রাচীন গ্রন্থে রামায়ণাদিতে মুনি-পুল শুন:-শেফের বুতাস্ত বণিত আছে। ভন:-শেক এক মুনিতনয়: তাঁহার পিতামাতা তাঁহাকে অগলোভে বলিকপে হত হইবার জন্ম বাজাব নিকটে বিক্রয় এইরূপ আবিও অনেক নরবলির বিববণ ক্ৰিয়াছিলেন। প্রাপ্ত হওয়া:যায। প্রাচীন ব্যাবিলন ফিনিসিয়া প্রভৃতি দেশে অবিবাহিতা বালিকাদিগকে বলিকপে হত্যা কবিবাব প্রথা প্রচলিত ছিল। ফিনিশিয়ার রাজধানীতে এত বড একটা দেবমূর্তি ছিল যে, ভাঁহার কুক্ষিব মধ্যে এক সঙ্গে ছুই তিন্টী वालिका फिलिशा मिटा भाषा याहे छ। तमहे तमव मूर्छित्र मत्भा অমি জালিয়া হতভাগিনী বালিকাদিগকে ফেলিয়া দেওয়া **১ইত। এই বলিদানের ভাব কোন না কোন আকারে** আবহ্মান কাল এদেশে ও অপবাপর দেশে চলিয়া আমিতেছে। জ্মে নরবলি বহিত হট্য়া পশু পক্ষী বলির বিধি প্রচলিত হইয়াছে। দেবতাকে প্রসন্ন কবিতে হইলে কিছু বলি দেওয়া চাই, এই সংস্কাবটা ধর্ম সাধকদিগের মনে বন্ধ মূল।

ইউনোপের ইতিব্যত্তেব মধ্যকালে এবং এটেলে বৌদ্ধধ্য প্রচারের পরে এই সংস্কার আবে এক আকার ধাবণ কবিয়া-ছিল। তাহা এই, সাধারণ মানব যে সকল স্থতোগ করে, তাহা বক্ষন না কবিলে প্রকৃত আত্ম-বলিদান কবা হটল না। খ্রীষ্টায় ধর্মোপদেষ্টাগণ মানব জীবনকে ছই ভাগে বিভাশ বরিষা এক ভাগকে স্বাভাবিক্ষীবন ও সাব এক ভাগকে ধক্ষজীবন বলিয়া বণনা কবিষাছিলেন। প্রভাবিক মারুধ যাহা চার ভালা ধল্মের পক্ষে নিষিদ্ধ। ভাব शेष्ठेभरमात गर्सा এक সময়ে এত প্রবল इहेग्राहिल যে, আমাদেব দেশেব সীয়াসের প্রথাব অভুকপ প্রথা সাধক দিগেব মধ্যে বহুদিন প্রচলিত তাঁহারা যেন এই রূপে বিচাব কবিতেন—স্বাভাবিক মানুষ স্ত্রী পুত্র ভাল বাসে অতএব তাহা পরিত্যাগ কবিতে বল : স্বাভাবিক মাপুষ ভাল থাইতে চায়, অতএব ধান্মিকের ক্র কণ্য্য আহারের ব্যবগা কর; স্বাভাবিক মামুষ বন্ধ বান্ধবেব নিকট থাকিতে ভাল বাদে অভএব ধার্মিককে বন্ধু বান্ধব হইতে বিচ্ছিন্ন করিয়া অরণো লইয়া যাও; স্বাভাবিক মাতুষ হাস্ত পরিহাদে আনন্দ পায়, অতএব ধার্মিক সর্বদা মুথ ভার কবিয়া থাকি-र्यन। এই त्राप्य प्रश्नाष्ट्रां विक मानर्यत रेमनिक कीयरनत मर्ट्या द्वांत विताध उर्थन हरेमाहिन। এम्प्लिन उ क्थारे নাই। এদেশের সাধকগণ জীবনকে কর্ম ফল ভোগ স্বকপ মনে করিয়া থাকেন, স্থতরাং জীবন ও জীবনের সমুদায় ।

সম্বন্ধ প্রথকে যে তাঁহার। শ্রহার চক্ষে দেখিবেন না তাহা বলা বাহল্য মাত্র।

প্রকৃত ভক্তির পথ যেদিন হইতে আবিদ্ধৃত হইয়াছে সেই দিন হইতে এই বিরোধের মধ্যে সামঞ্জ বিধানেব উপার হইয়াছে। ঈশ্বর-প্রীতির সহিত অপর কোনও বিশুদ্ধ প্রীতির বিরোধ নাই। বরং এই প্রীতি আর সমুদায় প্রীতিকে সমুন্নত ও দৃঢ় করে। একথা অতি সত্য যে, যে জীবন ঈশ্বর-প্রীতিতে প্রতিষ্ঠিত তাহা "জলপার্ঘে রোপিত বৃক্ষেব স্থায়।" নদীতীববভী সমুদায় তরুলতা যেরূপ সেই এক বসেব দারা সঞ্জীবিত ও সতেজ হয়, তেমনি একই প্রেমবস দারা আর সাম্দায় প্রেম সবল ও উন্নত হয়। একজন স্বাভাবিক অবস্থাতে পিতামাতার প্রতি ভক্তিমান, পত্নীব প্রতি প্রণয়ী, পুলক্সার প্রতি সেহবান; তিনি ধর্ম জীবন প্রাপ্ত হইলেন, অর্থাৎ সাধুসঙ্গে বিসিয়া তিনি ঈশবে প্রীতিমান হইলেন; তথন কি তাহার লক্ষণ এই হটবে যে, তাঁহাব পিতামাতার প্রতি ভক্তিব হ্রাস হইবে, পত্নীর প্রতি অফুরাগের অল্লভা জন্মিবে এবং পুত্র কভাব প্রতি স্নেহেব শিথিলভা হইবে ? আমবা বলি প্রকৃত ঈশব-প্রেম সদয়কে অধিকার কবিলে ঠিক ইহার বিপ্নীত ফলই ফলিয়াথাকে। তাহাব সমুদায় প্রীতি সতেজা ও উন্নত হয়। ঈশ্বব-প্রীতি মানবেব স্বাভাবিকতাকে হবণ না কবিষা ববং তাহাকে আবও ঘনীভূত কবে। স্বাভাবিক মানব প্রকৃতির শোভা দুৰ্ণন করিয়া যে আনন্দ অনুভব কবে, ঈশ্বৰ-প্রেমিক সেই শোভা দেখিয়া তদপেকা ঘনীভূত আনন্দ অমূভব কবিয়া থাকেন। স্বাভাবিক মানব প্রণয়ের যে স্থ সম্ভোগ কবে, প্রকৃত ঈশ্বরপ্রেমিকের নিকট তাহা আবও ঘনীভূত ও উন্নত হইয়া আদিয়া থাকে। অভএব ঈশ্ব-প্রীতি মানবকে জীবন হুইতে দূরে না লইষা ববং জীবনের সহিত আবও গাদরূপে বদ্ধ কবে। অথচ দে প্রেম আস্ত্রিক নহে। যে অফুরাণ মানব চিত্তকে ঈশ্বব-চিন্তা হইতে দূরে বাথে এবং ঈশ্বেচ্ছা সম্পাদনে অণবাত্ম্য কবে তাহাই আস্ত্রি-শব্দ-বাচ্য। ঈশ্বব প্রেমিকের অমুরাগ এপ্রকার নহে। তাহাতে সকল প্রেমের ও নকল কর্তব্যেৰ দামজ্ঞ দৃষ্ট হয়।

### ধর্মসাধনের অনুকূল অবস্থা।

ছঃথ দাবিদ্রা বা স্থ-সম্পদ বোন্ অবস্থা ধর্ম্মাধন বা ধর্ম্মলাভের অন্তক্ত্র ? জগতেব সাধু মহাজগণের অধিকাংশই অতি সামান্ত ভাবে দিন কাটাইতেন, ছঃথ ও দাবিদ্রাকে যেন সমাদবের সহিত তাঁহারা আলিঙ্গন কবিতেন। অনেকে ছঃথ দারিদ্রাকে প্রাথনীয় মনে করিয়া, সেই অবস্থা পাইবাব জন্ত আপনাপন অভীষ্ট দেবতাব নিকট প্রার্থনাও কবিতেন। তাঁহাদের এতাদৃশ ভাব অবলোকন করিলে সহজেই মনে হয় যে ছঃথ দাবিদ্রাই বুঝি ধর্ম্মাধনের পক্ষে বিশেষ অন্তক্তা। বিশেষতঃ দেথা যায় যথন লোকে বিপদ্-গ্রস্ত হয়, রোগ শোক রা ধনাভাব আসিয়া যথন মানবকে আক্রমণ করিতে থাকে, তথন সহজেই মনের অবস্থা কিয়ৎ পরিমাণে কোমল

২য়। ঔদ্ধতা, অহঙ্কার প্রভৃতি ধর্মদাধনের প্রতিকৃণ ভাব मकन उथन वर्ष मान शांन भाग ना। महाकहे लात्क धर्म কর্মেন দেয়। যে কথনও উপাসনা আরাধনার দিক দিয়াও যাইত না, দেও তথন ব্যাকুল ভাবে উপাসনাদিতে রত হয়। এই দিক্ দিয়া দেখিলে इःथ দাবিদ্রা প্রভৃতিকে ধর্মনাধনের ञ्चकृत विनियारे मत्न रुय। किन्त चावात यथन (पथि गांधावन ভাবে অধিকাংশ হুমার্য্য লোকে দারিদ্রোব পীডনেই করিয়া থাকে, অবস্থার প্রতিকূলতাব সহিত সংগ্রাম কবিয়া কবিয়া যথন আব সহু করিতে পাবে না, যথন নিত্য নৈমিত্তিক অবশ্য প্রয়োজনীয় ব্যাপারগুলি সম্পন্ন করিতেও অসমর্থ হইয়া পড়ে তথন লোকে অধিক পরিমাণে হৃষার্য্যসাধন কবিয়া থাকে। প্রবঞ্চনা, চৌর্য্য প্রভৃতিতে নিতাস্ত হুষ্ট প্রকৃতি না হইলে লোকে সহজে প্রবৃত্ত হয় না। নিতান্ত অফুপায় অবস্থাতেই যে লোকে অধিকতৰ অপবাধে প্রবৃত্ত হয়, ভাহার প্রমাণ সর্বাদাই পাওবা যায়। পৃথিবীতে দবিদ্র বা ছঃখীব সংখ্যা সামান্ত নহে। ববং সুখীও স্বচ্ছল অবস্থাপর লোক অপেকা গবিব इः वीव मः था। रे व्यक्ति । यनि इः य नाति ना धर्मामाध्यान व्यक्त কল বা উপায় স্থানপ হইত, তাহা হইলে পৃথিবীর বস্তমান যে **छ**वतन्त्रा । द्वारा प्राप्ता भाषूत्रां निवल्डन । साक कविन्ना शास्त्रन, ভাহা আর কবিতে ২ইত না। ধ্যের একপ মলিন ও দীন मुभाष प्रतिदिख इहेड ना। आवात्र (मुवा यात्र, याहावा माधू ! मञ्चन, याहाता निवस्त्र भक्षहिए वर्छ, याहावा जिथादत खिय কার্য্যে নিয়ত নিযুক্ত, তাঁহাবা নিজে দীন দ্বিদ্রেব অবস্থায় থাকিয়াও লোকের যাহাতে দরিত্রতাব নিবৃত্তি হয়, লোকে যাহাতে স্বচ্ছন্দে গ্রাসাচ্ছাদন প্রাপ্ত হয়, রোগাদিব প্রভাব যাথতে হ্রাস প্রাপ্ত হয়, তাহাবই জন্ম নিয়ত চেঠা কবিয়া थारकन। धमा अठाव कविर् गांशात्रा दाख डांशाता (ग লোককে দবিদ্ৰ দেখিতে অধিক ব্যাকুল এমন মনে হয় না। मातिषा इःथ याश्ष्य (में ५२ वि अविश्व ह्या, जाश्यके अनु নিরস্তব চেঠা কবিয়া থাকেন। স্করণং তাহাদের ব্যবহাব দ্বাবা এমন প্রমাণিত হয় না যে লোকেব ধ্যালাভেব প্রকে চু:ধ্ দাবিদ্রাকে ভাঁথাবা নিভান্তই প্রার্থনীয় মনে করেন।

শ্বভ দিকে যদি দেখা যাইত যে লোকে স্থুখ সম্পদ্বে মধ্য অবভিতি করিয়া বিশেষভাবে ধর্মসাধনে মনোযোগী হইতেছে, যেথানে ধনসম্পদ সেই স্থানেই ধর্ম বাস করিতেছে, সেথানেই লোকে সাধন ভজনে বিশেষভাবে মনোযোগী হইতেছে, তাহা হইলে না হয় বৃঝিতে পাবা যাইত যে স্থুখ সম্পদ এবং ধন ঐখ্যাই বৃঝি ধর্মসাধনের অমুক্ল। সেরূপ দৃষ্ঠান্তও অধিক দেখা বায় না। ববং ধনীব গৃহে নানা প্রকার জনহিত্তকর কার্যোব সহিত বত্রিধ অভায়ে অভ্যাচার দেন নিতা বাস করিয়া থাকে। তাকলের প্রতি অভ্যাচার ধনীব গৃহে যত নির্দ্ধনের গৃহে তত্ত নয়। ধনের সহচরক্রপে অনেক ছফার্যা সাধারণতঃ ধনীব গৃহেই অধিক পরিমাণে বাস করিতে থাকে। তবে দারিদ্য ও তৃঃথের অপেক্ষা স্থুখ স্বচ্ছনতার মধ্যে প্রতিপালিত জনগণ নীতি সম্বন্ধে কিয়ৎ পরিয়াণে উন্নত হইলেও হইতে পারে। কিন্তু ধর্মের জন্ত ব্যাকুলতা বা সেজন্ত যে বিশেষ আগ্রহ যে তথায়

বেশী দেখা যায় এমন নহে। যাহা দেখা যায় ভাছা সেই ধন প্রভাবে যাহা হইতে পারে বা প্রশংসা লাভেব জন্ম যাহা ঘটিতে পাবে। স্থতবাং এমনও বলা যায় না যে স্থ সম্পদ ধর্মসাধনেব বা ধ্যালাভেব অফুকুল।

দবিদ্রকে যেমন উদবায়েব চিন্তায় নিবস্তব বাতিবাস্ত হইতে হয়, তাহাব যেমন সামাল্য গ্রাসাচ্চাদনেব আয়েয় কবিতেই সময় কাটিয়া য়য়, পবিশ্রম কবিতে করিতে ক্লাম্ব হইয়া পড়িতে হয়, আব ধর্ম্মগাধন ধর্মচর্চাব জ্বল্য সময় দিবাব অবসব থাকে না, ধনীব পক্ষে সেকপ হা অয় হা অয় কবিয়া চীৎকার না থাকিলেও ধনেব চিন্তা, কিকপে তাহাব বৃদ্ধি হইবে, কিরপে তাহা নিবাপদে রক্ষা পাইবে, কিরপে নিতা নৃতন স্থ্য ভোগের কৌশল সকল অবলম্বিত হইবে, তাহাব চিন্তাতেই বাস্ত হইতে হয়। তাহাব সে সকল আশু-মুখপ্রদ চিন্তা ও থেয়াল পবিত্যাগ কবিষা ধর্ম্মগাধনে মন দিবাব প্রাকৃত্য থাকে না।

এইকপে দেখা যাঁয় ছঃগ বিপদ বা স্তথ সম্পদ ইছাবা ञ्च : (करु हे लाक एक भर्मा পरिष महेचा गांग्र ना वा विरम्ध जारि कान माहाया करव ना। किन्नु याहाव প্রাণে धर्मानुधा आहि. যাহাব প্রাণে ধর্মেব প্রতি অমুবাগ আছে, তাহাব পক্ষে কিছুই অমুকূল বা প্রতিকৃল নহে। জনক ও শাক্যসিংহেব বাজ-ঐশ্বর্যা চৈতক্তেৰ প্ৰবল পাণ্ডিত্য অথবা মহম্মন ও ধীক্ত্ৰীষ্ট্ৰা নানক ও কবিবেব দাবিদ্যা তাঁহাদেব ধন্ম পথেব অন্তরায় হয় নাই অথবা বিশেষ সাহাযাও কবে নাই। ধর্মে মতি হওয়া বা না হওয়া এসকলের উপর নির্ভব করে না। ধনীর ঘরে ধনের প্রারল আকর্ষণের মধ্যেও ধার্ম্মিকপ্রধান অব্নিডিড ক্রিতেছেন। আবাব দ্বিদ্রেব ঘবে দাবিদ্যেব প্রবল ভাতনার মধ্যেও ধর্ম প্রাণ্ সাধুৰ অভাৰ নাই। এজন্ত সহজেই মনে হয়, ধন বড়ুৱা ধনহীনতা কিছুই মানবের ধর্ম্মাধনের অফুকুল বা প্রতিকূল নর। ব্যাকৃল ও অমুবাগীর পক্ষে দাবিদ্রা ও ছঃখ যেমন সংগ্রহা কবে, সংসাবের সকল প্রকার ধনচিম্ভার উপদ্রব হইতে ককা পাইয়া এবং বাফ সুঞ্চ ভোগেব প্রলোভন হস্ত হটতে নিম্নতি পাইণা যেমন তিনি নিকন্তব ধূমসাধনে প্রবুও হুইতে পাবেন, ধর্মোর ছত্ত ব্যাকুলপ্রাণ ধনীও তেমনি আপন धरेनचर्या क्रेचरवर शिव्रकार्या निवैष्ठ निर्माण कविष्ठा जनः নিরস্তর আত্মপ্রসাদের সহিত প্রফুল মনে ধর্মদাধনও ধর্মচ্চায নিযুক্ত হইতে পারেন।

দাবিদ্রা বা সম্পদ, মোগ বা স্বাস্থা ইহাদের এমন কোন সাভাবিক শক্তি নাই, যাহা লোককে পর্মের দিকে বা প্রতিকৃপে লইয়া ষাইতে পারে। রোগে পড়িরা লোকে যেমন ঈশর স্মরণের সাহায্য পার, শোকগ্রস্থ যেমন সহকেই ঈশরপরায়ণ হয়, আবাব বোগেব তাড়না সহ্ করিয়া করিয়া বা প্রবল শোকের আঘাত পাইয়া লোকে ধর্মবিশ্বাস হীন হইয়া পড়ে তাহার দৃষ্টান্তও বিরল নহে। তাহারা ঈশরের করণা এবং তাঁহার প্রেম-স্বরূপে সন্দিহান হইয়া ক্রমে ক্রমে নান্তিক হইয়া পড়ে। এক্স ত্থে দারিত্যে বা স্থা সম্পদ ইহাদের কোন অবস্থারই এমন

বিশেষ কোন শক্তি দেখা যার না, যাহা ধর্মসাধনের অহকুল বা প্রতিক্ল বলিয়া নিশ্চয় রূপে নির্দেশ করা যায়। অহ্ব-কূলতা বা প্রতিকূলতা বাহিরে নহে। তাহা নিরম্ভবই অম্ভরে বাস করে। একজনের পক্ষে যাহা আমুকূল্য করে অপরেব পক্ষে তাহাই প্রতিকূলতা কবিয়া থাকে। একজনের পক্ষে যাহা প্রতিকূল অন্ত ব্যক্তির পক্ষে তাহাই অমুকূল।

বাস্তবিক ষাহাবা মনে কবেন পার্থিব ছ:খ বা স্থুপ ধর্ম-সাধনেৰ বা ধন্মেমতি হইবাৰ পক্ষে সহায় বা অসহায, তাঁহোৱা ধধ্মের মহিমার কিঞ্চিৎ নৃ।নতা করেন। কারণ ধর্ম স্বতঃই এমন বস্তু যে তাহা লাভেব জন্ম কোন বিশেষ অবস্থার অপেকা নাই। তাহা সকল কালেই ও সকল অবস্থাতেই সম্ভব। প্রাণের আকর্ষণ ও কল্যাণকারী কোন অবস্থা বিশেষে যাহার আদর হয় তাহা কথনই চিবদঙ্গী হইবাব উপযুক্ত নয। ধর্ম সুম্বের পক্ষে যেমন প্রার্থনীয় আবামদায়ক, অহছের পক্ষেও **्ठमनि आवामनायक अकलााग कर।** योशावा इःथ नाति छ।-কেই ধল্মদাধনেৰ অন্তকূল বলিয়া মনে কবেন, তাঁহাবা প্ৰকাৰা-अद्भारत हेराहे वाज्य करवन रा धर्म राग छेवध विस्थायत जाम। বোগী ব্যক্তি বোগের সময়ই ওঁষধ-সেবা করে। लम्**राय मरक मरक** छ्यस रमयन कवियान कान धरमाञ्चन थारक না। রোগের হাত এডাইতে পারিলেই ওয়ধের সঙ্গে সম্বন্ধ थाय। क्य अवजाराज्ये वेसर्यत अर्याक्त। किश्च ध्या स्वरूप नत्र। छार्। छित्रम्रहत्। छुःथ मात्रिया ता स्रथ मम्ला मकल সময়েই ধরা মানবারাবে সঙ্গা ও তাহার কলা। (কব। ৩:থ বা স্থ কোন অবস্থা বিশেষেবই একমাত্র সেব্য নহে। অনুবাগই অন্তকৃত্র অবস্থা। অন্তরাগীব পক্ষেত্ঃখন আমুক্ল্য কবে—স্তথ্য সহায়তা কবে। যাহাব প্রাণে অনুবাগ আছে

অমুবাগ্র অমুক্ল অবস্থা। অসরগোর সক্ষেত্র আমুক্ল।
করে—স্থও সহায়তা করে। যাহার প্রাণে অমুবাগ আছে
সে স্কল সময়েই আপোনার প্রিয়তম প্রমেশ্বরে জন্তা
বাক্লে। তঃধ বা দাবিদ্যু স্থ বা সম্পদ স্কল অবস্থাই তাহার
অমুক্ল। অপবের পক্ষে স্কলই প্রতিকূল।

## ব্রাহ্ম পর্য্যটকের পত্র।

#### • জয়পুর।

মানি পুদ্ব হইতে জয়পুর আসি। জয়পুব টেশন হইতে সহব আর > মাইল হইবে। চাবিদিকে উচ্চ ও প্রশস্ত প্রাচীব বেটিত জয়পুব সহর অতি স্থল্ব ভাবে অবস্তি। দেশায় রাজাদের বজদানীব মধ্যে জয়পুব অতি স্থল্ব সহব। হোলকারের ইল্লোব, গুইকোয়াবেব ববদা ও গোয়ালিয়াবের উজ্জিয়িনী সহর অপেকা জয়পুর অনেক উৎরুষ্ট সহব। হুইবাবে ক্টপাথ ও বৃক্ষাদি দ্বারা শোভিত প্রশস্ত বাজপথ। এখানে বাস্তায় জলের কল আছে, রাত্রে গাাসালোকে সহর আলোকিত হয়। রাস্তাব ছইধাবে বড় বড় স্থল্ব স্থল্ব অটালিকা, তাহাব মধ্যে শানে স্থানে দেবালয়ের উচ্চ উচ্চ ছড়া মস্তক উন্নত করিয়া সহরের সৌল্বা, রাজবাগান ও বিধানকার দেথিবার প্রধান জিনিষ রাজবাটী, রাজবাগান ও মিউজিয়ম, বিশেষ মিউজিয়মটী এমন স্থল্ব ভাবে সাজান আছে বে দেখিয়া অবাক হইতে হয়।

জরপুর হিন্দুদের একটা প্রাসিদ্ধ তীর্থ। এখানে রাজবাটার মধ্যে গোবিন্দলী নামক একটা পাষাণময় বিগ্রহ আছেন, তাঁহাকে দেখিবার জন্য এখানে বহুযাত্রীর আগমন হইয়া থাকে। গোবিন্দলীর মন্দির রাজপ্রাসাদের মধ্যে থাকায় তাঁহাকে যখন তখন দর্শন করিতে পাওয়া যায় না। প্রাতঃকালে মধ্যাক্ষের পূর্বের ও সন্ধ্যার সময় নির্দিষ্ট সময় আছে, সেই সময় যাত্রীগণ যাইয়া তাঁহার দর্শন করিয়া আইসেন। আমি একদিন বিগ্রহজীকে দেখিতে গিয়াছিলাম। বিগ্রহজীর প্রস্তরময় প্রতিমূর্ব্তি প্রায় হই ফুট উচ্চ হইবে। এখানকার রাজপুরোহিতেরা যাত্রীগণের প্রদত্ত কাপড়, টাকা, খাদ্যক্রাইত্যাদি গ্রহণ করিয়া থাতায় জমা করিয়া লইয়া থাকেন। শুনিলাম, সেই সমস্ত দ্রব্য দেবসেবার থাতায় জমা হইয়া দেবসেবাতেই বায় হইয়া থাকে। বলা বাহল্য যে, যাত্রীগণের প্রদত্ত উপটোকন অনুসারে তাহাদের আদরের ও ইতর বিশেষ হইয়া থাকে। জয়পুরে আমি ও দিন ছিলাম।

#### আয়ত সর।

জয়পুর হইতে দিলী যাই, সেখানে জুলা মস্জিদ, কেলা ও তন্মধ্যে সাজাহন বাদসাব দববার, মতিমস্জিদ ইত্যাদি দেখিয়া অযুত সহব আসি ।

এই অমৃত সবে শিথদিগেব বশ্বালোচনাব একটী প্রধান আছ্যা আছে, তাহাকে গুক দববাব কহে। ইহা সহবেব প্রায় মধ্যত্বল চারিদিকে প্রাচাব ও ধন্মশালা পবিবেটিত একটী প্রকাণ্ড দীঘিব মধ্যত্বল প্রতিষ্ঠিত। এই দীঘিব চাবিধাবে বিস্তৃতকপে খেত প্রস্তর ছাবায় বাধান এবং দীঘিব মধ্যত্বল স্বর্গ-পাত মণ্ডিত ও ততপবি নানাপ্রকাব কাককার্য্য থচিত একটা বৃহৎ খেত প্রস্তবেব মন্দিব। এই মন্দিরেব মধ্যে শিকদিগেব ধর্মগ্রন্থ গ্রন্থ-সাহেব অবহিত। এই দরবাব ও এই মন্দিব শিথদিগেব ৪থ ধন্মগুরু মহান্থা বামদাস্কী প্রতিষ্ঠা কবেন।

শিথদিগেব ধশা গুক ১০ জন, তাহা এই:—:ম, বাবা গুক নানক। ২ব, নানকেব শিব্য অঙ্গদজী। ৩য়, অঙ্গদের শিব্য অমবদাস্থাী। ৪র্থ, অমবদাস্থাীব শিব্য ও জামাতা বামদাস্থাী, ইনিই অমৃত সহবেব বর্ত্তমান গুক দববাব প্রতিষ্ঠাতা। ৫ম, বাম দাসেব পুত্র অর্জ্জুন্থাী, ইনি বাবা নানবেব ও জালাল্ল গুক দিগের গ্রন্থ এবং উক্তি ইত্যাদি সংগ্রহ কবিয়া গ্রন্থ সাহেব প্রস্তুত্ত করেন। ৬ঠি, অর্জ্জুনেব পুত্র হব গোবিন্দ্রাী, ইনিই শিথদিগের মধ্যে মুসলমানদিগেব সহিত যুদ্ধার্থে প্রথম তববাব ধাবণ কবেন। ৭ম, হর গোবিন্দ্রাীব পুত্র হববায়লী। ১ম, তেগবাহাছ্বজী, ইনি ৬ঠি গুকু হব গোবিন্দ্রাীব ভাতা। ১০ম গুরু, তেগ বাহাছ্রের পুত্র প্রস্কি গোবিন্দ্রাী। ইনিই শিথজাতিকে যোদ্ধান্তি রূপে পরিণ্ড করেন। ইহার প্রে আর উপযুক্ত বাক্তি না থাকায় ইহারপর হইত্তেই গুক্পদ উঠিয়া গিয়াছে।

অমৃত স্রেব এই গুরুদরবাবে স্কানাই একটা ধর্মের হাওয়া বহিতেছে। রাত্রী ৩টা হইতে আরম্ভ করিয়া রাত্রী ১১টা পর্যান্ত ২২ ঘণ্টা কাল আনবরত এই মন্দিরেয় মধ্যে তান লয়

ধৰ্ম সঙ্গীত **সহকারে रहेएउ**हि । একদল গাহক গান করিয়া পরিশ্রাস্ত হইলে আবার একদল গাহক - লোক আসিয়া তাঁহাদের স্থান পূর্ণ গাহিতেছেন। এই সকল গাহকদিগের মধ্যে অন্ধের সংখ্যাই বেশী। এই অন্ধ্যণ স্থান্দর স্থান্দর ধর্মসঙ্গীত গাহিয়া মন্দিরকে অপুব্ব ভাবে সাজাইয়া বাথিযাছেন। এখানে গ্রন্থ-সাহেরের হুই পাশে হুইজন শিথ বসিয়া আছেন, তাঁহারা যাতীগণের প্রদত্ত কড়াপ্রসাদ (মহনভোগ) গ্রহণ করিয়া তাঁহাদিগের হত্তে ফুল দিতেছেন। এই সমস্ত মহনভোগ এই থানেই ব্তরিত হইতেছে। অনববত যাত্রীগণ আদিতেছেন ও অনবরত মহনভোগ মন্দিরস্থ ব্যক্তিগণকে বিত্তবিত হইতেছে এবং এই মন্দির মধ্যেই ভাহা সকলে ভোজন কবিতেছেন। আমি দেখানে যাইয়া বসিবামাত্র আমাকে থানিকটা মনহভোগ দিয়া একজন শিখ বলিলেন যে, এথানে কেবল কড়া প্রসাদ थाहेवाव नियम चाष्ट, जाव किছू थाहेवाव नियम नाहे। আমি এথানে বসিয়া বসিয়া ধন্ম সঙ্গীত শুনিলা আত্মাব ও मस्या मस्या ठाँहारनव अनुक कड़ा अमान थाहेवा उन्रतिव जुलि नाञ्च कविटा नागिनाम ।

পবে সদ্যাব সময় গ্রন্থ-সাহেবেব নিকট আরতী ইইল
মহায়া নানকেব সেই গান "গগনমে থালে ইত্যাদি" শত
সহস্র লোকে গাহিতে গাহিতে আমাদের দেশের ছর্গ প্রতিমাব
নিকট আবতীব ন্যায় পঞ্চপ্রদীপ জালিয়া প্রায় > ঘণ্টা ধরিয়া
আবতী কবিতে লাগিলেন। পরে আরতী শেষ হওয়ায়
আবার পূর্কেব ন্যায় সন্ধীত চলিতে লাগিল। এখানে শিথ ধর্মাৰলন্ধী হা৪ জন সাধুব সহিত আমার পরিচয় হয়। তাঁহাদিগকে
"গগনমে থালে" এই সন্ধীতেব অর্থ ও এই প্রকাব আবতীর
কথা বলাম তাঁহাবা কহিলেন যে, কি কবিবে ? ইহাবা ত
ভাহা বোনে না, ইহাবা যাহা বোনে ভাহাই কবিতেছে।
ভাব শিথদিগেব মধ্যে এমন লোক আছেন, যাঁহাবা বান্তবিক
'গুক ন'নকেব ভাব ব্রিতে পাবেন। ভবে জন সাধাবণের
জন্ম এইরূপে ব্যব্যা ইইলেও ভাহাবা বাহ্নিক ক্রিয়াতে যোগ
দিয়া থাকেন।

ে কেবল মন্দিবের মধ্যে যে দিন বাত্রি এইকপ সন্ধাতাদি ছটতেছে তাহা নহে, সেই দীঘির চাবিপার্থেই কোণাও সন্ধাত, কোণাও এছ-দাহেব পাচ, কোণাওবা ধন্মালোচনা ইত্যাদি ছটতেছে। লোক সমস্ত দলে দলে এক এক স্থানে বিদ্যা ধর্ম-চর্চায় ব্যস্ত রহিয়াছেন। বাস্তবিক আমি ভারতবর্ষে যত স্থান দেথিয়াছি, এই স্থানের মত ধর্ম-চর্চাও ধন্মভাব আব কোণাও দেবি নাই। বিশেষ এথানকার লোকেব সেবার ভাব অতি চমংকার। আমি মন্দিরেব এক স্থানে বিদ্যা আছি এমন সময় একজন প্রোচা রমণী আমার বিশ্বন । মন্দিরের বাহিরে আসিয়া চুপে চুপে জিজ্ঞাসা কবিতেছেন, "বাবা রোটা খাওগে?" আমি বলিগাম "না"। রমণী আন্তে আন্তে চলিয়া গোলেন। মন্দিরের বাহিরে আসিয়া পুছরিণীর চারিধারে বেড়াইতেছি, এমন সময় একজন লোক কতকগুলি কৃটী ও ভরকারি আনিয়া বলিতেছেন, "রোটা খাওগে?" আমার

কুধা হইয়াছিল, বলিলাম, "হাঁ," অম্নি কিছু কটা ও, তরকাবী আমার হাতে দিয়া চলিয়া গেলেন। আর এক স্থানে বেড়াই-তেছি, সেথানে দেখিলাম একজন ব্যক্তি একটা মুটের মাথায় করিয়া এক ধামা লুচি লইয়া বেড়াইতেছে এবং "পুবি থাওগে, পুরি থাওগে" কবিয়া সকলকে জিজ্ঞাসা কবিতেছেন ও যিনি থাইতে চান, তাঁহাকে দিতেছেন। একদিন রাত্রি ১০০১টাব সময় আমি ছটা সাধুব সহিত ঐ পুকুরেব পাড়ে বিদয়া আলাপ কবিতেছি, এমন সময় এক ব্যক্তি ৩টা বড় বড় বাটাতে মারাছয়্ম আনিয়া আমাদেব হাতে হাতে দিয়া বলিলেন, থাইয়া ফেল। আমি দেখিয়া অবাক্! সাধুবা বলিলেন থাও, কি দেখ্ছ; পরে তাঁহাবাও থাইলেন, আমিও থাইলাম। শেষে ঐ ব্যক্তি পাত্তলিন ধুইয়া লইয়া চলিয়া গোলেন।

আবাব একদল লোক দেখিলাম, তাঁহাবা পাথা হস্তে किनया (केवन वाजाम किनमा (विषाहेर्टिहिन। (यथान लाक ষ্মাছে, দেগানেই যাইয়া ২।৪ বাব ব্যজন কবিয়া আবাব চলিয়া যাইতেছেন। পিপাদা পাইলে জলেব অভাব নাই, পুকুবের চাবিদিকে ১০/১৫ স্থানে জলছত্র আছে; এক এক স্থানে এক এক বাক্তি বসিয়া অনবৰত জল দিতেছেন। জল থাইবাৰ জग्र क उक अलिन वांधे आहि, मिथारन याहेग्रा जल हाहिरल वा वाजी धवित्वहे सम्भन्न ठाए। कल छाहावा (एन, कल थाहेन। বাটা একটা নিদিপ্ত স্থানে রাখিতে হয়, সেখানে বাটাটা রাখিলে তাহা গডাইয়া যেথানে পরিষ্কাব কবে সেইস্থানে যাইয়া পডে। এই ऋপে লোকেব সেবার বন্দোব ও আব কোথাও দেখি নাই। এখানে বেদাস্থাদি পাঠ দারার যেমন জ্ঞানের আলোচনা হইতেছে তেমনি সঙ্গীত, কীর্ত্তন, ভাগবত ইত্যাদি শাস্ত্র পাঠে ভক্তির আলোচনাও হইতেছে এবং লোক-দেবার জন্ত উক্ত প্রকাব বিবিধ আয়োজন কবিয়া কম্ম বা সেবাবও চ্ডাক্ত দৃষ্টাস্থ প্রকাশ পাইতেছে। অধিক আব কি লিখিব, এথানে আদিলে শ্বীর ও আত্মাব উভয়েবহ কুধা তুপ্তি হয় এবং জ্ঞান ভক্তি ও কম্মের স্থলৰ আদশ-তান দেখিয়া আশ্চৰ্যায়িত इटेट्ड २म्।

### কাশীর মহাত্মা ভাস্করানন্দ।

অনুত্সব ০ইতে হরিদার যাই। হরিদাবের প্রাকৃতিক সৌল্যোব বিষয় আর কি লিথিব, তাহা না দেখিলে ধারণা করা যায় না। এখানে আসিয়া আমার শরীব বড় অহুস্থ হওয়ায় সাধুদিগের সহিত মিশিতে পারি নাই, স্কুতরাং পাঠকদিগের উপযোগী এথানকাব কোন বিশেষ বিবরণ লিথিতে পারিলাম না। পবে হরিদার হইতে কাশী আসি। আমি ইহাব পূক্ষে আর একবার কাশী আসিয়া হানীয় বিশেষরের মন্দিরাদি দেখিয়াছিলাম স্কুতরাং এবার তাহার কিছুই দেখিবার আগ্রহ ছিল না। কেবল মহাদ্মা ভালয়ানন্দ আমীকে দেখিবার জন্মই এবারে এখানে আসিয়াছি স্কুতরাং বরাবর তাঁহার নিকট যাইলাম। তিনি কাশীর এক প্রাস্থে

थाक्ता हेश (नन अरा (हेमन इहेट्ड श्राप्त 8 माहेन इहेट्य। স্থানটী বেশ নির্জ্জন ও মনোরম। আমি বাগানের দরজা খুলিয়া বরাবর তাঁহার নিকট ঘাইয়া দেখিলাম তিনি দিগম্বর বেশে সামাভ একথানা মাছুরের উপর বসিয়া গীতাব সৃহিত অক্ত একথানা হন্তলিথিত পুঁথি মিলাইতেছেন। আমি যাইবামাত্র ডিনি আমাব দিকে চাহিয়া আমাকে নিকটে ডাকিয়া বসাইলেন এবং আমার হাতেব উপর নিজের হাত ि प्राचित्र का कि स्थाप कि কহিতে লাগিলেন। পবে আমি অত্যন্ত পবিপ্রান্ত জানিতে পারিষা বলিলেন যে "আজ যাইয়া বিশ্রাম কব, কবা খুব প্রাতে আসিবে সেই সময়ে উভয়ে বিশেষ ভাবে আলাপ কৰিব।" ভাহার গবেই বাঙ্গালা ভাষার রচিত তাঁহার একথানি জীবন চবিত আনিয়া আমার'হাতে দিয়া বলিলেন যে, "আমার জীবন চরিত একজন লিখিয়াছন তুমি ইহাদেখ। স্থামি তাহা লইয়া বিশ্রাম জক্ত তথা হইতে অক্ত এক স্থানে যাইয়া বিশ্রাম ও আহাবাদি কবিলাম।

প্রদিন প্রাতে উঠিয়া ভাঁহার নিকট বাইলাম। তিনি আদিব কবিশা আমাকে নিকটে লইয়া বসাইলেন ও আমাকে নানা প্রকাব প্রশংসা কবিষা আমাকে বাজাইতে লাগিলেন। ভদপ্ৰে নানা প্ৰকাৰ ধ্ৰালোচনা হইতে লাগিল। এমন সমষ একজন লোক পঞ্জদীপ, কতক গুলি ফুলেব মাুলা ও ফুল এবং থানিকটা মাথম হস্তে কবিয়া আমাদের নিকট আসিল। স্বামীকী ভাহাকে দেখিতে পাইয়া তাহার হাতের মালাগুলি লট্যা আমাৰ গ্লায় প্ৰাইয়া দিয়া—"তুমি আজ আমাৰ উপাত্ত" तिया आगारक मिटे माथम नमखरेथारेट मिलन। আমি বিনী চভাবে তাঁহাৰ প্ৰদত্ত উপহার গ্ৰহণ কৰিয়া তাঁহাৰ স্থিত আলাপ কবিতে করিতে তাঁহার দ্বাবা বিশেষভাবে অফু-ক্র হইয়া মাধ্য খাইতে লাগিলাম। পরে দে ব্যক্তি তাঁহাকে আনিতীক বিয়াচলিয়া গেল। উচিচাৰ সহিত যে সমস্ত আলোপ ছর তাহাব কোন কোন বিষয়েব সাবমর্ম লিথিতেছি। বলা ৰাচলা যে আমি ব্ৰাহ্মণৰ্মাবলম্বী বলিয়া তাঁচাৰ নিকট প্ৰিচ্য দিয়াছিলাম। তিনি আদ্মণীমাজেব কাছাকেও কাছাকেও জানেন এবং ব্রাক্ষসমাজ ও ব্রাক্ষধর্ম্মের অনেক সংবাদ বাথেন।

১ম। জগৎ কি ? এই বিষয় জিজ্ঞাসায় তিনি বলিলেন—
জগৎ মায়া। আমি তাঁখাৰ কথাৰ প্ৰত্যক্ষ প্ৰতিবাদ না
কৰিয়া বলিলাম যে "আমার কাছে জগৎ ঈশরেৰ লীলাজের ৰলিযা বোধ হয়।" তিনি বলিলেন "মায়া ও লীলা একই যাত হাায়।"

২য়। প্রকাশ কথা জিজ্ঞাসায় বলিলেন যে আমি কাণে মন্ত্র দেওরাপ্তক মানিনা। যিনি শিক্ষা দেন তিনিই প্রক, দত্তা-তেরের ২৪ জান প্রক ছিলেন।

তয়। ইহাঁকে অনেক লোকে গভীব শ্রদ্ধা করেন ও দেবতার মত মাল করেন। সেই জন্ম কাশীতে ৪।৫ স্থানে ইহার খেত প্রত্তরের প্রতিমৃত্তি গড়িয়া রীতিমত পূজাদি হইতেছে। বড়হর নগরের রাণী প্রায় ১ লক্ষ টাকা থরচ করিয়া এক মন্দির প্রত্ত করিয়াছেন অবং তাহার এক প্রকোঠে ইহাঁর এক

প্রতিমূর্ত্তি প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন। সেথানে পূজা ভোগ ইত্যাদি ছারা অস্থান্ত দেবতার স্থায় ইহাঁরও পূজাদি হইতেছে। আমি এই সমস্ত শুনিয়া তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করিলাম বে "লোকে আপনার প্রতিমূর্ত্তি এইরূপে পূজাদি করিতেছে আপনি ইহাতে কি মনে করেন ?" প্রত্যুত্তরে তিনি বলিলেন "লোক সমস্ত অজ্ঞান কিছুই বোঝে না; এই দেহ,—ইহাই ছদিন বাদে থাকিবে না, ইহার আবার প্রতিমৃত্তি গঠন করিয়া পূজাদি করিতেছে। এসব অজ্ঞানতার কাও। তবে আমি ইহা কাহাকে করিতেও বলি না এবং বাবণও কবিনা, তাহাদের যাহা অভিকৃতি তাহাই কবিতেছে; ইত্যাদি।"

এইকপ নানা প্রকাব ধর্মালোচনা হইল। তিনি "সাবাজ্য সিদ্ধিং" নামক বেদান্ত সম্বন্ধীয় একথানি গ্রাহ্ব টাকা কবিয়াছেন এবং ভাহা অতি স্থলর করিয়া পুস্তকাকাবে তাঁহাব শিষ্য একজন ছাপাইয়া দিয়াছেন। ভাস্থবানন্দলী স্বয়ং আমাকে সেই গ্রন্থ একথানি উপহার দিলেন এবং আমি অমুবোধ করায় ভাহাতে তিনি নিজ নাম প্রাক্ষর কবিয়া দিলেন। স্থামাজীব বয়স প্রায় ৬০ বংসব হইবে, একহাবা চেহাবা, দাভনাই, মন্তক মুগুন, উলঙ্গবেশ, দেখিতে গৌরবর্ণ। স্থভাব অতি স্থলব, বালকেব মত ভাব, সবল, প্রেমিক, বিদ্ধান ও জ্ঞানী। তাঁহার নিকট আমাদের অনেক শিথিবার জিনিষ আছে। তিনি আমাকে আবও ২০ দিন পাকিবার জন্ম অনুবোধ করিলেন কিন্তু আমার শীঘ্র আদিবার প্রযোজন থাকায় তাঁহাব অমুরোধ রক্ষা কবিতে পারি নাই।

#### সারনাথ।

স্বামীজীব নিকট হইতে বিদায় হইয়া সাবনাথ দেখিবাব জন্ম চলিলাম। কাশীব বাজাবে আসিয়া এলা কবিয়া সাবনাথ যাইলাম। কাশী সহর হইতে সাবনাথ ৪৫ মাইল হইবে। এই সাবনাথে মহাত্মা বৃদ্ধ ১ম পঞ্চ শিষাকে নিজধর্মে দীক্ষিত করেন। তিনি যে স্থানে পঞ্চ শিষাকে নৌদ্ধর্মেব উপদেশ দেন সেই স্থানে একটা উচ্চ ও প্রশন্ত প্রকাণ্ড থাম রহিয়াছে। মহারাজ আশোক এই থামেব প্রতিষ্ঠাতা বলিয়া শুনিয়াছি। স্থানীয় লোকেবা ইহার কিছুই থবব জানে না। স্থানীয় লোকেদিগকে "ইহাব নাম কি" এই কথা জিজ্ঞাসায় তাহারা বলিল যে ইহাব নাম কি" এই কথা জিজ্ঞাসায় তাহারা বলিল যে ইহাব নাম "লবিক্কা ধানেক।" যাহা হউক তাহা দেখিযা অদ্বে আর একটা উচ্চ স্থানের উপব একথানি কুটীর রহিয়াছে, তাহা দেখিবাব জন্ম তথায় যাইলাম, কিন্তু তাহা যে কি তাহাব কিছুই বৃষ্ণিলাম না। স্থানীয় লোকে বলে ইহাব নাম "সীতাকারস্কন।" পবে সাব নাথ হইতে ষ্টেসনে আসিয়া কিনিকাতাভিম্থে যাত্র, করিলাম।

### ব্রান্মসমাজ।

শ্রীদ্ধ শালোড় নিবাদী শ্রীযুক্ত বামচক্র মিত্রেব মাতার আদ্যশ্রাদ্ধ গত ২৯শে বৈশাথ উক্ত গ্রামে সম্পন্ন হইরাছে। এতত্বপলক্ষে কলিকাতা হইতে শ্রীযুক্ত বাবু মহেক্রনাথ চট্টো-পাধ্যান প্রমুপ ক্তিপন্ন ব্রাক্ষ্রভাতা তথার গমন করেন।

শ্রাদ্ধ বাসরে মহেন্দ্র বাব্ উপাসনা করেন। শ্রীযুক্ত বিপিনচন্দ্র পাল ও এীযুক্ত কাশীচক্ত ঘোষাল ধর্মশান্ত পাঠ করেন। যাত্রীগণ যে কয়দিন সেখানে ছিলেন, প্রতিদিন সমাজ গৃহে সমবেত উপাসনা করিয়াছেন। এক দিন প্রাতে বাড়ী বাড়ী সংকীর্ত্তন করেন, এবং এক দিন কালী বাড়ী নামক প্রকাশ্ম স্থানে সংকীর্ত্তন ও প্রার্থনা, আর এক দিন বাজারে কীর্ত্তন ও বক্তা করেন। তৎপর ইহারা ক্লিকাতা প্রতিগমন করেন। মাতৃশালোপলকে বাম বাবু সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে ১ টাকা এবং সাধনাশ্রমে ২ টাকা দান করিয়াছেন। পরমেশ্বর পরলোকগত আত্মাকে শান্তি দান করুন।

পরলোকগত ডেপ্ট মাজিছেুট বাবু কালীচরণ ঘোষের আদ্যশ্ৰাদ্ধ তৎপুত্ৰ যত্নাথ ঘোষ কৰ্তৃক গত ১৮ই মে তাবিথ কলিকাতা নগবীতে সম্পাদিত হইয়াছে। পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্ৰী আচাৰ্য্যেৰ কাৰ্য্য কৰেন। এীযুক্ত বাবু নগেন্দ্ৰ নাথ চটোপাধাায় ও ভীযুক বাবু রাধাকান্ত বন্দ্যোপাধ্যায় কালী-চবৰ বাবুর জীবনচবিত বলেন। যহ বাবু এতছণলক্ষে ত্রাহ্ম-সমাজেব নানা বিভাগে হুই শত টাকা দান করিয়াছেন। পরলোক গত আত্মাকে প্রমেশ্বর শান্তি দান করুন।

আমাদের প্রেমাম্পদ বন্ধু শ্রীমান সত্যরঞ্জন থাস্তগিরির সহধর্মিণী শ্রীমতী কুস্মকুমারীর শ্রাদ্ধ গত ২০শে মে তারিথে তাঁহার কার্য্যন্থান সাহাবাদ জেলার দানোয়াব গ্রামে ব্রাহ্মপদ্ধতিতে হ্বসম্পন্ন হইয়াছে। প্রচারক শ্রীযুক্ত নবদীপ চক্র দাস মহাশয় উপাসনাদির কার্য্য করেন এবং শ্রীযুক্ত বাবু বিপিন বিহারী সরকার মহাশয় কুস্থমকুমাবীর সংক্ষিপ্ত জীবন চরিত পাঠ করেন। হিন্দু গৃহে শিক্ষাপ্রাপ্ত হইলেও ত্রাহ্মধর্ম্মের প্রতি বিশেষ অমুরাগ ছিল। স্বামীর সঙ্গে ত্রাহ্মধর্ম প্রতিপালনের জন্ম সব্বদাই আগ্রহ প্রকাশ করিতেন। ঈশ্বর তাঁহার স্নেহের ক্তাকে শান্তি ক্রোড়ে রক্ষাকরুন। একটা মাত্র শিশু কভা রাথিয়া কুস্থম অতি অল বয়দেই প্রলোক গমন করিয়াছেন, প্রেমাম্পদ সত্যবঞ্জনকে পরমেশ্বর এই কঠিন েশাকের সময় সাম্বনা দিন। সত্যরঞ্জন স্ত্রীব আদ্ধ উপলক্ষে গবিব হঃখীকে ও ব্রাহ্মসমাজকে ১৫ টাকা দান করিয়াছেন।

প্রচার—গ্রীযুক্ত কাশীচক্র ঘোষাল কোটালী পাড়ার **ছিল্ফের সাহায্য কার্যো থাকিয়া সময় সময় বক্তৃতা, আলো-**চনা ও উপাসনা সংগীত ইত্যাদি দারা আক্ষধর্ম প্রচার করিয়াছেন। তিনি উনিশা আহা বিদ্যালয়ে হিদ্শাস্ত ও হিন্দুনীতি সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন। এই আম্বা বিদ্যালয়ে হিন্তু এটোন সকল জাতীয় ছাত্রদিগকেই সংস্কৃত শিক্ষা দেওয়া হয়। এরূপ সার্বজনিক ভাবে সংস্কৃত শিক্ষাব প্রণালী, এদেশে এক ন্তন ব্যাপার। জাতিভেদের প্রকোপ দিন দিনই শিথিল **२**हेरउइ ।

সাধনাশ্রমের সংবাদ—ক্লিকাতা সাধনাশ্রম হইতে

উত্তর বঙ্গে যাইতেছেন। এই প্রচার দলে এীযুক্ত বাবু মহেন্দ্র नाथ চটোপাধ্যায়, বাবু हतियाहन वायान এवः वातु कूक्षनान ঘোষ আছেন। কোটালী পাড়া অঞ্চলের ছর্ভিক্ষ পীড় ছ लाक्षिणत्क'माश्या कविवात अग्र माः बाः मभाष्ट्रव कार्या নির্বাহক সভা কর্তৃক বাবু কাশীচন্দ্র ঘোষাল তথায় প্রেরিত হন। তিনি প্রায় এক মাস কাল সেথানে প্রতিদিন চাউল বিতরণ করিয়াছেন। এবং কলিকাতা ও ফবিদপুরের আন্ধ-দিগেব কর্তৃক সংগৃহীত নূতন ও পুরাতন বস্ত্র বিতরণ করেন। ইতিমধ্যে ডি: বোর্ড এবং ফরিদপুর স্থন্দ সভা ও এীটান দনাজ হইতে দাহায্য আরম্ভ হওয়ায় কাশী বাবু ত্রাক্ষদমাজের সাহায্য বন্ধ করিয়া কলিকাতা প্রভ্যাগত হইয়াছেন।

আরাতে এখন নিম্নলিখিত পরিচাবক ও সংকলাধীন পরি-চাবকগণ আছেন। শ্রীযুক্ত প্রকাশ দেব,শ্রীযুক্ত গুরুদাস চক্রবর্ত্তী, শ্রীযুক্ত হলের সিং, শ্রীযুক্ত জগদীশচন্দ্র চৌধুরী, শ্রীযুক্ত শ্রীবঙ্গ বিহারী বি, এ, এবং শ্রীযুক্ত সতীশ্চক্র চক্রবভী বি এ। শ্রীযুক্ত সন্দর সিং পীডিত আছেন। গুরুদাস বাবু প্রচারার্থে দানাপুর ও বাঁকিপুর মোকামা গিয়াছিলেন। আরা আশ্রমে প্রতিদিন প্রাতঃকালে উপাদনাও বিকালে আলোচনা হয়। শনিবার সায়ংকালে স্থানীয় কোন ভদ্রলোকের বাড়ীতে উপাসনা হয়। রবিবার সকালে বিকালে আশ্রমে বাঙ্গলা ও হিন্দিতে উপাসনা হয়। কুল বন্ধের পূর্বের বক্তাহইত। জীযুক্ত জীরঙ্গ বিহারী লাল শাস্ত্রী মহাশয়ের "ধর্ম কি ?" নামক বক্তুতা হিলিতেও শ্ৰীযুক্ত প্ৰকাশ দেব "প্ৰাচ্য ও প্ৰতীচ্য ধন্মভাব" উদ্ভুতে অমুবাদ করিতেছেন।

দান--- बीधुक वायू (पवी अमन्न नाग्र हो धुनी छांशन স্বৰ্ণীয়া ক্যা অপ্রাজিতার জন্ম দিনে সাধারণ আক্ষ্যাজের প্রচার বিভাগে ১১ দাতব্য বিভাগে ১১ এবং সাধনাশ্রমে ১১ টাকা দান করিয়াছেন। আমেরা দাতাকে ধক্তবাদ প্রদান করিতেছি।

ক্লতজ্ঞতার সহিত স্বীকার করিতেছি যে, আমাদের ঢাকার वाक्तवम् वाव् ष्यायागानाथ (ठोधूबी महाभएवव भूटल्ल नामकवन উপলক্ষে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচার ফণ্ডে ১ টাকা এবং माधनाञ्चरम ১/ होका जान व्याश इंडग्रा शिवाह्ह ।

বগুড়াস্থ বন্ধাৰ বাদৰচন্দ্ৰ পাল তাঁহার পিতার বাধিক প্রাদ্ধপোলকে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচার ফণ্ডে ॥• আনা দান করিয়াছেন। এবং অফ্রতম বন্ধু ডাক্তর কামিনীকুমার ঘোষ প্রচার ফণ্ডে ২ টাকা দান করিয়াছেন।

বগুরাস্থ আন্ধ্রতাগণ সাধনাশ্রমে ১১১ টাকা দান ক্রিয়াছেন।

উৎসব--হাজারিবাগ ত্রাক্ষ সমাজের উৎসবের নিম-লিখিত বিবরণ প্রাপ্ত হওয়া গিরাছে। ১১ই এপ্রিল হইতে ১৫ই এপ্রিল পর্যান্ত হাজারিবাগ আকা সমাজের সাম্প্রিক উৎসব সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে ৷ বাবু শশীভূষণ বস্ন এই উৎসৰ সম্প্রতি এক প্রচার যাত্রীদল রামপুর, নলহাটি পুর্ণিরা হইরা । উপলক্ষে তথার গছন করেন। ভিনিই প্রায় উৎনবের যুক্ত

কার্য্য সম্পন্ন করেন। উৎসবের কার্য্য ব্যতীত তিনি ২১শে এপ্রিল কেশব হবে নৈতিক বিদ্যালয়ের উৎসব উপলক্ষে নীতি শিক্ষার আবশ্রকতা" সম্বন্ধে একটা বক্তৃতা করেন। এই সভার রায় বছনাথ মুখোপাধ্যায় বাহাছর মহাশয় সভাপতির আসন গ্রহণ করেন। ২৮শে এপ্রিল উক্ত হলে "আমাদের আধ্যাত্মিক ও সামাজিক উন্নতি" সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন। ২রা মে ছাত্রেরা স্থর্গীয় বন্ধিমচক্র চট্টোপাধ্যার মহাশয়ের স্মরণার্থ এক সভা করেন, তাহাতে শশী বাবু সভাপতির আসন গ্রহণ করিয়া বন্ধিম বাব্র জীবন হইতে কি শিক্ষা লাভ করা যায় ভদ্বিরা বন্ধিম বাব্র জীবন হইতে কি শিক্ষা লাভ করা যায় ভদ্বিরের কিছু বলেন। এই সভাটী কেশব হলে ইয়াছিল। ৬ই মে শশী বাবু উক্ত হলে ধর্মবীর সম্বন্ধে একটি বক্তৃতা করেন। ইহা ব্যতীত কোন কোন ভদ্র পরিবারে উপাসনা ও উপদেশ দান করেন, এবং ব্রাহ্ম বন্ধান করিব সহিত ধর্ম্মালাপ ও প্রার্থনাদি করেন। এবং তথায় অবস্থান কালীন সাপ্তাহিক উপাসনা সম্পন্ন করেন।

চট্টগ্রাম-বাবু নীলমণি চক্রবর্তী মহাশন্ন চট্টগ্রাম ব্রাহ্মসমাজের উৎসব উপলক্ষে তথার গমন করিয়াছিলেন। কার্যাসুরোধে ভাঁহাকে প্রায় চারি সপ্তাহ তথায় থাকিতে इटेग्नाइन। मर्भाव मन्त्रि ना शाकात्र উৎসবেব कार्या স্থচাক্তরপে সম্পন্ন হইতে পারে নাই। এজন্ত বাবু নীলমণি চক্রবন্তী বন্ধবান্ধবদিগকে একত্রিত করিয়া সভা করিয়া কিনপে একটা মন্দিব শীঘ নির্মিত হইতে পারে তাহার ক্রম্য বিশেষ চেষ্টা কবিয়াছেন। কয়েক বংসর ধবিয়া তথায় মন্দির নির্দ্মাণের জন্ম চেষ্ঠা হইতেছে এবং তজ্জ্য কিছু অর্থও সংগৃহীত হইয়াছে। কিন্তু উপযুক্ত স্থানের অভাবে মন্দির নির্মাণ কার্য্য আরম্ভ হর নাই। এবাবে অনেক চেষ্টাতে প্রমেখরের রূপার সহরের মধ্যত্তনে একটী স্থান পাওয়া গিয়াছে। নদিয়ার জমীদার শ্রীযক্ত বাব শরক্তক্র শুপু মহাশয় মন্দির নির্মাণের বস্তু একথণ্ড ভূমি প্রদান করিয়াছেন। উক্ত স্থানে মন্দিরের ভিত্তি ভাপিত হুইরাছে। নীলমণি বাবুর অধিকাংশ সময় এই কার্য্যে বায়িত হইয়াছে। ভ্রমতীত তিনি নিম্নলিধিত কার্য্য সকল কবিয়াছেন।

৬ই বৈশাথ বুধবাব—চট্টগ্রাম হাই স্কুলগৃহে "জীবস্থ ধর্ম" বিষয়ে সাধারণের জ্বন্স বক্তা। ১ই শনিবার স্থাসান্থাল ইন্ষ্টিটিউসন গৃহে "শীবনের ভিত্তি" বিষয়ে ছাত্রদিগের জ্বন্স বক্তৃতা।

১৩ই ব্ধবার—চট্টগ্রাম অইল ও কটন মিল্দ্ কোম্পানির তৈলের কল প্রতিষ্ঠা। ত্রন্ধোপাসনাদি করিয়া থোলা হয়।

> १ ই রবিবার—মি: ডি, এন, মুখোপাধ্যায়ের বিতীয়া কল্পার শুভ নামকরণ কার্যা আহ্মধর্ম অনুসারে সম্পন্ন হয়। শিশুর নাম কুমুমিকা রাখা হইয়াছে।

২৪এ রবিবার—এক্ষমন্দিরের ভিত্তি স্থাপন। প্রথতমঃ ব্রাহ্মগণ এবং অক্সান্ত ভদ্রগোক সকলে স্থানীর উকীল বাবু বাজাঘোহন সেন মহাশরের বাড়ীতে একজিত হইলে বাবু নীলমণি চক্ষরতী মহাশয় একটি সদীত করিয়া প্রার্থনা করেন।

তৎপরে সৃষ্ণলে মিলিয়া তথা হইতে কীর্ত্তন করিতে করিতে निर्मिष्ठे चात्न गमन करतन। तात् नीतमान ठळावळी मः किश्र ত্রন্ধোপাসনা ও প্রার্থনার পর মন্দিরের ভিত্তি স্থাপন করেন এবং তৎপরে ভিত্তি স্থাপন পত্রিকা পাঠ করেন। তাহাতে ভিত্তি স্থাপনের তারিথ, ত্রহ্মমন্দিরের উদ্দেশ, ত্রাহ্মধর্মের ব্রাহ্মসমান্তের পত্রিকার সহিত ঐ পত্রিকা লিখিত ছিল। একত্রে এক বোতলে আবন্ধ করিয়া ভিত্তির মধ্যে প্রোথিত করাহয়। পরে বাবু হরিশচন্দ্র দত্ত মহাশয় প্রার্থনা করেন এবং মি: ডি, এন, মুথোপাধ্যায় মহাশয় বক্তা করেন। উাহার সংক্ষিপ্ত বক্তার সারমর্ম এইরূপ;—"এইমাত আহ্ম ধর্মের যে সকল মূলমত পঠিত হইল, তদ্বারা দেখা যায় যে, আদি ব্রাহ্মসমাজ, নববিধান সমাজ এবং সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের এতদসম্বন্ধে কোনও মতভেদ হইতে পারে না। কেবল বিশেষ বিশেষ মত লইয়া। স্বর্গীয় কেশবচন্দ্র সেন মহাশয় আমাদের সকলের বিশেষ শ্রদ্ধা ও স্মানের পাতা। তাঁহার দারা ব্রাহ্মসমাজ যে বিশেষ উপক্লত হইয়াছে, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। কিন্তু তাঁহার এরপ কতকগুলি মত ছিল, ব্রাহ্মধর্ম্ম বিশ্বাস করিতে গিয়া যাহা না মানিলেও চলে এবং যাহার সত্যতা এবং আবশ্রকতা সম্বন্ধে কোনও নিসংশয় প্রমাণ পাওয়া যায় নাই। এই সকল মত আমরা না মানিতেও পারি। নববিধান বালীদিগের মধ্যে এরপ লোক আছেন, থাঁহাদিগকৈ আমরা অত্যন্ত শ্রনা করি। আমরা সকলে ভাই ভাই হইলেও তাঁহাদের সহিত এক গৃহে আমরা স্থান পাইলাম না, আমাদের শ্রদ্ধার পাত্র হাঁহারা, তাঁহারা তাঁহাদের মন্দিরের কার্য্য করিবার অধিকার পান না। স্থতরাং বাধা হইয়া ছংখের সহিত আমাদিগকে এই মন্দিরের ভিত্তি স্থাপন কবিতে হুইল। এখানে বলা আবশ্রুক যে, মি: মুখোপাধ্যায় এবং অক্তাক্ত স্থানীয় বন্ধগণের এইরূপ ইচ্ছা ও চেটা ছিল যে. নববিধান বিশ্বাসী ও সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের মতাবলম্বী স্থানীব ব্রাহ্মগণ একত্রে এক সমাজে উপাসনাদি কার্য্য করেন। কিন্ত নববিধানবাদী ভাতাগণ ব্রাহ্মসমাজের মতাবলম্বী কোনও-প্রাক্ষকে আপনাদের মন্দিরে উপাসনাদি কবিতে দিতে প্রস্তুত মি: মুথোপাধ্যায়ের বক্তৃতার পব নীলমণি বাবু সম্যোচিত ভাবে किছू वर्णम এवः श्रार्थमा कतिया काँग्रा स्मय करत्रम ।

এত হাতীত বাবু নীলমণি চক্রবর্তী করে কদিন ত্রাহ্মসমাছে উপাসনা ও উপদেশ প্রদান এবং বন্ধু বান্ধবদেব গৃহে উপাসনা প্রার্থনা এবং কীর্ত্তনাদি করিয়াছেন।

চারিটা জেলা লইয়া চট্টগ্রাম বিভাগ গঠিত হইয়াছে।
তাহার কেন্দ্র চট্টগ্রাম সহর। এই সহরে চারিটা এণ্ট্রান্দ স্থল,
একটা বিতীয় শ্রেণীর কলেন্দ্র এবং একটা নর্মাল স্থল আছে।
এখানে অনেক ভদ্রলোকের বাস। এই জ্বন্থ এই স্থান ব্রাদ্ধ
ধর্ম প্রচারের অমুক্ল ক্ষেত্র। একজন প্রচারক এই স্থানকে
ক্ষেত্র করিয়া এই প্রদেশে প্রচারক্ষেত্র প্রিলে চন্ত্রগ্রাম, নোয়াধালী এবং কুমিয়া কেলাতে ব্রাদ্ধর্ম প্রচারের অনেক স্বিধা

হইতে পারে। চট্টগ্রামে করেকজন উৎসাহী ব্রাক্ষ আছেন। তাঁহারা নানাভাবে প্রচারককে সাহায্য করিতে প্রস্তুত। এক জন উৎসাহী যুবক অধিক বেতনের চাকুরী পরিত্যাগ কবিয়া চট্টগ্রাম ব্রাক্ষসমাজের সেবার জন্ম অল্প বেতনের কার্য্যে তথায় আসিরাছেন।

প্রতিষ্ঠ থাছের সংক্রিপ্ত সমালোচনা—"ভক্তচবিতামৃত" এবং "বল্নাথ দাস গোস্বামীর জীবন-চরিত।"
তইথানি পুস্তকই শ্রীযুক্ত বাবু জ্বাবানাথ চট্টোপাধ্যার প্রণীত।
১৭ নং রল্নাথ চট্টোপাধ্যায়ের ষ্ট্রীট, মণিকা প্রেসে মুদ্রিত,
মূল্য ॥৮০ ও ৮০ আনা। ভক্ত-চবিতামৃত গ্রাম্থ কাপ, সনাতন
ও জীব গোস্বামীর জীবনচবিত লিখিত হইরাছে। অবোব
বাবু দিন দিনই সাহিত্য সমাজে স্প্রবিচিত হইতেছেন।
আমবা পুস্তক তইখানি পাঠ করিয়া প্রীতিলাভ কবিয়াছি।
গ্রন্থকাব বিবিধ বৈষ্ণব গ্রন্থ হইতে বিশেষ প্রয়োজনীয় বিষয
সমূহ সংগ্রহ কবিয়া পুস্তক তইথানিকে অধিকতব মূল্যবান
কবিয়াছেন। ভাষা বিশুদ্ধ ও স্থাপাঠা হইরাছে। ধর্মপিপাস্থ ব্যক্তিগণ একপ গ্রন্থ আদরের সহিত পাঠ করিবেন
সন্দেহ নাই।

"ঈখবেৰ সৰ্বজ্ঞতা ও মানবায়াৰ স্বাধীনতা এবং এতত্ত্-ভাষেৰ সামপ্তত্ত " ভীকুঞ্লবিহারী সেন-প্রণীত। কলিকাতা २> । । २ नः कर्ग अप्राणिम् द्वी छे, वाय ८ श्राप्तः न्यी गरहन्त्र नांगः वरन्ताः। পাধ্যায দারা মুদ্রিত ও প্রকাশিত। মূল্য । ১০ আনা। এই শুদ্র পুত্তকথানিতে লেথক "সতাদশী" ও "তত্ত্বাষেষী" নামক ক্রিত গুকু শিষ্যের কর্গোপকগনের আকাবে উপবাক্ত বিষয়ের আলোচনা করিয়াছেন এবং প্রায়ক্তমে স্কটি, বৈত্যাদ, फरेबडवान, देवडारेबडनान, शुक्तवान, मधावखीबान, व्यवडाववान, পাপ-পুণা, মানবায়াব উলভি প্রভৃতি নানা বিষয়ের অবভাবণা কবিয়াছেন। লেথক পুস্তকে যে চিন্তানীলভাব পবিচয় দিয়া-ছেন, ভাগ অভিশয় প্রশংসনীয়। কিন্তু ভাঁহার বচনা ও <u> দুক্তি-প্রণাশী কিছুই প্রিপ্রতা লাভ কবে নাই স্ন্তরাং</u> আলোচিত বিষয় সমূহেৰ বাথো ও সমাধান স্ভোষ্কৰ হয় নাই। আমাদের বিবেচনায় একপ ক্ষুদ্র পুস্তকে এত বহু-সংগ্যক বিষয়েব অবতাবণা না কবিলে মূল আলোচনা স্বল ও স্পষ্টতর হইত। যাহ। হউক এই সকল আতুষ্ঞ্চিক বিষয়ে বলিতে পিষা লেখক স্থানে স্থানে অনেক উচ্চ সত্যের উল্লেখ ক্রিয়াছেন। তংপাঠে পাঠ । উপকৃত হুইতে পাবেন।

দানপ্রাপ্তি স্বীকার—ক্বতজ্ঞতার সহিত স্বীকার করি-তেছি যে, নিম্নলিখিত নহোদয় ও মহোদয়াগণ এককালীন মাসিক, বার্যিক ও অনুষ্ঠানাদি উপলক্ষে ১৮৯০ সালেব জামুয়াবি হইতে ডিসেম্বর পর্যান্ত সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের দাতব্য বিভাগে স্মর্থ দান করিয়াছেন:—

একটা মহিলা মাং বাবু নবধীপচক্র দাস ১১, প্রীমতী বসস্ত-কুমারী বস্থ, কলিকাতা ১॥০, একটা ব্রাহ্ম, কলিকাতা ২৫১,

বাবু চণ্ডীচরণ গুহ, বরিশাল ১১, বাবু রামচক্র বন্যোপাধ্যায় लाट्टात euo, वावू मिंडनान टोधूती कनिकां o 8, वावू कानी-নারায়ণ সেন বিক্রমপুর ১১, মুন্সি এমাজুদ্দিন কলিকাতা ৪১, বাবু বিপিনবিহাবি দত্ত ঐ ১১, বাবু বিহারীলাল মলিক ঐ ১১, বাবু কেদাবনাথ মিত্র ঐ ৩১, বাবু কৈলাশ্চক্র সাহা ঐ ॥০, বাবু যহনাথ ঘোষ ঐ ৩১, বাবু গুরুচরণ মহলানবিশ ঐ ৩১, বাবু গোপালটাদ বহু ঐ ১১১, রায় গুণাভিবাম বড়ুয়া বাহাছর ঐ ১২১, বাবু কেদারনাথ ঘোষ ঐ ২১, মহারাজা মহীশ্ব মাং ডাঃ পি, কে রায়, ১০০ পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী কলিকাতা ২১, বাবু ভূবনমোহন ঘোষ ঐ ১॥∘, বাবু সতারঞ্জন থান্তগিব ১১, বাবু বাণীকান্ত রায় চৌধুবী কলিকাতা ১১, বাবু শবচ্চক্র মজুমদার মাং বাবু মধুস্থদন সেন ১১, বাবু ক্ষেত্রমোহন চল কলিকাতা ১১, বাবু হেবম্বচন্দ্র মৈক্র ঐ 🕫, বাবু কালীপ্রসয় ঘোষ ॥০, বাবু গোপালচন্দ্র মল্লিক কলিকাতা ১১, বাবু রাথাল-চल तम थे >√, वार् मन्नवांग तम थे >√, वार् वाराख्त-**চ**क्क ठक्कवडी कांकिनीया २√, वाव् क्लीक्टासाइन वस्र, কলিকাতা 🔍, শ্রীমতী জয়কালী গুপু 📐, বাবু প্রসাদদাস মলিক কলিকাভা ৫০১, বাবু শবচ্চন্দ্র সিংহ বল্মা ১১, বাবু দীন-নাণ গাঙ্গুলী বার ওয়াব ৫১, বাবু কান্তিচন্দ্র চটোপাধ্যায় ভক্কাব ২্, বাবু অভয়চরণ মল্লিক কলিকাতা ১৯১, রায় বিপিনক্লফ বস্থ বাহাছৰ নাগপৰ ১০১, বাবু ব্ৰন্ধনীকান্ত তপাদার পিরোজ পুর ১১, বাব্রাধাণোবিল সাহা কুমারথালী ৪॥০, এীমতী ক্ষেদাস্ক্ৰী মিত্ৰ কলিকাতা ৫১, বাবু ছগাচৰণ বিধাস কুষ্ট্যা ১১, বারু নন্দকুমার চৌরুবি কলিকাতা ২১, জ্রীরঙ্গনিহারী লাল ঐ ২১, বাবু বেচাবাম মল্লিক ঐ ॥, বাবু কালীনারায়ণ রার দিঘাপতিয়া ২৩১, ডাঃ হবনাথ ঘোষ করটীয়া ২১, বাবু প্রানন্ত কুমাৰ কুণু কলিকাতা ২১, শ্রীমতী স্বৰ্মনী দাস পুৰিয়া ১০১ বাব কাণীক্ষ ব্যাক কলিকাতা ১॥০. বাবু জীনাথ চক্রবর্ত্তী लाखी > रातु षा छत्राहतन तस्र (मिनीभूत > , तातु का ना हेलाल সাহা দিল্লি ॥০, বাবু জয়ক্ষণ নিত্র কলিকাতা ১১, শ্রীমতী स्रवेला मजुमनाव संशो > , वार् मर्वेज्यन वान्नाभाषा ववाठ-नशन ८, वात् अनाथनक् वाग्र कां किनीया २. वात् (शीतलाल বাধ ঐ ৩১, বাবু বিপিনবিভাবী বায় মাণিকদত ১০১, বাবু রাম-छल<sup>5</sup> मजूमनात नडगी ७, वावू खानकीनाए চটৌপাধাায় বিক্রমপুর ১১, বারু ছগামোহন দাস কলিকাতা ৯১, বার कुअतिहाती (भन के %। (गाउँ ७५१।%।

### বিজ্ঞাপন।

শীস্ক বাব মহেন্দ্রনাথ চটোপাধ্যায়, বাব ছবিমোহন ঘোষাল ও বাবু কুঞ্জলাল ঘোষ আক্ষাধর্ম প্রচাবার্থে মকঃপ্রশাল কবিয়াছেন। তাঁহারা তত্ত্ব-কৌমুদী, ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জারের মূল্য গ্রহণ করিবেন ও সাধাবণ আক্ষামাজের চাঁদা আদায় এবং সাধনাশ্রমের জন্ম ভিক্ষা করিবেন। সাধারণের সহায্য প্রার্থনীয়।

শ্রীশিবনাথ শান্তী। সাধনাশ্রমের তত্ত্বাবধারক।

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

মে সংখ্যা।

১লা আষাঢ় বৃহস্পতিবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম দম্বৎ ৬৫।

বাৎদরিক অন্তিম মূল্য ২৮০ মফবলে ৩ প্রতি বণ্ডের মূল্য ৫০

প্ৰাৰ্থনা।

হে প্রভো! অগতের মৃতপ্রার আধ্যাত্মিক দেহে নবজীবন দিবার জন্ত ভোমার সত্য ধর্মের অভাদর ইইরাছে। বে কেহ ইহাকে বিখাসের সহিত ধারণ করিবেন ও দৃঢ়তার সহিত সাধন করিবেন, তিনিই নবজীবন পাইবেন ও অপরকে নবজীবন দিতে পারিবেন। আমরা এমন মহৎ বস্তু পাইরাও ইহাকে বালকের ক্রীড়ার ছায় ব্যবহার করিতেছি। ইহার সাধনে আপনাদের দেহ মনকে সম্পূর্ণরূপে নিয়োগ করিতে পারিতেছি না। তুমি আমাদিগকে সেই শক্তি দেও, ঘাহাতে আমরা ইহার সাধনে দৃঢ় হইতে পারি।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

ব্রাহ্মণত্বের মূল কথা---প্রাচীন কালেব ব্রাহ্মণদিগের এই নিয়ম ছিল যে, তাঁহাবা কোনও প্রকার বিষয় কার্যো লিপ্ত হইতে পারিতেন না: অর্থোপার্জনের কোনও প্রকার উপায় অবলম্বন করিতে পারিতেন না। এমন কি তাঁহারা যে त्रकल ছाजरक विमारामान कतिराजन, जाहामिरशत निकछ কোনও প্রকাব ভৃতি শইতে পারিতেন না। মন্যাদি শাস্ত্র-কারগণ ত বেতন ভোগী অধ্যাপক ত্রাহ্মণদিগেব অনেক निन्ता कतिब्राष्ट्रन, এবং उाँशांतिशत्क कठिन मांगांबिक मास्रि দিবার আদেশ করিয়াছেন। একদিকে ব্রাহ্মণগণের প্রতি ट्यक्रभ कर्छात भागन छिन, व्यभन्नमिटक धनी छ विषयीमिटगत প্রতি এই আদেশ ছিল বে, তাঁহারা ত্রাহ্মণদিগের ভরণ-পোষণের ভার বহন করিবেন। তদমুসারে ধনিগণ वाक्षणितक मर्रामा मान कतिएक। তদ্বারা ত্রাহ্মণদিগের माश्मातिक श्रासामन मकन এक श्राकात निर्साह इहेछ। পরমুণাপেকী হওয়াতে ত্রাহ্মণগণ এক চির দারিল্যের মধ্যে বাস করিতেন। ধনবান আহ্মণের বিবরণ প্রাচীন ইভিরতে প্রায় দৃষ্টি গোচর হয় না। অপের দিকে আহ্মণগণ দরিজভার मध्य वाम कतियां अ महत्कार्या नाथन कतिएकन। वाकन, चाधावन, चाधाविना এই मकन धाधानकः छाहारमञ्ज कार्या हिन। दिलाद अञ्जीनन ७ विमानिन धरे छेखत्र कार्या ।

প্রধানত: নিযুক্ত থাকাতে তাঁহাদের মধ্যে জ্ঞানালোচনা সর্বাদা চলিত এবং ধর্মশাক্ষপ্রথমন ও ব্যাখ্যা কার্য্যে সর্বাদা त्रुष्ठ शाकार्क व्याधाश्चिक विषयात्र अञ्चलीनन मर्सनार हरेख। এইরপে সমান্ত মধ্যে এক শ্রেণীর লোক জ্ঞানাসুশীলনে সর্বাদা রত থাকিলে যে, দে সমাজ মধ্যে জ্ঞানের গৌরব রক্ষিত হয় তাহা বলা বাহলা মাত্র। এতদ্বারা ভারতে অতি উৎকৃষ্ট ফলই ফলিয়াছে। তবে ইহাস্বীকার্যা, ত্রাহ্মণত ক্রাগত না इटेल, এবং क्कानालाहना इटेल्ड अभन्न वर्गमिगरक निकामिङ না করিলে আরও উৎক্লষ্ট ফল দর্শিতে পারিত। এই ছুইটা আফুবলিক নিয়ম থাকাতে ভারতীয় ছাতিতেদ প্রথা অতি **জ্বস্ত আকার** ধারণ করিয়াছে, দূষিত ও পৃতিগন্ধময় হইরাছে। कि इ मृत निव्रमित (य উৎकृष्टे छाहाट मन्मह नाहे। ममास्क्रव সকল লোককেই যদি উদরান্নের জন্ম বিষয় কর্ম্মে লিপ্ত থাকিতে হয়, এবং কেইই যদি অনন্তকৰ্মা হটয়া অভিনিবেশ সহকারে জ্ঞানালোচনা ও ধর্ম চিস্থাতে নিযুক্ত হইতে না পাবে তাহা ছইলে ত্রায় সে সমাজেব মানসিক ও আধাাগ্রিক চুর্গতি উপস্থিত হয়। জগতে সাহিত্য বা বিজ্ঞান সম্বন্ধে যত কিছু আশ্চর্য্য কীর্ত্তি সাধিত হইতেছে, তাহা অনন্তকর্মা লোকদিগেব ঘারাই সাধিত হইতেছে। যদি হার্কাট স্পেনসারকে বা **ভারউইন বা অক্সান্ত ক্রতিমানদিগকে** উদরাল্লেব জন্ত ধা ধা কবিয়া বেডাইতে ২ইত, তাহা হইলে কি ইংলণ্ডের এত উন্নতি হইতে পারিত ? আমাদের দেশে অন্যকর্মা হইয়া জ্ঞানোরতি সাধনে নিযুক্ত হইবার লোক নাট বলিয়াই জ্ঞানের তাদুশ উন্নতি দৃষ্ট হইতেছে না। থাঁহাব কিঞিৎ প্রতিভা আছে, उाहारक जेमबासाब विश्वास था था कतिया दवजाहरक रहेरजुरह । মাত্র্য ছই প্রকারে অনভাকন্ম। হইতে পারে, প্রথম কেহ কেহ পৈতৃক বিষয়ের অধিকাবী হইয়া গ্রাসাচ্ছাদনেব চিম্বা হইতে অব্যাহতি পাইয়া অন্তক্ষা হইতে পাবেন; কেহ কেহ বা রাজার বা সমাজের সাহায্যে অন্তক্ষা ইইতে পাবেন। সভ্য দেশে রাজারা জ্ঞানীদিগকে অন্তাক্ষা করিবার জ্ঞা পেনসন দিয়া থাকেন। ইট ইণ্ডিয়া কোম্পানি যদি পেনসনের ৰন্দোৰস্ত করিয়া প্রোফেদার মোক্ষ-মূলারকে অনন্তকর্মা করিয়া না দিতেন তাহা হইলে কি তিনি জ্ঞানের যে আশ্চর্য্য উন্নতি ক্রিল্লাছেন, তাহা ক্রিতে পারিতেন ? যেথানে রাজা

উৎসাহদাতা নহে, সেথানে সমাজের উৎসাহদাতা হওরা আবশুক, তদ্তির আশাসুরূপ উরতি হইতে পারে না। ব্রাহ্মসমাজেরও এক শ্রেণী লোকের প্রয়োজন, বাহারা জনহাকর্মা হইয়া ইহার আধ্যাত্মিকতাকে রক্ষা ও পরিশোধন করিবেন। তদ্তির এ সমাজের আধ্যাত্মিকতা ত্রায় মান হইয়া যাইবে।

ব্ৰাহ্মদমাজ আদর্শ কৃষিক্ষেত্র—আর এক দিয়া দেখিতে গেলেও এইরূপ একদল অন্যকর্মা সাধকের প্রয়ো-জনীয়তা অনুভব করা যায়। মাক্রাজ সহরে একটী কৃষি-বিদ্যালয় স্থাপিত হইয়াছিল, তাহাতে ছাত্রদিগকে সমবেত কবিয়া কৃষিতত্ত্ব বিষয়ে গ্রন্থাদি পড়ান হইত ও উপদেশ দেওয়া इटेज। किन्नु भाक्ताक शवर्गामणे यथन थे कृषि-विमाानग्रही স্থাপন কবিলেন, তথন তাঁহার সঙ্গে সঙ্গেই একটা "মডেল ফাবম" আদর্শ ক্ষিক্ষেত্র স্থাপন করিলেন। বিদ্যালয়ে গ্রন্থে ও উপদেশে যাহা শিক্ষা দেওয়া হইত, কৃষিক্ষেত্রে তাহা হাতে কলমে কবিয়া দেখান হইত। ঐ কৃষিক্ষেত্রটী না থাকিলে বিদ্যালয়েব উপদেশ আশাহুরূপ স্থফল প্রদেব কবিতে পারিত না। নিবিষ্ট চিত্তে একটু চিস্তা কবিলেই ইহা অমুভব করিতে পাবা যাইবে যে, সমগ্র ব্রাহ্মসমাজ যেন ব্রাহ্মধর্ম্মের একটা কৃষিক্ষেত্র। গ্রন্থে ও উপদেশে আমবা যে,ব্রাহ্মধর্ম শিথাইতেছি, এই ব্রাহ্মসমাজ্রপ কৃষিক্ষেত্রে হাতে কলমে তাহা করিয়া দেথাইতেছি। এই দৃষ্টাস্থটীর তাৎপর্য্য হৃদয়ে অমুভব করিলেই এই প্রশ্ন আমাদের মনে স্বত:ই উদিত হয়, ব্রাহ্মধর্ম যে উচ্চ আদর্শ আমাদের সমকে উপস্থিত করিয়াছেন, ত্রাহ্মসমাজ্রপ ক্ষিক্ষেত্রে কি আমরা তাহা হাতে কলমে করিয়া দেখাইতে পাবিতেছি ও ব্রাহ্মসমাজ কি ব্রাহ্মধর্মের উচ্চ উপদেশের অনুরূপ হইতেছে ? এ প্রশ্নের বিচাব এখন পরিত্যাগ কবিয়া স্থার একটা বিষয়েব বিচারে মনোনিবেশ করা যাউক। দেটা এই-ব্রাহ্মসমাজ ব্রাহ্মধর্ণকে সাধন কবিবেন। কিছুব্রাহ্ম-সমাজেব সেই সাধনশক্তিকে ঘনীভূত ও বৃদ্ধিত করিবাব জন্ত একদল অন্তক্ষা ও সাধনপ্রায়ণ লোকের প্রয়োজন। नक एन है यनि विषयक एम वाश्वि थातक, नक एन है यनि धा धा করিয়া অর্থের চিস্তায় ঘুরিয়া বেডায় তাহা হইলে ইহার সাধনশক্তিকে ঘনীভূত ও বার্মত করিবে কে? এরপ একদল লোকেব প্রয়োজনীয়তা সকলেই অমুভব করিবেন।

ব্রাহ্মবর্শ্মে তুই দিক—সকল বস্তর স্থায় ব্রাহ্মধর্শ্মেরও তুই দিক আছে। এক দিক দিয়া দেখিলে অপরাপর ধর্শ্মের স্টিত ইহাব প্রভেদ কোথায় তাহা দেখিতে পাওমা যায়। অপর ধর্শ্মে মধ্যবতী মানে, ব্রাহ্মধন্ম মানে না; অপর ধর্শ্মে অস্ত্রান্ত শাস্ত্র বা গুর স্বীকার করে, ব্রাহ্মধন্ম তাহা করে না; ইত্যাদি। কিন্তু ব্রাম্পর্শের আর একটা দিক আছে, তাহা মিলনের ক্ষেত্র। ব্রাহ্মধন্ম ভূই মহাসত্যের উপরে প্রতিষ্ঠিত—
ইশ্বরের পিতৃত্ব ও মন্ত্রের ভাতৃত্ব। ইহার ছই প্রেষ্ঠ উপদেশ—
"স্থারকে, মানবকে সর্কান্তঃকরণে প্রীতি করে।" প্রীতিই

মিলনের ক্ষেত্র। এ বিষয়ে কাহার সহিত বিরোধ সম্ভব ? কোন ধর্মে এরূপ আছে, যে বলে ঈশরকে মানবকে প্রীতি করিও না। স্থতরাং অকপট ঈশ্বর প্রীতি ও নর-প্রেম হৃদয়ে জন্মিলে দকল সত্যের দক্ষে, সকল সাধুতার সঙ্গে এক প্রকার আধা[আুক যোগ স্থাপিত হয়। ঈশরের বন্ধু অনেক, অতএব অকপট ঈশ্বর-প্রেমিকেরও বন্ধু অনেক। স্থতরাং ব্রাহ্মধর্ম মিত্রতার ধর্ম। যে বিষয়ের সঙ্গে ব্রাহ্মধর্মের বিরোধ, সে বিষয়ের সঙ্গে সকল ধর্ম্মেরই বিরোধ। অসতা, অকায় ও অপবিত্রতার সহিত ব্রাহ্মধর্মের বিরোধ। কোন্ ধর্ম বলে অসত্য অক্সায় বা অপবিত্রতাকে পোষণ কর ? তবে ব্রাহ্মগণ যাহাকে অসত্য বলিয়া মনে করেন, অপরধর্মিগণ তাহাকে অসত্য না ভাবিতে পারেন। কিন্তু তাহা হইলেও মূল লক্ষ্যে প্রভেদ নাই এবং অকপট সত্য-প্রীতি যেথানে, সেথানে পরস্পরের প্রতি শ্রদ্ধা উৎপন্ন হওয়াও স্বাভাবিক। আমাদের প্রেমের অল্পতা বশতাই আমরা মিলনের এই মহাভাবকে সাধন করিতে পারিতেছি না। ঈশ্বর-প্রীতি ও মানব-প্রীতিব সাধন অপেকা ত্রাহ্মধর্মের বিরোধীর দিকেই আমাদেব অধিক मृष्टि। बाक्सथर्भाव विद्याधीत मित्करे याशामित क्रिकि मृष्टि, তাহাদের কার্য্য অরাম ফুরাইয়া যায়। পৌতলিকতা ও জাতি-ভেদ পরিত্যাগ করিলেন, অভ্রাম্ভ শাস্ত্র ও গুরু পরিত্যাগ করিলেন তৎপরে আব করিবেন কি? কিন্তু প্রীতিব উন্নতি অনস্ত. স্থতবাং প্রীতির সাধনে থাহাদেব আকাজ্ঞা তাঁহাদের সাধন ও কার্য্যের অন্ত নাই। ঈশব প্রীতি ও নব-প্রেমেব অমুশ্রলনের नित्क यनि कामता व्यक्षिक मृष्टि नि, ठाश इहेटन व्यामारनव জীবনে ব্রাহ্মধর্ম অধিক গৌববাঘিত হইতে পারে।

একতারদিকে গতি—চিকাগো মহামেলাতে যে জগ্-তের ধর্মসম্প্রদায় সকলের মহা সন্মিলন হইয়াছিল, ভাছাব ভাব এখনও তিবোহিত হয় নাই। আমেরিকা দেশের স্থানে স্থানে সমভাবাপর ধন্ম সম্প্রদায় স্ক্লের স্মধ্তে সূভা চলিতেছে। বিগত মে মাদের শেষ ভাগে ঐ চিকাগো নগরে উদার ভাবাগর ধর্মসমাজ সকলের সামলন হইয়া গিয়াছে। কোন কোন বিষয়ে পরস্পবের মতুরৈধ না হইয়া সম্মিলিতভাবে কার্য্য ইইতে পারে, সকলে এই চিস্তাতে নিযুক্ত হুইয়াছেন। ইংলও দেশেও কয়েক বৎসর হইতে "সিভিল চাচ্চ" নামে এক আন্দোলন চলিতেছে, সমুদায় ধর্ম সম্প্রদায়ের লোককে জনহিতকর কার্য্যে সমবেত করা এই আন্দোলনের উদ্দেশ্য। স্থের বিষয় যে, উদ্যোগকর্ত্তাগণ কির্পুণরিমাণে উক্ত উদ্দেশ্য সিদ্ধি বিষয়ে কৃতকার্য্য হইয়াছেন। ভিন্ন ভিন্ন সম্প্রদায়েব এটানগণ, থাহারা পুর্বে কথনই এক সঙ্গে মিলিয়া কার্য্য कतिराज চाहिराजन ना, हैशानिरागत छेरमगाराग ममरावाज रहेना অনেক সদস্ঠান করিতেছেন। ধর্ম সম্প্রদায়দিগের পক্ষে চির প্রচলিত বিবাদ-প্রবৃত্তিকে সংযত করিয়া মিলনের ভূমি আমবেষণ করাএকটা নৃতন কথা। এই প্রবৃত্তি প্রবৃদ হইলে লগতে এক ন্তন প্রেম ও শান্তির রাল্য ছাপিত হইবে। যে

উদারতার অর্থ বিশ্বাসের হুর্বলতা, বা সত্যাহ্বরাগের শিথিলতা আমরা তাহার পক্ষে নহি; কিন্ত প্রত্যেকে আপন আপন ভ্নিতে দণ্ডারমান হইরাও যে সকল বিষয়ে সন্মিলিত ভাবে কার্য্য করা সম্ভব তাহা কেন করা হইবে না ? আমরা দেখিয়া প্রীত হইতেছি যে, আদ্মনাজ মধ্যেও এইরপ্রমিলন প্রবৃত্তি বর্দ্ধিত হইতেছে। পরস্পরের বিশেষ ভাবের অপলাপ না করিয়া যতদ্র মিলন সম্ভব, তাহার দিকে আদ্ধনাজের ভিন্ন ভারে দাখা সকলের দৃষ্টি পড়িতেছে।

বালক বালিকার শিক্ষা-ইউনিটেরিরান সম্প্রদা-রেব অধিনারক জ্ঞানিশ্রেষ্ঠ স্থবিখ্যাত ডাক্তার মার্টিনো অতি প্রাচীন হইয়াছেন। তাঁহার বয়:ক্রম ৮০৮৪ বংসর হইবে। करत्रक वर्गत इहेर्ड जिनि मनुमाग्र कार्या इहेर्ड व्यवस्ठ इहेग्री আপনার স্কট্লওদেশীয় নিজ্ত গিরিশৃঙ্গন্থ ভবনে বাস করিতে-ছেন। বিগত কয়েক বৎসরের মধ্যে তিনি সমগ্র জীবনের চিস্তা ও সাধন-লব্ধ বিষয় সকল পুস্তাকারে মুদ্রিত করিয়া সভা জগতের লোককে বিশ্বিত ও চমংকৃত করিয়াছেন। সকলে মনে করিয়াছিল, যে তিনি এ বৃদ্ধ ব্যসে আর প্রকাশ্ত সভাদিতে উপস্থিত হইয়া কোনও কার্য্য করিবেন না। । কিন্তু বালক বালিকাদিগের ধর্মশিক। বিষয়ে ডাক্তার মাটিনোর অতিশয় মনোযোগ। এবিষয়ের গুরুত্ব, তিনি অতিশয় অমুভব করেন। বিগত মে মাসের শেষভাগে ইউনিটেরিয়ান এসোসিএসনের দাম্বংসবিক উৎসব উপশক্ষে অপরাপর কার্য্যের মধ্যে "সতে স্থল এসোসিএসন" নামক সভাবও সাস্বংসরিক অধিবেশন হয়। ঐ সভাতে উপন্থিত থাকিয়া ডাক্তাব মাটিনো, বালক বালিকা-দিগের ধন্ম শিক্ষা সম্বন্ধে অনেক সাবগর্ভ কথা বলিয়াছেন।

ইংলণ্ডে বাস কালে একজন আন্ধা একবাৰ ডাকোর মাটিনোর সহিত সাক্ষাৎ কবিয়াছিলেন। কথোপকথনের মধ্যে ডাক্তার মার্টনো ক্ষোভ প্রকাশ কবিয়া বলিলেন—"বে কারণেই २ डेक मासूय व्यामारमंत्र ( इंडेनिरहेतियान) मर्पा थारक ना : ष्पामारमंत्र घटत्रत्र रहत्म खीचेववामी, रत्रामान कार्यानक. अमन कि পজিটিডিই ও নাস্তিক হইয়া যাইতেছে।" कावन জিজাসা क्रवार्ड विल्लान, "এक हो कावर बहे ताथ हम्. हेडेनिएहेवियान পরিবারে বালকবালিকার ধর্মশিক্ষা বিষয়ে মনোযোগ দেওয়া হয় না। ইউনিটেরিয়ান পরিবার সকল এবিষয়ে অতিশয় উদাসীন।" ১৮৮৮ সালের জুন মাসে এই কধোপক্থন হয়। **এই করেক বৎসরের মধ্যে উক্ত সন্তার প্রায়ত্ক বালকবালিক**।-দিগের পাঠোপযোগী অনেকগুলি উৎকৃষ্ট গ্রন্থ রচিত ও মুদ্রিত হই রাছে। ইহার অধিকাংশই এটিধর্মের ইতিবৃত্ত ও উপদেশাদি मश्रकः। এই সকল গ্রন্থ পাঠ করিয়া বালকবালিকা কেন আমরাও অনেক উপকার লাভ কবিয়াছি। ডাক্তার মাটি-নোর কল্পা কুমারী মার্টিনো এই সকল পুত্তক আমাদের রবিবাসরীয় নৈতিক বিদ্যালয়ের বাবহারার্থ প্রেরণ কবি-(इन। उन्न वानक वानिकानिरात्र निकात उन्नि विधानार्थ ইউনিটেরিয়ানগণের প্রভিত্তিত পূর্কোক্ত সভার অহুরূপ একটা সভা আমাদিগের মধ্যে স্থাপিত হইলে ভাল হয়। অথবা

রবিবাষরীয় নৈতিক বিদ্যালয়ের শিক্ষক ও শিক্ষরিত্রীগণ যদি আপনাদের কার্যাক্ষেত্রকে বিস্তার করিয়া সাধারণ ভাবে সমৃদায় আন্ধারণ কার্যাক্ষেত্রকে বিস্তার করিয়া সাধারণ ভাবে সমৃদায় আন্ধারণ কার্লাক বালিকার শিক্ষার উরতি বিধানে যত্নশীল হন তাহা হইলেও অনেক উপকার দর্শিতে পারে। যে কার্য্যের শুক্ষত্ব অনুভব করিয়া ডাক্তার মার্টিনার স্থায় আশীতিপর বৃদ্ধও প্রকাশ্থ সভাতে উপদ্বিত হইয়া উৎসাহ দান আবশুক মনে করিরাছেন, আন্ধা পরিবারগণ আর কতদিন সেই কার্য্যের শুক্ষত্ব বিস্তৃত হইয়া ও নিজ সমাজের ভবিব্যতের প্রতি উদাসীন হইয়া থাকিবেন ? আমরা রবিবাসরীয় নৈতিক বিদ্যালয়ের মহিলাদিগকে বিশেষভাবে অমুরোধ করির্তিছি; ইহা বিশেষভাবে তাঁহাদেরই কার্য্য। তাঁহারা একটু যন্ত্রশীল হইলে এবিধ্যে অনেক কার্য্য হইতে পারে।

ত্রেষ্ঠ সংবরণ—ইজির নিএছের কথা উপস্থিত ইইলেই অনেকের চকু অতি জঘন্ত ইজির-পরায়ণতার প্রতি নিপতিত হয়; কিন্তু যিনি ইজির নিএছ কার্য্যে প্রবৃত্ত ইইয়ছেন, তিনিই দেখিয়াছেন যে, কোনও বিশেষ ইজিয়কে দমন করাই সহজ্প সাধ্য নহে; সকল গুলিই সমান বলবান। দমন করিতে গেলেই তাহারা শির উয়ত করিয়া উঠে, তখন তুমুল সংগ্রাম আরম্ভ হয়। সক্রাপেকা প্রবল রিপুকে দমন করিতে ইইলে সাধকের যতন্ব বলের আবগ্রুক, অক্তান্ত বিপুকে দমন করিতে ইইলে সাধকের যতন্ব বলের আবগ্রুক, অক্তান্ত বিপুকে দমন করিতে ইইলেও সেই পরিমাণ শক্তির প্রয়োজন। অথচ অনেকের মুথেই শুনিতে পাওয়া যায়, অন্তান্ত রিপুগুলিকে স্ববশে রাখা সহজ; কিন্তু ঐ বিপুবিশেষকে বণীভূত করা বড়ই কঠিন। ক্রোধ রিপু সহজে দমন হইয়া থাকে, এ কথাও অনেকের মুথে শুনিতে পাওয়া যায়। তাঁহাদের জন্ত গীতার একটি অপুর্ব শ্লোক উজ্ত করিতেছি।

ধ্যায়তো বিষধান্ পুংস: সঙ্গস্তেষ্পজায়তে।

সঙ্গাৎ সংজায়তে কাম: কামাৎ ক্রোধোইভিজায়তে।৬২ व्यर्था९ "विषय-िष्ठावि भूकरवत्र (मर्टे मकन (विषय) আস্তি জ্বে; আস্তি হইতে কামনা জ্বে; কামনা হইতে ক্রোধ উৎপন্ন হয়।" গীতাকারের মতে ক্রোধই স্ব্রাণেক। ভয়ানক রিপু। বাস্তবিক ধর্মঞ্জগতের ইতিহাসেও ইহা দেখা যায় যে, অনেক সাধু মহামা কাম, লোভ, মোহ, অহলাব ইত্যাদির হস্ত হইতে মুক্তিলাভ করিয়া অবশেষে ক্রোধেব হত্তে পতিত হইয়াছেন। সাধুরা নানাপ্রকার বাহ্ন ও আভাস্ক-রিক উপায় অবলয়ন করিয়া অনেক সমব স্থাপেকা প্রবল রিপুটকে নিজেজ কবিয়া রাখিয়াছেন এরপ দেখা গিয়াছে: কিন্তু যথনই কোনও প্রকার প্রতিকৃত্ত ঘটনা উপস্থিত হইয়াছে. তথনই তাহাবা সর্পেব স্থায় গজন করিয়া উঠিরাছেন। আমবাও देमनिम्म भीवान देश नक्षमा अञ्चय कति (य. यथनहे कान अ প্রকার অপ্রীতিকর কথা প্রবণ কবি, কোন প্রকার নির্যাতন প্রাপ্ত হই, কোনও প্রকার স্বায়ার কার্য্য দর্শন করি,তথন হ:থিত না হইয়া বিরক্ত ও ক্রোধযুক্ত হই। অন্তান্ত রিপুকে বিনি किय्र शित्रमात खरान जानित्व मनर्थ इटेग्राष्ट्रन, जिनि द्वारिक काष्ट्र भिद्रा यन अवन रहेवा भएन ।

কোধ বেধানে অহস্বারও দেখানে উপস্থিত হর। অহস্বার ক্রোধেব নিরত সহচর। স্থতরাং ক্রোধ এবং অহস্বার ব্রহ্ম-চর্যাব্রত-পরারণ শ্লমিকেও নরকের দিকে টানিয়া লইয়া যার। যিনি আজীবন ব্রহ্মচর্যাব্রত পালন করিয়া শুক্ষ কার্চের মত তইয়াছেন, কোনও বস্তুতেই যাহার আসক্তি নাই, কিছুতেই যাহাব দৃষ্টি নাই, সেই সংসার প্রমুক্ত সাধকও ক্রোধের বেগ সংবরণ করিতে পারেন না, অহস্বারকে বলিদান করিতে পারেন না। অতএব ইহা অপেকা ত্র্জির রিপু আর কি আছে ?

ব্যক্তিগত জীবনে অন্নাধিক পরিমাণে ইহা সকলেই অন্নত্ত্ব করিরাছেন যে, কথাবর্ত্তার, আলোচনার, বক্তৃতার পাবিবারিক কার্য্যাদিতে সকল সমর শাস্ত্রভাব রক্ষা করা করা করে করিন। অজ্ঞাতসাবে, অনিচ্ছার, অতর্কিতভাবে কোথা হইতে কোধের বাতাস আসিরা উপস্থিত হয় এবং মনকে অপ্রকৃতিস্থ করিরা ফেলে, তাহা পূর্বক্ষণে কিছুই টের পাওয়া যার না। বাহাকে সকলে অত্যন্ত শাস্ত, স্থশীল, ধার্ম্মিক বলিয়া জানে, তিনিই কার্য্যকালে (অর্থাৎ তাঁহার পক্ষে যেরূপ ঘটনা উপস্থিত হল, কোধের উল্লেক হইতে পারে) উষ্ণ-শোণিত হন। আমবা পরস্পর আলোচনার, সভা সমিতিতে সকল সমরই ইহার দৃষ্টান্ত দেখিতেছি। অথচ ক্রোধ দমন না হইলে, চিত্ত শাস্ত সমাহিত না হইলে কেহই ভগবানের রাজ্যে যাইতে পারিবে না। যাহার চিত্ত আসক্র, বিরক্ত, উত্তেজিত সেক্থনও ধ্যান-পরায়ণ হইতে পারে না। ভিতরে বাহিরে পান্তভাব অবলম্বন করিতে না পারিলে বন্ধলাত হয় না।

খানী ব্ৰাহ্ম।--একজন ত্ৰাহ্মবদ্ধু এই ওক্তর বিবয়ে আমাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছেন। তিনি ছ:খ করিয়া লিথিয়াছেন যে,অনেক ব্ৰাহ্ম ঋণজালে জডিত হইয়া ব্ৰাহ্মধৰ্মকে ও ব্রাহ্মসমাজকে লোকচকে হীন কবিতেছেন। দাবিদ্যের তাডনায় ও সংসারের অসচ্চলতানিবন্ধন ঋণ করিতে বাধ্য হইতেছেন ও সেই ঋণ-শোধের জ্ঞা আপনাদিগের ব্যয় সংলাচ করিয়াও বিবিধ ক্লেশভোগ করিয়া, ক্রমে ঋণমুক্ত ১ইতেছেন, তাঁহাদিগেৰ প্রতি পত্রপ্রেরক বিশেষ বিবক্তি প্রকাশ কবেন নাই, কিন্তু যাহা দেখিয়া তিনি অতিশয় চু:খিত **৬ইয়াছেন তাহা এই:—অনেকের পক্ষেঞ্গ করাটা যেন অতি** जञ्जकार्यात बहेश मां छाहेशाहि । श्रेण कतितात छन्। राजान বাগ্রতা, শোধ কবিবাদ জভ দেরণ নহে। বাহিরের চাল চলনে বার সংকোচের প্রতি দৃষ্টি নাই। नामा विध ट्रांश विवारित ब्रेड थाकिया निन्धित महन काव याथन করিতেছেন, অথচ বাঁহারা এক সময়ে বন্ধুভাবে অর্থ দিয়া বিপত্তার করিয়া দিয়াছেন, তাঁহারা যথা সময়ে সেই ष्यर्थ ना পा अग्राट्ड क्रम भारेएडएइन, मिनिटक मृष्टि नार्हे : हेश অতীব শোচনীয়। পত্রপ্রেক ছঃধ করিয়া লিখিয়াছেন-াক্ষসমাজের লোকের মধ্যে 'ধারে হাতী ক্রম করা' নৈমিতিক কাৰ্য্য মধ্যে গণ্য হইতেছে। ভবিষাতে কোথাও হইতে টাকা आनित्व, धरे जानात्र शाद्र किनियमक क्रत्र स्टेटिए।

"আমি" বই নিথিলাম, স্থতরাং ইহা বিক্রয় হইবেই, এই আশার প্রেসে ধারে বই ছাপা হইভেছে। গাড়ী ঘোড়া কিনিয়া কেহবা চাল বাড়াইভেছেন। এ সমস্ত ব্রাহ্মনাজের পক্ষে অগুভ লক্ষণ।" বিষয়টী অতি গুরুতর। অধিকাংশ ব্রাহ্মের সাংসারিক অবস্থা যেরূপ মন্দ, তাহাতে অনেক্রই ক্রমে ঋণজালে জড়াইয়৷ পড়িবার সভাবনা। ঋণগ্রহণ ও ঋণশোধ বিষয়ে ব্রাহ্মসমাজে আলোচনা হওয়া আবশুক। সেই সলে সঙ্গে ব্রাহ্মদিগের সাংসারিক অবস্থার উরভি বিধানের উপার করা কর্তব্য।

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ ।

### অমুতাপ আধ্যাত্মিক জীবনের চিহ্ন।

পাপবাধ না হইলে পাপ দমনের চেঠা হয় না। রোগ রহিয়াছে; কিন্তু রোগ যন্ত্রণা নাই, ক্ষত রোগে শরীরের অভ্যন্তর দেশ পচিয়া যাইতেছে, কোনও বেদনা নাই, এরপ অবস্থা বড়ই শোচনীর। মঙ্গলমন্ধ পরমেশ্বর রোগ হইতে প্রেম্কু হইবার জন্তই বেদনা দিয়াছেন। কুধা না হইলে বোধ হয় কেইই কর্ত্তব্য জ্ঞানে আহার করিত না, পিপাদা না হইলে কেইই জলপান করিত না, সেইরূপ বেদনা না জ্মিলে কেইই চিকিৎসিত হইবার জন্ত অন্তির হইত না। শারীরিক সম্বদ্ধে যে বিধান, মানসিক সম্বদ্ধেও সেই বিধান। পাপে বিরুত্ত ব্যক্তির অথনই আয়দৃষ্টি প্রথর হয়, অর্থাৎ পাপবোধ জ্ঞান্ম, তেখনই অনজ্ঞোপায় হইরা পরিত্রাণের জন্ত ভগবানের আশ্রন্ধ ভিক্ষা করিয়া থাকে। যতদিন পর্যান্ত না পাপবোধ জ্ঞানির, ততদিন ভাহার অবস্থা অত্যন্ত ভয়ানক। ঈশ্বর কুপার সাধুসঙ্গ, জ্ঞানালোচনা ও অন্তান্ত উপায়ে মানবের পাপবোধ জ্ঞান্মথ থাকে।

পাপবোধ ক্ষালিটে অন্তর্গাপের উদয় ইইনা থাকে। এ
সময় ইইতে আধ্যায়িক চিকিৎসা আরম্ভ হয়। তথন সে
ব্যক্তি নিজের প্রকৃত মৃতি দেখিতে সমর্থ হয়। যাহাদেব
পাপবোধ ক্ষমে নাই, তাহয়বা নিকের জীবন সম্বন্ধে প্রভারিত
ইইয়া কুৎসিতকে স্থানর দেখে, অপবিত্রকে পবিত্র দেখে,
এবং কুবাতাসকে ব্রহ্মসহবাসের অন্তর্গ বালয়া নিশ্চিম্ব পাকে।
নরকে বাস করিয়া মনে করে যে, স্বর্গে বাস করিতেছে।
প্রথম আত্ম-দৃষ্টি আসিয়া চক্ষে আঙ্গুল দিয়া প্রকৃত অবস্থা কি
তাহা দেখাইয়া দেয়। তথন পাপ-ব্যাধি হইতে মৃক্ত হইবার
জন্ত প্রোণ অন্থির ইইয়া উঠে।

প্রাক্ত অন্ততাপ বডই বন্ধণা-দায়ক। পাশীর লাজি বিধানের অন্ত নানা শাল্পে নানা প্রকার বিভীষিকাপূর্ণ নরক করিত হইরাছে। সে স্থান মল মৃত্র সাগরে পূর্ণ। তাহাতে কত কীট কিলিবিলি করিতেছে, সেই সাগরে পাশী ভূবিতেছে, উঠিতেছে, পড়িতেছে। আবার জ্বলম্ভ আন্তনে পাশীকে পোড়াইতেছে, যমদূত্রণ লোহার মুদ্দার দিরা পাশীর মন্তকে আবাত করিতেছে ইত্যাদি ইত্যাদি। কিন্তু করনার শক্তিশাশী

ভূলিকার সাহায্যে যতদুর ক্লেশজনক স্থানের চিত্র অন্ধিত হইতে পারে, অমুতাপিত ব্যক্তির হাদয় তদপেকা কটময়।

ছু:ধ চারি প্রকার,—অনাহার জনিত ছু:ধ, শোক, ব্যাধি এবং অমৃতাপের ক্লেশ। এই চতুর্বিধ হৃংথের মধ্যে অমৃতাপের ঞায় জালাকর আর কিছুই নহে। অনুভাপের বৃশ্চিক দংশন যন্ত্রণা যিনি অমুভব করিয়াছেন, তিনিই সাক্ষ্য দান করিবেন, এমন ক'ষ্ট পৃথিবীতে আর কিছুই নাই। কিন্তু যেমন গ্রীমাতি-শ্যা বৃষ্টিধারা পতনের পূর্ব্ব লক্ষণ, স্ফোটকে অন্ত প্রয়োগের ভয়ন্ধর যাতনা আরোগ্য লাভের কারণ, তদ্ধপ অমুতাপ মানব হৃদয়ে ঈশ্বর প্রকাশের পূর্বে লক্ষণ। প্রকৃত অমৃতাপের সঙ্গে সঙ্গে ব্ৰহ্মকুপা অভানিত হইয়া সাধককে শান্তি দান করে। তথন সাধকের প্রাণে যে অভূতপূর্ব্ব স্বর্গীয় প্রেমস্রোত প্রবাহিত হইতে থাকে, তাহা কল্পনার আয়ত্ত নহে।

অমুতাপের অশ্রেজনে .যে হৃদয় কথনও ধৌত হয় নাই, তাহা বাাধি-শৃত্ত নহে। অমুতাপ ধর্মজীবনের লক্ষণ। যে হুদ্র অহুতাপবিহীন, যে সমাজের লোক অহুতাপিত না হইয়া धर्म्ममन्मिरत প্রবেশ কবে, তাহারা প্রমেশ্বরের শুভাণীর্কাদ হইতে বঞ্চিত হয়। মহাত্মা যীও প্ৰধানত: ছুইটি বিষয় জগতে প্রার করিয়াছেন। "অন্তাপিত হও, অর্গরাজ্য তোমার নিকটবৰ্ত্তী ও সকলকে প্ৰেম কৰ।" গ্ৰীষ্টীয় সমাজ অনুভাপেই জীবিত। জনামুরীণ কর্মদলে ইম্জনের পাপ ও পুণা কার্যা অনুষ্ঠিত হয় ৰলিয়া বিখাস থাকাতে এদেশে অফুতাপের ভাব তেমন প্রফটিত হয় নাই। ইহজনোব কম্ম যথন পূর্বজনাকৃত কৰ্মেৰ ফলে অমুণ্ডিভ হইভেছে,তথন অমুশোচনা কৰা নিৰ্ক্তি দ্ধিতা মাত্র। তবে যাহাতে প্রক্রমে আর এরূপ ক্লেশ ভোগ না কবিতে হন, তক্ষ্য বিবিধ উপায়ে ধর্মদাধন কব।" কিন্তু একপ বিখাস বন্ধমূল হওয়া সত্ত্বেও হিন্দুলাম্বে অন্ততাপেব বিষয় কীৰ্ত্তিত ইইয়াছে। মহু বলিতেছেন ;—

কুখা পাণানি সম্বপ্য, তত্মাৎ পাপাৎ প্রমূচ্যতে। নৈবং কুর্য্যাং পুনবিতি নিবৃত্ত্যা পুষতে তু সং।

অর্থাৎ যে ব্যক্তি পাপ করিয়া পশ্চাৎ অমৃতাপ করে ও আর এক্লণ কর্ম করিব না বলিয়া পাপকার্য্য ছইতে নির্ভত হয়, সেই ব্যক্তিই পূর্বাক্বত পাপ হইতে নিমুক্ত ও পবিত্র হয়।

ব্রাক্ষসমাজ অমুতাপের ভিতর দিয়াই সাধন-রাজ্যে প্রবেশ করিয়াছিল; কিন্তু হৃ:থের বিষয় যে, বর্ত্তমান সময়ে অনুতাপের ভাব মৃত হইয়াছে। এখন অনেকেই কীর্ত্তনে নৃত্য করিতে উচ্চৈঃস্বরে নাম করিতে, ভাবাবেশে মন্ত হইয়া ক্রন্সন করিতে অভ্যস্ত, উাহারা অমৃতাপের বৃশ্চিকদংশন জালা অমৃভব করিতে প্রস্তত নহেন। অমুতাপটা কি বস্তু, তাহা প্রাণে অনেকেই অমূভব করেন না। "অমুতাপ" বলিয়া একটা শব্দ সকলের মুধে মুধে ঘুরিতেছে মাত। আচার্য্য বলিলেন, "প্রেমময়ী अननी व्यानिया व्यामानिशरक cधाम-cकारण लहेया विश्वपाद्य ।" অমনি শত চকু হইতে জলধারা পতিত হইতে লাগিল। কিন্তু পাপীর পাপ বক্ষ বিদারণ করিবার জন্ত ; বিষয়াসজ্জিকে ছিল করিবার জন্ত, বিলাদের কোমল কুস্থম শ্যাস শামিত, ধর্মের তিনি "ভয়ানকের ভয়ানক" ও "মহভয়ং বজ্র-মুল্যতং" হইয়া ষ্মাসিয়াছেন, সেদিকে কাহারও দৃষ্টি নাই। মা বলিতে অনেকে রাজি, কিন্তু তিনি যে ন্যায়বান ও শাসনকর্তা সে কথা উঠিলে, কেহ বড় ভীত হন না। ইহা সমাজের পক্ষে অতি কুলক্ষণ।

বিষয়াসক্ত লোকে যেমন ভাবিয়া থাকে যে, পুত্ৰকলা-দিগকে উত্তমরূপে শালন পালন করিতেছি, স্ত্রীকে শিকা দিতেছি, স্থশররপে সংসার পালন করিতেছি, ইহাই ধর্ম। ইহা ছাড়া আর কিছু ধর্ম নাই। তেমন অন্তাপুবিহীন লোকেরা পাপের মধ্যে ডুবিয়া ও ঈশ্বরের প্রেমেব কাহিনী গান করিয়া নিজকে ধার্মিক মনে করিতেছে। পাপীর নিকট তিনি "বজু হস্ত'' এ সত্যে বিশ্বাস থাকিলে ষ্থন অমুতাপিত হওয়া কর্ত্তব্য তথন কেহ কীর্ত্তনে নৃত্য করিতে পাবে না, যথন পাপের বিষে জর্জারিত, তথন "মাতিয়ে দে আনন্দময়ী একে-বারে মেতে যাই" বলিয়া গান গাহিতে পারে না, হথন বিষয়াসন্তির ভারে হৃদয় অবসন্ন, তথন কেহ বলিতে পাবেন না বে, "ডুবিব অতল সলিলে প্রেমসিন্ধু নীরে আক্র।'' প্রমে-খর ক্লপা করুন, আমাদের মধ্যে অফুতাপের ভাব প্রবল হউক।

### পুরাতন কথা।

মোহ মমতা যে ধনজনেই আবদ্ধ থাকে, এমন নয়। কিয় দেখা যায় কোন রীতিনীতি বা সংস্থার বহুদিন হইতে কোন দেশে প্রচলিত থাকিলে, লোকে তাহার অসারতা বা অপ-কাবিতা অন্থভৰ কৰিয়াও তাহাৰ মমতা ত্যাগ কৰিতে পাৰে না। ধন মানের আসক্তি পবিত্যাগ করা বরং সহজ। কিন্ত ব্রুমূল সংস্থাব এবং অজ্ঞানতার মুম্তা পরিত্যাগ করা বিষম কষ্টকব। নতুবা যে ধর্ম সম্প্রদায় আপনাদিগকে পৃথিবীব অপরাপব ধর্মসম্প্রদায় হইতে শ্রেষ্ঠ মনে কবেন; বাহাবা ব্রহ্মজ্ঞান সম্বন্ধে আপনাদিগকে সর্বাপেকা উন্নত মনে করেন: থাহারা আপনাদিগকে ত্রহ্মবাদিগণের বংশধর বলিয়া গৌব-বান্নিত মনে করেন এবং বাস্তবিকই যাঁহাবা ব্রহ্মপ্রায়ণ ব্রহ্মবিদ-গণেরই বংশধব, তাঁহারাই আবার নিরাকার চৈত্তুময় ত্রন্ধের উপাসনায় কেন আপনাদিগকে অন্ধিকারী ব্লিয়া অভিহিত কবিতে সৃষ্টতিত হন না। ত্রদ্মজ্ঞানেব জন্ম যে জাতির পূর্ব্ব পুরুষগণ বিখ্যাত,—যে দেশের প্রাচীন গ্রন্থসমূহ ব্রহ্মবাদেব विभम वाधाम भूर्न ; डाहाटमत्र वः भवत्रगटनत शक्क उक्का-পাসনার অনধিকারী বলিয়া পরিচিত হইবার প্রবৃত্তি কি বান্তবিকই শোচনীয় হুর্গতির পরিচায়ক নহে।

মুদলমান প্ৰভৃতি একেশ্বরৰাদিগণ ত কখনও আপনানিগকে নিরাকার ঈশবোপাসনার অন্ধিকারী বলিয়া মনে করেন না। ভারতীয় আর্য্যবংশধরগণ কথায় কথায় যাহাদিগকে ধর্মজ্ঞান ও भीवन मध्यक्ष शैन विश्वा वाक करतन, छांशांत्रा छ कथन छ अभन भारत करत्रन ना दव छोहात्र। श्रेत्रतात्राधनात व्यनधिकाती। তবে এদেশের প্রাচীন সমাজের জনগণের এ প্রকার আপ-পরিচ্ছদধারী নরনারীর পূর্তে কশাঘাত করিবাব জন্ত যে জিকে কি অজ্ঞানতার প্রতি মমতা বলিয়াই অভিতিত

করা উচিত নহে ? পৌত্তলিক নামে অভিহিত হইতে বর্ত্তমান সম্যে কেহই বড় রাজি নহেন। কিন্তু পৌত্তলিকতার যে আবেশময় প্রলোভন সমুথে বিরাজ করিতেছে, তাহার হাত এড়াইতে পাবা সহজ্যাধ্য নহে। এজগুই দেখিতেছি যাঁহার। সর্বা বিষয়ে আপনাদিগকে শ্রেষ্ঠ মনে কবিতেছেন, তাঁহাবাও নিবাকাব ত্রন্ধেব উপাসনায় আপনাদিগকে অন্ধিকাবী বলিয়া অভিহিত কবিতে সঙ্কোচ কবিতেছেন না। ইহাদের মোহ-নিদ্রা দ্ব ক্বা সহজ্যাধ্য নহে। কারণ জাগিয়া যে নিদ্রিতেব ভাণ কুবে তাহাব পুম কে ভাঙ্গিতে পারে। তাঁহাবা হস্তাববণ দাবা প্রকাশিত স্থ্যালোককে অবরুদ্ধ করিতে ইচ্ছ। কবেন। क्क् मूनिया अगः दक व्यक्त कात्रमय मत्न कत्त्रन। हेहात्मत्र त्माह যাইয়াও যায় না। কিন্তু যাঁহারা ত্রন্ধোপাসনার আস্বাদন পাইয়া-ছেন, প্রাচীন সংস্কাবের বন্ধন থাহারা কাটাইয়াছেন; তাঁহা-নেব মধ্যেও যে অধিকারী ভেদে উপাদ্যেব ভেদেব যুক্তিব অভাদয ইইতেছে, ইহা কি বিশেষ পরিতাপ ও শোক্ষর নহেণ পিঞ্চবাবদ্ধ পাথী যেমন বহুদিন পৰে দাব উন্মুক্ত পাইয়াও পিঞ্জবেব মানায় ভাহাতেই আকৃষ্ট হয়, সেইকপ ইহারাও যেন পূকা সংখাবেব মায়া কাটাইতে পাবিতেছেন না। তাই গুবিষা ফিবিয়া সেই অধিকাব ও অন্ধিবাবের যুক্তি আসিয়া মাঝে মাঝে দেখা দিতেছে।

রক্ষোপাদনাব অধিকাব মানবায়াব পক্ষে অতি উপাদের এবং অতি উচ্চ অধিকাব। এবং মঙ্গলমর প্রভ্ব সর্বশ্রেষ্ঠ দান। বে বাক্তি আপনাকে এমন উচ্চ এবং উপাদের অধিকাবেব অন্প্র্ক মনে কবে এবং ঈশ্ববেব সর্ক্ষোংক্ট দানকে অগ্রাফ কবে দে বাস্ত্রবিক্ট দীনহীন ও ক্লপাপাত্র তাহাব গুর্ভাগের পরিদীমা নাই।

মানবায়াব কল্যাণ লাভ—তাহার পবিত্রাণলাভ যদি এই রক্ষোপাদনাব উপবেই নির্ভব কবে—তাহাব সর্ব্যাপীন উন্নতি বদি এই মহিমামর এবং কক্লামর পরমেশ্বেব উপাদনার প্রতিই নির্ভব কবে এবং ক্রন্ধ যদি এক ভিন্ন বিতীয় না থাকেন, তাহা হইলে মদিকাবী ভেদে উপাস্থের ভেদ কির্মণে সম্ভবে ? যাহাব আব বিতীয় নাই তাঁহাব প্রকাব ভেদ কির্মণ কথা। তার ও স্ক্রিভত ত এক্রণ দিলান্ত হয় না। তবে সিদ্ধান্তের অপব্যবহাব স্ক্রেই সম্ভবে।

এই জাতিতেদ-গ্লাবিত দেশেই একপ উপাশু-ভেদের কথা উঠিতে পারে। কারণ এদেশীয়গণ মানব সাধাবণকে বিভিন্ন শ্রেণিতে বিভক্ত মনে কবিয়াই নিশ্চিত্ত হন নাই। ইহাবা আপনাদিগকে এক আকার প্রকারেব দেখিয়াও একই শ্রেণীব মনে করিতে পারেন নাই। এজন্ত শ্রেণীবিভাগ একমাত্র মানবেই আবদ্ধ বাথাও সঙ্গত মনে করেন নাই। সেই শ্রেণীবিভাগ ঈশ্বরেও যাইয়া উপস্থিত হইয়াছে। ইহারা জ্ঞানগক্ষে ক্ষীত হইয়া মনে করিতে পারেন নাই, যে আমাবা একপ জ্ঞান সম্পন্ন হইয়া দে করিতে পারেন নাই, যে আমাবা একপ জ্ঞান সম্পন্ন হইয়া দে করেবে আরাধনা কবিতেছি, অপারেরণ নিক্নন্ত হইয়া কিকপে সেই ঈশ্বরের আরাধনা করিবে। তাহারা কোন মতেই এক্ষাপাসনার অধিকারী নহে। শ্রেণীবিভাগ যেমন আপনাদিগের মধ্যে

তেমনি ঈশবেও আরোপিত হইয়াছে। জ্ঞান গরিমার অতিবিক্ত অভিমানের ফল অজ্ঞানতা। দেই অজ্ঞানতা প্রস্তুত ব্যবহাব পরিণাম আরও শোচনীয়। যাহাদের জন্ম অন্যুক্ত প্রত্যাহাদের ব্যবহা ইইয়াছিল; এক ঈশবেব শ্রেণী বিভাগ হইয়াছিল; তাহাদের বংশধরেরাই যে সেই অধিকার হইতে বিচ্যুত ইইয়া আপনাদিগকে হীন কবিয়াছে, তাহা নয়—ব্যবহাকর্ত্তাণণের বংশধবেবাও তাঁহাদের অজ্ঞতা ও অপরিণামদশিভাব ফলম্বকপ ব্রহ্মোপাসনার শ্রেষ্ঠ অধিকাব হইতে বঞ্চিত হইয়া অজ্ঞানতার পর অজ্ঞানতার পর স্বানতায় নিময় হইতেছে। যে দেশে জাতি ভেদ নাই এবং সেই জাতি ভেদ উপাস্থে আবোপ কবিবার প্রবৃত্তি নাই, সে দেশে এ প্রকার ভেদেব কথা উপস্থিতই হয় না। কোন ব্যক্তিই আপনাকে ঈশ্বরাধনার অনুপ্রক্ত মনে করে না।

ব্রন্দোপাদনার অধিকাবী কে, দেই উপাদনার প্রকৃত আয়োজনই বা কি ? এ প্রশ্নের সিদ্ধান্ত কি হওয়া উচিত ? অল্পজ্ঞান মানব তুমি মনে কবিতেছ আপনার জ্ঞানবলেই আমি তাঁহাকে আয়ত্ত করিব। আনি জ্ঞানী, আমিই টুটাহার উপাসনার অধিকারী। কিন্তু ভাবিয়া দেথ মহান্ অনন্তন্ত্রকপের ধাবণা করিতে, তাহার সতা আয়ত্ত কবিতে তোষার জ্ঞান, তোমাব শক্তি কত সাম। গ্রা । সেই অনপ্ত জ্ঞানের নিকট তোমাব জ্ঞান, আর যাহাকে অজ্ঞান ভাবিভেছ তাহাব জ্ঞানেব প্রভেদ কত সামান্ত। সে প্রভেদের তাবতম্য এরূপ যে গুণনাব मत्त्राहे चारम ना। उद्यानत्त वन स यक्त व अक्षा अक्षा करी কি সম্ভব ? যান তাহা না হয় কিবলে মানব তাঁহাকে লাভ কবিবে? সে আয়োজন কিরুপ আয়োজন? তাহা কি ব্যাকুণতা ও দীনতার আয়োজন নয় ৫ যে স্কাপেক। षापनारक भीनशेन भरन करत् । त्य षापनारक षाकिकन ভাবিতে পারে, সেই কি উপাসনার অধিকত্ব উপযুক্ত নহে ৮ इसन मनगरक कि आधारल नांड करत, ना त्महे मकिनानीत প্রতি নিভর ক্রিয়াই তাঁহাকে প্রাপ্ত হয় ? এরপ আয়ুদমর্পণ এবং ব্যাকুলতা লাভেব পক্ষে কি শ্রেণা বিশেষের বিশেষ অধিকাৰ নাছে ? না; সকলের পক্ষেই ভাহা সভব। আন্ম কল্যাণকারী প্রত্যেক দীন্থাই অক্ষোপাদনাৰ অধিকারী। ক্রণাময় প্রমেশ্রই প্রত্যেক মান্বকে তাহার উপাস্নার অধিকারী কবিয়াছেন। কিন্তু মানবের ছঃসাহাসকতা আত প্রবল বলিয়াই কেই কেই দেই অবিকার কাহারও পঞ থকা করিতে প্রয়াসী হয়। আমাবার কাহারও পক্ষে প্রাশত তর করিতে আপনাকে সক্ষম মনে করে। এরপ হংসাহস বা আত বিজ্ঞতার গর্বের পরিণাম অতি ভীষণ।

মানব কোন এক বিষয়ে একবার বিক্বতি প্রাপ্ত ইইলে
নানাপ্রকারে তাহার প্রকাশ হইতে থাকে। তথন অপবেব
হিত করিবার প্রবৃত্তিতেও সে বিক্বতির পরিচয় পাওয়া যায়।
উপাসকের অবস্থাহসারে উপাস্তের ভেদ কয়না করিতে প্রবৃত্ত
হওয়াও এক হিসাবে মানব-হিতৈষণা। কাবণ যথন অতি
বিজ্ঞাণ মনে করিলেন, নিরাকার চৈত্ত স্বরূপ প্রমেশবের
উপাসনায় সাধারণ লোকের অধিকার নাই, তথন তাহারা যে

ধর্মহীন ও পূলা হীন হইয়া থাকিবে, এরূপ আশকা তাঁহাদের মনে সংক্ষেই উপত্তিত হইল। এরূপ হইলেত আরও সর্বানাশ স্তরাং তাহাদের জন্ম ত কোন ব্যবস্থা চাই। হৃদয়ের এরপ অবস্থাকে অবশ্রই হিতৈষণাই বলিতে হইবে। কিন্ত আশ্চর্যা এই প্রহিতৈষিতা-প্রেরিত হইয়া উাহারা যে আ্ম-অকলাাণ সাধন কবিলেন, সে জ্ঞান তাঁহাদের হইল ना। छाँशांत्रा क्रेश्वरत्रत मश्वरत्त य श्राकांत्र छान लां क्रिया-ছিলেন, সাধাবণের জ্ञ তাহার প্রিবর্ত্তে মন:কল্পিত ঈশ্বব বা তাহাব অবতাবের সৃষ্টি করিলেন এবং তাহাব উপাসনায় সকলকে সম্ভষ্ট থাকিবার ব্যবস্থা করিলেন। কিন্তু প্ৰহিতৈষিতাৰ জ্বত উাহাৰা যে স্ভ্য-গোপন এবং অস্ত্যাচরণ ক্বিলেন, এবং তদ্বাবা যে আত্ম অক্ল্যাণ সাধন ক্রিলেন, সেদিকে দৃষ্টি করিবার অবকাশ থাকিল না। শাস্তকারগণ বলিয়াছেন, যে ব্যক্তি নিজে একরূপ হইয়া অন্তর্মপে আপনাকে ব্যক্ত করে, সেই আয়াপহারী চৌর কতৃক কোন্ অপরাধ না ক্লত হয় ় নিজে এক প্রকারের হইয়া অন্ত প্রকাবের ব্যক্ত কবাতেই যদি কেহ চোর নামে অভিহিত হইবাব উপযুক্ত হয়, ভাহা হইলে কোন বস্তু সৃষ্দ্ৰে একৰূপ জানিয়া অন্তৰূপে তঃগাকে ব্যক্ত ক্ৰিলে, তাগ্ৰ কোন্সংজ্ঞা পাওয়া উচিত ? বিক্লত হিতেষণা এতই প্রবল যে, নিজে যে অসভাচিবণে প্রত্যবাষ্থ্যস্ত ইইলেন এবং তাহাব ফল যে, কন্ত নরনাবীকে ভোগ কবিতে হইবে সে বিষয়েও তাহাদের চিন্তা করিবাব অবকাশ হইল না। "আত্ম-ক্ষতি ক্বিয়াও পবেব উপকার ক বা উচিত," ইছা কি দেই প্রকাবেৰ হিত সাধন অথবা ইছা कानशैना कननी त्यमन महात्नव चालक हेना यक मत्न कविया বিষাক্ত কগ্ন অঙ্গবিশেষ ছেদনে অনিচ্ছা প্রকাশ করিয়া বিক্ষতি। তাই বহু শত বংসবেব জ্ঞানালোচনার ফলভাগী **২**টয়াও এবং বর্তুমান সময়েব জ্ঞান বিজ্ঞানে উল্লুচ্ইয়াও সেই প্রাচীন অপকার্য্যের প্রিণাম স্বরূপ ব্রহ্মোপাদনা রূপ উন্নত অনিকাৰ এবং পরিত্তাণেৰ একমাত্র উপায় হইতে এদেশের জনগণ বঞ্চিত রহিয়াছে। আবও যে কতকাল একপ হুৰ্গতি ভোগ করিতে বাকী আছে, তাহাই বা কে

সবল পিপাস্থব পক্ষে ব্রহ্মোপাসনা সক্ষদাই সহজ ও আবামপ্রদান যাহার। আয়-কল্যাণ-আকাজ্ঞী তাহারা সর্ক্ষদাই
আপন মঙ্গলদাতা ভ্রুদাতা বিধাতা রূপে ঈশ্বকে অহুভব
করিতে এবং তাঁহার প্রসন্তা লাভ কবিতে সমর্থ হয়।
সবল পিপাস্থর পিপাসা কোন সময়েই অপূর্ণ থাকে না।
তাহাব দুপ্তান্ত সর্ক্ষদেশে সর্ক্ষ কালেই পাওয়া গিয়াছে এবং
পাওয়া যাইতেছে। এ প্রকার লোকে কথনও অধিকারী বা
অনধিকারীর প্রসঙ্গ উপস্থিত করিয়া আয়হারা হয় না এবং
লোককেও বিপথগানী কবিতে প্রস্থানী হয় না। তবে বাহারা
ব্রহ্মোপাসনাকে একটা বিষম প্রহেলিকা বা রহ্স্থময় ব্যাপার
বিলয়া প্রতিপন্ধ করিতে চাহেন এবং ইহাও একটা ব্রুক্রি

যাঁহারা আকাশে ভ্রমণ বা তাদৃশ প্রবোভন জনক কার্য্য विनिशा वार्था। करतन, खधु छाँहात्रांहे हेहारक नकरनत नांधा করিয়া ভৃপ্তি পায়, তাঁহাকে দেইভাবেই ভৃপ্ত থাকিতে উৎসাহিত করিয়া থাকেন। নতুবা অয়জল গ্রহণ যেমন সকলের পক্ষে স্বাভাবিক ও প্রয়েজনীয়, ঈশ্বরোপাদনাও তেমনি সর্বজনের পক্ষেই স্বাভাবিক ও প্রয়োজনীয়। সকলেই हेहात अधिकाती। अधिकाती वा अनिधिकाती मृत वस्त मस्टक्त নহে, যে কিছু প্রভেদ তাহা অবস্থা সম্বন্ধে। অবস্থাগত প্রভেদ याश (मथा याहेटलह लाहा (कहहे ष्यश्वीकांत करत्ना। এक जन वहिन इहेट माधन एकन कत्रिटा एन, जिनि (यक्त निहा ও অমুরাগের সহিত উপাসনা কবিবেন বা কবিতে সমর্থ হইবেন: ধর্মপাধনে নবপ্রবিষ্টের পক্ষে সেরূপ নিষ্ঠা বা অন্ত-রাগের সহিত সাধন ভলনে প্রবৃত্ত হইবাব সম্ভাবনা কোথায়। অবস্থার পার্থক্য সাধকে সাধকে ভক্তি ও অমুরাগ প্রভৃতিতে চিরদিনই আছে এবং থাকিবে। কিন্তু যে যেমন অবস্থাবই इडेन ना दकन प्रकल्पेट ८१२ এकरे छेलात्मात्र छेलाननात অধিকাবী। অধিকাবেব ভিন্নতা নহে, কিন্তু অবস্থাব ভিন্নতা। উপাস্তেব ভিন্নতা নহে, কিন্তু অনুবাগ, ভক্তি প্রভৃতি বিষয়েই ভিনতা।

#### চিকিৎদালয়।

( সাধারণ ত্রাহ্মসমাজ মন্দিবে শ্রীযুক্ত বাবু নবদীপচক্র দাস কর্তৃক প্রদত্ত উপদেশেব সাবাংশ )

একবার একজন উত্তব পশ্চিমাঞ্চলের উদাসীন সাধু বেহাব অংদেশের কোনও নগবে বাঙ্গালী বাবুদের অনুসন্ধান কবিলা জিজ্ঞাসা কবিলেন যে,"এথানে কোনও ব্ৰাহ্মসমাজ আছে কিনা ?" ব্রাহ্মসমাজ আছে এবং কোথায় আছে, কখন ব্রাহ্মসমাজেব कार्या इम्र हेजानि कथा वात्वा छाँशांक वनिम्न निलन। তিনি একদিন ব্ৰাহ্মসমাজে যাইয়া উপস্থিত হইলেন। উপস্থিত সভাদের মধ্যে কেহ তাঁহাব সঙ্গে আলাপে জানিতে পাবি-লেন, তিনি বিশেষ অফুস্কান করিয়া এ সময় এখানে আসিয়াছেন। সমাজের উপাসনাদি ২ইবা গেলে তাঁহাকে কিছু উপদেশ দিতে বলা হয়, তিনি সেই সময় কি কি কথা বলিয়াছিলেন, সব কথা স্মরণ নাই। স্থল সাবাংশ এই "ধ্যানুমাজ मभुरु विपि विकि शालय मत्न कता यात्र, उत्व वर्छमान ममत्रा ব্রাহ্মসমাজ শ্রেষ্ঠ তিকিৎসালয়। এথানে সকল প্রকাবের রোগীরা আদিয়া চিকিৎসা লাভ করিয়া সুস্থতা প্রাপ্ত হইতে-ছেন। আমি এবং আপনার। ঈশ্বর কুপায় এই স্কৃচিকিৎসাল্যে প্রবেশ ক্রিয়াছি, এবং স্থস্থতা লাভ ক্রিয়া ধন্ত ইইভেছি, এ চিকিৎসালয় যেন কেছই ত্যাগ না করি।"

ধর্ম সমাজকে চিকিৎসালয়ের সঙ্গে উপমা দেওয়া স্থসভত বটে। চিকিৎসালয়ে যাইয়া যেমন শারীরিক ব্যাধিগ্রস্ত লোকবা স্বাস্থ্য লাভ করে, এথানেও আধ্যাত্মিক পীড়াগ্রস্ত লোক সকল উপস্থিত হইরা আরোগ্য লাভ করে। ব্রাহ্মসমান্সকে কেন তিনি এ সময়ের শ্রেষ্ঠ চিকিৎসালয় বলিলেন ? শরীর-চিকিৎসা শাস্ত্র অসম্পূর্ণ সত্ত্বও শারীরতত্ত্বক্ত পণ্ডিতের মধ্যে অনেকে এই চিকিৎসাকে মিশ্র ঔষধের হস্ত হইতে রক্ষা করিবার জন্ত সামান্ত অমিশ্র ঔষধের বাবহার করিতেছেন। এমন কি অনেকে একবারে ঔষধের সাহায্য না লইরা স্বভাবে রাথিয়া রোগীকে স্বস্থ করিবার জন্ত পরামর্শ দিতেছেন এবং দেথিতে পাওয়া যায়, জ্ঞানী অজ্ঞানী সকলেরই গতি এদিকে। রোগীকে স্বভাবে রাথাই উত্তম চিকিৎসা। মিশ্র ঔষধকারীদের ভ্রমবশতঃ কত লোক মানবলীলা সংবরণ করিতেছে, তাহা কে গণনা করিবে ? এই মিশ্রঔষধের হন্ত হইতে রক্ষা করাও এ সময়ের চিকিৎসকদিগের এক বিশেষ চেষ্টা।

ধর্ম সমাজেব মিশ্রকারীরাও অনেক সময় লোকদিগকে রোগমুক্ত না করিয়া এক রোগের হস্ত হইতে অন্ত রোগের হস্তে লইয়া যান। ব্রাহ্মসমাজ এই মিশ্রকারীদের হস্ত হইতে বোগীদিগকে বক্ষা কবিতেছেন।

বলিতে কি, প্রচলিত ধর্মসমাজসকলের ছশ্চিকিৎসিত লোক मकन विथात आमिया आरवांगा नांच कविराज्ञ हान । हिन्तु व ছन्চिकि एक, मृत्रनभारत इन्हिकि एक, शृष्टीरतत इन्हिकि एक মানবকে ত্রাহ্মসমাজ বোগমুক্ত করিতেছেন। কেন ইহাঁব ব্যবস্থা পত্র এখানে তিনি স্বয়ং দান কবেন, ছোট বড় স্কল প্রকাব রোগীকেই তিনি হয়ং দেখেন এবং বোগেব উপযুক্ত ঔষধ ব্যবস্থা ব বেন। ঔষধ বাবস্থা কবেন ভধু তাহা নয়, আপনি স্বয়ং দেৱন কৰান, এথানে কোন মিশ্রকারীর হাত নাই। এথানে কোন মহাজন চিকিৎসক কি পাবিশদগণ মিশ্রকারী নন, এ চিকিংদাণ্যে পূর্ণব্রহ্ম স্বহস্তে দমুদন্ন কার্য্য সম্পন্ন করি-তেছেন, স্বতবাং ব্যবস্থা পত্রে ভুল কি মিশ্রণের ভুলে, কাহাবও थागनारम्य ভय नाहे। **एथारन याहात्रा उपराही, याहात्रा** আচার্য্য, বাহাব। প্রচাবক, ঠাহাদের কেবল এই কাষ, রোগীকে সব্বদা সেই প্রম চিকিংসকের সম্মুখে উপস্থিত হইতে প্রাম্শ मान कवा। छाँशास्त्र छेशासन, छाँशास्त्र आहत्र, छाँशास्त्र কাষ কর্মে ইহাই প্রকাশ পাইতেচে যে, পূর্ণব্রহ্ম রোগীর প্রম চিকিৎসক তাহার নিকট উপস্থিতনা হইলে রোগ্যক্ত হইবে না। সাক্ষাৎভাবে তাঁহাব নিকট আপনার রোগের বিষয় বল এবং তিনি স্বহস্তে যে ব্যবস্থা পত্র দেন তাহা গ্রহণ কর. তাঁহার হত্তে ঔষধ দেবনকর। তাহা হইলেই রোগ মুক্ত হইরা প্রস্ত হইতে পারিবে।

বাস্তবিক সেই উপদেষ্টাগণই শ্রেষ্ঠ, বাঁহারা রোগীকে
নিজ হল্ডে না রাথিয়া সর্কাণ ঈশ্বর সন্নিধানে উপস্থিত করেন।
সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের এই বিশেষ কার্য্য। ব্রাহ্মসমাজের এই
মহাসত্য সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে নৃত্ন উপস্থিত হয় নাই,
কিন্তু পূর্বের ইহা কার্য্যিতঃ তেমন ভাবে বিকাশ প্রাপ্ত
হয় নাই। ঈশ্বর তাঁহার নব ব্যবস্থাকে এবার বিশেষ
রূপে কার্য্যে পরিণত করিয়াছেন। আহা এমন ব্যধস্থা
পাইয়াও মাহ্য পূন্রায় মিশ্রকারীদের হস্তে জীবন সমর্পণ

করিয়া মৃত্যুমুথে পতিত হইতেছে! ঈশ্বর কর্তৃক চিকিৎসিত 🕫 হওরা, মানবের ইহাপেক্ষা সৌভাগ্যের বিষয় আর কি আছে ? ইহা অপেকা রোগীর নিশ্চিম্ত হইবার আর কি উপায় আছে ? এবার পূর্ণব্রহ্ম স্বয়ং রোগীদের ভার লইয়াছেন, "ও ভাই! শুন সমাচাব,পাপীদেব ভার লয়েছেন আপনি দ্য়াময়।" এমন স্বর্গের সমাচার পৃথিবীতে আর ঘোষিত হয় নাই। শারীরিক বাাধিগ্রন্তদিগকে এখন যদিও হাসপাতালে রাথিয়া চিকিৎসা করা হয়, কিন্তু কোন কোন পীড়া এমন সংক্রামক যে, তাহা-मिशक ज्यञ्चलित मन्द्र ताथा हम ना, পাছে তাহাবা मেই ব্যাধিতে व्यक्तिष्ठ इत्र । धर्मम्याष्ट्र ७ (कान ७ कान ७ करन ८ एथा यात्र, তাহারাও ঐরপ ভয় প্রাপ্ত হন। "অমুক হীন, উহার সঙ্গে পাকিলে হীন হইয়া যাইব।" কিন্তু ব্ৰাহ্মসমাজ এই কথা বলি-তেছেন," এথানে পাপ সংক্রামিত হয় না, এথানে সাধুতাই সংক্রামিত হয়। তুমি যে পাপেই পাপী হওনা কেন, এথানে সাধু সঙ্গে পূর্ণত্রন্ধের চিকিৎসাধীন হও, স্কুত্ত হইয়া যাইতে পারিবে।" যে সমাজে পাপীব সংস্পর্শে সাধু মলিন হইয়া যায়, তাহাকে আর ধর্মসমাজ কেমন কবিয়া বলিব ? যেথানে সাধুব সংস্পাশে পাপী হুত্তা লাভ কবে সেই ত প্রকৃত ধর্ম সমাজ। এথানে সকল প্রকার রোগী আসিয়াই স্বস্থতা লাভ করিতে পারে। পাপিয়দী নাবী হরিদাদের সাধুতা নষ্ট কবিতে চাহিয়া ছিল; किन्नु कि स्रेग्ना ছिल छाश कि कान ना? त्ररे পा पियमी সাধুসভাব। হইয়া গেল। আহ্মসমাজে কি এমন সকল লোক आहेरम नार, याराता अमाधु कामनाम आमिया माधु रहेमा গিয়াছে গ পীডিত হট্যা আসিয়া সুস্থ দেহ লাভ কৰিয়াছে গ ঈশ্ববেব বিচিত্র লীলা আহ্মসমাজে সকলে দর্শন করুন। ঈশ্বব এবার স্বয়ং চিকিৎসক হইবা এই ব্রাহ্মসমান্ত চিকিৎসালয় খুলিয়াছেন। এস বাাধিগ্রস্ত ভাই ভগ্নি! আরোগ্য লাভ করিয়া হুত্ত, হুখী ও হুন্দর হও। এ গৃহ ছাড়িয়া আৰ কেহ রোগ যন্ত্রণা ভোগ কবিও না, ঈশ্বব আমাদিগকে আশ-र्वान कक्न।

## প্রীক্ষাই জীবন লাভের উপায়।

(১০ই জুন রবিবার সাধারণ ত্রাক্ষসমাজ মন্দিরে শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত মহাশয়ের প্রাধৃত উপদেশ )

সর্বাতো যীশুর অভতম শিষ্য জেম্সের পত্রেব কিরদংশ উক্ত করিতেছি।

- >। "ভ্রাতৃগণ, যথন তোমরা বিবিধ প্রীক্ষা প্রলোভনে প্রতিত হও, তথন আনন্দ কর। জানিও বিশাসের প্রীক্ষাতে ধৈর্য্য শিক্ষা হয়।
- ২। কিন্তু ধৈর্য্যের কার্য্য যেন সম্পূর্ণ হয়, ভাহা হইলে ভোমরা পূর্ণ ও খাটি হইবে, কিছুরই অভাব থাকিবে না।
- ৩। তোমাদের মধ্যে যদি কাহারও জ্ঞানের অভাব হয়, ঈশরের নিকট জ্ঞান ভিক্ষা কর। তিনি সকল ময়্ব্যকেই মুক্তহত্তে দান করেন, প্রার্থনা করিলে তিরস্থার করেন না। যে চাহিবে, সে পাইবে।

- ৪।, যিনি চাহিবেন, তিনি যেন সম্পূর্ণ বিশাসের সহিত চান, কিছুমাত্র সংশয় না করেন। বে ব্যক্তি সম্পেহ করে, সে সমুত্র তরঙ্গের ভার তাড়িত ও ইতন্ততঃ বিকিপ্ত হয়। সে ব্যক্তি যেন মনে না করে যে, ঈশরের নিকট হইতে কিছু পাইবে।
  - ে। বিধাযুক্ত লোক সকল কার্য্যেই অন্থির ও অনিশ্চিত।
- ৬। নিমপদস্থ লোক উন্নত হইলে আনন্দ কর্মক, কিন্তু ধনী লোক অবনত হইয়া যেন আনন্দ করে, কারণ ঘাষের ফুলের ক্রায় তাহার গৌরব উদ্বিধা যাইবে।
- ৭। সূর্য্য প্রথর তাপে উদিত হইতে না হইতে ঘাষ শুকাইয়া যায় এবং তাহার ফুল ঝরিয়া পড়ে, ভাহার লাবণ্য অদুখ হয়। ধনী লোকের গতি এইরূপ।
- ৮। যে ব্যক্তি প্রশোভনে স্থির হইয়া দণ্ডায়মান হন, তিনি ধন্ত। কারণ পরীক্ষান্তে তিনি ঈশবের হত্তে জীবনের মুকুট লাভ করিবেন। যাহারা প্রভু পর্মেশরকে ভাল বাসে, তাহাদিগকে এই পুরস্কার দানে তিনি প্রক্ষিত।
- ম। প্রলোভনের সময় কোন ব্যক্তি যেন না বলে যে,
  ঈশর তাহাকে প্রলোভনে ফেলিভেছেন, কারণ ঈশর স্বয়ং
  পাপদারা মারুই হন না এবং তিনি কাহাকেও পাপে আকর্ষণ
  করেন না। প্রভাকে ব্যক্তি আপনার কুবাসনাদারা ধর্মপথ
  হইতে ভাই হইয়া প্রলোভনে পড়ে ও তাহাদারা আরুই হইয়া
  থাকে।
- ১০। কুবাসনা হইতে পাপের উৎপত্তি, পাপ অফুটিত হইলে ভাহার ফল মৃত্যু।
- ১>। ভ্রাভ্গণ, ভ্রান্ত হইও না। জানিও প্রত্যৈক কল্যাণ-কর ও পবিত্র দান স্বর্গ ইইতে—স্বর্গাধিপতি পরমেশরের হন্ত হইতে আসিতেছে, বাঁহার কোন পরিবর্ত্তন নাই এবং যিনি স্ক্রিলাল নিবিক্সা।
- ১২। তিনি আপনার ইচ্ছায় সত্যভাবে আমাদিগকে উৎপন্ন করিয়াছেন। আমরা সকল জীবের মুথপাত্র হইব, এই তাঁহার উদ্দেশ্য।
- ১০। এই জন্ম প্রায়ে ভাতৃগণ, প্রত্যেকে সহুপদেশ শ্রবণে তৎপর হও, কথা কম বল এবং ক্রোধ সংযম কর। মাফুষের ক্রোধে ঐখরিক সাধুভাব উৎপার হয় না।
- ১৪। অতএব সকল মলিনতা ও শঠতা পরিহার কর এবং নত্রভাবে সেই উপদেশ শ্রবণ কর, যাহাতে আত্মা পরিত্রাণ লাভে সমর্থ হইবে।
- ১৫। তোমবা উপদেশ **অফুসারে কার্য্য** কর, তাহা কেবল শ্রবণ করিয়া আত্মবঞ্চনা করিও না।
- ১৬। যে ব্যক্তি উপদেশ শুনিরা তাহার মত কার্য্য না করে, সে আপনার মুথ দর্পণে দর্শন করে। সে আপনাকে দেখে, চলিরা যায় এবং কিপ্রকার মন্ত্র্য, তথনি ভূলিয়া যায়।
- ১৭। যে ব্যক্তি স্বাধীনতার প্রকৃত নিয়ম অবগত হয়, তদহরপ আচরণ করে, সে ব্যক্তি ভ্রান্ত শ্রোতা নয়, কিন্ত কার্যাহঠায়ী, সেই ঈশ্বরের নিকট পুরস্কার লাভ করিবে।
  - ১৮। তোমাদের মধ্যে কোন ভাতা যদি আপনাকে

ধাৰ্শ্মিক মনে করে ওবং রস্নাকে শাসন না করে, তবে সে ভাতা আয়ু প্রবঞ্চিত এবং তাহার ধর্ম মিধ্যা।

১৯। পবিত্র ধর্ম লাভ করিতে হইলে পরম্পিতা পর-মেখরের দৃষ্টিতে নির্মাণ হওয়া চাই, জনাথ ও বিধ্বাদিগের ছঃধের সংবাদ লইলে এবং কলছের সংসারে আপনাকে নিস্কলছ রাখিতে পারিলে এই ধর্মের অধিকারী হওয়া যায়।"

এই নিদায়ণ এীত্মে কতস্থান হইতে প্র্যোর বিক্রমে কত र्र्श क्वाभग्न मक्व ७क ষ্ঠিষোগ উপস্থিত হইতেছে। कतिया পथ नकन धृतिमम् कतिराउद्य , अगठत ख्नाठत कौरिमिशत्क জীবমৃত করিয়া ফেলিতেছে, যে সকল স্থান পর্বতাকীর্ণ বালুকারণ্যে বেষ্টিভ, সেখানে বাস করা অসাধ্য হইয়া উঠিয়াছে, কত স্থানের জলকট্ট অবর্ণনীয়। কিন্তু সূর্য্য কাহারও কথার কর্ণপাত না করিয়া আরও তাপ দিবার অক্ত প্রস্তত। সুর্যোর এরণ করিবার উদ্দেশ্য কি ? ইহাতে তাহার নিজের কোন चार्थ नाहे, পृथिवीत हिटउत कन्नहे পृथिवीटक ভाতाहेग्रा ভाहात রস সকল শোষণ করিয়া লইতেছে। লবণাক্ত সলিল, পদ্ধিল জলাশয় সকল হইতে জল তুলিয়া তাহা নির্মাণ ও সুস্বাহ করিয়া পৃথিবীময় ছড়াইবে বেখানে বেমন অভাব সেখানে সেই পরিমাণ জল যোগাইবে; সেই জলে হ্রদ, সরোবর তড়াগ প্রভৃতি পূর্ণ হইবে এবং তাহারারা ভূমি দকল আর্দ্র হইয়া জীবের সম্বৎসরের আহারোপযোগী বিবিধ ফল সম্ম উৎপন্ন করিবে। পৃথিবী তাই নীরবে সকলি সহু করিতেছে এবং আপনার প্রকাশ্র ও লুকায়িত ভাণ্ডার হইতে রাজকীয় করম্বন্দ রস প্রদান করিতেছে। স্থ্য পৃথিবীর বায়ু লইয়া তাগ বিশুদ্ধতর করিয়া পৃথিবীকে প্রত্যার্পণ করিতেছে। এইকণে ৰাহ্য জগৎ ৰক্ষা পাইতেছে।

धर्षक्रगटङ कि अङ्ख्लि नाहे कथन छ कीवानत्र वम छकान--मक्लि मत्रम, मक्लि भधुत, मक्लि अञ्जूक्ल। आवात अध्य রাজ্যে নিদাঘ উপস্থিত হয়—কেবলি উত্তাপ, কেবলি শুষ্ঠা, কেবলি কঠোর প্রতিকৃল অবস্থা। সমাজগত ভাবে, ব্যক্তিগত ভাবে এ ঘটনা উপস্থিত হইয়া থাকে। যে ধর্মমণ্ডলী ভক্তিব স্রোতে ভাগিয়া ঘাইতেছিল তাহাই ত্রন্ধ ডাঙ্গার মত কঠিন इहेब्रा मीड़ाहेल। এक र्कांठी कल रमशान याक, कर्ठात তাপে তাহা শত সহস্র পরমাণুতে বিভক্ত হয়, আরে জমে না, ক্রমাগত ছাড়াছাড়ি। বাক্তিগত জীবনে এই অগ্নি প্রীকা। আরও ভয়ন্কর। স্বর্ণের গহনা রীতিমত বাঁহারা দেখিয়াছেন জানেন, স্বৰ্ণকে নিখাদ খাঁটি করিবার জন্ত তাহাকে কত কেশ সহ্য করিতে হয়। এক পিও মাটি হইতে মৃত্তিকার ঘটও ঐকপ হয়। এক ঘটা দ্র্ম হইতে মৃত করিতে গেলেও তাহাকে ঐরপ তাতনা যথেষ্ট সহা করিতে হয়। কিন্তু এইরপ প্রাণালী দারা সেই সকল বস্তু মহতুদেশু সাধন করিয়া থাকে। ধর্ম-জীবনের নিদাঘকালে তাহার উপর কত হঃথ দারিদ্রা বিপদের পরীকা হয়। এত কট, এত অপমান, এত লাহ্না বল্লা। किन्द्र शिनि भंदीक्रक, चात्र अद्भारतन। देशत्र (भव कन এह इत्र (यू, कीदन इटें एक मिनन ध्वतृष्ठि मकन विमात्र नहेत्रा चर्शत ভাবে তাহা পূর্ণ করে। এব, প্রহলাদ, নানক, কবীর, বুদ্ধ,

জিষা, মৃদা, মহম্মদ সকলের জীবনে দেখ এই পরীক্ষা। বর্ত্তমান-কালের সাধুগণের জীবনেও এই পরীক্ষা দৃষ্ট হয়। এক একটা সাধুজীবন এই পরীক্ষা হারা স্বর্গীয়ভাবে গঠিত হইয়াছে।

গ্রীয়ে পৃথিবী শিক্ষা দিতেছেন— ধৈর্য্য ও আত্মসমর্পণ। সে স্থ্যের হাতে, সে আর কিছুই জানে না— স্থ্য যেরূপে রাথে, সেইরূপে থাকে। তাহার বর্ষায় অগাধ জলরাশি, হাস্তময় শস্তক্ষেত্র, তাহার বসস্তের অতুল শোভাসৌন্দর্য্য এই তাপ হইতে। ধর্মাগধক যদি ধৈর্যাশীল হইয়া ঈশ্বরের হস্তে আত্মসমর্পণ করিতে পারেন, আত্মার অক্ষয় অলজলের ভাণ্ডার এবং আত্মার চিববসস্ত শোভা তাহার লাভ হইবে। পরীক্ষার আগুনে গলিয়া নিদাঘ হইয়া যে আত্মা গঠিত হয়, তাহাই ভগবানের চবণে অলজাররূপ ধারণের উপযুক্ত হয়। পদদ্বিত হইয়া আগুনে পুড়িয়া পবিত্র অক্র গঙ্গাজলে যে ঘট পূর্ণ হয়, তাহাতেই দেবতার আবির্ভাব হইয়া থাকে। অতএব বিশ্বাসিগণ পরীক্ষাতে নিরাশ ও নিবানন্দ না হইয়া আনন্দ করুন, কেননা তাহাতেই তাহার পরিত্রাণের উপায় হইবে।

### ব্যাখ্যান-রত্নাবলী।

সাধনাশ্রম, ২৬এ ফেব্রুয়ারী।

য়ীল্দী ধর্মগ্রন্থে নিম্নলিথিত বচনগুলি পাওয়া যায় :—

"আমি মেষ, প্রভু প্রমেশ্ব আমার মেষ্পালক, আমার কিছুই অভাব ইইবেনা। তিনি আমাকে স্থ্যামল, ইরিষ্ণ ক্ষেত্রে শয়ন কবাণ, তিনি আমাকে প্রশাস্ত সলিলপুর্ণ জলাশরের নিকট লইয়া যান; তিনি আমার কয় আয়াকে রোগ মৃক্ত করিয়া থাকেন; তিনি তাঁহার নামেরই গুণে আমাকে মাক্তর পথে লইয়া যান; এমন কি আমাকে যদি মৃত্যুর অন্ধনার পূর্ণ উপভ্যুকা দিয়াও যাইতে হয়, তথাপি আমি ভয় করিনা, কাবণ ভূমি আমার সঙ্গেই আছে। ভোমার শাসনদণ্ড ও চালন ষ্টা দেখিলেও আমার স্থাই হয়, ভূমি আমার বিপক্ষগণের সমক্ষে আমার জন্ম স্থাদ্য সকল প্রস্তুত্ত করিয়াছ; ভূমি আমার মন্তককে স্থাদিত তৈলে অভিষেক করিয়াছ; আমার জীবন পাত্রে স্থাধরিতেছেনা, ভোমার ক্লপাও মঙ্গলভাব যে চিবজীবন আমার সঙ্গে থাকিবে ভাহাতে আর সন্দেহ নাই। আমি চিরদিন প্রভু প্রমেশরের গৃহেই থাকিব।"

নেষ ও মেষপালকের সঙ্গে যে সম্বন্ধ, তাহা যদি প্রমেশ্বর সঙ্গে আমদের হয়, তবে আমবা বলিতে পারি যেতিনি আমাদের মেষপালক। কিন্তু আমরা ঐ গ্রীহুদি ভক্তের ক্সায় এমন তেজের সহিত এ কথা বলিতে পারিবনা, কারণ ঈশ্বরের সঙ্গে আমাদের সে সম্বন্ধ হয় নাই।

মেষপালকেব সঙ্গে মেযের কি ক্সনর সম্বন্ধ ! সে তাহার কঠেব রব শুনিয়া আনন্দিত হয়। প্রভুর আদেশ শুনিবামাত্র ছুটিয়া যায়। মেষপালক তাহাকে শান্তি দিতেছে, আঘাত করিতেছে,তথাপি সে তাহাব উপর সম্পূর্ণ নির্ভর করিয়া চলিতেছে, তাহার আদেশ পালন করিতেছে। কোথায় চলিতে হইবে, বোথায় জলপান করিতে হইবে, কোথায় বিশ্রাস করিতে হইবে, তাহা মেষপালক জানে। তিনি তাহাকে কুধার সময় হরিদ্বর্ণ শশুসূর্ণ ক্ষেত্রে লইয়া যান, তিনি তাহাকে পিপাসার সময় স্থণীতল প্রস্রবণের নিকট লইয়া যান, তিনি তাহাকে বিপ্রামের জয় স্থণীতল বৃক্ষের ছায়ার নিকট লইয়া যান। তাহার শরীরে ক্ষত হইলে তিনি সেই ক্ষত স্থানে ঔষধ লেপন করিয়া দেন। এই সকলের জন্ম মেষকে ভাবিতে হয় না। সে কেবল প্রভুর ইলিতে চলিয়া থাকে।

আমরা পরীক্ষা করিয়া দেখি, প্রভূ পরমেশ্বরের ইলিভ অপেকাকরি কিনা এবং সেই অহসারে চলি কিনা।

তৎপরে তাহার শাসনদণ্ড, শান্তিতে আনন্দ। বিধাতার শান্তি যথন পাই তথন কি আনন্দ হয় ? "বেশ হইয়াছে" একথা কি বলি ? শান্তি যদি দেন তবেত প্রেম
আছে। মেষপালকের শাসন দণ্ড দেখিয়া, মেষ আনন্দে
ছোটে। কেন না তাহাতে সে প্রেম দেখিতে পায়। আমরা
কি প্রভু পরমেশ্বের প্রেম দেখিয়া আনন্দিত হই ?

তাহার পর কোথায় বসিব প্রভুজানেন, কোথায় শীতল হায়াযুক্ত গাছ আছে প্রভু তাহা জানেন, কোথায় স্থশীতল বাডী আছে প্রভুজানেন; এসকল বিষয়ের জন্ম কি তাঁহাব উপর নির্ভর আছে ?

যতই অন্তুসন্ধান করি ততই দেখি, মেষ ও মেষপালকেব সঙ্গে যে সম্বন্ধ পরমেশ্বরের সঙ্গে আমাদের সে সম্বন্ধ নাই। সেই জন্ম বলিতে পাবি না "তোমার রুপা ও মঙ্গলভাব যে চির-জীবনে আমার সঙ্গে থাকিবে তাহাতে আর সন্দেহ নাই, আমি চিবদিন প্রভু প্রমেশ্বরের গৃহে থাকিব।" প্রভু রুপা করুন আমব। যেন তাহার প্রতি নির্ভর করিয়া একথা বলিতে পারি।

## ব্রাহ্মসমাজ।

উত্তরবঙ্গ-প্রচারযাত্রীদলের কার্য্যবিবরণ—বাবু মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়, বাবু হরিমোহন ঘোষাল এবং বাবু কুঞ্জলাল ঘোষ প্রচারার্থে উত্তরবঙ্গে: গমন ক্বিয়াছেন। ভাঁহাদের প্রচার বিবরণ এই;—

১৯এ মে, প্রাত:কালে, বাবু মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় এবং বাবু হরিমোহন ঘোষাল রামপুরহাট উপস্থিত হইয়া, বাবু মহেশচন্দ্র ঘোষের গৃহে পারিবারিক উপাসনা করেন। রাজিতে বামপুরহাট ত্রাহ্মসমাজে উপাসনা এবং "ত্রাহ্মধর্ম প্রচার কেকরিবে"; এই সম্বন্ধে উপদেশ প্রদন্ত হয়। মহেন্দ্র বাবু উভয় স্থলেই উপাসনাদি করেন।

২০এ মে, প্রাতে উষাকীর্ত্তন করিয়া যাত্রীদল নলহ।টী গমন করেন। পূর্বাক্তে বাবু নীলকান্ত সিদ্ধান্তের গৃহে পারিবারিক উপাসনা হয় এবং "গ্রাহ্মপরিবার ঈশবের পবিত্র আশ্রম" বিষয়ে উপদেশ প্রদন্ত হয়। মহেক্র বাবু উপাসনাদি করেন। সন্ধ্যার সময় নলহাটী নৈশবিদ্যালয়ের পুরস্কার বিতরণ সভায় মহেক্র বাবু সভাপতির আসন গ্রহণ করেন। স্থানীয় সকল ভদ্রবাক সভায় উপস্থিত হন। ৩০।৩৫ জন ছাত্রকে নানা-

বিধ পুত্তক এবং পেনদীল, হ্যাণ্ডেল, দোয়াত প্রভৃতি পুরস্কার দেওয়া হয়। হরিমোহন বাবু এবং সন্তাপতি মহাশয় ছাত্র-দিগকে উপদেশ প্রদান করেন। তৎপরে ছাত্রদিগকে পরি-ভোষ পূর্কক আম এবং মিষ্টায় ভোজন করান হয়। রাত্রিতে উপাসনা হয় এবং "ব্রাহ্ম ধর্ম কি ?" এই সম্বন্ধে উপদেশ প্রদত্ত হয়। হবিমোহন বাবু উপাসনাদি করেন।

২১এ মে উষাকীর্ত্তন করিয়া দিবদের কার্য আরস্ক হয়।
মানাস্তে নীলকাস্ত বাব্র গৃহে পারিবারিক উপাসনা এবং
"ব্রাক্ষদিগের গুরুতর দায়িত্ব" সম্বন্ধে উপদেশ প্রদত্ত হয়।
বাব্ কুঞ্জলাল ঘোষ উপাসনা করেন। সন্ধ্যার সময় নলহাটী
বাজারে কীর্ত্তন হয় এবং বাব্ হরিমোহন ঘোষাল একটী
সবল হৃদয়গ্রাহী বক্তা করিয়া ব্রাক্ষ ধর্ম কি ? সাধারণকে
ব্যাইয়া দেন। রাত্রিতে নীলকাস্ত বাব্র গৃহে উপাসনা হয়।

২২এ মে, যাত্রীদল প্রাতঃকালে বামপুরহাটে গমন কবেন এবং বাবু মৃগলক্ষ্ণ সরকারের গৃহে উপাসনা ও "ঈশ্বই তৃপ্তির হৈতু" বিষয়ে উপদেশ প্রদন্ত হয়। মহেক্র বাবু উপাসনাদি করেন। বাত্রিতে বাবু যগ্নাথ রাষের গৃহে উপাসনা হয় এবং "একটা পাণীও পবিত্যক্ত হইবে না" বিষয় উপদেশ প্রদন্ত হয়। মহেক্র বাবু উপাসনা করেন।

২৩এ মে, উষাকীর্ত্তন। স্থানাস্কে বাব্ শিবীশচন্ত্র সোমের গৃহে উপাসনা ও প্রীতিভোজন হয়। হরিমোগন বাব্ উপাসনা করেন। "রাহ্মগণ পৌত্তশিক অফুর্গ্তানাদিতে নিমন্ত্রণ গ্রহণ এবং রক্ষা করিতে পারেন কি না" সম্বন্ধে আলোচনা হয়। বাত্রিতে বাব্চন্ত্রকুমার রায়ের গৃহে উপাসনা হয়।

২৪এ মে, "ব্রাহ্মণী গ্রামে" উষাকীর্ত্তন হয়। বাঁবু পূণ্চন্দ্র
দাসের গৃহে উপাসনা হয়। মহেন্দ্র বাবু উপাসনা করেন।
মধ্যাক্তে বাবু মহেশচন্দ্র ঘোষের বাড়ীতে পারিবারিক উপাসনা
হয়, বাবু কুঞ্জলাল ঘোষ উপাসনা কবেন। রাত্রিতে বাবু
অনপ্রদেব বন্দ্যোপাধ্যায়ের বাড়ীতে হবিমোহন বাবু উপাসনা
করেন। উপাসনান্তে প্রীতিভোজন হয়।

২৫এ মে, প্রত্যুষে বাবু মহেশচক্র বোষের গৃহে পারিবারিক উপাসনা হয়। মহেক্র বারু উপাসনা করেন। তৎপরে যাত্রী-দল নলহাটী হইয়া মুশীদাবাদ অভিমুখে গমন করেন।

২৬এ মে শনিবার রাজি ২টার সময় যাজীদল নশীপুরে উপস্থিত হন। পরদিন স্নানাস্তে স্থানীয় ডাক্তার বাবু জানকীনাথ সেনের গৃহে বাবু মহেক্স নাথ চট্টোপাধ্যায় পারিবারিক উপাসনা কবেন। মাজিতে জানকী বাবুর গৃহে স্থানীয় আহ্মগণ সমবেত হন। বাবু কুঞ্জলাল খোষ উপাসনা করেন এবং "আহ্ম-জীবনের গুক্তর দায়িত্ব" সম্বন্ধে উপদেশ দেন।

২৭এ মে রবিবার নশীপুরে উষাকীপ্তন করিয়া যাত্রীদল
মুশীদাৰাদে গমন করেন। মধ্যাহে বাবু রামগোপাল রায়ের
গহে পারিবারিক উপাসনা হয়। রাত্তিতে মুশীদাবাদ আক্ষ
সমাজ মন্দিরে বাবু মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় উপাসনা করেন
এবং ''ঈশর জীবের প্রম গতি" সম্বন্ধে উপদেশ দেন।

২৮এ মে সোমবার স্থানীয় ডাক্টার বাব্ স্থরেক্সনাথ দন্তের গৃহে রামপুর হাট উচ্চ ইংরাকী বিদ্যালয়ের প্রধান শিক্ষক বাবু লোকনাথ দত্তের বিতীরা কন্যার নামকরণ হয়। কন্যার নাম নীলোৎপলা রাখা হয়। মহেন্দ্র বাবু জ্ঞাচার্য্যের কার্য্য করেন। রাত্রিতে স্থরেন্দ্র বাবুর গৃহে জ্ঞালোচনার জন্ত সকলে সমবেত হন। কুঞ্জ বাবু প্রার্থনা করিলে পর, বাবু হরিমোহন ঘোষাল "Blessed are they that suffer for righteousnesssake, for they shall inherit the kingdom of Heaven', বিষয়ে জ্ঞালোচনার জ্ঞবতারণা করেন। উপস্থিত সকলেই জ্ঞালোচনায় যোগদান করিয়াছিলেন।

২৯এ মে মঙ্গলবার প্রাতে যাত্রীদল নশীপুরে প্রত্যাগমন করেন। প্রাতে বাবু জগরাপ প্রসাদ শুপ্তেব গৃহে মহৈন্দ্র বাবু উপাসনা করেন এবং উপদেশ দেন। বৈকালে সমবেত বর্জ্নিগকে লইয়া বিশেষ আলোচনা হর। "পবিবার গঠন" এবং "জাতিভেদ" আলোচ্য-বিষয় ছিল। রাত্রিতে কুঞ্জ বাবু উপাসনা করেন এবং হরিমোহন বাবু উপদেশ দেন। জগরাপ বাবু সমবেত সকলকে পরিভোষপূর্বকে আহার করান। জগরাপ বাবুব ল্লী এবং ভগ্নী যাত্রীদলকে সদয় এবং সঙ্গেহ ব্যবহারে যাবপর নাই আপ্যায়িত করিয়াছেন।

৩০এ মে ব্ধবার উষাকীর্ত্তন করিয়। যাত্রীদল মূর্শীদাবাদে প্রত্যাগমন করেন। মধ্যাহ্নে বাবু রামগোপাল রায়ের গৃহে মহেক্র বাবু পারিবারিক উপাসনা করেন। বৈকালে মূর্শীদাবাদ টাউন হলে বাবু ক্ল লাল গোষ এবং বাবু হরিমোহন ঘোষাল "যাভাবিক ধর্ম" সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন। বক্তৃতা হলে শতাধিক লোক উপস্থিত হইয়াছিলেন। বক্তৃতায় কুল বাবু অভ্রান্ত শাল্রপ্রতিষ্ঠিত ধর্মের অনিষ্টকারিতা প্রতিপন্ন করেন এবং হরিমোহন বাবু ব্রাক্ষধর্মের সার্ক্তেনিক্তা, উদারতা এবং শ্বাভাবিকত্ব ক্লরকপে বুঝাইয়া দেন।

৩১৩ মে, বৃহম্পতিবাব, আজ মুশীদাবাদ ত্রাহ্ম সমাজের জমোৎসব। প্রান্ত মহেল বাব্ আচার্য্যেব কার্য্য করেন এবং "Ask and ye shall find, knock and the door shall be opened unto you" এই বাক্য অবলম্বন করিয়া উপদেশ প্রদান করেন। টোব সময় আলোচনা হয়। বাত্রিতে বাব্ হরিমোহন ঘোষাল আচার্য্যের কার্য্য কবেন। "ঈশ্ববে প্রতিষ্ঠিত সবল থাকে" এই বিষয়ে উপদেশ দেন।

>লা জুন, শুক্রবার যাত্রীদল আজিমগঞ্জে উপস্থিত হন।
মধ্যাকে স্থানীয় পোষ্টমাষ্টার বাবু আশুতোষ শুপ্তেব গৃহে
উপাসনা হয়। কুঞা বাবু উপাসনা করেন। তৎপরে কীর্ত্তন
কবিয়া যাত্রীদল রাত্রির গাড়ীতে নলহাটী উপস্থিত হন।

মুশীদাবাদ অঞ্চলে ব্রাহ্মসমাজের পুস্তক বিক্রম, সাধাবণ ব্রাহ্মসমাজ এবং পত্রিকাদির অনাদায়ী টাকা আদায় এবং সাধনাশ্রমের জন্ম দান সংগৃহীত হইয়াছে। বন্ধদিগের নিকট হইতে আশাতীত ক্ষেহ এবং সহায়তা পাইয়া ষাত্রীদল উপক্রত এবং ক্রতজ্ঞ হইয়াছেন। প্রভূ প্রমেশ্বর তাঁহাদের সঙ্গে সঙ্গে থাকিয়া সকল কার্য্যের সহায়তা ক্রিতেছেন।

কুমারী কুম্দিনী ঘোষ যাজীদলের সঙ্গে নশীপুর ও মুর্শীদা-বাদে গমন করিয়া কয়েকটা পরিবারে মহিলাদিগকে লইয়া উপাসনা এবং আলোচনাদি করিয়াছেন। প্রভু পর্মেশ্বর তাঁহার জীবনকে ব্রাহ্মসমাজের সেবার জন্ত প্রস্তুত কর্মন।

যাত্রীদল যেথানে যাইভেছেন দেখানেই ওরার্কারের অভাব

বিশেষরূপে অমূভব করিতেছেন। প্রভূ প্রমেশ্বর আমাদের

সে অভাব দূর কর্মন।

উৎস্ব—টাঙ্গাইল আক্ষসমাজের সাধ্ংসরিক উৎস্ব উপলক্ষে বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র তথার গমন করেন। তরা জুন প্র্রিছে সমাজ মন্দিরে উরোধন স্চক উপাসনা হয়, বাবু প্যাবীমোহন দে উপাসনা করেন। অপরাহ্ন পাঁচ ঘটকার সময় বাবু ছুর্গানাথ চক্রবর্তীর গৃহে সকলে সমবেত হইলে বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র ঈশোপনিষদের কিয়দংশ পাঠ ও ব্যাখ্যা কবেন। রাত্রিতে বাবু বাসবিহারী সেনের:বাড়ীতে উপাসনা হয়, কৃষ্ণকুমার বাবু উপাসনা করেন। ৪ঠা জুন উৎস্বের দিন। প্র্রাহেন সমাজ মন্দিরে কৃষ্ণ বাবু উপাসনা করেন এবং "আক্ষসমাজের মত ও উপাসনা প্রণালী" সম্বন্ধে উপ্রেশ প্রদান কবেন, উপাসনা ও উপদেশ অতি গভীর হইয়াছিল। অপবাহ্ন পাঁচ ঘটকার সময় বাধিক সভার অধিবেশন হয়। বাত্রিতে বাবু নৃত্যহরি মিত্রের বাসায় সকলে সন্মিলিত হইলে কৃষ্ণ বাবু উপনিষদ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন।

বগুড়া ব্রাহ্মসমাজের বাষিক উৎসব উপলক্ষে প্রচারক শ্রীযুক্ত নবদীপতন্দ্র দাস মহাশয় তথার গমন করেন। ২৮এ ১৯এ এপ্রেল ছাই দিন উৎসব হয়। এতছপলকে উপাসনা, সংশীর্ত্তন পাঠ ও ব্যাব্যা এবং বক্তৃতাদি হয়। "ধর্মই জীবন" এ বিষয়ে স্থানীয় টমসন হলে নবদীপ বাবু বক্তৃতা প্রদান করেন। বক্তৃতা অতি সদয়গ্রাহী হইয়াছিল। নবদীপ বাবু উক্ত স্থানে "ধর্ম জীবন কি ?" এ সম্বন্ধে আর একটা বক্তৃতা প্রদান বরিয়াছেন।

বিবাহ—সম্প্রতি মকঃ বলে তিনটী ত্রান্ধ বিবাহ হইরা গিয়াছে। বরিলালে কামাদের পরলোকগত বন্ধু বাবু সর্কানন্দ দাস মহাশ্রেষ পুত্র বাবু সত্যানন্দ দাসের সহিত, বাবু চক্তনাথ দাসের কন্তা শ্রীমতী কুত্মকুমারী দাসের এবং বাবু মনমোহন চক্রবর্তীর সহিত সর্কানন্দ বাবুর কন্তা শ্রীমতী প্রেমদা দাসের বিবাহ স্থান্দর ছইরাছে। উভর বিবাহেই শ্রীযুক্ত গিরিশচক্র মহাশর মহাশর আচার্যোর কার্য্য করিয়াছেন। এবং বন্ধ্রর শ্রীযুক্ত বাবু ত্কডি ঘোষের পুত্র শ্রীমান জ্ঞানচক্র ঘোষের সহিত বাঁকিপুর নিবাদী বাবু প্রকাশচক্র রায়ের দ্বিতীয় কন্তার বিবাহ উক্ত স্থানে সম্পাদন হইয়াছে। শ্রীযুক্ত বাবু অমৃতলাল বন্ধ এবং পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশর আচার্যোর কার্য্য করিয়াছেন। সকল বিবাহই রেজেইরী ইইয়াছে। পরমেশ্র নব দম্পতিদিগকে আশীর্ষাদ কর্মন।

নামকরণ—নলহাটির বাবু নীলকান্ত সিদ্ধান্তের প্রথম পুজের নামকরণ উক্ত স্থানে গত ংরা জ্ব তারিথে সম্পাদিত চুট্যাছে। বাবু কুঞ্লাল ঘোষ আচার্য্যের কার্য্য করেন। বালকের নাম নির্মালকুমার রাধা হইয়াছে। এত্ত্পলক্ষে

নীলকান্ত বাবুলাঃ বাঃ সমাজে ১ এবং সাধনাশ্রমে ৩ টাকা দান করিয়াছেন। পরমেশ্বর বালককে ধর্মপথে রক্ষা করুন।

দান—বাবু সত্যরঞ্জন থান্তগিরি পরলোকগত সহধর্মিণীর শ্রাহ্মোপলকে সাধারপ ব্রাহ্মসমাজের প্রচার বিভাগে ৩ ও দাতব্য বিভাগে ১ এবং সাধনাশ্রমে ৩ টাকা দান করিরাছেন। আমবা দাতাকে ক্বতজ্ঞতা প্রদান করিতেছি।

রবিবাসরিক দৈনিক বিদ্যালয়ের সহকারী সম্পাদক লিথিয়াছেন:—আসরা ক্লতজ্ঞতার সহিত নিম্নলিথিত দান শীকার করিতেছি—

শীযুক্ত সতীশচক্ত বহু ২০১ শীযুক্তা কুমুদিনী থান্তগির ১০১ শীযুক্তা শৈলবালা রায় ৬১।

দানপ্রাপ্তি স্বীকার—ক্কতজ্ঞতার সহিত স্বীকাব করি-তেছি যে, ছর্ভিকের সাহায্যার্থ নিম্নলিথিত মহোদয় ও মহো-দয়াগণ অর্থ সাহায়্য কবিয়াছেন।

পূর্ব্ধ প্রকাশিতের পর— ত্রীযুক্ত মজুমদার এও কোং কলিকাতা॥•, পি, এন, দত্ত স্বোরার ১, বাবু অভ্যাচরণ মরিক কলিকাতা॥•, বাবু অমলধন পাল॥•, বাবু মাখনলাল ঘোষ॥•, বাবু হেমচক্র দে।•, বাবু যোগেশচক্র কুণ্থ।•, বাবু পরেশ নাথ বিশ্বাস ১১, ত্রীযুক্তা অন্থিকা দেবী কোরগর ২১, বিদ্যাসাগর স্থল ছাত্রগণ ৫১, বাবু হেমচক্র স্বর্ত্ত কলিকাতা॥•. বাবু যহনাথ চক্রবর্ত্তী ১১, বাবু আর, এন, চক্রবর্তী ॥০, আর ভেন কাটা সি, ভু বিজ্ঞোদার ১১, বাবু সাতকভি দেবেব ভগ্রি ১১, ময়মনসিং ফেমিন ছর্ভিক্ষণ্ড ছইতে বাবু ত্রীনাথ চন্দ পাঠান ৫০১, বাবু হেমচক্র মুখোপাধ্যায় কলিকাতা ১১, বাবু প্রসন্ন দাস গুই মাং বাবু বটকুক্ষ চট্টোপাধ্যায় নদীয়া।০, জনৈক ভদ্রলোক কাকিনীয়া মাং বাবু যোগেশ্চক্র চক্রবর্তী ৫১, কুমারী কে, বস্থু মেদিনীপুর ২১, বাধু অধ্বচক্র মজুম্দার মাণিকদহ॥০, বাবু লণিতমোহন মরিক ঐ ৫১, বাবু হরিদাস দে গিরিধি ১১, একটা বন্ধু ক্লিকাতা ১১, মোট ৮৫।০।

ত্রীগুরুচরণ মহলানবিশ, ধনাধাক সাংগ্রা: সমাজ।

ভ্রম সংশোধন—মনাই চা বাগান হইতে প্রীয্ক বাবু
মতিলাল হালদার লিথিয়াছেন:—"মহাশর! গত ১৫ই বৈশাথের
তর্কৌম্দীতে "প্রাক্ষসমাজ" কলমে "দীক্ষা" দীর্যক করেকটি
ত্ল লেথা হইয়াছে, তাহা সংশোধন করা আবশুক। (১)
দীক্ষিত যুবকের নাম "বলেখর" আগরওয়ালা নয়, "বনেখর"
আগরওয়ালা।:(২) আমি দারজীলিং নিবাসী নহি,তবে তথায়
বহুদিন কার্য্যোপলক্ষে ছিলাম, বেমন এখানেও বহুদিন
আছি। আমার পৈত্রিক নিবাস বারাকপুরে। (৩) আমার
হারা প্রাক্ষধর্ম প্রচারের কোন প্রকার রীতিমত চেটা হইতেছে
না। আপনি এসহক্ষে আমার নাম উল্লেখ করাতে আমি
অত্যন্ত হংখিত হইয়াছি। মহান ক্ষম্বরই তাহার ধর্ম প্রচার
করিতেছেন। আমার স্থার দীনহীন পাশীর পক্ষে মহান
ক্ষম্বরের ধর্ম প্রচার করা অসম্ভব।"



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

৬ চ সংখ্যা। ১৭শ ভাগ।

১৯ই আবাঢ় শুক্রবার, ১৮১৬ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বিংসরিক অক্রিম মূল্য ২৮০ সফস্বলে ৩ প্রতি পঞ্চের মূল্য ৮০০

### প্রার্থনা।

ह् श्राप्ता । वैर्मजीवानत्र श्रात्रास्त्र श्रीवानत्र সম্বলরপে ধরিয়াছি, কিন্তু সময়ে সময়ে তুর্বলতা এতই অধিক হয়, আক্রশাসনে অসমর্থ হইয়া প্রবৃত্তির জালে এমনি জড়িত হইয়া পড়ি যে, তথন বার বার প্রার্থনা করিয়াও যেন জীবনের নিয়াভিমুখী ল্রোভকে ফিরাইভে পারি না। অবশেষে এমন যে জাবনের সম্বল প্রার্থনা তচুপরিও আব আশা রাখিতে পারি না। এইরপে কি প্রার্থনাতে অবিশ্বাদী হইরা পড়িব ? नित्रामात रूट प्राप्तनामिशक मयर्गंग कविद्रा निम्नाणिमूची স্লোতেই কি ভাসিয়া যাইব ? তুমি ত বিচিত্র-কর্মা পুরুষ ; তুমি যুগে যুগে ভক্ত-স্থানে বিচিত্র কমা সকল সম্পাদন কবিয়াছ। यथन मानत्वत्र विश्वाम-विशीन ठक् नित्रामात घन कूक्षिणिक। ভিন্ন আব কিছুই দেখিতে পায় নাই, তথন তুমি আশার আলোক দেথাইয়া বিশ্বিত করিয়াছ; ভূপতিত ভগ্ন-সদয় পাপীকে করে ধবিয়া তুলিয়া দণ্ডায়মান করিয়াছ। আমাদের জীবনেও ত হে বিধাতা। তুমি আপনার অপার রূপার ও বিচিত্র मक्तित **चारनक निम्मन** श्रीममन कतिशोह। टायात रमहे কুপা শ্বরণ করিয়া ও তোমার দেই জীবস্ত শক্তির আশ্রেয়প্রার্থী ছইয়া ভোমার চবণে শরণাপন্ন হইতেছি। আমাদিগকে নিরাশাতে ডুবিতে দিও না , নিয়াভিমুখী লোভে ভাসিয়া নীচ **হইতে দিও না; তোমার কুপাব দক্ষিণ হস্ত দারা আমাদিগকে** ধারণ কর; প্রবৃত্তির জাল হইতে উদ্ধার কর; তোমার পথে মুপ্রতিষ্ঠিত কর।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

জোয়ার ভাঁটা—জোয়ার ভাঁটা যে কেবল নদীর স্থাতেই থেলে ভাহা নহে, মানবের জীবনের স্রোভেও জোয়ার ভাঁটার আধিপত্য দেখা যায়। আমাদের চিস্তা ভাব ও কার্য্য সকল বিষয়েই জোয়ার আছে এবং ভাঁটাও আছে। এই জোয়ার ভাঁটার কারণ কি? ভাহা সকল সময়ে নির্দেশ করিতে পারা যায় না। কিন্তু আমরা একটু আছে-দৃষ্টি-পরায়ণ

हरेल मकलहे हेरा लका कतिए शाति। नगीए यथन জোয়ার আদে, তথন কেমন কানায় কানায় কল বহিতে থাকে। জন ব্রোতের সেই পূর্ণতা ও সেই গতি দেখিলেও কড আনন্দ হয়! নদীগর্ভে নয়নের অপ্রীতিকর যে কিছু বস্ত আছে, मभूनत्र कनतानि मत्था निमन्न रहेत्रा थात्क, तम नकन कि हूरे দেখিতে পাওয়া যায় না। কিন্তু যথন ভাঁটা পড়ে, তথন নদীর বিশীৰ্ণতা উপস্থিত হয় ! জলরাশি পঙ্কিল ও কন্দমাক্ত ২ইয়া কোথায় নদীগর্ভে লীন হইয়া থাকে; এবং তথন ভগ্ন বৃক্ষ, মগ্র নৌকার খণ্ড সকল, ইইক, প্রস্তর, ভগ্ন কলস, নরান্থি, গবাত্তি প্রভৃতি যে সকল নয়নের অগ্রীতিকর পদার্থ জোয়ারের জলে নিমগ্ল ছিল, সমুদয় প্রকাশ হইরা পড়ে। তথন নদীর ভিতরকার হর্বলতা জানিতে পারি। মানব-চবিত্রের জোয়ার ভাঁটাও এই প্রকার। যথন ধর্মভাবের জোয়াব অবলবেগে বহিতে থাকে, তথন আমাদেব উৎসাহ, অমুরগে, বিশাস ও আশার কল কানায় কানায় উঠিয়া থাকে। তথন আমাদিগকে যে দেখে তাহার স্থা হয়; আমাদের কথা যে ভনে তাহার স্থ হয়, আমাদের সহিত যে মিলিত হয়, তাহাব মন মুগ্ধ হয়। আমাদের চবিত্রের গৃত ছর্বলতা সকল তথন প্রচন্ত্র হইয়াথাকে। কিন্তু সকল সময়ে এই জোয়ার জীবনে স্থায়ী হয় না; আবার ভাঁটা পড়ে। যথন ভাঁটা পড়ে, তখন নিয়াভিমুথেই বহিতে জীবন-স্রোত थाक । কোনও রূপেই সে শ্রোতকে নিবারণ করিতে পারা যায় না। সে স্রোতকে ফিরাইবার জ্ঞা যত কিছু উপায় অবলম্বন কবি, স্কলি ব্যর্থ ছইয়া যায়। বার বার প্রার্থনা করি, স্কলি বিফল হয়। এই সময়ে আমাদের চরিত্রের ভিতবকাব ছুর্মলতা দকল প্রকাশ হইয়া পড়ে; আমাদের প্রকৃতির অস্কস্তলের কুৎসিত পদার্থ সকল দেখিতে পাওয়া যায়। कीरानत এই डाउोत ममग्न এक हो विभन घरिया शास्क । বাঁহাদের প্রকৃতিতে ধৈষ্য ও সহিষ্ণুতার ভাগ অর, তাঁহাবা এই অবস্থাতে পড়িলে, কিছুদিনের মধ্যেই প্রার্থনাতে অবিশ্বাদী হইরা পড়েন। আপনাদের জীবনের অধোগতি দেখিয়া ব্যাকুল চিত্তে বার বার প্রার্থনা করিতে থাকেন; এবং जनसूत्रभ कन ना दनविद्या अध-क्षम क्रेग्रायान। अवस्थि

নিরাশা তাঁহাদের অন্তবকে গ্রাস করে; এবং জীবন-লোভকে কিবাইবার চেষ্টা বিফল জানিয়া তাঁহারা সেই লোভে গা ভ'সাইয়া দেন। যদি ধৈর্যা ও বিশ্বাসের দৃঢ়তার প্রয়েজন কথনও থাকে, তবে তাঁহা এই জীবনের ভাঁটার সময়ে। যেমন মডে পড়িলে লোক একটা কোনও স্থাচ্চ পদার্থ ধরিয়া থাকে, পাছে ঝডে উড়াইয়া লইয়া যায়, অথবা নদীর প্রবল লোভে পড়িলে যেরপ লোকে নৌকার নকরের কাছি প্রাণপণে ধারণ কবিয়া থাকে, পাছে ভাসাইয়া লইয়া যায়, সেইরপ এই অবস্থাতেও প্রার্থনাকে স্থাচ্তরপে আলিঙ্গন কবিয়া থাকিতে হয়। সেইরপ জীবনের এই ভাঁটার টানের মধ্যেও প্রার্থনাকপ নঙ্গরের কাছি ছাডিতে নাই, তাহা হইলে ভাসিয়া যাইতে হয়। জগদীশ্বর আমাদিগকে এই বিশ্বাসের দৃঢ়তা প্রদান কর্মন।

বর্ত্তমান শিক্ষাপ্রণালী—স্থামরা যতই চিন্তা করি-তেছি, ততই এতদেশীয় প্রাচীন শিক্ষা প্রণালীর পক্ষপাতী ২ইতেছি। আমাদের প্রাচীন শিক্ষাপ্রণালী এই ছিল:--প্রত্যেক ব্রাহ্মণ সম্ভানকে গরাষ্ট্রম বর্ষে:উপনীত করিয়া বিদ্যা লাভার্থ গুরুকুলে অর্থাং আচার্যোর গৃহে রাথা হইত। এক একজন আচাৰ্যা যত সংখ্যক বালকের শিক্ষাকার্যা নিরাহ ক্ৰিতে সমৰ্থ ১ইতেন, ওত স্থাক ব্লেক্ষেই নিজ ভবনে খন দান কৰিতেন। বিদ্যাধিগণ আচায্যের প্রিবার মধ্যে প্তাত হুইয়া আচায়া-পত্নীকে জননা সম্পোধন কবিত, আচাৰ্যোৱ পত্র করাদিগকে ভাই ভাগনীকপে দেখিত। আচ্য্যে অনেক নন্যে অপেক্ষাকৃত জ্ঞান-বুদ্ধ ছাণ্ডিগ্ৰে শিক্ষকতা কাৰ্য্যে ন্থাক্ষে গ্ৰহণ ক্ৰিছেন এটে, কিন্তু স্বৰং প্ৰভাক ভাত্ৰেৰ - ক্রেয়ের ভন্নব্যন ক্রিভেন, ও প্রত্যেকর বিল্যা**লা**ভ িব। মনোগোগী হইতেন। এই শিক্ষাকার্য্য প্রাতে, সন্মাতে পতের, পথে ঘাটে চালত। বভ্যান স্ময়ের ভাষে প্রাফার পতিষ্ভিতা ছিল না, আচাৰ্যোৰ সম্ভোষলাভ কবিতে পারি-েট, এবং ধনিগৃতে যজ্ঞাদ সভাতে পণ্ডিতমণ্ডলীৰ মধ্যে শাস্থায় বিচারে নিপুণ হা প্রদশন করিতে পারিলেই, একজন শিলা বিপাত হইতেন ও পণ্ডিতন ওলীর নিকট উপাধি-প্রাপ্ত হইয়া স্বয়ং অধ্যাপনা কার্য্যে নিযুক্ত হইবাব উপযোগী বলিয়া বিবেচিত ২ইতেন। অন্ততঃ চঙুৰ্কিংশতি বৰ্ষ প্র্মান্ত এই শিক্ষা চলিত। এই কালেব মধ্যে শিক্ষার্থিগণ দাৰপরিগ্রহ করিতে পাবিতেন না: কঠোৰ ব্রহ্মচ্যা অবলম্বন শাৰতে ইইত। আচোধাগণ যে কেবল ব্যাক্রণ, সাহিত্য, অলস্কার, দশন, বেদ বেদাস্ত প্রভৃতি শিক্ষা দিতেন তাহা নহে, গুরুভাক্ত, বিনয়, দতানিষ্ঠা, ব্যাগুরাগ প্রভৃতি বন্ধিত ক্রিবার চেঠাও করিতেন। এইরূপে ছাত্রগণ এক একজন খ্যাতনামা ভাচাব্যােৰ নিকটে বহু বংসৰ বাস কৰিয়া তাঁহাদের চরিত্র ও জ্ঞানান্তরাগের দারা অণু গ্রাণিত হই য়া গৃহধর্মে প্রবিষ্ট হই ত। আচার্যাগণ ছাত্রদিগেব নিকট কোনও প্রকার নির্দিষ্ট ভৃতি ৰা অথ সাহায্য লইতে পারিতেন না। পঠদশা শেষ হইলে ছাত্রগণ অধিকাংশ হলে গুরুদক্ষিণা দিত বটে, কিন্তু সে সম্বন্ধেও কোনও নিয়ম ছিল না, যে যেরপে দক্ষিণা সংগ্রহ করিতে পারিত, সে তাহাই দিত।

পূর্বোক্ত শিক্ষাপ্রণাশীর মধ্যে অনেকগুলি উৎকৃষ্ট ব্যবস্থা ছিল। প্রথম, এক এক আচার্য্য যতগুলিব ছাত্রেব শিক্ষাব প্রতি মনোযোগ কবিতে সমর্থ, ততগুলির শিক্ষাব ভাব লইতেন ইহাতে প্রত্যেক বালকেব শিক্ষার প্রতি মনোযোগ থাকিত, অপ্চ দেশমধ্যে আচাৰ্য্য সংখ্যা অধিক হইত। দিতীয়তঃ চবিত্র-वान ७ छानी भुक्षिमिटशेत मः मर्ट्स शाकिया वानकश्य उद्धाव দারা অণুপ্রাণিত ২ইড; তৃতীয়ত:, বালকগণ যেমন গৃহ ও পরিবার ছাড়িয়া যাইড, তেমনি গৃহ ও পবিবার প্রাপ্ত হইয়া পারিবাবিক শিক্ষার অফল প্রাপ্ত হইত ; চতুর্থতঃ, পরীক্ষার প্রতিদ্বন্দিতা না থাকাতে, প্রীক্ষাতে প্রশংসা লাভ অপেকা জ্ঞানের গভীবতার দিকে অধিক দৃষ্টি থাকিত; পঞ্মত:, ছাত্রদত্ত বেতনের উপর নির্ভর না থাকাতে আচার্যাগণ অসং-কোচে ও স্বাধীনভাবে স্বীয় সীয় অভীষ্ট প্রণালীভে জ্ঞানদান কবিতে পাবিতেন; ষ্ঠতঃ, পঠদশাতে ব্ৰহ্মচর্যোর রীতি থাকাতে বালকগণ অকালে হীনতেজ হইয়া পড়িত না। বর্ডমান শিক্ষাপ্রণালী প্রায় প্রত্যেক বিষয়েই ইহার বিপবীত।

শ্রদ্ধাভক্তি—বর্তমান সময়ে দেশের সর্ব্বএই এই এক ধ্বনি উঠিয়াছে যে, বিদ্যাল্যের ছাত্রগণ শ্রদ্ধা ভক্তি-বিহীন (irreverent) হট্যা উঠিতেছে। কলিকভাতে এই অনিধ আমৰা গুক্তৰকপে লক্ষ্য কৰিতেছি। বাজপথ দিয়া চারিটী विमालियात वालक, (याशास्त्र वंशाक्तम २० कि २५व अधिक হইবে না) যাইতেছে; অজ্ঞাতসারে পশ্চান্দ্রী ১ইয়া ভালানের কণোপ্রুথনের প্রতি কর্ণপাত কর, তাংশা মেভাবে আগন আপন শিক্ষকের বা অপ্রাপর নেশের শ্রেন এমনকি তাহাদের পিত্রানীয় ব্যক্তিদিগের স্মাণোচনা কবিতেছে, যে অভন, অশ্লীল, ও ত্রাভাজনক ভাষতে তাঁখাদের দোষ-কীতন করিতেছে, তাহা শুনিলে কর্ণে হাত দিতে হয়। ইহা দেখিয়া সকলেই শোক করিতেছেন, কিন্তু ইহার কারণ কেহই অনুসন্ধান করিতেছেন না। শ্রদ্ধা ভক্তি কি আকশি হইতে পড়ে? না সভাতে বসিয়া লয়া লয়া বক্তা দিলে গতে ? শুকার পাত্র হাঁচারা একপ বাক্তির সংসর্গে না রাখিলে মানব-চারতে শ্রহা ভক্তি বাডে না। গেমন সম্ভান ক্রোড়ে না ধরিলে, জাঁলোকে র অপতামেহ প্রকৃতভাবে ফোটে না; তেমনি শ্রদ্ধাভাজনের সাহায়া বাতীত শ্রদ্ধা ফোটে না। বর্তমান সময়ে বিদ্যালয়ের বালকগণ যে শ্ৰদ্ধা-ভক্তি-বিহান হইতেছে, তাহার কাৰণ विमानियर्शनंत व्यवस्था। वर्र्समान नगरम विमानिय स्थानन করা একপ্রকাব দোকানদারি হইয়াছে। অধিকাংশ বিদ্যা-गरात सौरन ছाजमछ বেতনের উপরে নির্ভর করিতেছে, ন্মতরাং ছাত্র-সংখ্যা বৃদ্ধির দিকে বিদ্যালয়ের ভদ্বাবধারক-গণের প্রবল দৃষ্টি। ছাত্রসংখ্যা ক্রমেই বৃদ্ধি পাইভেছে। কলিকাতার কোন কোনও বিদালয়ের শ্রেণীতে ছাত্রসংখ্যা শতাধিক **ब्हे**र्य । বালকের শিক্ষার ভার ঘাঁছাদের হত্তে, তাঁছারা আবিরে

चन्छे। य चन्छे। य वन्न इट्टल्ड्न। স্থতরাং কোনও শিক্ষকই কোনও ছাত্রের প্রতি বিশেষ মনোযোগ করিতে পারেন না। কাহারও সহিত আধ্যাত্মিক সম্বন্ধ স্থাপন হয় না। এরপ হলে বালকদিগের চরিত্রে কি প্রকারে শ্রদ্ধাভক্তি বাড়িতে পারে ৪ কুক্মবাপে বিচার করিলে দেখিতে পাওয়া याहेरन, रा धर्माहे नम चात नी जिहे नम मकरनतहे जिखि अका ভক্তির উপরে। এ ভিত্তি চরিত্তের অস্তত্তলে না থাকিলে সেথানে কোনও প্রকার আধ্যাত্মিক গুণ দ।ড়াইতে পারে না। স্বতরাং এই শ্রনা-বিঠানতার দেরপ ফলের আশা कत्रा यात्र, वक्ररमात्मव निक्षिष्ठ युवकमञ्जीत मरशा सिहे প্রকার ফলই ফলিতেছে। একণে প্রশ্ন এই, এসম্বন্ধে আন্ধ পিতামাতার কর্ত্তব্য কি ? তাঁহাবা কি বর্ত্তমান অনিষ্টকারী শिका अभागोत मधा मञ्जानीमगरक ছाড়িয়া मित्रा निकिञ्च থাকিবেন, না এতং সম্বন্ধে তাঁহাদের কোনও প্রকার কন্তব্য আছে? কিরূপে তাহাদের সন্তানগণ শ্রদা-ভক্তি-সমবিত हहेरत তাहात्र कि উপায় कतिरास ? रा जकन ব্রাহ্ম পিতামাতা আপন আপন সম্ভানদিগের শিক্ষার জাত নিজে মনোযোগ কবিতে ও সেজন্ত প্রত্যন্থ কয়েব ঘণ্টা সময় দিতে সম্থ উাহাদিগের প্রাত প্রামর্শ এই, উাহারা সম্ভানদিগকে শ্রদা-ভক্তি সম্বিত করিবার দিকে বিশেষ দৃষ্টি রাথ্ন। যাঞাদগেব সেরূপ অবসর বা স্থবিধা নাহ, তাহা-দিগেৰ প্ৰতি প্ৰামশ, তাহাৰা স্বীয় সন্তানদিগকে উপযুক্ত ও শ্রদ্ধাভাদন আসা শিক্ষকশিগের তত্ত্বাবধানে ও তাঁহাদেব সহবাসে বাখিবাব ব্যবহা কক্ষা। ত্রান্ধ বালক্ষিপের বোডিংটা এই উদ্দেশ্যেই তাপিত ২ইষাছে। ভাহাৰ আরও উলাত বিধান ক্ৰিবা ভাগতে বালকাদগকে বাখিবার বাব্ছা ক্রুন। তিছিল বাল্লিগেৰ মধো লক্ষপ্ৰতিষ্ঠ ও চৰিত্ৰবান যে সকল শিক্ষক আছেন, ভাঁগদেৰ পরিবাৰ মধ্যে ছুই চারিটা ক্ৰিয়া বিষয়াস্ক্রিকে থকা ক্রিয়াছে তাহা দিয়াহ বিচাৰ। বালক রাগা যাইতে পাবে। ঐ সকল শ্রন্ধের ব্রাহ্ম বন্ধু যদি। বালকদিগের প্রতি সন্ত্রদা দৃষ্টি বাথেন, এবং সে জভ যদি উাঁহাদিগকে অন্তুক**ৰা**। করিয়া দিতে পাবা যায়, তাহা হইলে ∤ কবিতে সাধুবা সামাত সামাত বিষয়েও বিশেষ **মনো**যোগ অনেক উপকাৰ দশিতে পাৰে। আমৰা বাৰ বায় এই সকল | দিয়া থাকেন। যাহাৰা সামাত্ত সামাত বিষয়ে জীবনকে বিষয়ের আলোচনা কবিঠেছি, কাবণ আমবা দেখিতেছি ধর্ম পথে রক্ষা করিতে পারিতেছে না, তাহারা **গু**রুত্ব ত্রাহ্ম বালক বালিকাদিগকে ত্রাহ্মধর্মের ভার দিতে না পারিলে: বিষয়ে স্থাপনাদের ভবিষাতে ত্রাহ্মসমাজের তুগতি অনিবার্য্য।

স্বার্থপরতার শান্তি-বর্ণজনাথ একটা সংগীতে বলি-য়াছেন :--

> "আপনি কেটেছে আপনার মূল, না জানে সাঁতাৰ নহি পায় কুল:"

আপনি আপনাব মূল কাটা বড ভয়ানক কথা। স্কপ্রসিদ্ধ कित कालिमारमन वियरप्र खेक्रा लोकिक किश्रमञ्जी आहि स्य, ভিনি যৌবনকালে এমনি মজ্ঞ ছিলেন যে, একদা এক ভক্ত শাখাতে বসিয়া সেই শাখাই কাটিতেছিলেন। এ জগতে क्रिक यान व्यापनात मून कापनि काटि, तम, त्य चार्थभत---(मरे। স্বার্থপর মাতৃষ ভাবে আমি নিজের যাহা ভাহা ত রক্ষা করিতেছি অপরের অনিষ্ট হউক তাহাতে আমার কি? म अक्वांत्र विद्विष्ठना क्दत्र ना त्य, ज्यांनि অপরদিগের প্রতি যেরপ বিচার করিভেছি দেইরপ বিচার যদি অপরে আমার প্রতি করে তবে কি হয়? এক জনের অনাণা বিধবা ও পিতৃহীন সন্তান ঘোর ছংথে পড়িয়াছে, আমি দেখিয়াও দেখিতেছি না, স্বার্থের গণ্ডীর মধ্যে আপনাকে রাধিয়াছি, তাহার স্থ ত্:থের সহিত আমার সম্ম নাই। ভাবিতেছি না বে, আমার দেহাবসানে যদি আমার ল্লা পুত্র ঐ প্রাকার অবস্থাতে পড়ে এবং - অপরে যদি আমার ভারে স্বার্থের গণ্ডী দিয়া বাদিয়া থাকে তাহা लाक वक्रभ डेमामीन श्हेर्य कि इहेरव ? देश जामि পছन कति कि ना ? यनि ना कति उद जामि কেন অপরের হু:থের প্রতি উদাসীন হইতেছি? তুমি পরকে সাহায্য করিতে না চাও ঈশ্বরের রাজ্যে ভূমি পরের সাহায্য পাইবে না এই তোমার শান্তি। আপনাকে ভূলিয়া ঈশবেচছার অমুগত হও তোমার জন্ম সাহায্য আছে। স্বার্থপর বাকির আশয় অতি কুদ্র, তাহা একটা কুপের ম্থায়, সে ব্যক্তি ভেকের মত তাহার ভিতবে বাস করে। সে ভেকের সাধ্য নাই যে, ধৰ্মেৰ প্ৰামুক্ত ৰাযুৰ ত্থভোগ করে। স্বার্থপরতার ভায়ে পাপ নাই, ইহার ভাষ ধম্মেব শক্র আরে নাই। নরবাতক ঈশবের কুপা পাইতে পাবে ও তবিয়া যাইতে পাবে , কিন্তু স্বার্থপর क्रुप्रश-श्रकाव (माक जिंदश) या उसा मध्य नरह। (म वाहिरव নীতিমান ও ধ্যার্ডানে রত থাকিতে পারে, ভাহা আকাশে মাকু চালানব ক্যায়, ভদ্যরা বস্ত্র প্রত হইবে না। এই জন্ম সাধকগণ স্বাথপবতা ও বিষ্যাসাক্তকে ধন্ম জীবনের পক্ষে বিষ বলিয়া বণন করিয়াছেন। কে কত ধন্মের কথা বলে তাহা দিয়া ধাশ্মিকতাব বিচার নতে, দেকত স্বার্থপরতা ও

ধশ্ম জীবনের স্থল স্থল কথা—ধশ্ম জীবন গঠন कीवन ধন্মপথে কিরূপে রক্ষা করিবে সতা বটে কখন কখনও বড় বড় মহাজন-গণও সামাভ সামাভ বিষয়ে সাধাবণ লোক অপেকা ক্রটা দেখাইয়াছেন। সে বিষয়ে তাঁহাদেব ছবলতা ছিল, ठीहाता (म अन्न स्रेयात्व निक्टे मासी त्रहियार्डन, এবং সে বিষয় ভাষাদেব জীবন অপূর্ণ বৃহিয়াছে, ভাষাতে কোনই যদিও তাঁখাবা ত্রুটী সত্ত্বেও সাধারণ म्याह नाहै। লোক অপেকা অনেক উচ্চ স্থানে আছেন, কিন্তু তবুও তাঁহাবা আপনাদের কার্যোর জন্ম বিচারাধীন রহিয়াছেন। তাঁহাদের দুষ্টাম্ব প্রদশন করিয়া আমশাকেহই নিম্নতি লাভ করিতে পারি না। তুমি যদি কাহাকেও কথা দাও আর তাহা প্রতিপালন না কর তাহা হইলে কি তোমার মিথাা কথা বলা হইল না ৪ তুমি একজনকে বলিলে "আমি কাল আপনার সঙ্গে দেখা করিব ?"

কিন্তু পরদিন আর গেলে না। ইহাতে ভোমার মনে হইতে পারে, যাইতে চাহিয়াছিলাম, নাইবা গিয়াছি ইহাতে ত কাহারও কোন বিশেষ ক্ষতি করি নাই 📍 কিন্তু তুমি চিন্তা করিয়া দেথ, অবশ্রহ¦ক্ষতি করিয়াছ। তৃমি তোমায় স্বভাবকে সভ্যেতে শিথিল ক্রিয়াছ: একরূপ মিথ্যার আত্রয় লইয়াছ। এইরপে তুমি অবশেষে অপরের অপকার না হইলে কিম্বাপরের উপকার হইলে মিণ্যা বলিতে ও প্রস্তুত হইবে। মিধ্যা এইরপেই কিছু কিছু করিয়া মাতুষের চরিত্রে আংবেশ করে। শেষে মিথ্যা ও সভ্যে পার্থক্য থাকে না। সভ্য আপেকিক किनिय इया मठा एव मकन ऋलाई मठा म खान नूरी হইয়া যায়। তুমি যে তোমারই ক্ষতি করিলে কেবল তাগা নহে, যাহাকে বলিয়াছ যে "কাল দেখা করিব।" তিনিও ক্রমে লোকের কথায় অবিশ্বাস করিতে শিথিলেন। यদি তিনি তোমার মত লোক হন, তবে তিনিও তোমার পথ ধরিবেন। যদি তিনি বিশেষ সত্য-পরায়ণ সাধু লোক হন, তিনি বৃঝিলেন, সংসার ও ধর্ম ছই জিনিষ, সংসাবের লোক এইরূপই জনসমাজে মিথ্যা প্রবেশ नकनहे धहेक्रप। কবে।

যাহাকে যে কথা বলিয়াছ, যদি সতাস্থরাগী হও তবে তাহা প্রাণ দিয়া প্রতিপালন কর। ঋণ করিয়াছ, কিন্তু উত্তমণের নিকট কথনই তেমন অঙ্গীকার করিবেনা যাহা তুমি প্রতিপালন করিতে পারিবে না। এক সময়ে রাহ্মগণ কথা বলিবাব সময় "বোধ হয়" কথাটা ব্যবহার করিতেন, পাছে বা উাঁহাদেব কথা মিগ্যা হয়। ব্রাহ্ম বিরোধীগণ "বোধ হয়" শব্দ লইয়া বাহ্মদিগের উপহাস করিত। সেই উপহাস ব্রাহ্মদের প্রতি চিবদিন থাকুক। এথনও ব্রাহ্মেরা সত্যবাদী বলিয়া লোকের শ্রহা আছে।

স্সারে পাকিতে হটলে মধ্যে মধ্যে ঋণ করিতে হয় তাহা সত্য। কিন্তুত্মি সেই গরিমাণে ঋণ করিতে পাব যে ঋণ ভোমার শোধ করিবার শক্তি আছে। ঋণ শোধের উপায় না থাকিলে কথনই ঋণ করিবে না, ববং ভিক্ষা করিবে ; যদি এক-वाव (कान कावर्ण भण कतिया शाक, जरव मर्खार्ध (महे भण (नांध কবিতে চেষ্টা কর, আর ঋণ বাড়াইও না। ঋণ বাড়িতে আরম্ভ করিলে তোমার সমুদয় ধর্ম কর্ম নষ্ট হইয়া যাইবে। কোথায় বা তোমার উপাসনা, কোথায় বা তোমার প্রচার এবং কোথায় বা তোমার প্রসেবা। যদি দেখি ঋণগ্রন্থ রহিয়াছ, অথচ স্থে আহার বিখার বাবুগিবি চলিতেছে, ঋণের দিকে দৃষ্টি নাই, ভাহা হইলে বুঝিব তুমি অপদার্থ ও মুণাই জীব। তাহাতে যে কেবল ভূমি অনত্যাশ্রয়ী হইলে তাহা নহে, ঘাহার নিকট হটতে ঋণ লইয়াছিলে ভাহাকেও লোকের প্রতি িশাস कदिए भिथाहेता । दम वास्ति हेन्द्रभन्न यथार्थ अन । हेवान যোগ্য লোককেও ঋণ দিবে না। ঋণ বিষয়ে মুসলমান ধর্মে বিশেষ শাসন আছে। এক দিকে ঋণ দিয়া স্থদ গ্রহণ করিতে নিবেধ অপর দিকে এই উপদেশ "ঋণগ্রস্ত হইয়া যদি পরলোকে যাও তাহা হইলে সে পাপের আর নিছতি নাই; কেননা সেখানে আৰু তুমি তোমার দেনা শোধ করিতে পারিবে না।"

সামাস্ত দেনা পাওনাতে যাহারা ধর্ম রক্ষা করিতে না পারে, ভাহাদের আবার ধর্ম কি ?

তুমি যদি কাহারও কোন কার্যোর ভার লও তবে তুমি আর সে কাজে আপনার ক্ষতি বৃদ্ধি গণনা করিতে পাব না। ভার লইবার পূর্কে তুমি ইচ্ছা করিলে সে ভার নালইতে পারিতে, কিন্তু বুঝিয়া শুলিয়া ভাব লইয়াছ, তথন ভোমাব কর্ত্তব্য তাহা সম্পন্ন করা। তোমাকে কোন লোকে ভার দিলেন—আমার ছোলটিকে আপনি একটুকু পড়াইবেন এবং ইহার চরিত্রটী দেখিবেন, ভূমি বেতন লও বা না লও ভূমি সম্ভষ্ট চিত্তে এ কার্যাগ্রহণ কবিয়াছ, কিন্তু তাহার ছেলে তোমার ঘরে আসিরা অপর ছেলের সঙ্গে মিশিয়া মন্দ কথা শিখিতেছে, यस महत्र এकवाद्य यस हहेश शहेखहा, विश পড়া কিছুই শিথিতেছে না তোমার সংসারে অনেক কাজ, তুমি ভাবিলে यां हा कतियाह हे हा हे या पहें। এहे क्रिश मान कति एक ह, আর হই একটা কথা বলিয়া দিতেছ, কিন্তু ছেলেটা যথন একবার নষ্ট হইয়া গেল, তথন তোমার প্রতি তাহার পিতার কিরূপ মনের ভাব হইবে ? যে ব্যক্তি কর্ত্তব্যে অব-হেলা করে ভাহাকে বিশ্বাস করিতে কে চায় ৭ ত্রান্ধেবা পুব কর্ত্তব্য-পরায়ণ এবিখাস যতদিন থাকিবে লোকেরা কোন कार्यात जात मिर्क मङ्घिक इहेर्द ना। यथन लारक प्रिथिर ব্রাহ্মগণ কর্ত্তা-জ্ঞান-হীন হইতেছে, তথন তাহাবা কথনও ব্ৰাহ্ম বলিয়া কাহাকেও ধান্মিক মনে কবিবেন,না। কেহ কোন কাজ দিতে চাহিবে না। তুমি যথন যে কাজের ভাব লইবে ধম্মজাবন বক্ষার জন্ম প্রাণপণে তাহা প্রতিপালন কবিবে; নতুবাধমাজীবন গড়িবে না। এইক্প আনেক ছোট 'ছোট বিষয় আছে যাহাতে ধর্মজীবন গঠনেব পক্ষে অফুকুল প্রতিকৃশ ঘুই হয় ৷ যদি ধর্মজীবন গঠন করিতে চাও, চোট বিষয় বলিয়া কিছুই উপেকা কবিবে না, ছোট বিষয় যে জীবনে আয়ত্ত হণ, সে জীবন বড় বিষয়েও কুতী চইতে পারে। অতএব ধর্মজীবন গঠনের জন্য যেমন প্রেম ভক্তির সাধন করিবে তেমনি দেনা পাওনা কথাবার্ত্ত। ঠিক রাখিবে। অনেকে নীতিকে অবহেলা কবিয়া কেবল প্রেমভক্তি লাভেন জন্ত ব্যাকুল हन, किन्छ (अम छक्ति महक क्या नेम्र । माहात कर्खवानिक्षा नाहे. যে সামান্ত নীতিকে উল্লন্ড্যন করিতে পারে, ভাহার আবার প্রেম ভক্তি কি ? এদেশে শর্মের এই এক কুদ্রশা দেখা যায়. নীতিতে জীবন হীন, কিন্ধ ভক্তিতে উন্নত বলিয়া পরিচিত: वाक्रभर्म এই नौिछ-होन छाव-श्रभान धर्मा क प्रमाख इहेट पृत করিতে আসিয়াছে।

নিশীথ সাধন—দিনের বেলা চাবিদিকে কোলাহল।
কৃষক, পণাজীবী, শ্রমজীবী সকলেই স্থ স্থ কার্য্যে বাস্ত।
জীবিকাযুদ্ধে নরনারী রক্ত ক্ষয় করিতেছে। হাট বাজার, পথ
ঘাট, নগরময় লোকারণা। যে দিকে দর্শন করি, সে দিকেই
হাসি, ক্রন্দন, কোলাহল এবং কার্য্য-ব্যক্ততা। স্যোদ্যের
সঙ্গে সঙ্গে এই চঞ্চলতা আরম্ভ হয়, স্থ্যাক্তের সঙ্গে ক্রমে
ক্রমে তিরোহিত হুইয়া থাকে। গভীর রজনীতে সকলেই

নিত্তর। পক্ষীথণের ক্লরব প্রত হয় না, নরনারী নিতার অচেতন, কার্যক্ষেত্র বন্ধ। এই নিত্তর নীরব সময় সাধনের অত্যন্ত অমুক্ল।

রাত্রি প্রভাত ছইতে এখনও চারি দশু বাকী আছে।
নগর ও পরীতে সাড়া শক নাই। রজনীর শেবে সকলে গাঢ়
নিদ্রায় মধা। সাধক এ সময় গাত্রোখান করিয়া হস্ত মুখাদি
প্রকালন করিলেন এবং নির্দিষ্ট স্থানে উপবিষ্ট হইরা পরব্রক্ষে
চিত্ত সমাধান করিলেন। প্রকৃতি তাঁহার নিক্ট হইতে বিদার
গ্রহণ করিল, তিনি ধ্যান সাগরে ডুবিলেন।

দিনের বেলায় বিশেষতঃ জন কোলাহলময় তানে বিসরা ধ্যানের তেমন স্থবিধা ঘটে না। সাধারণতঃ দিবাভাগে মানব মন অপেক্ষাক্তত চঞল থাকে। এই জ্ঞুন্তই পূর্বকালের সাধক-গণ আদ্ধ মূহুর্ত্তে গাত্যোখান করিয়া ধ্যান করিবার উপদেশ দিয়াছেন। মহাভারত শান্তিপর্ব্ব ত্রিপঞ্চাশন্তম অধ্যায়ে লিখিত আছে; "জনন্তর ভগবান হুষাকেশ ক্ষেপ্ত প্রক্রনী অর্দ্ধ প্রেহরমাত্র অবশিষ্ট হুইলে জাগরিত হুইয়া ধ্যানে মনোনিবেশ পূর্বক জ্ঞান সকল সন্ধর্শন করিয়া, সনাতন ব্রক্ষের চিন্তা করিতে প্রেবৃত্ত হুইলেন।"

কেবল ধর্ম জগতেই বে নিশীপ সাধনের আবশুকতা আছে, তাহা নহে সাহিত্য, বিজ্ঞান, রাজনীতি প্রভৃতি সমৃদর উচ্চ উচ্চ বিষয়ে সিদ্ধি লাভ করিতে হইলে নিশীপ-সাধনের আবশুক। অনেক বিজ্ঞান আবিদার, গ্রন্থ প্রণয়ন, যোদ্ধার যুদ্ধের আয়ো-জন, রাজ-নৈতিকের প্রণীত বিধি ব্যবস্থা নিশীপ-চিস্তার ফল।

ভারতবর্ষ আধ্যাত্মিকতাপ্রধান হান। স্থাতবাং এ দেশের
শাস্ত্রকারপণ ব্যক্তি মাত্রকেই ব্রাক্ষ মুহুর্ত্তে উঠিয়া সাধন ভজনের
উপদেশ দিরাছেন। ব্রাক্ষ-মুহর্ত্ত সাধনের ফল তাঁছারে
বিশেষরূপ অফুভব করিয়াছিলেন। ব্রাক্ষসমাজে ঘাঁছারা নিশীণসাধন করিয়া থাকেন, তাঁছারাই ইছার উপকারিতা হীকার
করেন। নিশীণ-সাধন চিত্ত স্থিরের অতি স্থানর উপায়, নিশীণসাধন করিলে সমস্ত দিন অতি পবিত্রভাবে অতিবাহিত হয়,
নিশীথ সাধন ধ্যানের পক্ষে অতি প্রোজনীয়।

### मम्भामकोग ७ প্রাপ্ত প্রবন্ধ ।

#### ত্ৰহ্ম-দর্শন।

জীখারের নামে জনেকেই শ্রদ্ধা প্রকাশ করেন। জীখার যে থাকজন আছেন, প্রীকার করেন। কিন্তু জীখার যে মান-বাগ্যার জ্ঞানিবার বস্তু, দশনের বস্তু, লাভের বস্তু তাহা জনেকেই কার্যাতঃ খ্রীকার করেন না। ছগ্মকে উত্তম পানীর স্থাছ ও পুষ্টিকর বলিয়া প্রশংসা করিলেই কাহারও শরীর সবল হয় না বা রসনা ভৃগ্ত হয় না। যতক্ষণ সে পান না করে, ততক্ষণ সেই বস্তু কি তাহা প্রক্লভক্ষণে ব্রিভেই সক্ষম হয় না। জপর দিকে যখন সে ভৃগ্প পান করে এবং ভাহার শরীর সবল হইতে থাকে, তথন কেছ ভাহাকে ছগ্পের উপকারিভার বিক্লচ্চে

কিছু বলিলে সে প্রভার করে না, বরং মনে মনে উপহাসই করে। এইরূপ কোনও লোক যতক্ষণ ঈশরের প্রতি কেবল শ্রহ্মা করে কিছা ঈশরকে স্বীকার করে, ততক্ষণ প্রভূ পরমেশ্বর কর্তৃক তাহার আয়া সবল হয় না, আয়া তৃপ্তিও লাভ করে না। আবার যথন কোনও লোক পরমায়াকে মুথে স্বীকার কি শ্রহ্মা প্রকাশ না করিয়া তাঁহাকে অন্তরে জানে, দেথে এবং সন্তোগ করে, তথন লোকে পরত্রক্ষের বিক্তমে যতই বলুক না কেন, সেকল কথার সে কর্ণপাত করে না।

ঈশরকে জানা, দেখা বা লাভ করার অর্থ কি ? আমরা ইন্দ্রিরগ্রাহ্ন বস্তু সকল যেমন জানি কি দেখি—এ কি সেইকপ জানা কি দেখা ? আমরা যেমন হাতে টাকা পাইলে টাকা লাভ হইল মনে করি, সে কি এইরপ লাভ ? ঈশর-বিশাসী প্রেমিক ভক্তলোকেরা বলেন যে, "হাঁ এইরপই জানা, দেখা বা লাভ বটে, এমন কি ইহা অপেক্ষাপ্ত প্রত্যক্ষ।" তবে এ কি হইল ? ঈশর নিরাকার, চৈতন্ত শ্বরূপ, তাঁহাকে ইন্দ্রিয়-গ্রাহ্ন বস্তুর মত কিরুপে দেখা যার ?

ব্ৰশ্বজ্ঞ ঋষি বলেন, দে জানা এক অপূৰ্ব্ব জানা, সে দৰ্শন এক অপূর্ব্ব দর্শন। পৃথিবীতে অনেক পাইয়াছি, এ লাভের সঙ্গে সে লাভের তুলনা হয় না। ইহা ভাষায় ব্যক্ত করিতে হইলে এইমাত্রই বলা যার, ইহা এক অপূর্ব অভি মনোরম প্রাণ-মন-মুগ্ধকারী দর্শন বা উপলব্ধি। এ সকল কথা সকলে বুঝিতে পারিবে না, তাই সাধকেরা ঈশ্বর-দর্শন কি ইহা वुकारेएड ८०ई। ना कतिया जेचत-पर्यत्न नाख कि, जेचतरक পাইতে হইলে কি উপায় অবলম্বন করা কর্ত্তব্য তাহাই বুঝাইতে চেষ্টা করিয়াছেন। যাহার। ঈশ্বরকে দেখে নাই, ভাহাদিগকে ঈশ্বর-দর্শনের কথা বলিলে অম্ধকারে নিপাতিত কবা হইবে। ভাহারা ঈশর-দর্শন কি বুঝিতে চেটা না করিয়া ঈশ্বর-দর্শনে कि नाफ देशहे किछामा कवित्व। जाहात्रा वनित्व "दुक्षिनाम, ঈশর ভধু মাজের বা খীকারের বস্তুনন, তিনি দশ্নেব বস্তু বা লাভের বস্তু, কিন্তু তাঁহাকে লাভ করিয়া বা দেখিয়া কি ফল প যেমন টাকা পাইলাম, ভাহা ব্যবহারে সকল অভাব পূর্ণ হইয়া গেল, তেমন ঈশ্বরকে পাইলাম, আমার কি সকল অভাব দুর হইয়া যাইবে ় প্রাচীন সাধু বলিয়াছেন, ঈশ্রকে मनंन कतिता, वाखिविक मकन घडाव पृत श्र ,---

"ভিদাতে হানয় প্রছিলিছানাত্তে সর্বসংশ্রাঃ।
কীয়ত্তে চাস্ত কর্মাণি তাম্মিন্দ্টেপবাবরে॥"
সেই মহান্ ঈখরকে দর্শন করিলে হৃদয়-গ্রছি ভেদ হ্য,
সকল সংশ্র ডেদে হ্য এবং কর্মাসকল ক্ষয় প্রাপ্ত হয়।

হৃদয়-গ্রন্থি ভেদ হয়, ইহার অর্থ কি ? মানব-হৃদয়ে কতকপ্তলি গ্রন্থি আছে, সেই সকল গ্রন্থি আর কিছুতে ভেদ হয় না, সে গ্রন্থিভেদের তীক্ষ অন্ত্র পরব্রদ্ধ। মানবাত্মা যতক্ষণ পর্যান্ত সেই মহান্ ঈশ্বরকে দেখিতে না পায়, ততক্ষণ পর্যান্ত সে গ্রন্থি ভেদ হয় না। মানবাত্মা নানাক্ষপ আসক্তির বদ্ধনে বাঁধা য়হিয়াছে, কেহ বা ধনের আসক্তিতে, কেহ বা জাতির বৃদ্ধনে, কেহ বা যশেরগ্রন্থিতে, এইয়প নানা বৃদ্ধনে মানবাত্মা বাঁধা য়হিয়াছে। এসকলকে প্রাচীন সাধুমণ অষ্টাদশ পাশ

বলিয়াছেন। জালবদ্ধ পক্ষীর স্থায় মানব পাপপাশে বদ্ধ থাকে। তথন তাহার মহাক্লেশ এবং যখন সে পাপমুক্ত হয় তথন সে পরম স্থা হয়। এই হৃদয়-গ্রন্থি স্মার কিছুতেই য়য় না; একমাত্র "ভিন্মিন্ দৃষ্টে পরাবরে" হৃদয়-গ্রন্থি ভেদ হয়, সংশয় গ্রন্থি সকল ছিল্ল হয়। "আমি আমার ধনের আসক্রিটী ছাড়িতে পারিব না বা জাতির বাঁধনটা ছিল্ল করিতে পারিব না," এইরূপ দির করিয়া যে বাক্তি ধর্মপথে দাঁড়াই-য়াছিল, কত তর্ক কত যুক্তির হায়া আত্মপক্ষসমর্থন করিতেছিল, য়র্থন সে ব্যক্তি সেই মহান্ প্রক্ষকে দেখিল, তথন ভাহার সে তর্ক, সে যুক্তি কোধায় চলিয়া গেল, হৃদয়-গ্রন্থিতে পারিল। ঈশয়-দর্শনের ফল কি এখন সে ভাহা বুঝিতে পারিল। যে আত্মা পাপ-বদ্ধ হইয়া ছট্ফট্ করিতেছিল, এখন সে মুক্ত হইয়া পরমানন্দে চিদাকাশে বিহার করিতে লাগিল। ইহা অপেক্ষা আর পরমলাভ কি আছে ?

विजीव नाज, नेचंव-पर्नात मानवाचात्र मकन मः भारतताकाव হয়। কবিগণ সংশয়কে অন্ধকারের সঙ্গে তুলনা করিরাছেন। অন্ধকারে থাকিতে মানবের অত্যস্ত ভয়। লোকে কথায় বলে "অন্ধার ঘরের সকল স্থানেই সাপ।" অন্ধকারগৃহে থাকিতে বেমন সে তাসযুক্ত হয়, সেইরূপ সংশয় মহাশক্ত মানবাত্মাকে অন্ধকারে যুখন ঢাকিয়া ফেলে, তখন সে সেইক্লপ ভীত ও শহিত হয়। যতদিন মানবাত্মা সেই মহান্ ঈশবকে দেখিতে না পায় ততদিন সংশয় অন্ধকার দূর হয় না। শাস্ত্রজানে এ সংশয় যায় না, তর্ক যুক্তিতে যায় না, বহু উপদেশ প্রবণেও না। "তন্মিন দৃষ্টে পরাবরে" এসংশয় কেবল মাত্র চ্ছেদন হয়। সংশয়ীব আত্মার অবস্থা অতি ভয়ানক। আৰু ঈশবকে সাকার মানিতেছে, কাল একজন বক্তা বুঝাইলেন ঈখর নিরাকার, অমনি সাকার জ্ঞান চলিয়া গেল। আজ একজন নিরাকারবাদী ত্রাক্ষকে কেহ সাকারবাদ বুঝাইলেন অমনি নিরাকার জান চলিয়া গেল। সংশয়ী একবার ভাবে "ইহাও হইতে পাবে," আবার ভাবে "উহাও হইতে পারে।" (कन ना जाहात कानअ निकित्त खान नाहै। मत्नहाकून ব্যক্তির কোন বিষয়েই নিশ্চিত জ্ঞান হটতে পারে না। যে জিনিদ দেখা হয় নাই; ভাহার কথা বলিতে কে সাহগী **হইতে পারে? যে ঈশ্বকে দেখে নাই, ভাহার পক্ষে** ঈশবের কথা বলা, অন্তের কাছে শোনা কথা ভিন্ন আর কিছুই নয়। যে দেখিয়াছে, তাহাকে তুমি হাজার কথা বল, বিশ্বাসের বিক্লছে যতই ভয় প্রদর্শন কর না, সে কিঞ্ছিৎ মাত্রও ভীত হয় না। মহান্ধা মহমাদ যথন ঈশ্বরকে দেখিলেন, তথন পরমেশর একজন ব্যতীত দিতীয় নাই, সেই দেবদেবী পুজক আরব দেশে এই মহাসতা ঘোষণা করিতে লাগিলেন। "ঈশ্বর এক, তাঁহার পূজাতেই জীবের পরিত্রাণ।" এই কথাই তাঁহার क्रभामा इहेन। उथन मिट मिएन वड़ वड़ लाक्त्रा अकत रहेशा महत्यानत थूझठाछाक छाकिया वनिष्ठ ! नाशिन--"দেখুন আপনার প্রাতম্পুত্র বলিতেছে ঈশ্বর একজন মাত্র, দেব দেবীর পূজায় কিছু হয় না, ইহা ভাছাকে বলিভে

হইবে।" মহম্মদের পুরভাত মহম্মদকে অভান্ত ভাল বাসিতেন ভিনি প্রাভম্পুত্রকে গোপনে ডাকিয়া বলিলেন, "দেখ মহমদ! তুমি একথা আর বলিও না যে, ঈশ্বর এক এবং দেব দেবীর পূজার কিছু হর না।" মহম্মদ এই কথা শুনিরা বলিয়া উঠিলেন, যদি কেহ আমার এক হতে চক্রকে ও অস্ত হত্তে স্গাকে আনিয়া দেয়, তথাচ মহলদের রসনা হইতে ইহার বিপরীত কথা কথনই উচ্চারিত হইবে না।" তাঁহার পক্ষে ঈশ্বর এক ভিন্ন বহু বলা এবং দেবদেবীর পূজায় জীবের তাপ হর, এই উপদেশ দেওরা অসম্ভব। যাহারা প্রভূ পরমেশ্বকে **(मर्थ नार्टे जाहातारे এकवात क्षेत्रत निवाकात, এकवात क्षेत्रत** সাকার বলিতে পারে। যে তাঁহাকে দেখিয়াছে, সে তাঁহার সম্বন্ধে নিশ্চিত জ্ঞান সংশয়রহিত জ্ঞান লাভ করিয়াছে। দর্শন ব্যতীত সংশয় কথনই তিরোহিত হয় না। সাধুগণ চিরজীবন বে কথা বলিয়াছেন, এবং প্রাণ দিয়া যে সভ্য খোষণা করিয়াছেন. ভাষা কেবল দর্শনের কথা। যাহারা তাহাকে দেখে না, তাহারা ধর্মভাবসম্পন্ন পিপাত্ম লোক হইলেও আজ একরূপ কাল অম্বরূপ বলিবে। তাহাদের ধর্ম বিখাসের নিরামক। যথন যেরপ ভাব হর তথন তাহাদের মত দেই আকার ধারণ করে। এই দেব দেবী-পृक्षक-मित्र महाया ताका बामस्माहन जाकीवन এकहे कथा বলিতে পারিতেন না, বা মহর্ষি দেবেক্সনাথও বৃদ্ধকাল পর্যান্ত একই সভ্য প্রচার করিভে পারিভেন না, যদি তাঁহারা ঈশং-সাক্ষাত লাভ না করিতেন।

প্রাচীন সাধু ঈশব দশনের তৃতীয় লাভ বলিয়াছেন क्या क्या । अत्मान वाग यक क्रिया क्वार्भित वहरे आहुकाव ছিল, সম্ভবতঃ এই কর্মক্ষের কথাই তাঁহারা বলিয়াছেন। जेश्वत्र (पश्चिम याग यछ कि हा कनार्थ धार्व्ह धारक না, তথন এসকল অতি অসার বলিয়া মনে হয়। যাগযজ্ঞাদি পুষরিণী अनुनामि সমুদয় কর্মাই মাতুষ নিজে কর্তা হইয়া সম্পন্ন করে স্থতরাং তাহার সঙ্গে হুখ্যাতি অখ্যাতির সম্বন্ধ রহিয়াছে, ফলাফল চিন্তা রহিয়াছে। এ সকল কম্মে मानविधार मास्ति ना निधा व्यमस्ति व्यानधन करता। यथन মানব আপনার প্রভূপরমেখরণক দেখে এবং তাঁহার আদেশে কার্য্যে প্রবৃত্ত হয় "তথন ভাহার ফলাফল বা স্থুখ্যাতি অখ্যাতির চিন্তা থাকে না,তথন ভাহার "আমার কায় আমি কণ্ডা" এজ্ঞান চলিয়া यात्र। प्याभिष्टे भाष्य्यक न्रतना क्रम विटल्हा "আমার কাষ আমি কঠা," এই জ্ঞান ঈশ্বর দশনে বাধা দেয়। যতকণ সাধক প্রভুকে দেখিতে না পায়, ততকণ এসকল বন্ধন কিছুতেই যায় না। এই কর্মকণ্ণ ঈশরদর্শন বাতীত रुत्र न। य व्यामिट्यत व्यानात्र मासून पिनानिभि व्यक्ति, যদি সে আলা হইতে মাতুষ উদ্ধার পার, ভাছা হইলে ইহা অপেকা পরমলাভ আর কি আছে ?

হইরা মহম্মদের খুরতাতকে ডাকিয়া বলিতে গোলিল—

"দেখুন আপনার প্রাত্তপুত্র বলিতে ই ঈশর একজন মাত্র,
দেব দেবীর পূজায় কিছু হয় না, ইহা ডাহাকে বলিতে
কিবেধ করিয়া দিন, নজুবা তাহার সহিত আপনারও অনিষ্ট নিশ্চিত জ্ঞান লাভ করিয়া থাকে। মানবাম্মা বে পশু ক্ষ

ধারণ করিবে না এসংশয়ও ঈখর দর্শন ভিন্ন যার না; আত্মার এখানেই শেষ এ সংশয়ও লুচে না। পরকালের জ্ঞান উজ্জল হয় না। যতক্ষণ মানব ঈখরকে দেখিতে না পার ততক্ষণ খোর অক্ষকারের মধ্যেই বাস করে। আমরা এখন আপন আপন জীবনে ঈখর দর্শন যথার্থ হইয়াছে কিনা এই সকল ফলের সারা বিচার করি। ঈখরকে না দেখিলে এ রাজ্যে ঠিক থাকা যার না। ঈখর দরা করিয়া আমাদিগকে দেখা দিরা সকল সংশর দ্র করুন; ছদয়ের গ্রাছি সকল ছেদন করিয়া দিন এবং আমিছকে বিনাশ করুন। আমরা তাঁহাকে দেখিয়া তাঁহার হইয়া তাঁহার সেবায় জীবন অতিবাহিত করি।

#### অবতারবাদ ও গুরুবাদ।

পরমেশ্বর সর্কশক্তিমান—চিরসদর ও অমুকুল। স্থতরাং তিনি ভক্তের মনোবাঞ্চা পূর্ণ করিবার জন্ত্য, তাঁহার তৃপ্তির জন্ত কেন আকার পরিগ্রহ করিতে পারিবেন না ? অমুক্ল এবং সর্কশক্তিমান যিনি ভক্তের অমুরোধে তিনি কি না করিতে পারেন ? এই যুক্তি অবশন্ধন করিয়া অনেক অবভারবাদী ঈশবের জগতে অবভীর্ণ হওরার মতকে সমর্থন করিয়া থাকেন এবং বলেন যিনি সদয় এবং ইচ্ছা করিলে সকলই সম্পার করিতে পারেন, তিনি ভক্তের মনোবাঞ্চাপূর্ণ করিবার জন্ত অবস্তীর্ণ হইতেও পারেন।

যাহারা ঈশবের সর্মাক্তমন্তা এবং অত্কৃনভার প্রতি এরপ নির্ভরশীল ও বিখাদী, গাঁহারা এই বিখাস খারা চালিত হট্যা ষ্ট্রাপ্রকে তাঁহার প্রকৃতি ও ব্রুপবিকৃদ্ধ কার্যা করিতেও অফুরোধ করিতে পাবেন অর্থাৎ অনস্ত চিমায়কে সার্থ ও কুত্র আকার গ্রহণ করিতে অমুরোধ করিতে সংকাচ মনে করেন না: তাঁহারা কেন সেই সর্কাশক্তিমানের অফুকৃণতা ও সদয় ব্যবহারের প্রতি নির্ভব করিয়া, স্বাভাবিক ও সত্যের অমু-মোদিতকপে সেই চিমার নিরাকার সতা ধাান করিবার জন্ম এবং ভাহা দর্শন করিবার জন্ম সহিষ্ণৃতার সহিত নির্ভরণীল ও প্রার্থী हहेट भारतन ना ? এই कर्ण - आर्थी हहेरन प्रेचेत्रक छै। हात শ্বরূপের বিরুদ্ধ কোন কার্য্য করিতেও অফুরোধ করিতে হয় না এবং কল্পনার আশ্রের লইয়া অসম্ভব যাহা তাহাকে সম্ভবপর মনে ক্রিয়া প্রতারিতও হইতে হয় না এবং তাহাবারা অপরাধের পরিমাণ্ও বুদ্ধি হয় না। যাহারা ঈশবের আছকুলো সম্পূর্ণ বিশ্বাসী এবং সেই অমুকৃষভায় নির্ভন্ন করিয়া ডিনি নিরাকার হইয়াও আকার গ্রহণ করিতে পারেন.ইহা সম্ভবপর মনে করেন ष्यथह डाँहात्रा जिनि य वार्क्नाचात्र वार्क्न धार्थनापूर्व करतन, ডিনি যে তাঁহার প্রতি নির্ভরশীল ভক্তের আকাজ্ঞা মূর্ত্তি পরিগ্রহ না করিয়াও, প্রকৃত ফ্লাবেই পুর্ণ করিতে পারেন এবং ভাষার নিকট আত্মশ্বরূপ প্রকাশ করিতে পারেন, এই সভ্যে কেন সন্দেহ করেন। ত্রক্ষপ্রাপ্তির জম্ম তাঁহারা অপর কোন अक्षम पूर्वन वास्तित बाला अध्य क्रवादक्टे दकन अक्षाव चेभाव विश्वता मत्न करत्रन १ अल्मीत चवकात्रवाहिश्य विचान

करत्रन जिचेत्र फरकत्र সाংসারিক প্রয়োজন সাধন করিবার अस মূর্ত্তি গ্রহণ করিয়া কুদ্র মানব রূপেও পরিণত হইতে পারেন। সর্বাজিমানের ইচ্ছামাত্রেই যাহা হইতে পারে, তাহা সম্পর করিবার জন্ম তিনি মূর্ত্তি পরিগ্রহ করিবেন, তাঁহার প্রাকৃতি ও স্বরূপের বিপরীত ভাবাপর হইতে পারিবেন; বাঁহারা এতদ্র মানিতে প্রস্তুত, তাঁহারা যে সেই সর্কশক্তিমানের করণায় নির্ভরশীল হইয়া ধর্মজীবন লাভের আশায় আশাবিত থাকিতে পারেন না. ব্রহ্মদর্শনের জন্তু যে সামান্ত লোক-প্রদর্শিত পথের অনুসরণ করা ভিন্ন উপায়ান্তর নাই বলিয়া মনে করেন, ইহা নিতান্তই অসঙ্গত ও তাঁহাদের বিশ্বাসের বিপরীত ভাবব্যঞ্জক। অনম্ভ স্বরূপ পরমেশ্বরকে কুদ্রতায় পরিণত হইতে-পূর্ণ জ্ঞান-ময়কে সামান্ত জানীরপে—সর্বাশক্তিমানকে সামান্ত শক্তিশালী-রূপে দেখিতে তাঁহাদের এতই সাধ যে, এই প্রকারে অসঙ্গত প্রার্থনা করিতেও তাঁহারা সঙ্কোচ করেন না। কিন্তু ধৈর্যোর সহিত তাঁহার চিন্ময় সপ্রকাশ স্বরূপ দেখিবার জন্ম যে অপেকা করা, সেজ্যু তাঁহার প্রতিই যে নির্ভরশীল হইয়া থাকা, ভতদ্র বিলম্ব করিবার প্রবৃত্তি তাঁহাদের নাই। এজন্ত সহজে রাতারাতি বড় লোক হইবার প্রত্যাশায় এক শ্রেণীর লোক জ্ঞান বিজ্ঞানের বিরুদ্ধ ভাবেই ঈশ্বরকে আয়ত্ত করিবার প্রবাদ করিয়া থাকেন। সভ্যের সেবক না হইয়া মনঃ ক্রিত ভাবে चाि जिक्क चन्रिक हरेलारे कि चिनाय शूर्ग रहेरत ? राहा সত্যের বিরোধী তাহার সম্ভাবনা কোথায় ? সেরূপ আকাক্ষা ষেমন পূর্ণ হইবার নয়, তেমন স্বাভাবিক ও সরল সত্য পথ অফু-সরণ না ক্রিয়া অযথাভাবে মানবের পদামুসরণ করিয়া ধর্মজীবন লাভ বা ব্রহ্মলাভেরই বা সম্ভাবনা কোথায় 👂 ঈশ্বর যথন সংধ-প্রতিই নির্ভর করিয়া থাক। তাঁহার দৃষ্টিতে যথন তোমার আকাজ্ঞা পরিপূর্ণ হইবার সময় উপস্থিত হইবে.—যুখন সূত্য সভাই তোমায় আর অন্ত আকাজ্ঞা বা লাল্সা না থাকিবে, তথন তিনি তোমার আকাজ্ঞা অপূর্ণ রাথিবেন না। তথন সভা ভাবেই তাঁহার চিমায় সত্তা প্রাণে উপস্থিত দেখিতে পাইবে। কল্পনার সাহায্য লইয়া আত্ম-কল্লিড ঈশবের প্রকাশ দেখিবাব জন্ত কেন প্রয়াসী হও। তিনি যেরপ সেই ভাবেই তাঁছাকে **मिथिवात क्रम नानाग्रिक इड जवः ठाँहात मुथालको हहे** ता থাক, ভবেই আশা পূর্ণ হইবে।

গুরুবাদ সমর্থনকারিগণ তাঁহাদের মতের পোষণার্থ বলিয়।
থাকেন যে মাহুষ মাহুষের নিকট যদি শিক্ষা না পায়, তবে
তাহারা শিক্ষা লাভই করিছে পারে না। যেমন কোন মানব শিশু
ঘটনাক্রমে ভল্পক বা ব্যাছাদি কর্তৃক প্রতিপালিত হইলে
দেখা যায় তাহারা মানবপ্রকৃতি-বিচ্যুত হইয়া দেই সকল পশু
প্রকৃতিসম্পন্ন হইয়া থাকে। যদি ঈশর হইতেই সম্দন্ম শিক্ষা
পাওয়া বাইতে পারিত, ভবে এ হুলে মানবশিশু হইয়াও কেন
দে মানব-প্রকৃতি প্রাপ্ত হয় না। ঈশর কি তাহাকে মানবের
মত হইতে শিক্ষা দিতে পারেন না 
প্রতরাং দেখা যাইতেছে
মানবের শিক্ষা মানবের নিকট হইতেই হয়।

किन रेरावाता कि अक्षेत्र अमानिक रव रा, मानद मानरदत

নিকট শিক্ষা পার বশিরা আর কাহারও নিকট হইতে শিক্ষা পার না বা পাওয়া আবশুক নর। বরং ইহা হারা ইহাই প্রমাণিত হয় যে মানব যাহা দেখে, তাহাই শিক্ষা করে। তাহার শিক্ষক একমাত্র মানব নহে; কিন্তু জগতের সমস্ত পদার্থই শিক্ষক হইয়া তাহাকে শিক্ষা দিয়া থাকে। ভরুক বা ব্যাদ্রের নিকট শিশুকে রাখিলে সে ব্যাদ্র ও ভবুকের প্রকৃতি প্রাপ্ত হয়। ইহাহারা সহজেই প্রমাণিত হয় যে মানব অক্ত কিছু দেখিয়া শিক্ষা করে। শৈশবর্গালে যেরূপ দেখে সেইরূপই শিক্ষা করে। এবং সেইরূপই প্রকৃতি প্রাপ্ত হয়। স্থতরাং মানবকে মানবের নিকট রাখিয়া দিলেই চাহার মন্থ্রোচিত শিক্ষা লাভ হইতে পারে।

শিক্ষা লাভ করিতে হইলেই কিছু দেখিয়া শিক্ষা লাভ করিতে इहेटव यिन ইहारे निव्नम इब्र, जाहा इहेटल मासूय यिन निव्यविष्ट्रव মামুষের নিকটেই অবস্থিতি করে, সে যদি এই মানবের অতি-বিক্ত আর কিছুরই সন্ধান না পায়, তাহা হইলে এই মানবে যাহা আছে. সে ত তাহার অতিরিক্ত আর কিছুই শিধিতে পারে না। কিন্তু মানবের পক্ষে তাহাই কি প্রচুর ? মহুষা মহুষোর মধো যাহা দেখিতে পান্ন তাহাই কি ভাহার শিক্ষার চরম সীমা। তাহা इहेटल জনসমাজে বর্ত্তমান সময়ে জ্ঞানের যে বিকাশ হইয়াছে, সভাতা ও ধর্ম্মের যে আশ্চর্যা উন্নতি হইয়াছে, তাহার ত কোনই সম্ভাবনা ছিল না। সৃষ্টির আদিম মানব এবং বর্ত্তমানের মানবকে যদি পাশাপাশি রাথিবার সম্ভাবনা থাকিত, তাহা হইলে এই ছই শ্রেণীর প্রাণী একই মূল মানববংশ হইতে উৎপন্ন কি না ভাহাতেও (वाध इम्र मत्नर इरेज। (मरे चानिकाल मानत्वन (य हाम्र) এখন পাক্ষতা অসভ্য জাতিদিগের মধ্যে আছে, তাহাদের সহিত বর্ত্তমান স্ময়ের উন্নত জ্ঞান বিজ্ঞানসম্পন্ন মানবগণের কি তুগনা হয় ? এই যে উন্নতি, এই যে অতি উপাদেয় পরিবর্ত্তন গাহাব চিস্তাতেও মন প্রাণ মুগ্ধ হয় এবং ফুগৎস্তা বিশ্বগুরুৰ শিক্ষা প্রণানীর চমৎকাবিত দেখিয়া বিমোহিত হইতে হয়, তাহা কি সেই একমাত্র মানবকে দেখিয়াই লাভ হইয়াছিল ? সেই স্ষ্টের সমকালের মহুধ্যগণকে দেখিয়া ত মান্তকুলের দেইরূপ পরিণাম হওয়াই সম্ভবপর ছিল-वर्खभारनत এই উन्नज भानव किकार काथा हहेरज व्यामिन ? জগৎপ্রক্র শিক্ষা ভিন্ন কে কবে গোকাতীত নূতন সত্য नाटि मगर्थ इरेब्राइ १ कि अफ़्रिकान कि अक्षाश्रिकान কোন বিজ্ঞানের মূল ফ্র সকল মানব মানবকে দেখিয়া শিথিয়াছে ? নৃতন তম্ব, নৃতন সত্যের শিক্ষা করিতে চিরদিনই মানবকে সেই সভ্যের প্রস্রবণ সভ্য স্বরূপ পরমগুরুরই মৃগাপেকী হইতে হইয়াছে। তিনিই দেই সতা শিক্ষা প্রদান করিয়া-(इन। गानत्वत्र मांधा এकाख वााकूल रुख्या, এकाख निर्कत-শীল হওয়া; নৃতন তত্ত আবিভারের শক্তি সে কোথায় পাইবে ? যে সকল সভা এখন পথে ঘাটে ? যার ভার মুখে গুনাযায়, যার তার নিকট শিক্ষা করা যায়, তাহার আদি প্রকাশ সেই সভ্যের আধার হইতেই হইরাছে। মানব যে সত্য একবার জানিয়াছে, তাহা জানিবার জন্ত অপরের পক্তে ক্টকর বা তেমন পরিশ্রম সাধ্য থাকে না ইহা সভ্য এবং সেই শত্য মানবের নিকট শিক্ষা করিলে যে কোন খোষতাপী হইতে হয়, তাহাও নহে। কিন্তু সত্য অরপকে পরিত্যাগ করিয়া তাঁহার মুণাপেক্ষী না হইয়া, কথনই কেহ কোন নৃতন সভাকে আবিকার করিতে পারে নাই। যে সত্য শিক্ষা দিবার অধিকার মানবের নাই সে প্রকারের সত্য শিক্ষা করিতে হইলে, সেই সত্য অরপেরই মুক্ষাপেক্ষা করিতে হইবে।

মানবে যাহা আছে, ভাহাকে দেখিয়া ভূমি ভাহাই শিকা করিতে পার. ডদতিরিক্ত কিছু শিক্ষা করিতে হইলেই মানবের ষ্মতীত আর কিছুর নিকট ধাইতে হইবে। মানবের উন্নতির দীমা কোপায় শেষ হইবে, তাহা কে জানে ? মানবাঝার কলা।-ণের জন্ম এবং তাহার অসীম উন্নতির জন্ম তিনি যে কত কি শিক্ষা দিবেন—এই অসীম কৃধাসম্পন্ন মানবের ক্রিবৃত্তির জ্ঞাক্ত যে কি প্রয়োজন তাহা এখন মানবের কল্পনায়ও উদিত হইতেছে না। স্বতরাং সমগ্র উন্নতি বা কল্যাণ লাভের জন্ম কি একমাত্র মানবের মুখাপেকী হওয়া কর্ত্তবা ? মানব যাহা শিকা দিতে পারেন, তাঁহার নিকট হইতে যাহা গ্রহণ কবিবার আছে. তাহা গ্রহণ কর, তাঁহার প্রদন্ত শিক্ষা গ্রহণ কর ; তাহাতে আপন্তি কি ? কিন্তু তাহাতেই পরিভৃপ্ত হইও না। তাহাতেই দৃষ্টি আবন্ধ রাখিও না। তাহাতে উন্নতি সীমাবদ্ধ হইবে। তন্মারা কল্যা-ণের পর্ব প্রসন্তভর না হইয়া সন্ধীণতর হইবে। তাহাতে অনেক সময় শিক্ষার সহিত অশিক্ষাও লাভ হইবে। ব্রাহ্মসমাঞ্চ লোকের निक्ठ श्हेरङ निका शहर कतिरङ कथनहे निरंद्य करतन ना। কিন্তু তোমার শিক্ষার সীমা ঐ লোকের নিকটেই অবরুদ্ধ নছে। তুমি লোক প্রদত্ত শিক্ষাকেই একমাত্র শেষ দীমা করিয়া রাখিও ना, हेराहे वरनन । निकात विषय अनुद्ध । निकल कि मास रहे-বেন। শিক্ষকও অনস্তই ছইবেন। যাহার নিকট যাহা পাইবার সম্ভাবনা নাই, তাহার নিকট হইতে তাহা পাইবার আশা করিলে কেবল প্রতারিত হইতে হয়। ভাহাতে কেবলই অভ্ততার রৃদ্ধি হয়। স্থতরাং অনস্ত জ্ঞানের অধিকারী ভূমি অনত্তের ম্থাপেকী হও। অনস্ত জ্ঞান স্থা পাইয়া ক্তার্থ হইবে। চিরদিন এই বীতিই চলিয়া আসিতেছে যে অনস্ত জ্ঞানময় পরমেশ্ববের সাক্ষাৎকার লাভ হটতেই এবং তাঁহার প্রদন্ত শিক্ষা হইতেই মানব উল্লভ হইতে উত্রভতর শিক্ষা এবং জীবন লাভ করিয়া ক্তার্হইয়াছে।

### মৃত্যু ও পরলোক।

( প্রান্ধ উপলক্ষে পঠিত হইবার জন্ত লিখিত )

সাধুগণ বলেন. "মৃত্যুতেই জীবন।" মৃত্যুই অমৃতের সোপান,
মৃত্যু বার দিয়া ভগবান জীবদিগকে অমৃতে—শান্তি নিকেতনে
লইয়া যাইতেছেন। এই অমৃতের অধিকারী মানব, মৃত্যুর জল্ত
সর্বাদাই অপেকা করিতেছে। যাহার জল্ত আময়া অপেকা করিতেছি এবং যাহা আমাদিগকে অমৃতে লইয়া য়াইবে, ভাহাকে
আর মৃত্যু অথবা বিনাশ বলি কিরপে ? ভাহা মানআর একটী
অবস্থা মাত্র। অবস্থান্তর প্রাপ্ত হওয়া মৃত্যু নয়, ভাহাকে
পরিবর্ত্তন বা আখার দেহ ত্যাগ বলাঘাইতে পারে, বয়ং বে অবস্থা

মানবকে অমৃতে লইরা যার তাহাকে অমৃতের সোপান বলাই যুক্তিযুক্ত। জীব পার্থিব জীবন শেষ করিরা অনন্ত জীবনে প্রবৃত্ত হর। এই জন্মই সাধুগণ "মৃত্যুতেই জীবন," এই উক্তি করিয়াছেন।

তবে মৃত্যু কি ? অমৃত হইতে দূরে থাকা বা অমৃতকে ভূলিরা থাকাই মৃত্যু। মানব যথন ঈশরকে ভূলিরা থাকে, তথনই তাহার মৃত অবস্থা। ঈশরে যিনি জীবিত, তিনিই জীবিত। আধ্যাত্মিক রাজ্যে ঈশর মনন হারা জীবন এবং ঈশর বিশ্বতি হারাই মৃত্যু গণনা হইরা থাকে। জীব পৃথিবীর অর গ্রহণ করিতে পারিতেছে না, ইহা যথার্থ মৃত্যুর চিক্ষ নয়; কিন্তু ঈশরে বিশাস্বিহীন হইরা অর্গীর প্রেমার গ্রহণ করিতে পারিতেছে না, ইহাই মৃত্যুর লক্ষণ। খাস্থ্যানের গতিরোধ হইয়াছে, ইহা মৃত্যুর চিক্ষ নয়; কিন্তু সত্যের রক্ষ ধমনীতে প্রবাহিত হইতেছে না, প্রেমপুণ্যের বায়ু আত্মার প্রবাহিত হইতেছে না, প্রেমপুণ্যের বায়ু আত্মার প্রবাহিত হইতেছে না, ইহাই মৃত্যুর লক্ষণ।

যদি মৃত্যু বিশেষ অবস্থান্তর হইল, তবে কেন ভীত হইতেছ ? সংসারে কি চিরদিন এক অবস্থায় কাটাইতে পারিয়াছ ? যদি সে ন্কল অবস্থান্তরে আপনাকে ঠিক রাথিতে পারিয়াছ, তবে সৃত্যুতে ভীত হইতেছ কেন 💡 যে মৃত্যুতে ঈশ্বর হইতে বিচ্যুতি হয়, তাহাকেই ভয় কর। সেই মৃত্যু সকলের ভীতি উৎপাদন করুক। বিখাসীরা ঈখরবিরহে কাতর হইয়া ছট্ফট্ ক্বিয়াছেন; কিন্তু যথন তিনি প্রাণে প্রকাশিত হইয়াছেন, ডখন অতি হর্ষের সহিত শক্রহন্তে, অগ্নিতে, জলে, কুশৈ, পার্থিব **की** वन ( भव क तिवार हन। ( पश्नार में बीवन ( भव हय ना। हे हाव পর মানবাত্মা অনন্ত জীবন প্রাপ্ত হইবে। এই সীমাবদ্ধ অর करणत कीवनहे हेह कीवन, हेहात अवश्वित शासत नाम हेह-লোক এবং অবস্থিতি কালের নাম ইছকাল, এবং এই সীমাবদ্ধ জীবনের শেষে যে জীবন, তাহার নাম অনস্ত জীবন ; তাহার ষ্মবৃত্তিতি স্থানের নাম প্রলোক এবং কালের নাম প্রকাল। এ পরলোক কি অন্ধকারময় ৷ শিশু যেমন মাতৃগর্ভে অন্ধকারে থাকিয়া দকলই অন্ধকারময় দেখে, দেইকপ অজ্ঞান শিশু আত্মার নিকটও পরলোক অন্ধকারময়, কিন্তু শিশু যেমন ভূমিষ্ঠ হইয়াই উজ্জन ज्यात्नाक-পूर्व পृथिवी (मर्थ, मिटेक्न भिक्त ज्याजा প्रतनाक मस्दक्ष अथात्न अक्ककात प्रतिरिट्ट , त्रशात्न (भौष्टियाहे निवा भारताकपूर्व द्राष्ट्रा रामिशा भूगिकिङ हहेरव। भाषा এथान থাকিয়া জাতুক বা না জাতুক সে রাজ্য আলোক-পূর্ণ। যেমন গভন্থ শিশুর জ্ঞানের উপর এ পৃথিবীর আলোকের কাজ নির্ভন্ন করে না. সেইরপ অমর আত্মার পক্ষেও সে রাজ্যের বিষয় काना ना कानात्र উপর কিছু নির্ভর করে না; তবে পৃথিবীর আলোর সঙ্গে অন্ধকার আছে, এখানে দিবা রাত্রি হয়, কিন্তু সে वारका जारमा जारक, जक्षकांत्र शाहे। महामग्र नेचंत्र कीविमिशिरक সে রাজ্যের বিষয় বুঝাইবার জম্মই যেন অন্ধকার গর্ভবাসের ভিতর मित्रा मानवरक डेव्बन-चारनाक-पूर्व পृथिवीरङ चानित्रारहन। তবে বে যায় সে আর ফিরে না বা ফিরিতে চায় না; যেমন पि जिक्र वक्तात शर्धरज्ञना भाहेता भृथितीए ज्यानिवादह, णिहाटक हाबाब आलाखन दम्थाहेटन अ त्म बात पूनवाम गर्छ-

বাসে বাইতে চায় না; এই গর্ভবাস ক্লেশজনক বলিয়াই পুনর্জন্মবাদীরাও পুনর্জনকে শান্তি মনে করেন; আর বাঁহারা
ইহাতে অবিশাস করেন তাঁহারা ত ঈশরের স্থরূপ বিক্লম্ব
বলিয়াই মনে করেন। পরলোকে বাহারা গিয়াছে, তথায়
পূণ্যের পুরস্থার পাওয়া দূরে থাকুক, পাপের শান্তি পাইলেও
আর ফিরিয়া আসিতে চায় না। তাই বাহারা চলিয়া
গিয়াছে, তাহারা আর কেহ ফিরিল না; কিন্তু বিশাসীরা
বিদায়কালেই সে রাজ্যের সাক্ষ্য দিয়া চলিয়া বান, তাঁহাদেব
ফিরিবার আর আবশুক নাই; ফিরিল না বলিয়া তাঁহাদিগের
অন্তিম্ব সন্দেহ করিও না; তাঁহাদের প্রতি বাহা কর্ত্ব্য আছে,
ভক্তি নিঠার সহিত তাহা সম্পন্ন কর। এই কর্ত্ব্য পালন ছারা
তাঁহাদের সঙ্কে ইহলোকবাসীদের এক বিমল যোগ সংস্থাপিত
হইবে। মানব পৃথিবীতে থাকিয়াই স্থাবাস স্থুব সস্তোগ
করিবে।

একজন বিশ্বাসী যথন ঈশ্বনের নাম করিতে করিতে ইহলোক হইতে বিদায় গ্রহণ করেন, তাঁহার সে কথা শ্রবণ করিয়া
কি আমরা পরলোকে আস্থাবান হইতেছি না ? তাঁহার
পরলোকগমন সময়ে ধর্মভাবপূর্ণ উপনদশ শ্ররণ করিয়া কি
পরমেশ্বরে বিশ্বাসী হইতেছি না। সম্নয় বিশ্বাসী আত্রাই
দেহত্যাগের সময় এইকপ জীবস্ত বিশ্বাসের পরিচয় দিয়া
গিয়াছেন। সেই সন্নয় বিশ্বাসী আ্য়াদিগকে শ্রবণ করিয়া
স্বর্গীয় স্বর্থ সজ্যোগ কবি।

### প্রেরিত পত্র।

(পত্রপ্রেকদিগের মতামতেও জন্ত সম্পাদক দাই। নহেন।)
শীঘুক্ত তত্ত-কোমুনী সম্পাদক মহাশয়

সমীপেযু—

মহাশয়.

আপনি "আহ্মণতের মূল কথা" প্রসঙ্গে বলিয়াছেন, "এই-রূপে সমাজ মধ্যে এক শ্রেণীর লোক জ্ঞানামুশীলনে সর্বনা রত থাকিলে যে, সে সমাজ মধ্যে জ্ঞানের গৌরব বক্ষিত হয়, তাহা বলা বাহলা মাত্র।" এই কারণে আপনি ত্রাহ্মসমাজেও এইরূপ এফ শ্রেণীর লোক প্রস্তুত কবিতে প্রয়াসী হইয়াছেন, যাঁহারা "ইহার আধাাত্মিকতাকে রক্ষা ও পবিপোষন করিবেন।" আপনার এই বিশ্বাস জিমিয়াছে যে, এমন এক শ্রেণীর লোক না থাকিলে "ব্রাহ্মসমাজের আধ্যাত্মিকতা ত্বার মান চইয়া ষাইবে।" আপনি যে ত্রাহ্মসমাজে এক শ্রেণীর ত্রাহ্মণ সৃষ্টি করিবার বিশেষ পক্ষপাতী তাহার পরিচয় অনেক দিন হইতে পাইয়াছি। ব্রাহ্মণ অভাবে যদি ব্রাহ্মসমাজের আধ্যাত্মিকতা तका ना रत, उरव बाक्षमभाक (य नका नरेशा क्या बर क दिया-ছিল, তাহা বিলুপ্ত হইয়াছে। ত্রাহ্মণের আবির্ভাবে সে সমাজের আদিলকাগত আধ্যাত্মিকতা কথনই রক্ষিত হইবে না। আপনি নৃতনবিধ আধ্যাত্মিকতার আশ্রন্ধাতা হইতে পারেন। কিন্তু সে পাধ্যাত্মিকতা ত্রাক্ষসমাকের কোন দিন

লক্ষ্য ছিল না। অগতে সাহিত্য ও বিজ্ঞানের উন্নতি যে क्विन अन्जक्या लाकिनिश्ति बाताहै ब्हेमाहि, এ कथा यथार्थ নহে। অন্ত কর্ম করিয়াও শত শত লোকে সাহিত্য ও বিজ্ঞানের উন্নতি করিয়াছেন। গ্রাসাচ্ছাদনের চিন্তা করিয়াও বহু লোকে বিজ্ঞানেব উন্নতি করিয়াছেন, সাহিত্য জগতে প্রতিপত্তি লাভ কবিয়াছেন। ওয়াট্য ও ষ্টিবেনসন পৈতৃক সম্পত্তিব অধিকারী ছিলেন না, রাজাব বা সমাজের সাহাযাও পান নাই, তপাপি তাঁহাবা নিজ অধাবসায় বলে জগতের প্রম হিত সাধন করিয়া গিয়াছেন। হার্কাট স্পেন্সর দোভাগ্যের ক্রোড়ে প্রতিপানিত হন নাই, নিজ গুত্তক মুদ্রান্ধনের বার ভাব পর্যাপ্ত বহন করিবার ক্ষমতা তাঁহার ছিল না, জান ই য়াট মিলেব অথ সাহায়ে উহা মুদ্রিত হয়। মিল ইণ্ডিয়া আফিলে কেরাণীগিরি করিয়া জীবনটা কাটাইয়াছেন, কিন্তু তাঁহাৰ মত চিন্তাশীল লোক জগতে কত জন আছেন (ক) মিলেব সাহায্য ব্যতীত কোমতের অল্ল সংস্থানেব অঞ্চ উপায় ছিল না, মিলও আফলাদের সহিত তাঁহার সাহায্য কবিতেন। কিন্তু কোমত যথন আপনাব স্থায় এক শ্রেণীর ত্রাহ্মণ স্টিব প্রস্থাব কবিলেন, জন সাধারণে জ্ঞানীর সাহায্য করিতে বাধ্য এই দাবি উপন্থিত করিলেন, তথনই মিল তাঁহার সাহায্য করিতে বিরত হইলেন। মিলের জায় সাম্যবাদীর পক্ষে এইরূপ দাওয়া অতি অসঙ্গত বলিয়া বোধ ছইয়াছিল। (থ) কোন সামাবাদীই কোম্ভের কিথা আপনার এই ব্রাহ্মণ স্টির প্রস্তাব সমর্থন কবিবেন না। আমি এতদিন জানিতাম, ব্রাক্ষসমাজ সামামন্ত্রের উপাসক, প্রত্যেক ব্রাহ্মই সামাবাদী, কিন্তু এখন

কে ) অনস্তকন্ম লোক ভিন্ন যে সাহিত্য বা বিজ্ঞানের উন্নতি হইতে পাবে না একপ বলা আমাদের অভিপ্রায় নাত । পতে প্রেরক এ দেশ হইতেই ওকপ অনেক প্রতিভাগালী বাজিব নামোরেগ করিতে পাবিতেন, যাঁহারা আমক্রব বাজকায়ে নিযুক্ত পাকিষাও সাহিত্য চর্চাতে প্রসিদ্ধি লাভ কবিষাছেন। আত্নামা বিজ্ঞাচন্দ্র চট্টোপাধায়ে ও ব্যামশ দল্ল দক্ত মহোদ্য স্থায়ে নাম কবিলেই যথেই হয়। বিজ্ঞাপত প্রেরকাক জিজাসা কবি যে ইংলাওব স্থায় এবলেই যথেই হয়। বিজ্ঞাপত প্রেরকাক জিজাসা কবি যে ইংলাওব স্থায় এবলেই যথেই হয়। বিজ্ঞাপত প্রেরকাক জিজাসা কবি যে ইংলাওব স্থায় এবলেই যথেই হয়। বিজ্ঞানিত হন, ভাষা ইইলে কি সাহিত্যের আবও উরতি দৃষ্ট ইইত না ই ডাকারে মহেললাল স্বকার যদি অনস্তক্ষা ইইলি চার বিজ্ঞান সভাতে মনোণাগাঁই ইইতে পাবিতেন, উাহাকে যদি উন্বালের জন্ম চিকিৎনা যাবসায়ে সম্য না নিতে হইত, ভাষা ইইলে কি বিজ্ঞানের অধিক উন্নতি করিতে পারিতেন না ই আপ্রভোষ ম্পোধায়ায়ের স্থায় স্থ্যোগা ব্যক্তিয়াপ্তকে উদ্বাল্পর জন্ম যদি ওকালতী কবিতেন। ইইত ভাষা ইইলে কি কেশের অধিক উন্নতি হইতে পাবিত না হ

(গ) অগন্ত কোমত জ্ঞানীদিগকেই সমাছেব নেতা ও পবিচালক করিতে চাহি য়াছিলেন এবং অপরাপর শ্রেণার সাহায্য দাওয়া করিয়াছিলেন, এই জন্যই মিল চটিরাছিলেন। জ্ঞানবা ত এরপ প্রস্তাব করি নাই যে জ্ঞানিগণই সমাজের নিযন্তা ও পরিচালক হইবেন বা তাহাদের শক্তি নিরস্থা হইবে। তবে কোপায় সামো ব্যাঘাত হইল আমরা এইমাত্র বলিয়াছি যে জ্ঞানিগণ অনন্য-কর্মা হইয়া জ্ঞানালোচনা করিবেন, এবং সমাজ বা বাজা তাহাদেব অনন্য-কর্মা হইবার স্থবিধা করিয়া দিবেন সেই জ্ঞানালোচনাতেই তাহাদের জীবিকার উপায় করিয়া দিবেন; এইমাত্র। যেথানে শক্তির অধিকার ও চালনার কোন প্রস্কার বিস্থান সাম্য বৈক্ষেয়ার প্রসক্ষত্ত নাই।

राधिएक व्यानक बारकत मिक विश्वीक विरक्ष शाविक रहें (जरह, अथन वाक्षमभारक शक्र हाहे, वाक्षन हाहे, (नजा हाहे. এ সকল না হইলে আর আক্ষসমাজ চলে না, ইহার আধ্যাগ্রিকতা বক্ষা পায় না। কিন্তু কতিপয় ব্যক্তি আধ্যাগ্মিকতারক্ষার প্রহরী নিযুক্ত হইলে সমাজের আধ্যাত্মিকতা প্রকৃত পকে রকা হইবে কি না, ভাছা বিশেষ চিস্তার বিষয়। আধ্যাত্মিক-তার প্রহরীবর্গ স্বয়ং আধ্যান্মিক হইতে পারেন, কিন্তু সংসার হইতে নিরিপ্তনা হইলে যদি কাহারও পক্ষে প্রাকৃত আন্যাগ্রি-কতা লাভ করা মন্তব না হয়, ভবে সংসার-লিপ্ত ব্রাহ্মদিগের আধ্যাত্মিকতা ব্রাহ্ম-ব্রাহ্মণেবা কিন্দপে বক্ষা ও পরিপোষ্ট করিবেন ? কভিপয় ব্যক্তির আধ্যাত্মিকতা সঞ্জীব ও সতেজ থাকিলেই যে, সমাজের আ্বাধ্যাক্সিকতা **ন্নান হইবে** না, ই**হা** মনে কবা সঙ্গত নছে। আহ্মণের সৃষ্টি করিয়া প্রাচীন হিন্দু-नमास्क्रित रा मना रुदेशां हि, बाक्षममास्क्रिय ९ मर्ग गरेरिय। ব্ৰাহ্মণত জন্মগত হওয়ায় এবং অপের বর্ণদিগকে জ্ঞানালোচনা হইতে নিৰ্বাসিত করায়ই যে "জাতিতেদ প্ৰথা অমতি জঘ্য আকার ধারণ কবিয়াছে" নতুবা কবিত না, ইহা প্রমাণ সাপেক, স্বতঃসিদ্ধ সভ্য নহে। সমাঞ্চ মধ্যে গ্রাহ্মণত্ব প্রতিষ্ঠাব যদি উপযুক্ত কারণ থাকে, তবে দেই ব্রাহ্মণত্তকে বংশগত করিবারও বিশেষ হেতু আছে। উন্নতির যে একটা বংশায়ুক্রমিক বিকাশ আছে, প্রাকৃতিক তত্মজ পণ্ডিতেরা এখন একণা অসংহাচে স্বীকার করিয়া থাকেন, আশা কবি, আপনিও অস্বীকার করিবেন না; স্কৃতবাং ব্রাহ্মণত্ব প্রতিষ্ঠা করিতে হইলে তাহা জন্মগত কবাও আবিশ্রক। তবে কেবলমাত্র জন্মগত অধিকাবেৰ উপৰ কোন প্ৰাধান্তই সংস্থাপিত হইতে পাবে না। প্রাচীন বাহ্মণত্বও কেবল জন্মগত অধিকানেব উপব সংস্থাপিত হ্ইয়াছিল না। আনচায়ন্ত্রই ব্যক্তি ত্রাহ্মণত্ব হইতে বঞ্চিত হইতেন। তবে অপ্য বৰ্ণকে জ্ঞানালোচনা হইতে নিৰ্ব্বাসিত কৰিয়াই কি এদেশীয় জাতিভেদ "জ্বভা আকার ধারণ করিয়াছে ?" ত্রাহ্মণেল্লা যে সর্ব্ধ প্রকাব জ্ঞানা-লোচনা হইতে অপর জাতিকে নির্বাদিত ক্রিয়াছিলেন, ভাহাব কোন বিশেষ প্রমাণ পীওয়া যায় না। ভবে জ্ঞান ও ধর্মের উচ্চাঙ্গের আলোচনা কবিতে অপর জাতি অধিকারী हिलान ना। हेश ताप इय ताक्षत्रमास्य खाक्रगप आखिष्ठांत्र कृत ए मछवठः তাहार हरेत। जाशनि निष्करे वालग्राह्म. সমাজেব আধ্যায়িক ও মানগিক উন্নতির জগু কতকভাল লোককে অন্তক্ষা হইয়া ধর্ম-চিন্তা ও জানালোচনার নিযুক্ত থাকিতে হইবে। অন্যুক্ষা না হইলে জ্ঞান ও ধর্মের প্রকৃত উন্নতি সাধন কেহ করিতে পারেনা। যদি এ সিদ্ধান্ত ঠিক হয়, তবে ইহাও ঠিক যে, উচ্চালের জ্ঞান ও ধর্ম লাভ করা জন সাধারণের পক্ষে সম্ভব নহে; তাহারা প্রকৃত পক্ষে উহার অন্ধিকারী; পৃথিবীর অধিকাংশ লোক্কেই উদ্রাল্লের জ্ঞ বাস্ত থাকিতে হয়, স্থতরাং আপনার নিদ্ধাস্তাস্থ্যারে তাহা-निरंगत भरक केळ कान ও भरयत बात देहकारन कह वाकित। প্রাচীন ত্রাক্ষণত্ব বদি অপর বর্ণকে জ্ঞানালোচনা হইতে निर्कामिक क्रिया थारकन, छर्द म जाननात्र गुक्तिनथ ज्यनकन

क्रियाहे क्रियाटहन। जाशमि वाटका समनाधात्रशटक स्थान ও ধর্মের উচ্চ অধিকার হইতে বঞ্চিত করিতে না চাহিলেও কার্য্যে তাহারা সেই নির্মাদন দওভোগ করিবে। (গ) আপনার শিদান্ত যে ঠিক নহে, মাতুষ অব্যু কর্ম করিয়াও যে জ্ঞান ধর্মের যথেষ্ট উন্নতি করিতে পারে, তাহার কয়েকটী দৃষ্টান্ত পূর্বেট দিয়াছি। পেন্সনের বন্দোবন্ত না হইলে মোক্ষমূলর যে জ্ঞানের আশ্চর্যা উন্নতি করিতে সমর্থ হইতেন না, জ্ঞাপনার এ কথা অনুমান মাতা। সার উইলিয়ম জোন্স, কোলক্রক, উইলসন প্রভৃতি যে সকল মহাত্মার বিশেষ যতু ও অধ্যবসায় বলে সংস্কৃত শাস্ত্র ইউরোপীয় পণ্ডিতমণ্ডলীর দৃষ্টিগোচর হইয়াছে, তাঁহাদিগের সকলেই অন্ত কর্ম করিয়াও জ্ঞানের আশ্চধ্য উরতি করিতে পারিয়াছিলেন। গেল্ড ইুকার মোক্ষমূলর হইতে পাণ্ডিতো হীনকল্ল ছিলেন না বর্তমান সময়ে এডিদন বিজ্ঞান চর্চায় আশ্চর্য্য প্রতিপত্তি লাভ করিয়াছেন, তিনি কোন পৈতৃক ধনের অধিকাবী ছিলেন না, রাজার অথবা সমাজেরও কোনকপ সাহায্য পান নাই। ধ্মুজগতেও একপ पृष्टी ख या थ है जा हिं, महिं भन चालनात **अन्न मः हा नित्र क**न् পরিশ্রম কবিতে ক্রটি করেন নাই। রাজদত বৃত্তি ভোগ করিয়া কোন ধ্যা-যাজক তাহার অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ স্থান অধিকার কবিয়াছেন ? কেরি, মার্সমান, ওয়ার্ড প্রভৃতি শাবীরিক পবিভাম কবিয়া আপনাদিগের পবিবার পোষণ ও যাজন কার্য্যের ব্যয়ভাব বহন ক্বিয়াছেন। কেরি সাহেব ফোর্ট উইলিয়ম কলেজে অধ্যাপকতা কৰিয়াযে পাচ শত টাকা বেতন পাইতেন, তাহা মিশনেব কার্য্যে অসল্লোচে বায় কবিভেন। **ब्रुवान मन्द्राय (य मक्न वृष्ट्रेमच-गाङ्क वृष्ट्वि প्रान्ध इहेन्द्रा** অন্তুক্ষা হট্যাছেন, উাহাদিগেব মধ্যে ক্তজন কেবি, মার্স-মান ও ওয়াডেব ভায় কার্যা কবিতে সমর্থ হইয়াছেন ? দেই সমর অপেক্ষা বউমানে এদেশে গৃত্তধশ্বেৰ আধ্যাত্মিকতা কি অধিকতৰ উজ্জল হইয়াছে ? জন উইলিয়ম্দেৰ ভায় বহুকর্মাধন্মবাজক ধন্মের জন্ম যেকপ অকাত্তবে আয়ু-প্রাণ উৎসর্গ কাবতে সম্থ হইয়াছিলেন, অন্তাক্সাদিগের মধ্যে কয় ব্যক্তি তেমন পাবিয়াছের ? সংস্থান থাকিলেই কাথ্যের অধিকতর স্থবিধাহয়, জগতের ইভিহাস তাহা প্রমাণ করি-তেছে না। কত লোক সোভাগ্যের ক্রোড়ে প্রতিপালিত €रेटिए, किन्तु छौड़ामिश्यित द्वाता मह९ कार्या चाँछ चाहरे সাধিত হইতেছে। উদবালের জন্ম বাঁহাদিগকে এক সময়ে

(গ) পত্র প্রেলকের এ যুক্তি মনে লাগিতেছে না; যদি কেছ বলেন এ দেশে যদি এমন এক শ্রেণার লোক থাকিত, সাহিত্যালোচনাই থাংদিব এখন কাজ, সাহিত্যের উপ্রতিবিধানে গাঁহাদের সভত যত্ন, তাহা হইলে দেশীর সাহিত্যের আরও অনেক উপ্পতি হইতে পারিত, তাহার আর্থ কি এই অন্য কাহারও ছারা সাহিত্যের উপ্পতি হইতে পাবে না, বা অন্য কর্দ্মা বাজিদিসের সাহিত্যে হস্তাপণ করা কর্ত্তব্য নয়? ইংলপ্তে একাশ এক শ্রেণাব লোক আছেন বিজ্ঞানালোচনা থাহাদের প্রধান কাজ, তাহারা (Specialist) তাহার ফল কি এই হইয়াছে, যে অপবাপর শ্রেণী বিজ্ঞানালোচনা হইতে বঞ্চিত হইয়াছে? না এই শ্রুণত হইয়াছে যে দেশে একটা বিজ্ঞান-চর্চার প্রোভ বাহাল বহিয়াছে?

কঠোর পরিশ্রম করিতে হইরাছে, তাঁহারাই আবার ধনী হইয়া
কত লোকের উপকার করিরাছেন; কড় হিতকর বিষদ্ধের
অন্ধর্চান করিরাছেন। মান্ন্র থাহা করিরাছে, মান্ন্র তাহা
করিতে পারে, বর্জমান যুগের এই মহামন্ত্র। ধর্ম ও জ্ঞান
প্রভ্যেক মন্ত্রেরই আয়ন্তাধীন, প্রভ্যেকেরই পালনীর ও
শিক্ষণীর বিষয়। আশা করি, আপনি ব্রাহ্মসমাজে ব্রাহ্মণহ
ন্থাপন করিয়া মান্ন্রহেক এই উচ্চ লক্ষ্য হইতে এই করিবেন না।
ব্রাহ্মসমাজ, সাম্যমন্ত্রে দীক্ষিত, ইহাকে বৈধ্যারে শিক্ষা
দিবেন না। আমি এক প্রকার বাল্যকাল হইতেই সাম্যমন্ত্রে
দীক্ষিত হইরাছি। (ঘ) সাম্যের উপাসক না ছইলে আমার পক্ষে
ব্রাহ্মসমাজে প্রবেশ করা অসন্তর হইন্ত। সে মন্ত্র আমানক
ব্রাহ্মসমাজে টানিয়া আনিয়াছে, নে মন্ত্রের প্রতিকৃল কথা
শুনিলে প্রাণে আঘাত লাগে। এই কারণে ব্রাহ্মসমাজে
ব্রাহ্মণত্ব সংস্থাপন প্রস্তাবের প্রতিবাদ কবিতে বাধ্য হইলাম।
নিবেদক,

শ্রিকানাথ গঙ্গোপাধ্যায়।

### ব্রাহ্মসমাজ।

উত্তরবঙ্গ-প্রচারযাত্রীদলের কার্য্যবিবরণ—২বা জুন শনিবার নলহাটী গ্রামের গৃহে গৃহে উবাকীর্ত্তন। আজ জামাদের বন্ধু বাবু নীলকান্ত সিদ্ধান্ত মহাশ্যের পুত্তের নাম-কবণ। স্নানান্তে বন্ধুবান্ধরগণ সমবেত হইলেন। বাবু কুঞ্জলাল ঘোষ আচার্যোর কার্য্য করেন। উপন্তিত বন্ধুগণ কেহ কেহ প্রার্থনা কবেন। পুত্তের নাম নির্দ্মলকুমার বাধা হয়। সন্ধ্যার পর বাত্রীদল ধূলীয়ান র ও্যানা হন।

তরা জুন রবিবাব প্রাতে ধ্লাঘানে উপস্থিত হন। স্থানাধ্যে বাবু নন্দলাল পাল মহাশ্যের গৃহে পারিবাবিক উপাসনা হয়। বাবু মহেলুনাথ চট্টোপাধ্যায় উপাসনা কবেন। বাত্তিতে ধ্লায়ান ব্রাক্ষসমাজে মহেলু বাবু উপাসনা কবেন এবং "ব্রাক্ষধেষ্ট ভয়যুক্ত হইবে" এই বিষধে উপদেশ দেন।

৪ঠা জুন সোমবার পুলীয়ানে উষাকী জন হয়, তৎপরে যাত্রীদল কাঞ্চনতলায় গমন করেন। তথায় সানাস্তে শ্রীদক্ত কমলাকাস্ত ব্রহ্মদাস মহাশ্রের আশ্রমে কুঞ্জ বাবু উপাসনা করেন। বৈকালে স্থানীয় জমিদাব শ্রীমৃক্ত বাবু শ্রীনাথ বায় মহাশ্যেব ভবনে স্থানীয় ভদ্রলোক এবং মাহলাগণ সমাগত হন। সভায় মহেন্দ্র বাবু প্রাথনা কবিয়া কার্যাবস্ত করেন। এবং হবিমোহন বাবু "ব্রাহ্মধন্ম কি ?" বিষয়ে বক্তৃতা করেন। বক্তৃতা এবং সংকীক্তনকালে শ্রোত্বর্গ আনন্দ প্রকাশ করেন। শ্রীনাথ বাবু যাত্রীদল এবং স্থানীয় ব্রাহ্মদিগকে প্রীতিভোজন করাইয়া বিদায় কয়েন।

а 6

<sup>(</sup>ব) প্ৰেই বলিরাছি এই প্রস্তাবের সহিত সামা বৈধ্যাব কোন প্রস্থ নাই। যেখানে এক শ্রেপীর হাতে সামাজিক শক্তি সঞ্চিত হয়, এবং অপব শ্রেপী তাহা হইতে বঞ্চিত থাকে সেইথানেই সাম্যেব কথা উঠে। বাদ কোনত বিবয়ে বিশেষ পারদর্শিতা লাভ করিলে সাম্যের ব্যাঘাত হয় তাহা হইলে বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাধি ছারাও বৈষ্মা উৎপাদিত হয়।—ত.স.

৫ই জুন মদলবার—রাত্রিতে বাত্রীদল পূর্ণিরা উপস্থিত হইয়া টেশন নাষ্টার বাবু তারাপ্রসন্ন বস্তুর গৃহে অবস্থিতি কবেন।

৬ই জ্ন বুধবার—প্রাতে তারাপ্রসন্ধ বাবুর গৃহে উপাসনা হর, মহেন্দ্র বাবু উপাসনা করেন। সন্ধ্যার পর বাবু পার্কাতী চবণ দাস প্রপ্র মহাশরের তবনে সভা হর। সভার অনেক ভদ্রনাক উপস্থিত হন। সঙ্গীত এবং সংকীর্ত্তন করিয়া সভার কার্যা আবস্ত হয়। মহেন্দ্র বাবু আরম্ভ স্চক প্রার্থনা করিলে পব "বিশাস" সম্বন্ধে কুঞ্জ বাবু এবং হরিমোহন বাবু Bible এবং হিদ্দুশান্তের বাক্য অবলম্বন করিয়া ব্যাধ্যা করেন।

পই জ্ন বৃহস্পতিবার—প্রাতে উবাকীর্ত্তন। মধ্যাক্তে পার্কাজী বাব্র গৃহে উপাসনা। মহেন্দ্র বাব্ উপাসনা করেন। মধ্যাক্তে হরিমোহন বাবু এবং কুঞ্জবাবু পুস্তক বিক্রয়ের জ্বভ্ত তেথাবে গমন করেন। সন্ধ্যার পর পার্কাজী বাব্র ভবনে কুঞ্জ বাবু "প্রকৃত ধর্মজীবনের বিকাশ" সম্বন্ধে একটী প্রবন্ধ পাঠ করেন এবং হরিমোহন বাবু সেই বিষয়েই বক্তৃতা করেন। সানীয় অনেক গণ্য মাশ্র লোক বক্তৃতা স্থলে উপস্থিত ছিলেন।

৮ই জ্ন, শুক্রবার—প্রভূাষে বাবু তারাপ্রসন্ন বস্থর গৃহে কুঞ্জ বাবু উপাসনা করেন। তৎপরে যাত্রীদল কাটিহারে গমন কবেন। তথায় বাবু রাথালদাস চট্টোপাধ্যায়েব গৃহে মধ্যাহে মহেন্দ্র বাবু উপাসনা করেন। বিকালে কাটিহার অক্ষমন্দিরে মহেন্দ্র বাবু উপাসনা করেন এবং উপদেশ দেন। তৎপবে বাত্রীদল বাস্ফুই গমন কবেন।

সকল স্থানেই প্রাহ্মসমাজের নানা বিভাগের জন্ম টাকা সংগ্রহ হইতেছে এবং পত্রিকার গ্রাহকও করা হইতেছে। প্রভূ প্রমেশ্বব তাঁহার দাসদলেব সহায় হউন।

উৎসব—ভবানীপুর স্থার্কান ব্রাক্ষসমাজের বার্ধিক উৎসব সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। উৎসব উপলক্ষে কলিকাতা চইতে প্রীযুক্ত বাবু নবন্ধীপচক্র দাস প্রমুথ কতিপয় ব্রাক্ষরাতা তথায় গমন করেন। তরা আঘাচ দনিবার সন্ধ্যার পর উৎসবের উদোধনস্চক উপাসনা হয়, নবন্ধীপ বাবু উপাসনা করেন এবং উপদেশ দেন। তৎপর দিন পূর্ব্বাহ্নে ও তিনি উপাসনা করেন ও উপদেশ প্রদান করেন। অপরাহে আলোচনা হয়। সন্ধ্যার সময় পুনরায় উপাসনা হয়। প্রীযুক্ত বাবু উনেশচক্র দত্ত উপাসনা করেন এবং উপদেশ দেন। উৎসব উপলক্ষে কলিকাতা এবং ভবানীপুর হইতে সমাগত ব্যক্ষগণকে প্রিয়ন্তাতা প্রীযুক্ত বাবু বোগেক্র চক্র ঘোষ মহালয় তৃপ্তিপূর্ব্বক আহার করাইয়াছিলেন।

তত্ত্বিদ্যা সভা— শ্রিষ্ক বাবু সীতানাথ দত্ত এবং শ্রীষ্ক বাবু প্রতুলচক্র দোমের উদ্যোগে একটা তত্ত্বিদ্যা-সভা ত্তাপিত হইরাছে। বিগত করেক সপ্তাহ ধরিয়া বান্ধ সাধনাশ্রমে তাহার অধিবেশন হইতেছে। আমরা দেথিয়া স্থী হইতেছি যে, সভা দিন দিন উন্নতির পথে অগ্রসর হইতেছে। সভায় সামজিক ও আধ্যাত্মিক অতি প্রয়োজনীয়

বিষন্ন সমূহ আলোচিত হইরা থাকে। জুন মাসের প্রথম সপ্তাহে বাবু কাশীচক্র খোষাল গুরুকরন সহজে একটা প্রবন্ধ পাঠ करत्रन। "अक्रविरन मुक्ति नाहे," "नाथन हात्र। एक्सरनह ভ্রমণ করা ধারণ করিয়া নানাস্থানে যোগে সাধক আত্রক্তন্ত পর্যান্ত অনন্ত ত্রকাণ্ডের সম্-क्रिया : शांक्न," "সমাধির मर्भन नृत्रिः इ, कानी, इन्ना श्रक्षात्र मृर्खि पृष्ठे इत्र," नानाविष युक्ति अ প্রমাণ বারা মন্ত্রগ্রহী ত্রাহ্মগণের এবস্থিধ কারনিক মতের দৃচ্ প্রতিবাদ করেন। দ্বিতীয় সপ্তাহে বাবু অবিনাশচক্র বন্দ্যো-পাধ্যায় "দত্য আপেক্ষিক কি নিরপেক্ষ,'' এই বিষয়ে একটা প্রবন্ধ পাঠ করেন। সত্ত্য যে নিরপেক্ষ এবং মানব যে তাহা নিরপেক্ষভাবেই জানিতে পারে, প্রবন্ধকার তাহা প্রতিপন্ন করেন। ফাঁহারা সত্যকে অথবা সভৌর জ্ঞানকে আপেক্ষিক বলেন তাঁহাদের সাহত বিশেষ আলে না হয়। তৃতীয় ও চতুর্থ সপ্তাহ পর্যান্ত ইহাই আটোচ্য বাবু বিপিনচক্র পাল একটী স্থদীর্ঘ প্রবন্ধ লিথিয়া অবিনাশ বাবুব মতের প্রতিবাদ করেন, **অবিনাশ** বাবু সর্বাশেষে লিখিত উত্তর প্রদান কবেন। তৎপর সভাপতি ঐযুক্ত বাবু সীতানাথ দত্ত মহাশয় দাশনিক যুক্তি পরম্পবা অবলম্বন কবিয়া এই অভিমত ব্যক্ত করিয়াছেন যে, সত্য ও সত্যের জ্ঞান উভয়ই নিরপেক।

শাদ্ধি—মামাদের বন্ধ্বর বাবু ভগবানচক্র বন্ধ মহাশয় গত পূব্ব বংশর ইংলোকলীলা সংযরণ করিয়াছেন। অল্লাদিন হইল উহার বিধবাসহধার্মণীও পবলোক গমন করিয়াছেন। তাহাদের পুত্র শ্রীযুক্ত বাবু জগদীশচক্র বন্ধ এবং কন্তা শ্রীমতী স্বর্ণপ্রভাও স্ববণপ্রভা বন্ধ গ্রভাত তাহাদের ধর্মতলার বাটাতে সন্মিলিত হইয়া শ্রাদ্ধিকিয়া সম্পাদন করিয়াছেন। শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দৃত্ত মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করেন। সন্তানগণ শ্রাদেশকে সাঃ ব্রাঃ সমাজে ১০০ সাবনাশ্রমে ২০০ এবং ব্রাহ্ম-বালিকা বোডিং ও শিক্ষালয়ে ১০০০ এবং ব্যক্তান্ত স্থানে ৭০০ টাকা দান করিয়াছেন।

কলুটোলা নিবাদী বন্ধ শ্রীযুক্ত বাবু বিপিনবিছারী ধরের মাতৃপ্রান্ধ ব্রাহ্মপদ্ধতি অনুসারে দম্পন্ন হুহয়াছে। শ্রীসুক্ত বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করেন। বিপিন বাবু তত্ত্পলক্ষে সাধারণ ব্রহ্মেদমাক্ষে ১১, সাধনাশ্রমে ১১, এবং দাতব্য বিভাগে ১১ টাকা দান করিয়াছেন।

প্ৰলোকগত বাবু কালীনাথ দের বার্ষিক প্রান্ধোপলক্ষে ভাগীয় সহধর্মিনী সাঃ বাঃ সমাজে ২১ এবং সাধনাপ্রমে ২১ টাকা দান করিয়াছেন।

#### বিজ্ঞাপন।

আগামী ১৪ই জুলাই ১৮৯৪, শনিবার অপরাত্র ৫ ঘটকার সময় ১৩নং মির্জাপুর দ্বীটস্থ সিটিকলেজ ভবনে সাধারণ ব্রাহ্ম-সমাজের অধ্যক্ষ সভার বিতীয় বৈমাসিক অধিবেশন হইবে।

विद्वा विषय।

>। কার্যানির্কাহক সভার বিতীয় ত্রৈমাসিক কার্যাবিবরণ এবং আর ব্যয়ের হিসাব।

২। বিবিধ।
সাধারণ আহ্মসমাল কার্য্যালর
২১১নং কর্ণগুয়ালিস্ ট্রাট
ক্লিকাতা ১৪ই কুন ১৮৯৪

জীরন্থনীনাথ রার সম্পাদক।

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

৭ম সংখ্যা। ১৭শ.ভাগ।

১লা ভাবিণ সেমিবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২১০ প্রতি ৭৫৩ র মূল্য

## প্রার্থনা।

হে প্রভো! আমরা কীণ ও হর্বল হল্ডে তোমার সত্য-ধর্মকে ভাল করিয়া ধরিতে পারিতেছি না। এই ধর্মের মহৎ ভাব ভাল করিয়া ক্রদয়ে ধাবণ করিতে পারিলে, মানব জীবনের ও মানব-সমাজের নব-জীবন হইবে, তাহা বুঝিতে পারিতেছি, কিন্তু ইহাকে সেভাবে সাধন ও প্রচাব করিতে পাবিতেছি না। কতবার সংকল্ল করিতেছি, নিঃস্বার্থতার অগ্নি জালিয়া ভাহাতে জীবনকে আহতি দিব, নিজের ইচ্চাকে বলিদান দিরা তোমার ইচ্ছার অনুগত খ্ইব, জীবনের স্কল কার্যাকে ভোমাৰ অহুগত করিব, কিন্তু প্রকৃতির চুর্বলভা বশতঃ সে সংকল্পকে স্থির রাখিতে পাবিতেছি না। যে আসজির পাশ এক সময়ে গলদেশ ২ইতে মুক্ত করিয়া দূরে নিক্ষেপ কবিতেছি, অপর সময়ে তাহা কুড়াইয়া লইয়া নিজের গলায় প্বিতেছি; স্থাসক্তিও স্বার্থপবতার জালে পুনরার জডাইয়া যাইতেছি; প্রবৃত্তিকুলকে শাসনাধীন রাথিতে না পারিয়া নিরাশ হইয়া ভাহাদের হল্তে আপনাদিগকে সমর্পণ করিতেছি। এই ভবানক সঙ্গটের মধ্যে তোমার কুপাই একমাত্র ভরসা। তুমি আমাদিগকে রকা কর।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

একদিনের সংকল্প কিন্তু চিরজীবনের সাধন-নরনারী যথন পরিণয়-সূত্তে আবিদ্ধ হয়, তথন তাহারা পরস্পরের নিকট প্রতিজ্ঞা করিয়া থাকে,—"ধর্ম্মে, অর্থে, ভোগে তোমাকে **অতিক্রম করিব না**ং" প্রতিজ্ঞার এই অংশটুকু উচ্চারণ করিতে এক মিনিটও লাগে না; এবং যে ভাবের আবেগে এই প্রতিজ্ঞা উচ্চারিত হয়, সে আবেগও দীর্ঘকাল থাকে না। নব-বিবাহিত দম্পতি গৃহধর্মে প্রবৃত্ত হইলে নবামুরাগন্ধাত আবেগও উচ্চ্বাদ শান্তভাব ধারণ করে। তথন উভর ক্ষ একত করিয়া সংসার-ভার বহন করিবার দিন আসে। কিছ আবেগও উচ্ছাস মলীভূত হয় বলিয়া কি এই প্রতিকার

এই প্রতিজ্ঞার ভার চিরদিন সমান পাকে। তাঁহারা প্রেমের সরসতার অবস্থায় যে প্রতিজ্ঞা করিয়ীছেন, সংসারের স্থুখ, তু:খ সরসভা নীরসভা সকল অবস্থাতেই সেই প্রতিজ্ঞা পালন করিয়া পাকেন। এমন কি দম্পতির মধ্যে যদি একজন প্রতিকূলাচরণ करत्रन, यनि कर्कन वारका अनग्ररक विक्ष करत्रन, अथवा পाङ्गर ব্যবহাবে মর্ম্মপীড়া উপস্থিত কবেন,তথাপি ধার্ম্মিক পতিপত্নী ধম্মে, ষ্মর্থে, ভোগে অপরকে অতিক্রম করিবার ইচ্ছা করেন না। এক-দিনের সংকল যথন চিরজীবনেব বাধ্যতার দারা সমর্থিত হয়. তথনি আমরা মানব-চরিত্রের মহত লক্ষা করিয়া থাকি। প্রাচীন ঋষি বলিয়াছিলেন—"মাছং ত্রহ্ম নিরাকুর্য্যাং মা মা ত্রন্ধ নিরাকরোদনিবাকবণমস্তু" ত্রন্ধ আমাকে করেন নাই, আমি যেন তাঁহাকে পরিত্যাগ না করি, আমাদেব মধ্যে নিরাকরণ না থাকুক।" এইরূপে প্রত্যেক বিখাদী ও প্রেমিক আত্মা বলিয়া থাকেন—আমি যেন ব্রহ্মকে পবিভ্যাগ না করি। একদিন কোনও শুভ মুহূর্ত্তে এ প্রকার সংকল্প হৃদয়ে উদিত হওয়া ও একপ সংকল্প প্রকাশ করা কিছুই বিচিত্র নয়। ভক্ত সঙ্গে বসিয়া আমরা যথন ভগবানের ৩৪ণাফুবাদ শ্রবণ করি, যথন তান লয় বাদ্য সহকারে তাঁহাব নাম সংকাঁত্তন হর, তথন ভাবের আবেগে তাঁহার চরণে আপনাব দেহ, মন, প্রাণ অর্পণ করিতে ইচ্ছা হওয়া আশ্চর্যা নহে, হওয়াই স্বাভাবিক। কিন্তু সেই এক মুহুত্তের সংকল্পকে চিরদিন क्रमस्य यात्रण कत्रां এवः जन्ताता ममश कीवत्नत्र ममूनाम कार्यात्क নির্মিত ও শাসিত করা অতীব কঠিন। ধক্ত তাঁহাবা থাঁহাদেব হৃদয়ে এই সংকল চিন্ন জাগনক, বাঁহাদের চিত্তে স্বার্থপবতা বা তুথ শান্তির প্রভাব উপস্থিত হইবামাত তাঁহার৷ স্মবণ করেন, "আমরা যে ঈশর-চরণে দেহ মন সমর্পণ করিয়াছি" এবং অমনি সমুদায় প্রলোভন অন্তর্হিত হর। যিনি বাত্তবিক क्रेश्वत-हत्रत्व व्यापनात्र त्वरू यन निवादहन, डिनि नर्सना व्यञ्चद कत्रिया शास्त्रन त्य, 'डॅंग्झात ममुनाय वियत्यत उपदा श्रेषत्तर দাওরা ≪মাছে! তাঁহার সময়ের উপরে প্রভ্র দাওরা—সে সমন্ত্র তিনি পরসেবাতে ও ঈশবের প্রিয়কার্য সাধনে ব্যন্ত করিতে বাধ্য; তিনি ঘদি অর্থোপার্ক্ষন করেন, দে অর্থের শ্বন্ধ হাস হইলা বাস ? তাহা নহে। সাধু প্রকৃতির উপরে <sup>|</sup>,উপরে ঈশবের দাওয়া, তাহা কেবল পরসেবার **জন্ত** ও ঈশবের

প্রিম্নকার্য্য সাধনের জন্ত। এরূপ থাঁছারা অমুভব করেন, তাঁহারাই ঈশ্বরের প্রকৃত দাস ও প্রকৃত স্কান।

ব্রাক্ষদিগের গার্হস্থ্য জীবন-প্রাচীন সমাজে যে সামাজিক ও পারিবারিক ব্যবস্থা প্রচলিত আছে, তাহার এই একটা দোষ অনেকে কীর্ত্তন করিয়া থাকেন যে, তাহাতে পতিপত্নীর মধ্যে সাহচর্যাও মিত্রতা নাই। একালভুক্ত হিন্দু পরিবার মধ্যে বাস করিয়া পতি ও পত্নী পরস্পরেব সহিত স্কাস্ময়ে অসংকোচে মিশিতে পারেন না। এমন কি এক পরিবারত রম্ণীগণের সহিত সেই পরিবারত্ব পুরুষ্দিগের মিশিবার প্রথা নাই। রমণীগণ অবরোধ মধ্যে অপরাপর নারীকুলের মধ্যে বাস করেন, পুরুষগণ বাহিব বাটীতে পুরুষ-দিগের সঙ্গেই কাল্যাপন করিয়া থাকেন। এইরূপ পারিবারিক ব্যবস্থার এই একটা অনিষ্ট ফল ঘটিয়া থাকে যে, অনেক সময়ে যুবক্গণ আমোদ প্রমোদের জন্ত অন্তত্ত গিয়া থাকে এবং কু-সঙ্গে পতিত হইয়া বিবিধ প্রকার পাপে লিপ্ত হয়। এই জন্ম সমাজ ও নীতিতত্ত ব্যক্তিদিগের একটা মূলমন্ত্র এই,— যদি মানুষকে ভাল রাখিতে চাও, তবে তাহার গৃহকে তাহার পক্ষে আকর্ষণের বস্তু কর। আমরা আশা করিতেছি যে, (मन इटेंटि नातीत अवत्ताध लावा अवहिंड इटेंटन वरः नाती-গণের মধ্যে শিক্ষার বিস্তার হইলে, পতি ও পত্নার মধ্যে সাহচ্যা ও স্থিত্বের ভাব প্রতিষ্ঠিত হইবে এবং লোকে আপনার গৃহকেই স্কাপেক্ষা অধিক আকর্ষণের স্থান বলিয়া অহভব कविरंव। लारक व्यामानिगरक विकामा कतिरू भारत, "তোমরা যে এতগুলি ব্রাহ্ম-বিবাহ দিলে এবং বালিকাদিগকে শিক্ষিত করিবার জন্ত এত চেটা করিলে, তোমাদের মধ্যে পতিপরীর সাহচর্যা প্রতিষ্ঠিত হইতেছে কি না? অর্থাৎ বিবাহিত ব্রাহ্ম-পতিগণ তাহাদের বিশ্রামকালের অধিকাংশ সময় কি নিজ নিজ পত্নীর সহবাসে যাপন করেন অথবা বিনোদনের জন্ত অপরাপর বন্ধবান্ধবকে অরেষণ করেন ?" এই প্রশ্নের উত্তরে আমাদিগকে স্বীকার করিতে হইতেছে যে, এ বিষয়ে এখনও আশাহরূপ উন্নতি দৃষ্ট হয় নাই। ইহার পত্নীগণ শিক্ষিতা, তথাপি অনেক ছলেই পত্নীগণের শিক্ষার অবস্থ। স্থানিকত পতির সাহচর্য্যের অনুরূপ নহে। এবিষয়ে ঐ পতিগণই নিন্দনীয়। তাঁহারা বিবাহ করিবার সময় পাত্রী, শিক্ষা ও ধর্মজাবাদি সম্বন্ধে নিজেদের অমুদ্ধপ কি না তাহা তত দেখেন নাই, যত কপ বা জাতিকুল প্ৰভৃতি (निवित्राष्ट्रन। देशत प्रानिवारी कन, अकट्टे भगत পाইलाई ৰাড়ী ছাড়িয়া টো টো করিয়া বেড়ান অথবা বাড়ীতে থাকিয়াও বিনোদনের জন্ম অপর বিষয়ে বা অপরের সঙ্গে কাল্যাপন করা। চারিদিকে শিক্ষার যেরূপ বিস্তার হইতেছে, তাহাতে ব্রাহ্মবালিকাদিগকে উত্তমরূপ জ্ঞানে উন্নত করিতে না পারিলে ভাবী ত্রান্ধ পতি-পদ্মীর সাহচর্য্য প্রতিষ্ঠিত হইবে না এবং .ব্রান্ধ-मिर्गित गार्रेष्टा स्रोवत्मत्र जिन्नजि मृष्टे स्टेर्ट ना।

ধর্মামুগত ধনোপার্জন ও ধনের ধর্মামুগত ব্যবহার-বাক্ষধর্ম সামাজিক ধর্ম। ধন উপার্জন ও তাহার ব্যবহার সম্বন্ধেও ইহার কিছু বলিবার আছে। ব্রাহ্ম যে কোনও রূপেই হউক ধনোপার্জন করিতে কিংবা যে কোনও প্রকারে হউক ব্যয় করিতে পারেন না। তাহার ধনোপার্জনের প্রণালী ধর্মাত্রগত হওয়া আবিশ্রক। ইহা বলা বাছলামাত্র, যে উপাৰ্জনেৰ প্ৰণালীতে আংশিকৰূপেও অসত্য ব্যবহার বা প্রতারণা কবিতে হয়, বা অপরকে তাহার স্থায়া প্রাপ্য অর্থে বঞ্চিত করিতে হয়, ভাহা ব্রাক্ষের পক্ষে নিষিদ্ধ। কিংবা বে কার্য্যের ঘারা চিতের অধোগতি হয় তাহা তাঁহার পক্ষে বৰ্জনীয়। কেবল ভাহা নহে, ব্ৰাহ্ম যদি ধনোপাৰ্জ্জন লালসাতে এতদূব শ্রম করেন যে তাঁহাব পাঠ, আত্মচিন্তা উপাসনাদির সময় না থাকে, ভাহাও তাঁহার পক্ষে নিন্দনীয়। তদারা এই প্রকাশ পায়, যেন তিনি ধনের জন্তই জীবন ধারণ করিতেছেন, ঈশবের জন্ম নহে। ত্রাহ্মকে সর্ব্বদা শ্বরণ রাথিতে व्हेरत र्य क मः मारत थाउद्रा माठ्या व्यर्थाभाकान कता उ পার্থিব সম্পদ সঞ্যু করাই জীবনের লক্ষ্য নহে। ইহা অপেকা জীবনের মহত্তর ও উচ্চত্র লক্ষ্য আছে। তাঁহার দৈনিক জীবন এই বিশ্বাদের অনুক্রপ হওয়া আবশ্রক। ধনের উপাক্তন সম্বন্ধে যেরূপ, ধনের ব্যয় সম্বন্ধেও সেইরূপ। আহ্ম যে কোনও अकारवरे **र**डेक धन वाग्र कविर् शावन ना। উপাজ্জিত অর্থের অধিকাংশই যদি আপনার ও আপনার পরিবার পবিজনের ভোগ-বিলাম ও বাসনার চরিতার্থতাতেই নিযুক্ত হয়, ডাহা হইলে তিনি অপবাধী। মনে কর একজন ব্রাশ্ব আছেন, তিনি মাদে সহস্রাধিক টাকা উপাজ্জন করেন, তাঁহার পরিবাবগণের সংখ্যা যেকপ, তাহাতে মাসে ৫০০ শত টাকা বায় করিলেই ভাষাদিগকে স্থাথে রাখা যায় এবং উত্তমকাপে শিক্ষা দেওয়া যায়। তিনি একটু সংযত হইয়া চলিলেই অপর পাঁচ শত টাকা হইতে উত্তৰ কালের জন্ম কিছু কিছু সঞ্চয় করিয়া ইচ্ছামত নানা সদস্থানের সাধায়াথ দান করিতে পারেন, কিন্তু তিনি তাহা করেন না। ১ধন বৃদ্ধির সঙ্গে সঞ্চে তাঁহার ও তাঁহার পবিবার পরিজনগণের ভোগ বিলাসের লালদা এতই বাড়িখা যায় যে, তিনি সদত্রভানের সহায়তা করি-বেন कि १ छोहात महायेखा कतिए भातिरम ভाम ३य। আমরা বলি এরপে ধনের বায় করা ধ্মাবিগহিত। ধনসম্পদকে জগতের কল্যাণসাধনে ও ঈশবের প্রিয়কার্য্য সাধনে নিয়োগ कतिराज পातिरावहे कीबरनत मार्थका। धन मण्यमरक मर्यमा সেই ভাবে দেখা কর্ত্তবা।

সাধারণ প্রজাপুঞ্জের মধ্যে ত্রাক্ষধর্ম প্রচার—।

দিন দিন সাধারণ প্রজাপুঞ্জের নীতির কি ছুর্গতি ছুইতেছে!

বিচারালরে যাও, হাটে যাও, বাজারে যাও, ছ জন কারিকর

ডাকাইয়া কোনও কাজের ভার দেও, সক্ষত্রই জসত্যপরায়ণতাও প্রবঞ্চনা-প্রস্তি দেখিয়া মন স্লান ছইয়া যাইবে।

বাজারে যাও, দোকানদার ছই টাকা মৃল্যের কোনও

জব্যের দর আট টাকা বলিবে, তারপর তুমি ক্যাক্তি

ধন্তাধন্তি করিয়া যত নামাইতে পার, ভগ বিকৃত বা অপক্লষ্ট ज्यवा छे ९क्ट विनम्ना नित्त, जूमि वृक्तिमान इन वैकिमा अन, বিশাস কর, তবে প্রতারিত হও। প্রতিদিনের আহারের দ্রব্য, মৃত তৈল প্রভৃতি যাহাতে অন্য দ্রব্য মিশ্রিত করিলে স্বাস্থ্য হানির সন্তাবনা, লাভবান হইবার লোভে তাহাতে অন্য দ্রব্য মিশাইয়া বিক্রয় করিতেছে। একজন কারিকর ডাকিয়া कांक वृक्षाहेबा (मध, पतांत्र कांक है। हाहे विनेत्रा वात वात জানাও, জ্রায় পাইবে বলিয়া অংগ্রিম টাকা দেও, তথাপি সমরে পাইবে না, সে জন্ম ক্ষতিগ্রন্ত হইবে, মনে ক্লেশ হইবে, किन्द मिरिक मि वाकित पृष्टि नारे, मि ममस्य कांक पिरव ना। বিচারালয়ের ত কথাই নাই: তাহা নামে ধর্মাধিকরণ কিন্তু সেম্বানকে মিথ্যা প্রবঞ্চনা, শঠতার আলয় বলিলেই হয়। দেশের লোকের এ কি শোচনীয় অবস্থাই ঘটিয়াছে! আমাদের যেন বোধ হয় সাধারণ লোকের নীতির দিন দিন অধিক হুর্গতি হইতেছে। একপ কেন হইতেছে ? হিন্দুলাতি, সভাপরায়ণতা সরলতা, বিশ্বাসিতার জন্ম প্রাচীনকালে এত প্রসিদ্ধ ছিল, গ্রীক ও চীনদেশীয় পর্যাটকগণ ঘাহাদের সভ্যপরায়ণভার ভূরি ভূবি প্রশংসা করিয়াছেন, তাহাদের এত তুর্গতি হইল हरें ए शाहीन धर्मात वक्षन मिथिल हहेगा गहिए हा। शुर्ख সাধারণ প্রজাপুঞ্জেব মধ্যে যে সকল উপায়ে ধর্ম ও নীতির নিয়ম সকল প্রচার করা হইত, সে সকল উপায় বর্ত্তমান সময়ে পরিতাক্ত হইতেছে। ব্রাহ্মণগণের প্রভাব বিধ্বস্ত হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে প্রজাকুল পালকবিহীন মেষদলের ন্যায় উচ্চুঙ্গল হইয়া পড়িতেছে। কারণ যাহাই হউক সাধানণ লোকেব নীতিব অবস্থা বড়ই শোচনীয় হইয়াছে। একণে কর্ত্তবা কি ? সাধারণ লোকের মধ্যে ভ্রাহ্মধর্মকে জীবন্ত শক্তিরূপে উপস্থিত করিতে পারেন, এরূপ কতকগুলি প্রতিভাশালী প্রচাবকের প্রয়োজন চইয়াছে। রাম সিং যেমন পঞ্চাবের অজ্ঞ কৃষক-দিগকে নীতিমান করিয়া তুলিয়াছিলেন, এইরূপ আশ্বর্ধককে সামান্য লৌকিক নীতির মধ্যে লইয়া ঘাইতে পারেন, এরপ ব্যক্তির প্রয়োজন হইতেছে। যে ধর্ম লৌকিক নীতি নিরপেক হইয়া কেবল ভাবের তরল বায়ুতে বাস করে এবং নীতিকে নিমভূমির কথা বলিয়া উপেক্ষা করে, আমরা দে ধর্মের প্রার্থী नहि, जाहा जाधााजिक अहिएक (भवन। अहिएक एमर्वी (यमन গুলিতে দম দিয়া আপনাকে সপ্তম স্বর্গে উথিত বলিয়া মনে করে. এই আধাাত্মিক অহিফেণদেবীরাও সেইরূপ ভাবময় বাজ্যে বাস করিয়া চরিতার্থতা লাভ করে। সাধারণ লোক-मिशरक विनम्ना मिटि रहेर्त, हाबान्न कीर्खन कन्न, हाबान्न ভारत মাতামাতি কর, হাজাব গলামৃত্তিকার ফোঁটা দেও, ঘুতে যদি অভ্যু পদার্থ মিশ্রিত করিয়া বিক্রের করে, তাহা হইলে তোমরা नातकी, ट्यामारमत देश्यतकान इहे राग, महा कीर्खानध ভোমাদের কিছু করিতে পারিবে না।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ ।

### আধ্যাত্মিক সম্বন্ধ।

যে দেশের লোকে ভারতবর্ষকেই একমাত্র কর্মকেত্র বা ধর্মসাধনের উপযুক্ত ভান বলিয়া মনে করেন, সেই দেশে আমরা এ কি দৃশু দেখিলাম। দেখিলাম যে দেশে ছর মাস কাল মধ্যে একবার ও স্র্য্যের মুথ দৃষ্ট হয় না আবার অপর ছয় মাস মধ্যে একবাবও ক্র্যোর অক্ত হয় না, সেই দূববত্তী ল্যাপ্লাণ্ড দেশের সন্নিহিত স্থইডেনেব একপ্রাস্তবাসীর পরলোক-গমনে বাঙ্গালির চক্ষে জলধারা পড়িতেছে। করিয়াছেন। বঙ্গবাসি বাহ্মগণ বঙ্গদেশেব তাঁহার শ্রাদ্ধ-কর্তা। কোপায় তাঁহার আগ্রীয় স্বলন ? গাঁহা-দের সহিত তাঁহার রক্তের সম্পর্ক ছিল, তাঁহারা কোথায় ৭ তাঁহারা আজও এসংবাদ প্রাপ্ত হন নাই। এ দিকে তাঁহার প্রাদ্ধবাসরে বাঙ্গালির প্রাণ হইতে ইহ-পরলোকের আশ্রয় প্রমণ্ডি প্রমেশ্বরের অভিমূপে প্রার্থনা উথিত হইয়াছে। তাঁহাব পাবলৌকিক ভভবাসনা লইয়া শত শত বল্পবাসী সন্মিলিত হইয়াছেন। কেন এ দেশে এই দৃশু দেখিলাম ? দেই স্থইডেনেত আবও কত লোকের পরলোক-প্রাপ্তি হইতেছে। আর ত এমন দৃশ্য দেপা যায় না। বাঙ্গালি যে দেশভেদ ও জাতিভেদ অগ্রাহ্য করিয়া, সেই বিদেশাগত বন্ধুর জন্ম এরূপে ব্যাকুল হইয়াছিল, ইহাৰ মূলে কি দেখিতে পাওয়া বায় > রক্তের সম্পর্ক এথানে নাই, দেখের সম্পর্ক এথানে নাই, জাতীয-তারও কোন বন্ধন এখানে নাই। তবে কোন সম্পর্কে আকৃষ্ট হইয়া তিনি আত্মীয় স্বজনগণেব স্বেহ-বন্ধন অতিক্রম করিতে সমর্থ হইবা, এই দ্বদেশবাদী এবং অপ্রিচিত্রদিগ্রে আপনার জনরূপে পরিগ্রহ ক্বিয়াছিলেন এবং ব্রাহ্মগণ তাঁহার সহিত এরপ সম্বন্ধে সম্বন্ধ ইইয়াছিলেন ৭—সে সম্পর্ক আধ্যাত্মিক সম্পর্ক। তাহা পরম পিতা পিতৃত্ব হুইতে পুথিবীত নর্নারীতে যে মনোহ্ব ভ্রত সম্বন্ধ প্রতিষ্ঠিত হয়, সেই সম্পক। এক ধর্মে বিশাস. এক ঈশরে বিশ্বাস হইতে যে আশ্চর্যা সম্বন্ধ সংস্থাপিত হয় ইহা সেই সম্পর্ক। আমরা জাতি-ভেদাক্রান্ত দেশে পবি विक्षिण, आमता এই स्मधुत मश्रक्षत माधुर्ग ७ मरनाशितिक সম্পূর্ণক্লপে অমুভব করিতে অসমর্থ। মহাত্মা শাক্য সিংহ শ্বীয় পিতার নগরে ভিক্ষাপাত্র হস্তে বহিৰ্গত হইয়া প্রার্থনা কবিয়া বেডাইতে-ভিকা যথন ভারে ভারে ছিলেন, যধন দেই দারুণ লজাজনক মর্মপীড়ক সংবাদ শাক্য সিংহের পিতা রাজা হুদোধনের কর্ণে পৌছিল, তথন তিনি আর স্থন্তির থাকিতে না পারিয়া পুল্রের निकार याहेशा विलालन,—"(कन উদরায়ের জক্ত ছারে । हारत ভিক্ষা করিয়া আমাদিগকে বজ্জা দেও ? আমি কি এতগুলি ভিক্র আহার দিতে পারিতাম না।" বুক বদিলেন "মহারাজ ভিক্ষা বৃত্তিই আমাদিগের বংশের রীতি" "আপনি ও আপনার পরিবার রাজবংশ-জাত হইতে পারেন কিন্ত আমি পূর্বতন বুৰগণের বংশসম্ভূত,তাঁহারা ভিক্ষালন্ধ দ্রব্যে জীবন ধারণ করিতেন

মহামনা যীশুও এই আধ্যান্থিক সম্বন্ধ অহভব করিয়া তাঁহার কথাই বলিয়াছিলেন। এরূপ ভাবের মাতা, লাতা ও ভগিনীগণ তাঁহার সহিত সাক্ষাত করিবার জন্ত, আসিরা জনতার জন্ত ভাহার নিকটবর্তী হইতে অসমর্থ হইয়াছিলেন, তথন তাঁহার পার্যস্থ লোকেরা তাঁহাকে বলিয়াছিল যে "দেখুন আপনকার মাতা ও ভাতৃগণ, ও ভগিনীগণ বাহিরে আছে ও আপনার অন্বেষণ করিতেছে।" তথন তিনি উত্তর করিলেন যে "আমার মাতা কে? আর আমার ভ্রাভূগণ বা কে ? তিনি তাঁহার চারিদিকে উপবিষ্ট লোকদের প্রতি অবলোকন করিয়া কহিলেন, এই দেখ আমার মাতা ও আমার ভ্রাতৃগণ। কেন না যে কেহ ঈশবের ইচ্চাপাৰন করে, সেই আমাব ভ্ৰাতা ও ভগিনীও মাতা" এই উভয় স্থলেই আমিরা দেই সম্বন্ধেরই উলেথ দেখিতেছি। উভয়েই আত্ম পরিবার,বংশ ও জাতি প্রভৃতির সহিত যে পার্থিব সম্পক ছিল, তাহার প্রতি গুরুষ না দিয়া আধ্যান্মিক সম্বন্ধ—এক ঈশ্বরের তুপাসক পরিবারের মধ্যে যে সম্পক সংস্থাপিত হওয়া উচিত, ঈশ্বরের অনুগত ও আশ্রিত জনগণেব মধ্যে যে সম্বন্ধ প্রতিষ্ঠিত হওয়া উচিত, তাহারই শ্রেষ্টছ প্রতিপন্ন করিয়াছেন। এই যে উপাদক পরিবারের সম্পর্ক, যাহা পৃথিবীব লাভ ক্ষতি ৰা বংশ ও জাতি বা দেশের প্রতি নির্ভর করে না, এই সম্পর্কের কথাই চিরদিন সাধু সজ্জনেরা বলিয়া আসিয়াছেন। ত্রাহ্মধর্ম এই মহৎ ও উদার সম্পর্কেই সকলকে আবদ্ধ হইতে অমুরোধ করিতেছেন। এই মধুর সম্বন সংস্থাপনই ত্রাহ্মধর্মের পবিত্র লক্ষ্য। সে লক্ষ্যের দিকে আমরা যত অগ্রসর হইব, যত এই মধুর শোভন সম্বন্ধে পরস্পারের সহিত ঘনিষ্ঠ ভাবে আবদ্ধ হইতে পারিব, তত্ত এই পবিত্রধর্মের শ্রেষ্ঠত্ব জগৎ অনুভব করিবে এবং ঈশ্বরের শুভ ইচ্ছা পরিপূর্ণ হইবে।

#### প্রলোকগত কারল হেমারগ্রেণ।

ব্রাক্ষসমাজে কাজ করিবার লোকের যে প্রকার অপ্রতুল, তাহাতে একটা কাজের লোক হারাইলে অভিশয় ক্ষতি বোধ হয়। সম্প্রতি আমাদিগকে এই প্রকার একটা ক্ষতি সহু কবিতে হইয়াছে। আমরা একজন উৎসাহী, অনুরাগী ও কর্মানক্ষ সভ্য হারাইয়াছি। ইহার নাম কারল হেমারগ্রেণ নামটী, সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের সভ্যগণের নিকট সম্পূর্ণ অপরিচিত নহে। বিগত মাঘোৎসবের সময় অনেক ব্রাক্ষতা কলিকাতাতে আদিয়া ইহাকে দেখিয়া গিয়াছেন এবং বাহারা অচক্ষে দেখিয়া যান নাই, তাঁহারা ইহার বিষয় ওনিয়া থাকিবেন। আমরা ইহার জীবনচরিত সংক্ষেপে পাঠকগণের গোচর করিতেছি।

ইউরোপের উত্তর প্রান্তবর্তী স্থইডেন দেশ ইঠার জন্মভূমি। স্থইডেনের উত্তর বিভাগে এক সামাল্প গৃহক্তের গৃহে ইছার জন্ম তর। শুনিতে পাওয়া যার ইহার পিতা একজন গ্রাষ্ট ধর্মযাজক ছিলেন। যে স্থানে ইহার জন্ম হইয়াছিল, সেথানে ভূমি বংদরের অধিকাংশ কাল ভূহিনাবৃত থাকে। সেই

তুরস্ত শীভের মধ্যে সামান্যাবস্থ লোকদিপকে কিরূপ ক্লেশে বাস করিতে হয়, ভাহা সকলেই অমুভব করিতে পারেম। হেমারত্রেণ দরিজের অরে জন্ম গ্রহণ করিয়া বাল্যাবধি শুর্ডর শারীরিক শ্রমে অভাস্ত হইয়াছিলেন। ভাঁহারা যে স্থানে বাস করিতেন ভাহার বিশ মাইলের মধ্যে ভাল ডাক্তার ছিল না। তাঁহার পিতা পীড়িত হইলে, তিনি বিশ মাইল হাটিয়া ডাক্তার আনিতে গেলেন, আসিয়া দেথিলেন পিতার মৃত্যু ইইয়াছে। বয়োবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে মনে জ্ঞান পিপাসা অভিশয় প্রবল হইল। তিনি স্নইডেনের দক্ষিণ-বিভাগবর্তী অপশালা নগরে আগমন क्तिरानन, এবং তথাकात विश्वविद्यानरत्र किছुकान भार्ठ করিলেন। কিন্তু অবস্থার প্রতিকৃলতা-নিবন্ধন সে সুখও ভাগ্যে অধিক দিন ঘটল না। অসময়ে পাঠ সাঙ্গ করিয়া অর্থোপাজ্ঞানের চেষ্টাতে ব্যস্ত হইতে হইল। একটী শিক্ষক'তা কাৰ্য্য অৱলম্বনে কোনও প্ৰকারে আপনার ভবণ পোষণ করিতে লাগিলেন। কিন্তু বিদ্যালয়ের পাঠ সাম্ব করিয়াও তাঁহার বিদ্যাচর্চা গেল না। তিনি একাগ্রতা সহকাবে অনেক আয়াসে জাম্মাণ, দ্রেঞ্চ, ইংরাজী,লাটিন,প্রভৃতি নানা ভাষা অধ্যয়ন করিতে লাগিলেন। এবং স্থানীয় শিক্ষিত যুবকগণের সহিত সন্মিলিত হইয়া স্থরাপান নিবারণী সভা স্থাপন পুরুষ উৎসাহের সহিত কার্যা করিতে লাগিলেন। এহ সময়ে তাঁথার অন্তরে একটা গুরুতর পরিবর্তন ঘটল। বিবিধ ভাষা অধ্যয়ন ও বিবিধ শাস্ত্র আলোচনা করিতে করিতে তদ্দেশ প্রচলিত খ্রীষ্টধর্মের প্রতি তাঁহার অনাতা উপন্থিত হইল। প্রচলিত গ্রীষ্টায় মত সকলকে অতিশয় ভ্রান্তি সংকুল বোধ হইতে লাগিল। এই সময়ে তাঁহার অবস্থা একবার কল্পনা কর। তিনি ধর্ম বাজকের সন্তান, তাঁহার ভ্রাতা ভগিনী, আন্মীয় স্বন্ধন সকলে এইংন্মে বিদ্ধিত ও এষ্টি ধশামুরাগী। এষ্ট ধশা পরিত্যাগ করা দেশের মধ্যে নৃতন কথা। তিনি আর একটাও লোক দেখিতে পান না যে তাঁহার সমভাবাপর বা তাঁহার পার্বে আসিয়া দাঁডায়। তথাপি তিনি সাংসে নিউর করিয়া প্রচলিত খ্রীষ্ট ধম্ম পরিত্যাগ করিলেন। খ্রীষ্ট ধম্ম পরিত্যাগ করিলেন বটে किन्छ धर्माविचान क्षत्र वहेटा विनुश वहेना ना । जेनात विचान ও প্রার্থনাতে বিশ্বাস রহিয়া গেল। এই মাত্র সম্বল করিয়া তিনি পাঠ চিস্তা ও অম্বেষণ আরম্ভ করিলেন। এই সময়ে এক দিন হঠাৎ কোনও সংবাদ পত্তে ত্রাক্ষসমাঞ্জের কিছু विवत्र शार्व कतिरलन, शार्व कतिया हैहारमत्र विवत्य आत्रक কানিবার জন্ম ঔৎস্কা জন্মিল। किছ मिन ফরাসি ভাষাতে শিখিত একথানি গ্রন্থ তাঁহার হল্পে পতিত হইল, তাহাতে তিনি আক্ষমমাজের সবিশুর বিবরণ পাঠ করিলেন। পাঠ করিতে করিতে তিনি অমুভব করিলেন যে আহ্মধর্মাই তাঁহার ধর্ম এবং আহ্মসমাজই তাঁহার সমাজ। তদবধি যত্ন পূৰ্বক তিনি ব্ৰাহ্মসমাজ সংক্ৰান্ত সমুদার সংবাদ मः और कतिराज नागिरानन। **अवस्थार ১৮৮७ मारा माधान** ব্রাহ্মসমাজের সম্পাদককে, সভা হইবার অভিপ্রায় জালাইয়া পত লিখিলেন। যথাসময়ে ভাঁহাকে সভ্য করিয়া লওয়া

हेहांत करत्रक वदमत भरत छिनि हेश्नए जानमन करत्रन। निरसद कान ७ निकात जैज्ञ कि क्यां, कांस्त्र देश्न वर्गात्र উष्म्यः हिन। जिनि द विमानदः श्रादमः कतिन्नं निका করিবেন ভাবিয়া আসিরাছিলেন, ভাষা ঘটিয়া উঠিল না। তিনি নিতান্ত দারিজ্যে ও চ্রবস্থাতে বাস করিতে সাগিলেন। কিন্তু খোর দারিদ্রোর মধ্যে বাস করিয়াও আত্মোরতি সাধনে अकी मित्र बन्न व्यवस्थारिको हित्यन ना। हेश्मर वाम कारन नाना विष्मिश खारा मिका कतिरानन धवः खवारद भार्ठ করিতে পারিবেন বলিয়া "টএন বি হল নামক" স্থানের পুস্তকা-नात्रत महिल मः महे हटेराना। हेश्नाए चामात्रभत हटेराले উাহার মনে ভারতবর্ষে আসিবার বাসনা প্রবদ হর। फानविध कावमञ्ज कारवयन कतिएक हिरमन। कावरमारस विशेष्ठ বর্বের জুন মাসে সেই অবসর উপস্থিত হটন। কতিপর বন্ধুর সাহায্যে তিনি এদেশে আগমন করিলেন। আসিয়া একটা ব্রাহ্ম পরিবারে ভান প্রাপ্ত হন। অতি অরদিনের মধ্যে জার্মাণ, ফ্রেঞ্, লাটন প্রভৃতি ভাষা শিথিবার জন্ত অনেকগুলি ছাত্র ছাত্রী জুটিয়া গেল। তিনি উৎসাহের সহিত শিক্ষা দান এদেশে আসিয়াই তাঁহার প্রভীতি করিতে লাগিলেন। হইল যে গ্রাহ্মসমাজে জ্ঞানচর্চাব অভাব আছে। ব্রাহ্মদিগেব মধ্যে ভাল ভাল লোক পড়া ভনা ত্যাগ করিয়াছেন। জ্ঞান চর্চা নাই বলিয়া, ব্রাহ্মগণের মতের স্থিবতা নাই, কেবল ভাবের তবঙ্গের উপরে ভাসিয়া বেড়াইভেছেন। এই অভাব লক্ষ্য করিয়া তিনি ইহা দূর কবিবার জন্ত ক্রতসংকর হইলেন, এবং দারে দাবে ভ্রমণ কবিয়া একটা উৎক্লষ্ট পুস্তকালয় স্থাপন করিবার প্রয়াস পাইতে লাগিলেন। কাহারও দাবা কখনও যাহা হয় নাই, তিনি তাহা করিয়াছিলেন, তিনি মাসিক ত্রিশ টাকার অধিক চঁ'লা সংগ্রহ করিয়াছিলেন।' তিনি ঐ পুস্তকালয়ের "রানমোচন বায় পুস্তকালয়" নাম বাথিবেন ভাবি-রাছিলেন। তিনি জীবিত থাকিলে একার্য্য সিদ্ধ করিতেন ভাছাতে সন্দেহ নাই। এতন্তির তাঁহার এই এক সংকর ছিল ৰে তিনি অন্ততঃ পাঁচ ছয়টা ১৩১৪ বৎসবের এরূপ বালক শইবেন, ধাহাদেব পিতামাতা যাহাদিগকে ত্রাহ্মসমাজের সেবার ৰুম্ভ অর্পণ করিবেন। তিনি তাহাদিগকে জার্মাণ, ফ্রেঞ্চ প্রভৃতি ভাষা শিখাইয়াও ব্রাহ্মধর্মের মত ভাল করিয়া শিক্ষা দিয়া उत्तरकारम थाठात्रक कविया ज्ञित्वत्व । जिनि मर्स्तमा विमर्जन তোমরা মামুৰ প্রস্তুত কবিতেছ না কেন ? এই সংক্রিত কার্যাঞ্জি আরম্ভ করিতে না করিতেই তাঁহার জীবন শেষ ছইরা গেল। তিনি নিজ শরীরের প্রতি দৃষ্টি করিতেন না, द्योत्स अत्न प्रतिया (विज्ञाहिकन। जाशात कन वहे हहेन (व इब्रस ख्रां जिमात तारा चाकां रहे निम । २८० क्म त्रविवात পীড়ার সঞ্চার হইরা ৩রা জুলাই মললবার দেহান্ত হইয়া গেল। এই এক বংসর কালের মধ্যে আমরা তাঁহার অনেক সদ্তণ শকা করিয়াছি। 'আমরা ভার্কতা প্রধান জাতি তাহাতে चात्कका अञ्च हिन। जिनि त्रामत्माहम बाद्यत्र जीवत्नत আদৰ্শকে বড় ভাল বাসিভেন। ভিনি বেমন মূথে কিছু विगिष्ठिम मा कार्य नमुनाद कदिएकम धवर मानव-रनवारकरे

ঈশব-দেবা বলিয়া মনে করিতেন, হেমারতোণের আনর্শ তাহা ছিল। তিনি এই এক বংসরের মধ্যে একবারও প্রকাশ্র वकु जानि करतन नाहे, किन्नु कार्या याहा तिथाहेता शिवारहन, তাহা সহজে ভূলিতে পারা যাইবে না। ভিনি বে পরিবারে ছিলেন, তাহাদের সঙ্গে একীভূত হইয়া গিয়াছিলেন। সেধানে প্রেমের খ্রণে গৃহের কর্ত্তা ও কর্ত্তী দূরে থাক, শিশু-দিগকে ও পণ্ড পক্ষীদিগকে পর্যান্ত বশীভূত করিয়াছিলেন। তাহার মৃত দেহ যথন বহন করিয়া লইয়া যাওয়া যায়, তথন পল্লীস্থ সমুদায় নিম্নশ্রেণীর লোক হায় হায় ক্রিতে লাগিল কারণ তিনি সকলের বন্ধু ছিলেন। তাঁহার পীড়াব সংবাদ প্রাপ্তিমাত ত্রাহ্মগণ দলে দলে তাঁহার সেবার জন্ম উপস্থিত হইলেন এবং যথাসাধ্য তাঁহার শুশ্রবা করিতে লাগিলেন। কিছুতেই আর বোগের উপশম করিতে পাবা গেল না। আহতি আল সময়েই ভাঁহার জীবন শেষ হইল। মৃত্যুকালে ভাহাব বয়:ক্রম ৩৩।০৪ বৎসরেৰ অধিক হয় নাই। মৃত্যু इटेटन देशात (महरक निमल्नात घाटी नहेशा मार कवा कर्खवा বলিয়া স্থির হইল। কারণ খ্রীষ্টধন্মের প্রতি ইহাঁর অতিশর অনাস্থা ছিল, এবং ইনি কবৰ দিবার পক্ষ ছিলেন না, স্থতবাং ইহাঁকে কোনও এটীয় সমাধিকেতে সমাহিত করা কওঁবা त्वाध इहेन ना। विधि श्रुक्त क ब्रह्माशामना कविया है है। त गृज দেহ গৃহ হইতে লইয়া যাওয়া গেল এবং ব্রাহ্ম পদ্ধতি অনুসারে ব্রহ্মোপাদনা পূর্বক চিতাগ্নিতে অবর্পণ করা গেল। তিনি च्यानारमय मरधा वांत्र कतिवात कम्र ७ बाक्षित्रमारकत रमया করিবাব জান্ত এতদুর হইতে আসিয়াছিলেন, তাঁহার অকাল মৃত্যুতে সকলেই শোক সম্ভপ্ত হইয়াছি। বিগত ৭ই জুলাই শনিবাৰ ডাক্তার মোহিনীমোহন বস্থ নিজ ভবনে বন্ধু বান্ধবদিগকে আহ্বান কবিয়া তাঁহার স্মরণার্থ বিশেষ উপাসনা করিয়া-ছিলেন। হেমারগ্রেণ তাহাদের বাড়ীতেই ছিলেন। ঐ প্রাদ্ধ উপলক্ষে মোহিনী বাবু একণত টাকা তাহার প্রস্তাবিত লাইত্রেরিতে দান করিতে ইচ্ছা করিয়াছেন। তৎপর দিন অর্থাৎ ৮ই জুলাই রবিবার প্রাতে মন্দিরে তাঁহার স্মবণার্থ বিশেষ উপাসনা হয়, পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী আনাচার্য্যের কার্য্য করেন। শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দভ মহাশয় মৃত বন্ধুব গুণাবলী কিঞিৎ বর্ণন করিয়া প্রার্থনা करवन, कार्यानिक्साहक मुख्य छाहारमव हुई। छूनाहे ध्र অধিবেশনে শোকস্চক এক প্রস্তাব পত্রস্থ করিয়াছেন, ভাহা তাঁহার ভ্রতা ও ভগিনীর নিকট প্রেরিত হট্বে। এইরূপে আমরা একটা উপযুক্ত ও কার্যাদক লোক হারাইয়াছি। ঈশ্ব তাঁহার পরলোকগত আত্মাকে সুধ শাস্তিতে রক্ষা করুন।

## শোক-গীতি।

কোথা হ'তে এসেছিলে কোথার চলিরে গেলে,
স্বর্গীর বিষয় যেন বসম্ভের শেষে;
নেথালে আশ্চর্যা স্কৃতি, স্বভাব স্থান্দর মৃতি,
নিঃশন্দে গাইলে গীত মোহিরা আবেশে!

শুনেছি হিমানী দেশে. দীন দরিজের বেশে, বাল্যকালে করেছিলে জীবন-সংগ্রাম; শৈশবেতে পিতৃহীন, জনাহারে তমুক্ষীণ, জ্ঞান-পিপাসার কিন্তু ছিলনা বিরাম।

নিবিড় তুষাবে ঢাকা, গভীর তিমির মাখা,
বংসবেতে ছয় মাস থাকে যেই ভূমি;
ব্রহ্মকুপা পরকাশে, সেই অন্ধকার দেশে,
বিমল সত্যের জ্যোতিঃ পেয়েছিলে তুমি।
সত্য জার্গে যার প্রাণে, সেকি কোন বাধা মানে ?

লজ্মিয়া সাগর গিরি ঘ্রি দেশে দেশে , লভিয়া ধবন রম্ব, করিয়া কভাই যমু, অবশেষে এসেছিলে ভারত বরবে।

প্রেমেতে পাগল পারা, আাত্মপর জ্ঞান হারা,
আাত্ম গণি পর গৃহে করেছিলে বাস;
আাবাল বণিতা যত. তব প্রেমে বশীভূত,
পশু পক্ষী তোমা হেরি লভিত উলাস।

শিখেছিলে বছ ভাষা, করেছিলে বছ আশা,
ধর্মেব সেবায় আহা কাটাবে জীবন;
আমাদের ভাগ্য দোষে, হতভাগ্য বঙ্গদেশে,
ভাকালে হইল হার তোমার মরণ!!

নেকদেশে ছিল ধাম, সেদিন শুনেছি নাম, আয়ু বন্ধু পৰিচিত নহ তুমি কেউ;

শ্বরিতে তোমার মুখ, তবু কেন ফাটে বুক ?— হৃদয় ভেদিয়া উঠে বিষাদের ঢেট !

কে তুমি মোদের ছিলে, কি বে ধন এনে দিলে ?
কি রহস্ত আছে ইথে কে করে সন্ধান ?
চিত নাহি ছির রহে, তনরনে ধারা বহে,
কারল্ হেমারগ্রেণ ব'লে কাঁদে প্রাণ!

সভ্যের সেবক তুমি, পেয়েছিলে সত্য ভূমি,
স্থানেশ বিদেশ সম ছিল হে ভোমার;
একই পিতার নামে, চলেছিলে নিত্যধামে,
তাতেই কি হয়েছিলে এত আপনাব ?

রোগ শোক মৃত্য জ্বা, পূর্ণ এই বস্ক্রা,
ছাড়িরা গিরাছ তুমি জমৃত আলরে ,
দেব তুমি, দেব লোকে, চিরকাল থাক স্থে,
এদেছিলে মস্তাধামে দেবদূত হ'রে।

আছিলে "আগন" ভাই, এখনো রয়েছ তাই, ক্রমে ক্রমে আমরাও নিব্বালয়ে বাব; ভাসিয়া প্রেমাশ্র বাল, আনন্দমগীর কোলে, দেখিয়া ভোমারে ভাই পরাণ জুড়াব।

জর জর বিশ্বপতি, জরা মৃত্যু স্টি ছিতি, সংযোগ বিষোগ সব তোসারি বিধান ; তোমারি ইচ্ছার জর, হউক এ বিশ্বমূর, জয়, শিব শিদ্ধিদাতা মদল আলর !

# সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্ব্বাহক সভার ২য় ত্রৈমাসিক কার্য্যবিবরণ।

#### 7428 1

এই তিন মাসে—পরমেশরের ক্লপার কার্যানির্বাহক সভাব ১০টা সাধারণ অধিবেশন হইয়াছে। এই ১০টা অধি-বেশনে প্রধানতঃ যে যে কায্য হইয়াছে, তাহার সংক্ষিপ্ত বিবরণ এই:—

- (১) সামাজিক পবিত্রতা রক্ষা তেতু সমগ্র ব্রাক্ষসমাজের সংযোগে গবর্ণমেণ্টে ছইখানি আবেদন পত্র পাঠান হয়।
- (২) আক্ষসমাজের প্রম হিতিহিণী কুমারী কলেটের সাংঘাতিক পীড়াব সংবাদ পাইযা, কার্যানিকাঁধক সভা তাঁহার প্রতি বিশেষ শ্রন্ধা ও ক্লভজ্ঞতা জ্ঞাপন কবিয়া একখানি পত্র লিথিয়াছিলেন। উক্ত পত্র আমাদেব সভাপতি মহাশয়ের বিলাত যাত্রাকালে তাঁহার হল্তে প্রদত্ত হয়। কিন্তু পরিতাপের বিষয় সভাপতি মহাশয় বিলাত পৌছিবার পুরেই উক্ত মহোদ্যা প্রলোকগভা হইয়াছেন। এসংবাদে এক্ষিসমাঞ্জের সকলেই ছ:থিত খ্ইয়াছেন। তাঁহাব আয়ীয় স্ফলনের নিকটে আমাদের শোকস্চক পতাদি লিখিবার পূর্বে অধ্যক্ষসভার বিগত অধিবেশনে সমবেত সভাগণ সেই সভাব সমুদর কার্যা হুগিত রাথিয়া দুড়ায়মান হইয়া, তাঁহাব প্রলোকগমনে ব্রাহ্ম-সমাজ কতদূব কভিগ্রস্ত ২ইল, তাহার উল্লেখ পুরুক আমাদের আন্তরিক শ্রদ্ধা ও কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কবিয়া একটি প্রস্থাব নিষ্কারণ করেন। কার্য্যনিকাহক সভাও ইভিপুকো এই সন্মে আর একটি প্রস্থাব নির্দ্ধারণ করিয়াছিলেন। সিটিঞ্লেজ ভবনে তাঁহার আদাম্ভানে অনেকে তাঁহার গুণামুকীর্ত্তন কবিয়াছিলেন।
- (৩) সাধারণ রাহ্মসমাজের জন্মদিন উপলক্ষে কলিকাতা-উপাসনালয়ে ১০, ১৪৬১৫ই মে, তিন দিন্দ সংকীপ্তন, উপাসনা, উপদেশ, শাস্ত্রপাঠও ধর্মালোচনা হর এবং লক্ষ্ণেতে ও আমা দিগের প্রচাবক বাবু কন্ধাপ্রসাদ উপাসনা ও সাধারণ ব্রান্ধ সমাজের ইতিবৃত্ত ও কার্যা সম্বন্ধে বক্তৃতা করিয়াছিলেন।
- (৪) সাধাবণ আক্ষাসমাজেব যে যে সভ্যের নিক্ট ২ বংসরের অধিক কালের চাঁদা বাকি আছে, তাঁহাদিগকে সমাজের ৮ম নিয়ম অবগত করিয়া এক মুদ্রিত পত্র পাঠান হইয়াছে।
- (৫) তুর্ভিক্ষ-গত তৈমাসিক কার্যাবিবরণে আমরা জানাইরাছিলাম যে, বাবু কাশীচক্ত ঘোষালকে করিলপুরের অন্তর্গত কোটালিপাড়ার পাঠান হইরাছে। তিনি এপ্রিল মাস পর্যান্ত তথার থাকির। কাপড় ও অর্থানি বিতরণ করিরা-ছিলেন। তৎপর বিশেষ আবশুক না থাকার এবং তাঁহার-লারীরিক অন্ত্রতা নিবন্ধন তিনি উক্ত স্থান হইতে প্রত্যান্ত্র, হইরাছেন। ছ্ভিক্রে বারের হিসাব পরে দেওয়া বাইবে।

কাঁপি, 'মুর্শিদাবাদ, কাকিনিয়া, বাগেরহাট, বাঁশবেড়িয়া, চট্টগ্রাম বঞ্চা ও হালারিবাগ ও ভবানীপুর স্থবার্কণ আদ্ধ-সমাজের সাখৎসরিক উৎসব সম্পর হইয়া গিয়াছে। এই সব স্থান এবং আরও কোন কোন স্থান হইতে প্রচারক পাঠাইবার জল্প নিমন্ত্রণ আসিয়াছিল।

আমাদিগের প্রচারক মহাশ্যগণ নিঃ দিথিত রূপ কার্য্য করিয়াছেন।

পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী—ব্রাক্ষ-দাধনাশ্রমে অধিকাংশ সমর উপাসনা করিয়াছেন, কথন কথন ব্রহ্ম-মন্দিরে সাপ্তাহিক উপাসনার আচার্যোর কার্য্য করিয়াছেন। ব্রাক্ষ-বালিকা ছাত্রী নিবাস ও ব্রাক্ষ বালিকা শিক্ষালয় এবং ব্রাক্ষ বালক ছাত্র-নিবাসের তত্বাবধায়কের কার্য্য, তত্ব-কৌমুদী সম্পাদন ও মেসেঞ্জার সম্পাদনের সহায়তা এবং কোন কোন পারিবারিক অমুষ্ঠানে উপাসনা করিয়াছেন। একটা বিবাহোপলকে বাকী-পুরে গমন করিয়াছিলেন। তথা হইতে আরায় গমন করিয়া তথাকার আশ্রমে উপাসনাদি করেন।

বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়—বরিশাল—এক্ষ-যদিরে একটি বিবাহে আচার্য্যের কার্য্য করেন। বর্ষের শেষ দিন উপলক্ষে অক্ষমন্দিরে আচার্য্যের কার্য্য, ছাত্রসমাজের উৎসব উপলক্ষে আচার্য্যের কার্য্য,সমাজ মন্দিরে "নীতিশিক্ষা ও চরিত্র সংগঠন" বিষয়ে প্রাকাশু বন্তৃতা এবং ব্রজমোহন কলেজ গুহে "ধর্মের খোসা ও শাস" বিষয়ে প্রকাশ্য বক্তৃতা করেন।

কাকিনিয়া— ইৎসবের: উদোধন উপলক্ষে আচার্য্যের কার্যা, ছাত্রসমাজের উৎসব উপলক্ষে আচার্য্যের কার্যা, কাকিনিয়া আদ্ধ-সমাজের উৎসব উপলক্ষে আচার্য্যের কার্যা এবং ছাত্রসমাজ মন্দিবে "অসাম্প্রদায়িক ধর্মা" বিষয়ে প্রকাশ্র বক্তা করেন।

কলিকাভা—একটা বিবাহে আচার্যের কার্য্য, সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের জন্মোৎসব উপলক্ষে আচার্য্যের কার্য্য এবং অন্ত সমরে ভিন দিবস আচার্যোর কার্য্য কবেন।

বাশবেজ্যা—উংস্বের উবোধন উপলক্ষে সমাজ মন্দিরে জাচার্যোর কার্যা, উৎস্ব উপলক্ষে কোন ভদ্রশাকের বাটাতে উপাসনা, গভবাটাতে "ধর্মতের বিরোধ ও সামজ্ঞত" বিষয়ে প্রকাশ বক্তৃতা, মাদক স্বেন-নিবারণী সভার সাধংস্বিক উৎস্ব উপলক্ষে সভাপতির কার্যা, মাদক স্বেন্র বিরুদ্ধে বক্তৃতা, স্পগ্হে ছাত্রসভায় সভাপতির্পে "নিঃমার্থ হিতৈষ্ণা" বিষয়ে বক্তৃতা এবং আক্ষসমাজ মন্দিরে আচার্যোর কার্যা করেন।

এত দ্বির কলিকাতা ও মফ: স্বলে ও। দ্ব ও স্বর্গান্ত লোকের সহিত ধর্ম্মালোচনা এবং সাময়িক পত্রিকায় ধর্ম বিষয়ে প্রবন্ধ প্রাকাশ ও ধর্ম বিষয়ে পুঞ্জক রচনা করিয়াছেন।

वां व्यविश हिस्स नाम-किनिकाका ममास्य ध्वर बाक शिवराद छेशामना ७ छेशामना नान, माधनाञ्चरम मर्था बर्था छेशामना ७ शाख शाठे, नववर्ष छेशनरक विरम्ध छेशादव छेशामना छेशामना ७ शाख शाठे ध्वर माधावश बाक्सममास्यव बर्खाश्मरव इहे दिना विरम्ध छेशामना, छेशासन कान ७ शाख शाठे करमन। বশুড়া—রাক্ষসমাজের বার্ষিক উৎসব উপলক্ষে সমাজে উপাসনা, উপদেশ, পাঠ, ব্যাখ্যা এবং আলোচনাদি করেন। ছানীয় "টাউন হলে" ছই দিবস "ধর্ম্মই জীবন" এবং "ধর্মের লক্ষণ কি" এই ছই বিষয়ে বক্তৃতা এবং প্রকাশ্র ছানে "ধর্ম পরের জন্ত নয়" এই বিষয়ে বক্তৃতা করেন, ইহা ব্যতীত বন্ধুদের গৃহে বিশেষ উপাসনা, অনুষ্ঠান উপলক্ষেউপাসনা এবং স্ক্তরাপুর ব্রাক্ষসমাজে উপাসনা, উপদেশদান পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন।

नाটোর-একটা বছুর গৃহে উপাসনাদি করেন।

দিঘাপতিয়া—একটী বন্ধুর পবিবারে উপাসনাদি এবং স্থানীয় বাঙ্গালা স্কুল পৃহে গীতার শ্লোক ব্যাখ্যা হার। শশ্লীবনের পরিবর্ত্তন" বিষয়ে বক্তৃতা করেন।

কাওরাইদ—বক্ষমন্দির প্রতিষ্ঠা উপলক্ষে বিশেষ উপাসনা, উপদেশ দান, শাস্ত্র পাঠ এবং মন্দির প্রাঙ্গনে শ্রাক্ষ ধর্মের মূল সত্য" বিষয়ে টুইডিড পাঠ উপলক্ষে বক্তৃতা করেন।

চাকা—ব্রহ্মদিরে প্রাতে উপাদন। এবং পরিবারে উপাদনা ও একদিন ছাত্রদমাজের বিশেষ অধিবেশনে "জীবনের চিহ্ন কি ?" বিষয়ে বক্তৃতা কবেন।

নারায়ণগঞ্জ-সমাজে উপাদনা ও উপদেশ।

আরা---সাধনা শ্রমে ও পরিবারে উপাসনাও আলোচনা করেন।

সাহাবাদদেশার অভূর্গত নিম্নলিখিত তিন্টা গ্রামে উপাদ-নাদি কবেন।

কোয়াৎ-একটা ত্রান্ধ-পরিবারে উপাসনাদি কবেন।

দানোয়ায়—একটি বন্ধুর গৃহে প্রায় ছই সপ্তাহ কাল থাকিয়া নিত্য উপাসনাদি করেন এবং এক দিন একটা অনুসান উপলক্ষে বিশেষ উপাসনাদি কবেন।

ঁ নস্রিগঞ্জ—একটা ভদ্রলোকের গৃহে সঙ্গীত ও প্রার্থনাদি করেন। এথানে স্থানীয় প্রধান প্রধান লোক উপস্থিত ছিলেন।

গরা জেলার অন্তর্গত দাউ নগর—প্রামে একটা বন্ধ্ব গুড়ে বিশেষ উপাদনাদি কবেন। উপাদনায় স্থানীয় কেছ কেছ উপস্থিত ছিলেন।

বরাহনগর-একটা অফুগ্রান উপলক্ষে বিশেষ উপাসনাদি করেন।

কেরেন।

ভবানীপুর—স্থবস্থা ব্রাক্ষসমাজের সাহংসরিক উংসর উপলক্ষে ছই বেলা উপাসনা, উপদেশ ও আলোচনাদি কবেন। এতদাতীত তত্তকৌমূদীতে লেখেন এবং ছইখানি প্রতিবা বাহির করেন।

বাবু শশিভূষণ বস্থ—হাজারীবাগ উৎসবের সমস্ত কার্যা সম্পন্ন করেন ও নৈতিক বিদ্যালয়ের উৎসব উপলক্ষে কেশব। হলে "নীতি শিক্ষার আবশুকতা" এবং অন্ত হই দিন উক্ত হলে আমাদের "আধাাত্মিক ও সামাজিক উন্নতি" এবং "ধর্মবীর" সম্বন্ধে ২টা বক্তৃতা করেন, আর এক দিন পরলোকগত ব্যৱসাদ্ধান্তর অর্থার্থ স্ভার স্ভাসভির আসন গ্রহণ করেন। এত্তির সাপ্তাহিক সামাজিক উপাসনা কোন কোন পরিবারে উপাসনা, আলোচনা করেন ও উপদেশ প্রদান করেন।

গিরিধিতে সাথাহিক উপাসনা করেন ও উপদেশ দান করেন।
নিম্তা সমাজে একদিন উপাসনা করেন ও উপদেশ দান করেন।
এতদাতীত তিনি সম্প্রতি "Lotus: or a series of meditations" P. I. নামক একথানি ক্ষুত্র পুত্তক প্রণয়ন করিরাছেন এবং "Aids to spiritual life" নামক একথানি পুত্তক প্রকাশ করিবার আ্রোজন করিতেছেন। ইহাতে তাঁহার দীর্ঘকালবাাপী যত্ত্বর প্রয়োজন।

এই কংশ্বক মাস অস্স্তার জন্ত তাঁহার কার্য্যের কিছু ব্যাঘাত হইয়াচে।

শ্রীযুক্ত লক্ষ্মণ প্রসাদ—এই ভিন মাস কাঁল মধ্যে নিম্নলিখিত কার্ব্য বাতীত আরে বিশেষ কিছু করিতে পাবেন নাই।

তিনি প্রচারার্থে হরছই ও সাহাবাদ এই ছুই স্থানে গমন করিয়াছিলেন। শেষোক্ত স্থানে তিনি এক নৃতন প্রকারে প্রচার কবিয়াছেন। অর্থাৎ এক বিবাহ স্থলে নিমন্ত্রিত হইয়া তথার বুথা আমোদের বিনিময়ে সঙ্গত ও ধর্মপ্রচার করিয়া-ছিলেন। লক্ষোতে অৰম্ভিতি কালে দ্বিদ্ৰদিগকে রীতিমত ঔষধি বিতরণ করিয়াছেন, প্রতি শনিবার সামাজিক উপাদনা, এবং বুধবার বাবু বিশ্বস্তব রাম মহাশয়ের ভবনে সঙ্গত সভাব কার্য্য করিয়াছেন। এত্থাতীত কোন কোন পরিবাবে পারিবারিক উপাসনা,এবং চুইটি জাতকর্ম অনুষ্ঠানে আচার্য্যের কাব্য করিয়া-ছেন। সাধারণ ব্রাহ্মদমাঙ্গেব জন্মদিন উপলক্ষে উপাসনা এবং জাঁহার ইভিবৃত্ত ও কার্য্য সম্বন্ধে বক্তৃতা করিয়াছেন। প্রায় প্রতিদিন তাঁহার প্রচার কার্য্যালয়ে বাঁহারা আদিরাছিলেন তাঁহাদিগের দঙ্গে ধর্মালোচনা করিরাছেন। তাঁহার মন্তিন্ধের ণৌর্মল্য হেতু প্রকাশ রাজ্পথে ব**জুতা করিতে সমর্থ হ**ন নাই। ष्मगञ्च উত্তাপ बच्च उन्नविमानरप्रत कार्या छ স্থগিত ছিল।

থাসিয়া মিশন ও বাবু নীলমণি চক্রবর্তী—এই তিন মাস কাল নীলমণি বাবু সমস্ত সমর থাসিয়া মিশন কার্য্যে বাপন করিতে গারেন নাই। অর্থ সংগ্রহ হেতু তাঁহাকে প্রায়ই নানা স্থানে ভ্রমণ করিতে হইরাছে। কোন কোন ব্রাহ্মসমাজে সাহংসরিক উংসব উপলক্ষে গমন করিয়া উভর কার্য্যই সমাধা করিয়াছেন। সেই সেই সময়ে থাসিয়াতে তাঁহার সহকারীগণই স্থানীর ব্রাহ্মসমাজ সমূহে উপাসনা, ঔষধি বিভরণ, শিক্ষালরে শিক্ষকতা প্রভৃতি কার্য্য করিয়াছেন। চট্টগ্রাম উৎসব উপলক্ষে গমন করিয়া নীলমণি বাবু হানীর ব্রাহ্মসমাজ গৃছের ভিত্তি স্থাপন কবিরাছেন এবং নানাপ্রকারে ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করিয়াছেন। সম্প্রতি তিনি প্ররার থাসিয়াতে প্রত্যাণগমন পূর্বাক্ষ তথার কার্য্য করিতেছেন।

#### সাধনাশ্রম।

পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী এবং বাবু নবধীপচক্র দাস মহাশরের কার্য্যবিবরণ বথাছানে প্রচারক সহাশর্দিপের, কার্য্যের সৃহিত প্রকাশিত হইল। শীযুক্ত আদিনাথ চট্টোপাধ্যায়—রবিবার ব্রহ্মনদেরে প্রাতঃকালীন উপাসনার কথন কথন আচার্য্যের কার্ন্য, কোন কোন গৃহে পারিবারিক উপাসনা ও অষ্ট্রান উপলক্ষে উপাসনা, তত্তকৌমুলী সম্পাদনের সহারতা, সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ কার্য্যালয়ের কার্য্য, মধ্যে মধ্যে সাধনাশ্রমের উপাসনার আচার্য্যের কার্য্য এবং ব্রাহ্ম-বালিকা বোর্ডিংএ নিয়মিভরূপে উপাসনা করিরাছেন।

শীযুক্ত মহে দ্রনাথ চটোপাধ্যায়— কখন কখন বন্ধমন্দিরে প্রাভঃকালীন উপাসনায় এবং নিমতা ব্রাহ্মসমাজে
সাপ্তাহিক উপাসনার আচার্য্যের কার্য্য এবং খালোডে এক
ব্রাহ্মবন্ধ্র মাতৃশ্রান্ধোপলক্ষে উপাসনা কবেন। কাঁথি ব্রাহ্মসমাজেব উৎসবে গমন করিয়া তথায় এবং চণ্ডীভেটী ও দগড়া
গ্রামে উপাসনা ও আলোচনাদি দ্বারা ধর্মপ্রচার করেম।
রামপ্রহাট, মুবশীদাবাদ, নলহাটী, আজিমগল্প, ধুলিয়ান,
পূণিয়া, কাটিহার, দিনাজপুর, জলপাইগুড়ী, সিলিগুড়ী, ধরসান
ও দার্জিলিং প্রভৃতি ভানে উপাসনা, উপদেশ ও আলোচনাদি
দ্বারা ব্রাহ্মধর্ম প্রচাব করিয়াছেন।

শীযুক্ত কাশীচন্দ্র ঘোষাল—এপ্রেল মাস পর্যান্ত ফরিদপুবের অন্তর্গত রাধাগঞ্জ নামক স্থানে ছর্ভিক্ষ প্রাণীডিত লোকদিগকে সাহায্য কবিয়াছেন। তৎপর পাড়িত হইয়াকলিকাতার ফিরিয়া আসেন। এই সময়ে তত্তকোমুদী সম্পাদনের সহায়তা কবেন এবং "গুরু করণ" সম্বন্ধে তত্তবিদ্যাস্ভায় একটি প্রবন্ধ পাঠ করেন।

শ্রীযুক্ত জয়শক্ষর রায়—সাধনাশ্রমের ভরাবধারকতা এবং মহিলাদিগকে শিক্ষা দান কবিরাছেন।

#### সাধনাশ্রমের আয় ব্যয়ের হিসাব।

	বায়	
>96fle	<b>आ</b> श्रमवात्रीमिरगत्र	
5	আহাব ও অন্তান্ত	
80	বাবদে ধবচ	७२५,६
900	পাথের এবং আশ্রমের	
8, •	সাধারণ ধরচ	e94/o
	আরা আশ্রমে পাঠান	
38840/0	' হয় এবং ডাকমান্তল	₹•1•
8•<≥€		
		3\660
<b>3</b> <8000	হন্তেন্থিত	<b>い</b> ・
e11/>•		<del></del>
		361660
७५% ६८७		
	800 810 810 800 800 800 900 900 800	১০০৪০ আশ্রমবাসীদিগের আহার ও অন্তান্ত ৪০ বাবদে থবচ ৩০০০ পাপের এবং আশ্রমের ৪০ সাধারণ থরচ আরা আশ্রমে পাঠান ১৪৪৮০০ * হর এবং ডাকমান্তর ৪০০০ ৩৯০৮০ হস্তেন্থিড

#### আরা শাখা-সাধনাশ্রম।

শ্রীযুক্ত প্রকাশ দেব—মার্চ মানের শেবভাগে লাহোর রাওলপিও ও বেনারদে উপাদনা করেন ও উপদেশ প্রদান করেন, ১২ই এপ্রিল জারাভে ফিরিয়া জাদেন এবং সাধনাপ্রমে জাচার্য্যের কার্য্য করেন এবং "মানবজীবনের আদর্শ" ও "ব্রাদ্ধ-ধর্ম" সম্বন্ধে ছইটা প্রকাশ্ত ৰক্তৃতা করেন; আশ্রমে জ্যাগতদিগের সহিত ধর্মালোচনাদি করেন এবং মধ্যে মধ্যে

তাঁহাদের গৃহে যাইয়া ধর্মালোচনাদিও করেন। ভানীর ক্ষ আদালভের উকীল বাবু ভগবতী সহার মহাশর আছ্প্রাহ করিয়া উপাসনার জন্ত তাঁহার বাটী আমাদিগকে ছাড়িয়া দেওরার প্রতি শনিবার সন্ধ্যাকালে এই ভানে উপাসনা হইত। এই উপাসনা ভলে অনেক ভানীর বেহারি ভত্রলোক উপস্থিত হইতেন। আরও তিনি দেশের নানাভানের বন্ধু ও ব্রাহ্মধর্মের সহাত্মভৃতিকারীদিগের সহিত্ত পত্র হারা ধর্মালাপাদি করিয়াছেন এবং লাহোরের "ব্রাহ্ম-প্রচারক" নামক উর্দ্ পাক্ষিক পত্রিকার কিছু কিছু লিথিরাছেন।

শ্রীযুক্ত গুরুদাস চক্রবন্তী—বেনারসে অবস্থিতি-কালে উপাসনাদি করেন এবং শ্রীযুক্ত জগরাধপ্রসাদ প্তপ্তের প্ডীমার শ্রাদ্ধ **উ**পলক্ষে করেন। তৎপরে তিনি আরা দাবনাশ্রমে ফিরিয়া আদিয়া গঙ্গাগোবিন্দ গুপ্ত মহাশয় ও গোপাল মিত্র মহাশয়ের বাটীতে ও অঞাক্ত দিন আশ্রনে উপাদনা লরেন। কলিকাভায় আগ্যন করিয়া আশ্রমে ও ব্রাহ্মবন্দ্র লিগের গ্রহে উপাসনাদি কবেন। কলিকাতা হইতে প্রত্যাবর্তনের সময় চারি দিবদ বাকিপুর মোকামা ও मानाभूति मामाज्ञिक ७ शांतिवातिक উপामना कत्त्रन ७ উপদেশ প্রদান করেন। মফ:ফলে বন্ধু ও সহামুভূতিকারীদিগের সঙ্গে পত্তে হাবা ধর্মালাপ কবিয়াছিলেন।

প্রমেশ্বরের কুপার সাধনাশ্রমের কার্য্যক্ষেত্র বিস্তুত হইতে চলিল। গত মাঘোৎসবের পর শ্রীযুক্ত প্রকাশ দেব প্রভৃতি পরিচাবক মিলিত হইয়া প্রচাবার্থে বেহার উক্ত অঞ্চলে অঞ্চল গমন কৰেন। নাই। এজন্য তাঁহারা আপাতত: সমাজেব প্রচারক আরা সহবে অশ্রেম সংস্থাপন পূর্ণকে তাহার চতুদ্দিকে ধর্ম প্রচার কবিতেছেন। ঐ স্থানে স্থায়ীকপে প্রচারাথে প্রীযুক্ত প্রকাশ দেব, শ্রীযুক্ত গুরুদাস চক্রবর্তী, শ্রীযুক্ত স্থলর সিং ও শ্রীযুক্ত শ্রীরন্ধবিহারীলাল অবস্থিতি কবিতেছেন। ব্রাহ্মসমাজেব हिटेडियी तकु अक्षिय वात् अकारमत नाताग्रागत विरम्भ काशहर এই সাধনাশ্রমটি স্থাপিত হইয়াছে। এজন্ত তাঁহাকে আমাদিগের হৃদয়ের কৃতজ্ঞতা প্রদান কবিতেছি। এই আশ্রমে প্রায় ১০৷১১ জন বাে্ক একণে স্থায়ীরূপে অবস্থিতি করিভেছেন।

আরা শাথা সাধনাশ্রমেব আয় ব্যয়েব হিসাব।

আগ্ন		_ব্যয়—	
সত: প্রবৃত্ত দান কলিকাভার আশ্রম	२२ <i>०॥</i> % व	আহারাদির বায় প্রকাশ দেবের প্র	
হইতে প্রাপ্ত	¢ • \	কন্তাদিগের জন্ম পাথেয়	૭৬૫. ૧૯૫૭
মোট	ર ૧ • ∥ ત∕ ¢	ডাকমাণ্ডল আসৰাব বাটিভাড়া ও	>°\
		ভূত্যের বেতন	8२॥/€
	-	মোট	२ १ • ॥ । ৫
			(ক্রমশ:)

## প্রেরিত পত্র।

(পত্ৰপ্ৰেৱকদিগের মতামতেব জন্ত সম্পাদক দায়ী নহেন।) শ্ৰীযুক্ত শ্ৰদ্ধাম্পাদ তত্ত্ব-কৌমুদী সম্পাদক

মহাশয় সমীপেযু।

মহাশ্র,

আপনার প্রবন্ধ এবং আমার প্রতিবাদ ঘাঁহারা মনো-যোগের সহিত পাঠ করিয়াছেন, তাঁহাদিগকে আর কোন कथा विनवात श्राद्यांकन च्याहि, अयन द्यां रुग्रना। ज्द যাঁহাদিগের তেমন মনোযোগ দেওয়ার অবসর নাই, তাঁহারা আমার প্রতিবাদ পত্তের আপনি যে ফুটনোট (পদটীকা) করিয়াছেন, ভাহা দেখিয়া ভ্রমে পতিত হইতে পাবেন, এই হেতৃ আপনার ফুটনোটেব মন্তব্য সম্বন্ধে হুই চারিটী কথা বলা প্রােশ্বন হইয়াছে। আপনি বলিয়াছেন, "অনক্তকর্মা লােক ভিন্ন যে সাহিত্য ও বিজ্ঞানের উন্নতি হইতে পাবে না. একপ বলা আমাদিগের অভিপ্রায় নহে।" আপনার অভিপ্রায় না থাকিলেও আপনার কথা আপনার অভিপ্রায়ের প্রতিকুলাচরণ করিতেছে। অন্যকশা লোকেব দারা জ্ঞানের সামান্ত উন্নতি হইতে পাবে, কিন্তু "ভাদৃশ উন্নতি" চইতে পারে না, ভজ্জ্য অন্যকর্মা লোকের প্রয়োজন এ কথা আপনি স্পষ্টাক্ষরেই বলিয়াছেন। আপনার কথাগুলি এই,—(ক) "আমাদেব দেশে অন্যক্ষা হইয়া জ্ঞানোম্বতি সাধনে নিযুক্ত হইবাব লোক नारे वित्रारे छात्नत जामुन उन्नि पृष्ट रहेट हा ना ." (थ) জগতে সাহিত্য কিম্বা বিজ্ঞান সম্বন্ধে যত কিছু আশ্চর্যা কীৰ্দ্তি দাধিত হইতেছে, তাহা অনক্তকর্মা লোকনিগের দাবাই সাধিত হইতেছে। যে কথাগুলি আপনাব "ত্রাহ্মণত্বের মূল কথা" হইতে অধিকল উদ্ভ হইল, তাহার দারা কি স্পষ্ট প্রমাণিত হইতেছে না যে, সাহিতা ও বিজ্ঞানেব যত বিছু আশ্চর্যা উন্নতি তাহা কেবলমাত্র অনক্তকর্মা লোকেবাই সাধন কবিতেছেন ? নত্বা "ঘারাই, বলিয়াই" এ কথাগুলির কোন ष्यर्थ हे पारक ना। এशन ष्यापनात क्याप्त (वाध इहेटडएइ. আপনাব বাকা আপনার অভিপ্রায়ের প্রতিকৃল মত প্রবাশ কবিতে প্রস্তুত হইয়াছিল। স্কুতরাং দেখা যাইতেছে আমাব প্রতিবাদ সম্পূর্ণ নিফল হয় নাই: উহা অন্ততঃ আপনার প্রকৃত অভিপ্রার প্রকাশের স্থযোগ দিয়াছে।

আমার প্রতিবাদ পতে ইহাই প্রদর্শন কবিতে চেটা করিয়াছি যে, সাহিত্য ও বিজ্ঞানের উন্নজি যে কেবল অনজ-কর্মা লোকদিগের দারাই হইয়াছে, অল্পের দাবা হয় নাই, 
এ কথা যথার্থ নহে। বরং আপনি যে য়লে একজন অনজ-কর্মা লোকের দৃষ্টান্ত দিয়াছেন, আমি তথায় পাঁচ জন অল্পকর্মা লোকের দৃষ্টান্ত দেখাইয়াছি। আমার ইহা দৃচ বিশাঁস যে, 
অনুসন্ধান করিলে বরং ইহাই দৃষ্ট হইবে যে, অনজকর্মা লোকদিগের অপেকা অল্পকর্মা লোকেরাই সাহিত্য ও বিজ্ঞানেব 
অধিক উন্নতি করিয়াছেন। আমি ইছা করিয়াই এদেশীয় 
কোন লোকের মাম করি নাই। কিছু আপনি যখন উল্লেখ

করিয়াছেন, তথন এ কথা বলা আবিশ্রক, রাজা বামমেছিন। রায় হইতে আরম্ভ করিয়া বর্তমান সময় পর্য্যস্ত এদেশের সাহিত্যের যে উন্নতি হইরাছে, তাহার অধিকাংশই অস্তবর্দ্মা त्नाकित्रत द्वाता इहेबाहि, माइटकन मधुरुतम, ट्रमहत्त्र, নবীনচন্দ্র প্রভৃতি যত কবি আছেন, এক রবীন্দ্রনাথ ভিন্ন আর সকলকেই অলের জন্ম ধা ধা করিয়া বেড়াইতে হইয়াছে। भननामाहन माहिटछात अञ्च शृद्धि याश कतित्व शातियाहितनन, অর্থ সক্ষলতা উপস্থিত হইলে তাহা করিতে পারেন নাই। ঈশ্বচন্দ্র গুপ্তেব আক্ষেপ বোধ হয় আপনি বিশ্বত হন নাই। অলেব অস্ভলতা মাইকেল মধুস্দনের প্রতিভাবিনষ্ট করিতে পারে নাই। আপনাব প্রশ্নেব উত্তরে এ কথা বলা আবিশ্রক, ইংলত্তে Literary class রাজ্যর বা সমাজের সাহায্যে জন্ম নাই, উহাবা স্বয়ং নিজ সম্প্রদায়ের সৃষ্টি করিয়াছেন। তপাপি সেক্সপিয়র ও মিণ্টনের ভার কবি বর্ত্তমান সময়ে কয়জন क्रांचियार इन १ ताककित (उनिमन जिन्न वर्डमान मगरप्र कित-দিগেৰ মধ্যে আৰ কষজন বাজবৃত্তি লাভ কৰিয়াছেন ? আমাৰ বক্তবা এই, কোন এক ব্যক্তিকে রাজদত কিম্বা সমাজদত্ত বৃত্তি দিয়া বিজ্ঞান কিখা সাহিত্য সমাজে প্রবেশ করাইয়া দিলেই যে তিনি বিজ্ঞানবিৎ হইতে পাবিতেন কিম্বা সাহিত্যের যথেষ্ট উন্নতি কবিতে সমর্থ হইতেন, তাহা ঠিক নহে। ডাক্তার মহেন্দ্রলাল স্বকার যাহা করিয়াছেন, ভজ্জ্য আমনা যথেষ্ট কৃতজ্ঞ আছি, কিন্তু তাঁহাকে বৃত্তি দিলে যে তিনি আব অধিক বিছু কবিতে সমর্থ হইতেন, সে ধারণা আমাব নাই। তিনি এ পর্যান্ত অল অর্থ উপার্জন করেন नाहे, উদবালের জন্ম তাঁহাকে এখনও যে বিশেষ ভাবিতে হয় তাহা সম্ভব নহে, আশুতোষ মুথোপাধ্যায়ের ওকালতি কি উদরাল্লের জন্ম ? তিনি পৈতৃক সম্পত্তি লাভ কবিয়াছেন, রায়চাঁদের্ত্তি পাইয়াছেন। ইংলভে এমন অনেক লোক আছেন, বাঁহাবা কোন বৃত্তি পান না, অথচ দিনাস্তে একাহার ক্রিয়াও সাহিত্য বা বিজ্ঞানের চর্চ্চা ক্রিতেছেন। তাঁহাবা ইচ্ছা করিলে অমন্ত কার্য্য কবিয়া যথেষ্ট অর্থ উপার্জ্জন করিতে পারিতেন, কিন্তু সে দিকে তাহাদিগের দষ্টি নাই। তাঁহারা জ্ঞানের উপাদক। তাহারা অভ্যের মুখাপেকা করেন না। আপনার গুণে তাঁহাবা ক্রমে জগতের লোকের শ্রদ্ধা আকর্ষণ करद्रन। डाँशारा उक्षिण मध्यमाय स्रष्टि कदिए उर्दमन ना, অথচ জগতে তাঁহারাই বাহ্মণ্য লাভ করেন। এতলে সামা বৈষ্মোব কোন কথা উঠিতে পারে না। বেখানে সমাজ নিজ হত্তে কিছু একটা গুড়াইতে চাহৈন তথায়ই গোলঘোগ উপস্থিত হয়, সাম্যের স্থানে বৈষ্মা ঘটিয়া থাকে। আপুনি त्म এ कथा है। विश्वाह इहेब्रा याहेट छड़न हे इंहि विश्वास्त्र विषय । আপনি আপনার নিজ জীবনের শিক্ষার বিশ্বন্ধ কার্য্য করিতে প্রবৃত হইয়া সম।জের অনিষ্ট ঘটাইবেন। বীত্রমাজে যে প্রচাবকের সংখ্যা বৃদ্ধি হইতেছে না, লোকে অন্যক্ষী হুইয়া আধ্যায়িকতাকে রক্ষা করিতেছে না, তাহার কাবণ স্মী বৃত্তির বাবভার অভাব নহে। আহ্মসমাজে বঁহারা প্রথম

ছিল ? आপনার নিজের জয়ই বা অত্যে কোন্ বৃত্তির ব্যবস্থা হইয়াছিল ? অর্থোপার্জনের পথ উন্মুক্ত থাকিতেও আপনি ব্রাহ্মসমাজের সেবাত্রত কেন গ্রহণ করিয়াছিলেন ? আমি আবার বলিতে বাধ্য হইতেছি, আপনি নিজ জীবনের শিক্ষার প্রতি দৃষ্টি না রাথিয়া চিন্তার সাহায্যে নৃতন পথ আবিকার করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছেন। এই নৃতন পথে সহ-यां धीनिशतक नहेशा शिशा चार्यान ममास्त्रत्र चनिष्ठ कतिरवन। যদি সমাজের প্রকৃত কল্যাণ সাধন করিতে চাছেন, তাঁহা-দিগের সন্মুথে আপনার জীবনকে শিক্ষাদাতারূপে উপস্থিত করন। ব্রাহ্মসমাজের পূর্ব ইতিহাসে এরণ উপদেষ্টা আরও অনেক আছেন। আপনি ইহা স্বীকার করিবেন কি না জানি না, কিন্তু আমি এ কথা অসঙ্কোচে বলিতে পারি যে, যাহাবা ত্রাহ্মসমাজেব সাহায্য গ্রহণ করেন না, কিম্বা থাঁহারা সাহাযোর জন্ম লালায়িত নহেন, যাহা পান তাহাতেই সম্ভই, ना পाইলেও कृष्टे इन ना, उांशामिश्यत हात्रा बाक्षमभाष्यत আধ্যাত্মিক উন্নতি সাল সাধিত হইতেছে না; তাঁহার৷ সমাজের অঙ্কাধীন থাকিতে অসমত নহেন। অথচ বাঁহারা অন্ত উপায়ে সংসারকে অধিকতর সচ্ছল অবস্থায় আনিতে পারিতেন कि ना मन्नर, दृखि ভোগ कतिया उारात्रा कि व्यक्षिक उत्र আগ্রহ যত্নের সহিত ব্রাহ্মসমাঙ্কের সেবা করিতে সমর্থ হইয়াছেন ? আপনি এ কথার কি উত্তর দেন, ডাহাই জানিতে চাই। সাধারণ ত্রাহ্মসমাজ কি বৃত্তির ব্যবস্থা করেন নাই। তবে বাঁধারা এক সময়ে সাধারণ ব্রাহ্মসমাব্দের ধর্ম প্রচারক ছিলেন, আজ তাঁহাদিগের কেহ কেহ কোন্ধশাপ্রচার করিতেছেন? তাঁহাদিগকে কি আনাদিগের আধ্যায়িকতা রক্ষা ও পরিশোধনের জন্ম নিযুক্ত করিতে চাহেন ? আগ্রহ, স্থিরমতিত্ব, কর্ত্তবান্তা মানুষের প্রকৃতিগত ধর্ম। জীবন সংগ্রামে এই সকল ধর্ম পরিপুষ্ট হয়; সচ্চলতায়ই যে ডাহা বিকাশ প্রাপ্ত হয় তাহা নহে। আপনি যাহা প্রতিপন্ন করিতে চাহিয়াছেন, ব্রাহ্মণমাজের ইতিহাসেও তাহা প্রতিপন্ন रहेट्ड मा। देवस्यात वावस कता चालनात चित्रधारम्ब বিক্ষ হহতে পারে, কিন্তু আপনি যে ব্যবস্থা করিতে চাহিতে-ছেন, সাম্যের বিনাশ ভাষার অবভস্তাবী ফল। অগস্ত কোম্ত বলিয়াছিলেন, জ্ঞানীরা সমাজের মন্তকের কার্য্য করিয়া থাকে, স্তবাং মন্তকের পরিপোষণ জন্ম অন্তান্স অক্রে সাহায্য করা কত্তব্য। কোম্ত ধাহা বলিয়াছেন, আপুনিও অঞ্ কথায় তাহাই বলিতেছেন। আপনিও গ্রাহ্ম গ্রাহ্মণদিগের স্পক্ষে স্মাঞ্চের নিক্ট দেই দাওয়াই উপস্থিত ক্রিয়াছেন। ইহার ঘারা কিকপে সাম্যের বিনাশ ও বৈষ্ম্যের স্পষ্ট হইবে, আমি পুকা পত্রেই তাহা প্রদশন করিয়াছি, আপনি সে সকল কথার কোন উত্তর দেন নাই, স্থতরাং পুনরায় তাহাব আলো-**हना निश्चरत्राञ्चन** ।\*

> निर्वतकः, वीवातकानाव शक्ताशासासः।

বৃত্তির ব)বতার অভাব নহে। একাননাজে বাহারা প্রথম | জামাদের অভিপ্রায় ৰোধ হয় পাঠকগণ ক্ষয়লম কবিচে সম্ধ প্রচারক হইয়াছিলেন, উহাদিগের জন্ম কোন্ ইতি নিয়োজিত | হইয়াছেন, বুবিবয়ে আমাদের অধিক বাদ প্রতিবাদ করিবার ইচ্ছা নাই।

## ব্ৰান্মসমাজ।

প্রচার—ইতি পুর্বে উত্তর বালালায় প্রচারার্থ বাহার।
গমন করিরাছিলেন তাঁহারা দিনাজপুর হইতে দার্জিলিং এ
গমন করেন। তথা হইতে ২৫এ জুন সোমবার— কার্লিরং
উপস্থিত হন। রাত্রিতে শ্রমের বাবু রাধাকাস্ত বল্যোপাঁধ্যার
মহাশ্যের গৃহে মহেক্স বাবু পারিবারিক উপাসনা করেন।

২৬এ জুন মঙ্গলবার—প্রাতে রাধাকান্ত বাবুর গৃতে কুঞ্জ বাবু পারিবারিক উপাসনা করেন। রাত্রিতে যত্তীদল জলপাই গুড়ী উপস্থিত হন।

২৭এ জুন বুধবার—মধ্যাহে শ্রীযুক্ত জালাল উদ্দীনের গৃহে কুঞ্ল বাবু পারিবারিক উপাসনা করেন। রাত্রিতে সমাজ গৃহে হরিমোহন বাবু উপাসনা করেন।

২৮এ জুন বৃহস্পতিবার—প্রাতে বাবু হরিমোহন চক্রবর্তী
মহাশয়ের গৃহে মহেক্র বাবু পরিবারিক উপাদনা করেন।
এইদিন তাঁহারা দৈদপুর উপস্থিত হন।

২৯এ জুন শুক্রবার—প্রাতে উষাকীর্তন। সন্ধারপর সৈদপুর ব্রহ্মমন্দিরে "সার্বভৌমিক ধর্ম" সম্বন্ধে কুঞ্চ বাবু এবং হরি মোহন বাবু বক্তৃতা করেন।

৩০এ জুন শানবার—প্রাতে উষাকীর্ত্রন। তৎপরে মন্দিরে
মহেক্র বাব্ উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। বৈকালে হাটে
সংকীর্ত্রন হয়ও হরিমোহন বাব্ বক্তৃতা করেন। বক্তৃতান্তে
হাটে পুস্তকাদি বিক্রয় হয়। রাজিতে স্থানীয় ব্রাহ্মসমাজের
আচার্য্য বাব্ আভতোষ বস্থ মহাশরের গৃহে কুঞ্বাব্ পারিবারিক উপাসনা করেন।

>লা জ্লাই রবিধার—প্রাতে যাত্রীদল রংপুরে উপস্থিত হন।
স্থানাত্তে স্থানীয় আক্ষমনাজের সম্পাদক বাবু বিশেষর সেন
মহাশয়ের গৃহে কুঞ্জ বাবু উপাসনা কবেন। রাত্তিতে সমাজ
গৃহে মহেল্র বাবু উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন।

২বা জুণাই সোমবার—প্রাতে উষাকীপ্তন। তৎপরে সমাজ গৃহে হবিমোহন বারু উপাসনা করেন। রাতিতে সমাজ গৃহে কুঞা বারু ও হরিমোহন বারু "কোন্ পথে যাই" এই সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন।

তরা জ্লাই মঙ্গলবার—প্রাতে ব্রাহ্মবন্ধ্দিগের গৃহে গৃহে
যাইয়া আলাপ করা হয়। স্নানাস্তে বিশেষর বাবুর গৃহে
মহেন্দ্র বাবু উপাসনা করেন। বৈকালে সমাজ গৃহে উপাসনা
হয়। কুল বাবু উপাসনা করেন এবং বাবু বিশেষর সেন
মহাশর সাধনাশ্রম এবং যাত্রীদলের মঙ্গলার্থ বিশেষ ভাবে
প্রার্থনা করেন। তৎপরে যাত্রীদল কলিকাতা রওনা হন।

মৃক ও বধির বিদ্যালয়— মৃক ও বধির বিদ্যালয়ের সম্পাদক মহাশয় নিয়লিথিত সংবাদ প্রকাশার্থ আমাদিগের নিকট প্রেরণ করিয়াছেন। আমরা আশা করি মৃক ও বধির বালকদিগকে সকলেই এই বিদ্যালয়ে প্রেরণ করিয়া স্কুলের উল্যোগ কর্তাদিগকে উৎসাহিত করিবেন। এই বিদ্যালয় ছারা অনেক মৃক বালক কথা বলিতে অভ্যন্ত হইতেছে।

শ্বিদ্যালয় এক বর্ষ পূর্ণ করিয়া বিতীয় বর্ষে পঞ্চিয়াছে।
ইহার ছাত্র সংখ্যা এখন ১৫টা এবং শিক্ষক ৩ জন। কার্য্যের
স্থবিধার জন্ত কলেজ স্কোরার ৪নং ভবন ভাড়া লওয়া হইরাছে।
এখানে ছাত্রদিগের বাসন্থান ও আহারাদির বন্দেবিস্ত
হইতে পারিবে। ৬টা বাদিনা ছাত্র পাইলেই বোর্ডিং খোলা
হইবে এবং একজন শিক্ষক তন্ত্বাবধায়ক স্বরূপ বালকদিগের
সহিত বাদ করিবেন। আশা করি মকঃ বলের অভিভাবকগণ
কালা, বোবা বালকদিগকে অবিলম্বে এখানে ভর্ত্তি করিবেন।"

পণ্ডিত শিবনাথ শাল্কী মহাশর শারীরিক জারুস্থতা এবং অফান্ত কারণে তিন মাদের জন্ত প্রচার কার্য্য হইতে অবসব গ্রহণ করিয়া পশ্চিমে গিয়াছেন। ঈশ্বর করুন তিনি সুস্থ ও সবল হইয়া ফিরিয়া আহ্বন এবং প্রভুর সেবায় দেহ মন অর্থণ করিয়া ক্বতার্থ হউন। তাঁহার অনুপস্থিতি কালে শ্রীযুক্তনবরীপচক্র দাস মহাশের সাধনাশ্রমের তর্বাবধান করিবেন।

দিনাজপুর হইতে বাবু তৈলোক্যনাথ দাস লিখিয়াছেন:—
বিগত ১১ই জুন সোমবার—কলিকাতা হইতে ধর্মপ্রচার
উদ্দেশে শ্রদ্ধাম্পাদ শ্রীযুক্ত বাবু মহেল্রনাথ চট্টোপাধ্যায়, বাবু
হরিমোহন ঘোষাল ও বাবু কুঞ্জলাল ঘোষ মহাশয় এখানে
আসিয়াছিলেন। তাহাবা ৬ দিন এখানে থাকিয়া উপাসনা,
আলোচনা, বক্তা ও সংগাত সংকীতন দ্বারা সহবটীকে বেশ
একটু ধন্মান্দোলনে আন্দোলিত করিয়া গিয়াছেন। নিয়লিখিত প্রকারে তাহারা এখানে কার্যা করিয়াছেন।

১১ই জুন সোমবার-সংগ্রসঙ্গ হয়।

১২ই মঙ্গলবার—ভোরে উধাকাত্তন এবং তংপর উপাসনা হয় শ্রদ্ধাম্পদ বাবু মহেক্রনাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশয় উপাসনার কার্য্য করেন। অপরাক্ষে স্থানীয় ব্রাহ্মসমাজ মন্দিরে বাবু হারমোহন ঘোষাল "মানব আত্মার স্বাভাবিক গাত" সম্বন্ধ একটা বক্তৃতা করেন। তিনি বলেন জ্ঞান প্রেম ও দেবাব ভিতর দিয়া ভগবানের দিকে যাওয়াই আত্মার স্বাভাবিক গতি।

১৩ই বুধবার—প্রত্যুষে উষাকীন্তন হয়। তৎপরে শ্রীযুক্ত বাবু হরনাথ দাস মহাশয় উপাসনার কাষ্য করেন এবং সক্ষা পটার সময় স্থানীয় দ্রাজসমাজ মন্দিরে "প্রাক্ষধন্ম কি ?" এই সম্বন্ধে একটা বক্তা করেন। "মানবান্থার সমঙ্ক্ষমীভূত উমতি বা বিকাশই ধন্ম। প্রত্যেক বস্ততে প্রভ্যেক ঘটনায় ঈশরকে নিকটম্ম জানিয়া সাক্ষাৎ উপলব্ধি করাই ব্রাক্ষধন্মের বিশেষক।" ইহাই তার বক্তার সার মন্ম।

১৪ই বৃহস্পতিবার—প্রাতে উষাকীর্ত্তন তৎপরে উপাসনা হয়, শ্রীযুক্ত পণ্ডিত ভ্রনমোহন কর মহাশয় উপাসনার কাব্য করেন। ৪টার পর রেল বাজারের হাটে সংগীত, সংকীর্ত্তন ও বক্তৃতা হয়। এথানে কুঞ্জ বারু পাপী তাপী সকলকেই এক মাত্র পরিত্রাণপ্রদ ব্রাহ্মধর্মের স্বগীয় স্থসমাচার প্রদান করিয়া আহ্বান করেন। তৎপর হয়নাথ বারু হাটে আগত লোক দিগকে আক্রার এই স্থসমাচার ত্রী পুত্র পরিবারদিগের জ্ঞ

 $\{()_{i}\}$ 

লইয়া বাইতে অনুরোধ করেন এবং জীবনের সন্ধার ভবের চাট হইতে যাইবার কালে সর্ব্বাপেক্ষা শ্রেষ্ঠ ধন ধর্মকে ক্রের করিয়া লইয়া যাইতে উদুদ্ধ করেন। তৎপর পণ্ডিত ভ্বনমোহন কব ত্রাহ্মধর্ম সন্ধন্ধে তাঁর নিজ জীবনের পরীক্ষিত সত্য সকল অতি ওজবিনী ভাষায় বিবৃত করেন। সর্ব্বশেষে হরিমোহন বাব্ জাতিভেদ ও পৌত্তলিকতাব অযোক্তিকতা অতি সরল ভাষায় সকলকে ব্রাইয়া দেন। ফিরিয়া আসিবার সময় অনুক্রম হইয়া এক বাড়ীতে কীর্ত্তন করা হয়।

১৫ই শুক্রবার—বাবু ভ্বনমোহন কর মহাশয়ের বাসায় উপাসনা হয় । স্ক্ষ্যায় শ্রীযুক্ত বাবু গোবিন্দচক্র শুহ মহাশয়ের বাসায় উপাসনা হয়।

১৬ই শনিবার—প্রাতে বাবু যাদবচক্র কর মহাশয়ের বাসায় উপাসনা হয়। বৈকালে ৫টার পর কালীতলায় সঙ্গীত সংকীর্ত্তন হয় এবং বাবু ভূবনমোহন কর ও বাবু হরিমোহন যোষাল মহাশয় উপদেশ দেন।

এথানকার জ্ঞ্জ আফিসের এদিষ্টাণ্ট একাউণ্টেণ্ডেণ্ট বাবু বাদবচন্দ্র কর মহাশয় এতদিন প্রাহ্মসমাজের সঙ্গে মতে ও সহাস্থভূতিতে মিলিত ছিলেন, এবার তিনি প্রকাশ ভাবে এক্সমাজে যোগ দিতে ক্তসংকল হইরা ইহার একটা ১০০১ বংসরের ক্সাকে প্রাহ্মদের হাতে প্রদান কবিয়াছেন। অনেক দিন হইতেই তিনি বালিকাটীকে প্রাহ্মদের হত্তে দিতে সচেষ্ট ছিলেন, কেবল চতুর্দিকের প্রতিক্লতা বশতঃ এতদিন উহা কার্য্যে পরিণত কবিয়া উঠিতে পাবেন নাই। এবাব আব কোন বাধাই তাঁর অভিপ্সিত কার্য্যে ব্যাঘাত জন্মাইতে পারেন নাই।

উৎস্ব—বাগেরহাট হইতে কোন বন্ধু লিখিয়াছেন:—

বাগেরহাট ব্রাক্ষসমাঙ্কের একাদশ সাম্বৎসরিক উৎসবে কোন কোন স্বকা এবং স্থগায়ক অন্তাহ পূর্বক এথানে আগমন করিতে স্বীকৃত হন। ইহাতে আমাদের হৃদর কেমন এবার তা হইলে উৎসব দেখিতেছি খুব ভাল রকমেব হ্ইবে। নিকটত্ত ব্রহ্মবন্ধ্নিগকে নিমন্ত্রণ করিয়া আমবা ত একদিন পূর্ব্বে শুনিলাম, স্থবক্তা এবং স্থগায়ক কেহই এথানে উদ্রেক १ইল, কিন্তু নিরাশ হইলাম না। দয়াময়ের নিকট প্রার্থনা করিতে লাগিলাম। দ্য়াময় হাতে হাতে প্রার্থনাব कन (पथिहेश पिलान। थून्ना इहेट्ड अफ्तर वार् हअस्क्रात ঘোষ বি,এল প্রভৃতি কয়েকজন ব্রাক্ষ আসিলেন। বরিশাল ১ইতে শ্রেষ প্রচারক বাব্ নীলমণি চক্রবভী এবং গায়ক বাব্বরদাপ্রসন্নরায় আগমন করিলেন। অভাভ ভান হট্ডেও কোন কোন বন্ধু উপস্থিত হইলেন। উৎসব অভি স্থলর ভাবেই সম্পন্ন হইল। আমেরাযে তাঁহার করণার উপর নির্ভর না করিয়া মানুষের শক্তির উপর নির্ভর করিতেছিলাম, তাহা ভাবিয়া লক্ষিত হইলাম।

নিয়নিথিত প্রকারে এবারকার উৎসব স্বস্পার হইরাছে।
১৮ই জ্যৈষ্ঠ বৃহস্পতিবার—রাত্রে উৎসবের উদ্বোধন হয়।
বাবু চক্রকুমার ঘোষ বি,এল মহাশয় উপাসনার কার্য্য সম্পার
করেন।

১৯শে জৈ ঠ শুক্রবার সকালে উপাসনা হয়, চল্ল ১ বাবুই উপাসনার কার্য্য সম্পন্ন করেন। বৈকালে চন্দ্র বাবু প<sub>দ্র্তি</sub> ও ব্যাথা করেন। তৎপার আলোচনা হয়। রাত্রে সন্ধী প্রন হইরা উপাসনা হয়। প্রচারক নীলমণি বাবু উপাসনার কা ব্যি করেন। উপাসনান্তে অনেকক্ষণ মন্ত্রভার সহিত্র কীর্ত্তন ক<sup>ন মু</sup>র্হ প্রার্থনাদি করা হয়।

২০শে জৈ দিনবার—প্রাতঃকালে প্রত্যেক বাড়ী বাড় নী গিয়া উবাকীর্ত্তন করা হয়। তৎপর উপাসনা। নীলমণি বা ু ব্ উপাসনার কার্যা করেন। রাত্রে স্থানীয় কুল গৃহে (রিপণ হলে) "ধর্মের প্রাণ" বিষয়ে নীলমণি বাবু একটি বক্তা করেন। বক্তার পর বাবু চক্রকুমার ঘোষ মহাশর আন্ধর্ম সম্বন্ধে তাঁহার জীবনের কয়েকটি পরীক্ষিত সত্য অবলম্বন করিয়া কিছু বলেন।

২০শে জৈছি রবিবার—সকালে উপাসনা হয়। চক্র বাবু উপাসনার কার্য্য করেন। বৈকালে নগর সংকীর্ত্তন হয়। সে এক আশ্চর্য্য ব্যাপার! আকাশের চারিদিকে মেঘ, খুব বৃষ্টি হইতেছে। "সন্ধীর্ত্তন আর হইল না" ভাবিয়া অনেকে নিরাশ হইলেন, অনেকে আবাব আশায়িত হদরে প্রার্থনা আরম্ভ করিলন। অল সময়ের মধ্যেই বৃষ্টি থামিয়া গেল—আকাশ পরিদার হইল। দয়াময় পিতার এই জীবস্ত করণার নিদর্শন পাইয়া তথন সকলেই বিশ্বাস এবং ভক্তির সহিত সন্ধীর্ত্তন আরম্ভ করিলেন। সমগ্র বাগের হাট প্রদক্ষিণ করিয়া বাজাবে আসা গেল। বাবু ববদাপ্রসন্ন বান্ন, বাবু নীলমণি চক্রবর্ত্তী প্রভৃত্তি করেকজন বন্ধ্ ভক্তি-উক্যানিত হাদরে কয়েকটি সংক্রিপ্ত বক্তৃতা করিলেন। রাত্রে উপাসনা হইল। নীলমণি বাবু উপাসনা করিলেন। উপাসনাত্তে প্রার্থনা পূর্ব্বক উৎসব সমাধা করা হইল।

শাদ্ধি—হংথের সহিত জানাইতেছি আমাদের মুঙ্গেরস্থ বন্ধু বাবু কান্তিচন্দ্র গাঙ্গুনী মহাশরেব স্থা শ্রীমতী নলিনীবালা দেবী অকাণে ইহ সংগাব ছাড়িয়া চলিয়া গিয়াছেন। গত বৈশাপ মাদে এই ঘটনা ঘটে। অনবধানতা বশতঃ যথাসময়ে এই সংবাদ প্রকাশ না হওয়ায় আমরা ক্ষ হইতেছি। কান্তি বাবু এই শ্রাদ্ধ উপলক্ষে বিশেষ দানাদি করিয়াছেন। ঈশব পরলোকস্ত আয়াকে শাস্তি দান কর্মন এবং তাঁহার স্থামী ওপুল্ল ক্সাদিগকে সাম্বনা দান কর্মন।

গত ৪ঠা জুলাই, কার্য্যনির্বাহক সভার অধিবেশনে নিম্ন-লিখিত প্রস্তাব কয়েকটি স্থিরীকৃত হইয়াছে।

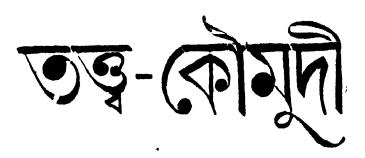
"এই সভা স্ইডেনের কে, ই, হেমার প্রেনের কলিকাভাব প্রবাদে মৃত্যু গভীর ছংথ ও শোকের সহিত লিপিবদ্ধ করিতে ছেন, ইনি নিটাবান পৃষ্টান গৃহে জন্মগ্রহণ করিয়াও স্বদেশে বাস কালে ১৮৮৬ সালে সাধারণ ত্রাদ্ধান্দরর সভা হন এবং ১৮৯০ সংলে জুলাই নাসে ত্রাদ্ধান্দরর সেবার জন্ম আপেনার শক্তি নিয়োগ করিতে কলিকাভাগ আসেন, এবং বাহারা এই অয় কালের মধ্যে তাঁহার সেই মধুর আড়ম্বর শৃত্য ধ্যাভাব ও ত্রাদ্ধানাদ্ধের জন্ম তাঁহার উৎসাহপূর্ণ কর্মান্দর। দশন করিয়াছেন, তাঁহার স্বৃতিপটে সে ছবি চির দিনের জন্ম মুক্তি হইয়া থাকিবে।"

"স্থিনীক্বত ছইল যে এই প্রস্তাব এক এক থণ্ড তাঁহার ইউরোপীয় বন্ধু ও আত্মীয়গণের নিকট প্রেশ্বিত ছইবে।"

"ফিরীক্ষত হইল যে স্বর্গীয় সাধুপুরুষের স্মৃতির জন্ত সভার অভ্যান্ত কার্যা অদ্য স্থাপত পাকিবে।"

### खग मः भाषम ।

গত বাবের তব-কৌমুদীতে "এক-দর্শন" নামক প্রবিদের মধ্যে একস্থানে "অইপাশ" ছলে "অটাদশ পাশ" মুদ্রিত হইরাছে।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

৮ম সংখা। ১৭শ ভাগ।

১৬ই শ্রাবণ মঙ্গলবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম দম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক অন্তিম মূল্য ২॥ • মফস্বলে ৩১ প্রতি বড়ের মূল্য 🗸

### প্রার্থনা

टर विधा छ। ज्ञि जामानिशतक त्र धर्मविधात्मव ज्ञि প্রদান করিয়াছ, তাহাব উপরে যাহাতে প্রির ভাবে দণ্ডায়মান হুইতে পারি, এরূপ আশীর্কাদ কর। তোমার পিতৃত্ব ও মন্ধুধোর ভাতত এই উভয় মহাসভাকে যেন আমবা সর্বাদ্যকরণের সহিত ধারণ করিতে পাবি এবং একাগ্রভাব স্হিত সাধন করিতে পারি। শ্রভো! আমরা নানা প্রকার প্রতিকৃত্ত সোভের মধ্যে দণ্ডায়মান বহিয়াছি; ছর্বলচিত ব্যক্তিদিগের পক্ষে এই সকল প্রতিকল স্রোতের মধ্যে তোমাব বিজয় নিশান হস্তে লইয়া স্থির থাকা অতীব কঠিন। এই জন্ত কত লোক এই স্রোতে ভাগিয়া যাইতেছে। থাহারা এক সময়ে তোমার সভাগর্ম সাধন ও প্রচারের জন্ম দেহ মন সমর্পণ কবিয়াছিলেন, এরপ কত সবল-চিত্র সাধু সদাশয় ব্যক্তি স্রোতে ভাসিয়া ভোমাব সভাধর্ম ছইতে দুবে চলিষা ঘাইতেছেন। যাঁহাবা তোমাৰ সভাধৰ্মকে আশ্রয় করিয়া আদিতেছেন, তাঁহাবাও অনেক সময়ে নিরুদাম ও নিকৎসাহ হটয়া আসিতেছেন। তুমি সভ্যেব প্রবর্ত্তক, ও রক্ষক। তুমি ছ্বলাচত্তে বল বিধান কর। যাহাবা তোমার সভাধর্মের আশ্রয় হইতে দূরে নীত হইতেছেন, তাঁহাদিগকে ফিরাইয়া সভোর আশ্রয়ে আনয়ন কর ও ভোমার চরণে শ্রতিষ্ঠিত কর, আমাদের সফলকে বিখাস-বলে বলী কর, যেন আমরা দুটভার সহিত সভাধর্ম সধেন ও প্রচার করিতে পারি।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

ভিতরের কথা—আক্ষদিগের মধ্যে নানা প্রকার মতভেদ উপস্থিত হইতেছে; অপরাপর ধর্মের সহিত আক্ষদর্মের সম্বন্ধ, উপাসনা-প্রণালী, সাধন-প্রণালী প্রভৃতি লইরা মধ্যে মধ্যে বাদার্থাদ উপস্থিত হইতেছে। কেহ বলিতেছেন, অপরাপর ধর্মে যাহা আছে, তাহার প্রতি আক্ষাণ কেন উদাসীন হইবেন, সকল ধর্ম ও সকল শাস্ত্র হইতে উদারভাবে সভ্য সংগ্রহ করা আক্ষদিগের কর্ম্বরা; কেহ বলিতেছেন আক্ষসমাজে যে উপাসনা প্রণালী প্রবৃত্তিত হইয়াছে, তাহাই যে স্ক্রেই তাহা কে বলিল ?

অশ্ব কোনও প্রণাণী কি উহা অপেকা উৎকৃষ্টতর হইতে পাবে ना ? किছ विनिष्ठ हिन बाक्षिणित मधा माधानत भए। নানা প্রকার থাকিবে, সকলকেই যে এক পথ দিয়া বাইতে ফটবে, তাহার **অ**থ কি? ইত্যাদি বাদামুবাদ ও তর্ক বিতর্কেব মধ্যে আমাদিগের ভিতরের কথাটী ভুলিলে হইবে না। সেটী কি ় সেটী এই, সতাস্বরূপ প্রমেশ্বরেব পৰিত্ৰ আধ্যাত্মিক অৰ্চ্চনা ও মামুদের ভ্ৰাতৃত্ব এই উভয় সভা হইতে দূরে গেলে চলিবে না। এই ছই মহাস্ত্য সাধনের ছারা ব্রাহ্মধর্ম জগতকে এখনকার অপেকা উন্নতত্তর ভূমিতে তুলিয়া আনিবে, এই ইহাব জীবনের লক্ষা। তুমি বেদ পুবাণ কেবিয়া निया टक्वन वाहेटवन टकाजान পाঠ कत्र, व्यथवा वाहेटवन टकाजान ফেলিয়া দিয়া কেবল বেদ পুবাণ পাঠ কর, তুমি আমিষাশী हरेग्रा विष्मिशेव পविष्करम ज्याभनारक ভृषिত कतिग्रा विष्मिशेव রীতি নীতিব অমুসবণ কব, অথবা নিরামিষাশী ও গৌবিকধারী হইয়া দেখীয় সল্লাদী ও ফ্কিবের স্থায় দিন যাপন কব, তুমি কর্মকেত্রে অবিশ্রান্ত শ্রম সহকারে পবোপকার্সাধনে বভ থাক, অথবা মৌনব্রত ধারণ করিয়া বংদবেব পর বংদর গিবিগুহাতে বাস কর, তুমি মস্তকে জটাজ্ট ও গলে জপমালা ধাবণ কবিষা যোগাসনে উপবেশন কর, অথবা কেশভাবকে স্থগন্ধ-যুক্ত করিয়া ঘটিহন্তে প্রভিঃসঞ্চরণ কর,আমরা ভোমাব সহিত বিবাদ করিব না, যতকণ তুমি পূর্কোক্ত মহা সতাহয় হইতে ভ্রষ্ট না হইতেছ। যতক্ষণ তুমি পুত্রিকার নিকট মন্তক অবনত না কবিতেছ, এবং জাতিভেদের জালে জড়িত না হইতেছ, এবং একমাত্র সভ্যস্থকাপ ঈশ্বরের পবিত্র আধ্যায়িক উপাসনার মহত্ত রক্ষা করিতেছ ও তাহাকেই হৃদয়ের সক্ষেষ্ঠ স্থান দিতেছ ; ততক্ষণ তুমি সত্যধর্মের আশ্রেষ্টে আছে। যে কোনও রূপেই হউক এই ভূমি হইতে বিচলিত হইলেই, তুমি বাহ্মধর্মের মহৎ লক্ষ্টিতে ভ্রম্ভ হালে। আক্ষণিগের কাহাবও কাহারও সন্ন্যাদীর বেশ পরিধানের জন্ম ব্যগ্রভা দেখা যায়, এবং কেছ কেহ গুরুর আশ্রর আবশুক বলিয়া মনে করেন। কিন্তু আমরা এরপ সন্ত্যাসীও এরপ গুরু দেখিতে চাই, বাহার আপ্রান্ত আসিয়া এবং যাঁহার প্রভাবে লোকে পৌত্তলিকডা ও জাভিডেন. হুনীতি ও কুদংস্কারকে বর্জন করিতেছে, বিশ্বাদ ও কার্য্যকে

এক করিবার জান্ত সংগ্রাম করিতেছে, নিরাকার সচিচদানন্দ পুরুষের পবিত্র আধ্যাত্মিক উপাসনাতে মন প্রাণ সমর্পণ কবিতেছে। তাহা না হইরা যদি দেখি, শুরুর আশ্রমে গিয়া মানুষের জ্ঞান জড়তাগ্রস্ত হইতেছে, বিচার-শক্তি মন্দীভূত হইতেছে, বিবেক মান হইতেছে, পৌর্লিকতা ও জাতিভেদে আপত্তি চলিয়া যাইতেছে, তবেই বলিব যে শুরু বাক্ষধর্ম হইতে লোককে শ্রষ্ট করিতেছে।

ব্রাহ্মধর্ম সাধনের ক্ষেত্র—পবলোকগত নববিধনা-চার্যা কেশবচন্দ্র সেন মহাশয় একবার ধর্মপ্রচাবোদেশে উত্তব-পশ্চিমাঞ্চলের কোনও নগরে গিষাছিলেন। তত্ততা বাঙ্গালি বাবুবা আসিয়া তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ ও ধর্মবিষয়ে নানা প্রসঙ্গ উত্থাপন কবিলেন। তাহার মধ্যে এক ব্যক্তি বিশেষ বাগ্রতা সহকাবে জিজ্ঞানা কবিলেন—"ঈশবোপাসনাতে চিত্ত छित्र বাথিবার উপার কি ?" সেই প্রাচীন প্রশ্ন যাহা ভগবদ্গীতাকাব অর্জুনের মুধে দিয়াছেন। কেশব বাবু তাঁহার আশ্চর্য্য মীমাংসা শক্তির বলে তাঁহাকে সহন্তর দিয়া প্রীত করিলেন। কয়েক বংসর পরে আর একবাব কেশবচন্দ্র ঐ সহবে উপস্থিত হইলেন, তথন অপরাপর লোকের মধ্যে সেই বাঙ্গালি ভদ্রলোকটীও আসিয়া তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিলেন। তাঁহাকে দেখিয়া কেশববাবুর সেই পুরাতন প্রশ্নের কথা শ্বরণ হইল। তিনি ভদ্রবোকটীকে জিজাসা করিলেন—"কি মহাশয়। এখন কি উপাসনাতে পূর্বাপেকা অধিক মনন্থির হয় ?" ভদ্রলোকটা গম্ভীর ভাবে উত্তর করিলেন, "আজে, ঈবর কুণায় অনেকটা ভাল। একজন সাধকের পরামশক্রমে একটু একটু আফিং **শেবন করিতে আরম্ভ করিয়াছি তাহাতে ধ্যানের বেশ স্থ**বিধা হয়।" শুনিয়া কেশবচন্দ্র হাক্ত করিতে লাগিলেন। যেমন আফিং বামরফিয়ার যোগী বা সাধু প্রস্তুত করিবার শক্তি मारे, সেইরূপ কোনও বাহিরের বেশ পরিধান বা চিহ্ন ধারণেরও সোগী বা সাধু প্রস্তুত করিবার শক্তি নাই। শস্তুটা পাওয়া কঠিন বলিয়া খোদাটা মানুষ শীঘ ধরিয়া বদে। বাহাই কর, ঈশরচরণে প্রাণমন সমর্পণ, সভ্যের সেবা ও कर्खवाभन्नात्रगढा ভिन्न धर्म माध्यात्र प्राम्य भव नाहे। हेश অগ্রে তৎপরে আর সমৃদায়। এই টুকুকে অগ্রে রাখিয়া সহায়রূপে আর যাহা কিছু গ্রহণ করিতে পার, তাহাতে আপত্তি নাই। আবার বলিতেছি, ত্রান্ধের সাধন সত্যপ্রিয়তাতে ও বিবেকপরারণতাতে। যাঁহারা ব্রাহ্মধর্ম্মের এই নৈতিক নিক বিশ্ত হইতেছেন, তাঁহারা—ইহার পথ হইতে এট ২ইয়া পড়িতেছেন।

সাধারণ প্রজাপুঞ্জের মধ্যে ধর্মা প্রচার—প্রাচীন-কালে সাধারণ লোকের মধ্যে ধর্মা প্রচার করিবার জনেক প্রকার প্রণালী ছিল। কথকতা, শাত্রপাঠ ও ব্যাখ্যা, রামা-রণাদি গান, ও যাত্রাদি বারা জনেক পৌরাণিক কাহিনী ও তদন্তর্গত উপদেশ সকল সাধারণ প্রজামগুলীর মনে মুদ্রিত

হইত। এইরপে সাপ্তাহিক সমিলিত উপাসনা, ও নির্দিষ্ট ধর্ম প্রচারক না থাকিয়াও হিন্দুধর্ম আপনাকে অতি আন্চর্য্য-রূপে প্রচার করিতে সমর্থ হইয়াছিল। ধর্ম শাল্তের উপদেশ ও নীতিব স্থূল সতা, সকল শ্রেণীর প্রজাকুলের মনে পরিব্যাপ্ত হইয়াছিল। অন্যাপি ইহার প্রমাণ আমরা প্রাপ্ত হইতেছি। মাথার যাম পায়ে ফেলিয়া যে কৃষক হল চালনা করিতেছে, বা হর্কাহ ভারে ক্লান্ত হইয়া যে ভারবাহী ভার বহন করিতেছে, সেই উভয়ের সহিত প্রদক্ষকেমে কোনও ধর্ম-তত্ত্বের বিষয় উত্থাপন কব, দেখিবে প্রচলিত দর্শন স্কলের কত মত, প্রচণিত ধর্ম-শাস্ত্রেব কত উপদেশ তাহাদের মনে निवक्क तरिशाष्ट्र। পूनर्कत्वात मठ ९ अपृष्टेनाम आवाननुक-বনিতা সকলের মনে কিকপ দৃঢ় নিবন্ধ! কোনও গুরুতর विभन चंग्रित, क्यान जाहाता अनुष्टे अ वर्षाकतात्र आश्राम गहेशा বিপদকে বহন কবে ! কিন্তু ইংবাজী শিক্ষাৰ প্রচলনের সঙ্গে मरम रमहे आहीन अहात-अनामी मकन পবिতाक इहेर उछ। সে সকল আর নব্যাশক্ষিত ব।ক্তিদিগের ক্রচিব অমুযায়ী নহে; স্তবাং তাঁহাবা এই সকলের উৎসাহদাতা নচেন। এখন সাধারণ প্রজাকুল পালকবিহীন মেষ্যুণের ক্সায় উচ্চু খল ও অষ্টাচার ২ইয়া পডিতেছে। দিন দিন আহারও উচ্ছুখলত। লক্ষিত হইবে। পাশ্চাত্য জ্ঞান ও পাশ্চাত্য সভাতার ভক্ষ-कात्रिगौ मक्ति এथन अ मम्पृगत्राप जाशास्त्र मस्या कार्या करत নাই, ষতই করিতে থাকিবে ততই প্রাচীন শৃথলার ব্যত্যয় (मथा वाहेत। এই मिक्काल (मल्मत हिटेडवी वाकि माद्यवहें সাধারণ প্রকাদিগকে নীতি ও ধর্মের উপদেশ দিবার প্রণালী বিষয়ে চিন্তা করা কর্ত্তব্য। হিন্দুধর্ম্মের পুনরুখান প্রাধীগণ ,বান্ধবিষেধে ও ত্রান্ধদিগের দোষ কীর্ত্তনে সমুদায় শক্তি পर्याविषठ या कतिया यनि अविषया किছू मनायां श इटेटजन, তাহা হইলেও বুঝা ঘাইত যে, তাঁহারা বান্তবিক নিষ্ঠাবান क्बि म अवृद्धि काहात्र प्रिथि कि मा। এসম্বন্ধে ত্রাহ্মগমাজের করেকটা গুরুতর কর্তব্য রহিয়াছে। माधात्रण अवामिरगत्र मरधा आक्रधर्यास्य छाण कतिया आहात्र করিবার জন্ত একদল প্রচারক প্রস্তুত করা আবশ্রক। শিক্ষিত্র ভদ্রলোকদিগের মধ্যে যে প্রণালীতে প্রচার হইয়া থাকে, সে लागी माधात्रण लाटकत छेलरगांगी नरह। बार्गा, कीर्जन, কথকতাদি দারা প্রচার করিতে হইবে। বে শ্রেণীর লোকের गर्या शहात्र क्त्रिए हरेत, जाहारम्त्र मर्गार्य मक्न (भोदानिक আখ্যায়িকা বিশেষ ভাবে প্রচালত তাহা প্রচুর পরিমাণে সংগ্রহ করিয়া ব্যবহার করিতে হইবে। হিন্দু সমাজে প্রচার করিবার সময় হিন্দু পুরাণাদি হইতে আখ্যারিকা সংগ্রহ क्तिरङ इहेरव, मूननमानिष्णित मर्था व्यक्तारवृत नम्य मूननमान সাধকমগুলীর জীবনের উপাধ্যানাদি সংগ্রহ করিয়া ব্যবহার क्तिर्ड हरेरत । रवक्ररभरे रुडेक भोत्रानिक आधार्मिका मकन स्रामहे श्रहण कतिराज हरेरव । धरेन्न न छारव धक्रमम धारान्नक প্রস্তুত করিবার চেষ্টা করা কর্ত্তব্য।

—গত বারের তম্ব-কৌমুদীতে **আম**রা বলিয়াছি—"ব্রাহ্মণগণের প্রভাব বিধ্বস্ত হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে প্রজাকুল পালক<sup>ি</sup>হীন মেবদলের ক্সায় উচ্ছ**্রাল** হইরা পড়িতেছে।" প্ৰত্যেক চিম্বাশীল ব্যক্তি এট ৰাক্যের সভ্যতা অফুডব করিবেন। আমাদের বোধ হর ইহা অফুডব করিয়াই পরলোকগত ভূদেব মুখ্যোপাধ্যায় মহাশর শেষ দশায় ব্রাহ্মণ রক্ষার জন্ত অভিশয় ব্যগ্র হইয়া উঠিয়া ছিলেন, এবং সেই জক্তুই দেড লক্ষের অধিক টাকা, বণিতে গেলে তাঁহার সমগ্র জীবনের শ্রম, ও সঞ্চয় শক্তির ফলস্বরূপ সঞ্চিত অর্থ, ব্রাহ্মণ পণ্ডিতগণের উৎসাহ দানার্থ দিয়া গিয়াছেন। তিনি প্রচলিত হিন্দধর্ম রক্ষার পক্ষপাতী ছিলেন। স্থতরাং এদিকে দৃষ্টি পড়া ভাহার পক্ষে সাভাবিক, এবং এবিষয়ে ধে তিনি কিরূপ চিস্তা করিতেন তাহা তাঁহার অর্থু দানেই স্পষ্ট প্রতীয়মান চটতেছে। আমবা ত্রান্ধণদিগের দুপ্ত প্রভাব পুনঃ প্রতিষ্ঠিত कता मञ्जद मान कित ना। हेश्ताको निका ४ हेश्ताकी मछाछा ভাহার মূলে কীট হইয়া লাগিয়াছে। বর্ত্তমান সময়ের হাওরার মধ্যেই তাহার বিবোধী ভাব। যে সকল কারণের যোগাঘোগ হট্যা পরিবর্ত্তন ঘটাইতেছে, দে সকল কারণকে শাসনাধীনে আনা সম্ভব নহে। আব যদি তাহা সম্ভবও হইত, তাহা হইলেও নানা কারণে আমবা প্রাচীন ভিত্তিকে বজার রাখিবার পক হইতাম না। কিন্তু ভূদেব বাবুব অভিপ্রায় কি ছিল তাহা व्यादिक भाति । विरम्प कः---(मम मर्था मः मुक्क ठाई। धारम हत्र ७ मःकृष्ठत जानत विक्षंत्र हत्र, व्यविषय जामारानत मन्पूर्न ক্রদয়ের যোগ। স্কুতবাং আমরা মুক্তকণ্ঠে তাঁহার প্রশংসা করিতেছি। নিজে দরিদ্রের ঘরে জন্মিয়া ও নিজ-পরিশ্রমে অর্থোপাজ্জন করিয়া সেই অর্থ পরোপকারার্থ দান করা এদেশের পক্ষে একরূপ বিরল দৃষ্টান্ত। খ্যাতনামা ঈশরচক্র विमानागत महानत्र नर्साता এই मुद्दोख तन्धाहेबाहित्नन। আমরা আশা করি ভূদেব বাবুব অমুকরণ করিবার লোক দেশ मधा चात्र मुहे श्हेरव ।

ব্রাহ্মসমাজে সাহিত্য চর্চ্চা—বাদ্ধসমাজই বল সাহিত্যে গদা লেখা সৃষ্টি করিরাছেন। থহায়া রাজা রামমোহন রাম্ন সর্ব্ধ প্রথমে শিক্ষিত সমাজে গদ্য ভাষা প্রচিণত করেন, তংপর অক্ষয়কুমার দত্ত এবং তত্ত্ববোধনী পত্রিকা নিপ্ণতার সহিত ইহার সৌন্দর্য্য বৃদ্ধি করেন। কিন্তু ছংথের বিষয় যে, বর্ত্তমান সমরে ব্রাহ্মসমাজ সাহিত্য-ক্ষেত্র হইতে দ্রে সরিরা যাইতেছেন। প্রাটীন লেখকদিগের মধ্যে করেক ব্যক্তি এবং ঠাকুর বাড়ীর কোন কোনও লেখক ভিন্ন বল সাহিত্যে অধিকাংশ ব্রাহ্ম লেখকেরই স্থান নাই। অথচ ব্রাহ্মসমাজে লেখকের অভাব নাই। ছ কলম না লিখিতে পারেন, এমন লোক অতি বিরল। কিন্তু অধিকাংশ লেখাই প্রক্রত সাহিত্যের মধ্যে গণ্য নহে। বল সাহিত্যে স্থান লাভ করিতে হইলে ছইটি বিষয়ের প্রয়োজন; বছ অধ্যয়ন এবং সংস্কৃত্ত শিক্ষা। অধিকাংশ ব্রাহ্মের এ ছইটি নাই। এই ছই সম্বল ভিন্ন বল শাহিত্য-ক্ষেত্রে ক্ষেত্রপ্রবেশ লাভ করিতে পারিবেন না।

বৈষ্ণৰ সাহিত্য এ দেশে যুগান্তর উপস্থিত করিয়াছে।
বৈষ্ণৰ কৰির স্থানাল কৰিতা পাঠকের প্রাণে অমৃত দিশ্বন
করে। পাঠ করিতে করিতে পাঠক বৈষ্ণৰ ভাবাপর হইয়া
যান। চণ্ডী দাস, বুলাবন দাস, ক্লফ দাস প্রভৃতির অমৃতরসময়ী
কবিতাবলীই এদেশে বৈষ্ণৰ ধর্মের প্রসার বৃদ্ধি করিয়াছে।
আক্লগণ সাহিত্য সেবক হইলে, তাঁহাদের ঘারাও আক্লাধর্ম এরপে
প্রচারিত হইবে। মহাত্মা অক্লয়কুমার দত্তের গ্রন্থাবলী এবং ক্রম
সংগীতাদি কি আমাদের শত শত প্রচারকের কার্য্য করিতেছে
না ? অক্লয়কুমারের গ্রন্থ পাঠ করিয়া কন্ত লোকের
পৌত্রিকতার বিশ্বাস দ্রীভূত হইয়াছে। কত লোকে
আমিষ ভোজন ত্যাগ করিয়াছে। ক্রম্পলীত প্রবণে কত
লোকের হলয় পরিবর্দ্ধন হইয়াছে। বাস্তবিক, সাহিত্য প্রচারের
উৎকৃষ্ট উপার। আন্ধ আন্ধিকাগণ এই উপায় অবলম্বন করিলে
আক্রসমাজের মহোপকার সাধিত হইবে।

माधु िं जिनवात छेशात्र कि ?— मित्र बहा, शतिशातन रेगतिक वनन, गनाम माना, मर्खात्न जन्म, हत्छ जिन्न किया **চিমটা, नध-দেহ ফকির সন্ন্যাসীদিগকেই সাধারণ লোকে** ধার্মিক বলিয়া থাকে। গ্রাহ্মসমাজেও দেখিতে পাই, যাহারা দিবারাত্রি পোল করতাল লইয়া ব্যস্ত, আৰু ইহার কাছে, कान উदांत काष्ट्र शिवा निया ऋत्य धन्ना मिर्छछ्न, किया যাহারা উপাসনা কালে চক্ষের জলে বক্ষত্বল প্লাবিত করিয়া থাকেন, তাঁহারাই সাধু বলিরা অনেকের কাছে সম্পৃঞ্জিত হইতেছেন। বাস্তবিক এ সকল বাহিরের উপায়ে সাধু অসাধু চিনিতে পারা যায় না। কার্য্য এবং ব্যবহারেই প্রকৃত চরিত্র সুস্পষ্ট প্রকাশিত হয়। যদি দেখি কোনও ত্রাহ্ম উপাসনায় चालाहनाव निवंज र्याण निर्छह्न, धर्म প्रहारत्व छे पाह আছে : কিছু উত্তমর্ণের সহিত কথা ঠিক রাখিতে পারিতেছেন না, আর বারের সামঞ্জ নাই, সভ্যের প্রতি তেমন নিষ্ঠা নাই. তাহা হইলে বুঝিব প্রকৃত ধর্ম হইতে তিনি বহুদূরে অবস্থিতি করিতেছেন। যদি দেখা যায়, কেহ ব্রাহ্মসমান্তের উরতির জন্ত পরিশ্রম করিতেছেন, বক্তৃতা ও লেখার ব্রাহ্মসমাজের প্রতি অমুরাগের চিহ্ন প্রদর্শন করিতেছেন; কিন্তু প্রতি মাদের গচ্ছিত কোম্পানীর কাগজের কোনও কুদ্র অংশও অভাবগ্রস্ত ত্রাহ্মসমান্তের কল্যাণের জগ্র দান করিতেছেন না. वतः ठामात छाका क्रमणः क्याइएडह्न, छाहा इहेरन छिनि रय ব্রাদাসমালের হিতৈষী একণা কি রূপে বিখাদ করা ঘাইতে পারে ? থাঁহার বাক্যে সভানিষ্ঠা, আচরণে ধর্মভীক্তা, সমুদয় কাৰ্য্যে সরলতা ও নিম্বার্থতা প্রকাশ পায়, তিনিই সাধু। যে মানদণ্ড ছারা সাধারণ লোকে সচারাচর সাধুতাব পরিমাণ कतिया थारक, जाहा नम्मून ऋत्म ठिक नरह। ेवाहिरत माधु হওয়া অতি সহজ, কার্য্যগত জীবনে সাধুতা রক্ষা করা বড়ই কঠিন। বাহির অপেকা ভিতরে বাহার অধিকভর লষ্টি, ধর্ম মত অপেকা জীবন গঠনের প্রতি বাঁচার বিশেষ মুলোযোগ. লোকের নিকট ধার্শ্বিক বলিয়া পরিচিত হইতে বিনি অনিচ্ছক, তাঁহার গন্তব্য পথই সাধুতার পথ। তুলদর্শী লোকেরা সন্ম

বাক্তি সাধু বলিয়া পুজিত হয়, পরস্ক প্রকৃত ধার্মিক ব্যক্তি তিরক্ষত এবং লাম্বিত হইয়া থাকেন।

# मण्णामकीय ७ প্राश्व श्रवस्त ।

### বিধাতার বিধি।

অহরত ও সুলদ্শী লোকেরা না ঠেকিলে অঞ্চের কর্তৃয কিছা প্রভুত্ব স্বীকাব করিতে চাহে না। যথন তাহারা দেখে निटक्र भक्ति, ८० ही, शति अदम कानरे करलामम रहेरछ हा, কার্য্য সিদ্ধি হয় না, তথনই তাহারা "বিধির বিধি" বা "কপালের লেখা" কিম্বা "অদৃষ্ট" বলিয়া অপ্রতাক্ষভাবে ঐশি-শক্তির অন্তিত্ব স্বীকার করে। কিন্তু স্ক্রদশী লোকেরা নিয়ত সমুদয় কার্য্যের ভিতরেই বিধাতার বিধি দর্শন করিয়া পরিতৃপ্ত ও আখন্ত হন। তাঁহারা দেখিতে পান, তাঁহাদের জীবনের প্রত্যেক ঘটনা পরস্পর সম্বন্ধ বিশিষ্ট এবং মালার স্থায় এথিত। দেই মালা বচয়িতা সমং বিধাতা পুক্ষ। জীবনে মরণে, স্থথে ছঃধে, সম্পদে বিপদে সেই বিধাতার হস্ত নিয়ত বর্ত্তমান। যে বিধাতার বিধিতে সামাভ তৃণ হইতে অনস্ত সৌরজগত विश्व द्रशिष्ट, यिनि नकन कार्यात मृनकाद्रण, धर्मानमाञ्ज তাঁহাবই সাক্ষাৎ লালাকেত। তিনি যেমন কুধার সময় আছার, পিপাসায় জল দান করেন, তেমন মানবের পবিত্রাণেব ভাল ধর্মসমাজের সৃষ্টি করিয়াছেন। ধর্মসমাজ তাঁহার প্রত্যক বিধান। কিন্তু বিশ্বাসী ভিন্ন কেছ ধর্মসমাজকে তাঁহার বিধিক্রপে দেখিতে সমর্থ হয় না। যাহার ঈশবে বিশ্বাস নাই, ঈশবের কার্য্যে তাহার কথনও বিশ্বাস হইতে পারে না। যিনি ধর্মকে ঈশরের আজ্ঞারূপে মানেন না, ধর্মে তাহার কথনও আন্তা থাকিতে পারে না। লৌকিক ধর্মমতই তাহার অবলম্ব-নীয় ও পবিচালক হয়।

সংসারে দেখিতে পাই, যথন দেশের রাজা কোনও আইনের পাণ্ডুলিপি করেন, তথন প্রজা সাধারণ সেই অমুশাসন অনুসারে চলে না; কিন্তু যেই একদিন সেই পাঙ্লিপি वास्त्राक्तत रहेन, उथन रहेट एमरे बास्विधित निक्रे मक्तत्र মস্তক নত হইল; রাজবিধানরূপে সর্বত আদৃত, সীকৃত এবং মান্ত হইতে লাগিল। সেইরূপ যিনি দেখেন যে, ধর্ম পরমেখরের স্বাক্ষবযুক্ত বিধি, তিনিই অবনত হৃদরে ভক্তিপুর্বাক তাহা গ্রহণ করেন। কিন্তু যিনি প্রমেশ্বরের স্থাক্ষর দেখিতে পাইবেন না, ভিনি মানবর্চিত অক্সাক্স বিধি ব্যবস্থার লায় ধর্মকে একটা বিধি ব্যবস্থা মনে করিবেন,—স্বর্গীয় স্থলমাচার বিধানরূপে গ্রহণ করিতে পারিবেন না।

বাহ্মসমাজ ভগবানের লীলাক্ষেত্র। বর্তমান যুগে নর-নারীকে ধর্মের উরতভাব, বিমলখাদ প্রদান কবিবার क्र छ किनि व धर्मनमाक एष्टि कतिशाहन। लाहक रायन স্থল কলেজ স্থাপন করিয়া থাকে, ত্রাহ্মসমাজ দেরূপ ভাবে স্থাপিত হয় নাই, স্বরং পরমেশ্বর এ সমাব্দের নেতা। কিন্তু

ভাবে দেখে না, এজ্ঞুই ভাহাদের কাছে কখন কখন অসাধু চঃখের বিষয়, ব্রাহ্মসমাজকে বিধাতার বিধিরূপে অনেকেই দেথিতে সুষ্ঠ নহেন। ইচাকে বিধাতার বিধিরূপে বাঁছার। দেখিবেন, তাঁছারা নিশ্চর ইহার কল্যাণের জল সর্বস্থ অর্পণ করিতে কাতর হইবেন না।

> ্একটা প্রস্ন অনেকের মুখেই শুনিতে পাওয়া যায়, খৃষ্টান মুসলমান প্রভৃতি ধর্ম অভাদিত হটবার সময় সেই সকল সম্প্রদায়ের লোক যেরূপে স্বার্থনাশ, বৈরাগ্যের দৃষ্টাস্ক প্রদর্শন করিয়াছিলেন, ব্রাহ্মগণ সেরপ পারিতেছেন না কেন ? অনা প্রষ্ট্র বংসর হইল ব্রাহ্মসমাজ প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, ইহার মধ্যে পট, মহম্মদ, চৈতক্ত প্রভৃতি মহাম্মাগণের দলভুক্ত সাধকদিগের স্থায় ব্রাহ্মদমান্তে ধর্মপ্রাণ লোকের আবিভাব হইল না কেন গ নানাজনে এ কথার নানা উত্তর দিয়া থাকেন। কেচ কেচ এদেশের জল বায়ুর দোষু দেন. কেহ বা এদেশের আধাায়িক অবনতিব কথা উল্লেখ কবেন। কিন্তু আমাদের বোধ হয়, ব্রাহ্মধর্ম্ম ও ব্রাহ্মসমাজকে বিধাতার বিধিকপে না দেখাই ইহার মূলকারণ। কেবল ধর্মমত বিখাস কবিলে স্বার্থনাশ ও বৈরাগ্যের উদয় হয় না। কেবল মত রক্ষার্থে কেই জীবন দান করিতে পারে না। অবলম্বিত ধর্মকে ঈশরেব বিধান এ আদেশ বলিয়া বিশ্বাস করিলে সেই ধর্মের জ্বন্ত লোকে না করিতে পারে এমন কিছুই নাই। যাহাবা ধন্মকে বিধান বলিয়া বিশ্বাস কবেন, তাঁহাবাই ধর্ম রক্ষার্থে অগ্নিকুণ্ডে দেহ विभक्षेत किया निःह-कर्तन निकिश्व इटेट जी इन ना। যাহাবা স্বাক্ষর বিহীন রাজাজ্ঞা পত্রের ক্রায় ধন্মকে কেবল লৌফিক মঁত বলিয়া বিশাস করে, ডাহারা ধর্মেব জন্য একটি টাকা বায় করিতেও সম্কৃতিত হয়। মূলে ভুল থাকিলে একপ विभागे रहा।

> रंग गांधक धर्मारक विधाजांत्र विधिक्राण विधान ना कतिरवन. তাহার ধর্মে দুচতা ও নিষ্ঠা হইবে না। তিনি চঞ্চল চিন্ত লোকের ভার আজ এমত, কাল ওমত গ্রহণ করিবেন। মত বিখাসে তাঁহাব কোনই শ্বিরতা থাকিবে না। কিছুদিন পর তিনি ব্রাহ্মসমাজ পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হইবেন। আমবা নিয়ত ত্রাহ্মসমাজে এরূপ ঘটনা প্রত্যক করিতেছি। ত্রাহ্মসমাজে বাঁস করিয়াও কেই কেই যেকপ চঞ্চতা প্রকাশ করিতেছেন, তাহাতে কথনও অমুমিত হয় মা যে, তাঁহারা কোনও কালে ত্রাহ্মধর্মকে বিধান্তার বিধিরূপে विचान-ठटक नर्नन कतियाहित्तन। याहावा हेहाँटक विधिक्र ति দর্শন করিতেছেন, তাঁহাদের মধ্যে এরপ অবিশাস স্থলভ চপণতা কথনও তিটিতে পারে না। ভগবান আশীর্মাদ করুন, ব্রাহ্মগণ ব্রাহ্মসমাজকৈ ভাঁহার বিধিরপে দশন করেন।

# **সাধনাশ্রম** কাখ্যান রছাবলি।

২৬শে ফেব্রুয়ারি, ১৮৯৪।

"Are not two sparrows sold for a forthing? And one of them shall not fall ground without your father. But the very hairs of your head are all numbered. Fear ye not therefore, ye are of more value than many sparrows."—Matt. X. 29-31.

"গৃইটী চটক পক্ষী কি সামাস্ত তাত্র থণ্ডে বিক্রীত হয় না ? ভণাচ তাহার একটীও তোমাদিগের পিতার কর্তৃত্ব ব্যতীত ভূতনশায়ী হয় না। তোমাদের মন্তকের প্রত্যেক কেশ তিনি দেখেন, অতএব তোমরা ভীত হইও না, অনেক চটকপক্ষী অপেকা ভোমরা অধিকতর মুল্যবান।"

পৃথিবীর মহাজনদিগের এই এক লক্ষণ দেখা যার বে, সামাক্ত বিষয়, সামাক্ত ঘটনা যাহা ভূমি আমি লক্ষ্য করি, প্রতিদিন অগ্রাহ্ম করি, যাহা সর্বাদা চক্ষের সম্মুথে ঘটতেছে অবিচ কেছ মনোনিবেশ করিতেছে না, এমন সকল বিষয়, এমন সকল ঘটনা হইতে তাঁহারা অনেক তত্ত্ প্রাপু হইয়াছেন। একজন চিম্বাশীল ব্যক্তি বলিয়াছেলেন যে, একজন কবি প্রেমের চক্ষে প্রকৃতিকে দেখিয়া মনে যে স্থাপায়, অত্যে তাহা পার না। উষাকাল দশন করিয়া কবি যে আনন্দ অমূভব করেন, আমরা তাহা পাই না। প্রেমবিহীন চকে দেখি বলিয়া প্রকৃতির শোভা পুরাতন, প্রেমবিহীন চক্ষে সমান্তকে দেখি বলিয়া ভাষার শোভা ও সৌন্দ্র্যা দেখি না, প্রেমবিহীন চক্ষে भाक्षरक दिन विनया, भाक्ष्यत्र भोन्तर्ग । अ मन्छन दिन ना, মহাজনেরা প্রেমের চক্ষে দেখিতে পাহতেন বেলিয়া যে স্থুখ পাইতেন আমরা তাহা পাই না। একটা চটক পক্ষী ছু প্রদা হইলে পাওয়া বায়, তাহার মূল্য ত এই। কিন্তু তাহাকে রক্ষা করিবার জগ্র কত বন্দেবেস্তা সে বাদায় বদিয়া প্রতি-পালিত হয়, ভাহাকে তিনিই রক্ষা করিতেছেন। মাহুষের আত্মা কি ইহা অপেকা মূল্যবান নর ? যািন সমস্ত সৃষ্টি করিয়াছেন, সকলের জন্ম যাহার বিধান, তিনি কি মানুষকে ভূলিতে পারেন? কুদ্র বুহৎ সকলের উপর হাঁহার প্রেম, ष्मामारमञ्ज উপর তাঁহবে প্রেম নাই, ইহা কি সম্ভব ?

শাতের প্রকোপে যে বৃক্ষের পত্র শুক্ষ হইয়া পঞ্জিছিল,
বসন্তের হাওয়াতে আবার সে বৃক্ষে নৃতন পাতা জনিতেছে,তিনি
মৃতপ্রায় বৃক্ষকে নৃতন জীবন দিয়াকেমন শোভাশালী করিতেছেন!
যিনি একটী বৃক্ষ শুক্ষ ইইলে, ভাহাকে নবজীবন দিতেছেন,
ইহা কি সম্ভব যে মানবায়া জীণ হুইয়া মৃতপ্রায় হইয়া থাকিবে
আর নৃতন জীবন পাইবে না ? সকলকে যিনি জীবিত রাথিয়াছেন, তিনি মানবায়াকে পরিত্যাগ করিবেন; ইহা কথনই সম্ভব
নহে। তাঁহার বিধাতৃ শক্তি দেখিয়া মনে হয়, তিনি আমাদের
জক্তও আছেন, আমাদিগের জক্তও ভাঁহার প্রেম আছে,
নিরাশার কোন কারণই নাই। তিনি করুন, তাঁহার বিধাতৃত্বের
উপর নির্ভর করিয়া আমরা কুতার্থ হই।

## বৈরাগ্য।

(রামমোহন রায় ক্লবে ত্রীযুক্ত নবদীপচক্র দাস মহাশন্ন কর্তৃক বিবৃত )

মহাত্মা রাজা রামমোহন রাবের বৈরাগ্যের বিষয়ে আমর। আজ এখানে আলোচনা করিতে আসিরাছি। তিনি ধেরপ বৈরাগী ছিলেন, সেরপ বা হইতে পারিলে তাঁহার বৈরাগ্য সম্বন্ধে আলোচনা করাও কঠিন ব্যাপার। যদিও তিনি এখনও জীবস্ত প্রুবের স্থায় আমাদের সমুখে বিদ্যমান, তথাপি তাঁহার বিষয়ে আমরা অনেকেই অজ্ঞাত।

দেশপ্রচলিত বৈরাগ্যের ভার তাঁহার বাহিরে কোন প্রকার বৈরাগ্যের চিহ্ন প্রকাশিত হইত না। বৈরাগ্যের সম্বন্ধে ভাবিতে পেলেই প্রথমতঃ দেই সকল বাহ্য বৈরাগ্যের কথাই আমাদের মনে পড়ে এবং তাহারই উল্লেখ করিতে ইচ্ছা হয়। বুর, চৈতক্ত প্রভৃতি মহাত্মাগণ এবং তাঁহাদের ুশিষাগণের বৈরাগ্যের কথা সকলেই অবগত আছেন। তাঁহারা আহারে বিহারে পরিচ্চদে ও শরন প্রভৃতি ব্যাপারে কি: যে ক্লেশ স্বীকার করিয়া গিয়াছেন এখনও ভাবিলে চক্ষে অবল আইসে। জমিদারের পুত্র রঘুনাথ দাস ঠাকুরের জীবন যথনই মনে হয়, তথনই বৈরাগ্য শক্তির অপূর্ব পরিচয় প্রাপ্ত হওয়া যায়। কিন্তু আমাদের মহাত্মা রামমোহন সে শ্রেণীর বৈরাগী ছিলেন না, তাঁহার বৈরাগ্য ষ্মন্ত প্রকার ছিল। ব্রাহ্মধর্মের বৈরাগ্যের সহিত ষ্মন্ত ধর্মের বৈরাগ্যের বাহিরে মিল নাই। তিনি সম্পূর্ণরূপে অন্তর বৈরাণী ছিলেন, তাঁহার রচিত সঙ্গাঁত পুস্তক যিনি মনোনিবেশ পূর্বক পাঠ করিয়াছেন, তিনি দেখিয়াছেন, ষ্মনেক সঙ্গীত বৈরাগ্যের কথায় পূর্ণ। বৈরাগ্য এই কথাটীইবা क्जवात्र উল্লেখ क्तिग्राष्ट्रन।

> 'পড লে অজ্ঞান কুপে আগ নাহি কোনরূপে এখন এই যুক্তি কর বৈরাগ্য আশ্রয়"
> "বিবেক বৈরাগ্য ছই সহায় রণে।"

• তিনি সংসাবের অনিত্যতা এবং ঈশবের নিত্যতা প্রতি
সঙ্গীতেই দেখাইয়াছেন। বৈবাগ্যভাবপূণ সংগাত দ্বাবাই তিনি
বৈরাগ্যপ্রধান ভারতবর্ষবাসীদিগকে ব্রাক্ষিধন্ম আকৃষ্ট করিতে
চেষ্টা করিয়াছিলেন। এখনও প্রাচীনগণ সেই স্কল সংগাত
যেমন ভাল বাসেন, এমন অন্ত সংগীত ভাল বাসেন না।

"তুমি কার কে তোমার কারে বল রে আপন ?"

একদিন একটা প্রাচীন হিন্দু পথিমধ্যে এই সংগীতেব হারা
রাজার বৈরাগ্যের বিষয়ে কত কথা বলিলেন। প্রাণে প্রবল
বৈরাগ্য না থাকিলে, এরপ সন্ধীত কথনই বাহির হইত না।

তাঁহার আহার পরিচ্ছদ এবং চলা ফেরা প্রভৃতি দেখিলে কেহ তাঁহাকে বৈরাগী বলিয়া বুঝিতে পারিত না। তিনি ক্ষবস্থাই-সারে উত্তম আহার করিতেন, তিনি ভাল বস্ত্র পরিধান করিতেন। বিশেষতঃ ভজনালয়ে যাইবার সময় আপনাকে স্থানর পরিচ্ছদে শোভিত করিতেন। তিনি আপন প্রভৃর নিক্ট কথনও মলিন বেশে ঘাইতেন না। সেরূপে যাওয়া ভিনি অভায় মনে করিতেন। ইহাতে তাঁহাকে কেহই বৈরাগী মনে করিতে পারিত না। কিন্ত তাঁহাকে কেহই বৈরাগী মনে করিতে পারিত না। কিন্ত তাঁহার বৈরাগ্য উচ্চ শ্রেণীর। তিনি আপন প্রভুর সেবার জন্ত ধন, মান, প্রাণ সকলই বিস্তুলন দিয়াছিলেন। তিনি লক্ষাধিক টাকা প্রিয় ব্রাশ্বসমাজের সেবায় নিঃশেষ করিয়া শেষে দরিজ হইয়াছিলেন। তাঁহার বাসস্থান পর্যায়্ম থাকিল না, তিনি বছল পরিমাণে নিজ অর্থব্যরে যদি আদি ব্রাক্ষসমাজমন্দির নির্মাণ না কবিতেন, তাহা হইলে আজ আমরা ব্রাক্ষসমাজ দেখিতে পাইতাম কি না সন্দেহ। এরপ ধনের বৈরাগ্য সকলেরই অফুকরণীয়।

তিনি সম্মান বিসর্জন করিতেও কুষ্টিত হইতেন না। তিনি यथन हेरदब्बी विम्लानम्न ज्ञानानम् अन्तान करत्रन, यथन गवर्ग-মেন্টের উল্যোগে এক কমিটি গঠিত হইল; তথন প্রয়োজন বশতঃ তাহাতে তাঁহার নাম রহিল না। সে ছক্ত তিনি এক বিন্দুও ছ:খিত ३३ त्वन ना। वदः विवा शिवाहित्वन"(य कार्यावादा श्वामाद तित्वत কল্যাণ সাধিত হইবে, ভাহাতে আমার নাম থাকিলে অনিষ্ট হই-বার সন্তাবনা থাকিলে আমার নাম না থাকাই ভাল।'' করজন লোক এরপভাবে অকৃষ্ঠিত চিত্তে আপনার মর্য্যাদা পরিত্যাগ কবিতে পাবেন ? ইহাই যথার্থ বৈরাগ্য। গৃহ ছাড়িয়া অরণাবাসী হ ওয়া বরং সহজ। কিন্তু গৃহে থাকিয়া এরূপে ধন মান বিসৰ্জ্জন দেওরাত কত বড প্রাণের প্রয়োজন! মামুষ সামাল্য মানেব ভক্ত কি না কবিতেছে ? যথন তিনি সমুদায় অৰ্থ ব্ৰাহ্ম-मयारखंद मिवान निःश्य कतिलान, छथन मान कतिलान (य, একবাব বিদেশে বাহিব হই, দেখি আমার প্রিয় সমাজের কিছু কবিতে পাবি कि না। তাই তিনি পরের সাহায্যে বিলাভ ণেলেন এবং সেখানেই প্রাণ দিলেন :

কুশে বিদ্ধ কবিয়া একদিনে যীশুব প্রাণ বিনাশ কবিয়াছিল, এই মহাত্মার প্রাণ তিল তিল করিয়া কুশে অপিত হইয়াছিল। প্রভুব সেবায় এরপে থাঁহারা তিল তিল করিয়া প্রাণ দিতে পাবেন, তাঁহাবা ধন্ত। জগৎ যতই রাজাব এই বৈবাগ্যের মাহাত্মা বুঝিতে পারিবে ও সাধন করিতে পারিবে, ততই ধন্ত হইবে। এ সুগে এই বৈরাগাই প্রেঠ বৈরাগা।

#### সাম্যবাদ।

(প্রাপ্ত)

"The modern leveller, after having done away with conventional inequalities, arbitrary previlege and historical injustice, goes still further and rebels against the inequalities of merit, capacity and virtue. Beginning with a just principle he develops it into an unjust one. Inequality may be as true and just as equality: it depends upon what you mean by it . . . . The modern zeal for equality is a disguised hatred that tries to pass itself off as love."—Amiel.

"আধুনিক সাম্যবাদিগণ ক্রজিম বৈষ্মা, স্বেচ্ছা প্রস্তুত অধিকার ও চিরাণত ক্রতাচাত্রের প্রতিবিধান করিয়াই ক্ষান্ত নহেন, কিন্তু তাঁহারা বৃদ্ধি দক্ষতা ও চরিজমূলক বৈষ্মাের বিরুদ্ধেও যুদ্ধ ঘোষণা করিয়াছেন। তাঁহারা সাম্যের মহামারকে বিরুত অর্থে গ্রহণ করিতেছেন। এক অর্থে বলা যাইতে পারে যে, সাম্যের মত বৈষ্মাও সত্য ও ভারের উপর প্রতিষ্ঠিত।
......ইলানীং লোকে সংযাের নামে যে মহা উৎসাহ প্রকাশ করিয়া থাকে, তাহা প্রেমের ভাগ মাজ, বস্তুতঃ তাহা এক প্রকার প্রছ্ম বিবেষ।"

निर्कित्मर मानव माधात्रावत कडक श्री व्यक्ति कारण, যাহার মূলে মানবের সাধারণ ধর্ম বা ৩৪৭। কোন রাজা বা কোন সমাজের এই অধিকার হরণ করিবার ক্ষমতা নাই। জীবন রক্ষা, অর্থোপার্জন, শিক্ষা, ধর্মচর্চা প্রভৃতি বিষয়ে মমুষ্য মাত্রেরই সমান অধিকার-ইহাই সামাবাদ। অবশ্র স্বাধীনতা ব্যতীত অধিকারের কোন অর্থ নাই। কিন্তু স্বাধীনতার শুষ मक ज्ञानक नमाय जामानिशाक ज्याविकारत मती हिका (तथा-ইয়া উপহাস করে। জীবন রক্ষার সম্পূর্ণ স্বাধীনত। সত্ত্বেও অনাহারে লোকের প্রাণ যাইতেছে। আমি শিক্ষা লাভ করি, ভাহাতে কাগারও কিছুমাত্র আপত্তি না থাকিলেও দারিল্রা বশত: বিদ্যালয়ের ছার আমার নিকট ক্লছ হইতে পারে। অতএব यहाट अधिकांत कथांठा छधू मृत्यंत्र कथा ना हम अर्थाए गाहाट छ কভকগুলি মূল বিষয়ে সকলেই কিছু পরিমাণে প্রকৃত অধিকার সম্ভোগ করিতে পাবে, তাহাব উপায় বিধান কর্ত্তব্য। অভি গ্ৰীবের সম্ভানকেও এমন স্থ্রিধা দিতে হইবে যে, যদি ভাহার প্রতিভা থাকে সে যেন অতি উচ্চন্থান লাভ করিতে পারে. সমাধ যেন তাহার প্রতিভাব গৌরব হইতে বঞ্চিত না হয়। ইহাই প্রকৃত সামাবাদ।

সাম। বাদের অর্থ কদাচ ইহা নহে যে, সকল মাতুষই সকল বিষরে সমান 🕆 স্প্রের কে:পাও ত গুইটা বস্তু ঠিক একরূপ पृष्टिगाठव रहा ना । भारौदिक, मानिष्ठ **७ आधाश्चिक मक**न मिटक हे **माञ्चरव माञ्चरव विख्य अ**टिंग। यनि किह वालन (य. मकलाई ममान बनवान वा ८५%। कतिरल मकलाई जीरमव ভায় মহাবিজ্ঞম হইতে পাবে, সকলেই সমান বৃদ্ধিমান বা cbशे। कतिरण नकरणहे रिश्कशियत निष्ठेषेन इहेर्ड शास्त्र, मक (लाहे ममान माधु वा (हिंदो कविदल हे मक एन भाका वा के भाव ভার হইতে পারে,—দেই উংকট দামাবাদের অপব নাম বালকভা। সভাবভ: মানুষে মানুষে প্রভেদ আছে, ভাহার পর চেষ্টার শক্তি ও ভিন্ন ভিন্ন লোকের ভিন্ন কপ। বোপদেব গোখানী বা ডিমন্থিনিদ সম্বন্ধে দে প্রবাদ আছে তাহা প্রত্যেক সুলেব ছাত্রই জানেন। কিন্ত আ্বানবা যে বভ আধিক ডিমন্তিনিস বোপদেব দেখি না তাহাব কারণ এই যে, সে প্রকার অধ্যবসায় হওয়াও ঠিক মুথের কথা নছে। পরলোকের অনম্ভ পথে চলিতে চলিতে আমরা কে কি প্রকাব কবিতা লিখিব বা বক্তৃতা করিব, আমাদের বাাকরণ গণিতের ष्यभूभीयन आग्राञ्चन इहेरव कि ना-एन भव कहानात्र कथा। किन्छ देरकीयान (य देख्या कतिलाहे आमता निष्ठेवेन প্রভৃতি হইতে পারি না ভাহা বোধ হয় স্বীকার্য্য।

মানুষে মানুষে যতদিন গুণের তারতমা থাকিবে, ততদিন অধিকারেরও ইতর বিশেষ থাকিবে। অধিকারের মূলে বোগ্যতা। যদি কোন সমাজ অযোগ্য ব্যক্তিকে অধিকার দের এবংশ্যোগ্য ব্যক্তিকে বঞ্চিত করে, তাহাই অভার, তাহাই বহু অনর্থের মূল। যদি কুঞ্চদাস পালকে তাঁহার জাতীর ব্যবসার অবলম্বনে বাধ্য করা যাইত, তবে যে গুরু ব্যক্তিগত ভাবে গুণের অবমাননা ও খোর অত্যাচার হইত তাহাই নহে. কিন্তু তিনি দেশের যে উপকার সাধন করিয়াছিলেন, সেই

উপকার হইতে বঙ্গভূমি বঞ্চিত হইত। জন্মগত জাতিভেদের মূলে ক্রত্রিম বৈষমা। ব্রাহ্মণাদি উচ্চবর্ণের স্বেচ্ছা-প্রস্ত যে অধিকার, ইহার অর্থ গুণের অবমাননা, চরিত্রের মন্তকে পদাখাত।

যদি বলাযায় যে,ব্যক্তি বিশেষের কোন গুণ যথন প্রাকৃতিক নিয়মে তাহার বংশগত হইবার কথা, তথন সেই খাণ মূলক অধিকার বংশগত করাও কর্ত্তব্য। এ কথার অনেক উত্তর। প্রথমতঃ প্রকৃতিতে দেখা যায় যে, প্রাণীবিশেষের কোন গুণ সমান ভাবে তাহার বংশাবণীতে অস্তৃত হয় না। অর্থাৎ সস্তান সন্ততির মধ্যে কাহারও কাহারও সেই গুণ কম থাকে। যাহাদের বেশী থাকে তাহারা যেমন জীবন সংগ্রামে স্থবিধা শাভ করিয়া প্রবল হয়, যাহাদের কম থাকে, তাহারা অস্বিধা ভোগ করিয়া অপেকাকৃত তুর্বণ হইয়া পড়ে। অর্থাৎ গুণ বংশামুক্রমিক হইলেও প্রকৃতিই ঠিক গুণের পরিমাণ মত कार्यकात अनान कतिया थाएक । खनीत तः म तिनग्राहे नकनएक সমান শ্রেণ্ডা দেয় না। দ্বিতীয়তঃ—অধিকার বংশগত হইলে বাহিরেব লোকের গেই অধিকার লাভ করা কঠিন হইয়া পড়ে, অথচ বাহিরের গোকেরও প্রতিভা শইয়া জন্ম গ্রহণ করা কিছুই বিচিত্ত নহে। এনবের (Ganss) পিতা গণিত ৰেশারদ ছিলেন না। হ'তেলের (Handle) পিতা সঙ্গাতজ্ঞ ছिल्न ना; छिछियान ( Titian ) চিত্রকরের পুল নহেন। যাদ জ্যাতভেদের নিয়মামুদারে হইাদিগকে আপনাপন পৈতিক ব্যবসায় অবলম্বন করিতে হহত, তাহা হইলে জগতের কি ক্ষতি **१इड वित्वाना कता छा**ठठ। जुडीवड:--मासूख्यत स्नोवन শিকা ও অভাবের স্মিলিত ফল। এই শিক্ষা শুধু স্কুলের ागक। नटः। किन्न (प्रदे जीवन वाली विञ्च निका, याश खात्नत উন্মেষের সহিত আরম্ভ হয়। এত সামার সামার্থ কারণে মামুষের জাবনের গতি ফার্যা যায় যে,ঘটনার নিক্রন্ধের উপর আমাদের হস্ত নাই এক প্রকার বলা বাইতে পারে। আবার বস্তমান প্রাণীতত্ববিদগণের অগ্রণী ওয়ালেস ভাইসমান প্রভৃতি স্বীকার করেন না যে, শিক্ষা বা অভ্যাস শব্ধ কোন গুণ বা বিদ্যা (acquired characters) সন্তান সন্ততিতে অনুস্ত হইতে পারে। এই কারণেই পণ্ডিটের পুলকেও মূর্ব দেখা যায়, সাধ্র সন্তানও সমাজেব বক্ষে কলঙ্ক হয়। তবে বিদ্যা ও চরিত্রমূলক অধিকার কে বংশগত করা কতদূর স্তায়দঙ্গত বিবেচনা করা উচিত। এই প্রাসকে আরও অনেক কথা বলিবার আছে; কিন্তু তাহার জন্ম একটা স্বতন্ত্র প্রবন্ধের প্রয়েজন।

জন্মগত ক্তিম বৈষমা দূর করিতে ব্রাহ্মসমাজ বন্ধ পরিকর।
এই অর্থে প্রত্যেক ব্রাহ্মই সাম্যমন্ত্রের উপাসক। মাসুষকে মানুষ
বলিরা সন্মান করিতে হইবে। মাহুষ মাত্রেরই যে প্রকৃতিগত
অধিকার আছে,তাহা হইতে সমাজের এক শ্রেণী অপর শ্রেণীকে
বঞ্চিত করিতে পারে না, এই কথা প্রচার করিতে হইবে।
কিন্তু সকল শুণে সকল মাহুষ সমান—ইহা সত্যও নহে, ইহা
সাম্যবাদের অর্থও নহে। ব্রাহ্মসমাজে কি শুণের আদের থাকিবে
না ? ব্রাহ্মসমাজে বোগদিলেই কি সকলে সমান হইরা গেল,

সকল গুণের পরাকার্চ। লাভ করিল? এই কুসংস্কার যদি আমাদের সাম্যমন্ত্রের অর্থ হয়, তবে আমাদের হর্দশার সীমা থাকিবে না। প্রীদেবেক্তনাথ মুখোপাধ্যায়, চট্টাগ্রাম।

## সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্বাহক সভার ২য় ত্রৈমাসিক কার্য্যবিবরণ।

#### 2F28

### (পূর্ব্ব প্রকাশিতে পর)

দাতব্য বিভাগ—এই তিন মাদ মধ্যে ১২টা পরিবার, ১১টা ছাত্র, ১টা ছাত্রী, ৩টা অস্ক্র, এবং একটা কুঠ রোগীকে অর্থ দাহায্য করা হয়। বহাদিগকে অর্থ দাহায্য করা হয়, বংসরের প্রথমেই তাহাদিগকে এক বংসব দাহায্য করা হয়। বিগত তিন মানে ১০০ শত টাকা দেওয়া হইয়াছে, আর ৯ মাদে অন্ততঃ আবও ৩০০ শত টাকার প্রয়োজন। তহবিলে ছই শত দশ টাকা মাত্র আছে, আরও কয়েকজনের দ্রথান্ত আমাদিগের হত্তে আসিয়াছে। সহলয় দাতাগণের নিকট এই প্রার্থনা যে, তাহারা অনুষ্ঠানাদি উপলক্ষে এবং এককালীন এই কত্তে কিছু কিছু অর্থ দান করেন। বাহারা বিগত তিন মাদ কাল মধ্যে অর্থ সাহায্য করিয়াছেন, তাহাদিগকে আন্তরিক ধন্তবাদ দিতেছি।

### আর ব্যয়ের হিসাব।

আয়		–ব্যয় ———	
এককালীন দান সং	গ্ৰহ ৬৬//০	মাসিক দান	9211•
বাৰ্ষিক দান সংগ্ৰহ	>9110	वार्षिक मान	4
,মাসিক দান সংগ্ৰহ	>•/	এককাণীন দান	₹ \$ 4 •
অমুগান উপলক্ষে প্র	11िश्र 88	বিবিধ ব্যয়	3/26
প্ৰলোকগভা সর্লা	মহলা-		<del></del>
নবিশ ফণ্ডের ১০০১	টাকার		20011005
ञ्चम	>616	<b>र</b> त्यश्रिष्ठ	२३०॥/३०
বাবু কানীপ্রসন্ন বহ	্ফণ্ডের		-
১০০ টাকার হৃদ	ه ااح		32212.
তহবিলে অতিবিক্ত	રહે >•		
	>69he/36		
পূর্কার স্থিত	3891;¢		
	022120		

নীতি-বিদ্যালয়— গ্রীমাবকাশ উপলকে নীতি বিদ্যালয়ের কার্যা স্থগিত ছিল, পুনরায় :লা জুলাই হইতে বিদ্যালয়ের কার্যা আরম্ভ হইবে, গ্রীমাবকাশের পুরের ইহার কার্যা রীতিমত চলিয়াছে। ইতিমধ্যে আমবা ৫৬ টাকা দানপ্রাপ্ত হইয়াছি, তাহার কিয়নংশ বালকবালিকাদিগের ব্যায়ামেব পুরস্কার স্বরূপ ব্যম্বিভ হইয়াছে। ছাত্র ছাত্রীর সংখ্যা পুরের স্থায়ই আছে।

উপাস্ক্মগুলী—বিগত তিন মাসে নিয়মিতরূপে মন্দিরে রবিবার প্রাত্তে ও সন্ধার সময় উপাসনা হইয়াছিল। এতহাতীত কয়েকটা বন্ধু মিণিত হইয়া, প্রতিদিন প্রাতঃকালে

মন্দিরে উপাদনা করিয়াছেন। এই তিন মাদ বিদ্যা-লয়ের শিক্ষক মহাশয়ের। ও ছাত্রমগুলী থাঁহারা নিয়মিত-काल मिन्द्र উপामना क्रिएंड आमिश्रा थार्कन, उाँशामिश्रात অনেকে গ্রীয়াবকাশ বশতঃ সহবের বাহিরে গিয়াছিলেন, স্কুতবাং উপাদক সংখ্যা কিছু অল হইয়াছিল। বিগত সপ্তাহ হইতে পুনরায় উপাসক সংখ্যা বৃদ্ধি হইতেছে। প্রীযুক্ত বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত ও শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী এই বৎসরের 🖯 পাওত শিবনাথ শাস্ত্রী, শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত, শ্রীযুক্ত বাবু দৃষ্টি আকর্ষণ করিতেছি। তাঁহাদের সদয় ব্যবহার ভিন্ন नलाकनाथ हाडोशाधात ७ औयुक वाव नवहीशहक नाम মহাশয়গণ আচাযোঁর কার্য্য কবিয়াছেন।

#### আয় বায়েব ছিনাব।

আয় ————		- <b>वा</b> स	
টালা আদার	20000	(ব <b>তন</b>	\$81.
দান সংগ্ৰহ	34/0	কৃত কৃত ব্যয়	<b>3</b> ≥6 ¢
ছাত্ৰসমাজ হইতে	গ্যাস	হাওলাত শোধ	२४
হি: প্রাপ্ত	/د	গ্যাদের আণো	\$ 511 °
	>>811/ •		>>> he
পুক্ষিত	<b>8</b>   •	হস্তেষ্ঠিত	<b>かいり</b> 。
	> <b>२•</b> ₩/•		>> 04/0

ব্রাক্ষাত্রী-নিবাস ও শিক্ষালয়—ছাত্রীনিবাসের বর্তুমান ছাত্রীসংখ্যা ৩১। ইহাব মধ্যে ২৪টা শিক্ষাণয়ে পাঠ কবে। গত তিন মাদেব গড ছাত্রীসংখ্যা ৩০। এই তিন . মাদে ২টা ছাত্রী চলিয়া গিষাছে, ৩টা নৃতন ভণ্ডি হইয়াছে।

শিক্ষালয়—বউনান ছাত্রী ও ছাত্রসংখ্যা ৬৭। হহার মধ্যে ৫৬টা বালিকা ও অবশিষ্ট ১১টা বালক। গত তিন মাসের . গভ ছাত্রীসংখ্যা ৭২। একজন শিক্ষয়িত্রী কার্য্য পবিত্যাগ করিষাছেন, অপর একজন তাহার স্থানে নিযুক্ত হইয়াছেন। পাওত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় এতদিন দক্ষতার সহিত ছাত্রী-निराप्त । शिकालास्य अम्लामात्कत्र काञ्च कविर उहिल्लन। স্বাস্থ্যভঙ্গ হওয়াতে তিনি সম্পাদকীয় কার্যা আর করিতে পারিতেছেন না। ডাক্তাব নীলরতন স্বকার মহাশ্য তাঁহার স্থানে সম্পাদক নিযুক্ত হইয়াছেন।

#### আয় ব্যয়ের হিসাব।

আয় ——		बाब	
ছাত্ৰ ও ছাত্ৰী বেতন	०४४६५	থাওয়াও আলো	
চাদা ও এককালীন দ	ान ६५८	ইত্যাদি	800110/0
বাড়ী ভাড়া	: 6	কর্মচারীর বেতন	१७२४५०
গাড়ী ঘোড়া বিক্রী (স্ব	(4) >90	গাড়া	>890¢
ধার	>> 6/	বাড়ী ভাড়া	२१०
		ধার শোধ	२४८
	ibiaho	বিবিধ	2 845 C
পূৰ্বস্থিত	92.26		
মোট '	:528450	<b>र</b> खिह्उ	२६/
			362847¢

मक्रक म्ला-- এই जिन मार्ग मक्रक महाब ১०।। অধিবেশন হয়, ভাহাতে নিমাল্থিত ৭টা বিষয়ের আলোচনা হইরাছিল। (১) "সত্য-সাধন" (২) "কলিকাতা ও নিকটন্ত श्न नकरन बाक्तनभाक कि छेशाय व्यवन्यन क्तिरन धर्म श्राट्यत

ऋविधा इत्र।" (२) "श्राप्ता" (৪) "गृह्य व्यक्तातक।" (৫) "বিশেষ ঋতুতে ভগবানের বিশেষ আবির্ভাব।" (৬) "ব্রাক্ষ-সমাজের কার্য্যাদি সম্বন্ধে আলোচনা।" (१) "আদর্শ ব্রাশ্ধ-জীবন।" ইহার মধ্যে কোন কোন বিষয় ২।৩ অধিবেশন ধরিয়া আলোচিত হ্ইয়াছিল। সভাগণের উপস্থিতির সংখ্যা গড়ে ৯।১০ জন।

তত্তকৌমুদী ও ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জার—এই ছই পতিকাই নিয়মিতরূপে প্রকাশিত হইয়াছে। তত্ত্বামুদীর জন্ম এতদিন জক্ত আচায়া এবং সাধারণ ত্রাহ্মসমাজের প্রচারকগণ এবং বিকানরূপ ঋণ হয় নাই, কিন্তু হু:থের বিষয় এই তিন মাসে ডা: প্রসন্নকুমার রায়, বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র সহকাবী আচার্য্য । তত্তকৌমুদীর জন্ত ঋণ করিতে হইয়াছে। ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্চারের মনোনীত হ'ংয়াছেন। ডাঃ প্রদরকুমাব রায় সম্পাদক এবং ফুল্ডও গত বংসরে ঋণ করিতে হয় নাই, কিন্তু এই বংসরে বঙ্কবিহারী বহু সহকাবী সম্পাদক নিযুক্ত হইয়াছেন। আবার ঋণ হইতেছে। এ বিষয়ে আমরা গ্রাহক মহাশয়দিগেব প্রিকাদির বায় কথনই নিকাহিত হইতে পারে না।

> ছাত্রসমাজ, অন্ধবিদ্যালয় মিশনকমিটি, আন্ধ-স্থিলনী, লাইত্রেবী, আধ্যাত্মিক-উন্নতি সাধন কমিটির বিশেষ কোন কাষ্যবিবরণ পাওয়া যায় নাই।

### আয় ব্যয়ের হিদাব।

#### সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ।

অায়————	–ব্যয়————	
্সভ্য ও সহযোগিগণের	প্রচার ব্যয়	933000
' निकंछ इहेट होना	কম্মচাবীর বেতন	<b>552</b> 11●
व्यानात्र ३५२॥४३०	স্থদ	2 9 hc
वार्षिक ३७६.•	বিবিধ	२०५७०
मामिक ১२८१७:०	<b>ভাক্ষা</b> শুল	>h •
	পুস্ক বাধাই	ale .
२ <b>५</b> २॥०√ ७ ७	<b>মুদ্রাক্ষ</b>	¢2,
প্রচারাথ দানপ্রাপ্তি ২১০।১০	গ্ৰহিক	47104
वाधिक ठाँना २५/:৫	প্রচারক গৃহ	e 6/30
' यामिक हाँमा ১२ ११ d ३ c	পাথেয়	22844
এককালীন ১৯৪০	উৎসৰ	<b>&gt; •</b> √
	সিটিকলেজ বৃত্তি	1 5 H •
२ २ ७। २ ०	সৌদামিনী বৃত্তি	201
হায়ী প্রচার ফণ্ড ৪১	বেনারস আশ্রম	2920
প্রচাবক গৃহ হি: ৪৯	বাগআঁচড। মিশন	
উৎসব हिः २	হাওলাভ ও গচ্ছিত	>8094d€
<b>भार</b> णम् <b>५</b> %	লাইব্রেবি	10
ছডিক ১৫৭॥∙	•	
সূদ ৭৯৸•		२१२५,५७•
विविध >	<b>শ্বিত</b>	8.4/2.
মেরি কার্পেণ্টার ফগু ১৩০০		-
মন্দিরে অমুষ্ঠান উপ-		२१७२।•
नक्षमान >६		
সিটি কলেজ বৃত্তি ৭৯॥•		
টুইভীড ১		
ডাক্মান্ত্র / •		
राउनाउ चानात्र ও		
গচ্ছিত ১১৩৮০		
२७३:॥१		
গত তৈমানিকের		
স্থিত ৩৭০॥১১৫		

२१७२। •

	ইপ্রিয়ান	(मरमक्षात्र ।	
আর		- ব্যর	
•	२२४।८८ ८०	মুদ্রাহন কাগ <b>জ</b>	>89√ €२॥/€
নগদ বিক্রয় বিজ্ঞাপন	्र €२∥०	কর্মচারীর বেতন	> 1810
विश्वरायम् विविध	11/0	विविध	32426
াবাবৰ ডাকমাশু <b>ল</b>	9145·	ডাকমাগুল	>>>/>
হাওণাত	25	ক্ষিশন	ર ∖ા
रावनाव			
•	Dr•/>C		• chac8
গত তৈমাসিকের স্থিত	<b>6</b> )  •	<b>হিত</b>	swe
		•	88:11/:0
8	১৫\॥८৪। ভত্ত-বৈ	रोग्रही ।	80711734
	<b>⊘</b> 4-€4	-ব্যয় <del></del>	
আয়————————————————————————————————————	રક8ન⁄¢	'ডাকমাত্ত্ৰ	8206
নুগা আগাস নগদ বিক্রায়	1.	কাগজ	٥٤١
ক্পিন বিজ্ঞান ক্পিজ বিজ্য		মুদাহৰ	> 911 •
ভাক্ষাগুৰ	4.	ক্ষাচানীর বেতন	8>110C
হাওলাত	; 2 0 /	বিবিধ	8 \
१।उना उ		কামশন	>110
	<b>০৭৬</b> ৭৵⊄	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	
গত ত্রৈমাসিকের স্থিত	()/•		२१२५०/३०
		<b>ষ্ঠি</b>	>081120
	ع له ۱۹۹۰		
			७११।८६
প	<b>ন্দ ফ</b> ংগ্	।ব হিদাব।	
অায় —		-ব্যয় ——	
	७२।/>८		3 6 9 6 ¢
नगारकर >२∙।√६		পুস্তক বাধাহ	२911€
অপরের ৪-৮৩১০		কম্মচাবীৰ বেতন	२१८
-		ডাক্মাণ্ডল '	ew.
ऽ <b>५</b> २।/ऽ¢		বিবিধ	bw:c
বাকী মূল্য আদায়	251/50	কমিশন	9120
ক্মিশন	39he/5.	<b>मृ</b> जाइन	e,
ভাকমাণ্ডল	40/0		२५२
এককাণীন দান	8、		<del></del>
			०२ हारि
	<b>২</b> ৩∙৸•	<b>হিত</b>	२७३।८०
গত তৈমাসিকের হিত	-	,	
			१७१०
	esed.		
	মাৰে	ৎসব ।	
আয় ———		-वाब	
চাঁদা সংগ্ৰহ		অতিথিগণের বাড়ী	
ৰন্দিরে দান সংগ্ৰহ	<b>⇔</b> 8∥>•		22
জিনিস বিক্রন		मिन्द्रित्र पार्गा	0.1
গভ বংসরের ভহবিল		<b>A</b> 4	₹24•
হাওলাত জমা	००॥०		
•	•	- ডাক্মাওল	>•/
	<b>८२</b> ३। ६		
		সবের ফুল ও মালা	311-
		অভিধিগণের আহা	
		विविध वात्र	\$6,88€

	ত্ৰাক মিশ	ান প্রেস।	
আয়		-ব্যন্থ ——	
ৰত <b>টাকা নগদ আ</b>	लात्र	<del>द</del> ्रम	92
<b>হই</b> য়াছে	seemels	সরঞামী	क्राज्य २ ६
ছাপাই হি: হাওলা	ত	বিবিধ	રલાઇલ
<b>জ</b> মা	>6811°	<b>च</b> नना न	১১১৬॥८১०
	-	শ্রেদ প্রস্তুত হিঃ	3.597.
	२२७०।८०	ডাকমা <b>ভ</b> ল	110) è
প্রথম ত্রৈমাসিকের	7	কর্মচারিগণের বে	তেন ৬৭৩৶১•
হম্বেহিত	>৬।৫	<b>ज</b> नभानि ू	911>
		পূব্দের টাইপ ক্রব্রের	
	૨૨૨૧∥৶૯	মূল্য শোধ	6.9110
		হাওলাত শোধ	¢•\
		<b>म</b> श्री	a,
		ফেবত জ্মা	«\
		এপ্রেল ও মে মা	
		কমিশন ইত্যাদি	۶•؍
			२>•७/১৫
		হস্তেষ্তি	≥811/>•
			२२२ <b>१</b> ॥८

# প্রেরিত পত্র।

(পত্ৰেরকদিশের মতামতেব জন্ত সম্পাদক দায়ী নহেন্।)

## গুপ্ত কণ্টক।

এক ব্যক্তি দিবারাত্রি ছ্কর্ম করিয়া হৃদয় মলিন এবং কলম্বিত করিতেছে। তাহার হৃদয়ের মলিনতা হৃদয়েই প্রচ্ন থাকিতেছে। কে ভাহার প্রতি দৃকপাত করে? তাহার শরীর যদি বহুমূল্য ও স্থক্তি সম্পন্ন আছোদনে আছো-দিত থাকে, তবে ভদ্রসমাজের উচ্চাদনে তাহাকে বদাইতে ष्पद्म लाक्ट्रिक कृष्ठिक इया । एक भागीतिक षाष्ट्रामत्नत्रहे এই শক্তি! ইহাব সহিত यथन পদ, মান, ধন ও কুল মর্য্যাদা অড়িত হয়, তথন তাহার নিকট মস্তক অবনত না করে এমন মমুষা পৃথিবীতে হুৰ্লভ। যাহাকে দাধু ও উপকারী মিত্র विनिन्ना निःमिक्यिङार्व विश्वाम कतिन्नाहि, स्म यथन र्गापति শক্রতাচরণ করে, তথন তাহার মত অনিটকারী বিতীয় ঘটা ভার হয়। পুশহারে যে :সর্প লুকারিত থাকে, তাহার ভার সমুধত্ব দংশনোমুধ সর্প কথনই ভয়ের আম্পদ নয়। স্থমধুর মিটারে যে বিব মিশ্রিত থাকে ভাহা ভক্ষণ করিয়া মহুষ্যের হানি হইবার বেরূপ সম্ভাবনা, বিষ-পাত্রশ্বিত দুশ্বমান বিষে কখনই তজ্ঞপ সন্তাবনা নাই। এই জন্মই আজ কভগুলি উচ্চ বিষয় নিহিত দোবের সমালোচ-नात्र व्यव्य हरेनाम।---

ধর্মও অনেক সমরে সাংসারিক তন্ততার স্থার বহিরাবরণাদিতে পর্যাবসিত হর। সে ধর্মের বিক্রমবানী এসংসারে
অতি ফুর্লভ। আবার কতগুলি বিবর পুশহারের স্থার অভি
প্রিত্র ও রমণীর হইলেও ভাহার মধ্যে অনেক অবস্থাতেই

দর্শনিক লুকায়িত থাকিয়া ময়য়য়েক গোপনে সাংঘাতিক রূপে দংশন করে। অতি স্মধুর হইলেও অনেক সময়েই তাহাতে গরল মিশ্রিত থাকে। চিরবিখাসী উপকারী মিত্রের শক্রতার ক্লার ইহার শক্রতাও মায়্ষের পক্ষে বিষম অপকারী। আমরা এই সকল জাতীয় ধর্মের মধ্যে যে সকল বিষয়ের উল্লেখ করিব, যদি আমাদের সকল কথা শুনিবার ধৈর্য্যকে ত্যাগ করিয়া প্রথমেই কেহ আমাদিগকে বিচারাধীন করেন, তবে তিনি আমাদিগকে অবশ্রই এবস্থিধ উপাধি দিবেন যে, তাহাকে আমরা আমাদের উপব অযথা গালি বর্ষণ বলিয়া ত্বংব কবিব।

আমরা প্রধানতঃ ধর্ম বাজ্যেব গুপু কণ্টকের মধ্যে অবস্থা বিশেষে অনুষ্ঠান, ধর্ম বাকা, উপাসনা, পরিত্রাণ ও প্রকাল এই কয়েকটা বিষয়কেই নিশ্তি ক্রিয়াছি। একাদিজ্নে ইহাব কাবণ ক্রমে উল্লিখিত হইতেছে।

১৷ অফুষ্ঠান: — ঈশবেব প্রিয়কার্য্য সাধন ব্যতীত অক্ত কোন অৰ্থে আম্বা অনুষ্ঠান কথাটা ব্যবহাৰ কবিতে প্ৰস্তুত নই। সুতবাং মনুষোর যাহা কিছু কবণীয় সমস্তই অনুষ্টান। অথচ অবস্থামুদারে এই অনুষ্ঠানকেই আবার ধম্মপথেব গুপ্ত क्लेक मत्न क्रि। अञ्चान इहे अवदाउ नाया स्म। প্রথম অজ্ঞানান্ধতামূলক কুসংস্থাব বশতঃ, অপব উদ্দেশ্যেব বিভদ্ধতাৰ অভাৰ জন্ম। প্ৰথম কাৰণে জগতে কত নৰহত্যা শিভহত্যা, নারীহত্যা, পভহত্যা, অত্যাচাব, সংগ্রাম প্রভৃতি ष्रकृष्ठिञ्जार्व मःमाधिष्ठ इरोग्राष्ट्र, जाहा यार्ग २रेरन পাষাণ হৃদয় ব্যক্তিরও গাত্র কণ্টকিত হয়। ইতিহাসই ইহার জাজলামান সাক্ষী। দিতীয় কারণে আদি-कान इरेट अना পर्यास পृথियोत अधिकाश्म नतनाती अकृत ধম্ম হইতে সমস্ত জীবন দূরে রহিয়াছে। একরাণ मृष्टिएक (मिथएक (भारत), (वाथ स्य (यन ममन्य भारूष धर्मातास्त्र) শশু ত্যাগ কবিয়া তুষ লইয়াই বাতিব্যস্ত। অনুষ্ঠান মাত্রেরই একটী প্রকৃত বা প্রমেশ্বরনিদিপ্ত নিগৃত মূল আছে। সেই নিগৃত মূল ত্যাগ করিয়া যথন অনুস্থান মহুষ্যের নীচ স্বার্থের উপরে প্রতিষ্ঠিত হয়,তথনই উহা সমুষ্যকে বহন করিয়া ধর্ম প্রাঙ্গন হইতে শুক্তে উড্ডীয়মান হয়। উহার সঙ্গে প্রকৃত ধম্মের কিছুই আকর্ষণ থাকে না। এইজন্ত অমুধানকে আমরা পুরা বণিত উভয় অবস্থাতেই ধর্ম পথের অতিশয় অনিইকারী কণ্টক বলিয়া मत्न कति। উहारक এहेकछ ७४ क छ क विन (य. छेश মানুষের চক্ষুতে সহসাধরাপড়ে না। আমরা বিশাস করি বে, মামুষ সমস্ত জীবন এহ অস্থ্যে ভ্রম্মের নীচে আপুনাকে লুকারিত রাখিয়া, অথচ কৃতার্থ মনে ক্রিয়া বিলক্ষ্ণরূপে প্রবঞ্চিত হটতে পালে। এইজন্ম প্রত্যেক প্রকৃত ধর্মার্থীর পক্ষে অতি সতর্কতার সহিত অমুটানের সঙ্গে পরিশুদ্ধ জ্ঞান ও শক্ষোর পবিত্রভার সংযোগ, সক্রথা রক্ষণীয়।

বিতীর ধন্মবাকা; — ধন্মবনাক মধ্যে কতকগুলি উচ্চ ভাবের কথা ব্যবগৃত হইয়া থাকে। ঐ কথা গুলকে ধন্মবাক্য বলা যাইতে পারে। উক্ত কথা সকল যে মূল্যহীন ও অমূপ-কামী তাহা নম্ন, কিন্তু উহার বিষম অপব্যবহার আহে।

সেই অপব্যবহার ও অনুষ্ঠানের অপব্যবহারের ক্যায় অনিষ্ট-কারী। ঐ কথাগুলির সঙ্গে যতকণ প্রক্রতভাবের যোগ থাকে. ততক্ষণ উহা মানুষের ধর্মপথের বিশেষ সহায় হয়। উচ্চতম ধর্মালাপে মামুষের হৃদর উরভরপে প্রস্তুত হয়। কিন্তু যথন উহা হইতে ভাবের বিয়োগ সংঘটন হয়, তথন উহা মামুষকে ক্রমে অধোগামী ও পদে পদে অপরাধী করে। হঃথের বিষয় মানুষের অবিবেচনা ও অসতর্কতা উহা হইতে কুফলই সকলো উৎপন্ন করিতেছে। পৃথেবীর বছতর মাতৃষ্ট ধর্মবাক্য বিনিম্য করিয়া ধার্ম্মিক নাম ক্রয় করিতে বাগ্র। এক ব্যক্তি ছুই দণ্ড একস্থানে বসিয়া শাস্তি অশান্তি, পাপ পুণা, অনুতাপ, জদর আহ্বা, ইহকাল পরকাল ত্ৰহ্ম, দয়া, ধৰ্ম, প্ৰেম, সত্য ইত্যাদি নানা উচ্চ কথা ব্যবহাৰ কবিয়া আলাপ করিল। চারিদিকের মাহুষেরা তাহাকে ধান্মিক বলিল। হয় ত বক্তাও অনেক সময়ে তাহাতেই আপনাকে কুতার্থ মনে ক্রিয়া প্রবৃঞ্চিত কিন্তু এমন ভাবশৃত্ত জদয়ে ঐ সকল মূল্যবান কথা উচ্চারণ कविरासन (य, रच प्रकृष कुला ভाবের शृहित উচ্চারিত হইলে क्रमस्त्रव मगन्ज कात्र উल्पाष्टिक अ नवस्थान व्यास्माणिक इरेक. त्महे मकन कथाहे अशिष्क व्यवः भारत प्रिक ठानि उ क्रिन। এইজন্ত ধ্যাক্থা ব্যবহাবের স্বাদা সভক্তা বক্ষা প্রয়োজন। এমন কি ভাবশুক্ত ইইয়া বলা অপেকানা বলা ক্ষতিকবেক নয়। ববং ঐক্রপ বলাকেই আমরা ধর্মপ্রথের গুপ্ত কন্টক মনে কবি।

ভূভায় উপাদ্না ;—ভাববিহীন ধন্মবাক্যের স্থায় ভবেশৃক্ত উপাসনাকেও আমরা অতিশয় ভয়ানক মনে কবি, উহা বিষম কপটত।কপ মহাপাপেব সোপান স্বক্প। যে ব্যক্তি ঈশ্বরকে শ্বীকাৰ কৰে না, ভদপেশা যে বাক্তি ঈশ্বরকে শইয়া ক্রীড়া পুতুবের ভায় থেলা ও উপহাস কবে, সে অভিশয় নাবকী। সে যদি তাহার জিহবাকে শত সহস্রবার দগ্ধ করে, তাহাতে ৭ ভাহার এ অপবাধ ও পাপের মোচন হয় না। বিশ্ব ছংথেব বিষয় যে, এই জলম্ব অগ্নিতে অবগাহন করিতে কবিতেছে। 'ধ্যাবাক্যের ভাষ भाक्ष मकानाई माहम व्यत्नक ममरब्रहे मीर्घ मीर्घ छेपानना विनियम কবিয়া ধান্মিক নাম কিনিয়া প্রবঞ্চিত मायायत এই धृष्टेज (मधिया ९ जाविया हैका इम व्यापना कति-"প্রভো! ভোমার ভাষণনোং ভাষণং রূপ প্রকাশিত করিয়া অজ্ঞান মানবসম্ভানকে জ্ঞান দান কর। তোমার প্রেমকে কোমৰ ভাব দেখিয়া নিৰ্কোধ মাত্মখ আমরা গ্রংসাহসী হইয়াছি।" এই अन्त्र जामता मत्न कति, यनि मासूष बह यह ७ ८० हो। করিয়াও সমস্ত জীবনে খাঁটি পবিত্র এবং ব্যাকুল অদয়ে তাঁছার নামে একবিন্দু অশ্রপাত্ত করে, তাহাও শত্বর্ধব্যাপী ভাব-শুক্ত কণ্ট উপাদনা অপেক। অনম্ভ গুণে শ্রেয়:। কেবুল লেয়: নহে, ভাহাই অবশ্র কর্ণায়। मीर्घकानवााशी खेलामना আবগুকীয়। मीर्घकाल (कन १ প্রকৃত উপাসনাকে আমরা জীবনব্যাপী হওয়া শ্রেয়ঃ বোধ করি। কিছ ভাবশৃক্ত কপট উপাসনাকে আমরা ধ্রমপথের বিষম 🐯 क्फेक मत्न क्रि। क्यात्र हेहा अ मत्न क्रि, महत्व अक्रिन

ছই দিনেই মাহ্য প্রাকৃত উপাদক হইতে পারে না। ভাষার বেমন "ক" হইতে শিক্ষা করিরা অনেক দিনে উচ্চ ব্যুৎপত্তি লাভ করিতে হয়, উপাদনার যে দে নিয়মের ব্যতিক্রম ঘটতে পারে তাহাতে আমাদের বিশ্বাস নাই। এইজ্ঞুই ধর্মসমাজে প্রবেশ করিয়াই বাহারা দীর্ঘকালব্যাপ্রী উপাদনার যোগ দেন উাহাদিগকে, সাবধান করিতে ইচ্ছা হয়।

চতুর্থ পরিতাণ;—পরমেশরকে প্রাপ্তি বিষয়ে মহুযোর অগ্রগমন ভিন্ন আমরা পরিত্রাণ বা মৃক্তির কোন অর্থ জানি না। আমাদের মন:কল্লিত কোন শান্তি স্থ্যম স্থান বা অবস্থাকে লাভ করা পরিত্রাণ বলিয়া জানি না। স্থান, অবস্থা, স্থ্থ, গুঃথ, শাস্তি অশান্তি পাপ পুণা বিছুই আমাদের লক্ষ্য নয়। লক্ষ্য আমাদের ঈশ্র। সেই লক্ষ্যে দিকে অগ্রবর্তী হওয়াই পারত্রাণ। তাহাই মানব জীবনের উদ্দেশ্য। হয়ত আজ আমি যাহাকে হুথ, শান্তি বা পুণ্য কল্পনা করিয়া বদিয়া আছি, কাল দেপথে অগ্রগমন ক্রিতে, তাহার বিপরীত वरेषण वे मकन পক্ষ আমাব মঙ্গলের নিদান হইব। আমাদের লক্ষা হইতে পারে না। কিন্তু অধিকাংশ ধর্মেই প্রিত্রাণ পৃথক পদার্থ মধ্যে গণ্য। ঈশর কেবল তৎপ্রাপ্তির সহায়। বাহ্মসমাজের মতে এ পণিত্রাণ বিকৃত না হইলেও কার্য্যতঃ চির্কালের কুঅভ্যাস বশতঃ অনেক সময়ে মনে মনে স্বীকৃত হটয়া থাকে। এই দৃষিত পরিআণ মাহ্যকে চিব-দিন ঈশ্বব হইতে দূরে নিঃক্ষিপ্ত করে। ভাবিতে হৃদ্কম্প इय, (य मानूष मिहे चािनकान श्रहे छ क्रेचरका महाधनका পণ স্বরূপে দান করিয়াও এই অসার কাল্লনিক পরিত্রাণ কিনিতে ব্যতিব্যস্ত। বস্ততঃ এই সকল দূষিত সংস্থার বশতঃ ধ্যারাজ্য একদিকে নিতান্ত স্বার্থ ও কপটতা পূর্ণ বলিয়া বোধ হয়। এই দূষিত পরিতাণ মানবের ধর্ম পথের বিষম বাধা। এইজন্ম ইংাকেও আমরা ভার একটী গুপ্ত কণ্টক মনে কবি ৷

**পक्षम कल्टेक भद्रकाम ;--- भर्तकान क्लेक विनाम** বলিয়া কেং যদি মনে কবেন যে, আমবা পরকাল অস্বীকার করি তাহা হইলে তিনি ভুল কবিবেন। আমবা উহার অভিত জনপ্তরূপে বিখাদ করি। তথাপি বলিতেছি যে, স্থামরা মানব সপ্তান, নিভান্ত অবোধ প্রকৃতি বলিয়াই এই জ্লন্ত সভাও আমাদের পক্ষে অপকারক হইয়াছে। আমরা প্র-কালে বিশাস করিতে পারি, কিন্তু পরকালের অবস্থার কলনা ও তদমুষায়ী প্রস্তুত হইবার চেষ্টা উভয়ই ভূল। পরকাল বলিতে যদি পর মুহুর্ত বুঝায়, তাহা হইলেই আমরা দাহদের সহিত পুর্ববাক্য ব্যবহার করিতে পারি। কিন্তু যথন অনস্ত কালের জন্য মাতৃষকে ভাবিয়া ভাবিয়া ব্যতিব্যস্ত হইতেছে, দেখা যায়, তথন তাহা আরও অধিকতর গুরুতর চিস্তার विषय इहेशा में। जाय। वर्षकः मारूष यनि वर्षमान ध्यकि मूहूर्खत অস্ত প্রস্তুত হয়, ভাহা হইলেই তাহার অনন্ত জীবনের সমন্ত মুহুর্ত্তের প্রকৃত সুবাবহাব হইতে পারে। কিন্তু অনেক সময়েই मालूब जानल कविवारजत ठिलाय मध्र थारक, वर्जमारनत ज्यन-बावहात करता व्यथि कात्रकारणत कथा प्रत थाकूक, भन-

মুহুর্ভ সহয়েও মাহুবের সম্পূর্ণ আয়ন্ত না থাকার তজ্জন্ত বাস্তবিক প্রস্তাত হওরা ঘটে না। প্রস্তাত না হইরা কেবল পরকাল পরকাল করিরা মাহুষ প্রবঞ্চিত হর। মাহুষ পরকালে সমস্ত আশা ভরসা স্থাপন করিয়া সমুদায় জীবন করে, নিরানন্দ ভাবে যাপন করিয়া প্রকৃত পরিশুদ্ধ নিহ্নাম ধর্মের বিমল আনন্দ হইতে বঞ্চিত থাকে। প্রকৃত নির্ভরশালী সাধুপুরুষ বর্তমান মুহুর্ভকে যত্ন পূর্বক পবিত্র রাথিয়া পরমুহুর্ভের চিন্তা পরিত্যাগ করেন। কারণ তিনি জানেন সাধনই জীবনের মূলমন্ত্র। এজন্ত আমরা পরকালকে বর্তমান ত্র পরমুহুর্ভের ন্তায় জলস্করূপে বিশ্বাস করি, কিন্তু তৎকালীন অবস্তার করনাও ভজ্জন্ত প্রস্তুত হওয়াকে ধর্মপথে গুপু কণ্টক মনে করি।

## ব্রাহ্মসমাজ।

উৎস্ব—ময়মনসিংহ হইতে শ্রীমতী লক্ষীমণি গুপ্তা লিথিয়াছেন;—

"শ্রেষে শ্রীযুক্ত বাবু শ্রীনাথ চল মহাশয়ের নবপ্রতিষ্ঠিত উপাসনা গৃহে নিম্নলিথিতকপে ভগিনী স্মাজেব ২য় সাম্বংসবিক উৎসব সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। এই উৎসব উপলক্ষে আময়া ক্রণাময়েব অপার ক্রণার প্রতাক্ষ নিদর্শন দেখিয়া ধ্রু ইইয়াছি।

২৮এ সাধাত ব্ধবার—প্রাতে উপাসনা। শ্রীষ্কা স্বন্ধা-স্বন্ধী বিখাস উপাসনার কাঠ্য করেন।

মধাাহে—প্রথিনা সঙ্গাঁত ও সঙ্গীর্ত্তন। প্রবন্ধ পাঠ, সাধুজীবনী পাঠ ও তৎসম্বন্ধে আলোচনা।

অপরাক্তে—সঙ্গাঁত, সংকীর্ত্তন ও উপাসনা। শ্রীযুক্তা বামাস্থলরী চল উপাসনার কার্য্য করেন।

২৯এ আষাঢ় বৃংস্পতিবার—প্রাত্তে সঙ্গীত, উপাদনা।
শ্রীযুক্তা স্থালা বস্থ উপাদনার কার্য্য করেন। মধ্যাহে—
সঙ্গীত, প্রার্থনা, এবং ''আমাদের জীবনেব অভাব ও তাহা
প্রণের উপায়" সম্বন্ধে আলোচনা। অপরাহে—সঙ্গীত
সংকীর্তান ও উপাদনা। শ্রীযুক্তা লক্ষ্মীমণি গুপ্তা উপাদনার
কার্য্য করেন।

৩০এ আষাত শুক্রবাব—প্রাতে সঙ্গীত সংকীর্ত্তন ও উপা-সনা। শ্রীযুক্তা বসপ্তক্মারী চক্রবর্তা উপাসনাব কার্যা করেন। মধ্যাক্ষে সঙ্গীত সংকীর্ত্তন ও প্রাথনা। তৎপরে 'বিপোট' পাঠ ও নৃতন বৎসরের কার্যাপ্রণাণী নিদ্ধাবণ।

মধ্যাকে—সঙ্গীত সংকীত্তন ও উপাসনা। শ্রীযুক্তা কুত্রম-কুমারী বস্থ উপাসনার কাষ্য করেন।"

থলিলপুর ব্রাহ্মসমাজের সম্পাদক শ্রীযুক্ত ঈশ্বচক্র নাথ লিথিয়াছেন;—

"নিম্নলিথিত প্রণালীতে থলিলপুব ব্রাহ্মসমাজের সাম্বসেরিক উৎসব সম্পন্ন হইয়াছে।

ভই প্রাবণ-প্রাত:কালে উৎসবের উরোধন। বার্ চঙীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার উপাসনার কার্য্য সম্পন্ন করেন। বাত্রিকালে সংগীত ও উপাসনা। বাবু ঈশারচক্র নাথ উপাসনা কবেন।

ণই শ্রাবণ—প্রাতঃকালে সংগীত ও উপাসনা, বাবু চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার উপাসনা করেন।—মধ্যাক্তে ১টা হইতে অপরাক্ত ৬३ ঘটকা পর্যান্ত গ্রন্থাদি পাঠ, আলোচনা, সংপ্রসঙ্গ হয়। রাত্রিকালে উপাসনা হয়। বাবুরজনীকান্ত সরকার উপাসনা কবেন।

তত্ত্বিদ্যা সভা—প্রতি সোমবার কলিকাত। সাধনআশ্রমে নিয়মৃতরূপে ভত্তবিদ্যা সভার প্রবন্ধ গঠিত ও
আলোচিত হইতেছে। গত কর সপ্তাহে নিয়লিখিত ব্যক্তিগণ
প্রবন্ধ পাঠ করিয়াছেন ;—বাবু সীতানাথ দত্ত—"শ্রুতি মূলক
বিশ্বাস ও স্বাধীন চিস্তা", বাবু প্রত্লচক্র সোম—"ধর্মজীবনে সন্ন্যাস ও অবকাশ", বাবু প্যারীলাল ঘোষ—"গ্রাক্ষসমাজেব ধর্মোৎসাহ কি কমিয়াছে ? বাবু মনোরঞ্জন শুহ—
"ব্রাক্ষসমাজের ভিত্ত।"

নামকরণ—বরিশালন্থ প্রাক্ষ প্রতি বাবু বরদাপ্রসন্ন রান্ধের প্রথম পুদ্রের নামকবণ সম্পন্ন ইইযাছে। শ্রীযুক্ত নীলমণি চক্রবর্ত্তী আচার্য্যের কার্য্য করেন। বালকের নাম সুধীক্র রাথা ইইয়াছে। প্রমেশ্বর বালককে ধর্মপথে ৰদ্ধিত করুন।

কৃতজ্ঞতা প্রকাশ — শ্রীযুক্ত মহেশ্চন্দ্র ভট্টাচার্য্য তাঁহাব কলেজ ষ্ট্রীটের হোমিওপ্যাধিক ষ্টোর হইতে আবা ও কলিকাতা সাধনাশ্রমের জন্ত নিয়ত বিনামূল্যে ঔষধ দান কবিতেছেন। আমরা দাতাকে অন্তরের সহিত ধন্তবাদ প্রদান করিতেছি।

সাধুদ্ফীন্ত — প্রান্ধ বালিকা শিক্ষালয়ের শিক্ষ্মিতী 
শ্রীমতী কুম্দিনী ঘোষ যথন নলহাটিতে ছিলেন, তথন একদিন কোনও বালককে সঙ্গে করিয়া মাঠে বেড়াইতে যান। হঠাৎ একটা গোক্র সাপ বালকের পদে দংশন কবে। তিনি কিংকর্ত্তব্য বিমৃত্না হইয়া তৎক্ষণাৎ আপন বস্ত্রাঞ্চল ছিডিয়া কত স্থানের উর্চ্চে চ্চবন্ধন করিলেন এবং ক্ষত স্থানে মৃথ দিয়া সমস্ত বিষাক্ত রক্ত চ্যায়া ফেলিলেন। অবসাক্ষ চলচ্ছক্তিহীন বালককে পৃঠে বহন করিয়া প্রান্ধ এক মাইল বাবধান বাসাতে উপস্থিত হইলেন। ক্ষাব্যের ক্লপায় বালকের জীবন রক্ষা পাইয়াছে। এই প্রকার ঘটনায় প্রত্যুৎপর্মতিছের অভাবে প্রান্ধণা বায় লোকে কোন প্রতিকারই করিতে পারে না। আমরা এই মহিলার প্রত্যুৎপর্মতিছ ও সাধু কার্য্যের জন্ত অতি সাহস দেখিয়া বিশেষ প্রীত হইয়াছি। ক্ষাম্বর তাঁহাকে এই সদম্চানের প্রস্থার প্রদান কক্ষন।

শ্রাদ্ধি—পরলোকগত বাবু আশুতোব বহু মহাশরের বার্ষিক শ্রাদ্ধ গ্রে ব্রীটের নিজ ভবনে সম্পাদিত হইয়াছে। শ্রীবৃক্ত নব্দীপচন্দ্র দাস মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন।

পরলোকগত জগদীখর গুপ্ত মহাশরের বার্ষিক প্রাদ্ধ প্রীপণ্ডে তাঁহার বাড়ীতে সম্পন্ন হইরাছে। এতত্পলক্ষে কলিকাতা হইতে বাবু কাশীচক্র ঘোষাল তথার গমন করিরা আচার্য্যের কার্য্য করেন। জগদীখর বাবুর বিধবা পদ্মী প্রাদ্ধের দিন অনাথদিগকে সাহায্য দান করিরাছেন এবং সাধনাপ্রমে ২ টাকা দিরাছেন।

সূত্যু সংবাদ—আমরা অতীব হংধের সহিত করেকটা দৃত্যু সংবাদ প্রকাশ করিতেছি। আমাদের কটকত্ব বন্ধ শীনুক বাবু ফৈলকানাধ চক্রবর্তীর পত্নী কিশোরীবালা চক্রবর্তী

একটি সন্তান রাথিয়া অকাণে পরলোক গমন করিয়াছেন। এই শোকে তাঁহার আত্মীর অজন সকলেই ব্যথিত। পরমেশ্বর তাঁহাদের প্রাণে শান্তি প্রদান করুন।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের ভৃতপূর্ব সভাপতি পরলোকগভ শিবচন্দ্র দেব মহাশরের সহধর্মিণী অখিকা দেব মহাশরা প্রকোক গমন করিয়াছেন। এতত্পলকে কলিকাতা ছই স্থানে আৰু-পদ্ধতি অনুসারে আদ্ধক্রিয়া সম্পন্ন হইয়াছে। প্রথমত: শহর ঘোষের দেনস্থ ভবনে তাঁহার কক্সা খ্রীমতী ক্ষেমদাস্তুদরী মিত্র আছে করেন। ইনি বিখ্যাত উকীল বাবু উপেক্রনাথ মিত্র মহাশয়ের পত্নী। তিনি এতত্পলকে সাধনাশ্রমে 🗘 টাকা এবং সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে ৪১ টাকাও অস্ত হানে ১১ টাকা দান করিয়াছেন। তৎপর অপের কস্তা শ্রীমতী রমাস্থলরী ঘোষ হুকিয়া ট্রীটস্থ ভবনে প্রাদ্ধ করেন। ইনি জীযুক্ত বাবু ছুকড়ি ঘোষ মহাশয়ের পত্নী। এই আছোপলক্ষে তিনি ক্লিকাতা কুঠাশ্রম, অনাথাশ্রম ও দাসাশ্রমেব লোক্দিগকে প্রচুর পরিমাণে ভোজন করাইয়াছেন এবং সাধাৰণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচার বিভাগে ১০১ টাকা দান কবিয়াছেন। উভয় आफ्रिहे औयुक नवनी पहला नाम महानय चाहारपात्र काया करवन।

গত ২০শে জুলাই ২১০ ১নং কণ ওয়ালিস ষ্ট্রাট্ছ তবনে বাবু ভুবনমোহন ঘোষ মহাশয় পরলোক গমন কবিয়াছেন। তিনি বছাদন ধরিয়া ব্যাধি মন্ত্রণা ভোগ কবিতেছিলেন। কিন্তু তিনি মৃত্যুব জন্ত বিশেষভাবে প্রস্তুত হইয়াছিলেন। মৃত্যুর পূর্বে যথন বোগ যন্ত্রণা ভয়ানক বৃদ্ধি পাহয়াছিল, যথন ভূত্য ও আত্মীয়গণের যথোচিত সেবা ও ঔষধ সেবনেও যন্ত্রণার হাস হইত না, তথন ক্রমস্পীত করিতে বালতেন। সংগীত আবস্তু হইলে তিনি শাস্ত হইতেন। তিনি যথনই যন্ত্রণায় ছটকট করিয়াছেন, আত্মীয়গণ তথনহ সংগাত করিয়া সাম্বনা কবিয়াছেন। মৃত্যু এক দিন সকলেবই হইবে, কিন্তু থিনি ঈশরের নাম কারতে করিতে, তাঁহার সাহত যোগ যুক্ত হইয়া ভত্তাগ করিতে পারেন তিনিই ধন্তা। প্রমেশর তাঁহার অনাথাপত্নীর প্রাণে শাস্তি প্রদান কর্কন।

্ কোনও ,আন্ধ কবি একটি আশা-সঙ্গীত রচনা করিয়াছেন, আমরা এস্থলে তাহা মুদ্রিত করিলাম।

আশা সন্ধীত।

("তোমার কথা হেথা কেহ ত বলেনা" হুর) ওরূপ নয়নে, ছেরেছে যে স্থা, ৰগত আড়ালে গোপনে, পথহারা হয়ে, ভ্রমে না সে কভূ, নিবিড় সংসার-কাননে। লভে সে তোমায় ববে বায় চলে, थाकिल क (मान थाक ७व काल. আঁথি দিঠি তার স্থির অনিবার ও चानम (श्रेम-छर्ता। তুমি আছ তার নাহি আর কেহ, চির আপনার বিরামের গেহ, জনকের প্রীতি, জননীর স্নেহ পার সে তোমার সদনে। षायुत्रवि यत्व ष्यञ्चानत्व यात्र, মৃত্যুর অধাধারে আসে সমুদার, त्म **कां**धात भारत रमस्य हात्रियादत्र জ্যোতির্শন্ন তব আননে ; विमानम ब्राम कृष्ट धर्च-प्रनि,— व्यमत्र व्यमती करत्र व्यत्र श्वनि, স্বরণ স্যোতিতে মধুর সঙ্গীতে লভে সে জীবন মরণে।

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিক।।

৯ম সংপা। ১৭শ ভাগ।

১লা ভাদ্র রহস্পতিবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম দম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২১০
মফললে
প্রতি থণ্ডের মূল্য প্ত

## প্রার্থনা

হে প্রভো। তুমি আমাদিগকে যে আধ্যায়িক ধর্মে দীক্ষিত করিয়াছ, ভাহার উচ্চতা আমেরা কি'রপে রক্ষা করিব ? वाहित्वत्र ध्रभ: मील निर्दिनग्रामिटक कृषि मञ्जरे नड, नक्ता আনরা তাহা দিভাম। তুমি যে প্রকারে পূকা চাও, তাহা ভোমাকে অর্পণ করা আমাদের ছর্মল প্রাকৃতির পক্ষে অভীব দু সাধ্য। তোমার সতা ধর্মের আধাাত্মিকতার এবং আপনা-দেব প্রকৃতির চুর্বলভার বিষয়ে যথন চিম্বা করি, তথন আমবা অবসর হইয়া পড়ি৷ আরু কতদিন আমরা অস্থরের ছক্ষণতার দার। পরাভূত হইব, আদ্ম ক্ডদিন প্রর্ভিকুলের স্থিত সংগ্রামে প্রাঞ্জিত হইব ? হে অম্বর্থানি, তুমি আমাদেব সকল যাতনা দেখিতেছ, আমাদের আকাজ্জা কিৰূপ এবং আমাদেব জীবন কিরূপ তাহাও জানিতেছ। আমরা নিজ বলের উপর নির্ভর করিয়া সংগ্রাম ক্লেত্রে অন্থাসর হুই বলিয়া বার বার পরাক্ত হইয়া যাই। তুমি জামাদিগকে বিশ্বাসী ও নির্ভরশীল কর, যেন আমরা সর্বাদা সর্বাস্তঃকবণে তোমারই শক্তি এবং তোমাবই ককণার উপরে নির্ভর কবিতে পারি।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

রাজিদিক ধর্মভাব—রজোগুণের প্রধান লক্ষণ অহলার
— লাফুশক্তিতে বিশ্বাস। যে ভাবের মধ্যে এই আত্ম প্রভাববোধ অধিক পরিমাণে বিদামান, ভাহা রাজিদিক ভাব।
কথন কথনও মানুষেব ধর্মভাব এবং ধর্মানুষ্ঠানের মধ্যেও
এই আত্ম-প্রভাব-বোধ লুরাগ্নিত ভাবে কার্য্য কবে, তথন
সেই ধর্মভাবকেও রাজিদিক-ভাব-সন্তুত মনে কবা যায়।
বেথানেই রাজিদিক ভাব প্রবল সেই খানেই সাধক দলের
মধ্যে সামান্ত সামান্ত কারণে বিবাদ; কারণ সকল ব্যক্তিই
আপনার ব্যক্তিত্বকে প্রবল রাখিতে চার, প্রভাবেই নিজে
একটা কিছু করিতে চার, নিজের অভিরুচি অনুসারে চলিতে
চার, এবং নিজেরাই গৌরব অল্বেষণ করে। বিশুদ্ধ সাত্মিক
ধর্মভাবের লক্ষণ এ প্রকার নহে। সে ভাবের ছারা চালিত

হইলে লোকে,নিজের গৌরব অবেষণ না করিয়া ঈশরেবই গৌরব অবেষণ করিয়া থাকে; স্তরাং সেন্তলে সাধকগণের মধ্যে মিলনের স্থান অধিক পরিমাণে লক্ষিত হয়। এই ভাবেই বোধ হয় সে টপল করিছবাসিদিগকে তিরস্বার করিয়া ণিথিয়াছিলেন—"ভোমরা carnal অর্থাৎ পার্থিব ভাব দারা চালিত। তাহার প্রমাণ এই, তোমাদের মধ্যে এত বিবাদ।" তিনি যাহাকে carnal বা পার্থিব ভাব বলিয়াছেন, তাহাই আমানের দেশীয় রাজনিক ভাব বলিয়া উক্ত হইয়াছে। এই আদর্শের দ্বারা বিচার করিলে ত্রাহ্মদিগের কার্য্যকলাপ অনেক পরিমাণে রাজদিক ভাব-সম্ভূত বলিয়া প্রভীত হটবে। সভ্যামুবাগ ও ঈশ্বর প্রীতির ছারা চালিত হইয়া আমরা সকল कार्या कति ना। आभारमत अत्नक कार्यात अञ्चल आग्र প্রভাব-বৃদ্ধি সমিহিত থাকিয়া গুপ্তভাবে কার্য্য করে। স্থতরাং সে সকল কার্য্যের ফল প্রেমকে বর্দ্ধিত না করিয়া অপ্রেমকেই উৎপন্ন করে। যাহারা ব্রাহ্মনমাজের কার্যাক্ষেত্রে কার্য্য কবি তেছেন তাঁহারা যদি মধ্যে মধ্যে আত্ম-পবীকার দাবা খীয় স্বীয় কার্য্যের প্রকৃতি ও ভাব বিষয়ে পর্য্যালোচনা করেন, তাহা হইলে অনেক উপকার হইতে পারে।

ব্রাহ্মপরিবারে জ্ঞানালোচনা— এ। ক্ষ পরিবার এই শক্ষা উচ্চারণ করিলে কিরপ ছবি চক্ষের সমক্ষে উপস্থিত হয় ? আমর। প্রাচীন সমাজে পারিবারিক জীবনের যে আদশ দেখিয়াছি, ও যাহার মধ্যে আমরা বর্দ্ধিত হইয়াছি, প্রান্ধ পরিবারের আদশ ভাহা হইডে বিভিন্ন কিনা ? একথা বলাব ভাৎপর্য্য একপ নহে, যে প্রাচীন সমাজের যে পারিবারিক জীবনের আদশ ভাহার মধ্যে স্থলর এবং স্পৃহনীয় বিষয় অধিক নাই। কিন্তু আমাদের বলাবার উদ্দেশ্য এই, ব্রাহ্ম পবিবাবের আদর্শ প্রাচীন সমাজের পারিবারিক আদর্শের অম্বর্মপ নহে। বাল্যবিবাহ নিবারণ, নারীগণের শিক্ষা ও নারীর স্বাধীনতা এই যে ত্রিবিধ সংস্কার কার্য্যে ব্রাহ্মগণ হন্তার্পণ করিয়াছেন, এই ত্রিবিধ সংস্কারের গতিই ভাবী ব্রাক্ষণমাজের পারিবাবিক জীবনের আদর্শকে নুহন করিয়া গঠন করিবার দিকে। পুত্র কন্তাদিগকে প্রাপ্ত বন্ধন্ধ করিয়া বিবাহ দিবার ফল এই হইবে, যে কালে প্রাচীন প্রকারভ্কে প্রথা পরিবর্ত্তিত হইয়া যাইবে।

প্রাচীন সমাজে যেমন বালকগণ পিডা বা জ্যেষ্ঠ ভ্রাডার উপরে निर्चय कतिया विवाह करत, नवांशंख वर्षण चन्नत्र मांगनाधीन হ্ইয়া বাস করে, ভাবী ব্রাহ্মসমাজে এক্নপ নিষম আর থাকিবে না৷ পিতার আয়ের উপরে নির্ভর করিছা পুত্রগণ বিবাহ কবিবে না, এবং বয়ঃপ্রাপ্ত পুত্রবধূগণও খঞ্জর সম্পূর্ণ শাসনাধীন থাকিবে না। যদিও এখন কোন কোনও ব্রাহ্মপরিবারে প্রাচীন রীতি কিয়ৎ পরিমাণে দেখা যাইতেছে, অর্থাৎ পুত্রগণ বিবাহ করিয়া পিতামাতারই অবীনে বাস করিতেছে, এবং ব্ৰাহ্ম পুত্ৰবধুগণ খঞ্জ শাসনাধীন থাকিতেছেন, কিন্ত ইহা এক প্রকার অবশ্রস্তাবী বলিলেও হয়, যে কালে এক দম্পতী এক একটী পরিবার এক বিবাহিত ত্রান্ধ এটা প্রাচীন সমাজের প্রথা হইতে বিভিন্ন। আর একটা শুরুতর বিষয়ে প্রভেদ থাকিবে। প্রাচীন সমাব্দের একারভুক্ত পরিবার মধ্যে পতি ও পত্নীর অথবা পরিবারস্থ পুক্ষ ও মহিলাগণের মধ্যে সাহচর্যা নাই। দিবসের व्यक्षिकाः म कान शुक्रवशन वाहित्र महतन शुक्रवितिशत मरधाह বাস করেন, নারীগণ অন্তঃপুরে নারীকুলের মধ্যে অবহিতি করেন। এমন কি পতি পত্নীতে রক্ষনীর করেক ঘণী বাতীত অন্ত সময়ে সাক্ষাৎকার সন্মিলন অথবা ভাব ও চিন্তার বিনিময় हरेवात छेशाव नारे। এरे य शतिवात्र श्रूक्य । मिला-দিগের সাহাযোর অভাব ইহার অনেক বিষময় ফল প্রাচীন সমাজে প্রতিদিন ঘটতেছে। নারীগণের শিক্ষা ও সামাজিক স্বাধীনতার রীতি প্রচলিত করিয়া ত্রান্ধগণ পরিবারস্থ পুরুষ ও মহিলাগণের পরস্পর সহায্যের স্তত্তপাত করিয়াছেন। কালে এই সাহায্য অধিক পরিমাণে স্থাপিত হইলে ত্রাক্ষ পরিবার স্কল প্রাচীন সমাজের পরিবার স্কল হইতে বিভিন্ন আদর্শে গঠিত হইবে। কিন্তু যে উদ্দেশ্তে নারীগণের শিক্ষা ও স্বাধীনতার বীতি প্রবৃত্তিত হইমাছে তাহার ফল এখন ও আশাসুদ্ধপ দেখা যাইতেছে না। অনেক ব্রাহ্মপরিবার চালচগ্রে প্রাচীন পরিবার হইতে কিছুই বিভিন্ন নহে। সেথানেও পরিবারস্থ বাহিরে থাকেন, নারীগণ নারীকলের মধ্যে বাস করেন। চারিদিকের জ্ঞানালোচনা ও জগতের বিবিধ প্রকার উন্নতির দঙ্গে সে সকল ত্রাহ্ম পরিবারের কোনও দম্পর্ক নাই। সে সকল আন্ধ গৃহস্থের গৃহে এমন একটা ঘর নাই যেখানে সারংকালে পিতা. মাতা, ভাই, ভগিনী সকলে নিক্ষেগ চিত্তে ছই দণ্ড বসিয়া নানা বিষয়ে আলাপ ক্রিতে পারে, ছই থানা থবরের কাগজ বা মাসিক পত্রিকা পড়িতে পারে বা জগতের উন্নতির কোনও সমাচার লইতে পারে। ব্রাহ্ম পরিবার মধ্যে জ্ঞানালোচনার নিয়ম নাই, স্নতরাং ব্রাহ্ম ত্রান্মিকাদিগের জ্ঞানে ক্লচি জন্মিবে কিরূপে ? পুত্র ক্সাগণ জ্ঞান-শ্রুহা লইরা বর্দ্ধিত হইবে কিন্ধপে ৪ আক্ষ্যিগের যে জ্ঞানে ক্ষচি জন্মিতেছে না, জগতের উন্নতির সহিত সংস্রব शाकिए एक ना. देशांत्र कृत छितियार कि माठनीय दहेत. তাহা চিন্তা করিলে বিষয় হইতে হয়। ত্রাক্ষদমাঞ্জ জগতের উন্নতি ও উন্নত জ্ঞান হইতে ভ্ৰষ্ট হইয়া অজ্ঞতা ও অশ্ৰদার निम्म পिएमा याहेर्द, এবং বিবিধ প্রকার ফুর্নীতির আলম

र्हेर्त। এই कांत्रण त्यांव रत्न निष्ठा उत्कालाननात्र स्नात्र ভানালোচনা ব্রাহ্ম পরিবারের একটা দৈনিক নিয়মের মত ছওয়া আবশুক। এই সকল বিষয়ে চিন্তা করিতে প্রবৃত্ত इंटेरनरे, रेश्त्राक शतिवादतत्र देवर्ठक पदतत्र (drawing room) কথা শ্বরণ হয়। নিঠাবান হিন্দু গৃহত্তের গৃহে যেমন একটা ঠাকুর মর রাখিতেই হয়, সেইরূপ মধ্যবিক্ত ইংরাজ গৃহজের গুছে একটা ডুলিং ক্সম অর্থাৎ সাধারণের বসিবার ঘর রাখিতেই হয়। ঐ ধরটাতে কেহ রাত্রে শম্ন করে না বা সেখানে আহারাদি করে না, সেটা কেবল সকলের ৰসিয়া আলাপাদি ও আগন্তকদিপের সহিত সাক্ষাৎ করিবার জন্ত থাকে। স্চরাচর বৈকালে আহারাত্তে পরিবারত্ব পুরুষ ও মহিলা-श्रम मकरन के घरत्र शिक्षा जामीन इन ; उथन पिरनद मःवाप, জগতের উন্নতির বিশেষ বিশেষ সমাচার, বিজ্ঞানের ন্বা-বিষ্কৃত ভত্তাদির বিবরণ ও প্রতিবেশিদিগের স্থুণ হৃংথের কথাদি বলিতে থাকে। এক্লপ একটা গৃহ না থাকিলে প্রত্যেককে নিজ নিজ শয়ন গৃহেই থাকিতে হয়, তাহাতে পারিবারিক সম্মিলন হইয়া উঠে না। আমাদের বোধ হয় প্রত্যেক মধাবিত আহ্ম পরিবারে একটা সাধারণের বসিবার ঘর রাথার নির্ম প্রবর্ত্তিত করা ভাল, তদ্ভিন্ন পারিবারিক সম্মিলনের প্রথা প্রবর্ত্তিত हहेरत ना এवः পারিবারিক সম্মিলনের প্রথা প্রবর্ত্তিত না हहेरल পরিবার মধ্যে জ্ঞানালোচনাও প্রবর্ত্তিত হইবে না।

রামমোহন রায় সমিতি ও রামমোহন রায় পুস্তকালয়-কতিপন্ন ত্রাহ্মবন্থর উৎসাহ ও মত্রে কিছুদিন হইতে রামমোহন রায় সমিতি নামে একটি আলোচনা সভা স্থাপিত হইয়াছে। সপ্তাহে সপ্তাহে সকলে সমবেত হইয়া রামমোহন রায়ের চরিত্র ও কীর্ত্তি বিষয়ে অনেক আলোচনা করিয়া থাকেন। এক এক জনের প্রতি এক একটা বিষয়ের অবতারণা ক্রিবার ভার অর্পিত হয়, তিনি ভবিষয়ে একটা প্রবন্ধ পাঠ করেন, ভৎপরে সেই সম্বন্ধে আলোচনা হইয়া সভা ভঙ্গ হয়। এতংবাতীত ष्मद्र पिन रहेल करव्रकस्त्रन वसूत्र উদ্যোগে वामरमाहन वाब পুস্তকালয় নামে একটা পুস্তকালয় স্থাপিত হুচবার আয়োজন হইতেছে: আমাদের পরলোক গত বন্ধ কার্ত্ক হেমারগ্রেণ পুত্তকালয়ের উদ্যোগ করিয়াছিলেন, ইহা ভাহারই পরিশাম মাত্র। এই ছইটা অমুষ্ঠানকে ব্রাশ্বসমাজের একটি স্থমহৎ কল্যাণের উপায় স্বরূপ করা ঘাইতে পারে। আমা-**एमत প্রস্তাব এই, ক্তিপয় ফুডবিদ্য অবিবাহিত ত্রাক্ষ্যুবক্** একত্ত হয়্যা একটা বাড়া ভাড়া করুন এবং সেই সানে তাহারা পুত্তকালয়ে পাঠাগার ও আলোচনা গৃহ বাস ক্সন। হইবার উপযুক্ত করেকটা ঘর থাকিব। विटमयकः दम घत्रकान यम अक्रथ इत्र. याहारक निया क्रमध बिंगरण व्याग मञ्जरे रूप। प्यर्थाए त्यन वायू পश्चित्विष्ठ, সুপরিষ্ণত, শৃত্যলাহুদারে সক্ষিত ও উপযুক্ত আলোকছারা মাজিত হয়। দেই পাঠাগারে ঐ ভবনত ব্রাহ্মগণ ও ভারির वाहिएतत्र आभा युवकशन मन्त्राकारम धक्क रहेवात्र मित्रम প্রাক্তিবে। বিবাহিত ত্রাহ্মগণ অধিকাংশ সময় খীয় খীয়

हाति शिक्तितन, किन्न छाँशति के मोठागाति नाश्यार्थ व्यर्थ मान क्रियन এवः मशास्त्र व्या हरे अरु मिन छथान याहेर्यन। अरे माठागात्र रहेर्ड, खान खान मानिक धिमिक भिक्ति गहेरात त्रीं कि ध्यविक्रि रहेर्द, खिन खेरके छेरक्रे उरक्रे नवध्यकानिङ श्रेष्ठ क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया अर्थ क्रिया क्

সাময়িক উৎসাহ--- খনেক ত্রান্দের জীবনেই একটি কুলক্ষণ দেখা যায়, তাঁহারা চির জীবন কোনও লক্ষ্য সাধনে নিরত থাকিতে পারেন না। তাঁহারা চির জীবন মন প্রাণ निया সাধন করিবেন বলিয়া যাহা অবলম্বন করেন, ছদিন বাইতে না যাইতেই তাহা পরিত্যাগ করেন এবং উৎদাহ ও উদাম ব্রাস প্রাপ্ত হয়। তাঁহাদের উৎসাহ তৃণের অগ্নির ক্লায়; भहमा প্রজ্ঞালিত হর; **কিন্তু অরক্ষণ পরেই নি**বিয়া যার। कछ ब्राक्ष कछ नश्कार्या श्रवेष भगेरान। कार्याविष्ठ कविर्वात সমন্ত্র কত উৎসাহ, আনন্দ, প্রফুলতা। তাহাদের উদাম দেখিয়া শুনিরা সকলেরই আশা হইল। কিন্তু করেক দিন পর জানা গেল যে, যিনি মহোৎসাহে কার্য্য আরম্ভ করিয়াছিলেন, সাল্লিপাতিক রোগীর ভার তাঁহার চিত্ত অবসন্ন হইয়াছে, তিনি আরক্ত কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া অস্ত বিষয়ে মনোযোগী হইরাছেন। এই শ্রেণীর ব্রাহ্মদিগের দারা কত সভাসমিতি স্থাপিত হয়, কত উপাসনা, আলোচনার আয়োজন হয়, কিন্তু দেখিতে দেখিতে विनुष्ठ इटेग्रा घात्र । এ সকল দেথিয়া শুনিয়া ব্রাহ্মদিগের কার্য্যের প্রতি অনেকেই আত্বাবিহীন হইতেছেন। এরপ জীবন দার। কথনও কোন প্রকার উন্নতির আশা করা গাইতে পারে না। এস্থলে মহর্ষি দেবেক্সনাথের জীবন অমুকরণীয়। তিনি যাহা ধরিরাছেন, তাহা অদ্য পর্যান্ত প্রাণপনে সাধন করিতেছেন। তাঁহার সকল কার্য্যের সহিত আমরা মিলিতে পারি না বটে; किन्द धक्या बाक्समाख्य मुक्ककर्ण चौकान कतिर्वन, र्योवत्मन श्रावरस्थ (य धर्म्याप्त्रांत, कार्याप्त्राह जाहात श्रात প্রজ্ঞালত হইরাছিল, সেই সময়ে যে সাধন প্রাণালী অবলম্বন করিয়াছিলেন, বার্দ্ধকো রোগ শ্যাতেও সেই উৎসাহ বহি সম-ভাবে তাঁহার অন্তরে প্রজ্ঞানিত রহিরাছে ও সেই সাধন-প্রণালী অকুল মহিয়াছে। জরাজীর্ণ হইয়াও প্রাহ্মধর্মের প্রতি ভাহার অমু-ब्राज्ञकानुमाख । इत्र हम स्व नारे। जिनि त्य, कार्या कीवत्मन ব্রত-স্বরূপ সাধন আরম্ভ করিয়াছিলেন, স্থতরাং আজীবন তাহা পালন করিরা আসিতেছেন। মহবির স্থার প্রত্যেক ব্রাহ্মকেই কর্মবানিষ্ঠ হইতে হইবে। শক্ষাের স্থিরতা ও সাধনের দুঢ়তা এই উভয় সাধন ব্যতীত স্থায়ী ও স্থদ্য ধর্ম-জীবন গঠিত इत्र ना। व्यावता व्यत्तरक या धाकात्र क्रिक छे दशाह कार्या করি, তাহা দেখিলে আমাদের প্রকৃতিকে বালকের প্রকৃতির ক্তার অসার ও লঘু বলিয়া বোধ হয়।

সাধনে বিশাস—কোনও কোনও ব্রাহ্ম বলিয়া থাকেন
"এডদিন সাধন ভজন করিতেছি; কিন্তু সাক্ষ্য দিতে পারি
এমনত কিছুই পাইলাম না। আরাধনা, ধ্যান সকলই
কর্মার ক্সায় বোধ হইতেছে। রিপুগুলিকে দমন করিতে
পারিতেছি না, প্রলোভন দূর হইতেছে না। দশ বৎসর
পূর্বে বেথানে বে অবস্থায় ছিলাম, এখনও সেই অবস্থাতেই
আছি।" সাধনে অবিশাসই ইহার মূল কারণ।

আপানে ও চীনে সম্প্রতি যুদ্ধ আরম্ভ হইরাছে। চীন অতি বিস্তৃত রাজ্য, তাহার সৈক্ত ৰল অপরিমেয়। বীরপ্রসবিনী ফ্রান্স একবার চীনের কাছে পরাত্তব স্বীকার করিয়াছে। জাপান অতি কুদ্র রাজ্য, সৈক্ত সংখ্যা অতি কম। ধন বল, बन वरन हीरनत निकृष्ठे नश्या। किन्न छारा रहेरन कि रत्र, ৰাপান সাধনার বিখাসী। ৰাপান পাশ্চাত্য প্রণালীতে সমর শিক্ষা করিয়াছে। ভাহার বিখাস বে, এই সাধন বলে সে চীনের শক্ষ শক্ষ দেনাক্ষে পরাভূত করিতে সবর্থ হইবে। এই বিখাস থাকাতেই যুদ্ধের আবোজন। সাধনার বিখান থাকিলে আধ্যাত্মিক রাজ্যেও লাধক এ প্রকার রিপু ও প্রলোভনের সহিত সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইতে পারেন। কোনও विवरत जाहात्र निजामा नाहे। भूर्व खाल नत्वारमारहत्र महिज विनि जमूमन कार्या अरवभ कतिरा भारतन, छाँबात कम कि १ তিনি ব্ৰহ্ম মন্ত্ৰ শিক্ষা করিয়াছেন। সাধনায় বিশ্বাসী ব্যক্তি रियान याहेरवन, रम्थारमहे कीवल छारवर পরিচয় প্রদান क्तित्वन । वाहात क्लाब, खेशामनात ममत्र, काद्या खशरख, नकन ऋत्महे छाहात्र माहम, व्यथावमात्र मृत्र्छा, উৎमाह दिश्या সকলে বিশ্বিত হইবে। সাধনার বিখাস ভিন্ন কেহই পাপের সহিত সংগ্রামে প্রবৃত হইতে পায়ে না। সাধনায় বিখাসই সাধুতার লকণ।

অলখ নিরঞ্জন—মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর তাঁহার রাক্ষ
সমাজের পঞ্চবিংশতি বংসরের পরীক্ষিত কুরান্তে লিথিয়াছেন,
"একদিন রামমোহন রায় বলিলেন যে, 'ভাল ভাল গায়ক
সংগ্রহ করিয়া মধ্যে মধ্যে রাক্ষনমাজে সংগীত দিলে ভাল হয়,'
অমনি গুণী গায়ক সকল সেথানে এক্তিত হইল এবং নানা
ভাবের সংগীত চলিল। রামমোহন রায় বলিলেন, 'আলথ
নিরঞ্জন গাও' তথন সেই অবধি ব্রহ্মসঙ্গীত হইতে লাগিল।
তাঁহার সঙ্গীদিগের মধ্যে এতটুকও তথন কাহারও বুঝা হয়
নাই। যে, ব্রাক্ষসমাজে সংগীত পাইতে বলিলে ঈশবের
সংগীত গাইতে হয়।"

"অলথ নিবঞ্জন" এই সঙ্গীতটী রাজা রামমোহন রারের জীবন সঙ্গীত ছিল। ইহার প্রত্যেক অক্ষরের সহিত তাঁহার আধাাত্মিক রক্তের যোগ ছিল। সঙ্গীতে "অলথ নিরঞ্জন" প্রচারে "অলথ নিরঞ্জন" উপাসনায় ও আলোচনায় সর্ব্বত্ত সকল সমর সেই একমাত্র মহামন্ত্র "অলথ নিরঞ্জন।" যথন তিনি পিতালাতার জেহ-ক্রোড়ে পালিত হইতেছিলেন, সেই বোড়শান্ত্র বরসে ভাগবত ও ইসলাম প্রভ্ পাঠের সময় ক্ষরে যে ভাব-কুন্ত্র অভ্রিত হইরাছিল, অলথ নিরঞ্জনে

তাঁহারই বিকাশ। তিনি চির জীবন সেই একই ভাব সাধন, একই ভাব আলোচনা ও প্রচার করিয়া গিয়াছেন। প্রাণের অতি প্রিয়তম স্থানে যে ভাব সংরক্ষিত করিয়া যোড়শ বর্ষের বালক রাধা নগরের স্থান্য বাস ভবন পরিত্যাগ করেন; তির্কতের বৌদ্ধ মণ্ডলীতে, রঙ্গপুরের কার্যাক্ষেত্রে, বারানসীর অধায়নে, কনিকাতার আলোচনায় ও সাধনে যে ভাব দিন দিন প্রস্কৃতিত ইইয়াছিল, তাহাই হৃদয়ে ধারণ করিয়া ব্রিষ্টল নগবে রোগ শ্যায় তিনি ইছলোক লীলা সম্বরণ করেন। শৈশবে, প্রৌড়ে, বার্দ্ধক্যে দেই একই কথা, একই সাধন, একই ত্রাম্ম্বণ অলথ নিরঞ্জন।"

চক্ষের উপর দেখিলাম, ব্রাহ্মসমাজে কত জন মন্তক উন্নত করিয়া দাঁড়াইলেন, বক্তৃতায়, আলোচনায় কত লোককে ব্রাহ্মসমাজের দিকে আরুট্ট করিলেন, ব্রহ্ম দর্শন করিলেন, ব্রহ্ম দর্শনের কথা বলিলেন, কিছু কাল পর উঁহোরা আবার বিপরীত হার ধরিলেন। এক সময় বজ্ঞ-গন্তীর নীনাদে যে সকল কথা দেশে প্রচার কবিয়াছিলেন, কিছুকাল পরে নিজেই তাহার বিরুদ্ধাচন্ত্রণ করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। এরূপ চক্ষলতার কাবণ কি? কাবণ এই যে, এই শ্রেণীর ব্রাহ্মণণ দাঁডাইবার কোনই স্থল প্রাপ্ত হন নাই। যিনি সত্য স্বরূপকে ধবিতে পারিয়াছেন. তিনিই আলোকে অন্ধ্রকারে, বিপদে সম্বন্ধে, তঃথে স্থাথ একই মন্ত্র জ্বপ কবিতে পারেন, এক কথা বলিতে পারেন । যাঁহারা সেই ভূমা প্রব্রহ্মের সহিত পরিচিত হইতে পারেন নাই, তাঁহাবা কি কবিয়া আজীবন এক মন্ত্র জপ করিবেন ?

সতা বস্ত্রব সঞ্চিত সাক্ষাৎ না হইলে কেছই এক স্থানে স্থির ভাবে দাঁডাইতে পারেন না। তাঁহাকে নিশ্চরই মধ্যে মধ্যে কুপণে যাইতে হইবে। সমাজে তিনি সাধুতক বলিরা পরিচিতই হউন, শিষা-সেৰকের স্তৃতি দারা তাঁহাব তৃপিলাভ হউক, তাঁহাব সাময়িক মত লোকে গ্রহণ করুক, তাহাতে কিছু আসিয়া যায় না। সকল আবরণ ভেদ করিয়া তাঁহার চঞ্চলতার চিক্ত প্রকাশিত হইবেই হইবে এবং হঠাৎ এমন সময় উপস্থিত হইবে যে, যথন তট্যাতিনী পদ্মার তীরস্থ ভূথণ্ডের কায় সেই দল ভগ্ন হইয়া যাইবে। সত্য স্করপে বিশ্বাস্থাপন কবিতে পাবিলে, বিনাশ নাই, অস্থিবতা চঞ্চলতা গাকেনা।

নাবিকগণ ক্লশ্য জলধিতে গ্রুব নক্ষত্র অবলম্বন করিয়া তবণী চালায়। প্রতিকৃল বাযুতে, তণ্লাঘাতে সময় সময় তবণী পণ্ডপ্ত হয় বটে; কিন্তু নাবিকের লক্ষা দির থাকায় অবশেষ গম্য ভানে উপনাত হইয়া থাকে। তজ্রপ সময় সময় নানাপ্রকার ঘটনা পরন্পাবা দ্বারা আক্রান্ত হইয়া সাধক পদ্যালিত হইলেও, লক্ষা ঠিক থাকিলে কথনও প্রকৃত পথ হইতে দ্বে সরিয়া পড়েন না। পদস্থলিত ও পথচ্যুত এক কথা নহে। বিশ্বাসী নানা বাধা বিদ্ন অতিক্রম করিয়া অবশেষে সেই দেবাধিদেবের মন্দিরে উপস্থিত হইয়া থাকেন। অবিশ্বাসী চঞ্চলিত্ত মানব ঘ্রিয়া ফিরিয়া অন্ধ্বারের মধ্যেই বাস করে। ক্ষাধিশ্বাসী একদিন সাকার, আর একদিন নিরাকার, একদিন

কালী ছুর্গা আর একদিন ব্রহ্মা এইরূপ অন্থিরভার্ভেই বাস করে। বিশ্বাদী ব্রাহ্ম চিরদিনই এক কথা বলেন "অলথ নিরঞ্জন।"

মহাত্মা রামমোহন রায় এই শিক্ষা দিয়াছেন যে, সকল
ধর্মশাল্রের শেষ নিগৃঢ় মীমাংসাই প্রাহ্মধর্ম, একমাত্র নিরাকার
ক্ষেষ্টিভিতি-প্রলম্ব-কর্ত্ত। পরমেশ্বরই মানবের উপাত্য। এই
উপাসনাই তাঁহার আজীবনের সম্বল ছিল। তিনি যে মহামত্র
সাধন করিয়া সিদ্ধিলাভ করিয়াছিলেন, প্রাহ্মগণ সেই মহামত্র
দৃঢভাবে ধারণ করিতে পারিলেই মৃক্তিলাভ করিবেন।
চঞ্চলতা, অভিরতাতে ধর্ম হয় না বরং কুপথে গিয়া জনসমাজেব
ও নিজের অমহল সাধন করা হয়।

শাধুর লক্ষণ—ভক্তচ্ডামণি শ্রীচৈতক্ত যথন নীলাচলে বাস করিতেন, সেই সমর্যে প্রতি বৎসর বঙ্গদেশীয় নৈক্ষবগণ তাঁহার সঙ্গলাভ করিবার জক্ত তথায় গমন করিতেন। একবার ক্লীন-গ্রামবাসী সভারাজ বাঁ প্রভৃতি কয়েকজন শিষ্য গৃহস্থ-বৈষ্ণবের কর্ত্তবা সম্বন্ধে চৈতক্তদেবকে জিল্ঞাসা করিলে তিনি বিন্যাভিলেন, ভগবানের নামসংকীর্ত্তন ও বৈষ্ণবসেবা অর্থাৎ সাধুসজ্জনের পরিচর্য্যা হারাই গৃহস্তগণ পরিত্রাণ লাভ করিবেন। সভারাজ বাঁ বৈষ্ণব চিনিবার উপায় কি জিল্ঞাসা কবিলেন। চৈতক্ত বলিলেন, 'বাঁহার মুখে একবার মাত্র হবিনাম ভনিবে তাঁহাকেই বৈষ্ণব বলিয়া জানিবে।'

এই উপদেশ অবণ করিয়া শিযাগণ নীলগিরি হইতে গৃছে প্রতাগত হইলেন। নানাক্রপ প্রীক্ষা ও চিন্তাছারা তাঁহারা দেখিলেন যে, এই লক্ষণয়ারা প্রকৃত প্রস্তাবে সাধু চিনিতে পারিবার কোনও সম্ভাবনানাই। কেন নাসাধু অসাধু পাপী বা পুণাবাদ কথন একবারও ভগবানের নাম করেন না, একপ লোক অতি বিরল। তবে কি সকলেই সাধু । তাঁহারা এই রূপে সন্দিশ্ধ হটয়া পরবৎসর চৈত্ত সমীপে উপনীত **इहेरलन धवः मत्मह नित्राकत्रत्वत्र कन्न शूनर्कात्र देवस्व**व-লক্ষণ জিজ্ঞাস। করিবেন। গৌরাঙ্গ বলিলেন, 'যিনি নিরস্তর ভগবানের নামরসান্দাদন কবেন, তিনিই ভক্তশেষ্ঠ, এরূপ ভক্তের সেবা ক্রিলে ভগবানকে লাভ ক্রা যায়।' কিন্তু এবারেও শিষাদিগের সন্দেহ কিছুমাত্র নিরাকৃত হইল না। তাঁহারা দেখিলেন, এরূপ বৈষ্ণব অনেক রহিয়াছেন, বাঁহারা দর্বদা হরিনাম জপ করিতেছেন, কৌপীন-পরিধান বা কণ্ঠীধারণ প্রস্কৃতি বাহু আড়ম্বরের কোন ক্রটী নাই; কিন্তু ইহাঁরা অভান্ত চিতের বিভদ্ধতা লাভ করিতে পারেন নাই। ইহাঁদেয় মধ্যে কেহ বা খোর বিষয়াসক্ত, এবং কেহ কেহ নানারপ ত্রুশান্তি। স্কুতরাং কেবল হরিনাম জ্বপ করাই সাধুতার একমাত্র লক্ষণ হইলে এই সকল ই ऋियु रू शांत्रक न तांध्यशंतरक छ माधु विनया अवधात्र করিতে হয়। শিষাগণ সংশ্রাপন হইয়া এইরূপ চিন্তা করিতে লাগিলেন। অনভর পর বংসর পুনর্কার তাঁহার। নীলাচলে সমুপস্থিত হইয়া চৈত্ত্যদেবকে আপনাদের মনোভাব জ্ঞাপন করিলেন। औद्दिङ অ এবারে বলিলেন,—

## "বাঁহার দর্শনে মূথে আইসে ক্লফনাম। তাঁহারে জানিহ তুমি বৈকাব প্রধান"॥

বান্তবিক ইহাই সাধুর অভি উৎকৃষ্ট লক্ষণ। সাধুর দর্শনে প্রাণে সাধুভাব উদ্দীপিত হয়, ভক্তসঙ্গে হাদর নির্মাণ ও ভগবাবে পূর্ণ হয়, তথন স্বভাবতঃ মানব ভগবানের স্থমধুর নাম উচ্চারণ করিয়া কতার্থ হইয়া থাকে। বাহিরের বেশভ্ষা বা ধর্মামুষ্ঠানের আড়েম্বর সাধুতার লক্ষণ নয়। সত্যস্থরপ পরমেশরের যিনি আপনাকে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন, তিনিই যথার্থ সাধু, এরূপ সাধুর সঙ্গনাভ করিলেই মানবের হাদরক্ষেত্র প্রেমপুণ্য বিবিধ সন্তাবকুস্থমে সমলক্ষত হইয়া থাকে।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

# স্থার-বিশ্বতি।

প্রবৃত্তিকুলের উত্তেজনা, বিষয়ের প্রলোভন, রোগ শোকের আঘাত ও জগতের কার্যাকলাপের কোলাহল, এই সকলের মধ্যে আমবা সকাদাই ঈশব্যকে বিশ্বত হইয়া যাই। তাহা না হইলে আমবা পতিত হইব কেন ? জীবনের আদর্শ হইতে ভ্রষ্ট কেন ? বাঁহারা সত্ত ঈশরের নাম করেন, বাঁহারা তাহাতে বিখাস স্থাপন কবিয়াছেন তাঁহারাও ভূলিয়া যান, অপবে ত ভূলিবেনই। এই বিষয়টী চিন্তা করিলে আমরা ধন্ম সাধনের প্রয়োজনীয়তা অতিশন্ত অমুভব করি। যে বিষয়টা বিশ্বত ২ইবাব অধিক সম্ভাবনা, সেই বিষয়ই মানুষকে শ্বরণ করাহয়া দিতে হয়, যে সকল বিষয় বিশ্বত হইবার সম্ভাবনা नारे—यापनातरे क्षप्र धारत मर्त्रमा या घाठ कतिर छह, हिन्तर क ষ্মাকর্ষণ করিতেছে, তাহাদিগকে স্বার স্মবণ করাইতত হয় না। একজন হীনাবন্থ ভদ্রলোক উদরাল্লের অক্ত সমস্ত দিন মাথার ঘাম পারে ফেলিয়া পরিভ্রম করিতেছেন, তাঁহাকে আর এ কথা विनवात्र व्यायायन नाहे—"(मिथिও, ভোমাকে পরিবার প্রতি-পালন করিতে হইবে, অর্থোপার্জন কবিতে হইবে, ভাহা যেন ভূলিও না" বরং এই কথা শ্বরণ করাইয়া দিতে হয়—''সাব-ধান উদরান্নের চিস্তাতে মান্সিক উন্নতির চিস্তা একেবাবে বিশৃত হইও না; প্রতিাদন কিছু কিছু জ্ঞানের উন্নতির দিকে দৃষ্টি त्राधि । " এবিষয়ে তাঁহার মনোযোগ আকর্ষণ না কবিলে ভূলিয়া যাইবার সম্ভাবনা। সেইরূপ সাংসারিক নানা প্রকার কাজ কর্মা, ভাবনা চিস্তার মধ্যে যদি ধর্মা সাধনের অর্থাৎ ঈশ্ব-রের শ্রবণ মননের জন্ম নিশিষ্ট সময় না রাখা যায়, তাহা হইলে কাজ কন্মের ব্যস্ততার মধ্যে ঈশ্বরকে বিশ্বত হইয়া गारेवात व्यक्षिक मञ्जावना। এই कावल्ये त्वाध इय् गीए বলিয়াছিলেন - "স্বর্গ রাজ্য সর্কাত্রো অস্বেষণ কর, অপরাপর বিষয় সকল তোমাদিগকে প্রাদত্ত হইবে।" অর্থাৎ যে সকল বিষয় সতত হাদর ভারে আঘাত করিতেছে ও আপনাদের বন্দোবন্ত করিয়া লইতেছে, তাহার জন্ম ভাবিও না, তাহা ত আসিবেই, ভালা পাইবেই। যে স্বৰ্গ রাজ্যের বিষয় বিশ্বত হটবার সম্ভাবনা, ভাহা সর্ব্ব প্রযম্মে আবেষণ কর; সর্বাদা

ঈশবের দাম মুথে রাথিয়াও কারণ আমের। তাঁহাকে আনেক সমন্ত্রিকৃত হইতেছি।

কিরূপ অবস্থাতে ও কি কি কারণে মাসুষ ঈশবকে বিস্তৃত হয়, সে বিষয়ে চিস্তা করিলে কয়েক প্রকার অবস্থা লক্ষ্য করা যায়। প্রথমত:-ইহা সর্বাদাই দেখিতে পাওয়া যার যে, শ্রদাহীন চিত্ত ধর্মতাব ধারণের অমুপ্যোগী, তাহা সর্বদাই জনসমাজে কতকগুলি ষ্ট্রপ্রবৃত্তির মধ্যে বাস করে। লোকের প্রকৃতি এরূপ বিকৃত হইরা যার, যে তাহারা আর শ্রদ্ধাসমবিত হইয়া কোনও গন্তীর ও পবিত্র বিষয়ের আলোচনা করিতে পারে না। সকল বিষয়েরই অতি লঘুভাবে সমা-লোচনা করে এবং দকল ভাল কথাই বিক্রপ করিয়া উড়াইয়া দেয়। এই সকল ব্যক্তি মানব-জীবনের গান্তীর্য্য কিছুই অনুভব करत ना; कीवनरक এकটा क्रीड़ा ও কৌতৃকের ব্যাপাব विनिन्ना मत्न करत्र, ७ हेहा हहेरल एक है। चारमान जानात्र कत्रा সম্ভব তাহা আদায় করিতে চায়। কিরূপে মানব-প্রকৃতিব বিকার হইয়া এরূপ অবস্থার উপস্থিত হয়, তাহা একটা শুক্তর প্রশ্ন। নিরম্ভর সত্যের অবমাননা করাতে, এবং সর্বাদা একটা প্রবঞ্চনার পরিচ্ছদ পরিধান করা অভ্যাস হওয়াতে একপ তুর্দশা ঘটে। মনুষাত্বের লক্ষণ যদি কিছু বুঝিয়া থাকি তবে তাহা এই, চিস্তাতে সত্যামুরাগ, বাক্যে সত্য-তৎপরতা ও ব্যবহারে সত্য-নিষ্ঠা: এ ভূমি হইতে যে ভ্রষ্ট হইল, সে मस्याप इटेटिं खंडे इटेंग। त्यति रिखित शिक्क नेया বিশ্বতি কি স্বাভাবিক নহে? এই সকল অসার লোক আপনাদের হৃদয় অস্থেষণ করিয়া ঈশ্বরকে দেখিতে পায় না, অপরে ঈশ্বরের কথা বলিলে বিদ্রূপ করে।

আর এক শ্রেণীর লোকের পক্ষে ঈশ্বর-বিশ্বৃতি শাভাবিক।
ইহাদের জীবনের লক্ষ্য ক্ষুদ্র, আদর্শ অতি হীন; ইহাবা
সংসারের সামান্ত বস্তকেই পরম পদার্থ জ্ঞান করিয়া তাহার
সেবা করিতেছে। ইহাদিগকে প্রকৃত "বিষয়ী" শক্ষের দাবা
নির্দেশ করা যাইতে পারে। কারণ, বিষয় যাহাব লক্ষ্য
সেই বিষয়ী। বিষয় যাহার লক্ষ্য, ঈশ্বর তাহার চিন্তাতে
নাই; স্তরাং ঈশ্বর-বিশ্বৃতি তাহার পক্ষে শাভাবিক।
এরপ ব্যক্তি যে ধর্মের সঙ্গে বা ধর্ম সমাজের সঙ্গে একেবাবে
সংশ্রব-শৃক্ত হয় তাহা নহে; লোকসমাজে সন্তম ও প্রতিষ্ঠা
রক্ষার জন্ত ইহারা অনেক সময়ে ধর্মের বাহ্ জন্ত্র্যান ও
করিয়া থাকে। কিন্তু তাহাও ইহাদের শার্থসাধনেব উপায়
মাত্র, বিষয় সেবার আবরণ মাত্র। ইহারাও ঈশ্বর-বিশ্বৃতিব
মধ্যে বাস করে; কিন্তু সংসার-কোলাহলে ও বিষয়-চিন্তার
তরক্ষের মধ্যে তাহা অমুভব করিতে পারে না।

তৃতীয় একশ্রেণীর লোক শ্রদ্ধাবান এবং উরত আকাজ্র।
সদরে ধারণ করেন, কিন্তু সমাক জ্ঞানের অভাবে ঈশ্ববকে
কানিতে পারিতেছেন না। তাঁহাদের চিন্তা উন্মার্গ-গামিনী
হইরা অপর দিকে গিরাছে। তাহাদের মধ্যে এক প্রকার
ক্ঞানাভিমান আছে, যাহা অক্ততাকে প্রসব করিরাছে।
তাঁহারা মুখে বলেন মানব অক্ত, কি জানিতে পারে ? ক্ষ্ম
পরিমিত মন, অসীমক্ষে কি প্রকারে ধারণা করিতে পারে;

কিন্তু মনের কথা এই, যে তাঁহারা জ্ঞান দারা জানিরাছেন যে, তাঁহাদের জ্ঞানের সীমাই চরম সীমা, এবং জ্ঞাপরে যে বা বলে সমুদার অজ্ঞের কথা। এই জ্ঞানাভিমান এক প্রকার প্রান্তির কুল্লাটকা উৎপন্ন করে, যাহাতে মানুষকে ঈশ্বর বিশ্বতির মধ্যে ফেলিয়া দেয়।

চতুর্থ আর এক শ্রেণীর লোক আছে, যাহারা ঈশর বিশ্বতির মধ্যে বাস করে, অর্থাৎ যাহারা পাশর প্রবৃত্তি সকলের বশবর্ত্তী হইরা ভাহাদিগেরই চরিভার্থভার মধ্যে জীবন ধারণ করিতেছে। মানবের অশাসিভ প্রবৃত্তিকুল হইতে এক প্রকার দ্বিত ভাবময় বার্পা উথিত হর, যাহা সর্কানই আন্ধার দৃষ্টিকে আবরণ করে। এই দ্বিত বাঙ্গা ঈশর দর্শনের প্রমনি বিরোধীযে, সকল দেশের সাধ্যণ একবাক্যে বলিয়াছেন, "পবিত্র হুদয়ই ঈশর-দশনের উপযোগী। যে প্রবৃত্তিকুলের হল্তে আপনাকে অর্পণ করিরাছে সে জীবনের পথ হারাইয়া কেলিয়াছে, ভাহার পক্ষে ঈশরকে বিশ্বভ হওয়াই স্বাভাবিক।

আমরা পৃর্বোক্ত করেক শ্রেণীর বিষয়ে যদি নিবিইচিত্তে চিন্তা করি ভাহা হইলে প্রাচীন শ্বিগণের নিম্নলিখিত উপদেশের ভাংপর্যা অফুভব করিতে পারি:—

> "সভোনশভাস্তপসা হোষ **আয়া** সমাক্ জানেন একচর্যোগ নিভান্॥"

সভোর বাবা শ্রদ্ধা সমুংপর হয়, তপদা বা আত্ম নিগ্রাহের দারা নিজ্যানিতা বিবেক ও চিত্তের একাগ্রতা ক্ষমে; সমাক জ্ঞানের দারা ত্রন্ধতদ্বের ক্রিটি হয়, এবং ব্রন্ধচর্ব্যের দারা চিত্তের দ্বিতা ও পবিত্রতা লাভ হয়। এই সকল গুণ সম্পন্ন আত্মা দ্বির দর্শনে সমর্থ হয়। এবং তাঁহাকে আর ঈশার-বিশ্বতির মধ্যে বাস করিতে হয় না।

# মহাজনদিগের শক্তির মূল কোথায়?

পৃথিবীর প্রায় সকল ধর্মসম্প্রদায়ের মধ্যেই ছইটী বিশ্বাস দেখিতে পাওয়া যায়; ঈশর ব্যক্তি বিশেষকে, বিশেষ কার্যা সিদ্ধির জন্ত সমর সময় এই পৃথিবীতে প্রেরণ করেন। সেই প্রেরিত মহাজনগণ আপন আপন কার্য্য সম্পন্ন কবিয়া এই পৃথিবী হইতে চলিয়া যান। অপর, ঈশর পৃথিবীর লোক বিশেষকে মনোনীত করিয়া উহাতে বিশেষ শক্তিপ্রদান করেন এবং তাহার দ্বারা বিশেষ কার্য্য সম্পন্ন করিয়া থাকেন। কিন্তু এই প্রেরিত ও মনোনীত সাধু সম্বন্ধে চিন্তা করিলে এবং যাহারা প্রেরিত ও মনোনীত বলিয়া পৃত্তিত হইয়াছেন তাহাদের জাবনী পাঠ করিলে প্রচলিত অর্থ অপ্রেক্ষা আতি গৃত্ত ধর্ম্মতন্ত্ব অবগত হওয়া যায়।

অতি প্রাচীন কাল হহতে প্রেরিভবাদে ও মনোনীতবাদে
মানুষ বিশ্বাস স্থাপন করিয়া আসিতেছে। এই বিশ্বাস
উৎপত্তির কারণ কি ? কোন ত্রম ও কুসংস্কার বৃদ্ধি হইতে কি
এই বিশ্বাসের উৎপত্তি হইয়াছে ? এই প্রস্কের মীমাংসায়
উপনীত হইবার জন্ত প্রেরিত ও মনোনীত মহাপুরুষদিগের
সম্বাদ্ধ আদ্যা আম্বরা কিঞ্চিৎ আলোচনা ক্রিব।

মহাত্মা মূবা ঈশ্বর প্রেরিত মহাপুরুষ ধলিরা অভিহিত। তাঁহার সম্বন্ধে বাইবেশে বর্ণিত আছে, ঈশর তাঁহার সহিত সাক্ষাৎভাবে কথা কহিতেন ও আদেশ করিতেন। মুঘা সেট আদেশ প্রতিপালন বিষয়ে বিন্দুমাত্রও ইড:ন্তত করিভেন না। অতাত্ত গুরুতর ও অলৌকিক কার্য্যের আদেশ পাইলেও মুষা ज्थनरे जारा व्यक्तिभागत अधानत रहेएकन । वाहेरवरण हेरा छ কথিত আছে, ঈশ্বর মূবাকে কোন কার্য্যের আদেশ করিয়া সেই আদেশ প্রতিপালনের শক্তিও তাঁছাকে প্রদান করিতেন। क्षेत्रक चारमण कतिरमन, "है आनमिगरक मित्रत हहेरि नहेता याहेरज इहेरव," भृषा जल्कनार स्मिहे कार्या जजी इहेरनन। ঈশ্বর সৃষার সাহায্যের জস্ত মহামারি ইত্যাদি উপস্থিত করিবার শক্তিও তাঁহাকে প্রদান করিলেন। মুধা ঈশ্বরের নামে প্রস্তর ছ**ইতে জল, আকাশ হ**ইতে ফল সংগ্রহ করিয়া **ঈখ**রের কার্য্য সাধন করিলেন ; ঈশ্বর' শ্বহন্তে সৃহাকে আদেশ লিখিয়া मिलन. युवा नकलात निक्छ जाहा धाठात कतिलान। युवा বীর জীবনে কোন্লোকাতীত মহাশক্তির কার্য্য দেখিতে পাইয়াছিলেন ?

যীশুর ভীবনেও ঐক্লপ ঘটনা দেখিতে পাই। ভিনি जाननात निष्कत हैका काहारक वरन बानिएकन ना। स्य चारम जिनि थाश हरेटान, जारा बीवरन चाहत्रन, धाजिनान করাই তাঁহার ব্রভ ছিল। পুথিবীর নিন্দা স্কৃতি, অপমান নিৰ্ব্যান্তন, অভ্যাচার ও মৃত্যুকে ভুচ্ছ জ্ঞান করিয়া "পিভার ইচ্ছাপূৰ্ণ হউক" এই মহামন্ত্ৰ সাধন ও পালন কৰিয়াছিলেন : তিনি দরিদ্রের, সম্ভান, ধন জন বলে হান ছিলেন। কিছ আণে যে কি একটু সভ্যের আলো পাইরাভিলেন, তাং। ধ্রিয়া সমাজ শক্তি ও রাজশাক্তর সহিত অভূল বিক্রমে সংগ্রামে নিযুক্ত ছিলেন। তিনি কুশকাষ্টে বিদ্ধ হৃৎয়। জীবন विमञ्जन कतिरामन, किन्नु कि राय श्रार्थ धक है ज्यार्था शहरा-ছিলেন, তাহা ছাড়িতে পারিলেন না। সেই আলোটুকু প্রাণে পাইয়াছিলেন বলিয়াই মানবের জর্জন্ম শক্তিকে পদদলিত করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন এবং সত্যের রাজ্য জগতে প্রভিষ্ঠিত করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। তিনি এক্ষাই জগতে প্রেরিড ও ঈশর পুত্র বলিয়া অভিহিত।

হরাপক্তের গহবরে বসিরা মহম্মদ যে কি ধ্বনি প্রাণে শুনিরাছিলেন, সেই ধ্বনির অসুসরণ করিবার জন্ম পৃথিবীর ধনজনম্থ সম্পদকে পদগলিত কারয়া সমগ্র আরবজাতির সঙ্গে ধর্মাগংগ্রামে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন। আরীর স্বজনের নির্যাতিন সংসারিক ক্লেশ, এমন কি আপনার জাবন নাশের পর্যান্ত সন্ভাবনা উপন্তিত হইল; কিন্তু মহ্মাদ কিছুতেই সেই ধ্বনির অসুসরণ হইতে বিরত হইগেন না। মহম্মদ মূর্থ সামান্ত লোক হইয়াও জগতে আলোকিক শক্তির পরিচয় দেখাইয়া গিয়াছেন। আজ লক্ষ লক্ষ মূন্লমান ঈথর প্রেরিত মহাজন বালয়া তাঁহার স্মান করিতেছে।

অপর দিকে যীওর শিষাগণ কেন মনোনীত বলির। পুজিত ? দামাক্ত মংস্তজীবী হইরাও তাহারা অসাধারণ শক্তির পরিচর দিরাছিলেন বলিরা। সংধারণ লোকে যাহা ক্রিডে সমর্থ নতে তাঁহারা তাহা ফরিয়াছিলেন। তাঁহাদের হৃদরে যে বিশাসালি প্রজ্ঞানিত হইয়াছিল, অন্ত হৃদরে তাহা জলেনা।

নেপোলিয়ান হানিমান, কেবল অসাধারণ মানসিক প্রতিভা প্রাপ্ত হইয়াও, ধনজন বিদ্যা ও ক্ষমতায় অধিপত্তি হইয়াও প্রেরিত আখ্যা প্রাপ্ত হন নাই বা মানবমনে রাজত্ব প্রতিষ্ঠিত করিতে পারেন নাই। অনস্ত রাজ্যের আলো ভির, ঐশীশক্তির প্রভাব ভির মানবের মনোয়াজ্যে কেহ আসন গ্রহণ করিতে পারেন না।

জগতে যে অর্থে প্রেরিডবাদ ও মনোনীডবাদ প্রচলিত, সেই অর্থে ইহা গ্রহণ করিলে ঈশ্বরকে পক্ষপাতী বলিরা প্রতিপর করা হর। তিনি কোন কোন ব্যক্তিকে অমুগ্রহ করিয়া সভ্য ও আলোক বিভরণ করেন, আর অভ্য গোককে গেই সভ্য গ্রহণ ও সেই আলোক দর্শন হইতে বঞ্চিত রাখেন।

ঈশরের সতা, দেশ ও লোক বিশেবে আবি থাকে ইহা
বীকার করিলে ঈশরের প্রেম ও সমদলিভার ব্যাঘাত
ঘটে। তবে কি এই প্রেরিডবাদ ও মনোমীডবাদে
কোনও সভা নাই ? অবশ্র ইহার গৃঢ় আধ্যাদ্মিক অর্থ
আছে।

ইশবের হার সকলের নিকট উর্ক রহিরাছে। তিনি মানব সন্তানকে তাহার সতা গ্রহণ ও প্রতিপালন করিবার অধিকার দিয়াছেন। মাহুবের একটা স্থমহৎ অধিকার এই বে, সেইছো করিলে সভোর পথ অবলহন করিরা, ঈশবের সিংহাসন প্রাণে স্থাপন করিতে পারে, তাহার সদয়তে স্বর্গ রাজ্যে পরিণত করিতে পারে। আর ইচ্ছা করিলে সে পাপের পথও অমুসরণ করিতে পারে। মাহুবের ইচ্ছার স্বর্ধীনতা আছে বলিরাই পাপপুণা, সৎ ও অসং কার্যের জন্ত মানবের দারিত্ব আছে। এই স্থাধীন ইচ্ছার সঙ্গে সঙ্গে তাহার সকল ধর্ম কর্মা, পাপ পুণা গ্রাণিত।

মানুষ অপুণ, অপুণ জীবকে কর্ত্তবা ও হিতব্দি প্রাদান করিবার জন্ত দেই পূর্ণ মঙ্গণত্তরূপ মানব প্রাণে নিরত বাস করিতেছেন। দেই সভ্য ৰোগতি প্রতিনিয়ত মানুষকে সভ্যপথে যাইতে উপদেশ করিতেছেন। পার্কার এই বাণী প্রাণে ভনিরাই কচ্ছপকে আঘাত করিতে বিরত হইয়াছিলেন, লোকে ইহাকে হিতাহিত বুদ্ধি, বিবেক বলে। আমরা পার্কারের মাতার সঙ্গে একবাক্যে ইহাকে ঈশ্বরের বাণী বলি। অপূর্ণ আফাকে সভা ও জানের আলো প্রদান করিবার জন্ত खानमञ्ज भत्रामचत्र गर्यामा (ठहावान। माभूव त्यमन वश्तिक्रीम দারা বাঞ্জগত দর্শন ও প্রবণ করে, সেই প্রকার প্রাণের ठक्ष् अ कर्गवाता धर्मातात्कात एक नकन मर्गन अ व्यवन करत । य याकि चीत्र कर्मकक्रकगरक वास्तित्रत मुद्दे अ अच्छ विषयत ডুবাইয়া রাখিরা অন্তচকুকর্ণের দৃষ্ট ও শ্রুতবিষরকে অবিখাদ করে, সে আহাের রস, ধর্মের রস, অফ্ডব করিডে সমর্থ হয় না। অর্নরাজ্য, অধ্যাত্মিক রাজ্য তাঁহার নিকট করনা माब । भवमभिका आर्थंत्र मर्था बाह्य वर्णम, वांषा मखारमंत्र

ৰধ্যে ৰে ভাৰা প্ৰাণপণে প্ৰতিপালন করে—বে অবনত মস্তকে তাঁহার আদেশ পালন করিবার জন্ত চেটা করে, পর্মেশ্বর ভাহাকে অসাধারণ শক্তি প্রদান করেন। জগতের লোক দেখিয়া অবাক হয়। পৃথিবীতে উন্নতি কেনা চায় ? পৃথি-বীতে সভ্যের জ্যোভি, ঈশ্বরের আদেশ কেনা প্রাপ্ত হটচে ইচ্ছাক্রে? কিন্তুধর্মজগতে এই গুঢ়নিরম প্রতিপালন না করিলে কেহ সেই অধিকার লাভ করিতে পারিবে না। সকল সত্যের সার সভ্য এই—"যাহা প্রাণে সভ্য বলিয়া বুঝিতে পারিবে, তাহা জীবন দিয়া প্রতিপালন করিবে।" বুদি প্রাণে সভ্যের জ্যোতি পাইবার জক্ত উৎক্তিত থাক, আর যাহা সভ্য ও কর্ত্তব্য বলিয়া বুঝিতে পার তৎক্ষণাৎ তাহা কার্য্যে পরিণত কর, দেখিবে ভোমার জীবন উন্নতির সোপান হইতে সোপা-নান্তরে আরোহণ করিবে। পৃথিবীর সাধু ডক্তগণ চিরদিন সাক্ষ্য मित्रारहन, 'क्रियरतत्र जारमण छना यात्र," रेश कि मिथा।, क्रज्ञना ? (र जेपंत्र, व्यार्ग कथा वर्णन ना, जाहा क्रज्ञनात्र ঈশর। ধর্মসাধন করা, ঈশরের নিকট প্রার্থনা করার উদ্দেশ্ত আমাদের ইচ্ছাত্মরূপ কাজ করিবার জল্ঞ ঈশ্বরকে আদেশ कत्रा नरह; किन्द्र भागारमत्र अपूर्व हेन्हारक स्मर्टे पूर्व मन्नन ইচ্ছাময়ের অধীন করা, তাঁহার অমুদরণ করা। আধ্যাত্মিক রাজ্যের নিরম এই, সভ্যকে বুঝিরা যদি ভাছাকে জীবনে প্রতিপালন নাকর তোষার চিত্ত চুর্বল হইবে, নুতন স্ভা তোমার প্রাণে আদিবার পথ বন্ধ হইবে। একটা অসভ্য তোমার জীবনে জয়যুক্ত হইলে আর একটা তথার প্রবেশ করিবার পথ পাইবে। মাছুব ইচ্ছা করিলে দেবতা হইতে পারে; মামুষ ইচ্ছা করিয়া নরকের কীটও হইতে পারে। সত্যের সহায় ঈশ্বর। জীবনে একটী সামাক্ত কুদ্র সভ্যক্তেও যদি অব্যাননা কর, তবে ঐশী শক্তির সহারতা হইতে বঞ্চিত হইবে। অপরাধী সম্ভান যে প্রকার পিতার অফুগ্রহ পাইতে বঞ্চিত হয়, তেমনি তাঁহার আদেশকে যে অগ্রাফ করে. তাঁহার আত্মায় তিনি রস প্রেরণ করেন না। যে, যে পরি-भाष (मरे भक्त हेव्हा अखिलानात यद्भ कतिबाह्न (म (मरे পরিমাণে ঐশী শক্তির পরিচয় জগতে দেখাইয়া গিয়াছে। মহাত্মা যীশুর জীবনে সতা জয়য়ুকু হইয়াছিল। তাই তিনি প্রেরিত বলিয়া অভিহিত। প্রত্যেক মানব বিধাতার কোন না কোন মন্ত্ৰ অভিপ্ৰায় সিদ্ধ কবিবার জন্ত জ্ঞাসিয়া পাকেন। যিনি কণ ঘারা বিধাতার বাণী শুনিয়া সেই তাদেশ প্রাত্পালনে कौरन यन अमान करतन, जिनि এই পৃথিবীতেই ঈশ্ব সহবাস মুধ সম্ভোগ করেন এবং জীবনকে ধন্ত করিয়া ইচলোক পরিত্যাগ করেন। একটী পরীক্ষাতে উত্তীণ হওয়ার উপর যেমন আর একটা পরীকা কেত্রে উপস্থিত হওয়া নির্ভর করে; সেই প্রকার, একটা সভা প্রতিপালন করার উপর অপর সভালাভ করা নির্ভর করে। কেই কেই মনে করেন, "এই সভাটী প্রতিপাশন করা আমার পক্ষে কঠিন, এটা নাই বা প্রতিপালন করিলাম, অস্তাম গুলি প্রতিপালন করি, ডাইাডেই इहेरव ।" किन्नु धर्माद्रांस्का धहे वावद्या कथनक हहेरक शास्त्र ना । এ রাজ্যে উর্তিলাভ করিছে ব্ইলে প্রাণে যাহা সভ্য বলিরা

বুৰিবে তাহার ধোলআনা প্রতিপালন করিতে হইবে। একটী কুক্ত ছিত দিয়া যেমন কলসীর সমুদর জল পভিয়া যার, সেই প্রকার একটী সামান্ত সত্যকে অগ্রাহ্ম করিলে, সমস্ত ধর্ম-জীবন নিস্তেজ হইয়া যায়।

জীবন গতি প্রথমে মন্দীভূত, পরে নিয়গামী হয়। ঈশবের রাজ্য সত্য, তাঁহার ধর্মরাজ্য স্তাবস্তা। এ রাজ্যে ফাকি দিয়া অসতা আশ্রয় করিয়া কেছ পার পাইতে পারিবে না। ঈশ্বর প্রাণে যাহা বৃঝিতে দিবেন, বিবেকের আদেশ বলিয়া যাহা অনুভব করিবে, তাহা তলুহুর্তে প্রতিপালন কবিতে হইবে। ছর্বল সবল হয় সভ্যের বলে। পৃথিবীর দবিদ্র ও মূর্থ অলৌকিক কার্যা সম্পন্ন করে ঈখর শক্তিতে অফুপ্রাণিত হইয়া। এই জন্মই মহাত্মা রাজা রামমোহন রায় বলিয়াছেন। "দতো কর প্রীতি পাইবে পরিত্রাণ।" মানব, তুমি আপনাকে হৰ্কল ভাবিয়া কোন কাৰ্য্যে হস্তক্ষেপ কবিতে সাহস কবিতেছ না। नेपदात्र एथम रुख দেখিতে না পাইয়া নিরাশ মনে পৃথিবীতে ভ্রমন কবিতেছ, মানবের নিন্দা প্রশংসা ভোমার প্রাণকে প্রতিনিয়ত আন্দোলিত কবিতেছে। একবাব মহাত্মা বীশুর স্থায়, মহম্মদের স্থায়, ম্বাব ক্লাৰ্ক্সাহা সভা বলিয়া জীবনে বুঝিব তাহা জীবন দিয়া প্রতিপালন করিব," এই মহামন্ত্র সাধন করিতে আরম্ভ কব। দেখিবে ঈশ্ববের আলোক আসিয়া ভোমার প্রাণকে আলোকিত করিবে। এমন উপদেষ্টা, পথ প্রদর্শকের আশ্রয় পাইবে, যাঁহার ভ্রম হয় না, এমন শক্তি প্রাণে অনুভব কবিবে, যে শক্তিকে পৃথিবীর কোন শক্তি পরাজয় করিতে পাবে না।

যিনি সভাকে এই ভাবে জীবনে মরণে রক্ষা করেন্ তিনি মথার্থ ই ঈশ্বরের প্রেবিত। তাঁহার সঙ্গে যে ঈশ্বর কথা বলেন ইহাতে কি সন্দেহ আছে ? জীবন্ত ঈশ্বর প্রত্যেকের প্রাণে কথা বলেন, প্রত্যেক মানব সম্ভান ঈশর প্রোবত व्याक्तां भारेट भारत, यनि याखत छात्र "भिजात हेव्हा भागन" कीवरनत धक्याक लक्का विलया बाइन करता भूरव "धर्म धर्म" বলিলে হইবে না, ক্ষুদ্ৰ হউক বড় হউক যাহা জীবনে সত্য বলিয়া বুঝিবে ভাহা প্রতিপালন কাবতে হটবে। ক্রমে স্বর্গ বাজ্যের ঈশ্ব-বিশ্বাস, ঈশ্বরাদেশ,—আজ ছার থুলিয়া যাইবে। যাহা কল্পনা, সাধুভক্ত মহাজনদিগের একচেটিয়া বস্তু বলিয়। মনে করিতেছ—তাহা তোমার প্রাণের সম্পত্তি হটবে: মুক্তকণ্ঠে জগতের নিকট সাক্ষ্য দিতে পারিবে "মামুষ কেবল রুটী খাইয়া বাচে না, কিন্তু ঈশবের মুখ নিংস্ভ বাণীরূপ স্থাপান করিয়াই মানব জীবন রক্ষা করে। कौरानद्र (र कर्छश আজ অস্কার বলিয়। মনে করিতেছ, তাহা चात्माकिङ हरे,। यारेत्व । ५व्यवला, च्यवियान हिनमा यारेत् । "যাহা সভ্য বলিয়া বুঝিব ভাহা জীবন দিয়া পালন করিব" এই প্রতিজ্ঞা প্রতিপালন করার উপর জীবনের উন্নতি, মহন্ব নির্ভন্ন

এক গাছি তৃণও বিধাতা বিনা অভিপ্রামে এই পৃথিবীতে

বিনা উদ্দেশে এই পৃথিবীতে প্রেরণ করিয়াছেন ? ভূণের খাধীন ইচ্ছা নাই, সেই মহানইচ্ছা অনিবাৰ্য্য রূপে তাহার উপর কার্য্য করিতেছে। বৃদ্ধি ও জ্ঞান সম্পর স্বাধীন মানৰ, তুমি ব্ঝিয়া—অহভব করিয়া বিধাতার অভিপ্রায় পালন করিবে ইহাই তাঁহার বিধান। সেই জ্ঞাই তোমাকে জ্ঞান ও হিতাহিত বুদ্ধি দিয়াছেন। গভীর আধ্যাত্মযোগে তাঁহার সঙ্গে যুক্ত হইয়া প্রাণে তাঁহার কথা শুনিবার অধিকার পাইয়াছ।

# সম্পত্তি চতুষ্টয়।

(বৌদ্ধ ধর্মগ্রন্থ বিনয় স্ত্র হইতে সংক্ষিত )

একবার বুদ্ধোপাসক কয়েকজন গৃহস্তের গৃহে বুদ্ধের সহচর ভিকুদলেব উপয্যুপরি কয়েকদিন নিমন্ত্রন হইরাছিল। নিমন্ত্রন স্থলে ভোজের ব্যাপারটা মন্দ হয় নাই। এই ভোজের ব্যাপাব নেধিয়া একজন ত্রন্ধেণ চিস্তা করিল, "এই শাক্য পুরীয় এমণদিগের দশভূক্ত হওয়াতমন্দ নয়। ইহারা উক্তম আহার করে ও উত্তম স্থানে শয়ন করে; ইহারাত পরমানন্দেই দিন যাপন করে।" এই রূপ চিন্তা করিয়া ঐ ব্রাহ্মণ ভিক্<u>ষ</u>-দিগেব নিকটে আসিয়া প্রবৃদ্ধা গ্রহণ করিয়া তাঁহাদের ধর্মে দীক্ষিত হইবার অভিপ্রায় প্রকাশ কবিল। ভিক্ষুগণ্যগা-নিয়মে ভাগকে দীক্ষিত করিয়া স্বদণে এ১ণ কবিলেন। সে ব্যক্তির দীক্ষিত হওয়াব কিছুদিন পবেই নিমন্ত্রনাদি বন্ধ হইয়া গেল। তথন ভিক্গণ একদিন প্রাতে উঠিয়া ঐ নব দীক্ষিত ব্রাহ্মণ ভিকুকে বলিলেন ''এস ভাই আমরা ভিক্ষাতে গমন করি।" ত্রাহ্মণ কহিল, "দে কি? আমি কি ভিক্ষা করিবার জন্ম প্রব্রজ্যা গ্রহণ করিয়াছি ? আমি ভিক্ষাতে যাইব না, আমি বসিয়া থাকিব, ভিকা করিতে হয় তোমরা ভিকা করিয়া আনিয়া থাওয়াইবে।" এই কথা শুনিয়া অপর ভিকুগণ আশ্চর্যা।-বিত হইয়া জিজ্ঞাদা করিলেন, "তবে কি পেটের জন্ম, সকলে আহার করিবার লোভে প্রব্রুৱা গ্রহণ কবিয়াচ ? সরল ভাবেই বলিল "ঠা, পেটের জগুই করিয়াছি।" শিষ্যগণ এই কথা মহাত্মা বৃদ্ধের নিকটে নিবেদন কবিলে তিনি ত্রাহ্মণকে জিজ্ঞাসা করিলেন ; ''হে ভিকু ! ইহা কি সভা যে, তুমি পেটের জন্ম ধম্মজীবন আশ্রয় করিয়াছ ?" তাহ্মণ উত্তর কারল, "হাঁ, প্রভূইহা সতা।" তথন মহাত্মা বুদ্ধ আহ্মণ ভিক্ষুকে ভিরস্তার করিয়া বলিলেন ''ছে নিকোধ! তুমি কি প্রকারে ক্ষছনে আহার করিবার লোভে এই সত্তা ধন্মের আশ্রয় গ্রহণ করিলে 🥍 হে মন্দমতে! এরপ ১ইলে কি আর লোকের হৃদর পবিবন্তিত হইবে ও শিষ্য সংখ্যা বর্দ্ধিত হইবে 🖓 ' এইরূপে ব্রাহ্মণকে তিরস্বার করিয়া বুদ্ধ আদেশ করিলেন ''হে ভিকুগণ, আমি এই নিয়ম করিতেছি, যে কেছ কোনও ব্যক্তিকে দীক্ষিত করিবেন, তিনি দেই দক্ষে সম্পত্তি চতুটয়ের কথাও তাহাকে বলিয়া मिद्दन ।

धर्मकीवरनंत्र व्यथम मन्निखि कहे, या कछ नशायनशीनिगरक ঞেরণ করেন না। দেবত লাভের অধিকারী মানব, জোমাকে । মৃষ্টিভিক্ষার খারা জীবন ধারণ করিতে হয়। এই ক্লপেই তুমি সমগ্র জীবন যাপন করিবার চেটা করিবে। সলীয় সমুদায় লোককে বা কভিপয় ব্যক্তিকে যদি কেহ নিমন্ত্রণ করে বা ভিভাজ্য বস্তু পাঠাইরা দের কিম্বা পোর্ণমাসী বা অভ্য কোনও উপাসনাদিব দিবসে কিছু ভোজা বস্তু উপহার দের, তাহা অধিকত্তর মধ্যে।

ধন্মজীবনেব দিতীয় সম্পত্তি এই যে, ছাই গাদা হইতে ছিন্ন বস্ত্র কুডাইয়া যোডা দিয়া অঙ্গাচ্চাদনের বস্ত্র করিবে; এইরূপ পরিচ্চদে সম্ভূপ্ত হইয়াই তুমি সমগ্র জীবন অভিবাহিত করিবার চেটা করিবে। যদি কেহ কার্পাসজাত বা ক্ষৌম স্ত্র নির্মিত বা লোমজ বস্তাদি দেয় তাহা অধিকস্তর মধ্যে।

ধর্মজীবনের তৃতীয় সম্পত্তি এই, তোমাকে তরুতলে রাত্রি যাপন করিতে হইবে, এইরূপে সম্বস্ত চিত্তে তৃমি সমগ্র জীবন যাপন করিবার চেষ্টা করিবে। যদি দৈবাৎ বিহার বা প্রাসাদ, হর্মবা গুলাদি যোটে সৈ অধিকস্ত্রব মধ্যে।

ধর্মজীবনের চতুর্থ সম্পত্তি এই. রোগ হইলে গোমুত্রই একমাত্র ঔষধ। ইহাতেই সম্ভষ্ট থাকিয়া ভোমাকে চিরজীবন অভিবাহিত কবিতে হইবে; মৃত, তৈল, প্রভৃতি যদি দৈবাৎ যোটে তাহা অধিকন্তর মধ্যে।

### বৰ্ত্তমান ছাত্ৰ জীবন।

(প্রাপ্ত)

বর্ত্তমান সময়ের অধিকাংশ শিক্ষিত ব্যক্তির চরিত্রের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে অনেক সময় নিরাশ হইতে হয়। ধর্মচর্য্যা বা চরিত্রোন্নতি এথন আর শিক্ষার অঙ্গ বলিয়া পরিগণিত হয় না। বর্ত্তমান শিক্ষাপ্রণাণী এসম্বন্ধে নিতাস্ত' উদাসীন। কেবল মানসিক বৃত্তির উৎকর্ষ সাধনই এথন শিক্ষার চরম লক্ষ্য বলা যাইতে পারে। কিন্তু প্রাচীন ভারতের শিক্ষাপ্রণালী এক্লপ সংকীৰ্ণ সীমায় আমাবদ্ধ ছিল না। দেহ মন হৃদয় ও আত্মা এই চারিটা শিক্ষার বিষয়। দেহের স্বাস্থ্য ও বল, মনের विकाम, क्षमायत व्यमञ्ज এवः ष्यायात हत्रमक्षि ७ भोन्तवा, প্রাচীনকালে ভারতীয় আচার্যগেণ এই চারিটা বিষয়ে শিক্ষা প্রদান করিতেন। মাতুষ এসংসারে কেবল ঘটনা স্রোতে ভাসিয়া বেড়াইবার জন্ম স্ট হয় নাই। বিধাতা মানবের অন্ত:করণে যে সকল সন্থত্তি নিহিত করিয়াছেন, উপযুক্ত পরিমাণে তাহার উন্নতি বিধান করাই প্রকৃত মহুষাত। স্থুতরাং মহুষ্যত্ব লাভ করিতে হইলে দেহ মন হৃদয় ও আত্মার সমভাবে বিকাশ আবশুক, বিকাশই শিকা। শিকার আর এক সাধারণ অর্থ এই,--সং ও অসং উভয় জ্ঞাত হইয়া সং ক্ষবলম্বন করার নাম শিক্ষা। যেরূপ নিয়মে আত্মশাস্তি नियां कतित উদেশ निष हम. जाहात्र नाम निका।

মানবের প্রবৃত্তি সমূহ একাস্ত রিপুর উত্তেজনায় বিলাস বিভ্রমে আসক্ত হওয়ায় মাসুষ কত না যাতনা ভোগ করে। পতঙ্গ যেমন অগ্নিশিধার বাফ্ সৌন্দর্য্যে মুগ্ধ হইয়া তাহাকে আলিক্ষন করিতে গিয়া পুড়িয়া মরে, প্রবৃত্তি পরায়ণ অবোধ মানবও স্থাপের আশার ইন্দ্রির সেবার নিযুক্ত হইরা চরিত্রকে কলুবিত করিরা থাকে। সংহিতকার মহু বলিয়াছেন,—

"সারথি বেমন অর্থ সকলের সংয্ম করেন, তজ্রপ মোহময় বিষয়ে প্রবৃত্ত ইন্দ্রিয় গ্রামের সংয্মে জ্ঞানী ব্যক্তি য়য় করিবেন।' প্রাচীন আচার্য্যগণ জ্ঞানামূশীলনকে ধর্ম জীবন লাভের উপায় স্বরূপ জ্ঞান করিতেন। অর্থোপার্জনের কৌশলকে তাঁহারা জ্ঞান বলিতেন না। জ্ঞান বলিতে তাঁহারা ধর্ম ও চরিত্রশৃত্ত আজ কালকার "কালেজী শিক্ষা" বুঝিতেন না। হুদয় মনের বে শক্তি লাভ করিলে মনেব উত্তেজিত প্রবৃত্তিকুলকে সংগ্রামে পরাস্ত করিতে সমর্থ হয়, উৎকট রিপুনাত্ততা পরিহার করিয়া মানব যে শক্তিতে প্রকৃত মন্থুয়াত্ব লাভ করিতে পারে, প্রাচীনেরা তাহাকেই শিক্ষা বলিতেন। এই জন্ত ইক্রিয়সংয্মকে তাঁহারা শিক্ষার প্রথম সোপান বলিয়াছেন।

আমরা দেহ, মন, হৃদয় ও আত্মা, এই চারি বিষয়ে শিক্ষার কথা বলিয়াছি। कष्ट महिक्कु अन्छाम ना क्रिल অর্থাৎ দৈহিক শ্রম বাতীত দেহ কথন বলিষ্ঠ হয় না। ইক্রিয় নিগ্ৰহও এই শিক্ষাতে বিশেষ আবশুক। ইন্দ্ৰিয়শিথিলতা ও বিলাসামূর্চান অনেক পরিমাণে দৈহিক অবনতির কারণ। **এই जञ्च প্রাচীনকালে শিক্ষার্থিগণ দীর্ঘকাল গুরুকুলে বাস** ক্রিয়া ব্রহ্মচ্য্যব্রত অবলম্বন ক্রিতেন। তাবপর মানসিক শিক্ষা। বলিতে কি আমাদের কুল কলেজের শিক্ষা একমাত্র मानिज्ञ भिका। ইहाए अपनिकारण वृद्धिवृद्धित পविमार्क्सन **इब्र वर्ট, किन्ह मानरवित्र मर्क्स श्रिमान मन्त्रिल एव इन्द्र ७ आद्या:** বিকাশের অভাবে তাহা নিতান্ত মলিন ভাবাপর হইয়। যায়। আত্মার বিষয় ধর্ম ও নীতি, আধুনিক শিক্ষা প্রণালীতে তাহাব নাম গন্ধও নাই, এবং মানসিক শক্তির অনুশীলনে শিক্ষার্থিগণকে এতদুর ব্যস্ত থাকিতে হয় যে, হৃদয়ের উপযুক্ত বিকাশের অবকাশই থাকে না। ইহার ফলও হাতে হাতে দেখিতে পাওয়া যাইতেছে। অধিকাংশ শিক্ষিত যুবক ধর্মের নামে উপহাস বিজ্ঞপ করিয়া থাকেন; ধর্ম্ম, নীতি, চরিত্র, এসকল रयन मः नात्र कानमृज निर्काध वाकित व्यवनवनीय, हेरां हे অনেকের বারণা। কেবল অর্থ সংগ্রহই যে শিক্ষার উদ্দেশ্য নহে. মানব প্রকৃতির সর্বাদীণ বিকাশের নামই যে শিক্ষা, শিক্ষাব প্রভাবে যে ভ্রান্ত কুসংস্কার পরিত্যাগ করিয়া মানব সূত্য लां कतिया क्रार्थ हम, हें हा व्यानक है विश्वां करावन ना निका मःकीर्गटक উपात्र करत, এवः मानवटक मुख्यास्त्रात्री ও সত্য অবলম্বনে সম্থ করে। স্ত্যাফুরাগ এবং স্ত্য গ্রহণই মনুষ্যত্বের সর্বপ্রধান লক্ষণ। সভাাহরাগ বাতীত চরিত্র বল ও নৈতিক জীবন লাভের সম্ভাবনা নাই। যে শিক্ষাতে মামুষকে সর্ব্ধপ্রকার বাধা বিদ্ন অতিক্রম করিয়া সভাের উপার্জন, প্রভিপালন ও প্রতিষ্ঠায় সমর্থ করে, যে শিক্ষায় চরিত্রের বল, ধর্মের উন্নতি এবং মহুষাত্ব গঠিত হয় তাহাই ত প্রকৃত শিক্ষা। নতুবা যাহাতে আত্ম-শাসন-শক্তিকে मिथिन करत, ठिखरक बेलियभत्राय करत, कीवनरक दक्तन স্বার্থপরতা ও সাংসারিকতার দাস করে, তাহা কথনও স্থানিকা নয়।

আমাদের দেশের শিক্ষিত সম্প্রদায়ের অনেকেই যে দ্বিত টু চরিত্র এবং আলভাপরতন্ত্র তাহার প্রধান কারণ, শৈশবকাল হইতে প্রকৃত ভাবে শিক্ষা লাভ করেন না। ছাত্রজীবনে ইন্দ্রিয়াসক্তি প্রবেশ করিলে কি নিদারুণ কাণ্ড সংজ্যটিত হয়, হতভাগ্য তিনকড়ি পালের জীবন তাহার জলন্ত প্রমাণ। সম্রতি সংবাদ পত্তে এইরূপ রোমহর্ষণ ঘটনার বিবরণ পাঠ করিয়া আমরা স্তম্ভিত হইয়াছি। শিক্ষার্থী অল বয়ক বালক-গণের এইরূপ চরিত্র-হীনতার কথা চিস্তা করিলে প্রাচীন-কালের শুরুকুলবাদী ব্রহ্মচর্য্যপরায়ণ ছাত্রগণের কথা মনে পড়ে। মুমু বলিয়াছেন, যথাবিধানে উপনীত আচার্য্যকুলবাসী <u> নৈষ্ঠিক ও উপকুর্বাণ উভয় বন্ধচারী মধুমাংস</u> প্রভৃতি উত্তেজক वसु आहात, हन्मनानि शक्कल्या विरामिन, मानाधात्रभ, व्यक्तानि क्रीडा. तथा कलरू, शरतत मार्याप्यायण, खीलां कत मन्न প্রভৃতি সর্ব্যকার ইন্রিয়-উত্তেজক বিষয় হইতে পূরে থাকিয়া সংযমনশীলতা উপার্জন করিবেন। প্রাচীনকালের শিক্ষা-शीवा এই প্রকারে কষ্ট-সহিষ্ণু, विनामविद्यांधी, निष्ठावान এবং সম্পূর্ণরূপে আগ্ন-শাসনক্ষম হইয়া সংসারে প্রবেশ করি-তেন, স্থতরাং তাঁহাদের সংসারধর্ম অতি পবিত্র ভাবেই নির্কাহ হইত। রাজা এবং প্রজা উভয় শ্রেণীই যৌবনের প্রারম্ভে এই কঠোর ব্রহ্মচর্যা-ব্রত পালন কবিতেন।

বর্তমান সময়ে এইরূপ শিক্ষা প্রণালীব প্রবর্তনা একান্ত অসম্ভব, ইহা বলাই বাহুল্য। আচার্য্য এখন আর পিতৃস্থানীয় নহেন, **তাঁচাট্টি**খন বেতনভূক্ কর্মচানী মাতা। ছাত্রের স্থিত তাঁহাদের স্থন্ধও অতি অ**র** স্ময়ের *অন্ত*। আচার্যোর পৰিত্ৰতা, ধৰ্মভাৰ স্নেহ ও বাৎসল্য ছাত্ৰেরা দৃষ্টাস্ত স্বরূপ দেখিতে পায় না, স্বতরাং শিক্ষার্থিগণ আচার্য্য-চরিত্তের অমুকরণ দারা এখন আর চবিত্র গঠনে সমর্থ হয় না। শিক্ষা-প্রণালীর দোষে এবং অভিভাবকবর্গের স্মমনোযোগিতার এথনকার ছাত্রেরা তুর্বিনীত চঞ্চল প্রকৃতি ও বিলাদপরায়ণ উঠিয়াছে। ছাত্রজীবনে এখন আর কিছুমাত্র বিনয়, গুরুজনেব প্রতি স্থান ও গাড়ীর্য্যের লক্ষণ পরিল্ফিত হয় না। এই সকল বালক বয়:প্রাপ্ত হইয়া সংসারে প্রবেশ করিলে ভাহাবা যে ধর্ম ও নীতিহীন অতি অসার জীবন যাপন কবিবে, তাহা আর বিচিত্র কি। বর্ত্তমান সময়ের চিম্বাদীল মনস্বী লোকেরা য্বকগণের চরিত্রোরতি সম্বন্ধে চিন্তা করিতেছেন। এবিষয়ে সত্তর কোন বিশিষ্ট উপায় অবল্যিত হওয়া আবশ্রক। আমর। ত্রাহ্মগণকে এবিষয়ে গভীবরূপে চিন্তা করিতে অমুবোধ করিতেছে।

## প্রেরিত পত্র।

(পত্রপ্রেকদিগের মতাসতের জন্ম সম্পাদক দায়ী নহেন )।

শ্ৰীযুক্ত ভত্ত-কৌমুদী সম্পাদক

মহাশয় সমীপেয়ু।

ষহাশয়,

আপনার ১৬ই প্রাবণের তক্ত কোম্দীতে "সাম্যাদ" সম্বদ্ধে বে প্রাপ্ত প্রবন্ধ প্রকাশিত হইয়াছে, তৎসম্বদ্ধে কিছু বলা আবশুক। বাবু দেবেক্তনাথ মুথোপাগায় তাঁহার নিজ প্রবন্ধে জিজ্ঞাসা করিয়াছেন "ব্রাহ্মসমাজে কি গুণের আদর থাকিবে না? ব্রাহ্মসমাজে যোগ দিলেই কি সকলে সমান হইয়া গেল, সকল গুণের পরাকাঠা লাভ করিল?" মুথোপাধ্যায় মহাশয়ের মনে হঠাৎ এই প্রশ্ন কেন উপস্থিত হইল তাহার কারণ বুঝা যাইতেছে না। কোন ব্রাহ্ম যে সাম্য মন্ত্রের এই অর্থ করিয়াতিন তাহা তো আমাদিগের স্মরণ হইতেছে না। সাম্যবাদ সম্বন্ধে সংস্পৃতি যে কোন আলোচনা ব্রাহ্মসমাজে উপস্থিত হই-

য়াছে তাহাও জানি না। তবে আমি আপনার "প্রাক্ষণছের মূল কারণ" বিষয়ক প্রবন্ধের লক্ষাগত বিষয়ের প্রতিবাদে সামা সম্বন্ধে ছই একটা কথা লিখিয়াছিলাম, যদি মুখোপাধাায় মহাশয় তাঁহারই প্রতিবাদে এই প্রবন্ধ লিখিয়া থাকেন, তবে একথা বলা আবশুক যে, তিনি এই র্থা পরিশ্রমে নিরত না হইলেও কোন ক্ষতি ছিল না। তিনি যে র্থা আশক্ষা করিয়া বলিয়াছেন, "তবে আমাদের ছর্দশার সীমা থাকিবে না," আমার পত্রের কোনাইলেও এরপ আশক্ষা করিবার আমি কোন কারণ প্রদান করি নাই; তবে কোন কোন লোকের অভ্যাস আছে তাঁহারা করানার অস্থর কৃষ্টি করিয়া তাহার নিধন সাধন পূর্বাক কীর্ত্তি সঞ্চয় করেন। মুখোপাধ্যায় মহাশয়ের হায় বিজ্ঞ ব্যক্তিও সেই পথামুসরণ"করিয়াছেন এরপ অমুমান করা সঙ্গত হইবে না। আমাব পত্রের প্রতিবাদ কবাই যদি তাঁহার অভিপ্রায় হয়, তবে আমার কোন্ কথায় তাঁহার এইরপ অমূলক আশক্ষা জিয়িয়াছে তাহা প্রদর্শন করা উচিত ছিল।

সে বাহা হউক, মুথোপাধ্যার মহাশয়ের সহিত মূল বিষয় সম্বন্ধে যে আমার অধিক মর্তভেদ আছে; তাহা বোধ হয় না। তিনি বলিয়াছেন, "সামাবাদের অর্থ কলাচ ইহা নহে যে, সকল মাসুষই সকল বিষয়ে সমান। সৃষ্টির কোথাও ত ছইটী বস্তু ঠিক একরূপ দৃষ্টিগোচব হয় না। শারীরিক, মান্দিক, ও আধ্যাত্মিক সকল বিষয়েই মামুবে মামুবে বিস্তর প্রভেদ।" কথাটী ঠিক বটে; আমিও এই কথা বলিতে চাই যে. সকল মামুষ্ই এক সমান ছাঁচে গঠিত হইবে ইহা ঈশ্বের অভিপ্রেড বলিয়া বোধ হয় না। প্রকৃতিতে যেমন একতা আছে, তেমন বিচিত্রতাও রহিয়াছে। কিন্তু প্রকার ভেদই যে উৎকর্ষা-প্ৰধেয় প্ৰমাণ তাহা ঠিক নহে। ছই বাক্তির মানাসক প্রভেদ স্তম্ব হইলেও তাঁহাদিগের মধ্যে একজন অপর অপেকা নিকুট হইতে না পারেন। এক মাতুষকে উৎকৃষ্ট এবং অপর জনকে অপরুষ্ট করিয়া ঈশ্বর সৃষ্টি করিয়াছেন, একথা বলিতে গেলে ঈশবের সমদশীতার উপর লোকের সন্দেহ হইতে পারে। প্রকার ভেদ যে উৎকর্যাপকর্ষের জনক তাহা বলা যাইতে পারে না। তবে মামুনের মধ্যে উৎকর্ষাপকর্ষ যে দৃষ্ট হয়, তাহার কাল্রণ কি তাহাই অফুসন্ধান যোগ্য বিষয়। ইহার কভকগুলি বৈষম্য সমাজ-সৃষ্ট, কভকগুলি অবস্থাগত ও কতকগুলি বংশামুগত বলিয়া উল্লেখ কৰা যাইতে পারে। কিস্ত এই প্রভেদ মহুষ্যের প্রকৃতিগত চিরস্থায়ী প্রভেদ বলিয়। স্বীকার করা যায় না; এই সমস্তই কৃতিম প্রভেদ ৷ দেবেন্দ্র বাবু যে বংশানুগত গুণ সন্তান সন্তুতিতে অনুসত হইতে পারে ना विनिधा अधारमस्त्र मिकारम्बत कथा वैनिधारम्न, स्म (व वन অজিত গুণ সম্বন্ধেই প্রযোজ্য। অপচ গ্যাল্টন (Galton) প্রতিপন্ন করিয়াছেন এই অজিড গুণও বংশামুগত হইয়া থাকে, তবে স্থল বিশেষে ব্যতিরেক নিয়ম দৃত হয়, সেই exception প্রাকৃতিক নিয়মেও (Natural law) বিদ্যমান দেখা যায়। সে যাহা হউক, মহুষ্য বংশাহুগৃত গুণের কোন-রূপ অধিকারী হয় কিনা উহা আমাদিণের আলোচ্য বিষয় নহে। অভ্যাস শব্ধ গুণ বংশাত্মক্রমিক না হইলে কুতিমে প্রভেদ **আরও সহজে** ভগ্ন করা সম্ভব হটবে। আমার পত্তে কেবল মাত্র এই কথাই বালয়াছিলাম, ত্রাঞ্চণের স্বতন্ত্র শ্রেণী রক্ষা করা যদি আবিশ্রক হয়, ভবে সেই সূত্রে সেই ব্রাহ্মণত জন্মগত করাও প্রয়োজন হইবে, কেন না গুণেব যে বংশামুগতিক বিকাশ আছে, পণ্ডিত মণ্ডলীর মধ্যে অনেকে এখন ইহা সীকার করিয়া থাকেন; কেবল গুণের কেন, দোষ ও রোগাদিরও বংশাহুগত বিকাশ দৃষ্ট হয় এবং একণা এখন অনেকেই স্বীকার করিয়া থাকেন। কিন্তু ত্রাহ্মণত্ব বংশান্ত্র-ক্রমিকই হউক আর ব্যাক্তগতই হউক, এই রূপ শ্রেণী বিভেদ नमारकत्र शक्क विराग्ध कन्यानकत्र नरह। महामम वरतन, "मक्रलहे ममान वृक्षिमान वा ८०%। कविरन

সকলেই সেক্ষপীয়র নিউটন হইতে পারে; সকলেই সমান সাধুবা চেষ্টা করিলে সকলেই শাক্য বা ঈশার ভার হইতে পারে—দেই উৎকট সাম্য বাদের অপর নাম বালকতা।" উহা বালকতা হইতে পারে, কিন্তু এই আশার মূলে যে কর্ম-নিষ্ঠার বীজ নিহিত বহিয়াছে, উহাই যে নানা প্রকার প্রতিবন্ধকতার মধ্যে মহুষাকে কর্ম-ক্ষেত্রে নিরস্তর পরিচালিত করিতেছে একথা অসীকার করিলেই কিছু বিজ্ঞতা জন্মেনা। সকল মহুষা সেকাপীয়র, নিউটন শাকা বা ঈশা হইতে পারে না, একথা মানিলাম · কিন্তু কে হইতে পারে আর কে হইতে পারে না, ইচার নির্দেশ কোন্বিজ্ঞ কবিতে সমর্থ হইবেন ? যদি অন্ততঃ এক ব্যক্তিও এই মহাপুরুষদিগের কাহারও সমান হইতে পারে; এবং কে দেই ব্যক্তি তাহা নির্দেশ করা কাহারও পক্ষে সন্তব না হয়, তবে সকলের জন্মই কর্ম-ক্ষেত্রের পণ সমান ভাবে উন্মুক্ত, রাথা কি অসক্ষত ? মারুষ যাহা कविद्यारक, मासूय जाहा कतिएं भारत. हेहात व्यर्थ এहे नरह (य, এক মামুষ যাহা করিয়াছে, প্রত্যেক মামুষের পক্ষেই সকল কালে সকল অবস্থায় ভাগা করা সম্ভব হইবে। ইহাই অর্থ যে, এক মামুষের পক্ষে যাহা করা সম্ভব হইগাছে, অপর মানুষের পক্ষেও তাহা করা অসম্ভব নহে; সম্ভব কি অসম্ভব তাহা যত্ন, চেষ্টা, অধ্যবসায় প্রভৃতি দ্বারাই নিরূপিত হু হয়। থাকে। সেকাপীয়র যে অতুল কবিকীতি লাভ করিবেন, অগ্রে কে ভাষা মনে করিয়াছিল, বস্তুতঃ তাঁছার নামে প্রচারিত গ্রন্থ সমূহের তিনিই প্রকৃত লেপক কি না, এ সম্বন্ধে এখন ও মত বিভেদ দৃষ্ট হয়; কেহ কেহ বেকনকেই উহার শেখক মনে করেন। বাঁহাবা এই মতের পোষক তাঁহারা বলেন সেকাপীয়রের মত অরবিদ্য লোকের পক্ষে এইরূপ গ্রন্থ (नथा अमञ्जर। लाक गारा अमञ्जर मत्न करत, अत्नक ममरत्र তাহাও যে সম্ভব হয়, একথা অস্থীকার করা যায় না। ঐশ্বর্যাব ক্রোড়ে প্রতিপ।শিত হইয়া রাজপুত্র যে সন্ন্যাস ধর্ম অবলম্বন কবিবেন, সংযমন ব্রত অভ্যাস করিয়া জগতের পূজা হটবেন শাকোর সম্বন্ধে তাঁহার আত্মীয় স্বজন কি একবারও একথা মনে করিয়াছিলেন? স্তরধর পুত্র যে স্কগতের আতি প্রধান ধন্মগুরু হইবেন, ঈশার সম্বন্ধে কে এই আশা করিয়া-हिन १ गाँ । एक श्रवश्रक वान्या देहि पत्रा इंडा क्रियाहिन, আজ তাঁহাৰ সাধুতায় জগং মৃদ্ধ। মুখেপাধাায় মহাশয় যে উৎকট সামাবাদে বালকতা ভিন্ন আব কিছু দেখিতে পাইতে-ছেন না, এই সকল ঘটনা সেই সামাবাদেরই সমর্থন করিতেছে। যিনি প্রকৃত সামাবাদী হুইবেন তাহাব পক্ষে একথা বলা অসম্ভব হটবে, অমুক মন্ত্রোব উন্নতির এই শেষ দীমা তাহার পক্ষে ইছার অধিক অগ্রসর হওয়া সম্ভব নছে। সাগ্র যেমন এই আদেশ প্রতিপালন করে নাই, দীমা বেধা উল্লুঅন কবি-য়াছে, মাফুষের অভান্তবলুকায়িত শক্তি যথন বিকাশ পাইতে থাকে তথন সেও সেহ দীমা রেথাকে উল্লক্তন করিয়া যায়। काशांत्र मंक्ति कान भए। विकास शाश रहेरव छारा वना यात्र না। অস্থাই মাধাই যে ধক্ষজগতে সাধুও সদাচাৰী বলিয়া গণা হইবেন, তাঁহাদিগের পূর্বজীবন দেথিয়া একণা কি কেছ मत्न कतिएक शांतिग्राहिल ? (ठारतत मञ्जान यमि माधू हम, তবে তাহার গৌরব, সাধুর পুত্র সাধু অপেক্ষা অধিক। প্রতি-কুল শক্তিকে পৰাভৰ কৰিয়া যে অগ্ৰসর হইতে পারে সে ব্যক্তিই প্রকৃত ধন্ম-বীর। কোন্ ৰাক্তি প্রতিকৃল শক্তির সহিত সংগ্রাম করিয়া জয়ী হইতে পারিবে, আর কে পারিবে না ভাহার যথন কোন নিশ্চযতা নাই; তথন মাত্র যাহা করিয়াছে অপর মান্তবেও তাহা করিতে পারে, এই বিখাদ লইয়া কর্মক্ষেত্রে অগ্রস্ব হওয়া কি বালকভা ? মামুষে এখন যে গুরুতর বৈষম্য দৃষ্টিগোচর হয়, ভাহা ক্লঞিম ভিত্তির উপর সংস্থাপিত, এই বৈষম্য যে এক শতাকীতেই দুর श्हेरव, छाहा त्कृ विनाउद्य ना। किन्न धारे कृषिम देवयमा

দ্র করাই সামামত্রের প্রধান সাধন। এ সাধনা উৎকট হইতে পারে কিন্তু অসঙ্গত নছে। পূর্কেই বলা হইয়াছে, শক্তির প্রকার ভেদ রহিত করা সাম্যের লক্ষ্য নহে, বৈষম্য দ্রে করাই উহার অভিধেয়। যে সাম্য আংশিক রূপে বৈষম্য দ্রের প্রয়াসী, তাহা প্রকৃত সাম্য বলিয়া বাচ্য হইবাব যোগ্য নহে।

নিবেদক, শ্রীদ্বারকানাথ গঙ্গোপাধ্যায়।

#### ব্ৰাহ্মসমাজ।

ব্রহ্মধর্ম গ্রহণ— শ্রীযুক্ত জগরাথ প্রসাদ নামক মুক্তি-ফৌজ দলের একজন প্রচাবক খৃষ্টধর্ম পরিভ্যাগ করিয়া কলিকাতা সাধনাশ্রমে আসিয়া ব্রাহ্মসমাজে যোগ দিয়াছেন। পরমেশ্বর ইহাকে সভ্যধর্ম পথে রক্ষা করুন।

ত্রাক্ষসন্মিলনী— ৫ই আগষ্ট রবিবার প্রীযুক্ত স্থবেক্স
নাথ দাসের বেলঘরিয়ান্থ বাগানে ব্রাক্ষসন্মিলনীর উৎসব সম্পন্ন
হটয়া গিয়াছে। এভত্পলক্ষে প্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত
প্রমুথ কতিপয় ব্রাক্ষ লাতা কলিকাতা হটতে তথায় গমন
করেন। মধ্যাক্তে উপাসনা হব, উমেশ বাবু উপাসনা
করেন। তৎপরে স্থরেক্র বাবু স্কলকে পরিতোষ পূর্ক্ক
ভোজন করান।

উৎস্ব— ঢাকা হইতে বাবু কামিনী কুমার ঘোষ লিপিয়াছেন, "নিয়লিধিত প্রণালীতে ঢাকা পূকা বাঙ্গাল। ছাঅসমাজের সায়ংসরিক উৎসব সম্পন্ন হঠয়াছে।

১৩ই আবেণ—সন্ধাা ৭॥ ঘটিকার সময় বক্তৃতা, বক্তা জীয়ক্ত বাবুনগেক্সনাথ চটোপাধ্যায়, বিষয়— দেহ ও আয়ো।

১৪ই শ্রাবণ—পূকাক ৬ ঘটকার সময় উপাসনা, বাবু বজনীকাপ্ত ঘোষ উপাসনা করেন। মধ্যাকে আলোচনা, অপ-রাকে কীপ্তন, সন্ধ্যা ৭॥ ঘটকার সমন্ন পুনবান্ন উপাসনা হয়, বাবু চণ্ডীকিশোর কুশাবী উপাসনার কায্য করেন।

১৫ই শ্রাবণ—সন্ধ্যা ৭॥ ঘটিকার সময় উপাসনা, বাবু নগেক্ত নাথ চট্টোপাধ্যায় উপাসনা করেন।

১৬ই শ্রাবণ— সন্ধা। ৭॥ ঘটকাব সমন্ন স্বসীন ত্রজ্ফুলর মিত্র প্রস্থারের প্রবন্ধ পাঠ ও প্রস্থার বিভরণ ২য়। প্রবন্ধ লেথক বাবু অভয়কুমার গুহ প্রস্থার প্রাপ্ত হইয়াছেন।

১৭ই শ্রাবণ—সন্ধা ৭॥ ঘটিকার সময় উপাসনা, বাবু গিরিশ্চক্র মজুমদার উপাসনার কাষ্য করেন।

১৮ই শ্রাবণ—সন্ধ্যা ৭॥ ঘটকার সময় বন্ধৃতা, বক্তা বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়, বিষয়—প্রকাল।

১৯শে শ্রাবণ — সন্ধা ৭ ঘটিকার সময় সাধারণ সভার বার্ষিক অধিবেশন হয়।"

৫ই আগষ্ট শিবপুবে বার্ষিক ব্রহ্মোৎসব উপলক্ষে কলিকাতা হইতে বাবু শবচচন্দ্র বায়, বাবু হেরম্বচন্দ্র মৈত্র এবং বাবু পাক্ষতী নাথ দন্ত প্রভৃতি কতিপয় ব্রাহ্ম ত্রাতা তথায় গমন করেন। তাঁহারা ৪ঠা তারিথ রজনীতে গলার ঘাটে বজরায় অবস্থিতি করেন, প্রাভংকালে শিবপুরে পঁহছিয়া কলেজের কতিপয় ছাত্রস্ব কোম্পানীর বাগানে এক নিজ্জন বনমধ্যে উপাসনা করেন। বাবু হেরম্বচন্দ্র মৈত্র আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছিলেন। সন্ধ্যার প্রাকালে গলাতীরে এক প্রকাশ্ত স্ভার অধিবেশন হয়। কলেজের ছাত্রগণ বক্তৃতা শুনিবাব জন্ধ আবিহ সহকারে উপস্থিত চইলেন। সন্ধ্যাসমাগমে গঙ্গাতীর অধিকতর স্থাপ্ত হইল। উপরে স্থনীল আকাশ, নিমে ধীবগামিনী স্রোভস্বতী প্রবাহিত, তীবে নানা জাতীয় বৃক্ষ লভা পুশে পবিপূর্ণ স্থরমা উদ্যান। এই শোভা নিবীক্ষণ কবিয়া অনেকেরই প্রাণ মুগ্ম চইল। সকলে স্থান পরিগ্রহ কবিলে প্রথমতঃ সংগীত ও প্রার্থনা ইইল, তংপব হেবস্থ বাবু স্থললিত ইংবাজি ভাষাতে বিশ্বজনিন ধর্ম কি তংসম্বন্ধে সাবগর্ভ বক্তৃতা প্রদান করিলেন। শ্রোভাগণ অতি মনোযোগের সহিত বক্তৃতা প্রবণ কবিয়াভিলেন। বক্তৃতার পর ভাঁহারা কলিকাভায় প্রভাগমন কবেন।

বিবাহ—গত ৭ই আগষ্ট কলিকাতায় শ্রীযুক্ত বাবু কেদাবনাথ বায়েব সহিত শ্রীমতী কামিনী সেনেব শুভবিবাহ সম্পাদিত হইয়াছে। শ্রীযুক্ত বাবু আদিত্য কুমাব চট্টোপাধাায় আচার্যোব কার্যা কবেন।

৮ই আগষ্ঠ দেবাধূন সহবে প্রীযুক্ত বাবু ঈশানচন্দ্র দেবেব সহিত আমাদের বন্ধু বাবু অস্বিকাচবণ মুখোপাধ্যায়ের কন্তা প্রীমতী সরলা নুখোপাধ্যায়ের বিবাহ সম্পাদন হইয়া গিয়াছে। এই বিবাহ উপলক্ষে কলিকাতা হইতে প্রীযুক্ত বাবু নবদীপচন্দ্র দাস এবং শ্রীযুক্ত বাবু আদিনাথ চট্টোপাধ্যায় তথায় গমন কবেন। নবি দীপ বাবু আচার্যাের কার্য্য কবিয়াছেন। উভয় বিবাহই ৩ আইন অনুষ্ঠা বেজেইরী হইয়াছে। প্রমেশ্বর মবদম্পতিদিগকে আশ্বিধিদ করুন।

ত্বভিক্ষ সংবাদ—কার্যানির্বাহক সভা কোটালীপাড়াব ছভিক্ষেব সংবাদ প্রাপ্ত হইয়া সাহায্য বিভরণের জন্ম বাবু **কা**শী5<u>ল</u> ঘোষালকে তথায় প্রেরণ করেন। তিনি রাধাণঞ্জ নামক স্থানের চতুঃপার্ম্বে এক মাস কাল চাউল ও কাপড বিতরণ করিয়া পীডিত অবস্থায় কলিকাতায় প্রত্যাগত হন। সে সময় ফবিদপুবেব ডিঃ বোর্ড, খুষ্টান সমাজ এবং করিদপুর স্থদদ সভা সাহায্য করিতেছিলেন। স্কুদ্দ সভাব যে প্রতিনিধি সেথানে সাহায়া কবিতেছিলেন, তাঁহাকে স্বীয় কার্য্যোপলক্ষে বাধা হইয়। কলিকাতা আসিতে হুইয়াছে। অথচ অনাহাক্ত্র এথন ও প্রায় পূর্ব্ব রহিয়াছে। ফবিদপুর অন্তাদ সভার সম্পদক ঐ অঞ্জে প্রেরণের জন্ত সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে লোক চাহিযাছিলেন। কার্যানির্বাহক সভা সাধনাশ্রম হইতে সম্প্রতি বাবু হরিমোহন যোষাল ও বাবু কুঞ্জলাল গোষকে তথায় প।ঠাইযাছেন। বাবু কুঞ্জলাল ঘোষ ফরিদপুর স্থলদ সভাপ্রদত সাহাযা এবং বাবু হবিমোহন ঘোষাল সাধাবণ ব্রাহ্মসমাজের প্রাদত্ত সাহায্য বিতরণ কবিবেন। সজনয় মহোদয় ও মহোদযাগণ ছভিক্ষের নিম্নলিখিত ঠিকানায় চাঁদা প্রেরণ করিয়া অমুগ্রহীত কবিবেন। "শ্রীযুক্ত বাবু গুরুচরণ মহলানবিশ, ২১১নং কর্ণওয়ালিস দ্বীট, কলিকাতা।"

আদ্ধি—গত ২ ওশে প্রাবণ কলিকাতান্থ ভবনে শ্রীমতী কগৎলক্ষী ঘোষ তাঁহার পরলোকগত স্বামী বাবু ভ্বনমোহন ঘোষের আদ্যশ্রুদ্ধ সম্পাদন করিয়াছেন। পণ্ডিত শ্রীযুক্ত শিবনাথ শান্ত্রী আচার্য্যের কার্য্য কবেন। এই প্রান্ধোপলকে ১৫০০ শত টাকা দান করা হইয়াছে। ভ্বন বাবু মৃত্যুর অব্যবহিত পূর্বে তাঁহার প্রাদ্ধে এক হাজার টাকা দান কবিবার ক্ষন্ত বিদয়া গিয়াছেন। কোন্ স্থানে কত টাকা দিতে হইবে তাহারও এক ফর্দ রাধিয়া গিয়াছেন। এবং তাহার সহধর্মিনী ৫০০ শত টাকা দান করিয়াছেন। ভ্বন বাবুর ফর্দ অমুসারে এক হাজার টাকা দানের মধ্যে সাধারণ বাক্রমাজ নিম্নলিখিত

রূপে দান প্রাপ্ত হইয়াছেন; স্থায়ী প্রচার বিভাগ ৩০০ দাতব্য বিভাগ ৫০ মাখেৎসবে আহারের জন্ম স্থায়ী তহবিল ১০০ কলিকাতা উপাসক মণ্ডলী ৫০ এবং সাধনাশ্রম ৫০ মেটি ৫০০ টাকা।

ভুবন বাবুর ভগিনী প্রীমতী থাকমণি ঘোষ ৫ই আগষ্ট তারিথে তাঁছার কলিকাতার বাটীতে পরলোকগত ভাতার শ্রাদ্ধ কবিয়াছেন। তত্পলক্ষে শ্রীযুক্ত উমেশচন্দ্র দত্ত মহাশম্ম উপাসনা কবেন। তিনি সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে নিম্নলিখিত দান করিয়াছেন,—সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ সাধাবণ বিভাগ ৮০ প্রচার বিভাগ ৫১, সাধনাশ্রম ৩১, বালিকা বোডিং ৫১ মোট ২১১ টাকা।

ভূবন বাব্ব বন্ধু প্রীয়ক্ত বাব্ হরনাথ বন্ধ ঢাকা নগবীতে প্রচারাপ্রমে ২৪শে প্রাবণ তারিথে প্রান্ধ কবিয়াছেন। প্রীয়ক্ত বাব্ চণ্ডীকিশোর কুশাবী উপাসনা কবেন, প্রীয়ক্ত বাব্ নগেক্রনাথ চট্টোপাধ্যায় ভূবন বাব্ব সংক্ষিপ্ত জীবনী বলেন। এই উপলক্ষে হবনাথ বাব্ হংখা কাঙ্গালদিগকে কিঞ্চিৎ দান করিয়াছেন। প্রমেশ্বর প্রলোকগত জাত্মাকে তাঁহার অমৃত্ময় কোড়ে স্থান দান কর্মন।

আমাদের যশোহরত্ব বাদ্ধবন্ধ বাব্ প্রসরক্ষার চৌধুবীর ১ বংসর বয়ত্ব একটি পুত্র সন্তান গত ২রা আগপ্ত পরলোক গমন কবে, ৬ই আগপ্ত ৬ বংসর বয়ত্ব একটি কল্লাও পৃথিবী হইতে বিদায় গ্রহণ করিয়াছে। প্রসর্ম বাব্ কিছু কালেব জল্ল সপবিবাবে কলিকাতা আসিয়া ব্রাহ্মপাড়ায় বাস করিতেছেন। গত ১৩ই আগপ্ত বালিকাব শ্রাদ্ধ উপলক্ষে উপাসনা হয়। শ্রীযুক্ত মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় আচার্য্যের কার্য্য করেন, প্রসর্ম বাব্ প্রাথনা কবেন এবং শ্রীযুক্ত কানীচক্র ঘোষাল কোনও ধর্মপ্রতির পাঠ ও প্রার্থনা কবেন। প্রমেশ্বর লোকসন্তপ্ত দম্পতির প্রাণে শান্ধি দান করন। প্রসর্ম বাব্ সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে নিম্নলিখিত দান কবিয়াছেন। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ ২০ তিক্ষিবিভাগ ১০ সাধনাশ্রম ১০ টাকা।

বিগত ২৪শে শ্রাবণ ঢাকা নগরীতে বাবু জ্বোতিরীক্ত প্রসাদ মিত্রের পরী শ্রীমতী নিম্মণা মিত্র তাঁহাব প্রবলাক গণ্ডা পিতামথী অফিকা দেবীব আদ্যপ্রাদ্ধ সম্পন্ন করিয়াছেন। বাবু নগেক্তনাথ চট্টোপাধ্যায় উপাসনা করেন। শ্রাদ্ধক্তী এই উপ্লক্ষে পুকা বালালা ব্রাহ্মসাজে ৪১ টাকা দান কবিয়াছেন।

ঔষধ বিতর্ণ— আরা সহরে ভয়ানক বিস্চিকা আরম্ভ হইয়াছে। প্রতিদিন অনেক পোক কাল গ্রাসে পতিত হটতেছে। সেথানে চিকিৎসকের কোনও ভাল বন্দোবস্ত না থাকায়, আবা সাধনাশ্রমের পরিচারকগণ হোমিওপ্যাথিক প্রধ বিতরণ করিতেছেন। লোকে ৫।৬ মাইল দ্রবন্তী স্থান হইতে আদিয়া ঔষধ লইয়া যাইতেছে।

দান— আমাদের আগ্রান্থ বন্ধু প্রীযুক্ত বাবু নীলমণি ধরের পত্নী প্রীমতী সতাবতী ধর নৃতন বাটী ক্রন্থ উপলক্ষে নিমলিথিত দান করিয়াছেন;—সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ ৫১, সাধনাশ্রম ৫১ দাতব্য বিভাগে ১১ টাকা। আমরা এই দানের জন্ম তাঁহাকে:ধন্থবাদ প্রদান করিতেছি।

মাসিক পত্তিকা—"জোভিঃ" নামক একথানি ন্তন .
মাসিক পত্তিকা আমরা নিয়মিত রূপে প্রাপ্ত হইতেছি। ইহাতে
সমাজ-নীতি, বিজ্ঞান, সাহিত্য ইত্যাদি সম্বন্ধীয় উপাদের প্রবন্ধ
লিখিত হইতেছে। আমরা নবোদিত জ্যোতির দীর্ঘলীবন
ও মলল কামনা করি।

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

>•ম সংখ্যা। ১৭শ ভাগ।

১৬ই ভাদ্র শুক্রবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক অপ্রিম মূল্য ২া০ মফবলে ০ প্রতি খণ্ডের মূল্য প্র

#### ্প্রার্থনা।

হে প্রভা! ভোষার সভাধর্শের মহৎ লক্ষ্য যেন আমরা ভূলিয়ানা ঘাই। ভোষার প্রতি এবং ভোষার সভাধর্শের প্রতি আমাদের প্রেম এরপ বর্দ্ধিত হউক, ঘাহাতে আমবা ইহার জন্ত আপনাদের দেহ মন সমর্পণ করিতে পাবি। ভোমার বিশ্বাসী সন্তানদিগের বিশ্বাস ও প্রেমের শক্তি সমবেত না হইলে ত এ ধর্শের পরাক্রম জগতে প্রকাশ পাইবে না। কেন তাঁহারা পরস্পর বিচ্ছির হইয়া রহিয়াছেন ? ভোমার উপরে কি আমাদের এতটুকু প্রেম নাই, যাহাতে সমুদায় ক্রে ক্রে প্রেমার জন্ত ভোমার চরিবে সম্বার করে ভোষণা করিবার জন্ত ভোমার চরিবে সম্বার করে ভোমার চরিবে স্থাহাতে মানুবকে আত্ম-হারা করিয়া দেয়।

## সম্পাদকীয় মন্তব্য।

সত্যের জন্মই সত্যকে প্রীতি কর—একমন আমিষাশী একজন নিরামিষাশীকে একদিন জিজ্ঞাসা করিলেন— "মছাশ্য। আপনি কি মনে করেন জগৎ হইতে মাছ মাংস পাওয়া উঠিয়া যাইবে, যদি ভাহা না হর ভাহা হইলে, মাছ মাংস ছাড়িয়া শরীরটা নষ্ট করেন কেন ?" নিরামিষাশী উত্তর করি-**লেন—"আ**মিষ ভো**জন জ**গৎ হইতে উঠিয়া বাওয়া ত অস্তুৰ মনে করি না, কারণ মহযাসমাজ যভই সভা হইবে, ভ্ৰদল্পের কোমল ও সাধু ভাব সকল অতই বিকশিত হইবে, ভতই প্রাণি-হত্যার প্রতি লোকের বিতৃষ্ণা শ্বনিবে। मत्नहे कत्रा शिल, यन कशंटि आमिशानी लाक ित्रमिनहे থাকিবে, তাহার সঙ্গে আমার নিরামিষাশী হওয়া না হওয়ার দল্পক কি ? আমিষ ভোজন নিধিদ্ধ কাৰ্য্য বলিরা আমার · বিখাস জন্মিয়াছে, স্থতরাং আমি আমিষ ভোজন করি না,— সার কেই এ মতাবলখী হইল কিনা, তাহার বলে আমার সম্ম কি ? যাহা সত্য, আমি ভাহার অহুসরণ করিব; আর (क्र क्रक, चात्र मारे क्रक। त्रमंत्रम चरूनत्र क्रिस्त, न्छा

অধিক সভা হয় না, কিংবা দশজনে অমুসরণ না করিলে ভাহার মহিমার এক কণিকাও বিনষ্ট হয় না। এই স্থূল কথানী ज्ञित्रा या अन्नार्क ज्ञातक वृद्धनिष्ठि वाक्तित वर्ष वृद्धना प्रिथित পাই। তাঁহাবা জ্ঞানের দারা আদ্ধর্মকে গ্রহণ করিয়াছেন , ইহার উদার ও সার্বভৌমিক সত্য সকলকে জদরে স্থান দিয়াছেন; ব্রহ্মোপাসনাদিতে প্রীতি লাভ কবেন ও তাহাতে যোগ দিয়া থাকেন; কিন্ত তাঁহাবা পূর্ণভাবে ব্রাহ্মধর্মের সভা স্কল্কে পালন করিতে পাবিতেছেন না; ব্রাক্ষসমাজে যোগ দিতে পারিতেছেন না। তাহার **কারণ এই, বছ বংসরে**এ তাঁহাদের এই প্রশ্লটা মীমাংদা হইতেছে না যে, ব্রাহ্মদমাল স্থায়ী इडेरव किना ? जाँशावा यथन निर्कात हिन्ना करवन, छथन বলেন---"কৈ ইহার উন্নতির চিহ্ন ত দেখি না। ইহার প্রসিদ্ধ প্রচারকগণ ইহাকে বিক্বত করিয়া তুলিলেন, এবং অনেকে ইছাকে পবিত্যাগ কবিলেন; লোকের মুখে ইছার সভাদিগের কত নিন্দা ভনিতে পাই,—ইহার ভিতবে পা বাডাই কিরপে ? কাঁচা মাটীতে পা দিয়া কি "ইত:ভ্রপ্ততো নষ্ট'' হইব 

ভূ'' লোকে জিজ্ঞানা করিলেও এইরূপ কথা विनिष्ठा थारकन। महत्र्यम (कात्रार्ग এই শ্রেণীর লোকের বণনা করিয়াছেন, ভাহারা সন্দেহে দোলায়মানচিত্তে চিরদিন ধর্ম রাজ্যের ছারেই দণ্ডায়মান থাকে; ভিতরেও আসে ना, मृत्रि पात्र ना। এই मक्न बाक्ष अधिक्रा हेशि मिश्र क বলি—কে আসিবে কে না আসিবে তাহা গণনা করিওনা, তুমি যাহা সভ্য বলিয়া বুঝিয়াছ, ভাহা যথাসাধ্য প্রতিপালন কর, তাহাতেই তোমার মছব।ছ, মহত 'ও ঈখবের আহুগত্য, তত্তির তুমি ঈশবের চরণে অপরাধী।

একাকিছ নদী সকলের উৎপত্তি বিষয়ে এইরপ দেখা যার যে, ভাহারা নির্জন পর্বত শৃঙ্গে, মানব চকুর অগো-চরে জন্মগ্রহণ করে, কিন্তু সজনে কোলাহলমর নগরের পার্য দিয়া খীর কার্য্য সাধন করিয়া যার। জগতের ধর্ম সকলকে যদি এক একটা প্রোত্তরতীর স্থায় করন। করা যার, ভাহা হইলে ভাহাদেরও সক্ত্রে পূর্বোক্ত দৃষ্টান্তটী খাটে। যোর একাকিয়ের মধ্যে ভাহাদের অধিকাংশের জন্ম হইর হছে। ৫

সাধু মহাজনের মুধনি:স্ত সভ্যবারি বারা সেই স্কল স্রোত-স্বতী পূর্ণ হইয়াছে, তাঁহারা সে সকল সত্য বোর নির্ক্তনতার মধ্যে প্রাপ্ত হইরাছেন। আমরা কেবলমাত্র বাহিরের নির্জ্জন-তার প্রতি দৃষ্টি রাথিয়া কথা বলিতেছি না; ঘোর আধ্যাত্মিক নির্জ্জনতাই আমাদেব লক্ষ্য। শাক্য সিংহ নির্প্তন নদীর তীর-বন্তী অরণ্যমধ্যে ছয় বৎসরকাল কঠোর তপস্তাতে যাপন করিয়া-हिर्मन,---(मर्टे अंतर्गत निषक्ता इटेरेड दोक्षरार्भत सन्त्र, हेंहा বলা আমাদের অভিপ্রায় নছে: কিন্তু সেই নির্জ্জনতার মধ্যে আরও খোব নিজ্জনতা ছিল, তাহার প্রতি আমাদের লক্ষ্য। মহম্মদ হরা প্রতের কন্দরে একাকী বসিয়া চিম্বা করিতেন, সে হরা পর্বতকন্দরের নির্জনতা ত সামান্ত, কিন্তু তাহার ভিতরে যে একাকিত্ব ছিল, সেই একাকিত্ব হইতেই ইসলাম ধর্মের অভাদয়। এই সকল ধর্ম প্রবর্ত্তক মহাজনদিগের জীবন-চরিত সংক্ষেপে বলিতে গেলে এই বলিতে হয় যে, তাঁহারা জগতের পাপ তাপ দশনে হৃদয়ে আঘাত পাইয়া চিস্তাতে নিমগ্ন হইয়া-ছিলেন, সেই চিম্বাতে আত্ম-নির্ভর ও জগতের প্রতি নির্ভর চলিয়া গিয়াছিল এবং সম্পূর্ণরূপে একাকী হইরা ঈশ্বর-চরণে পড়িয়াছিলেন ও দেইখান হইতেই জীবনপ্রদ মন্ত্রের সন্ধান পাইরাছি<u>লেল।</u> একাকী ও অনন্তগতি হইরা ঈশ্র-চরণে প্ডা বড় সিইজ কথা নহে। ইহা ত আমরা অনেকবার বলিয়াছি, লিথিয়াছি, উপদেশ দিয়াছি; কিন্তু অনুভব करियाहि बहारे। बामदा मर्समा त्यक्रभ कनत्कानाश्लव मत्या ৰাস করি, তাহাতে মধ্যে মধ্যে আপনাদিগকে একাকী কবিবার চেষ্টা করা অতীব বাঞ্নীয়।

ঈশ্বর-প্রীতির অধিকার—সকলেই কি ঈশব-প্রীতির क्यिकाती ? व्यर्धा९ त्य त्र वाक्ति गत्न कतिलहे कि क्रेश्वत-প্রীতি লাভ করিতে পারে? অথবা ঈশ্বর-প্রীতি বিষয়ে क्षिकात्रीत्वन वारह ? उत्क्रिनिशत विद्राधिशन नर्सना छेन-হাস করিয়া বলিয়া থাকেন,---"অজাতশাশ্রু বালক, যাহার গলা টিপিলে অন্নপ্রাশনের অন্ন উঠে, দে মহাভক্ত ব্রাহ্ম হইয়া উঠিল, वक्षकान कि अमनहे किनिय ? वक्षकानक अहेक्श हक्ड़ा নকডা করে বলিয়াই ত আমরা ব্রাহ্মসমাজকে ঘুণা করি।" षावात्र बाक्षितिशत मधाहे ष्यत्नत्क विषया थात्कन-"बाक्षधर्य অশিক্ষিত ব্যক্তিদিগের জন্ম নহে, মার্জিতজ্ঞান-সম্পন্ন ব্যক্তি ভিন্ন এ ধর্ম কেছ পালন করিতে পারে না। সাধারণ লোকের মধ্যে हेहा প্রচার করিবার চেষ্টা করাই রুখা।" এ সমুদায় অধিকারীভেদের কথা। বয়সের অঞ্চতা অথবা মাজিত শিক্ষার অভাব বশতঃ যে লোকে ঈশ্বরকে প্রীতি করিতে অনুসূষ্ঠ হয়, আমরা এরপ মনে করি না। ছয় মাসের শিও এবং পঞ্চবিংশতি বর্ষ বয়স্ক জ্ঞানি-শ্রেষ্ঠ সস্তান উভয়েই পিতাকে প্রীতি করিতে পারে। কিন্তু একটা সদ্পুণ এমন আছে, বাহার অভাবে মাছুষের আহার ঈশ্বরকে প্রীতি করিবার অধিকার थारक ना। मासूच यनि आश्रनात्र धर्मात्कित्र वा विटवटकत्र विक्रम कार्या करत. यनि सीयरनंत्र कर्खवा मकन भानरन छेनामीन थात्क, छाहा हहेता स्नात छाहात्र मेचत्र-श्रीकित स्मिकात थात्क

ना। जुनि यादांपिरात अर्थ इः त्थत कक्क मात्री, जाहारमत अर्थ হু:থের প্রতি তোমার দৃষ্টি নাই; তাহাদের যে ক্লেশ নিবারণ করিবার সাধ্য আছে, সে বিষয়ে তোমার মনোযোগ নাই; তুমি যে কার্য্যের ভার লইরাছ ভাহা স্থচায়ুরূপে নির্বাধ করিবার क्य राधाना नाहे; जुमि अन भाष मित्र विनन्ना अन कतिनाह, সেই অর্থের অভাবে ভোমার উত্তমর্ণ ক্ষতিগ্রন্ত হইতেছে, সে বিষয়ে তোমার দৃষ্টি নাই : ঈশ্বর তোমাকে যে সকল শক্তি দিয়াছেন, ভাহার যথায়থ ব্যবহারের জ্বন্ত ভোমার ব্যগ্রভা নাট ;—কিন্তু তুমি পর্বত কল্পরে গিয়া ধ্যান করিবার জন্ত, বা ভক্তসঙ্গে ঘণ্টার পর ঘণ্টা বসিয়া ধর্মালাপ শুনিবার জল্প বা উৎসব ক্ষেত্রে সমস্ত রক্ষনী কীর্ত্তন ও সিংহবিক্রমে নৃত্য করিবার জন্ম বাস্ত। তোমার ধাবণা আছে, এতধারা তুমি ঈশ্বর-প্রীতি লাভ করিবে। কিন্তু এটা তোমার পক্ষে জানা থাকা ভাল, যে তোমার ঈশ্বর-প্রীতিতে অধিকার লাই। তুমি ১২ বৎসর পর্বতগুহাতে বাস করিলেও তাহা বিফল হইবে। ঈশ্বর এক্সপ আগ্রহ ভনিবেন কেন? এক গৃহত্ব বছদিন বিদেশে বাস করিতেন, অনেক বৎসর পবে বাড়ীতে আসিয়া দেখিলেন, কাঁহার কভাটী বড় হইয়াছে। কিন্তু বয়োবৃদ্ধি সহকারে ভাবকতাটা কিঞ্চিৎ অভিরিক্ত মাত্রায় পাইয়াছে। যথন তথন শেখানে সেখানে "বাবা মণি," "বাবা মণি" বলিয়া পিতাকে আদ্ব কবে। তিনি ব্রিয়া লিখিতেছেন, "বাবা মণি।" বলিয়া আসিয়া চুম্বন করে এবং সর্মাদা তাঁহার নিকটে থাকিতে ভাল বাসে। প্রেমের সীমা পরিসীমা নাই—সে পিতার জন্ত প্রাণ দিতে পারে। কিন্তু পিতার অত্যাবশ্রক প্র<u>য়ো</u>জনীয় কার্যোর জন্ত পিতা বার বার আদেশ করিয়াও দেখিতে পান যে তাহা হয় না। তিনি বাহিরে যাইবার সময় দেখিলেন, জামাঞ্চলিতে বোতাম'নাই; মোজা যোড়া পায়ে দিতে গিয়া দেখিলেন, চেড়ামোজা যোড়াটী সেলাই করে নাই; আহার করিতে গিয়া দেখিলেন, ভাত পুড়িয়া গিয়াছে, দেখে নাই; শগন করিতে গিয়া দেখিলেন, শ্যাগুলি বৃষ্টিতে ভিলিয়াছে, ভোলে নাই। এইরূপে কয়েকদিন দেখার পর একদিন কক্তাটী "বাবামণি।'' বলিয়া চুখন করিতে আসিল, তথন মুখ ফিরাইয়। বিরক্তি-কর্কশন্তরে বলিলেন—"আঃ কর কি । শুআর "বাবামণি" "বাবামণি" ভাল লাগে না। ঘরের কাঞ্চটাতে একট মনোযোগ क्रिल ভाग रहा।" आमारमंत्र त्यांथ रहा, आन्तरकत स्वेषत-প্রীতি সাধন এই প্রকার। ঈশবের আদেশ ও কর্তব্য भागत्मत्र पिरक पृष्टि नाहे। रक्षण क्षेत्रत महिथात्म वित्रा "বাবামণি। বাবামণি।'' বলিয়া প্রীতি সাধন করিবার জঞ্চ ব্যস্ত। এরূপ প্রীতি সাধনে ঈশ্বর প্রসন্ন হন না, স্থতরাং সে সাধন নিফল।

জগতে উদারভাবের বিস্তার—স্মানাদের ১৮৭২ সালের ৩ আইনের মূলে একটা উদার ভাব নিহিত আছে, 'বাহারা প্রচলিত কোনও ধর্মের নিয়মান্ত্রসারে বিবাহিত হইতে বাহাদের আগতি আছে, তাহাদের কি বিবাহ করিবার অধিকার থাকিবে না?

অথবা তাহারা যদি বিবাহ করে, তবে তাহাদের সন্তান সন্ততি কি আপন আপন পিতামাতার সম্পত্তি অধিকার করিতে भातिरव ना १ ७ जाहेन विवारक, ज्वतक भातिरव। जारम जारम জগতের সমুদার সভাদেশে এই উদার ভাবটী ব্যাপ্ত হইরা পড়িতেছে। হঙ্গেরি ইউরোপ মহাদেশের মধ্যে একটা সামান্ত প্রদেশ। সেধানে গ্রীষ্টধর্ম প্রবল। এতদিন গ্রীষ্টীয় थर्प्रनमारकत्र नित्रमाञ्चनारत विवाहानि हहेछ। बात्न (बाध हव, मिथात्न अक्रम नवनात्रीत मःथा मिन मिन वर्षिक रहेर्डिस, वाहात्रा भात औष्ठीवनभारमत त्रीडि পक्षडि भन्ननारत বিবাহ করিতে চাহেন না। এই সকল নরনারীর জন্ম আমা-দের ৩ আইনের অমুরপ একটা আইনের প্রয়োজন হইরাছে। এইরূপ একটা আইনের পাঙ্গিপি তাঁহাদের পার্লেমেন্টের নিয়তন সভা হইতে পাশ হইয়া উৰ্জতন সভাতে গমন করে: সেধানে প্রথমে পদ্ধিতাক্ত হয়। কিন্তু তাহাতে এত প্রবল আন্দোলন হয় যে, অবলেষে সেই আইন পুনরায় উপস্থিত করিরা পার্লেমেণ্টের উভর সভার বারা পাশ হইরাছে, রাজাও ভাহাতে সম্মৃতি দিল্লাছেন। এটিয় সমাজেব প্রভাপ চারি-मित्वरे धर्म रहेशा शिष्टाउट ।

শিশুদিগের ধর্মশিক্ষা---শিশুদিগকে ধর্মশিক্ষা দেও-রাব ভার কঠিন কার্যা আর নাই। কিরুপে শিক্ষা দিলে ভাষাদিগের উপযোগী হয়, कि প্রণালীতে নীতি ও ধর্মের স্থল निव्रम मक्न जागीएव मान वस्तुन कविया एए उसा याहेट भारत, ভাহা নির্দারণ করাই কঠিন। এ দেশে ইংরাজী শিক্ষা প্রচলিত হওরার এ প্রশ্ন আরও কঠিন হইরা উঠিয়াছে। ইংরাজী শিক্ষা বাহুলাকপে প্রচার হইনার পূর্ব্বে প্রত্যেক নিষ্ঠাবান হিন্দু গৃহস্তের গ্ৰহে শিশুদিগকে শিক্ষা দিবার একপ্রকাব প্রণানী প্রচলিত ছিল। অন্তম বর্ষে উপনীত প্রত্যেক ব্রাহ্মণবালককেই সন্ধাবন্দনাদি শিক্ষা দেওয়া হইত। গৃহের বৃদ্ধ বৃদ্ধাগণ মূথে মুখে পৌরাণিক আখ্যায়িকাদি ছারা ভাহাদিগকে অনেক কথা শিখাইতেন। তাহারা রামায়ণ ও মহাভারত পডিত বা ব্দপরকে পড়িতে শুনিত। কিন্ত ইংরাজী শিক্ষাবিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে সে সমুদায় লোপপ্রাপ্ত হইয়াছে। নবাশিক্ষিত পিতামাতা যাহা নিজেরা বিখাস করেন না, তাহা কিরুপে শিকা मिरवन ? এই कार्प रेममरव धर्मा मिका हिम्म प्रशास हरे एक এক প্রকার উঠিয়া ঘাইতেছে। ব্রাহ্মসমাজের পক্ষে এ প্রাশ্ন নতন। আমাদের ঘরে ঘরে শিশু সম্ভানের সংখ্যা ৰত্তই বাড়িতেছে, তত্তই এই প্রশ্ন গুরুতর হইয়া উঠিতেছে। चामार्मत गर्धा व्यन्तरक करवक वर्षत हहेरा व्यविवानतिक नौछि विमानम भागन कतिमा এই অভাব किम्रप्लिमाण দুর করিবার চেষ্টা করিতেছেন। কিন্তু তাঁহারা সর্বাদাই ত্বইটী অভাব অমুভব করিতেছেন। প্রথম শিশুদিগকে ধর্ম্মোপদেশ দিবার উপযোগী গ্রন্থাবলীর অভাব, দিতীয় গৃছে পিতামাতার নিকটে ধর্ম ও নীতিশিকা লাভের অভাব। এই বিতীয় অভাব নিবন্ধন তাঁহাদের উৎসাহ ও অধ্যবসায়ের অমু-শ্বশ ফল ফলিতেছে না। সপ্তাহে একবার ছই ঘণ্টার জন্ত

শিশুদিগকে ডাকিয়া ছুইটা ভাল কথা বলিলে, কত উপকার হয় ৭ হদি সপ্তাহের সমস্ত দিন পিতামাতার নিকটে সংশিকা না পার, ভাহা হইলে এফ দিনের শিক্ষাতে কি করিতে পারে ? শিশুদিগের ধর্ম-শিক্ষা-বিষয়ক প্রশ্নের কঠিনতা যে কেবল আমরাই অসুভব করিতেছি তাহানহে। ইংলওেও এবিষয়ে च्यात्मानन हिनटलहा त्रथात "त्रविवानतिक विमानत्र" ভাছাতে শিক্ষা দান করা একটা প্লাঘার কথা। वछ वछ लाक प्रविवामित्रिक विमानिया निश्वनिशटक निका (मुख्यात्र विषयः नाहाया कतिया थाटकन । किन्छ किछूमिन इटेल, সেধানেও এই প্রশ্ন উঠিয়াছে, "শিশুদিগকে বাইবেলের আথ্যা-য়িকা সকল হইতে শিক্ষা দেওয়া কর্ত্তব্য কি না।" এতদিন वाहेरवन व्यवनम्बन कवित्रा निका मिश्रा हहेना व्यानिएएह, अ প্রশ্লোতরচ্ছলে প্রীষ্টধর্মের মূল মৃল মত শিক্ষা দেওয়া হই-তেছে। কিন্তু জ্ঞান বিজ্ঞানের উন্নতির সঙ্গে সঙ্গে বাইবেলের প্রতি লোকের আস্থা চলিয়া যাইতেছে। অনেকে এখন অমুভব ক্রিতেছেন, যে যাহা সত্য বলিয়া বিশ্বাস ক্রিতে পারা বার না তাहा निस्तमिशक निका प्रश्वा व्यवस्वा। देश्वाध्वत देखे-निट्छेतियान मच्छामाय अटकचत्रवामी. छाँशामत त्रविवामतिक विमानित्र निक्षमिशक निका मिवांत अन्त निकामत्र মতামুঘারী পাঠা গ্রন্থাবলী রচনা করিয়াছেন। তাহাতে বাই-বেলকে অবলম্বন করিয়াছেন বটে; কিন্তু তাহার ভ্রম প্রমাদ পরিহার করিয়াছেন। আমাদেরও বোধ হয় আমাদের দেশের পুরাণ সকলের করনা ও নিষিদ্ধ ভাগ বাদ দিয়া, শিশুদিগের পাঠোপযোগী ও ধর্মোপদেশোপযোগী আখ্যারিকা সংগ্রহ করিতে পারিলে ভাল হয়, কারণ শিশুদিগকে যেকপেই উপ-(मन (महम्रा गाँडिक ना (कन, (कवन माधात्र) ভাবে एक नीडि উপদেশ कतिरम करनामग्र इटेरव ना, नर्समाटे आधाशिकामि দারা ভাহাদিগকে উপদেশ দিতে হইবে।

জাতি-গর্বাকি তুষ্পরিহার্য্য ?—আমেরিকাব প্রশংসা चांभारतत्र भूर्य थरत ना । चार्यात्रका, कानविकारन चशुनत्र, সভাতাতে উন্নত, শিল্প বাণিজ্যে সর্ব্বাগ্রপণা ও সর্ব্ববিধ উন্নতিতে জগতের আদর্শ স্থানীয়, এরপ প্রশংসা সর্ব্যদাই শুনিতে পাওয়া যায়। কিন্তু আমেরিকার একটা ভিতরপিঠ আছে, তাহা अर्मान्य व्यानारक व्यवशंक नार्यन । त्यमन हास्त्र तमार कन्द्र, তেমনি আমেবিকারও যদের উপরে একটা প্রকাও কালির দাগ আছে। আমেরিকার সমাজে জাতিভেদ অতিশন্ন প্রবন ও অসহনীয়। ইহা সেই পুরাতন বৈদিক শুক্ল ক্লফের, আর্য্য অনার্য্যের বিরোধ। অনেকে সুলভাবে অবগত আছেন যে. আমেরিকাতে এক সময়ে দাস্ত প্রথা প্রচলিত ছিল, এখন উঠিয়া গিয়াছে, জীভদাসগণ সকলে স্বাধীন হইয়াছে i কিন্তু এখনও কি ব্যাপার দেখানে চলিয়াছে, তাহা অনেকে অবগত নহেন। আমেরিকার যুক্তরাজ্যের দক্ষিণ বিভাগে জাতি विरवरषत्र व्यक्ति ध्यमन धारत व्यक्तिर्छर्छ। ২৭ বংসর হটল, বোর অন্তর্বিদ্রোহ ও অনেক রক্তপাতের भत्र **भारे**रमत बाता औष्णांत्रिशितक बाबीन कहा हरेबाह्य बरहे.

किन्द्र कािंटिवटवत्र अधि এখনও निर्साण इम्र नाहे। बन्नः ক্লফবর্ণ কাফ্রিণণ যভই উন্নতি লাভ করিতেছে, ভতই ভাছাদের পুরাতন শুক্রবর্ণ প্রভুগণ গাত্রদাহে অন্বির হইতেছেন; এবং क्थान कथान मायाच जानतार मायी निर्मारी विहान ना ৰুরিয়া কৃষ্ণকায়দিগকে ঘোর যাতনা দিয়া হত্যা করিতে আরম্ভ ক্রিয়াছেন। আইন আদালত অধিকাংশ শুক্লবর্ণদিগের হস্তে স্থতরাং আশামুরূপ সালা হইতেছে না। ভারতীয় পাঠক ভুনিয়া আশ্চর্য্যায়িত হইবেন যে, আমেরিকার অনেক রাজ্যেই এই আইন প্রচলিত আছে যে, কোনও কৃষ্ণকার পুরুষ যদি কোন খেতালিনী নারীব পাণিগ্রহণ কবে, তবে সে বিবাহ অসিদ্ধ বলিয়া পরিগণিত হইবে, ও সেই পুরুষ সেই অপরাধের क्रम करतम इहेरव। हेहा इहेन, मसूत প্রতিলোম विवाह। কিন্তু কুষ্ণকায়দিগের প্রতি এই ঘোব অত্যাচারের মধ্যে একটি বিষয় দেখিয়া স্থুপ হইতেছে। স্বাধীনভার যে কি গুণ তাহা ক্লফ্রকায়দিগের উন্নতিতে প্রমাণিত হইতেছে। আমেবিকার একথানি সংবাদপত্তে দেখা গেল যে, ২৭ বৎসর পূর্বে অর্থাৎ স্বাধীনতা লাভেব পূর্বে দক্ষিণ প্রদেশে প্রায় ৪,০০০,০০০ চল্লিশ লক্ষ কাফ্-িদাস লেখাপড়া করিতে পাইত না। দেশের আইন তাহাদিগকে 🗱 লাভ কবিতে দিত না। কিন্তু এই ২৭ বৎসরের মধ্যে অভিস্থনীয় পরিবর্ত্তন ঘটিরাছে। বিগত ১৮৯০ সালের লোকসংখ্যা গণনার সময় জানা গিয়াছে যে, একংণ २,६००,००० शॅठिम लक्ष कृष्णकाम शुक्र ७ स्त्रीलाक निविद्ध ও পড়িতে পাবে: প্রায় ১,২৬৮,২৩০ জন বালকবালিকা নিয়তন বিদ্যালয়ে শিকা করিতেছে; প্রায় ২০,০০০ বিশ शकांत्र कृष्णकांत्र श्रुक्ष ७ महिला निकाकार्र्या नियुक्त त्रशिक्षां इन ; अरे २१ वर्गात्त्रत्र मास्या अरे कृष्णकाय्याग निक व्यर्थ ७ निक हिहार डेकिनिकात क्रम ७ है। এकाएम ৮০টা কলেজ ও প্রায় ২০০০ বিশ হাজার মধামশ্রেণীর বিদ্যাশয় স্থাপন করিয়াছে। ইহাদের মধ্য হইতে প্রায় এক সহস্র ব্যক্তি স্থাশিকিত হইয়া ধর্মপ্রচার ত্রতে জীবন সমর্পণ कतियारहन। २१ वर्गात এই कन, जा जिल्हा असनहे किनिम বে এই উদ্যোগ ও আয়োরতির শক্তিকে শত শত বংসর চাপিয়া রাথিয়াছিল। আইন, জাতিভেদের মন্তকে লগুড়াঘাত क्रियाह्म, किन्त देवतानगरक निर्म्वाण क्रिंतर्छ शास्त्र नाहे। বাক্ষদমাকেও দেখিতেছি, জাতিভেদ ছাড়িয়াও আমাদিগকে ভাড়িতেছে না। ত্রাক্ষ-পরিবার সকলের কেহ কেহ পুত্র কক্সার বিবাহ দিবার সময় অজাতীয় বর ক্সা খুঁজিয়া বেড়াইতেছেন। ভারতের জাতিভেদ জিনিস্টা এইরূপ।

পঞ্চম পুরুষার্থ—ছিন্দুশান্তে ধর্ম, অর্থ, কাম, মোক এই চারি প্রকার পুরুষার্থের বিষয়.উল্লেখ আছে; তল্পধ্যে মোক বা মুক্তি পাঁচ প্রকার। ভক্তিশাল্তে ভগবৎপ্রেমের নিকট এই পাঁচপ্রকার মুক্তি অতি তৃচ্ছ বলিয়া কথিত হইরাছে। ভগবভক্তগণ ধর্ম, অর্থ, কাম, মোক্ষ এই চতুর্ম্বর্গ ফলম্পৃহা পরি-ত্যাগ করিয়া ভগবানের সেবাময় বিশুদ্ধ প্রেমকেই জীবের চরম লক্ষ্য বলিয়া থাকেন। ইহাই পঞ্চমপুরুষার্থ। ব্রাশ্বধন্ত্র বলিতেছেন, ঈশর-প্রীতি ও ঈশর-সেবাই যথার্থ উপাসনা এবং ইহাই মানবের ঈশ্বন-নির্দিষ্টধর্ম। ভজিশাল্লের সহিত এ বিষয়ে ত্রাহ্মধর্মের চমৎকার সাদৃগু দেখিতে পাওয়া যার। ঈশরের প্রিরকার্য্য সম্পন্ন করাই ঈশ্বর-সেবা। ঈশ্বর-সেবার অর্থ, নরনাবীর সেবা অর্থাৎ জনসমাজেব হিতামুগ্রান। পরমেশরের প্রিরকার্য্য—তাঁহার ইচ্ছামুগত কার্য্য কি ?—না জগতের মঙ্গলাধন। ঈশ্বর প্রেমময় মঙ্গলমর, জগতের মঙ্গলাই তাঁহার উদ্দেশু। আমরা বথন সর্ব্বপ্রকার অভিসন্ধি পরিত্যাগ করিয়া সরলভাবে পবিত্র অন্তঃকবণে জগতের কল্যাণজনক সাধু অমুগ্রানে যোগদান করি, তথনই আমবা পরমেশরের প্রিরকার্য্য অর্থাৎ তাঁহার সেবা করিয়া চবিতার্থ হই। এই কর্ম্মধ্যোগাত্মক উপাসনাই ব্রাহ্মধর্ম্বের প্রাণ। সেবা ঘারাই প্রীতির পরিচর, সেবাশৃক্ত প্রীতির কোন অর্থ নাই।

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

## मार्क्सरजीयका ७ मार्ख्यमीयिक्छा।

প্রত্যেক মানবেব চবিত্রে হুইপ্রকার ওণ আছে, এক প্রকার তাণ মানবসাধাবণ, অপববিধ তাণ বিশেষ বিশেষ জাতি সাধারণ; তেমনি সকল ধর্ম্মেবই তুইদিক আছে, একটা मार्का छो भिक निक, अभव हो। मान्याना विक निक। धरे रा আমরা বাঙ্গালি তুমি, আমি. বাম খ্রাম. গোপাল প্রভৃতি এই আব ঐ যে ইংরাজদল, ওয়েভ, বীমস্ ফটন প্রভৃতি। घुटे मन्दर धकेख आनयन कत, जुननाडि ग्याद्याहना कत, **टमिश्रिट जामारमंत हिंदि धमन किছू किছू आहा यांश नकन** रिम्ट ने क क मानरतत्र हित्र छि भा अप्रा यात्र, यादा 🐧 है श्टब्रक-দিগের চরিত্রেও আছে: আবার এমন কিছু আছে, যাহা বিশেব-ভাবে হিন্দুর-বঙ্গের বাঙ্গালিব, বাহা ঐ ইণ্রাঞ্চ চরিত্রে পাওয়! যার না। আবাব ঐ ইংরাজদিগের চরিত্রে এমন কিছু কিছু পাইবে, याजा मानव माधावरणन खन, याहा এই वालानि हितर्छ छ আছে, অথচ এমন কিছু ও দেখিবে যাহা পর্কতোভাবে ইংলওের ইংরাজেব, বাঙ্গালিতে তাহা নাই। মানবচবিত্তের এই সার্ব-ভৌমিকতা ও জাতীয়শার বিষর্বে চিম্তা করিলে আর একটা তম্ব নিরূপণ করা যায়। বোন কোন মাসুষ এমন দেখি, যাঁহাদের চরিত্তে সার্ব্যভৌমিকতা বেশি, তাহাদের মন স্বদেশ ও স্বন্ধাতির মধ্যে একাস্ত বন্ধ নহে, তাঁহাবা উদাবভাবে সমগ্র জগতকে আপনাদের প্রেম বাহর মধ্যে আলিঙ্গন করিয়া থাকেন। আবার কোন কোনও লোককে দেখি, ধে তাঁহাদের চরিত্রে আতীয়তার ভাবই প্রধান। সত্তর বংসর পূর্বে এই বঙ্গদেশে ছুইজন থ্যাতনামা ব্যক্তি বিদ্যমানছিলেন। হুইজনেই স্বাবলম্বন শক্তির দারা প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছেন, এবং চুইজনের মধ্যে কিঞ্ছিৎ প্রতিষ্ঠিতাও ছিল। সেই তুই জনের নাম উল্লেখ করিলেই আমাদের অভিপ্রেত অর্থ সকলের হাদরক্ষম হটবে। একলন মহাত্মা রাজা রামমোহন রায়,অপর জন প্রসিদ্ধ রাজা রাধাকাত দেব। রামমোহন রায়ের চরিত্রে সার্বভৌমিকতা প্রবল ছিল। তাঁহার কি আর দৃষ্টান্ত দিব ? ইটালীর লোকে সাধীনভার

বুদ্ধে হারিয়া যাইতেছে শুনিয়া যিনি মনের ক্লেশে নিমন্ত্রণ রক্ষাকরিতে পারেন নাই; স্পেনে স্বাধীনতার পতাকা উডিয়াছে শুনিয়া যিনি কলিকাতার টাউন হলে মনের আনন্দে প্রকাশ ভোজ দিয়াছিলেন, তাঁহার সার্বভৌমিকতার আবার কি প্রমাণ দিব ? তাহার কল দেখ, ইংরাজ, ফরাসি, মার্কিন সকলেই তাঁহার মহত্ব ব্রিয়াছে। রামমোহন রায় "এন্সাইক্লোপিডিয়াতে জগতের মহাপুরুষদিগের মধ্যে স্থান প্রাপ্ত ইয়াছেন। রাধাকাস্ত দেব ও বিয়ান্ বৃদ্ধিমান্, রুতী ও প্রতিষ্ঠাভাজন ব্যক্তি ছিলেন; তাঁহারও স্থ্যাতি আমাদের মধ্যে রহিয়াছে; কিছ তিনি প্রধানতঃ ভারতের হিন্দু ও বঙ্গের বাঙ্গালি ছিলেন। তাঁহাকে বাহিরের লোকে ব্রিতে পারে নাই।

আবার আর একদিকে এই সার্বভৌমিকতা ও জাতীয়তাব वारखन रमथ। माशिरखा देशांत रकमन विचित्र कन! देश्ताकी সাহিত্যাভিজ্ঞ সকলেই.कार्नन, य पि श्रामीन পাঠकाণ সকলেই দেক্ষণীয়ারকে মানব সাধারণের কবি (Poet of humanity) বলিরা থাকে। কেন ? কারণ এই, সেকপীয়াব যে সকল ক্লচি ও ভাব বৰ্ণন কবিয়াছেন, তাহা দাৰ্কভৌমিক, তাহা টেমদ্ नमी जीरव रशक्रभ ज्यामृठ, समृव शृर्ख काक्रवी जीरव अ रमहेक्रभ আদৃত। বোমিও জুলিয়েটের প্রেমের মধুরতা, ডেস্ডিমোনার প্রাণুরে গভীরতা, ইরাগোর ধৃষ্ঠতা, যুববান্ধ হামলেটের আক্রোশ, ম্যাকবেপের লোভ ও তাহার শান্তি, কে না অমুভব করিতে পারে . কিন্তু সেই ইংলপ্ডেই আর একজন কবি জিমি-बाह्न, डाहांत नाम कांडेशांत (Coloper)। हेरीतक नकरण ( most English of English poets )- "ইংবাজ কবি-দিগের মধ্যে বিশেষ ইংরাজ" বলিয়া থাকে। ইহার অর্থ কি ? ইহার অর্থ এই, কাউপার মানব-সাধারণের কচি ও ভাব সেইরূপ वाक करतन नाहे, हेश्त्राक काजित विस्मय विस्मय ऋहि ७ जाव त्य शतिमार्ग वाक कतिवार्षां । जत्व रमथ, हे शतिक कविमिर्गव মধ্যে সেক্ষণীয়ার সার্ব্বভৌমিক: কিন্তু কাউপার সাম্প্রদায়িক।

ধর্ম সকলের মধ্যেও এইরূপ প্রভেদ দেখিবে। এমন কোনও ধর্মই নাই, যাহাতে কিছু না কিছু সার্বভোমিকভাব নাই, আবাব এমন ধর্মও নাই, যাহাতে কিছু না কিছু সাম্প্রভাষিক বা জাতীয় ভাব নাই। অগচ এরূপ দেখি, কোনও ধর্মে সার্বভৌমিক ভাব কিছু অধিক, কোনও ধর্মে বা সাম্প্রভামিক ভাবটা কিছু অধিক। গ্রীইধর্ম, রিছদীধর্ম হইতে উন্তুত, তথাপি গ্রীইধর্মে সার্ববভৌমিক ভাব প্রবল, রিছদীধর্মে সাম্প্রভাষিক ভাব প্রবল। রিছদী ধর্মের সংশ্রবে আর একটা ধর্ম অভ্যাদিত হইয়াছে, তাহা ইদ্গাম ধর্মা, তাহাতে তাতারের সাম্প্রদায়িক ভাব প্রবল। গ্রীইধর্মের যে সার্বভৌমিকতা তাহা গ্রীক সম্ভাতার সংশ্রব জাত ও সেন্টপ্রের প্রধান কীন্তি। সে যাহাই হউক, গ্রীইধর্ম্ম সার্বভৌমিক বিলিয়া জগতে ব্যাপ্ত হই-রাছে; রিছদী ধর্মা অতি সংকীর্ণ সীমার মধ্যে বাস করিতেছে।

কিন্ত এপানে একটা কথা স্মরণ রাধিতে হইবে, নদী বেমন অতি স্বচ্ছ তৃষাবময় উৎসে জ্মিলেও বেরূপ ভূমির ভিতর দিয়া প্রবাহিত হয়, তাহার রং কিয়ৎপরিমাণে গ্রহণ না করিয়া যাইতে পারে না, তেমনি কোনও প্রবল ধর্মভাব বেরূপ হৃদয়েই জন্মগ্রহণ করুক না কেন, তাহা যেরূপ সমাজ মধ্যে প্রবাহিত হয়, যেরূপে চিস্তার সংশ্রবে আসে, তাহার ভাব কিয়ৎপরিমাণে গ্রহণ না করিরা থাকিতে পারে না। এক ব্রাহ্মধর্ম ইংলণ্ডেও বঙ্গদেশে কি মূর্স্তি ধাবণ করিতেছে, তাহা তুলনা কব। ভ্রমি সাহেব যদি কোনও দিন ব্রাহ্মদিগের কীর্ত্তনে উপন্থিত থাকেন, তাহা হইলে এতই বিশ্বরাবিষ্ট হইবেন যে, দশদিনে সে বিশ্বর মন হইতে যাইবে না। অতএব প্রচলিত ব্রাহ্মধর্মের যেমন একটা সার্ব্বভৌমিক দিক আছে, তেমনি একটা জাতীয় দিকও আছে। ইহার সার্ব্বভৌমিকতা প্রীষ্টধর্মের সংশ্রবে উৎপত্তি হইরাছে এবং ইহার জাতীয়তা হিন্দ্ধর্মের গর্ভে ক্রিয়াছে কেবল জাতীয়তা নহে, সাম্প্রদায়িকতাজনিত সংকীর্ণতাও ইহার মধ্যে আছে। সেটুকু অনিবার্য্য ও অতীব প্রয়োজনীয়। ইহা যুক্তির ঘারা প্রমাণ করা যাইতে পারে। সংক্রেণে সেই বৃক্তি নির্দেশ করিতেছি:—

১ম। কোনও দলের কার্যাকারিতা, তাহাদের লক্ষার স্থনিদিষ্টতা ও তল্ল<u>কা সাধনার্থ মনের অ</u>ন্থরাগের উপর নির্ভব কবে।

২র। লক্ষ্যের স্থানির্দিষ্টতা ও তৎসাধনে অনুবাগ,—
কতিপর সত্যের প্রতি বিশেষ মনোযোগ দেওয়ার উপবে নির্ভব
করে।

স্থতরাং কতিপয় সত্যের প্রতি বিশেষ মনোযোগজনিত যে म•कौर्गछा, ভাহা ঐ দলের कार्याकात्रिভाব জন্ম প্রয়োজনীয়। ইংলণ্ডের ইতিহাসজ্ঞ ব্যক্তিদিগকে জিজ্ঞাসা কবি, কবডেন ও প্রাইট যথন বাণিজ্যের স্বাধীনতা স্থাপনের জক্ত মাতিয়া ছিলেন, তথন তাহাই ধ্যান, তাহাই জ্ঞান যদি না কবিতেন, ভাহা হইলে কি কুতকাৰ্য্য হইতে পারিতেন ব্রাহ্মগণ সাম্প্রদায়িক হইতেছেন বলিয়া ছঃৰ কবা দূবে থাকুক, এই ছঃৰ করি বে, আবও সাম্প্রদায়িক হইতেছেন না কেন ? ইহার কভিপয় সতাকে আরও দূঢরূপে ধরিতে পারিতেছেন না কেন 📍 লোকে যাহাই বলুক দেদিকে দৃষ্টিপাত করিলে চলিবে না, আমবা যেন বজ্রগন্তীরশ্বরে সর্বনা বলিতে পাবি, পৌত্রলিকতার বিনাশ, প্রব্রহ্মের পূজা, জাতিভেদের বিনাশ, মানবের ভ্রাতৃষ —ইহা অত্যে তৎপরে অপব কথা। সে উদাবতা অসাব,— অভ্তানোচিত ও ঘুণিত, যাহা এই সভাষয় হইতে ব্ৰাহ্মদিগেব দৃষ্টিকে অন্তর লইয়া যাইবে। আমরা জানি, ব্রাহ্মধর্ম সার্ক-ভৌমিক, কিন্তু ইহার সাম্প্রদায়িক দিকও আছে, তাহা আমা-দের জীবন ও কুতকার্য্যভারে পক্ষে অতীব প্রয়োজনীয়।

#### আপ্ত-বাক্য ও স্বাধীন চিন্তা।

আপাততঃ :বোধ হইতে পারে যে, যে সমাজ বছকাল পূর্ব্বেই অল্রান্ত শাস্ত্র ও গুরুবাদ থওন করিয়। আত্মপ্রতায় ও যুক্তির উপর ধর্মকে স্থাপন করিয়াছেন, সেই সমাজে বর্ত্তমান বিষয়ের আলোচনার বিশেষ প্রয়োজন নাই। কিন্তু কভক-গুলি কারণে এই বিষয়ের গভীর :আগোচনা আবশ্রক বলিয়া

 <sup>&</sup>quot;তত্ববিদ্যা সভায়" য়ীবৃক্ত বাবু সীতানাথ দত কর্ভৃক পঠিত প্রবন্ধ।

বোধ হয়। স্বাধীন চিস্তা থকা করিয়া আবিচারিত ভাবে গুরুবাকো নির্ভর করিবার প্রবণতা সমাজের কোন কোন বিভাগ বা ব্যক্তির মধ্যে বে দেখা দিয়াছে, তাহা কাহারো অবিদিত নাই। কিন্তু গাঁহাদের মধ্যে এই প্রবণতা স্পষ্টরূপে (मेथा नियारक, टकरन उँ। हानिशटक नका कतियाह एव आमती এই বিষয়েব অবতারণা করিতেছি তাহা নহে। যে সমাজের অনেকগুলি স্থবিবেচক ও সাধন-পরায়ণ ব্যক্তিব মধ্যে এই প্রবণতা স্পষ্টরূপে প্রকাশ পাইয়াছে, সেই সমাজ মধ্যে যে এই প্রবণতাব বীজ প্রচন্ধভাবে নিহিত আছে, তাহা চিস্তাশীল बाक्तिमाज्ञ श्रीकात्र कविरवन । भवीरतत्र श्राम विरमस्य स्काउँक উড়ত হইলে বুঝা ধার শরীরের সমগ্র রক্তই কিয়ৎ পরিমাণে দূষিত হইয়াছে। আমাদের সাধারণ অবকা দেখিয়াও বুঝা यात्र (य वाधीन हिन्छ। नमारक द कीवरन जान्न वक्तम्न रह नारे। त्य नमात्म नाहिजाञ्चताग नाहे, नाहित्जात उन्निज नाहे, क्छाना लाहनात्र छे : नाह नाहे. (महे नमास्क উल्लिथिङ রোগের স্পষ্ট প্রকাশ না হইলেও বুঝা যাইত যে, সুমাজ স্বাধীন চিন্তার माराया अपनक्षा (कर्ण क्यायर श्रीकात क्रियाह्न, श्राधीन **हिन्ठारक প্রাণের সহিত আ। । अपना करत्रन नाहे। आ**मार्टित ञानक मिन रूट्रेट के लाहे त्वां हरेट छाइ (य गाँहा एम स साधा উক্ত প্রবশ্বনশিষ্টরূপে প্রকাশ পাহয়াছে এবং অপর দিকে বাহারা ইহার প্রতিবাদ কবিতেছেন, এই উভয় দলের মধ্যে চিম্বার স্বাধীনতা সম্বন্ধে বিশেষ পার্থক্য নাই। সাধারণভাবে উভন্ন দলই অল্ল বা অধিক পরিমাণে আপ্ত-বাক্যের উপর দণ্ডায়নান। অনেক স্থলেই প্রভেদটা কেবল এই মাত্র যে এক দলেব পরতন্ত্রতা স্পষ্ট ও সজ্ঞান ; অপর সম্প্রদায়ের পরাধীনতা অম্পষ্ট ও অজ্ঞাত। অর্থাৎ যাহারা ব্যক্তি বিশেষের উপর কোন কোন ত্রাক্ষের অন্ধ নির্ভর দেখিয়। এরপ নির্ভরের প্রতিবাদ क्ति তেছেন, আমার বেধি হয় অধিকাংশ স্থলে তাঁহারাও সমাজের নেতা অর্থাৎ আচার্য্য, প্রচারক ও লেথকদিগের কথা, অথবা সমাজ-প্রচলিত সাধারণ মতের উপর তদ্রূপ অশ্বভাবেই নির্ভর করিতেছেন। ভবে প্রভেদটা এই যে अथरमाक मन निष्कत भत्राधीनछ। वृक्षिष्ठ भाविष्ठिकन, শেষোক্ত দল তাহা না বুঝিয়া নিজের অধীন ও অন্ধ মতকে স্বাধান মত বলিয়া মনে করিতেছেন। ফল সম্বন্ধে বিশেষ প্রভেদ এই যে, প্রথমোক্ত দল **অপেকা** শেষোক্ত দলকে প্রকৃত স্বাধীন চন্তার দিকে অগ্রসর করা অপেক্ষাকৃত অনেক সংজ, কেন না তাঁহারা প্রকৃত পক্ষে পরাধীন হইয়াও স্বাধীন চিম্ভার মাহাত্মা স্বীকার করিতেছেন এবং ইহার উন্নতির পক্ষপাতী। অপর দল সম্বন্ধে এই আশা পোষণ করা ঘাইতে পারে না।

কৃত্ত কেবল স্বাধীন চিন্তার পক্ষ সমর্থনই অদ্যকার আলোচনার বিষয় নহে। যে যে স্থলে বরুস, অভিজ্ঞতা ও শিক্ষাব অন্নতা বশতঃ স্বাধীন চিন্তার স্ফৃত্তি বা উন্নতি অসম্ভব, সেই সেই স্থলে আপ্ত-বাক্যে বিশাসকে কতটা প্রশ্রম দিতে হইবে, এবং ধর্মপ্রচার ও ধ্যাশিক্ষা সম্বন্ধে কিন্তুপ প্রণাণী অ নম্বন করিতে হইবে, এই বিষয়ে বিচারের অবতারণা করাও এই প্রবিদ্ধের অক্সন্তর উদ্দেশ্য। ব্রাহ্মধর্ম স্বাধীন চিন্তার উপর প্রতিষ্ঠিত, তাহাতে সন্দেহ নাই, কিন্তু যথন স্বাধীন চিন্তার ফুর্ন্তি বয়স, অভিজ্ঞতা ও শিক্ষার উপর নির্ভর করে, এবং সমাজভূক সকল ব্যক্তিই যথন পরিপক্ষ বয়স্ক, অভিজ্ঞ ও স্থানিকত নহেন, এবং স্বাধীন চিন্তার অভাবে আপ্ত-বাক্যে বিশ্বাসই যথন ধর্মমত ও ধর্মজীবন লাভের একমাত্র উপার, তথন ব্রাহ্মসমাজতে অনেক পরিমাণে আপ্ত-বাক্যে বিশ্বাসর প্রশ্রম দিয়া চলিতে হইবে, ইহাও অনিবাধ্য বলিয়া বোধ হয়। কিন্তু এই প্রশ্রের সীমা নির্দিষ্ট হওয়া আবশ্রক।

সাধীন চিস্তা ফ্রিত হইবার পূর্বে মাতুষ নিজ সমাজ-প্রচলিত মত নিখাদ বাযুর ক্লায় অভাবতঃ গ্রহণ কবে, ইহার সত্যাপত্যতা বিচার করে না। ব্রাহ্মসমাজ এই সাধারণ নিয়-মের বহিভূতি নহেন। হিন্দু, মুসলমান বা এীষ্টান বালক বালিকা যেমন হিন্দু, মুমলমান বা গ্রীষ্টান সমাজে জাত विनिग्राहे हिन्तू, मूननमान वा औद्योन, आका वानक वानिकांड তেমনই ব্রাহ্মসমার্জে জাত বলিয়াই ব্রাহ্ম। এই নিয়মামুসাবেই নান্তিক পবিবার ও নান্তিকতাব প্রভাব মধ্যে জাত জনষ্ট্রাট মিল ধর্মবিশ্বাস-বিধীন হইয়া বদ্ধিত হইয়াছিলেন। বিশ্বাস সম্বন্ধে সাধারণ প্রাকৃতিক নিয়ম এই যে বিপরীত বিশাসের সংশ্রবে না আসিলে পূর্ব্ব বিখাস বিচলিত হয় না। প্রচলিত হিন্দুধন্মের বিপরীত বিশ্বাসেব আঘাতে এদেশে ত্রাহ্মধক্ষের উৎপত্তি। যাহারা দেশ-প্রচলিত সাকারোপাসনা ও জাতি-ভেদ প্রভৃতি সামাজিক প্রথা পরিত্যাগ করিয়া ব্রাহ্ম ইইরাছেন. তাঁহাদের মৃত্ত-পবিবর্ত্তন অনেক স্থানেই স্বাধীন চিন্তা-প্রস্তুত্ত, नत्मर नारे। किन्न श्रातिक धर्मा । वाक्ष सम्बद्ध नार्मा वाक्ष नार्मिक মত সাধারণ, যথা ঈশবের অভিত ও পূর্ণতা, আত্মার অমরত, উপাসনাব আবহাকতা, ইত্যাদি সেই সকল মত সম্বন্ধে যে সাধারণ আক্ষণণ স্বাধীন চিস্তায় আক্রচ হটয়াছেন তাহা বোধ হয় না। প্রচলিত হিন্দুধর্ম্মের বিশেষ বিশেষ মতের দঙ্গে এই সকল সাধারণ মত ও অবিচারিত ভাবে নিশ্বাস বাযুর ভাষে গৃহীত হইয়াছিল, এবং যেরূপ অবিচারিত ভাবে গৃহীত হইরাছিল, আমাদের প্রিবেচনায় অনেক স্থাই দেরূপ অবিচারিত ভাবেই পোষিত হইতেছে। প্রাহ্মসমাজের माहिला, वकुला, बारनाहना, ও माधावन बारनाहनामिटल এहे সকল বিষয়ে চিস্তার যেকপ অপরিপক্তা দেখা যায়, ভাছাতেই এই कथात्र यर्थेष्ट ध्यमान भाउत्रा यात्र । ज्यामता बाक्ष माधातरनव कथा विलिट्डिह, २/४ अन विलिय किशानील व्यक्तित कथा বলিতেছি না। সাধারণ ত্রাহ্মগণ উপরোক্ত বিশাস সমূহের युक्तियुक्त ভिक्ति मिथाईर्ड शारत्रन ना. এবং विरागह विरागह ব্যক্তিতে কিছু কিছু জ্ঞানের আভাস পাওয়া গেলেও এই সকল বিষয়ে আক্ষসমাজের বিশাস সাধারণের গৃহীত কোন বিজ্ঞান শাল্পে পরিণত হয় নাই। ইহাতে ইহাই প্রকাশ পার त्य अरे नकन विषय बाक्षशन शाशीन विश्वात आक्रा इन नारे, হিন্দু মুসলমান প্রভৃতির ভাষ তাঁহারাও এই সকল বিষরে লোক-প্রচলিত মত অবিচারিতভাবে গ্রহণ করিয়াছেন। এই বিষয়ে ত্রাদ্ধসমাজ মধ্যে একটা মত প্রচলিত আছে,

हाहा चौमारमञ्ज निकृष्टे खांख विनन्ना (वांव रुन्। त्रहे मछो। এই यে, এই সকল মূল সভ্যে সাধারণের যে বিশ্বাস, সেই বিখাস সহজ্ঞান বা আত্মপ্রতার-মূলক। হুতরাং এই বিশাসকে অহ্ব বা আপ্ত-বাক্যে বিশাস বলা যাইতে পারে না। সহজ-জ্ঞান বা আত্মপ্রত্যন্তের মতকে অস্বীকার করা দূরে থাকুক, আমরা এই মতকে গভীর দর্শন-সন্মত ৰলিয়া মনে করি। কিন্তু সেই দর্শন-সম্মত মত এই যে ধর্মের मृन विश्वान नमृह नछा, व्यन्त , खानी, व्यक्तानी, नांखिक, আন্তিক সকলের চিন্তাকে অনতিক্রমনীয়রপে, অথচ অফ্ট অজ্ঞাতভাবে নিয়মিত করিতেছে। অস্ভা, অজ্ঞানীর মধ্যে এই বিশ্বাস ম্পষ্টতঃ দেখা যায় না বটে, কিন্তু দার্শনিক বিশ্লেষণ দাবা দেখাইতে পারা যায় যে এই সকল বিশ্বাস অজ্ঞাতভাবে তাহাদেরও সমুদয় সংস্কাবের মূলে বর্তমান রহিয়াছে। কিন্ত প্রচলিত সহজ জ্ঞানের মৃত এই যে •এই সকল বিশ্বাস সজ্ঞান-ভাবে সকলেরই মধ্যে বর্ত্তমান আছে। কিন্তু বস্ততঃ দেখিতে পাওয়া যায়, জগতের সহস্র সহস্র উপধর্ম বিশাসী সজ্ঞানভাবে এই সকল মত পোষণ করে না। শত শত চিন্তাশীল নান্তিক সজ্ঞানভাবে এবং স্পষ্টক্রণে এই সকল বিশ্বাস পরিত্যাগ ক্রিয়াছেন, এবং বাঁহারা বিশ্বাসী বলিয়া পরিগণিত, তাঁহারাও ইন্দ্রিয় বোধ-লব্ধ বিখাস সমূহের স্থায় এই সকল বিখাসকে অনতিক্রমনীয়, অপরিহার্য্য বলিয়া অমুভব করা দুরে থাকুক, পরীক্ষা, বিপদ ও সংসারের কোলাহলে পডিয়া অনেক সময়েই এই मुकल में जा मस्या मिल्या हन। छाहारात्र निक्रे धहे मक्न मंडा कथनहें हे जिन्न-(वाध-नक्त मंडात ग्राप्त न्याहे । अन्व विनया (वाध क्य ना। श्रूखताः क्षात्रीण विश्वारम महक्र-क्यान-ঘটিত বিশ্বাদের বিশ্বজ্ঞনীনত্ব কি অনতিক্রমনীয়ত্ব কোন শক্ষণই দেখিতে পাওয়া যায় না। স্থতরাং প্রচল্ত বিশাস শাস্ত্র বা গুরুপদেশ-ঘটিত অথবা পরম্পরাগত জনশ্রতি-মূলক বিশ্বাস ব্যতীত আর কিছুই নহে। জ্ঞানালোচনা দারা এহ বিশাস যতদিন প্রাস্ত আপনাকে মৌলিক ও প্রকৃতি নিহিত বলিয়া বুঝিতে না পারে এবং অনতিক্রমনীয় বলিয়া অনুভব না করে, ততদিন পর্যাম্ভ ইহাকে স্বাধীন বলিয়া স্বীকার করা ঘাইভে পারে না। ইহা স্পট্টই বুঝা ঘাইতেছে যে বাহারা আপনাদের বিশ্বাসকে স্পষ্ট, স্থানিণীত, অপরিহাব্য স্বাধীন জ্ঞান বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে না পারেন, তাঁহারা শুরুবাদের যতই তীব্র প্রতিবাদ কম্পন না কেন, সে প্রতিবাদ তত কাব্যকর হইবে না। গুরুবাদী এরপ প্রতিবাদকারী-গণকে সহজেই বলিতে পারেন যে "যাহারা ফটিক-গৃহে বাস করে তাহাদের পক্ষে অন্তের উপর প্রস্তর নিক্ষেপ করা কদাচ नित्राशम नरह।"

প্রচলিত আগ্র-বাক্যে বিখাস মৌলক আত্মপ্রত্যর নহে, আমরা ইহাই বলিলাম; 'আপ্রবাক্যে বিখাসের একান্ত নিন্দা করা আমাদের উদ্দেশ্য নহে। অর বরস, অর অভিক্রভা ও অর শিক্ষার অবস্থার আপ্র-বাক্যে বিখাস স্থভাবতঃই হৃদরে স্থান শায় এবং নীতি ও ধর্ম সম্বন্ধে জীবনে প্রভৃত স্থফল প্রস্ব করে। এই আপ্র-বাক্যে বিখাসকে অসমরে চেটা করিলেও ভালিরা

বেওয়া বার না এবং ভাঙ্গিয়া দেওয়া যুক্তিযুক্তও নতে ইহা

যতদিন কার্যাকর হয় হউক, যতদিন সম্ভব বিখাসীকে স্থনীতিপরারণ করুক, সাধনশীল করুক, সরল প্রেম ভক্তিবারা হাদয়কে
সরস করুক। বতদিন পর্যান্ত স্বাধীন চিন্তা স্কুরিত না হয়,
আয়া ব্রহ্মজ্জাস্থ না হয় এবং বুদ্ধি ধর্মের দার্শনিক তত্ত্ব
ব্ঝিতে সক্ষম না হয়, ততদিন পর্যান্ত একপ বিশাসকে
ভাঙ্গিয়া দেওয়াতে অনিষ্ট বই ইষ্ট নাই; স্থতরাং আমরা এরুপ
ভাঙ্গিয়া দেওয়ার পক্ষপাতী নহি। কিন্তু ধর্মের এই বাল্যাবন্ধাপর্ম ব্যক্তিদিগের মধ্যে কিরুপ প্রণালীতে ধর্ম প্রচার করিতে
হইবে তাহা স্পষ্ট বুঝা কঠিন। ব্রাহ্মসমাজ শাস্ত্র ও গুরুব
আধিপত্য বিনাশ কবিয়া অশিক্ষিত ও অজ্ঞানীদিনের উপর
কোন্ শক্তির আধিপত্য বিস্তার করিবেন, শাস্ত্র ও শুরুর
দোহাই দেওয়া হইতে বিরত হইয়া, সত্য প্রচারে কাহার দোহাই
দিবেন, এই বিষয় বিচার-সাপেক্ষ এবং এ বিষয়ে বিচার কবিয়া
একটা প্রণালী নির্দ্ধারত হওয়া উচিত।

কিন্তু এই ধর্ম ও সমাজবিপ্লবের সময়ে, উজ্জ্ব জ্ঞান বিজ্ঞানের সময়ে, সাধারণ শিক্ষা ও খাধীনতার বহল প্রচারের সমরে, আপ্র-বাকো বিশাস যে বহুসংখ্যক লোকের মধ্যে অবিচলিত থাকিবে তাহা বোধ হয় না. বিশেষত: প্রতিবাদে যে সমাজের জন্ম, পাশ্চাত্য জ্ঞান বিজ্ঞান ও বাধীন চিন্তা যে সমাজ মধ্যে অপেকাকৃত বহুলরপে প্রচারিত হইয়াছে, সেট সমাজভুক ব্যক্তিগণের মধ্যে অতি অল্ল বন্ধসেই আপ্ত-বাক্যে বিখাস আলাধিক পবিমাণে বিচলিত হইয়া যায়। যথন এই সকল বা এতাদশ অক্তান্ত কারণে বিশ্বাদেব বাল্যাবস্থা তিরোহিত হইয়া যৌবনাবস্থা উপস্থিত হয়, তথন ধর্মঞীবন এই ত্রিবিধ পথের কোন এক পথ অবলম্বন করে। প্রথমতঃ, কেছ কেছ আপ্ত-বাক্যে বিশ্বাস হারাইয়া কোন উৎকৃষ্টতর উপায়ে উজ্জ্বলতৰ বিশাস লাভের চেষ্টা করেন না; সন্দিশ্বমনা ও অন্ধ-বিশ্বাসী वा व्यविधानी इहेगा, एक ও উन्नजि-विशीन श्रीवन नहेगा नमाक মধ্যে বাস করেন। এরূপ পথকে কেংই যুক্তিযুক্ত মনে করিবেন না। স্বতরাং ইহার সমালোচনা নিম্প্রয়োজন। বিভীয়তঃ, কেহ কেহ ধর্মচিস্তার এই বাল্যাবস্থার তিরোধানকে ভয়েব সহিত নিরীক্ষণ কবেন এবং ইহাকে হুনীতি ও ভূষতার আকব মনে করিয়া সেই বাল্যাবস্থার সংরক্ষণে যত্নবান হন। প্রাচীন শাস্ত্র ও গুরুতে লোকের অবিশ্বাদ অপরিহার্য্য জানিয়া নৃতন গুরুও শাস্ত্রের ব্যবস্থা করিতে প্রবৃত্ত হন। এমন কি এরূপ শাস্ত্র বা ৩৪কর উপর আবদ নিউর যুক্তিবারাসমর্থন করিতেও কেহ কেহ অগ্রসর হন: কিন্তু আপ্ত-বাক্যে বিশ্বাসের উপর নির্ভর একবার বিচলিত হইলে এবং স্বাধীন চিস্তার উন্মেষ হইলে এরপ শুরুবাদ স্থাপন কেবল হাস্তজনকই হয়। কোন বিশেষ ব্যক্তি আমাকে ব্রহ্ম লাভের সাহায্য করিবেন, আমার মুক্তিপথের সহার হইবেন, এরপ বিখাস করিতে হইলে পূর্বাছে আমাকে ওর-নিরপেক্ষভাবেই এই বিখাস করা আবশুক (य. क्रेयत मननमत्र ও পরम প্রাপ্যবন্ধ, मुक्तिनां मञ्जब এवः ঈশর আমার মুক্তি-বিধাতা। স্বতরাং এরূপ গুরুবাদেও স্বাধীন চিন্তারই প্রাধান্ত স্বীকৃত হয়। তৎপন্নে সেই শুকুর

উপযুক্তা নির্দারণেও অনেক পরিমাণে স্বাধীন চিন্তা ও সাধীন ধর্মাভিজ্ঞতা প্রকাশ পার। এতদ্র স্বাধীন চিন্তা ও স্বাধীন অভিজ্ঞতা যিনি লাভ করিরাছেন, যিনি অন্ধভাবে নহে, কিন্তু বান্তবিকই স্বাধীন বৃদ্ধি-পরিচালিত হইয়া গুরু-নির্বাচন করিয়াছেন, তিনি গুরুপদেশে উপকার লাভ করিতে পারেন সন্দেহ নাই, গুরু-প্রদশিত সাধন-প্রণালী শ্রদ্ধার সহিত অবলম্বন করিয়া পরীক্ষা করিতে পারেন সন্দেহ নাই, গুরু-তিপ্রচারিত সত্য প্রবণ করিয়া নিজের যুক্তি, অনুভব ও অভিজ্ঞতাব সৃহিত মিলাইয়া গ্রহণ কবিতে পারেন সন্দেহ নাই; কিন্তু তাঁহার পক্ষে অন্ধ, অবিচাবিতভাবে গুরু-প্রচারিত মত গ্রহণ কবা একেবারেই অসম্ভব। তিনি যদি বলেন যে, যুক্তি একপ অন্ধ নির্ভরের পক্ষপাতী, তিনি যদি বলেন যে, যুক্তি যে গুরুর আশ্রয় লইতে বলে, সে গুরুর বাক্য অযৌক্তিক विना (वाध इटेल @ গ্রহণ কবা উচিত, তবে ইছাই वना इटेन যে, যক্তি অযৌক্তিক কথা গ্রহণ করিতে বলে। ইহার স্থায় স্ববিরোধী অসঙ্গত কথা আর কি হইতে পারে ?

পূর্বোল্লিথিত তৃতীয় পথ স্বাধীন চিস্তা। প্রকৃত সভায়ে-রাগী ব্যক্তি আপ্র বাকা-জনিত সংস্কারে সন্দিহান হইয়া এই मन्म्हरक ठालिया রाখিতে চেষ্ঠা করেন না, বিখাদ मचरक মনের উপব কোন বলপ্রয়োগ কবেন না। তিনি জানেন এরূপ বলপ্রােগে অন্তরের গৃঢ় সন্দেহ দূর হয় না, কুদ্য প্রকৃত বিশ্বাদে প্রতিষ্ঠিত হয় না। তিনি কোন সামাজিক প্রয়োজনে निक मन्त्र मन्त्र ७ निर्फाष मन्त्राह्य व्यथनाथ करत्न ना. তিনি এক্লপ অপলাপকে ভণ্ডতা ও ভীক্ষতা বলিয়া মনে করেন। মনের সরল সন্দেহ ও বিখাস তাঁহাকে কোন সমাজের অন্তর্গত বাকোন্সমাজের বহির্গত করিবে, তিনি তাহা দেখেন না,, আত্মার সর্বতা ও সাধুতা রক্ষাই তাঁহার একমাত্র যত্নের বিষয়। তিনি প্রাচীন শাস্ত্র ও গুরুর উপর অন্ধনির্ভররপ গলিত শব পরিত্যাগ করিয়া জীবিত গুরুর উপর নির্ভর রূপ স্থা শব আশ্রর করেন না। তিনি জানেন উভয়ই মৃত, ধর্মজীবনের পক্ষে পর-মুথ-শ্রুত মৃত মতের প্রয়োজন নহে, স্বাধীন-চিন্তা-লব্ধ, সাক্ষাৎ অমূভব-লব্ধ জীবস্ত সভ্যেরই প্রয়োজন। তিনি প্রাচীনকালের সঞ্জিত চিন্তাও অভিজ্ঞতা এবং বর্ত্তমান ধার্ম্মিক-দিগের উপদেশকে অগ্রাফ করেন না। কিন্তু তিনি এই সমুদারকে ভাঁহার স্বাধীন চিন্তাক্ত্রণের সহায়রূপেই গ্রহণ করেন, এই সমুদায়ের উপর অকভাবে নির্ভর করেন না। তিনি ধর্মদাহিত। ও ধর্মালোচনার সাহাযো স্বাধীন-চিন্তার পথে অব্যসর হইয়া নিজের সাক্ষাৎ অকুতব ঘারা আধ্যাত্মিক সত্য আবিভারের জন্ম যত্নবান হন, এবং যতদিন না ধর্মজীবনের উপৰোগী প্রত্যেক সত্য নিজের সাক্ষাৎ অমুভবের বিষয় হইয়াছে, ততদিন নিশ্চিত্ত হন না'। আমাণিগের কাছে এই পথই একমাতা সভাপথ बिनदा त्वांध रुत्र। ध्वे भर्षद व्यथमाः मरनह, एकजा. শ্রশান্তি এবং কঠোর-চিন্তা ও অধার্যন-মনিত ক্লেশে পরিপুর্ণ। সেই অনুষ্ঠ যাহারা ধর্মজনতে আসিয়াও স্থ-লাল্সা পরিত্যাগ করিতে পারে না, পরত্ত ধর্মসাধনকৈ স্থপ-লালসা পরিতৃত্তির উপায় রূপেই গ্রহণ করে, তাহারা এই পথকে পছন্দ করে না

এবং এই পথে ২৷৪ পা অগ্রসর হইরাও নিজের হুও লালসা ও चान्छ वन्छः कितिन्न चार्ता मठाहे वाहारनत धक्याव লক্ষ্য, সত্যের জন্ত বাঁহারা সমুদায় বাহ্যিক ও আন্তরিক ক্লেশ স্থ্য করিতে বৃদ্ধপরিকর হইয়াছেন, কেবল তাঁহারাই এই পথে চলিতে পারেন এবং সত্যের সাক্ষাৎ দর্শনরূপ গম্যস্থানে উপনীত হইতে পারেন। ব্যক্তিগত স্বাধীন-চিন্তা প্রথমে পরস্পরের বিরোধী হইতে পারে এবং হইয়াও থাকে। কিছ এই অনৈকো কেবল ইহাই প্রকাশ পায় যে, এরপ স্বাধীন-চিন্তা এখনও প্রকৃতক্পে স্বাধীন হয় নাই। স্বাধীন-চিস্তার অর্থ--বে िष्ठा च, वर्षार निरम्बत व्यक्षीन, भरतत व्यक्षीन नरह। **এই 'च'**ও 'পর'এর প্রাক্ত অর্থ বুঝা আবিশ্রক। 'পব' অর্থ শাস্ত্র, 'পর' অর্থ গুরু, 'পর' অর্থ ধর্মাবন্ধু, 'পর' অর্থ জনশ্রুতি। কিন্তু কেবল এই সমুদায় 'পর' হইতে মুক্ত হইলেই চিন্তা প্রকৃতরূপে স্বাধীন হইল না এবং সকলের ঐক্যন্তলরপ নিরপেক্ষ সত্যলাভের উপযোগী হইল না। আরও 'পর' আছে। আমার আলভ, কড়তা 'পব'; ইহাও সত্য-দর্শনের বিরোধী; আমার স্থপ্রিরতা 'পর,' ইহাও সভাকে অসভা ও অসভাকে সভা বলিয়া ভ্রম জন্মায়। আমার কাম, কোধ, লোভ, অহন্ধার প্রভৃতি প্রবৃত্তিনিচয়ও 'পব,' ইহাবা আত্মার চকুকে তম্সাচ্ছন্ন করিয়া রাথে, সতাদশন কবিতে দেয় না। এই সমস্ত 'পর'এর অধীনতা পরিত্যাগ কবিয়া চিন্তা যথন নিৰ্মাণ, নিম্নলম্ভ জাগ্ৰত ধৰ্মাবৃদ্ধি বা প্রজ্ঞার অধীন হয়, তখনই ইহা প্রকৃতরূপে স্বাধীন হয়। এই নির্মালা প্রজাই আমাদের প্রকৃত 'স্ব,' আমাদের প্রকৃত 'আস্মা'। এই নির্মালা,প্রজ্ঞা সমুদার মানবের অন্তরে বর্তমান থাকিয়া मानवरक श्रव्यक्त मर्का महेवा याहेर्डाह्न। याहारमव हिसा এই প্রজ্ঞার অধীন হয়, তাঁহাদের মধ্যে অনৈক্য থাকিতে পারে না। তাঁহারা অবশুম্ভাবিরপেই এক এব, অপরিবর্তনীয় प्रिकारि डेननीं डरन। (कनना वहें अखा अल कि नरह. আর কেহ নহেন; যিনি এক অধিতীয় ধ্রুব সতা, যিনি সমুদায় সত্যের আশ্রয়, ইনি সেই স্তাহ্বরূপ, জ্ঞান্দ্রকপ, আছিতীয় পরব্রন্ধেরই সাক্ষাৎ আলোক। এই প্রজাই ধর্মজাবনের একমাত্র পরিচালক। স্বাধীন ধর্ম সাধক মাত্রই এই প্রক্রা দেবতাকে বলেন---

> "ভোমারেই করিয়াছি জীবনের জবভারা। এ সমুদ্রে আরে কভূহবনাক পথহারা॥'

#### मयोगां ना

সম্প্রতি "কৌমুদী" নামে একখানি পাক্ষিক পত্রিকা আমাদের হন্তগত হইরাছে। ইহা প্রীযুক্ত বাবু বিপিনচন্দ্র পাল কর্তৃক সম্পাদিত। পত্রিকা থানিতে নৃতন কি আছে, তাহা আমরা এখনও ভাল করিরা হাদরলম করিতে পারিতেছি না— স্থলতঃ বুঝিতেছি, সার্কভৌমিক ধর্মপ্রচার কবা ইহাদের উদ্দেশ্র। কিন্তু সার্কভৌমিক ধর্মের ভাবটা ইহাদের মনে কি প্রকার,ভাহা বুঝা যাইতেছে না। সম্পাদক প্রবম সংখ্যার একছানে খলিলাছেন— শ্বগতের সকল ধর্মাই বিধাতা প্রভিষ্টিত। খোন ধর্মাই

আল্লান্ত সভ্যের অনক্রাধার বা মানবের অনক্র মৃক্তিপছা নহে। नकन धर्त्यार्ट में जा च्यारहा'' भरकत भक्तार हूं हित्न हरेरव ना, একটু ধীরচিত্তে বিচার করিরা দেখিতে হইবে। "জগতের সকল ধর্ম্মই বিধাতা প্রতিষ্ঠিত''—এ উক্তির অর্থ কি 📍 জগতের ধর্ম বলিলে, কতকগুলি মতের সমষ্টি, কতকগুলি অনুষ্ঠান ও ক্রিয়ার সমষ্টি ও কভকগুলি নীতি বা আচারের সমষ্টি বুঝায়। কৌমুদীৰ লেখকগণ কি বাস্তবিক বিশ্বাস করেন যে, প্রত্যেক ধর্মের সমুদার মত, অফুঠান ও আচার সমষ্টি ভ্রমণ্ডা ও ঈশর প্রতিষ্ঠিত ? অর্থাৎ খ্রীষ্টীয়ের অবতারবাদ, অনস্থনরকবাদ, ত্রীশ্বরবাদ, সমতানবাদ প্রভৃতি মত; জলাভিষেক, প্রভুর ভোজ আঙ্তি অফুষ্ঠান ও রবিবাবকে পবিত্রবাররূপে রক্ষা করা প্রভৃতি আচার, এবং মুসলমানের কোরাণের অভান্ততাতে বিখাদ, মহম্মদেৰ প্রেবিভত্তে বিখাদ, মুর্গ ও নরকে বিখাদ প্রভৃতি মত , ঘকচ্চেদ্প্রভৃতি অমুষ্ঠান, রোজা নমাজ প্রভৃতি আনাচার সমুদয় কি ভ্রমপমাদশূতা ও ঈশ্বর প্রতিষ্ঠিত ? যদি खारा रुप्त, जरव जरमभूमाय जामारम्य आरडीरकत्रहे ज्यवस्मीयः লেখকদিগেব বোধ হয় ভাহা অভিপ্রায় নহে। কারণ পরেই লিখিয়াছেন, "কোনও ধর্মই অভ্রান্ত সভ্যেব আধার নহে।" এবং "সকল ধর্মেই সতা আছে।'' বেশক্থা, সকল ধর্মেই সতা আছে, তেমনি ভ্রাপ্তি বা অসতাও আছে। আছে। যাহা ত্রান্তি তাহাও কি ঈশ্বর প্রতিষ্ঠিত গ অবশ্র এরপ কেহ < निर्वत ना। তবে कि এই माँ ज़ाहेर उर्छ या, प्रकृत धर्माहे সত্য আছে এবং সেই সত্যাংশ ঈশর প্রতিষ্ঠিত ? ইংগ ত ত্রাহ্মধর্মের পুণাতন মত। ইহাব জক্ত ব্রাহ্মধুর্মের উপরে 🕏 ঠিয়া দাঁডাইবার প্রয়োজন কি 📍 এত হপলকে আমাদের একটা ঘটনা প্রবণ হইতেছে। একবার একজন ইউরোপীয় শ্রীষ্টান মিশনারির সহিত একজন প্রাক্ষধর্ম প্রচারকের करत्रकानि विठात बरेबाहिन। "क्रेचेत नकन मिटन छ সুকল জাতিমধ্যে সত্য প্রকাশ ক্রিয়াছেন।" এই বিষয়ে বিচার চলিতেছিল। শেষ দিনে আক্ষপ্রচারক বলিলেন -- "আছে৷ আপনি যীশুর উক্তির মধ্যে এমন কিছু দেখান, ৰাহা আগানি মনে করেন, অন্ত কোনও দেশে ও অন্ত কোনও সাধুর মুথবারা প্রকাশিত হয় নাই। তথন ইউরোপীয় মিশনারি মহাশগ্ন বলিলেন—"অপরের নিকট ৠমি ষেরাপ ব্যবহার চাও, অপর্দিগকে দেইকপ ব্যবহার দেও"--ইহার অফুরূপ বাক্য কোন শাস্ত্রে বা কোন দেশে অকাশিত হইয়াছে ?" আক্ষ প্রচারক উঠিমা গিয়া চীনদেশীর সাধু কংফুচেব একথানি গ্রন্থ আনয়ন কবিলেন। ইউরোপীয় মিশনারি দেখিলেন যে, তাহা তাঁহারই স্থায় একজন এটিয় মিশনারির দারা অফুনাদিত স্থতরাং পুস্তকের বিশাসযোগ্যতা সম্বন্ধে তাঁছার সন্দেহ রহিল না। তৎপর ব্রাহ্ম প্রচারক একটী স্থান बाहित कतिरानन, रत हान्गीरा धक्त निधि इरेबाहि, य একবার কংফ্রের ক্তিপ্য শিষ্য গুরুসরিধানে আসিয়া ক্হিল "करता जाशनि जामानिशरक जरनक धर्मनी जि जेशरम निवा **ाम्य, जालनात मकल উপদেশের সার যাহা, তাহার নিম্ব করিয়া** 

निक्रे हा १९ ना, ८१ व्यवहात्र अभन्नत्क पिछ ना ।" बान्न शहान क সেই অংশটুকু পাঠ করিয়া জিজাসা করিলেন, "ইহাতে এবং যীশুর উপদেশে প্রভেদ কি ?" ইউরোপীয় মিশনারি স্বীকাব করিতে বাধ্য হইলেন, "কোনও প্রভেদ নাই।" তথন ত্রাহ্মপ্রচারক জিজ্ঞাদা করিলেন, "যাহা সত্য তাহা ঈশবের প্রকাশিত, না সমতানের প্রকাশিত ?" ইউরোপীয় মিশনারি বলিলেন---"অবশ্য ঈশরের প্রকাশিত।" মীমাংসা—"কংফুচ যীশুর পাচ শতের অধিক বৎসর পুর্বের জন্মিয়াছিলেন, তবে দেখুন যী 🕏 জন্মিবার পাঁচ শত বৎসর পূর্বের ঈশ্বর ঐ সত্য চীনদেশে প্রকাশ করিয়াছেন।" বিবাদটা এই স্থানে থামিয়া গেল। ইহা কি বাহ্মধর্মের পক্ষে নৃতন কথা যে, সকল ধর্মেই সভ্য আছে? মহাত্মা রাজা রামমোহন বাত্মের কার্য্যের ভিত্তিভূমি ভাহাই हिल। महर्षि (मरवक्तनाथ यमि ९ हिन्मुमिरगत मर्था প्रकारनत উদ্দেশে हिन्दू भाष्ट्रांक्टे व्यधानक्रांत्र व्यवनवन कतिब्राह्न. তথাপি যাঁহারা তাঁহার সহিত একদিন কথা কহিয়াছেন তাঁহাবাই জানেন, এই উদারসত্যে তাঁহার কতদ্র আছো। হাফেব্রের নামে তাঁহাকে উন্মন্তপ্রায় হইতে যাহারা একবাব দেখিয়াছেন, তাঁহারা আর তাঁগার উদারতাতে সন্দেহ কবিবেন না। কেশবচন্দ্র সেন মহাশয়েব ত কথাই নাই, তিনি এই ভাবের প্রচাবক ছিলেন। ঠাহার প্রকাশিত ব্রাহ্মধর্ম প্রতি পাদক শ্লোকসংগ্রহ ইহার দেদীপামান প্রমাণ। সাধারণ ব্রাক্ষসমান্ত্র উদার ভূমি হইতে এক দিনের বাস্তও বিচলিভ হন নাই। তবে এমন নৃতন কথা কি আসিল, বাহাতে বান্ধর্মের উপরে উঠিয়া দাঁড়াইতে হয় ? আমরা বুঝিতে পারিলাম না।

আর এক স্থানে লিখিত হইরাছে-"সর্বাঙ্গীন ধর্ম-জীবন গঠনই সাক্ষভৌমিক ধন্মতত্ত্ব আলোচনার প্রধান শক্ষ্য।" ইহাতেই বুনিতে হইবে, জগতে যত সাম্প্রদায়িক ধর্ম আছে, তাহাতে मसाक्रीन धर्म कीरन माधिक ध्या ना, मिट खन्न এटे मार्स्स छोसिक পত্রিকার প্রয়োজন। অণ্চ সম্পাদক আর এক স্থানে বলি-बाट्डन — "हिन् द्वीक औष्ठीग्रान, मूननमान, टेकन, পानी, कगर्डब প্রচলিত প্রধান প্রধান ধর্মাওলীব সকলের মধ্যেই অল বিস্তর সংখ্যক বিগতবাদনা, বিগতশোক, বিগতপাপ, বিগত-সন্দেহ ভগবম্বক্ত রহিয়াছেন।" বিগতবাসনা, বিগতশোক, বিগতপাপ, বলিতে ত ভীবলুক লোক ব্ৰায়। বাঁহাবা कोवलाक नाम कतियाहिन, उँग्हाता मसानीन धर्मा-कीवन नाक कर्यन नाहे, व रकमन १ व गलाशीन धर्या बीवन जरव किन्नण, যাহ। না পাইয়াও মুক্তি লাভ করা যায় ? আর বদি হিন্দু, খ্রীষ্টামান প্রভৃতি ধর্ম্মে লোকে জীবমুক্তি লাভ করিল, ভাষা इहेल (कोमुनीत लाबकशारवत मुर्खाशीन धर्मकीयन निवास अञ्च এতটা আগ্রহ ও পরিশ্রমের প্রয়োজন কিং ফল कथा এই, मक्तानीन धर्मकीवन अकथात बान्नधर्मात कथा। ব্রাহ্মগণ চিরদিন বলিয়া আসিতেছেন, বুদ্ধের যোগ, ঘীওর विधान, टेइडिए इस अक्षेत्र कराव नमार्यम कतिर्ड इस्त, यति ७ वह मन्त्रामीम वर्षभीवन वक वाकिए माथि इहेरक আমাধিগতে বৰুদ্ৰ." কংসুচ বলিলেন—"যে ব্যবহার অভের । পারে কিনা তাহা বিচার সাপেক। বাহাইউক আমর।

क्षिम्मीत উদ্দেশ্য সকলের মধ্যে বান্ধর্মের অতিরিক্ত নৃত্ন কণা এমন কিছু দেখিলাম না, যে জম্ভ একথানি শ্বভন্ত কাগজের তবে একটা কথা লিখি-**প্রয়েজ**নীয়তা অহুডব করা বায়। রাছেন, বাহাতে ইহার জীবনের কিরৎপরিমাণে সার্থকতা **८७था बाहे** एक एक प्राप्त के विवाह कर्मा के विवाह कर करते हैं। কাশীধামে ইহার (চিকাগো মহাধর্ম্মগুলের) দ্বিতীয় व्यभित्यमन इहेवात প্রস্তাব इहेन्नाह्यः। এই আট বৎসর কাল ইংরে মহান্তাদশ ও উদার ভাবকে লোক সমক্ষে উজ্জলরপে ধারণ করিয়া রাখিতে হইবে। নতুবা চিকাগো মহাধশ্মজলের यह छी ज्यामा स्पङ्क (यह विनष्टे इरेग्ना याहे वाद मखावना। अहे ষহতী আশাহৃদয়ে ধাবণ করিয়া 🔹 💌 🗢 কৌমুদী জন্মগ্রহণ করিল।" ইহা একটা কাজ বটে। আশাকরি, আমাদের অদ্বেষ্বৰুবাবু প্ৰতাপচক্ৰ মজুমদার মহাশয় আমেরিকাপ্রাপ্ত ব্দর্থ হইতে এই পত্রিকাব বিশেষ সহায়তা করিবেন। 🛛 🗢 । 🗢 । 🗢 🕶 । ব ইহা সেই মহাধর্মগুলেবই কার্য্য করিবে।

## প্রেরিত পত্র।

(পত্ৰপ্ৰেরকদিগের মতামতেব জন্ম সম্পাদক দায়ী নহেন)। শ্ৰদ্ধাম্পদ শ্ৰীযুক্ত তম্ব-কৌমুদী সম্পাদক

মহাশয় সমীপেরু।

ষহাপর,

আপনাব "ব্রাহ্মণত্বের মূল কথা"র প্রতিবাদে ঘারিক বাব্ প্রসঙ্গ ক্রেমে সামাবাদের যে ব্যাথ্যা করিয়াছিলেন, তাহা আমার কাছে অভিশয় আগভিজনক বলিয়া মনে ইইরাছিল। প্রভাকে ব্রাহ্মই সামাবাদী বলিয়া পরিচর দেন অথচ সামোর মতটী আমাদের মধ্যে ভাল পরিষ্কার নাই, তাহার এই যে প্রথম প্রমাণ পাইলাম তাহাও নহে। বিষয়টী অভিশয় স্কল্ডর। সামাবাদের বিক্লভ অর্থ ইইভেই নিহিলিজম্, সোসিয়ালিজম্ ও কমিউলিজমের উৎপত্তি। একদিকে উৎকট সামোর উপাসনা হইতে বেমন বিপ্লবের বাল্ল্ জ্লিভেছে, ডেমনই অপর দিকে স্বেচ্ছাচার মূলক ক্রিমে বৈষ্মো সমাজের স্বাধীনতা ও জীবন পর্যান্ত নিশোষিত ইইরোছিল। ইহাতে মনেক কথা ছিল, বাহা দ্বাবিক বাবুর কোন কথার প্রতিবাদ নহে এবং তাহার প্রতি লক্ষ ক্রিয়াও লিখিত হয় নাই।

স্বামার প্রবন্ধে সংক্ষেপতঃ তিনটী কথা ছিল:---

- (১) সামাবাদের অর্থ মাহুষের প্রাকৃতিগত কতকগুলি অধিকারের ক্ষমতা। সমাজের একশ্রেণী অপর শ্রেণী হহতে সেই সকল অধিকার হরণ করিতে পারে না। জন্মগত ক্রুতিম অধিকার দূর করাই সাম্যবাদের উদ্দেশ্য।
- (২) সকল মান্ত্র সকল বিষয়ে কদাচ সমান নছে। বিদ্যা,
  বৃদ্ধি, চরিত্রে মান্ত্রে মান্ত্রে বিশুর প্রভেদ। সমাজে শুণের
  প্রস্থার থাকা সক্রথা বিধেয়। ইহাকে যদি কেই বৈষম্য
  সৃষ্টি বলেন, তবে বলা ঘাইতে পারে যে, এক অর্থে বৈষম্য,
  সৃত্য ও স্থায়ের উপর প্রতিষ্ঠিত।
- (৩). সমাজ শুণী ব্যক্তিকে যে সন্মান বা অধিকার প্রদান করিবে, তাহা বংশগত করা উচিত নহে। একবার বংশগত হইলে পরে যোগাতা সন্তেও বাহিরের লোকের এরপ সন্মান ও অধিকার লাভ কবা কঠিন হইরা উঠে, স্থতবাং শুণের পুনস্কার হয়না। বিজ্ঞান ও জাতিভেদের বিরোধী। কোন শুণই সমান ভাবে সন্তান সন্ততিতে অমুস্তে হয় না এবং জ্ঞিত কোন শুণই জাদৌ বংশাস্থ্যারী নহে।

প্ত ১লা ভাল্লের তন্ত্র-কৌষুদীতে ছারিক বাব্ আমার প্রবন্ধের একটা প্রতিবাদ করিয়াছেন। মূল কথার সহিত তাঁহার বড় মতভেদ লাই, কিন্তু আমার প্রাবন্ধের তিনি বে ভাব সংগ্রহ করিয়াছেন, তাহারই প্রভিবাদ করিয়াছেন। ইচ্ছা কবিলেই যে কেছ মহাপুরুষ হইতে পারে না,---এ কথার অর্থ কাহারও প্রতি কর্মক্ষেত্রের ধার রুদ্ধ করা নর। বাস্তবিক কে কত বড হইতে পারে, ভাহা পূর্বে হইভেই স্থানা থাকে না, তবে উচ্চ আশা লইয়া কৰ্মকেত্ৰে নামিছে দোৰ কি, বাধা কোথায়ণ স্থতরাং আমি বাহা বলিয়াছি, তাহা উন্নতির বিরোগী নছে, চেষ্টারও প্রভিরোধক নছে। কিন্তু "মাতুষ যাহা কবিয়াছে (অপব ) মাত্র্য ভাহা করিতে 'পারে'' এ প্রবচন সত্য বলিয়ামানি না। ব্যক্তি বিশেষের পক্ষে সেক্ষপীয়র হওয়ঃ সম্ভব হটতে পারে, কাহারও পক্ষেই আশা ও যত্ন করার দোষ না। স্বারিক বাবুৰলেন যে, "এক ব্যক্তির পক্ষে যাহা সম্ভৰ ্ট্রাছে, অপর বাজির পক্ষেও তাহা অসম্ভব নহে; সম্ভব **কি**, অসম্ভব তাহা চেটা দ্বাবাই নিরূপিত হয় : " অর্থাৎ এক ব্যক্তি যাহা করিয়াছে, অপর বাজি তাহা পারে কি না, সে চেষ্টা করিয়া না দোনলে বলা যায় না,—পারিতেও পারে, নাও পাবে। সভা কথা—ভাহা ভৰ্ক নহে। চেষ্টা কবিলে সকলেই মহাপুরুষ হইতে পারে কি না ইহাই বিচার্য্য। দারিক বাবু উপন্টিউক্ত প্রবচনের যে ভাষা করিয়াছেন, তাহার সহিত मामावारमय चात्र वर्ष चिम्हे मच्य डेपनाक भ्य मा।

তাহাব আর এক কথা এই যে, সমদর্শী ঈশর কাহাকেও উৎকৃষ্ট কাহাকে নিকৃষ্ট করিয়া স্থলন করেন নাই, মায়ুৰে मान्नरम (य स्वाकांविक व्यक्ति चाह्नि, जाहा डें दक्षी पक र्वत्र জনক নতে, ভাষা প্রকার ভেদমাত্র, ভবে বে কেই ভাল, কেহ সল দেখা যায়, তাহা সমাজ ব'শ ও অবস্থার ফল —সে সমুলায় ক্ষত্রিম বৈষমা, চিরস্থায়ী প্রভেদ নয়। তিনি আবও বলিয়াছেন যে, এক শতাকীতেই এই প্ৰকার প্রভেদ দূব করা যাইবে না। এ সকল কথাও ভাল বুঝিলাম ্রাহ্মণ চণ্ডাল, ধনী নিধ্ন, ভদ্রাভদ্রের কাভেদ্ই ক্রমি ব্লিয়া মনে করি, কিন্তু সাধু অসাধু, বৃদ্ধিমান্ নিক্ষোধ, অলস ও অধ্যবসায়ীর ভিন্নতা যে সম্পূর্ণ অবন্ধা বংশ ও স্বা**জের** ফল তাহা স্বীকার কবিতে পারি না। তাহাই যদি হয়, তবে ভ এ প্রকার প্রভেদ চিরস্থায়ী, কারণ অবস্থাও বংশ যে কখন मकरलात शरक मनान इटेग्रा यादेख, जाहा (मामिशालिडेनिर्गात अ কল্লনার অতীত। আর একই পিতামাতার সন্তানদিমের মধ্যে এমন কি যমজ সন্তান্দিগের মধ্যেও যথন সকলকে সমাৰ ভাল লোক, বুদ্ধিমান বা যত্নীল দেখা যায় না, তথন কেমন করিয়াবলিব যে, এই সকল গুলেব ভিন্নতা ব'ল ক্ষবস্থা 📽 ममाक्षणं देवस्याव कलाव जाव व कथा जाहि, ममन्त्री <del>ঈখ</del>র একটা পক্ষাকে ভজ্জাতীয় **স্বায়** একটা প**ক্ষা অণেক্ষা** অধিক পালক দিয়া শীত হইতে রক্ষা করেন কেন 💡 একটী প্তক্ষের রং আরে একটা প্রজ হুইতে বিভিন্ন করিয়া পক্ষীর গ্রাস হইতে দক্ষা করেন কেন ? পণ্ডিভেরা বলেন যে, জীব-মাত্রেরই এমন কোন গুণ নাই, পেছের এমন আংশ নাই, যাহাতে পরস্পরের মধ্যে ভিন্নতা লক্ষিত না হর। যথনই এই প্রকার ভিন্নতা প্রাণা বা উদ্ভিদ বিশেষের পক্ষে অহুকুল হয়, তথনই উহা জীবন সংগ্ৰামে ওজ্জাতীয় অক্সাঞ্জ উদ্ভিদ বা প্ৰাণী हरेट छावन हम्। अहे हे छत्र विराप्त मेचारत त्रहे काया। हैं बी যদি তাঁহার সমদ্শীভার বিরোধী না হয়, তবে মাছুষে মাছুষে যে গুণের প্রভেদ লক্ষিত হর, তাহাই বা তাঁহার সমদশীতার বিরোধী হইবে কেন? ঈশ্বর সত্য শ্বরূপ। ভিনি মিথা। মুখের চাটুকারিভায় যে আমাদের প্রতি প্রদর হইবেন, ভাষা मत्न कत्रा व्यथतामः।

সাঝার পত্ত দীর্ঘ হইরা পড়িল, সে:রক্ত কমা প্রার্থনা করি। স্থারও হ একটা কথা উল্লেখের প্রয়োগন ছিল, কিন্তু তাহার স্থানাভাব।

> বিনীত, শ্রীদেবেজনাথ বুণোপাধ্যার চট্টগ্রাম।

#### ব্রাহ্মসমাজ।

ফুর্ভিকে সাহায্য দান—সাধারণ বাদ্যমাজের নির্দেশ
আহুসারে বাবু হরিমোহন ঘোষাল ফরিদপুরের অন্তর্গত মাদরা
নামক স্থানে চ্ভিক্ষপীড়িত লোকদিগকে চাউল বিতরণ
করিতেহেন। যথাসমরে চাউল বিতরণ আরম্ভ না করিলে
কেহ কেহ মৃত্যমুথে পতিত হইত। অরাভাবে অত্যন্ত হাহাকার উঠিরাছে। প্রমেশ্বর ক্ষ্পাত্রদিগকে অল্লান কর্ফন।

ঔষ্ধ দান—লক্ষ্ণে নগরে বিস্চিকাপ্রস্থ বোণীদিগকে আমাদিগের প্রচাবক লক্ষণ প্রসাদ অতি বত্বও পরিপ্রমের সহিত হোমিওপ্যাপিক ঔষধ দান করিতেছেন। বাবু হীরালাল বার এবং স্থীরকুমার সেন এই মহৎকার্য্যে প্রাণপণে খাটিতেছেন।

বিবাহ—গত ২০ শে আগন্ত ব্রহ্মনিকবে আমাদের বন্ধু পরলোকগত বাবু কালীনাথ দেবের কলা শ্রীমতী কুণদা দেবের সহিত্র, বিলাভ প্রভাগেত ডাক্তার শ্রীযুক্ত পূণানক চটোপাধ্যায়ের বিবাহ সম্পন্ন হইয়াছে। শ্রীযুক্ত বাবু উমেশ চন্দ্র দত্ত মহাশ্য আচার্যোব কার্যা করেন। বিবাহ ৩ আইন অমুসারে রেজেগুরী করা হইয়াছে।

জাতকর্ম— দেরাধুনের বাবু ললিতমোহন বসাক এবং বাবু মঞ্চল দেবের সন্তান ব্যের জাতকর্ম উপলক্ষে শ্রীযুক্ত বাবু নব্দীপচক্র দাস মহাশয় উপাসনা করেন। এত চ্পলক্ষে ললিত বাবু সাঃ আক্ষনমাজে ১১ টাকা দান করিয়াছেন।

দান—বাবু অধিকাচরণ মুখোপাধ্যার তাঁহার ক্সার বিবাহ উপলক্ষে সা: আহ্মসমাজে ৩ ও সাধনাশ্রমে ৩ টাকা এবং ডিক্রগড়স্থ বাবু গোপাশচক্র ঘোর ভাহার ৪র্থ পুরের নামকরণ উপশক্ষে সা: আহ্মসমাজে ২ টাকা দান করিরাছেন।

শ্রাদ্ধি—স্থাীয়া অন্ধিক। দেবের পুত্র বাবু সভাপ্রির দেব কলিকাভার তাঁহাব আদ্যশ্রাদ্ধ করিরাছেন। শ্রীষ্ক্ত বাবু উদেশ চন্দ্র দত্ত মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন এবং আন্ধিক। দেবের দোহিত্র কীবন চরিত পাঠ করেন। এভছপলক্ষে সভাগ্রির বাবুসাঃ ব্রাহ্মসমাজে ১০ টাকা দান করিরাছেন। শ্রীবন-চরিতের মর্ম্মানমে প্রকাশিত হইল। •

শপুণাবতী ত্রী স্বামীর শিরোভ্ষণ" এই মহাবাক্যের জলত 
ছষ্টান্তছল তিনি, বাঁহার জাদ্যশ্রাজোপলক্ষে জাদ্য আমরা 
এবানে সমবেত হইয়াছি। কিঞ্চিদধিক ৭৭ বৎসর পূর্বে 
চগলি জেলার জন্তঃপাতী গোপালনগর গ্রামে এক সম্পর 
গৃহত্তের গৃহে তাঁহার জন্ম হয়। তাঁহার পিতা, তাঁহার নাম 
"অম্বিকা" রাথিয়াছিলেন। কোলগর নিবাসী পরলোকগত 
সাধু শিবচক্র দেবের সহিত তাঁহার বিবাহ হয়। তথন ক্যার 
বর্ল ৯ ও বরের বয়স ১৫ বৎসর মাত্র। নববধ্যধন স্বামীগৃহে 
বাস ক্রিতে আইসেন, তথন এই বল্লেশে কোনও ভত্তা

পরিবার "কেনা ভাত" থাইতেন না। সূভরাং তাঁহাকে: বালিকা বরদেই পর্যারজ্ঞানে শুওর মহালারের বুহৎ পরিবারের উপযোগী অন্নবাঞ্চনাদি প্রস্তুত করিতে হইত। ডিনি সেই কুসংস্কারপুর্ণ সময়ে গোপনে স্বামীর নিকট সপ্তাহাত্তে সমস্ত निवरमत পরিশ্রমের পর, রজনীযোগে বিদ্যাভ্যাস করিতেন ও রন্ধন করিতে করিতে আকারথও লইয়া ভূতলে বর্ণমালা লিপিতে শিপিতেন। ভাগার স্বিস্তার বর্ণনা নিপ্রয়োজন। এই বলিলেই যথেষ্ট হইবে যে, ভিমি স্বামীৰ ষত্ত্বে ও নিজের ঐকান্তিক অধ্যবসায় গুণে অচিরাৎ এতাদুশী উন্নতি লাভ ক্রিয়াছিলেন যে যোগবাশিষ্ট রামায়ণ প্রভৃতি ছুরুই গ্রন্থ সকল অবলীলাক্রমে পড়িতে ও বুঝিতে পাবিভেন এবং অসাধারণ মেধা প্রস্তাবে ঐ সকল অধীত গ্রন্থের অনেকাংশ অতি প্রাচীন বয়সেও বিস্তুত হ্যেন নাই। ফলতঃ তাঁহাব জ্ঞানলিপা এত বলবতী ছিল যে মৃত্যুর কয়েক মাস পূর্ব্বেও আমাকে বারম্বার এই বলিয়া অমুবোধ করিতেন, "আমাকে কোন গ্রন্থের সাবমর্ম্ম ব্যাখ্যা করিয়া শুনাও।'' আমি তাঁহার ইচ্ছামত কোনও রূপ সংপ্রসঙ্গের উত্থাপন করিলে তিনি তাহা অভীব আগ্রহ সহকাবে শুনিতেন। এই সময়ে তিনি আহাব নিদ্রা ভূলিয়া যাইতেন। তথন সেই ব্যীয়সীর মূথে তরুণীর নব-উৎসাহ প্রতিভাত হইত। বস্তুত: জ্ঞান ও ধর্ম উপার্ক্তন कराहे डाँशत कीवानत अधान नका हिन। किंद्ध डाहे বলিয়া তিনি সংসাবধর্মের অতি ক্ষুদ্রতম কর্ত্তবাপালনেও कनाणि खनाद्या (नवान नाहे। डाँशात चामौरमवा, खिंखि-সেবা, গোসেবা, সন্তানপালন ও পবিজ্ঞনপালন তুলনা রহিত : তাঁহার শরীরে আলভ ছিল না। যৌবনে যথন তিনি স্বামীর সহিত প্রবাসে গমন করেন, তখন তিনি দাসদাসীগণে পরিবৃতা হইয়াও কখন ভোগবিলাদে মন দেন নাই। বরং এই সময়ে যৎপরোনান্তি কারিক পরিশ্রম স্বীকার কবিরা নানাবিধ উপাদের খাদা দ্রব্য প্রস্তুত করিয়া স্বামীকে ও তম্বনুবর্গকে সাদরে খাওয়াইতেন। অতি প্রাচীন বয়সেও তাঁহার গৃহসজ্জী দেখিলে বিশ্বিত হইতে হইত। যেখানে যে দ্রবাটী রাখা উচিত, তাহাব অহুমাত্র ব্যতিক্রম দেখা যাইত না। তাঁহার সংসাবে কোনও প্রকার বিশৃখালতা বা অপরিচ্ছরতা স্থান পাইত না। তিনি উপযুক্ত বিষয়ে অকাতবে অর্থ ব্যব্ন করি-তেন, কিন্তু কথনও কোনও কপ অপবায় কবিতেন না। তিনি পরিজনের মুখাপেকা কবিয়া কখনও নিজেব হস্তপদ চালনা কবিতে বিরত হন নাই। তাঁহার স্তায় দ্যাশীলা রমণী অভি অলই দেশিতে পাওয়া যায়। পরের হ:থ দৃণ করিতে তিনি বিধিমতে চেষ্টা কবিতেন। তাঁহার দরিত্র প্রতিবেশীদিগকে তিনি নানা প্রকারে সাহায়্য কবিতেন। রুক্সকেশাব মন্তকে বহুতে তৈলঢ়ালিয়। দিতেন, কুবাক্তকে বসাইয়া প্ৰিতোষপুক্তক व्याहार कंद्राहेर्डन, रञ्जहोनारक रञ्ज मान क्रिर्डन,काहारकक्ष्रा সংপরামর্শ দিয়া উপক্বত করিতেন, কাহাকেও বা গোপনে অর্থ সাহাযা করিতেন। একবার তিনি কোরগর ও তৎপার্যবন্ধী গ্রামবাদী দমন্ত কালালদিগকে দাদবে নিমন্ত্রণ করিয়া পরিভোষ পূর্বাক আহার করাইয়াছলেন। এই ভোজে তিনি যেরপ আব্যোজন ক্বিয়াছিলেন,অনেকে আত্মীয় কুটুখকে পাওয়াইবাৰ জন্ত তত আয়োজন করেন না। তিনি গোপনে কত দান করি-তেন, তাঁহার পুত্রক্সাগণও তাহা জানিতে পারেন নাই। रमिन और्क अक्र ठत्रन महनानित्न महान्द्रत अमुबार अवग्र হইলাম যে, একবার ডিনি নিজের নাম গোপন করিয়া সাধারণ ব্ৰাহ্মসমাজে একটা হারমোনিয়ম কিনিবার জন্ত চারিশভ টাকা দান করেন। এডান্তন্ন তিনি উক্ত ব্রাক্ষসমাব্দে, কোন্নগর आक्रामारक, रकान्नगत्र वानिकाविन्।। नरत्र ७ अञ्चा विविध হিতকর অতুষ্ঠানে বছ অর্থ দান করিয়াছেন। তাঁহার নিজ ব্যবে কোনগর গ্রামে ডিনি একটা দাতব্য চিকিৎসালয় স্থাপন ও প্রিচ্ছেরের শ্বরণার্থ একটা স্থানর বাট প্রতিষ্ঠা করির। নিরাছেন এবং ঐ চিকিৎসালয় বাহাতে চিরস্থায়ী হয়, তাহার শ্ববন্দোবস্ত করিয়া গিয়াছেন।

তিনি প্রকৃতপক্ষে তাহার কর্মবোগী স্বামীর সহধর্মিণী ছিলেন। সনাতন আহ্মধর্মে তাঁহার স্বামীই তাঁহাকে দীক্ষিত করেন। এই দীকার পর তিনি স্বামীর সহিত প্রতাহ নিম্মিভক্ষণে ত্রন্ধোপাসনা করিতেন, ইহাতে তাঁহাদের উভয়ের মধ্যে যে অপুর অধ্যাত্মযোগ সংস্থাপিত হয়, মৃত্যুও তাহা বিচ্ছিন্ন করিতে পারে নাই। তিনি ৬৫ বংসরকাল স্বামীব সহিত প্রথে কাটাইয়াছিলেন। এই দীর্ঘকালের মধ্যে এক দিনেব জন্তেও তাঁহাদেব কথান্তর বা মনান্তব উপস্থিত হর নাই। এরূপ হুথ কয়জন ভাগাবতীব ভাগো ঘটিয়াছে? স্বামীর মৃত্যুর অবাবহিত পবেই তিনি তাঁহার স্থদীর্ঘ কেশপাশ (इमन कवित्रा एकत्वन এवः य जिन চाরि वः प्रव कौविज ছিলেন, ব্রহ্মচর্যা সাধনে ভাহা পর্যাব্যিত করেন। বিবাহেব প্রস্কৃত মর্ম্ম তিনি উপলব্ধি কবিতে পারিয়াছিলেন বলিয়াই ভাঁহাব জোষ্ঠ দৌহিত্তের ৩৭ বৎসর বয়সে জীবিয়োগ হইলে षिতीयवाव मावशविद्याह कविराज भवासमा (मन नाहे। देवसवा দশায় উহার স্বামীৰ সভিত সম্ম এক মুহুর্ত্তের জন্মণ্ড শিথিক হয় নাই। তিনি প্রতিনিয়ত কেবল এই বলিয়া আক্ষেপ করিতেন, "কে আর তেমন করিয়া আমাকে ধর্মশিক্ষা দিবেন ও আমাৰ কৰ্ত্তব্যাকৰ্ত্তব্য নিৰ্দেশ করিয়া দিবেন।'' তিনি সর্বা-দাই কেবল ওন্ধনাম জপ করিতেন। স্বামীব সহিত পুনর্মিলন इইবে এই আনন্দে অধীবা হইয়া মৃত্যুব অল্পিন পুর্বে তিনি ভাহার ক্সাদিগকে বলিয়াছিলেন, "ভোবা ত আমাকে রাঙ্গাপেড়ে কাপড় পবাইয়া তাঁহার কাছে পাঠাইতে পারলিনি, কিন্তু তাহাতে আমাব ছ:খ নাই, এই বিশুদ্ধ বেশহ তাহার মনোনীত। পকাধিক কাল তিনি মৃত্যুশ্য্যায় শ্য়ানা ছিলেন. কিন্ত তাঁহার মধুম্মী প্রকৃতি রোগের ছবিষহ যন্ত্রণাতেও কিঞ্চিনাত্র বিকৃতি প্রাপ হয় নাই। তাঁহার ভঞ্জধাকাবিণী-দিগকে "যাত্ৰ" "ধন" ইত্যাদি মিট সম্বোধন ভিন্ন অতা সম্বোধন কবেন নাই৷ মৃত্যু যভই সল্লিহিত হইতে লাগিল, ততই তিনি মহানদে দি ওণ উৎসাহের সহিত ত্রহ্মনাম গান ও ব্রহ্মনাম ৰূপ ক্রিতে লাগিলেন এবং অবশেষ বাহ্যিক সংজ্ঞা হাবাইয়াও ব্রহ্মনাম জপ করিতে বিরত হয়েন নাই। পাছে ঐ নাম ভলিয়া যান, এই জন্ম ভাঁহাৰ এক প্রিয় ছহিভাকে পুর্বেই वित्रा त्रावित्राहित्वन, "आमतकात्व आभारक उन्ननाम छनाहेरछ ज्वि । ना " ठांशव जाएम यथाकारन भानि इहेग्राहिन। নামায়ত পান কবিতে করিতে তিনি "অবোব আবার" এই कथां है। वावश्वाव উচ্চারণ কারয়াছিলেন। মৃত্যুর ছই একদিন পুকো তাঁহার এক প্রিয়ছহিতা তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করেন, "মা! আমাদিগকে এত ভালবাসিতে, এথন ছাডিয়া যাইতে তোমাব মন কেমন কারভেছে না ?" ভাহাতে তিনি "না" বলিয়া উত্তব দেন, বস্ততঃ তিনি জীবশুক্তা হইয়াছিলেন। মৃত্যুর পবেও তাঁহার মুথেব প্রশান্ত ভাবের কোনওরূপ বৈল-🍽 मा घ 🖟 नाहै। जिनि वह मिन शृद्ध विषया ছिल्मन, दायात्न चामात्र यामीत नाइ व्या (मृह्यात्म्ब (यम चामात्र किंटा मासान হয়। সভীর ইচ্ছাপূর্ণ হইবে বলিয়াই যেন যেদিন ভাঁহার সংকার হয়, সেদিন নিমতলাব শ্রশান ঘাটে সমস্ত দিবারাত্রিব মধ্যে অপর একটীও শব থানীত হয় নাই। শ্বশানভূমির এরপ 'শাস্তিময় দুখ্য আব ব্যন্ত দেখি নাই। বিশ্বমাত। लाक निकात अग्रह (यन (नहें आपन प्रम्मेजिटक वहें मर्काधारम পাঠाইয়াছিলেন এবং এ মহৎ উদ্দেশ সংসাধিত হটলে নিজের **८ वह**रकारफ़ हानिया नहेलन। छांशामत शविक कोवानत ভাব স্থামাদের নিজ নিজ ধর্মজীবনে বিলীন হউক।"

গত ৯ই ভাদ্র শুক্রবার ঢাকা প্রচারনিবাসে প্রীর্ক্ত কামিনী কুমার ঘোষ তাঁহার পরলোকগত পিতার আদ্যশ্রাদ্ধ সম্পন্ন করিরাছেন। প্রীযুক্ত বাবু চণ্ডীকিশোর কুশারী মহাশর আচার্য্যের কার্যা করেন। দরামর পরলোকগত আত্মাদিগের শান্তি বিধান করুন্।

রিক্সসন্মিলনীর উৎসব—গত ১২ই ভাজ সোমবার ইইতে ত্রান্ধ সন্মিলনীর উৎসব আরম্ভ ইইরাছে। প্রতিদিন সন্ধা ৭ ঘটিকার সময় ত্রন্ধ-মন্দিবে সংকার্ত্তন, উপাসনা, পাঠ ইত্যাদি হইতেছে। শনিবার পর্যান্ত এইরপে কার্য্য ইইবে। তৎপরববিবারে পূর্ণ উৎসব। রবিবারের কার্য্যবিষয়পের বিজ্ঞাপন প্রকাশিত হইল।

#### বিজ্ঞাপন।

সত্যমেবজনত। একমেবাদিভীরম্। ব্রহ্মক্রপাহিকেবলম্। সন্মিলনীব বিশেষ উৎসব।

্চই ভাত্র, রবিবাব।

প্রাতঃকাল গোটা সঙ্কীস্তন ; 🕈 আটা উপাসনা।

মধ্যাহ্— ধ্যান ও প্রার্থনা। অপরাহ্—৩টা, শাগ্রপাঠ ও ব্যাখ্যা।

- ঃটা, প্রবন্ধপাঠ ও আলোচনা।
- ু 🐧 🐧 বনের সার কথা ও প্রার্থনা।
  - ৬টা, সংকীর্ত্তন।

রাত্রি— ৭টা, রাত্রিকালীন উপাসনা।

#### ছুর্ভিক্ষ ফণ্ডের সাহায্য প্রার্থনা।

গভ ফাল্লন মাদ হইতে ফরিদপুরেব অন্তঃপাতা কোটালি পাড় প্রভৃতি স্থানে অতাম্ব আরক্ত উপস্থিত হইয়াছে। এই न नाम भारेयां नाधात्रण बाक्षनमारक्षत कार्यानिस्तार्क मुखा শ্রীযুক্ত বাবু কাশাচন্দ্র ঘোষালকে তথায় প্রেবণ করিয়াছিলেন। তিনি রাধাগঞ্জ নামক স্থানে অবস্থিতি করিয়া অতি যদ্কের সহিত হর্ভিক্ষপাডিত ব্যক্তিদিগের সাহায্য করিয়াছিলেন। তৎপরে শারারিক অহুস্তা বশতঃ তিনি তথা হইতে চলিয়া আসিয়াছেন। কিন্তু এখন প্র্যান্ত ও ঐ স্কল ভানের আত্মকট্ট দুর হয় নাই, বরং বুদ্ধি পাইয়াছে। আংগানী অন্তাহায়ণ সাস পথ্যস্ত এরূপ কষ্ট থাকিবে। স্থতরাং কার্যানিকাহক সভা পুনর্কার শ্রীযুক্ত বাবু হরিমোহন ঘোষাণকে ঐ অঞ্চলে প্রেরণ করি-म्राष्ट्रतः। इतिरमाध्न वायु उथाकात्र व्यवका मन्त कतिमा (य পত্র লিথিয়াছেন, সেই পত্র পাঠ ক্বিলে নিতাস্ত পাষাণ क्षप्रक विशासक श्रेषा यात्र। अज्ञालात्व (मात्कव भरोति स्वीर्ग नीर्ग रहेबाट्ह, शांत्रधारम बळा माण, घरत्रत्र हारम थड़ माहे. এहे ভয়ানক বর্ষাৰ জলধারা তাহাদিগের মক্তকের উপর দিয়া বছিয়া যাইতেছে, মানুষের ইহা হউতে আর চদ্দা কি ২ইতে পারে 🕈 এই জন্ম আমরা সর্ব্য সাধারণের নিকট বিনীভভাবে অর্থ সাহাযোর প্রার্থনা কবিভেছি। যদি সকলে আহারক্লিষ্ট ভ্রান্তা ভগিনীাদগের হৃংৰের কৰা একবায় চিস্তা করেন, এবং স্বীয় স্বীয় ক্ষমতা অহুসারে কিছু কিছু অর্থ সাহায্য করেন, তাহা হইলে व्यत्नक পরিমাণে ইङानिগের ছ: अ মোচন হহতে পারে। अञ्चर-এহ পুৰুক সকলে নিম্ন আক্ষরকারীর নিকট সাহায্য পাঠাইলে আন্তরিক ক্লতজ্ঞতার সহিত গৃহীত হটবে। আমাদিগের নিকট টাকা আসিলে আমরা হুভিক্ষপীড়িত স্থানে পাঠাইরা দিব এবং যাথাতে ছভিক ফণ্ডের টাক। কোনও ক্লপে অপবায় না হয় সে বিষয়ে বিশেষ দৃষ্টি রাখিব। নিবেদক

> জীরজনীনাথ রার, সম্পাদক। জীতকচরণ মহলানবিশ, ধনাধ্যক্ষ সাধারণ ব্রাক্ষসমাজ ; ২১১নং কণগুরালিস্ ফ্রীট, কলিকাতা।

## ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১১শ সংখ্যা। ১৭শ ভাগ ।

১লা আখিন রবিবার, ১৮১৬ শক, ত্রাক্ষ সম্বৎ ৬৫।

বিংসরিক অপ্রিম-মূল্য ২৪০ সফস্বলে. শ ৩ প্রতি থণ্ডের মূল্য ় ৮০

#### প্রার্থনা। '

হে জাগ্রত জীবস্ত প্রভু পরমেশর ৷ তোমার বাণী জীবস্ত वानी, जाहा व्यक्ति स्राप्त मानव क्षप्रदा প্রবেশ করে, নিজিত হুদরকে জাগ্রত করে; স্বভাছ্তির ক্লার সাধু আকাজ্ফার আমিকে প্রজ্ঞানিত করে, বিশ্বাস চকুকে উজ্জ্ঞান করে এবং আঘাকে ধর্ম জীবনের অমৃতরস পান করিতে সমর্থ করে। তোমার সংস্পর্ণ ও ভোমার জাগ্রতবাণী ভিন্ন ধর্ম নাই। আমবা জগতের কোলাহল গুনিয়া কি করিব ? কেবল সাধু महाजनिए जा वाणी श्वनिषा कि कतिव ? छाहार जामानिशक व्यक् की वन व्यमान कतिए भातिएव ना। भागता एमित्राहि, यथन आमता श्रकुछ এकाकी इहेबा ट्लामात ममुबीन इहे. তথনি আমরা প্রকৃত ধর্মের সন্ধান পাই। যথন জগতের প্রতি, বাহাড়মরের প্রতি, সাধু মহাজনের উক্তির প্রতি, वाहिरत्रत्र मकन अकात्र व्यवनश्रानत्र अष्ठि निर्कत हिनग्री याग्र এবং তোমার প্রান্তি পূর্ণ ও ঐকান্তিক নির্ভর উপস্থিত হয়, তথনই আমবা ভোষার মহিমা কিছু বুঝিতে পারি। এইরূপ অনক্লগতি ও অশরণ হইয়া ভোমার শরণাপর হইবার উপদেশ भामत्रा अप्तकवात्र भारेग्राष्ट्रि; किन्छ এर कीव्यत अठि अञ्च नमरबंदे रमहे 😼 मूहूर्ख উপস্থিত হয়, यथन আমরা বাস্তবিক অশরণ হইয়া ভোমার শরণাপন্ন ফ্ট। তাই তোমার চরণে প্রাণ্ড হইয়া এই প্রার্থনা করিতেছি, যেন আমরা অশরণ ৰ্টরা ভোমার শর্ণাপর হটতে পারি। জগতেব কোলাহলে. বাহিরের ধর্ম সাধনের অসার আডম্বরে, অক্যান্ত কারণে যেন আমাদের নির্ভর তোমা হইতে অফ্র কিছুরই উপর না লইরা ষার। আমরা যেন সর্কালা, সর্কাত্ত, সর্কাবস্থাতে তোমারই উপর একান্ত নির্ভন্ন করিতে পারি।

## সম্পাদকীয় মন্তব্য।

ধর্মভীক্ষতা—মফঃখনে আমাদের একজন ব্রাশ্ববদ্ বাস করেন, তাঁহাকে সকলেই অভিশব শ্রদা ভক্তি করিয়া থাকে। তিনি যথনই যেখানে থাকেন, ব্রাশ্বধর্মবাধন ও ব্রাশ্বধর্ম প্রচারে

অপনার দেহ মন নিয়োগ করিয়া থাকেন। আমরা অনেক সময়ে অফুতৰ করিয়াছি, যে তিনি যদি অনতাকর্মা হইরা ব্রাক্ষধর্ম প্রচারে জীবন সমর্পণ করিতে পারেন, ভাষা হইলে वर्ष्ट्रे लाग हम। वसू वासरवत्र मर्था व्यत्नरक व्यत्नकवात्र জাঁহার নিকটে এরূপ ইচ্ছা প্রকাশ করিয়াছেন। যথনই ভাঁহার নিকটে একপ প্রস্তাব কবা গিয়াছে, তথনই একই উত্তর পাওয়া গিয়াছে ;—"আমাব যে স্বাধীনতা নাই, আমি ঋণী লোক।'' বছদিন হইল তাঁহার আয় যথন অল্ল ছিল, তথন তিনি নানাপ্রকার সাংসারিক বিপদে পড়িয়া ঋণজালে জড়িত হইয়াছেন। **७ इं सन वह वर्मव** ধরিয়া শোধ কবিয়া আসিতেছেন। তাঁহার প্রতি প্রগাঢ বিশ্বাস ও শ্রদ্ধা থাকাতে উত্তমর্ণগণ তাঁহাকে এই দীর্ঘকালেব মধ্যে কোনও প্রকারে ক্লেশ দের নাই। আর এরূপ कर्डवा-शताम वाक्तिक क्रिम निवात श्रामानरे वा कि म তিনি নিজে আপনাকে এজন্ত প্রচুর ক্লেশ দিতেছেন। ব্রাহ্মধর্ম প্রচার কার্য্যে তাঁহার প্রাণ পড়িয়া রহিয়াছে, প্রতিজ্ঞা এই যে, ঋণ শোধ না হইলে, তিনি কিছু কবিবেন না। হয়ত ঋণ শোধ করিতে করিতে মৃত্যমুধে পতিত ছইবেন, তাঁহার অভীষ্ট আর পূর্ণ হইবে না। আমরা বলি, তাঁহার আর প্রচারকপদ গ্রহণ করিবার প্রয়োজন কি ৪ তাঁহাব কর্তব্য-নিষ্ঠা শ্বারা তিনি আক্ষধর্ম প্রচারের পক্ষে যথেষ্ট সাহায্য कतिराज्या वार्षाता धाराम कर्रवानिष्ठं कीवरनत जामग **रमधारेरवन, ध्वक्रुक मञ्चारवत मृष्टीख ध्वमर्गन कतिरवन।** कारा ना इहेशा यति तिथा यात्र. य बाक्षणन कर्डवा-छान-विशेन. सन করিয়া শোধ দিতে ব্যগ্র নহেন, তামাদির আইনের স্থবিধা नहें अञ्चर ताकरक विश्व कतिए हेरीएमव मरन বাঁধে না। তাহা হইলে আর লম্বা চৌড়া ভাষায় ত্রাহ্মধর্ম প্রচার করিয়া কি ফল ছটবে ? কর্ত্তবানিষ্ঠ ও ধর্মভীর জীবনের ছারা ত্রাহ্মধর্মের মহিমা রক্ষা করিতে না পারিলে মুথের প্রচারে কি কাজ ?

একতার ভূমি—ইংলওে বাসকালে ভর্মি সাহেবের উপাসক্মওনীর একজন গণনীয় সভ্যের সহিত একজন

ত্রান্দের কথোপকথন হয়। ঐ ব্যক্তি একজন সম্ভান্ত ও পদস্থ লোক, কেश्विक विश्वविगानस्त्र डेक्रभरम প্রতিষ্ঠিত আছেন। ব্রাহ্ম তাঁহাকে বলিলেন--"ভন্নসি সাহেব, তাঁহার উপাসক-মঙলীকে এক বেয়ে করিয়া ফেলিয়াছেন, লভনে এত প্রকার मम्प्रष्टांन চলিতেছে, কিছুরই সহিত তাঁহার উপাসকমগুলীর সংশ্রব নাই। দেখিলে বোধ হয় খ্রীষ্টধর্ম্মের দোষ কীর্ত্তন ভিন্ন ভয়সি সাহেবের উপাসকমগুলীর যেন কার্য্য নাই। আপনাদের স্থায় শিক্ষিত, চিন্তাশীল ও পদস্থ ব্যক্তি সকল ইহার মধ্যে थाकिए, (कन এक्रप এकरपर्य इट्रेंट एन ?'' जिनि উन्तर করিলেন—"মিষ্টার ভর্দির প্রকৃতি এরূপ নম্ন, যে তিনি দশব্দনের সঙ্গে মিলিয়া, দশজনের অধীনে থাকিয়া কাজ করিতে পাবেন। আমাদের মধ্যে অক্ত কোন লোকও নাই যে এ বিষয়ের জক সময় ও মনোযোগ দিতে পারেন। আমবা নিজে যথন বিশেষ কিছু করিতে পারিব না, তথন যে ব্যক্তি করিতেছেন ও খাটিতেছেন, এবং অনেক ক্রটী-সত্ত্বেও একেশ্বরবাদের মহিমা বোষণা করিতেছেন, তাঁহার কার্য্যের ব্যাঘাত করিয়া ফল কি ? তিনি দশজনের সঙ্গে কাজ করিতে না পারেন, একা একা काक कक़न, তाहाँहे जाता। तथा विवास ममन्न महे कन्ना অপেকা তাঁহার সহায়তা করাও ভাল। এই জন্ম আমরা তাঁহার কার্য্যে হস্তার্পণ করি না, বরং যথাসাধ্য অর্থাদি দারা महामुखा कतिया थाकि।" এই क्रि भ महिर्दितन। यनि आमारने मर्सा वल्ल পরিমাণে দৃষ্ট হইজ, তাহা হইলে ত্রাক্ষসমাজের

वात्र (य, आक्रामारकत कार्या कलाभ छौरारमत मन्भून मत्नामङ হইতেছে না। কার্যানির্বাহক সভা যে কাজ করেন তাহা তাঁহাদের অহুমোদিত নহে; স্বতরাং সমাজের কার্য্যে সাহায্য করিতে তাঁহাদের প্রবৃত্তি হয় না। এই সকল ব্যক্তির প্রতি প্রশ্ন এই, তাঁহাবা সমাজের কার্য্যে এখন যভটা সময়ও মনোযোগ দিতেছেন তাহা অপেক। অধিক সময় ও মনোযোগ দিতে সমর্থ কি না ? যদি সমর্থ হন, তবে তাঁহারা অগ্রসর হইয়া সমাজের কার্য্য স্থচাকরণে চালাইবার ভার গ্রহণ করুন, এবং বর্তমান সময়ে কার্য্যভার থাঁহাদের হস্তে ভ্রস্ত রহিয়াছে. তাহাদের ক্রটী নিবন্ধন যে অনিষ্ট হইতেছে তাহা নিবারণ করিবার চেষ্টা করুন। আর যদি নিজেরা অধিকতর সময় ও মনোযোগ দিতে সমর্থনা হন, বর্তমান ব্যক্তিদিগের ष्या । উপयुक्त वाकि वानिया यांशानिशाक मान कार्यन, তাঁহাদিগকে মনোনীত করিয়া তাঁহাদের হত্তে কার্য্যভার অর্পণ করিবার চেষ্টা করুন। যদি উপযুক্ততর ব্যক্তি না পান, ভাহা হইলে বর্ত্তমান কার্য্যভার বাঁহাদের হল্তে আছে, তাঁহা-দের সহায়তা করুন; কারণ ঠিক মনের মত কাঞ্টানা হইলেও বর্ত্তমান সময়ে আহ্মসমাজের কার্য্য চালাইবার উপায়ান্তর নাই। এই একতা-বুদ্ধি ও এই সাহায্য-প্রবৃদ্ধি আমাদের নাই বলিয়া আমাদের এত হরবস্থা। বিচ্ছিন্ন হইনা কার্য্য করাতে কতলোকের শক্তির অপচয় হইতেছে। জগণীখন কবে আমাদিগকে সেই শুভবুদ্ধি

বিধান করিবেন, যদ্বারা আমরা নানাপ্রকার মডভেদের মধ্যেও একতার ভূমি দেখিতে পাইব।

রামমোহন রায়ের স্মৃতি---২৭৩ সেপ্টেম্বর মহাত্মা ताका तामरमाहन तारवत मृञ्जानिन, উक्त निरन वर्ष वर्ष व्यामता সেই পরলোকগত মহাজনকে শ্বরণ করিয়া থাকি। ২৭এ সেপ্টেম্বর নিকটে আসিতেছে। আমরা রামমোহন রায়ের অমুগামী ব্যক্তিদিগকে শ্বরণ করাইয়া দিতেছি, এবং উক্ত দিনের জন্ম প্রস্তুত হইতে অমুরোধ করিতেছি। ত্রাশ্ধ-দিগের মধ্যে ভিন্ন ভিন্ন দলের এই সন্মিলিত হইবার সমর। সেই মহাপুরুষের নিশানের নিমে সকলেই পাশাপালি দাড়াইতে যতই মতভেদ থাকুক, তাঁহার সহিত সকলেরই সকল সম্প্রদায়ের মধ্যে একা ও আত্মীয়তা স্থাপন করা থাঁহার জীবনের মহা উদ্দেশ্য ছিল, তাঁহার নামেও আহ্মগণ যদি কুদ্র কুদ্র পার্থক্য বিশ্বত না হইতে পারেন, তাহা হইলে এই প্রমাণ দিবেন, যে তাঁহারা রাজার মহৎকার্য্যের উত্তরাধিকারী হইবার উপযুক্ত নহেন। প্রাচীন রোমের ইতিরত্তে একটা স্থলর আখ্যায়িকা দেখিতে পাওয়া যায়। একবার একদল প্রবেশ শক্ত আসিয়ারোম নগরকে অবরোধ করিরাছিল। রোমকগণ প্রাণপণে যুদ্ধ করিয়াও শক্রকুলকে বিদ্রাবিত করিতে পারিলেন না। অবশেষে তাঁহার। রিজ্বার দেখিয়া ঈশবের শরণাপল হইলেন। কার্য্যকে অনেক পরিমাণে সুশৃত্থল দেখিতে পাওয়া যাইত পাড় প্রভুজ্জিরে দেবতার নিকটে হত্যা দিয়া পড়িলেন। যথাসময়ে

অনেকের মূথে মধ্যে মধ্যে এইরূপ অভিযোগ শুনিতে পাওয়া<sup>•্বাদ</sup> প্নিী, হইল, যে রোমীয় সেনাপতিদিগের মধ্যে একজন বাঁদ না গেলে, অর্থাৎ বিনষ্ট না হইলে, তাঁহারা জয়য়য়ুক্ত হইতে পারিবেন না। এই দৈববাণীর কথা যথন রোম নগরে পৌছিল, তথন সকলেই চিম্তা করিতে লাগিল, কোন্ সেনা-পতিকে মরিতে হইবে ও কিরুপে মরিতে হইবে ? একদিন সেনাপতি সকলে অখারোহণে এক নির্দিষ্ট স্থানে সমবেত रुरेलन। সমবেত रुरेश किकाल भक्क स्वाहर रुख रहेर जनात রক্ষা করা যায় সেই চিন্তাতেই সকলে নিমগ্ন হইলেন। দৈববাণীর কথা সকলের স্মরণ হইল। পরস্পার প্রশ্ন করিতে नाशित्नन, ७ देनववागीत वर्श कि ? "आमादनत मद्या काहादक মরিতে হইবে ও কি প্রকারে মরিতে হইবে 🕍 কথোপকথন ও চিস্তা চলিয়াছে, ইতিমধ্যে সেনাপতিদিগের मर्था अक्सन कर्शना वाकि स्ठार मिहे पन स्टेर्ड बहे स्टेमा অখারোহণে নক্ষত্রবেগে ধাবিত হইলেন। অপর সকলে বিশ্বিত হইয়াচিন্তা করিতে লাুগিলেন 'কেন তিনি হঠাং' কিছুনা বলিয়া কহিয়া এক্নপ বেগে ধাবিত হইলেন। কিন্তু তাঁহাদের হৃদরস্থিত প্রশ্নের উত্তর স্থির না করিতে করিতে দৃষ্ট হইল যে, উক্ত দেনাপতি অখসহ সভাহানের অদ্রবর্তী এক প্রকাও গভীর গর্ত্তের মধ্যে লক্ষ্ দিয়া পড়িলেন। একি হইল, একি হইল विनिष्ठा मकरन रमहे शर्खन्न मिरक थाविल इहेरनन। किन्न मकनि বুথা, তিনি চুর্ণ বিচুর্ণ হইরা অখসহ পঞ্চ প্রাপ্ত হইরাছেন। তথন সকলে বুঝিতে পারিলেন, যে একজন সেনাপতি বিনষ্ট ना हरेल द्याम तका পारेद ना, जानित्रारे जिनि जार्यनादक

বিনষ্ট করিয়া রোম রক্ষার উপায় করিয়াছেন। একজন প্রধান সেনাপতি রোম রক্ষার ধরু বিনষ্ট হইরাছে, এই সংবাদ यथन नगरत वाशि हरेया পড़िन, उथन विश्वन खरत विश्व क्रांख ७ आख रशक्कां निरंगत्र (मरह रयन व्यानोकिक वन व्यानिन; **द्याभीत रेमळगग উৎमार्ट्स अधिमय हहेन्ना आवात त्रगमञ्जा** করিতে লাগিল; এবং সেই সংবাদ শত্রুশিবিরে পৌছিবামাত্র ভাহাদের অন্তরেও ত্রাসের স্থার হইল। ভাহারা নগর অবরোধ করিয়া থাকা বুথা জানিয়া স্বস্থান পরিত্যাগ করিতে আরম্ভ করিল। ভিজ্ঞাদা করি, উক্ত রোমীয় দেনাপতিগণ বধন নগর রক্ষার উপায় চিন্তা করিবার জন্ত সন্মিলিত হইয়া-ছিলেন, তথন এই আত্মবিনাশের বৃদ্ধি হৃদরে না জাগিয়া यिन छौहाता कुछ कथा नहेग्रा विवासन व्यव् इहेरछन, दक কিরূপ সম্রমের পাত্র তাহা বিচার করিতে যদি নিযুক্ত হইতেন, कृत कृत भठ छम बहेगा यमि पत्रण्यत हहेए विव्हित हहेए उन, তাহা इटेल कि धाकाम পाईछ ? जाहा इटेल कि टेहारे প্রকাশ পাইত না যে, তাঁহারা যেরূপ মহৎ কার্য্যের ভার প্রাপ্ত, তাঁহারা তাহার উপযুক্ত নহেন ? এইরূপ ব্রাহ্মদিগের হল্তে যে সকল গুরুতর কার্ব্যের ভার রহিয়াছে, তাহা সাধন করিবার উপায় চিন্তাতে সমবেত না হইয়া যদি তাঁহারা কুদ্র কুদ্র কথা লইয়া বিবাদে প্রবৃত্ত হন, তাহা ২ইলেও প্রকাশ পায় যে তাঁহারা ঐদকল মহৎ কার্য্যের সম্পূর্ণ অনুপযুক্ত।

স্মৃতি-চিহ্ন-রামমোহন বায়ের ক্লায় মহৎ বাক্তিদিগকে বুঝিতে অনেক বিলম্ব হয়। ইহারা সময় আসিবার অনেক অগ্রেই অভাদিত হইয়া থাকেন । ইহাঁরা বিশ্বাস নয়নে যাহা দুর্শন কবেন, তাহা বহুকাল পর্যান্ত ভবিষাতের গর্ক্তে লুকান্নিত থাকে। স্বতরাঃ বতই সময় যায়, যতই দেশে জ্ঞান ও সভাতার উন্নতি হইতে থাকে, তত্ত লোকে ইহাঁদের মহত্ত অহুভব কুরিতে থাকে। রামমোহন রায়ের দেশবাদিগণ রামমোহন রায়কে সমুচিভরূপে ভক্তি শ্রদ্ধা দিতেছেন না, ইহা দেখিয়া অনেকে অনেক দিন ছঃথ কবিয়া আসিতেছেন। কিন্তু সেই সঙ্গে সঙ্গে এই বলিয়া मनत्क माञ्चना मिट्डाइन (य, वरमत्त्रत्र शत वरमत रायम याहर्त, দেশে ইংবাজী শিক্ষার বিস্তার ও জ্ঞানের উন্নতি যত হইবে, রামমোহন রায় যে সকল সংস্থারে হস্তার্পণ করিয়াছিলেন. দেই সকল সংস্থার কার্য্যে লোকের অফুরাগ যত বাড়িবে, ততই তাঁহাকে বুঝিবার ও শ্রদ্ধা ভক্তি করিবার লোক সংখ্যা বাড়িবে। কিন্তু ছ:থের বিষয়, কিছুদিন হইতে দেশ মধ্যে হিন্দু ধর্ম্মের একটা বিক্বত পুনরুখান স্রোত প্রবাহিত হইয়াছে। ইহাতে রামমোহন রায়ের কীর্ত্তিকে উজ্জ্বল না করিয়া যেন কিয়ৎ পরিমাণে মান করিয়াছে। বাঁহারা ঐ সকল সংস্কারের পক্ষ, বাঁহারা পুনক্থানকারীদিগের চেষ্টার বিক্বত ফল দেখিয়া छःथ कतिया थाटकन, छाहारनत नकरनतहे त्रामरमाहन तारवत নাম ও কীর্ত্তিকে জাগ্রত করিবার চেষ্টা করা উচিত। রাম-মোহন রায় জাগিয়া থাকিলেই ভারতের স্বপ্রকার উন্নতির আশা জাগিয়া রহিল। কেবল কলিকাতাতে রামমোহন त्रारम्पत्र प्रत्रगार्थ मेखा हरेला यर्थहे नरह, स्यः चरन । नाना चारन

শারণার্থ সভা হওয়া কর্ত্তব্য। এই সময়ে আমাদের পরলোকগত বন্ধু কারল হেমারগ্রেণকে শারণ হইতেছে, তিনি
রামমোহন রায়ের কোনও প্রকার স্থতিচিক্ন স্থাপন করিবার
জন্ত প্রাণ সমর্পণ করিয়াছিলেন। তিনি জীবিত থাকিলে
একটা কিছু করিয়া তুলিতেন তাহাতে সন্দেহ নাই। কিন্ধ
একার্য্য জাবলম্বন করিবার কি কেহ নাই ? পরলোকগত
কেশবচন্দ্র সেন মহাশয় যুবরাজ এলবার্টের ভারতাগমনের
শারণার্থ এলবার্ট হল স্থাপন করিয়া গিয়াছেন। রামমোহন
রায়ের শারণার্থ কোনও প্রকার চিক্ন স্থাপন করিয় গরাছেন। রামমোহন
রায়ের শারণার্থ কোনও প্রকার চিক্ন স্থাপন করিয় ওরেল ব্রত
লইবার কি কেহ নাই ? এ বিষয়ে যদি কেহ উদ্যোগী থাকেন,
তিনি ব্রাহ্ম অব্রাহ্ম শিক্ষিত বালালি মাত্রেরই নিক্ট সাহায্য
পাইবেন তাহাতে সন্দেহ নাই।

অনাময়-অবস্থা-সেই অবস্থাই উত্তম অবস্থা, যে অব-স্থায় লোকে সত্যের উৎপত্তি গুলের অমুসন্ধানের অন্স লালায়িত না হইয়া,সত্য কি না,ভাহার অফুসন্ধানের জক্তই লালায়িত হয়। যথন কোন গ্রন্থ বিশেষের ছিল প্রাংশ বায়ু-তাড়িত ২ইয়া নয়ন পথে উপস্থিত হয়, তথন তাহা কোনু গ্রন্থের পত্রাংশ এরূপ অমুসন্ধানের প্রবৃত্তি প্রবল না হইয়া, তাহা সত্য কি না তাহাই নির্ণয়েব জন্ম যদি ব্যাকুলতা হয়, তাহাই উত্তম অবস্থা ; কারণ তদ্বারা মানব সভ্যেরই সমাদ্ব করিতে সমর্থ হইরাছে বলিয়া বুঝা যায় এবং তাহাই নিরাপদ অবস্থার জ্ঞাপক। বাইবেল, কোরাণ কিম্বাবেদ পুরাণের সহিত সকল সময় একতা অবস্থিতি করা যাইবে এমন কোন নিশ্চয়তা নাই। কথন কোনু স্বব্ছায় মানবকে কোথায় যাইয়া পড়িতে হইবে, কে জানে ? তথন मरक वाहेरवन किया कात्रांग चानि ना थाकिरनं छेनांत्र जारव সত্য গ্রহণের প্রবৃত্তি প্রবল থাকিলে, তাহাই মানবকে কর্তব্যের পথে স্থিতর রাখিতে সমর্থ হয়। তথন হয় ত কোন রাখালেব একটী সংগীতে এমন উপদেশ পাওয়া যাইতে পারে ষাহা কোন ধর্মগ্রন্থ বারা অক্ত সময়ে পাওয়া যায় নাই। সত্য অসুসন্ধান এবং গ্রহণের প্রবৃত্তি প্রবল হইল কি না ইহাই বিশেষ লক্ষ্য করিবার विषय। তাहा याहात हय. (म (य कान (मर्ट्म गमन कक़क (य কোন অবস্থায় পতিত হউক না কেন, তাহার ভয়ের কাবণ किइरे नारे। तम भाषीत गात्न अल्पान भाषा तम निकीत প্রস্তর থণ্ড হইতেও উপদেশ লাভ করে। সমস্ত প্রাকৃতিই তাহার উপদেষ্টা। অধিল বিশ্ব শাস্ত্রই তাহার সত্রপদেশ-পরিপূর্ণ অমোঘ শাস্ত্র। প্রস্তর-খোদিত সহক্তি যেমন সে আগ্রহে গ্রহণ করে, কোন প্রসিদ্ধ ধর্মগ্রন্থের উব্জিও সে সেই ভাবেই গ্রহণ করিয়া থাকে। কিন্তু লোকে এরূপ উদার সভ্যের পক্ষপাতিত্ব করিতে অতি অল পরিমাণেই সমর্থ হইয়াছে। শুনিশেই তাহা কোন ব্যক্তির উক্তি, তাহারই অসুসন্ধানে লোকে স্ক্রিথা ব্যস্ত হয়। সেই ব্যক্তির গুরুতামুসারেই সভ্যের বা সছক্তির গুরুত্ব নির্ণয় করিয়া থাকে। লোকের এমনই প্রবৃত্তি यে এक थाना न्जन श्रष्ट शास्त्र भामात्वरे अथस्य (मह श्रष्ट कान ব্যক্তির প্রণীত, তাহারই অমুসদ্ধান করে এবং ব্যক্তির দারাই এছ দম্মে মনে একটা ভাব সংগ্রহ করিয়া তাহার বিচারে

প্রবৃত্ত হয়। এজস্ত দেখা যায় সমালোচকর্মণ আনেক সময়
গ্রান্থের সমালোচনা না করিয়া ব্যক্তির সমালোচনা করিয়া
থাকেন। ইহা দারা প্রকৃত রূপে সভ্যের সমাদর করা হয় না।
সভ্যের সমাদর করিতে যিনি অভ্যন্ত বা ইচ্ছুক তিনি স্থান কাল
এবং ব্যক্তি নিরপেক্ষ হইয়াই বিচার করিবেন এবং সভ্য
বিলিয়া প্রতীতি হইলে তাহারই অনুসরণ করিবেন। এই অবস্থাই
স্বাস্থ্যের প্রকাশক। স্কুত্ব আ্মার প্রথম এবং প্রধান লক্ষণ এই
যে তিনি সভ্যকে পবিপ্রহ করিতে কাহারও উপরোধ বা অনু
রোধের বণীভূত হল না। কিন্তু আ্যভ্যন্তরীণ প্রবল সভ্যান্থরাগ
এবং সভ্যেরই বিমোহিনী শক্তিতে মুদ্দ হইয়া তাহার পরিপ্রহ
কবিয়া থাকেন। আ্মায় এই অবস্থা উপস্থিত হইলেই স্ক্থ
ছঃথে, বিপদ সম্পদে, সজন নির্জ্জনে সভ্যের শরণাপন্ন হইয়া
আ্মায় কল্যাণ লাভে সমর্থ হন। ইহাই ব্রাহ্মধর্ম্বেব বিশেষত্ব
এবং এই বিশেষত্বই চির কল্যাণের প্রস্রবণ হইয়া আ্মাকে
পোষণ কবিবে।

অভিনব উদারতা—মধ্য আসিয়াতে এখনও এমন এক এক শ্রেণীর লোক দেখা যায় যাহারা যাযাবর। তাহারা कान निर्मिष्ठे आएएमत अधिवामी नरह। यथन स्थारन ভাহাদের স্থবিধা হয়, সেই স্থানেই যাইয়া বাস করে। স্থন্তির হইয়া, দীর্ঘকাল কোন স্থানে বাস করা তাহাদের রীন্তি নহে। যতদিন যে প্রদেশকে ভাহারা আপনাদের বাসের উপযুক্ত জ্ঞান করে, ততদিন তাহারা সেই প্রদেশে বাস করে, আবার সেই ञ्चितिशांत चास इटेलिट चाला काला यात्र। এटे ट्यांनीत লোকেরা যেমন কোন বিশেষ স্থানের নহে, তেমনি কোন বিশেষস্থানও ইহাদের নহে। ইহারা কোন স্থানের মঙ্গলের জন্ত যেমন বিশেষভাবে কিছুই করে না, তেমনি কোন স্থানও हेशात्र अन्न विलयणात किहूरे कात्र ना। हेशात निम्रण চঞ্চলভাবেই ঘুরিয়া বেড়ায়। নিত্য নৃতন স্থানের সহিত ইহাদের সম্বন্ধ স্থাপিত হয় এবং প্রয়োজন ফুরাইলেই স্মাবার ন্তন ভানের অতিথি হয়। পরীক্ষা দারা দেখা গিয়াছে, ইহারা যেমন কোন স্থানেরই স্থানীয় উন্নতির জন্ম ব্যস্ত নয়, তেমনি নিজেদেরও কোন স্বান্ধী উন্নতি লাভে সমর্থ হয় না। তাহারা অতি নিক্ট অবস্থায় জনসমাজেব অতি নিয়ন্তরেই বাস করিতেছে। বর্তমান সময়ের উন্নত জ্ঞান বিজ্ঞান বা ष्मन श्रकात উन्नजि नाष्ट्र हेराता नमर्थ रय नाहे। हेराता নিয়ত স্থবিধাবাদী। স্থবিধাই খুলিয়া বেডায়। নিজেদের বিশেষ উন্নতি লাভের জন্ম বা কোন স্থানের উন্নতির জন্ম हेहावा कि हूहे करत्र ना , कात्रण हेहान्ना कारन रकान हानहे ইহাদের নহে। স্থতরাং তাহার উন্নতির জন্ম যত্ন করিতে প্রবৃত্তি হইবে কেন 

ভূ আপনাদিগকে কোন স্থানবাসী বলিয়া मान ना कतात कल এই इटेब्राइड (य, टेहात्रा निष्कु छेब्रङ হইতেছে না এবং কোন বিশেষ স্থানের স্থানীয় উন্নতিও ইহাদের দারা সাধিত হইতেছে না। কোন এক স্থানকে আপনাদের চিরবাসন্থান জ্ঞান না করার ইহাদের যেমন হীনতাই থাকিরা যাইতেছে, কোনরূপ উন্নতি হইতেছে না, তেমনি বাঁহারা

कान धर्म विष्मवाक चार्यनात्मत्र धर्म विषया- खान ना कतिकाः সকল ধর্মকেই আপনাদের মনে করিভেছেন,বধন বেরূপ স্থবিধা হর, দেইরূপে জীবন যাপন ক্রিভেছেন,তাঁহাদের খারাও কোন ধর্ম বিশেষ পরিপুষ্ট হয় না এবং তাঁহারাও কোন ধর্মের ভার। পরিপুট হন না। এই সর্ব্ধ সম্প্রদায়ের মনোরঞ্জনকারীজাতীর লোকেরা যথন যেরূপ স্থবিধা, তথন সেইরূপ মূর্ত্তি পরিগ্রহ করেন। কিছুতেই আবদ্ধ নহেন। কোন ধর্মের প্রতি তেমন অফুরাগ বা আছা নাই। নিষ্ঠার সহিত সত্যাসত্যের বিঁচার নাই এবং নিষ্ঠার সহিত কোন ধর্মেরই সাধন অবশংন নাই। এই শ্রেণীর লোক কোন ধর্ম্বেরই নহেন অপচ সকল ধর্ম্বেরই। স্থতরাং ইহাদের উন্নতিও দেই যাযাবরগণের মতই হর। উদার হইতে হইবে, কিছুতেই আবন্ধ থাকা হইবে না, স্থভরাং কোন ধর্মের নামে নিজে পবিচিতও হইবেন না। এজভ ইহাঁর। সার্কভৌমিকতার ভাগ করিরা থাকেন। .এই প্রকার সার্ক-ভৌমিকভার ফল এই হয় যে, কোনক্লপ হায়ী উন্নতি লাভে তাঁহারা সমর্থ হন না। তাঁহারা স্রোতে আদেন আর স্রোতে যান। যথন যে ধর্মের জয় হয়, তথন তাঁহারা সেই ধর্মের মহিমা গান করেন। এই প্রকাবের অন্থিরচিত্তদিগের ধেমন কোন ধর্মাই আপনাব নয়, তেমনি ইহারাও কোন ধর্মের नरहन। ऋजताः हेहावा ভावारवर्ग চলিতেই অভ্যন্ত। मृह ভূমির উপর প্রতিষ্ঠিত হইয়া, আপন কল্যাণ সাধনে ইহাবা क्थनरे मक्कम नरहन। वर्खमान ममर्य এरे अकारत्रत्र जेनात्रजात्र নামে দিবত্যাসত্য বিচাববিষ্থ এক শ্রেণীব লোক দেখা দিরাছেন। তাঁহারা অতি উদার স্থতরাং কিছুতেই আবদ্ধ नर्टन। रेटाँ एन अवश मिट्र अप्ति छेनात्रजात अञ्चल्र अर्थे

উদারতা শব্দের এমন সৃষ্টি ছাড়া অবর্থ ইইবে, তাহা বোধ হয় কেহ কথনও কল্পনাও করিতে পারেন নাই। যে কোন মত প্রাচীন গ্রন্থ বিশেষে লিখিত আছে, ভাহাই সভা; ভাহাই দ্বীরান্নদোদিত স্তরাং তাহাই অবলধীয়। ইহার মত মারায়ক কথা আরে কি হইতে পারে ? উদার হইবার আকাজকার যদি এরপ মতাক্রাস্ত হইতে হয়, তাহা হইলে অনুদারতাই বোধ হয় অবশ্বনীয়। উদারতা শব্বের এরূপ বিক্লত অর্থ হাহারা করেন তাঁহারা ধর্মজগতে এক অদুত পদার্থের সৃষ্টি করিবার প্রয়াসী व्हेट उट्टन। यादा व्यक्ति जीयन भनार्थ। याहात मः न्नार्भ আত্মার সমূহ অকল্যাণ সাধিত হইবে। প্রক্রত উদারতা আর সত্যপ্রিয়তা একই পদার্থ। সত্যাসত্যের বিচার বিমু**থ হইয়া** প্রাচীন কোন গ্রন্থ প্রচারিত, বা কোন ধর্ম প্রবর্ত্তক প্রচারিত हरेटनरे यमि जाहा अवनम्नीय रुप्त धवः स्मेयतास्यामिक विनया পরিগণিত হর, তাহা হইলে ধর্মাধর্মে সভ্যাসভ্যে কোন প্রভেদ থাকিতে পারে না, সকল ধর্মাই ঈশ্বরপ্রতিষ্ঠিত এক্সণ মত মানিতে হইলে, হুনীতিকে নীতি বলিতে হয়—সনেক কুৎসিত আচারকে সদাচার নামে অভিহিত করিতে হর; ধর্মাধর্মের প্রভেদ বিশ্বত হইতে হয়। আশা এই, এইরূপ नार्क्त छोटमत नःथा। दिनी नरह এवः देहाँ एतत बाता दिनान नमान পরিচালিত হইবারও সম্ভাবনা নাই।

উদারতা বা দার্কভৌবিক্তার প্রাক্তত অর্থ আক্ষর্ণরই প্রাহণ করিয়াছেন। অর্থাৎ সভ্য মাত্রই অবলম্বনীয়। সভাই বর্ষের সায় ও প্রাণ। ভাহা বে কোন নময়ের, জাতির বা ব্যক্তির হউক না কেন। শত কতি নহ করিবাও ভাহাই धारमध्य क्रिएं इहेर्द। डेमाप्रकात धहे धारु मर्थ ভিন্ন, বিচারবিধীন ভাবে বাহা কিছু ধর্মের নামে অভিহিত इब, क्वाहारे मक्त क्लिया शहर क्तिरन, क्रेमायकात मारम महाविशक्तमक मछ क्षांत्रिष्ठ हरेरव धवः छाहा क्यमह शानत्वत्र कन्त्रांवकत्र इहेरव ना। म्हा शानत्कहे व्यवनचन করিতে হইবে। কিন্তু ভাহার সলে সকে ইহাও সরণ রাথিতে क्टेरन ८४, ८४म आया-आखिय निनृष्ठ ना क्टेग्रा यात्र । अखिय-विशेष इहेन्ना नर्सक्षयमणकातीय मरण मिलिल रक्ष्यनरे पिलि-काता अधिरकत मना भाकेरण कृष। रक्षके वामावत्रक धारा ৰ্ইতে হয়। কোন খারী উন্নতি লাডেই সমর্থ হওরার সম্ভাবনা থাকে না। এজন্ত ত্রাহ্মধর্ম, আত্ম-অভিত্ব বজার রাখিয়া সর্বত্ত **२हेरल मठा अहरमञ्ज डेलरमम विरक्ताहम व्यार हेराहे कनागिकत्र।** 

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ ।

#### মহাত্মা রামমোহন রায়ের সমকালে ব্রাহ্ম সমাজের অবস্থা।

( त्रायरमास्य त्रात क्रांव अध्यक्त क्रिक्स विविष्ठ )

মহাত্মা রামনোহন রাম ঈশোপনিষদের ইংরেজী অনুযোদের ভূমিকার লিধিরা গিয়াছেন ''আমার স্বদেশবাসিগণ সাংঘাতিক পৌতালক ধর্মের অভি অন্ধবিশাসী,--ভারারা মন:কলিভ দেবদেবীর প্রীতির জন্ত স্বাভাবিক কেই মমতা ছিল্ল করিয়া ভাষণ কার্য্যের অহঠান করিতেছে,—আমি অত্যন্ত হাতনার সহিত অবিশ্ৰান্ত সেই চিন্তা করিতাম। আদেশ যদে করিয়া আত্মহত্যা করেও আত্মীয় স্বজনকে বলিদান করে। আমার খদেশবাসিগণ বিনয় ও সৃহিফুতা প্ৰভৃতি অনেক দল্ভণে অনুহত-ভাহারা হীন হইয়া থাকিবে আমি ইহা বহু করিতে পারিতাম না।"

"ঈশবের বিশুদ্ধ উপাদনা, পবিত্র নীতি ও সংশ্বত মঞ ইহাদিগকে দর্মপ্রকার হানতা হইতে উদ্ধার ক্রিবে, এই আশায় আশাষিত হইয়া আমি ধর্ম পুতকের বিলেব বিশেষ অংশ অম্বাদ করিতে আরম্ভ করি। অনেক প্রকার পৌতলিকতা चाह्न, क्खि हिन्दू भोखनिक्छात्र दियन सन्हिक्त सर्हान খিথিল করে, আর কিছুতেই তেমন করে মা। वानिशन बामान धिनः — किकान डाहाना.. नर्स अकानहीनडा হইতে উদার পাইবে, এই চিস্তার আমি বিব্রত হইরা পজিরাছিলাম। অবশেষে দেখিলাম, স্বদেশবাদিপণ যতদিন क्षक्र क्षाप्त महिल मेचारा बक्ष ७ मर्काराणीय शान कतिएक ना भारित्य, ककतिम काशायत कमाान नाहे, काहे ধর্ম পুরুকের অর্থ প্রচার করিছে প্রাযুদ্ধ হট্ট্যাম।" ধর্ম বিছেন ব্রম্মজান প্রচারের বস্তু ক্লিকাভার আগ্রমণ করি-

**ৰীলভার জাতীয় হীৰভা দেখিয়া খদেশ**েপ্রমিক মহম্মদের ल्यां क्षा क्षा क्षित्राहिन। बहे क्षान्त्र क्रन मूननमान ধর্মের আবির্ভাব। সমেনের মারাত্মক পৌত্তলিকতা ও ভীষণ অনুষ্ঠান দেখিয়া অভাতি প্রেমিক মহাত্মা রামমোহনের প্রাণ কাদিরাছিল, উচ্চার অঞ্জলে প্রাক্ষ সমাজের ভাবি-ৰ্জাৰ। যেখানে ব্যাকুল ক্ৰদান, দেখানেই ঈৰৱের শক্তি व्यवकत्र मात्र । द्वामामहात्मत्र व्यक्तमाव उद्मनिक गरेम्रा अस्तिम व्यकीर्ग हम ।

**क्तिमिन्दे अक इहेर्ड वहत्र सृष्टि इर्द्र। अक वृक्तक** नहेबारे अथम (बीक्षममाच, अक मस्यानक नरेबारे अथन मूननमान नमान । এक तामरमाहनरक नहेत्राहे अथम आका সমাজের পত্তন হয়। বোড়শ বর্ষের রামনোহন যথন পৌত-লিক উপাসনার অসারতা ও একমাত্র পরত্রকোর উপাসনার मात्रवज्ञान कथा थाठान कतिया गृष्ट बरेटज वश्कित हन, छथनहे এদেশে वाक्रमारकत भवन स्हैताह । किन्न छथन त्रामरमाहन একাকী।

त्रामामाहन यथन तक्ष्याद द्राक्याद्या निवृक्त हितन, उथनरे नर्स क्षारमा मान बान मिनिष्ठ रहेशा अन्न-उष चाला-চনা ক্রিভে আত্মন্ত করেন। সন্ধার পর আপনার বাদার ধর্মালোচনার জম্ম নানা লোককে আহ্বান করিতেন। ভিনি পৌত্তিকভার অসারতা ও ত্রমোপাসনার সারতত্ব সক্ষণকে वृक्षाहेन्ना निरंजन। त्रमभूत्रधानी भरनक्छिन मार्फात्राती अहे मखात्र मचा कितन। अथाहनहै बाक्यमभारकत्र म्यापाछ।

সত্য ধর্মের প্রতিষ্দী চির্দিন সকল দেশে জাবিভূত হুইরাছে। রাবণ না হইলে রামের মাছান্ম জগতের লোক नमाक् क्राप्त वृक्षिण्ड नमर्थ स्टेंड न।। त्रामरमाहन कारनक्षेत्रम দেওয়ান, তিনি সভা করিয়া ব্রক্ষান প্রচার করিতে আর্থ ক্রিরাছেন। বঙ্গপুরের জজের দেওরান গৌরীকান্ত ভট্টা-চার্চা রামযোহনের প্রতিবন্দীত। করিতে মন্তকোরত করি-শেন। তিনি সকলকে রামমোহনের বিক্লছাচারী হইতে नदामर्ग हिरमन। প্রভঞ্জন প্রবলবেপে পর্কভের গাতে ভাষাভ क्तिराज्य शर्काखत किছू कितिए शास्त्र ना। एक बन मो मो **এकটা भन्न इत्र ; (शोतीकारस्त्र म्माल ठारे रहेनाहिल।** भाषि गहेना नार, किंद मःधाम गहेनाहे आक्रमभाष्ट्रत হত্তপাত।

वक्रभूद्र शोतीकांच ध्रवः वामस्याद्यान क्रमकृषि क्रकः নগরের সন্নিহিত রামনগরের রাষজয় বটব্যাল "যুদ্ধ: দেছি" वनिवा मीषादेशाहित्तम। वष्टेवान ठाति शेष्ठ श्वाप नाक লইলা এক দল করিলাছিলেন। তোর বেলার রামমোহনের ৰাটীয় নিকট ঘাইয়া কুকুট ধানি করিতেন এবং ৰাড়ীয় ভিতর গো-অহি নিকেপ করিয়া ব্রহ্মতান দূর করিবার চেটা করিতেন! ব্রাহ্মদের প্রতি অত্যাচার রামমোহন রারের উত্তরাধিকার স্থের ভ্রাক্ষসমান্ত ভোগ দুখল করি-তেছেৰ।

১৭५७ मटक देश्यांकी ১৮১० पृष्टीत्क ८० वश्मन वहरून जान-

লেন। মাণিকতলার লোরার সার্কুলার রোডের যে বাড়ীতে এখন স্থাকরা ট্রাট থানা, সেই বাটী ক্রের করিরা তথা হইতে পৌত্তলিকতার উপর গোলাগুলি বর্ষণ করিতে আরম্ভ করিলেন।

রামমোহন রারের শারীরিক বল ও মানসিক শক্তি উভর্গ পরাকার্চা লাভ করিরাছিল। তাঁহার অনক্সসাধারণ পাঙ্জিতা দেখিরা লোকে শ্রদ্ধা করিত, তাঁহার নম্রভা, বিনর ও বেহ প্রবণতা দেখিরা লোকে অন্থগত ভূতাবৎ হটত। একদিকে করির বিখাস, অপর দিকে লোকান্থরাগ ভাহাকে অনেকের প্রির করিরাছিল। তৎকাদে তাঁহার মত্ত বিবরবৃদ্ধি ও ধর্মবৃদ্ধি সম্পন্ন লোক বিরল ছিল। কলিকাতা আসিরা ভিনি চতুর্বিধ উপারে ব্রক্ষকান ও ব্রক্ষোপাসনার প্রচার করিতে প্রের্ব ইইরাছিলেন। ১ম তর্ক বিভর্ক, বিতীর শিক্ষাদান, তর পুরুক প্রচার, ৪র্ধ ব্রাহ্মসতা স্থাপন। ধর্মপ্রচারের প্রই সক্ষল উপার অবশ্বন রাম্যোহন রারের সমরে ব্যমন প্রয়োজন ছিল, আজ্ঞ তেমনই প্রয়োজন বহিরাছে।

কলিকাতা এক বংসর বাস করিরা রামমোহন রার মাণিকতলার ভবনে ১৮১৬ খৃষ্টান্দে "আখীরসভা" সংস্থাপন করিগোন। ব্রাহ্মসমান্ধ স্থাপনের ইহাই দিতীয় অসুষ্ঠান। কলিকাতার গাঁহারা তংকালে প্রসিদ্ধ লোক ছিলেন, তাঁহাদের
অনেকে এই আখীর সভার সভা ছিলেন। আখীরসভা
সপ্তাহে একদিন হইত। লিবপ্রসাদ মিত্র সভান্ধ বেদ-পাঠ
করিতেন, গোবিন্দ মালা নামক একব্যক্তি সলীত করিতেন।
বেদাদির বাঙ্গলা ব্যাখ্যা হইত না।

সভাগণ সকলেই বে ব্ৰহ্মানুৱাগী হইয়া সভার আসিতেন তাহা নহে। রামমোহন রারের মত তীক্ত মনীবাসলার লোক তৎকালে বিরল ছিল। তিনি বিষয়ীদিগকে বিষয় রক্ষার ক্ষমৰ উপায় বলিয়া দিতেন, স্থতরাং কলিকাতার বড ৰড় বিষয়ী ভোকেরা নানা বিষয়ের মন্ত্রণার জল্প তাঁহার নিকট ৰাভাৰাত করিভেন। রামমোহন রার ত্রন্ধোপাসনা ভাল বাসেন, বোকদের অনেকে তাঁহার মনোরঞ্জনের জক্ত আগ্রীয় সভার সভা হইরাছিলেন। তৎকালের বড় লোকের মধ্যে ভূকৈলাদের রাজা কালীশঙ্কর ঘোষাল, দারকানাথ ঠাকুর, ক্রসরকুমার ঠাকুর, টাকীর জমিদার কালীনাথ রায়, ভজেখর তেলিনীপাড়ার অমিদার অনুদাগ্রসাদ বল্যোপাধারে, রাজা বদনচন্দ্ৰ রার, ৮ জটিস্ অমুকূলচন্দ্ৰ মুধোপাধ্যারের পিতা বৈদানাথ মুখোপাধ্যার ও সার যতীক্রমোহন ঠাকুরের পিতামছ গোপীমোহন ঠাকুর, রাজারবাগানের জরক্ত সিংহ. ঘোড়ালাঁকোর রাজকৃষ্ণ সিংহ ও আন্দুলের কাশীনাথ মলিক প্রভৃতি আ্থীর সভার সভা ছিলেন। ইহাদের কেহই ধে বদাসুরাণী হইরা আত্মীর সভার আসিতেন না, এমন কথা বলা যায় না

আত্মীর সভা সংস্থাপিত হওরাতে পৌত্তলিকদের ক্রোধ বহ্নি অলিয়া উঠিল। তাঁহারা চারিদিকে প্রচার করিতে লাগিলেন। "আত্মীর সভার বেদ পাঠের কথা সক্রৈব মিখ্যা, ওবানে কেবল স্বরাপান, অভ্যাচরণ ও গোসাংস আহার তর।'' নিকা ও অভ্যাচার সভ্ করিতে না পারিরা অনেকে আত্মীর সভার সংশ্রব পরিভাগে করিবেন। আত্মীর সভার বিনি সম্পাদক ছিলেন, ভিনিও সমাজের ভরে পৌতনিকদের নিকট আত্মীর সভার নিকা করিতেন। করক্ত সিংহ পৌতনিকদের সক্তে বোগদান করিরা রটনা করিবেন যে, তিনি কচক্ষে দেখিরাছেন, আত্মীর সভার গোহভা৷ করা হয়। আত্মীর সভার সভার সভার সভার করিবেন। আক্ষসমাজে এখনও করক্ত সিংহের অভাব নাই। অনেকে গ্রামবোহন রারকে পরিভাগে করিরা গেলেন বটে; কিন্তু মহর্ষি দেবেক্তনাথের পিতা বারকানাথ ও "পৌতনিক মুখ চপেটকা" প্রপ্রেটন না। বিদ্যানন মক্ষ্মদার প্রভৃতি ভাহাকে পরিভাগে করিবেন না।

কির্দিন পরে বর্দ্ধনাধিপৃতি মহারাজা তেজচক্র প্রভৃতি

আনেকে রামমোহন রারকে জব্দ করিবার জক্ত বিবিধ হেতৃতে

মোকদমা উপস্থিত করিবেন। রামমোহন ব্যতিবাস্ত হইলেন,

তিনি সর্বালা আত্মীর সভার উপস্থিত হইতে পারিতেন না।

সভা কথনও ডাকার রাজেজ্রলাল মিত্রের পিতামহ বুলাবনচক্র

মিত্রের ডবনে, কথনও ভূকৈলাসের রাজা কালীশন্তর ঘোষালের

বাটাতে, কথনওবা তুলাপটাতে বিহারীলাল চৌবের বাড়ীতে

চইত। রামমোহনের একান্ত বন্ধের অভাবে অবলেবে আ্রীর
সভা উঠিয়া গেল। বিপক্ষ দলে জয় ধ্বনি পড়িল।

আয়ীর সভা উঠিয়৷ পেল, ক্রির রামমোহন তর্ক বিতর্ক ৪
পুরুক প্রচার ঘারা ব্রক্ষজ্ঞান প্রচার করিতে বিমুখ হটলেন না।
এই সমরে জিনি উইলিরাম এডাম নামক একজন পৃথান
ধর্মপ্রচারককে ইউনিটেরিয়ান মতে দীক্ষিত করিলেন।
এডাম অতঃপর উৎসাহের সহিত একেশ্ররাদ প্রচার করিতে
লাগিলেন। "হরকরা" নামক তৎকালের প্রসিদ্ধ সংবাদ পত্রের
কার্যালয়ের বিতল গৃহে ইউনিটেরিয়ান সোসাইটা ভাপন
করিয়া একেশ্রবাদী গৃষ্টানদের ভার উপাসনার প্রভিপ্রচলিত
করিলেন। রামমোহন রার, তাহার পুরুগণ এবং অভাত্ত
করিলেন। রামমোহন রার, তাহার পুরুগণ এবং অভাত্ত
করিতেন। কুল বীজ হটতে বিশাল বটরক্ষের উত্তর হয়,
একদিনের একটা সামান্ত কথা হইতে "ব্রক্ষসভার" প্রতিটা
হটল।

একদিন রামমোহন রায়, এডাম সাহৈবের উপাসনা সভা হইতে বাটাতে প্রভাগমন করিতেছেন, এমন সময় ভারাটাদ চক্রবর্তী ও চক্রশেধর দেব বলিলের একটা উপাসনা গৃহ করিলে ভাল হর না ?" রামবোহন রায়, বারকানাথ ঠাকুর, টাকীর কালীনাথ রায়, প্রসরকুমার ঠাকুর, ও হারভার মথুরানাথ মরিকের সহিত এ সম্বন্ধে পরামর্শ করিলেন। উহায়া ধনী, ধন দানে সাহায়া করিভে অলীকার করিলেন। সমলায় এক খণ্ড ভূমি করের প্রভাব হইল, কিন্তু ব্রহ্মভান প্রচারের পক্ষেদাটি আছকুল বোধ না হওয়াতে ১৭৫০ পক্রের উপর কমল-লোচন বস্থর বাড়ী ভাড়া করিয়া "ব্রহ্মসভা" নামে এক উপাসনা সমাল প্রডিষ্ঠা করা হইল।

এই বাটাতে বে সমাজের প্রতিষ্ঠা হয়, তাহা প্রাক্ষমনাল নামে প্রাক্তিক হইরাছে। ইহাই জগতের পালী তালী মননারীর আলার হল হইরাছে। কমলনোচন বস্থর এই বাটা এখন হরনাথ মলিকের সম্পত্তি। এই বাটা প্রাক্তমমাজের ইতিহাসে পরনীর বিবর। হারজনাথ ঠাকুর প্রভৃতির অর্থ সাহাব্যে বোড়ালাকো চিংপুর রোডের উপর এক বিতল গৃহ নির্শিত হয়। ১৭৫১ শকের ১১ই মাথ কমল বস্থর বাটা হইতে প্রক্ষমনা এই নৃতন গৃহে উঠিয়া আটসে। ৬ই তাজ প্রাক্ষমমাজের জন্মদিন, ১১ই মাথ আদি সমাজগৃহ প্রতিষ্ঠার দিন।

প্রতি শনিবার সন্ধা সাভটা হইতে ৯টা পর্যায় সভার কার্যা হইভ । তথন সমাজের ত্রিত্র গৃহ ছিলনা, ত্রিত্রগৃহ महर्वि (मरवन्त्रवार्थत नगरत निर्मित इत। विकास कात्रकी कृत कृत कक हिन। द्वर्ग अब इहेबात किছु शुर्ख निव প্ৰসাদ যিত্ৰ নামৰ একজন হিন্দুখানী প্ৰাহ্মণ একটা কক্ষে উপনিবদ পাঠ করিতেন। সেধানে ব্রাহ্মণ ভিন্ন আর কেহ বাইতে পারিত না। হিন্দ্রিগকে আকর্ষণ করিবার জন্তই जिनि धेरे लेश अनगरन कविदाहितन। पूर्वा अस हरेता লাষচক বিদ্যাবাণীৰ ও উৎস্বানৰ পোৰাষী স্মাজগৃহে चानिता (वनीत जेनत जेनदानेन कतिराजन । উপনিষদ ব্যাখ্যা করিতেন। কিন্তু উপনিষদের স্লোক পাঠ করিভেন না। বিদ্যাবাগীশ কথনও রামমোচন সারের त्रिक व्यापान क्ष्यनक्वा विश्वास मेंगानत व्यापान भार्ट कतिएक। ७९९व मनीठ इहेबा ममान एक इहेस। छात्रा-চাদ চক্রবর্তী স্মাজের সম্পাদক ছিলেন। স্মাজগৃছে হিন্দু, মুস্লমান, খুটান প্রভৃতি স্কল ধর্মাবল্মী লোকই স্থাগমন করিতেন। বেণীর পূর্বাদিকে করাস চাদর পাতা গাকিত, मठानग এখানে উপবেশন করিছেন। পশ্চিম দিকে চৌক থাকিত ভাষাতে আগন্ধকেরা আসিয়া বসিতেন।

চুই চারিক্স লোক বাতীত স্টাদের আর কেই ব্রহ সভার উদ্দেশ্য পর্যন্ত ব্রিভ না। গায়কগণ ব্রহ্মসভার বসিয়া क्षत्र काली विषय क्षंत्र याथा कृत्कत्र (अम विषयक গান গাহিতেন: রামমোহন রায় এক্দিন বলিলেন "ওস্ব গাও কেন ? অলপ নির্ধন গাও ?' তাজসমাজে বে, ত্রন্ধ বিষয়ক গান গাইতে হয় ভাষা অনেকে জানিভেন না। चानरक दे प्रामायाहन द्वारबंद मनचरित्र क्या चानिएन. ধর্মাধর্মজান অনেকেরই ছিলনা। শনিবার রাত্তে তৎকালে আমোদ প্রমোদের সময় ছিল। বন্ধসভার সভাগণ আমোদ ছাড়িয়া উপনিষদপাঠ শুনিতে আসিতে প্রস্তুত ছিলেন না। छाडे व्यवस्थार मनिवास्त्रत भत्रिवार्क वृथवात ममास्मत्र मिन বির হর। রাম্মোহন রারের সমর হইতে আৰু পর্যান্ত चानि नशक वृथवात्रहे हहेता चानिएउएह। ७९कारत नछा-দের মধ্যে চুই একজন বে ব্রক্ষাস্থরাগী ছিলেন না, এমন কথা বলা বার না। ভেলিনী পাড়ার অমিলারপুত্র অরলাপ্রদার বন্দ্যোপাধ্যার ব্রহ্মসভাকে প্রকৃত্ত ভাল বাসিডেন। তাঁহার পিতা ত্রাত্মসমাজের বিরোধী ছিলেন। অরবাঞ্চসাদ প্রতি मनिरांत धरः ७९भव छाछि युपरांत्र सञ्जामी नोकारवारा

প্রাইরা স্মালে আসিতেন। এবং স্বাভ অতে আবার নৌকার করিরা তেলিনীপাড়া ঘাইতেন। ইহা তাঁহার ক্ম অনুরাগের প্রিচর নর।

ব্ৰহ্মসভা সংস্থাপিত হওয়াতে পৌত্তলিকগণ আভ্ৰিছ হইলেন। তাঁহারা মনে করিয়াছিলেন, আত্মীয় সভা মরিয়াচে, আর ভর নাই। ব্রহ্মসভার প্রতিষ্ঠা দেখিয়া তাঁহারা একলক টাকা মূলধন করিয়া ধর্মগতা স্থাপন করিলেন। রাধাকার সভাপতি, মতিলাল শীল প্রভৃতি ইহার উৎসাহী সভ্য क्टेर्नि। ख्वानीहत्रन वस्मानाशात्र म्छात्र मन्नामिक ब्हेत्रा বরে বরে ব্রহ্মসভার নিলা করিয়া বেডাইতে লাগিলেন এবং সকলকে ব্রহ্মসভার ঘাইতে নিষেধ করিতে লাগিলেন। যাঁছারা তাঁহার নিবেধ বাক্য অগ্রাজ করিল ভাহারা সমাজচাত হইল। ব্ৰহ্মতার দল ও ধর্ম সভার দলে কলিকাতা তুই ভাগে বিভক্ক হইন। ব্রহ্মসভার দলত লোকেরা প্রায় সকলেই অফুরানে পৌত্তলিক ছিলেন, নিজের দলে আহ্মণের সংখ্যা বৃদ্ধি করিবার बाब कथन व्यवस्य व्यर्थ वात्र कत्रा रहेख । ১১ই मास्यत উৎসবের দিনেও ব্রাহ্মণদিগকে বিদার দেওরা হটত। রামযোচন রার ব্রম্বোপাসনা প্রচারের জন্ত ব্রম্মণ্ডা স্থাপন করিয়াছিলেন, কিন্ত मछाशांशव व्यानास्कृति । असन কি রামমোহন রায়ের বিশাত গমনের পরে ঈশরচন্দ্র লার্র্ড নামক একজন আচার্য্য বেদী হইতে রামচল্লের অবতারত প্রতিপন্ন করিয়া বক্ততা করিয়াছিলেন।

সভা স্বরূপ প্রমেশরের পূজা প্রতিষ্ঠা করিয়া স্বন্ধেবাসীকে সর্বপ্রকার হীনতা হইতে উদ্ধার করিবার জন্তুই রামমোচন রার সমবেত ব্রহ্মোপাসনার প্রথা প্রচলিত করেন। কিন্তু নির্ক্তন ধ্যান ধারণা বাতীত যে মানবের কল্যাণ হয় না ভাহাও তিনি বুঝিতেন স্ক্তরাং নির্ক্তন ব্রহ্মোপাসনার ব্যবস্থা করিয়া গিয়াছেন। নির্ক্তন ব্রহ্মোপাসনার প্রণাণীতে ধ্যানের ব্যবস্থা করিয়া দিলেন। (রামমোহন রায়ের গ্রন্থাবাদী ও৬ পৃষ্ঠা দ্রন্তব্য।)

পরমেশরকে প্রীতি করা ও তাঁহার প্রিন্ন কার্য্য সাধন করাই যে প্রকৃত উপাসনা রামমোহন রার্ই এই শিক্ষা দিয়া গিলাছেন। (প্রস্থাবদী ৫২৫ পূঠা।)

রামমোহন রার সকল জাতীর লোকের উপাসনার জঞ্জ ব্রাহ্মসাজ স্থাপন এবং ব্রাহ্মদের প্রাভ্যহিক উপাসনার জঞ্জ এক উপাসনা প্রণালী প্রস্তুত করিরা গিরাছেন এবং ব্রহ্মো-পাসনা ও জনহিত্ত্বর কার্য্যে ব্রতী হওরা যে ব্রাহ্মসমাজের কার্য্য ভাহা নিক্স জীবনে ও উপদেশে প্রকাশ করিয়াছেন।

রামমোহন রার বেদের অভ্রান্ততার কথনও বিশাস করিতেন না। তিনি কেনউপনিষদের ইংরেকী অমুবাদের ভূমিকাতে স্পষ্ট বলিয়া গিরাছেন, "শ্রুতি সকল পরস্পার বিরোধী। তাহাদের উপর নির্ভর করা যায় না। মানববৃদ্ধি সম্পূর্ণ নহে ভ্রতরাং তাহার উপরও নির্ভর করা যায় না। অভএব লাম ও বৃদ্ধি এই উভরের যথামর্শ্ব ব্যবহার দারা এবং বিনি প্রার্থনার বন্ধ বিধান করেন, তাঁহার মদল ভাব, অনস্ত শক্তির উপর নির্ভর করিয়া বৃদ্ধিবৃত্তি ও ধর্ম প্রবৃত্তির উর্ভি সাধনে চেটা ক্রিক্টে ছইবে।" ত্রাহ্মসমাজকৈ সকল ধর্মাবলন্ধীর গ্রাহ্ম যোগ্য সমাজ করা বামমোহন রারের উদ্দেশ্য ছিল। এই জন্তই ভিনি স্বাজ্মের টুইডিডে এই বিধি করিরা গিরাছেন যে, কোন সাম্প্রদারিক নামে ব্রকোপাসনা হইতে পারিবে না।

# সকল ধর্ম মুক্তিপ্রদ কি না ?\* (প্রাপ্ত)

কোন্ ধর্ম মুক্তিপ্রদ এবং কোন্ ধর্ম মুক্তিপ্রদ নছে. এই প্রান্ত্রের সংস্থাবকর উত্তর স্ক্র বিচার-সাপেক্ষ হইলেও বর্তমান বিষয় সম্বন্ধীয় ২০০টা কথা সহজেই মীমাংষিত হয়। যে ধর্ম দেশ বিশেষ, স্থান বিশেষ বা ব্যক্তি বিশেষের উপর নির্ভর করে, সেই ধর্ম যে মানব সাধাবণেৰ মুক্তির কল্প একান্ত আবশ্যক নহে, তাহা সহজ যুক্তিতেই বুঝা যার। আরু মোক্ষ-সাধনেব সামগ্রী কি কি এবং প্রচলিত সকল ধর্মে তাহা আছে কি না, এই বিষরের বিচার না করিয়া "ধর্মমাত্রই মুক্তিপ্রদ" এই কথা বলা যে নিতান্ত স্থলদর্শিতার ফল, ইহাও আনায়ায়েই বৃথিতে পারা যায়। স্থতরাং মূল প্রশ্নের মীমাংসা করিতে হইলে পুর্ব্বে এই বিচার আবশ্যক যে, মুক্তি কি এবং কোন থর্মা বা সাধন-প্রণালী কিরূপ লক্ষণাক্রান্ত হইলে তাহা মুক্তিপ্রদ

মৃক্তি কি ? আমরা কি হইতে মৃক্তি আকাজ্ঞা করি ?

মৃক্তি বলিলেই কোন বন্ধন হইতে মৃক্তি বুঝার। সেই বন্ধন

কি ? রাহ্মসমাজে এই গ্রাশ্মের সাধারণতঃ এই উত্তর পাওয়া

বায়—মৃক্তির অর্থ পাপের বন্ধন হইতে মৃক্তি। এই উত্তর
আমার বিবেচনায় সম্পূর্ণ উত্তর নহে। কিন্তু আমি সম্প্রতি এই
উত্তর নিরাপত্তিতে গ্রহণ করিতেছি, কারণ আমার বিশাস বে,
কিঞ্চিৎ আলোচনা করিলেই ইহার ভিতর হইতে পূর্ণ উত্তর
বাহির হইতে পারে।

এখন জিজান্ত এই, পাপের কারণ কি? মানুষ কেন
এবং কি অবসার পাপ করে ? ইছার উত্তর—প্রবৃত্তির অধীনতা।
মানুষের মন প্রবৃত্তির অধীন থাকিলেই মানুষ পাপ করে।
মানুষ প্রবৃত্তির অধীন হয় কেন ? নীচ বাসনা-পরভন্ত হয়
কেন ? ইছার উত্তর—মোহবশতঃ। যাহা প্রেমন্তর নহে,
কেবল মাত্র অথকর, অথবা বাস্তবিক স্থধকরও নহে, কেবল
আপাত-স্থকর, এরূপ বিষয়ে অভিনিবেশের নামই মোহ।
মোহের কারণ কি ? মোহের কারণ—প্রেয়ঃ অর্থাৎ প্রকৃত
মক্ল সম্বন্ধে জ্ঞানের অভাব। 'জ্ঞান' অর্থ কেবল বৃথা নহে,
অন্ততঃ সেই অর্থে আমি 'জ্ঞান' বাবছার করিতেছি না। এন্থলে
জ্ঞানের অর্থ—পরিষ্কার বোধ, দৃঢ় বিশ্বাস এবং উচ্ছল ও স্থারী
উপলব্ধি। শ্রেয়ঃ সম্বন্ধ এরূপ জ্ঞানের অভাবই মোহের
কারণ। এরূপ জ্ঞানে মোহ দূর হয়, মোহ দূর হইলে প্রবৃত্তি
বশীভূত হয়, এবং প্রবৃত্তি বশীভূত হইলেই মানুষ পাশবন্ধন

হইতে মুক্ত হর। ছতরাং পাপ হইতে মুক্ত হওরার নামই যদি মুক্তি হর, ভবে শ্রের: সম্বনীয় উক্ত লক্ষণাক্রাক্ত ক্রান লাভই মুক্তি লাভের উপার।

কিছ শব, নম, ভিভিকা, উপরতি, শ্রহা, সমাধান প্রাড়তি মানসিক ও নৈতিক সম্পত্তি লব না হইলে উপরোক্ত জ্ঞানলাভ অসম্ভব। প্রতরাং শম দমাদি সাধন যোগে শ্রেরঃ সম্বনীর উচ্ছাল ও সারী জ্ঞান লাভই মুক্তির উপার। কিন্তু একপ জ্ঞান লাভ ও নিশাপ হওরার মধ্যে কালের বাবধান নাই। একাপ জ্ঞানে অবভিতি করা আর নিশাপ হওরা একই কথা, প্রভরাং ইহাকে সুক্তির উপার মা বলিরা ইহাকেই মুক্তি বলা যাইতে পারে। অবতঃ ইহাকে মুক্তির একাল বলিতে হুইবে। প্রতরাং মৃক্তির অর্থ কেবল পাপ হুইতে মুক্তি নহে, শ্রেরঃ বিষয়ক অক্তানতা হুইতে মুক্তিও বটে।

কিন্ত শ্রেরক্ষে আনিতেছি আর্ব্যে শ্রেরের অনুসরণ করিতেছি, অথচ নিত্ত শ্রেরকে প্রীতি করে না, শ্রেরঃ প্রির হর নাই, এই অবস্থা সম্পূর্ণ বাঞ্চনীর অবস্থা নহে, সম্পূর্ণ শ্রেরকর অবস্থা নহে। চিত্তরন্তি শ্রেরকে আনিলন না করিলে আয়াডে শ্রেরের পূর্ণ রাজক স্থাপিত হইব না. পবিত্রতা পূর্ণ কটক না। স্তর্কাং প্রীতি ও মৃক্তির অল। তাহা হইলে মৃক্তির পূর্ণ অর্থ অক্তানতা, অপ্রীতি ও অপবিত্র কার্য্য হইতে মৃক্ত হওরা। অক্ত কথার,—শ্রেরকে জানা, প্রীতি করা ও কার্য্যত জীবনে শ্রেরের অনুসরণ করা।

কেহ কেহ হয়তঃ বলিবেন বে, জ্ঞান ছাড়াও মুক্তি সম্ভব, **अयाः महरक पृष्ट् विधामहे मुक्तित भटक यटबंहे। किन्छ आ**मात বিবেচনায় জ্ঞানবিধীন বিশ্বাস বাঞ্চিক চরিত্রকে সংশোধন করিতে, পারে বটে, অনেক পরিমাণে চিত্তকেও পরিত্র করিতে পারে বটে, কিন্তু সম্পূর্ণ চিত্তভূদ্ধি অধ্ববিশাসের সাধ্যারত নহে। এরপ বিদ্যান্তের কারণ এই,—ব্রহ্মবস্ত বে কি, এবং গভীর ত্রন্ধবোগে জীবন কিন্ধপ আকার ধারণ করে, কিরূপ चावर्ग मानत्वत्र ममरक क्षकाभिष्ठ इत्र, এই ममस्य क्षष्ठाक कानश्गाहत वन्न, क्वन अञ्चिष्ट्रमकं विश्वास अहे मकन वन्न সম্বন্ধে প্রকৃত ধারণা হয় না। স্বতরাং কেবল এরূপ বিখাসের উপর দাঁড়াইয়া ত্রন্ধোপশন্ধি ও ত্রন্ধাকৃত জীবনের সাধন চলিতে আর, ত্রনোপদ্ধি বাতীত অহমার বিনষ্ট हम् ना । यত निन भर्याय उकारक मर्सवाभी, मर्समम, लानक्रनी, অন্তরাঝা বলিয়া উপলব্ধি না করা হার, ততদিন পর্যন্ত क्तरदत्र शृष्ट् व्यवकात्र विनष्टे हत्र मा, ध्वरः व्यवकात विनष्टे मा हरेल मन्पूर्ग हिन्नकुष्कि हरेएक भारत ना। धर्मात हैकिहारम रव नमरत नमरत रमिश्टल भाश्वता बात्र रव, व्यासक वह वह ভক্ত এবং সেবকগণও অভিযান ও আত্মাদর ভূলিতে পারেন नारे, जारात कात्रन धरे (य, जीहाता खिक ७ (भवात फेक সাধক হইগাও সেই প্রেত্যক্ষ ও উজ্জ্ব ব্রক্ষজানের সাধনা क्दब्रन नारे, चढ्डः छाहात्र चिथकाती हम नारे, याहार्ष्ड उर्जात नर्मवन्द्र धवः वाकिशंक स्वरंक्षात्वत्र स्नात्का स्वादेश क्रजार व्या वाहेरल्ट्ह (व, तक अ तकीकृष्ठ जीवन প্রভাক জানবোগে উপদান্তি করা মুক্তির পক্ষে একান্ত

<sup>\* &</sup>quot;তথ্যবিদ্যা সভার" জীবুজ বাবু সীভাষাথ দভ মহালবের পঠিত ও বিবৃত এবন, কিঞ্ছিৎ পরিবর্ভিত।

আবিশ্রক । শুধু বিশাস এই জ্ঞানের স্থান অধিকার করিতে পারে না।

আর একটা কথা পরিকার হওয়া আবশ্রক। **मध्दीत्र छान मृक्तित्र भक्त्य धकान्य चार्यक्र, हेरा दूशा (गन।** ঘাছা লাভ করিতে হইবে, যাহার জন্ত সাধনা করিতে হইবে, তাহার সম্বন্ধে পরিফার ধারণা না থাকিলে সাধুনাও চলিতে পারে না, বন্ধলাভও হইতে পারে না। যে পরিমাণে এই জ্ঞান বিশ্বত ও ভ্রমযুক্ত থাকিবে সেই পরিমাণে মৃক্তি অপ্রাপ্ত থাকিবে। হতরাং পূর্ণ মৃক্তির পক্ষে শ্রের: সম্বন্ধে অৰিকৃত, ভ্ৰমশৃক্ত জ্ঞান আবিশ্ৰক। প্রভাক্ষ ও সায়ী আধ্যাত্মিক যোগ কাপনই যে শ্রের:, এই विषय अञ्चल मञ्जल रखगात मञ्जावना नाहे। अहे আধ্যান্মিক যোগ ভাপনের পক্ষে ত্রন্ধের সহিত জীবের আধ্যাত্মিক সম্বন্ধ বিষয়ে অবিক্লত, নির্মাণ জ্ঞান আবশুক। ত্রক্ষের অনন্ত ঐখার্য্য সম্বন্ধে মান্বের জ্ঞান কোন কালে পূর্ণ हरेल भारत ना, हेश ज्ञा; मानत्त्र लक्ष्मक्तीय कान क्रमम:हे উन्नज श्हेट উन्नज्जन श्हेट थाकिरन, हेरा मजा, কিন্তু এই জ্ঞান যথন বতটুকু স্মামাদের মধ্যে থাকিবে, সেই-টুকু যে অবিকৃত ও নিশ্মণ হইতে পারে না, তাহা মনে করি না। ত্রহ্ম অনম্ভ শক্তি ও অনম্ভ জ্ঞানের আধার, তিনি অন্তর্যামী, অন্তবাত্মা, তিনি পূর্ণপ্রেম ও পূর্ণ পবিত্রস্বরূপ, তাঁহার সহিত চিত্তা, ভাব ও কার্য্যে যুক্ত হওয়াই শ্রেয়ঃ, এই সাধারণ ধারণাতে কোন ভ্রম নাই, এবং এই ভ্রমণ্ড নিশ্বল জ্ঞান মোক্ষ সাধনের পক্ষে একান্ত আবশুক।

এই আলোচনা হইতে করেকটা বিষয় শাইরেপে বুঝা যাইতেছে। যে সকল ধর্মে উপরোক্ত মুক্তি-সাধন-সামগ্রী বর্ত্তমান নাই, পরস্ত যে সকল ধর্ম ঐ সকল সামগ্রী-প্রাপ্তির বিরোধা, বিষয় সকল ধর্ম যে মুক্তিপ্রদ নহে, তাহা নিঃসন্দেহ রূপে স্থামাণ হইতেছে। স্থতরাং সাধারণভাবে ৰলা যায় যে,—

প্রথমতঃ, যে সকল ধর্ম শ্রুতিমূলক বিশ্বাসের উপর প্রতি-ষ্ঠিত, ত্রহ্মকে সাক্ষাৎ জ্ঞানযোগে উপলব্ধি করা যে সকল ধর্মের লক্ষ্য নহে, সে সকল ধর্ম মুক্তিপ্রদ নছে।

দিতীয়তঃ, যে সকল ধর্ম ত্রন্ধ বিষয়ে ত্রন্ধের সহিত জীবের আধ্যাত্মিক সম্বন্ধ বিষয়ে, অনুশযুক্ত ধারণা আছে, সে সকল ধর্ম মুক্তিপ্রদ নহে।

ভৃতীয়তঃ, যে সকল সাধনপ্রণালীতে ত্রদীভূত জীবন প্রাপ্তিয় সহায়তা না করিয়া ব্যক্তিগত স্থপন্ত দার্থ সাধনের সহায়তা করে, সে সকল ধর্ম মৃক্তিপ্রদ নহে।

पि नक्न धर्म म्किशन नर्दृ जाशास्त्र नाधात्र नक्ष्य नक्न प्रिथा शिन, এখন বিশেষভাবে এরূপ धर्मात्र ज्ञारनाहना क्ता याक्। ज्ञामि कान धर्मात्र नाम कतित्र ना, नाम ज्ञारनक क्रात्र वृक्तिक ल्राम निर्क्षण करत्। क्विन मुक्तिविद्याधी वा मुक्तिमारन ज्ञानमर्थ धर्म नम्रह्त विस्थि विस्थि नक्ष्यक्रीति । উল্লেখ করিব।

(>) যে ধর্মে সর্কাধার সর্কাব্যাপী, অনস্ত ত্রন্ধ উপাক্ত নহেন, কোন পরিনিত দেবতা উপাক্ত, সে ধর্ম মুক্তিপ্রদ নহে।

- (२) যে পূজার উপকরণ জ্ঞান, প্রীতি, আত্মসমর্পণ প্রভৃতি আধ্যাত্মিক বন্ধ নহে, কিন্তু পূলা, পত্র, খাদ্যা, পশুবধ প্রভৃতি বাহ্যবন্তু, সে পূজা মৃক্তিপ্রদ নহে।
- (৩) বে সাধনের লক্ষ্য ধন, যশ, ঐখর্য্য, বা ইন্দ্রলোকাদি স্থপকর স্থান লাভ, ত্রহ্মলাভ নছে, সে সাধন মুক্তিপ্রাদ নহে।
- (৪) বে ধর্ম্মে ঈশ্বর ও মানুবের মধ্যে শাস্ত্র বা ওক্ত মধ্য বর্ত্তী, যে ধর্ম্ম সাধককে সাক্ষাৎভাবে ঈশ্বরের সমূধীন করে না, সে ধর্ম্ম সুক্তিপ্রাদ নহে।
- (৫) বে ধর্মের লক্ষ্য চিন্ন বর্ত্তমান পূর্ণ পরত্রক্ষের সহিত যোগ নহে, যাহার লক্ষ্য সমুদার জ্ঞান, চিস্তা, জ্ঞাব ও কার্য্যের সম্পূর্ণ নির্ব্বাণ, সে ধর্ম মৃক্তিপ্রদ নহে।
- (৬) বে ধর্মের ঈশর ক্রোধ ও ছেফ পরারণ, পাপীও ভ্রাস্ত মানবের পক্ষে অমন্ত-নর ফ বিধারক, স্থতরাং বাঁহার সংস্পর্শে উপাসক ক্রোধ ও ছেষশ্সু হইতে পারেন না, সে ধর্ম মুক্তিপ্রাদ নহে।
- (१) যে ধর্মে বাক্তি, শ্রেণী বা জাতি বিশেষ ঈশরের ক্লপা পাত্র, এবং অপর ব্যক্তি, শ্রেণী বা জাতি বিশেষ ঈশরের পরি-তাক্ত, যে ধর্ম সাধকের হৃদয়ে অপক্ষপাতিত্ব ও বিশ্বপ্রেম সঞ্চার করিতে পারে না, সে ধর্ম মুক্তিপ্রদ নহে।
- ৮। যে উপাসনাতে ঈশর আত্মার বাহিরে, যে উপাসনাতে ঈশর অন্তর্যামী, অন্তরাত্মা, প্রাণের প্রাণ রূপে উপলব্ধ হৃন না, সে উপাসনা অজ্ঞানতা ও অহংকাব বিনাশ করিতে পারে না, স্কুতরাং তাহা মুক্তিপ্রদানহে।

এখন মুক্তি প্রদ ধর্মের লক্ষণ সংক্ষেপে প্নরুল্লেখ কবিতেছি। যে ধর্মে পূর্ণ, অনস্ত পরব্রহ্ম উপাস্থা; বাক্তিগত অহংকার, অপ্রীতিও অপবিত্রতা পরিত্যাগ করিয়া ব্রহ্মের সহিত পূর্ণ আধ্যাত্মিক যোগ যে ধর্মের সাধ্য অর্থাৎ লক্ষ্য; আধ্যাত্মিক উপাসনা ও শমদমাদি জ্ঞানসমত স্বাভাবিক উপায়ে ব্রহ্মযোগ লাভের চেষ্টা যে ধর্ম্মের সাধন, কেবল সেই ধর্মেই মোক্ষসাধন-সামগ্রী পূর্ণরূপে বর্ত্তমান আছে, স্কৃতরাং কেবল সেই ধর্ম্মই একমাত্র মৃক্তিপ্রদ ধর্ম্ম। এরূপ ধর্মাকে আমি ব্রাহ্মধর্ম্ম বলি, কিন্ত ইহা ভিন্ন ভিন্ন দেশে, ভিন্ন ভিন্ন সম্প্রদারে ভিন্ন ভিন্ন নামে বর্ত্তমান থাকিতে পারে ও আছে। ইহাকে কেই হিন্দু, কেই মৃলমান, কেই গ্রীষ্টান, কেই বৌদ্ধর্ম্ম বলিতে পারেন। কিন্ত এরূপ সাম্প্রদায়িক নামে ইহার মৃক্তিপ্রদ শক্তি বিনম্ভ হয় না।

বে সকল ধর্মে মুক্তি-সাধনের উপকরণ পূর্ণরূপে বর্ত্তমান নাই, এবং বে সকল ধর্ম জরাধিক পরিমাণে মুক্তি-বিরোধী বস্তু-সংবলিত, সে সকল ধর্ম পূর্ণ মুক্তি দানে অসমর্থ বটে, কিন্তু তাহাদের মধ্যে মুক্তি-সাধন-সামগ্রী বে পরিমাণে বর্ত্তমান, সেই পরিমাণে তাহারা মুক্তির সহায়, এবং সেই পরিমাণেই তাহারা আমাদের শ্রহা ও সহায়ভৃতির উপযুক্ত।

ব্রাক্ষধর্ম ব্যতীত মুক্তি নাই। অথচ প্রেমমন্ত্র ঈশবের সন্তান মাত্রই মুক্তির অধিকারী। স্থতবাং আমার বিশ্বাস এই বে শীদ্র ছউক, বিলম্ভে হউক, ইছকালে হউক, পরকালে হউক, সকলেই ব্রাক্ষধর্মের আশ্রমে আসিবে এবং ব্রাক্ষধর্ম সাধন দারা মুক্তি লাভ করিবে।

#### প্রেরিত পত্র।

(পত্রপ্রেকদিগের মতামতেব জক্ত সম্পাদক দায়ী নহেন।)
শ্রীযুক্ত তত্ত্বকৌমুদী সম্পাদক মহাশন্ন
সমীপেষু।

মহাশয়.

বাবু দেবেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যার আমার পত্রের যে উত্তর দিয়াছেন, তাহা পাঠ করিয়া অবগত হইলাম, আমি সাম্যাবাদের যে ব্যাখ্যা কবিয়াছিলাম, তাহা তাঁহার "কাছে অতিশ্র আপত্তিজনক বলিয়া মনে হইয়াছিল।" "প্রত্যেক ব্রাক্ষাই সাম্যবাদী বলিয়া পরিচয় দেন, অথচ সাম্যের মতটী কি" তাহা পবিকার জানেন না, দেবেক্স বাবু ব্রাহ্মদিগের সেই অনভিজ্ঞতা দ্র করিতে অগ্রসর হইয়াছেন বলিয়া তাঁহাকে ধ্যুবাদ দিতেছি। কিন্তু তিনি সাম্যের যে বাাখ্যা করিয়াছেন, তদ্বারা ব্রাহ্মদিগের অনভিজ্ঞতা দ্ব হইয়াছে কি না বলিতে পারি না, কিন্তু আমি যে অন্ধকারে ছিলাম, তথায়ই পড়িয়া রহিয়াছি, আলোক প্রাপ্ত হই নাই।

আমার কোন্ কোন্ কথা তাঁহার নিকট অভিশয় আপত্তিজনক বলিয়া গণ্য হইয়াছে, দিডীয় পত্তেও তাহাব উল্লেখ করেন নাই: স্থতরাং তাহার উত্তর দেওয়া আমার পক্ষে অসম্ভব। কমিউনিজমকে তিনি ফেরূপ বিকৃত পদার্থ ৰলিয়া মনে করেন, অনেক চিন্তাশীল ইউরোপীয় ভাহা করেন নাই। Christ and communism নামে একথানি গ্রন্থ অনেক দিন হইল পাঠ করিয়াছিলাম। তাহাতে ইহা প্রদশিত হুইরাছিল, যিশু অনেক পরিমাণে কমিউনিজমই প্রচার কবিরাছেন। এই গ্রন্থের এক স্থানে লেখা ছিল, জগতে প্রচলিত ধন বিভাগ ঘারা যত অনিষ্ঠ হইয়াছে, কমিউনিজ্মের মূলতত্ত্ব ভ্রমাত্মক বলিয়াও যদি প্রমাণিত হয়, তথাপি তদ্বারা সেরূপ অনিষ্ট ঘটবার সম্ভাবনা নাই। জনষ্ট রার্ট মিলও যে এরূপ কথা বলিয়া গিয়াছেন দেবেন্দ্র বাবুর বোধ হয় তাহা অবিদিত নাই। মিল আরও বলিয়াছেন, কমিউনিজমকে নির্বাসিত করিবার চেটানা করিয়া উহার ফলাফল স্থিরচিত্তে প্রীক্ষা কবা আবগুক। কেন না উহার ছারা বর্তমান ধন বিভাগেব অনিষ্টকারিতা নিবারণ পক্ষে কোনরূপ স্থলিদ্ধান্তে উপন্থিত हरेवात ऋषाग हरेएंड भारत । तम याहा हडेक, कमिडेनिकम প্রভৃতির ফলাফল বিচার কথা এপ্রস্তাবের লক্ষ্য নহে। ডাক্তার টমাস চামাস প্রভৃতি Christian socialsism নামে বাহা প্রচার করিতেছেন এবং কার্য্যন্ত: শিক্ষা দিতেছেন, ভাছাকে বালকভা বলা সাহসিকতার কার্য্য বটে।

দেবেক্স বাবু বলেন, "সাম্যবাদের অর্থ মানুষের প্রকৃতিগত কতকপ্রলি অধিকারের ক্ষমতা।" অনষ্টুরাট মিল বলেন, greatest good of the greatest number, স্থুপ ও সমাজ নীতির মূল। হারবাট স্পেন্সর বলেন, মিলেব উক্তি প্রকৃত বিষয়ের মীমাংসার বিশেষ সহায়তা ক্রিতেছে না। what constitutes the greatest good of the greatest number ভাহাই মীমাংসার বিষয় মালুবের প্রকৃতিগত অধিকার कि, जाहा (मरवक्त वायू निर्फाण करतन नाहे। अपेठ जाहाह নির্দেশ করা আবিশ্রক। প্রকৃতিগত শক্তি ও অসামর্থ্য যে অনেক পরিমাণে অন্মগত হইরা থাকে, দেবেল্ল বাবু তাহা কি অত্বীকার করিতে চাহেন ? বংশধর্ম সম্বন্ধে বিচার উপস্থিত করা আমার অভিপ্রায় নহে। তবে যদি দেবেক্স বাবু সে বিচারে প্রবৃত্ত হইতে চাহেন, তত্তকৌমুদীর পরিবর্তে Indian Messenger এ তাহা করাই উচিত, কেন না আমাকে এবং তাঁহাকে এসম্বন্ধে অনেক কথা উদ্ভুত করিতে হইবে। একবার ইংরাজীতে উহা উদ্ভ করিয়া পরে বাঙ্গালায় ভাহার অমুবাদ করিতে হইলে অনর্থক তত্ত্বকৌমুণীর অনেক স্থান অধিক্লভ इहेर्त, छाहा निच्छाझाबन । एमरवन्त्र वातृ वरनन, "माधू व्यमाधू, বুদ্ধিমান নির্বোধ, অলস ও অধ্যবসায়ীর ভিন্নতা যে সম্পূর্ণ অবস্থা, বংশ ও সমাজের ফল তাহা স্বীকার করিতে পারি না।" "সম্পূৰ্ণ" কথাটা আমি কি ব্যবহার করিয়াছিলাম, ভাছা ভ আমার স্মরণ হইতেছে না। উহা আংশিক রূপে সত্য হইলেই আমাব পক্ষ সমর্থিত হয়। ত্রাহ্মণত্ব বংশগত কিছা ব্যক্তিগত কবিবার একটা বিশেষ আবশ্রকতা আছে, একটা নৃতন বর্ণ ভেদের প্রয়োজন বহিয়াছে ইহা আমি স্বীকার করি না। খুণ, চরিত্র বা ধর্ম্মের একটা পুথক দাবি দাওয়া সংস্থাপন করিতে হইবে, না করিলে মামুষের ধর্মও থাকিবে না, চরিত্রও থাকিবে না, সমাঞ্চ তুর্গতির চবম সীমায় উপস্থিত হইবে, ইহা আমার নিকট একটা অসমত বিভীষিকা বলিয়া বোধ হয়। Mrs Humphry ward এর marcella এর কথা মনে উদয় हत्र :- "It makes one man master, instead of all men brothers. And who is fit to be master? Which of us?"

মামুষ মামুষকে ভাই বলিয়া স্বীকার করিলে সংসায় ফেন চলে না, প্রভূষের একটা দাবি দাওয়া উপস্থিত করা ফেন একটা অবশু কর্ত্তব্য বিষয়, না করিলে পৃথিবী রসাভলে যাইবে।

"ইচ্ছা করিলেই যে কেহ মহাপুরুষ হইতে পারে না।" একথার অর্থটা কি দেবেক্স বাবু ভাহা বুঝাইয়া দিলে ভাল हरेंछ। जिनि जाहा धूनिया वनित्वन ना, एक कथातहे भूनः পুন: উল্লেখ করিবেন। স্কুলাং আমাকেও পুনরায় পুরু উত্তরই দিতে হয়। देव्हा করিলে লোকে যদি সাধু হইছে না পারে, ধার্ম্মিক হইতে না পারে, তবে ধর্ম-চর্চাব আর কোন প্রয়েজনই থাকে না। আমি কোথাও "প্রকার ভেদ" variability গোপ করিতে চাই নাই। এক শতালী কেন, শভ भठाकीएउउ "প্रकात ए**उ**न्द लाग इहेर्द ना। সম্বন্ধেই বলিয়াছি, যে উহাও এক শতাকীতে দূর হইবে না। এক পিতা মাতার সন্তানদিগের মধ্যে যে সকলে সমান হয় না, তাহা কি কতক পরিমাণে পিতা মাতার ভিন্ন ভিন্ন অবস্থার ফল নছে? দেবেজ বাবু ইহা অস্বীকার ক্রিডে পারেন, কিন্তু যাহারা এ সকল তব নিবিষ্টচিত্তে অমুসন্ধান করিতেছেন, ভাঁহারা একথা যে স্বীকার করিয়া থাকেন ইহার প্রমাণ তিনি यित होने कामि Indian Messeugera छोहा श्रामनि कृतिव

ঈশ্বর বে একটা কণোডকে আর একটা কণোত অপেকা अधिक शानक मिन्ना जाहारक नौठ हटेरज तका करतन, अश्वरक শীতে কট্ট দেন, একথা আমি নৃতন গুনিলাম। কিন্তু উপযুক্ত প্রমাণ বাতীত উহা গ্রহণ করিতে প্রস্তুত নহি। তবে কপোত অপেকা ঘুখুর পালক অধিক বা অল হইলে ভদ্যারা অসম-দশীভার পরিচয় দেওয়া হয় না, কেবল প্রকার ভেদেরই প্রমাণ হয়। আমি পুর্বেই বলিয়াছি "প্রকার ভেদ" দোষাবছ নহে। কাফ্রি ও ইংরেজ যদি ছই শ্বতন্ত্র প্রাণী species हरेटिन, এवः তাহাদিগের মধ্যে প্রকৃতিগত বৈষম্য থাকিত, তাহা হইলে ঈশ্বরের সমদশীতার প্রতি দোষারোপ করা যাইতে পারিত না। কিন্তু এক জাতীয় প্রাণী আপনার দোষে সাম্যাবস্থা হইতে ভ্রষ্টনা হইলেও যদি ঈশ্বরই তাহাদিগকে উৎকৃষ্ট च्य भक्क है कि तथा रूबन के तिरुवन, छाहा हहे लि स्रे चेतरक कि कि प्र সমদর্শী বলিতাম। পিতা যদি এক সন্তানের শিক্ষার জন্ত यक्र करवन, व्यथत मछानंदक मूर्थ कवित्रा वार्थन, छाहारक कि সমদর্শী বলিতে পারা যার ? যাহারা রে লাকাষ্টারের গ্রন্থ পাঠ করিয়াছেন, তাঁহারা জানেন যে, কাফ্রি ও ইংরেজ এক জাতীয় মহুষ্য কি না, তৎসম্বন্ধে বিশুর মতভেদ পণ্ডিত মওলার मर्(। विमामान हिन। किन्न डेशाता रा जिन्न species नरह, এক কাডীয় মহুষা, এখন আরে সে বিষয়ে কোন মতভেদ नारे। ञ्चताः এथन माञ्चर्य माञ्चर रय विचन्न देवसमा पृष्टे হয়, তাহা নানা কারণে উপস্থিত হইয়াছে, চেষ্টা করিলে কালে সে বৈষমা দূর হইতে পারিবে; ইহা দূর করা যে অনসম্ভব পণ্ডিত মণ্ডলী তাহা বলিতেছেন না। এন্থলে আমি variability त्र कथा विनाट हि ना, inequality त्र कथा विनाट हि। একজন কবি, আর একজন চিত্রকর, ইহা inequalityর লক্ষণ নছে, variability মাতা। লেখোক্ত "প্রকার ভেদ" দূর করা কাহারও অভিপ্রায় নহে। ঈশবেরও তাহা অভিপ্রেত বলিয়া বোধ হয় না। কিন্তু inequality দূব করা আবশুক এবং উহা করা সৃষ্টি নিয়মের বিরোধী বলিয়া মনে হয় না। একটা मृष्टी स (मश्रा गाँउक। এक वाकित পूछ स्टब्स, स्मात এक वाक्तित्र भूल कम्रातागः नहेग्रा अन्य शहन कतिन। धहे य বৈষমা ইহা ঈশবের অভিপ্রেত বলাষায় নাঃ এ বৈষম্য অঞ্চ কোন কারণ বশতঃ ঘটিয়ীছে, স্থুতরাং সেই কারণ দুর क्तिएक भातिरम मिरे देवसमा पृत हरेरव । এक श्रुकरम छेहा দুর না হইতে পারে, কিন্তু চিকিৎসা শাস্ত্রজ্ঞ পঞ্জিরো বলেন বংশগত রোগ দুর করা অতিশন্ন কঠিন বটে, কিন্তু সম্পূর্ণ অসম্ভব নছে। দৈহিক শক্তির এইরূপ বৈষম্য যেমন দূব कता घाहेट भारत, मानिक भक्तित्र देवसमाख सिहेन्न पृत করা সম্ভবপর। নৈতিক শক্তি হর্কল থাকিলে তাহা যে অনায়াসে সবল করা যায়, তাহা অস্বীকার করিলে ধর্মচর্চার সার কোন প্রয়োজন থাকে না।

> নিবেদক, শ্রীষারকানাথ গঙ্গোপাধ্যার।

#### ব্রান্মসমাজ।

উৎস্ব--গত ২রা সেপ্টেম্বর সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ উপাসনা মন্দিরে ত্রাহ্মসন্মিলনীর সাম্বৎসরিক উৎসব সম্পন্ন হইরাছে। ২৭শে আগষ্ট দোমবার হইতে শনিবার পর্যান্ত त्रात्व मन्मित्त्र छेशामना ७ छेशाम हहेग्राहिन। औयुक वावू উমেশচক্র দত্ত, নগেক্রনাথ চট্টোপাধ্যায়, ক্লফকুমার মিত্র, व्यापिनाथ हाहोशाशाय, कानौ अमन वस् ववः वात् महिन्नाथ চট্টোপাধ্যায় প্রভৃতি উপাসনাদি করিয়াছিলেন। উপাসনাস্তে "क्य (**ए**व क्य एपव" এই वननां । সমস্বরে গীত হইত। রবিবার সমস্ত দিনব্যাপী উৎসব হইয়াছিল। প্রাতে সংকী-র্ত্তনের পর উপাদনা হয়। খ্রীযুক্ত উমেশচক্র দত্ত উপাদনা करतन। मधारक धान ७ व्यार्थना रहा। वीयुक मरहकनाथ চট্টোপাধাায় এবং শ্রীযুক্ত কৈলাসচক্র সেন প্রভৃতি প্রার্থনা করেন। অপরাহে ৩ ঘটিকার সময় শাস্ত্র পাঠ হয়। শ্রীযুক্ত কৃষ্ণকুমার মিত্র ও শ্রীযুক্ত নবদ্বীপচন্দ্র দাস শাস্ত্র পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। ৪ ঘটকার সময় শ্রীযুক্ত কাশীচক্র ঘোষাল "ভক্তি ও ভক্ত" সম্বন্ধে প্রবন্ধ পাঠ করেন। তৎপর কিরপে সাধু সঙ্গ করিতে হয়, তৎসম্বন্ধে এীযুক্ত উমেশচক্র দত্ত আলোচনা আরম্ভ করেন। এীযুক্ত গুরুচরণ মহলানবিশ ও শীযুক্ত নবধীপচক্র দাস প্রভৃতি স্বীয় স্বীয় মত প্রকাশ করেন। তৎপর শ্রীযুক্ত কালী প্রসন্ন বস্থ জীবনের অভিজ্ঞতা সম্বন্ধে কিছু वर्णन। मुद्याकारण कीर्श्वन हरेब्रा छेशामना आब्रस्ट हव। এীযুক্ত নব্দীপচক্র দাস আচার্য্যের কার্য্য করেন।

আরা সাধনাশ্রম—কোরেটা ব্রাহ্মসমাজের উৎসব উপলক্ষে তথাকার ব্রাহ্মগণ কর্তৃক অমুক্র হইয়া ভাই প্রকাশ দেব ও ভাই স্থলর সিং.কোরেটার গমন করিয়াছেন। অস্তান্ত পরিচারকগণ আশ্রমে থাকিয়া বিস্চিকা রোগের চিকিৎসা করিতেছিলেন। সম্প্রতি রোগের প্রকোপ প্রশমিত হওয়ার শ্রীযুক্ত গুরুলাস চক্রবর্তী প্রভৃতি বাকিপুর, ভাগলপুর অঞ্চলে প্রচারে যাইতে ইচ্ছা করিয়াছেন।

শোক-সংবাদ— আমরা ছংথের সহিত প্রকাশ করিতেছি, আমাদের শ্রদ্ধের ব্রাহ্মবন্ধ্নার মহাশর ইহ-সংসার পরিত্যাগ করিয়াছেন। তাঁহার
অনাথা পদ্ধী এবং প্রক্তাগণ এবং আত্মীয় স্থলনগণ
তাঁহার অসামরিক মৃত্যুতে ব্যথিত হইরাছেন। তাঁহার
চরিত্র সকলের শ্রনীয়। তিনি অতি সামান্ত অবস্থা হইতে
শীর অধ্যবসার, পরিশ্রম, মিতব্যরিতা এবং সাধুতা প্রভৃতি গুণে
প্রথম শ্রেণীর পুস্তকালর স্থাপন করিতে সমর্থ হইরাছিলেন,
এবং সাংসারিক উন্নতি সাধন করিয়াছিলেন। তাঁহার
প্রকৃতি অতি ধীর ও প্রশান্ত ছিল। ভাহাতে বাহিরের
আড়েম্বর কিছুই ছিল না। তিনি নির্জনে ঘণ্টার পর ঘণ্টা
উপাসনার যাপন করিতেন এবং নিষ্ঠার সহিত ধর্মাছুমোদিত

সাংসারিক কর্ত্তবাদি স্থন্দররূপে সম্পাদন করিতেন। পর-মেশ্বর তাঁহার পরলোকগত আত্মার মঙ্গল বিধান করুন এবং তাঁহার অনাথ পরিবারকে শান্তি দান করুন।

শ্রাদ্ধি—শ্রীযুক্ত বাবু মহেক্সনাথ চট্টোপাধ্যারের পরলোকগতা পত্নীর প্রাদ্ধ সম্পন্ন হইরা গিরাছে। মহেক্স বাবুর
কনিষ্ঠ পুত্র শ্রীমান ঈশানচক্র চট্টোপাধ্যার এই প্রাদ্ধক্রিরা
সম্পন্ন করিরাছেন। কলিকাতা কলেজ দ্বীট বাইলেনের বাসার
প্রাদ্ধ হয়। শ্রীযুক্ত উমেশচক্র দন্ত মহাশন্ন আচার্য্যের কার্য্য
করেন। প্রাদ্ধোপলক্ষে মহেক্স বাবু সাং ব্রাঃ সমাজে নিম্নলিখিত
রূপ দান কবিরাছেন; সাং ব্রাঃ সমাজ ২১ সাধনাশ্রম ২১ ব্রান্ধনিকা শিক্ষালের ২১ ছর্ভিক্ষ তহবিল ১১ দাতব্য বিভাগ
১১ টাকা।

শ্রীমতী লীলাবতী বস্থ তাঁহার প্রবােকগত পিতা বাব্ মোহিনীমোহন মজুমদারের শ্রাদ্ধ কবিয়াছেন। শ্রীযুক্ত উমেশচন্দ্র দত্ত মহাশয় আচার্যোব কার্যা কবেন। শ্রীযুক্ত ফণীক্রমোহন বস্থ মর্মস্পশী ভাষায় মোহিনী বাবুর জীবনের ছ চারিটি কথা বলেন। শ্রাদ্ধোপলকে শ্রীমতী লীলাবতী বস্থ সাধাবণ ব্রাহ্মসমাজে ৬ ও সাধনাশ্রমে ২ টাকা দান করিয়াছেন।

নামকরণ—দাসাশ্রমের স্থণারিন্টেণ্ডেণ্ট প্রীগৃক বৈকুণ্ঠ
নাথ দাসের কন্তার নামকরণ উক্ত দাসাশ্রমে সং হইয়াছে।
শ্রীযুক্ত সীভানাথ দত্ত আচার্য্যের কার্য্য করেন। কন্তার নাম
বিভা রাথা হইয়াছে।

#### তুর্ভিক্ষ সংবাদ।

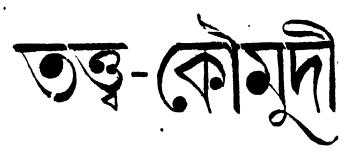
মাদরা নামক স্থানে বাবু হরিমোহন ঘোষাল অবস্থিতি করিয়া নিয়মিত রূপে ছভিক্ষ পীড়িত লোক দিগবে সাহায্য করিতেছেন। কলিকাতা হইতে বহু বন্ধ এবং ঔষধাদি সংগ্রহ করিয়া পাঠান গিয়াছে। দিন দিনই ছভিক্ষ বাড়িতেছে। এক মৃষ্টি চাউলের জন্ম বহু দূর হইতে লোক আসিতেছে। এই কয় সপ্তাহে সাহায্য প্রাথীর সংখ্যা অনেক বৃদ্ধি হইয়াছে। কোন কয় সপ্তাহে সাহায্য প্রাথীর সংখ্যা অনেক বৃদ্ধি হইয়াছে। কোন কোনও গরিবের গৃহ সংস্কার করিবার জন্ম এবং কাহাকেও বা নোকা মেরামতের জন্ম টাকা দেওয়া হইতেছে। বর্ষাকালে নৌকা বাতীত ভিক্ষা লইতে আসিতে পারে না। দেশবাসিগণের প্রমুক্ত দানের উপর ইহাদের জীবন নির্ভর করিতেছে। আমরা বিনীতভাবে অমুরোধ করিতেছি যে, সকলে যথা সাধ্য সাহায্য করিয়া শত শত গোকের প্রাণ রক্ষা কয়ন।

দান প্রাপ্তি স্বীকার— ক্রতজ্ঞতার সহিত স্বীকার করা যাইতেছে যে নিম্নলিখিত মহোদন্ন মহোদরাগণ ফরিদপুরের ছর্ভিক্ষ পীড়িত ব্যক্তি দিগের সাহায্যার্থে নিম্নলিখিত চাঁদা দান করিয়াছেন।—

শ্রীমতী স্থবোধকামিনী মন্ত্মদার লাহোরং, বাবু বরদাকান্ত বস্মর্মনসিং ১, বাগেরহাট হইতে বাবু হরিনাথ দাস

সংগ্রহ করিয়া পাঠান ৫১, বাবু বিশ্বের সেন রঙ্গপুর •হইভে সংগ্রহ করিয়া পাঠান ৩৮, বাবু প্রমধনাথ সরকার আসেনসোল ১১, বাবু আগুভোষ চট্টোপাধ্যার নলহাটী ৮০, বাবু অবিনাশ চক্র মিত্র বর্জমান ২১, বাবু কামিনীকুমার গুপ্ত বর্জমান ২১, কলিকাতা ৪নং ব্রজ্গলালের ষ্ট্রীট হইতে বাবু হরিমোহন দক্ত সংগ্রহ করিরা পাঠান ৩।•, ১জন বন্ধু বন্ধে ১২১, বাবু মহেশচক্র বোৰ সভাপতি রামপুর হাট নীতি সভা ৬১, বাবু অতুলচক্ত কর मन्नापक यत्नाहत्र व्यनात्र পू अत्र तिनिक कथ २८, वावू नेतरहत्त রায় কলিকাতা ২১, বাবু কেদারনাথ রায় কলিকাতা ১১, হকড়ি বোষ কলিকাভা ১১, বাবু রঞ্জনীনাথ গুছ কলিকাভা ১১, বাবু উমেশচক্র দত্ত কলিকাত। ১১, বাবু উমাকান্ত দাস গুপ্ত কলি-কাতা ৪১, বাবু প্রফুলচক্র রার ১১, বাবু মোহিনীমোহন ব<del>পু</del> কলিকাতা ১১, বাবু অভয়চরণ মল্লিক কলিকাতা ॥•, বাৰু জ্ঞানেন্দ্রলাল থান্ডগির কলিকাতা ১১, মেশাস- দত্ত মিত্র এণ্ড কোম্পানি কলিকাতা।•, বাবু দেবেক্সনাথ পাল কলিকাতা॥•, ডাক্তাব ডি, এন, রায়, কলিকাতা ২১, বনগাঁ মিডিল ক্ল্যাস ইংলিস স্কুলের ছাত্রগণ নিদায়ুদ্দীন মোলার মারফং ৭॥৶∙, ৰাবুজগদীশচক্ৰ বহু কলিকাতা ১১, বাবু আভতোষ ঘোষ কলিকাতা>্,বাবু রাধানাথ বসু কলিকাতা॥০,ঢাকা কলেজিয়েট স্লের অন্তম শ্রেণীর ছাত্রগণ বাবু হরনাথ বহুর মারফৎ ২১, বাবুবরদানাথ হালদার কলিকাতা ১১, শ্রীযুক্তা স্বণময়ী দাস কলিকাত। ১৲, বাবু গিরিশচন্দ্র শর্মা। কলিকাতা ৩∙১, মাণিকদহ হইতে বাবু উমেশচক্র নাগ সংগ্রহ কবিয়া পাঠান ৩৩॥৫, বাবু অবিনাশচন্দ্র সরকার কলিকাতা ২১, বাবু নির্ম্মলচন্দ্র মল্লিক কলিকাতা 🗸 ০, বাবু বেচাবাম মল্লিক কলিকাতা 🕫, বাবুরামগুলভি মজুমদার নওগাঁ আসাম ৪১., বাবু তৈলোকা নাণ দেব কলিকাডা।•, গয়া হইতে বাবু চক্রনাথ চট্টোপাধাায় সংগ্রন্থ করিয়া পাঠান ২৫১, বাবু বেণীমাধ্ব মিত্তের স্ত্রী কুথ,ভূমরা উন ৫১, একটা বজুমাঃ বাবু হেরম্বচক্র মৈত্র ৫১, এমি তী কুমুম কুমারী মৈত্র কলিকাতা ১১, বাবু মৃত্যঞ্জয় বন্দোপোধ্যায় সমস্কি পুর ২্,বাবু সভাপ্রিয় দেব কলিকাভা১্,বাবু যোগেক্সনাথ বোষ কলিকাতা ॥০,কালীমোহন দাস নওগাঁ আসাম ২১,শ্ৰীমতাঁ চিন্ময়ী দাস নওগাঁ আসাম ১১, বাবু গৌরলাল রায় কাকিনীয়া ২১, শ্রীমতী হেমলভা সরকার ভবানীপুর ৩্, বাবু শ্রীনাথচন্দ ছক্তিক ফণ্ডের উদ্ধৃত টাকা ময়মনসিং হইতে পাঠান ৩৪॥/০, জ্রীমন্ত্রী স্থালা বস্থমন্দিং ভগিনীসমাজ হইতে সংগ্রহ করিয়া পাঠান २६, तात् (मरतकाश धाष्ट्रा (गंडशानी २, तात् कानीक्रक বসাক কণিকাতা॥•, বাবু পাৰ্বভীনাথ দন্ত কলিকাতা ১১, বাবু চণ্ডীচরণ সিংহ জামালপুর হইতে সংগ্রহ করিয়া পাঠনে ২৫১, वाव् हतिरमाहन मे उक्ष घ्रणालित है। हे हेट में शह कतिया দেন ৪১, বাবু জহরীলাল শীল কলিকাতা ১১, বাবু বিপিন বিহারী দত্ত ॥০, বাবু সভ্যত্ত সিংহ চাঁদপুর ।০, বাবু যোগ-ত্রত সিংহ নওয়াথালি ৷০, শ্রীমতী মেহলতা দত্ত কাঁটাল পাড়া একটা বন্ধু মাঃ প্রবোধচক্র মহলানবিশ ১১, বাবু ভারণচক্র দাস नारहात्र २५८०, वात् कानाहेनान (तन कनिकाछ। >,, বাবু হরিদাস চট্টোপাধ্যয় ক্ষিকাতা ে্, একটী বন্ধু ক্ষিকাতা d., বাবু বামলাল মজুমদার এবং বৃদ্ধিচ<del>ত্র</del> রায় পুরুলিয়া কুলের ছাত্রগণ হইতে সংগ্রহ করিয়া পাঠান ১৬১, বাবু ভোলানাথ সরকার পুরুলিয়া হইতে সংগ্রহ করিলা পাঠান ১৭॥•, শ্রীমতী হৈমবতী সেন চুচড়া ১১, ডা: কালীপ্রসর দেন দারজিলিং হইতে সংগ্রহ করিয়া পাঠান ২৫১, একটা ব্ৰাহ্মিকা কলিকাতা মা/০।

১৬ই বৈশাথের তত্তকৌমুদীতে প্রকাশিত ৬১/০।
>লা আঘাঢ়ের তত্তকোমুদীতে প্রকাশিত ৮৫।•,।
মোট ৫০২/৫



## ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা

>२म मध्या। >१म खान्।

১৬ই আশ্বিন দোমবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২০০ সক্ষালে ৩ প্রতি থণ্ডের মূল্য ৮০

#### প্রার্থনা।

হে করণাসিদ্ধ । আমরা ব্রাহ্মসমাজকে তোমার মঙ্গলবিধি বলিরা বিখাসচক্ষে দেখিতে পারিতেছি না, সেই জন্তই ইহার দেবাতে আপনাদিগকে সমুচিতরূপে অর্পণ করিতে পারিতেছি না। বিখাসচক্ষে বলি ভোমাকে প্রভু ও অধিপতিরূপে দেখিছাম এবং ব্রাহ্মসমাজের সেবাকে যদি ভোমার সেবা বলিরা দেখিতে পাইতাম, ভাহা হইলে, ইহার জন্ত আপনাদের দেই মনের শক্তি-সমূহকে নিয়োগ করিতে কুটিত হইতাম না। আমাদিগকে বিখাসচকু দেও, যেন সেই চক্ষেত্মী ব্রাহ্মসমাজকে কর্মন করি।

## সম্পাদকীয় মন্তব্য।

শক্তিদ্বয়ের সমাবেশ—ভৌতিকলগত সম্বন্ধে ইহা একটা প্রাতনদত্য যে, প্রত্যেক জড়ীয় পরমাণুর উপরে পরম্পর বিসম্বাদী ছইটা শক্তি কার্য্য করিতেছে, একটা কেন্দ্রা-ভিসারিণী অপরটা কেন্দ্রণসারিণী। একটা প্রমাণু পুঞ্জকে পরস্পরেব নিকটে রাথিতে চায় অপরটী সেই পরমাণু সকলকে পরস্পার হইতে দূরে ফেলিতে চার্য। এইরূপ প্রত্যেক অভীয় পরমাণুতে হইটা শক্তি আছে, বিয়োজক ও সংযোজক। বিয়োজক শক্তির গতি ভালিবার দিকে, সংযোজক শক্তির গতি গড়িবার দিকে। এই ভালা ও গড়া প্রকৃতিরাল্যে নিরস্তর চলিতেছে। গুঢ়রূপে চিন্তা করিলে দৃষ্ট হইবে, যে মানব-দদমেও ভালিবার ও গড়িবার উপবৈাগী দিবিধশক্তি বিদ্যমান विश्वारकः वारीनिष्ठिष्ठा ७ विटबक मर्समा मायक्षेण विष्ठाव करत्, ও যাহা নিষিদ্ধ ভাহাকে বৰ্জন কৰে, আবার শ্রদ্ধা ভক্তি প্রেম প্রাভৃতি যাহা কিছু ভাগ তাহাকে গঠন করে। অতএব প্রভাক বাক্তির অন্তরে এবং ব্রাহ্মসমাজের শিক্ষার মধ্যে এই উভয় শক্তির সমাবেশ আবশ্রক, অর্থাৎ একদিকে যেমন মার্জিত खान ও বিবেকের উজ্জলতা, অপরদিকে তেমনি প্রদা, ভক্তি, ্প্রম প্রভৃতির বিকাশ। এই উত্তর দিকে দৃষ্টি রাখিতে হইবে। আমরা দেশিতেছি, ছুই শ্লেশীর লোক ছই অভিরিক সীমাতে |

যাইতেছেন। এক শ্রেণী পৌক্ষবৃদ্ধিকে নিভাস্ত প্রবল কবিতে চাহিতেছেন, অপর শ্রেণী শুক্তক্তির হস্তে আত্মবিক্রের করিতে চাহিতেছেন। প্রাক্ষসমাজকে এই উভরের মধ্যপথ অবলম্বকরিতে হইবে। উভর দলের বিবাদ ছারা একটা মহোপকার সাধিত হইতেছে। আমরা মধাপথটা পরিকাররূপে দেখিতে পাইতেছি।

হর্ষ গ্রোকো জহাতি—উপনিবদের একটা প্রাচীন লোকের এক অংশ এই ;— "অধ্যাত্ম যোগাধিগমেন দেবং মতা পীরো হর্ব শোকৌ লহাতি।"

ধীর ব্যক্তি অধ্যাত্মযোগ দারা সেই পরত্রক্ষকে জানিয়া হর্ষ ও শোক উভয়কে পরিত্যাগ করেন। মানবসমাব্দের চিস্তা ও ভাবের স্রোভকে অতি স্থন্দরন্ধপেই একটা নদীর স্রোভের সহিত তুলনা করা যাইতে পারে। নদীর জলরাশির উপরকার জল সর্কাদাই বায়ুব দারা তাড়িত। বায়ুর আমাতে সেথানে সকা-দাই নানাপ্রকার তরঙ্গ উবিত হইতেছে। সে জলরাশি কথনই স্থৃত্বি নহে। কিন্তু নদীব তলবর্তী অনলের গতিও ভাব সে প্রকার নহে। সেথানে উপরকার চঞ্চলতা নাই, বিপুল জল-রাশি নিঃশব্দ গতিতে এক মুথেই বহিতেছে। যদি জলনিম-বন্ত্রী ইষ্টকথণ্ডের সহিত উপরিভাগবর্ত্তী কার্চথণ্ডের তুলনা করা ব্রার, তাহা হইলে কভ প্রভেদ লক্ষিত হয়। উপরিভাণ-বন্ত্ৰীকাষ্ঠপত্ত তরঙ্গাঘাতে নৃত্য করিতেছে, ছলিতেছে, উঠি-তেছে. পড়িতেছে, ঘুরিতেছে, বায়ুর অগ্রে ছুটিতেছে; কিছ জলনিমবতী ইপ্টক বা উপলথত অতি ধীরে ধীরে অগ্রসর হইতেছে। এ সংসারে সভ্যে প্রতিষ্ঠাবিহীন ও সভ্যে প্রতিষ্ঠিত এই উভয় শ্রেণীর লোকের মধ্যেও ঐ প্রকার প্রভেদ। যাহাদের সভ্যে প্রতিষ্ঠা নাই, তাহারা বায়্তাড়িত তৃণ বা কাষ্ট্রপণ্ডের স্থায় সতত বিক্ষিপ্ত হইতেছে, বায়ুর অত্যেনীত হইতেছে। ভাহাদের জীবন জনসমাজের চিন্তা ও ভাব স্রোতের ক্রীড়ার দ্রব্য হইরা রহিয়াছে। যথন যে দিকে স্রোভ विहालाइ, लाहाता त्रहे मित्करे नील स्टेलाइ ; कंपनल स्टर्म উৎফুল কথন পূবা বিধাদে গ্রিয়মাণ হইয়া যাইভেছে। কিন্ত याहारमञ्ज मरका श्राक्ति इहेशारह, काहाता स्थादत श्राकृति नाक

করিয়াছেন। সভারাজ্য বিশাসের রাজ্য, বিমল বায়্ময় রাজ্য।
বাহিরের বিক্ষেপকারী কারণ সেখানে বিদ্যমান নাই। ভাষা
বক্ষেব পবিত্র ও শাস্তিপ্রদ আবির্ভাবে পরিপূর্ণ। এ রাজ্যে যিনি
একবার স্থান প্রাপ্ত হইয়াছেন, তিনি বাহিরের বিক্ষেপকারী
হর্ষ ও শোকের বিক্ষোভকে অভিক্রম করিয়াছেন। আমরা
সভ্যকে যতই অকপট চিন্তে প্রীতি করিতে পারিব, যতই একাস্ত
অন্তরে সভ্যের অনুসরণ করিতে পারিব, ততই এই বিক্ষোভবিহীন শাস্তিময় রাজ্যে প্রবেশের অধিকারী হইব। আমরা
অকাভরে ঈশরের হস্তে আত্ম-সমর্পণ করিতে পারি না বলিয়াই
সর্বাদা হর্ষ শোকের অধীন হইয়া এ সংসারে অনেক লাঞ্ছনা
ভোগ করি। ঈশর করুন, আমরা সত্যে আত্মসমর্পণ করিয়া
দেন তাঁহার পবিত্র সন্ধিনে বাস করিতে পারি।

ভবিষ্যৎ ব্রাক্সসমাজ—ভবিষ্যৎ ব্রাক্ষসমাজের অঞ্ পৃষ্টি কি প্রকারে হইবে ? ভাহার হুই উপায় আছে ;—প্রথ-মতঃ সমুচিতরূপে ব্রাহ্মধর্ম প্রচারিত হইয়া উত্তরোতর যদি নৃতন নৃত্র ধর্মভাবদম্পন্ন লোক আকৃষ্ট হয়, ভদারা,—ঘিতীয়ত: যাহারা আহ্মগৃতে জানাতেছে, ভাহাদের ধর্মজীবনের উন্নতির वाता। किन्छ চिन्छ। कतिरण मृष्टे श्रेरत, य याशाता म्यास्कत অন্তর্ত, তাহাদের ধর্মজীবনের উপর বাহিরের লোকের আরুষ্ট হওয়া না হওয়া অনেক পরিমাণে নির্ভর করিতেছে। কারণ ব্রাহ্মসমাজের অন্তর্ভুত ব্যক্তিদিগের ধর্মভাব যদি মান হয়, এবং তাহাদের চরিত্র যদি অসং হয়,তাহা ছইলে ব্রাহ্মসমাজ যে নৈতিক শক্তির বলে এতদিন লোককে আফুট করিয়াছেন, তাহা विनहें रहेरव । (य मक्न धर्मजावम्भन लाक आकृष्टे रहेना 'আসিবে তাহারা তিটিবে না, এবং আভান্তরীণ কথা যতই• প্রকাশিত হইবে তত্তই ধন্মভাবদম্পন্ন ব্যক্তিগণ আর আরুষ্ট হইবে না। অতএব ব্রাহ্মসমাজের ক্রোড়জাত ও ইহার অস্তর্ভ नत्रनात्रीत ध्याकीवरनत्र उन्निष्ठत उपाद देशात ভविषाः ध्यान-কপে নির্ভর করিতেছে। সে বিষয়ে আমাদের অবস্থা যদি বাত্তবিক আশাজনক হয়, ভাহা হইলে অপর সহস্রপ্রকার তুর্বলতা সত্ত্বেভ ভয় বা চিন্তার কারণ নাই। আমাদের ञ्चत्कि पिर्क व्यानक क्वेंगे त्रिशाहि, किन्नु यनि पिथिट भारे ए। পশ্চাতে এরূপ একদল বালক বালিকা প্রস্তুত হইতেছে, যাহারা জ্ঞানে ধর্মে স্বার্থনাশে ও ব্রাহ্মসমাজের সেবাতে আমা-দিগকে অতিক্রম করিবে, তাহা হইলে এ সমুদায় ক্রটী উপেক্ষা করিতে পারা যায়। কিন্তু প্রেল্ল এই, এরূপ একদল নরনারী कि भक्तार्ड व्यामिर्डिष्ट् ? ट्यामार्तित्र वानकवानिकान्त्रिक দেখিয়া কি আশা হইতেছে যে,ভাহারা ধর্মজীবনের পথে বর্ত্তনান সময়ের ব্রাহ্মদিগকে অতিক্রম করিয়া ঘাইবে ? প্রকৃত কথা কি ? বান্ধবালকগণ সহরের যে যে স্থলে পাঠ করে, তাহাদের শিক্ষক মহাশন্ত্রদিগের মুথে গুনিতেছি যে, ব্রাহ্মবালক্দিগ্রে তাঁহারা আশামুরূপ দেখিতেছেন না। বিদ্যাশিক্ষাতে নিক্ল পভাবচরিত্রেও অনেকে নিকৃষ্ট। অনেক ব্রাহ্মবালকের এরূপ হনীতিব কথা গুনা যাইতেছে যে, তাহা গুনিলে হ্ৰুদ্ধ আশঙা ও विवारि पूर्व हत्र । बाक्यवानकनिर्वत्र विवत्र किछा कत्रित्रा रमिश्त

বিদ্যাশিক্ষায় উৎকর্ষ দেখাইতেছে, এমন বালকের সংখ্যা অধিক নহে। যে ছই চারিটী ব্রাহ্মবালক উৎকৃষ্ট হইতেছে, তাহাদেরও মনে ব্রাহ্মসমাজের প্রতি অমুরাগ বৃদ্ধি হইতেছে না।

এই ত গেল বালকদিগের অবস্থা। বালিকাদিগের শিক্ষার ভার যাঁহাদের হস্তে তাঁহাদের মুখে শুনিভেছি যে, বালিকাগণ লিখিতে, পড়িতে, গাইতে, বালাইতে, পলুফুলটীর মত সাজিতে শিখিতেছে বটে; কিন্তু হৃদরে প্রজ্ঞানিত ধর্মান্ত্রাগের কোনও লক্ষণ দেখা যাইতেছে না। উপাসনার কথা ও ধর্মোশাদেশ সকল পল্ন পত্রের জলের জার তাহাদের মনের উপর দিয়া গড়াইয়া যাইতেছে, তাহাদের মন ভিলিতেছে না। ইহাদিগকে দেখিরা এখনও আশা করা যাইতেছে না, যে ইহারা বিবাহিত হইয়া যথন গৃহধর্মে প্রবৃত্ত হইবে, তখন ব্রাহ্মধর্ম্ম প্রচার ও ব্রাহ্মসমাজের সেবাতে ইহাদের বিশেষ উৎসাহ থাকিবে, বরং ইহাই মনে হইতেছে যে, ইহারা গৃহধর্মে প্রবৃত্ত হইলে, আয়ু স্থে সুখী হইয়া সংসারস্থেই নিমগ্ন হইবে। তবে ভবিষ্যৎ ব্রাহ্মসমাজের আশাটা কোথায় রহিয়াছে গু

যুবকগণের ধর্মশিকা--- ব্রাক্ষদমান্তের ভবিষ্যৎ যাহা-দের উপরে নির্ভর করিতেছে, সেই সকল বালকবালিকার অবস্থা ত গেল এই। যে সকল যুবক ব্ৰাহ্মসমাজের দিকে আকৃষ্ট হইতেছে, তাহাদের ধর্মশিক্ষার এমন 🖛 উপায় বিধান করা হইতেছে, যদারা আশা করা ঘাইতে পারে যে, ব্রাহ্মধর্ম ভাহাদের হৃদয়ে বদ্ধুশ হইয়া জীবৃদ্ধিশালী হুইবে ? এমন দশজন লোক দেখাও--্যাহাদের অন্তরে ত্রাক্ষধর্মের ভিত্তি ञ्चलत्रकाल शालन क्रिवात क्रम हिंही क्रता हहे छिहि । वतः धरे কথাই কি সভ্য নহে যে, যে সকল যুবক ত্রাহ্মসমাজের দিকে আরুট হুইভেছে, ভাহাদিগকে সমুচিভরূপে শিক্ষিত ও বিনীত করিবার বিশেষ উপায় নাই। এক ধর্ম বিজ্ঞান বিদ্যালয় (Theological Institution) আছে, ভাৰাও সকলের উৎসাহ ও চেষ্টার অভাবে যুবকদলকে বহুল পরিমাণে আকৃষ্ট করিতে পারিতেছে না। সমুচিত ধ্যাশিক্ষার অভাবেই যুবক দলের মধ্যে শোচনীয় চঞ্চলতা দৃষ্ট হইতেছে। আজ বাহারা উৎসাহী आञ्च, कना छाहात्रा हिन्तूरयात्री, मास्त्र ভोमिक वा हिन्तू পুনরুখানকারী। ধন্মাশক্ষার বস্তমান শিথিল অবস্থাতে এরূপ চঞ্চলতা অনিবাৰ্য্য ও অবশ্ৰস্তাবী। যদি এরূপ শিণিল অবস্থা थाकिया यात्र, जाहा हहेरन जाहात्र फन वहे हहेरव (य, जान প্রচারকগণ একছার দিয়া যাহাদিগকে ডাকিয়া আনিবেন, তাহারা অপর দার দিয়া বাহির হইয়া বাইবে। বাহিরের লোক আসিয়া যে ভবিষ্যৎ ব্রাহ্মসমাজের প্রষ্টিসাধন করিবেন, ভাহাও হইয়া উঠিবে না। যে দেছে একদিক निया পुष्टिकत नामधी नित्न व्याभवनिक निवा वाहित हहेबा यात्र, रत्र (पंर (यमन शाष्ट्र ना, त्य विशिक्त अकृतिक निम्ना जिलाकान হয়. কিন্তু অপর দিক দিয়া অপবায় হইরা যায় ভাছার ধন সম্পদ যেমন বাড়ে না, তেমনি যাহারা লোক ডাকিছে বাতা. किन्द छाहारमत मिकात छेशात विशास करत मा, छाहारमत्र সমাজ গড়ে না।

সামাজিক-শ্রমবিভাগ---নানা লনে একটা কার্য্যের নানা ভাগের ভার শওরার নাম শ্রম-বিভাগ। স্থৃতিটা প্রস্তুত হইবে, একজন লোহার ভার কাটিয়া দিভেছে, অপর জন ঘষিভেছে, একজন অগ্রভাগ সৃদ্ধ করিতেছে, একজন পশ্চাতে ছিদ্র করি-তেছে,—এইরপে কার্যা ভাগ করিয়া নেওয়াতে অর সময়ের भर्था अप्तक कार्या इहेबा याहेर उर्छ। जाहा ना इहेबा यपि এक বাজিকেই তার কাটিতে, ঘষিতে, অগ্রভাগ স্কু করিতে ও পশ্চাতে ছিদ্র করিতে হইত তাহা হইলে, সমস্ত দিনে তুইটা স্চ हरे ७ कि ना मत्मर। रेश्न ७ रहे एक एव मकन उरक्षे स्वया এদেশে আসিতেছে, তাহার অধিকাংশ এইরূপ শ্রম-বিভাগ ব্ৰাড। দশ ব্ৰের হাত দিয়া যে দ্রবাটি উৎপন্ন হয়, তাহা এপ্রকার উৎকৃষ্ট হয় কির্নপে ? ইহার পূঢ় কারণ এই, প্রত্যে-(क्टे श्रीय श्रीय व्यः भी क्ष्मव्यक्तरभ शिक्षांत्र (ठष्टे। करता। প্রভ্যেকে সীয় স্বীয় অংশটুকু যদি স্থচারুকপে সম্পন্ন করে, ভাহা हरेल, नमा ब बस्ती उ दहरे हम। सनमगास्त्र मर्स्ति उम्रिड বিষয়ে এই সভাটী শারণ রাখিলে উপকার আছে। জনসমাজের পাপ তাপ চুনীতি দেখিয়া আমরা অনেক সময়ে নিরাশ হইয়া পড়ি। বছদিনের সঞ্চিত পাপরাশি কিরুপে দূর হইবে, এই চিয়াতে আমাদের মন অবসর হইয়া পড়ে। কিন্তু তথন আমরা প্রত্যেকে যদি এই চিন্তা করি, যে আমার উপরে যত-টুকুব ভার আছে, সেটুকু যদি আমি স্থচারুরপে সম্পন্ন করি তाहा रहेला के वहनितनत मिक्क भाभतानि मृत रहेवात भक्त অনেক সাহায়্য হইতে পারে। প্রত্যেক গৃহস্থ যদি আপনার গৃহের প্রাঙ্গণ ও আপনার ভবনের চতুষ্পার্যস্থ ভূমি পরিষার বাথিতে যত্ন করেন, তাহা হইলে সমগ্র সহরের স্বাস্থ্য রক্ষা কঠিন **इम्र ना। "शम्म कि इट्टार ? किছू उट्टे किছू इट्टेंट्ड ना, कि** করা যায় ?'' ইত্যাদি প্রকার আর্তনাদ ও ক্ষেতে প্রকাশে সময় প্রথাবদান না করিয়া প্রত্যোকে যদি স্বীয় স্বীয় কঠবোর কেত্র मिथ्या महेया निम मार्था यउँ। इस क्रियात खन्न (ठेट) क्रित्न. তাহা হইলে অধিক দিন আর ক্ষোভ করিতে হয় না। একবার म्मू मत्या এकथानि काशास्त्र आधन नागिम्राहिन। काथाम আগুন লাগিয়াছে, তাহা কেহ জানিতে পারিল না। জাহাজথানি मार्टन পूर्व हिन, रत त्रभूनाय मात्र नदाहेया अधिद उर्पेख छान নিণয় করিবার স্থবিধা হইল না। ক্রমে উত্রোত্র ধুমরাশি বাড়িতে লাগিল, সকলেই বুঝিতে পারিল যে, আগুন অগ্রসব रहेएछह। धरे विभाग चार्ताहिशानत चानतक रुख्या চারিদিকে চুটাচুটা ও আর্ত্তনাদ করিতে লাগিল। সৌভাগ্য वग्रः काश्विन এक्कन एडकको ७ क्रिडिंग राख्नि हिल्लन, ভান সকলকে ভিরস্কার করিয়া শাস্ত হইতে বলিলেন, এবং নাবিকদিগকে একাগ্রতার সহিত স্বীয় স্বীয় কর্ত্তব্য কার্য্য সাধনে নিযুক্ত হইতে বলিলেন। অগ্নি নিবারণের অবিশ্রাম্ভ চেষ্টা **हिन्न। कृत मुद्धे इहेरलह्, मक्त अ**खिनिर्देश महकार श्रीय श्रीय कर्द्धवा नाधन कतिरम, कृम পाहेवात चामा चाहि। নাবিকগণ দৃঢ়তার সহিত প্রত্যেকে স্বীয় স্বীয় কর্তব্য পালনে নিযুক্ত হইল। তল্পধ্যে জাহাজের কল পুরাইবার ভার যে ব্যাক্তর উপরে ছিল ভাহার কি ভয়ানক অবস্থা। সে ব্যক্তিকে

জাহাজের নিয়ত্তে অন্ধকার গৃহের মধ্যে অগ্যাগারের সন্নিধানে দাঁড়োইয়া কাজ করিতে হয়। অলুকালের মধ্যে সেহান ধুমরাশির ছারা ঘন অন্ধকারে আবৃত হইয়া গেল। আর চকে কিছু দেখিতে পাওয়া যায় না, তাহার পদতলে আগুন অগ্রসর হইয়া আসিতেছে। তথাপি সে ব্যক্তি শ্বীয় কর্ত্তব্য সাধনে নিযুক্ত আছে। কাপ্তেন উপর হটতে এক এক বার চীৎকার করিয়া তাহার নাম ধরিয়া জিজ্ঞাসা করিতেছেন, তাহার উত্তর পা ওয়া বাইতেছে, সে বলিতেছে,—"ভন্ন নাই, ভোমরা আপনা-পন কাজ কর।" ক্রমে জাহাজ কুলের অভিমুখে যতই ঋগ্রসর হইতে লাগিল, ততই সেই ব্যক্তির রব ক্ষীণ ও বিকৃত হইয়া আসিতে লাগিল। কিন্তু তথনও সে কল ঘুরাইতেছে। অবশেষে আর তাহার সাড়া শব্দ পাওয়া যায় না, কিন্তু কল ঘুরাইতেছে। क्रांस काहाक जीरतत मित्रधारन (भीहिरन, करप्रकक्रन त्नाक অন্ধকারে কোনও প্রকারে প্রবেশ করিয়া ঐ ব্যক্তিকে ধরিয়া বহন করিয়া উপরে আনিল, তথন দেখা গেল ২ে, তাহার ছুইথানি পা একেবারে ঝলসিয়া গিয়াছে, এবং আর একটু বিলম্ব হইলেই স্থাসরোধ হইয়া তাহার মৃত্যু হইত। ইহা একটা সত্য ঘটনা। ঐ জাহাজে আগুন লাগিলে প্রত্যেক নাবিক যাহা করিয়াছিল, তাহা যদি তুমি আমি করি তাহা হইলে, অনেক নিরাশজনক অবস্থা হইতে উত্তীণ হইতে পারি। নাবিকগণ দে দিন যেরূপ দৃঢতার সহিত স্বীয় স্বীয় কর্ত্তব্য পালন করিয়াছিল, তাহা না করিয়া যদি পরস্পরে "হা হতোস্মি" कतिया ছুটা ছুটী করিত, তাহা হইলে সেই জাহাজ আর ক্ৰে পৌছিত না, আরোহীদিগের সকলৈরই প্রাণ যাইত। আমাদের প্রত্যেকের কর্ত্তবাপরায়ণতার মধ্যে আমাদেব অধিকাংশ मामाजिक वार्षित खेष्ध निहिত इहेशा त्रहियारह। जैपन क्रकन, त्रीय त्रीय कर्डवा পानत्मत्र मिटक आमारमत्र अधिक मत्नारयात्र

জল্পনা-প্রিয়তা-উপরে যে দকল অবন্থা বর্ণিত হইল তাহা গুরুতর চিস্তার বিষয়, তাহা কে২ই অস্বীকার করিবেন না এবং তত্ত্বকৌমুলীর পৃষ্ঠাতে এদকল বিষয়ের এই প্রথম অবতারণানছে। একণে কর্ত্তব্য কি ৪ এক একবার মনে হয় এসকল বিষয়ের আলোচনা না করাই ভাল, মুখে আব কিছু না বলাই ভাল। কারণ মুথে আলোচনা করিয়া আমাদের একটা গুরুত্ব ব্যাধি জ্মিয়াছে। আমরা দশজনে একত रहेटनहें, वा किमिणिट वित्रालहें এर मकन विषय आती-চনা করি, "হায় হায়" করি, তৎপরে কাহারও কার্যো কিছু कतिवात अवृष्डि (मथा यात्र ना। (यन शत्र शत्र कविरन, इःथ প্রকাশ করিলেই আমাদের সমুদায় দায়িত্বের পর্যাবসান হইয়া याम्, (यन जनिधक ज्यामारमत्र आत्र किছू कतिवाव नाहै। इंश দেখিয়া এক একবার মনে হয়, আমরা প্রত্যেকে ধনি এই প্রতিজ্ঞা করি যে, আর মুথে এসকল বিষয়ের আলোচনা করিব না, প্রত্যেকের যতটুকু করিবার আছে স্থিচতে বসিয়া করিব, ভাতা হইলে এ অবস্থা ব্রায় দুর হইতে পারে। चामता चँद्रना थिय आक्रामिशदक छाहारमञ्ज कर्कत्वात्रभथ তত্ত্ব-কৌযুদী।

প্রদর্শন করিবার জন্ম পূর্ব্বোলিখিত বিষয় সকলের অবভারণা করিলাম। আমাদের পরলোকগত বন্ধু কারল্ হেমারগ্রেণকে একজন ব্রাহ্মযুবক একবার বলিয়াছিলেন "আপনি আমা-দিগকে কিছু উপদেশ দিন," তাহাতে তিনি উত্তর করিয়া-ছিলেন—"উপদেশ আর কি দিব, উপদেশ দেওয়া আমার আসে না। আমি ব্রাহ্মদিগের নিকটে আসিয়া দেখিতেছি, ব্রাহ্মেরা বড বেশি কথা বলে, তোমরা মুখে বলা আপেকা कारक रविंग कत्र, এই आमाव উপদেশ।" विम्भीय लाक, তাহাদের দেশে অধিক কথা বলিবার নিয়ম নাই স্তরাং আমাদেব জলনাপ্রিয়তাটা তাঁহার মনে বড় লাগিয়াছিল। কি আমাদের ছর্ভাগ্য এই সকল গুরুতর বিষয়ে সময়ে সময়ে যে কনফাবেন্স হয়, ভাহাতেও কাজের কথা অপেকা জলনাপ্রিয়তা অধিক থাকে। কনকাবেন্স হইতে উঠিয়া আসিবার সময়ে আমবা কাজে কিছু করিবার প্রতিজ্ঞা লইমা, वा काटक किছू इहेन, कानिया स्थी इहेगा घरत स्थानि ना, किख পরস্পরে যাহা বলিয়াছি ত্রিষয়ে বাদামুবাদ লইয়া ঘরে আসি। অত এব আমাদের অমুবোধ, এই স্কল গুরুত্র বিষয়ে স্মাজের অগ্রণী ব্যক্তিগণ কাজে কিছু করিবার জন্ম প্রতিজ্ঞারঢ় হটন।

## 

#### অধিকারিভেদ।

বঙ্গদেশীয় সাকারবাদীদিণের হুর্গোৎসব সন্নিকট, এ সময়ে অধিকাবিভেদের বিষয়ে কিঞাং প্রসঙ্গ করা অসাময়িক নহে। মহাত্মা বাজা রামমোহন বায় স্বদেশীয়দিগেব সহিত বিচারে যথন প্রবৃত্ত হন, তথন হিন্দু শাস্ত্রকেই প্রমাণ্য রূপে গ্রহণ করিয়া বিচার কবিয়াছিলেন। বেদ, বেদান্ত উপনিষৎ প্রভৃতি প্রাচীন গ্রন্থ সমূহ হুইতে অনেক বচন উদ্ভূত করিয়া, তিনি প্রতিপন্ন কবিয়াছিলেন যে, নিবাকার ব্রহ্মোপাসনাই শ্রেষ্ঠ এবং শাস্ত্রের অস্থুমোদিত; কিন্তু সেই সঙ্গে সঙ্গে তাহাকে ইহাও স্বীকার কবিত্রে হুইয়াছিল, যে তুর্মলেঅধিকারীদিগেব জন্ম শাস্ত্রে সাকারোপাসনার বিধি আছে। এই টুকু স্বীকাব করাতে দেশের সমূহ অনিষ্ট হুইয়াছে। অনেকের মনে এইরূপ ধারণা জন্মিয়াছে, যে হুর্মল অধিকারীদিগেব পক্ষে সাকাবোপাসনা নিষিদ্ধ নহে। এই উক্তির আশ্রয় লইয়া অনেকে জ্ঞানসম্পন্ন হুইয়াও সাকারোপাসনার পক্ষ সমর্থন কবিতেছেন। আমাদের এবিষয়টী একটু তলাইয়া বৃন্ধিতে হুইতেছে।

জ্ঞান রাজ্যে যে অধিকারিভেদ আছে, ইহা কেহ কথনও অস্বীকার করে না। সকল প্রকার জ্ঞান সকল লোকের ধারণ করিবার শক্তি নাই বয়স ও শিক্ষার তারতম্য অনুসারে ধারণাশক্তির তারতম্য হইয়াথাকে। প্রতিদিন অর্থনীতি(Political Economy) সম্বন্ধে এমন সকল বিষয় বড় বড় সংবাদ পত্রে আলোচিত হুইভেছে, যাহা তুমি আমি পাঠ করিয়া ধারণা করিতে পারিতেছি না। আমরা সে সকল বিষয়ে অভিজ্ঞ

নহি। এরপ বিজ্ঞানবিদ্ পণ্ডিভগণের সম্ভাতে যথন কোনও নবাবিদ্বত বৈজ্ঞানিকতত্ত্বর আলোচনা হর, তথন যদি তুমি আমি দেখানে উপস্থিত থাকি, তাহা হইলে হয় ত তাঁহাদের অধিকাংশ কথারই তাৎপর্যা গ্রহণ করিতে পারিব না, কাবণ আসর। সে বিষয়ে অভিজ্ঞ নহি। এই কারণেই সাধারণ প্রজাগণের বোধসৌকার্য্যার্থে নিরস্তর বৈজ্ঞানিক তত্ত্বসকলের কোমলতা বিধানের চেষ্টা হইতেছে। পণ্ডিভদিগের মধ্যে অনেকে কুপা-পরবশ হইয়া প্রজা-সাধারণের বোধগমা ভাষাতেও ধারণাঁব উপযোগী যুক্তিপরম্পরা দারা সেই সকল তত্তকে ব্যাখ্যা কবিতেছেন। নিভাম্ব চিম্বাবিহীন লোক না হইলে কেহই একপ বলিবেন না যে, জ্ঞানে অধিকাবিভেদ নাই। যে যুক্তি একজন বয়: প্রাপ্ত ও স্থানিক্ষত ব্যক্তির উপযোগী, সেই যুক্তি একজন অজ্ঞ অশিক্ষিত ব্যক্তির বা শিশুরও উপযোগী, हेश (कहरे विगरित ना। गानिनिं अप्रतिक देवकानिक পবীক্ষার দ্বারা অনেক আঙ্ক ক্ষিয়া স্থিব ক্রিয়াছিলেন যে, পৃথিবী সুর্যোর চতুর্দিকে ঘূরিতেছে। কোনু ব্যক্তি এরূপ বলিবেন যে সেই সকল যুক্তি একজন আজ্ঞ ক্রুষকের নিকট বা একজন পঞ্চমব্যীয় ক্লেব বালকের নিকট উপন্থিত করিতে হইবে ? কিন্তু তাহা বলিয়া এরপ কি কেছ विनादिन (य अक्षक्रयक ও विनानियुत्र वानकशन, পृथिवीत আহ্নিক ও বার্ষিক গতি ধারণ করিবার অধিকারী নয় অভএব তাহাদিগকে এখন শিখাও যে পৃথিবী স্থির ও স্থ্য ব্বিভেছে, তৎপরে তাহারা যথন জ্ঞানলাভ করিবে বা প্রাপ্তবয়ত্ত হুইবে. তথন শিধাইতে হইবে যে পৃথিবী সূর্যোর চতুর্দিকে খোরে। একথার অবর্থ এই যে, জ্ঞানীর জন্ত সত্য আজের জন্ত নিখ্যার পাবস্থাকর। ইহা যুক্তি ও ধর্ম উভয় বিগহিত। কাবণ সতোর প্রয়োজন কাহার অধিক ? যে জ্ঞানী, তাঁহার না যে অজ্ঞ তাহার ? অজ্ঞেরই জ্ঞানলাভের প্রয়োজন। কিন্তু এই ধর্ম বিগহিত মত বলে, যে অজ্ঞ তাহাকে আরও অজ্ঞতাতে নিমগ্ন রাথ এবং উৎকৃষ্ট জ্ঞান কতিপয় জ্ঞানীর জন্ত রক্ষা কর। याँहाता वरणन (य. माकारताभामना छर्वनव्यधिकातीमिश्यत জন্ত, নিরাকারোপাসনা জ্ঞানীদিগের জন্ত; তাঁহাদের উক্তিত ও এইরূপ ধশ্ম-বিগহিত যুক্তি প্রকাশ পায়।

কথা এই, সাকারোপসনা সত্য কি না ? কেইই বোধ হয় বিলিবেন না যে, ঈশ্বরকে সাকারভাবে পূজা করা, সত্য পূজা। কারণ তাহা গদি সত্য-পূজা হয়, তবে তাহা চক্ষণ সবল সকল অধিকারীর পক্ষেই অবলম্বনীর; তাহা পরিত্যাগ করিবার প্রয়োজন দেখা যায় না। তাহা যথন এক অবস্থাতে বর্জনীয় বলিরা প্রতিপন্ন করা হইতেছে, তথন ইহা বলা হইতেছে যে তাহা মিথ্যা বলিয়াই বর্জ্জনীয়। যাহা মিথ্যা বলিয়া বর্জ্জনীয় হইল, তাহা কাহাকেও বিশেষ অজ্ঞবাক্তিদিগকে শিক্ষা দিলৈ কি পাপ হয় না ? সত্য যাহা তাহাই মাম্বকে দিতে হইবে। হর্জ্বলঅধিকারীদিগকে তাহাদের ধারণার উপযোগী যুক্তির সহিত দিতে হইবে, সবল অধিকারীদিগকে তাহাদের উপযোগী যুক্তির সহিত দিতে হইবে। পূর্থ্বি গোল ইহা সকলেই বলে,—পাঁচ বৎসরের ক্ষুলের

বালককেও বল, বিংশভিবর্ষবয়স্থ স্থালিকিত যুবককেও বল, কিন্তু বালককে বালকের উপযোগী যুক্তি প্রদান করিতে হইবে।

ত্বলম্ধিকারীদিগকে সাকারোপাদনা লইয়া থাকিতে मिट हहेरव, काव्रण हेहा **डाहारमंत्र छे**शरयांगी, हेहा कथनहे नरहा সাকাবোপাসনা অসতা, ঘোর ভ্রান্তি স্করাং ভাষা বর্জনীয়; সক্ষতোভাবে বক্ষনীয়, ভোমার আনার পক্ষে বর্জনীয়, শিশু ও বুদ্ধের পক্ষে বর্জনীয়, কৃষ্ক ও পণ্ডিতের পক্ষে বর্জনীয়। একমাত্র সভাম্বরূপ প্রমেশ্বই মানবের উপাতা, ইহা হইতে এक চুল বিচলিত হইলে চলিবেনা। ভবে এই মাত্র সীকার করা ঘাইতে পারে, অজ্ঞ ও অশিকিত সরল বিশাসীদিগের পক্ষে পৌত্তলিকতাচরণ মাজ্জনীয় অসবাধ, জ্ঞানালোক প্রাপ্তবাক্তিদিগের পক্ষে তাহা নহে। ঈশ্বর্কে গাঁহরা कानियारकन. उंद्यापात कानकुछ (भोद्यानक काठतर में भेत्रात-মাননাজনিত পাপ জন্ম। ইহার একটা দৃষ্টান্ত প্রদশন কবা ঘাইতেছে। একবাব একজন যুবক কর্মোপলক্ষে विकास वाम कतिरक्त। तिर्भ किनि महित्यत महान हिल्लन, (कह डाँहारक क्वानिक ना. विरम्भ किनि व्यर्थाभार्कन कविया लभन्न (नाक ब्रहेग्राडितन। किन्नु भन्न (नाक ब्रहेग्रा डिनि আর সীয় দরিদ্র পিতা মাতাকে স্মুবণ কবিতেন না। পিতার निक्रे इहेट्ड पर्वत उपर प्रव प्रव है, हिनि উख्व मिर्टन ना। একবার তাঁহার পিডা বছদিন পুজের অদশনে উদ্বিগ্ন হুচ্যা তাহার কর্মান্তানে উপস্থিত হৃহলেন। তাঁহার পরিধানে সেই সামাত্র বস্ত্র ও বেশ ভূষা সমুদার দরিদ্রের মত। একদিন উপযুক্ত পুল্ৰ বন্ধু বান্ধৰ সমভিবাহারে নৃত্য গীত ধদখিতেছেন, এমন সময়ে ঠাহার পিতা আসিয়া নাম ধরিয়া 'তুই'' 'তুই'' কবিষা তাঁহাকে ডাকিলেন। কে সামাল্য বন্ত্ৰ পরিধায়ী বৃদ্ধটা বন্ধকে ডাকিল, এই ভাবিয়া বন্ধু বান্ধব কিঞ্চিৎ আশ্চর্যান্ত্রিত হটলেন। উপযুক্ত পুদ্রকে জিজ্ঞ সা করাতে তিনি ইংবাজীতে বলিলেন "আমাদেব বাড়ীর একজন পুবাতন ভূত্য-" বন্ধ বান্ধবেৰ নিকট নিজ সম্ভ্ৰম রক্ষাব জ্বন্ত সে আপনার পিতাকে অসীকার করিল 🔻 এই এক আচরণ, আবে এক আচরণ পরলোক গত কৃষ্ণদাস পাল মহাশ্রের দেখা গিয়াছিল। তাহারও পিতা সেকেলে লোকের মন্ত সামান্ত বেশে থাকিতেন। একদিন প্রাতে তাহার পিতা বাড়ার দ্বারে দণ্ডায়মান আছেন, এমন সময়ে কলিকাভার মিউনিসিপালিটীর তদানীস্তন সভাপতি হগ সাহেব অখারোহণে আসিয়া উপস্থিত। তাঁহাকে मृत रहेट आंगिट (एभिश कुछनाम वावू उपित रहेट नामिश विह्विति चामिट उट्हन, अमन मुमर्यु छनिट भारेरनन, रय হুণ সাহেব তাহার পিতাকে সামান্ত ভূতা জ্ঞানে ঘোড়ার লাগাম ধার্যা থাকিবার অক্ত আদেশ করিতেছেন। ভানিয়াই ক্লফদাস বাবু দৌড়িয়া আসিয়াই বলিলেন "ও মিষ্টার २१. উনি আমার ভক্তিভার্মন পিতৃদেব।" ইংচতে হগ সাংহেব অভিশয় লজ্জিত হইলেন। জ্ঞান প্রাপ্ত হইয়াও স্থীয় পিতাকে চিনিয়াও যিনি লোকভয়ে পৌতলিকতাচরণ কবেন, তিনি প্রথমোক্ত পুত্রের ভারে পিতৃত্যাগী ঈশরাব্যাননাকারী। কে পৃথিবীর লোক যাহাদের ভরে আমি ঈশরকে অসীকার করিব?

আগামী পৌত্তলিকউৎসবের সময় ব্রাক্ষমাত্রেরই এই সকল কথা দ্বরণ রাধা কর্ত্তব্য।

#### ভক্তি ও ভক্ত ৷#

শীমন্ত গবতকার ভক্তির এইরপ লক্ষণ নির্দেশ করিরাছেন;—
মদ্গুণ শ্রুতি মাত্রেণ মরি সর্বাগুহাশরে।
মনোগতি রবিছিলা যথা গঙ্গান্তসোহস্থানী
লক্ষণং ভক্তি যোগস্থা নিগুণিত হাুদাক হু
ক্ষাইহত্কাব্যবহিতা যা ভক্তিঃ পুরুষোত্রেম।

ভাঃ ৩য় কক্ষ।

আমি সর্কান্তর্বামী ও সর্ক শ্রেষ্ঠ। আমার গুণ শ্রবণ মাত্র সমুদ্রগামী গঙ্গাসলিলের ক্যায় আমাতে অবিচ্ছিল। ও ফলা মু-সন্ধান-রঞ্জি। এবং ভেদদর্শন-বর্জিতা মনের যে গতি হয়, ভাহাই নিগুণ ভক্তিযোগের লক্ষণ বলিয়া কথিত ইইয়াছে, ইহাই অহৈতৃকী ও অব্যবহিতা ভক্তি।

নারদ পঞ্চবাত্তে আছে ;—

ক্ষনক্ত মমতা বিষ্ণে) মমতা প্রেমসক্তা। ভক্তিরিভাচাতে ভীম প্রফ্লাদোদ্ধব নারদৈঃ॥

ভক্তি কি, তাহা বাকো প্রকাশ করিবার বিষয় নঙে, উপলব্ধিব বিষয়। সাধু-হাদয়ই ভক্তিবিকাশের ক্ষেত্র। সন্দ্রন্থানী গঙ্গাসলিলের স্থায় বাঁহাদের হাজবাবির সংস্পর্শে পাশার শুল্ল জীবনতরু মুল্লরিছ হয়, মৃতদেহে নবজীবন সঞ্চার হয়, যাঁহাদের সহবাসে আসিয়া ঘোরবিষয়ী, বিষয়-স্থ-লালসা পরিভাগে করিয়া প্রম স্থায়ের অংশয়ণে ধাবিত হয়, দংসার দয় অশান্তিময় জীবনে মধুবউৎস উৎসারিত হয়, সেই সকল প্রালোক মহায়াগণই ব্রিয়াছেন, ভাক্ত কি বস্তু। অক্সে কর্বিবে ? সন্থানবিহীন দম্পতি, সন্থান বাৎসলা কি মধুময় ভাবনে না, অবিবাহিতজন দাম্পত্য প্রেমের প্রিত্তমাদ করেপে গ্রহণ করিবে ?

আমেরিকায় যখন দাসম্ব প্রথা প্রচলিত ছিল, তথন দাসদিগের প্রতি ভয়য়র অত্যাচার হইত। দাসস্থানী, নাতা ও
পুল্রকে নগরে বিক্রের করিতে আনায়াছে। নাতাকে
একজন ক্রয় করিল, পুল্রকে অপরে ক্রয় করিয়া বহু দ্বে লইয়া
গোল। মাতা পুল্রে পরস্পার বিচ্ছিন্ন হইয়া অসহনীয় ক্রেশে
দিন যাপন করিতে লাগিল। তাহাদের সেই মানাসক
নিদারকণ কই, বর্ণনাতীত। ঘটনাক্রেমে দাসম্ব হইতে মুক্তিলাভ
করিয়া তাহারা মাতা পুল্রে যদি একত্ত হয়, তবে সেই অভূতপূর্ব্ব মিশনে কতই আনন্দের উদয় হয়। জননী অধীবা হইয়া
প্রেমভরে বারংবার সম্ভানের মুগ চ্ছন কবিতেছেন: সম্ভান
মাতার সেহকোড়ে মন্তক রাখিয়া আত্মহারা হইয়াছে।
উভয় দদয়ে যুগপৎ প্রেমের বভা প্রবাহিত হইতেছে। কবিয়
কর্মনায়ী তুলিকাও এই দ্বন্ধতিত্ব অক্ষনে অসমর্থ। ভগবৎ

\* ১লা সেপ্টেম্বর রবিধার ব্রাহ্মগশ্মিলনীর উৎসব উপশক্ষে ব্রহ্মশন্দিরে ব্রীযুক্ত কাশীচক্র ঘোষাল কর্তৃক গঠিত। প্রেমও এইরপ। যথন বছ জন্মরান, বছ তপস্থাও সাধন ভঙ্গনের পর ভগবানের সহিত উপাসকের সাক্ষাৎ হর, তথন উপাসকের প্রাণ আননেদ নৃত্য করিয়া উঠে। পাপাসক সন্থান অনেক ঘ্রিয়া ফিরিয়া, আনেক ছঃথ যন্ত্রণা ভোগ করিয়া, আনেক দিনের পর স্বগৃহে আগমন করিয়াছে, আনন্দময়ী জননী বাহু বিস্তার করিয়া ভাহাকে আলিজন করিভেছেন, সন্তানও চির অভিল্যিত বস্তু লাভ করিয়া আাম্বিস্তুত হইয়াছে। এই আনন্দোছ্যুস কে বর্ণন.করিতে পারেন ?

ভক্তনীবন, ঈশর সভোগময়। ভক্তনীবন তিলার্দ্ধ কালও ভগবানের বিচ্ছেদ-যন্ত্রণা সহু করিতে অসমর্থ। হরি একটু কাছ ছাড়া হইলেই প্রেমিক চৈতন্ত ক্রন্দন করিয়া উঠিতেন। বর্দ্ধণ রক্ষনীতে চৈতন্তের সহিত নিদ্রা যাইতেছেন। হঠাৎ তাহারা ক্রাপ্রত হইয়া দেখেন, চৈতন্তের শ্ব্যা শৃন্ত, উদ্বিশ্ব চিত্তে চহুদ্দিকে অন্বেষণ করিতে করিতে দেখিতে পাইলেন, অতিদ্রে বনমধ্যে গিয়া চৈতন্ত, প্রাণ-দেবতার উদ্দেশে ক্রন্দন করিতেছেন। কি প্রবল অম্বাগ! শিশু সন্তান, জননীকে একটু না দেখিতে পাইলে কাঁদিয়া আকুল হয়, ভক্তগণের অবস্থাও সেইর্ন্প। পরমেশ্বরের সহিত বাহাদের অক্রেদ প্রেম্বোগ স্থাপিত হইয়াছে, তাঁহারা ভিন্ন সেই অপূর্ব্ব ভক্তিরস-মুধা কেহ পান কবিতে পারে না।

যাহাদের প্রেম স্ত্রী পুত্র পরিবারে, সংসারে আবৃদ্ধ, তাহারা ভগবং প্রেমে বঞ্চিত। এবং যাহারা সেই অতুলনীয় স্বর্গীয় ঈশ্বর প্রেম লাভ করিয়াছেন, সংসার-প্রেমলাভ তাঁহাদের মুখ্য উদ্দেশ্য নহে। সেই জন্তুই প্রেমিক চৈতন্ত নিজ মুখে বলিয়াছেন;—

ন ধনং ন জনং ন হৃদ্রীং কবিতাং জগদীশ কাময়ে। মম জন্মনি জন্মনীশ্ববে ভবতুভক্তির হৈতৃকী হয়ি।

চৈতক্সচরিতামত।

হে জগদীশ, আমি ধন জন বা স্থানী স্ত্রী বা পাণ্ডিত্য এ সকল কিছুই প্রার্থনা করি না, আমার জন্ম জন্ম যেন তোমার প্রতি অবিচলিত ভক্তি থাকে।

ভক্তের আর কোনও আকাজ্ঞানাই, তিনি আর কিছুই চাহেন না, প্রাণস্থার দর্শন লাভ হইলেই তাঁহার সকল লাভ হয়। সে জন্তই তিনি নিয়ত লালায়িত। যাহার প্রাণের গতি অমৃতের দিকে তিনি পৃথিবীর অসার অকিঞ্চিৎকর বস্তুতে কি ভূলিয়া থাকিতে পারেন ? ভাঁমগতি স্রোভস্বতীর জ্ঞায় যাহার প্রাণ অনস্তের পানে ছুটিয়াছে, সংসারের কোনও বন্ধনই তাহাকে বাঁধিতে পারে না। বাস্তবিক এই রূপ অনন্ত-মুখী প্রবল অনুরাগ ভিন্ন কেহই ভগবানকে লাভ করিতে সমর্থ হয় না। মন সংসারের কোনও তিলমাত্র বস্তুতে আসক্ত থাকিলেও ঈশরের রাজ্যে, ভক্তির রাজ্যে কেহপ্রবেশ করিতে পারে না। শুক্ত জ্ঞানের সাহায্যেও ধর্মরাজ্যে প্রবেশের অধিকার নাই। ভক্তি ভিন্ন মুক্তি অসম্ভব। ভক্তি শাস্ত্র ভাগবত বলিতেছেন;—

শ্রের: স্থতিং ভক্তি মুদস্ত তে বিভো ক্লিপ্ততি যে কেবল বোধ লক্ষ্যে। তেবামসৌ ক্লেশন এব শিব্যতে নাস্তদ্ যথা স্থল তুবাবঘাতিনাং।

ভा: >•ম ऋक, >৪শ व्यशात्र।

হে ভগবন্, যে সকল সাধক সর্কমঙ্গলপ্রাণ ভক্তি পরিত্যাগ করিয়া কেবল শুক্ত জ্ঞান লাভার্থ ক্লেশ করে, তাহাদের ত্যাব-ঘাতী লোকদিগের স্থায় কিছু লাভ না হইয়া কেবল শ্রম মাত্রই সার হয়।

আর্যাথবিগণ উপনিষদ-শাস্ত্রে ব্রহ্মজ্ঞান বলিয়া যাহা বর্ণন করিয়াছেন, তাহা ভক্তিমর জ্ঞান। জ্ঞানবিহীন ভক্তি, ভক্তিই নহে। এবং ভক্তিবিহীন জ্ঞান ও প্রকৃত জ্ঞান নহে। যাহার। কেবল বুদ্ধিৰারা, আলোচনা ও শাস্ত্র পাঠ হারা ব্রহ্মতত্ত্ জানিতে ইচ্ছক, ভাগবতকার সেই শ্রেণীর লোকদিগকেট "তুষাবঘাতী" শুক জ্ঞানী বলিয়াছেন। জ্ঞান ও ভক্তি গুই অভিন্ন আকারে সাধকের গ্রুদরে বাস করে। জ্ঞান ও ভক্তিতে পার্থকা করা প্লকটিন। বৈষ্ণবগণ যাহাকে ভক্তি বলিয়াছেন. উপনিষদের ঋষি তাছাকেই ব্রহ্মজ্ঞান বলিয়াছেন। কেবল ভাষার ভিন্নতা, ভাবের ভিন্নতা নাই। এই জন্মই ভাগবত-कात्र, छान ও ভক্তি गाण्डत এकरे धाकात्र छेशात्र निर्फाण कति-য়াছেন। তিনি জ্ঞান লাভের উপায় বলিয়াছেন এই রূপ ;— "বাহ্যাভান্তর শৃন্ত, পরিপূর্ণ, অপরিচ্ছন্ন এবং নির্বিকার জ্ঞানই প্রমার্থ স্তা। সেই জ্ঞানের নাম ভগবং ।" ♦ 🔸 "এই প্রকার জ্ঞান মহাপুরুষদিগের পদধূলীর অভিষেক ছারাই অজিত হয়, নতুবা তপস্থাৰাবৈদিক কৰ্ম কিম্বা অন্তাদি সংবিভাগ অথবা গৃহস্থ ধর্মার্থ পরোপকার কিছা বেদাভ্যাস অথবা জল ও অগ্নি ও ক্র্য্যের উপাসনা কিছুতেই ইহা পাওয়া যার না।" ভা: ৫ম স্বন্ধু, রহুরাজগণের প্রতি জড় ভরতের छा (ना भर मंभ ।

ভক্তিলাভের উপায়ও ঐ রূপই বলিরাছেন। যথা ;—
"সাধুজনের সহিত প্রক্ত রূপে সঙ্গ হইলে হানর ও কর্ণের
স্থানারক আমার বীর্যাপ্রকাশক কথা উপন্থিত হইরা থাকে।
তৎসেবনেই শীঘ্র অপবর্গরত্বস্বরূপ শীহরিতে প্রথমতঃ শ্রদ্ধা,
তৎপরে রতি ও অবশেষে ভক্তি উৎপন্ন হইরা থাকে।
"ভাগবত তৃতীর হার।

উক্ত উভয় প্রণালীতে মূলগত কোনও বৈষম্য দেখা যায়
না। এবং ভক্তি ও জ্ঞানলাভের এই প্রণালী সম্পূর্ণ উপধর্ম
দোব বর্জিত। পৃতৃত্য পৃদা কর, কিখা কোরাণ, পুরাণকে
অত্রাক্ত বলিয়া শ্বীকার কর, অথবা ব্যক্তিবিশেষকে অত্রাক্ত বলিয়া শ্বীকার কর, অথবা ব্যক্তিবিশেষকে অত্রাক্ত গুরু
কিখা মধ্যবর্ত্তী রূপে আশ্রেম্ন করিয়া, তদমুসরণ কর, ভাহা
হইলেই ভক্তি কিখা জ্ঞানলাভ হইবে, তাঁহায়া এরূপ প্রাক্ত
উপদেশ প্রদান করেন নাই। তাঁহায়া য়্লবিছিলেন, ঋবির
মতই কথা বলিয়াছেন। তাঁহাদের ধর্মালোচনা এবং উপদেশাদি
শ্রুবণ কর, তবেই ঈশ্রম ভক্তির উদ্রেক হইবে। যুদ্ধ ব্যবসারীদিগের সংসর্গে থাকিলে, যুদ্ধবিষয়ে মন উত্তেজিত হয়, বৈজ্ঞানিকের নিকট বাস করিলে বিজ্ঞানামুশীলনে মতি যায়, ভক্তসক
লাভ করিলে ভক্তির উদ্রেক হইবে না কি ? বাত্তবিক সাধুসঙ্গ ভক্তিলাভের অতি উৎক্লই উপায়।

পূর্বকাবে ঋবিগণের পূণ্যময়আশ্রমে বাস করিয়া কত বিশাস্থীন ব্যক্তি ব্রক্ষান লাভ করিয়াছেন, কত নিরাশপ্রাণে আশাস্থারিত হইয়াছে। প্রেমপ্রবণহাদয় হৈতক্ত, নিত্যানন্দ শুভ্তির সঙ্গ লাভ করিয়া কত কঠোরহদয় সংসারাসকলোক হরিভক্তি লাভ করিয়া কতার্থ হইয়াছে। আতসী কাঁচে স্থ্যরিশ্মি পতিত হইলে যেমন অগ্নি প্রজ্বলিত হইয়া উঠে, তেমন ভক্তের সঙ্গ লাভ হইলেই মানবহদয়ের অস্তত্তল নিহিত ভক্তিবারি উথলিয়া উঠে। এজস্কই সাধুসহবাস প্রয়োজনীয়। একজন ভক্তের সঙ্গলাভ করিয়া অপর দশ জন লোক ভক্তিনান হয়। হৈতক্তপ্রমূথ বৈষ্ণবগণ, কঠোর শক্তি উপাসকময় বঙ্গদেশে প্রেমের স্রোভ প্রবাহিত করিয়াছেন, যুগান্তর আনয়ন করিয়াছেন। ভক্তিলাভের পক্ষে সাধুসঙ্গ মহা তীর্থ বর্মণ।

## অনস্ত উন্নতিপথে মুক্তি কোথায় ?

"মানবান্থা অনস্ত উন্নতিশীল''—এই মহাবাক্যের দার্শনিক বিচার বর্ত্তমান সমরে নিতাস্তই অনাবশুক। যাঁহারা আন্মার অন্তিত্ব স্বীকার করেন, তাঁহারা অনস্তউন্নতি স্বীকার না করিয়া গতান্তর দেখিতেছেন না। অনস্ত নবক্বাদিগণও নীবব এবং নিজভর। আন্মার বিনাশ যদি মান, তাহা হইলে উন্নতির একটা সামা নিদ্ধারণ করিলেও করিতে পার। আন্মা অমর বলিলেই অনন্তউন্নতি মানিতে তুমি বাধ্য। শাস্তের দোহাই দিবার দিন অবসান হইতে চলিয়াছে। স্থর্গেরবিহল ঐ দেখ অনস্ত মুক্ত আকাশে উভিয়াছে, অভ্রান্ত শক্ত্মরে কে আবদ্ধ করিবেন ?

আয়া যথন অনস্ত উন্নতিশীল, তথন তাহার কোন্ অবস্থাকে ।
মৃক্তি বলিব ?—অনস্ত জীবন পথের কোন স্থানে গিয়া উপস্থিত
হইলে—হে পথিক, তৃমি মৃক্তি লাভ করিয়াছ বলিয়া মনে
করিবে ? স্থাদশী শাস্ত্রবাদিগণ শাস্ত্রোক্ত কোন অস্প্রান বা
উদ্যাপন হইতে মৃক্তি গণনা করেন। জন্মান্তরবাদিগণ পূর্ব্ব
জন্মেরস্থতির উনয়কেই মুক্তাবস্থা মনে করেন। জেনেরাল
বুপের শিষাগণের সহিত সাক্ষাৎ হইলেই তাঁহারা এই প্রাপ্রটী
জিজ্ঞাসা করেন—"are you saved?" "তুমি কি মৃক্তি লাভ
করিয়াছ ?" ইহাদের মৃক্তি শব্দেব অর্থ "বীশুকে ঈশ্বর বলিয়া
শীকার করা।" এই সকল ধর্মসম্প্রাদায়ের গ্রন্থাদিতে মৃক্তি
শক্ষার একটা বিশেষ অর্থ আছে। কিন্তু ব্রাহ্বাগী
নির্দেশ করিবেন—ইহাই বিচার্যা বিষয়।

মৃক্তি শব্দের সাধারণ অর্থ পাপের বন্ধন হইতে মৃক্তি। এ
অর্থ ধরতে গোলে—ধর্মজীবনের সমস্ত পথেই মৃক্তি ছড়ান
রহিরাছে, কোন অবস্থা বিশেষ মৃক্তি নহে। ইহাই যদি মৃক্তির
অর্থ হয়, ডাহা হইলে একথা স্বীকার করিতেই হইবে, সকল
ধর্মেই এ মৃক্তিলাভ করা যায়, কারণ সকল ধর্মেই কডকটা
আাত্মার বিকাশের এবং উন্নতির সহায়ভা করিতেছে। "সকল
ধর্মেই মৃক্তি আছে" এই নিয়পেক্ষ উদায়ভার কথা—এই
সাধারণ অর্থে আময়া সম্পূণ্রপে সমর্থন করি।

কিন্তু মুক্তির একটা বিশেষ অর্থ আছে। ধর্মজীবনের মধাপথে, মরুভূমির ওরেদিদের স্থায়, বিষম পক্তবেষ্টিত স্থানে ত্মরন্দিত ছর্গের ক্রার, শিশুর পক্ষে মাতৃক্রোভের ক্রার একটা नितानम व्यवसा, এकी सूलत सान व्याह्य। देश मिर व्यवसा, বে অবস্থার উপস্থিত হইলে, পাপের সহিত সংগ্রাম থামিয়া যার, আত্মার পক্ষে কোনরূপে পাপচিস্তা করা এবং অমুষ্ঠান করা অসম্ভব হর, পতনের আশকা আর থাকে না। যে দিন পাপের সহিত সংগ্রামে জয়ী হইয়া আত্মা শান্তিলাভ করিবে, দেই শুভমুহুর্ত হইতে আমরা আয়ার মুক্তি গণনা করি। অনন্ত করুণাময় এবং শান্তিস্বরূপের রাজ্যে চিরসংগ্রাম কথনই সম্ভব নয়। প্রতিদিন সংগ্রাম ও শাস্তি পর্যায়ক্রমে আসি-তেছে, যাইতেছে। সাধক প্রতিদিনের অভিক্রভায় ব্ঝিতে পারেন,এই সংগ্রামে ক্রমণই পাপের হাস এবং শান্তি বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। প্রত্যেক সাধকই এই চিরস্থায়ী শাস্তির জন্ম লালায়িত। মুক্তির এ পারে উধান ও পতন,—ওপারে কেবলই উখান, পতন নাই। ইহা করনার অবস্থা নয়, সত্য অবস্থা।

এই মুক্তাবন্থা কোথার লাভ করা যায় ? সে কোন্ধর্ম, र्य धर्म्य এই मूक्ति व्यक्तान करत्र ? आशांत्र अनक्षेत्रेज्ञि नरक সঙ্গে ধর্ম্মের ও ক্রমোন্নতি সাধিত হইরাছে এবং হইতেছে। যে ধর্ম অভ্রান্ত শাল্ক এবং অভ্রান্তমহাপুরুষের ছারা শাসিত, গুরু এবং পুরোহিতেরা লগুড় হল্তে যে ধর্ম্মের উন্নতিকে বাধা দিয়া বিশতেছেন "Thus far shalt thou go and no further." দর্শন এবং বিজ্ঞানের উন্নতি যে ধর্ম গ্রাহ্য করে ना, व्यर्थाए (र धर्म व्यनस डिज्ञ डिनोन नरह, रिन धर्म এই মুক্তি প্রদান করিতে সমর্থ নহে। একদিকে কুসংস্বারাদি বন্ধন ছেদন অক্সদিকে জ্ঞান, প্রেম এবং ইচ্ছার সমভাবে বিকাশ ভিন্ন, এই मुक्ति कथनहै निक्ठेष हहैरव ना। मानवकीवरनत वाधीनजात উপর যেধর্ম প্রতিষ্ঠিত নয় সেধর্ম মুক্তির অন্তরায়। স্বতরাং বর্ত্তমান সময়ে যে একটা উৎকট উদারতাব কথা শুনিতেছি-"সকল ধর্ম্মেই মুক্তি আছে" ইহা অতীব অলৌকিক এবং হাস্তাম্পদ। অগতের শিশুকাল হইতে এ পর্যান্ত সমগ্র উর-তির উত্তরাধিকারী হইয়া অনস্ত উন্নতিশীল, সার্বভৌমিক, সনাতন ব্রাহ্মধর্ম অবতীর্ণ। আত্মার সর্বাঙ্গীণ উন্নতি অক্তত্ত্ব নাই। মুক্তিয়ান লাভ করিতে হইলে ব্রাহ্মধর্মকে আশ্রেষ কবিতেই হইবে। যথাসময়ে প্রভুপরমেশর জগতেব পরিতাণের জক্ত এই ধর্মের অভাদর করিয়া দিয়াছেন। জগডের সমতা নরনারীইহার আশ্রয় গ্রহণ করিয়ামুক্তিলাভ कत्रिद्व।

> আত্ম-চিন্তা। (প্রাপ্ত)

> > ۵

বিদ্ন কি ? কেন হর না ? পথে অশুরার কি ? দোষ ভ আনেকের উপর চাপাইলাম; আনেক অবস্থা, আনেক ব্যক্তি, আনেক নিয়মের দোষ দিয়া আপনাকে মুক্ত করিলাম। ভাবি-

স্ক্রীর দোষ ? এই "দেথ, এই স্ক্রী ভোমায় ছাড়িল-এখন হ্টক। কিন্তু তবু হইল না। অভিযোগও যায় না---আমার সংসার টাবড প্রতিকৃশ তাই হয় না। আমার সংসারের ধারার দিন কাটে—তাই আমার হয় না। অক্ত অভিযোগ, "সমাজের অব্তা ভাল হইতেছে না, প্রস্পরের মধ্যে মিল নাই।" (ইরূপে স্কল দোষ ভাগাভাগী কবিয়া অন্তের উপব দিয়া নিজে নিশ্চিপ্ত হইতেছি। বিধাতা কিন্তু ছাড়ি-टिंग्स्न ना—्तथ, प्रक्रन প্रक्रि वक्षक कारिया याहेटिङ्ह। বিধাতা বলিতেছেন — "দেখ, এই তোমাব সংসারেব ভার লইলাম, এই তোমার সমাজের প্রতিবন্ধক কাটিয়া দিলাম-- এথন ? অঙ্গুলি দিয়া দেথাইতেছেন—"নিয়ম তল্পে হয় না ? তবে দরবাবে এত গোল কেন্। একছত্তেব এত ছ'দিশা কেন্?'' নিদ্রিত প্রাণে চৈতক্ত হইল—ভাই ত। তবে কেন হয় না ? তথন আত্মদৃষ্টি ফুটল—নিজের দিকে দৃষ্টি পডিল, কাতর প্রাথন। সদয় হইতে উঠিল—"প্রভো, পণ দেখাও কেন হয় না। প্রভো কেন এ জীবনে ভোষার সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত হইতেছে না. কেন ভাহএ ভাইএ মিল হইতেছে না, কেন ভোমার ঘরে অশাস্তি গ বাঁহারা জগতে শান্তির থবর প্রচার করিবে বলিয়া দলবদ্ধ হই-ষাছে, সভা, প্রেম ও শাস্তির রাজা জগতে প্রতিটা করিবে विनिन्ना याँहाता अगरखत्र निक्र । यायमा क्रिएखर्ह, खाँहाता আৰুও যে শান্তির রাজা ১ইতে দূরে রহিল--প্রেম পরিবার যে তাহাদের মধ্যে আজেও প্রতিষ্ঠিত হইল না। প্রভো স্থেপ (मथा ७।"

याहि। आठिए हाड़ियाहि, शिखामा ठाटक के निहित्रा छै। हो-দিগকে ছাড়িয়াছি। ধনজনের মায়াও রাখি ন, তবে কেন इस मा, क्रेश्वर-८ श्रम (कन कीवान हाग्री क्यू मार क्रमग्र क्ट्रेंटिक উওর আসিল—-"এদকলই ছাডা সহজ্ব " এসকল ছাড়িলে হইবে না। মুথে "একমেবাদি তায়ং" "এফারুপাহিকেবলম্" বলিলে ২ বে না। হবস্ত "আমি" কে কি ছাড়িয়াছ ? অমুসন্ধান কর---দেখিতে পাহবে-বিল্ল কি ? বিল্ল " আমি।" বাহিরের সব ছাডা महक-- किन्दु निष्कृत हेष्ट्रा. कांठ, यान, शोत्रव, खार्थ, स्थ स्विधा পবিভাগে কাবয়া সমুদয় হৃদয়ের গহিত ঈশ্বরেব গৌরব, সভ্যের গৌরব চাওয়া কি সঞ্জ ? "হুরস্থ আমি ঈশ্বরের রাজ্য স্থাপনের বিল্ল। এই "আমি' ঈশ্বর ও মানুবাল্লার সন্মিলনের অন্ত-বার , এই আমি ভাইএ ভাইএ মিলনের পরম শক্ত। এই "আমি" নানা বেশে আগে। এই আনি প্রথমে দীনভাকে বিনাপ করে, আস্কের প্রতি শ্রদ্ধাহীন করে। নিজেব স্বেচ্ছাচারী ইচ্ছাকে principle 9 conscience বলে৷ ঈশরের বাজ্য স্থাপনের নামে নিজের মতের রাজা স্থাপন করিতে চায়। নিজের ইচ্ছা ও ক্লচিকে বিবেকবাণী বলিয়াধুঁয়াধরে। বাহিরের ভ্যাগ ভ সহজ। হঠৎে ভাবের উত্তেজনায় এক জনে লক্ষ টাকা দান

লাম, সঙ্গীরা তেমন করিয়া আমার দাহায্য করে না- সংদর্গ, পারে। কিন্তু ধর্ম জগতের ভাগে বড় কটিন। বিন্দু বিন্দু নিভান্তই সাধনের প্রতিকৃশ, তাই হুইতেছে না—সকল দোব করিয়া আপনাকে কাটিয়া ঈশবচরণে উপহার দিতে হয়। मन्नोत्मत उभन्न हाभाइनाम-नित्क मूक । विधाला वरनन- नित्कत हेव्हा नाह, क्रि नाह, मान नाह, व्यभमान नाह, লাভ নাই, ক্ষতি নাই---আছে ঈশ্বরের ইচ্ছা ও তাঁহার গৌরব। यनि ठातिकन ভाই আমার মাণার উপর দিয়া চলিয়া যায়, ঈশবের গৌরব বাডে, তবে নত ্হইয়া পড়িয়া থাকিব— এই ধার্মার কথা। কিন্তু ত্বন্ত "আ।মি" বুঝুক আর না বুসুক প্রতিবাদ করিবে, নিজের সত্যের ধুঁয়া ধবিবে। এই জন্মই বিশ্বাদী উমাদ কেষ্টীৰ্বলিয়াছিলেন "You rather follow the will of others than your own" বরং অক্সের ইচ্ছার অনুস্বণ কর—কিন্তুনিজের ইচ্ছায় চলিও না। ইহাব অর্থ এই, যে বিষয়ে তুমি ঈশ্ববের ইচ্ছা ও আদেশ অফুভব কর, সে বিষয়ে তোমার অন্ত পথ নাই। কিন্ধ যে কাৰ্যো তেমন কিছু বুঝ না, সেই কাষেই অভ্যেব ইচ্ছাব অধীন হওয়া তোমার মঙ্গণ। হায়, এই নীভিঅনুস্বণ কবিলে জীবনে দীনতা ভক্তি, বিশ্বাস কত বৃদ্ধিত ২ইড, ব্যক্তিগত ও সামাজিক জীবনে কত প্রেম ও শাস্তি আাস্ত। যাহারা "অংমি'' ছাডিয়া ছিলেন, উাহারাই বড। সাধুস্তীবন স্বর বর্ণেক প্রায়,--- স্থাপনাকে লুপু কবিয়া অক্সেব সঙ্গে মিলিয়া যায়। কিন্তু ভাষ বলিয়া তাঁহাদের অভিত্র থাকে না এমন নছে। স্বর যেমন বাঞ্নের নিয়ামক ও পরিচালক, সাধু कार्यमञ्ज्ञात्र नियासक अभिविद्याल ।

গ্ৰাহ্মসমান্তে কেন আসিলাম গ অক্ত লোককেই বা কেন এখানে আসিতে বলি ? কভগুলি বিশুদ্ধ মত আছে-এই कि कात्रगर जाएकता वक जियव मार्तिन मक्न नद्रनावीएक ভাই বোন এশিয়া স্বাকার কবেন। তাঁগ্ৰা স্ত্ৰীশিক্ষা ও স্ত্ৰী স্বাধীনভার পক্ষপাতী। বালা বিবাহ ও। হারা দেন না, বিধ্বা বিবাহ প্রচলনে তাঁহারা যত্নশাল। তাঁহারা আত্মার অবিনশ্বত্তে विधान करतन। এই विश्वक মত श्रुणिव आकर्षश्रदे कि व्यान-য়াছি প্ৰভাৱে কি এই জন্ত ভাকিব ? ইহা এক ভাল সমাজ--্যাহাবা নীতির পক্ষপাতী-এই সমাজে তাহাদের বাস করা স্বিধা—এই কি উদ্দেশ্ত ? যত চিন্তা করি, এই উত্তরে মন महर्थ दम ना-वरे बिखारम मासूम्रक छाकिए बान हैका हय ना ।

জীবনের চুট একটা অভাব – তাহানা মিটিংশ আর কিছু-তেই পরিতৃপ্তি পাওয়া যার না ১ম লেষ্টার একটু সভ্য প্রিচর পা 9 यो । २ य निष्य स्रोत्नित् পরিশাম সম্বন্ধে छ। न পরিফ ট र उग्रा

অনেকদিন এই প্রশ্ন উপস্থিত হইয়াছে—জীবনের ভিত্তি ফুদুট হইল নাকেন ? কিন্ধু অনেকবার এই বলিলা প্রবোধ দিয়াছি—মামুষ একদিনে "ঈশরকে জানিতে পারে না—অন 🕆 काम व्याभिया कानित्व, वास इहेरन कि इत्व १ डेब्राड অনস্তকাল ব্যাপিয়া।

"পরকাল সম্বন্ধে বিশেষ कि জানিকে 📍 এবিষরে বিশেষ করিতে পারে; কথবা কোন সুমহৎ কার্যো প্রবৃত্ত হইতে আজান এ পৃথিবীতে আর কি লাভ হইবে ? আত্মা অমের

লানিরা রাখ, সংকার্যাকর, সংগতি হইবে।" কডবার মনকে এই বলিরা প্রবোধ দিরাছি, কিছ মন যে এই প্রবোধে দির বাকে না, সকল ধর্মের কোলাহলের মধ্যে প্রাণ কাঁদিরা উঠে, জীবনের অভাব পূর্ণ হইল কৈ? বর্ধনই এই প্রশ্ন ভূলিতে চাই, বন্ধুগণ এই বলিরা প্রবোধ দেন "এত কান্ত কেন—সিদ্ধি লাভ একদিনের কার্যা নহে, অনস্ককাল ব্যাপিরা হইবে, কার্যা কর, অনস্ককাল ব্যাপী উরতি লাভ করিবে।"

বন্ধ্যণ থবর লন, আমি কয়টা সৎকার্য্য করিয়াছি, প্রাক্ষণাজে কয়জন লোক আনিয়াছি, প্রাক্ষণার্ম্বের পক্ষে কয়থানা বই লিথিয়াছি; কিন্তু কেহ থবর লন না—আমার জীবনের অভাব পূর্ণ হইল কি না। নিজকে নিজে কত তাড়না করি—কেন কাজ কর্ম হইল না, কেন সকলের ইচ্ছামত থাট না গ কিন্তু কতবার যে পাণ হইতে এই কথা আসে—কেন আসিয়াছিলে, সকলকে সন্তুষ্ট করিতে ? দল করিতে ? দল বাডাইতে ? এই জন্ম কি এত সংগ্রাম ? পিতামাতার প্রতি ভব্তিপরায়ণ হওয়া, তাঁহাদের সেবা ও আমুগতা ধর্মনীতি সংগত, বল কোন্ উচ্চনীতির জন্ম এই নীতিকে ভাঙ্গিলে? সংসারে এত সংগ্রাম আনিলে, বিচ্ছেদ ও কেল তাথ বাডাইলে কেবল কি একটা দলের জন্ম প এত যে অলান্তি উৎপন্ন করিলে, তাহার পরিবর্ত্তে কি পাইলে, পৃথিবীতে কি দিলে ? যাঁহাদিগকে কাঁদাইলে তাঁহাদিগের নিকট কি বলিতে পার, "দেখ দেখ এই বন্ধ পাইয়াছি—ইহা গ্রহণ কর তোমরাও স্থাই হইবে।"

অন্ধ অন্ধরণ ছগতির কারণ। বৃদ্ধ সভার অন্ধরেধে পিতামাতা স্ত্রীকে কেশ দিয়াছিলেন, অতএব আমিও দিব। মন! বল ত জীবনে সতাের আন্গতা কতটুক, বৃদ্ধের বৈরাগা কতটুক পাইয়াছ? মন, তােমার হিংসা বিদ্বেষ, স্বার্থপবতা, ইক্রিয়াসক্তি ত সব রহিয়াচে—ধাান, হােম, তপস্থার ত কোন লক্ষণ দেখি না—তবে বৃদ্ধেব সঙ্গে তুলনা করিতে লজ্জাহয় না? সতাের অন্ধরাধে,ধর্মের অন্ধরাধে পিতামাতাকে কেশ দিয়াছ, ধর্মের অন্ধরাধে কৈ ? তােমার ক্রোধ ত দমন হয় নাই, সাধন ভলনের ত কোন চিক্ত প্রকাশ পায় না, তবে কি ইহকাল পরকাল সকল নই করিবে ? মন, জাগ্রত হও—কেন আসিয়াছ তাহা ভাব।

প্রভাগ, আমি ত আসি নাই, তুমি আনিয়াছিলে। কিন্তু
ধরা দিলাম কৈ ? দল ভালিয়া যে দল বাঁধিতেছি। তোমাকে
পাইব, ভোমার অধীন হইব, সংকর করিয়াছিলাম, তাহা
হইল কোথার ? যাহা দারা সংগারের সকল বন্ধন কাটিল
ভাবিয়াছিলাম—এখন দেখি আন্তে আন্তে তাহাই গলার
কড়িত হইতেছে—সাড়া শব্দও ত করিতেহি না। আমার যে
ইহকাল, পরকাল সব নষ্ট হইল—আমার বাঁচাও—নৃতন
প্রার্থনা মুখে তুলিয়া দাও। "চাই দয়ালের নাম চাই, আর
অভ য়চরণ চাই—আমরা সামান্ত ধন দাহি চাই, অন্ত কিছু
নাহি চাই।"

ভবে এই "আমি" কে সরাইরা দিব। প্রভা, বুঝিয়াছি এই আমি সকল অনর্থের মূল। শেল্টার করি, আর ক্ষিটি করি, দ্রধায় করি, আর দেবসমাজ করি, এই "আমি" কে না ভাড়াইলে ভোনার ধর্ম প্রতিষ্ঠিত হইবে না। প্রভা তুমি এস, তুমি বস, তুমি জীবন। তুমি বদি "আমির" ভান পূর্ণ কর, ভবে আর ছংথ কি থাকে! প্রভা, তুমি জীবনের অধিপতি হইরা বস. সমাজপতি হইরা বস, শেল্টারপতি হইরা বস "একমেবাদিতীয়ন্" তুমি এক প্রভু, কর্ত্তা, নেতা। আমরা সকলে সরিয়া দাঁড়াই। অভ্যের উপর দোষ দিব না। ব্রাক্ষজীবনে তুমি বস, ব্রাক্ষসমাজে তুমি বস—আমরা আপ-নাকে ছাড়িয়া কেবল ভোমার গৌরব অমুসন্ধান করি।

#### প্রেরিত পত্র।

(পত্ৰপ্ৰেক্ষদিপের মতামতের জগু সম্পাদক দায়ী নহেন।) শ্ৰদ্ধাপদ শ্ৰীযুক্ত তত্ত্ব-কৌমুদী সম্পাদক মহাশয় সমীপেযুক্ত

মতাশয়.

ছারিক বাবুর কোন্ কোন্ কথায় আমার আপত্তি, ভাহা এখন প্রায়ন্ত উল্লেখ করি নাই শুনিয়া, সপ্তকাশু রামায়ণ পাঠান্তে সীতাদেবীৰ পরিচয় জিজ্ঞাসার কৌতৃক মনে পভিল। जिनि विमा। वृद्धि हविख मृनक अधिकांत्रक य मारमात्र विद्राधी ষনে করিতেছেন, এই ভ প্রথম ও প্রধান আপত্তি। তিনি বলিতেছেন যে, গুণমূলক অধিকার সৃষ্টি করিলেই উহা বংশমূলক করাও উচিত ; কারণ প্রাকৃতিক নিয়মে, গুণ বংশা-यूगामी, अबर जाहा इट्टलइ बाजिएक उपिक्ठ इट्टल- ध्र দ্বিতীয় আপত্তি। তিনি ব্লিয়াছিলেন যে, একজন মানুষ যাহা করিয়াছে, অপর একজনও ইচ্ছা করিলে তাহা করিতে পারে, এই আমার তৃতীয় আপত্তি। দ্বারিক বাবুর ব্যাখা। কৌশলে শেষ কথাটীর অর্থ পরে এই দাড়াইয়াছে যে, অফুকৃগ অবস্থায় কেছ কেছ মহাপুরুষ হইতে পারে। এই অর্থের সহিত আমার কোনও তর্ক নাই; কিন্তু ইহার সহিত সামা-বাদেবও বড় সম্পর্ক নাই। প্রথম ছটি কথার উত্তর আমি সাধ্যমত দিয়াছি, স্বতরাং তাহার পুনকল্লেথ নিষ্প্রোজন।

আমি বলিয়াছিলাম যে, সকল মামুধ সমান বা ইচ্ছা করিলে সমান হইতে পারে, তাহা সতাও নহে, সামাবাদের অর্থণ নহে। দ্বারিক বাবুও তাহা অস্বীকার করেন না; কিন্তু তিনি বলেন যে, মামুধে মামুধে যে প্রভেদ তাহা প্রকার ভেদমাত্র, তবে যে উৎকর্ষাপকর্ষ দৃষ্ট হয়, তাহা মমুধ্যস্ট কৃত্রিম অবস্থার ফল, সমদর্শী ঈশবের কার্য্য নহে। আমি সম্পূর্ণ স্বীকার করি নাই। দ্বারিক বাবু উল্লাসের সম্ভিত্ত বলিতেছেন, সম্পূর্ণ স্বীকার না করি, অংশতঃ স্বীকার করিলেই তাহার পক্ষ সমর্থিত হইল। কিন্তু তাহার পক্ষ কি পূমামুধে মামুধে যে ইন্তর বিশেষ দৃষ্ট হয়, তাহার কতক্টা অবস্থা বংশ সমাজের ফল হইলে বাকীটা কাহার কার্য্য প্রাকীটার জন্ম যদি ঈশব দায়ী হন, তাহা হইলেও ত তিনি সমদ্দী নহেন। তবে বোধ হয়, অল পরিমাণ বৈষম্য স্টের অপরায় দ্বারিক বাবু অমুগ্রহ পূর্মক উপেক্ষা করিতে প্রস্তুত্ত।

আমি আরও বলিয়াছিলাম যে সমগ্র প্রাণী জগতেই বৈষম্য দৃষ্ট হয়। জীব মাজেরই এমন কোন গুণ নাই, দেহের এমন কোন অংশ নাই, যাহাতে ভিন্নতা লক্ষিত হয় না। ইহা

यनि जेचेदतत ममनिजात विद्याधीं न। इत, छद्व मालूद्वत मध्य যে ইতক বিশেষ থাকে, তাহাই বা তাঁহার সমন্ত্রীভার বিরোধী হইবে কেন ? দৃষ্টান্ত স্বরূপ এক জ্বাতীয় ছইটা পক্ষীর মধ্যে যে পালকের ইতর বিশেষ, কিম্বা এক কাজীয় ছইটী পতক্ষের মধ্যে রঙ্গের ইতর বিশেষে, তাছাদের জীবন সংগ্রামে স্থবিধা অস্থবিধা হয় তাহার উল্লেথ ক্রিয়াছিলাম। উত্তরে দারিক বাবু বলিভেছেন যে, এপ্রকার ভিন্নতার কথা এই তিনি ন্তন ওনিলেন ও ইছার প্রমাণ চাহিয়াছেন। আমি তাঁহাকে ওয়ালেস্ প্রণীত Darwinism নামক গ্রন্থের ৩য়, ৪র্ও ৫ম অধ্যায়, বিশেষতঃ ৪র্থ অধ্যায়ের শেষ কথাগুলি পড়িতে অমুরোধ করি। আমার কথা তাঁহার নিকট নৃতন হইতে পারে, কিন্তু ইহা প্রাকৃতিক নির্বাচনের "ক থ।" প্রাকৃতিক নির্বাচনের মতটা যে সকলে মানেন না তাহা জানি। কিন্তু ভাহার মূল কথাটী যাহার নিকট নুতন লাগে, ভাহার সহিত বর্ত্তমান চিন্তা জগতের কিকপ সংস্পর্ণ বলিতে পারি না। विष्मय यिनि कथा कहिलाई मिन, कामए त्र्यन्मात विविज হয়, তাঁহার নিকট হইতে এরূপ কথা বিশ্বয়জনক।

দাবিক বাবু বাঙ্গ করিয়া বলিয়াছেন যে, আমার প্রবন্ধে ও পত্তে তাঁহার মনের অফ্ককাব ঘুচিল না। কিন্তু আমার কথায় তাহার অক্ককার ঘুচিবে, তাহা আশা করাও আমার পক্ষে হঃসাহসিকতা বটে। এ বিধয়ে এই আমার শেষ প্রো।

> বিনীত শ্রীদেবেক্সনাথ মুখোপাধ্যায়, চটুগ্রাম।

### ব্রাহ্মসমাজ।

মহাত্মা রামমোহন রায়ের মৃত্যুদিন উপলক্ষে উপাসনা—গত ২৭শে সেপ্টেম্বর মহান্মা রামমোহন রায়ের মৃত্যু দিন উপলক্ষে সাধনাশ্রমে বিশেষ উপাসনা হয়। নিমন্ত্রিত অনেক ভাই ভগিনী উপস্থিত হইয়া উপাসনায় যোগদান করিয়াছিলেন। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী উপাসনা করেন। উপদেশ অতি গভীর ও প্রাণম্পর্শী হইয়াছিল। উপদেশের হুইটি বিষয়ের স্থল মর্ম্ম উল্লিখিত হইতেছে।—"আজ আমরা মহাঝা রামমোহন রায়ের দেই উদারবিশ্বলনীন প্রেমের বিষয় চিন্তা করি। স্থানুর ইটালিবাসিগ্ স্বাধীনতার যুদ্ধে পরাঞ্চিত হটয়াছে, একথা मःवाष्ट्रपाव पार्ठ कतिया तामरमारून तात्र **मयााग** इहेरनन; স্পেনদেশীয়গণ স্বদেশে সাধারণ তম্ম প্রতিষ্ঠা করিতে সম্থ श्रीराह छनिया जिनि जानत्म ठेजिन श्रम (छाम पिर्णन ; हेश्यख याजाकात्म ममु मस्य कत्रामी तमीत्र बाहात्व माधात्र তত্ত্বের বিজয়-বৈজয়ঞ্জি দেখিয়া ভাহাকে সমান করিবার कछ काशात्मव कथा मा छनिवाछ त्महे व्यर्वयात्म श्रात्मन. এবং তিনি তাহাতে পদে এরণ গুল্লতর আঘাত পাইরা-हिल्म (य, हे:नाथ (थांफ़ा इरेबा छेनिहरू इरेल्म। এरेब्रन,

সকল দেশের প্রতি; সকল মানবের প্রতি তাঁহার কি গভীর বিশ্ব-জনীন প্রেম ছিল, তাহা স্মামাদের ধারণা করাও কঠিন "

"মহাত্মা রামমোহন রায় ১৬ বৎসর বন্ধসে গৃহ হইতে বহির্গত হইরা সন্নাসীদিগের সঙ্গে সঙ্গে নানা স্থান পর্যাটন করেন। এই সমর তিনি তিব্বৎদেশে তিন বৎসর কাল অবস্থিতি করেন। তিনি ভারতের নানা শ্রেণীর সাধকগণের সাধন পছা দেখিরা এই সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছিলেন যে, "ঈশবের প্রিক্ষার্য্য সাধন ও তাঁহাকে শ্রীতি করাই তাঁহার উপাদনা।" এই প্রণালীই শ্রেষ্ঠ। এই ইতে তিনি লোকহিতকর ব্রতে প্রাণ মন অর্পণ করিলেন। আমরাও যেন তাঁহার এই দৃষ্টান্তের অমুসরণ করি।"

উপাদনাত্তে শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত মহাশয়ও অবতি উপাদেয় ছ একটি কথা বলেন। অদ্যকার অষ্ঠান আতি মধুময় হইয়াছিল।

রামমোহন রায়ের স্মরণার্থসভা—উক্ত দিবস অপরাহ্ন ৫ই ঘটিকার সময় এই সভার অধিবেশন হয়। অভ্যস্ত বৃষ্টিপাত
হইলেও সিটীকলেজের বিস্তৃত হল লোকে পরিপূণ হইরা
গিরাছিল। অনেকে স্থান না পাইয়া ফিরিয়া গিরাছেলেন।
মাননার বিচারপতি ডাঃ গুরুলাস বন্দোপোধাায় মহাশর
সভাপতিব আসন গ্রহণ করেন। বাগ্মীপ্রবর শ্রীযুক্ত বাবু কালাচরণ বন্দ্যোপাধাার অধিময় ভাষাতে রামমোহন রায়ের
গুণাবলী ব্যাথা করেন। তাঁহার বক্তৃতায় সভাস্তলে এক
বৈত্যতিক শক্তি সকলের হৃদরে সঞ্চারিত হইয়াছেল। এতভিন্ন
পাওত শিবনাথ শাল্পী বাঙ্গালাতে এবং শ্রীযুক্ত বাবু চিন্তর এন
দাস ব্যারিষ্টার ইংরাজিতে বক্তৃতা করেন। শ্রীযুক্ত বাবু
কিতীক্রনাথ ঠাকুর বাঙ্গলা প্রবন্ধপাঠ করেন।

তুর্ভিক্ষসংবাদ—বাবু হরিমোহন ঘোষাল সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের পক্ষ হইতে মাদরা নামক স্থানে নির্মাতক্রপে চাউল বিতরণ করিতেছেন। অগামী ধান্তের ফলল না উঠা পর্যন্ত সাহায্য দিতে হইবে। যাহারা ক্ষার্ত্তিদিগের প্রতি দয়া করিয়া অর্থ সাহায্য প্রেরণ করিতেছেন, তাঁহাদিগকে আমরা অন্তরের সাহত ধন্তবাদ প্রদান কারতেছি। তাঁহাদের দের সাহায্য স্থানত্তবে স্থাক্ত হইতেছে। একটি সাধুদুপ্রতি দেখিয়া আমরা পরমপুলকিত হইরাছি, তাহা বিশেষভাবে উল্লেখ যোগ্য। আসাম মনাই চা বাগানের কর্মাচারিগণ টাদা সংগ্রহ করিয়া কিছু টাকা পাঠাইলে, সেই বাগানের প্রমন্ত্রীবিগণ ইংগ জানিতে পারিয়া নিজেদের মধ্য হইতে সংগ্রহ করিয়া ১০টি টাকা পাঠাইরাছেন। এই প্রমন্ত্রীবি প্রাত্তাগণের সন্ত্রদর্ক্তা এবং পরেয়াপকার প্রবৃদ্ধি অনেকেরই অনুকরণীয়। আমরা তাঁহাদের নিক্ট কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিতেছি!

শ্রাজ — শ্রীযুক্ত বাবু রাজকুমার সেনের পরলোকগতা পরী বরদাহানারী সেনের আদ্যশ্রাদ্ধ সাধনাশ্রমে সম্পন্ন হইরাছে। পণ্ডিত শিবনাথ শাল্রী এবং শ্রীযুক্ত নববীপচক্ত দাস মহাশ্রগণ উপাসনাদির কার্যা করেন। এতত্বপদকে রাজকুমার বাব্ সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে ও সাধনাশ্রমে একটি স্বর্ণমূতা (ভাহার মূলা ২৮।২৯ টাকা) দাম করিয়াছেন।

গত ২৯শে সেপ্টেম্বর সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ-মন্দিরে প্রলোক-গত বাবু মোহিনীমোহন মজুম্দারের আদ্য প্রাদ্ধ সম্পন্ন হাই-য়াছে। শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাল্রী আচার্য্যের কার্য্য করেন। শ্রীযুক্ত কেদারনাথ রার ও শ্রীযুক্ত ফণীক্রমোহন বহু মোহিনী বাবুর জীবনী সম্বন্ধে কিছু কিছু বলেন। প্রমেশ্বর প্রলোকগত আ্যান্দিগকে শাস্তি দান করুন।

বিবাহ—গত ২রা আখিন ঢাকা নগরীতে পরলোকগত বাবু গোপীমোহন ঘোষের গৃহে একটি ব্রাহ্ম-বিবাহ সম্পন্ন হইয়াছে। পাত্রী শ্রীমতী বিনোদ্দী ঘোষ, পাত্র শ্রীমান প্যারীকান্ত মিত্র। শ্রীযুক্ত বাবু নবহীপচক্র দাস আচার্য্যের কার্যা করিয়াছিলেন।

গত ২ই আখিন মেদিনীপুর নগরে শ্রীমান প্যারীলাল পোরর সহিত শ্রীযুক্ত বাবু অভয়চরণ বস্থর তৃতীয়া কল্পা শ্রীমতী ক্ষীরোদ কুমারীর শুভ বিবাহ সম্পন্ন হইয়াছে। এই বিবাহ উপলক্ষে শ্রীযুক্ত বাবু নগেক্সনাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশয় সেধানে গমন কবিয়া আচার্যোর কার্য্য করিয়াছেন। উভয় বিবাহই ৩ আইন অফুসারে রেজেইরী হইয়াছে। প্রমেশ্বর নবদম্পতিদিগকে আশীর্কাদ কর্মন।

চুঁচুড়াতে রবিবাসরীয় বিদ্যালয় স্থাপন— প্রীযুক্ত বাব্ কুঞ্বিহাবী সেন চুঁচ্ডা বাস কবিতেছেন। তিনি সম্প্রতি করেকটি বালক বালিকা লইয়া রবিবাসরীয় বিদ্যালয় স্থাপন করিয়াছেন। প্রমেশ্ব সাধু কার্যোর সহায় হউন।

বানিবনে ত্রাক্ষ-পর্ল্লা---বানিবনেব ত্রাক্ষপল্লীর বৃত্তান্ত ইতিপূর্বের তর-কৌমুদীতে প্রকাশিত হইরাছে। বাবুহারাণচন্দ্র রার স্বারী রূপে বাস করিবার জন্ম তথার বাড়ী নির্মাণ করিয়া-ছেন। সেই বাড়ীতে সম্প্রতি অপুণ্য ২০০টী ত্রাহ্মপরিবারও বাস করিতেছেন। বাবু উমাপদ রায় এবং বাবু তাবকগোপাল ঘোষ কৃষিকাথ্যের জন্ম জনি ক্রেয় করিয়াছেন এবং ক্রমশঃ আরও ক্রয় করিবেন। ধনবান ভদ্র লোকের অভাব এবং অন্যান্ত কারণে বানিবনে নাখেরাজ ও জমিদারীর অন্তর্গত জোতস্বত্ব অতি কম মূল্যে বিক্রের হইরাথাকে। হারাণু বাবুর বাড়ী, থালের ধারে অতি श्वविधाकनक जात्न श्रहेशास्त्र । উनुविक्षिया श्रहेट तोकारक অনারাদে গমন করা যায়। পরমোৎসাহী বাবু এককড়ি সিংছের যত্নেই এই পল্লীস্থাপিত হইতেছে। বানিবনের মাইনর কুল স্থানর রূপে চলিতেছে। স্থানর হেডমান্টার আগ্রধর্মাবলখী। এককড়ি বাবু ফুলের জন্ত নিজে অনেক অর্থ ব্যয় করিতেছেন। তিনি গরিব হটলেও সাধু কার্যো অর্থ বায় করিতে অনেক ধনবান অপেকা মুক্ত হত। আমরা উছিকে আত্তরিক थक्षवान धानान क्षिर्डि ।

নামক্রুকু গত ১৭ই সেপ্টেম্বর কলিকাভার বাবু তৈলোকানাথ ধাঁবের কভার নামকরণ হইরাছে। শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র লন্ত মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করেন। কভার নাম প্রাক্রবালা রাধা হইরাছে। এই উপলক্ষে তৈলোক্য বাবু সাঃ বাঃ সমাজে ১ টাকা দান করিয়াছেন।

পূর্ববাঙ্গালা আক্ষদন্মিলনী—আক্ষদিলনীর সম্পাদক জীযুক রাবু শশিভূষণ দত্ত লিথিয়াছেন;—

"পূর্ববাদালা ত্রাফ্রদ্দ্রিগনীর আগামী অধিবেশন ঢাকা নগরে ২৬শে আখিন আরম্ভ হইবে। ঐ তারিখে প্রারম্ভিক অধিবেশন ও ২৭শে এবং ২৮শে মূল অধিবেশন হইবে। ত্রাক্ষ-বন্ধুগণ উপস্থিত হইয়া আলোচনার সহারতা করেন, ইহা একাস্ত প্রার্থনীয়।

व्यालाहा विषय-

- ু। ব্ৰাহ্মবিবাহ আইন বিষয়ক পাণ্ডুলিপি।
- २। क्षात्रिक नामानिक উপাদনাপ্রণালী।
- ত। বিবিধ।

তুর্ভিক্ষের দানপ্রাপ্তি স্বাকার-পূর্বপ্রকাশিতের পর। আমরা কৃতজ্ঞতার সৃহিত স্বীকার করিতেছি যে, নিয়লিধিত ব্যক্তিগণ ফরিদপুরের ভূজিন্তপীডিত লোকদিগের সাহায্যার্থে নিয়লিপিত অর্থ প্রেরণ করিয়াছেন। বাবু নিবারণচক্র দাস পটুয়াথালী স্থূল হইতে সংগ্রহ করেন ১৩০ বাবু বিশেশর করুক নেলফামারি হইতে সংগ্রহ ১৫॥ • সিটিকলেজের ২য় বার্ষিক শ্রেণীর ছাত্রগণ ১০১ বাবু এস, সি কয়াল-মনিয়া ১১ বাবুপূৰ্ণচক্ৰ দত্ত কলিকাতা 🔍 বিপিন বিহানী মিত্ৰ 🏖 🔍 कानकी शमाम (म खे ১ हिन्रवहत्त वस खे ১ व्याव्हन হামিদ বা শিয়ালদহ ২ সেথ আমাবছল গণি ঐ ১ সেথ আবহুল মঞ্জিদ ঐ ১১ বাবু শরৎচন্দ্র দত্ত কলিকাতা ॥ চণ্ডীচরণ ঘোষ ঐ॥॰ কৃষ্ণলাল দে ঐ॥॰ অক্ষরচক্র ঘোষাল ঐ।৽ যোগেক্রনাথ পাল ঐা- অক্যুকুমার ভট্টাচার্যা ঐ • অমুতলাল মিত্র ঐ • বিনোদ বিহারী বস্থ ঐ :০ পরেশনাথ ঘোষ ঐ :০ কালীকান্ত ও দীনবন্ধ ঐ।• অধরচন্দ্র বস্থ ঐ।• হরেন্দ্র চন্দ্র মাল্লক ঐ।• স্থরেন্দ্র নাথ বন্যোপাধ্যায় ৷ শ্রীমতী শরৎকুমাবী মিত্র মাণিকতলা ১১ বাবু मननस्माहन वञ्च कलिकला ১ , উমাকান্ত দাস ঐ : , औ्रको निन्ती वाला वक् खे २ माः बाः मभाष्ट्रव द्रविवामवीव विमालव ১৮০/ • বাবু বজনীনাথ দত্ত বাগেরহাট হইতে পাঠান ২ ব্রীমতী সৈয়দপুর হইতে সংগ্রহ ২০ ে০ বাবু রামনাথ বিশ্বাস সম্পাদক বাগুটিয়া নম:শুদ্র হিতসাধিনী সভা ১১ বাবু বেণীমাধব পাল ২১ জেনাবেল এসেম্বির :ম বার্ষিক শ্রেণীর ছাত্রগণ ৩ • বাবু শ্রীধর চট্টোপাধাায় কর্তৃক ময়মনসিং ঝাওয়াইল হইতে সংগৃহীত ১٠ वाव् टिकटनाकानाथ ठक्तवर्शी करेक ८ डेमम्बताम मान মিদাং আমিতা সরলাজ্নরী দাস ঐ ২ বাবু কালীপ্রসর সেন এল, এম্, এম দাৰ্জিলিং ৩১ একজন ভদ্ৰবোক /• বাবু চন্দ্ৰনাথ চট্টোপাধায় কর্তৃক গয়া ইইতে সংগৃহীত ৭২া• অধরচন্দ্র মজুমদার কলিকাতা ১১ নবীনচন্দ্র সিংহ উকিল কর্ত্তক সংগৃহীত বাগেরহাট ৮১ শ্রীমতী বিহালতা মিত্র ৫১ करेनक ছाळा उक्त वानिका हाळिनवाम > वाव ठळनाव छोधूती বরাহনগর ১১ খ্রীমভী চারুমভা দেবা পুরুনঅপড়া১ বাবু মহেশু ठक (चाष कर्कुक मध्यक् तामश्रवहाउँ २<sub>९</sub> मून्त्री हेमाक्षिन नाहिर्द কর্তৃক সংগৃহীত কলিকাতা>০১ মনাই আগাম চা বাগানের কর্ম-চারীগণ্২১১ বাবু অভয়চরণ মজুমদার কর্তৃক সংগৃহীত কলিকাজা ১১৯ পূर्वनारतत मरपूरीज व्यवमह त्यां विकास १०००।

পত্র প্রের্কদিগের প্রতি—বাঁকুড় ইতি প্রধাশন বার্ম্ম বন্ধু শ্রীযুক্ত বার্ কেদার নাথ কুলভি মহাশইলি থিয়াছেন; — "আক্রলাল সার্ক্রভৌমিক ধর্ম, বিশ্বন্ধনীন প্রেম কথাগুলির বেশী প্রান্তর্ভাব দেখা যায়; কিন্তু ইহার তলে তলে কোন না কোনও সম্প্রদায় বা দলের প্রতি অপ্রেম বা তদপেক্ষায় ও দ্বণীয় ভাব,—বিদ্বের্দ্ধি লুকাইত বহিয়াছে।" দৃষ্টান্ত শ্বন্ধ নামক" পত্রিকার উল্লেখ কবা যাইতে পাবে। জৈছি ও আয়াঢ় মাসের পত্রিকার উল্লেখ কবা যাইতে পাবে। জৈছি ও আয়াঢ় মাসের পত্রিকার এক স্থানে লিখিত চইয়াছে যে, "বাহারা হিন্দুধর্ম্মের মর্ম্ম ব্ঝিবন, তাহারা কেন আন্ধ থাকিবেন গু" আমি বলি, বাহারা হিন্দুধর্মের মর্ম্ম ব্ঝিবেন, তাহারা ভিতর, অনাচারের ভিতর কথনই থাকিতে পাবেন না।"

"ব্রাক্ষেবা জাতিভেদ মানে না, স্ত্রীশিক্ষা ও স্বাধীনতার পক্ষ সমথন করে, মৃত্তিকা বা পাষাণনির্দ্মিত দেবতা করন। কবে না। এই সকল যদি অহিন্দ্যানী হয়, তবে তুমি তোমার হিন্দ্যানী লইয়া সুধে থাক, ব্রাক্ষেরা তাহার বাহিবে, এবং সে জন্ম তুমি তাহাদের প্রতি কটাক্ষ করিবার স্থবিধা পাইলেই ছ চার কথা বলিতে পার, সে জন্ম ব্রাক্ষেরা ছঃধিত হইবেন না।"

পত্রথানি "কর" পত্রিকার সম্বন্ধে লিশিত, স্থাতরাং কর পত্রিকাতে প্রকাশিত হইলেই ভাল হইত। এজভাই আমর। কেবল সার্মর্ম প্রদান করিলাম।

#### ছভিক্ষ ফণ্ডের সাহায্য প্রার্থনা।

গত ফাল্পন মাস হইতে ফরিদপুরের অস্ত:পাতী কোটালি-পাড় প্রভৃতি স্থানে অতান্ত অন্নকষ্ট উপস্থিত হইয়াছে। এই সংবাদ পাইয়া সাধারণ ত্রাক্ষসমাজের কার্য।নির্বাহকসভা শ্রীযুক্ত বাবু কাশীচক্র ঘোষালকে তথায় প্রেরণ করিয়াছিলেন। তিনি রাধাগঞ্জ নামক স্থানে অবস্থিতি করিয়া অতি যত্নের সহিত তুর্ভিক্ষ-পীড়িত ব্যক্তিদিগের সাহাধ্য করিয়াছিলেন। ভৎপরে শারীবিক অসুস্থতা বশতঃ তিনি তথা হইতে চলিয়া আসিয়াছেন। কিন্তু এখন পর্যান্তও ঐ সকল স্থানের অন্নকষ্ট দূর হয় নাই, বরং বৃদ্ধি পাইয়াছে। আগোমী অভাহায়ণ মাস পর্যান্ত এরূপ কষ্ট থাকিবে। স্থতরাং কার্যানির্বাহক সভা পুনর্কার শ্রীযুক্ত বাবু হরিমোহন ঘোষালকে ঐ অঞ্চলে প্রেরণ কবিয়াছেন। হরিমোহন বাবু তথাকার অবস্থা দশন করিয়া যে পত্র লিখিতেছেন, সেই সকল পত্র পাঠ করিলে নিতান্ত পাষাণ ক্ষরও বিগলিত হইয়া যায়। অন্নাভাবে লোকের শরীর জীণ नार्व इहेग्राइ, पतिशास वसु नाहे, घरत्र जाल थड़ नाहे, धहे ভয়ানক বর্ষার জলধারা ভাহাদিগের মস্তকের উপর দিয়া বহিয়া যাইতেছে, মামুষের ইহা হইতে আর ছুদশা কি হইতে পারে ? এট জন্ত আমরা সর্ব সাধারণের নিকট বিনীভভাবে অর্থ माशाया প्रार्थना कतिएकि। यपि मकल व्याशास क्रिष्टे खाला ভগিনীদিগের তংখের কথা একবার চিন্ত। করেন, এবং স্বীয় স্বীয় ক্ষমতা অনুসাবে কিছু কিছু অর্থ সাহায্য করেন, তাহা হইলে অনেক পরিমাণে ইহাদিগের ত্র:খ মোচন হইতে পারে। অমুগ্রহ পুরাক সকলে নিম্ন স্বাক্ষরকারীর নিকট সাহায্য পাঠাইলৈ আন্তরিক ফুডজ্ঞতার স্হিত গৃহীত হইবে। আমা-নিগের মিকট টাকা আদিলে আমবা ছডিক্স-পীড়িত স্থানে পাঠাইয়া দিব এবং যাহাতে ছভিক্ষ ফণ্ডের টাকা কোনও রূপে व्यवनाय ना इत रम विषय विषय पृष्टि दाश्वित।

নিবেদক

শীরজনীনাথ রার, সম্পাদক।

শীগুরুচরণ মহলানবিশ, ধনাধাক
সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ , ২১১নং কণগুয়ালিস্ দ্বীগু, কলিকাতা।

#### ব্রহাবিদ্যালয়ের বার্ষিক পরীক্ষা।

নিয়লিখিত প্রণালী অনুসারে সাধারণ ব্রাক্ষসমাক্ষের অধীনত্ব
ব্রক্ষবিদ্যালয়ের বর্ত্তমান বর্ষেব পরীক্ষা গৃহীত হইবে।
পরীক্ষার্থিগণকে আগামী তরা নবেত্বর বা তৎপূর্ক্ষে সম্পাদকের
নিকট আবেদন করিতে হইবে। প্রত্যেক আবেদন পরে
পরীক্ষার্থীর নাম, বয়স, ঠিকানা, বাবসায়, (ছাত্র বা ছাত্রী
হইলে কলেজ বা স্কুল ও শ্রেণীর নাম), ধর্মমত এবং অভিভাবকের নামের উল্লেখ এবং তৎসঙ্গে কোন স্থপবিচিত ব্রাক্ষেব
লিখিত প্রশংসাপত্র থাকা আবশুক। মফল্মলবাসী পরীক্ষার্থিগণ
আপন আপন স্থানে কোন স্থপরিচিত স্থানীয় ব্রাক্ষের
তত্ত্বাবধানে পরীক্ষা দিতে পাবিবেন। অত্ত্য পরীক্ষার্থিগণের
পরীক্ষা উপাসনা-মন্দিরে গৃহীত হইবে।

#### পরীক্ষার প্রণালী।

>•ই নবেশ্বর, শনিবার, অপরাহ্ন ৩টা হইতে ৬টা। বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়-প্রণীত ধর্মজিজ্ঞাসা' প্রথম-ভাগ ও আদিব্রাহ্মসমাজ-প্রকাশিত 'ব্রাহ্মধর্মের মত ও বিখাস'।

১১ই নবেম্বর, রবিবার, অপরাহ্ন ২টা হইতে ৫টা।

[The New Testament in English].

১৭ই নবেম্বর, শনিবার, অপারাহ্ণ ৩টা হইতে ৬টা।
'ভগবদ্দীতা,' মূলসংস্কৃত। উত্তর বাঙ্গালা বা ইংরেঞ্জিতে দেওয়া যাইতে পারিবে।

১৮ই নবেম্বর, পূর্বাহ্ন ১১টা হইতে অপরাহ্ন ২টা।

Principal Caird's Introduction to the Philosophy of Religion.

অপরাক্-২-ইটা হইতে ৫-ইটা। বাবু সীতানাথ দত্ত-প্রণীত 'ব্ৰহ্মজিজ্ঞাসা'ও বাবু নগেক্সনাথ চট্টোপাধ্যায়-প্রণীত 'ধর্ম-জিজ্ঞাসা' দিতীয়ভাগ।

পরীক্ষাধিগণ উপরোক্ত কোর্স সমূহের কোন একটা বা একাধিক কোর্সে পরীক্ষা দিতে পারেন। উত্তীণ ছাত্র ও ছাত্রীগণকে মাঘোৎসবের সময় পুরস্কার প্রদত্ত হয়। বিশেষ কথা সম্পাদকের নিকট জ্ঞাতব্য।

২১০।তা২, কর্ণ ওয়ালিস্ খ্রীট, কলিকান্ডা ২৬এ সেপ্টেম্বর, ১৮৯৪। শ্রীসীতানাথ দত্ত, বন্ধবিদ্যালয় সম্পাদক।

#### বিজ্ঞাপন।

আগামী এই অক্টোবর গুক্রবার অপরাক এই ঘটকার সময় কলিকাতা সাধারণ আক্ষসমাজ উপাসনামন্দিরে অধ্যক্ষ সভার ৩য় তৈমাসিক অধিবেশন হইবে।

#### कार्याविषय् ।

>। কার্যানির্বাহক সভার ৩র ত্রৈমাসিক রিপোট এবং আয় ব্যয়ের হিসাব।

২। বিবিধ---

সা: ব্ৰা: সমাৰ কলিকাভা त्रक्नीनाथ तात्र।

সম্পাদক সাঃ ব্রাঃ সমাজ



## ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিক।।

১৩শ সংখা। . ১৭শ ভাগ।

১লা কার্ত্তিক বুধবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক অগ্রিম মৃ্ল্য ২॥• মফস্বলে ৩১ প্রতি খণ্ডের মূল্য 🗸 •

তোমাতেই মুদ্ধ হয়ে বাকি অমুক্ষণ।

हिमानाय (वशवजी निसंतिनी यज, বাধা বিদ্ন অতিক্রম করি অবিরত, ঁ আকুল অধীর মনে মহাসিদ্ধ দরশনে ছুটিয়াছে তুলি কন্ত ভরন্ধ-উঞ্চাস। নির্থিয়া তাশাদেব আনন-উল্লাস ,— কৃদ্ৰতম নিৰ্মবিণী অতি ক্ষীণ কায়, ষ্মনস্ত সাগর পানে ছুটে বেভে চার। কিন্তু হায়। পথে ভার প্রস্তাকার; একটু চলিয়া আব চলিতে না পানে। ছে পিতা। তেমনি যে গো আমিও সংসাবে,--করিলাম দর্শন সাধু ভক্ত অগণন কি এক ভাবেতে ষেন হয়ে মাভোয়াখা কি এক আনন্দে যেন হযে আত্ম-হাবা, চলেছেন ভোমাপানে; ভোমায় হেরিলে, প্রাণে না জানি কি পাইবেন শান্তি অমুপম। ধন্ত হবে ধরণীতে মানব জনম। তাই যে গো কুদ্ৰ আমি, কচ কি আশায়, চলেছিমু তোমাপ্লানে, এখন যে হায়! বাধা বিদ্ন শত শত, প্রস্তার স্থার মত, माजाल मञ्जूर्य এरम गांभ-विभू-मल। আমার যে নাহি কোন সাধনেব বল।

নাহি পারি একপদ্ধ হতে অগ্রসব।

নিজ হর্মলতা অবি কতবাব মনে করি,

ফিরে ঘাই পূর্মিস্থানে; তাহাতেও প্রাণ,

মর্ম্মান্তিক হ:বে যেন হয় ভ্রিয়মাণ!
ভূনিরাছি যে হর্মল অভি অসহায়,
অথ্যত সরল প্রাণে তোমাবেই চায়,
ভূমি না কি দলা করে তাব হটি করে ধরে
কাছে ডেকে লও পিতা! আমি আজ তাই,

नकाजरत्र ७ हत्रत्य करे जिला हारे,-

তাই ত গো করি কত চেপ্তা নিরন্তর,

ব্যাকৃল হৃদয় মোর যেতে তব কাছে,
বাধা বিদ্ন সন্মুখেতে বাহা কিছু আছে,
দাও তাহা দ্র করি, আকুল এ প্রাণ ভরি,
নির্থি ভোমার প্রেম-মুধ অতুলন,
ভোমাতেই মুগ্ধ হরে পাকি অনুক্রণ।

### সম্পাদকীয় মন্তব্য।

প্রেম সাধন—''প্রীতি প্রম্যাধনং'' ব্রাহ্মসমাকে এ
কথা বছল প্রচারিত। কচ্চু সাধন, বৈবাগাসাধন প্রকৃত পক্ষে
সাধনেব লক্ষা হইতে পারে না। সাধনের লক্ষা ভগবৎ-প্রেম,
সেই প্রেম্যাধনের ফলে বৈরাগা ও সংসারে অনাসক্তি স্বতঃই
অঙ্কুবিত হয়। প্রেম সকল সাধনার মূল। যেমন কোনও
ক্রিনিষে রঙ্গ ফলাইতে হইলে প্রথমতঃ আত্তব দিতে হয়,
আত্তর না দিলে কোনও রঙ্গই ধরেনা, তজপ প্রেম না
থাকিলে জ্ঞান, ভক্তি, কর্ম (কোনও সাধনই প্রতিষ্ঠিত
হইতে পারে না। প্রেম-বিহীন-জীবন নাত্তিকতার প্রতিমৃতি।
প্রীষ্টার ধর্মানাক্রে লিখিত আছে;—

Love is the fulfilling of the law—ROM XIII. 10. প্রীতিই ধন্দের সাধন।

He that loveth not knoweth not God, for God is love—I John IV. 8.

যে প্রীতি করে না সে ঈখরকে জানে না, কারণ ঈখর প্রীতিশ্বরূপ।

প্রেমের ছুইটি দিক আছে; ঈশ্বরের দিক এবং মানবের দিক। যিনি ঈশ্বর-প্রেমিক নছেন, তিনি মানবকেও প্রকৃতরূপে প্রেম করিতে পারেন না। ঈশ্বর-প্রেমিকের হৃদর নির্মাণ নিষ্ণান্ধ। নিষ্কামভাবে তাঁহারাই কেবল কার্য্য করিতে পারেম। এই প্রেমই সাধনীয়, ইহাই বাহ্ননীয়। সাধকগণ ইহাকেই অহৈতুকী প্রেম বলিয়া নির্দেশ করিরাছেন।

প্রতিদিন সকলেরই আত্মপরীক্ষা করা কর্ত্তব্য, ভিল ভিল করিয়া প্রেমের বিমনসংস্পর্শে প্রাণ প্রিতীক্ষত ক্ইডেছে কি না। বৌদ্ধ ধর্ণগ্রেছে সাধন সম্বাদ্ধে এই রূপ লিখিত আছে যে,—"তাঁহারা কখনও মৈত্রীভাবনার নিযুক্ত হইবেন। এই সময়ে সর্ববদীবের বিষয় চিন্তা ও তাহাদের স্থ-ইচ্ছা করিবেন; নিজের মুক্তি স্থথ ও সেই স্থাধাতে সর্বপ্রশানীতে বিস্তৃত হয়, শত্রুগণও যাহাতে স্থীহটতে পারে, সেই আকাজ্জা করিবেন। শত্রুর গুণ চিন্তা ও মঙ্গল কামনা করিবেন। কখনও তাঁহারা করণা ভাবনায় নিযুক্ত হইবেন। এই সময় তুঃখসন্তপ্ত সকল প্রাণীকে শরণ করিয়া লোকের তুঃথের অবস্থা উপলাদ্ধি করিবেন এবং এই উপার্মে তুঃখীব জন্ত তুঃখ উদ্দীপিত করিবেন।"

মহাত্মা যীশুও উপদেশ দিয়াছেন; "তুমি সমগ্রহৃদয়
মন প্রাণ ও সম্দয় শক্তি দারা প্রভু প্রমেশবকে প্রেম
কব এবং প্রীতিবেশকৈ আয়তুল্য ভাল বাদ।" আর্য্য
ৠযিও বহুকাল পূকো আধ্যাত্মিকতার উচ্চমঞ্চে আবোহণ কবিয়া বলিয়া গিয়াছেন, "মামুষ, পশু পক্ষা সকলকে
আপনার ভাষ প্রেম কব, বস্তুধা তোমার কুটুম্ব।"

অল্লাধিক পরিমাণে সকল সাধকই এই নপে প্রেমের স্বর্গীয়
মহিমা বর্ণন কবিয়া গিয়াছেন। প্রেম ভিন্ন সাধনভজ্ঞন
সকলই বুথা। শুক্ষ কঠোবহৃদয় ব্যক্তি নানা শাল্পে পারদর্শী, বুজিমান, তার্কিক হইতে পাবেন, ধর্মশাল্পের স্ক্রাম্
স্ক্র মীমাংসা কবিতে পারেন; কিন্তু প্রেমের অভাবে
তিনি চিবদিনই শ্রশানবৎ মরুভূমিতে বাস করিবেন,
ঈশ্বর সহবাসের স্থান্মির শ্রামল প্রীতি-নিকেতন কথনও
লাভ করিতে পারিবেন না।

আত্ম-তৃপ্তি ও ব্যাকুলতা— আত্ম-তৃপ্তি, ব্যাকুলতার অন্তর্ময়। যেথানে আত্ম-তৃপ্তি, দেখানেই ঈশ্বর লাভের জন্ত আকাজ্জা শিথিল-ভাবাপন্ন। উপাসক মনে করিতে পারেন, দিন ত বেশ যাইতেছে, ছই বেলা নিয়মিত উপাসনা কবিতেছি; নিশীথ সময়ে ধ্যান কবিতেছি; নানা গ্রন্থপাঠ ও ধর্মালোচনা ক্রিতেছি, "দৈনিক লিপি" লিখিতেছি, আত্ম-চিস্তারও বিবাম নাই; অপর দিকে নানাবিধ হিতকর কাষ্যত যথা সাধ্য করিছেছি, সাধু সঙ্গে বাস করিতেছি। এইরূপে সচ্চিন্তার, ধ্যান ও আরাধনায় এবং নানারপ "প্রিয়কার্য্য" সাধনে অতি সাধুভাবে দিন যাইতেছে। উপাসনার সময় ভাবোচ্ছ্যুসত্ত হইয়া থায়, ভাবাবেশে কদম নৃত্য কবিয়া উঠে। অপর দিকে কার্য্য করিবার সময়ও কদয়ে প্রবল উৎসাহ। সকল দিকেই দিন অতি স্থল্মর ভাবে অতিবাহিত হইতেছে, তবে আর ভাবনা কি ?

গৃচভাবে চিন্তা করিলে দেখা যায়, বান্তবিক এ অবস্থা আধ্যাত্মিক, উরতির পরিচায়ক নহে। যথন আত্মা ঈশ্বর সহবাস লাভের জন্ম অভান্ত ব্যাকৃল হয়, সংসারের কিছুভেই শান্তি লাভ করিতে না পারিয়া ভগবানের জন্ম লালাগিত হয়, সেই অভিরভাই আধ্যাত্মিক উরতির লক্ষণ। ঈশ্বরকে না পাইয়া ঘাঁহার প্রাণ ছটফট করে না, ঈশ্বরকে ভ্লিয়া যিনি রশ্বনী স্থানিয়া যাপন করেন, আনন্দচিত্তে কার্যা সম্পাদন

করেন. তাঁহার পক্ষে ঈশবলাভ স্থান্ত্রপরাহত। ব্যাকুলতাবিহীন-আত্মা যত কালই সাধন ভল্পন করুক না,কথনও ঈশবকে
লাভ করিতে পারিবে না। এক বিন্দু ব্যাকুলতা থাকিলে সেই
অনস্ত ভূমা প্রমেশবকে লাভ করা যায়। সাধক ভগবানকে লাভ
করিবাব জন্ম কিরূপ ব্যাকুলতা প্রার্থনা কবেন, তৎসম্বনীয়
বৈষ্ণবিধির একটি শ্লোক উদ্ধৃত করা যাইতেছে;—

অজ্ঞাতপকা ইব মাতরংথগাঃ
স্কুলং যথা বংসতবাঃ কুধার্তাঃ।
প্রিয়ং প্রিয়েব ব্যবিতা বিষয়া
মনোরবিন্দাক দিদুক্ষতে ডাং॥

অর্থ—"হে অরবিলাক্ষ ! অজাতপক্ষ পক্ষিশাবকগণ যেকপ উৎকণ্ঠাব সহিত মাতার জন্ত অপেক্ষা করে, গোশালাতেবদ্ধ গোবংস যে ভাবে মাতার অপেক্ষা করে, প্রোষিতভত্কা কুলকামিনী যে ভাবে প্রবাসগত পতির পথ চাহিয়া থাকে, সেইরূপ আমার মন তোমার দর্শনের জন্ত উৎস্কুক হইতেছে ।"

ব্যাকুলতা যে হৃদরে উদন্ন হইয়াছে, সে হৃদয়ই ভগবানের
লীলাবিহার হল। আত্ম-ভৃপ্তি ব্যাধির লক্ষণ। অনেক সাধক
এই আত্ম-ভৃপ্তিকেই ব্রহ্ম লাভ বা ব্রহ্মানন্দ উপভোগের অবস্থা
মনে করেন; কেহ কেহ বা ইহাকেই সিদ্ধাবস্থা বলিয়া প্রভাবিত
হইয়া থাকেন। সাধন রাজ্যে আত্ম-ভৃপ্তি এক ভয়ানক শক্র।
সাধক অনেক শক্রর হস্ত হইতে নিম্নতি লাভ করিয়া পরিশেষে
আত্মভূপ্তির হস্তে পতিত হন। ব্রহ্মের আবরণস্করণ আত্মভূপ্তি
যাহাতে না আসিতে পাবে, তজ্জ্য সকলকেই স্ক্রাণ থাকা
কন্তব্য। অপব্যদিকে ব্রহ্মলাভেব জন্য যাহাতে কুধা বৃদ্ধি হয়,
সেজন্য প্রথনাপরায়ণ হওয়া কন্তব্য। তাঁহার কুপাভিয়
মানবের সাধ্য নাই, তাঁহাকে লাভ করিতে পারে। তাঁহার
কুপাতেই ব্যাকুলতা উপস্থিত হয়, ঈশ্বর লাভ হয়, মৃক্তি হয়।
সেই কুপা স্রোভ আসিবার পথ যেন আম্বা বন্ধ না করি।

সংগ্রামে ধর্ম-সাধন--- ধর্ম সাধন সকলের পক্ষে সমান আয়াসকর নহে। কোনও কোনও ব্যক্তি এরপ প্রকৃতি লইয়া জন্মগ্রহণ কবিষাচেন যে, ওাঁহারা সভাবতঃ সাধু, স্বভাবতঃ বিনয়ী, মিষ্টভাষী, ক্রোধহীন, পরোপকারী ও পবিত্রচেতা। এই সকল সৌভাগাবান পুরুষ ও বম্ণীর পক্ষে ধর্মের আদেশের অনুগত ২ওয়া সায়াসসাধ্য নহে। তাহাদের প্রার্ভিকুশ এমনি निष्यक (य, ভाशानिशक मुख्यानिक कतिरक विरम्य क्रिम इम्र না। কিন্তু সংসারে আর এক শ্রেণীর লোক দেখিতে পাই. বাঁহারা বিভিন্ন প্রকার প্রাকৃতি ক্রয়ের জন্মগ্রহণ করিয়াছেন। তাঁহাদের প্রবৃত্তিকুল সতেজ, রিপুকুল স্বভাবত: প্রবল। ইহাঁদের পক্ষে ধম্মের আদেশের অমুগত হওয়া অতীব ক্ষুদাধ্য। অনেক সময়ে দেখা যায় যে, হুইারা বছ বংসরের তপ্সাতে যে উন্নতিখাভ করেন, তাহা হয় ত একদিনের চুক্লভা বশতঃ ভালিয়া যায়। কিন্তু তাহা ব্লিয়া এই দ্বিতীয় শ্ৰেণীস্ক ব্যক্তিগণ কি নিরাশ হইয়া ধ্যাসাধন পরিত্যাগ করিবেন, **আপনাদের প্রকৃতিকে প্রতিকৃল জানিয়া কি প্রবৃত্তি-লোভে** शा छात्राहेता निर्दन ? कथनरे नरह ; नकनरकरे धरर्भन्न आरम-

শের অহুগত হইতে হইবে। বাঁহাদের প্রকৃতি প্রতিকৃল, তাঁহারা मा इब (चात्र मः आर्मित मर्पा वाम कतिबाहे जाहात स्मरा कतिरवन। आयारमत रुष्टिकर्छात्र निकरि आयारमत रकान् ছর্কলতা, কোন্ সংগ্রাম প্রচ্ছন আছে ? যাহারা খোর সংগ্রামের মধ্যে তাঁহার দিকে অগ্রসর হইবার প্রয়াস পাইতেছে, তাহাদের সেই প্রেম কি জাঁহাব নিকট মূলাবান নহে? যে অশ্বয় লোহনির্মিত পথে ট্রামগাড়ি টানিতেছে, তাহাদের অপেকা যে অশ্বয় বন্ধুর পথে গাডি টানিতেছে, তাহাবা কি ভাগ্যে ইষ্টকাকীণ পথ দিয়া গাডি টানা পডিযা থাকে, তুমি কোভ করিও না, বা নিবাশ হইও না, যণাসাধা টানিয়া যাও যিনি আমাদের সকল চুর্বলতা ও সকল চুংথ জানেন তাঁহার চক্ষে তোমার তপ্যা বৃথা হইতেছে না। বর এরপ অনেক मगरा प्रिथिट পाउरा गाँग रा, गाँशाती मः शामितिहीन निक्र भाज र শান্তিতে ধর্মাধন করিতেছেন, তাঁহাদের অপেকা যাঁহারা শত তুর্বলতার মধ্যে অমুতাপিত চিত্তে, ঘোর সংগ্রামেব মধ্যে क्रेश्वरतत्र भिरक व्यक्षमत्र रहेवात हाष्ट्री कतिष्ठाह्रम, उँ। हावाहे ঈশবের বিশেষ করুণার নিদশন সকল প্রাপ্ত হন। মহাত্মা যাভর উল্লিখিত "পতিত পুঞ" নামক উদাহরণে এই সভাই প্রকাশ করা হইয়াছে: সে দৃষ্টান্তটী ব্রাহ্ম-পাঠকদিগেব অনেকেই অবগত আছেন তথাপি আর একবার উলেধ করাতে হানি নাই, নিমে উল্লেখ করা ঘাইতেছে।

পাপীর প্রত্যাবর্ত্তন—একজন ধনীব ছই পুত্র ছিল, এক পুত্র পিতার বাধ্য, অসের জ্বন উচ্ছ্,খল। উচ্ছ্,খল পুত্র (योवरनत भरत ७ कूमकिनिरगव अरत्राहनाम अस्थाम श्रेम। স্বীয় পিতাকে বলিল--"আপনি আমাকে যাহা দিবার সংকল্প কারয়া রাখিয়াছেন, তাহা এখনই দিন, আমি দেশান্তরে গিয়া দেই অর্থ বাণিজ্যে লাগাই, আমার আর গৃহে থাকিবার ইচ্চা नाहे।" त्र পिভाর প্রদত্ত ধন नहेश বিদেশে গেল এবং নানা-প্রকার পাপাচরণে লিপ্ত হইল। মারুষ পাপের নেশায় মাতিলে কুবেরের ধনভাণ্ডারও শুন্ত হইতে অধিক দিন লাগে না, স্কুতরাং ঐ যৌবন মদান্ধ-যুবক অল্পলীল মধ্যে যথাসক্ষম থে।য়াইয়া দাবিদ্যের মধ্যে পতিত হইল। দাবিদ্যে শীর্ণ ও রোগে ভগ্ন হইয়া মনে করিল, "আবার একবার পিতার নিকটে যাহ, তিনি ভিন্ন আমার সহায় আবে কেহ নাহ।" হহা ভাবিয়া স্বায় পিতার ভবনাভিমুখে চলিল। পিতা যথন দোখলেন যে, তাহার উচ্চু আল সম্ভান দারিদ্রো 😵 বৈরে ভগপ্রায় হইয়া আবার তাঁহারই ভবনাভিমুথে আসিতেছে, তথন অগ্রসর ২হয়া ভাহাকে অভার্থনা করিয়া লইলেন ও তাহার প্রভ্যাগমনজনিত ष्मानम धाकारमञ्जूषा शुरह ष्मानत्मा ९ मत्यत्र ष्मारम क्रियान । যথন আনন্দোৎসৰ চলিয়াছে, তথন যে পুত্রটা পিতার গৃহে ' বাধ্য ছিল, সে কোথা হইতে বেড়াইয়া আসিল। স্বারে আসিয়া গৃহে আনন্দোৎসৰ দেখিয়া ভৃত্যাদিগকে কারণ বিজ্ঞাসা করিব। ভ্ডাগণ ৰলিল,—"আপনার উচ্ছুখল প্রাতা অনুতাপিত হইয়া ফিরিয়া আসিয়াছে, সেইজয় বড় থাসিটী মারা হইয়াছে ও

আনন্দোৎসব চলিয়াছে। ইহা শুনিয়া সেই পু্এটা ঈর্ষায়িত হইয়া আর গৃহে প্রবেশ করিল না, য়ারে দাঁড়াইয়া রহিল। পিতা এই সংবাদ পাইয়া বারে আসিলেন ও তাহাকে ভিতবে প্রবেশ করিয়া আনন্দোৎসবে যোগ দিবার জক্ত আহ্বান করিলেন। সে বলিল,—"আপনার এই পুত্র আপনাকে ত্যাগ করিয়া গিয়াছিল, তথাপি ইহার আগমনে আপনি বড় থাসি মারিয়াছেন, আর আমি এতদিন আপনাব গৃহে আপনার অমুগত রহিয়াছি, কিন্তু আমাব বন্ধুবান্ধবদিগকে লইয়া আমোদ করিবার জন্ত কোন দিন একটা মেষশিশুও মাবিতে চকুম দেন নাই, এ কি প্রকার গ তথন পিতা সেই ঈর্ষায়িত পুত্রকে তিরস্কার কবিয়া বলিলেন, "আমি ত তোমার প্রাপাধনে তোমাকে বঞ্চিত করি নাই তুমি ঈর্ষায়িত হও কেন গ্"

পুর্ব্বেক্তি উদাহবণটীতে যীশুর মানব-সদয়াভিজ্ঞতাই প্রকাশ হইতেছে। পিতার গৃহস্তিত পুলুটী যথন ঈর্ধান্বিত ১ইল, তথন বলিল—"আপনার এই পুল্ল।" কিন্তু "এই আমার ভাই" এরূপ कथा विलल ना। क्रेश्वत याद्यां निगटक आपन कविया ववन कर्त्रन, स्थामत्रा स्थानक नमस्य छाहानिशस्क "ভाই" विनया গ্রহণ করিতে প্রস্তুত হই না। এইরূপে গৃহস্তের গৃহমধ্যে. ভাই-ভগিনীদিগের মধ্যে যথন বিবাদ ঘটে তথন বালক-বালিকাবা অনেকসময় জননীকে ডাকিয়া বলে ''দেখ মা. তোমার ছেলে আমাকে মারিল।'' তথন আব দাদা কি দিদী कि छाहै कि त्वान वला ना। आभारमन्न मन यथन विरवध वा ক্রোধ দাবা উত্তেজিত হয়, তথন আমবা লাতু-সম্বন্ধ ভূলিয়া যাই। দিতীয়ত: একপ ঘটনা সর্বদাই ঘটতেছে যে, যাহাবা অনেক দিন ঈশ্বাশ্রিত হইষা রহিয়াছেন, অনেক দিন ধশ্মসাধন ক্রিতেছেন, ধর্ম সমাজের মধ্যে মান্ত গণ্য ব্যক্তি হইয়া রহিয়া-ছেন, তাঁহাবা হয়ত ঈশ্ববের বিশেষ করুণার কোন নিদর্শন পাই-তেছেন না, আব ওদিকে এক ব্যক্তি যে বহুদিন পাপেব সেবা क्रिया ७ भ्र श्राप्त रहेग्राह्म, এवः मुख्या निवसीवन পार्ग्राह्म, সে হয় ত বিশেষ করণাব অনেক নিদশন প্রাপ্ত হইতেছে।

যথন এইরূপ কোনও নবাগত ব্যক্তি আমাদের চক্ষেব উপব দিয়া অগ্রসব হইয়া যায়, তথন পুবাতন যাঁহারা আছেন তাঁহাবা অনেক সময়ে ঈর্যাধিত হইয়া বাধা দিবার চেষ্টা কবেন। কিন্তু বিধাতার নিকটে প্রেমেরই আদর, প্রেম-বিহীন নিয়ম পালনের আদর নাই।

জীবনবিহীন সাধন—ইউবোপের স্বিখ্যাত দার্শনিক পণ্ডিত স্পিনোজার বিষয়ে এইকপ কথিত আছে বৈ, বাল্যকালে তাঁহার পিতা একবার তাঁহাকে কতকগুলি মুদ্রা আনিবাব জ্ঞ এক মহিলার নিকট প্রেরণ করিয়াছিলেন। ধার্মিকা বলিয়া ঐ মহিলার স্থাতি ছিল। নিত্য উপাসনা, ভজনালয়ে গমন, ধর্মার্থে দান প্রভৃতি ধর্মের নিয়ম সকল তিনি পুঝারুপুঝ্রুপে পালন করিতেন। ধান্মিকা বলিয়া সকলেই তাঁহাকে প্রছা ভক্তি করিত। বালক স্পিনোজাও তাঁহাকে সম্বনের সহিত দেখিতেন। স্পিনোজা ব্যার পিতা কর্তৃক প্রেরিত হইয়া সেই রম্ণীর নিকট উপস্থিত হইলো, তথন তিনি সম্পুষ্থ টেব-

লেব উপরে মুদ্রাগুলি ঢালিয়া এক ছই করিয়া গণনা কুরিছে লাগিলেন। স্পিনোজা দেখিতে পাইলেন, ঐ রমণী মুলাগুলি গণিতে গণিতে টেবলের তক্তাম্বয়ের মধ্যন্তিত ফাঁক দিয়া একটা মুদ্রা নিমে ফেলিয়া দিলেন এবং কিয়ৎক্ষণ পরে স্পিনোজাকে মুদাগুলি তুলিয়া লইতে আদেশ কবিলেন। চতুব বালক অসাবাব মুদ্রাগুলি গণিতে আরম্ভ কবিল। গণিয়া দেখে যে. একটা মুদ্রা কম আছে। বালক একবার বৃদ্ধাব মুথেরদিকে ও আব একবাব টেবলের তলে চাহিবামাত্র বুদ্ধা বলিলেন—"ও একটা মুদ্রা,বুঝি পডিয়া গিষাছে," এই বলিয়া সেটী কুড়াইয়া দিলেন। এই প্রভাবণাতে বালক স্পিনোজার মনে এমনি আঘাত লাগিল, যে তিনি জন্মের মত ধর্মসাধনের প্রতি আস্থা-हीन हहेब्रा (शत्नन। आव এककन मासूरवत कीवतन धहेक्प একটা ঘটনা ঘটিয়াছিল। গ্রীষীয় কোয়েকাব সম্প্রদায়েব প্রতি-**ছাতা ঞ্চজ ফক্দের বিষয়ে এইকপ কণিত আছে, যে তাঁহার** উনবিংশ বৎসর বয়ক্রমেব সময় একদিন তিনি স্বসম্পকীয় ছই ক্ষন যুবকের সহিত কোনও স্থানে গিয়াছিলেন। তাহাদের তুইজনকে তিনি ধ্যাফুরাণী ও নিষ্ঠাবান লোক বলিয়া জানি-তেন। তাহারা স্বাদাই মুথে ধর্মের কথা বলিত। কিন্ত ফক্স দেখিয়া বিস্মিত হইলেন, যে তাহাবা উভয়ে অপরাপর কুসঙ্গীদের সহিত মিলিয়া বাজি রাধিয়া স্তরাপান করিতে আরম্ভ কবিল। ইহাতে স্বল্মতি জজেব মনে এমনি আঘাত লাগিল যে, তিনি সে স্থান পবিত্যাগ করিয়া গৃহাভিমুপে প্রস্থান করি-লেন। কিন্তু মনেব ক্লেশ এত অধিক ছইল যে, আর গৃহে যাইতে পারিলেন না, সমস্ত বাত্তি কাঁদিয়া ও ঈশ্বরচরণে প্রার্থনা কবিয়া পথে পথে ভ্ৰমণ করিলেন। অবশেষে যেন তিনি ঈশবের বাণী শ্রবণ করিলেন—"তুমি দেখিতেছ কি প্রকারে যুবাদিগের অধোগতি হয়, এশং বৃদ্ধেরাও বিনষ্ট হয়, অতএব যুবক ও বৃদ্ধ স্কল্কে প্রিত্যাগ কর ." ছব্জ ক্রুস বলিয়াছেন--"এই বাণী ভনিয়া ১৬৪৮ সালেব সুলাই মাসের নবম দিবসে আমি আমাব আগ্রীয় স্বন্ধন, যুবক বৃদ্ধ সকলকে পবিত্যাগ করিলাম।" যুবক বুদ্ধ সকলকে বজ্জন কবিয়া তিনি আশ্রেয়হীন, গৃহহীন হইয়া : ভুইবৎসর কাল একাকী ঘ্রিয়া বেড়াইয়াছিলেন, তৎপরে ভাঁচার নবধন্মের প্রচার আঘাবন্ত করেন। সেই প্রচারে জীবন-বিহীন সাধনের প্রতি অতিশয় রুণা প্রকাশ করিতেন।

বিশ্বাদী ও বিষয়ী—বিশ্বাদী নানক বলিতেছেন—
"হে মন, ভোমাব আহার বথন হরি প্রস্তুত করিয়া রাথিয়াছেন,
তথন চিত্ত মধ্যে চিন্তা কেন পোষণ করিতেছ গ পর্বত ও
প্রস্তুরের মধ্যে তিনি করু সৃষ্টি করিয়া তাহাদিগের আহার
সামগ্রী ভাহাদিগের সম্মুথে দিভেছেন। যিনি ক্লগতের পতি, তিনি
যদি সঙ্গী হন, তবেই জীব নিস্তার পার। পরমগুরুর প্রসাদে
ভক্ষ কাঠও হরিদর্গ হইয়া যায়। পিজামাতা, বা পুত্র কলা
শেষ দিনে কাহাকেও ধরিয়া রাথিতে পারে না। প্রতি জনকে
ঠাকুর আহার যোগাইতেছেন, তবে হে মন, কেন ভর করিতেছ গ
সরপ কর, পক্ষীবিশেষ পশ্চাতে শাবক রাধিয়া শত ক্রোশ
উঠিয়া আসিতেছে, কে তাহাদিগকে আহার করায়, কে

চঞ্ ছারা ভাহাদিগকে আছার দেয় ? সর্বা প্রকারের নিধি, অষ্টাদশ সিদ্ধি, ঠাকুর নিজ করতলে ধারণ কবেন। দাস नानक करहन छौहारक विनहाति, छौहारक विनहाति, मना বলিহাবি ঘাই; প্রভো, ভোমাব অন্ত ও পারাপার পাওরা যায় না⊹" চিবদিন পৃথিবীতে এই সংগ্ৰাম—বিশাস ও অবিখাসের মধো, সংসার ও ঈশ্বর নির্ভরের মধো। ঈশ্বককে মান, ঈশবেব পূজা—ন্তব স্তুতি কর, ইহাতে পৃথিবীর লোক কথনও আপত্তি কবিবে না। কিন্তু বিশাসীবা যে শান্তিময় বিশ্বাদেব নিরাপদ ভূমিতে বাস কবেন, সংসার সেই ভূমিকে ম্পর্শ করিতে চায় না। সাধু নানক যেমন অবিখাসী পৃথিবীর দাবে সাক্ষা দিতেছেন---"হবি আমাব আহার প্রস্তুত কবিয়া বাথিযাছেন" সেইকপ সকল সময়ে সকল বিশাসী পৃথিবীর নিকট, কুদ্র স্থ-স্বার্থে অন্ধ-মানবদিগের নিকট এই বিশ্বাদেব কথা বলিতেছেন। কিন্তু সংসার ইহাঁদেব ভাষা ব্ঝিতেছে না। ইঠারা বলেন, "ঈশ্বর স্তা, ইহার উপর নির্ভব কর-তাহা সত্য নির্ভব ।" কিন্তু সংসার বলে, উপাসনালয়ে, গির্জাতে, মসজিদে ঈশবেৰ নাম কৰ-যাহাতে নিজের স্থ স্থবিধা হয় তাহা কব। সংসারের ধন মানেব হানি করিয়া কিছু কবিও না। একের দৃষ্টি সুল কগতে আবদ্ধ, অন্যেব দৃষ্টি সুলেব অতীত সতা বন্ধতে প্রতিষ্ঠিত। এক দলধর্মকে কর্মনার চকে দেখে, অপর, বিশ্বাসীরা ধর্মকে সভাবস্ত বলিয়াধরেন। যে ভূমিতে বিশ্বাসীবা দাঁডাইয়া এই সকল উক্তি করিয়াছেন, সে স্থান সংসাবের দৃষ্টিব অতীত। নানক বলিতেছেন,—"আমার আচার হরি প্রস্তুত রাধিয়াছেন।" তুলদশী সংসাবাসক্ত লোকেবা হরিব হাত খুলিয়া পায় না, সে আপনার কুদ "আমিকে" সেখানে দেখিতেছে। যীও বলিতেছেন, "কলাকার জগ্র ভাবি ও ना।" मःभाव शास्त्र कविया विनाटिएफ, "हेहा वाएलव कथा।" জাবার বিঝাদীকে পাথিব অভাবে পতিত দেখিয়া সংসাব কেমন ष्ठाहेश क्रिटाइ १ विश्वामी माउन नवश्विक विश्रम् अ দেখিয়া তাহার শক্রণণ বলিতেছে, "তোমাব ঈশ্বর কোণাম ? তোমার ঈশর কোণায় ৭" বাশু কুশকাটে হত ইইতেভেন, আর অবিখাসিগণ বলিতেছে, "যীও অন্তকে ত্রাণ করিতে পাবেন, নিছকে বাঁচাইতে পাবেন নাও" এহ মূল জগতে ক্বতকাৰী ভাকেই সংসারের লোক জয় বলিয়া গণনা করিয়া থাকে। কিন্তু বিশ্বাসাব জয় কি কেবল এই পৃথিবীতে? এই পৃথিবীর দেছ পৃথিবীতে পড়িয়া হুঃৰ দারিদ্যে, উৎপাডন ও মৃত্যুতে নিংশেষ হুইতে পারে, কিন্তু বিশাসার আগ্না, আপনাকে এমন স্থানে স্থাপন ক্রিয়াছেন, এমন স্থান অচল স্থানে তিনি দণ্ডায়মান, যে পৃথিবীর কোন শক্তি তাহাকে চঞ্চল করিতে পারে না। পৃথি-বীর ধর্মের দাম কত্ত ক্ত লোক তুমুখে ধর্ম ধ্যা, ঈশ্ব ঈশ্বর বলে। এই সংসারের ধর্ম ক্রেয় করিয়া লইতে কত থরচ ? আর্মাদের চকের সম্থ্রে কি শত শত লোক এক প্রসার জন্ত-শামাস্ত স্বার্থ ও স্থাধের জন্ত—ঈশ্বরকে, ধর্মকে বিক্লের করিতেছে · না ? সংসার, কোলাহল করিয়া ঈশবের নাম করে, কত ভতি বলনা করে; কিন্তু সামান্ত প্রতিবন্ধক আত্মক, সামান্ত পরীকা আহ্ৰ--সৰ কোপাৰ চুৰ্ হইবা বাইৰে।

Á

বিশ্বাসী জীবনের লক্ষণ কি ? যীশু উত্তর করিতেছেন, Love, peace righteusness. ধর্ম মান্থযকে প্রেমিক করে, ধর্ম মান্থযকে পাপ হইতে বাঁচার। বিশ্বাস-বিহান ধর্ম-জীবনে প্রেমের কথা, শান্তির কথা, সাধুতার কথা কাকা।

জুডাস সামাস্ত অর্থের জন্ত যীভকে শক্রহন্তে অর্পণ কবিয়া-ছিল, সেইজান্ত জুডাসের নাম চিব কলক্ষিত। উমীটাদ সামান্ত অথের জন্ম স্বদেশের স্বাধীনতাকে বিক্রয় কবিয়াছিল, সেই ষ্ণার কেরি-নিন্দিত। কিন্তু পৃথিবীতে অমুসন্ধান করিলে কি দেখিতে পাই ? সামাক্ত অর্থের জ্বল্য, সামাক্ত স্বার্থেব জ্বল্য কত লোক ক্যায় ও সত্যকে, ঈশ্বর ও ধর্মকে বিক্রয় করিণতছে। এইজন্মই বলিতেছিলাম বিশ্বাসীর ধর্মা ও সংসারেব ধর্মা ছই ভিন্ন বস্তু। মৃতে ও জীবিতে যত পার্থক্য, এই সংগারের ধন্মেও বিশ্বাসীব ধর্মেও ভত ুদূরত। বিশ্বাসার জীবস্ত, কথা বলেন, বিপদে বন্ধু, পরকালে ত্রাণকন্তা। আর সংসাবীৰ ঈশ্বর মৃত শব—যাহা ইচ্ছা হয় কর, বাধা নাই। নৰ নৰ বিশ্বাসী ও ধন্ম প্ৰবৈত্তকের কাৰ্য্য কি ৪ তাঁহাবাকি क इ छोग न इन मठ निया क्राइटक छात्राहेया हिन १ उँ। शास्त्र সংগ্রাম সেদিকে তত নয়। কিন্তু তাঁহাবা মাসুষের নিকট এই সংক্ষা দিয়াছেন—"আমি ঈশ্ববের নিকট প্রার্থনা কবিয়াছিলাম, তিনি আমাব ক্রন্দন ভ্নিয়াছেন।" "প্রভু আমার বক্ষক, আমাৰ অভাৰ ১ইৰে না।'' সংসারের লোকেৰ ত্ৰবস্থা (भ:अवाहे (वांध इय महत्र्यन व्यापनात ध्यांटक "हेन्सामध्या" আপ্যা দিয়াছিলেন। বিশ্বাসী ও অবিশ্বাসী জীবনেব পার্থকা মহাত্মা মহম্মদের জীবনেব একটা ঘটনা ধাবা বড স্থলর বুঝিতে পাবা যায়। এক দিন মহম্মদ নিাদ্রত আছেন। তাঁহার প্রম শক্র সেই নিজিত অবভায় ভরবারি হত্তে মহম্মদেব বুকে চডিয়া বলিল ''মহত্মদ তোমায় এখন কে বক্ষা কবে ?'' মহত্মদ হঠাৎ কাত্ৰত হুইয়াই মহা তেজেব সহিত উত্তৰ কৰিলেন—"কেন ঈশ্বৰ ৰক্ষা কৰিবেন '' মহম্মদ এত সাহস ও উৎসাহেৰ সহিত এই বাকা বলিয়াছিলেন যে শত্ৰু ভয়ে কাপিয়া উঠিল ও ভাহাব হস্ত ১ইতে ত্রবারি পাডিয়া গেল। মহম্মদ ত্র্থন ত্রবারি হাতে ল্ট্য়া শক্রব :বুকের উপর বসিয়া কহিলেন, "কাফেব, ভোমায় ध्यम (क वक्का करता" उद्धम इहेन-"अर्जा आर्थाम तक्का ककन।" प्रश्यम (भर्दे काश्रुक्यत्क छाड़िया निया विनादन — "मृष्ट्रा ममरत्र ७ जेबतरक रमिल्ल ना १' विधामी, मानवमिल्ति অ গাঁত ব্রহ্ম-শক্তিব উপর দণ্ডায়মান-স্থাব সংসাবেব মাহুষ (करण क्रफ्णिकि (मध्य। क्रेश्वत कक्रन, आभवा विश्वास्त्रव धर्म গ্রহণ করি—সংসাবের ধ্যে কি জীবন তৃপ হয় ?

### সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

"গুহাহিতং গহ্বরেষ্ঠং।"।

আমাদের প্রাচীন উপনিষদে ঈশবের প্রকণ নির্দেশ কবিয়া যত কথা বলা হটয়াছে, তন্মধ্যে প্রধান কথা এই. ধে তিনি হুদয়-বাসী। উপনিষদের সে বচনটা এই,— "তছর্দশং গৃঢ় মহুপ্রবিষ্টং গুহাহিতং গহবের ছাং পুরাণং।" অধ্যাত্মযোগাধিগমেন দেবংমতা ধীরো হর্ষ শোকৌ জহাতি।"

অর্থ—যিনি ছর্দর্শ, যিনি গুঢ়রূপে তাবত পদার্থে অনুপ্রবিষ্ট হইয়া আছেন, যিনি সদয়রূপ গুহাতে বাস করিতেছেন, গাব ব্যক্তি তাঁহাকে অধ্যাত্ম যোগে দারা জানিয়া হর্ষও শোক উভয়কে অতিক্রম করেন।"

"ঈশ্বর অন্তবে''—এই মহাসতো উপনীত হইতে যে মানব জাতির কত দিন লাগিয়াছে, ভাহা আমরা একণে বিস্তুত হট্যা গিয়াছি। বহু বহু শতাকীব ধর্ম-চিন্তার পব মানুষ এই সভ্য প্রতীতি করিতে সমর্থ হইয়াছে। ঈশ্ববেব ভাব সর্বাতো কি প্রকারে মানব-হৃদয়ে আসিল ? পূঞ্জার ভাব কি রূপে প্রক্ষুটিত হইল ১ এই চিম্বাতে বর্ত্তমান সময়ের চিম্তাশীল পণ্ডিতগণ বতদিন নিযুক্ত রহিয়াছেন , এবং এই প্রশ্নেব মীমাংসাব নিমিন্ত প্রভৃত গবেষণা চলিয়াছে। কেহ কেহ বলেন, পিতৃলোক-পূজা (ancestor-worship) হউতে ঈশব্যোপাসনাব সৃষ্টি। জুলুদিগেৰ মধ্যে ঈশবেৰ অফুকপ শব্দ নাই, কিন্তু তাহাবা এক আদি পিতৃপুক্ষ কল্পনা করে, বাঁহাতে সমুদয় ঈশ্বীয় গুণেব আরোপ কবিষা পাকে। কোনও কোনও পণ্ডিতের মতে, ইহা হইতে পূজাব স্টি। কেহ কেহ বলিয়াছেন, ভয় হইতে ধম্ম ভাবেব জনা। আদিম মহুষা প্রকৃতির ছক্ষয়শক্তি দারা প্রপাডিত ২ইযা তাহাকে কোনও অলৌকিক ব্যক্তি জ্ঞানে প্রসন্মতা সম্পাদনেব জন্য পূজা, কবিতে আবন্ত কবিয়াছে, ভাষা ফটতে এখন পূজা, উপাসনা-পদ্ধতি প্ৰভৃতিৰ সৃষ্টি হইয়াছে চেঁচাৰ প্ৰমাণ স্বৰূপ ইছাবা বলিয়া থাকেন যে, এখনও অনেক অসভা জ্বাভির মধ্যে চুইটা ঈশ্ববে বিশাস দেখা যায়। এক ভাল ঈশ্বব, এক দুই ঈশ্বব। ছষ্ট ঈশ্বকেই ইহারা পূজা কবিয়া থাকে. ভাল ঈশ্ববেব পূভা করেনা, কারণ তিনি অনিষ্টকাবী নহেন। কেহ কেহ বাল-য়াছেন, নিজেব হুবালতা জ্ঞান ও নিভবেব ভাব হইতেই পূজাৰ উৎপত্তি হইয়াছে , মান্তব দোথয়াছে, নিজেব বুদ্ধি, নিজেব শাক্ত ও নিজেব হচ্ছাতে আয়েক্জা হয় না, তাই শক্তি বিশেষের উপবে স্বতঃই ানভব কবিয়াছে। এই নিভবেব ভাব মানবেব প্রকৃতি নিহিত ও ইহাব উপবেই ধ্যাভাব প্রতিষ্ঠিত। মান্ব হৃদয়েৰ ধত্মভাৰ ও ঈশ্বৰ জ্ঞানেৰ উৎপত্তি যেৰূপেই ১৮৯ নাকেন "ঈশ্বৰ লদয়ে" এই মহাস্তা ধবিতে অনেক শতাকী অতীত হইয়া গিয়াছে। আদিতে অজ্ঞ সানৰ প্রাকৃতিক পদাং সকলকে প্রভূত শক্তিশালী দোখয়া তাহাদিগকে নিভ্যেব ২ল বিবেচনা কবিয়া অঞ্চনা কবিতে আরম্ভ কবিয়াছে। मानव उद्यादित रेविषक काल वला याहेर ज भारत। মানব বলিয়াছে, "হে ইন্দ্ৰ, হে উষা, হে অগ্নি, হে বাঘ, আমাকে বকা কবা" এই বৈদিক উপাদনা যে कड भट বৎসর চলিয়াছে, ভাহা কে বলিভে পারে ৪ ভৎপরে পৌবাাণক কাল--যথন মাতুষ বিশাস করিল যে, মেঘ, অগ্নি, বাযু প্রভাঙ পদার্থ সকল আরাধা ও নিভবের স্থল নহে, কিন্তু ইঞাদের অধিষ্ঠাত্রী দেবতাগণ আবাধ্য। এই সকল দেবতাগণ কপ ও মৃত্তি ধাবণ করিয়া ভক্তের মনে।বথ পূর্ণ করিয়াপাকেন। এই काल कवित्र कत्रना श्हें एक नाना अकात ऋप ७ भूडि

প্রস্ত হইতে লাগ্ল। এরপ। বিধাসে আরও কভ শত বংসর অতীত হইয়া গেল। ক্রমে জগভের লোক বছ দেবতাতে বিশ্বাস পবিত্যাগ ক্রিয়া একত্বে উপনীত হইল। কিন্তু একমাত্র অধিতীয় ঈশ্বরে বিশাস স্থাপিত হওয়ার পরেও वहकान इत्यवानी स्थादत जाव जारम नाहे। धाठीन त्रिहती জাতির ধর্মবিশাস আলোচনা করিলে দেখা যায় যে, তাঁহাদের আবাধ্য ঈশ্বর স্বর্গে বাস করিতেন এবং সেথান হইতে মানবের পুণ্যাপুণ্যের বিচার করিতেন। পার্থিব বাজা যেমন নিজ ভবনে অবস্থিতি করিয়াই সমুদায় রাজ্যেব সংবাদ পাইয়া থাকেন, বিখেব বাজাও তেমনি স্থান বিশেষে প্রতিষ্ঠিত থাকিয়া विश्व-कार्यात তवावधान कतिया थारकन। हेमलाम धर्म, ब्रिल्मी ধম হইতে উদ্ভুত, স্থৃতরাং ইসলাম ধর্মেও ঈশ্বরকে বাহিরে প্রতিষ্ঠিত দেখা যায়। ঈশার স্বণে থাকেন, এমন কি তাঁহাব সহিত সাক্ষাৎ কবিবার জন্ম মহম্মদকে একদিন স্বর্গে যাইতে হইয়াছিল। অতএব একেশ্ববাদিদিণের মধ্যেও বছকাল বহিঃস্ত ও দূবস্তিত ঈশ্বরেব ভাব বিদ্যমান ছিল। "ঈশ্বর অন্তরে" এছ ভাব গ্রহণ করিতে জ্মনেক দিন লাগিয়াছে। হহা উপ-নিষদকাব ঋষাদগের বিশেষ ভাব। তাহাবা বলিয়াছেন, "আত্মাতে পরমাত্মাকে দশন কব।"

যতক্ষণ উপাস্ত দেবতা বাহিবে, ততক্ষণ সাধনেব আয়োজন বাহা কিছু সকলই বাহিবে। যিনি বাহিরে থাকিয়া আমার কাষা পর্যালোচনা করিতেছেন, তাঁহার সস্তোষ সাধনের জন্ত আমাকে বাহিবেব উপকরণ সংগ্রহ করিতে হইবে। ধূপ চাই, দীপ চাই, বলি চাই, নৈবেদ্য চাই। এই বাহ্যপূজাব ভাব একবাব প্রবল হইলে, উপাসকের হৃদয়ের সহিত আর কোনও সম্বন্ধ থাকে না। তোমার হৃদয়ের অবস্থা যে প্রকার হউক না কেন যতক্ষণ তুমি বাহিরের উপকরণ সংগ্রহ কবিতেছ, ততক্ষণ দেবতা তোমার প্রতি দস্তই। এই বাহ্যপূজার ভাব এতদূর বাইতে পাবে বে, বোর্ধিশাবলখীদিগের প্রথার ন্তায় কলে নাম জপ হইতে পারে। বৌধেবা নাম জপের একপ্রকার কল নিশ্মণ করিয়াছে, তাহাতে নাম জপ হয়, অথচ দে নাম জপে ধাহাব পুণ্য হইবে, দে ব্যক্তি হ্য ত দে সময়ে আহাব বিহাব করিয়া বেডাইতেছে।

আগ্নাতে প্রমায়াকে দশনই বাহপুদ্ধা হইতে চিন্তকে উদাব কবিবাব সক্ষপ্রথম উপায়। ঈশ্ব অন্তরে স্ক্রাং নানবের ধর্মাজীবনের সংগ্রামক্ষেত্রও অন্তরে। সাধন ভদ্ধন সন্দায়ই আধ্যায়িক ব্যাপার। এইজন্মই উপনিষদ বলিয়াছেন, "অধ্যায় যোগাধিগনেন" অধ্যায় যোগ দ্বারা উলোকে প্রাপ্ত হর্মা যায়। জ্ঞানেব সহিত জ্ঞানেব, প্রেমের সহিত প্রেমের এবং ইচ্চাব সহিত ইচ্চার যে যোগ ভাহাই "অধ্যায় যোগ"। যথন এই প্রকার যোগে আমরা ঈশ্বের সহিত সৃক্ত হই, তথ্নই ভাহার প্রকৃত অন্তনা হয়। কিন্তু ঈশ্বকে দ্বদ্বাসী না ক্রানিলে এই যোগের ভাব অন্তরে আ্বাসেন।

#### ধর্মজীবন।

আমাদের ধর্মজীবনের সজে বৃক্ষের স্থুনর তুলনা হয়। কোনও বৃক্ষ উৎপন্ন করিতে হইলে ছইটী উপকরণ চাই---ভূমি ও বীজ। এই হুই উপকরণ সম্বন্ধে মানবের কোনও হাত নাই। ভূমি ও বীজ ব্যতীত কে বৃক্ষ উৎপন্ন করিতে পারে ? এই হুইটা ঈশ্বর দিয়াছেন। মাহুব শত চেষ্টা করিয়াও ভূমি ও বীদ্ধের সৃষ্টি করিতে পারে না। এই হই বস্তুর উপযুক্ত ব্যবহার দ্বারা বৃক্ষপূর্ণ স্থন্দরউন্থান প্রস্তুত করিতে পারা যায়। মামুষের প্রথম কর্ত্তব্য, যে ভূমি টুকু আছে তাহাকে উকারা করা। স্কল ভূমি স্মান থাকে না। নানা কারণে ভূমির উর্বরত। কথনও কথনও হ্রাস হয়। তথন ভূমিতে সার দিয়া উর্ববতা বর্দ্ধিত করিতে হয়। সার দারা অমুকারা-ক্ষেত্রেও সতেজ বৃক্ষ জন্মাইতে পাবা যায়। বীজ হইতে যেট পত্র বহির্গত হইল, মামুষেব তথন কর্ত্তব্য বেড়া দিয়া ইতর জন্তর প্রাদ হইতে চাবা বৃক্ষকে রক্ষা কবা। যথন চাবা বৃক্ষ বৃদ্ধিত হইয়া পত্ৰ ও শাখাপ্ৰশাখা বিস্তার কবে, তথন মামুষ কত যত্নে বেডাদিয়া গো, ছাগ প্রভৃতির উপদ্রব হইতে ইহাকে রক্ষা করে। নতুবা বছদিনেব যত্নবিদ্ধিত বৃক্ষ এক দিনে ছাগাদির গ্রাদে বিনাশ পাইতে পারে, সকল শ্রম ও চেষ্টা নিক্ষণ হইতে পাবে।

ইহার সঙ্গে জল সিঞ্চন্ত প্রয়োজনীয় কাট্য। স্থানভেদে এই জলসিঞ্চন ভিন্ন ভিন্ন আকার ধারণ করে। স্থাভাবিক উর্বর ভূমিতে অর জল দিলেও ফল হয়, কিন্তু যে ভূমি স্থভাবত: শুক্ষ, যে দেশে জলের অরভা, সেয়ানে গভার কূপ হহতে জল উত্তোলন কবিয়া রক্ষকে স্ঞাব রাখিতে হয়। জল ছারা ভূমিকে সিক্ত না করিলে রক্ষ স্থাঞ্জ হয় না; সময়ে ফল ফুলও প্রদান করে না, অকালে পঞ্চ দশা প্রাপ্ত হয়। উলিখিত উপায়ে বীজ হইতে স্থলর রক্ষ উৎপন্ন করা যায়, যাহা হইতে ফল ফুল পাহয়। এবং যাহার ছায়ায় উপবেশন করিয়া পৃথিবীয় লোক কঙ আনলল লাভ করে।

মানবেব ধন্দ্রীবনও এই প্রকার। ঈশার শ্বয়ণ নিজ হত্তে
মানবাত্থার পভ্মিতে ধর্মের বাজ, বিধাসের বাজ রাখিয়াছেন।
এই মানবাত্থা ও বিশাস-বাজ ঈশার হস্ত-প্রস্ত । নানা কাকণে
যেমন ভূমি অনুর্ববা হয়, তেমনি আত্থাও অনুব্বর হয়। তথন
বিশাসী আত্থাব সংস্পাশে আনিয়া আত্থাকে উর্বরা করিতে হয়।
তথন সেই বিশাসের বীজু হইতে ধর্মজীবনের অত্বর উৎপদ্ধ
হয়। বিশাসী-আত্থার সংস্পাশে যথন ধর্মজীবনের স্চনা
হয়, তথন মান্ত্রের গুরুতের সংগ্রাম। সংযমের বেড়া দিয়া
তথ্ন এই জীবনকে রক্ষা করিতে হয়। ধর্মজীবন গঠন
সম্বন্ধের থারতে বদি মান্ত্রম সংযম অবলম্বন
না করে, তাহা হইলে সেই জীবনতক অকালে বিনষ্ট
হইয়া যায়। কাম ক্রোধ লোভ মোহ প্রভৃতি গ্রমান্ত রিপ্র

মানবেশ্ব গুরুতর সংগ্রাম। নূতন-পত্ত-পূপ্প-শোভিত চারা গাছ দেখিলেই যেমন গো, ছাগ প্রভৃতি ক্লমা ঃবিস্তার করিয়া ভোজন করিতে চার, সেইরূপ ধর্মজীবনের স্চনাকালে পাপপ্রবৃত্তিগুলি ধর্মজীবনকে উৎসন্ন করিয়া স্বেচ্ছাচারিতার রাজত্ব বিস্তার করিতে চায়। বিশ্বাসের বাণী বলে, "ঈশরকে ভর করে, খেচ্ছাচারিতা পরিত্যাগ করিয়া সত্যের অধীন হও" কুপ্রবৃত্তিগুলি আপনাদের কার্য্যের ব্যাঘাত উৎপন্ন হয় দেখিয়া, সেই বীঞ্চকে উৎপাটন করিতে চায়। শত উর্বার ভূমি হউক, বিশ্বাসীর সংস্পর্ণে এই বীজকে সতেজ রাথা হউক, কিন্তু প্রারম্ভে বেডা না দিলে এই বীজকে বিদ্ধিত করা কথনই সম্ভব নহে। ধর্মজীবনের অঙ্ক এথানেও ভন্ন ও প্রলোভন আছে। ভক্তিও প্রেমে জীবন माउक ना इहेरल कल, करना ना।, किन्छ मासून এই চারা বুক্ষ হইতে ফলের প্রত্যাশা করিয়া স্বন্ধীবনকে পাতলা ও নিষ্টেজ করিয়া ফেলে। ভক্তিও প্রেমে অভিষিক্ত না হইলে কথনও ধশ্বজীবন দৃঢ় হয় না, ফলও প্রদান করে না। বৃক্ষের ন্তায় ধর্মজীবনকে ভক্তিজলে বদ্ধিত করিতে হয়। ঈশ্ব-প্রীতি माधन ना इटेल প্রিয়-কার্য্য সাধন, মানব-সেবা হয় না। সংসার, প্রশ্ন কবে—"কত কাজ কারয়াছ," কিন্তু ধর্মা, জিজ্ঞাসা করেন "কিভাবে কবিয়াছ ?"—অতি দীনভাবে ভক্ত ও সাধু-সঙ্গে বাস কবিয়া এই ঈখন্ন-প্রেম ঈখর-ভক্তি জীবনে লাভ করা আবশুক। কাষাক্ষেত্রে আমুগত্য, অধীনতা এই ভক্তি হই-তেই হয়। থাহার প্রতি প্রেম নাই তাহার আমুগত্য, কি কখনও হয় 🔊 🤏 জ ভূমির রুক্ষাদি কি কথনও ফল প্রস্ব করে 🤉 পৃথি-ৰার বাদাস্থবাদ, নিন্দা চর্চা, প্রভৃতি রাহ্মসিক ভাবের মধ্যে বাস করিলে এই ভক্তি জাবনে আসে না। স্থতবাং সামুগতা কোথায়? প্রেম না হইলে আফুগতা হয় না। বিখাসে ঘেমন তাঁথার প্রকাশ দেখি, ভক্তিতে সেইরূপ তাঁহাকে প্রাণের প্রাণ বালয়া গ্রহণ করি। ধর্মজীবনেব সৌন্দর্য্য ও মধুবতা এহ প্রেমে। বিশ্বাসা ও কন্মী জীবনে মানুষকে আশ্চয়ায়িত কারতে পাবে, কিন্তু ভক্ত-জীবন মানুষকে একেবাবে ডুবাইয়া ফেলে। ঈশ্বন প্রেমেব ভায় স্থমিতুবন্ত আবে কি আছে ? ইহা ২ইতেই নব-প্রীতির সৃষ্টি। প্রকৃত আফুগত্য ইহা হইতেই উৎপন্ন। माधुमिरगत कीवन व्यारमाठना कतिरम रम्था यात्र, उँशामिरगव জীবনের গৌন্দধ্য জগৎমুদ্ধকারী ভাব এই প্রেম হহতেই উৎ-পর। ভক্তজন সত্য সভ্যই অনুভব করিয়াছেন "ভূমি আমার স্ত্রা পুত্র ধন জন হইতে প্রিয়।" নতুরা কাঁহাবা জীবনকে কোন্ প্রেমের জন্ম বিসজ্জন দিতে প্রস্তুত হইয়াছিলেন ৮--এই ঈশর-প্রেমের জন্মই তাঁহারা সক্ষতাাগী হইতে পারিয়াছিলেন।

জীবনকে সর্বাদা ভক্তিবদে জীবিত বাথিবাৰ জয় প্রথমে मीनजा हाइ- अवहः अतिन्ता श्रेट पृत्त थाकिए श्रेट । আমবা বিশ্বাদী, ভক্ত ও আহুগত্যের জীরন অমুসরণ করিব। धमाको वान वाक के के काकूव कानिया थारक, जाशास्क मः यरमञ বেড়া দিয়ারকা করিব ও ঈশ্বপ্রীতির রস দারাসঞ্চীবিত করিব। আমাদিগকে আবর্জনা তাড়াইয়া দিয়া দীন ভাবে প্রতীকা করিতে হইবে। পর-দৃষ্টি অপেক্ষা আত্ম-দৃষ্টি ও আত্মপরীকা প্রবল করিতে হইবে। শয়নে স্থপনে সর্বাদা তাঁহার গুণ কীর্ত্তন कत्रा, उाँशास्क खत्रण त्राथा व्यामात्मत्र माधन। स्रेचत-छक्ति মানব জীবনের সর্বশ্রেষ্ঠ লাভ। সমস্ত জীবন দিয়া যদি তাঁহার প্রতি ভক্তিলাভ করিতে পারি, তবে কি না লাভ হইল ? পর-মেশ্বর কুপা করুন তাঁহার চরণে একবিন্দু ভক্তিলাভ কবিরা কুতাৰ্থ হই।

### পরিমিতের পূজা।

পরিমিতেব পূজা ৬ই প্রকার; পরিমিতকে পরিমিত জ্ঞানে পূজা ও পরিমিতকে অনম্বজ্ঞানে পূজা।

পরিমিতকে পরিমিত জ্ঞানে পূজা করা সম্ভব. এবং আমবা সর্বদাই ভাহা করিয়া থাকি। ভক্তসন্তান যথন তাঁহার প্রতি মাতার অলোকসামাক্সপ্রেম অমুভব করিয়া তাঁহার চবণে প্রণত হইয়া বলেন,—

> ''যা ভূতলে ব্ৰহ্মকুপৈৰ মুৰ্ক্তা বাল্যে সদা পালয়তি প্রসন্না। ক্ষেত্রেরেকপয়োনিধি তাং नमामि (पवीः जननीममाथाम् ॥''

অর্থ—িধিনি ভূতলে মৃত্তিমতী ত্রহ্মকুপাম্বরূপিনী; অসহায় বাল্যকালে যিনি প্রসন্না হইয়া পালন করিয়াছেন; যিনি ক্ষেহরত্বের একমাত্র পরোনিধি; জননী আথাধারিণী সেই (मरीक अनाम कति।"

তথন তাঁহার ভাব ও বাক্য উভয়ই বুঝিতে পারি। তিনি যে জননীকে জননীই মনে করিয়া কৃতজ্ঞতাভরে প্রণত **ब्हेम्रा डाहारक ভक्डियेश्वर अमान क्रिलन, हेहारड डाहा**ब পুঞা করাই হইল। পিতা, জ্যেষ্ঠভ্রাতা উপদেপ্তা সকলেরই সম্বন্ধে ইহাসতা। পরিমিতকে পরিমিত বলিয়া আংলা এবং পরিমিত জ্ঞানে ভক্তি শ্রদ্ধা করা সম্ভব।

কিন্তু প্ৰিমিতকে অনন্ত জ্ঞানে পূজা কৰা সম্পূৰ্ণৰূপে অসম্ভব, কাবণ পরিমিতকে অনস্ত বলিয়া জানা জ্ঞানেব মৃশস্ত্রেব বিরোধী। যে বস্তু যাহা নহে, তাহাকে সেই वञ्च विद्या ভाবा, कि नेश्वत कि मानव नकरणवहे भक्ति অসম্ভব। পরিমিতের উপাদক হয়ত এই আপত্তি কবিবেন. তবে ঈশবের স্বাশক্তিমতা কোথায় রাইল ? এই আপত্তিব मृत्य विषम जास्ति त्रश्याद्य ।

আমার পক্ষে যদি এরপ চিস্তা কবা সম্ভব হইত যে, আমি নাই, তাহাহইলে বাস্তবিকই আমি থাকিতাম না, কারণ চিস্তাতে যাহা সভা, বাস্তবিকও ভাহাই সভা। স্থভবাং ঈশ্বর স্বরূপতঃ অনস্ত হুইয়াও যদি তিনি ভাবিতে পাবেন যে তিনি স্বয়ং পরিমিত, ভাষা হইলে তিনি আর অনন্ত রহিলেন না, অর্থাৎ তাঁহার আবাব ঈশরত রহিল না। এতটুকু **जनारेग्रा (मथिएन चात्र बना मछव रुप्त ना, (य क्रेश्वत चान इ** হইয়াও আপনাকে পরিমিত বলিয়া ভাবিতে পারেন দীধরভক্তি তাঁহারই ক্রণাতে জাবনে আসে ইহাসতা, কিন্ত । অথবা পরিমিত আকার ধারণ করিতে পারেন। ঈশ্বর আপনাকে কখনও পবিমিত বলিয়া ভাবিতে পাবেন না, ইহাতে তাঁহার সক্ষণজ্জিমতার অভাব প্রমাণ হয় না, বরং যদি তিনি পারিতেন, তাহা হইলে তিনি ঈশ্ব থাকিতেন না. জগৎ থাকিত না, ধর্মও থাকিত না। পরিমিত ও অনম্ভ সম্বন্ধবাচক শব্দ; পরিমিতকে না ভাবিয়া অনস্তকে ভাবা যায় না, উভযকে এক সঙ্গেই ভাবিতে হয়। কিয় পবি-মিতকে অনম্ভ বলিয়া ভাবা সম্ভব নহে। পুল্রকে যেমন পিতা বলিয়া ভাবা যায় না, অথচ উভয়কেই একরে ভাবিতে হয়, ভাইকে যেমন ভগ্নী বলিয়া ভাবা যায় না, অথচ উভকেই একরেই ভাবিতে হয় রীকে যেমন স্থামী বলিয়া ভাবা যায় না, অথচ উভয়কেই একরেই ভাবিতে হয় প্রিমিতকে অনস্ভ বলিয়া ভাবা যায় না, অথচ উভয়কে একরেই ভাবিতে হয়, তজ্পপবিমিতকে অনস্ভ বলিয়া ভাবা যায় না, অথচ উভয়কে একরেই ভাবিতে হয় ।

স্তরাং দেখা গেল যে, প্রিমিতকে অনস্ত বলিয়া ভাবিতে চেষ্টা করা বিজন্ধনা মাত্র। ইহা দ্বারা কোন ধারণাই সম্ভব নহে, কোন জ্ঞানই হইতে পাবে না। যথন কোন জ্ঞানই হইবে না. ধারণাই যথন সম্ভব নহে, তথন পূজা হইবে কিসের ৪ শৃক্তের না হাওয়ার ৪

কেই কেই হয়ত বলিবেন, বাথিয়া দাও তোমাদের তক বৃক্তি; আমরা কার্য্যে দেখিতে পাইতেছি. যে পবিমিত্রসদবতাব উপাসকও তাঁহার দেবতাতে অনস্তেব গুণ
আরোপ কবিতেছেন; যিনি চ্র্যাব উপাসক তিনি এক
দিকে বেমন "অতুসী পুষ্পবণাভাং স্বপ্রতিষ্ঠাং স্পোচনাণ
বলিয়া সীয় ইষ্টদেবতার ধ্যান্ করিতেছেন, অপরদিকে
তেমনই সেই দেবীব সম্বন্ধেই বলিতেছেন;—

''যা দেবী সক্ষভূতে যুশ**ক্তিক** পেণ সংস্থিতা। নম স্তামে নম স্থামে নম স্থামি নমা ।"

স্থাতরাং প্রিমিতকে অনস্ত বলিয়া ভাবা অসম্ভব চইল কিবপে? কিন্তু কণা হুইতেছে এই যে, "ভানস্ত অনস্ত" বাললেই অনস্ত বুঝা হুইল না। অনস্তকে বুঝিলে আব পার্মিতকে অনস্ত বলা সম্ভব হয় না, কেনা হয় না, ভাগা পূর্বেই বলিয়াছি। ভবে যিনি প্রিমিতে অনস্তের গুণ আবোপ করেন, অথবা অনস্তেব পক্ষে প্রিমিত হুওয়া সম্ভব মনে কবেন, তিনি অনস্ত্রও বুঝেন না, প্রামিতও বুঝেন না, স্কতবাং যাহা মনে আইসে ভাহাই বলেন।

আজ কাল এক শ্রেণীর নৃত্রন তার্কিক দেখা দিয়াছেন, উলোরা বিশেষ বিশেষ মানবের ঈশ্বর প্রমাণ করিতে অতিশর বাগ্র। করেকমান পূরের এই শ্রেণীর কোন এক তার্কিকের সহিত আমাদের সাক্ষাং হট্যাছিল। তিনি পরলোকগত মহাত্মা বামক্ষণ পরস্থাবের শিষা। তিনি বলিয়াছিলেন "আত্মা যথন এক অথও অনস্ত বস্তু, এবং রামকৃষ্ণদেবের মধ্যে যথন আত্মা চিল্ল, তথন তিনি অনস্ত অর্থাং ঈশ্বরই ছিলেন।" ইইার মুক্তি ইলাই প্রমাণিত হইতেছে, যে তোমার আমার এবং তাহ, বিজ্যের আত্মা নাই, কেবল রামকৃষ্ণেরই আত্মা ছিল, এবং যদিও তাহার নিজ্যে মধ্যে আত্মা নাই বটৈ, তথাপি কিনি

পরমহংস মহাশয়ের অস্তরম্ব আত্মাকে চিনিতে পারিরাছেন ! কিন্তু আমলার্শামুভব করি যে, আমাদের আত্মা আছে; স্থভরাং তাঁহার যুক্তিতে ইহাই প্রতিপন্ন হইতেছে যে, তুমি আমি প্রত্যে-কেই অনস্ক এবং এই কুদ্র জগতে বহু অনস্কের মিলন হইয়াছে। কি অন্তত যুক্তি। অনস্ত যে আবাব বহু হইতে পারে, তাহা प्यामता এই প্রথম ভূনিলাম। याहा इडेक প্রশ্ন এই যে, পূৰ্ণব্ৰহ্ম কি কোন মামুষে পূৰ্ণৰূপে অবতীৰ্ণ হইতে পারেন না ? এবং যদি পাবেন, ভাহা হইলে ঈদৃশ ব্যক্তিকে পূজা কবিলে কি অনস্তেব পূজা इत्र ना ? आयवा विल-ना ; कातगः यिनि कार्या-কাবণ শৃত্থালে জগতে আসিলেন, তিনি সেই শৃত্থালের মধ্যে একটা অংশ মাত্র, এবং যিনি এই কার্য্যকারণ শৃত্যলের আধাৰ অৰ্থাৎ গাঁহাৰ জ্ঞানে এই কাৰ্যাকাৰণশৃত্বল সম্ভব হই-তেছে, তিনি অবশ্ৰই শৃঙ্খলেব অন্তবৰ্তী প্ৰত্যেক অংশ হইতে ভিন্ন। অর্থাৎ এই অংশ কথনও অনন্ত নছে; স্কুতবাং পরিমিত মানব কথনও ঈশ্বব হইতে পাবে না, এবং কোন ব্যক্তি যতই উন্নত হউন না কেন, তাঁহার পূজা করিলে কথনই অনস্ত ঈশবেব পূজাহয় না।

অতএব অনভের পূলা পুতুলেও হয় না মানবেও হয় না।

এক্ষণে দেখা যাউক অনস্তের পূজা ওপবিমিতের পূজা একই পদার্থ কি না। অনস্তেব পূজা কি? আয়ুজ্ঞানে নিজকে ও অনস্তকে নিত্যযুক্ত বলিয়া জানিলে, ও তাঁহাকে অথওং সাচ্চদানক্ষণ এবং নিজকে তাঁহাব চিব আশ্রেত বলিয়া যে অহে একটা ভক্তির উদয় হয়, তাহারই নাম অনস্তেব পূজা। যাঁহার কিলিওং মাত্রও আয়াদৃষ্টি জন্মিয়াছে, এবং যাঁহার জ্ঞান ক্ষভাব হইতে কিয়ৎ পরিমাণেও মুক্ত হই য়াছে, তিনিই সক্ষাস্থাকরণে এই সভ্রেব সাক্ষা প্রদান কবিবেন। ইহাই পরমায়ার সহিত প্রক্রত সক্ষর, এবং জ্ঞানে ও প্রেমে এই সম্বন্ধের বিকাশই ধর্মা। জনস্বরূপ্তায় অনস্তই উপাত্তা, শ্রবণ, মনন, নিদিধাসন, সতানিষ্ঠা সংকর্মনীলতা প্রভৃতি জ্ঞানোদাপক ও প্রেমোদ্দীপক ক্রিয়া ইহাব সাধন, এবং অনস্তকে দিন দিন অনিক্তবক্রপে আয়ুত্ত কবিয়া ক্রণয়েব সাভাবিক ভাক্ত ও ক্রিম্বার্থ প্রেম তাঁহাকে উপহাব দেওয়াই ইহার লক্ষ্য।

কিন্তুপরিমিতের পূজা কি ৪ আমিলা প্রচলিত তুগা পূজাব বিষয় আলোচনা কবিয়া দেখাটব যে প্রিমিতের পূজা কি ৪ এন্তলে উপাত্ত দেবতা কিকপ এবং দ্পাদক অন্তরে কি ধানি কবিতেছেন তাহা শ্রবণ করান ঃ—

"ও' ছটাজুটসমায় কামদ্দেক্ত তশেখরাং।
লোচনত্রসংযুকীং পুঁণেল্সদৃশাননাং॥
তপুকাঞ্চনবণাভাং স্ক প্রতিষ্ঠাং ক্রলোচনাং।
নবযৌবনসম্পরাং সর্বাভরণভূষিতাং॥
স্কচাকদশনাং দেবীং পীনোর তপয়োধরাং।
তিভিদ্যানসংস্থানাং মহিষ্যস্থরমন্দিনীং।
ইত্যাদি, ইত্যাদি।

তাহ ানজেরও আত্মানাই, কেবল রামক্তফেরই আত্মাছিল, উপরোক্ত রূপধারিণী যে দেবী তিনিই উপাশু দেবতা। এবং যদিও তাঁহার নিজের মধ্যে আত্মানাই বটৈ, তথাপি তিনি। সাধন কি ় প্রতিমাগঠন, নৈবেদ্যাদির আহোজন, ও ছাগ মহিধানি क्रम । शृकां कि १ द्वेन्द्रनग्रानि उरमधींकत्र । हाशमहि-वानि वथ । हाका कि १

"রূপন্দেহি জয়ন্দেহি যশোদেহি বিবোজাহি। ভাগ্যাং মনোরমাং দেহি সর্ব্বাং কামাংশ্চ দেহি মে॥"

"রূপ দাও, জয় দাও, যশ দাও, এবং শত্রুদিগকে বিনাশ কর; মনোরমা ভাষ্যা দাও,এবং সর্ব্ধ প্রকার কাম্যবস্থ দান কর।" এখন জিজ্ঞাসা করি, এই ছুই কি এক ? বাঁহারা এক ভাবিতে পারেন, তাঁহাদের চিন্তাও উদারতা অতি আশ্চর্যা বটে!

কোন বাহ্ বস্তুতে ব্যক্তিত্ব আরোপ করিলেই সে বস্তু ব্যক্তি হটল না, এবং সে ব্যক্তিও প্রাকৃত ব্যক্তি হইল না। অতএব পরিমিতের উপাসক যথন কোন বস্তুতে ব্যক্তিত্ব আরোপ কবিয়া তাহাব পূলা করেন, তথন তিনি অন্ত কোন ব্যক্তির পূলা কবেন না. কিন্তু নিজেরই পূলা, করিতেছেন, অর্থাৎ তিনি নিজেরই পূলা করিতেছেন। আত্ম-পূলা আর অনস্তের পূলা কি এক? যে ভক্তি অনস্তের স্বর্লপ জানিয়া স্বভাবতঃ অনস্থেব দিকে ধাবিত হইতেছে না, সে ভক্তি কথনও ভগবদ্ধিক নহে।

অপাত্রে স্থাপিত ভক্তিকে ভগবছকি বলাতে যে কি কৃষ্ণৰ ফলে, আমাদেব দেশেব প্রচলিত বৈষ্ণবধর্ম তাহার উচ্ছ ল मुद्देश्य । त्राधाकृष्क्य जिल्दा कथा क्रियां क्रिया कान याना পালা হইয়া গেল। কোন কোন বন্ধুব নাকি রাধাক্র ফের প্রণয়-रुष्ठ० मधील ना श्रीमाल लेखिन जेमग्र हम्रामा। (१ **लेखि (काम** বাক্তি বা বস্তু সাপেক্ষ সে ভক্তি কথনও ভগবন্তু কি, নহে। কাবণ চিনায় প্রমেশবের স্থিত প্রকৃত সম্বন্ধ জ্ঞান হইলে যে ভক্তি **হয়, ভাহা অহেতৃকী ও সব্ব প্রকার পার্থিব সম্বন্ধ বিবর্জিভ**, ও নিবপেক্ষ। তিনি যদিও সর্ব্ব প্রকার পার্থিব সম্বন্ধের মূলে, তথাপি তাঁহার সহিত মানবাঝার যে সম্বন্ধ তাহা কোন পার্থিব সম্বন্ধেবই অমুক্রপ নহে; কারণ তিনি পার্থিব অর্থে পিতাও नरहन, माजाख नरहन, खाजाख नरहन, मधाख नरहन, यपिछ তাহারই প্রেম জ্নয়ে জ্নয়ে অবতীণ হইয়া সর্বপ্রকার পার্থিব সম্বর্কে মধুময় কবিয়াছে। যিনি পার্থিক অর্থে জাঁহাকে স্বামী মনে করিয়া রাধাক্নফেব দাম্পত্যবিলাদে তাহাব দৃষ্টাস্ত দর্শন করিতে চাহেন, তাঁহাব হৃদয় কথনও নিশ্মল ও শুদ্ধ হইতে পারে না, এবং মূথে যাহাই বলুন না কেন, তিনি ও তাঁচার ভাব দৃষিত। সংসাবেব দিক হইতে ঈশ্ববকে দেখিলে, ঈশ্বর ও সংসারী হইয়। পডেন ; ঈশ্বের দিক হইতে সংসারকে ८मिथरन भः मात्र अक्तमग्र रहेगा यात्र। व्यत्नरक विनिशा शास्त्रन, রাধা ক্লঞ্চের মধ্যে যে প্রেম ছিল তাহা পার্থিব দাম্পত্য প্রেম নহে, কিছ অপার্থিব ভগবড়ক্তি। কথাটা নিতান্তই অসকত; স্থারণ দেহধারী কোন ব্যক্তির প্রতি চিন্নয় অনন্ত পরমেশবের প্রতি বে ভাব ভাষা উদয় হইতে পারে না; যেহেতু এই তুই এক নহে, এবং পদার্থের বিভিন্নতা নিবন্ধন ভাবের বিভিন্নতা रहेरवहे इहेरव ।

#### শুঙালা ও সৌন্দর্য্য।

(প্রাপ্ত )

বিশ্বস্থার অসীম প্রকৃতিতে কি এক মহাশৃঙ্খলা এবং মহ:ন্
সৌন্দর্যা বিদ্যমান! সেই অসীমপ্রকৃতি স্টেরপে অভিবাক্ত
হুইয়াছে বলিয়া এই পরিদৃশুমান পৃথিবীর সর্বত্ত কেমন এক
অপূর্ব্ব শৃঙ্খলা! কেমন এক অনুপম সৌন্দর্যা! আমন্ধা
ব্যথন নিবিষ্টুচিত্তে এই স্পৃষ্টি এবং স্পৃষ্টি বক্ষার বিষয চিন্তা
করি, তথন তাহাব মূলেও নিরীক্ষণ করি—একমাত্ত শৃঙ্খলা
এবং সৌন্দর্যা।

ব্রক্ষের প্রাকৃতি যাহা, এবং সৃষ্টি বক্ষার মূলে য'হা, ভাহাই ব্রাক্ষধর্ম। স্থতরাং ব্রাক্ষধর্মের মূলেও এই শৃঙ্খলা এবং সৌন্দর্মা। আমাদের মনে হয়, থে ব্রাহ্ম, জীবনে যতটা এই শৃঙ্খলা এবং সৌন্দর্য্যে রক্ষা করিতে পাবেন, তিনিই ততটা ব্রাহ্মধর্ম পালন করিয়া গাকেন। আর যিনি যতটা উচ্চ্ ভ্রাণ ও অশোভন হইয়া পড়েন, তিনিই ততটা ব্রাহ্মধর্ম হইতে ত্রই হইয়া যান। আমার বিশ্বাস, বর্ত্তমান সময়ে উচ্চ্ ভ্রাণ ও অশোভনভাব ব্রাহ্মসমাজে এক টু বেশি পবিমাণে প্রবেশ কবিয়াছে, তাই আমবা ব্রাহ্মধর্মের উচ্চ লক্ষ্য হইতে ক্রমশঃ যেন নিয়ে নামিয়া যাইতেছি।

প্রথমতঃ দেগুন, ব্রাহ্মস্মাজের মতেব ভিতর আজ্কাল কেমন এক উচ্ছালও অশোভন ভাব প্রবেশ করিয়াছে। ষ্মনেক ব্ৰাহ্ম বলেন, মতটা নাকি খাঁট জিনিষ নয়—একটা খোদা মাত্র একথাকি দতাণ মত কি আমাদের অনস্থ গম্ভবাপথে একটি দিংদশন যন্ত্ৰ নয় ? নাবিকেব যেকপ অম্বপোত লইয়া সামাহীন সমুদ্রে প্রবেশ করিতে হইলে, দিগদশন যন্ত্রের দিকে হির লক্ষা বাথা প্রয়োজন, –নছিলে দিক্রাস্ত হইয়া বিষম বিপদে পজ্বার সন্থাবনা, সেইকপ ব্রাহ্ম যে তাঁহাব জীবনতরণী লইয়া ব্রাহ্মধন্মের অকুল পাবাবারে অনস্ত উন্নতিউদ্দেশে যাত্রা কবিবেন, বিজ্ঞান-দশনস্মত স্থসংস্কৃত মতের দিন্দশন্যস্ত্রের উপব ভিব লক্ষ্য নারাখিলে চলিবে কেন ? ব্ৰাহ্মকে যে তাহা ২ইলে জীবনের লক্ষ্য হইতে ঋণিত হইয়া পড়িতে হইবে। কিন্তু হায়। আজ কাল কুসংস্কাব এবং উচ্চুছাল ভাবগুলি এমনই এক উৎকট উদারতার ছম্ম-বেশে আমাদেব ভিতর প্রবেশ করিতেছে, যেন আমবা মতেব দিক্নিণায়ক যন্ত্রের উপব আব স্থিব লক্ষা রাখিতে পারি-তেছি না! আমরা মনে কবিতেছি--স্তাও ভাল, মিথাও ভাল। আলোও যাহা, অন্ধকারও তাহা। নিরাকাব ব্ৰক্ষোপাসনা এবং জাতিভেদ বজ্জন পূৰ্ব্বক স্বজাতি সমধ্য, সেও ভাল, ও পৌত্তলিকতা, জাতিভেদ ( যাহাতে ভাবতের সর্ব্ব প্রকার অপ্রেম এবং জ্মঙ্গল সংঘটন হইয়াছে এবং হইতেছে ) তাহাও ভাল ! কিন্তু মাহুবের মনেব ধাবণা এরপ অস্বাভাবিক হইলেও স্বভাবত: আরু অস্বভাব হইতে পারে না ; 🗷 "হা" কি "না" এই গুইটীর একটিকে গ্রহণ করে ত অক্টাকে নিশ্চয়ই বৰ্জন করিবে। ফলে কিন্তু তাহাই হইতেছে। পূর্বে যাহাবা অসভ্যকে ভুচ্ছ করিয়া সভ্যকে আদর করিভেন, এখন ভাছাবা

সভাগিতা এ ছই এক মনে করাতে, তাঁহাদেব অসতোর অব-খেলা আসিয়া সভাের উপর পড়িতেছে! সভাের আদেব অসতাের উপব বাইতেছে। দিন দিনই তাঁহারা সভাধর্ম হইতে দ্রে সবিয়া বাইতেছেন!

মত ছাড়িয়া যদি আমবা আমাদেব কার্য্যেব উপর দৃষ্টিপাত্ করি, তাহা হইলেও এই উচ্চুছাল এবং অশোভনভাবই যেন অনেকটা দেখিতে পাই। প্রথমেই দৃষ্টি পড়ে, আমাদের সাধারণতন্ত্রপ্রণালীর উপব। এই শাস্ত্র এবং গুরু পুবোহিত প্রাপীড়িত দেশে, ছোট বড় সকলে মিলিয়া মিশিয়া দকলেব শক্তি সমবেত কবিয়া প্রিয়তম ত্রাহ্মসমাজের কার্য্য স্থসম্পন্ন কবিব, ইহাকি আননের বিষয়! কিন্ত হায়! আমবাতাহা পাবিয়া উচিলাম কই ? আমাদেব যথন এক একটী সভার অধিবেশন হ্য, তথন এমন গোলমাল এবং অপ্রেমস্চক বাদারুবাদ হইতে থাকে যে, শক্তি সকলেবই ক্ষয় হইয়া যায়, অণচ কোন একটা কার্যা স্কুচারুকপে হইয়া উঠে না! আমাদেব জাতীয় প্রস্তুতির পোডায় গলদ বলিযা বুঝি বা এপ্রকাব হয়। আমাদের জাতি শুদ্ধলা এবং সৌন্দয়কে বডই উপেক্ষা কৰিয়াছে। এইজগ্ৰই বুঝি বা এদেশে জাতীয়একতা এবং জাতীযপ্রেম কথনো প্রতিষ্ঠিত হইতে পাবে নাই। আমবা যথন সেই জাতি হইতে উৎপন্ন হইয়াছি, তথন যে অতি সহজে আনবা ব্যক্তিগতস্বাৰ্থ এবং অভিমান পবিত্যাগ করিয়া ভাই ভাই পরস্পব প্রেমে স্মিলিত হইয়া ঈশ্ববে কার্যা স্থচাকরপে সম্পন্ন কবিতে পাবিব, একপ মনে হয় না। কিন্তু উদার প্রেমেব ধর্ম যথন ष्यवलक्षत कविग्राष्ट्रि, ज्यन (यक्तर्भ रुष्ठेक এ भाषन ष्यामानिगरक किति उड़े इट्रेंद। এडिमन (य किति छ भावि नाहे, उड़्ज़ ग्र আক্রেপ ক্রিয়া বলা অসঙ্গত নয় যে, শৃত্থলা এবং সৌন্দ্র্য্যের প্রতি আমাদেব দৃষ্টি নাই।

আমাদের সমাজে পুক্ষ বমণীর সমান অধিকার। পুক্ষ রমণী সকলেই স্থাশিকিত এবং ধ্যাণীল হইয়া মিলিয়া মিশিয়া যদি ত্রাহ্মসমাজের কার্য্য কবিতে পাবিতাম, তাহা হইলে কঠোরে कामत्न मिनियां जामातात कार्या श्रीत कि सम्भव कि समुध्यतहे নাহইত। কিন্তু হায়। আমাদের মধ্যে বৃদ্ধিমতী স্থাশিকিতা, धयानीला व्यानक वमली व्याष्ट्रन . किन्न कार्याव ममग्र कार्याक छ অগ্রস্ব হইতে দেখা যায় না। "পাছে লোকে কিছুবলে" **এই ভয়ে অথবা এই ল**জ্জায়ই বৃষ্ণিবা স্বাদা **উ**হোৱা মিয়মাণ इटेगा बाइन। नटेरल धार्मारतत (बनारतल कमिष्ठिर एर मकल মাননীয়া মহিলাদিগেব নাম দেখা যায়, ঠাহাবা কি উক্ত কমিটিতে বীতিমত উপন্তিত থাকিয়া, পুক্ষের এক তব্ফা ডিক্রার বিক্লে কিছু বলিতে পারেন না? না,—কার্যানিকাহক সভার সভ্য হুট্যা ব্রাহ্মদ্যাজের কার্য্য যাহাতে স্কুড্খলে সম্পন্ন হয়, ত্রিষয়ে (त्रष्टी कविष्ठ भारतम ना ? जाकामगास्कृत व्यवका मन्नस्क ग्यन আলোচনার জন্ত কোন সভা হয়, কত শ্রহ্মেয়া ভগিনী সেভলে উপস্থিত থাকেন, ব্ৰহ্মসমাজের কল্যাণ কামনায় তাঁহারা কি মনের কোন ভাব বাক্ত করিতে পাবেন না ? বলিতে ছ:থ रुप्त, य जाक्रमभारक व मुक्की वर्गी भरत वस्त्रीया व्याभारन व मुक्रान्टर প্রাণ পাইয়াছেন, সেই ব্রাহ্মসমান্তে এক্ষণ মহিলা প্রচারিকার কত প্রয়েজন; তথাচ আজ পর্যান্ত একটি ভগিনীকেও গ্রচাবিকা হইতে দেখিলা না! ছাত্রসমাজে অনেক মহিলা মেম্বর আছেন; কিন্তু পুক্ষসম্পাদক এবং পুক্ষই সহকারী সম্পাদক থাকায়, মহিলা মেম্বরের সঙ্গে মিলিয়া মিশিয়া কার্য্য করিবার স্থবিধা হয় না। তাই এবার অনেক পুক্ষ মেম্বরের ইচ্ছাছিল, তুইজন সহকারী সম্পাদকের মধ্যে একজন পুক্ষ এবং একজন কোন মহিলা নিযুক্ত হন। কিন্তু কোন মহিলাই তাহাতে সীকৃতা হইলেন না। মূর্ত্তিমান সৌন্দর্য্য স্বরূপ যে রমণীজ্ঞাতি, ভগবানেব অমুপম শৃত্ত্বলা বাহাদেব স্বাভাবিক ভাব তাঁহারা যে কেন সৌন্দর্য্য এবং শৃত্ত্বলাকে এরপ অবহেলা করেন, তাহাত ব্ঝিতে পারি না।

স্মিলিত সাধারণকার্য ছাডিয়া যদাপি আমাদের আমাদেব ব্যক্তিগতকার্য্য পর্যালোচনা কবি, ভাগ হইলে ब्रनकरम्क कर्मभौन উদ্যোগী পুরুষ ,বাতীত আব যুবক वन, वृक्ष वन, अप्तारकत कार्यावह (यन এक हा श्रीनाह अक हा শৃখলা নাই। আমাদের নেতাদিগের মুখেত স্র্দাই এই বলিয়া আক্ষেপ শুনিতে পাই, বালস্মাজে এমন লোক থুব কমই আছেন, যাহাদেব হস্তে কোনকপ একটা দায়িত্বপূর্ণকার্য্য অপণ কবিলে, তাঁহাবা তা স্কুদর সুশুখল ভাবে সম্পন্ন করিতে পারেন। অনেক ব্রাহ্মেব যে হিদাব এবং তাল জ্ঞান নাই, একণা বলিয়া हिन्तुता পর্যান্ত বাল করিয়া থাকেন। কিন্তু ব্রাহ্ম, এই বে-ভালা, বেহিসাব **मत्मित व्यर्थ देवनागा এवर मरमादव डेमामान्छ।** वृक्षिया লইয়া বেশ , আয়-প্রদাদ লাভ করেন। সংসাবপরিত্যাগী সন্নাদীর পকে ইহা আত্মপ্রদাদের কথা হইলেও সাধন रमहे बाक्यमामनकारीय भएक हेश कथनहे बानत्मत कथा नरहा

জ্ঞান, ভক্তি, কর্ম অথবা জ্ঞান, সাধন, সংসাব এই তিন্টিৰ সামপ্ৰসো সভা সভাই আল্বাহ্ম কি ভুগুছাল কি छन्तवहें ना व्हेंग्राइड। किन्द्र वाष्ट्र। <u>बाक्त</u>पटकांत अध्यम न्द्रव एय छान, तम छानक भागता भागति के जुम्ह कविराङ्ग । অনেকেই ভাবের মাদকতা নিধা প্রমন্ত হইয়াছি! আবাব দে ए ममझन बाम अक्ट्रे विरम्य चार्य खानार लाहना क द्विर छ हन, তাঁহাদেব মধ্যেও কেহ কেহ ভক্তিকে অগ্রাফ্ত করিয়া ভুধু क्टानरक लहेया (कमन এकरपरा इहेशा घाड/७८५न। व्यानक मः मात्री ७ " अव- भगाय भयन कतिया विषय नालिए माथा नाथिया" সংসারের সঙ্গে জীবনের অভায়ী বন্দোবস্তটা কিসে চিরস্থায়ী হয়, সেই উপায় আবিদারে বিশেষ চিস্থিত আছেন ; স্থতবাং তাঁহাদেব মহামূল্য সময়ের কিঞ্চিৎ যে সাধনে কিছা আহ্ন সমাজের কাৰ্য্যে ব্যয় করিবেন, সে আশা গুরাশা মাত্র। কিন্তু ष्यत्नक माधक ९ त्य ष्यांचाच मः मात्रतक प्रवात हत्क (मिथ्डिक) ইহা কি অত্যক্ত কোভের বিষয় নয়? এক সময় হাছারা মহা-ক্ষ্মী ছিলেন, বাহাদের উৎসাহের জ্যোতিতে ব্রাহ্মসমাজ প্রদীপ্ত ছিল, অতিবিক্ত আধ্যায়িকতার কোলাচলে তাঁহাদেব দেকর্ম ক্রমশঃ থামিয়া যাইতেছে—উাহাদের দে জ্যোতি: शीবে धीरत्र निरित्रा गाहेर ७ एक । कारक हे विलाख हहेरत. बारकात्र रम

সামঞ্জার ভাব আর থাকিতেছে না; ব্রাক্ষধর্মের যে মৌলিক সৌন্দর্য্য এবং শৃঙ্খলা ছিল, তাহা যেন নষ্ট হইবারে উপক্রম হইয়াছে!

উল্লিখিত বিশৃষ্খল এবং অশোভন ভাবের একমাত্র কারণ মনে হয়, ব্যক্তিগত স্বার্থপরতা এবং স্বেচ্ছাচারিতা। শৃশ্বলাও সৌন্দর্য্য বক্ষা করিতে হইলেই ব্যক্তিগত স্বার্থ এবং স্বেচ্ছা-চারিতাকে থর্ক কবা আবশুক, এবং পরম্পর ভাবের সমতা রক্ষাকরা প্রয়োজন। যুদ্ধের সময় সেনাপতির আদেশে দৌনিকেরা যথন সারি সারি শৃঙালার সহিত সজ্জিত হইয়া দাড়াইয়া যায়, তথন তাহাদের কি চমৎকাব শোভা হয়! কোনও শক্রর আরে সে বাহ ভেদ করিয়া ঘাইবার সাধা থাকে ना। किन्छ रिमनिरकता यमानि विभृष्यम श्रेमा (य याशत স্বেচ্ছামত এদিক্ সেদিক্ দাঁডাইরা যায়, তাহা হইলে সে চমৎকাব সৌন্দর্য্যও যেমন থাকেনা, তৎসঙ্গে যুদ্ধ জয়ের व्यामा अ जिर्ताहिक इस । व्यामार्तितं रान काहा है इहेर कहा ! অতএব সকল ব্রাহ্ম ব্যাহ্মিকাবই এই দৃঢসংকল্প করা আবিশ্রক হইয়াছে যে, আমবা ব্ৰহ্মমাজাধিপতি সেই মহান্ শ্ৰমেশ্বেব আজ্ঞার সম্পূর্ণ অধীন হইয়া, ব্যক্তিগত স্বার্থপ্বতা এবং খেচছাচাবিতা পৰিত্যাগ পূৰ্ব্বক সকলেই আহ্মধৰ্ম ৰূপ সংগ্ৰাম ক্ষেত্রে সাবি সারি শৃত্যকাব সহিত দণ্ডায়মান হইব, এবং আপন আপন কুদ্র বৃহৎ শক্তি দাবা স্বশৃত্যল এবং স্থাশেভন ভাবে নিজ নিজ কর্ত্তবা সম্পাদন করিয়া ব্রাহ্মসমাজেব শুখলা ও (भोक्या दका कतिवः

### ব্রাহ্মসমাজ।

রাম্মোহন রাট্যের স্মরণাথ সভা— মফ্ষেলের নানা ব স্থানে গতংশশে সেপ্টেম্বর মহাত্মা বাজা বামমোহন রায়েব ক্ষরণার্থসভা হটয়াছিল। আমবা এ প্যান্ত নিম্লিখিত স্থানেব কার্যাবিববণ পাইয়াছি।

মেদিনীপর 'বেলী হলে' এক স্বারহং সভাব অধিবেশন হয়।
সানীয় প্রধান উকীল জীব্জ বাবু কান্তিকচন্দ্র মিত্র মহাশয়
সভাপতিব আসন গ্রহণ কবেন। জীবৃক্ত বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় ওজ্বিনী ভাষায় বাজাব গুণাবলী সম্বন্ধে বক্তা
কবেন।

ভাগলপুর ব্রহ্মনিদিরে বাজাব স্মবণার্থ উপাসনা ও জীবনী পাঠ হয়। প্রীযুক্ত বাবু দীননাথ মজুমদাব মহাশয় উপাসনা কবেন এবং প্রীযুক্ত বাবু নিবাবণ্ডন্দ্র স্থোপাধ্যায় জীবনী পাঠ করেন।

মাণিকদহ মধ্য ইংরাজি স্কুল গৃহে "আশাদলেব" এক বিশেষ অধিবেশন হয়। বাজাব জীবনচরিত আলোচনা হইয়াছিল। এতত্পলক্ষে স্কুলের বার্ষিক পরীক্ষা স্থগিত ছিল এবং দেড় ঘটি কার সময় সুল বন্ধ দেওয়া হইয়াছিল।

চেরাপুঞ্জী সাধনাশ্রমে প্রাতঃকালে বাঙ্গালী দিগকে লইরা এক সভা হয়। এই সভায় প্রবন্ধ পাঠ ও প্রার্থনাদি হয়। অপরাষ্ট্র ও ঘটিকার সময় ত্রাহ্মসমাজ-গৃহে থাসিয়া বন্ধুদিগকে লইয়া এক সভা হয়। তুইজন থাসিয়া বন্ধু রাজার জীবন-চরিত সম্বন্ধে থাসিয়া ভাষায় বক্তা করেন। সন্ধার সময় মৌসমাই ত্রাহ্মসমাজে এক বৃহৎ সভার অধিবেশন হয়। গৃহ লোকে পরিপূর্ণ হইয়াছিল। থাসিয়া ভাষায় বক্তা, সংগীত ও প্রার্থনাদি হয়।

ঢাকা পূর্ববঙ্গ রাহ্মসমাজে এক সভা আহত হয়। এইক বাবু অক্ষয়কুমাব সেন সভাপতির আসন গ্রহণ করেন, বাবু বঙ্গচন্দ্র রায় ও শর্চচন্দ্র বৃহ্ব বকৃতা প্রদান করেন।

আবা সাধনাশ্রমে রাজার স্বর্গারোহণেব দিন উপলক্ষে বিশেষ উপাসনা হয় এবং সাধনাশ্রমেব পরিচাবকগণ কর্তৃক সন্ধ্যাকালে এক সভা আহত হয়। শ্রীযুক্ত বাবু সাবদাপ্রসাদ গঙ্গোপাধ্যায় সভাপতির আসন গ্রহণ কবেন। বাবু কৈলাসচক্ত বন্দ্যোপাধ্যায়, কিশোবীলাল হালদাব, ভাবতী সাহা, নৃত্যগোপাল মিত্র এবং বাবু গুরুদাস চক্রবর্তী বক্তৃতা কবেন।

লক্ষ্যে নগবে আমাদেব প্রচাবক প্রীযুক্ত লক্ষণপ্রসাদেব গৃহে বাজার স্বর্গাবোহণ উপলক্ষে উপাসনা হয় এবং স্থানীয় Queen's Anglo Sanskrit School গৃহে বক্তৃতা হয়। প্রীযুক্ত লক্ষ্মণ প্রসাদ এবং বাবু বিপিনবিহাবী বস্থ এম, এ, এবং হিবালাল বায় বি, এ, বক্তৃতা কবেন।

বোয়াণীয়া ছাত্রসমাজেব অধ্যক্ষণণ কর্তৃক ব্রাহ্মসমাজ-মন্দিবে একটা সভা আহত হয়। বাবু অক্ষয়কুমাব মৈত্র প্রাথন। কবেন এবং রাজাব জাবনী সম্বন্ধে উপদেশ প্রদান কবেন।

থাসিয়া পকাতে সেলা আক্ষমমাজে বাবু নীলমণি চক্রবরী বাজার জীবনচবিত সম্বন্ধে বক্তা প্রদান করিয়াছেন।

শারণীয় উৎসব— ঢাকা হইতে কোনও ত্রাহ্মবদ্ লিথিয়াছেন,—নিম্নলিথিত প্রণালী অন্তুদাবে ঢাকা পূর্ব্ব বাঙ্গালা ত্রাহ্ম সমাজেব শাবদীয় উৎসব সম্পন্ন হইষাছে।

১৩ই আখিন শুক্রবাব অপবাত্ন আ ঘটিকা—সংকীর্ত্তন। ৬॥ ঘটকা—উপাসনা, বাবুবজনীকান্ত ঘোষ আচাযোর কার্য্য করেন।

১৪ই শনিবাৰ অপেরাত্ব ৬॥ ঘটিকা—ৰজুতা। বিষয়-শৰ্সাধনা বা মুক্তিত্ব। ৰক্তা, বাৰুশ্রচজুল কম্ম বি, এল,।

১৫ই ববিবাব পুরাত্র ৬॥ ঘটকা—উপাসনা, বাবু গিবিশ্চক্র মজুমদাব আচার্য্যের কাজ কবেন। অপরাত্র ৩ হইতে ৫ ঘটিকা—গতাদি গ্রন্থ পাঠ ওসংপ্রদঙ্গ, বাবু চণ্ডী কিশোব কুসারী পাঠ কবেন তৎপরে আলোচনা হয়। ৫॥ ঘটিকা—সংকীপ্তন, ৬॥ ঘটিকা—উপাসনা। বাবু চণ্ডী কিশোর কুসারী আচার্য্যের কাজ করেন।

মাণিকদহেব শাবদীর উৎসব সমাবোহের সহিত সম্পন্ন 
ইয়াছে। ততুপলক্ষে কলিকাতা হইতে শ্রীযুক্ত নবনীপ চন্দ্র 
দাস প্রভৃতি কতিপয় ব্রাহ্ম লাতা তথায় গমন করেন এবং ঢাকা ও 
বরিশাল প্রভৃতি স্থান হইতেও অনেকে গিয়া যোগ দান করেন। 
উৎসবে শ্রীযুক্ত নবদীপচন্দ্র দাস, আদিনাথ চট্টোপাধ্যার, মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় এবং শ্রীযুক্ত শশিভূষণ মল্লিক আচার্যোর কার্য্য 
করেন। বাবু হবিমোহন ঘোষাল একদিন বিশ্বমঙ্গলের জীবন 
চরিত অবশন্ধন করিয়া সংক্ষিপ্ত বক্তৃতা বা কথকতা করেন।

তুর্ভিক্ষ— মাদরা অঞ্চলে এখনও অয়াভাব রহিয়াছে। বাবু হরিমোচন ঘোষাল সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের পক্ষ হইতে সাহাধ্য প্রদান করিভেছেন। সাহাধ্য দাতা মহোদয় ও মহোদয়াগণ নিম-লিখিত ঠিকানায় অর্থ প্রেরণ কবিয়া বাধিত করিবেন। শ্রীযুক্ত বাবু গুরুচবণ মহলানবিশ, ২১১ নং কর্ণওয়ালিস্ খ্রীট, সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ, কলিকাতা।

বিবাহ—কলিকাতা ২১০৫ নং কর্ণওয়ালিস্ ষ্টাটস্থ ভবনে মজিলপুবেব আমাদেব ব্রাহ্ম বন্ধু শ্রীযুক্ত বাবু হবনাথ বাস্তর কলা শ্রীমতী প্রফুলবালা বন্ধব সহিত পবলোক গত ব্রাহ্ম বন্ধু বাবু সর্বানন্দ দাসেব পুত্র শ্রীমান্ যোগানন্দ দাসেব বিবাহ সম্পন্ন হইয়াছে। শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী আচার্যের কার্যা কবেন।

আমাদেব প্রাচীন রাজ বন্ধ ঢাকাব প্রীযুক্ত বাবু কালী নাবায়ণ গুপ্ত মহাশয়েব কতা প্রীমতী স্থবালাব সহিত ডাকাব প্রীযুক্ত বাবু প্রাণক্ষণ্ধ আচার্য্যের বিবাহ উক্ত নগবীতে সম্পন্ন হুইয়াছে। প্রীযুক্ত নবদ্বীপ চক্র দাস আচার্য্যের কার্যা কবেন আচার্যা এবং কালী নাবায়ণ বাবু উভয়েই পাক্র পাত্রীকে সময়োচিত উপদেশ প্রদান কবেন। ছুইটি বিবাহই ও আইন অমুসারে রেজিষ্টারী হুইয়াছে। প্রমেশ্ব নবদম্পতিদিগেব ক্ল্যাণ বিধান কর্ষন।

শ্রাদ চক্রবর্তীর থুড়ীমাতার আদাশ্রাদ রাহ্মবন্ধ বাবু সারদাপ্রসাদ চক্রবর্তীর থুড়ীমাতার আদাশ্রাদ রাহ্মধর্ম পদ্ধতি অমুসারে
সম্পন্ন ১ইয়াছে। শ্রীযুক্ত বাবু গুরু দাস চক্রবর্তী আচার্য্যের কান্য্য কবেন এবং সারদা বাবুব পত্নী,পবলোকগতা গুড়ীমাতাব সংক্ষাপ্ত জীবনী পাঠ করেন। এত তপলক্ষে সারদা বাবু সাং নাং সমাজে ১. ও আবা সাধনাশ্রমে ৩ টাকা দান কবিয়াছেন ও উপস্থিত গবিব দিগকে কিছু কিছু পর্যা ও আংহারীয় দ্রব্য প্রদান কবিয়াছেন।

গত ৫ট অস্টোবর কলিকাভায় শীযুক্ত তৈলোকা নাথ দেবেব প্ৰলোকগতা শৃশুঠাক্রাণীর আদা শ্রাদ্ধ ব্রাহ্মধন্ম-ফুলাবে সম্পন্ন হট্যাছে। শীয্ক উমেশচন্দ্র দত্ত আচাগোর কাষ্য করেন। তৈলোকা বাবু এট উপলক্ষে ব্রাহ্মসমাজোনয়-লোপতকপ দান ক্রিয়াছেন, সাঃবাঃ সমাজ ১ ্সাধনাশ্র ১১।

শীংসুক্ত জগমোহন দাসের পিতৃশ্রাদ্ধ ব্রাহ্মধান্মার্সারে সম্পাদিত হুইরাছে। ২১০২ নং কণ প্রয়ালিস খ্রীটে এভতুপলকে তুই বেলা উপাসনাহয়।জগমোহন বাবু পরকােকগত পি তার সংক্ষিপ্ত জীবনী পাঠ্ও প্রার্থনা করেন। তিনি সাধনাশ্রমে ২০ টাকা এবং সাঃ ব্রাঃসমাজের ছভিক্ষ বিভাগে ৪০ টাকা দান করিয়াছেন।

নাসকরণ—গত ১৫ই আখিন মেদিনীপুরের অন্তর্গত পাতাডিপুর নামক স্থানে শ্রীযুক্ত বাবু প্যাবালাল দত্তব পুলেব নামকরণ ব্রাহ্মপদ্ধতি অনুসারে সম্পন্ন হইরাছে। শ্রাযুক্ত বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাগার আচার্যোর কার্য্য করেন। বাগকেব নাম সভারঞ্জন রাথা হইরাছে। এই উপলক্ষেপারী বাবু সা: ব্রাঃ সমাজে ১ ও সাধনাশ্রমে ১ এবং মেদনীপুর ব্রাঃ সমাজে ১ টাকা দান করিয়াছেন।

জালিপাড়া রুফ্ষনগর প্রামে শ্রীযুক্ত বাবু এককড়ি শিংছ্
রায়েল্ল কল্পান্থ নামকরণ হইয়াছে। শ্রীযুক্ত বাবু হারাণ
চক্র রায় জাচার্যোর কার্য্য করেন। বালিকার নাম স্থ্যমা রাথা হইয়াছে। এই উপলক্ষে এককড়ি বাবু সাং ব্রাং সমাজে ২ টাকা দান করিয়াছেন।

-	
, দানপ্রাপ্তি স্বীকার—অমরা ক্রতজ্ঞতার সহিত স্বীকার	
করিতেছি যে, নিয়লিখিত মহোদয়গণ ফবিদপুরের ছার্ভিকের	
জন্ম নিম্লিখিত সাহায্য প্রেরণ কবিয়া অমুগৃহীত করিয়াছেন।	
(ঝাওয়াইল ময়মনসিংহ কাছারির অমাতাবর্গ কতৃক সংগৃহীত)।	
भार वार् श्रीक्ष करहें। कार्या वार्या	) (C) (C) (C)
বাবু ভৈশোকানাথ চক্রবর্তী, কটক	,
বাবু উদর্বাম দাস, মিসা, আসাম	¢ 1
चापू अगप्रतास गाग. त्यागा, जागास चीम <b>ठी ग</b> तलाञ्चलती माग	٤/
ভাকার কালীপ্রসন্ন (ডার্জিলিং হইতে সংগৃহীত)	٤/
একটা বাবু মা: মহলানবিশ মহাশয়	84
•	)• •
বাবু চন্দ্ৰনাথ চটোপাধাায় (গ্ৰা হইতে স্ংগৃহীত)	१२। •
বাবু অধরচন্দ্র মজুমদাব, কলিকাতা	۱٫۶
বাগেরহাট হইতে বারু নবীনচন্দ্র সিংহ,উকিল কর্তৃক স	ংগৃহাত ৮
শ্রীমতী বিহ্নাল্লতা মিত্র,কলিকাতা মাঃ	
বাব্ জ্ঞানেজ্লাল দাস	¢,
ন্দুটনক ছাত্রী, ব্রাপ্স বালিকা ব্যোডিং	2/
वाय् ह्याप होधुती, ववाञ्मणत	2/
শ্রীমতী চাক্তমতি দেবী পূর্বনপাডা	>/
বাব্ মছেশচক্ষ ঘোষ (রামপুৰহাট হইতে সংগৃহীত)	2,
বাবু অভয়চরণ মজুমদার (কলিকাতাস্থ ভিন্ন ভিন্ন বাস	
হইতে সংগৃহীত)	9110
জেনাবেল এসেমনী কলেজের সেকেওইয়ার ক্লাসেব	
ছাত্রগণ মাঃ বাবু গুরুচবণ মহলানবিশ	36h/3·
বাবু নগেন্দ্রনাথ রায়, দিনাজপুব	4•
বাবু হবনাথ বঞ্চাকা কলেজিয়েট স্থেলৰ ৮ম শ্ৰেণীর	
ছাত্রগণ হইতে সংগ্হীত)	٤,
ধুবডি হইকে বাবুচ গ্রীচবণ গুহ কড়ক সংগৃহীত	93
কলিকাভাব বাবু পূণানন্দ সাহার গদি হইতে সংগৃহীত	
একটা বন্ধু	[] •
মহিষাদল বাজস্বলেব ৩য় শিক্ষক বাবু জলধর সেন ঐ স্থূল	
হহতে সংগ্ৰহ ক্রিয়া পাঠান	20
রামপুরহাট হইতে বাবু মহেশচন্দ্র বোষ	<b>b</b> ,
ফবিদপুৰ হইতে শ্ৰীমতী বিনয়কুমারী চক্রবরী কন্ত কসং	
বাবু গোপালচকু মল্লিক, কলিকাতা	4
বাবু কুকণাকুমার দেন গুপু (কাকিনিয়াহইতে সংগৃহীয়	
বেথুন কলেজ হইতে সংগ্ঠীত	० क्रा
বাবু মতিলাল হালদাব (ক্যাশমালটি কোম্পানির	
শ্রমজীবিগণের নিকট হুইতে সংগৃহীত্য	> e \
্রব্রা গ্রাম নিষ্ট হত বংগ্রাত্য চেলা গ্রহাবাম, নবসিপ্টম	2
তেলা স্থানান, প্রাণান্ত্র বাবু কালিদাস সরকার (গ্যা দাউদনগর <b>হইভে</b> সংগ <b>ী</b>	•
বাৰু জগণোৰৰ সমকাম (সমা দাঙ্কনসম হুহুট্ভ সংস্থা বাৰু জগমোহন দাস, কলিফাভা, মাজুলান্ধ উপলক্ষে	, Q) (Q) , R\
বাবু জগণোধন দান, কালকাভা, ৰাজুলাৰ ভাৰতক বাবু গুকজি ঘোষ কন্তৃক সংগৃহীত কলিকাতা	alld.
বাবু হবিদাস ৠমানি কলিকাভা বাবু বজনীলাও বংগ্যা মুখ্যাও কুক্ত মুংগ্ <b>নি</b> ক	,3\
রাবুরজনীনাথ বায়েয় সম্ভানগণ কর্ক সংগ্ঠীত	> 0/
শীবৃক্তা জগভারিণী মৈত্র	>/
কোনও গ্রামেব পঞ্চায়ৎ কর্ত্তক আদায়	><
্রাক্ষ বালিকা শিক্ষালয়ের নিয়ন্ত্রণীর ছাত্রীগণ	٥١١/٥٠
लामा जाताचा राजा राजाप्यताचात्रकाला ॥त्र श्रीव्याया	117 4 "
•	
नर्सरमा ह	9 6 8 1 of a



## ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১৩শ সংখা।

১৬ই কার্ত্তিক রহস্পতিবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম দম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২৮০ মফস্বলে ৩ প্রতি পণ্ডের মূল্য ৮০

#### প্রার্থনা।

তে কফণাময় প্রভো। যাহারা ধর্মজীবন পাইয়াছে ও ধর্মদাধনে নিযুক্ত আছে তাহারাও নিরাপদ নহে। আমাদের পুৰাতন ছক্কলতা সহজে যায়না; পুৱাতন শত্ৰুগণ শীঘ্ৰ ছাড়ে না। যদিও বা ওক্তর পাপ ওলির হাত ছাডান যায়, কোণা হইতে আত্ম-তৃপ্তি আসিয়া আমাদিগকে গ্রাস করে। বাহিরেব কডক-গুলি সাধন ও কতকপুলি কাজ লইয়া আমিরা তৃপ্ত হইয়া পাকি, মনে করি ইহার অধিক আর কি ছইবে। কোনও প্রকারে বাহিরের স্রোতের সঙ্গে চলিয়া এই বলিয়ামনকে প্রবোধ দি যে, আমাদেব দারা ঘাহা হইতে পারে তাহা হইতেছে। এইরূপে ধর্মজীবনের সকল প্রকার উন্নতির মূল কারণ যে ব্যাকুলতা তাহা হ্রাস হইমাযায়। তৎপরে উপাসনাতে যোগ দিতে হয় বলিয়া যোগ দি, কাজ করিতে হয় বলিয়া কাজ করি; তোমাকে প্রাণে পাইলাম কিনা, তোমার প্রসাদ লাভ করিলাম কিনা সেদিকে আব দৃষ্টি থাকে না। দিনের পর দিন উপাসনা স্থানে আসিয়া বসি, পদ্মপত্রের জ্বলের স্থায় উপাসনার শক সকল মনের উপর দিয়া গড়াইয়া যায়; সময়ে সময়ে থনিক ভাবেরও উদয় হয়; কিন্ধ প্রাণ তোমার সংস্পর্শ লাভ করিল কিনা, অন্তরাত্মাতে ভোমার আলোক প্রকাশ পাইল কি না ভাছা দেখি না। ভোমার বিখাদী ও ব্যাকুল সম্ভান-দিগের জীবনে কি কুধা ও তৃষ্ণার পরিচয় পাই। তোমার অদর্শন যন্ত্রণা তাহাদিগকে অন্থির করিয়া তোলে। আহারে माखि नारे, विशाद भाषि नारे, भग्रत निक्रा नारे! टामात ৰহিত অত্যে মিলন না হইলে কোমও°কাজেই তাঁহাদের হাত উঠেনা। আমাদের সে ব্যাকুলত। কোথায় গেল ? মৃত্যুর পূৰ্ব্বাজ্ঞাস এই আত্ম-তৃপ্তি কোণা হইতে আসিল ? হে বিধাতা। আমাদের মক্তির উপকরণ সামগ্রীত চারিদিকে রাথিয়াছ। এই জগৎশাস্ত্র আমাদের চক্ষের সমক্ষে পনিরস্তর উদ্যাটিত · विवादक, এই भाज পाঠ कतियारे कानिशन कानी स्रेपादिन; ভক্তগণ অমৃল্য উপদেশ পাইয়াছেন; এই মানব-প্রকৃতিরূপ শার চিরদিন সমক্ষে রহিরাছে। কত সাধু মহাজন, কড সৎগ্রন্থ, ক্ত সংসঞ্চ, সমুদায় হাতের নিকটেই রহিয়াছে, কিন্ত কুধা

তৃষ্ণার অভাবে এ সমুদায় র্থা। এই ঘোর বিপত্তি হইতে তৃমি আমাদিগকে উদ্ধার কর। তোমাকে যে আমরা লাভ করিব তাহার উপায়ও তোমাকে করিয়া দিতে হইবে। তোমাব চরণাশ্রিত দাসদিগকে আয়ুতৃপ্ত হইয়া মোহ নিশ্রায় শয়নকবিতে দিও না। আমরা তোমার করুণার উপরেই একাস্ত নির্ভর করিতেছি। ওঁ ব্রহ্ম কুপাহি কেবলম্।

### সম্পাদকীয় মন্তব্য।

ধর্ম প্রচার ও প্রাচীন রীতি—ইংলণ্ডের ইতিহাস পাঠ করিলে দেখিতে পাওয়া যায় যে, সপ্তম শতাব্দীর প্রারম্ভে ওপাপ গ্রেগরি ইংলতে এছিধর্ম প্রচার করিবার জন্ম চরিশজন পবিবাজক সমভিব্যাহারে অগষ্টিন নামক একজন ধর্মপ্রচারককে প্রেরণ করিয়াছিলেন। অগষ্টিন ইংলণ্ডে গিয়া দেখিলেন, তথা কার আদিম অধিবাসীদিগের মধ্যে এমন অনেক প্রকার রীতি নীতি প্রচলিত আছে, যাহা তাহারা প্রির জ্ঞান কবে। তন্মধো একটা রীতি এই ছিল যে, তাহারা বৎসরের মধো তাহাতে আবালবৃদ্ধ বনিতা ক্ষেক্বার উৎস্ব করিত। সকলে আনন্দের সহিত যোগ দিত। কিন্তু ঐ সকল উৎসব তাহাদের দেশপ্রচলিত প্রাচীন পৌত্তলিকতার সহিত সম্বদ্ধ ছিল। অগষ্টিন দেখিলেন, দেশের লোক এই উৎসবগুলি পরিতাগি করিতে প্রস্তুত নহে। ঐ উৎসবগুলিই খ্রীষ্টধর্ম প্রচারের পথে বিম্নকাবী হইয়া দণ্ডায়মান রহিয়াছে। তথন তিনি ধর্মসমাজপতি পোপের অভিপ্রায় জানিবার জন্ত রোমে পত্র লিখিলেন। রোম হইতে উত্তর আদিল—"দাধারণত: প্রজাদিগের প্রাচীন রীভি নীভিতে হস্তার্পণ করিও না। তাহারা সে সকল রীডি নীতি রক্ষা করুক; কিন্তু ঐ সকল উৎসবকে तकः कतियां नृष्ठन षार्थ मिया औष्टीय উৎসবে পরিণত করিবার চেল্লা কর।" এই পরামর্শামুসারে কার্য্য হইল **এবং পোপ যে ফলের আশা করিয়াছিলেন তাছাই ঘটল**। ইংলভের বর্তমান পৃষ্টমাদ্ মহোৎসব ও ইষ্টার উৎসব এই ছইটা খ্রীষ্টার আকারে পরিণত স্যাক্সন্ কাভির প্রাচীন উৎস্ব

দ্বের ভগাবশেষ মাতা। এই বিবরণটা পাঠ করিয়া এটিধর্মের অড়ত সম্প্রসারণ শক্তির পরিচয় পাওয়া যার। খ্রীষ্টধর্ম্ম যে দেশে रव जािं गर्या श्रातिष्ठ इहेग्राह्म, जोहािमगरक व्यक्तित কবিবার জ্ঞা সর্বাদাই আপনাকে ভাছাদের ভাবে পরিবর্জিত कतिवाहि। (পাপ গ্রেগবি অগষ্টিনকে যে পরামর্শ দিয়াছিলেন সে বিষয়ে চিস্তা কবিলে বেশ বুঝিতে পাবা যায়, কেন বোমান काथिनिक मस्त्रनाग्न धर्मा श्राहात विषया मकन मस्त्रनाग्न व्यापका অধিক কৃতকার্য্য হইয়াছে। তাঁহাবা যথন যে দেশে প্রচার করিতে গিয়াছেন, তথন গৃষ্টধশ্মকে যথাসাধ্য তাহাদের চিবাগত বীতি নীতির অহুরূপ কবিয়া উপস্থিত কবিয়াছেন। দাক্ষিণাতঃ প্রদেশে এরপ একটা কিম্বদম্ভী প্রচলিত আছে, যে পঞ্চদশ শতাব্দীতে রোমান ক্যাথলিক প্রচারকগণ সক্ষপ্রথমে যথন সে দেশে আইইধর্ম প্রচার করিবাব জন্ম উপস্থিত হইয়াছিলেন. তথন সন্ন্যাসীৰ বেশ পৰিধান কৰিয়া প্ৰচার কৰিবাৰ জন্ম বুক্ষতলে বসিয়াছিলেন এবং বলিয়াছিলেন যে তাঁহার৷ পশ্চিম দেশীষ ব্রাহ্মণ এবং তাঁহাদের ধর্ম-গ্রন্থ পঞ্চম বেদ। এই বলিয়া नाहरतिलय वार्था। व्यावस्त्र कविशाहित्यन। देहाँ ता एव मकल হিন্দুকে খ্রীষ্টধর্মে দীক্ষিত করিতেন, তাঁহাদিগকে জাতিভেদ বক্ষা কবিতে দিতেন। এই রূপে এখনও দাক্ষিণাত্যে বহুসংখ্যক উপবীত ধাবী ত্রাহ্মণ খ্রীষ্টান দেখিতে পাওয়া যায়, তাঁহাবা শুদ্র খ্রীষ্টানদিগের সহিত আহাব বিহার বা আদান প্রদান করেননা। তবে এ স্থলে ইহা বক্তব্য যে, জাতিভেদ প্রথা নিবন্ধন হিন্দুসমাজ মধ্যে যে সকল অনিষ্ট ঘটিয়াছে ও যে সকল অস্থবিধা লোকে প্রতিদিন ভোগ করিতেছে, এই জাতীয় গ্রীষ্টানগণকে সে সকল অম্ববিধা আরও গুরুতর্রপে ভোগ ক্রিতে হইতেছে। রোমান ক্যাথলিকগণ যে কেবলমাত্র জাতি ভেদ রাখিতে দিয়াছিলেন তাহা নহে, অপবাপর রীতি নীতিও খ্রীষ্টায় আকাবে পরিণত কবিয়া রাখিতে দিয়াছিলেন। মালাক প্রেসিডেন্সিতে একটা বিশেষ প্রথা আছে যে বিশেষ বিশেষ পর্কের দিনে উপাসকগণ দলবন্ধ হইয়া মহাসমারোহ সহকারে সীয় সীয় উপাস্ত দেবমূর্ত্তিকে এক মন্দির হইতে অপৰ মন্দিরে লইয়া যায়। সেধানকাব নগবে নগরে এরপ <u> त्वाक्याळा नर्स्त्राहे (प्रथिष्ठ शाश्त्रा याग्र। हेहा नाक्षात्र</u> লোকের একটা ধর্ম্মাদের ব্যাপার, এভদারা চিল্ধর্মকে সে প্রদেশে অনেক পরিমাণে জাগ্রত রাথিয়াছে। রোমান कार्थानकश्व यथन मटन मटन निम्नद्धनीत हिन्मुनिश्दक थीहेश्या দীক্ষিত করিতে লাগিলেন, তথন বোধ হয় ভাহারা এই ধর্মামোদের অভাবটা বড় অন্মুভব করিতে লাগিল। জন্তু রোমান কার্থালক নেতাগণ আদেশ করিলেন, তোমরাও সমারোহ সহকারে যীশু ও মেরীর মৃত্তি বহন করিয়া লইয়া যাও। তদমুদারে মাক্রাজ প্রদেশের অনেক সহরে এথনও मत्या मत्या यी ७ ७ तमनीत मूर्डि वहन कतिन्ना नहेना गाँह एक एनथा খ্রীষ্টধর্ম এইরূপে দেশ কালপাত্র ভেদে আপনাকে ক্রপাস্তরিত করিয়া জগতে ব্যাপ্ত হইয়াছে। কিন্তু প্রীষ্ট্রপর্মের প্রাশংসার বিষয় এই, অপরকে গ্রহণ করিতে গিয়া নিজের অভিত হারার নাই, তাহাদিগকেই রূপান্তরিত করিয়া নিজ

ভাবাপর করিয়া শইয়াছে। ইহার কারণ এই খ্রীষ্টধর্শ্বের কেন্দ্র দ্বানে এমন কিছু শক্তি ছিল, যাহা বিজিত না হইয়া সর্বাদা জয়শালী হইয়াছে। যে ধর্ম সম্প্রদায়ের সে শক্তি নাই, অপরের ভাবে রূপান্তরিত হইতে গেলেই তাহার মৃত্যু।

ব্রাক্ষসমাজের অঙ্গসন্ধির শিথিলতা—অঙ্গনির निधिन्छ। वर्षमान बाक्षममाक-गर्रन अनानीत এक है। अधान ক্রটি বলিয়া লক্ষিত হয়। ব্রাহ্মগণের সংখ্যা অতি অল্ল, ইহা তত হঃথের বিষয় নহে, কিন্তু এই অল সংখ্যক ব্যক্তিব মধ্যেও যে ঘন-নিবিষ্টতা নাই, ইহাই ইহাঁদেব চুর্বলতাব প্রধান কারণ। এই অঙ্গসন্ধির শিণিলতা বশতঃই ব্রাক্ষসমাজে আশা-মুরূপ কাষ্যশক্তি প্রকাশ পাইতেছে না। এই অঙ্গসন্ধির শিথিলভার বিষয় চিন্তা কবিলেই অনুভব করা যায় যে. যে প্রণালীতে অদ্য পর্যান্ত ব্রাক্ষধন্ম প্রচার হইনা আসিতেছে,তাহাব পবিবর্ত্তন আবশুক হইয়াছে। এই অঙ্গ-সন্ধির শিথিণভাব মূল কারণ কি १ তাহ। স্তিরচিত্তে আলোচনা করিতে হইবে। সচবাচব লোকে বলিয়া থাকেন, ব্রাহ্মেবা কোনও প্রকাব অভ্রান্তশাস্ত্রে বিশ্বাস করেন না, প্রত্যেকেই নিজের শাস্ত্র। স্বতবাং এই সমাজ মধ্যে ব্যক্তিগত স্বাধীনতাব ও যথেচ্চাচাবেৰ যথেষ্ট স্থান আছে। এই উৎকট বাক্তিগত স্বাধীনতাই ব্ৰাহ্মদিগকে ঘননিবিষ্ট হইতে দিতেছে না। এই যুক্তির মধ্যে কিঞ্চিৎ সভ্য থাকিলেও ইহাকে সচবাচৰ যত সাববান মনে করা হয় তাছা নছে। সামাজিক ঘন নিবিষ্টতা প্রেম সম্ভত, পরম্পবের প্রতি প্রেম ও সমন্ত সমাজেব প্রতি প্রেম , প্রেম প্রেমাম্পদেব সহিত মিলন ও আত্মীয়তা সম্ভূত। বাহ্মসমাজের অঙ্গীভূত প্রত্যেক সমান্ধকে ও প্রত্যেক ব্যক্তিকে পরস্পরের সহিত ও সমস্ত সমান্ধের স্হিত মিলিত করিবার উপায় এখনও অবলম্বিত হয় নাই। অক্যান্ত ধর্ম্মসম্প্রদায় আপন আপন সমাজের পুষ্টি সাধন, বক্ষা ও শিক্ষার নিমিত্ত যে সকল প্রণালী অবলম্বন করিয়াছেন, তাহা नर्रा প্রথমে মনোযোগ পূর্বাক পাঠ ও আলোচনা কবা কর্ত্তবা। ভূধু আমরাই যে এজগতে ধর্মসমাজ গঠন করিতে অএসর হই-য়াছি ভাহা নহে। অনেক ধর্মসম্প্রদায় আমাদেব অগ্রে গিয়াছেন। তাঁহাদের অভিজ্ঞতার ফল কি আমাদের গ্রহণ করা উচিত নয় ? ছ:থের বিষয় এ বিষয়ে গ্রাক্ষদিগের বিশেষ আঞ্জ্ঞ হা দৃষ্ট হয়। অপরাপর ধর্মসম্প্রদায়ের ইতিবৃত্ত আলোচনা করা আমাদেব তত অভ্যাদ নাই। তাহা যদি থাকিত তাহা হইলে হয়ত আমরা অনেক ভ্রান্তি পরিহার করিতে পারিতাম ও অনেক উৎকৃষ্টতব প্রণালী অবলম্বন করিতে পারিতাম। দষ্টাস্তত্তরপ একটা বিষয়ের উল্লেখ করা যাইতে পারে। গ্রীষ্টায় ধর্মের ইতিস্ত পাঠ করিলে দেখিতে পাওয়া যায়, আদিম কাল হইতে এই নিয়ম প্রচলিত রহিয়াছে যে এক একটা উপাদক মণ্ডলীর উপরে একজন আচাৰ্য্য নিযুক্ত পাকিবেন, এবং কভকগুলি উপাসকমগুলীব উপরে একজন করিয়া বিশপ বা তত্ত্বধায়ক থাকিবেন। এই • নিয়মের একটা খাণ এই যে বাঁহাদের প্রতি কার্য্যভার অর্পিত इत्र, मात्रिषकान थाकारण कार्या ज्ञानको। युम्बनक्राम हरण, विकीयकः, कांशांत्रत महिक छेशामकगत्नत वको। व्याधााचिक

আত্মীয়তা স্থাপিত হয়, বাহা ধর্মসমাজের ঘন-নিবিটতার একটা প্রধান উপায় বলিয়া গণনীয়। ব্রাহ্মধর্ম প্রচারার্থে विश्वे व्यागानी व्यवनचन कतिए शान भूर्क तिथए हहेरव কোরেকার সম্প্রদায়ের স্থায় যে সকল গ্রীষ্টীয় সম্প্রদায় এই প্রণালীর প্রতি বিরাগ প্রকাশ করিয়াছেন, তাঁহাদের যুক্তি কি ? পাঠ আলোচনা ও চিম্বা ভিন্ন তাহা কি প্রকারে সম্ভবে ? विटमव चारनाहना ও গভীর চিন্তার পর যে প্রণালী অবলঘনীয় বলিয়া বিবেচিত হইবে, তাহাই অবলম্বিত হওয়া কর্ত্তবা। কিন্তু ব্রাহ্মসমাজের বর্ত্তমান কাজের মধ্যে এই চিস্তাশীলভা অধিক পরিমাণে দৃষ্ট হইতেছে না। আমরা ক্ষণিক ভাবের উত্তেজনাতে অনেক কার্য্য কবিতেছি; তাহার ফল এই হইতেছে যে আমা-দের অনেক কার্য্যের মধ্যে স্থিরতা থাকিতেছে না। আজ যে ও ণালী অবলম্বনীয় বলিয়া মনে করিতেছি, ছই দিন পবে ভাহা পরিহার করা আনবভাক বলিয়া বোধ হইতেছে। ধর্ম-সমাজকে नहेंगा এই तथ वाल कित छात्र क्री ए। कति त से बंत छ মানবের নিকট অপরাধী হইতে হয়।

ব্ৰহ্ম-সঙ্গীত--ইহা সকলেই বিদিত আছেন, যে মহা-পুরুষ মহমুদ উহাব শিষাদিগকে উপাসনাকালে সঙ্গীত করিবার অধিকার দেন নাই। সর্বাপ্রকার পৌত্রলিকতা ও অংশিত্বাদেব উপবে তাঁহার এমন বিজ্ঞাতীয় বিরাগ ছিল ু যে, তিনি সঙ্গীতকেও ভয় করিতেন। বোধ হয় ভাবিয়া ছিলেন, যদি উপাসনাকালে সঙ্গীত করিবার অফুমতি দি, ভাহা হইলে সেই দার দিয়া সকল প্রকাব কবিত্ব প্রবেশ করিবে এবং হয়ত চরমে বিশুদ্ধ একত্ববাদ বক্ষা হইবে না, लाएक क्रेन्यदात छेलत निर्देत ना कविशा व्यलतालत लगायंत. উপর নির্ভব করিতে শিথিবে। তাঁহার হৃদ্যাত ভাব যাহাই হউক, সঙ্গীতকে ধন্ম সাধনের অঙ্গরূপে ব্যবহার করার যে গুকত্ব আছে, তাহা আমরা অনেক সময় অমুভব করি না। সঙ্গীতের ঘারা যে উপদেশ দেওয়া হয়, সঙ্গীতের মধ্যে ধর্ম জীবনের যে আদর্শ লোকের চক্ষে ধরা হয়, তাহা অপর সকল উপদেশ অপেকা অধিক পরিমাণে লোকেব মনে মুদ্রিত হইয়া থাকে। একজন প্রতিচাশালী উপদেষ্টা বাগ্মিতাপুর্ণ ও মর্দ্মপাশী ভাষাতে যে উপদেশ দেন, তাহা কিছু দিনেব জন্ত চিত্তকে উদ্দীপ্ত করে, হয়ত হৃদয়ে কোনও সাধুভাবের উদয় করে. কিন্তু কালে লোকে তাহা বিশ্বত হইয়া যায়, সে উপদেশ আর কাহারও শ্বতিতে থাকে না। কিন্তু একজন স্থকবি তান লয় বিশুদ্ধ সঙ্গীতে যে উপদেশটা নিবন্ধ করিয়া দেন, তাহা আব পুরাতন হয় না, কতস্থানে কত উপাদনা-ক্ষেত্রে কতদিন সেই সঙ্গীতটা গীত হইয়া থাকে। যতবারই সেটা গান করা যার, ততবারই সে উপদেশটী নৃতন হইয়া মনের সমক্ষে আসে ও সেই जानर्गी कार्या मूखिल हया। এই अन्न मत्न हय. উপাসনাকালে ব্যবহারের জন্ম গাঁহারা সঙ্গীত রচনা করেন. তাঁহাদের দায়িত অতি গুরুতর। বে দলের মধ্যে যেরূপ ভাবের সঙ্গীত অধিক পরিমাণে গাওয়া হয়, সে দলের गांधक मिराव किन्छ । धर्मा जीवन चारत चारत राहे कार्वहे

গঠিত হঁইরা থাকে। যদি ঈশ্বরকে মানব-ভাবাপর করিয়া সঙ্গীত রচনা কর, "পাপীর হুংথে তোমার বুক ফাটিরা ঘাই-তেছে, না জানি তৃমি কত কাঁদিতেছ, তৃমি কি জান্তে আমি এমন হব ? ঈশ্বর আমি তোমাকে নিরাশ করেছি," ইত্যাদি ভাব বহুল পরিমাণে যে সকল সঙ্গীতে আছে, তাহা যদি সর্কাণ গাওয়া যায়, ক্রমে দেখা ঘাইবে আমাদের আবাধনা, প্রার্থনা, উপদেশাদিতে মানবীয় ভাবের আবোপ হইতেছে। ক্রমে সেই সমাজ মধ্যে ঈশ্বেরর স্বরূপ জ্ঞান মান হইয়া বাইবে। দেইকপ যে সকল সঙ্গীতে কেবল ভাবোচ্ছাসংক্ষেই ধর্ম্মজীবনের প্রেষ্ঠ অবস্থা বলিয়া বর্ণনা কবা হইয়াছে, যথা,

হাসিব কাঁদিব নাচিব গাইব ক্ষেপা পাগলের মত"

সে সকল সঙ্গীত যদি সর্বাদা গাওয়া যায়, সে দলের ধর্মা জীবন অলেল আলে ভাবুকতা প্রধান হইয়া উঠিবার সন্থাবনা। সঙ্গীত গ্রন্থ করিবার সময় অভিশয় সাবধানতাব সহিত সঙ্গীত নির্বাচন করা কর্তব্য। আমরা মধ্যে মধ্যে রাক্ষেব মুথে এরূপ সঙ্গীতও শুনিতে পাই,যাহাতে ইন্দ্রিয়াসক্তিব গন্ধ আছে বলিলে অত্যক্তি হয় না। ঐ সকল ইন্দ্রিয়াসক্তিব গন্ধহিতিত সঙ্গীত স্বর্থা বক্ষনীয়। তাহা সমাজ মধ্যে প্রচলিত হইলে সমাজেব নৈতিক আদেশ হীন হইয়া ঘাইবার সন্থাবনা, সঙ্গীত বিষ্য়ে ব্রাহ্মগণের স্তর্কতা অবলম্বন করা আবশ্রক।

ধর্ম্মের মুখস-একবার এদেশীয় একজন হিন্দু বড লোক কোনও উচ্চপদত্ত ইংরাজ কর্মচাবীব সহিত সাক্ষাং কারতে গিয়াছিলেন। উভয়ে কথোপকথন চলিতেছে, এমন সময় ভূতা আসিয়া একথানি কার্ড সাহেবের হল্তে অপন করিল। সাহেব দেখিলেন যে, একজন পদস্থ মুসলমান ভদ্র লোক তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসিয়াছেন। ইহা कानिया जिनि विलया छेठिएलन (य, "এই पूननपानिमगरक আমি দেখিতে পারি না। বিশেষত: এই ব্যক্তি অতি অসার लाक, तकवल वर्ष लात्कित जावारमाम करत. इंशांक व्यामि ভাল বাসি না।" এমন সময় আগন্তুক মুসলমানটি গৃহে প্রবিষ্ট হইলেন। অমনি সাহেব তাডাতাড়ি আসন পরিতাাগ কবিয়া উঠিয়া তাঁহাকে অভার্থনা করিলেন, ও সম্রমস্টক অনেক কথা বলিলেন, যেন ঐ ভদ্রলোকটির আগমনে কতই আপ্যায়িত **२हेलन। हेटा (मिशा (महे हिन्मू छम्रालाक मान मान हिन्ना** করিতে লাগিলেন, "এ কিরূপ ভাব, আমার নিকট একরপ ভাব প্রকাশ করিলেন, মুসলমান ভদ্রলোকটি উপস্থিত হইলে অন্তর্মপ ব্যবহাব করিলেন ?"

কেবল ইংরাজ ভদ্র লোকই যে এইরপ করিরাছিলেন, ভাষা নহে, সভ্য সমাজে প্রতিদিন এরপ চলিতেছে। লোকে প্রতিদিন সৌজন্ত-মুখস পরিয়া পরস্পারকে অভ্যর্থনা করিতেছে। ছেলেরা মুখস পরিয়া যেমন কেহ বাব হয়, কেহ সিংহ হয়; ভজ্ঞপ মাসুষে প্রস্থা বিষয়া যে যাহা নয় ভাষা দেখাইয়া থাকে। অভ্যের ঘাহার প্রভিছ্মণা, বাহিরে ভাষার প্রভিষ্টর সভ্যম: ভিতরে কেম নাই, বাহিরে প্রেমের উপহার; ভিতরে আত্মীয়তা নাই, বাহিরে আত্মীয়তার ছড়াছড়ি।

এইরপে কেবল যে প্রতিদিন লোকে সভ্যতার ও সৌজজ্ঞের
মুখস্ পরিতেছে তাহাও নহে, ধার্মিকতারও মুখস্ পরিয়া
থাকে। যিনি ধার্মিক নহেন, তিনি ধার্মিকের বেশ ধারণ
করেন, যিনি দাধন ভজন করেন না, তিনি দাধক বলিয়া
পরিচিত হন। ইহাকে "ধ্র্মকঞ্ক" কহে।

ধর্মক ক্ষুক ছই প্রকার। এক প্রকার প্রতারণার উদ্দেশ্তে অবলম্বিত হয় ৫ উপায়ে ঘোর দক্ষ্য সয়্যাসীর পোষাক পরিয়া এদেশে স্বার্থ সাধন কবিতেছে। শুনিয়াছি, একজন লোক ব্রাক্ষ প্রচারক স্বাক্সিয়া মফ:সলে গিয়া চুরি করিয়াছিল। ছিতীয় প্রকার ধর্মক ক্ষুক্রধারিগণ ধর্ম চায়, ধর্মে লিগু থাকিতে চায়, অথচ তাহারা হ্রলভাবশতঃ সাধন ভজন কমিতে পারে না। তাহাদের প্রাণে অমি নাই, উত্তাপ নাই, তেজ নাই, ব্যাকুলতা নাই, সংগ্রামও নাই। তাহাবা প্রতিদিন অস্তরের হর্মকাতা অমুভব করিতেছে, অথচ বাহিরে ধর্মের কথা বালতেছে। নিজের বিশ্বাস নাই, অথচ বিশ্বাসের কথা বালতেছে। প্রতাবণা ইহাদের উদ্দেশ্য নহে; কিন্তু হ্র্মলতা বশতঃ এবং স্থ্যাতির প্রস্ত্যানী হইয়া বাহেরে ধর্মের উচ্চ উচ্চকণা বলিতেছে। নিজের চেষ্টা, আগ্রহ কিছুই নাই।

যথন বাহিরে ধর্মের কথা বলিয়া বলিয়া অভ্যাস হইয়া যায়, তগন আর নিজের প্রতি দৃষ্টি থাকে না। এই বিপদ হইতে আমাদিগকে সাবধান হইতে হইবে। আমরা যেন মৃথদ্ না পরি, আমরা যেন আয়-প্রতারিত ও প্রবঞ্চিত না হই। আমাদের মধ্যে যেন ব্যাকুলতা, একাগ্রতা থাকে, দৃষ্টি যেন সজাগ থাকে। আমরা যে আদেশ অপরের নিকট ধারণ করিব, ভাহা যেন অগ্রে সাধন করি।

ব্যবসায়ী ভিক্কক—পথে চলিতে চলিতে জনেক সময়
লেথা যায় যে, ভিক্ককের বেশধারী বালকগণ "পয়সা দেও,
পয়সা দেও" বলিয়া পথিকের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমান হয়।
ভাহাদের পরিধানে ভিক্ককের ভায় বয়, হাব ভাব ও ভিক্ককের
ভায়, স্বর বিক্বত। ভাহাদের আকার প্রকার দেখিলেই
মনে হয় যে, ভাহারা বাস্তবিক গরিব নহে। ভাহারা অয়
বয়াভাবে যে বিশেষ ক্লেশ পাইতেছে, এরপ বােধ হয় না।
কিন্ত ভাহারা অভ্য কোন প্রকার অভাব প্রণের জন্তই এই
উপায়ে পয়সা উপার্জন করিতেছে বলিয়া সন্দেহ হয়। কিন্ত
পেই ভিক্ষাব্যবসায়ীদিগের মধ্যে এরপ ছই এক জন লােকও
পাকে যাহাদিগকে দেখিলে, যাহাদের কথা ভনিলে মনে
কোনও প্রকার সন্দেহ উপস্থিত হয় না। ভাহাদের সকাতর
প্রার্থনা ভনিলে ও মলিন মুধ দেখিলেই ব্রিতে পারা যায় যে,
ভাহারা বাস্তবিক দরিজে।

উক্ত ভিক্কদিগের সহিত আমাদের জীবনের তুলনা হয়। আমরা যে উপাসনা করি, প্রার্থনা করি; তাহার মধ্যে আনেক সময় পরমেখরের নিকট কত কি চাই। কিন্তু হয় ত যাহা চাহিতেছি, তাহা লাভের জন্ম প্রাণ বাস্তবিক ব্যাকুল নহে। উপাসনার সমর উচ্চ উচ্চ বিষরের প্রার্থনা করিতে হর বলিরাই যেন প্রার্থনা করিয়া থাকি। অতি কুল্ল পাণের কথা স্থরণ করিয়া প্রার্থনা করিছে পারি না। এই জক্তুই আমাদের প্রার্থনা ছারা জীবন প্রস্তুত হয় না। তাহা উপাসনা গৃহেই আবদ্ধ থাকে। এরপে আমরা বিরক্তকারী সেই ভিক্ষাব্যবসায়ীদিগের মত হট্যাছি। স্বীর্বের নিকট কত্ত স্তুতি মিনতি করি, বড বড় বিষয়ে প্রার্থনা করি, কিন্তু অন্তরে সে ভাব নাই। পৃথিবীর লোক ভিক্ষাব্যবসায়ীদিগের নিকট প্রতারিত হইরা থাকে, কিন্তু অন্তর্থামী ভগবান প্রতারিত হন না। তাঁহার স্ক্র দৃষ্টির নিকট আমাদের জীবনের কুল্র ছর্মলতাও প্রকাশিত হইরা পতে।

আমাদেব বাাকুলতা কেবল ভাষায় এবং সঙ্গীতেই প্রকাশ পার। "কাতরে ভোমায়, ডাকি দয়াময়" বলিয়া গান করি; কিন্তু কাতরতা কোথায় ? সংগীতের ভাষার এরপ শক্ষ না থাকিলে 'হয় ত আমাদের এরপভাব প্রকাশের কোন প্রয়োজনই হইত না। কাতবতা থাকিলে কি আমবা এমন কবিয়া উপাসনা শেষ করিতে পারি ? যে কুধার্ত্ত, সে বদি ভিক্ষার্থে কাহারও লাবে যায়, গৃহসামী কিছু না দেওয়া পর্যান্ত, সে কি উঠিয়া যাইতে পাবে ? যতক্ষণ না ভিক্ষা পায়, গৃহদারে পডিয়া থাকে। আমবা প্রকৃত ভিক্ক হইলে, প্রকৃত অভাবগ্রন্ত হইলে ঐকপে প্রভ্র দ্বারে পডিয়া পাকিতাম। আমাদের মধ্যে যিনি প্রকৃত রূপাপ্রার্থী, তাঁহার লক্ষণও এইরপ।

আমাদের উপাদনা,প্রার্থনায় যে সকল সময় বিশেষ ফলোদর হয় না,তালার কারণও এই। আমরা বাাকুল হইয়া প্রার্থনা করি না। নিজের,অভাব কি তাহা তলাইয়া দেখি না। দিনের পব দিন উচ্চ উচ্চ কথায় যাপন করিতেছি। উচ্চ কথায় যে ক্ষণিক উচ্চ্বাস হয়, তাহা লইয়াই সন্তুর্গ হই। আমরা ক্ষ্ধিত নই,অপচ ক্ষিতের ভাগ করিয়া প্রভুর দারে উপন্থিত হইতেছি; ব্যাকুলতা নাই, অথচ ব্যাকুলতাব ভাব প্রকাশ করিতেছি; এরূপে কথনও ব্রহ্মকুপা লাভ হয় না। '

পণ্ডিত-মুর্থ—একথানি গ্রন্থে "পণ্ডিত-মূর্গের" বিষয় লিখিত আছে। অনেক শাস্ত্র পাঠ, অনেক জ্ঞান লাভ করিয়াও লোকে কিরুপ মূর্থ থাকে, ঐ গ্রন্থে তাহাই প্রকাশ করা হইরাছে। এই মূর্থেরা একদিন নদা পার হইয়া নিজেদের সংখ্যা গণুনা করিতে লাগিল। যিনি গণিতে আরম্ভ করিলেন, তিনিই নিজকে বাদ দিয়া গণিতে লাগিলেন। সর্বভদ্ধ তাহারা চারি জন লোক ছিল; কিন্তু যভবারই গণে, তিন জন বই আর হয় না। প্রত্যেক বারেই আপনাকে ছাডিয়া."এক ঘূই তিনু" গণিয়া শেষে কাঁদিতে আরম্ভ করিল— "হায় হায়, এক জন লোক মারা গিয়াছে।"

আমরাও এইরপে অনেক সময় আপনাকে ছাড়িরা গণনা করিরা থাকি। সমাজের লোককে ব্যাধিগ্রন্থ বলিয়া অনেক সময় কোভ করি; কিন্তু আপনাকে তাঁহাদের মধ্যে প্রণা করি না। বাধি অক্তাক্তের আছে, আমার নাই। আমি বে কথ, তাহা মনে থাকে না। বাধির ঔষধের যে আমারও কারোজন, তাহা অমেও চিস্তা করি না।

এইরূপ অনেক ভলেই আপনাকে চাড়িয়া দিয়া বিচার করা হয়। এরূপ অনেক লোক দেখা যায়, যাঁহারা রাহ্মধর্মকে নিজ জীবনে ও অমুষ্ঠানে প্রাহণ কবিতে প্রস্তুত নহেন, অইচ প্রচারক ডাকিয়া রাহ্মধর্মের কথা অপবকে শুনাইতে অভিশম উৎসাহী। তাঁহারা আচরণে অমুষ্ঠানে প্রাচীন সমাজের সহিত যুক্ত আচেন; পৌত্তলিকতা, জাতিভেদ রক্ষা করিয়া চলিতেছেন; অথচ রাহ্মপ্রচারক ডাকিয়া লোককে বক্তৃতা শুনাইবার জ্ব্যু খুবু বাস্তু। যদি জিজ্ঞাসা কবা যায় যে, ইহার কারণ কি দ তাঁহাবা যদি মন খুলিয়া উত্তর দেন, তবে ইহাই কারণ কি দ তাঁহাবা যদি মন খুলিয়া উত্তর দেন, তবে ইহাই কারণ কি ককক, আমুষ্ঠানিক হউক, আমুরা ইহাই চাই।" এম্বলে তাাগ করুক, আমুষ্ঠানিক হউক, আমুরা ইহাই চাই।" এম্বলে তাহাবা আপনাকে বাদ দিয়াই গণনা করেন। আমি ছাড়া আর সকলে রাহ্মধর্ম গ্রহণ ককক. আমি ছাড়া আর সকলে ভাল হউক, আমি ছাড়া আব সকলে অমুষ্ঠান করুক, তাঁহাদের মনের ভাব ষেন এই প্রেকার।

আমরাও অনেক সময় আপনাকে চাডিয়া সংসাবকে ভাল কবিতে চাই। ধন্মগ্রন্থ পাঠ করিতেছি, তাহা শুনিয়া সকলে ভাল হউক, আমার উপাসনা হউক বা না হউক আন্তের উপাসনা হউক। সপ্তাহে সপ্তাহে সমাজেব বেণী হইতে ব্রাহ্মধন্ম প্রচার হউক। এ সকল অপরের হুলু, আমার হুলু নহে। ধন্ম যে আমাকে আয় ক কবিতে হইবে, সে দিকে দৃষ্টি নাই। এইরূপে নিজকে বাদ দিয়াই মানুষ পাপে পতিত হয়; নিজকে বাদ দিয়াই মানুষ পাপে পতিত হয়;

আমরা যদি নিজকে আসে গণনা করি, তাহা হইলে এই চিস্তা স্বতঃই উঠিবে, আমার কিছু হইতেছে কি না ? পাঠ ও আলোচনার দারা আমাব চিত্ত উন্নত হইতেছে কি না ? যদি না হয়, তবে বলিতে পাবি, যাহা বলিতেছি বা করিতেছি, অন্তের তদ্বাবা উপকাধ হইতেছে না। আয়-দৃষ্টিপ্রায়ণ ব্যক্তিগণ অক্তের হউক বা না হউক সে দিকে দৃষ্টি না রাধিয়া আপনাকে সর্ব্বাগ্রে উর্নত করিবার অন্ত বাস্ত হইয়া খাকেন। অপরকে শইয়া যাহারা সর্ব্বাহ বাস্ত, প্রচচ্চাতে যাহাদের উৎসাহ, তাহারা সচরাচর নিজ উন্নতির প্রতি উদাসীন হইয়া থাকে। এই ব্যাধি হইতে রক্ষা পাইবার জন্ত আমা-দিগকে সর্ব্বা সতর্ক থাজিতে হইবে।

এরপ জীবনেব সহিত তুলনা করিলে আমাদেব কি শোচনীর অবস্থাই দেখিতে পাই। বিপদে পতিত হইলে আমাদের মন সর্বাত্রে কাহাকে অন্তেবণ করে? আমবা কি তাঁহার নিকট হইতে সাল্বনা লাভের চেষ্টা করি? তাঁহার নিকট হইতে কি আশা ও বল পাই ? সকল কার্য্যের মধ্যে কি সর্বাত্রে তাঁহাকেই দেখি ? এই সকল প্রমাণের লারা আছ-পরীলা করিলে অনুভব করা বার যে, আমাদের জীবনের সহিত তাঁহার ভেষন ঘনিই স্থক্ধ নাই। তজ্জ্ঞাই আমাদের লুংখ কই।

জীবন তাঁহাতে প্ৰতিষ্ঠিত না হইলে ধৰ্মসাধন হয় না। धर्मानाधम वाहित्तद विषय नद्धाः आभारतत्र कि अवका ? আমরা যে মাতুষকে চর্কাল ছীন বলিয়া থাকি, সেই মানবের উপরেই নির্ভর করিয়া নিশ্চিম্ত হই। জগতে সর্বাদা দেখিতে পাওরা যার, আজ যিনি অমুকৃল, কাল হয় ত প্রতি-কুল; আজ যিনি সহায়, কাল তিনি শক্র, এরপ মাসুষের উপর নির্ভর করিয়া কতবার প্রবঞ্চিত হইতেছি, তথাচ তাহা-দেব উপর নির্ভর করিতেছি; কিন্তু প্রত্যেশ্বর, বাঁহার প্রেমের পরিবর্ত্তন নাই, তাঁহাব প্রতি নির্ভন্ন করিতে পারিতেছি না। ইহাই আমাদেব ভয়ানক ব্যাধি! আমির। ড়াঁহাৰ চরণে শরণ লইতে পারিতেছি না। সকল দেশের সকল সাধু বলিতেছেন, "মানবাত্মার জীবন তাহার চবণে। অনক্সগাঁত इंटेग्रा डाँश्वर भवनाभन्न ना इंटेंग कलान नाई।" व्यर्ध डाँहाव চবণে পড়িয়া থাকিতে পারি না। তাঁহাতে ঔষধ আছে জানি: কিন্তু লাভ করিবার জন্ত ব্যাকুলতা নাই, একাগ্রতা নাই, অন্তিরতা নাই। এজন্তই আমরা চুর্বল ও হীনাবস্তায় পতিত হই। ঈশব রূপা করুন, আমরা যেন বিপদে কেশে তুঃধে একান্ত মনে তাঁহাকে হৃদয়ে স্থান দান করি।

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### ্রন্স-কুপার আবির্ভাব।

এই পৃথিবীতে ছই শ্রেণীর লোক ছই ভিন্ন পথ অমুসবণ কবিয়া ঈশ্বসমীপে উপন্থিত হন ও তাঁহাকে প্রাপ্ত হন। প্রথম যাঁহাবা সাধুগৃহে জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন, সাধু এবং পুণাবান পিতা মাতার নিকট প্রতিপালিত হইয়াছেন, কখনও কুসঙ্গে পডেন নাই, শিশুকাল হইতে ভাল দেখিয়াছেন, ভাল ভানয়া-**(इन, मस्त्रा मध्यातम आश्र इहेग्राट्डन, धोवटन यहार्यन** कविया সৎসঙ্গে काठोडेग्राह्म, प्रश्विष्ययत्रं आलाहनाम नियुक्त এইরূপে ক্রমে বয়োবৃদ্ধিব সঙ্গে সঙ্গে জানী श्हेगार्डन। गांशारम्त्र म् विषया में मुख्यमा में कि. मेर विषया के একান্ত উৎসাহ, তাঁহারা স্বভাবতঃই সৎ হুইয়া থাকেন এবং এই রূপেই ক্রমে ভগবানের নিকট উপস্থিত হন। এই সকল লোক জ্ঞান এবং মানবপ্রেম, পরোপকাব ও প্রিয়কার্য্য সাধনের দার দিয়া ঈশবের নিকট উপনীত হন। অতি ধীরে ধীরে, কথন যে কিরূপ ভাবে ঈশ্বন-সগ্লিধানে উপস্থিত হন তাহা বলিতে পারেন না। ফেব্রুম দদীর অবল স্বভাবতঃই সাগরে যায়, এক থণ্ড কাৰ্চ জলে পড়িলে ভাসিয়া আপনা আপনি সাগরের জলে গিয়া উপনীত হয়, সেইরূপ ইহারাও ক্রমে ক্রমে অর অর করিয়া ঈখরের ক্রোড়ে স্থান প্রাপ্ত হন। দেখিয়াছি মানুষ সর্গও প্রমুক্ত জ্বদয়ে সভােব সেবা কবিয়া জন্মরের নিকট উপস্থিত इहेग्राह्म। भीवत्म इम्र छ वित्मम भन्निवर्सन घटि নাই। তাঁহার। ঈশবে একান্ত বিশাসী এবং অনুবাগী চইয়া অক্সাত্যারে স্রোতস্থতীর ক্লায় ক্রমে ঈশ্বরসন্ধিয়ানে উপস্থিত एरेबाएका।

একজন জ্যোভির্বেস্তার স্থব্দে এইরূপ কথিত আছে বে, একদা রাত্তিতে একাগ্রচিতে গণনবিহারী জ্যোতিক মণ্ডলীর গতিবিধি লক্ষ্য করিতে করিতে তাঁছার হৃদয় ঈশ্বরের মহিমার ভাবে এত পূর্ণ হইয়া উঠিণ বে, তিনি চীৎকার করিয়া বলিয়া-উঠিবেন, "O God, O God! I think thy thoughts after thee" হে ঈখব, হে ঈখর তোমার চিন্তার পশ্চাতে আমার চিন্তা ঘুরিতেছে। এই জ্ঞানীর জ্ঞান স্বাভাবিক ভাবে তাঁহাকে ঈশ্বরে উপনীত করিয়াছিল। তিনি কোনও উপাসনা মন্দিরে হয় তো উপাদনা করেন নাই, স্থমিষ্ট সংগীত কিয়া কীর্ত্তন শুনিয়া হয় তো মত্ত হন নাই, কিন্তু তবুও জ্ঞান তাঁহাকে ঈশ্বরচবণে লইয়া গিয়াছে। আবার যাঁহাবা নিজের **एक्ट मन और मम्हाय केचेबहत्य हियाहिन, उाँहां प्रताय,** তাঁর প্রিয় কার্য্য সাধনে উৎপর্গ কবিয়াছেন, তাঁহারাও মানব-প্রেম রূপ দার দিয়া ঈশবচরণে উপনীত হইয়াছেন। ইটালীর (नम हिटेउयो प्रतम् । अभिक भाषित्रिनित कौवन अधारमाहना করিলে কি দেখিতে পাই ?—তিনি খদেশবাদিগণেব ছঃথ দেখিয়া यात्रभन्न नारे वाधिक रहेग्राहित्तन। चात्रत्भन्न कृत्व कृति-वात क्रम कोवन উৎপर्ग कतियाहित्वन ; त्नर, मन, व्याग देववा-থ্যের অভিণে আছতি দিয়াছিলেন, শান্তি কিম্বা আরাম किन्तर, धक्वांव आञ्चामन किन्द्रा (म्राथन नाहे। मानव প্রেমের বহ্নি তাঁহার স্বার্থকে একেবাবে ভত্ম কবিয়া দিয়াছিল। এই জন্মই স্রোভস্থতী নদী যেরূপ ক্রমে সাগরের কলে বিলীন रहेशा यात्र, जिनि ७ करम रमहे तथ के चव विचारम डेभनी ७ २ हेशा-ছিলেন। সাধু, নির্মাল এবং প্রেমিকর্দর ব্যক্তিই স্বভাবত: ঈশ্বরচরণে উপনীত হইয়া থাকেন।

বিতীয় শ্রেণীব সাধকের মনকে টানিয়া ঈশ্বরের চরণে আনিতে হয়। সদয়েব অন্তণ্ডল হইতে পাপের বীজ উৎপাটিত ক্ৰিয়া তবে ঈশ্বচ্বণে উপনীত হইতে হয়। এই দ্বিতীয় শ্রেণীব লোকেরা, বঁ,হারা পাপের তীব্র যাতনায় অমৃতপ্ত হইয়া ঈরব চরণে আদেন, ভাঁহারা অতিশয় ছভাগা। বালক-কালে (যাহা না শিথিলে আত্মার কল্যাণ হইত,) এমন কিছু শিথিয়াছেন, যৌবনে এমন কিছু করিয়াছেন, যাহার শ্বতি চিরকালের জন্ম হৃদয়ে সঞ্চিত বহিয়াছে ও চঃথ দিতেছে। क्म त्क्रत त्नार्य भारभत वाग क्रमरम विक हरेब्रा हि। वार्यंत्र मह्क পাপের তুলনা এই জন্ত যে, তীর গার ফুটিলে তখন বুঝা যায় না। তলোয়ারের চোট বধন লাগে, দেই মৃহতে কিছুই অফু-ভূত হয় না। এক মিনিট পরে মাধায় হাত দিয়া দেখা যায়,রকে মুধ ভাসিয়া যাইভেছে। পাপের প্রকৃতিও এইরূপ। মাত্র প্রবৃত্তির বশবন্তী হইয়া যথন পাপে লিগু হয়, সে মুহুর্ত্তে বুঝিতে পারে না, কি সর্বনাশ হইল। পরে তাহার ফল জানিতে পারে। তীরের সহিত পাপের তুলনা করিবার দ্বিতীয় কারণ এই,—দেহে তার সহজে প্রবিষ্ট হয়, কিন্তু উৎপাটন করা সেরূপ সহজ নছে। পাপের অভ্যাস ও সহজে হয়, কিন্তু উৎপাটন করা অতীব ছঃসাধ্য। পিতা মাতা যতই কেন সাবধান হউন ना, ছেলেরা মলটা সহজেই শিথিয়া ফেলে; किन्ত পশ্চাৎ होनिया वाहित करा यात्र नाः। आमारतत्र अस्तकरक आवा

এই বলিয়া অঞ্পাত করিতে হইডেছে যে, যাহা শিথিয়াছি তাহা অত্তে অনেক চক্ষের জল দিয়াও ভূলিতে পরিতেছি না। এই ভীর তুলিবার উপায় কি, এ চিস্তা कि মনে হয় না ? यथन এ তীর প্রাণে বিদ্ধ হইয়াছিল, তখন বুঝিতে পারি নাই, এথন কে ভাহা উৎপাটন করে ? কে সাস্থনা দেয় ? এই ভগ্নহালয়কে অশোর বাণী ভনাইয়া কে রক্ষা করে 💡 এইরূপ 🛭 ভাবভার মাত্র্য উপস্থিত হইলে আপনাকে ঘুণা করিতে আরম্ভ করে এবং পাপের জন্ম অমুভপ্ত হয়। তথন স্বভাবত:ই মন ঈশর চরণে যাইতে চায়। এই ব্যাকুল অবস্থায় লোকে তাহা-দিগকে যাহা ধরাইয়া দেয় তাহাই ধরে। যাহারা পাপীর সান্তনার কারণ জানে না, কি উপায় অবলম্বন করিলে পাণী শান্তি লাভ করিবে বুঝিতে পারে না, তাহারাই নামের মালা জপ কর, তন্ত্র মন্ত্র অবলম্বন কর ইত্যাদি বলিয়া দের ; কিন্তু প্রাণ তাহাতে শাস্তি পায় না, তৃপ্তি লাভ কবে না। कवित्न माखि পाইবেন এই আশায় বুদ্ধ ৬ বৎসরকাল ছজ্জর প্রতিজ্ঞাবলে তপস্থা করিলেন ; কিছু কোথায় শান্তি ; শান্তি পাইলেন না। বেদনা কিছুতেই যায় না। অবশেষে পাপী ঈশ্বর চরণে পড়িয়া বলে—"তুমি ত দুরে নও,ত্বরায় নিকটে এস" যতক্ষণ তাঁহার সহিত মিল না হয় ততক্ষণ কিছুতেই প্রাণ শাস্তি লাভ করে না। ঈশবের হৃদয়ে আসার অর্থ কি ? এই স্থলে আমরা প্রারই ল্মে পতিত হইরা থাকি। যথন আমরা তাঁহাকে পাইবার জন্ত তাঁহার চরণে বসিয়া চিত্তকে একাগ্র করিতে চেষ্টা করি এবং তাঁহাকে ডাকি, তথন প্রায়ই দেখা যায় যে, অন্তঃকরণে একপ্রকার অন্তঃক্তিআনন্দের সঞ্চার হয; এবং সামগ্রিক ভাবের উত্তেজনায় মন উত্তেজিত হয়। ইথা দেখিয়া অনেকে মনে করেন যে, প্রাভূ হৃদয়ে জ্ঞাসিলেন। যদি বিশেষ ভাবে একটু আত্ম-পরীক্ষা করা যায়, তবে দেখিতে পাই যে, এ আনন্দ কলনাপ্রস্ত ও কণিক; যেমন একজন দ্রিদ্র ব্যক্তি দারিদ্রো চিরনিমগ্ন থাকিয়াও কল্লিভ সম্পদ ও স্লণ ভোগ করিতে পারে, সেইরূপ মাফুষও "এই প্রস্ক হৃদয়ে আসিলেন," এরপ কল্পনা করিয়া আনন্দিত হইতে পারে। মামুষ কল্লিভ অবস্থায় আপদাকে ফেলিয়া যেমন হর্ষ শোক অমুভব করে, আমরাও তেমনি অনেক বাব আপনা-দিগকে কল্লিভ অবস্থায় ফেলিয়া, প্রেম, বৈরাগ্য প্রভৃতির উচ্চাবন্তা ভোগ করিতে পারি; ক্ষণকালের জন্ত মনে করিতে পারি, ঈশরকে অদের আমার কিছুই নাই। এই মনে করিয়া क्रिक्टारवत्र উट्छम्ना इत्र। याहारमत्र मेचवहत्राण मन দিবার ভাব কিছুই নাই, একাম্ত সার্থপর, এক টাকাকে পিতৃতাত্ত তুলা জ্ঞান করে, তাহারাও ক্লিকভাবের উত্তে-জনায় মনে করে "এই ত প্রভূ এসেছেন, এই ত এখন আমি সব দেহ মন প্রাণ তার চরণে দিতে পারি।" এইরূপ সাময়িক উত্তেজনার আনন্দের বারা প্রতারিত হওয়া উচিত নর। ध अवद्यारिक दर्के कारत क्षेत्रदेश आश्रमन विवेश स्वन मरन না করেন।

আর এক প্রকার ভাব আছে, তাহাকেও চেটা করির। বর্জন করিতে হইবে। দশ ধন ভক্ত সাধুর সঙ্গে একলে

, উপাপনাতে বসিয়াছি, দশ कत्त्र উৎসাহে आनत्म आमात्रश দ্বর উৎসাহিত ও আনন্দিত হইরাছে। উৎসবে বসিয়াছি, मनबन माधू अरक्त मरद भिनिछ हहेग्रा श्रमत्र नािंगा उठिन, উৎসাহিত হইল। এইরূপ যে হৃদরের আনন্দ ইহাও ঈশ্বরের क सनाबरे घरेबा थाएक मत्मर नारे। किन्न रेराक अम्मूर्ग स्नेय-রের আগমন মনে করা উচিত নর। ইহা অনেক পরিমাণে त्तिहन कत्रा कलात्र छात्र ; कृष्टे नित्न हे एका हेत्रा याहेरत । व्याभात्र निष्य त (करा कन नाहे ; भरत्र त रक्ष हहेरा कन राउन क्रिया चानित्न व उक्त थाकित्व । चामात्र श्वतः तम क्ष ठारे, याहा हहेए ज नित्रस्वत्र स्थित वाति शाहेव। এই ऋश सामितिक व्यवद्या विरम्परवत्र উত्তেজनारक क्षेत्रप्रतत्र व्यागमन मरन कतिरव ना। उद उाहात जागमन कि श्रकाद त्या गाहेद ? जाग-মনের ব্যাপার বাক্যে প্রকাশ কর। যায় না। তথাপি কিঞ্ছিৎ প্রকাশ করিবার চেষ্টা করা যাইতেছে। আত্মা ও পরমাত্মাতে যে মিলন, তাহার ফল ক্ষণিক ও অস্থায়ী নহে, অথবা তাহা কেবল ভাবের উচ্চাসও নহে। জ্ঞান মধন তাঁহাকে পরম স্ত্য ব্লিয়া অবলম্বন করে, প্রেম যুধ্ন তাঁহাকে প্রেমাম্পদ विनिष्ठा ज्यानिक्रन करत এवः हेम्हा यथन छांशारक व्यञ् विनिष्ठा তাহার অফুগত হয়, তথন ঈশ্বর আশ্বার অল্পান সরূপ হইয়া আত্মার পুষ্টি সাধন কবিয়া থাকেন। তাঁহার সংস্পশে আত্মাতে कात्री वन, आभा ७ ज्यानत्मत्र ज्याविकात (मधा यात्र। এই वन আশাও আনন্দ আয়ার সম্পত্তিম্বরূপ হটয়া তাহাকে উল্লত करत १ वर उँशत आंगमानत कनवता रेशत प्रशस्क সকল জাগ্রত হয়।

#### শ্রেয় ও প্রেয়।

(পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী কর্ত্তক ১৪ই অক্টোবর ১৮৯৪ রবিবার সাধারণ ত্রাহ্মসমাজ-মন্দিরে বিবৃত উপদেশের সারাংশ)

বাল্যকালে যথন থেলা করিতাম, তথন কোনও কোনও খেলাতে চ্ইদল হইয়া থেলা হইত। কে কোন্দলে ঘাইবে, তাহা ঠিক করিবার জন্ম এক কৌশল অবলম্বন করা হইত। একজন বালক এক হন্তের মুষ্টিতে বেলপাতা, অপর হন্তে কচুপাতা পুকাইয়া আসিয়া বলিত—"কে নেবে বেলপাতা কে নেবে কচুপাতা !" যে বেলপাতা লইত সে বেলপাতার, যে কচুপাতা লইত সে কচুপাতার দলে বাইত। তৎপরে খেলাতে যদি বেলপাতার দল হারিয়া যাইত, তবে ভাবিতাম, হায়রে যদি কচুপাতার দলে থাকিতাম তাহা হইলে হারটা সহ্

কেবল বালকদিগের ক্রীড়াতে নহে, বয়োর্জদিগের কার্যোও সর্কান ছই দলে ভাগ হইডেছে। যখন কুরু-পাগুবের বিয়োধ উপস্থিত হইল, তখন উভয় দলের হিভার্থী ক্রফ যাহাতে সদ্ধি স্থাপিত হয় ভাহার ক্রম্ব প্রথমে বর্থেষ্ঠ প্রয়াস পাইলেন; কিন্তু কিছুতেই শান্তি স্থাপিত হইল না। তখন জ্রীক্রফ কাহাকে ছাড়িরা কোন্দলে যাইবেন, ভাহা ঠিক করিতে না পারিয়া এক উপার ক্ষবলম্বন করিলেন। ভিনি একদিকে স্বরং, ক্ষপর

সংসারে এইরূপ দল-বিভেদ সর্ব্বদাই সংঘটিত হইতেছে। जामात्र कीवत्न, व्यामात्र कीवत्न, मक्त्वत्र कीवत्नरे चित्रिक्छ। ভগবানকে নেবে না বিষয় হুখ নেবে—এই প্রশ্ন আদিতেছে সত্য চাই কি বিষয় চাই ? এই সকল প্রশ্নের উত্তর অনু-সাবেই মাহ্য ছইভাগে বিভক্ত। চীনদেশীয় মহাত্মা কংফুচ ৰলিমাছেন,—"The mind of the superior man is conversant with righteousness; the mind of the mean man is conversant with gain" অধাৎ ব্যাৰ্থ মনশ্বী পুরুষ সত্যে এবং ধর্মে সর্কানা রত থাকেন, আরে নিক্লষ্ট ব্যক্তিরা পার্থিব লাভালাভে ব্যক্ত থাকে। একদিকে ধর্ম. অপরদিকে লাভ; একদিকে সত্য, অপরদিকে বিষয়-স্থু, একদিকে কর্ত্তব্য, অপর্যদিকে আরাম। এইরূপ চুইটা পথ মানবের সম্মুখে সর্বাদাই আসিতেছে। যে, যে পথ অনুসর্ব করে, দেইঅনুসারে অপরেব সঙ্গে ভাহার প্রভেদ। একজন সাধুতে, আর আমাতে কিখা তোমাতে কি প্রভেদ ? কে লাভ চাও ৷ হাত তোল-কে ঈশ্বরকে, ধর্মকে চাও ৷ হাত তোলা বিষয়স্থ সচ্দলতার দিকে যদি লোভ থাকে, তবে প্রেয়ের দলে যাও; যদি ধর্ম চাও, সত্যপ্রিয় কঠব্যনিষ্ঠ হইতে চাও, ভৰে শ্রের দলে এস।

সংসাবে দেখা যায় যে, যাঁহারা ধর্মের আশ্রয় গ্রহণ করেন. প্রথম প্রথম তাঁহারা ক্ষতিগ্রস্ত হন। এইরূপ অবস্থা বর্ত্তমান সংসারে রহিয়াছে। কিন্তু এমন দিনও আসিতে পাবে যথন ধান্মিকতা (Rightousness) এবং লাভ (gain) চইই একত্রে মিলিত হইবে,—ধর্মাকে আশ্রয় করিলে আর ক্ষতিগ্রস্ত হইতে হইবে না। বস্তমানে দেখিতে পাই, ধর্মা এবং লাভ পরস্পার বিরোধী। ধার্ম্মিক প্রায়ই ক্ষতিগ্রস্ত হইরা থাকেন। ধর্মের আশ্রয় লইলে আপাততঃ ক্ষতি হইতে পারে বটে, কিন্তু ধার্মিক চরমে লাভবান হইবেনই হইবেন। "ক্ষম্মোন্ত পাঙ্পুলুণাং যেষাং পক্ষে ক্ষনাদ্দন।" এই উক্তিতিত গৃঢভাবে এই কথা নিহিত রহিয়াছে যে, যিনি ক্ষতিগ্রস্ত হইয়াও ধর্মকে পরিত্যাগ করেন না, চিরকাল ধর্মের আশ্রয়ে থাকেন, ভিনি

একবার কল্পেকজন আন্ধবন্ধ কলিকাতার চিনেবাজারে একটী দোকান খুলিয়াছিলেন। তাঁহারা একদরে জিনিসপত্ত San San

विकास कविरवन विषया मःकञ्च कतिरामन । श्राथम श्राथम रामारक विश्वाम कतिन मा; जिक्तात क्रिनिम विक्रम कतिरव, नत नस्तत कविटव ना. हेश लाटकत निक्र वाकुनका वनित्रा ताथ इहेटक नाजिन: मार्कात लाक चारम, मत जिज्जामा कतिया हिनया यात्र। এक मर्दित (माकान इटेंडि (कह अिनिम उत्तेष्ठ कर्द না। তাঁহাদেব ক্ষতি হইতে লাগিল। এমন কি মূলধন বেশী না ণাকাতে কিছুদিন পবে তাঁহারা দোকান বন্ধ করিয়া দিলেন। ইঙা নিশ্চয় বলা যাইতে পারে যে, যদি তাঁছাবা কিছুকাল টেঁকিয়া থাকিতে পাবিতেন,তবে লাভবান হইতেন। তাহাব প্রমাণ, একদিন এক জন ইংবাজ তাঁহাদেব দোকানে আসিয়া একটী জিনিস দেথাইয়া জিজ্ঞাসা কবিলেন, "ইহাব पर करु?'' ठाँहारा रिलालन, "१॥० টाका।'' সাহেব ইহা ভ্রিয়া অন্ত দোকানে গেলেন। কিন্তু দেখিলেন, কেহ তদ-পেক্ষোকম মূলা বলিল না। তথন তিনি ঘুবিয়া ফিবিয়া সেই দোকানে আসিয়া বলিলেন, "Babus are you Brahmo Samaj?" বাবু তোমবা কি ব্রাহ্মসমাজেব লোক ? বলা বাহল্য তাঁহাদেব দোকানের সেই জিনিস্টীই সাহেব গ্রহণ কবিলেন। ইহাতে দেখা যায় যে, যদি তাঁহাবা প্রথম প্রথম ক্ষতি সহ্ করিয়া দোকান বক্ষা করিতে পাবিতেন, তবে শেষে निभ्हयहे बाजवान इटेटजन।

नार्शित এकतात करम्बक्त लाक्ति এक मत्त्र प्राकान थुनिन। (नाकारनव नाम त्राथिन, "माछि छ्कान।" (यह আহ্রক না কেন, একদব। প্রথমে বড বেশী বিজেয় হইত ना, िञ्च क्रांस এই तथ अवश में डिशिंग (य, काहाव ९ कान क्रिनिय किनिवात প্রয়োজন इट्टोल व्याज, ''সাচিচ ত্রকান হইতে আনিও।" এই সকল কাবণে দেখা যায় যে, ় ধার্মিকতা ও লাভ প্রথমে বিরোধিভাবাপর থাকিলেও চরমে উভয় মিলিত হয়। বর্ত্তমান জগতে এততভয়ে মিলন দেগা यात्र ना। नः नादत नत्रनावीनिश्वत मस्या एक दकान नत्नत লোক, তাহা কে শ্রেষ কে প্রেম চাম, এই প্রশ্ন করিলেই म्लेष्ठे तुका यात्र। छः स्थित विषय्, मः मः त्व व्यवका এই ऋश দাঁডাইয়াছে যে, যাহাবা শ্রেয়কে লঙ্ঘন কবিয়া প্রেয়কেই আশ্রম করিয়াছে, তাহারাই প্রতিপত্তিশালী হইয়া থাকে। यांन मः मात्र धनी इहेट हा अ, उत्त नाट इत निदक है या । াসংসারে সভানিষ্ঠ, সারবান ধার্মিক লোকেরা আদর পায় না,আর কত অসার মহুষ্য,যাহারা প্রেয়তে ডুবিয়া রহিয়াছে, তাহাদেরই উন্নতি হইয়া থাকে। এই সকল দেখিয়া গুনিরা , হুবল লোকেরা প্রেরকেই আশ্রয় করিয়া ধাকে। এইরূপ ষ্মবস্থা প্রত্যেক জীবনে এবং রাশি রাশি উদাহরণে প্রমাণিত হর।

মান্বের জীবনে এইরপ ছইটি অবস্থা নিয়তই উপস্থিত হইরা থাকে। "শ্রের না প্রের ?" "বেলপাতা না কচুপাতা ?" ব্রাহ্মগণ একমাত্র সত্যম্বরপ পরমত্রক্ষের উপাসনাকে অবলম্বন করিয়াছেন। এই হৃদয়বিহারী পুরুষকে জ্ঞান বারা অর্চনার যে পথ অবলম্বন করিয়াছেন,সেই শ্রেরপথ,এই পথ পরিত্যাগ করিয়া বৃদ্ধি বর্ণেন "ইহা কিছুই নয়," হবে দেশের পোক্ষে ভাঁছাদের প্রশংসা করিবে, তাঁহারা লাভবান ইইবেন, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। তবু কেন তাঁহারা প্রেরকে দূর করিয়া প্রেরকে অবলম্বন করিয়াছেন ? ছুর্মালচিত্ত লোকেরা প্রায়ই দেখিছে পার যে, প্রেরকে আশ্রয় করিয়া বছ লোক ধনী হইতেছে, একপ অবস্থায় তাহারাও ঠিক থাকিতে পারে না। ধর্মের স্ক্রপথে বিচরণ করা কঠিন জ্ঞান হওয়াতে তাহা পরিত্যাগ কবিয়া থাকে।

প্রথমে দেখা চাই যে. শ্রেয় ও প্রেয় এই ছইএর কোন্টা আমবা চাই ৷ যাঁহাবা সেই পরমপুক্ষেব উপব বিশ্বাস করেন, धर्म डाँहारमृत घाटना। (प्रहे घाटनाटक याहाता हरनन, তौंशाता इ:थ, (क्रम, विशास मर्खनाहे मरकात मिरक थारकन। সংসাবের ত্বও সম্পদ বিপদ সকলই অনিতা; আজ যাচা আছে, কাল তাহা নাই। আৰু বার প্রতি একান্ত অকুরাপ, কাল তাব প্রতি বিরাগ। আব তোমাকে যে বলিভেছে **ভाল, कान (म वनिट्डिइ मन्त्र) मकन्टे ठक्षन, मन्त्रम विश्रम** সকলই চঞ্চল। এই অনিতা চঞ্চল জগতে একমাত্র সভাস্থৰূপ প্রভু প্রমেশ্বই ন্তিব, ধীর, নিতা স্তা, তিনি একমাত্র গভি। ধর্ম এবং সভা আজাও উজ্জল, কালও উজ্জল এবং চিরকালই সমভাবে উজ্জ্ব থাকিবে। যিনি এই অসাব অনিতা অকি-ঞ্চিৎকর সংসাবে লাভালাভ পবিভাগে করিয়া শ্রেয়ের পথ অবলম্বন কবিয়াছেন, একমাত্র ধর্মেবই আশ্রয় গ্রহণ করিয়া-(छन. जिनिहे भन्न, जीवडे हवस्य कन्नाान। ज्यात त्थात्रक त्य আশ্রেষ করে, প্রমার্থ হইতে সে বঞ্চিত হয়। ঈশ্ব করুণ। করুন, আমরা যেন প্রেয়কে প্রিভাগি ক্রিয়া ভাঁছারই সভাধৰ্মেৰ আশ্ৰয়ে থাকিয়া প্রমার্থ লাভ ক্ৰিয়া কুতার্থ হইতে পারি।

ব্যাখ্যান রত্বাবলী।

২২ শে অক্টোবর ১৮৯৪।

সাধনাঞ্জামের উপাসনা কালে বিরুত।

চীনদেশীয় সাধু কংক্চস্ তাঁহারণ শিষাদিগকে বলিয়াছিলেন,—"তোমরা যাহা ন ও, তাহা উপদেশ দিওনা , এবং
যদি উপদেশ দেও, তবে স্বায় ত্রুপে হইতে চেঠা কর।"
উপদেশীগণ যদি নিজে স্থির করেন যে, "আমি যাহা নিজে
করিব না অথবা করিয়া দেখি নাই, তৎসম্বন্ধে উপদেশ দিব না।
তাহা হইলে অনেক উপদেশ বন্ধ হইয়া য়ায়। অস্ততঃ মদি
এরপও মনে করা য়ায় য়, পরের উপকারের ক্রম্ম য়ায়া বিদি,
অত্যে তথা নিজে করিতে চেটা করি; তাহা হইলেও

মাসুৰ যে সকল বিষয় উপদেশ দেয়, ভাহা বধন উপদেষ্টার পরীক্ষিত সভা হয়, তথনই তাহা নরনারীর জদদ্ধ প্রবেশ করে, ভাহাতেই কাজ হয়। অভএব বাহা উপদেশ দিব, ভাহা প্রাণপণে অগ্রে নিজ জীবনে সাধন করিব।

একবার ইংলওে কোনও বক্তা সাধারণ লোকনিগের নিকট প্রাণানের সম্ভে বক্তা দিভেছিলেন। ইংলওের লোকে হুরাপান হরিয়া যে রূপ হুরবছার পড়ে, ভাহা সর্থ করিলে হার্কশা ব্র । হুরাপান করিয়া নরনারী কি ভয়ানক কটে পভিত হর, বক্তা তাহা বথন বর্ণন করিছে লাগিলেন, তথন বেন তাহার মুথ হইতে অগ্নি বৃষ্টি হইতে লাগিল। শত শভ বাজি প্রতিজ্ঞা করিতে লাগিল বে, তাহারা আর কথনও হুরাপান করিবে না। বজা বজ্তা করিতে করিতে বলিকেন, 'পরিমিত হুরাপান করাও অহুচিত।'' এই কথা বলিতে পিয়া ভাহার স্থাপ হইল যে, তিনিও পরিমিত হুরাপান করেন। ইহা স্থাপ হইলামাত্র তিনি বালতে লাগিলেন,—"ভোমরা শুন, আমিও পরিমিত হুরাপান করিয়া থাকি, কিন্তু আল ভোমাদের সম্মুধে প্রতিজ্ঞা করিতেছি আর কথন পরিমিত হুরাপান পরিক্রিব না।" ইনি উপদেশ দিতে গিয়া নিজে হুরাপান পরিজ্ঞাণ করিলেন, কনফুচের নীতি অহুসরণ করিলেন।

আমরা যে ঈশরের প্রতি বিশাস ভাপন করিবার জন্ত লগতকে নিমন্ত্রণ করিতেছি, সাধু উক্তি সকল ব্যাথা। করিয়া সকলকে সাধু ইইতে বলিতেছি, নিম্বার্থভাব জাগ্রত করিতে চেটা করিতেছি, সে সম্লয় বিফল হইয়া ঘাইবে, যদি সেই সকল উপদেশ নিজে পালন না করি। যে মুহূর্ত্তে বলিতেছি, "কুমি ঈশরে বিশাস কর, সেই মুহূর্ত্তে যেন প্রাকৃত বিশাসীর মত আচরণ করিতে পারি; যথন অপরকে বলিতেছি, 'সাধন ভজন কর'' তখন বেন মনে উদর হয়, আমি এই মুহূর্ত্ত হইতে সাধনশাল হইব। এইয়পে আমরা যথন যে উপদেশ দান করি, ভলমুসারে যেন নিজ লীবন মঠনে বস্থশীল হই।

একজন সাধু বলিয়াছেন, "ঈখরাশ্রিত লোকদিগের লক্ষণ এই :--- ঈশবে তাঁহাদের চিস্তার গতি, ঈশবের সঙ্গে তাঁহাদের विकि. जेचद्याम् एमा काशास्त्र काशास्त्र काशास्त्र काशास्त्र मरका विचारमञ्ज (य जिन्छि नक्षण अमर्गिज इहेबारक, जेरमधरक हिसाक्तिल हेहाहे (मधा यात्र (य, विश्वारमत व्यथम नक्ष्ण, সমুদর পদার্থে ঈশবের প্রতি দৃষ্টি রাথা; ২য়, লক্ষণ সকল কার্য্যে क्रेबन-मूबीन इंड्ना. डांहान नाहाया शहर कना, नकन कार्याहे ভাষার সহারতা লাভের জন্ম প্রার্থনা করা। ১ম বিষয় সম্বন্ধে চিম্বা করা ঘাউক। এই পরিদুখ্যমান অগতের সৌন্দর্য্য রাশি मनम कतिया उँ। होत कथा माने পড़ किना ? खूनोन पन उ আকাশের শেভা: অভভেদী অতানত গিরিরাজির বিশাল भोमार्या हेजानि मर्गन कतिया जाहात कथा मत्न भए किना ? निकान वन मर्था विरूप्तमत स्मामिक यत अवन कतिता. अछा-তের নবোলিত কর্যোর ভরণ কিরণ এবং স্ক্রা সমাগমে প্রকৃ-তির লিগ্রভাব অবলোকন করিয়া তাঁহার কথা শ্বরণ হয় কিনা ? ইছা জনর পরীক্ষা করিয়া দেখিবার বিষয়। জড় এবং চেডনের याथा याथा मनन कांत्राएकि, अवग कांत्राएकि, आधामन कांत्र-ভেছি, উপলব্ধি করিভেছি, ভাহার সলে সলে সেই প্রাণ-**८** इन्हें कि स्वाप्त के प्रतिक्र के कि स्वाप्त के कि स्व ভেছি, মন তাঁহাতে নিমগ্ন হয় কিনা ?

ংস-স্কল কাৰ্য্যে ঈশ্বমুখীন থাকা। সংসাৱে দেখি বাড়ীতে
'কোনও বিপদ্ ঘটলে কৰ্ডার মন অহোরাজ যে দিকেই

রহিরাকে। তিনি আফিসে যাইতেছেন, বাজারে যাইতেছেন, লোকের সহিত কভ কারবার করিতেছেন, কিন্তু নন সেই গৃহের পীঞ্চত পুত্রের দিকে। যাহারা বিবরী লোক সর্বদা বিষরে ব্যাপৃত থাকে, তাহাদের মন বিষয়েতেই লাগিয়া থাকে। তাহারা গলা লান করিতে বার, মালা লগ করে, কিন্তু নন অর্থোপার্জ্জনের দিকে, মামলা মোকদমার দিকে। তজ্ঞপ কি হে ব্রাহ্ম ব্রাহ্মকা! তোমাদের মন সংসারের সকল কার্য্যে, আহার বিহারে, ফার্যাক্ষেত্রে ও নির্জ্জনে সর্ব্যর সকল অবস্থার সেই ভগবানের দিকে আক্রপ্ত হইয়া থাকে ? মনের গতি কি সেই দিকে ? যেমন পথিক গস্তব্য স্থানে উপনীতে হইবার অক্ত ইটিতিতেছেন, তিনি প্রতিপদ বিক্ষেপে গস্তব্য স্থানের কথা অরপ করিতেছেন না এবং ঠিক পথে যাইতেছি কিনা ইহাও ভাবিতেছেন না, তথাচ তিনি যেমন কিছুকাল প্ররেই গস্তব্য স্থানে উপস্থিত হইয়া থাকেন, তোমরা কি ভগবানের দিকে সেই রূপে জ্ঞাত ও অজ্ঞাতসারে গমন করিভেছ ?

ওয় সাহাযা প্রার্থনা। কি রূপে ভাল হইব, এই প্রশ্ন উদর

ইংলে অমনি প্রার্থনা-চক্ষ্ তাঁহার দিকে পতিত হইবে। সমাজ
ও বন্ধুগণ কি রূপে ভাল ইইবেন, অমনি প্রার্থনা; কোনও
অভাবের কথা উঠিলেই প্রার্থনা, এরূপ প্রার্থনাই বিশ্বাসের
লক্ষণ। অক্সের দোষ দেখিলে নিন্দানা করিয়া প্রার্থনা;
সকল অভাবের সমর, বিবাদের সমর প্রার্থনা; প্রার্থনাই
সহার, প্রার্থনাই সম্বল। এইরূপে যথন যে কোনও বিষয়
উপন্থিত হয়, যদি প্রার্থনার দিকেই চক্ষ্ পড়ে, ভাহাই
বিশ্বাসের লক্ষণ। সাধুগণ বিশ্বাসের যে তিনটি লক্ষণ নির্দেশ
করিয়াছেন,ভাহা অতি গভীর তত্ত্বমূলক। ঈশ্বর করুন, এই
সাধনে যেন আমরা ক্বভকার্য্য হই।

একজন সাধুর উক্তি ২ইতে কিয়দংশ পাঠ করিতেছি :—

"ঈখরের উপর তুমি নির্ভর স্থাপন করিও, তাহা হইলে ঈশ্বর তোমার সঙ্গে থাকিবেন, তুমিও তাঁহাতে স্থিতি করিবে: ছ:थ কষ্টের সময় অক্তকে না বলিয়া তাঁহাকে বলিবে, ষেহেত লোক সমুদায় ভোমার ক্ষতি বৃদ্ধি কিছুই করিতে পারে না। जांशाय निकार ममुनाय माशोषध विश्वाह, यान जुमि दकान छ প্রার্থনা কর, তাঁহার নিকটেই করিবে। কোন ছ:ধ বা কোন-রূপ বিপদ কিছা কোন প্রকার অরকষ্ট উপস্থিত হইলে. কানিও তারা গোপন করিলেই তারার বার উন্মোচন হইবে।" এই উপদেশ অতি প্রাচীন। ঈশ্বরকৈ সভাবন্ধ বলিয়া, অতি নিক্টস্থ সহায় বলিয়া, নিক্টতম বন্ধু বলিয়া বাঁহারা দেখিয়া-ছেন, তাঁহারা ঈশবের উপর এই প্রকারেই নির্ভন্ন কবিলঃ থাকেন। যথন বিপদ, ক্লেশ, ছঃথ উপস্থিত হয়, তথন ভাঁহা-দের দৃষ্টি সর্বাত্যে উপরের উপরেই পড়ে। তাঁহারা হ:খ विशासत कथा वाहित्त धाकाण ना कतिया शाशास केचतहत्वा निर्वापन करतन: डाँगाता मेचत रहेरफ माचना खारं रम। अन्नभ कीवनकि अकुछ निर्वतमीन कीवन वना यात्र।

এরপ জীবনের সহিত তুলনা করিলে আমাদের কি শোচনীর অবস্থাই দেখিতে পাই। বিপদে পতিত হইলে আমাদের মন নর্বাধ্যে কারাকে অবেশ করে? আমন্যা কি তাঁহার নিকট হইতে সান্ধনা লাভের চেষ্টা করি ? ওাঁহার নিকট হইতে কি আলা ওবল পাই ? সকল কার্য্যের মধ্যে কি সর্বাত্তে তাঁহাকেই দেখি ? এই সকল প্রামাণের দ্বারা ভাদ্ধ-পরীক্ষা করিলে অন্তব করা যায় যে, আমাদের জীবনের সহিত্ত তাঁহার তেমন ঘনিষ্ট সম্বন্ধ নাই। তজ্জ্ঞ্যই আমাদের হুঃধ কষ্ট।

জীবন ভাহাতে প্রভিষ্ঠিত না হইলে ধর্ম্মদাধন হয় না। ধর্মদাধন বাহিরের বিষয় নহে। আমাদের কি অবস্থা ? আমরা যে মামুষ্কে ইর্কল হীন বলিশা থাকি, সেই মানবের উপরেই নির্ভর করিয়া নিশ্চিম্ভ হইতে ইচ্ছা করি। জগতে সর্বাদা দেখিতে পাওয়া যায়, আজ যিনি অমুকূল, কাল হয় ত প্রতিকূল, আজ যিনি সহায়, কাল তিনি শক্র, এরূপ মামুষেব ট্রপর নির্ভব করিয়া কতবাব প্রবঞ্চিত হইতেছি, তথাচ তাহা-দের উপরেই নির্ভব কবিতেছি; কিন্তু প্রভে পরমেশ্বর--থাঁহার প্রেমের পবিবর্ত্তন নাই, তাঁহার প্রতি নির্ভর কবিতে পারিতেছি না। ইথাই আমাদেব ভয়ানক ব্যাধি। আমরা তাঁহার চরণে শরণ লইতে পাবিতেছি না। সকল দেশের সকল সাধুগণ বলিতেছেন, "মানবায়ার জীবন তাঁহার চরণে। অনভাগতি ছইয়া তাঁহাৰ শ্রণাপন্ন না হইলে কল্যাণ নাই।" অথচ তাঁহার চরণে পড়িয়া থাকিতে পারি না। তাঁহাতে ঔষধ আছে লানি: কিছুলাভ করিবাব জন্ত ব্যাকুলতা নাই, একাগ্রতা নাই, অন্তিরতা নাই। এজন্মই আমরা তুর্বণ ও হানাবস্থায় পতিত হই। ঈশ্বর কুপা করুন, আমরা যেন বিপদে ক্লেশে তঃথে একান্ত মনে তাহাকে হদয়ে স্থান দান করি।

## প্রেরিত পত্র।

(পত্রপ্রেক্তিকিব মতামতের গুঞ্চ সম্পাদক দায়ী নহেন।) জীযুক্ত তত্ত্ত্বৌসুদী সম্পাদক

মহাশয় সমীপেযু---

মহাশয়,

আমার শরীর নিতান্ত অনুস্থ ছিল বলিয়া বাবু দেবেন্দ্রনাথ মুখে। পাধ্যায়েব শেষ পত্তের শেষ উত্তর দিতে বিলম্ব হইল। এ পত্রগানিও বোগশ্যায় থাকিয়া লিখিতেছি।

(২) আমি বিদ্যা বৃদ্ধি চরিত্রমূপক অধিকারকে সাম্যের বিরোধী মনে করিয়াছি, দেবেন্দ্র বাবু আমার কোন্ কথায় এরপ ব্রিয়াছেন, তাহা বুরিতে পারিলাম না। শিক্ষকতা করিতে হইলে বে বিদ্যার প্রয়োজন, তাহা আমি বিলক্ষণ জানি। ধর্ম্মোপদেশ দিতে হইলে বে অত্যে ধার্ম্মিক হওয়া আবশুক তাহা আমি অজ্ঞাত নহি। কিন্তু শিক্ষক বিদয়া একটা শ্রেণী স্বতম্ন সৃষ্টি করিতে হইবে, ধর্ম্মাঞ্চনার জন্ম ব্রাহ্মণ প্রস্তুত করিতে হইবে, আজ বিনি শিক্ষক কাল তিনি ডেপ্টা মাজিট্রেট হইতে পারিবেন না, যিনি একবার ধর্মান্যাজকের ব্রত্ত অবলম্বন করিয়াছেন তিনি আজীবন সেই ব্রত্ত অবলম্বন করিয়াছাত্রন হইলে অক্ত ব্যবসায় অবলম্বন করিয়া থাকিবেন, ইছে। হইলে অক্ত ব্যবসায় অবলম্বন করিতে পারিবেন না, এই ভাবে ব্যবসায় বর্ণ বা জাতিবিকাগ করিতে হইলে ইহার ভবিষ্যৎ ফল অভ্যক্ষনক হইবে

चात्रि এ कथा है विनिश्च हिनाम, अहे क्रम खाद वर्गविद्धम दा সামোর বিরোধী ভাহা আমি বলিয়াছি, এখনও বলিতেছি। व्यधिकारत्रत्र नावि नाश्या इटेट र मश्मारत यज व्यनिटहेत्रः উৎপত্তি হইরাছে। এই জন্মই মার্সেলার কথা উল্লেখ করিরা-ছিলাম। কে কাচার অপেকাবড় এবং কত বড় ইহা নির্দারণ कड़ाहे (यन कीरनशांतराव त्थाशांन नका; ना कत्रितन (यन মনুষ্ড রক্ষা পায় না। মানুষ মানুষের ভাই ইহা ব্যরণ রাথিয়া সকলের প্রতি সমান বাবহার করিতে গেলে সমুদায় উন্নতি-ল্রোত বন্ধ হইয়া যাইবে, পৃথিবী রুসাতলে যাইবে একথা আমি খীকার করিনা। কিন্ত দেবেক্ত বাবু ইহাই প্রতিপন্ন করিতে চাহিয়াছেন। তাঁহার প্রথম পত্রে একথা স্পষ্ট লিখিত আছে; শেষেও তিনি একথা প্রতিপন্ন করিতে চেষ্টা করিয়া-ছেন। ঈশর কাহাকেও শ্রেষ্ঠ করিয়াছেন, কাহাকেও নিকৃষ্ট করিয়াছেন এই তাঁহার মত। দৃষ্টাক্তস্তরপ তিনি বলিয়া-ছিলেন, এক জাতীয় হুইটা পক্ষীর মধ্যে ঈশ্বর একটীকে অধিক পালক দিয়া শাত হটতে রক্ষা করিতেছেন, আর একটা শীতের উপদ্রব ভোগ করিতেছে। আমি একণা স্বীকার করি নাই। তিনি আমাকে ওয়ালেস্ প্রণাত Darwinism অধ্যয়ন করিতে বিলিয়াছেন। তাঁহার এই অনুতাহেব জ্ঞ বিশেষ বাধিত হইলাম। মনে করিয়াছিলাম, পৃক্ষে ওয়ালেসের উক্ত গ্রন্থে यारा पूँ अने या भारे नारे, मूर्याणाधाक्ष महानव व्यधाव ଓ द्वान নির্দেশ করিলা দেওয়ায় অবশ্রই তাহা পাইব, একটা ঘোর অজ্ঞানতা দ্র হইয়া যাইবে, কিন্তু আমার হুডাগাৰশতঃ ভাহা হইল না, নিদিষ্ট রত্মরাজির অমুসন্ধান করিয়াও তাহা পাইলাম ना। তিনি दे जिन्ही अधाप्त निर्मिष्टे कतिब्राष्ट्रन, তाहात প্রথমটা On the variability of species in a state of Nature, বিভাষ্টা On variation of domesticated animals and cultivated plants ভূতায়টা On natural selection by variation and survival of the fittest সম্বন্ধে লিখিত। প্রকৃতিতে যে variability আছে তাহা আমি অস্বীকার করি নাই, বরং তাহা আমি পুন: পুন: উল্লেখ করিয়াছি। Variability দূর করা যে দম্ভব নছে এবং সাম্যের লকাও নহে ভাহা আমি পুকোই বলিয়াছি। Inequality पूत्र कतारे मारमान्न लका। धिन्न tufa Variability ua: Inequalityকে একার্থবোধক মনে করেন, বর্তমান চিন্তা-জগতের সহিত তাঁহার অতি নিগুড় সম্পক বিদামান তাছার मत्मर नारे। Variability नानाकाल मःचिष्ठ क्यू by natural selection, by artificial selection, acclimatisation by occasional crossing &c. Diversity of physical condition বশতঃ কোন দেশের লোক খেতকায়. কোন দেশের লোক ভাষ্তবর্ণ, আবার কোন স্থানের (नाक कुकावर्ग। এইরূপ বর্ণবিভেদ Variability कि Inferiority নহে। মান্তবে মান্তবে যে Inequality সংঘটিত হয় নাই তাহা নহে, কিন্তু তাহা প্রাকৃতিক निर्साहत्नव क्न नरह, मामाजिक व्यवदा अञ्चित क्न माळ. उच्च अभव पात्री नरहरा। भीख्यान माम्ब भक्की खीच-

ধ্বান পেশে আনীত হইলে তাহার পালকের বে ইতর্বিশেষ হব ভাছা প্রাকৃতিক অবস্থান ফল, নতুবা গ্রীয়প্রধান দেশে উহার পক্ষে অবস্থিতি করা অসম্ভব! কিন্তু ইহা হীনভার লক্ষণ নহে, প্রকারভেদ মাত্র। যে স্থলে হীনভা ঘটে, তথার মহুবোর হন্ত দৃষ্ট হুইরা থাকে। মহুবা কৃত নির্বাচনে অনেক সমরে যে ফল সংঘটিত হয় তৎসম্বন্ধে ওরালেসই বলিয়াছেন, "not only are they often of no use to the animals or plants themselves, but they are not unfrequently injurious to them." মাহুব কেবলমাত্র পশুপক্ষা এবং বৃক্ষ লভারই এইরূপ অনিপ্ত সাধন করিয়াছে ভাহা নহে, নিজেরও যথেই ক্ষতি করিয়াছে, সেই ক্ষতি, সেই অনিপ্ত নিবারণ করাই সামোর লক্ষ্য। যাহারা ভাহা নিবারণ করিছে সমুৎস্থক নহেন, উলাও বিধাতাব বিধান বলিয়া মনে কবেন, তাঁহারা কথনও সাম্বাদী নহেন।

- (২) আমি বলিয়াছিলাম, ত্রান্ধণত্ব সৃষ্টি করিতে হউলে ভাহা বংশাস্থাত করাও উচিত, ইহাও দেবেক্স বাবুর অভিশয় আপত্তির বিষয়। কিন্তু তাঁহার শ্বরণ রাথা উচিত ছিল, "it is only by isolation and pure breeding that any specially desired qualities can be increased by selection." এই isolation এর অন্তেই বংশগত ত্রান্ধণত্বের সৃষ্টি।
- (৩) কেহ কেহ মহাপুরুষ হইতে পারে আমি একথা বলি নাই। সকলের পক্ষেই মহাপুরুষ হওয়া স্বাভাবিক, সকলে যে হইতে পারে না সে অন্বাভাবিকতার ফল। এই অন্বাভা-বিক্তা দূর করা সাম্যের লক্ষ্য। তবে কে কোন প্রকারের মহাপুরুষ হইবে তাহা মামুষের স্বাভাবিক শক্তির দারা নিণীত হুইবে। প্রকৃতিতে variation আছে। Inequality প্রাকৃ-जिक निकाहतनत्र "क थ" नरह, variability हे जाहात ज्यापि বর্ণ। জীব জগতে ও উদ্ভিদবাজ্যে variation এর শক্তি বিদামান আছে বলিয়াই উহারা আপনাদিগকে ভিন্ন ভিন্ন অবস্থার উপযোগা করিয়া অবস্থিতি করিতে সমর্থ হয়, it brings "the species into harmony with its new conditions." অবস্থাভেদ যোগ্যাযোগ্যতার নিয়ামক নহে। প্রাকৃতিক নিকাচনেব ফল ভভলনক। ওয়ালেসই বলিতে-চেন, as natural selection acts solely by the preservation of useful variations or those which are bene ficial to the organism under the conditions to which it is exposed, the result must necessarily be that each species or group tends to become more and more improved in relation to its conditions." মামুষকে এই প্রাকৃতিক নিকাচনের পথে আকৃষ্ট করাই সামোর মূলমন্ত্র। মাত্রষ চেষ্টা করিয়াও ধার্মিক হইতে भारत ना, रमरवस वावत এই कथा बाक्षधर्य-विरवाधी, रक्न ना कारा रहेल माधनात चात कान धारमाबनरे थारक ना।

দেবেজ বাবু পরিশেষে বলিয়াছেন আমি "কথা কহিলেই
মিল্ কোমৎ স্পেজার বর্ষিত হয়।" ইহা শুনিয়া চালনীর
ছুঁচের নিন্দার কথা মনে পড়িল। পাঠকবর্গের বোধ হয়
অবণ আছে যে, কে পরের নজির নিজ্ঞ প্রস্তাবের শিরোদেশে
উদ্ভ করিয়াছিলেন, কে ওয়ালেসের নাম লইরা প্রতিপক্ষকে
বিভীষিকা দেখাইতে চাহিয়াছিলেন,কে communism, Socialism, Nihelism প্রভৃতিকে একত্রে ব্ধবদ্ধ করিয়া নিজের
বিজ্ঞতা প্রদর্শনে বাস্ত হইয়াছিলেন। সে ঘাহা হউক, যিনি
আপনায়:পান্ডিভার অভিমানে অপরকে বালক, অনভিজ্ঞ
প্রভৃতি বলিতে কিছুমান্ত সন্তুচিত হন না, তিনি যে একটু
নামান্ত রোধ পর্যান্ত সন্তু করিতে পারেন না, ইহাই আভ্যের

বিষয়। তিনি যে ফলের প্রত্যালী না হইরাই নিছাম মসাক্রীর ব্রত্ত অবক্ষর করিরাছেন ইহা শুনিরা প্রীত হইলাম। • নিবেদক

প্রীধারকানাধ গঙ্গোপাধ্যার।

#### ব্রান্মসমাজ।

আশ্চর্য্য সহাত্মভূতি—কোনও ত্রাদ্ধ যুবকের প্রতি এক হিন্দু গরিব পরিবারের আশ্চর্য্য সহাত্মভূতি সম্বন্ধে আমা-দের ত্রাহ্মবন্ধু বাবু প্রভাপচন্দ্র নাগ মহাশয় নিম্নলিখিত মর্ম্মে একগানি পত্র লিথিয়াছেন ;—

"বিগত ১৮৮৮ খৃষ্টাবে ডিসেম্বর মাসে একজন ব্রাহ্মযুবক कुरनत अक्षांभरकत कार्या नियुक्त इहेशा, এकना (कान ड नुष्ठन ज्ञारन याहेर छहिएन। त्नोकाग्र छैठिएन, नाना विशरप्रत চিন্তা আসিয়া তাঁহার হৃদয়কে অধিকায় করিল। তিনি মনে করিলেন,—"আমি একেবারে অপরিচিত স্থানে যাইতেছি, विरमघनः सिर कुनति भवर्गाराधेत कुन नरह, कानीय रनारकताहे मर्स्समर्सा। छाहाता स्थामारक श्रहण कतिर्दन कि ना, কেহ একটু আশ্রয় দিবেন কি না, কোন পীড়া হইলে কে ভ্ৰহ্মবা কবিবে, -- কে দেখিবে, -- কে বিপদের সময় সহায় হইবে ?" সেই স্থানটী অতি ভয়ন্তর বলিয়া তাঁহার জানা ছিল। তথাকার লোকেরা অতি সামান্ত কারণেই ক্রোধায়িত হয়, স্থাবিধা পাইলে প্রাণ বিনাশ কলিতেও কুন্তিত হয় না। তাঁহার চিস্তিত হইবার অন্ত কাবণ এই যে. — তিনি জাতিভেদ মানেন না,—প্রাচীন সমাজ হইতে তাড়িত, জ্ঞাতি-বন্ধুগণ কর্তৃক পবিতাক্ত; স্বতরাং এইরূপ অবস্থায় সেই প্রকার নিকান্ধৰ ও ভাষণ খানে অবস্থান কবিয়া নিকিছে স্চাক্তবে । কার্যানিকাছ করিতে কত দূব সক্ষ হইবেন গ

এই क्रांश विश्विष्ठ क्रमरत्र जिनि शख्ता छात्न (शेहिहिलन এবং ऋ लंद मुल्लानक महाभाष्य्य वामास छे ठिलान। मुल्लानक মহাশয় বাসায় নাই, কোনও কার্য্যোপলক্ষে অক্তত্র গমন তথন শিক্ষক মহাশ্য, ব্যাহবেব ঘবেব বারাণ্ডায় বসিয়া বহিলেন। কতকক্ষণ পবে ঘটনাক্রমে একটা ভদ্লোক দেই স্থানে আসিয়া উপস্থিত ইইলেন। পরি-চয়ে জ্ঞাত ২ইলেন,—ইনি সেই স্কুলের একজন শিক্ষক। ठीशांदक ममख कथा वना इहेन। क्रम्यकान भाव रमहे छ छ লোকটা তাঁথাকে সঙ্গে করিয়া ঐ স্থূলের সহকাবী সম্পাদক একজন উকীল বাবুৰ বাসায় লইয়া গেলেন। তিনি বিলক্ষণ ভদ্র ব্যবহার দারা আপ্যায়িত ক্রিয়া, তাঁহার বাসাতেই প্রথমত: স্থান দান করিলেন। ক্রমে কথোপকথন দ্বরে। অবগত হইলেন যে, আগেত্তক শিক্ষক মহাশয় সমাজচাত ব্ৰহ্ম। হহা শ্ৰবণ কবিয়া উকীল মহাশয় কিছু উদিয়াও ভাত इहेलन! डिनि हिन्दु-ध्यावनशी, धहे अकात लाक क বাসায় স্থান দান করিলে, তাঁহাকে বিপদে পভিত হইভে ছইবে। তিনি শিক্ষক মহাশয়কে কোনও কোনও বিষয গোপন কবিয়া চলিবার নিমিত্ত অহুবোধ করিয়া, অন্ত বাসার অফুসন্ধানে প্রবৃত্ত হইলেন। সেই স্থানটী স্বডিভিস্ন। সুত্রাং ভদ্রলোকের বাসার অভাব নাই। উক্ত উকীল বাবু কয়েক मिन व्यविध नमल जन्मातिकत वानाम जन जम कविया श्रीकतनः किस (करूरे अकर दान मिटल मारमी रहेटनन ना। अकरी উচ্চ हेश्यको कृत चाह्न, जाहात हात ও निक कर्गावत शांकिवात বোডিং আছে তথায়ও স্থান মিলিল না।

বৃত্ত অনুস্কানের পর বাজারে এক থানা সামান্ত থড়ের ঘ্র মিলিল। ঘর থানায় বাস করা কিছু স্কটন, কেন না

अविषदम गत्थह बालामूनान करेतारक आह भज मृजिक करेंदर ना।

চারিদিকের বেড়া, অভি সামাল বিশেষতঃ দীতকাল ় শিক্ষক মহাশর অগত্যা তথার গমনের উদ্বোগ করিতে লাগিলেন। उंश्रित क्रिनिम भव अक्वी मूर्छेत्र माथात्र क्रूनिन्ना मिर्दन, এমন সমর সহসা একটা যুবক ভণার আসিরা উপস্থিত इन्हें होता । जिल्ला विश्वविद्यानस्त्र हे भाषिधात्री नरहन,— সামার কিছু বাঙ্গালা লেখা পড়া শিক্ষা করিরাছেন। দরিদ্রের मञ्जान, देवरूव धर्मावनशो। (महे व्यवितिक यूवक, निकक মহাশয়েব ছ:थ ও বিপদের কথা লোক পরম্পরার ভ্রুত হইরা, তথার আসিরা উপত্তিত হইরাছেন। যুবক স্থমিষ্টম্বরে শিক্ষক মহাশয়কে সংখাধন পূর্বক কহিলেন,--"আপনি কেন একাকী সেই ভগ্ন গৃহে বাস করিতে যাইতেছেন ? এই ভগ্নানক শীতে मात्रा याहेरवन, यनि किছू मन्न ना करतन, छरव आमात्र বাড়ীতে আপনাকে স্থান দিতে পারি। এ সম্বন্ধে স্থাপনার অভিপার কি ?" এই কথা শ্রবণ মাত্র শিক্ষক মহাশয় একেবারে স্তম্ভিত হইলেন! সহর গুদ্ধ লোকে গাঁহাকে সমাজের ভয়ে একট্ স্থান দিতে সাহসী হইবেন না, একটী পন্নী-বাদী অপরিচিত দরিদ্র লোক অবাচিত ভাবে তাঁহাকে আছবান করিতেছেন! ইহার নিগৃচ মর্ম্ম নির্ণয় করা সহজ্ঞ নহে তিনি সেই যুবকের নিকট জানিলেন যে, তাঁহার বাডীতে চারিখানা খডের ঘর, বাহিরে কোন ঘর নাই, তাঁহার একটীযুবতী সহধর্মিণী, একটী যুবতী সহোদরা আরে বৃদ্ধ পিতা মাতা আছেন। সামাল্প বেতনে চাকরী করেন। শিক্ষক মহাশয় বলিলেন,—"আমাকে কোন্পুছে বাস করিতে भित्वन ? वाहिरत । कान चत्र नाहे, च्यामि (काथाम्र थाकिव ? আর বে গৃহে আমি থাকিব, সেই স্থানটী কেবল আমার শয়-तित्र निमिख नरह ;—आमि छ्लाइ प्रिकाः म ममन् वाम कतिव, পুত্ত অধ্যয়ন করিব, গান করিব, ভগৰানের নাম • করিব।" যুবকটা বলিলেন,—"আপনার যে খর ইচ্ছা সেই খরে বাস क्रियन, मिरे छान्न निवा बाक शांकियन, भन्नसम्बद्धत्र नाम করিবেন, আমাদের ভাহাতে কোনও আপত্তি ন।ই। আমবা আপনাকে পরম্যত্ত্বে রাখিব।"

শিক্ষক মহাশার সেই ব্বক্টীর আগ্রহাতিশরদর্শনে চমকিত ও সাতিশর বিশ্বিত হইলেন এবং প্রত্যাবে সেই ব্বক্টী পুনরার সমাগত হইলে,শিক্ষক মহাশার পরমানলে তাঁহার সমভিব্যাহারে গমন করিলেন। তিনি সেই পরিবারে অতি প্লেহে ও অতি আদরে বাস করিতে লাগিলেন। নির্মিত সমরে তাঁহার সন্মুথে অরক্ত্র আসিত, অতি তৃপ্তির সহিত তাহা আহার করিতেন, বাড়ীর সকলেই তাঁহার উচ্ছিষ্টাদি পরিষ্কার করিতেন। কোন প্রকার মুণার ভাব প্রকাশ করিতেন না। সেই ব্রক্টীর মাতা তাঁহাকে প্রনির্কিশেবে শ্বেহ করিতেন, ভগিনীট তাঁহাকে ক্যেষ্ঠ সহোদরের স্থার ভক্তিক করিতেন। কতক দিন পরে শিক্ষক মহাশার সেধানে পরিবার লইরা আসিলেন। এমন কি সেই পর্নীর মুস্লমান বন্ধ্বাণের বাড়ী হইতে সমর সময় থাদা দ্রবা আসিত, তজ্জ্ঞ তণাকার কেই প্রণাকরিত না, হিন্দু মুস্লমান সকলেই তাঁহাকে প্রেহচক্ষেদশন করিত।"

নামকরণ—বিগত ২৬শে আখিন ভাগলপুরে শ্রীযুক্ত বাবু কানচক্র বন্দোপাধ্যায়ের পুজের নামকরণ হইয়াছে। বালকের নাম অমিয় চক্র রাখা হইয়াছে। এতত্বপ্লক্ষে ক্সান বাবু সাধাপণ বাক্ষমাকে ১১ টাকা দান করিয়াছেন।

গত ২৫শে ভাদ্র জগরাধপুরের প্রীযুক্ত বাবু কৃষ্ণচক্র দের প্রানৰ জীবনের হ প্রথম ও দিতীর পুনের নামকরণ হইর।ছে। প্রীযুক্ত বাবু দেবী প্রসর রার চৌধুরী আচার্গ্যের কার্যা করেন। এতর্গ-লক্ষেক্ত বাবু সাঃ বাঃ সমাজে ২ সাধনাশ্রমে ২ টাকা উপস্থিত ছিলেন। দান করিয়াছেন। পরমেশর শিশুদিগকে আশীর্মাদ করন।

দান—কৃতজ্ঞতার সহিত নিয়লিখিত দানপ্রাপ্তি বীকার করা বাইতেছে। খেদিনীপুরত্ব বার্থ অভরাচরণ বন্ধ নাধারণ ব্রাহ্মসমাজে ২ দাভরা বিভাগে ২ সাধনাপ্রমে ২ এবং বার্প্যারীলাল ঘোব নিজের বিবাহ উপলক্ষে মেদিনীপুর ব্রাহ্মসমাজে ২ সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে ২ বার্মহেজ্রনাপ দাঁ তেজপুর ১৫ বারু গোপালচক্র মলিক ক্যাছন উপলক্ষে ২ দান করিয়াছেন।

জাতকর্ম-কর্ণ প্রবাদিন ট্রাটছ ২১৭নং ভবনে প্রীযুক্ত বাবু ঘোগীন্দ্রনাথ সরকারের নবজাত পুত্রের জাতকর্ম সম্পন্ন হইরাছে। এতত্পলক্ষে শ্রীযুক্ত বাবু আদিনাথ চট্টো-পাধ্যার উপাসনা করেন। প্রমেশ্বর শিশুর কল্যাণ বিধান কর্মন।

তুর্ভিক্ষ সংবাদ—মাদরা নামক স্থানের ছর্তিক পীড়িত লোকদিগের অবস্থা কিয়ৎপরিমাণে ভাল হইরাছে। একত সাধারণ ব্রাক্ষসমাক্ষের প্রতিনিধি বাবু হরিমোহন ঘোষাল তথাকার সাহায্য দান বন্ধ করিয়া কলিকাতার প্রত্যাগমন করিয়াছেন। তিনি কতক লোককে ১৫ই কার্ত্তিক ও কতক লোককে ৩০লে কার্ত্তিক পর্যন্ত চাউল দিয়া আসিয়াছেন। তিনি কোটালীপাড় অঞ্চলেও গিয়াছিলেন, সেথানেও আর বেশীদিন বিশেষ সাহায্যের আবশ্রক নাই বলিরা সাধারণ ব্রাক্ষসমাজ্যের পক্ষ হইতে সাহায্য দান বন্ধ করা হইয়াছে।

রামনোহন রায়ের স্মরণার্থ সভা—বিগত ২৭শে সেপ্টেম্বর দেবাধুন সহরে আমাদের ব্রাক্ষল্রত। প্রীযুক্ত ঈশান চক্র দেবের গৃহে প্রাতে উপাসনা হয়। অপরাক্তে শ্রীযুক্ত মঙ্গল দেব, রাজার জীবন সম্বন্ধে প্রাক্তাতা বক্তা করেন। বক্তাতালে অনেক লোক উপত্তিত হইরাছিলেন।

বিশুড়া স্থতরাপুর গ্রাহ্মসমাজ গৃহে রাজার স্মরণার্থ একটা সভা আহুত হইসাছিল। যথারীতি সভার কার্য্য সম্পর হইলে পর একজন শ্রন্ধের গ্রাহ্মবন্ধু রাজার মহন্ত ও দেশহিতৈ-যণায় এমন মুগ্ধ হইরাছিলেন যে, তিনি উক্ত সভাতে এই মর্ম্মে একটা কৃতজ্ঞাস্চক প্রস্তাৰ করেন যে,তিনি "রাজা রামহোহন রায় ও গ্রাহ্মধর্ম্ম" সম্বন্ধে সর্কোৎক্রট প্রবন্ধ লেথককে জন্মান দশ টাকা মূল্যের একটা ওরাচ উপহার প্রদান করিবেন।

"সভার সর্বসম্বতি ক্রমে নির্দারিত হইরাছে, আগামী ৩১শে ফাল্পনের মধ্যে বে সকল প্রবন্ধ উক্ত সভার সেক্রেটারী বাব্ শ্রীমন্ত চট্টোপাধ্যার মহাশয়ের ব্রিকট প্রেবিত হইবে, তন্মধ্যম্ব সর্বোৎক্রই প্রবন্ধলেশককে উক্ত উপহার প্রান্ত হইবে এবং প্রবন্ধী মৃদ্রিত করা হইবে।"

উৎসব ও প্রচার—বাবু শশিভ্ষণ বস্থ চাঁইবাসার
উৎসবে গমন করিয়া উপাসনা উপদেশ বক্তৃতাদি করেন।
তথা হইতে কলিকাভার প্রস্থাপ্রমনের সময় পুরলিয়াতে অবতরণ
করেন। সেধানে ইতঃপুর্ফে কোনও সমাজ ছিল না। শশি
বাবু কয়েক দিন তথায় থাকিয়া একটা ব্রাহ্মসমাজ সংস্থাপন
সম্বন্ধে বিশেষ চেটা করেন। পরমেশরের কুপার তথায় একটি
সমাজ প্রতিষ্ঠিত হইয়ছে। তিনি তত্রতা টাউন হলে
মানব জীবনের মহক্ত সম্বন্ধে একটি বক্তৃতা করেন। ডাঃ
ত্রীসুক্ত ধর্মদাস বস্থ মহাশের সভাপতির আসন গ্রহণ করিয়াছিলেন। বক্তৃতা স্থলে অনেক ভত্রলাকে ও বিদ্যালবের ছাজ
উপস্থিত ছিলেন।



## ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

>৪শ সংখা। ১৮শ ভাগ।

১লা অগ্রহায়ণ শুক্রবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাংসরিক স্নপ্রিম মূল্য ২৪০ মক্তবলে ৩ প্রতি বণ্ডের মূল্য 🗸 ৮

জীবন ত কুদ্র নর প্রকাশ যে অসীমের,
জীবন কি বদ্ধ রর সীমা-মাঝে সদীমের !
সংসারের খেলা ধ্লা, ভূচ্ছ কুখ, ধন মান,
পদ্বে কি ভৃষ্টি পার অনস্তের যাত্রী-প্রাণ ?
মৃত্যু সে ত কুদ্র অতি বদ্ধ থাকে মৃত্তিকার,
ধরণীর ভূচ্ছ ধ্লি তাহাতেই ভৃপ্তি পার!

জীবন ও মরণ।

কীবনে জীবন তাই আছিল না ষত দিন, ধরণীর তুদ্ধে খেলা স্থা চংগ অতি হীন, মৃত্যু-মাঝে তাহা নিয়া পরিতৃপ্ত আছিলাম; অনন্ত কি অসীম কি কিছুই না জানিভাম। জানি না কি মন্ত্র বলে দয়াময় ভগবান, মৃত্যু-মাঝে দঞ্চাবিত করেছিলে নব প্রাণ! দিয়াছিলে বুঝাইয়া ধন মান ধ্লিময়, ধ্লি নিয়ে ছেলা থেলা জীবনের লক্ষ্য নয়! কৃদ্র স্থথে তুদ্ধ কাজে আসি নাই এ ধরায়, অসীম এ জীবনের তৃপ্তি নাই কৃদ্রভায়।

গশ্চাতে সংসার ফেলি. সীমা ছাড়ি মরপের, সেই হতে ছুটেছিল নির্মারণী জীবনের, ভোমার চরণ-তলে; হৈ জনস্ত পারাবার! সমর্পিতে চির তরে প্রাণ মন জাপনার!

কিন্তু পিতা, এ কি হ'ল—এ কি মোর হ'ল হার!
মৃত্যু করিয়াছে গ্রাস জীবন যে প্নরার!
মৃত্যুমন্ন হয়ে আত্মা তোমার যে ভ্লিয়াছে;
কৃদ্র সুথে ডুছে কাজে আবার সে ভ্বিয়াছে!

দয়াকর তুমি পিতা, তোমা বিনা কোথা যাই ?
মরণে জীবন দের এমন ত কেহ নাই।
মৃত্যু-মাঝে দেও পিতা, জলে সরি যাত্তনার,
করণা করিয়া দেহ দব প্রাণ এ আত্মার।
মরবের ক্ত স্থা, ডুচ্ছ কাল, তার্থ আর —

! শ্বান্ত প্রতি বাহে বন্ধ আছে জনিবার;

নবীন জীবন পেরে ঠেলি' তাহা ছটি পার, জগতের মহকাজে ঢেলে দিরা আপনার। পশ্চাতে ফেলিরা সীমা অসীমে ছুটিরা যাই ! পুরাও এ মনস্বাম এই আজ ভিক্ষা চাই।

## সম্পাদকীয় মন্তব্য।

আত্মার প্রতিষ্ঠা—উপনিষদে আছে,—

যথা সৌম্য বয়াং দি বাদোরক্ষং সংপ্রতিষ্ঠত্তে।

এবং দবৈ তৎ দর্বং পরস্বাত্মনিসংপ্রতিষ্ঠতে।২

"হে প্রিয়! যেমন গক্ষিসকল তাছাদিগের বাসস্থান বৃক্ষেতে স্থিতি করে, তজ্ঞপ সকলই পরমান্মাতে স্থিতি কবিতেছে।

বৃক্ষ এবং পক্ষী এই উভয়ের সঙ্গে পরস্পর অতি খনিষ্ঠ
সংক্ষ রহিয়াছে। ইহারা উভয়ে উভয়ের উপযোগী। পক্ষীকে
এমন করিয়া বিধাতা সৃষ্টি করিয়াছেন যে, সে বৃক্ষে বিসবার
উপয়ুক্ত; বৃক্ষকে এয়পে সৃষ্টি করিয়াছেন যে, সে পক্ষীকে নিজ
দেহে স্থান দিবার উপয়ুক্ত। পক্ষীর পা ছখানি এমন ভাবে
নির্দ্মিত যে, সে বৃক্ষে বিসয়া থাকিতেই আরাম পায়; আবার
বৃক্ষের শাখা প্রশাধা এমনি যে পক্ষী তাহাতে বিসয়া স্থা
হয়। বৃক্ষ দেখিলে মনে হয় যেন পক্ষীকে বসাইবার জক্তই
বৃক্ষের সৃষ্টি। পক্ষী ও বৃক্ষের সহিত এমন নিকট সম্বদ্ধ যে,
উভয়ের মধ্যে একটী দেখিলে অপর্যীকে মনে হয়।

বৃক্ষই পক্ষীর নিরাপদ হান। তুমি তাহাকে ভর দেখাইলে সে অমনি বৃক্ষে পিয়া বসিবে। ভরত্বর রৃষ্টিপাত হইলে, কঞ্চা-বাতে বাড়ী ঘর ভূপতিত হইতে থাকিলে, পক্ষী বৃক্ষকেই আশ্রয় করে। আবার যথন প্রচশুরৌদ্রতাপে পৃথিবী অলম্ভ অনলের স্থায় উদ্ভপ্ত হয়, তথন পক্ষী প্রবিশিষ্ট বৃক্ষশাধার আশ্রয় গ্রহণ করিয়া শাস্তি লাভ করে।

আছাও পরমান্ধার সহিত ঐ প্রকার নিগৃচ্সহর। এই উভরের মধ্যে বে সন্মিলন, যোগ, তাহা স্বাভাবিক। পদ্দীকে দেখিলে রুক্ষকে এবং বৃক্ষকে দেখিলে পদ্দীকে ক্ষেন মনে হর, তেমনি আত্মাকে দেখিলে প্রমান্ধাকে মনে হয় এবং প্রমা- আকে দশন করিলে তাঁহার আশ্রিত জীবকে সারণ হয়।
উভয়ের সহিত অছেদ্য সম্বন্ধ। বৃদ্ধ বেম্ন পদীর পদ্ধে নিরাপদ
ও আশ্রর স্থান, আত্মার পদ্ধে পরমাত্মা তেমনই আশ্রমভূমি, ও
নিবাপদ ভূমি। যতক্ষণ মানব দিখরকে আশ্রয় না করে, ততক্ষণ সে নিবাপদ অবস্থা লাভ করে না। পদ্ধী যেমন স্থানিকবণে সন্থাপিত হইলে শান্তির জন্ম বৃদ্ধকে অবলম্বন করে,
মানবও তেমনি সংসার-বৌদ্রে তাপিত ও ভূষিত হইয়া শান্তি
স্থান করিরে আশ্রয় গ্রহণ করে। তিনি দাতা, আমরা
গহীতা। তিনি প্রেম দিতেছেন, আমরা গ্রহণ করিতেছি,
আমাদেব প্রাথনা তাঁহাতে স্থান প্রাপ্ত ইইতেছে। এই যোগই
স্থাভাবিক যোগ। অতএব আমাদেব মন সংসাবেব পাপ তাপে
জজ্জবিত হইলে তাঁহাব চবণ আশ্রয় করিতে ইচ্ছুক কি না
ইহাই অনুসন্ধানেব বিষয়। পদ্ধী ভ্যে, বিপদে যেমন স্বতঃই
আশ্রয়ব্যক্ষের দিকে যায়, তেমনি আমাদের মন ভ্যে, বিপদে
স্বতঃই পরমাশ্রয় পরমেশ্ববেব দিকে যায় কি না ইহাই দ্রন্থীয়।

আকৈ জিফা — এবজন সাধু বলিয়াছেন, "তোমবা অন্ন সাধনে সন্থাই হইও না। সর্বাদাই বর্মেব অহাচচ অবস্থা লাভেব জন্ম আকাজ্ঞা কব।" বাস্তবিক উচ্চাকাজ্ঞা মানবেব সক্ষবিধ উন্নতিব একমাত্র উপায় ও উপক্ষবণ। যাহাব স্থানয়ে উচ্চা-কাজ্ঞা নাই, তাহাব স্থান্য উন্নতিব জন্ম গংগ্রামও নাই।

कति माहेरकलाव कीवनहित्छ-लाशक लिथिग्राष्ट्रंन (य. মধফুদন যথন বালাকালে বিদ্যালয়ে পাঠ করিতেন, তথন সহাধ্যায়ী দিগকে এই কথা বলিতেন যে, "আমি একজন প্রথম শ্রেণীৰ কৰি হইব। ভোমরা আমাৰ জীবনচরিত লিখিবে। এই কথা ভনিষা তথন সমপাঠীরা কত বিজ্ঞাপ করিত, কিন্তু মধুস্দন সেই উপহাস ও বিজ্ঞাপে দৃক্পাত না করিয়া অতি তেজেব সহিত বলিতেন "তোমরা দেখিও, আমি সর্প্রাষ্ঠ कवि इहेव।" वालक भपूर्मानव मान य প্রতিজ্ঞার উদয় হইগাছিল, তাহাতেই তাঁহাকে কালে স্থকবি কবিষাছিল। मामाज प्याकाष्क्रा वहा। (य व) कि महुरे, (म कथन ६ कीवान न উচ্চশিখরে আরোহণ করিতে পারে না। পণ্ডিতেরা বলিয়া-ছেন, প্রতিভার লক্ষণ মানবঙ্গদয়েব উচ্চাকাজ্জ।। কুজ মানবের লক্ষণ এই যে, ভাহার প্রাণে উচ্চ-আকাজ্ঞা নাই। উচ্চ-णाकाड्या यादारमत अमर्य विमामान, छाँदावा मःमारतत কোনও বাধা বিয়েতেই স্ফুচিত হয় না। উচ্চাকাজ্ঞা অগ্নির गढ जाहामिशक नर्समा मटब्ब तार्थ। याहारमत आकाउका কুদ্র, তাহাদের মনও কুদ্র। তাহারা বিম বাধা দেখিয়া ভয় পায়, সংসারের কোনও মহৎ কার্য্যে হস্তার্পণ করিতে পাবে না। তাহারা কথনও মহত্ব লাভ করিতে পারে না।

ফরানী দৈশের সম্রাট নেপোলিফনের সম্বন্ধে এরূপ কথিত আছে যে, তিনি বলিয়াছিলেন, "ইউরোপের সমূদর রাজগণ মতদিন না আমার চরণতলে আসিতেছে, ততদিন আমার বিশ্রাম নাই।" তিনি ফরানী ভাষার অভিধান যথন খুলিতেন, 'অসম্ভব' এই কথাটা পাঠ ক্রিয়া বিশ্বক্ত হুইতেন। জগতে

কিছু অসম্ভব আছে, ইহা তিনি মানিতে চাহিতেন না। উাহার হৃদয়ে এমনি ছুর্জন্মশক্তি ছিল যে, সকল বাধা বিদ্ন অতিক্রম করিয়া তিনি অভীট লাভ করিয়াছিলেন।

এক দিকে উচ্চ আকাজ্ঞা, অপর দিকে সাহস, এই হুই একস্থলে দেখা যায়। ধর্ম্মাধন বিষয়ে এই হুইটিই নিতান্ত প্রয়োজনীয়। বে বাক্তি সাধনে বিশ্ব বাধা দেখিয়া ভয় পায়, সে কথনও ধর্মলাভ করিতে পারে না। যে অল্ল সাধনে সন্তঃই হয়, স্বার্থত্যাগ, ঈশ্বলাভ, পাপদমন তাহার হয় না। ছোট খাটতে যে সন্তঃই, সে কথনও ধর্মজীবনে শ্রেষ্ঠত্ব লাভ করিবার উপযুক্ত নয়। যে কৃদ্র আকাজ্ঞা লইয়া বসিয়া আছে, সে নিজে কৃদ্র—কৃদ্রভা ডাকিয়া আনিতেছে। মানুষ এ জগতে যে, যে অবস্থায় থাকে, সে সেই অবস্থা সৃষ্টি করে।

তুমি যদি কুল লইয়া সন্তুষ্ট হইতে পার, তবে তুমি কুল। যাহাব আত্ম মাদা জ্ঞান নাই, ছই আনাব প্রসাহাতে দিলে সন্তুষ্ট হয়, দে ছোট হইযা যায়। তুমি যা চাও, ভাহাই পাইবে। বড় হইতে চাও, বড় হইবে, কুল হইয়া থাকিতে চাও, ভাহাই হইবে।

আথা দৃষ্টিরছারা রিচাব কবা উচিত আমবা কিকপ ধর্মজীবন লইয়া সন্তুপ্ত আছি। উচ্চ আকাজ্ঞা, কি নীচ আকাজ্ঞা
আমাদের কদয়ে রহিয়াছে ? কদয় পরীক্ষা কব, যাহা কবিতেছ, তাহাতে সন্তুপ্ত আছ কিনা ? সন্তুপ্ত থাকিলে উন্নতি
ইইবে না। যদি প্রাণের ভিতর দেখ, তোমাব কিছুতেই
তৃপ্তিলাভ হইতেছে না, ইহা অপেক্ষা অধিক চাই—প্রকৃত
প্রেম চাই, প্রকৃত পুণ্য চাই,—তবে তুমি উন্নতি লাভ কবিতেছ, বলিয়া জানিবে।

আমাদেব প্রত্যেকের দেখা উচিত, আমরা ছোট আদর্শ নাইবা সন্তুষ্ট ,আছি কিনা। উৎসবের সময় খুব বাাকুলতা। আ সিল, তখন উচ্চ আকাজ্ঞা জলিয়া উঠিল। তৎপর উৎসবের পরে আবার নিজকে ছোট খাট করিয়া বাধিয়া লওয়া হইল। এরপ দেখা যায়, ১০২০০০ বংসরেও সেই লোক সাধনরাজ্যে অগ্রসব হয় না। নৌকার দড়ি গাছে বাঁধিয়া দাড় টানিলে যেমন নৌকা অগ্রসব হয় না, তেমনি কুদ্র আকাজ্ঞাতে আপনাকে বাঁধিয়া রাখিলে উন্নতি হয় না। অতএব আমরা সর্কাণ আয়-পর্বীক্ষা করিব, আমরা অল্লেভে সন্তুষ্ট কি আরও কিছু চাই ? অল্ল পার্শ্বতার, অল্ল প্রেয়া করিব, আর বাকুলতার অলি জলিতেছে।

ন্ত্রান, প্রত্যক্ষ ও প্রোক্ষ—ইহা পুরাতন কথা যে জ্ঞান ছই প্রকার, প্রত্যক্ষ ও পরোক্ষ। কিন্তু পুরাতন হই-লেও এই প্রভেদের বিষয়ে কিঞ্চিৎ আলোচনা করা মন্দ নহে। 'মানব-মমাজেঘ অধিকাংশ কার্য্যই পরোক্ষ-জ্ঞানে চলিতেছে। কে আমরা পরীক্ষা বারা দেখিয়াছি যে পৃথিবী গোলাকার, অথবা পৃথিবী অপরাপর গ্রহের ভার স্থ্যমন্ত্র্যকে নিরস্তর প্রাক্ষণ করিভেছে। অথচ প্রভ্যেক্টে বিশ্বা

কলি যে এই ধরা গোলাকার এবং স্বাের চতুর্দিকে ঘ্রিতেছে। এই ক্লানের উপরে ভিত্তি ছাপন করিয়া সমগ্র জ্ঞানের অটা-লিকা নির্মাণ করিতেছি। এই রূপে পরোক জ্ঞান দারা সংসারের কার্যা সাধন হয় বটে, কিন্তু তাহা প্রতাক্ষ জ্ঞানের স্থায় বলবান নছে, ও তৃপিপ্রদ নছে। পৃথিবী ঘুরিতেছে এই कथा वनार्छ शानिनियरक कातागारत गाहेरछ हरेग्राहिता. তিনি বছল যুক্তি ও প্রমাণ ছারা ইহাকে পরীক্ষা করিয়া প্রত্যক্ষ জ্ঞানে উপনীত হইয়াছিলেন, এই জ্ঞা কারাগারে বন্দিলশাতে বাদ করিয়াও তেজের সহিত বলিতে পারিয়া-ছিলেন, হাঁ এখনও ঘুরিতেছে; এবং এজন্ত যে কিছু নিগ্রহ স্থ ক্রিতে হ্ইয়াছিল তাহাও তিনি অমান্চিত্তে বহন कतियाहित्तन। शानिनियत छात्र याशत छान भतीकानक প্রাত্যক্ষ জ্ঞান নহে, তিনি কথনই গালিলিয়ব বল ও ঠাংবি আয়ুপ্রদাদ অফুভব করিতে পারিবেন না। জ্ঞান ও বিজ্ঞান বাজ্যে দেখিতে পাই, পণ্ডিতগণ প্রভূত চেষ্টা ও প্রীকা দাবা याहा निर्गय कतियादहन, जाहा खनमाधात्रात्व लगाठवार्थ निश्विक কবিয়া গিয়াছেন। তুমি আমি মনে করিলেই ঐ সকল গ্রন্থ সংগ্রহ করিয়া করে কোন তত্ত্ব আবিষ্কৃত হটয়াছে তাহা लानिट शावि। किंद्ध अल्ह शार्घ कतिया कानिया ताथिए। हे কি সে সকল ভত্ত প্রকৃতকপে জানা হইল ? পণ্ডিভগণ যে সে সকল গ্রন্থ প্রাথমন কাব্যাছেন ভাহার উদ্দেশ্য কি ৪ তাহাব উদ্দেশ্য কি এই যে তুমি আমি তাঁহাদের গ্রন্থ পাঠ কবিয়া পরোক্ষভাবে কতকগুলি তত্ত্ব জানিয়া রাখিব, না, এ সকল গ্রন্থের সাহায্যে পরীক্ষা দাবা নিঞ্চেবা ঐ সকল তত্ত্বের প্রমাণ প্রাপ্ত হইব ৪ তবে আমবা যে পরোক জ্ঞানে তুপ্ত হই তাহা আমাদেব সাধীন পরীকাব অবসরাভাব বা অশক্তি निवसन। विकान विष्टम পরোক জ্ঞানের অবজা কথনই প্রার্থনীয় অবস্থানহে। কেবল বিজ্ঞান সম্বন্ধে কেন, ধ্যাসম্বন্ধে माधुत्रा यांग किছू विनित्राह्मन, जाहात उत्मिश हेहा नरह, त्य লোকে তাঁহাদের প্রন্থাৎ শুনিয়া সম্ভুষ্ট হইয়া থাকিবে, এবং অসমর্থ শিশুদিগের ভায় চিরদিন তাহাদেরই ফল আশ্রয় करिया थाकित्व ? जाशात छेत्मश कहे त्य जाहातम्य छेल्तम ও দৃষ্টাস্তের অমুসরণ করিয়া সকলে সাক্ষাং ভাবে ঐ সকল জ্ঞান লাভ কবিবার চেষ্টা করিবে। বিজ্ঞান সম্বন্ধে কোনও বাজিকে যদি এক্লপে দেখা যায় যে সে চিরদিন কোনও পণ্ডিত বিশেষের উক্তির পুনরার্ত্তি করিয়া আসিতেছে, নিজে প্রীক্ষা করিয়া দেখে না, তবে সে যেমন আম্বজ্ঞার পাত্র, তেমনি ধর্ম সম্বন্ধে যে বাক্তি গুরু-বাক্যেব মধ্যেই আবন্ধ, নিজে কিছু প্রীক্ষা করিয়া দেখে না, সাক্ষাৎ সম্বন্ধে ঈশ্বের সন্নিহিত হইবাব শক্তি হারাইয়াছে, তবে সেওক্ষজ্ঞ ও ক্লপার পাত্র। ধর্ম্মের উচ্চ উচ্চ কথা লক্ষ লক্ষ ধর্ম এছে পড়িয়া বা সাধুমুথে ভুনিয়া রাধিলে ধর্ম হয় না। কিন্তু প্রত্যক্ষ জ্ঞানের এক কণিক। পাইলেই ধর্ম হয়। আমাদিগকে এই প্রতাক জ্ঞানে উপনীত ক্রিবার জ্ঞালান্ত্র ও সাধুগণ উপায় শ্বরূপ। তাঁহাদের সাহায্যে সামরা প্রত্যক্ষ জ্ঞানে ওরিত উপনীত হইতে পারি এই মাত্র। धर्म नच्दक जामार्गित नकरनत्रहे श्राज्य कारनत्र देशरत कीरानत

ভিত্তি ছাপন করিয়া দণ্ডায়মান হইবার চেষ্টা করা কর্ত্তবা। কারণ যথা প্রেত্যক্ষ নহে, তাহা আমার আর্থার সম্পত্তি নহে, স্তরাং তাহা খারা আমার আর্থার প্রকৃত ভাবে পরিপুষ্ট হইতে পারে না। যাহা আমার আ্রাতে শক্তিরপে বাস করে, তাহাই আমার জীবনের উৎসম্বর্ধ হইতে পাবে,পবোক্ষ জ্ঞানের শক্তি নাই স্ক্ররাং তাহা জীবনকে নিয়মিত কবিতে পারে না।

ভাল মাকুষ-- এদেশের ভাল মাকুষের বড় প্রশংসা। ভাল মালুষ কাহাকেও মর্মান্তিক কথা বলে না। কাহারও বিরোধী না হইয়া থাকিতে পাবা কিছু মন্দ নয় ৾ বরং, তাহা প্রশংসনীয়। কিন্তু ছঃথেব বিষয় একপ ভাবে কাহাবও দিন কাটে না। একমাত্র দেশ-প্রচলিত ভাল মান্ত্র নামে অভিহিত इंटेवात माथ थाकिलाई लाउक काश्वत विद्याभी ना इहै:। থাকিতে পাবে। কিন্তু সভা-বাদী ও মতাাত্বাণী সভাপিপাত্তব পক্ষে সকল সময় সকল অবভায় কাহাবও বিবোধী নাহত্যা शाका (शासाय ना । यीम कंगर ७ व व्याप अंकश शहे ह (य अंशान আৰ সত্যের বিনোধী কেহই নাই। সকলেই সত্যের সেবক , সকলেই নতোর উপাদক, সভা ভিন্ন অসভা সেবক আবে কেং নাই, তাহা হইগেই এরপ নির্বিগের লোকের অন্তিত্ব সম্ভবপর ইত। কিন্তু ছঃথেব বিষয় জগতে সকলেই এক কথাবলে না, একরপধর্মজোন্ত নয়। স্বতবাং বিবোধ থাকা যেন অবশ্রন্তারী इहेगाएए। अभिनाकारताशामक माकाननारमन विद्यानी इहेरतन, ইহাতে অস্বাভাবিকার বা ধন্মবিক্দ্ধ কিছুই এক্ষা হয় না। উদাসান থাকা বা কিছুই না বলা এক স্বতন্ত্র কথা; कि प्र উদ্যোগী হইয়া কিছু কবিতে বা বলিতে হইলেই অসত্যেৰ বিক্ষে সংগ্রাম কবিতে হয়। ভাহাব বিক্ষাচারী হইতে হয়। যৈ ব্যক্তি ঈশ্বকে নিরাকাব বলিয়া জানে এবং বিশ্বাস কৰে তাহার গক্ষে সাকাববাদের বিক্ষে সংগ্রাম কবা বা তাহার विद्याभी इंडब्रा अथवा द्य क्रेश्वरक माकाव विनिव्राष्ट्र कारन व्यवः বিশাস কবে, ভাহাব পক্ষে নিরাকাববাদেব বিরুদ্ধে সংগ্রাম করা বা বিবোধী ২ওয়া কথনই অস্বাভাবিক বা নিল্নীয় নহে। কোনও ব্যক্তিকে ঘুণা কৰা বাহীন ও ভুচ্ছভাবে দেখা সকল সময়েই নিল্নীয়। কিন্তু স্কল সম্যেই ব্যক্তিব প্রতি উপযুক্ত স্থান ও প্রীতির স্থিত তাঁহাব ভ্রমায়ক মতের বিক্দ্নে সংগ্রাম ক্বান্ড্রপর। এইজন্স কাহাবও বিরোধী হওয়া অংপ্রার্থনীয় হইলেও সত্যামুরাগীও সত্যসেবকের পক্ষে অসত্যের বিকল্পে চিবদিন সংগ্রাম করিতে হইয়াছে। নিবাকারোপাসকের পক্ষে সাকাবোপাদকের ভক্তি নিষ্ঠার অনুসরণ করা অনাবগ্রক नरह। वरः विरम्ध ভাবেই আবশ্रक। याश किছ कल्यानकव যাহা কিছু সাধু তাহা গ্রহণ করা সকল অবস্থাতেই প্রশংসনীয় এবং আবশুক। কিন্তু অসত্যের পরিহার এবং তাহাব প্রতিবাদ সকল সময়েই কর্ত্বা।

নিষ্ঠা, ভক্তি এবং সদ্ভাব সকল গ্রহণ করা কর্ত্তব্য, এবং তাহা সকল সময়েই কল্যাণকর ও শোভনীয়। কিন্তু নিরা-কার-উপাসকের পক্ষে সাকারের বিরোধী হওয়ায় এক বিন্তুও অধর্ম বা প্রভাবায়ের স্ভাবনা নাই। স্রল বিশাসী প্রতিকূল বিশাসের বিরোধী হইবে ইহা তাহার অভাব এবং ইহার সভাের প্রতি সমাদর-ক্ষাপ্ত । এই বিরোধে নীচতা বা ঈর্বা। নাই । এবং ইহাতে ধর্ম হানিও হর না। ধর্ম হানি অকতা ধারা হয়, ধর্ম হানি বেষ বা শক্ত ভা ধারা হয় । অসত্যের প্রতিকৃবে সংগ্রাম করা কথনই নিন্দনীয় নহে এবং তাহা চিরদিনই সাধুজন প্রদর্শিত পথ। বাহাদের নামে কোটী কোটী মানবের মন্তক অবনত হয়, সেই সকল সাধু পুরুষেরা কেহই অসত্যের সহিত সন্ধি করিয়া কার্য্য করেন নাই। তিলমাত্র অসত্যাতার সহিত সন্ধি করিয়া কার্য্য করেন নাই। তিলমাত্র অসত্যাতাহাদের অস্ত্ছিল। তাই তাহারা অসত্যের বিরুদ্ধে তীত্র প্রতিবাদ করিয়াছেন এবং তাহাই তাহাদের কত জনের পক্ষে অস্থ যন্ত্রণা-লাভের হেত্ হইয়াছে। তাহারা যদি আল কালের ভাল মান্ত্র গোছের উদাব মতাবলম্বী হইতেন, বুঝি বা তাহাতে ধর্মের এমন উজ্জ্বল প্রকাশিত হইত না। বুঝি বা তাহাতে ধর্মের এমন সংহিমা প্রচারিত হইত না।

সত্যেতে এবং অস্ত্যেতে বিরোধ থাকিবে এবং আছে। যথন অসত্যের কোন চিহ্ন থাকিবে না,তথন যদি সম্পূর্ণ বিরোধ চলিয়া যায়। সেই দিন কবে আদিবে কে জানে, বর্ত্তমান সময়ে সাকারবাদের স্পক্ষতা করা একটা বিশেষ বাহাছরির মধ্যে পণ্য হইয়াছে। কিন্তু তাহা দারা কি সরলতা বা স্ত্যানুরাগের পরিচয় দেওয়া হয় ? এদেশের সাকারবাদ এক চমৎকার বস্তু। কারণ তাহা এক মূথে বলিতেছে "যা দেবী সর্বভূতেযু বৃদ্ধিরূপেণ সংস্থিতা" "যা দেবী সর্বভৃতেযু শক্তিরপেণ সংস্থিতা, যা দেবী সর্বভৃতেষু শান্তিরপেণ সংস্থিতা, যা দেবী সর্বভৃতেষু চেতনে-ত্যভিধীয়তে, যা দেবী সর্বভূতেযু দয়াক্সপেণ সংস্থিত।" ইত্যাদি ষ্মাবাব সেই মুথেই "ওঁ জটাজুটদমাযুক্তাং মলুর্দ্ধকুতশেধরাং। लाहनवयमःयुकाः भूर्लन् मह्माननाः उश्रकाक्षनवर्गार्डाः স্প্রতিষ্ঠাং স্থলোচনাং" ইত্যাদি রূপে সেই দেবীর আরাধনা कत्रिए एह। य प्रती मर्स्स एक एक ना, वृक्षि, मग्ना, मक्ति, প্রভৃতি রূপে অবস্থিতি করেন, তাহার পুর্ব্বোক্ত আকৃতিও অবস্থা কিরূপে সম্ভবে ? এসকলের প্রতি উদাসীন হইয়া থাকিতে ইচ্ছাকর ভাহাতে প্রশংসা পাইবে। কিন্তু ভদ্মারাসভ্য-প্রেম বা নর-প্রেমের পরিচয় পাওয়া যাইবে না। ইহা সেই ভীরু ও অমুচিত মেহশাল পিতামাতার সদৃশ কার্য্য হইবে, যাহারা শিশুর স্ফোটকে অস্ত্রাঘাত করিতে চিকিৎসককে निरयधकरत्र।

কাহারও বিরোধী না হওয়া দেশ প্রচলিত ভাল মাছ্য নামে অভিহিত হইবার স্থাগে তাহাতে সন্দেহ নাই। গাঁহারা সাতেও হাঁ পাঁচেও হাঁ দিতে পাবেন, তাঁহাদের লোকসমাজে কোন নিন্দার হেতু না থাকিতে পারে। এবং তাঁহারা গোবেচারি নামেও অভিহিত হইতে পারেন,তাহাতে সন্দেহ নাই। কৈছ এরূপ লোকের মূল্য প্রকৃত ভাবে বেশী নয়। লোক প্রশংসা ইহাদের অন্ত চিরদিনই থাকিবে, উভয় পক্ষের স্থানিতরই ইহারা অধিকারী। কিছ লাভ ঐ পর্যান্ত। তাঁহানিগতে লোকে কথনই আপনার বলিয়া গ্রহণ করিতে চাহিবে না। যথন লোকে চিনিয়া লইবে তথন এরূপ অব্যবস্থিত-চিত্তকে কেহই আপনার সলী করিবে না। ভাহাদের হরিক্তক্রের দশাই প্রাপ্ত হইতে হইবে।

আমরা কি চাহিতেছি 🤊 সামরা আক্রধর্মের নিকটে কি চালিতেছি ? জ্ঞানের চরিতার্থতা, কি ভাবের উন্মন্ততা, বা অত কিছু অংঘৰণ করিতেছি ? ইহা নিবিষ্টচিতে মধ্যে মধ্যে চিস্তা করিয়া দেখিলে উপকার আছে। ভিন্ন ভিন্ন ব্যক্তি ধর্মজীবনের ভিন্ন ভিন্ন আদর্শ লইয়া ব্রাহ্মণর্মকে আশ্রর করিতেছেন। কাহার কাহারও অস্তরের ভাব এই যে, এতদ্বারা তাঁহাদের জ্ঞানের চবিভাপতা হইয়াছে, ইহা তাঁহাদের উল্লভ চিন্তাও সুমার্জিত জ্ঞানকে তৃপ্ত করিয়াছে। ইহাই বর্ত্তমান সময়ের হুযুক্তিসমত ধর্ম। এই জ্ঞাই ব্রাহ্মধর্মের ও ব্রাহ্ম-সমাজের প্রতি তাঁহাদের প্রাণের টান। এক সময়ে একপ লোকের সংখ্যাই অধিক ছিল। মহাত্রা রাজা রামমোছন রায়ের সময়ে ও তৎপরবর্তী মধ্যকালে থাহারা ব্রাহ্মসমাক্ষে रयांश नियाहितन, उाहातन अधिकाः भत जात अहे अकात ছিল। এক্ষণে এরপভাবাপর লোকের সংখ্যা অধিক নছে। এখনকার ত্রাহ্মণণের অনেকে ভাবের চরিতার্থতাকেই ধর্ম-জীবনের শ্রের অবস্থা বলিয়া মনে করিয়া পাকেন। ভাবেব দ্বারা তাঁহারা স্বীয় স্বীয় ধর্মজীবনের বিচাব কবেন; স্তরাং यिन किছ निन ভाবের নীরসতা লক্ষ্য করেন, यनि উপাসনা কালে প্রবল ভাবোচ্ছাস না হয়, লোকের কণা বার্ত্তা সেরপ সতেজ ও সরস দেখিতে না পান, তাছা হইলেই মনে করিতে পাকেন যে, তাঁহাদের ধর্মজাবনের কোনও উন্নতি হইতেছে না; অমনি চারিদিকে এই ধ্বনি উপিত হয়, "কিছু ভইতেছে না, কৈ যে আশা করিয়া ব্রাহ্মধর্মকে আশ্রয় কবি-লাম তাহার কি হইল ?" অমনি এই শ্রেণীর সাধকেরা হা হতোমি রবে গৃহ পূর্ণ করিয়া ভোগেন। অভএব মধ্যে মধ্যে আপন আপন হৃদয়কে প্রশ্ন করা ভাল, "আমরাকি চাহিতেছি ?" महर्वि (मरवस्त्रनाथ এक पिन विषया हित्नन, छाव জোয়ারের জ্বলের স্থায় স্কালে বাড়ে বৈকালে কমিয়া যায়, কিন্ত क्कान मुख्य हेश मुकाल देवकाल मसना मुमान थाएक।" এ কথার মধ্যে সভ্য আছে। ভাব শরীর মনের বিশেষ অবস্থা, সঙ্গের ত্থাপ, ঘটনার যোগাযোগ প্রাকৃতি কত বিষয়ের উপরে নির্ভর করে। তুমি রাজপথে আদিবার সময়ে একটা অভত সংৰাদ ভূনিয়া আসিয়াছ, যে জন্ম তোমার মন অতিশয় डेविश ও বিষয় আছে, ভূমি সেই রূপ মন লইরাই উপাসনা मिन्तत व्यादन कतियाह, जानिया प्रिशित (मशान ভाবের তরঙ্গ উদ্বেশিত হইভেছে; লোকে তাবোচ্ছানে মন্তপ্রায় হইয়া উঠিতেছে। কিন্তু সে তরঙ্গ তোমাকে স্পর্শ করিল না। তমি যেরপ ভক্ষদম লইয়া আসিয়াছিলে, সেইরপ ভক্তা লইয়া ফিরিয়া গেলে। এরপ কতবার হইয়াছে। যে দিন শরীরে কোনও গ্লানি থাকে, সে দিন উপাসনাদিতে সরসভা অফুডৰ করিতে পারা যায় না; ইহা কডবার দেখিয়াছি। জ্ঞান এপ্রকার নহে, জ্ঞান নিতাবস্তু, জ্ঞান সভাবস্ত। যাহা জানিয়াছি, তাহা অদ্যকার জন্ত জানিয়াছি, কণ্যকার জন্তও জানিয়াছি। তাহার আর ব্যতায় হইতে পারে না। ডুনি যদি ছোগশ্যায় পড়িয়া দেখিয়া থাক, যে কোনও একজন থাতনামা চিকিৎসক আসিরাছিলেন, তোমার মৃত্যুর সময়ে

জ্ঞান থাকিলে এবং জিজ্ঞাসা করিলে নিশ্চর বলিবে হাঁ অসুক আসিরাছিলেন। তোমাকে মরিতে মরিতেও সাক্ষ্য দিডে হইবে। জ্ঞান এমনি বস্তা। সেইরূপ যাহারা জ্ঞানের বারা ঈশবের অরপের প্রমাণ আপনাদের অন্তরে পাইরাছেন, তাঁহারা মরিতে মরিতেও সেই সাক্ষ্য দিরা থাকেন। অন্তএব জ্ঞানের অন্তভিত্তিতে যে বিশাস স্থাপিত, তাহাই আ্মার চিরস্তন সম্পত্তি হইয়া থাকে।

কিন্তু জ্ঞানের চরিতার্থতা ও ভাবের সরস্তা, ইহার অতি-রিক্ত আরও কিছু আছে, যাহাকে লোকে ধর্মজীবনের আদর্শ করিয়া থাকে। সে অবস্থা জ্ঞান ও ভাব উভয়ে জড়িত এবং এই উভয়ের কার্য্যের ফলস্বরূপ। তাহা আত্ম-বল বা विचारित्र मंकि । जागता ज्यानक मगरत्र रमिश्टल भारे, लारक क्कार्त धार्वीन ও ভাবে সরস হইয়াও এই আয়-বল বিষয়ে হীন হয়। আমি জ্ঞানে বুঝিয়াছি, ঈশর বিধাতা, ভাবের উচ্চাসের সময়েও তাঁহাকে বিধ্যতা বলিয়া মোহিত হই ; কিন্তু তিনি বিধাতা এ বিশাস আমার আয়ার অস্থি-মজ্জাতে বদিতেছে না, আমার চরিত্রকে শাসন করিতে পারিতেছে না, আমার চিন্তা ও কার্যাকে নিয়মিত করিতে পারিতেছে না। त्कर रुष्ठ विलादन, "ज्ञाद त्य विधाजा विनया क्यानवात्रा वृत्थि-য়াছ, তাহা প্রকৃত জ্ঞান নহে। সে বিষয়ে তোমার সন্দেহ আছে।" অবভাএক অর্থে ইহা সতা যে, সে জ্ঞান প্রকৃত कान रहेरा जाहात कम अग्र धकात रहेज; किन्न अरनक मगरत हैश (मिथि एक भारे (य, ज्ञान क माधन बात्रा व्याचा-वर्ण বা বিশ্বাস-শক্তিতে পরিণত করিতে হয়। জ্ঞান ও প্রেম, উভয় সাধনই ঘনীভূত ও কেল্রগত হইয়া আত্ম-বলকে উৎপন্ন করে। যতকণ ধন্মবিখাদ এই আত্ম-বলে পরিণত না হয়, ততক্ষণ মনে করা উচিত নয় যে, আমরা ধর্মজীবনের (अर्छ ष्यवद्या शाहेबाहि।

### সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

### জীবস্ত যোগসাধন।

( ৪ঠা নবেম্বর রবিবার সাধারণ ব্রাহ্মসমাজমন্দিরে পণ্ডিত শিবনাথ শাল্লী কর্তৃক বিবৃত উপদেশের সারাংশ )

উপনিষ্কলার ঋষি বলিতেছেন;—"অক্কারের পরপারে আমি এই মহান্ পুরুষকে জানিয়ছি।" এই উজির বিষয়ে আমরা একটু আলোচনা করি। বর্তমান সময়ে এই প্রশ্নের বিচার চলিডেছে যে, মানব অনস্তকে জানিছে পারে কিনা, ধারণা করিতে পারে কিনা ? এক অনন্ত, অবিনাশী সভা যে অপতের মূলে আছে সে বিষয়ে কোনও সন্দেহ নাই। ইহা স্ক্রানিসম্মত এবং ইহা বর্তমান বিজ্ঞানের প্রচলিত কথা। কিছু এই অনন্ত, অবিনাশী সভাকে মাল্য জানিছে পারে কিনা ? ধারণা করিতে পারে কিনা ? স্ক্রান্তে পারে কিনা ? ধারণা করিতে পারে কিনা ? স্ক্রান্তে পারে কিনা ? ব্যানা, এই উভরের অন্তর্গত পার্কচা বিশ্বত হওয়া

উচিত নর'৷- এরপ অনেক বিষয় আছে, যাহা আমরা সকলেই জানি, ক্রিড ধারণা করিতে পারি না। ধারণার অর্ধ কি ? ধারণার অর্থ:-কোন বিষয় কিখা কোন বস্তুকে মনের চিস্তা খারা আরম্ভ করা; মনের চিস্তার অধীন করা, বা চিস্তা খারা ক্ৰলিত ক্য়া; স্থতরাং দেই বিষয়েরই ধারণা হওয়া সম্ভব, যাহা व्यायात्रत्र धात्रवायक्ति व्यायका होता । याहा धात्रवा कतित्राहि, কিছা সম্পূর্ণরূপে জানিয়াছি, তাহাই মনের ঘারা সম্পূর্ণরূপে ক্বলিত এবং আয়ত্ত ক্রিয়াছি; তাহাই ধারণা শক্তির অধীন হইয়াছে। যদি ভূমি ইউক্লিডের জ্যামিতি সমাকপ্রকারে ব্ৰিয়াথাক, তবে তাহা তোমার মনের শক্তি অপেকা হীন रुरेग्राष्ट्रः, यनि निष्ठेठेत्नत्र कालकूनान ना त्रिका थाक, उत्त উহাতোমার মনের শক্তির বাহিরে রহিয়াছে। যাহা তুনি আয়ত্ত করিতে পার, তাহাই তোমার শক্তি অপেকা হীন। জ্ঞানের পক্ষে তাহা নহে; কোনও বিষয়ের জ্ঞান থাকিতে পারে, **धात्रमा ना रहे** ८७८ পারে। ছই মাইল পথ বলিলে ভূমি একটা ধারণা করিতে পার, কেন না চুই মাইল কতটা দূব তাহা ভোমার জানা আছে। কিন্তু यथन वना यात्र, পৃথিৰী হইতে **ठऋ मणगक माहेन मृत्र, उथन त्म मृत्र कि धात्रना कत्रित्छ** পার? সেই দূরত্ব তুমি মনে আয়ত্ত করিতে পার না। সেই দুর্জ সমগ্র মনের মধ্যে আনিতে পার না। কিন্তু ডাহা বালয়াইহা কি বলিতে পার যে, পৃথিবী হইতে চক্তের দ্রজের বিষয় কিছুই জানি না, কেন চক্ষতে ত দূরজের কিঞ্ছিৎ দেখিতেছ' ? তুমি বলিবে, ও জ্ঞান অতি অসম্পূর্ণ; অর্থাৎ জ্ঞান আছে, ধারণা নাই। 'Apprehension এবং Comprehension' ইংরাজী এই ছই শব্দে যে প্রভেদ, ঈশ্বরকে জানা এবং ধারণা क्रवाञ्च अट्ट व्यञ्चन । स्थे ब्रह्म काना यात्र ना विषया, शान-মাল করিলে হইবে না। তাঁহাকে apprehend করিতে পারি: কিন্তু comprehend করিতে পারি না। যে দিন এরূপ সম্ভব হইবে (य, श्रामक्री मेथन्रक शावना कतिरक शावित, श्रामन क्रांशव मेथन्त्र লোপ পাইবে এবং আমাপেরও মহুষ্যত্ব লোপ পাইবে। चाल এव यनि लर्क कतियां वन त्य, मेच तत्क काना यात्र ना, लत्व हेश विवादक हरेरव स्व, कांहारक काना यात्र व्यथह काना यात्र ना। "নাহং মল্পে স্থবেদেতি নো ন বেদেতি বেদ চ। **७ (वन नान (वरमकि (वन छ।" व्यर्थ:--"व्या**मि (य क्रेन्नेत्रक चमाकार जानिशाहि धमन नरह, छाहारक रा धक्रवारत जानि ना धमन अन्दर, जाहारक जानि अपह जानि ना, हेहात अर्थ विनि चामारमत्र मरश्य त्रिवारह्म, जिनिहे जाहारक कानितारहम।"

বিতীর প্রশ্ন, ঋষিগণ তাঁহাকে জ্ঞানিতে গিয়া কি দেখিলেন ? দেখিলেন, তিনি মহান্ পুরুষ । পুরুষ অর্থ কি ? তাঁহাকে পুরুষ বলিয়া জ্ঞানিয়াছ, ইহার তাৎপর্য্য কি ? এই জ্ঞগতে ক্রির ভিন্ন সমরের ভিন্ন ভিন্ন সম্প্রদায়কর্ত্ক ঈশ্বর সহদ্ধে যে সকল ভাব প্রচারিত হইয়াছে, এখনে তাহার কিঞিৎ জ্ঞালোচনার প্রায়োজন ৷ প্রথম ভাব, বৈজ্ঞানিক ঈশবের ভাব। এই ভাবে ব্যক্ত করে যে "এই জ্ঞগৎ এক শক্তি হইডে প্রেপ্ত। ভাহা এক জ্বিনাশী ও জ্মনত্ত শক্তি। এই ক্লপ, রস্গ্রহাণি বিশ্লেষণ ক্রিয়া বিজ্ঞান মৌলিক প্রার্থে উপনীত

হইবার পণ পাইয়া এক অব্যক্ত শক্তিমাত্র নির্ণয় করিছে পারিরাছে। ইহা গীভার সেই পুরাতন কথা-- অব্যক্তাদীনি ভূতানি ব্যক্ত মধ্যানি ভারত। অব্যক্ত নিধনাম্ভেব।'—আদিতে অব্যক্ত, মধ্যে ব্যক্ত, চরমে অব্যক্ত সেই অব্যক্ত, বা invisible বস্তু কি ? বিজ্ঞান তাহার নাম দিয়াছেন, Force। বিজ্ঞান বলে धारे कां पर Force वा मंख्नि इटें एक डिप्शन । विकास वर्णन, এই Force এক এবং অবিনখর। সবই এক অবিনাশী অনন্ত মহাশক্তি হইতে উৎপন্ন। যে শক্তি বীঞ্চরপে ফলের ভিতরে ৰৰ্ত্তমান, তাহাই আবার বৃক্ষরূপে ছাগের উদরে যায়; এক পদার্থ ভিন্ন ভিন্ন অবস্থায় ভিন্ন ভিন্ন আকাব ধারণ করে। একই জলীয়বাস্প কুষাটিকারূপে এবং অবস্থা বিশেষে অস্ত আকারে वर्त्तमान किन्न प्रवहे এक। विक्रान এখন यांश वर्णन, বহুশতাকীপুর্বে প্রাচীনঋষিরাও তাহাই বলিয়া গিয়াছেন। "ষিনি এক এবং বর্ণহীন হইয়া বছবিধ শক্তি যোগে विविध कामावञ्च উৎপन्न कत्रिट्ड्ला-" देवछानिक नेच-বের উপরে জ্ঞান প্রীতি ইচ্ছা প্রভৃতি কিছুই আরোপ করা যায় না; কেবল সভামাত। কিন্তু এই সন্তামাত্র হৃদয়েব व्यक्रुवार्शित वश्च इटेटि शास्त्र ना। टेशात्र উष्म्राम व्यार्थना আরাধনা, স্তুতি, পূজা প্রভৃতি কিছুই সম্ভব নয়। কল হইতে কাপড় প্রস্তুত হয়, কিন্তু কল তাহা কিছুই জানে না। যদি কলকে সম্বোধন করিয়া বলি "হে কল। তুমি দয়া করিয়া আমাদিগের জন্ত কাপড় প্রস্তুত করিতেছ, আমাদিগের কত উপকার করিতেছ।" তাহা হইলে যেরপ'হয়, এই জ্ঞানহীন শক্তিকে বা সন্তাকে পূজা করিলেও সেই থেকাব रुष्र ।

আবু এক ঈশবের ভাব জগতে প্রচার হইয়াছে, তাহা দার্শনিক ঈশর। দার্শনিক ঈশর কিরূপ তাহা বিগত শতানীতে हेडेरब्राप्त कात्र हरेब्राह् । च्यामारमञ्जलप्रभन्न (वोक्ररमन मर्सा जवः रेजनत्तत्र मरसाख अरुतात्रिक स्टेग्नारक्। जरे मरक वरन कार्याकात्रनमुख्याना कारा अहे कार नियमिछ। अहे कार्या-কারণশৃঙ্খলাবদ্ধ জগতের সঙ্গে স্ষ্টিকর্তার কোনই সম্বন্ধ নাই। এই শৃষ্ণলের এক পাশে আমবা অপরপার্শে তিনি রহিয়াছেন। সংসারের ছ:থ যন্ত্রণায় অন্থিব হইয়া, পাপের তীত্রযাতনায় इते कि कांत्रवा क्रमन कर, कि इ एउटे कि इ ट्रेंटर ना ; जिन শৃথ্যল ভগ্ন করিবেন না; নিয়ম রহিত থ্ইবে না। এই কার্য্য-কারণশৃঙ্খলার সহিত তোমার মনোগত ভাবের কোনই সম্পর্ক নাই। এই ভাবাপর ব্যক্তিদিগকে বিগত শতাকীর শেষে "Deist" বলিত। এই Deist. গণ বলিতেন, "প্রভু, প্রভু, विनया आर्थना कतिवात किहूरे आरमायन नारे। कार्याकात्र শুখলা বিশেষরূপে উপলব্ধি কর এবং তাহা কি চায়, জানিয়া ভাহা বাঁচাইয়া চল, ভোমার কিছুরই অভাব হইবে না। পুৰিবীতে অথে থাকিবে । এইরূপ বিশ্বাস থাকিলে ঈশরের প্রতি আরাধনা, ফুতজ্ঞতা, প্রেম, প্রীতি প্রভৃতি কোনও ভাবই উৎপন্ন হর না।

ভূতীয়ত: আর এক ভাব আছে, তাহা পৌরাণিক ঈখর। এই পৌরণিকমতে ঈখরে মানবীয় ভাবের আরোপ দেখা

যার। ঈশ্বর জগভের ভার মোচনের জন্ত, পাণীর উদ্ধারের জন্ত, রক্তমাংসময় দেহ ধারণ করিয়া কোনও কালে ভূতলে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন। তিনি মান্থবের স্থার পৃথিবীতে কতিপর বংসর স্থ ছ: ৭ ভোগ করিয়া কালক্রমে অন্তর্হিত হইয়াছেন। मानत्वत ममुनाम ভाव छाँहाटि विनामान हिन । हिःसा, त्वय ক্রোধ বৈরনির্যাতন প্রভৃতি নিরুষ্টভাবনিচয় তাঁহাতে দেখা याग्रं। এই পৌবাণিকভাবাপর ব্যক্তিদিগের আর একদল, এই মতে বিখাস কবেন অণচ অবতারবাদের বিরোধী। তাঁহারা বিশ্বাস করেন যে, জনস্ত আক্রাশের কোনও কোরে স্বৰ্গ নামে এক অমৃত্যয় ধাম আছে; তথায় অসীময়কান সম্পন্ন, হুর্জন্ম শক্তিশালী এবং ক্রোধপরায়ণ এক মহাপুরুষ বাস করেন, তিনিই ঈশ্বর। তিনি সেধান হইতে জগতের কার্য্য-क्नाभ भर्गारनाहना कविष्ठाह्न । पण व्या भूगमात्र विधान কবিতেছেন। এই উভয়ভাবই ধর্মজীবনের অনুকৃণ নছে। প্রথম যিনি অবতার তিনি বিশেষ সময়ে বিশেষ দেশে অবভীর্ণ হইয়াছিলেন; তাহার সঙ্গে আমার সম্পর্ক কি ? তিনি কেন অবতীৰ হইয়াছিলেন ? না—ভূভার হবণের নিমিত্ত। বেশ কথা; কিন্তু এখন কি ভূভার নাই, তাহা কি কমিয়া গিয়াছে 
এই উনবিংশ শতানীতে প্রত্যেক নরনাবীকে জিজ্ঞাসা কর "আজ কি ভগবানে তোমার প্রয়োজন নাই ? এখন কি অগতের ত্রুথ যন্ত্রণা কমিয়া গিয়াছে, পাপের সংখ্যা কি হ্রাস হইয়াছে ৫ "ঈশ্বর জগতেব হুঃথভার অপহরণ করিজে এক সময়ে অবভীৰ্ হইয়াছিলেন, ভাহাতে আমার কি ? আমার প্রাণ ভাহাতে সম্ভুষ্ট হয় না, তৃপ্তিলাভ করিতে পারে না। আমি যে এখন সংসারের পাপ তাপে ক্লিষ্ট এবং অর্জরিত হইতেছি, ডুবিয়া ঘাইতেছি, আমাকে এখন ভোলে কে 📍 ঈশর অমুক দেশে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন গুনিলেই কি হইল ? ১৮৭৬ সালেঁ প্রিক্ত অব ওয়েলস্ আমাদের ভারতবর্ষে আসিয়া-हिल्लन, देश छनिल कि ताकनमन इहेन ? जेचत्क (मक्रम ভাবে জানিয়া প্রাণ তপ্ত হয় না। ব্রাহ্মধর্ম্মের উপদেশ এই বে. তিনি জীবস্ত পুরুষ, জ্ঞান, প্রেম ও ইচ্ছাময় দেবতা, আমাদের সঙ্গে তাঁহার ঘনিষ্ঠ এবং নিকট যোগ রহিয়াছে। এই জগতের প্রত্যেক পদার্থে তিনি বিরাজিত, তিনিই প্রাণের প্রাণ এবং নিকট হইতে নিকটতম। অতীতকালে তিনি প্রকাশিত हरेग्राहित्नन, प्यवजीर्ग हरेग्राहित्नन हेरा ता शक्त शिष्ट. কিন্তু প্রতি মৃতর্তে তিনি আমাদের সকলের মধ্যে, বিধাতা রূপে, প্রাণের প্রাণ হইয়া বিবা**ল করিতেছেন না কি** ? প্রতি মুহুর্তে তিনি বিধাতা হইয়া এই দেহের প্রত্যেক শিরাতে বিদামান; এই প্রেছের অঞ্চি, মাংস এবং ধাতু পুঞ্জ তাঁহারই শক্তিতে পরিচাশিত হইতেছে। সর্বাদা আমাদিগের আত্মাকে রক্ষা করিতেছেন। ধর্ম্মের বিশেষত্ব এই থানে। তাঁহাকে সাক্ষাৎ ভাবে অবিনাশী সভারণে নিক্টে অফুভব করা, প্রাণের ভিতরে উপলব্ধি করা এবং তাঁহাকে প্রতীতি করাই ত ত্রাহ্মধর্ম। পূর্ব্ব ভাব ছাড়িরা, এই পরম পুরুষকে জীবনে একমাত্র সভ্যস্তরপ দেবভা জানিরা তাঁহার পূজা করা, সাধনা করাই ত আহাধর্ম। এই

ভাব আনন্ধা বেঁপরিবাণে অভ্তর করি, সেই পরিমাণে আমরা ভাঁহার নিকটক হই, এবং প্রালধর্ম দাধন করি। একজন পরী-গ্রামের লোক বলি ভানতে পার যে, আলিপুরের প্রাণী-বাটিকার দিংছ আদিরাছে, ভাহাতে যেমন ভাহার দিংছ দেখা হর না, সেইরূপ ভূমি কেবল মাত্র বলি ভানিরা রাথ এবং পুস্তকে পড়িরা রাথ বেং তিনিই বিধাতা, তিনিই আমাদিগের প্রমাণিতা পরমেশর, তবে কিছুই হইল না! তিনি কিরূপ বস্তু ভাহা ব্ঝিতে পারিলে না। যতক্ষণ জীবনে ভাঁহাকে এক শাত্র সভ্যামরণ বলিয়া না ধরিতে পারিবে, ততক্ষণ জানিও বে, বই পড়িরা এবং লোকমুথে ভানিরা কিছুই হইবে না। ইশার করুন, আমরা যেন সভ্য ধর্মকে জীবনে সাধন করিতে পারি।

# ব্রাহ্মধর্ম ও বর্ত্তমান থ্রীফীধর্ম। ' (প্রাপ্ত)

ব্রাহ্মধর্মকৈ আমবা অনেকসময় যুগ্নধর্ম বলিয়া বর্ণনা कति, (कनना এই धर्मा (मण कार्य निवक्ष नरह, हेहा मगरप्रत পূর্ণতার ভারতবর্ষে প্রকাশ হইয়াছে। ব্রাহ্মসমাজের যাহা মূলধর্ম তাহা বর্ত্তমান সময়ে কি বিজ্ঞান কি দর্শন প্রত্যেকের মধ্যেই দেখিতে পাওয়া যার। স্থুতরাং ব্রাহ্মধর্মকে মনুষ্যবচিত এবং অল্পকাল স্থায়ী বলিরা কি প্রকারে মনে করিতে পারি ? দর্শন বিজ্ঞান ছাডিয়া বর্ত্তমান সময়ের খ্রীষ্টধর্ম্মের আবস্থা পর্য্যালোচনা করিলে আরও স্থম্পট্ট প্রতীয়মান হইবে যে, छात्रिनिटक **बाक्षधर्मावरे कग्न**णायणा श्रेटिक छ। जामि है निष्ध কিছুকাল খ্রীষ্টসমাজে বাস করিয়। আসিয়াছি এবং এবিষয়ে আমান কিঞ্চিৎ অভিজ্ঞতাও আছে। বর্তুমান খ্রীষ্টধর্মের অবস্থা দেখিয়া মনে হয় যে, ঐ ধর্ম ক্রমশ:ই জগতের ক্রমবিকাশ নিয়নের অধীন হইয়া ত্রাহ্মধর্মের নিক টবর্তী হইতেছে। এ कथा आभारतत काहात्र निक्र नृजन नरह ; कि इ आगि ম্বচক্ষে যাহা দেখিয়াছি, তাহাতে আমার ত্রাহ্মধর্মের উপরে বিশ্বাস শতগুণ বৃদ্ধিত হইয়াছে। আমি সংক্ষেপে এবং সাধা-রণ ভাবে আমার অভিজ্ঞতার হই একটা কথা বলিব।

আমাদের দেশে যেমন বৃদ্ধা স্ত্রীলোক, অশিক্ষিত বা আর্থনিক্ষিত পুরুষদিগের মধ্যেই প্রাচ্নীন হিন্দুধর্মের প্রতি আহা দেখিতে পাওয়া যায়, ঠিক সেইরূপ গ্রীষ্টসমালে ও গ্রীষ্টানধর্মে বৃদ্ধা স্ত্রীলোক এবং আর্থনিক্ষিত বৃদ্ধপুরুষদিগেরই আহা দৃষ্ট হয়। এখনও ভাহারা গ্রীষ্ট প্রয়ং ঈশ্বরের অবভার অথবা ভাঁহার পুত্র এবং বাইবেল ঈশ্বরের নিজয়চিতগ্রন্থ ইহা বিশাস করে। উচ্চশিক্ষাপ্রাপ্ত লোকদিগের মধ্য হইতে বে এই সকল বিশাস একেবারেই ভিরোহিত হইয়াছে, ভাহা বলা বায় না। আমরা সকলেই জানি, মাডষ্টোন রাজনীতি বিষয়ে অভি উদার ভাবাপয়, কিন্তু ধর্ম্ম সম্বন্ধে ভিনি ঠিক ভাহার বিপরীত। কিছুকাল গত হইল, কোন কোন ধর্মমত লইয়া হক্সী সাহেবের সহিত ভাহার ভূমুল সংগ্রাম হইয়া গিয়াছে এবং ভৎপরেই মাডষ্টোন সাহেব একথানা পুত্তক প্রকাশ করিয়াছেন, ভাহার নাম "Inpregn rock o

the Holy Scriptures" वर्षार পৰিত্ৰ ধৰ্ম-শাল্তকপ ছৰ্ভেদ্য भाराष्। जाराष्ठ वारेदनहरू ष्याश श्रष्ट वनिवाह्न। এইরূপ স্থবিখ্যাত স্পার্জিয়ন সাহেব (ঘিনি কিছুকাল হইল পরলোকে গমন করিয়াছেন) সম্বন্ধেও এই প্রবাদ যে, উ'হার এীষ্টধর্ম সেই যোড়শ শতাকার এতিধর্ম। যাহা হউক শিকিত জনসাধারণের মধ্যে বিশেষতঃ শিক্ষিত যুবা পুরুষদের মধ্যে औहेश्राचित्र व्यवका व्यक्तत्र रहेग्रा मीकाहेग्राह् । दकान यूरी পুরুষকে যদি किछाना कরা যায় যে, "আপনি कি তিছবাদ মানেন 📍 অথবা খ্রীষ্টকে ঈশ্বরের অবভার বলিয়া কি বিশ্বাস करतन ?" जरव जिनि निकारहे वनिरवन, रय, अ नकन সেকেলে মত, এখন আর ওদব কেহ মানে না। ইউরোপের মধ্যে জর্মনি, ফ্রান্স প্রভৃতি দেশেব অবস্থা অবলোকন कतिरल रयन रवांध रुग्न रय, औष्टेधर्मा औ नकन रमभरक अरकवारत পরিত্যাগ করিরা চলিয়া গিয়াছে; কিন্তু চুংখের বিষয় এই, ঐ সকল দেশে গ্রীষ্টধর্ম্মের অভাবে ধর্মাচনণে একেবারে শৈখিলা ঘটিয়াছে। এতক লি রবিবার দিনটা গ্রীষ্টানদের বড়ই পবিজ দিন বলিয়া বিবেচিত হইত; সেইদিন গির্জ্জাতে যাওয়া ও বাইবেল পড়া ভিন্ন কোনও প্রকার সাংসাবিক কাজ বা चारमामं अरमाम এरकवारत निधिक हिल; किन्न अथन भातिन এবং বার্ণিন্ নগরে রবিবারে নৃত্যগীতের খুব প্রাত্র্ভাব দেখিতে পাওয়া যায়; মদ্যপানের ত কথাই নাই। সৌভাগ্যক্রমে ইংলণ্ডে ধর্মেব এতদূর হুববস্থা দৃষ্ট হয় না। সেধানে এথন ও রবিৰার দিনে এতটা আমোদ প্রমোদ প্রচলিত হয় নাই. এখনও লোকে বীতিমত রবিবার দিন গির্জ্জাতে দাইয়া থাকে। কিন্তু রবিবারের পবিত্রতা সম্বদ্ধে মতি গতি একেবারে পবিবর্ত্তিত হইয়াছে। রবিবার দিনটী যে ঈশ্বরের একটা विस्मिष निर्मिष्ठे मिन जाश जात्राक्टे विश्वाम कात्रन ना। অনেকেরই এই মত যে, সপ্তাহের মধ্যে একটা কোনও বিশেষ দিন বিশ্রাম ও ধম্মালোচনার জক্ত রাথা উচিত। রবিবার দিন্টী যথন এতকাল এইভাবে ব্যবস্তুত হইয়া আসিতেছে, তথন এখনও তাহাই হউক। আমরা সকলেই জানি স্কটল ও-বাসিগণ ধর্মের অভ্যন্ত গোড়া। সেথানে সকলেই ববিবাবে রীতিমত গির্জাতে যান। দেখানকার অবয়াও আজকাল অতি চমৎকার। রবিবার দিন এডিনবর্গ নগরের অনেক স্থানে ব্যাপ্ত প্রভৃতি বাজিয়া থাকে। অনেক সময় থবরের কাগজে এইরূপ আলোচনা হইতে দেখা গিয়াছে যে, রবিবার मिन्छै। ७ क याहेटव टकन १ टम मिटन अक है विश्वक आस्मान थारमारनत्र वत्नावछ रकन थाकिरव ना १ ५३ बन्न कनमार्डे ইত্যাদির ব্যবস্থা করা ছউক।

এডিনবর্গ নগরের অনেক শিক্ষিত যুবা পুরুষের সহিত এ সম্বন্ধে আমার কথা হইরাছে। যথনই আমি তাঁহাদের নিকটে ব্রাহ্মধর্মের ব্যাখ্যা করিয়াছি, তথনই তাঁহারা বলিয়া-ছেন যে "এই ত প্রকৃত এটিয়ধর্মা।" এটিয় ধর্মা আর ইহা হইতে শ্বতম্র কি ? শ্রীটায়ধর্মের বিশেষ বিশেষ মতগুলিয় কথা উল্লেখ করিলে ভাঁহারা বলিভেন যে, ঐ সকল মতের বিশেষ তাৎপর্যা ও দার্শনিক অর্থ আছে। ঐ সকল মতকে বড়

क विद्या न उदा ठिक् नद्या " (यत्रन आंक कान हिन्दू भून कथान কারীরা উচ্চেদের হিন্দুমতের নানারণ বৈজ্ঞানিক ব্যাখ্যা क्त्रियाहिन, हे:गएअ ठिक (जरेक्र प्रहेर्फरह)

विश्वविमानित्रत यूवकरमत्र मर्या धर्षमण्डत व्यवदां अवेक्रथ। অধিকাংশ ছাত্রই ধর্মাত সম্বন্ধে উদাসীন। আছে, তাঁহাদের এটিধর্ম এ বিষয়ে একটু অনুরাগ ও আমবা যাহাকে ব্রাহ্মধর্ম বলি ভাহার প্রভেদ খুবই मत्न इय्र। विश्वविष्णानस्त्रज्ञ অধিকাংশ অধ্যাপকও ধর্ম্মের উদারতা বিষয়ে ছাত্রদিগকে বিশেষ উপ-**८म्मानि धानात कत्रिया धारकन। आगि ८म्थिया अ**योक् इहेशाहिनाम ८४, এकपिन এডिनदर्श विश्वविদ्যानस्त्रत्र अकस्त्रन প্রফেদার তাঁহার ছাত্রদের সমক্ষে বাইবেল হইতে ভর্কশাল্লের So called word of God ( যাহাকে লোকে ঈশ্বনদত্ত গ্ৰন্থ বলে) বলিয়া অভিহিত করিলেন। ইহাতে ছাত্রদের মধ্যে মহা করতালি ধ্বনি পড়িয়া গেল; এডিনবর্গ বিশ্ববিদ্যালয়ের অন্তৰ্গত হুইটা "খীষ্টধৰ্ম রকিণী" সভা আছে।

উইলিয়ম মনিওর ( धिनि ঐ বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রিন্সিপাল ) ঐ সভাদ্বরের সভাপতি। আমাদের ছাত্র-সমাজের মত ঐ ছই সভায় ভাল ভাল বক্তাদিগকে ডাকিয়া ৰক্তা করান হর। ঐ সকল বক্তাদের মধ্যে ক্রোফেসার ভূম এই সর্বাপ্রধান। প্রেফেসার ভূষণ্ডের নাম বোধহর অনেকেই শুনিরাছেন। আমেরিকা এবং স্কটলতে তাঁহার বিশেষ প্রতি-পত্তি। বিশেষতঃ তিনি "Ascent of man" নামক গ্ৰন্থে স্থবি-পাাত হইয়াছেন। প্রোকেসার ভূমণ্ডের সহিত আমার কথা বার্দ্তা হইরাছিল। আমি ভাঁহাকে বিশেষরূপে জানি। তিনি গ্লাদগো বিশ্ববিদ্যালয়েব প্রোফেশাব । দেখানে ধর্ম ও বিজ্ঞা-় বিলেষ ভাব লক্ষিত হয়। তাঁহারা এতকাল কেবল এই-নের সামঞ্জ বিষয়ে উপদেশ এন। এডিনবর্গের খ্রীষ্টধর্ম্ম র্কিণী সভার সভ্যগণ তাঁহাকে অনেক সময়ে নিমন্ত্রণ করিয়া বক্তা করান। তিনি থেমন স্থলেধক, তেমনি স্বকা। যুৰক্দিগের মনে খ্রীষ্ট্রপক্ষের সতাসকল বন্ধমূল করাই তাঁহার বক্তার উদ্ভেশ। কিন্তু সেই সকল বক্তার যাহা খ্রীষ্ঠারভাব ও মত বলিয়া ব্যাখ্যা করা হইত, তাহা কোনও অংশেই আম-ধর্মের বিরোধী নহে। আমি প্রোফেসাব ভূমওকে যতদ্র জানি, তাহাতে আমার বিশাস যে, তাঁহার গ্রীষ্টধর্মে ও বর্তমান ব্ৰাহ্মধন্মে পুৰ কমই প্ৰভেদ। তিনি একদিন ৰক্তাতে न्याकियान माह्राद्य में में मार्गाहमा क्रिया विवासन (य, তিনি औद्देशकारिक উन्नजिनीनधर्क विनन्न चौकान ना कनिन्ना थे ধর্মের বড়ই ক্ষতি করিয়াছেন। তাঁহার শেষপুত্তকে ( অর্থাৎ Ascent of man এ) ভিনি বৰ্তমান বিবৰ্তনবাদের সহিত শারধর্মের কোথার সামঞ্জ তাহাই দেখাইতে প্ররাস পাইয়া-ছেন; কিন্তু বাঁহারা ঐ পুত্তকথানা পড়িয়াছেন, তাঁহারা त्मिश्राह्म, सामत्रा वाहात्क जाक्रवर्ष वनि, व श्राट्स विवर्छन-वारमत्र महिन ठिक् नाहाबहे मामक्षण क्या हहेबाहि। कि প্রকারে এই প্রকৃত ধর্মের উন্নতির সঙ্গে সঙ্গে মামুষের ধর্মভাব সকল বিক্শিত হয়, তাহা তিনি অভি কুন্দুরুরূপে দেখাইয়াছেন।

পুত্তকথানার উপদংহার কালে তিনি খ্রীইথর্লের বিশেষ মত-श्वनित्र कथा উল্লেখ করিয়াছেন; কিন্তু कि প্রাকারে বিবর্ত্তন-ৰাদের সহিত তাহার সামঞ্জ হয়, তাহা কিছুই বলেন নাই। প্রেফেরার ড মণ্ডের মতে প্রীষ্টধর্ম এবং প্রেমের ধর্ম একট কথা। ভাৰার লিখিত "The Greatest thing in the world" नाम्क कृष्ठ প्रक थए उहात्र विष्य ध्यमाण बहेन्नाइ; ভূমণ্ডের মতে প্রেমই জগতের সর্কোৎক্রই বস্তু। স্কটলভের ষুবকদের মধ্যে ড্মঞ্জ সাহেবের থুব প্রতিপত্তি এবং তাঁহাকে অনেক সময় ছাত্রদিগের আদর্শ উপদেষ্টা বলিরা বর্ণনা করা হয়। তাঁহার ধর্মভাব ও মত স্কল সেধানকার ছাত্রদের মনে বে বিশেষরূপপ্রবিষ্ট হইভেছে ভাহাতে আর সন্দেহ নাই।

Cकरन युरकरनत मरधाहे रच धर्ममरखत छेनात्रक। **अरब**न क्रिटिल्ड अभन नर्ह। ऋडेन ७ वर्ष वर्ष अठातकरम्त्र मर्धा अ ধর্মতের মথেষ্ট বিপ্লব দেখা যায়।

**औद्देनमास्क्रित এই क्रम उमात्र छा (मर्थिया मत्न इंटेर्ड भारत** যে ইউনিটোৰ্যানদিগেৰ বুঝি সেধানে খুব প্রতিপত্তি আছে; কিন্ত छारा नहि। औष्ट्रेनमाञ्च शैनाउक रहेला अथान रेडेनिए बि-রানদের প্রতি জনসাধারণ অতঃস্ক বীতবাগ। ইহার কারণ এই যে সকলেই মনে কবেন যে, ইলারা কেবল ভালেন, গড়িবার দিকে मृष्टि नाहे। একথার কভদ্ব সভাভা ডাকার মাটিনো चाइ कानि ना। जानक है जानन ইউনিটেরিয়ান দলের বর্ত্তমান নেতা। তিনি গত কয়েক বৎসরেয় मध्य उँ होत धर्मामक विभवताल वराया कतियाहन । जाहारक ইউনিটেৎিয়ান মতের যুক্তিযুক্তভা প্রমাণিত হইয়াছে। ইউনিটেবিশ্বনিগণ অনেক পরিমাণে ভাঙ্গিতে পটু, গড়িতে নহে। কিন্তু ইউনিটেরিয়ানদের মধ্যে আক্ষাল একটা ধর্ম্মের স্মালোচন। করিয়া আসিয়াছেন; কিন্তু বর্ত্তমান সমরে অন্তদেশে এবং অন্তধর্মে কি সভ্য আছে ভাষা জানিবার জন্ত এবং আপনাদের ধর্মে তাহা প্রবিষ্ট করিবার জন্ত তাঁহারা ৰিশেষ ব্যগ্ৰ।

এটিদমাক ও এটিধর্মের এরণ ক্রমোরতি দেখিয়া আমাদের ত্রাক্রধর্মের ক্যাশা বর্দ্ধিত হওয়া অভ্যস্ত আভাবিক। যাহারা ত্রাহ্মধর্মকে মৃত বলিদ্ধ উপেক্ষা করিতেছেন, তাঁহাদের একবার ইংলও প্রভৃতি দেশের প্রতি দৃষ্টি করা কর্ত্তবা। वाकारनत रनारव वाकामभारकत अरमक अवमिक स्ट्रेंटिक शारत, किन्दु धरे बाक्षधर्म (य क्रमम: भृषिवीत्त अवनाक कतिराष्ट्रह, ভাহা অধীকার করা অভাত্ত অন্ধের কাল।

আমার সামার ক্মতাত্রসারে আমি ইংলতে বাহা দেবিরাছি, তাহাতে ব্রাহ্মধর্মের উপর বিখাস এবং ইহার ভবিষ্যৎ সম্বন্ধে আশা আমার অনেক বাড়িয়া গিরাছে। হিন্দুধর্মের পুনক্ষথান मिथा गाहाता की उ हरेएउएकन, छाहाएमत व के का निकास है अपूर्णक, दकनना' हातिमित्कत्र कहे भूनक्रथामरक आमि ধর্মের পুনক্ষণান বলিরা মানিতে প্রস্তুত নই। ইহাজে হিন্দু ° পুরাতন্সাহিত্যের পুন জীবন विशिष्ट युक्तिवृक्त एता चामास्त्र पृष्टि यथन स्वतंत्र चरमर्गहे निপछिङ थार्क, छवनहै

আয়াদের ভীত হইবার সপ্তাবনা; কিন্তু সমগ্র পৃথিবীর বর্তমান অবস্থা পর্বালোচনা করিলে সে তর অনারাসেই চলিয়া বার।

किन्द अपन कथी और रय, नमरमंत्र व्यवशा सिवित्र निकिन र्डेटलई कि जामारनंत्र गर्थंडे कर्ता रहेर्द ? जानारनंत्र कि चात (क / न ७ कर्स्डवा नाहे १ लाकाशकारक कि क्षकारत धरे स्मर् জনমুক্ত করিতে হইবে, তৎসহদে কি কোমও কার্যাপ্রণালী সেব-লম্বন করিব না ? আজকাল ত্রাক্ষসমাজে হিন্দু ভাবের পুরই व्याष्ट्रकीय (मधा याहेरल्डाह) हेहा अक्षितिक श्व चर्थन्न विवन्न, কেন্দা ইহাতে খলেশের প্রতি অনুদাগ প্রবং জাতীয় জীবনেব প্রতি শ্রদাই পরিলক্ষিত হর, কিন্তু কেবল জাভীয় জীবন অথবা উহার আধিকাদারাই ব্রাক্ষধর্মের আদর্শ সিদ্ধ হইবে এবং খ্রীষ্টান্ন ভাবের কিঞ্চিৎ তিরোভাবে ব্রাহ্মধর্মের বিশেষ অনিষ্ট ২ইতেছে। আমবা ক্রমশ: পুরাতন হিন্দু কুদংস্কার এবং অলসভার জড়িত হট য়া পড়িতৈছি। ধর্মপ্রচারের ভাব, বল এবং বীর্যা ক্রমশঃ ভাস চইতেছে। প্রকৃত কণা বলিতে কি. ব্রাক্ষমমাকের মধ্যে হিন্দুভাবের প্রায়ভাবে অভি দুষ্ণীয় পুকুবাদ (বাছা ত্রাহ্মধর্মের দারুণ বিরোধী এবং অস্বাভাবিক) গোগবাদ (বাহাতে মানবের সমুদার মানসিক শক্তিকে একে-বারে সমলে বিনাশ করে) ব্রাহ্মসমাজে প্রবেশ করিতেছে। এই সকল বিষয় এই প্রবন্ধের বিবেচা বিষয় নহে। কিন্তু আমার বিশাস এই, যে ধীটীয়ধর্ম্মের প্রভাব ত্রাহ্মসমাজেব উপর পডিরা টহাকে বলবীর্যাশালী করিয়াছিল এবং ব্রাহ্মস্থাজেব পৌরব দিগদিগভারে বিভার করিয়াছিল, সেই খীটারভাব আনেক পরিমাণে অন্তর্ভিত হটয়া ব্রাহ্মধর্মকে চীনবীগ্য কবিয়া रमनिएउट्छ। ब्राक्तनभारखन हे जिहान यनि भर्गारनाहना कता बाब छत्व मिबिटल भारतमा गाहेत्व (व, हिन्तृस्रात्वत्र महिस খ্রীষ্টারভাবের সংমিশ্রণই আক্ষধর্মের উর্বভিষ একমাত্র কারণ মহাত্মা রামমোহন রায় খীষ্টীয়ভাবের সাহায্যেই ত্রাহ্মসমাজ भःगर्धन करत्रन, महर्वि एमरव<u>ल</u>नाथ (महे वल कथकिए धर्य করিরাছিলেন: কিন্তু কেল্বচন্ত্র সেনের ছারা সেই ভাব পুন: প্রবিষ্ট ২ইয়া আক্ষধর্মে কি যুগান্তর আনয়ন করিয়াছে তাহা কোনও ব্রান্ধের অবিদিত নাই। ইহা নিশ্চিত, যদি थोडेटक छाफिया मि, जार। स्टेटन गत्म स्त्र देवताशी स्टेमा ধোল করতাল বাজাইয়া পুনরায় হিন্দুসমাজের আশ্রয় লইব, मा इत चानकक कतिका धमनि रशाशी इहेव (व, जामारमत काता পুথিবীর আর কোনও উপকারের আশা থাকিবে না। কেশবচন্দ্র সেনও শেষ জীবনে যোগী হইরাছিলেম। কিন্তু তাঁহার "যোগ" নামক পুত্তক খানা প্ৰিজে হৈখিতে পাওয়া যায় বে, উহা কি অস্বর এবং শাভাবিক ভাবে পরিপূর্ণ। তিনি এক-দিকে আৰাদিসের পূজাপাদ মহবিগণ এবং অপ্রদিকে দীকৰ নিকট হইতে সেই যোগ শিক্ষা করিবাছিলেন। ८कमन्डल त्मनरे नर्काधावत्रं वीखरक बरादेवाकी न्विटाहा नेताथा। ॰ করিরা পিরাছেন। এ।ক্ষুসমাকে বদি যীওর সেই বোগ (মছারা किनि बच्छी উজीवनाम करनारक क्षेत्रत नर्गम कविदाहितन। वर्म शतिमार्ग मानिक न्या, छटन वक्ष्टे त्मीकारगांत्र विवत ।

চক্ষ্ হল্প করিবেই বোগী হওরা বার না। প্রীই পাপীর পাপ বিমেচিন করিয়া, এবং শোকার্তকে সান্ধনা বাকা বলিয়া মহাযোগ সাধন করিয়াছিলেন। পৃথিবীতে আর কোথাও এল্প দৃষ্টান্ত নাই। এই জন্মই প্রীষ্টের মহন্ব, এই লক্ষই আল তাঁহার অরপতাকা পৃথিবীতে উড়িতেছে।

খ্রীষ্টের নাম করিলে এবং খ্রীষ্টায় ভাবের কথা বলিলে আনেকেরই বৈদেশিকভাব বলিরা মনে হয়,এই কুলং ছার বশতঃই আমরা আনেক সময়ে খ্রাষ্টের আদেশ অমুকরণ করিতে বিশেব বত্বশীল হই না। আমরা মনে করি যে, আমাদের সদেশে কিউচ ধর্মা নাই, ভাহা পরিভাগে করিয়া কেন খ্রীষ্টের অমুসরণ করিতে বাইব ? কেশবচক্র সেন এই ত্রম দূর করিতে প্রাণপণ চেষ্টা করিয়াছিলেন এবং ভাহাতে প্রচুর পরিমাণে সিদ্ধনাবিধ ও ইয়াছিলেন । আমরা ভাহার নিকটেই খ্রীষ্টকে সমাদের ও শ্রমা করিতে শিথিয়াছি। আমি এই সকল কথা দারা হিল্লভাব অথবা হিল্পধর্মের উচ্চভা কিছুমাত্র অস্বীফার করিক্তিছি না, কিছ আমার এই বিশাস যে, ব্রাহ্মসমাজে কেবল হিল্পধর্মের প্রাধান্ত দারা ব্রাহ্মধর্মের আদর্শ কথনই সংবক্ষিত হইবেন। আশা করি,ব্রাহ্মসাধারণ এই সভা দ্বায়া উপলব্ধি করিবেন এবং ভদ্মুসারে ব্রাহ্মধর্মের কল্যাণ সাধনে প্রবৃত্ত হইবেন।

ত্রীপূর্ণানন্দ চট্টোপাধ্যায়।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্ব্বাহক সভার তৃতীয় ত্রৈমাসিক কার্য্যবিবরণ।

7228

ঈথরের কুপায় নিম্নলিখিত ভাবে এই তিন মাসে কার্য্য-নির্ব্বাহ্ক সভা সমাজের নানা বিভাগের কার্য্যসম্পন্ন করিয়াছেন। কার্যানির্ব্বাহক সভার ১২টা অধিবেশন হইয়াছিল।

বাবু সদোৱজন গুছ মহাশর গুরুৰাদ স্থাকে তথ্কৌমুদী
পত্রে যে সকল পত্র লিথিয়াছেন, বিসত অধ্যক্ষসভার দিতীর
তৈরমাসিক অধিবেশনে সেই বিবরে কার্যানির্বাহক সভার মনযোগ
আকর্ষণ করা হইলাছিল। কার্যানির্বাহক সভা সেই বিষয়ে
অফুস্দ্ধানে প্রস্তু আছেন। আজিও তাহাল্পেষ হর নাই।

সহকারী সম্পাদক বাবু অংঘারনাথ মুখোপাধ্যায় মহাশয় তিন মালের জক্ত ছুটী লইয়া উত্তর পশ্চিম অঞ্জলে গমন করিয়াছেন।

নিয়লিথিত স্থানসমূহে উৎসব সম্পন্ন হইয়। গিয়াছে—টালাইল, ভবানীপুর, থলিলপুর, ঢাকা, লিবপুর, ধুবড়ীছাত্রসমান্ধ, কোয়েটা ও চাইবাসা। এই সকল স্থানে ও নিয়লিখিত স্থান-সমূহে আমাদের প্রচারক মহাশন্বগণ ও অন্যান্ত বন্ধুরা প্রচারার্থে গ্রমন করিয়াছিলেনঃ—

রামপুরহাট, নলস্থাটা, মশীপুর, ম্র্লিনাবাদ, আজিমগড়, ধুলিয়াম, কাঞ্সতলা, প্র্লিয়া, বার্হই, দিনাজপুর, ধ্রসাম, দার্জিলিং, রংপুর, পুরুলিয়া, বড়বাদী, দেরাহ্ন, ঢাকা, বেদিনীপুর।

থাসিরাপর্বত, লক্ষ্ণে ও আরাসহতে স্থায়ী প্রচারক্ষেত্র বিশিষ্টি আছে ৷ প্রচার—গুচার কমিটর অন্থরোধ অনুসারে বাবু নীলমণি ক্রবর্তী মহাশরকে কার্য।নির্বাহক সভা প্রচারক নিয়োগ সম্বনীয় নিয়মাবলীর ১৪ন নিয়মান্ত্রারে প্রবেশার্থী প্রচারক নিয়্রত্ব করিয়াছেন। এইরূপ নির্নারণের কারণ এই যে নীল মণি বাবু কয়েক বৎসর থাসিয়া পর্বতে থাকিয়া ব্রাহ্ম ধর্ম প্রচার করিতেছেন। বাবু কালীপ্রসর বস্তু মহাশয় (Missionary on probation) সম্প্রতি কলিকাতায় থাকিয়া কার্য্য করিবেন এইরূপ শ্বির হইয়াছে।

পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী—নির্জ্জনবাস ও জল ধার্
পরিবর্ত্তনের জর্গ তিন মাসের ছুটি গ্রহণ করিয়া বোলপ্রের
শান্তিনিকেতনে অবস্থিতি করেন। এ সময়েও তিনি তত্ত্বকৌমুদীর সম্পাদকীয় কার্য্য করিয়াছেন। তৎপর কলিকাতার
আগমন করিয়া সাধনাশ্রমে ও কথন কথন অস্তান্ত স্থানে উপসনাদি করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত নবদ্বীপচন্দ্র দাস—প্রথম মাসে কলিকাতায়
থাকিয়া নিয়মিতরূপে মন্দিরে আচার্যোর কার্য্য করিয়াছিলেন এবং
কথন কথন প্রাতেও উপাসনাদি কবিয়াছেন। সাধনাপ্রমের
বিশেষ ভার প্রাপ্ত ইইয়া ইইয়ে কাজ সব দেখিয়াছেন। বালক
বোর্ডিংএ মধ্যে মধ্যে উপাসনাদি করিয়াছেন এবং মধ্যে মধ্যে
পরিদেশকের কাজ করিয়াছেন। ছাত্রসমাজে একদিন "বিদ্যাসাগরের মহত্ব" এই বিষয়ে বক্তৃতা করিয়াছেন। ছাত্রাবাসে
উপাসনা ও আলোচনাদি করিয়াছেন। ইহা বাতীত ব্রাক্ষপরিবারে
পাবিবারিক অফুষ্ঠান উপলক্ষে এবং সাধারণ ভাবে মধ্যে মধ্যে
উপাসনাদি করিয়াছেন। ব্রাক্ষপরিবারাদি পরিদর্শন করিয়াছেন,
ভবানীপুরে ব্রাক্ষপরিবারে উপাসনাদি করিয়াছেন। প্রায়
প্রতিদিনই এইরূপে উপাসনা আলোচনা পাঠাদি দ্বারা ব্রাক্ষধর্ম প্রচারেব সহায়তা ও ব্রাহ্মপরিবার সংগঠনের জন্ত চেষ্টা করিয়াছেন। তিনটা উপদেশ মুদ্রিত করিয়াছেন এবং তাহার
কিছু কিছু বিতরণও করিয়াছেন।

कुनाई मारमत्र इहे अकिन शिकिएड अकिन शाहिरातिक ष्ट्रकान উপলক্ষে দেরাছন নগবে গমন করেন। দেরাছনে সপ্তাহাধিককাল থাকেন। এই সময় তথায় তিন্টী পারিবারিক অফুটান উপলক্ষে উপাদনা করেন, ইহা ব্যতীত সামাজিক ও পারিবারিক উপাসনা উপদেশ পাঠ-ব্যাখ্যা ও আলোচনাদি দ্বারা ব্রাহ্মধর্ম প্রচারের সহায়তা করিয়াছিলেন। দেরাছন হইতে প্রত্যাগমনের সময় আগ্রা, লক্ষ্ণো, ফরজাবাদ, আরা, ভাগলপুর, নলহাটী এবং বোলপুরে কিছু কিছু কাজ করেন। ইহার মধ্যে আরা সাধনাশ্রমের কার্য্যাদির বিষয় আলোচনা कारतम धवः धकते व्यक्ष्मांम উপनाक विश्व छेशमना कारतम. गक्तिएक किছ विस्मय ऋत्भ काग रुग्न। इमिन विस्मय স্মালোচনা হয়। লক্ষোতে "দেবাস্থর সংগ্রাম" বিষয়ে একটা বক্তুতা করেন ইহা ব্যতীত ভগবদাশ্রমে এবং ভিন্ন ভিন্ন পরিবারে উপাসনা উপদেশ পাঠ ব্যাথ্যাদি ছারা ত্রাহ্মধর্ম প্রচারের সহায়তা করিরাছেন। অক্তাক্ত স্থানে কোথাও উপাসনা কোথাও বা কেবল ধর্মালোচনাদি করিরাছেন। এইরূপ প্ৰায় একমান কাল ৰাহিয়ে যাপন করিয়া কলিকাতা প্ৰত্যা- বর্জন করেন। বিশেষরূপে কলিকাডার কোন কোন কার্য্যের ভার খাকাতেই এরপভাবে শীত্র শীত্র কিরিতে হইরাছে।

কলিকাতায় প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া ব্রাক্ষ-সন্মিলনীর
ভাদ্রোৎসবের কার্য্যের কিছু কিছু সহারতা করেন। এই এক
নাস কালের মধ্যে মন্দিরে তিন দিবস সন্ধাকালেও কোন
ক্যেন দিন প্রাতঃকালে আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন। মধ্যে
এক রবিবার ঢাকাতে বিশেষ একটা অমুষ্ঠান উপলক্ষে বান,
সেথানে ছই দিন থাকিয়া অমুষ্ঠান উপলক্ষেও সাধারণভাবে
উপাসনা, উপদেশও পাঠাদি দারা ব্রাক্ষধর্ম প্রচারের সহায়ত্র্য করেন। কলিকাতাতে বালক বোর্ডিং এবং ছাত্রাবাসে মধ্যে
মধ্যে উপাসনাদি করিয়াছেন। একদিন বালিকা বোর্ডিংএ
একটা অমুষ্ঠান উপলক্ষে উপাসনা করেন,ইহাব্যতীত সাধনাশ্রমে
এবং ব্রাহ্মপরিবারে প্রায় প্রতিদিনই উপাসনাদি করিয়াছেন।
মধ্যে মধ্যে তত্তকৌমুদীতে কিছু কিছু লিবিয়াছেন।

শীযুক্ত শশিস্থান বস্তু—চাইবাসা—উৎসব উপলক্ষে গমন করেন, করেকদিন আচার্য্যের কার্য্য করেন। ইহা ব্যতীত কোন কোন পরিবারে উপাসনা করেন ও উপদেশ দান করেন। বন্ধুদিগের সহিত একত্রে উপাসনা ও আলোচনাদি করেন এবং "ধর্মের শক্তি" সহকে একটি বক্তৃতা করেন।

সঞ্জয়—এখানে একটী পরিবারে উপাসনা করেন ও উপদেশ প্রদান করেন।

পুরুলিয়া—এখানে কোন ব্রাহ্মসমাজ ছিল না, সেজস্ত একটে ব্রাহ্মসমাজ সংস্থাপন সম্বন্ধে বিশেষ সহায়তা করেন। কোন কোন পরিবারে উপাসনা করেন ও উপদেশ দান করেন এবং "জীবনের মহব" সম্বন্ধে টাউন হলে একটি বক্তৃতা করেন। কলিকাতা—মন্দিরে রবিবার সায়ংকালে একদিন স্বাচার্য্যের কার্য্য করেন। কোন কোন পরিবারে উপাসনাদি করেন এবং Aids to Spiritual Life নামক একখানি পুস্তক সঙ্কলনে প্রস্তৃত্ত ছিলেন।

শ্রীযুক্ত লছমনপ্রসাদ—মধ্যে একবার বড়বাছী জেলার প্রচারার্থ গমন করেন। তদ্তির অধিকাংশ সমর লক্ষ্ণী-সহরে থাকিরা কার্য্য করেন। এই তিন মাসই নির্মাতভাবে লক্ষ্ণোসমাজে উপাদনা করিরাছেন এবং প্রায় প্রত্যহ যুবক-দিগের দহিত ধর্ম্মালাপ করিরাছেন। প্রত্যহ প্রাতে হোমিও-প্যাথি ঔষধ বিভরণ করিরাছেন। সম্প্রতি যথন লক্ষ্ণোসহরে ওলাউঠা রোগেব অত্যন্ত প্রাত্তিবি হইরাছিল—তথন ঔষধ বিভরণ ও রোগীদের গুলাবা করিরাছেন। গোমতী নদীতে বস্তা হইলে অনেক লোক আশ্ররহীন হইরাছিল, তিনি তাহা-দের নানাপ্রকারে সাহার্যা করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত কালীপ্রসন্ধ বহু—তিনি নিম্নলিখিত স্থানে ভ্রমণ করির। উপাসনা, উপদেশ, আলোচনা, প্রার্থনা ও বক্তা করিয়াছেন—খান্ধানাপুর, তিরি, টালাইল, করটীরা। আগষ্ট মাসের প্রথমে কলিকাতার আসিরা, সাধনাশ্রমে ও কোন কোন পরিবারে উপাসনাদি করেন।

শ্রীযুক্ত নীলমণি চক্রবর্ত্তী—চেরাপুরী প্রচার আপ্রমের প্রাত্যহিক মিলিত উপাসনার পাঠ ও উপাসনা করেন। নংক্রিস

सोरतरे बदः सोनगारे धरे जिन बाचनगारकत्र नाशाहिक উপাসনার উপাসনা ও উপদেশ প্রদান করেন। শনিবার ৰাখালা উপাদনা দমাজে পাঠ ও উপাদনা করেন। প্রত্যহ दांगीनिगरक **खेर्य धानान करत्रन। এक था**निहा क्रमीरक मीकिछ करतन। মৌসমাই ত্রাহ্মসমাজে মৌপুন কাটিয়াং নামক গ্রামে প্রকাশ্ত স্থানে বক্তৃতা স্বারা ত্রাহ্মধর্ম প্রচার করেন। শেষোক্ত স্থানে প্রায় প্রত্যেক সপ্তাহে এরূপ প্রচার হইরা থাকে। ছইবার শেলা এবং লাইকানসেউএ ध्वर धक्रवात्र मिनद्ध गमन करत्रन। श्रवरमाक इहे चारन উপদেশ প্রদান করেন। শিলকে মৌথার ব্রাহ্মসমাজ, লাবান উপাসনা সমাজ এবং শিলং ব্ৰাহ্মদমাজে তিন সপ্তাহ উপাসনাদি करतन। नाराम नेमारकत छेरनार चाहारर्गत कार्या करतन। मिनः यहिनामयास्य जिनं मश्राह जेभामना करत्रन ও जेभरमम थानान करतन এवः अक्ट ब्यालाहनानि करतन। शांत्रवातिक তিনটী অমুগ্রানে আচার্য্যের কার্য্য করেন।

শ্রীযুক্ত নগেল্রনাথ চট্টোপাধ্যায়—কলিকাতা—
সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ-মন্দিরে ছাত্রসমাজে জড় ও আত্মা এবং
সংশন্ন ও বিশ্বাস বিষয়ে ছইটী প্রকাশ্য বক্তৃতা। সাধনকূটীরে
তক্ষবিদ্যা সভার অধিবেশনে সভাপতিরূপে ৩টী কুদ্র বক্তৃতা,
অক্ত ছই দিন আলোচনা সভান্ন ছইটী বিষয়ে কুদ্র বক্তৃতা,
কোন ভদ্রলোকের বাটীতে শ্রাদ্ধ উপলক্ষে আচার্য্যের কার্য্য,
ব্রাহ্ম-সন্মিলনীর উৎসব উপলক্ষে উপাসনা ও উপদেশ, কোন
ভদ্রলোকের বাটীতে সদীত ও কীর্ত্তন;

हाका—हाजमभाष्ट्रत उरमव उरमवाक भूर्स-ताकाम। उक्षभिक्तद "एम् ७ आञ्चा" এवः "भतकाम" विषय २ हो वक्क् छ।,
এकिम अभवाष्ट्र धर्मालाहना। भूर्स-वाकामा उक्ष-भिन्दत हाजमभाष्ट्रत उरमव उर्भमाक्त (विषेत्र कार्या, उर्भातमात्र विषय
"विचारमत मक्ता।" भूर्स-वाकामा उक्ष-भिन्दत कार्यीय उक्रमनत
भिज भहाभायत चत्रनार्थ "हिति जित्र उपत धर्मात व्यञ्चाव" विषय
व्यवक्त भांठ उर्भमाक्त भञाभित्र कार्या ७ वक्क् छ।। भूर्स-वाकामा
उक्ष-भिन्दत उर्भामना ७ उर्भातमा १ भूर्स-वाकामा उक्ष-भिन्दत उर्भामना ७ उर्भातमा १ भूर्स-वाकामा उक्ष-भिन्दत उर्भामना ७ उर्भातमा १ भूर्स-वाकामा उक्ष-भिन्दत उर्भामना अधिविध्या पर्यालाहना, विषय "आक्रथमां छित्र
अक्ष धर्मा मृक्ति हत्र कि ना १", এकिष्ठ आमामाक्ष उर्भमाक्ष्या

মেদিনীপুর—এক-মন্দিরে একটি আক্ষ বিবাহে আচায্যের কার্যা বেলী হলে মহাত্মা রাজা রামমোহন রায়ের মৃত্যুদিন উপ-লক্ষে অকাশ্য বক্তা, বক্তার বিষয় "মহাত্মা রাজা রামমোহন রারের মহন্ব;"

এতত্তির সাময়িক পত্তিকার ধর্মবিষয়ক প্রবন্ধ লেখা, ধর্ম-বিষয়ক পুত্তক রচনা; এবং কলিকাতা ও মফদ্বলে আদ্ধ ও অপরাপর লোকের মধ্যে কথোপকথন ও আলোচনা ছারা সত্য প্রচার করেন।

সাধনাশ্রম--- পণ্ডিত শিবনাথ শালী মহাশর ও মাসের অবকাশ প্রহণ করিলে বাবু নবনীপচক্র দাস মহাশর তাঁহার শানে সাধনাশ্রমের ভবাবধারক নিযুক্ত হইরাছিলেন। শ্রীৰুক্ত জন্নশন্ধর রান্ধ-নাধনাশ্রমের সম্পাদকীর কার্য্যাদি নির্মাহ করিয়াছেন এবং ব্রাহ্মবালিকা ছাত্রীনিবাসে মাসাধিক-কাল নির্মিতরূপে উপাসনা করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত আদিনাথ চট্টোপাধ্যার—সাধনাশ্রমের দৈনিক উপাসনার কথন কথন আচার্য্যের কার্য্য করিরাছেন। তত্ত্ব-কৌমুদী সম্পাদনের সহায়তা করিয়াছেন এবং কোন কোন অমুষ্ঠানে উপাসনা করিয়াছেন। এতত্ত্বি নিয়মিতরূপে সাধারণ ব্রাহ্মনমাজ কার্য্যালয়ে কার্য্য করিয়াছেন। আক্ষ বালিক। ছাত্রীনিবাসে প্রাতে উপাসনা করিয়াছেন। কথন কথন মন্দিরে রবিবার প্রাতে উপাসনা করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়—উত্তর বাঙ্গালার প্রচারার্থে গমন করিয়া সৈদপুর ও রংপুরে উপাসনা উপদেশ প্রদান ও আলোচনাদি করেন। নিম্তা ব্রাহ্মসমাজে কথন কথন আচার্টোর কার্য্য করেন। কয়েকটি ব্রাহ্মপরিবার পরিদর্শন করেন। কয়েকদিবস সাধনাশ্রমে প্রাতে ও সন্ধ্যায় উপাসনার কয়্যা করেন। শ্রাদ্ধ উপলক্ষে হুইটি পরিবারে কয়েকদিবস আচার্টোর কার্য্য করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত কাশীচক্র ঘোষাল—একটা পারিবারিক অনুষ্ঠান উপলক্ষে শ্রীথণ্ডে গমন করিয়া উপাসনাদি করেন। কাটোয়াতে ধর্মবাাধ্যা করেন। কথন কথন সাধনাশ্রমে উপাসনা করিয়াছেন এবং নিয়মিতক্রপে তত্ত্বকৌমুদী সম্পাদনের সহায়তা করিয়াছেন। তত্ত্বিদ্যাসভাতে "ব্রাহ্মধর্মের ভিত্তি" এবং ব্রাহ্মদম্মিলনীর উৎসব উপলক্ষে মন্দিরে "ভক্তি ও ভক্ত" সম্বন্ধে প্রবন্ধ পাঠ করেন। সম্প্রতি ধর্মসম্বন্ধীয় একথানি পৃত্তক মুদ্রিত করিতেছেন।

#### সাধনাশ্রমের আর ব্যয়ের হিসাব।

জমা		থরচ	
মাশ্রমবাসীদিগে	विक्र हरेट	পাথেয় ও আশ্রন	ষর নানা-
প্রাপ্তি	•।८७	বিধ ক্ষুদ্র ব্যয়	><\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\
मानश्राधि	>90/>0	আশ্রমবাসী পরি	চার <b>ক</b>
পাথেয় হি:	921426	এবং অক্তান্তের প	মাহা-
<b>পুস্তকফণ্ড হই</b> তে	প্রাপ্ত ৩লার	রাদির ব্যন্ন	3P210
ভিকা	20110/20	<b>শ্বিত</b>	•10
	٥٠٠/১৫		₹ <b>%₽</b> ₩ <b>⟩</b> >•
পূৰ্কণ্ডিড	レ。1	হৈত	<b>C</b> IC
	0001478		90910/3C

ছাত্রসমাজ—বিগত ১৪ই ও ১৫ই জুলাই উপাসনামন্দিরে নিম্নলিধিত প্রণালী অনুসারে ছাত্রসমাজের সাহৎসরিক উৎসব হয়; তদনস্তর নববর্ষের কার্যারস্ত হয়।

( 事 有 叫: )

## ব্ৰাহ্মসমাজ।

প্রচার যাত্রা—সাধনাশ্রম হইতে পরিচারক বাবু কাশীচক্ত বোষাল ও সহায় বাবু অমৃতলাল শুপ্ত, ক্ষঞ্জনগর, কুটিয়া প্রভৃতি স্থানহইয়া ময়মনসিংহ যাইবেন। এবং সংক্রাধীন পরিচারক বাবু হনিমোহন ঘোষাল ও সহায় বাবু কুঞ্জলাল বেঃব খুলনা, যশোহর, বাগেরহাট প্রভৃতি স্থানে যাইবেন। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজেব চাঁদা, তত্তকোকুদী ও মেসেঞ্জারের মূল্যও ইহারা আদার করিবেন। আশা করি আমাদের বন্ধুগণ দেয় অর্থ প্রদান করিয়া এবং প্রচার কার্য্যের প্রতিসহায়ভৃতি প্রদর্শন করিয়া বাধিত করিবেন।

নামকরণ—স্নামগঞ্জে শ্রীযুক্ত বাবু ক্লফদরাল রায়ের ষষ্ঠকভাব নামকরণ হই রাছে। কভার নাম স্থাসিনী রাথা হইরাছে। এই উপলক্ষে ক্লফদরাল বাবু সাঃ ব্রাঃ সমাজে ১১ ও সাধনাশ্রমে ১১ টাকা দান করিরাছেন।

কালীগচ্ছ গ্রামবাসী জীবুক্ত রজনীনাথ নন্দীর পুত্রের এবং জীবুক্ত প্রাবীনাথ নন্দীর দিতীয় কভারা নামকরণ উক্তস্থানে সম্পন্ন হটয়াছে। পুত্রের নাম অজিতনাথ ও কভার নাম নির্ম্মলাবালা বাথা হইয়াছে। ছই স্থলেই জীবুক্ত নবদীপচক্র দাস আচার্যোর কার্য্য কবিয়াছেন।

জ্ব তক্র্ম — শ্রীযুক্ত প্রবোধচন্দ্র মহলানবিসের কন্তার জন্ম উপলক্ষে কলিকাতা ২১০নং কর্ণওয়ালিস্ট্রীটস্থ তথনে বিশেষ উপাসনা হয়। শ্রীযুক্ত আদিনাথ চট্টোপাধ্যায় উপাসনা করেন। এই উপলক্ষে কন্তার মাতা সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে ১১ টাকা দান করিয়াছেন।

২৩শে কার্ত্তিক রহস্পতিবার মধ্যাক্তে পাবনা নিবাসী শ্রীযুক্ত কৈলাসচন্দ্র বাগছির চতুর্থ পুল্রের (নবম সন্তান) জাতকর্ম উপলক্ষে তাঁহার বাটীতে উপাসনা হয়। উপাসনার কার্য্য শশী বাবু সম্পন্ন করেন।

উৎস্ব-পাৰনা হটতে এীযুক্ত কৈলাসচক্ৰ বাগ্ছি লিথিয়াছেন,—"গত ২-শে ও ২৩শে কান্তিক বুধ ও বৃহস্পতিবাব পাবনা ত্রাহ্মসমাজের অষ্টতিংশ সাম্বৎসরিক উৎস্ব সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। এভত্পলক্ষে কলিকাতা হইতে প্রচারক খাবু শশিভূষণ বহু ও বাবু কৈলাসচক্র সেন মহাশয়দ্য এখানে আসিয়াছিলেন। বুধবার প্রাতে ও সায়ংকালে উপাসনা হয়। উপদেশের বিষয় প্রাতে "শিশুর ন্যায় সরল পবিত্র ও বিশাসী ৰা হইলে স্বৰ্গগ্ৰাজ্যে প্ৰবেশ ক্বা যায় না,'' সায়ংকালে "সংসারে থাকিয়া ধর্মসাধন"। বৃহস্পতিবার প্রাতেও উপাসনা হয়। উপদেশের বিষয় "ধর্ম্মের আলোকে সংসারের বস্ত দর্শন,'' সারংকালে "মুক্তির উপায়" সম্বন্ধে বক্তা হয়। বক্তা প্রথমে জগতের ভিন্ন ভিন্ন ধর্মসম্প্রদায়ের মুক্তি সম্বন্ধে মত বিরত করিয়া নিম্লিথিত কয়েকটা বিষয় মুক্তি দাধনের উপায় विनया निर्फाण कतियारहन। (১) छानमाधन, (२) मछामाधन, (৩) উদারতা ( অর্থাৎ অভান্ত শুরু ও অভান্ত শাস্ত্রের বন্ধন ছিয়া করা) (৪) বিখাস। উপাসনা ও ৰক্তাদি শশিবাবু করেন। কৈলাদ বাবু তাঁহার হুললিল সংগীতবার। সকলকে প্রীত করেন।

রাজা রামমোহন রায়ের স্মরণার্থ সভা—বাঁকিপুর হইতে হনৈক বন্ধ লিধিয়াছেন,—গত ২৭শে সেপ্টেম্বর তারিধে পত্রস্থ বৈহার ভাসনেল কলেজ হলে মহাত্মা, রাজা রামমোহন রারের শ্বরণার্থ এক সভা হর। প্রাক্ষাক্ষার প্রীযুক্ত প্রভাপচল্ল মকুমদার মহাশর সভাপতির আসন গ্রহণ করিয়াছিলেন। বাবুদেবেল্রনাথ সেন এম্ এ, রাজার সমসামারিক সামাজিক ও নৈতিক অবস্থা এবং তৎপূর্বের এ দেশের ধর্মের স্থল স্থল আভাস প্রদান করিয়া একটা সারগর্ভ স্থানীর প্রবন্ধ পাঠ করেন। দেবেল্র বাবুর প্রবন্ধ পাঠ শেষ হইলে সভাপতি মহাশরের সম্মতি মতে স্থানীর খ্রীষ্ট ধর্ম প্রচারক রেভারেও মিঃক লিয়ার তাহার স্বচক্ষে দৃষ্ট ব্রিষ্টল নগরে রাজার সমাধিত্ত সম্বন্ধি করের। ভ্রানীর ভাষার সভাসে ভ্রানীর বিহারী ভদ্রলোক অনেক উপস্থিত ছিলেন।

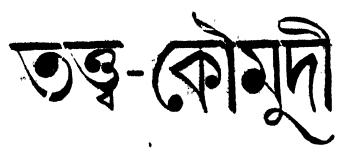
কৃতজ্ঞতার সহিত করিদপুরের ছর্ভিক্ষ নিবারণার্থ নিম্নলিখিত দানপ্রাপ্তি স্বীকার করা বাইতেছে।

পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর 🕒

मुक्कीवनी कार्याामप्र इटेटि शासि माः खक्ठत्र ममफात भाग, যশোহর জেলার অন্তর্গত আউডিয়া গ্রাম বাসী কোন ভদ্রলোক ১।৫/১৭॥ ডাঃ যোগেন্দ্রনাথ বিশাদ লাছোরং১, বাবু কালীশঙ্কর সুকুল সিটি ৹লেজের শোভাবাজাব আঞ্চইতে সংগ্রহ করিরা পাঠান ১০॥০, একটী বালিকা কলিকাতা ১১, রাধাগোবিন্দ সাহা কলিকাতা ২১, ভামলাল ভড় কলিকাত। ॥०, একজন ভদ্রলোক কলিকাভা।•, জেনেরল এসেম্বু ক লগ ইইভে वावू तिरक्षमत पछ ७ स्रायाधिक त्रांग भाष्टांन २०/०, वावू त्यारशक्तनाथ मत्रकात कनिकाला दर्, वाव् त्केमात्रनाथ मत्रकात বোশালিয়া ১১, বাবু জীক্ষণ চট্টোপাধ্যায় ঐ ১১, বাবু বিহারীলাল রায় ঐ ১১, শ্রীমতা উবাবতা ঘোষ দেওখর, একটা সোণার আংটী, খ্রীমতা বিনয়কুমারী চক্রবভী ফরিদপুর হইতে সংগ্রহের অবশিষ্ট 👀 শ্রীমতী স্বর্ণপ্রভা বস্তু 🔊, বাবু ঘারকা-নাপ দাস (জামালপুর ময়মনাসংহ) হইতে সংগ্রহ স্থারিয়া পাঠান ২২।১০, শ্রীমতা বিধুমুখী দাসী কলিকাতা ১১, বাবু গোপেশ্বর দন্ত ঐ ১॥০, বাবু হুরেশচন্দ্র মুখোপাধ্যায় ঐ ॥•, বাবু সাতকজি আইচ ঐ।•, নিউ ইণ্ডিয়ান ক্লের ছাত্রগণ বাবু নরেন্দ্র-নাথ চট্টোপাধ্যায় কর্ত্তক সংগৃহীত ১১১, ৰাবু প্রসরকুমার চৌধুরী কৃলিকাভা ॥•, বাবু মুকুললাল বর্মণ দৈদাবাদ ২৫, একটা বন্ধু(মাং শরচ্চন্দ্র রায়) কলিকাভা ১০১, সম্পাদক পুরর রিলিফফও যশেহর ১০১, বাবু মধুস্দন রাও কটক ৪५%, वातू देवकूर्भटक खाहार्या, नर्याम खून हाका ५७, বাবু অধরচন্দ্র মজুমদার ১০, শীমতী মোক্ষদা মিত্র ক লৈকাতা ১১, একজন সেবক (মাং কৈশিকীচরণ ঋপ্ত) মাদার্ঘটি আসাম) ৩১, বাবু আর, এম, বি, গৌহাটী ১১, বাবু শৈলেক্সভূষণ দত্ত, সভ্যেক্স ভূষণ দত্ত ষণীক্সভূষণ দত্ত বারভারা ৮, উপেক্রনাথ, রার কত্তক দৈরদপুর হইতে সংগৃহীত ১০ বন্ধবিহারী দাস কর্তৃক বর্দ্মা হইতে সংগৃহীত ২৫১, মাণিকদহ হইতে বাবু হরিমোহন ঘোষাল কর্জ সংগৃহীত ৩,, প্রীমতী শৈবলিনী দেবী মৌহালি ঢাকা ১. हेन्नुमठी प्तरी के 🔍, के वाबू हक्कनाथ हुए छानाधाव कर्क् গয়া হইতে সংগৃহীত 🛌, শ্রীষতী চক্রশোভা হালদার কলি-काला ১८, वाव मनारमाहनू विधान क्रक्षनगत ১८, खटेनक ভদ্ৰলোক পোত্ৰিয়া পাৰনা ১,,বাবু বছৰিহারী চৌধুরী কর্তৃক ভাণ্ডারহাটী হইতে সংগৃহীত ১০১, মি: সরদার দয়াল সিংহ नारहात २६, कान वन्न कर्जुक (मनिवन वर्षा) हहेएछ সংগৃহীত ২২৷• বাবু প্যারালাল খোষ কলিকাতা ১১, শ্রীমতী তীর্থমণি ঘোষ ময়ুমনসিংহ॥ বাবু কালিদাস সম্বস্থার কর্তৃ (দাউদ নগর গনা) হইতে সংগৃহীত আও। মোট ২৬৯।/১৭॥।

পূর্ব্বে প্রকাশিত ১২৬৭৮১৫

260011251



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১৫শ সংখা। ১৮ল ভাগ।

১৬ই অহায়ণ শনিবার, ১৮১৬ শক, ত্রাহ্ম দম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক জীত্রিম মূল্য ২৪০ মকস্বলে ৩২ প্রতি বজ্ঞের মূল্য 🗸

#### • প্রার্থনা ।।

হে সভ্যস্তরপ ৷ মললক্ষরপ ৷ পরমেখর ভোমাকে সভ্য আনিয়া ভোমার করণার উপর নির্ভর করাই ত ধর্ম। কিন্তু হে প্রভো! আমরা যথম ভোমার উপরে নির্ভর করিতে যাই, তথন কভ প্রতিকৃষ ভরত্ব আসিয়া আমাদিগকে আঘাত করে। মানা-भिष्क विकिश इहेबा जामना जीवरनत नका विक्र हहेबा याहै। প্রবৃত্তিকুলের ভাড়নাভে ভরভীত হইরা নিরাশ হইলা পড়ি। বার বায় উত্থান, বায় বায় পদ্তন, এই যাতনাতে পড়িয়া মনে করি, ভূষি বুঝি আমাদের প্রার্থনা গুনিতেছ না। ব্ধন অভিত্ন কটনা সকল ঘটতে থাকে, বড় আশা করিয়া যাহা গড়িতে বাই, যথন তাহা ভালিরা ভালিরা পড়িরা যায়, হত্তের कार्या मकन यथन विकन इहेट थोटक, लाटकत माहाया ना পাইরা যথন প্রতিকৃষতাই পাইডে থাকি, তথন মনু বিষয় ও ছতাশ হইয়া বলে, বুঝি তোমার করণার উপর নির্ভর করা প্রকৃত পথ নহে। তখন আবার আপনাদের উপরে নির্ভর **ক্ষরিবার বৃদ্ধি জন্মে। কিন্তু ভাহাতেই বা সুথ কৈ** ? কে তদারা অদ্যাপি শান্তিলাভ করিয়াছে ? তোমার করুণার উপরে পত্য ভাবে নির্ভন্ন করিতে পারিলে, জীবনে বল ও শক্তি আসে। ধর্ম তথন মুখের কথায় না থাকিয়া প্রাণের পরীক্ষিত স্থমিষ্ট বস্তু হয়। আমরা এই নির্ভরের ধর্মের জক্ত লালায়িত। তোমার ं निक्टो हेहारे हारे। आध्वा ८१न गर्वमा रेश सानिया निकिस शक्टिक भाति या, कृषि व्यामात्मत्र भातीतिक, माननिक, আধ্যাত্মিক, সর্কবিধ অভাব মোচন করিতেছ। যে ভূমি আমাদিগকে এত অমুপযুক্ত জানিরাও ভরণ পোষণ করিতেছ, সেই ভূমি কি আমাদের আত্মার অভাব সকল মোচন করিবে না ? সেই তুমি কি আমাদিগকে প্রবৃত্তিকূলের হস্ত হইতে নিছুতি দিবে না ? সেই তুমি কি আমাদিপকে চরণা-क्षाप्त ज्ञान नान कतिरव ना १ व्यवज्ञ हे कतिरव। व्यामता स्थन নিহ্নৰেগে সমুদায় মন প্রাণের সহিত আপনাদিগতক ভোমার ৰভে দিরা ভোমার অন্থগত ভৃত্য হইয়া থাকিতে পারি, এই चानैकाम कन्न।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

সত্যৈর অভিনব বিপদ—সম্প্রতি একটা কথা শ্রতিপাচর হইতেছে বে সত্যের নাকি নির্দিষ্ট নিরপেক্ষতা নাই।
প্রাচীন কালে যে সকল তত্ত্ব সত্য বলিয়া লোকে প্রচারিত
ছিল, বর্ত্তমান সময়ে তাহার কোন কোনটা অসত্য বলিয়া
প্রমাণিত হইয়াছে। হয় ত এখন যাহা সত্যনামে অভিহিত.
তাহাই আঘার কালে অসত্যে পরিণত হইবে। যখন হায়ী
সত্য কিছুই দেখা যায় না, তখন সত্যের নিরপেক্ষতা
বীকার করা কখনও সক্ষত নহে।

সত্য যদি এমন কাদার তালের মত বস্তুই হয় যে, যথন বেরূপ ইচ্ছা তাহার আরুতির পরিবর্ত্তন করা ঘাইতে পারে এবং বিদ্যাবৃদ্ধি ও তর্ক প্রভাবে সত্যকে অসত্য, আর অসত্যকে সত্যে করিণত করা ঘাইতে পারে, তাহা হইলে ত কোনও সত্যের প্রতি নির্ভর করা সম্ভব নয়। তাহা হইলে সত্য সত্য করিয়া চিরদিন যে একটা রব উত্থিত হইতেছে, তাহার ত কোনও সার্থকতা থাকে না। এ দেশীয় প্রাচীন ধর্মগ্রছে সত্যের যে মহিমা বর্ণিত আছে, তাহা কি কেবলই কবির করনা ? শাস্ত্রে উক্ত হইয়াছে:—

"নান্তি সভাসমোধর্শো ন সভ্যাদিদ্যতে পরম।
নহি তীব্রতরং কিঞ্চিন্তাদিহ বিদ্যতে ॥"
"সভ্যান্ন প্রমদিভব্যং"
"সভ্যান্ধ প্রমাশ্রিভ্য যৎ কর্মকুরুতে নরঃ।
তদেব সফলং কর্ম সভ্যং জানীহি প্রতে॥
নহি সভ্যাৎ পরোধর্মো ন পাপমন্তাৎ পরম।
তন্মাৎ সর্মান্ধানা মর্ত্যঃ সভ্যমেকং সমাশ্রমেৎ॥
সভ্যহীনা বৃথাপুজা সভ্যহীনো বৃথাজ্পঃ।
সভ্যহীনং তপোব্যর্থমুখ্যে বপনং যথা॥
সভ্যন্তাং করেনাং সর্মাঃ সভ্যাৎ পরভরং নহি॥"
"ভল্ল হুবা এছল বুজানোনাম সভ্যম্"
"সভ্যমেৰ জন্মতে"

এই সকল বাকোর যে কোন অর্থ নাই এমন নহে।

যদি সভা নামে কোন ভত্তই না থাকে, বদি সভা এমন

বস্তই হয় যে ইচ্ছামত ভাহার পরিবর্ত্তন করিলেও করিতে

পারা যার, ভাহা হইলে উক্ত প্রকার উক্তির কোনই সার্থকভা
থাকে না। এই সকল শাস্ত্রীয় বাকা বা অক্ত প্রকার যুক্তি যদি

কাহারও মনোমত না হয়, যদি এ সকলকে অভিক্রম করাও

তাঁহাদের পক্ষে সাধ্যায়ত্ত হয়, ভাহা হইলেও আরও সহজে

সভ্যের নিরপেক্ষতা প্রমাণিত হইতে পারে।

সভ্য, ধর্মনীতি প্রভৃতির আদর্শ সকলের মধ্যেই নিহিত चाह्य। यथन 'मकन প্रकात चार्थ এवः निष्कत विक्र ठात অভিমান প্রভৃতির উপদ্রব না থাকে, তথন সহজেই তাহা অনুভূত হয়। আমর। যথন কোন কাব্য বা উপভাদ পাঠ क्रिंत, त्रहे कात्याङ्गिथिङ वाङ्गिपिशत महिङ ज्यामात्मत्र (कानहे चार्थत मध्य ना शाकांग्र, चिं महस्बरे डाहारनत কাহারও উপর বা বিরক্ত হই; কাহারও উপর বা শ্রদাযুক্ত হই। সে সকল হলে আমরা অতি সহজভাবে ধর্মাধর্ম সত্যাসতা নীতি গুনীতির বিচার করিতে পারি। **কা**রণ সে সকলের সহিত আমরা কোনরূপে সংস্টু নহি। রামায়ণের বর্ণিত রাবণ ও তাহার অফুচর প্রভৃতির প্রতি সহজেই সকলে বিবক্ত এবং রাম প্রভৃতির প্রতি সকলেই অমুরক। মহা-ভারতের হুর্য্যোধন ও তৎসহচরগণের প্রতি বিদেষ এবং যুধিষ্ঠির ও তংসঙ্গীদিগের প্রতি অমুরাগ অতি সহজেই লোকের মনে উদিত হয়। কতদিন হইল এই ছই মহাগ্রন্থ রচিত হইয়াছে। किन्न উक्त शहनत्र स्वान इर्जन मकरणत्रहे मान এक हे जादि প্রভাব বিস্তার করিতেছে। নিয়ত যে এরূপ ঘটনা ঘটে, তাহার कात्रण कि १ तावण वा इंटिशाधन कि आमारमत काहात्र भार्थिव কোনরপ অনিষ্ট করিয়াছে, না রাম ও যুবিষ্ঠির আমাদেরণ কাহারও স্বার্থসাধনের সহায়তা করিয়াছে? তবে কেন একপ সহজে, বিনা বিচার বিতর্কে, এক শ্রেণীব লোকেব অতি বিরক্তি, বিধেষ ও অপর শ্রেণীর প্রতি সহায়ভূতি ও অনুবাগ অস্মিয়া থাকে ? ইহাব কারণ সত্য, ধর্ম, নীতি সম্বন্ধে সহজ জ্ঞানলব্ধ আদিশ মানব মাত্রেরই মনে আছে। সেই সভ্যের প্রতি বিরুদ্ধাচরণ বা সমাদর হইতেই এরপ সর্ব্বন্ধন সাধারণ অফুরাগ বা বিরাগের উৎপত্তি হইয়া থাকে। এইরূপ অফুবাগ বা বিরাগ কোন এক দেশে নয়, কিন্তু সর্বাদেশে সর্বা সময়েই . ঘটিয়া থাকে, সত্য সম্বন্ধে সাধারণের মনে এরূপ একটা সাধারণ আদর্শ না থাকিলে এরপ সর্বজনসাধারণ অভুরাগ বা বিরাগ জান্মিবার কোনই হেতু দেখা যায় না। জ্ঞানের অল্লতা-ৰশতঃ, বিচার করিতে গিয়া মাত্র ভ্রান্ত হইতে পারে বা স্বার্থবশত: অভ্য সংস্থারাপন্ন হইতে পারে; কিন্তু যেথানে সেরপ কোন হেতু নাই! কোন লাভ ক্ষতির সম্ভাবনা ৰাই, সেথানেই সভ্যে সমাদর, ধর্মে আছা প্রকাশিত হইয়া থাকে। সভ্যের দৃচভিত্তি এবং নিরপেক্ষতানা থাকিলে ক্ষনই এরূপ সম্ভাবনা থাকিত না। অস্তু নিরপেক বলিয়াই ভাহার নাম দত্য। দত্য যাহা তাহা চিরদিনই বর্ত্তমান আছে। **डिव्हामन याहा अनिवर्कनीय अवः निवरनक नटह अमन किछू**हे

সত্য নামে অভিহিত হইতে পারে না। সভ্যকেও যদি অঞ্চের উপর নির্ভর করিয়া সভ্য হইতে হয়, ভবে আর দাঁড়াইবার ভিত্তি কোথায় ?

ভজন সাধনের প্রয়োজন কি ?—জনেকগুলি সম্ভান লইয়া যে মাতাকে দংদার করিতে হয়, দেই মাতার দৃষ্টি সকল সম্ভানের প্রতি থাকিলেও যে সম্ভানটী নিতাম্ভ শিশু, যাহার চলিবার ও বলিবার শক্তি নাই---এবং জ্রন্দন ভিন্ন যাহার আর কোন দম্বল নাই, দেই সন্তানটীর প্রতিই তাঁহার স্কাপেক্ষা অধিক মনোযোগ থাকে, এবং সর্বাদাই তাহার অভাব মোচনের জক্ত তাঁহার ব্যগ্রতা দৃষ্ট হয়। অহ্য শিশুরাও মাতাকে नाना विषयप्रत्र व्यञाव कानाहेरल्ट्स, नाना श्रकारत क्रमनामि ছারা তাঁহার কার্য্যের ব্যাঘাত উৎপন্ন করিতেছে, কেছ বা পড়িয়া গিয়া আঘাত প্রাপ্ত হইতেছে, মাতা অক্তাক্ত কাজের ব্যস্ততার মধ্যে যতটা পারেন তাহাদেরও অভাব মোঁচন করি-তেছেন। কিন্তু যে মুহুর্ত্তে ঐ শ্যাশরী শিশুটী কাঁদিরা উঠিতেছে দেই মুহুতেই **মাতার অক্ত কার্য্য বন্ধ হ**ইয়া যাইতেছে। তাহার অভাব মোচন করিতে মাতার আরে কালবিলম্ব হয় না। অপর কোন কাৰ্য্যামূবোধ তাঁহাকে তথন আৰম্ধ করিয়া রাখিতে পারে না। বতক্ষণ তাহার অভাব-মোচন না হয় ততক্ষণ তিনি অপর সম্ভানি গিকে থেন দেখিয়াও দেখেন না। তাহাদের সম্ভান্ধ যে তাঁহার কোন কর্ত্তবা আছে তাহাও যেন তাঁহার স্মরণে আন্দেনা। উহার ব্যবহারে মনে হয় যেন ঐ শিশু ভিয় আদর যত্ন পাইবার উপযুক্ত সন্তান তাঁহার আর নাই। এইরূপ ঘটনার কারণ সহজেই অমুভব করা যায়। জননী ভাবেন অস্ত সম্ভানগণচলিয়া বলিয়া বেড়াইতেছে, তাহাদের প্রতি কিছুকাল মনোযোগের হানি হইলে তত ক্ষতি নাই। অথবা যাহা ভাহারা চাহিতেছে, তাহা কিছু বিলম্বে প্রদান করিলেও চলে : কিছু শ্যাতে অসহায় অবস্থায় যে শ্য়ন ক্বিয়া আছে, তাহার ত মাতা ভিন্ন আর গতি নাই। মাতা গিয়া যদি ভাগাকে আছার দেন. তবে সে আহার পাইবে, নভুবা নহে। তাহার নি**জের** যখন কিছুই করিবার বা বলিবার সামগী নাই, তথন মাতার দৃষ্টি তাহার প্রতি সর্বাপেকা অধিক থাকিবে তাহাতে আর বিচিত্ৰ কি ?

পৃথিবীর মাতার বাবহারে যেমন দেখা যার, নিভান্ত নিরুপার সন্তানটাকেই তিনি সর্বাত্রে কোলে লন, এবং তাহার অভাব অন্তদের অভাব মোচনের পৃর্বে মোচন করেন। আমাদের পৃরমু জননীর ব্যবহারেও কি আমরা তাহারই পরিচয় পাই না ধর্মজগতেও যে সর্বাপেক্ষা নিরুপার, সর্বাপেক্ষা অসহায় এবং পরম মাতার প্রতি নির্ভরশীল, যাহাব নিজের করিবার ও বলিবার শক্তিনাই, সেই যেন তাঁহার করুণা সর্বাত্রে প্রাপ্ত হয়। তাহার প্রার্থনাই যেন পরম মাতা সর্বাত্রে পূণ করেন। এরূপ বাবহার পার্থনাই যেন পরম মাতা সর্বাত্রে পূণ করেন। এরূপ বাবহার বার্থনাই নিরু ত সর্বাত্রে সাহায্য পাইবার উপর্ক্ত। পক্ষণাতিতা সমান অবস্থাপরের প্রতি বিভিন্ন ব্যবহার বারাই

क्षकान . भारेबा थारक । . ठ क्रीन अवः ठ क्यान् अरे इरे अव मरक्षा हकूरीनरक यनि क्ट २ । भग्ना त्मन छाहात्रवाता চক্মানের প্রতি কথনও অবিচার করা হয় না। তবে কথা এই জগন্মভার নিকট সকলেই অসহায় শিশু। এমন কে আছে নিজ বলে যে আধ্যাত্মিক আহার সংগ্রহ করিতে পারে ? এথানে সবল ছুর্বলের প্রভেদ কোনু লক্ষণ ছারা হয়। বাস্তবিক অবস্থাগত প্রভেদ অতি সামাস্ত হইলেও দেখা যায়, এ রাজ্যৈ धक (अभीत लाक जाभनामिशक नर्समाहे जनहात्र, निक्रभात्र এবং চর্বল বলিয়া অমুভব করিতে পারে। তাহারা আপনাদের আক্ষমতার প্রকৃত পরিচয় পাইয়া অতি সহজেট পরম মাতার মুখাপেকী হইতে পারে। তাঁহার প্রতি নির্ভরশীল হইতে भारत । **अ**भरतता रमहेक्रभ इन्हेंग ७ अमहाम्र निक्रभाम हहेगा ७ ভাছা অন্তত্তৰ ক্ৰিতে পারে না; এবং আত্মনলে ষ্ট্টা পারা যায় তভ্রা করিতে যায় বলিয়া, সভাবত: প্রম মাভার প্রতি তেমন নির্ভুর থাকে না'৷ এজন্য তাঁহারা প্রম মাতার করুণা সম্ভোগ করিবার স্থবিধাও তেমনভাবে গ্রাপ্ত হন না। তিনি সম-ভাবে সকলের প্রতি সদয় হইয়াও যেন এক প্রেণীর লোকের নিকট হইতে বহুদ্বে অবস্থিতি করেন এবং অপব শ্রেণীকে যেন একবারে ক্রোড়ে ধারণ কবিরাই আছেন বলিয়া অনুভূত হয়। পরম মাতার বাবহাব সকলের প্রতি সমান হইয়াও আমাদের অবস্থানুসারে বিভিন্ন বলিয়া প্রভীয়মান হয়। এই যে নিরাশ্রয় ष्यवद्या श्राश्च ब्रह्मा, ष्याभनाटक मन्त्रभंत्रतभ निक्रभाव विवया ष्यकृष्ठव कत्रा, हेहा (कह हेक्का कतिलहे श्राश्र हत्र ना। यडकर নিজের প্রকৃত অবভার পরিচয় পাওয়া না যায়, আমাদের শক্তির অকিঞাংকরতা, কার্যাসাধনে তাহার অফমতা, যতকণ বাস্তবিকরণে অফুভূত না হয়, ততক্ষণ ভাবিয়া চিন্তিয়া কেহই তেমন ভাবে আপনাকে অসহায় বলিয়া জানিতে পারে না; এবং সম্পূর্ণ নিঃসম্বলের ও অক্ষমের স্থায় আত্মনির্ভরীও করিতে পারে না। অনেক চেষ্টা করিয়া বারম্বার উঠিয়া পড়িয়া যথন দেখা যায় অকীয় শক্তিতে আর কুলায় না, তথনট সেই নির্ভব আদে ও প্রকৃতরূপে আপনাকে অস্হায়রূপে অমূভব করিবার স্থোগ ঘটে। এই স্থাগে পাইবার জন্ট সাধন ভল্পন কবা আবশুক। নতুবা কল্লনা করিয়া কেংই এরপ অবস্থাতে যাইতে পারে না।

উপাদনা সজন ও নির্জ্জন—বাগানে নানাবিধ
কুন্থম প্রাকৃতিত হইয়া রহিয়াছে। ভাহার হংগদে চতুর্দিক
আমোদিত হইডেছে। কেহ নদি দেগানে প্রবেশ করেন,
ভবে দেই হৃদ্ভে এবং হুদোরভে তাঁহার মন প্রাণ বিমুগ্
হইয়া যাইবে। তিনি আয়হায়া হইয়া দেই কুন্থমিত ও
সৌরভপূর্ণ বাগানে বিচরণ করিবেন। কিন্তু কিছুকাল
তথার অবস্থিতি করিলেই দেখা যায় আয়ে তাঁহার নাসিকায়
তেমন দেই গন্ধ উবুদ্ধ হয় না। তিনি তখন দেই পূপ
কাননে ভ্রমণ করিতে করিতে আর পুর্বের ভার আমোদও
প্রাপ্ত হন না। অনেকক্ষণ দেখিয়া দেখিয়া এবং দৌরভ প্রবেণ

করিরা করিরা তিনি এমন অভাগ্ত হইরা বান বে, তাহাতে কিছুমাত্রও নবীনত্ব থাকে না, স্ত্রাং পূর্কের ভার স্থোদর হর না।

উপাসনা কেত্রেও আমরা এইরূপ দেখিতে পাই। বাঁহারা बाक्रममारक व्यथरम रंशां रहन, উপामना क्रिएंड कार्रङ करतन, তথন তাঁহাদের কত উৎসাহ, কত আগ্রহ ! তথন উপাদনাতে তাঁহারা কত আনন্দ প্রাপ্ত হন। তথন সাধুসজ্জনগণের সহিত এবং সমবিশাসীজনের সহিত উপাসনা করিয়া তাঁহারা বিশেষ তৃপ্তি পাইয়া থাকেন। কিন্তু যতই সময় যাইতে থাকে, ততই তাঁহারা উপাদনা কেতে যেন আর তেমন রস পান না। ক্রমে ক্রমে তাহা পুরাতন ও নীর্স হইরা পড়ে। তথন তাহার উপকারিতা বোধ ও ধেন ক্রমে ক্রমে হ্রাস হইতে পাকে ৷ এ সময় অনেকের পক্ষেই অতি কটিন পরীক্ষার সময়। কিন্তু এ স্থলে একটি বিষয় স্মরণ রাধা আবিশ্রক। আমরা যদি কোনও খাস্থাকর স্থানে গমন করি, তথনও যেমন অজ্ঞাতসাবে व्यामारमञ्जू मत्रीत छान इहेर्त्रहे हहेर्तः। (कान छान छात्न थाकित्न हे नतीत ऋष, जनन हहेत्व हहेत्व। त्महेक्रण चामता যদি সাধুসলে, উপাসনা-কেতে নিয়মিত রূপে যোগ দান করিতে পারি, তাহাতেও জ্ঞাত বা অজ্ঞাতসারে আমাদের আধ্যাত্মিক স্বাস্থ্যের নিশ্চরই উন্নতি হইবে।

যথন আমরা একাকী থাকিতে বাধা হই, তথনই এই উপাসনা-ক্ষেত্রের ও সাধুসংসর্গের উপকারিতা বিশেষরূপে হদরক্ষম করিতে পারি, ধর্মবন্ধদের সঙ্গে সজন উপাসনাবিহীন হইলে আমরা আধান্মিক অবসরতা অমুভ্র করি। তথন হৃদরে এমন শুক্তা উপন্থিত হয় যে উপাসনাতে মন উদ্বৃদ্ধ হয় না। আমরা যে প্রতিদিন নির্দিষ্ট সময়ে বন্ধুগণের সহিত পরমেশরের উপাসনায় যোগ দান করিয়া জ্ঞাত ও অজ্ঞাতসারে প্রভৃত বল লাভ কবিয়া থাকি, ভাহা সজনে তত ব্বিতে পারি না; কিন্তু একাকী হইলেই স্পষ্ট অমুভ্র করি।

আমরা যদি কোনও উপাসক দলের সহিত নিয়ত যোগ রাথি, সমধ্মী ও সমবিখাসীদিগেব সহিত একত্রে সাধন ভজন কবি, তবে নিশ্চয়ই আমাদের বিশেষ উপকাব হইবে, ভদ্বাবা আত্মা ক্রমশঃ বল লাভ কবিবে। কিন্তু এই সজন উপাসনাকে সজীব করিবার জন্ম নির্জ্জনে উপাসনা ও আত্মপবীক্ষার বিশেষ প্রয়োজন। নির্জ্জনে প্রতিদিন আত্মচিস্তা ও ধ্যান ভিন্ন সজন উপাসনার ফল হায়ী হয় না; এবং সজন উপাসনা ভিন্নও নির্জ্জন উপাসনাতে সন্ত্রসভাব উপস্থিত হয় না। ছইটিই চাই। সজন নির্জ্জন উভয়বিধ উপাসনাই আত্মার কল্যাণের জন্ম অবলম্বনীয়। ব্রাহ্ম কোনটিই পরিত্যাগ করিতে পারেন না।

ধর্মভাবের উৎস—আমরা নানাস্থানে বড় রড় নদী দেখিতে পাই; এক একটী নদীর বিস্তার ৩৪ মাইল। ভয়ত্বর স্বোত অবিরত চলিতেছে। কিন্তু এই সকল নদীর উৎপত্তি স্থান দেখিলে বিস্কয়ান্থিত হুইতে হয়। যে প্রামানগর গ্রাম, জনপদ ইত্যাদি ধ্বংস করিয়া প্রবল গতিতে সাগরাভিমুধে ছুটতেছে, ভাহার উৎপত্তি হান এমন সহীর্ণ বে,এফটি বাণকেও মনারাসে পার হইরা যাইতে পারে। এই নদী সক্ষের গতি ও উৎপত্তি হান যেমন আশ্রুণ্ডা জনক, জগতের ধর্মসমাজের গতিও এইকপ। থূইধর্ম ও মুসলমান ধর্ম এক এক জন সামাল্ল মন্থব্যের জীবন ও কার্য্য হইতে উৎপর হইরাছে। উৎপত্তি হানে এক এক জন লোক, কিন্তু ভৎপর দেশ বিদেশকে আরম্ভ করিয়া, অন্যান্ত ধর্মকে কম্পান্থিত করিয়া পদ্মার ক্লায় অপ্রভিহতগতিতে প্রবাহিত হইতেছে। সামাল্ত এক এক জন লোকের মধ্যে কিরূপে এমন হর্জেয় শক্তি আসিল ? আমরা ভাহাদিগকে এই জন্ত সামাল্ত বলিভেছি যে. পৃথিবীর ধনবল ও লোকবল তাঁহাদের কিছুই ছিল না। ইহা অভ্যন্ত গভীর চিন্তার বিষয় যে পৃথিবীর নরনারীর চিন্তাকে তাঁহারা কিরূপে আলোড়িত করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন।

পৃষ্ট ধর্ম ছই হাজার বংসরে যে কার্য্য করিয়াছে, ডং-সম্বন্ধে একজন চিস্তাশীল লেথক বলেন যে "বৰ্ষণা, ভোমরা একটা কথা মনে রাখিও বে, ছই হাজার বংসর পূর্বে এমন একজন আশ্চর্যা শক্তিশালী পুরুষ ছিলেন, যাঁহার শক্তিতে জগতের এমন পরিবর্ত্তন ঘটিয়াছে। সে শক্তি সামাল শক্তি नरह। विश्वत कीरन अशायन कतिरत मर्सारश डाँहात क्रेच्य-জ্ঞান সম্বন্ধীয় উজ্জ্বল ভাবেব প্রতি দৃষ্টি পতিত হয়। কি উজ্জ্বল ঈশ্বর-প্রতীতি ৷ তাঁহার জীবন, তাঁহার চিস্তা, তাঁহার মনের ভাব, ঈশ্বর হারা অমূবিদ্ধ। প্রাতঃকাল ও সন্ধাকালে শ্বন্ধিগ্ধ আকাশ-মণ্ডল দর্শন করিলে তাঁহার প্রাণ ঈশবেহত সমাকৃষ্ট হইত। তিনি যাহ। কিছু দর্শন করিতেন, যাহা স্পর্শ কবিতেন. সকল বিষয়েই ঈখরের সন্তা উপলব্ধি করিতেন। তিনি চারি দিক ঈশ্বনময় দেখিতেন। তিনি জীবস্ত সন্তাময় ঈশ্বর হইতে বল লাভ করিতেন। তাঁহা হইতেই শক্তি এবং ডাঁহা হইতেই জ্ঞানলাভ করিতেন। তিনি সকল বিষয়েই পরমেখরেব নিকট প্রার্থনা করিতেন, যদি কখনও কোন প্রার্থনা পূর্ণ না रहेड, उरव डिनि मान कविर्वन य, ध प्रश्रक अवादत हैक्हा অন্ত প্রকার।" এই জীবস্ত ঈশর-প্রতীতিই যিওর শক্তির উৎস স্বরূপ ছিল।

ঈশ্র-প্রতীতি—এই ঈশ্বর প্রতীতি এমন বস্তু যে, ইহার আবির্ভাবে মামুব দকল শক্তি লাভ করিয়া থাকে। যদি কেই জিজ্ঞাসা করেন যে, "পৃথিবীতে দর্কাপেক্ষা বলবান কে ?" তবে তাঁহার এই উত্তর যে, "যিনি দর্কাপেক্ষা ঈশ্বর-প্রতীতি লাভ করি-রাছেন।" তাঁহার কার্য্য ঈশ্বর চরণে, আক্যক্ষা ঈশ্বর-চরণে এবং চিস্তা ঈশ্বর চরণে। তাঁহার হৃদর বিশুদ্ধ, আকাক্ষা পবিত্র এবং দক্ষর সাধু। তিনি আপনাকে হারাইন্বাছেন, এ জক্তই সংসার জর করিতে পারেন। আমরা যে এত ত্র্কান, নিরাশহাদয়, নিক্রংসাহ নিক্রদাম, এবং মরার মত রহিয়াছি, ইহার কারণ এই যে, আমাদের অস্তরে ঈশ্বর-প্রতীতি নাই।

আমরা কি বলিতে পারি যে, আমাদের ঈশর ভিন্ন লক্ষ্য নাই, আশা নাই বল নাই ? আমরা কি বলিতে পারি যে, আ মাদের জীবনতক পরমেশ্বরেতে রোপণ করিয়াছি ? আমা- দের মধ্যে একথা কে বলিতে পারেন ? যিনি বলিতে,পারেন, তিনি অতি বিখাসী সাধু বীর। তাঁলাতে পৃথিবীর পাপ প্রালোজন, ও ইক্রিয়াসক্তি স্পর্শ করিতে পারিবে না। তিনি হুদয়-বলে হুর্জয় হটয়াছেন।

মহাজনগণ স্বীয় জীবনতরু ঈশর চরণে রোপণ করিয়া-ছিলেন, আমরা দূরে পড়িয়া রহিয়াছি। বিনি যে পরিমাণে ঐ অবস্থা লাভ করিয়াছেন, তিনি সেই পরিমাণে সাহস ও বল পাইয়াছেন। একবার মহম্মদের শিষাগণ কোন যুদ্ধে পরাস্ত হইয়া শিবিরে প্রভাগেমন করিলে, দলত অন্যান্য লোকদিগের ষ্মতান্ত্র বিষয় ভাব উপস্থিত হয়। চারিদিকে বিধবাদের ক্রেন্সন উঠিতেছে। কিন্তু মহম্মদ নিশ্চিন্ত, প্রশাব্তভাবে উপবিষ্ট আছেন। মহম্মদকে এই ছদিনে শান্তচিত্ত দেখিয়া, শিষাগণ কহিল, "আপনি কিরুপে নিশিচ্ভ রহিয়াছেন •ৃ" মহম্মদ কহিলেন, ''প্রভু প্রমেশ্বর আমাদিগকে পরিত্যাগ করেন নাই. এই অন্ত নিশ্চিত্ত " । মহম্মদের মির্ভর লোকজনের উপর ছিল না। ঈশর তাঁহার নির্ভরের স্থান। স্বতরাং তিনি विभाग दिवा दिवान। आयवा (रा मूहू र्ख स्रेचरत विदासी इहे. সেই মৃহুর্ত্তেই আমরা ঐ প্রকার সাহস প্রাপ্ত হই। আমরা বে মুহূর্ত্তে ভাহাকে দেখি, সেই মুহূর্ত্তেই জীবিত হই ঈশব-প্রতীতি राथान, कीवन ९ (मथान । आधारमंत्र मकन अजाव, था ७ द्वा পড়া, আত্মীয়তা ভালবাসা সকল যদি তাঁহার চরণে রাখিতে পারি, তবেই আমর। যথার্থ তেজীয়ান, যথার্থ শক্তিশালী আর যথন ঈশরকে না দেখিয়া সকল কাজ করি, আমাদের আত্মীয়তা আমাদের সাংসারিক কার্য্য কেবল আমাদের দারাই मम्लब रुव, रिकिन चात्र मर्था शास्त्रन ना, कथनरे चामजा হৰ্কল হইয়া পড়ি।

বিশাসী সাধুগণ জীবনের সকল কার্য্যেই প্রমেশরের প্রজি
নির্জির কলিতে উপদেশ দেন। জীবনের সকল ঘটনাতেই
ঈশরের কপার আলোক লাভ করিবার জক্ত উপদেশ দেন।
জীবনের প্রধান প্রধান ঘটনাতেও যেমন মানব তাঁহার ক্লপাপ্রার্থী হইবে, তেমনই প্রতিদিনের আরাধনা উপাসনা
করিবার সময়ও তাঁহার করুণার উপর স্ক্রতোভাবে নির্জ্বর

উপাসনায় যথন আমরা বিসৃ, তথন কাহার উপর নির্ভর থাকে ? উৎকৃষ্ট সংগীত স্থলনিত ভাষায় প্রার্থনা এবং শাস্ত্র বাধারে উপর কি আমাদের নিউর থাকে ? তাল গায়ক, উৎকৃষ্ট বক্তা একত্র হইংলই কি উপাসনা সরস হইবে ? না, তাহা নহে। সম্পূর্ণরূপে পরমেশ্বরের প্রতি নির্ভর করিছে হইবে। তাঁহার কুলা ভিয়, তাঁহার পূকা অসম্ভব। তিনি অসং হদরে প্রকাশিত না হইলে কি স্থলনিত সংগীত ও প্রাণ-ভৃত্রিকর বাক্য দারা তাঁহাকে আনয়ন করা যায় ? আমরা যদি ঐ রূপে উৎকৃষ্ট আয়োলন করিয়া, সমস্ত দিন বসিয়া পূকা করি, তাহা হইলেই. যে ঈশ্বর আসিবেন, এ কথা কে বলিতে পারেন ? এথানেও তাঁহার করুণার উপর নির্ভর। ভিনি হদহে উপস্থিত হইয়া পূকা গ্রহণ করিলেই তবে পূকা হয়। নতুবা সহল চেষ্টা করিলেও উপাসনা হয় না। ক্লে বৃহৎ সকল কার্যাই

ভাঁহার জুপার ভিখারী হইতে হইবে। সাধক ভাঁহার কুপা ভিরুজ্ঞার কিছুই জানেন মান

ধর্মা, ভাবে ও কার্য্যে—ভাবুকভার ধর্মে ও কার্যাগভ ধর্মে অনেক প্রভেদ। আমরা সংসারে সচর।চর ছই প্রকৃতির লোক দেখিতে পাই। কাহারও কাহারও প্রেম ভাবুকভাতে প্রকাশ পার; কাহারও কাহারও প্রেম কার্য্যে প্রকাশ পায়। কোনও কোনও লোকের প্রকৃতির গভীরতা স্বভাবত: অর। সামান্ত কারণেই তাহাদের ভাবরাশির উপরে তরঙ্গ উথিত হয়। তথন তাহারা ভাবের উচ্চাদেকত কথা বলে ৷ কিন্তু কার্য্য-কালে ভদমুরূপ আচরণ দেখিতে পাওয়া যায় না। তাহারা অর কারণে আনন্দ প্রকাশ করে, অল্লে অশ্রণাত করে, আল্লে ক্রোধ करत्र ७ कर्षे कथा नर्ल, ऋहा आवात्र कर्शालक्रम करत्र ७ हम्रम करता जाहारमच कामग्र (यन जाहारमत अष्टीधरतत जेशदत ভাসিতেছে ৷ কিন্তু কার্য্যে যথন সেই প্রেম দেখাইবার সময় উপস্থিত হয়, তথনি ভাহাদের প্রেমের অগভীরতা অনুভ্র করিতে পারা যায়। ঐ সকল লঘু-প্রকৃতি লোক তথন পশ্চাৎ-পদ হইয়া থাকে। এমন কতবার দেখিয়াছি, একজন আর এক জনের কণ্ঠাণিজন করিয়া বলিতেছে "ভাট। ভোমাকে বড ভাল বাসি, ভোমাব জন্ম মরিতে পারি, ভোমাকে কি না দিতে পারি ।" ইত্যাদি, ইত্যাদি। কিন্তু যেই সেই বন্ধুটী বিপদে পড়ি-লেন বা গুরুতর রূপে রোগগ্রস্ত হইলেন্যথন তাঁহার সাহায্যের জন্ত অর্থবার বা রাত্রি জাগরণ আবশুক হইতে লাগিল, অমনি ভাবুক বন্ধুর আর দেখা নাই। ভাবের প্রকাশে ধরচ নাই: স্থভরাং তিনি ভাহা বন্ধকে দিভে পারিয়াছিলেন, কিন্তু যুধন किकिए भरतिय जावश्रक रहेन, उथन जार राज भा केटि ना।

অপর প্রকৃতি ঠিক ইহার বিপরীত! তাঁহাদের সদয়ত্ব ভাবেব প্রকাশ নাই। তাঁহাদের কি এক প্রকার স্বাভাবিক শজ্জানীলতা আছে, যন্নিবন্ধন তাঁহারা সর্বাদাই আত্মগোপন কবিরা থাকেন। তাঁহাদের মুথের কথা সর্বাদাই কাজের পশ্চাতে পড়িয়া থাকে। তাঁহারা যাহা করিবার তাহা কাজে করিয়া থাকেন, ভাবে বড় প্রকাশ করেন না। ইহাদের প্রেম পরীক্ষাকে ভয় করে না, বরং ভাহাতে আনন্দিত হয়।

এই ছই প্রকার প্রেমের মধ্যে কোন্টা প্রেষ্ঠ ? ঈশরকে আমরা কিরপ প্রেম দিব ? উংবের উদ্ধানে তাহাকে মিষ্ট মিষ্ট সংখাধন করাতে কিছুই বার হর না; প্রত্যুত নিজের আত্মার এক প্রকার তৃত্তি হর। যথন ঈশর-প্রীতিকে আমরা কার্য্যে পরিণত করিবার চেষ্টা করি, তাহার আলোকে জীবনের কর্ত্তর সকল পালন করিতে সচেষ্ট হই, তথনই আমালের প্রোমের পরীক্ষা আরম্ভ হর। বাহার প্রকৃতিতে প্রেমের পত্তীরতা যত অধিক, তিনি তত এই পরীক্ষাতে উত্তীর্ণ হইতে পারেন। আমরা প্রতিদিন দেখিতে পাইতেছি যে প্রেমের এই পরীক্ষাতেই আমরা হারিয়া যাইতেছি। জীবনের কর্ত্তার কার্য্য সকল স্থচাকরপে নির্মাহ করিতে পারিতেছিল। প্রতিকৃত্তকে সংযত করিয়া ঈশরেছার অধীন ইইতে পারিতেছিল। প্রতিকৃত্তকে সংযত করিয়া ঈশরেছার অধীন ইইতে পারিতেছিল। প্রতিকৃত্তকে সংযত করিয়া ঈশরেছার অধীন ইইতে

নাধনে আপনাদিগকে নিরোগ করিতে পারিতেটি না। কত বার গঁতীব ছাথের সহিত এই কথা বলিতে হইতেছে, "হার! হার! দশজনে উপাসনাতে বলিলে সমরে সমরে যেরূপ ভাবো-চন্স হর, ঈশ্বরকে যে প্রেমের কথা বলি, জীবনের কর্ত্বা সাধনে যদি সে প্রকার বল লাভ করিতে পারি, তাহা হইলে ধন্ত হইরা যাই। প্রভূ আমাদিগকে কার্য্যগত প্রেম প্রদান কর্মন।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

### সাধন-সিদ্ধ ও প্রেম-সিদ্ধ।

বৃদ্ধ ও চৈতত্ত্বে, সক্রেটিস ও যীগুতে কি প্রভেদ। এক প্রকার চরিত্র সাধন-সিদ্ধ অপর চবিত্র প্রেম-সিদ্ধ। ইতিবৃত্তে শুনা যায়, গ্রীক সাধু সক্রেটিস যৌবন কালে অভিশয় কোপন-স্বভাব ও হুর্কৃত্ত ছিলেন ; কিন্তু সাধনের দ্বারা ক্রোধকে সম্পূর্ণ-রূপে দমন করিয়াছিলেনা শেষে এত দূর অক্রোধী হট্যা-ছিলেন, যে লোকে তাঁহাকে ক্সষ্ট করিবার জন্ম বিবিধ প্রকার উপায় অবলম্বন করিয়াও তাঁহার ধৈর্যাচাতি করিতে পাবিভ একবার কতকগুলি হুষ্ট লোকের প্ররোচনায় তাঁহার ভূতা তাঁহাকে বিরক্ত কবিবার জন্ম বিধিমতে চেষ্টা করিয়াছিল। শয়ন করিতে গিয়া দেখেন শ্যাটী প্রস্তুতনাই; ফল পান করিতে গিয়া দেখেন জলপাত্তে জল নাই ; বস্ত্র পরিবর্ত্তন কবিতে গিয়া দেখেন বন্ধ নাই: এইরপে বার বার অনবধানতা ও অবাধাতা দেখিয়া একদিন সক্রেটিস বাস্ত্রবিক বিবক্ত হইলেন: এবং ভূতাকে বলিলেন "কি বলিব, আমার ক্রোধ হইরাছে, নতুবা ভোমাকে শান্তি দিতাম।'' বিবক্ত হইয়াছিলেন বলিয়া শান্তি দিলেন না। গ্রীদের জগ্দিখ্যাত বক্তা ডিমন্তিনিস বেমন আপনার তোত্লামি দুর কবিবার জন্ত মুখের মধ্যে প্রস্তর পণ্ড পুরিষা, সমুদ্রের উপকৃলে গিয়া চীৎকার করিতেন, এবং ভদ্মারা ष्मापनात्र উচ্চারণের দোষ সংশোধন করিয়াছিলেন, সক্রেটিসও তেমনি আপনার ক্রোধকে দমন করিবার জন্ত অম্ভুত উপায় সকল অবলম্বন করিয়াছিলেন। তন্মধ্যে একটী এই, যথনি তাঁহার ক্রোধের উদয় হইত তথনি তিনি মনে মনে "আল্ফা" "বিটা" প্রভৃতি গ্রীক বর্ণমালার বণস্কল উচ্চাবণ করিতেন, বর্ণমালা শেষ না করিয়া কথা কহিতেন না। একপ নিয়ম করিবার অভিপ্রার এই ছিল; বর্ণমালা শেব না করিতে করিতে তাঁহার ক্রোধ শাস্ত হইরা ঘাইত। রিপু দমনের এই একটা গৃঢ় সন্ধান। যথন কোনও রিপু বিশেষ প্রবন্ধ इहेटलह, प्रिथित भाहेर्द, उथन हिस्राटक स्मिट खालाखरनव विषय इटेट विषयाश्वरत नहेत्रा याख। यनि नेपदात प्रक्रभ ও সন্তার চিস্তাতে চিত্তকে নিয়োগ করিতে পার ভালই, নতুবা যাহা কিছু হয়, অপের একটা বিষয় চিস্তা কর। অস্ততঃ তৎপূর্কাদন একজন ভোমাকে কি কথা বলিয়াছিলেন ভাছা .छाविट्ड चात्रस कत्र। सिथिट्य मस्तत्र উर्डिक्ना भास इहेन्रा वाहेट्य। हेहा नट्याहिटमत व्यवनिषठ छेशात्र।

মহাত্ম। বৃদ্ধও প্রবৃত্তি সকলকে সংযত করিবার নানাজকার উপার নির্দেশ করিরাছিলেন। আত্ম-প্রভাবের উপরে উছার ধর্মের প্রধান নির্জর। মৃত্যুখায়ার শিব্যদিগের প্রজি তিনি শেষ উপদেশ এই দিলেন, "তোমরা দর্ম প্রযুদ্ধে নিজ নিজ মৃক্তি সাধনে নিযুক্ত থাক।" নিজের মৃক্তি নিজে সাধন করিতে হটবে, এই তাঁহার ধর্মের প্রধান ভাব। স্কুতরাং তাঁহার ধর্মে মানবের নিজের সাধনই একমাত্র অবলম্বন।

কিন্তু এই সাধনদন্ধ সিদ্ধির পথ স্থেরে পথ নতে। ইহাতে হরন্ত পরিশ্রম করিতে হয়, এবং প্রবল ইচ্ছা শক্তির প্রয়োজন। ইহা যেন সবলে সবলে সংগ্রাম! কথনও আমি প্রস্তুতিকূলের উপরে কথনও বা প্রস্তিকূল আমার উপরে। এই গল কচ্চপের যুদ্ধে মানবালা শ্রান্ত ও ক্লান্ত হইয়া পড়ে; এবং অনেক সময়ে পরান্ত হইয়া য়ায়। হৃত্তিয় ইচ্ছাশক্তির বলে বৃদ্ধ এবং সক্রেটিস, এইয়প সংগ্রামে ক্ষরণাভ করিয়াছিলেন, কিন্তু অপব সাধারণের পক্ষে তাহা সহক্রসাধ্য নছে।

সিদিলাভের আর একটা পথ আছে তাহা অপেকাকত स्थकत्र, यो ७ व्यथना हिन्जु एव भवाननश्ची हिल्ला ; हेहा প্রেমের পথ। ইহাতে এক একটী প্রবৃত্তির সহিত বিশেষ বিশেষ ভাবে হবন্ত সংগ্রাম করিছে হয় না; কিন্তু অন্তঃস্থিত প্রেমেব প্রভাবে প্রবৃত্তিকুল আপনাপনি সংযত হইরা যায়। হদরের প্রবল অমুরাগ ঈশ্বরেতে অর্পিড হওয়াতে স্বাভাবিক ভাবে বিষয়ে বিরাগ উপস্থিত হয়; এবং তৎসঙ্গে সঙ্গে সম্দায় পাপ প্রশোভন খসিয়া পড়িয়া যায়; এবং প্রবৃত্তি কুল আপনাপনি সংযক্ত হইয়া আসে। ধর্মরাজ্ঞার চিন্তাশীল সাধকেরা এই প্রেমের পথকেই শ্রেষ্ঠ পথ বলিয়া অমুভব করিয়াছেন। কিন্ত প্রেমিকগণ যে সাধন-বিমূথ হল তাহা নছে। তাঁহাদের সমুদায় সাধন প্রেম-প্রস্ত ও প্রেমের অমুগত এই মাত্র তাঁহাদিগেরও নিয়মাধীন হওয়ার প্রয়োজন তাঁহাদের পক্ষেও ব্রভ-নিষ্ঠা অত্যাবশ্রক। তাহার অভাবে প্রেম উচ্ছেল হইয়া ধর্মজাবনের সৌলবা ও সামঞ্জ বিনষ্ট कतिया (क्या) अहे कांबरण (अम ७ माधन উভয় हे व्यामानिशरक ষ্মবলম্বন করিতে হহবে।

## অনিরাকরণমস্ত।

( ১৮ই নবেম্বর, সাধারণ ব্রাহ্মসমাজমন্দিরে শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী কর্তৃক প্রদন্ত উপদেশের সারাংশ)

উপনিষদে একটা বচন আছে; বচনটা এই,—"মাহং এক্ষ নিরাকুর্যাং মা মা একা নিরাকরোং।" অর্থ একা আমাকে পরিত্যাগ করেন নাই; আমি যেন এক্ষকে নিরাকরণ না করি।" এ ভলে ঈশ্বরকে নিরাকরণ করার অর্থ কি ? যিনি প্রতি মুহুর্জে সকলের প্রাণের প্রাণ হইরা বিরাজমান রহি-রাছেন, এই দেহের প্রভাকে পরমাণুর সহিত, বায়ুর প্রত্যেক ভরপের সহিত এবং জীবনের প্রত্যেক জিলাল সহিত যিনি বিদ্যমান রহিরাছেন, আন্তরা কিরুপে ভাঁহাকে নিরাকরণ করিতে পারি ? ভাঁহা হইতে সরিলা দুরে যাইতে পারি ?

**छट्ट (कन ध्वाठीम च**वित्रा अहेन्नल खार्चना कतिरुवन । विरमय-ভাবে বিবেচনা করিলে এই নিরাকরণ শব্দের একটা গুঢ় অর্থ **मिथिएक भारे। मः मारत बहेक्ग मर्या मर्या रामि, रा बक** ব্দের প্রেম অপর একজনের প্রতি প্রবলভাবে প্রবাহিত, কিছ সে ব্যক্তি ভাহার কিছুই জানে না; সে সেই প্রেমের প্রতি অন্ধ, একবার মনেও করে না, চাহিয়াও দেখে না। এইরপ দৃটান্ত সকল সমাজেই দেখিতে পাওরা যার। এতিয় সাধু অগষ্টনের মাতা মনিকা দেবী অত্যন্ত সস্তানবৎসলা ধর্মপরায়ণা নারী ছিলেন এক মাত্র পুল্ল অগষ্টিনের কল্যাণ-চিন্তাই দিবানিশি তাঁহার অন্তরে জ্বাগনক থাকিত। আগষ্টিনের পিতা অগষ্টিনকৈ ধন দিয়া স্বাধীন করিয়া বিদ্যালাভের জন্ত বিদেশে প্রেরণ করিলেন। তথার কুসঙ্গে পড়িয়া কালক্রমে ছড়িয়াসক্ত হইয়া উঠিলেন। মনিকাদেবীর কটের সামারহিল না। প্রতিদিন পুজের মঙ্গলোদেশে ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা করিতে লাগিলেন। প্রতি রবিবারে আচাযোর নিকট বলিতেন, "আপনি আমার পুত্রের জনা ঈশ্বরের নিকট প্রথেনা করুন, যাহাতে তিনি তাহাকে পাপ হইতে উদ্ধার করেন।" প্রতি রবিবার প্রার্থনা করিয়া করিয়া অবশেষে বিরক্ত হইয়া এক রবিবার আচার্য্য মনিকাকে বলিলেন,—"হে ভজে ! তুমি গৃহে গাও , যেসন্তানের জন্ত এত অঞ পড়িতেছে সে মারবে না।" সেহ ধশাপরারণা মাতা পুলের জন্ত নিরন্তর প্রার্থনা করিতে লাগিলেন; পুলের প্রাত্ত প্রেম ও তাহার জ্বল্ল বাকুণতা হৃদয় হইতে নিকাণ হইতে দিলেন না; কিন্ত চুৰ্কৃত পুত্ৰ তাঁহার এই অক্লাত্রম প্রেম একবার চাহিয়াও দেখিল না; তাহার অশ্রর প্রতি অদ্ধ এবং আর্দ্তনার্দের প্রতি বধির হইয়া রহিল। এরপে কন্তকাল কাটিয়া গেল; পরে মাভার প্রার্থনা পূর্ণ হইল। কেবল এই সাধুর জীবনেই যে এইরূপ ঘটনা ঘটিয়াছিল ভাচা নছে। আমোদিগের জনক জননী আমাদিগকে যে লেহ কবেন ভালা কি আমানা সকল সময়ে অফুভব করিং আমাদের মঞ্জ-উদ্দেশে কত অমুষ্ঠান করেন তাহা কি শ্বরণ করি ? এ জগতে কত প্রেমের মধ্যে বাস করিতেছি তাহা আমেরা অনেক সময় ভূলিয়া থাকি। ধেমন শিশু রেজ্কু-নির্মিত দোলায় শরান থাকে, চারিদিক হইতে রজজু আসিলা শিশুকে ধারণ করিয়া থাকে, তেমনি আমরা এ জগতে যেন প্রেমের দোলায় রহিয়াছি, কত দিক হইতে কও প্রেম আসিরা আমাদিগকে ধরিয়াছে! যাহারা পাপাচারী তাহারাও প্রেম হইতে সুস্পুর্ণ বঞ্চিত হয় না। এক টুচিন্তা করিলে দেখিতে পাইবে এরপ পাপী অৱই আছে, যাহাকে কাহার না কাহারও থেম আলিজন করিয়া রহে নাই। এই প্রেম অফ্রাতদারে এবং জ্ঞাতসারে সকানাই আমাদিগকে আলিখন করিতেছে, আমরা কত সময়ে তাহা দেখি না; এবং অফ্ভব করিতেও পারি না।

কীশর এই একটা নিয়ম আধ্যাত্মিক জগতে রাখিয়াছেন, যে তেনার ক্রনয়ে ইদি প্রেম থাকে তবেই তুমি অপ্যয়ের ত্রেমকে দেখিবে ও সেই প্রেম তোমার ক্রদরে কাজ করিবে। তোমার জননী তোমার জন্ত দিন রাত্মি ক্রেলন

করিভেচেন, কিন্ত ভূমি ভাহা দেখিছে পাওমা কারণ তোমার, জলরে প্রেম নাই। বে দিন তোমার প্রেমচকু ফুটিবে, সেই দিন জ্বুনীর প্রেমের গাঢ়ভা অহুভব ক্রিতে পারিবে; ভোমার হাদয়ে সে প্রেমের শক্তি আসিবে। কোম मा शंकित (श्रम का ना यात्र ना; धवः (श्रम क्रानित्न हे (श्रामत्र मक्ति कत्राय उपिष्ठिक क्या। এই नियम यनि क्रमयक्तम कति, ভবেই ঈশরকে নিরাকরণ করার অর্থন্ত ব্রিতে পারিব। ইহা কবিছ নয়, কল্পনা নয়, ইহা অতি সত্য কথা। তাঁহার প্রেম নিরস্তর অবিচলিত ভাবে প্রবাহিত হইতেছে। সেই স্থনস্ত প্রেম দর্মদাই আমাদিগকে আলিক্সন করিরা আছে; আমরা দেই প্রেমের কার্যা দেখি না এবং তাহা অমুভব করি না। এই জ্বসুই তাঁহরে শক্তি আমাদের হৃদয়ে কাজ করেনা। यथम स्मेषदतत कुला अवः ८शम कामारमत कमरत अवास्छि इटेग्रा व्यामारत्व कत्रारकं उन्नड, मिष्ठे ७ पुर करत, उथनहे আমরা ব্ঝিতে পারি যে ঈশ্বব সদরে সলিহিত রহিয়াছেন। আর যথন সেই প্রেম'দেখি না, তাহা ভূলিয়া বাই এবং দে জন্ম ঠাহার উপরে নির্ভর করিতে পারি না, তথনই আমরা বলি "ঈশ্বরকে নিরাকরণ করিয়াছি অর্থাৎ সদয় हहेट डीहाटक पृद्ध ब्राधिबाहि।" डीहांत्र मंकि मर्वापाहै আমাদিগকে পরাজয় কবিতে উলাপ। যথন আমরা তাঁহার ্প্রম ও করুণার উপর নির্ভর করি তথনই তাঁচাকে চদয়ের অতি নিকটে দেখিতে পাই: আর তাহা না হইলেই আমরা তাঁহাকে নিরাকরণ করি।

এই ভাবে আমরা কতবার যে ঈশারকে নিরাকরণ করি তালা বলিতে পারি না। সংসারে ছই প্রাকৃতির লোক দেখি, কেচ কেহ সম্পাদে এবং স্থাবের অবস্থার ঈশারকে 'শারণ করে, কিন্তু বিপদে ও ছংথে বা প্রতিকৃশ অবস্থাতে পড়িলে তালারা ঈশারের মঙ্গল স্বন্ধার কথা ভুলিয়া যায়; অসাইছ্ কালয় ছংগে চঞ্চল হয়, তাঁহার প্রেম দেখিতে পায় না এবং তাঁহাকে নিরাকরণ করে। আবার কেহ কেহ বা স্থাবের অবস্থায় ঈশাবকে নিরাকরণ করে। সাবার জালা যন্ত্রণাও সকল প্রকার প্রতিকৃল অবস্থার মধ্যে বেশ ঈশারে জালা যন্ত্রণাও সকল প্রকার প্রতিকৃল অবস্থার মধ্যে বেশ ঈশারে নির্ভির রাণিয়া চলে; কিন্তু যেই স্থাবের অবস্থা আয়াসণ অমমি স্থানাভাতে ভুলিয়া গেল; স্থাবের মাদকতা শাক্তর গুণে তাঁহাকে নিরাকরণ করিল।

তৃতীয়তঃ, কেহ কেহ বা অংকার বশতঃ ঈশ্বরকে নিরাকরণ করে। ভলনের অহলার, দাধুতার অহলার, নিজে বড়ই জ্ঞানী পণ্ডিত, নিজের শক্তির উপরই নির্ভর এবং নিজের পায়ে সকাদা দণ্ডায়মান এই ভাবিষা বড়ই অহলার ! ইহারাও ঈশ্বরকে নিবাকরণ করে। তাঁহার উপর নির্ভর রাথে না। তাহাদের ভাবটা যেন এই প্রকার,—"সমুদাম ঘর যুড়িয়াই আমি, ঈশ্বর তুমি যাও তোমার জন্ম জায়গা নাই।" এইভাব ভক্তিলাভের বিরোধী, এ অবস্থায় ঈশ্বর নিরাক্তি হন। যেমন পিচ্কারীতে বায়ু পরিজ্ঞাক্ত স্থানটীই জল আসিয়া অধিকার করে, সেইরূপ অহমিকা-পরিত্যক্ত ক্ষমাকেই বিন্ধরণা পূণ্ করিয়। থাকে।

চতুর্থতঃ বিষয়াসক লোক নর্বাশেকা স্বায়কে নিয়াকরণ করে। বে স্বারের উপরে বিষয়কে ছান দেয় সে দীশাকক নিয়াকরণ করে। এরপ লোক তাঁহাকে সভ্য বলিয়া ব্রিতে পারে না; তাঁহার প্রতি নির্ভর করিতে পারে না; তাঁহার শক্তির অধীন হয় না।

এইরপে নানাপ্রকারে আমারা ঈশবকে নিরাকরণ করি। সময়ে সময়ে প্রবৃত্তির প্রবশতা বশতঃও ঈশ্বরকে নিরাকরণ করিয়া থাকি। মাতার প্রেম শিশুর প্রতি সর্বাদা অবিচলিত ভাবে প্রবাহিত। ক্রোধের ক্ষণিক উত্তেজনা বশত: সেই প্রেমের পণে বিদ্ন আসিলেও দেখিতে পাই স্থায়ী প্রেমের ব্যাঘাত হয় না; এবং পর মৃহুর্তেই আবার সম্ভানের প্রতি প্রেম প্রবাহিত হয়। পতি পত্নীর প্রেমে কত সময়ে বিরোধ উপশ্বিত হয়, কিন্তু স্থায়ী প্রেম প্রবাহ একেবারে বিশুষ্ **হটয়া যায় না: এইরূপ এদি দেখিতাম যে প্রবৃত্তির উত্তেজনা** व। मानिषक विकास वभठ: हेचेत्रक क्रिकिकारव नित्री-করণ করিলেও তাঁহার প্রতি আমাদের অবিচলিত প্রেম বর্জনান রহিয়াছে, তবে ছঃথিত হইতাম না। যদি দেখিতাম যে রোগ শয়ার পডিয়া ছট্ ফট্ করিতেছি বটে কিন্ত ঈশবের প্রতি প্রেম রহিয়াছে, নির্ভর রহিয়াছে। কভ সময়ে कछ সংকর করি এবং সেই সংকল ভগ্ন হইলে কাঁদি ৰটে, কিন্তু তাঁহার করুণার প্রতি অটল বিশ্বাস রভিরাছে, তাহা হইলে এত ছ:খিত হইতাম না। কিন্তু ছ:খের বিষয় এই ধে ঈশবের প্রতি আমাদের বিশাস ও নির্ভব স্থায়ী হয় না। মুখে বণি বটে 'তিনি খীবস্ত জাগ্রত দেবতা কিন্তু তাঁহার প্রতি সেরপ নির্ভর নাই। আমরা কি শরীর মন এবং আত্মার জন্ম তাঁহার প্রতি নিভর করি ? পদে পদে পদখলিত হইয়া এবং অন্ধকারে পড়িয়াও কি তাঁহাবই উপর নির্ভর করি 📍 বিশ্বাসী, প্রেমিক যিনি তিনি ঈশ্ববের সঙ্গে চির সন্ধি-কুত্তে বদ্ধ। "ঈশর আমাকে নিরাকরণ করেন নাই, আমিও তাঁহাকে নিরাকরণ করিব না; তাহার সঙ্গে আমার divorce যেন হয় না। এই সন্ধি-পত্ৰ জনোর মত লিখিয়া দিতেছি।" এই বলিয়া সাধু প্রেমিক ব্যক্তি তাহার চরণে জন্মেব মত পড়িয়া থাকেন। ঈশ্বর করুণা করুন যেন এই ভাবে তাঁহাকে আমরা ধবিতে পারি, তাঁহাকে খেন কথনও নিরাকরণ না করি।

শ্রীশান্ প্রকাশচন্দ্র বহার দীক্ষা উপলক্ষে শ্রীমমাহর্ষি
দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর মহাশয়ের উপদেশ।
(প্রাপ্ত)

শ্রীমান্ প্রকাশচক্র, আজ তোমার বড় ভাগ্যোদর, বড় সৌভাগ্যের দিন। তুমি এই শুভদিনে, শুভমুহুর্তে ঈশ্বরের প্রার জন্ত দীক্ষিত হইতেছে। তুমি তোমার সমন্ত জীবনকাল— যতদিন জীবিত থাক, ঈশ্বরের প্রা আর্চনা করিবে। যাইজ্জীবন ভার সভাধশ্যের অনুসর্গ করিবে, তাহা হইলে এই সংসারে ভোমার কল্যাণ হইবে ও অন্তে মৃক্তিলাভ করিবে। সমন্ত জাবন সর্বালা ছদরে এইটা ধারণ করিবে— এক্ষ বা একমিদমগ্র

षानौर नाजरिककिनानौर। এই बनर পূর্বে किছুই ছিল ना একমাত্র পরতক্ষই বিরাজিত ছিলেন। জগৎ প্রকাশ করিরা এখন তিনি ইহার অন্তর্গামিরূপে সর্ব্যত্ত সর্ব্যাপী হইরা রহিয়া-**(इन) এই मर्क्स अही मर्क्क गामी भन्न अस्कार काम कि?** छाएन निजाः कानमनसः निवः चज्रः निववत्रवायानाविजीतः नर्ववाानि न प्रनिषञ्च नर्त्वा अत्र नर्त्व विष् नर्त्व मिक्रम अवः পূर्व म अवि । পাৰ্বত্ৰিক মঙ্গল হয়। একন্ত তলৈবোপাসনয়া পারত্ৰিকমৈ-হিকঞ্ শুভম্ভবতি। তাঁহার উপাসনার প্রকার কি ৭ তামিন প্রীতিত্তস্ত প্রিয়কার্য সাধনঞ্চ ভতুপাসনমেব। তাঁহাকে প্রীতি কর এবং তাঁহার আদেশাসুসারে তাঁহার প্রিয়কার্য্য স্কল गाधन कत्र मर्काका ठाँहावहे डेलामनाट एमश्यन क नियुक्त রাথ। ব্রাহ্মধর্মের বীজ এই। এই বীজে চিরকাল বিখাস কব, নির্ভর কর এবং জীবনাবধি তাঁর উপাসনা কর। ত্রাক্ষ-ধর্ম অপৌত্তলিক ধর্ম, একমাত্র পরত্রন্ধেরই উপাসনা কর, কোন জলনা কলনার ভিতরে যাইও না। কেবলমাত তিনি নিভাসতা। তাঁহাকে ছাডিয়া তাঁহার সৃষ্ট কোন বস্তুরই উপাসনা কবিবে না। জগতের পশু, পক্ষী কিম্বা কোন बाक्ष्यक क्रेबंब विनिशं छेशामना कविश्वना। क्रिक्ट किह् वा চন্দ্র, স্থা, কালী, শক্তি প্রভৃতির উপাসনা কবিয়া থাকে, কিন্তু **छाहा कथनहे अधारत उपामना नहा। ब्राह्मत उपामनाहे** প্রকৃত উপাসনা। তাঁহাকে জ্ঞানে প্রদর্শন করিয়া,আয়ার আ্যা প্রমাত্মা জানিয়া উপাসন। করিবে। বাগ ষজ্ঞ হোম পুষ্পচন্দনাদি ছারা তাঁহার উপাসনা হয় না: (कर्वन झप्रायत ভক্তিবারাই তাঁর উপাসনা হয়। এইরূপ প্রেমভক্তি বারা তাঁহার উপাসনা করাই আক্ষধর্মের পূর্ণ লক্ষণ। অবেটা সর্বভূতানাং মৈত্র: করুণএবচ:। যে কাহারও প্রতি দ্বেষ করে না, নির্বি-শেষে সকলের প্রতি যার করুণা ও মৈত্রভাব, সেই ব্রাহ্মধর্মের সম্পূর্ণতা প্রাপ্ত হইয়াছে। ঈশ্বর সকলেরই স্থল্বং, তিনি স্ক্লের স্থা, প্রভু, নির্দ্ধা, ঈশান ও আল্রয় তাঁহাকে জীবন-পথের আদর্শ করিয়া, উহোর প্রেম ও মঙ্গলের ভাব অসুকরণ করিয়া যে সকলকে প্রীতি করিতে পারে, সকলের क्लागिनाधन क्तिए भारत, (महे श्राकुछ बाह्य। धहे चामर्गहे शृर्व चामर्ग । এই चामण श्रह्म कत्रिया मः माद्र धर्ममाधन कत्र তোমার কল্যাণ ও জগতের কল্যাণ হইবে। সর্বাদা সৎকার্য্যে नियुक्त थाकित्व এवः अप्रश्कार्या इहेट्ड विव्रष्ठ थाकित्व। যদি কথন মোহ বশতঃ কোন পাপাচরণ কর, তবে অফুডপ্ত জদরে ঈশবের শরণাপর হইবে এবং "আর এরপ কর্ম করিব না" ব্লিয়া ক্রন্সন করিবে, তাঁহার করণা ভিক্ষা করিবে; তিনি ट्यामारक कमा कतिरान: भाभ-छात्र इटेट मुक्त कतिरान। সম্ভর্তিতে প্রার্থনা করিলে, প্রভিত্পাবন প্রমেশ্বর ক্ষ্মা করেন। এই বলিরা ভাঁহার নিকট প্রার্থনা করিও-- "পাপে मिन हरत्र कांत्र कारह कांत्रिव, कुला कत्र एक कुलानियान।" পরিত্রাণ কেবল মাত্র তাঁর কাছেই পাওরা ধার। ভিনি ধর্মের বে আদেশ করিয়াছেন তাহা পঞ্চন করিয়া দোব করিলে আর ८क्ट्डे পরিতাণ করিতে পারে না। এই সংশারে বিপদের

শ্বর মাত্র্ব মাত্র্বকে রক্ষা করিতেও পারে, কিন্তু পাপভাপেশতিত সমুব্যকে একমাত্র ঈশ্বর ভিন্ন আর কেইই পরিত্রাপ করিতে পারে না। তিনি ধর্মাবহ ও পাপছদ; তিনি ধর্ম প্রেরণ করেন এবং তাঁহার প্রেরিত ধর্মাবশন্ধনকারীকে সংশোধন করিরা তাঁহার দিকে আনর্যন করেন। করিত উপাসনাতে কিন্তা গঙ্গামানাদিতে হুদরের পাপ দ্রীভূত হয় না; ঈশ্বরের শরণাপর হইয়া ক্ষমা প্রার্থনা করিলেই তিনি পাপ হইতে পরিত্রাণ করিবেন। পাপের জক্ত অক্তর্ত্তিম অমুশোচনাপূর্বক তাঁর নিকট দাঁড়াও, তিনি ক্ষমা করিবেন। যেরূপে এই ব্রাহ্মধর্মের উরতি করিতে পার সর্বাদা তাব চেষ্টা করিবে। অর্থ জারা, উপদেশ লারা যেরূপে পার, কর্থনও এই ধর্ম্মের উরতিসাধনের চেষ্টা করিতে অবহেলা করিবে না। এই উপদেশ গ্রহণ এবং এই প্রতিজ্ঞা কর যে এই উপদেশাস্থামী জীবন যাপন করিবে। এই বিষয়ে ঈশ্বরের ক্রপা প্রার্থনা কর।

## সাধারণ ব্রাহ্মসমাক্তের কার্য্যনির্ব্বাহক সভাব তৃতীয় ত্রৈমাসিক কার্য্যবিবরণ।

3498

(পূর্ব্ধ প্রকাশিতের পর।)

১৪ই জুলাই প্রাতে শ্রীযুক্ত উমেশচন্দ্র দত্ত বি, এ মহাশন্ধ বিলোগাদনা করেন। অপবাহে শ্রীযুক্ত ক্ষাক্ষমার মিত্র বি, এ ব্যাখা করেন ও সন্ধার সময় শ্রীযুক্ত হেরম্বচন্দ্র মৈত্র এম্, এ "ধর্মাচরণ কি সংসার ভ্যাগ ৭" বিষয়ে বক্তৃতা করেন। ১৫ই অপরাহ্ন ৪ঘটিকার সময় বার্ষিক সভার অধিবেশন হন্ন; ভাহাতে নিম্লিখিত কর্মাচারী নিযুক্ত হন—

সভাপতি—শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী এম্.এ। সহকারী সভাপতি—শ্রীযুক্ত ক্লফকুমার মিত্র বি.এ।

সুম্পাদক--- শ্রীষুক্ত যোগেক্তলাল থান্তগির বি.এ। সহকারী সম্পাদক--শ্রীযুক্ত রামচক্র চৌধুরী। শ্রীযুক্ত হরিহর বন্যোপাধ্যার বি.এ।

এ বংসর চাত্রসমাজ অনেকগুলি কার্য্যে হস্তার্পণ করিয়াছেন। ছাত্রসমাজকে করেকটা "অস্তর্মগুলী"তে বিভাগ করা
হইরাছে এবং প্রত্যেক বিভাগে "তত্ত্ববিধায়ক" নিযুক্ত করা
হইরাছে। (১) শুলুষা বিভাগ (১) নৈতিক বিভাগ
(০) চরিত্র-সংশোধনী বিভাগ (৪) দরিত্র ছাত্রদের সাহায্যাদান বিভাগ। এই বিভাগে একটা ছাত্রকে সাহায্য করা
হইরাছে। (৫) বিজ্ঞান আলোচনা বিভাগ; শ্রীযুক্ত
কার্যাশিচক্র বস্তু বি, এস্, সি, এ বিষয়ে বিশেষ সাহায্য
করিরাছেন।

নিয়লিথিত বক্তাগণ এই সমরের মধ্যে সংধারণ **রাক্ষসমাজ** মন্দিরে নিয়োক্ত বিবয়সমূহে বক্তৃতা করিয়াছেন।— বাবুকুক্ক্মার মিত্র বি,এ "ঈখর বিখাসের তিন্তি কি ৫" ৭**ই জুলাই** ১৮৯৫।

- ু কৃষ্ণকুমার মিত্র বি,এ ু হেরখচন্দ্র সৈত্র এবু,এ "ধর্মচিতণ কি সংসার ত্যাপ ?' ১৪ই ু
- ू बर्गक्रवांच हर्षे भाषात्र "कड् ७ व वादा" २०१५ ू

- ু নবৰীপচ<u>ল</u> দাস "বিদ্যাসাগরের মহজ্ব" ২৮শে জুলাই ১৮৯6
- ু, কৃককুমার মিত্র বি,এ, "বিদ্যাসাগরের মহত্ব" ৪ঠা আগষ্ট ু, কালীশঙ্কর স্থকুল এম্,এ "জাতীর উন্নতির মূলমন্ত" ১১ই ু
- " উমেশচন্দ্র বি,এ "প্রজ্ঞাও ইহার উৎকর্ষ সাধন" ২০শে " "
- , বিনরেন্দ্রনাথ সেন এম্,এ "ছাত্রজীবনের কার্য্য" ৮ই সেপ্টেম্বর "
- ,, নগেল্রনাথ চটোপাধাায় "সংখয় ও বিধাস" ১০ই ,, ,,
  বিগক্ত ২২শে সেপ্টেম্বর সায়াক্ত ৭ ঘটিকার সময় সিটা
  কলেজে ছাত্রসমাজের একটা "সামাজিক সন্মিলন" হয়।

#### আরা দাধনাশ্ম

বাবু শুরুদাস চক্রবর্ত্তী প্রধানতঃ আরায় থাকিয়া এই জিন মাস কার্যা করিয়াছেন। এই সময়ে আরা সহরে বিস্চিকা রোগের আবির্ভাব হওয়াতে উাহাকে বিশেষ পরিশ্রম করিয়া ঔষধ বিতরণ ও শুশ্রুষা করিতে হইয়াছে। এতদ্বিল্ল নিয়মিত ভাবে হোমি প্রণাথিক ঔষধ বিতরণও করিয়াছেন। ইভিমদো ডোমবাও, রক্সাব বাঁকীপুর, ভাগলপুর প্রভৃতি স্থানে গিয়া উপাসনাদি করিয়াছেন। ডোমরাওতে তিনি তিনবার গমন কবেন। ২৭শে সেপ্টেম্বর তারিথে রাজা রামমোহন রায়ের স্মবণার্থ এক সভায় বক্তৃতাদি করেন। কয়েকটী অন্তর্ভানে আচার্যোর কার্য্য করেন। শীযুক্ত প্রকাশ দেব এবং শীযুক্ত স্থলর সিংছ কোয়েটায় গমন কবিয়াছিলেন। ইহাদের কার্য্যের কোন বিবরণ পাওয়া ষায় নাই।

#### আরা দাধনাশ্রম।

<b>बा</b> र		-ব্যস্	
চাঁদা এবং এককালী	न	আশ্রমের ব্যয়	-   45
मान	25¢/	প্রকাশ দেব জিউর	পুত্রদিগের
আগন্তক প্রদত্ত আহ	াবাদির	জন্ত অৰ্থ পাঠান হয়	<b>৩৩</b> %•
বায়	٩	বাচীভাডা	96110
মফসবের বন্ধুদিগের	প্রদন্ত	ভূতাদিগের বেতন	<b>30</b> d16
পাথেয়	३२७४/•	বিবিধ	816
	-	আগন্তকদিগের আ	<b>शंत्रामित्र</b>
	088h/.	<b>ব</b> ≀য়	9/6
গত ত্রৈমাসিকের স্থি	ত :>	পাথেয় ব্যয়	55.4VO
,	<b>088</b> 4/>>		090W/22
		<b>হন্তে</b> শ্বিত	3/
			088h/:>

তুর্ভিক্ষ-সাধাবণ বাক্ষসমাজের পক্ষ হইতে বাবু হরি মোহন ঘোষাল জেলা ফরিদপুরের অস্তঃপাঁতী মাদারীপুর সবডিভিজনের অধীন মাদরা নামক স্থানে অবন্ধিতি করিয়া তৃতিক্ষ পীড়িভদিগকে সাহায্য করিতেছেন। প্রতি সপ্তাহে ৫০০ শত আন্দাজ লোককে প্রায় ২০/ মণ চাউল বিতরণ করিতেছেন। এতি দ্বিরাছেন, এক-জনকে নৌকা থরিদ করিয়া দিয়াছেন। অনেক লোককে নৃতন এবং পুরাতন বস্তু বিতরণ করিয়াছেন। অনেক রোগীকে হোমিওপ্যাথিক ঔষধ বিতরণ করিছেছেন। এই সময় মধ্যে ছর্জিক্ষ কতে ৯৬৮॥ ১৫ আয় এবং ৫২১ ৫ বার হইয়াছে।

লাই ত্রেরী—সম্রতি আমাদের করে কটা বন্ধর উদ্যোগে রাজা রাম্যেছন রারের নামে একটা লাইত্রেরী থোলা হইরাছে।
এই লাইত্রেরীর সম্পাদক ডাঃ মোহিনীমোহন বস্থর প্রার্থনামুসারে আমাদের লাইত্রেরীর পুত্তক সকল তাঁহার দারিছে
প্রদান করা হইরাছে। আবশুক হইলে আমরা এই পুত্তক
সকল ১ মাদের নোটিদ দিরা ফিরাইয়া আনিতে পারিব এইরপ
বন্দোবস্ত করা হইয়াছে।

ব্রাক্ষাদ্দ্রিলনী—এই তিন মাদের মধ্যে ইহার তিন বার অধিবেশন হইরাছিল। জুলাই মাদের প্রথম রবিবারে ডাঃ মোহিনীমোহন বস্থর বাড়ীতে ইহার প্রথম অধিবেশন হইরাছিল। আগপ্ত মাদে বেলছরিয়ায় বাবু স্থরেক্সনাথ দাস মহাশরের বাগানে ইহার দ্বিতীর অধিবেশন হর। স্থরেক্স বাবু নিজ হইতে এই সন্মিলনীর আহাবাদির বায় বহন করিয়াছেন। তাঁহাকে বিশেষ ধন্তবাদ দেওরা যাইতেছে। বিগত ২৭শে আগপ্ত তারিথ হইতে ১লা দেপ্টেম্বর তারিথ পর্যান্ত প্রভাহ সক্ষার সমন্ত সমাজ মন্দিরে বিশেষ উপাসনা হয় এবং ২বা দেপ্টেম্বর রবিবারে সমন্ত দিনবাাপী বিশেষ উৎসব হইয়াছিল।

দান—বাবুজগদীশচন্দ্র বহু মহাশয় তাঁহাব লগীয়ামাতার শ্রাদ্ধ উপলক্ষে সমাজের ভিল্ল ভিল্ল ফণ্ডেং০০ টাকা দান কবিয়া ছেন। শ্রীমতী জগৎলক্ষী ঘোষ তাঁহার স্বামী বাবু ভ্বন-মোচন ঘোষ মহাশয়ের শ্রাদ্ধোপলক্ষে সমাজের ভিল্ল ভিল্ল ফণ্ডে ৫৫০ টাকা দান করিয়াছেন। বাবু যত্নাথ ঘোষ মহাশয় তাঁহার স্বর্গীয়পিতা বাবু কালীচরণ ঘোষ মহাশয়েব শ্রাদ্ধ উপলক্ষে আমাদের ভিল্ল ফিডে ১০০ টাকা দান কবিয়াছেন।

তত্ত্বকৌমুদী ও ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জার—এই তিন মাস এই কাগজ ছইথানি নিয়মিত ভাবে প্রকাশিত হইয়াছে। কিন্তু হৃঃথের বিষয় এই যে ছই থানিরই আথিক অবস্থা ভাল নয়।

নূতন সমাজ—পুক্ৰিয়াতে একটা নূতন সমাজ প্ৰতি-টিত হইয়াছে।

নূতন সভ্য ও সহযোগী—এই তিন মাসের মধ্যে ছইজন নৃতন সভা ও ছইজন নৃতন সহযোগী মনোনিত ছইরাছেন।

অনুষ্ঠান—এই তিন মাদের মধ্যে ৮টা বিবাহ, ৬টা নামকরণ ও ১টা প্রাক্ত সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে।

মৃত্যু—এই তিন মাদের মধ্যে নিম্নলিখিত করেকটা সভ্যের মৃত্যু হইরাছে। মিঃ কারল হেমারগ্রেণ—১৮৮৬ সালে ইহার জন্মভূমি স্ইডেন দেশ হইতে আমাদের সমাজের সহিত্ত সহাস্থভূতি প্রকাশ করিয়া আমাদের সমাজের পভ্যু হন। বিগত বংসরের জুলাই মাসে এদেশে আসিয়াছিলেন। এখানে থাকিয়া "রামমোহন রার পৃস্তকালয়" সংস্থাপনার্থ বিশেষ পরিশ্রম করিতেছিলেন। বিগত ওরা জুলাই ভারিখে তিনি মৃত্যুম্থে পতিত হন। কোলগর নিবাসী আমাদের ভৃতপুর্ব সভাপতি পরলোকগত শিবচন্তা দেব মহা-

শরের পত্নী অধিক। দেবী বিগত জুলাই মাসে ইংলোক ত্যাগ করিয়।ছেন। বাবু ভ্বনমোহন ধ্বীষ মহাশয় অনেক-কাল হইতে বোগযন্ত্রণায় কট ভোগ করিতেছিলেন, তিনিও বিগত জুলাই মাসে মানবলীলা সম্বরণ করিয়াছেন। বাবু মোহিনীমোহন মজুমদার মহাশয় প্রায় মাসাবধি রোগ যন্ত্রণায় কট পাইয়া ইহলোক ত্যাগ করিয়াছেন। ভগবান পর্লোকে ইহাদিগকে শান্তিদান কর্মন।

সঙ্গত-সভা— এই তিন মাসের মধ্যে সঙ্গত সভার অধি-বেশন তিন দিব্দ স্থগিত ছিল। কারণ এই তিন দিনে আমাদের তিন অন ব্রাহ্মবন্ধুর মৃত্যু হইরাছে। ৮ দিবদ ইংার অধিবেশন হর। তাহাতে নিম্নলিখিত ৬টা বিষয়ে আলোচনা হইরাছিল। (১) ব্রাহ্মমাজে জমাট ভাব হয় না কেন ? এবং কি উপারে হইতে পারে ? (২) অসাম্প্রদায়িক ধর্ম্ম। (৩) গুরুর আবশুক্তা আছে কি না ? (৪) বালক বালিকাদের ধর্ম্ম দীক্ষা। (৫) স্কাবের পিয়কার্যা সাধন। (৬) পাবিবারিক উপাসনা।

ইহাব মধ্যে কোন বিষয়ে ছই দিন আলোচনা হইয়াছিল।
দাতব্য বিভাগ—এই ভিন মাস ৪টা অন্ধকে ১টা কুষ্ঠ
বোগীকে ১১টা ছাত্ৰকে ১টা ছাত্ৰীকে এবং ১৪টা পরিবারে ও
বিধবাকে অর্থ সাহায্য কবা হইয়াছে।

বিগত ৩ মাস মধো যাঁহাবা এই ফণ্ডে দান করিয়াছেন তাঁহাদিগকে বিশেষ ধন্ত বাদ দিতেছি।

#### অয়ে বায়ের হিসাব।

571		_থবচ	
এককালীন দান প্রাথি	<b>১</b> ৬৯॥०	মাসিক দ'ন	۲۶۰
বাৰ্ষিক দান প্ৰাপ্তি	224.	এককালীন দান	>00/0
মাসিক দান প্রাপ্তি ৮॥০		বিবিধ ব্যয়	110 :
অফুড়ান উপণকে দান	ŧ		
প্রাপ্তি	£3,		
-			<b>おきり/っ</b>
	\$ 95110	হস্তেষ্ঠিত	३८।४८
পূর্বকাবস্তিত ২	3011/-0		
_			৩৮৯/১৫
	१८८५७		

উপাদক মণ্ডলী—বিগত গ্রমাদ কলিকাভান্ত উপাদক মণ্ডলীয় কার্য্য নিগমিতকণে চলিয়াছে। ভ্রদ্ধাম্পদ শ্রীযুক্ত নবদ্বীপচন্দ্র দাস, শশিভূষণ বহা, নগেল্রনাথ চট্টোপাধ্যার, উমেশচন্দ্র দত্ত ও পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রা মহাশয়গণ উপাদনার কার্য্য করিয়াছেন।

#### व्याय दार्यत्र किमात्।

আয় —		বায় ————		
টাদা আদায়	৬১%	বেতন হিঃ		২৬৸৽
দান সংগ্ৰহ	٠ ل ۶	গ্যাদের আলো		≥8∥•
শ্ৰাদ্ধ উপৰক্ষে দান প্ৰ	गश्चि ७०५	শুদ্ৰ বায়	•	>9170
বিবাহ উপলক্ষে দান	a v	গক্তিত শোধ		>6/
				············
	22211-			<b>७७</b> १५०
পুৰ্কন্থিত	4426	হস্তেহিত		801/4
	>>6/1/2¢		•	)२७॥/ <b>&gt;</b> ८

নৃতন পুস্তক—চরিত-রত্বাবলী। জ্রীকাশীচক্র ঘোষাল প্রণীত। ২১০৬ নং কর্ণওয়ালিস্ স্তীট হইতে প্রকাশিত। মূল্য • আনা। এই পুস্তকে করমেতি বাই. সঙ্গমিত্রা, তপদ্বিনী রাবেয়া, কুকাগুরু রাম সিং, ওমর প্রভৃতি একাদশটা পুরুষ ও রম্ণীর ধর্মজীবনী সন্নিবেশিত আছে।

ব্রামাছাত্রীনিবাস ও শিক্ষালয়— ছাত্রী নিবাসের বর্ত্তমান ছাত্রী সংখ্যা ৩০। ইহার মধ্যে চুইটা অন্ত স্কুলে পাঠ করে। শিক্ষালয়ের ছাত্র ও ছাত্রী সংখ্যা ৭৮। বিগত তিন মাসের গড সংখ্যা ৭৭। একজন শিক্ষক ছুটী লইয়া যাওয়াতে আর একজন তাঁহাব প্তানে নিযক্ত হইয়াছেন।

আয় বায়ের হিগাব।

আয় —		-ব্যয় — ——	
(বভন	>>>and.	বোর্ডিংএব আগবা	<b>मित्र</b>
<b>हांगा ७ मान शांशि</b>	904K.C	থবচ '	@>911> ·
গাড়ী বিক্ৰী হি: প্ৰ	<b>াপি ৪</b> ০১	কর্মচাবীর বেভন	98343•
বিবিধ	, >, N/>0	গাড়ী	:02 h/e
<b>ध</b> रंत्र	> 0 0	বাড়ীভাড়া	362 <sub>1</sub>
	,	বিবিধ	a9/.c
	3, ८७७८	<b>धाव</b> ८णाध	801
পৃৰ্কস্থিত	₹ € \		
	· ·		269210
	३) ८५७:	হস্তে হিত	Shue
			), each

# আয় ব্যয়ের হিদাব।

•	সাধারণ ব	ক্ষিদম্ভি।	
আ্য ——		– ব্যশ্ন — — —	
সভা ও সহযোগিগ		প্ৰচাব বায়	86 9110 C
নিকট হইতে প্রাগ	व हामा २४०५	কর্মচাবীর বেতন	हिः १२॥•
বার্ষিক ১০৩		ডাকমাঙ্গ হিঃ	•′وق
মাসিক ১৪৬	0  0	বিবিধ হিঃ	>२०।
Whitehouse	<del></del>	মুদ্রাহ্বন হি:	8
প্রচারার্থ দান প্রা	म ८०१।५५६	পাথেয় হিঃ	43/
মাসিক ২১৫		উ:मा हिः	9
वार्षिक २৮॥४	٥4	কমিশ্ৰ হিঃ	>84%
এককালীন ১২৬	<b>D</b> •	প্রচারক গৃহ হি:	<b>₩/&gt;€</b>
-		. ছর্ভিক িঃ	e> 50/e
স্থায়ী প্রচার ফণ্ডের		নব্দীপ বৃত্তি	•
দানপ্রাপ্তি	•    6 • 6	भान	٤,
স্থদ হিঃ	90110	সিটি কলেজের প্রা	र छ
বিশ্ভিং ফণ্ড	11/30	রুত্তি দান	>> •/
ছডিক ি:	३५ <b>८॥</b> ७३६	স্থদ	>9110
নবদ্বীপর্জ্তি	>911% .	সৌদামিনী বুঙ্কি	>•
স্থায়ী উৎসব ফণ্ড	> • • <	হাওশাত ও গচিছত	;
সিটি কলেজ বৃত্তি	>2.	শোধ	৩১৩।•
হাওলাত ও গচিহ	ত ৩৮৭।		
বিবিধ হিঃ	>•/		> se ende
পাথেয় হিঃ	۰ ۵۹	<b>ন্থিত</b>	>>86110/>·
- >	२१७३॥৫	-	२४०२।/३६
গত ত্রৈমাসিকের স্থিত	80N/30		

26-21/36

	<b>दे</b> खियान	মেদেশার।	
আয়		– ব্যয় ——— —	-
<b>न्</b> नाथाथि	8.6/5.	কর্মচারীর বেতন	,44
বিজ্ঞাপন হি:	৩৮৻	মুক্তাকন	20.110
নগদ বিক্ৰয়	100	কাগজ	>01/>
वेविध	۵د/۱۱	ক মিশন	>0150
(াওলাত,	b.	ভাকমাশুল	>06H/>0
		বিবিধ	9150
	e२१d७e		
তে তৈমাসিকের বি	ইত ১৮/৫		8 <sup>५</sup> ७ ८६
		<b>ন্থিত</b>	bene'se
	652		
	•	•	८२ २८
[[¥ ———		- ব্যয়	
<b>নাপ্রাপ্তি</b>	• ८॥०५,६	কৰ্মচারীয় বেতন	७९
গেদ বিক্ৰয়	11 0	কাগজ	90 ()
		<b>मृ</b> जा <b>क</b> न	P 211 •
	• < 38 < 5	ক্মিশন	ە ، ھ د
ত মাদেব স্বিভ	> 81130	বিবিধ	<b>७</b> ; ●
		<b>ডাক্ষাভুল</b> ,	٥٥ مراء ده
	७३४॥/८		
			२१५, ०
		হিত "	) २२२।de
			०३४॥/६
	পুন্তক	ফণ্ড।	
	পুন্তক ,	মণ্ড।	

wig	***************************************	— ব্যর—————	
নগদ বিক্রেয় ২২২৮৮/১৫		অপরের পুস্তক বিক্রয়ের	
সমাজের ১	ه لوما و	মূলা শোধ	eends.
অপরের ৩	olle se	কর্মচারীর বেভন	२२॥०
		ডাক্মাভুল	b.4.
বাকী বিক্রয়ের	<b>মূল্য</b>	কমিশন	२२५०/७०
আদায়	, 50M·	বিৰিধ	110/20
ডাক্মাও্ল	• د اله	পুস্তক বাঁধাই	<b>a</b> \
ক্মিশন	<b>્</b> ર	হাওলাত দান	4.
		_	
	2044/•	2	> २ ००० २ ०
গত তৈমাদিবে	<b>ে</b> র	•িক্ত	२ <i>७७,</i> /৫
<b>ৰি</b> ত	১৬৯।এ॰		
			8२५। •
	8541•		

🧯 ভান্ধ মিসন্ প্রেস ।			
আয় — ত্বাপান ই কাগন ই কাগেৰ ই কাগেৰ বিভাগের দৰ্মণ হাওলাত ভ	ই গ্রাদির— ২২:৭ <i>১০</i> নিকট কাজের দমা ১২৪৪৮৮০	বার ————————————————————————————————————	9°\ 28&@ 9°\
		দপ্রী অংশ কমিশন গচ্ছিত শোধ নগদ কাগজ থরিদ কেজজ হাওার সন বে	
		হন্তেষ্ঠিত	৩১০/•

## ব্ৰাহ্মসমাজ।

প্রচার—সাধনাশ্রম হইতে প্রচারার্থ বাহারা পূর্ববঙ্গাভি-মুথে গমন করিয়াছেন, তাঁহাদের নিম্লিথিত কার্য্যবৈবরণ পাওয়া গিয়াছে।

২০এ নবেম্ব কৃষ্ণনগর A V কুল গৃহে অপবাহ্ন আড়াইটার
সময় বাবু কাশাচক্র ঘোষাল নীতি সম্বন্ধে একটি বক্তৃতা
করেন। ছাত্ত এবং শিক্ষকগণ উপস্থিত ছিলেন। ঐ দিবদ
রাত্তে উকীল বাবু প্রসন্মার বস্থ এম,এ বি,এল, মহাশনের
গৃহে স্থানীয় কয়েকজন উকীল মোকার নিমন্তিত হইরা
আগম করেন। কাশী বাবু সেম্বানে ধন্ম ব্যাথ্যা এবং সঙ্গাত্ত

২১এ নবেম্ব প্রাতঃকালে ক্ষণনগব কলেজের দশনাধ্যাপক বাবু শিবেন্দ্রনাথ গুপ্ত এম,এ, মহাশরেব বাসায় উপাসনা হয়, কাশী বাবু উপাসনাব কার্য্য করেন। অপবাহ্ন থেটিকার সময় গোয়াড়ি গোবিন্দ সড়ক স্কুল গৃহে একটি সভার অধিবেশন হয়। কলেজের অধ্যাপক এবং অনেক উকীল মোক্তার সেম্থানে আগমন করেন। কাশী বাবু "সাধনা ও সিদ্ধি" বিষয়ে তথায় একটি বক্তৃতা প্রদান করেন। তৎপর পূর্ব্বোক্ত শিবেন্দ্র বাবুব গৃহে ছানীয় ব্রাহ্মসমান্দের মেম্বরগণ এবং অভাত্ত কতিপ্র ভন্তপোক আগমন করেন। কাশী বাবু সেম্থানে উপাসনা করেন এবং ছটি সাধু জীবনের আখ্যারিকা ক্ষেব্রুঘন করিয়া উপদেশ দেন।

২২শে নবেম্বর অপন্নাহ্ণ ও ঘটিকার সময় ক্রফনগর কলেজ গৃহে কালী বাবু নীতি সম্বন্ধে একটি বক্তৃতা করেন। বক্তৃতা স্থলে কলেজের অনেক ছাত্র এবং শিক্ষকগণ উপস্থিত ছিলেন। ইংলিদের প্রোফেসার বাবু দেবেক্সনাথ বস্থ প্রুম্. এ, সভাপতির বার্যা কবিরাছিলেন। ঐ দিবস রাত্রে কলেজিয়েট স্থলের সেকেণ্ড মান্টাব জগৎ বাবুর গৃহে স্থানীর ব্রাহ্মসমাজের মেম্বর-গণ আগমন করেন। কাশী বাবু সেম্বানে উপাসনা করেন এবং উপদেশ দেন।

২০শে নবেম্বর অপাক্ত ৫টার সময় কৃষ্ণনগর ব্রাক্ষসমাজ গকে একটি সভায় অধিবেশন হয়। কাশী বাবু "ধর্ম ও ধার্মিকত।" বিষয়ে একটি কক্তা করেন।

শুদ্ধি—গত ১৭ই নবেশ্বর শনিবার আমাদের পরলোক-গত বন্ধু বাবু ক্ষেত্রমোহন মুখোপাধ্যায়ের বার্ষিক প্রাদ্ধ সম্পন্ন হটরাছে। এই উপলক্ষে তাঁহার বিধবা পত্নী সাধারণ ব্রাহ্ম-সমাজের প্রচার ফণ্ডে ৩ এবং সাধনাপ্রমে ৩ দান করিয়া-ছেন।

সাধনাশুম— আন্ধরদ্গণের স্বতঃ প্রবৃত্ত দানের দারাই
সাধনাশ্রম চলিতেছে। পূর্ব্বে মাদে একবার কলিকাতাতে
বাজীতে বাজীতে ভিক্ষা করা হইত। বহুদিন হইল ভাষার
রহিত করা হইয়াছে। অনেকে জিজ্ঞাদা করিয়া থাকেন,
কিপ্রকারে সাধনাশ্রমের বায় নির্বাহ হয়। য়াহাদের উপরে
ইহার কার্যাভার আছে, তাঁহারাও ভাষা জানেন না। জগদীশব
ইহার বায় একপ্রকার চালাইয়া দিতেছেন। বিগত মাদে স্বতঃ
প্রবৃত্ত দানদাবা ৫৪/০ পাওয়া গিয়াছে।

সম্প্রতি সাধনাশ্রম হইতে ছই দল ছইদিকে প্রচারাথে বিহিপ্ত হটয়াছেন। শ্রীযুক্ত বাবু হরিমোহন ঘোষাল ও শ্রীযুক্ত বাবু ক্ঞালাল ঘোষ, গাঁটুবা, বনগাঁ, যশোহর, বাগেরহাট হইয়া ববিশালের অভিমুখে যাত্রা কবিয়াছেন। অপর দলে শ্রীযুক্ত বাবু কাশীচন্দ্র ঘোষাল ও শ্রীযুক্ত বাবু অমৃতলাল গুপু আছেন, ভাহাবা ক্ষণনগর, কুন্তিয়া প্রভৃতি স্থান হইয়া ঢাকা ময়মনসিংহ প্রভৃতি স্থানের অভিমুখে গমন করিয়াছেন। জগদীশ্বর ইহাদের কুদ্র চেষ্টাব সহায় হউন।

দীক্ষা— কিছুদিন হইল ভক্তিভাজন মহর্ষি দেবেজ্ঞনাথ ঠাকুব মহাশর আমাদের মঞ্জিলপুর নিবাসী আহ্মবন্ধু শ্রীযুক্ত হরনাথ বন্ধ মহাশয়ের পুত্র শ্রীমান্ প্রকাশচন্দ্র বন্ধকে আহ্মধর্মে দ্বীক্ষিত করিয়াছেন। মহর্ষি মহাশয় ভত্তপলক্ষে যে উপদেশ দিয়াছিলেন, তাহা স্থানাস্তরে মুদ্রিত করা গেল।

মুত্যু— আমবা ভানিরা ছংখিত হইলাম যে আমাদের বন্ধুবাবুরামলাল সাহা গত ৩রা অগ্রহারণ অকালে মানবলীলা সম্বর্করিয়াছেন। আক্ষাধর্মের প্রতি ইহার বিশেষ অন্ত্রাগ চিল্

আমাদিগের প্রাক্ষের বন্ধু প্রাচীন রাক্ষ সোলাকুডা নিবাসী দারকানাথ ঘোষ মহাশর দীর্ঘকাল ব্যাপী অবর ও উদরাময়, রোগ ভোগ করিয়া বিগত ১১ই অগ্রহায়ণ বেলা অমুমান ১ ঘটকার সমরে মানবলীলা সম্বরণ করিয়াছেন। ত্রাক্ষধর্মের প্রতি ইহারও বিশেষ অমুরাগ ছিল।

দান কৃতকার সহিত স্বীকার করা ঘাইতেছে যে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের দাতব্য বিভাগের জন্ত নিম্নলিখিত দান পাওয়া গিয়াছে। ত্রীযুক্ত রাজা বনবিহারী কপুর, বর্মনান ১০১ ত্রীযুক্ত বাবু রজনীনাণ রারের পত্নী, ভবানীপুর ২০১,

প্রোফেসার নিউম্যানের নাম ব্রাহ্মদাধারণের নিকট স্থারিচিত্ত। ৩০ বৎসর পূর্বেই ইহার এবং থিওডোর পার্কারের
চরণে বিদিরা আমরা ধর্ম্মের অনেক তত্ব শিক্ষা করিয়াছি।
ইহার প্রণীত soul ও Theism; নামক গ্রন্থন্তর পাঠ করিয়া
আনেক ব্রাহ্ম ব্রাহ্মিকা উপকৃত হইয়া থাকিবেন। ইনি এখনও
জীবিত রহিয়াছেন। ইহার বয়:ক্রম প্রায়স নবতি বৎসর
হইয়াছে, তথাপি কার্য্য করিবার শক্তি যায় নাই। এখনও
ব্রাহ্মসমাজেব কলাাণচিন্তা হইতে বিবত হন নাই। ইনি
সম্প্রতি ৪ পাউও ৭১০০ পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রীর নিকট প্রেরণ
করিয়া তাহাব তই পাউও ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যে ও ত্ই পাউও
ব্রাহ্মগরের শ্রীফ্রুক বাবু শশিপদ বন্দ্যোপাধ্যারের বিধবাশ্রমেব সাহায্যার্থ বায় করিতে আদেশ করিয়াছেন। ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যেব সাহার্য্যার্থ প্রেরিত ত্ই পাউও সাধনাশ্রমে
দান করা হইয়াছে।

এবার মান্দ্রাজ সহবে জাতীয় মহাস্মিতির অধিবেশন হইবে। তত্পলক্ষে সেথানে অনেক রান্ধের সমাগম হইবার সম্ভাবনা। সে সময়ে যাহাতে রান্ধিগের একটী সন্ধিলনী (Conference) হইতে পারে, সেজন্ত মান্দ্রাজ-রান্ধ্যমাজের সভাগণ চেষ্টা করিতেছেন। এজন্ত তাহাবা ভিন্ন ভিন্ন সমাজে নিমন্ত্রণপত্র প্রেরণ কবিয়াছেন। আশা করি তাঁহাদের মনোর্থ পূর্ণ হইবে।

### প্রাপ্তি স্বীকার।

ক্লতজ্ঞতার সহিত ফরিদপুবের হুর্ভিক্ষ নিবারণার্থ নিমলিধিত দানপ্রাপ্তি সীকার করা যাইতেছে।

निश्चारि प्रकार करा गार्टिए है।	
বাবু বৈকুণ্ঠ চন্দ্ৰ আচাৰ্য্য (নৰ্মাণ স্কুল ঢাকা)	কৰ্ত্ত
ংগৃহীত	*
" जितिक्त होधूती मारेग्राःगाः	4
,, ভারদিয়াল সিংহ কুমিলা	21
,, নবীন ক্লফ ভপ্ত মুশিদাবাদ	e,
,, ভগৰতী চরণ পাল লাংলে -	٦٠,
" অধরচন্দ্রমজুমদার কলিকাতা	1•
,, নবীনচক্ৰমিত্ৰ . ঐ	>
,, রজনীকান্ত নিয়োগী ঐ	3
,, উপেক্স নারায়ণ নিয়োগী সাক্রাইল	ø •
,, উপেক্র নাথ রায় সৈয়দপুর	*
,, গিরিশচক্র দত্ত শিবসাগর	37
,, মুদ্ধের হইতে বাবু চণ্ডীচরণ সিংহ সংগ্রহ	,
ক্রিরা পাঠনে	301
,, বাবুভুবন মোহন কর দিনালপুর	> h •
,, বাধু দেবী প্রসম রায় চৌধুরী ফরিদপুর	·
স্থান ক্রার সম্পাদক	6.
,, কোন ভদ্রলোকের নিকট হইতে হরিমোহন	- (
• বাবু প্রাপ্ত•হন	1.
" শ্ৰীমতী প্ৰভাবতী দাস কলিকাতা	١,٠
" वाव् विभिन विहाती तात्र माणिकमह	<b>&gt;•</b> \
	• \
্, কারণপুর ২২০৩ এট্কোবিনর কুমারা চক্রবস্তা কর্তৃক কোন ভদ্র মালিলা হইতে সংগ্রহ করেন	٧٠,
AZO WAITA BĂTE ANO BER	
,, ध्यार जञ्ज रूर्ट छ ध्यान्त रून	1.

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

>७म मःथा।.

১৭শ ভাগ।

১লা পোষ শনিবার, ১৮১৬ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২৪০ সফরলে . ৩. প্রতি থাওের মূল্য 🗸 ০

#### প্রার্থনা।

হে কুপাসিকু! আষরা আবার, মহোৎসবের ছারে সম্-পদ্বিত হইতেছি। স্থথে ছাথে, আশা নিরাশাতে, সম্বংসর অতীত-প্রায়। বংসর যত শেব হইতেছে, ভভই খনবিধাদে चामारमत्र मन चाह्न हरेरछहि। वरमस्त्रत खात्रस्य रा मकन সংকল করিয়াছিলাম, ভাহার কতই অপূর্ণ রহিল ৮ হে পিতা আষরা যে নিরস্তর আপনাদের মূর্বলতা অমূভব করিতেছি। সর্বাদাই আমাদের কার্য্য, আমাদের আকাজ্ঞা অপেকা অনেক নিমে পড়িয়া থাকিতেছে। সেই লজ্জার আমরা অভিভৃত এক একবার মনে হয়, এরপ ছর্কাণ হইয়া পড়িতেচি। বাক্তিগৰ তোমান্ন সভাধৰ্ম, এই মহৎ ও উদার ধর্ম সাধনের উপযুক্ত নহে। কিন্তু স্বল হই, ছর্মল হই, তোমার আশ্রয়ে থাকা ভিন্ন আমাদের অক্ত গতি আন্ন কি আছে ? তোমার দ্বারে ভিক্ষার্থী হইয়া উপক্তিত **হওয়া ব্যতীত অন্ত উ**পায় আর কি আছে? তাই আমর। ছর্কল হইরাও তোফার চরণে উপনীত হইতেছি। মহোৎসবের খারের সন্নিহিত হইয়া তোমার দিকে দৃষ্টিপাত করিতেছি। ভূমি আমাদের হৃদরে নববল ও নব সংকল্প প্রেরণ কর।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

সব থাকিতে বঞ্চিত—বিগত শতালীর শেষভাগে ফরাসি দেশের দহিত স্পেন দেশবাসিদিগের যথন যুদ্ধ হয়, তথন একটা মহা সত্যের প্রমাণ পাওয়া গিয়াছিল। স্পেন বাসিদিগের সাহস সমরোৎসাহ ও ফরাসিবিবেষের কিছু অপ্রতুল ছিল না। অনিক্ষিত সৈ্তাদ্য় এবং উপযুক্ত সেনাপতিগণেরও অভাব ছিল না। তথাপি স্পেন ফরাসিদিগের নিকট পরাজিত হইয়া গেল। ইহার একটা প্রধান কারণ এই স্পেনের সেনাপতিগণ পরস্পরের সহিত এক পরামশে কাজ করিতে পারিলেন না। প্রত্যেকেই স্থ প্রধান হইবার চেটা করিতে লাগিলেন। কেহই আপনার মত বা স্বাধীনতাকে বিন্মাত্র সংকোচ করিতে চাহিলেন না। বুথা বিবাদে অনেক সমর পর্যাবসিত হইয়া যাইতে লাগিল, কি প্রণালীতে যুদ্ধ

চলিবে সে বিষয়ের নিদ্ধারণ করা কঠিন হইল। ওদিকে শক্রগণ একাগ্রতার সহিত অগ্রসর হইতে লাগিল। কাজেই ম্পেন বল থাকিয়াও একতার অভাবে চুর্বল হইয়া পড়িল, সৰ থাকিতে বঞ্চিত হইল। এ সংসারে জন-সমাজের কার্যা ছই প্রকারে চলিতে দেখা যায়। প্রথম কোনও প্রতিভাশালী अ मिकिमानी कार्यापक निर्हात कारीन हरेया लाटक कार्या করে। যেমন নেপোলিয়ানের অধীনে থাকিয়া ফরাসিগ্র যুদ্ধ করিরাছিল। দিতীয়, যাহাদের মধ্যে এক্লপ প্রতিভাশালী ও সর্বজনের পৃজিত নেতা নাই, তাহারা দশজনে প্রামর্শ कतियां कार्या करता हेशांक नियमञ्ज लागानी वन, चात माधात्रण जन्न भागोहे तन, विषय्गी अक । किन्न याहारमञ्ज मरधा সর্বাদ্যর পুৰিত প্রতিভাশালী নেতাও নাই, এবং যাহারা দশব্দনে পরামর্শ করিয়াও কাজ করিতে পারে না, তাহাদের ৰারা কোনও কাজ হওয়া কঠিন হয়। অনেক চিস্তাশীল লৈকে বলিয়াপাকেন এ দেশবাসিদিগের পকে দশজনে মিলিয়া মিশিয়া পরামর্শ করিয়া কার্য্য করিবার সময় এখনও আসে নাই। বহু বহু শতাব্দী ধরিয়া যাহারা সর্ববিধ প্রভূ-শক্তির মধ্যে বাস করিয়াছে, গৃহে, পরিবারে, সমাজে, ধর্মক্ষেত্রে, রাজনীতিকে যাহারা অপরের আদেশে উঠিয়াছে ব্দিরাছে, তাহাবা কি हेक्का कतिरमहे चाधीनजारत ও निषमजरत्त्र व्यधीन हरेबा नमझरन মিলিয়া কাজ করিতে পাবে ধর্মে গুরু, সমাজে কন্তা, ও রাজনীতিতে রাজা, এই নিয়ম এখনও অনেক দিন ইহাদের পক্ষে চাই। আমরা মনে করি ব্রাহ্মসমাজ আধ্যাত্মিক স্বাধীনতার জন্মদাতা: এথানে মানব-বিবেকেব আদর; অভএব ত্রাহ্মগণ এ দেশবাসিদিগকে দশব্দনে মিশিরা কাজ করিবার দৃষ্টাস্ত প্রদর্শন করিবেন। কিন্তু এথনও আহ্মগণ হুচারুরূপে সে দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিতে পারিতেছেন না। এক দিকে हेड्रामित कात्रक अक्र ७ कर्छ। ना धतिर माँ ए। हेर्ड भातिर उर्हन ना: व्यन्त्र पिरक व्यन्तरक प्रमद्धन मिनिया. काक করিতেও পারিতেছেন না; উপরি উল্লিখিত স্পেন দেশীয় সেনাপতিদিগের স্থায় পরস্পার বিচ্ছিন্ন হইরা আপনা-দিগকে ছবল করিয়া ফেলিভেছেন; সৰ থাকিভে বঞ্চিত र्रेएएइन ।

গুরু ও বিচার-ক্ষমতা--উৎকৃষ্ট গুরুর উপদেশই যে এक माज व्यवन्यन नरह अवः चकीत्र विरवहना ও विहात्र में जिन উৎকৃষ্টতারও যে বিশেষ প্রয়োজন আছে, ভাছার দৃষ্টাত্ত স্বরূপ মহাভারতের অখনেধ পর্কের ষড়বিংশ অধ্যার হইতে করেক পঁক্তি নিমে উদ্ভ হইল। যাহারা উৎকণ্ণ গুৰু লাভ হইলেই সিদ্ধকাম হইলেন এরূপ মনে করেন, তাঁহারা এই উদ্ভ অংশ পাঠ বারা সহজেই অফুভব করিতে পারিবেন ধ্ব, বেষম উৎক্ট উপদেষ্টার প্রয়েজন, তেমনি উপদিষ্টেরও সেই উপদেশের অর্থ এছণ করিবার শক্তি থাকা আবশ্যক। বিচাবশক্তি, বা উত্তম অর্থবোধশক্তি না থাকিলে কেবল গুরু কথনই কাহারও পরিত্রণের উপায় করিয়া দিতে পারেন না। মহাভারতে উক্ত হইরাছে—"পর্গ ও দেব্যিগণ প্রজাপতির নিকটে যাহা किशाहितन, পণ্ডিতেরা এই হলে সেই সংবাদ সংবলিত এই পুরাতন ইতিহাস কীর্ত্তন করিয়া থাকেন। দেবতা, ঋষি, নাগ ও অহুর সকলেই প্রজাপতির নিকট গমন পূর্ধক সমাসীম हरेब्रा छांशांटक कहिलान (य, 'छत्रवन्! आमांपिरंगत्र याहार्ड শ্রের হয়, আপনি আমাদিগকে তাহা বলুন।' ভগবান ध्यकां পতि कूमन किछान् (महे आपि एपत अन्न मकन एके कश्लिन (४, ७ँकात चत्रभ अकाकत उक्तरे अक्साब (अर्थ) তাহারা এই কথা গুনিয়া নানাদিকে প্লায়ন করিল। ভ্রদীয় উপদেশ ওঁকারাত্মক একাক্ষর ব্রহ্মের প্রাকৃত অর্থ গ্রহণে অসমর্থ হইয়া প্ৰার্মান সেই আদি দেব অন্তর স্কলের মধ্যে প্রথমতঃ मर्भ मक्न उंकात डेकातरा निस मूर्यत्र डेग्रीनम ७ निमीनन হওয়ায় স্বীয় স্বভাৰজ মুখোন্মীলন-সাধ্য দংশনই শ্ৰেয়, ইছা विटवहना कब्रङ: मः भन विषय अवृद्ध इहेग । भरत्र मामवनग उँकाव छेक्रातरण उछ ठालन र अत्रात्र मञ्जरे (अत्रः देश वित्वहर्मा করিয়া স্বভাবজ দন্তভাব, দেবতাগণ ওঁকারের অর্থ প্রার্থিত বস্তুর স্বীকার এইরূপ অবগত হুইরা দাদব্যবদায় এবং সৃত্রি সকল ওঁকার উচ্চায়ণে ওচ প্রাকৃতির উপসংহার দর্শন করিয়া স্কাপ্রবৃত্তির উপসংহারার্ঘ দমই শ্রেষ ; ইহা বিবেচনা করত: मृ अवगद्यन क्रिलन। (क्रव, श्रवि, क्रामव अवः मर्श मक्रव একমাত্র গুরু লাভ করত: এক শব্দ দ্বারা উপদিষ্ট হইয়া নানা বাবসায়ে প্রবৃত হইল। শিষাগণ এই গুরুকে (যিনি হৃদয় মধ্যে বাস করেন) যাহা জিঞাসা করে ইনি ভাছা শিষ্য-গণকে अवन এবং यथाउथक्राप अङ्गक्तान विषया, हेनि ভিন্ন দ্বিতায় खक चात्र (कहरे विनामान नाहे।" এह অধ্যায়ের অন্যত্র লিখিত হটয়াছে যে, "যিলি জ্লীবগণের क्रमग्रम्(शा वाम करत्रम, स्मर्शे मात्रामण (मवरे এकमांख धक्र, তিনি ভিন্ন দিতীয় গুরু আবে কেইই নাই, আমি তাঁহারই বিষয় তোমাকে কহিতেছি।" মহাভারতের এই অংশে যাহা লিখিত হইয়াছে, তাহাদারা "ঈশ্রকেই প্রমণ্ডক জানিরা তাঁহারই.ইচ্ছামুসাবে চলিভে হইবে, ভাঁহার প্রদর্শিত পথেই চলিতে হইবে"; ত্রাহ্মগণের এই উক্তিরই সমর্থন হইভেছে। ব্ৰাহ্মগণের শুকুৰাদ সম্মীয় মতের ভিত্তি একমাত যুক্তির উপরেই নির্ভর করিভেছে এমন নয়। গুরুষাদের সর্কাপ্রধান সমর্থনকারীধর্মশাল্পেও তাহার উল্লেখ দেখা যাইতেছে।

প্রাচীন ও নবীন—জনসমাজের নিকট ছইটি প্রোভ বিদ্যমান রহিরাছে। একটি নবীন অপরটি প্রাচীন। বাঁহারা দবীনকে অরগন্ধন করিতেছেন, তাঁহারা বর্ত্তমান শভানীতে জন্মগ্রহণ করিরাও বহপূর্ব্ব শতালীতে বাস করিতেছেন। বর্ত্তমান উন্নত জ্ঞান বিজ্ঞানের সহিত তাঁহাদের কোনও সম্বন্ধ নাই। আমরা করেকটি দৃইাস্ত ব্রের্ট পরিকাররূপে ব্র্থাইতে চেষ্টা করিব।

বর্ত্তমান সময়ে রেল ও ষ্টামার প্রভৃতি হওরাতে গমনাগমনের অত্যন্ত স্বিধা হইয়াছে। কল কারথানা ইওয়াতে
অতি অর সমরের মধ্যে কাজ সম্পন্ন হইতেছে। যদি কেহ
এখন এ সকল ব্যবহার না করিয়া প্রাচীন প্রথা অমুসারে
গোধানে কিছা পদব্রজে গমনাগমন করেম, কলে স্তা ও
বন্ধ প্রস্তুত না করিয়া চরকাতে স্তা প্রস্তুত ও হাতে বন্ধ বর্মন
করেন, তবে তাঁহাকে সকলে কি বলিবেন 
 তিনি কথনও
বর্ত্তমান হরত প্রতিধাপিতার সময়ে জীবন সংগ্রামে জয়লাভ
করিতে পারিবেন না।

নিউটন বহু চিন্তা ও গবেষণার পর যে তত্ত্ব আবিকার করিয়াছিলেন, কেহ যদি অদ্য তাহা দইয়াই ব্যাপ্ত থাকেন, তদতিরিক্ত আর কিছুই না জানেন, যদি কেহ সভ্যতার বর্ণ পরিচমের প্রথম ভাগ আয়ত্তি করাকেই আর্যাত্ম রক্ষা মনে করেন, তবে তাহাকে বর্তমান শতাকীর লোক মধ্যে গণ্য করা যাইতে পারে না।

প্রাচীনকালে প্রবৃত্তিবিশেষকে দমন করিবার জন্ম কভ শারীরিক উপায় জাবলখন ও ঔষধাদি সেবন করা হইত. व्यर्थानिष्ठ बानशांत्र जवर खी शूल्यक भाषनविष्ठ मन्न कतिया নিৰ্জ্ঞানে গমন क्यारकरे श्रीय-बर्गाहिङ काल বণন করা হইত এবং দিনের পর দিন উপবাস ক্রিয়া तिह ७४७ घरणी क्रिया थालाक्टनत्र वात स्ताध क्रिटक চেষ্টা করা ইইড, বর্ত্তমান বুগে ঐ সকল নিয়ম পল্লিডাক্ত रहेत्राष्ट्र। वाहाता वर्खमान खेळाल स्थानात्मात्कत यूत्र व मक्न नित्रम প্রতিপালন করিবেন, তাঁহাাদগকে দেই প্রাচীন कारणत्र रणाक चिनत्रा श्रा क्त्रा क्हेर्त । खानतारका छाक्रास्त्र मखात्रमान रहेवात ज्ञि थाकित्य ना। आधाष्प्रिक वात्का त्य সকল নৃতন নৃতন সভা আপাবিষ্কৃত হইয়াছে, ভাহা সাধন না ক্রিয়া একমাত্র প্রাচান কালের আবিষ্কৃত সভ্য ধ্রিয়া খাকিলে क्षम ७ छेन्न ठ कौरम नाष्ट्र १६१० ना। ध्यम ध्रम ध्रम, যথন লোকে পর্বতগহররে বাস করিত, আমমাংস আহার করিত, কার্চ ও প্রস্তর্নির্মিত যন্ত্রাদি খ্যবহার করিত: এখন **म्हिल काठब्र क्रिया माहाबा পृद्ध**शुक्रवगरनद की हि दका ক্ষিতে ইচ্ছুক, তাঁহারা নিজকে নিজে জ্ঞানরাজ্য হইডে দুরীভঙ করিয়া দিতেছেন।

কেহ কেহ বলিয়া থাকেন যে, বিজ্ঞান এবং রাজনীতি সম্বন্ধে যেমন পৃথিবীর সভ্যতা জতগতিতে উন্নতির পথে অগ্র-সর হইতেছে, ধর্ম ও নীতি সম্বন্ধে তজপ নহে। এমন কি সে বিষয়ে নবীন প্রাচীন অপেকা নিক্ট অবস্থার অবস্থিত। এ কথার উত্তর দিতে হইলে অনেক কথা বলা আবশ্রক হয়। আমরা এই ষাত্র বৃণিতে পারি বে, বাঁছারা ব্রাক্ষ হইরাছেন, অথবা ব্রাক্ষণ বিশাস ভাপন করিয়াছেন, তাঁছারা কথনও ঐরপ উক্তি অল্পোদন করিতে পারেন না। কোরাণ, বাইবেল এবং উপনিবদাক ব্রাক্ষধর্ম অপেকা বর্ত্তমান যুগের ব্রাক্ষধর্ম বিভিন্ন ও অনেক বিষয়ে সমধিক উরতিশীল। এই উরতিশীল ধর্মাই বর্ত্তমান সমরের উপযোগী ধর্মা। এই ধর্ম্ম বাঁছারা গ্রহণ না করিবেন, তাঁছারা কথনও বর্ত্তমানের নব জ্ঞানালোক লাভ করিতে সমর্থ হইবেন না। এই ধর্ম বাঁছারা গ্রহণ করিয়াছেন, এবং বাঁছারা এই ধর্ম সাধন করিয়া সিদ্ধ হইয়াছেন, তাঁছারাই আধ্যাত্মিকবাজ্যে নবীন বলিয়া আথ্যাত। বাঁছারা এই নবীন ভাবের বশবর্তী না হইয়া সম্পূর্ণরূপে প্রাচীনের অমুসরণ করিতেছেন, তাঁহারা বহুশতাকী পশ্চাতে সরিয়া যাইতেছেন। নবাবিদ্ধত কোন বিজ্ঞানের সহিত যোগ না থাকিবে সকলকেই হীনবল হইতে হইবে। বর্ত্তমান যুগে তাঁহারা কথনও সকলমনোরথ হইতে পারিবেন না।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### नित्राकारतत्र धान।

"নিরাকারের ধ্যান সম্ভবপর নহে" এই যুক্তি প্রদর্শন পূর্বক এদেশের সাকারবাদিগণ সাধারণতঃ নিরাকারোপাসনার প্রতি-বাদ ক্বিরা থাকেন। কিন্তু এই প্রকার উক্তি ছারা উাহারা ছে আপনাদের আধ্যাত্মিক-দৃষ্টিহীনভারই পরিচয় দেন, ভাহা সম্ভবতঃ হ্রিভাবে অম্ধাবন করিয়া দেখেন না। বিপক্ষ-দমনের প্রবৃত্তি এতই প্রবল বে, এইরূপ যুক্তিছারা আত্ম-পক্ষকে প্রকারাস্তরে হীন করিতেও ভাঁহারা বিরত হন না। আমরা একটী দৃষ্টান্তের উল্লেখ ক্রিভেছি, যদ্বারা অভি সহজেই আমাদের উক্তির সমর্থন হইবে।

ব্রাহ্মণগণের পক্ষে গায়ত্রী মন্ত্র জপ একটা অবশুপ্রতিপাল্য रिप्तिक कर्तवा। अहे शाम्रजीरक विषमाणा नाम पाणिहिल করা হইয়া থাকে। গায়তীর অর্থের প্রতি দৃষ্টি করিলে এবং ইহার অন্তর্নিহিত ভাব অমুভব করিলে, সহজেই তাঁহার। আপনাদের উক্তির অদারতা অমুভব করিতে সমর্থ হটতে পারি-(तन: ध्वरः निवाकारतत शानम्ख्यभत्र नम्रविमाधाण-भक्तः সমর্থনেরও আর স্থবিধা পাইবেন না। সাধারণত: যেভাবে গায়তী মন্ত্রের অর্থ ব্যাথা৷ করা হয়,তাহ৷ তেমন প্রদের বা আধ্যাত্মিকভার পরিচারক নহে। অর্থাৎ স্বিতা শব্দের অর্থ যদি "পূর্যা" করা যায়, তাহা হইলে উক্ত মন্ত্রের গৌরব ও শ্রেষ্ঠতের বিশেষ লাঘ্য করা হয়, এবং তদ্বারা হিন্দুসমাজের একটা প্রধান শাখাকে জড় কুর্য্যোপাসকরূপে জগতের সমীপে উপস্থিত করা इस। छेशनियनोनिएछ य छेक अरक्षत्रवारनत छन अकाशिक चाह्य এवः यादा वाल्डविक हिम्मुधर्ण्यत्र मस्तुराक्ता शोत्रवत्र কারণ, ভাহারও অমর্যাদা এবং অক্সথা করা হয়। অড়োপাসক নামে বর্ত্তমান সময়ে হিলুসমাজ কথনই পরিচিত হইতে ইচ্ছা करतन ना। এकक স্বিতা শব্দের প্রস্তুত্ত অর্থই গ্রহণ করা উচিত ও তাহাই গৌরবাত্মক। বিশেষতঃ বর্ত্মনান সমর
আধ্যাত্মিক ব্যাখ্যার সময়। এখন জন্ম মরণের অধীন, এবং
সচরাচর মানতে বে সকল দোব ও ছর্ত্মলতা দৃষ্ট হয়, সেরপ
ছর্ত্মল ও দোবাক্রান্ত মছ্য্য বিশেষকেও বখন আধ্যাত্মিক
ব্যাখ্যার সাহায্যে ঈখনের অবভাররপে প্রচণ কয়া হইতেছে,
তথন গান্ধবী মন্ত্রের ভার একটা মন্ত্রের গৌরবকর প্রকৃষ্ট
অর্থই গ্রহণ কয়া উচিত।

বাত্তবিক পার্য্যী মন্ত্রের ছই প্রকার অর্থই প্রচলিত আছে। বেদের ব্যাখ্যাকারক খ্যাতনামা দার্নাচার্য্য ও সবিধ্যাখার ছই অর্থই গ্রহণ করিরাছেন। আমন্ত্রা দিরে গার্য্যী মন্ত্রের করেক প্রকার্ত্ত করিরাছেন। আমন্ত্রা দিরে গার্থ্যী মন্ত্রের করেক প্রকার্ত্ত করিরাছেন, প্রথমে ভাছাই উদ্ভ করা গেল। হিন্দু-পত্রিকার গত আবাঢ় ও প্রাবণ মাদের সংখ্যার পার্ত্তীর তিন প্রকার অর্থ করা ছইন্রাছে; বধা—অবরং—ভঙ্গ সবিত্ত্ত দেবস্ত ব্রেণাং ভর্গোঞ্জীমছিন। উপ্ত কন্ত্র যোগবিতা নং ধিরো প্রচোদরাং।

বলার্থ। যে জ্যোতির্মন্ধ ব্রদ্ধ সংকার্যামূর্চানের জন্ত আমানিগকে বৃদ্ধিস্থতি প্রদান করিয়া থাকেন, আমরা সেই জ্যোতির্মন্ন ব্রদ্ধের সর্পাজন পৃজনীয় পাপনাশকারী তেজ ধ্যান করি।

অর্থান্তর,—স্বিকু দেবজ জৎবরেল্যং তর্গো ধারিমান বল্চ নো বিয়ো আচোদরাৎ। অর্থাৎ সাবিতাদেবের দেই বরেণা তর্গ ব্যান করি। বিনিই আমাদিগকে বৃদ্ধিবৃত্তি প্রেরণ করির। থাকেন।

অর্থান্তর,—স্বিভূদেবক্ত তৎ বরণ্যেং ভর্মো ধীমহি বো (বং) ভর্মো নো বৃদ্ধীঃ প্রেররতি। অর্থাৎ স্বিভা দেবের সেই বরেণ্য ভর্ম ধানকরি যে ভর্ম আমাদিগকে বৃদ্ধিবৃত্তি প্রদান করিয়া থাকে।

আদি সমাজ কর্তৃক প্রচারিত ব্রাহ্মধর্ম গ্রন্থে এই পারতীর অর্থ এইরপ করা হইরাছে। "সেই জগৎ প্রসাবতা প্রম্বেদ্বতার বরণীর জ্ঞান ও শক্তি ধাান করি, যিনি আমাদিগকে বৃদ্ধিবৃদ্ধি সকল প্রেরণ করিয়াছেন। ব্রাহ্মধর্ম গ্রন্থে "তৎস্বিতৃঃ" শক্ষের অর্থ এইরূপ করা হইরাছে; তহু স্বিতৃঃ জগৎ প্রস্বিতৃঃ প্রেরকন্ত স্ক্র্মামানাম্ বিজ্ঞানানন্দস্বভাবস্ত অন্তর্গামনো ব্রহ্মণঃ, এবং ভর্গঃ শক্ষের এইরূপ অর্থ করা হইরাছে "ভর্গঃ" ভর্গং তেজঃ জ্ঞানং শক্তিক।

শীযুক্ত রমেশচক্র দত মহাশর-কৃত প্রক্বেদের অন্থবাদে গায়ত্রী মন্ত্রের এইরূপ অর্থ করা হইয়াছে,—"াযনি আমাদের ধীশক্তি প্রেরণ করেন, আমরা সেই স্বিতা দেবের সেই বর্ণীয় তেজ: ধান করি।"

স্তরাং দেখা ঘাইতেছে, সেই অতি প্রাত্তীনকালেও এদেশীয় এ:ক্ষণগণ জ্বগৎপ্রস্বিতা প্রমেশ্বের ব্রণীয়

<sup>\*</sup> সবিজু: সক্ষান্তবামিনো বিজ্ঞানাদন্দ বভাবক্ত ব্ৰহ্মণঃ, সক্ষান্তবামী বিজ্ঞানাদন্দ বভাব ব্ৰহ্মের। \* সক্ষণাপানাং কৰ্জন স্মৰ্থং তেজঃ—সক্ল পাপ নাশকারী তেজ।

ভেজের (ক্যান ও শক্তি) ধ্যান করিতে সমর্থ ছিলেন। অন্তম বর্ষের ত্রাহ্মণ-শিশুর পক্ষেও এরূপ ধ্যানপরায়ণ হওয়া সম্ভবপর এবং সহজ্বসাধ্য ছিল। কারণ ব্রীহ্মণ-বালকের ষ্ট্রমবর্ষে উপনীত হইবার বিধি দৃষ্ট হয়। পক্ষে সন্ধ্যাবন্দনা ও গায়ত্রী মন্ত্র জপ নিত্য ক্রিয়ার মধ্যে পরিগণিত। সধ্যা বন্দনা করেন না, এরূপ ত্রাহ্মণের অক্তিত্ব शृर्त्स हिन ना। मन्नावन्त्रनाशीन बान्नावत जीवन श्राप्तनिहरू त ব্যবস্থা শাল্পে দৃষ্ট হয়। স্থতরাং উপনীত প্রত্যেক বালককেই সন্ধ্যাবন্দনা এবং গায়ত্তী মন্ত্র জপ করিতে হইত। এখন জিজ্ঞান্ত এই তেজের (জ্ঞান ও শক্তির) ধ্যান করা যদি অষ্টম वर्षत वानत्कत निक्ष महस्रमाधा हिन, छाहा हहेता वर्खमान সমধের জ্ঞানোমত আর্য্যবংশধরগণ কেন সেই উচ্চ অধিকার হইতে আপনাদিগকে বঞ্চিত করিতে সমুৎস্ক হইয়াছেন ? যদি বর্ত্তমান আর্যাগণ গায়ত্রী মন্ত্রকে জড়স্র্য্যের উপাসনার উদোধন স্বরূপ মনে করিয়া সম্মানিত হইবার প্রয়াসী হইতে ইচ্ছুক হন, তাহা হইলেও "বরণীয় তেজের ধাান করি" हेशाबात्रा ७ कान चाक्र विभिष्टे भगार्थत धान कति, এমন প্রতিপন্ন হয় না; কারণ তেজের কোনই আকার নাই। স্বভরাং আকারহীন তেজের ধ্যান কিরূপে সম্ভবে। তবে কি এই অতি প্রসিদ্ধ মন্ত্রীর কোনই সার্থকতা নাই। কভকগুলি কথা উচ্চাবণ মাত্র কি ইহার উদ্দেশ্য ? কেহই এমন অশ্রদ্ধের কথার আস্থাবান হইবেন না। তবে নিরাকার বস্তুর ধানি হয় না, এ কথাটা কি একমাত্র গায়ের জোৱে বিপক্ষ ममन्त्र अग्रहे डेक इम्र १ याहाता जाननारमत्र दिन्निक व्यवश्र প্রতিপাল্য ধর্ম-সাধনকে পরনিগ্রহের জন্ত এরপ হীনতাতে পরিণত করিতে ইচ্ছুক হন এবং কোন কার্যা গৌরক্কর, কোন কার্য্য অগৌরবকর তাহার অমুসন্ধানের প্রবৃত্তি পর্যান্ত পরিত্যাগ করিতে প্রস্তুত, তাঁহাদিগের আরোপিত যুক্তির <mark>সারবন্তা যে কত ভাহা সুগজেই অমুভূত হইতে পারে।</mark>

এমন সময় ছিল যথন এদেশের আর্য্যগণ প্রমেখন্ত্রের জ্ঞান ও শক্তির ধ্যান করিতে সক্ষম ছিলেন, অর্থাৎ নিরাকার পদার্থের ধ্যান করিতে পারিতেন; তাঁহার ববণীয় পরিত্রাণপ্রদ তেক্সের ধ্যান দাবা তাঁহাবা মুক্তিশাভ করিতেন এবং তেজস্বী হইতেন। এখন সেই উন্নত এবং গৌরবাম্মক অবস্থা হইতে বিচ্যুত হওয়াই গৌরবের কারণ হইয়াছে। যাহা শোচনীয় ভাহাই গোরব ও উলাদের কারণে পরিণত হইয়াছে। সকল **म्हिल्ला क्रिक क्षाठीन जार प्रक्रमाजी, यादा कि**ष्टू जान जारा भूर्त्स हिन ; वर्खभारनत मकनहे मना। স্বৰ্যুগ বা সভাব্য পূর্বেছিল, এই বিশ্বাস অক্তান্ত দেশের তার এদেশেও প্রচলিত। অথচ পূর্বকালে যে মুনি ঋষিগণ আধ্যাত্মিকতা ও নিরাকার একেশরবাদের উচ্চশিথরে আরোচণ করিয়াছিলেন, তাঁহাদের वः नधत्र नात्य व्याधाः छ याहात्रा, छाहात्राहे व्याचात्र माकात-ৰাদের সমর্থন দারা তাঁহাদের সেই উজ্জ্ব প্রতিভা এবং মহন্তের श्रीन क्रिएए इन ! निवाकात्र श्रेचाताशामनात्र विद्याशी ছইয় আপন্যদিগলৈ গৌরবাধিত মনে করিতেছেন। विश्वत्रकत्र छाहार्छ महस्मह नाहे।

আত্মার এরপ বিকৃতি কেন ?

ভগবদ্গীভার উক্ত হইরাছে "মহুষাাণাং সহস্রেষু কশ্চিদ্ যততি সিদ্ধয়ে। যততামপি সিদ্ধানাং কশ্চিন্মাং বেভি তবত:॥" অর্থাৎ অনেক সংস্ত্র মনুষ্যের মধ্যে কেহ কেহ আত্মজ্ঞান লাভের নিমিত্ত প্রয়ত্ব করেন। প্রয়ত্বকারিগণের অনেক সহস্রের মধ্যে কেহ কেহ আত্ম-জ্ঞান লাভ করেন এবং অনেক সহস্র আত্মজানীর মধ্যে কেহপরমাত্মাকে (আমাকে) শ্বরপত: জানিতে পারেন। গীতাকার লোকদিগের যে প্রকার প্রকৃতি বর্ণনা কবিয়াছেন, তাহা সর্বাংশে লোকসমূহের অবস্থার অফুরূপ ना इहेरन ७, माधात्र गढ: मानव-ममास्त्र व्यवश छेक छेकित ममर्थन করিয়া থাকে। আমরা সচরাচর আত্মতত্ত্ব এবং পরমার্থ-তত্ত্ব नाज्य कम्म पाठि पात नाकरकरे वाक्नं (पथिट भारे। শারীরিক প্রয়োজন সাধনের জন্ত লোকের যাদৃশ যত্ন আহিক প্রয়োজন সাধনের জন্ত সেরপ ব্যাকুণতার নিতান্ত অভাব সর্বব্রই পবিলক্ষিত হইরা'থাকে। অপচ যে কোন ধর্ম-সমাজের ধর্মপাল্র বা. উপদেশাবলী অবেষণ কর সর্ব্রেই এই আত্মজ্ঞান এবং প্রমাত্ম-জ্ঞানলাভের জন্ম উত্তেজনা বাক্য পরিলক্ষিত হইবে। ধর্মের প্রয়োজন ঈশ্বরলাভের আত্যন্তিক আবশুক্তা সেই সকল উপদেশ বা সন্থক্তি সমূহের স্ব্রেই পরিলক্ষিত হইবে। কোন ধর্মশান্ত বা উপদেষ্টার বাক্য তাহার विकास किहुरे वालन नारे। रेमनवकाल शरेर मानवशन এই প্ৰকার শিক্ষা ও উপদেশ পাইরাও কেন ধর্মতন্ত্ব, আত্মতন্ত্ ও প্রমাম্ব তত্ত্ব জানিতে এমন উদাসীন ? বাক্যে অনেক সময়ে ধর্মের অক্ত ব্যাকুলতা প্রদলিত হইলেও কার্য্যকালে তাহার অন্তথা কৈন পরিলক্ষিত হয়? ইহার কারণ অমুসন্ধান করিতে গিয়া এদেশীয় ধর্মতত্ত্বিদ্গণ স্কাগ্রে পূর্কক্সাক্তিত কর্মের প্রতিই সমস্ত ভার দিয়া নিশ্চিত্ত হইয়াছেন। পুকা-জন্মে যিনি বেঁরূপ কর্ম্ম করিয়া আসিয়াছেন, এই জন্মে ডদফু-রূপ ফলই ফলিতেছে। কিন্তু গীতাতেই আবার অন্তত্ত উক্ত হইয়াছে যে—

"ন জায়তে মিয়তে বা কদাচিলায়ং ভূষা ভবিভা বা ন ভূয়:। অজো নিতাঃ শাখতোহয়ং পুরাশো ন হস্তুতে হস্তুমানে শ্রীরে॥ বেদাবিনাশিনং নিতাং য এনমজমবায়ম

কণং স পুরুষ: পার্থ কং ঘাতরতি হস্তি কম্ বাসাংসি জীণানি যথা বিহার নবানি গৃহাতি নরে চপরাণি। তথা শরীরাণি বিহার জীণাঞ্জুলানি সংযাতি নবানি দেহী। " ইত্যাদি

অর্থাৎ ইনি (আরা) কখনও জন্মধারণ করেন না অথবা অক্সান্ত জাত বস্তুর ভার উৎপন্ন ইইয়া বিদ্যামানও থাকেন না। জন্ম রহিত নিত্য (হ্রাস বৃদ্ধি শৃত্ত) শাখত (অপক্ষর শৃত্ত) এবং পুরাণ। শরীরের বিনাশ হইলেও ইনি হত হন না। হে পার্থ যিনি ইহাকে অজ, অব্যর (ক্ষর শৃত্ত) নিত্য এবং অবিনাশী বলিয়া জানেন, তিনি কিরুপে কাহাকে হনন করান কাহাকেই বা হনন করেন। যেমন মনুষ্য জার্ণ বস্ত্র পরিভ্যাগ করিয়া অপর নৃতন বস্ত গ্রহণ করে, সেইরূপ আয়া জীর্ণ শরীর পরিভ্যাগ করিয়া অস্তুন শরীর ধারণ করে। খাদ্বা বদি এইরপই প্রকৃতি বিশিষ্ট হন যে, তাঁহার জন্ম
মৃত্যু, হ্রান, বৃদ্ধি গভ্তি কিছুই নাই, তাহা হইলে পূর্বজন্মর
বা পরজন্মের কথাটার কোনই অর্থ থাকে না; অথচ পূর্বজন্ম
ও পরজন্মের কথার উপর এদেশের ধর্মাশাল্রের ভিত্তি অনেক
পরিমাণে অবন্তিও। তাহা হইলে মামুব বেমম পূরাতান বল্প
পরিমাণে অবন্তিও। তাহা হইলে মামুব বেমম পূরাতান বল্প
পরিতাগি করিয়া নবীন বল্প গ্রহণ করে, অল ও স্থামর
আত্মার পক্ষে সেই বাস পরির্জন রূপ দেহধারণ ও পরিত্যাগ
ক্রিয়াকেই জন্ম ও মৃত্যু শব্দে অভিহিত করিতে হয়।
কিন্তু এখানে একটা প্রশ্ন সভঃই উপন্থিত হয়। আত্মা অনাদি
অল, অময়; অক্ষর অবার প্রভৃতি প্রকৃতি বিশিষ্ট হইয়া
কেন এই শরীররূপ বল্প গ্রহণ করেন। তিনি কি শীর
ইচ্ছায় এই বন্ধন মধ্যে আগ্যমন করেন অথবা ইহাতে
আর কোন ইচ্ছা বর্ত্তমান আছে। আত্মার বেরূপ প্রকৃতি
উপরে বর্ণিত হইয়াছে তাহা সভ্য হইলে, আ্যায় এপ্রকায়
প্রস্তির উদর হওয়ার সন্তাবদা একবারেই থাকে না।

বৈ আত্মা অনাদি, নিভা ও হাসবৃদ্ধিশৃল ভাহার এই প্রকার ইচ্চার উত্তেক হটবার সম্ভাবনা কি ? এবং যে আত্মা এরূপ প্রফুতি বিশিষ্ট ভাহার পক্ষে শরীরাশ্রর করিয়া এরপ মোহাডিভ্ড হইবারট বা সম্ভাবনা কি 🗲 भन्नीताश्रास्त्र व्यासाकन्त्रे वा कि १ । धरे मकन श्रम्भ फारहे मान উদিত হয়। আত্মায় শরীরাশ্রয়রূপ ব্যাপারে তারায় ইচ্ছাট একমাত্র কারণ কি না, ভারাও একটি বিশেষ জিজাক্ত। এট স্কল প্রশ্নের উত্তর ঘাহাট হউক, ভাহাম নৃতন বস্ত্র গ্রহণ রূপ অন্মের পর ইইডেই যে সে বর্তমান প্রকৃতি বিশিষ্ট ইইয়াছে भीभाश्त्राञ्च (वाधक्त्र काकात्रअ मास्कृ नोहै। তুরবভাপর হটবার টচ্চা ভাহাতে পুর্বেছিল না। হঠাৎ ভাচার এক্রপ প্রকৃতিরই উদয়ের বা সম্ভাবনা কি ? সাধ করিয়া কে আপনার স্বাধীনতা পরিত্যাগ করিয়া এমন চর্মণতা ও অজ্ঞানতার আশ্রম নইছে প্রস্তুত হয় ? তবে আনার কি কেই ল্রষ্টা আছেন ? বাহার ইচ্ছাতে সে এরপ क्षक्र विभिष्ठे ब्रेश क्या क्षर्ण करता। शीकात वर्गिक ब्रेशास् বে, অনেক সহজের মধ্যে কেহ কেহ আত্মজান লাভের জন্ত প্রয়াসী হয়, ভাছার আবার অনেক সহলের মধ্যে কেহ কেহ আত্মজ্ঞান লাভ করিতে পারে, তাহারও অতি অর সংখ্যক ব্যক্তি পরমাত্মার জ্ঞান লাভে সমর্থ হইরা থাকে। যদি দেখা যাইত সহলের মধ্যে ২০১ ব্যক্তি এরূপ যে আত্মজ্ঞান লাভের অস্ত্রাকুল নয়, তদ্বাদে অস্তাক্তেরা আত্মজান ও পরমাত্মজান লাভের অস্ত ব্যাকুল, ভাহা হইলে ইহাকে প্রকৃতির ব্যাতক্রম মনে করা যাইত হইত। এক্লপ হইবার হেতৃরূপে সেই वाक्तिक्ट मात्री मेरन इंहेछ। किन्ह এथारन छाहा अञ्चमान कविवाद कान स्वविधा नाष्ट्र। এथान महस्व मान हत्र (य छारात क्षेत्र रहेराज्हे रंग अक्रण क्षत्रां काश रहेनारह अवः की बाब है वभीकृष बहेमां तम साहा जिल्लु बहेदी मः नारत প্রতিনিয়ত লাহনা ভোগ করিভেছে, কেবলই ছর্গতির পর প্রপৃতি ভোগ করিতেছে। কিব ভারতে ড সম্বর্থে না। কারণ 15 রম্প্রমন্ত্রিন, চিরপুণাখন বিনি ভাষ্য কর্তৃক স্ট ইইবা,

তাঁচা হুইভেই যে আত্মা এক্সপ হীনপ্রকৃতি প্রাপ্ত হুইবে---অন্নপ অশিব্রাকৃতি লাভ করিয়া করা গ্রহণ করিবে তাহাও ভ মনে হর না। ভিনি আত্মাত্তে এরপ মণিন প্রকৃতি দিয়া ংযে পাঠাইরাছেন, ভাহা কিছুতেই প্রত্যের হর না। তবে কি সে পূর্বজন্মের ছছতির ফলেই এরপ ছর্দশাভোগ করে ? ভাহাতেও মন প্রবোধ পার না; কারণ এই জব্মে যদি পূর্ব-জ্ঞাের ফলভােগ করিভেছে, ভবে সেই পূর্বজ্ঞা কাহার লোবে সে চ্ছাতপরায়ণ হইয়াছিল ? ভাছাও যদি পূর্বজন্মের मार्य परिवा थाएक, फारव मिटे कार्या है वा एकन मि इक्तिया मीन हरेग्राहिन ? এरेक्राप हिनम् यारेष्ठ यारेष्ड वमन वक चारम बाहेरफ इहेरव, रमशास चाचात्र नवीन वज्जधश्य-क्रम শরীরধারণ ক্রিরার আদিতে যাইয়া উপস্থিত হইতে হয়। (महे अथम करमा (म कान् कातरण बक्कण क्षक्रिवामण हहेमा-ছিল ৷ বৈ মুছৰ্ষের জন্ম ভাহাকে এত লাজনা ভোগ করিছে **ब्हेएछएइ। नववज्रधात्रमञ्जल भत्रीत्रश्रहगळित्राख एव ज्ञनामि** তাহার কোন উপযুক্ত প্রমাণ নাই। বরং পৃথিবীর সৃষ্টিপ্রকবণ रमिरण जाजात मानवरमह-शात्रण कित्रा रथ श्रूव मीर्चकारणत्र मरह, ভাহারই প্রমাণ পাওরা যায়। স্করাং এন্তানে কারণাস্থরের কল্পনা করিতে হয়। যদি মানবাত্মার বর্তমান প্রকৃতি যাহা লোক-চক্ষুর গোচর হইতেছে এবং গীতা ও অফ্টাক্ত শাস্ত্রাদিতে উল্লিখিত হইরাছে, ভাহা স্টিকর্তার ইচ্চাপ্রস্ত না হয়. এবং যদি ভাহা পূর্বজন্মার্জিড কর্মের ফলেও না ঘটে: ভবে এরপ প্রস্তাভর উৎপত্তি কোধা হটতে হইল ? খুটান ও মুসলমানগণ এরূপ হলে সম্বতান নামক পরাক্রায় कीव वा व्यथत किहूत मत्रण लहेशाह्न व्यवः हिन्तूनाह्य তৎপরিবর্তে মায়ার আশ্রয় লওয়া হইরাছে। কিন্তু সর্তান বা মায়া তাহাই বা কোণা হইতে আাদল ? তাহা কি স্টিক্ডার সমকক্ষ আর কোন স্বতন্ত্র শক্তি বা অপর কিছু याश चढ:रे चाएइ १ किया स्टिक्डारे ठाराप्त्र स्ट स्टिया-ছেন এবং এরূপ প্রবলশক্তির সহিত সংগ্রাম করিবার জন্ত भामवाचारक अक्रम इस्रेंग ए ज्ञाम कविवा मार्शिहेबार्कन। ভাছা হইলেও তাঁহাতেই দোষ বর্ত্তে। কিন্তু এরূপ প্রবলের সহিত সংগ্রাম করিবার জন্ত এরপ ছকলের সৃষ্টি করা ভ জ্ঞানময়, প্রেম্মরের প্রকৃতির অনুরূপ নহে। আর যদি ভাহারা খত:ই অনাদিকাণ হইতে আছে এমন হয়, তাঙা হইলে ঈশর ভিন্ন ডৎপ্রতিযোগী বিক্লাচারী দিতীয় সন্তার করন। করিতে হর। কিন্তু অনন্ত শাক্তশালী পরমেখনের এরপ প্রতিযোগী শক্তির অভিত মানিলে, তাহার অন্ত শক্তির অনস্তব আর থাকে না। মৃতরাং এরূপ কারণ অমুমান করিলেও নিঙ্গপত্রব হওয়া যায় না। তবে কেন मानरवत्र अक्रन व्यक्तिनाच स्टेन १ अटे व्यक्ति उन्द्र बात किছ १७३१रे गुख्य।

এই প্রস্নের অন্তুসদ্ধানে প্রবৃত্ত হইলে মানবাঝার স্বাধীনভার কথা মনে হয়। আলার স্বাধীনভাব বর্তমান আছে দেখিতে পাওরা যায়; ভাহার হিতাহিত বোধ আছে, কর্ত্তব্যাকর্তব্য নির্দারণ করিবার স্থবিধা এবং শাক্ত

च्याह्य अवः ভाग समा मक्त পথেই याहेवात ऋ याश । ও ऋ विधा भाष्ट्र। जेवत एवं मानवाचारक तृत्रापित्र छात्र निर्मिष्ठे गीमात्र আবদ্ধ রাথেন নাই এবং একমাত্র অদ্ধভাবে আপন প্রবৃত্তির অমুসবণ করিবার অবভার ফেলেন নাই, তাহার প্রমাণ यरथष्टेहे পाउत्रा यात्रः मःशाम कतित्रा, यज्ञ पतात्रग हहेता स्म আপনার গন্তব্যপথে চলিবে, উন্নতি লাভ করিয়া আত্মপ্রদাদ প্রাপ্ত হইবে, ইহাই জাঁহার ইচ্ছা। সেই ইচ্ছা হইতেই আন্মার স্বাধীনতার স্থাষ্ট হইয়াছে এবং এই স্বাধীনতাই আত্মার অংশেষ কল্যাণলাভেব হেতু। তুমি যদি ইচ্ছা করিয়া স্থপথে না हन, चाञ्च-विकारभंत्र भेष श्रमेख ना कत्र, তোমার ছঃখ দারিদ্রাই বৃদ্ধি হইবে; যন্ত্রণার পর যন্ত্রণা, অনুতাপের পর অনুতাপই (ভाগ করিতে হইবে। आর যদি স্পথে চল, সঙ্গে সঙ্গে শাস্তি ও আরাম পাইবে এবং আত্মজ্ঞান ও পরমাত্মজ্ঞান লাভ করিয়া ক্নতার্থ হইবে। ধর্মদাধনের অবশ্রস্তাবী পুরস্কার তোমার জন্ত নির্দারিত আছে। তুমি সে জন্ত লালারিত হইও না, হওয়া উচিতও নর; নিফাম হইয়াই তোমার ধর্ম-সাধন করা কর্ত্তবা; কিন্তু পুরস্কার তোমার জন্ত আছেই, দৌভাগ্য ভোমার জন্ত নির্দ্ধারিতই আছে। এরপ অবস্থাতেও रि मनित स्थि ना हिनमा विश्वशामी इम, जाहात जन्म ষ্মপরে দায়ী নহে, তাহার জ্ঞ্জ সে নিজেই দায়ী।

ধর্মে বীভরাগ হইবার পক্ষে আর একটী কথা মনে উপন্থিত হইয়া থাকে, তাহা এই যে ধর্ম সাধনও একমাত্র আছে-कन्गान-नाधरनत्र अन्न निकाम ভाবে ना रहेशा रंगोत्रव । सर्गाम। माट्डित উপায় স্বরূপ হইয়াছে। ইহা যদি অল্পান গ্রহণের ক্লার স্বাভাবিক থাকিত, অরপান গ্রহণে বেমন লোকে কোনরূপ স্থ্যাতি বা গৌরবলাভের আশা করে না, কিন্তু না করিয়া থাকিতে পারে না বলিয়াই করে, যদি তেমনি স্বাভাবিক ভাবেই ধর্ম্মাধন ক্রিত, তাহা হইলে বোধ হয় সাধন ভব্দনের পথে এত আড়ম্বর আদিত না। সচরাচর লোকে যে বৈরাগ্য অবশহন করে ভাহাতেও বেন একটা বাহাছরি পঁইবার ভবে প্রচ্ছর থাকে। কে কত কঠোর সাধনা করিতে পারে, কে কত শারীরিক নিগ্রহ সহু করিতে পারে, ভাহার চূড়ান্ত করিবার জ্বন্ত থেন একটা জেদ উপস্থিত হয়। কোনরূপ প্রশংসালাভের সম্ভাবনা না থাকিলে এরূপ কঠোরতা অবশ্বন করিবার প্রয়োজন হয় না। দারুণ শীতের সময় অনাবৃত দেহে থাকা এবং ঋণনিষ্য হওয়া বা প্রচ্ড সুর্যোজ্ঞাপের মধ্যে অগ্নিবেষ্টিত হইয়া অবস্থিতি করা, প্রথর-রশ্মি रुर्पात मिटक चानिस्मरत ठाकाहेन्रा थाका, গৃহ-পরিজন পরিতাগে করিয়া বৃক্ষতল্বাসী হওয়া, অনাহারে আনিজায় দিনের পর দিন যাপন করা প্রভৃতি ধর্মদাধনের যে সকল প্রক্রিয়া নানা দেশে নানা আকারে বর্ত্তমান আছে, যাহা দেখিলা সহজেই লোকের মনে আতক্ষ উপ্তিত হয় যে, ধর্মসাধন করিতে হইলেই বুঝি এরপ ভীষণ কটকর অবস্থার আত্রর বইতে হয়। অনেক সময় অম্বাভাবিক প্রতিযোগিতা। वा वाहाहती नहेवात ध्यवन आकाष्क्रात मारूष अध्यकात कर्छात कार्या প্রবৃত্ত হটয়া থাকে। সরল পিপাসা বা নিকাম ধর্মসাধন

কথনই এরপ আড়ম্বরপূর্ণ ও লোক ভীতির উদ্রেককারী-সাধনপ্রণালীর উদ্ভাবনে উৎসাহিত করে না। তাহা বরং গোপনীয় হইতে গোপনীয়ভাবে আত্মার নিভ্ত প্রদেশেই পরমাত্মার জ্বস্তু ব্যাকুলভার স্ষ্টি করে এবং ফ্রুনদীর অদৃশ্র প্রোতের ক্যায় অন্তরেই প্রবাহিত হইতে থাকে।

,কঠোর সাধনাধীদিগের দৃষ্টাস্ত লোকের ধর্মগ্রহুতি বিকাশের আফুক্ল্য না করিয়া বরং ভীতির সঞ্চার করিয়াছে এবং ধর্মভাব বিকাশের অন্তরায় হইয়াছে ৷ লোকে দুর হইতে এরূপ ধর্ম্মদাধনের প্রশংসা করিতে পারে, কিন্তু সকলের পক্ষে ভাহাতে নিযুক্ত হইবার প্রবৃত্তির উপয়ের কোনই সম্ভাবনা নাই। वदः ইহাই লোকের মনে সহজে উদিত হয় যে, ধর্ম বুঝি সকলের জল্ঞ নর। কারণ সেরূপ কঠোরভা অবলম্বন করিবার আকাজ্যাসহজে কাহারও হয় না, তাহার পরিবর্তে ওকাজ আমার নর বলিয়া তাহাতে প্রবৃত্তির অভাবট অধ্যারা থাকে। বহুকাল হইতে মানব-সমাজে ধর্মসাধনের নামে যে সকল ভীষণ কঠোরতার স্ষ্টি হইয়া আসিতেছে, ভাহা স্থারণ জনস্মাজে ধর্মসাধনে প্রবৃত্তির উদ্রকের সহায়তা না করিয়া বরং তাহাটত বাধাই क्याहिट उद्ध। धर्मनाधन (य महक ও काइकन अहरात छात्र সকলের পক্ষে অভি প্রয়োজনীয় এবং সুধ্যাধ্য ; সে জ্ঞান যতদিন মানব অন্তরে শ্রুপ্রতিষ্ঠ না হইবে, ততদিন সমাজের এই বিক্বত ছবিই দেখিতে হইবে। ধর্মসাধন স্পষ্টকর্তার সহিত সংগ্ৰাম নয় বা একটা বিশেষ প্ৰহেলিকাপূৰ্ণ রহস্তের মধ্যেও নিহিত নয়। ইহা অতি উপাদেয় এবং বিধাতার পরমোৎকৃষ্ট দান। পরিবার পরিজন পরিত্যাগ করিয়া বিধাতা-প্রদত্ত সদৃতিগুলি বিনাশ করিয়া, তাঁহার প্রদত্ত দানের অপব্যবহার নর, কিন্তু তাহার সদ্গবহার। আক্ষধশ্ব এই স্বাভাবিক সহজ্যাধ্য ধর্মেরই পক্ষ সমর্থন করিয়া আসিডেছেন এবং তাহাই ইহার শক্ষা। অস্বাভাবিক ভীতির উত্তেককারী কঠোর বৈরাগ্য কথনই আন্ধন্মের অভিঞ্জেত নয়। ধশ্ব-সাধনকে লোকের ভাতির কারণ না করিয়া প্রলোভনের ব্যাপার করিতে পারিলেই, লোকে আকুণ প্রাণে ধর্মের অফুসরণ করিবে এবং ধন্মের শোভন ছাব অসুভব করিয়া ইহাতেহ প্রবৃত থাকেবে। 🔹

## তপদা ব্ৰহ্ম বিজিজ্ঞাদম।

(২৫এ নবেশ্বর, রবিবার সাধারণ এ।ক্ষসমাজমন্দিরে আযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্তা কতৃক প্রদন্ত উপদেশের সারাংশ।)

উপনিষদে বৃদ্ধবিধে, ও বৃদ্ধজ্ঞান বিষয়ে যত উপদেশ আছে, তন্মধ্যে "তপুসা বৃদ্ধ বিশ্বজ্ঞানত্ব" তপুসা বৃদ্ধা বৃদ্ধকে জান, ইছা একটা অতি উত্তম উপদেশ। একটু চিত্তা কার্মা দেখিলে দেখা যার যে এই উপদেশটা একটু বিশ্বস্কর। "তপুসা বৃদ্ধা বৃদ্ধকৈ জান"—উপনিষদক্ষ আহিগ্য কেন

এরণ কথা বলিলেন ? যদি বলিভেন, "উপযুক্ত শুরুর আশ্রয় গ্রাহণ করিয়া তাঁর উপদেশ লইয়া ব্রহ্মকে জান''—বদি বলিডেন, "উপবৃক্ত বিচার ঘারা ঈশরকে জান," ভাহা হইলে আশুর্ব্যের विषद किছू थाकिछ ना। किन्ह "मीवन बादा प्रेचेत्रक मान" ইহাকেন বলিলেন 💡 এট যে জীবন দ্বারা ঈশবকে জানা, ইহাতে একটা নিগৃঢ় তাৎপর্য্য রহিয়াছে। প্রথমতঃ আমাদের প্রকৃতি পর্য্যালোচনা করিয়া দেখিলে দেখিতে পাই যে, মাসুবের নিজের অন্তরে যে গুণ নাই ভাহা যে অপরের অন্তরে আছে সে ভাহা বৃঝিভেও পারে না। এদেশে একটা প্রচলিভ কথা আছে, "ধাহা নাই ভাঙে, তাহা নাই ব্রহ্মাণ্ডে"। তোমার ভিতরে যাগ নাই, ত্রহ্মাণ্ডময় খুঁজিয়া তাহা পাইবে না। সংস্কৃতে একটী চলিত বাক্য আছে "গুণী গুণং বেন্তি ন বেন্তি নিশুণী" তোমার অন্তঃকরণে যদি দরা থাকে, তবে অপরের দরা কিরপ ভালা ব্ঝিভে পারিবে। তে।মার হৃদরে যদি প্রেম থাকে তবে প্রেম কি জিনিস তাহা বুঝিতে পারিবে, নতুবা পারিবে না। এইরূপ ভোমার প্রাণ যদি ভারপরতার অগ্নিতে উদীপ হয়, তবে অক্তের হুদরে স্তারপরতার আগুন কিরূপ অলে, তাহা তুমি বুঝিতে পারিবে। হৃদরে সাধুতা থাকিলে জগতের সকল সাধু মহাজনদিগকে চিনিতে পারিবে। এখন ভাবিয়া দেখ, ভূমি ঈশরকে সত্যক্ষরপ, প্রেমবরূপ, স্থারবান বলিরা কিরুপে অমুভব করিবে; যদি ভোমাতে সভা, প্রেম এবং স্থারপরারণভা না থাকে 📍 তুমি আগে সভা-বান ও প্রেমিক হও, ভবে ঈশরকে স্ত্যুত্তরপ, প্রেমত্তরপ বলিয়া বৃঝিতে পারিবে। প্রাক্ষত জীবন না থাকিলে ঈশ্বরকে काना रात्र ना। এक्याब कान बाता जेवतरक काना कानाह নর। প্রকৃত জীবন না থাকিলে দেখিতে পাই শুধু জ্ঞান স্বারা ঈৰরকে জানা যায় না। বহু বচন কিম্বা বহু শাল্পাঠাদি ৰারা ঈশবকে জানা বার না। প্রকৃত ভক্ত বলেন,—"হে প্রভো! তুমি যে স্থায়কারী ভগবান, তাহা আমাদের স্থায়-পরতা ছারা জানিতে পারি।" এইরূপ যীওও প্রার্থনা করিরাছিলেন—"Forgive us our trespasses as we forgive those that trespass against us" আমার ক্ষমা দারা, প্রেমদারা তাঁহার ক্ষমাঞ্চণ ও প্রেম ধারণা করিতে পারি। তুমি যদি সত্যেতে, প্রেমেতে হান হও, কুদ্রচেতা, অক্সায়কারী, হও তবে কি প্রকাবে তুমি ওধু জ্ঞানবারা ঈশরকে ধরিবে ? বে পরিমাণে আমরা সত্যপরায়ণ ও ধার্মিক হইব সেই পরিমাণে ঈশ্বকে জানিতে পারিব। "তপদা ত্রন্ধবিকিজ্ঞাদস্ব" বুদ্ধি দারা নয়, ঈশবকে জাবন দারা, তপক্সার দারা জানিতে ८ इडी क्रत

ষিতীরতঃ জীবন ধারা যাহা না ধরা যার তাহার গভীরতা ব্রিতে আমবা সক্ষম হই না। প্রকৃত ধর্মজাবন ধারা ষভক্ষণ আমবা ঈশ্বরকে উপলব্ধি না করি ততক্ষণ তাঁহাকে ধারণা করিতে সক্ষম হই না। দৃষ্টাজ্বরূপ মনে করে, একথণ্ড প্রস্তর পড়িয়া রহিয়াচে, তিনজন লোক দ্র হইতে তৎসম্বন্ধে কথোণ-ক্থন ক্রিতেছে। একজন বলিতেছে এটা ১০ সের; অপর এক ব্যক্তি বলিতেছে "নাহে ১৫ সের।" ভৃতীর ব্যক্তি বলিল শনা ২০ সের হইবে !" কিন্তু যে পর্যান্ত তাহারা সেই প্রস্তর-থণ্ড নিজ হাতে তুলিবার চেষ্টা না করিবে, সে পর্যান্ত তাহ। কত ভারি তাহার কিছুই জানিতে পারিবে না। সেইরূপ বতক্ষণ আমরা কেবলমাত্র দ্র হইতে সত্যের বিচার করি, জীবনে তাহা সাধন করিতে সচেষ্ট না হই, ততক্ষণ তার শুরুত্ব অমুভব করিতে পারি.না। জীবনে সাধন করিতে চেষ্টা কর, ব্রিতে পারিবে।

মান্ত্ৰ সভাকে ছই ভাবে দেখিতে পারে। প্রথম—
বেরপ চিত্রশালিকাতে (Art gallery) নানা প্রকার
ফলর ক্লর ছবি রহিরাছে; আমরা দ্রে দাড়াইরা সেই
সকল দেখি এবং বলি, "বাং, বেশ ক্লর ছবি;" কিন্তু ভার
সঙ্গে আমাদের জীবনের, বা চরিত্রের যে কোনও সম্বন্ধ আছে,
ভাহা বোধ হয় না। শুধু সৌলাগ্য-প্রিরভার চরিভার্থতা
ছাড়া আর কিছুই হয় না। এইরপ সৌলাগ্য-প্রিরভার চরিভার্থতার
ভার্থতার ভাবে অনেকে সভ্যকে দেখিয়া থাকেন। বাং বুদ্ধের
কেমন বৈরাগ্য; বাং চৈতন্তের কেমন কোম; বাং, বীশুর
কেমন বিশ্বাস! এইরপ একটু চমৎকারিম্ব ভাব, তৎপরেই
শেব। চিত্রশালিকার ছবি যে ভাবে দেখ, হে মানব! সভ্যকেও
কি সেই ভাবে দেখিবে ? কাণে শুনিয়া, চক্কে দেখিরাই কি
শেব হইবে ? না জীবনে পরীক্ষা করিয়া দেখিবারও কিছু
আছে ?

দিতীরতঃ, নিলাম বরে গিয়া লোকে যে ভাবে জিনিসপত্র **रमर्थ, राहे ভাবে भारतक मडारक्छ रम्थिया बारक्त**। অর্থাৎ তদ্বারা সংসারের কোন কার্যা সিদ্ধ ইইবে তাহাই গণনা করেন। এইরূপ স্বার্থসাধনের চক্ষে স্ত্যুকে দেখিলে অপরাধ হয়। তবে সতাকে কি ভাবে ধরিব, কিরপে দেখিব 🤊 थाँ हारू वस भाषी स्वक्रभ आकात्मव नित्क हात्र-धेथाति है ভাহার বাস ও জীবনধারণ; ঐধানেই ভাহার বিহারের স্থান। তেমনি হে মানব! সত্যকে কি "ঐখানেই আমার বাস, खेथात्न हे चामात्र कीवन" এहे चाद्य त्मिथ्य ना १ यनि ७३ ভাবে দেখিতে না পার তবে সতাকে অপমান করা হইবে, ঈশবকে অপমান করা হইবে। যাহা সত্য বলিয়া জানিয়াছি, ধরিরাছি, তাহা অপের > ভানে পালন করুক বানা করুক আমি তাহ৷ জীবন বিনিময়ে পালন করিব ; যাহাকে সত্য বলিরা ধরিব তাহাতেই আমার জীবন, তাহাতেই আমার বাস। উৎকৃষ্ট উপদেশ গুনিয়া কেহ যদি গুধু বলে, বাঃ বেশ উপদেশ राप्ताह, जाशास्त्र किहूरे बरेन ना; तारे अञ्चात्री कीवनाक গঠন করা চাই। সভাকে "ইহাতেই আমার জীবন, ইহাভেই আমার বাস," এই ভাবে ধরা চাই, তাহা না হইলে কিছুই हरेर्दि ना। "छ्राना उक्सविक्षिकानच" अधिता विनिद्राह्म "कोवन ৰারা ত্রন্ধকে জান<sup>্ত</sup> তপস্তার অর্থ ঈশবে আসক্তি এবং বিষয়ে জনাস্তিক ও আম্মনিগ্রহ। স্কলের মৃলেই এই তিনটী। বিজ্ঞানের মূলেও এই ভিনটীই রহিয়াছে। নিউটন গ্যালিলিও প্রভৃতি কেহই এই ভিনটী ছাড়া কিছু করিতে পারেন নাই। এই তিনটী দৃঢ় করিয়া ধর, ঈখরকে জানিতে পারিবে।

ঈশরকে জানিতে গেলে তপজা বার। জীবন বারা জান।

প্রত্যেক ব্রাহ্ম পরিবার প্রতিজ্ঞাবদ হও "ধর্মকে দীবনে পরি-ণত করিব"। সভাকে কোন কালে সৌন্দর্যাপ্রিয়তার দিক দিয়া, সার্থসাধনের দিক দিয়া দেখিবে না। মাছের পক্ষে বেমন ফল, পাধীর পক্ষে বেমন আকাশ, সেইকপ আমাদের পক্ষে সভা হউক; তাতে দীবন,তাতেই আমাদের বাস হউক। ঈশ্বর করণা করুন আমরা যেন তপস্তা দ্বারা,প্রকৃত দীবন দ্বারা তাঁহাকে স্কান।

্ এর কু প্রবিহারী সেনের প্রচাষ ব্রত প্রহণ উপলক্ষে প্রথম কু প্রবিহারী সেনের প্রচাষ ব্রত প্রহণ উপলক্ষে প্রথম কুর্মবিহারি!

ভোষাকে প্রমেশ্বর গুড় ইচ্ছা দিয়াছেন; তুমি ভাঁহারই আদেশে এই ব্রভ গ্রহণ করিতেছ। তিনি ভোষাকে আশীর্কাদ করুন। তুমি ব্রাহ্মধর্ম প্রচারব্রত গ্রহণ কর। ভোষার প্রচারে সকল লোক আরুষ্ট হউক। ইহাই আমার আশীর্কাদ।

ভূমি লোককে ব্ঝাটবে যে কগতেই তাঁহার প্রকাশ স্তি-बारक। এই बगरठ डाँशांव कछ कोमन त्रविवारक, छाहा বর্ণনা কবা যায় না। এই জগতই তাঁছার মন্দির। "জগত মন্দিরে বিবাজেন সপ্রকাশ।" তৃমি এই সকল কৌশল দেখা-টয়া সহজেই তাঁহার বিষয় বুঝাইয়া দিতে পারিবে। এই বিশ্বই আশ্চর্যা গ্রন্থ। উপরে ু 🏂 আকাশ, আর এই নানা विक्रिक्षण मतिभूनं भृथिनी । अहे सगर भार्ठ सतित्वहे जाहारक জানিতে পারিবে। তিনি জগতের মধ্যেই রহিরাছেন: ভাঁহাকে খুঁলিতে বাহিরে যাইতে হইবে না। তিনি এই লগতের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা। কিন্তু তিনি কেবল জগতে আছেন ভাগা নছে: তিনি সকলের আত্মাতে এবং সম্বেতেও বর্ণমান রহিয়াছেন। তিনি যেমন সর্বব্যাপীরূপে জগতে বিরাজ করিতেছেন সেইরূপ সর্কান্তর্বামী রূপে সকলের জাত্মাতে বহিয়াছেন। এই আমাদের কাছে বেমন তিনি আছেন তেমনি আমাদের প্রত্যেকের আত্মাতে তিনি বহিয়াছেন। **এবং क्षप्रमाधकाल धार्कात्कत्र क्षप्राप्तक किमि वर्खमान** আছেন। তিনি আয়াতে থাকিয়া বৃদ্ধিবৃত্তি জ্ঞান, শিক্ষা, প্রেরণ क्तिटिह्न बदः क्षम साभी रहेम्रा अपराद छ छिनि चाहिन। कबत्र जैशिटक्टे ठात्र। य भवास जीशांक ना भाग त भर्यास चज्य थाकः ; किन्न जांगाकः भारेतारे ज्य हतः। जिनि এरे ক্ষরে বাস করিভেছেন তিনি কোণায় না আছেন ? ৰচিৰ্ল গতে, আস্থাতে, হৃদ্ধে স্কৃত্যনেই তিনি বহিয়াছেন। কিন্তু এই জ্ঞান বারা কেবল উচ্চাকে জানিলে চলিবে না: প্রেম,ও ভক্তি বারা ঠাহার পূজা করিতে হইবে। প্রেম ভক্তি বিহীন জ্ঞান গুদ্ধ জ্ঞান । একটি গান আহৈ--

> "অধিশ ব্ৰহ্মা ওপতি প্ৰণমি চবণে তব প্ৰেষভক্তি ভৱে শৱৰ লাগি। ছৰ্ম্মান্ত দূৰ করি ওভইতি দেও ছে এই বৰ দান ভগবান মাগিশ

ভক্তের এই সলীতটির মধ্যেই সমস্ত ভাব নিহিত রহিরাছে।
তাঁহাকে কেবল শুক্ক জ্ঞান হারা দেখিলে ছইবে না; প্রীতি
হারা পূজা করিতে হইবে। পৌতলিকগণ যেমন তাহাদের দেবতা
প্রস্তুত করেন, ফুল চল্লনাদি হারা তাহার পূজা করিরা থাকেন,
স্মামাদেরও দেবতাকে ভক্তি হারা পূজা করিতে হইবে।
অবশু কাহাকেও পূতৃল পূজা করিতে হলি মা; কেবল দৃষ্টাস্তের
স্কুট এই কথাটি বলিলাম। আমাদেব দেবতা প্রস্তুত করিতে
হইবে না। তিনি সকলকে গঠন করিতেছেন তাঁহাকে কেহ
গঠন কবিতে পারে না। তিনি সর্ব্বেই রহিয়াছেন, তাঁহাকে
লগতে আয়াতে ও হদরে দেখিয়া প্রেম ও ভক্তি হারা তাঁহার
পূজা করাই প্রেম:। প্রতিদিনই এইরাপ পূজা কবিতে হইবে।
যেমন প্রতিদিনই অর গ্রহণ কবা আবগ্রক সেইরূপ প্রতিদিনই
উপাসনা করা প্ররোজন! তুমি সকলকে বৃঝাইবে যে কোন
দিনই যেন উপাসনা বন্ধ না হয়।

এই প্রেম ভক্তি উদ্দীপনা করিবার উপার কি ? মান্তবের কত পাপ তাপ রহিয়াছে; কত তংখ দারিদ্রা কত রোগ শোক রহিয়াছে। এই সকল বিপদ হইতে উদ্ধার কে করিতে পারে ? তুমি ব্রাইবে যে তিনিই পাপ তাপ রোগ শোক হইতে উদ্ধার করিতে পারেন। তালা হইলে কি লোকের মন তালার দিকে আরুই হইবে না ? তিনিই পাপ হইতে পরিত্রাণ করেন; তিনিই সকল বিপদ হইতে উদ্ধার করেন; তিনিই বিদ্যা, বৃদ্ধি সম্পদ সকল প্রেরণ করেন। ইহা স্থানিতে পারিলে সহস্থেই লোকে তাহাকে প্রেম দান করিবে।

ঈশার যাত্তিক জ্লয় ও হতু, পদ এম্লান করিয়াছেন; मखिएक स्नान, क्षमाय (धाम एक्टि ও रुख शाम कार्या করিবার শক্তি দিয়াছেন ৷ মক্তিক তাঁহার ভত্ত অবগত হউক ; দদর প্রেম্ভক্তি ছারা তাহার পূঞা করুক এবং হল্ল তাঁহার আজ্ঞাপালন করুক। এইরূপ উপদেশ বারা তুমি এককম लाकरक स विन मर्भाभ जानिए भात्र, जाहा इहेरन ह ভোমার শ্রম সার্থক মনে করিবে। আর তুরি নিক্তেও এইরূপ कीवन श्रेत कविरव। कृषि कान दावा **डीहारक** हे बानिरवः क्षमत्र पात्रा खाँगावरे शृका कांत्रद्य वयः इष्ट पात्रा खाँगावरे कारी। করিবে। ভাছা হইলেই লোকে ভোম।র কথা প্রবণ করিবে। দুষ্টান্ত হারাই লোককে সংপ্রে আনা যার। ভূমি আপনায় উপর নির্ভব করিবে না। আপনার অংকরে অভিমান একে-বারে পরিত্যাপ করিবে। ফলের প্রতি দৃষ্টি করিবে না। কৃষি তাঁহার উপর নির্ভর করিয়া তাহার আদেশ মভ কারী করিবে। ভিনিই ফল দাভা; ভূমি কেবল কার্য্য করিবে। তুমি আপনাকে ভুলিরা ঘাট্যাকেবল তাহার মহিমাট কীর্ত্তন कतिरव। कृति कृतानिकाञ्चिक हहेरव। काहात्रक निका वा প্রশংসা গ্রাছ করিবে না। আর যে কিছু পাও ভাহাতেই मुब्हे शांकित्व। मुब्हेः (यम क्रमाह्य हेहाहे व्यहात्रक्त धर्मा ভূমি প্রাণপণে তাঁলীর আদেশ পালন করিবে। ফলের প্রতি (वन मृष्टि ना थारकः) जुमि मण्णूर्ग मिण्णू इ इहेब्रा कार्यः कविरवः । । ভূমি যদি একটিও লোক না পাও ভাষা হটলেও নিয়াশ হটবে না। তোমার কর্ত্বর ভূমি করিবে। ঈশ্বর ভোমাকে আনেশ

कवितात्क्म; कृषि लिक्ट कालिभ भाकत कतित्व। छाहात्र केका निष्ठतके भूग क्वेत्व। चक् किथा मत्त जकत्वत्र द्यांक्टि जयवृद्धि व्हेत्व। जाहा हहेत्महे लात्क रजायात्र कथात चाक्टि हहेत्व। चामात छेनसम्म धहे।

ভূদি ঈশংরের দিকে ডাকাণ্ড ভিনিই ভোষাকে বৃদ্ধি প্রদান করিবেন। সেই বৃদ্ধি অনুসারে কার্য করিবে। যদি একজনও গ্রেমার ধর্ম গ্রহণ করে, ডাহা ক্ইলেই নিজকে ধ্যা মনে করিও। ভাহা হইলেই জানিবে যে ভূমি জগতের মধ্যে অন্ততঃ একজন লোককে ঈশ্রের দিকে আনর্যন করিয়াছ।

ব্ৰথকে সাক্ষাৎভাবে জগতে আন্থাতে ও হাদরে জানা তাঁহাকে প্রেম ও ভক্তি হারা পূলা করা এবং তাঁহার আদেশ পালন করাই ধর্ম। প্রেম যেথানে সেধানে প্রদান করিলে উহার নার্থকতা লাভ হর না। এই প্রেম যেন ঈখরেতেই নিভা থাকে, অল্পে ধেন ইহা লইতে না পারে। যে এই প্রকার জ্ঞান প্রেম ও ধর্ম লাভ করিয়াছে; যে জগতে আন্থাতে ও হাল গোলে তাঁহাকে জানিয়াছে প্রেম ও ভক্তি হারা তাঁহার পূজা করে তাঁহার আদেশ পালন করে সেই প্রক্রত ব্রাক্ষ। হাহাতে লোক এই সকল লক্ষণাক্রান্ত হর, ভূমি ভাহার চেটা কর এবং এই প্রকারে ব্রাক্ষধর্ম প্রচার কর।

ঈশর তোমাকে এই শুভ বৃদ্ধি প্রদান করিরাছেন। তাঁহার কুপার উহা আরও উজ্জল হউক। তিনি ভোমার হাত ধরিরা লইরা বাউন্; তিনি ভোমাকে সমস্ত পাপ প্রলোভন, বিদ্ন বিপ্র হইতে রক্ষা করান।

## ব্রতনিষ্ঠা। (প্রাপ্ত)

ं बुबाइएत-वर्थ व्यवगद्य कतिया स्थानिक कवि श्रीयूक्त (हमहस्र বন্দ্যোপাধ্যায় যে গ্রন্থ বচনা করিয়াছেন ভাছা পাঠ করিলে দেখা বায়, সুজাত্ম মহাদেবের বরে ছদ্ধ হইয়া উঠিল; এবং আপনার ৰাছবলে ও অক্তান্ত দৈড্যগণের সাহন্যো সমস্ত ব্রহ্মতে অয় করিয়া অবশেষে স্বগরাজ্য অধিকার করিল। সর্গের রাজা ইন্দ্র দৈভার তেজ সহ্ করিছে না পারিয়া অক্সান্ত দেবগণের সহিত পাতালপুরে যাইয়া আশ্রয় লইলেন ৷ সেধানে तिवग्रान इत्रवचा प्रिथा ७वः चाननात ज्ववान देवजानमन ক্রা অসম্ভব মনে ক্রিয়া, ইন্দ্র মের-প্রদেশে ঘাইয়া তপ্তা षात्रच कतिरनन। छिनि चित्र कतिरनन (य, ८४ भयाच ८०४-व्यानामणाक ना बहेरव, रव भर्यास जेचरत्र व निक्र वत्र व्यास ना क्ट्रेट्टिन, च्रुक्त चात्र छेहिट्टिन ना। क्रिक अनिटक स्वर्कांगण আপনাদের পোচনীর অবভার অভ্যক্ত অধীর হইরা পড়িলেন। নানা প্রকার অসার তক্ষন গর্জন আবস্ত করিলেন। আপনা (क्त्र वन वीर्दात क्ष्मात क्तिएक नागिर्गम। म्रःच्राष्ठ अक्की (शाक बाह्य--

> অগাধনলস্কারী বিকারী দচ রোছিত: গশুর কলমাতেন সক্রি ফর্ফরারতে।

নেকজাগণের ভাবস্থাও ভাহাই হইল। ভাষিতভেতসম্পন্ন ইক্স দেবকাগুল ব্যতীত বৈত্যগণের, বিক্লভে পুনরার বৃদ্ধানা করিতে সাহসী হট্টলেন না। কিছ বায়ু বরুণ প্রভৃতি কুল কুল দেবজাগণ আপনাদের ঘলবীর্যো সর্কিত হইরা কর্গ আজ্মণ করিলেন। কিছু গর্ক থাকিলে কি হর ? বল বে সেরূপ নাই; তাই তাঁহারা বার বার পরাজিত হইতে লাগিলেন। অবশেবে ইন্দ্র যথন তপভার সিদ্ধ হইরা ঈশরের বর লাভ করিরা আসিলেন, তখন তাঁহারই সেনাপতিত্ব ক্ষেণ্ডার জর হইল। ব্রাহ্র অঞ্জান্ত অহুরগণের সহিত নিহত হইল।

এই আণ্যায়িকা হটতে ব্ৰাহ্মসমাঞ্চের বর্ত্তমান অবস্থা विষয়ে कि कि ९ উপদেশ পাওয়া বাইতে পারে। আমাদেব দুর্বলভার সময় আসিয়াছে, আমাদের দুর্বলভার সময় আসি-ब्राष्ट्र, विवा ही एकां ब्रक्तिक किंदू लाख नाहै। याहारक सामारमन অভাব মোচ্ন হয়, ডজ্জার প্রতিকের তপভার প্রবৃত্ত হওবব আবশুক। আমাদের এখন যে শক্তি আছে তাহা চাদিদিকের কুসংস্থার, পাপ প্রলোভনের সঙ্গে যুদ্ধ করিতে সমর্থ নছে আমাদৈর আরও শক্তি সঞ্যু করিতে হইবে, ভপস্তা দারা (मर-चान्त्रेसाम लाङ कतिरा हरेरा । मजूरा बाक्षमभास्त्र আর উপার নাই। আমরা এ কথা বলিভেছি না বে আমাদের শক্তি অল বলিরা শত্রুর নিকট আত্মসমর্পণ করিতে চইনে। সমরের স্রোত্ত বেলিকে লইরা বার সেই দিক্ষেই বাইজে इहेरवः। व्यामारमञ्ज्ञ विनवात्र फेरफ्क थहे रव, नकरणबहे स्वन মনে পার্কে, বে শক্তি আমাদিগের আছে তাহা লইয়া বর্জমান न्रज्ञानारक व्यक्तिं। गांच क्या जनस्य। जामानिशस्य स्वजान নিবৃক্ত হটতে হইবে। বে পর্যাত ইক্রির ভার কেই ভাগভাব निकं रुहेन्ना ना जानित्य, तम भर्याख जामात्मन कन्नाम नाहै। আমাদিগকে তপভা করিতে হটবে তাহার অর্থ এই নর বে. সকলকে বিষয়কার্য্য সমস্ত পরিত্যাগ করিয়া পর্বতশুহার বসিয়া কেবল খ্যান ধারণাই কবিতে হইবে। কিন্তু প্রভোক-কেই ব্ৰহ্মণত-প্ৰাণ হইতে হইবে। ভাৰিয়া দেপুন স্মামবা আদশ হইতে কভ দূবে আসিয়া পড়িরাছি। আমবা সংগ্ৰ ও ধর্মকে এক করিবার তায়াস পাইয়াছিলাম। সংসারকৈ ধর্মাছুগত কবিতে চেষ্টা করিয়াছিলাম। কি**ত্ত** আমাদেব-कोवरन कि ভाहा रम्थाहरू भातिर छि ? ने भरत क स कि সমস্ত পরিত্যাগ কবিতে প্রস্তুত আছি ? স্থাধের সমীয় তাঁহাকে মঙ্গলময় বলি বটে, কিন্তু ছঃথ. বিপদ, শোকভাপের মধোঙ কি তাঁহার মঞ্ল হন্ত দেখিতে পাই ? তাঁহাকে কি আণের প্রাণরূপে জানিয়া কার্যনোবাকো তাঁহার উপর আমরা নিউরুকরিতেছি ? এই সকল বিষয় চিন্তা করিলেই দেখা याहेटन (य, च्यामता अक्कशङ्थांग क्हेटङ शांति नाहे। धहे ব্ৰহ্মগতপ্ৰাণ হইতে হ্টুলেই ব্ৰহ্মনিষ্ঠার আবশ্ৰক। আমা-निगरक खड कारनधन कतिर्दे रहेरव । कामता कृत्धिकिक हरेशा এই उद्माजक कात्रक कतिता। (य भर्यान मिकिना इरेट्सं, বে প্রযান্ত তাঁহাকে প্রাণমন সমর্পণ করিতে না পারিব, বে পর্যান্ত প্রাণের ভিতর জাঁহাকে দেখিরা তাঁহার আদেশাভুসারে কার্ঘ্য করিতে না পারিষ, সে পর্বান্ত এই ব্রভেন্ন উল্লোপন নাই। এই মৃদ্পতিকাই ডপজার প্রথম নির্ম। ওপজার

আর একটা নিরম সভ্যাত্রাগ। যাহার ুসভ্যাত্রাগ নাই, তাঁহার সাধনা কখন সিদ্ধ হয় না! এই স্ত্যাস্থাগ ছায়া পবিচালিত হইয়া আমাদিগকে নানা শাল্প মনোযোগের সহিত অধ্যয়ন করিতে হইবে। এই চক্ষের সমুধে যে বিশ্বগ্রন্থ রহি-ু য়াছে এবং বহিষ্চকুর ছুর্গম স্থানে যে বিশাল মনোরাজ্ঞা বলিরাছে, তাহা ষত্নের সহিত পাঠ করিতে হইবে। বাাকুল ভাবে সাধু সজ্জনের নিকট ষাইয়া ধর্মের গৃততত্ব সমূহ শিক্ষা ক্রিভে চ্টবে. এব সর্কোপরি ঘিনি অন্তর্দ্নী ভগবান, তাহার কাছে কাভরে প্রাথনা করিছে হইবে। সভানিষ্ঠা দাবা পরিচালিত হটয়া ব্যাকুল ভাবে যাহা কবা যায়, তাহার ভিতর দিয়াই ভগবান সত্য প্রেরণ করেন। তপস্থার আরে একটীনিয়ম সাধনে দুচতা। এই সকল অফুসন্ধান দারা যাহা সভা বশিয়া মনে ধাৰণা জন্মিৰে, ভাহা দৃচভাৰ সহিত পালন করিতে চইবে। এবং যাহা যাহা কর্ত্তরা ভাচাই ভগবানের विधान, अञ्जल मान कविटा इवंदा। अहे अकात खावनिवात দাবা তাঁহার প্রসাদ লাভ করিতে হইবে। তাঁহার আদর্শ পাইয়া যিনি কর্মকেত্রে অবতীণ হইবেন তিনিই ক্লুতকায়া হইবেন। এইরূপ একটা লোক ও যদি ব্রন্তনিষ্ঠাব স্বারা সিদ্ধ ইযা, ব্রহ্মফুর্তি লাভ কবিয়া কার্য্য করিতে অগ্রসেব হন, তাহা হটাবেও ভাহাব সংস্পাদে আনেক লোক নৃত্ন জীবন প্রাপ্ত হইতে পাবিবেন। কিন্তু আমাদিগকে আর একটা বিষয়ে সাবধান হইতে হইবে। শুনিয়াছি পূর্ববালে বাঁহারী তপস্থা করিতেন, তাঁহাদিগকে প্রতিনিবৃত্ত কবিবার জন্ত্র নানাপ্রকার . দৃশ্র আসিয়া তাঁহাদের সমুধৈ উপন্থিত হইত। কখনও নানা প্রকার ভয়ানক আফুডি, কথনও বা মনোমুগ্ধকর দৃশ্য স্কল ভাঁছাদের নয়নগোচর হইত। এই স্কণ দেখিয়া যাঁহাবা ভীত ৰা মুগ্ধ হইতেন, তাঁহাদিগের আবে সিদ্ধিলাভ হইত না। আমাদের তপভায় ঐরপ সাকার মূর্বিনা আসিতে পারে, कि इ छिहार छ विश्व श्रे बाहिवांत्र अञ्च अरनक तकम श्रीलाजन আসিবে। সময় সময় ত্থস্পুতা আসিয়া তপ্তার কঠেরেতা व्हेट शकिनिवृद्ध कतिएक (हर्श भाहेर्य। न्यावात ममन समन ভাবকতা আদিয়া বলিবে এফদর্শন আর কি ? এই ত তুমি ব্রহ্মকে পাইয়াছ। বাস্থবিক অনেক সময় নিজেব প্রকাপ্তিক ইচ্চাকে ব্রেক্সিব আদেশ বলিয়া আমবা গ্রহণ করিয়া পাকি। ज्लाबी निशंदक मार्रधान शांकिएक अहेरत (य. (यन द्यानक्रान আবামপ্রিয়তা কিম্বা ভাবকতা আসিয়া কর্ত্ব্য-পণ হইতে 145বিভ না করে। যে পর্যান্ত প্রাত্তক্ষ ভাবে ব্রহ্মকে দেখিতে নাপাইব ও তাঁগের বাণী স্পইকপে শুনিতে না পাইব, সে ্ছইটী কথাতে যে প্রভেদ্ আছে, ভাহা বিশ্বত চইয়াই সভ্তৰতঃ পর্যান্ত প্রতিনিবৃত্ত হটব না। এইরূপ ক্রমাগ্র ভপ্রতা বারা অশাগভপ্রাণ হইতে হটনে। যে পর্যান্ত এই প্রবার অগগভ প্রাণ হটতে না পারিব দে প্রান্ত যে কোন কাজ করিব না ভাহা নহে। সকল সময়েই আমাদের শক্তি অফুসারে জগতের **किटलन क्रम्म कार्या कतिएल थाकिन, किन्द्र बाहाएक काम्**द्रा তপভা দারা সিত্র হইতে পারি তংগ্রিই আমাদের বিশেষ मका थाविटन। जामता मर्मागारे भिकाशी थाकिन। मर्द्धमा मक्षक व्यवसङ कतिया भगत्यत तिक्रे शिक्रांशां कतिय।

বিনরই ভক্তিপণের প্রধান সহার। আর আমরা ঘটাটুকু বৃশ্বি ভভটুকু মাত্রই অন্তকে ব্ৰাইভে চেটা করিব। অ<sup>নো</sup>লক সমর এই विষয়ে আমাদের দৃষ্টি থাকে না; এবং ভাষা<sup>টো</sup>ভ নিজের ও সমাজেব বথেট অমঙ্গল হয়। আর এই তপ্<sup>লী</sup>লা করিতে করিতে ষ্ডট স্তালাভ ক্রিতে থাকিব তত্ই আমাদে ্ব নিজের ও লগতের মলল হইবে। যাঁহানা তপ্তার সিদ্ধ হইরী লাছেন তাঁহাদের প্রচার কবিবার জন্স বেশী প্রয়াস পাইতে হয় নীপী। মহর্ষি ঈশাভিন বংসরের মধো যাহা প্রচার করিরাছেন, ভাচা 🕛 অন্য লোকে শত বংসরেও করিতে পারিত না। তাঁচাদের कीवटनत अमनहे अक मातूरी राष्ट्री योग रा, जाकारमंत मरम्मार्ग जांत्रित्वहे त्नारकत मन वनवाहेश याग्र; उँ। हानितरक जात বেশী বক্তা করিতে হয় না। এই তপস্তা বাতীত কোন लाकहे तिक इहेर अारवन नाहै। यिनि स्य मिरक उन्नि করিয়াছেন, তাহার মূলেই তপস্তা ৷ ব্রাহ্মগণের দৃষ্টি যেসন সমাজের অভাবের দিকে পডিয়াছে, ক্রেমন এই উপায়টিব দিকেও পত্তিত চউক। বাক্তিগত ও সামাজিক জীবনে এই ভপস্তা ও ব্রতনিষ্ঠাব উন্নতিব একমাত্র স্হায়। প্রত্যেকে তপস্তা দারা নিজের জীবনকে নিযমিত কবিতে চেষ্টা না পাঁইযা বাহিবে যত্ত উদেবাগ কব, সমস্তই বিফল ছইবে। আছার এই তপ্রসার ভাব আমাদেব মধো যত প্রবল হইবে, ভত্ত দৈখিতে পাইব যে আমাদের ধন্মপ্রাণতা বাডিতেছে । স্বতরাং ভাহার সঙ্গে সঙ্গে পরস্পরের প্রতি শ্রদ্ধা ও প্রেম্ম ডান দেখা ষাইবে। জ্ঞান ও সেবার ভাব ক্রমে বর্দ্ধিত হইবে। এই-ক্লপ করিলে ব্রাহ্মসমাজ আবার সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করিছে পারিবে৷ যে উদ্দেশ্য বইয়া ব্রাহ্মসমাজ জগতে অবতীৰ হইয়া-ছেন তাহা সুসিদ্ধ হইবে। ভগবান ককুন ব্রাহ্মগণ দৃঢ়প্রতিক্ত হট্যা দেব আশীকাদ লাভ করিবার জন্ত গভীর তপভার নিযুক্ত হউন।

## প্রোরত পত্র।

( পত্রপ্রেরক্ষিপের মতামতের জন্ত সম্পাদক দায়ী নহেন। )

মহাশ্য স্মীপেযু

মহাশয়! এই পত্রধানি যথাস্থানে প্রাকাশ করিয়া বাধিত क किरवन।

"দক্ষ ধর্মেই সভা আনছে" এবং "দক্ষ ধর্মেই সভা" এই কৌনুদী সম্পাদক মহাশয় "সবল ধর্মাই স্থাৰ-প্রভিষ্কিত" এবং "সকল ধর্মই সভা" এরূপ মত প্রকাশ করিতেছেন। নতৃবা জ্ঞান ও বিচারবৃদ্ধির অভিতে বর্তমান থাকিতে, এরূপ কথায় সার मिवात क्यान ऋविधा छ एमशा यात्र ना। (कोमूमीमुल्लामक कोमू-मीत छाजगारमत ১म भरकत मध्यात धर्मात करमकी मक्त निर्फिन कतियार्कन, यथा—"धर्यंड ध्वकंष्ठी abstraction नरि, কিন্ত ধৰ্মীৰ স্মাভাজনীণ ভাবের বিকাশ ও বিবর্তনমাঞ্র" "সাজের অনতের দিকে গভিই ধর্ম 'এই গভি জীবের প্রাদারত, জীব

मकार्त अकारन मर्सनाई जाननात्रं मीमा हाए।देवा जनएक উড়িতে চেটা করিতেছে। ইহাই জীবের ধর্ম। অগ্নির ধর্ম (वमन উक्षक) करनत धर्म (यमन देणका,.....कोरवत धर्महे ্সেইরূপ এই অনস্থ লিপা।" অগ্নির ধর্ম উষ্ণভা, জলের ধর্ম শৈতা, ইহার বাতিক্রম দেপা যায় না। ধর্ণন ব্যতিক্রম হয় ভখন সে তাহার ধর্মচাত হয়, ইহা বলাই সঞ্চত। জালে মুখন উষ্ণতাত্মভব হয় তথন সে ধৰ্মচাত হইয়াছে ইহা বলাই স্কৃত, কিন্ত তাহা না বলিয়া যদি জলের উষ্ণতাবস্থাকেও সধর্মেন্তিতি বালতে হয়, ভবে এরূপ উজিকে কি বিচারবিক্ষতি বলা উচিত নহে। তেখনি অন্তলিপাদম্পন্ন জীব যদি কোন স্মীম জড় বস্তুকেই অনেজ্ঞান. করিয়া, ভাহাকেই আপনার লক্ষ্য করে, তাহা কি সেই জীবের পক্ষে ধর্মচাতি নহে। তাহার উদ্দেশ্য ভাগ 🕫 ইংলও হইতে পাবে। কিন্তু দে অঞ্চতা প্রযুক্ত এক বস্তুকে অপ্র<sup>8</sup>িবস্ত মনে করিলে, কি উদ্দেশ্য ভাল বলিয়াই ভাছার সাধনা সিদ্ধ হটবে। একব্যক্তি কলিকাতা হটতে বৰ্দ্ধমানে যাইতে ইচ্ছুক ইট্রা, যদি ডায়মণ্ড হারবারের গাড়ীতে চলিতে থাকে, তাহাদারা কি তাহার বর্দ্ধান যাওয়া হইবে ? তাহার উদ্দেশ্য दा निश्नात कान कि वा अज्ञात नाहे। कि ख यर्जानन াছার এই ভ্রান্তির সংখোধন না হইবে, তত্ত্তিন বর্দ্ধানের দিকে ভাহার<sup>(</sup>একপদও অগ্রসর হওয়া ঘটিবে না**৷ স্থ**ভরাং অনুনন্তলিপাশালীমানৰ যত দিন জড়ৰাসীমাৰদ্বত ৰস্তকে অতিক্রম না করিবে, ততদিন তাহার গতি অসনস্কের দিকে ক্ষনট হইবে না। তাহাৰ প্ৰিশ্ৰম বুণা প্রিশ্ৰম হইবে। ভবে এক্নপ পবিভান করিছে করিতে যখন সে বুঝিৰে যে বুখা পরিশ্রম হইতেছে, উল্টাদিকে দাঁড টানা হইতেছে, তথন যদি স্তবুদ্ধি হয়, তবেই সে আবার স্থপথে আসিতে পারিবে এবং ধর্মলাভ করিছে সমর্থ হইবে। নতুবা একমাত্র লিপা। থাকিলেই 🔓 কাহাবও সিদ্ধিলাভের সম্ভাবনা নাই।

ধন্ম যদি ধন্মীর আভাস্তরীণ ভাবের বিকাশ ও বিবর্তন মাত্র হয় এবং ভাষার প্রতিষ্ঠাতা যদি ঈশর হন, ভাষা হইলে ঘটনা কিরূপ হয় দেখা যাউক। কৌমুদার ভাদ্রের ২য় পক এবং আখিনের ১ম পক্ষের সংখার ১ম পৃষ্ঠার লিখিত হইরাছে যে, "এগলাম ধশ্যের মূলমন্ত্র এই যে, নিরাকার ঈশবের কেছ সমকক নাই, এবং কখনই ছইটে পারে না; তিনি কাহাব । क्रम धात्रण कतिया देहकगटि चारमन नाहे ५ १९ काहात कह ভাৰতারও নাই। তিনি কোন বস্তুতাতও নন এবং কোন বিশেষ ভানে আবিদ্ধও নন ইভাদি।" এসলাম ধর্মের এই যে मृतमञ्ज, हेश व्यवश्रहे धननामधर्मी पिरात व्याक्ति खती। विकास ও বিবর্ত্তন। স্থভরাং ইছা ধর্ম এবং এট ধর্মের প্রতিষ্ঠাতাও ঈশ্বর। আবার অঞ্চলিকে হিন্দুগণের আভ্যন্তরীণ বিকাশ বা বিবর্তনের ফল ঘাহা, তাহা আমরা সকলেই জানি, যথা---ঈখরের মংস্ত, কুর্মা, বরাহ, নৃসিংহ, ও নর প্রভৃতির আকার পরিগ্রহ পূর্বক পৃথিবীতে অবতরণ। এই যে ধর্মীর আভাস্তরীণ ভাবের বিকাশ বা বিবর্ত্তনরূপধর্ম ইহাও ঈশরেরই প্রতি ভিত। কারণ "কগতের সকল ধর্মাই এক ধর্ম।ৰহ প্রমেখনের প্রতিষ্ঠিত," এখন এসলামধর্ম ও হিন্দুধর্ম, হাহ। পরস্পারের

বিল্লেখী, মাছা একের সহিত তুলনার অপরের বিপরীত ভাবের জ্ঞাপক, এই উভর বিক্রভাবাপর বিকাশ বাবিবর্তন পরম স্থান্তবান প্রম্পবিত্র প্রমেশ্বরেরই প্রতিষ্ঠিত বলিলে বা ঠাহারই প্রস্তুত করা জিনিস বলিলে, তাঁহার স্তায় ও পবিত্রতার কি দশা হয় ? আমরা অপূর্ণ, ও জ্ঞানে অতি হীন মানব হইয়াও আপ্নাদিগকে এরপ ছই বিরুদ্ধ ধর্মবিশিষ্ট বস্তুর স্ষ্টিকর্তা বলিয়া পরিচয় দিতে সৃষ্টতিত হইরা থাকি। এক মুখে তুই কথা যাহারা বৰেন, তাঁহাদের প্রতি শ্রদ্ধা প্রদর্শন করিতে কে প্রস্তুত তবে ঈশবের সম্বন্ধে এরপ অযথা উক্তিতে কি কোন অপরাধের অংশী হইতে হয় না ্ ভাল কাজ করিবার শক্তি না পাকে নাই বা করিশাম; কিন্তু অকার্য্য করিয়া প্রত্যবায়ভাগী হইবার প্রয়োজন কি ? বরং এরূপস্থলে নিজিয় থাকাই প্রার্থনীয়। ধম্মের সদ্ব্যাখ্যানা করিতে পারা যায, क्याथा। कतिया कि कल १ जनाता मामाज खान लाकित বিচার শক্তিকেই বিপথগামী করা হয়, এবং কেবলই কুদংস্থারসকলকে প্রশ্রের দেওয়া হয় । এরূপ চেষ্টায় যদিও মানবীয় ধ্যুবাদ লাভের স্স্তাবনা আছে, প্রশংসার শ্রুতিমধুব ধ্বনি শ্রবণ করিবার আশা আছে, কিন্তু কল্যাণের পথে অগ্র-সর হইবার সম্ভাবনা নাই বলিলেই হয়। স্কুতরাং একপ কার্যোর প্রায়াসী বাঁহারা, ভাহাদের স্মতি হউক ইং:ই পরমেশ্ব সমীপে প্রার্থনা।

স্কল, ধর্মেই সভ্য আছে: ভাষা স্বীকার করিতে সংকাচ করা বেমন নিতান্তই অজ্ঞের কার্যা, "স্কল ধর্মই সভ্য" ভাষা স্বীকার করাও তেমনি বিচারবিহীন এবং জ্ঞানবুদ্ধিব অবমাননা-কারীর কার্যা। বে ধর্মের যেটুকু সভ্য, ভাষাই ঈশবের প্রভিত্তিত এবং ভাষাই ধর্মা। এরপ না বলিয়া সভ্যাসভা মিশ্রিত ধর্মমাত্রকেই ঈশর-প্রভিত্তিত বলিলে ভাষা ঘাবা সভ্যাস্থর পরমেশরের বিকল্পে অভি ভীষণ ও মারাত্মক অভিবোগ উপস্থিত করা হয়। শুভ্মতিদাভা প্রমেশর এই প্রকাব সংস্কার হইতে জনসমাজকে উদ্ধার ককন।

নিবেদক এ.....

কলিকাভা

## ব্ৰাহ্মসমাজ।

আমাদের পবলোকগত বন্ধ্ আসাম নিবাসী গুণাতিবাম
বড়ুয়া মহাশর প্রাক্ষাদিগেব নিকট বছদিনের পরিচিত লোক।
বিগত করেক বংসরে মৃত্যু তাঁহার পরিবাব মধ্যে
প্রবেশ করিয়া একে একে গম্দার পরিবাবটা নিঃশেষ করিয়া
কেলিল। তাঁহার জােচ পুলটা গেল, পত্নী গেলেন, জামতাটা
গেলেন, স্বয়ং গেলেন, তৎপরে সম্প্রাত তাঁহার মধাম পুলু কমলা
ভিরাম তাঁহাদেব সহিত স্মিলিত হইয়াছে। এ সংবাদে তাঁহার
বন্ধ্র বান্ধর সকলেই বিশেষ ছঃখিত হইবেন। বিগত ১০ই
ভিসেম্ব সােম্বাব ভাহার ভরিনী স্বর্ণতা রায়ের ভবানীপুবস্থ
ভবনে কমলাভিবামের প্রান্ধ সম্পার হইয়াছে। কমলাভিরামের
ভরিনী ও কনিষ্ঠ জান্ধা এতত্পুলক্ষে বান্ধন্যাহের নানাবিধ
কাব্যা ২০০ একশত টাকা দান করিয়াছেন। প্রমেশ্বর
পরলোকগত আ্লামানকে শান্তিতে রক্ষা ক্ষন।

সাধনাশ্রম—প্রেই সংবাদ দেওয় ছইয়াইল বে সাধনাশ্রম হইতে ছইটা দল বহির্গত হইয়া ছই দিকে প্রচার্থ করিছেন, জাগর দল ক্ষনগর, কুয়য়া, পাবনা প্রভৃতি জান ছইয়া পূর্ব-বঙ্গের অভিমুখে গিয়াছেন। বাবু কুয়লাল ঘোষের শরীর ম্যালেরিয়াগ্রন্থ হইয়া অসুত্ব হওয়াতে বরিশালের দল সম্প্রতি কনিকাভাতে ফিরিয়া আসিয়াছেন। ফিরিয়া আসিয়া তাহায়া কিছু দিনের জন্তা নগহাটী রামপুর হাট প্রভৃতি জানে গমন করিয়াছেন। ভাহাদের সাল্যলাভ মুখা উদ্দেশ্য।

তিভয়ই দলই সর্বাত্ত বর্ণাসাধ্য ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করিয়াছেন এবং প্রচ্র পরিমাণে ব্রাহ্মধর্ম প্রতিপাদক প্রকাদি বিজ্ঞার করিয়াছেন।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সভাপতি প্রদ্ধাভাজন ত্রীবৃক্ত জানক মোহন বস্থ মহাশর বিগত ১০ই ভিসেম্বর রহস্পতিবার অন্দেশে ফিবরিরা আসিরাছেন। কলিকাভাবাসী ব্রাহ্মদিগের জনেকে উাহাকে জভ্যর্থনা করিবার জক্ত পঙ্গার ঘাটে গিরাছিলেন। গঙ্গার ঘাট হইতে পরিবার পরিজ্ঞন ও বন্ধ্বান্ধবসহ তিনি খীর ভবনে উপস্থিত হইলে, সেখানে সর্ব্বাহ্বে সকলে সমবেত হইরা একটু উপাসনা হর, তৎপরে জানক্ষমেহন বাব্র পত্নী মিষ্টালের হারা উপস্থিত বন্ধুয়গুলীর পরিচর্ব্যা করেন।

১৬ই ডিসেম্বর রবিবার হাঁইকোর্টের এটার্নিণ শ্রীযুক্ত স্থরেক্তনার্থ দাস, মহাশরের বেলম্বিরাম্থ উদ্যানে ব্রাক্ত-সন্মিলনীর এক বিশেষ অধিবেশন হইরাছিল। তাহাতে কলি-কাতাবাসী ব্রাহ্মণ আনন্দমোহন বাবুকে শ্বভিনন্দন ক্রিরাছেন।

আমাদের ব্রাহ্মবন্ধ্ শ্রীযুক্ত কুঞ্জবিহারী সেন সম্প্রতি ভক্তিভাজন মহর্ষি দেবেজ্র নাথ ঠাকুর মহাশয়ের নিকটে ব্রাহ্মধর্ম প্রচারব্রতে দীক্ষিত হইরাছেন। তত্পলক্ষে মহর্ষি যে উপদেশ দিয়াছেন। তাহা জানাস্তরে মুদ্রিত হইব। কিন্তু ইহাতে যেন কেহ্মনে না করেন যে কুঞ্জ বাবু আদি সমাজের বা আক্র কোন সমাজের প্রচারক হটলেন। তিনি স্বাধীন ভাবে প্রচার ক্রিবেন।

উৎসব—শিলং তাজসমাজের বিংশতিত্য জন্ধ দিন উপলক্ষে বিগত ৩রা ইইতে ১১ই নবেম্বর পর্যান্ত নয় দিনবাাপী উৎসব হইয়ছিল। ইহার মধ্যে তিন দিন শিলং ত্রাজসমাজ মন্দিরে, একদিন লাবান উপাসনা সমাজে উপাসনা হয়। জাব-শিষ্ট কয়দিন স্থানীর ত্রান্ধ পরিবার সকলে উপাসনা এবং মানাভানে বক্তা ও আলোচনা হয়। ৠয়ুজ্ঞ বাবু নবছীশচক্র দাস,
বাবু নীলমণি চক্রবর্তী, বাবু সদয়াচরণ দাস, বাবু ছর্গাদাস য়ায়
এবং বাবু শিবনাথ দন্ত এই সকল উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য
করেন। নবখীপ বাবু 'ত্রাক্ষধর্মের মন্ত্র,' 'আধ্যাত্মিক
উল্লিডি' প্রভৃত্তি বিবরে উপদেশ বেন ও বক্তৃতা ক্ষেম এবং
আলোচনা করেন। 'শিশুর ক্লার সরলতা,' 'লাধ্দিগেম্বনব্দীবন লাজ' নীলমণি বাবুয়, উপদেশ ও বক্তৃতার বিবর
ছিল।

প্রচার— তীবুক বাবু মবদীপ চক্র দাস প্রাসিয়া পাছাক্তের নানাছানে আন্ধর্ম প্রচার করিতেছেন। তিনি মৌশার আন্দ্রমানে একদিন "আন্দ্রমানের বিশেব কার্যা এবং ডজ্জ্ম খাসিয়া আত্গণের দারিত" এই বিবরে উপদেশ দেন। নীলমণি বাবু খাসিয়া ভাষার সমাগ্র ইয়াভাদিগকে তাহার উপদেশের মর্ম্ম বুঝাইরা দেন।

भाधनाळामत भूर्वतक श्रात्या विशालत कारी विवल्त ।

পাধনা—২৬ শে নবেছর রক্ষনীতে বাবু যোগীক্ষেনাথ মুখো-পাধ্যারের বাদার সংগীত ও ধর্মব্যাখ্যা হর।

২৭ শে নবেম্বর প্রাতে আহ্মবদ্ধু বাবু কৈলাস্টক্স বাগছির বাসার প্রাতে পারিবারিক উপসনা হয়। অপরাহ্ন ও ঘটিকার সমর জেলাফুল গৃহে নীতি সম্ভার ক্তাত্র ।

২৮ নবেশ্বর প্রাতে কৈলাস বাবুর বাসায় পারিবারিক উপাসনা হয়; সন্ধ্যা ৬২ ঘটকার সময় ব্রস্থানিংগ্ন সংগ্রীত, সংকীর্ত্তন সহযোগে ধর্মবাশ্যা হয়।

কুঞ্জীরা— ১লা ডিসেম্বর আক্ষবকুগণের বাসায় উবাকীর্জন হর। অপরাহু ও ঘটিকার সময় কুঞ্জীয়া এন্ট্রাস্ কুলে নীজি সম্বন্ধে বক্ত ভাহয়।

>য়া ডিসেম্ম রবিধার ভোর কীর্ত্তন হয়, তৎপত্ম মন্দিরে সমবেন্ত উপাসনা হয়। সন্ধা ৬২ ঘটকার সমর মন্দিরে উপা-সনা ও উপাদেশ হয়।

কুমারখালি— ৩রা ডিসেম্বর রন্ধারণচক্র সরকারের গৃতে সমবেত উপাসনা হয়।

৪ঠা ডিসেশ্ব স্থা। ৬
ই বটিকার সময় স্থানীয় এক্ষমক্ষিকে
ধর্মজীবন স্থকে বজুতা হয়। ।

६ जित्रवत्र व्यादेक मिल्या नगरवङ छेलानना इत ।

প্লিলপুর--- १ই :প্রাতে ভোর কীর্ত্তন হর। এই কু বাবু রজনীকান্ত সরকারের গৃহে উপাসনা ও উপদেশ হর।

রাজবাড়ী—৮ই ডিসেশর প্রাতে বাব্ যহনাথ সেনের বাসার ভোর কীর্ত্তন হয়। অপরাজ ২ ঘটিকাব সমর স্থানীর এন্ট্রান্স ক্লেনীতি সুমধ্যে বক্তা এবং সন্ধ্যা ৬২ ঘটিকার সময় শ্রেমগুরেক্স দেশীর কর্মচারীদিগের গৃহে সংগীত ও ধর্মবাধ্যা হয়।

'দ্বি--- মেদিনীপুর হইতে জীমুক বাবু চর্গনোয়ারণ বস্থ মহাশ্বর প্রের পদোয়তি উপলক্ষে দাতব্য বিভাগে ১ৢ ঠ সাধনাশ্রমে ১ৢ টাকা দান করিয়াছেন।

ভ্ৰমসংশোধন—গত ১৬ই অগ্ৰহারণের তরকৌমুদীংও কার্যানির্বাচক সভার তৃতীর ত্রৈমাসিক কার্যা বিবরণীতে বে "নৃতন পুত্তক" শীর্ষকপ্যারাটী প্রকাশিত হইরাছে। ভাষা ব্রাহ্মসমাজ কলমে প্রকাশিত হক্লরা উচিত ছিল। এমজ্বে উক্তর্ম ইইয়াছে।

#### तिखालन। •

আগামী ১১ই জান্তরারি গুক্রবার ৫ই ঘটিকার সমন্ন সাং ব্রাঃ সমাক্রমন্দিরে অধ্যক্ষ সভার চতুর্ব বৈমাসিক অধিবেশন হইবে। বিবেচ্য বিষয় ।

১। কার্যানির্বাহক সভার ৪র্থ জৈমাসিক কার্যাবিবরণ ও আর ব্যবের হিসাব।

- २। नित्रभावनी जःग्याधन।
- ७। विविध।

# ভত্ত-কৌমুদী

# ্ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১৭শ সংখা। ১৭শ ভাগ।

১৬ই পোষ রবিবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৫।

## প্রার্থনা।

रह मुक्किनांछ।। मञ्चरमय পবে আবध्य আমবা আশাপূর্ণ নয়নে ভোমার দিকে চাহিতেছি। শত ত্র্বলভার মধ্যে পডিয়াও ভোমার দিকে চাহিতেছি। নৃতন বৎসর আসিতেচে, केंग्डा हहेरङ हा थे अर्थ अर्थ कामार्यंत अञ्च नृत्रन कीवन আহক; আমবা অভ্যাদেব জীৰ্ণ কন্থা ফেলিয়া দিয়া নব আশাবে নৃতন বস্ত্র পরিয়া কোমাব সম্মুধে দণ্ডায়নান হই। আমাদেব সমক্ষে কি বিস্তাৰ্থ কাষ্যক্ষেত্ৰ বহিয়াছে, অৰ্থচ আমরা এরূপ ভাবে চলিতেছি যেন আমাদের কবিবার কিছু নাই। যাহাদিগের উপরে গুক্তর দায়িত্ব ভার পড়ে, তাহাবা কখনই আপনাদেব অবভা বিশ্বত হয় না, াকন্ত আমরা এরূপ ভাবে চলিতেছি যেন আমাদেব উপর কোনও গুরুত্ব দায়িত্ব ভার নাই। আমাদের ল্পুচিত্ততা বশতঃ আমরা আপনাদের দায়িত্বভাব সমূচিত কপে অনুভব কবিতে পারি-তেছিনা। যে সকল শক্তি সমবেত হইলে ভোনার কার্য্য স্টাক্রপে ইইতে পাবে, সেই সকল শক্তিকে প্রম্পর হইতে বিচ্ছিন্ন করিয়া বৃথা ক্ষয় কবিতেছি। তোমাব প্রতি যদি আমাদের সমুচিত প্রেম থাকিত, এবং নিজ নিজ গৌবব অন্বেষণ না কৰিয়া, যদি একান্ত অন্তবে বাস্তবিক তোমাব গৌবৰ অন্বেষণ কৰিতাম, তাহা ছইলে বোধ হয় এক্লপ কৰিতে পারিতাম না। উৎসবের প্রাকালে তোমাব চরণে পডিয়া আর্থনা কবিতেছি, আমাদিগকে সীয় সীয় জীবনের দায়িত্ব ভার অফুভব করিতে সমর্থ কব : এবং নিজ গৌরব অপেকা ভোমার গৌবব অবেষণে প্রবৃত্ত কব।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

মতে শ্বেন ক্রিয়াছিলাম, আয়শোধনের যে ব্রত লইয়াছিলাম, আয়শোধনের যে ব্রত লইয়াছিলাম, আয়শোধনের যে ব্রত লইয়াছিলাম, ভাষা কি পরিমাণে সিদ্ধ হইয়াছে, তাহা দেখিবার সময় উপস্থিত। এই উৎসবের পুর্বে ব্রাক্ষ ও ব্রাক্ষিকার আয় জীবন

প্রীক্ষা করিবার সময়। ধে সকল লোক সংসারে উদ্দোশ্র-বিহীন, সংকল্পবিহীন, সাধনবিহীন জীবন যাপন করেন, তাঁহারী আত্মপরীক। ভারা আনন্দ বা স্থ্য, অস্ত্রভাপ বা ক্লেশ . কিছুই অহুভব করেন না। কিন্তু যাঁহাবা ব্রাহ্মজীবনের আদর্শ পাইয়াছেন, ত্রহ্মশাধন ত্রত জীবনে গ্রহণ কবিয়াছেন, তাঁহার প্রতি প্রীতি ও তাঁহার প্রিয়কার্যা সাধনকেই জীবনের একমাত্র লক্ষ্য বলিয়া গ্রাহণ কবিয়াছেন, তাঁহোদের স্থিরচিত্তে স্বীয় স্বীয় জাবনের অবস্থা পর্যালোচনা করা প্রয়োজন। উৎসব বাৎসরিক ভাৰতবঙ্গের থেলা নহে। জীবন সংশোধনেব জন্ম, প্রভুর সেবাব জন্ম, নৃতন সংকল্ল ও ব্ভ গ্রহণ করিবার এই উপযুক্ত সময়। গত বংদর উৎসবের সময়ে যাহারা বিশেষ বিশেষ ব্রভ গ্রহণ কবিয়াছিলেন, উৎসবের পূর্বেক ঈশ্ববচবণে বসিয়া দেখা কণ্ডব্য সেই স্কল এত জীবনে কি পবিমাণে রাক্ষত হইয়াছে। গভীর আত্মপ্ৰীক্ষাও অনুতাপ বাতীত জীবন কি সংশোধনেৰ পথে অগ্রাস্য হয় ৫ গাঁহার সংকল্ল আছে, উদ্দেশ্য আছে, তাঁহার জাবনে অমুতাপ এবং অশ্ৰও আছে। চিস্তাবিহান ও উদ্দেশ্য-বিহীন জীবনে অমুতাপ নাই, সংশোধনেব প্রবৃত্তিও নাই।

পুকো আমাদেব মনে এই প্রশ্ন উদয় হইতেছে; কি কবিলে উৎসবটা উত্যক্ষে নির্বাহ হইবে। माधनविशीन ७ ि छाविशीन कौवन लहेगा छे १ मत्व (शाल कि উহাস্থচাকরপে সম্পন্ন হইতে পাবে গ যিনি নৃতন সংকল্প লইয়া ণতবৎসরে কার্যাক্ষেত্রে গিয়াছিলেন, এবং সমগ্র বৎসব সেই ব্রত পালনে যতুশীল ছিলেন হঃথ ও হ্বলতাৰ মধ্যে সেই সংকল্প ভূলেন নাই, তিনি আজ উৎসবেব ঘাবে নব বলেব জন্ম উপান্তত। এইরূপ আশাতেই তিনি আজ অনুতাপ ও চকালভার মধ্যেও ঈশ্বরের করুণাশ্ববণ করিয়া ক্লভজ্ঞ হইতেছে, এবং তুর্বলতাব মধ্যে বল লাভের আকাজ্ঞা ক্বিভেছে। ব্যাকুলাত্মাদিগের সন্মিলনেই উৎসব হয়। কোনও যাত্র নতে যাহাতে আবোহণ করিলে মাতুষ ধার্মিক হয়; উৎসব সাধনশীল ও চিস্তাশীল এবং ব্রডপরায়ণ জীবনকেই উন্নত করে। এক্ষি ও আক্ষিকাগণ উৎসবেব দারে এই ভাবে উপস্থিত হইলে উৎসব সজ্যোগ কবিয়া ক্নতাথ হইবেন ; জীবনে नुखन वन चामिर्त, उदमव कमाठे रहेर्त ।

প্রেমের ভাষা— স্বিধ্যাত পর্যাটক মহাত্মা লিভিং-টোন আফ্রিকা ভ্রমণের সময় সেই দেশীয় লোকদিগের ভাষা জানিতেন না, তাঁহাব ভাষাও তাহাবা বৃথিত ন।। কিন্তু কি এক অফুট ও শক্বিহীন ভাষাতে তিনি কথা বলিতেন যে সেই অসভা লোকেবাও তাঁহার অফুগত হইরা যাইত।

কুকুর প্রভৃতি ইতব প্রাণীগুলি নিজ নিজ প্রভুব অধীন হয় কেন? প্রভুর ভাষা কি ভাহাবা বুঝিতে পারে? কোন্ কথা শুনিয়া এই অধীনভা, এই আমুগত্য। ইহা প্রেমেব ভাষা— ইহা নীরবে মানবেব হৃদয়কে অধিকার করে। প্রেমিকের সংস্পর্শে আসিলে কি এক শন্ধবিহীন বাণী প্রাণকে হরণ করিয়া থাকে।

প্রেম জগতে মহাশক্তি।প্রগমে ইহা অফুভব করা যায় না। জাবন বত উল্লত হর, তত্ই ইহার সত্যতা অফুভূত হইতে থাকে।

আমবা কাহাব কল্যাণ্যাধন কবিতে পাবি ? যাহাকে 
থলা কবি ? যাহাব বিক্দে শত কুভাব পোষণ কবি ? না 
যাহাব মঙ্গল চাই, গাহাব প্রতি প্রেম আছে। সর্বাদা এই কথা 
ভনা যায় যে উপদেষ্টাব প্রতি যদি শ্রোভাব বিশ্বাস থাকে, তবেই 
উপদেশের দারা উপকাব হয়। ইহা সত্য হইলেও, ইহাব 
বিপবীত কথা কি ততোবিক সত্য নহে যে উপদিষ্টেব প্রতি 
বদি উপদেষ্টাব বিশ্বাস থাকে, তবেই উপদেশেব দ্বাবা উপকাব 
হয়।

এই প্রেমের আদর্শ দিয়া যদি আমাদেব অবস্থা বিচাব কবি তবে আমবা সেই আদশ হইতে অনেক নিয়ে পতিত বলিয়া নিশ্চয় ব্ঝিতে পাবিব। আমরা উপাদনা ও প্রার্থনা দারা প্রতিদিন ত্রাহ্মধর্ম সাধন কবিতেছি। ত্রাহ্মধর্মের সাধন কি ? "প্রীতিঃ পরম সাধনং।" ঈশ্ববে প্রীতি ও মানবে প্রীতি ত্রান্দের সাধন। জীবনে হদি প্রতি দিন প্রেম-বিবোধী কার্যোর অফুষ্ঠান হয়, প্রেম-বিরোধী ভাব, ভাষা ও চিন্তা পোষণ করি, তবে কি আমরা ব্রাহ্মধর্ম সাধন হইতে বত দরে পতিত হুই নাণ যাহা প্রার্থনাতে ঈশবের নিকটে চাই, প্রতিদিন জাবন সংগ্রামে যদি তাহার জক্ত যত্নশীল না হই, তবে कामारमंत्र राहे धार्यनात्र मुना कि? यमि कौवरन जाक्रधर्य চাই, बाक्तभन्त्र नवनातीत मत्था अवयुक्त रूडेक विनवा देव्हा कति, আসিতেছে যদি ভাই ভগিনার প্রতিপ্রেম না থাকে, তবে কোন্সাহসে উৎসবের দারে গিয়া দাঁডাইব ? আময়া সকলে যদি প্রেমে তাঁহার চবণে স্থিলিত হইতে পারি, তবেই তাঁহার ক রুণা অবভীর্ণ হইবে এবং আমাদেব জীবন ধরা হইবে।

সকল কাথোট থেএনের জয়। ধর্মসমাজ প্রেমহীন হইলে ভাহার হরবস্থার আরে কি সীমা থাকে ?

.সত্য সতাই ইলা মহাপুরুষের উত্তি "বদি আমার মঙ্গল ক্রিতে চাও, তবে প্রথমে আমাকে প্রীতির চক্ষে দেখ।"

ব্রাক্ষি-বালক—কলিকাতাতে যে সকল ব্রাক্ষ বাস করেন তাঁহাদের অধিকাংশই দরিত্র। তাঁহারা নামে মধ্যবিত শ্রেণীর

লোক, কিন্তু বস্তুত: দরিদ্র। তাঁহাদিগকে ক্লেশে পরিবারের ভরণপোষণ করিতে হয়। অধিকাংশ ব্রাহ্মপবিবারই অতি সামার ভাড়া দিয়া হুই একটা ঘর ভাড়া করিয়া কোনও প্রকারে তন্মধ্যে স্প্রিবাবে বাস্ক্রেন। সেরপ গ্রে বালক বালিকারা যথন বাডীতে থাকে, তথন তাহাদিগকে সেই সকল কুদ্র স্থানে ধবিয়া বাথা ভার হয়, এবং অধিকাংশ স্থলেই পিভামাতা ধৰিয়া বাখিতে পাবেন না। একটা ৮ কি ১০ বৎসবেৰ বালক, ক্রীডা যাহাব পক্ষে স্বাভাবিক. সে সমস্ত দিনেব পরি-শ্রমের পব কুল হইতে আং দিল। কুলে সে ৫ ঘণ্টা একটী ঘরে বদ্ধ ছিল। সে বাডীতে আসিয়াও কি আবাৰ ১২ হস্ত দীৰ্ঘ ও ৭ হস্ত বিস্তার একটা ঘবে বন্ধ থাকিবে ৭ তাহা কি উচিত ? সে থেলে কোণায় ৪ স্কুতবাং তাহাকে গেলিবার জন্ম রাস্তাতে ৰা পাড়াতে বাহিব হইতে হয়। পিতা আপীসে, ৰান্তাতে তাহাকে দেখে কে ৪ সেখাটন সে কাহাব সঙ্গে মিশিতেছে ভাহার সংবাদ রাথে কে ৪ কাজেই সে অনেক সমর অসৎ বালকের সঙ্গে মিশিয়া অন্থ হইয়া যায়। এইকপে কলিকাভার অনেক ব্রাহ্মপ্রিবারের বালকগণ অসৎ হইয়া যাইভেছে। বৃদ্ কোনও ত্রাহ্ম পিতামাতা এই বলিয়া গর্ক করেন, যে উাহাবা তাঁহাদের বালকদিগকে শাসনে বাথেন, অর্থাৎ বাড়ীব বাহির रुडेट एन ना: उठकरव आमता विल, रेटा उ मरहारवव विवन्न নহে। বালকগণ সর্বাদা ক্ষত্র স্থানে বন্ধ গাকে, ইহা কোন ও মতেই প্রার্থনীয় নতে। তাহাতে তাহাদের স্বাস্থ্যভঙ্গ হওয়া অনিবার্যা। বালকদিগেবজ্বন্ত থেলিবাব স্থান থাকা নিতান্ত আবশুক। তাহা অতি অল প্রিবাঁবের ভাগোই ঘটে। এইঞ্জু আমাদের বোধ হয়, ব্রাহ্ম বালকদিগের জন্ম কলিকাতার বাহিরে যদি একটা বোর্ডিং স্থল কবিতে পাবা যায় এবং তাহাতে যদি সকলে সীয় সীয় বালকদিগকে প্রেরণ কবেন, তাহা হটলে এই অনিষ্ট অনেক পরিমাণে নিবারিত হইতে পারে। তাহাতে কিঞ্চিৎ অধিক বায় হইলেও বালকদিগের ও ব্রাহ্মসমাজের ভবিষাতের দিকে চাহিয়া সেরূপ কবা কর্ত্তবা। अञ्चल कराक अन दाक्राग्वक यपि দলবদ্ধ হইয়া. এই ব্ৰত গ্ৰহণ কৰেন যে ঠাহাৰা প্ৰতিদিন रेवकारण बाक्षवाणकमिशरक मलवक कतिया मार्छ रथिलएक লইয়া যাইবেন এবং যথাসময়ে •বাড়ীতে ফিবাইয়া আনিবেন, তাহা হইলেও অনেক উপকাব হইতে পাবে। নতুবা ত্রান্ধ বালকদিগের স্বাস্তা ও নীতি ছই নষ্ট হইতেছে।

ব্রাহ্মসমাজে নারীশক্তি—ব্রাহ্মসমাজে হালিকা প্রাপ্ত
নারীর সংখ্যা এখনও অতিশব অর । উালাদিগকে অসুলির
অগ্রভাগে গণনা করা যায় । কিন্তু এই অর পরিমিত নাবীরশক্তি ও ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যে সম্চিতকপে লাগিতেছে না । যে
সকল মহিলা রবিবাসরিক নীতি বিদ্যালয় করিয়া,ভাহার কার্য্যে
নিযুক্ত হটয়াছের এবংউৎসাহের সহিত সে কার্য্য চালাইতেছেন;
ভাঁহারা আমাদের সকলেবই ক্বতক্ততাভাজন তাহাতে সন্দেহ
কি ? কিন্তু তিন্তু আবিও কত মহিলা আমাদের মধ্যে রহিয়াছেন, তাঁহারা মনে করিলে আপনাদের শক্তিকে আরও কত
দিকে নিয়োগ করিতে পাল্লেন। কিন্তু তাঁহাদের শক্তিক সহায়ত

আমরা সমূচিত রূপে পাইতেছি না। ইহার কারণ কি ?
পুরুষণণ কি নারীগণের শক্তি অবরোধ করিরা রাথিতেছেন ?
অথবা তাঁহাদের মধ্যে সেই ধর্মায়ি প্রজ্ঞালিত চইতেছে না,
যাহা মাহ্যকে উৎসাহ আনিয়া দের, এবং স্বার্থনালে সমর্থ
করে ? এ ধর্মায়ি তাঁহাদের অন্তবে কেন জ্ঞালিচেছে না ?
পুরুষদিগের মধ্যে ত এমন অনেককে দেগিতেছি বাঁহাবা।
নবজীবন পাইয়া ঈশবের কার্য্যে আপনাদের অর্থ ও সামর্থা
দিতে আনন্দিত হইতেছেন,নারীগণের মধ্যে কেন এভাব অধিক
পরিমাণে প্রজ্ঞালিত হইতেছে না ? ইহার কাবণ বোধ হয়
এই যে বিশেষ ভাবে নাবীগণের মধ্যে কাজ কবিবার জন্ত
কোনও উপার অবলন্ধিত হইতেছে না ? যাহা হউক নববর্ষের
প্রাক্কালে এ চিস্কা আমাদের হৃদয়ে আসা ভাল, ভাহা হইলে
আগামী বর্ষে এবিষ্রের কিছু উন্নতি দৃষ্ট হইতে পারে ?

ঈশ্বের জনা কি ত্যাগ করিতে পারি—এ দেশেব সাধকগণ বার বার সংসারের অনিতাতা শ্বন কবিবার উপদেশ দিয়াছেন। মানব তৃমি ভূলিও না, এ জগতে তুমি চিবস্থায়ী নও; তোমাব জন্ত মৃত্যু নিশ্চিত আছে। অনেক সাধকের জীবনচরিতে একপ দেখা শন্ত যে তাঁহাবা তাঁহাদেব ধর্ম সাধনের অক্সন্থকা প্রতিদিন মৃত্যুকে শ্বন করিতেন। বার বার এ প্রকাব উপদেশ দিবার তাৎপর্য্য এই, যে এদেশের সাধকগণ অভ্তব করিয়াছিলেন, যে মৃত্যুকে বিশ্বত হও্যাই মানবেব মোহজালে জড়িত হইবার একটা প্রধান কারণ। মৃত্যুকে মান্তব ঘদি বিশ্বত না হয়, তাহা হইলে এত মোহে নিমগ্ন হয় না। কেই যদি বিদেশে চাকুরী কবিতে গিয়া জানে যে পাঁচ বৎসব পরেই তাহাকে শ্বদেশে ফিবিয়া আসিতে ইইবে, তবে কি সে সেখানে কোনও প্রকাব স্থায়ী সম্পত্তি কবিতে পারে হ যদি করে লোকে তাহাকে নিশ্বয় বাতুল বলে।

সমধ্যে সমধ্যে মৃত্যু চিন্তার তার আর একটা চিন্তার দার। আমাদের অনেক উপকাস হইতে পারে। আমবা যদি মধ্যে मर्पा जाभनामिश्यक এই अन्न कति (य. जामवा क्रेचरत्व अन्न কি ছাডিতে পারি ? তাহা হইলে আমাদেব আত্ম-পবীকার অনেক সাহায্য হয়। প্রেমেব পবীক্ষা ত্যাগ স্বীকারে। মৌথিক প্রেম প্রকাশে কাহারও কিছু ব্যর হয় না। সেকপ মৌথিক প্রেম প্রকাশ জনসমাজে প্রতিনিয়ত চলিতেছে। মানুষ মানুষকে প্রেমের কোন্ কথা না বলিতেছে! কিন্তু প্রেমের পরীক্ষাও প্রতিদিন হইতেছে। মাহম মূথে পরস্পরকে যত শ্রেমের কথা বলে, স্বার্থক্যাগ দাবা যদ্বি তাহার দশ ভাগের এক ভাগের প্রমাণ দিতে পাবিত, তাহা হইলে মহুষাসমাঞ আর এক আকার ধারণ করিত। মাতুষকে মৌথিক প্রেম প্রদর্শনের ক্রার ঈশরকেও মেথিক প্রেম প্রদর্শন করা সহজ, जाहारक कि हूरे राग्र नारे। कि ख এहे अभ यथनरे आश्रना-, দিগকে করি, ঈশবের কার্য্যের জন্ত কডটা স্বার্থনাশ করিতে প্রস্তুত আছি, অমনি প্রেমের পরীকা আরম্ভ হর।

জগনাথ তীর্থে যাহারা যান্ন, তাহারা অনেক সময়ে জগন নাথকে একটা কিছু দিনা আসে। সচরাচর বে বে বস্তকে সর্বাপেকা অধিক ভাল বাদে সে দেইটা দিরা থাকে। যে পরমার ভাল বাদে, সে পরমার দিয়া আসিল। যে আমে অভ্রক্ত সে আম দিরা আসিল। তৎপরে আর ভাহার। সমগ্র জীবনের মধ্যে সে দকল বস্তু আস্থাদন করে না। ইহাতে প্রেমের ও বিশ্বাদের পরিচয় পাওয়া যায়; ভাহাতে সন্দেহ কি ?

ন্তন ৰৎসর ও তৎসক্ষে মহোৎসব আসিতেছে, এসময়ে আমাদের প্রত্যেকেরই স্বীয় স্বীয় আত্মাকে এই প্রশ্ন করা ভাল "আমি ঈশরের জন্ত কি ছাড়িতে পারি ?" প্রত্যেকে চিস্তা করুন আগামী বর্ষে তিনি ঈশরের উদ্দেশ্রে কি দিবেন। যাহারা বিষয় কার্য্যে নিযুক্ত আছেন, তাহাবা চিম্বা করুন, তাহারা আগামী বর্ষে ব্রহ্মসমাজের কার্য্যের সাহায্যার্থ কি পরিমাণ অর্থ দিবেন; যাহাদের সময় ও সামর্থ্য আছে, তাহারা ভাবুন আগামী বর্ষে কোন্ কোন্ কার্য্যে হস্তার্পণ করিবেন; যাহারা প্রচারব্রতে ব্রহী, তাহারা চিম্বা করুন এবার কি বৈরাগ্যব্রত অবলম্বন করিবেন।

প্রলোভন ও পরীক্ষা-মহাত্মা যীত স্বীয় শিষাদিগকে যে প্রার্থনা শিখাইয়াছিলেন, তাহাব মধ্যে নিম্লিখিত কথাটা স্বাছে— "আমাদিগকে প্রলোভন ও পরীক্ষাতে ফেলিও না।" এই বিষয় আই লইয়া ধর্ম সাধক দিগের মধ্যে অনেক বাদামুবাদ इन्हेग्नाइक। (क्र क्र विद्याहिन, श्वासामित नित्र विक-শিত কবিবাব জ্ঞু প্রলোভন ও প্রীক্ষার প্রয়োজনীয়তা আছে, এরূপ স্থলে কিরূপে প্রাথনা করা যায়,—"আমাদিগকে প্রলো-ভন ও প্ৰীক্ষাতে ফেলিও না।" এই মাত্ৰ বলিতে পাবি, প্ৰলো-ভন ও পরীক্ষার মধ্যে যেন তোমাকে না, ভূলি ইংাই সঙ্গত। वास्त्रिक প্রলোভন ও পরীক্ষা আমানের পক্ষে মহোপকাবী। প্রথমতঃ এতদ্বারা আমাদেব শক্তিব প্রকৃত পবিমাণ আমাদেব নিকট প্রকাশ পায়। যতক্ষণ মান্ত্র কোনও গুরুতর কাজে হাত না দেয়, প্রলোভন ও পবীক্ষাব মধ্যে না পড়ে, ভতক্ষণ আপনাব শক্তির পবিচয় আপনি প্রাপ্ত হয় না, হুরুল হ্টয়া আপনাকে সবল ভাবিতে থাকে, অথবা স্থীয় বলেব পরিচর নাপাইয়া আপনাকে ছবল ভাবিয়া অবসর ২ইতে থাকে। প্রলোভন ও পরীক্ষাব মধ্যে পডিলে সেই ভাঙি ঘুচিয়া যার। স্মনেক সময়ে দেথি পুর্বে নিজের প্রতি যতটা নিভর ছিল তাহা বিদূরিত হয়, এবং বিনয় সদযকে আধকার করে, নিভর বজ্জিত হয়। আপনাব প্রতি নিভয়ের হ্রাস হইলেই ঈশবেৰ প্ৰতি নিভর বাড়িতে থাকে। তথন ব্যাকুল প্ৰাথনা স্বত:ই দ্রুদয় হইতে উত্থিত হয়।

ষিতীয়তঃ প্রলোভন ও পরীক্ষাতে ঈশবের রূপাকে আমাদের নিকট স্থমিষ্ট ও মূল্যবান করে। মাসুষ যথন সংগ শ্বছন্দে
ও নিরাপদে থাকে, তথন ব্রহ্মরূপার মূল্য যেন ব্ঝিতে পাবে
না। ঈশব কি করিতেছেন তাহা দেখিয়াও দেখে না।
কিন্ত প্রলোভন ও পরীক্ষাতে পড়িলে অনেক সময়ে মানব
অক্ষাবভীত শিশুর স্থার ব্রহ্মরূপার ক্রোড়কে আশ্রয় করে, ও
তাহার অমৃত রুস তথন আখাদন করে। এই কয় আমাদের

আত্মার কল্যাণের নিমিত্তই প্রলোভন ও পরীক্ষা অনেক সমরে আমাদেব পথে আদিয়া থাকে।

বিধাতার বিশ্বরাজ্যেব সর্ব্বন্তই এই নিরম দেখিতে পাঠ, সংগ্রামের দ্বাবা শক্তির বিকাশ, বিনা সংগ্রামে কিছুই বৃদ্ধি পায় না। মানব জীবন কেন বিনা সংগ্রামে উন্নতি লাভ কবিবে ? ইহা তাঁহাব স্টেব নিয়মবিরুদ্ধ। মানবকুলের মধ্যে তাঁহাবাই দৃঢ়, তাঁহাবাই কর্মক্ষম, তাঁহারাই বলশালী, যাঁহাবা অনেক সংগ্রামে পডিয়াছেন ও জয় লাভ করিয়াছেন। যে ব্যক্তি জীবনে অনেক বেজ, অনেক রুটি সহ্থ করেন, তাঁহাবই দেহ দৃঢ় ও কর্মক্ষম হয় যাহারা সম্পদের ও বিলাসের ক্রোডে লালিত, তাহারা শীতাতপ সহ্থ করিতে পারে না। সেইকপ যাহাবা সংগ্রামবিহীন জীবন যাপন করে, তাহাদেব অন্ধবান্থাও স্বদ্ধ হয় না। অভ এব প্রালাভন ও পরীক্ষাকে জীবন গঠনেব সহায় জানিরা তত্পরি জয়শালী হইবাব জন্থ চেটা কবিতে হইবে।

উপাসনা—হলও দেশ সমুদ্রেব তীবে অবস্থিত। ইচার ভূমি সমুদ্রেব জল অপেকা নিয়। প্রজাগণ দেশ রক্ষার জ্বল সমুদ্রের দিকে এক বাধ দিয়াছে, সেই কাবণে সমুদ্রেব জল ইহাব ভিত্তবে প্রবেশ কবিতে পারে না। সেই বাধে একটা ছিদ্র কবিষা দিলে দেখিতে দেখিতে সমস্ত দেশ জলমগ্র হইযা গাইতে পারে, এই কাবণে হলওবাসিগণ অতি সতর্কতাব সহিত সমুদ্রেব দিকে যে বাধ (Dyke) আছে তাহা রক্ষা করিয়া থাকে। সমুদ্রের জল হলওবাসিদিগকে ভুবাইবার জ্বল সর্বাদাই প্রস্তুত, যথন যে কোন ছিদ্র পায় তদ্বারাই প্রবেশ করিছে থাকে, কিন্তু দেশবাসিগণ অতি সাবধানতার সহিত সেই সকল ছিদ্র বন্ধ করিয়া দেয়, এবং ব্রুবার্মে এই বাধ রক্ষা করে।

মানবজীবনের অবহার সহিত এই ঘটনাটীর বড স্থলর তুলনা হয়। ঈশ্বরের শক্তি ও করণা মানব জীবনের রারে সকাদাই অপেক্ষা করিতেছে, যথন স্থবিধা পায়, তথনই মানব জীবনকে ডুবাইযা ফেলে। বিষয় চিন্তাব বাধ দিয়া মান্তুষ ঈশ্বরের করণাকে দূবে রাথে। ধর্মজীবনের স্থচনায় মান্তুষ যথন এই করণার জন্ম জীবনের ভিতরে একটী ছিদ্র কবিয়া দেয়, তথনই আত্তে আতে ঈশ্বরের শক্তি আসিয়া মানবের প্রাণকে অধিকার কবে। ধর্মজীবনের প্রারম্ভে প্রার্থনা, উপাসনা এই ছিদ্রের কার্য্য কবে। যথন মান্তুর উপাসনার ঘাবটী খুলিয়া রাথে, তথন দেখা যায় ঈশ্বরের শক্তি আসিয়া মান্ত্রের প্রাণকে অধিকার কবিয়া বসিতেছে। গাঁহারা জীবনে সত্য উপাসনা, ব্যাকুল প্রার্থনা অবলম্বন করিয়াছেন, তাঁহারাই এই সভ্যের সাক্ষ্য দিবেন।

এই দেখিতেছিলাম মাসুষ্টা ৰড সংসারী, টাকা টাকা ক্রিয়া বেড়াইতেছিল, কিন্তু যেই উপাসনার দার, প্রার্থনার ছিড়, খুলিয়া দিল, অমনি ব্রহ্মকুপার ছলে স্থার্থ স্থ সব ডুবিয়া গেল। ঈশ্বরের শক্তি আসিয়া সমস্ত স্থান অধিকার ক্রিল। আবার অস্তু দিকেও দেখিতে পাই লোকটা পুর উপাসনার কথা বলে, ধর্মসমাজে আসে, কিন্তু জীবনে প্রেম নাই, পর নিন্দা পরচর্চাতে বড় পটু। তথন বুঝিতে হইবে ঐ উপাসনার ঘারটী বন্ধ হইয়া নিয়াছে, ঈশ্বরের শক্তি আসিয়া জীবনে কাজ করিবার পথ রুদ্ধ হইয়াছে।

উপাসনা প্রার্থনা জার কি ? ঈশবের শক্তি জাসিয়া জীবনকে জেধিকার করুক বলিয়া আত্মাকে ঈশবের দিকে ফিরান। আমি যাহা আছি তাহাই থাকিব এই ভাব লইয়া থাকিলে উপাসনা হয় না। স্থবাপারী যেমন সজ্ঞানে পান করে, পরে স্থরার অধীন হয়, মাফুর সেই প্রকার আপন ইচ্ছাতেই উপসনার হাব থোলে, পরে ঈশবের শক্তিব অধীন হয়য়া যায়। প্রথম প্রথম মাফুর ভাবে কেবল উপাসনার হবে ঈশবের সঙ্গে সম্বন্ধ রাথিব। কিন্তু পবে দেখিতে পায় যে তাহাব জীবনের সকল স্থান পূর্ণ করিয়া ঈশবের দয়া ঈশবের শক্তি কার্যা করিছে আরম্ভ করিয়াছে। যে সত্যভাবে উপাসনা করে, সে জীবনে কোনও সীমা রাখিতে পারে না।

মাহ্ব আংগে ভাবিতেছিল, বিষয়ক্ষেত্রে, পেলার স্থানে, আমোদের গৃহে ঈশ্বরকে স্থান দেওয়া হইবে না। কিন্তু ঐ উপাসনার দার দিয়া তিনি মানব জীবনের সকল বিভাগ অধিকার কবিযা বসিলেন। তথন গোপনে বসিয়া মাহ্য আর পাপচিক্রা কবিতে পারে না। সেথানে ঈশ্বর তাহাকে লজ্জা দিয়া থাকেন। সে মানব চক্ষর জ্জাতস্থানে অত্যেব বিক্দে একটা চিন্তা করিল, প্রাণ হইতে কে ভাহাকে তিরস্নার করিল "ছি প্রেম বিবোদী কার্য্য করিলে।" এই উপাসনা ও প্রার্থনার দ্বার দিয়া ঈশ্বর মানব প্রাণক্ষেত্রে এ দিকে, ওদিকে ছুটাছুটা কবিয়া কাটায়, ঈশ্বরের সম্মুখীন হইতে চায় না, পাছে সে ধরা পড়ে। এই উপাসনা গৃহে মানব ঈশ্বরের কলণা বহন করিতে না পারিয়া আ্রায়মর্মণণ করে। তাই সাধক আ্পনার প্রেম হানতা দেখিয়া এই প্রার্থনা করেন—

"তুমি ভাল বাস যেমন, আমি কি মা পাবি তেমন, আমায় ভাল বাসাও তেমন. আমার প্রতি ভোমাব যেমন।" ঈশ্বর করুন আমেবা জীবনে সত্য উপসনা অবলম্বন ক্রিয়া, তাঁহার শক্তির সম্পূর্ণ অধীন হুইয়া যাই।

মালা ও সূত্র—মণি সকল এবং পুল্প সকল এক তিত করিয়া এক একটা মালা রচিত হয়। এক এক ফুলের এক এক প্রকার আকার, এক এক রকম, বর্ণ, এক এক রকম সৌরভ। এই সকল ফুল যথন চারিদিকে বিক্ষিপ্ত থাকে, তথন পরস্পারের সঙ্গে কোনও সম্বন্ধ থাকে না—তথন ভাহারা সকলেই ভিন্ন, সকলেই পরস্পর হইতে দ্রে দ্রে অব্ভিত। কিন্তু এই সকল ফুল স্ত্রের দারা একর বন্ধ হইলে ভাহাদের পরস্পারের সঙ্গে একটা সমন্ধ তালিত হয়। তথন ভাহারা এক লক্ষ্য সাধনে মিলিত হয়। ভাদের মধ্যে এক প্রকার একভা স্থাপিত হয়। কিন্তু এই যে স্তা, যাহা এই সকল ফুলকে এক বিভ রাধিয়াছে, ভাহা দেখা যায় না; উহা লুকায়িত থাকে। কিন্তু

পুকারিত থাকিলেও উগ এক মহৎ উদ্দেশ্ত সিদ্ধ করে। চিস্তাশীল লোকেরা ।চন্তাবারা দেখিয়াছেন, আমাদের মনে প্রতি মুহুর্বে কত প্রাণার বিভিন্ন অবস্থার উদয় হইতেছে। এখন যে অবস্থা, প্ৰক্ষে আহর ভাহা দেখা যায় না। এখন তর্ম পরক্ষণে বিষাদ। কথনও আশা, কথনও ভয়, কথনও সন্দেহ মনোমধো কত তরঙ্গই উঠিতেছে। অবস্থার কতুঁই পরিবর্ত্তন ঘটতেছে। এক অবস্থার সহিত অন্ত অবস্থার কোনও প্রকার মিল নাই, এই সকল হর্ষ বিষাদের মধ্যে বিচিত্রতা রহিয়াছে। কিন্তু এই যে অবস্থাগত তারতম্য,—বিচিত্রতা, ইহার মূলে এক প্রাণার একতা আছে। ইহার মূলে এমন একটা হত্ত আছে, যাহা এই সন্দয়কে পরস্পরের স্ঠিত সম্বন্ধ রাথিয়াছে: সেই একতা—সেই সূত্র কি ? এসমন্য আমার, সমস্ত আমাতে সম্বন্ এই প্রকাব জ্ঞান। সালার মধ্যে যেমন হত লুকায়িত, সেইকপ মুনেব সমুদ্য পরিবর্ত্তনশীল ভাবের মূলে আমিত্ব লুকায়িত। তেমান ব্রহ্মাণ্ডে যে সকল **कफ ९ ८ एडन (**मिश्टिक ), त्य भ्रम्म भ्रम्भ स्ट्रिंड विस्हिन, পরস্পারের স্থিত দাদেশ বহিত, এস্কলের মূলে কি সূত্র আছে গ মনেব ভাব সমূহেব মধ্যে বেমন এক ভা আছে, ভেমনি এই জড় ও চেত্ৰকে কোন স্থাত্ত একত্ৰ বাখিয়াছে, অথবা এ সকল —প্রস্পারের সাহত সহয় বাহত হইয়া বিদ্যমান আছে ? নিম্ম চিত্তে দোধলে দেবা যায়, ইহাদের মূলে এক মহাসূত্র ৰক্তমান আছে। মাণগণ যেমন সূত্রে আৰম্ম থাকে, তেমনি সমুদ্য ক্ৰের কুএ-প্রম পূত্র ধারা এসমস্ত আবদ্ধ রতি-য়াছে। এই হতের হুএকে দেখিলে বন্ধজ্ঞান লাভ হয়। ব্দড়েতে এবং চেতনেতে তাঁহাকে সূত্রকপে দেখিতে হইবে। -- जिनि ममूनम वस्र ७ ७०८ थाठ ३ हेमा चाह्न, छान-स्टिक हैश विरमधक्ताल (मिथाड कहात। यडका डाहारक এইরূপ আশ্রয় ও আধাররূপে দেখিতে পাওয়া না যায়. ভতক্ষণ আমাদের সভাতান হ্য না। প্রমেশ্বর করুন আমরা (यन वार्ड माना — कड़ ७ ८ उनका वार्ड माना के माना के माना के পরম স্ত্তকে দশন করি। আমরা যেন আত্মাব প্রমাকাশে তাঁহাকে আত্মবি পরমাত্মবিকপে, আধার ও আশ্রয়রূপে প্রেম-দাতা পিতারূপে এবং বহিজগতে, সমূদ্য বািচত্রতার মূলাধার ক্সপে সমুদয়ের নিয়থা বিধাতাক্সপে সন্দর্শন কবি।

বলে না মনে ?—ফ্রীদ কংহন,—"বনেব কণ্টক দলন ক্রিয়া বনে বনে কেন ভ্রমণ কর । স্কদ্যের মধ্যে ভিনি ব্যিয়া আছেন, আরণ্যে কেন ভাহাকে অধ্যুদ্ধ কর।"

পরমেশরকে লাভ করা না করা, আমাদের আহার অবস্থার উপর নির্জর করে। আহা যদি তাঁহাকে লাভ করিবার অফ্কুল অবস্থার থাকে, তাহা হইলে গৃহে, সংসারে জন কোলাহলের
মধ্যে থাকিলেও আমরা ঈশরকে লাভ করিতে পারি। আর
আহা যদি ঈশর লাভের অমুক্ল অবস্থার না থাকে, তাহা
ইইলে, নির্জন বনে প্রকৃতির প্রশাপ্ত ভাবের মধ্যে, সৌন্ধ্য
শোভার মধ্যেও আম্রা তাঁহাকে দশন করিতে পারি না।
রাহ্য সংস্রের অনেক ছল্ডিয়াতে ক্লান্ত হইরা, এথানকার

পাপ তাপ,তঃথ শোকে জর্জারিত হইরা, অনেক্ সময় আশা করে, নিৰ্জ্জন ৰনে, গভীর অরণ্যে, বিজ্ঞন গিরি-কাস্তারে, পর্বতের শুহাতে অথেষণ করিলে পরমেশ্বকে প্রাপ্ত হইব। যাহারা সংসারে থাকে ভাছাদের পক্ষে নির্জ্জন বাস উপাদের সন্দেহ নাই। উত্তপ্ত চিত্তকে প্রশাস্ত করিবার জন্ম, বিক্লিপ্ত মনকে সংযত কুরিবার জ্বন্তু, সময়ে সময়ে নির্জ্জন বাস নিতাস্ত আবেগুক। কিন্তু যে ব্যক্তির চিত্তে ব্যাকুশতা নাই, ঈশ্বরকে দর্শন করিবার **जञ ध्येवन प्याकाष्ट्रकः। नाहे, (म निक्कन तत्न याहेया कि क्रिया १** তাঁহাকে লাভ কবিবার প্রধান উপায় ব্যাকুলতা, প্রাণেব গভীর আকাজ্ঞা, ব্যাকুল ও সবল প্রার্থনা। যাদ প্রাক্ লতা থাকে, তাঁহাকে লাভ কবিবার জ্ঞা বিশেষ আগ্রহ্ থাকে, ঐকান্তিক নিষ্ঠা থাকে, দেবে জন কোলাহলেব মধ্যে সংসাবের প্রবল ঝটিকার মধ্যেও প্রভূপরমেশ্বরের স্গিধানে বাস ক্রা याग्र। अनव न। थाकिएल निष्क्रन वर्तन, विक्रन शिविशस्त्रद्व. কোথাও তাঁহাকে পাওয়া যায় না। সদবেতে যে তাঁহাকে না পায়, যে তাঁহাকে বাহিরে কগনই পায় না । এই একটা সাব সতা কথা, ইহা সকলা আমাাদগকে স্মাৰণ বাখিতে হইবে। জ্জজগতে প্রকৃতির বিচিত্র শোভার মধ্যে তিনি আছেন, ইডিহাদে তাঁহার সত্তা রহিয়াছে, সন্দেহ নাই। কিন্তু যে অন্তরে দেখে না সে কোথাও তাঁহাকে দেখিতে পায় না। অন্তবে আত্মার প্রমায়ারূপে, আশ্রয় ও আধার্রূপে তিনি নিতা বাস কাবতেছেন। সেইখানে তাঁহাকে দেখিতে হইবে। অস্তবে অমৃতের আস্বাদন না কবিলে আর কোপায় করিবে ? निकारने यारे चार श्रहर शांकि, चलरत ना तिथान ठांशांक কোথাও দেখা যায় না। এইজন্ম ভক্ত ফবাদ বলিয়াছেন,— "वरनंत्र कफेक मलन कविशा वरन वरन दक्न जमन कंद्र १। छन-দৈর মধ্যে তিনি বাসয়া আছেন, অবণো কেন তাঁহাকে অনে-ষণ কব ?" আমরা অগুরে দেখি না, এইজন্ম তাঁহাকে কোথাও দেখিতে পাই না। অতএব সর্ব প্রয়ত্ত্বে তাহাকে मिथिए इहेर्द । প্রাণের প্রাণরূপে আয়ার আধাবরূপে তাঁহাকে দেখ। তবে সর্বব্রই তাঁহাকে দেখিবে। প্রমেশ্বর কুপা করুন আমরা যেন স্ক্লা তাঁহাকে অন্তরে पिथिए (इ.स.)

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

## চিত্ত-হৈথ্য।

আমাদের মন কিরুপ চঞ্চল, অলাধিক প্রিমাণে আমরা তাহার প্রিচয় স্কাদাই পাইয়া থাকি। মন বিষয় হইতে বিষয়ায়রে নিয়ত ঘুরিয়া বেড়াইতেছে; তাহাকে এক বিষরে ধরিয়া রাখা বিষম কট্টকর ব্যাপার। ধর্মাসাধনের বিয়য়পে যে সকল অন্তরায় বর্তমান আছে, চিন্তচাঞ্চল্য তাহার মধ্যে একটা প্রধান। কোনও প্রকারে সাংসারের চিন্ত-বিক্লেপকারী কার্যা সকলের হল্প হইতে নিয়্লতি গাইয়া উপাসনা করিতে আসিয়া বসিলাম, একটুকু সমর বাইতে না যাইতেই মনকোধায় চলিয়া পেল। আবায় ভাহাকে ধরিয়া আনিলাম,

আবার এক টুকু সমর অভীত হইতে বা হইতেই দেখি সে কোথার চলিয়া গিয়াছে। এই প্রকারে অনেক সমর উপাসনাস্থলে শরীব থাকিলেও মন সেম্থানে থাকে না। এই অস্থ্রিধা আময়া সকলেই কিছু না কিছু পরিমাণে ভোগ করিয়া থাকি। মনের উপর যেন ছইটা শক্তির কার্য্য হইয়া থাকে। একটা শক্তিতে মনকে উপাসনাতে আবদ্ধ রাখিতে চাহে, অপর শক্তি যেন তাহাকে অভ্যত্র লইয়া যায়। এই সংগ্রাম সর্কান্য চলিতেছে। এই সংগ্রামে যিনি কিয়ৎ পরিমাণে জয়য়ুক্ত হইতেছেন, ধশ্মসাধন তাহার পক্ষে সহজ্লাধ্য হইতেছে। এজভ্য মনঃ দৈর্য্য ধর্মসাধনের পক্ষে একটী অতি গুরুতর প্রশ্ন। এই প্রশ্নের স্থানাস্যাব উপরেই ধর্মসাধনের পদ্বার কাঠিভ ও সারলা নিভর করিতেছে। কারণ সক্ষরাপী পর্মেশরের নিতা বর্জনান সন্তাসাগরে আময়া সর্কানই নিমম হইয়া থাকিলেও এক মাত্র অনবধানতা ও চিত্রেব বিক্ষেপ বশতঃই তাহাকে আমরা অমুভব করিতে পারি না।

মনের প্রকৃতি নিতাস্ত চঞ্চল হইলেও এবং সে নিরস্তর বিষয় হইতে বিষয়াস্তরে ব্যাপৃত হইলেও একবারেই যে কোন বিষয়ে গাঢ়ভাবে ব্যাপৃত হইতে পারে না, তাহা নহে। নিয়ত চঞ্চলপ্রকৃতি মনও নানা সময়ে নানা বিষয়ে গাঢ়ভাবে শিপ্তা হইয়াথাকে।

व्यायत्रा कानि निक्तारे नर्सार्थका हक्षन । हक्षनजात्र नृष्टीख দিতে হইলেই শিশুদিগের উল্লেখ করিতে হয়। কিন্তু দেখ ঐ বালিকা কেমন মনোযোগেব সহিত ভাহার খেলার পুতুল-গুলিকে সাজাইতেছে, কেমন গাঢ় মনোযোগের সহিত ভাহা-मिश्र नरेश को इ। क्रिटिंग्हा रानिकात डेक कार्या (म्बिल কি তাহাকে আর চঞ্চল বলিতে পারা যায় ? দে তাহার আহার ভুণিয়া ঐ কাষ্য করিতেছে। আহ্বান কর, উত্তর নাই, তিরস্বার কর, টৈত্র লাই, সে আপেন মনে ক্রাড়াই করিতেছে। আবার চিন্তা করিয়া দেখ, শিশুরা যুখন গল कान्टि वर्ष, उथन कमन जाशामरात्र मरनारमागृश अकती ক্ষপক্থ। ওনিবার জন্ত কেমন তাহাদের আন্তাহণ ঘাহারা অন্ত সময় বারম্বার বলিয়া দিলেও একটা বিষয় মনে ধারণা কারতে পারে না, বারস্বার না বুঝাইয়া দিলে যাহারা আছে বা শিক্ষার অন্ত বিষয় সকল মনে রাখিতে পারে না, এমন কি (किन अव है। वेश्व शाना क्षेत्र हहें लि, लहेग्रा व्यामिवात्र सम्म विषया भिष्ण, याश्रता भव वहेट इस क कि तिया चानिया चारात किकामा করে,—কোন্ বস্ত আনিবার জন্ত তাহাকে অমুরোধ করা হই-ষাছে। তাহারাও কেমন মনোযোগের সহিত ঐ রূপক্থা ভনে এবং একবার ভানরাই কেমন তাহার পুনরাবৃত্তি করিতে সমর্থ হয়। विमानिया (मथा यात्र, यथन चात्र कान ध्वकार्त्रहे भिक्रिकि भार क्रिडि भारा, यात्र ना, उपन युनि वना यात्र এগ ভোমরা গর ভনিবে, অমনিই সকলে শাস্তভাব ধারণ করে। এজন্ত স্থশিক্ষকগণ মধ্যে মধ্যে শিশুদিগকে গল छनारेषा, ভारापिशत्क माख करत्रन , धवः मत्नारपात्मत्र महिछ ব্দধ্যরনের বিষয় সকলে অভিনিবিষ্ট করেন। থেলার এবং গল্প খনিতে যেমন শিশুদিগকে অতি গাঢ়ভাবে মনোবোগী হইছে

(मथा यात्र, वत्रक्रणावत्र भाक्य (मत्रभ मृद्धोरखत क्षणाव नारे। ব্ৰম আমরা কোন উপস্থাস পাঠে নিযুক্ত হই, কত শীঘ তালা পড়িয়া শেষ করিয়া থাকি। তথন কেহ যদি বিষয়ান্তরে बरनारयां कतिवात यग्र व्याभाषिगरक व्यष्टरहां करत, ভাহাতে কত বিরক্ত হই। শিক্ষা প্রদ অক্স বিষয়ের একথানি গ্রন্থ পাঠ করিতে যে সময় লাগে, তত্ত্বা একথানি উপস্থাস পাঠে, আমাদের কত অর সময় লাগে, ভাহা আমরা সকলেই कानि। पान विवयं मान कतिया ताथा कमन कहेकतः; বারস্থার পড়িয়া পড়িয়া, ভবে তাহা আয়ত্ত করিতে হয়। কিন্তু উপক্তাস থানি একবার পাঠ করিলেই তাহার সমস্ত ঘটনা স্মৃতিপটে মুদ্রিত হইরা যায়। এই প্রকার যথন আনারা কোন সদ্বক্তার জ্ঞানগর্ভ বক্তৃতা শ্রবণ করি, তথন কত মনোঘোগের সহিত তাহা গুনিয়া থাকি এবং তাঁহার বণিত বিষয়-श्विन कामाराम्य मरन रकमन मूजिङ इहेश्री यात्र। व्यक्तिम मनन করিতে গিয়া সকলকেই গাচভাবে মনোযোগ প্রদান করিতে দেখিতে পাওয়া যায়। কোনও প্রকার মনোহর দুগু দশন করিতে আমরা কেমন মনোযোগী হইয়া থাকি, আমাদিগকে এই সকল शास्त । এই मक्न व्यवद्वारक क्रिश्च प्राप्त करवन, करव किनि আমাদিগকেই সেই চঞ্চলমতি লোক বলিয়া অনুভব করিতে भारतन ना। এই अकात वह पृष्टेश्य चात्रा अमानि इ इरेड भारत रिष कामारित्र मन च छावछः हक्षण इहेरल ७ एए एकान विध-য়েই গাঢভাবে নিযুক্ত হইতে পারে না এমন নহে। বয়ং विषय विषय जामता अञ्चि महस्करे गाउ मनायाती सहसा থাকি। এমন কি চঞ্চলমতি শিশুরাও বিষয়বিশেষে অভি गर्छोत्र मत्नारयारगत्र मृक्षेत्र चक्रश धरेत्रा थारक। काश इंहरनहे मश्रक्तरे व्याजिभन दश्राहर (य प्यामार्गित भरक रकान विवर्ग मरनारपाणी रुअन्ना कथनरे (७२न कडेकत व)।भात नरह। ऋखताः ইহা বলা অভ্যুক্তি নহে যে বিষয়বিশেষে আমর। অভি সহজেই গঢ়েমনোযোগ প্রদান করিতে পারে এবং দীর্ঘকাল কোন বিষয়ে আমরা গাঢ়ভাবে স্থির ও মগ্ন থাকিয়া যোগ দিভে পারি। **ভবে সকল বিষয়ে মন দি**তে পারি না কেন ?

তাহার হেতু অন্তব করাও কিছু তেমন কঠিন ব্যাপার
নয়। হতিপুকো যে কয়েকঢ়া দৃহাও প্রদাশত হহণ তাহাতে
দেখা যাইতেছে যে আমরা কিরুপ বিষয়ে গাঢ় মনোযোগা হইয়া
থাকি। যাহা আমাদিগকে তাপ্ত দেয়—বাহা আমাদিগকে
আরাম প্রদান করে, যাহাতে নিযুক্ত হর্গা প্রথের আখাদন
পাইয়া থাকি, এরপ বিবয়েই আমাদের গাঢ় আভানবেশ হইয়া
থাকে। যাহা তেমন অন্তপ্রতিকর নয়; যাহা তেমন চিতের
আকর্ষক নয়, তাহাতে মনকে নিযুক্ত কারতে হত্তে অনেক
সংগ্রামের প্রয়োজন হয়। শিশুর খেলার বস্ততে আসক্ত হয়য়া
বা রূপক্পার গাঢ় মনোযোগা হয়য়া বা বয়য়ের উপক্রাস পায়,
কিছা মনোহর দৃশ্রু দশনে সভার মনোযোগ প্রদান একই
কারণে হইয়া থাকে। অর্থাৎ সেই সকল বিষয় এমন কিছু
প্রীতি প্রদান করে, এমন কিছু আরাম দেয়, যাহার পায়বর্তে
তথ্ন অন্ত কিছুরই কন্ত চিতের আগ্রহের উদ্ব হয় মা।
ইহাছারা সহকেই বোধ-গ্রম্য হইতেছে, যে বাহা আয়োম্বারক;

ষাহা তৃত্তিকর এবং যাহা অকুরাগের পাত্র, তাহাতেই মন সহজে ব্যাপৃত হয়, তাহাতেই মনের গতি সহজে হয়। সে বিষয় কঠোর পরিশ্রমদাধ্য হইলেও লোকে সহজে তাহাতে নিযুক্ত হইয়া থাকে।

যদি ইহা সত্য হয় বে প্রীতিকর, তৃথিকর এবং অন্থানের পাত্রেই লোকের মন সহক্ষে নিমগ্র হয়, তাহার অন্থানিকরিতে লোকে সহক্ষে সমর্থ হয়, তাহা হইলেই এই মীমাংসায় উপস্থিত হইতে হয়, যে আমাদের মন যে উপাসনায় তেমন নিমগ্র হর না,—চঞ্চল হইয়া তৃরিয়া বেড়ায়, অনেক সংগ্রাম করিয়া, অনেক আরাস সহকারে উপাসনায় মনকে নিয়োগ করিতে হয়, ইহার কারণ অন্ত কিছু নয়, কেবল এই যে আমরা উপাস্নায় সেরূপ তৃথি পাই না; তেমন প্রীতি পাই না এবং বাহাকে লইয়া উপাসনা করিতে হয়, তিনি আমাদের তেমন অনুরাগের পাত্র মহেন।

হুতরাং মনঃতৈত্ত্যের প্রধান সাধন-অমুবাগ সাধন। যাহাতে মনোনিবেশ করিতে হইবে, তাহাতে অপুরক্ত হইতে **ब्हेर्त् । अञ्चत्रारात्र अ**खार्य रय स्कान विष<sup>्</sup>यहे शाष्ट्र মনোনিবেশ করিতে সমর্থ হওয়া যায় না। ঈশর যদি আমাদের অন্থরাগের পাত হন, তিনি যদি আমাদের চিত্তের প্রীতি ও ভৃপ্তির কারণ হন, তাহা হইলে অতি সহজেই আমরা তাঁথার প্রবণ মনন ও নিদিধাাসনে অভিনিবিট হইতে भाति। अञ्चतारभव अजारवरे आमारमव डेभामना वमन অক্চিক্র এবং চিত্তের অশান্তির কারণ ব্রূপ হয়; অনুরাগের व्यक्ताराहे व्यामारमञ्ज हिरखन्न विस्कृत এত व्यवन रहेन्ना शास्क । স্কুভরাং চিক্ত ক্রৈয়ের প্রধান সাধন অফ্রাগ সাধন। ঈশবে বাঁহারা অনুরক্ত, বাঁহারা তাঁহাতে অনুরাগণীল, তাঁহারা অতি সংক্ষেই তাঁহার উপাসনায় প্রারুত্ত হন এবং শ্বির ভাবে তাঁহাতে মন সংস্থাপন পুৰাক অপুৰা তৃত্তি লাভ করিয়া থাকেন। আমেরা कानि कामारमत छेलाना स्वर्धा कान्स चन्नल, क्यमूज्यम श्रुऋव उंशिष्ट चामक रहेट भातिरम, किट्डिन च्यमारमन कानहे मखावना नाहे वतः छाहात পরিবত্তে মনের প্রদরভাই লাভ ছইয়া থাকে। তাঁহাতে মনোনিবেশ করা কিছু কঠোর ও वित्रक्तिकत्र भनार्थ मन ध्यनात्मत्र भाव अन्तरः। किन्न प्वि किनात्वत्र निर्मार्थ मत्नानःत्यात्वत्र क्यात्र ऋमिष्टे। ऋखताः ভাছাতে অমুরক্ত হওবা কিছু কটকর বা তেমন বিএক্তিকর माधन नद्य ।

সচরাচর আমরা বে সকল পদার্থে বা বিষরে অন্তর্মক হই, তাহার হেতু অনুস্কানে প্রাবৃত্ত হইলে দেখিতে পাওয়া যায় বাহা আমাদের সক্ষে অধিক সমর থাকে, তাহানের প্রতিই আমাদের অনুরাগ সহকে জিয়ারা থাকে। আমাদের সর্ব্ধাপেক্ষা অনুরাগের পাত্র পরিবারত্ব জনগণ। তাহার মধ্যে আবার মাতা পিতা এবং ভাই ভগিনী এভুতির,প্রতি অধিক অনুযাগ সহজে হইয়া থাকে। কারণ তাহাদের সহিত সকলা অবস্থিতি করিতে হয়। তৎপরে প্রতিবেশী এবং গ্রামত্ব অক্তাভ ব্যক্তিগরে উপর আমাদের অনুরাগ সহজে প্রতিষ্ঠিত হয় এবং গে সকল লোকের সহিত একজ কাল করা বাল

একত্ত শিক্ষা করা যার সেই সকল লৈকের প্রভিঙ সহজে আমাদের অভুরাগ জবিয়া থাকে। পরিবারত্ব সকলেই रव थूव क्ष्मव वा अगवान छोहा अधम अ नरह। नकरण है रव आंभाषिशस्य म्यान ভाবে आषत्र कतित्रा शांक वा नकत्नहे যে আমাদের সমান উপকারী, গ্ডাহাও নহে। তণাপি তাঁহাঁদের প্রতি অপর পরিবারত জনগণের অপেকা আমাদের অহুরাগ জনিরা থাকে। আমরা অন্ত লোক অপেকা তাঁহাদের প্রতি অধিক পক্ষপাতি হই। এইরূপে উত্তরোভর যাহাদের সহিত আমাদের সংস্রব কম বা যাহাদের সহিত জানা শুনা কম, তাহাদের প্রতি অনুবাগেবও সেই হারে ন্যনতা হইয়া থাকে। অভতৰ দেখা ধাইতেছে যাহাদের সহিত আলাপ পরিচয় অধিক এবং যাহাদেব সহিত অধিক সময় যাপন করা যায়, তাঁহারাই আমাদের অনুরাগ আকর্ষণ এইরপে, নিজের গ্রাম অব্পর গ্রাম হইতে কদয্য **হইলেও স্থল**ব, নি**জের ভাষা অপর ভাষা**পেকা **হ**ইলেও অনুরাগের পাত্র হইয়া থাকে। এই নিয়ম প্রায় স্কাতই দেখা যায়, যে যাহার সহিত অধিক সময় যাপন করা যায ভাহাতেই অনুবাগ সহজে প্রতিষ্ঠিত হয়। স্থতরাং অনুবাগ লাভের মূল হেতু অধিক সময় একতা অবস্থিতি, অধিক পরি-মাণে জানা ভনা। অফুরাগের হেতৃ যদি তাহাই হয়, তাহা হইলে ত আমাদের পক্ষে ঈশবের প্রতিই সর্বাপেক্ষা অধিক অমুরক্ত ছওয়া উচিত। তিনিই ত সর্বাপেক্ষা আমাদের অমুবাগের পাত্র হইতে পারেন। কারণ জাঁহার সহিত যেমন অধিক সময় আমরা যাপন করি, তেমন ত অপের কাহারও স্চিত একতা থাকিবার সম্ভাবনা নাই। তবে তাঁহাতে আমাদের অফুরাগের এত অরতা কেন। তাহার করেণ আমরা যে ষ্পাণ ভাঁহার সঙ্গে থাকি, তাহা আমাদের জ্ঞাতসারে নহে। তিনি যে আমাদের সঙ্গে আমাদের সহায়, সুরুদ ও আঞ্র হইয়া আছেন, ভাহা আমরা তেমন অনুভব করি না।

তাঁহাতে সর্বাণা অবস্থিতি করিয়াও আমরা তাঁহাকে স্বাপেক্ষা দূরেই মনে করি। আমাদের উদাসীনতা তাহার প্রাত্ থেমন, এমন সংসারের আর কিছুরই স্থলে নহে। আমা-দের মধ্যে থাঁহার এই উদাসীনতা যে পরিমাণে হ্রাস হইয়াছে বা তাঁহার বিদ্যমানতা যিনি যে পরিমাণে অমুভব করিতে সমর্থ, তিনি তাঁহাতে সেই পরিমাণে অমুবক্ত হইতে পারেন। তাঁহার সহবাস জ্ঞাতসারে হইলে, তাঁহাতে অমুরাগী হইবার কোনই বাধা থাকে না। কারণ তিনি চিরম্ক্ষর, চির্মম্ব-কুল, আমাদের প্রাণের চির্মারামের হেতু, তাঁহার এই বিদ্য-মানতা অমুভব হইতেই তাঁহাতে আমাদের প্রস্তুত অমুরাগের স্ঞার হইয়া থাকে।

এই নিত্য- বর্ত্তমান ঈশরের বর্ত্তমানত। অনুভব করিতে

ইইলে, যত অধিক পরিমাণে তাঁহার শ্রন্থ মননে নিযুক্ত হওর।

যাইবে, যত অধিক পরিমাণে তাঁহার গুণরাজির অনুধ্যান ও

মহিমা কীর্ত্তনে ব্যাপ্ত থাকা যাইবে, ততই সফলকাম হইতে
পারা যাইবে। নিত্য এইরূপ অভ্যাস বারা তাঁহার বর্ত্তমানতা
প্রাণে অনুভব করিতে হইবে, অভ্যাসই তাঁহার বর্ত্তমানতা

অমুভবের প্রাকৃষ্ট উপায়। এজন্ত গীতার উক্ত হইরাছে,— "অভ্যাদযোগযুক্তেন চেতদা নাস্তগামিনা। প্ৰমং পুৰুষং দিবাং যাতি পাৰ্থাস্থচিন্তম্বন ॥"

অর্থাৎ হে পার্থ অভ্যাদরূপ উপায় দারা একাগ্র এবং অন্সগামী চিত্তবারা প্রভামর প্রম পুরুষকে চিন্তা করিতে করিতে তাঁহাকেই প্রাপ্ত হওয়া যায়। স্করাং আমরা ফাঁহার সন্তাসাগরে নিমগ্র থাকিয়াও অনবধানতা ও উদাসীনতা বশতঃ তাহাতে অফুবক্ত ১ইতে পাবিতেছি না এবং তাঁহার উপাসনায় বিফলমনোরথ চইতেছি, বারস্বার স্মবণ, মনন, অহুধ্যান ও তাঁহাব গুণ এবং মহিমা কীন্তন দাবা সেই উদাসীনতা তিরোহিত। করিরা, তাহার সহবাদে অধিক সময় যাপন করিতে হইবে, এবং অভ্যাস দ্বাবা তাঁহাকে ক্রমশঃ প্রিয় রূপে অমুভব করিতে হইবে। ' তাঁহাতে একবাব অনুবাগ বদ্ধুল হহলে তাঁহার। পূঞা অচনায় মনোনিবেশ কবা আর কঠিন বা অপ্রীতিকর কাষ্যের মধ্যে থাকিবে না। স্থতরাং চিত্ত-ছৈথ্যেব প্রধান ও শহন্ধ উপায় অভ্যাস যোগে তাঁহাব স্মবণ মনন কীক্তনে প্রতি-ৰাছ উপায় সকলও অবলাম্বত হুইয়া থাকে, কিন্তু অনুবাগ সাধনই স্কাপেকা প্রশস্ত ও শ্রেষ্ঠ উপায়। প্রাচীন বৈজ্ঞানকগ্র ষে দক্র অন্স্রসাধারণ তত্ত্ব আবিদ্যার কবিয়াছেন বা বস্তমান সমধ্যে যে সকল গুঢ় ভত্ত আবিষ্কাব করিয়া মানব মনের উং-करबंद आकर्षा পরিচয় দিভেছেন, যাহা সাধাবণ জনগণের পক্ষে অলৌকিক ব্যাপাবের ভায় হইতেছে, তাহাতে তাহাদের সামাভা মন: হৈছে থারে প্রাক্ষেন হয় না। তাঁহাদের এক এক-स्टनंत्र गर्जीत मत्नारगारगत मःवाम खनिया स्रवाक श्रद्या याग्रह रत। ज्यानक समय जाँराता वाश खान राता रहता (महे सकत ू গুঢ় তত্ত্বের অনুধ্যানে নিযুক্ত হইয়া থাকেন। দিনের পর দিন এই ভাবে তাহারা গাচ আভনিবেশ সহকারে বিষয় विष्परित्र विश्वाप्त नियुक्त थारकन। अह नकत देवछानिकश्व কিছু প্রাণায়াম বা তৎসদৃশ অন্ত কোন উপায় অবলম্বন कर्त्रन ना, किस मृह्डात मार्ड जङ्गाम दावाई এ প্रकात मनःदेश्या माध्यन मिक्ति गाउँ कतिया थाक्तन। मङ्गीछ छ বাদ্য শৈক। করিতে এবং চিত্র বিদ্যা প্রভৃতি হক্ষ শিল্পায়ে কত গভার মনোধোগ প্রদান করিতে হয় এবং কত দার্ঘকাল नाइ कालिनिर्वामत्र महिल त्महे मकल कार्या नियक शांकरल **करव मिक्रमटनात्रथ रुख्या यात्र। हेराता ४ किছू व्याणात्रामानित्र** অনুসরণ করেন না। একমাত্র অভ্যাস অনুরাগ স্ত্কারে গাচ, मत्नानित्यम् कांशास्त्र कुककार्यः इहेवात्र व्यथान कार्यनः

স্ত্রাং প্রতিনিয়ত অভাসে ধারাই সেই নিতা বর্তমান পরমেশবের সভাগ্রভব করিতে হইবে এবং তাঁহার সভাগ্রভব ছইলেই, তাঁহার প্রতি অমুরাগ এবং মনের ত্বিতাও তৎস্কে সঙ্গেই উপস্থিত হইবে।

## ব্রাহ্মধর্ম—সার্বভৌমিক ও জাতীয়!

(প্রাপ্ত)

( नाम चाकत भूर्यक रा मकन धाल अवस उद्दर्श र्मी ए अका निज হইবে তাহার মতামতের জন্ম লেথকই দায়ী।)

( "তত্ত্ববিদ্যা সমিতি"তে পঠিত ও বিরুত প্রবন্ধের সারাংশ। )

কোন বিশেষ দেশ, কাল, জাতি বা ব্যক্তিব উপব ত্রাহ্মধর্ম निर्छत करत ना, अञ्चक्त अवश मध्योतन मक्य प्राप्त, সকল কালে, সকল জাতি ও বাক্তিই বিশুদ্ধ বৃদ্ধির সাহাযো ব্রাহ্মধর্ম আবিষ্কার কবিতে পারে। কোন বিশেষ শাস্ত্র বা গুক্ব উপর ত্রাহ্মধর্ম নির্ভর কবে না , সভামাত্রই ত্রাহ্মধর্মের শাস্ত্র, সভোব শিক্ষক মাত্রই ব্রাহ্মধর্ম্মের গুরু। কোন জাতি, সম্প্রদায় বা বাক্তি ত্রাহ্মধর্ম্মের একমাত্র অধিকারী নছে, উপযুক্ত সাধন সম্পন্ন প্রত্যেক জাতি, সম্প্রদায় ও ব্যক্তিই ব্রাহ্মধর্মের অধিক।বী। ইহাই-ব্রাহ্মধর্ম্মের সাধারণত্বও সাক্ষভৌমিক্ত।

কিন্তু ব্রাহ্মধর্মের অভ্যাদয়ের অমুকৃল অবস্থা অনেক স্বংশই ানয়ত নিযুক্ত হওবা। চত্ত-হৈছযোৰ জন্ম প্ৰাণায়াম প্ৰভৃতি বিশেষ বিশেষ দেশ কাল, ও জাতিৰ মধো উপস্থিত হয়। বিশেষ বিশেষ শাস্ব ও শুরু ব্রাহ্মধন্ম প্রতিপাদন করেন; विरम्य विरम्य कांचि, मच्छनाग्र वा वाक्कि बाक्सधर्यात्र विरम्य আবিষ্ঠা বা বক্ষকরপে জগতের সমক্ষে উপপ্রিত হন; ইহা হইতেই ব্রাহ্মধশ্মের বিশেষত্ব ও জাতীয়তা উৎপন্ন হয়।

> জাতীয়তার আর একটা বিশেষ কারণ এই ,—আনেক উংকৃষ্ট ও স্থলার দেশ আছে, অথচ প্রাকৃতিস্থ মানব মাত্রেরই পক্ষে चाम मन्त्रार्थका शिय ; चामक छे दक्षे ७ मध्य छाया আছে, অথচ মাতৃভাষা সকাপেকা প্রিয়; অনেক উৎকৃষ্ট নারী আছেন, অথচ সীয় মাতা, ভার্যা ওভগিনী সকলেৰই অধিক প্রির ; অনেক শিশু সম্ভান আছে, অপ্ত নিজ সম্ভান मसारिका (अहाम्लान , वहें कातराहें मकन भाज, मकन श्वक, मकन माधु-कीयन अकात वस हरेला (मनाम मास, अक अ এহ নিয়ম সাধাৰণ, কেবল ষেপানে কোন জাতি, সম্প্রদায় বা ব্যক্তি কোন বিশেষ কারণে সম্পূর্ণ বা আংশিক ভাবে काछीत्रछ। विशैन २हेन्रा श्रिनाह्य, स्थारनहे धहे निन्नस्मन বাতিক্রম দোখতে পাওয়া যায়।

ভাতীয়তা যেখানে যত প্রবল, যে জাতির সভাতা যত উচ্চ ও প্রাচান, সেই জাভির মধ্যোবদেশ-জাভ ধর্ম প্রচার করা ডভ কঠিন। অপেকারড অসভা, অহরভ আভির मर्था नुष्ठन ও विरम्भीत अन्तः धातात्र कता व्यव्यक्तात्र निरम অস্ভ্য ব্রিটন ও আমান আভির মধ্যে গ্রীষ্টধর্ম প্রচার করা ভাদৃশ কঠিন হয় নাই, কিন্তু স্থসন্তা এীকু ও রোমান লাভি महर्ष बिष्टेश्य शहर करत नारे जवः यथन कतिन, ज्यन हेराक তাহাচ্দের জাতীয় দশন ও দেব-তত্ত্বের মিশ্রণে এতদূর পরিবটিত कतिम य देश कात्र तारे कामिम और धेम त्रिम ना। हिन्तु . কাতির সভাত। এক প্রাচীন ও স্থান্ত, এবং কাতীরভাব এক व्यवन, दर वह काछि अधन शर्यास द्वान विस्त्रभाव धर्म व्यवन करत नारे । वक्रारामत कार्कक किंदानी मूननमान वर्छ,

কিন্ত ভাছালের অধিকাংশই নিয়প্রেশীত্ব লোক। আর বলনেশ আনেক কাল হইভেই ধর্মনিষ্ঠা সক্ষে হিন্দুআভি সমূহের মধ্যে আপোকারুত হীন বলিরা পরিচিত। আর, ইহাও ঠিক যে বলদেশের মুসলমান ধর্ম গাঁট মুসলমান ধর্ম নহে, পীর পুলা ও হিন্দু দেবদেবীতে বিখাস ইহার সহিত মিশ্রিত হইরা ইহাকে অনেক পরিমাণে প্রচলিত হিন্দুধর্মের অফ্রপ করিরা ভূলিয়াছে।

এ দেশে প্রাহ্মধর্ম প্রচার সহকে দেশীর প্রণালী অবলহন করা উচিত; ইহা সকলেই ব্ঝিতে পারেন। দেশীর শাস্ত্র হইতে ব্রাহ্মধর্ম প্রতিপাদক শ্লোকোদ্ধার, দেশীর সাধুও সাধ্বীদিগের জীবদ ও জীবন-ঘটত আখ্যারিকার বহুল প্রচার, সংকীর্তন ও ক্ষকতা প্রভৃত্তি দেশীর প্রচার-প্রণালী অবলহন, বিবাহাদি সামাজিশ অনুষ্ঠানে যতদ্র সম্ভব দেশীর প্রথার অনুসরণ, এই সমুদারের প্রয়েজনীয়তা অল্লাধিক পরিমাণে সকলেই স্বীকার করেন। আমি এই সকল বিষরে বিশেষ ভাবে কিছু বলিতে চাই না। আমি ইহা অপেকা আরো গাঢ়তর জাতীয়তার পক্ষপাতী। এই গাঢ়তর জাতীয়তার অর্থ কি তাহাই বলিতেচি।

একজন আহ্মধর্ম প্রচারক, যাহার শিক্ষা জাতীয় ভাবে হয় নাই, যিনি জাতীয় শাল্পে অনভিজ্ঞ, স্বতরাং স্বভাবত: জাতীয়তার বিশেষ পক্ষপাভী নহেন, তিনি আমাকে একদিন বলিলেন, "আজ্জাল ব্ৰাহ্মধৰ্মকে হিন্দুশান্ত-প্ৰতিপাদিত বলিয়া ব্যাখ্যা না করিলে লোকে ত্রাহ্মধর্ম্মের কথা গুনিতে চায় না, আর উক্তভাবে প্রচার করিলে লোকে শ্রদ্ধাপুর্বক ভনে।" আমার বোধ হয় অনেকেই এই কথার সভ্যতায় সাক্ষ্য দিবেন। এরপ হইবার হুইটি কারণ আছে। প্রথম কারণ হিন্দু জাতির বন্ধন্দ জাতীয়তা। বিতীয় কারণ এই যে चादकान हिन्तुभारत्वत वहन धाहात वभाजः नाटकं प्रथिए পাইতেছে যে ব্রান্দেরা এমন কোন উচ্চ কথা বলিতেছেন না, ধর্মাত বা. ধর্মাণ্যন সম্বন্ধে এমন কোন সভ্য প্রচার করিতেছেন না বাহা হিন্দুশান্তে নাই। আমি হিন্দুশান্তের यक्ट्रेक् आरमाहमा कतिप्राह्मि, छाहारक आमात्र धहे धात्रगा হইরাছে, যে উপনিষদ্-লেখক ঋষিগণ অতি উচ্চ অঙ্গের ত্রাহ্ম-ধর্ম সাধন করিয়াছিলেন। আখ্রসমাজের ইতিহাস আলোচনা করিলেও দেখা যায় ত্রাহ্মধর্ম উপনিষদ প্রতিপাদিত ধর্মরূপেই ध्यथाम धानिक इटेशाहिन, এवः चानि वाक्रमभाव वतावत्रे ব্রাহ্মধর্মের সার্বভৌমিকত স্বীকার করিরাও ইহাকে হিন্দুশাস্ত্র প্রতিপাদিত ধর্মরূপে প্রচার করিয়া আসিতেছেন। আমি আদি ব্রাহ্মসমাজের আত্যস্তিক 'সন্ধীর্ণতা ও রক্ষণীলতার প্ৰপাতী নহি, কিন্তু উক্ত সমাজের এই মতের সহিত আমার সম্পূর্ণ সহাত্ত্তভি যে হিন্দুজাতীর ব্রাক্ষদের পক্ষে উপনিষদের দ্বিত হনিষ্ঠ বোগ র**ক্ষা করা উচিত এবং হিলুকাতি**র মধ্যে ব্রাক্ষর্পকে উপনিষদ্ প্রতিপাদিত ধর্ণীরূপে প্রচার করা উচিত। এই মতের প্রধান প্রধান যুক্তি খালি সামি পরে भारत **केरतम क्**तिरक्ष ।

১। ব্রাহ্মধর্ম সার্ক্ষভৌমিক ও শান্তনিরপেক ধর্ম

বটে, কিন্তু উপনিষদ্ এই সার্ক্ডোমিক ধর্মই শিক্ষা দিতেছেন, হুতরাং ইহাকে ব্রাক্ষধর্ম-প্রতিপাদক শাস্ত্র অর্থাৎ ধর্ম-সাহিত্য-রূপে গ্রহণ করা আবশ্রক।

- ২। ইহা দেশীর শাস্ত্র, ইহার প্রতি আমাদের বভাবত:ই বিশেষ শ্রদ্ধা ও অনুরাগ আরুই হর, স্বতরাং ইহার উচ্চ শিক্ষা আমরা অন্তান্ত শাস্তের শিক্ষা অপেকা সহজতররূপে গ্রহণ করিতে সক্ষম।
- ০। সাধ্য ও স্থবিধা অনুসারে সমুদার শান্ত ও শিক্ষকের সাহায্য গ্রহণই উচিত বটে; কিন্তু বিশেষ ভাবে কোন শান্ত্র ও শিক্ষকের সাহায্য গ্রহণ না করিলে ধর্মনিষ্ঠা দ্বম্বন্ধ শৈথিল্য ও স্বেচ্ছাচারিতা আদিরা পড়ে। ত্রাহ্মদমাজের সাধারণ অবস্থা এখন এইরূপ। এমন অনেক ব্রাহ্মপরিবার আছে, বেখানে নিয়মিতরূপে কোন শান্ত্রাধ্যরন হয় না, কোন সাধুরীবনের আলোচনা হয় না। এই শৈথিল্য ও স্বেচ্ছাচারিতা দূর করিবার পক্ষে ব্রহ্মবাদ-প্রতিপাদক অদেশীয় উপনিবদ্ শান্ত্রের এবং অদেশীয় সাধুরীবনের বিশেষ আলোচনা সর্ব্বাপেক্ষা অধিক কার্য্যকর।
- ৪। মহাত্মা রাজা রামমোহন রার হিন্দুজাতিব মধ্যে উপনিষদ্-প্রতিপাদিত ধর্মই প্রচার করেন। নহর্ষি দেবক্রনাথ ঠাকুর বেদ বেদান্তের অভ্রান্ততা অস্বীকার করিয়াও ব্রাহ্মধর্ম্মকে বেদান্ত-প্রতিপাদিত ধর্মরূপেই প্রচার করেন। তাঁহার ধর্মজীবন ও উপদেশ, যদ্বারা এদেশীয় ব্রাহ্মধর্মের অঙ্গপৃষ্টি ও সৌষ্ঠর সম্পন্ন হইয়াছে, তাহা প্রধানতঃ উপনিষদম্প্রাণিত। মুতরাং ঐতিহাদিক ভাবে দেখিতে গেলে আধুনিক ব্রাহ্মধর্ম্ম অনেকাংশেই উপনিষদ্ প্রতিষ্ঠিত ও উপনিষদম্প্রাণিত। ইহার উপাসনা-প্রণাণী প্রায় সম্পৃণক্রপেই উপনিষদ্ প্রতিষ্ঠিত। মৃতরাং ব্রাহ্মধর্মকে উপনিষদ্ প্রতিপাদিত ধর্ম্ম বলিয়া প্রচার করিলে যুক্তি বা ইতিহাস কিছুবই বিরুদ্ধাচনণ হইবে না, এবং ইহা একটী নৃতন কার্য্য ও ইইবে না।
- ৫। ত্রাহ্মসমাজ ইদানীং কার্য্যতঃ অনেক পরিমাণে উপনিষদে হইতে দ্রে পড়িয়াছেন, উপনিষদের আলোচনা ছাড়িয়া দিয়াছেন। ইহা হইতে কয়েকটা বিষময় ফল ফলিয়াছে—
  (১) গভীব জ্ঞানালোচনায় শৈথিল্য, (২) উপাসনার গাঢ়তাব অভাব, (৩) গভীব ধ্যান ধাবণায় বিতৃষ্ণা। এই অবস্থা বেশি দিন চলিলে ত্রাহ্মসমাজ আধ্যাত্মীকতা-বিহীন সমাজসংস্কারক দল রূপে পরিণত হইবে এবং সমাজসংস্কারও প্রকৃত সংস্কার না হইমা বাহ্ম সভ্যতা ও সেভাচারিতার আকার ধারণ করিবে। প্রস্কুম্বদিগের যুগ্যুগান্তরব্যাপী সাধনালর সঞ্চিত ধর্মাভিজ্ঞতা হইতে বঞ্চিত হইলে, এরূপ আধ্যাত্মিক দারিদ্রা অবশ্রম্ভাবী। গাছের কাটা ভাল শীন্তই শুকাইয়া বার।
- ৬। এককালে এদেশের শিক্ষিত নক্ত সম্প্রদায় নিরবছির ইংরেজি শিক্ষার প্রভাবে অনেক পরিমাণে জাতীয়তাশৃষ্ট হইরা পড়িরাছিলেন। কেশের সর্ক্রসাধারণও অনেক পরিমাণে শাস্তালোচনা-বঞ্চিত ছিলেন। সেই সময়ে জাতীয়তা নিরপেক্ষ প্রচার অনেক পরিমাণে কার্যক্রের হইরাছিল। তখন ইংরেজির একাধিপত্য ছিল, স্কুজরাং ইংরেজি উচ্চ শিক্ষা-প্রাপ্ত, ইংরেজির

ভাষায় সুৰক্তা ও সুলেধক মহাত্মা কেশবচন্দ্র ও তাঁহার সহ-र्याणिशालत हेरदाकि ভाবाপन श्राठात्रहि ष्यानक श्रीत्रमात्न সফল হইয়াছিল। আজকাল জাতীয়তার বিশেষ অভ্যুত্থান ও জাতীর ধর্ম-সাহিত্যের বহুল প্রচার বশত: যুগ-পরিবর্তন ঘটিরাছে। নৃতন যুগে যুগের উপযোগী প্রচার-প্রণালী অব-লম্বনা করিলে প্রচারচেষ্টা তাদৃশ সফল হইবার সম্ভাবনা নাই। কেশব বাবুর সম্বন্ধে আরণ করাইয়া দেওয়া আবিশুক যে তিনি শেষ জীবনে অতান্ত হিন্দুভাবাপন্ন হইয়া উঠিয়াছিলেন। এমন কি তাঁহার Liberal and New Dispensation পত্তে "Our Return to the Vedanta" শীৰ্ষক একটী কুদ্ৰ প্ৰবন্ধ বা পাাবা প্রকাশিত হইয়াছিল, তাহাতে লেথক তাঁহার সধর্মাব-লম্বীদিগের হইয়া এই লিখেন যে তাঁহারা বৈদান্তিক ধর্মে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়াছেন। স্মারও লিখেন যে ব্রাহ্মধর্মের ভিত্তি-মূল অনেক দিন পূর্ব্বেই উপনিষদে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।

৭। সমুদার হিন্দুশাস্ত্রের মধ্যে আমি যে উপনিষদ্কে বিশেষকপে অবলম্বনীয় বলিয়া উল্লেখ করিতেছি, তাহার কাবণ এই যে জামি হিন্দুশান্ত্র-সমূহের মধ্যে কেবল উপ-নিবদ্কেই অনন্ত পূর্ণরব্দ্ধ-প্রতিপাদক শাস্ত্র বলিয়া মনে কবি। শাক্ত, শৈব, বৈষ্ণব প্রভৃতি শাস্ত্রও অনেক ছলে আপন আপন দেবতাকে প্রক্র বলিয়া ব্যাখ্যা ক্রেন বটে, কিন্তু অক্সান্ত হলে আবাব এই সকল দেবতাকেই সাকারও পবিমিতকপে বর্ণনা করেন। আবে একটী কারণ এই যে উপনিষদ্কে সকল শ্রেণীব হিন্দুই ভব্তি কবেন। ইহা হিন্দুর ष्मगांच्यनायिक गाञ्च। ष्यकांच गाञ्च माच्यनायिक, मर्व-माना নহে। এমন কি বেদের সংহিতা এবং ব্রাহ্মণ শ্রুতি বলিয়া মানাম্পদ হইলেও তৎপ্রতিপাদিত দেব-পৃঞ্চা ও যজ্ঞাদি ক্রিয়া বৈষ্ণবাদি সম্প্রদায়ের নিন্দাব বস্তু। কিন্তু উপনিষদ-প্রতি-পাদিত ত্রন্ধোপাদনা সকল সম্প্রদায়েরই শ্রদাব বস্তু।

> (ক্রন্থ ) শ্ৰীসীতানাথ দত্ত।

## ব্ৰাহ্মসমাজ।

উৎসব— শ্রীযুক্ত বাবু শশিভূষণ বহু সিরাজগঞ্জ রান্ধ-সমাজেব উৎসব উপলক্ষে তথায় গমন কবিয়াছিলেন। তিনি উৎসব উপলক্ষে "ধর্ম্মের শিক্ষা" বিষয়ে একটা প্রকাশ্র বক্ততা करतन এবং উৎসব উপলক্ষে উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য करत्रन ।

প্রতিনিধি নিয়োগ—জাতীয় মহাসমিতির অধিবেশন উপলক্ষে মাক্রাজ নগবে একেশ্বর বাদীদিগের যে স্মালন হইবে. তাহাতে ঐীযুক্ত বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র বিএ শ্রীযুক্ত বাবু হেরম্বচন্দ্র নৈত্র এম্ এ এবং শ্রীযুক্ত ডাক্তার মোহিনামোহন বস্থ মহাশরগণ সাধারণ ত্রাহ্মসামাজের কার্যানির্বাহক সভা কর্ত্ প্রতিনিধি মনোনীত হইয়াছেন।

শ্রীযুক্ত বাবু আনন্দমোহন বস্ত মহাশয়ের বিলাত হইতে প্রত্যাবর্ত্তনের প্রাকালে লওনের একেশরবাদিগণ এসেবুহলে তাঁহার বিদার স্চক এক সভা করেন। মি: আই এম, সভা-পতির আসন গ্রহণ করেন। এই সভা তাঁহাকে সাদরে অর্ভার্থনা করেন এবং ব্রাহ্মসমাজের প্রতি সহামুভূতি এবং শুভইচ্ছা জ্ঞাপন করেন। উক্ত সভায় অনেক গণ্যমায় ভিন্ন ভিন্ন সহরবাসী একেশ্বরবাদিগণ উপস্থিত ছিলেন।

## পঞ্চপ্তিতম মাঘোৎসধের কার্য্য প্রণালী।

নিয়লিখিত প্রণালী অহুসারে সাধারণ ব্রাহ্মসমাব্দের কার্য্য-নির্কাহক সভা আগামী মাবোৎসব সম্পন্ন করিতে ইচ্ছা করিয়াছেন। স্মাবশুক হইলে এই প্রণালীর কোনও কোনও অংশের পরিবর্ত্তন হইতে পারিবে। আমরা ত্রান্ধ এবং ধর্মা-মুরাগী প্রত্যেককে এই উৎসবে যোগদান করিবার জন্ত বিশেষ ভাবে অমুবোধ করিতেছি।

১লা মাঘ (১৪ই জামুয়ারি ) সোমবার—ত্রান্ধ পবিবারে, ও ব্রান্মছাত্রনিবাদে ব্রাহ্ম সমাজের কল্যাণের জন্ত প্রার্থন।।

२त्रा भाच---( > ६ दे का ) मननवात--- छेटबांधन ।

তরা মাঘ—(১৬ই জা) বুধবার—প্রাতে উপাসনা; সাংকালে—বক্তৃতা।

৪ঠা মাঘ—(১৭ই জা) বৃহস্পতিবার—প্রাতে উপাদনা; नायःकाल--- उक्ष विमानस्यत्र नाष्ट्रपतिक উৎসव।

৫ই মাঘ —( ১৮ই জা ) শুক্রবার—প্রাতে উপাসনা ; সায়ংকালে—সঙ্গত সভার উৎসব।

৬ই মাঘ—(১৯শে জা) শনিবার—প্রাতে উপাসনা : সারংকালে—ধর্মশান্ত হইতে পাঠ।

৭ই মাঘ—( ২০.শে জা ) রবিবার—প্রাতে উপাসনা ; देवकाल-वाहित्र क्षाठात्र ; मात्रःकाल-डेभामना ।

४३ मान—(२) मा अ) (मामतात्र—शां उपामना : বৈকালে —রবিবাসরিক বিদ্যালয়ের উৎসব; সায়ংকালে – বক্তা।

>हे गाच—(२२८म का) मक्रनतात—शां खाकिका नमां ; মধ্যাহ্নে ব্রাহ্মসন্মিলন , সায়ংকালে—বার্ষিক সভা।

১০ই মাঘ—( ২৩শে জা ) বুধবার—প্রাতে উপাদকমণ্ডলীর উৎসব , देवकालि—नगत्र कौर्छन ; मात्रःकालि—উপामना ।

১১ই মাঘ—(२scm का) तृहम्लाज्यात्र-ममख मिन वााशी উৎসব।

১২ই মাঘ — (২৫শে জা) শুক্রবার — প্রাতে সাধন আশ্রমের উৎসব; মধ্যাহ্যে—আলোচনা এবং সায়ংকালে—বক্তা।

১৩ই মাঘ—(२५८म का) मनिवात्र—প্রাতে উপাসনা: देवकारल-त्वानक वानिकामित्रन्तः। ছाज्यमभारस्त्र छे ९ मर । > १३ माच-(२१८ म छ।) त्रविवात- वाक मिननीत उरम्ब ।

#### বিজ্ঞাপন।

আগামী ১১ই জাতুয়ারি শুক্রবার ৫২ ঘটকার সময় সাং ত্রাঃ ममासमित्त व्यथाक मजात ठेजूर्य दिवसामिक व्यथित्यमन इहेर्द । विद्वा विवय ।

 कार्यः निर्व्ताहक मञ्जात वर्ष देवमानिक कार्याविवत्र ও আয় ব্যয়ের হিনাব।

२। निग्नमावली मः त्नाधन।

ত। বিবিধ।

### ভোটিং পত্র।

আগামী বর্ষের অধ্যক্ষ সভা গঠনের নিমিত্ত ভোটং পত্র সভাগণের নিকট প্রেরিত হইরাছে। যদি কোন সভা ভোটিং পত্র প্রাপ্ত না হইয়া থাকেন অফুগ্রহ পূর্ব্বক সাধারণ ত্রাক্ষসমাজ কার্যালয়ে জানাইলে পাইতে পারিবেন। আগামী ৫ই জামুরারি ১৮৯৫ তারিথের মধ্যে নিয়লিথিত ঠিকানায় ভোটিং পত্র পাঠা-ইয়া অসামাদিগকে বাধিত করেন।

সাং ত্রাঃ সমাজ

२১ २नः कर्प अया निम् द्वी है क्लिकाछ। २ना (भीष ১००२ শ্ৰীপ্ৰাণকৃষ্ণ আচাৰ্য্য गरकाती गण्णाहक।

পঞ্চবস্থিতম মাঘো	২সব উপ <b>লক্ষে ১লা হ</b> ইতে	>৫ই	্বাতীর সংগীত	<b>৶• স্থ</b> লে	s)
			জাগ্ৰত জীবন	•	1
	फॅक्ट नगर मृत्ना विक्री <b>७</b> ।		জীবন্ত ও মৃতধর্ম		(
			জীবনছায়া		9
	য়ের মধ্যে কেহ মূল্য পা		<b>জ্যোতিক</b> ণা		/
	ক্পাঠাইতে পত্ৰ লিখিলে	ডক্ত-	र्षि किः		1
রূপ স্থলভ মূল্যে বই গ	াহিতে পারিবেন।		ভীর্থযাত্রা	॥• ऋटन	10
অঞ্বি		119/	*छर्ष दर्भामृती अकटल वांधा व		3
অন্নপূর্ণা চরিত		<b>3</b> /	ঐ ১৫ ভাগ একতে লই		50
*অধ্যাত্ম যোগ ও প্রেম <u>ই</u>	tधम । <b>॰ ए</b> टन	J	*#14	√• इंटन	/
+অল্ক চরিত	•	J.	* मी शि	<b>\dagger</b>	ノン
অমরকীর্তি বা ফাদার ডা	মিয়নের জীবন চরিত	- 11	∗হইথানি ছবি	и• "	10/
*णालांक	।• ऋत्न	J	*দীপ্রশিরার অভিষেক	, ,	ر)
≠আত্ম-পরীক্ষা	८३ <b>८ व्ह</b> रन	د؛ ه	দয়ানন্দ সরস্বতীর জীবন চরি	ত	15
আয়োরতি	•	ه کی	•ধর্মতক্দীপিকা (বাবু রাজনা	রায়ণ বস্থ ক্বত ॥॰ স্থান	ام
जानम नीना		<b>,</b> /•	ধর্ম বিষয়ক প্রশ্নোত্তর (পণ্ডি		
चास्रान ,	•	/•	(গোস্বামী কৃত)	/∙ ऋरन	ر)
আত্মচিস্তা (পাপীর নবজী	বন প্রণেতা ক্বত)	J.	ধর্মকুমুম	/o "	42
আধাান কৃত্য	•	" <i>V</i> •	*ধৰ্মজিজাসা ( ৰাবু নগেক্ৰন	থি চট্টোপাধ্যার	
আদৰ্শ নৰনারী		<b>₀</b> /∘	কৈত, ১ম ভাগ, ২য় সং	खद्र <b>ा ॥• ऋत्न</b>	10
*আসাম ভ্ৰমণ		ho	* 🔄 २	য় ভাগ ॥ "	10
ঈশবের সর্বাজ্ঞতা ও মাস	ায়ার স্বাধীনতা এবং		•ধর্ম সম্বনীয় ভিন্ন ভিন্ন মটো,	প্ৰতি খণ্ড	د>
	এতহ্ভয়ের সামাঞ্জ	100	* ঐ ছোট		•
*উপনিষদ: (जेन, दक्न,	কঠ,প্ৰশ্ন মুগুক ও মাণ্ডক্য		ঐ অন্ত	প্রকারের	4
এই ছয়খানি উপনিষ			ধৰ্ম সাধন ১ম ভাগ		1
वकाञ्चरामगर )	১ इत	hd.	ঐ ২য় ভাগ		Ho
<b>∗উপ</b> হাব	।० े ऋटन	J•	নীতিমালা,		4
*डेभरमभाना (बाठाया ग	११व डेপ <i>(न</i> ण) ।√० ऋ <i>(न</i>	1 %	নারীশিক্ষা ১ম ভাগ		t
উপন্যাস মাশা	,	٠٤)	ঐ ২য় ভাগ		!!
উদ্গীথা	·	10	* <b>ন</b> গেন্দ্ৰ বালা	৴• স্থলে	4,
এতদেশীয় স্ত্রীলোকদিগের		150	नवयूश		)
	নীবনীও উপদেশ)। ॰ হুলে	e o	নীতি কুম্বম		J
∗কেন আছি?	•	<; ∘	নীতিপদ্য		/
কারাকুস্থমিকা		10/0	নিত্যকৃত্য ১ম ভাগ		42
क्रम्ननाथ		•∕•	ঐ ২য় ভাগ		1
क्र्युमिनौ हित्रिङ		1 •	* প্রকৃতি চচ্চা	।• ऋत्न	9
कृषक वान!		19.	*প্রকৃত বিশ্বাস	/• "	(2)
<ul> <li>ক্রিয়াশীল ব্রহ্ন</li> </ul>	_	<a>c</a>	*প্রার্থনার আব্ভক্তা ও যুব্তি	•	ري.
থাসিয়া জাতি ও থাসিয়া		/•	*পাপীৰ নৰজীৰন লাভ	्र इंटन अध्यो कर अस्त्र ११ व्यक्त	130
	ত শিবনাথ শান্ত্ৰী ক্বত। d• স্থলে		*পুলাঞ্লী (পণ্ডিত শিবনাথ		
গান ও বচন	•	•/•	*পরিবারে শিশুশিকা	/• इट <b>न</b> •/• ∷	ري ري
চানক্য নীতি	1	۲۶ ۰	*পূজার ফুগ	, ,,	
চিন্তাশতক চলিত কল	J• <b>च्</b> रल	4.	*পূজার <b>আয়োজন</b>	৵° " √ ऋरव	/50
চরিত রহন্ত	0 <sub>39</sub>	•⁄	*প্রসাদি ফুল প্রমদাচরণ	<i>७ ५</i> ८५	/s
*চিন্তাকণিকা (বাবু সীত *চিন্তামঞ্জী	নাথ দও হও ) ৶ <b>৽ হ</b> লে	<>• •∕•	পুরুষকার মহাবীর গারফীল্ড (	কাপডেৰ মলাট মাঠ স্থাল	ري. د کري
কাতভাবন্দ্র চিন্তাবিন্দু		-	পঞ্চোপনিষৎ ( क्रेन, क्वर, क्वर		19
- 1	o **	4.	এই পাঁচখানি উপনিষৎ এক		লে 1•
চিরদিন কি ছংথে যায় ? ছারাময়ী পরিণয় (পঞ্জিত	शिवयांचा भागी <i>ल</i> ती≔	<b>å</b>	প্রাক্ত ভত্ত বিবেক	· · ···· · · · · · · · · · · · · · · ·	•1¢
		110	* পूनर्जम चाष्ट्र कि ना ? (	বাব কঞ্চবিহাঁরী	-,
*ৰাভিভেদ( ১ম প্ৰবন্ধ) প *ৰাভিভেদ ২য় প্ৰবন্ধ		\> .	•	জ্ <b>ড</b> ) /• স্থলে	٠ ر٥٠
क्षाि छित्। व्यक्ति	· (जा) कर क्रम	.5.	প্রকৃতির শিক্ষা	· / · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	• نوا
चीरनकारा (পণ্ডিড नियम	' '	۲۰•	্ঐ কাপড়ে বাঁধা		#•
অক্ত কয়েক জনের লি		1.	পারিবারিক ঈশবোপাসনা প্রণ	।।नी	7.
অন্ত করেক্ জনের।গ জীবনালোক (কাপড়ের ম		13.	* ফুলের মালা	•	çs.
व्यान ७ धर्मात उन्नि	·114 / 19 * <b>26*1</b>	110	उक्त माथन ( वायू कानीनाथ प	ন কত )	10
THE KENT OF LE		(t •	an min / hymmin	- <b>-</b> ,	, 7

			,
<ul> <li>বৃদ্ধচর্য্য ভগিনী ভোরা (ভীবনালোক)</li> </ul>	Į	যু <del>ৰক-ধৰ্ণ্য-ণী</del> তি	•/•
'প্ৰণেতা কৰ্ত্ব প্ৰণীত ) Id> <b>ছলে</b>	10	म् अभूका	10
<ul> <li>ব্রেলাপাসনা প্রণালী    <ul> <li>৺ »</li> </ul> </li> </ul>	150	* ৰোগ	63.
<ul> <li>ব্রহ্মদঙ্গীত ১ম ভাগ ৪র্থ সং ( কাগজের মলাট )</li> </ul>	Ŋ•	<ul> <li>शंखवदा कीवनी</li> </ul>	10
<ul> <li>১ ৫ম সং (কাপড়ের মলাট)</li> </ul>	ho	<b>ट्याग्रनाथ</b> ,	10/+
* ঐ (ম সং (কাগজের মলাট)	H•	রমণীর কর্ত্তব্য	loke
<ul> <li>ঐ ১০ ছলে ৬ ছ সং (কাগজের মলাট)</li> </ul>	31	রাজা রামমোহন রায় (বালক বালিকাদিগের জন্ত )	₹>€
<ul> <li>   ক্রি ১॥ • ভ্রে ৬ ছ সং (কাপড়ের ম্বাট)  </li> </ul>	• 21•	লন্দীমণি চরিত	1•
<ul> <li>বান্ধর্ম স্ত্র</li> </ul>	ر٥٠	লহরী (শ্রীমতী কুমুদিনী <b>বস্থ</b> প্রণীত)	<b>n•</b>
ব্রাহ্মধর্ম ১ম ভাগ (হিন্দি)	<b>)) •</b>	नाश्चिम	14/4
क्षे रम्र जाग व्य	H•	* শান্তি - এ- ছলে	<b>./•</b>
* ব্রাহ্মসমাজের বর্তুমান অবস্থা এবং আমার		रेमवा .	٠,٥٠
জীবনে ত্রাহ্মসমাজের পরীক্ষিত বিষয়		<ul> <li>শুশানভন্ম ১ম মৃষ্টি ।• স্থলে</li> </ul>	J.
(পণ্ডিত বিজয়ক্ষ গোস্বামী কৃত) 🗸 ৽ স্থান	4.	<ul> <li>के २व मृष्टि ।• च्हाना</li> </ul>	J.
<ul> <li>ব্রেলাপাসনা কর্ত্ব্য কেন? (পণ্ডিত শিবনাথশাল্লী কৃত</li> </ul>		टेमनाद्यमीत छेभरमभ	۰ در
* বক্তৃতা ন্তবক (পৃথিত শিবনাথ শাস্ত্রী ক্বন্ত ) ৮/০ ছবে		শিকা	10
		শঙ্করাচার্য্য	
বুদ্ধদেবচরিত	3/		-
ত্রান্ধর্ম তত্ত্ব	10	<ul> <li>করাজকুত্বন /• ছলে         সময় ও সংয়ার</li></ul>	/• />•
* ব্রাহ্মধর্ম ও নববিধান	<b>/•</b>		
ব্ৰাহ্ম বচন সংগ্ৰহ ১ৰ ভাগ	10	* সাধুদৃষ্টাত্ত (জীবনালোক প্রণেতা কৃত )	650
ঐ ২য়ভাগ	<b>9/</b> •	» স্থেসক /> জাল	ہ/ر ماد
ব্যথার ব্যথী	4.	<ul> <li>সংস্থা (জীবনালোক প্রণেতা কন্ত ) ।• ছলে</li> </ul>	<b>J</b> •
ৰাল্যবিবাহ (বাবু নগেজনাথ চ্টোপাধ্যায়ের বক্তা)	<b>å</b>	* সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের নির্মাবলী	
वागाकीयन	10	* সাধন বিন্দু (বাবু দীতানাথ দত্ত ক্বত ) ।•ছলে	d.
* ব্রাহ্মধন্দ সম্ক্রীয় প্রশ্নোত্তর 🖊 - স্থলে	⟨>•	स्थ किरम ?	/•
वाम। त्रुं जनावनी	II •	স্রাপান বিষয়ে বক্তা	/•
বেদীয়া বালিকা .	<b>å</b>	স্কীত লতিকা (প্রথম খণ্ড) (সিন্দ্রিয়া পঢ়ী পারিবারি	4
বৈৰাগ্য ৮/১ ছলে	12.	সমাজ হইতে প্ৰকাশিত)	n •
🕈 ব্রহ্মজিজ্ঞাসা ( বাবু সীতানাথ দত প্রণীত ) ॥० স্থলে	10/2	সঙ্গীত মঞ্জরী (বাবু কালীপ্রসন্ন ঘোষ প্রণীত)	<b>↓•</b>
বনফুল	ル・	স্ত্যুস্কীত <b>'</b>	ij•
বিদ্যাসাগর চরিত (সচিত্র)	456	সঙ্গীত প্ৰবন্ধ	4.
वनवातिनी	150	সঙ্গীতরঞ্জন	<b>{•</b>
बनथरन	1	সঙ্গীতৃহার ১ম ভাগ	1.
वानिका	1.	ঐ ২য় ভাগ	1.
বাঙ্গালি রমণীর গৃহধর্ম	1.	সারধর্ম (বাবু যাজনারায়ণ বস্তু ক্বত )	130
ভক্তিসাধন। (ধিওডোর পার্কারের করেকটা		সভ্যদাসের সংপ্রসঙ্গ	1/-
• छेशारामंत्र दकास्वामं)	<b>11 •</b>	সুরাপান বা বিষপান	N•
<b>ङ्</b> ङिनौन।	 1•	সক্ৰেটিশ	4.
ভক্ত-চরিতামূত	119	* সাকার ও নিকাকার উপাসনা ( হিলি ) ।• <b>ছেবে</b>	J•
ভজ-চার্থা মাতৃত্তি ও মাতৃপুলা	100	স্থানার ওানকার জালিকার আৰম্ভকতা	۰۶,
	•	্ স্ত্রী-ধর্ম-নীতি (পণ্ডিতা রমাবাই প্রণীত)	
• মনোরমার গৃহ	şi.	विश्व कृत	ارد ا
* মহাত্মা রাজা রামমোহন রায় (পদ্য)	4.		4.
মহাত্মা থিরোডোর পার্কারের জীবনচরিত		সাধুজীবন	
(বাবু নগেজনাথ চটোপাধ্যার প্রণীত)	h•	সাধুচরিত (কাগজের মলাট)	#•/=
মার্টিন লুথারের জীবনচরিত (বাবু উমেশচন্দ্র		ঐ কাপড়ে বাধা	40
मच टांगेंड)	1•	* সাণী	43.
নহম্মদচরিত (বুদ্ধদেবচরিত-প্রণেতা বারু কৃষ্ণকুমার মিত্র		সচন্দন পূপ	/•
প্ৰণীত )	3/	ন্ত্ৰীর কর্ত্তব্য	43.
महाश्क्य की वनी	1•	হরিদাসের ধর্মকথা	<b>*</b>
মেরি কার্পেণ্টার	•∕•	হিন্দাত্র (ভানকাণ্ড ও কর্মকাণ্ড )	>#•
মহাত্মারাজা রামমোহন রারের জীবনচরিত ২য়.সংকরণ		हिन्मू धर्षा-७व	.ta/•
পরিবর্ত্তিত ও পরিবর্দ্ধিত ( বাবু নগেক্রনাথ চট্টোপাধ্যার		हिमालार प्रार्थना ।	/>•
প্রণীত )	3/	হরি লীলা ১৯/• স্থলে	11-de
প্রণীত ) মানব ইতিবৃত্তে বিধাতার শীশা	ç;•		¥4/•
_		হরি লীলা ১৫ ছলে  * চিহ্নিত পুতক্তলি সাধানণ রাজসমাজের নিজৰ।  ছানাভাবে এবারে অনে কণ্ডলি পুতকের ভালিকা একাশিত হ	

# তত্ত্ব-কৌমূদী

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১৯শ সংখ্যা। ১৭শ ভাগ।

১লা যাঘ দোমবার, ১৮১৬ শক, ত্রাহ্ম দম্বৎ ৬৫।

#### প্রার্থনা ।

উৎসবের দেবতা! আমরা মহোৎসবের হারে উপনীত ছইতেছি, সহৎসরের ক্লথ ছংথের বোঝা বহন করিরা, তোমার চরণে উপস্থিত চইতেছি, মহোৎসবের ভেরীব নিনাদ উঠিতেছে, ভক্তগণ আশা ও আনন্দে উৎফুল্ল হইতেছেন; আমরাও নৃতন বল ও নৃতন উৎসাহের জন্ম আশাপূর্ণ নয়নে তোমাব দিকে চাহিতেছি। এই প্রার্থনা হৃদরে লইয়া উৎসবের হারে প্রবিষ্ট হইতেছি যে এবাব যেন তোমার শক্তি ভাল কবিয়া আমাদের হৃদয়কে অধিকার করে, এবং সেই শক্তিব প্রভাবে আমরা যেন নবজীবন প্রাপ্ত হই। আমাদের হৃদয় মনে কি বিল্ল আছে, যাহার জন্ম আমরা সম্পূর্ণরূপে তোমার ইচ্ছার অধীন হইতে পারিতেছি না প্তৃমি সে সকল বিল্ল

## मम्भापकां मखवा।

প্রেম-সাগরের নীরেতে ডুবিয়া, জীব কেন মর পিপাসায় ?—একদা কোনও এক নদীর নীরবাসী মৎস্তাগ সকলে সমবেত হইয়া পরস্পরকে বিলল,—"লোক মুথে শুনি জলেই আমাদের উৎপত্তি, জলেই আমাদের জীবন, কিন্তু কৈ, জল কিরুপ তাহা ত দেখিলাম না, এবং জলের প্রাকৃতি কি তাহাও ত জানিলাম না! ঐ মৎস্তাণের মধ্যে করেকটা জ্ঞানী মৎস্ত ছিল, তাহার। বলিল,—আমরা শুনিয়াছি যে সমুদ্রে একজন জ্ঞানী ও স্থপত্তিত মৎস্ত বাস কবেন, তিনি সকল বিষয়ে অভিজ্ঞ, এস আমরা সকলে তাহার নিকটে বাই, এবং তাহাকে জল দেখাইবার জন্মও জলের স্বরূপ ব্যাথ্যা করিবার জন্ম অন্থ্রোধ করি।", এই পরামণ শুনিয়া উক্ত মৎস্থাণের জনেকে সাগরাভিমুখে যাত্রা করিল, এবং আবদ্যের সমুদ্র মধ্যে দেই জ্ঞানী ও স্থপত্তিত মৎস্তের সিয়ধানে উপস্থিত হইল। তাহাদের প্রশ্ন শুনিয়া উক্ত মণ্ডিত মংশ্রের সারিধানে উপস্থিত হইল। তাহাদের প্রশ্ন শুনিয়া উক্ত মণ্ডিত মংশ্রের সারিধানে উপস্থিত হইল।

"জানিতে গভীর ডম্ব হরেছ ব্যাকুল; বাঁতে আছু, তাঁকে ভোল এ কেমন ভুল; বিদিয়া নদীর পাশে মর পিপাদার,
আশেব স্বভক্ষ্য কোলে, মরিছ কৃধার।"
কনওয়ে সাহেব কর্তৃক সম্বলিত Sacred Anthology
নামক গ্রন্থ হইতে উদ্ধৃত মুসলমান স্থদী সম্প্রদারের উক্তি।

তপস্তা—তপস্তা বলিতে এ দেশে রুচ্ছু সাধন ব্ঝার, একজন যোগী পঞ্চতপা হইতেছেন, অর্থাৎ দিবা দিপ্রহবে চারিদিকে অগ্নিকুণ্ড জালিয়া তন্মধ্যে আসীন আছেন, কেহ বা वरु वरुत्रव উर्क्षवाङ इहेम्रा द्रहिम्राह्म्न, ट्रक्र वा लोश्मनाका নির্মিত শ্যার উপরে শ্রান আছেন, স্কলেই বলিতেছেন, "ওঃ কি কঠোর তপস্থা!'' এ তপস্থা যে অতি কঠোর ভাহাতে সন্দেহ নাই এবং একপ তপস্থা যে হৃদয়ের ব্যাকুলতা ও আগ্রহ ব্যপ্ত্রক ভাহাও নিশ্চিত, কিন্তু আর এক প্রকার তপস্থার কথা বলিতেছি। একবার একথানি জাহাজ সমুদ্র মধ্যে ঝটিকাবেগে বিপথে নীত হইয়া বহুদূরে পভিয়াছিল। याजा कारन ভाहावा এक मार्भित में थाना ज्वा नहेगाहिन, কারণ এক মাদের মধ্যে গস্তব্য স্থানে পৌছিবার আশা ছিল। ঝটিকাবেগে বিপথে পড়িয়া গণনা করিয়া দেখিল যে আর তিন মাদের মধ্যে কোনও বন্দরে পৌছিবার আশা নাই। उथन काशकष्ट वाकिमिरगत महा वर्जावना উপश्वित इहेन, এক মাদের থাদো ভিন মাস কিপ্রকারে চলিবে ? প্রথমে क्रित रहेन (य काहां क्रिय नकन मान (वाबाहे चाहि, जाहा সমুদ্র জলে ফেলিয়া দিতে হইবে। কারণ জাহাজের ভার কমিলে অপেক্ষাকৃত অধিক ক্রভ চলিবার সন্তাবনা। তদমুসারে প্রথমে জাহাজক পণ্যদ্রব্যের কিরদংশ সমুদ্র জ্বলে নিক্ষেপ করা হইল। তাহাতে জাহাজ লঘু হইয়া কয়েকদিন কিঞ্চিৎ দ্ৰুতগভিতে চলিল। কিন্তু তথন গণনা করিয়া দেখা হইল, যেরূপ গতিতে চলিতেছে ভাহাতে যথাসময়ে বন্দরে পৌছিব।র আশানাই। আবার **भात्र अक्रिश्नः मान (क्रिन्स (मध्या हरेन) । এই ऋर्थ क्रिन्स**-দিনের মধ্যে সমগ্র মাল কলে নিক্লিপ্ত হইল। তথনও গণনা कतिया (मथा रहेण, (र यथानमत्त्र वनत्त्र भीहिवात चाना नाहे : **এইবারে সর্ক্রনাশ, হর কির্দিবস পরে সঞ্চাকে অনাছারে** मजिएक स्टेर्व, ना स्त्र अकिनिन करत्रकलन कतिहा मासूब

किलाया मिट्ड इटेरन । अन्यास्य (सर्वाक छेलाव अन्यनस्त কবা কর্ত্তব্য বলিয়া ছির হইন। তদমুসারে প্রতিদিন স্থরতী কবিয়া পাঁচ পাঁচ জান মাসুষ সমুদ্রগর্ভে নিকিপ্ত হইতে লাণিল। এইকপে যে জাহাজ ছই শত লোক লইয়া যাতা। कविग्राहित, जाहा २० कन लाक नहेग्रा वन्तरत (भीहित। আমবা যে তপস্থার কথা বলিতেছি তাহার সঙ্গে এই ব্যাপারেব কিঞিৎ সাদ্খ্য আছে। হে মানব! ভূমি হৃদয় পোতে বহ সামগ্রী বেবি। বাই লইয়া ব্রহ্মধামের অভিমুখে যাত্রা কবিয়াছ; সময়ে সময়ে পণের দ্বতা ভাবিয়া কি নিরাশ হইতেছ ৫ তবে হৃদয় পোত অনুসন্ধান কবিয়া দেখ কিজন্ত তোমার গতি মন্দ হইতেছে। এক একটা কবিয়া অগাধ সিন্ধুক্তলে নিক্ষেপ কবিতে পাক ৷ আজ অর্থ গেল, কল্য মান গেল, পবল্ত, আগ্রীয় স্বভনেব পেম গেল; এইরূপ কবিয়া ফেলিতে ফেলিতে যাও, হয়ত এমন দিন আসিবে, যেদিন জীবনেব স্বাংশক্ষা মূলাবান বস্তু ও শ্ৰেষ্ঠ স্থ বলিয়া যাত্রা বিবেচনা করিয়াছিলে, ভাছাও নিক্ষেপ কবিতে চুট্রে। ঈশুরের জন্ম এবং ব্রাহ্মসমাজের জ্বন্ম যদি তাহাও কবিতে সমর্থ হও তাহা হইলে বুঝা ঘাইবে যে ভূমি তপসী । ত্রাক্ষেবা এইরূপ তপস্থাব দিকে মনোনিবেশ করুন।

## সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

#### ব্রহ্মোৎসবের প্রকৃতি ও তাহার ফল।

মধুকরের মধুচক্রে মধুসঞ্চয়েব প্রথা আমবা জানি। কুদ্র কুদ্র মৌমাছি সকল নানা ফুল হইতে নিয়ত মধু আহরণ কবিতেছে, এবং ভাহা আপনাদেব বাসস্থল-চক্রে আনিয়া সঞ্চয় করিতেছে। বিন্দুবিন্দু পনিমাণে আনিতেছে, বিন্দু বিন্দু পরিমাণে জমা হইতেছে। কিন্তু কিছু কাল যাইতে না যাইতেই দেখা যায়, ভাহারা একটা প্রকাণ্ড চক্র মধুতে পবিপূর্ণ কবিতে ममर्थ रहेगाइ। यनि ले मक्न मधूकोवी जञ्जकादत जक স্থানে তাহাদের উপাক্ষিত মধু বিন্দু স্কল সংস্থাপিত না করিত এবং যদি তাহা ঐ সকল কুদ্র প্রাণীর মুখে মুথেই যুরিয়া। বেড়াইত অথবা তাহারা স্মিলিত না হইয়া নিজে নিজেই ভাহা উদরস্থ করিয়া ফেলিত, তবে তাহা কাহার ও দৃষ্টিগোচর হইত না, বা জগতের অপরেব কোন কাজেই লাগিত না। ভাগা ঐ সকল সংগ্রহকাবীদিগেবই উদরে থাকিয়া অদৃশ্র ২ইয়া যাইত। কিন্তু তাহাদেব এই প্রকার দশ্মিলন এপ্রকার একত্র সঞ্যপ্রার্ডি হইতেই উহা লোক-চফুগোচর হয়। এবং জগভের বাবহারে আসিয়া থাকে। এই যে মধুজীবিগণের মধুচক্রে মধুসঞ্জ ব্যাপরে, ইহার সহিত ত্রক্ষোৎসবের সাদৃগ্র জাছে। দুরে দূরে এক একজন ঈশ্বর্ণিপাস্থ, তাঁহার প্রেমিক ও ভূক্ত, অবস্থিতি করিতেছেন ; দিনের পন্ন দিন যত্ন অধাবদায় সহকারে বিন্দু বিন্দু ঈশ্বর-৫ খন, বিন্দু বিন্দু ঈশ্বর-ভক্তি সঞ্যু করিতেছেন, যদি তাঁহারা সেই ভাবেই অবস্থিতি করেন, ক্ষমত পরস্পারের সহিত মিলিত না হন, আত্মসঞ্চিত রত্ম স্কল আত্মভোগে, আত্মপরিতৃপ্তির জন্তই, রাথিয়া দেন এবং নিজেই

ভাহালইয়া বিভোর থাকেন, ভবে ভাণা আর লোকচকুর গোচর হয় না; এবং তত্ত্বারা জগতের কার্যাও সিদ্ধ হয় না। ভাহা লোকচকুব অগোচরে সঞ্চিত হইরা, অগোচরেই থাকিয়া যায়। নিক্রিণী নিভ্ত গিরিশুলে জন্মিয়া যদি ভার্থপরের ন্ত।য় সেই জনচকুর অগোচর স্থানেই বাস করে, তাহাতে জগতের লাভ কি ? তেমনি ভক্তজনয়ে সঞ্চিত বিন্দু বিন্দু প্ৰেম যদি সেই জদয়েই লুকায়িত থাকে, তবে তাহা আর অপর হৃদয়কে পবিতৃ**গ** করিতে পারেনা। ভাহাতে ভািন নিজে চরিভার্থ হইতে পারেন, কিন্তু অপরকে পরিবেশন করা রূপ মধুরতর সুথাস্থা-দন তাঁহার ভাগ্যে ঘটে না। মধুকরের বিল্বিন্মধুসঞ্যের ভায় ভক্ত জনয়ে সঞ্চিত প্রেমবিদ্ স্কল সন্মিলিভ হইয়া উৎসবক্ষেত্রে প্রকাও মধুচক্রের আকার ধারণ করে এবং তখন স্ক্রকারীর সঙ্গে স্ফেপরেও তাহার আমাদ প্রাপ্ত হয়। ইহাব নামই ব্রক্ষোৎসব। একা একা যাহা সম্ভোগ করা যায়, তাহাই যদি দশ জনে মিলিয়া মিশিয়া সভোগ করা যায় তাহারই নাম উৎসবভোগ। প্রতিদিন একাকী উপাদেয় বস্ত সকল আন্থার করিতে পারি,কিন্তু তাহাই যদি দশজনে মিলিয়া আখার করি, তবে তাহারই নাম হয় মহাভো**জ**। ত্রনোৎ-সবও তাহাট। একা একা যাহা সম্ভোগ করা যায় তাহা দশ ব্দনে মিলিয়। সম্ভোগ করার নামই মহোৎস্ব।

मीनशैन, इःथी, पश्चिम, नकत्मधे मरहा९प्ररव याहेवात्र অধিকাবী; সে স্থান অবারিত। কাহারও পক্ষে উৎসবগৃহের দার অবক্ষ নহে। যাহারা নিজেরা সঞ্চয় কবিতে পাবে নাই বা করিবার যত্ন করে নাই, তাহারাও এই সময়ে দশ জনের সহিত সন্মিলিত হইয়া সেই স্থুথ সম্ভোগ করিতে পারে। এই জক্স যাহা পৃথক্ পৃথক্, দুরে দূরে, বিচ্ছিন্ন ভাবে, থাকিয়া জ্বগতের সাধা-রণের সম্পত্তি হইয়াও অপ্রকাশিত থাকে এবং লোকের ব্যবহারের পক্ষে অমুপযুক্ত থাকে, দশ্মিলন ধারা ভাষাই সক-লের পক্ষে সহজলভ্য হয়, এবং সকলের সভ্তোগের বস্তর্জপে পরিণত হয়। এই জ্লু উৎসবের বিশেষ প্রয়োজন। যাহা নিজে দন্তোগ করিতেছ তাহা দশব্দের সহিত মিলিয়া ভোগ कत्र। एम अस्तित्र महिल मिलान याश शृद्धि पृष्टित वार्क्टित ছিল তাথা দৃষ্টির মধ্যে আফ্লিবে, এবং যাহা সকলের পক্ষে উপাৰ্জন করা বিশেষ আয়াস-সাধ্য ছিল, তাহা সহজ্বতা হইবে। এই জন্তুই উৎসব চিত্তের এরূপ আবাকর্ষক এবং মহত্পকারী। ইংাকে প্রেম-পিপাস্থ ঈশ্বরভক্তগণের মেলা বলাই সঙ্গত। উৎসবকে পিপাস্থ ও অনুরাগিগণের সন্মিশন নাম দিলেই ইহার উপযুক্ত আখা দেওয়া হয়।

মধুকরগণ যথন একা একা আপনাপন গুণ গুণ ধ্বনির সহিত এক একটা ফুল হইতে মধুসঞ্চয় করে কে তাহার সংবাদ পায়। কিন্তু যথন কোন বিশেষ বিশেষ সমরে ফুলসালে রক্ষণণ সজ্জিত হয়, আর হাজার হাজার মধুকর তাহাতে মিলিত হইয়া মধু সঞ্চয় করিতে থাকে, তথন তাহাদের সেই অফুট্ধ্বনি, যাহা একাকী অবস্থিতি কালে কাহারও কণগোচর হয় নাই, তাহাই কেমন শ্রুতিমধুর প্রবেশ শঙ্কে পরিণতা হইয় পথিকদিগের চিত্ত বিমুগ্ধ করিয়া থাকে।

আমরা ও যথন একাকী থাকি কে আমাদের সন্ধান পায়, আমরা বে ব্রন্ধের মহিমা গান করি তাহাতে কোন্ অস্তমনত্ব ব্যক্তির আকর্ষণের কারণ হর ? তথন সে সঙ্গীত কেহই তেমন ভাবে শোনে না। কিন্তু উৎসবক্ষেত্র দেথ আমাদেরই সমিলিত ধ্বনি, বিশেশরের মহিমা গান রব, যথন আকাশের নিস্তন্ধতা ভগ্ন করিয়া দেয়, তথন কেনা তাহাতে আকৃষ্ট হয়। সমিলনেরই শুণা সমিলনেই শক্তির বিকাশ। সমিলনেই নিজিত সমাজ বা জাতির নিজাবসাপের উপারের আবিকার। যাহা অদৃশ্য ভাবে ছিল, তাহাই সমিলনে দৃষ্টিগোচর হইয়া লোকচক্ষ্র প্রীতিকর হইয়া প্রকাশিত হয়।

সেই মহা সন্মিলনরূপ উৎসব আধার আসিয়াছে। ইহা হুকালকে স্বল এবং উদাসীন ও আলস্থের ক্রোড়ে শায়িত वाक्तिक निजावनारनेक कात्रण इक्रेक । "अरमर्टण देवक्षवनमारक মহোৎসৰ হট্যা থাকে ৷ ভাহার নমন্ত্রণের বিশেষ কোন বন্দোৰত নাই। ধ্য় ত কোন মতে দেশম্ধ্যে সংবাদ আচার क दिन्न। (म ९ मा ६ म । ज्यान प्राची यात्र शाकात शाकात ज्याक यद्भव व्यापनका करत्र ना। रमथान व्यविधा भाग्न विभन्ना यात्र এবং ভৃপ্তির সহিত উদরপু: করিয়া চলিয়া যায়। কাহারও কাহারও প্রতি অভিমান প্রকাশ প্রাত অনুযোগ নাই। नाहै। नकत्नहें मत्न करत्र, हेश मरहादन्य। हेश काहायछ বাড়ীর নিমন্ত্রণ নহে। স্মতরাং আদর যত্ন কবিবার জন্ত বিশেষ কেং নাই। এবং তাহা পাইবার কাহারও তেমন আকজ্জাও নাই৷ স্তবাং স্কলেই সৃষ্ট, স্কলেহ স্ম্প্রীত ৷ বিশাসাদের উৎসবও তাহাই। ইহার উদ্যোগ কন্তা তেমন বিশেষ ভাবে (कर्ट नग्र। व्यामता এই উদার ভাবেই (यन उत्कारमत নিযুক্ত হইতে পারি এবং উৎসবের সক্ষপ্রেষ্ঠদান যে প্রেমভক্তি পুণ্য তাহা লাভ করিয়া যেন কুতার্থ হইতে পারি।

ব্রহ্মোৎসবকে আমরা আর এক ভাবে দশন করিতে পারি, याहामिशतक भारत्र वाफ़ी छाफ़ा नहेशा वानकतिए इय, छाहा-দিগকে বাধ্য হইয়াই মধ্যে মটেধ বাটী পরিবর্ত্তন করিতে হয়। একটার পর আর একটা বাটাতে উঠিয়া যাইতে হয়। এই বাটি পরিবর্তনের সময় দেখাযাত্র. যে গৃহে উঠিয়া যাওয়া इहेटलह, जाहाटल यनि (कान अप्रतिक्रमण थाटक, দর্বাত্রে ভাষার দিকে আগন্তকের দৃষ্টি পড়ে। দে বাড়ীটা পরিষার করিবার জক্ত তথন বিশেষ পরিশ্রম করিতে কাহাকেও পরাম্মুথ দেখা যায় না। অর্থব্যয়, শারীরিক পরিশ্রম প্রভৃতি যাহা আবিশ্রক সকলেই তাহা । অপ্লানবদনে বহন করে। সাম্ভারকার অমুরোধ এবং সৌন্দর্যাপ্রিয়তা স্কলই তথন আসিয়া দেখা দেয়। এই নৃতন বাটীতে আগমনের পুর্বে যে বাটীভে বসতি ছিল, ভাছা যে ইহাপেকা কিছু অধিক পরিকার পরিচহর ছিল, এমনও নতে। হর ত ইহাপেকা ভাষা - আরও অপরিচ্ছর এবং আরও অস্বাস্থাকরই ছিল। কিন্তু **শেখানে অব্যত্তি কালে ভাছার অপরিজ্**রতার দিকে তেমন দৃষ্টিছিল না এবং সে অন্পরিজ্য়তা দূর করিবার জস্তুতেমন কোন উদ্যোগও ছিল না। কোনমতে ভাহাতেই দিন কাটিয়া যাইতেছিল। এই প্রকার হইবার কারণ অনুসন্ধান করিলে দেখা বার, বে পূর্বের বে বাটাতে অবস্থিতি হইতেছিল এবং ভাছাতে যে অপরিচ্ছরতা প্রভৃতি ছিল, ভাহার সহিত অনেক দিন বাস করিরা করিয়া সেই সকল মলিনভার সলে একটা সন্ধিবন্ধন হইয়া গিয়াছিল। সেই হীনভাও কদর্যাভার ভীব্রভা তথন অনুভব করিবার শক্তিও ক্রমে ক্রমে ভ্রাস পাইয়াছিল এবং ভাহার সহিত সন্ধি করিয়া কোন মতে দিন চলিতেছিল। কিন্তু নৃত্তন গৃহে আগমনের সঙ্গে সেই গৃহের কদর্যাভা নৃত্তন ভাবে মনকে অক্রমণ করিল, ভাহার অপরিচ্ছরভার সহিত ত আর সন্ধি হয় নাই। স্বত্রাং ভাহার সহিত বাস করাও অসহাও বিরক্তিকর হইয়া উঠিল। যাহা অভ্যাস বশতঃ এক সময় সহা হইয়া গিয়াছিল ভাহাই নৃত্তন বলিয়া অভিশ্র কুৎসিত এবং বিষম অপ্রীতিকর হইয়া পডিল। এই জন্ম লোকে নৃত্তন বাটাতে যাইয়া ভাহাকে পরিষ্কার পরিষ্কার ক্রিতে বিশেষ যত্নশাল হইয়া থাকে।

উৎসব আমাদের পক্ষে এই নৃতন গৃহে গমনের অবভার ক্লার। উৎসবে আমেরা নৃতন ভাবাপর হই। যাহা অভ্যাস বশতঃ সহিয়া গিয়াছিল, তাহাব সহিত আর বাস করিবার পার্ত্তি পাকে না। উৎসব যেন আমাদিগকে নৃতন গৃহে লইয়া যায়। এবং যে সকল মলিন চিন্তা, মলিন আকাজ্ঞার সহিত সন্ধি বন্ধন করিয়া এক সঙ্গে বাস করিতেছিলাম, যাহারা কুংসিত হইয়াও স্থাতা নিবন্ধন চিভের অশান্তির উদ্রেক করিতে পারে নাই এবং ঘাহারা মলিন হইলেও উদাসীনতা বশত: চিত্তের অতৃপ্রির কারণ হয় নাই; উৎসব যেন সেই সকলের তীব্রতা, কদর্য তাও হীনতা নৃতন করিয়া চকুর সমুথে উপস্থিত করে। উৎসবে আমরা নবীন সভাই যে সর্মদা পাইব, তাহা নাও হইতে পারে। কিন্তু উৎসব পুরাতন হীনতা, পুরাতন সংসারা-স্ক্তির প্রতি বিবক্তিউৎপাদনের এক প্রধান সহায় হয় : উৎসবে পুরাতন হীনতাসক্তির কদর্যাতা যেমন বোধগমা হয় এবং তাহার সহিত বাসে যেমন অপ্রবৃত্তি হয়, তেমনি সাধুতা, পুলা, ও সৌন্দর্যা লাভের জন্ম প্রবল আকাজ্জারও উদ্রেক হয়। তথন সেজ্যু পরিশ্রম কবিতে এবং সময় দিতে এবং সর্বাপ্রকার পাথিব স্থবিধা পরিত্যাগ করিতেও আমরা প্রস্তুত হই। এপ্রকাব পরিবর্ত্তন কি শুধু উৎসবের সময়েই হ্য ? তাহা কি কেবল मामतिक উ उ क नात्र है क न १ म क दन भवामन क विटल है कि আমরা এরপ পরিবর্ত্তন আনয়ন করিতে পারি ৪ নাতাহা পারি না। ভাবিয়া টিভিয়া যদি কিছু করিতে পারা যাইত তবে আমরা সকল সময়েই তাহা পারিতাম। কিন্তু তাহা रग्र ना। हेराटि जेपादात जानीका परे जायात्मत श्राम महल। ভাহাপাওয়াসকল সময়েই সম্ভবপর হইলৈও যথন আ্মেরা পরস্পরের সহিত ব্যাকুল প্রার্থনা লইয়া মিলিত হই এবং ভাহাও যথন বিশেষ ভাবে হয়, তখনই সেই অবস্থা আমবঃ পাইতে পারি এবং তথনই বাটী পরিবর্ত্তনের ফ্রায় স্তা স্তাই আমরা আপনাপন জীবনের প্রাচীন হীনভামুম্ভব কবিয়া নবজীবনের নবীন সৌন্দর্য্য লাভের জন্ম ব্যাকুল হই। তথনই যে জীবন পাইতে পারি এবং দেজক পরি**ভ্রমণ্ড যত্ন করিতে** পারি।

ইহা উৎসব রূপ শুভ স্মিলন দারা সহচ্চে স্থাসিদ হর। কারণ বে সকল সদ্ভাব লুকায়িত ভাবে থাকে, তাহা পরম্পরের স্মিলনে অসুকূল অবস্থার সহযোগে বিক্শিত হর এবং নবীন সৌদ্দ্র্য্য, পুণ্য, পবিত্রতা লাভের আশাও প্রবল আকজ্জার উদ্রেক হর। উৎসব নৃতন গৃহে গমনের স্থায় আমাদের প্রাচীন মলিন বাস পরিত্যাগের প্রধান উপায় স্কর্প হউক।

## ব্রাহ্মধর্ম—সার্বভোমিক ও জাতীয়। (প্রাপ্ত)

( নাম স্বাক্ষর পূর্বক বে সকল প্রাপ্ত প্রবন্ধ তত্ত্বকৌমুদীতে প্রকাশিত ছইবে তাহার মতামতের জন্ত লেধকই দায়ী।)

( "তত্ববিদ্যা-সমিতি"তে পঠিত ও বিবৃত প্রবন্ধের সারাংশ।)
( পূর্ব্ব প্রকাশিতের পব )

উপনিষদের ধর্মকে ব্রাহ্মধর্ম বলাতে এবং সাধারণতঃ ধর্ম সম্বন্ধে জাতীয়তা অবলম্বন করা সম্বন্ধে অনেক আপত্তি উঠিতে পারে। আমি এরূপ কতিপয় আপত্তির উল্লেখ করিয়া সংক্ষেপে উত্তব দিব।

- া ব্রাহ্মধর্ম অভ্রাপ্ত শাস্ত্র মানেন না। কিন্তু, কেই কেই বিলিছে পারেন যে উপনিষদ বেদের পূর্ব্বভাগকে এরূপ শাস্ত্র বিলয় মান্ত কবেন। একপ আপত্তির উত্তব এই যে আমি প্রাচীন ও প্রামাণিক উপনিষদ সমূহে একপ অভ্রাপ্ত শাস্ত্রবাদ কোথাও পাই নাই। উপনিষদ-লেখকগণ অভ্যাপ্ত সাহসী ও স্থাধীন। এমন কি তাঁহারা বেদের নিন্দা করিতে, অর্থাৎ ইহাকে অপরা বিদ্যা ও নিম্নসাধকের অবলম্বনীয় বলিয়া বর্ণনা করিতেও কুন্তিত হন নাই। অভ্যাপ্ত শাস্ত্র মানা সম্বন্ধে পরবর্ত্তীতিকু লেখকগণই দায়ী, উপনিষদের ঋষিগণ দায়ী নহেন।
- ২। 'উপনিষদে অবৈত্যাদ আছে; অবৈত্যাদের সহিত্ ব্রাহ্মধর্মের সামঞ্জ্য কোণায় ?' এই আপত্তির উত্তর এই যে, উপনিষদের অবৈত্যাদকে আমি ব্রাহ্ম-ধর্মবিরোধী বলিয়া মনে করি না। ব্রহ্মই একমাত্র নিরপেক্ষ সত্য বস্তু, অস্থাস্থ সম্দার বস্তু আপেক্ষিক ও ব্রহ্মান্ত্রিত, এরপ অবৈত্যাদ ব্রাহ্ম-ধর্ম-বিরোধী হওয়া দ্রে থাক্, প্রত্যেক ব্রাহ্মই বোধ হর গভার উপাসনার সময়ে এই সত্য অক্ত্র কবিয়া থাকেন। ব্রাহ্ম-আচার্য্যাণের উপাসনার সময়ে স্পষ্টরপেই এই সত্য উচ্চারিত
- ত। 'উপনিষদে নির্গণ ব্রহ্মের মত আছে, এরপ ব্রহ্ম আজের; ব্রাহ্মধর্মের ঈশবের সহিত এরপ ব্রহ্মের সাদৃশু কোথায়?' এই আপত্তি একটা মহা ভ্রমের উপর প্রতিষ্ঠিত। প্রাচীন ও প্রামাণিক উপনিষদ সমূহে এ 'সপুণ' 'নিপ্ত্রণ' কথাগুলিই নাই। কিন্তু এই শব্দ ছটার ভাব যাহা তাহা কোন কোন উপনিষদে দেখিতে পাওরা যায়। উপনিষদে ব্রহ্ম সপুণ নিপ্ত্রণ, অর্থাৎ বিশ্বরূপী ও বিশ্বাতীত এই উভর ভাবেই বর্ণিত। উপনিষদ-লেখকগণ এই ছই ভাবে কোন অসামঞ্জ্য দেখিতে পান না। আর তাঁহাদের নিশ্বণ ব্রহ্মও অ্যাক্ষের নহেন। তিনিও সৎ, চিৎ, ও আনক্ষেত্রণ।

- ৪। উপনিবদে জন্মান্তরবাদ আছে। কেই কেই জন্মান্তরবাদকে প্রাক্ষধর্ম-বিরোধী মনে করেন। জন্মান্তরবাদ ইদানীন্তন অধিকাংশ প্রাক্ষের মত-বিরোধী বটে, কিন্তু অধিকাংশ প্রাক্ষের মত বিরোধী ইওরা আরু প্রাক্ষধর্ম-বিরোধী ইওরা এক কথা নহে। প্রাক্ষধর্ম বলেন, আয়া অমর ও অনন্ত উরতিশীল। আয়া অশরীরী ইইরা অমর ইইবে কি শরীরান্তর প্রহণ করিবে, এই বিষয়ের মতামন্ত প্রাক্ষধর্মের মূল সত্যের অন্তর্গত নহে। জন্মান্তরবাদ অমরত্ব ও অনন্ত উরতির বিরোধী নহে. স্ক্তরাং ইহা প্রাক্ষধর্ম-বিবোধীও নহে।
- ৫। 'উপনিষদে নানা অবৈজ্ঞানিক ও আদার্শনিক কথা কথা আছে। এরপ শান্তকে কিরপে প্রাহ্মধর্ম-প্রতিপাদক বলা যার ?' এই আপেরির উত্তর এই বে ধর্মের মূল ও অবাস্তর মতের মধ্যে প্রভেদ কর্মা আবশ্রক। উপনিষদের অবৈজ্ঞান নিক মতগুলি উপনিষদের মৌলক ধর্মের অঙ্গীভূত নহে, স্থতরাং সেই সকল মৃতকে প্রাহ্মধর্ম-বিরোধী বলা ঘাইতে পারে না। ইয়তি আমাদের মধ্যে এরপ অনেক মত প্রচলিত আছে যে সকল মত ভবিষ্যতে অবৈজ্ঞানিক বলিয়া প্রদর্শিত হইবে। কিন্তু আমরা অবৈজ্ঞানিক মতে বিশ্বাস করিতাম বলিয়া আমাদের ভাবী বংশীয়দের দ্বারা অপ্রাহ্ম বলিয়া গৃহীত হইলে আমাদেব উপর বড়ই অবিচার করা হইবে।
- ৬। 'গ্রাহ্মধর্ম অভ্য ধর্মের নিকটও ঋণী। স্কুডবাং ইহাকে বিশেষভাবে উপনিষদ্-প্রতিপাদিত ধর্ম বলিয়া প্রচার করা হইবে কেন? ইহাতে অভাধর্মের উপর অক্তজ্ঞতা প্রকাশ কবা হইবে 🥇 এই আমাপত্তির উত্তর এই যে আমি অক্তাক্ত ধর্মের আলোচনা দারা ত্রাহ্মসমাজ ও ত্রাহ্মজীবনের অঙ্গ-পুষ্টি हरेटाइ हेरा कु**डब्बडात म**हिंड चौकात विवि वर्षे, किन्नु-জাতি ব্রাক্ষণক্ষের মূল সভ্য-শিক্ষার জ্ঞাবে অভা ধর্ম-সম্প্রদায়ের নিকট ঋণী ইহা আমি শীকাব করি না। ব্রাহ্মসমাঞ্চের প্রতি-ষ্ঠাতাগণ কেবল দেশীয় শাস্ত্রের সাহায্যে,সম্পূর্ণ স্বতন্ত্রভাবে বান্ধ-ধর্মের মূল সভ্য আনবিকার ও প্রচার কবিয়াছেন। ক্রভেরাং ব্ৰাহ্মধৰ্মকে দেশীয় শান্ত-প্ৰতিপাদিত ধ্ৰম বলিয়। ব্যাথ্যা কবিলে সত্যের অপলাপ করা হয় না, এবং অন্তান্ত ধার্মসম্প্রদারের প্রতিও অকৃতজ্ঞতা আদর্শন ৰুৱা হয় না। ইংরেজী ভাষা ইছার অঙ্গপুষ্টির জন্ম নানাভাষাব নিকট ঋণী, কিন্তু ইহা যে মূলে য়্যাকলো-স্থাক্দন্ ভাষা, ইহা সত্য, এবং এই সত্য কথা বলাতে অন্ত ভাষার ঋণ অত্মীকার করা হয় না।
- ৭। 'উপনিষদ্ দেববাদী। দেববাসের সহিত ব্রাহ্মধর্মের সামঞ্জত কোথার ?' উঠ্ডর—রহ্ম যে এক অবিভীর, এবিষরে উপনিষদে কোন বিহ্নজ্ঞি নাই। তবে ইহা মহুয্যাপেক্ষা উচ্চতর দেবতা প্রভৃতি জীবের অন্তিছে বিশ্বাস করে। আমরা এরূপ জীবের কোন প্রমাণ পাই না, তাই বিশ্বাস করি না। কিন্তু' যদি কেহ এরূপ জীবে বিশ্বাস করেন, তাঁহাকে অব্রাহ্ম বিলবার কোন কারণ দেখি না। মহুয্যাপেক্ষা উচ্চতর জীব গনাই, এরূপ মত কথনও ব্রাহ্মধর্মের অঙ্গীভৃত হইতে পারে না। মহর্ষি দেবেজ্ঞনাথ ঠাকুর মহাশরের ব্যাধানে "দেবতা" শক্ষেরও বহুণ উর্মেধ দেখা যার।

- ৮। 'উপনিষদ বেদের অংশ। বেদ দেবপুলা-প্রতিপাদক, স্নতরাং উপনিষদকেও কিরদংশে সেই দোবে দোবী মনে করিতে হইবে।' এই কথার উত্তর এই বে বৈদিক সাহিত্যে কর্মকাশুও ও জ্ঞানকাণ্ডের পরিষ্কার প্রভেদ করা হইরাছে। বেদের পূর্কবিজ্ঞাগ দেবপুলা প্রভৃতি ক্রিরাকলাপের পক্ষপাতী। বেদের অন্তভাগ উপনিষদ্ ব্রেরাপাসনা, ব্রহ্মধান, ব্রহ্মশাধি প্রভৃতি জ্ঞানগত সাধনের পক্ষপাতী। স্থভরাং উপনিষদ্ বেদের অংশ হইরাও স্পইতঃই ব্রাহ্মধর্ম-প্রতিপাদক।
- ১। 'ধর্ম সম্বন্ধ জাতীয়তা অৰণম্বন করিলে ত্রাহ্মধর্মের সার্বভৌমিকত্ব দই হইবার সভাবনা।' এই আপত্তির উত্তর এই,—কাভীয়তায় 'সার্বভোমিকত নষ্ট হর না. ক্লাভিগত স্থীপতারট সার্কভৌমিকত নষ্ট হর। আমরা বদি আদি ব্রাক্ষ-সমাজের অমুকরণে সামাজিক উপাসনার কৈবল জাতীর ধর্ম-**अइ शांठ कित्र, এवर সমাজের সভারোলী কেবল হিন্দুজা**তির 'একচেটীরা' করি, তবে আক্ষধর্শের সার্বভৌমিকত্ব নষ্ট হওয়া অবশুস্তাবী, ভাছাতে সন্দেহ নাই। কিন্তু উদার গ্রীষ্টানগণ দের্গণ ৰাইবেলের শিক্ষার স্প্রতিষ্ঠিত হইরাও সকল ধর্ম সাহিত্যেরই कारनाहना कतिरहरहन, आमानिशरक उन्द्रम,—उनरमण्ड व्यक्ति---नाना भारत्वत्र व्यारमाधना कत्रिष्ठ इहेरव, **এ**वः (क्वम विदम्भीत नरह, এएमभीत बाक्षमभारकत बात्र अन्त काछि, সকল সম্প্রদায়ের জন্ম অবারিত রাখিতে হইবে। ভিন্ন ভিন্ন দেশে, ভিন্ন ভিন্ন অবস্থায় ত্রাহ্মধর্ম্ম সাধন ও ত্রাহ্মধর্ম-প্রচারের जिन्न जिन्न अनामी अवमधन कतित्व इहेरव मत्मह नाहे, किन्न যদি কোন অভিন্তুজাতীয় ব্ৰাহ্মধৰ্ম-বিশ্বাসী আমাদের দেশীয় সাধন, সামাজিকতা ও প্রচার-প্রণালীর পক্ষপাতী হইয়া এ দেশীর বাহ্মমণ্ডলীভূক হইতে চান, এরূপ ব্যক্তিকেও আমাদের পরমাদরে গ্রহণ করিতে হইবে। এরূপ উদার নীতি 'অবলম্বন করিলে ত্রাহ্মধর্মের সাকভোমিকত্ব নাশের কোন স্ভাবনা নাই।

এখন বর্ত্তমান বিষয়ে আমাদের কর্ত্তব্য সংক্ষেপ্তে উল্লেখ ক্ৰিয়া আমি ৰক্তা শেষ ক্রিব।

প্রথমতঃ, ত্রাহ্মধর্মের সার্বভৌষিকত্ব রক্ষা করিবার জ্বন্ত আমাদিগকে এই সকল প্রণালী অবল্যন করিতে হইবে।

- )। দর্শনবিজ্ঞানের আলোচনা। এতদারা আমাদের সভ্যাসভ্য-বিচারশক্তি উজ্জ্ল থাকিবে।
- ২। নানা জাতীয় শাল্তের আলোচনা। এতদ্বারা আমা-দের উদারতা রুদ্ধি ও সমীর্ণতা দূর হইবে।
  - ७। नामा (मनीय माधुकीवनाटनाहमा।
- ৪। বিদেশীয় সমাজতত্ব ও ইতিহাস আলোচনা ও তৎ-সাহাব্যে দেশীয় কুপ্রধার উচ্ছেদসাধ্য ও জাতীয় জীবনের পদ্মিপৃষ্টি।

বিতীরতঃ ব্রাহ্মধর্মের জাতীরতা রক্ষার জক্ত জামাদিগকে এই দক্ত নিরম অবলয়ন করিতে হইবে।

- ৈ ২। এক বাদ ও ক্রন্ধনাধন-প্রতিপাদক উপনিবদ্ শাল্পের বিশেষ আলোচনা।
  - २। नांधात्रनखाटव रमभीत नकन माटबात <del>बाटलां</del>हना।
  - त्वभीत्र नाधुकीयनाटनाठमा ।

- গার্হস্থা অমুর্ঠানও সামাজিক আচার ব্যবহারে যথাসম্ভব

  জাতীয়তা রক্ষা। সত্য ও বিবেকের অমুরোধ ভিন্ন কেবল
  ক্রেছোচার বা পাশ্চাত্য রীতির অন্ধ-অমুকরণে অনর্থক বিজ্ঞাতীয়
  ব্যবহার-অবলম্বন না করা।

শ্ৰীসীতানাথ দত্ত।

## সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্বাহক সভার চতুর্থ ত্রৈমাসিক কার্য্যবিবরণ

#### 24×81

ভগবানের ক্পায় নিয়লিখিত ভাবে এই করেক মাস কার্যানির্বাহক সভা সমাজের ভিন্ন ভিন্ন বিভাগের কার্যা সম্পন্ন করিরাছেন। ইতিমধ্যে কার্যানির্বাহক সভার ৯টা অধিবেশন হইরাছিল,। শারণীয় অবকাশ উপলক্ষে অনেক সভা সহরের বাহিরে গমন করাতে, ব্লীতিমত সভার অধিবেশন হয় নাই।

প্রচার—এই কর মাসে আমাদের প্রচারক মহাশরের।
নিম্নলিপিত ভাবে প্রচার করিয়াছেন।

শীযুক্ত লছমন প্রসাদ—ইনি লক্ষেত্র থাকিয়া তথা-কার সমাজমলিরে উপাসনাদি করিয়াছেন। দাতব্য ঔষধালয়ে । হোমিওপ্যাথিক ঔষধ দান করিয়াছেন এবং একথানি হিল্পি সঙ্গীত পুস্তক প্রকাশের চেটা করিয়াছেন, এবং রাজা রামমোহন রায়ের শ্বরণার্থ সভায় উপাসনা ও বক্তা করিয়াছেন।

## श्रीयुक्त नरशस्त्रनाथ हरिहाशाधाय ।

ি মেদিনীপুর।—কোন ভদ্রলোকের বাটাতে নৃতন নির্দ্ধিত উপাসনা-ঘর গুতিষ্ঠা উপলক্ষে উপাসনাদি করেন। পাহাড়ীপুরে কোন ব্রাহ্মপরিবারে একটা শিশুর নামকরণে আচার্যোর কাষা

কলিকান্তা।—কোন ব্রান্ধের বাটীতে শাবদীর ব্রন্ধোৎসব উপলক্ষে আচাব্যের কার্য্য করেন। উপদেশের বিষয় 'বিশ্বাস'। কোন ভদ্রলোকের বাচীতে স্বান্ধ্রে পারিবারিক উপাসনা করেন। ব্রান্ধপরিবারে ৪টী শিশুর জন্মদিন উপলক্ষে উপাসনা। সাধারণ ব্রান্ধ্যাজ মালরে এক দিবস, বেদীর কার্যা। 'ভদ্মবিদ্যাসভা'র অধিবেশনে 'ধন্মবিদ্যাসের ভিত্তি', 'ব্রান্ধধন্মের উলারভা', "আমাদের ধর্ম্মগতের উৎপত্তি ও উর্লভি', ব্রান্ধধন্মের বিশেষত্ব', 'ধর্মের ভিত্তি' প্রভৃতি আলোচ্য বিষয়ে মন্ত্র্যা প্রকাশক কৃত্ত কৃত্র বক্তা। সিল্পরিয়াপটী ব্রান্ধ্যমান্ধের উৎসব উপলক্ষে আচার্যের কার্য্য। সাধারণ ব্রান্ধ্যমান্ধ্য মন্ধিরে ছাত্র-সমান্ধে একটী বক্ত্তা। বক্ত্তার বিষয় 'বুদ্ধিগত ক্ষান ও পারমান্ধিক ক্ষান'।

নবরাছনপর।—ত্রাদ্দসমাজ মন্দিরে একটা পিশুর নামকরণ উপলক্ষে আচার্যোর কার্যা করেন।

শ্রীরামপ্র।—ব্রাক্ষনদক্ষের সাহৎসরিক উৎসব উপালক্ষে উপাসনা করেন ও উপসেদ প্রান্ত করেন। চুচ্ছ। — ব্ৰহ্মমন্দিরে, উৎসবের প্রারম্ভিক প্রকাশ্স বব্জৃতা কবেন। বক্তৃতার বিষয়—"ভক্তিসাধন"।

শীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী।—ছাত্র সমাজে "মানব জাবনের গৃঢ় বহস্ত" এবং "সভ্যভার গৃঢ় রহস্ত" বিষয়ে ইটা বক্তৃতা করিয়াছেন। সিলস্ ফ্রি কলেজে 'জাতাঁয় জাবনেব উন্নতির ভিত্তি' সম্বন্ধে একটা বক্তৃতা করিয়াছেন। নিয়মিত রূপে শেল্টারের উপাসনায় জাচায্যের কার্য্য কবিয়াছেন এবং তহকোমুনার সম্পাদকেব কায্য করিয়াছেন। সম্প্রতি কলি কাতা উপাস্কম ওলাব জাচার্য্যের কার্য্য বিশেষরূপে গ্রহণ করিয়াছেন এবং সেই কার্য্যে নিযুক্ত আছেন। ভিন্ন ভিন্ন পরিবাবে সামাজিক অনুষ্ঠানে উপাসনা করেন। এতান্তর আলোচনা, প্রবন্ধ শেখা ইত্যাদি ছারা বিবিধ উপায়ে বান্ধার্ম প্রচার কবিয়াছেন।

वाव नवही भारत्य माम-व्यक्तिवत्र मारमत वर्शक मिन কলিকাভার থাকিরা পবিবারে ও সাধনাশ্রমে উপাসনাদি করেন। তৎপব তিনি মাণিকদহ শাবদীয় উৎসব উপলক্ষে उथात्र 810 मिन আছুত হইয়া তথায় গমন কবেন। शांकिया উৎসবে উপাসনা পাঠ ও আলোচনাদি করেন। कित महिनामिगरक गहन्ना विस्थि छार्व छेलामना करवन छ উপদেশ দেন, "बाक्षमयाब्ब नात्रोकाण्डित प्रवा विश्विकार्य চাই" এই বিষয়ে ৰক্তা করেন। তৎপর ঢালাতে এবটা অফুষ্ঠান উপলক্ষে নিমন্ত্ৰিত হইয়া গমন করেন। দেখানে কয়েক मिन थाकिया **अ**श्रृष्ठीन উপলক্ষে বিশেষ উপাসনা কবেন ও উপদেশ দেন এবং পূব্ব বাঙ্গালা ত্রাহ্মসমাজে উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। এতদ্যতীত পারিবারিক উপাসনা কবেন ও ব্রাহ্ম সন্মিলনীতে উপস্থিত থাকেন। তৎপর একটা বন্ধর বিশেষ অনুরোধে তাঁহার পারিবারিক বিশেষ কাজে বিক্রমপুর স্থান-গ্রামে ধান, তথায়ও কয়েক দিন থাকিয়া উপাসনা করেন \* এবং একদিন কয়েকটী পল্লাতে গমন কবেন। শ্রীনাণ সম্প্রদায় নামক একেশ্বর বাদীদের আক্তার ঘাইরাধর্মপ্রসঙ্গ করেন। তথা হইতে পুনরায় ঢাকার আগমন করেন। এবাব ২।১ দিন থাকিয়া বিশেষ অন্তবোধে কালিকচ্চ গ্রামে গমন করেন। এম্বলে ১৪ দিন থাকিয়া পারিবারিক উপাসনাও ধর্মপ্রসঙ্গাদি করেন। এক দিন অমুগান উপশক্ষে বিশেষ উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। এখান হঠতে তিনি কিছুদিনের জন্ম আদামে গমন করেন। প্রথমে জুনামগঞ্জ নামক স্থানে উপস্থিত হন, **मिथारन करावक मिन थाकिया मगारक्ष भविवारत छे** भागना করেন ও উপদেশ দেন এবং ধর্মালোচনা করেন। একদিন একটা অমুষ্ঠান উপলক্ষে বিশেষ উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন্য এ স্থান হইতে থাসিয়া নিশন দেখিবার জন্ত চেরাপুঞ্জি গমন করেন। পথে থাইরা ঘাটে ২ দিন অব্যন্তিতি করেন। **এখানে উপাসনাদি করেন। এইরূপে অক্টোবর মাস শেষ. হয়।** তৎপর এথান হইতে বাবু রাইচরণ দাসকে সঙ্গে করিয়া চেরাপুঞ্জি যান এবং পথে শ্রীমান বর্দ্ধন রায়ের সহিত মিলিত হন। আশ্রমে ঘাইরা বেশী সময় থাকিতে পারেন নাই।

এখানে পৌছিয়াই শিলং ত্রাহ্মসমাজের সাম্বংসরিক উৎসব উপলক্ষে নিমল্লিড হইয়া তথায় গমন করেন। এখানে আর তুই সপ্তাহকাল অবস্থিতি করেন। উৎসব উপলক্ষে সমাজেও পরিবারে বিশেষ উপাদনা করেন ,এবং মুদ্রিত উপদেশ পাঠ करवन ७ विजवन करतन अवः विस्मयक्ररम चारनाहनानि करतन । ধর্মগ্রস্থ পাঠও ব্যাখ্যা করেন এবং চুইদিন মহিলাদিগকে লইয়া निट्मय উপामना करवन ও উপদেশ দেন এবং ছুই দিন मभाक মন্দিরে ছুইটা বক্তৃতা কবেন ১ম বক্তৃতা-- "একজন স্বাধর মানিবাৰ প্রয়েশন কি ?" ২য় বক্তা--"উপাসনাত্ত্" এতগাতীত নিকটত্ব মৌধার ব্রাহ্মসমাজে "ব্রাহ্মধর্মের বিশেষ কাজ কি ৽" এই বিষয়ে বক্তৃতা করেন। এথান হইতে বাবু নীলমণি চক্রবর্তী মহাশয়েব সঙ্গে চেরাপুঞ্জি গমন কবেন। সেণানে আশ্রম প্রতিষ্ঠাব জন্ম দিন উপলক্ষে विल्य डेलामना करवन । डेलरम्म स्मन अवः मकरनत्र महिङ বিশেষ কপে থাসিয়া মিশন সম্বন্ধে এবং ধর্মজীবন 😵 ধন্মসাধন সম্বন্ধে কয়েক দিন আলোচনা করেন। একদিন একটা অমুদ্রান উপলক্ষে উপাসনা কবেন এবং একদিন স্থানীয় বাকালীদিগকে লইয়া জানীয় পোষ্টমান্তার বাব্ব গৃছে উপাসনা কবেন ও উপদেশ দেন। এ স্থানে অবস্থিতি পূর্বক নিকটবভী ৪টা থাসিয়া সমাজ দেখেন। একদিন নংরিম ব্রান্ধ-সমাজ ও একদিন মৌদমাই ত্রাক্ষসমাজে—"থাসিয়া জাতিতে ব্ৰাহ্মধন্মও সাধাৰণ ব্ৰাহ্মসমাজের কাৰ্য্য এ বিষয়ে কিছু কিছু বলেন। তৎপর শাইকনদেউ আক্ষমমাজে থাসিয়া জাতিতে এই বিষয়ে বলেন। তৎপর ত্রাহ্মধর্মের বিশেষ কার্যা" শেলা ব্রাহ্মসমাজে উপস্থিত হন। এইখানে **উপাসনা হ**য় এবং থাসিয়া পর্বত ও ত্রাহ্মধর্ম এই বিষয়ে কিছু বলেন ? তৎপব' বিদায়ের দিন একটা বাবুর বাদায় উপাদনাদি কবিয়া বিদায় লন। তৎপর জীহট্টে গমন করিয়া সেখানে সপ্তাহ কাল অব্যত্তি পুর্বক সমাজে ও গৃহে গৃহে উপাসন। करत्रन এবং উপদেশ দেন ও বিশেষ ऋপে আলোচনাদি করেন এবং কয়েকটা বক্তৃতা করেন। সমাঞ্মন্দিবে "কোন্ धया मानिव ?" खानीव छाणछाण सूरण "পথের कण्डेक" এবং প্রকাশ্র স্থানে "নিজের দায়িত্ব স্থাবণ কর" এবং "অধক্ষেতে বিষম ছঃখ"। এস্থান হচতে কাছাড় (সিলচর), গমন করেন তথায় ১০।১১ দিন থাকিয়া সমাজে ও পরিবারে विट्मय छेशामनामि करत्रन अवः छेशाम्म एमन ७ जालाहना করেন। একদিন একটা বন্ধুর নবজাত শিশুর জন্ম উপলক্ষে विष्य উপাদনা करवून ७ উधरम्भ रमन ७ मानीव হাইস্থে "বত্তমান জনসমাজে ধর্মের অবস্থা" এই বিষয়ে বকুতা করেন। এই স্থানে অবস্থিতি কালে এক দিন সিল-কুড়ি চা বাগানে যে সমাজ আছে তথায় গমন করেন। সেধানে উপাসনা করেন 🛭 উপদেশ দেন। তৎপর বিশেষরূপে অহুকৃৎ হইয়া তথাকার কাজ বন্ধ করিয়া, পুনরায় কুমিলা ত্রাক্ক-সমাজের উৎগবে গমন করেন। প্রার দেও মাস কাব चामारम शारकन । এখন कृषिक्षा ममारखत छे ९ मरतत काच भि করিয়া বিশেষ অনুরোধে নোয়াখালি গমন করিতে সংকর্ম

করিরাছেন। কুমিলাতে সমাজে ও গৃহে উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন এবং আলোচনা করেন।

শ্রীযুক্ত বাবু শশিভ্ষণ বস্তু—কলিকাতা অমুঠানাদি উপলক্ষে কোন কোন পত্নিবারে উপাসনা করিয়াছেন। দাসাশ্র-মের উৎসব উপলক্ষে এক দিন উপাসনা করেন ও উপদেশ দান করেন। ধর্মাস্বন্ধে একথানি বালালা পুস্তক লিথিয়াছেন, সেখানি মুদ্রিত হইতেছে।

পাৰনা—উৎসৰ উপলক্ষে তথার করেক দিন আচার্যোর কার্য্য করেন। কোন পরিবারে অফুষ্ঠান উপলক্ষে এক দিন উপাসনা করেন। এবং "মুক্তির পথ" বিষয়ে সমাজ গৃহে একটি বক্তুভা করেন।

সিরাজগঞ্জ—উৎসব উপলক্ষে কয়েক দিন আচার্যার কার্যা কবেন। চাত্রদিগের জন্ত এবং স্থাবিণ লোকদিগের জন্ত ঘুটাদিন ঘুইটি বক্তৃতা করেন, এবং "ধর্মের শিক্ষা" সম্বন্ধে আর এক দিন আর একটি বক্তৃতা কবেন।

মুঙ্গের-- এখানে কোন পরিবারে এক দিন উপাসনা করেন।

वाय नीलमान हक्तवली—हिन्नाभूकी अवदान कारन প্রচার আশ্রমের প্রাত্যহিক মিলিত উপাদনার পাঠ ও উপাদনা करत्रन जवः नःत्रिम, त्भाद्विहे अ त्मीममाहे जहे जिन बान्त সমাজের সাপ্তাহিক উপাসনার উপাসনা করেন ও উপদেশ ध्यमान करवन । द्याशीमिशरक हिकिएमा अ श्रीतम्मन करतन । ছোয়া নামক স্থানে একদিন প্রকাশ্য স্থানে বক্তৃতা কবেন। इहेरात्र (मना, नाहेकानरम्ड, मन्छ এবং मिनस्त्र गमन করেন। শেশায় উপাসনা এবং "ঈশবের প্রেম" ও "ক্রাজাতির উন্নতি" বিষয়ে বক্তৃতা করেন এবং সমাজের উন্নতি সাধনের ৰুক্ত গুইবার আলোচনা সভা করেন। মস্তে "স্বাভাবিক ধন্ম" এবং "এাক্ষধন্ম ও অব্য ধর্মে প্রভেদ কি ?" বিষয়ে বক্তা করেন। পূর্ববাঙ্গালা সন্মিলনীতে যোগ দিবার জন্ত ঢাকা গমন পুর্বক আলোচনায় যোগ দান করেন এবং আরম্ভ স্চক উপাদনায় আচার্যোর কার্য্য করেন। প্রচারকনিবাসে, वकानन शृक्तवानाना ত্রাক্ষদমালে এবং একদিন এক পারিবারিক অফুষ্ঠানে ষ্মাচার্যোর কার্যা করেন। হুইটা নামকরণ, একটা বাধিক আদ্ধ এবং একটা বিবাহে আচার্য্যের কাষ্য করেন। অক্ত একটা জ্ঞাতকর্মে উপদেশ প্রদান করেন এবং আনার একটা পাবিবারিক অমুষ্ঠানে আচার্য্যের কার্য্য করেন। শিলং ব্রাহ্ম नमारक, महिना नमारक अवः सोधात नमारक करत्रकवात উপাসনায় আচাখ্যের কাধ্য করেন। কোন কোন বন্ধুর शृष्ट् পात्रिवात्रिक छेभानना कात्रन। শিশং ব্রাহ্মসমাজের উৎসবে ছই দিন উপাসনা করেন ও উপদেশ প্রদান করেন এবং इहे पिन "माधूगरणत्र नवकोवन नाख" ववः "(मण्डेकाक्मिम" विषद्य বক্তা করেন। চেরপুঞ্জী প্রচার-খীশ্রমের বাবিক উৎস্ব উপলক্ষে উপাসনাদি করেন। খাসিয়া পাছাড়স্থ ব্রাহ্মসন্মিলনীর विजीव व्यक्षित्वात जेशामना करत्रन ও উপদেশ প্রদান করেন **এবং সভাপতির কার্যা করেন। পাঁচজন পুরুষ এবং একজন** बाब्बाक्टक बान्नश्रद्ध मोक्किक करत्रन ।

থাসিয়া মিশন—চারটী ব্রাক্ষসমাজের ও নীতি বিদ্যালব্রের কার্য্য ভাল চলিতেছে। কার্য্যক্ষম লোকের অভাবে
অপর হুইটী সমাজের কার্য্য সামাস্ত ভাবে চলিতেছে। তিন
মাসের মধ্যে সর্বাসমেৎ ৭ জন দীক্ষিত হইয়াছে। চেরাপ্সনী
মিশন স্ক্লের কাজ নিয়মিতরপে চলিতেছে। আসামের
ডিরেক্টর সাহেব সম্প্রতি তাহা পরিদশন ক্রিয়া প্রশংসাপূর্ণ
মন্তব্য প্রকাশ করিয়াছেন। চিকিৎসালব্রে রোগীব সংখ্যা
প্রায় ৪০০ হইয়াছে। ব্রাক্ষ স্মিশনীর বিতীয় বাবিক অধিবেশনে কয়েক স্থান হইতে বন্ধ্যণ আসিয়া ব্যোগ দিয়াছিলেন।

নিমলিখিত স্থান চইতে প্রচারক পাঠাইবার জন্ত নিমন্ত্রণ আসিয়াছিল। গিবিডি, বোয়ালিয়া, কোচবিহার, ঢাকা, কুমিলা, নোয়াথালি, নিবাজগঞ্জ, মুক্লের, মাণিকদক, পাবনা. কুমারথালি ইহার মধ্যে গিরিডি, কুমিলা, নোয়াখালি, মাণিক-দহ, সিরাজগঞ্জ ও পাবনাতে কেহ কেহ গিয়াছিলেন।

ডিদেশ্বর মাসে মাক্রাঞ্জ স্থরে Theistic Conference 
হইয়াছে। আমাদের মাক্রাজ্বাদী বন্ধদের অন্থরোধে দাধারণ
বাহ্মসমাজ হইতে ডাঃ মোহিনীমোহন বন্ধ, বাবু হেরশ্বচক্র
মৈত্র ও বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র ঐ conference এর প্রতিনিধি
নিযুক্ত হইয়াছেন।

#### সাধনাশ্রম।

শ্রীযুক্ত জ্বরশক্ষর রায়—মধ্যে মধ্যে ত্রাক্ষ ছাত্রী
নিবাসে প্রাতঃকালে উপাসনা করিয়াছেন, রোগীব সেবা
করিয়াছেন। ত্রাক্ষপরিবার পরিদর্শন ও লোকেব সহিত ধ্যু
সহক্ষে আলাপাদি করিয়াছেন। নিয়মিত রূপে শেল্টারের
বালিকাদিগকে শিক্ষা দান করিয়াছেন এবং শেল্টারের
কার্যাধ্যক্ষতা করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত কাশীচন্দ্র ঘোষাল—ইনি পূর্ববঙ্গে গমন করিয়া নিমালখিত রূপে কার্য্য কবিয়াছেন। রঞ্জনগর—
এ, ভি, এণ্ট্রান্স স্কুলে এবং রুঞ্চনগর কলেজে নীতি প্রথমে বক্তৃতা করেন। গোবিন্দ সড়ক বিদ্যালয় গৃহে "সাধন ও সিদ্ধি" এবং স্থানীয় প্রস্কামন্দিরে "ধর্ম কি ?" সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন। কোন কোন বাসায় উপাসনা এবং ধর্মব্যাখ্যা করেন।

পাবনা—জেলা সুলে নীতি নম্বন্ধে বক্তা করেন এবং ব্রাহ্মসমাজ গৃহে সঙ্গীত সংকীতন ও ধর্মব্যাখ্যা করেন। কোন কোন বাসায় উপাসনা ও ধর্মব্যাখ্যা করেন।

কুষ্টিয়া—এণ্ট্রাচ্চ স্ক্লে নীতি সম্বন্ধে বক্তা, সমাজ গৃহে ধর্মব্যাথ্যা, উপাসনা ও সঙ্গীতাদি করেন।

কুমারখালী—সমাজ মদিবে সাধুজীবন সহয়ে ৰক্তা করেন এবং সাপ্তাহিক উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য করেন।

থলিল পুর-সমবেত উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য কবেন এবং বালাল। কুলেম ছাত্রদিগকে নীতি সম্বন্ধে উপদেশ দেন।

রাজবাড়ী—স্থানীয় এণ্ট্রান্স স্থলে নীতি সম্বন্ধে বক্তা করেন এবং রেলওয়ে দেশীয় কর্মচারীদিগের ক্লবে ধন্মব্যাথ্যা ও স্কীত করেন। ফরিদপুর—এক্ষমন্দিরে সাপ্তাহিক উপাসনার আ্চার্যোর কার্যা করেন। কোনও বাদার পারিবারিক উপাসনা করেন। এবং একদিন মন্দিরে ধর্মব্যাখ্যা ও সঙ্গীত করেন।

মন্বমনসিংহ—কোন বাসার ধর্মব্যাখ্যা ও সঙ্গীতাদি করেন। মন্দিরে মুক্তিপ্রদ ধর্ম সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন এবং রবিবার প্রক্ষমন্দিরে সাপ্তাহিক উপাসনার আচার্য্যের কার্য্য করেন। এক দিন মন্দিরে ধর্মব্যাখ্যা ও সঙ্গীতাদি করেন।

চাকা--ছাত্রসমাজে "আমাদের আশা ও দায়িত্" বিষয়ে বক্তা করেন। কোনও বাদার উপাসনা করেন।

নারারণ গঞ্জ—ছানীর এণ্ট্রান্স কুলে নীতি সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন। সাপ্তাহিক উপাসনার সমাজ গৃহে উপাসনা করেন এবং একদিন সমাজ ব্য়ে 'প্রাকৃত ধর্ম' বিষয়ে বক্তৃতা ও স্কীতাদি করেন।

ক্মিলা—ব্ৰাহ্মসমাজের উৎসব উপলক্ষে টাউন হলে 'আমা-দের আশা' সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন। বার্ষিক প্রান্ধোপলকে কোনও ৰাসায় উপাসনা করেন এবং উৎসবে ছই দিবস মন্দিরে আচার্ব্যের কার্য্য করেন। কোনও ৰাসায় ধর্মব্যাধ্যা ও সলীতাদি করেন।

শীযুক্ত মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়—সাধনাশ্রমের দৈনিক উপাসনায় কখন কখন আচার্যোর কার্যা করিয়াছেন। কোলগর ব্রাহ্মসমাজে ছই দিবস ও নিম্ভাব্রাহ্মসমাজে সাপ্তাহিক উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন। করেকটা ব্রাহ্মপবিবার পরিদর্শন করিয়াছেন। গিরিডি ব্রাহ্মসমাজের উৎসব উপলক্ষে উপাসনায় আচার্য্যেক কার্য্য করিয়াছেন।

বাবু আদিনাথ চটোপাধ্যায়—সমাজ আফিসে
নির্মিতরূপে কার্য্য করিয়াছেন। মফংস্বলে ও কলিকাতার
অনেক পরিবারে বিশেষ বিশেষ অনুষ্ঠানে এবং নির্মিত
পারিবারিক উপাসনার আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন। সাধনাশ্রমে এবং সমাজ মলিরে মধ্যে মধ্যে প্রাত:কালের উপাসনার
কার্য্য করিয়াছেন এবং তন্ত্রকৌমুনী পত্রিকা সম্পাদনে সাহায্য
করিয়াছেন। ত্রাহ্মবালিকা বোর্ডিংএ উ্যাকালে উপাসনা
করিয়াছেন এবং মাণিকদহ ও গাির্ডি ত্রাহ্মসমাজের উৎসব
উপলক্ষে গিয়া উপাসনাদি করেন।

#### সাধনাশ্রমের আয় বায়ের হিসাব।

कमा		<b>খর</b> চ	
मान	5 <b>७२ ८</b> ०	প্রচার যাত্রার পারে	থ <b>য় ও</b>
পুত্তক বিক্রয়ের আয়	१ ७२५८ ३६	অফ্রান্ত খরচ	۵۰/۶۱
ষর ভাড়া আদার থোরাকী বাবত জনশহর বাবুর আয় পাথেয় বাক্ড ভিকান	8\ ७।॰ १।८ •	আশ্রমবাসিগণের আহারাদির ব্যর ভিজ	5 등 의   년 • • 본 환 사 구 위   •
পূৰ্কাহত	20b1/30 ele 		୧ ଓ ଆଐ ∙

#### भाषामाध्याख्या ।

শ্রীযুক্ত প্রকশি দেব— আগষ্ট মাসে কোরেটা গমন করিয়া ভগার একমাস কাল অবস্থান করিয়া প্রচার করেন। ভৎপরে বেলুচি স্থানের নানা স্থানে প্রচার করিয়া রাউল-পিণ্ডিভে গমন করেন। ভৎপর ঝেলুম ও জ্বভুতে গমন করেন। ইহাব পর সাদনরা নামক স্থানে গমন করিয়া পাঁড়িত হুহয়া পড়েন। সেধান হুইভে আরোর ফিবিয়া আংদেন। এপানে থাকিয়া নানা প্রকারে প্রচার করেন। মধ্যে একবার ডোময়াও এবং গাজীপ্রে গমন করিয়াছিলেন।

শী যুক্ত বাবু গুরুদাস চক্রবর্তী— প্রধানত: স্বারার থাকিয়া প্রচার কবিয়াছেন। ইতিমধ্যে গাফ্টাপুর ও ডোমরাও প্রচারার্থ গমন করিয়াছিলেন।

#### আর বারের হিসাব।

<b></b>		.बाह्य <del></del>	
हैं। १ वक्कार्व	गैन मान—; २५8८०	ওরারকারদের ব্যন্ত বাড়ী ভাড়া	•N46C
প্রাপ্ত	াশ্ৰম হইতে <b>'</b> <sup>২</sup> ়\	চাক্ৰদের বেতন ঔবধাদি	>911/50 6W0
পুন্তক বিক্ৰন্ন পুন্তক ৰিক্ৰয়ের	৯৶১∙ ক্ষিশ্ন—	भू <b>खक</b> विविध	>• <b>&gt;</b> €
আহারাদি হিসা	৯॥১৫ বে প্রাপ্ত— ২১।০	অতিথি হি: পাথের	>84• ৮୩ <b>।€</b>
পাথেয় গত ত্রৈমাসিবে	>••1/>•	হত্তে স্থিত	996110
হিত্ত	<u> </u>	- Control of the Cont	99eh/

99eh/.

ব্ৰাক্স বালিকা শিক্ষালয়—এই বিদ্যালয়ে এখন ৭৬ জন ছাত্ৰ ছাত্ৰী শিক্ষা পাইডেছে। ইহার মধ্যে বাণকেব সংখ্যা ১২। বোর্ডিংএর ছাত্রী সংখ্যা ২৬ জন। গত মাসে ছাত্ৰ ছাত্ৰী সংখ্যা ৭২ জন ছিল। বোর্ডিং এর গত মাসে ২৮জন ছিল।

আয় বায়ের হিসাব।

আয়		ব্যয়———	
र्के गर्भ	548	আহারাদি	883.04
বেতৰ	***	বেতনাদি	98611020
এককাদীন দান	226	গাড়ীভাড়া	>> F•
ধার	ره ود	বাড়ী ভাঁড়।	299
বিবিধ	nel.	বিবিধ	> e11e' =
	***************************************	বার শোধ	99110
	ه له وطور		
গভ তৈমাদিকের বি	33 >84€		>#38hm/•
		– হলেন্ডিড	8 = 1/c
	> 69@de		
	•	. •	369606

স্কৃত সভা—এই তিন মাসের মধ্যে সক্ত সভার ১১টা অধিবেশন হর। কেবল চুই দিবস অধিক সংখ্যের সভাের অমুপান্ত নিবন্ধন সভা স্থানিত ছিল। চুই দিবস গীতাপাঠ, তিন চারি দিবস সাধারণ আলোচনা ও নির্লাণ্ড ৫টা বিহরে বিশেষ আলোচনা হই ক্রছিল। ১। ধর্মানিঠা ৷ ২। ত্রান্ধের সংসার কিরপ হওয়া উচিত। ৩। ধর্মানুগত সংসার ৷ ৪। ক্রমের ক্রপ হওয়া উচিত। ৩। ধর্মানুগত সংসার ৷ ৪। ক্রমের ক্রপ্ত বাাকুসতা হর কিরুপে। ৫। নির্মিত উপাসনা ৷

দাতব্য বিভাগ—দাতব্য বিভাগের কার্যা প্রার পূর্ববংই চলিরাছে। এই তিন মাস মধ্যে ১৩টা ছাত্র ১টা ছাত্রী, ১৩টা অসহায় পরিবার, ৪টা অন্ধ ও ১টা কুঠ রোগীতে অর্থ সাহায়্য कता इहेबाह्इ। अयत्नक घुःशीत्क উপযুক্তরূপে अवशं माहासा করিতে পারা যায় নাই। নিমে দাতব্য বিভাগের আম वारम्य विवत्रण रम ७ मा रगन ।

জমা ——		- খবচ	
এককালীন দান সংগ্ৰহ	50	মাসিক দান	re,
অফুগান উপলক্ষে	631	এককালীন দান	> 10
মাসিক দান সংগ্ৰহ	<b>⊎</b>   •	বিধিধ ব্যয়	ه لو:
ञ्चन हिः कमा	शाऽद		
			٠ ااه ٠ د
b	٥, ١৫	হঙ্গে স্থিত	>9blln/>0
পুর্বের ম্বিড ২:	); ¿¢	<b>A</b>	
*****	<del></del>		٥٩۵٠/٥٠
৩৭:	a /:•	•	

द्धाक्रामान्यालमी—विशव ३०६ फिरमधन वावित्थ विन-ঘরিষায় বাবু স্থরেক্সনাথ দাসের উদ্যানে ত্রাহ্মদামিলনীব এক অধিবেশন হইয়াছিল। প্রথমে উপাসনাদি হয়। পরে বিলাভ হইতে প্রত্যাগত আমাদের সভাপতি বাবু আনন্দমোহন বস্ত্র মহাশয়কে এক অভিনন্দন দেওয়া হয়। সভাপতি মহাশয় বিলাতের ধন্মসমাজ সকল পরিদশন করিয়াযে অভি-জ্ঞতালাভ করেন, ভাহার কিছু কিছু বৰ্ণনা করেন। বাবু স্থবেক্তন্থ দাস মহাশয় উপত্তিত ব্ৰহ্ম মহাশয়দিগকে নিজ ব্যয়ে ভোজন করাইয়াহিলেন। তত্ত্বন্ত তাঁহাকে বিশেষ ধন্তবাদ (म अम्रा याहेराज्य हा

রামমোহন রায়ের স্মরণার্থ সভা—বিগত ২৭শে <u> গেপ্টেম্বর তারিখে প্রাতে সাধনাশ্রমে রামমোহন রায়েব</u> অরণার্থ উপাদনা হয় ও অপরাহে দিটি কলেজ-গৃহে এক महजी मछ। इत्र। माननीय सक अक्नाम वत्नााभाषात्र महा-শ্য ঐ সভায় সভাপতি ২ইয়াছিলেন। ভারতবর্ষের নানা श्वाति । ताकात व्यवनार्थ गङा इहेग्राहिन।

ছাত্রসমাজ-শারদীয় অবকাশ উপলক্ষে ছাত্রসমান্ত্রেব कार्या वक हिन । व्यवकारनंत्र शत्त हो ने ने स्टेशाह वर তাহাতে নিম্নলিখিত বিষয়ে বক্তৃতা ইয়।

১লা ডিসেম্বর—বক্তা পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী, বিষয় "সতা-ভার গৃঢ়তবু"।

bहे ডिश्विषय—वका वावू नशिक्तनाथु हट्हाेेे शाहा, विषय "বৃদ্ধিগত জ্ঞান ও পারমার্থিক জ্ঞান"।

১৫ই ডিলেম্বর--- वका वादू क्रम्थकूमात शिखा, विषत्र "वसी ক্ষিব পুত্তিক।"।

२२८म छित्मचत्र--- वक्ता वार् श्रमथनाथ (मन, विषय The worship of sorow

দান---আমরা আনন্দের সহিত জ্ঞাপন করিতেছি যে শ্রীমতী জগৎক্ষী ঘোষ মহাশয়া ত্রাক্ষসন্তানদিগের শিকার্থ ৫০০ টাকা দান করিয়াছেন। এই টাকার হৃদ শিক্ষার জন্ত वात हहेरत । व्यामत्रा धहे नात्मत्र कचा छाहारक विष्मवज्ञात धक्रवाम मिट्डिছि।

তুর্ভিক্ষ-ক্রিদপুবের তর্ভিক্ষ শেষ হওয়াতে বাবু হরি-মোহন ঘোষাল তথা ১ইতে চলিয়া আদিয়াছেন। গত মার্ক মাস হইতে ডিসেম্বর পর্যাম্ভ ইঞাব আয়ে বায়ের হিপাব নিমে (म उग्रा (शन ।

- ধবচ ---

জমা ---গত মার্চহৈতৈ ডিনেম্বর भाष्ट्रें स्था — अध्यादिक स्था निवारक

রাধাগঞ্জে বাবু কাশীচক্ত প্রযাস্ত নানা স্থান হইতে দান- (ঘাষালের মাঃ, চাউল, কাপ্ড नगमनामिट्ड वाग्र रूप्र २२०/०

> কর্মচাবিগণের যভোষাতের এবং ফানীয় অনুসন্ধানের পাপের 2:heise মাদ্রাতে বাবু হরিমোহন (घाषात्वत्र भाः, हाडेन, कालड नगम मानामिट्ड वाग स्त्र

> > 2601130

বিবিধ চিঃ প্রয়েঞ্জনীয় জিনিষ (কর্মচাথীর বস্তানি কাগজ, খাচাও অপ-त्राशव किनिष थितम) २०८० এবং টাকা পাঠাইবার ডাক

>110/> **'**उध ফবিদপুর স্থলদ্সভার সম্পাদক वावू नवा अनम वाम (हो धूवी तक (५ ७ मा ६ म e . \

96 116 33 90910391

2 & 5 & < 5 ll

নৃতন সমাজ--গোবকপুৰ একটা নূতন সমাজ প্রতি-ষ্ঠিত হইয়াছে।

অনুষ্ঠান--্যতদ্ব সংবাদ পা 9 য়া গিয়াছে, ভাছাতে জানা যায় যে, এই তিন মাস মধ্যে ১০টী নামকরণ ও জাতকর্ম, ৫টী বিবাহ ও ৬টী প্রাদ্ধ সম্পন্ন হইয়াছে।

সুত্যু-- আমরা ছ:খের সহিত জ্ঞাপন কবিভৈছি খে সমাজেব সভা বাবুরামলাল সাহা ও বাবু ছারকানাথ ছোৱ ইছলোক পরিত্যাগ করিয়াছেন। ঈশর ইথাদের আত্মাকে भाषितान कक्न।

	ার হিসাব।			@ A-C	कोयूनी।	
সাধারণ ত্রা	হাসমাজ ফণ্ড।		जाव		ব্যয়	
			মূল্যপ্রাপ্তি		কর্মচারীর বেডন	`
আর —	_ ব্যশ্ন		विविध	21•	মুদ্রাঙ্কন বিংবিধ	٠د/١ <del>٥</del> ٢٥٠
मं । । महरवाणिगरगत्र निक्र	শ্রচার বার	७४:५७/६		38814	াক্ষ্যক ডাক্মা <del>ড়</del> ল	84/5-
<b>२हें एक डॉमा व्याखि ००</b> ৮॥६		F 510	গভ তৈমাসিকের হিত			٠٤/٠
वार्षिक हामा २०५	বিবিধ হি:	12/4,	100441140		ক্মিশন	80.
भातिक ठीन। ১०२॥०	ক্ষিশন হিঃ	<b>&gt;/•</b>		obuh/d	113.13	
	ডাক্মাশুল হি	4			•	282He
७०४॥६ क्राहार्त्रार्थ मानकाश्चि २८५।८६	मूजाकन हिः अरस्या हिः	عر >•الا			হি <b>ভ</b>	><646
वाधिक है। ।	বিল্ডিং ফণ্ড হিঃ	ماله د			·	
मात्रिक ठाँना >२४-	•					obsh/€
,	ণাৰ্থ সভা হি:	له رد د		পুত্তক	ফপু ।	
	সিটি কলেজ বৃত্তি		আয়————		–ব্যন্ন————	
२ 8 ३। ८ ६	দিগের বেতন দান	•	নগদ বিক্রয় ২	: • (\    ) • •	কর্মচারীর বেতন	हि: २२ 🗸
সিটিকলেজ বৃত্তি ৬০১		•	नगारकत ১৯६५८	•	অপরের মূল্য শোধ	হি: ৩০/১০
জন্ম রেজিষ্টারির ফিন ১৮٠		৩	অপরের ৩৭॥৵১•		<b>जिमा</b> छन हिः	>•he/
कात्री अठात्र करखन होना : ६		• ১৬৬૮			বিবিধ হিঃ	110/20
<b>ञ्</b> न हिः १२ <sub>५</sub>		٠٠٠٧	50>11/20		ক্ষিশন হিঃ	રઝમન
ব্ৰাক্ষ বালকবালিকা শিক্ষাৰ্থ		5 त्नाथ १७\	वाकी मृन्य ज्यानाम			<b>७</b> ₼•
काग्री कछ हिः					পুন্তক ধরিদ হিঃ	>4·
<b>७</b> ९मव हिः २,	_	7862.451	ক্ষিশ্ৰ	91/5.		a: nd
•	<b>ন্থিত</b>	se:ble	<b>\$</b>	99 0/: 6	হাওলাভ দান	7.00/
ছতিক হি: ৪৪৩॥৭॥			গত ত্রৈমাসিকের স্থিত		•	,
বাজা রামমোহন বায়ের স্থর-		2,29 5 hay 9 #				209h
नार्थ महा हिः २२०/६				€2•H	TEL	5 6 5 NM
शार्थम हिः ३१॥			•			43.1
बाबनाउ जामात्र ७ शिक्ड हिः						4,7-1
>62/	•			রান্ <u>ধ</u> মিশন	र ८ थ्यम ।	
A Day of Day	ī		আর———		ব্যয়————	
১৮০০/১৭৮ গত তৈমাসিকের স্থিত			অক্টোবর মাস			@2442240
,			নভেম্বর মাস ডিসেম্বর মাস		<b>জ</b> লপানি	80.0
2288/10/2 o			। ७८७ चत्र मान	orsh.		9.11.
· ২৯৭৬/911				> 9.0 > /0	चनमान (धाइकात्रमिनाटक क	3694/e
CHA LOOKS III				2064/6	(धारपात्रामगरप प भित्र खन्न भावित्कर	
ইণ্ডিয়ান (	মেদেরার।	1	পুকা তৈমাসিকের ছিত	990 /o		१९ । <b>१२</b> ० ४६८ ५
w 4	- 218		211 111 101 11 120		কর্মচারীদের বেড	
• •	.,			•	ডাক্মান্ত্র	• العالمة
	কর্মচারীর বেতন	766	মোট জ্মা	: 9४२ de	জন ডিকেনস্ন এং	
•	মুজারন	>0•			দর কাগল ও কাল	
नगम विद्धारम 👢	ডাক্মান্ত্ৰ	33311e/a			ৰজ হ্যাপ্তারসন্ত	9 ( <b>₹</b> 1:> ≥ • √
विविध हिः 🔍	विविध	> 0 hay > 0			টাইপের দেন <i>শো</i>	४ १४ े
ভাক্ষাওল হি:	<b>ক্</b> মিশন	110			ক্মিশন	3.
হাৰণাত (পুস্তক ষণ্ড হইতে)		4211/34		• •	গড়িভ জমা শোধ	
	र र र ५ - प्रमृष	- < 117 34			অভিরিক্ত জম। যে	
248/					ষ্টক পাতার ধরচ	)•h4>•
		8-21107-			मानाडी	<b>*</b>
	হৈ <b>ত</b>	9 % > 8				
গত তৈমা সিকের শ্বিত			•		<b>হত্তে</b> স্থিত	1156/1996
behel: e		8>24E				• ५५२॥
-		}				3952de
		1				- IV K 17 %

#### ব্ৰান্মসমাজ।

#### পঞ্চ্চীতম মাঘোৎসবের কার্য্যপ্রণালী।

নিম্নলিখিত প্রণালী অনুসারে সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের কার্যানির্কাহক্ষ সন্ধা আগামী মাঘোৎসব সম্পন্ন করিতে ইচ্চা করিয়াছেন। আবস্তাক হইলে এই প্রণালীর কোনও কোনও অংশের পরিবর্ত্তন হইতে পারিবে। আমরা ব্রাক্ষ প্রবং ধর্মান্ত্রাণী প্রত্যোক্ত এই উৎসবে বোগদান করিবার জন্ত বিশেষ ভাবে অন্তরোধ করিতেছি।

>লা মাছ ( ১৪ই জামুরারি ) শোমবার—ব্রাহ্ম পরিবারে, ও ব্রাহ্মছাত্রনিবাসে ব্রাহ্মসমাজের কল্যাণের জন্ত প্রার্থনা।

२ता माध -( २० का ) महनवात--- छेत्वाधन।

তরা মাধ—( ১৬ই জা ) বুধবার—প্রাতে উপাসনা ; সাংকাথে,—বক্ত তা।

৪ঠা মাঘ—(১৭ই জা) বৃহস্পতিবাদ্ধ—প্রাতে উপাসনা, সায়ংকালে—ব্রন্ধ বিদ্যালয়ের সাম্বংদ্যারিক উৎসব।

৫ই মাঘ—( ১৮ই জা ) শুক্রবার—প্রাতে উপাসনা ; সায়ংকালে—সঙ্গত সভার উৎসব।

১ই মাঘ—( ১৯শে জা ) শনিবার—প্রাত্তে উপাসনা ; সায়ংকালে—ধর্মপাস্ত হলতে পাঠ।

৭ই মাখ—( २०শে জা ) রবিবার—প্রাত্তে উপাসনা ; সারংকালে—বাহিরে প্রচার , সায়ংকালে—উপাসনা ।

५३ माथ—(२>८ण छ।) त्मामवात्र— श्राटक छेणामना। देवकारम—विवर्गमतिक विद्यागरत्रत छेष्मव , मात्रःकारम—वेकुछ।।

৯ই মাঘ—(২২শে জা) মঙ্গলবার -- প্রাতে ব্রান্ধিকা সমাজ; মধ্যাকে এাজস্মিলন, সায়ংকালে--বার্ধিক সভা

>•हे माघ (२०८म ङा) तूपवात--- श्राटि छेप्पेनकम छनीत छेरनव; रेतकारन---- नगत कीर्छन; माग्नः कारन--- छेपानना।

১১ই মাঘ—(২৩শে জা) বৃহস্পতিবার—সমন্ত দিন ব্যাপী উৎপব।

>২ই মাঘ—(২৪শে জা) গুক্রবাব—প্রাতে সাধন আশ্রমের উংসব, মধ্যাকে—আলোচনা এবং সায়ংকালে—বক্তা।

১৩ই মাঘ—( २৬শে জা ) শনিবার— গ্রাতে উপাদনা, বৈকালে—বালক বালিকাসন্মিলন। ছাত্রসমাজের উৎসব।

२०७२ मार्थ--(२१८**म का**) व्रतिवाद---आक्त मध्यन्त्रीत छंदन्त् ।

কলিকাতাম্ব উপাদকমণ্ডলা—কলিকাতাম্ব উপাদক-मधनीत कार्तानि नुष्ठनভाবে आवत इहेग्राह्म। উপাসক-মঞ্জীর সম্পাদক ডাঃ পি, কে, বায় বিশেষ উৎসাহের সহিত কার্যো প্রবৃত্ত হইয়াছেন। শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী নিয়মিত আচার্যাপদে নিযুক্ত হইয়াছেন। তাঁহার অবস্থিতির **জ্ঞ ২২০নং কর্ণ এয়ালীসন্ত খ্রীট ভবন ভাডা** করা হইয়াছে। সেই বাড়ীতে ত্রাহ্মসমালের পুত্তকালর স্থাপিত হইরাছে ও উপাসকমণ্ডলীর কার্যালয় এবং শাস্ত্রী মহাশয়ের নিজ্জনবাসের ন্থান নিৰ্দিষ্ট হইয়াছে'। রবিবাম সন্ধ্যা**কা**লের উপাসনায় কি বিষয়ে উপদেশ প্ৰদত্ত হইবে. তাহা অত্যে বিজ্ঞাপন্তারা প্রকাশ করা হইয়া থাকে। এই সমস্ত উপদেশ ক্রমশ: মুদ্রিত **হটবে। অনেকেই উপাসকমগুণীর সাহায্য করিতে প্রস্তু**ত হইয়াছেন। মহর্ষি দেবেজ্রনাথ ঠাকুর মহাশয় এই নৃতন বন্দোবন্তে বিশেষ আনন্দ প্রকাশ করিয়া, উপাসক্ষমগুলীর সভা - শ্রেণী ভূক্ত হইয়াছেন: এবং প্রতি মালে ১০ টাকা করিয়া সাহায্য করিবেন বলিয়া প্রতিশ্রত হইরাছেন। তন্তির এককালীন ७०० मं ड है। का मान कतिवाह्म । त्रविवात मुक्का कारनत छेला-শ্লায় এত শোক স্মাগ্ম হয় যে, অনেকে স্থানাভাবে দণ্ডায়-मान शास्त्रन। त्यामवाद्य मिवन चाठार्यात वागख्यान चानक ধৰ্ম-লিপাল ৰাজ্যি সন্মিলিত হইয়া ধৰ্মালোচনাদি কৰিয়া থাকেন।

সাধনাতার—আমাদের প্রিত্ন মাবোৎপর নিকটবর্তী দেখিয়া পরিচারকগণ চারিদিক হঠতে আসিরা সাধনাশ্রমে সাদ্ধিত হইতে ছন। আরা আশ্রম হইতে ভাই প্রকাশ দেব, শ্রীযুক্ত গুরুদ্ধাস চক্রবর্তী এবং শ্রীযুক্ত শ্রীরক্ষবিচারী লাল এবং পূর্ববর্জালা হইতে শ্রীযুক্ত কাশীচন্দ্র ঘোষাল ও শ্রীযুক্ত ক্রমেহন ঘোষাল ও শ্রীযুক্ত ক্রমাল ঘোষ এবং শ্রীযুক্ত নববীপচন্দ্র দাস মহাশর শিলং, শ্রীহুট্ট, কাছাড ও কুমিলা, নোয়াখালী শ্রমণ করিয়া আশ্রমের উপানীত হইয়াছেন। গ্রাহুল্যাকারী আশ্রমের মাসিক উৎসব সম্পার হইয়াছেন। গ্রহণ করেন। প্রাত্তাম শ্রীযুক্ত শিবনাথ শাল্রা মহাশর আচাযোর কাষ্যা করেন। প্রাত্তামের প্রিয়ক ক্রম্বাল ঘোষ সাধনাশ্রমের প্রিচারক হইবেন বলিয়া সংকল্প গ্রহণ করেন। প্রমেশ্বর ভাঁহার প্রাণে নবশক্তি প্রদান কর্কন।

উৎসব—বিগত ২৪ ও ২৫এ ডিসেম্বর নলহাটী ব্রাম্থনাক্ষের উৎসব হইয়া গিয়াছে। কলিকাতা, রামপুরহাট, দিনাজপুর,আসেনসোল এবং ধুলায়ান হৃততে ব্রাম্থনাক্ষণ উৎসবে যোগদান কবিয়াছিলেন। নিমলিধিত প্রণালীতে উৎসবের কার্যা নির্কাহ হয়,—

২৪এ ডিসেম্বর প্রতাষে পরলোকগতা স্বর্ণময়ী ছোষের মৃত্যুদিন উপলকোবশেষ উপাসনা। মধ্যাক্তে স্বর্ণময়ীর জীবনচরিত্ত
পাঠ এবং প্রথিনা। রাত্তিতে স্বর্ণময়ীর একমাত্র ক্তারে
নামকবণ হয়। বালিকার নাম "ডোরা নিঝ'রিণী" রাণা
হট্যাছে। প্রমেশ্বর বালিকার জীবনে মাতার সদ্ভণরাশী
প্রস্কৃতিত করুন।

বৰএ ডিসেম্বর—প্রাত্তে এবং রাত্রিতে উপাসনা। মধ্যাক্ষে নলহাটী মিশন সম্বন্ধ কথাবাস্তা হয়। অপরাক্ষে বাজাবে সংকীস্তন ও বক্তৃতা হয়।

গত ২২শে পৌষ চইতে ২৬শে পৌষ পর্যান্ত ময়মনসিংক ব্রাহ্মসমান্তের সাহুৎসবিক উৎসব সম্পন্ন হইরাছে। উৎসব উপলক্ষে আমাদের ঢাকান্থ প্রাচান ব্রাহ্মবন্ধু শ্রীযুক্ত বাবু কালানারায়ণ বার তথার গমন ক্ষিয়াছিলেন। নগরকীর্ত্তন ডগাস্সনা ও সংগীতাদি প্রতিদিন আত সরলভাবে সুসম্পন্ন হইরাছে।

রাজসাহী ব্রাহ্মসমাজের সাছৎসরিক উৎসব নিয়লিথিতকপে
সম্পাদিত হইয়াছে। ৮ই পৌষ সমাজ মন্দিরে উছােধন হয়,
শ্রীযুক্ত বাবু শশিভূষণ সেন আচার্য্যের কার্য্য করেন।. ১ই পৌষ
ভাের কীর্ত্তন হয়,তৎপরে মন্দিবে উপাসনা হয়। বাবু শ্রামাচবদ
ধর আচার্য্যের কায়্য করেন। ১০ই পৌষ প্রাতে বাবু রামচক্র
পিংছ উপাসনা করেন। অপরাক্তে গরিবদিগকে বক্স ও
পয়সা বিতরণ করা হয়। সদ্যাকালে রামচক্র বাবু উপাসনা
করেন। ১১ই পৌষ প্রাতে ছাত্রসমাজের উৎসব উপলক্ষে
বাবু অক্ষয়ক্মার মৈত্র আচার্যাের কায়্য্য করেন। অপবাকে
নগর সংকীর্তান হয়, তৎপরে মন্দিরে রামচক্র বাবু "চবিত্রবল"
বিষয়ে বক্তৃ ক্রেকন। ১২ই পৌষ উদ্যান সাম্মিলন ১য়।
তথায় উপাসনা, আলোচনা ও পাঠাদি হয়।

গিরিডি ব্রাক্ষসমাজের বিংশতিম সাম্বংসরিক উৎসব নিম্ন-লিখিতরূপে সম্পাদিত হইরাছে। ৯ই পৌব প্রাভে উদ্বোধন স্চক উপাসন্। হর। সন্ধার সমর উপাসনা হর, বাবু আদিনাথ চট্টোপাধ্যার আচার্য্যের কার্যা করেন। ১১ই পৌর প্রাভঃ কালে উপাসনা হয়, বাবু মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যার উপাসনা কবেন। মধ্যাকে গবিনদিগকে দান করা হয়, অপরাক্তেনগর সংকীর্জন হয়। সন্ধার পরে সমাজ মন্দিরে প্রার্থনা ও সংকীর্জনাদি হয়। ১২ই পোষ প্রাতে শ্রীযুক্ত যোগানন্দ দাসের বাসায় উপাসনা হয়, শ্রীযুক্ত উমেশচক্র দত্ত উপাসনা করেন।

কৃমিলা ব্রাহ্মদমাজেব সাস্বংসবিক উৎসব উপলক্ষে শ্রীযুক্ত बाव नवत्री भहन्त मात्र এवः 🖺 युक्त वाव का नी हन्त्र (घाषाल 😉 শ্রীযুক্ত বাব অমৃতলাল গুপু এবং ময়মনসিংহ হইতে শ্রীযুক্ত বাবু জীনাণ •চন্দ কুমিলায় গমন কবেন। নিম্নলিথিত কাপে উৎসব কার্যা সম্পন্ন হইয়াছে। ৯ই পৌষ রাত্তে সমাজমন্দিবে উৎসবেব উদোধন হয়. और्फ कानीहमु (घाषान উপাসনা কবেন। ১০ই পৌষ অপরাক্ত ৪ ঘটিকার সময় টাউন হলে কাশীবাবৃ "আমাদের আশা" বিষয়ে বক্তৃতা কবেন। ১১ই পৌষ প্রাতে শ্রীনাথ বাব উপাসনা কবেন। অপবাক্তে সংশীত ও আলোচনা হয়। বাত্রে নবদীপ বাব্ উপসনা কবেন। ১০ট পৌষ শ্রীযুক্ত আনন্দচন্দ্র বর্দ্ধনেব বাসায উপাসনা হয়. নবদীপ বাবু উপাসনা কবেন। অপবাজ ৪ ঘটিকার সময় টাউন হলে শ্রীনাথ বাবু "উনবিংশ শতাকীব শিক্ষা ও ব্রাহ্ম-সমাজ'' বিষয়ে বক্তৃতা করেন। বক্তৃতা প্রবণ কবিয়া প্রোতা-मिराव भर्था (करु (करु विश्वय आनम श्रकान कविशा,वङ्गारक धन्नवाम (मन এवः वक्कवा विषय मश्रद्ध चारणाठना करवन। স্থানায় প্রধান উকিল বাবু কৈলাসচন্দ্র দত্ত উক্ত বিষয়ের আলো-চনা কবিতে গিয়া যে মন্তব্য প্রকাশ করেন, ভাহা শিক্ষিত ব্যক্তিদিগেৰ স্মৰণীয় বিষয়। ভিনি ৰলেন যে, "জাভিভেদ সম্বন্ধে মুখে ঘিনিট যাছা বলুন এবং কাৰ্যো যিনিই যাতা করুন কিন্ধ শিক্ষিত ব্যক্তিবা সবল ভাবে প্রাণ খুলিয়া যদি কথা ঞ্ছেন, তাহা ১ইলে বলিজে ১ইবে, তাঁহারা অনেকেই জাতি-Cछम भारतन ना, माना डिb छ । भरत करदन ना । आसि স্বীকার কবিতেছি, দুর্মবণত। বশতঃ জাতি মানিয়া চলিতেছি; किन्द्र कामि विदास कनि झाडिएडम এमেশেन मर्ख्यकात्र, অনিষ্টের মূল। জাতিতেন উঠিয়ানাগেলে এদেশের উন্নতির আবার আশা নাই।" ১০ই পোবে তুর্ণাচৰণ বক্সব বাসায় উপা-मना इब्र, नवदील वावू डेलामना करबन। खलदारक औषुक জ্বানন্দমোহন বদ্ধনেৰ বাগায় সমবেত মহিলাদিগেৰ নিকট কাশী বাবুক্ষেক্টা ধর্মশীলা সাধ্বী বমণীর ভাবন অবলম্বন ক্রিয়া উপদেশ দান কবেন এবং সংগীত করেন।

ঢাকা ছাত্রসমাজ—বিলাত হইতে আগত ডাক্ডাব পূর্ণানন্দ চটোপাধারে, ঢাকা কলেজেব দশনখালের অধ্যাপক পদে নিযুক্ত হইয়া তথায় অবস্থিতি করিতেছেন। তিনি লাক্ষ্যাজেব কার্যাদি কবিবাব জন্ম বিশেষভাবে মনো-যোগী হইতেছেন দেখিয়া, আমরা সন্তঃ হইয়াছি। ইতিমধো তিনি ছাত্রসমাজেব সভাপতি পদে রত হইয়া বক্তৃতাদি কবিভেচন এবং ছাত্রদিগকে ভ্রবিদ্যা শিক্ষা দিবার জন্ম আন্যোজন করিতেছেন। পর্যেশ্বর ককন, এ স্কল কার্যো ভাহাব উৎসাংগ্রি দিন দিব পরিব্রতি হউক।

বিবাহ—বিগত ২৪শে ডিসেম্বর (১৮৯৪) তারিপে ভাগলপুর নগনে শ্রীয়ক বার বানাচরণ বোষের তৃতীরা কলা শ্রীমতী নির্মাণা ঘোষের সহিত বাবু বিগারী ক্লফ দেবের শুর্ভ-বিবাহ সম্পান হইরাছে। শ্রীযুক্ত বাবু নিবারণ চক্ত মুপোপাধ্যায় আচার্যোর কার্যা করেন।

উক্ত তারিখে মুক্ষের নগরে প্রীযুক্ত বাবু চণ্ডীচরণ সিংহের পুত্র প্রীমান্চাক্ষচন্দ্র সিংছের সহিত প্রীমতী বিষ্ণুক্ত মোহিনীর বিবাহ হইরাছে। প্রীযুক্ত বাবু উমেশচন্দ্র করেন।

\_-· /

ুসিলং সহবে প্রীযুক্ত বাবু লালমাধৰ বাবুৰ কল্পা প্রীয়া জী গিবি-বালার সহিত বাবু ঈশ্ববচক্স নাথের বিবাহ হইয়াছে। এই, উপলক্ষে বব সাধাবণ ব্রাহ্মমাজে ১১ এবং সাধনাশ্রমে ১১ দান করিয়াছেন। সকল বিবাহই ৩ আইনামুসারে রেজেটারী ইইয়াছে। প্রমেশ্বর নবদম্পতিদিগ্রকে আশীর্কাদ কর্মন।

নামকরণ— ৫ই জামুয়ারী ২১০নং কর্ণ রয়লিন্ ষ্ট্রীটন্ত ভবনে শ্রীযুক্ত বাবু গুরুচরণ মহলানবিসের পুত্র শ্রীমান্ প্রবোধচন্দ্র মহলানবিসেব পুত্র ও প্রথমা কল্পার নামকরণ হইয়াছে। শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী আচার্যোর কার্যা কবেন। পুত্রেব নংম প্রশান্তচন্দ্র ও নীরদচন্দ্র এবং ক্লার নাম জ্যোৎনা ও হিমানী রাথা হইয়াছে।

নারায়ণগঞ্জে বাব্দীনবন্ধ মিত্রের পুজের নামকরণ কার্য্য সম্পাদিত হইরাছে। বাবু কাশীচক্র ছোষাল উপাসনা করেন। বালকের নাম সত্যেক্রমাহন রাখা হইয়াছে।

কলিকাভার শ্রীযুক্ত বাবু হেমেন্দ্রমোহন বস্তুর প্রথম পুলের নামকরণ কার্যা সম্পান হইরাছে। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় উপাসনা করিয়াছিলেন। বালকের নাম হিতেক্ত্র মোহন রাথা হইয়াছে।

নোয়। পালীর ডেপুটী মাজিট্রেট বাবু ক্ষরেশচক্র সিংছের
বিতীয় পুত্রের নামকরণ কার্য্য উক্ত স্থানে সম্পাদিত
হইয়াছে। শ্রীযুক্ত নবদীপচক্র দাস আচার্যের কার্য্য করেন। বালকের নাম নির্মালকুমার রাপা হইয়াছে। এই উপলক্ষে ক্রেশ বাবু নিম্নলিথি ৩ রূপ, দান করিয়াছেন। সাঃ ব্রাঃ সমাক্র প্রচার ফণ্ড ১ দাতব্য বিভাগ ১ সাধনাশ্রম ৪ নায়াথালী ব্রাহ্মসমাক্র ৪ কুপ্মলা ব্রাহ্মসমাক্র ১ নাট ২২ টাকা।

পর্মেশ্বর শিশুদিগকে আশীর্মাদ করুন।

দানপ্রাপ্ত স্থাকার—স্নামগঞ্জ প্রীযুক্ত বাব্ কৃষ্ণদরাল রায় মহাশ্বের জোর্চ জামাতা শ্রীমান্ অক্ষরনাপ রায়
দাঃ ত্রাহ্মগমাজে নিয়লিথিতরূপ দান করিয়াছেন; প্রচার
বিভাগ ২, দাতবা বিভাগ ১, এবং সাধনাশ্রম ২, টাকা।

শীর্ক গোবেশ্বৃত্ত সিংধ তাঁথার নবজাত পুর্তের কল্যা-গার্থে নিম্নিরিতরূপ দান করিয়াছেন; প্রচার বিভাগ ১ সাধনাশ্রম ১০ টাকা। আমরা দাতাদিগকে ধক্তবাদ প্রদান করিতেছি।



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

- House House House .

২০শ সংখা। ১৭শ ভাগ।

১৬ই মাঘ মঙ্গলবার, ১৮১৬ শক, ত্রাহ্ম দম্বৎ ৬৬।

#### প্রার্থনা।

হে প্রেমময় প্রমেখর, প্রেমই ভোমার মুখের জ্যোতি। বিশ্বক্ষাণ্ড তোমার প্রেমের স্থবর্ণে অনুরঞ্জিত। তুমি প্রেম-মূর্ত্তি। তুমি জীবস্তভাবে সর্কতা প্রেমরূপে বিকশিত আছ ৰশিয়া লগৎ এত হৃন্দর ও মনোহর হইরাছে। তৃমি প্রেমের সম্ভ্রত্মপ্র করিয়াছ, ভাই ক্রনীর ক্ষেহ, পদ্মীর প্রেম, শিশুর ভোমল অফুরাগ এত মধুর। তৃষি প্রেমরূপে সাধুর ক্রারে बान कत विन्ना, नाधून्य जन्न एक एन्ट्रमानिकन बाजा माधून्। দান কৰিতেছেন। তুমি প্ৰেমরূপী হইরা অভ্যাতে বাস चित्रिष्ठक् बनिवा सम्मनी, तितिकक्षत्र, वस উপবন এবং चन इ चाकार नत चन ख शहम श्रेमी एक च शूर्य (मोमर्ग) तानि প্রক্টিত হইরাউটিরাছে। অসেৎ ভোমারই প্রেমের বিচিতা নিল্পন। তোমার প্রেমের মহা আকর্বণে নরনারীর হৃদয় কেন্দ্রীভূত এবং অভজগৎ শৃত্যলাবদ। অভ্ ও চেতন্ প্রেমের এক মহাস্ত্রে গ্রপিড, এই বন্ধন ছিল্ল ছইলে জগৎ এক মুহূর্ত্ত ষাত্রও জীবিত থাকে না। ধন্ত তুমি জগদীশ। তোমার এই প্রেম লাভ করিবার জনা মানব প্রাণকে ব্যাকুল কবিয়াছ। তোমাব প্রেমস্থাবারি একবিন্দুপান করিবার জনা তৃষিত মানবাত্মা নিয়ত লালায়িত। তোমার অনস্ত প্রেমঞ্জদধির এক কণা ষ্থন ভ্ষিত মান্ব প্রাণে পতিত হয়, তথনই প্রকৃত ব্রহ্মোৎস্ব हहेबा थाटक। टाडा, जूमि चाँनी सीन कत, चामता रवन, ভূষিত হইরা ভোমার বাবে উপস্থিত হই, এবং এক বিন্দু প্রেম লাভ করিয়া মহোৎদৰ সম্ভোগ করিতে পারি, যেন ভোমার রোমে আপন পর ভূলিয়া যাই, হৃথ স্বার্থ ভূলিয়া যাই, সম্পূর্ণ-রপে জাপনাকে তোমার হতে অর্পণ করিয়া নিশ্চিভ হই।

ভোমার প্রেম ত অ্যাচিতর প আমাদের হৃদয় বারে উপস্থিত, আমরা আপনাকে ভ্লিতে পারি না বলিয়াই সেই প্রেমের অংশী হইতে পারি,না। তুমি আশীর্কাদ কর, আগামী বর্বে বেন আমরা আপনাকে সম্পূর্ণরূপে ভূলিয়া তোমার প্রেমের আয়েন্দ্রস্থান করিতে পারি। যেন তোমার সেবা করিতে গিয়া আমরা ভোমাকেই দর্শন করি, এবং স্কান্ত:করণে ভোমারই শোরব অব্রেষণ করি।

## পঞ্চষ্টিতম মাঘোৎসব।

তৃষ্ঠি শুক্কণ চাতক এক বিন্দু বারির জন্য উচ্চৈঃমরে ডাকিতেছিল, প্রথর মধ্যাক্-গ্রীমপ্রতিশ্ব পথিক পিপাসার অফিব হুইরা জলের অন্বেরণে ছুটিতেছিল, হঠাৎ ক্রপানীর প্রাপ্ত হুইলে তাহাদের হৃদরে যে অভ্তপূর্ব আনন্দের উদর হর, তাহা অবর্ণনীর বিষয়। কিন্তু আধ্যায়িক রাজ্যে মানবান্ধার যথন প্রক্রপ শুক্তা উপস্থিত হর, যথন প্রেমমন্নের প্রেমবারি পান করিবার জন্য পরিপ্রান্ত, তৃষিত আন্ধা ব্যাকুল হইরা উঠে, তথন যদি সে এক বিন্দু সর্গের অমৃত্বারি প্রাপ্ত হয়. তবে তাহার আনন্দ আরও অধিক হয়। সেই আনন্দোচ্জ্যুদের নামই ব্রক্ষোৎসব অথবা মহোৎসব।

বেধানে ব্যাকুলতা নাই, সেথানে উৎসৰ বাহ্নব্যাপার মাজ। কুলের মালা, নিশান এবং প্রীতিভোজনেই তাহার পরিস্মাপ্তি। ব্যাকুলতা হইতেই উৎসবের প্রকৃত উৎস উৎসারিত হইরা থাকে।

পিপাসার উদ্রেক ভিন্ন যেমন জলপানের প্রয়োজন হয় না, কুধার উদ্রেক না হইলে যেমন জাহারের প্রয়োজন হয় না, তদ্রুপ একা প্রেমহুধা পান করিবার জন্য প্রাণ তৃষ্ণার্ত্ত না হইলে, প্রেমবারির প্রয়োজন হয় না। অন্তর্যামী ভগবান মানব অন্তর দশন করেন, বাহিরের আয়োজন দেখিয়া ভূলিয়া যান না। অত্তর্গব আফাদের মধ্যে যিনি ত্বিত ও ব্যাকুশ, তিনিই বিশেষরূপে উৎসব সম্ভোগ করিতে সমর্থ হইবেন।

উপাসকের অস্তরে প্রতি নিয়ত নানারূপ পিপাসা উপস্থিত হুইতেছে। কথন জ্ঞানের পিপাসা, কথন প্রেমের পিপাসা, কখন বা পবিত্রতার জন্ত পিপাসা হুইয়া থাকে। এইরূপে ধর্মসমাজেব অধিকাংশ লোকের প্রাণ যে জন্য ব্যাকুল হুইয়া উঠে, প্রভু পরমেশ্বর উৎসবে ভাছাই পুরণ করিয়া থাকেন।

আমাদের প্রির ১১ই মাবের উৎসব সম্পন্ন হইরা গিরাছে।
এবার আমরা কি অনা ভিপারীর বেশে তাঁহার বারে উপত্তিত
ইইরাছিলাম ? কি অভাব তাঁহাকে আনাইরাছিলাম ? সেই
প্রার্থনা কি তিনি গ্রহণ করিয়াছেন ? তিনি তাপিত অভরে
স্থাতিল হত অপ্ন করিয়া ভ্রদরের আলামর কত সকল

আ।বোগ্য করিয়া ছন কি ? উৎস্ব।ত্তে একবার তাহা পরীক্ষ। করিয়া দেখি।

রাক্ষণণ করেক বংসব হইতে বিশেষভাবে ইহা অমুণ্য
কবিতেছেন বে, প্যম্পরের প্রতি প্রেমের অভাবে রাক্ষধর্দ্দ
সাধনে ও প্রচারে বহু বিশ্ন হইতেছে। ঘাঁহারা জগতে প্রেম
প্রচার করিতে যাইতেছেন, তাঁহাদের গৃহে প্রেম নাই, শাস্তি
নাই। ক্ষুদ্র রহং নানা দলে রাক্ষণণ বিভক্ত হইরা বিচিন্ন
হইতেছেন। মত্রগত ও সাধনগত পার্থকো মনোবাদ
ঘটিতেছে। শ্রদ্ধা ও ভক্তিই সমবেত ধর্ম সাধনের মূলমন্ত্র,
সেই শ্রদ্ধা ভঙ্কি বিহান হইরা রাক্ষণণ অবিনয়ী হইতেছেন।
কবার এই ভরানক রোগের প্রতীকার না হইলে রাক্ষসমাজের
কলাণ হটবে না।

এই মহামন্ত্র পালনের উদ্দেশ্যেই সকলে প্রেমে একীভূত হইর।
ব্রাহ্ম ধর্ম সাধন, ব্রাহ্ম ধর্ম প্রচারের জন্তই সাধনাশ্রম প্রভিত্তিত
হহরাছে এবং এই উদ্দেশ্য সাধনের জন্তই ব্রাহ্মসন্মিলনী স্থাপিত
হইরাছে। স্থতরাং ইং। বলা বাহল্য বে, কোন্ রোগে ব্রাহ্ম
ব্রাহ্মিলাপ আহত সৈনিকের ভার শ্বাার শার্মিত হইবাছেন,
ভাহা জনেক দিন হইতেই বুনিতে পারা গিরাছে। পরমেশরের
কপার এইবার জনেকের চকুই এই দিকে ধাবিত হইরাছে।
এই জন্তই এবার জনেকের চকুই এই দিকে ধাবিত হইরাছে।
এই জন্তই এবার জনেকের প্রেম-ভিক্ষার্থী হইরাছেন; সংগীত
সংকীর্ত্রনে প্রেমের মহিষা কীর্ত্তিত হইরাছে, উপদেশে জ্বালোচনার প্রেমের মহিষা কীর্ত্তিত ইইরাছে এবং প্রার্থনাকালে
প্রেমের আব্যক্তাহ জাগ্রত হইরাছে।

প্রত্যেক বারেই উৎসবের একটা বিশেষ ভাব পাকে।

এবারেব বিশেষ ভাব এই দে, স্নামাদিগকে প্রেমে স্ম্নিলিভ
ইইতে ইইবে। স্নামাদের বাক্তিগত স্বাভন্তা রাখিরাও স্নামান
প্রেমে এক ইইরা ঘাইব। এবার প্রেমা পপাস্থ ইইরা সাধকগণ
উহার হারে উপস্থিত ইইরাছিলেন, তাই স্বগ্রহ্মননী প্রেমে
সকলকে বাধিবার আরে, জন কবিরাচেন। আক্ষা ভাই ভগিনি,
এবার যে গোমের স্থকোমল করম্পাল অন্নভব কবিরাছ, তাহা
বিশ্বত ইইও না। গোমমরকে সকলের মধান্তলে দর্শন করিরা
প্রেমে এক ইইরা যাও, প্রেম মন্ত্র দ্বপ কর, প্রেমের ধর্ম্মাধান
কর। এই প্রেম ক্রাগলেই আক্ষধ্য উজ্জ্ল ইইবে, আক্ষ্মাঞ্ব

ধিনি তৃষিত আত্মাকে উৎসনকোত্র শাস্তি দান করিরাছেন, যিনি ভার প্রাণ শুলিকে একত্র গাঁথিরা স্থীবিত করিরাছেন। যিনি ভাপিত, শোকসন্তপ্ত ক্লয়কে প্রেমবারি দানে শীত্রণ করিরাছেন, সেই প্রেমমর স্চিদানন্দ প্রমেখরের পবিত্র চরণে বার বার নমস্থার করিয়া মাঘোৎসবের মধুমর কার্যা-বিবরণ প্রকাশ করিতে গুরুত্ত হই। বিদেশস্থ আন্ধ বান্ধিকাগণ আমাদের ক্লরের প্রেমপূর্ণ অভিবাদন গ্রহণ কন্ধন, এবং প্রভু পর্ষেশ্ব এবার উৎসবক্ষেত্রে বে ঈলিত করিয়াছেন, ভাহা শিরোধার্য্য করিয়া প্রেম সাধনে নিয়োজিত হউন।

#### ১লা মাঘ দোমবার।

আদাকার দিন ত্রাহ্মপরিবারে ও ত্রাহ্মছাত্রাবাস সমূহে উপাসনা এবং ব্রাক্ষসমাজের কল্যাণার্থে প্রার্থনার কল্প নির্দিষ্ট ছিল। রজনী প্রভাতে দেখা গেঁল যে, ব্রাহ্মপরিচারকাশ্রম, কোন কোন ও ছাত্রাবাস এবং অনেক ব্রাহ্মগ্র ফুলের মালা ও লতা পাতার স্থ্সজ্জিত হইয়াছে। কোন কোনও প্রাসাদের শীৰ্ষদেশে "ব্ৰহ্মকুপাছিকেৰলম" • 🤞 একমেবারি ীয়ম" "সভাষেকজয়তে" ইতাাদি বচন আছিত নিশান উড়ি-ভেছে। যুবকগণ অভি উল্লাস ও আনন্দে উপাসনাদির আয়োজন করিতেছেন, তাঁহাদের মুগে এক আশাব জ্লোভি উল্লাসিত হইরাছে। সাধনাশ্রমে কেহ রজনী ২ ঘটকার সময়, কেছ ৩ ঘটিকার সময় সাধনকূটীরে প্রবেশ কবিয়া ধানে মগ্র হটলেন। ৪১ ঘটকার সময় সমধুর সংবীর্তন আরম্ভ ১ইল। **छेवाकारन मःकीर्जन अं**वरन माधकशानत खान मूद्र इहेत्रा গেল। ৫ ঘটকার সমর এীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশর উপাদনা আরম্ভ করিলেন। সংগীত ও উপাদনাদি অতীব প্রাণম্পূর্মী ও গভীর ১ইয়াছিল। ,ব ব্রাহ্মসমাজের শীতণ ছায়াতে উপৰেশন কৰিয়া শত শত পাণভায়ক্ৰোস্ত ভূষিক ত'পিত আত্মা বিশ্রামলাভ করিতেচে, শাস্তি পাইতেছে, সংসারের পাপ ও মোহান্ধকারের মধ্যে যে ত্রাক্ষধর্ম ও वाचरमाक बारमाक वर्षिका महेशा भव अमर्गन कतिरहरहन, যে ব্রাহ্মসমাজের অভুদয়ে ভারত নগঞীবন শাভের পথে व्यशंगत रहेश्रां ए. (गर्रे जाकागमा (कात मक्नार्थ काना भतरम्बद्धतः निक्टो आशंमा कविटा मकला मिश्रिलिक इटेग्नाइन, आक कि (कर डेमागीन शार्किट शास्त्रन ? निस्न निस्न सीवासत्र প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া এবং রাক্ষসমাত সেই জীবনের উন্ধৃতি পথে কিরুপ সহারতা করিয়াছেন, তাহা স্থবণ করিয়া আনেধেই অশ্রন্ধলে সিক্ত হইলেন এবং প্রাণের মন্ম স্থান হইতে আনে-কের্ছ প্রাণনা উথিত হটল।

এতঘাতীত উক্ত দিনস প্রামাচরণ দেব ষ্টাটের চাতাবাসে ত্রীবৃক্ত আদিনাথ চট্টোপাধ্যায় উপাসনা করেন এবং মদন মিত্রের পেনের চাতাবাসে ত্রীযুক্ত কাশীচন্দ্র ঘোষাল উপাসনা করেন। অপবাক্তে আক্ষ-বালক বেণ্ডিং এ ত্রীযুক্ত স্কর্দাস চক্রবর্তী উপাসনা করেন এবং কোনও পরিবারে ত্রীযুক্ত নবগাপচক্র দাস উপাসনা করেন। কলিকাতার প্রায় সকল ব্রাহ্মপরিবারেই এই বিশেষদিনে উপাসনা এবং প্রাক্ষসমান্তের কল্যালাধ প্রার্থনাদি হইয়াছে। সাধারণ ব্রাহ্মসমান্তের প্রতি দেন দিন লোকের অমুর্বাগ বিভিত্ত হইতেছে, এই অমুর্চানে ভাছারই চিক্ত দেখা বাইতেতে।

#### ३ता याच यक्तवात ।

আরা উৎসবের উবোধন। সন্ধা স্থাপ্তম ব্রহ্মবন্ধির । লোকে পরিপূর্ণ হইরা গেল। মুন্ত ও করতান সহবোধে অমধুর ব্রহ্মসংকীর্ত্তন আরম্ভ হইল। ৬ই ঘটকার সম্প্র পঞ্চিত শিবনার্থ শাল্পী মহাশ্র বদী গ্রহণ করিলেন। ভিনি

এই মার্শ্ব উদোধন ∓রিলেন;—"শাভের অস্ত হইগেই আমিরা বসন্ত ঋতৃৰ অফুভব করিরা পাকি। নৰ বসভের আগষন ত্চক দক্ষিণবায়ু মৃত্ মৃত্ প্রবাহিত ছইতে থাকে; শীতের দারুণ প্রকোপে, যে সকল বুক্ষের পত্ত ঝরিয়া পজিলা গিলাছিল, ভাষাতে নব প্রোদর হর: কোকিল পঞ্মস্বরে মধুর ধ্বনি করিরা টঠে; বসস্তকালীর নানাজাতি ফুণ প্রাক্টিভ হর। এই সকল চিক্ত দর্শন করিয়া আমরা অনুভৰ করিয়া পাকি বে, বসস্ত ঋতু আগমন করিভেছে আধ্যাত্মিক রাজ্যে, আত্মার ভিতরে কি ঐরপ বসস্তোদয় হর নাণু বৃক্ষ, লভা, পাভা, ফুল এলভ্ডি নৃতন বেশ धात्रम कतिरत, बञ्चक्रत। सम्मत (तर्म सम्बद्धिः इहेरतः, আছাৰ কি বলও আসিবে না? আমরা অমরাছা, আমরা কি न्डन्य गांछ कविन न। ? यामारमञ्जूषाक कि वमस नाहे ? वृत्कत পाछा क्षकाहेश (शतन, श्विन मन भाव धानाम करतम, আমাদের আল্লা ওক হইলে, তিনি কি নৰভাবে দালাইতে পাবেন ना ' कोन् विचानी वाक्षि এ कथा मा विलासन हा আত্মার ভিতরেও নৰ ৰস্থের উদয় হয় 🕍

"हैश कि मञ्जर (र. प्यामन्न) निन्नाम ७ ७फ ठाम धारकवादि মরিরা বাটব ? এ কথা কেছই বলিতে পারেন লা। কিন্তু (यमन পृथियो यमरस्वत कार्ययन मश्याम नामा छाट्य कामा बाब, ভেষ্মি হে সাধক ৷ তুমি কি নানা উপায়ে আত্মার বসম্ভের অগিমন কানিতে পার না 👂 আতারে মধ্যে বসজের আগিমন कि डेशास काना यात्र १। अलभ उ: निताम आ (१) चामात्र मकाव **ब्रेट्स्टे** रमञ्ज्ञ व्यामिट ७८६, व्यामिट । २ ब, यनि देनच, कनटब প্রেম জনিতেছে। অপ্রেম, বিরেধে সমর বাপন করিরাছ, কত অশান্তিতে দিন অতিবাহিত হইয়াছে, কত দিন त्रवनीएक निमा इस नाहे, माक्न विषयित विषये कर्कतिक হইরাসমুদ্য বৎসর যাতনার অভিব হইরাছ। এখন কি জদরে **८ था एक वर्ष के एक एक १ विकास प्रकार अभिकारिक एक.** फरवरे क्यांनरव वश्रक्ष क्यांश्रिट्हा ७ व्र, विनव क्यांशिट्टहा किना ? आमत्रा अस्तक ममरप्रदे आपनारक जुलिएक पाति ना। अहे डेरमत्वत शांत्राष्ठ पापनाक जुनिया कि डांशांक किथिड **पिक्तां**जा, এই कार्य मन कामल कहेरज्ञ कि १ विनग्न चानिट्टर कि ? व्यवस्थित पिथिए हरेत् अप्राप्त नवनः कन्न জাগিতেছে কিনাণ যিনি অনেকসময় উপাসনা করেন নাই. ভারার মনে কি উপাসনা করিবার সংবর কাগিতেছে ? ত্রাক नमारकत वाकाव भूगं कतितात कल कि ध्वार्ण हेका वहर उरह १ विधान, देवतागा, रनवाटा आधाराता रहेता वाठवात अञ्च कि आ। बाक्न इटेडिह १ धरे नक्न हिरु यनि अकानिक इत्र. ভবে নিশ্চর জানিবে, বসন্ত স্থাসিতেছে। অদ্য সকলে একবার अ विवय किया कति। यनि मिथि, क्लंट्य काला क्टेटकट -প্ৰেৰ জাপিয়া উঠিতেছে, নৰসংকল হইতেছে, তবেই জানিৰ छेरनव चानिट्डाइ, वनड चानिट्डाइ। छाई छनिन। धन, व्यापता अहे मक्त वाचा महेता उँदमत्व आत्य कति।"

करभव अधि भडीव छाटन आज्ञानमा स्व। मनटन्छ।

প্রার্থনা ও সংগীভের পরে আচার্য্য নির্বাদ্ধিত উপদেশ প্রখান করেন ;---

"शकीत्र इःच वा चानत्मत्र मित्मत्र कथा हिन्नकारगत कन्न মানব অন্তরে মুক্তিত হইয়া থাকে। সন্তান যে দিন জন্মগ্রহণ করিয়াছিল, কোন্দিন কোন্ গুরুতর পীড়ার আক্রান্ত ইইয়া প্রার (মরিতে মরিতে বাঁচিয়া গিয়াক, পিতা মাভার মনে **डाहा बरमब बरमब्रेट कार्या। प्यामता रव वरमब वरमब** रमभ विरम्भ इटेर्ड बागंड वसुवासवर्गमह मिश्रामंड इन्या এहे महा উৎসবে মত हहे, এমন कि अपूना धन आयात्रा পाहेबाहि, र्य कक्ष वर्भरवत এहे विस्मय समरब मकरण समरवक हरेगा ঈশ্বনকে ধন্তবাদ প্রদান করি, এবং প্রস্পরকে এভ প্রেম বিভরণ করিয়া থাকি 🕈 এক্লপ কি অমূলা ধন আমরা লাভ করিয়াছি ? মহাস্থা বীশু বলিয়াছেন,—"কোন ও बिंक वोकारत शिव्रा यहि महामृता मिन (पश्चित्र शाव्र এ५१ বদি সে আনিতে পারে ধে, এই ধন তাহার সমস্ত সম্পত্তি অপেকাও মৃল্যবান ও ইহা ক্রন্ন করিলে সে উত্তরকালে মহাধনী হইতে পারিবে, ভবে সে তাহার সমস্ত সম্পত্তি বেচিয়া তাহা ক্রর করে।" এইরূপ যদি আমি বলি বে "ভোমরা ভোমাদের गाःगातिक गमक धन मुल्लाख পরিভাগে করির। এই **অ**মুলা ধন গ্রহণ কর, তথন কি ইহা ভোমাদের মনে হর না বে, এই नुजन चत्रना धन शहर कतिया (कामता नाक्यान इटेर्ट ?" यो । (रक्ष व विदाहित्वन, (महेक्स कामात्मक कि मतन इस ना যে, আমরা এমন কি অমূলা ধন পাইরাছি ? বাহ্মধর্ম জগতে এমন কি প্রচার করিয়াছেন যাহা নুতন, কোনও কালে কোনও रमत्म याहा शहातिछ इत्र नाहे, किया श्रीहीन कान मार्ख ছিল নাং "একমাত্র সতা করেপ ঈখরই মানবের উপাস্ত, মানবাঝার সঙ্গে এবং জগতের সঙ্গে ঈশবের চির স্থন্ধ িদামান রহিয়াছে।" এইরূপ যে সকল আধ্যায়িকভন্ধ আন্ধ-ধর্ম প্রচার করিভেছেন, ভাহা কি নুতন কথা ? ব্রাহ্মগণ বে অবশঘন করিয়া উপাসনা করিতেছেন, তাহাতেই বা কি সাধন প্রণালীর নৃতন্ত আছে ? জ্ঞানের কথা বলিতে গেলে ভাছাতে এমন কি নৃতন ভাব রহিয়াছে, যাহা প্রাচীন জ্ঞানিগ্ৰ জানিতেন না ? ধদি ত্রান্দরে প্রেমের কথা বলি, তাংগও देवकवरमत (श्रास्त्र निक्षे भवाक्रिक। बाक्रश्य क्रेश्रद्धत्र প্রিরকার্য্য সাধনে তৎপর, কিন্তু এবিষয়েও তাহারা খুইস্প্র-मारमञ्जानिक । जाति । जा माजिताह, এত चानल कत, नृष्ठा कत ? (ठामाता अमन कि महानिधि नाख कतिबाह ?

এইরপ প্রশ্ন অনেকেই করিয়া থাকেন। কিছু ইহা সভা
নর বে, রাজধর্ম লগতে এইরপ ন্তন কিছুই আনরন করেন
নাই। রাজধর্ম বাহা বলেন, ভাহা জগতের নানা সম্প্রদারের
ধর্মপাল্রে নানাভাবে আছে বটে, কিন্তু রাজধর্ম ন্তনভাবে
পরিবর্ত্তন আনিরাছের; অনেক নৃত্তন কথা রাজধর্মে
থাকিলেও ভাহা ইহার শক্তির কারণ নছে। প্রথম দেখা
নাউক, রাজধর্ম কি মুভন কথা বলেন। ছেবিজে পাই
প্রধানতঃ চারিটা বিশ্বরে ভ্রাজধর্ম এদেশে গারধর্মন আনর্মর

कतित्राद्धन; अधमजः — चामादमत दिएन धरेकावरे ध्येवन दि ভক্তি, বিখাস, প্রেম, পূঞা, আরোধনা প্রভৃতি হৃদরের ভাব সমুদার কোনও সাকার বস্তুকে অবলম্বন না করিলে উদিত হর ना : काटकरे माकात উপामनात्रविद्धि वः मासूक्तरम मकल्पत्रहे চিন্তা এইদিকে প্রবাহিত। সাকার ভিন্ন নিরাকার যে প্রেম, পুণ্য প্রভৃতি বারা আরোধা হইতে পারে, এই ভাব এদেশের সাধারণ লোকের মনে ধারণাই হইতে পারে না। ত্রাহ্মধর্ম বলেন, নিরাকারই প্রেমের আম্পদ এবং মানবের একমাত্র উপায়া। "সাক্ষারকে বেরূপ ভক্তি প্রভৃতির হারা অর্চনা করা যার, নিরাকারকেও তজ্ঞপ করা যার," ইহা বলা সঙ্গত নয়। কারণ নিবাকারই সৎ বস্তু। অসত্যের সহিত সভোর তুলনার, সভোর অপমান হয়।

विजीवज:--- नकरंल वहे मरन हेश वक्षमृत मः कांत्र (य, "अक-ক্ষানলাভ প্রবাসী ব্যক্তি মাত্রকেই সন্ত্রাস অবলম্বন করিতে **ब्हेरव। यमि ब्रक्तरक नाम्ड क**तिएन हात्र, ब्राक्त इंहेरन होड. ভবে ভোমার সংসার বন্ধন ছিল্ল কর, সংসার পরিভাাগ কর। কিন্তু ত্রাহ্মধর্ম ভাহা বলেন না। মহাত্মা বালারামমোহন রার বলিরাছেন, "আমরা সংগারে থাকিয়া গৃহীর কর্ত্তবা পালন করিব এবং ব্রন্ধজ্ঞান লাভ করিয়া ব্রহ্মকে দর্শন করিব :"

ভূতীরতঃ—দেধিতে পাই বে, এদেশে সমাজের ভিত্তি বৈষ-মোর উপরে স্থাপিত। জাতিতে জাতিতে, ধর্ম্মে ধর্ম্মে সম্প্রদায়ে সম্প্রদারে এই বৈষমোর ভাব দেখিতে পাওয়া যায় । "ঈশর ন্দাদিতে মানবন্ধাতিকে ভিন্ন ভিন্ন করিয়া সৃষ্টি করিয়াছেন, এই ভাৰ প্ৰবল থাকাতেই চিস্তার মূলে, ধর্ম্মের মূলে এবং সমাক্ষবন্ধন প্রভৃতিস্কলের মৃলেই বৈষমাদেখিতে পাওরা যায়। কিন্তু ব্রাহ্মধর্ম সমাজকে সামোর ভূমিতে ভাপন করিবার প্রয়াস্ পাইরাছেন। "বার আছে ভক্তি সে পাবে মুক্তি, নাহি জাতি বিচার।"—ত্রাহ্মধর্মই ইহা জগতে প্রচার করিয়াছেন এবং इंश नृष्ठन।

চতুর্থতঃ—ধর্ম্মেতে এবং নীতিতে বিচ্ছেদ। এদেষে সাধারণতঃ ধশ্ব নীতির সহিত ধশ্মের সঙ্গে যোগ নাই। "ব্যক্তিগত রীতিনীতি ষাহাই হউক না কেন, তুমি ধর্মের উচ্চ সিংহাদনে আবোহণ করিতে পার, সেই পরম বস্তুকে লাভ করিতে পার।" विशावामी (बात भाभागती क्वेश क धर्मनाच कतिएक भार, রীতি নীতির সঙ্গে ধর্মের কোনও সংস্রব নাই। ত্রাহ্মসমাঞ বলেন, "ব্যক্তিগত এবং সামাজিক বীতি নীতিকে ধর্মের ভূমিতে স্থাপন করিতে হইবে।

এদেশ ছাড়িয়া কগতের প্রতি দৃষ্টি ক্রিলেও দেখি, এই আকার চারিটী ভাব বিদ্যমান রহিয়াছে। আক্ষাধর্ম ৰলেন,—"ঈশর ও মানবের মধাবর্তী কিছুই নাই। জগতে হত ধর্ম প্রচলিত আছে, প্রায় সকল ধর্মেই এই মধ্য-বত্তীবাদ দেখা যার। পৃষ্ট ও মুসলমান ধর্ম মধ্যবতী-বাদ মৃণক, হিন্দুধর্শেও দেখিতে পাই, আক্ষণেরাই সকণের डेशाञ्च द्मबहात्र बधावर्खी। श्रेषतत्रत्र व्यमत्रका नाच कत्रित्व हरेरनरे बाबनरक बाह्याम क्रिएंड हरेरत। ऋडवार व्यव्ति ।

এই নৃতন সভ্য প্রচার করিয়াছেন, "ঘার আছে ভক্তি সে পাৰে मुक्ति।" वर्षार कार्या बाज्ञन हकान मकरनत महिन रिहे পরম দেবভার সাক্ষাৎ সম্বন্ধ বিদামান; মধ্যবভীর সাহাব্য ভিন্নও সকলেই তাঁহাকে লাভ করিতে পারে।

ব্রাহ্মধর্মের দিতীয় লক্ষণ, স্বাধীনতা। স্কুল ধর্মই অল্লাধিক পরিমাণে কোন না কোন গ্রন্থের অধীন। ত্রাক্ষধর্ম বলেন, "বেখানে সভা পাইব, তাছাই গ্রহণ করিব।" ব্রাক্ষ-ধর্মই আত্মচিন্তা এবং প্রেমের স্বাধীনতা ঘোষণা করিতেছেন।

ব্রাহ্মধর্মের জৃতীয় লহ্মণ উদারতা। "দেশ কাল ভেদে সকল সাধুদিগকে এবং সকল ধর্মশাল্তকে সমাদর করিছে হইবে'' ইহা ব্রাহ্মধর্ম প্রচার কবেন।

ব্ৰাহ্মধৰ্মের চতুৰ্থ লক্ষণ—"আধ্যাঘ্মিকতা।" সকল ধর্মই বাহ্নিক ক্রিয়ার উপর নির্ণর করে। ত্রাহ্মধর্ম্মের উপাক্ত, আত্মা, ন্বৰ্গ ও নৱক সকলই আধ্যাত্মিক। আধ্যাত্মিকতা ইহার প্রাণ, লকণ এবং ভিত্তি।

ব্রাহ্মধর্ম জগতে এই চারিটী ভাব প্রচার করিয়াছেন; অত এব ইহা সতা নয় যে, আহ্নধৰ্ম জগতে নৃতন কিছুই আনয়ন करत्रन नाहे। किन्नु अबन्नु आक्षरार्धत्र विरमयय नरह, शील विश्वाद्यास्तः—"नृजन किছूहे व्यानवन कवि नाई, স্কল্ট পুরাতন, কেবল মাত্র পুরাতন বিধিকে পূর্ণ করিতেছি। তিনি এমন কিছুই বলেন নাই,বাহা প্রাচীন সীহদী প্রছে দেখিতে পাওয়া যায় না। তবে তিনি কি নৃতন **কথা** বলিরাছেন > ভিনি প্রাচীনের মধ্যে নৃতন শক্তির সঞ্চার করিয়া-ছেন, পুরাতন শৃথলার নৃতন বিধান দিয়াছেন, শাল্ল মৃত কৰা ছিল তাঁহার সংস্পর্শে কাবিস্ত হটরাছে। সকল মহাজ্যের সম্ব-क्षिहे এहे कथा। बृद्ध अमन किहूहे नृष्टन वरनन नाहै, बाहा প্রাচীন শাল্রে ছিল না। তবে তিনি নৃতন এই করিয়াছিলেন (य, त्महे शाठीन कथात्क कीवन मान कवित्राहित्मन । महत्त्रम€ দেইরূপ জীবস্ত প্রেম ছারা পুরাতন সভাকে ধরিছা জীবস্ত कतियाहितन। এहेक्सन वास्तिग्र कीवान अवः नामासिक कीवत (य मंक्ति ठानना इत्र, छाश हुन्डन। अहे प्रक्न है বিকাশের নিয়ম ৷ উত্থানের প্রণালী কি ৷ যে শক্তি মারা নুত্র ধর্ম জগতে জয় লাভ করিয়াছে, ভাহার উৎস কোণার ? ইহা বিখাস, প্রেম এবং স্বার্থ ভ্যাগের শক্তি ভিন্ন আরু কিছুই नरह। প্রাচীন খুট ধর্মের ইভিহাস পাঠ করিলে দেখা যাম (य. (महे ममस्त्र कानीता पुरहेत नियामित कथा विवास श्रामके कंड व्यवस्था एक वाका वावश्व कतिएक। পशिए जा स्थन अक्रम वावहात कति छन, छथन चमत्र मिरक चावात मिरमन बाबा ड डाहारम् ब विनारम केमा छ। ध्वकाश कांब्रगांव कीवन সংশর দেখিয়া ভূমির গর্ভে উপায়হীন পুটশিবাগণ উপাসনা ক্রিডেন, এবং তাঁহারা দৃঢ় বিখাস ক্রিভেন যে, ভাঁহার। অগৎ বদলাইয়া দিবেন। প্রভোকেই বিশাস করিতেন যে,যীও পুনরাম व्यवजीर्ग स्टेर्टन ध्वर क्षत्रर भतिवर्ष्टिक स्टेब्रा याहेर्द । कि व्याक्त्याः প্রেম এবং পরস্পরের প্রতি সহামুভুতি। তৎপর তাঁহাদিগের चार्थ जाग। यो ७ व निया इरेटल इरेटनरे मःमाद्रित यां किई হিৰুধৰ্ম ঃ - মধ্যবজীবাদসূলক । - এক মাজ কাক্ষধৰ্মই কাগতে বিবয় সম্পতি সম্ভ পরিভাগে ক্লিডে হইত। সেই প্রিভাজ

সম্পদ শিষাদিগের মধ্যে কেছ কোন অপরাধ করিলে কঠোর পান্তি পাইতেন। কিছু তথাচ জাঁহারা মণ্ডনী পরিত্যাগ করি-তেন না, কারণ তাঁহাদের ভিতর প্রেম ও স্বার্থত্যাগ প্রভৃতির ভাব প্রবলম্পে জাগিয়াভিল। উননের ভিতরে বেরূপ বড় কাঠের সঙ্গেছেটে কাঠও অলিয়া থাকে, সেইরূপ প্রেমিক বিশাসীদের সঙ্গে লাগিয়া চুর্জলেরা ও বল লাভ করে।

वाक्रमाक्षक वाक्तिशंक कीवान वादः मामाकिक कीवान वहे भक्ति धानान कतिरवन। अधि क्षत्रहरू म्मर्ग कतिशाष्ट्र विन-রাই ত মামুব লাতিভেদ ছাড়িতেছে, কুসংস্থার বর্জন করিতে প্রস্তুত হইরাছে। সামাজিক জীবনে এই শক্তি ব্রাহ্মসমাজ দিরাছেন। এই যে আজ এতগুলি জ্রীলোক এই মন্দিরে আসিয়াছেন, ইহা তাহারই প্রমাণ। এই শক্তি ব্রহ্মসমাজ নুতন দিয়াছেন। হে ব্ৰাহ্ম ভাইভগিনিগ্লু! তোমরা প্রতোকে বিখাস এবং প্রেম দারা এই শক্তি ছদয়ে জাগাইবে। হে ব্রাহ্ম ভগিনি ! তুমি মনে করিও না যে, আমি জ্রীলোক আমার ছারা কিছুই হইবে না। হে ব্রাহ্ম যুবক! তুমিও মনে করিও ना (य, আমার बाরा किছू हे इहेटव ना। (य, त्य পরিমাণে বিখাস প্রেম বৈরাগা প্রভৃতি সাধন করিবে, সে সেই পরিমাণে কাজ कविद्य। (इ इव्वंग बाक्ष । यात्र (कामांव कीवरन विधान, ८ शम এবং বৈরাণোর অঘি জালিতে পার, ভবে তুমি কুলু হইয়াও বিজ্ঞ জ্ঞানীর অনপেক্ষা উত্তম পোচাব করিবে এবং দেই শক্তি জাগ্রত করিবে। এই শক্তি যদি ত্রাহ্মসমাজ দিতে পাবেন. তাহা হইলে সকলই হইবে। এই শক্তি যে দিন আমাদিগের ভিতর আদিয়াছিল, তাহা কি আমরা ভূলিতে পারি ? সে निन कि कामारनंत भरक विरमंद निन नरह १ इटे हाक्षांत वर-সর পূর্বে অখুশালায় একটা বালক জন্মগ্রহণ করিয়াছিল, সে দিন কি বিশেষ দিন নহে ? তদ্বারা জগতের ইতিহাস কি পরিবর্তিত इब नाहे १ त्महेक्र पर पिन बाक्षिमभाष्ट्र क्या, त्मिन कि विलाय मिन नरह ? ट्र खाक्र खाक्तिका । यभि ट्रामता व्यभनार्थ ना इ. व. ভবে ইহ। নিশ্চর বিশ্বাস করিবে যে, ভারতেব ভবিষাৎ ইতিহাস कांत्र म्लोडीकरत निथिरवन (य. এই ১) हे माच এक है विस्तिय দিন। অভএৰ এস, সকলৈ আনন্দেৰ সহিত এই মহোৎসৰে আবৃত্ত হই ? সেই সভা প্রভুকে যদি বিশ্বাসের সহিত সভা ৰলিরাধরিতে পারি. স্বার্থকে যদি বলিদান করিতে পারি, ভবে আমরা যে আভন জালিবার বিশেষ সাহাযা করিব ভাহাতে কোন সন্দেহ নাই। অতএব আর উদাসীন থাকিও না, সকলে উথিত হও, জাগ্রত হও, ঈশ্বরকরণা শারণ কর. মহাশক্তি জাগাও। করুণাময় প্রভু আমাদের সহার হউন।

## তরা মাঘ, বুধবার।

আদ্য প্রাত্তে সংকীর্তনের পরে সমবেত উপাসনা হয়।

শীবুক্ত আদিনাথ চট্টোপাধ্যায় বেদী গ্রহণ করেন। আরাধনাতে
তিনি নিয়লিখিতরূপ উপদেশ প্রদান করেন।

"মাথ মাস আসিলেই ত্রাহ্মগণ উৎসব করিবার জ্ঞা চারি-বিক হইতে আসিরা মিলিত হন। মাঘ মাসে ত্রাহ্মগণ চুণ করিরা থাকিতে পারেন না, জার সংসারের কাজা লইয়া বাডা

थाक्टिक भारतम् ना, छे०भरवत्र ज्यानस्य नकरम् मछ हरेत्रा यान । ষ্পন্নে প্রেম, বিশাস এবং ভক্তি প্রভৃতি ভাবের বিশেষ অভাদর হয়। ঘণ্টার পর ঘণ্টা ভাবে মন্ত হটরা তাঁহারা সংকীর্ত্তনাদি করিয়া कांगारेया थाटकन। ध ममत्र छे ९ मार्गीनटक छे ९ मारी; अनम छ अमिविम्थरक अमनीन উদ্যোগী, धर्माक्धाविशीनरक धर्मात कन्न বিশেষ ব্যাকুল করে, এমন কি অনেকের এ সময়কার ছবি पिथित हेरांत्रा तमहे भूत्वत मासूच कि ना छाहाए मत्नह ব্দমে। উৎসবের মধ্যে এই ভাবে সময় অভিবাহিত হইলেও উৎসবের পরে সাধারণত: সে সকল ভাব যেন ক্রমে ক্রমে বিলুপ্ত হইতে থাকে। আবার সংদারের শীতল বাতাদ আদিয়া ব্রাহ্মগণের উৎসাহাগ্নিকে যেন নির্কাপিত কবিয়া দেয়। ভাবার মত ভাব আসিয়া তাহাদিগকে অধিকাব করে। যদি পরিণাম এইরূপই হইবে, ভবে কেন আমরা প্রতি বংসর এই উৎস্বের আবোজন করিয়া থাকি ? সাময়িক উৎসাহে ত বার্টয়ারির জন্মও লোকে মত্ত হইয়া থাকে, আমাদেব উৎস্বও কি সেই প্রকারণ আমাদের আচার ব্যবহার দেখিলে সহজেট লোকে এই-রূপ প্রান্ন জিজ্ঞাসা করিতে পারে। কিন্তু বন্ধুগণ, ত্রন্ধোৎসব নিরু-র্থক নছে। ইহা জীবন লাভের প্রধান উপার এবং মক্তিলৈলে ষাইবার পথের একটা সোপান স্বরূপ। ইহা অতি সতা যে, এই প্রকার উৎসব সম্ভোগের স্থবোগ হইরাছে বলিয়াই আমবা कीवत्नत्र आश्वामन शाहेटहि। সৌভাগ্য ক্রমে আমার कीवान এই ऋविधा विल्य चाद चित्राह्म. काहा ना इहेल এতদিনে হয়ত অন্তরণ হইতাম।

আমাদের উৎসবের আয়োজনকে পক্ষিপাবকের আকাপে উড়িতে শিথিবার প্রণালীর সহিতও তুলনা করিতে পারা যায়। পক্ষিশাবক যথন বাদায় বদিয়া থাকে, তথন ভাহার দূবে যাইয়া আহার সংগ্রহ করিবার শক্তি না থাকিলেও এবং বিশেষ কিছু করিবার না থাকিলেও সে বাসায় বসিয়া বসিয়া ডানা নাড়িতে থাকে। পকিশাবক দেখিতে পায় যে, ভাহাদেব পিতামাতা উডিয়া গিয়া ভাহাদিগের জন্ম আহার সংগ্রহ কবিয়া-আনয়ন করে। ইহা দেখিয়া ভাহাদিগকেও যে সময়ে উডিতে হইবে, তাহা ব্ঝিতে পারে এবং স্বভাবের তাড়নায় তাহারা ডানা নাডিতে থাকে। ডানা নাডিলে সেই মুহুর্কেই যে উড়িতে পারে তাহা নহে, কিন্তু তাহাই উড়িতে শিক্ষ। করিবার প্রথম সোপান। যদি তাহারা শিশুকাল হইতে এইরূপ অমুকবণ না করে, তবে কখনও যে উড়িতে শিখিবে তাহাব সন্তাবনা थाटक ना। (महेक्रण आमानिगटक छान, भूगा, (अस्मत আকাশে উডিতে হইবে। পক্ষিশাৰক আপন পিতা মাতাকে উড়িতে দেখে, আমরা क्रि ভাহা দেখি নাই ? আমাদের সমকে কি কেই জ্ঞান, প্রেম, পুণাের আকাশে উড়িতেছে না ? আমা-**(मत्र मक्नाक्टे (महेक्न फेंडिएक इहेरव)** मः मात्र क्र वामात्र कामत्रा वित्रमिन वाकिय ना। कामारमत्र व्याङ्गकरकरे छें फ़िर्ड হইবে। পক্ষীশাবকের স্থায় আমাদিগকেও সংসাররূপ বাসার পাকিয়াই পুণ্য, প্রেম, পবিজ্ঞার আকাশে উড়িবাব জন্ত এখন সময়ে উড়িতে পারিব নচেৎ সমস্তই রুথা হইবে। পক্ষিণাবক

(58) कविया कविया (भारव अकिनन इठा ९ **छे छिमा साम,** अवः উভিতে ঘাইয়া যথন ক্লান্ত হইয়া পড়ে, তথন ভাহার পিত।মাতা আসিয়া তাহাকে সাহায্য করে। আমরা ধ্পন উড়িতে উড়িতে क्रांड इटेब्रा পডिव, व्यामाप्तत कि माहाया कतिवात कन्न কেছ থাকিবেন না ? আমাদের কি পিতা মাতা নাই ? যিনি আমাদিগকে সাহায্য করিতে সক্ষদ।ই প্রস্তুত আছেন, তাঁহার সত্তাকাশে উভিতে যাইয়া ধ্যন আমরা ক্লান্ত হইয়া পড়িব. जिनिहे आंगानिशक ज्थन माहाया कतिरवन, वन निरवन, এবং স্বীয় অভয় ক্রোভে বিশ্রামের স্থান দেখাইয়া দিবেন। আম্বা চুর্বল ও অজ্ঞান, স্থতবাং উডিবাব সময় যে অনেকবার প্রভিষা যাইব, ভাহাতে সন্দেহ নাই। কিন্তু তথন ঈশরেব করুণাই আমাদিগকে তুলিয়া ধরিবে। এক একটা উৎসব এইরপ পাখীব ড়ানা নাডাব ক্লায়। আমরা প্রত্যেক উৎস্বে একটু একটু কবিয়া উড়িতে শিধিয়া ক্রমে ক্রমে বন্ধ সন্নিধানে উপন্থিত হটব, ঈশ্ববে বিশ্রাম করিব। चामता नकरन উৎসাহী हहे এবং निक निक कार्या शतुति হ্রাস কবিষা উৎসবে গোগ দিবাব জন্ম ব্যস্ত হই। কার্য্য অনেক कतिशाहि, (म अनुष्ठि ५थन कि हमित्नत अन्न इसन इडेक। সুণলে মিলিয়া পকিশাবকেব ভায়ে আমবা ডানা নাডিতে श्कि, क्रेश्वत व्यामाभिष्ठात मधाय रुप्ते ।

বলে পুথিবা চালিত হয" বিষয়ে নিম্লিখিত মধ্যে বক্তা করেন,—

"পঞ্চনশ শতাকী অতীত প্রায, তথন বাঙ্গালায় বৈফ্রনধ্য প্রচলিত ২ইতেছিল। কিন্তু বৈষ্ণবধর্ম প্রবন্তক চৈতক্ত ইহাব वहकान भूत्वहे हेश्लाक श्रेंड अञ्चान कविग्राहितन। टेइ--জের পর যে সকল বৈষ্ণবদাধু আবিভূতি ইইয়াছিলেন, তাঁহা-বাও ক্রমে পৃথিবী হইতে বিদায় গ্রহণ করিলেন 🔻 বে বৈষ্ণবধন্দ, ভক্তিৰ ধর্ম প্রচারিত হইতেছিল, তাহার পথ •বন্ধ হইরা গেল। জাননের শেষ ভাগে চৈত্র বঙ্গদেশ হইতে উডিয়া দেশে গমন করেন। তাঁহার সঙ্গে সাধু বৈফাব-গণও গমন করিয়াছিলেন। এই করেণেই বঙ্গে এই ভক্তিধর্ম প্রচার করিবাব উপযুক্ত সাধু পুক্ষ তথন ছিলেন না।

**এই সময়ে तृ**कात्म १ हे उठ इह जन देवछन माधु नत्त्र आह-मन करित्तन। व्यन्तक देवकाव मार्च तुन्नावतन वाम करित्तन। कै। हार्तित काहार अकाहार अध्यास कर कार किन्न इंडेन त्य. "যে বঙ্গদেশ হইতে এই ভক্তিব স্লোভ প্রবাহিত হইয়াছে, সেই बदकरे अथन अर्थ छ कित छाव भौतम बरेगा शिवाएए, बेशांत कात्रण কি ? এই নীবসভাব ভাব কোণা হইতে আসিল ? বজেৱ এখন অনেকই শক্তির উপাসক, প্রেমের ধর্ম প্রচার করে এরুপ लाक नाहे, त्रथात चात्र अथन श्रियत्र माहाचा नाहे।" क्रिका कतिया छ। हाता विवश इहेटमन अवः इहे. सन বৈষ্ণব-সাধুকে বিশেষ ভাবে প্রেমের ধর্ম প্রচারের জ্ঞা বুলে (अद्भ कतिरम्भ।

পঞ্চনশ শতাকীর শেষ ভাগে হুই জন বৈক্ষৰ সাধু এই **चे एक एक विकास के उन्हार के अपने किएक । अर्थ के अर्थ**  किছूहे मधन माहे, (करन मांक कंडकश्रीन ভिक्तिशार्धन মাহাত্মা স্চক গ্রন্থ। পরিধানে জীর্ণবন্ত, ধুলি-ধুসবিত বেশ। এইরূপ অবস্থায় তুইজন সাধু বঙ্গে গ্রেমের ধর্ম প্রচাব করিডে চলিলেন। धन वन नाहे, (नाक वन नाहे, এक वाद्य निः महाम, তাঁহারা কি সাহদে এই মহৎ কার্য্যে ব্রতী হইলেন ? এই इंहे कात्र माथा अक कर ताक माही दिल्लात कमा शहर कित्रा-ছিলেন। তাঁহার নাম সাধু নরোত্তম দাস। তিনি ধনীর গুছে অলুগ্রহণ করিয়াছিলেন, শৈশবাবভা ছইতেই নান প্রকাবে চৈতন্তের ভব্তি এবং প্রেমের কথা গুনিরা তাঁহার মনে প্রেমধর্ম জাগিয়া উঠিয়াছিল। যাহা পাইয়া চৈত্ত প্রেমে উন্মত্ত হইয়াছিলেন কোথায় গেলে. কাহার নিকট প্রার্থনা कवित्त, जिनि (महे धन नाज कवित्वन, व्याविश्व माम माम নবোত্তম এই কথাই স্ভাবিকে লাগিলেন। দিন দিন তাঁহার প্রাণে ব্যাকুণতা বাড়িতে লাগিল'। জমে তিনি পিতৃগৃহ প্রতিয়াগ করিয়া ধর্ম লাভার্থে রুক্লাবনে উপনীত হইলেন। সেখানে তিনি সাধুসঙ্গে বাস কবিয়া ভক্তি-শাস্ত্র অধায়ন এবং ভক্তিসাধন করিতে লাগিলেন। এই রূপে ক্রমে তিনি প্রেমের ধর্ম প্রচারের জন্ম বঙ্গে প্রেরিত হইলেন, সঙ্গীয় অপর ব্যক্তিব নাম শ্রীনিবাস আচার্যা।

তাঁহাদের সঙ্গে যে সকল ধর্ম গ্রন্থ চিল, পণে বিষ্ণপুৰেব স্রুলা ৬) ঘটকরে সম্য শ্রীষ্ক্র বাবু ক্ষেক্মার মিত্র "যে । স্তিকটে ভাহা দ্ম্যা কর্ত্ত অপ্সত হয়। সেই স্কল গ্রন্থ খন্নেষ্ণ কবিতে কবিতে পণ্ডিত শ্রীনিবাস আচায়া বিষ্ণুপুরে উপনীত হটলেন। বিষ্ণুপুৰে বাজা ঘোৰ অভাচাৰী ছিলেন। 'তাঁহারই আদেশে ভাঁহার অন্তচ্বগণ বৈষ্ণ্য ধশা-এছ গুলি অপহরণ করিয়াছিল। ঐীনিবাস রাজসভাতে উপস্থিত হইয়া ভাগৰত গ্রন্থ পাঠ করিয়া वााभा লাগিলেম। একদিন ভাগবত ২ইতে একটা वाच्या कारन "পाशीव शतिशारम कि मध इम्र, अखिरम কি শাব্যি হয়" এ বিষয় বলিতে ছিলেন। শ্রীনিবাসের কাথা। শুনিয়া এবং তাঁহার ভগবদ্যাক্ত দেখিয়া সেই হুদাস্ত রাজাব कत्राय रुठार পবিবর্তনের স্রোভ প্রবাহিত হইল। যে ব্যক্তি চিরজীবন পাপের ক্রোডে বন্ধিত, ঘোর অত্যাচারী, ১ঠাং আজ ঈশ্র-কুপায় তাহাব সদয় বদ্লাইয়া গেল। ভাছাব প্রাণ বিগলিত হইয়াগেল, জগতের পরিতারা প্রভু পরমেশ্ব ব্যক্ষার হাদয়ে নিজ শাক্ত বিক্শিত ক্রিলেন; অফুভাপের আগুন জ্লিয়া উটিল, রাজা চিংকার করিয়া কাদিতে লাগি-লেন। জীনিবাস খনেক কথা বলিয়া রাজাকে আখন্ত করি-लन। व्यवस्थार नावा श्राहीत नुक्रन (श्रम-शर्का मीक्रिक হটলেন এবং "হরিনরোয়ণ দাস" এই নুতন নাম গ্রহণ করি-(गन। এই कार्य अथरम (अरमत सम्म निक्न अठात इंडेन।

> अमिरक नरबाखम अगिकहा मधन गरेबा धनी निजाब ग्रह উপ্স্তিত হইলেন। । সেথানে তাঁহার ভগবছক্তি, প্রেম, বিশ্বাস, সংসারের প্রতি উদাসীম্ভ এবং সর্ব্বসাধারণের প্রতি প্রেম দেখিয়া। আন্ধণেরাও মুগ্ধ হইরা গেলেন এবং অবশেষে কেহ কেহ ভাগাৰ নিকট প্রেমের ধর্মে দাক্ষিত হইলেন। এই ঘটনার পর গ্রাম-গুদ্ধ লোকে তাঁহার বিরুদ্ধে দ্ঞায়মান হইল। "নরোত্তম

ত্রাহ্মণের ধর্ম লোপ করিতে আসিয়াছে' এই কথা চারিদিকে উথিত হইল; তাঁহার প্রচারের পথ বন্ধ হইয়া গেল। কিন্ত মরোভম ইহাতেও কান্ত হইলেন না। "প্রভু, শীঘ্র বঙ্গদেশকে প্রেমের ধর্মে প্লাবিত কর, বঙ্গের গৃহে গৃহে প্রেমের ধর্ম প্রতিষ্ঠিত হউক" এই বলিয়া দিবা রাত্ত জগদীখরের নিকট वार्थना कवित्व नागितन। छाहात्र वार्थनात कन कनिन। ক্তিপর দিবস পরে করেকজন সম্ভান্ত ত্রাহ্মণ সেই গ্রামে আসিলেন এবং নরোন্তমেব জীবে-দশা দেখিয়া তাঁহারা মোহিত ছইয়া গেলেন। তাঁহারা এতদিন বাহিরের অফুষ্ঠানকেই ধর্ম वित्रा कामिर्लन; किन्ह निक व्याताश (म्वरक डाकिय़ा रि काहात 3 हत्क थात्रा विह्ना शांक, जाहा कथन 3 तम्यन नाहै। कार्तिको नार्याखरमत 'धर्मा मीकिष्ठ इटेरनन। नार्याखरमत कीवनी भाठ कवित्ल (मिथ्ड भारे त्व, जिनि निःमधन হইবাও নিজ চরিত্রগুণে এবং প্রেমের বলে জ্বনেক লোককে এই নবধার্ম দীক্ষিত করিয়াছিলেন। স্তরাং ইহা স্পষ্টই দেখা যায় যে, এই বৈষ্ণবধর্মের বিষ্ণারের কারণ নরোভ্তমেব 🎒 বনের বিশাস, প্রেম এবং আংগ্রোৎসর্গ। এই শাক্ত-প্রধান ৰঙ্গে. এই নব প্রেমেব ধন্দ্র প্রচারের মূলে বিশ্বাস, প্রেম এবং আ্যোৎসর্গ। অগতে ষত ধর্ম জয়লাভ করিয়াছে, সকলের মূলেই দেখিতে পাই এই ভিন্টী বর্ত্তমান। এই ভিন্টী বস্ত যে ধর্মের মূলে নাই, সে ধর্ম কথন ও ভাষী হইতে পারে না। এই ভাব যে भणावनभौদেব মধ্যে প্রবল নয়, ভাহারা লোক-मिशाक मनाइक करिएड भारत वरहे, किंद्र कशाइ भारत स्वन भानप्रन कविट्ड পात्र ना, त्मरभन्न मूत्र किवारेया मिट्ड भारत . ना। आत्मरकरे मृत्य अत्मक कथा विवारक भारत वर्षे ; नियु ধর্ম্মের জন্ত সকল পবিভাগে কবা বড় কঠিন। প্রকৃত পক্ষে তাঁহার হাতে জীবন অর্পণ না করিলে, প্রাণের পিপাসা धानभिष्ठ इय ना, खाला पृत्व यात्र ना। यजनिन क्रेथर क সভা বলিয়া ধরিতে না পারা যায়, ততদিন কাহারও দাবা ধর্মপ্রচার হর না।

এখন প্রশ্ন এই যে, এই বিখাস কি কবিয়া পাইব ৪ সাধু-জীবনে দেণিতে পাই যে, তাহায়া জারিয়াই সাধু হন নাহ। সকলেই ঈশর হইতে সাধুতাব বীক লইয়া জন্ম গ্রহণ করেন ; পরে তাহার উৎকর্ষ সাধিত হয়। छ।शास्त्र कीवानह দেখিতে পাই যে, প্রথম ঠাহাদের প্রাণে ধক্ষচিস্তারূপ অস্কর উৎ-পন্ন হইয়াছে, পবে ক্রমে উ:হাবা ধর্মধীবন লাভ কবিয়াছেন। ঈশবপ্রদত্ত শক্তিব উচিত বাবহাব করিলেই প্রাণে ধন্মভাব জাগিয়া উঠে। ঈশবপ্রদত্ত সংগুণের বীজ আত্মতে নিহিত রহিয়াছে, কর্ষণ কর, ফুফল উৎপন্ন চইবে। লক্ষ লক্ষ লোক কত গ্রন্থ পড়িয়াছেন, কত গ্রন্থ প্রণ্যন ক্রিয়াছেন, তথাচ দেখিতে পাই যে, তাঁহারা ধর্ম সম্বন্ধে অজ্ঞান। বৈজ্ঞানিক দিগেব क्था भरत इटेरन. डीहारमज हजरण भन्नक खेवन छ इस. किन्न धन्य ॰ সম্বন্ধে উহিহার। অফলন। ধর্ম সম্বন্ধে চিন্তার উন্মেষ নাহইলে কেহ धर्षकीरन वास क्रिट्ड পाद्रन ना। अथम (म्बिट्ड পाই, क्रेश्वर সম্বন্ধে প্রাণে প্রশ্নের উদয় হয় ; সেই প্রশ্ন মীমাংসা কবিতে গিয়া মাছৰ দত্তো উপনীত হয়। মহম্মদের প্রাণে প্রথমে মুতু ধর্মজাব

ছিল; কিন্তু প্রকৃতির মধ্যে বাস করিতে করিতে যথন তাঁহার প্রাণে প্রশ্ন উথিত হইল, "কে এই বিশাল ব্রহ্মাণ্ডেব रुष्टिक हो। ?'' अभिन त्रहे मत्त्र मत्त्र हिस्तात जेनग्र इहेन এবং তিনি অবশেষে ধর্মজীবন লাভ করিলেন। এখন প্রশ্ন এই ষে, "কিরপে চিন্তার উন্মেষ হয় ?" প্রথম প্রাকৃতি-তত্ত্ব আলোচনা করিলে, বাহুজ্পৎ, অন্তর্জগৎ বা দেহতত্ত্ব আলোচনা করিলে ষ্মামাদিগের প্রাণে এই প্রশ্নের উদয় হয় যে "এই সকলেব স্ষ্টিকর্তাকে ?" আলোচনা করিলে দেখা যায় যে, ইহাদেব সকলের মূলেই এক জীবস্ত শক্তি বিদ্যমান এরং এই শক্তিই বুক্ষ, লভা, পাতা,প্রভৃতির মধ্যে কার্য্য করিতেছে। জগতের সর্ব্যেই এই একই শক্তি বিদ্যমান। তাঁহার বাপ, প্রাকৃতি ও ভাব সর্বাত্রই এক। এই শক্তিই জাগ্রত, জীবত প্রভু প্রমে-বর। তাঁহাকে পাইতে হইলে একমাত্র তাঁহার রুপাই ভরদা, এবং তাঁহার চবণেই শরণাপর হইতে হয়। যথন দেখিতে পাইবে, জগতে মানবের চেষ্টা বার্থ হইরা যাইতেছে, শক্তি কাজ করিতেছে না, ভথনই বুঝিতে পারিবে, এই শক্তির উপবেও এক মহাশক্তির কাল হইতেছে এবং তথন স্ভাবতই তাঁহার চরণে মন্তক অবনত হইবে। এইরপে নিরাশ প্রাণ যথন ব্যাকুল হইয়া ঈশ্ব কুপার প্রার্থী হয়, তথন কি ঈশ্ব লুকায়িত পাকিতে পারেন ? তিনি তখন স্বয়ং প্রাণে প্রকাশিত হন। भाभी वयन क्रेनरवर এই भक्ति প্রাণে অনুভব করে তথন আবে বলিতে পারে নাহে, "ঈশর নাই।" এইকপ অকুভব चेचेत्रकृशाम आमानिश्व अन्तिक के कियाहिन।

এই দেহের শক্তি ধদি ঈশ্বর গ্রহণ করেন, দেহের পতন
হয়, এই শক্তি তাঁহারই। তাঁহারই শক্তিতে আমবা শক্তিশালী, জগতে দিতীয়শক্তি আর নাই। যথন আহাব
করিতে বসি, দেখিতে পাই, ঈশ্বর সেহে বিগলিত হইয়া মুথে
গ্রাস তুলিয়া দিতেছেন, কঠে পানীয় ঢালিয়া দিতেছেন, সকলই
তাঁহার করণা। জগতের অপব সমুদায় পদার্থ ক্ষুদ্র, একমাত্র
ঈশ্বরই মহৎ।

জগতের সকল সাধু এইকপে ধর্ম-বিপ্লব উপস্থিত কবিয়া-ছেন। এই বিশাস, প্রেম এবং আত্মোৎসর্গ লাভ কবিতে इटेर्ल अथम जामत्रा हिन्दानील इहेर, उर्पाद आर्ग महालाउन আকাজ্জা আসিবে এবং তৃৎপব প্রাথনাব ভাব জাগ্রত হইবে। এই প্রার্থনাই মানবজীবনেব সম্বল। মহাত্রা 'আগষ্টিনেব জীবনে এই প্রার্থনার মাহাত্মা দেখা গিয়াছিল। পাপাদক্ত হইলে তাঁছার মাতা মনিকা দেবী ঈশবেব চবণে পুলেব মঙ্গলাকা জ্ঞিণী হইয়া নিরম্ভর প্রার্থনা কবিয়াছিলেন, তাঁহার প্রার্থনা বিফলে যায় নাই। ঈশবের রাজ্যের নিয়মই এই যে, ব্যাকুল হইরা যে চক্ষেব জল ফেলে, তাহাব প্রাথনা বিফল হয় না ৮ এই বিশ্বাদ লাভের জন্ম যদি আমবা বাকুল হইয়াসকলে ঈশ্রচরণে প্রার্থনা করি, তিনি অবশুই আমাদেব প্রার্থনা পুরণ করিবেন, দেশের হু: প হুর্ণতি দূর ইইবে, নিজে धक्य हहेसा याहेत । धहे विश्वाम व्यामानित्रक मत्था व्याद्धक : উৎসবের প্রাক্ষালে ঈশ্বরচরণে এই ভিক্ষা যে, আমাদের প্রাণে তিনি এই বিখাস দিন। ঈখর করণা করুন।

#### ৪ঠা মাঘ বুহস্পতিবার।

অদ্য প্রাতে ৬ ঘটকার সময় কীর্ত্তন হয়। তৎপর শ্রীযুক্ত মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যার উপাসনা করেন। তিনি উপদেশ প্রদান করেন নাই। সন্ধ্যা ৬২ ঘটকার সময় ব্রহ্ম-বিদ্যালয়ের উংসব এবং তত্তপলক্ষে "আমাদের ধর্মের বিশেষহ সম্বন্ধে শ্রীযুক্ত বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়ের বক্তৃতা হইবার কথা ছিল; নগেন্দ্র বাবুর শরীর অফুছ হওয়ায় উক্ত উংসব ও বক্তা অদা বন্ধ থাকে। তৎপরিবর্কে শ্রীযুক্ত লক্ষ্ণপ্রসাদ অদ্য হিন্দি ভাষায় "ইহকাল ও প্রকাল" সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন।

#### ৫ই মাঘ শুক্রবার।

পূর্বাক্ত ৬ ঘটকার সময় কীর্ত্তন হয়। তৎপর ঐযুক্ত নবদীপচক্র দাস উপাসনা করেন। তিনি সমবেত প্রার্থনার পরে নিয়লিখিত উপদেশ প্রদান করেন;
→

"আমরা ত্রাহ্ম। ত্রাহ্মের লক্ষণ কি ? একমাত্র সভাস্বৰূপ ঈশ্বেবে উপাসনা কবা, প্রতি সপ্তাহে রবিবার দিন
ভঙ্গনালরে যাওয়া, ত্রাহ্মের প্রথম অবস্থা। দ্বিতীর অবস্থা
এই:—"ঈশ্বকে সভাস্বরূপ বলিয়া বিশ্বাস করা, তাঁহার
উপাসনা করা. এবং গৃহেব সমূদ্র অস্ক্রানকালে উাঁহারই
নিকট বল ভিক্ষা করা।" এরূপ অবস্থার পরিমিতের উপাসনা
কিরূপে করিতে পাবিব ? কেবল মাত্র এক পরপ্রহ্মের উপাসনা
করিবার জন্ম প্রথমে শিক্ষিত বাক্তিগণ একত্র হইয়াছিলেন।
তৎপর মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর প্রাহ্মমতে পিতার আছ্
করিলেন। তাঁহার প্রাণে এই ভাব উদ্য় হইয়াছিল যে,
আমি প্রাহ্ম হইয়াছি, কিরূপে পরিমিতের উপাসনা করিব ?
গৃহহব প্রত্যেক অমুন্নানাদিতে সেই সভ্যম্বরূপ ঈশ্বের পূকাই
করিতে হইবে।

প্রকৃত উপাসনা কি ? প্রকৃত উপাসনা এই যে, উপাস্থ দেবতা যিনি, তাঁহার চরিত্র অমুকরণ করিয়া সেইরূপ হইতে চেষ্টা করা। জগতের ভিন্ন ভিন্ন ধর্ম্মসম্প্রদায়ের ধর্মকত ष्पालाहमा कतिरम । विषयत्र छेन्द्रम महोस (मिश्रर) পাওয়া যায়। বৈঞ্বশাল আলোচনা ক্রিলে দেখিতে পাই (व, दिल्ल क्या वर्षात्र व प्रहे. इत्र ४ ६ ६ १ विकास विकास (यरे क्नरत्र ज्ञेथत-श्रीजित छेमत्र रहेन, अमिन नास विनीछ ध्वरः नस इहेरनन। देवज्ञास छेशासक देवकवरमञ्ज अधान লক্ষণ এই যে, তাঁহারা অতাত বিনরী এবং শান্তস্বভাব। প্রকৃত উপাসক বিন্রী না হইরা পারেন না। উপাজের অমুকরর করা উপাসকের একটি প্রধান লক্ষণ। সম্প্রদারে দেখিতে পাই, কত নরনারী বদেশ পরিভ্যাগ পরোপকারত্তত भीवन छेऽमर्ग कतियाहिन। "গরিবের ছোট ভগিনী সম্প্রদার" পরের সেবার জয় জি না করিতেছেন ? নিজের জন্মভূমি, পিতামাতা, ভাই বন্ধু প্রভৃতি দমস্ক পরিত্যাগ করিয়া এই ভারতে জাদিয়া মানব-এথমে

নিজ জীবন একেবারে ঢালিয়া দিয়াছেন। পরের সেবা করিতে করিতে যে কথনও উঁহোরা বিরক্তি বোধ না করেন তাহা নহে। কিন্তু বিরক্তির সময় ইহারা কি করিয়া থাকেন ? তথন ইহারা ভলনালরে, প্রবিষ্ট হইয়া যিশুর মূর্ত্তি এবং তাঁহার প্রেম পুণা পবিত্রভা প্রভৃতির ধানে করিতে থাকেন। এইরপে প্রাণে বল সঞ্চর করিয়া প্নরার বিশুণ উৎসাহে কর্ত্বব্যাধনে প্রবৃত্ত হন।

পৃথান যুবক যুবতীগণ নিজ স্বার্থকে সমূলে বিনাশ করিয়া এইরূপে যে পরের সেবায় জীবন উৎসর্গ করিয়াছেন, ইহা কেবল তাঁহাদের উপাস্ত দেবতার জ্বাফ্ররের ফল। সকল ধর্মানবলম্বীদের মধ্যেই ঐরূপ দেখিতে পাই। বুজের জীবনেও ইহাই দেখি;—রাজার পুত্র, সংসারেব স্থা; এখার্যা সমস্ত বিসর্জন করিয়া গৃহ পবিত্যাগ কলিয়া চলিয়া গেলেন। অনেক সাধনার পর সিদ্ধ হুইয়া জগতে নিজের ধর্ম প্রচার ক্বিতে লাগিলেন। দেখিতে দেখিতে কত লোক তাঁহার জ্বাস্বৰণ কবিল।

উপাস্ত দেবতার অফুকরণ করাই উপাদকের লক্ষণ। बक्क-छेल: मरकत्र व्यापर्णिक ? बारकात्र व्यापर्ण कृष्य नव। बुक्क, है हे उस, विश्व, महस्मान श्राकृष्ठि (कहरे बाह्यात्र कामर्ग नहरून। देश সত্য যে তাঁহাদের নিক্ট মন্তক অৰমত করিতে হটবে, তাঁহাদের फेक काव मुम्ह क्षमां भावन कतिएक एहेंही विवित, किन्ह उँहिंदी আমাদিগের আদশপুক্ষ নহেন। কেবল মাত্র সেই পবিত্র-স্ত্রপ, সভাস্তরপ, পরমপ্রিতা, প্রমস্তুল্র পুরুষ্ট স্থামাদিগের একমাত্র উপাস্থ এবং আদেশ। বৈষ্ণবেবা যেমন চৈত্রতক चामनं करतन, श्रीहारनता रयका ने नारक जामनकरा धारन करतन. ट्रिहेक्श क्रेचंत्र व्यामात्मव व्याममंश्रुक्य । এই य उक्त उेशामनात्र জ্ঞাসমবেত হইয়াছি, ইহার উদ্দেশ্য এই যে, সেই পরত্রন্ধের উপাদনা ক্রিয়া, অফুকরণ ক্রিয়া ব্রহ্ম-চ্বিত্র লাভেব চেষ্টা করিব। যদি ব্রহ্ম-চরিত্র অভুকরণ করিয়া আমরা তদ্মুক্প জীবন যাপন না করি, তবে আমরা প্রক্রত ত্রন্ধের উপাসক নই। ব্রদ্ধই আমাদের আদর্শ, তাঁহার চবিত্রই আমর। অমুদরণ ও অফুকরণ করিব।

জগতের লোক কডজনে কড কথা বলে,—কেচ বলে ঈশর
নাই, ইকছ বলে তিনি সঞ্জু, কেছ বলে নিশুণ; লোকে
যাহা বলে বলুক, আমরা ক্রীয়াশীল এক্ষেরই উপাসক, সেই
সচিচদানলমর পুরুষকে সর্বাদা প্রাণের ভিতরে রাথিয়া নিজ
নিজ কর্ত্তব্যপথে অগ্রসব হইতে হইবে। সপ্রাণান্তে এক্ষমলিরে
উপন্থিত হইলে কিশ্বা প্রাক্ষাধর্মাহের অন্তর্গান করিলেও
প্রাক্ষ হওরা যার না। প্রেক্ত প্রাক্ষের জীবন এরপ ভাবে
গঠিত হইবে যে, লোকে দেখিলেই মনে করিবে, "হাঁ বান্তরিক
প্রক্ষের উপাসক।" যথন দেখিব, প্রাক্ষ শান্ত এবং নিয়ত
কার্য্যশীল; যথন দেখিব, তিনি ঈশ্বরের গুণসমূহ জীবনে
লাভ করিতেছেন, ভখনই বুঝিব যে, তিনি প্রকৃত প্রাক্ষ
হইরাছেন। হে প্রাক্ষ ভাই ভগিনি! আমরা সেই প্রক্ষচরিত্র •
জীবনে অন্তর্গক করিবার জন্ত ব্যাক্স হইরাছি কিনা, আদ্য
একবার বিশেষ ভাবে চিন্তা করিরা দেখি, এবং সেই আদর্শ
জন্তব্য করিরা প্রকৃত জীবন লাভ করি।

সন্ধা ৬ ই ঘটিকার সময় সলতসভার উৎসব হর। এতত্ত-পলক্ষে প্রদাস্পদ প্রীযুক্ত উমেশচক্র দত্ত উপাসনা করেন। তৎপর প্রীযুক্ত ক্ষাবিহারী সেন নিম্নলিধিতরূপে সলতসভার বার্ষিক-কার্য।বিবরণ পাঠ করেন;—

করণামর পরমেখরের কপার আমাদের এই সক্ষতসভা ৩৫ বংসর অভিক্রম করিরা, অদ্য ৩৬ বংসরে পদার্পণ করিল। এই সভার নির্মিত সভ্যসংখ্যা ১০১২ জনের অধিক নতে। ধর্মোৎসাহী ভ্রাত্গণ ইহাতে যোগ দান করিয়া সভার পৃষ্টি সাধন করেন, ইহা একাস্ত প্রার্থনীয়।

গত মাঘোৎস্বে, ৭ই মাঘ মঙ্গলবার এই সভার বিশেষ উৎসব হয়, ভাহাতে শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত মহাশর আচার্যোর কাষ্য করেন। তৎপরে বাবু কুঞ্জবিহারী সেন সক্তের স্থায়বিবরণ পাঠ করিলে বাবু বিপিনচক্র পাল, মথুরামোহন গাঙ্গুলী, মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় ও বাবু হরগোবিন্দ চৌধুরী মহাশমগণ নিজ নিজ জীবনের অভিজ্ঞতা সম্বন্ধে কিছু বিজ্ বলেন।

গত বৎদব এই সভাব উপস্থিত সভোৱ সংখ্যা গড়ে ৮।১০

আন করিয়া হইয়াছিল। এত দ্বিল সময়ে সমরে কোনও কোনও

মহিলা ও আনোচনায় যোগ পিয়াছেন। পারিবারিক অসুষ্ঠান,
কোনও এক্ষেবক্র মৃত্যু ও অন্তান্ত কারণে ৬।৭ মক্লবার বাদে

এ বংদা এই সভার সর্কানমেত ৪০টা অধিবেশন হইয়াছে।

এতদ্বাতীত ৬টা ক্ষাধিবেশনে মহানিক্ষাগতন্ত্র, বাইবেল,
গীতা এবং চৈতন্ত ভাগবত পাঠ ও ব্যাখ্যা হয়। অবশিষ্ট

৩৭টা অধিবেশনের মধ্যে ১৫টা অধিবেশনে নানা বিষয়ে

আলোচনা, বাকী ২০টা অধিবেশনে নিম্লাথিত বিষয়ের
আলোচনা হয়;—

- हिन्दू भाख भार्ठित्र क्लांकन कि ?
- ২। সহতের সভাদিগের অবভাকর্ত্তবাবিধিও নিষেধ।
- ৩। সত্য সাধন।
- ৪। কলিকাতার নিক্টস্থান সকলে কি প্রণালী
   অবশ্যন করিলে আক্ষধর্মপ্রচারের স্থ্রিধা হয়।
  - ८। छात्र।
  - ७। शृहस्र अठात्रकः।
  - ৭। বিশেষ বিশেষ ঋতুতে ভগবানের বিশেষ আবিভাব।
  - छ। बाक्तनमारकत्र कार्याानि व्यात्नाहना।
  - ৯। जामर्ग बाचनीयन।
  - > । बाक्षनभाष्य क्रभाष्टे छात इय ना ८कन ?
  - ১১। जामास्थ्रमाधिक धर्म।
  - ১২। গুরুর আবশুক আছে কি না ?
  - >७। वानक वानिकानिरगत धर्म-मौका।
  - **३८। जेपा**रतत श्रिवकार्या गायन।
  - ১৫। পারিবারিক-উপাসনা।
  - ५७। धर्मानिष्ठी।
  - ১৭। ত্রান্ধের সংসার কিরূপ হওয়া উচিত 📍
  - ১৮। ধর্ত্বাস্থপত-সংসার।

- ১৯। ঈখরের জন্ম ব্যাকুল্ডা হয় কিরুপে ?
- २•। উপাসনাশীলতা।
- २>। (यात्र।
- २२ । देवज्ञागा ।
- २७। मृत्रा
- २८। ७ किः।
- ২৫। কর্ম ও সেবা।
- ২৬। স্বর্গীর কেশবচন্দ্র সেনের মহত।

এই সকল বিষয়ের কোন কোনটা ছই দিন ধরিয়া আলো-চিত হয়। আলোচিত বিষয় গুলির কয়েকটীর সারমর্ম নিমে প্রদত্ত হইল:—

- ১। সঙ্গতের সভ্যবিগের পক্ষে নিষেধ ও বিধি।
- (১) প্রতিদিন অস্ততঃ দেড় ঘণ্টাকাল উপাসনার জন্তু সময় দেওয়া কর্ত্ব্য।
  - (২) প্রতিদিন সাধুসঙ্গ অথবা সংগ্রন্থ পাঠ।
  - প্রতিদিন আত্মচিস্তাও আত্মানুসন্ধান করা।
- (৪) পরস্পারের মধ্যে যোগরক্ষার জন্ত প্রত্যহ যথাসাধ্য স্কলে একত হইবার চেষ্টা করা।
  - (e) ত্যাগন্বীকার,—প্রতিদিন কিছু কিছু দান ক**বা।**
  - (৬) সর্বাদাই ঈশবের নাম শ্বরণ করিতে চেষ্টা করা।
  - ১। নীতি বিরুদ্ধ ও বিবেকবিরুদ্ধ কাথ্য না করা।
- ২। শরীর মন ও বাক্য দারাই পাপ হইরা থাকে, ইহাদিগকে সংযত করিয়া পরিমিতাহারী, পরিমিত ভাষী ও পবিত্র ভাবে চিস্তা করিতে চেষ্টা করিতে হইবে।

২। সত্য সাধন—সত্য সাধন সকল বিষ্ণেই ক<িতে

হইবে। মনকে সভ্যজ্ঞানে উজ্জ্ঞল করিবে, সত্য কথা বলিবে,
প্রাণে যাহা সত্য বলিয়া বুঝিবে কার্য্যে তাহা করিতে চেটা

করিবে ইত্যাদি। আমরা যদি সর্বাদা সত্য বলিতে পাবি, তাহা

হইলে আমাদের মধ্যে কোন পাপ আসিতে পারে না।

সত্য সহজে ও স্বাভাবিক ভাবে পাওয়া অসম্ভব নহোঁ কিন্তু সাধারণের ভাগ্যে তাহা হয় না। আমাদিগকে তাহ। সাধন করিতে হইবে। বাহারা সামান্ত সামান্ত বিধরে সত্য প্রতি-পালন করেন, তাঁহারা ক্রমে ক্রমে সত্যের দিকে অগ্রসর হন। সেই সামান্ত সত্যের মধ্যে ভূগবানের ভাব দেখিয়া মনে তাহা ধরিয়া রাথিতে এবং কার্য্যে পরিণত করিতে চেটা করিতে হইবে।

"দতাং" বলিলে যদি ঈশবের সত্য ভাব আণে জাগ্রভ হয়, তাহা হইলেই ঠিক সত্য সাধন হইল ।

সভাই আন্ধের শার্ম। আন্ধার্ম আমাদিগকে এই মহৎ অধিকার দিয়াছেন যে, যেথানে যে সভা পাঙ্যা যাইবে, সেথান হইতেই সেই সভা গ্রহণ করিতে হইবে এবং ভাহাই আঁদিগের শাস্তা। অফ কোনও ধর্মে এ অধিকার নাই।

সত্য অর্থ—সত্য স্বরপের প্রকাশ। অনস্তকালে অনস্থ সত্য সমূহ প্রকাশিত হইবে। স্তরাং তাহা অনস্তকাল ধরিয়া আমাদিগকে শিক্ষা করিতে হইবে। বাঁহারা সভা লাভ করিয়াছেন, তাঁহাদের এমন একটা বিশেষ অবিহা হয় যে, তাঁহাদের জীবন সভ্যের সহিত যুক্ত হইয়া হায়। তাঁহাদের কথা, ভাব, কার্যা প্রভৃতি,সুমত্তই সভাময় হয়।

৩। আয়ি—যাহার যাহা প্রাপ্য তাহা ভাহাকে দেওয়ার নাম স্থায়। অস্তে আমার নিকট যাহা পাইবে, তাহা আমি তাহাকে দিতে বাধ্য, ইহাই ভারের মূল তব।

জগতেব সকল লোকের সঙ্গে আমাদের ঘনিষ্ঠ যোগ রহিয়াছে। ঈশ্বর আমাদের স্থায়বান প্রভু, তিনি আমাদের কিয়ৎ পরিমাণে কর্ভ্র শক্তি দিয়াছেন, স্থতরাং আমবা বিবেচনা কৰিয়া কতক পবিমাণে স্থাধীন ভাবে কাজ করিতে পারি'। এই স্থাধীনভাবে কাজ করিবার শক্তি থাকায় স্থায়ের ভাব প্রস্কৃতিত হইতেছে। আমরা যতক্ষণ আমাদেব চবিত্র ভাল করিতে না পারিব, ততক্ষণ আমাদের মঙ্গল নাই, ঈশ্বর কথনও অপবিত্রতার প্রশ্রের দেন না। তাঁহার কাছে যাইতে হইলে, সরল ও পবিত্র ভাব অবলম্বন করিতে হয়।

যাহাবা ধর্ম জগতে ঈশবের করণা পাইর। তাহাব অভার বাবহার কবেন, তাঁহাদের বড় চুদ্দশা হয়। তাঁহাব করণা পাইবার বিধয়ে জাতি বর্ণ ভেদ নাই, সকলেই তাঁহাব করণার অধিকাবী।

গৃহস্থ প্রচারক—গৃহে থাকিয়া স্ত্রীপুত্র প্রতিপালন এবং ধর্ম দাধন কবিতে ব্রাহ্মধন্ম উপদেশ দেন। গৃহস্থ ব্যক্তিগণ ধর্ম প্রচার কবিবেন। ব্রাহ্মদাজ এমন কথা বলেন না যে, যাঁহারা ধর্ম প্রচার কবিবেন ভাঁহারা গৃহস্ত হউতে একটা পৃথক শ্রেণী হউবেন। একপ হইলে পেরিহিত্যের স্প্রতি হইবে এবং ভদ্মারা স্মাজের কল্যাণ না হইয়া অকল্যাণ হউবে।

ে। বিশেষ ঋতুতে ভগবানের বিশেষ আবি ভাব।

—মকভূমি প্রদেশে ভগবানের বিশেষ করণা প্রত্যক্ষ কবা

যায়। যেথানে এক বিশ্ এল নাই, সেধানে ভগবান পার

পালপ ও বড় বড় ভরমুজ প্রভৃতি ক্ষ্টি কবিয়া প্রাণিগণের

পিপাসা দ্ব করিবার জন্তু কেমন স্থলব ব্যবতা করিয়াছেন।

গীলের সময়ে সমূল প্রভৃতি হইতে জল আকর্ষণ করিয়া

বর্ষার আয়োজন কবেন। এমন সকল তানও আছে যেথানে

মেঘ হইতে বৃষ্টি হয় না, কোয়াসাব দ্বারা বৃষ্টি হইয়া থাকে।

মানুষেব দৃষ্টি যানন ভৌতিক জাগং ছাড়িয়া অস্তর্জাতে প্রবেশ করে, তথন সে অতি সামান্ত ঘটনার মধ্যে ভগবানেব লীলা প্রত্যক্ষ করিয়া গাকে। বসস্তের পূর্বে ভগবান রক্ষ সমূহকে ন্তন নৃতন পত্রহায়। কেমন স্থলব সাজে সাজাইয়া দেন। তেমনি প্রাণে ন্যরসের স্কার হইলে প্রাতন জড্তা ক্রেফে ক্রেম চলিয়া গিয়া নব নব ভাবকু স্থে প্রক্টিত হয়।

৬। ব্রাক্ষাসমাজে জমটি ভাব হয় না কেন এবং
কি উপায়ে হইতে পারে ?—মাম্বের ুঅক প্রভাক
কিচ্ছির থাকিলে, বৈমন তাহার জীবন আছে বলিয়া মনে হয়
না, আমাদের সমাজের অবস্থাও বেন সেইরূপ। এইজয়ই
আমরা সমাজের মধ্যে জ্মাট ভাব দেখিতেছি না, বা তেমন
শক্তি জাগিতেছে না।

অহ্বার একটা প্রধান শক্ত, তাই বর্তমান সময়ে মিলেমিশে কাল করাও অসম্ভব। আমরা তৃণের সমান হীন হইয়া, তরুর স্থার সহিক্ হইয়া, অমানীকে মান দিতে পারি না। এই লক্তই ধর্মভাবের অভাব দেখিতে পাওয়া বাইতেছে। এখন আমাদের কর্ত্তব্য এই;—মনে থৈ সকল সাধু ভাবের উল্লেক হইবে, তাহা কার্য্যে পরিণত করা। কথার বলিলে কিছুই হইবে না। যাহাতে বাক্য, কার্য্যে পরিণত হয়, প্রত্যেকের তাহার চেষ্টা করা প্রয়েজন।

পৃথিন, হিন্দু, সুসলমান ইভাগি ধর্ম সম্প্রদায় গুরু বা শাস্তবাক্য অবনত মন্তকে গ্রহণ করেন। গ্রাহ্মধর্ম এরুপ করিতে উপদেশ দেন না। গ্রাহ্মধর্ম বলেন, সাধু বা শাস্তবাক্যে যাহা সভ্য আছে তাহাই গ্রহণীব। গ্রাহ্মধর্ম, ধর্মপথপ্রদর্শক ও ধর্মসাধনের সহায় আচার্য্য বা উপদেশ্লার আবশুক্তা অস্ত্রীকার করেন না। ভগবান মানবর্সমান্তের মধ্যে লীলা করিতেছেন। গ্রাহ্ম যেথানে সভ্যা, সাধুতা, ক্রায় দেখিবেন, সেধানেই নত হইয়া সেই সকল গ্রহণ করিবেন। গ্রাহ্মধর্ম ইহাই শিক্ষা দেন। তুর্মল ব্যক্তি সমলের সাহায্য পাইবে। সামান্ত শিক্ষার যদি শিক্ষকের আবশুক হয়, ভবে শাণিত ক্ষুরধারের স্থায় তর্মম ধর্ম্মগাধন-প্রথ চলিতে উপদেশ্লার আবশুক হইবে না কি পুসাধু লোকের সাহায্য না লইব কেন প্

৮। বালক বালিকাদিগের ধর্মশিক্ষা— স্থামাদের বালকবালিকারা যাহাতে ধর্মভাবে বর্দ্ধিত হহতে পারে, এমন বিশেব কোন চেষ্টা হইতেছে না। ব্রাহ্ম বালকবালিকাদের ধর্মশিক্ষার বিশেষ স্কভাব রহিয়াছে। স্থামরা স্ক্রানদের বিদ্যাশিক্ষা দিবার স্কন্ত বেমন ব্যগ্র, ধর্মজীবন প্রস্তুত ক্রিবার ক্রন্ত তেমন নহি।

সহজে যাহাতে ধর্মভাব জাগ্রত হয়, সে বিষয়ে ধর্ম সমাজের বিশেষ দৃষ্টি থাকা বাঞ্নীয়। সন্তান প্রথমতঃ পিতা মাতাকে ভক্তি কবিবে; পরে যথাসময়ে ভাহার ধর্মদীক। হইবে। অত্যাত্ত ধর্মসমাজে দীক্ষাব নিয়ম আছে। হিন্দুসমাজে এইরূপ দীক্ষা হইবো, ভাহাকে ধিজার লাভ বলে। ধিজ র লাভ তই প্রকাব,—

- (>) जेनंत चत्रः याहारक मीक्किड करत्रनः
- (२) धर्त्याशरहरण रव हीका इय ।

বালকের অজ্ঞানত। দূর করিবার জন্ম যেমন সাধারণ শিক্ষার প্রয়েজন, তেমনি ধর্মশিক্ষার জন্ম নানা উপায় অব-লম্বন করিতে হইবে। আমাদের মুস্তানগণ বাহাতে অভি শৈশব হইতে ধর্মভাবে বর্দ্ধিত হয়, তাহার আয়োজন করা প্রত্যেক ব্রাক্ষের কর্মবা।

১। ধর্মাকুগত সংসার—সংগার ধর্মের আল।
সকলকেই সংসারধর্ম পালন করিতে হইবে। সংসার একটী
পরীক্ষার হল। ইহার মধ্যে ঠিক ভাবে চলা ও ভগবানকে সকল,
সমরে উপলব্ধি করা অভীব কঠিন। কিন্তু বিশাসী হইয়া
ভাঁহার শরণাপর হইলে, সংগার মধুময় হয়।

১০। ঈশবের জন্ম ব্যাকুলতা হয় কি রূপে ?—

ঈশবকে আমরা সার, সত্য, নিত্য বলিরা বৃধি নাই, বিখাসের

আরতা বশতইে তাঁহার বিচ্ছেদ ভাব অহ্ভব করিতে
পারি না।

ব্যাকুলতা বাড়াইবার এই করেকটী উপার;—সাধুগণের জীবন চরিত পাঠ, অভাব চিন্তা করা ও সেই সঙ্গে অভাব পূরণ করিবার জন্ত ঈশ্বের নিক্ট প্রার্থনা করা।

অভাব হইতে দীন ভাবের উদ্রেক হয়। সামার একটু উপায় পাইলে, ক্রমে আত্মদৃষ্টি প্রফ্টিত হর, এবং তাহা হইতে সাধক ঈশবের প্রসাদ লাভ করেন।

বিখাদের সহিত ভাঁহাকে দার সত্য বলিরা ধরিতে পারিলেন, আকাজ্জার উদ্রেক হয়। ভাঁহাকে ভিন্ন দিন চলেনা।

প্রাথিব সামাত বস্তব অভাবে বা বিচ্ছেদে আমরা প্রাণে কত কট পাই, আর ভগবান আমাদের পরম বস্ত, যাহা বিনা আমরা এশদিনও জীবিত থাকিতে পারি না, তাঁহার জন্ত কি আমরা ব্যাকুল হইব না ?

পার্থিব বস্তুতে আসক্তি থাকিলে ব্যাকুলতা বাড়ে না। ঈশ্বর প্রীতিই ব্যাকুলভা আনয়ন করে।

ঈশ্ব-কুপায় এবংসরও ১লা পৌষ হইতে সমস্ত মাস ভোর-স্কান্তন হুইয়াছিল এবং যথাসাধ্য নগরবাসী আহ্মদিগের স্থারে স্থারে নাম কাত্তন করা হুইয়াছে।

#### ৬ই মাঘ শনিবার।

আদ্য প্রাতে ৬ ঘটিকার সময় সঙ্কীর্ত্তন আবস্ত হয়। তৎপর আমাদের আরা সাধনাশ্রমের পরিচারক শ্রদ্ধান্দ্রালি শ্রুক প্রকাশ দেব বেদী গ্রহণ করিয়া হিন্দী ভাষাতে উপাসনা করেন। তিনি যে উপদেশ প্রদান করিয়াছিলেন, তাহা লিখিত হয় নাই।

অপরাক্ষ ৬ ই ঘটিকার সময় প্রথমতঃ সংকীর্ত্তন হয়। তৎপব শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ 'শাল্লী হিন্দুশাল্প পাঠ করেন। তিনি শ্রীমন্তাগবত হইতে ভক্তি-তর সম্বন্ধে কয়েকটী স্লোক পাঠ ও ব্যাথ্যা করেন। তৎপরে শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচন্দ্র দন্ত বাইবেল-গ্রন্থ ও খৃষ্টধর্মের স্থুগ মর্মা সংক্ষেপে অথচ অতি উজ্জলরূপে বর্ণনা করিয়া বাইবেলের নানা স্থান পাঠ ও ব্যাথ্যা করেন। তাহার পাঠ ও ব্যাথ্যা শেষ হইলে শ্রীযুক্ত প্রকাশ দেব গুরু নানকের "মাদি গ্রন্থ" হইতে কিছু পাঠ ও ব্যাথ্যা করেন। তৎপর শ্রীযুক্ত লক্ষ্ণপ্রসাদ কবিরের কোন কোনও দোহা অবলম্বন করিয়া কিছু বলেন। এই স্কল্পাঠ ও ব্যাথ্যা অতি স্কল্য ও শিক্ষপ্রেদ হইয়াছিল।

## ৭ই মাঘ রবিবার।

আদ্য রবিবার প্রাত্তে ৬ ঘটিকার সময় সংকীর্ত্তন আরেন্ত হয়। তৎপর শ্রীযুক্ত নবদীপ চক্র দাস উপাসনা করেন।

সমবেত আর্থনার পরে তিনি নিম্নলিখিত উপদেশ প্রানাকরেন;

"मानवजीवन ध्वधानजः जिन छार्ग विख्कः। लिनवे, योवन वर वार्कका। धर्मभीवानश वहेन्नभ जिन छात्र मिथिए भारे ; माधात्रण कीवन, नवकीवन এवः ८ श्रम-कीवन। माधात्रण धर्म-कौरान (मथिए भारे, भाषूर भारते निक निक धर्माष्ट्राशी সাধন'প্রণালী অমুসারে কর্ত্তব্য পালনে রত; দিবসে ৩।৪ বার ভঙ্গন সাধন করিয়া থাকে। দেখিলেই বেশ মনে হয়, এ লোকটী (वर्ष धार्षिक। अमन कि अहे माधात्रण धर्मावण्यनकाती वास्कि, তদবস্থাপন্ন বিতীয় ব্যক্তিকেও দেখিলে বলিয়া থাঁকেন "এ বেশ ধার্ম্মিক ইহার ধর্মজীবন বেশ স্থলর।" এইরূপ সাধারণ ধর্ম-জীবন অধিকাংশ লোকেরই দেখিতে পাওরা যায়। ধর্ম ভ্রমে যাহারা পাপে ডুবিয়াছে, তাহাদের কথা বলিবার ষ্মাবশ্রক নাই। যাহারা গৃহে অমুষ্ঠান করিতেছে, কর্ত্তগ্য পালনরপ সদস্ঠানেও রত, তাহাদের জীবনও সাধারণ ধর্ম-জীবনেরই অন্তর্ক। যে পর্যান্ত না জীবনে ঈশরের প্রতি পূর্ণ বিখাসের আবিভাব হয়, সাধক নবজীবন প্রাপ্ত না হন, দে পর্যান্ত তদ্রপ ফীবন প্রশংসনীয় হইলেও ভাহা মূল্যবান धर्माकीयन विनिधा श्रह्मीय नय, जाश वानाकीयरान्हे भगा, रक्नना সাধক তথনও প্রাণে প্রকৃতরূপে ঈশ্বর-সভা অমুভব কবিতে পাবেন নাই।

ভিন্ন ভিন্ন ধর্ম্মনম্প্রদায়ে দেখিতে পাওয়া যায়, গুরু আসিয়া প্রাচীন দীক্ষাপদ্ধতি অনুসারে শিষ্যকে দীক্ষিত করিয়া शांकन। मिलित उभागक श्रेरण खक्र व्यागित्रा वित्यसांगतन ानिवादक ज्ञान कत्राहेश। निक्तित वौक मञ्ज भिन्ना थादकन। **এ**हे मञ्जनान ममरत्र भिषाटक विनन्ना दम्ख्या शत्र दस, हेश विस्मय-ভাবে গোপন করিয়া রাখিবে। বৈফবদিগের এবং সাধারণ ধর্মসম্প্রদায়েব ভিতরে এইরূপ প্রথা প্রচলিত আছে। শিষা যতদিন এইরূপ দীক্ষা গ্রহণ নাকরে, ততদিন পर्य ख निरयात नतीत अलक, जाशांत शाजत करन रमन-পুৰা পৰ্যান্ত হইতে পারে না। এই সংস্কার চিরপ্রচলিত। मौका ना रहेरन, नवकीवन ना পाहेरन, महीत खख्य थारक। এইরূপ দীকার অবস্থাই নবজীবনের অবস্থা। প্রাচীন রীতি অমুদারে দীকা গ্রহণ করিয়া থাকেন, তাঁহাবা প্রকৃত নবজীবন প্রাপ্ত হন কিনা তাহা সকলেই একুবাব চিম্ভা कतिया (मधुन । यमि धहे जैशास लाटकत नवस्रीयन नाच श्हेज, তाश रहेरा सगर उन्न मकर नहे नवसीयन गांछ कतिछ। किस हेश नवकीयन नरह, हेहा ७ माधांत्र की बरन व्र मरधा हे भगा। ७८व कि मासूष চিরকালই काধারণ জীবন লইয়া থাকিবে, নবজীবন পाইবে না? তাহা क्यन है श्हेर्ड भारत ना। जेचेत मानूयरक नवजीवन मिवात जञ्च मलाहे शाखा । कान जाका उहाहाक পাইবার জন্ম ব্যাকুল, তাহা তিনি গ্রুদাই দেখিতে-ছেন। সংসারের তারু, শিখা দীক্ষিত হইবার জন্ত ব্যাকুল হইরাছে কিনা ভাষা পরীকা করিয়া থাকেন; জগতের ওকু. অর্গের ঈখরও তাঁহার কোন্ সম্ভানের প্রাণ তাঁহাকে পাইবার षश्च कथन शिशामिक इत्र, काहा (एथित्रा थाटकन। এहेक्रट्स যথন ভিনি দেখিতে পান বে, কোনও আছা তাঁহার জন্ত বাাকুল হইরাছে, তথন ভিনি নিজেই ভাহাকে দীক্ষিত করিয়া থাকেন এবং এইরূপ দীক্ষাতেই মানুষ নবজীবন প্রাপ্ত হয়।

এই যে আমরা উৎসব কেতে বিসয়ছি, নিজ নিজ জীবনে আনেকেই কি সাক্ষা দিতে পারি যে আমরা ঈখরের নিকট দীক্ষিত হইরাছি। এইকপেই ঈখরের পুত্র কভাগণ দীক্ষিত হইরাছি। এইকপেই ঈখরের পুত্র কভাগণ দীক্ষিত হইরা থাকেন। এইরূপ জীবন লাভ না করিলে মান্ত্য প্রকৃত পথ প্রাপ্ত হর না; সাধারণ জীবন লইয়াই চিরকাল বাস করে এবং তাহা পাইয়াই ত্প্ত থাকে। আমরা সকলেই কি এই নবজীবন লাভ করিয়াছি? ঈখর কি দীক্ষা কালে আমাদিরের কর্ণে কোনও বিশেষ গোপনীয় কথা বলিয়া দিয়াছেন ? ঈখর যদি আমাদির্গকে নবজীবন প্রদান না করেন, তবে শত সদম্ভান করিলেও তাহা মৃত জীবনই থাকিবে। নবজীবন আমাবা পাইয়াছি কিনা তাহা দেথিতে হইবে।

আমাদের কি কোনও ঋক আনাছেন ? এমন ৩০ক কেহ আছেন কি যাঁহার কথা ভনিয়া চিরদিন চলিতে পারি ! হাঁ, ইহা ঠিক, যে. জগতের অংপব ধর্মসম্প্রদায়ের ভায়ে আনা-দেরও গুরু আহেন। পূর্কজানময় পবিতা পুরুষ পরমেখবই একমাত আমাদের ওক। যদি সেই পূর্ণসুক্ষ পর্রক্ষ ৰান্তবিকই আমাদিগকে দীকিত করিয়া থাকেন, ভবে ইহা নিশ্চর বলিতে পারি যে, যথন পৃথিবীর গুরুই শিষ্যকে পরিত্যাগ করেন না, তথন দেই জগতের গুরুকি আনা দিগকে পরিত্যাগ কবিবেন ? এখন জিজ্ঞাস্য এই, অপব সম্প্রদারের লোকের ভায় ৩৪কর নিকট হইতে কি কেহ যে মন্ত্ৰ পাইলে কাণে কাণে কোন মন্ত্ৰ পাইয়াছেন ? শরীর বিভদ্ধ হয়, আহাথা পবিত হয়; সেরূপ কোনও ময় পাইয়াছেন কি ? কি মন্ত্ৰ পাইয়াছেন বলিতে পারেন কি ? না কাপনাদের মন্ত্র গোপনীয় ? না তাহা কখনই নহে। জগতের গুরু প্রমপিতা প্রমেশ্র আমাদের কর্ণে যে মন্ত্র দিয়াছেন, ভাহা কথনই গোপনীয় নহে; ভাহা জগতেব নিকট উটেচ: খরে ঘোষণা করিতে হইবে। আনাদের মন্ত্র কি ? "সভাং জ্ঞানমনস্তং এক।" ইভাাদি। ইহা গোপনে সাধন করিব; কিন্তু উচ্চৈঃস্ববে জগতের নিক্ট প্রচার কবিব। ছ্রভাগ্যের বিষয়, আমেরা বডই ছক্রেল, মল্লের কণা ভূলিয়া যাই, কেন আসিলাম, কেন মল গ্রহণ করিখাম, তাহা ভূলিয়া যাই এবং চিরকাল মৃত্জীবন লইয়াধর্মনাজের অঙ্গকে চুর্গক্ষয় করিতে থাকি।

আমাদের উৎসব আসিরাছে। আমাদের প্রাণে সেই
মন্ত্র জাগাইবার জন্ম স্থার আমাদিগকে আ্হবান কবিয়াছেন।
তিনি জিজ্ঞাসা কবেন, "মন্ত্র আমাদের মনে আছে কিনা ?"
মদি বলি মনে আছে, পুনরায় জিজ্ঞাসা করিবেন "মন্ত্র সাধন
করিয়া জীবনের উন্নতি হইয়াছে কিনা ?" বদি মন্ত্র ভূলিয়া
গিরা থাকি, তিনি পুনরায় তাহা জাগাইয়া দিবেন। উৎসবে কি
জন্ত আসিয়াছি ? তাহার দিকে অগ্রসর হইব,মন্ত্র ভূলিয়া থাকিলে
আবার প্রাণে তাহা জাগাইব, সাধনে প্রবৃত্ত হইব। "তিম্নন্
গ্রিতিক্তক্ত প্রিয় কার্য্য সাধনং" ইত্যাদি যে প্রাক্তিক্তা করিয়া

ব্রাক্ষসমাজে আসিয়াছিলাম, ধৌবনে বার্দ্ধকো যেন তাহা পালন করিতে পারি। এই জন্ত ঈশবের নিকট বল ভিকা করিব।

আংদ্য অপরাক্ষ ৪ ঘটিকার সমর ব্রাহ্মগণ দলে দলে বিজন উদ্যানে সমবেত হইলেন। একটা সংকীর্ত্তনের পরে আমাদের লক্ষ্ণে নগরের প্রচারক শ্রীযুক্ত লক্ষ্ণপ্রসাদ হিন্দি ভাষার অক্তৃতা করেন। তৎপর আরো সাধনাশ্রমের পরিচারক শ্রীযুক্ত অফ্লাস চক্রবর্তী ও প্রচারক নবদীপচক্র দাস বক্তা ও প্রার্থনাদি কবেন। অবশেষে শ্রহ্মাম্পদ শ্রীযুক্ত হরিমোহন ঘোষাল বক্তা করেন। পরে পুনরায় সংকীর্ত্তন করিয়া প্রচার্যাকীদল মন্দিরে প্রত্যাগত হন।

সন্ধ্যা ৬ ঘটিকার সময় মন্দিরে কীর্ত্তন আবস্ত হয়। তৎপর শীযুক্ত কৃষ্ণকুমার মিত্র, উপাদনা করেন। তাঁহার প্রাদত্ত উপদেশ এই ;—

"একদিন মহম্মদ অনেক ৰুদ্ধ, যুবক, যুবতী এবং ৰালকগণ-দারা পরিবেটিত হইয়া উপবিষ্ট আছেন, এমন সময়ে তিনি স্কলকে সম্বোধন করিয়া বাল্লেন:—"এই জগতের স্টিকর্তা একমাত্র পরমেশ্বর, তিনিই জগতের প্রাণরূপে বিদ্যমান রহিয়াছেন; তাঁহারই ভম্বনা কর, তিনিই ঐহিক পারত্তিক স্ক্রিধ কল্যাণের আকর, উছিকে ছাড়িয়া মানবের আর দিভার পরিতাণের উপায় নাই।" তিনি বুঝিতে পাবিয়া-ছিলেন যে, এই একমাত্র সভাস্কল প্রমেশ্বকে অবলম্বন না করিলে দেশের হুর্গতি দূব হইবে না, ভাই বার বার উটিচঃ यात मकनारक करे कथा विलाख लेशितन। नृह्यता নীরব, কেহই তাঁথার কথাব উত্তর দিলেন না। অবশেষে किनि नात्री निगरक मरशाधन कतिया विनासन,—"(जामारमत्र হ্বদয় স্বভাবত: কোমল, ভোমরা কি এই সত্যস্থকপ ঈশ্বরের ভজনা क्रिट्न ना १" मक्राल है नी त्रत, (क्रव्हे उंश्वात क्रशात উত্তর প্রদান করিল না। অবশেষে যুবক্দিগকে সংখাধন করিয়া বলিলেন। যুবকগণ কেহ কেহ তাঁহাকে উপহাস করিতে লাগিল, অপর সকলে নীরব হইয়া রহিল। অবশেষে यथन जिनि वालक निगरक मास्याधन कतिया आध कतिरलन, তখন একটা ১৪ বৎসরের বালক গন্তীর ভাবে বলিয়া উঠিল. "হাঁ আমি প্রাণে উপলব্ধি করিয়াছি যে, একমাত্র সভাস্বরূপ ঈশরই মানবের উপাস্ত দেবতা; তাঁহাকেই আমি একমাত্র সত্যস্তরপ বলিয়া প্রাণে উপলব্ধি করিয়াছি।" বালকের এই कथा छनिया नकत्वरे अवाक् रहेया श्वन ; अवत यूवत्कता বলিতে লাগিল "আমবা ভোমা অপেকা অধিক জ্ঞানী, আমরাকিছুই বলিলাম না, আমার তুমি এই কথাবলিলে 🥍 বালকের আত্মীয় স্বজনগণ ভাঁহাকে নানারূপ ভয় দেখাইতে लाशिन। वानक नीत्रव, मृष्धिष्ठिक, मञ्जक व्यवने कतिशी माँ ए। हेया त्रहित्वन, काहाय ७ क्षांय क्ष्माक क्रित्वन ना। वानक वनिष्ड नाशिलन, - "ध्य याहाहे वैनना (कन, आंभारक रयक्रभ छत्रहे (मथा अना दिनन, आमात विश्वान पृष्, अवेन, কিছুতেই ভক্ক হটবার নছে। মহমদ বালকের কথা শুনিয়া যার পর নাই আহলাদিত হইলেন এবং বলিতে লাগিলেন.-"জগণীখর! তোমাকে ধলুবাদ যে, একজন লোককেও তোমার সাক্ষা (দবার অক্ত পাইলাম " এই জ্ঞানহীন বালকের সাক্ষ্যেরই ফল জগতে সংক্রামক হইয়াছিল। আমরা দেখিতে পाই (व, देशाव भव महम्माप्तव निक्रे धहेन्नभ कानक कानहीन दलाक मेचदत्रत माक्का निवात कक मधात्रमान स्टेबाहित्सन ।

(क्रमणुः)

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

२> म त्रः था। > १ म छात्र ।

>লা ফাব্তুন মঙ্গলবার, ১৮১৬ শক, ব্রাক্ষ সম্বৎ ৬৬।

বিংশরিক অপ্রিম মূল্য ২॥• মফললে ৩১ প্রতি পণ্ডের-মূল্য 🗸 ০০

# পঞ্চষষ্টিতম মাঘোৎসর।

(পূর্বপ্রকাশিতের পর)

মহাত্মা যীওর আচোরিত প্রত্যে বাহারা বিখাস করিয়া मेचात्रत माका निर्वाहित्नन, ठाँशात्मत्र मत्याख त्नवित्क भारे, चारतक्रे चित्र होत, पूर्व এवः नीहकाठीय लाक हिल्तत। মাক্য দান করিয়া ক্রমে তাঁহারাঈখরবিখাসী, ধার্মিক হইয়াছিলেন। পুর্বোলিখিত সেই ১৪ বংসরের বালক, কালে भूननमानमञ्जादि अक्जन महास्त्र, भूजनीय, धार्म्सक्भूक्य বলিয়া গণ্য হইয়াছিলেন। বর্তমান আক্ষসমাজও ঘোষণা করিতেছেন—"সভাম্বরূপ পরব্রহ্মকে উপাসনা না করিলে चामारनंत्र इःथ এवः रिएमित्र इगेंडि पृव इहेरव ना।" अथारन আমারা আনেকেই সমাগত হইয়াছি, কে ঈশ্বরের সাক্ষা দিতে मछाप्रमान रहेरवन १ क्ल खारण विचान कत्रिपाहन रा. "<del>দীবর এক</del>মাত্র মানবের পূজনীয় দেবতা ৮" কে এই সাক্ষ্য निष्ठ अञ्चल १ वाकामभाष्म यांशांवा खानी, धनवान, उांशांवा এই সাক্ষ্য দিতে দণ্ডায়মান হইয়াছেন 
 না

তাহাদের ष्यान (करे डेनामीन १ व्यान अञ्चान, होन, व्यञ्च व्याक हो এই সত্যে দৃঢ় বিখাস করিয়া দণ্ডায়মান হইয়াছেন; অনেক পাপী, পুণ্যধান হইয়াছেন, চণ্ডাল ব্রাহ্মণত্ব লাভ করিয়াছেন। আমরা সকলেই কি জীবন দিয়া ঈশবের মহিমা ঘোষণা করিতে প্রস্তুত হইয়াছি ? ত্রাহ্মসমাজের বালকগণ ৷ তোমরা <del>দীখারের স্থা অফ্ডব কৃ</del>থিয়া তাহা চির্হ্গীবন পালন वितिष्ठ श्रीष्ठ इहेग्राष्ट्र कि ? এथानि व्यन्तिक वग्नस्रवृक्ष উপস্থিত রহিরাছেন, আক্ষসমাজ তাঁহাদিগকেও আহ্বান করিছেছেন, তাঁহারা সাক্ষ্য দিতে প্রস্তুত আছেন কি? निकारक व्यक्तान, व्यमात्र छाविया पृटेत थाकिरण अवितर ना। খনেক মহিলা এথানে উপস্থিত রহিয়াছেন, নিজ জীবন্দারা দিখন-মহিমা খোষণা করিবার জন্ত আক্ষদমাজ তাঁহাদিগকে মাহ্বান করিতেছেন, আপেনারা প্রস্তুত আছেন কি ? আমরা খামাদিগের চরিত্রকে প্রেম এবং বিখাস দারা এরপ সংগঠিত क्तिर, रबन लाएक ब्यामानिरगत्र की रूप एपित्रा युनिएक शास्त्र

বে "হাঁ, ইহারা বে ঈশ্বরের স্তাবিশ্বাসী ভাহা ইহাদিগের চরিত্রখারাই বেশ বুঝিতে পারা যায়।" এই সাক্ষ্য না দিলে कामारनत हर्ममा च्ितिय ना, अनगरखत हःथ न्त हहेरव ना। क्षेत्रं आयाम्बर वानक, दक, यूवक, खौलाक नकनाटक ह উৎসবের ঘারে আছবান করিরাছেন, স্কল্কেই এই সাক্ষ্য निटिं हरेटें। चाहार्रात्र पृथ हरेटें आगल्लामी वाका छनिवात क्य नहर, ऋष् ভाবের উচ্ছাদে कीर्जन मञ्ड हहेवात क्य नहर ; কিন্তু এই সভ্য,প্রাণে লাভ করিয়া সাক্ষ্য দিবরে জন্ম ঈশ্বর আমাদিগকে আহ্বান করিরাছেন। এখন আমরা নিজের ছৰ্কলতা দেখিয়া, অত্থেম দেখিয়া, মিয়মান হইয়া থাকিব না, সাহস এবং উৎসাহপূর্ণ হৃদয়ে ঈশবের সাক্ষা দিবার হৃত্ত জগতের ঘারে দণ্ডারমান হইব; আমাদিগের চরিত্রঘারা দেশে क्रेचर्दंद नाम व्यानांद्र कदिव। आमानिद्दशंद छात्र अनुनार्थ লোককেও যথন ঈশ্বর আহ্বান ক্রিয়াছেন, তখন ইহাব ভিতর তাঁহার মহৎ উদ্দেশ্য বিদ্যমান রহিরাছে, তরিষয়ে কোনও সন্দেহ নাই। অতএব আহ্ন, নরনাবী আমরা সকলে মিলিয়া উৎসবের হারে দাঁডাইয়া, বিশাস এবং প্রেমের ভিথারী হইয়া তাঁহার নিকট যাই। এই আক্ষসমাজকেই ঈশ্বর এদেশে তাঁহাব স্ত্যপ্রচারের হান ক্বিয়াছেন, এই বান্সসমাজই আমাদিগের গৃহত্তলী হউক, পাপী তাপীর আশ্রয়-স্থান হউক, আমরা সকলে মিলিয়া ঈশ্বেব মঙ্গলময় ইচ্ছা স্থসম্পল্ল করিবার সাহায্য করি। ঈশ্বর আমাদিগকে আশী-वीप कक्न।"

## ৮ই মাঘ, সোমবার।

প্রাতে ৬ ঘটিকার.সময় সংকীর্ত্তন হয়, তৎপরে জীযুক্ত লক্ষ্ণ প্রসাদ হিলিতে উপাসনা করেন। তাঁহার উপদেশ নিথিত. হয় নাই।

অপরাহ্ন ৩ ঘটিকার সময় ১৩নং কর্ণ ওয়ালিস খ্রীটস্থ ভবনে রবিবাসরীয় নৈতিক বিদ্যালয়ের উৎসব হয়। এতত্পলক্ষে নিমন্ত্রিক অনেক ত্রান্ধ ত্রান্ধিকা উপস্থিত হইয়।ছিলেন। প্রথমত: শ্রীযুক্ত পঞ্জিক শিবনাথ শাল্পী একটা প্রাথনা করেন, তংপর বাধিক রিপে। ট পঠিত হইলে বালক বালিকাগণ উপদেশপূর্ণ এবং আমোদ জনক কোন কোনও বিষয় অভিনয় কবে। অমিত্রাক্ষর ছলের কবিতা আবৃত্তি এবং অভিনয় ইত্যাদি ভালই হইয়াছিল। তংপর ছাত্র ও ছাত্রী-দিগকে পাবিতোধিক বিভবণ কবা হয়।

অপরাক ৬২ ঘটিকার সময় মলিরে শীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী "সাক্ষভৌমিক ধর্মভাব ও ধর্মসমান্ত গঠন" সম্বন্ধে বক্তা প্রদান করেন। বক্তা শ্রবণ করিবার জন্ত মলিরে বহু লোকসমাগম হইয়াছিল। অনেকে হানাভাবে ফিরিয়া ঘাইতে বাধ্য হইয়াছিলেন। অনেকে দণ্ডায়মান থাকিয়া অতি উৎস্ক-চিত্তে বক্তা শ্রবণ করিয়াছিলেন। নিম্লিখিতরূপে বক্তা হইয়াছিল;—

"দাৰ্বভৌমিক ধৰ্মভাব এবং ধৰ্মদমাল সংগঠনের কথা অনেকেই জানেন। এই সম্বন্ধে প্রথমে স্ক্রাধারণের স্থ্রিদিত বলিব। সুগ সুগ কথা অনেকেই অবগত আছেন य. প্রাচীনকালে জ্যোতির্ব্বিদ্রণ এই পৃথিবীকে গ্রহণণের মধ্যে প্রধান বলিয়া গণনা ক্রিতেন এবং মনে ক্রিতেন যে. ইহা দৌবজগতে মহারাণীব ভায়ে প্রতিষ্ঠিত। স্ব্যু এবং অপব গ্রহগণ ইহাকে আবেষ্টন করিয়া নিয়ত ভ্রমণ কবিতেছে। কিন্তু বর্তমান জ্যোতি বির্দ্গণ ইহা জানিতে পারিয়াছেন যে, পথিনী জ্লোতিকমণ্ডলীতে একটা ক্ষুদ্র গ্রহ, সৌবজগতের महावानी नरह। देश अञ्चाल अरहत लाग्न स्र्गारक स्नारवहेन কাবরা ঘুরিতেছে। আপততঃ এইরূপ মতের পরিবর্তন সামাক্ত त्वाध इटेंटि পार्त्र ; किन्द्र धरे इंग्ली कथात्र अगर्छ विद्धान সম্বন্ধে যে পরিবর্ত্তন আনয়ন করিয়াছে, তাহা কি স্থমহৎ এবং কত শতাকী ২ইতে সংগঠিত।

वर्डमान ८इ रिक्नानिक शत्वयगार्थगांनीत हात्रिती कम আছে,—ুম বস্তু প্রাক্ষা, বিতীয় তুলনায় বিচার বা সম্বন্ধ বিনিল্য, ভূঠীয় স্বাধর্ম।নিরূপণ এবং চতুর্থ জাতিবিভাগ। প্রথমত:—কেনেও নুতন বস্তু দেখিলেই তাহা পরীকা করা, তাহাব সভাব, গুণ, ক্রিয়া ল'গ্য করিয়া পুঋামুপুঋরপে তাহাব বিচাব করা। বধন তাহার স্বরূপ এবং গুণ দানা হইল, ত্রন তুল্নায় বিচারে আরম্ভ হহল। তৎপর অবস্ত বস্তুর সংস্পৃত্র স্থা বিভিন্ন করা বিভীয় কাজ। এইরপে অন্ত প্রাথের সহিত্ত সহল ঠিক ক্রিতে ক্রিতে মাসুষ দেখিতে পাষ (य, हेटात সহিত অভ বস্তুব সাদৃশা রহিয়াছে—ইহার নামহ সাৰ্ম্মানিরপণ। এই সাধ্যা নিরপণের পরে এক ভাবাপর বস্তুনিগকে একটা শ্রেণতে আবদ্ধ করা হয়। ইচাই रेनछानिक शृल्वम्यात त्रीं । এই त्रीं कि मर्स्व हे चार्थ. ইভার কাজ সর্বতেই আমরা লক্ষ্য করিছে পারি। জ্যোতি-किना, भगविविना, आगितिना, मनाम-उद्व मर्वाबरे धरे रेवक्कानिक शरवमगांत्र त्रौडि एमथिए शाहे।

একজন উ ছিদ্বিদ্যাবিং নিজ্জনে হঠাৎ কোনও নৃতন গুলা পাইলে, প্রথমেই তাহার স্বরূপ, প্রকৃতি এবং গঠন প্রণাণী পরীক্ষা করেন, যে যে বস্তুর বিষয়ে তাহার অভিক্রতা আছে, সেই সেই বস্তুর সহিত তুলনা করেন। যথন অপর বস্তুর সহিত

সমগুণ বলিয়া ব্ঝিতে পায়েন, তথন কোনও এক শ্রেণীতে তাছাকে সংবদ্ধ করেন। এইরপ প্রাণিতত্ববিং পণ্ডিত কোনও ন্তন প্রাণী দেখিতে পাইলে, তাছার স্বভাব, গঠন প্রণালী প্রভৃতি পরীক্ষা করিয়া ত্লনামারী তাছাকে শ্রেণীবদ্ধ করেন। মনুষ্যসমান্তকেও এইরপে বৈজ্ঞানিক প্রণালী ঘাবা শ্রেণীবদ্ধ করা হইয়াছে। মানুষের আরুতিগত পার্থকা, প্রভৃতি ছারা আর্যা, অনার্যা প্রভৃতি নানা শ্রেণীতে মানব সমান্তকে বিভক্ত করা হইয়াছে।

এই বৈজ্ঞানিক গবেষণা প্রাণালী এক্ষণে ধর্ম্মের ষিচারেও প্রযুক্ত হইতেছে। প্রাচীনজ্যোতির্বিদদিগের ভার, ভিন্ন ভিন্ন मुख्यमारम्य धर्मावनश्रीश्रा निक निक धर्म ७ मनरक अधान এবং অপবকে নিকৃষ্ট স্থান দিতেন। বর্ত্তমান সময়ে বৈজ্ঞানিক রীতির উন্নতিব সঙ্গে সঙ্গে নিজ নিজ ধর্মকে তুলনা দাবা চিন্তা করা হইতেছে। 'বর্তমানে কোন ও ধ্যাসমাজের চিন্তাশীল লোকই নিজ ধর্মকৈ স্বতমুভাবে ভাবিতে পারেন না ; জগতের অপরাপর ধর্মেব সহিত দেখিতে পান। এইরূপ বিচার করিতে গিয়া আমবা এক মহাসতো উপনীত হই। তাহা এই-প্রথমতঃ এক আধাাত্মিক দৃষ্টি মানব সাধারণে দেখা মায়; অন্থাং যে দৃষ্টি হারা মানব পর্মসন্তাকে প্রভীতি করে, ভাহাই আধাাগ্মিক দৃষ্টি। কোনও সময়ে চিন্তাশীল লোকমাত্রেই বিশ্বাস করিতেন যে, পৃথিবীতে এরূপ অনেক লোক রহিয়াছে, যাহাদিগের মধ্যে এই আধ্যান্মিন দৃষ্টি প্রস্কৃতিত হয় নাই। আনিমকালে খুটায়ান পাদ্রীগণ বধাব জাভীয়নিগের ভাষা বুঝিতে না পারিয়া জগতের সমূবে তাহাদিগের সম্বন্ধে যাহা বশিতেন, ভাহাতেই লোকের মনে এইরূপ সংস্কাব জন্মিয়াছিল যে,জগতে আধ্যাঘ্মিক দৃষ্টিবিহীন লোক ও রহিয়াছে: বর্তমান ৫০ বংসরের গ্রেষণায় যে নূতন চিম্বা স্থাত প্রাবাহিত হইয়াছে, তাহাতে দেখিতে পাওয়া যায় যে, এমন কোনও বর্কার জাতি নাই, যাহাদিগের ভাষায় এক অনম্ভ পরম সহাব প্রতীতির প্রমাণ পাওয়। যায় না। এনন কোনও জ।তি নাই, যাহাদিগের মধ্যে আধ্যাগ্রিকদৃষ্টি প্রাক্টিত হয় নাই।

ষিতীয়—তুলনায়বিচার। এই বিতীয় অবস্থায় মানব আধাাাত্রিক দৃষ্টিব সাহাঁথ্যে এক মহা সহায় উপান্থত হয়।
সেই সহাধারটে মানবের জীনব নিয়মিত। এতলে অনেকেই'
বিলতে পারেন বে,—বহুদেব বিখাসীও জনেকে আছেন!
এখানে আমাদিগকে একটা কথা সর্গ করিতে হইবে!
মোক্ষমুলার ঠাহার কোন ও গ্রন্থে একটা নুতন কথা স্পষ্ট কবিয়াছেন,—"বেদে উষা, বরুল, প্রাকৃতি যে সকল দেবতার নাম
আছে, অহুধাবন করিলে দেখিতে পাওয়া যায় যে, তাহাদিগের
সকলের মূলে একই ভাব রহিয়াছে, ভিল্ল প্রয়োগ মারা।
'সর্বজ্ঞা, 'দলামুল্ল' প্রভৃতি যে সকল স্বরূপ স্থভাবতঃ ঈশরে
অর্পণ করা হয়, সে সমন্তই ভিল্ল ভিল্ল দেবতার প্রতি প্রয়োগ
করা হইয়াছে। "হে বন্ধুণ! ভোমার স্তব্দারী বন্ধুদিগিকে
রক্ষা কর, তুমি সকলই করিতে পার, ভোমাব অজ্ঞাত কিছুই
নাই।" এই স্থানে দল্লামন্ন প্রভৃতি কথা বন্ধুণের প্রতিই
প্রয়োগ করা হইয়াছে। ইল্লের স্তব্দালেও এই এক ভাব

थाकाम कता श्रेशाहि। कलड: मर्क्जरे वरे वकरे हिव দেখিতে পাওয়া যায়। নাম ভিন্ন, ছবি একই। আমাদের (मर्ल नाना (मवडा नहेंग्रा विठात हहेत्राष्ट्र। क्रक्षडरकता कुक्षरक, काली जरकता कालीरक, विक्रूजरकता विक्रूरकहे সর্বভ্রেষ্ঠ দেবতা বলিয়াছেন। কিন্তু দেখিতে পাই যে, এক অনত্তের গুণই ভিন্ন ভিন্ন উপাদকেরা তাঁহাদের স্বীয় স্বীয় দেবতাকে অর্পণ করিয়াছেন। আত্তিক হিদ্দুর নিকট যদি বল, "কালীত ইং৷ করিতে পারে না?" তিনি তোমার প্রতি ভয়ানক ক্রন্ধ হটবেন। একদিন আমার মাতৃঠাকুরাণী আমাকে বলিয়াছিলেন "বাবা, তারকনাথ ভোমাকে স্থে রাথুন।" আমি বলিলাম "তে'মাব তারকনাথ ত তারকে-খবে, সেথান হইতে, আমাকে কিরপে রক্ষা করিবেন ?" তত্ত্তরে তিনি বলিলেন—"বাছা 🕻 তাবকেশ্ব কি স্থ্ ঐ মন্দিরেই বৃদিয়া বৃহিরাছেন ? তিনি স্বত্ত বিদ্যমান থাকিরা সকলই দেখিতেছেন।" এইরূপ দেখিতে পাই, মানবের ভাব সর্বাহ্রত এক, ইহাকে "Henotheism" বলে।—অর্থাৎ একই ভাব ভিন্ন ভিন্ন নাম এবং পদার্থে আরোপ করা ১ইয়াছে।

প্রাচীন গোকেরা নিজের ভিতরে কোনও এক শক্তির প্রমাণ পাইয়া বহিজ্ঞগতে ভাহার অয়েষণে বাহির হইয়াছেন। অগ্নিব প্রবলশক্তি দেখিয়া, বায়ু তরক্ষের পরাক্রম অনুভব कतिया, उांशाना मत्न कति छन, এই तुनि आमानितात সেই উপাশু দেবতা। জদদের ভাব বাহিবে নানা বস্তুতে স্মাবোপ কবিয়া ভাহাকেই উপাদা জ্ঞান করিভেন। এই থানেই গুচতত নিংীত রভিয়াছে, তাহা এই পে, মানব্যার সঙ্গে সঙ্গে প্ৰমায়াৰ জ্ঞান। যদি বলা যায় যে, "এই টেনিলের উপরিতিত সেজ্লীকে ভাব" তাহা হইলে যেরপ চতুদ্দিকের আকাশের চিন্তা পণিত্যাগ করিয়া সেজ্টীর धावना कवा मछ्य नरह, स्महेक्क्य मानव यथन निक्कीवरनव বিষয় চিন্না কবে, তথন জীবনেব ভিত্তিস্তরূপ দেই মহাস্তাকে इर्डिया हिन्न करा प्रष्ट्रव नरहा कामात हेक्स्य এहे कीवन ণাকিবে না। এই দেহরূপ মাংস পিতে যথন জীবন স্ঞারিত क्ट्रेग्राहिल, उथन व्यामात टेव्हांग रहेग्राहिल कि ? कीवत्नत উপর আমার কোনও হাতৃ নাই, এই জীবনজোত, খাস, প্রাথান, কিছুই আমার তকুম মানিয়াচলে না। যে জীবনেব উপর আমাবহাত নাই, তাহাব ককাকি আমামি ? তবে এই कौरात्व उरम (काणा क्रेट्ड उरमाविड इवेट्डएक १ देवात मुन (काशाम १ हेहार आनि काशाम १ धहेक्रभ हिश्रा अञाव उहे भागव भाग के निक इस । का फिक्र मान का का लित कान (यज्ञाल, আহার সঙ্গে প্রমাহার জ্ঞানও সেইকপ। এই মহাস্তা দেখিয়াই অসভা বকার জাতি চমকিত হইয়াছে, এবং ইহার বিষয় চিস্তা করিতে 'গিয়াই ভিন্ন ভিন্ন বস্তুতে এই সভাকে আনরোপ করিয়াছে।

সকল পদ্মাবলস্থিগণই ইহা বিশাস করেন যে, "এক ই জিয়াতি সহাসত্থা বিদামান বহিরাছেন, যন্থারা মানবন্ধীবন নিয়ামত।" এ ছলে কেহ কেহ প্রশ্ন করিতে পারেন যে, "এবিদ্ধান্দ্রিয়া ত ঈশার মানেন না ?" তাঁহারা এরপ

ন্ধার মানেন না বটে; কিন্তু তাঁহাদের জীবন কর্ম্মের (Law of Karma) অধীন, ইহা বৌদ্ধার্মাবদন্ধিগণ বিশ্বাস করেন। ইহার অর্থ এই যে, জীবন পার্থিব নিরমের অধীন নহে, ইহা এক ইক্রিয়াতীত নিরমের হারা শাসিত। জীবনের এক অনস্তপ্রসারিত ইক্রিয়াতীত ক্ষেত্র রহিয়াছে, তাহা হইতে জীবন আইসে। ইহাও এক অনস্ত সহা ও শাসনশক্তিতে বিশ্বাসেব ফল।

তৃতীয়ত:--ভিন্ন ভিন্ন ধর্ম তুশনাবাশে দেশিতে পাও্যা যায় যে, এই সভা বা শক্তি যে নামেই অভিহিত হউক ना (कन, कीवनरक इंशाज अधीन कज़ारे धर्मा । अगरं उर जिला धर्म्ममञ्जूषा एष्ट्रव त्वारक द्रिष्टे वामना त्य, खीतनत्क किं छेपार्व्य এই শক্তির অধীন করা যায়। বৌদ্ধদিগের উদ্দেশ্য তাহাই। তাঁহাল ইন্দ্রিয়কে সংঘত করিয়া, ফদয়ের সমগ্র বাসনাকে বিনাশ করিয়া জীবনকে এই নিয়মের অধীন কবেন। হিন্দ্র মনে এই বাসনা যে, জীবনের অধিপতি ধিনি, জীবন তাঁহার অনীন করিতে হইবে। ঐীষ্টান প্রভৃতি অন্যান্ত धर्मावनशीमाराव ७ ८ विधान त्य. এই ই क्रिया छै उ শক্তিদাবা জীবনকে নিয়মিত করাই ধর্ম। এইরূপ বিখাস স্কল জাতিতেই প্রফ্টিত। অস্ভাবর্কবিদিগের মধ্যে ইহার ভাব কিঞ্চিং সুল। পাসিয়া জাতীয় লোকেরা মনে করে যে, মুরগীব ডিম ভাঙ্গিয়া দেবতাকে দিলেই তিনি প্রসন্ন হইবেন। কেহ কেহ মনে করে, কঠোরতপস্থা ঘারা দেবতা প্রসর হটবেন। সকলের এই এবই উদেশ্র যে, সেই পুক্ষ যাগ চাহেন, তাঁহাকে তাহা দিতে হইবে, তাঁহার ইচ্ছাব অধীন হইতে হইবে, ইহাই ধর্ম।

চতুৰ্ত:--- মাধাা খ্ৰিকত ৰ যুগে যুগে স্কল জাতিতেই অভিব্যক্ত ( Revealed ) হইয়াছে, এবং নানা গ্রন্থেও সেই অভিব্যক্তি দেখিতে পাওয়া যায়। কোন জাভিতে কোনও সত্য অধিক পরিমাণে প্রক্টিত হইয়াছে এবং কোনও জাতিতে বা অর ফুটরাছে। যেমন মানবচরিত্রের গুণাবলী ভিন্ন ভিন্ন জাতিতে ভিন্ন ভিন্ন ভাবে প্রক্ষৃটিত, সেইকাণ ধর্মজীবনেও ভিন্ন ভিন্ন ভাল ভিন্ন জাতিতে ভিন্ন ভিন্ন ভাবে প্রক্ষাটিত হইয়াছে। জ্ঞান, ভক্তি এবং কর্মাধর্মের এই তিনটী অঙ্গ। এই আধ্যাগ্রিকতত্ব সকল জাতিতেই অল্লাধিক পরিমাণে অভিব্যক্ত হইয়াছে ৷ হিমাল্য হইতে কুমাবিকাপ্র্যান্তবিস্তৃত ভারতবর্ষ নামক স্থানে যাঁহাবা জন্মগ্রহণ বরিয়াছেন, কেবল মাত্র তাঁহাদেব মধোই ঈগব সভা ঢালিয়া দিয়াছেন. ভাগা নহে। বাহিবেব বাণিজা যথন ছিল না, লোক ।ভন্ন एमा यात्र नारे, **ज्यन ला**क मत्न कति ज "आभारनत एमरन যেরপ পাট হয় এরপে আবে কোণায়ও নাই। কিছ এখন লোকে বলে "ভাল পাট ত আমাদের দেশ ছাড়া অক্ত দেশেও আছে।" পুরের ভিন্ন সম্প্রদায়ের লোকেরা মনে করিতেন যে, "আমাদিগের ধর্মের ভায় আবে ধর্ম জগভে नाहे।" किन्न अभन हिशामील लाटकता विश्वाम करतन (य. "नकन धर्मनष्यमारात्र मडारे नेचन-(अतिङ, मिरे रेखिनाडी ड প্রমস্ত্র হইতেই স্কল প্রকাশিত।" এই আধ্যাত্মিক স্ভ্যের

অভিব্যক্তি সকল দেশেই ভিন্ন ভিন্ন জাতিতে ভিন্ন ভিন্ন ভাবে ফুটিয়াছে। কোনও সভা অভিব্যক্ত হয় নাই, এমন দেশ কোথায় আছে? আবার ইহাও সভা মে, আধাাত্মিক-তত্ম সমূহ অপূর্ণ মানবভাষায় বিবৃত হইয়াছে, স্থভরাং ভাহাতে অনেক অম প্রমাদও বিদ্যমান রহিয়াছে। সকল ধর্ম গ্রন্থেই যেমন ঈশ্বর-প্রকাশিত-সভা রহিয়াছে তেমন ভাহার সঙ্গে জাতিগত অমও মিলিত আছে।

ইহা হইতে আমবা এক মূল সত্যে উপনীত হই। প্রথম ধর্ম্মের ভিত্তি মানব সাধারণেব প্রাকৃতিতে, অতএব ধর্ম্মের ভিত্তি সার্ক্রভৌমিক। দিতীয়ত:—ধর্মের মূল সত্য সাক্র-ভৌমিক। প্রথম অন্থি-সংস্থান, তৎপর রক্ত মাংস গঠন হইরাছে। তৃতীয়ত:—ধর্মের আকাজ্জা এবং অভিব্যক্তি সার্ক্রভৌমিক। এই সার্ক্রভৌমিক অন্থিসংস্থানের উপর বিশেষ বিশেষ জাতি এবং ধর্ম্ম বিশেষ বিশেষ অক্স গঠন কবিরাছেন।

অমুবাবন কবিলেই আমরা দেখিতে পাই যে, মানবজাতি একটা বৃহৎ পরিবার, ঈশ্বর পিতা, পৃথিনী
বাসন্থান এবং সকলে ভাই ভগিনী। সমগ্র মানব-জাতি
ধর্মের প্রশস্ত ক্ষেত্র। যথন দেখিতে পাই যে, ঈশ্বর
সকলেব পিতা, পৃথিবী বাসন্থান এবং অগতের সাধু ব্যক্তিগণ জ্যেষ্ঠসহোদর, তথন মনে কি মহৎ উদার বিশ্বজনীন
ভাবের উদর হয়! এই সংসাররূপ রঙ্গভ্যতিত আমরা
এক এক জন নট, অধিকারী পশ্চাতে রহিয়াছেন।
তাহার বেহালার সহিত হার মিলাইয়া জগতের সাধুবা গান
করিতেছেন।

বৈষ্ণবক্ষি মানবের ধর্মভাবকে পাঁচ ভাগে বিভক্ত ক্রিয়াছেন;—শান্ত, দাহ্য, স্থা, বাংস্লা এবং মধুব। এই সকল ভাব কি আশ্চর্যা রূপে ভিন্ন ভিন্ন জাভিতে প্রফুটিত হইয়াছে! মহায়া বৃদ্দের শান্তভাব, মহম্মদের দাহ্য ভাব, যীশুর বাংস্লা ভাব, হাফেজের স্থা ভাব এবং চৈত্ত্যেব মাধুর্যা ভাব। এক একজন সাধু এক এক ভাবেব অবভার ছিলেন। এই সকল চরিত্র আলোচনা ক্রিয়া আমাদিগের মনে কি মহৎ উদাব ভাবের উদয় হইতেছে।

সোভাগাবশতঃ বৈজ্ঞানিক গবেষণার গুণে যে মহৎ ভাব আমাদিগের অন্তরে আদিতেছে, তাহা যদি কেবলমাত্র ভাবেতেই থাকিয়া যায়, তাহা হইলে মানবের হৃদয় পরিবর্তিত হইবে না। যে চিস্তা কেবলমাত্র মানবের মনেই রহিয়াছে, দে চিস্তা জনসমাধ্রের পরিবর্ত্তন সাধন করিতে সমর্থ হটবে না। কোনও নৃতন ভাব আদিলে তাহার মূর্ত্তি গ্রহণ করা চাই। অর্থাৎ কতকগুলি জীবস্ত লোকের মধ্যে দে ভাব বদ্দল হওয়া চাই এবং সেই ভাবের সাধন হওয়া আবশুক। এতলে দৃষ্টাস্তমন্ত্রণ ছইটা বিষয়ের উল্লেখ করিতেছি,—আমাদেব দেশে ছইটা সভ্য আবিভ্ত হইয়াছে। প্রথম—বৌদ্ধধর্মের বাসনাবিনাশ, দিতীয়—অবৈহ্বাদ। বাসনা বিনাশের ভাব এই যে, সংসার ভাগে করিয়া স্ল্যাস অবলম্বন করিতে হইবে। অবৈহ্বাদের

মর্শ্র এই, "কেবা কার কারে বলরে আপন।" বুদ্ধের বাসনাবিনাশ সম্বন্ধে যে উপদেশ, ভাহা কেবল তাঁচার চিন্তার
ভিতরেই ছিল না; কিন্তু সকল শিষ্যকে এট উপদেশ
দিয়াছিলেন। এইরূপে ইহার শক্তি বাড়িল মানবেব
চিন্তাকে ফিরাইল। এইরূপ অবৈতবাদ সম্বন্ধেও দেখা যায়
যে, শক্তরাচার্যোব পরে পরমহংস দল এই মত প্রচাব করিতেছেন। ডারুইনেব ক্রমবিকাশের মত অনেকের হৃদ্যকে অধিকার করিয়াছে, ভাহা সকলেই জানেন। এইরূপ সার্মভৌমিক
ধর্মভাব যদি কেবল ক্রনাভেই থাকে, তবে মানবস্মান্তের
চিন্তাকে পরিবর্ত্তন করিভে পাবিবে না। অত্রব ইহা সাধন
করিবাব জন্ম সাধক দল চাই, শুরু পরম্পরা চাই, অস্তথা
ইহার শক্তির বিকাশ হইবে না।

বর্ত্তমান সময়ে এই সার্ব্রভোমিক ভাবের ক্ষেত্র রাক্ষসমাজ। ব্রাক্ষসমাজ বলেন,—"জগজের পশ্চাং এক সরা বিদামান বহিয়াছেন, তাঁহা হইতেই জীবন উৎপর।" এই ভাবের উপরই ব্রাক্ষসমাজ দণ্ডারমান। এই ভাব সাধন কবিলেই শক্তি জাগিবে। একবার মাল্রাজে দেখিয়াছিলাম যে, একটা "ক্ষ্যিকলেজ" বহিয়াছে, তাহাতে ছাত্রদিগকে বিদেশীর ক্ষয়িপালী হাতে কলমে শিক্ষা দেওয়া হয়। এইরপ করিবার কারণ এই যে, কেবলমাত্র উপদেশে পরিকার জ্ঞানলাভ হয় না। সার্ব্যভৌমিক ধর্মজাব বে জগতে প্রকাশ হইতেছে, কাজ করিবার যদি ক্ষেত্র না থাকে, তাহা হইলেইহা মানবচিত্ত অধিকার করিতে পারিবে না। ব্রাক্ষসমাজই সেই ক্ষেত্র।

গৃষ্টধর্ম জগতে জরী হইবার কারণ কি ? যীও নিজের চিন্তার জিতবে উপদেশের জলস্ত চবি দেখাইয়াছিলেন। সাঁচাকে প্রাণ দিয়া না ধরিলে তাহার শক্তি হয় না। প্রেমেব বলে সভ্যের বল, অত এব ইহা সাধনেব জস্ত ক্ষেত্র চাই। ব্রাহ্মসমাজ সেই ক্ষেত্র। তাই বলিয়া মনে কবিতে হইবে না বে, ব্রাহ্মধর্মবিলয়ী সকল সমান্তই আমাদের এই ব্রাহ্মসমাজের ক্রায় হইবে। ভারতে হিন্দুদিগের মধ্যে ব্রাহ্মধর্ম আসিয়াছে অত এব হিন্দুর রক্ত ইহার দেহে না লাগিয়াপারে না। ইউরোপ কিয়া আরের দেশে গদি বাহ্মধর্ম যায়, সেধানকার রক্ত গায়ে লাগিবেই লাগিবে। ইংলত্তে ভয়্মী সাহেবেব সম্প্রদায় কি ব্রাহ্ম নন ৪ তাহারাৎ আমাদিগের স্থায় সার্ম্বভৌমিক ধর্মের উপাসক। তাহারিদেগের ভাবের অঙ্গ পৃষ্টীয়ান রক্ত বারা গঠিত, কাজেই আমাদিগের সহিত্র কিঞ্চিৎ প্রভেদ আছে। ব্যক্তিগত বিভিন্নতা গাকিলেও জগতে এই শক্তি অভ্যুদিত হইবে, জগতে উচা ব্যক্ত হটবে।

বর্ত্তমান সময়ে কোন কোনও বিজ্ঞ লোক মনে করেন যে, আত্রাস্ত গুক্ত না হইলে ধর্ম্মমাজ হাপিত হইতে পারে না। আবার কোন কোনও বুদ্ধমান, চিস্তাশীল লোকের মুথে ইহা শুনিয়াছি যে, সার্বভৌমিকভাব গ্রহণ করিয়া ধর্ম্মমাজ গঠন করিতে গারা যায় না। ইংলণ্ডে একজন ব্রাহ্মধর্ম্মাবলম্বী প্রতি রবিবারে যীশুর নাম পরিত্যাগ করিয়া প্রকাশ্য উপাসনা করিয়া থাকেন। কিন্তু তথাত তিনি

ভিন্ন ধর্মসমাজ গঠন করেন না। কারণ জিল্ঞাসা করিলে বলেন যে,—"থামার বিশ্বাস যে, এই সার্ক্ষভৌমিকভাব লইয়া ধর্ম সমাজ গঠন চইবে না।" এইরূপ কোনও সময়ে জগতের লোক ইহা বলিত যে, রাজার শক্তি ছাড়িয়া, রাজাতন্ত্র ছাড়িয়া, রাজা থাকিতে পারে না। আমাদের দেশে ব্রাহ্মণেরা বলেন যে "বর্ণভেদ পরিত্যাগ করিলে জনসমাজ থাকিতে পারে না।" এখন দেখিতে পাই, প্রজাতন্ত্র প্রবল হইয়াও বাজ্য চলিতেছে, জাতিভেদ ভাঙ্গিয়া দিয়াও সমাজ চলিতেছে, ববং প্র্কাণেকা অতি স্থলর কপেই চলিতেছে।

যাঁহারা রাজতন্ত্র বাস্ করিতেছেন, তাঁহাদের পক্ষে ইচা ৰলা স্বাভাবিক যে, রাজাকে বাদ দিল্লে বাজা থাকিবে না। জ্ঞান্তশাস্ত্র বিশ্বাসকারীয়া এবং গুরুবাদিগণেবও এই বিশ্বাস স্বাভাবিক যে, গুরু ও জ্ঞান্ত শাস্ত্র ভিন্ন কি করিয়া ধর্ম থাকিবে ? মানবেব প্রকৃতির উপবেই ধর্ম্মের ভিত্তি। অদ্য যাহা লোকে বিশ্বাসকরে, কল্য তাহার পরিবর্তন হইতে পারে; কিন্তু তাই বলিয়া মানবের বিশ্বাসের শিথিলতা ইটবেনা।

শক্ষার স্থিরতা, উদ্দেশ্যের একতা এবং সাধনের দৃঢ্ডা এই তিন্টী ভণ ছাডা ধর্মসংস্কার, সমাজসংস্কার কিমা বান্ধনৈতিক সংস্থাব হইতে পাবে না। ব্ৰাহ্ম মাত্ৰকেই এই কথা মনে রাখিতে হইবে। যদি এই উদার ধর্মাবল্মী সমাজকে রক্ষা কবিতে চাও, দশলনে মিলিয়া ঠিক কর, কি कविटा बहेरव, हिस्तक हक्षत बहेरज मिश्र मा, नक्कारक मह বাৰ: ঈশবের মহিমা অপেকা নিজের মহিমা যাদ অফুদ্রান कवित्रा (वर्षा ९, निष्कत माणा यनि वर्ष कतिएक हा छ। कि हू हे হটবেনা। যতক্ষণনাবিমল এদয়ে সতাকে চাচ, ততক্ষণ উদেখের এক ভা হইবে না। প্রত্যেকে চাও কি যে, পৌত্ত-লিকতা এবং স্বপ্রকার কুসংস্থাব দেশ হইতে দ্র হইয়া যায় 👂 একমাত্র সত্যস্বরূপ ঈশবের আবাধনা চাবিদিকে ব্যাপ্ত হয় গ ভোমরা চাও কি, মানবসমাজে ভাতৃত্ব ভাপিত হয়, নরনারীর জঃখ জ্দিশা দূর হয়, জগতের পবিবতন হয় ৭ বদি ভাহাই চাও, তবে অগ্রাসর হও। নিজেব মাপা বভ করিবার ইচ্ছা वाथिए ना, তाहा हहेला এট धर्म्य ट्यामात्र व्यक्षिकात्र नाहे, তুমি এই ত্রাহ্মধর্মের অনুপযুক্ত, ঈশ্বরের অনুপযুক্ত এবং মহৎ বিষয়ে হাত দিবাব অফুপযুক্ত। উদেখে এক হও, नाधान पृष्ठ इ. इ. वरमात्रत्र श्रव वर्मद याउँक निताम इहे । না। অবলা একটুক তৃক্লতা আসিল, মতের পার্থকা হইল; কিন্তু ভাহাতে নিরাশ হইও না, দৃঢভাবে সাধন কর। সভ্য ধর্মের সাধন কর। এই মহৎ উদার এবং সার্ক-ভৌমিক ধর্ম ঈশ্বর জগতে আন্যান কর্মিবাছেন, তজ্ঞ ভাঁহাকে ধল্পবাদ প্রদান করি। এই সার্বভৌমিক ধর্ম আমর। পাইয়াছি, তিনি করণা করুন, আমরা যেন আমাদিগের দারিত্ব মধ্তব করিতে সক্ষম হই এবং তজ্জন্ত আমবা তাঁহার নিকট আর্থনা করি এবং তাহার কুপার প্রাণী হই।"

#### ৯ই মাঘ মঙ্গলবার।

ष्ममा मन्दित ब्राक्तिकानमास्क्रत উৎनव इत्र। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী উপাদনা করেন। তিনি যে উপদেশ প্রদান করিয়াছিলেন, তাহা এখনও প্রাপ্ত হওয়া যায় নাই। প্রীমতী চঞ্চলা ঘোষ ও প্রীমতী হেমলতা সরকার অপ-রাঙ্গে প্রাবন্ধ পাঠ করেন এবং শ্রীমতী অবলা বস্থ মৌধিক কিছু বলেন। অপর দিকে ত্রাহ্মগণ ২৩নং কর্ণওয়ালিস্ ষ্ট্রীষ্টত্থ ভবনে সমবেত হইয়া প্রাতে উপাসনা করেন। এীযুক্ত আদিনাথ চট্টোপাধ্যায় আচার্য্যের কার্য্য করেন। ভিনি সমবেত প্রার্থনার পরে নিয়লিথিত মর্শ্বে উপদেশ দেন ;-- "বন্ধুগণ, অনেক উপদেশ প্রবণ করা হইরাছে, কিন্তু জীবনের অভিজ্ঞতায় দেখিলাম, উপদেশে বিশেষ ফলোদয় হয় না। আমরা অনেকেই উপদেশের অতুসরণ কবি প্রাণের ভিতরে গুরুরপে, আচার্যা আমাদের রূপে অধিষ্ঠিত থাকিয়া নিয়ত সেই মহান প্রমেখব যে সকল উপদেশ দিতেছেন, তাহা আমবা কয়জনে পালন করিয়া থাকি ? তাহা যদি পালন করিতে পারিতাম, তবে কোনই অভাব থাকিত না। অতএব আমুন, আমবা সকলে মিলিত হইরা সেই বিখপতি প্রম শুরুর মহোপদেশ স্কল প্রাণপণে পালন কবিতে আবস্ত করি। সেই উপদেশের ন্তার क्रगढ चार्व (कान ९ উপদেশই नाहे। चामता वाक्न चरुत यनि आर्थना कति, आश्रिष्ठिश कति, তবেই তিনি आमानिशक ধর্ম-পথ দেখাইয়া দিবেন। এমন উপদেষ্টা আব আমরা কোথায় পাইব ? তাহার উপদেশের ক্রায় এমন উপদেশ আর কোথায় ভূনিব ?

অপরাহ ৩ ই ঘটকার সময় ব্রাহ্মসন্মিলনীর অধিবেশন হয়।

শ্রীযুক্ত নবদ্বীপচন্দ্র দাস মহাশয় সভাপতির আসন গ্রহণ করেন।
আমাদের ময়মনসিংহের ব্রাহ্মত্রাতা শ্রীযুক্ত বাবু বরদাকাস্ত বহুর হরিনাম সম্বন্ধীয় একথানি হুদীর্ঘ পত্র সভাতে পঠিত হয়।
তৎপব উক্ত সম্বন্ধে কেহ কেহ স্থায় মন্তব্য প্রকাশ কবিলে সভা ভঙ্গ হয়। সন্ধ্যা ৬ ই ঘটকার সময় সাধাবণ ব্রাহ্মসমাজের বাধিক সভার অধিবেশন হয়।

## ১০ই মাঘ বুধবার।

অদা প্রাতে ৬ ঘটকার সময় কীক্তন আবস্ক হয়। তৎপর শ্রীযুক্ত উমেশচন্দ্র দত্ত মহাশয় বেদী গ্রহণ কবিয়া উপাসনা করেন। তিনি নিয়লিখিত উপদেশ প্রদান কবেন .—

"মহাত্মা যীত যথন ধর্ম প্রচাবে রত ছিলেন, তথন তাঁহার অবতা ভূতপ্রত্ম ব্যক্তিব ভায় হইয়াছিল। কথন কোথায় পাকিতেন. কি থাইতেন, কি বলিতেন, কিছুই ঠিক ছিল° না। একদিন পদরক্ষে কোনও প্রদেশে প্রায় ৩০।৪০ তেশে যাইতেছিলেন, প্রিমধ্যে বেলা ছই প্রহরের সময় প্রপ্রান্ত হইয়া একটী কূপের স্বিকটে উপবিষ্ট হইলেন। এমন সময় একজন জীলোক সেই কূপ হইতে জল লইবার জন্ত উপস্থিত ইইল। যীত প্রায় কলেবর, পিপাসার ভাঁহার কঠ তক্ষ হইয়া গিয়াছে; কিছ

ভণাপি তাঁহাব নিজের হঃথ ভূলিয়া দেই স্ত্রীলোকটীকে সম্বোধন कविन्ना विलालन, — "जूमि त्य जन नहेट आमिन्नाइ, जाहा পান কবিলে পুনবায় তৃষ্ণা পায়; কিন্তু আমার নিকট এরূপ জল আছে যে, পিপাদিত প্রাণ হইয়া তাহাপান করিলে ন্সাৰ ভৃষ্ণাপায় না। যীভৱ কণা শুনিয়া স্ত্রীৰোকটী অবাক্ হইয়া গেল। কথা প্রসঙ্গে ঈথরের কথা উঠিলে সেই জ্রীলোকটি ষীশুকে বলিলেন "Our fathers worshipped in the mount but you say that Jerusalem is the place where we ought to worship God." व्यापार वामारनंत शृक्तशूक्रयंगन পর্বতেব উপবে উপাসনা করিতেন; কিন্তু আপনি বলি-তেছেন, জেরুজেলম নগরে ঈশবোপসনা করা কর্ত্তব্য। যীশু তহত্তবে যাহা ব্লিয়াছিলেন তাহার তৎপর্যা এই, "ভদে। আমাব কপা প্রভায় কব। প্রমেশ্র চিনায় প্রমাত্মা, উহিরে উপাদনার কোনও স্থান, কাল নাই। যেখানে ইচ্ছা হয়, উপা-সনা কর।" ধীশুব এই কথার মধ্যে ব্রহ্মপুজাব যথার্থ তত্ত্ব নিহিত বহিয়াছে। পকাত্ৰাদিগণ জড়কে দেবতা বলিয়া পূজা কবিত, ভাহা অতি নিরুষ্ট পূজা। অপর দিকে য়িছদীবা জের-সাল্মের দেবমন্দিরে উপাসনা করে, আবাধনা কবে, ইচাও প্রকৃত পূজা নহে। এই জন্ম যীও বলিগাছিলেন যে ''এই দেব মন্দিৰে ঈশ্বৰের পূজা আবদ্ধ হইয়া থাকিতে পারে না।" ভবে কেমন কবিয়া এবং কোণায় ভাঁচাৰ উপায়না হইবে গ इंश्व फेडरव याच विवया: इटलन . — 'केबन व्यानस्तल, তাগকে কেবল মত্যভাবে উপামনা কবিতে হইবে, দেশ কালেব বিচাৰ নাই।" কথিত আছে, যাঁশুৰ এই কথায द्वीरलाक्ती पिराङ्कान लाड करिया नगरवानी पिशरक दलि. ड लागिन रव '' ५ क भहाशुक्त वाित्रवाह्म, जिनि झेबरबैत । আৰ্শ্চিষ্য ভত্মকল প্ৰকাশ কৰিছে ছন :"

এই সাধ্যায়িকাতে চিম্বা এবং সালোচনা করিবার বিশেষ পথা আছে। প্রথমতঃ ঈশ্বরকে "জানিশাপুজা কবা .'' দি ভীয়তঃ ''ঈশ্বকে প্রাণ যোগে সভা ভাবে উণাদনা করা<sub>।</sub>" इंडींबड:-- "क्रेयन डांश्रत अंहड डेलानकरक अरवस्य कर्यास्य ন' জানিয়া অনেকে ঈশবেব গৃজা কবে, তালা সভা পূজা নছে। এই জগতের পালনকওঁ। প্রমেখবের পূজা জগতের স্কৃত্রই ≥हेट्डाइ, व्यानक्ट्रेडं!ाक ना कानिया পूजा कतिरहिए। কেইবাজডেব পূজা কবিতেছে, কেই বা চল্ৰকে, সুৰ্যাকে (कर वा পक्ष प्रदित भूजा करि: ১(छ। तुक, वाठा, भुज, भुका, কটি প্রজাদিকেও কত কোক দেবতা ভাবিয়া পূজা করিয়া থাকে। স্টেক্টাবেমেখন স্টির অভাত, তিনি কোন স্ট-वेन्द्र इंटेटें भारतिस्ता, ७ वे उड़ान ना भाकाय माञ्च केन्द्रित জতি, 'তিনি মবেণ, বাচেন, বোগগ্ৰস্ত হন,' প্রভৃতি মানবায় ভাব আবোপ কবিয়া বাকে।

এই পূজাতে জীবের যে কিছু উপকাব হয় না, ভাছা কে विकारक भारत्रन १ शी छात्र चार्रक,--- "अक्रभ माधरकता (प्रवासक, সর্গলোক প্রাপ্ত হয়; কিন্তু ভাহারা আমাকে পায় না।" অর্থাৎ ভাহারা সভাস্থরপ ঈশ্ব হটতে বঞ্চিত হয়। প্রভ্যেকেই নিজ

করিবার জক্ত মানবের জন্ম, সত্য ভাবে ঈশ্বর পূজা না कतिता जाहा नाछ हत्र ना। উপনিষদে আছে:--"এই अमत পুরুষকে না জানিলে কেহ নবজীবন লাভ করিতে পারে না।"

**'পৌরাণিকভাবে** এবং প্রতিমাতে মাহুষ ভাবে ঈশবের পূজা করিতে পাবে না এবং তাঁহার জন্ত প্রার্থী হইতে পারে না। অধিকাংশ স্তলেই "ধনং দেহি, ষশো দেহি" প্রভৃতি কোনও কাম্যবস্তুব জন্ম প্রার্থনা করিয়া থাকে। কেবল মাত্র ঈশার লাভের জন্ত যে পূজা, ভাহাই প্রকৃত পূজা। প্রকৃত ঈশ্ববজ্ঞান না হইলে, সেইকপ ভাবে ঈশ্ববেৰ পূজা कतिएक भारत ना। 'भत्रम कान लाख' कविरलहे निक्नहेरक ছাডিয়া প্রকৃষ্টকে ধরিতে পারে। বেদবাসি প্রাণ রচনা कतिया निचटत्व निक्रे अड्डे विषया कथा शार्थना कवियाहित्यन যে,— "হে ভগবন ! অজ্ঞতা ও চঞ্চলতা প্রযুক্ত তোমাব আকার কল্পনা করিয়া যে .দাষ কবিয়াছি, তাহা ক্ষমাকর ।" ঈশ্বকে না कानिया (त श्रक्षा करत, छानामय श्रेटन (म मञ्जूश श्रेया शास्त्र ।

विजीय ठः-- ঈश्वतिक सानिया পূজा कता। हेश कि मन्दर, অগ্ন্য অপার বিনে, তাঁহাকে মাহুষ জানিতে পাবিবে ? বস্ত ভঃ कीशांक कानाव अथ अहे नाइ (य, कैशिव विषय मकलर জানিবে। কিন্তু "তিনি অনন্ত' এই ব'লংশত ঠাইরে সম্বন্ধে किছু जाना इरेग्राइ दोनट इरेटन, अञ्चला कि करिया बनिटन যে, তিনি অনস্ত প্রভাবে জ্ঞান, প্রেম, প্রভতি স্বৰূপের যে ছায়া মারুযের অন্তবে ভি'ন দিয়াছেন, মারুষ উঞারই পূজা কবিয়া গাকে।

व्यामना (मन्दिर अपने दार, दर केश्वरक व्यवसन करत, সেই উ'হাকে পাভ কবিতে সমৰ্থ হয়। প্ৰ'টীন গ্ৰিনিণেব অনেকেই এক্ষজান লাভ কবিষাছিলেন। বভ তপ্রার প্রে क्कार्ति। পार्कन करिया उँ। हाता एकमन इन्मन स्था निया গিয়াছেন। মধাযুগে ঈশা, মহত্মদ, নান্ক প্রভতি সাধু ভক্তগণও ঈশ্বকে শাভ ক্রিয়া কভ তত্ত্ব প্রকাশ ক্রিয়ার্চেন। আমাদিগের পূজ। মংবি দেবেরুনাথ ঠাকুব নিজ অভিজ্ঞাতার কপা এই বলিয়াছেন—"এই অপ্রধানী অনৃত পুরুষট সকলেব উপাস্ত, অন্তবে আত্মাদাবা তাঁহাকে স্পশ কৰা যায়, এই আত্মজ্ঞান বাবা ঠাচাকে জানিতে পারা যায়৷ আনাদিগের আহাতে ঈশ্বরের মান্দ্র আছে, তথায় তিনি বিবাজ করিরা थारकन ।

ष्यत्नरकत्र हेळ्डा (यु. क्रेन्ट्रेन्ट्रक्त ह्राह्म (मांश्रद्धा किया हेश तुषा (5हा। जेवत रक्षियरणाहर नर्हन, हेक्षियरणाहत मभूनाय বস্তুই বিনাশনীল। যিনি চিনস্তা, অবিনাশী, তাঁহাকে বাছ रेक्सिय घाता कानिवात (७%) तुथा।

, ভূতীয়ভ:—"God is a spirit and you must &c &c. व्यामोभिराव थातान देशानयमकाव बक्तवामी भागव मरत्र बीखा কেমন ঐকাভাব! সভা হুই ভাবের হয় না সভা প্রকাশিত হটগে সকলেই এক হইয়া যায়। **কেরু**সালেমের ঋষি যাহা বলিয়াছেন, আমাদিণের ঋষিরাও তাহাই বলিয়া-নিজ কাম্যাত্যায়ী ফল লাভ করে; কিন্ত বে পরমবস্ত লাভ ছিন। ঈশার জড় পদার্থ নত্নে, ঠাছার প্রতিমা হুঁইতে পারে

না। অনন্ত, অব্যক্ত বিনি, তাঁহাৰ তুলনা কোথায় ? তাঁহা-তেই তাঁহার তুশনা, তাঁহা ছাডা সকলই অনিত্য। বাছ উপকরণে ঈশবের পূজা হয়না; যাহার যেরূপ ভক্তি, সেই অনুসারে সে ফণ পাইবে। ইন্দ্রিয় যজ্ঞ করিল, ঈশ্রকে পাইল না, বাক্যসমূহ আড়ম্বর করিয়া যজ্ঞ করিল, ঈশ্বরকে भारेन ना, मर्कास्य आत्मत याख्य श्रेषत आकाशिक श्रेंलन। এই যে প্রাণযোগে ঈশ্বর উপাদনা, ইহাই প্রক্ত উপাদনা। এই উপাসনাতে হৃদয়ই আসন, বাহ্য আসনের প্রয়োজন ন।ই। নিজ হৃদয়কে পরিষার করিয়া সেই পবিত্রশ্বরূপকে বৃদাইতে हहेरव, এখানে দौপ 'बाबाकान', পूष्पाक्षनी "किंक, প्राम, শ্রম।" বলিদান কোন বাহ্ন পদার্থ নহে, কিন্তু অস্তরের "क्वाप्रना।" टेनरवनाः "आञ्चप्रमर्थनः," आञ्चारक इक्टेरमरवत्र চবণে দিতে হইবে। এইরূপ প্রাণ্যোগে ঈশ্বরের পূজাই প্রকৃত পূজা। তিনি বাক্যের আমাড়ম্বৰ চাহেন না, প্রাণের অমুরাপ এবং চক্ষের জল চাহেন। তিনি এই বিশ্বের প্রাণ হট্যার্হিয়াছেন, তিনি স্ক্তাই বিদামান বহিয়াছেন। জের-मालाम, পर्वाक, ভীর্থে, স্বাতই তাঁহার পূজা হয়। यनि अहे शानारा । हाहारक भूका करा यात्र, जात मर्सवारे भूका হয়। কাম্যবস্তু লাভেব আশোবিবজ্ঞিত হইয়া, নিঃস্বার্থভাবে ठे। हारक ( श्रम क वि ल है । है। होत शक् छ शृषा हम ।

ঈশ্বন স্বাদাই অপরকে তাঁহার প্রেমের অংশী করিছে চাহেন। মানবকে প্রেমেব পাত্র কবিষা প্রেম বিনিময় কবিতেই যেন ঈশ্বৰ জগৎ সৃষ্টি কবিয়াছেন। তাঁহাৰ এই भ कहा (काशांस निक कहेर्त ? अप अगर डीहॉरक आर्ना, উদ্বিদ্পত্ত অজ্ঞানত ২ আছের বৃগিয়াছে, কত কোটি কোট নিরুপ্ত শীব রহিয়াছে, ভাহাবা কি তাঁহাকে প্রেম করিবাব অধিকাবী ? কেবল মাত্র মানব আত্মাই এই পর্ম পিতাকে লাভ কবিয়াছেন। মানবামা তাঁথাকে জানিয়া পূজা कतित्त, छाहा इनेत्नरे जाँशांव माकल भून इरेटव। खाँशांव ইচ্ছা মানবপ্রাণ উচােকে জানিবে, পরমধন বলিয়া বুঝিবে, প্রেমতে এবং সভা,ভাবে মিলিবে। এই বিশাল আশা করিয়া তিনি বদিয়া রহিষাছেন। "হই পক্ষী এক বুকে, উভয়ে উভয়েব স্থা হইয়া প্রেম সম্ভোগ করে, প্রেম পায় এবং প্রেম দেয়, প্রেম বিনিমর কবে।" মানবপ্রাণ তাঁহার প্রেমতে মগ্ন হইয়া তাঁহাতেই বাদ কবিবে, তাঁহাতেই ক্রীড়া कतिरव এवः चानन উপভোগ कविरव। श्रेशंरतत क्रेशाय আমাদিগেব কি দেই গৌভাগা হইবে যে, তাঁহাকে দতা স্বরূপ দেবতা বলিয়া আমরী লাভ কবিব 📍 তাঁহার প্রকৃত পূজার क्र क्र कि मिल्दि नगरन इहेग्राहि। कड नाधक शाहेग्राहि; কিন্তু প্রকৃত ভাবে তাঁহার পূজা যদি করিতে না পানি, তবে সকলই নিফল। আমরা তাঁহার সঙ্গে এক পাণে মিলিভ ১ইব, এই প্রতিজ্ঞা দইয়া উপাদনায় প্রবেশ কুরি এবং যাহাতে ভাষা পালন করিতে পারি, ভজ্জায় সকলে তাঁহার নিকট প্রার্থনা क्ति. डाँवात कत्रणा जिका कति, श्रेयत आमानिरणंत्र महाग्र

व्यभन्नाक् व चिकान गम्ब शानिविचन बादन नकरन नम-

রূপক।

'যদি চাহ এ ভবে বে ভাই পরিত্রাণ, (নগরবাসি রে)
সঁপ সঁপরে অক্ষপদে মন প্রাণ।
(হ'য়ে) দীনের দীন, ভূণেবো হীন,
হও রে তাঁর ক্রপাব অধীন, (নগরবাসি কে)
পাবে পাবেরে ছদরমাঝে স্বর্গধাম

খরুর ।

এদ হরা করি, অবস থেকোনাবে ( দ্রে থেকোনা রে )
পিব পিবরে স্থা প্রাণভরি। (জনম সফল হবে )
আপনা দিলে, সেই ধন মিলে,

ফদয়ে বহে প্রেম লইরী। (তার পরশ পেলে)
সেই প্রেমের সরসে, ডুব ডুব বে হরষে,
পিব পিববে হাধা নিজে পাশবি। (জালা দ্রে যাবে)

(नाध।

অপুন্ন প্রেমেব বীতি কে বাপানে তায়,

(তাব তুলনা নাই বে,) ( অতুলন প্রেম সে বে)
বলিতে রসনা হাবে বলা নাহি যায়,
কদরে পশিলে সে প্রেম মৃতপ্রাণ জাগে; (প্রেমের এমনি গুণ রে)
পরশে হবর কত স্থা-সম লাগে;
মবমে রাথিলে সে প্রেম, কুবাসনা হীন; (আর বাসনা থাকে
না, প্রেমের পরশ পেশে)

নয়নে বাধিলে সে প্রেম দৃষ্টি হয় নবীন;
জাত যুগে বাথ সে প্রেম নাম গুণগাণে,
মধুর আনন্দ রদ উপলিবে প্রাণে;
রদনাতে বাথ সে প্রেম, নাম সংকীর্ত্তনে
ড্বিবে সে প্রেমামৃত রদ আস্বাদনে;
সে প্রেম জানিও বে ভাই দক্ষ বত্র দার, (তাঁব ভুলনা নাইরে
অভুলন প্রেমমণি)

তার কাছে ধন মান সকলি অসাব।

मणकृती।

( यन ) त्कन त्व त्म त्थिम त्फिलि, विषय कुश्तक जूलि, ( ७ मिन यांग्र यांग्र तत्र ) .

নিজ হিত কর না বিচার (এ কি ল্রান্ত মতি রে') অসার স্থথের আংশ, ছুটিতেছ দশদিশে . (আশা মিটে না মিটে না)

ন্দানিতেছ বহি হংধ ভার; (কিবা লাভ ভার রে, স্থপ তাহে মিন্ধে না রে) ভোগের বিষয় কত, ঢালিভেছে অবিরত
(আশা পুরে না পুরে না যত ঢাল বেড়ে যায়)
নিবেনা ত বাসনা আগুণ (কেবল অলে উঠে রে)
নিজ হাতে নিজ আঁথি, ভাবিছ ঢাকিয়া রাখি,
তাহে আলা বড়িছে বিশুণ; (আলা নিভে না নিভে না)
এখনো স্থমতি ধব, আপনারে পরিছব,
সে শ্রীপদে লহ রে শবণ! (নইলে গতি যে নাই রে)
তাঁহার প্রেম পবশে, ড্বি সে অমৃত রসে।
পাবে পাবে মরণে জীবন। (পাণী তবে যাবে রে,
পুণাময়ের পরশ পেছে)

একতলা।

আনন্দে হৃদয়ে আজি গাও এক্ষ নাম রে,
গাও রে সকলে.মিলে দিও না বিরাম রে।
নগর মাতারে গাও, সে মধুর নাম রে;
নামরসে প্রেমাবেশে দেখ স্বর্গধাম রে।
কুপাময়ের কুপা বে ভাই কারু নহে বাম রে,
নিবাব পাপের জালা হব পূর্ণকাম রে।
ঐ দেখ এক্ষ কুপার উভিছে নিশান বে,
কি ভয় কি ভয় সবে পাব পরিত্তাণ রে)

(সবে যাব স্বর্গধাম রে,) ( স্থামরা হব পূর্ণকাম রে )

রগক।

মিল। পাপী ডাকে নাথ সকাতরে,

বিন্দু প্রেম দেও হে তাবে; (প্রেমময় হে;)
সেই বিন্দু হর সিদ্ধু প্রায় (যাহে) বাঁচে প্রাণ।

"হয়ে দীনের দীন, তৃণেরো হীন, ছও রে তাঁর কুপার অধীন"এই পদটা প্রমন্তভাবে গাহিতে গাহিতে কলেজ সোনারে সঞ্জীবনী কার্য্যালয়ের নিকট দিয়া মধন কীর্ত্তন দল যাইতে ছিল, তথন এক অপূর্ব ভাবের উচ্চ্বাস উথিত হইয়াছিল। "দীন না হইলে কেহ তাঁহার দারে যাইতে পারে না," এই ভাবট্নী সকলের প্রাণে অতি উজ্জ্বভাবে প্রকাশিত হইয়াছিল। এমন কি কাহার কাহারও বাহিরেও দৈঞ্জাব প্রকাশিত হইয়াছিল।

সংকীর্ত্তনের তৃতীর অন্তরাতে প্রেমমাহাত্ম কীর্ত্তি হইরাছে। "অপূর্ব্ব প্রেমের রীতি কে বাধানে তার, বলিতে
রসনা হারে বলা নাহি বার।" এই পদ আরম্ভ করিয়া পরিশেষে "সে প্রেম জানিওরে ভাই সর্বরত্ম সার, ভার কাছে
ধন মান সকলি অসার।" এই পদটী গাহিতে গাহিতে গারকগণ ভাবে বিভোর হইরা গেলেন। প্রেমে ত্মার্থ ও অভিমান
আছতি প্রদান না করিলে সেই পর্মধন সিলে না, প্রেমই
ধর্মের আদাস্ত, প্রেম পথ ভিন্ন অন্ত কোনও পথে অমৃত ধানে
উপস্থিত হওয়া বার না। সেই অপূর্ব্ব প্রেমের মাহাত্ম্য কীর্ত্তন
করিয়া গারকগণ, প্রোজাগণ ধন্ত হইয়া বাইতে লাগিলেন।
প্রেমমাহাত্মা, শ্রবণ কীর্ত্তন, প্রেমসাধন, প্রেমরসাভাদনে মানব
জীবনে আশ্রেম্য পরিবর্ত্তন আনয়ন করে। মুহুর্ত্তের মধ্যে
বেন প্রেম নিকেতনের তার সকলের সন্মুথে উন্মৃক্ত হইল।
ভাই ভাই পরক্ষান আণিজন করিতে লাগিলেন, পূর্ব্ব

অপরাধের জ্ঞা চরণে ধরিরা ক্ষমা ভিক্ষা করিতে লাগিলেন।
অভিমান, অহঙার দ্রে পলায়ন করিল। শুক্ষ মরুভূমিতে
যেন স্বর্গের অমৃত-বারি বিধিত হইল। ধ্যা প্রেমমর প্রমেশ্বর,
উৎসবে প্রেমার বিভরণ করিবারা জ্ঞাই কি ভিনি ভাঁহাব
হর্বল হ:খী সন্তানদিগ্রে নিমন্ত্রণ করিয়াছিলেন।

কীর্ত্তনদল বিহবলচিত্তে কীর্ত্তন করিতে করিতে সজ্ক পার্যস্থিত স্বর্গীর মহাত্মা কেশবচক্র সেনের গৃহে উপন্থিত হইলেন। সেধানে কিয়ৎকা কীর্ত্তন করিয়া শ্রীযুক্ত বার্ প্রভাপচক্র মজ্মদারের গৃহে উপন্থিত হইরা কীর্ত্তন করেন। বাত্রি প্রারু ৭ ঘটকাব সময় কীর্ত্তনদল মন্দিরে উপন্থিত হইলে উপাসনা আরম্ভ হয়। শ্রীযুক্ত কৃষ্ণকুমার মিত্র উপাসনা করেন। তিনি নিম্নলিধিত উপদেশ প্রদান করেন,—

<sup>"</sup>সাধুনানকের বিষয় আমবা অনেকেই অবগত আছি। নানকের অনেক শিষা ছিলেন। ওঁছোর শিষাসংখ্যা যথন দিন দিন বৰ্দ্ধিত হইতেছিল তথন কোনও সাধুনানককে বলি-लन, -- "जामात अप्तक शिषा आहि वरहे, किन छांशामिरणत মধ্যে প্রকৃত বিখাদী কয়জন ? ভাহারা প্রকৃত বিখাদী ভক্ত কিনা শরীক্ষা কবিয়া গ্রহণ করা কঠবা, অভ্রথা ভূমি ধক্ষের नारम कलक आनवन कतिरव। अक्रेश आनक निवा आहि, যাহারা তোমার ধল্মেব কথা কিছুই অবগত নছে।" নানক যেখানেই যাইতেন, তাঁহাৰ শিষোরা সংক ঘাইত। তাহা-দিগকে কিছুই কাল করিতে হইত না, বিনা পরিশ্রমে আহা-রাদি করিয়া স্থাথে দিন কাটাইত। একদিন নানক শিষ্যদিগকে ভাকিয়া বলিলেন,—"যাহারা আমার শিষ্য বলিয়া পরিচয় দিবে, অদ্য হইতে তাহারা আছে একপে থাকিতে পারিবে না, নিয়ম মত পরিশ্রম করিয়া আংধার সংগ্রহ করিতে হইবে। যে পরিশ্রম করিতে অনিচ্ছুক, সে এক বেলা আহার কবিতে পাইবে:<sup>শ</sup> এই কথা ভূনিয়া যাহারা কেবল মাত্র আহারের লোভে শিক্ ধর্ম অবলম্বন করিয়াছিল, তাহারা নানককে পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া গেল। অন্ত একদিন নানক পুনরায় শিহাদিগকে ভাকিয়া বলিলেন,—"অদা হইতে ভোমাদিগকে, কৃষিকাজ করিতে हहेटव, ममछ पिन काळ कतिया यथन शृंदह कितिया च्यामिटन, তথন থাইতে পাইবে।" এই কথা ভনিয়া আরও অনেক শিষা নানককে পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া গেল শিব্যেরা কঠিন পরিশ্রম কবিয়া অনেক শস্তু উৎপাদন করিয়া সংগ্রহ করিল। নানক একদিন বলিলেন,—"শহাগার আভিন লাগাইয়া দগ্ধ করিয়া ফেগ।" "এত দিন পরিশ্রম কবিয়া শক্ত সংগ্রহ করিলাম, ভাহা আত্মদ দিয়া পোড়াইয়া ফেলিব !" এই ব্লিয়া অনেক শিষ্য উাহাকে প্রিত্যাগ করিল। অবশিষ্ট যাহারারহিল, ভাহাদিগের এইতি নানক দিন দিন কঠোব ব্যবহার করিতে লাগিলেন। আরও ক্তকগুলি শিব্য চলিয়া গেল। **অবেশেষে নানক<sup>®</sup> যেন পাগলের ভার হ**ইরা গেলেন। .একদিন শিবাদের পাথর ছুঁড়িয়া মারিলেন, এইরূপ ভারস্থায় আরও শিষ্য তাঁহাকে ছাডিয়া চলিয়া গেল।

অবশিষ্ট অতি কম সংখ্যক শিষ্যকে লইরা নানক একদিন বাহির হইলেন। কিয়দুর গিয়া এক্টী শব দেখিতে পাইরা শিবাদিগকে বলিলেন—"এই শব ভোমাদিগকে ভক্ষণ করিতে হইবে।" এই কথার আবও করেক জন তাঁহাকে ছাড়িরা। চলিয়া গেল। অবশিষ্ট গুইজন শিষ্য বলিল—"প্রভা. আপনি মাহা বলিবেন, ভাহাই আমাদিগের পক্ষে মঙ্গলজনক, আত্র ব আমরা এই শব ভক্ষণ কবিব।" এই বলিয়া ভাহারা শব ভক্ষণে উদ্যত হইল। কিন্তু নানক ভাহাদিগকে নিবস্ত করিলেন,।

नानक (य डेलार्य निक भिषा वाहिया लहेबाहित्वन, क्रेबिव छ এই উপায়ে নিজেব স্থদন্তানদিগকে বাছিয়া লন ৷ কত লোক কত ভাব, কত ভাকাজ্ঞা লইয়া ধর্মবাজ্যে প্রবেশ করিয়া খাকে; কিন্তু ঈশ্বৰ যথন প্ৰীক্ষা কৰিতে আরম্ভ কৰেন, তথন आत्मक हे भन्छार भन् • हम्रा क्षेत्र विकास के विकास के कि রীতি দেশিতে পাওযা ্যায় যে, তিনি নিজ মধুর স্করপ कीरवन्न निक्रे श्रकाम करिया कोत्रक श्रानुक करिया शास्त्रन । যে পর্যাম্ব মনের মধ্যে পাপ এবং ভোগবাদনা থাকে, সে প্রবাস্ত এই বাজো কেহ স্থান পার না। কত সাধকের নিকট जिमि প্রকাশিত হট্যা তাহাকে প্রলুদ্ধ কবিয়া পুনরায় লুক্ষায়িত হইয়াছেন। আমানিগেব মধ্যেও কত লোককে তিনি তাঁহাব প্রেমেব বাজ্যেব স্থলৰ ছবি দেখাইয়া আকর্ষণ করিয়াছেন, পৰে তিনি লুকাইয়াছেন ' পৃথিবী অন্ধকাৰ হইয়া গিয়াছে, भाभ-इच्छा मत्न अवल इहेबा कूभरथ नहेबा याहेबाब ८० हो कविद्राष्ट्र । ज्थन भान करेब्राष्ट्र (य. "यांका प्राथिया व्यानिया-किलाम, मकल वृत्रि मनै हिका; मृत इंडेटंड यादा मछा विलग्न! অফুভব কবিয়াছিলাম, সকল বুঝি মিণ্যা, প্রেমেব কণা न्कन वृक्षि जुन।" धन्त्रतारका योहाता প্রবেশ কবেন, সকলেবই জীবনে এই রূপ বটিযা থাকে। সময় সময় বডই ছাথের দিন উপস্থিত হয়, আশাব আলোক নিভিয়া গিয়া পাপেব অন্ধকার গাঢ হয়। এই রূপ অবস্থায় অনেকেই পুনবাব সেবিমানী ≢ইয়া পচে।

व्यागानी कला ১: हे भाष, এहामरन व्यत्नक भाषी भतिकान লাভ কৰিয়াছে, এই দিনে জগতেব অধীশ্বৰ মানবেৰ প্ৰাণে প্রকাশিত হুইয়া থাকেন। আজ ভাহাব প্রদানন, আজ জামবা নিজকে নিজে এই প্রেল্ল করি, "যে আশাব কথা শুনিয়া আমরা এই ধন্মবাজো আসিয়াছিলাম, আমাদের জানেকে কি আশান্তকণ ফল দেখিতে না পাইয়া দূরে স্বিয়া शिवाहि ?" यनि त्कर अज्ञान थात्कन, जत्त छै।शिकात्क वांन ষে, তাঁচারা জানেন না যে, ঈখণের রাজ্যেব নিয়মই এই--"একপদ অগ্রদর এবং পরীকা।'' যে এই পরীকায় ভীত इत्र, সে ধর্মবাজ্যে প্রবেশ কবিতে পারে না। এই রপ তঃথেব मिन श्वानित्न (क এই वनिया शांकिटल भारत—"शं भिति सम কবিতে হয়, কট স্বীকার কবিতে হয়, করিব; কিন্তু ভবুও এই ধর্ম পবিত্যাগ করিব না?" এইরূপ আমবাও যদি ৰলিতে পারি—"হে ঈশ্ব, তুমি তোমাব এই ধর্মে আনিয়াছ, • এখন চারিদিক যদি অন্ধকার দেথি, তবু তোমাকে পাবতগগ করিব না; ভোগাকে দেখিতে পাই না বটে, কিন্তু তবুও ভূমি আছে এই বিশ্বাস করিয়া পড়িয়া থাকিব। মাত্র এইরূপ ষ্পবিশ্বাস অন্ধকারে পতিত হইয়া যদি তাঁহাকে পরিত্যাগ না

ক্রিয়া কাত্র প্রাণে ডাকিতে থাকে, তবে তিনি প্রাণে প্রকাশিত হইবেন।

পার্কাত্য প্রদেশে পাষাণের স্থায় কঠিন ভূমি রৃষ্টির জল পডিলেহ যেমন কোমল এবং চাষের উপযুক্ত হয়, সেইকাপ আমাদিগের পাপ-মলিন এবং কঠোর প্রাণ্ড অমুতাপের অক্রতে সিক্ত হইলে কোমল হয় ও তাহাতে পরত্রকার নামেব বীজ রোপণ করিলে স্থালর অস্কুর উৎপন্ন হয়। হে ঈশবের রাজোর যাত্রীগণ এস তবে আমরা প্রাণের মলিন্তা দূব কবিয়া, অঞ্জলে সিক্ত হইয়া প্রাণকে ব্রহ্মবীজোৎপাদনের উপযুক্ত কবি।

धयातात्कात याखीं मिश्राक व्यानक वाक्यिक वर्ष्ट भारे एउ रहा। কিন্তু বাহ্যিকক্লেশ অপেক্ষা প্রাণের ক্লেশ অবিক। প্রাণে এক একটা পাপপ্রবৃত্তি প্রবল রহিয়াছে, যাহাকে বডই ভালবাসি, ঐ পাপ পবিতাগি কারতে ঈশ্বর বলিতেছেন, ত।হা পবিত্যাগ না কবিতে পারিলে, ধর্মরাজ্যে প্রবেশ করিতে পারিব ঝা। অতএব সকলে মিলিত হইয়া সেই সাধনে প্রবৃত্ত হই। এই জন্ম জীবনে অনেক ক্লেশ পাইতে হইবে। ঈশ্ব প্রিয়রূপে আমাদের নিকটে প্রকাশিত হন, যথন তিনি অপ্রিয়র্নপে প্রকাশিত হইবেন, তথন ঠিক থাকিতে পারিব ना कि १ जियंत्र कननी ऋश्य श्रकाशित इन, आवात्र यथन ऋष-কপে প্রকাশিত হইবেন, তথন কি স্থিব থাকিতে পাবিব না ? ধন্মবাজ্যে প্রবেশ করিতে হইলে অনেক প্রীক্ষাতে উত্তীর্ণ হুইতে হুইবে। যথন ঈশ্ববেব স্পশ প্রাণে অমুভব কবিতে গাবি না, কিন্তু তাঁহাৰ মাধুষা অহুভৰ কৰি, তথন নিশ্চর ানি ঈশ্বর আছেন; কিন্তু আমার মলিন আত্মায় প্রকাশিত ১ইতেছেন না। "ঈশ্ব আছেন" এই বলিয়া ব্যাকুল প্রাণে ফ্রন্সন কফ্ন, ত'হার ক্রুণায় পাষাণ প্রাণ গলিবে, হাদয় कामन इट्रेंच ध्वः अन्ननारमञ्ज वीक चन्नुविक इट्रेंच ।

## ১১ই মাঘ বুহস্পতিবার।

অদ্য ভারতের বিশেষ দিন। অদ্য মহাত্মা বাজা বামমোহন বায় জ্যাতিভেদ প্রপীডিত, পৌতুলিক দেশে একমাত্র পবব্রহ্মের পূঞা প্রতিষ্ঠিত কবেন। এই দিনে ব্রহ্মক্রণা বিশেষভাবে ভারতে অবতীর্ণ হইয়াছিল। স্বতরং ব্রাহ্মজীবনের সহিত এই পাবত্র দিবদেব অভি ঘনিষ্টত্র সম্বন্ধ। ১১ই মাথের নাম স্মবণ ইইলেই ব্রাহ্মের প্রাণে আশা ও আনন্দের সঞ্চার হয়। যিনি সাবা বৎসব আধ্যাত্মিক শুক্তার মধ্যে বাস কবেন. তাহার কঠোব সদক্ষেও এই প্রতি দিবদে ব্রহ্মক্রণাব প্রতিপ্রেম বন্যাতে প্লাবিত ইয়া যায়। সারা বৎসব যাহার চঙ্গু হতে এক বিন্দু অন্ত্রাপের অঞ্চ পতিত হয় নাই, তিনিও এই দিবদে নিজের পাপ ও চ্ছুতি স্মবণ করিয়া খ্যাকুণভাবে জেন্দন কবিতে থাকেন। পাপী, তাপী, অসাধু, উপাসনা বিহীনের হৃদয়েও ১১ই মাথের উপাসনায় আশ্রুত্মী ঈশ্বাবিশ্রার গ্রাহ্ম হর। সকলের হৃদয় যন্ত্রই এক প্ররে বাজিয়া উঠে।

भाग (महे ७७ मिन উপস্থিত। উষার স্থানিত্ব নবকিরণের

সংক্ষ সংক্ষ ব্যক্ষ গণের প্রাণ ব্রহ্ম-প্রেমালোকে অফুরঞ্জিত হইর।
উঠিল। মৃত, অবসর, শোকসন্তপ্ত প্রাণ নববেশে নবভাবে
প্রবৃদ্ধ হইতে লাগিল, সংসার, জড় জগৎ সকল বিস্কৃত হইরা
ব্রাহ্মসাধক অপার জানন্ত স্চিদানন্দ্মর রাজ্যে প্রবেশে। নুধ
হইলেন।

व्यमा रक्षनी ७ वर्षिका व्यञ्जी उन्हेर्ड ना ब्हेर्ड मरन मरन সাধকগণ আসিয়া মন্দিরে উপবিষ্ট হইতে লাগিলেন। রাতি ৪ ঘটিকার সময় মন্দির লোকসমাগমে পূর্ণ হইয়া গেল। বেদীব हर्ज़िक्तिक याँशाबा विभिन्ना किलान, उाँशावा की खेन चात्रस कविलान। স্কলেব প্রাণে ভাবেব তবঙ্গ উত্থিত হইল। সুর্যোদিয় ছইলে, উপাসনাব ঘণ্টাধ্বনি হইল। তথন দ্বিতলত সংগীতভান ≱ইতে অতি সুমধুর কঠে সংগীত হইতে লাগিল। ১১ই মাঘ সংগীতকবিবাব জন্ম কয়েকটী মহিলা পূর্বে ১ইতে বিশেষ-ভাবে প্রস্তুত হহয়াছিলেন। তাঁহাদের মধুর কণ্ঠ নিঃস্ত ত্রন্ম সংগীত শ্রবণে সাধবগণ বিমৃগ্ধ হইয়া গেলেন। সংগীতেব পরে আচার্য্য মাঘোৎসবের মহাপূজার প্রাবস্থেব উপযোগী গভীব ভাবস্চক উরোধন আরম্ভ করিলেন। ব্রহ্ম দশন-পিপাস্থ সাধকগণের প্রাণ একীভূত হইয়া আচার্য্যের ভাবের স্থিত যোগদান করিল। চতুর্দিকে সভাসাগ্রে যেন প্রেম **उत्रक्र** डेथिङ इनेन। (य चार्त्त (य ভार्ति चानाकांत्र উপामना, छे পদেশ इहे शाष्ट्र, जाहा প্রতাক্ষ ना কবিলে লেখা পাঠ কবিয়া অনুমিত হয় না। নিম্লিথিত মধ্যে উবোধন হইয়াছিল ,—

শাংঘাৎদবের মহা আবাধনাতে প্রব্ত হইবার পূর্বে ঈশবের দেবক দিগকে শ্বন করি, স্বদেশে বিদেশে ইহকালে প্রকালে, বিনি ধেথানে আছেন, তাঁছার মহাউপাসকসভার সকলকে শ্বন করি। তাঁহার জন্ত ব্যাক্ল প্রাণ ধিনি ধেথানে আছেন, তাঁহারি জন্ত ব্যাক্ল প্রাণ ধিনি ধেথানে আছেন, তাঁহারিগেক শ্বন করি। তাঁহার প্রেমান্ত পান করিয়া াধনি যে সম্যে ধে দেশে ধন্ত হইয়াছেন, তাঁহাদিণের সকলকে শ্বনণ করি। জগতের সারু মহাথ্রাদিগকে শ্বন করি, তাঁহাদিগের চরণে প্রণত হই, আনাক্ষাদে ভিক্ষা করিয়া, শুভকামনা প্রার্থনা করিয়া ভাঁহার মহা পূজাতে প্রবৃত্ত হই।

মংহাৎসবেব সময়ে কোনও ভবনে যজের লারোজন চইলে,
পেই ভবনে অভিথিদের বসিবার জন্ত ঘর বাখিতে হয়, বিশ্রামস্থবাত ও আলোচনাদি করিবার জন্ত ঘর বাখিতে হয়,
নিমায়ভবাজিদিগকে সেই গৃহে আদর পূক্ক বসিতে দেওরা
হয়। আমাদেব উৎসবেরও এইকপ অনেক ঘর আছে।
ঈশবের ভবনে অনেক ঘর আছে। মহায়া যীও বলিয়াছিলেন
— "পিতার ভবনে অনেক ঘর।" কোণায়ও জ্ঞানীগণ জ্ঞানের
গভীর সাগরে নিময়, কোনও গরে ভক্তেরা ভক্তিরসে ডুবিয়া
রহিয়াছেন, কোনও গরে ক্রিবা আনন্দিত চিত্তে বসিয়াছেন।
এইরপ অনেক ঘরে অনেকে বসিয়াছেন; এসোঁ ভাইভগিনি,
সকলের জন্তই ঘর রহিয়াছে কাহাকেও বিমুথ হইতে হইবে
না। প্রভুর গৃহে জ্ঞানী, ভক্তা, ক্র্মী সকলেই বসিয়া
উৎসব সন্তোগ করিতেছেন। বাও, যাহার বেখানে ইছলা,
উপবেশন কর।

কিরপে আমরা এই উৎস্বে প্রের্ড হটব ? আমরা কি ভারে ভারে প্রবৃত্ত হইব ? ভিড়ের মধ্যে ব।ইবাব কালে যেমন সভর্ক হই, পাচে পকেট হইতে কেহ কিছু চুরি করে, আমরা কি তেমনি সন্দেহাকুলচিত্তে ঘাইবং ভিড়ের মধ্যে গেলে, আমারা शाग्रहे এই जन्न मठर्क हहे दा, भारह कि हू हाताहे। किन्र विस्मय विभिन्न ज्ञान खत्र भारे ना। किছू नुकारे बात बजा मिथान गारे ना , किञ्ज किছू पिवात क्या वाहे। (कान अर्थान इहेरन त्रथान যথন আমরা ঘাই, তথন স্বভাবতঃই আমবা চারিদিকে চাহিরা কথা মনে হয়, সেইক্লপ কোনও বিষয়ে কিন্তা কোনৰ স্থানে গিয়া বিশেষ আনন্দ সম্ভোগ করিলে ভালবাসার পাত্রদের কথা মনে পডে। আমাদের মধ্যে যিনি ৰাহ্যকে ভাল বাসেন, जना কি ভাহাদের কথা স্থারণ হইছেছে ? - যথন কেনিও মেলাতে ষাই, তখন ৰায় কবিবার জন্ত বাগ্র হইয়া থাকি, আজ আৰবা কি এখানে ভয়ে ভঁয়ে বদিৰ? পাছে কোনও প্ৰিয় জিনিৰ श्वाहेबा एक नि, शास्त्र स्नेश्वेत समग्रहो. धनमान मुव लहेबा यान । अमा तम कब्र हिन्दा करिय मा, अमा आमात्मत तमना, मकरन দিবার জ্বন্তু আসিয়াছি। আজ আর পকেটেব দিকে নজ্র রাখিব না। নিশ্চিম্ব মনে বসিব এবং ভাব বিতরণ করিব। এসো ছুইজনে মিলিয়া, পাচজনে মিলিয়া বসি, প্রেম বিভরণ করি। দেখ, কেমন মহাজনেরা ঘবে ঘবে ঈশ্বর চরণে ৰদিয়া প্রেম বিত্রণ কবিতেছেন। দেখ, ঈশ্ব মন্দিবের কি আশ্চর্য্য শোভা। ভক্তবৃদ্দ তাঁহার মন্দিব পুণ কবিয়াছেন। দেশ কালের ভেদ নাই। কেহ ভারতে, কেহ জুভিয়ার কয় গ্রহণ কবিয়াসকল ভুলিয়া গিয়া প্রেমেতে ঈশ্বর চরণে এক হইয়াছেন্।

অদা আমবাও উংসবেব দারে ক্রদর গুলিয়া সবলে মিলিয়া প্রবেশ করিব। যেরপ পূব্দ দার গুলিয়া অরণ উদিত হইরাছে, সেইকপ ঈশ্বরও উংসবের দাবে গুলিয়া আমাদিগকে প্রবেশের জন্ত নিমন্ত্রণ করিভেছেন। আজ এসো সকলে, উংসবের দারে প্রবিপ্ত হও, সাধুসভার প্রবিপ্ত হও। আজ তিনি নিশ্চম দুরে নংহন। নিকটে, অতি নিকটে; "ডেকেছেন প্রিয়ত্ত্ব কে রহিবে দবে;"—আজ কি তাহার হাত সকলের মাধার পডে নাই? বাত্রি প্রভাতের পূর্বেহ যে এথানে তাহার পূত্র কন্ত্রাগণ সন্মিলিত হইয়াছেন, তাহাদিগকে কি তিনি স্পশ করেন নাই? এ তাহারই উংসব, তিনিই ইহার করা। সমস্ত দিন তাহাকে ডাক, তাহার নুম গান কব, তাহাকে প্রাণ দেও। হ্রদর যেন আজ আর নিস্তেজ, মলিন না থাকে। সমস্ত তাহার চরণে দিবার জন্ত প্রস্তুত হইয়া উপাসনাতে প্রস্তুত হই, তিনি আমাাদেগের সহায় হউন।"

আরাধনাও অক্তি গভীর হইরাছিল। সচিদানক্ষমর,
লিব স্থানর পরিমেখর প্রাণে প্রকাশিত হইলেই প্রকৃত আরাধনা
হর। যে উপাসক তাঁহাকে দর্শন করেন না, তাঁহার
প্রকৃত আরাধনা হয় না। অদ্য আর বিভাব নাই, আচার্য্য
উপাসক সকলের প্রাণেই সেই একমেবাধিতীয়ম্ প্রকাশিত।

আবাধনা কালে সেই প্রেমমরের স্থাতিল সংস্পর্ণ প্রাণে পাইরা অনেকেই আপ্যায়িত হইয়াছিলেন। ঈশবের পূর্ণ আবির্ভাব আনেকেই প্রাণে উপলব্ধি করিয়া পরিতৃপ্ত হইয়াছিলেন। আরা-ধনার পর ধ্যান, ধ্যানের পরে সহস্র কণ্ঠ হইতে সমবেত প্রার্থনা-ধ্বনি উখিত হইল। তৎপর সংগীত হইলে আচার্য্য প্রেমমাহান্ম্য বিষয়ে নিয়লিখিত সারগর্ভ উপদেশ জ্বলস্ত ভাষায় বিশ্বত

শ্বাজ প্রেমের মহিমা বিবৃত্ত করিব। শ্বীরে শ্বীবে যেরূপ সংস্পূর্ণ হয়, আবীয়াতে আহাতেও দেইরপ হইয়া থাকে। শ্বীরের সংস্পৃশ কিরূপ, তাহা আমরা সকলেই অহ্ভব कतित्राष्ट्रिः পृथिभौत পথে চলিতে চলিতে কত লোকের সঙ্গে সংস্পর্ণ হয় তাহার (কছুট শক্তি নাই। কিন্তু আমরা तिथिटि शाहे, यांडादक . छाल ,वांति, यांडात गहिउ প্রীতির যোগ রহিয়াছে, তিনি রুখন আমাদিগকে ম্পার্শ করেন, কাঁধে হাত দেন, বাচ খাবা আবেটন করেন, তথন তাহার যে প্রাশ্চর্য্য শক্তি আমাদের উপর কার্য্য করে, ভাহা আমরা বিলক্ষণ অমুভব করিয়া থ।কি। যেথানে প্রীতির যোগ আচে, দেণানেই লোক সংস্পর্ণ করিরা থাকে। ৰখন শিশু শ্যায় শয়ন করিয়া খেলা কবিতে থাকে, প্রক্টিত নয়ন দ্বারা জননীর প্রতি দৃষ্টিপাত করে, জননী তাহাকে চুম্বন না করা পর্যান্ত তাঁহার প্রাণ যেন তৃপ্ত হয় না ৷ জননী শিশুকে বুকে ধবিয়া তাহার মূথ চুম্বন করিয়া কি স্বর্গীয় আনন্দ লাভ করিয়া থাকেন, তাহা অপরে কি বুঝিবে ? এক মাত্র পিতা মাতাই তাহা অমুভব করিয়া থাকেন ।

গুভক্লা यथन कीखान वाश्वि इहेग्राहिनाम, बीर्खन क ब्रिट्ड व विट्ड भाग ध्व अर्थ डिश्मोह्ब मधाव इहेग्राहिन। কিন্তু গায়কগণ যভক্ষণ প্ৰান্ত প্ৰস্পাৰকৈ ৰাভ•খাবা বদ্ধ প্যাস্ত যেন প্ৰাণ ভৃপ্তি লাভ ना क्रिलिन. <u>ভ ৬ ক্ষণ</u> শরীরে এইকপ সংস্পশ আমবা শবীরে कत्रिम ना। ইহার মধ্যে বাস্তবিক্ই মধুব্তা चारतक (मनियाधिः সংস্পৃশ হইয়া আছে। এইকণ আয়াতে আগুতেও थारक এवः जाशाज्य लात्न ष्यश्य ष्यानत्क्य प्रकार रहा। উৎসবের প্রাবত্তে চারিদিক হুইতে ব্যাকুল অবসর আছা স্থিলিত হইয়াছেন, সকলে আনন্দ উপশ্ৰ করিতেছেন কি ? 🌞 ভ জনে প্রাণে কত নিভেজভাব লইয়া আসিয়াছিশাম। 🕏ংসবের সময় উপাসনা মন্দিরে কত সাধু ভক্তেবস্মাগম इरेब्राएइ, छे९मरव अरवण माज रवन आरागत मिननजा पृत হুইরা প্রেল, প্রাণে কি এক অপূর্ম, ভাব আসিল, প্রাণ জাগিয়া डेंडिन, अनत्र कांभिन, कि आंक्टर्श मःस्थाने ?

আমর। অনুভব করি নাই কি বে, ঈশরের মন্দিরে
আমরা অপ্রেমিক হইয়া আসিয়াছিলাম, হঠাৎ কোণা হইতে
প্রেমের বলা প্রবাহিত হইয়া কদর ডুবিয়া গৈল ? এই সংস্পাশ
শ্বন প্রেমিক জনের প্রেমের সহিত সন্মিলিত হয়, তথনই
অমৃত ফল প্রস্ক হইয়া থাকে।

মাহ্নে মাহ্নে সংস্পূর্ণ হওরার স্থায় উপারের সহিত ও থেমের লংস্পূর্ণ হইরা থাকে । তাঁহার সংস্পূর্ণে সামাদের চৈতক্ত হর, আধ্যাত্মিক চক্ষু পুলিরা যার ৷ সেই সংস্পর্ণ কি কেহ প্রাণে অমুভব করেন নাই ? আজ এই ব্রহ্মনিদরে এমন কেছ আছেন কি, বিনি বলিতে পাবেন যে, এই বিশেষ দিনে ঈশ্বরের সংস্পর্ণ প্রাণে অমুভব করেন নাই ?

বড বাড়ী প্রস্তুত কবিলে বৈত্যতিক অগ্নি সঞ্চালিত করিয়া আনিবার জন্ম বাড়ীর গাযেলোহাব শিক দেওয়া হর। Benjamine Frankiin বেশমের স্তার ঘুড়ি উডাইয়া বিতাৎ আনিরা ছিলেন। এই যে প্রেমেব সংস্পর্শ, বাহা হনরে অনুভব কবিয়া থাকি, ইহা হৃদরের গুণ, ভাব ও চিস্তাশক্তিকে সঞ্চালিত করে। এই সঞ্চালনে এক হৃদয়েব ভাব অন্তুত উপায়ে অন্তু হৃদয়েব সংক্রামিত হয়। যেথানে এই প্রেমেব সংস্পর্শ নাই, সেধানে ভাব ও শক্তি বিনিময়ের উপায় নাই। আমি যদি ভোমাকে প্রীতি না কবি, কি কবিয়া প্রেমেব শক্তি আদিবে ? যেথানে প্রেম, সেথানেই কথায় কাজ করিয়া থাকে। আমার প্রতি যদি ভোমার প্রেম থাকে, তবে আমার কথার শক্তি ভোমার উপরে নিশ্চয়ই কাজ করিবে।

মহম্মদের জীবনচরিত পঠে কবিলে দেখিতে পাই বে,

মিশবের রাজা মহম্মদকে উপটোকন দিবার জক্ম তাঁহার নিকট

দৃত প্রেবণ কবেন। সহম্মদ মকা জয় কবিষা ঈশবের উপাসনা
করিবার জক্ম দেশেব সমস্ত রাজাকে নিমন্ত্রণ কবিয়া পাঠাইলেন। অপব সকল বাজাই মহম্মদেব নিমন্ত্রণ উপেক্ষা করিলেন, একুমাত্র মিশবের রাজাই উপটোকন দিয়া মহম্মদের
নিকট দৃত প্রেবণ করিরাছিলেন। দৃত মহম্মদের নিকট উপস্থিত হইয়া প্রণাম করিয়া উপটোকন প্রদান করিল এবং
মহম্মদের প্রজাবর্গ দেখারা দেশে ফিবিয়া আাসয়া বাজার নিকট

এই বলিল যে মহাবাজ দশ হাজাব নাথা না কাটিলে মহম্মদের
বিনাশ সম্ভাবনা নাই, তিনি এমনই প্রেমেব ছাবা স্থ্বক্ষিত।"

•রাজা তাহা প্রবণ কবিয়া অবাক হইয়া গেলেন। মহম্মদের
এই প্রেমাকর্ষণ শক্তিই তাহাব ধন্ম জয়া হইবার কারণ।
প্রেমেব ভিত্তি ছিল বলিয়াই তাহাব ধন্ম জয়াত জয় লাভ

করিয়াছিল।

মহশ্বদ মথন রোগে আক্রান্ত হইরা শ্বাগিত ইইলেন, তথনও তিনি প্রভাই উপাসনার জন্ত মৃশ্জনে বাইতেন। ক্রমে যথন তাঁহাব উথানশাক্ত বহিত হইল, তথন গুই জন লোকের স্বন্ধে ভব কার্যা উপাসনা কবিতে বাইতেন। যথন লোকে দেখিতে পাইল যে, মহশ্মদ দাঁভাইতে পাবেন না, গুইজন লোক তাঁহাকে ধ্বিয়া বাথিয়াছে, ভিনি সেই অবস্থায় উপাসনা কবিতেছেন, তথন চা্বিদিকের লোক উন্মন্তপ্রায় হইয়া "আন্না হো আক্রব" বলিয়া চাঁৎকার কার্যা উঠিল। মহশ্মদের সেই বিশ্বাসের আপ্তন সকলেব হাদ্যে জলিয়া উঠিল। প্রেমের ধােগেই এই বৈগ্রাভিক শক্তি সকলের হাদ্যে বাাপ্ত হহয়াছিল।

নেলস্ন যথন যুদ্ধকালে জাহাজেব উপবে গিয়া সকলের
নিকট দণ্ডায়মান হইতেন,তথন সমস্ত সৈক্ত শাগল হইয়া যাইত,
কেননা ভাহারা জানিত যে, ভাহার প্রনায় দেশহিতেয়া আর কেহ
নাই। নেলস্ন, ভাহার পভাকায় লিখিয়াছিলেন—"England
expects her every son to do his duty" "ইংলণ্ড আশা
করেন বে, প্রত্যেক ইংলণ্ডবাসী কর্বা কার্যা নিকাহ করিব।"
কেনারেল গর্ডন যথন যুদ্ধক্তে দণ্ডায়ন হইতেন, ভাহাকে
দেখিয়া সেনাগণ পাগণ হইয়া যাইত। ইহাতেই প্রেমের যোগ
দেখিতে পাওয়া বাছ। এই স্পলেই প্রেমের ভাব এবং চিন্তার
সঞ্চার হর, ইহাই অগ্নিস্ঞাণক দণ্ড। বিভীয়তঃ প্রেম গঠন

কবে, অপপ্রেম ভঙ্গ কবে। মিছরির বেরপ দানা বাঁথে. সেই-রপ প্রেমেতে মানব সমাজবদ্ধ হয়। প্রেমেতে পুরুষ নারীব হদর এক হয়, ক্রমে শিশু সন্তানাদি সকলে প্রেমে বছ হইরা এক পরিবাব হয়। এই প্রেমেতেই প্রতিবাসীদিগের সহিত সন্মিলিত হইরা পাড়া হইল। চাবিদিকেই প্রেমে গঠন কবিতেছে।

মাধ্যাকর্ষণী শক্তিদাবা সৃষ্টি বক্ষিত, ইহাকে রহিত কর, স্থ্য বেণু হইরা, মেদিনী বেণু হইষা উডিয়া যাইবে। সেইকপ প্রেমেব বন্ধন খুলিযা দাও, সমগ্র মানবসমাজ সেই মুহুতেই বিনাশ প্রাপ্ত ইইবে।

তৃতীয়তঃ প্রেমের আর একটা গুণ এই যে ইছা সংবক্ষণ করে। প্রেম বিনাশ হটতে বক্ষা কবে। জগতেব সাধুদিগের জীবন আলোচনা কবিলে আশ্চর্যা ঘটনা দেখিতে পাই, মহম্মদ অজ ছিলেন, মহায়া খীশু কিছুই লিখিয়া বাখিয়া বান নাই, চৈত্র ভক্তিলাতেব পূর্বে বাহা লিখিয়াছিলেন, তাহা ভক্তিলাতেব আগেই গলাব জলে নিক্ষিপ্র ইইয়ছিল। ভবে কোণা হইতে এই ভক্তিৰ কণা. প্রেমের কথা জগতে প্রচারিক হইল গ কে এ সকল তম্ব রক্ষা করে গ সকলেব মূল এবং ভিত্তি, প্রেম। শিষ্য্দিগেব প্রেমের ব্রোই মহায়াদিগেব উক্তি সকল রক্ষিত ও স্ঞালিত হুইতেছে।

প্রেমের আমার একটী প্রণ এই যে, প্রেম, চক্ষের জ্যোতি প্রকাশ করে। প্রেমহীন চক্ষে জগত দেখ, স্কল্ট প্রাতন, কিছুই নৃতন নাই। কিন্তু ঈশ্ব-েপ্রম হৃদয়ে আফুক, চকু थूं निम्ना बाहेरत, त्रकलाई नृष्ठन इहेरब, इन्नारख्य स्त्री स्मा দেশিয়া প্রাণ মৃগ্ধ মইয়া ঘাইবে বিশ্বাসীনা আব এক চকে জগত দেখিয়াছিলেন এবং তাহা হইতে তাঁহাৰা অমূলা উপদেশ बाञ कविद्याहित्यन। भाशी एाक, कृष कृ'है। ইহা চিবকালই ১ইডেচে, কিন্তু ইছা দেখিয়াই যীশু ৰলিয়াছিলেন "পাথীবা ৰীজ বপন করে না, কিন্তু জৰ্ও ঈশ্বৰ তাহাদিগকে থাইতে দেন।" ফুলকে কেমন স্থুন্র করিরা ঈশ্বর সাজাইয়াছেন্স প্রেমের চক্ষে গাছের निरक ठाफ, कारनक छेशाम नाज कतिरव। वशक भ्यागरम বৃক্ষ নৃত্তন পৰে শোভিত ২ণ, ইহা কি সন্তুৰ যে ঈৰ্বৰ আমাকে সাজাইবেন না ? প্রেমেব চকে চাবিদিকে চাও উপদেশ পাইবে। জগদপৈতাপ্রেম্বারাজগতকে চিত্রিত না কবিশে ৰুগঁত এত স্থলৰ হইত না। শীত নিৰাবণেৰ জন্তু পাথীকে পালকদাবা তিনি আত্ত কবিষাছেন, আমাৰ আল্লাকে কি ভিনি বক্ষা কৰিবেন নাণ ৰিখাদীবা কেন অংগত হইতে উপদেশ গ্রহণ করেন<sup>্</sup> তাঁহারা জগতকে প্রেমের চক্ষে দেখেন বালয়া। প্রেম্মর চক্ষে প্রাচীন স্থুদের দৃষ্টিপাত কৰ, প্রাচান শাস্ত্রসমূহ দশন কর, मिटक আশ্চর্যান্তির চত্রা ঘাইবে। পেমবিতীন চক্ষে দেখিয়াছিলে বলিয়াট কোনও ভত্ত গ্ৰহণ কৰিতে পার নাই। অপ্রের চক্ষে পুস্তক পডিয়া দেখিযাছি, পাতাব পর পাতা উভটাইরা 🗄 গিয়াছি, কিছুই পাই নাই, কিন্তু যথন ঈশর-কূপায় প্রেমেব চক্ষু পুলিয়াছে, দেথিয়াছি প্রতি পণকি আমাৰ নিকট আশাব ৰুথা ৰলিতেছে। প্ৰেমই চক্ষেব আলেক।প্ৰেমহীন চক্ষে মান্ত্রকে প্রকৃত ভাবে চিনা বায় না। প্রেমতীন হইলে অপবেব দোষ মুহজেট চকে পতিত হয়। "অমুকে বড অহস্বাবী, অমুকের অনুক দেষে" ইতাদি ভাব মনে উদয় হস। প্রেমহীন ছইলৈ "ঈরবের ঘরের একমাত্র আমিই অধিকারী, অক্ত কেচ আসিতে পাৰিবে না' ইত্যাদি ভাব মনে উদয় হয়। ঈশ্বন কুপায় জদয়ে প্রেম আসিলে আর কাচাকেও পর ভাবিতে भाति ना, मक्लर्ड (यन बाधन, काशांक अपूरत त्राथिएंड हेस्डा इंग्र ना। याशर्क भागी बानमा पूर्वा कतिमाहि, एक्टरमत हरक (म कान लाक करेश (शन!

প্রেমবিহীন হইয়া কথনও উপাদনা করিবে না।
সার্থপরের জন্ম ধর্মানহে। কেবল ঈশ্ববেব নাম কবিলে উপাদনাহর না; প্রেম দিয়া পূজানা করিলে উগোব পূজাই হয়
না। ক্লায়ে প্রেম না পাইয়া থাকিলে কিছুই জানিতে পাবিবে
না, প্রস্পারকে চিনিতে পাবিবে না। 'ঈশ্ববই প্রেম প্রেমই
ঈশ্ব।"

ন্রাক্রসমাজ কিকপে সংগঠিত হইবে প যত প্রকাব বন্ধনের বজুর্থ মত প্রভৃতি ) আছে, সকলই বাহিবেব ৰন্ধনা, তাহা গুলিয়া ঘাইবে, যদি প্রেমহীন হত্তে বাধা হয়। বিবাহ বন্ধনা, পবিবাব সংমিশন পভৃতি কিসেব ঘাবা হয়, প্রথমেব বন্ধনে। যদি আমবা অপেমেব অলু দিয়া পেমের বজু কাটিরা দিই, তবে কিকণে বান্ধসমাজ সংগঠিত হইবে পু প্রেমাণরাধ্মতি গুরুত্ব অপবাধ।

বেখানে অধীনতা সেংকি প্রেম হয় না। অধীনের সঙ্গে সাধীনের প্রেম হয় না। প্রেমেব প্রাণ সাধীনভা। জগদীশ্বর কি আমাদিগকে জগতেব অপর নিকৃষ্ট প্রাণীদিগেব হ্যায় করিয়া স্ষ্টিকবিভে পাবিভেন না? কেন ততেৰ আমাদিগকে স্বাধীন কবিয়া সৃষ্টি কবিয়াছেন ? বেধানে ভয় আছে, সেধানে প্রেম্ব 🕈 नाई। (यथारन পङ्गो পভিকে ভয় দেখাইয়া বাধা কবিতে চান, সেখানে প্রেম নাই। ভবে কিরপে সাবীন থাকিবে, অথচ অধীন হটবে ৭ প্রেম পূর্ণসাধীনতা প্রদান কবে পূর্ণ অধীনতাও আন্বন কবে। ঐকভানবাদা (কমন মুন্দব। যন্ত্রগুলি এক সঙ্গে বাজিতোছ, প্রভাকের নিজ নিজ স্ব বাজিতেছে, কিছ সকলের সংমিশ্রণে কেমন স্থানর শব্দ হইরা থাকে। যথন चामारमत ७ हे जाने व जानवामा हहेरव, भत्रम्भव ८ शम हहेर्ब, তথন সকল হব মিলিয়া একতানে। ঈখৰের নাম গান করিৰে। বৌশা এবং অণ মিশেনা; কিন্তু আগুন দাও, সকল গলিয়া যাইবে। এইরূপ প্রেম্ছীন জুটী কঠিন জ্বন্ধ গণিবে না. প্রেমের উত্তাপ দাও ,তথনই গণিয়া যাইবে। "প্রেমের অপুকা রীভি ৰলানাহি বায়" ইহা অভি সভ্য কথা। ত্ৰাহ্মসমাজে যদি এই প্রেম অবভীর্ণ নাহয় ভাগা হটলে স্কলটাবফল। এট প্রে কি সে বাধা জন্মায় ৪ আমাদিগের মিলনের পণে কিসে বিশ্ব উৎপাদন কৰে ৮ আনারাকেবল প্রেমের এবং ঈশ্ববের শক্তির অধীন ভ নই, যদি ভাহাই হই গ্ৰাম তবে অবগ্ৰ মিশিয়া যাই-তাম। ইহা নিশ্চয় যে, আমরা সম্পূর্ণরূপে তাঁচার রুপার অধীন নহি। আমাৰ যে নিজ হচ্চা প্ৰবাধ এৰ পাথিবভাৰ कारह, छाठाठे व्वेठ मिनस्तित পरिश निष्न উৎপাদন করে। অভকার অভিমান বিষেধের ভাবই বাধা প্রদান করিভেছে। "কি। আমাৰ কথা রাখিল না, এত বচ যোগাতা।" এই छात कि मन्न छेन्य व्यागाश अवे मक्त कातर । वे ८ श्रम काइन বরেনা৷ আজি যিনি নিজকে ছ'ডিঙে আাস্যাভেন ডিনিই <del>ঈ</del>পর ককণা সভ্তোগ কবিবেন। দোগতে পাচ যে, কোনও দেবালয়ে প্রবেশ কবিতে *◆হলেই* পাছকা পারভাগে করিয়া প্রবেশ কবিতে হয়, আমানের ঈশর আজে বালতেছেন "নিজকে ताथ, जरशत छेरमत्वत ५(त्व अत्यम कव ।" लाभ भाहे त्वान्! আমবা া নক্ষকে ছাডিয়া আদি নাই "আমাব ইছে। তুৰিয়া ৰাউক, কেবল ঠাচাৱল ইচ্চার কয় ১উক " এই ভাৰ প্টরা বিনি আজ আসিয়াছেন, তিনিহ প্রবেশের আধিকার পাইবেন। আৰু এই উৎস্বেদ দিনে স্কলে এক ১ইয়া প্রাথনা করিৰ, আমার যেন প্রেমাপবাধ নাকরি। নৃভন বৎসরের জয়ভ প্রতিজ্ঞাকরিয়ে "ৄপ্রনাপবাধ আরে করিব না।" প্রেম ! এলো ৷ তিনিট প্রেম, তিনিট পেম, আজা এদ সকলে মিলিরা প্রেমের গুণ গান করি। তাঁহাব ক্রোড়ে নিজকে সমর্পণ করি। • পোমহন্ত প্রাণে অকুভব কবি, তাঁহার পোমের হন্ত একদিকে পডুক, এবং সকলের হাত অবপর দিকে পড়ুক। **ঈশ্রক**রণা क्क्रन, प्यामाभिरगत महाम्र इंडेन। ( ক্রমণ: )

# ভত্ত-কৌমুদী

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

২ংশ সংখা। ১৭শ ভাগ।

১৬ই ফাব্ধন বুধনার, ১৮১৬ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬৬।

বাৎসরিক ক্ষগ্রিম মূল্য ৩১ মফস্বলে ২॥০ প্রতি গণ্ডের মূল্য 🖋 •

# পঞ্চষষ্টিতম মাঘোৎসব।

(পুর্বপ্রকাশিতের পর). ১১ই মাঘ।

মধ্যাকে শ্রীযুক্ত বাবু উমেশচক্র দত্ত উপাসনা করেন। তিনি নিম্লিখিতকপ উপদেশ প্রদান করেন,—

সন্তানের প্রতিমাতার প্রেম থেরপে উচ্ছলভাবে প্রকাণিত হয়, এরপ আর কাহারও প্রতি হয় না। এই মাতৃপ্রেম প্রত্যেক সন্তান উপভোগ করে, কিন্তু স্থানত না
হইলে এই প্রেম কেহ ব্রিতে পারে না। সন্তান যত ছয়ন্ত
ইক, মাতার প্রতি উদাসীন হউক, তাঁহার দয়া করণা আগ্রহ
কর্ক, তব্র মায়ের প্রাণ সন্তানের করে লালায়িত।
এসম্বন্ধে একটি গল্প আছে;—

কোনও এক গৃহত্বের পরিবারে কর্তার মা এবং স্তীর সঙ্গে বিশেষ সন্তাৰ ভিল না। স্ত্রীর ইচ্ছা গৃহে কর্ড্র করে; কিছ বৃদ্ধা খঞার জয়ত তাহাসম্পন্ন হয়না। বধ্র কোনও দোষ করিশেই খুশা ভাষাকে ভিরস্বার করেন, এই কারণে সর্বনাই তিনি শক্ষর প্রতি বিরক্ত। বণু শাশুড়ীর প্রতি স্বামীর विवक्ति উৎপাদনের জ্ञ नाना उभाव कल्लना कविटा नाभिन। স্বামীকে একদিন বলিল:—"ভোমার মাতা 'ডাইনমন্ত্র' জ্ঞানেন, তুমি যখন নিজা যাও, তথন তিনি তোমার রক্ত শোৰণ করিয়াখান ৷ " স্বামী এই কণা শুনিয়া অমবাক্ হইয়া পেলেন; যে মা সস্তান কাৰ্য্যস্থল হইতে বিলম্বে আসিলে, **সাহার নিদ্রা পরিত্যাগ করিয়া এক**দৃষ্টে পথপানে চাহিয়া **পাকেন, দেই মারের কি এ**রূপ ব্যবহার! তিনি এই কথা ক্রথন্ট বিশ্বাস করিতে পারিলেন না। স্থতরাং স্ত্রী বিফল-মনোর্থ হইরা স্বামীর বিরুদ্ধে মারের নিক্ট অভিযোগ উপস্থিত করিল; দে বলিল:—"ভোমার সন্তান ঘোর হুরাপায়ী। একদিন নিজিত অবস্থায় যদি তাঁছাকে পরীক্ষা कत्र, छाहा इटेटन धटे कथात ध्रमान नाटेरत,।" धिनटक 'একদিন স্বামীকে বলিয়া রাখিল বে, তুমি কণ্ট নিদ্রা করিরা থাকিও, আমি প্রনাণ করিয়া দিব বে, তোমার মা চ্ছাইন। এদিকে শাশুড়ীকে পরীকা করিতে বলিন। এইরূপ

পরীকাকালে হঠাৎ সন্তান চকু মেলিয়া নায়ের ভজ্ঞপ वावरात (मिथता मारक विनात-"जुमि बाँखिक्के छाहेन, আমার রক্ত শোষণ করিয়া ধাও।" তৎপর স্ত্রীর সহিত পরামর্শ করিয়া ঠিক করিল যে, মাকে বনবাস দিবে। সম্ভান স্ত্রীর কথায় কর্ত্তব্য ভূলিয়া গিয়া, ভক্ষি ভালবাসা ভুলিয়া গিয়া, মাকে লইয়া বনবাস দিতে গেলেন। মা কি করিবেন, সন্তানের এরূপ ব্যবহারে মনে অভ্যন্ত কট পাইলেন; সেই সংসারে আবর থাকিবার একটুও ইচ্ছারহিল না। সন্তান মাকে খোর জঙ্গলে রাথিয়া বধন ফিরিয়া আদিবেন, তথন হঠাং আকাশ ঘোর মেৰচেছর হইল। মাতার সন্তানের জন্ত বড়ই ভাবনা হইল। নিজৈ ঘোর व्यत्रा व्यवहात्र व्यवहात्र शांकिरवन, ठाति निरक व्याच छन्नुक তাহাতে ভয় নাই; কিন্তু সন্থান কিন্ধপে নিরাপদে গৃছে পৌছিবে, এই একমাত্র ভাবনা। সন্থানকে বলিলেন,---\*তাড়াভাড়ি ষাও বাবা, যাহাতে শীঘ্ৰ শীঘ্ৰ গিয়া জনপদে পৌছিতে পার।" সম্ভান তাঁহার কথা অগ্রাহ্ করিয়া তাঁহাকে ফেলিয়া চলিয়া গেল। এইনপ শত শত দৃষ্টাস্ত দেখিতে পাই। সম্ভানের শত অত্যাচার **স্বত্তেও মা**তং সম্ভানের মঙ্গল কামনা করিয়া থাকেন।

যিনি জননীর জননী, জগতেব জননী, তিনি অপার জনত্ত প্রেমের এক বিল্পু সংসাবের জননীর হাদরে প্রদান করিয়াছেন। পৃথিবীর জননী চিরকালের নহেন, ছই দিন পরে এ সংসার হইতে বিদার গ্রহণ করেন, সন্তান হাজার কাঁদিলেও তাঁহাকে রাথিতে পাবে না। এই মাতৃপ্রেমের আত্মাদন বে স্থসন্তান পাইয়াছেন, তিনি কি বুঝিতে পারেন না বে, এই পৃথিবীর জননীব অন্তরালে অপর এক জননী রহিয়াছেন? তাঁহার অনত্ত প্রেম, অপার ক্ষেহ কি আমরা পৃথিবীর জননীর ভিতর দিয়া দেখিতে পাই না? পৃথিবীর জননীর ভিতর দিয়া তাঁহার ক্ষেহ তিনি জগতে পরিবেশন করিয়া থাকেন। কেবল জননী কেন, জগতের সাধু মহাপুরুষদের মধা দিয়াও তাঁহার কলণা তিনি পরিবেশন করিয়া থাকেন। এই জননীকে কি আমরা দেখিব না? তাঁহার সাক্ষাৎ লাভ করিয়া কি তাঁহার উপর বিশ্বাস স্থাপন করিছে পারিব না? আমরা কুসন্তান হইয়া নিজ স্থে মত্ত থাকি, তাঁহার দত্ত সম্পত্তি ভোগ করিতে জানি না কুব্যবহার করিয়া নানাপ্রকারে জননীর মর্দ্রদেনার কাবণ হই। কিছ তিনি চিরক্ষমাশীলা, চির্দৈর্ঘাশীলা, সকল সহ্য কবিয়া থাকেন। সম্ভান নিজ স্থেও উন্মন্ত, তিনি তাহাকে প্রেক্ত স্থী করিবার জন্ম সর্বলাই ব্যস্ত।

আমরা সাবা বংসর তাঁহাকে ভূলিয়া ধূলা থেলা লইয়া বাস্ত থাকি; কিন্ত তিনি আমাদিগের স্থের আয়োজন কবিরা থাকেন। এক একটী উৎসবে আমরা তাঁহাব কতই করণা সন্তোগ কবি, তিনি আমাদিগেব জন্ম কতই স্থা প্রদান কবেন। আমরা পাপের আগুন জালিয়া তাঁহার সংসাবকে ছারথার কবিতে চেটা কবি, তাঁহার পুত্র কন্তাকে কভপ্রকারে যাতনা দি; এত ত্বস্ত যে আমরা, তবু তিনি আমাদিগকে পরিত্যাগ করেন না।

বিশ্বজননী এই উৎসবে ঠাঁহাব কত ছরস্ত সন্তানকে ডাকিয়া আনিয়াছেন। তিনি সকল সন্তানকে সমান ভাল বাসেন; ছকল পাণীর প্রতি বরং তাঁহার বেশী করুণা। বিশ্বজননী যিনি, তিনি কি পাণী ছকল সন্তানকে পরিত্যাগ করিতে পারেন? তাহা কথনই নহে। তিনি তাঁহার প্রেম পরিব্রেশন করিয়া সকলের প্রাণেব ক্ষুধা নির্তি করিবেন।

এই উৎসবের দিনে, এই হৃত্তল সম্বানদিগের প্রতি তাঁহার কতই দয়া দেখিতে পাইতেছি। আজ এখান হইতে কুধিত কেহই ফিবেরা যাইও না, জনশনে কেহই থাকিও না, সকলেই তাঁহার প্রেম স্থা পান কর, তাঁহার ভাণ্ডাব অক্ষ্য। এসো তবে ভাই বোন্! আজ আমবা জননার প্রসাদ সকলে মিলিরা ভোগ কবি,কেহই কুধিত অবস্থার ফিরিয়া যাইব না।"

মাধ্যাহ্নক উপাসনার পরে উন্যুক্ত নবছীপচক্র দাস বেদীতে সমাসীন হইয়া ধন্মণাস্ত্র পাঠ করেন। তংপর তিনি মহন্মদের জীবনচরিত অবশস্থন করিয়া ধন্ম-ব্যাথ্যা করেন। তংপর কাতন হয়।

সন্ধ্যা ৬২ বটকার সীময় পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্রী উপাদনা করেন। মান্দরে এত লোক সমাগম ২ইয়াছিল যে, তজ্জ্ঞ উপাদনার প্রাক্তালে উপাদকগণের বিশেষ অপ্রাবধা হহ্যা-ছিল। শান্ত্রা মহাশর নিম্নলিথিত সংশ্বে উদ্বোধন করেন;—

"ঈশ্বপ্ত। ছই প্রকার, লোকিক পূজা ও নিটা। পূজা। লোকিক পূজাকিরপ ? প্রাভিদিন পূজাব নিয়ম বজায় রহি-রাছে; পূজা না করিয়া অন্নগ্রহণ করা হয় না, কোনও রক্ষে পূজার নিয়ম রাখা চাই। গৈতৃকদেবতা ঘরে আছেন, তাঁখার জন্মনা করা। গৃহস্থের দে উহারে প্রাভ বিশেষ নিটা আছে, ভাহা নহে, কিন্তু তবুও পূজা বলায় রাখা। ইহা এক রক্ষ পূজা, ইহাকে লোকিক পূজা বলা যাইতে পারে।

হিতীয় ত: নিহার সহিত পূজা। যাহাদের অন্তরে ঈর্যরেব প্রতি ও ধন্মের প্রতি আছো আছে, তাহাদের পূজা অন্ত প্রকার। বংবরের উৎক্রই পূল ব: ফল, যাহা তাঁহাবা পুব ভাল বাদেন, তাহা দেবতার চরণে অর্পণ করিয়া থাকেন। আমাদের দেশে এইরূপ নিয়ম আছে যে, যাহারা তাঁথে বায়, তাহারা ভাহাদের ভালুবাদার অনেক জিনিব দেবতার চরণে অর্পণ করিয়া আসে। আর সে দক্ল দ্রব্য ভাহারা জীবনে ব্যবহার কবে না। প্রাচীনকালে আমাদের দেশে অনেক স্থালোক এইরূপে নিজ শিশু সন্তানকে গলার নিক্ষেপ করিত। কিন্তু এইরূপ পূজাও আমাদের পক্ষে ব্যেষ্ট নহে। আমার সন্বাপেক্ষা প্রিয় জিনিষ ঈশ্বরের 'চরণে অর্পণ করিলেই যে, ধ্র্ম হইল, প্রাকৃত নিষ্ঠা দেখান হইল, তাহা নহে। ইহা অপেক্ষাও শ্রেষ্ঠ অবস্থা এই যে, কোন প্রকার প্রিয়বস্ত ঈশ্বর-চবণে না দিয়া নিজকে, সমগ্র হৃদয়কে, ঈশ্বর-চরণে দিতে হইবে।

এই ধর্ম সাধন কবিতে হইলে নিজকে ঈশ্ব-চরণে অর্পণ কবিতে হয়, সভ্যকে দৃঢ় করিয়া ধাবণ কবিতে হয়, সাধুতাকে ধারণ করিতে হয়। যদি সভা পাইতে চাও, নিজকে একে-বারে ঈশ্বর-চরণে সমর্পণ কব। এই পূজা কোনও শব্দ সাপেক্ষ নহে। প্রার্থনা কবিতে পার আর নাই পার, ভাহাতে কিছুই আসিয়া ধায় না, স্ব্যাস্থ:কবণে নিজকে ঈশ্বর-চবণে সমর্পণ করিতে পারিলেই ভাহার প্রক্কত উপাসনা হইল।

আজ আমরা দেখিব ষে,ঈশ্বর-চরণে কি সমর্পণ করিয়াছি ? নিজকে দিতে পারিয়াছি কি ? যদি পারিয়া থাকি, তাহা হইলেই প্রাকৃত পূজা হইবে।

নিজকে ঈশ্ব-চরণে দিলে আমি তাঁছার হইরা বাইব. আমাব ধন, জন, স্ত্রী-পূত্র-পরিবার সকলই তাঁহার চরণে উৎসর্গ করিব। সাক্ষাৎ সম্বন্ধে তাঁহার সহিত দেখা হইবে, তাহাই যথার্থ পূজা। আজ উৎসবের দিনে হৃদ্ধে এই মহৎ ভাষ লইরা ঈশ্বরের আবাধনাতে প্রসূত্র হই।"

সমবেভপ্রার্থনার পরে নিয়লিখিত মর্ক্সে উপদেশ প্রদন্ত হয়,—

"বিষ্ণুরাণে প্রাহলাদ-চবিত্র সন্থান্ধ যে উপদেশ আছে, তাহাতে আমরা দেখিতে পাই বে,একদিকে একটী অসহার শিশু, অপরদিকে একজন প্রবলপবাক্রান্ত রাজা। ঐ অসহার শিশুকে বক্ষা করিবাব কেহই নাই, অবলমনেব কিছুই নাই, তবুও তাহার সাহস কত, দাঁডাইবার স্থান নাই, তবুও সে দাঁডায়। অপর দিকে প্রবলপবাক্রান্ত রাজা, ভানার উপর সমস্ত শক্তি প্রয়োগ কবিতেছেন। "আমার সন্তান হইয়া আমার সমক্ষে আমার বিক্লাচরণ করিখে ?" এই ক্রোধে তিনি নানা উপায় উদ্থান কবিয়া শিশুকে প্রালয় করিতে ক্রতসংকল্প।

এগানে আমরা দেখিতে পাই দে, এই ছই জনের ছই বিভিন্ন সলে নির্ভিন্ন বাংয়াছে। শিশুর নির্ভিন্ন ঈশবেব উপরে, রাজার নির্ভিন্ন নির্ভিন্ন শক্তির উপরে, ধনের উপরে। এই যে ছই জাতীয় চরিত্র এই স্থানে সন্ধিবেশ করা ইইয়াছে, জগতের এইরপ ছই জাতীয় চরিত্র সর্কাত্র দেখিতে পাওয়া যায়। মহাত্রা যীশুকে যখন হত্যা করা হয়, সেই চিত্র একবার মনে করিয়া দেখ। একদিকে প্রভাপশালী যীহণী পুরোহিতগণ দণ্ডায়মান, রোমের সমগ্র রাজশক্তি তাহাদিগের অফ্রুল; অপর দিকে একমাত্র স্তর্গরের স্ফান। তিনি নিজের কথা নিজে এইরপে ব্যক্ত করিয়াছিলেন— প্রাথীর বাসা আছে, শেয়াল কুকুরের গঠে আছে; কিন্ত আমাত্র মাথা

দ্বাধিবীর স্থান নাই।" রাজশক্তিহীন, ঘলহীন, পৃথিবীর মান সম্ভ্রমবিহীন গরীবের সস্থান, অপরদিকে পরাক্রান্ত রাজশক্তি এবং পুরোহিতগণ।

যীশু যথন দেখিলেন, সকলেই তাঁহাকে পরিত্যাগ করিরাছে, তাঁহার শিবোবাও তাঁহাকে পরিত্যাগ কবিরাছে, তথন
তিনি উচ্চৈ:স্বরে বলিলেন—"ইলি ইলি লামা শবাক্তানি"
"হে পিতা, হে পিতা! কেন তুমি আমাকে পবিত্যাগ
করিতেছ ?" কেমন ঈশবের প্রতি নির্ভর। দেখ এখানে
কাহার জয় ? হিরণ্যকশিপুর না প্রহলাদের ? ইহদী রাজার,
না গরীব স্তর্থর তনয়ের ?

মহাত্মা রাজা রামমোহন রায় যথন ঈশ্বর উপাসনা আরম্ভ কবিলেন, তথন সহরের অনেক লক্ষপতি ধনীরা ওাঁহার শক্ত হইয়া দাঁড়াইয়াছিলেন ১ তাঁহারা বলিতেন যে,—"পুটী মাছের পোটার মতন রামমোহনের ধর্মের • পোটা বাহির করিয়া দিব।" এঁরাই হিরণাকশিপু এবং রামমোহন প্রহলাদ। ভাষ্টাদের নির্ত্তর ছিল ধনের উপরে, জুড়ী গাড়ীর উপরে, অতএৰ তাহারা হিরণ্যকশিপু। রামমোহন রায়ের মৃত্যু পর অনেক উপাসক তাঁহার ধর্ম পরিত্যাগ **इहे** एन করিলেন। সকলেই মনে করিল, তাঁহার ধর্মের আঞ্চন নিভিন্ন গিন্নাছে। বিশ্বকোণার যে একটু ক্লিঙ্গ লুকান্নিত बरिग्राहिल, छाहा (कहरे प्रिचिड भाग्न नारे। इंग्रेड পুনবায় ঘরে আগুন ধবিল, দেখিতে দেখিতে আগুন চারি-দিকে ছড়াইয়াপড়িল। তাই আবল বাক্ষসমাজের এইরূপ ষ্পবস্থা। তিমালয় হইতে কুমারিকা প্রান্ত ব্রাহ্মধর্ম ছডাইয়াছে. ২০০ শতেব ও অধিক উপাদনা মন্দির প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। জগতে হিবণ্যকশিপুৰ স্থায় ঈশ্ব-বিরোধী ব্যক্তির আশা कथनहे भूर्व हम्र ना।

প্রকৃত বিশ্বাসীর লক্ষণ কি ? "অকপটচিতে ঈশ্বরে নির্ভর করা।" বিশ্বাসী যদি নিজকে দেখিতে পাইত, তবে তাহার ভর হইত। বিশ্বাসী ব্যক্তি নিজকে দেখিতে পার না। যে নিজকে ভূলিয়া কেবল মাত্র ঈশ্বকেই সত্য বলিয়া ধারণা করিতে পাবে, সেই প্রকৃতবিশ্বাসী।

সকল ছাড়া সহজ; কিন্তু রাজসিক ভাব পরিতাগি কবা বড়ই কঠিন। কোন মেলায় গোলে মাহ্ম্য কিছু না কিছু হারাইয়া জাসে; সভায় গিয়ে জুতো হারায়, গায়েব কাপড় হারায়। বল ত ভাই বোন্! কে নিজকে হারাইবে? ঘবে গিয়া কে বলিবে "নিজকে হারাইয়া আসিয়াছি?" কয়জন লোক এইরূপ ভাব লইয়া এখানে আসিয়াছ? যদি দশজন এইরূপ ভাবাপয় লোক থাক, জাহা হইলেই হুর্গ জয় হইবে। শুহ্লাদ হওয়া বড়ই কঠিন। তোমাব পাথিব বলেব কামানের গোলা কিরূপে তাহার বিশ্বাসের শরীবকে বিদ্ধ কবিবে? এইরূপ বিশ্বাসের বলে যদি আক্ষরণ বলী হইতে পারে, ভাহা হইলে আর ভাবনা থাকিবে না। সকল জুগুৎ একদিকে তবুও কাহাকে গ্রাহ্ম করিব না" এইরূপ বিশ্বাসী হওয়া চাই। এরূপ হইতে হইলে নিজকে জ্বাব চবণে দিতে হয়। নিজকে না ছাড়িলে গ্রেম্ব্য় না। নিজকে ছাড়িলেই জগতের সাধু-

দিশের সঙ্গে, বন্ধুদিগের সঙ্গে এবং ভগবানের সঙ্গে মিলন হইবে। নিজকে ছাড়, মিলন আরম্ভ হইবে। প্রকৃত বিশাসীর নিকট হিরণ্যকশিপুর পরাজয় হইবে। "জয়য় পাঙুপুত্রাণাং যেযাং পক্ষে জনার্দ্দনং" রুফ্চকে পাইয়া পাঙুপুত্রীগণ জয়ী হইয়াছিলেন। অতএব হে আক্ষ লাতা ভগিনীগণ! জীবনে স্থ হংখ প্রতিকৃল অবস্থা আদিবে; কিন্তু প্রেমের বিবোধী কাল কথনই করিপ্ত না। যদি সর্কান্তকরণে হৃদয়কে ঈশ্বর চরণে দিতে পার, তবে হিরণ্যকশিপুর ভয় নাই। অতএব এস সবে আল্ল বলি—"আমাদের কাহার মাথা বড় হইবে, কাহার মাথা ছোট হইবে তাহা আমরা জানিনা; হে প্রভু তোমার জয় হউক। তোমার ইচ্ছার জয় হউক। "ঈশ্বর কর্দন, আমরা যেন নিজকে তাঁহার চরণে অর্পণ করিতে পারি।"

## ১২ই মাঘ, শুক্রবার।

অন্তা পূর্বাকে সাধনাশ্রমের উৎসব। অতি প্রত্যুবে আশ্রমের পরিচারকর্গণ সাধনকূটীরে সমবেত হইরা সঙ্গীত ও প্রার্থনা করেন, তৎপবে "শোন রে শোন রে জাঁর বাণী" এই সংকীর্ত্তন্টী গাহিতে গাহিতে মন্দির অভিমুখে গমন করেন এবং মন্দির প্রদক্ষিণ করিয়া অভ্যন্তবে প্রবেশ করেন। ৬ ই ঘটিকার সময় আশ্রমের তত্ত্বাবধায়ক পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী বেদী, গ্রহণ করিয়া উপাসনা করেন। সমবেত প্রার্থনার পরে তিনি যে সকল কথা বিশ্যাছিলেন, তাহার স্থ্পমর্ম্ম লিখিত হইল।

"অদ্য আহ্মধর্ম প্রচার করিব না, আন্য কেবল তাঁহার ককণার স্বাক্ষ্য দান করিব। তিন বংস্ব পৃক্ষে আমাব 'প্রাণে ভয়ানক অশান্তি উপস্থিত হয়। ব্রাহ্মধর্ম সাধন এবং ব্রাহ্মধর্ম প্রচারের নানা প্রকার অভাব ও বিছেব বিষয় চিস্তা कतिया व्यामि व्यवसम इहेया পड़ि। ३৮৯२ माल्यत मार्चार-मध्यत भूटर्स धक्क विरमय बााकून इहेग्राहिनाम। यथन আমি উপায় নিদ্ধারণের জন্ম প্রার্থনা ও চিন্তা করিতেছিলাম, তथन প্রাণে এইকপ ভাব উদয় হইল যে, "এমন একদ্ল সাধক চাই, ঘাঁহারা অন্তক্ষা হইয়। ব্রাহ্মধ্ম সাধন, ব্রাহ্মধ্ম প্রচাব ও ব্রাহ্মসমাজের সেবার্থ সমুদয় দেহ মন অর্পণ করিবেন এবং ঘনিষ্ঠএকতাহতে বঁদ্ধ হইয়া সমাজ মধ্যে নৃতন জীবন আনিবার চেষ্টা করিবেন।" এই ভাব লইয়াই আমি ১৮৯২ সালের ১১ই মাঘ প্রাত:কালেব উপদেশ দিয়াছিলাম। এবং এই সংকল্প গ্রহণ করিয়াই ১৮৯২ সনের ১লা ফেব্রুয়াবী দিবসে नाधनाध्यम ज्ञान कर्तत। ज्ञास्य এक ही अक ही करिया माधनार्थिशन व्यामिश्रा हेशाउँ राश मान कविर्णन। जयन আমাদের পরিচারক ও সংকল্পানি পরিচারক এই ক্রেক ব্যক্তি আছেন; ---

> ( পবিচাৰক ) পশ্তিত শিব্নাথ শান্ত্ৰী । শ্ৰীযুক্ত নবধীণচন্দ্ৰ দাস।

## ত্রীযুক্ত মহেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়।

- ु व्यानिनाथ हर्ष्ट्राभाषात्र ।
- ু প্রকাশ দেব।
- ু, শুরুদাস চক্রবর্তী।
- ু জয়শকর রায়।
- ু কাশীচন্দ্ৰ ঘো**ষাল**।

( मःकज्ञाधीन পরিচারक )

#### শ্ৰীযুক্ত কুঞ্জলাল ঘোষ।

- ু স্থনর সিংহ।
- ু হরিমোহন ঘোষাল।
- ु ञीवक्रनिहाती नान।
- . क्शनीभठऋ त्रात्र।

**बीगडो हक्ष्मा (चाय।** 

ষধন সাধনাশ্রম প্রতিষ্ঠা কবি, আমার হাতে একটা পরসাও ছিল না। কিরূপে ধরচ চলিবে এসম্বন্ধে আমার মনে কথনও চিন্তার উদর হ্ব নাই। এধানে বাহারা আসিবেন, তাঁহারা স্ক্তোভাবে ঈশ্বের উপর নির্ভর করিবেন। এবিষদে ছইটা মূলমন্ত্র শ্ববণ করিয়া আশ্রম প্রতিষ্ঠা কার্য্যে প্রবৃত্ত হইরা-ছিল্যে। সেই মন্ত ছইটা এই,—

> জনভ⊹শ্চিভয়ছো মাং বে জনাঃ পর্∫পাদতে। তেষাং নিত্যাভিযুক্তানাং বোগকেমং বহামাহম্⊹

> > গীতা।

আজু কামনাবিহীন হইর। আমাকে চিন্তা করতঃ বাঁহাবা উপাদনা করেন, আমি দর্বপ্রকারে মৎপরায়ণ তাঁহাদের বোগকেম (সমুদয় ভার) বহন করিয়া থাকি।

The Lord is my sheppred; I shall not want.

Psalm X X III

শ্প্রভূ প্রমেশ্বর আমার রক্ষক, আমার কোনই অভাব হইবেনা।

আপ্রমের ইতিবৃত্ত প্রতকের ১ম পৃষ্ঠাতে ঐ ছইটী বচন লিখিত আছে। আশ্রম পরিচালনের ইংাই ম্লমন্ত্র। প্রভু পর-মেশ্রর অদ্য তিন বংসর যেরূপ অ্যাচিতভাবে রূপা কবিরা আসিতেছেন, তাহা বিশ্বরজনক। অদ্য ম্কুক্ঠে প্রকাশ করি-তেছি, প্রভু তাঁহার দাস দলকে এক দিনও অভ্কুক্ত রাথেন নাই। অতি আশ্চর্যা রূপে তিনি আশ্রমবাসীদিগকে রক্ষা করিরাছেন। ১৮৯৪ সালে কলিকাতা ও আরা সাধনাশ্রমে ২৮৩৮ টাকা ব্যর হইরাছে, ১৮০০ সনে কলিকাতা আশ্রমে ২৩৬৫ টাকা এবং ১৮৯২ সালে ৮৪০ টাকা ব্যর হয়। আশ্রম

বিগতবর্ষে যে টাকা প্রাপ্ত হওয়া গিয়ছে, তন্মধ্যে ১৯১৫ টাকা দান এবং প্রক নিক্রেরের কমিশনবারত ১০৩, তিকাতে মাত্র ৯৪ টাকা পাওয়া গিয়ছে। যাহারা আশ্রমে অর্থসাহায্য করিয়া থাকেন, তাহাদের নাম আশ্রম হইতে প্রকাশিত হয় না। অদ্য অংশি বিশেষভাবে তাঁহাদিগকে ধঞ্চবাদ প্রদান কিতিছি।

গত বংসর আমাদের পরিচারকগণ নিম্নলিথিত স্থান সমূহে

ক্রমণ ক্রিয়া প্রমেখরের নাম প্রচার ক্রিয়াছেন,—ভাগল-

পুর, মৃদের, বাঁকিপুর, মজফরপুর, মতিহারী, পরা, আরা, ড্মরাউন, গাঁজিপুর, এলাহাবাদ, সাচড়া, জগাদরি, লাহোর, রাউল পিণ্ডি, বেনারস, লক্ষ্ণে, কোরেটা, হিরাট, নিউমস্, পনির, পদিন, নিউচামন, শকর, ভাওলপুর, জেলম, জত্ম, গিরিধি এবং কাঁথি, পৃণিয়া, দিনাজপুর, রঙ্গপুর, জলপাই-গুড়, দার্জিলিং, যশোহর, খুলনা, বাগেরহাট, বরিশাল, ক্ষ্যনগর, কুন্তিয়া, পাবনা, কুমারথালী, রাজবাড়ী, ফরিদপুর, নারা-য়ণগঞ্জ, ঢাকা, ময়মনসিংহ, কুমিলা। এগলে আমার কার্য্য এবং শ্রীযুক্ত বাবু নবদীপচন্দ্র দাস মহাশ্রের কার্য্য উল্লিখিক হইল না।

কোটালীপাড়ায ছভিকে আমাদের তিনজন পরিচারক সাধাবণ ব্রাহ্মসমাজ ও ফরিদপুর স্থহদসভার পক্ষ হইতে ৩।৪ মাসকাল সাহায্য বিভরণ করিয়াছেন,এবং আরা সহরে ভয়ানক বিস্চিকা রোগের প্রাহুর্ভাব হুইলে, তথাকার পরিচারকগণ যথাসাধ্য হোমিওপ্যাথিক ঔষধ বিভরণও চিকিৎসাদি করি-য়াছেন।

বিগত বর্ষে সাধনাশ্রম হইতে এই খানি পুত্তক (চরিত-রজাবলী ও সেবকের গান) মুদ্রিত হইরাছে। আদ্যুবন্ধু বান্ধবগণ আশ্রমবাসীদিগের জ্বন্থ প্রথিনা ও আশীকাদি করুন, যেন তাহারা প্রমেখরের বিশ্বাসী সন্থান হইয়া তাহার সাধন, তাঁহার সন্থানগণের সেবা এবং তাঁহার ধর্ম প্রচার করিতে সমর্থ হয়।"

অদ্য অপরাক ২ ই ঘটকার সময় ধর্মালোচনা হয়।

শীসুক্র উমেশচন্দ্র দত্ত সভাপতির আসন এইণ করেন।

শীসুক্র আনন্দমোহন বস্থ, পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী, বাবু বহুনাথ
চক্রবর্তী, বাবু গুরুদাস চক্রবর্তী, বাবু চক্রকুমার ঘোষ, মুন্দী
জাণালউদিন মিঞা, শীমতী চঞ্চলা ঘোষ, বাবু বিপিনচক্র
পাল এবং শীসুক্র বাবু গুরুচরণ মহলানবিস প্রভৃতি মহালয়গণ
ব্রাহ্মসমাজের উন্নতি এবং কিরূপ উপায় অবলম্বন করিলে সাধন
ভন্নের স্ব্যবস্থা হইতে পারে, ইত্যাদি বিষয়ে অনেক ক্রথা
বলেন।

সদ্ধাভ ই ঘটকার সময় ত্রদ্ধবিদ্যালয়ের উৎসব উপলক্ষে ত্রীসুক্ত বাবু নগেল্ডনাথ চট্টোপাধায় "আমাদের ধর্মের বিশেষত্ব" সম্বন্ধ বক্তা করেন। বক্তৃতা লিখিত হর নাই, ভবিষ্যতে পুত্তকাকরি প্রকাশিত হইতে পারে। বক্তৃতার স্থা মর্ম্ম এই ,—ত্রাহ্মধন্মের তিনটা লক্ষ্ণ। প্রথম লক্ষণ, জীবায়ার সহিত পরমায়ার সাক্ষাৎ বোগ। উপনিষদের মধ্যে এই ভারটা প্রক্টেত আছে। কিন্তু দেশ-প্রচলিত ধর্মের সহিত্ইহার অ্তান্ত বিরোধ। বর্তমান হিন্দুধর্ম অবতারবাদ, মধ্যবর্তীবাদ, সাকারবাদ, অভান্ত শাস্ত্রবাদ প্রভৃতি হারা সংকীর্ণতাপ্রাপ্ত আবদ্ধ। এ সক্ল ধর্মের অন্তর্মায় স্ক্রমণ, ইহারা মানবায়্মতে পরমান্মার সাক্ষাৎ বোগের ব্যাঘাত হটে। মহম্মনীয় ও খ্রীত্রীর ধর্মাও মধ্যবর্তীবাদমূলক, স্বত্রাং তদ্বারাও ত্রাক্ষধর্মের উদ্দেশ্য সাধিত হর না, তাহাতেও ঈশ্বরের সহিত সাক্ষাৎ বোগ লাভের উপার নাই। দিতীয় লক্ষণ, প্রাক্ষধর্ম জ্ঞানমূলক। এই জ্ঞান ভিন ভাগে বিভক্ত

সহজ্ঞান, আধ্যাত্মিক অভিজ্ঞতা এবং বৃক্তি। বজ্ঞা অভি
পাতিভ্যসহকারে জ্ঞানই যে ধর্মের ভিত্তি, শাস্ত্র, গুক্ত-বচন
ইত্যাদি যে ধর্মের ভিত্তি হইতে পারে না. তাহা অভি দৃক্ষভার
সহিত বর্ণন করেন। তর লক্ষণ অসাম্প্রদারিক ভাব। অক্সান্ত
সম্পার ধর্মই অরাধিক পরিমাণে সংকীর্ণভাবাপর, কেবল
বান্ধধর্মই উদার, বিশ্বজনিন।

## ১৩ই মাঘ শনিবার।

আদ্য প্রাত্তে উপাসনা হয় প্রীযুক্ত লক্ষণপ্রসাদ ইিন্সিতে উপাসনা ক্রেন। তাঁহার উপদেশ লিখিত হয় নাই।

আপরাক্ত ৪ ঘটিকার সময় বালকবালিকা সন্মিলন হয়।
আলকগণ একদিকে এবং বালিকাগণ আপরদিকে উপবিষ্ট
ইইরা প্রথমত গান ক্রে, তৎপর বাবু ক্ষঞ্চকুমার মিত্র প্রার্থনা
করেন. এবং বাবু বারকানাথ গঙ্গোপাধ্যায় নিম্নলিখিত মর্ম্মে
উপদেশ প্রদান করেন:—"বিলাতের কোনও একটা বালক
প্রীষ্টমান্সের উৎসবের সমর এক দোকানে কতকগুলি হাড় বিক্রের
করিতে গিরাছিল: দোকানদার মনে করিল ধে, বালকটা হাড়
বিক্রের করিয়া সেই প্রসাধারা বোধ হর পৃষ্টমানের উৎসবে
নানা প্রকার আমোদ করিবে। এজক্ত মূল্য প্রদানের সময়
দোকানদার বালককে জিজ্ঞানা করিল, "ভূমি এই পর্সা দিয়া
কি করিবে পূ" বালক বিন্যুভাবে উত্তর করিল,—"ভাবতবর্ষের
গরিব বালকদিগকে শিক্ষাদান করিবার জক্ত সেখানে একটা
ক্লে স্থাপিত হইয়াছে, সেই স্থানর সাহায্যার্থে আমি এই
পর্সা পাঠাইব।" দোকানদার বালকের কথা শুনিয়া
আশ্রুণায়িত হইল।

এই বালকের মহবের বিষয় স্থরণ করিরা আমরাও বিস্মিত হই। কোথার ইংলগু, আব কোথার ভারতবর্ষ! বহুদুর-হিত ভারতের গরীব বালকগণের শিক্ষার জন্ত ইংলগুঁর বালকের প্রাণে কেমন অফুরাগ! বিশেষতঃ উংস্বের দিনে, যে দিনে বালকবালিকাবা কেবল আমোদ প্রমোদই ভাল বাসে, সেই দিনে বালকেব প্রাণ প্রোপ্কাবের জন্ত ব্যক্ত!

হে ৰালকবালিকাগণ! ভোমরা কি জীবনে কথনও 
থ্রেপ ভাল কাজ করিয়াছ ? যদি করিয়া না থাক, ভবে 
থ্রিপ কোনও কাজ করিবার ,জন্ম প্রস্তুত হও। ভোমবা 
ইচ্ছা করিলে আজই একটা ভাল কাজ করিতে পাব। বোধ 
হর তোমবা শুনিয়াছ যে, আজ কাল কলিকাতা সহরে ভয়ানক 
বসন্ত রোগ হইভেছে। শিয়ালদহ হাসণাভালে কভ বালক 
বালিকা বসন্ত রোগে ভয়ানক যাতনা পাইতেছে। ভোমাদের 
হাতে যে ফুলর ফুলের ভোড়া গ্রীবং গলায় যে মালা আছে, 
ভাহা বদি ভোমরা সেথানে পাঠাও, ভবে কভ ছেলে এই 
ফুলর ফুলর ফুল দেখিয়া আনন্দিত হইবে। ভাহাদের 
ব্যাধিষ্ম্রণা কিছু ক্ষিবে। অথবা ভোমরা চাঁদা করিয়া কিছু 
টাকাও পাঠাইতে পার, ভাহা দ্বিরা ফুল কিনিয়া দেওয়া 
বাইতে পারে।"

বারিক বাবুর উপদেশ প্রবণ মাত্র বালকবালিকাগণ স্বীর স্বীয় কঠ হইতে মালা এবং হাতের ভোড়া উক্ত উদ্দেশ্তে প্রদান করিল। তংশর সংগীত হইলে, তাহারা ১৩নং ভবনে গমন করিবা পরিভোষপূর্বক ভোজন করিল।

আদ্য সদ্ধা ৬ ই ঘটিকার সময় ছাত্রসমাজের উৎসব হয়।
তল্পলকে বাবু হেরছচন্দ্র মৈত্র "আভাব ও আশা" (Need and hope) বিবার ইংরাজিতে বক্তৃতা করেন। শ্রীযুক্ত বাবু আনন্দমোহন বস্ন সভাপতির আসন গ্রহণ কবেন। হেরম্ব বাক্স বক্তা শেষ হইলে সভাপতি মহাশরও ওজ্বী ভাষার মন্তব্য প্রকাশ কবেন।

## ১৪ই মাঘ রবিবার।

আদ্য উদ্যান-সন্মিলন। শ্রীযুক্ত বাবু আঁনন্দমোহন ৰম্মর দমদমার ৰাগানে সকলে রেলযোগে গমন করেন। পুক্ষ ও মহিলার বাত্তীসংখা প্রায় চারি শত হইরাছিল। রক্ষতলে সমবেত উপাসনা হয়। শ্রীযুক্ত বাবু উমেশ্চক্র দত উপাসনা করেন। তিনি যে উপদেশ প্রদান করিয়াছিলেন, তাহার মর্ম্ম এই;—

"প্রাচীন ঋথেদে আছে, "স্বাগ্নি মিলে পুরোহিতং" "আমি বজ্ঞের পুনোহিত হইয়া উপাসকের মনোবাঞ্গ পূর্ণ করেন।" প্রাচীন ঋষিগণ অগ্নি দাবা যক্ত কবিতেন, সেই উপলক্ষে কত উংসব করিভেন। অবশেষে তাঁহাদের মধ্যে গাঁহারা শ্রেষ্ঠ উপাসক, তাঁহাবা সেই অগ্নি বক্ষা করিতেন।

আমাদের ত্রন্ধায়ি প্রজ্বত হইরাছিল, আমরা কি তাহা রক্ষা করিব না? সাগ্নিক ত্রাহ্মণগণ জড় অগ্নিকে রক্ষা করি-তেন, আমরা ভিতরের অগ্নিকে রক্ষা করিব। অদ্য বিশেষ ভাবে সাগ্নিক হইবার দিন। মহাভাবের অগ্নি—ত্রন্ধাগ্নি জ্বিদ-রাছে, তাহা কি আমবা নির্কাণ করিব ?

অধির অনেক গুণ। অধির উত্তাপে নানা জাতীয় ধাতৃ পলিয়া এক হইয়া যায়। অধিব সংস্পর্শে ধাতৃ সমূহ উজ্জল হয়। ব্রহ্মাধিও মানব অন্তবে প্রবিষ্ট হইয়া পাপ মলিনতা বিদ্রিত কবে, অন্তব পবিস্তুত ক্রিয়া দেয়। দশ্টী আত্মাকে একীভূত করে। কঠিন মন গুলিকে দ্রব ক্রিয়া দেয়।

ব্ৰহ্ম তেওঁৰ অমি আমাদিগকৈ গ্ৰহণ কৰিতে হইবে।
আমরা জীবনকৈ অমিমর কবিব, আমবা প্রভাকে অমিমরে
দীকিত হইব। আমাদেব প্রভাকে চিস্তা, কার্যা, অমুষ্ঠান
অমিমর হটবে। অভএব ব্রাহ্ম ভাই ভগিনি! এস. আমরা
সকলে সামিক ইই। আমাদের জীবন হাবা প্রিবার ও
নিকটন্ত সকলকে অমিমর কবিরা তুলি। দেশে এই অমি
বিভ্তত হইরা পাপ ও কুসংস্কাবের আবর্জনা ভন্নীভূত
করিবে।"

তৎপৰ শ্রীষ্ক্ত জানকমোহন বস্থ এবং শ্রীযুক্ত ধর্মদাস বস্ক, বাব্ চল্লকুমার ঘোষ প্রভৃতি প্রার্থনা করেন। উপাসনাল্ডে শ্রীতিভোলন হইলে সকলে কলিকাতা প্রত্যাগমন করেন।

মলিরে ৬ ই বটিকার সময় উপাসতা হয়। জীবুক নবৰীপ চক্র দাস আচার্য্যের কার্য্য করেন। তিনি যে উপদেশ প্রদান করিয়াছিলেন, তদ্বল্বনে নিম্নিধিত প্রবৃদ্ধী রচিত হর্মাছে।

ব্রাক্ষরাক্ষিকাগণ! আমর। ব্রক্ষোৎসবের জন্ত যথাসাধ্য আরোজন কবিয়াছিলাম, বাহিরের যে সকল আরোজন হইতে বে ফল প্রত্যাশা কবা যায়, তাহা পাওয়া গিয়াছে; বাহিরের দৃষ্টিতে দেখিতে গেলে, আমাদের সক্ষর একরূপ সিদ্ধ হইরাছে। ১লা মাঘ হইতে ১৪ই মাঘ পর্য্যস্ত উৎসব করিব বলিরা আমরা হির করিয়াছিলাম, অদ্য সেই ১৪ই মাঘ। অদ্যকার উপাসনাদি শেষ হইলেই পঞ্চাষ্টিতম মাঘোৎসব পরিস্মাপ্ত হইল।

এখন প্রশ্ন এই, ত্রক্ষোৎসব শেষ করিয়া আমরা কি কোনও উন্নতলকা ক্লেরে ধাবণ করিয়া গৃহে প্রতিগমন করিব, না ভাবের ক্ষণিকমন্ততা লইয়া ফিরিব ? এই যে স্থলব পূজাতক হারা মলিব স্থাজিত হহয়ছিল, আগামী কলা এই সকল শুক-কুসন রাজপথে পরিত্যক্ত হইবে; মলিরশীর্ষে যে সকল "ত্রক্ষরপাহিকেবলং" "সত্যমেবক্ষরতে" প্রভৃতি উক্তি লিখিত পতাকা উড়িতেছিল, তাহা তুলিয়া রাধা হইবে। যেমন এই সকল বাহাচিক্ছ বিলুপু হইবে, তেমন কি হে ত্রাক্ষ ভাইভগিনি। উৎসব ক্ষেত্রে ডোমাদের গলায় প্রেমমন্ন বিধাতা বে প্রেমেব মালা প্রাইয়া দিয়াছিলেন, তাহা পরিত্যাগ ক্রিয়া গৃহে চলিয়া যাইবে? উৎসব ক্ষেত্রে ভিনি বাহাকে বাহা দিয়াছেন, তিনি কি তাহা অন্ধেরবৃত্তির ক্লার ধরিয়া রাথিবেন না? আন্ধ উৎসবের শেষ দিনে সকলে একবার এই বিষর্টী চিস্তা ক্রন

এ করেকদিনে ধর্মেব জনেক উচ্চতত্ত্ব ব্যাখ্যাত হইয়াছে, সাধন ভঙ্গনের কথা, গভার ধর্মনতের কথা, বোগ ভক্তির কথা ইত্যাদি অনেক কথাই এই বেদী হইতে বলা হইয়াছে,এ সকল কথা শুনিতেও ভাল, বলিতেও ভাল, কিন্তু কার্য্যতঃ গ্রহণ করা বড়ই কঠিন। অনেকেই বলিতে পারেন এবং শুনিতেও অনেকে পারেন; রক্ষা করিতে পারেন কয় জনে? এই জাত্তই একজন পশ্চিন দেশীয় সাধু ছংথ করিয়া বলিয়াছেন, বে শুননেকেই আহ্ত হয়; কিন্তু জন্ন বেনাকীত হয়।"

বিশেষতঃ প্রেমের কথা বলিতে ও শুনিতে বড়ই মিই, সেই ধুন লাভ করা কত কঠিন ৈ প্রেম, ধর্মের সর্কোৎক্রষ্ট কল। ইহা অতি অল্ল লোকেই লাভ করিয়েছেন, তিনিই ভক্ত প্রেম বলিয়া গণ্য হইয়াছেন। খিনি প্রেম লাভ করেন নাই, তিনি শুকনীভির ধর্ম পালন করিয়া থাকেন। তাহার জীবন মধুময় হয় না।

এই প্রেম লাভ করিবার জন্ম কি মান্থবের কিছু করিবার
নাই ? আছে বৈকি ? প্রেম লাভেব জন্ম সাধন ভজন,
তপল্যা সকলি মান্থ করিবে, কিন্তু প্রেম দান করা না করা
তাহার ইচ্ছা। প্রক্রপা বাতীত সেই প্রেম্ম কৈছ লাভ
করিতে পারে না। সকল চেঠার পরিসমাপ্তি হইলে,
বপন সাধক অতি ব্যাপুলভাবে তাহার প্রেমের প্রাণী হর,
তথনই ব্লক্রপা আসিয়া তাহার অভীষ্ট সিদ্ধ করেন।

আজ কর্দিন হইতে প্রেমের কত কথা ইইতেছে। ১১ই মাম প্রাতঃকালে আচার্য্য প্রেম-তত্ত্বে স্কলের ব্যাখ্যা করিয়া-ছেন, এখন প্রশ্ন এই, সেই প্রেম কিরেপে লাভ হইবে? প্রেম সাধনার ফল, কি সাধন করিলে প্রেমরূপ ফল আমরা প্রাপ্ত হইব ? প্রেম ত সকলেই চার, ইহা কিরুপে মিলিবে ? বৈক্ষবশাল্পে আছে ;—

> "প্রেমধন বিনা ব্যর্থ দরিজ জীবন। দাস করি বেতন মোরে দেহ প্রেমধন॥"

সকল সাধকের আকাজ্জাই প্রেম লাভের দিকে; কিছ লাভ হটুবে কিরপে? তাহার পথ কি ? কেহ কেহ বলি-তেছেন, "কিরপে সাধন করিতে হয়, তাহা সিদ্ধপুরুষেরাই বলিভে পাবেন। আক্ষমাজে সেইরপ সিদ্ধপুরুষ কোথার ? বাহারা স্বরং অসিদ্ধ তাহাবা সাধনের প্রণালী কিরপে বলিয়া দিবেন ?"

এ কথা কি সম্পূর্ণ সত্য যে, ত্রাহ্মসমাজে সিদ্ধপুরুষ নাই ?
৬৫ বংসর যাবং এদেশে ত্রাহ্মগণ সাধন ভজন করিরা
আসিতেছেন, ইহার মধ্যে কি কেইই সিদ্ধিলাভ কবিতে পারেন
নাই ? পদ্মপত্রের জলের ভায় সকলের হৃদয়ের উপর দিয়াই
কি ত্রাহ্মধর্মের সত্য সমূহ গড়াইয়া পড়িয়া যাইডেছে, কোনও
হৃদয়েই কি তাহা ফলপ্রদ হয় নাই ? বোধ হয় এই কথার
কোনও ত্রাহ্ম ভ্যথবা ত্রাহ্মসমাজের হিতার্থী খোগ দান করিতে
পারেন না!

সিদপুরুষ কাছাকে বলে ? তামাকে **সোণা করি**তে পাবিলে, অথবা তত্ত্বা কোনও প্রকার অন্তুত কার্য্য করিতে পারিলেই এদেশে সিদ্ধপুরুষ বলিয়া পুলিত হওয়া যায়। গৈরিকবন্ত পরিধান, জটাধারণ, ভত্ম লেপন, সৃক্ষতলে বাস ইত্যাদিও সিদ্ধপুরুষের লক্ষণ; উদ্ধবাহু হওয়া, দওধারণ করাও সিদ্ধত্বের লক্ষণ। কিন্তু ব্রাহ্মসাধন এরপ সিদ্ধত্বের পক্ষপাতী পর্মেশ্বর অনস্ত, অনস্তকাল মান্ব তাঁহাকে कानित, कानिया कानिया कथन ७ ज्ञात वित्राम हहेत्व ना। শানবাত্মা অনম্ভ উন্নতি পথে নিয়তই অগ্রসর হইবে, নিয়তই জ্ঞান প্রেমে উন্নত হইবে, ইহাই ব্রাহ্মসাধ্যের লক্ষণ। তবে পাপের সহিত যে একটা সংগ্রাম মানব জীবনে সর্বদা দেখিতে পাওয়া যার, তাহা ইহলীবনেই বিদুরিত ২ইয়া যাইতে পাবে। উক্ত লক্ষণাক্রাম্ব সিদ্ধপুরুষ কি ব্ৰাহ্মসমাজে এক জনও নাই? নাম করিব না, কিন্তু এই কথা অতি বিশ্বাদের দহিত বলিতেচি যে, ত্রাহ্মসমাজে সিদ্ধ-পুরুষ আছেন। কিন্তু যেমন পাণুরোগগ্রস্ত ব্যক্তি জ্গৎকে পীতবর্ণ দেখে, তেমন অসিদ্ধ লোকেরা আপনার ক্রায় দকলকেই অদিদ ভাবিবে বিচিত্র কি 📍 যাঁহারা এরাপ ভাবেন এবং বলেন যে, ত্রাহ্মসমাজে কেছ সিম্পুরুষ নাই, তাহাদের প্রকৃত বিনরের অভাব শ্রদ্ধার অফাব, সাধু-প্রীতির অভাব আছে বলিয়াই মনে হয়।

যাহা হউক এখন আমি মূল বিষয়ে প্রবেশ করি। প্রেম-ধন লাভ করিতে হইলে, কিরূপে সাধন করিতে হয়, সংক্ষেপে তৎসম্বন্ধে তুই একটা কথা ধালিব। প্রেম শ্ন্যে প্রতিষ্ঠিত হয় না, জ্ঞাবা অনিত্য বস্তুতে হয় না; সারবস্তু, স্ত্যবস্তু ভির প্রেমের উদয় হয় না। সাংসারিক-প্রেমের দৃষ্টাস্ত হারা পরিকার-রূপে ব্রাইতেছি। মাতা স্স্তানকে ভাল বাসেন, যদি মাতা मत्न करत्रन (य, ছেলেটী শীঘ্রই মৃত্যুমুথে পতিত হইবে, অথবা চিরক্ষ হইয়া অকর্মণ্য হইয়া বাইবে, ভবে কি ভাহার প্রতি माज्ञाह (जमन वनवजी इहेज ? (यथारनहें (श्रम, रम्थारनहें অন্তিতে বিশ্বাস দেখিতে পাওয়া যার। পত্নী ভাবেন,তিনি নধবা অবস্থার পরলোকে গমন করিছবন; পতি ভাবেৰ, তাহাকে **কথনও পত্নীবিয়োগ হঃখ ভোগ করিতে হইৰে না। অপর**্ দিকে ধনী যদি ভাবেন যে, রঞ্জনী প্রভাতেই তাঁহার সমস্ত ঐশব্য বিনাশপ্রাপ্ত হইবে, তবে কি তিনি সেই সম্পদে স্থ লাভ করিতে পারেন ? রাজা যদি ভাবেন যে, শীঘুই তিনি রাজপদ হইতে অবস্ত হইবেন, তবে কি তিনি দেই রাজ্যের প্রতি আসক হইতে পারেন ? একটী গল আছে যে, এক জনের প্রাণদভের আনদেশ হইয়াছিল। ৭ দিন পরে ভাহার व्यागमण हरेरव चित्र हरेगै। এर १ मिन प्रिटे वाकित्क রাজপদে প্রতিষ্ঠিত কবা হইল। ৬ দিন পরে তাঁহাকে কেহ. বলিলেন বে, "মহারাজ। আপনি পরম স্থে আছেন।" ভিনি বিষয়চিত্তে উত্তব দিলেন, "বাঁহার মন্তক'ছেদ্ন করিবার জর থজা শাণিত হইতেছে, তাহার আবার আনল কি ?" বাস্তবিক যেধানেই অনিভ্যতা বোধ, সেধানে ভাষী প্রেম অন্মিতে পারে না৷ যাহাকে ভাল বাসিব, তাহার অন্তিত্তে ৰিখাস নাথাকিলে ভালবাসা জন্মে না। ইহা মানব-প্রকৃতির নিগৃঢ় রহস্ত। প্রেম ভায়ী বস্ত চার, নিভ্য বস্ত চার, ষ্মনিত্যের প্রতি প্রেম ক্রমে না।

সভোই প্রেমের জনা, সভোই প্রেমের পরিপুষ্টি এবং সভোই প্রেমের উন্নতি ও বিস্তৃতি। ঈশ্বর পূর্ণ স্তা, ভাঁহাকে ধরিতে পারিলেই প্রাকৃত প্রেম্মাধন আরম্ভ হয়। নির্ভর (यथारन नाहे, त्रथारन (अम खिनाएड भारक ना। स्रेश्वत (यमन নির্ভারের স্থল, এমন নির্ভাবের স্থল আর কোথায় 📍 🖼 খর মানব প্রাণের অম্বন্তবে "আমি আছি" নিয়ত এই মহাধ্বনি করিতেছেন। এই সভোব প্রকাশ অন্নভব করিয়া, ভাহার অমুসবণ কর। প্রাণের প্রাণ হইয়া তিনি হৃদরে বাস করিতে-ছেন, সেই প্রম সত্যে বিশ্বাস স্থাপন করিলেই জাঁহার প্রতি প্রেম জ্বিবে। মাতুষ সংসাবের অনিতা বস্তকে নিতাজ্ঞান করিয়া ভত্পরি প্রেস স্থাপন করে, তুমি কি প্রকৃত নিত্য-চৈতক্সময় বস্তুতে বিশ্বাসা হইয়া প্রেম করিতে পারিবে নাণ্ \*নিতা চৈত্ত্বখয় বস্তকেই নিতাকাল, অনম্ভকাল প্রেম করা याहेटल शादा। यह मिन (महे महा, कहानात विषद्र शाकित. ভাবের রাজ্যেই থাকিবে, ততদিন বাহিরের ব্যাপার। ভাহাতে প্রকৃত প্রেমোদয় হয় না।

বিতীয়,—প্রেমধন লাভ করিতে ইইলে আপনাকে শুদ্ধ করিতে হয়। এদেশের কোন কোনও মলিনচিত্ত সাধকের মধ্যেও এক প্রকার প্রেমের বিকাশ দেখা যায়; কিন্তু সেই প্রেম ভগবৎ প্রেম নহে, বাহিরের বস্তু, অথবা স্থানর প্রেমের বিক্তু অবস্থা। শারীরিক, আধ্যান্মিক, মানসিক সর্বপ্রকার ব্যভিচার হইতে আপনাকে রক্ষানা করিলে ভগবৎ প্রেমের উদর অসম্ভব। শরীর শুদ্ধ করিতে হইলে, বাহিরের সমৃদ্য ইস্কির্দিগকে শাসনে রাধিতে হয়, মানসিক শুদ্ধতা রক্ষা

করিতে ধ্ইলে, মনের ইন্দ্রিরিদিগকে শাসনে রাখিতে হর এবং আধ্যাত্মিক পবিত্রভা লাভ করিতে হইলে কুবাসনা বিনাশ করিতে হয়। ৰাক্য সংয়ম, পরনিন্দা হইতে জিহ্বাকে সংয়ত রাথা, সত্য কথা, সত্য ব্যবহার,পরোপকার ইত্যাদি আধ্যাত্মিক শুদ্ধতার বাহ্ন লক্ষণ। এই সকল পবিত্রতা লাভ না করিলে প্রেমাদর হয় না।

তৃতীয়ত;—প্রেম অরপ যিনি, তাঁহাকে লাভ বরিলেই প্রেম লাভ হয়। তাঁহাকে লাভ করিবার পথে যতক্ষণ অন্ত কোনও ব্যক্তি থাকেন, তিনি গুরুই হউন, মহাপুরুষই হউন— এরপ হইলে প্রকৃত প্রেম হর না। যাঁহাব সহিত প্রেম হইনে, ভাঁহার সহিত সাক্ষাৎ যোগ হওরা চাই। মধ্যত্তলে আকাশের ব্যব্ধান থাকিলেও প্রেম হয় না। অথও যোগই প্রেমের পরিণতি।

প্রেমাম্পদকে না জানিলে, কিরপে প্রেম হইবে?

যতকণ সাধক তাঁহাকে জানেন না, ততকণ প্রেম হর না।
থ্টেতে প্রেম স্থাপিত হইলেই খুটানের প্রেম হর, চৈতক্তে
প্রেমাদর হইলেই বৈঞ্বেরা কৃতার্থ হন; কিন্তু আন্ধাপ্রেম দেরপ নহে। পরব্রদের সহিত আধ্যাত্মিক যোগ ভিন্ন এই প্রেমের উদর্হর না। পরমেখরের সহিত সাক্ষাৎ যোগই
আক্ষধর্মাবলমীর ব্রম-প্রেম।

একলে বলা আবৈশ্রক, ধন মানে প্রেম অপেক্ষা ছিলা,
ম্বা, চৈতত্ত্ব প্রেম, শ্রেষ্ঠ প্রেম; তাহাতে চিত্তের সাধুভাব
সকল জাগ্রত হয়, সাধুভক্তির উদর হয় এবং মনকে ধর্মপথে
রক্ষা করে; কিন্তু তাহাও অনিত্য প্রেম। সত্য অরপ পররক্ষের প্রতি প্রেম ভিন্ন কেহ নিত্য প্রেম লাভ করিতে পারেন
না। অতএব ব্রেমের সহিত সাক্ষাৎ ধ্যোগ স্থাপনই ব্রহ্মপ্রেম
লাভের একমাত্র উপায়।

जामि नर्स अथरम रय विषयात्र উল्लেখ कवित्राहि, जाहात शूनक-লেথ করিয়া উপশংহার করিতেছি। উৎসবক্ষেত্রে প্রভু পরমেশ্বর যাঁথাদেব কণ্ঠে প্রেমের মালা দিয়াছেন, সে মালা আর কিছুই নয়, ত্রন্ধের সহিত যোগ। এই যোগ রক্ষা কবিতে পারিলেই, भागात मधान तका कता रहा। পृथिवीत वाका यनि काराटक अ কোনও উপহার প্রদান কবেন, তবে তাহা কত যত্নে সে রক্ষা করিয়া থাকে। বাজদত দ্রাবলিয়াকত আদর যতে তাহা রিফিত হয়। ভনিয়াছি, বহু শতাকী পূর্বে হিন্দু **রাজ**গণ গ্রাক্ষণদিগের গলদেশে যজ্ঞোপবীত প্রদান করিয়াছিলেন. অদ্যাবধি ব্রাহ্মণ সম্ভানগণ তাহা কত বত্নে রক্ষা করিতেছেন। মহান্রাজাধিরাজ প্রমেশ্বর ক্রপা কবিয়া শুভক্ষণে আমাদিগকে যে মহামূল্য প্রেমধন দান করিয়াছেন, তাহা কি আমরা প্রাণপণে রক্ষা করিব না? অদ্য বিশেষভাবে এই চিন্তাই भागात गत्न छेनग्र श्टेटलाइ। जिनि याशं अनान कतिग्राह्न, **जारा एक वर्ष्क भारत्। कतिया शृद्ध याहेर्ड भारत्। जरवहे** জীবন ধ্যা হইবে। ব্ৰাহ্ম ভাই, ব্ৰাহ্মিকা ভগিনি। আজ তোমী-দিগকে বিনয়ের সহিত অন্থ্রোধ করি, প্রভু পর মেখরের দান উপেকা করিও না, হৃদরের মধ্যে অতি সংগোপনে তাহা রকা कत । উৎসবের শেষ দিনে ইहा भामात প্রাণগত অনুরৌধ।

এইরপে মাঘোৎদৰ শেষ হইল। এবার উৎদব উপলক্ষে নিমলিখিত স্থান হইতে প্রার ছই শত আক্ষ আক্ষিকা আদিয়া উৎদবে
বোগ দিয়াছিলেন। মেদিমীপুর, কাঁথি, বাগনান, বানিবন.ছাবড়া,
ক্ষিলিগাড়া রুক্তনগর, কোরগর, চুঁচুড়া, রামপুবহাট, মুর্শীদাবাদ
চণ্ডীবাড়ী, দাহগড়া, পাবনা, পিন্ধনা, বাঘির, শাঁকিপুর, আরা,
ডোমরাউন, বারহাঁই, কুমারথালী, মজকরপুর, বাঁকুড়া, নলধা.
রাজসাহী, বনগ্রাম, ঢাকা, পুরুলীরা, কুষ্টিরা, হোদেলাবাদ,
নাগপুর, দিউরি, ঝালী, খলিলপুর, জগরাথপুর, যশোহর,
পিরিজপুর, দিরাজগঞ্জ, মাণিকদহ, ফরিদপুর, বাগআঁচড়া,
থালোড়, মালদহ, ডাগলপুর, চলননগর, খুলনা, হাজারিবাগ,
বরাহনগর,কলপাইগুড়ী,লক্ষেনিচেরাপুঞ্জি ওমগুরভ্জেরকোথ প্রভৃতি।

উৎসব উপলক্ষে অনেক দান পাওয়া গিয়াছে। নিম্লিখিত ব্যক্তিগণ বিশেষ দান কবিয়াছেন।

পূর্ণিরার শ্রীমতী স্বর্ণমরী দাস অতিথিগণের বিছানা ক্রের জন্ত ৫০১ টাকা দিরাছেন।

ত্রীযুক্ত বিপিনবিহারী রায় আনন্দবালাবের জয় ১৫•১ টাকাদান করিয়াছেন।

বাবু নীলরতন সরকার বালকবালকা-স্মিলনের দিন সমুদ্র বালকবালিকা এবং মফ:খল হইতে আগত অতিথি-দিগকে পরিভোষপূর্কক ভোজন করাইরাছেন এবং বালক বালিকাদিগকে ফুলের মালা ও ভোজা উপহার প্রদান করিয়াছেন।

# ভক্তিই ধর্মজীবনের সার। (প্রাপ্ত)

স্থান বিশিলে সাধারণ লোকের মনে কি ভাবেব উদয় হয় ?
উদ্ধানিকে কোনও স্থান বিশেষ। সেই স্থানের বর্ণনা করিতে
হইলে তাহারা এইরূপ বলিয়া থাকেন—"তাহা পুণ্যধাম;
ধার্ম্মিক বাক্তি সে স্থানে বাস করেন। সে স্থানে কোনও
অভাব নাই—সকলেই আনন্দ স্থাও শান্তিতে বাস করেন।"
স্থানে কেবল পুণ্যায়াবা বাস করেন তাহা নহে, সেই স্থানি
জগতের অধিপতি ঈশ্বও বাস করেন। হর্গ পুথিবী অপেক্ষা
স্থানর ও উৎক্রই স্থান এবং নবনারী অপেক্ষা উন্নতজীবের বাসভূমিও ঈশ্বরের বাস্থান, ইহাই সাধারণ লোকের স্থানের ভাব।

আমাদের স্বর্গ সহক্ষে ভাব कि? আমরা উর্ন্ধদেশে কোনও
তান বিশেষকে স্বর্গ মনে করি না। আমরা ঈশ্বরকে স্বর্ধব্যাপী বলিয়া বিশাস করি—তিনি স্বর্ধতেই রহিয়াছেন—স্কৃতরাং
স্বর্গের যে প্রথম লক্ষণ—ঈশরের অধিষ্ঠান ভূমি—সেই সহদ্ধেই
আমাদের সংক্ উল্লিখিত মতে মিল নাই। ঈশ্বর স্বর্ধব্যাপী—
তিনি যথন স্কল স্থানেই আছেন তথন উর্দ্ধে কোনও স্থান
রিশেষে স্বর্গ আবদ্ধ থাকিতে পারে না—স্বর্গ সকল স্থানেই
হইতে পারে। এন্থলে প্রশ্ন হইতে পারে, "ঈশ্বর স্বর্ধ্বে
আছেন বটে; কিন্তু যে স্থানে পুণ্যাত্মারা বাস করেন, সে
স্থানকেই স্বর্গ আখ্যা দেওরা যাইত্তে পারে। সাধু ও পুণ্যাত্মা-

দিগের জন্ত যে স্থান আছে,বিশেষ মৃত্যুর পর যেথানে বাইতে হইবে, তাহাই স্থান মাছ্য কি কেবল মৃত্যুর পরেই প্ণ্যাত্মা হন্ন, তবে প্ণ্যাত্মা লোক কি এই পৃথিবীতে বাস করিতে পারেন না ? স্থতরাং স্থাকে কোনও দেশে ও কালে আবদ্ধ করা যাইতে পারে না । স্থা সকল কালে ও সকল দেশে হইতে পারে।

এইরপ সকলেই এক স্বর্গলোক, পুণ্যলোকের ভাব্ জীবনে পোষণ করেন। আমরা এই পৃথিবীতে থাকিয়াই সেই পুণ্যলোকে বাস করিতে পারি, সেই স্বর্গের আস্বাদন পাইতে शांति-- हेहारे जामारमत विधान! जामारमत कीवन, जामारमत সমাজ সেই चर्न রাজ্য হইবে সেই পুণালোকেরআভাস मासूयक अमान कतिरव। सगरछत लाक वरन धरे शृथिवीरङ चर्ग इब्र ना, आमता विन এই পৃথিবীডেই अर्ग इब्र। এই य অামাদের কথা, তাহা কার্য্যে পরিণত হয় না কেন? আমাদের জীবনে, আমাদের প্যাজে সেই অর্থ রাজ্যের ছায়া কেন পড়িতেছে নাণ আমাদের ব্যক্তিগত জীবনের হু:থ যার মা কেন ? সমাজের মধ্যে প্রেম ও শান্তি স্থাপিত হয় না কেন ? আ্বাদের বিখাদে কি ভ্রম আছে ? আমরা কি অসাধ্য সাধন क्रविट यारेटिक १ धक्र भारत रह ना। किन्न मानवानात रम প্রকার অবস্থা হইলে স্বর্গের শোভা প্রকাশ পায় সেই উপকরণের অভাব। পিতা ও পুত্র এক স্থানে বাস কবিতে পাবেন, কিন্তু সম্ভান যদি পিতাব প্রতি শ্রন্ধা বিহীন হয়, পিতা যদি পুত্রের প্রতি স্বেহ হীন হন, সেগানে পিতা পুলের সম্বন্ধের মধুরত। तिथा गांत्र ना । मानवाका यथन जेचदत्रत मृद्ध च्यापनांत्र छाङ्क छ। সম্বন্ধে উপস্থিত হয়, তথনই অর্গেব শোভা প্রকাশ পায়। সেই সম্বন্ধ প্রেমের মিলন। যথন মানবাত্মা ভক্তি ও কৃতজ্ঞতা ভরে প্রমেখবের পূজা, বন্দা ও গুণগান করে, তথ্নই ৰাক্তিগত জীবনে, সামাজিক জীবনে অর্গের শোভা পায়। ভক্তিহীন জীবনে ধর্ম্মের শোভা প্রকাশ পায় না। জগতের भोक्या (श्राम, न्यात धार्मात भोक्या कि (श्रमशैनन्यात्र? ভর্ক করিবার জ্বন্স বলিতে পারা যায়, "কেন জ্ঞান চাই, সং-কর্ম্মের অনুষ্ঠান চাই, তবেই স্বর্গ হয়। ভক্তিকে সর্ব্যপ্রধান ম্বান কেন দাও?" জ্ঞান, নীতি কি সংকর্মের অক্টান কাহাকেও ভাড়াইয়া দিবার কথা হইতেছে না। থাকিতে পারে, অথচ জীবন ভক্তিহীন হহলে, স্বর্গ দূরে থাকুক. ইহা শ্রশান তুল্য স্থান হইয়া যায়।

বর্ত্তমান সভ্যতার উন্নতির সঙ্গে সংক্ষে প্রতির নানা প্রকার অভিযোগ আগিতেছে। ভক্তি সম্বন্ধে নানাপ্রকার অপ্রদার ভাব পোষণ করা হইতেছে। আর বর্ত্তমান কন-সমাজ এরপ অবস্থায় অবস্থিত আছে যে, ধর্ম্মের প্রাণম্বরূপ ভক্তিকে রক্ষা করাকঠিন হইরাছে। কিন্তু স্থিরভাবে চিন্তা করিলে কি দেখিতে পাই ? ভক্তি ও ভক্তজীয়ন সম্বন্ধে বে সকল অভিযোগ দেখা বার ভাছা কি সভ্যা ? চুল বাইয়া গুড়িলে দধিকে কি কেহু ভব্ন করে,ভক্তজীবনের অভাব শৌধরা ভক্তিকে—ধর্মজীবনের সার বস্তক্ষে,দুরে নিক্ষেপ করিলে কেবল বিচার শক্তির হীনভাবই পরিচন্ধ গাওয়া যায়।

বিনয়, দীনতা ও শ্রদ্ধা, ভক্তির সহার। অভিরিক্তব্যক্তিত্ব,
নিন্দা ও সমালোচনা, ভক্তির বিরোধী। বর্তমান সময়ে সকল
কার্যাই যেন যত্ত্রের হারা সম্পাদিত হইভেছে। মানা শাল্র পাঠ
করিয়া মাছ্ম জ্ঞানী হইভে পারে, দেশে নানাপ্রকার সৎকর্দ্মের
অহঠান করিয়া ভাল লোকও হইভে পারা হায়। এমম কি
ভাহার মধ্যে প্রবেশ করিলে অকর্মণা লোকও সৎকর্মনীল হইভে
পারে, কিন্তু এরূপ কোনও যন্ত্র নাই, যাহাভে আরোহণ করিলে
মাছ্ম ভক্ত হইভে পারে। প্রেমলগতের স্ক্র নিয়মের অধীন না
হইলে, প্রেম হয় না। ঈশবের প্রীতি, ধর্মের সার, মানব প্রীতি
ইহার বল। মহাত্রা যীশু এই ভবের সার ব্রিয়াছিলেন, ভাই
এক কথায় সমুদর ধর্মশাল্রের এই সার মর্ম্ম ব্যাথাা করিয়াছিলেন,—"সম্বর সদয়ের সহিত ঈশবকে প্রেম কর, ইহুইে প্রথম
উপদেশ। তর্পবে ভোমার প্রতিবেশীকে আত্মবং প্রীতি
কর।" মহর্মি নাবদ ব্যাস ম্নিকে যে ভক্তি শিক্ষা দিয়াছিলেন, ভাহাইও ভাৎপর্যা এই।

শোহং বসামি বৈকৃষ্ঠে যোগীনাং ক্ষান্তেনচ। মন্তকা বত্র গায়স্তি তত্র তিপ্রামি নাবদঃ।' উক্তি, ভগবানের উক্তরূপে লিখিত হইয়াছে,—"আমি বৈকুষ্ঠেও বাস করি না, যোগিদিগের ক্ষান্তেথ থাকি না. যেখানে আমার ভক্ত গান করেন, আমি সেই থানেই থাকি।" ঈশরের আবির্ভাব সর্কত্রই আছে। কিন্তু ভক্ত যেথানে ভক্তিতে তাঁহার পূকা বন্দনাদি ক্বেন, সেই থানেই স্বর্গেব চবি প্রকাশ পায়।

ভাবৃকভাতে এবং যথার্থ ভক্তিতে অনেক প্রভেদ। নার-দের উক্তি-ভব্ব, শাণ্ডিলোর ডক্তি-ব্যাথ্যা পাঠ কবিলে ভক্তি কি ভাহা বুঝা যায় না। ঈশ্বরক্লপায় যিনি সেই বস্তু প্রাণে এক বিন্দু পাইয়াছেন, তিনিই জানেন ইহা কি বস্তু।

ব্যক্তিগভন্ধীবন ও ব্রাহ্মসমান্তের জীবন আলোন্ডনা করিলে বড়ই অভাব দৃষ্ট হয়। অত্যস্ত ছ:থের বিষয় যে, অনেক স্থানেই ত্রাক্ষ জীবনের অবস্থা এই ভক্তি সাধনের অফু-কুল নহে। তার পর জীবনের গতিও ভিন্ন দিকে ধাবিত। ভিক্কীবন সমাজারে প্রাণ। অনেক স্থলে ব্রাহ্মসমাজ ও ব্রহ্মো-পাদনা-ক্ষেত্র যে আকর্ষণ শুক্ত হইয়া পড়িতেছে, তাহার কারণঙ **এই, राशांत्र एक की**वरनंत्र वह नाई अवः राशांत्र एक विकास পার না, দেখানে মানবপ্রাণ ভৃষ্ঠ হইতে পারে না। গাঁহারা ভঙ্কিমত্তে দীক্ষিত, তাঁহারা সমাজের লোককে মল্ল মুগ্রের স্থায় এক প্রাণ করিয়া রাথেন। কিরুপে পরস্পরের মধ্যে মিল হয়, कि व्यकारत मभारकत्र कार्या छान ज्ञारण हरन, जाहात रहहा इह-তেছে; কিন্তু যথার্থ উপায় উদ্ভাবিত হুইতেছে না। পরিত্রাণের পথে বদি লইয়া যাইতে চাই, সমাজকে যদি জীবস্ত क्रांत्रिक होहे, ज्रांत क्रीवरन क्रिक मञ्जनाधन क्रिक्त हहेरत। ঈশর-প্রেম প্রাণে জাগ্রত হউক, ঈশর-প্রীতি জীবনকে অধি-কার করক, ভক্তের সংখ্যা আদ্দ্রমাঞে বিদ্ধিত হউক, মহা পরিবর্ত্তন আসিবে। আনেক সমরে কুসংস্থার বর্জন করিতে যাইয়া, সার বস্তকে ফেলিয়া দিয়াছি। সাধুভক্তদিগের প্রতি শ্ৰদাও তাঁহাদিগকে সৈবা করা এবং জীবে প্রেম ও নামে ক্ষতি ভক্তি লাভের উপায়। ব্রাহ্মসমালে এই সকল উপারের

প্রতি আছা বর্দ্ধিত হওরা আবশুক। বেমন জ্ঞানীর চরণে বসিরা জ্ঞান শিক্ষা করা যায়, তেমনই অগতের সকল ভক্ত নাধুর চরণে বসিরা ভক্তি তত্ত্ব প্রবণ এবং লাভ করিতে ইইবে।

যদি ভক্তিগত জীবনে স্বর্ণের ছবি দেখিতে চাই, যদি ব্রাক্ষ-সমাজ নরনারীর প্রাণ জুড়াইবার স্থান করিতে চাই, আমা-দিগ্ৰে ভক্তি-মল্লে দীকিত হইতে হইৰে, প্ৰেম মল্ল সাধন করিতে হইবে ৷ মহাত্মা পল জীবনের অভিজ্ঞভার বুঝিরা ছিলেন, প্রেমই ধর্মের সার। জীবনের প্রারম্ভে তিনি বিশ্বাস-কেই সর্ব্বোপরি স্থান দিতেন। কিন্তু সকলের শেষে প্রেমকে বিশ্বাদের উপর দাঁত করাইরা বলিলেন,—"Faith hope and love abide, but the greatest of these is love " বিশাস, আশাও প্রেম চির্দিন থাকিবে; কিন্তু প্রেমই সর্ব্ব প্রধান স্থানীয়।" ভক্তি-তত্ত্ব শিকাও ইহা লাভেব স্চনা জীবনে ঈশ্রের করুণা দর্শন করিয়াই হয়। "I love Him because He has loved me first." "তাঁহাকে ভাল বাসি, কারৰ তিনি আমাকে প্রথম ভাল বাসিয়াছেন।" জীবনে ঈশবের বস্তুণাকে কে অস্বীকার করিতে পারে ? বধনই দ্বিরচিত্ত আপ-নার গুপ্ত ঘবে বদিরা চিন্তা করি, তথনই সেই প্রেমের চিত্র জীবনে দেখিয়া ভক্তি ও কুতজ্ঞতাতে তাঁহার চরণে অবনত হই। প্রেম, প্রেমকে উৎপন্ন করে। ঈশ্বরের করুণা দেখিলেই জীবনে প্রেমের স্ঞার হয় এবং নর্নাবীর প্রতি প্রেম ছড়াইরা পতে।.

বাধিরের এবং ভিতরের নানাপ্রকার উপায় অবলম্বন করিয়া এই প্রেমকে বহ্নিত করিতে হয়। পুর্ব্বে কয়েকটী উপায় উল্লেখ করিয়া প্রবন্ধের উপসংহার করা গেল। ১ম উপায় ভক্ত-সম। অগ্রির সংস্পর্শে বিদিলে যেমন উত্তাপ অমূভ্র করা যায়, ভেমনি ভক্ত-সম্প্রেম উপরেশন করিলে জীবনে ঈশ্ব-প্রী ভি জাগ্রত হয়। ২য় উপায়, ভগবানের গুণকীর্ত্তন, শ্রবণ ও প্রদম্ম। ৩য় উপরে — জীবে দয়া ও জীব সেবা।

ঈশার করুন আমারা জীবনে ভগবদ্ভক্তি লাভ করিয়া ক্লতার্থহিই।

#### দরবেশগণের যোগরহস্ত।

(উদ্ভ)।

গত >লা মাধ্যের "ধর্মাতত্ত্ব" প্রাক্রিকায় "দরবেশগণের যোগ-রহস্ত" সম্বন্ধে একথানি প্রেরিভপত্র প্রাকাশিত হইরাছে। এসম্বন্ধে পাঠকগণের মনোযোগ আকর্ষণ করিবার জন্ত আমবা পত্রথানি অবিকল উদ্ধৃত করিয়া দিলাম্।

"এই বর্ত্তমানবুগে গুরুবাদের এমনই প্রভাব বাড়িয়নছে যে, বাজসমাজের কজিপর প্রসিদ্ধ ব্যক্তি পবিজ্ঞ বিধানের বিরুদ্ধা-চরণ পূর্বক কেহ কর্ত্তাভলা,কেহ ভক্তিভালন বিজয়ক্ষ গোষামী মহাশরের নিকট দীকা গ্রহণপূর্বক অস্বাভাবিকউপারে মনঃ-ক্ষিত দেবতার দর্শনকামনার উনবিংশ শতাকীর দার্শনিক ও মার্জিত জানের অলভ দৃষ্টান্ত সত্তে ও ক্ষবৈজ্ঞানিক ও আদর্শনিক ভাব প্রদেশন করিতেছেন। এই সকল বিশারকর ব্যাপারদর্শনে বিশারসাগরে একেবারে নিমগ্ন হইরাছি। কেন, আমি বিদ্যাব্দিইন নিতাস্ত অর্কাচীন হইরাও যখন দরবেশদিগের করিত যোগাদি সাধন ও করিত জ্যোতির্শ্বম ব্রহ্মদর্শন করিরা ভাহা ঘূণার সহিত পরিত্যাগপুর্বাক ব্রহ্ম-ধর্ম গ্রহণ করিরা এ পর্যাস্ত নিজ বিখাস উজ্জল রাথিরাছি, তথন উইরো বিদ্যাব্দিসকে কিরপে নর-পূজা, গুরু-পূজা ও ভ্ত-পূজা করিতে সম্মত হইলেন, ভাহা আমার ক্ষুত্র বুদ্ধিৰ অগোচর!

আমি সাধারণের বিদিতার্থ দরবেশদিগের সাধন-প্রণালী ও নিজ্ঞীবনে এবং সমসাধকগণের জীবনে বাহা ঘটয়াছে, ভাহা প্রকাশ করিতে বাধা হইলাম।

দরবেশদিগের নিকট কোনও দীক্ষার্থী উপস্থিত হইলে, শুক্ তাঁহাকে দীক্ষিত করিয়া কোনও একটা বস্কোথ্ (আবরণ) দেন। বদ্কোথ্ প্রধাণতঃ তিন প্রকার; যথা কোন স্করী নারী চিন্তা, নিক্ষরণ চিন্তা ও স্থামগুলে দীক্ষা গুরুর চিন্তা।

নাবা-চিন্তা। কোন স্করী রমণীর মুথমওল স্করেরপে
মনের মধ্যে অন্ধিত করিরা হেফ্জ্নম্ (খাস বোধ) পূর্বাক
লাধক সর্বালা ঐ রমণীর রমণীর মুথমওল চিন্তা করিবেন।
এইরূপে কিছু দিন চিন্তা করিছে করিতে, যথন মোরাকেব
(চিন্তাতে মন ময়) হইরা মাইবে, তখন সেই নারী সাধকের
মানসচক্ষের নিকট অপ্ররানিক্ষিত রূপ ধারণ করিরা নয় বেশে
প্রকাশিত হইবেন এবং সাধক যে নারীর চিন্তা কবিবেন তিনি
উন্মানিনীর ন্থার তাঁহার সক্ষণনের জন্ত অভিরতা প্রকাশ করি-বেন। লরবেশগণ বলেন, এম মেজাজি না হইলে, এম্বংকিকি
লাভ হয় না। এর মেজাজি শব্দের অর্থ নারীব প্রতি আসক
হয়রা। আমার ছই তিন জন বছু বা সমসাধক উক্ত বর্জাথে
সিদ্ধি লাভ করিয়াছিলেন; কিছু তল্মধ্যে জনৈক কুমার সমসাধক
ভল্লর ব্যক্তিরার লোহে লিপ্ত হইয়া, আপনাকে তিন চারি
মাস কল্লিক রাথিয়াছিলেন। পরে তিনি অন্ত্রপ্ত হইয়া
ভল্নর চরণ ধারণপূর্বাক ক্ষমা পার্থনাৰ বিয়া শিব্যপ্রেণীভূক্ত হন।

নিজরুপ চিস্তা। দর্পণে নিজ মুথ সর্বাদা অবলোকন বরিতে করিতে, বথন মনের মধ্যে নিজ মুথমঙ্গল সম্পূর্কণে অঙ্কিত হইল, তথন খাসরোধপূর্কক প্রভাহ চারি পাঁচ ঘণ্টা গভীব চিন্তার নিমগ্ন হওয়া আবশুক। এইকপে কিয়দিন চিন্তা করিলে নিজ দেহের প্রতিরূপ সর্পত্তি অর্থাৎ অন্তরে বাহিবে দেখা যাইবে। (আমার জনৈক সাধক বন্ধু বলেন, সকল সময়ে বা সর্পত্তি দেখা যার না।) নিজ দেহের জ্যোভি:পূর্ণ প্রতিরূপ দর্শনকে দরবেশগণ মলকুত মোকামে রুহেরদিদাব (আ্যারদর্শন) কহেন। কিন্তু উচ্চ শ্রেণীর সাধকগণ নিজ দেহেব প্রতিরূপ দর্শনকে আ্যার দর্শন বলিয়া আক্রান জ্বেন না। তাঁহারা বলেন, আপনাব মধ্যে স্কারের জ্ঞান প্রেম ইত্যাদি স্কাররূপে দর্শন করাই রুহেরদিদার বা আ্যায়দর্শন। ইটি সাধন করিয়াছি।

ু স্থামগুলে শুরু দর্শন। অরুণোদরের সমর অঙ্গুলির উপর অঙ্গুলি স্থাপন করিরা তচ্ছিত্র বারা স্থোর তথ্য কাঞ্চনের জ্ঞার পোলাকার স্থি হুদরে অঙ্কিত করিরা ত্রাংগ্য গুরুর মৃত্তি কুম্ভকের সহিত কিয়দিবস চিত্তা করিলে সাধক মানস-চক্ষে দেখিবেন যে, স্থ্যমণ্ডলের মধ্যে উ'ছার শুল বিরাজ করি-তেছেন। ইহাকে দরবেশগণ সম্ছ (স্থ্যের) বর্জোধ্ কহেন। ইহা সাধন করিয়াছি।

জ্যোতিময় ব্রহ্মদর্শন। ইহা সার্ধন করিবার অত্যে সাধককে অন্তঃ পুঁচিশ মিনিট খাসরোধ অভ্যাস করিতে হইবে। পরে নবধার বন্ধ করিরা ললাটে দৃষ্টি ও চিস্তা স্থাপনপূর্মক প্রভাৱ একাসনে তিন চারি ঘণ্টা সাধন করা একাস্ত আৰশ্ম । এইকাপে কিছুদিন সাধন করিলে প্রথমতঃ ললাট হইতে জ্যোভির কণাসকল বাহির হইতে থাকে। সমরে সেই কণাগুলি ক্রমশঃ বৃহৎ হইরা সাধককে জ্যোভির সাগবে ভ্রাইয়া দেয়। কোন কোন সাধক ঐ জ্যোভিব মধ্যে গুরুত্বপ চিস্তা করিয়া ভাঁহার দীক্ষা গুরুকে দর্শন করেন, কিন্তু আমি কেবল জ্যোভির সাগরে ভূবিরা যাইভাম। এইকপ জ্যোভিদশনকে জ্যু সাধক জ্যোভিদশনকে জ্যু সাধক জ্যোভিদশনকে জ্যু সাধক জ্যোভিদশনকে ক্রুত্বপ করেন। ইহা সাধন করিয়াছি।

ফনোফেল ওকুর (দেহের লয় গ্রাপ্তি)। সাধক নিজরুপ চিন্তা করিতে করিতে এমনি দৃষ্টিবিকার প্রাপ্ত হন যে, তিনি আপনাকে সর্বাত্ত দুর্শন করেন।

ফনোফেই শে'রাণ্ ( শুক্তে লর্থান্ডি)। শুক্রপ নিরম্বর
চিন্তা করিতে করিতে, দীক্ষাগুক্তে স্ক্রি দর্শন করা ফেনোফে হ শেরাথ। ইহা বলা বাচল্য যে, সাধক আগনাক্ষেও ইহাতে শুক্র মত দর্শন করেন। উন্নত সাধকণণ শুক্রপ অর্থাৎ শুক্র মধ্যে জ্ঞান, প্রোর্থে ঈশ্রের যে প্রকাশ ভাহাই চিন্তা ক্রিরা উক্ত জ্ঞান প্রেম পুণাদিতে আগনাকে পূর্ণ রোধ করেন।

কনোফের স্থল (হজরৎ মহন্মদে লর প্রাপ্তি)। খোলাসোতল্ আরিয়া প্রভৃতি গ্রন্থে হজরৎ মোহন্মদের বেরপ রূপ
বর্ণন আছে, ভাহা মনের মধ্যে অভিত করিয়া, খানরোধপূর্কক
কিছুদিন চিন্তা করিলে উক্ত সাধক হজরতের রূপ সর্কত্র দর্শন করেন। সাধক এ অবস্থার আপনাকে হজরতের ক্রান্থ দেখেন।
উচ্চ প্রেণীর দরবেশগণ হজরতের মধ্যে দ্বিরের জ্ঞান, প্রেম,
পুণ্য ইত্যাদির অলক্ত প্রকাশ দর্শন করিতে করিতে, ভাহার
মধ্যে আপনাকে হারাইয়া দেশেন অর্থাৎ হজরৎ মোহন্মদে
আমির নাশ করিয়া, ভাহার স্বিত অভিয়ন্তাবে জ্ঞান প্রেম
প্ণ্যাদিতে স্থিতি করেন। ইহাই প্রক্রত ফনোক্ষের স্থানের দরেশ।

ফনোফিলা (ঈখরে লরপ্রাপ্তি)। ইহা সাধন করিবার জন্ত সাধক প্রথমে গভীর সুবাচিন্তার, নিমগ্ন হইরা আমিত্ব নাশপূর্বক ভেলাডেদজ্ঞানশৃষ্ঠ হইরা যথন নিরস্তর ব্রক্ষে ছিতি করেন, তথন তাহাকে ফনোফিলা (ঈখরে লয়প্রাপ্তি) কহে। ফনোফিলার অবস্থার সাধক অবৈত্ব ভাষাপর হইরা আনোল্ ইক্ (সোহং) শক্ষ উচ্চারণ করেন, এক্স নিজের ক্রেম্ব, দাসর ইত্যাদি ক্রনণ করিরা, বৈত্ব অবৈত্ব ভাষের স্মিলনভূমিকে আপ্ররপ্রক ছিতি করেন। ইহাকে লরবেশিন্ত্র ফনোফেল বকো কহে। ইহার উপর লরবেশদিগের আরা উচ্চ সাধন লাই।

ফনোফেরছুল, ফনোফিলা ও ফনোফেল বকো, এই ত্রিবিধ অবস্থা লাভ করি নাই, সাধকগণের নিকট গুনিরা লিপিবন্ধ করিলাম, স্থতরাং নিভূলি হইতে পারে না।

দরবেশি মত চারি সম্প্রদারে বিভক্ত, যথা কাদ্রিয়া, চিক্তিয়া, নক্সবিদ্যা ও নোজাদৈদিয়া। ইহার মধ্যে কেবল নক্সবিদ্যা মতে বরজোথ নাই। ইহারা বলেন, বরজোধ, ও. পৌত্তলিকতা শৃত্যু নহে।

হাবড়ার কিঞ্চিৎ পশ্চিম কান্তলির প্রামে তাপদ নেহালুদিন সাহ নামক যে দরবেশ ছিলেন, তাঁহার একটি হিন্দু শিব্যার প্রমুখাৎ বাহা গুনিয়াছি, তাহা বর্ণন করিতে প্রবৃত্ত হইলাম। উক্ত নারী বলেন, যগন আমি ধ্যান করিতে বদি, তথন আমার দল্পথে কালীঘাটের কালীমূলির উপত্তিত হর। পরে জনতি-বিলম্বে মা স্বয়ং ঘারের অর্গল উদ্ঘাটনপূর্ক্ক বাহিরে আদিয়া আমাকে দর্শন দেন। আমার ঈশ্বর প্রাপ্তির বাক্ষি কি ?

কলিকাতা শিরালদহ দামক স্থানে হাজি মোহলদ সাহ
নামে এক জন দরবেশ বাস করেন। তাঁহার জনৈক শিবা সাধন
ভব্দন করিবার সমর, কথন রোদন, কথন বক্ষে করাঘাত, কথন
ভূতলে অবসূঠন ও কোন কোন সমর অটুহান্ত করেন। সে
বাক্তির অবভা দর্শনে আমার অতাস্ত সন্দেহ হয় এবং তাঁহাকে
লাই করিয়া বলি যে, ভূমি কি দেগিয়া থাক, তাহা আমি
বুঝিতে পারিয়াছি। 'যাহা দেখিয়া থাক, তাহা আমি
মনঃকরিত দেবতা ভিন্ন কিছুই নহে। তত্তত্তরে তিনি বলেদ,
যথন আমি সাধন করিতে বসি, তথন আমার প্রির (দীক্ষাগুরু)
আমার সমূপে উপস্থিত হন। এই কথা বলিয়া উক্ত সাধক
রোদন করিতে থাকেন। পরে তাঁহাকে নিরাকার ঈশর দর্শন
ভূক্ষররূপে বুঝাইয়া দিলে, তিনি বলিলেন আমার কিছুই হয়
নাই; আমি হিন্দুদের ভার প্তলিকা লইয়া ক্রীডা করিছেছিমাত্র।

মুদ্দি পোলাম পাঞ্জাতন প্রাভৃতি কতিপর লাধকের জানৈক শিষা বলেন, আমি ঈশব লাভ করিরাছি। পরে নানা কৌশলে জানিলাম, তিনি ক্রহের দিলার (নিজ দেহের প্রতিরূপ দর্শন) ক্রিয়াছেন।

তাপদ নেহালুদ্দিন সার অনৈক শিবা (আমার প্রভিবেশী)
খ্যানের সমর শুরুর জ্যোতিঃপূর্ণ দিবা মূর্ত্তি দর্শন করিতেন ও
সময়ে সমরে প্রাল্ল করিয়া তাঁহার নিকট সহত্তর লাভ করিয়া
পরমাহলাদিত হটতেন। তঃথের বিষয়, তিনি ঐ গুরুম্র্তিকে
ঈশরজ্ঞানে নিজ আশ্বার উয়্মি সাধনে পরাশ্ব্য ছিলেন। আমি
কর্মেকটী ঘটনার ঘারার উহা স্ক্রেরপে ব্রিয়াছিলাম। উক্ত সাধক অমুমান পনেব বৎসর ইচলোক পরিত্যাগ ক্রিয়াছেন।

অধ্যার কোঁচতাত বঁগাঁর নিম্টাচরণ ভট্টাচার্যা কর্তাভজা ছিলেন। আমি তাঁহার নিকট বাদশ বংসর বরঃক্রমের সমর দীক্ষিত হইরা অসুমান চারি পাঁচ বংসর সাধন ভজন করি-রাছিলাম। জোঁচতাত প্রায়ই বলিতেন, আমি সভী মারের (৬রামশরণ পালের ল্লী ও ৬ত্লালটাদের মাতা) জ্যোতিপূর্ণ দিবা সৃদ্ধি দর্শন করিরাংথাকি; তুমি চেটা কর, অচিরে মারের পাদপল্ম লাভ করিবে। কিন্তু আমি লর্বেলি গ্রহণ করিয়া বেমন প্রত্যাহ উনিশ কৃতি বতী কঠোর সাধ্য করিতাম, সেইরূপ সাধ্যের অভাবে সভীমারের দিবাস্তি দর্শন করিরা কুতার্থ হই নাই। স্বভরং আমি উক্ত ধর্ম পরিভাগে করিয়া পাছে বা বাল্যধর্মপ্রত্য করি এই ভরে কিনি প্রায়ই বলিতেন, ব্রহ্ম-

জ্ঞানীরা কিছু পার না, কিছু দেখে না, কেবল চকু মুদ্রিত করিয়া ধোঁৰা বা অক্কার দেবে; উহাদের মাথা মুও মত; कथात्र वरन 'अमृत्थ छावना नाखि'। किङ्क्तिन शत्त्र मत्रत्विन গ্রহণ করিয়া, অন্থ্যান তিন চারি বৎসর কঠোর সাধনাদি ছারা কল্লিত দেবদর্শন করিয়া স্থী হইতে পারিলাম না। কেন না আমি হিন্দুধর্মসাধনের সময় বহুদিন স্থ্যমণ্ডলে নারায়ণের धान कतियाहिनाम। भरत शक्त मनिधारन गमन कतियां, वनि-লাম বে, আমি কল্পনাপ্রস্ত দেবদর্শন লাভ করিয়া, আদৌ স্থী हरेट পात्रि एक ना; जापनि जामारक यथार्थ साहजारी सर्ज দিন। আমার কথা প্রবংগ তিনি ক্ষণকাল সাম্বনার জন্ত উপদেশ मिलान। किन्न यथन मिथिलान (य, आमात्र मन किছू उट्टे मान्धि-লাভ করিতেছে না, তথন নিরুপায় ইহয়া ঈশবের সভা চিন্তা শিক্ষা দিয়া বলিলেন, আমরা অজ্ঞ সাধককে বশীভূত কবিবার জন্ত ঐরপ বৰজোথ শিক্ষা দিয়া থাকি,কারণ গুরুবাক্যে শিষ্যের অকৃত্রিম ভক্তি বিখাদ না মলিনলে বৈরাগ্যাদির ছঃদহ কই সহা क्तिएक ना शांत्रिया मःमारत शंनायन करता। शरत उँशांत्र निक्छे আচার্য্য ব্রহ্মানন্দ কেশবচন্দ্রের গুণের কথা গুনিয়া ব্রাহ্মসমাঞ গমন ও যোগদান পূর্বক উপাসনা ও নির্জ্জনে সন্থাসাধন করিয়া এ পর্যান্ত স্থিতি করিতেছি। মনংকলিত দেবতার উপাস্কগণ

আমার দীকাগুরু (তাপস নেহালুদ্দিন সা) এক দিবস বলিয়াছিলেন যে, আমার নিকট জনৈক মেষপালক আদিয়া দীক্ষিত হইবার জন্ত অভ্যস্ত কাকুতি মিনতি করিছ। আমি অধোগ্য জ্ঞানে ভাহাকে দীক্ষিত করিতাম না। কিন্তু মেষপালক সময়ে সময়ে অভান্ত বিরক্ত করিত এবং বলিত খোদাকে ( म्रेचंत्रक ) किकार छावित ? खामि এक निन विनाम स्यायन ক্সায় তাঁহাকে চিন্তা কৰ। তুমি মূৰ্থ! ধোদাতালায় বুঝিৰে কি 📍 किन्द (महे मंदन विश्वाची (महेशानक (महाज्ञ कतिएंड कतिएंड বুক্ষতলে উপবিষ্ট হট্যা দিবামেবজ্ঞানে ঈশবের গভীয় চিস্তায় নিষয় হইত। পয়ে এক দিবস ঘটনাক্রমে উক্ত মেৰণালক সলিধানে উপস্থিত হই: দে আমাকে দর্শন করিয়া পদতলে গড়াগড়ি দিতে ও রোদন করিতে থাকে, এবং বলে ৰোদা (त्रुख ( चर्ग निरुक्त ) इरेट मिना (मर्यन श्रीत कृत्न वन-তরণ-পূর্ব্বক আমার চাবিদিকে নৃত্য করেন। আমি ভাছার ভক্তি বিখাদ দশনে একান্ত মুগ্ধ হইষা, উক্ত মেৰণালককে প্রকৃত খ্যান ও দশন শিক্ষা দিয়া গস্তব্য স্থানে গমন করি।

ভক্তিভান্ধন মহাশর, আপনার অভিলাষমতে নিতাস্ক উচিত্ত
মনে করিয়া দববেশদিগেব সাধন প্রণালী ও নিক্ত জীবনে
এবং সমসাধকদিগের জীবনে যাহা যাহা ঘটিয়াছে, তাহাই
লিশিবদ্ধ করিয়া আপনার নিক্ট প্রেবণ করিলাম। মহাশর,
আমাব পত্রথানি অবলম্বনপূর্বক ধর্মাতন্ত্বপত্রিকায় প্রবন্ধ লিখিয়া
এ দাসকে ক্কতার্থ করিবেন। ধর্মাতন্ত্বপত্রকার উপযোগী প্রবন্ধ
লেখা আমার সাধাাতীত।

"আপনারদাসামূদাস শ্রীবিহারীলাল নাথ। মোং ধোপাপড়া।"

# ব্ৰাহ্মসমাজ।

প্রচার যাত্রা—মাঘোৎসবের পরে, পরমেখরের ভঙাশীর্কাদ প্রার্থনা, করিয়া সাধনাপ্রম হইতে একটা প্রচার দল ইতিপূর্বে মফ:স্থলে গিয়াছেন। তাঁহারা রাজসাঞ্জী, রঙ্গপুর, কোঁচবিহার হইয়া আসাবের স্থানে স্থানে প্রমণ করিবেন; অপ্রর দল
পূর্ণিয়া, দিনাজপুর, জলপাইপ্রড়ি প্রভৃতি স্থানে যাইতেছেন।
আসামযাত্রী প্রথমোক্ত দলে শ্রীযুক্ত হরিমোহন ঘোরাল এবং
শ্রীযুক্ত অমৃতলাল শ্রুপ্ত গিয়াছেন। শেষোক্ত দলে শ্রীযুক্ত কাশ্রচক্র ঘোরাল এবং শক্ত একজন প্রহার ঘাইবেন। ক্তংল্বছ

বন্ধুগণের নিকট বিনীত নিবেদন যে, তাঁহারা যেন প্রভু প্রমেখরের নাম প্রচার এবং সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের দের চাঁদা, ভব্বকৌমদী, মেদেঞ্চারের মূল্য প্রভৃতি আদার সম্বন্ধে বিশেষ সহারতা করিয়া বাধিত করেন।

উৎসব—-বাকুড়া হইতে প্রদের ভাতা প্রীযুক্ত কেদাব নাথ কুলভি লিথিয়াছেন;—

কর্মণাময় প্রমেখরের রূপার উপর নির্ভর কবিয়াণ্রীকুডা রাহ্মসমাজের সভাগণ নিম্নলিথিত প্রণালীতে উক্ত সমাজের চতুর্দশ সাম্বদ্রিক উৎসব সম্পন্ন করিয়াছেন।

১১ই ফান্তুন, শুক্রবার, সায়াত্রে—উৎসবের উদ্বোধন। ১২ই ফান্তুন, শনিবার, প্রাতে—উপাসনা। অপরাত্রে—বক্তা। রাত্রে—সংকীর্ত্তন ও উপাসনা। ১৩ই ফান্তুন, ববিবার, প্রাতে—উপাসনা। ১৯ই ফান্তুন, সোমবার, প্রাত্তে—উপাসনা। মধ্যাত্রে—আতৃর ও গরিবদিগকে কিছু দান। অপরাত্রে—নগর সংকীর্ত্তন। রাত্রে—উপাসনা। ১৫ই ফান্তুন মঙ্গলবার প্রাত্তে—উপাসনা। মধ্যাত্রে—শান্ত্র পার বাধা। আপরাত্রে—সঙ্গীত ও সংফীর্ত্তন। সায়াত্রে—শান্ত্র পাঠ ও বাধা। অপরাত্রে—সঙ্গীত ও সংফীর্ত্তন। সায়াত্রে—উপাসনা।

দানপ্রাপ্তি স্বীকার—জামরা ক্বজ্জতাব সহিত্ সীকার করিতেছি বে, সাধারণ গ্রান্ধসমাজের দাতব্য বিভাগে মযুবভঞ্জের মহারাজা ৫০১,কলিকাতা নাথের বাগানের জমিদাব প্রীযুক্ত রামলাল বন্দ্যোপাধ্যার পারিবারিক শুভার্ম্চান উপ -লক্ষে ১০১, এবং থলাসির জমিদার প্রীযুক্ত বাবু বোগেন্দ্রনাথ বস্তু ১০১ টাকা এককালীন দান করিয়াছেন।

বিবাহ— ঢাকাম্ব আশ্বব্ধ শ্রীযুক্ত বাবু নবকান্ত চটোপাধ্যারের প্রথম পুত্র শ্রীমান সীতাকান্ত চটোপাধ্যায়ের সহিত
বাগআঁচড়া নিবাসী শ্রীযুক্ত হলধর মল্লিকের কলা শ্রীমতা
স্থাসিনীর বিবাহ স্থাস্পার হইরাছে। কলিকাতা সাধারণ
ব্রাহ্মসমান্ত—প্রাঙ্গনে বিবাহ হয়। শ্রীযুক্ত নবদ্বীপচক্স দাস্থাচার্বের কার্যা করেন।

গত ২৭ শে মাঘ, ভাগলপুর নগরে আর একটা রাহ্মবিবাহ
সম্পন্ন হইরাছে। পাতু মেদিনীপুর নিবাসী বাবু হুর্গানারায়ণ
বস্ত্র তৃতীর পুত্র শ্রীমান হেমেন্দ্র নাথ বস্ত্র, পাত্রী ভাগলপুর
নিবাসী শ্রীযুক্ত বামাচবণ ঘোষের ক্যোষ্ঠা কলা শ্রীমতী বিমলা
ঘোষ। শ্রীযুক্ত নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যার আচার্য্যের কার্য্য
করেন। উভর বিবাহই রেজেইনী হইরাছে। প্রমেশ্বর
নবদম্পতিদিগকে আশীর্কাদ কর্কন।

নামকরণ— শ্রীযুক্ত বাবু নীলুজরন সরকারেব দিতীর সন্তান (কন্তার) এবং শ্রীযুক্ত বাবু যোগীন্দ্রনাথ সরকারের দিতার সন্তানের (পুল্রের) নামকরণ একযোগে সম্পন্ন হই-রাছে। বালিকার নাম নির্দাননিনী এবং বাপকের নাম সচীন্দ্রনাথ রাধা হইরাছে। শ্রীযুক্ত নবদীপচক্র দাস আচার্য্যের কার্য্য করেন।

শীযুক্ত বাবু হেরছচক্র মৈত্রের প্রথম সন্তানের (পুত্রের)
নামকরণ স্থান্পর হইরাছে। শীযুক্ত নবগীপচক্র দাস আচার্য্যের
কার্য্য-করেন। বালকের নাম হিরময় রাথা হইরাছে।

শ্রীযুক্ত গগনচক্র হোষের প্রথম সন্তানের (পুত্রের) নামকরণ সম্পর হইরাছে। বালকের নাম অমলচক্র রাথা হইরাছে। শ্রীযুক্ত কালীনাথ দত্ত উপাসনা করেন।

সাধনাপ্রমে ক্রমান্তরে তিন দিনে নিয়লিখিত তিন্টা নামকরণ 📗 নবিশ ধনাধাক্ষ।

হইরাছে;—বনগ্রাম নিবাসী ব্রাহ্মবন্ধু আব্দুলগদুরের কস্তার নাম শ্রীমতী স্থফিরাও স্থাবেয়া এবং পবিত্রকুমারী রাথা হর।

শ্রীযুক্ত গুরুদাস চক্রবর্তীর চতুর্ধ সম্ভানের (পুত্রের) নাম শ্রীমান অজিত কুমার রাধা হয়।

শ্রীযুক্ত কাশীচন্দ্র ঘোষালের, বিতীয় সম্ভানের (পুত্রের) নাম শ্রীমান স্থবিমলচন্দ্র রাধা হয়। এই তিনটী অস্টানেই পণ্ডিত শিব্নাথ শাস্ত্রী আচার্য্যের কার্য্য করেন।

আফুল গফুব স্বীয় কন্তায় নামকরণ উপলক্ষে সাধনাশ্রমে ২ টাকা দান করিয়াছেন। পরমেশ্বর শিশুদিগকে ধর্মপথে বর্দ্ধিত করুন।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ—নিম্নলিখিত ব্যক্তিগণ বর্তমান বর্ষের গণ্য অধ্যক্ষ সভার সভা মনোনিভ হইয়াছেন।

সদর--> পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী, ২ বাবু উমেশচন্দ্র দত্ত, ৩ বাবু রুঞ্জুমার মিত্র, ৪ ডাঃ প্রসন্তুমার রান্ন, ৫ বাবু হের্ছ हक्त रेमञ, ७ वांत् श्रीनकृष, चाहार्या, १ वांत् वादिका नांच গলোপাধ্যার, ৮ বাবু নব্দীপ চক্র দাল, ৯ বাবু নীলয়ভন সর-কার, ১০ বাবু কালীশঙ্কর স্থকুল, ১১ বাবু রামানন্দ চট্টোপাধ্যার ১২ বাবু নগেজনাণ চট্টোপাধ্যায়, ১৩ বাবু আনন্দ মোহন বস্থু, ১৪ বাবু সীতানাথ দত্ত. ১৫ বাবু উমাপদ রায়, ১৬ ডাঃ প্রাফুর हक्त त्राव, ১৭ वावू इनी स्माहन नाम, ১৮ वावू मधूरुनन स्मन, ১৯ বাবু আদিত্য কুমার চট্টোপাধ্যায়, ২০ বাবু শশিভূষণ বন্ধ, ২১ কুমারী কুমুদিনী খান্তগির, ২২ বাবু মহেজ্ঞানাথ চট্টোপাধ্যার, ২০ বাবু যত্নাথ চক্ৰবৰ্তী, ২৪ ৰাবু বস্কৃ বিহারী বন্ধ, ২**৫ ৰাবু** कुक्छ गि। विना ७ थे, २७ वावू । या शिक्ष नाथ भिक्त, २१ वावू हिव-মোহন ছোষাল, २৮ বাবু উপেক্ত কিশোর বায়টোধুবী, २৯ বাবু গোবিল নাথ গুছ, ৩০ বাবু পবেশনাথ সেন। মফ:यग---১ বাবুনীলমণি চক্রবর্তী, থাসিয়া পাছাড, ২ শ্রীযুক্ত লন্ধণ व्यमान लाष्ट्रो. ७ वावू धयानाम वद्य शूकलिया, ८ वावू (का**नाबनाव** রায় ঢাকা, ৫ বাবু রজনীকান্ত ঘোষ ঢাকা ৬ বাবু ভ্বন মোহন সেন ফরিদপুর, ৭ মুগ্দী জানালদিন মিঞা অলপাই ওড়ি, ৮ বাবু ভ্ৰন মোহন কর দিনীজপুৰ, ১ বাবু পূর্ণানন্দ চট্টোপাধ্যাত্ম ঢাকা, ১g বাবু রাধাকান্ত বন্দোপাধ্যার মুঙ্গের, ১১ বাবু এ**জেন্ত** নাথ শীল বহরমপুব, ১২ বাবু চণ্ডীকিশোর কুশারী ঢাক।, ১৩ বাবু হীরালাল হালদার বহরমপুর, ১৪ বাবু শ্রীনাথচন্দ মন্ত্রম সিং, ১৫ বাবু নিবারণ চক্ত মুখোপাধ্যায় ভাগলপুর, ১৬ বাবু কৈলাসচন্দ্ৰ বাগ্চি পাবনা, ১৭ বাবু পাকাভীনাথ দাস ৩৩৩ পুর্ণিয়া, ১৮ বাবু পার্ব্বতীনাণ দত্ত মধ্য ভারতবর্ষ, ১৯ বাবু মধুন স্দন রাও কটক, ২০ বাবু শুরুদাস চক্রবর্তী আরো।

নিম্নলিথিত ব্যক্তিগণ মকঃফলন্থ অঙ্গীভূত আক্ষামাজ ছইতে অধ্যক্ষসভার সভা মনোনিত, ছইয়াছেন ;— > বাবু সাভকড়ি দেব কোলগর, ২ বাবু কৃষ্ণগোবিদ্দ গুণ্ড কৃষ্ণনগর. ৩ বাবু বিশ্বনাথ কর কটক, ৪ বাবু ভূবন মোহন সেন ফরিদপুর, ৫ বাবু কৃষ্ণ-কৃমার মিত্র টাঙ্গাইল, ৬ বাবু রাজচক্র চৌধুরী সিলং, ৭ বাবু ছারিকানাথ সরকার নরমনসিংছ, ৮ বাবু মধুক্দন জানা কাঁথি।

নিমলিথিত বাজিগণ কার্য।নির্বাহক সভার সভা হইরা-ছেন;—বাবু উমেশচক্ত দক্ত, পণ্ডিড লিবনাথ শাল্পী, বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র, বাবু হেরস্বচক্ত মৈত্র, বাবু সারকানাথ গাঙ্গুলী, বাবু রামানন্দ চটোপাধারি, বাবু প্রাণক্তম্ব আচার্যা, বাবু মধু-স্থান সেন, বাবু কালীশক্তর শুক্ল, ডাঃ প্রফুলচক্ত রার, ডাঃ প্রসরকুমার রায়, বাবু বঙ্বিহারী বস্থ।

নিয়লিখিত বঁজিগণ সাধারণ আক্সমাজের কর্মচারী
নিযুক্ত হইরাছেন;—বাবু আনন্দ মোহন বস্থ সভাপতি, বাবু
রজনীনাথ রার সম্পাদক, বাবু শশিভ্যণ বস্থ এবং বাবু অবোর
নাথ মুখোপাধ্যার সহকারী সম্পাদক, বাবু গুক্তরণ মহলানবিশ ধনাধ্যক।

# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষরক পাক্ষিক পজিকা।

২৩শ সংখ্যা। ১৭শ ভাগ।

১লা চৈত্র বৃহস্পতিবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৬।

বাংসরিক অপ্রিম মৃল্য ৩ মফ খলে ২॥ ০ প্রতি থণ্ডের মৃল্য ৩/০

## প্রার্থনা।

হে কল্পাসিদ্। যাহাকে ডুমি ৰত দেও, তাহার নিকটে ভত চাও, যাহার যত আছে, তাহার দায়িত্ব তত অধিক। যে থালোক পার, সে সে আলোক অসুসারে চলিতে বাধ্য, না লিলে ভোষার নিকট অপরাধী। ত্রাহ্মসমাজকে তুমি কি ধন সম্পদের অধিকাবী করিয়াছ, তাহা যুগন ভাবি তথন ইহার দায়িতভার স্মবণ করিয়া অবসর হইয়াপড়ি। তুমি এই কুদ্র শিশুকে সকল ধর্মসম্প্রদায়ের সভা রত্নের উত্তরাধিকারী করি-রাছ। যাহার ঘাহা ভাল আচে, সমুদার আদশরূপে আমাদের নিকটে উপস্থিত হইয়াছে। বিভিন্ন দেশে, বিভিন্ন জাতি মধ্যে তোমার সভোর সাক্ষীসরূপ যে সকল সাধু মহাজন জনিয়াছেন, সকলেব পদধ্বি এই শিশুৰ মশ্তকে পড়িভেছে। ইহার অপেকা সৌভাগা আৰু কি চইতে পারে ? কিন্তু প্রভো। এই সঙ্গে সঙ্গেট যে আমাদের দারিজভাব বাডিয়া গিয়াছে। আমা-দিগকে যত দিয়াছ, আমাদিগের মিকট তদমুকাপ চাও। হে শ্রভো। এই বিষয়েই আমনা অপরাধী হইরা পড়িতেছি। প্রতি-নিরত অর্ভব কবিতেছি যে, এই চুবাল প্রকৃতির ল্যাক্দিগের ৰারা এই উদার ও মহৎধর্মের উপযুক্তরূপ সাধন ও প্রচার ছইতেছে না। ভূমি আমাদিগকে বুল দেও, বেন আমরা কিয়ৎ পরিষাণে আমাদের দারিত্তাব পূর্ণ করিতে পারি।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য 📗

तियामीत मूलधम— नःमाहत पाहाता वावमा वाणिका करत, जाहाता এक हा मूलधन हित तारथ। मूलधन हाज़ वावमा हरना हरना । दह याहा है करूक मूलधनरक चिक्कम कथन के करत ना। मूलधन याहार नहें ना हत, रमहेक मूलधन हिंदि थारक। यि जाहारक रकह এक है। विकृत कात्रवारत ना निर्देश मिन रामा स्माधन चित्रवार मूलधन चित्रवार वाता मुलधन चित्रवार मूलधन चित्रवार वाता मःमारत वाता मुलधन चित्रवार मूलधन चित्रवार हत अवश्राम मुलधन चित्रवार हत अवश्राम मुलधन चित्रवार हत अवश्राम मुलधन चित्रवार हत अवश्राम महास्त्रवार वाता मानारत वाता महास्त्रवार वाता महास्त्रवार

সংসারে বিশ্বাসীদিগের অফুটিত অনেক মহৎ বাাপার দেখিতে পাই। বিশ্বাসীকে কোন বাধা, বিদ্ধ, বিপদ ও ভরে ভীত করিতে পারে না। ইহাদের কার্য্য দেখিলে অবাক্ হইতে হয়,—কিন্তু ইহাদের মূলধন কোপায় ? এক এক জন দরিদ্র, অসহায় ব্যক্তি সমস্ত সংসারকে কাঁপাইয়া তুলিলেন,—কিসের জোরে, ইহাদের এমন কি পুঁজী ছিল ? তাহাদের মূলধন অক্ষয়। সেই মূলধন পরমেশবের করুণা; তাহাদের মূলধন কথনও ক্রায় না। যে সকল ঘটনাতে বিষয়ী লোক নিরাশ, ভয়, হইয়া যায়, বিশ্বাসী সেথানে অটল। কার্মণ বিশ্বীয় মির্ভর ক্রুল পার্থিব ধনে, বিশ্বাসীর নির্ভর ব্রহ্মকুপার উপরে। তাহাদের কি সৌভাগ্য।

এই কারণে দেখি, যখন চারিদিক প্রতিক্ল, সকলেই নিরাশার কাবণ ভিন্ন কিছু দেখিতেছে না, সকলের বোধ হইতেছে, এই বার এই বাক্তি গেল, এমন সময়ে সকলের অতর্কিত ভাবে কোথা হইতে সে ব্যক্তির অন্তরে বল আসিল! সে হঠাৎ বিক্রমশালী বারের ভায় সকল বাধাকে অতিক্রমকরিয়া দাঁড়াইল। জগত ন্তর হইয়া গেল, জানিতে পারিল না বে তাহার অক্ষম মূলধনের ভোণ্ডার হইতে সে যাক্তি নৃতন বল লাভ করিয়াছে। বিশ্বাস ও প্রার্থনার গৃঢ় তব্ব বাহারা জানিয়াছেন, তাঁহারা অক্ষম ধন্ ভাগ্ডার লাভ করিয়াছেন।

আমরা কিরপে শান্তি চাই ?——আমরা কি প্রকার
শান্তি অ্যেষণ করি ? শান্তি সম্বন্ধে সকলের কি একই প্রকার
ধারণা? তাহা নহে। শান্তি বলিলে তুই শ্রেণীর সাধকের
মনে তুই প্রকার বিপরীত ভাবের উদর হয়। এক শ্রেণীর
লোক, সকল প্রকার কার্যা, শ্রম, চিন্তা, ও সংপ্রাম হইতে
নিক্ষতি পাওরাকেই শান্তি নাম দিয়াছেন। এই প্রকার শান্তিপ্রাধী লোক ক্যতে অনেক আছে। অইল যদি সংসারের
ক্রিসীমার বাহিরে বাইরা বাস করিছে পারি, তাহা হইলে এক
প্রকারের শান্তি পাওরা যার, ভাহাতে সলোহ কি ? সমন্ত
দিন নানা কার্য্যে বান্ত থাকিয়া সারংকালে মানুর ব্যন আপন
আলিরে প্রবেশ করে, তথ্ন শ্রতাব্রুই ভারার প্রাণে এক

প্রকার শাস্তি আসিয়া উপস্থিত হয়। ইহাকে বলে বিশ্রাম-জনিত শাস্তি।

আর এক প্রকার শান্তি আছে, ভাহাকে বলে—''ঈশবের উপর নির্ভর-জনিত শান্তি।" কার্য্য আছে, শ্রম আছে, চিম্বা আছে, সংগ্রাম আছে,—অণচ শাস্তি! প্রেমের বোঝা দিবানিশি বহিয়া ৰহিয়া ক্লাস্তি নাই; প্লেমের খাটুনি খাটতে পাবিয়া শান্তি,—খাটিতে না পারিলে যেন প্রাণে দারুণ অঁশান্তি। আঁম্সু কান্ প্রকার শান্তির অবেশ্র করি 🥍 সকল প্রকার শ্ৰম হইতে অবস্ত হইয়া যে শান্তি তাহাই চাই ? না, থাটিয়া থাটিয়া মরিতে পারিলে 'যে শাস্তি ভাছাই চাই ? অলসের শান্তি চাই 📍 না নির্ভরের শান্তি চাই 🎙 এই সংসারে সংগ্রাম-বিহীন লোক প্রায় পাওয়া যায় না। সকল লোককেই শ্রম করিতে হয়,—সংগ্রাম করিতে হয়। বিধাতা যেন এই প্রকারই ব্যবস্থা করিয়াছেন যে, তাঁহার দাসদাসীগণ সংগ্রামের মধ্যেই তাঁহার সেবা করিবে। সংগ্রামের মধ্যে বাস করিতে হইতেছে বলিয়া যে ব্যক্তি পরমেশবকে প্রীতি দিতে পারিল না, তাহার প্রীতিব আবার মূল্য কি ৭ যাহাব জন্ত যাহা আবেশ্রক, তিনি তাহার জন্ত তাহাই ব্যবস্থা কবিয়াছেন। যদি কেহ এমন थारकन--गंशात्र कीवरन प्रशाम नाहे, उँ। शास्त्र नेशी कति ना , কিন্তু আমার পক্ষেও তাহাই হউক তাহাঁও ইচ্ছা করি না : মহাস্থা যীশু শিষ দিগকে বলিয়াছিলেন—''আমি তোমাদিগকে আমার শান্তি দিয়া ঘাইব। কিন্তু সংসার যে শান্তি দেয় ভাহা নহে।" যীশুর জীবন কি ভীষণ সংগ্রামময় ছিল। অথচ তিনি বলিলেন ''আমি যে শাস্তি ভোগ কবিতেছি,—তাহাই टामानिगरक निव।" उाँशांत्र मास्त्रि विचारमञ्ज मास्त्रि, নির্ভয়ের শাস্তি, প্রেমের শাস্তি।

জীবনাদর্শ ও ধর্ম-সাধন-মামুষের যে কথা ভূলিয়া याहेवात मञ्चावना नाहे, त्य तथा जाहारक खत्रण कताहेग्रा मिवात कुछ नानाविध कारम्राज्ञन विष्यारह, स्म कथा प्रवत क्रवाहेन्ना দিবার জক্ত ব্যস্ত হইবাব প্রয়োজন নাই। যেমন একথা কাহা-কেও বলিয়া দিতে হয় না,—''তুমি আহার করিও, বা তুমি ঘুমাই ও," তেমনি একথা কাহাকেও বলিয়া দিতে হয় না যে. ''তুমি তোমার স্ত্রী পুলকে ভালবাসিও।" ইহা প্রকৃতিতেই क्वाहेर्द, काहारके अध्यान क्विम्री अक्षा अत्रा क्वाहेम्रा দিতে হয় না। যাহা ভূলিয়া যাইবার সম্ভাবনা আছে, তাহাই স্মবণ করাইতে হয়। শরীরেব কথা বলিয়া দিতে হয় না,---শারীরিক অভাব কাহাকেও দেখাইয়া দিতে হর না-কুণার ভাড়নায় ও শারীরিক অভাবে ভাহা করিবেই ; কিন্তু জ্ঞানা-লোচনার কণা স্বরণ করাইয়া দিতে ১ র। কেরাণীদিগকে মাঝে মাঝে বলিয়া দিতৈ হয়—''ওগো মান্সিক উলভির ক্পাটা একেবারে ভূলিও না" নতুবা চরস্ত কার্য্যের পেষণে তাহাবা নিশ্চরই সে কণাটা ভূলিয়া ঘাইতে পারে। শ্রমনীনী मिगरक अभागिक ७ स्वाभाष्मिक उन्नजित्र विषय छेनाम দেওয়া আবগ্ৰহ, নতুবা প্ৰাত:কাল হইতে রাত্তি পথ্যস্ত অবি-প্রান্ত থাটিয়া পাটিয়া তাহারা আত্মোন্নতির কথা ভূলিয়া যাইবে। <sup>।</sup> বে মহৎ বিষয় মাত্র্যকে পশু হইতে পৃথক করিয়াছে,—দে বিষয়ের জন্ত উপদেশ চাই, পরামশ চাই; তজ্জন্ত আরোজন চাই; নতুবা মাত্র্য পরামশ, চিন্তা বিবজ্জিত হইয়া সংসারা-শক্তিতে ড্বিবে। এই জন্ত উপাসনার স্থান ও কাল, উপাসনা-মন্দির, ধর্মাচার্য্য, ধর্মমগুলী ও ধর্মপ্রচার প্রভৃতির ব্যবস্থার প্রায়োজন।

জীবনের একটা মহৎ আদর্শ ধবিরাছি বলিয়া মানবের
নিশ্চিত্ত থাকা কর্ত্তব্য নয়। সে আদর্শ ভূলিয়া ঘাইতে কতক্রণ লাগে? সংসারের চভূর্দিকেই ত দেখিতে পাইতেছি.
আজ যে বাক্তি মহৎ উদ্দেশ্য সদরে লইয়া সংসার সমরে বীরের
ন্যায় দাঁডাইতেছেন, কাল সেই বাক্তিই আছাবিশ্বক্ত হইয়া
বিপথে গমন করিতেছেন। ইহাত কত্তবায় দেখিয়াছি, যে
মামূষ প্রথমে ধন উপার্জন করিতে প্রবৃত্ত হয়, পরিবার পরিজনেব স্থাবের জন্ম, র্ছংখীর হংখ মােচনের জন্ম, সংকার্যোর
সাহায্যের জন্ম, কিন্তু পরে দেখি, সেই বাক্তিই সে সকল মহৎ
উদ্দেশ্য বিশ্বত হইয়া, কেবল ধনের জন্ম ধন উপার্জন করিতে
থাকে। অতএব নিজ নিজ জীবনের আদর্শের বিষয়ে মধ্যে
মধ্যে :চিন্তা করা ধর্মসাধকদিগের সাধন প্রণালীর একটা
অক্সম্বরূপ ২ওয়া কর্ত্তবা।

ধর্ম জীবনে মণ্ডলীর সহায়তা—কিরপে আমা-দিগের অধ্যাত্মিক জীবন প্রতিপালিত ও পরিপোষিত হয়, তাहात मुक्तान ना शाहेग्रा आमत्रा अत्नक मुमन्न वित्वहन। कृति, আমি একাকী অভ্নের সাহায় নিরপেক হইয়া উন্নতি করিছে পারি। অপরেব সাহায্য বাতীত যে আমরা নিরাপদে অগ্রসর হইতে পাবি না, অপরেপ্যে আমাদিগের ধন্ম জীবনকে নানা ভাবে প্রতিপালিত এবং পরিপোষিত করিতেছেন, ভাষা আমরা চিন্তা করিয়া দেখি না। আমাদিগের ধর্ম জাবন বিশ্বাসীমণ্ডলী দ্বারা সক্ষণাই প্রতিপাশিত 😻 পরিপোষিত হইতেছে। গগনবিহারী প্রহও তারকামওল যেমন পরস্পারের আকর্ষণ দ্বারা নিজ নিজ স্থানে রক্ষিত হইতেছে এবং নিরাপদে আপন আপন ককে আবর্ত্তন করিতে পারিভেছে, আমাদের ধ্যাজীবন তেমনি সাধুমণ্ডলী ছারা স্ক্রেট রক্ষিত এবং নিরাপদে প্রতিপালিত হইতেছে। কিন্তু অপরের নিকট সাহায্যটুকু পাইতে গেলেই, তাঁহাদের ক্রটী ও হুবালত্ত্রে সহিত সাক্ষাৎ করিবার জন্মও প্রস্তুত পাকা কর্ত্তবা। সাহাযা পাইবার জন্ম যেমন প্রস্তুত থাকা আবশ্রক, ক্রটী পাইবার জন্ত সেইরূপ প্রস্তত ধাকু আবিশ্রক; কারণ এমনু মাফুষ কোথায় পাইব, যাহাতে কোনও ফটা নাই! নিজের তুর্বলঙার সহিত নিরন্তর সংগ্রাম ক্রিজে ক্রিডে বাহারা এক এক পা অগ্রসর হইতেছেন তাঁহায়া কিরুপে আশা করেন, যে অন্তের জ্বীও হুর্বশতা থাকিবে না। আমি কি আমাকে ক্ষম করি না ? নিজের অপরাধকে কোমল ছত্তে। ম্পূর্ল করি না ? কি ভাত্তমতি কীব আমরা যে, নিকের অপরাধ কমা করিতে প্রস্তুত, কিন্তু অপরের তুর্বলতা কমা করিতে প্রস্ত নই। ইহার কারণ কি, ভাহা কি কেই

অনুসন্ধান করিয়াছেন ? এই যে নিজকে স্কাদাই কোমল ভাবে দর্শন করিতেছি, ক্ষমা করিতেছি, ইহার মূলে "প্রেম''। নিকের প্রতি যে প্রেম আছে, অপরের প্রতি সে প্রেম কোথায় ? আমি অনায়াদে অপরের প্রতি কত কর্মা, অক্সায় ব্যবহার করি কিন্তু অপরে একটু ভূল ও জটী করিলেই অসহা ১ইয়া উঠে। যে চকু দারা নিজকে দেখি, সে চকু খারা অপরকে দেখি না। নিজের বেলা প্রেমের চকু, অপরের বেলা কঠিন বিধি--দেখিয়াছি যাহারা নিজে স্বার্থপর ও অপরের প্রতি উদাসীন, তাহারাই অপরের ঔদাসীভের বিষয় অধিক অভিযোগ করে। "অপরে আমাকে দেখিল না"---কিন্তু যদি জিজ্ঞাস। করা যায়, "তুমি কত দেখ ?" তাহা হইলেই বিপদ। একটাকথামনে রাখিলে ভাল হয়, "আমি যথন আগার মনেরমভ হইতেছি না, २० বৎসর চেষ্টা করিয়াও श्हेर् भारिनाम ना" किन्न (भ राजुर नर्ने ग्राप्त कहि साना कति ए, ज्यापत ठिक जामात्र मत्त्र मङ इंदेर । ज्यामि यपि इलाग হইয়াও ক্ষমার আশা করি, অন্তের খেলায় এ উদারভাব मस्म शास्त्र ना (कन १" विधाज। आमानिशस्त्र त्रका कक्रन। যাঁহাদের সঙ্গে বসিয়া এত উপকার পাইতেছি, তাঁহাদের সহায়তা ও হ্বালতা হুল যেন লইতে পারি, সহিতে পারি। গোলাপ ফুল তুলিতে গেলে কাটার আচড লাগিবেই, সহ कांत्रवाव अन्न यनि व्यञ्जात थाक, शालाभ वृत्कता निक्रवेदही হও, নতুবা যাহও না। কেন বিধাতা এমন করেলেন १---তাঁহার বিশ্ব বিদ্যালয়েব এক প্রকার শিক্ষা। অসাধুতার সঙ্গে সংগ্রাম করিতে হয় কেন গুলেব ও অস্থর গুই, কেন মানব প্রকৃতিতে হান পাইণ গুএই জন্স যে, অসাধুতার সাহত সংঘর্ষণে সাধুতা ফুনিয়া উচিবে। অন্দ্রকার না থাকিলে কে আলোর ম্যাদা ব্রেড গ বিপদ না থাকিলে কি সম্পদের আদিব কেচ কবিড ৪ আমিবা যেন অপবের স্বল্ভা ছুবাল্ভা हुई मिथिबाद जब मक्तनाई श्रञ्ज थाकि।

সাংসারিকতা-নাংগাবিকতার প্রভাব ও কার্যা অতি বিচিত্র, সে কোন রূপে প্রাণে দেখা দেয় এবং বোন ভাবে আমাদিগকে বণীভূত করে, কেইই তাহা সমাক অবধাৰণ করিছে পারে না। এজন্ত দেখা যায় সাংসারিকতার মৃত্তি নানা আকারে আমাদিগের ভিতর দিয়া প্রকাশিত হইতেছে। থাঁহারা পৃথিবীর ধনাকাজ্ঞা পরি গাগ করিয়া আপনাকে পরসেবায় व्यर्भन कत्रिष्ठ हन, छाशामत्र मत्या । तथा यात्र, रुक्तत्वा অন্ত আকারে আবার সেহ খার্মপরতা দেখা দিতেছে। তাঁহারা বাহিরের আমিম ছাড়াইয়া ভিতরকার আমিথে কড়াইরা পড়িছেনে। প্রশংসাপ্রিয়ভারণে—গৌরৰ লাভের আকাজ্ঞারপে ভাহাই মে সকল ভানে আবার দেখা দিতেছে। উপদেষ্টা যে गार्गाविक जात विकास " छेपानम निर्वाहन, जिनिहे इक्षे आवार शिष्टे जेशामा अनिश्रा लाटक व्यनःसा করে কিনা ভাহার অনুসন্ধান করিতেছেন। ভাহার সাংসারকতা বাহির পারত্যাগ করিয়া অন্তরে প্রবিষ্ট रहेशाइ ।

ধ্রপ্র প্রচারক প্রচারের উদ্দেশ্যে বহিণ্ড হইয়াছেন, প্রচারই তাঁহার উদ্দেশ্য। কিন্তু দেখা যাইতেছে তাহার মধ্যেও সাংসা-विकला आस आकारत व्यविष्टे ब्हेरल्ट् । जिनि मक्न जातन প্রচার করিতে পারেন না। তিনি সকল সময় সকল সভ্য প্রচার করিতে পারেন না। কোথাও লোক গঞ্জনার ভয়, কোথাও প্রশংসার আশা, তাঁহাকে ভান বিশেষে অধিকতর মনোযোগী করিতেছে, আবার স্থান বিশেষের প্রতি উদাসীন করিতেছে। একই উদ্দেশ্যে যাহারা মিলিয়া-ट्रिन—धर्मा श्रात विश्व विश्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष्य क् তাঁহারাও আবার এই সৃক্ষ সাংসারিকভার বন্ধনৈ আবদ্ধ হইয়া লক্ষ্য সাধনের মূলমন্ত্র করপ একতা অবলম্বন করিতে এবং পরস্পারের সহিত মিলিত হইতে পারিতেচেন না। মহৎ উদ্দেশ্যে কার্য্য করিতে যাইয়াও আপনাকে ভূলিতে না পাবিয়া পরস্পর হইতে বিচ্ছিন্ন রহিয়াছেন। আমরা গান করি "ছাড আপনারে প্রেমে পাবে ভাঁরে" কিন্তু আয়ত্যাগ কাষ্যতঃ আমাদের মধ্যে স্থান পাইতেছে না। এথানেও সাংসারিকতাই ভিন্ন মৃটিতে প্রকাশিত হইতেছে।

আমরা উৎসব করিব বা অপর কোন প্রকার সংকার্যা করিব, ভাহাতে অথের প্রয়োজন, কাহার উপর তাহা সংগ্রহের ভাব অর্পণ করিতে হইবে, এই প্রশ্ন উপস্থিত হইলেহ, সকলের মুথেই এক কথা, যিনি সকলের শ্রদ্ধের, যিনি সংগ্রহ করিতে গমন কবিলে লোকে, চকু লজ্জার খাতিরেও কিছু ना भिग्ना थाकिए भावित्वम ना, जाशांकरे वहे कार्यः नियुक कत्र, डांशाय উপবেই এই কার্য্যের ভাবাপণ কর। কায়েও তাহাহ দেখা যায়। ঘিনি পদস্থ, যিনি সম্মানিত এবং যাঁহাকে ফিরাইয়া দেওয়া সহজ নহে, সেকপ ব্যক্তি যথন অর্থ সংগ্রহের ভাবেগ্রহণ কবেন, তথন প্রচুর অর্থ সংগৃহীত হয়: কাষা স্থানিকাহ হয়। এখানেও সেই সাংসারিকতারই মৃতি আর এক আকাবে প্রকাশিত।ুযাদ কায্যের প্রতি মতুরাগ থাকে, তবে আরে পদস্থ ব্যাক্তর উপর অন্থ সংগ্রহের ভারাপণ কারতে হইবে কেন? যদি কার্যা স্থদম্পন্ন হউক इशह नकत्नत्र श्राञ्चातक वामना २४, उत्त श्राव (नाक प्रिया দানের প্রিমাণের লঘুত্ব গুরুত্ব হছবে কেন ? আপনা হইতেহ সমূচিত দান করিতে সকলেবহ আগ্রহ হইতে পাবে। কিন্তু এখানেও লোকের অমুবাগ বিরাগের আশা বা আশস্কা সাংদারিকভাব আমাকারে দেখা দিতেছে। আথের প্রতি মমতা **१हेट ए अनात्मत्र अध्यत्रि १हेट एक छाहा नरह**े कावन তাহা হইলে লোক্বিশেষের গমনে দানের তারতমা হইত না। लारकत्र भनञ्जष्टित द्वा ज्यमञ्जूष्टित भगना इहेरजह काया इहेरजहा। काशास्त्राग यिन ध्वरण थाकिछ, তবে कि आव लाकक এরূপ তাড়না করিয়া বেড়াইতে হয় ? উৎসবের দান সংগ্রঞ कत्रिवाद सर्ग कि बाड़ी वाडी घावमा (बड्डाइंटड इमं? डाइ) হুইলে দিবার জন্মই সকলের বাস্ততা পারলক্ষিত হইত। দান সংগ্রহের জয় কেহ বাড়াতে গেলে লজ্জা ও সঙ্কোচেরই উদর হুইত। কোন মতে সেই বাজিকে পরিহার করিবার প্রবৃত্তি হইত না। প্রচার করিতে . হইবে, ক্রায়ার ক্র অথের

আবশুক। কিন্তু দেখা বায় ভাছাতেও সাহাব্য করিবার জ্ঞ व्यक्टतार्थत्र शत्र व्यक्टताथ अवः क्ष कन कोनन व्यवनसम कतिरान, তবে কোনরূপে বদি কিছু আদার করা ধার। কিন্ত यित मकरनहे हेहारक जाभनांत्र करांगीत कार्या मरन करतन, जरव আর কি এত অমুরোধ উপবোধ করিতে হয় ? আপনা-পন শক্তি মত বাহা দিতে পারা বার, ভাহাত সহজেই দেওরা ষাইতে পারে। এখানেও সেই সাংসাবিকতা আমাদিগকে বেরিয়া রাথিয়াছে। ভাছারই মৃর্ত্তি এথানেও পরিলক্ষিত লোক মনোবঞ্জন বা বিরাগ ভন্ন এখানে সাংসারিকভার আকারে প্রকাশ পাইতেছে। "ছাড আপনারে প্রেমে পাৰে ভাবে'' ইহা সকল সময় সকল অবস্থাতেই প্রাক্ষন। সংসার আপনা ছাডিয়া কর, তাহা পরম স্থাধর হেতৃ হইবে। ধর্ম আপনাধে ছাডিয়া কর, প্রম লাভের কারণ হইবে। সদমুষ্ঠান কবিতে ঘাইয়া আপনাকে ভ্লিয়া ভাহাতে নিমগ্ন হও, ভাহাতে দেখিবে কেমন স্থফল কলিবে। আপনার গণ্ডী পবিত্যাগ কবিয়া, প্রেমে আপনাকে বিদর্জন नित्रा, मकन প্রকার সাধু কার্য্যে আমরা বদি প্রবৃত হই তাহাতে কার্য্য ক্লসম্পন্ন হইবে, আমবাও পরিত্রাণ লাভে সমর্থ হটব। ভাব প্রাণে দেখিয়া এবং পরস্পরকে প্রেম দিয়া ও নিজে ভাছা শাভ করিয়া কুডার্থ হইতে পারিব।

বিচিত্ৰতা ও একতা—একজন হিলুধৰ্ম প্ৰচাৰক একবার আন্ধাদিগকে বিজ্ঞাপ করিয়া বলিয়াছিলেন, আন্ধার্ম ভ देववाशी: पत व्यालभाक्षा विष्यव । व्यथाए देवताशीता द्यमन नाना বর্ণের ছিটের টুকবা সকল সংগ্রহ করিয়া এবং ভাহা পরস্পরের সাহত বংযুক্ত করিয়া, একটা কিন্তুত কিমাকার গোছের পোষাক প্রস্তুত করে, আক্ষধর্মণ সেহ প্রকার। ইহাও সেই নানা স্থান হইতে ভিক্ষা করা, নানা প্রকারের বস্তুত্তে প্রস্তুত করা বস্তু বিশেষ। বিদ্রূপ করিবার জক্ত ব্রাহ্মধর্ম সম্বন্ধে যাহা উক্ত **চ্চয়াছিল ( যদিও তাহা বিজ্ঞাপের হেতু নয়) তাহাই ব্রাহ্মধর্মের** বিশেষত্ব ৪ গৌরববোধক। এই বিশেষত্ব নই চইয়া গেলে আর তথার স্বাতস্থ্র ও বিশেষ প্রয়েজনীয়তাই থাকে না। যদি কেই মনে করেন যে, ত্রাহ্মগণ কোন নুত্রন সত্য প্রচার করিতেছেন না বা সাধনপ্রণালী সম্বন্ধেও কোন নবীন প্রভা আবিষ্কার করিছে-ছেন না, ভাষা হইলে ঐ সংগ্রহ দ্লপ বিশেষত্ব ভিন্ন ইছার আর কি থাকে ? নুতন সভা প্রকাশিত হইয়াছে, কি না হইয়াছে अध्य पार्वाहनाम थावृत्व ना इरेम्रा इरेन वना गाम, এहे रा भः शह हेराहे अभिधार्यात मुख्यक अवः **हेराहे हेरात की**वन। নুতনত্ব এই জন্ম যে চিরদিন পরস্পারের প্রতি পরস্পারের উদাসীনতা ও বিদেষ প্রকাশের লক্ষণই ধর্মসমাজে ছিল। কেছ भाक्षा कारव व्यवस्त्र निक्षे हहेर्छ निकात क्रम वास हम नाहे. किय दवन भिकाम्रिक्ट वास हिन। अभरतत निकृष्टे हहेए छ कि प्रशिक्ष कि विवास क्षेत्र का अधिर ना रहेश (कवल अमारनक वावयाहे पृष्टे इहेटछिल, बाक्ससर्वात अङ्ग्रहाई এই मछा श्चायिक व्हेशारक, य तक्वन अन्तरंक मिर्छ व्हेरव, जारा নহে; কিন্তু নেথানে যাহা ভাগ আছে, তাহা গ্রহণও করিতে |

হইবে। এই উদার ভাবেই ত্রাজধর্মের প্রাণ। ত্রাজ ধর্মের এই প্রকৃতি নষ্ট করিলে ইহার বিশেষত্ব এবং প্রাণই নষ্ট कत्रा इत्र। हेहांटक ट्यान श्रष्ट विरम्पत चावक कत्रिल, ইহার নবীনত্ব বা প্রয়েজনীয়তাই বিলুপ্ত হর। জাতীরতা ও উদারতার মধ্যে যে একটা অবচেদ্য বৈরভাব বন্ধমূল আনছে তাহা মনে হয় না। স্বাতীয়তা এবং উদারতা একই ক্ষেত্রে বাদ করিতে পারে এবং করিতেছে: জাপানদেশে জাতীয়ভার অভাব নাই এবং চীনদেশেও জাতীয়তা যোলকলাতেই বর্জমান। কিন্তু একের চেষ্টা দশ স্থান হইতে সংগ্রহ পূর্বক আপনার দেহে শক্তি ও জীবনের সঞ্চার কর। ও नस धाकात महत्त्वत नमानत कतिया नित्क महर हरुया, অপরেব চেটা আপন সীমার বাহিরে পদক্ষেপ না কবিয়া আপনাকে আপনাতে আবদ্ধ রাথা এবং আত্মগৌরবে ক্ষীত হওয়া এবং অন্তকে আপনার ত্রিণীমা মধ্যে আসিতে না দেওয়া, নিজেও গভীর বাহিরে পদার্পণ নাকরা। এই ছই জাতির জাতীয়তার প্রতি কাহারও সন্দেহ করিবার কিছুই নাই। কিছু উভয়ের রীতি নীতি এবং উন্নতি লাভের উপার অব-শম্পার প্রকারের বিশেষ প্রচ্ছেদ এবং ভাছার ফলরে তারতমাও জগতের নিকট প্রকাশিত হইয়াছে। স্বতরাং জাতীয়তা এবং উদারতা, এক ক্ষেত্রে এক সঙ্গে মিশিখা যে শুধু কার্য্য ক্ষিতেছে তাহাই নহে, কিন্তু ভাহাই প্রকৃষ্ট উ পায়। ভিন্ন দেশের বা জাতির কিছুকে জ্ঞাদর করিতে হইলে যে আপনার দেশের মৃল্যবান বস্তুকে পরিত্যাগ করিতে ছইবে, তাহা নহে। বরং তাহারই অঙ্গপুষ্টি সাধন করিবার জন।ই নানা স্থান হইতে আরও সম্পত্তি। সংগ্রহ করিতে হইবে। वाक्षधर्म এ हे श्राकृष्ठि वहेशा है समाध्य क्रियार हा। अत्र वाक-গভ কেশবছক্র সেন মহাশয় ব্রাহ্মধর্মকে যে নবৰিধান নামে আখ্যাত করিয়াছিলেন, তদ্বারা ব্রাহ্মধন্মের এই প্রকৃতির विस्मय विकारमत एठ । कतियां इरमन । यनि जिनि जांशाव সেই উদ্দেশ্ব পরিত্যাগ করিয়া কোন একথানি গ্রায় বা কোন रिम वित्निष्य थां कि वित्नय खीं कि काशन कतिया थार कन. ভদারা তাহার ধ্যাসমহর্ত্তপ নববিধানের ব্যতিক্রম করিয়াছেন। তদ্বারা **স্বপ্র**চারিত ধর্মের শ<del>ক্তির</del> বিকাশ বা অঙ্গপৃষ্টি হর নাই। আমরা খুটার ধর্ম প্রচারকগণের মধ্যে কাহার অধিক প্রশংসা করি বা লোকে ক্রিয়া থাকে ? বাঁহারা খুটধর্মকে একমাত রিচদিদিগের মধ্যে আবন্ধ রাখিতে চাহিয়াছিলেন বা থাহায়া দেই জাতিকেই এই ধর্মলাভেয় উপযোগী মনে कतियाहिएक्स छ। छालापत्र ? किया , विसि हेहारक जकन बाछित जल्लाखि । इहारक जकरनत जमान অধিকারবাদ প্রচার করিয়াছিলেন, সেই পলেরই 🕈 প্রশংসা मश्कीर्यकात्र मटह, किन्न উদারভার। **এবং এই উদারভাই** क्नाग्रकत ७ रेटारे जामारमत भीवनमात्रक।

আত্ম কল্যাণের জন্ত নানাস্থান হহতে রত্ন সংগ্রহ করা '
কথনই নিন্দনীর বা সোন্দর্যাহীনতার কারণ নহে। বরং
উৎক্ট নিপুণ শিলীর হাতে পড়িলে তাহাই পরমশোভার
কারণ হয়। নানা বণের ছিটের টুক্রা বাহা অধ্যবসারী

বৈক্ষবের হত্তে পড়িরা, উপহাদের কারণ স্বরূপ হর, ভাহাই উত্তম শিল্পীর হাতে পড়িলে, চিত্তমুগ্ধকর দৌন্দর্য্যে পরিণত হয়। নানা বর্ণের মিশ্রণে যে গালিচা বা কার্পেট প্রস্তুত হয়, তাহা কি চিত্তের আনন্দায়ক নুহে ? নানা প্রকারের এবং नाना वर्णत शैतक, मिन, मुक्ता मध्यह कतिया यनि धकहणा হার গাঁথা যার এবং তাহা যদি উত্তম শিল্পীর হাতে পড়িয়া যথাষোগ্য স্থানে সন্নিবিষ্ট হয়, তাহা কি মনোমুগ্ধকর এবং রাজা-ভরণ রূপে পরিণত হয় না ? উদ্যানের নানা বৃক্ষের নানাবিধ ফুল পত্র সংগ্রহ-করিয়া উৎকৃষ্ট মালী বথন তোড়া বাঁধে, তাহা কাহার না চিত্তের পরিতোষের কারণ হয় ? ফুলগুলি মতন্ত্র মতন্ত্র যথন পাকে, তথন ভাহাদিগের এক প্রকার (नाफ)-- পত शिन विक्रित्र छोत्व यथन थात्क, जभन छा हारा प्र আর এক প্রকার শোভা, কিন্তু, যথন তাহা উৎকৃষ্ট মালীর হত্তে পড়িরা যথাযোগ্য স্থানে নিয়োজ্বিত হয়, তথন তাহাতে কি অপূর্ব মনোহারিছ। স্থতরাং নানা স্থান হটতে खिका बाताई रुडेक, आत अ**ञ्च** धाकारतरे रुडेक, मःश्राह (कानहे (माय नांहे, वब्रः ङाङाङे नवीन (त्रोल्क्षा ७ नव वल त्रकारवब्र কারণ। সেই দৃষ্টি রাখিতে হইবে, যাহাতে সংগৃহীত বস্তু সকল মথাযোগা ভাবে স্মিলিত হইতে পারে, কুশিলীর হাতে পাডয়া কুংসিত না হয়। উত্তম শিলীরই প্রয়োজন वादः अनुष छेपात मर्गिवरे अर्पाञ्चन । जाहा रुटेल्हे मः शह नर्वश्रकारवत कन्यावकत रय। आयदा नानाकर्त नाना श्वारत नाना ভाবে ছডाইয়া আছি, উৎর্প্ট মালী-পরম यानी व्यामामिश्वत चाराहे छेख्य हाणा श्रास्त्र के कतिर्वन। ख्यन बामारमत **औ अग्र अकात १**हेरत। मंकित गहिल मंकि নিশিবে, প্রেমের সহিত প্রেম মিশিবে, ভক্তিব সহিত ভक्ति मिनिद्य এवः পরস্পব 'পাশাপাশী ≥ইর। বিচিত্র শোভা ধারণ করিবে। এই তোড়া বাঁধিবার মালী স্বয়ং **পর**নেখর। ভোডার বন্ধন রঙ্জু যেমন দেখা যায় না, সে অদৃশ্র ভাবে ধাকিয়া যেমন ঐক্যের কাবণ হয়, তেমনি भन्नम मानौ भन्नरमचन व्यामानिरान्त विष्टिश्चला नष्टे कतिया अवः শ্বয়ং অদৃশ্ৰ থাকিয়া **मक्**न(क মিলাইবেন। স্মামাদের শোভা দেথিয়া জগৎ হাসিবে, প্রীত হইবে। আমরাও বাঁচিব, এক গুণ শক্তিম্বনে শতগুণ শক্তি লাভ করিরা, জগতে অজের হইয়া বেড়াইব এবং তাঁহার প্রিয় कार्या माध्यम ममर्थ इहेव।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্তপ্রবন্ধ।

# আশা ও বিশ্বাস।

দর্মদাই এই দেখি যে, মাহুষের আশা কোনও স্থান ছিতির উপরে দণ্ডারমান; সভ্য অবস্থা, প্রকৃত ঘটনাকে অবশ্যন করিরাই দণ্ডারমান। প্রকৃতি রাজ্যে, জড় অগতে ভৌতিক শিরম সকলের মধ্যে দেখি, আমাদের আশা প্রকৃত ঘটনার উপরে মণ্ডারমান। আশা করি, কাল প্রাতে সুর্য্যোদ্য হইবে,

–কেন করি? কারণ দেখিয়াছি, প্রতিদিন প্রাতে নবরাগে विक्षिष्ठ रहेबा नवस्या भूर्लाकात्न डेमग्र रुब्र--'हेराम्च वाष्टिक्रम क्लाहरूत्र मा; आणा कति, এक्টी छाति वस छ र्फ निष्क्र করিলে নিমে পতিত হইবে,—কারণ প্রতিদিন এই ঘটনা প্রভাক্ষ নরনগোচর করিতেছি; আমার বন্ধু, দশ বৎসর যাহার সহিত অক্টুত্রিম মিত্রতাস্ত্রে প্রথিত আছি, রোগে শোকে, एः प विशेष मः मारत्र नानाविध घडेनात्र मर्था यांहात्र रक्षम ७ সাহায্যে কথনও ৰঞ্চিত হই নাই, আশা করি যে, আবার যথন বিপদ ঘটিৰে, তথন তাঁহাকে পাৰ্ছে দেখিব। এক জনের প্রতি কোনও ওরতর কার্যাভার ক্লস্ত করিয়া দেখিয়াছি, তিনি উহা মুচাক্তরপে সম্পন্ন করিয়াছেন, তাই আশা করি, তাঁহার ঘারা অন্ত কার্যাও স্থান্সার ইইবে। এইরূপ সর্বতেই আশা ভূত-কালের সত্য ঘটনার উপর দণ্ডায়মান। যদি দেখিতাম, মধ্যে मरबा প্রাতে সূর্যোদয় হয় না, যদি দেখিতাম,উর্দ্ধে নিকিপ্ত বস্ত ধরাতলে পতিত হইল না, যদি দেখিতাম, বন্ধু আমার সুধ হুংখে কখনও কখনও উদাসীন থাকেন, যদি কাহাকেও কোন कार्याकात निन्ना छৎभम्भानत्न कृष्ठी त्निथिजाम, जाहा इहेत्न चात्र দুচতার সহিত এ সকলের উপর আশা স্থাপন করিতে পারি-जाम ना। · मर्काना, मर्काज ऋष्टुं चिखित छेशरत्रहे मानरवत्र व्याणा দ্ভায়মান। কিন্তু একটা ভান আছে, যেখানে আশা রাথিবার এমন কোন ভিত্তি নাই, তথাপি আশা করিতেছি। দেখানে অতীতের প্রকৃত ঘটনা এরূপ আশা স্থাপনের বিরোধী তথাপি আশা স্থাপন কবিতেছি। আপনার জীবনেব ও চবিত্রের উন্নতিব বিষয়ে যে আশা—তাহাব ভূমি নাই, তথাপি তাহা আমাদিগকে ছাড়ে না। জীবন সম্বন্ধে যথন পশ্চতে চাহিয়া एमिश्र— ज्थन कि एमिश १ हेश हे कि एमिश्र ना,— एवं मानव নিবস্তরই আদর্শ হইতে ভ্রপ্ত হইতেছে, ডাহার সাধু ইচ্ছা, সাধু मकत, मःभारतत मः शास्य कलवावर हर्ग विहर्ग रहेना यारेटलह, मासूष भूनःभून आघाउ श्रीश इहेबाह (यह माँ। हार्डाइ, আৰার অমনি প্রতিকৃণতার আঘাতে পড়িয়া যাইতেছে, অবেচ যদি কেহ জিজ্ঞাদা করে, তোমার দাধু দক্ষরের জয় হইবে --- हेशां जाना ताथ कि ना? **उथिन इग्र**ठ स्म वाक्ति विति, হাঁ, সত্যের ও সাধুতার জয় হবেই হইবে। এ কিরপ বিসদৃশ আশা। যে শতবাৰ পড়িতেছে, সে ভাবিতেছে যে, চৰমে সে দাড়াইবে ! যদি বল--"এমন আশা কেন কর ? নিতাই ত দেখিতেছ যে, তুমি পথ-এট, সঙ্গল-চাত হইতেছ, পুন:পুন পড়িয়া যাইতেছ—তবুও এমন আশা কিকপে প্রাণে স্থান দেও ?" ইহার উত্তর মাত্র্য দিতে পারে না। যদি কেহ বলেন, সূর্য্য कुई मिन द्वेमग्र ना इंस्टन जात कुठीय मिटन ठाहात প্রতি আশা স্থাপন করিতে পার না-পুন:পুন পাপে পড়িয়াও কিরূপে আশা করিতেছ, ভূমি উদ্ধার পাইবৈ ? কেন আশা করি-তাহার কারণ জানি না। পশ্চাতে ফিবিয়া দেখি পাপ, প্রলোভন পতন, মুর্বালতা ও কু প্রবৃত্তির জয়-- অথচ আশা করি, উদার পাইব। একবার চিস্তা করা যাউক, এই আশার মূল কোথার! हेरात्र दकान छिक्ति चाह्य कि ना ?

हेहात शृष्ट्र कांत्रण अहे, शक्त ও উद्यात- अक्टब्स्टनत काक

মনে করি না। যে পতিত হয় সেই আপনাকে উদ্ধার করিবে

ইহা ভাবিলে আশা কবিতে পারিতাম না। আমবা ভাঙ্গিয়া
বলিতে পাবি আর না পাবি, স্পষ্ট ব্ঝিতে পাবি আব না পাবি,
আমাদের অস্তরাত্মা অমুভব করে যে, এ তুই কাল তুই জনের।
পতন আমাব কিন্তু উদ্ধাব আর এক জনের হাতে: আমি
যতই তুর্বল হই না কেন, ত্রন্ধাণ্ড মধ্যে এক অজেয় শক্তি
বিদামান রহিয়াছে, ঘাহা সত্যকে ও সাধুতাকে জয়্যুক্ত করিবেই
করিবে। দশ বৎসব সংগ্রাম কবিয়া যে পাপকে পরালয়
কবিতে পারিতেছি না—সেই অবার্থ অজেয় শক্তি—অবভীর্ণ
হইয়া মুহূর্ত্ত মধ্যে হয়ত সেই পাপের বিনাশ সাধন কবিবে।
আমাব পুনঃপুন পতন হইতে পাবে—ইহাও যেমন সত্যা,
এক মহাশক্তি আমাকে বক্ষা করিতেছে, ইহাও তেমনি সত্যা।
যথন পশ্চাতের দিকে দৃষ্টিপাত কবি, তথন আমাব তর্ব্বলতা
দেখি, কিন্তু যথন ভবিষাতের দিকে দৃষ্টিপাত কবি, তথন সেই
হুর্জ্জুর ব্রন্ধাণ্ড পতিব প্রতি আশা ও নির্ভর স্থাপন করি।

এইরপ আমাদিগেব জীবনেব একদিকে তর্কাকতা অপব বৈকে আশা। এই আশা যে পবিমাণে প্রবল হয়, সেই পবিমাণে আমরা বিখাসী। আশা মান হইলেই বিখাসও মান
হইরা বায়। স্বীয় জীবনে উাহার প্রকাশ, তাঁহার কার্য্য যে
পরিমাণে দেখি না—সেই পরিমাণে নিরাশ এবং অবিখাসী
হইযা যাই। ধর্ম সমাজে গাঁহাবা বাস করিতেছেন, তাঁহাদিগকে নিতাই আশ্ব-পবীক্ষা কবিয়া দেখিতে হয়—বিশাস
বাজিতেছে কি না। যদি বিশ্বাস বৃদ্ধিত না হয়—তাহা হইলে
সঙ্গীত, উপাসনা, ব্রত, সংযুম সকলই বুণা।

হৃদ্যের যে কোমল ভারগুলি আছে, ভাহাদের প্রাক্রম আমরা সচবাচৰ দেখিতে পাই না। জননী সন্তানদিগকে পালন কবিতেচেন, কথনও ক্রোধ কবিতেচেন, কপনও তির্মাব কবিতেছেন, বখনও বা প্রহাব করিতেছেন—মনে হয়, কৈ মাতৃমেহেব শক্তি কোথায়? কিন্তু যথন ঐ সন্তান °বোগশযান্য শ্রন কবিয়া ছট্নট্ কবে, পীড়াব জালায় অভিব इडेब्रा बाखनाम करत- उवन तमिश्र बाज्रसम्बद कि व्यथितिमा শক্তি। তথ্ন জননা আবে সন্তানের পাশ ছাডিতেছেন না, আহাৰ নাই, নিজা নাহ, মূপে কথা নাই, প্ৰাণে শাণ্ডি নাই— স্থানের রোগ যাত্নাতে জন্নী যমুণাগ্রস্ত । বন্ধুব ভালবাস্বি প্রক্রেম তত্ত্বল দেখিতে পাছ না, যতক্ষণ না বিপদ উপস্থিত व्यः मानवीय शक्तिः शकान (यमन मनामा (प्रशिट्ड शाहे ना, ঈশ্ববৈৰ শক্তি দম্বন্ধেও ঠিক তাহাই, আংমরা অনেক সময় ঠাহার কুপা বুঝিটে পাবিনা। যথন ধ্যাবীৰ্দিলের বীব্র কাহেনীর পাঠ করিয়াছি, তথন ভাবিয়াছি প্রয়োজন উপস্থিত ছইলে বুঝি আমিও, এরপ করিতে পাবি। আমার বেশ মনে म, 'तानकदात्न धकन। धकन औद्वान तानक फामात्क वालग्राहि लन- "रेंग्ल त्य विश्वाम त्थाम तथाहेगा शिग्राहिन-ভাহা অতুলনীর, অন্তের জীবনে ভাহা সম্ভব নহে।" আর্দম ভাহার উত্তর কবিষাছিলাম "কেন, একজন যাহা করিয়াছে অন্তে তাহা কেন পাবিবে না ?" কিন্তু পরীকার দিনে বৃঝিতে 

বিশ্বাদী হওয়া বড কঠিন। সংসারে এইরূপে আমরা কতবারই আত্মপ্রতারিত হই। যে বল আপনাতে নাই, তাহা আছে বলিয়া মনে করি। সাবধান—আত্মপ্রতারণার বিরুদ্ধে সকলে সাবধান रुप्रेन। সমুদ্রেব মধ্যে ঝড় উঠিলে দেখিতে পাই, नार्विकर्गण आग्नारण काहाक्षरक वन्तरतत्र मिटक हानाहर छह : ৰ্শিক্ষৰ কোন ভয়েৰ বা হুঃথেৰ কাৰণ উপস্থিত হইলে দেখিতে প<sup>্</sup>ই, দে জননীর দিকে ছুটিয়াছে; পতিপ্রাণা নারীব কোন কোভের কাৰণ উপস্থিত হইলে, পতিব পাশে ছুটিয়া যান—সেইরূপ প্রাণের জালা জুড়াইবাব জন্ত, এ প্রাণ কি বিপদ ও পরীক্ষার দিনে নিজ প্রাণেশ্বরেব পাশে ছুটিয়া যায় ? যথন দেথিব---রোগে, শোকে, দারিদ্যে, ছুংথে, চিস্তাতে মন সহজে তাঁহার দিকে যায়, তথনই বুঝিব নিজ ছর্কলতার মধ্যে আশার ভূমি ধবিয়াছি ৷ যথন দেথি, পাপ, ছুর্মলতাব কথা ভাবিতে ভাৰিতে প্রাণ নিবাশায় ভূবিয়া, যায়, তথন কিরুপে বলিব--বিশ্বাস পাইয়াছি ৷ অভ এব সকলে একবাব অতীত ও ভবিষাতেব দিকে ভাল কবিয়া চাহিয়া দেখি। একবার পশ্চাতেব দিকে চাহিয়া ত্র্বলতার কথাগুলি ভাল করিয়া ভাবি--আবার সমুথের দিকে আশাপূর্ণ হৃদয়ে ভগবানের করুণাব দিকে চাহি। ঐ পশ্চাত্তে পডিয়া রহিল অন্ধকার, আর সম্মুথে ককণার আলোক। অন্ধ-कारतर मिरक जान करिया ठाहित बात्नारकत्र मर्यामा जान করিয়াসদরক্ষম হইবে। নিজের চুকালভার দিকে এই অভ চাহিবে যে, যেন ব্যাকুশভাবে তাঁহার শক্তির নিকট নিজকে উৎসর্গ কবিতে পারি। বিশ্বাস, বিশ্বাস করিলে বিশ্বাসী হওয়। যাব না, ই**ঠা অনেক সাধনের ফল**, বছ দিনের তপ্রভার ফ**ল**। ঈখন করুন, যেন আমবা একদৃষ্টি নিজ গুরুষভার উপতে, অপুর দৃষ্টি ভাষার করুণার উপরে রাণিয়া অগ্রসর হইতে পারি।

## পশ্চাতে না সম্মুগে গ

বর্তমানে অভুপ্তি মানব জদয়ের পাভাবিক অবভা যাহা এখন ও অপরিজ্ঞাত, তাহা জানিবাদ জ্ঞাই মানব মন কৌতৃহল প্ৰবশ্, কিন্তু তাহা একবার প্ৰিক্তাত হড়ক, আর মানবচিত্র তাহাতে কুপ্ত থাকিবে না, আবার অজ্ঞভার যবনিকা সবাহয়া অন্ধকারের গভোক আছে, ভালা দেথিবার প্রায়াস প্রতবে। ক্ষার্ত কুত্র ব্যেন একথ্য মাংস আহার করিবার সময় সম্বস্থ আর এক ঘণ্ডের দিকে চাহিয়া থাকে, তেমনি যেন মানব বর্তমানকে ভোগ করিবার সময় অজ্ঞাত রাজ্যের দিকে চাহিয়া থাকে। এই বর্ত্তনানে অগ্রপ্ত ইইতেই মানবের मक्तिविध जिन्न जिल्ला कर्म कर्म कर्म किलान वन, विषय वानिका বল, সাহিত্য বল, রাজনীতি বল, দুওনীতি বল, সমাজনীতি বল, সক্ষবিধ্ উন্নতির মূলে এই অতৃপ্নি এই অতৃপ্তি ছারাই প্রমাণিত হয়, ঈশ্বর মানবচিত্তে বাস্ক্রিভেছেন, এবং মানবকে \* অনস্ত আকাজ্ঞা দিয়া তাহাকে আপনার সহিত সম্বন্ধ করিয়া-ছেন। ইতর প্রাণীরাই বর্তমানে তৃপ্ত; মানবকুলের মধ্যে याबारमञ्ज श्वार्णत जेवाजित जाकाक्या अटक वादत निर्वाणह देवारह,

ভাহারাও বর্ত্তমানে ভৃপ্ত। নতুবা মানবমাত্রেই বর্ত্তমানে অভৃপ্ত। এই বিষম অতৃপ্তি হৃদয়ে লইয়া ছুই শ্রেণীর লোক, ছুই বিপরীত দিকে দৃষ্টি নিকেপ কবিয়া গাকেন। প্রথমতঃ এক শ্রেণীব লোক আশাব স্থিত • অতীতের দিকে দৃষ্টিপাত করেন, অপব শ্রেণীৰ লোক ভবিষাতে আপনাদের আশা ভবসা ও ৰক্ষাস্থাপন কৰিয়া ভাহাৰই দিকে চাহিয়া থাকেন। প্ৰাথম শ্রেণীৰ নিকটে অভীতেৰ শোভা, অভীতেৰ উন্নতি, অভীতেৰ সভাগ, অতীতের জ্ঞান, অতীতের বীবহু, অতীতের ধর্ম, **অতীতেৰ প্**মাজ, অতীতেৰ যাহা কিছু ছিল, স্কলি <del>সুন্</del>ৰ দেখার ; এবং তাহারা অ**ীতকে** ফিরাইয়া আনিতে চান। উাহাবা বিশ্বাস কৰেন যে, অতীতকে যদি ফিরাইয় আনা যায়, ভাষ। হইলেই এ কগৎ প্ৰম স্থাৰ স্থান হইৰে, মান্ব সমাজ উন্নতিৰ চৰমগীমাৰ পদীৰ্পণ ক'বিৰে। এই অভীতেৰ আদৰ বাঁহাৰা কৰেন—অতীতকে বাঁহাৰা ফিরাইয়া আনিতে वांत्रमा करवन— उँ। शांतिशतक वक्तवांशील (Conservative) वला ্যাইতে পাবে। ইই,দেব মতে উন্নতিব অর্থ প্শচ্চত ফিরিয়া যা ওয়া।

দিতীয় শেণীৰ লোক বিশাস কৰেন - সভা মূগ পশ্চাতে নহে সম্বেদ জগ উঃতিৰ অৰণা হইছে এই ইইয়া দিন দিন ছুৰ্মতি প্ৰাপ্ত ইইতেছে না, কিন্তু কি জড বাজে কি মানবসমাজে স্ক্রিট কদ্যাতার মধ্যে সৌন্দ্রা, বিশ্বলাব মধ্যে শ্রালা ভাপিত হইতেছে, স্নতরাং মনেবায় উন্নিত্ত আদিশ্ভবিষাতে র্ভিয়াছে। এইক্রেপ ভবিষাতের দিকে বাঁহারা চাহিয়া র্ঞ-মাজেন, জাঁহাবাই স্পাবক (Reformer) ইহাবা বলেন গভিয় নাম স্থাপদিকে অতাস্ব হওয়া পশ্চাদগ্যন নহে। কগতেব माध महास्रमित्रात कानतक ७ टे (स्वी ग्रा। महाशुक्रस्गन অভাগিত হট্যা স্থাধে অহাসর হট্যাব জ্ঞাই ক্রস্মাজকে ইক্সিত কৰিয়া গ্ৰিয়াছেন। জগৎ যে ইক্সিতে অগ্ৰসৰ ইইয়াছে। মহাত্রা যিশু শিষাদিগকে যে স্বর্গ র ভোব কথা বলিয়াছিলেন---ভাচা পশ্চাতে নভে স্মুথে তিনি পুনঃ পুন এই কণাই বলিয়াছিলেন -পশ্চতি নংখ সন্থাপ। ভিনি পুনঃপুন এই কণাই বলিয়াভিলেন—"বৰ্গৰাজা আদিতেতে শ মহাত্মা বন্ধ যে নিকাণয়াক লাভ কবিবার জ্ঞা কঠোব তপ্সস্থা অবলধন কবিয়াছিলেন-ভাহার জেক্সও" স্মুথেই ইক্সিড কবিষাছেন: মহাত্রা মহল্লদ দেশ প্রচলিত পৌত্রশিক্তা, कुम ऋ दिव विकास यैक शायना के विद्या अमल मान का कर क সম্মুপের দিকেই অগ্রাসর কবিয়া দিয়া শিয়াছেন-এবং উজ্জ্বল ভবিষাতের দিকৈট ঘাইতে শৈক্ষা দিয়া গিষাছেন। মহাত্রা চৈত্র যে পেনবাজ্যের আভাষ দিয়া গিয়াছেন---তাহাও তিনি স্থাপে দেপিয়।ছিলেন।

মহায়া রাজা বামমেইন বাষও তাঁহাবু দেশবাদীদিগকে
সন্মুখে অগ্রসের হইতেই আহ্বান কবিয়াছেন। এাক্সধর্ম যে
বাজার মৃলধন লইয়া অবতীর্ণ হইয়াছেন—দে রাজা কি
সন্মুখে না পশ্চাতে প অতীতের সমস্ত জ্ঞান, বিজ্ঞান, উন্নতি,
সভ্যতার উত্তরাধিকারীকপে যে বাদ্ধসমাজ জন্মগ্রহণ কবিয়া,তেন এরং অনত উন্নতি ধাহারে শক্ষ্য, ভাহার গতি কোন্

দিকে যাইবে, পশ্চাতে না সমুখে? ব্রাহ্মসমাজ সভাই বলিয়াছেন—"সমুথেতে স্বর্গরাজ্য পশ্চাতে চেয়োনা ফিরে" উন্নতির অর্থই অতীতকে পশ্চাতে ফেলিয়া আসা। তোমরা একদিকে যেমন বর্ত্তমানে পবিতৃপ্ত হুইতে পারিতেছ না—অন্তদিকে তেমনি অতীতকেও আলিঙ্গন করিবার জন্ত হাত বাঙাইও না। যাহার রুণাতে এত দ্ব অগ্রসর হুইরাছ—ভিনিই হাত ধরিয়া অপরিচিত অনস্ত উন্নতির পথে দিন দিন আমাদিগকে অগ্রসর করিবেন। পরেব কণায় ভূলিও না— ছিদিন যদি অন্ধকারেই পভিয়া থাক—তাই বলিয়া কি যাহা পশ্চাতে পবিত্যাগ করিয়া আসিয়াছ—তাহাকেই আবার অবলম্বন করিবে গ বিধাতা আমাদিগের অনস্ত উন্নতি পথের সহায় হুটন।

## বিষয়ী ও বিশ্বাসী।

অতি প্রাচীনকাল হইতে ভাবতবর্ষে সংসার এবং ধর্ম্মে কিছু বিরোধ চলিয়া আদ্বিতেছে। ধার্ম্মিক বলিলেই এতদ্দে-শের আপামর সাধারণ সকল লোকেই সংসার-বিরাগী বা সংসারভাগী বলিয়া বৃঝিয়া থাকেন। আমাদিগের দেশের প্রাচীন শাস্ত্র, প্রাচীন বিধি এবং প্রাচীন ব্যবহাব এই ভাবকে জাতীয় জীবনে অফুপ্রবিষ্ট কবাইয়া দিয়াছে।

ব্রাহ্মসমাজ অর্দ্ধ শতালী ধরিরা সংসার এবং ধর্মের এই
বিরোধ ভাঙ্গিবার জন্ম প্রাণপণে চেষ্টা কবিয়া আসিতেছেন।
মানবেব দৈনিক জীবনকে আধ্যান্মিক আলোকে উজ্জ্বল
করিয়া সমুদায় জীবনেব ক্ষেত্রকে ধ্যাক্ষেত্র করিবার জন্ম
ব্রাহ্মধর্ম অবতীণ। হিন্দু শাস্ত্রসমূদ্র মন্থন কবিয়া ব্রাহ্মসমাজ —

"এক্ষনিটোগৃহতঃসাৎ তত্ত্তান প্রায়নঃ

যদ্গৎ কমা প্রাকুরবীত তদ্মানি সমপ্রেৎ" এই মহাৰাক; উদ্ধাব এবং প্ৰচার কবিলেন। জনসাধারণ এখনও এই মহাবাকোৰ ভাৰ গ্ৰহণ করিতে পাৰিতেছেন না। রাক্ষ গৃহস্তগণ ইছা কতদ্ব প্ৰিয়াছেন, বর্ত্তমান সময়ে তাহাই চিন্তাৰ বিষয় হইয়াছে ৷ সংসার কবিৰ কিন্তু সংসারাক্ত **হই**ব না, বিষয়েব মধ্যে বাস করিব কিন্তু "বিষয়ী" হইব না—এ কথা উপদেশেই রহিয়া যাইতেছে—কি জীবনে প্রতিষ্ঠিত হইকেছে—তাহা বিশেষভাবে ভাবিয়া দেখিবার সময় আদিযাছে। ত্রাহ্মসমাজ এখন একটা বিস্তাণ সমাঞ্চরপে পরিণত হইতে চলিয়াছে। প্রভু প্রমেশ্বরের কৃষায়—শভ শত রাক্ষ পবিবার নানা স্থানে বাদ করিতেছেন। বাারীটার ত্রাক্ষ, উকীল ত্রাক্ষ, ভাক্তার ত্রাক্ষ, বাবসায়ী ত্রাক্ষ, কেরাণী বান্ধ্য, শিক্ষক বান্ধ্য, চাষী বান্ধ-সংসাবৰূপ সংগ্ৰামক্ষেত্ৰে সহস্র সহস্র ব্রাহ্ম নানাক্ষপে বিচৰণ কবিতেছেন। বিষ্ণী ব্ৰাহ্ম ও বিষয়ত্যাগী ব্ৰাহ্মও দেখিতে পাইতেছি। কিন্তু অনা**স্তু** বিষয়ী ব্ৰাহ্মেৰ সহিত এখনও ভাল করিয়া সাক্ষাৎ হইতেছে না। ৬৫ বংসবের অভিজ্ঞতারপর কি বলিতে হইবে---বে বিষয়ী এবং বিশ্বাসীর ছই পৃথক দল ভালিয়া আক্সমাল এক

করিতে সমর্থ হন নাই ? অত্রাক্ষ বিষয়ী বেমন নিজ স্বার্থে ড্বিয়া আছেন, ত্রাক্ষ-বিষয়ীও কি তাহাই করিতেছেন ? কথা বার্ত্তা, আচার বাবহার, চলন চবিত্রে—উভরকে পৃথক বলিরা বা্থতে পারা যায়, এরূপ বিশেষ চিহ্ন কি বিষয়ী ত্রাক্ষ চবিত্রে দেখিতেছি ? ত্রাক্ষ, তুমি কি এমন কিছু পাও নাই— যাহাব গুণে তুমি বিষয়ী হইতে পৃথক ? হায় ! সে দিন কবে হইবে—বে দিন ত্রাক্ষ বলিলেই "বিশ্বাসী" বলিয়া জানা বাইবে, বিষয়াসক্ত জীব হইতে তাঁহারা পৃথক হইয়া পড়িবেন।

"विषयी अवः विषामी कि अक हहेरव ना ?" अहे धान बरन হইলেই, তাহার সঙ্গে সঙ্গে নানা প্রকার আপের সঞ্চার হর। বিখাসী বলিয়াছেন, "কলাকার হুত্ত ভাবিও না"—বিবয়ী বলিতেছেন 'অাগে আমার স্ত্রী পুত্রের জক্ত কিছু সঞ্চয় করিতে দেও, তৎপরে আমার এ জীবন আমি প্রভুর কার্য্যে উৎসর্গ করিব।" একজন ত্যাগী, অস্তজন ভোগী (পরিমিত ভোগী ?) অথবা একজন বিষয় কাৰ্যোব উপধোগী কবিয়া বিশ্বাসকে গঠন কবিয়াছেন—অন্তজন বিশ্বাদের অনুগামী কবিয়া সংসাবকে हानाइटङ्का। त्मरे क्या मत्न रम्न-विषयी व्यवः विचामी कुरे भूभक पत स्वभट्ड **हित्रमिन** हे थाकिता। उक्तिमाटसङ हेहात्र अञ्चर्णा हत्र नाहे अवः हहेवाव मुखावना । नाहे । अकृत्रण সভ্য, ক্যায়, স্বল্ভা ও বিশ্বাদেব দ্বারা ব্রাহ্মস্মাজকে গঠন কবিতে চেষ্টা কবিবেন—অপর দল তীক্ষ প্রতিভা, কৌশল এবং हनन महे अशिएक व्यवनयन क्रिया द्राक्ष मभाएक्त कार्या हाला-ইবেন। এই হুই দলের সমবেত চেষ্টাতেই ব্রাহ্ম সমাজ শক্তি-भागी रुटेटव । विषश्ची এवং विश्वामी এक यात्रा उनका मभारक व উন্নতির অস্ত খাটিয়া ইহাকে পবাক্রান্ত শক্তিকপে জগতের সমুবেধরিবেন। ব্রাহ্মসমাজে এই ছই দলেরই স্থান আছে। এক पन कीवस विश्वामी (नाक श्रञ्ज बहेग्रा यह पिन ना आका সমাজের কার্যাক্ষেত্রের সমস্ত ভাব গ্রহণ করিতেছেন—ততদিন •हेश विषशे लाकित नौनाक्कबरे थाकित, छाराउ मन्तर নাই, ভাহাতে বড ক্তিও নাই।

ব্রাহ্ম সমাজ ক্রমোরতিশীল। ইহার গঠন কার্য্য ভগবান যে ভাবে চালাইভেছেন, তাহাতে নিশ্চয়তার সহিত্য বলিতে পারা যার যে, এথানে বিশ্বাসিগণ চালক হইবেন এবং বিষয়িগণ তাঁহাদের অফুনরণ করিবেন। ব্রাহ্মসমাজের হিতাকাজ্ঞী ও ব্রাহ্মধর্ম প্রচারার্থিগণের ইহা মরণ রাথিতে হইবে, বিশ্বাস ও ত্যাগের বল ভিন্ন ধর্ম সমাজ অক্ত বলের ছারা চলে না, অক্ত বলের দারা তাহার দেহ পৃষ্টি হয় না। ব্রাহ্মসমাজের উরতি ও অঙ্গপৃষ্টিতে ব্যহারা বিশ্বাস, বৈরাগ্য প্রভৃতিকে সর্কপ্রেষ্ঠ জান না দিয়া অক্ত বলের উপরে নির্ভর করেন, তাঁহারা বালুকারাশির উপরে অট্যালিকার ভিত্তি নিহিত করেন, সেরূপ ,বিবয়বৃদ্ধির হস্ত হইতে ঈশ্বর আমাদিগকে বহা-ক্রন।

#### প্রশোতর।

#### বাক্যসংযম।

প্রশ্ন ৷—বাক্য সংযত রাখিবার প্রক্ষে কি কি কর্তব্য ?

উত্তর।—বিশেষ গুরুতর কাবণ বাতীত অপরের সম্বন্ধে কোন প্রকার মতামত প্রকাশ করিবে না। অন্তকে কোন প্রকার ক্ষতি বা প্রতারণা হইতে রক্ষা করিবাব জল্প, কিমা অন্ত কোন বিশেষ গুরুতর কারণে, কাহারও সম্বন্ধে মতামত প্রকাশ করিতে হইলে, বিশেষ সতর্কতা ও হৃংধের সহিত বলিতে অভ্যাস করিবে। গুণ কীর্ত্তন সম্বন্ধেও সংযত হওরা আবশ্রক।

- ২। পরচর্চার প্রবৃত্তি সর্বাধা নিল্নীয়। এই প্রবৃত্তি প্রবল হইলে চিত্ত-বিক্ষেপ জন্ম; নিজের প্রতি দৃষ্টি ছাস হর; গুরুজনের প্রতি শ্রদ্ধা ডক্তি অর্ডিত হয়, এবং অশেষ দোবের আকর শ্বরূপ যে অহঙ্কার তাহা আসিয়া মানুষকে অপদার্থ ক্রিয়া ফেলে। এই প্রকার ব্যক্তিব মনে ভক্তি স্থান পায়না।
- ৩। ভানে অসানে উচ্চ ধর্মের কথা বলার অভ্যাস নিন্দনীয়। ইছাতেও অংকার আদিয়া গ্রাদ কবে। অহকারীয় নিকট ধর্মের লাব অবক্তম। ধ্যের কথার ছডাছ্ডি করিবে না;ধর্ম প্রদশনের ইচ্ছা পরিভাগে কবিবে।
- ৪। নিজের সঙ্কল সহসা অন্তের কাছে প্রকাশ করিবে না। ইহাতে চিত্তের লগুতা অন্যে ও কম্ম করিবার শক্তি হাস হয়। ্যাহার অন্তরে ষ্টাম না জ্মিতে জ্মিতে স্থাধের ছিদ্র দিয়া বাহির হইয়া য়য়, তাহার কল ভাল চলে না।
- ৫। প্রার্থনাসংঘন্ও বাক্য সংঘ্যের অপ্তর্গত। প্রভুপরমেশরের নিক্ট বাক্পটুতা দেগাইবে না। "বাল্ব ◆ম ও করিব বিশি" ইংটি সাবেশন লোকের লক্ষণ।

>म अञ्च । मञ्जा कीवत्नत्र अधान উদ্দেশ कि १

উত্তর। বৃক্ষ সৃষ্টির উদ্দেশ্য যেমন বৃক্ষের প্রাকৃতি আলোচনা করিলেই অন্থামিত হয়, তেমনি মানবের প্রকৃতি পর্য্যালোচনা করিলেই মানবজীবনের উদ্দেশ্য কি তাহা স্থাপার প্রতিভাত হয়। সংক্ষেপে বলিতে গেলে এই বলিতে হয় য়ে, মানবাত্মার সর্ব্বাঙ্গীন উর্কৃতি সাধনই মানব জীবনের মুধ্য উদ্দেশ্য। আমরা দেখিতে পাই বে, আমানের মধ্যে প্রেম, পবিত্রতা, জ্ঞান প্রভৃতি যে সকল উচ্চ বৃত্তি আছে, তাহা কথনও পূর্ণতা প্রাপ্ত হয় না। কেছ কি বলিতে পারেন হে, "আমি জ্ঞানের চরম সীমায়, অথবা প্রেমের চরমসীমায় উপনীত হইয়াছি ?" দিন-দিন জ্ঞান প্রেম যতই বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়, ততই আকাজ্যা বৃদ্ধি হয়, স্থতরাং অপূর্ণতা অমুভূত হয়। এই যে মানবাত্মার অনস্ত উন্নতি অভিমুখীন গতি, এই গতি লাভ করিবার পক্ষে ঈশ্বরের অমুগত হওয়াই এক্সাত্র উপায়। বিদি জীবন স্টি করিয়াছেন, তাহার হল্তে জীবনকে অর্পণ করিতে পারিলেই মানবজীবনের উদ্দেশ্য সফল হয়।

জীবনের উপরে মানবের কোনই কর্তৃত্ব নাই। আমি কি ইচ্ছা করিয়া অন্মগ্রহণ করিয়াছি? ইচ্ছা করিয়া কি আমি ভূমিঠ হইরাছি? এখন বে জীবিত রহিয়াছি, ভারাও কি আমার ইচ্ছাতে ? আমার ইচ্ছার জীবন হর নাই, আমার ইচ্ছার ইহা পৃথিবীতে বাসু করে না এবং আমার ইচ্ছাতে পরলোকগমন করিবে না। আমি ইচ্ছা করিলে আত্মহত্যা করিতে পারি; কিন্তু জীবনকে ত এক সুহর্ত্ত মৃত্যু গ্রাস হইতে বক্ষা করিতে পারি না। ইচ্ছা করিয়া হাত সুষ্টিবদ্ধ করিতে পারি; কিন্তু তথন যে তর তর বেগে আমার প্রত্যেক ধমনী দিয়া রক্তলোত প্রবাহিত হইতে থাকে, তাহা আমার ইচ্ছা সাপেক নহে। এই জীবনেব আদিতে, মধ্যে, অক্তে আমার হাত নাই, এই জীবন সম্পূর্ণরূপে তাঁহারই হস্ত রচিত এবং তাঁহার দারা পরিব্দিত্য স্কৃতবাং তাঁহাকে অর্পণ করাই ইহার উদ্দেশ্য। যিনি পূর্ণ পবিত্র, পূর্ণ প্রেম, পূর্ণ জ্ঞান তাঁহাকে আদর্শ কবিয়া অনস্ত উন্নতিপথে গমন করা ও তাঁহাকে লাভ করাই মানবজীবনেব লক্ষ্য।

## . ভূই জাতীয় চরিত্র।

বিস্তীৰ্ণ এক সবোৰৰ ৰক্ষে জনী সন্দৰ্শ প্ৰস্কৃতিত পদাকৃত্ৰ শোভা পাইতেছিল। ছটীকে দেখিতে ঠিক একট প্রকার। তম্বেরই অনুস্পম শোভায় চাবিদিক আলোকিত হইতেছিল। पुत्र घटेट उटकान देवलक्षणा, दकान भाशकः एपशा या हेट छिल् ना । কিন্তু তাহাব একটা মৃণালগাবা মূলেব সচিত দুচকপে আবদ্ধ ছিল, অপবনী চিল্নমল হইরা ভাসিতেছিল। হঠাৎ একদিন প্ৰিচিড অঞ্লে মসল্পাবে বৰ্ষণ হট্যা স্বোৰ্বেৰ জ্বল দ্নীত হইষা উঠিল। ভীর অভিক্ষ কবিয়া দতেবেগে স্রোত প্রবা-হিছ হটতে লাগিল। দেপিতে দেখিতে মূলহীন পদানী ভাসিষা কোণাণ চলিয়াগেল। যেটী মলেব স্ভিত দৃচকুপে আবিদ্ধ ছিল, সেটী শ্লোতেৰ বেগে 'ইতওতঃ আন্দোলিত হটল বটে, তৰঙ্গেৰ আগাতে একৰাৰ উদ্ধে একৰাৰ মুদ্ৰোতে, अकर्नात डेव्टर अकर्नात मिक्सिन (इनिटिक इनिटिक लागिन वटि, শোৰ অনক্ষেৰ মধ্যে পডিয়া কথনও চক্ৰাকাৰে ঘ্ৰিতে লাগিল वरहे—िक इ क्यान हाल इहेन ना, वजावमारन यथायारन विष्ठ হইয়া শোভাবিস্তাব কবিতে লাগিল। মানব সমাজে স্চরাচ্ব আমর। এই প্রকার দৃষ্টান্ত দশন কবিয়া গাকি। ছুট প্রকাবেব সাধুতা, সদস্কান ও স্চেবিত্রতা মানব সমাজ-বক্ষে পেকটিত হটনারহিয়াছে। বাহিব হইতে উভিয়েব দৌন্দধ্যে, উভয়েব কার্য্যে উভরের অফুষ্ঠানে কোন প্রকার বৈলক্ষণ্য ও পার্থক্য দৃটিগোচর হয় না। সকল সাধুতা, সদস্ঞান এবং সচ্চরিত্রতাই স্থব্দর, পবিত্র এবং স্পৃহনীয় বলিয়া মনে হয়। কিন্তু সচরাচর দেখিতে পাই, যথন দালণ বিপ্লব্ উপ্লিড হয়, যথন বিল্ল বিপত্তি ও পরীক্ষার ভীষণ তবঙ্গ উথিত হয়, তথন এক প্রকারের সাধুতা, সদমুষ্ঠান ও সচ্চরিত্রতা মূলহীন পলোর ভাষ কোথায় ভাসিয়া যার, আর এক প্রকারের সাধুতা, সদফুষ্ঠান ও সচ্চরিত্রতা বিষম তর্লাঘাতে আন্দোলিত হয় বটে, ইভস্তত: হেলিতে ছলিতে থাকে বটে, কিন্তু কথনই স্বহান-চ্যুত হয় ना, जब्रक्रावजारन व्हित्रकांव धावन करत्र ७ कार्टन इहेग्रा धारक। ইহার কারণ কি ? একই ৰম্ভর এমন বিষদৃশ পরিণাম কেন ঘটে ? এ প্রান্নের উত্তর কোথায় ?

এক প্রকারের সাধুতা, সদম্ভান, প্রিত্ততা দেখিতে পা ওয়া যায়, যাহার মূল স্থদৃঢ় ঈথর-রিখাদ ও ঈখর প্রীতির উপর প্রতিষ্ঠিত। সমন্ত জগৎ চূর্ণ হইয়া গেলেও এই সাধুতা, সদম্-ষ্ঠান ও সচ্চরিতাভার মৃলছিল হয়না। ইহা এমন সাব্বস্তু, ষাহা তবঙ্গে ডোবে না, অগ্নিতে ভগ্ন হয় না, কঠিন আঘাতে ও চূর্ণ হয় না। জগতের প্রকৃত ধর্মবীবগণের জীবনে এই প্রকারের সাধুতা, সদমুষ্ঠান ও সচ্চরিত্রতা দেথিয়া জগৎ স্তস্থিত হটয়াছে। এইরূপ বিশাদী-দিগকেই প্রমেশ্বর আপনীর কার্য্যের জন্ত মনোনীত করিরাছেন। আবে এক প্রকারেব সাধুতা, সদস্ঠান ও সচ্চরিত্রতা সচরাচর দেঁথিতে পাওয়া যায, যাহা ছিলমূল পলেব ভায় সোতে ভাসিয়া যায়। 'অফু-সন্ধান করিলে দেখিতে পাওয়া যায়, এই প্রকাবের সাধুতা পভৃতি আয়গৌবৰ, লোকের প্রশংসা প্রভৃতির উপরে প্রতি-ষ্ঠিত। প্রশংসার জ্বন্ত লোক কিনাকরিতে পারে ? এরূপ প্ৰমাণ পাওয়া গিয়াছে যে, প্ৰশংদাব লোভে কতজন নিজ জীবনকে, সৃক্টাপল করিয়াছেন, ক্তজ্ঞন মৃত্যুকে আলিঙ্গন कतिब्राष्ट्रिन। हेरांच व्यय्नक मृष्टोस्ट श्रामनंन कता याहेएड পাবে। किছু कान পৃর্বে আমাদের দেশে চৈত্র সংক্রান্তির সমযে চড়ক পূজার প্রণা -ছিল, ঐ চডকেব সময় দেখিতাম, কোন কোনও লে'ক লোহশলাকাব ছাবা পৃহদেশ ফুঁডিয়। তদ্বস্থাতে ঝুলিনা চডকগাছে পাক পাইত। সে কি ভীষ্ণ দুখা। এই কপ ভুষ্ধ লোমহর্ষণ তপ্রভাতে যাহারা প্রবৃত্ত হইত তাহারা সকলে কি বিশুদ্ধ ধর্মভাব দারা চালিত হইহ ২ তাহা নহে। তালাদেৰ অনেকে আমের মধো অতিনিক্ত শ্রেণীৰ ও নিরুষ্ট চবিত্রের লোক, ভাহাবা দম্বংস্ব কাল গ্রামের লোকের উপবে উপদ্রব কবিয়া কাটাইত, বংসরাস্তে গাজনের সন্ন্যাসী হইয়া বাহিব হইত। তবে তাহাবা কোন শক্তিব বলে এই ছক্ষৰ কাৰ্য্য কৰিতে সম্থ হইত ৭ চিম্বাক্ৰিলে অমুভব কৰা যাইবে যে, চতুদিকেৰ ব্লোকেৰ প্ৰশংসা বলিয়া উন্মাদিনী শক্তিই ভাহাদিগকে এইকপ কাৰ্য্য কবিতে প্ৰবৃত্ত কবিত। এই নপ এ জগতে অহবহ এমন অনেক চুছৰ কাষা অমুষ্ঠিত হইত, যাহাব মূলে প্রশংসাপ্রিয়তার গৃঢ় শক্তি ভিন্ন ष्म अपिक विनामान नरहा समकल वीत नमत्रकारक स्मोरयाद প্রাক্ষ্যি প্রদশন করিয়া থাকেন, যে স্কল্ধন্মবীর জ্লন্ত বৈরাগ্য ও স্বার্থনাশের দৃষ্টান্ত প্রদশন কবিছেছেন, সেই সকল বীরত্বে কত অংশ যে প্রশংসাপ্রিয়তা প্রণোদিত, তাহা কে বলিতে পারে। প্রশংসাাপ্রয়তা অতি গৃঢ়ও স্কুভাৰে আমাদেব চরিত্রে কাধ্য কবিয়া থাকে। জগতেব অনেক সাধুতা ও সদমুষ্ঠান এই প্রশংসাপ্রিয়তার গৃচ শক্তি হইতে উৎপন্ন। বাহির দেখিয়া বিচার করিতে গেলে প্রকৃত বিশ্বাসী এবং এই আত্মগোরবাষেধীদিগের কাষ্যের বড় ভারতম্য দেখিতে পাওয়া যাক না। কিন্তু স্কাবিচারে হহাদের মধ্যে স্বৰ্গ ও নরকের বাবধান লক্ষিত হয়। অতএৰ ব্ৰাক্ষত্ৰাতৃগণ, ত্রান্সিকা ভারিপণ, একবার হৃদয়ের অভ্যন্তরে প্রবিষ্ট হইয়া আত্ম-পরীক্ষা কর। তোমাদের সাধুতা, সদম্গানও সচরেত্রভার মুল কোথার, একবার ভাল করিয়া অহস্থান কর। বৃদ্ধি

স্থাদ্য বিশ্বাসের ভিত্তির উপর তোমার জীবন প্রতিষ্ঠিত না হটয়া থাকে, আজ' হউক আর কাল হউক বিষম তরঙ্গাঘাতে তুমি কোপায় ঘাইয়া পড়িবে তোমাকে কেছ খুঁজিয়া পাইবেন না। সাবধান, সাবধান, সাবধান। আত্মগীরব অন্থেবণ করিও না, অক্লে ডুবিয়া মরিবে। এই ভীষণ নবকে অনেককে ডুবিয়া মবিতে হইয়াছে। বিশ্বাসে আপনাকে বাঁধ. ইহলোক ও পরলোকে জয়লাভ করিবে, সকল আবর্ত্তের মধ্যে বিধাতা ভোষাকে রক্ষা কবিবেন।

# প্রেরিত পত্র।

(পত্রপ্রেরক্দিগের মতামতের জস্তু সম্পাদক দায়ী নহেন।)
গীতা ও বাইবেল।

মাক্তবর শ্রীযুক্ত তব-কৌমুদী সম্পাদক মহাশয় সমীপেযু—

মহাশয়,

গীতার আদর্শ উচ্চ কি, বাইবেলের আদর্শ উচ্চ, ইহা লইয়া "যুগান্তর" নামক নবোপক্লাসে পঞ্র সহিত বিজয়ার তর্ক হয়। পঞ্র মতে বাইবেলই শ্রেষ্ট। বিজয়া গীতার আদর্শকে উচ্চ মনে করেন। বিচারে বিজয়ার জয় হয়। কিন্তু বিচারটা বড় একতরপা হইয়াছিল মনে করিয়া এই করেকটী কথা লিখিতে সাহসী হইলাম। ভবসা করি, ভক্তিভাজন গ্রন্থকার আমাদের ধুইতা মাজ্জনা করিয়া আতি দ্র করিয়া দিবেন।

বিজয়া বলেন—"বাইবেলের ভক্তি সকাম।" আর গীতা নিষ্কাম ভাবে ধর্মাচরণ করিতে উপদেশ দেন। বাইবেলের কোন স্থানে এরপ সকাম ভক্তির উল্লেখ আছে, তাহা তিনি म्पष्टे कतिया वर्णन नाहे । बीश्वत्र छेपरमस्पत्र मरश्र Sermon on the mount ভোষ। তাৰা এই — Blessed are the poor in spirit, for theirs is the Kingdom Blessed are they that mourn, for Heaven Blessed are the meek, they shall be comforted for they shall mehrit the earth Blessed are they that hunger and thirst after righteousness, for they shall he filled. Belssed are pure in heart for they shall see God Blessed are the peace makers, for they shall be called the children of God."

বদি ভগবানের পুন রূপে পরিগণিত হইতে উপযুক্ত হইবার ক্ষক্ত, তাঁহার শাস্তির রাজ্যে প্রবেশু করিতে অধিকারী
হইবার ক্ষক্ত বা তাঁহার সরিকটে থাকিয়া তাঁহার সাক্ষাংকাররূপ বিমল ব্রহ্মানন্দ অফুভন করিবার আশায়, বিনি জগতের
হিত্ততে জীবন উৎসূর্গ করেন, তাঁহার ক্র্মাপ্ত সকাম হয়,
তবে নিক্ষাম কাহার ? ইয়া অপেকা গাঁতাতেই বা কি উচ্চাদ্র্শ
আছে। শ্রীক্রক্ত গাঁতাতেও ত এইরূপ বলিয়াছেন। নিম্পাপ
যোগা ব্রহ্ম সাক্ষাংকার জনিত বিমলানন্দ প্রাপ্ত হন—স্পর্থন
ব্রহ্ম সংস্পর্শ মৃত্যক্তং স্থ্যস্থাতে। তিনি নিতা, শাস্তি লাভ

করেন, শশস্তান্তিং নিগজ্ঞতি ইত্যাদি। গীতার যাহা "পরা গতি" ভাহাই বাইবেলের (kingdom of Heaven) বাইবেলের ভার গীতাতেও নরকাদিব ভর বিলক্ষণ দেখান আছে। অধিক্ত পীতার ব্রহ্মবিদেরা যে পথে গমন করিয়া ব্রহ্মকে লাভ করেন, ভাহার বর্ণনা শুদ্ধ আছে।

, অমি জ্যোতিবহঃ শুক্ল যথাসা ঔত্তরায়ণম্ ইত্যাদি ইরচজ্র মনে করেন খুষ্টায়ানের অর্গ ও হিন্দুর স্বর্গ একই প্রকার। শেষেকেটীতে যেমন কতকগুলি বিদ্যাধরী আছে. প্রথমটীতে সেইরূপ পরী আছে। বাইবেলের স্বর্গে যে সকল পরী (angels) আছে ভাহারা নিম্পাপ আআ; ঈশরের সমিধানে থাকিরা তাহারই মহিমা কীর্ত্তনে কালাতিপাত কবেন। পুরাণের স্বর্গ গোধিন বাবুর বিহার উদ্যান। বাইবেলের স্বর্গ ব্রহ্ম মন্দির। উভয়েব প্রভেদ বড় সামাল নর। মনে কক্ষন, বাইবেলের আদশ উচ্চ দরের নয় বিষ্ণা যাউক, গীতারই বা শিক্ষা কত দ্র নিছাম। গীতার বাহ্দেব "হভোবা প্রপ্রস্তাস স্বর্গং জিলাবা বা ভোক্ষাসে মহীম্" যুদ্ধে হত হইলে তুমি স্বর্গ প্রাপ্ত হইবে এবং জ্বনী হইলে জ্বাতেব অধিপতি হইবে।

ভন্মবেমুভিষ্ঠ যশোনা ভন্তং শ্লীবা শক্রণ ভৃংক্ রাজ্যং সমৃত্বস্। আন্তএৰ যুদ্ধ ৰারা শত্রুগণকে আনুক্বিয়াযশসী হও এবং সমুদ্ধ রাজ্য উপভোগ কর ইত্যাদি বাক্য দারা ধনসম্পত্তি লাভ রূপ পার্থির সুখের জালায় অর্জুনড়ে পুন: পুন অয়ান বদনে গুরু হত্যা, জ্ঞাতি হত্যা রূপ মহা অধর্মকর কর্মে ( कर्म्यनि (चात्र ) নিযুক্ত হইতে পরামর্শ দিতেছেন। যোগ-गाधन कृत्कप्र माज महर धर्मा। (वार्श लाकरक প्रावृक्त कराहे-বার জন্ম কৃষ্ণ বলেন, যদি কেহ যোগ সামান্ত রূপও অভ্যাস करतन, जिनि वह वर्नत्र वर्गत्छांग कतित्र। अवरमरव धनीमिर्गत গুছে ( শুনীনাং শ্রীমভাং গেহে ) জন্ম গ্রহণ করেন। উপদেশের ভিতর নিহামদ্বের কোন সংশ্রব নাই। আর গীতোক নিফাম ধর্মের অর্থই বা কি। উক্ত পুস্তকে লিখিভ আছে যদি কেছ আপনাকে কন্তা মনে না করিয়া, বৃদ্ধিকে কাৰ্য্যে আসক্ত না কবিয়া অৰ্থাৎ নিক্ষাম ভাবে ৰগতের সমস্ত লোককে হত্যা করে, ভবে তাহার নবহত্যা জনিত পাপের ফল (পুন: জনাদি) ভোগ করিতে হয় না। (১৮ অধ্যায় ১৭ খ্লোক)

একণে প্রশ্ন হইতে পারে "সাধারণ বাদ্ধমশুলী" মুক্তি অর্থে কি বোঝেন। ভক্তি এবং বিশ্বাস বছল পাপ জয় করিয়া ভগবানের অনুগ্রহে ইাহার রাজ্যে উপনীত হওয়াকে খুষীয়ান salvation বা মুক্তি মনে কবেন। গীতা ভক্ত, আপনার আত্মাকে পরমাত্মার অংশ মনে করেয়া, যোগাদি প্রক্রিয়া হারা কর্মবন্ধন ছিল্ল, অতএব পুন:জন্মেব হল্ত হইতে নিজ্জতি পাইয়া আগনাকে অিগুণের অতীত কবিয়া পরবন্ধে লীন হওয়াকেই মুক্তি মনে করেন। ক্ষুদ্রাদিপি ক্ষুদ্র মানবের পক্ষে পরবন্ধের অংশ হইবার আশা কত দ্র যুক্তি সক্ষত ভাহা আপনি বিচার করিবেন। ইহার মধ্যে কোনটী আক্ষমশুলীর আক্শি প

রাজেনসা কলেজ বশস্থদ কটক। **শীক্ষর**গোপাক দে।

# ব্ৰান্মসমাজ।

উৎসব ঃ— বিগত ১ই মাঘ হইতে ১৫ই পর্যান্ত কাকি-নীরা আদ্ধাসমাজে মাথোৎসব হইরা গিয়াছে। এতত্বপলক্ষে ছাত্রসমাজ গৃহে স্থানীর আদ্ধাসমাজের উপাচার্যা বাবু গৌরনাথ রার মহাশ্য "ধর্মের উরতি" সম্বন্ধে একটী বক্তৃতা করেন।

বিগত 
ইং কান্তন হইতে ১০ই কান্তন পর্যান্ত মেদিনীপুর
ব্রাহ্মসমাজের উৎসব সম্পন্ন হইরা গিরাছে। এতত্পলকে
কলিকাতা হইতে শ্রীযুক্ত বাবু নবগীপচন্দ্র দাস এবং শ্রীযুক্ত বাবু
আদিনাথ চট্টোপাধারে মহাশয় মেমিনীপুর গমন কবেন।
উপাসনা, উপদেশ এবং বক্তাদি অতি জীবন্ত ভাব আনেরন
করিরাছে। দ্যামর প্রভু প্রমেশ্বর এই উৎস্বের ফল স্থায়ী
কর্মন।

নাম করণ ঃ—বিগত ১৮ই মাব কাকিনীয়া ত্রাহ্মসমাজের সভা শ্রীযুক্ত অক্ষরকুমার দাসের দিতীয় পুত্রের নাম
শ্রীমান চিত্তরঞ্জন রাণা হইরাছে। এতত্রপদক্ষে অক্ষর বাব্
সাধারণ ত্রাহ্মসমাজে ১ এবং ককিনীয়া ত্রাহ্মসমাজে ১ দান
করিরাছেন।

বিবাহ :— বিগত ১ই মার্চ রামপুরহাট নিবাসী শ্রীযুক্ত মহেশ্চক্র ঘোষের ভাগিনেরী কুমারী কুম্দিনী ঘোষের সহিত খালোড় নিবাসী শ্রীযুক্ত ভ্বনেশ্বর ভট্টাচার্য্যের বিবাহ হইরা গিরাছে। বিবাহে শ্রীযুক্ত বাবু আদিনাথ চট্টোপাধ্যার আচাধ্যের কার্যা করেন। শ্রীযুক্ত বাবু নগেক্সনাথ চট্টোপান্ন বর ও ক্যাকে উপদেশ দান করেন। বিবাহ ৩ মাইন অনুসারে রেজইগী হইরাছে।

শোক সন্থান ঃ—বাব প্যারীলাল ঘোষের নাম তককৌমূলীর পাঠকমাত্তেরই নিকট স্থপরিচিত। ইটি প্রায় ৭
বংসর হইল চিত্রকৃট এবং ওঁ স্কারনাথ পক্ষতের গুহায় কঠোর
সাধনায় লিপ্ত ছিলেন। সংপ্রতি ওঁ স্কাবনাথ পক্ষত গুহায়
৩৭ বংসর বয়সে তিনি মানবলীলা সম্ববণ কবিয়াছেন। ওঁ স্কারনাথবাসীগণ তাঁহার দেই সসম্মানে সমাধিস্থ করিয়াছেন।

নদীয়া জেলার অভংগাতী আযুদির গোমে একটা সম্ভান্ত ধনী পরিবারে ইহার জন্ম হয়। ইনি পিতা, মাতা, ভাই ভগ্নী এবং একমাত্র কভাকে শোকে ডুবাইয়া গিয়াছেন। ইনি শৈশৰ হইতেই সরল, সভানিষ্ঠ এবং ধন্মভাবপ্রবণ লোক ছিলেন। ইনি বাললা ও ইংরাজী ভাষার কৃতবিদা ছিলেন। বাল্যকাল হইতে

ইিহার জীধনে অনেক বিশেষত্ব লক্ষিত হয়। অন্তাম্ভ বালকেরা ষ্থন বাল্যক্রীড়া করিত—ভিনি ভেণন ধীর, গন্ধীর-ভাবে একধারে দাঁড়াইয়া কি চিন্তা কবিতেন। প্রায় ১৮।১৯ বৎসর বয়সে ইনি ত্রাহ্ম ধর্মের স্থসমাচার প্রাপ্ত হন। ভদবধি हैरात स्वीवरन वाक्षिणा । देवतागा विस्मय ভাবে আরম্ভ रहा। विषय कर्पात कानाहरनत मर्पाउ जिनि धाननीन, किजाजा ছিলৈন। তাঁহার স্থায় ব্যাকুল ও দীনাত্মা লোক এ সংসারে বড় মেলে না। অভি ভাঁত্র ভাবে তাঁহার কার্য্যের সমালোচনা क्रिलिंश जिनि कथन दिव्रक इहेर्डिन ना। धीवछार्व विन-जिन—''क्वानरे ल व्यापि व्यक्ति होन हर्वन लाक, शामि शामि व्यापित क्रिक्ति । কত ত্রতী করি। আমার ভার হতভাগ্য পাপী আর কে আছে ?" তাঁহার এই দীনতা ও বিনয়ের শতুণে তিনি এক জনও শত্রু পশ্চাতে রাখিয়া যান নাই। প্রায় ২৬।২৭ বংসর বয়সে ক্সার নামকরণ উপলক্ষে পিতৃগৃহ হইতে ভাড়িত হন. এই ৰৎসরই তাঁহার জীবিয়োগ হয়। তদবধি তিনি বিষয় कर्ष श्रहेर् अवगत गहेरात अस वाकून हहेरान। किस ভাই এবং ভগীর শিক্ষাব জয় আরও চারি বৎসর বিষয় কর্ম্মে লিপ্ত থাকিতে হইল্। তিনি রংপুরেব অধীন গোপালপুর मधा है : ताकी चूरनत धार्धान निक्क हिल्लन। पिरन विषय কার্ব্য করিতেন-প্রায় সমস্ত রাত্রি একাসনে বসিয়া ধ্যান করিতেন। অবশেষে একাস্ত অতৃপ্ত হইয়া ১৮৮৮ সালের ১২ই আগষ্ট চিত্রকৃট গমন করেন। যাইবার विश्वा बान, "विन व्यात्वत्र वामना मिछाइटक भाति, कितिवा আসিয়া প্রাণ ভরিয়া ত্রাহ্মসমাজের সেবা করিব।" চিত্রকুট পর্কান্তে পূর্ণ ৩ বংসর কঠোর তপস্যা করিয়া অবশেষে ওঁল্লার-नाथ भर्त्ताल गमन करवन। हिल्लकृष्ठे व्यवज्ञानकारम मास्य मार्य छारे छग्नीनिगरक भवानि निर्धिएउन किन्न अंदात्रनाथ গমন করিয়া মৌনত্রত অবলম্বন কবেন ও বাহিরেব সঙ্গে সকল সংশ্রব ছিল্ল করিয়া ফেলেন। আমাদিগের একজন বন্ধ কয়েক বৎসর পূর্বের ওঁজারনাথ গমন করিয়াছিলেন। তাঁহার মুথে ভনিয়াছি, সমস্ত দিন রাত্রিব মধ্যে ২০০ ঘণ্টার বেশী তিনি বিশ্রামাদি কবিতেন না। সামাভ একটুকুন হগ্ধ পান কবিয়া জীবনধারণ করিতেন। পুরোক্ত বন্ধু আবে। বলিয়াছেন--"বৃদ্ধদেবের পর এমন উৎকট তপ্যার কথা ष्पात ७नि नाहे।" यनि এই বৈরাগ্য, ব্যাকুলতা►ও বিনয়ের সহিত সেবাব সাধন হইত, তাহা হইলে আজ এই সাধুপুরুষ দারা ত্রাক্ষ সমাজের এবং এই হতভাগ্য দেশের কতই না মঙ্গল সাধিত হইত ৷ দেশের জল বায়ুর মধ্যে কৈ বিষ আনছে যে, বিখাদ, বৈরাগ্য ও দেবা একাধারে ফুটতেছে না ! কি পরিভাপের বিষয় যে, এমন দীন ও ব্যাকুলাত্মাকে এক প্রকার আত্মহত্যার বারা জীবন শেব করিতে হইক। হার। ত্রাত্ম

স্মাজের মধ্যে এরূপ বিখাসীও দীনাত্মার কত প্ররোজন ! এক্লপ ব্যক্তিব জীবন ধে'ব্রাহ্মসমাজের সেবাতে আনিতে পারিল না এই কোভ বহিয়াগেণ।

সাধনাশ্রম—বাহ্মসাধনাশ্রম হইতে ছই দল মফ:স্বস ষাত্রা করিয়াছেন, এসংবাদ পূর্ব্বেই দেওয়া হইয়াছে। একদল রাজসাহী বঙ্গপুৰ, কুচবিহাৰ প্রভৃতি ভান হইয়া আসামেৰ অভিমুধে ধাইতেছেন, অপব দল ফুলবাডী, নেলফামারী প্রভৃতি স্থান হইয়া দিনাজপুর পুর্ণিয়া প্রভৃতির অভিমুখে যাইতেছেন। আবাম যাতীদলে এীযুক হরিমোহন ঘোষাল ও এীযুক অমৃত লাল গুপ্ত আছেন, দিঙীয় দলে শ্ৰীযুক্ত কাশীচন্দ্ৰ ঘোষাল ও এীযুক্ত গিবিশচক্র কাঞ্জিলাল আছেন। সাধনাপ্রমেব নিয়ম এই यে मक्ष्यल वाहित इहेट इहेटल क्इ এकाकी वाहेंदन না, অন্ততঃ অপব একজন সঙ্গে চাট, তদমুসাবে তুই তুই জনে বাহির হইয়াছেন। আমরা ধক্তবাদ নহকারে স্বীকার করি তেছি যে, ইষ্টাবণ বেঙ্গল রেল গ্রের অধ্যক্ষণণ এতদর্থ ফ্রী পাল निदाष्ट्रन ।

আদাম যাত্রীদল—ইহাবা ১৯শে কেক্রয়ারী বাজ-সাহীতে উপস্থিত হন। আমাদেব শ্রুদের বন্ধুও সানীয় কলে-ক্কিষেট কুলেব প্রধান শিক্ষক শ্রীযুক্ত বাবু শশিভ্যণ সেন মহাশ্য অনুগ্রহ করিয়া ইহাদিগকে নিজ ভবনে স্থান দিয়া আহিথা ও সৌজুতের ইলাদিগকে আপাারিত করিয়াছেন। ইলার। ২০শে ফেব্রুয়ারী হইতে ২৫শে ফেব্রুয়াবী প্র্যান্ত বাজ্বসাহীতে কার্যা কবেন। ব্রাহ্মদিগের ভবনে ভবনে উপাসনা, উষাকীওন, সমাজে উপাসনা, বক্তা, কণ্চতা প্রভৃতির ৰাবা বংগাসাধ্য ব্রাক্ষণর্ম প্রচাব করেন, তব॰ ব্রাক্ষদমাল্লেব গ্রন্থাবলী অনেক বিক্রন্ন করেন, তৎপবে ২৬/শ হে করারী ভাহারা বঙ্গপুরে উপ-স্থিত হন। সেথানে তাঁহারা আনমাদের শ্রহ্মাম্পদ বন্ধু শ্রীযুক ৰাব্বিৰেখন দেন মহাশ্যেৰ ভবনে স্থান প্ৰাপ্ত হন। সেই রাতেই একটা বক্তাহয়। তংপরে ২৮শে ফেব্রুয়াবী পর্যাপ্ত ভাহারা রক্ষপুরে অংকিতি করিয়া ভবনে ভবনে উপাসনা, সামাজিক উপাসনাও, বক্ত। প্রভৃতি ঘারা আক্সাম্ম প্রচার করেন। ওলা মার্চ তাঁহারা দীনহাটাতে উপভিত হন। সেধানে তত্ততা পোষ্টমাষ্টার শ্রীযুক্ত বাবু ভগবানচক্র মুখো-পাধ্যার মহাশবের ভবনে অবস্থিতি করিয়া ৩রা মার্চ্চ প্রাতঃকাল | ইরাছেন। এজন্ত তাঁহাকে বিশেষ শ্বন্তবাদ

পর্যান্ত উপাসনা, ধর্মালোচনা, সংগীত সন্ধীর্ত্তন প্রভৃতির দানা ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করেন। ৩রা মার্চ উাহারা কুচবিহারে উপ-স্থিত হন। কুচবিহারের স্থপ্রসিদ্ধ দেওয়ান কালিকাদাস দত্ত মহাশয় ইহাঁদিগের কার্যো বিশেষ সাহা্ষা করিয়াছেন। এপা-त्न वित्मव वित्मव खबत्न ७ ममास्क छेशामनी, शार्व, वाशि।, বক্তৃতা, সংক্লীর্ত্তন, ও কথকতা ছারা ব্রাহ্মধর্ম প্রচারিত হয়। টহার পর ইহারা যেণানে যেথানে গমন কবিবেন, তথাকার কার্য্যবিবরণ ক্রমে প্রকাশিত হইবে। স্থানীয় আক্ষবন্ধুগণেব প্রতি অনুবোদ, ইহাদেব কার্য্যের দোবগুণ যাহা দেখিতেছেন, অনুগ্ৰহপূৰ্ত্তক সাধনাশ্ৰমের ভদ্বাবধায়ক শ্ৰীযুক্ত পণ্ডিত শিবনাপ শাস্ত্রীকে জানাইয়া বাধিত করিবেন।

উত্তর-বঙ্গ যাতীদলের কার্যাবিবরণ এখনও প্রাপ্ত হওয়। যার

আরা সাধনাশ্রম—আরা হটতে এই সভোবজনক সংবাদ প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে, যে এবংসবের প্রারম্ভ হইতে এখানকার পরিচারকগণেব কার্যোর প্রতি ভানীর লোকেব অধিক মনোযোগ দৃষ্ট ছইভেচে। প্ৰিচারকগণ স্পাহে এক দিন প্রকাশ্ত ভানে বকৃতা কবিতে আবেড কবিযাছেন। ক্লেহাম্পদ ভাট জন্দৰ সিং উংসাহের সহিত এই সকল বকৃতা কবিতেছেন। ভাই প্রকাশ দেব মজাফবপুরের অভিনুথে যাতা করিয়াছেন। শ্রীযুক্ত বাবু শুরুদাস চক্রবন্তী, শ্রীমান সতীশচন্দ্র চক্রবর্তীকে সংকে লইয়া মধ্যে বাঁকীপুরে গিয়াছিলেন। আরা হইতে আশ্রম তুলিয়া লইয়া বাঁকীপুবে ঘাইবাব প্রস্তাৰ इटेट्डिइ। कार्र्ग दांकी भूत এक है। श्रधान कार्यात्क्य। श्रक्ती-শ্ব তাঁহাৰ এই দাসদিগেৰ কাৰ্ষোৰ সহয়ে হ'টন।

मान প্রাপ্তি স্বীকার—বাবু তৈলোকা নাধ চক্রবর্তী মহাশন্ন তাঁহার পরলোকগভা ত্রা কিশোরবালা চক্রবারীর অর-ণার্থ সাধারণ ত্রাক্ষসমান্তের স্বায়ী প্রচার ফণ্ডে 👀 ট্রকা এবং ব্রাহ্মবালিকা বোর্ডি:এ ৫০১ টাকা দান করিয়াছেন। এই দানের জন্ত দাতাকে বিলেষ ধন্তবাদ।

গত মাঘোৎসবের লময় বাবু গোপালচক্ত মলিক মহাশবের जी बाक्रिका উर्गत्वत्र मिन সমস্ত बाक्रिका ও उँशिएमत्र मसाम-গণকে (প্রায় ২৫০ শত লোককে) পরিভোষ পূর্বাক থাওয়া-



# ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিক।।

२८म मःचा। -

১৬ই চৈত্র শুক্রবার, ১৮১৬ শক, ব্রাহ্ম সম্বৎ ৬৬।

বাৎসরিক অপ্রিম মৃশ্য ২॥ • মফবলে ৩১ প্রতি ধণ্ডের মৃল্য ৮

' প্রার্থনা এ

(इ मक्षणमत्र विधाछ।। वधन चामता व्यवृछित्र वसवर्छी। হটশ্বা কোনও হীল কার্যোর অমুষ্ঠান কৈরি, তথন আমরা व्यापनारमत हरक व्यापनाता कुछ हहेता वाहे, এই মानव-জীবনের মহত্ব মনে থাকে না; তথন আর পাপ প্রলোভনের नमत्क मां छोटेट नाहन हन्न ना। किन्दु (इ. १५७०)। स्वामा-দের জীবন ড ক্ষুদ্র নহে। যে জীবন ধারা আমরা তোমাকে জানিব, তোমাকে প্রীতি করিব, এবং তোমার প্রেরকার্যা সাধন করিব, সে জীবন কিরূপে কুড় 📍 যাহা ভোমার সেবার উপযুক্ত হইতে পারে ভাহা ভ কুলুনহে। ভোষার সহিত আমাদের যে সম্বন্ধ তাহা যথনি অনুভব করি, তথনি এ वितन प्रश्व कामालित क्यस्त उम्हीश हम ; जथनि ७ कीव-निव माबिय ७ अक्य कान उज्ज्व हत्र। जुमि कक्या कत्र, বেন আমরা আত্মবিস্থত হইয়া কুদ্রভার মধ্যে পতিত না হই। বান্দ্রমাজের কার্যোর যে ভার আমাদের প্রতি অর্পণ করি-রাছ তাহার <del>ও</del>রুত্ব যেন সর্বাদা প্রতীতি করি, এবং স্বাব-স্থাতে তোমাকে আশ্রর করিয়া আপন জীবনের মহন্ত সাধন ক্রিতে পারি।

# সম্পাদকীয় মন্তব্য।

আধ্যাত্মিক বায়ু—একজন মানুষ যদি দিনের মধ্যে ২৩ খণ্টা হুর্গন্ধমর, অত্মান্থাকর, আবজ্জনা ও দ্বিত বায়ু পূর্ণ গৃহে বাস করে, আর একষ্ণ্টা মাঠে, অনাবৃত মুক্ত-ভানে পরিকার বায়ু সেবন করিয়া আসে, তাহা হইলে কি তাহার রাখ্য রক্ষা হর ? কোনও গৃহত্ব যদি তাহার নিজের গৃহটী পরিকার ও পরিচ্ছর রাখে, গৃহগুলিতে প্রযুক্ত বায়ু সঞ্চারের স্থবার্থী করে, গৃহ হইতে আবজ্জনা রীলি দূরে নিক্ষেপ করে কিন্তু যে পরীতে তাহার বাস, তাহা যদি অভিশব্ধ কদর্যা, হুর্গন্ধমর, বিহাক্ত মালেরিরাতে পূর্ণ থাকে, তাহা হইলে কি সে ভাহার গৃহকে খাত্মকর রাথিতে সমর্থ হর ? খান সম্বন্ধে হেমন মানব-পরিবার সম্বন্ধে ঠিক সেই কণ্টা একটী

वानक यमि मर्खमा পিতামাতার অসৎ मृहोत्स्व मर्था वर्षिङ হয়, উপাসনাহীনতা, ভক্তি-হীনতা, হৃদয়হীনতা, অসভ্যাচরণ অভদ্রদাপ, কুংসিত আমোদ ও অক্টের প্রভৃতির দৃষিত ও বিধাক্ত বায়ুর মধ্যে বাস করে, আর मश्राह् এक पिन द्रविवामश्रीद्र नौिं विष्णानहत्त्र भिन्ना नौिं শিক্ষা করিয়া আ্দে, তাহাতে কি কখনও তাহাদের নীজি मका हत्र ? मर्खांगाई (मथिएक পाইएकि, वानक वानिकाशन গৃহের শিক্ষার অফুরপ চরিত্ত লইরাই বর্দ্ধিত হয় এবং জীবন ঐ বে ুপুস্তক-ভার-বহনকারী ৰালক ও यूवकश्व विश्वविमानियम छेक निका नाख क्रिएछह, क्छ উন্নত নীতি, উন্নত জ্ঞান ও উন্নত দৃধান্ত প্ৰাপ্ত হইতেছে, हेशामत्र व्यानाकत्र प्रतिवा এङ हीन, এङ नीप्त हरेएछहে क्नि 🤊 हेहात कात्रण च्याष्ट्र ; हेहात्र कात्रण अहे (य, हेहात्रा मर्यागः) (य হাওয়াতে বাস করিতেছে, ভাহা ইহাদের চরিত্রের প্রকৃত উৎকর্বের অমুকৃল নছে। আমরা জীবনের অধিকাংশ সময় त्य शृंद्ध, त्य भविवादत, त्य ममात्य वान कवि अवः यादाव मत्या আমরা বৃদ্ধিত হই, তাহাতে যদি ধর্ম, স্থনীতি, সদমুঠান এবং সচ্চরিত্রভার বায়ু প্রবাহিত না থাকে, তাহা হইলে ছই ঘণ্টার উপদেশ किया खान ठक्का दावा कि कननाख इटेरव ? मिरनव ष्यधिकाः भ नमम् यनि कन्या विषयात्र मरधा, ष्यमात्र रकानाहरनत मर्सा धर्माञावहोन इहेम्राहे नाम कति, इहे এक घणीत छेपाननार्ड विश्वा कि कन क्हेर्र ? (मर्ट्य शक्क रवमन, आञ्चात शक्क अ ঠিক ভাহাই হইরা থাকে।

কিন্ত হুই এক জন সৌজাগাবান পুরুষ দেখিতে পাই—
বাহাদিগকে দেখিলেই বোধ হয় যেন এই দ্বিতভাব তাঁহাদিগকে স্পর্ণ করিতে পারে না। তাঁহাদের মন প্রন সর্বাদাই
উন্নত চিন্তা, উন্নত আকাজ্জা এবং মহৎ কার্যাের বায়ুর মধ্যে
ভূবিরা রহিরাছে। যেন তাঁহারা সংসারের নীচন্তা, ক্ষুজ্তা,
ভার্থপর্ডা, অপ্রেম এবং দ্বিত ভাবের নিম্ন ভূমিতে কথ নই
অবতরণ করেন না। এইরূপ সাধু পুরুষ আমাদের মধ্যেই
দেখিরাছি। ইহাদিগকে দেখিলেই মনে হব ইহারা বেন এ
অগতের লোক নছেন। নির বজের ম্যালেরিয়া দ্বিত ভান
পরিত্যাগ করিয়া দার্জিলীং পর্বতে আর্থ্যুহশু করিলে বেমন

দেহ স্বাস্থ্যলাভ করে, বিখাসের এই উচ্চ ভূমিতে আরোহণ করিতে পারিলে আত্মা তেমনি স্বাস্থ্যলাভ করে।

এখন প্রশ্ন এই যে, উন্নত ভূমি ত দেখিতেছি। কিন্তু সেধানে चारतार्ग कतिवात উপায় कि १ मःमारतत कमर्या विषया विष्ठि পাকিব, অথচ মন ঐ উচ্চ ভূমিতে বিচরণ করিবে, ইহা সম্ভব হয় কিরূপে ৷ এ প্রশ্নের উত্তরে, এই মাত্র বলা যাইতে পারে যে, আত্মার ঐকান্তিক অকণট ভাবের বিশেষ প্রয়ো-জনা যাহা সভা বলিয়া জানিবে অকপট ভাবে ভাচার **অমুসরণ কর। সর্কাণা তোমার বাহির এবং ভিতর একই**কপ রাধিলার জন্ত ১চটা কব। সর্বাদা আত্মপবীক্ষা করিয়া দেখ তোমার অন্তর এবং বাহির এক কি না। যেথানে আত্মার ঐকান্তিকতা এবং শিশুর ফ্রায় সর্বতা নাই, বিমল আধ্যা-ঝিকতা সেধানে জন্মে না। জ্ঞানের অভিমান, ধনের অভিমান, সাধনের অভিমান, প্রচারের অভিমান, স্কল প্রকার অভিমানকে বিদায় দিতে না পারিলে ঐকান্তিকতা জন্মে না। সর্বাদাই তাঁহার কাছে थाটি থাকিবার জন্ত সংগ্রাম করিতে হইবে। আমরাঅনেক সময় আত্ম-প্রতারিত হই। নিজের याश नाहे, जाशहे आहा विनिया जावि। हेहाहे वफ मर्ख-नार्मंत्र वार्शात्र। धेकाञ्चिक्छ। ध्रवः সत्रन्छ। धाकिरनहे, মাহ্র একটা উচ্চভূমি প্রাপ্ত হয়। তথন কার আত্মগৌরব वृष्कि थाटक ना । ज्थन चालनाटक (मथा प्रविद्या यात्र, ज्यवादन त শক্তি ব্যতীত আর কিছুই দেখা যায় না।

আত্মার-তৃপ্তি--কুধার্ত প্রাণী এবং আহারের দারা পরিতৃপ্ত প্রাণী এই উভয়ের মধ্যে অনেক প্রভেম। পশুশালাতে ষেখানে নানাপ্রকার পশু রক্ষা করা হয় এবং ভাহাদিগকে मिनारिष्ठ ष्याहात (म<sup>.</sup>९ग्रा हम्न, (मशास ध्यावम कतिरलहे **ब**हे প্রভেদ লক্ষ্য করা যায়। পশুদিগের আহারেব পুনের এবং পরের অবস্থা যদি দেখা যায় ভাহার মধ্যে কত প্রভেদ ৷ क्षार्ख मिश्य ध्वर द्याघ यथन यांहात्र भर्षा शास्क, ज्यन लाश (मत्र व्यवशां कि ठक्षण! निवश्वत अभित्क अभित्क प्रतिष्ठिह, विज्ञाम नाहे, स्वाताम नाहे, कि छोरन स्ववस्था। किस्त यथन **काकात्रा काकात शाहेल, कुधानल निकाल इहेल, छथन याहेगा** দেখ, তাহাদের কেমন শান্ত, হির ও নিরুপদ্রব ভাব। কেমন ম্বথে শর্ম করিয়া আছে, ক্রোধের কায়ণ উপন্থিত কবিলেও আর কুদ্ধ হয় না। কুধাত প্রাণী ও পরিতৃপ্র প্রাণীর যে প্রভেদ, ঈশ্বরকে যিনি অয়েষণ করিতেছেন এবং যিনি ঈশ্বরকে লাভ क्रियाहिन, এ इट्रांड त्वरं व्यक्ति। यथन व्यात छ्यानक সংগ্রাম চলিন্সছে, তথন কি চঞ্চতা, অস্থিরতা এবং উদ্বেগ। কিন্তু ঈশবেতে বাহার বিশাস প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, সে চিত্ত কেমন শান্ত, সমাহিত, গভীয় ও নিশ্চিত্ব। পরিতৃপ্ত প্রাণীকে रमिथ्रिल रियमन र्नाम् इत्र, विश्वाशीरक रमिथ्रिल उपनहे त्वांध इस्र । धारे त्य धार्माञ्च छाव हेश वह माध्नमाधा, वह আয়াসসাধা। এই অবস্থা আমাদিগকে লাভ করিতে হইবে। চিরাদনই কি আমরা সংগ্রাম ও অভিরতা শইয়া থাকিব গ 

এই ভাবেই জীবনের শেষ দিন<sup>†</sup>পর্যাম্ভ কাটাইতে হর, তাহাতেও তাঁহার অধীর হওয়া কর্তব্য নয়। বিধাতা ধনি কাহাকেও অল্লদিনের সংগ্রামের পর শান্তি দেন, তিনি তো পরম সৌভাগাবান, তিনি ছই হাত তুলিরা ধরা ধরা করুন। আর বাঁহারা তাঁহাকে লাভ করিবার জন্ত ব্যাকুল রহিয়াছেন, তাঁহাবাও সৌভাগাবান, কারণ তাঁহারা পরিতৃপ্ত হইবেন। (कवन (य वाकि ना भारेग्रां अ निनिष्ठ (महे वाकि हे रू छाता। ভারবাহী গদভের ভার তাহারা বড বড বাকোর বোঝা বহিয়া মরিতেছে, মনে করিতেছে, ধর্মজীবনে পুর অগ্রসর হইতেছে। चाहार करत नाहे, उर्व क्रुधात উদ্ভেক नाहे— विषय शीज़ात লক্ষণ জানিবে। আমরা খনেক সমর এই অবস্থাতে পডিয়া বিষম আত্ম-প্রতাবিত হই। দশ, বিশ বৎসব ব্রাহ্মসমাজে থাকিয়া, উপাদনা করিয়াধর্মের বড় বড় কথা কহিয়াও ঈশ্বরকে লাভ করা হইল না, তাহার জন্ত তেমন ব্যাকুলতাও নাই,— এমন হতভাগা আমরা আনেকেই আছি। এ বড় বিষম ব্যাধি। এরপ যিনি আছেন, তিনি আর নিশ্চিম্ব পাকিবেন ना। विषय भक्ट अधियां अध्य निभिन्न इट्या निका यात्र, সে কি বাতুল!

ঈশ্বরের চরণ্চায়া—গ্রীন্মের দিনে বিস্তীর্ণ প্রাস্তবের मधा निम्ना प्रात्मक वात्र अथ हिना नाहि। यडेंहे (वना वाड़िट डाइ. तोतमुत्र **जान क्यिक इहे**टल एक, निर्धास तक्ति हहेटल एक, निरीत ঘর্মাক্ত ও অবসন্ন হইতেছে, পিপাসাতে কণ্ঠতালু গুছ হইতেছে, এমন সময়ে দূরে দেখিলাম একটা ছায়াযুক্ত বুক্ষ, দেখিরাই ভাহার সুশীতল ছায়াতে বসিবার জন্ত, মন ব্যাকুল চটল। কিয়ংকাল বিশ্রাম করিবার জন্তু,—তপু,অবসর দেহকে জুড়াই-বার জন্ত উৎ্দাহ ও একাম্ব বাাকুলতার সহিত বুকেব নিকট-বভী হইয়া দেখি,— কেবল বৃক্ষ নহ, সুণতল বাবেপুর্ণ স্থানর मरतावत स्मान विस्तारन बाल्नानिक व्हेरकछ , क्श्म, मात्रम প্রভৃতি জলতর পক্ষিগণ স্থাথে সম্বরণ ক্রিতছে। যে বায়ু এতক্ষণ দেহকে দ্র্ম করিতোছল—ভাগাই সেখানে স্থলীত্র হইয়া প্রবাৃহিত হইতেছে। এথানে উপস্থিত হইয়াই মনে হইস, কোন দলালু, পরোপকারী, ধাশিক লোক পথিকের আখিদুৰ কবিবার জন্ম এই সবোবর খনন করিয়া তাহার कृत्य এই तुक्ष (त्राभण कर्षिया हिन। मत्वावत्वन कृत्य सन করিয়া এবং তাহাব কল অঞ্জলি ভরিয়া পান করিয়া শীতন হইলাম-এইরূপ কতবার হইয়াছে।

বিখাদিগণ বলেন, যাঁহারা পুরমেশরের উপন প্রকৃত নির্ভর করিয়াছেন, তাঁহারা এ জীবনে অনেকবার তাঁহার করুণাকে প্রান্তরের মধ্যভিত বটরক্ষের ছায়ার ক্সায় অহুভব করিয়াছেন.। সংসারের উত্তথ্য বাভাদে শ্রাস্ত, ক্রান্ত এবং অবসন্ন হটয়া উহোরা পরমেশরের কুপাভরুম্দে, প্রেম সরোবরের স্থুশীতল হিলোলে প্রাণ মনকে জ্ডাহয়াছেন। প্রান্তরের মধ্যে একটা বটরক্ষ দেখিলে পথিক যেমন ব্যাক্ল ভাবে সেই দিকে ধাবিত হয়—তেমনি হে আক্ষাধক! সংসাবের শোক, তাপ, ছংধ, বিপদ্ধ ও পরীক্ষার দিনে ভোমার প্রাণ কি স্কভাবতঃ পর্কু-

মেখবের শীতল চরণ ছারীতে বলিবার অস্ত ব্যাকুলভাবে ধাবিত হয় ? ক্ষণিক শীতল ছায়াতে বসিলে শরীকা যেমন শীতল হর—তোমার প্রাণ কি নামের ছায়াতে বসিরা তেমনি শীতল হয় ? এমন কি কখনও অমুভব করিয়াছ ? এমন সৌভাগ্যবান পুরুষ এবং সৌভাগাবতী নারী আমাদের মধ্যে কত জন আছেন, বিনি রোগ, শোক, ছঃখ, দরিদ্রভার পেষণে পেষিত্ हन नाहे ? इ:थ प्रकालत खग्रहे विष्ठत कतिएए । किन्छ পধিক रেমন স্থশীতল ছায়ার অন্বেষণ করে, হে ঈখরের সাধক. ভূমি কি তেমনি আশাপূর্ণ জদয়ে ঈশ্বরের দারত হও ? যথন শোক আাদে, কোন আত্মীয়জনের মৃত্যু সমাচার পাও, তখন কি তুমি ঈশবের চরণ ছায়াতে উপবেশন কর, না মাহুষেব निक ए हे शमन क्य ? वां भा ना फिलाल किया ब्रस्क निक्ति না করিলে যেমন জলের গভীরতার পরিমাণ হয় না, তেমনি আত্ম-পরীক্ষার রজ্জুনিকেপুনা করিলে বিখাসের গভীরতার পরিমাণ হয় না। ুরোগ, শোক, ছু:খ, দুরিদ্রতা, বিপদ, পরীকা ইহারাই বিখাস পবীকার রজজু। কোন কোনও কুকুর যেমন क्षात ममत्र 🛭 वार्ज़ी 🤡 वाज़ी पूत्रिया व्यक्षात्र, विधारमत्र সহিত, ধৈৰ্যোৱ স্থিত প্ৰভূব দ্বারে পড়িয়া থাকিতে পারে না. टिमनि (र मानव, जूमिश कि विशासत मितन a वाजी श वाज़ी করিয়া ঘুরিয়া বেডাও ? কুকুর যেমনঃস্কল হার হইতে নিরাশ হইরা অবশেষে সন্ধ্যাকালে প্রভুর দ্বারে আদিয়া পাড়েয়া থাকে---তুমিও কি তেমনি তুচ্ছ মহুষ্যের খারে, ৩৪কর খারে ঘুরিয়া ষ্মবশেষে এভে পরমেখরের ঘারস্থ হও। ডি: ছি: একথা ভাবিলেও প্রাণে অশেষ ক্লেশ হয়। আমবা বিশ্বসী হইতে পারিলাম না। এখনও প্রভৃতক কুকুরের ক্লায় প্রভুর ছারেই পড়িয়া থাকিবার বুল্লি অস্মিশ না।

নির্ভর-এ জগতে নিভরেব উপর কত কার্য্য চলি-তেছে, যদি আমেবা একবার ভাহা চিস্তা কবি ভাহা চইলে আংশ্চেয়ায়িত হ্হয়া যাই। যাদ পরস্পরের প্রতি বিশ্বাস এক্দিনের জন্ম বিচলিত হয়, তাহা হইলে এ সংসারে বাস कन्ना এक्कारत अमुख्य हैवेग्रा উঠে। कान द्वारन यहिव ৰলিয়া পথে বাহির হইয়াছে, কোন পথে গেলে গমা স্থানে উপস্থিত হইতে পাবিব कानि ना; रिम शृह कानि ना, পर একজনকে জিজাদা করায় দে বলিল, অমুক গলির অমুক স্থানে। যদিসে কথায় অবিশাস করি, তাহা হইলে আর यां अत्रा इत्र ना। कविताम विलया नित्लन, प्रामुक ঔष्ट धत्र অফুপান অমুক গাছড়া। রাজারে এুক স্বামাত্ত বেদের দোকান হুইতে সেই অপরিচিত গাছড়া আদিয়া ঔষধ সেবন করা इहेन, यनि व्यविश्वान कति, छेयथ (भवन इत्र न।। ডाउलादात निक्र इहेट वावशायक महेन्रा खेयधानस्य रागाम, कम्पाउ खात नानाविष विषाक वश्व मः यात्रा छेवस अश्वेष कात्रमा निन, ছাহাতেই বিখাদ করিলাম। একটা বাড়ী ভাড়া করিলাম, লেখা পড়া হইয়াছে, নিশ্চিত্ত মনে সে বাড়ীতে বাস করিতেছি। वाड़ोत अधिकातीत यथन हेट्सा जाड़ाहेशा निरंद, এ मत्लह मत्न थोकिल जामात्र वान कत्रा हल ना। রাজ্শ জ

আমাদিগের স্থায্য দাওয়া ও অধিকার প্রদান করিয়া আমাদিগকে রক্ষা করিতেছে; এ বিশ্বাস না থাকিলে স্থথে আহার নিজা করা আমাদের ভাগ্যে ঘটে না। এই যে বিশ্বাসের বলে সংসারটা চলিতেছে, ইহাতে অবিশ্বাসী মানুষের উপরে বিশ্বাস! একাদশ বৎসর একজনকে সমভাবে বিশ্বাস করিয়া কি ঘাদশ বৎসরে প্রভারিত হই না ? যে ভূত্য আজ আমাকে সেবা করিতেছে, সে কি কল্য আমার গলে ছুরী বসাইয়া দিতে পারে না ? আমার পার্শ্বে যে পত্নী যুমাইতেছেন, তিনি কি একদিন বিক্বত হইয়া আমাকে বিষপান করাইতে পারেন না ? ইহা ত কতবার দেখিয়াছি। তব্ প্রামাদের প্রকৃতিই এই যে, আমারা মানুষকে বিশ্বাস করি এবং বিশ্বাস করির এবং বিশ্বাস করিয়াই বাঁচিয়া থাকি। বিশ্বাস না করিলে একদিনও চলিতে পাবে না। ভ্রান্তিশীল, পরিবর্ত্তনশীল ছর্বল মানুষের উপর এত নির্ভর কবিতে পারি কেন ?

পক্ষান্তরে যিনি অপবিবর্তনীয়, অভ্রান্ত, পর্মকুপাময়, नक्तनभी ध्रवः नक्तभक्तिमान् त्रहे भन्नमभूकष्ठक विश्वान कविटल পারিতেছি না, ইহা কি বিষদৃশ ঘটনা! কি অস্বাভাবিক ব্যাপার! এই অবিখাদেব জ্ঞাকত জীবন তুঃধময়, পাপময়, ভারবহ হইয়াছে, এ অবিশাদের জন্ত সোণার সংসাব বিষময় হইয়া উঠিতেছে, 'চবুও আংমরা তাঁহাতে বিখাস ভাপন কবিতে পাবিভোছ না। একবার ভাবিয়া দেখি, মামুষকেই অধিক বিশাস করি, কি ঈশরেকেই অধিক বিশাস কবি। গয়! হায়৾! কি ছ:খের বিষয় আমবা প্রমেশ্বরে উপয়ৢক বিখাস ভাপন কবিতে পারিতেছি না। কেন পারি নাগ দেখিতেছি এ জগতে বিশ্বাসী লোকই জয়লাভ ক্রিয়াছেন এবং কবিতেছেন; অবিশাসীর জীবন কি তঃখনমু, কি খোচনীয়! নিজের জীবনের বিষয় আনুশোচনা করিলেও আমবা দেখিতে পাই যে, তাঁহাব প্রতি কণামাত্র বিশ্বাস यथनहे जालन कविट्ड लाविय हि, उथनहे 🕰 कोवन, এ मः नाव মুধানয় হইয়াছে। অতএৰ প্রমেশ্বেৰ শক্তি, প্ৰমেশ্বেৰ, করুণা আমেবা যেন নাভূলি। স্বৰ্ণা ঠাফাকে এই হৃদ্যাসনে বসাইয়া অকপটে তাঁহার দিকে চাহিয়া থাকিতে পাবি। অমুভপ্ত অনুদ্রে ভারার নিকট স্বলা বিশ্বাসী হইবার জন্ত প্রাথনা করিতে পারি।

নিয়মিত জীবন—বিশ্বপতি প্রমেশ্বের কার্য্যপ্রণালী যদি আমরা লক্ষ্য করি, তাহা হইলে দেখিতে পাই যে, তিনি এক দিকে পূর্ণ স্বাধীন, অপর দিকে পূর্ণ স্বাধীন। তিনি স্বয়স্থ, স্বতন্ত্র, সকাশক্তিমান, সকলের প্রভু; স্বতরাং স্বাধীন। তিনি জড়ের মধ্যে শক্তি রূপে, আত্মার মধ্যে প্রমাত্মাকপে বসতি করিতেছেন; কিন্তু তিনি সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র এবং স্মাধীন। পূর্ণ স্বাধীনতা তাহাতেই চিরবিরাজমান > অথচ তিনি আপনাকে নিজ প্রতিষ্ঠিত নিয়মের এমন স্বাধীন করিয়াছেন থে, তাহাদিগকে কথনই স্বতিক্রম করেন না। সক্ষত্র, স্বশৃত্ধলাও স্থনিয়ম্বারা সমস্ত জাগৎকে এমন করিয়া নিয়মিত করিয়াত্দন যে, কোন মতেই তাহার এক চুলও ব্যতিক্রম ঘটতে

পারে না। সেহমরী জননীর ক্রোড় হইতে অকালে প্রাণসম সন্তান চলিরা যার, শত শত লোক মাথা ভালিরা মরিলেও এ বিধির অভিক্রম হইবে না। হর্ভিক্স, মহামারী, রাষ্ট্রবিপ্লব, সমাজবিপ্লব উপস্থিত হইরা দেশ উৎসর গেলেও এক চুলও তাঁহার নিরমের বাতিক্রম করেন না। এমন নিরম ও শৃত্যলার অধীন হইরা কার্য্য করিতে আর কোথার দেধিয়াছ? জগতের অধিপতি স্বাধীন হইরাও মহা অধীন।

ত্র নিয়মের অধীনতা দশন করিয়া পূর্বাকালের বৌদ্ধ এবং লৈন সাধকগণ ভাবিয়াছিলেন যে. যিনি কার্য্য কাবণ, শৃঁলালে এতদ্র আবদ্ধ, পূজা, অর্চ্চনা ও আরাধনাদি ধারা তাঁহাকে প্রসন্ধ করিতে চেষ্টা করিয়া কোনই ফল নাই। নিয়মকে মানিলেই যথেষ্ট, ভিনিও সেই নিয়মেরই অধীন। তিনি এই নিয়মের অধীনভা স্বীকার করেন সভা; কিন্তু তিনি স্বাধীন এবং স্বতন্ত্র পূক্ষ। নিয়মের অধীন হইয়া কার্য্য করেন বিলয়াই আমরা তাঁহার উপর পূর্ণ নির্ভ্র করিতে পারি। একদিন হর্দ্য উদিত হইয়া আর হুই দিন যদি অফ্রেনি বাকিত, অলিতে জল সিঞ্চন করিলে যদি তাহা কথনও নির্বাণ হইত, কখনও বাতিক্রম ঘটিত, তাহা হইলে কে তাঁহার উপর নির্ভ্র করিছে পারিত। বিশ্বাস আছে, তাঁহার জ্বপং নিয়ম দাবা স্থাবিচালিত, তাই তাঁহার উপর নির্ভর করা সহজ এবং স্বাভাবিক হইয়াছে।

বিশ্ব-বিধাতার এই প্রকৃতি দর্শন করিরা আমরাও খাধীনতা ও অধীনতার শাস্ত্র শিক্ষা করিতে পারি। নিজের খাধীনতা সত্ত্বেও আমরা নিরম এবং শৃঞ্চলার অধীনতা শিক্ষা করিতে পারি। আমরা সর্ব্রেই দেখিতেছি, বাঁহারা নিরম ও শৃঞ্চলার অধীন, তাঁহাদেরই সাধন হয় এবং উরতি হয়। কিন্তু এই অধীন হওয়ার মধ্যেও খাধীনতা চাই। খ-ইচ্ছায়, আফ্রাদের সহিত যে অধীন হওয়া তাহাতেই আত্মার কল্যাণ হয়, ভয়ে বে নিরমের অধীন, হওয়া, তাহাতে আত্মার অশেব হুর্গাতি হইয়া থাকে। প্রেমের অধীনতা আার ভয়ের অধীনতা হুই খতর পদার্থ। প্রেমের অধীনতা আার ভয়ের অধীনতা হুই খতর পদার্থ। প্রেমের অধীনতাতে আত্মা খাধীন হয়। অভএব সর্ব্বান করিরা দিয়া, তাঁহার বিনীত ভূতা হওয়াই মানবের প্রকৃত খাধীনতা। প্রভূ পরমেশ্বর কক্ষন আমরা এই সাধীনতার শাস্ত্র ভাগ করিরা হুদয়ঙ্গম করি এবং তাঁহারই নিরমের অধীন হইয়া আপনাদের জীবনকে স্থনিয়মিত করি।

স্বেচ্ছাচারিতা—বেচ্চাচারিতা বলিলে আমরা সচরাচর এই বৃঝি বে, যে বাক্তি নিজের ছত্রার্তির বশবর্তী হইরা
ধত্মধর্ম জ্ঞান করে না, আপনার ক্রথকেই অবেষণ করে,
প্রার্তিকে সংঘত করিতে ইচ্ছা করে না, সেই ত্রেচ্ছাচারী।
কিন্তু ছত্রার্তির বশবর্তী হইরাও লোকে ত্রেচ্ছাচার
হইতে পারে। বে ব্যক্তি নিজের ফচি ও ভাবের অন্সারেই
চলিতে চার, আপনার জীবনকে শৃথালা ও নিরম্বের অধীন
করিতে চার না, সে বেচ্ছাচারী। একজন ত্রীপুত্রকে ভূলিরা,

ভাছাদের প্রতি কর্ত্তবা ভূলিরা স্থ<sup>র</sup>ালি<sub>শানে</sub> রভ রছিরাছে সে স্বেচ্ছাচারী; থার এক বাজি বধন বাংন ভাল লাগিতেছে जाहा कतिराज्ञ की बरम निषय नाहे, मृत्यना नाहे, पलाहा विहे লাগিতেছে ভাৰাতেই ৰড হইভেছে, সেও স্থপ্ৰিৰ এবং ষ্টেচারী। এমন অনেক লাক দেখিতে পাওয়া যার, वाहाता जाननात कीवनरक मुख्यनात मरधा ज्यानवन करव ना; कर्खवास्त्रान चात्रा चार्यमात्र कौवनक निव्यमिष्ठ करव ना ; ज्यवं जेपरतंत्र निकृषे शार्थना करत "रह जेपत जामारक खामात हेकाशीन कता" a खार्थनात (कान मृना नाहे। এ প্রার্থনার অর্থ এই বে, "আমি আমার মত চলি, হে ঈশর ভূমি দরা করিরা ভাহাতে যোগ দেও, ও সে বিবরে ক্লভকার্য্য কর। তাহাদের প্রার্থনার মধ্যে বেন এই ভাব লুক্কারিত আছে. "**ছে ঈশ্ব, আমার টছা পূর্ণ ইউক ভোমার গারা।"** "ভোমার ইচ্ছাপূর্ণ হউক আমার ঘারা" এবং "আমার ইচ্ছাপুর্ণ হউক ভোমার ঘারা" এ ছই প্রার্থনাতে আকাশ পাতাল প্রভেদ। বে বেচ্ছাচারীদে বিতীয় প্রকারের প্রার্থনা করে। যাহার জীবন কর্ত্তব্য জ্ঞানদারা স্থনিরমিত, স্থপরিচালিত নর সে ব্যক্তির প্রার্থনা করিবার অধিকার কোণার গ অতএব আমরা বেন এই স্বেচ্চা-চারিভার জীবন বাপন না করি ৷ সংকার্যা ও সংপ্রবৃত্তিকে ও তাঁহার ইচ্ছার অধীন করিয়া দিতে হইবে। ভোমার ইচ্ছা হইতেছে বে, ভোমার ধর্মবন্ধুর সহিত বসিরা ধর্মালাপ কর্ আর ওদিকে একজন লোক রোগশ্যার শরন করিয়া আছে। ষাগকে দেখা ভোমার কর্ত্তবা। ভূমি ভোমার এ সদিচ্ছাকেও সংযত করিয়া রোগীর সেবায় নিযুক্ত হও। যদি ভূমি ইলা না কৰ, তাৰে একজন যাতালে ও তোমাতে প্ৰভেদ কি বৃদ্ধি ? সেও স্থপ্রির তুমিও স্থপ্রির। বাহা মিষ্ট লাগে, তাহা কলা তো সহজ, নীরস কর্ত্তবাসাধন করিতে অভ্যাস কর। স্থন্দরকে ভাল তো সকলেই বাসে, ভোমরা কদর্যাকে ভাল বাসিতে অভ্যাস কর।

লক্ষ্য ও উপলক্ষ্য—মাত্রৰ এই পৃথিবীতে যত প্রকার कांक करत. (मृष्टे मकन कार्र्यात मर्था पूरे ट्यापीत कार्या পাকে। কতকগুলি কার্যাকে লক্ষা বলা বায়, আর কতক-श्वितिक উপलक्षा वना यात्र। त्य वास्त्रि वावना कतिवात अन ক্লিকাভার রহিরাছে, প্রতিদিন ভালার উন্নতির চেষ্টা করি-তেছে, ভাহার কলিকাভার থাকার "লক্ষ্য" বাবসায়। বাবসা कतिर्दि विनेत्रा कि त्र आह कान कार्या कतिरव ना १ अधान-कात्र नाना शकात्र कारमान काहनान, अधानकात्र रमम्हिजकत्र নানাপ্রকার অফুষ্ঠান, এ সকলে কি সে বোগ দিবে না? অর্থোগার্ক্সন করিতে আসিরাচে বলিয়া কি আর কোন কার্যা ক্রিবে না ভাছা কেন এইরপ ব্যবসারী লোকেও ক্তপ্রকার সদহ্ঠীন করিতেছেন। ভবে অন্ত সার্ব্য গুলি जेशनका-वार्गकारे जाहात नका। (व यूवक विमानिकाह क्षम् এই স্থরে আছে, সে कि जम्र कार्या याश पिरव ना ? ष्यवश्चेष्ठे निरव ! कि**ष्कु** विल्या निष्ण कारात्र नष्या-पश्च कार्या श्रीत डेननका।

द्यान्ति कात गका धवः, द्यान्ति छेन्नका किक्रान काना बात ? कानिवात छेशात्र पाटकः। आमता नर्सनार मिथिए পাই, মাতুৰ লক্ষ্যে জন্ত উপলক্ষ্যকে স্থলৈ ছাড়িতে পারে, লক্ষ্যের অভুরোধে উপলক্ষ্যকৈ অবহেলা করিতে পারে। वाहाएं वानिकान क्रिक इत्र विनक त्महेक्र कार्या कथनहे হাত দিবে না। যাহাতে শিক্ষার ব্যাঘাত হয়, শিক্ষাথী তেমন কার্ব্যে কখনট যোগ দিবেন না। কিন্তু আমরা এক্লপ মূর্য লোকও দেখিতে পাই. যাহারা উপলক্ষ্যের অনুরোধে नकारक व्यवहरूना करता। व्यामात्मत्र व्यानक नमन अहे দুশা ঘটিরা থাকে। আমরা সকলেই জানি প্রভূপরমে-ব্রাহ্মধর্ম্মের লক্ষা। খবের সঙ্গে সাক্ষাত যোগ ভাপনই किंदु त्रिथियाहि, . मंन व्यत्नक ममब्रहे नक्नारक छाड़िया উপলক্ষ্যের পশ্চাতে ছুটিতে থাকে। সমর সমর পরমেশ্বর দরা করিয়া কোন ঘটনার মধ্য দিরা একটা মহৎ ভাৰ, একটা মহৎ সত্য, একটা মহৎ আদুৰ্শ আমাদের সন্মুধে ধরিরাছেন-কিন্তু আমরা কি সেই ভাব, সভ্য এবং আমুর্শ হারাইনা শোক প্রকাশ কবি নাই ? বার বার এইরূপ ৰ্ইয়া থাকে। কাহারও কাহারও প্রকৃতিতে এই চঞ্চতা কিছু অধিক প্ররিমাণে দৃষ্ট হয়। কোন কোন ব্যক্তি চবিত্রের এমন **एउडा भारेग्राट्डन** (य, ।वटनर शर्य भिन, मारत्र शत्र मात्र, ৰংসরের পর বংসব, চলিয়া যায়—সে দুটতা কিছুতেই ছাড়েন ना। डौशामत कथान्न, कार्या, वादशात, व्हारत, वक्राट সকল দিকেই দুঢ়তা। কিন্তু কেহ কেহ আবার এমন আছেন, ৰাহাদের কি শিক্ষা, কি ধর্ম্মণাধন, কি কর্ত্তব্য কার্য্য, কি চরিত্র কি বন্ধুতা, কিছুতেই দৃচতা নাই। এই প্রকৃতিত লোকেবা শ্বিরভাবে কিছুই করিতে পারে না। ইহাদের 🏕 কিছুই क्हेरव ना ? हेहात्रा।क निताम हहेबा पाहिरत थाकिरव ! ना, কথনই না। যাহাদের কার্য্যে মনোনিবেশ করিবার দৃঢতা नाहे, ভাহাদিগকে चौत्र প্রবৃত্তি সকলকে পরমেশরের ইচ্ছার আনিতে হইবে। যাহাদের প্রক্রতি শাসনের মধ্যে **८३ পরিমাণে চঞ্চল ভাহাদিগকে** সেই পরিমাণে শাসনের मध्या थाकिया मृह्छ। अख्याम कतिर्ह रहेरव। এहेक्स করিতে করিতে অনেক দিন যাহা অসম্ভব ছিল, তাহা সম্ভব क्रेबा बाहरत। क्रगरज्य कात्नक ट्यार्ड लारकत्र हतिरत थहे महोख (मधित्राहि।

# সম্পাদকীয় ও প্রাপ্তপ্রবন্ধ।

# সাধনীসদ্ধ ও কুপাসিদ্ধ।

ইহা সকলেই অবগত আছেন যে, মহাত্মা বীও সর্বাদা নীনাপ্রকার দৃষ্টান্ত হারা ধর্মোপদেশ দিতেন। আজ তাহার ছইটা উদ্ধেশ করা যাইতেছে। প্রথমটা এই,—একজন লোক মুক্তার ব্যবসায় করিত। নিজের ব্যবসারে উন্নতি লাভ করিবার জল্প তাহার মন সর্বাদা ব্যগ্র ছিল। একবার সে মুক্তার জল্প পার্যন্ত উপসাগরের সন্নিকটবন্তী জেলেদের পাড়াতে

আবেষণ করিতে গেল। গিরা একজন সামাস্ত জেলের কুঁছে ববে প্রবেশ করিরা দেখে, তাহার নিকট একটা মুক্তা রহিন্যাছে। ওরূপ বড় ও হুন্দর মুক্তা প্রার দেখা যার না। দেখিরা আনন্দে তাহার মন নৃত্য করিতে লাগিল। মূল্য জিজ্ঞাসা করাতে ঐ জেলে এত দাম বলিল যে, সে ব্যক্তির জিনিস পত্র সমুদার বিক্রি না করিলে সে দাম উঠে না। মূল্যটা অধিক বলিল বটে, কিন্তু ঐ জাতীর উৎক্রই মুক্তার সঙ্গে তুলনার সে দাম সন্তা বলিতে হইবে। বলিক জেলেকে বলিল,—বেশ, কাল আমি এই দাম তোমাকে দিব, এই মুক্তা আর কাহাকেও দিও না। এই বলিরা সে গৃহে গেল এবং নিজে যথাসর্বাহ্ম বিক্রের করিয়া সেই দাম লইরা আসিক্রম সে কি আপনাকে ক্ষতিগ্রন্ত বিবেচনা করিল না, লাভবান মনে করিল ?

विजीव पृष्टोख यथा,--- এकमा এकজन मञ्जूत छाहात्र প্রভুর জনি ধনন করিতেছিল; এমন সমরে হঠাৎ ভাছার कामारणत भूरथ धक्रों कि नक खिनिन दर्रिकन। कामान দেখিতে পাইল। সে উৎসাহ ও দৃঢ়তার সহিত আরে। ধনন করিতে লাগিল এবং চারিদিকের মাটি সরাইভে লাগিল। খুঁডিতে খুঁড়িতে, দেখিতে পাইল যে, একটা পালে অনেকগুলি चिन्द्रा ও অপরাপর মূলাবান পদার্থ নিহিত রহিয়াছে। দেখিবামাত্র সে বাক্তি ব্যস্ত সমস্ত হইয়া, সে সমুদায়কে মাটিভে চাপা দিয়া রাখিল। কাহাকেও কিছু বলিল না। অবশেষে সেই ক্ষেত্রখামীর নিকটে গিল্পা দেই ক্ষেত্র ক্রম ক্রিবার ইচ্ছা প্রকাশ করিল। ক্ষেত্রখামী रिय मृता विनिद्यान, छारा थे वाक्तित्र यथानर्वत्र विक्रम ना क्रिल উঠে ना। तम काल विलय ना क्रिया निरस्तर वास-ভূমি তৈজদ পতা যাহা কিছু ছিল, সমুদয় বিক্রেয় করিল। অর্থ সংগৃথীত হইলে সে উপযুক্ত মূল্য দিয়া ঐ জমি ক্রন্ত করিল। সক্ষম যে গেল ভাহাতে ভাহার ছঃথ নাই; ভাহার মনে এই সম্ভোষ যে, সে অল মূল্যে বছমূল্য পদার্থ পাইল।

এই ছইটী কল্লিত আখ্যাদ্যিকার মধ্যে একটা গৃঢ প্রভেদ আছে। প্রথম দৃষ্টান্তে দেখা যাইতেছে, যে বণিক মুক্তারই কারবার করিত, মুক্তার অবেষণে নানাস্থানে যাইত, মুক্তার জ্ঞাই পারস্থ উপদাগরের তীরন্থিত জেলেদিগের ভবনে গিরাছিল; এবং তাহার শ্রের প্রস্কারম্বকণ মহামূল্য মুক্তা লাভ করিয়াছিল। বিতীয় দৃষ্টাপ্তের ঘটনা সেরপ নহে। যে দরিজ মজুর অলকালের মধ্যে ধনবান হইয়া গেল, সে ধনের জ্ঞান্ত খিনন করে নাই; ধনের আশা তাহার মনেও ছিল না; সে একাগ্রতারু সহিত নিজ কর্ত্তব্য সাধন করিতেছিল, হঠাৎ তাহার ভাগ্যে ধন লাভ হইয়া গেল।

জগতে যত লোক ধর্মধন লাভ ক্রিয়া ধনী হইরা থাকেন, তাঁহাদের মধ্যেও এই ছই শ্রেণীর লোক দৃষ্ট হয়। কেহ কেহ বহু সাধনের কলে ধর্মেওজ লাভ করিয়া থাকেন। তাঁহারা সর্বাদ ধর্মসাধনে নিযুক্ত রহিয়াছেন; নিরস্তর চেষ্টা করিজে-ছেন; ধর্মতন্তেরই অমুসন্ধানে নানাস্থানে গমন করিতেছেন;

নানা সাধুর সহিত আলাপ করিতেছেন; নানা শাত্র অধ্যরন করিছেছেন; পরিশেষে তাঁহাদের শ্রম অবেষণ ও সাধনার ফলস্বরূপ ধর্মতত্ত্বে উপনীত হইতেছেন। ইহারা সাধন-সিদ্ধ। किन्दु कथन कथन अध्यक्त प्राप्त वाम, त्व विना किहा विना সাধনাতেও কোন কোনও লোকের নিকটে ধর্মরাজ্যের দার উদ্বাটিত হইয়া থাকে। এরপ ঘটনা কতবার ঘটিয়াছে, যে এক ব্যক্তি রাজ্পথ দিয়া বয়গুগণের সহিত হাস্ত পরি-হাস করিতে করিতে ঘাইতেছিল, উপাসনা মন্দিরের সন্মুখে আসিয়া হঠাৎ তাহার মনে ইচ্ছা হইল বে একবার মন্দির मर्या श्रायम कतिया स्मिन, वाशायभाना कि बहेरण्डः। स्म क्यूजानात्क विज्ञन-"अवस् धन ना देशात्रा कि क्रिएउए धक-वार्त्र (पश्चिम्न) बाहे," এই विलया उभामना मन्त्रित्र मध्या श्चितिह रुरेन : घটनाक्राम সেদিনকার উপদেশ **ए**यन ভাरার**ই अ**ञ्च প্রদন্ত হইতেছিল। ঐ উপদেশের প্রত্যেক বাক্য যেন ভাহার হৃদরে আঘাত করিতে লাগিল, এবং যে ভাব তাহার হৃদরে কথনও ছিল না ভাহা বেন জাপাইয়া তুলিল। তৎপরে সংগীত প্রার্থনাদিতে তাহার হদয়কে আর্ত্র করিয়া ফেলিল। সে ब्रांतिष्ठ हानिष्ठ जेशामनामिन्द्र धाविष्ट ब्हेबाहिन, किंड অমুডাপাশ্র বর্ষণ করিতে করিতে গৃহাভিমুখে প্রভিনির্ভ इरेग। जनविध जाहात कीयन शतिवर्धिक हरेया शिन।

धर्मक्षाटात हेजियुक्त अक्षा पहेना विक्रण नरह। आस्म-রিকা দেশের একজন স্থাসিদ্ধ ধর্মাচার্ষ্যের বিষয়ে এরূপ কথিত আছে যে তিনি একদিন অপর একজন ধর্মাচার্য্য কর্তৃক নিমন্ত্রিত হইয়া, তাঁহার উপাদনামন্দিরে উপাদনা করিতে পিয়াছিলেন। নিমন্ত্ৰণকর্তা সেদিন পীড়িত ছিলেন। ঘটনা-ক্রমে উপাসনাকালের কিঞিং পূর্বাহ্ন হইতে মুষলধারাতে এক্লপ বৃষ্টি হইতে লাগিল যে লোকের পক্ষে গৃহের বাহির হওয়াও ছম্বন। তিনি কর্ত্তবাহেরেধে একাকী উপাসনা মন্দিরে উপস্থিত হইরা দেথেন কেহই নাই। উপাসক-দিগের মধ্যে এক প্রাণীও আসিতে পারে নাই। তিনি क्रमंगा विवच कतिया এकाकी वाहेरवन यूनिया शांठ कतिएड লাগিলেন ও উপাদনা করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। ইত্যুৰসরে একজন প্রিক লোক জল ঝড়ের ভয়ে আত্রর নইবার জন্ত আসিয়া মন্দির মধ্যে প্রবিষ্ট হইল। এক ব্যক্তি আসিয়াছে দেখিয়া সেই ধর্মাচার্যা নিজের অভীষ্ট উপদেশ দিতে প্রবৃত হইলেন। ম্থাসময়ে উপাসনা সাক্ষ হইলে বৃটির জন্ত আরও কিন্নৎকাল তাঁহারা ছই জনে উপাদনা মিলিরের ঘারে माँ जाहे या ज्यानक कथा वार्का कहितन । खर्शा दहे, উভয়ে श्रीव খীর গস্তব্য পথের অভিমুখে প্রস্থান করিলেন।

এই ঘুটনার প্রায় পচিশ ত্রিশ বৎসর পরে, এক দিন এক সভা মধ্যে একজন লোক আসিয়া উক্ত ধর্মাচার্যাকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন—"মহাশয় কি আসাকে চিনিতে পারেন ?" বৃদ্ধ (কারণ তথন তিনি বৃদ্ধ ) কহিলেন—না কৈ চিনিতে পারিতেছি না।" তথন সেই ব্যক্তি সেই বৃষ্টির দিনের ঘটনা, আছপ্রিকি বর্ণন করিয়া বলিলেন—সেই দিনের সেই উপদেশ আমাকে নবজীবন দিয়াছে। তংপুর্কে আমি ধর্মহীন ও

পাপাচারী ছিলাম, সেই দিন হইছে আমার কার পরিবর্তিত হইরাছে!। তৎপরে আমি বিষয় কর্ম হইতে অবস্ত হইরা এই পঁচিশ জিশ বংসরকাল ধর্মপ্রচারে জীবন সমর্পণ করিরাছি; এবং প্রভু পরমেশরের রূপার আমি শত শত ব্যক্তির জীবন পরিবর্তনের উপার শ্বরূপ হইরাছি।"

এইরূপ অবাচিত কুপা आরিও অনেকের জীবনে ঘটর। शांकित्व। अत्तरक अत्वर्ग এवः ध्यार्थना कतित्रात त्व अवस् भारेएउएइ ना, खारा এर नकन काकित कीवान क्याहिएकान কি প্রকারে ঘটিল ? ইহা একটা ত্রন্মকুপার আবির্ভাবের গড় त्ररूष्ठ । क्लिड देश प्रिक्षित्र यक्ति (क्रह म्यान क्रदतन, क्लेप्रत्रन क्रमण यथन इटेर्ड, उथन च्यम्मा धन चार्यान चात्रिर्ड, त्राधरनक्र প্রয়োজন কি ? তবে তিনি সহাত্রমে প্রিভ হইবেন। সংসারে বিষয় বাণিকা ঘাহার। করে, ভাহাদের কাহার কাহারও ভাগ্যে কখন কখনও এরপ ঘটনা ঘটনা বার, বে ভাহারা হঠাৎ অপ্রত্যাশিত ভাবে প্রচুর ধন সম্পদ লাভ करत्र। रेराटक विश्वकृतिरात्र खावात्र "मौक्ष" वटन। किन्द इरे চারি करनत ভাগো "मं। ७" नागित्राह वनित्रा कि সহত্তের অপরাপর বণিকগণ খীর খীর কার্য্যে উদাসীন হর 👂 ভাছারা কি মনে করে—"ছুটাছুটি করিরা কি করিব? দোভান तका, अन्त्र विकन्न প্রভৃতির শ্রম শীকার করিয়া ফল कि. निक्या इहेबा बिबाशिक एक पिन अक्टी "पीठ" मादिव तिहे पिन धरकवारत धनी हहेग्रा वाहेव १° काम क वृद्धिमान বণিক এরূপ চিন্তা করে না, হঠাৎ ধনী হটব এট আশা করিয়া বসিয়া থাকে না, প্রত্যেহ যথারীতি, ক্রের বিক্রম হিসাব নিকাষ করিতে থাকে, এবং দৈনিক প্রমের ছারা অরে অরে উন্নতিবাভ করে। ধর্মনাধকদিগকে দেইক্সপ করিতে হইবে। কোনু দিন অপ্রত্যাশিত ভাবে ব্রহ্মসূপ। কাহার হ্রদয়ে আসিল, তাহা দেখিয়া অলস ও উদাসীন হইয়া थांकिल हिरेख ना। व्यञ्जिक्ट नाथत्नव साम चौकाव করিতে হইবে।

কিন্তু সাধন বিষয়েও একটা কথা সর্বাদা শ্বরণ রাখিতে হইবে, নিজ সাধনের গুণেই ঈশরকে পাইব, এরূপ অভিমান বেন কথনও সদয়কে অধিকার না করে। প্রকৃত প্রেম কথনও নিজের গুণ দেখিতে পার না; সর্বাহ্ব দিরাও কিছু দিরাছি বলিয়া মনে করে না', স্থতরাং প্রেম যেখানে আছে সেথানে সাধনের গুণের প্রতি সাধকের দৃষ্টি থাকে না। যেখানে সাধনের গুণের প্রতি সাধকের দৃষ্টি পড়ে, সেখানে প্রেমের অভাব। অভএব সাধনের নিঠার মধ্যেও ব্রহ্ম কুপার প্রতি সর্বাদা দৃষ্টি রাখিতে হইবে।

# ত্রাহ্ম ধর্ম্মের প্রকৃতি।

মানৰ অপূৰ্ণ,তাহার জ্ঞানও অপূৰ্ণ। স্থতরাং চিন্ন-জ্ঞানচলিত অবস্থা পাওয়া তাহার পক্ষে অতীব কঠিন। সে আন হাহা ক্রুব সত্যরূপে জানিতেছে, এবং সত্যরূপে গ্রহণ করিয়া বাহাকে জীবনের জটগভিত্তিরূপে অবশহন করিভেছে;

इरे मिन यारेट्ड ना यारेट्ड इयुड डाराएटरे बावाय मः भय ব্দরিতেছে। অপূর্ণ-জ্ঞান-বিশিষ্ট জীবের পক্ষে এ প্রকার অন্থিরতা च्याक्टर्रात्र विषय् नटह। এ अन्न च्यानक ममय रमशे वात्र कि हमिन একরূপ বিখাস গইয়া, জীবন যাপন করিছে করিতে, লোকের প্রাণে অন্তবিধ বিখাদের সঞার হইরা থাকে। এরূপ পরিবর্ত্তন त्व नकन नमत्र वा नकन व्यवहारिक निस्तनीत्र काहा नरह, वतः সভাপ্রিয় ও সভ্যাহস্কিৎস্থ আত্মার পক্ষে এরপ পরিবর্ত্তন ব্দপরিহার্যা। মুতরাং ভাহা কথনই অংগৌরবের হেড় নহে। কিন্ত এরূপ পরিবর্তনের লক্ষণ সর্বাদাই উপস্থিত **रहेल ७ नर्सजड़े** (य जारांत्र कार्य) पृष्ठे रुग्न जारा नरह । लाक সহজে পূর্ব্বদংস্কার ও বিখাদ পরিত্যাগ করিতে প্রস্তুত হয় না। এমন কি এক আশ্চর্যারূপ মোহ এ সময়ে মানব অন্তরকে মোহিত করিরা রাথে। , ধেই মোহ এবং পূর্ববিলম্বিত বিশা-দের প্রতি অম্রাপ শোকে সহজে পরিত্যাগ করিতে ইচ্ছা करत्र ना । अप्येष्ठ विचारमञ्ज পরিবর্ত্তনের দক্ষে সঙ্গে অস্তরে যে সংগ্রাম উপস্থিত হয়,ভাহাও অগুদিকে লোককে স্থায়ির থাকিতে (नक्रमा। अकाप चर्षात्र भाषात्रगण: लाटकत्र मटशा **এ**ই প্রার্তির উদর হইতে দেখা যার যে তাহারা নব উপার্জিত বিখাদকে পূর্বাবলম্বিত বিখাদরূপে পরিচিত করিবার আশায় বৃদ্ধি ও বিচার শক্তির সাহায়ে প্রচলিত শাল্পাদির অর্থান্তর করিবার ৰম্ভ বিশেষ ৰাগ্ৰ হয়। নৰাৰ্জিত বিখাদকে অবশ্যন করিতে याहेत्रा, महत्क धाहीनर्दैक अंकवादत्र विषात्र पिर्छ धान (यन সমত হর না। তথন লোকে ব্যাথারে সাহায্য গ্রহণ क्रिंड विरमय ভाবে वाक्ष रम । এवং প্রাচীন विश्वासम (পাষ্ক এছদক্ষের কোথায় কোন্ একটা বাক্য, শ্লোক বা উক্তি দারা নবার্চ্ছিত বিশ্বাদের সমর্থন হইতে পারে, ভাহার অফু-সন্ধানে স্কাণ্ডো প্রবৃত হয়। বাঁহারা সম্ধিক প্রতিভাশালী তাঁহারা আত্মবিদ্যা ও বৃদ্ধিপ্রভাবে প্রচলিত শাস্ক্র সকলের যেরপ অর্থ সাধারণে প্রচারিত ছিল, তাহার পরিবর্ত্তন ঘটাইয়া, নৃত্তন ভাবে তাহার অর্থ ও ব্যাথ্যা করিতে বিশেষ যত্রবান হইরা থাকেন এবং অনেক হলে তাঁহারা কৃতকার্য্যও চ্ট্য়া থাকেন। যে ধর্মের ভিত্তি কোন গ্রন্থ বিশেষের উপর প্রতিষ্ঠিত নহে। বীহারা গ্রন্থ বিশেষে আপনাদের বিশ্বাসাম্ঘারী তব সকল লিপিবদ করিয়া, ভাছাকে অভাস্ত শান্ত্ররূপে গ্রহণ করেন নাই, তাঁহাদের পক্ষে এ প্রবৃত্তির উদয় হওয়া যেমন স্বাভাবিক, তাহাতে ক্বতকার্য্য হইবার সম্ভাবনাও एक मनहे व्यक्षिक । किन्द्र त्य मकन धर्म मत्त्री नांत्र अन् विश्वस्क অপ্রান্ত বলিয়া সন্মান করেন এবং সেই সকল গ্রন্থকেই আপ্র-नारमत् धर्मभराजत श्वित । ভिত্তिकाश । व्यवनथन कतिशारहन, তাঁহাদিগের মধ্যেও এই রীতির দৃষ্টান্ত বিরল নছে। ছই অব্দ্রী দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিলেই বুঝা বাইবে লোকে আত্মবিদ্যা ও অভিভা বলে ব্যাখা ঘারা কেমন আশ্চর্যারূপে নবলক বিখা শের সহিত প্রাচীন শাস্ত্রসকলের সামঞ্জত রক্ষা করিতে স্চেষ্ট 🗻 हेब्राट्डन ।

শধিক দিমের কথা নয় পণ্ডিতাগ্রগণা দয়ানন্দ সরস্বতী মহশির যথন আপন প্রাণে নবীন বিশানের সঞ্চার অনুভব

করিলেন, যথন তিনি প্রচলিত পৌত্তলিকতার অসারতা উপলব্ধি ক্রিলেন এবং তাহাকে সত্যের বিরোধী বলিয়া অফুডব করিলেন, তথন সহজ ভাবে ভাহা পরিভাগে না করিয়া শাস্ত্রের সহায়তায় তাহা পরিত্যাগ করিতে প্রয়াসী হটলেন; এবং আপনার অসাধারণ জ্ঞান ও প্রতিভা দ্বারা বেদের প্রচলিত অর্থের ব্যতিক্রম করিতে বিশেষ ব্যগ্র হইলেন। ব্যাখ্যার সাহায়্যে এবং আপনার পাণ্ডিভ্যের সাহায়ে তিনি প্রমাণিত করিতে প্রবৃত্ত হইলেন যে বেদের কোথাও পৌতলিকতার ' সমর্থন নাই। অগ্নি, বায়ু, বরুণ, ইন্দ্র গ্রন্থভি শব্দের নৃত্র অর্থ প্রকাশ করিরা, লোককে চমৎক্রত করিছে লাগিলেন। नकनत्करे व्यारेश मिए नागितनन, डेक नक नकन अक्षीक बक्तात्रहे भित्रहात्रक । लाकि नाधात्रभण्डः खेळ भक नकन बाता যাহ। বুঝিয়া থাকে, ভাহা প্রকৃত নহে। তাঁহার সহিত বিচারে অনেকে তাঁহার পাণ্ডিতা ও প্রতিতা দেখিরা বিশ্বিত হইলেন। क्राम जिनि (महे नाना) (मववामी (वमरक्टे अक उक्षवामीकार) পরিণত করিয়া, এক নবীন অপৌত্তলিক ধর্মসমাজ সংগঠন করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। তাঁহার প্রতিষ্ঠিত আর্যাসমাজ এখন বিশেষ দৃঢভার সহিত বেদের বহু দেববাদকে অগ্রাহ্য করিতে-ছেন, তাঁহারা বহু দেববাদীদিগকে সমর সময় প্রকাশ্য ভাবে তর্কসংগ্রামে আহ্বান করিতেছেন। এমন কি কেহ বেদে পৌত-লিকভার সমর্থক উক্তি প্রদর্শন করিতে পারিলে, তাঁহাকে বছ অর্থ প্রদান করিবেন বলিয়া সংবাদ পত্তে বিজ্ঞাপনও थानान कविटाउट्झन। किन्दु त्वरानत चाधिकाः न अत्तत मत्रन कई याहा, जाहा चाता (य वह तनवान धामाणिज इहेता পাকে, ভাছাতে কোনই সন্দেহ নাই। এথানে আমরা বিখাদের পরিবর্ত্তনের সঙ্গে সঙ্গে শান্তের ব্যাখ্যা পরিবর্তন করিবান্ধ প্রবৃত্তির বিশেষ দৃষ্টান্ত দেখিতেছি।

অন্তত্ত আবার দেখা যায়, জ্ঞানী ও তার্কিক-প্রধান গৌরাঙ্গ যথন ব্ঝিলেন যে ভক্তিই ধর্ম সাধনের শ্রেষ্ঠ পথ,এবং যথন তিনি প্রাণে নৃতন বিশ্বাসলাভ করিলেন,তথন তিঁনিও এইরূপ ব্যাখ্যার সাহায্য লইয়াছিলেন। তৎকালে লোকে বেদাক গ্রন্থকে " শক্ষর ভাষ্যের সহিত ঐক্য করিয়াই তাহার অর্থ গ্রহণ করিত ; **এবং মায়াবাদ ও অবৈতবাদকেই ধর্ম সাধনের ভিত্তি করিয়া** সেই ভাবে সাধন করিত। প্রেমিক গৌরাঙ্গ দেখিলেন ও ব্যাখ্যাতে প্রাণের ভক্তিবৃত্তির বিশেষ ক্র্তি হয় না। 🔁 মিকের প্রাণ ভাহাতে পরিতৃপ্ত হয়না। এক্ষন্ত তিনি আপন প্রক্রিভাবলে ব্যাখ্যা ছারা দেই বেদাস্ত গ্রন্থ হইতেই স্বমত পোষণ করিতে লাগিলেন এবং সার্বভৌম বাস্থদেব পণ্ডিতকে বেদাস্ত স্ত্রের ব্যাখ্যা দারা প্রদর্শন করিলেন যে বেদান্তের স্ত্রগুলি ভগবানের প্রতি ভক্তি উদীপক। ঈশ্বর ও মানবাস্থার প্রভু ও **मारमंत्र मध्यस्ट वर्खमान । मानवाञ्चा ध्वर • পরমাত্মাকে এক** ভাবা বেদাং अत्र मुनर्थ नत्र। এই প্রকার রীতি সর্বত্তই স্কৃত্ত ষিত হইরা আসিরাছে। নবীন বিশ্বাসকে প্রাচীনের সহিত এক ভাবাপর করিয়া প্রচার করিতে এবং নবীনকে প্রাচীনের অবিরোধী রূপে প্রমাণ করিতে সর্বক্তই লোকে বড়পরার**ং** ररेशांह ।

वथन वहिंगितत প্রচলিত অভাতরেপে গৃহীত গ্রান্থেরই অর্ধান্তর কবিবার এরূপ প্রায়াস দেখা যায়, তথন যাহাদের কোন অভ্রান্ত শাল্ত নাই, বহুদিনের অবলম্বিত কোন বিশেষ রীতি পদ্ধতি নাই, তাহাদেব মধ্যে এই রীতি যে বিশেষভাবে প্রচলিত হইবে, ভাহাতে আর সন্দেহ কি ৭ এই জন্ত দেখা গিরাছে যথন কোন ত্রাহ্ম আপন পূর্ব্ব বিশ্বাসচুতে হইয়াছেন, এবং নবীন বিশ্বাস লাভ কবিয়াছেন ; তথন তাঁহার নবাবলম্বিত বিশ্বাস যে ত্রাহ্ম ধর্ম্মের বিবোধী নয় ভাগা প্রদর্শনের জ্ঞাও বাগ্র হইরাছেন। তাঁহাবা ভাগু তাহাতেই প্রিতৃপ্ত না হটয়া যথন ব্নিযাদৃশ সংস্থার প্রাপ্ত হন, ভাহাই যে ত্রাক্ষধর্মানুমোদিত এবং ভাছাই যে ত্রাহ্মধর্ম রূপে প্রিগহীত হওয়া আবশুক, তথন এরপ প্রমাণিত করিবার জন্ত বিশেষ বাগ্র হইরা থাকেন। এখানে ভাঁহাদের পথ অতি সহজ। কারণ ব্রাহ্মগণের ভ কোন এরপ গ্রন্থ নাই, যাহা ছারা প্রমাণিত হইতে পারে যে তাঁহার নবীন ব্যাধা। ত্রাহ্মধর্ম বিরুদ্ধ। তাঁহারা ত্রাহ্মধর্মকে বেন নিতান্তই কর্দমের তালের ক্রায় মনে করেন। কাদার তাল লইরা শিশু যেমন ক্রীড়া কবিজে করিতে, যেকাপ ইচ্ছা ভাহাকে পৰিবৰ্ত্তিত কৰে, ইহারাও সেই প্রকারে ব্রাহ্ম ধর্মকে মে ভাবে ইচ্ছা প্রিবৃত্তি করিতে বজুপ্রায়ণ হইয়া থাকেন। जान्नम्यास्य **এ**ই कार्यक वामावात्र माध्य तकान विहमय धार्ष व्यापनाटक चावब ना कविटन ९, हेशत य कान निर्मिष्ट অবয়ব নাট বা ইখার যে কোন নিদিষ্ট প্রকৃতিবও গঠন **क्य नाहै.** जाहा नरहा वहात পरिवर्त्तन व्यानक व्हेग्राट्ड अवर আবাৰও খ্ইৰে, ভাগতে সন্দেহ নাই। কিন্তু ইহার অবব্র ইহারই মধ্যে গঠিত হইয়াছে এবং ভাহাই মূলে অস্থিকপে বর্তমান থাকিয়া ক্রমশঃ পরিফটে হইবে। इंश (कान निर्किष्ठ भी गाप्त आहातक স্থভরাং কথনও না হইলেও আপন মূল প্রকৃতিকে পরিবর্তন কবিবে না। সেই প্রকৃতিই যদি পরিবৃত্তিত হয়, তাহা চটলে ইহার আর ব্রাহ্মধর্ম নামে অভিহিত হইবারও কোন সার্থকতা থাকিবে না। এই মূল প্রকৃতির প্রিবর্তন হইয়াও যদি তাক্ষধর্ম নামেই ইচা অভিহিত হয়, তবে তাহাকে এক অত্যাশ্চর্যা ঘটনা ও অভ্যাচারবিশেষ বলিয়া গণ্য করিতে হইবে। :ব্রাহ্মধর্মের সমগ্র প্রকৃতির সম্যক প্রকাশ এই অলু সময় মধ্যে হওয়া কথনই সম্ভবপর শৃষ্ত এবং বাঞ্চনীয় ও নয়। কিন্তু ইহার প্রকৃতি ইচাবই মধ্যে গঠিত হইয়াছে। তাহা এই—ইহা একমাজ অদি এীয় নিরাকার চৈত্তুস্তরূপ পরতক্ষেত্রই উপাদনাকে আপনার চির-সম্বল করিবে।,পৌতুলিকতাব প্রশ্রম ত্রাহ্মধর্ম্ম কথনই দিবে না। পৌত্রলিক ভার-সমর্থনকারী কেছ কথনই ইহার অগ্নীভূত হইবে না। পৌঁতলিক এবং ত্রাহ্ম পরম্পর বিরুদ্ধ ধর্মবিশিষ্ট। এই इहेरब्रे प्रियम यनि कथन १ ह्या, जाहा व्यक्त दर्गन नृहन ধশ্বসমাজ নামে অভিহিত হইবে। কথনই ত্রাহ্মধর্ম নামে অভিহিত হইবে না। অত্তান্ত শাস্ত্রবাদ স্নতরাং অভ্রান্ত গুরুবাদ ও মধ্যবন্ত্রীবাদ কথনই ইহার অন্তর্গত হইবে না। আগুন ও 🎍ল যেমন গুইরে মিলিয়া থাকিতে পারে না : তেমনিই অভান্ত শান্তবাদ ও অভাত মধ্যবতীবাদ এনে ব্ৰাহ্মধৰ্ম সন্ধিবন্ধনপূৰ্বক একত অবস্থিতি করিবে না।

বাঁহারা মনে করেন বে আক্ষাণ কথনও সকলে মিলিরা সভা সমিতি করিয়া এরূপ নির্দারণ একবাক্যে গ্রহণ করেন নাই। ব্যক্তি বিশেষ কোন কোন গ্রন্থে আপনাপন মত ব্যক্ত করিয়াছেন। তাহাই কেন সকলের গ্রাহ্ন হইবে 🔈 সকল ব্রাহ্ম যে একবাকো কথনও কোন সভায় উক্তপ্রকার নির্দারণ গ্রহণ করিয়াছেন, ভাহা সভ্য না হইলেও এবং বিশেষ বিশেষ ব্যক্তির নিধিক গ্রন্থের মত সকল সমুদায় ব্রাহ্মকর্তৃক সমর্থিত না হইলেও, ব্ৰাহ্মসমাজ স্কল যে ভাবে আপনাদের কার্যানির্কাহ করিয়া আসিতেছেন, তত্মারা আক্ষধর্মের উপরোক্ত প্রকৃতি নির্বাচন করিতে আর অধিক আয়াস করিতে হয় না। সকল ব্রাহ্ম বা বে কোন সমাজের সমস্ত লোক বে একসলে সভায় যুটিতে পারে, তাহা নহে। কিন্তু সকলে একসলে না যুটিলেও কি তাহাদের ধর্মের মূল প্রকৃতি, এবং মূল মত নির্দারিত হইতে পারে না। এই সম্ভাবনানা থাকিলে কথনই কোন সমাজ আপনাদের কার্যা নির্বাহ করিতে পারিত না। যাহা হউক আহ্মগণ একবাক্যে কোন সভার সমবেত হইয়া আপনাদের মূল মতগুলি গ্রহণ নাকবিলেও তাহাপেকা আছি উত্তম প্রণাণীতে আপনাদের মূল মত ও প্রকৃতির গঠন করিয়া-(हन। यांशायां मार्न करत्रन (य यथन (य Cकान मा**ड व्यवस्य**न কবা যায়, ভাচাই ব্রাহ্মধর্মের অমুমোদিত, তাহাদের ভ্রম অপনোদনের জন্ত আমরা ত্রাহ্মসমাজ সকলের মন্দির প্রতিষ্ঠার অম্বভান পত্র এবং মন্দিরসমূহের ট্রাষ্ট্রীডসমূহের উল্লেখ করি-ভেছি। অফুষ্ঠান পত্র সমূহ ত্রাক্ষসমাজ্বের স্কল সভ্যেরই মত প্রকাশক বলিয়াই মনে করিতে হুইবে। কারণ যদিও ভাহা সকল সময় °কোন সভাদারা গৃথীত না হউক, কিছু সকলেই তাহাতে সম্মতি জ্ঞাপন কবিয়া থাকেন। অন্ততঃ মতদিন তাহার প্রতিবাদ না হয়: ততদিন তাহা সকলেরই অনুমাদিত বলিয়াই মনে করিতে হয়। ত্রাহ্মসমাজের প্রতিষ্ঠিত মন্দির সমূহেব টুটেডীডসমূহ সম্বন্ধেও ইহাই উক্ত হঠতে পারে। এবং যতদিন কোন ব্রাহ্ম বা বহু ব্রাহ্ম তাহার প্রতিবাদ না কবেন, ততদিন তাহাকে তাঁহাদের সকলের সমর্থিত বলি-রাই গ্রহণ করিতে হর। কোন সভার বরং মতবৈধ হইরা হটয়াংথাকে। কিন্তু ট্রাষ্টডীডসমূহঃসকলের মতে প্রচারিত হইতেছে বলিয়া মনে করা ধীইতে পারে। কারণ কেহ কোন ট্রাষ্টটীডের প্রতিবাদ প্রকাশভাবে করিয়াছেন বলিয়া মনে हम्रना।

আমরা কোন কোন এক মন্দিরের ট্রাইডীড কইতে আক্ষণধর্মের মূল প্রস্কৃতির পোষক নিদ্ধারণ উদ্ধৃত করিতেছি। প্রার্থ সকল ট্রাইডীডই একভাবাপর। অতরাং বেঁশী উদ্ধৃত করিবার প্রয়োজন নাই। প্রথমতঃ আদি আক্ষদমাজের শাখা বাজ্য অন্তর্ভুক্ত সমাজ "কালনা" আক্ষদমাজের ট্রাইডীড কইতে উদ্ধৃত করা যাইতেছে। কালনা সমাজের ট্রাইডীডে আছিল "উক্ত সমাজ গৃহে কেবল চিরকালই এক এক্ষের উপাসনা হটবে, এব এক্ষের উপাসনা ব্যতীত কোন সম্প্রার অথবা কোনের আভীই দেবতা বা পাও পক্ষী মহযোর বা মূর্বির অথবা কোনে চিত্র

বা চিক্লের পূজা এই গৃহে হাইবৈ না, এই গৃহে অপর সাধারণের একজন বা অনেকে মিলিত হইয়া নিরাকার এক ব্রক্ষের উপাসনা করিতে পারিবেন।" "সমাজে এরপ উপদেশাদি দিতে হইবে যে যাহা ছারা সার্বজনীন ধর্মভাব ও ভ্রাতৃভাব সম্বদ্ধিত হয়, এবং সর্ব প্রকার কর্মনীতির ও উপচিকীয়া বৃত্তির ফুরণ হয়। এ গৃহে পরনিক্লা ও প্রচর্চা কলহাদি একেবারেই ইইতে পারিবে না।"

শাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সহিত যে সকল স্মাজেব সহাতৃতি আছে, দেই সকল সমাজের টুষ্টিডীড সমৃহের ভাষা প্রায়ই একরপ। এজন্ত আমরা একথানি ট্রাইডীড হইতে কিয়দংশ উদ্ত করিতেছি—∸ত্দারাই প্রমাণিত হইবে আহ্লসমাজের মূল প্রকৃতি কি ? ব্রাহ্মসমাজ যে কথনই পৌতলিকভার বা আবেতারবাদের সমর্থন করিবে না, তাহা এই ট্রাইডীড **দারাই প্রমাণিত হইতেছে। ় কোর**গৰ বাক্ষীনমা**লে**ৰ ট্রাইডীড ছইতে নিমে উদ্ভ হুইল। "এই মন্দির" কোলগর আহ্মসমাজ নামে আণ্যাত হইবে। এই গৃহে প্রতিদিন অংবা অন্ততঃ প্রতি সপ্তাতে একনার অধিতীয়, পূর্ণ অনম্ব, সর্বস্রেষ্টা, সক্ৰোপী সক্ৰিজিনান্, লক্জ সক্ষক্ৰময়, প্ৰম ভায়বান্ ও পবিত্র ঈশবের উপাসন। ১১বে। এগানে কোন স্ট বস্তুর আমোধনাহইবে না। কোন সৃষ্ট বা নিকৃষ্ট জীব বা জনড-পদার্থ ঈশ্বৰ জ্ঞানে ক্ষথবা ঈশ্বরের স্মান জ্ঞানে কিম্বা ঈশ্ববের অবতার জ্ঞানে এখানে পুঞ্জিত হইবে না এবং ঈশ্বর ভিন্ন আরে কাহারও নিকটে অথবা কাহারও নামে পার্থনা, স্তব বাসঙ্গীত ১ইবে না৷ কোন থোদিত বা চিত্রিত ঐতিম্বি অথবাকোন বাহ্যিক চিহ্ন যাহাসম্প্রদায় বিশেষে পূজার্থে বা কোন বিশেষ ঘটনা স্মৰণথে বাবহুত হুট্মীছে বা হুটুৰে ভাছা এখানে রক্ষিত হইবে না। "কোন বিশেষ পুস্তক এখানে ঈশার প্রণীত ও অভাধ বলিয়া সীকৃত বা সমাদৃত হইবে না। "এথানকার কোন স্তোত্র, প্রার্থনা সঙ্গীত, উপদেশ বা ব্যাথ্যান দারা কোন প্রকার পোত্তলিকতা, সাম্প্রদায়িকতা বা পাপে অমুমোদন ও তৎপ্রতি উৎসাহ প্রদান করা হইবে না। যদ্বারা সকলে নারীজ্ঞাত বণ ও অবশা নিাকাশেষে একতাস্ত্রে আবদ্ধ হইতে পারেন এবং উদার ও পবিত্র ত্রাহ্মধন্মের সাহায্যে সকল প্রকার ভ্রম ও পাপ পরিত্যাগ কবিয়া জ্ঞান, প্রাতি, ভক্তি ও সাধুতাতে উন্নত হৃহতে পারেন এমন ভাবে ও প্রণালীতে **এबा**न् উপामना स्ट्रेप ।"

উপরে যাহা উদ্ভ হইল তাহাতেই প্রতীয়মান হইবে ব্রাহ্মধর্ম চিরদিন অপৌত্তি বিক ধর্ম। এক মাত্র নিবাকাব পত্য সক্ষপ প্রমেশবের পূজা প্রতিষ্ঠা করাই ইহার উদ্দেশ। সক্ষপাপ ও দ্ণীতি এবং ভ্রাতৃভাবে বিরোধ ভাবাত্মক জাতি-ভেদ প্রথা প্রভাত কুসংস্কার ও অভ্রান্ত শাস্ত্রবাদ প্রভৃতির দমন পূর্বক ভ্রতৃভাব ও পবিত্রতার কায় স্থাপনহ ইহার এক •

#### कीवरनत्र अधार्थ ।

(কলিকাডা সা: বা: সমাজ-ছাত্রসমাজে পণ্ডিত শিবনাথ শারী কর্ত্ক প্রদন্ত বক্তার সারাংশ)

সাধারণ মহুষ্যের প্রতিদিনের কার্যোর পক্ষে কোন্ পথ অবলম্বনীয়—ইহার কিঞিৎ আলোচনা করা অদ্যকার বক্তার উদ্দেশ্য। সাধারণ জনমণ্ডলীর প্রতিদিনের কার্যা— 'সাধারণ জনমণ্ডলী একথা বলিবার তাৎপর্য্য এই যে আমাদের এই মানবকুলে একশ্রেণীর মহুষ্য দেখি বাঁছারা সাধারণ শ্রেণী ভূক নছেন। তাঁহাদিগকে বলে 'One Idead men.' তাঁহারা বিশেষ কোনও ভাবদ্বারা চালিত হন, তাঁহাবা সেই ভাবের অবতা ম্বরণ জগতে বাদ করেন. তাঁহাদের সম্দর কার্যাের স্রোভ একট ভাবে চলিতে থাকে; মৃত্যুর শেষ দিন প্যাস্ত সেই ভাব উাহাদিগকে অধিকার করিয়া থাকে, গ্রাস কারয়া থাকে। তাই তাঁহাদেব চিস্তা, ভাই তাঁহাদেব নিদ্রা, ভাই তাঁহাদের আর, তাই তাঁহাদের নেশা। এই প্রকার অসাধাবণ ব্যক্তি এরপ অনেক্ল কাজ করেন যাহাতে আমরা উৎকেলভাদোব (eccentricity) দেখিতে পাই। তাঁহাবা মহাপুরুষ, Prophet ইত্যাদি বলিয়া আখাতে হন। সাধাৰণের সঙ্গে তাঁহাদিগকে তুলনা ক্রিতেছিমা। তাঁহাদের সম্বন্ধে পূর্বে অনেকবার বলা হইয়াছে। এই সকল মহাজনের চাবত ভাঁহাদিগকে আস করিয়াছিল। এই সত্য এই ভাব তাহা দের জাবনকে এরপ ভাবে গ্রাস করিয়াছিল যে ভাইস্কুই তাহাদের উত্থান, তাহাতেই তাহাদের পত্ন, ডাহাতেই ঠাঁহাদের অশন, তাহাতেহ তাঁহাদের শয়ন ছিল। দৃষ্টা স্তব্ধণ এক জন মহাপুরুষের বিশেষ ভাবের উল্লেখ কবা বাহতে পাকে। যেমন যাশুর বিশেষ ভাব ছিল স্বগবাজ্য kingdom of God এই ভাবেহ ভিান কাষ্য কাব্য়াছেন, এই ভাবহ তিনি প্রচার কবিয়াছেন, মরিবার সময় এই কথাহ মুখে কবিয়া মারিয়াছেন। ইহাদের বিষয়ে কিছু বলিব না, বলা অদ্যকাব উদ্দেশ্যও নহে। ইহাাদগকে অবাপ।ততঃ বাহিরে রাথিষা সাধারণ জনমণ্ডলা সম্বন্ধে কিছু বালব:

ছাত্রসমাজের সভাগণের মধ্যে বােধহয় আনেকেই বুদ্ধের
জীবনের সুল সুল ঘটনাগুলি জানেন। মহায়া বুদ্ধের জালনিব
একটা প্রধান ঘটনা এই:—তিনি ৬ বংসর কাল অতি কুঠার
তপস্থায় য়াপন করেন। এই তপস্থাতে তাহার শ্রীর একেবারে জার্গ শীর্ণ হইয়া গিয়াছিল। তাহাকে দেখিলে মৃত
বলিয়া মনে হইত। এই তপস্থা সাধন কবিতে কবিতে হুয়াং
একদিন তিনি আহার কবিতে চাাংলেন। কোনও এক
ধনীর কন্সার নিকট পরমায় চাহিয়া থাইলেন। ৬ বংসব
কাল কঠোর তপস্থার পরে তাহাকে আহার কবিতে দোঝয়া
তাহার ৫ জন শিষা বিরক্ত হইয়া তাহার সঙ্গ ছাজিয়া চলিয়া
েগল। য়াহারা তাহাক অরণ্যের সঙ্গী ছিল তাহারাও তাহাকে
পরিত্যাগ করিল। বুদ্ধ যে আছার করিলেন, ভাহা তপস্থা
পরিত্যাগ করিবন বলিয়া তিনি সেই পথ ছাড়িলেন, কাবেণ
সেই পথে তাহার অভীপিত বস্তু পাইলেন নিং। তিনি

বু'ঝলেন যে এজনো তাঁহাব কিছুই হইবে না, যে পথ ভি:ন অধেষণ কবিভেছেন ইহা ভাগা নয়। কথিত আছে বে এই সময়ে তিনি এক স্বপ্ন দেখিতে পাইলেন। বৌদ্ধ ধ্যাবিল্ছীবা ইহা প্রকৃত ঘটনা বলিয়ামনে কবেন। সে যাহা হটুক, সপ্লটী এই ,—এক স্বগীয় দৃত একটী নীণা লইষা তাঁহাব নিকট উপস্থিত হইলেন। প্রাথমে বলিলেন যে স্থমেব উপরে চড।ইয়াবাৰ, আৰু ৰাজাও। বৃদ্ধ ৰাজাইতে গিয়া দেখিলেন য়ে ৰিক্ত সৰ দংপল হইল। ভগন স্থীয় দত গ্ৰ নামাইয়া वानिट विलिलन। डाङाएड विकड अव डेश्पन इडेल। অবংশধে নধাপণে বাণিতে বলিশেন। এইবাৰ বাজাই<mark>য</mark>া (निशित्नन (संश्व ग्रन्त अन उँ२शत क्वेंग । कावर्णास मृष्ठ বাললেন — তে বাজকুমাৰ কঠোৰ বৈৰাগেৰে পথ প্ৰক্লুত পথ নতে, ইল্রিয় সেবার পণও প্রক্রত পণ নহে, প্রক্রত পথ মধ্য পণ।" ইং। ব'লিয়া দূত অংছ(১১ ১ছ(লন। সহাল্লা বুদ্ধ ইহা প্রচাব কাবতে লাগিলেন। ভিনে সন্সাম বলিতে লাগিলেন, মধ্য পথই প্রকৃত পে। আসাক্ত ওাববক্তি কোননীই প্রকৃত পথ নহে। একদিকে আসাজ্ব মোখনী মৃত্ত ও অপব দিকে 🖟 বিশক্তিৰ ভিক্ৰাভি— এই ছয়েৰ মধান্তলেই প্ৰকৃত পৰা। ইহাই বুদ্ধ উপদেশ দিভেন। এই উপদেশ অগুত্রও পাওয়া যায়। 🔻 ভগবদগীতাৰ এক স্থলে আছে,—

নাত)স্বতস্থ যোগোহাস্ত ন চৈকাস্তমনগ্রঃ।
ন চাতিকপ্রনালস্ত ভাগোহোটোৰ চাজ্জুন ॥ ৬
যুক্তাহাববিহাস্ত সক্চেইস্ত ক্ষাস্থ।
যুক্তপ্রাৰবোদ্যা গোগো ভ্ৰাত ছঃগহা ॥ ১৭
গাডা ১ ৮৪ স্থায়।

ইহাব অর্থ এই বে অভিবিক্ত আহাব যে কবে, ভাহার যোগ হয় না। অনাহাবে যে থাকে ভাহাবও যোগ হয় না। আনাহাবে দেবাকে তাহাবেও যোগ হয় না। উগ্যুক্ত শ্রুম, উপ্যুক্ত আহাব, উপ্যুক্ত নিজা যে কবে ভাহাবেই নোগ হয়। বুদ্ধ যে সত্য প্রচাব কবিতেন এখানেও অন্তভাবে সেই সভোৱ কথা বলা হইতেছে। লোভা, অনশনকাবী, অল্ম, ও আনি লাক্লিই কাহাবেও প্রাক্ত যোগ হয় না। শ্রীব ও মনকে অকাবণে ত্রশ দেলেও যোগ হয় না, ইাক্রয় স্থাকি গ্রেও যোগ হয় না।

কোবল আবাাছিক বিনয়ে, এই নিয়ম ভাষা নহে। সকল কাৰ্যেব সকল ভাবের, সকল সভাবে আভিনিক্ত সানা আছে। কোনও কোনও সমাজ, কোনও কোনও লোক সেই অভিনিক্ত মাত্রার দিকে সিয়া পাডতেছে। আবার কোনও কোনও ব্যক্তি অপর দিকের অভিনিক্ত সামাতে শ্রমন কবিভেছে। এক সীমা ফইতে অপর নামার দিকে চলিয়াছে। এই ঘাত গ্রেঘাতে জনসমাজ সভত আন্দোলিত হইতেছে, এবং গ্রেঘাত জনসমাজ সভত আন্দোলিত হইতেছে।

' আজ কাল 'সামাজিকতা ও ব্যক্তিগত স্বাধানতা' (Socialism and Individualism) স্পর্ই এই তুইটা ভাবের ঘাত প্রতিঘাত চলিয়াছে। কোনও কোন্ও জাতিতে ব্যক্তিগত স্বাধীনতা এত প্রবল যে সামাজিকতা নাই বলিলেও

চলে। আবার কোনও কোনও গাতিতে ব্যক্তিগত স্বাধীনতা নাই বলিলে'। হয়—ভধু সামাজিকভা। যেমন আমাদের দেশেও চীন দেশে সামাঞ্চিকতা এত প্রবল যে ব্যাক্তগত স্বাধীনতা অতি সামাগ্র। আর পাশ্চাতা দেশ সকলে বাজি-গত খাধীনতা এত প্রবল দে সামাজিকতা নাই বলিলেও অভ্যাক্ত হয় না। আমাদের দেশে ঞাতিভেদ প্রথা ও একার বর্তী পরিবার প্রথা; বাক্তিগত শক্তিকে সঙ্গুচিত করিয়া রাণিয়াছে। এথানে সামাজিক শক্তি এত প্রবল যে অতি অল লোকেই সমাজেব শাক্তর বিকল্পে দ্রামান ইইতে সমর্থ হয়। আহার বিহাৰ, বেশ, ভূষা সকল বিষয়েই সমাজেৰ আধিকার— স্মাজেব হাত। মাতুষ কি ভাবে আহার করিবে, কিভাবে শ্রীব রক্ষা কবিবে, কি ভাবে বেশবিস্থাস কাববে---সকল বিষয়েই সামাজিক শাসন। সমাজেব শক্তির নিকট মাতুষ সক্ষদা ভীত ও কুন্তিত। এই জাতিভেদ প্রথা সমাজেব হত্তে এমন একটা Engine, বা যথ দিয়াছে, যদ্মাবামনে করিলেই দশ জন মিলিয়া সমাজের অঙ্গাভূত কোনও বাক্তিকে গুক্তব শাস্তি দিতে পাবে, আবাব এই জাতিভেদ এণা বংশগত হওয়াতে মানুষেৰ উদ্যোগ, সামধ্য, ও পুক্ষকার অন্তর্হিত হইয়াছে। এই জন্ম আমাদেব দেশে প্রতিভা ( Genius ) এবং উদামশীল 🕬 (Spirit of enterprise) অস্থৃহিত হইয়াছে। একদিকে এই সামাজিকতা প্রবা বলিয়া গ্রেমন্ত্র অপকাব ২ইতেছে অপ্রদিকে ইহাতে একটী মহা সভা, নিহিত রহিয়াছে। আনবা প্রত্যেকে জনসমাজের কাছে ঋণী, আমবা সমাজকে পাবত্যাগ্র কবিয়া থাকিতে পাবি না। আমাদের শ্রীরের उपत, आमारित धरनत उपत ममार्क्त अधिकात आहि। মন্তব্য ভ আদিমকালে বনে বনে ভ্ৰমণ কৰিত, এরপ স্মাঞ্চ বদ্ধ হইল কেন্দ্র কবিণ দেখিল একা একা থাকা যায় না 🚉 প্রত্যেকে প্রত্যেকের গ্রহান্তা চায়। প্রথম যুগন মানব-স্মান্ত গঠিত হয়, ভগন এই অন্তনিহিত চুক্তি (implicit contract) বৃহিণ যে আম্বা প্ৰস্পব্লেষ সাহায্য কবিব। আমি তোমাৰ স্ত্ৰী পুৰকে ৰক্ষা কৰিব, ভুাম আমাৰ স্ত্ৰা পুত্ৰকে বক্ষা করিবে। প্রত্যেক মাধুষ সুমাজেব নিকট ঋণী। স্কুতরাং সম্পূর্কণে আর্থন মাত্র পাপী, আর্থপরতাই সকল পাপের निमान कुडा

কিন্দ্র সমাজের এই শক্তিকে বথন অভিরিক্ত দীমাতে
লহণা যাওয়া গান, এবং বাক্তিগত শাক্ত শোপ প্রাপ্ত হয়,
তপন জনসমাজ মানালে উল্লেচ্চিব সহায় না হহণা অবনতির
কারণ হহণা দাড়ায়। ব্যক্তিগত স্থকে বাদ্ধিত করিবে,
ব্যক্তিগত শক্তিকে বিকশিত করিবে, ব্যক্তিগত জীবনকে উল্লেড হহতে সম্প্রকাবে, হহাই সমাজেব লক্ষ্য ও উদ্দেশ্ত। সেই
সমাজেই ঈশ্বাহণত সমাজ যাহাতে বাস করিয়া প্রত্যেক
ব্যক্তি স্থায় অধ্যাকে অবাবে উল্লেচ করিছে পারে। আর
বি সমাজ নানবের আয়াকে অবোগতিপ্রাপ্ত করে, তাহা
ঈশ্ববের হচ্চা-বিক্তা। প্রত্যেকের উপরে সমাজের অধিকার আছে
সন্দেহ নাই, কিন্তু সেই অধিকার অভিরিক্ত শাত্রায় গিয়া যেন
অন্নিষ্ট না করে। ভাহা হইকে অবনতি হইবে। CALL STATE OF THE And the street of the

कार्याक कार्याक प्रतिकार प्रश्निक कार्याक कार की रहे के विश्व का विश्व का विश्व ক্ষাপ্ত লেশে কুকারত্ত পরিবার প্রথা क्रिक्त महाकि देखा वर्ष प्रथम । ७ अमबानिशय नियम क्षित्र क्षेत्र भाषाहै वाव टिहाटल लाभिया श्रीपटल हरें। किर्म । आम्राहमक (न्दर्भ जाशीया । १५नाटक विम ८०६ क्षित्रमञ्जून मिल्करमें करेन, दम मानुकम यनिया गैना इस क्षा क्षा क क्षाब शायका, आण कथाकार खाउू शहात कि त्या कार्य क्रांन रहे ना ना कर नारक कारक मूच ধেরান কার প্রতিত ছোল এছণ ভাব নাই, আহরা मुखिकिताल मि के. त्र प्रश्लाकीय प्रवासन त्यात मात्रिय

क्षींत्र वंत्रहें। व्यक्त कर्ने, स्टाराना उठहें। करतन नी। ?. <sup>6</sup> আৰাৰ এই ৰাজিগত স্বাধীনতাৰ মধ্যেও মহাসভা स्मिद्धिक भारहर काभारतत रमस्यत प्रगीवित এए धारान কাৰ্মণ এই নৈ ৰাজীতে এক ভাই চাকুৱী কণিলে ভাষ পাচ ्रकेत् वेटिश भारेकः कृष्णसम्बादण का का स्रोतातन करे ट्याइनीय किंद्र समाम क्षेत्र कात्रण। इश् भूग नेत्र हैक्ट्रण व्यापरणत জীরতি লাউ। ইনিজেপ্টার দেশ সকলেব ইতিমধ্যে অপ্রদিকে अधि पृथे क्षेत्रपटिक। धार्यम आनिहासकतात कल हीरकार क्**डिकाट्ड**ो श्राप्टातिक महत्वा जाला भारती है। डेल १० ५० मा नारती किक्के दिवास सका स्थान के नाम के ने नाम में निवास है। कि कि 'অৰ্থিত্ত আছিছেলের ও কা ক। ইছা নান্ত স্থানিত विक्षित विक्रिको मार्ग अस बाग वर्ग निमाद न निरुष्ण एक पार्च मूं कृतिया होता १ हरू ११। मनावटण । ११ जन १ राज्य विकास किया किया सुरूप शिक्ष डाइक अल्हा करा एक डेडम (चार ठ क्षित्रकाश्चर अम्राटकात काय ठ मनावि देशहर ।

# ব্ৰাদাশমাজ।

विकास के में किया है है है है कि का निवस रक्षिण क्षित्र क्षाक्रमान ३ उरवदन, लक्षाक्षार्थ भवतं । कार्याद्वार्यस्थिति। व काल कामी क्षेत्रिमाण्ड्न। THE PROPERTY OF THE PROPERTY O

THE THE PART OF TH

इनितारी-पूर्णी वनिष्ठतीक क्यान के भावनी वर्षनाथी 

विमान्त्र-नगरमार्केक व , श्रेकांक वक्क छ। अकृतिम मॅम्पिटन "मेराडाम कम् न विश्वस मास्त्र मा

कामर्गक्य-निमालपुत २०८७ चीवू क रात्, नवकीशस्त प्राप्ति সহিত স্মিলিক হট্যা প্রচারণত স্বায়ায় প্রকি ক্রেক্ট্র उथाय देशान दकान वामाय मगरत ह छेल मना इय प्रवे कर्मीकृति क्षालीय कलगाइ आयात है है कि महास दक्त है। देश । सर्वेहिल भवु 9 करनी बात है जायहे तक की कातान । समान करें हैश्री वात्र एंडे श्रम करवन। हेश्रीया (भारत ग्रमत कार्ति-Cecer, দেখানেই বিশেষ দহাস্কৃতি গ্রাভুতেছেন। বা**র্জি**র্জু अस्ति क अक्षण विकारमा वर्षाके नश्चाका कादरक्रमाहे र्वरमध्य छ। हात् म्डाधर्षात्य स्वाप्तकः करेना ।

वल् छ। — है। ल बात नवतीलध्स मान, निनाबन्दर्भ क र्राष्ट्रीक करानु "।'ये वालांत्र नानुन, मा।" विकास अक्रिकी वक्कुली

विताह मिनालभूत नगरत शक ३७६ मार्क विमिनानी निवानी निवक एउनान भावकारतव पूछ छिएक सरस्यूनान भत्तकीरता महिल, अपूक्त तांद्र व्यवश्थ नात्मत विकास क्षेत्र भिक्षो स्थाला मारमन अस्तिनार मण्या कर स्ट्राटक् में क्रिकेट ard त्रवहां १९६५ मान का ठाटकात कार्या कटवन । ह्वामीक ता कि भार भारी है समस्या है - उभान शतान करतम । विवर्ग् >৮ : • करायव व अर्चन अस्माहत (विज्ञानि व्हेस्रोट्छ)

अंकि- व्यामात्त्व कितान्त्रवष्ट्र रक्ष अनुक वाद् गास्त्री तस करनव उकती । नक अवाहत त्यानशान भिक्क र पारका अन् २५६ पाक छाईनास केक कारन ना पाक्की ट र किश मण्डा तंत्र श्हेमारम् । आम्झानाद्वा मृत्र वात्राहरू पारा र काक्काल जरूर भागाम पश्चित्रमम् समाहित्स छे १ ४६ ६६मा मानिङ ६ छना ।।। व करवेम विवस सुन्नि बद्ध भूटक छेलाममा वस । एहे द्वलाचे की पूक्त नवशे गृहुक विश् चाहारणाव कारी करवम ।

'वश्रक अन्दे भाक श्रीतृष्ट कविषठ से मात्याव किन् गानी भाजात जानाभाष मन्यत इहेग्राटक । और अधिकार जाअस्मित्र कृष्णि कर्मा है .

ं विश्व १३५ माई नाग्यन बाबाना मिनित करात माजान आहे जान निर्देश में महिल्ला माजान जानाता है से बेर्डा है के ब्री अविक मा गुक्रांच विद्वार्थिक विकास करिया करिया करिया है। The second secon

ে নামকবণ— বিগ্রুত্ব মাগ জলপাইওজীয় শীমুক ুইবিয়েশখন চক্রবর্ণীর এথম সভানের (পুলেন) নামকর্ণ ক্রিবিশ্য উন্নিক্ত স্থান চক্রবিধ্য ব্রেট্ডে স্থান ইই-স্যাজ্য বিলাপের নাম ব্যোল মেহন বাধ্য ইইন্টের

মৃত্যু — ইনিগদে ইন্দ । হল্ল লামের একারত পুল শীমান্ ন্রেন্তন্ত্র দাস ২১ বংলর ২গদে এবং ইন্তে বলু সময়ভবান চক্ষর্তীর কমিষ্ট পুল্ল মান্দ বহুনে পিতামাতাকে শোক্ষাণারে ভ্রাইয়া প্রলোক গ্রু হেষ্টে। ত্রন্ত ব্যক্ত রোপে উভয়ের মৃত্যু হইয়াছে। ঈশ্ব শোক্ষরণ্ড পিতামাতার ক্রিয়ে শান্তিবারি অপন্কজন।

উৎস্ব—হ শামী । ৫ মার্চ হরণত, ৩১ এ মার্চ পর্যান্ত আবা সংদ্যাগাল সাক্তস্বিক উৎস্ব হরুবে এতকুললাক্ষ আগুল পাথত শিবনাথ শাস্ট আরায় গ্রমন ক্রিয়াছেন।

### भागवादि।

ক্রিজেকার ক্ষাত্র স্থান বি ব্যাণ্ট্রকেছে যে নিজাল্থিত ক্ষেত্র মংকান্যাপ্থ সাধান্য নাধ্যম, ক্ষেত্র নাজ্য বিভাগে ১৮৯৪ স্থান্যাতি কট্ডে ডিনেক্র গাঙ্কে তর সাত করি-ক্ষাছেন তেহুকা নাজ্যে বে জাত্রিক ধ্যান্থ প্রান্ ১৯কুরা বাহ্যেতেঃ

য়াব শিরিশচন শর্ম বালকান। ২ 🔒 ব'্ পলিজ্যমাহন ं सूत्र के अ, बाद केंद्र मन्द्र मान मानिकार है । दावा व्यवहरून । সংশ্লালৰ কৰি কাভা ১ - ক<sup>ু</sup> বা গ্ৰেণবিন্দ লভা বু নারখাহি र्हिष्हेद, बाहु समिक्रवर्ग (मन Caroll 110) । , तातु आक्रकांक (सन क्रिकाम ने, 'बार कारिजिन्द्र द्वारा प्रमध्या ५ , बार्ट् বাবু বিশিশ্বিধাবী রায় ন্টপ্ৰেন্তন্ত নিজ কলিকতে आधिकम्ब ३०० वाद् रहमार (याःव व लिकानः ३० , वार् असक्यात (डोक्नी के क.) लच्च (असक्याय सिंह के प्. িলাৰু ৰিপিনেবিহালী মত সংগ্ৰাগ্ৰাগালে সেন ও ১১, क्षेत्रांड क्षेत्रप्रकृष्ण र २ ० १ १४० हो । ২ ম বিলেপিনী ्षिरवाधास्त्रं विभिन्धः ४ . २ ८ - ली राष्ट्र रफटानुन, देन न, शिम्ही भन्ने।कुमारी में के खे हैं। किस शिक्ष्ट नमस्नि दशय ्राहेषु ऋरिनामाञ्चन तक्रमाहः । १ २० द्रान् व विकास स्व .स हे .age, यात (पाणानहरू महिक हेरेल, दुष्पि - अभाक्षांकिस के ५८, नावु स्कान्डल सहस्राट कुमाबनामी •५

वार प्रविश्वाहर्न (साम कर्निकाका है), वि खर्थ के 🎮 तान जनायहान निर्म के अध्यक्ति है। ब्यादिन्स्मान अपि के कि निर्माण 🤫 नेर्ने देवी अमा नीम्रकोधनी क्विकास 🔊 सीच देशासाम ठीम तथ के ८, छोक्तांत बतागरन रमाम के 🤼 न्यून खरवान मार्थ नीम के २०८, मानु देगारमञ्जूषाण दक्षत्र के दूर हिंगीह বরদকোত বরু ময়মনসি ত - , বাৰু সভাত এন শ্লিটিভ ১. বাবু রসিকলাল দত্ত কলিফাডা ১১, বাবু জিগাদীনট্ন বল্ল ঐ ১০, বাবু বিশিনবিষ্ণাৰী ১৮ ঐ ১৮, বাৰু বি**হুটো**নুং वाल मनिक के २८, पाइ इक्डि धाव के २८, वांव विविन्द्रकारी বস্তু বাহাছর ঐ ১০১, বাবু ছুর্থানারারণ ষত্ম মেদিনীপুর নিষ্ক্ লিখিত বাজি হইডে আদায় কান্ত্রা পাতান ১২ বাবে ভূবনেবর 🖞 मिक २५, बार्क कि कहा हिल २५, बाबू कार्य किया मिक ३५, साबू 📈 বল্পনাথ দাস ১১, বাব নবৰ্মাৰ মিজ ১১, যাবু প্ৰদানীয়ায়ৰ পক্ষী २८ दात् घटनाहरू वक्ष २८, गात् कृष्णतील सङ्घणात्र ॥०, वात् ए तक हमा (पास he, बार् क्रेयंब्रह्स अक्ष ne, क्रूमाकी विकास-(भारिनी वद्य ), वार् जेगानाह्य (वता 16, यार् केवलहरू ख्य ४०, राषु Cultumbra मख ४०, वाद् दिल्लाकामाथ मख do, বারু জি, লাশচন্দ্র দত্ত sio, বারু বিষমচন্দ্র পাশ do, বারু भाकीवान मञ्जल .)। कानातिका वामविकाती साध क्षेत्र, 🙉 ছি, এল কলিকাভা 🥕 , না , কেদারনাথ সুক্তি বাকুজা 🤾 , শীয়জ। ক্ষেন্সজনা নিং কলিকছে। ১৯১, নাবুশশিভূষণ 🦼 মজ্মনাৰ লগংশংপুৰ ১১, 🖎 মণ্ডা সভাৰতী ধৰ কৰিকাছো ২১, 📆 श्चिम भी भाकमान रशाय लाग । ने ने माम के कशाम कर्मा (प्रथम के सन्दर्भ है) নান কানাই শাল-সংখা দি লি। ০, ৰাজন ন'হমারঞ্জ লায় চৌধুনী ক্রাকনীয়া ৩ . বাসু মধ্যে জনাগ চটোপোগার ক্রিক্টার্ডা ২০, বাৰু বেখনাৰৰ পাল শিতি 🔍 বাৰু দীননাথ পাসুৰী জালি ফুল্ল ন , ডা যোগেলচন্দ্র বর্ণার ক্রিকা**ডা ১১,** বারুট হ্বনাল বস্থ ১১, কাবু ক'লোনারায়ণ গুপু চাকা ১১, জীমদী रिद्राकर्ता १४मी रह कालका छ। ६०, श्रीमकी एइस्क्री सह ८ । মান ৪., শ্রীমতী বিধুয়ুবা লাম কলিকাতা ২∙ে **যারু কার্মী**ে নাবেশাও স্থায়ি জাও , বাবু সভাবিজায় চোৰ আই ২৮, ৰাৰু ছিলিল (२९१० एवं के २८**, वाका नर्मावश्वी कर्नूद विक्रमान** ५०८<sub>,०५</sub> न के के विश्विमार्थित प्रकार स्वानी**श्व २, ७ विशास्त्रि**मार्थित। न प्राप्त प्राप्तन । चारकालनायक 🚉 🔻 चात्र 🖚 🖼 महिके 🤄 कांत्काला १ ) . जाव हेमाका व भाग मार्थाहत के ७५३

#### विकाशिम् ।

শ্রহাপদ প্রিয়ক পাও্র শিশনাথ শালী বৃষ্ণিয় কৃষিত্র কাতাত উপাসন্মান বিশ্বনাথ ব পাত্র পান ক্ষিত্র ক্ষান্ত ক্ষান্ত বিধান কল ক্ষেত্র করে তাতা মুদ্দিত কবিবার কল ক্ষ্মী তিন্ত ক্ষান্ত তিনি কাল ক্ষ্মী ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষ্মান্ত ক্ষান্ত ক্

२२० तर कर्म श्रमित् झेंहे,

क्षिकाकार

श्चित्रशिक्षति थे। सर्वास्त्री स्थापिक